शब्द-संख्या ३१५६७

प्रामाणिक हिन्दी कोश

(हिन्दी भाषा का वस्तुतः प्रामाणिक और सर्व-श्रेष्ठ शब्द-कोश)

सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

(हिन्दी शब्द-सागर, संक्षिप्त हिन्दी शब्द-सागर, उर्दू-हिन्दी कोश,
राजकीय कोश आदि के सम्पादक और 'अच्छी हिन्दी'
'हिन्दी प्रयोग' आदि ग्रन्थों के लेखक)

सहायक सम्पादक

जयकान्त झा

प्रकाशक

हिन्दी साहित्य कुटीर, हाथी गली, बनारस
साहित्य-रत्न-माला कार्यालय, २० धर्म्मकूप, बनारस

पहला संस्करण

१०००० प्रतियाँ

राम-नवमी सं० २००७ वि०

मूल्य ४०॥=)

मुद्रक—

के० कृ० पावगी.

हितचिन्तक प्रेस, राम घाट बनारस।

संकेताक्षरों का विवरण

अं०=अँगरेजी भाषा।

अ०=१. अकर्मक क्रिया।

२. कोष्ठक में व्युत्पत्ति के प्रसंग में =अरबी भाषा।

अनु०=अनुकरण।

अप०=अपभ्रंश।

अल्पा०=अल्पार्थक रूप।

अव्य०=अव्यय।

उप०=उपसर्ग।

कहा०=कहावत।

क्रि० प्र०=क्रिया प्रयोग।

क्रि० वि०=क्रिया-विशेषण।

क्व०=क्वचित् (कहीं कहीं प्रयुक्त)।

गुज०=गुजराती भाषा।

ता०=तातारी भाषा।

तु०=तुरकी भाषा।

दे०=देखो (अतिदेश)।

देश०=देशज।

ना० धा०=नाम-धातु।

पं०=पंजाबी भाषा।

परि०=परिशिष्ट।

पा०=पाली भाषा।

पु०=पुंलिंग।

पु० हिं०=पुरानी हिन्दी।

पुर्त०=पुर्तगाली भाषा।

प्रत्य०=प्रत्यय।

प्रा०=प्राकृत भाषा।

प्रे०, प्रेर०=प्रेरणार्थक क्रिया।

फा०=फारसी भाषा।

बँग०=बँगला भाषा।

बहु०=बहुवचन।

भाव०=भाववाचक संज्ञा।

मि०=मिलाओ।

मुसल०=मुसलमानों में प्रयुक्त।

मुहा०=मुहावरा।

यू०=यूनानी भाषा।

यौ०=यौगिक (दो या अधिक शब्दों के पद)।

व० वि०=वर्ण-विपर्यय।

वि०=विशेषण।

व्या०=व्याकरण।

सं०=संस्कृत।

संक्षि०=संक्षिप्त।

स०=सकर्मक क्रिया।

सम०-समस्त पद।

सर्व०=सर्वनाम।

सा०=साहित्य।

स्त्रि०=स्त्रियों की बोल-चाल।

स्त्री०=स्त्री-लिंग।

स्पे०=स्पेनी भाषा।

हिं०=हिन्दी।

---

* कविताओं, गीतों आदि में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का सूचक चिह्न।

† स्थानिक बोल-चाल में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का सूचक चिह्न।

विषय-सूची

विशेष सूचना

इस कोश का पूरा पूरा महत्त्व समझने और इसका ठीक ठीक उपयोग करने के लिए इसकी प्रस्तावना एक बार ध्यानपूर्वक पढ़ जाना आवश्यक है।

प्रस्तावना

इस शताब्दी के आरम्भ में हिन्दी में 'गौरी नागरी कोश', 'मंगल कोश' आदि छोटे-मोटे दो-चार शब्द-कोश ही मिलते थे; और हिन्दी के उस आरम्भिक युग के लिए वही बहुत थे। हिन्दी में व्यवस्थित तथा कलात्मक रूप से बड़ा और सर्वांगपूर्ण कोश बनाने का काम पहले-पहल काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने सन् १९०० में आरम्भ किया था और बीस वर्षों में उसने 'हिन्दी-शब्द-सागर' छापकर तैयार किया था। यह कोश हिन्दीवालों के लिए तो सर्व-श्रेष्ठ और आदर्श था ही, भारतीय भाषाओं में भी यह अपने ढंग का पहला कोश था। उसमें अनेक ऐसे तत्त्वों का समावेश हुआ था, जो राष्ट्र-भाषा के सर्व-श्रेष्ठ कोश के लिए परम आवश्यक थे। इन पंक्तियों का लेखक आदि से अन्त तक (बीच के उस थोड़े-से समय को छोड़कर, जब कोश-विभाग जम्मू चला गया था) उसकी रचना में सम्मिलित और सहायक था। चाहे सौभाग्य से समझिए या दुर्भाग्य से, उसके सम्पादकों में से वही अब तक जैसे-तैसे बचा है।

जिस समय हिन्दी शब्द-सागर बना था, उस समय बड़े बड़े विद्वानों ने मुक्त-कंठ से उसकी प्रशंसा की थी। पर जो विशाल भवन दूर से देखनेवालों को परम रमणीक, भव्य और सुखद जान पड़ता है, वही भवन उसमें रहनेवालों को और उनसे भी बढ़कर उसे बनानेवाले कारीगरों को बहुत-कुछ त्रुटिपूर्ण और स-दोष जान पड़ता है। शब्द-सागर के दो सम्पादक (स्व० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और इन पंक्तियों का लेखक) प्रायः आपस की बात-चीत में शब्द-सागर की खूब दिल्लगी उड़ाते थे; और उसके तरह तरह के दोषों की चर्चा करते हुए सोचा करते थे कि इसके ये सब दोष कब और कैसे दूर होंगे। स्व० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अन्यान्य विषयों और विद्याओं की भाँति कोश-कला के भी परम प्रवीण पंडित थे। यदि वे चाहते तो उसे बहुत-कुछ निर्दोष कर सकते। पर थे वे बहुत बड़े सुख-जीवी, और परिश्रम के कार्यों तथा झगड़े-बखेड़ों से दूर रहनेवाले। अतः वे प्रायः मुझसे कहा करते थे—'वर्म्मा जी, हमसे तो अब कुछ हो न सकेगा। हाँ, आप यदि कुछ हिम्मत करें तो शब्द-सागर का बहुत कुछ सुधार हो सकता है।' मैं भी हँसकर कह देता—'जी हाँ, मैं तो इसके लिए मरने को हूँ। हम लोगों को जो कुछ करना था, वह कर चुके। अब आनेवाली पीढ़ियाँ जो चाहेंगी वह करेंगी।'

परन्तु जब शुक्ल जी का स्वर्गवास हो गया, तब मेरी आँखें खुलीं। जिस समय मैं शोक-मग्न होकर उनके शव के साथ श्मशान की ओर जा रहा था, उस समय मुझे ध्यान आया कि शुक्ल जी कोश-कला के ज्ञान का कितना बड़ा भंडार अपने साथ लिये जा रहे हैं; और उस ज्ञान का कितना थोड़ा अंश अभी तक कागज पर आ पाया है। मैंने सोचा कि शुक्ल जी के सत्संग से इस विषय का जो थोड़ा-बहुत ज्ञान मुझे प्राप्त हुआ है, उसका तो मैं कुछ उपयोग कर जाऊँ। बस तभी से मैं शब्द-सागर में जहाँ-तहाँ सुधार, संशोधन, परिवर्त्तन और परिवर्द्धन करने

जाता। पर सारा काम अकेले मेरे वश का नहीं था। इसके लिए अनेक विद्वानों के सहयोग तथा एक बड़े कार्यालय की आवश्यकता थी। सभा का कोश-विभाग बहुत पहले बन्द हो चुका था, और फिर से उसका काम चलाने में सभा असमर्थ-सी थी। अतः मुझसे अकेले जो कुछ हो सकता था, वह मैं करता चलता था।

परन्तु जब संवत् २००४ के अन्त में द्वेष-स्वरूप महा० गान्धी के पवित्र नाम का घोर दुरुपयोग करके सभा का तख्ता उलट दिया गया और उसी समय से सभा के कई पुराने और सच्चे सेवकों, उन्नायकों तथा हितैषियों के साथ अनेक प्रकार के अशालीन और अशोभन व्यवहार होने लगे, कोरे व्यक्ति-गत राग-द्वेष तथा विशुद्ध बल-प्रदर्शन की वेदियों पर सभा के उच्चतम हितों की बलि चढ़ने लगी और सभा की कई परम उपयोगी तथा अर्थ-करी योजनाएँ और व्यवस्थाएँ मनमाने ढंग से नष्ट की जाने लगीं[1], तब सं० २००५ के पूर्वार्द्ध में मैंने परम दुःखी होकर सभा से ४० वर्षों का पुराना घनिष्ठ सम्बन्ध तोड़ लिया और शब्द-सागरों के संशोधन से हाथ खींचकर 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' की रचना में हाथ लगाया।

अन्यान्य कोशों की भूलें

यह नया कोश प्रस्तुत करने के समय मुझे शब्द-सागर के बृहत् और संक्षिप्त दोनों संस्करणों में और भी अनेक प्रकार की हजारों भूलें मिलने लगीं। यहाँ यह बतला देना भी आवश्यक जान पड़ता है कि 'शब्द-सागरों' के बाद उनके अनुकरण पर बने हुए कोशों में भी ये सब भूलें तो ज्यों की त्यों मिलती ही हैं, साथ में और भी बहुत सी नई भूलें देखने में आती हैं। ऐसी भूलों का सुधार और बहुत-सी त्रुटियों की पूर्ति तो इस कोश में कर दी गई है, तो भी बहुत-सा काम बाकी है। पर मैं इसके लिए शारीरिक शक्ति और नैत्रिक ज्योति कहाँ से लाऊँ? फिर भी जहाँ तक हो सकेगा, कुछ न कुछ करता रहूँगा। बाकी काम 'आनेवाली पीढ़ियाँ' करेंगी।

संक्षिप्त शब्द-सागर में 'धवली' के बाद भूल से 'धवर' शब्द तो छपना छूट गया है, पर उसका अर्थ 'सफेद, उजला' छप गया है, जिससे यह अर्थ भी 'धवली' के अन्तर्गत हो गया है। वर्णों का उच्चारण-प्रकार है तो वस्तुत: 'स्पृष्ट' पर शब्द-सागरों में उसका विवरण 'स्पष्ट' के अन्तर्गत चला गया है। 'पराह्न' शब्द है तो संज्ञा, पर दोनों शब्द-सागरों में भूल से 'विशेषण' छप गया है। 'होना' क्रिया का अवधी भूत-कालिक रूप 'भया' है तो अकर्मक क्रिया, पर दोनों शब्द-सागरों में विशेषण छप गया है। 'पूर' विशेषण भी है और संज्ञा भी; पर संक्षिप्त शब्द-सागर में उसका संज्ञावाला अर्थ भी विशेषणवाले अर्थ के साथ ही

१. इन्हीं में 'संक्षिप्त शब्द-सागर' के नये संस्करण के प्रकाशन की मेरी वह व्यवस्था भी थी, जिसके अनुसार उक्त कोश सं० २००५ के उत्तरार्द्ध में निश्चित रूप से प्रकाशित हो जाना चाहिए था, पर जिसे सभा आज तक प्रकाशित न कर सकी!

आ गया है। यही बात 'आग्रत' के सम्बन्ध में भी है। संक्षिप्त शब्द-सागर में इसके विशेषणवाले अर्थ के साथ ही संज्ञावाला अर्थ भी आ गया है। 'सकोड़ना' का 'सिकोड़ना' वाला अर्थ सकर्मक और 'संकोच या लज्जा करना' वाला अर्थ अकर्मक है। पर दोनों अर्थ सकर्मक के अन्तर्गत ही आये हैं। संक्षिप्त शब्द-सागर में 'पट' शब्द जहाँ विशेषण बताया गया है, वहाँ उसका जो अर्थ दिया है, वह विशेषण के रूप में नहीं, बल्कि संज्ञा के रूप में है। कोशों में 'संगत' का संज्ञावाला हिन्दी अर्थ तो मिलता है, पर संस्कृत का विशेषणवाला अर्थ नहीं मिलता। कई कोशों में 'कोहरी' के आगे दे० 'कोहलारी' 'दोहरा' के आगे दे० 'देवहरा' और 'तनुरुह' के आगे दे० 'तनूरुह' लिखा है। पर 'कोहलारी' 'देवहरा' और 'तनूरुह' शब्द उनमें आये ही नहीं। एक कोश में 'निमिख' दे० 'निमिष' और 'निमिष' दे० 'निमेष' तथा 'तरोई' दे० 'तुरई' और 'तुरई' दे० 'तरोई' तक मिला है। यदि शब्द-सागरों में आंतरिक, परिस्थिति, पारिश्रमिक, पुस्तिका आदि शब्द छूट गये हैं, तो फिर उनके अनुकरण पर बने हुए कोशों में भी इन शब्दों का अभाव ही दिखाई देता है। तात्पर्य यह कि हिन्दी के किसी नये या आधुनिक कोशकार ने कहीं कुछ सोचने विचारने की आवश्यकता नहीं समझी। सबने शब्द-सागरों का अन्ध अनुसरण मात्र किया है। पर मैं आशा करता हूँ कि इस प्रस्तावना में कोशों की भूलों और त्रुटियों की जो चर्चा की गई है, उससे भावी कोशकार सचेत हो जायँगे और अपनी कृतियों को ऐसी भूलों और त्रुटियों से बचाने का प्रयत्न करेंगे।

शब्दों का चुनाव

कोशकार को पहले यह देखना पड़ता है कि हम किस प्रकार अथवा वर्ग के लोगों के लिए कोश बना रहे हैं; और उन्हीं लोगों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए शब्दों का चुनाव और संग्रह होना चाहिए। प्रायः लोग कोई बड़ा कोश उठा लेते हैं और उसी में से बिना किसी उद्देश्य या विशेष दृष्टि के शब्द लेने लगते हैं। अन्य क्षेत्रों से नये शब्द ढूँढ़ने का भी वे कोई प्रयत्न नहीं करते। हिन्दी शब्द-सागर के बाद आज तक जितने कोश बने हैं, उनमें से एक को छोड़कर और किसी कोश में कदाचित् ही दस-पाँच नये शब्द आये हों। हिन्दी शब्द-संग्रह में प्राचीन कवियों के प्रयुक्त किये हुए अवश्य सैकड़ों ऐसे शब्द मिलते हैं, जो हिन्दी शब्द-सागर में नहीं आये हैं। इधर हिन्दी में हजारों नये शब्द बने और प्रचलित हुए हैं और हजारों शब्दों में नये अर्थ लगे हैं। पर अभी तक किसी कोश में उन्हें स्थान नहीं मिला। इधर दस-बारह वर्षों में मैंने प्राचीन तथा आधुनिक कवियों और इधर के समाचारपत्रों आदि में प्रयुक्त सात-आठ हजार नये शब्द उदाहरणों सहित ढूँढकर इकट्ठे किये हैं। और उनमें से अधिकतर मुख्य शब्द इस कोश में ले लिये गये हैं।

जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ है, तब से हिन्दीवालों को शासनिक, वैधानिक, राजनीतिक आदि अनेक प्रकार के और कार्यालयों आदि में प्रयुक्त होनेवाले बहुत-

से अँगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्यायों की आवश्यकता पड़ने लगी है। अनेक सरकारी और गैर-सरकारी क्षेत्रों में आवश्यक अँगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय खूब बन रहे हैं। पर ये सभी नये हिन्दी पर्याय न तो अभी तक सर्व-मान्य हुए हैं और न उनमें से बहुतेरे कभी सर्व-मान्य हो सकते हैं। हाँ, उनमें से जो दो-तीन हजार शब्द मुझे ठीक और काम के या चल सकने के योग्य जान पड़े, वे अवश्य इस कोश में ले लिये गये हैं। नवम्बर-दिसम्बर १९४९ में भारतीय संविधान परिषद् की ओर से दिल्ली में जो भाषा-विद् सम्मेलन हुआ था और जिसमें मुझे भी इस प्रान्त की सरकार के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उसमें अँगरेजी के विधिक और वैधानिक शब्दों के लिए जो हिन्दी शब्द बने थे, उनमें से भी प्रायः सभी ठीक और उपयुक्त शब्द इस कोश में आ गये हैं। बहुत-से शब्द मेरे विद्वान् और सुयोग्य मित्र श्री गोपालचन्द्र सिंह जी (इस प्रान्त के सिविल जज) के चुने और बनाये हुए भी हैं, जिन्हें इस प्रान्त की सरकार ने सभा द्वारा बननेवाले 'राजकीय कोश' में मेरे साथ सहयोग के लिए काशी भेजा था। और बहुत-से शब्द स्वयं मेरे चुने, ढूँढ़े, बनाये और स्थिर किये हुए भी हैं।

इस कोश में पाठकों को कुछ अँगरेजी शब्दों के दो दो और तीन तीन पर्याय भी मिलेंगे। वे इसी दृष्टि से दिये गये हैं कि सुविज्ञ लोग उनमें से चल सकने योग्य और उपयुक्त शब्द चुन लें। ऐसे महत्त्वपूर्ण शब्दों की व्याख्या के अन्त में उनके वाचक अँगरेजी शब्द भी दे दिये गये हैं। जो लोग अँगरेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय जानना चाहते हों, उनके सुभीते के लिए अँगरेजी के प्रायः दो हजार शब्दों की सूची उनके हिन्दी पर्यायों के साथ इस कोश के अन्त में दे दी गई है। हिन्दी और संस्कृत के शब्दों में से गिनतियों, ओषधियों, स्थलों, व्यक्तियों, पशु-पक्षियों, जातियों, वृक्षों आदि के नामों और धर्म-शास्त्र, ज्योतिष, तर्क-शास्त्र, पिंगल, अलंकार-शास्त्र आदि के शब्दों में से वही शब्द लिये गये हैं, जो बहुत अधिक प्रचलित हैं। अरबी-फारसी के भी बहुत प्रचलित शब्द ही लिये गये हैं, शेष छोड़ दिये गये हैं।

शब्दों के मानक रूप

जिन दिनों हिन्दी शब्द-सागर बन रहा था, उन दिनों शब्दों के मानक रूप स्थिर करने की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया था। जो शब्द जहाँ जिस रूप में मिलता था, वहाँ से वह प्रायः उसी रूप में ले लिया जाता था और उसी के आगे उसके अर्थ भी दे दिये जाते थे। इसके सिवा उस समय भूल से कुछ शब्दों के ऐसे रूप मानक मान लिये गये थे, जो वास्तव में मानक नहीं थे। उदाहरणार्थ—कुआँ, कौवा, ठटरी, ठाट, तुरई, धुआँ आदि। पर इनके मानक रूप क्रमात् कूआँ, कौआ, ठठरी, ठाठ, तोरी, धूआँ आदि हैं। शब्द-सागर में पावँड़ा, पावँड़ी आदि रूप दिये हैं, पर ये शब्द 'पाँव' से बने हैं; और इसी लिए 'पाँवड़ा' 'पाँवड़ी' आदि रूप ही शुद्ध ठहरते हैं। 'बहुँटा' रूप इसलिए ठीक नहीं है कि वह 'बाँह' से बना है। मैंने

'बँहुदा' रूप ही ठीक माना है। संस्कृत 'विहंगिका' से निकला हुआ हिन्दी शब्द 'बहँगी' ही ठीक होगा, 'बँहगी' नहीं। 'रसावर' रूप तो मानक और 'रसौर' स्थानिक है। पर कोशों में प्रायः 'रसौर' के अन्तर्गत ही अर्थ मिलता है। इस कोश में 'रसावर' के अन्तर्गत ही अर्थ दिया गया है। 'तूँबा' रूप तो मानक है, पर 'तुँबड़ी' तूमड़ी' आदि रूप स्थानिक हैं। बोल-चाल का और प्रचलित रूप 'साँढ़' ही मानक माना गया है, 'साड़' नहीं।

शब्दों की अक्षरी या हिज्जे उनके मानक रूप के अन्तर्गत ही आ जाते हैं। पर मैंने अक्षरी में भी एक विशेष बात का ध्यान रखा है। वह यह कि आवश्यकतानुसार समस्त या यौगिक शब्दों में संयोजक-चिह्न लगाकर उनके ठीक ठीक उच्चारण बतलाने का भी प्रयत्न किया है। उदाहरणार्थं 'कम-पटी' रूप इसलिए दिया गया है कि मदरासी, आसामी आदि अ-हिन्दी-भाषी कहीं भूल से उसका उच्चारण 'कनप-टी' के समान न करने लगें। इसी दृष्टि से 'ड' और 'ड़' तथा 'ढ' और 'ढ़' के अन्तर का भी बहुत-कुछ ध्यान रखा गया है। पर हो सकता है कि प्रेस के भूतों के कारण इस नियम का कहीं कहीं पालन न हो सका हो। अगले संस्करण में इस बात का और भी अधिक ध्यान रखा जायगा।

इस कोश में अरबी-फारसी आदि विदेशी शब्दों के हिन्दी मानक रूप स्थिर करने का भी प्रयत्न किया गया है। उदाहरणार्थ–'उम्र' 'बिल्कुल' 'सब्र' 'सर्दी' आदि रूपों के बदले 'उमर', 'बिलकुल', 'सबर', 'सरदी' आदि रूप ही मानक माने गये हैं। इसके कई कारण हैं। एक तो यह कि ये शब्द हिन्दी में अधिकतर इन्हीं रूपों में बोले और लिखे जाते हैं। दूसरे यह कि ऐसे रूपों में संयुक्त अक्षरों के लिखने-पढ़ने की कठिनाई से बचत होती है। परन्तु 'बस्ता', 'बस्ती' सरीखे शब्द इसी लिए इन रूपों में रखे गये हैं कि ये इसी प्रकार बोले और लिखे जाते हैं। इसी दृष्टि से संस्कृत के 'तारल्य', 'प्राबल्य', 'दौर्बल्य' और 'शैथिल्य' सरीखे रूपों की जगह 'तरलता' 'प्रबलता' 'दुर्बलता' 'शिथिलता' सरीखे रूप ही मान्य किये गये हैं। सारांश यह कि इस कोश में शब्दों के मानक रूप बहुत सोच-समझकर और कुछ विशिष्ट सिद्धान्तों के आधार पर ही स्थिर किये गये हैं। आशा है, इससे लोगों को भाषा का स्वरूप स्थिर करने में विशेष सहायता मिलेगी।

शब्द-भेद

शब्द का मानक रूप ज्ञात हो जाने पर यह जानने की आवश्यकता होती है कि व्याकरण की दृष्टि से यह किस प्रकार का शब्द है। अर्थात् संज्ञा है या विशेषण; क्रिया है अथवा क्रिया-विशेषण आदि। पर कुछ तो गम्भीर विचार के अभाव के कारण और कुछ दृष्टि-दोष से इस सम्बन्ध में भी कोशकारों से कई प्रकार की भूलें हो जाती हैं। यों तो बहुत-से ऐसे विशेषण हैं जिनका व्यवहार प्रायः संज्ञा के समान होता है; फिर भी विशेषण विशेषण ही हैं और संज्ञाएँ संज्ञाएँ ही। फिर इनके सम्बन्ध की गड़बड़ी उतनी भ्रामक भी नहीं होती। हाँ, गड़बड़ी तब होती है, जब एक

शब्द-भेद के अन्तर्गत दूसरे शब्द-भेदवाला अर्थ आता है। संक्षिप्त शब्द-सागर में 'सरपट' शब्द बताया तो गया है क्रि० वि०, पर उसका अर्थ दिया गया है संज्ञा के रूप में। वस्तुतः ये दोनों अर्थ हैं जो अलग अलग शब्द-भेदों के अन्तर्गत होने चाहिएँ। क्रियाओं में अकर्मक और सकर्मक का भेद करना कभी कभी कठिन होता है; और शायद इसी कठिनता से बचने के लिए एक कोशकार ने अपने कोश में से यह भेद ही निकाल दिया है, और 'क्रिया' मात्र लिखकर छुट्टी ली है! पर अधिकतर कोशों में अकर्मक और सकर्मक भेद बतलाये गये हैं। हाँ, उनमें कहीं कहीं कुछ भूलें अवश्य हुई हैं। उदाहरणार्थ—'पतियाना' शब्द है तो अकर्मक, पर कई कोशों में वह सकर्मक बतलाया गया है। भीजना, बराना, बहना आदि बहुत-से शब्दों में मुझे कई कोशों में अकर्मक और सकर्मक अर्थ एक-साथ और एक ही में मिले जुले दिखाई दिये। पर इस कोश में प्रायः सभी अकर्मक और सकर्मक अर्थ अलग और यथा-स्थान किये गये हैं; और इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि अकर्मक का अर्थ भी अकर्मक रूप में हो और सकर्मक का अर्थ भी सकर्मक रूप में।

लिंग-निर्णय

हिन्दी में लिंग भेद का प्रकरण इतना जटिल और दुरूह है कि उसकी ठीक ठीक मीमांसा होना प्रायः असम्भव है। बहुत-से अ-हिन्दी-भाषी इसी लिए हिन्दी से घबराते हैं कि उनकी समझ में नहीं आता कि हिन्दी में 'मार्ग' या 'रास्ता' पुं० क्यों है और 'सड़क' या 'गली' स्त्री० क्यों है। या 'बाल' पुं० क्यों है और दाढ़ी या मूँछ स्त्री० क्यों है। पर हिन्दी में संज्ञाओं में लिंग-भेद है ही, जिसका प्रभाव विशेषणों और क्रियाओं तक पर पड़ता है। किसी शब्द का ठीक लिंग जानने के लिए लोगों को प्रायः कोश का ही सहारा लेना पड़ता है। अतः 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में शब्दों के लिंग बहुत-कुछ विचारपूर्वक और कुछ निश्चित सिद्धान्तों के आधार पर स्थिर किये गये हैं। संक्षिप्त शब्द-सागर में 'थूक' शब्द पुं० बतलाया गया है; पर अब मैं समझता हूँ कि चूक, हूक, फूँक आदि शब्दों की तरह 'थूक' भी स्त्री० ही है। 'दम-कल' शब्द मैंने इसलिए स्त्री० माना है कि उसके अन्त में 'कल' है जो स्त्री० है। और फिर इसका पुं० रूप 'दम-कला' भी हिन्दी में प्रचलित है। 'हँकारी' शब्द 'दूत' के अर्थ में पुं० है, पर संक्षिप्त शब्द-सागर में स्त्री० दिया है। प्रायः कोशों में 'बन्दनवार' शब्द पुं० बतलाया गया है; पर वह 'बन्दनमाला' से निकला है; और इसी लिए स्त्री० होना चाहिए। 'पंखी' शब्द पक्षी या चिड़िया के अर्थ में तो पुं० है, पर शेष अर्थों में स्त्री० है। शब्द-सागरों में यह सभी अर्थों में पुं० बतलाया गया है, जो ठीक नहीं है। प्रायः कोशों में 'लाश' शब्द कुछ अर्थों में पुं० और कुछ अर्थों में स्त्री० बतलाया गया है। पर वह बोला जाता है सभी अर्थों में स्त्री० ही; और इसी लिए वह इस कोश में भी स्त्री० ही माना गया है। शब्द-सागरों में 'पारख' शब्द तो स्त्री० बतलाया गया है; पर उसी के अन्तर्गत उस 'पारखी' शब्द

का भी अभिदेश किया गया है, जो स्त्री० नहीं बल्कि पुं० है। यही बात 'पायल' के सम्बन्ध में भी है। शब्द-सागरों में उसके स्त्री० रूप में ही पुं० रूप का भी अर्थ आ गया है। यद्यपि कई कोशों में 'नैतक' शब्द पुं० दिया गया है; पर मैंने उसे इसलिए स्त्री० रखा है कि कविता में उसके प्रायः सभी प्रयोग स्त्री० रूप में मिलते हैं। 'याद' शब्द सर्वत्र स्त्री० है। पर कुछ कवियों ने इसके 'यार' रूप का प्रयोग पुं० में किया है जो ठीक नहीं है। इस अर्थ में मैंने 'यार' शब्द भी स्त्री० ही माना है।

व्युत्पत्ति

कोश में व्युत्पत्ति विशेष महत्व की वस्तु मानी जाती है। शब्द का मूल रूप तो व्युत्पत्ति बतलाती ही है, इससे शब्द के इतिहास और विकास के सम्बन्ध की भी बहुत-सी बातें प्रकट होती हैं। शब्द के ठीक अर्थ का जो ज्ञान होता है, वह अलग। खेद है कि इस क्षेत्र में अब तक हिन्दी में बहुत ही कम काम हुआ है। जो कुछ हुआ है, उसका अधिकांश शब्द सागर में ही हुआ है। पर वह आरम्भिक काम भी ऐसे समय हुआ था, जब न तो किसी का ध्यान इस ओर गया था और न इसके लिए यथेष्ट अवकाश अथवा साधन ही प्राप्त थे। 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में भी व्युत्पत्तियों की वैसी छान-बीन तो नहीं हो सकी है, जैसी होनी चाहिए, फिर भी जहाँ-तहाँ बहुत-सी व्युत्पत्तियाँ ठीक की गई हैं। 'जुकाम' सीधा-सादा अरबी शब्द है, पर शब्द-सागर में उसकी व्युत्पत्ति 'जूड़+घाम' बतलाई गई है! जो 'बहीर' वस्तुतः फारसी का शब्द है, उसकी व्युत्पत्ति शब्द-सागर में 'भीड़' बतलाई गई है। 'पुर' फारसी का शब्द है, जो शब्द-सागर में भूल से अरबी का माना गया है। 'तालाब' शब्द 'ताल' और 'आब' के योग से नहीं बना है, बल्कि सं० तल्ल' से निकला है। 'समूर' है तो अरबी का शब्द, पर शब्द-सागर में संस्कृत बताया गया है। यों बोल-चाल में लोग भले ही 'ठेका' और 'ठीका' में अन्तर न रखें, पर व्युत्पत्ति के विचार से दोनों में बहुत अन्तर है। 'ठेका' शब्द 'ठेकना' से बना है। इसका अर्थ 'थोक' है और इसका दूसरा रूप 'ठेक' है। पर संविदा का वाचक 'ठीका' वास्तव में 'ठीक' से बना है; और इस दृष्टि से 'ठेका' से बिलकुल अलग चीज है। 'धुस्स' शब्द कभी 'ध्वंस' से निकला हुआ नहीं हो सकता, चाहे वह 'दूह' से बना हो, चाहे किसी और शब्द से। 'निनावाँ' कभी 'नन्हों' से निकला हुआ नहीं माना जा सकता। 'पुजापा' शब्द 'पूजापात्र' से नहीं निकला है, बल्कि 'पूजा' में वही 'आपा' प्रत्यय लगने से बना है जो 'बुढ़ापा' में है। शब्द-सागर में 'पिन्नी' को देशज बतलाया गया है, पर वह सं० 'पिंड' से निकला है। 'निदरना' सं० 'निरादर' से नहीं बना है; क्योंकि स्वयं 'निरादर' संस्कृत का शब्द नहीं है। वह 'आदर' में हिन्दी उपसर्ग लगने से बना है। 'पहल' का तह या परतवाला अर्थ शब्द-सागर में फारसी 'पहलू' से व्युत्पन्न माना गया है, पर वह वस्तुतः सं० 'पटल' से निकला है। 'तरी' का एक अर्थ है—नीची भूमि, जिसमें बरसाती पानी इकट्ठा होता है। इस अर्थ में यह शब्द हिन्दी के उस 'तर' से निकला है, जिसका अर्थ 'तले' या

'नीचे' है, न कि फ़ारसी 'तर' (आर्द्र) से। अवधी हिन्दी का प्रसिद्ध 'बक' या 'बकक' शब्द या तो सं० 'वरक्' से निकला है, या फ़ारसी 'बलिक' से। उसे सं० वर=श्रेष्ठ से निकला हुआ बतलाना ठीक नहीं है। व्युत्पत्ति संबंधी इस प्रकार की सैकड़ों भूलें इस कोश में सुधारी गई हैं। बहुत-से ऐसे शब्द भी हैं, जिनकी कोई व्युत्पत्ति शब्द-सागर में दी ही नहीं गई है और उनके आगे प्रश्न चिह्न लगाकर छोड़ दिया गया है। इस कोश में ऐसे कुछ शब्दों की व्युत्पत्ति ढूँढ़ने का भी प्रयत्न किया गया है। पंक्ति या कतार के अर्थ में 'परा' शब्द फ़ारसी के उस 'पर' शब्द से निकला है, जिसका अर्थ पंख है। 'धूजना' शब्द 'धूत' से और 'पुदियाना' शब्द 'पुद देना' में के 'पुद' से निकला है। पुतली घर, पक्का चिट्ठा, फ़ौजी क़ानून, बन्दर-घुड़की सरीखे समस्त या यौगिक शब्दों में इसलिए व्युत्पत्ति नहीं दी गई कि वह शब्दों से ही प्रकट हो जाती है और इनके अलग अलग शब्दों के अन्तर्गत देखी जा सकती है। अन्त में मैं यह भी निवेदन कर देना चाहता हूँ कि व्युत्पत्ति का विषय बहुत ही विस्तृत, गम्भीर, जटिल और महत्त्व का है; बड़े बड़े विद्वानों को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिए।

अर्थ-विचार

शब्द-कोश का सबसे अधिक महत्त्व का अंग वह होता है जिसमें शब्दों की व्याख्याएँ और अर्थ होते हैं। शब्दों की व्याख्या सदा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें न तो अ-व्याप्ति दोष हो और न अति-व्याप्ति दोष। शब्द-सागर में 'हुंडा' शब्द की जो व्याख्या है, उसमें कुछ दृष्टियों से अ-व्याप्ति दोष भी है और कुछ दृष्टियों से अति-व्याप्ति दोष भी। व्याख्या इतनी सुगम और स्पष्ट होनी चाहिए कि पाठकों को तुरन्त उस पदार्थ या भाव का ठीक ठीक ज्ञान हो जाय, जिसका वाचक वह शब्द है। शब्द-सागर में 'दशमलव' शब्द की जो व्याख्या है, वह कोरी पारिभाषिक और फलतः इतनी जटिल है कि साधारण पाठकों को उससे कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में इन शब्दों की जो व्याख्याएँ दी गई हैं, उन्हें देखने से सहज में पता चल सकता है कि कौन-सी व्याख्याएँ ठीक, अच्छी और काम की हैं। 'देवर्षि' शब्द के सम्बन्ध में यह कहना ठीक नहीं है–'नारद, अत्रि, मरीचि आदि जो देवताओं में ऋषि माने जाते हैं।' इसकी ठीक व्याख्या होगी–'नारद, अत्रि, मरीचि, आदि जो ऋषि होने पर भी देवता माने जाते हैं।' शब्दों के अर्थ और पर्याय देते समय भी उक्त प्रकार के दोषों से बहुत बचना पड़ता है। यह नहीं होना चाहिए कि बहुत से ऐसे पर्याय एक-साथ दे दिये जायँ जो आपस में एक दूसरे से भिन्न भाव प्रकट करनेवाले हों। उदाहरणार्थ-संक्षिप्त शब्द-सागर में 'अधिकार' शब्द के अन्तर्गत पहले अर्थ में कार्य-भार प्रभुत्व, आधिपत्य और प्रधानता ये चार शब्द आये हैं; चौथे अर्थ के अन्तर्गत कब्जा और प्राप्ति ये दो शब्द आये हैं; और छठे अर्थ में योग्यता, जानकारी और लियाकत शब्द हैं। यह स्पष्ट है कि 'कार्य-भार' कभी 'प्रभुत्व' का

अर्थ नहीं दे सकता और 'आधिपत्य' तथा 'प्रधानता' दोनों अलग बातें हैं। कन्या कोई और चीज है, प्राप्ति कोई और चीज। हम जहाँ 'योग्यता' या 'क्षिप्रता' का प्रयोग कर सकते हैं, वहाँ 'जानकारी' का प्रयोग नहीं कर सकते। 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' में 'अधिकार' शब्द की व्याख्याएँ, अर्थ-विभाग तथा पर्याय देखने से यह अन्तर स्पष्ट हो जायगा। 'दुहिता' का अर्थ पुत्री या बेटी ही ठीक है, 'कन्या' या 'लड़की' नहीं।

फिर शब्दों के अर्थ-विभाग करते समय उनके क्रम का भी ध्यान रखना पड़ता है। शब्दों के अर्थों के विकास का भी कुछ इतिहास होता है। कुछ अर्थ केवल शाब्दिक होते हैं, जिन्हें हम मूल अर्थ कह सकते हैं। कुछ मुख्य होते हैं और कुछ गौण। इसके सिवा अर्थों के कुछ वर्ग और क्रम भी होते हैं। 'संक्षिप्त शब्द-सागर' में 'पकड़ा' शब्द के अन्तर्गत पहले क्रि० वि० वाले अर्थ दिये हैं और तब संज्ञावाले। पर 'पकड़ा' शब्द सुनते ही पहले उसके संज्ञावाले अर्थों का ध्यान आता है और तब उसके क्रि० वि० अथवा वि० वाले अर्थों का। संक्षिप्त शब्द-सागर में 'निधि' शब्द के अन्तर्गत कुबेर के नौ रत्न तो दूसरे अर्थ के अन्तर्गत आये हैं, पर इन्हीं नौ रत्नों के कारण 'निधि' शब्द जो 'नौ' की संख्या का वाचक बन गया है, उसका सूचक अर्थ उसमें सबके अंत में अर्थात् सातवाँ रखा गया है। वास्तव में यह सातवाँ अर्थ दूसरे अर्थ के बाद अर्थात् तीसरा अर्थ होना चाहिए। फिर जीवित भाषा के शब्दों में समय समय पर नये अर्थ भी लगते रहते हैं। पर इधर के किसी कोशकार का ध्यान ऐसे नये अर्थों की ओर नहीं गया। संस्कृत का 'मत' शब्द तो आपको हिन्दी के सभी कोशों में मिल जायगा। पर आज-कल इसमें अँगरेजी के 'वोट' शब्द का जो नया अर्थ लगा है, वह अब तक के किसी कोश में नहीं आया है। इस कोश में ऐसे हजारों नये अर्थ भी बढ़ाये गये हैं।

मुहावरे

बहुत-से शब्दों के साथ कुछ मुहावरे भी लगे होते हैं और कुछ कहावतें भी। इनके सिवा उनसे बने हुए कुछ समस्त या यौगिक पद भी होते हैं। जैसे—'काम पड़ना' मुहावरा है, 'काम के न काज के' कहावत है और 'काम की बात' पद है। हिन्दी शब्द-सागर में शब्दों का अर्थ-विभाग करते समय उनसे सम्बन्ध रखनेवाले मुहावरों का भी ध्यान रखा गया था; और जो मुहावरा जिस अर्थ से सम्बन्ध रखता था, वह प्रायः उसी अर्थ के साथ रखा जाता था। पर इस सम्बन्ध की एक महत्व की बात उस समय सम्पादकों के ध्यान में नहीं आई थी। उन्होंने कहावतों और पदों को भी मुहावरों के साथ ही रख दिया था। इस कोश में, जहाँ तक हो सका है, ये तीनों तत्व अलग अलग रखे गये हैं और जिस प्रकार [illegible] पदों के मानक रूप स्थिर किये गये हैं, उसी प्रकार मुहावरों के भी मानक [illegible] अर्थ भी [illegible] गये हैं। उदा- [illegible] भी परिशिष्ट में दे [illegible] रूप है—'हुक्का [illegible] जवाब देना' 'कलमदान' का दूसरा अर्थ वास्तव में 'दार्शनिक प्रणाली' में आना [illegible] है—उक्त

ठीक दिया जाता है। 'टका सा जवाब' में 'टका' केवल उर्दूवालों की कसाहत और उर्दू-लिपि की कृपा से चला है। वस्तुतः 'टका सा जवाब' का कुछ अर्थ नहीं होता। शब्द-सागरों में 'टाँग' और 'पाँव' से सम्बन्ध रखनेवाले बहुत-से मुहावरे अवश्य आये हैं; पर उन मुहावरों का वर्गीकरण उतना युक्ति-संगत नहीं हुआ है, जितना होना चाहिए। और इसी लिए बहुत-से मुहावरे, 'टाँग' और 'पाँव' दोनों के अन्तर्गत आ गये हैं। इस कोश का सम्पादन करते समय मेरे ध्यान में यह बात आई कि कुछ मुहावरे तो केवल 'टाँग' के हैं और कुछ केवल 'पाँव' के। उदाहरणार्थ-'किसी के काम में टाँग अड़ाना' तो मुहावरा है, पर 'किसी के काम में पाँव (या पैर) अड़ाना' मुहावरा नहीं है। इसलिए मैंने 'टाँग' के मुहावरे 'टाँग' के अन्तर्गत और 'पाँव' के मुहावरे 'पाँव' के अन्तर्गत दिये हैं। पर कुछ मुहावरे ऐसे भी हैं जो दोनों शब्दों के साथ समान रूप से चलते हैं। ऐसे मुहावरे इसलिए 'पाँव' के अन्तर्गत रखे गये हैं कि आज-कल यही शब्द मानक और शिष्ट सम्मत है। 'टाँग' शब्द कुछ तो पुराना हो चला है, कुछ उसमें स्थानिकता की गन्ध है और कुछ वह ग्राम्य-सा जान पड़ता है। मुहावरों के क्षेत्र में कुछ कुछ इसी प्रकार का अन्तर 'पाँव' और 'पैर' में भी है, पर उतना नहीं, जितना 'टाँग' और 'पाँव' में है। मैंने यथा-साध्य ऐसे सूक्ष्म अन्तरों का भी बहुत ध्यान रखा है।

उपयोगी सूचनाएँ

अब मैं कुछ ऐसी बातें बतलाता हूँ, जिनसे पाठकों को इस कोश के सामान्य स्वरूप का ज्ञान हो जायगा और वे ठीक तरह से इसका उपयोग कर सकेंगे।

१. प्रायः शब्दों के साथ ही भाववाचक संज्ञाएँ, विशेषण, क्रियाएँ आदि भी मूल में दे दी गई हैं। जैसे-'तीक्ष्ण' के अन्तर्गत ही 'तीक्ष्णता', 'मृदुल' के अन्तर्गत ही 'मृदुलता' और 'धिक्कार' के अन्तर्गत 'धिक्कारना' है; 'दीवाना' में ही 'दीवानापन' और 'धारी' में ही 'धारीदार' भी दिखा दिया गया है। 'संबंध' के साथ उससे बननेवाला विशेषण 'संबद्ध' भी दिखला दिया है। प्रायः अकर्मक क्रियाओं के अन्तर्गत उनके सकर्मक रूप और सकर्मक क्रियाओं के अन्तर्गत उनके अकर्मक रूप भी दिखा दिये गये हैं।

२. यों तो सभी आवश्यक यौगिक शब्द इस कोश में आ गये हैं; पर व्यर्थ का विस्तार बचाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के यौगिक शब्द छोड़ भी दिये गये हैं। उदाहरणार्थ-'तिरलोक' शब्द के आगे कहा है-दे० 'त्रिलोक'; परन्तु 'तिरलोकपति' शब्द नहीं लिया गया है। 'दच्छ' के आगे लिखा है-दे० 'दक्ष' पर 'दच्छ-कुमारी' शब्द नहीं लिया गया है। [illegible]-पाठकों को समझ लेना चाहिए कि 'तिरलोकपति' शब्द के लिए 'त्रिलोक-प्रभुत्व, आधिपत्य [illegible] के लिए 'दक्ष-कुमारी' शब्द देखना चाहिए।

३. यदि कब्जा और प्राप्ति ये दो शब्द-'[illegible]' [illegible] अर्थ में योग्यता, [illegible]कारी और लियाकत शब्द हैं; यह स्पष्ट है कि 'कार्य-भार' कभी 'प्रभुत्व' का

अंश से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार यदि 'चुवना' अ० के आगे दे० 'चूना' लिखा है, तो 'चूना' का वही अंश देखना चाहिए, जिसके आगे 'अ०' लिखा है, उसके पुं० या संज्ञावाले अर्थ से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

४. हिन्दी में जो शब्द अशुद्ध रूप अथवा अशुद्ध अर्थ में चल पड़े हैं, उनकी अशुद्धता का निर्देश उनके आगे कोष्ठक में कर दिया गया है।

५. 'ब' और 'व' के अन्तर का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। संस्कृत के जो शब्द 'ब' में न मिलें, उन्हें 'व' में और जो 'व' में न मिलें, उन्हें 'ब' में ढूँढ़ना चाहिए।

६. प्राचीन कवियों ने 'ख ष', 'छ-क्ष', 'श-स', 'न-त', 'य ज' आदि में विशेष अन्तर नहीं माना है। बहुत-से कवि 'खारा' को 'षारा', 'क्षेत्र' को 'छेत्र', 'नक्षत्र' का 'नखत' 'शिव' को 'सिव' और 'यदु' को 'जदु' लिख गये हैं। ऐसे अपभ्रष्ट रूपों में से जो बहुत अधिक प्रचलित हैं, वे तो इस कोश में दे दिये गये हैं, पर कम प्रचलित रूप छोड़ दिये गये हैं। शब्द ढूँढ़ते समय इस तत्व का भी ध्यान रखना चाहिए।

७. इस कोश में शब्दों का क्रम तो उन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार रखा गया है, जो शब्द-सागर की रचना के समय स्थिर हुए थे। पर शब्द-सागर में कहीं कहीं दृष्टि-दोष से उन सिद्धान्तों का अतिक्रमण भी हुआ है। इस प्रकार की भूलें जहाँ जहाँ मेरे ध्यान में आई हैं, वहाँ वहाँ वे ठीक कर दी गई हैं। इस कोश में इस क्षेत्र में दूसरे कोशों से जो अन्तर दिखाई दे, उसके कारण पाठकों को भ्रम नहीं होना चाहिए।

(८) अँगरेजी हिन्दी-शब्दावली में अँगरेजी शब्दों के आगे जो हिन्दी पर्याय दिये गये हैं, उनमें से बहुतेरे बाद में मिले या ध्यान में आये हैं; और फलतः वे परिशिष्ट में दिये गये हैं। ऐसे अधिकतर शब्दों के आगे परिशिष्ट का संकेत कर दिया गया है। अतः ऐसे शब्द मूल शब्द-कोश में नहीं, बल्कि परिशिष्ट में देखने चाहिएँ।

छापे की भूलें

मुझे इस बात का बहुत खेद है कि इस कोश में छापे की कुछ ऐसी भद्दी भूलें हो गई हैं जो अक्षम्य कही जा सकती हैं। जैसे-(क) अनुपस्थित (विशेषण) भूल से 'अनुपस्थिति' छप गया है; 'एक-निष्ठ' का 'एकानिष्ठ' हो गया है। 'अवधि' की जगह 'अद्यावधि' छप गया है। 'अनुजीवी' अपने ठीक स्थान पर तो है ही, पर वह 'अनुकंपा' और 'अनुकरण' के बीच में भी आ गया है। मूल शब्दों के रूप सम्बन्धी नियमों के अनुसार 'अप्रतिबंध' और 'अनुलंब' होना चाहिए। पर इनके स्थान पर भूल से 'अप्रतिबन्ध' और 'अनुलम्ब' रूप छप गये हैं। 'दासन' के आगे तो दे० 'डासन' है, पर 'डासन' अपने स्थान पर नहीं है, अतः वह परिशिष्ट में दिया गया है। 'अपसत' में ही 'अपसरक' के दो अर्थ आ गये हैं, और 'अपसरक' अपने स्थान पर आया ही नहीं; अतः वह भी परिशिष्ट में दे दिया गया है। 'दशमलव' का दूसरा अर्थ वास्तव में 'दाशमिक प्रणाली' में जाना चाहिए था,

पर 'दार्शनिक' अपने स्थान पर नहीं है, अतः उसे भी परिशिष्ट में स्थान है। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसी बातें भी हैं, जो मेरे वश के बाहर की जिनके लिए छापाखाना और उसके भूत उत्तरदायी हैं। प्रेस के [illegible] पृष्ठ-संख्या ४१८ की जगह ६४८ कर दी है। अनेक स्थानों पर छपते-छपते, मात्राएँ टूट गई हैं, जिससे शब्दों के रूप ही बिलकुल विकृत हो गये हैं। जैसे–'अविद्यमान' का 'आवद्यमान' 'चौबारा' का 'चौबार' 'लोकपति' का 'लाकपात' 'उपयोजन' का 'उपयाजन' 'प्राविधिक' का 'प्रावाधक' 'उपयोगिता' का 'उपयोगिता' 'प्रत्यभिज्ञान' का 'प्रत्याभज्ञान' 'कहवैया' का 'कहवया', आदि। इससे पाठकों को बहुत-कुछ भ्रम हो सकता है। संभव है, ऐसे दोष सब प्रतियों में न हों, कुछ में ही हों; फिर भी ये बहुत बड़े दोष हैं। इनके लिए मैं पाठकों से क्षमा माँगता हूँ। आशा है, वे स्वयं समझ-बूझकर और शब्दों के क्रम तथा स्थान ध्यान रखते हुए इनका परिमार्जन कर लेंगे।

अन्तिम निवेदन

शब्द-कोश का काम सभी प्रकार के साहित्यिक कामों से इसलिए बहुत अधिक कठिन और विकट होता है कि उसमें सभी विषयों और सभी शास्त्रों के शब्द आते हैं; और किसी एक व्यक्ति के लिए सभी विषयों और सभी शास्त्रों की थोड़ी-बहुत जानकारी रखना भी असम्भव-सा बात है। इसी लिए अच्छे शब्द-कोश वही होते हैं जिनमें अलग अलग विषयों और शास्त्रों के शब्द उनके विशिष्ट ज्ञाताओं से सम्पादित कराये जाते हैं। मैं 'प्रामाणिक हिन्दी कोश' की इस प्रकार की त्रुटियों और अपनी अक्षमताओं से अच्छी तरह परिचित हूँ; और उनके लिए सुविज्ञ पाठकों से क्षमा माँगता हूँ। पर मैं उन्हें यह भी विश्वास दिलाता हूँ कि जहाँ तक हो सका है, मैंने इसे वस्तुतः 'प्रामाणिक' बनाने में अपनी ओर से कोई बात उठा नहीं रखी है, और हजारों शब्दों तथा अर्थों के लिए बहुत अधिक छान-बीन की है। इस संस्करण में जो दोष और त्रुटियाँ रह गई हैं, उनके सुधार और पूर्त्ति का अगले संस्करणों में प्रयत्न किया जायगा। शर्त्त यही है कि ईश्वर इसके लिए मुझमें थोड़ी-बहुत शारीरिक शक्ति और नैत्रिक ज्योति बनाये रखे।

अन्त में मैं अपने सहायक, वात्सल्य-भाजन चि० जयकान्त झा को कृतज्ञतापूर्वक आशीर्वाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने प्रायः आदि से अन्त तक मुझे यह कोश प्रस्तुत करने में बहुत ही तत्परतापूर्वक पूरी पूरी और अमूल्य सहायता दी है। ईश्वर इन्हें इस नये क्षेत्र में यशस्वी करे!

महा शिवरात्रि,
संवत् २००६ वि०

रामचन्द्र वर्म्मा

॥ श्रीः ॥

प्रामाणिक हिन्दी कोश

अ

अ-हिन्दी वर्ण-माला का पहला अक्षर और पहला स्वर। इसका उच्चारण कंठ से होता है। व्यंजनों का उच्चारण करते समय उनके अन्त में इसका उच्चारण भी आपसे आप हो जाता है। जब किसी व्यंजन का उच्चारण इसके बिना होता है, तब वह हलन्त कहलाता है; और नहीं तो साधारण स-स्वर रहता है।

व्यंजनों से आरम्भ होनेवाली संज्ञाओं और विशेषणों के पहले जब यह उपसर्ग के रूप में लगता है, तब प्रायः उनका अर्थ या तो उलट देता है या बहुत कुछ बदल देता है। जैसे-धर्म्म और अधर्म्म, कर्म्म और अकर्म्म; अथवा खंड और अखंड; चूक और अचूक आदि। जब यह स्वर से आरंभ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले लगता है, तब इसका रूप 'अन' हो जाता है। जैसे-अन्त और अनन्त; आदि और अनादि; एक और अनेक आदि। संस्कृत में इसका प्रयोग संज्ञा और विशेषण के रूप में भी होता है। संज्ञा रूप में इसके कई अर्थ होते हैं। जैसे-ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, इन्द्र, वायु, अमृत आदि। यह कीर्ति और सरस्वती का भी वाचक माना जाता है। विशेषण रूप में इसके अर्थ होते हैं-रक्षक और उत्पादक।

अंक-पुं० [सं०] [वि० अंकित, अंकनीय, अंक्य। भाव० अंकन] १. चिह्न। छाप। २. लेख। लिखावट। ३. संख्या के सूचक चिह्न। जैसे-१. २. ३. ४ आदि। ४. भाग्य। ५. धब्बा। ६. शरीर। देह। ७. गोद। ८. नाटक का खंड या भाग जिसमें कई दृश्य होते हैं। ९. पत्र-पत्रिका आदिका कोई प्रकाशन जो अपने नियत समय पर एक बार में हुआ हो। संख्या।

अंकक- पुं० [सं०] रबर की मोहर।

अंक-गणित- पुं० [सं०] वह विद्या जिसमें १, २, ३ आदि संख्याओं के जोड़ने, घटाने और गुणा-भाग के ढंग बतलाये जाते हैं। हिसाब।

अंकन- पुं० [सं०] [वि० अंकित] १. अंक या चिह्न बनाना। २. लिखना। ३. कलम या कूची से चित्र बनाना। ४. गिनती करना। गिनना।

अँकना-अ० [सं० अंकन] लिखा, आँका या कूता जाना।

अंकनीय-[वि०] अंकन करने योग्य।

अंकपत्र- पुं० [सं०] कागज का वह छोटा टुकड़ा जो कुछ निश्चित मूल्य का होता और किसी प्रकार के कर, देन आदि के रूप में किसी चीज पर लगाया जाता है। टिकट। (स्टाम्प) जैसे-डाक के अंक-

पत्र, अधिकरण के अंकपत्र।

अंकपत्रित-वि० [सं०] जिसपर अंक-पत्र लगा हो।

अँकवार-स्त्री० [सं० अंक] १ छाती। हृदय। २. गोद।

अँकवारना-स० [हिं० अँकवार] गले लगाना। आलिंगन करना।

अँकाई-स्त्री० [हिं० आँकना] १ आँकने की क्रिया या भाव। कूत। अटकल। २. आँकने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

अँकाना-स० [हिं० आँकना का प्रे०] [संज्ञा अँकाव] आँकने का काम दूसरे से कराना।

अंकित-वि० [सं०] १. जिसपर अंक या चिह्न बना हो। २. लिखा हुआ। लिखित। ३. चित्र के रूप में बना हुआ। चित्रित। ४. जिस पर अंकक या रबर की मोहर लगी हो।

अंकितक-पुं० [सं०] कागज का वह छोटा टुकड़ा जो नाम आदि लिखकर किसी वस्तु पर चपकाया जाता है। चिप्पी। (लेबुल)

अँकुड़ा- पुं० [सं० अंकुश] [स्त्री० अल्पा० अँकुड़ी] कोई चीज फँसाने या टाँगने आदि के लिए बना हुआ लोहे का टेढ़ा काँटा। जैसे-किवाड़ का अँकुड़ा।

अंकुर-पुं० [सं०] [वि० अंकुरित] १. बोये हुए बीज में से निकला हुआ पहला डंठल जिसमें नये पत्ते निकलते हैं। २. किसी वस्तु का वह आरम्भिक रूप जो आगे चलकर बहुत बढ़ या फैल सकता हो।
क्रि० प्र०- निकलना।-फूटना।

अँकुरना-अ० [सं० अंकुर] अंकुर निकलना या फूटना। अंकुरित होना।

अंकुरित-वि० [सं०] अंकुर के रूप में निकला या आया हुआ। जिसने अंकुर का रूप धारण किया हो।

अंकुश-पुं० [सं०] १. वह छोटा दो-मुँहा भाला जिससे हाथी चलाया और वश में रखा जाता है। २. वह वस्तु या कार्य्य जो किसी को रोकने या दबाव में रखने के लिए हो। दबाव। रोक।

अँखुआ-पुं० [क्रि० अँखुआना] दे० 'अंकुर'।

अंग-पुं० [सं०] १. शरीर। देह। बदन। २. शरीर का कोई भाग। जैसे-हाथ, पैर, मुंह, नाक आदि। ३. भाग। अंश।

अंगचारी-पुं० [सं० अंगचारिन्] सहचर। सखा। साथी।

अंगज-वि० [सं०] जो अंग से उत्पन्न हुआ हो। जैसे-पसीना, रोएँ या बाल। पुं० [स्त्री० अंगजा = बेटी] पुत्र। बेटा।

अँगड़ाई-स्त्री० [हिं० अँगड़ाना] शरीर की वह क्रिया जिसमे धड़ और बाँहें कुछ समय के लिए तनती या ऐंठती हैं। (ऐसा प्रायः आलस्य के कारण सोकर उठने पर या ज्वर आने से पहले होता है।)
क्रि० प्र०-लेना।

अँगड़ाना-अ० [हिं० अंग] अँगड़ाई लेना।

अंगद-पुं० [सं०] १. बांह पर पहनने का बाजूबंद। २. राम की सेना का एक बन्दर जो बालि का पुत्र था।

अँगनाई-स्त्री० दे० 'आंगन'।

अंग-भंग-पुं० [सं०] १. अंग का भंग या खंडित होना। २. दे० 'अंग-भंगी'।

अंग-भंगी-स्त्री० [सं०] १. शरीर के अंगों के हिलने-डुलने से प्रकट होनेवाला

भाव या चेष्टा। २. स्त्रियों के हाव-भाव (पुरुषों को मोहित करने के लिए)।

अंग-रक्षक-पुं० [सं०] वे सैनिक जो राजाओं या बड़े शासकों के साथ, उनकी शारीरिक रक्षा के लिए रहते हैं। (बॉडीगार्ड)

अँगरखा-पुं० [हिं० अंग+रखना=रक्षा करना] (कोट की तरह का) एक प्रकार का लम्बा पहनावा। अंगा। चपकन।

अंग-राग-पुं० [सं०] १ शरीर पर मलने का उबटन। बटना। (विशेषतः सुगन्धित पदार्थों का) २. शरीर की सजावट। ३. शरीर की सजावट की सामग्री।

अँगरेज-पुं० [पुर्त्त० इँग्लेज़] इंगलैंड का रहनेवाला आदमी।

अँगरेजियत-स्त्री० [हिं० अंगरेज] अँगरेजी-पन।

अँगरेजी-वि० [हिं० अँगरेज] अँगरेजों का। जैसे-अँगरेजी ढंग।

स्त्री० इंगलड देश या अँगरेजों की भाषा।

अंगांगी भाव-पुं० [सं०] वह भाव या संबंध जो अंग और उसके मूल शरीर (अंगी) मे होता है। किसी बड़ी वस्तु का उसके अंगो के साथ रहनेवाला सम्बन्ध।

अंगा-पुं० दे० 'अँगरखा'।

अँगाना*-स० [हिं० अंग] अपने अंग में या अपने ऊपर लेना।

अंगार-पुं० [सं०] आग का अंगारा। विशेष दे० 'अंगारा'।

अंगारा-पुं० [सं० अंगार] जलता हुआ कोयला या जलती हुई लकड़ी का छोटा टुकड़ा।

मुहा०-**अंगारों पर लोटना**-बहुत अधिक क्रोध या ईर्ष्या से जलना। **अंगारे बरसना**-बहुत गरमी पड़ना।

अँगिया-स्त्री० [सं० अङ्गिका] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की छोटी कुरती। चोली। कंचुकी।

अंगी-पुं० [सं० अङ्गिन्] वह जिसने अंग या शरीर धारण किया हो। शरीरी।

अंगीकार-पुं० [सं०] [वि० अंगीकृत] अपने अंग पर या अपने ऊपर लेने की क्रिया या भाव। स्वीकार। ग्रहण।

अंगीकृत-वि० [सं०] जिसे अंगीकार किया गया हो। जो अपने ऊपर लिया गया हो। स्वीकृत। गृहीत।

अँगीठा-पुं० [सं० अग्निष्ठ] बड़ी अँगीठी। विशेष दे० 'अँगीठी'।

अँगीठी-स्त्री० [हिं० अँगीठा] लोहे, मिट्टी आदि का वह प्रसिद्ध पात्र जिसमें आग सुलगाते है।

अँगुरी*-स्त्री० दे० 'उँगली'।

अंगुल-पुं० [सं०] १. उँगली। २. एक नाप जो उँगली की चौड़ाई के बराबर होती है।

अंगुलि-प्रतिमुद्रा-स्त्री० [सं०] उँगलियों के अगले भाग की छाप जो व्यक्तियों की पहचान के लिए ली जाती है। (फिंगर-प्रिन्ट)

अंगुली-स्त्री० दे० 'उँगली'।

अंगुष्ठ-पुं० [सं०] अँगूठा।

अँगूठा-पुं० [सं० अंगुष्ठ] हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली।

अंगूर-पुं० [फा०] [वि० अँगूरी] एक प्रसिद्ध मीठा फल जो लताओं में लगता है। दाख। द्राक्षा।

पुं० [सं० अकुर] घाव भरने के समय उसमें दिखाई पड़नेवाले मांस के छोटे छोटे लाल दाने।

अँगेट*-स्त्री० [हिं० अंग] अंग की

दीप्ति या चमक।

अँगोछा-पुं० [हिं० अंग + पोंछना] [क्रि० अँगोछना] गीला शरीर पोंछने का छोटा कपड़ा।

अंचल-पुं० [सं०] १. साड़ी या चादर का सिरा। पल्ला। २. सीमा के पास का प्रदेश। ३. किनारा। तट।

अँचवना*-अ० [सं० आचमन] १. आचमन करना। २. भोजन के बाद हाथ-मुँह धोना।

अंजन-पुं० [सं०] आंखों में लगाने का सुरमा या काजल।

पुं० दे० 'इंजन'।

अंजनी-स्त्री० [सं०] हनुमान जी की माता का नाम।

अंजलि, अंजली-स्त्री० [सं०] दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा जिसमें भरकर कुछ दिया या लिया जाता है।

अंजीर-पुं [फा०] गूलर की तरह का एक प्रसिद्ध फल।

अँजोरना-स० [हिं० अंजोरा] १. (दिया) जलाना। २. (दिया जलाकर) घर में प्रकाश करना।

अँजोरा-पुं० दे० 'उजाला'।

अंटी-स्त्री० [सं० अष्टि] १. उँगलियों के बीच की जगह। २. कमर के पास की धोती की लपेट। ३. कपड़े के पल्ले की गाँठ, जिसमें रुपए-पैसे बँधे हों।

अंठी-स्त्री० [सं० अंड] १. किसी गीली चीज़ की बँधी हुई गाँठ या जमा हुआ थक्का। गाँठ। २. बीज। गुठली। ३. गिलटी।

अंड-पुं० [सं०] १. अंडा। २. अंडकोश। ३. ब्रह्मांड। विश्व।

अंडकोश-पुं० [सं०] १. दूध पीकर पलनेवाले जीवों के नरों या पुरुषों की इन्द्रिय के नीचे की थैली जिसमें दो गुठलियाँ होती हैं। २. ब्रह्मांड। विश्व।

अंडज-वि० [सं०] अंडे में से जन्म लेनेवाला। अंडे से उत्पन्न।

पुं० मछली, चिड़िया, साँप आदि वे जीव जो अंडे देते और अंडे से उत्पन्न होते हैं।

अंड-बंड-वि० [अनु०] १. व्यर्थ का। बे सिर-पैर का। २. भद्दा और अनुचित। खराब।

पुं० व्यर्थ की, बेसिर-पैर की या भद्दी और बुरी बात।

अंडा-पुं० [सं० अंड] वह गोल पिंड जिसमें से मछलियाँ, चिड़ियाँ आदि जन्म लेती हैं।

अंडाकार-वि० [सं०] अंडे के आकार का। लंबोतरा गोल।

अंडी-स्त्री० [सं० एरंड] १. रेंड का वृक्ष या बीज। रेंडी। २. एक प्रकार का रेशम।

अंतःकरण-पुं० [सं०] १. मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। २. हृदय। मन।

अंतःकालीन-वि० [सं०] दो घटनाओं या कालों के बीच का (और फलतः अस्थायी)।

अंतःपुर-पुं० [सं०] घर या महल का वह भीतरी भाग, जिसमें स्त्रियां रहती हैं।

अंत-पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु समाप्त होती हो। सिरा। छोर। २. समाप्ति। आखीर। ३. परिणाम। फल। ४. नाश। ५. मृत्यु।

पुं० [सं० अन्तस्] १. अन्तःकरण। हृदय। २. भेद रहस्य। ३. थाह।

पुं० दे० 'आंत'।

अंतक-वि०[सं०] अन्त या नाश करनेवाला।

पुं० १. मृत्यु । मौत । २. यमराज ।

अँतड़ी-स्त्री० दे० 'आँत' ।

अंततः- क्रि० वि० [सं०] १. अंत में । आखिर में । २. कम से कम ।

अंतरंग-वि० [सं०] १. बहुत पास या निकट का । आत्मीय । जैसे-अंतरंग संबंध। २. बिलकुल अन्दर का । भीतरी । जैसे-अंतरंग सभा ।

अंतरंग मंत्री-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति का निजी सचिव । (प्राइवेट सेक्रेटरी)

अंतरंग सभा-स्त्री० [सं०] किसी संस्था की व्यवस्था करनेवाली समिति । प्रबन्ध-कारिणी सभा या समिति ।

अंतर-पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं के बीच का भेद या दूरी । भेद । फरक । २. दो बातों के बीच का समय । ३. ओट । आड़ । परदा ।

क्रि० वि० दूर । अलग । जुदा ।

पुं० [सं० अन्तस्] अंतःकरण । हृदय । मन ।

क्रि० वि० अन्दर । भीतर ।

वि० दे० 'अंतर्द्धान' ।

अंतरण-पुं० [सं० अन्तर] [वि० अंतरित] १. किसी वस्तु का बिककर या और किसी प्रकार दूसरे स्वामी के हाथ जाना । बिकना । २. अधिकारी या कार्यकर्त्ता का एक स्थान या विभाग से दूसरे स्थान पर या विभाग में भेजा जाना । बदली । ३. धन आदि का एक खाते से दूसरे खाते में जाना । (ट्रान्सफरेन्स)

अंतरणकर्ता-पुं० दे० 'अंतरितक' ।

अंतरतम-पुं० [सं० अन्तस्+तम] १. किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग । २. हृदय का भीतरी भाग । ३. विशुद्ध अंतःकरण ।

अंतरदिशा-स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा । कोण ।

अंतरस्थ-वि० [सं०] अन्दर या बीच का।

अंतरा-पुं० [सं० अंतर] किसी गीत के पहले पद या टेक को छोड़कर दूसरा पद या चरण ।

अंतरात्मा-पुं० [सं०] १. जीवात्मा । २. जीव । प्राण । ३. अन्तःकरण । मन ।

अँतराना-स० [सं० अन्तर] १. अलग या पृथक् करना । २. अन्दर करना ।

अंतरिक्ष-पुं० [सं०] १. पृथ्वी और दूसरे ग्रहों या नक्षत्रों के बीच का स्थान । आकाश । २. स्वर्ग ।

अंतरिक्ष विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें वायु-मंडल के विक्षोभ के आधार पर गरमी-सरदी, वर्षा आदि का विवेचन होता है । (मिटीरियालोजी)

अंतरित-वि० [सं०] १. अन्दर रखा, छिपाया या छिपा हुआ । २. एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर रखा या किया हुआ । ३. एक के हाथ से दूसरे के हाथ में गया या बिका हुआ । (ट्रान्सफर्ड)

अंतरितक-पुं० [सं० अंतरित] वह जो अपनी सम्पत्ति और उससे सम्बन्ध रखनेवाले अधिकार आदि दूसरे के हाथ अंतरित करे या दे । (ट्रान्सफरर)

अंतरिती-पुं० [सं० अंतरित] वह जिसके हाथ कोई अपनी सम्पत्ति और उसके संबंध के अधिकार आदि दे या अंतरित करे । वह जिसके पक्ष में अंतरण हो । (ट्रान्सफरी)

अंतरिम-वि० [सं० अन्तर] दो अलग कालों या समयों के बीच का । मध्य-वर्ती । (इन्टेरिम)

अँतरिया-पुं० [सं० अन्तर] एक दिन

का अन्तर देकर आनेवाला ज्वर। पारी का बुखार।

अंतरीप-पुं० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो दूर तक समुद्र में चला गया हो। (पेनिन्सुला)

अंतर्गत-वि० [सं०] १. किसी के अन्दर छिपा, समाया, गया या मिला हुआ। २. अंग के रूप में किसी में मिला हुआ।

अंतर्ज्ञान-पुं० [सं०] मन मे होनेवाला ज्ञान।

अंतर्दाह-पुं० [सं०] हृदय की दाह या जलन। घोर मानसिक कष्ट।

अंतर्द्धान-वि० [सं०] इस प्रकार अदृश्य हो जाना कि कहीं पता न चले। लुप्त। गायब।

अंतर्निहित-वि० [सं०] अन्दर छिपा हुआ।

अंतर्पट-पुं० [सं०] १. आड़। ओट। परदा। २. ढकनेवाली चीज़। आच्छादन। आवरण।

अंतर्भाव-पुं० [सं०] १. किसी का किसी दूसरे में समा या आ जाना। सम्मिलित, समाविष्ट या अन्तर्गत होना। २. भीतरी आशय। अभिप्राय। ३. न रह जाना। नाश या अभाव।

अंतर्भावित-वि० [सं०] जो किसी के अन्दर आ या समा गया हो। अंतर्भूत। समाविष्ट। (इन्कारपोरेटेड)

अंतर्भूत-वि० दे० 'अंतर्भावित'।

अंतर्यामी-वि० [सं०] सबके मन में रहने और सबके मन की बात जानने-वाला (ईश्वर)।

अंतर्राष्ट्रीय-वि० [सं० अंताराष्ट्रिय] सब या कुछ राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला। (इन्टरनैशनल)

अंतर्वर्ती-वि० [सं०] १. अन्दर रहने-वाला। २. अंतर्गत। अंतर्भुक्त।

अंतर्वस्तु-स्त्री० [सं०] किसी वस्तु के अंदर रहनेवाली दूसरी वस्तु। जैसे-घड़े के अन्दर रहनेवाला पानी, पुस्तक में रहनेवाला विषय-विवेचन या लेख्य में रहनेवाले नियम, प्रतिबन्ध आदि। (कन्टेन्ट्स)

अंतर्वेदना-स्त्री० [सं०] अन्तःकरण मे होनेवाली वेदना या कष्ट।

अंतस्तल-संज्ञा पुं० [सं०] हृदय या मन (का भीतरी भाग)।

अंतस्थ-वि० [सं०] १. अन्दर या बीच का। २. अन्त का। अन्तिम। आखिरी। पुं० य, र, ल और व ये चारों वर्ण।

अंताराष्ट्रीय-वि० दे० 'अंतर्राष्ट्रिय'।

अंतिम-वि० [सं०] सब के अन्त या पीछे का। पिछला। आखिरी। (फाइनल)

अंतिमेत्थम्-पुं० [अँग० अल्टिमेटम के अनुकरण पर, सं०] यह कहना कि बस, यह बात यहीं तक हो सकती है, इससे आगे होने पर लड़ाई या बिगाड़ होगा। अन्तिम चुनौती। (अल्टिमेटम)

अंतेउर*-पुं० दे० 'अंतःपुर'।

अंतेवासी-पुं० [सं०] १. गुरु के पास रहकर शिक्षा पानेवाला। शिष्य। चेला। २. वह जो किसी के पास या किसी कार्यालय में रहकर, नौकरी पाने की आशा से कुछ काम करता या सीखता हो। (अप्रेन्टिस) ३. दे० 'अंत्यज'।

अंत्य-वि० [सं०] सब के अंत का। अन्तिम। आखिरी।

अंत्यज-पुं० [सं०] डोम-चमार आदि जातियाँ जो पहले बहुत छोटी मानी

जाती थीं और जिन्हें लोग छूते नहीं थे।

अंत्यशेष-पुं० [सं०] वह धन या रकम जो कोई खाता बन्द करने के समय अन्त में बाकी निकले। (बैलेन्स)

अंत्याक्षरी-स्त्री० [सं०] विद्यार्थियों का एक प्रकार का खेल या प्रतियोगिता जिसमें कोई एक कविता पढ़ता और दूसरा उस कविता के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होनेवाली दूसरी कविता पढ़ता है।

अंत्यानुप्रास-पुं० [सं०] पद्य में अन्तिम अक्षरों का मेल या अनुप्रास। तुक।

अंत्येष्टि-स्त्री० [सं०] किसी के मरने पर होनेवाले धार्मिक कृत्य या संस्कार।

अंत्र-पुं० [सं०] आँत। अँतड़ी।

अंत्र-वृद्धि-स्त्री० [सं०] आँतें उतरने का रोग जो बहुत कष्टदायक होता है।

अँथऊ[†]-पुं० [सं० अस्त] सूर्यास्त से पहले का भोजन। (जैन)

अंदर-क्रि० वि० [फा०] [वि० अंदरी= भीतरी] (किसी निश्चित सीमा, स्थान या समय के) भीतर। में।

पुं० किसी घिरे हुए स्थान का भीतरी भाग।

अँदरसा-पुं० [सं० इन्द्राश] एक प्रकार की मिठाई।

अंदाज-पुं० [फा०] १ अनुमान। अट-कल। २. ढब। ढंग। तौर। ३ हाव-भाव। स्त्रियों की चेष्टा।

अंदाजा-पुं० [फा०] १. अनुमान। अटकल। २. कूत।

अंदेशा-पुं० [फा०] १. चिन्ता। सोच-विचार। २. संशय। सन्देह। शक। ३. आशंका। खटका। भय।

अँदोर*-पुं० [सं० आन्दोल] हो-हल्ला। हुल्लड़।

अंध-वि० [सं०] १. नेत्र-हीन। अंधा। २. अज्ञानी। मूर्ख। ३. मतवाला। उन्मत्त।

पुं० दे० 'अंधा'।

अंधकार-पुं० [सं०] १. अँधेरा। २. अज्ञान।

अंधड़-पुं० दे० 'आँधी'।

अंधता-स्त्री० [सं०] अंधे होने की दशा या भाव। अन्धापन।

अंध-तामिस्र-पुं० [सं०] एक नरक जो बहुत अधिक अंधकारपूर्ण माना जाता है।

अंध-परंपरा-स्त्री० [सं०] बहुत दिनों की चली आई हुई प्रथा या परंपरा के अनुसार बिना समझे-बूझे काम करना।

अंधबाई*-स्त्री० दे० 'आंधी'।

अंधर*-वि० [सं० अन्धकार] अंधकार-पूर्ण। अँधेरा।

अँधरा[†]-वि० दे० 'अंधा'।

अंध-विश्वास-पुं० [सं०] बिना समझे-बूझे किसी बात पर किया जानेवाला विश्वास।

अंधा-पुं० [सं० अन्ध] [स्त्री० अंधी] वह जिसे आँखों से कुछ भी दिखाई न देता हो।

वि० १. जिसे दिखाई न दे। २. जिसके अन्दर कुछ दिखाई न दे। जैसे-अन्धा कुआं, अन्धी कोठरी।

अंधाधुंध-क्रि० वि० [हि० अन्धा+धुन्ध] बिना सोचे-समझे और बहुत तेजी से। बहुत वेग से।

स्त्री० १. बहुत अधिक अँधेरा। २ अन्याय और अत्याचार।

अँधियारा-वि० दे० 'अँधेरा'।

अँधियारी-स्त्री० [हि० अँधेरा] १. अन्धकार। अँधेरा। २. वह पट्टी जो उपद्रवी घोड़ो और शिकारी जन्तुओं की

आंखों पर बाँधी जाती है।

अंधेर-पुं० [सं० अन्धकार] १. ऐसा काम जिसमे सोच-विचार या न्याय से काम न लिया जाय। अन्याय और अत्याचार। २. बहुत अधिक गड़बड़ी या कुप्रबन्ध।

अंधेर खाता-पुं० दे० 'अंधेर'।

अँधेरना*-स० [हिं० अँधेरा] अँधेरा करना। अन्धकार फैलाना।

अँधेरा-पुं० [सं० अन्धकार] १. 'प्रकाश' या 'उजाला' का उलटा। अन्धकार। २. काली छाया। परछाँई।
यौ०-अँधेरा गुप्प = घोर अंधकार। ३. छाया। परछाईं। ४. उदासीनता। उदासी।
वि० जिसमें या जहाँ प्रकाश या उजाला न हो। अन्धकारपूर्ण।

अँधेरा पख-पुं० [हिं० अँधेरा+पख] पूर्णिमा से अमावस्या तक के १५ दिन।

अँधेरी-स्त्री० [हिं० अँधेरा] १. अन्धकार। अँधेरा। २. अँधेरी या काली रात। ३. आंधी। ४. दे० 'अँधियारी'।

अँधेरी कोठरी-स्त्री० १. पेट। २. वह स्थान जिसके अन्दर का कुछ पता न चले।

अँधोटी-स्त्री० [हिं० अंधा] वह पट्टी जो बैलों या घोड़ों की आंखों पर बांधी जाती है।

अंब-स्त्री० दे० 'अंबा'।
पुं० दे० 'आम' (फल और वृक्ष)।

अंबक-पुं० [सं०] १. नेत्र। आंख। जैसे-त्र्यंबक=महादेव। २. पिता। बाप।

अंबर-पुं० [सं० अम्बर] १. पहनने का कपड़ा। वस्त्र। २. आकाश। आसमान। ३. एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य जो ह्वेल नाम की मछली की आँतों में से निकलता है। ४. मेघ। बादल।

अंबर-डंबर-पुं० [सं० अम्बर=आकाश] सूर्यास्त के समय दिखाई देनेवाली लाली।

अंबरबेलि-स्त्री० दे० 'आकाश-बेल'।

अँबराई-स्त्री० दे० 'अमराई'।

अंबष्ठ-पुं० [सं०] १. मध्य पंजाब का प्राचीन नाम। २. इस देश का निवासी। ३. महावत। हाथीवान।

अंबा-स्त्री० [सं० अम्बा] १. माता। मां। २. गौरी या पार्वती देवी।
पुं० दे० 'आम' (फल और वृक्ष)।

अंबारी-स्त्री० [अ० अमारी] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला हौदा।

अंबिका-स्त्री० दे० 'अंबा'।

अँबिया-स्त्री० [हिं० आम] छोटा आम।

अंबु-पुं० [सं०] जल। पानी।

अंबुज-वि० [सं० अम्बुज] जो जल में उत्पन्न हुआ हो।
पुं० १. कमल। २. शंख। ३. ब्रह्मा।

अंबुद-पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. नागर-मोथा।

अंबुधर-पुं० [सं०] मेघ। बादल।

अंबुधि-पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

अंबुपति-पुं० [सं०] १. समुद्र। २. वरुण।

अंबुशायी-पुं० [सं०] विष्णु।

अंभोज-पुं० [सं०] १. कमल। २. सारस। ३. चन्द्रमा। ४. कपूर।

अंश-पुं० [सं०] १. उन अवयवों या अंगों में से कोई एक, जिनके योग से कोई वस्तु बनी हो। पूरे में का कोई टुकड़ा, खंड या भाग। २. भाग। हिस्सा। खंड। जैसे-लाभ का अंश। ३. किसी वस्तु का

चौथाई भाग। ४. किसी वस्तु विशेषतः चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग। कला। ५. वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग। (डिगरी)

अंशक-पुं० [सं०] १. भाग। टुकड़ा। २. दे० 'अंशी'।
वि० १. अंश धारण करनेवाला। २. अंश या भाग लगानेवाला। विभाजक।

अंशतः-क्रि० वि० [सं०] किसी अंश या कुछ अंशों में ही। पूरा नहीं, बल्कि कुछ अंश या अंशों में।

अंशपत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर यह लिखा हो कि किसी संपत्ति या व्यापार आदि में किसका कितना अंश है।

अंश-मापन-पुं० [सं०] [वि० अंश-मापक] किसी चीज के अंशों को नापना। (जैसे--ताप-मापक यंत्र में के अंशों को नापना)

अंशावतार-पुं [सं०] वह अवतार जिसमें ईश्वरता पूरी न हो, बल्कि कुछ अंशों में ही हो।

अंशी-पुं० [सं० अंशिन्] वह जिसका किसी सम्पत्ति या व्यापार आदि में कोई अंश हो। हिस्सेदार।

अंशु-पुं [सं०] सूर्य की किरण।

अंशुमान-पुं० [सं०] सूर्य।

अंशु-माला-स्त्री [सं०] सूर्य की किरणें या उनका जाल।

अंशुमाली-पुं० [सं०] सूर्य।

अँसुआना-अ० [हिं० आँसू] आँखों का आँसुओं से भरना।

अऊत-वि० [सं० अपुत्र] जिसे पुत्र या सन्तान न हो। अपुत्र। निपूता।

अऊलना*-अ० दे० 'औलना'।

अएरना*-स० [सं० अंगीकरण] अंगीकार करना। ग्रहण या स्वीकृत करना।

अकंटक-वि० [सं०] जिसमें कोई कंटक या बाधा न हो। निर्विघ्न।

अकड़-स्त्री० [हिं० अ+कड़] १. ऐंठने की क्रिया या भाव। ऐंठ। तनाव। २ घमंड। अभिमान। शेखी।

अकड़ना-अ० [हिं० अकड़] १. सूखने या कड़े होने के कारण तनना। ऐंठना। तनना। २. अभिमान या घमंड दिखलाना। ऐंठना। इतराना। ३. ढिठाई, हठ या दुराग्रह करना।

अकड़ाव-पुं० [हिं० अकड़ना] १ अकड़ने की क्रिया या भाव। २ ऐंठन।

अकत*-वि० [सं० अक्षत] सारा। पूरा। समूचा। कुल।

अकथ-वि० दे० 'अकथनीय'।

अकथनीय-वि० [सं०] जो कहा न जा सके। जिसका वर्णन करना कठिन हो।

अकथ्य-वि० दे० 'अकथनीय'।

अक-धक*-स्त्री० [अनु०] [क्रि० अकधकाना] १ भय। डर। २ आशंका। खटका। ३ आगा-पीछा। सोच-विचार। असमंजस।

अकनना*-स० दे० 'सुनना'।

अकना*-अ० [सं० आकुल] उकताना। ऊबना।

अक-बक-स्त्री० [हिं० बकना] [क्रि० अकबकाना] १. व्यर्थ की बात। प्रलाप। बकवाद। २. दे० 'अकधक'।
वि० १. भौचक्का। चकित। २. घबराया हुआ। विकल।

अकर-वि० [सं० अ+कर] १. न करने योग्य। २. जिसके हाथ न हो। ३. जिसपर कर न लगे।

अकरकरा-पुं० [अ० अकरकरह] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

अकरखना*-स० [सं० आकर्षण] आकर्षित करना। खींचना या तानना।

अकरण-पुं० [सं०] १. न करना। कर्म का अभाव। २. जो करना चाहिए, वह न करना। कर्त्तव्य छोड़ देना। (ओमिशन) ३. करने पर भी न किये हुए के समान हो जाना।

वि० १. न करने योग्य। २. अनुचित। बुरा। ३. कठिन।

अकरणीय-वि० [सं०] जिसे करना ठीक न हो। न करने योग्य।

अकरा[†]-वि० [अक्रय्य] १. अधिक मूल्य का। मँहगा। २. खरा। अच्छा।

अकराथ*-वि० दे० 'अकारथ'।

अकरास[†]-स्त्री० [सं० अकर] १ आलस्य। सुस्ती। २ अँगड़ाई।

अकरासू-वि० स्त्री० [हिं० अकरास] गर्भवती। (स्त्री)

अकर्त्तृत्व-पुं० [सं०] कर्तृत्व (या उसके अभिमान) का अभाव।

अकर्म-पुं० [सं०] १. कार्य का न होना। कर्म का अभाव। २. बुरा या अनुचित काम।

अकर्मक-वि० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिसके साथ कोई कर्म न हो। जैसे-चलना, दौड़ना, सोना।

अकर्मण्य-वि० [सं०] [भाव० अकर्मण्यता] १. जो कोई काम न कर सकता हो। निकम्मा। २ जो किसी काम न आ सकता हो। निकम्मा। (पदार्थ)

अकर्मण्यता-स्त्री० [सं०] 'अकर्मण्य' का भाव। निकम्मापन।

अकलंक-वि० [सं०] [भाव० अकलंकता] जिसमें कोई कलंक या दोष न हो। सब तरह से अच्छा। निर्मल।

*वि० दे० 'कलंक'।

अकल-वि० [सं०] १ जिसमें अवयव या अंग न हों। २. जिसके टुकड़े न हों। पूरा। समूचा। ३. जिसमें कोई कला या कौशल न हो।

*वि० [हिं० अ+कल] विकल। बेचैन।

स्त्री० दे० 'अक्ल'।

अकल्पित-वि० [सं०] १ जो कल्पित या मन से गढ़ा हुआ न हो। वास्तविक। २. जिसकी कल्पना या अनुमान न किया गया हो।

अकवन-पुं० दे० 'मदार' (पौधा)।

अकस-पुं० [सं० आकर्ष] मन में होनेवाला दुर्भाव। वैर। शत्रुता।

अकसना-अ० [हिं० अकस] मन में दुर्भाव या वैर रखना। द्वेष करना।

अकसर-क्रि० वि० [हिं० एक+सर] बिना साथी के। अकेले।

क्रि० वि० दे० 'प्रायः'।

अकसीर-वि० [अ०] अवश्य गुण या प्रभाव दिखानेवाला। अव्यर्थ।

पुं० वह रस या भस्म जो धातु को सोना या चाँदी बना दे। रसायन।

अकस्मात्-क्रि० वि० [सं०] [वि० आकस्मिक] एक दम से। अचानक। सहसा।

अकह*-वि० दे० 'अकथ्य'।

अकांड-वि० [सं०] (वृक्ष) जिसमें कांड या शाखाएँ न हों।

क्रि० वि० अकस्मात्। अचानक।

अकांड-तांडव-पुं० [सं०] व्यर्थ की

उछल-कूद या झगड़ा।

अकाज-पुं० [सं० अकार्य] [क्रि० अकाजना] १. अनुचित या बुरा काम। २. हानि। हरज।

अकाजी-वि० [हिं० अकाज] काम में हर्ज करनेवाला। काम में विघ्न डालने या औरों का समय नष्ट करनेवाला।

अकाट्य-वि० [सं० अ+हिं० काटना] जिसका खंडन न हो सके। जो काटा न जा सके। (यह शब्द अशुद्ध है)

अकाथ*-क्रि० वि० दे० 'अकारथ'।

अकाम-वि० [सं०] जिसमें कोई कामना या इच्छा न हो। निष्काम। निस्पृह। क्रि० वि० [सं० अकर्म] बिना काम के। व्यर्थ।

अकाय-वि० [सं०] जिसकी काया या शरीर न हो। देह रहित। २ अजन्मा। ३. निराकार।

अकार-पुं० [सं०] 'अ' अक्षर या मात्रा। *पुं० दे० 'आकार'।

अकारज-पुं० दे० 'अकाज'।

अकारण-क्रि० वि० [सं०] बिना किसी कारण या वजह के। व्यर्थ। यों ही।

अकारथ*-क्रि० वि० दे० 'व्यर्थ'।

अकार्य-पुं० दे० 'अकर्म'।

अकाल-पुं० [सं०] १ ऐसा समय जो ठीक या उपयुक्त न हो। जैसे-अकाल मृत्यु। २ ऐसा समय जब अन्न न मिलता हो। दुर्भिक्ष।

अकाल-कुसुम-पुं० [सं०] वह फूल जो अपने समय से पहले या पीछे खिला हो। (ऐसा फूल फूलना अशुभ माना जाता है)। २ वह चीज जो अपने समय से पहले या पीछे हो। (आश्चर्य की बात)

अकाल-प्रसव-पुं० [सं०] स्त्री को नियत या ठीक समय से पहले सन्तान या बच्चा होना।

अकाल-मृत्यु-स्त्री० [सं०] उचित समय से पहले होनेवाली मृत्यु। असामयिक मृत्यु।

अकालिक-वि० [सं०] अकाल या असमय में होनेवाला।

अकाली-पुं० [हिं० अकाल (पुरुष)] सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

अकास*-पुं० दे० 'आकाश'।

अकास-दीया-पुं० [हिं०] वह दीया जो बांस में बांधकर आकाश में जलाया जाता है। अकाश-दीपक।

अकास-बानी-स्त्री०दे० 'आकाश-वाणी'।

अकासी-स्त्री० [सं० आकाश] १. चील (पक्षी)। २. ताड़ का रस। ताड़ी।

अकिंचन-वि० [सं०] [भाव० अकिंचनता] १. बहुत ही दीन या दरिद्र। गरीब। २. बहुत ही साधारण। बिलकुल मामूली।

अकिंचित्-वि० [सं०] जिसकी कोई गिनती न हो। नगण्य। तुच्छ।

अकि*-अव्य० [फा० कि] कि। या। अथवा।

अकिल-स्त्री० दे० 'अक्ल'।

अकिल दाढ़-स्त्री० [हिं०] वह विशेष दांत जो मनुष्यों को वयस्क होने पर निकलता है।

अकीक-पुं० [अ०] एक प्रकार का लाल पत्थर या उप-रत्न।

अकीरत*-स्त्री० दे० 'अकीर्ति'।

अकीर्त्ति-स्त्री० [सं०] बुरी कीर्त्ति। अपकीर्त्ति। बदनामी।

अकीर्तिकर-वि० [सं०] (बात) जो

किसी की कीर्त्ति में बट्टा लगानेवाली हो। बदनामी की।

अकुंठ-वि० [सं०] जो कुंठित न हो। तीखा। तीव्र।

अकुताना*-अ० दे० 'उकताना'।

अकुल-पुं० [सं०] १. बुरा या छोटा कुल या वंश। २. वह जिसके कुल मे कोई न हो।

अकुलाना-क्रि० [सं० आकुल] १. आकुल होना। घबराना। २. ऊबना। ३. शीघ्रता करना। जल्दी मचाना।

अकुलीन-वि० [सं०] जो कुलीन न हो। छोटे, नीच या तुच्छ कुल या वंश का।

अकुशल-वि० [सं०] जो कार्य करने में कुशल या दक्ष न हो।

अकूट-वि० [सं०] जो अवास्तविक या कृत्रिम न हो। जेन्य। सच्चा। असली। (जेनुइन)

अकूत-वि० [हिं० अ+कूतना] १. जो कूता न जा सके। २. बहुत अधिक।

अकूल-वि० [स०] जिसका कोई कूल, किनारा या अन्त न हो। असीम।

अकूहल*-वि० [हिं० अकूत] बहुत अधिक।

अकृत-वि० [स०] १. जो किया न गया हो। बिना किया हुआ। २. जिसमें सफलता न हुई हो। विफल। जैसे-अकृत-कार्य=विफल। ३. जिसने न किया हो।

अ-कृतकार्य-वि० [सं०] जो अपने कार्य में सफल न हुआ हो। विफल।

अकृतज्ञ-वि० [सं०] जो किसी का किया हुआ उपकार न माने। कृतघ्न।

अकृति-वि० दे० 'अकर्मण्य'।

अकृत्य-पुं० [सं०] न करने योग्य या बुरा काम।

अकेला-वि० [सं० एकल] १. जिसके साथ और कोई न हो। बिना संग-साथ-वाला। २. जिसके जोड़ का दूसरा न हो। अद्वितीय। बेजोड़।
पुं० ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो। एकान्त। निराला।

अकेले-क्रि० वि० [हिं० अकेला] १. बिना किसी के संग-साथ के। २. केवल। सिर्फ।

अकोट*-वि० [सं० कोटि] १. करोड़ों। २. बहुत अधिक।

अकोतर सौ-वि० [सं० एकोत्तरशत] एक सौ एक।

अकौशल-पुं० [सं०] कौशल या दक्षता का अभाव। कुशल या दक्ष न होना। (इन-एफिशिएन्सी)

अकौसना*-स० दे० 'कोसना'।

अकौआ-पुं० [हिं० कौआ] गले के अन्दर की घंटी। कौआ।

अक्खड़-वि० [सं० अक्षर] १. वह जो अपनी बात पर अड़ा रहे और किसी की न सुने। २. जल्दी लड़ पड़नेवाला। बिगड़ैल। झगड़ालू।

अक्खर*-पु० दे० 'अक्षर'।

अक्रम-वि० [सं०] जिसमें कोई क्रम या शृंखला न हो। क्रम-रहित। बे-सिल-सिले।

अक्रिय-वि० [सं०] जो कोई क्रिया या कार्य न करे।

अक्ल-स्त्री० [अ०] बुद्धि। समझ।
मुहा०-अक्ल का अंधा या दुश्मन=मूर्ख। बेवकूफ। अक्ल का पूरा=मूर्ख।

अक्लमंद-वि० [अ० अक्ल+फा० मन्द]

[भाव० अक्लमंदी] बुद्धिमान् । समझदार ।

अक्ष-पुं० [सं०] १. जूआ खेलने का पासा । २. दो वस्तुओं के बीच की रेखा। मेरु । धुरा । (ऐक्सिस) ३. भूगोल में वह कल्पित रेखाएँ जो सारी पृथ्वी पर समान अन्तर पर पड़ी हुई मानी जाती हैं। (लैटिट्यूड) ४. रुद्राक्ष आदि के बीज जिनसे माला बनती है। ५. इन्द्रिय।

अक्ष-क्रीड़ा-स्त्री० [सं०] पासे या चौसर का खेल ।

अक्षत-वि० [सं०] १. जिसे क्षत या चोट न लगी हो। २. जिसके टुकड़े न हुए हों । अखंड । पूरा ।

पुं० कच्चा चावल (जो देवताओं पर चढ़ाया जाता है) ।

अक्षत-योनि-वि० [सं०] (कन्या) जिसका पुरुष से संसर्ग न हुआ हो ।

अक्षपाद-पुं० [सं०] न्याय शास्त्र के प्रवर्त्तक गौतम ऋषि ।

अक्षम-वि० [सं०] [भाव० अक्षमता] १. जिस में क्षमता या शक्ति न हो। असमर्थ । २. जिसमें किसी कार्य के लिए योग्यता न हो। अयोग्य । ३. जो क्षमा न करे ।

अक्षम्य-वि० [सं०] जिसे क्षमा न कर सकें।

अक्षय- वि० [सं०] जिसका कभी क्षय या नाश न हो। सदा एक-सा बना रहनेवाला । अविनाशी ।

अक्षर-पुं० [सं०] १. वर्ण-माला का कोई स्वर या व्यंजन । वर्ण । हरफ । २. आत्मा । ३. ब्रह्म । ४. मोक्ष । वि० सदा एक सा बना रहनेवाला । अविनाशी । नित्य ।

अक्षरशः- क्रि० वि० [सं०] एक अक्षर का भी अन्तर न रखकर । ठीक ज्यों का त्यों । (कथन या लेख)

अक्षरी-स्त्री० [सं० अक्षर] शब्दों के अक्षरों का क्रम । वर्त्तनी । हिज्जे ।

अक्ष-रेखा-स्त्री० [सं०] वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के केन्द्र से दोनों पृष्ठों पर सीधी गिरती है ।

अक्षरौटी-स्त्री० दे० 'अखरौटी'।

अखरौटी-स्त्री० [हिं० अक्षर] १. वर्णमाला । २. लिखने का ढंग । लिखावट । ३. वह कविता जिसके पद क्रमशः वर्णमाला के अक्षरों से आरम्भ होते हैं ।

अक्षांश-पुं० [सं०] १. भूगोल में पृथ्वी पर पूर्व से पश्चिम गई हुई कल्पित समान अन्तरवाली रेखा या अक्ष का अंश । (लैटिट्यूड की डिग्री)

अक्षि- स्त्री० [सं०] आँख । नेत्र ।

अक्षुण्ण-वि० [सं०] ज्यों का त्यों और पूरा । बिना टूटा-फूटा । समूचा ।

अक्षोनी*-स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी' ।

अक्षौहिणी-स्त्री० [सं०] वह सेना जिसमें बहुत-से हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सिपाही हों ।

अक्स-पुं० [अ०] १. प्रतिबिंब । छाया । परछाईं । २. चित्र । तसवीर ।

अक्सर-क्रि० वि० दे० 'प्रायः' ।

अक्सीर-वि० पुं० दे० 'अकसीर' ।

अखंग*-वि० दे० 'अक्षय' ।

अखंड-वि० [सं०] जिसके खंड या टुकड़े न हो। बिना टूटा हुआ। पूरा ।

अखंडनीय-वि० [सं०] १. जिसके खंड या टुकड़े न किये जा सकें । २. जिसका खंडन न किया जा सके। जो अशुद्ध, या झूठ न सिद्ध किया जा सके ।

अखंडल*-वि० दे० 'अखंड' ।

अखंडित-वि० [सं०] १. जो खंडित या टूटा-फूटा न हो। पूरा। समूचा। २. जिसका खंडन न हुआ हो।

अखज*-वि० दे० 'अखाद्य'।

अखड़ैत-पुं० [हिं० अखाड़ा+ऐत प्रत्य०] १. मल्ल। पहलवान। २. दे० 'अखाड़िया'।

अखती*-स्त्री० दे० 'अक्षय तृतीया'।

अखनी-स्त्री० [अ० यख़नी] मांस का रसा। शोरबा।

अखबार-पुं० [अ०] समाचार-पत्र।

अखय*-वि० दे० 'अक्षय'।

अखर*-वि० पुं० दे० 'अक्षर'।

अखरना।-अ० [सं० खर] अनुचित या कष्टदायक जान पड़ना। अच्छा न लगना। खलना

अखरा-वि० [सं० अ+हिं० खरा=सच्चा] बनावटी। कृत्रिम।

अखरावट-स्त्री० दे० 'अखरौटी'।

अखरोट-पुं० [सं० अक्षोट] एक फलदार ऊँचा पेड़ जिसके फलों की गिनती मेवों में होती है।

अखर्व-वि० [सं०] जो खर्व या छोटा न हो। बहुत बड़ा।

अखा*-पुं० दे० 'आखा'।

अखाड़ा-पुं० [सं० अक्षवाट] १. वह स्थान जहाँ लोग व्यायाम करते और कुश्ती लड़ते हैं। २. साधुओं की मंडली और निवास-स्थान। ३. वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर अपना कोई कौशल दिखलाते हो।

अखाड़िया- वि० [हिं० अखाड़ा] बड़े बड़े अखाड़ों में कौशल दिखानेवाला।

अखात-पुं० [सं०] १. समुद्र का वह थोड़ा अंश जो स्थल से तीन ओर से घिरा हो। उप-सागर। खाड़ी। २. झील।

अखाद*-वि० दे० 'अखाद्य'।

अखाद्य-वि० [सं०] (वस्तु) जो खाने के योग्य न हो।

अखिल-वि० [सं०] समस्त। सारा। पुं० जगत्। संसार।

अखिलेश (श्वर)-पुं० [सं०] ईश्वर।

अखीर-पुं० दे० 'अंत'।

अखूट*-वि० [हिं० अ+खूटना=कम होना] जो घटे नहीं। कम न होनेवाला। बहुत अधिक।

अखोर*-वि० [हिं० अ+खोर=बुरा] १. भद्र। सज्जन। २. सुन्दर। ३. निर्दोष। वि० [फा० अखोर] निकम्मा। बुरा। पुं० १. कूड़ा करकट। निकम्मी चीज। २. खराब घास। बुरा चारा।

अख्तियार-पुं० दे० 'अधिकार'।

अग-वि० [सं०] १. न चलनेवाला। अचल। २ टेढ़ा चलनेवाला।

अगज-वि० [सं०] पर्वत से उत्पन्न। पुं० १. शिलाजीत। २. हाथी।

अगटना-अ० [हिं० इकट्ठा] इकट्ठा या जमा होना।

अगड़-बगड़-वि० [अनु०] १. अंड-बंड। बे सिर-पैर का। २. निकम्मा। व्यर्थ का।

अगण-पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में ये चार बुरे गण-जगण, रगण, सगण और तगण।

अगणित-वि० [सं०] जिनकी गिनती न हो सके। बहुत अधिक। असंख्य।

अगता।-वि० दे० 'अग्रिम'।

अगति-स्त्री० [सं०] १. गति का न होना। स्थिर या ठहरा हुआ होना। २. मरे हुए का संस्कार आदि न होना। वि० जिसमें गति न हो। अचल।

अगतिक-वि० [सं०] १. जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो। असहाय। निराश्रय। २. मरने पर जिसकी अंत्येष्टि क्रिया आदि न हुई हो।

अगत्या-क्रि० वि० [सं०] १. विवश होकर। लाचार होकर। २. अचानक।

अगनिउ*-पुं० [सं० आग्नेय] उत्तर-पूर्व का कोना।

अगनी*-वि० दे० 'अगणित'।
स्त्री० दे० 'अग्नि'।

अगनेत*-पुं० [सं० आग्नेय] आग्नेय दिशा। अग्निकोण।

अगम-वि० [सं० अगम्य] [संज्ञा अगमता] १. जहाँ तक कोई पहुँच न सके। दुर्गम। २. जो जल्दी समझ में न आवे। कठिन। ३. जिसकी थाह न लगे। अथाह। ४. विकट। ५. बहुत। अधिक।

अगमन*-क्रि० वि० [सं० अग्रवान्] १. आगे। पहले। २. आगे से। पहले से।

अगमानी*- पुं० [सं० अग्रगामी] अगुआ। नायक। सरदार।
*स्त्री० दे० 'अगवानी'।

अगम्य-वि० [सं०] [संज्ञा अगम्यता] १. जिसके अन्दर या पास न पहुँच सकें। दुर्गम। २ जिसे समझना कठिन हो।

अगम्या-वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो। जैसे-गुरुपत्नी, राजपत्नी, सौतेली माँ।

अगर-अव्य० [फा०] यदि। जो।
पुं० [सं० अगरु] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है। ऊद।

अगरना*-अ० [सं० अग्र] आगे बढ़ना।

अगरबत्ती-स्त्री० [सं० अगरुवर्तिका] सुगन्ध के निमित्त जलाने की बत्ती।

अगराना*-स० [सं० अंग] प्यार या दुलार से छूना।

अगरी-स्त्री० [सं० अर्गल] लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कोंढ़ा लगाकर डाला रहता है। ब्योंड़ा।
स्त्री० [सं० अगिर=अवाच्य] अंड-बंड या बुरी बात। अनुचित बात।

अगरु-पुं० [सं०] अगर या ऊद नाम की सुगन्धित लकड़ी।

अगरा*-वि० [सं० अग्र] १. आगे का। अगला। २. बड़ा। ३. कुशल। चतुर।

अगल-बगल-क्रि० वि० [फा० बगल] इधर-उधर। आस-पास।

अगला-वि० [सं० अग्र] १. आगे या सामने का। २. पहले का। ३. पुराना। ४. जो अभी आने को हो। आनेवाला। आगामी। ५.बाद या पीछे का। दूसरा।

अगवना*-अ० [हिं० आगे] स्वागत के लिए आगे बढ़ना।

अगवाड़ा-पुं० [सं० अग्रवाट] घर के आगे का भाग। 'पिछवाड़ा' का उलटा।

अगवानी-स्त्री० [हिं० आगे] किसी आनेवाले का सत्कार करने के लिए आगे बढ़ना। स्वागत।

अगस्त्य-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ऋषि। २. एक प्रसिद्ध तारा। ३. एक वृक्ष जिसमें लाल या सफेद फूल होते हैं।

अगहन-पुं० [सं० अग्रहायण] [वि० अगहनियाँ, अगहनी] कार्तिक के बाद और पूस के पहले का महीना।

अगाऊ-वि० [हिं० आगे] (धन) जो किसी काम के लिए पहले दिया जाय। अग्रिम। पेशगी। (एडवान्स)

अगाड़*-क्रि० वि० [सं० अग्र] १. आगे। सामने। २. पहले। पूर्व।

अगाड़ी-क्रि० वि० [हिं० अगाड़] १. भविष्य में। २. सामने। आगे। ३. पहले।

स्त्री० १. किसी वस्तु के आगे या सामने का भाग। २. घोड़े के गले में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर-उधर दो खूँटों से बँधी रहती हैं।

अगाध-वि० [सं०] जिसकी गहराई का पता न चले। बहुत गहरा।

अगाह*-वि० [सं० अगाध] १. अथाह। बहुत गहरा। २. अत्यंत। बहुत।

क्रि० वि० आगे से। पहले से।

अगिन-स्त्री० [सं० अग्नि] [क्रि० अगियाना] १. अग्नि। आग। २. एक प्रकार की छोटी चिड़िया। ३. अगिया घास।

वि० [सं० अ=नहीं+हिं० गिनना] अगणित। बेशुमार।

अगिन गोला-पुं० [हिं० आग+गोला] (बम का) वह गोला जिसके फटने से आग लग जाती हो।

अगिन बोट-पुं० [सं० अग्नि+अं० बोट] वह बड़ी नाव जो भाप के एंजिन के जोर से चलती है। धूआँकश। स्टीमर।

अगिया-स्त्री० [सं० अग्नि, प्रा० अग्गि] १. एक प्रकार की घास। २. नीली चाय। अगिन घास। ३. एक पहाड़ी पौधा जिसके पत्तों में जहरीले रोएँ होते हैं। ४. अगिया सन नाम की घास।

अगियाना-अ० [हिं० आग] जलन या दाह होना।

अगियारी-स्त्री० [सं० अग्निकार्य्य] आग में सुगन्धित द्रव्य डालने की पूजन-विधि। धूप देने की क्रिया।

अगिया सन-पुं० [हिं० आग + सन (पौधा)] एक पौधा जिसकी पत्ती छूने से शरीर में जलन होती है।

अगुआ-पुं० [हिं० आगे] १. आगे चलनेवाला। नेता। नायक। २. मुखिया। प्रधान। ३. पथ-दर्शक। मार्ग बतानेवाला।

अगुआना-स० [हिं० अगुआ] अगुआ बनाना। सरदार नियत करना।

अ० आगे होना। बढ़ना।

अगुण-वि० [सं०] १. रज, तम आदि गुणों से रहित। निर्गुण। २. निर्गुण। मूर्ख।

पुं० अवगुण। दोष।

अगुरु-वि० [सं०] १ जो भारी न हो। हलका। २. जिसने गुरु से शिक्षा या उपदेश न पाया हो।

अगुवा-पुं० दे० 'अगुआ'।

अगुसरना*-अ० [सं० अग्रसर] [स० अगुसारना] आगे बढ़ना।

अगेह-वि० [हिं० अ+गेह] जिसके रहने का घर-बार न हो।

अगोचर-वि० [सं०] जो इन्द्रियों के द्वारा जाना जा सके। जो देखा, सुना या समझा न जा सके।

अगोटना-सं० [हिं० अगोट + ना (प्रत्य०)] १. रोकना। छेकना। २. पहरे में रखना। ३. छिपाना। ४. चारों ओर से घेरना।

स० [सं० अंग+हिं० ओट] १. अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. पसंद करना। चुनना।

अगोरना-स० [सं० आगूरण] १. राह देखना। प्रतीक्षा करना। २. रखवाली या चौकसी करना।

स० [हिं० अगोरना] रोकना। छेकना।

अगौहैं*-क्रि० वि० [सं० अग्रमुख] आगे की ओर।

अग्नि-स्त्री० [सं०] [वि० आग्नेय] १. जलती हुई वस्तु। आग। २. पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना। ३. पेट की वह शक्ति जिससे भोजन पचता है।
अग्नि-कर्म-पुं० [सं०] मरे हुए व्यक्ति का जलाया जाना।
अग्नि-कांड-पुं० [सं०] ऐसी आग लगना जो चारों ओर फैले। आग लगना।
अग्नि-कोण-पुं० [सं०] पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना।
अग्नि-क्रीड़ा-स्त्री० [सं०] आतिशबाजी।
अग्निदाह-पुं० [सं०] १. जलाना। २. शव-दाह। मुर्दा जलाना।
अग्नि-परीक्षा-स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल की एक परीक्षा जिसमें कोई हाथ आग में लेकर या आग में बैठकर अपना निर्दोष होना सिद्ध करता था। २. बहुत कठिन परीक्षा या जाँच, जिसमें सब लोग जल्दी पूरे न उतर सकते हों।
अग्निपूजक-पुं० [सं०] वह जो अग्नि को देवता मानकर पूजे। जैसे-पारसी।
अग्निवर्द्धक-वि० [सं०] जिससे पेट की अग्नि या भोजन पचाने की शक्ति बढ़े।
अग्नि-वर्षा-स्त्री० [सं०] १. आग या जलती हुई वस्तुएँ बरसना। २. लड़ाई में गोलियां-गोले बरसना।
अग्नि-बाण-पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाण जिसे चलाने पर आग बरसती थी।
अग्नि-मांद्य-पुं० [सं०] पेट की अग्नि मन्द होना, जिससे भोजन नहीं पचता और भूख नहीं लगती।
अग्नि-संस्कार-पुं० दे० 'अग्नि-कर्म'।
अग्निहोत्र-पुं० [सं०] वेदों में बतलाया हुआ एक प्रकार का होम, जो नित्य किया जाता है और जिसकी आग कभी बुझने नहीं दी जाती।
अग्निहोत्री-पुं० [सं०] वह जो सदा अग्निहोत्र करता हो।
अग्न्यस्त्र-पुं० दे० 'आग्नेय-अस्त्र'।
अग्र-वि० [सं०] १. आगे या सामने का। अगला। २. प्रधान। मुख्य।
क्रि० वि० आगे। सामने।
अग्रगण्य-वि० [सं०] १. गिनती में जिसका नाम सबसे पहले आता हो। २. सब से अच्छा। श्रेष्ठ। उत्तम।
अग्रगामी-पुं० [सं०] वह जो सबके आगे चलता हो। औरों को अपने पीछे लेकर चलनेवाला।
अग्रज-पुं० [सं०] बड़ा भाई।
वि० १. जो पहले उत्पन्न हुआ हो। २. श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा।
अग्रणी-पुं० [सं०] वह जो सबके आगे रहता हो। नायक। नेता। अगुआ।
वि० [सं०] उत्तम। श्रेष्ठ।
अग्रदान-पुं० [सं०] देन या दातव्य धन पहले से दे देना। अग्रिम। पेशगी।
अग्रदूत-पुं० [सं०] वह जो किसी से पहले आकर उसके आने की सूचना दे।
अग्र-पूजा-स्त्री० [सं०] किसी की वह पूजा जो औरों से पहले की जाय।
अग्रशोची-पुं० [सं०] आगे का विचार करनेवाला। दूरदर्शी।
अग्रवर्त्ती-वि० [सं०] सबसे आगे रहनेवाला।
अग्रसर-वि० [सं०] आगे बढ़ा हुआ।
पुं० १. नेता। अगुआ। प्रधान व्यक्ति। मुखिया। २. सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक आदि विचारों, व्यवहारों और कार्यों में औरों की अपेक्षा आगे बढ़ा

२

हुआ और अधिक उदार। प्रगतिशील।

अग्रसारण-पुं० [सं०] १. आगे की ओर बढ़ाना। २. किसी का निवेदन, प्रार्थना आदि उचित आज्ञा के लिए अपने से बड़े अधिकारी के पास भेजना। (फॉरवर्डिंग)

अग्रसारित-वि० [सं०] १. आगे बढ़ाया हुआ। २. किसी का निवेदन, उचित आज्ञा आदि के लिए बड़े अधिकारी के पास भेजा हुआ। (फॉरवर्डेड)

अग्रहायण-पुं० [सं०] अगहन।

अग्रासन-पुं० [सं०] सबसे आगे का या ऊँचा आसन।

अग्राह्य-वि० [सं०] १. जिसे ग्रहण न किया जा सके। २. जो माना न जा सके।

अग्रिम-वि० [सं०] १. वस्तु लेने से पहले चुकाया जानेवाला (मूल्य)। अगाऊ। पेशगी। २. आगे आनेवाला। आगामी।

अघ-पुं० [सं०] १. पाप। पातक। २. दुःख। ३. व्यसन।

अघट-वि० [सं० अ + घटना] १. जो घटित न हो। न होनेवाला। २. दुर्घट। कठिन। ३. ठीक न बैठनेवाला। बे-मेल।

वि० [हिं० अ+घट (घटना)] १. न घटनेवाला। कम न होनेवाला। २. सदा एक-सा रहनेवाला। एक-रस।

अघटन-पुं० [सं०] १. न घटना या न होना। २. वह जिसका घटना न हो सके। असम्भव।

अघटित-वि० [सं०] १. जो या जैसा पहले न हुआ हो। अभूत-पूर्व। २. बिलकुल नया या अनोखा।

(अ + घट = घटना) जो किसी की तुलना में बहुत घटकर न हो।

अघमर्षण-वि० [सं०] पापों का नाश करनेवाला।

अघवाना-स० [हिं० अघाना] अघाना का प्रेरणार्थक रूप।

अघात*-पुं० दे० 'आघात'।

अघाना-अ० [सं० अग्रह] १. कोई वस्तु आवश्यकता से अधिक प्राप्त होने पर परम प्रसन्न और सन्तुष्ट होना। २. किसी काम से जी भर जाने के कारण उकताना। ३. थकना।

स० १. ऐसा काम करना जिससे कोई वस्तु प्राप्त करके कोई परम सन्तुष्ट और प्रसन्न हो। सन्तुष्ट और तृप्त करना। २. थकाना।

अघाव-पुं० [हिं० अघाना] अघाने की क्रिया या भाव। तृप्ति।

अघी-वि० [सं०] पापी।

अघोर-वि० [सं०] १. जो घोर या भीषण न हो। २. बहुत अधिक घोर।

अघोर पंथ-पुं० [सं०] शिव का अनुयायी एक पंथ या सम्प्रदाय। (इस सम्प्रदाय के लोगों का आचरण प्रायः बहुत वीभत्स होता है।)

अघोरपंथी-पुं० [सं०] अघोर पंथ का अनुयायी। अघोरी। औघड़।

अघोरी-पुं० दे० 'अघोरपंथी'।

अघोष-पुं० [सं०] व्याकरण का एक वर्ण-समूह जिसमें क ख च छ ट ठ त थ प फ श स और ष है।

अघ्रान*-पुं० दे० 'आघ्राण'।

अघ्रानना*-स० दे० 'सूँघना'।

अचंभा-पुं० [सं० असंभव] १. विस्मय। आश्चर्य। ताज्जुब। २. विस्मय की या आश्चर्यजनक बात।

अचंभित*-वि० दे० 'चकित'।

अचंभो*-पुं० दे० 'अचंभा'।

अचक-वि० [सं० चक] भर-पूर। पुं० भौचक्कापन। विस्मय।

अचकन-स्त्री० [सं० कंचुक] अंगे की तरह का एक लम्बा पहनावा।

अचगरा-वि० [सं० अत्याकार] नटखट। पाजी। दुष्ट।

अचगरी*-स्त्री० [हिं० अचगरा] दुष्टता। पाजीपन। नटखटी।

अचना*-स० [सं० आचमन] आचमन करना।

अचमन-पुं० दे० 'आचमन'।

अचर-वि० [सं०] [भाव० अचरता] जो चलता न हो। गति-रहित। स्थावर।

अचरज-पुं० दे० 'आश्चर्य'।

अचल-वि० [सं०] [स्त्री० अचला, भाव० अचलता] १ जो अपने स्थान से हटे या चल नहीं। (इम्मूवेबुल)। २. स्थिर। अटल। दृढ़।
पुं० पर्वत। पहाड़।

अचल सम्पत्ति-स्त्री० [सं०] वह सम्पत्ति जो अपने स्थान पर अचल रूप से स्थित हो और कहीं हटाई-बढ़ाई न जा सकती हो। जैसे-खेत, घर आदि।

अचला-वि० स्त्री० [सं०] जो न चले। ठहरी हुई। स्थिर।
स्त्री० पृथ्वी।

अचवन*-पुं० दे० 'आचमन'।

अचवना-स० [सं० आचमन] १. आचमन करना। पीना। २. भोजन के बाद हाथ-मुँह धोना और कुल्ली करना। ३. छोड़ देना।

अचवाना-स० हिं० 'अचवना' का प्रे०।

अचाका-क्रि० वि० दे० 'अचानक'।

अचानक-क्रि० वि० [सं० अज्ञानात्] एक-बारगी। सहसा। अकस्मात्।

अचार-पुं० [फा०] मसालों के साथ तेल में या यों ही कुछ दिन रखकर खट्टा किया हुआ फल या तरकारी। अथाना।
*पुं० दे० 'आचार'।
पुं० [सं० चार] चिरौंजी का पेड़।

अचाह-स्त्री० [हिं० अ+चाह] [वि० अचाहा] चाह या इच्छा न होना।
वि० जिसे चाह या इच्छा न हो।

अचिंतनीय-वि० [सं०] जो ध्यान में न आ सके। अज्ञेय। दुर्बोध।

अचिंत्य-वि० [सं०] १. जिसका चिंतन न हो सके। अज्ञेय। कल्पनातीत। २. जिसका अन्दाजा न हो सके। अतुल। ३. आशा से अधिक। ४. आकस्मिक।

अचिर-क्रि० वि० [सं०] [भाव० अचिरता] १. शीघ्र। जल्दी। २. तुरन्त। तत्काल। उसी समय।
वि० १. थोड़ा। अल्प। २. थोड़े समय तक रहनेवाला।

अचिरात्-क्रि० वि० [सं०] १. तुरन्त। तत्काल। २. जल्दी।

अचूक-वि० [सं० अच्युत] १ जो न चूके। २. जो अवश्य फल दिखावे। ३. भ्रम-रहित। ठीक। पक्का।
क्रि० वि० १. सफाई से। कौशल से। २. निश्चय। अवश्य। जरूर।

अचेत-वि० दे० 'अचेतन'।

अचेतन-वि० [सं०] १. जिसमें चेतना, ज्ञान या संज्ञा न हो। २. बेहोश। ३. जिसमें जीवन या प्राण न हों। जड़। 'चेतन' का उलटा।

अचेष्ट-वि० [सं०] जिसमें कोई चेष्टा या गति न हो। जो हिलता-डुलता न हो।

अचेष्टित-वि० [सं०] जिसके लिए कोई चेष्टा या प्रयत्न न हुआ हो।

अचैतन्य-वि० [सं०] जिसमें चेतना या चैतन्य न हो।

अच्छ*-वि० [सं०] स्वच्छ। निर्मल। पु० दे० 'अक्ष'।

अच्छत*-वि० पुं० दे० 'अक्षत'।

अच्छर*-वि० पुं० दे० 'अक्षर'।

अच्छरा*-स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अच्छा-वि० [सं० अच्छ] १. उत्तम। बढ़िया।
मुहा० अच्छे आना=ठीक या उपयुक्त अवसर पर आना। अच्छे दिन=सुख-सम्पत्ति के दिन।
२. स्वस्थ। तंदुरुस्त। नीरोग।
पु० १. बड़ा आदमी। श्रेष्ठ पुरुष। २. गुरुजन। बड़े बूढ़े। (बहुवचन)।
क्रि० वि० अच्छी तरह। खूब।

अच्छाई-स्त्री० दे० 'अच्छापन'।

अच्छापन- पुं० [हिं० अच्छा+हिं० पन] अच्छे होने का भाव। उत्तमता।

अच्छि*-स्त्री० [सं० अक्ष] आँख। नेत्र।

अच्छे- क्रि० वि० [हिं० अच्छा] अच्छी या ठीक तरह से।

अच्युत-वि० [सं०] [भाव० अच्युति] अपने स्थान से न हटने या न गिरने-वाला।
पुं० १. विष्णु। २. कृष्ण।

अछत-क्रि० वि० [हिं० 'आछना' का कृदंत रूप] १. रहते हुए। २. उपस्थिति में।

अछन*-पुं० [सं० अ+क्षण] बहुत दिन। दीर्घ काल। चिर काल।
क्रि० वि० धीरे धीरे। ठहर ठहरकर।

अछना*-अ० [सं० अस्] विद्यमान रहना। मौजूद होना। रहना।

अछरा*-स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अछरौटी-स्त्री० दे० 'अखरौटी'।

अछवाई*-स्त्री० [हिं० अच्छा] १. अच्छापन। अच्छाई। २. स्वच्छता। सफाई।

अछवाना-स० [सं० अच्छ=साफ] १. साफ करना। २. सँवारना।

अछवानी-स्त्री० [हिं० अजवायन] कुछ मसालों को पीसकर घी में पकाया हुआ चूर्ण जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाते हैं।

अछूत-वि० [सं० अ=नहीं+छुत] १. अछूता। अस्पृष्ट। २. जो काम में न लाया गया हो। नया। ताजा। ३. जिसे अपवित्र मानकर लोग न छूएँ। अस्पृश्य।

अछूता-वि० [सं० अ=नहीं+छुत=छुआ हुआ] [स्त्री० अछूती] १. जो छुआ न गया हो। अस्पृष्ट। २. जो काम में न लाया गया हो। नया। कोरा। ताजा।

अछूतोद्धार-पुं० [हिं अछूत+सं० उद्धार] अछूतों या अंत्यजों का उद्धार। (यह शब्द अशुद्ध यौगिक है।)

अछोर*-वि० [हिं० अ+छोर] १. अनन्त। असीम। २. बहुत अधिक।

अज-वि० [सं०] [स्त्री० अजा] जिसका जन्म न हुआ हो, बल्कि जो आपसे आप हुआ हो। जैसे—ईश्वर।
पुं० १. ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३. बकरी।

अजगर- पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत बड़ा और मोटा साँप।

अजगुत*-पुं० [सं० अयुक्त] अद्भुत या विलक्षण बात।

अजगुतहाया*-वि० [हिं० अजगुत+हाया (प्रत्य०)] विलक्षण। अनोखा।

अजगैबी-वि० [फा० अज+अ० गैब] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. अचानक होने-वाला। आकस्मिक।

अजनबी-वि० [अ०] १. अज्ञात । अ-परिचित । २. नया आया हुआ । परदेसी ।
अजन्मा- वि० [सं०] १. जो हो तो सही, पर बिना जन्म लिये हो । जैसे-ईश्वर । २. जारज । दोगला ।
अजब-वि० [अ०] विलक्षण । अद्‌भुत । विचित्र । अनोखा ।
अजय-पुं० [सं०] पराजय । हार ।
वि० जो जीता न जा सके । अजेय ।
अजर-वि० [सं०] १. जिसे जरा या बुढ़ापा न आवे । सदा ज्यों का त्यों रहने-वाला ।
अजवायन-स्त्री० [सं० यवानिका] एक पौधा जिसके सुगन्धित बीज मसाले और दवा के काम मे आते हैं । यवानी ।
अजस*-पुं० [सं० अयश] अपयश । अपकीर्ति । बदनामी ।
अजस्र-वि० [सं०] बहुत अधिक । अपरिमित ।
क्रि० वि० लगातार । निरन्तर ।
अजहु (हू)-क्रि० वि० [हिं० आज+हूँ (प्रत्य०)] अभी तक । इस समय तक ।
अजा-स्त्री० [सं०] १. बकरी । २ दुर्गा ।
अजात-वि० [सं०] १. जो हो तो, पर जिसका जन्म न हुआ हो । २. जो अभी जन्मा न हो ।
वि० [सं० अ+जाति] १. जिसकी कोई जाति न हो । २. जाति से निकाला हुआ ।
अजात-शत्रु-वि० [सं०] जिसका कोई शत्रु न हो ।
अजाती-वि० [सं० अ+जाति] जाति से निकाला हुआ । पंक्ति-च्युत ।
अजान-वि० [हिं० अ+जानना] १. जो न जाने । अनजान । अबोध । ना-समझ । २. अपरिचित । अज्ञात ।
पुं० अज्ञानता । अनभिज्ञता ।
अजाय*-वि० [अ=नहीं+फा० जा] बेजा । अनुचित ।
अजिऔरा*-पुं० [हिं० आजी+सं० पुर] आजी या दादी के पिता का घर ।
अजित-वि० [सं०] जिसे जीत न सकें ।
अजिर-पुं० [सं०] १. आंगन । सहन । २. वायु । हवा । ३. शरीर । ४. इन्द्रियों का विषय ।
अजी-अव्य० [सं० अयि] सम्बोधन का शब्द । हे जी ।
अजीब-वि० [अ०] विलक्षण । विचित्र । अनोखा । अनूठा ।
अजीर्ण-पुं० [सं०] १. वह रोग जिसमें भोजन नहीं पचता । अपच । बद-हजमी । २. किसी वस्तु का इतना अधिक हो जाना कि वह सँभाली न जा सके ।
वि० जो जीर्ण या पुराना न हो ।
अजीव-पुं० [सं०] जीव-तत्व से भिन्न, जड़ पदार्थ । अचेतन ।
वि० बिना प्राण का । मृत ।
अजूजा*-पुं० [देश०] बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुर्दे खाता है ।
अजूबा-वि० [अ०] अद्‌भुत । अनोखा ।
अजूरा*-पुं० [हिं० अ+जुड़ना] जो जुड़ा न हो । पृथक् । अलग ।
पुं० [अ०] १. मजदूरी । २. भाड़ा ।
अजूह*-पुं० [सं० युद्ध] युद्ध । लड़ाई ।
अजेय-वि० [सं०] [भाव० अजेयता] जिसे कोई जीत न सके ।
अजैव-वि० [सं०] जो जैव या जीवन से युक्त न हो । (इन-आर्गेनिक)
अजौं*-क्रि० वि० [सं० अद्य] अब तक ।
अज्ञ-वि० [सं०] [भाव० अज्ञता] जो कुछ जानता न हो ; या जिसे कुछ आता

न हो। मूर्ख। ना-समझ।

अज्ञा*-स्त्री० दे० 'आज्ञा'।

अज्ञात-वि० [सं०] १. जो जाना हुआ न हो। बिना जाना। २. छिपा हुआ। गुप्त। ३. जिसको किसी प्रकार जान न सकें। अगोचर।

अज्ञातनामा-वि० [सं०] १. जिसका नाम विदित न हो। २. अविख्यात।

अज्ञात-वास-पुं० [सं०] ऐसे स्थान का निवास जहाँ कोई पता न पा सके। छिपकर रहना।

अज्ञात-यौवना-स्त्री० [सं०] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आगमन का ज्ञान न हो।

अज्ञान-पुं० [सं०] १. बोध का अभाव। जड़ता। मूर्खता। २. जीवात्मा को गुण और गुण के कार्य्यों से पृथक् न समझने का अविवेक। ३. न्याय में एक निग्रह स्थान।

वि० मूर्ख। ना-समझ।

अज्ञानी-वि० [सं०] मूर्ख। ना-समझ।

अज्ञेय-वि० [सं०] जो समझ में न आ सके। ज्ञानातीत। बोधागम्य।

अझर*-वि० [सं० अ=नहीं+झर] १. जो न झरे। जो न गिरे। २. जो न बरसे। (बादल)

अझूना*-वि० [हिं० अ+सं० जीर्ण] ज्यों का त्यों रहनेवाला। स्थायी।

अटंबर-पुं० [सं० अट्ट+फा० अंबार] अटाला। ढेर। राशि।

अट-स्त्री० [हिं० अटक] बन्ध। शर्त्त।

अटक-स्त्री० [हिं० अटकना] १. अटकने की क्रिया या भाव। २. रोक। रुकावट। ३. अड़चन। बाधा। ४. संकोच।

अटकना-अ० [हिं० अ+टिकना] [स० अटकाना] चलते चलते रुकना। अड़ना। २. फँसकर रुकना। ३. झगड़ा करना।

अटकल-स्त्री० [?] अनुमान। अन्दाज।

अटकल-पच्चू-वि० [हिं० अटकल] केवल अटकल या अनुमान से सोचा या समझा हुआ।

अटका-पुं० [?] जगन्नाथ जी को चढ़ाया हुआ भात और धन।

अटकाना-स० [हिं० अटकना] १. रोकना। ठहराना। २. अड़ाना। फँसाना। ३. पूरा करने में विलम्ब करना।

अटकाव-पुं० [हिं० अटकना] १ अटकने की क्रिया या भाव। रोक। रुकावट। प्रतिबन्ध। २. बाधा। विघ्न।

अटन-पुं० [सं०] घूमना। फिरना।

अटना-अ० [सं० अटन] १. घूमना। फिरना। २ यात्रा करना। सफर करना। अ० [हिं० ओट] आड़ करना। ओट करना। छेंकना।

अ० दे० 'अँटना'।

अट-पट-वि० [अनु०] १. बेठिकाने का। बे-सिर-पैर का। २. विकट। कठिन।

अटपटाना-अ० [हिं० अटपट] १ अटकना। लड़खड़ाना। २. गड़बड़ाना। चूकना। ३ हिचकना। संकोच करना।

अट-पटी*-स्त्री० [हिं० अटपट] नट-खटी। शरारत। अन-रीति।

अटम्बर-पुं० [सं० आडम्बर] १ आ-डम्बर। २. दर्प।

अटल-वि० [हिं० अ+टलना] १. जो अपने स्थान से हटे या टले नहीं। स्थिर। २. दृढ़। पक्का। ३. अवश्य होनेवाला।

अटवी-स्त्री० [सं०] १. जंगल। बन। २. मैदान।

अटा-स्त्री० दे० 'अटारी'।

अटारी-स्त्री० [सं० अट्टाली] घर का ऊपरी भाग। कोठा।

अटाला-पुं० [सं० अट्टाल] ढेर। राशि।

अटित-वि० [सं० अटन] घुमावदार। वि० [सं० अटा] अटारियों या ऊँचे मकानों से युक्त। (नगर)

अटूट-वि० [सं० अ=नहीं+हिं० टूटना] १. न टूटने योग्य। दृढ़। पुष्ट। मजबूत। २. जिसका पतन न हो। अजेय। ३. अखंड। लगातार। ४. बहुत अधिक।

अटेरन-पुं० [सं० अति+ईरण] [क्रि० अटेरना] १. सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक यन्त्र। २. घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति।

अटेरना-स० [हिं० अटेरन] १ अटेरन से सूत की आँटी बनाना। २ मात्रा से अधिक मद्य या नशा पीना।

अट्ट-पुं० [सं०] १. बड़ा मकान। भवन। २ अटारी। कोठा। ३ हाट। बाजार। वि० ऊँचा। उच्च।

अट्ट-सट्ट-वि० [अनु०] अंड-बंड। ऊट-पटांग। (—बकना)

अट्टहास-पुं० [सं०] खूब जोर की हँसी। ठहाका।

अट्टालिका-स्त्री० [सं०] १. बड़ा और ऊँचा मकान। २. अटारी। कोठा।

अट्टी-स्त्री० [हिं० अंटी] अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन। लच्छा।

अठ-वि० दे० 'आठ'। (यौगिक शब्दों के आरम्भ में ; जैसे—अठ-पहलू)

अठ-कौशल-पुं० [सं० अष्ट-कौशल] १. गोष्ठी। पंचायत। २. सलाह। मंत्रणा।

अठखेली-स्त्री० [सं० अष्टकेलि] १. विनोद। क्रीड़ा। २. चपलता। चुलबुला-पन। (प्रायः बहुवचन में)

अठन्नी-स्त्री० [हिं० आठ+आना] आठ आने का सिक्का।

अठपाव*-पुं० [सं० अष्टवाद] उपद्रव। ऊधम। शरारत।

अठलाना*-अ० [सं० अष्टवाद] १ ऐंठ दिखलाना। इतराना। २. चोचला करना। नखरा करना। ३. मदोन्मत्त होना। मस्ती दिखाना। ४. जान-बूझकर अनजान बनना।

अठवना*-अ० [सं० आस्थान] जमना। ठनना।

अठवाँसा-वि० [सं० अष्टमास] वह गर्भ जो आठ ही महीने में उत्पन्न हो। पुं० १ सीमंत संस्कार। २. वह खेत जो आषाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाय और जिसमें ईख बोई जाय।

अठवारा-पुं० [हिं० आठ+सं० वार] १. आठ दिन का समय। २. सप्ताह। हफ्ता।

अठाई*-वि० [सं० अष्टवादी] उत्पाती नटखट। शरारती। उपद्रवी।

अठान-पुं० [सं० अ=नहीं+हिं० ठानना] १. न ठानने योग्य कार्य। अयोग्य या दुष्कर कर्म। २. वैर। शत्रुता। ३. झगड़ा।

अठाना*-स० [सं० अट्ट=वध करना] सताना। पीड़ित करना। स० [हिं० ठानना] मचाना। ठानना।

अठोतर-सौ-वि० [सं० अष्टोत्तर-शत] एक सौ आठ। सौ और आठ।

अड़ंगा-पुं० [हिं० अड़ाना + टाँग] १. टाँग अड़ाना। रुकावट। २. बाधा।

अड़-स्त्री० [सं० हठ] हठ। जिद।

अड़गड़ा-पुं० [अनु०] १. बैल-गाड़ियों के ठहरने का स्थान। २. बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान।

अड़चन-स्त्री० [हिं० अड़ना+चलना]

१. बाधा । विघ्न । २. कठिनता ।

अड़चल-स्त्री० दे० 'अड़चन'।

अड़ना-अ० [सं० अल=वारण करना] १. रुकना । ठहरना । २. हठ करना ।

अड़बंग*-वि० [हिं० अड़+सं० वक्र] १. टेढ़ा-मेढ़ा । अटपट । २. विकट । कठिन । ३. विलक्षण ।

अड़र*-वि० [सं० अ+हिं० डर] निडर । निर्भय । बेडर ।

अड़हुल-पुं० [सं० ओड्रु+फुल्ल] देवी-फूल । जपा या जवा पुष्प ।

अड़ान-स्त्री० [हिं० अड़ना] १. अड़ने या रुकने की जगह । २. अड़ने की क्रिया या भाव । ३. पड़ाव ।

अड़ाना-स० [हिं० अड़ना] १. टिकाना । रोकना । ठहराना । अटकाना । २. टेकना । डाट लगाना । ३. कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना । ४. ठूसना । भरना । ५ गिराना । ढरकाना ।

पुं० १. एक राग । २. वह लकड़ी जो गिरती हुई छत या दीवार आदि को गिरने से बचाने के लिए लगाई जाती है । डाट । चाँड़ ।

अड़ार-पुं० [सं० अट्टाल=बुर्ज] १. समूह । राशि । ढेर । २. ईंधन का ढेर जो बेचने के लिए रक्खा हो । ३. लकड़ी या ईंधन की दूकान ।

*वि० [सं० अराल] टेढ़ा । तिरछा ।

अड़ारना*-स० दे० 'डालना'।

अडिग-वि० [हिं० अ+डिगना] अपने स्थान से न डिगने या न हटनेवाला । अटल । स्थिर ।

अड़ियल-वि० [हिं० अड़ना] १. अड़-कर चलनेवाला । चलते चलते रुक जानेवाला । २. सुस्त । मट्ठर । ३. हठी ।

अड़ी-स्त्री० [हिं० अड़ना] १. जिद । हठ । आग्रह । २. रोक । ३. जरूरत का वक्त या मौका ।

अडीठ*-वि० [हिं० अ+डीठ] १. जो दिखाई न दे । २. छिपा हुआ । गुप्त ।

अडूलना-स० [सं० उत्=ऊँचा+हुल= फेंकना] जल आदि ढालना । उँडेलना ।

अडूसा-पुं० [सं० अटरूष] एक पौधा जिसके फूल और पत्ते दवा के काम में आते हैं ।

अडोल-वि० [सं० अ=नहीं+हिं० डोलना] १. जो हिले नहीं । अटल । स्थिर । २. स्तब्ध । चकित ।

अड़ोस-पड़ोस-पुं० [हिं० पड़ोस] आस-पास । करीब ।

अड्डा-पुं० [सं० अट्टा=ऊँची जगह] १. टिकने की जगह । ठहरने का स्थान । २. मिलने या इकट्ठा होने की जगह । ३. केन्द्र स्थान । प्रधान स्थान । ४. चिड़ियों के बैठने के लिए लकड़ी या लोहे का छड़ । ५. कबूतरों की छतरी । ६. करघा ।

अढ़तिया-पुं० [हिं० आढ़त] १. वह दुकानदार जो ग्राहकों या महाजनों को माल खरीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता है । आढ़त करनेवाला । २. दलाल ।

अढ़वायक*-पुं० [?] वह जो औरों से काम कराता हो ।

अणिमा-स्त्री० [सं०] अष्ट-सिद्धियों में पहली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते ।

अणु-पुं० [सं०] १. द्व्यणुक से सूक्ष्म और परमाणु से बड़ा कण । (६० पर-माणुओं का) २. छोटा टुकड़ा या

कण। ३. रज-कण। ४. अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा।

वि० १. अति सूक्ष्म। अत्यन्त छोटा। २. जो दिखाई न दे।

अणु बम-पुं० [सं० अणु+अँ० बॉम्ब] एक प्रकार का परम भीषण बम (गोला)।

अणुवाद-पुं० [सं०] १. वह दर्शन या सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया हो। (रामानुज का) २. वैशेषिक दर्शन।

अणुवीक्षण-पुं० [सं०] १. सूक्ष्म-दर्शक यंत्र। खुर्दबीन। २. बाल की खाल निकालना। छिद्रान्वेषण।

अतंक*-पुं० दे० 'आतंक'।

अतर्कित-वि० [सं०] १. जिसका पहले से अनुमान या कल्पना न हो। २. आकस्मिक। ३. अचानक आ पड़ने-वाला। जैसे—अतर्कित व्यय।

अतर्क्य-वि० [सं०] जिसके विषय में तर्क-वितर्क न हो सके।

अतल-पुं० [सं०] सात पातालों में दूसरा पाताल।

अतलस्पर्शी-वि० [सं०] अतल को छूनेवाला। अत्यन्त गहरा। अथाह।

अतलांतक-पुं० [अं० एटलान्टिक] अफ्रिका और अमेरिका के बीच का महा-समुद्र। (एटलांटिक)

अतवान†-वि० [सं० अति] बहुत। अधिक।

अताई-वि० [अ०] १. दक्ष। कुशल। प्रवीण। २. धूर्त। चालाक। ३. जो किसी काम को बिना सीखे हुए करे।

अति-वि [सं०] बहुत। अधिक।

स्त्री० अधिकता। ज्यादती।

अति-कर-पुं० [सं०] वह कर जो साधा-रण कर के अतिरिक्त हो और बहुत अधिक आयवाले लोगों से लिया जाता हो। (सुपर-टैक्स)

अति-काल-पुं० [सं०] १. विलम्ब। देर। २. कुसमय।

अतिक्रम-पुं० [सं०] नियम या मर्यादा का उल्लंघन। विपरीत व्यवहार।

अतिक्रमण-पुं० [सं०] अपने कार्य, अधिकार, क्षेत्र आदि की सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना, जहाँ जाना या रहना अनुचित, मर्यादा-विरुद्ध या अवैध हो। सीमा का अनुचित उल्लंघन। (एनक्रोचमेन्ट)

अतिक्रांत-वि० [सं०] १. हद के बाहर गया हुआ। २. बीता हुआ।

अतिक्रामक-पुं० [सं०] वह जो अपने अधिकार आदि की सीमा का उल्लंघन करके आगे बढ़े। दूसरे के अधिकारों में हस्तक्षेप करनेवाला।

अतिगति-स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

अतिचरण-पु० [सं०] अपने अधि-कार या अधिकृत सीमा के बाहर अनु-चित रूप से जाना। अधिकार के बाहर इस प्रकार जाना कि दूसरे के अधिकार में बाधा पहुँचे। (ट्रान्सग्रेशन)

अतिचार-पुं० [सं०] अपने अधिकार की सीमा से निकलकर दूसरे के अधिकार की सीमा में इस प्रकार जाना कि उसके अधिकार में बाधा हो। (एनक्रोचमेन्ट)

अतिचारी-पुं० [सं०] वह जो अति-चार करता हो। अतिचार करनेवाला।

अतिथि-पुं० [सं०] १. घर में आया हुआ अज्ञातपूर्व व्यक्ति। अभ्यागत। मेहमान।

पाहुन। २. वह संन्यासी जो किसी स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरे। व्रात्य। ३. अग्नि। ४. यज्ञ में सोम लता लानेवाला।

अतिपात-पुं० [सं०] १. अव्यवस्था। २. बाधा। विघ्न।

अतिभोग-पुं० [सं०] नियत समय के उपरान्त भी अथवा बहुत दिनों से किसी सम्पत्ति का भोग करना। (प्रेस्क्रिप्शन)

अतिरंजन-पुं० [सं०] [वि० अतिरंजित] कोई बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना। अत्युक्ति।

अतिरिक्त-वि० [सं०] १. आवश्यकता या उपयोग से अधिक। २ बचा हुआ। शेष। ३ अलग। भिन्न। जुदा। क्रि० वि० किसी को छोड़कर उसके सिवा। अलावा।

अतिरिक्त-पत्र-पुं० दे० 'क्रोडपत्र'।

अतिरेक-पुं० [सं०] १ अधिकता। बहुतायत। २ व्यर्थ की वृद्धि या विस्तार।

अतिवृष्टि-स्त्री० [सं०] बहुत अधिक वर्षा। (६ ईतियों में से एक)

अतिव्याप्ति-स्त्री० [सं०] किसी लक्षण या कथन के अन्तर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष।

अतिशय-वि० [सं०] [भाव० अतिशयता] बहुत। ज्यादा।
पुं० एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर सम्भावना या असम्भावना दिखलाई जाती है।

अतिशयोक्ति-स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में संबंध आदि दिखाकर किसी वस्तु का बहुत बढ़ाकर वर्णन होता है।

अतिसार-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों में से पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है।

अतिहायन-पुं० [सं०] १. इतना अधिक वृद्ध होना कि काम-धन्धा न हो सके। (सुपरएनुएशन) २. बहुत अधिक पुराना और जीर्ण हो जाना।

अतींद्रिय-वि० [सं०] १. जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो। अगोचर।

अतीत-वि० [सं०] [क्रि० अतीतना] १. गत। व्यतीत। बीता हुआ। २. पृथक्। अलग। ३. मरा हुआ। मृत।
क्रि० वि० परे। बाहर। दूर।

अतीव-वि० [सं०] बहुत। अत्यन्त।

अतीस-स्त्री० [सं० अतिविषा] एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

अतुराई*-स्त्री० दे० 'आतुरता'।

अतुराना*-अ० [सं० आतुर] १. आतुर होना। घबराना। २. जल्दी मचाना।

अतुल-वि० [सं०] [भाव० अतुलता] १ जिसकी तौल या अन्दाज न हो सके। २ अमित। असीम। बहुत अधिक। ३. अनुपम। बेजोड़।

अतुलनीय-वि० [सं०] १. अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। २ अनुपम।

अतुलित-वि० [सं०] १. बिना तौला हुआ। २ अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३. असंख्य। ४. अनुपम।

अतृप्त-वि० [सं०] [संज्ञा अतृप्ति] १. जो तृप्त या सन्तुष्ट न हो। २. भूखा।

अतृप्ति-स्त्री० [सं०] मन न भरने की दशा। तृप्ति न होना।

अतोर*-वि० [सं० अ+हिं० तोड़] जो न टूटे। पक्का। दृढ़।

अत्त*-स्त्री० दे० 'अति'।

अत्तार-पुं० [अ०] १. इत्र या तेल

बेचनेवाला। गंधी। २. यूनानी दवाएँ बनाने और बेचनेवाला।

अत्यंत-वि० [सं०] बहुत अधिक। हद से ज्यादा। अतिशय।

अत्यंताभाव-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का बिलकुल न होना। अस्तित्व की परम शून्यता। २. पांच प्रकार के अभावों में से एक। तीनों कालों में सम्भव न होना। जैसे-आकाश-कुसुम, वंध्यापुत्र। २. बिलकुल कमी।

अत्यय-पुं० [सं०] १. मृत्यु। मौत। २ नाश। ३. सीमा के बाहर जाना। ४. कम होना। घटना। ५. ह्रास या क्षीणता को प्राप्त होना।

अत्याचार-पुं० [सं०] १ आचार का अतिक्रमण। अन्याय। ज़ुल्म। २. दुराचार। पाप। ३. पाखंड। ढोंग।

अत्युक्त-वि० [सं०] जो बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया हो।

अत्युक्ति-स्त्री० [सं०] १ कोई बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना। २ इस प्रकार बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात। ३ एक अलंकार जिसमें शूरता, उदारता आदि गुणों का अद्भुत और मिथ्या वर्णन होता है।

अत्र-क्रि० वि० [सं०] यहां। इस जगह। *पुं० दे० 'अस्त्र'।

अथ-अव्य० [सं०] एक शब्द जिससे प्राचीन लोग ग्रन्थ या लेख का आरम्भ करते थे। २. अब। ३. अनन्तर।

अथक-वि० [सं० अ=नहीं+हिं० थकना] जो न थके। अश्रान्त।

अथच-अव्य० [सं०] और। और भी।

अथना*-अ० [सं० अस्त] अस्त होना। डूबना। (सूर्य, चन्द्रमा आदि का)

अथमना†-पुं० [सं० अस्तमन] पश्चिम दिशा। 'उगमना' का उलटा।

अथवना*-अ० दे० 'अथना'।

अथरा-पुं० [सं० स्थाल] [स्त्री० अथरी] मिट्टी का खुले मुँह का चौड़ा बरतन। नाँद।

अथर्व-पुं० [सं० अथर्वन्] चौथा वेद जिसके मंत्र-द्रष्टा या ऋषि भृगु और अंगिरा गोत्रवाले थे।

अथवना*-अ० दे० 'अथना'।

अथवा-अव्य० [सं०] एक वियोजक अव्यय जिसका प्रयोग वहां होता है, जहां कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। या। वा। किंवा।

अथाई-स्त्री० [सं० आस्थान] १. बैठने की जगह। बैठक। २. वह स्थान जहां लोग इकट्ठे होकर पंचायत करते हैं। ३ मंडली। जमावड़ा।

अथाना*-अ० दे० 'अथवना'। स० [सं० स्थान] १. थाह लेना। गहराई नापना। २. ढूँढना।

अथावत*-वि० [सं० अस्तमन] डूबा हुआ। अस्त।

अथाह-वि० [सं० अस्ताघ] १ जिसकी थाह न हो। बहुत गहरा। २. जिसका अंदाज़ न हो सके। अपरिमित। बहुत अधिक। ३ गम्भीर। गूढ़। पुं० १. गहराई। २. जलाशय। ३. समुद्र।

अथोर*-वि० [सं० अ=नहीं+हिं० थोर] अधिक। ज्यादा। बहुत।

अदंड-वि० [सं०] १. जो दण्ड के योग्य न हो। २. जिस पर कर या महसूल न लगे। ३. स्वेच्छाचारी। पुं० वह भूमि जिसकी मालगुजारी न लगे। मुआफी।

अदंड्य-वि० [सं०] जिसे दंड न दिया

जा सके। सज़ा से बरी।

अदंत-वि० [सं०] १. जिसे दाँत न हो। २. बहुत थोड़ी अवस्था का। दुधमुँहाँ।

अदग-वि० [सं० अदग्ध] १. बेदाग़। शुद्ध। २. निरपराध। निर्दोष। ३. अछूता। अस्पृष्ट। ४. साफ़।

अदत्त-वि० [सं०] १. जो दिया न गया हो। बिना दिया हुआ। २. जिसका मूल्य, कर आदि न चुकाया गया हो। पुं० वह वस्तु जो मिलने पर भी पानेवाला ले या रख न सकता हो। (स्मृति)

अदद-स्त्री० [अ०] १. संख्या। गिनती। २. संख्या का चिह्न या संकेत।

अदना-वि० [अ०] बहुत ही छोटा या साधारण। तुच्छ।

अदब-पुं० [अ०] बड़ों के प्रति होनेवाला आदर और शिष्टाचार।

अदम्य-वि० [सं०] १. जो किसी प्रकार दबाया न जा सके। जिसका दमन न हो सके। २. बहुत प्रबल या उग्र।

अदय-वि० [सं०] जिसमें दया न हो। दया-रहित। निर्दय।

अदरक-पुं० [सं० आर्द्रक, फा० अदरक] एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है।

अदराना-अ० [सं० आदर] बहुत आदर पाने से शेखी पर चढ़ना। इतराना। स० आदर देकर शेखी पर चढ़ाना। घमंडी बनाना।

अदर्शन-पुं० [सं०] १. अविद्यमानता। असाक्षात्। २. लोप। विनाश।

अदल-बदल पुं० [अ०] उलट-पुलट। हेर-फेर। परिवर्तन।

अदवान-स्त्री० [सं० अधः=नीचे+हिं० बान=रस्सी] चारपाई के पैताने की बिनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिए उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी। उनचन।

अदहन-पुं० [सं० आदहन] वह पानी जो दाल, चावल पकाने के लिए पहले गरम किया जाता है।

अदांत-वि० [सं०] १. अपनी इंद्रियों या वासनाओं का दमन न कर सकनेवाला। विषय-लोलुप। २ उद्दंड। उद्धत।

अदा-स्त्री० [अ०] स्त्रियों का हाव-भाव। नखरा।

वि० १. चुकाया हुआ। चुकता। २. १. जिसका पालन हुआ हो। २. करके दिखलाया हुआ।

अदाई*-वि० [अ० अदा] चालबाज।

अदानी-वि० [हिं० अ+दानी] १. जो दानी न हो। २. कंजूस। कृपण।

अदायाँ*-वि० [हिं० अ+दायाँ=दाहिना] प्रतिकूल। वाम।

अदालत-स्त्री० दे० 'न्यायालय'।

अदावत-स्त्री० दे० शत्रुता'।

अदिति-स्त्री० [सं०] १ प्रकृति। २. पृथ्वी। ३. दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जिनसे देवताओं का जन्म हुआ था।

अदिन-पुं० [सं०] १. बुरा दिन। संकट या दुःख का समय। २. अभाग्य।

अदिव्य-वि० [सं०] १ लौकिक। २. साधारण। ३. बुरा।

अदिष्ट*-वि० दे० 'अदृष्ट'।

अदीन-वि० [सं०] १. दीनता-रहित। २. उग्र। प्रचंड। ३. निडर। ४. ऊँची तबीयत का। उदार।

अदीह*-वि० [हिं० अ+दीर्घ] छोटा।

अदूजा*-वि० दे० 'अद्वितीय'।

अदूरदर्शी-वि० [सं०] जो दूर तक न सोचे। स्थूलबुद्धि। नासमझ।

अदृश्य-वि० [सं०] १. जो दिखाई न दे। २. जिसका ज्ञान इन्द्रियों को न हो। अगोचर। ३. लुप्त। गायब।

अदृष्ट-वि० [सं०] १. न देखा हुआ। २. लुप्त। अंतर्धान। ग़ायब। पुं० १. भाग्य। २ अग्नि और जल आदि से उत्पन्न आपत्ति।

अदृष्टवाद-पुं० [सं०] [वि० अदृष्टवादी] परलोक आदि परोक्ष बातों का निरूपक सिद्धान्त।

अदेख*-वि० [सं० अ=नहीं+हिं० देखना] १. छिपा हुआ। अदृश्य। गुप्त। २. न देखा हुआ। अदृष्ट।

अदेय-वि० [सं०] जो दिया न जा सके। न देने योग्य।

अद्ध*-वि० दे० 'अर्द्ध'।

अद्धा-पुं० [सं० अर्द्ध] १. किसी वस्तु का आधा मान। २. वह बोतल जो पूरी बोतल की आधी हो।

अद्धी-स्त्री० [सं० अर्द्ध] १. दमड़ी का आधा। एक पैसे का सोलहवां भाग। २ एक बारीक और चिकना कपड़ा।

अद्‌भुत-वि० [सं०] आश्चर्यजनक। वि-लक्षण। विचित्र। अनोखा।

अद्‌भुतोपमा-स्त्री० [सं०] उपमा अलं-कार का एक भेद जिसमें उपमेय के ऐसे गुणों का उल्लेख होता है जिनका होना उपमान में कभी सम्भव न हो।

अद्य-क्रि० वि० [सं०] इस समय।

अद्यतन-वि० दे० 'दिनाप्त'।

अद्यापि-क्रि० वि० [सं०] इस समय तक। अभी तक।

अद्यावधि- क्रि० वि० दे० 'अद्यापि'।

अद्रि-पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़।

अद्वितीय-वि० [सं०] १. जिसके समान और कोई न हो। अनुपम। बेजोड़। २. विलक्षण। अद्‌भुत।

अद्वैत-वि० दे० 'अद्वितीय'।

अद्वैतवाद-पुं० [सं०] [वि० अद्वैत-वादी] वेदान्त का सिद्धान्त जिसमें आत्मा और परमात्मा को एक माना जाता है और ब्रह्म के सिवा और सब वस्तुओं या तत्वों की सत्ता अ-वास्तविक या असत्य मानी जाती है।

अधः-अव्य० [सं०] नीचे। तले।

अधःपतन-पुं० [सं०] १. नीचे की ओर गिरना। पतित होना। अवनति। २. दुर्दशा। दुर्गति।

अधःपात-पुं० दे० 'अधःपतन'।

अध-वि० [सं० अर्द्ध] 'आधा' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे दूसरे शब्दों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे-अध-खुला, अध-मरा।
*अव्य० दे० 'अधः'।

अध-कचरा-वि० [हिं० आधा+कचरना] १. जो पूरा या पक्का न हो। आधा ठीक और आधा बे-ठीक। २. अधूरा। अपूर्ण। ३. जो पूरा कुशल या दक्ष न हो। ४ आधा कूटा या पीसा हुआ। दरदरा।

अध-कपारी-स्त्री० [हिं० आधा+कपार] आधे सिर का दर्द। आधासीसी।

अध-करी-स्त्री० [हिं० आधा+कर] कर, देन आदि आधा आधा करके दो बार या दो किस्तों में चुकाने की रीति।

अध-कहा-वि० [हिं० आधा+कहना] जो पूरा और स्पष्ट नहीं, बल्कि आधा और अस्पष्ट कहा गया हो।

अध-खिला-वि० [हिं० आधा+खिलना]

पूरा नहीं, बल्कि आधा ही खिला हुआ।

अध-खुला-वि० [हिं० आधा+खुलना] जो आधा खुला हो।

अध-घट-वि० दे० 'अटपट'।

अध-चरा-वि० [हिं० आधा+चरना] जो पूरा नहीं, बल्कि आधा ही चरा गया हो।

अध-जला-वि० [हिं० आधा+जलना] आधा जला हुआ।

अधड़ा*-[हिं० आधा या सं० अधर] जिसका सिर-पैर न हो। ऊट-पटाँग। असंबद्ध।

अधन*-वि० दे० 'निर्धन'।

अधनिया-वि० [हिं० अधन्नी] आध आने या दो पैसेवाला।

अधन्ना-पुं० [हिं० आधा+आना] आधे आने या दो पैसे का ताँबे का सिक्का।

अधन्नी-स्त्री० [हिं० आधा+आना] आधे आने का निकल धातु का छोटा चौकोर सिक्का।

अध-फर*-पुं० [सं० अर्द्ध+फलक] १. बीच का भाग। २. अंतरिक्ष। ३ मध्य आकाश। अधर।

अध-बुध-वि० [हिं० आधा+बुद्धि] कम या थोड़ा ज्ञान रखनेवाला।

अध-बैसू*-वि० [हिं० आधा+वयस] जिसकी आधा या उससे कुछ अधिक अवस्था बीत चुकी हो। अधेड़।

अधम-वि० [सं०] १. बिलकुल निम्न या निकृष्ट कोटि का। २. बहुत बड़ा पापी, दुष्ट या दुराचारी।

अधमई*-स्त्री० दे० 'अधमता'।

अधमता-स्त्री० [सं०] 'अधम' होने की क्रिया या भाव। नीचता।

अध-मरा-वि० [हिं० आधा+मरना] जो पूरा नहीं, बल्कि आधा ही मरा हो। जिसमें कुछ ही प्राण हों। मृत-प्राय।

अधमर्ण-पुं० [सं०] वह जिसने किसी से ऋण लिया हो। कर्जदार। (बॉरोवर)

अधमाई*-स्त्री० दे० 'अधमता'।

अधमा-वि० स्त्री० [सं०] अधम स्वभाव या आचरणवाली। दुष्ट प्रकृति की। जैसे-अधमा दूती अधमा नायिका।

अधमुआ-वि० दे० 'अध-मरा'।

अधर-पुं० [सं०] होंठ। ओठ।
पुं० [हिं० अ+धरना] १. ऐसा स्थान जिसके चारों ओर शून्य या आकाश हो। २. पाताल।
वि० १. जो पकड़ा न जा सके। चंचल। २. दे० 'अधम'।

अधरज*-पुं० [सं० अधर+रज] १. ओठों की ललाई या सुर्खी। २ ओठों पर की पान या मिस्सी की धड़ी।

अधर्म-पुं० [सं०] धर्म्म के विरुद्ध कार्य। कुकर्म। दुराचार। बुरा काम।

अधर्मी-पुं० [सं० अधर्मिन्] [स्त्री० अधर्मिणी] पापी। दुराचारी।

अधवा-स्त्री० दे० 'विधवा'।

अधस्तल-पुं० [सं०] १. नीचे की कोठरी। २. नीचे की तह। ३. तहखाना।

अधस्थ-वि० [सं० अधःस्थ] १. किसी के अधीन या नीचे रहकर काम करनेवाला। २. किसी नियम, आज्ञा या व्यवस्था आदि के अधीन। (अंडर)

अधार*- पुं० दे० 'आधार'।

अधारा-वि० [हिं० अ+धार] (शस्त्र) जिसमें धार न हो। बिना धार का। अशित। (जैसे-लाठी, छड़ी आदि)

अधार्मिक-वि० [सं०] १. जो धार्मिक न हो। २. धर्म-हीन। ३. धर्म-विरुद्ध।

अधि–एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं–१. ऊपर। ऊँचा। जैसे अधिराज, अधिकरण। २. प्रधान। मुख्य। जैसे- अधिपति। ३. अधिक। ज्यादा। जैसे- अधिमास। ४. संबंध में। जैसे आध्यात्मिक।

अधिक–वि० [सं०] १. बहुत। ज्यादा। विशेष। २. बचा हुआ। फालतू।
पुं० वह अलंकार जिसमें आधेय को आधार से अधिक बतलाते हैं।

अधिकता–स्त्री० [सं०] बहुतायत। ज्यादती। विशेषता। बढ़ती। वृद्धि।

अधिक मास–पुं० दे० 'मल-मास'।

अधि-कर–पुं० [सं०] साधारण के अतिरिक्त वह विशेष कर जो कुछ विशेष अवस्थाओं में लगाया जाता है। (सुपर-टैक्स)

अधिकरण–पुं० [सं०] १. आधार। सहारा। २. व्याकरण मे कर्त्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार जो सातवां कारक है। ३. प्रकरण। ४. न्यायालय। अदालत। (कोर्ट)

अधिकरण-शुल्क–पुं० [सं०] वह शुल्क जो किसी अधिकरण या न्यायालय में कोई प्रार्थनापत्र उपस्थित करते समय, अंक-पत्रक या स्टाम्प के रूप में देना पड़ता है। (कोर्ट फी)

अधिकरण्य–पुं० [सं०] वह आज्ञा-पत्र जिसमें किसी को कोई कार्य करने की आज्ञा और अधिकार दिया गया हो। जैसे-किसी को पकड़ने या किसी को कुछ धन देने का अधिकरण्य। (वारेन्ट)

अधिकर्मी–पुं० [सं०] कुछ लोगों के ऊपर रहकर उनके कामों की देख-भाल करनेवाला अधिकारी। (ओवरसियर)

अधिकांश–पुं० [सं०] अधिक भाग। ज्यादा हिस्सा।
वि० बहुत।
क्रि० वि० १. ज्यादातर। विशेषकर। २. प्रायः। अक्सर।

अधिकाई*–स्त्री० दे० 'अधिकता'।

अधिकाना*–अ० [सं० अधिक] अधिक होना। ज्यादा होना। बढ़ना।

अधिकार–पुं० [सं०] वह शक्ति जो किसी को विधि, अपने पद, मर्यादा अथवा योग्यता आदि के कारण प्राप्त हो। (अथॉरिटी) २. प्रभुत्व। आधिपत्य। ३. वह योग्यता या सामर्थ्य जिसके कारण किसी में कोई कार्य कर सकने का बल आता है। शक्ति। (पॉवर) ४. वह शक्ति जिसके द्वारा किसी को किसी वस्तु पर स्वामित्व अथवा किसी कार्य की शक्ति प्राप्त होती है। स्वत्व। (राइट) ५. किसी वस्तु या विषय का ऐसा पूर्ण ज्ञान जिसके आधार पर उसका कथन प्रामाणिक होता हो। पूरी जानकारी। ६. किसी वस्तु या सम्पत्ति आदि पर होने-वाला स्वामित्व। कब्जा। (पोजेशन) ७. प्रकरण अथवा उसका शीर्षक। ८. नाट्य शास्त्र में रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता।

अधिकार-त्याग–पुं० [सं०] अपना अधिकार छोड़कर अलग हो जाना। (एब्डिकेशन)

अधिकार-पत्र–पुं० [सं०] वह पत्र जिसके अनुसार किसी को कोई कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो।

अधिकारिक–पुं० [सं०] वह जिसे किसी कार्य का अधिकार प्राप्त हो। अधि-

कारी। (ऑथारिटी)

अधिकारिकी-स्त्री० [सं०] अधिकारियों का समूह, वर्ग या संघात। (ऑथारिटी)

अधिकारी-पुं० [सं०] [स्त्री० अधिकारिणी] १. प्रभु। स्वामी। २. वह जिसे कोई स्वत्व प्राप्त हो। ३. वह जिसमें कोई विशेष योग्यता या क्षमता हो। ४. वह कर्मचारी जो किसी पद पर रहकर कोई कार्य करता हो। अफसर। (आफिसर) ५. नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त हो।

वि० १. अधिकार रखनेवाला। अधिकारधारी। २. जिसे कुछ पाने या करने का अधिकार हो।

अधिकृत-वि० [सं०] १. जिसपर अधिकार कर लिया गया हो। २. जो किसी के अधिकार में हो। ३. जिसको कोई काम करने का अधिकार दिया गया हो। ४ जिसको कोई काम करने का अधिकार हो। (ऑथराइज्ड)

अधिकौहाँ*-वि० [हिं० अधिक] बराबर बढ़ता रहनेवाला।

अधिक्रम-पुं० [सं०] १. किसी पर चढ़ना। आरोहण। २ दे० 'अधिक्रमण'।

अधिक्रमण-पुं० [सं०] अपने वरिष्ठ शक्ति या अधिकार के कारण किसी को हटा या दबाकर उसका स्थान स्वयं ले लेना। (सुपरसेशन)

अधिक्रांत-वि० [सं०] जिसपर अधिक्रमण हुआ हो। जो दबा या हटा दिया गया हो। (सुपरसीडेड)

अधिक्षेत्र-पुं० [सं० अधि + क्षेत्र] किसी के अधिकार या कार्य का क्षेत्र। (ज्युरिसडिक्शन)

अधिगत-वि० [सं०] १. प्राप्त। पाया हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात।

अधिगम-पुं० [सं०] १. पहुँच। गति। २. दूसरे के उपदेश से मिला हुआ ज्ञान। ३. न्यायालय का वह निष्कर्ष जो किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई हो चुकने पर उसे प्राप्त हुआ हो। (फाइन्डिंग)

अधिगमन-पुं० [सं०] किसी वाक्य की वह व्याख्या या व्याकृति जो उसकी पद-योजना के आधार पर की जाय। (रीडिंग)

अधित्यका-स्त्री० [सं०] पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ऊँचा पहाड़ी मैदान।

अधिदेव-पुं० [सं०] [स्त्री० अधिदेवी] १. इष्टदेव। २. कुलदेव।

अधिदैवत-पुं० [सं०] वह प्रकरण या मंत्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्य इत्यादि देवताओं के नाम-कीर्त्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा मिले।

वि० देवता सम्बन्धी।

अधिनायक-पुं० [सं०] [स्त्री० अधिनायिका] सरदार। मुखिया।

अधिनायक तंत्र-पुं० [सं०] वह राज्य जिसके सब काम केवल अधिनायक की आज्ञा से होते हों।

अधिनायकी-पुं० [सं० अधिनायक] अधिनायक का कार्य, पद या भाव।

अधिनियम-पुं० [सं०] १. वह नियम जो किसी विशेष आज्ञा या निश्चय के अनुसार किसी प्रकार की व्यवस्था या प्रबन्ध के लिए बना हो। (रेगुलेशन) २. साधारण नियम से अधिक महत्त्व का वह नियम जो किसी विधायन के अधीन न बना हो, बल्कि उसकी परिभाषा में ही आता हो। (रेगुलेशन)

अधिपति-पुं० [सं०] १. स्वामी । मालिक । २. प्रधान अधिकारी । ३. न्यायालय आदि का प्रधान विचारक या अधिकारी । (प्रिसाइडिंग ऑफिसर)

अधिभार-पुं० [सं०] कर या शुल्क आदि का वह विशेष या अतिरिक्त अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए अथवा किसी विशेष परिस्थिति में अलग से अधिक लिया जाता है । (सुपर-चार्ज)

अधिमान-पुं० [सं०] किसी वस्तु या व्यक्ति का वह मान या आदर जो औरों की तुलना में उसे अच्छा समझकर किया जाता है । किसी को औरों से अच्छा समझकर ग्रहण करना । (तरजीह, प्रिफरेन्स)

अधिमानित-वि० [सं०] जिसे औरों से अच्छा समझकर ग्रहण किया गया हो । जिसका अधिमान किया गया हो । (प्रिफर्ड)

अधिमान्य-वि० [सं०] जो अधिमान के योग्य हो । जो औरों से अच्छा होने के कारण ग्रहण किया जा सके । (प्रिफरेबुल)

अधि-मास-पुं० दे० 'मल-मास' ।

अधिमूल्य-पुं० [सं०] १ किसी वस्तु का साधारण से अधिक वह मूल्य आदि जो विशेष परिस्थिति में लिया जाय । २. दे० 'अधिभार' ।

अधिया-पुं० [हिं० आधा] १. आधा हिस्सा । २. गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी । ३. एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है ।

अधियाना-स० [हिं० आधा] आधा करना । दो बराबर हिस्सों में बाँटना । अ० आधा होना ।

अधियार-पुं० [हिं० आधा] [स्त्री० अधियारिन] १. किसी जायदाद का आधा हिस्सा । २. आधे का मालिक । ३. वह जमींदार या असामी जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का हिस्सेदार हो ।

अधियारी-स्त्री० [हिं० अधियार] किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी ।

अधियुक्त-वि० [सं०] वेतन या पारिश्रमिक पर किसी काम में लगा हुआ । (एम्प्लॉयड)

अधियुक्ती-पुं० [सं० अधियुक्त] वह जो किसी काम पर लगा हो और वेतन या पारिश्रमिक पाता हो । काम पर लगा हुआ । (एम्प्लॉई)

अधियोक्ता-पुं० दे० 'अधियोजक' ।

अधियोजक-पुं० [सं०] वह जो वेतन आदि देकर लोगों को अपने यहाँ कोई काम करने के लिए रखे । (एमप्लॉयर)

अधियोजन-पुं० [सं०] १. किसी को वेतन आदि देकर अपने यहाँ किसी काम पर लगाना । २. वेतन आदि पर किसी काम पर लगा रहना । (एम्प्लॉयमेन्ट)

अधिरक्षी-पु० [सं०] आरक्षी या पुलिस विभाग का वह कर्मचारी जिसके अधीन कुछ सिपाही रहते हैं । (हेड कान्स्टेबुल)

अधिरथ-पुं० [सं०] १. रथ हाँकनेवाला । गाड़ीवान । २. बड़ा रथ ।

अधिराज-पुं० [सं०] महाराज ।

अधि-राज्य-पुं० [सं०] साम्राज्य ।

अधि-रात*-स्त्री० [हिं० आधी+रात] आधी रात ।

अधिरोप (ण)-पुं० [सं०] किसी पर अपराध का आरोप, अभियोग या दोष लगाया जाना । (चार्ज)

अधिरोपित-वि० [सं०] १. जिसपर

अपराध आदि का अधिरोप हुआ हो। २ (अपराध) जिसका अधिरोप किया गया हो। (चार्ज्ड)

अधिरोहण-पुं० [सं०] चढ़ना। सवार होना। ऊपर बैठना।

अधिलाभ-पुं० [सं०] लाभ का वह अंश जो किसी समवाय या मंडली के अंशियों अथवा संस्था के नौकरों को साधारण लाभांश या वेतन के अतिरिक्त दिया जाता है। (बोनस)

अधिवास-पुं० [सं०] १. रहने का स्थान। २. एक देश से चलकर दूसरे देश में इस प्रकार बस जाना कि उस देश की नागरिकता के अधिकार प्राप्त हो जायँ। (डोमिसाइल) ३. सुगन्ध। खुशबू।

अधिवासी-पुं० [सं०] १ निवासी। २. दूसरे देश में जाकर बसनेवाला।

अधिवेशन-पुं० [सं०] सभा, सम्मेलन आदि की बैठक।

अधि-शुल्क-पुं० [सं०] साधारण से अधिक या अतिरिक्त वह शुल्क जो किसी विशेष परिस्थिति में लिया जाता है। (सुपर-चार्ज)

अधिष्ठाता-पुं० [सं० अधिष्ठातृ] [स्त्री० अधिष्ठात्री] १ अध्यक्ष। २ मुखिया। प्रधान। ३ वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो। ४ ईश्वर।

अधिष्ठान-पुं० [सं०] [वि० अधिष्ठित] १ वास-स्थान। रहने का स्थान। २. नगर। शहर। ३. ठहरने का स्थान। पड़ाव। ४. आधार। सहारा। ५. वह वस्तु जिसमे भ्रम का आरोप हो। जैसे रज्जु मे सर्प या शुक्ति में रजत का। ६. शासन। राजसत्ता। ७. संस्था। ८. संस्था के कार्यकर्ता और अधिकारी लोग। (एस्टैब्लिशमेन्ट)

अधिष्ठित-वि० [सं०] १. ठहरा हुआ। स्थापित। २. नियुक्त।

अधीक्षक-पुं० [सं०] किसी कार्यालय या विभाग का वह प्रधान अधिकारी जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के सब कामों की देख-भाल करे। (सुपरिन्टेन्डेन्ट)

अधीक्षण-पुं० [सं०] किसी कार्यालय या विभाग के कर्मचारियों के सब कामों की देख-भाल करना। अधीक्षक का काम।

अधीत-वि० [सं०] (ग्रन्थ, पाठ आदि) जो पढ़ा जा चुका हो।

अधीन-वि० [सं०] १. किसी के अधिकार, शासन, निरीक्षण या वश में रहनेवाला। मातहत। २. किसी के आसरे या सहारे पर रहनेवाला। आश्रित। अवलम्बित। ३. वशीभूत। आज्ञाकारी। ४. विवश। लाचार। ५ अवलम्बित। मुनहसर।

अधीनता-स्त्री० [सं०] १. परवशता। परतंत्रता। २. मातहती।

अधीनना*-स० [सं० अधीन] अपने अधीन करना।

अ० किसी के अधीन होना।

अधीनस्थ-वि० [सं०] किसी के अधीन।

अधीनीकरण-पुं० [सं०] किसी को अपने अधीन करना या अपने अधिकार में लाना। (सबजुगेशन)

अधीर-वि० [सं०] [संज्ञा अधीरता] १ धैर्य-रहित। २. घबराया हुआ। उद्विग्न। ३. बेचैन। व्याकुल। ४. आतुर।

अधीरा-स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक में नारी-विलास के सूचक चिह्न देखने से अधीर होकर प्रत्यक्ष कोप करे।

अधीश-पुं० [सं०] [स्त्री० अधीश्वरी] १. मालिक। स्वामी। २. भूपति। राजा।

अधीश्वर-पुं० दे० 'अधीश'।

अधुना-क्रि० वि० [सं०] [वि० आधुनिक] सम्प्रति। आज-कल। इन दिनों।

अधूरा-वि० [हिं० अध+पूरा] [स्त्री० अधूरी] जो पूरा न हो। अपूर्ण।

अधेड़-वि० [हिं० आधा+एड़ (प्रत्य०)] ढलती जवानी का। बुढ़ापे और जवानी के बीच का।

अधेला-पुं० [हिं० आधा+एला (प्रत्य०)] आधा पैसा।

अधेली-स्त्री० दे० 'अठन्नी'।

अधो-अव्य० दे० 'अधः'।

अधोगति-स्त्री० [सं०] १. पतन। गिराव। २. अवनति। ३ दुर्दशा।

अधोगमन-पुं० [सं०] १ नीचे जाना। २. अवनति। पतन।

अधोगामी-वि० [सं० अधोगामिन्] [स्त्री० अधोगामिनी] १. नीचे जानेवाला। २. अवनति की ओर जानेवाला।

अधोतर-पुं० [सं० अधः+उत्तर] दोहरी बुनावट का एक देशी कपड़ा।

अधोमडल-पुं० [सं०] पृथ्वी से साढ़े सात मील तक ऊँचा वायुमंडल। (बादल, बिजली, आंधी आदि इसी में होती हैं।)

अधोमार्ग-पुं० [सं०] १. नीचे का रास्ता। २. गुदा।

अधोमुख-वि० [सं०] १. नीचे मुँह किये हुए। २. औंधा। उलटा।

क्रि० वि० औंधा। मुँह के बल।

अधोवस्त्र-पुं० [सं०] कमर से नीचे पहना जानेवाला कपड़ा। (धोती, लुंगी)

अधोवायु-पुं० [सं०] अपान वायु। गुदा की वायु। पाद।

अध्यक्ष-पुं० [सं०] १. स्वामी। मालिक। २ नायक। मुखिया। ३. अधिष्ठाता। ४. सभा-संस्था आदि का प्रधान। (चेयरमैन)

अध्यक्षता-स्त्री० [सं०] १. अध्यक्ष होने की क्रिया या भाव। २. अध्यक्ष का पद या स्थान।

अध्ययन-पुं० [सं०] पठन-पाठन। पढ़ाई।

अध्ययनावकाश-पुं० [सं०] वह अवकाश या छुट्टी जो किसी कर्मचारी या अधिकारी को किसी विषय का विशेष रूप से अध्ययन करने के लिए मिले।

अध्यर्थ-पुं० [सं०] वह वस्तु जिसपर अधिकार जताया जाय। (क्लेम)

अध्यर्थन-पुं० [सं०] किसी वस्तु पर स्वत्व या अधिकार जताना। (क्लेम)

अध्यवसाय-पुं० [सं०] [कर्त्ता-अध्यवसायी] १. लगातार उद्योग। दृढ़तापूर्वक किसी काम में लगा रहना। २. उत्साह।

अध्यात्म-पुं० [सं०] आत्मा और ब्रह्म का विवेचन। ज्ञान-तत्त्व। आत्म-ज्ञान।

अध्यात्मवाद-पुं० [सं०] ब्रह्म और आत्मा को मुख्य मानने का सिद्धान्त।

अध्यापक-पुं० [सं०] [स्त्री० अध्यापिका] शिक्षक। गुरु। पढ़ानेवाला। उस्ताद।

अध्यापकी-स्त्री० [सं० अध्यापक] अध्यापन या पढ़ाने का काम। मुदर्रिसी।

अध्यापन-पुं० [सं०] शिक्षण। पढ़ाने का कार्य।

अध्याय-पुं० [सं०] ग्रंथ का खंड या विभाग जिसमें किसी विषय के विशेष अंग या विषय का विवेचन हो। प्रकरण।

अध्यास-पुं० [सं०] मिथ्या ज्ञान।

अध्यासन-पुं० [सं०] १. उपवेशन। बैठना। २. आरोपण।

अध्याहार-पुं० [सं०] १. तर्क-वितर्क। विचार। बहस। २. वाक्य पूरा करने

के लिए उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना। ३. अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करने की क्रिया।

अध्यूढ़ा-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले। ज्येष्ठा पत्नी।

अध्वर्यु-पुं० [सं०] यज्ञ में यजुर्वेद का मंत्र पढ़नेवाला ब्राह्मण।

अनंग-वि० [सं०] [क्रि० अनंगना] बिना शरीर का। देह-रहित।
पुं० कामदेव।

अनंगना*-अ० [सं० अनंग] शरीर की सुधि छोड़ना। सुध-बुध भुलाना।

अनंगी-वि० [सं० अनंगिन्] [स्त्री० अनंगिनी] अंग-रहित। बिना देह का।
पुं० १ ईश्वर। २. कामदेव।

अनंत-वि० [सं०] १. जिसका अन्त या पार न हो। असीम। २ बहुत अधिक या बहुत बड़ा। ३. अविनाशी।
पु० १ विष्णु। २. शेषनाग। ३ लक्ष्मण। ४ बाँह पर पहनने का एक गहना।

अनंतर-क्रि० वि० [सं०] १. पीछे। उपरान्त। बाद। २. निरन्तर। लगातार।

अनंद*-पु० दे० 'आनंद'।

अनंदना-अ० [सं० आनन्द] आनंदित होना। खुश होना। प्रसन्न होना।

अन-क्रि० वि० [सं० अन्] बिना। वगैर।
वि० [सं० अन्य] अन्य। दूसरा।

अनऋतु-स्त्री० [सं० अन्+ऋतु] १. विरुद्ध ऋतु। बे-मौसिम। २. ऋतु-विपर्य्यय। ३. ऋतु के विरुद्ध कार्य।

अनक*-पुं० दे० 'आनक'।

अनकना*-स० [सं० आकर्णन] १. सुनना। २ चुपचाप या छिपकर सुनना।

अनकहा-वि० [सं० अन् = नहीं + हिं कहना] [स्त्री० अनकही] बिना कहा हुआ। अकथित। अनुक्त।
मुहा०-अनकही देना=चुपचाप रहना।

अनख-स्त्री० [सं० अन्+अक्ष] १. क्रोध। कोप। २. ग्लानि। खिन्नता। ३. ईर्ष्या।
वि० [सं० अ+नख] बिना नख का।

अनखना*-अ० [हिं अनख] १. क्रोध करना। २ रुष्ट होना।

अनखा-पुं० [हिं० अनख] काजल की बिन्दी। (कुदृष्टि से बचाने के लिए)

अनखाना†-अ० दे० 'अनखना'।
स० अप्रसन्न करना। नाराज करना।

अनखाहट-स्त्री० दे० 'अनख'।

अनखी*-वि० [हिं० अनख] १. जो जल्दी रुष्ट हो जाय। २ क्रोधी।

अन-खुला-वि० [हिं० अन+खुलना] बिना खुला। बन्द।

अनखौहाँ*-वि० [हिं० अनख] [स्त्री० अनखौंही] १. क्रोध से भरा। कुपित। २ चिड़चिड़ा। ३ क्रोध दिलानेवाला। ४ अनुचित। बुरा।

अनगढ़-वि० [सं० अन+हिं० गढ़ना] १. बिना गढ़ा हुआ। २ जिसे किसी ने बनाया न हो। स्वयंभू। ३. बेडौल। भद्दा। बेढंगा। ४. उजड्ड। अक्खड़।

अनगन*-वि० दे० 'अनगिनत'।

अनगवना*-अ० [हिं० अन+गमन] देर लगाना। विलम्ब करना।

अनगाना*-अ० दे० 'अनगवना'।

अनगिनत-वि० [हिं० अन+गिनना] जो गिना न जा सके। बहुत अधिक।

अनगिना-वि० [सं० अन+हिं० गिनना] १. जो गिना न गया हो। २. बहुत अधिक।

अनघ-पुं० [सं०] वह जो अघ या पाप न हो।
वि० पाप-रहित। निर्दोष।

अनघैरी-वि० दे० 'अनिमंत्रित'।

अनघोरी*-[?] १. चुपके से। चुपचाप। २. अचानक। अकस्मात्।

अन-चाहा-वि० जिसकी चाह या इच्छा न की गई हो।

अनजान-वि० [सं० अन+हिं० जानना] १. अज्ञानी। नादान। नासमझ। २. अपरिचित। अज्ञात।

अन-जन्मा-वि० १. जिसने जन्म न लिया हो। (जैसे-ईश्वर) २. जिसका अभी जन्म न हुआ हो।

अनट*-पु० [सं० अनृत] १. उपद्रव। २. अत्याचार।

अनत-वि० [सं०] बिना झुका। सीधा। क्रि० वि० दूसरी जगह।

अनति-वि० [सं०] कम। थोड़ा। स्त्री० नम्रता का अभाव। अहंकार।

अनदेखा-वि० [सं०अ न+हिं० देखना] [स्त्री० अनदेखी] बिना देखा हुआ।

अनद्यतन-वि० दे० दिनातीत'।

अनधिकार-पुं० [सं०] १. अधिकार का अभाव। अधिकार न होना। २. बे-बसी। लाचारी। ३. अयोग्यता। यौ० अनधिकार चर्चा=जिस विषय का ज्ञान न हो, उसमें बोलना।

अनधिकारी-वि० [सं०] [स्त्री० अनधिकारिणी] १. जिसे अधिकार न हो। २. अयोग्य। अपात्र।

अनधिकृत-वि० [सं०] १. जिसपर अधिकार न किया गया हो; अथवा अधिकार न हुआ हो। २. जिसके सम्बन्ध में अधिकार प्राप्त न हो।

अनध्याय-पुं० [सं०] १. वह दिन जो शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने का न हो। (अमावस्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा।)

अनधियुक्त-वि० [सं०] १. जो किसी काम में लगा न हो। २. जिसकी जीविका न लगी हो। खाली बैठा हुआ।

अननुरूप-वि० [सं०] १. जो किसी के अनुरूप न हो। 'अनुरूप' का उलटा। २. जो किसी की मर्यादा को देखते हुए उसके अनुरूप या उपयुक्त न हो।

अनन्नास-पुं० [पुर्त० अनानास] एक छोटा पौधा जिसके फल खट-मीठे होते हैं।

अनन्य-वि० [सं०] [स्त्री० अनन्या] अन्य से संबंध न रखनेवाला। एक ही में लीन। एकनिष्ठ।

अनपत्य-वि० [सं०] जिसे अपत्य या सन्तान न हो। निस्सन्तान।

अनपच-पुं० [सं० अन+पचना] भोजन न पचना। अजीर्ण। बद-हजमी।

अनपढ़- वि० [हिं० अन+पढ़ना] जो पढ़ा-लिखा न हो। अशिक्षित।

अनपराध-वि० [सं०] जिसका कोई अपराध न हो। निर्दोष।

अनपाकर्म-पुं० [सं०] कोई प्रतिज्ञा या संविदान करके उसके अनुसार काम न करना। निश्चय तोड़ना।

अनपेक्ष-वि० [सं०] १ जिसे किसी की अपेक्षा या आवश्यकता न हो। २. जो किसी की चिन्ता या परवाह न करे। ला-परवाह।

अनपेक्षा-स्त्री० [सं०] १. अपेक्षा का न होना। २. दे० 'उपेक्षा'।

अनबन-स्त्री० [हिं० अन+हिं० बनना] बिगाड़। विरोध। खटपट।

अनबिधा-वि० [सं० अन्+विद्ध] बिना बेधा या छेद किया हुआ। जैसे— अनबिधा मोती।

अन-बूझ*-वि० १. जिसे समझ-बूझ न हो। अज्ञान। २. जो समझ में न आ सके।

अनबोल(ना)-वि० [सं० अन् + हिं० बोलना] १. न बोलनेवाला। मौन। २. जो अपना सुख-दुःख न कह सके।

अन-बोला-पुं० (किसी से) बोल-चाल या बात-चीत बन्द हो जाना।

अनभल-पुं० [सं० अन्+हिं भला] बुराई। हानि। अहित।

अनभला-वि० [हिं० अन+भला] बुरा। खराब।

पुं० दे० 'अनभल'।

अनभिज्ञ-वि० [सं०] [स्त्री० अनभिज्ञा संज्ञा अनभिज्ञता] १. अज्ञ। अनजान। मूर्ख। २. अपरिचित। नावाकिफ।

अनभीष्ट-वि० [सं०] जो अभीष्ट न हो। जिसकी चाह या इच्छा न हो।

अन-भेदी-वि० [हिं० अन+भेद] १ जो भेद या रहस्य न जाने। २. पराया।

अनभो*-पुं० [सं० अन्+भव=होना] १ अचंभा। अचरज। २. अनहोनी बात। वि० १. अपूर्व। अलौकिक। २. अद्भुत। विलक्षण।

अनभोरी*-स्त्री० [हिं० भोर=भुलावा] भुलावा। चकमा।

अनभ्यस्त-वि० [सं०] १. जिसका अभ्यास न किया गया हो। २. जिसने अभ्यास न किया हो। अपरिपक्व।

अनमना-वि० दे० 'अन्यमनस्क'।

अन-माया-वि [हिं० अन+माप (माप)] जो नापा न जा सके। जिसकी थाह न हो।

अनमिल*-वि० [हिं० अन=नहीं+हिं० मिलना] बेमेल। बेजोड़। असंबद्ध।

अनमीलना*-स० [सं० उन्मीलन] आँखें खोलना।

अनमेल-वि० [हिं० अन+हिं० मेल] १. बेजोड़। असंबद्ध। २. बिना मिलावट का। विशुद्ध।

अनमोल-वि० [सं० अन+हिं० मोल] १ अमूल्य। २ मूल्यवान्। बहुमूल्य। कीमती। ३ सुन्दर। ४. उत्तम।

अनय-पुं० [सं०] १. अमंगल। विपद्। २. अनीति। अन्याय।

अनयास*-क्रि० वि० दे० 'अनायास'।

अनरना*-स० [सं० अनादर] अनादर करना। अपमान करना।

अनरस-पुं० [सं० अन्=नहीं+सं० रस] रसहीनता। शुष्कता।

अनरसना*-अ० [हिं० अनरस] १ दुःखी या उदास होना। २ अप्रसन्न होना।

अनरसा*-वि० [सं० अन+रस] १ अनमना। २. मांदा। बीमार। रोगी।

अनराता*-वि० [सं० अन+हिं० राता] १ बिना रँगा। २ प्रेम में न पड़ा हुआ।

अनरीति-स्त्री० [सं० अन+रीति] १ बुरी रीति। कुरीति। २ अनुचित व्यवहार।

अनरूप*-वि० [सं० अन्=बुरा+रूप] १. कुरूप। भद्दा। २. अ-समान। असदृश।

अनर्गल-वि० [सं०] १. बेरोक। बेधड़क। २. व्यर्थ। अंडबंड। ३. लगातार।

अनर्घ-वि० [सं०] १ बहुमूल्य। कीमती। २ कम क़ीमत का। सस्ता।

अनर्जित-वि० [सं०] जो अर्जित न हो। जो कमाया न गया हो। जैसे—अनर्जित आय या धन।

अनर्थ-पुं० [सं०] १. विरुद्ध या उलटा अर्थ। २ बहुत बुरी और अनुचित बात। भारी अन्याय। ३. वह धन जो अधर्म से प्राप्त किया जाय।

अनर्थक-वि० [सं०] १. निरर्थक।

अर्थ-रहित । २. व्यर्थ । बेफायदा ।

अनर्थकारी-वि० [सं०] [स्त्री० अनर्थकारिणी] १. उलटा मतलब निकालनेवाला । २. अनर्थ या अनुचित काम करनेवाला ।

अनल-पुं० [सं०] अग्नि । आग ।

अनलस-वि [सं०] १. आलस्य-रहित । फुर्तीला । २ चैतन्य ।

अन-लायक*-वि० दे० 'नालायक' ।

अन-लेखा-वि० [हिं० अन+लेखा] जिसका लेखा या हिसाब न हो सके । अनगिनत । असख्य ।

अनल्प-वि० [सं०] जो अल्प या थोड़ा न हो । बहुत । अधिक ।

अनवकाश-पुं० [सं०] अवकाश न होना । अवकाश का अभाव ।

अनवच्छिन्न-वि० [सं०] १ अखंडित । अटूट । २ जुड़ा हुआ । संयुक्त ।

अनवद्य-वि० [सं०] दोष-रहित । निर्दोष ।

अनवधान-पुं० [सं०] [संज्ञा अनवधानता] अवधान का अभाव । असावधानी । लापरवाही ।

अनवरत-क्रि० वि० [सं०] निरंतर । सतत । लगातार ।

अनवस्था-स्त्री० [सं०] १. ठीक अवस्था या स्थिति न होना । २. अव्यवस्था । ३. आतुरता । अधीरता ।

अनवस्थिति-स्त्री० [सं०] १. चंचलता । २. अधीरता । ३. आधार-हीनता ।

अनवाद*-पुं० [सं० अन्=बुरा+वाद=वचन] बुरा वचन । कटु भाषण ।

अनशन-पुं० [सं०] भोजन न करना । खाना छोड़ देना । निराहार रहना ।

अन-सहन-वि० [हिं० अन+सहना] जो सह न सके । असहन-शील ।

अनस्तित्व-पुं० [सं०] अस्तित्व का अभाव । अस्तित्व न होना ।

अनहद-नाद-पुं० दे० 'अनाहत' ।

अनहित-पुं० [हिं० अन+हित] १ हित या भलाई का उलटा । बुराई । २. अशुभ कामना ।

अनहितू-वि० [हिं० अनहित] अनहित चाहनेवाला । अशुभ या अमंगल चाहनेवाला ।

अनहोना-वि० [सं० अन् = नहीं + हिं० होना] न होनेवाला । अलौकिक ।

अनाकानी*-स्त्री० दे० 'आनाकानी' ।

अनाकार-वि० [सं०] जिसका कोई आकार न हो ।

अनाक्रमण-पुं० [सं०] आक्रमण न करना । जैसे—अनाक्रमण की सन्धि ।

अनागत-वि० [सं०] १. जो न आया हो । अनुपस्थित । २. भावी । होनहार । ३ अपरिचित । अज्ञात । ४ अनादि । ५. अद्भुत । विलक्षण ।

क्रि० वि० अचानक । सहसा ।

अनाचरण-पुं० [सं०] १ आचरण न करना । २ जो करना हो, वह न करना । करने का काम छोड़ देना । (ओमिशन)

अनाज-पुं० [सं० अन्नाद्य] अन्न । धान्य । दाना । गल्ला ।

अनाड़ी-वि० [सं० अनार्य ?] १ नासमझ । नादान । अनजान । २ जो निपुण न हो । अकुशल । अदक्ष ।

अनाथ-वि० [सं०] १. जिसका कोई नाथ न हो । बिना मालिक का । २ जिसका कोई पालन करनेवाला न हो ।

अनाथालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहां असहाय दीन-दुखियों का पालन हो ।

अनादर-पुं० [सं०] [वि० अनादृत,

अनादरणीय] १. आदर न होना। निरादर। अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। २. एक काव्यालंकार जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा करके प्राप्त वस्तु का अनादर किया जाता है।

अनादि-वि० [सं०] जिसका आदि न हो। जो सदा से हो।

अनाना*-स० [सं० आनयन] मँगाना।

अनाप्त-वि० [सं०] १. अप्राप्त। अलब्ध। २. अविश्वस्त। ३. असत्य। ४. अकुशल। अनाड़ी। ५. अनात्मीय। अबंधु।

अनाम-वि० [सं० अनामन्] [स्त्री० अनामा] १. बिना नाम का। २. अप्रसिद्ध।

अनामिका-स्त्री० [सं०] कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली।

अनायत्त-वि० [सं०] १ जो वश में न हुआ हो। २. स्वतंत्र। स्वाधीन।

अनायास-क्रि० वि० [सं०] १ बिना आयास या प्रयास के। बिना परिश्रम। २ अकस्मात। अचानक।

अनार-पुं० [फा०] एक पेड़ और उसके फल का नाम। दाड़िम।

अनारदाना-पुं० [फा०] खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना।

अनारी*-वि० दे० 'अनाड़ी'।

अनार्य-पुं० [सं०] १ वह जो आर्य जाति का न हो। २. म्लेच्छ। वि० अश्रेष्ठ। हीन। बुरा।

अनावर्तक-वि० [सं०] (व्यय, दान, आदि) जिसका आवर्त्तन न हो। जो एक ही बार होकर रह जाय, बार बार न हो। (नान-रेकरिंग)

अनावश्यक-वि० [सं०] जिसकी आवश्यकता न हो। अप्रयोजनीय। गैर-जरूरी।

अनावृत-वि० [सं०] १. जो ढका न हो। खुला। २. जो घिरा न हो।

अनावृष्टि-स्त्री० [सं०] वर्षा का अभाव। अवर्षा। सूखा।

अनाश्रमी-वि० [सं० अनाश्रमिन्] गार्हस्थ्य आदि चारों आश्रमों से रहित। आश्रम-भ्रष्ट।

अनाश्रित-वि० [सं०] जिसे सहारा न हो। आश्रय-रहित। निरवलम्ब।

अनासक्त-वि० [सं०] जो आसक्त न हो। निर्लेप।

अनासक्ति-स्त्री० [सं०] १. आसक्ति या अनुराग न होना। २. अलग दूर या उदासीन रहना।

अनासीन-वि० [सं०] अपने आसन या स्थान से हटा या हटाया हुआ।

अनाहक*-क्रि० वि० दे० 'नाहक'।

अनाहत-वि० [सं०] जिसपर आघात न हुआ हो। पुं० १ शब्द-योग में वह शब्द जो अँगूठों से दोनों कानों को बन्द करने से सुनाई देता है। २. हठ योग में शरीर के अन्दर के छः चक्रों में से एक।

अनाहार-पुं० [सं०] [वि० अनाहारी] १. भोजन का त्याग। भोजन न करना। २. जिसने कुछ खाया न हो।

अनाहूत-वि० [सं०] जो बुलाया न गया हो। बिना बुलाया हुआ।

अनिंद्य-वि० [सं०] १ जो निन्दा के योग्य न हो। निर्दोष। २ उत्तम। अच्छा।

अनिच्छा-स्त्री० [सं०] इच्छा का अभाव। जी न चाहना।

अनित्य-वि० [सं०] [भाव० अनित्यता] १. जो सदा न रहे। अस्थायी। क्षण-भंगुर। २. नश्वर। ३. जो स्वयं कार्य-रूप हो और जिसका कोई कारण हो। ४ असत्य। झूठा।

अनिप*-पुं० दे० 'सेनापति'।

अनिमेष-क्रि० वि० [सं०] १ बिना पलक गिराये। एक टक। २ निरंतर। लगातार।

अनियंत्रित-वि० [सं०] १. प्रतिबंध-रहित। बिना रोक-टोक का। २. मन-माना।

अनियंत्रित राज्य-पुं० [सं०] वह राज्य जिसका सारा अधिकार किसी एक व्यक्ति (राजा) के हाथ में हो और जिसपर प्रजा के प्रतिनिधियों का कोई नियंत्रण न हो। (एब्साल्यूट मोनर्की)

अनियमित-वि० [सं०] १. नियम रहित। बे-कायदा। २ अनिश्चित। अनिर्दिष्ट।

अनियारा*-वि [सं० अणि=नोक+ हिं० आर (प्रत्य०)] [स्त्री० अनियारी] १ नुकीला। पैना। २ धारदार।

अनिरुद्ध-वि० [सं०] जो निरुद्ध या रुद्ध न हो। जिसके आगे कोई रुकावट न हो। बिना रोका हुआ।

पुं० श्रीकृष्ण के पोते और प्रद्युम्न के लड़के जिन्हें ऊषा व्याही थी।

अनिर्दिष्ट-वि० [सं०] १ जो निर्दिष्ट न हुआ हो। जिसका निर्देश न हुआ हो। २. अनिश्चित।

अनिर्बंध-वि० [सं०] १ जिसके लिए कोई बन्धन न हो। २. स्वतंत्र।

अनिर्वच-वि० दे० 'अनिर्वचनीय'।

अनिर्वचनीय-वि० [सं०] जो वचन द्वारा बतलाया न जा सके। जो कहा न जा सके। अकथनीय।

अनिर्वाच्य-वि० [सं०] १. जो निर्वाचन के योग्य न हो। जिसका चुनाव न हो सके। जो चुना न जा सके। २. दे० 'अनिर्वचनीय'।

अनिर्वाप्य-वि० [सं०] जिसका निर्वापण या शमन हो सके। जैसे-अनिर्वाप्य ज्वाला।

अनिल-पुं० [सं०] वायु। पवन। हवा। यौ०-अनिल-कुमार=हनुमान।

अनिवार्य-वि [सं०] [भाव० अनिवार्यता] १. जिसका निवारण न हो। २. जो हटाया या छोड़ा न जा सके। ३. जिसे लेना, रखना या मानना आवश्यक हो। (कम्पल्सरी)

अनिश्चित-वि० [सं०] १ जो निश्चित न हो। अनियत। अनिर्दिष्ट। २ आकस्मिक रूप से बीच में आ जानेवाला। (कन्टिन्जेन्ट)

अनिष्ट-वि० [सं०] जो इष्ट न हो। अनभिलषित।

पुं० १. अमंगल। अहित। २. हानि।

अनी-स्त्री० [सं० अणि] १ नुकीली चीज का अगला भाग। नोक।

स्त्री० [सं० अनीक] १ समूह। झुंड। २ सेना। फौज।

स्त्री० [हिं० आन] मन मे होनेवाली लज्जा। ग्लानि।

अनीक-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. सेना। फौज। ३. युद्ध। लड़ाई।

*वि० [हिं० अ+नीक] जो 'नीक' (अच्छा) न हो। बुरा। खराब।

अनीठ*-वि० दे० 'अनिष्ट'।

अनीति-स्त्री० [सं०] १. नीति, न्याय, औचित्य आदि का न होना। २.

अन्याय। अन्धेर। ३. अत्याचार।

अनीश-वि० [सं०] १. जिसका कोई ईश्वर या स्वामी न हो। २. सबसे बड़ा।

अनीश्वरवाद-पुं० [सं०] १. ईश्वर का अस्तित्व न मानना। नास्तिकता। २. मीमांसा।

अनु-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर ये अर्थ बढ़ाता है- (क) पीछे; जैसे—अनुगामी। (ख) समान या सदृश; जैसे—अनुसार, अनुरूप, अनुकूल। (ग) संग या साथ; जैसे—अनुपान। (घ) हर एक; जैसे-अनुदिन। (च) बार बार; जैसे-अनुशीलन।

अनुकंपा-स्त्री० [सं०] १ दया। कृपा। अनुग्रह। २. सहानुभूति। हमदर्दी।

अनुजीवी-पुं० [सं० अनुजीविन्] [स्त्री० अनुजीविनी] १ आश्रित। २ सेवक। नौकर।

अनुकरण-पुं० [सं०] [वि० अनुकरणीय, अनुकृत] १. देखा-देखी कार्य। नकल। २. वह जो पीछे हो या आवे।

अनुकलन-पुं० [सं०] दूसरे की कोई बात लेकर और उसे अपने अनुकूल बनाकर ग्रहण करना। (एडाप्टेशन)

अनुकूल-वि० [सं०] १. अनुरूप। मुआफिक। २. पक्ष में होनेवाला। सहायक। ३. विचारों आदि में साथ देने-या मेल खानेवाला। ४. प्रसन्न।

पुं० १ वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री से सम्बन्ध रखे। २ एक काव्यालंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है।

अनुकूलता-स्त्री० [सं०] अनुकूल होने की क्रिया या भाव।

अनुकूलना-अ० [सं० अनुकूलन] १. अनुकूल या मुआफिक होना। २. हितकर होना। ३. प्रसन्न होना।

अनुकृत-वि० [सं०] जिसका अनुकरण किया गया हो।

अनुकृति-स्त्री० [सं०] १ दूसरे को देखकर किया हुआ कार्य। नकल। २. वह काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु का कारणांतर से दूसरी वस्तु के अनुसार होने का वर्णन हो।

अनुक्त-वि० [सं०] [स्त्री० अनुक्ता] बिना कहा हुआ। अकथित।

अनुक्रम-पुं० [सं०] क्रम। सिलसिला।

अनुक्रमणिका-स्त्री० [सं०] १ क्रम। सिलसिला। २ क्रम से दी हुई सूची।

अनुगत-वि० [सं०] [संज्ञा अनुगति [स्त्री० अनुगता] १. अनुगामी। अनुयायी। २ अनुकूल। मुआफिक।
पुं० सेवक। नौकर।

अनुगमन-पुं० [सं०] १ पीछे चलना। अनुसरण। २ समान आचरण। ३ विधवा का मृत पति के साथ जल मरना।

अनुगामिता-स्त्री० [सं०] १ अनुगामी होने की क्रिया या भाव। २ अनुगमन।

अनुगामी-वि० [सं० अनुगामिन्] [स्त्री० अनुगामिनी] १ पीछे चलनेवाला। २ समान आचरण करनेवाला। ३ आज्ञाकारी।

अनुगृहीत-वि० [सं०] [स्त्री० अनुगृहीता] १ जिसपर अनुग्रह हुआ हो। २. उपकृत। कृतज्ञ।

अनुग्रह-पुं० [सं०] १. कृपा। दया। २. अनिष्ट-निवारण। ३. सरकारी रिआयत।

अनुग्राहक-वि० [सं०] [स्त्री० अनुग्राहिका] अनुग्रह करनेवाला। कृपालु।

अनुचर-पुं०[सं०] १. दास। नौकर। २. सहचारी। साथी।

अनुचित-वि० [सं०] १. जो उचित न हो। नामुनासिब। २. बुरा। खराब।

अनुज-वि० [सं०] जो पीछे जनमा हो। पुं० [स्त्री० अनुजा] छोटा भाई।

अनुजीवी-पुं० [सं० अनुजीविन्] [स्त्री० अनुजीविनी] १. आश्रित। २. सेवक। नौकर।

अनुज्ञप्त-वि० [सं०] जिसके लिए अनुज्ञा या स्वीकृति मिल चुकी हो।

अनुज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] कोई काम करने की अनुज्ञा या स्वीकृति देने की क्रिया या भाव। (सैंक्शन)

अनुज्ञा-स्त्री०[सं०] १. आज्ञा। हुकम। २ वह अनुमति या स्वीकृति जो किसी बड़े या अधिकारी से कोई काम करने के लिए मिले। इजाजत। (सैंक्शन) ३. एक काव्यालंकार जिसमें किसी बुरी चीज में भी कोई अच्छी बात देखकर उसे पाने की इच्छा का वर्णन होता है।

अनुज्ञापन-पुं० [सं०] अनुज्ञा देने की क्रिया या भाव। अनुज्ञा देना।

अनुज्ञापित-वि० दे० अनुज्ञप्त।

अनुताप-पुं० [सं०] [वि० अनुतप्त] १ तपन। दाह। जलन। २ दुःख। रंज। ३. पछतावा। अफसोस।

अनुतोष-पुं० [सं०] १. किसी काम से होनेवाला संतोष। २. वह धन आदि जो किसी को तुष्ट या प्रसन्न करने के लिए दिया जाय। (ग्रैटिफिकेशन)

अनुतोषण-पुं० [सं०] १ किसी का अनुतोष करने की क्रिया या भाव। किसी को प्रसन्न या संतुष्ट करना। २ किसी को कुछ देकर अपने अनुकूल करना। (ग्रैटिफिकेशन)

अनुत्तर-वि० [सं०] जो उत्तर न दे सके। निरुत्तर। पुं० [वि० अनुत्तरित] उत्तर का अभाव। उत्तर या जवाब न देना।

अनुत्तरित-वि० [सं०] जिसका उत्तर न दिया गया हो।

अनुत्तीर्ण-वि० [सं०] जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ हो।

अनुत्प्रेक्षण-पुं० [सं०] १. उत्प्रेक्षण न करना। २. ऐसे सामान्य अपराध या अनुचित बात पर ध्यान न देना जिसपर विधि के अनुसार ध्यान देना आवश्यक न हो। (नान-कागिनिजेन्स)

अनुदात्त-वि० [सं०] १. छोटा। तुच्छ। २ नीचा (स्वर)। ३. लघु। (उच्चारण) पुं० स्वर के तीन भेदों में से एक जो उदात्त या ऊँचा नहीं, बल्कि कुछ नीचा होता है।

अनुदान-पुं० [सं०] राज्य, शासन आदि की ओर से किसी संस्था आदि को किसी विशेष कार्य के लिए सहायता के रूप में मिलनेवाला धन। (ग्रान्ट)

अनुदार-वि० [सं०] १. जो उदार न हो। संकीर्ण। २. कृपण। कंजूस।

अनुदृष्टि-स्त्री० [सं०] बहुत-सी वस्तुओं में से प्रत्येक वस्तु को उसके ठीक रूप में और सब वस्तुओं के अनुपात का ध्यान रखते हुए देखने की क्रिया या भाव। (पर्सपेक्टिव)

अनुधावन-पुं० [सं०] पीछे चलना। अनुसरण करना।

अनुनय-पुं० [सं०] १ विनय। विनती। प्रार्थना। २ मनाना।

अनुपम-वि० [सं०] [संज्ञा अनुपमता]

१. उपमा-रहित । बेजोड़ । २. बहुत अच्छा ।

अनुपमेय-वि० दे० 'अनुपम' ।

अनुपयुक्त-वि० [सं०] [भाव० अनुपयुक्तता] जो उपयुक्त या योग्य न हो ।

अनुपयोगिता-स्त्री० [सं०] उपयोगिता का न होना । निरर्थकता ।

अनुपयोगी-वि० [सं०] बेकाम । व्यर्थ का ।

अनुपस्थित-वि० [सं०] जो सामने मौजूद न हो । अविद्यमान । गैर-हाजिर । (ऐबसेन्ट)

अनुपस्थिति-स्त्री० [सं०] उपस्थित, वर्त्तमान या मौजूद न होने का भाव । सामने न होना । गैर-मौजूदगी । (एब्सेन्स)

अनुपात-पुं० [सं०] १. गणित की त्रैराशिक क्रिया । २ मान, माप, उपयोगिता आदि की तुलना के विचार से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से रहनेवाला सम्बन्ध या अपेक्षा । तुलनात्मक स्थिति । (प्रोपोर्शन)

अनुपान-पुं० [सं०] वह वस्तु जो औषध के साथ या ऊपर से खाई जाय ।

अनुपाय-वि० [सं०] जिसके पास या जिसका कोई उपाय न हो ।

अनुपालन-पुं० [सं०] १. किसी मिली हुई आज्ञा का ठीक पालन । २. किसी पत्र या आज्ञा को उसके ठीक स्थान तक पहुँचाने का काम । (तामील, सरविस)

अनुप्राणन-पुं० [सं०] [वि० अनुप्राणित] (किसी में) प्राण डालना । जीवन का संचार करना ।

अनुप्रापण-पुं० [सं०] [वि० अनुप्राप्त] (कर, दंड आदि के रूप में) प्राप्तव्य धन इकट्ठा करना या उगाहना । वसूली करने की क्रिया या भाव । वसूली ।

अनुप्राप्त-वि० [सं०] जिसका अनुप्रापण हुआ हो । इकट्ठा किया या उगाहा हुआ । वसूल किया हुआ ।

अनुप्राप्ति-स्त्री० [सं०] (कर, दंड आदि के रूप में) प्राप्तव्य धन इकट्ठा करने की क्रिया या भाव । वसूली ।

अनुप्रास-पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार बार आता है । वर्ण-वृत्ति । वर्ण-मैत्री ।

अनुबंध-पुं० [सं०] १. बाँधनेवाली चीज या सम्बन्ध । बन्धन । २. किसी विषय की सब बातों का विवेचन । ३. कोई काम करने के लिए दो पक्षों में होनेवाला ठहराव या समझौता । (एग्रिमेन्ट)

अनुबद्ध-वि० [सं०] १. बंधा हुआ । २. जिसके संबंध में कोई अनुबन्ध या समझौता हुआ हो ।

अनुबोधक-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी को कुछ स्मरण रखने के लिए दिया जाय । जैसे-किसी सभा मंडली आदि के उद्देश्यों और व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाला पत्र या पुस्तिका । (मेमोरेंडम)

अनुबोधन-पुं० [सं०] किसी को कोई बात स्मरण कराने की क्रिया या भाव ।

अनुभक्त-वि० [सं०] जो सब लोगों को उनकी आवश्यकता का ध्यान रखकर उनके अंश या हिस्से के रूप में दिया जाय । (रैशन)

अनुभक्तक-पुं० [सं०] वह जो लोगों को उनकी आवश्यकता का ध्यान रखते हुए उनके अंश या हिस्से के रूप में दिया गया हो । (रैशन्ड)

अनुभव-पुं० [सं०] [वि० अनुभवी] वह ज्ञान जो कोई काम या परीक्षा करके से प्राप्त हो ।

अनुभवी-वि [सं० अनुभविन्] अनुभव रखनेवाला। जिसे अनुभव हुआ हो।

अनुभाजन-पुं० [सं०] वह क्रिया जिसमें कोई वस्तु लोगों की आवश्यकता का ध्यान रखते हुए उनके अंश या हिस्से के अनुसार उन्हें दी जाती है। (रैशनिंग)

अनुभाव-पुं० [सं०] १. महिमा। बड़ाई। २ काव्य में रस के अन्तर्गत चित्त का भाव प्रकट करनेवाली कटाक्ष, रोमांच आदि चेष्टाएँ।

अनुभूत-वि० [सं०] १. जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो। २ परीक्षित। तजरबा किया हुआ।

अनुभूति-स्त्री० [सं०] १ अनुभव। २ मन में होनेवाला ज्ञान। परिज्ञान।

अनुमान-पुं० [सं०] [वि० अनुमित] १ अपने मन से यह समझना कि ऐसा हो सकता है या होगा। अटकल। अंदाजा। २ न्याय में प्रमाण के चार भेदों में से वह भेद जिसमें प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना होती है।

अनुमानना*-स० [सं० अनुमान] अनुमान करना। अंदाजा लगाना।

अनुमित-वि० [सं०] अनुमान किया हुआ।

अनुमिति-स्त्री० [सं०] अनुमान।

अनुमेय-वि० [सं०] अनुमान के योग्य।

अनुमोदन-पुं० [सं०] १. प्रसन्नता प्रकट करना। २ किसी के किये हुए काम या सामने रक्खे हुए सुझाव को ठीक मानकर अपनी स्वीकृति देना या उसका समर्थन करना। (एप्रूवल)

अनुमोदित-वि० [सं०] १. (प्रस्ताव) जिसका किसी ने अनुमोदन किया हो। २ (बात या विचार) जिसे किसी उच्च अधिकारी ने ठीक मान लिया हो और जिसके अनुसार कार्य करने की स्वीकृति दे दी हो।

अनुयाचक-पुं० [सं०] वह जो किसी को समझा-बुझाकर उससे अपने किसी काम के लिए कहे। अनुयाचन करनेवाला। (केन्वेसर)

अनुयाचन-पुं० [सं०] किसी को समझा-बुझाकर अपने अनुकूल करते हुए उससे कोई काम करने के लिए कहना। (कैन्वेसिंग) जैसे-मत या वोट के लिए, अथवा अपना माल बेचने के लिए अनुयाचन।

अनुयायी-वि० [सं० अनुयायिन्] [स्त्री० अनुयायिनी] १ किसी के पीछे-पीछे चलनेवाला। अनुगामी। २. अनुकरण करनेवाला।

पुं० अनुचर। सेवक। दास।

अनुयोग-पुं० [सं०] कोई बात जानने के लिए कुछ पूछना या उसपर आपत्ति करना। किसी बात की सत्यता में सन्देह प्रकट करना। (क्वेश्चन)

अनुरंजन-पुं० [सं०] [वि० अनुरंजित] १. अनुराग। प्रीति। २. दिल-बहलाव।

अनुरक्त-वि० [सं०] १. जिसके मन में किसी के प्रति अनुराग हुआ हो। २ किसी की ओर झुका या ढला हुआ।

अनुरक्ति-स्त्री० [सं०] १ अनुरक्त होने की क्रिया या भाव। २. किसी के प्रति श्रद्धा या सद्भाव होना। अनुराग। प्रेम। (एफेक्शन)

अनुरणन-पुं० [सं०] [वि० अनुरणित] किसी चीज का बोलना या बजना।

अनुराग-पुं० [सं०] १ प्रीति। प्रेम। २. दे० 'अनुरक्ति'।

अनुरागी-वि० [सं० अनुरागिन्]

[स्त्री॰ अनुरागिनी] अनुराग रखनेवाला।

अनुराधना*-स॰ [सं॰ अनुराधन] विनय करना। मनाना।

अनुरूप-वि॰ [सं॰] १. तुल्य रूप का। सदृश। समान। २. योग्य। उपयुक्त।

अनुरूपता-स्त्री॰ [सं॰] किसी के अनुरूप होने की क्रिया या भाव। जैसा कोई और हो, वैसा ही या उसके समान होना। (एग्रिमेन्ट)

अनुरूपना*-अ॰ [हिं॰ अनुरूप] किसी के अनुरूप होना।

स॰ किसी को अपने अनुरूप करना।

अनुरोध-पुं॰ [सं॰] १. रुकावट। बाधा। २. प्रेरणा। उत्तेजना। ३. विनयपूर्वक किसी बात के लिए हठ। आग्रह।

अनुलंब-पुं॰ [सं॰] वह अवस्था जिसमें हाँ या नहीं का कुछ निश्चय न हुआ हो, पर अभी होने को हो। (सस्पेन्स)

अनुलम्ब खाता-पुं॰ [सं॰+हिं॰] वह खाता जिसमें किसी को कुछ धन बाद में हिसाब देने के लिए दिया जाय। उचित। (सस्पेन्स एकाउन्ट)

अनुलंबन-पुं॰ [सं॰] किसी कर्मचारी के दोष या अपराध की सूचना पाने पर उसकी ठीक जाँच होने तक के लिए उसका अपने पद से हटाया जाना। मुअत्तल होना। (सस्पेन्शन)

अनुलंबित-वि॰ [सं॰] (कार्यकर्ता) जिसका किसी अभियोग या अपराध के कारण अनुलंबन हुआ हो। जो अन्तिम निर्णय तक के लिए अपने कार्य या पद से हटा दिया गया हो। मुअत्तल। (सस्पेंडेड)

अनुलग्न-वि॰ [सं॰] किसी के साथ लगा, मिला या जुड़ा हुआ। (अटैच्ड या एनक्लोज्ड)

अनुलग्नक-पुं॰ [सं॰] वह पत्र या कागज जो किसी दूसरे पत्र के साथ लगा या जुड़ा हो। (एनक्लोजर)

अनुलेख-पुं॰ [सं॰] किसी लेख या पत्र पर अपनी स्वीकृति, सहमति आदि लिखकर उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। (एन्डोर्समेन्ट)

अनुलेखन-पुं॰ [सं॰] [कर्त्ता अनुलेखक, वि॰ अनुलेख्य] १. घटना या कार्य का लेखा आदि लिखना। जैसे-वायु की गति या भूकम्प के धक्के का अनुलेखन। २. दे॰ 'अनुलेख'।

अनुलोम-पुं॰ [सं॰] १. ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम। उतार। २. संगीत में सुरों का उतार। अवरोह।

अनुवचन-पुं॰ [सं॰] [कर्त्ता अनुवक्ता] १. किसी की कही हुई बात फिर से कहना या दोहराना। २. प्रकरण। अध्याय। ३. भाग। खंड। हिस्सा।

अनुवर्तन-पुं॰ [सं॰] [वि॰ अनुवर्त्ती] १. अनुकरण। अनुगमन। २. समान आचरण। ३. कोई नियम कई स्थानों पर बार-बार लगाना।

अनुवाक्-पुं॰ [सं॰] १. ग्रंथ-विभाग। अध्याय या प्रकरण का एक भाग। २. वेद के अध्याय का एक अंश।

अनुवाद-पुं॰ [सं॰] १. फिर से कहना। दोहराना। २. एक भाषा में लिखी हुई चीज या कही हुई बात दूसरी भाषा में लिखना या कहना। भाषान्तर। उलथा। तरजुमा। (ट्रांसलेशन)

अनुवादक-पुं॰ [सं॰] अनुवाद या भाषांतर करनेवाला। एक भाषा से दूसरी भाषा में लिखने या कहनेवाला।

अनुवादित-वि० दे० 'अनूदित'।

अनुवाद्य-वि० [सं०] १. अनुवाद करने के योग्य। २. जिसका अनुवाद होने को हो।

अनुविष्ट-वि० [सं०] जो अपने स्थान पर लिख लिया गया हो। चढ़ा या चढ़ाया हुआ। (एन्टर्ड)

अनुवृत्ति-स्त्री० [सं०] वेतन का वह अंश जो किसी कर्मचारी को बहुत दिनों तक काम करने पर, उसकी वृद्धावस्था में अथवा उसकी किसी सेवा के विचार से, वृत्ति के रूप में या भरण-पोषण के लिए मिलता है। (पेन्शन)

अनुवृत्तिक-वि० [सं०] १. अनुवृत्ति सम्बन्धी। अनुवृत्ति का। २. (पद, सेवा आदि) जिसके लिए अनुवृत्ति मिलती अथवा मिल सकती हो। (पेन्शनेबुल)

अनुवृत्तिधारी-पुं० [सं०] वह जिसे अनुवृत्ति मिलती हो। अनुवृत्ति पानेवाला। (पेन्शनर)

अनुशंसा-स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति या प्रार्थना आदि के सम्बन्ध में यह कहना कि यह अच्छा, उपयुक्त, ग्राह्य अथवा मान्य है। सिफारिश। (रिकमेंडेशन)

अनुशंसित-वि० [सं०] जिसके संबंध में अनुशंसा की गई हो। जिसकी सिफारिश की गई हो। (रिकमेंडेड)

अनुशय-पुं० [सं०] किसी दी हुई आज्ञा या किये हुए कार्य को नहीं के समान करना। रद्द करना। (रिवोकेशन)

अनुशयाना-स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट हो जाने से दुःखी हो।

अनुशासक-पुं० [सं०] वह जो अनुशासन करता हो। अनुशासन या राजकीय व्यवस्था करनेवाला। (एडमिनिस्ट्रेटर)

अनुशासन-पुं० [सं०] १. आज्ञा। आदेश। हुक्म। २. उपदेश। शिक्षा। ३. राज्य या लोक-प्रबन्ध के शासन-पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला काम। राज्य का प्रबन्ध या व्यवस्था। (एडमिनिस्ट्रेशन)। ४. वह विधान जो किसी संस्था या वर्ग के सब सदस्यों को ठीक तरह से कार्य या आचरण करने के लिए बाध्य करे। (डिसिप्लिन)

अनुशीलन-पुं० [सं०] [वि० अनुशीलित] १. चिन्तन। मनन। २. बार बार किया जानेवाला अध्ययन या अभ्यास।

अनुश्रुति-स्त्री० [सं०] [वि० अनुश्रुत] परम्परा से चली आई हुई बात, कथा, उक्ति आदि। (ट्रेडिशन)

अनुषंग-पुं० [सं०] [वि० आनुषंगिक] १. करुणा। दया। २. संबंध। लगाव। ३. प्रसंग से एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना। ४. एक बात के बाद दूसरी बात आपसे आप होना। (इनसिडेन्स)

अनुषंगी-वि० [सं०] किसी कार्य, विषय या तथ्य के बाद सहायक या सम्बद्ध रूप में होनेवाला। (एक्सेसरी आफ्टर दि फैक्ट)

अनुष्टुप्-पुं० [सं०] ३२ अक्षरों का एक वर्ण छन्द।

अनुष्ठान-पुं० [सं०] १. कार्य्य का आरंभ। २. नियमपूर्वक कोई काम करना। ३. शास्त्र-विहित कर्म करना। ४. फल के निमित्त किसी देवता का आराधन। प्रयोग। पुरश्चरण।

अनुसंधान-पुं० [सं०] १. किसी व्यक्ति या बात के पीछे लगना या पड़ना। २. अच्छी तरह देखकर वास्तविक बात का पता लगाना। जाँच-पड़ताल। (इन्वेस्टिगेशन)

अनुसंधानना*-स० [सं० अनुसंधान] १. छान-बीन करके पता लगाना। २. सोचना। विचार करना।

अनुसंधि-स्त्री० [सं०] १ गुप्त परामर्श या संधि। २. षड्यन्त्र। कुचक्र।

अनुसरण-पुं० [सं०] १. किसी के पीछे चलना। अनुकरण। २. कोई बात या निर्णय मानकर उसके अनुसार काम करना। (एवाइड)

अनुसरना*-अ० [हिं० अनुसरण] १ किसी के पीछे पीछे चलना। अनुगमन करना। २. कोई बात मानकर उसके अनुसार काम करना। ३. नियम या निश्चय के अनुसार चलना।

अनुसार-वि० [सं०] जो किसी के अनुकूल या अनुकरण पर हो। किसी के समान या सदृश।

क्रि० वि० किसी की तरह पर। वैसे ही, जैसे कोई प्रस्तुत या सामने हो।

अनुसारतः- क्रि० वि० [सं०] किसी के अनुसार। तदनुसार।

अनुसारता-स्त्री० [सं०] 'अनुसार' होने की क्रिया या भाव। (एकॉर्डेन्स)

अनुसारना*-स० [हिं० अनुसार] कोई काम पूरा करना।

अ० दे० 'अनुसरना'।

अनुसारिता-स्त्री० दे० 'अनुसारता'।

अनुसारी*-वि० [हिं० अनुसार] किसी के अनुसार होकर या रहकर चलनेवाला। अनुसरण करनेवाला।

अनुस्वार-पुं० [सं०] १. स्वर के पीछे उच्चरित होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण, जिसका चिह्न (ं) है। २. अक्षर के ऊपर की बिन्दी, जो उक्त वर्ण की सूचक होती है।

अनुहरना*-अ० दे० 'अनुसरना'।

अनुहार-वि० [सं०] १. सदृश। तुल्य। समान। २. अनुसार। अनुकूल।

पुं० १. भेद। प्रकार। २. मुखाकृति। आकृति। ३. सादृश्य। ४. किसी चीज़ की ज्यों की त्यों नकल। प्रतिकृति।

अनुहारना*-स० [सं० अनुहारण] तुल्य, सदृश या समान करना।

अनूअर*-क्रि० वि० [सं० अनवरत] निरन्तर। लगातार।

अनूजरा*-वि० [हिं० अन+ उजरा] १ जो उज्वल न हो। २ मैला।

अनूठा-वि० [सं० अनुच्छिष्ट] [स्त्री० अनूठी, भाव० अनूठापन] १ अनोखा। विचित्र। विलक्षण। अद्भुत। २. अच्छा। बढ़िया।

अनूढ़ा-स्त्री० [सं०] वह बिना ब्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखती हो।

अनूदित-वि० [सं०] १ कहा हुआ। २. अनुवाद किया हुआ। उलथा किया हुआ। भाषांतरित।

अनूप-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ जल अधिक हो। जलप्राय देश।

*वि० [सं० अनुपम] १ जिसकी उपमा न हो। बे-जोड़। २. सुन्दर। अच्छा।

अनृत-वि० [सं०] १. मिथ्या। असत्य। झूठ। २ अन्यथा। विपरीत।

अनेक-वि० [सं०] एक से अधिक। बहुत।

अनेड़*-वि० [सं० अनृत] १. बुरा। खराब। २. दुष्ट। ३. टेढ़ा। ४. मन में वैर रखनेवाला। कुटिल।

अनेरा-वि० [सं० अनृत] [स्त्री० अनेरी] १. झूठ। २. व्यर्थ। निष्प्रयोजन। ३. झूठा। ४. अन्यायी। दुष्ट। ५. निकम्मा। क्रि० वि० व्यर्थ। फजूल।

अनैक्य-पुं० [सं०] एकता या एका न होना। मत-भेद। फूट।

अनैच्छिक-वि० [सं०] जो अपनी इच्छा से या जान-बूझकर न किया गया हो, बल्कि दूसरे की इच्छा से या परिस्थितियों आदि के कारण, कुछ विवश होकर या यों ही किया गया हो। (इन-वालेन्टरी)

अनैतिक-वि० [सं०] नीति के विरुद्ध।

अनैतिहासिक-वि० [सं०] जो इतिहास से सिद्ध न हो, या उसके अनुरूप न हो।

अनैस*-वि० दे० 'अनिष्ट'।

अनैसना*-अ० [हिं० अनैस] १. बुरा मानना। २. रूठना।

अनैसर्गिक-वि० [सं०] निसर्ग या प्रकृति के विरुद्ध या उससे अलग। अस्वाभाविक।

अनोखा-वि० [सं० अन्+ईक्ष] [स्त्री० अनोखी] १. अनूठा। निराला। विलक्षण। विचित्र। २. नया। ३. सुन्दर।

अनोखापन-पुं० [हिं० अनोखा+पन (प्रत्य०)] १.अनूठापन। निरालापन। विलक्षणता। विचित्रता। २. नयापन। ३. सुन्दरता। खूबसूरती।

अनौचित्य-पुं० [सं०] अनुचित होने का भाव। ना-मुनासिब होना।

अन्न-पुं० [सं०] १. पौधों से उत्पन्न होनेवाले दाने (गेहूँ, चावल, दाल आदि) जो खाने के काम में आते हैं। अनाज। धान्य। गल्ला। २. इन दानों से बना या पका हुआ भोजन।

अन्न-कूट-पुं० [सं०] कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होनेवाला एक उत्सव जिसमें अनेक प्रकार के भोजन बनाकर देवता के सामने उनका ढेर लगाया जाता है।

अन्न-चोर-पुं० [हिं०] वह जो चोर बाजार में मँहगे दाम पर बेचने के लिए अन्न छिपाकर रखे।

अन्न-क्षेत्र-पुं० दे० 'अन्नसत्र'।

अन्न-जल-पुं० [सं०] १. खाने-पीने की सामग्री। २. कहीं रहकर वहाँ खाने-पीने की स्थिति। जैसे-अब यहाँ से हमारा अन्न-जल उठ गया।

अन्नदाता-पुं० [सं०] वह जिसकी कृपा से भोजन मिलता हो। पालन-पोषण करनेवाला। प्रतिपालक।

अन्नपूर्णा-स्त्री० [सं०] शिव की पत्नी जो सबको भोजन देनेवाली मानी जाती हैं।

अन्न-प्राशन-पुं०[सं०] वह संस्कार जिसमें छोटे बच्चे को पहले-पहल अन्न चटाया जाता है।

अन्नसत्र-पुं० [सं०] वह स्थान जहां दरिद्रों को पका हुआ भोजन बाँटा या खिलाया जाता है।

अन्य-वि० [सं०] कोई दूसरा। और। भिन्न।

अन्यत्र-क्रि० वि० [सं०] किसी और स्थान पर। किसी दूसरी जगह।

अन्यतम-वि० [सं०] सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ।

अन्यथा-अव्य० [स०] नहीं तो। दूसरी अवस्था में।

वि० १. विपरीत। उलटा। २. सत्य या वास्तविक से विपरीत। मिथ्या। झूठ। मुहा०-अन्यथा करना=पहले की आज्ञा या निश्चय रद करना या उलटना। (सेट एसाइड)

अन्यमनस्क-वि० [सं०] [भाव० अन्यमनस्कता] जिसका जी या ध्यान किसी और तरफ हो। अनमना। २. खिन्न। उदास।

अन्याय-पुं० [सं०] [कर्त्ता-अन्यायी] १. न्याय का न होना या उलटा होना।

२. न्याय के विरुद्ध व्यवहार या आचरण। अनीति। अन्धेर। ३. अत्याचार।

अन्यायी-वि० [सं०] अन्याय करनेवाला।

अन्यारा*-वि० [हिं० अ+न्यारा] १. जो न्यारा या अलग न हो। मिला हुआ। २. दे० 'अनोखा'।

क्रि० वि० बहुत। अधिक।

अन्यास*-वि० दे० ''अनायास'।

अन्योक्ति- स्त्री० [सं०] कोई बात कहने का वह ढंग जिसमें कुछ कहा तो किसी एक के सम्बन्ध में जाता है, पर वह बात घटती या ठीक बैठती किसी और पर है।

अन्योन्य-सर्व० [सं०] एक दूसरे के साथ। आपस में। परस्पर।

पुं० काव्य में वह अलंकार जिसमें दो वस्तुओं के किसी कार्य या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना बतलाया जाता है।

अन्योन्याश्रय-पुं० [सं०] १ दो वस्तुओं का आपस में या एक दूसरे पर आश्रित होना। २. न्याय में एक वस्तु के ज्ञान से दूसरी वस्तु का ज्ञान। सापेक्ष ज्ञान।

अन्वय-पुं० [सं०] १. दो वस्तुओं का आपस का सम्बन्ध या मेल। २. पद्य या कविता की वाक्य-रचना को गद्य की वाक्य-रचना के अनुसार बैठाने या ठीक करने की क्रिया। ३. किसी वाक्य की रचना के अनुसार उसका ठीक और संगत अर्थ। ४. कार्य और कारण का पारस्परिक संबंध। ५. एक बात सिद्ध करने के लिए दूसरी बात की सिद्धि या उसका सम्बन्ध।

अन्वित-वि० [सं०] १. जिसका अन्वय हुआ हो। २. मिला हुआ। युक्त।

अन्वितार्थ-पुं० [सं०] १. अन्वय करने पर निकलनेवाला अर्थ। २. अन्दर छिपा हुआ अर्थ। गूढ़ आशय।

अन्वीक्षण-पुं० [सं०] [कर्ता-अन्वीक्षक] १. भली भांति देखना या सोचना-समझना। २. ढूँढ़। खोज। तलाश।

अन्वेषण-पुं० [सं०] [कर्ता-अन्वेषक, अन्वेषी] छान-बीन करके बीती हुई बात के तथ्य, इतिहास आदि का पता लगाना। (रिसर्च) २. दे० 'अनुसंधान'।

अन्हाना*-अ० दे० 'नहाना'।

अपंग-वि० दे० 'अपांग'।

अप-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें निषेध, अपकर्ष, विकार या किसी बुरी विशेषता का भाव उत्पन्न करता है। जैसे-मान और अपमान, व्यय और अपव्यय, मृत्यु और अपमृत्यु, हरण और अपहरण या हास और अपहास।

अपकर्म-पुं० [सं०] बुरा, अनुचित या निन्दनीय काम।

अपकर्षण-पुं० [सं०] १ नीचे या उतार की ओर खिंचना या जाना। अवनति की ओर जाना। २. पद-मर्यादा या मान-महत्त्व का घटना या कम होना। (डेरोगेशन)। ३. मूल्य आदि का कम होना या उतरना। घटाव। उतार। (डेप्रिसिएशन)। ४ किसी वस्तु में से उसका कुछ अंश निकल या कम हो जाना। घट जाना। (डिट्रैक्शन)

अपकर्षक-वि० [सं०] अपकर्ष करनेवाला। घटाने, उतारने या कम करनेवाला। (डेरोगेटरी) विशेष दे० 'अपकर्ष'।

अपकार-पुं० [सं०] [भाव० अपकारिता] 'उपकार' का विपरीत भाव। 'भलाई' का उलटा काम। हानि। अहित। नुकसान।

अपकारक-वि० [सं०] अपकार या

खराबी करनेवाला।

अपकारी-वि० दे० 'अपकारक'।

अपकीर्ति-स्त्री० [सं०] 'कीर्ति' का विपरीत भाव। यश या नेक-नामी का उलटा। अपयश। बदनामी।

अपकृत-वि० [सं०] जिसका अपकार हुआ हो। 'उपकृत' का उलटा।

अपकृष्ट-वि० [सं०] जिसका अपकर्ष हुआ हो या किया गया हो। जिसका महत्त्व, मूल्य, मान आदि कम हुआ हो या किया गया हो। विशेष दे० 'अपकर्ष'।

अपक्रम-पुं० दे० 'व्यतिक्रम'।

अपक्रमण-पुं० [सं०] किसी स्थान से रुष्ट या असन्तुष्ट होकर उठ जाना। (वॉक आउट)

अपक्व-वि० [सं०] (संज्ञा-अपक्वता) १. जो पका न हो। कच्चा। २. जिसके पक्के या ठीक होने में अभी कुछ कसर हो।

अपगत-वि० [सं०] [संज्ञा-अपगति] १. भागा या हटा हुआ। २. मृत। मरा हुआ। ३. नष्ट।

अपगति-स्त्री० [सं०] १. बुरी गति। २. अनुचित मार्ग पर जाना। ३. भागना या हटना। ४. नाश।

अपघात-पुं० [सं०] [कर्त्ता-अपघातक, अपघाती] १. किसी को मार डालना। हत्या, वध या हिंसा। २. दे० 'विश्वास-घात'। ३. दे० 'आत्म-घात'।

अपच-पुं० [सं०] १. भोजन आदि न पचने की क्रिया या भाव। २. भोजन न पचने का रोग। अजीर्ण।

अपचय-पुं० [सं०] १. कम या थोड़ा होना। कमी, घटाव या ह्रास। (एबेटमेन्ट) २. नाश। ३. गँवाना।

अपचरण-पुं० [सं०] अपने अधिकार के क्षेत्र या सीमा से निकलकर दूसरे के अधिकार के क्षेत्र या सीमा में जाना, जो अनुचित और आपत्तिजनक माना जाता है। (ट्रेसपासिंग)

अपचार-पुं० [सं०] १. अनुचित कार्य। २. निन्दा। बुराई। ३. ऐसा काम जिससे अपना स्वास्थ्य नष्ट हो। ४. ऐसे स्थान पर या क्षेत्र में पहुँचना, जहां जाना अनुचित हो या जहाँ जाने का अधिकार न हो। (ट्रेसपास)

अपचारक-पुं० [सं०] १. वह जो बुरा या अनुचित काम करे। २. वह जो ऐसे स्थान या क्षेत्र में जा पहुँचे, जहाँ जाना अनुचित या अधिकार-विरुद्ध हो। (ट्रेसपासर)

अपचारी-पुं० दे० 'अपचारक'।

अपचाल*-स्त्री० [हिं० अप+चाल] १. बुरी चाल या व्यवहार। २. पाजीपन।

अपची-स्त्री० [सं०] एक प्रकार की गंड-माला (रोग)।

अपछरा*-स्त्री० दे० 'अप्सरा'।

अपजस-पुं० दे० 'अपयश'।

अपडर*-पुं० [क्रि० अपडरना] दे० 'डर'।

अपड़ाना*-अ० [स० अपर] [भाव० अपड़ाव] खींचा-तानी या लड़ाई-झगड़ा करना।

अपढ़-वि० [सं० अपठ] जो कुछ पढ़ा-लिखा न हो। अशिक्षित।

अपढार*-वि० दे० 'अवढर'।

अपत*-वि० [हिं० अ+पत्ता] (वृक्ष) जिसमें पत्ते न हों। पत्र-हीन।
वि० [सं० अपात्र] अधम। नीच।
वि० [अ+पत=प्रतिष्ठा] निर्लज्ज। बेहया।
स्त्री० अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

अपताई*-स्त्री० [हिं० अपत] १.

निर्लज्जता। बेहयाई। २. धृष्टता। ढिठाई। ३. पाजीपन। नटखटी।

अपति*-स्त्री० [हिं० अ+पत=प्रतिष्ठा] १. दुर्गति। दुर्दशा। २. अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। ३. दे० 'अपतई'।

अपतोस*-पुं० दे० 'अफसोस'।

अपत्य-पुं० [सं०] सन्तान। औलाद।

अपथ्य-वि० दे० 'कुपथ्य'।

अप-देखा-वि० [हिं० आप+देखना] १ अभिमानी। घमंडी। २. स्वार्थी। मतलबी।

अपद्रव्य- पुं० [सं०] बुरी वस्तु या धन।

अपन-वि० १. दे० 'अपना'। २. दे० 'हम'।

अपनपौ-पुं० [हिं० अपना] १. आत्मीयता। आपसदारी। अपनायत। २. सुध। ज्ञान। होश। ३. अभिमान। घमंड। ४. प्रतिष्ठा। इज्जत।

अपनयन-पुं० [सं०] [वि० अपनीत] १ दूर या अलग करना। हटाना। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना या पहुँचाना। ३. स्त्री, बालक आदि को उसके पति या माता-पिता के पास से हटाकर दुष्ट उद्देश्य से किसी दूसरी जगह ले जाना। भगा ले जाना। (एब्डक्शन)

अपना-सर्व० [सं० आत्मनः] [क्रि० अपनाना] (हर एक की दृष्टि से उसका) निज का। दूसरे का नहीं। (तीनों पुरुषों में)

यौ०-अपने आप = स्वतः। स्वयं।

पुं० आत्मीय। स्वजन।

अपनाना-स० [हिं० अपना] १. अपना बनाना। अपना कर लेना। २. अपने अधिकार, शरण, रक्षा आदि में लेना।

अपनाम-पुं० [सं०] बदनामी।

अपनायत-स्त्री० [हिं० अपना] अपनापन। आत्मीयता। आपसदारी।

अपनीत-वि० [सं०] १ दूर किया या हटाया हुआ। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया हुआ। ३. जिसे कोई भगा ले गया हो। (एबडक्टेड) विशेष दे० 'अपनयन'।

अपनेता-पुं० [सं०] किसी को भगा ले जानेवाला। (एबडक्टर) विशेष दे० 'अपनयन'।

अपबस*-वि० [हिं० आप+वश] जो अपने वश में हो। स्वतंत्र। 'परबस' का उलटा।

अपभोग-पुं० [सं०] [वि० अपभोगी] किसी के धन या सम्पत्ति पर अनुचित रूप से अधिकार करके उसे भोगना या अपने काम में लाना। (एम्बेजेल्मेन्ट)

अपभ्रंश-पुं० [सं०] [वि० अपभ्रष्ट] १. पतन। गिरना। २. बिगाड़। विकृति। ३. मूल शब्द से बिगड़कर उसका नया बना हुआ रूप। ४. प्राचीन काल की वह भाषा जो पुरानी हिन्दी से पहले और प्राकृत भाषाओं के बाद इस देश में प्रचलित थी।

अपभ्रष्ट-वि० [सं०] १. गिरा हुआ। पतित। २. बिगड़ा हुआ। विकृत।

अपमान-पुं० [सं०] [वि० अपमानित] १. वह काम या बात जिससे किसी का मान या प्रतिष्ठा कम हो। अनादर। बेइज्जती। (इन्सल्ट)

अपमानना*-स० [हिं० अपमान] अपमान करना।

अपमानिक-वि० [सं०] (ऐसी बात) जिससे किसी का अपमान हो।

अपमानित-वि० [सं०] जिसका अप-

मान हुआ हो।

अपमिश्रण-पुं० [सं०] किसी अच्छी या बढ़िया चीज में बुरी या घटिया चीज़ मिलाना। (एडल्टरेशन)

अपमृत्यु-स्त्री० [सं०] वह मृत्यु जो किसी दुर्घटना के कारण और आकस्मिक हो। जैसे-छत से गिरने या लाठी की चोट से मरना।

अपयश-पुं० [सं०] बुरा यश। अप-कीर्त्ति। बदनामी।

अपयोग-पुं० [सं०] १. बुरा योग। २. बुरा समय। ३. दे० 'अपयोजन'।

अपयोजन-पुं० [सं०] [वि० अप-योजित] किसी का धन या सम्पत्ति अनुचित रूप से अपने काम में लाना। (मिस्-एप्रोप्रिएशन)

अपरंच-अव्य० [सं०] १. और भी। २. फिर भी। ३. बाद। पीछे।

अपरंपार-वि० [हिं० अपर+पार] १. जिसका पारावार या कूल-किनारा न हो। असीम। २. बहुत अधिक। बेहद।

अपर-वि० [सं०] [स्त्री० अपरा] १. पहले का। पूर्व का। २. पिछला। ३. अन्य। दूसरा।

अपरक्ति-स्त्री० [सं०] [वि० अपरक्त] किसी के प्रति प्रेम, श्रद्धा या सद्भावना न होना। (डिस्-एफेक्शन)

अपरछन*-वि० दे० 'अपरिच्छिन्न'।

अपरती*-स्त्री० [हिं० आप+सं० रति] १. स्वार्थ। २. बेईमानी।

अपरना*-स्त्री० दे० 'अपर्णा'।

अपरबल*-वि० दे० 'प्रबल'।

अपरस-वि० [सं० अ+स्पर्श] १. जिसे किसी ने छूआ न हो। २. न छूने योग्य। पुं० एक चर्म रोग जो हथेली या तलवे में होता है।

अपरा-स्त्री० [सं०] १. अध्यात्म या ब्रह्म-विद्या के अतिरिक्त अन्य विद्या। लौकिक विद्या। पदार्थ विद्या। २. पश्चिम दिशा।

अपराग-पुं० [सं०] १. वैर। द्वेष। शत्रुता। २. अरुचि। ३. दे० 'अपरक्ति'।

अपराजिता-स्त्री० [सं०] १. विष्णुक्रांता लता। कौआ ठोंठी। कोयल। २. दुर्गा।

अपराध-पुं० [सं० अपराध] कोई ऐसा अ-नुचित कार्य जिससे किसी को हानि पहुँचे। (ऑफेन्स) २. कोई ऐसा काम जो किसी विधि या विधान के विरुद्ध हो और जिसके लिए कर्त्ता को दंड मिल सकता हो। (क्राइम)। ३. कोई अनुचित या बुरा काम। दोष। पाप। ४. भूल। चूक।

अपराधिक-वि०[सं०] अपराध-सम्बन्धी। जैसे-अपराधिक प्रक्रिया (क्रिमिनल प्रोसेस)।

अपराधी-पुं० [सं०] [स्त्री० अपराधिनी] १. वह जिसने कोई अपराध किया हो। अपराध करनेवाला। २. मुलजिम।

अपराह्न-पुं० [सं०] तीसरा पहर।

अपरिग्रह-पुं० [सं०] १. दान न लेना। २. आवश्यक धन से अधिक का त्याग।

अपरिच्छिन्न-वि० [सं०] १. जिसका विभाग न हो सके। अभेद्य। २. मिला हुआ। ३. असीम। (एबसोल्यूट)

अपरिणामी-वि० [सं० अपरिणामिन्] [स्त्री० अपरिणामिनी] १. परिणाम-रहित। २. जिसकी दशा या रूप में परि-वर्त्तन न हो।

अपरिमित-वि० [सं०] १. असीम। बेहद। २. असंख्य। अगणित।

अपरिमेय-वि० [सं०] १. बे-अंदाज। अकूत। २. असंख्य। अनगिनत।

अपरिवर्त्तनीय-वि० [सं०] जिसमें परिवर्त्तन या फेर-बदल न हो सके।

अपरिहार्य-वि० [सं०] १. जिसके बिना काम न चले। अनिवार्य्य। २. न छोड़ने योग्य। अ-त्याज्य। ३. न छीनने योग्य।

अपरूप-वि० [सं०] १. बद-शकल। भद्दा। बेडौल। २. अद्भुत। अपूर्व।

अपर्णा-स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. दुर्गा।

अपलक-वि० [हिं० अ+पलक] जिसकी पलकें न गिरें।

क्रि० वि० बिना पलक गिराये या झपकाये। एक-टक।

अपलाप-पुं० [सं०] व्यर्थ की बक-बक।

अपवर्ग-पुं० [सं०] १. मोक्ष। निर्वाण। मुक्ति। २. त्याग। ३. दान।

अपवर्जन-पुं० [सं०] [वि० अपवर्जित] १. त्यागना। २. मुक्ति। मोक्ष।

अपवर्त्तन-पुं० [सं०] [वि० अपवर्त्तित] १. पीछे की ओर अथवा अपने मूल स्थान की ओर लौटना। २. राज्य या अधिकारिकों द्वारा किसी की धन-सम्पत्ति पर इस प्रकार अधिकार किया जाना कि उसके स्वामी पर उसका कोई अधिकार न रह जाय। जब्त होना। जब्ती। (फोरफीचर)

अपवर्त्तित-वि० [सं०] १. पीछे लौटा हुआ। २. जिसपर राज्य या अधिकारिकों ने अपना अधिकार कर लिया हो। जिसका अपवर्त्तन हुआ हो। जब्त किया हुआ। (फोरफीटेड)

अपवाद-पुं० [सं०] १. विरोध या खंडन। २. ऐसी निन्दा जिससे किसी के सम्मान को आघात पहुँचे। बदनामी। (स्लैंडर)। ३. दोष। पाप। ४. वह बात जो किसी व्यापक या सामान्य नियम के विरुद्ध हो। 'उत्सर्ग' का विरोधी भाव। (एक्सेपशन)

अपवादक-पुं० [सं०] वह जो दूसरों का अपवाद या बदनामी करे।

वि० १. विरोधी। २. बाधक।

अपवादिक-वि० [सं०] १. अपवाद संबंधी। २. जिसके कारण या द्वारा किसी का अपमान हो। (स्लैंडरस)

अपवित्र-वि० [सं०] [भाव० अपवित्रता] जो पवित्र या शुद्ध न हो। मलिन। गन्दा।

अपव्यय-पुं० [सं०] १. व्यर्थ व्यय। फजूल-खर्ची। २. बुरे कामों में होनेवाला व्यय।

अपव्ययी-वि० [सं० अपव्ययिन्] व्यर्थ और अधिक खर्च करनेवाला। फजूल-खर्च।

अपशकुन-पुं० [सं०] बुरा शकुन। असगुन।

अपशब्द-पुं० [सं०] १. अशुद्ध शब्द। २. गाली। कुवाच्य।

अपसना-अ० [?] पहुँचना। प्राप्त होना।

अपसर-वि० [हिं० अप=अपना+सर (प्रत्य०)] १. आप ही आप। २. मनमाना।

अपसरण-पुं० [सं०] कार्य या उत्तरदायित्व छोड़कर भाग जाना। जैसे-सैनिक सेवा से, अथवा विवाहिता स्त्री को, अथवा अपने बच्चे को छोड़कर चल देना। (डिजर्शन)

अपसर्जन-पुं० [सं०] [वि० अपसर्जित] १. छोड़ना। त्यागना। २. अपने उत्तरदायित्व से बचने के लिए किसी को असहाय अवस्था में छोड़कर हट जाना। (एबैन्डन) जैसे-माता द्वारा शिशु का अपसर्जन।

अपसवना*-अ० [सं० अपसरण] हट या खिसक जाना।

अपसव्य-वि० [सं०] १. 'सव्य' का उलटा। दहिना। दक्षिण। २. उलटा।

अपसारण-पुं० [सं०] [वि० अपसारित] किसी व्यक्ति या वाक्य को कहीं से हटा या निकाल देना। दूर करना। (एक्स-पल्शन)

अपसृत-वि० [सं०] १. जो कहीं से निकल कर हट गया हो। दूर हटा या किया हुआ। २. वह जो सेवा, विशेषतः सैनिक सेवा से भाग गया हो। ३. वह जिसने अपनी पत्नी या पति का परित्याग कर दिया हो और उसकी देख-रेख छोड़ दी हो। (डिजर्टर)

अपसोस*-पुं० [क्रिया अपसोसना*] दे० 'अफसोस'।

अपसौन*-पुं० दे० 'अपशकुन'।

अपस्मार-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें रोगी काँपता हुआ मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है। मिरगी।

अपस्वर-पुं० [सं०] बुरा, बे-सुरा या कर्कश स्वर।

अपस्वार्थी-वि० दे० 'स्वार्थी'।

अपहत-वि० [सं०] १. नष्ट किया हुआ। मारा हुआ। २. दूर किया हुआ।

अपहरण-पुं० [सं०] १. छीनकर या बलपूर्वक ले लेना। २. किसी व्यक्ति को कहीं से बलपूर्वक उठा ले जाना। (किडनैपिंग)। ३. छिपाव। संगोपन।

अपहरना-स० [सं० अपहरण] १. छीनना। ले लेना। लूटना। २. चुराना। ३. कम करना। घटाना। ४. क्षय करना।

अपहर्त्ता-पुं० [सं० अपहर्तृ] १. छीनने-वाला। हर लेनेवाला। ले लेनेवाला। २. चोर। लुटेरा। ३. छिपानेवाला।

अपहार-पुं० दे० 'अपहरण'।

अपहास-पुं० [सं०] १. उपहास। २. अकारण हँसी।

अपहारक, अपहारी-पुं० दे० 'अपहर्त्ता'।

अपहृत-वि० [सं०] १. छीना हुआ। २. चुराया हुआ। ३. लूटा हुआ।

अपह्नुति-स्त्री० [सं०] १. दुराव। छिपाव। २. बहाना। टाल-मटोल। ३. वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाय।

अपांग-वि० [सं०] जिसका कोई अंग टूटा हो या न हो।

अपा*-पुं० [हिं० आपा] अभिमान।

अपाकरण-पुं० [सं०] ऋण आदि का परिशोधन। देन चुकाना। (लिक्विडेशन आफ डेट)

अपाकर्म-पुं० [सं०] वह कार्य जिसमें किसी मंडली या समवाय का देना-पावना चुकाकर उसका सारा व्यापार समेटा जाता है। (लिक्विडेशन आफ कम्पनी)

अपात्र-वि० [सं०] १. अयोग्य पात्र। २. बुरा पात्र। ३. मूर्ख।

अपादान-पुं० [सं०] १. हटाना। अलग करना। २. व्याकरण में पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारम्भ सूचित होता है। इसका चिह्न 'से' है। जैसे-घर से।

अपान-पुं० [सं०] १. दस या पाँच प्राणों में से एक। २. गुदास्थ वायु जो मल-मूत्र बाहर निकालती है। ३. वह वायु जो गुदा से निकले। पाद। ४. गुदा।

अपान-वायु-स्त्री० [सं०] गुदा से निकलनेवाली वायु। पाद।

अपाय-पुं० [सं०] १. अलगाव। २. नाश। ३. अन्यथाचार। अनरीति।

अपार-वि० [सं०] १. सीमा-रहित।

अनन्त। असीम। २. असंख्य। अतिशय।

अपारग-वि० [सं०] १. जो पार-गामी न हो। २. अयोग्य। ३. असमर्थ।

अपाव*-पुं० [सं० अपाय] अन्याय।

अपावन-पुं० [स्त्री० अपावनी] दे० 'अपवित्र'।

अपासन-पुं० [सं०] [वि० अपासित] अपने सामने आई हुई प्रार्थना, कथन आदि की अस्वीकृति। ना-मंजूरी। (रिजेक्शन)

अपासित-वि० [सं०] जो माना न गया हो। अस्वीकृत। (रिजेक्टेड)

अपाहज-वि० [सं० अपाहिक] १. अंग-हीन। खंज। लूला-लँगड़ा। २. काम करने के अयोग्य। ३. आलसी।

अपि-अव्य० [सं०] १. भी। ही। २. निश्चय। ठीक।

अपितु-अव्य० [सं०] १ किन्तु। २. बल्कि।

अपील-स्त्री० [अं०] १. निवेदन। विचारार्थ प्रार्थना। २. मातहत अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊँची अदालत में फिर से विचार के लिए अभियोग रखना।

अपूठना*-स० [सं० आपोथन] १. विध्वंस या नाश करना। २. उलटना।

अपूठा*-वि० [सं० अपुष्ट] १. अपरिपक्व। २. अनजान। अनभिज्ञ।

वि० [सं० अस्फुट] अविकसित। बेखिला।

अपून-वि० [सं०] अपवित्र। अशुद्ध।

*वि० [हिं० अ+पूत] पुत्रहीन। निपूता।

पुं० कुपूत। बुरा लड़का।

अपूरना*-स० दे० 'पूरना'।

अपूर्ण-वि० [सं०] १. जो पूर्ण या भरा न हो। २. अधूरा। असमाप्त। ३. कम।

अपूर्व-वि० [सं०] [भाव० अपूर्वता] १. जो पहले न रहा हो। २. अद्भुत। अनोखा। विचित्र। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।

अपेक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० अपेक्षित] १. आकांक्षा। इच्छा। अभिलाषा। चाह। २. आवश्यकता। जरूरत। ३. भरोसा। आशा। ४. कार्य-कारण का अन्योन्य सम्बन्ध। ५. तुलना।

अपेक्षाकृत-क्रि० वि० [सं०] तुलना या मुकाबले में।

अपेक्षित-वि० [सं०] १. जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो। आवश्यक। जरूरी। २. चाहा हुआ। इच्छित। वांछित।

अपेक्ष्य-वि० [सं०] १. जिसकी अपेक्षा करना उचित हो। २. अपेक्षित।

अपेय-वि० [सं०] न पीने योग्य।

अपेल*-वि० [अ=नहीं+पीड़=दबाना] जो हटे या टले नहीं। अटल।

अपैठ*-वि० [हिं० अ+पैठना] जिसमें कोई पैठ न सके। विकट। दुर्गम।

अप्रकट-वि० [सं०] जो प्रकट न हो। छिपा हुआ। गुप्त।

अप्रकाशित-वि० [सं०] १. जिसमें उजाला न हो। अँधेरा। २. जो प्रकट न हुआ हो। छिपा हुआ। गुप्त। ३. जो सर्व-साधारण के सामने न रखा गया हो। ४. जो छापकर प्रचलित न किया गया हो।

अ-प्रकृत-वि० [सं०] १. जो प्रकृत न हो। २. जो अपने उचित मान से घटा या बढ़ा हुआ हो। जो अपने ठीक ठिकाने पर न हो। (एबनार्मल)

अ-प्रचलित-वि० [सं०] जो प्रचलित न हो। अव्यवहृत। अप्रयुक्त।

अप्रतिदेय-वि० [सं०] (ऋण आदि) जो स्थायी रूप से या सदा के लिए दिया गया हो और जिसे लौटाना या चुकाना

न पड़े। जैसे—अप्रतिदेय ऋण। (परमेनेन्ट एडवान्स)

अप्रतिदेय ऋण-पुं० [सं०] वह ऋण जो किसी को सहायता के रूप में सदा के लिए दिया गया हो और जो लौटाया न जाय। (परमेनेन्ट एडवान्स)

अप्रतिबन्ध-वि० [सं०] १. जिसपर या जिसके लिए कोई प्रतिबन्ध न हो। २. पूर्ण। परम। (एबसोल्यूट)

अप्रतिभ-वि० [सं०] १. प्रतिभा-शून्य। २. चेष्टा-हीन। उदास। ३. स्फूर्ति-शून्य। सुस्त। मन्द। ४. मति-हीन। निर्बुद्धि।

अप्रतिम-वि० [सं०] अद्वितीय। अनुपम।

अप्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] [वि० अप्रतिष्ठित] १. अनादर। अपमान। २. अपयश। अपकीर्ति।

अप्रत्याशित-वि० [सं०] जिसकी आशा न की गई हो। अचानक या अकस्मात् होनेवाला।

अप्रमेय-वि० [सं०] १. जो नापा न जा सके। अपरिमित। अपार। अनन्त। २. जो तर्क या प्रमाण से सिद्ध न हो।

अप्रयुक्त-वि० [सं०] जो काम में न लाया गया हो। अव्यवहृत।

अप्रसन्न-वि० [स०] [भाव० अप्रसन्नता] जो प्रसन्न न हो। नाराज।

अप्रसिद्ध-वि० [सं०] जो प्रसिद्ध न हो। अविख्यात।

अप्राकृत-वि० [सं०] १. जो प्राकृत न हो। अस्वाभाविक। २. असाधारण।

अप्राप्त-वि० [सं०] [संज्ञा अप्राप्ति] १. जो प्राप्त न हो या न हुआ हो। दुर्लभ। अलभ्य। २. जिसे प्राप्त न हुआ हो। ३. अप्रत्यक्ष। अप्रस्तुत।

अप्राप्य-वि० [सं०] जो प्राप्त न हो सके। अलभ्य।

अप्रामाणिक-वि० [सं०] [भाव० अप्रामाणिकता] १. जो प्रमाण से सिद्ध न हो। ऊट-पटाँग। २. जो मानने योग्य न हो।

अप्रासंगिक-वि० [सं०] प्रसंग के विरुद्ध। जिसकी कोई चर्चा न हो।

अप्रिय-वि० [सं०] १. अरुचिकर। जो न रुचे। २. जिसकी चाह न हो।

अप्सरा-स्त्री० [सं०] १. स्वर्ग की वेश्या। २. इन्द्र की सभा में नाचनेवाली देवांगना। ३. परम रूपवती स्त्री। परी।

अफरना-अ० [सं० स्फार] १. पेट भर खाना। भोजन से तृप्त होना। २. पेट का फूलना। ३. और अधिक की इच्छा न रहना। ऊबना।

अफरा-पुं० [सं० स्फार] अजीर्ण या वायु से पेट फूलना।

अफवाह-स्त्री० दे० 'किंवदंती'।

अफसर-पुं० [अं० ऑफिसर] १. प्रधान। मुखिया। २. अधिकारी। हाकिम।

अफसोस-पुं० [फा०] १. शोक। रंज। दुःख। २. पश्चात्ताप। खेद। पछतावा।

अफीम-स्त्री० [यू० ओपियन, अ० अफयून] पोस्त के ढेढ का गोंद जो कड़ुआ, मादक और विष होता है।

अफीमची-पुं० [हिं० अफीम + ची (प्रत्य०)] वह पुरुष जिसे अफीम खाने की लत हो।

अब-क्रि० वि० [सं० इदानीं] इस समय। इस क्षण। इस घड़ी।

मुहा०-अब की=इस बार। अब जाकर=इतनी देर बाद। अब तब लगना या होना=मरने का समय निकट पहुँचना।

अबटन-पुं० दे० 'उबटन'।

अबधू*-वि० [सं० अबोध] अबोध।

पुं० दे० 'अवधूत'।

अवध्य-वि० [सं०] [स्त्री० अवध्या, संज्ञा अवध्यता] १. जिसे मारना उचित न हो। २. जिसे शास्त्रानुसार प्राण-दंड न दिया जा सके। जैसे-स्त्री, ब्राह्मण आदि। ३. जिसे कोई मार न सके।

अबरक-पुं० [सं० अभ्रक] १. एक धातु जिसकी तहें काँच की तरह चमकीली होती हैं। भोडल। भोडर। २. एक प्रकार का पत्थर।

अबरा-पुं० [फा०] १. दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला। उपल्ला। २. उलझन।

अबरी-स्त्री० [फा०] १. एक प्रकार का धारीदार चिकना कागज। २. एक प्रकार का पीला पत्थर। ३. एक प्रकार की लाह की रँगाई।

अबल-वि० [सं०] [स्त्री० अबला] निर्बल। कमजोर।

अबला-स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

अबस*-वि० दे० 'अवश'।

अबाँह*-वि० [हिं० अ+बाँह] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो। असहाय।

अबादान-वि० [अ० आबाद] [भाव० अबादानी] १. बसा हुआ। २. भरा हुआ।

अबाध-वि० [सं०] १. जिसके लिए कोई बाधा या रोक-टोक न हो। निर्विघ्न। २. बहुत अधिक। अपार। ३. पूर्ण। परम। (एबसोल्यूट)

अबाधित-वि० [सं०] १. बाधा-रहित। बे-रोक। २. स्वच्छन्द। स्वतन्त्र।

अबाध्य-वि० [सं०] [संज्ञा अबाध्यता] १. जो रोका न जा सके। बे-रोक। २. अनिवार्य।

अबार*-स्त्री० [सं० अ+बेला] देर।

अबास*-पुं० दे० 'आवास'।

अबीर-पुं० [अ०] [वि० अबीरी] रंगीन बुकनी या अबरक का चूरा जिसे लोग होली में इष्ट-मित्रों पर डालते हैं।

अबूझ*-वि० दे० 'अबोध'।

अबूत*-वि० [हिं० अ+पूत] निस्सन्तान। वि० [हिं० अ+बूझ] अबोध। अज्ञानी।

अबे-अव्य० [सं० अयि] अरे। हे। (छोटे या नीच के लिए सम्बोधन) मुहा०-अबे तबे करना=निरादर-सूचक बातें कहना।

अबेर*-स्त्री० [सं० अबेला] विलम्ब।

अबैन*-वि० [हिं० अ+बैन] मौन।

अबोध-पुं० [सं०] अज्ञान। मूर्खता। वि० [सं०] अनजान। नादान। मूर्ख।

अबोल*-वि० [सं० अ+बोल] १. मौन। अवाक्। २. जिसके विषय में कुछ बोल या कह न सकें। अनिर्वचनीय। पुं० कुबोल। बुरा बोल।

अबोला-पुं० [सं० अ+हिं० बोलना] रंज में न बोलना। रूठने के कारण मौन।

अब्ज-पुं० [सं०] १. जल से उत्पन्न वस्तु। २. कमल। ३. शंख। ४. चन्द्रमा। ५. सौ करोड़। अरब।

अब्द-पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २. मेघ। बादल। ३. आकाश।

अब्द कोश-पुं० [सं०] प्रति वर्ष प्रकाशित होनेवाला वह कोष जिसमें किसी देश, समाज या वर्ग आदि से सम्बन्ध रखनेवाली सभी जानने योग्य बातों का संग्रह हो। (ईयर बुक)

अब्धि-पुं० [सं०] १. समुद्र। सागर। २. सरोवर। ताल। ३. सात की संख्या।

अब्रह्मण्य-पुं० [सं०] १. वह कर्म जो ब्राह्मणों के योग्य न हो। २. हिंसा आदि कर्म। ३.वह जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो।

अभंग-वि० [सं०] १. अखंड । अटूट । पूर्ण । २. न मिटनेवाला । ३. लगातार ।
अभक्ष्य-वि० [सं०] १. अखाद्य । अभोज्य । जो खाने के योग्य न हो । २. जिसके खाने का धर्मशास्त्र में निषेध हो ।
अभद्र-वि० [सं०] [भाव० अभद्रता] १. अमांगलिक । अशुभ । २. अशिष्ट ।
अभय-वि० [सं०] [स्त्री० अभया] निर्भय । बेडर । बेखौफ ।
अभय-दान-पुं० [सं०] भय से बचाने का वचन देना । शरण देना । रक्षा करना ।
अभय-पद-पुं० [सं०] मुक्ति । मोक्ष ।
अभय मुद्रा-स्त्री० [सं०] शरीर की वह मुद्रा जो किसी को अभय या पूर्ण आश्वासन देने की सूचक होती है ।
अभय-वचन-पुं० [सं०] भय से बचाने की प्रतिज्ञा । रक्षा का वचन ।
अभरन*-पुं० दे० 'आभरण' ।
अभल*-वि० [सं० अ+हिं० भला] अश्रेष्ठ । बुरा । खराब ।
अभागा-वि० [सं० अभाग्य] [स्त्री० अभागिनी] भाग्यहीन । बदकिस्मत ।
अभाग्य-पुं० [सं०] प्रारब्ध-हीनता । बदकिस्मती ।
अभाव-पुं० [सं०] १. न होना । अविद्यमानता । २. त्रुटि । कमी । ३. दुर्भाव ।
अभावना*-वि० दे० 'अप्रिय' ।
अभास*-पुं० दे० 'आभास' ।
अभि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—सामने, बराबर, अच्छी तरह, बुरा, अच्छा आदि ।
अभिकरण-पुं० [सं०] १. किसी की ओर से, उसके अभिकर्ता के रूप में काम करना । २. वह स्थान जहाँ किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से उसका अभिकर्त्ता रहता और काम करता हो । (एजेन्सी)
अभिकर्त्ता-पुं० [सं०] वह जो किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से उसके प्रतिनिधि के रूप में कुछ काम करने के लिए नियत हो । (एजेन्ट)
अभिकर्त्तापत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसके अनुसार कोई अभिकर्त्ता नियुक्त किया गया हो और उसे कोई काम करने का पूरा अधिकार दिया गया हो । (पावर ऑफ एटारनी)
अभिकर्त्तृत्व-पुं० [सं०] १. अभिकर्त्ता होने की क्रिया या भाव । २. दे० 'अभिकरण' ।
अभिगमन-पुं० [सं०] [वि० अभिगामी] १. पास जाना । २ सहवास । संभोग ।
अभिघात-पुं० [सं०] [वि० अभिघातक, अभिघाती] चोट पहुँचाना । प्रहार । मार ।
अभिचार-पुं० [सं०] [कर्त्ता-अभिचारी] मंत्र-यंत्र द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसा कर्म । पुरश्चरण ।
अभिजात-वि० [सं०] १. अच्छे कुल में उत्पन्न । कुलीन । २. बुद्धिमान । पंडित । ३. योग्य । उपयुक्त । ४. मान्य । पूज्य । ५. सुन्दर । मनोहर ।
अभिजिति-स्त्री० [सं०] युद्ध में दूसरे को जीत लेना । (कान्क्वेस्ट)
अभिज्ञ-वि० [सं०] १. जानकार । विज्ञ । २. निपुण । कुशल ।
अभिज्ञा-स्त्री० [सं०] १. पहले-पहल होनेवाला ज्ञान । २ स्मृति । याद । ३. अलौकिक ज्ञान-बल । (बौद्ध)
अभिज्ञान-पुं० [सं०] [वि० अभिज्ञात] १. स्मृति । २. पहचान या देखकर यह

बतलाना कि यह वही है। (आइडेन्टि-फिकेशन) ३. लक्षण। पहचान।

अभिदत्त-वि० [सं०] अपने स्थान पर या उचित अधिकारी के पास पहुँचाया हुआ। (डेलिवर्ड)

अभिदान-पुं० [सं०] किसी की वस्तु उसके पास पहुँचाना या उसे देना। (डेलिवरी)

अभिधा-स्त्री० [सं०] शब्दों की वह शक्ति जिससे उनके नियत अर्थ ही निकलते हैं।

अभिधान-पुं० [सं०] १. नाम। संज्ञा। २. किसी पद का विशेष नाम या संज्ञा। (डेजिग्नेशन) जैसे-मंत्री, सचिव, निरीक्षक, आचार्य आदि। ३. शब्द-कोश। (डिक्शनरी)

अभिधेय-वि० [सं०] १. प्रतिपाद्य। वाच्य। २. जिसका बोध नाम लेने ही से हो जाय।

पुं० नाम।

अभिनंदन-पुं० [सं०][वि०अभिनन्दनीय] १. आनन्द। २. सन्तोष। ३. प्रशंसा। ४. विनीत प्रार्थना।

अभिनंदनपत्र-पुं० [सं०] वह सम्मान-सूचक पत्र जो बड़े आदमी के आने पर उसके कार्यों आदि से सन्तोष और कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उसे सुनाया और दिया जाता है। (एड्रेस)

अभिनंदना*-अ० [हिं० अभिनंदन] अभिनन्दन करना।

अभिनंदित-वि० [सं०] [स्त्री० अभि-नंदिता] जिसका अभिनंदन किया गया हो।

अभिनय-पुं० [सं०] [वि० अभिनीत] १. दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा का कुछ काल के लिए अनुकरण करना। स्वाँग। नकल। २. नाटक का खेल।

अभिनव-वि० [सं०] १. नया। २. ताजा।

अभिनिर्णय-पुं० [सं०] किसी के दोषी या निर्दोष होने के सम्बन्ध में अभि-निर्णायक (ज्यूरी) का दिया हुआ मत या निर्णय। (वरडिक्ट आफ ज्यूरी)

अभिनिर्णायक-पुं० [सं०] वे लोग जो जज के साथ बैठकर किसी के दोषी या निर्दोष होने के सम्बन्ध में अपना निर्णय या मत देते हैं। (ज्यूरी)

अभिनिर्देश-पुं० [सं०] [वि० अभि-निर्दिष्ट] १. किसी बात में प्रसंगवश होने-वाली किसी दूसरी बात की साधारण चर्चा। (रेफरेन्स) २. किसी विषय में किसी का मत या आदेश लेने के लिए वह विषय उसके पास भेजना। (रेफरेन्स)

अभिनिवेश-पुं० [सं०] १. प्रवेश। पैठ। गति। २. मनोयोग। एकाग्र-चिन्तन। ३. दृढ़ संकल्प। ४. मरण के भय से उत्पन्न क्लेश या कष्ट।

अभिनीत-वि० [सं०] १. निकट लाया हुआ। २. सुसज्जित। अलंकृत। ३. जिसका अभिनय हुआ हो। खेला हुआ। (नाटक)

अभिनेता-पुं० [सं० अभिनेतृ] [स्त्री० अभिनेत्री] अभिनय करने या स्वाँग दिखानेवाला पुरुष। नट। (एक्टर)

अभिनेय-वि० [सं०] अभिनय करने योग्य। खेलने योग्य। (नाटक)

अभिन्न-वि० [सं०] [संज्ञा अभिन्नता] १. जो भिन्न न हो। २. मिला या सटा हुआ। सम्बद्ध।

अभिन्यस्त-वि० [सं०] किसी मद या विभाग में रखा या डाला हुआ। जमा किया हुआ। (डिपाजिटेड)

अभिन्यास-पुं० [सं०] [वि० अभिन्यस्त] किसी मद या विभाग में रखना। जमा करना।

अभिपोषण-पुं० [सं०] प्रतिनिधियों के किये हुए काम की स्वीकृति देकर उसे पक्का करना या मान लेना। (रैटिफिकेशन)

अभिप्राय-पुं० [सं०] [वि० अभिप्रेत] १. आशय। मतलब। तात्पर्य। २. वह प्राकृतिक या काल्पनिक वस्तु जिसकी आकृति किसी चित्र में सजावट के लिए बनाई जाय।

अभिप्रेत-वि० [सं०] अभिप्राय का लक्ष्य या विषय। इष्ट। अभिलषित।

अभिभावक-वि० [सं०] १. अभिभूत या पराजित करनेवाला। २. स्तम्भित कर देनेवाला। ३. वशीभूत करनेवाला। ४. देख-रेख रखनेवाला। रक्षक।

अभिभावित-वि० [सं०] जिसे किसी ने पूरी तरह से दबाकर निकम्मा या अपने अधीन कर लिया हो। किसी के नीचे दबा हुआ।

अभिभाषक-पुं० [सं०] वह विधिज्ञ जो किसी व्यवहार में न्यायालय में किसी पक्ष का समर्थन करता है। (एडवोकेट)

अभिभाषण-पुं० [सं०] १ भाषण। २. वह भाषण या वक्तव्य जो न्यायालय में विधिज्ञ किसी व्यवहार में किसी पक्ष की ओर से देता है। (एडवोकेट का एड्रेस)

अभिभूत-वि० [सं०] १. पराजित। हराया हुआ। २. पीड़ित। ३. वशीभूत। ४. चकित या स्तब्ध।

अभिमंत्रण-पुं० [सं०] [वि० अभिमंत्रित] १. मंत्र द्वारा संस्कार करना। २. आवाहन।

अभिमत-वि० [सं०] १. मनोनीत। वांछित। २. सम्मत। राय के मुताबिक। पुं० १. मत। सम्मति। राय। २. विचार। ३. मन-चाही बात।

अभिमान-पुं० [सं०] [वि० अभिमानी] अहंकार। गर्व। घमंड।

अभिमानी-वि० [सं० अभिमानिन्] [स्त्री० अभिमानिनी] अहंकारी। घमंडी।

अभिमुख-क्रि० वि० [सं०] सामने। सम्मुख।

अभियाचन- पुं० [सं०] अपनी आवश्यकता, अधिकार अथवा प्राप्य बतलाते हुए किसी से कुछ माँगना। माँग। (डिमांड)

अभियान-पुं० [सं०] १. सैनिक कार्य के लिए होनेवाली यात्रा। (एक्सपेडिशन) २. आक्रमण। चढ़ाई।

अभियुक्त-पुं० [सं०] वह जिसपर कोई अभियोग लगाया गया हो। मुलजिम। (एक्यूज़्ड)

अभियोक्ता-पुं० दे० 'अभियोगी'।

अभियोग-पुं० [सं०] १ किसी के सम्बन्ध में यह कहना कि इसने अमुक दोष या अनुचित कार्य किया है। फरियाद। (कम्प्लेन्ट) २. न्यायालय के सामने न्याय के लिए किसी के विरुद्ध यह कहना कि इसने अमुक अपराध या नियम-विरुद्ध कार्य किया है और इसका विचार होना चाहिए। (चार्ज) ३. इस सम्बन्ध का वाद या व्यवहार। नालिश या मुकदमा। (केस)

अभियोगी-पुं० [सं०] वह जिसने किसी पर कोई अभियोग लगाया या चलाया हो। अभियोक्ता। फरियादी। (कम्प्लेनेन्ट)

अभियोज्य-वि० [सं०] (कार्य) जिसके लिए अभियोग लगाना उचित हो। अभियोग लगाने के योग्य।

अभिरत-वि० [सं०] १ लीन। अनुरक्त। २. मिला हुआ। युक्त।

अभिरना*-अ० [सं० अभि+रण=युद्ध] १. भिड़ना। लड़ना। २. टेकना। स० मिलाना।

अभिराम-वि० [सं०] [स्त्री० अभिरामा, भाव० अभिरामता] मनोहर। सुन्दर।

अभिरुचि-स्त्री० [सं०] १. अत्यन्त रुचि। चाह। २. पसन्द।

अभिलषित-वि० [सं०] जिसकी अभिलाषा की जाय। वांछित। चाहा हुआ।

अभिलाख*-स्त्री० [क्रि० अभिलाखना] दे० 'अभिलाषा'।

अभिलाष-पुं० [सं०] १. इच्छा। कामना। चाह। २. वियोग शृंगार में प्रिय से मिलने की इच्छा।

अभिलाषा-स्त्री० [सं०] इच्छा। कामना। आकांक्षा। चाह।

अभिलाषी-वि० [सं० अभिलाषिन्] [स्त्री० अभिलाषिणी] इच्छा करनेवाला। आकांक्षी।

अभिलिखित-वि० [सं०] जिसका अभिलेखन हुआ हो। अभिलेख के रूप में लाया हुआ। नियमित रूप से लिखा या अंकित किया हुआ। (रेकर्डेड)

अभिलेख-पुं० [सं०] किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी हुई सब बातें। (रेकार्ड)

अभिलेखन-पुं० [सं०] किसी विषय की सब बातें किसी विशेष उद्देश्य से लिखना। (रेकर्डिंग)

अभिलेखपाल-पुं० [सं०] वह अधिकारी जिसकी देख-रेख में किसी कार्यालय के अभिलेख आदि रहते हों। (रेकार्ड-कीपर)

अभिलेखालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ अभिलेख सुरक्षित रूप से रखे जाते हैं। (रेकार्ड रूम)

अभिवंदन-पुं० [सं०] १. प्रणाम। नमस्कार। २. स्तुति।

अभिवक्ता-पुं० [सं०] वह जो न्यायालय में किसी पक्ष की ओर से उसके विधिक या व्यावहारिक पक्ष का समर्थन करता है। वकील। (प्लीडर)

अभिवादन-पुं० [सं०] १. प्रणाम। नमस्कार। वन्दना। २. स्तुति।

अभिव्यंजक-वि० [सं०] प्रकट करनेवाला। प्रकाशक। सूचक। बोधक।

अभिव्यंजन-पुं० [सं०] मन के भाव आदि व्यक्त, प्रकट, स्पष्ट या सूचित करना। (एक्सप्रेशन)

अभिव्यंजित-वि० [सं०] जिसका अभिव्यंजन किया गया हो। (एक्सप्रेस्ड)

अभिव्यक्त-वि० [सं०] जिसका अभिव्यंजन हुआ हो। प्रकट। स्पष्ट। जाहिर। (एक्सप्रेस्ड)

अभिव्यक्ति-स्त्री० [सं०] १. प्रकाशन। स्पष्टीकरण। विशेष दे० 'अभिव्यंजन'। २. सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष कार्य रूप में सामने आना। जैसे-बीज से अंकुर निकलना।

अभिशसन-पुं० दे० 'अभिशंसा'।

अभिशंसा-स्त्री० [सं०] [वि० अभिशंसित] इस बात का निर्णय या प्रख्यापन कि अभियुक्त पर लगाया हुआ दोष प्रमाणित हो गया है। (कनविक्शन)

अभिशंसित-वि० [सं०] न्यायालय में जिसका दोषी होना प्रमाणित हो गया

हो। (कनविक्टेड)

अभिशप्त-वि० [सं०] १. शापित। जिसे शाप दिया गया हो। २. जिसपर मिथ्या दोष लगा हो।

अभिशाप-पुं० [सं०] [वि० अभिशप्त] १. शाप। २. मिथ्या दोषारोपण।

अभिषंग-पुं० [सं०] १. पराजय। हार। २. आक्रोश। कोसना। ३. मिथ्या अपवाद। झूठा दोषारोपण। ४. दृढ़ मिलाप। आलिंगन। ५. शपथ। कसम। ६. भूत-प्रेत का आवेश। ७. किसी कार्य या बात में किसी के साथ होना। संग।

अभिषंगी-पुं० [सं०] वह जो किसी बुरे या अनुचित काम में किसी का साथ दे। (एकम्प्लिस)

वि० किसी के साथ होने या लगा रहनेवाला। (कार्य आदि)

अभिषिक्त-वि० [सं०] [स्त्री० अभिषिक्ता] १. जिसका अभिषेक हुआ हो। २. बाधा-शांति के लिए जिसपर मन्त्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो। ३. राज-पद पर नियुक्त।

अभिषेक-पुं० [सं०] [वि० अभिषिक्त] १ जल से सींचना। छिड़काव। २. ऊपर से जल डालकर स्नान। ३. बाधा-शांति या मंगल के लिए मंत्र पढ़कर जल छिड़कना। मार्जन। ४. विधिपूर्वक मन्त्र से जल छिड़ककर राजगद्दी पर बैठाना। ५. शिवलिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा लटकाकर धीरे धीरे पानी टपकाना।

अभिषेचन-पुं० दे० 'अभिषेक'।

अभिसंधि-स्त्री० [सं०] १. वंचना। धोखा। २. चुपचाप काम करने की कई आदमियों की सलाह। कुचक्र। षड्यन्त्र।

अभिसरण-पुं० [सं०] १. आगे या पास जाना। २. प्रिय से मिलने जाना।

अभिसरना*-अ० [सं० अभिसरण] १. आगे बढ़ना। जाना। २. किसी वांछित स्थान की ओर जाना। ३. प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल की ओर जाना।

अभिसाधक-पुं० दे० 'अभिकर्त्ता'।

अभिसाधन-पुं० दे० 'अभिकरण'।

अभिसार-पुं० [सं०] [वि० अभिसारिका, अभिसारी] १. सहायता। सहारा। २. प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जाना।

अभिसारिका-स्त्री० [सं०] प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थान पर जानेवाली स्त्री या नायिका।

अभिसारी-वि० [सं० अभिसारिन्] [स्त्री० अभिसारिणी] १. साधक। सहायक। २. प्रिय से मिलने के लिए संकेत-स्थल पर जानेवाला नायक।

अभिसूचना-स्त्री० [सं०] कोई कार्य्य करने के लिए दी हुई विशेष सूचना। विशिष्ट रूप से कोई काम करने के लिए कहना। (इंस्ट्रक्शन)

अभिहार-पुं० [सं०] १. युद्ध की घोषणा। २. दंड। सजा।

अभी-क्रि० वि० [हिं० अब+ही] इसी क्षण। इसी समय। इसी वक्त।

अभीप्सा-स्त्री० [सं०] [वि० अभीप्सित] (कुछ पाने की) प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा।

अभीष्ट-वि० [सं०] १. वांछित। चाहा हुआ। २. मनोनीत। पसन्द का। ३. आशय के अनुकूल। अभिप्रेत।

पुं० मनोरथ। मन-चाही बात।

अभुआना-अ० [सं० आह्वान] हाथ-पैर

पटकना और सिर हिलाना, जिससे सिर पर भूत आना समझा जाता है।

अभुक्त-वि० [सं०] १. न खाया हुआ। जो खाया या भोगा न गया हो। २. जो भुनाया न गया हो। जिसका नगद धन या प्राप्य वस्तु न ली गई हो। (अनकैश्ड)

अभूत-वि० [सं०] १. जो हुआ न हो। २. अपूर्व। विलक्षण।

अभूतपूर्व-वि० [सं०] १. जो पहले न हुआ हो। २. अपूर्व। अनोखा।

अभेद-पुं० [सं०] [वि० अभेदनीय, अभेद्य] १. भेद का अभाव। अभिन्नता। २. रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक। वि० भेद-शून्य। एक-रूप। समान। वि० दे० 'अभेद्य'।

अभेद्य-वि० [सं०] १. जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके। २. जो टूट न सके।

अभेरना*-स० [?] मिलाना।

अभोग-वि० [सं०] १. जिसका भोग न किया गया हो। २. अछूता। ३. दे० 'अभोग्य'।

अभोगी-वि० [सं०] १. जो भोग न करे। २. विरक्त।

अभोग्य-वि० [सं०] [स्त्री० अभोग्या] (वस्तु) जो भोग करने के योग्य न हो।

अभ्यंग-पुं० [सं०] [वि० अभ्यक्त, अभ्यंजनीय] १. पोतना। लेपना। २. शरीर में तेल लगाना।

अभ्यंतर-पुं० [सं०] १. मध्य। बीच। २. हृदय। क्रि० वि० अन्दर। भीतर।

अभ्यधीन-वि० [सं०] १. किसी नियम, पण, प्रतिबन्ध आदि के अधीन या उससे बँधा हुआ। (सबजेक्ट टू) (क्रि० वि० के रूप में भी) २. दे० 'अधीन'।

अभ्यर्थन-पुं० [सं०] १. किसी से कुछ माँगना या कोई काम करने के लिए जोर देकर कहना। (डिमांड) २. दे० 'अभ्यर्थना'।

अभ्यर्थना-स्त्री० [सं०] [वि० अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थित] १. प्रार्थना। विनय। २. सम्मान के लिए आगे बढ़कर किया जानेवाला स्वागत। अगवानी। ३. दे० 'अभ्यर्थन'।

अभ्यर्पक-पुं० [सं०] वह जो किसी को कोई वस्तु, उसका स्वामित्व अथवा अधिकार दे। (असाइनर)

अभ्यर्पण-पुं० [सं०] [वि० अभ्यर्पक] अपनी कोई वस्तु, उसका स्वामित्व या अधिकार किसी को सौंपना या दे देना। (असाइनमेन्ट)

अभ्यर्पणग्राही-पुं० दे० 'अभ्यर्पिती'।

अभ्यर्पित-वि० [सं०] (वस्तु, उसका स्वामित्व या अधिकार) जो किसी को जिसे सौंप या दे दिया गया हो। (असाइन्ड)

अभ्यर्पिती-पुं० [सं० अभ्यर्पित] वह जिसे कोई वस्तु, उसका स्वामित्व या अधिकार सौंप दिया गया हो। (असाइनी)

अभ्यस्त-वि० [सं०] १. जिसका अभ्यास किया गया हो। २. जिसने अभ्यास किया हो। दक्ष। निपुण।

अभ्यागत-वि० [सं०] १. सामने आया हुआ। २. अतिथि। पाहुना। मेहमान। ३. वह जो किसी से मिलने या भेंट करने आवे। ४. साधु, संन्यासी आदि।

अभ्यास-पुं० [सं०] [वि० अभ्यासी, अभ्यस्त] १. पूर्णता प्राप्त करने के लिए फिर फिर एक ही क्रिया का साधन।

आवृत्ति । मश्क । २. आदत । स्वभाव ।

अभ्यासी-वि० [सं० अभ्यासिन्] [स्त्री० अभ्यासिनी] अभ्यास करनेवाला । साधक ।

अभ्युक्ति-स्त्री० [सं०] किसी व्यवहार या मुकदमे में दोनों पक्षों के कथन या वक्तव्य । (स्टेटमेन्ट)

अभ्युत्थान-पुं० [सं०] १. उठना । २. किसी के आने पर उसके आदर के लिए उठकर खड़े हो जाना । ३. बढ़ती । समृद्धि । ४ उठान । आरम्भ ।

अभ्युदय-पुं० [सं०] १. सूर्य आदि ग्रहों का उदय । २. प्रादुर्भाव । उत्पत्ति । ३ मनोरथ की सिद्धि । ४. वृद्धि । बढ़ती ।

अभ्र-पुं० [सं०] १. मेघ । बादल । २. आकाश । ३. स्वर्ग । सोना ।

अभ्रक-पुं० दे० 'अबरक' ।

अभ्रांत-वि० [सं०] १. भ्रांति-शून्य । भ्रम-रहित । २ स्थिर ।

अमंगल-वि० [सं०] मंगल-रहित । अशुभ ।

पुं० अ-कल्याण । अहित । खराबी ।

अमचूर-पुं० [हिं० आम+चूर] सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण ।

अमत-पुं० [सं०] १. अनुकूल मत का अभाव । असम्मति । २. रोग । ३. मृत्यु ।

अमन-पुं० दे० 'शांति' ।

अमनैक-पुं० [सं० आम्नायिक] १. सरदार । नायक । २. अधिकारी । हकदार । ३. ढीठ ।

अमनैकी*-स्त्री० [हिं० अमनैक] मनमाना आचरण या व्यवहार । स्वेच्छाचार ।

पुं० दे० 'अमनैक' ।

अमर-वि० [सं०] [भाव० अमरता] जो कभी न मरे । सदा जीवित रहनेवाला । चिरजीवी ।

पुं० देवता ।

अमरख*-पुं० दे० 'अमर्ष' ।

अमरता-स्त्री० [सं०] १. मृत्यु से सदा बचे रहना । चिर-जीवन । २. देवत्व ।

अमर पद-पुं० [सं०] मुक्ति ।

अमरलोक-पुं० [सं०] स्वर्ग ।

अमराई*-स्त्री० [सं० आम्रराजि] आम का बाग । आम की बारी ।

अमरावती-स्त्री० [सं०] देवताओं की पुरी । इन्द्रपुरी ।

अमरूत-पुं० [सं० अमृत (फल)] एक पेड़ जिसका फल खाया जाता है ।

अमर्याद-वि० [सं०] १. मर्यादा-विरुद्ध । बे-कायदा । २. अप्रतिष्ठित ।

अमर्ष(ण)-पुं० [सं०] [वि० अमर्षित, अमर्षी] १. क्रोध । कोप । गुस्सा । २. वह द्वेष या दुःख जो विरोधी या शत्रु का कोई अपकार न कर सकने पर हो ।

अमर्षी-वि० [सं० अमर्षिन्] [स्त्री० अमर्षिणी] १ असहनशील । २. जल्दी बुरा माननेवाला ।

अमल-वि० [सं०] [स्त्री० अमला] १. निर्मल । स्वच्छ । २. निर्दोष । पाप-शून्य ।

पुं० [अ०] १. शासन-काल । २. नशा । ३. व्यवहार । प्रयोग ।

अमलदारी-स्त्री० [अ०+फा०] शासन ।

अमल-पट्टा-पुं० [अ० अमल+हिं० पट्टा] वह दस्तावेज या अधिकार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिन्दे को किसी कार्य्य पर नियुक्त करने के समय दिया जाय ।

अमलबेत-पुं० [सं० अम्लवेतस्] एक पेड़ जिसके फल की खटाई तीक्ष्ण होती है ।

अमला-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी ।

अमा-स्त्री० [सं०] १. अमावस्या की कला । २. घर । ३. मर्त्यलोक ।

अमातना*-स० [सं० आमंत्रण] आमंत्रित करना । निमन्त्रण या न्योता देना ।

अमात्य-पुं० [सं०] मंत्री । वजीर ।

अमानत-स्त्री० [अ०] १. अपनी वस्तु किसी दूसरे के पास कुछ काल के लिए रखना । २. इस प्रकार रखी हुई वस्तु ।

अमाना-अ० [सं० आ=पूरा+मान] १. पूरा पूरा भरना । समाना । अँटना । २. फूलना । इतराना । गर्व करना ।

अमानी-वि० [सं० अमानिन्] निर-भिमान । घमंड-रहित ।

स्त्री० [सं० आत्मन्] १. वह भूमि जिसकी जमींदार सरकार हो । खास । २. लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रिआयत हो । ३. दैनिक मज-दूरी पर होनेवाला काम ।

स्त्री० [सं० अ+हिं० मानना] मनमानी कार्रवाई । अंधेर ।

अमानुष-पुं० [सं०] वह प्राणी जो मनुष्य न हो, बल्कि उससे भिन्न हो । जैसे-देवता, राक्षस आदि ।

वि० दे० 'अमानुषी' ।

अमानुषिक-वि० दे० 'अमानुषी' ।

अमानुषी-वि० [सं०] १. मनुष्य की शक्ति के बाहर का । २. मनुष्य के स्व-भाव, प्रकृति या आचरण के विरुद्ध । पशुओं का-सा । पाशव । जैसे-अमानुषी अत्याचार ।

अमाय-वि० [सं०] १. माया-रहित । निर्लिप्त । २. छल-कपट-शून्य ।

अमावट-स्त्री० [हिं० आम] आम के सुखाये हुए रस की परत या तह ।

अमावास्या-स्त्री० [सं०] कृष्ण पक्ष की अन्तिम तिथि जिसमें रात को चन्द्रमा बिलकुल दिखाई नहीं देता ।

अमिट-वि० [सं० अ+मिटना] १. जो न मिटे । जो नष्ट न हो । स्थायी । २. जिसका होना निश्चित हो । अवश्यम्भावी ।

अमित-वि० [सं०] १. अपरिमित । बेहद । असीम । २. बहुत अधिक ।

अमिय*-पुं० दे० 'अमृत' ।

अमिय-मूरि-स्त्री० [सं० अमृत-मूरि] अमृत बूटी । संजीवनी जड़ी ।

अमिल*-वि० [सं० अ=नहीं+हिं० मिलना] २. न मिलनेवाला । अप्राप्य । २. बे-मेल । बेजोड़ । ३. जिससे मेल-जोल न हो ।

अमी*-पुं० दे० 'अमृत' ।

अमीकर*-पुं०[सं० अमृतकर] चंद्रमा ।

अमीत*-पुं० [सं० अमित्र] शत्रु ।

अमीन-पुं०[अ०] [भाव० अमीनी] माल-विभाग का वह कर्मचारी जो खेतों के बँटवारे आदि का प्रबन्ध करता है ।

अमी-निधि-पुं० [हिं० अमी+सं० निधि] १. अमृत का समुद्र । २. चन्द्रमा ।

अमीर-पुं० [अ०] [भाव० अमीरी] १. कार्य का अधिकार रखनेवाला । सरदार । २. धनाढ्य । दौलतमन्द । ३. उदार ।

अमुक-वि० [सं०] वह जिसका नाम न लिया गया हो । कोई व्यक्ति । (इस शब्द का प्रयोग किसी नाम के स्थान पर करते हैं ।)

अमूर्त्त-वि० [सं०] १. मूर्ति-रहित । निराकार । २. जिसका कोई ठोस रूप सामने न हो ।

पुं० १. परमेश्वर । २. आत्मा । ३. काल । ४. आकाश । ५. वायु ।

अमूलक-वि० [सं०] १. निर्मूल । २. मिथ्या ।

अमूल्य-वि० [सं०] १. जिसका मूल्य न लग सके। अनमोल। २. बहुमूल्य।

अमृत-पुं० [सं०] [भाव० अमृतत्व] १. वह वस्तु जिसे पीने से जीव अमर हो जाता है। सुधा। पीयूष। २. जल। ३. घी। ४. मीठी और स्वादिष्ट वस्तु।

अमृतवान-पुं० [सं० अमृत=घी+ वान] लाह का रोगन किया हुआ मिट्टी का बरतन।

अमेजना*-स०[फा० आमेजन]मिलाना।

अमेय-वि० [सं०] १. असीम। बेहद। २. जो जाना न जा सके। अज्ञेय।

अमेल-वि० [हिं० अ+मेल] १. असम्बद्ध। २. जिसमें मेल न हो।

अमेड*-वि० [हिं० अ+मेड] मर्यादा या बन्धन न माननेवाला।

अमोघ-वि० [सं०] निष्फल न होनेवाला। अव्यर्थ। अचूक।

अमोल-वि० दे० 'अमूल्य'।

अम्माँ-स्त्री० [सं० अम्बा] माता। माँ।

अम्ल-पुं० [सं०] १. खटाई। २. तेजाब। वि० खट्टा। तुर्श।

अम्लपित्त-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें जो कुछ भोजन किया जाता है, वह सब पित्त के दोष से खट्टा हो जाता है।

अम्लान-वि० [सं०] १. जो उदास न हो। २. निर्मल। स्वच्छ। साफ।

अम्हौरी-स्त्री० [सं० अम्भस्+औरी (प्रत्य०)] बहुत छोटी छोटी फुंसियाँ जो गरमी के दिनों में पसीने के कारण शरीर में निकलती हैं। अँधौरी। घमौरी।

अयथा-वि० [सं०] १. मिथ्या। झूठ। २. अयोग्य।

अयन-पुं० [सं०] १. गति। चाल। २. सूर्य्य या चन्द्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या प्रवृत्ति, जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। ३. आश्रम। ४. स्थान। ५. घर। ६. काल। समय। ७. गाय या भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।

अयश-पुं० [सं०] १. अपयश। अपकीर्त्ति। २. निन्दा।

अयस्कांत-पुं० [सं०] चुम्बक।

अयाचक-वि० [सं०] १. न माँगनेवाला। जो न माँगे। २. सन्तुष्ट। पूर्ण-काम।

अयाचित-वि० [सं०] बिना माँगा हुआ।

अयाची-पुं० दे० 'अयाचक'।

अयान-पुं० दे० 'अयाना'।

अयानपन*-पुं० [हिं० अजान+पन] १. अज्ञानता। अनजानपन। २. भोलापन। सीधापन।

अयाना*-वि० [हिं० अजान] [स्त्री० अयानी] अज्ञान। बुद्धि-हीन।

अयाल-पुं० [फा०] घोड़े और सिंह आदि की गरदन पर के बाल। केसर।

अयास-क्रि० वि० दे० 'अनायास'।

अयुक्त-वि० [सं०] १. अयोग्य। अनुचित। बे-ठीक। २. असंयुक्त। अलग। ३. आपद्ग्रस्त। ४. अनमना। ५. असम्बद्ध। अंड-बंड।

अयुक्ति-स्त्री० [सं०] १. युक्ति का अभाव। असम्बद्धता। गड़बड़ी। २. योग न देना या न होना। अप्रवृत्ति।

अयोग-पुं० [सं०] १. योग का अभाव। २. बुरा योग। ३. कुसमय। ४. संकट।

अयोग्य-वि० [सं०] [स्त्री० अयोग्या, भाव० अयोग्यता] १. जो योग्य न हो। अनुपयुक्त। २. नालायक। निकम्मा। अपात्र। ३. अनुचित। ना-मुनासिब।

अयोग्यता-स्त्री० [सं०] १. 'योग्य' न होने या 'अयोग्य' होने का भाव। २. निकम्मापन। ३. अपात्रता। ४. अनौचित्य।

अरंभ*-पुं० दे० 'आरंभ'।
पुं० [सं० रंभ] १. हलचल। २. नाद। शब्द।

अरंभना*-अ० [सं० आ+रंभ=शब्द करना] १. बोलना। २. शोर करना।
स० [सं० आरम्भ] आरम्भ करना।
अ० आरंभ होना। शुरू होना।

अर*-स्त्री० दे० 'अड़'।

अरक-पुं० [अ० अर्क] १. किसी पदार्थ का वह रस जो भभके से खींचने से निकले। आसव। २. रस।
पुं० [अ०] पसीना। स्वेद।

अरकन*-अ० [अनु०] १. अरराकर गिरना। २. टकराना। ३. फटना।

अरगजा-पुं० [हिं० अगर+जा] एक सुगन्धित द्रव्य जो केसर, चन्दन, कपूर आदि को मिलाने से बनता है।

अरगट*-वि० [हिं० अलग] १. पृथक्। अलग। २. निराला। भिन्न।

अरगला-पुं० दे० 'अर्गला'।

अरगाना*-अ० [हिं० अलगाना] १. अलग होना। पृथक् होना। २. चुप्पी साधना। मौन होना।
स० अलग करना। छाँटना।

अरघा-पुं० [सं० अर्घ] १. एक प्रसिद्ध पात्र जिसमें अरघ का जल रखकर दिया जाता है। २. वह आधार जिसमें शिव-लिंग स्थापित किया जाता है। जलधरी।

अरचना*-स० [सं० अर्चन] पूजना।

अरज-स्त्री० [अ० अर्ज] १. विनय। निवेदन। विनती। २. चौड़ाई।

अरजी-स्त्री० [अ० अर्जी] आवेदनपत्र। निवेदनपत्र। प्रार्थनापत्र।
*† [अ० अर्ज़ी] अर्ज़ करनेवाला। प्रार्थी।

अरणी-स्त्री० [सं०] १. गनियारी वृक्ष। २. सूर्य्य। ३. काठ का एक यंत्र जिससे यज्ञों के लिए आग निकालते थे।

अरण्य-पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. संन्यासियों का एक भेद।

अरण्य-रोदन-पुं० [सं०] १. ऐसी पुकार जिसे कोई सुननेवाला न हो। २. ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे।

अरथाना*-स० [सं० अर्थ] अर्थ समझाना। व्याख्या करना।

अरथी-स्त्री० [सं० रथ] वह ढाँचा जिस पर मुरदे को रखकर स्मशान ले जाते हैं। टिखटी।
पुं० [सं० अ+रथी] जो रथी न हो। पैदल।
*वि० दे० 'अर्थी'।

अरदली-पुं० [अं० आर्डरली] वह चपरासी जो साथ में या दरवाजे पर रहता है।

अरध*-वि० दे० 'अर्ध'।
क्रि० वि० [सं० अधः] अंदर। भीतर।

अरना-पुं० [सं० अरण्य] जंगली भैंसा।
*अ० दे० 'अड़ना'।

अरनी-स्त्री० दे० 'अरणी'।

अरपना*-स० [सं० अर्पण] अर्पण करना।

अरब-पुं० [सं० अर्बुद] १. सौ करोड़। २. सौ करोड़ की संख्या।
पुं० [सं० अर्वन्] १. घोड़ा। २. इन्द्र।
पुं० [अ०] पश्चिमी एशिया का एक प्रसिद्ध रेगिस्तानी देश।

अरबराना-अ० [हिं० अरबर] [भाव० अरबरी] १. घबराना। व्याकुल होना। २. चलने में लड़खड़ाना।

अरबी-वि० [फा०] अरब देश का । पुं० १. अरबी घोड़ा । ताज़ी । २. ताशा नामक बाजा ।
स्त्री० अरब देश की भाषा ।

अरबीला*-वि० [अनु०] भोला-भाला ।

अरमान-पुं० [तु०] लालसा । चाह । वासना ।

अरराना-अ० [अनु०] १. अररर शब्द करना । २. भहरा पड़ना । सहसा गिरना ।

अरविन्द-पुं० [सं०] १. कमल । २. सारस ।

अरसना*-अ० [सं० अलस] शिथिल या ढीला पड़ना । मन्द होना ।

अरसना-परसना*-स० [सं० स्पर्शन] आलिंगन करना । गले लगाना ।

अरसा-पुं० [अ० अर्सः] १. समय । काल । २. देर । विलम्ब ।

अरसाना*-अ० दे० 'अलसाना' ।

अरसीला*-वि० [सं० अलस] आलस्य-पूर्ण । आलस्य से भरा हुआ ।

अरहर-स्त्री० [सं० आढकी] एक अनाज जिसकी दाल खाई जाती है । तुअर ।

अराजक-वि० [सं०] १. जहां राजा न हो । राजा-हीन । बिना राजा का । २. राज्य में अव्यवस्था उत्पन्न करनेवाला ।

अराजकता-स्त्री० [सं०] १. राजा का न होना । २. शासन का अभाव । ३. अशान्ति । हलचल ।

अराधना*-स० [सं० आराधन] १. आराधना करना । पूजा करना । २. जपना । ध्यान करना ।
स्त्री० दे० 'आराधना' ।

अराधी-वि० [सं० आराधन] आराधना या पूजा करनेवाला । पूजक ।

अरारूट-पुं० [अँ० एरोरूट] एक पौधा जिसके कन्द का आटा तीखुर की तरह काम में आता है ।

अरि-पुं० [सं०] १. शत्रु । वैरी । २. चक्र । ३. काम, क्रोध आदि । ४. छः की संख्या ।

अरियाना*-स० [सं० अरे] अरे कहकर बातें करना । तिरस्कार करना ।

अरिष्ट-पुं० [सं०] १. दुःख । कष्ट । २. आपत्ति । विपत्ति । ३. दुर्भाग्य । ४. अपशकुन । ५. दुष्ट ग्रहों का मरणकारक योग । ६. एक प्रकार का मद्य जो ओष-धियों का खमीर उठाकर बनाया जाता है । ७. अनिष्ट उत्पात । जैसे-भूकम्प ।
वि० [सं०] बुरा । अशुभ ।

अरी-अव्य० [सं० अयि] स्त्रियों के लिए सम्बोधन ।

अरुंधती-स्त्री० [सं०] १. वशिष्ठ मुनि की स्त्री । २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म्म से ब्याही गई थी । ३. एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षि मंडल में है ।

अरु*-संयो० दे० 'और' ।

अरुचि-स्त्री० [सं०] १. रुचि का अभाव । अनिच्छा । २. अग्निमांद्य रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती । ३. घृणा ।

अरुझना*-अ० दे० 'उलझना' ।

अरुण-वि० [सं०] [स्त्री० अरुणा] लाल । रक्त ।

अरुणाई*-स्त्री० दे० 'अरुणिमा' ।

अरुणाभ-वि० [सं०] लाल आभा से युक्त । लाली लिये हुए ।

अरुणिमा-स्त्री० [सं०] ललाई । लाली । सुर्खी ।

अरुणोदय-पुं० [सं०] उषाकाल । ब्राह्म-मुहूर्त्त । तड़का । भोर ।

अरुनारा*-वि० [सं० अरुण] लाल

रंग का।
अरूभना*-अ० दे० 'उलझना'।
अरे-अव्य० [सं०] १. सम्बोधन का शब्द। ए। ओ। २. एक आश्चर्यसूचक अव्यय।
अरोहना*-अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।
अर्क-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. इन्द्र। ३. तांबा। ४. विष्णु। ५. आक। मदार। ६. बारह की संख्या।
पुं० दे० 'अरक'।
अर्गला-स्त्री० [सं०] १. अरगल। अगरी। व्योंड़ा। २. किवाड़। ३. अवरोध। ४. कल्लोल। ५. वे रंग-बिरंग के बादल जो सूर्योदय या सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम में दिखाई देते हैं। ६. मांस।
अर्घ-पुं० [सं०] १. षोडशोपचार में से एक। जल, दूध, दही, सरसों, जौ आदि मिलाकर देवता को अर्पित करना। २. सामने जल गिराना। ३. हाथ धोने के लिए जल देना। ४. मूल्य। भाव।
अर्घ-पतन-पुं० [सं०] भाव का गिरना। माल की कीमत बाजार में कम होना। (डेप्रिसिएशन)
अर्घपात्र-पुं० [सं०] अरघा।
अर्घ्य-वि० [सं०] १. पूजनीय। २ बहुमूल्य। ३. पूजा में देने योग्य (जल, फूल, आदि) ४. भेंट देने योग्य।
अर्चक-वि० [सं०] अर्चना या पूजा करनेवाला। पूजक।
अर्चन-पुं० [सं०] १. पूजा। पूजन। २. आदर-सत्कार।
अर्चा-स्त्री० [सं०] १. पूजा। २. प्रतिमा।
अर्ज-स्त्री० [अ०] विनती। विनय।
पुं० चौड़ाई। आयत।
अर्जन-पुं० [सं०] [वि० अर्जनीय] १. उपार्जन। पैदा करना। कमाना। २. इकट्ठा करना। संग्रह।
अर्जित-वि० [सं०] किसी प्रकार प्राप्त या इकट्ठा किया हुआ। संगृहीत। (एक्वायर्ड)
अर्जी-स्त्री० [अ०] प्रार्थना-पत्र।
अर्जी-दावा-पुं० [फा०] वह निवेदनपत्र जो अदालत में दावा दायर के समय दिया जाय।
अर्जुन-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। काहू। २ पाँच पांडवों में से मझले का नाम।
अर्णव-पुं० [सं०] १ समुद्र। २ सूर्य। ३. चार की संख्या।
अर्थ-वि० [सं०] लोगों के स्वकीय अधिकारों और उपचारों से संबंध रखनेवाला, पर अपराधिक से भिन्न। (सिविल) जैसे-अर्थ व्यवहार। (सिविल केस)
पुं० १. शब्दों का वह अभिप्राय जो बोलचाल में लिया जाता है। मतलब। मानें। २. अभिप्राय। आशय। ३. हेतु। निमित्त। ४. धन-सम्पत्ति। दौलत।
अर्थक-वि० [सं०] १. अर्थ या धन उपार्जित करने या करानेवाला। २. अर्थ या धन से सम्बन्ध रखनेवाला। आर्थिक। ३. अर्थ या मतलब से सम्बन्ध रखनेवाला।
अर्थकर-वि० [सं०] [स्त्री० अर्थकरी] जिससे धन उपार्जन किया जाय। धनदायक। जैसे-अर्थकरी विद्या।
अर्थ-कार्य-पुं० दे० 'अर्थ-विवाद'।
अर्थ-दंड-पुं० [सं०] १. वह दंड जो अर्थ या धन के रूप में हो। जुरमाना। (फाइन) २. किसी प्रकार की क्षति या व्यय के बदले में लिया जानेवाला धन। (कॉस्ट्स)
अर्थ-न्यायालय-पुं०[सं०] वह न्यायालय

जिसमें केवल अर्थ-सम्बन्धी वादों का विचार होता हो। दीवानी कचहरी। (सिविल कोर्ट)

अर्थ-पिशाच-पुं० [सं०] बहुत बड़ा कंजूस। धन-लोलुप।

अर्थ-प्रक्रिया-स्त्री० [सं०] अर्थ-न्यायालय के द्वारा होनेवाली प्रक्रिया या कार्य। (सिविल प्रोसीजर)

अर्थ-प्रसर-पुं० [सं०] अर्थ-न्यायालय से निकली हुई आज्ञा या सूचना। (सिविल प्रोसेस)

अर्थ-मंत्री-पुं० दे० 'अर्थ सचिव'।

अर्थ-मूलक-वि० [सं०] अर्थ या दीवानी विभाग से सम्बन्ध रखनेवाला।

अर्थ-वाद-पुं० [सं०] १. किसी बात का अर्थ या प्रयोजन बतलाना। २. वह वाक्य जिसमे किसी विधि के करने की उत्तेजना या प्रोत्साहन हो। जैसे-दान करने से स्वर्ग मिलता है। ३. विधान की नियमावली आदि के आरम्भ की वे बातें जिनसे उस विधान या नियमावली का अर्थ या प्रयोजन सूचित होता है। (प्रिएम्बुल)

अर्थ-विधि-स्त्री० [सं०] वह विधि या कानून जो राज्य की ओर से जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए (अपराधिक विधि से भिन्न) बनाया गया हो। (सिविल लॉ)

अर्थ-विवाद-पुं० [सं०] वह विवाद (मुकदमा) जो केवल अर्थ या धन से सम्बन्ध रखता हो। दीवानी मुकदमा। (सिविल केस)

अर्थ-व्यवहार-पुं० दे० 'अर्थ-विवाद'।

अर्थ-शास्त्र-पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें अर्थ की प्राप्ति, रक्षा और वृद्धि का विवेचन हो। २. राज्य के प्रबन्ध, वृद्धि, रक्षा आदि की विद्या।

अर्थ-सचिव-पुं० [सं०] किसी राज्य या प्रान्त के अर्थ विभाग का वह प्रधान अधिकारी या मन्त्री जो आर्थिक विषयों की देख-रेख करता है। (फाइनान्स मिनिस्टर)

अर्थांतरन्यास-पुं० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य द्वारा समर्थन किया जाता है।

अर्थात्-अव्य० [सं०] इसका अर्थ यह है कि। मतलब यह कि।

अर्थाना*-स० [सं० अर्थ] अर्थ लगाना।

अर्थापत्ति-स्त्री० [सं०] १. मीमांसा में वह प्रमाण जिसमे एक बात से दूसरी बात की सिद्धि आपसे आप हो जाय। २. एक अर्थालंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाती है।

अर्थापन-पुं० [सं०] किसी गूढ़ पद या वाक्य का अर्थ लगाना या बताना। यह कहना कि इसका यह अर्थ है। (इन्टरप्रेटशन)

अर्थालंकार-पुं० [सं०] वह अलंकार जिसमें अर्थ का चमत्कार हो।

अर्थिक-पुं० [सं०] १. वह जो अपने मन में कोई अर्थ या कामना रखता हो। कुछ चाहनेवाला। २. कोई पद, कार्य या सेवा प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाला। उम्मेदवार। (कैन्डिडेट)

अर्थी-वि० [सं० अर्थिन्] [स्त्री० अर्थिनी] १. इच्छा रखनेवाला। चाह रखनेवाला। २. कार्य्यार्थी। प्रयोजनवाला। गर्जी।
पुं० १. मुद्दई। २. सेवक। ३. धनी।

स्त्री० दे० 'अरथी'।

अर्थोपचार-पुं० [सं०] वह उपचार या क्षति-पूर्ति आदि जो अर्थ-न्यायालय या अर्थ-विधि के द्वारा प्राप्त हो। (सिविल रेमेडी)

अर्थ्यक-पुं० [सं० अर्थ] वह पत्र जिसमें किसी से प्राप्य धन या मूल्य आदि का ब्योरा हो। (बिल)

अर्थ्यक समाहर्ता-पुं० [सं०] वह जो अर्थ्यकों में लिखा हुआ प्राप्य धन उगाहता या इकट्ठा करता हो। (बिल कलक्टर)

अर्दन-पुं० [सं०] १. पीड़न। हिंसा। २. जाना। ३. माँगना।

अर्दना*-स० [सं० अर्दन] पीड़ित करना। कष्ट देना।

अर्द्ध-वि० [सं०] आधा।

अर्द्ध चन्द्र-पुं० [सं०] १. अष्टमी का चन्द्रमा जो आधा होता है। २. चन्द्रिका। मोरपंख पर की आँख। ३. नख-क्षत। ४. सानुनासिक का एक चिह्न। चन्द्र-बिन्दु। ५. निकाल बाहर करने के लिए गले में हाथ लगाना। गरदनियाँ।

अर्द्ध-जल-पुं० दे० 'अर्द्धोदक'।

अर्द्ध-नारीश्वर-पुं० [सं०] तन्त्र में शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप।

अर्द्ध-मागधी-स्त्री० [सं०] प्राकृत का एक भेद। काशी और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा।

अर्द्ध-वृत्त-पुं० [सं०] मध्य-बिन्दु से समान अन्तर पर खिंची हुई गोल रेखा का आधा अंश। आधा गोला या वृत्त।

अर्द्ध-समवृत्त-पुं० [सं०] वह छन्द जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो।

अर्द्धांग-पुं० [सं०] १. आधा अंग। २. लकवा रोग जिसमें आधा अंग बे-काम हो जाता है।

अर्द्धांगिनी-स्त्री० [सं०] स्त्री। पत्नी।

अर्द्धाली-स्त्री० [सं० अर्धालि] आधी चौपाई। चौपाई की दो पंक्तियाँ।

अर्द्धासन-पुं० [सं०] किसी का सम्मान करने के लिए उसे अपने साथ अपने आसन पर बैठाना या अपने आसन का आधा अंश उसे देना।

अर्द्धोदक-पुं० [सं०] मरते हुए व्यक्ति को अन्त समय में किसी नदी या जलाशय में इस प्रकार रखना कि उसका आधा अंग जल में और आधा बाहर रहे।

अर्द्धोदय-पुं० [सं०] एक पर्व जो उस दिन होता है जिस दिन माघ की अमावस्या रविवार को होती है और श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग पड़ता है।

अर्पण-पुं० [सं०] [वि० अर्पित] १. देना। दान। २. नजर। भेंट।

अर्पना*-स० [सं० अर्पण] भेंट करना।

अर्बुद-पुं० [सं०] १. गणित में इकाई-दहाई के नवें स्थान की संख्या। दस करोड़। २. अरावली पहाड़। ३. बादल। ४. दो मास का गर्भ। ५ एक रोग जिसमें शरीर में एक प्रकार की गाँठ पड़ जाती है। बतौरी।

अर्भक-वि० [सं०] १. छोटा। अल्प। २. मूर्ख। ३. दुबला-पतला। पुं० [सं०] बालक। लड़का।

अर्यमा-पुं० [सं० अर्यमन्] १. सूर्य। २. बारह आदित्यों में से एक।

अर्वाचीन-वि० [सं०] १. हाल का। आधुनिक। २. नवीन। नया।

अर्श-पुं० [सं०] बवासीर नामक रोग।

अर्ह-वि० [सं०] १. पूज्य । २. योग्य । उपयुक्त । जैसे-पूजार्ह, मानार्ह, दंडार्ह । पुं० १. ईश्वर । २. इन्द्र ।

अर्हत-पुं० [सं०] १. जिन देव । बुद्ध ।

अलं-अव्य० दे० 'अलम्' ।

अलंकरण-पुं० [सं०][वि० अलंकृत] १. अलंकारों आदि से सजाना । अलंकृत करना । २. सजावट । सजा ।

अलंकार-पुं० [सं०] [वि० अलंकृत] १. आभूषण । गहना । जेवर । २. वर्णन करने की वह रीति जिससे चमत्कार और रोचकता आती है । ३. नायिका का सौन्दर्य बढ़ानेवाले हाव-भाव ।

अलंकृत-वि० [सं०][स्त्री० अलंकृता] १. विभूषित । सँवारा हुआ । २ काव्या-लंकार से युक्त ।

अलंग-पुं० [सं० अल=पूर्ण+अंग] ओर । तरफ । दिशा ।

मुहा०-अलंग पर आना या होना=घोड़ी का मस्ताना ।

अलंघ्य-वि० [सं०] १. जो लांघने योग्य न हो । जिसे लांघ न सकें । २. जिसे टाल या छोड़ न सकें ।

अलक-स्त्री० [सं०] १. मस्तक के इधर-उधर लटकते हुए बाल । केश । लट । २. छल्लेदार बाल ।

अलकतरा-पुं० [अ०] पत्थर के कोयले को उबाल या गलाकर निकाला हुआ एक प्रसिद्ध गाढ़ा काला पदार्थ ।

अलक-लड़ैता*-वि० [हिं० अलक= बाल+लाड़=दुलार] दुलारा । लाड़ला ।

अलक-सलोरा*-वि० [सं० अलक= बाल+हिं० सलोना] लाड़ला । दुलारा ।

अलकावलि-स्त्री० [सं०] १. केशों का समूह । बालों की लटें । २. घूँघरवाले बाल । छल्लेदार बाल ।

अलक्षण-पुं० [सं०] [स्त्री० अलक्षणा] १. लक्षण का न होना । २. बुरा या अशुभ लक्षण । ३. वह जिसमें बुरे लक्षण हों ।

अलक्षित-वि० दे० 'अलक्ष्य' ।

अलक्ष्य-वि० [सं०] १. अदृश्य । जो दिखाई न पड़े । गायब । २. जिसका लक्षण न बतलाया जा सके ।

अलख-वि० [सं० अलक्ष्य] १. जो दिखाई न पड़े । अदृश्य । अप्रत्यक्ष । २. अगोचर । इन्द्रियातीत । (ईश्वर का एक विशेषण)

मुहा०-अलख जगाना=१. पुकारकर पर-मात्मा का स्मरण करना या कराना । २. परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना ।

अलग-वि० [सं० अलग्न] जुदा । पृथक् । भिन्न । अलहदा ।

मुहा०-अलग करना=१. दूर करना । हटाना । २. नौकरी से छुड़ाना । बरखास्त करना । ३. बेलाग । ४. बचाया हुआ । रक्षित ।

अलगनी-स्त्री० [सं० आलग्न] आड़ी रस्सी य. बाँस जो कपड़े टाँगने के लिए घर में बाँधा जाता है । डारा ।

अलगाऊ-वि० [हिं० अलग] १. अलग करने या रखनेवाला । २. अलग करने या रखने का पक्षपाती ।

अलगाना-स० [हिं० अलग] १. अलग करना । छाँटना । २. जुदा करना । दूर करना । हटाना ।

अलगाव-पुं० [हिं० अलग] अलग होने या रहने की क्रिया या भाव । पार्थक्य ।

अलगोजा-पुं० [अ०] एक प्रकार की बाँसुरी ।

अलता-पुं० [सं० अलक्तक] १. लाल रंग जो स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं। २. महावर। खसी की सूत्रेंद्रिय।

अलबत्ता-अव्य० [अ०] १. निस्सन्देह। निःसंशय। बेशक। २. हाँ। बहुत ठीक। दुरुस्त। ३. लेकिन। परन्तु।

अलबेला-वि० [सं० अलभ्य] [स्त्री० अलबेली] १. बाँका। बना-ठना। छैला। २. अनोखा। अनूठा। ३. सुन्दर। ४. अल्हड़। बेपरवाह। मनमौजी। पुं० नारियल का बना हुआ हुक्का।

अलभ्य-वि० [सं०] [भाव० अलभ्यता] १. न मिलने योग्य। अप्राप्य। २. जो कठिनता से मिल सके। दुर्लभ। ३ अमूल्य। अनमोल।

अलम्-अव्य० [सं०] यथेष्ट। पर्याप्त।

अलमस्त-वि० [फा०] [संज्ञा अलमस्ती] १. मतवाला। बदहोश। बेहोश। २. निश्चिंत। बेफिक्र।

अलमारी-स्त्री० [पुर्त्त० अलमारियो] वह खड़ा सन्दूक जिसमें चीजें रखने के लिए खाने या दर बने रहते हैं। बड़ी भंडरिया।

अलल-टप्पू-वि० [अनु०] अटकल-पच्चू। बे-ठिकाने का। अंड-बंड।

अलल-बछेड़ा-पुं० [हिं० अल्हड़+बछेड़ा] १. घोड़े का जवान बच्चा। २. अल्हड़ आदमी।

अललाना-अ० [सं० अर=बोलना] गला फाड़कर बोलना। चिल्लाना।

अलवान-पुं० [अ०] ऊनी चादर।

अलस-वि० [सं०] [भाव० अलसता] आलसी। सुस्त।

अलसाना-अ० [सं० अलस] आलस्य में पड़ना। शिथिलता अनुभव करना।

अलसी-स्त्री० [सं० अतसी] १. एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

अलसेट(ठ)-स्त्री० [सं० अलस] [वि० अलसेटिया] १. ढिलाई। व्यर्थ की देर। २. टाल-मटोल। ३. भुलावा। चकमा। ४. बाधा। अड़चन। ५. झगड़ा। तकरार।

अलसौहाँ*-वि० [सं० अलस] [स्त्री० अलसौंहीं] १. आलस्ययुक्त। शिथिल। २. नींद से भरा हुआ। उनींदा।

अलह*-वि० दे० 'अलभ्य'।

अलहदा-वि० दे० 'अलग'।

अलहदी-वि० [अ० अहदी] आलसी और अकर्मण्य।

अलात-पुं० [सं०] १. जलती हुई लकड़ी। २ अंगारा।

अलात-चक्र-पुं० [सं०] १ जलती हुई लकड़ी को जोर से घुमाने से बना हुआ मंडल। २. बनेठी।

अलान-पुं० [सं० आलान] १. हाथी बाँधने का खूँटा या सिक्कड़। २. बन्धन। ३. बेड़ी। ४ बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी हुई लकड़ी या ढाँचा।

अलाप-पुं० दे० 'आलाप'।

अलापना-अ० [सं० आलापन] १. बोलना। बात-चीत करना। २ गाने में तान लगाना। ३. गाना।

अलापी-वि० [सं० आलापिन्] बोलनेवाला। शब्द करनेवाला।

अलाभ-पुं० [सं०] १. लाभ न होना। २. घाटा। घटी।

अलाम*-वि० [अ० अल्लामा] १. बातें बनानेवाला। २. मिथ्यावादी।

अलार-पुं० [सं०] कपाट। किवाड़। *पुं० [सं० अलात] १. अलाव। २. आँवाँ।

अलाव-पुं० [सं० अलात] तापने के लिए जलाई हुई आग। कौड़ा।

अलावा-क्रि० वि० [अ०] सिवाय। अतिरिक्त।

अलिंग-वि० [सं०] १. लिंग-रहित। बिना चिह्न का। २. जिसकी कोई पहचान न बतलाई जा सके।
पुं० १. व्याकरण में वह शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत हो। जैसे-हम, तुम, मित्र। २. ब्रह्म।

अलिंद-पुं० [सं०] मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या छज्जा।
*पुं० [सं० अलींद्र] भौंरा।

अलि-पुं० [सं०] [स्त्री० अलिनी] १ भौंरा। २. कोयला। ३. कौआ। ४. बिच्छू। ५. वृश्चिक राशि। ६. कुत्ता। ७. मदिरा।
स्त्री० दे० 'अली'।

अलिप्त-वि० [सं०] जो लिप्त न हो। निर्लिप्त। अलीन।

अली-स्त्री० [सं० आली] १. सखी। सहेली। २. पंक्ति। कतार।
पुं० [सं० अलि] भौंरा।

अलीक-वि० [सं०] १ मिथ्या। झूठ। २. मर्यादा-रहित। ३. अप्रतिष्ठित। ४. सारहीन।
पुं० [सं० अ+हिं० लीक] अप्रतिष्ठा।

अलीजा-वि० [अ० आलीजाह] बहुत। अधिक।

अलीन-वि० [हिं० अ+लीन] १. जो किसी में लीन न हो। विरत। अलग। २. जो ठीक या उपयुक्त न हो। अनुचित।

अलीह*-वि० [सं० अलीक] १. मिथ्या। असत्य। झूठ। २. अनुचित।

अलुक्-पुं० [सं०] व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता, बल्कि वह ज्यों की त्यों बनी रहती है। जैसे-मनसिज।

अलुझाना*-अ० दे० 'उलझना'।

अलुटना*-अ० [सं० लुट्=लोटना] लड़खड़ाना। गिरना-पड़ना।

अलूला*-पुं० [हिं०बुलबुला] १. भभूका। बबूला। लपट। २. बुलबुला।

अलेख-वि० [सं०] १. जिसके विषय में कोई भावना न हो सके। दुर्बोध। अज्ञेय।

अलेखा*-वि० [सं० अलेख] १. बेहद। बहुत। २. व्यर्थ। निष्फल।

अलेखी*-वि० [सं० अलेख] १. बे-हिसाब या अंड-बंड काम करनेवाला। २. गड़बड़ मचानेवाला। ३ अंधेर करने-वाला। अन्यायी।

अलेल-पुं० [?] क्रीड़ा। कलोल।

अलेलह¹-क्रि० वि० (देश०) जितना चाहिए, उससे अधिक। बहुत अधिक।

अलोक-वि० [सं०] १. जो देखने में न आवे। अदृश्य। २. निर्जन। एकान्त।
पुं० १. पातालादि लोक। परलोक। २. मिथ्या दोष। कलंक। निन्दा।
*पुं० दे० 'आलोक'।

अलोकना*-स० [सं०आलोकन] देखना।

अलोना*-वि० [सं० अलवण] [स्त्री० अलोनी] १. जिसमें नमक न पड़ा हो। २. जिसमें नमक न खाया जाय। जैसे-अलोना व्रत। ३. फीका। स्वाद-रहित।

अलोप*-वि० दे० 'लोप'।

अलौकिक-वि० [सं०] [भाव० अलौकिक-ता] १. जो इस लोक में न दिखाई दे। लोकोत्तर। २. अद्भुत। अपूर्व। ३. अमानुषी।

अल्प-वि० [सं०] [भाव० अल्पता, अल्पत्व] १. थोड़ा। कम। २. छोटा।

पुं० एक काव्यालंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता या छोटाई का वर्णन होता है।

अल्प-कालिक-वि० [सं०] थोड़े समय के लिए होने या दिया जानेवाला। जैसे- अल्प-कालिक अगाऊ।

अल्प-जीवी-वि० [सं०] जिसकी आयु कम हो। अल्पायु।

अल्पज्ञ-वि० [सं०] [भाव० अल्पज्ञता] १. थोड़ा ज्ञान रखनेवाला। छोटी बुद्धि का। २. ना-समझ।

अल्प-प्राण-पुं० [सं०] व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवां अक्षर तथा य, र, ल और व।

अल्प-मत-पुं० [सं०] १. थोड़े से लोगों का मत। बहु-मत का उलटा। २. वे लोग जिनकी संख्या और फलतः मत औरों के मुकाबले में कम हो। अल्प-संख्यक। (माइनारिटी)

अल्प-वयस्क-वि० [सं०] छोटी अवस्था का। कमसिन।

अल्पशः-क्रि० वि० [सं०] थोड़ा-थोड़ा करके। धीरे धीरे। क्रमशः।

अल्प-संख्यक-पुं० [सं०] वह समाज जिसके सदस्यों की संख्या औरों के मुकाबले में कम हो। (माइनारिटी) वि० [सं०] गिनती में थोड़ या कम।

अल्पायु-वि० दे० 'अल्पजीवी'।

अल्ल-पुं० [अ० आल] वंश, गोत्र, जाति आदि के अनुसार चलनेवाला नाम। जैसे शर्म्मा, मिश्र, श्रीवास्तव आदि।

अल्हड़-वि० [सं० अल=बहुत+लल= चाह] १. मन-मौजी। बेपरवाह। २. जिसे व्यवहार का ज्ञान या अनुभव न हो। ३. उद्धत। उजड्ड। ४. गँवार। पुं० वह नया बैल या बछड़ा जो निकाला न गया हो।

अव-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें निश्चय (जैसे-अवधारण), अनादर (जैसे- अवज्ञा), कमी (जैसे-अवघात), उतार या नीचाई (जैसे-अवतार), बुराई या दोष (जैसे-अवगुण), व्याप्ति (जैसे- अवकाश) आदि भाव उत्पन्न करता है। *अव्य० दे० 'और'।

अवकलन-पुं० [सं०] १. इकट्ठा करके एक में मिलाना। २. देखना। ३. ग्रहण करना। ४. जानना। समझना।

अवकलना*-अ० [सं० अवकलन] ज्ञान या बोध होना। समझ में आना। स० १. इकट्ठा करना। २. देखना।

अवकाश-पुं० [सं०] १. रिक्त या शून्य स्थान। खाली जगह। २. आकाश। अन्तरिक्ष। ३. दूरी। अन्तर। ४. अवसर। उपयुक्त समय। ५. खाली समय। ६. छुट्टी। (लीव)

अवकाश-ग्रहण-पुं० [सं०] किसी पद या कार्य से हटकर अलग हो जाना। काम से अवकाश लेना (या छुटकारा पाना)। (रिटायरमेन्ट)

अवकाश-संख्यान-पुं० [सं०] वह लेखा या हिसाब जो कार्यकर्त्ताओं को मिलनेवाली छुट्टियों से संबंध रखता है। (लीव एकाउन्ट)

अवक्रय-पुं० [सं०] किसी वस्तु के बदले में दिया जानेवाला धन। मूल्य। दाम। (प्राइस)

अवगत-वि० [सं०] १. विदित। ज्ञात। जाना हुआ। मालूम। २. नीचे आया हुआ। गिरा हुआ।

अवगतना*-स० [सं० अवगत] समझना। विचारना।

अवगति-स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। धारणा। समझ। २. बुरी गति।

अवगाधना*-स० दे० 'अवगाहना'।

अवगारना*-स० [सं० अव+गृ] १. समझाना-बुझाना। २. जताना।

अवगाह*-वि० [सं० अवगाध] १. अथाह। बहुत गहरा। *२. अनहोना। ३. कठिन।

पुं० १. गहरा स्थान। २. संकट का स्थान। ३. कठिनाई।

पुं० [सं०] १. अन्दर प्रवेश करना। पैठना। २. जल में उतरकर नहाना।

अवगाहन-पुं० [सं०] १. नदी, तालाब में पैठकर नहाना। २. प्रवेश। पैठ। ३. मन्थन। ४. खोज। छान-बीन। ५. मन लगाकर विचार करना या सोचना।

अवगाहना*-अ० [सं० अवगाहन] १. तालाब, नदी आदि में पैठकर नहाना। २. पैठना। घुसना। धँसना। ३. मगन या प्रसन्न होना।

स० १. छान-बीन करना। २. गति या हलचल उत्पन्न करना। ३. धारण या ग्रहण करना। ४. (कोई बात) सोचना।

अवगुंठन-पुं० [सं०] [वि० अवगुंठित] १. ढँकना। छिपाना। २. रेखा से घेरना। ३. घूँघट।

अवगुंफन-पुं० [सं०] [वि० अवगुंफित] गूँथना। पिरोना।

अवगुण-पुं० [सं०] १. दोष। ऐब। २. बुराई। खोटाई।

अवग्रह-पुं० [सं०] १. रुकावट। अड़चन। बाधा। २. वर्षा का अभाव। अनावृष्टि। ३. बाँध। बन्द। ४. संधि-विच्छेद। (व्या०) ५. 'अनुग्रह' का उलटा। ६. शाप। कोसना।

अवघट-वि० [सं० अव+घट्=घाट] १. विकट। दुर्गम। २. मुश्किल। कठिन।

अवचेतना-स्त्री० [सं०] चेतना की वह सुप्त अवस्था जिसमें किसी वस्तु का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। अर्द्ध-चेतना।

अवच्छिन्न-वि० [सं०] अलग किया हुआ। पृथक्।

अवच्छेद-पुं० [सं०] [वि० अवच्छेद्य, अवच्छिन्न] १. अलगाव। भेद। २. हद। सीमा। ३. अवधारण। छान-बीन। ४. परिच्छेद। प्रकरण।

अवज्ञा-स्त्री० [सं०] [वि० अवज्ञात, अवज्ञेय] १. किसी के प्रति उचित मान या आदर का अभाव। २. आज्ञा न मानना। अवहेला। (डिसओबीडिएन्स) ३. पराजय। हार। ४. एक काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष का दूसरी वस्तु पर प्रभाव न पड़ना दिखलाया जाता है।

अवज्ञात-वि० [सं०] [संज्ञा अवज्ञा] १. जिसकी अवज्ञा, अपमान या अनादर किया गया हो। २. (आज्ञा) जिसका उल्लंघन किया गया हो। ३. हारा हुआ। पराजित।

अवज्ञेय-वि० [सं०] १. अपमान, अनादर या अवज्ञा करने के योग्य। २. (आज्ञा) उल्लंघन करने के योग्य। न मानने योग्य।

अवटना-स० [सं० आवर्तन] १. मथना। आलोड़न करना। २. किसी द्रव पदार्थ को आग पर चढ़ाकर गाढ़ा करना।

अ० घूमना। फिरना।

अवडेर-पुं० [देश०] [क्रि० अवडेरना]

१. फेर । चक्कर । २. झंझट । बखेड़ा । ३. रंग में भंग ।

अवढर-वि० [हिं० अव+ढलना] अकारण ही प्रसन्न या अनुरक्त होनेवाला ।

अवतंस-पुं० [सं०] [वि० अवतंसित] १. भूषण । अलंकार । २. शिरोभूषण । टीका । ३. मुकुट । ४. श्रेष्ठ व्यक्ति । सबसे उत्तम पुरुष । ५. माला । हार । ६. कान की बाली । ७. कर्णफूल । ८. दूल्हा ।

अवतरण-पुं० [सं०] [वि० अवतीर्ण] १. उतरना । २ पार होना । ३. घटना । कम होना । ४. जन्म ग्रहण करना । ५. सीढ़ी । ६. घाट ।

अवतरण-चिह्न-पुं० [सं०] उलटे हुए अल्प-विराम-चिन्ह जिनके बीच किसी का कथन उद्धृत रहता है । जैसे-" "

अवतरणिका-स्त्री० [सं०] १. प्रस्तावना । भूमिका । उपोद्‌घात । २. परिपाटी ।

अवतरना*-अ० [सं० अवतरण] १. प्रकट होना । उपजना । २ उतरना ।

अवतरित-वि० [सं०] १. ऊपर से नीचे उतरा हुआ । २. किसी दूसरे स्थान से लिया हुआ । उद्धृत । ३. जिसने अवतार धारण किया हो ।

अवतार-पुं० [सं०] [वि० अवतीर्ण, अवतरित] १. उतरना । नीचे आना । २. जन्म होना । शरीर-धारण । देवता का मनुष्यादि संसारी प्राणियों के शरीर में आना । *४. सृष्टि ।

अवतारण-पुं० [सं०] [स्त्री० अवतारणा] १. उतारना । नीचे लाना । २. नकल करना । ३. उदाहृत करना ।

अवतारी-वि० [सं० अवतार] १. उतरनेवाला । २. अवतार लेनेवाला । ३. देवांशधारी । ४. अलौकिक शक्तिवाला ।

अवतीर्ण-वि० [सं०] १. ऊपर से नीचे आया हुआ । उतरा हुआ । २. जिसने अवतार धारण किया हो । ३. उत्तीर्ण ।

अवदात-वि० [सं०] १. उज्वल । श्वेत । २. शुद्ध । स्वच्छ । निर्मल ।

अवदान-पुं० [सं०] [वि० अवदान्य] १. शुद्ध आचरण । अच्छा काम । २. खंडन । तोड़ना । ३. शक्ति । बल । ४. अतिक्रम । उल्लंघन ।

अवध-पुं० [सं० अयोध्या] १. कोशल देश । २. अयोध्या नगरी । *स्त्री० दे० 'अवधि' ।

अवधान-पुं० [सं०] १. मन एकाग्र करके किसी ओर लगाना । मनोयोग । २. सावधानी । चौकसी । ३. किसी कार्य या वस्तु की देख-रेख । (केयर) ४. किसी कार्य या अपने अधीन रखकर उसका संचालन करना या कराना । (चार्ज)

अवधायक-पुं० [सं०] वह जिसके अवधान में कोई वस्तु, कार्य अथवा कार्यालय हो । (इन-चार्ज)

अवधायक अधिकारी-पुं० [सं०] वह अधिकारी जो किसी कार्य या कार्यालय का अवधायक हो । (आफिसर-इन-चार्ज)

अवधारण-पुं० [सं०] [वि०. अवधारित, अवधारणीय] १. अच्छी तरह विचार करके कोई निश्चय करना । (डिटरमिनेशन) २. अच्छी तरह विचार करके परिणाम निकालना । (फाइंडिंग)

अवधारना*-स० [सं० अवधारण] धारण करना । ग्रहण करना ।

अद्यावधि-स्त्री० [सं०] १. सीमा । हद । २. वह नियत या निश्चित समय जिसके

पहले कोई काम होना आवश्यक हो। (मियाद, लिमिटेशन) ३. किसी पद या कार्य के एक बार आरम्भ होने पर फिर अन्त होने तक का समय। (टर्म) अव्य० तक। पर्यंत।

अवधी-वि० [सं० अयोध्या] अवध सम्बन्धी। अवध का।
स्त्री० अवध की बोली।

अवधूत-पुं० [सं०] [स्त्री० अवधूतिन] संन्यासी। साधु। योगी।

अवनत-वि० [सं०] १. नीचा। झुका हुआ। २. गिरा हुआ। पतित। ३. कम।

अवनति-स्त्री० [सं०] १. घटती। कमी। न्यूनता। २. अधोगति। हीन दशा। ३. झुकाव। ४. नम्रता।

अवनि-स्त्री० [सं०] पृथ्वी। जमीन।

अवनीश्वर-पुं० [सं०] [स्त्री० अवनीश्वरी] राजा। महीप।

अवपात-पुं० [सं०] १. गिराव। पतन। २. गड्ढा। कुंड। ३. नाटक में भय से भागना, व्याकुल होना आदि दिखाते हुए अंक की समाप्ति।

अवबोध-पुं० [सं०] १. जागना। २. ज्ञान। बोध।

अवभृथ-पुं० [सं०] १. वह शेष कर्म जिसके करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर है। २. यज्ञांत स्नान।

अवमर्दन-पुं० [सं०] [वि० अवमर्दित] १. कष्ट पहुँचाना। २. कुचलना, रौंदना या दलना।

अवमान-पुं० [सं०] [वि० अवमानित] किसी के मान का पूरा ध्यान न रखना। जितना चाहिए, उतना मान न करना। (कन्टेम्प्ट)

अवमानना-स्त्री० दे० 'अवमान'।

*स० किसी का अपमान करना।

अवयव-पुं० [सं०] [वि० अवयवी] १. अंश। भाग। हिस्सा। २. शरीर का अंग। ३. तर्क-पूर्ण वाक्य का कोई अंश या भेद। (न्याय)

अवयस्क-वि० [सं०] जिसने विधि की दृष्टि में पूर्ण वय न प्राप्त किया हो। अल्प-वयस्क। (नाबालिग, माइनर)

अवर-वि० [सं० अ+वर] १. जो ऊँचा या बड़ा न हो, बल्कि उसकी अपेक्षा कुछ नीचा या छोटा हो। 'वर' का विपरीत। (इन्फीरियर) २. अधम।
*वि० [सं० अपर] १. अन्य। दूसरा। २. और।

अवर सेवक-पुं० [सं०] वह कर्मचारी जिसकी गिनती ऊँचे या बड़े सेवकों में न होती हो। (इन्फीरियर सर्वेन्ट)

अवर सेवा-स्त्री० [सं०] राजकीय अथवा लोक-सेवा का वह अंग जिसमें निम्न-कोटि के कर्मचारी होते हैं। (इन्फीरियर सर्विस)

अवराधन-पुं० दे० 'आराधन'।

अवरुद्ध-वि० [सं०] १. रुँधा या रुका हुआ। २. चारों ओर से घेरकर बन्द किया हुआ। (इम्पाउंडेड) ३. छिपा हुआ। गुप्त।

अवरेखना*-स० [सं० अवलेखन] १. उरेहना। लिखना। चित्रित करना। २. देखना। ३. अनुमान करना। कल्पना करना। सोचना। ४. मानना। ५. जानना।

अवरेव-पुं० [सं० अव=विरुद्ध+रेव=गति] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट।
यौ० अवरेबदार=तिरछी काट का।
३. पेंच। उलझन। ४. खराबी। कठि-

नाई। ४. झगड़ा। विवाद। खींचा-तानी।
अवरोध-पुं० [सं०] १. रुकावट। अड़चन। रोक। २. घेर लेना। मुहासिरा। ३. निरोध। बन्द करना। ४. अनुरोध। दबाव। ५. अन्तःपुर।
अवरोधन-पुं० [सं०] [वि० अवरोधक, अवरुद्ध, अवरोधित] १. चारों ओर से घेरकर रोकना। २. इस प्रकार घेरकर रोकना कि इधर-उधर न हो सके। (इम्पाउंडिंग)।
अवरोधना*-स० [सं० अवरोधन] १ रोकना। २. निषेध करना।
अवरोप(ण)-पुं० [सं०] किसी को, उसपर लगे हुए आरोप या अभियोग से मुक्त करना। (डिस्चार्ज)
अवरोपित-वि० [सं०] लगे हुए आरोप या अभियोग से मुक्त किया हुआ। (डिसचार्ज्ड)
अवरोह(ण)-पुं० [सं०] [वि० अवरोहक, अवरोहित] १. नीचे की ओर आना। उतार। २. गिराव। अधःपतन। ३. अवनति।
अवरोहना*-अ० [सं० अवरोहण] उतरना। नीचे आना।
अ० [सं० आरोहण] चढ़ना।
*स० [हिं० उरेहना] खींचना। अंकित करना। चित्रित करना।
स० [सं० अवरोधन] रोकना।
अवर्ण-वि० [सं०] १. वर्ण-रहित। बिना रंग का। २. बदरंग। बुरे रंग का। ३. वर्ण-धर्म-रहित।
अवर्ण्य-वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके।
अवर्षण-पुं० [सं०] वर्षा न होना।
अवलंघना*-स० दे० 'लाँघना'।
अवलंब-पुं० [सं०] आश्रय। सहारा।
अवलंबन-पुं० [सं०] [वि० अवलंबनीय, अवलम्बित, अवलंबी] १. आश्रय। आधार। सहारा। २. धारण। ग्रहण।
अवलंबना*-स० [सं० अवलंबन] १. अवलंबन करना। आश्रय लेना। टिकना। २. धारण करना।
अवलंबित-वि० [सं०] १. किसी के आधार या सहारे पर ठहरा या टिका हुआ। २. जो किसी दूसरी बात के होने पर ही हो। (डिपेंडेंड)
अवलंबी-वि० [सं० अवलंबिन्] [स्त्री० अवलंबिनी] १. अवलंबन करनेवाला। सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।
अवली*-स्त्री० [सं० आवलि] १. पंक्ति। पाँती। २ समूह। झुंड। ३. वह अन्न की डाँट जो नवान्न करने के लिए खेत से पहले पहल काटी जाती है।
अवलेखना-स० [सं० अवलेखन] १. खोदना। खुरचना। २ चिह्न डालना।
अवलेपन-पुं० [सं०] १. लगाना। पोतना। २. वह वस्तु जो लगाई जाय। लेप। ३. घमंड। अभिमान। ४. ऐब।
अवलेह-पुं० [सं०] [वि० अवलेह्य] १. लेई जो न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली हो। २ चटनी। माजून। ३. वह औषध जो चाटी जाय।
अवलोकन-पुं० [सं०] १. देखना। २. अच्छी तरह या जाँच-पड़ताल करने के लिए देखना। (पेरुज़ल)
अवलोकना*-स० [सं० अवलोकन] १. देखना। २. जाँचना। ३. अनुसंधान करना।
अवलोकनि*-स्त्री० [सं० अवलोकन]

१. आँख। दृष्टि। २. चितवन।

अवश-वि० [सं०] [भाव० अवशता] विवश। लाचार।

अवशिष्ट-वि० [सं०] बाकी बचा हुआ। शेष। (एरियर) (कार्य और धन दोनों)

अवशेष-वि० [सं०] १. बचा हुआ। शेष। बाकी। २ समाप्त।
पुं० [सं०] [वि० अवशिष्ट] १. बची हुई वस्तु। (कार्य या धन आदि) (एरियर्स) २. अन्त। समाप्ति।

अवश्यंभावी-वि० [सं० अवश्यंभाविन्] जो अवश्य हो, टले नहीं। अटल। ध्रुव।

अवश्य-क्रि० वि० [सं०] निश्चित रूप से। निस्सन्देह। जरूर।
वि० [सं०] [स्त्री० अवश्या] १. जो वश में न आ सके। २ जो वश में न हो।

अवश्यमेव-क्रि० वि० [सं०] अवश्य। निःसंदेह। जरूर।

अवसन्न-वि० [स०] [भाव० अवसन्नता] १. विषाद-प्राप्त। दुःखी। २. नष्ट होनेवाला। ३ सुस्त। आलसी।

अवसर-पुं० [सं०] १ समय। काल। २. अवकाश। फुरसत। ३. संयोग।
मुहा०-अवसर चूकना=मौका हाथ से जाने देना।
४. एक काव्यालंकर जिसमें किसी घटना का ठीक अपेक्षित समय पर घटित होना वर्णन किया जाता है।

अवसर-ग्रहण-पुं० [सं०] अपने कार्य या पद से अवकाश या छुट्टी लेकर सदा के लिए हट जाना। (रिटायरमेन्ट)

अवसर-प्राप्त-वि० [सं०] जो अपनी नौकरी की अवधि पूरी होने पर काम से हट गया हो। (रिटायर्ड)

अवसर्ग-पुं० [सं०] देन, दंड आदि में होनेवाली कमी या छूट। (रेमिशन)

अवसर्पिणी-स्त्री० [सं०] जैन शास्त्रानुसार पतन का समय, जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।

अवसाद-पुं० [सं०] [वि० अवसादित, अवसन्न] १. नाश। क्षय। २. विषाद। खेद। रंज। ३. दीनता। ४. आशा या उत्साह का अभाव। ५ थकावट। ६. कमजोरी।

अवसान-पुं० [सं०] १. विराम। ठहराव। २ समाप्ति। अन्त। (डिस्सोल्यूशन) ३. सीमा। ४. सायंकाल। ५. मरण। मृत्यु।

अवसित-वि० [सं०] १. जिसका अवसान या अन्त हुआ हो। समाप्त। २. गत। बीता हुआ। ३ बदला हुआ।

अवसेचन-पुं० [सं०] १. सींचना। पानी देना। २. वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना या रक्त निकाला जाय।

अवसेर*-स्त्री० [सं० अवसर] १. अटकाव। उलझन। २ देर। विलम्ब। ३. चिन्ता। ४. व्यग्रता।

अवसेरना*-स० [हिं० अवसेर] तंग करना। दुःख देना।

अवस्था-स्त्री० [सं०] १. दशा। हालत। २. समय। काल। ३. आयु। उम्र। ४. स्थिति। दशा। जैसे-जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय या कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन और वृद्ध आदि।

अवस्थान-पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३. स्थिति। ४. उन्नति या विकास के क्रम में कुछ समय तक रुकने

या ठहरने का स्थान अथवा श्रेणी। (स्टेज) ५. रेल-गाड़ी के नियमित रूप से ठहरने का स्थान। (स्टेशन) ६. वह स्थान जहाँ पुलिस, सेना आदि के लोग रहते हों। (स्टेशन) ७. सम्पत्ति पर किसी व्यक्ति के स्वत्व की मात्रा, प्रकार या विस्तार। (एस्टेट)

अवस्थित-वि० [सं०] १. उपस्थित। मौजूद। २. ठहरा हुआ।

अवस्थिति-स्त्री० [सं०] १. वर्तमानता। मौजूद होना। २. स्थिति। सत्ता।

अवहार-पुं० [सं०] सन्धि की बात-चीत करने के लिए कुछ समय तक युद्ध रोकना। (आरमिस्टिस)

अवहित्था-स्त्री० [सं०] मन का भाव छिपाना। दुराव। (साहित्य)

अवहेलना-स्त्री० [सं०] [वि० अवहेलित] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. ध्यान न देना। बे-परवाही।

*स० [सं० अवहेलन] तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

अवहेला-स्त्री० दे० 'अवहेलना'।

अवांछनीय-वि० [सं० अ+वांछनीय] जिसका होना अभीष्ट न हो। जिसके होने की इच्छा न की जाय।

अवांतर-वि० [सं०] अन्तर्गत। मध्यवर्ती। पुं० [सं०] मध्य। बीच।

यौ०-अवान्तर दिशा=बीच की दिशा। विदिशा। अवान्तर भेद=अन्तर्गत भेद। विभाग का भाग।

अवाई-स्त्री० [हिं० आना] १. आगमन। आना। २ गहरी जोताई।

अवाक्-वि० [सं० अवाच्] १. चुप। मौन। २. स्तम्भित। चकित। विस्मित।

अवाच्य-वि० [सं०] १. जो कुछ कहने योग्य न हो। अनिन्दित। अकथ्य। २. जिससे बात करना उचित न हो। नीच। पुं० [सं०] कुवाच्य। गाली।

अवाप्त-वि० [सं०] जिसपर अधिकार-पूर्वक कुछ देन लगाया गया हो और वह देन उचित प्राप्य के रूप में उगाहा जा सके। (लेवीड)

अवाप्ति-स्त्री० [सं०] १. अधिकारपूर्वक कर, शुल्क, आदाय आदि के रूप में लगाना, लेना या उगाहना। २. अधिकार-पूर्वक लोगों को बुलाकर उन्हें सेना के रूप में रखना या सेना खड़ी करना। (लेवी)

अवाप्य-वि० [सं०] अधिकारपूर्वक कर, शुल्क आदि के रूप में लेने के योग्य। जिसके सम्बन्ध में अधिकारपूर्वक धन, कर आदि लिया जा सके। (लेविएबुल)

अवारजा-पुं० [फा०] १. वह बही जिसमें प्रत्येक असामी की जोत आदि लिखी जाती है। २. जमा-खर्च की बही।

अवारना*-स० [सं० अवारण] १. रोकना। मना करना। २. दे० 'वारना'। स्त्री० [सं० अवार] १. किनारा। अन्त। २. विवर। छेद।

अविकच-वि० [सं० अ+विकच] १. बिना खिला हुआ। २. जो सफल न हुआ हो।

अविकल-वि० [सं०] १. ज्यों का त्यों। बिना उलट-फेर का। २. पूर्ण। पूरा। ३. निश्चल। शान्त।

अविकल्प-वि० [सं०] १. जिसमें कुछ हेर-फेर न हो सके। निश्चित। (एबसोल्यूट) २. अन्तिम रूप से किया या कहा हुआ। (फाइनल)। ३. जिसमें कुछ भी संदेह न हो। असंदिग्ध।

अविकार-वि० [सं०] १. विकार-रहित। निर्दोष। २. जिसका रूप-रंग न बदले। पुं० [सं०] विकार का अभाव।

अविकारी-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो या न होता हो। पुं० व्याकरण में अव्यय। जैसे-बहुधा, प्रायः, अतः आदि।

अविकृत-वि० [सं०] जो बिगड़ा या बदला न हो।

अविचल-वि० दे० 'अचल'।

अविचार-पुं० [सं०] [कर्त्ता अविचारी] १. विचार का अभाव। २. अज्ञान। अविवेक। ३. अन्याय। अत्याचार।

अविच्छिन्न-वि० [सं०] अटूट। लगातार।

अविच्छेद-पुं० [सं०] विच्छेद का अभाव। विच्छिन्न या अलग न होना। एक में होना।

अविज्ञ-वि० [सं०] [भाव० अविज्ञता] अनजान। अज्ञानी।

अविद्यमान-वि० [सं०] १. जो विद्यमान या उपस्थित न हो। अनुपस्थित। (एब्सेन्ट)। २. असत्य। मिथ्या।

अविद्या-स्त्री० [सं०] १. विरुद्ध ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। अज्ञान। मोह। २. माया का एक भेद। ३. कर्म-कांड। ४. सांख्य के अनुसार प्रकृति। जड़।

अविधिक-वि० [सं०] विधि या नियम के विरुद्ध। (इल्लीगल)

अविनय-पुं० [सं०] विनय का अभाव। ढिठाई। उद्दंडता।

अविनश्वर-वि० [सं०] जिसका नाश न हो। जो बिगड़े नहीं। अक्षय। चिरस्थायी।

अविनाशी-वि० दे० 'अविनश्वर'।

अविरत-वि [सं०] [संज्ञा-अविरति] १. विराम-शून्य। निरन्तर। २. लगा हुआ। क्रि० वि० [सं०] १. निरन्तर। लगातार। २. नित्य। हमेशा। सदा।

अविलम्ब-क्रि० वि० [सं०] बिना विलम्ब के। तुरन्त। फौरन्। तत्काल।

अविवाहित-पुं० [सं०] [स्त्री० अविवाहिता] जिसका ब्याह न हुआ हो। कुँआरा।

अविवेक-पुं० [सं०] १. विवेक का अभाव। अविचार। २. अज्ञान। नादानी। ३. अन्याय।

अविश्रांत-वि० [सं०] १. जो रुके नहीं। २. जो थके नहीं।

अविश्वसनीय-वि० [सं०] जिसपर विश्वास न किया जा सके।

अविश्वास-पुं० [सं०] १. विश्वास का अभाव। बे-एतबारी। २. अनिश्चय।

अवेक्षण-पुं० [सं०] [वि० अवेक्षित, अवेक्षणीय] १. अवलोकन। देखना। २. जाँच-पड़ताल। देख-भाल।

अवेक्षा-स्त्री० [सं०] १ दे० 'अवेक्षण'। २. किसी दोष या अपराध आदि की ओर न्यायालय या अधिकारी का इस प्रकार ध्यान जाना कि वह उसके सम्बन्ध में कुछ उचित कार्य या प्रतिकार करे। (कागनिजेन्स) जैसे-न्यायालय को इसकी वैचारिक अवेक्षा करनी चाहिए।

अवेज*-पुं० [अ० एवज़] बदला। प्रतिकार।

अवैज्ञानिक-वि० [सं०] जो विज्ञान के सिद्धान्तों के विरुद्ध हो।

अवैतनिक-वि० [सं०] बिना वेतन या तनखाह के काम करनेवाला। (आनरेरी)

अवैध-वि० [सं०] विधि या कानून

आदि के विरुद्ध। नियम-विरुद्ध। जैसे-अवैध अनुतोषण (इल्लीगल ग्रैटिफिकेशन)

अव्यक्त-वि० [सं०] १. अप्रत्यक्ष। अगोचर। जो जाहिर न हो। २. अज्ञात। ३. अनिर्वचनीय। ४ जिसमें रूप-गुण न हो।
पुं० [सं०] १ विष्णु। २. कामदेव। ३. शिव। ४. प्रकृति। (सांख्य) ५. सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था। ६. ब्रह्म। ७. बीज-गणित में वह राशि जिसका मान अज्ञात हो। ८. जीव।

अव्यय-वि० [सं०] १. जिसमें विकार न हो। सदा एक-रस रहनेवाला। आदि-अन्त से रहित। अक्षय। २. नित्य।
पुं० [सं०] १. व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, विभक्तियों और वचनों में समान रूप से प्रयोग हो। २. पर-ब्रह्म। ३. शिव। ४. विष्णु।

अव्यर्थ-वि० [सं०] १ जो व्यर्थ न हो। सफल। २ सार्थक। ३. अमोघ। न चूकने-वाला। ४. अवश्य असर करनेवाला।

अव्यवस्था-स्त्री० [सं०] [वि० अव्य-वस्थित] १. व्यवस्था का न होना। बे-कायदगी। २. स्थिति या मर्य्यादा का न होना। ३ शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था। ४ बे-इंतजामी। गड़बड़ी।

अव्यवहार्य-वि० [सं०] १. जो व्यव-हार में न लाया जा सके। २. पतित।

अव्याप्ति-स्त्री० [सं०] [वि० अव्याप्त] १ व्याप्ति का अभाव। २. न्याय में सारे लक्ष्य पर लक्षण का न घटना।

अव्याहत-वि० [सं०] १. अप्रतिरुद्ध। बे-रोक। २. सत्य। ठीक। युक्ति-संगत।

अशंक-वि० [सं०] बेडर। निर्भय।

अशकुन-पुं० [सं०] बुरा शकुन।

अशक्त-वि० [सं०] [संज्ञा अशक्तता, अशक्ति] १. निर्बल। कमजोर। २. असमर्थ।

अशक्य-वि० [सं०] १. असाध्य। न होने योग्य। २. दे० 'अशक्त'।

अशन-पुं० [सं०] १ भोजन। आहार। २ खाने की क्रिया। खाना।

अशरण-वि० [सं०] जिसे कहीं शरण न मिले। अनाथ। निराश्रय।

अशांत-वि० [सं०] १. जो शान्त न हो। अस्थिर। चंचल। २ जिसमें शान्ति न हो।

अशांति-स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता। चंचलता। २. क्षोभ। ३. असंतोष।

अशिक्षित-वि० [सं०] जिसने शिक्षा न पाई हो। बे पढ़ा-लिखा। अनपढ़।

अशित-वि० [सं०] (हथियार) जो धारदार न हो। बिना धार का। (जैसे लाठी, डंडा आदि।)

अशिष्ट-वि० [सं०] जो शिष्ट न हो। उजड्ड। बेहूदा।

अशिष्टता-स्त्री० [सं०] असाधुता। बेहूदगी। उजड्डपन।

अशुद्ध-वि० [सं०] १. अपवित्र। नापाक। २. बिना शोधा हुआ। अ-संस्कृत। ३. गलत।

अशुद्धि-स्त्री० [सं०] १ शुद्धि का अभाव। २. भूल। गलती।

अशुभ-पुं० [सं०] १ अमंगल। अहित। २ पाप। ३. अपराध।
वि० [सं०] जो शुभ न हो। बुरा।

अशेष-वि० [सं०] १ पूरा। समूचा। २ समाप्त। खतम। ३. अनन्त। बहुत।

अशोक-वि० [सं०] शोक-रहित। दुःख-शून्य।

पुं० १. एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लम्बी होती हैं। २. पारा।

अशौच-पुं० [सं०] [वि० अशुचि] १. अपवित्रता। अशुद्धता। २. हिन्दू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या सन्तान होने पर कुछ दिनों तक मानी जाती है।

अश्म-पुं० [सं०] १. पहाड़। २. पत्थर। ३. बादल।

अश्मज-पुं० [सं०] एक प्रकार का काला लसीला खनिज पदार्थ जो नलों आदि के जोड़ पर इसलिए लगाया जाता है कि उनमें का जल चू न सके। यह सड़कों पर अलकतरे की तरह बिछाने के भी काम आता है (एस्फाल्ट)

अश्रद्धा-स्त्री० [सं०] [वि० अश्रद्धेय] श्रद्धा का अभाव।

अश्रु-पुं० [सं०] आंसू।

अश्रुत-वि० [सं०] १. जो सुना न गया हो। २. जिसने कुछ देखा-सुना न हो।

अश्रुतपूर्व-वि० [सं०] १. जो पहले न सुना गया हो। २. अद्‌भुत। विलक्षण।

अश्रुपात-पुं० [सं०] आंसू गिराना। रुदन। रोना।

अश्लील-वि० [सं०] [भाव० अश्लीलता] १ फूहड़। भद्दा। २ लज्जाजनक।

अश्व-पुं० [सं०] घोड़ा। तुरंग।

अश्वतर-पुं० [सं०] [स्त्री० अश्वतरी] १. नागराज। २. खच्चर।

अश्वत्थ-पुं० [सं०] पीपल।

अश्वमेध-पुं० [सं०] एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के सिर पर जय-पत्र बाँधकर उसे भूमंडल में घूमने के लिए छोड़ देते थे। फिर उसको मारकर उसकी चरबी से हवन किया जाता था।

अश्वशाला-स्त्री० [सं०] अस्तबल। तबेला।

अश्वायुर्वेद-पुं० [सं०] आयुर्वेद या चिकित्सा शास्त्र का वह अंग जिसमें घोड़ों तथा अन्य पशुओं की चिकित्सा का वर्णन रहता है। शालिहोत्र।

अश्वारोही-वि० [सं०] घोड़े का सवार।

अश्विन-पुं० [सं०] एक प्राचीन वैदिक देवता।

अश्विनी-स्त्री० [सं०] १. घोड़ी। २. २७ नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र।

अश्विनीकुमार-पुं० [सं०] त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

अष्ट-वि० [सं०] आठ।

अष्टक-पुं० [सं०] १. आठ वस्तुओं का संग्रह। २. वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक या पद्य हों।

अष्टछाप-पुं० [सं० अष्ट+हिं० छाप] गोसाइँ बिट्ठलनाथ जी का निश्चित किया हुआ आठ सर्वोत्तम पुष्टि-मार्गी कवियों का एक वर्ग। (इन आठों कवियों के नाम ये हैं-सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुजदास और नन्ददास।)

अष्ट-धातु-स्त्री० [सं०] ये आठ धातुएँ— सोना, चांदी तांबा, रांगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।

अष्टम-वि० [सं०] आठवां।

अष्टमी-स्त्री० [सं०] शुक्ल या कृष्ण-पक्ष की आठवीं तिथि।

अष्टवर्ग-पुं० [सं०] १. आठ ओषधियों का समूह—जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि

और वृद्धि। २. राज्य के ऋषि, वस्ति, दुर्ग, सेना, हस्तिबन्धन, खान, कर-ग्रहण और सैन्य-संस्थापन का समूह।

अष्टांग-पुं० [सं०] [वि० अष्टांगी] किसी वस्तु के आठ अंग। जैसे-(क) योग के-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। (ख) आयुर्वेद के-शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूत-विद्या, कौमार-भृत्य, अगदतंत्र, रसायन-तंत्र और वाजीकरण। (ग) शरीर के-जानु, पद, हाथ, उर, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि जिनसे प्रणाम करने का विधान है।

वि० [सं०] १. आठ अवयवोंवाला। २. अठ-पहल।

अष्टावक्र-पुं० [सं०] १. एक ऋषि। २. टेढ़े-मेढ़े अंगों का मनुष्य।

असंख्य-वि० [सं०] अनगिनत। बेशुमार।

असंग*-वि० [सं०] १. अकेला। एकाकी। २. किसी से वास्ता न रखने-वाला। निर्लिप्त। ३. जुदा। अलग। ४. विरक्त।

असंगत-वि० [सं०] १. जो संगत या संबद्ध न हो। २. अयुक्त। बे-ठीक। ३. अनुचित। ना-मुनासिब।

असंगति-स्त्री० [सं०] १. बेसिलसिला-पन। बेमेल होने का भाव। २. अनुप-युक्तता। ३. वह काव्यालंकार जिसमें कारण कहीं बताया जाय और कार्य्य कहीं।

असंतुष्ट-वि० [सं०] [संज्ञा असन्तुष्टि] १. जो सन्तुष्ट न हो। २. अतृप्त। जिसका मन न भरा हो। ३. अप्रसन्न। नाराज।

असंतोष-पुं० [सं०] [वि० असन्तोषी] १. सन्तोष का अभाव। अधैर्य्य। २. अतृप्ति। ३. अप्रसन्नता। नाराजगी।

असंबद्ध-वि० [सं०] १. जो मेल में न हो। २. पृथक्। अलग। ३ अनमिल। बे-मेल। अंड-बंड। जैसे-असंबद्ध प्रलाप।

असंभव-वि० [सं०] [संज्ञा असंभवता] जो सम्भव न हो। जो हो न सके। ना-मुमकिन।

पुं० एक काव्यालंकार जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका होना असम्भव था।

असंभावना-स्त्री० [सं०] [वि० असं-भावित, असंभाव्य] सम्भावना का अभाव। अनहोनापन।

असंभाव्य-वि० [सं०] जिसकी सम्भावना न हो। अनहोना।

अस*-वि० [सं० ईदृश] १. इस प्रकार का। ऐसा। २. तुल्य। समान।

असकताना-अ० [हिं० आसकत] आलस्य में पड़ना। आलसी होना।

असगंध-पुं० [सं० अश्वगंधा] एक झाड़ी जिसकी जड़ दवा के काम में आती है। अश्वगन्धा।

असत्-वि० [सं०] १. अस्तित्व-विहीन। सत्ता-रहित। २. बुरा। खराब। ३. असाधु।

असत्य-वि० [सं०] [भाव० असत्यता] मिथ्या। झूठ।

असन*-पुं० [सं० अशन] भोजन। आहार। खाना।

असफल-वि० दे० 'विफल'।

असबाब-पुं० [अ०] सामग्री। सामान। प्रयोजनीय पदार्थ।

असभ्य-वि० [सं०] [संज्ञा असभ्यता] १. जो सभ्य न हो। २. अशिष्ट। गँवार।

असमंजस-स्त्री० [सं०] १. दुविधा। आगा-पीछा। २. अड़चन। कठिनाई।

असमंत*-पुं० [सं० अश्वमत] चूल्हा।

असम-वि० [सं०] १. जो सम या तुल्य न हो। असदृश। २ विषम। ताक। ३. ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़। ४ एक काव्यालंकार जिसमें उपमान का मिलना असम्भव बतलाया जाता है।

पुं० पूर्वी भारत का एक प्रदेश जो 'आसाम' भी कहलाता है।

असमय-पुं० [सं०] विपत्ति का समय। बुरा समय।

असमर्थ-वि० [सं०] [भाव० असमर्थता] १. सामर्थ्य-हीन। २. दुर्बल। अशक्त। ३. अयोग्य।

असम्मत-वि० [सं०] [संज्ञा असम्मति] १. जो राजी न हो। विरुद्ध। २ जिसपर किसी की राय न हो।

असर-पुं० [अ०] प्रभाव।

असल-वि० [अ०] १. सच्चा। खरा। २. उच्च। श्रेष्ठ। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध। खालिस। ४ जो झूठा या बनावटी न हो।

पुं० १ जड़। बुनियाद। २ मूल धन।

असलियत-स्त्री० [अ०] १ तथ्य। वास्तविकता। २. जड़। मूल। ३ मूल तत्त्व। सार।

असली-वि० [अ० असल] १. सच्चा। खरा। २. मूल। प्रधान। ३. बिना मिलावट का। शुद्ध।

असवर्ण-वि० [सं०] जो एक ही वर्ण या जाति के न हों। जैसे-क्षत्रिय और ब्राह्मण एक दूसरे के असवर्ण हैं।

असहन-वि० १. दे० 'असह्य'। २. दे० 'असहिष्णु'।

असहनीय-वि० [सं०] न सहने योग्य। जो बरदाश्त न हो सके।

असहयोग-पुं० [सं०] [वि० असहयोगी] १. किसी से किसी काम में सहयोग न करना। साथ मिलकर काम न करने का भाव। २. इस सिद्धान्त का वह आन्दोलन जो सन १९२१ में महात्मा गांधी ने भारत को स्वतन्त्र करने के लिए चलाया था और जिसमें लोगों से सरकारी सेवाएँ, पदवियाँ, न्यायालय, शिक्षा-संस्थाएँ आदि छोड़ने के लिए कहा जाता था।

असहाय-वि० [सं०] जिसे कोई सहारा न हो। निःसहाय। निराश्रय।

असहिष्णु-वि० [सं०] [संज्ञा असहिष्णुता] १. असहनशील। २. चिड़चिड़ा।

असह्य-वि० [स०] १. जो बरदाश्त न हो सके। असहनीय।

असांसद्-वि० [हिं० अ+सं० संसद्] जो संसद् के उपयुक्त या उसकी मर्यादा के अनुकूल न हो। (अन-पार्लमेन्टरी)

असाई*-पुं० [सं० अशास्त्रीय] वह जिसे कुछ भी ज्ञान न हो। अज्ञानी।

असाढ़-पुं० दे० 'आषाढ़'।

असाढ़ी-वि० [सं० आषाढ़] आषाढ़ का। स्त्री० १. वह फसल जो आषाढ़ में बोई जाय। खरीफ। २. आषाढ़ी पूर्णिमा।

असाधारण-वि० [सं०] [भाव० असाधारणता] १. जो अपनी साधारण अवस्था में नहीं, बल्कि उससे कुछ घट या बढ़कर हो। (अन-कॉमन) २. दे० 'असामान्य'।

असाध्य-वि० [सं०] १. न होने योग्य। दुष्कर। कठिन। २. न आरोग्य होने के योग्य। जैसे-असाध्य रोग।

असामयिक-वि० [सं०] जो नियत

समय से पहले या पीछे हो। बिना समय का।

असामान्य-वि० [सं०] १. जो अपनी सामान्य अवस्था में नहीं, बल्कि उससे कुछ घट या बढ़कर हो। (एबनॉर्मल) २. दे० 'असाधारण'।

असामी-पुं० [अ० आसामी] १. व्यक्ति। प्राणी। २ जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो। ३. वह जिसने लगान पर जोतने के लिए जमींदार से खेत लिया हो। रैयत। काश्तकार। जोता। ४. देनदार। ५. अपराधी। ६ वह जिससे किसी प्रकार का मतलब गांठना हो। स्त्री० नौकरी। जगह।

असार-वि० [सं०] [संज्ञा असारता] १ सार-रहित। निःसार। २ शून्य। खाली। ३. तुच्छ।

असावधानता-स्त्री० [सं०] बे-खबरी। बे-परवाही।

असावधानी-स्त्री० दे० 'असावधानता'।

असि-स्त्री० [सं०] तलवार। खड्ग।

असित-वि० [सं०] [स्त्री० असिता] १. काला। २ दुष्ट। बुरा। ३. टेढ़ा। कुटिल।

असिद्ध-वि० [सं०] १. जो सिद्ध न हो। २. बे-पका। कच्चा। ३. अपूर्ण। अधूरा। ४ निष्फल। व्यर्थ। ५. अप्रमाणित।

असीम-वि० [सं०] १. जिसकी सीमा न हो। बेहद। २. बहुत अधिक। अपार। ३. अनन्त और परम। (एब्सोल्यूट)

असीस*-स्त्री० दे० 'आशिष'।

असीसना-स० [सं० आशिष] आशीर्वाद देना। दुआ देना।

असुग*-वि० [सं० आशुग] जल्दी चलनेवाला। पुं० १. वायु। २. तीर। वाण।

असुविधा-स्त्री० [सं० अ=नहीं+सुविधि=अच्छी तरह] १. कठिनाई। अड़चन। २. तकलीफ। दिक्कत।

असुर-पुं० [सं०] १. दैत्य। राक्षस। २. रात। ३. नीच वृत्ति का पुरुष। ४ पृथ्वी। ५. सूर्य। ६. बादल। ७. राहु। ८. एक प्रकार का उन्माद।

असुरारि-पुं० [सं०] १ देवता। २. विष्णु।

असूया-स्त्री० [सं०] [वि० असूयक] १. किसी के गुण को भी अवगुण समझना। २. ईर्ष्या। डाह। (जेलसी)। (यह रस के अन्तर्गत एक संचारी भाव भी माना जाता है।)

असूर्यपश्या-वि० [सं०] जिसको सूर्य्य भी न देख सके। परदे में रहनेवाली।

असैग*-वि० [सं० असह्य] न सहने के योग्य। असह्य।

असैनिक-वि० [सं०] १. सैनिक और नागर आदि से भिन्न। २. जो सैनिक न हो।

असैला*-वि० [सं० अ=नहीं+शैली=रीति] [स्त्री० असैली] १. रीति-नीति के विरुद्ध काम करनेवाला। कुमार्गी। २. शैली के विरुद्ध। ३. अनुचित।

असोच-पुं० [हिं० अ+सोच] चिन्ता-रहित। निश्चिन्त। वि० [सं० अशुचि] अपवित्र। अशुद्ध।

असोज*-पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन मास।

असोस*-वि० [सं० अ+शोष] जो सूखे नहीं। न सूखनेवाला।

असौंध*-पुं० दे० 'दुर्गंध'।

अस्तंगत-वि० [सं०] १. जो अस्त हो

चुका हो। २. अवनत। हीन।

अस्त-वि० [सं०] १. छिपा हुआ। तिरोहित। २. जो न दिखाई दे। अदृश्य। ३. डूबा हुआ। (सूर्य, चन्द्र आदि) ४. नष्ट। ध्वस्त।

पुं० [सं०] लोप। अदर्शन।

अस्तबल-पुं० [अ०] घुड़साल। तबेला।

अस्तमन-पुं० [सं०] [वि० अस्तमित] अस्त होना।

अस्तर-पुं० [फा०] १. नीचे की तह या पल्ला। भितल्ला। २. दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा। ३. चन्दन का तेल जिसके आधार पर इत्र बनाये जाते हैं। जमीन। ४. वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ बारीक साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं। अँतरौटा। अंतरपट। ५. वह मसाला जिससे किसी चित्र की जमीन या सतह तैयार की जाय।

अस्त-व्यस्त-वि० [सं०] उलटा-पुलटा। छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

अस्ताचल-पुं० [सं०] वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे अस्त होने पर सूर्य्य का छिप जाना माना जाता है। पश्चिमाचल।

अस्ति-स्त्री० [सं०] १. भाव। सत्ता। २ विद्यमानता। वर्तमानता।

मुहा०-अस्ति अस्ति कहना-वाह वाह कहना। साधुवाद कहना।

अस्तित्व-पुं० [सं०] १. सत्ता का भाव। विद्यमानता। होना। मौजूदगी। २. सत्ता। भाव।

अस्तु-अव्य० [सं०] १. जो हो। चाहे जो हो। २. ख़ैर। भला। अच्छा।

अस्तुति-स्त्री० [सं०] निन्दा। बुराई। *स्त्री० दे० 'स्तुति'।

अस्तेय-पुं० [सं०] चोरी का त्याग। चोरी न करना। (दस धर्मों में से एक)

अस्त्र-पुं० [सं०] १. वह हथियार जो शत्रु पर फेंककर चलाया जाय। जैसे-बाण, शक्ति। २. हथियार जिससे शत्रु के चलाये हुए हथियारों की रोक हो। जैसे-ढाल। ३. वह हथियार जो मन्त्र द्वारा चलाया जाय। ४. वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर-फाड़ करते हैं। ५. शस्त्र। हथियार।

अस्त्र-चिकित्सा-स्त्री० [सं०] वैद्यक शास्त्र का वह अंश जिसमें चीर-फाड़ करके चिकित्सा की जाती है।

अस्त्रशाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रक्खे जायँ।

अस्थायी-वि० [सं०] [भाव० अस्थायित्व] जो स्थायी या सदा बना रहनेवाला न हो। थोड़े समय तक रहनेवाला। (टेम्परेरी)

अस्थि-स्त्री० [सं०] हड्डी।

अस्थिर-वि० [सं०] [भाव० अस्थिरता] १. चचल। चलायमान। डावाँ-डोल। २. जिसका कुछ ठीक न हो।

*वि० दे० 'स्थिर'।

अस्थि-संचय-पुं० [सं०] अन्त्येष्टि संस्कार के बाद जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करने का काम।

अस्पताल-पुं० [अँ० हॉस्पिटल] औषधालय। चिकित्सालय। दवाखाना।

अस्पृश्य-वि० [सं०] [भाव० अस्पृश्यता] जिसे छूना ठीक न हो। जो स्पर्श करने के योग्य न हो।

पुं० दे० 'अंत्यज'।

अस्मिता-स्त्री० [सं०] १. दृक्, द्रष्टा और दर्शन शक्ति को एक मानना, या

पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रान्ति (योग)। २. अहंकार। ३. मोह।

अस्वस्थ-वि० [सं०] १. रोगी। २. अनमना।

अस्वस्थ-प्रज्ञ-पुं० [सं०] वह जिसकी बुद्धि या प्रज्ञा कोई काम अच्छी तरह समझ-बूझकर करने के योग्य न हो। (·अनसाउंड माइंड)

अस्वाभाविक-वि० [सं०] [भाव० अस्वाभाविकता] १. जो स्वाभाविक न हो। प्रकृति-विरुद्ध। २. कृत्रिम। बनावटी।

अस्वीकरण-पुं० [सं०] अस्वीकृत करने की क्रिया या भाव। नामंजूर करना। (रिजेक्शन)

अस्वीकार-पुं० [सं०] [वि० अस्वीकृत] स्वीकार का उलटा। इनकार। नामंजूरी। वि० दे० 'अस्वीकृत'।

अस्वीकृत-वि० [सं०] जो स्वीकृत या मंजूर न किया गया हो। (रिजेक्टेड)

अहं-सर्व० [सं०] मैं।

पुं० [सं०] अहंकार। अभिमान।

अहंकार-पुं० [सं०] [वि० अहंकारी] १. अभिमान। गर्व। घमंड। २. 'मैं हूँ' या 'मैं करता हूँ' की भावना।

अहंकारी-वि० [सं०] [स्त्री० अहंकारिणी] अहंकार करनेवाला। घमंडी।

अहंता-स्त्री० [सं०] अहंकार। गर्व।

अह-पुं० [सं० अहन्] १ दिन। २. विष्णु। ३. सूर्य। ४. दिन का देवता।

अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य, खेद या क्लेश आदि का सूचक शब्द।

अहक*-स्त्री० [सं० ईहा] इच्छा।

अहकना*-स० [हिं० अहक] इच्छा करना। लालसा करना।

अहटाना*-अ० [हिं० आहट] आहट लगना। पता चलना।

स० आहट लगाना। टोह लेना।

अ० [सं० आहत] दुखना।

अहथिर*-वि० १. दे० 'स्थिर' २ दे० 'अस्थिर'।

अहदी-पुं० [अ०] १. आलसी। आस-कर्त्ता। २. अकर्मण्य। ३. निठल्लू।

पुं० [अ०] अकबर के समय के एक प्रकार के सिपाही जिनसे बड़ी आवश्यकता के समय काम लिया जाता था और जो साधारणतः सब दिन बैठे खाते थे।

अहना*-अ० [सं० अस्=होना] होना। (अब यह क्रिया केवल वर्तमान रूप 'अहै' में ही आती है।)

अहरह-क्रि० वि० [सं०] १. प्रति दिन। २. नित्य। सदा। ३ लगातार। निरंतर।

अहरा-पुं० [सं० आहरण] १. कंडे का ढेर। २ वह स्थान जहाँ लोग ठहरें।

अहर्निश-क्रि० वि० [सं०] १. रात-दिन। २ सदा। नित्य।

अहलकार-पुं० [फा०] १. कर्मचारी। २. कारिन्दा।

अहलना*-अ० [सं० अहलन] हिलना। काँपना।

अहलाद*-पुं० दे० 'आह्लाद'।

अहा-अव्य० [सं० अहह] आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द।

अहाता-पुं० [अ०] १. घेरा। हाता। बाड़ा। २. प्राकार। चहारदीवारी।

अहारना*-स० [सं० आहरण] १. खाना। भक्षण करना। २. चपकाना। ३. कपड़े में माँड़ी लगाना।

अहिंसक-वि० [सं०] जो हिंसा न करे।

अहिंसा-स्त्री० [सं०] किसी को न

सताना या न मारना या दुःख न देना।

अहि-पुं० [सं०] १. साँप। २. वृत्रासुर। ३. पृथ्वी। ४ सूर्य।

अहित-वि० [सं०] १. शत्रु। वैरी। २. हानिकारक।
पुं० खराबी। अकल्याण।

अहिफेन-पुं० [सं०] १. सर्प के मुँह को लार या फेन। २. अफीम।

अहिबेल*-स्त्री० [सं० अहिवल्ली] पान।

अहिवात-पुं० [सं० अभिवाद] [वि० अहिवाती] स्त्री का सौभाग्य। सोहाग।

अहीर-पुं० [सं० आभीर] [स्त्री० अहीरिन] एक जाति जिसका काम गाय-भैंस रखना और दूध बेचना है। ग्वाला।

अहुटना*-अ० [हिं० हटना] हटना। दूर होना। अलग होना।

अहेर-पुं० [सं० आखेट] [कर्ता अहेरी] १. शिकार। मृगया। २. वह जन्तु जिसका शिकार किया जाय।

अहोरात्र-पुं० [सं०] दिन-रात।

आ

आ-हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है।

अव्य० [सं०] संस्कृत में अव्यय के रूप में इसका प्रयोग सीमा, (जैसे-आकर्ण=कानों तक, आ-समुद्र=समुद्र तक), अभिव्याप्ति, (जैसे-आ-पाताल=पाताल के भीतरी भाग तक), किंचित्, (जैसे-आ-पिंगल=कुछ कुछ पीला) और अति-क्रमण (जैसे—आ-कालिक=बे-मौसिम का) के अर्थ में होता है।

उपसर्ग के रूप में यह प्रायः गत्यर्थक धातुओं के पहले लगकर उनके अर्थों मे कुछ विशेषता उत्पन्न करता है; जैसे-आरोहण, आकर्षण। कभी कभी यह कुछ शब्दों के पहले लगकर उनका अर्थ कुछ उलट भी देता है। जैसे-गमन और आगमन, दान और आदान; नयन (ले जाना) और आनयन (ले आना)।

आँक-पुं० [सं० अंक] १. अंक। चिह्न। निशान। २. संख्या का चिह्न। अदद। ३. अक्षर। हरफ। ४. गढ़ी हुई बात। ५. अंश। हिस्सा। ६. लकीर। ७. किसी चीज पर संकेत रूप में टाँका हुआ उसका दाम।

आँकड़ा-पुं० [हिं० आंक] १. अंक। अदद। संख्या का चिह्न। २. पेंच।

आँकड़े-पुं० [हिं० आंक] गणित की सहायता से किसी विषय या विभाग के सम्बन्ध मे स्थिर किये हुए अंक जो उस विषय या विभाग की स्थिति सूचित करते हैं। (स्टेटिस्टिक्स)

आँकना-स०[सं०अंकन] १.चिह्नित करना। निशान लगाना। दागना। २. कूतना। अंदाज करना। मूल्य लगाना। ३. अनुमान करना; ठहराना। ४. चित्र बनाना।

आँख-स्त्री० [सं० अक्षि] १. वह इन्द्रिय जिससे प्राणियों को रूप, वर्ण, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है। नेत्र। लोचन। २ दृष्टि। नजर। ध्यान।

मुहा०-आँख आना=आँख में लाली, पीड़ा और सूजन होना। आँख उठाना= १. देखना। २. हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। आँख उलट जाना=पुतली का ऊपर चढ़ जाना। (मरने के समय) आँख

खुलना=१. नींद टूटना। २. ज्ञान होना। भ्रम दूर होना। **आँखें चार करना**=देखा-देखी करना। सामने आना। **आँखें चुराना या छिपाना**=१. सामने न होना। २. लज्जा से बराबर न ताकना। **आँखें डबडबाना**=आंखों में आंसू भर आना। **आँख दिखाना**=१. क्रोध की दृष्टि से देखना। २. क्रोध जताना। **आँख न ठहरना**=चमक या द्रुत गति के कारण दृष्टि न जमना। **आँखें निकालना**=१. क्रोध की दृष्टि से देखना। २. आंख का डेला काटकर अलग कर देना। **आँखें नीची होना**=सिर नीचा होना। लज्जा उत्पन्न होना। **आँखों पर परदा पड़ना**=अज्ञान का अन्धकार छाना। भ्रम होना। **आँख फड़कना**=आंखों का बार बार हिलना (शुभ-अशुभ सूचक) **आँखें फिर जाना**=१. पहले की सी कृपा न रहना। बे-मुरौअती आ जाना। २. मन मे बुराई आना। **आँखें फेरना**=१. पहले की सी कृपा या स्नेह-दृष्टि न रखना। २. मित्रता तोड़ना। ३. विरुद्ध या प्रति-कूल होना। **आँखें बन्द होना**=१ आंख झपकना। पलक गिरना। २ मृत्यु होना। मरना। **आँखें बन्द करके या मूँदकर**=बिना सब बातें देखे, सुने या विचार किये। **आँख बचाना**=सामना न करना। कतराना। **आँखें बिछाना**=१. प्रेम से स्वागत करना। २. प्रेम-पूर्वक प्रतीक्षा करना। **आँखें भर आना**=आंखों में आंसू आना। **आँख भर देखना**=खूब अच्छी तरह देखना। **आँख मारना**=१. इशारा करना। सन-कारना। २. आँख के इशारे से मना करना। **आँख मिलाना**=१. आँख सामने करना। बराबर ताकना। २. सामने आना। मुँह दिखाना। **आँखों में चरबी छाना**=गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना। **आँखों में धूल डालना**=सरासर धोखा देना। भ्रम में डालना। **आँखों में समाना**=हृदय में बसना। चित्त में स्मरण बना रहना। **आँख लगना**=१. प्रीति होना। प्रेम होना। २. नींद आना। **आँख लड़ना**=१. देखा-देखी होना। आंख मिलना। २. प्रेम होना। प्रीति होना। **आँख होना**=१. परख होना। पहचान होना। २ ज्ञान होना। विवेक होना।
३. विचार। विवेक। परख। शिनाख्त। पहचान। ४. कृपा-दृष्टि। दया-भाव। ५. सन्तति। सन्तान। लड़का-बाला। ६. आंख के आकार का छेद या चिह्न। जैसे-सूई की आंख।

आँख-मिचौली-स्त्री० [हिं० आंख+मींचना] लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आंख मूँदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं, जिन्हें उस आंख मूँदने-वाले लड़के को ढूँढ़कर छूना पड़ता है।

आँगन-पुं० [सं० अंगण] घर के अन्दर का सहन। चौक। अजिर।

आंगिक-वि० [सं०] अंग सम्बन्धी। अंग का।
पुं० १. चित्त के भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा। जैसे-भ्रू-विक्षेप, हाव आदि। २. रस में कायिक अनुभाव। ३. नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

आँधी-स्त्री० [सं० घृ=क्षरण] महीन कपड़े या जाली से मढ़ी हुई चलनी।

आँच-स्त्री० [सं० अर्चि] १. गरमी। ताप। २. आग की लपट। लौ। ३. आग। मुहा०-**आँच खाना**=गरमी पाना। आग पर चढ़ना। तपना। **आँच दिखाना**= आग के सामने रखकर गरम करना। ४. एक एक बार पहुँचा हुआ ताप। ५. तेज। प्रताप। ६ आघात। चोट। ७. हानि। अहित। अनिष्ट। ८. विपत्ति। संकट। आफत। ९. प्रेम। मुहब्बत। १० काम-वासना।

आँचल-पुं० [सं० अंचल] १. धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का भाग। पल्ला। छोर। २. साधुओं का अँचला। ३. साड़ी या ओढ़नी का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है। मुहा०-**आँचल में बाँधना**=१ हर समय साथ रखना। प्रति क्षण पास रखना। २. किसी की कही हुई बात अच्छी तरह स्मरण रखना। कभी न भूलना।

आँजन-पुं० दे० 'अंजन'।

आँजना-स० [सं०अंजन] अंजन लगाना।

आँट-स्त्री० [हिं० अँटी] १. तर्जनी और अँगूठे के नीचे का स्थान। २ दाँव। वश। ३. वैर। लाग-डाँट। ४. गिरह। गाँठ। ऐंठन। ५. पूला। गट्ठा।

आँटना*-अ० दे० 'अँटना'।

आँटी-स्त्री० [हिं० आँटना] १. लम्बे तृणों का छोटा गट्ठा। पूला। २. लड़कों के खेलने की गुल्ली। ३. सूत का लच्छा। ४. धोती की गिरह। टेंट। मुर्री।

आँठी-स्त्री० दे० 'अंठी'।

आँत-स्त्री० [सं० अन्त्र] प्राणियों के पेट के भीतर की वह लम्बी नली जो गुदा तक रहती है और जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है। अंत्र। अँतड़ी। लाद। मुहा०-**आँत उतरना**=एक रोग जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है और अंडकोश में पीड़ा उत्पन्न होती है। **आँतें कुलकुलाना या सूखना**= भूख के मारे बुरी दशा होना।

आंतरिक-वि० [सं०] १. अन्दर का। भीतरी। २. किसी देश के भीतरी भागों से संबंध रखनेवाला। जैसे-आंतरिक व्यवस्था।

आंदोलन-पुं० [सं०] १ बार बार हिलना डोलना। २. उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न। हलचल। (एजिटेशन)

आँधना*-अ० [हिं० आँधी] वेग से धावा करना। टूट पड़ना।

आँधी-स्त्री० [सं० अंध=अँधेरा] बहुत वेग की हवा जिससे इतनी धूल उठती है कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। अंधड़। वि० आँधी की तरह तेज।

आँव-पुं० [सं० आम=कच्चा] वह चिकना, सफेद लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।

आँवठ-पुं० [सं० ओष्ठ] किनारा।

आँवड़ा-वि० [सं० आकुंड] गहरा।

आँवल-पुं० [सं० उल्व] वह झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं। खेड़ी। जेरी।

आँवला-पुं० [सं० आमलक] एक पेड़ जिसके गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं।

आँवाँ-पुं० [सं० आपाक] वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं। मुहा०-आँवें का आँवाँ बिगड़ना=किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।

आंशिक-वि० [सं०] १. अंश सम्बन्धी।

अंश-विषयक। २. जो अंश रूप में हो। थोड़ा। कुछ या कम। (पार्शल)

आँस*-स्त्री० [सं० काश] संवेदना। दर्द। स्त्री० [सं० पाश] १. डोरी। २. रेशा। पुं० दे० 'आँसू'।

आँसू-पुं० [सं० अश्रु] वह जल जो आँखों से शोक या पीड़ा के समय निकलता है। अश्रु।

मुहा०-आँसू गिराना या ढालना= रोना। आँसू पीकर रह जाना=मन ही मन रोकर रह जाना। आँसू पुँछना=आश्वासन मिलना। ढारस बँधना। आँसू पोंछना = आश्वासन देना। ढारस देना।

आइ*-स्त्री० [सं० आयु] १. जीवन। २. दे० 'आयु'।

आईन-पुं० [फा०] १. नियम। कायदा। २. कानून। विधान।

आईना-पुं० [फा०] दर्पण। शीशा। मुहा०-आईना होना=बिलकुल स्पष्ट होना।

आक-पुं० [सं० अर्क] मदार। अकौवन।

आकर-पुं० [सं०] १. खान। उत्पत्ति-स्थान। २. खजाना। भांडार। ३. प्रकार।

आकर-भाषा-स्त्री० [सं०] वह मूल प्राचीन भाषा जिससे नई भाषा आवश्यकता पड़ने पर शब्द ले। जैसे— हिन्दी की आकर-भाषा संस्कृत और उर्दू की अरबी-फारसी है।

आकरिक-पुं० [सं०] खान खोदनेवाला। वि० आकर या खान से सम्बन्ध रखनेवाला।

आकर्षक-वि० [सं०] आकर्षण करनेवाला। खींचनेवाला।

आकर्षण-पुं० [सं०] [वि० आकर्षित, आकृष्ट] १. किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना। २. खिंचाव। ३. तंत्र में एक प्रकार का प्रयोग जिसके द्वारा दूर-देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास आ जाता है।

आकर्षण-शक्ति-स्त्री० [सं०] भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षना*-स० [सं०आकर्षण] खींचना।

आकर्षित-वि० [सं०] खींचा हुआ।

आकलन-पुं० [सं०] [वि० आकलनीय, आकलित] १. ग्रहण। लेना। २. संग्रह। संचय। इकट्ठा करना। ३ गिनती करना। ४. खाते में जमा करना। (क्रेडिट)। ५. अनुसंधान।

आकलन-पक्ष-पुं० [सं०] खाते या हिसाब का वह पक्ष या अंग जिसमें आया हुआ धन जमा किया जाता है। (क्रेडिट साइड)

आकलन-पत्रक-पुं० [सं०] वह पत्रक जो खाते में किसी के समुचित आकलन पक्ष या यथेष्ट धन जमा होने का सूचक होता है। (क्रेडिट नोट)

आकस्मिक-वि० [सं०] १. यों ही किसी समय हो जानेवाला। (कैजुअल) २. अचानक या सहसा होनेवाला। (कन्टिनजेन्ट)

आकस्मिक छुट्टी-स्त्री० [सं०+हिं०] वह छुट्टी जो यों ही या अचानक कोई काम आ पड़ने पर ली जाय। (कैजुअल लीव)

आकस्मिकी-स्त्री० [सं० आकस्मिक] अकस्मात् या अचानक हो जानेवाली घटना या बात। (कैजुएलिटी)

आकांक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० आकांक्षित] १. इच्छा। अभिलाषा।

वांछा। चाह। २. अपेक्षा। ३. अनुसन्धान। ४. वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिए एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना। (न्याय)

आकांक्षी-वि० [सं० आकांक्षिन्] [स्त्री० आकांक्षिणी] इच्छा करनेवाला। इच्छुक।

आकार-पुं० [सं०] १. स्वरूप। आकृति। सूरत। २ डील-डौल। ३. बनावट। ४. निशान। चिह्न। ५. चेष्टा। ६. 'आ' वर्ण। ७. बुलावा।

आकारक-पुं० [सं० आकार=बुलावा] न्यायालय का वह आज्ञापत्र जो किसी को साक्षी आदि के लिए बुलाने के अभिप्राय से उसके पास भेजा जाता है। (सम्मन)

आकारण-पुं० [सं०] किसी को यों ही अथवा आकारक भेजकर, बुलाने की क्रिया या भाव। (सम्मनिंग)

आकारी-वि० [सं०] [स्त्री० आकारिणी] आह्वान करनेवाला। बुलानेवाला।

आकाश-पुं० [सं०] १. अंतरिक्ष। आसमान। २. वह स्थान जहाँ वायु के अतिरिक्त और कुछ न हो। खाली जगह। मुहा०-**आकाश छूना या चूमना**=बहुत ऊँचा होना। **आकाश पाताल एक करना**=१. भारी उद्योग करना। २. आन्दोलन या हलचल करना। **आकाश पाताल का अन्तर**=बहुत अन्तर।

आकाश-कुसुम-पुं० [सं०] आकाश में फूल खिलने की सी असम्भव बात।

आकाश-गंगा-स्त्री० [सं०] १. बहुत से तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला है। डहर। २. पुराणानुसार स्वर्ग की गंगा। मन्दाकिनी।

आकाशचारी-वि० [सं० आकाशचारिन्] आकाश में फिरनेवाला। आकाशगामी।

पुं० १. सूर्यादि ग्रह और नक्षत्र। २. वायु। ३. पक्षी। ४. देवता।

आकाश-भाषित-पुं० [सं०] नाटक के अभिनय मे वक्ता का ऊपर की ओर देखकर इस तरह कोई प्रश्न कहना मानो वह उससे किया जा रहा हो और तब फिर उसका उत्तर देना।

आकाश-वाणी-स्त्री० [सं०] १ वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोले। देव-वाणी। २. दे० 'रेडिओ'।

आकाश-वृत्ति-स्त्री० [सं०] अनिश्चित जीविका। ऐसी आमदनी जो बँधी न हो।

आकुंचन-पु० [सं०] [वि० आकुंचित] सिकुड़ना। सिमटना। संकोचन।

आकुल-वि० [सं०] [वि० आकुलित, संज्ञा आकुलता] १. व्यग्र। घबराया हुआ। उद्विग्न। २. विह्वल। कातर। ३. व्याप्त। सकुल। ४. संदिग्ध। अस्पष्ट।

आकुलता-स्त्री० [सं०] [वि० आकुलित] व्याकुलता। घबराहट।

आकृति-स्त्री० [सं०] १. बनावट। गढ़न। ढाँचा। २. मूर्ति। रूप। ३. मुख। चेहरा। ४. मुख का भाव। चेष्टा।

आकृष्ट-वि० [सं०] खींचा या खिंचा हुआ।

आक्रम*-पुं० दे० 'पराक्रम'।

आक्रमण-पुं० [सं०] [वि० आक्रमित] १. बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करके दूसरे के राज्य या क्षेत्र में जाना। चढ़ाई। २. आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना या उसे मारना। (एसॉल्ट) ३. घेरना। छेंकना। ४.

किसी के कार्यों या विचारों पर किया जानेवाला आक्षेप या उसकी निन्दा।

आक्रांत-वि० [सं०] १. जिसपर आक्रमण हुआ हो। २. घिरा हुआ। आवृत्त। ३. वशीभूत। विवश। ४. व्याप्त। ५. पराजित।

आक्रामक-वि० [सं०] आक्रमण करनेवाला। जो आक्रमण करे।

आक्रोश-पुं० [सं०] कोसना। शाप या गाली देना।

आक्षेप-पुं० [सं०] [कर्त्ता आक्षेपक] १ फेंकना। गिराना। २. दोष लगाना। अपवाद या इलजाम लगाना। ३. कटु उक्ति। ताना। ४ एक वात रोग जिसमें अंग में कँपकँपी होती है। ५. व्यंग्य।

आखत*-पुं० दे० 'अक्षत' (चावल)।

आखन*-क्रि० वि० [सं० आ+क्षण] प्रति क्षण : हर घड़ी।

आखना*-स० [सं० आख्यान] कहना। अ० [सं० आकांक्षा] चाहना। स० [हिं० आँख] देखना। ताकना।

आखर*-पुं० दे० 'अक्षर'।

आखिर-वि० [फा०] अन्तिम। पीछे का। पुं० १. अन्त। २. परिणाम। फल। क्रि० वि० अन्त में। अंत को।

आखिरी-वि० [फा०] अन्तिम। पिछला।

आखेट-पुं० [सं०] [कर्त्ता आखेटक] जंगली पशु-पक्षियों को मारना। शिकार।

आख्या-स्त्री० [सं०] १. नाम। संज्ञा। २. कीर्ति। यश। ३. व्याख्या। ४. किसी घटना या कार्य का विवरण जो किसी को सूचित करने के लिए हो। (रिपोर्ट)

आख्यात-वि० [सं०] १. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर। २. जो आख्या, विवरण या सूचना के रूप में किसी को बतलाया गया हो। (रिपोर्टेड)

आख्यान-पुं० [सं०] १. वर्णन। वृत्तान्त। बयान। २. कथा। कहानी। किस्सा। ३. उपन्यास के नौ भेदों में से एक। वह कथा जो स्वयं कवि कहे।

आख्यापक-पुं० [सं०] वह जो किसी को कोई विवरण बतलावे या सूचना दे। आख्या देनेवाला। (रिपोर्टर)

आख्यायिका-स्त्री० [सं०] १. कथा। कहानी। २. वह कल्पित कथा जिससे कुछ शिक्षा निकले। ३. एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र भी अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ कुछ कहते हैं।

आगंतुक-वि० [सं०] १. जो आवे। आनेवाला। २. जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय।

आग-स्त्री० [सं० अग्नि] १. तेज और प्रकाश का पुंज जो तीव्र उष्णतावाली वस्तुओं में देखा जाता है। अग्नि। बसुन्दर। २. जलन। ताप। गरमी। ३. काम का वेग। ४. वात्सल्य। प्रेम। ५. डाह। ईर्ष्या। वि० १. जलता हुआ। बहुत गरम। २. जो गुण में उष्ण हो।

मुहा०-**आग बबूला**=अत्यन्त क्रुद्ध होना। **आग बरसना**=बहुत गरमी पड़ना। **आग लगना**=बहुत क्रोध उत्पन्न होना। **आग लगाना**=१. आग से किसी वस्तु को जलाना। २. गरमी करना। जलन पैदा करना। ३. क्रोध उत्पन्न करना। ४. बिगाड़ना। नष्ट करना। **पानी में आग लगाना**=१. असम्भव कार्य करना। २. जहाँ लड़ाई की कोई बात न हो, वहाँ भी लड़ाई लगा देना।

आगणन-पुं० [सं०] पहले से व्यय या लागत आदि का अनुमान करना। कूत। (एस्टिमेट)

आगत-वि० [सं०] [स्त्री० आगता] १. आया हुआ। २. प्राप्त। उपस्थित।

आगत-पतिका-स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका पति पर-देस से लौटा हो।

आगत-स्वागत-पुं०[सं०आगत+स्वागत] आये हुए व्यक्ति का आदर। सत्कार। आव-भगत।

आगम-पुं० [सं०] १. अवाई। आगमन। आमद। २. भविष्य काल। आनेवाला समय। ३. होनहार। ४. समागम। संगम। ५. आमदनी। आय। ६. व्याकरण में किसी शब्द-साधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाय। ७. उत्पत्ति। ८. वेद और शास्त्र। ९. नीति-शास्त्र। १०. वह अधिकार या अधिकार-सूचक पत्र जिसके आधार पर कोई किसी वस्तु का स्वामी या उत्तराधिकारी होता है। (टाइटिल)

आगम-ज्ञानी-वि० [सं० आगमज्ञानी] होनहार जाननेवाला। आगम-ज्ञानी।

आगमन-पुं० [सं०] १. अवाई। आना। आमद। २. प्राप्ति। लाभ।

आगर-पुं० [सं० आकर] [स्त्री० आगरी] १. खान। आकर। २. समूह। ढेर। ३. कोष। निधि। खजाना। ४. वह गड्ढा जिसमें नमक जमाया जाता है। पुं० [सं० आगार] १. घर। गृह। २. छाजन। छप्पर। *वि० [सं० अग्र] १. श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़कर। २. चतुर। होशियार। दक्ष। कुशल।

आगल*-वि० दे० 'अगला'।

आगवन*-पुं० दे० 'आगमन'।

आगा-पुं० [सं० अग्र] १. किसी चीज के आगे का भाग। अगला भाग। २ सामने का भाग। मुख। मुँह। ३. अँगरखे या कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा। ४. सेना या फौज का अगला भाग। हरावल। ५. घर के सामने का मैदान। ६. आनेवाला समय। भविष्य। पुं० [तु० आगा] १. मालिक। सरदार। २. काबुली। अफगान।

आगान*-पुं० [सं० आ+गान] १. बात। प्रसंग। २. वृत्तान्त।

आगा-पीछा-पुं० [हिं आगा+पीछा] १. हिचक। सोच-विचार। दुबिधा। २. परिणाम। नतीजा। ३. शरीर का अगला और पिछला भाग।

आगामी-वि० [सं० आगामिन्] [स्त्री० आगामिनी] भावी। आनेवाला।

आगार-पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. स्थान। जगह। ३. खजाना।

आगे-क्रि० वि० [सं० अग्र] १. सामने की ओर कुछ दूर पर। और बढ़कर। 'पीछे' का उलटा। २. समक्ष। सामने। सम्मुख। ३. जीवन-काल में। जीते-जी। ४. भविष्य में। आगे चलकर। ५. अनन्तर। पीछे। बाद। ६. पूर्व। पहले। ७. गोद में। जैसे-उसके आगे एक लड़का है। मुहा०-आगे आना=१. सामने आना या पड़ना। मिलना। २ सामना करना। भिड़ना। ३. घटित होना। घटना। आगे करना=१. उपस्थित या प्रस्तुत करना। २. अगुआ या मुखिया बनाना। आगे को=भविष्य में। आगे निकलना=बढ़ जाना। आगे-पीछे=एक के पीछे एक। २. आस-पास। आगे से=१.

आइन्दा से। भविष्य में। २. पहले से।
आग्नेय-वि० [सं०] [स्त्री० आग्नेया] १. अग्नि-संबंधी। अग्नि का। २. अग्नि से उत्पन्न। ३. जिससे आग निकले। जलानेवाला। जैसे-आग्नेय अस्त्र। पुं० १. सुवर्ण। सोना। २. अग्नि के पुत्र कार्तिकेय। ३. ज्वालामुखी पर्वत। ४. दक्षिण का एक देश जिसकी प्रधान नगरी माहिष्मती थी। ५. वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे। जैसे-बारूद। ६. अग्नि-कोण।
आग्रह-पुं० [सं०] १ अनुरोध। हठ। जिद। २. तत्परता। परायणता। ३. बल। ज़ोर।
आग्रहायण-पुं० [सं०] अगहन। (महीना)
आग्रही-वि० [सं० आग्रहिन्] आग्रह करनेवाला। हठी। जिद्दी।
आघ*-पुं० [सं० अर्घ] मूल्य। दाम।
आघात-पुं० [सं०] १ धक्का। ठोकर। २. मार। प्रहार। चोट। (इंजरी)
आघातपत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर किसी को लगे हुए आघातों या चोटों का उल्लेख या विवरण हो। (इंजरी लेटर)
आघ्राण-पुं० [सं०] [वि० आघ्रात, आघ्रेय] १. सूँघना। बास लेना। २ अघाना। तृप्ति।
आचमन-पुं० [सं०] [वि० आचमनीय, आचमित] १. जल पीना। २. पूजा या धर्म्म-सम्बन्धी कर्म्म के आरम्भ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।
आचमनी-स्त्री० [सं० आचमनीय] एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं।
आचरण-पुं० [सं०] [वि० आचरणीय, आचरित] १. अनुष्ठान। २. व्यवहार। बरताव। चाल-चलन। (कॉनडक्ट) ३. आचार-शुद्धि। सफाई।
आचरण-पुस्तिका-स्त्री० [सं०] वह पुस्तिका जिसमें किसी कार्य-कर्त्ता के कार्यों या कर्तव्य-पालन से सम्बन्ध रखनेवाले आचरणों या व्यवहारों का उल्लेख हो। (कैरेक्टर बुक)
आचरणीय-वि० [सं०] व्यवहार करने योग्य। आचरण करने योग्य।
आचरना*-अ० [सं० आचरण] आचरण करना। व्यवहार करना।
आचरित-वि० [सं०] किया हुआ।
आचानक*-क्रि० वि० दे० 'अचानक'।
आचार-पुं० [सं०] १. चाल-चलन और रहन-सहन। २. रीति-व्यवहार। (कस्टम) जैसे-देशाचार, कुलाचार। ३. चरित्र। चाल-ढाल। ४ अच्छा शील या स्वभाव।
आचारज*-पुं० दे० 'आचार्य'।
आचारवान्-वि० [सं०] [स्त्री० आचारवती] पवित्रता से रहनेवाला। शुद्ध आचार का।
आचार-विचार-पुं० [सं०] आचार और विचार। रहने की सफाई।
आचारी-वि० [सं० आचारिन्] [स्त्री० आचारिणी] आचारवान्। चरित्रवान्। पुं० रामानुज सम्प्रदाय का वैष्णव।
आचार्य्य-पुं० [सं०] [स्त्री० आचार्य्याणी] १. उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करनेवाला। २. गुरु। वेद पढ़ानेवाला। ३. यज्ञ के समय कर्मोपदेशक। ४. पुरोहित। ५. अध्यापक। ६. ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार शंकर, रामानुज, मध्व और वल्लभाचार्य। ७. वेद का भाष्यकार।

विशेष-स्वयं आचार्य का काम करने-वाली स्त्री आचार्या कहलाती है। आचार्य की पत्नी को आचार्याणी कहते हैं।

आच्छन्न-वि० दे० 'आच्छादित'।

आच्छादन-पुं० [सं०] [वि० आच्छादित, आच्छिन्न] १. ढकना। २. वस्त्र। कपड़ा। ३. छाजन। ४. छवाई।

आछत*-क्रि० वि० [क्रि० अ० 'आछना' का कृदन्त रूप] होते हुए। रहते हुए। विद्यमानता में। मौजूदगी में।

आछना*-अ० [सं० अस् = होना] १. होना। २. रहना। विद्यमान होना।

आछे*-क्रि० वि० [हिं० अच्छा] भले प्रकार से। भली-भाँति। अच्छी तरह।

आज-क्रि० वि० [सं० अद्य] १. वर्त्तमान दिन में। जो दिन बीत रहा है, उसमें। २. इन दिनों। वर्तमान समय में। ३. इस वक्त। अब।

आज-कल-क्रि० वि० [हिं० आज+कल] इन दिनों। इस समय। वर्त्तमान दिनों में। मुहा०-आज-कल करना=टाल-मटोल करना। हाला-हवाला करना। आज-कल लगना=अब तब लगना। मरण काल निकट आना।

आजन्म-क्रि० वि० [सं०] जीवन भर। जन्म भर। जिन्दगी भर।

आजमाना-स० [फा० आजमाइश] परीक्षा करना। परखना।

आजा-पुं० [सं० आर्य] [स्त्री० आजी] पितामह। दादा। बाप का बाप।

आजाद-वि० दे० 'स्वतंत्र'।

आजादी-स्त्री० दे० 'स्वतंत्रता'।

आजानु-वि० [सं०] जाँघ या घुटने तक लम्बा।

आजानु-बाहु-वि० [सं०] जिसके बाहु जानु तक लम्बे हों। जिसके हाथ घुटने तक पहुँचें। (वीरों का लक्षण)

आजीवन-क्रि० वि० [सं०] जीवन पर्यंत। जिन्दगी भर।

आजीविका-स्त्री० दे० 'जीविका'।

आज्ञप्त-वि० [सं०] जिसका या जिसके सम्बन्ध में आज्ञा दी गई हो।

आज्ञा-स्त्री० [सं०] बड़ों का छोटों को किसी काम के लिए कहना : हुक्म।

आज्ञाकारी-वि० [सं० आज्ञाकारिन्] [स्त्री० आज्ञाकारिणी] १. आज्ञा माननेवाला। हुक्म माननेवाला। २. सेवक। दास।

आज्ञापक-वि० [सं०] [स्त्री० आज्ञापिका] १. आज्ञा देनेवाला। २. प्रभु। स्वामी।

आज्ञापत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें कोई आज्ञा लिखी हो। (हुकुमनामा)

आज्ञापन-पुं० [सं०] [वि० आज्ञापित] सूचित करना। जताना।

आज्ञा-पालन-पुं० [सं०] [वि० आज्ञापालक] किसी की दी हुई आज्ञा के अनुसार कोई काम करना।

आज्ञापित-वि० [सं०] सूचित किया हुआ। जताया हुआ।

आज्ञा-फलक-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर किसी विषय या व्यवहार के सम्बन्ध की आज्ञा लिखी हो। (ऑर्डर शीट)

आज्ञा-भंग-पुं० [सं०] किसी की आज्ञा न मानना या उस आज्ञा के विरुद्ध काम करना। (डिस्-ओबीडिएन्स)

आटना-स० [सं० अट्ट] ढँकना। दबाना।

आटा-पुं० [सं० अटन=घूमना] १. किसी अन्न का चूर्ण। पिसान। चून।

मुहा०-आटे-दाल का भाव मालूम होना=संसार के व्यवहार का ज्ञान होना। आटे-दाल की फ़िक्र=जीविका की चिन्ता।

२. किसी वस्तु का चूर्ण। बुकनी।

आठ-वि० [सं० अष्ट] चार का दूना। मुहा०-आठ आठ आँसू रोना=बहुत अधिक विलाप करना। आठो गाँठ कुम्मैत=१. सर्व-गुण-सम्पन्न। २. चतुर। ३. छँटा हुआ। धूर्त। आठों पहर=दिन-रात।

आडंबर-पुं० [सं०] [वि० आडंबरी] १. गम्भीर शब्द। २. तुरही का शब्द। ३. हाथी की चिग्घाड़। ४. ऊपरी बनावट। तड़क-भड़क। टीम-टाम। ढोंग। ५. आच्छादन। ६. तम्बू। ७. बड़ा ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है।

आड़-स्त्री० [सं० अल्=रोक] १. ओट। परदा। आवरण। २. रक्षा। शरण। पनाह। ३. सहारा। आश्रय। ४. रोक। अड़ान। ५. थूनी। ठेक।

स्त्री० [सं० आलि=रेखा] १. लंबी टिकली जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। २. स्त्रियों के मस्तक पर का आड़ा तिलक। ३. माथे पर पहनने का एक गहना। टीका।

पुं० दे० 'डंक'।

आड़ना-स० [सं० अल्=वारण करना] १. रोकना। छेंकना। २. बाँधना। ३ मना करना। न करने देना। ४. गिरवी या रेहन रखना। गहने रखना।

आड़ा-पुं० [सं० अलि] १. एक धारीदार कपड़ा। २. लट्ठा। शहतीर।

वि० १ आँखों के समानान्तर दाहिनी से बाँई ओर को या बाँई से दाहिनी ओर को गया हुआ। २. इस पार से उस पार तक रखा हुआ।

मुहा०-आड़े आना=१. रुकावट डालना। बाधक होना। २. कठिन समय में सहायक होना। आड़े हाथों लेना=किसी को व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना।

आढ़-पुं० [सं० आढ़क] चार प्रस्थ अर्थात् चार सेर की एक तौल।

स्त्री० [हिं० आड़] १. ओट। २. अन्तर। फरक। ३. नागा।

वि० [सं० आढ्य=सम्पन्न] कुशल। दक्ष।

आढ़त-स्त्री० [हिं० आढ़ना=जमानत देना] १. किसी अन्य व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय। २. वह स्थान जहाँ आढ़त का माल रहता हो। ३. वह धन जो इस प्रकार बिक्री कराने के बदले में मिलता है।

आढ़तिया-पुं० दे० 'अढ़तिया'।

आढ्य-वि० [सं०] १. पूरी तरह से युक्त या सम्पन्न। जैसे-धनाढ्य, गुणाढ्य।

आतंक-पुं० [सं०] १ रोब। दबदबा। प्रताप। २. भय। आशंका। ३. रोग।

आततायी-पुं० [सं० आततायिन्] [स्त्री० आततायिनी] १.आग लगानेवाला। २. विष देनेवाला। ३. जमीन, धन या स्त्री हरनेवाला।

आतप-पुं० [सं०] [भाव० आतपता] १. धूप। घाम। २. गर्मी। उष्णता। ३. सूर्य्य का प्रकाश।

आतश-स्त्री० [फा०] आग। अग्नि।

आतशबाज-पुं० [फा०] वह जो आतशबाजी बनाता हो।

आतशबाजी-स्त्री० [फा०] बारूद, गन्धक, सोरे आदि के योग से बने हुए चक्र, जिनके जलने पर रंग-बिरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं।

आतिथ्य-पुं० [सं०] अतिथि का सत्कार। पहुनाई। मेहमानदारी।

आतिश-स्त्री० दे० 'आतश'।

आतिशय्य-पुं० [सं०] अतिशय होने का भाव। आधिक्य। बहुतायत। ज्यादती।

आतुर-वि० [सं०] [संज्ञा आतुरता] १. व्याकुल। व्यग्र। घबराया हुआ। २. उतावला। अधीर। ३. उद्विग्न। बेचैन। ४. उत्सुक। ५. दुःखी। ६. रोगी। क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

आतुरा-स्त्री० [सं० आतुर] १. घबराहट। व्याकुलता। २. शीघ्रता।

आत्म-वि० [सं० आत्मन्] अपना।

आत्मक-वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] मय। युक्त। (यौगिक शब्दों के अन्त में)

आत्म-गौरव-पुं० [सं०] अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान। आत्म-सम्मान।

आत्म-घात-पुं० [सं०] अपने हाथों अपने को मार डालना। खुदकुशी।

आत्मज-पुं० [सं०] [स्त्री० आत्मजा] १. पुत्र। लड़का। २. कामदेव।

आत्म-ज्ञान-पुं० [सं०] १. जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी। २. ब्रह्म का साक्षात्कार।

आत्म-त्याग-पुं० [सं०] दूसरों के हित के लिए अपना स्वार्थ छोड़ना।

आत्म-निवेदन-पुं० [सं०] अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना। आत्म-समर्पण। (नवधा भक्ति में)

आत्म-प्रशंसा-स्त्री० दे० 'आत्म-श्लाघा'।

आत्मभू-वि० [सं०] १. अपने शरीर से उत्पन्न। २. आप ही आप उत्पन्न। पुं० १. पुत्र। २. कामदेव। ३. ब्रह्मा। ४. विष्णु। ५. शिव।

आत्म-रक्षा-स्त्री० [सं०] अपनी रक्षा या बचाव।

आत्म-विद्या-स्त्री० [सं०] वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो। ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म विद्या।

आत्म-विस्मृति-स्त्री० [सं०] अपने को भूल जाना। अपना ध्यान न रखना।

आत्म-श्लाघा-स्त्री० [सं०] [वि० आत्मश्लाघी] अपनी तारीफ करना।

आत्म-संयम-पुं० [सं०] अपने मन को रोकना। इच्छाओं को वश में रखना।

आत्म-समर्पण-पुं० [सं०] अपने आपको किसी के हाथ सौंपना। पूरी तरह से किसी के वश में या अधीन हो जाना।

आत्म-हत्या-स्त्री० [सं०] अपने आप को मार डालना। खुदकुशी। (सुइसाइड)

आत्मा-स्त्री० [सं०] [वि० आत्मिक, आत्मीय] १. मन या अंतःकरण के व्यापारों का ज्ञान करानेवाली सत्ता। जीवात्मा। चैतन्य। २. मन। चित्त। ३. हृदय।

आत्माभिमान-पुं० [सं०] [वि० आत्माभिमानी] अपनी इज्जत या प्रतिष्ठा का ख़याल। मान-अपमान का ध्यान।

आत्मावलंबी-पुं० [सं०] जो सब काम अपने बल पर करे।

आत्मिक-वि० [सं०] [स्त्री० आत्मिका] १. आत्मा-संबंधी। २. अपना। ३. मानसिक।

आत्मीय-वि० [सं०] [स्त्री० आत्मीया] निज का। अपना। पुं० अपना सम्बन्धी। रिश्तेदार।

आत्मोत्सर्ग-पुं० [सं०] दूसरे की भलाई के लिए अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना।

आत्मोद्धार-पुं० [सं०] १. अपनी आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना या ब्रह्म में

मिलाना। मोक्ष। २. अपना उद्धार या छुटकारा।

आत्मोन्नति-स्त्री० [सं०] १. आत्मा की उन्नति। २. अपनी उन्नति।

आत्यंतिक-वि० [सं०] चरम सीमा पर पहुँचा हुआ। अति अधिक।

आत्रेय-वि० [सं० अत्रि] अत्रि गोत्रवाला। पुं० [सं० अत्रि] अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा और चन्द्रमा।

आत्रेयी-स्त्री० [सं०] एक तपस्विनी जो वेदान्त की बहुत पंडिता थी।

आथ*-पुं० दे० 'अर्थ'।

आथना*-अ० [सं० अस्ति] होना।

आथि*-स्त्री० [सं० अस्ति] १. स्थिरता। २. पूँजी। जमा।

आथी-स्त्री० [हिं० थाती] पूँजी। धन।

आदत-स्त्री० १ दे० 'स्वभाव'। २ दे० 'अभ्यास'।

आदम-पुं० [अ०] इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति।

आदमियत-स्त्री० दे० 'मनुष्यत्व'।

आदमी-पुं० दे० 'मनुष्य'।

आदर-पुं० [सं०] १. सम्मान। सत्कार। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।

आदरणीय-वि० [सं०] [स्त्री० आदरणीया] आदर करने के लायक।

आदरना*-स० [सं० आदर] आदर करना। सम्मान करना। मानना।

आदर्श-पुं० [सं०] १. दर्पण। शीशा। आइना। २. टीका। व्याख्या। ३. वह जिसके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय। नमूना। (आइडियल)

आदान-पुं० [सं०] किसी से कुछ लेना। ग्रहण करना। 'दान' का उलटा। २. वह जो कर, शुल्क आदि के रूप में लिया जाने को हो या प्राप्य हो।

आदान-प्रदान-पुं० [सं०] किसी से कुछ लेना और उसे कुछ देना। जैसे-वस्तुओं या विचारों का आदान-प्रदान।

आदि-वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। शुरू का। आरम्भ का। २. बिलकुल। पुं० [सं०] १. आरंभ। बुनियाद। मूल कारण। २. परमेश्वर। अव्य० वगैरह। आदिक। (इस बात का सूचक कि इसी प्रकार और भी समझें)

आदि-वासी-पुं० [सं०] किसी देश या प्रान्त के वे निवासी जो बहुत पहले से वहाँ रहते आये हों और जिनके बाद और लोग भी वहाँ आकर बसे हों। आदिम निवासी।

आदिक-अव्य० [सं०] आदि। वगैरह।

आदि-कवि-पुं० [सं०] वाल्मीकि।

आदि-कारण-पुं० [सं०] सृष्टि का मूल कारण। जैसे-ईश्वर या प्रकृति।

आदित्य-पुं० [सं०] १. अदिति के पुत्र। २. देवता। ३. सूर्य्य। ४. इन्द्र।

आदि पुरुष-पुं० [सं०] परमेश्वर।

आदिम-वि० [सं०] पहले का। पुराना।

आदिम-निवासी-पुं० दे० 'आदि-वासी'।

आदिमान-पुं० [सं०] वह आदर या मान जो किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्य्य को औरों से पहले दिया जाता है। (प्रेरोगेटिव)

आदिष्ट-वि० [सं०] १. जिसे आदेश मिला हो। २. जिसके विषय में कोई आदेश दिया गया हो।

आदी-वि० [अ०] अभ्यस्त। स्त्री० दे० 'अदरक'।

आदृत-वि० [सं०] जिसका आदर

किया गया हो। सम्मानित।

आदेय-वि० [सं०] १. किसी से लेने योग्य। जो लिया जा सके। २. जिस पर कर, शुल्क आदि लिया या लगाया जा सके।

आदेश-पुं० [सं०] [वि० आदेशक, आदिष्ट] १. आज्ञा। २. उपदेश। ३. ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों का फल। ४. व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना। अक्षर-परिवर्त्तन।

आद्यंत-क्रि० वि० [सं०] आदि से अन्त तक। शुरू से आखीर तक।

आद्य-वि० [सं०] आदि का। पहला।

आद्य-शेष-पुं० [सं०] हिसाब में वह धन जो पहले रोकड़-बाकी के रूप में रहा हो और अब नये खाते या पृष्ठ मे गया हो। (ओपिनिंग बैलेन्स)

आद्या-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. दस महाविद्याओं में से एक।

आद्याक्षर-पुं० [सं०] नाम के शब्दों के आरम्भ के अक्षर। (इनीशियल) जैसे-कृष्णचन्द्र के कृ० चं० या नागरी प्रचारिणी सभा के ना० प्र० स०।

आद्याक्षरित-वि० [सं०] जिसपर हस्ताक्षर के रूप में नाम के शब्दों के आरम्भ के अक्षर लिखे हों।(इनीशियल्ड)

आद्योपांत-क्रि० वि० [सं०] शुरू से आखीर तक।

आद्रा-स्त्री० दे० 'आर्द्रा'।

आध-वि० [हिं० आधा] दो बराबर भागों में से एक। आधा। (यौगिक में) यौ०-एक-आध=थोड़े से। कुछ।

आधर्षण-पुं० [सं०] न्यायालय का अभियुक्त को दोषी पाकर अपराधी मानना और दंड देना। (कनविक्शन)

आधर्षित-वि० [सं०] जो अपराधी सिद्ध होने पर न्यायालय से दंडित हुआ हो। (कनविक्टेड)

आधा-वि० [सं० अर्ध] [स्त्री० आधी] दो समान भागों में से एक। अद्धं। मुहा०-आधा-आध=दो बराबर भागों में। आधा तीतर, आधा बटेर=कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का। आधी बात-जरा सी भी अपमान-जनक बात।

आधान-पुं० [सं०] १. स्थापन। रखना। २. गिरवी या बन्धक रखना।

आधार-पुं० [सं०] १. आश्रय। सहारा। अवलम्ब। २. व्याकरण में अधिकरण कारक। ३. वृक्ष का थाला। आलवाल। ४. पात्र। ५ नींव। जड़। मूल। ६. आश्रय देने या पालन करने-वाला।

यौ०-प्राणाधार=परम प्रिय।

आधारिक-वि० [सं०] १. आधार संबंधी। २. जिसपर किसी दूसरी बड़ी चीज़ की स्थिति हो। जो किसी के लिए आधार-स्वरूप हो। (बेसिक) जैसे-आधारिक शिक्षा, आधारिक भाषा।

आधारित-वि० [सं० आधार] किसी के आधार पर ठहरा हुआ। अवलम्बित। आश्रित।

आधारी-वि० [सं० आधारिन्] [स्त्री० आधारिणी] १. सहारा रखनेवाला। सहारे पर रहनेवाला। २. साधुओं के टेकने की, अड्डे के आकार की एक लकड़ी।

आधि-स्त्री० [सं०] १. मानसिक व्यथा। चिन्ता। २. रेहन। बन्धक।

आधिकरणिक-वि० [सं०] १. अधि-करण या न्यायालय से सम्बन्ध रखने-

वाला। २. अधिकरण या न्यायालय की आज्ञा से होनेवाला। जैसे-आधिकरणिक विक्रय। (कोर्ट सेल)

आधिकारिक-वि० [सं०] किसी प्रकार के अधिकार से युक्त। अधिकार-संपन्न। (ऑथॉरिटेटिव)
पुं० १ वह जिसे कोई विशेष अधिकार प्राप्त हो और वह उस अधिकार का प्रयोग करता हो। अधिकारी। (ऑथारिटी) २ साहित्य में दृश्य काव्य की कथा-वस्तु।

आधिकारिकी-स्त्री० [सं०] व्यक्तियों का वह संघात या समूह जो किसी अधिकार का प्रयोग या व्यवहार करता हो। (ऑथारिटी)

आधिक्य-पुं० दे० 'अधिकता'।

आधिदैविक-वि० [सं०] देवता, भूत आदि द्वारा होनेवाला। देवता-कृत। (दुःख)

आधिपत्य-पुं० [सं०] 'अधिपति' होने की क्रिया या भाव। प्रभुत्व। स्वामित्व।

आधिभौतिक-वि० [सं०] व्याघ्र, सर्पादि जीवों का कृत। जीवों या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त। (दुःख)

आधीन*-वि० दे० 'अधीन'।

आधुनिक-वि० [सं०] वर्तमान या इस समय का। आज-कल का।

आधेय-पुं० [सं०] किसी सहारे पर टिकी हुई चीज।
वि० १. ठहराने योग्य। २ रखने योग्य। ३. गिरो रखने योग्य।

आध्यात्मिक-वि० [सं०] १. अध्यात्म या आत्मा संबंधी। २. ब्रह्म और जीव संबंधी।

आनंद-पुं० [सं०] [वि० आनंदित, आनंदी] मन का वह भाव जो किसी प्रिय या अभीष्ट वस्तु के प्राप्त होने या कोई अच्छा और शुभ कार्य होने पर होता है। 'कष्ट' का उलटा। हर्ष। प्रसन्नता। खुशी। सुख।
यौ०-आनन्द-मंगल।

आनंदना*-अ० [सं० आनन्द] आनन्दित या प्रसन्न होना।
स० किसी को आनन्दित या प्रसन्न करना।

आनंद-बधाई-स्त्री० [सं० आनन्द+हिं० बधाई] १. मंगल-उत्सव। २. मंगल-अवसर।

आनंद वन-पुं० [सं०] काशी।

आनंद-सम्मोहिता-स्त्री० [सं०] वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनन्द में अत्यन्त निमग्न और मुग्ध हो रही हो।

आनंदित-वि० [सं०] जिसे आनन्द हुआ हो। हर्षित। प्रसन्न।

आनंदी-वि० [सं०] १. हर्षित। प्रसन्न। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला।

आन-स्त्री० [सं० आणि=मर्यादा, सीमा] १. मर्यादा। २. शपथ। सौगंद। कसम। ३. विजय-घोषणा। दुहाई। ४. ढंग। तर्ज। ५. क्षण। लमहा।
मुहा०-**आन की आन में**=चटपट।
६. अकड़। ऐंठ। ठसक। ६. अदब। लिहाज़। ७. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक।
*वि० [सं० अन्य] दूसरा। और।

आनक-पुं० [सं०] १. डंका। भेरी। दुंदुभी। २. गरजता हुआ बादल।

आनत-वि० [सं०] १. झुका हुआ। नत। २. नम्र।

आनति-स्त्री० [सं०] पारिश्रमिक के रूप में किसी को आदरपूर्वक भेंट किया हुआ धन। (ऑनरेरियम)

आनद्ध-वि० [सं०] कसा या मढ़ा हुआ।

पुं० वह बाजा जो चमड़े से मढ़ा हो। जैसे-ढोल, मृदंग आदि

आनन-पुं० [सं०] १. मुख। मुँह। २. चेहरा। मुखड़ा।

आनना*-स० [सं० आनयन] लाना।

आन-बान-स्त्री० [हिं० आन+बान] १. सज-धज। ठाठ-बाट। तड़क-भड़क। २. ठसक। अदा।

आनयन-पुं० [सं०] १. लाना। २. उपनयन-संस्कार।

आनर्त्त-पुं० [सं०] [वि० आनर्त्तक] १. द्वारका पुरी या प्रदेश। २. इस देश का निवासी। ३. नृत्यशाला। ४. युद्ध।

आना-पुं० [सं० आणक] १. रुपये का सोलहवाँ हिस्सा। २. किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश।

अ० [सं० आगमन] १. कहीं से चलकर वक्ता के पास पहुँचना। आगमन करना। २. जाकर लौटना। ३. काल या समय का प्रारम्भ होना। ४. फल-फूल लगना। ५. मन में कोई भाव उत्पन्न होना। जैसे-आनन्द आना।

मुहा०-आता-जाता=आने-जानेवाला। पथिक। आ धमकना=अचानक आ पहुँचना। आया-गया = अतिथि। अभ्यागत। आ रहना=गिर पड़ना। आ लेना=१. पास पहुँच जाना। २. आक्रमण करना। टूट पड़ना। (किसी की) आ बनना=लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना। किसी को कुछ आना=किसी को कुछ ज्ञान होना।

आना-कानी-स्त्री० [सं० अनाकर्णन] १. सुनी अनसुनी करने का कार्य्य। न ध्यान देने का कार्य्य। २. टाल-मटूल। हीला-हवाला। ३. काना फूसी।

आनुतोषिक-पुं० [सं०] वह धन जो किसी को उसे सन्तुष्ट या प्रसन्न करने के लिए दिया जाय। (ग्रैचुइटी)

आनुपूर्वी-वि० [सं० आनुपूर्वीय] क्रमानुसार। एक के बाद दूसरा।

आनुमानिक-वि० [सं०] अनुमान से सोचा या समझा हुआ। ख़याली।

आनुवंशिक-वि० [सं०] जो किसी वंश में बराबर होता आया हो। वंशानुक्रमिक। मौरूसी। (एन्सेस्ट्रल)

आनुषंगिक-वि० [सं०] १. जिसका साधन कोई दूसरा प्रधान कार्य्य करते समय बहुत थोड़े प्रयास में हो जाय। गौण। अप्रधान। २. अनुषंग या प्रसंग से या हा हो जानेवाला। प्रासंगिक। (इन्सिडेन्टल) जैसे-आनुषंगिक पारिश्रमिक।

आप-सर्व० [सं० आत्मन्] १. अपने शरीर से। स्वयं। खुद। (तीनों पुरुषों में) मुहा०-आप आपकी पड़ना=अपना अपना रक्षा या लाभ का ध्यान रहना। आप आपका=सबको अलग अलग। अपने आपको भूलना = १. किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना। २. घमंड में चूर होना। आपसे आप या आप ही आप=१. स्वयं। खुद। २. मन ही मन। स्वगत।

२. 'तुम' और 'व' के स्थान में आदरार्थक प्रयोग।

पुं० [सं० आपः=जल] जल। पानी।

आप-काज-पुं० [हिं०] [वि० आपकाजी] १. अपना काम। २. स्वार्थ।

आपत्काल-पुं० [सं०] [वि० आपत्कालिक] १. विपत्ति। दुर्दिन। २. दुष्काल। कुसमय।

आपत्ति-स्त्री० [सं०] १. दुःख। क्लेश। कष्ट। २. विपत्ति। संकट। आफत। ३. कष्ट का समय। ४. जीविका का कष्ट। ५. दोषारोपण। ६. किसी बात को ठीक न मानकर उसके सम्बन्ध में कुछ कहना। उज्र। एतराज़। (आबजेक्शन)

आपत्तिपत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी कार्य या विषय में अपनी आपत्ति और मत-भेद लिखा हो। (पेटिशन ऑफ आबजेक्शन)

आपत्य-वि० [सं०] अपत्य या सन्तान सम्बन्धी। औलाद का।

आपदा-स्त्री० [सं०] १ दुःख। क्लेश। २. विपत्ति। आफ़त। ३ कष्ट का समय।

आपद्धर्म-पुं० [सं०] १. वह कर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिए हो। २. किसी वर्ण के लिए वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनोपाय न होने की ही दशा में हो। जैसे-ब्राह्मण के लिए वाणिज्य। (स्मृति)

आपना*-सर्व० दे० 'अपना'।

आपन्न-वि० [सं०] १. आपद-ग्रस्त। दुःखी। २. प्राप्त। जैसे-संकटापन्न।

आप-बीती-स्त्री० [हिं०] वह बात या घटना जो स्वयं अपने ऊपर बीती हो।

आपराधिक-वि० [सं०] ऐसे कार्यों या बातों से सम्बन्ध रखनेवाला जिनकी गणना अपराधों में हो और जिनके लिए न्यायालय से दंड मिल सकता हो। (क्रिमिनल)

आप-रूप-वि० [हिं०] स्वयं। आप। खुद।

आपस-पुं० [हिं० आप+से] १. संबंध। नाता। भाई-चारा। जैसे-आपसवालों में, आपस के लोग। २. एक दूसरे के साथ। एक दूसरे का (संबंध, अधिकरण-कारक में)

मुहा०-**आपस का**=१. इष्ट-मित्रों या भाई-बन्धुओं के बीच का। २. पारस्परिक। एक दूसरे का। परस्पर का। **आपस में** = परस्पर। एक दूसरे से।

यौ०-**आपसदारी**=१. परस्पर का व्यवहार। २. भाई-चारा।

आपसी-वि० [हिं० आपस] आपस का। पारस्परिक।

आपा-पुं० [हिं० आप] १. अपनी सत्ता या अस्तित्व। २. अहंकार। घमंड। गर्व। ३ होश-हवास। सुध-बुध।

मुहा०-**आपा खोना**=१ अहंकार छोड़कर नम्र होना। २. अपना गौरव छोड़ना। **आपा तजना**=१ अपनी सत्ता को भूलना। आत्म-भाव का त्याग। २. अहंकार छोड़ना। निरभिमान होना। ३. प्राण तजना। मरना। **आपे में आना**= होश-हवास में होना। चेत में होना। **आपे में न रहना या आपे से बाहर होना** = अपने ऊपर वश न रखना। बे-काबू होना। २. घबराना। बद-हवास होना। ३. अत्यन्त क्रोध करना।

आपात-पुं० [सं] १. गिराव। पतन। २. किसी घटना का अचानक हो जाना। ३ आरंभ। ४. अंत।

आपातत:-क्रि० वि० [सं०] १. अकस्मात्। अचानक। २. अन्त में।

आपा-धापी-स्त्री० [हिं० आप+धाप] १. अपनी अपनी चिन्ता। अपनी अपनी धुन। २ खींच-तान। लाग-डाँट।

आपुन*†-सर्व० दे० 'अपना', 'आप'।

आपूरना*-स० [सं० आपूरण] भरना।

आपेक्षिक-वि० [सं०] १. सापेक्ष। अपेक्षा रखनेवाला। २. दूसरी वस्तु के

अवलंब पर रहनेवाला । किसी की अपेक्षा में या किसी पर आश्रित रहनेवाला ।

आप्त-वि० [सं०] [भाव० आप्ति] १. प्राप्त । लब्ध । (यौगिक में) २. कुशल । दक्ष । ३. विषय को ठीक तौर से जाननेवाला । ४ पूर्ण तत्वज्ञ का कहा हुआ और इसी कारण प्रामाणिक ।

पुं० [सं०] १. ऋषि । २. शब्द-प्रमाण । ३. भाग का लब्ध ।

आफ़त-स्त्री० [अ०] १. आपत्ति । विपत्ति । २. कष्ट । दुःख । ३ कष्ट या विपत्ति के दिन ।

आबंध-पुं० [सं०] [वि० आबंधक] १. कोई निश्चित की हुई बात या समझौता । २. भूमि का कर या राजस्व निश्चित करने का काम । (सेटिलमेन्ट)

आबंधक अधिकारी-पुं० [सं०] वह राजकीय अधिकारी जो भूमि का कर या राजस्व निश्चित करता है । (सेटिलमेन्ट ऑफिसर)

आबंधन-पुं० [सं०] १ अच्छी तरह बाँधना । २. दे० 'आबंध' ।

आब-स्त्री० [फा०] १. चमक । तड़क-भड़क । आभा । कान्ति । पानी । २. शोभा । रौनक । छवि ।

पुं० पानी । जल ।

आबकारी-स्त्री० [फा०] १. वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो । शराबखाना । कलवरिया । भट्टी । २. मादक वस्तुओं से सम्बन्ध रखनेवाला सरकारी विभाग ।

आब-दाना-पुं० [फा०] १. अन्न-जल । दाना-पानी । खान-पान । २. जीविका । ३. रहने का संयोग ।

मुहा०-आब-दाना उठना=जीविका न रहना । रहने का संयोग टलना ।

आबद्ध-वि० [सं०] १. बँधा हुआ । २. कैद ।

आबनूस-पुं० [फा०] [वि० आबनूसी] एक प्रकार का पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत काली होती है ।

मुहा०-आबनूस का कुन्दा=अत्यन्त काले रंग का मनुष्य ।

आबरू-स्त्री० [फा०] इज्जत । प्रतिष्ठा ।

आब-हवा-स्त्री० [फा०] सरदी-गरमी, स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश या स्थान की प्राकृतिक स्थिति । जल-वायु ।

आबाद-वि० [फा०] १. बसा हुआ । २. उपजाऊ । जोतने योग्य । (जमीन)

आबादी-स्त्री० [फा०] १. बस्ती । २. जन-संख्या । मर्दुम-शुमारी । ३. वह भूमि जिसपर खेती होती हो ।

आभरण-पुं० [सं०] [वि० आभरित] १. गहना । आभूषण । २. पालन-पोषण । परवरिश ।

आभा-स्त्री० [सं०] १. चमक । दमक । कान्ति । दीप्ति । २ झलक । छाया ।

आभार-पुं० [सं० आ+भार] १. बोझ । भार । २ गृहस्थी का बोझ । घर की देखभाल की जिम्मेदारी । ३. एहसान । उपकार । (ऑब्लिगेशन)

आभारक-पुं० दे० 'आभारी' ।

आभारी-पुं० [हिं० आभार] जिसके साथ कोई उपकार किया गया हो । उपकृत ।

आभास-पुं० [सं०] १. प्रतिबिम्ब । छाया । झलक । २. निशान । संकेत । ३. मिथ्या ज्ञान । जैसे-रस्सी में सर्प का । ४. वह जो पूरा न हो, पर जिसमें असल

की झलक भर हो। जैसे—रसाभास, हेत्वाभास।

आभिजात्य-पुं० [सं०] कुलीनों के लक्षण और गुण। कुल-संस्कार।

आभीर-पुं० [सं०] [स्त्री० आभीरी] अहीर। ग्वाला। गोप।

आभुक्त-स्त्री० [सं०] किसी सुख या सुभीते का वह लाभ जो पहले से प्राप्त हो। (ईज़मेन्ट)

आभूषण-पुं० [सं०] [वि० आभूषित] गहना। ज़ेवर। आभरण। अलंकार।

आभोग-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता। पूर्ण लक्षण। २. किसी पद्य में कवि के नाम का उल्लेख।

आभ्यतर-वि० [सं०] भीतरी।

आमंत्रण-पुं० [सं०] [वि० आमंत्रित] बुलाना। आह्वान। निमंत्रण। न्योता।

आमंत्रित-वि० [सं०] १. बुलाया हुआ। २. निमंत्रित। न्योता हुआ।

आम-पुं० [सं० आम्र] १. एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़ जिसके फल खाये या चूसे जाते हैं। २. इस पेड़ का फल।

यौ०-अमचूर। अमहर।

वि० [सं०] कच्चा। अपक्व। असिद्ध।

पुं० खाये हुए अन्न का बिना पचा हुआ सफेद और लसदार मल जो मरोड़ के साथ थोड़ी थोड़ी देर में शौच में निकलता है। आंव।

वि० [अ०] १. साधारण। मामूली। २. जन-साधारण। जनता। ३. प्रसिद्ध। विख्यात। (वस्तु या बात)

आमद-स्त्री० [फा०] १. अवाई। आगमन। आना। २. आय। आमदनी।

आमदनी-स्त्री० [फा०] १. आनेवाला धन। आय। प्राप्ति। २. व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आवे। आयात।

आमन-स्त्री० [देश०] १. वह भूमि जिसमें साल में एक ही फसल हो। २. जाड़े में होनेवाला धान।

आमना-सामना-पुं० [हिं० सामना] १. मुकाबला। २. भेंट।

आमने-सामने-क्रि० वि० [हिं० सामने] एक दूसरे के समक्ष या मुकाबले में।

आमरखना*-अ० [सं० आमर्ष] क्रुद्ध होना। दुःखपूर्वक क्रोध करना।

आमरण-क्रि० वि० [सं०] मरण काल तक। ज़िन्दगी भर।

आमर्ष-पुं० [सं०] १. क्रोध। गुस्सा। २. असहनशीलता। (रस में एक संचारी भाव)

आमलक-पुं० [सं०] आंवला।

आम-वात-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें आंव गिरता है और शरीर सूजकर पीला पड़ जाता है।

आमाशय-पुं० [सं०] पेट के अन्दर की वह थैली जिसमें भोजन किये हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमिर*-पुं० दे० 'आमिल'।

आमिल-पुं० [अ०] १. कार्यकर्त्ता। २. अधिकारी। हाकिम। ३. ओझा। सयाना।

आमिष-पुं० [सं०] १. मांस। गोश्त। २. भोग्य वस्तु। ३. लोभ। लालच।

आमुख-पुं० [सं०] नाटक की प्रस्तावना।

आमेजना*-स०[फा०आमेज़न] मिलाना।

आमोद-पुं० [सं०] [वि० आमोदित, आमोदी] १. आनन्द। हर्ष। खुशी। प्रसन्नता। २. मन-बहलाव।

आमोद-प्रमोद-पुं० [सं०] भोग-विलास।

हँसी-खुशी।

आम्र-पुं० [सं०] आम का पेड़ या फल।

आय-स्त्री० [सं०] काम आदि के रूप में आने या प्राप्त होनेवाला धन। आमदनी। प्राप्ति। धनागम। (इन्कम)

आयत-वि० [सं०] विस्तृत। लंबा-चौड़ा। दीर्घ। विशाल।

स्त्री० [अ०] इंजील या कुरान का वाक्य।

आयतन-पुं० [सं०] १. मकान। घर। २. ठहरने की जगह। ३. देवताओं की वन्दना की जगह। मन्दिर।

आयत्त-वि० [सं०] [भाव० आयत्ति] अधीन।

आय-व्यय-पुं० [सं०] आमदनी और खर्च।

आय-व्यय फलक-पुं० [सं०] वह फलक या पत्र जिसपर एक ओर सारी आय का और दूसरी ओर सारे व्यय का सारांश लिखा हो। (बैलेन्स शीट)

आय-व्ययिक-पुं० [सं० आय-व्यय] भविष्य में कुछ निश्चित काल तक होनेवाली आय और व्यय का अनुमान से लगाया हुआ हिसाब। व्याकल्प। (बजट)

आयसु*-स्त्री० [सं० आदेश] आज्ञा।

आया*-स्त्री० दे० 'आयुष्य'।

स्त्री० [पुर्त०] बच्चों को दूध पिलाने और उनको खेलानेवाली स्त्री। दाई।

आयात-पुं० [सं०] वह वस्तु या माल जो व्यापार के लिए विदेश से अपने देश में लाया या मँगाया जाय। (इम्पोर्ट)

आयाम-पुं० [सं०] १. लम्बाई। विस्तार। २. नियमित करने की क्रिया। नियमन। जैसे-प्राणायाम।

आयास-पुं० [सं०] परिश्रम। मेहनत।

आयु-स्त्री० [सं०] जन्म से मृत्यु तक का समय। वय। उमर। जीवन-काल।

आयुध-पुं० [सं०] लड़ाई के हथियार। शस्त्र। (आर्म्स)

आयुध विधान-पुं० [सं०] वह विधान जिसमें जनता द्वारा आयुध रखने और उनके प्रयोग से सम्बन्ध रखनेवाले नियम रहते हैं। (आर्म्स ऐक्ट)

आयुर्वेद-पुं० [सं०] [वि० आयुर्वेदीय] आयु संबंधी शास्त्र। चिकित्सा शास्त्र। वैद्य-विद्या।

आयुष्मान्-वि० [सं०] [स्त्री० आयुष्मती] दीर्घजीवी। चिरजीवी।

आयुष्य-पुं० [सं०] आयु। उमर।

आयोजन-पुं० [सं०] [स्त्री० आयोजना, कर्त्ता आयोजक, वि० आयोजित] १. किसी कार्य में लगाना। नियुक्ति। २. किसी काम के लिए पहले से किया जानेवाला प्रबन्ध। ३. उद्योग। ४. सामग्री।

आरंभ-पुं० [सं०] कोई काम हाथ में लेकर उसके पहले अंश का सम्पादन या प्रवर्तन करना। २. किसी कार्य, व्यापार आदि का पहलेवाला अंश या भाग। शुरू का हिस्सा। आदि। ३. शुरू होने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति।

आरंभतः-क्रि० वि० [सं०] १. बिलकुल आरंभ से। ठीक पहले से। २. बिलकुल नये सिरे से। (एब-इनीशियो)

आरंभना*-अ० [सं० आरंभ] आरंभ या शुरू होना।

स० काम में हाथ लगाना।

आरंभिक-वि० [सं०] आरंभ का। शुरू का। पहले का।

आर-स्त्री० [सं० अल्=डंक] १. लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी

रहती है। अनी। पैनी। २. नर मुरगे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३. बिच्छू, बर्रे या मधुमक्खी आदि का डंक।

स्त्री० [हिं० अड़] जिद। हठ।

आरक्त-वि० [सं०] १. ललाई लिये हुए। कुछ लाल। २. लाल।

आरक्षिक-वि० [सं०] आरक्षी विभाग से सम्बन्ध रखनेवाला। पुलिस का।

आरक्षी-पुं० [सं०] १ वह विभाग जिसका काम देश मे शान्ति बनाये रखना और अपराधियों आदि को पकड़कर न्यायालय के सामने उपस्थित करना होता है। (पुलिस) २. इस विभाग का कोई कर्मचारी। ३. इस विभाग के कर्त्तव्य और कार्य्य।

आरण्यक-वि० [सं०] [स्त्री० आरण्यकी] वन का। जंगली।

पुं० [सं०] वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण और उनके लिए उपदेश है।

आरत*-वि० दे० 'आर्त्त'।

आरती-स्त्री० [सं० आरात्रिक] १. किसी मूर्ति के सामने दीपक घुमाना। नीराजन। (षोडशोपचार पूजन में) २. वह पात्र जिसमें बत्ती रखकर आरती की जाती है। ३. वह स्तोत्र जो आरती के समय पढ़ा जाता है।

आर-पार-पुं० [सं० आर=किनारा+पार=दूसरा किनारा] यह और वह किनारा। यह छोर और वह छोर।

क्रि० वि० [सं०] एक किनारे या सिरे से दूसरे किनारे या सिरे तक। जैसे-आर पार जाना या छेद होना।

आरबल-पुं० दे० 'आयुर्बल'।

आरब्ध-वि० [सं०] आरम्भ किया हुआ।

आरभटी-स्त्री० [सं०] १. क्रोध आदि उग्र भावों की चेष्टा। २. नाटक में एक वृत्ति जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है और जिसका व्यवहार रौद्र, भयानक और वीभत्स रसों में होता है।

आरस*-पुं० दे० 'आलस्य'।

स्त्री० दे० 'आरसी'।

आरा-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० आरी] १. लोहे का वह दाँतीदार पटरा जिससे लकड़ी चीरी जाती है। २. लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिए की गड़ारी और पुट्ठी के बीच जड़ी रहती है।

आराजी-स्त्री० [अ०] १. भूमि। जमीन। २. खेत।

आराधक-वि० [सं०] [स्त्री० आराधिका] उपासक। पूजा करनेवाला।

आराधन-पुं० [सं०] [वि० आराधक, आराधित, आराधनीय, आराध्य] १. सेवा। पूजा। उपासना। २. तोषण। प्रसन्न करना।

आराधना-स्त्री० दे० 'आराधन'।

स० [सं० आराधन] १. उपासना करना। पूजना। २. संतुष्ट करना। प्रसन्न करना।

आराधनीय-वि० [सं०] आराधना करने के योग्य। पूज्य। उपास्य।

आराधित-वि० [सं०] जिसकी आराधना की जाय।

आराध्य-वि० दे० 'आराधनीय'।

आराम-पुं० [सं०] बाग। उपवन।

पुं० [फा०] १. चैन। सुख। २. चंगापन। स्वास्थ्य। ३. थकावट मिटाना। दम लेना। विश्राम।

वि० [फा०] चंगा। तन्दुरुस्त। स्वस्थ।

आराम-कुरसी-स्त्री० [फा०+अ०] एक

प्रकार की लम्बी कुरसी।

आरी-स्त्री० [हिं० आरा का अल्पा०] १. लकड़ी चीरने का बढ़ई का एक औजार। छोटा आरा। २. लोहे की कील जो बैल हाँकने के पैने में लगी रहती है। स्त्री० [सं० आर=किनारा] १. ओर। तरफ। २. कोर। सिरा।

आरूढ़-वि० [सं०] [भाव० आरूढ़ता] १. चढ़ा हुआ। सवार। २. दृढ़। स्थिर। किसी बात पर जमा हुआ। ३. सन्नद्ध। तत्पर। उतारू।

आरोगना*-स० [सं० आ+रोगना ? (रुज्=हिंसा)] भोजन करना। खाना।

आरोग्य-वि० [सं०] रोग-रहित। स्वस्थ।

आरोधना*-स० [सं० आ+रुंधन] रोकना। छेंकना। आड़ करना।

आरोप-पुं० [सं०] १. स्थापित करना। लगाना। मढ़ना। जैसे-दोषारोप। (चार्ज) २. एक पेड़ को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना। रोपना। बैठाना। ३. एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म की कल्पना।

आरोपक-वि० [सं०] 'आरोप' या 'आरोपण' करनेवाला। लगानेवाला।

आरोपण-पुं० दे० 'आरोप'।

आरोपना*-स० [सं० आरोपण] १. लगाना। २. स्थापित करना।

आरोप फलक-पुं० [सं०] न्यायालय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ वह फलक या पत्र जिसमें किसी पर लगाये हुए अभियोगों या आरोपों की सूची या विवरण होता है। (चार्ज शीट)

आरोपित-वि० [सं०] १. लगाया हुआ। स्थापित किया हुआ। २. रोपा हुआ।

आरोह-पुं० [सं०] [वि० आरोही] १. ऊपर की ओर बढ़ना। चढ़ाव। २. आक्रमण। चढ़ाई। ३. घोड़े, हाथी आदि पर चढ़ना। सवारी। ४. वेदान्त में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति। ५. कारण से कार्य्य का होना या पदार्थों का एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचना। जैसे-बीज से अंकुर। ६. क्षुद्र और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति। विकास। (आधुनिक) ७. संगीत में नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचे स्वर निकालना।

आरोहण-पुं० [सं०] [वि० आरोहित] चढ़ना। सवार होना।

आरोही-वि० [सं० आरोहिन्] [स्त्री० आरोहिणी] चढ़ने या ऊपर जानेवाला। पुं० १. संगीत में वह स्वर-साधन जो षड्ज से लेकर निषाद तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाता है। २. सवार।

आर्जव-पुं० [सं०] १. सीधापन। ऋजुता। २. सरलता सुगमता। ३. व्यवहार की सरलता और शुद्धता। ईमानदारी। (ऑनेस्टी)

आर्त्त-वि० [सं०] [भाव० आर्त्तता] १. पीड़ित। चोट खाया हुआ। २. दुःखी। कातर। ३. अस्वस्थ।

आर्त्त-नाद-पुं० [सं०] दुःख-सूचक शब्द। पीड़ा के समय निकली ध्वनि।

आर्थिक-वि० [सं०] १. धन-संबंधी। द्रव्य संबंधी। रुपये-पैसे का। माली। २. अर्थ-शास्त्र सम्बन्धी। (इकॉनामिक)

आर्थी-स्त्री० दे० 'कैतवापह्नुति'।

आर्द्र-वि० [सं०] [संज्ञा आर्द्रता] १. गीला। ओदा। तर। २. सना। लथपथ।

आर्द्रा-स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से छठा नक्षत्र। २. आषाढ़ का आरम्भ, जब सूर्य्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है।

आर्य-वि० [सं०] [स्त्री० आर्य्या, भाव० आर्यत्व] १. मान्य। पूज्य। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३. श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न। कुलीन।

पुं० [सं०] मनुष्यों की एक प्रसिद्ध जाति जिसने संसार में बहुत पहले सभ्यता प्राप्त की थी। भारतवासी इसी जाति के हैं। इसकी शाखाएँ एशिया और युरोप में दूर दूर तक फैली हैं।

आर्य-पुत्र-पुं० [सं०] पति को पुकारने या सम्बोधन करने का संकेत।

आर्य समाज-पुं० [सं०] एक धार्मिक समाज जिसके संस्थापक स्वामी दयानन्द थे। इस समाज के लोग मूर्त्ति-पूजा या पौराणिक रीतियाँ आदि नहीं मानते।

आर्या-स्त्री० [सं०] १ पार्वती। २. सास। ३. दादी। पितामही। ४. एक अर्द्ध-मात्रिक छन्द।

आर्यावर्त्त-पुं० [सं०] उत्तरीय भारत।

आर्ष-वि० [सं०] १. ऋषि-संबंधी। २. ऋषि-प्रणीत। ऋषिकृत। ३ वैदिक।

आर्ष प्रयोग-पुं० [सं०] शब्दों का वह व्यवहार जो व्याकरण के नियम के विरुद्ध हो, पर प्राचीन ग्रंथों में मिले।

आर्ष-विवाह-पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से तीसरा, जिसमें वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेता था।

आलंकारिक-वि० [सं०] १. अलंकार-संबंधी। अलंकार-युक्त। २ अलंकार जाननेवाला।

आलंब-पुं० [सं०] १. अवलम्ब। आश्रय। सहारा। २. शरण।

आलंबन-पुं० [सं०] [वि० आलंबित] १. सहारा। आश्रय। अवलंब। २. रस में वह वस्तु जिसके अवलम्ब से रस की उत्पत्ति होती है। जैसे-शृंगार-रस में नायक और नायिका, रौद्र रस में शत्रु। ३. साधन। कारण।

आलकस-पुं० दे० 'आलस्य'।

आल-जाल-वि० [हिं० आल=झंझट] व्यर्थ का। ऊट-पटाँग।

आलन-पुं० [?] १. दीवार की मिट्टी में मिलाया जानेवाला घास-भूसा। २. साग में मिलाया जानेवाला आटा या बेसन।

आलपीन-स्त्री० [पुर्त० आलफ़िनेट] एक घुंडीदार सूई जिससे कागज आदि के टुकड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं।

आलमारी-स्त्री० दे० 'अलमारी'।

आलय-पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. स्थान।

आलवाल-पुं० [सं०] वृक्षों के नीचे का थाला। थावला।

आलस-पुं० दे० 'आलस्य'।

आलसी-वि० [हिं० आलस] सुस्त। काहिल।

आलस्य-पुं० [सं०] कार्य करने में अनुत्साह। सुस्ती। काहिली।

आला-पुं० [सं० आलय] दीवार में का ताखा।

वि० [अ०] सबसे बढ़िया। श्रेष्ठ।

पुं० [अ०] औजार। हथियार।

*वि० [सं० आर्द्र] [स्त्री० आली] गीला।

आलान-पुं० [सं०] १. हाथी बाँधने का खूँटा, रस्सा या सिक्कड़। २. बन्धन।

आलाप-पुं० [सं०] [वि० आलापक, आलापित] १. कथोपकथन। संभाषण। बात-चीत। २. संगीत में स्वरों का विस्तारपूर्वक साधन। तान।

आलापना-स० दे० 'अलापना'।

आलापी-वि० [सं० आलापिन्] [स्त्री० आलापिनी] १. बोलनेवाला। २. आलाप करनेवाला। तान लगानेवाला। ३. गानेवाला।

आलिंगन-पुं० [सं०] [वि० आलिंगित] गले से लगाना। परिरंभण।

आलि-स्त्री० [सं०] १ सखी। सहेली। २. भ्रमरी। ३. पंक्ति। अवली।

आली-स्त्री० [सं० आलि] सखी। वि० [अ०] बड़ा। उच्च। श्रेष्ठ।

आलू-पुं० [सं० आलु] एक प्रकार का कन्द जो बहुत खाया जाता है।

आलेख-पुं० [सं०] लिखावट। लिपि।

आलेखन-पुं० [सं०] [वि० आलेखिक, आलिखित, संज्ञा आलेखक] १. लिखना। लिपि-बद्ध करना। २. चित्र आदि अंकित करना।

आलेख्य-पुं० [सं०] १. चित्र। २. वह अंकन जिसमें रूप-रेखाएँ मात्र हों। (स्केच) वि० लिखने के योग्य।

आलोक-पुं० [सं०] [वि० आलोक्य, आलोकित] १. प्रकाश। चाँदनी। उजाला। २. चमक। ज्योति। ३. किसी विषय पर लिखी हुई टिप्पणी या सूचना। (नोट)

आलोक-चित्रण-पुं० [सं०] वह प्रक्रिया जिसमें प्रकाश में रहनेवाली वस्तु की छाया लेकर चित्र बनाया जाता है। (फोटोग्राफी)

आलोकन-पुं० [सं०] १. प्रकाश डालना। २. चमकाना। ३. दिखलाना।

आलोकित-वि० [सं०] १. जिसपर प्रकाश पड़ रहा हो। २. चमकता हुआ।

आलोक-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र या लेख जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए स्मारक के रूप में लिखा गया हो। (मेमोरैन्डम)

आलोचक-वि० [सं०] [स्त्री० आलोचिका] १ देखनेवाला। २. जो आलोचना करे।

आलोचन-पुं० [सं०] १. दर्शन। २ गुण-दोष का विचार। विवेचन। ३. समालोचना।

आलोचना-स्त्री० दे० 'समालोचना'।

आलोड़न-पुं० [सं०] [वि० आलोड़ित] १ मथना। हिलोरना। २ विचार।

आलोप-पुं० दे० 'उत्सादन'।

आल्हा-पुं० [देश०] १. ३१ मात्राओं का एक छन्द। वीर छन्द। २. महोबे के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। ३ बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन।

आवज-पुं० [सं० वाद्य] ताशा नाम का बाजा।

आवटना*-पुं० [सं० आवर्त्त] १. हल-चल। उथल-पुथल। अस्थिरता। २. संकल्प-विकल्प। ऊहापोह।

आवधिक-वि० [सं०] किसी अवधि या सीमा से सम्बन्ध रखनेवाला। अवधि का।

आवन*-पुं० [सं० आगमन] आगमन। आना।

आव-भगत-स्त्री० [हिं० आना+भक्ति] आदर-सत्कार। खातिर-तवाजा।

आवरण-पुं० [सं०] [वि० आवरित, आवृत्त] १. आच्छादन। ढकना। २. वह

कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो। बेठन। ३. परदा। ४. ढाल। ५. चलाये हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र।

आवरण-पत्र-पुं० [सं०] वह कागज जो किसी पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा के लिए लगा रहता है और जिसपर उसका तथा लेखक का नाम रहता है।

आवरण-पृष्ठ-पुं० दे० 'आवरण-पत्र'।

आवर्जन-पुं० [सं०] [वि० आवर्जित] छोड़ देना। परित्याग।

आवर्त्त-पुं० [सं०] १. पानी का भँवर। २. वह बादल जिससे पानी न बरसे। ३. एक प्रकार का रत्न। राजावर्त्त। लाजवर्द।
वि० घूमा हुआ। मुड़ा हुआ।

आवर्त्तक-वि० [सं०] १. घूमने या चक्कर खानेवाला। २. कुछ निश्चित समय पर बार बार होनेवाला। जैसे-आवर्त्तक अनुदान। (रेकरिंग ग्रान्ट)

आवर्त्तन-पुं० [सं०] [वि० आवर्त्तनीय, आवर्त्तित] १. चक्कर देना। फिराव। घुमाव। २. मथना। हिलाना। ३. किसी बात का बार बार होना। (रिपीटीशन)

आवर्त्ती-वि० दे० 'आवर्तक'।

आवली-स्त्री० दे० 'अवली'।

आवश्यक-वि० [सं०] १. जो अवश्य और शीघ्र होना चाहिए। जरूरी। सापेक्ष। (अर्जेन्ट)। २. जिसके बिना काम न चले। प्रयोजनीय।

आवश्यकता-स्त्री० [सं०] १. जरूरत। अपेक्षा। २. प्रयोजन। मतलब।

आवश्यकीय-वि० दे० 'आवश्यक'

आवस*-स्त्री० दे० 'ओस'।

आवागमन-पुं० [हिं० आवा=आना+सं० गमन] १. आना-जाना। आमद-रफ्त। २. बार बार मरना और जन्म लेना।

आवाज-स्त्री० [फा०, मिलाओ सं० आवद्य] १. शब्द। ध्वनि। नाद। २. बोली। वाणी। स्वर।
मुहा०-**आवाज उठाना**=किसी के विरुद्ध कहना। **आवाज देना**=पुकारना। **आवाज बैठना**=गले के कफ के कारण स्वर का साफ न निकलना।

आवा-जाही-स्त्री० [हिं० आना+जाना] आना-जाना।

आवारा-वि० [फा०] [भाव० आवारगी] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला। निकम्मा। २ बे-ठौर-ठिकाने का। निठल्लू। ३ बदमाश। लुच्चा।

आवास-पुं० [सं०] १. रहने की जगह। निवास-स्थान। (एबोड) २. मकान। घर।

आवाहक-पुं० [सं०] आवाहन करने या बुलानेवाला।

आवाहन-पुं० [सं०] १. किसी को पुकारने या बुलाने का कार्य्य। २. निमंत्रित करना। बुलाना।

आविर्भाव-पुं० [सं०] [वि० आविर्भूत] १. सामने आना। प्रकाश। २. उत्पत्ति। ३ प्रकट या उत्पन्न होकर सामने आना।

आविर्भूत-वि० [सं०] १. प्रकाशित। प्रकटित। २. उत्पन्न। ३. सामने आया हुआ। उपस्थित।

आविष्कर्त्ता-वि० [सं०] आविष्कार करनेवाला।

आविष्कार-पुं०[सं०][वि०आविष्कारक, आविष्कर्ता, आविष्कृत] १. प्रकट होना। २. कोई ऐसी नई वस्तु तैयार

करना या नई बात ढूँढ़ निकालना जो पहले किसी को मालूम न रही हो। किसी बात का पहले-पहल पता लगाना। ईजाद। (डिस्कवरी)

आविष्कृत-वि० [सं०] १. प्रकाशित। प्रकटित। २. पता लगाया हुआ। जाना हुआ। ३. ईजाद किया हुआ।

आवृत-वि० [सं०] [स्त्री० आवृता] १. छिपा हुआ। ढका हुआ। २. लपेटा या घिरा हुआ।

आवृत्ति-स्त्री० [सं०] १. बार बार किसी बात का अभ्यास। २. पढ़ना। ३. किसी पुस्तक का पहली बार या फिर से ज्यों का त्यों छपना।

आवेग-पुं० [सं०] १. चित्त की प्रबल वृत्ति। मन की झोंक। २. अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से मन की विकलता। घबराहट। ३. मनोविकार।

आवेदक-वि० [सं०] आवेदन करनेवाला।

आवेदन-पुं० [सं०] [वि० आवेदनीय, आवेदित, आवेदी, आवेद्य] १. अपनी दशा सूचित करना। २. किसी काम के लिए की जानेवाली प्रार्थना। निवेदन।

आवेदन-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर कोई अपनी दशा या प्रार्थना लिखकर किसी को सूचित करे। अरजी।

आवेश-पुं० [सं०] १. व्याप्ति। संचार। दौरा। २. प्रवेश। ३. मन की प्रेरणा। ४. झोंक। वेग। जोश। ५. भूत-प्रेत की बाधा। ६. मृगी रोग।

आवेष्टन-पुं० [सं०] [वि० आवेष्टित] १. छिपाने या ढँकने का कार्य। २. छिपाने, लपेटने या ढँकने की वस्तु।

आशंका-स्त्री० [सं०] [वि० आशंकित] १. डर। भय। २. शक। सन्देह। ३. अनिष्ट की संभावना।

आशंसा-स्त्री० [सं०] [वि० आशंसित] १. आशा। उम्मेद। २. इच्छा। कामना। वासना। ३. सन्देह। शक। ४. प्रशंसा। ५. आदर-सत्कार। अभ्यर्थन।

आशय-पुं० [सं०] १. अभिप्राय। मतलब। तात्पर्य। २. वासना। इच्छा। ३. उद्देश। नीयत। (इन्टेन्शन)

आशा-स्त्री० [सं०] मन का वह भाव कि अमुक कार्य हो जायगा या अमुक पदार्थ हमें मिल जायगा।

आशावाद-पुं० [सं०] यह सिद्धान्त कि सदा अच्छी बातों की आशा रखनी चाहिए। (आप्टिमिज्म)

आशिक-पुं० [अ०] प्रेम करनेवाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आसक्त।

आशिष-स्त्री० [सं०] १. आशीर्वाद। आशीष। दुआ। २. एक अलंकार जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिए प्रार्थना होती है।

आशीर्वाद-पुं० [सं०] कल्याण या मंगल-कामना का सूचक कथन। आशिष। दुआ।

आशु-क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्द।

आशुकवि-पुं० [सं०] वह कवि जो तत्क्षण कविता कर सके।

आशुग-वि० [सं०] बहुत जल्दी जल्दी या शीघ्र चलनेवाला। जैसे-आशुग रेल। (एक्सप्रेस ट्रेन) २. (पत्र, तार आदि) जो पानेवाले के पास बहुत जल्दी पहुँचाया जाने को हो। (एक्सप्रेस) पुं० १. वायु। हवा। २. बाण। तीर।

आशुतोष-वि० [सं०] शीघ्र सन्तुष्ट होनेवाला। जल्दी प्रसन्न होनेवाला। पुं० शिव। महादेव।

आश्चर्य-पुं० [सं०] [वि० आश्चर्यित]

१. मन का वह भाव जो किसी नई, विलक्षण या असाधारण बात को देखने, सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होता है। अचम्भा। विस्मय। ताज्जुब। २. रस के नौ स्थायी भावों में से एक।

आश्रम-पुं० [सं०] [वि० आश्रमी] १. ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान। तपोवन। २. साधु-संत के रहने की जगह। ३. विश्राम का स्थान। ठहरने की जगह। ४. हिन्दुओं के जीवन की चार अवस्थाएं-ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास।

आश्रय-पुं० [सं०] [वि० आश्रयी, आश्रित] १ आधार। सहारा। अवलम्ब। २. आधार वस्तु। वह वस्तु जिसके सहारे पर दूसरी वस्तु हो। ३. शरण। पनाह। ४. जीवन-निर्वाह का आधार। सहारा। ५ घर।

आश्रित-वि० [सं०] १. सहारे पर टिका हुआ। ठहरा हुआ। २ किसी के भरोसे रहनेवाला। अधीन। ३. सेवक।

आश्वस्त-वि० [सं०] जिसे आश्वासन मिला हो। जिसे तसल्ली दी गई हो।

आश्वासन-पुं० [सं०] [वि० आश्वसनीय, आश्वासित, आश्वास्य] दिलासा। तसल्ली। सान्त्वना।

आश्विन-पुं० [सं०] क्वार का महीना।

आषाढ़-पुं० [सं०] जेठ के बाद का महीना। असाढ़।

आसंग-पुं० [सं०] १ साथ। संग। २ लगाव। सम्बन्ध। ३. आसक्ति। (एटैचमेन्ट)

आसंजन-पुं० [सं०] १. दे० 'आसंग'। २ न्यायालय की ओर से किसी देनदार, अपराधी या ऋणी की सम्पत्ति पर वह अधिकार जो ऋण या अर्थ-दंड चुकाने के लिए होता है। कुर्की। (एटैचमेन्ट)

आसंजित-वि० [सं०] (वह सम्पत्ति) जिसका आसंजन हुआ हो। कुर्क किया हुआ। (एटैच्ड)

आसदी-स्त्री० [सं०] काठ की छोटी चौकी।

आस-स्त्री० [सं० आशा] १. आशा। उम्मेद। २ लालसा। कामना। ३. सहारा। आधार। भरोसा।

आसकत-स्त्री० [सं० आसक्ति] [वि० आसकती, क्रि० असकताना] सुस्ती। आलस्य।

आसक्त-वि० [सं०] १ अनुरक्त। लीन। लिप्त। २ मोहित। लुब्ध। मुग्ध।

आसक्ति-स्त्री० [सं०] १ अनुरक्ति। लिप्तता। २ लगन। चाह। प्रेम।

आसन-पुं० [सं०] बैठने का ढंग या भाव। बैठने का ढब। स्थिति। बैठक। मुहा०-**आसन उखड़ना**=अपनी जगह से हिल जाना। **आसन जमना**=बैठने में स्थिरता आना। **आसन डिगना या डोलना**=१. बैठने में स्थिर न रहना। २ चित्त चंचल होना। मन डोलना। **आसन देना**=सत्कारार्थ बैठने के लिए कोई वस्तु सामने रखना या बतलाना। २ वह वस्तु जिसपर बैठें। जैसे-चौकी, कुरसी आदि। ३ निवास-स्थान।

आसन्न-वि० [सं०] निकट आया हुआ। समीपस्थ। प्राप्त।

आसन्न-भूत-पुं० [सं०] भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमान से उसकी समीपता पाई जाती है। जैसे-मैं हो आया हूँ।

आस-पास-क्रि० वि० [अनु० आस+हिं० पास] चारों ओर। इधर-उधर।

आसमान-पुं० [फा०] [वि० आसमानी] १. आकाश। गगन। २. स्वर्ग। देवलोक। मुहा०-**आसमान के तारे तोड़ना**=कठिन या असम्भव काम करना। **आसमान पर चढ़ना**=शेखी करना। घमंड दिखाना। **आसमान पर चढ़ाना**=बहुत प्रशंसा करके मिजाज बिगाड़ देना। **आसमान में थिगली लगाना**=विकट काम करना। **दिमाग आसमान पर होना**=बहुत अभिमान होना।

आसमानी-वि० [फा०] १. आकाश संबंधी। आकाशीय। आसमान का। २. आकाश के रंग का। हलका नीला।

आसरना*-अ० [हिं० आसरा] आश्रय या सहारा लेना।

आसरा-पुं० [सं० आश्रय] १. सहारा। आधार। अवलम्ब। २. भरण-पोषण की आशा। भरोसा। आस। ३. किसी से सहायता पाने का निश्चय। ४. जीवन या कार्य्य-निर्वाह का आधार। आश्रयदाता। ५. सहायक। ६. शरण। ७. प्रतीक्षा। प्रत्याशा। ८. आशा।

आसव-पुं० [सं०] १. वह मद्य जो फलों के खमीर को निचोड़कर बनाया जाता है। २. द्रव्यों का खमीर छानकर बनाया हुआ औषध। ३. अर्क।

आसा-स्त्री० दे० 'आशा'।
पुं० [अ० असा] सोने या चाँदी का वह डंडा जो राजा-महाराजाओं अथवा बरात और जलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं।

आसान-वि० [फा०] [भाव० आसानी] सहज। सरल।

आसीन-वि० [सं०] बैठा हुआ। स्थित।

आसीस-स्त्री० दे० 'आशिष'।

आसुर-वि० [सं०] असुर-संबंधी।
यौ०-**आसुर विवाह**=वह विवाह जो कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर हो।
*पुं० दे० 'असुर'।

आसुरी-वि० [सं०] असुर-संबंधी। असुरों का। राक्षसी।
यौ०-**आसुरी चिकित्सा**=शस्त्र-चिकित्सा। चीर-फाड़। **आसुरी माया**=चक्कर में डालनेवाली राक्षसों या दुष्टों की चाल।
स्त्री० असुर की स्त्री।

आसोज-पुं० [सं० अश्वयुज्] आश्विन मास। क्वार का महीना।

आसौं*-क्रि० वि० [सं० इह+संवत्] इस वर्ष। इस साल।

आस्तरण-पुं० [सं०] १. शय्या। २. बिछौना। बिस्तर। ३. दुपट्टा।

आस्तिक-वि० [सं०] [भाव० आस्तिकता] १. वेद, ईश्वर और परलोक आदि पर विश्वास रखनेवाला। २. ईश्वर का अस्तित्व माननेवाला।

आस्तीन-स्त्री० [फा०] पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है। बाँह। मुहा०-**आस्तीन का साँप**=वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे।

आस्था-स्त्री० [सं०] १. पूज्य बुद्धि। श्रद्धा। २. सभा। समाज। ३. आलंबन। सहारा।

आस्थान-पुं० [सं०] १. बैठने की जगह। बैठक। २. सभा। दरबार।

आस्पद-पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. आधार। अधिष्ठान। ३. कार्य्य। कृत्य। ४. पद। प्रतिष्ठा। ५. अल्ल। वंश का नाम। ६. कुल या जाति।

आस्फालन-पुं० [सं०] [वि० आ-

स्फालित] १. आत्म-श्लाघा । डींग । २. संघर्ष । ३. उछल-कूद ।

आस्वादन-पुं० [सं०] [वि० आस्वादनीय, आस्वादित] चखना । स्वाद लेना ।

आह-अव्य० [सं० अहह] पीड़ा, शोक, दुःख, खेद या ग्लानि का सूचक अव्यय । स्त्री० १. दुःख या क्लेश सूचक शब्द । २. ठंढा साँस । उसास ।

मुहा०-किसी की आह पड़ना=शाप पड़ना । किसी को दुःख देने का फल मिलना । आह भरना = ठंढा साँस लेना ।

पुं० [सं० साहस] १. साहस । हिम्मत । २. बल । जोर ।

आहट-स्त्री० [हिं० आ = आना + हट (प्रत्य०)] १ वह शब्द जो चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होता है । आने का शब्द । पाँव की धमक । खटका । २. किसी स्थान पर किसी के रहने के कारण होनेवाला शब्द । ३. पता । टोह ।

आहत-वि० [सं०] [संज्ञा आहति] १. चोट खाया हुआ । घायल । जख्मी । यौ०-हताहत=मरे हुए और घायल । २.वह संख्या जिसको गुणित करें । गुण्य ।

आहर*-पुं० [सं० अहः] समय । पुं० [सं० आहव] युद्ध । लड़ाई ।

आहरण-पुं० [सं०] [वि० आहरणीय, आहृत] १. छीनना । हर लेना । २. कोई वस्तु दूसरे स्थान पर ले जाना । ३. ग्रहण । लेना ।

आहा-अव्य० [सं० अहह] आश्चर्य या हर्ष-सूचक अव्यय ।

आहार-पुं० [सं०] १. भोजन । खाना । २. खाने की वस्तु ।

आहार-विहार-पुं० [सं०] खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार । रहन-सहन ।

आहार्य्य-वि० [सं०] १. ग्रहण किया हुआ । २. खाने योग्य । पुं० [सं०] नायक और नायिका का एक दूसरे का वेष धारण करना ।

आहि*-अ० [सं० अस्] 'असना' का वर्त्तमान कालिक रूप । है ।

आहिस्ता-क्रि० वि० [फा०] [भाव० आहिस्तगी] धीरे धीरे । शनैः शनैः ।

आहुति-स्त्री० [सं०] १. मंत्र पढ़कर देवता के लिए कुछ द्रव्य अग्नि में डालना । होम । हवन । २. हवन में डालने की सामग्री । ३ होम-द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार यज्ञ-कुंड में डाली जाय ।

आहै*-अ० [सं० अस] 'असना' का वर्त्तमान-कालिक रूप । है ।

आह्निक-वि० [सं०] नित्य का । दैनिक ।

आह्लाद-पुं० [सं०] [वि० आह्लादक, आह्लादित] आनन्द । खुशी । हर्ष ।

आह्वान-पुं० [सं०] १. बुलाना । बुलावा । पुकार । २. राजा की ओर से बुलावे का पत्र । समन । आकार । ३. यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना ।

इ

इ-हिन्दी वर्ण-माला का तीसरा स्वर, जिसका दीर्घ रूप 'ई' है । इसका उच्चारण तालु से होता है और प्रयत्न विवृत होता है ।

इंगला-स्त्री० [सं०] शरीर में इड़ा नाम की नाड़ी । (हठ योग)

इंगित-पुं० [सं०] चेष्टा द्वारा अभिप्राय प्रकट करना। इशारा। चेष्टा। वि० जिसकी ओर इशारा किया जाय।

इंगुदी-स्त्री० [सं०] १. हिंगोट का पेड़। २. माल-कंगनी।

इंच-स्त्री० [अं०] एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। तसू।

इँचना*-अ० दे० 'खिंचना'।

इंजन-पुं० [अं० एंजिन] १. कल। पेंच। २. भाप या बिजली से चलनेवाला यंत्र। ३. रेल में वह आगेवाली यंत्र-युक्त गाड़ी जो सब गाड़ियों को खींचती है।

इंजीनियर-पुं० [अं० एंजीनियर] १. यंत्र की विद्या जाननेवाला। कलों का बनाने या चलानेवाला। २. शिल्प-विद्या। में निपुण। विश्वकर्मा। ३. वह अधिकारी जो सड़कें, इमारतें और पुल आदि बनता है।

इंजीनियरी-स्त्री० [अं० इंजीनियरिंग] इंजीनियर का कार्य या पद।

इँडुआ-पुं० [सं० कुंडल] कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जो बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं। गेंडुरी।

इनखाब-पुं० [अ०] १. चुनाव। निर्वाचन। २. पसंद। ३. पटवारी के खाते की नकल।

इंतज़ाम-पुं० दे० 'प्रबन्ध'।

इंदिरा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

इंदीवर-पुं० [सं०] १. नील-कमल। नीलोत्पल। २. कमल।

इंदु-पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. कपूर। ३. एक की संख्या।

इंद्र-वि० [सं०] १. ऐश्वर्यवान्। संपन्न। २. श्रेष्ठ। बड़ा। जैसे-नरेन्द्र। पुं० १. एक वैदिक देवता जो पानी बरसाता है। २. देवताओं का राजा।

यौ०-**इन्द्र का अखाड़ा**=१. इंद्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं। २. बहुत सजी हुई सभा जिसमें खूब नाच-रंग होता हो। **इंद्र की परी**=१. अप्सरा। २. बहुत सुन्दरी स्त्री। ३. बारह आदित्यों में से एक। सूर्य। ४. मालिक। स्वामी। ५. चौदह की संख्या।

इंद्रगोप-पुं० [सं०] बीर-बहूटी।

इंद्रजव-पुं० [सं० इंद्रयव] कुड़ा। कोरैया का बीज।

इंद्रजाल-पुं० [सं०] [वि० ऐंद्रजालिक] जादू के वे आश्चर्यजनक खेल जो जल्दी समझ में न आवें। जादूगरी।

इंद्रजित्-वि० [सं०] इंद्र को जीतनेवाला। पुं० रावण का पुत्र, मेघनाद।

इंद्रजीत-पुं० दे० 'इंद्रजित'।

इंद्र-दमन-पुं० [सं०] नदी के जल का बढ़कर किसी निश्चित कुंड, ताल अथवा वृक्ष तक पहुँचना जो एक पर्व समझा जाता है।

इंद्र-धनुष-पुं० [सं०] सात रंगों का वह अर्द्धवृत्त जो वर्षा काल में सूर्य के सामने की दिशा में दिखाई देता है।

इंद्रनील-पुं० [सं०] नीलम।

इंद्रप्रस्थ-पुं० [सं०] एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था।

इंद्र-लोक-पुं० [सं०] स्वर्ग।

इंद्राणी-स्त्री० [सं०] १. इन्द्र की पत्नी, शची। २. इंद्रायन।

इंद्रायन-स्त्री० [सं० इंद्राणी] एक लता जिसका लाल फल देखने में सुंदर, पर खाने में बहुत कड़ुआ होता है। इनारू।

इंद्रासन-पुं० [सं०] १. इंद्र का सिंहासन।

२. राज सिंहासन। ३. वह स्थान जहाँ सब प्रकार के सुख मिलें।

इंद्रिय-स्त्री० [सं०] १. वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान होता है। २. शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा उक्त शक्ति विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है। जैसे-आँख, कान, जीभ, नाक और त्वचा। ज्ञानेन्द्रिय। ३. वे अंग या अवयव जिनसे कर्म किये जाते हैं। जैसे-वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ। कर्मेंद्रिय। ४. लिंगेंद्रिय। ५. पाँच की संख्या।

इंद्रिय-निग्रह-पुं० [सं०] इंद्रियों का वश रोकना।

इकंत*-वि० दे० 'एकान्त'।

इक*-वि० दे० 'एक'।

इकट्ठा-वि० [सं० एकस्थ] एकत्र। जमा।

इकता*-स्त्री० दे० 'एकता'।

इक-तारा-पुं० [हिं० एक+तार] १. सितार की तरह का एक बाजा जिसमें एक ही तार रहता है। २. एक प्रकार का कपड़ा।

इकत्र*-क्रि० वि० दे० 'एकत्र'।

इकबाल-पुं० दे० 'प्रताप'।

इकरार-पुं० [अ०] १. प्रतिज्ञा। वादा। २. कोई काम करने का वचन।

यौ०-इकरारनामा = वह पत्र जिसमें कोई इकरार या उसकी शर्तें लिखी हों। प्रतिज्ञापत्र।

इकलाई-स्त्री० [हिं० एक+लाई या लोई= परत] १. एक पाट का महीन दुपट्टा या चादर। २. अकेलापन।

इकलौता-पुं० [हिं० इकला+ऊत (पुत्र)] [स्त्री० इकलौती] वह लड़का जो अपने माँ-बाप का एक ही हो।

इकल्ला*-वि० दे० 'अकेला'।

इकसर*-वि० [हिं० एक+सर (प्रत्य०)] अकेला। एकाकी।

इकसूत*-वि० [सं० एक+सूत्र] एक साथ। इकट्ठा। एकत्र।

इकहरा-वि० दे० 'एकहरा'।

इकहाई*-क्रि० वि० [हिं० एक+हाई (प्रत्य०)] १. तुरन्त। २. अचानक।

इकाई-स्त्री० दे० 'एकाई' और 'मात्रक'।

इकौना*-वि० [हिं० एक] अनुपम। बेजोड़।

इक्का-वि० [सं० एक] १. एकाकी। अकेला। २. अनुपम। बे-जोड़।

पुं० १. एक प्रकार की कान की बाली। २. वह योद्धा जो लड़ाई में अकेला लड़े। ३. एक प्रकार की दो पहियों की गाड़ी जिसे एक ही घोड़ा खींचता है।

इक्का-दुक्का-वि० [हिं० इक्का+दुक्का] अकेला-दुकेला।

इक्षु-पुं० [सं०] ईख। गन्ना।

इक्ष्वाकु-पुं० [सं०] सूर्य-वंश का एक प्रधान राजा।

इख्तियार-पुं० १. दे० 'अधिकार'। २ दे० 'प्रभुत्व'।

इच्छना*-स० [सं० इच्छा] इच्छा करना।

इच्छा-स्त्री० [सं०] [वि० इच्छित, इच्छुक] वह मनोवृत्ति जो किसी बात या वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है। कामना। लालसा। अभिलाषा। चाह।

इच्छा-भोजन-पुं० [सं०] जिन जिन वस्तुओं की इच्छा हो, वही खाना।

इच्छित-वि० [सं०] जिसकी इच्छा की जाय। चाहा हुआ। वांछित।

इजमाल-पुं० [अ०] [वि० इजमाली] १. कुल। समष्टि। २. किसी वस्तु पर कुछ लोगों का संयुक्त स्वत्व। साझा।

इजराय-पुं० [अ०] १. जारी या प्रचलित करना । २. काम में लाना ।
यौ०-इजराय डिगरी=डिगरी को कार्य-रूप में परिणत करना ।

इजलास-पुं० [अ०] १. बैठक । २. कचहरी । न्यायालय । अधिकरण ।

इज़हार-पुं० [अ०] १. जाहिर या प्रकट करना । २. अदालत के सामने बयान । ३. गवाही । साक्षी ।

इजाज़त-स्त्री० [अ०] १. आज्ञा । हुक्म । २. परवानगी । स्वीकृति ।

इज़ाफ़ा-पुं० [अ०] बढ़ती । वृद्धि ।

इज़ार-स्त्री० [अ०] पायजामा । सूथन ।

इज़ारबन्द-पुं० [फा०] वह डोरी जो पायजामे या लँहगे के नेफे में उसे कमर मे बाँधने के लिए पड़ी रहती है । नारा ।

इज़ारदार-वि० [फा०] किसी पदार्थ को इजारे या ठीके पर लेनेवाला । ठेकेदार ।

इजारा-पुं० [अ०] १. ठेका । २. अधिकार । स्वत्व ।

इज़्ज़त-स्त्री० [अ०] मान । मर्यादा ।
मुहा०-इज्जत उतारना=मर्य्यादा नष्ट करना । इज्जत रखना=प्रतिष्ठा की रक्षा करना ।

इठलाना-अ० दे० 'इतराना' ।

इठाई*-स्त्री [सं० इष्ट] १. रुचि । चाह । २. मित्रता ।

इड़ा-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी । भूमि । २. हठ योग की साधना में कल्पित बाईं ओर की एक नाड़ी ।

इत†-क्रि० वि० [सं० इतः] इधर ।

इतना-वि० [सं० एतावत् अथवा हिं० ई (यह)+तना (प्रत्य०)] [स्त्री० इतनी] इस मात्रा का । इस क़दर ।
मुहा०-इतने में=इसी बीच में ।

इतमाम*†-पुं० [अ० एहतमाम] इंतज़ाम । बन्दोबस्त । प्रबन्ध ।

इतमीनान-पुं० दे० 'सन्तोष' ।

इतर-वि० [सं०] १. दूसरा । अपर । अन्य । २. नीच । ३. साधारण ।
पुं० दे० 'अतर' ।

इतराना-अ० [सं० उत्तरण] [भाव० इतराहट] १. घमंड करना । २. ठसक दिखाना । इठलाना ।

इतरेतर-क्रि० वि० [सं०] परस्पर ।

इतरौहाँ-वि० [हिं० इतराना+औहाँ (प्रत्य०)] जिससे इतराने का भाव प्रकट हो ।

इतस्ततः-क्रि० वि० [सं०] इधर-उधर ।

इताअत-स्त्री० [अ०] आज्ञा-पालन ।

इताति*-स्त्री० दे० 'इताअत' ।

इति-अव्य० [सं०] समाप्ति-सूचक अव्यय ।
स्त्री० [सं०] समाप्ति । पूर्णता ।
यौ०-इति या इति-श्री=समाप्ति । अन्त ।

इतिकर्तव्यता-स्त्री० [सं०] १. किसी काम के करने की विधि । परिपाटी । २. कर्त्तव्य ।

इतिवृत्त-पुं० [सं०] १. पुरानी कथा या कहानी । २. वर्णन । हाल ।

इतिहास-पुं० [सं०] बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले पुरुषों का काल-क्रम से वर्णन । तवारीख़ । (हिस्टरी)

इतेक†-वि० दे० 'इतना' ।

इतो*-वि० दे० 'इतना' ।

इत्तफ़ाक़-पुं० [अ०] १. मेल । २. संयोग । अवसर ।

इत्तला-स्त्री० [अ० इत्तलाअ] सूचना ।
यौ०-इत्तलानामा=सूचनापत्र ।

इत्थं-क्रि० वि० [सं०] ऐसे । यों ।

इत्थंभूत-वि० [सं०] ऐसा ।

इत्यादि-अव्य० [सं०] इसी प्रकार और भी। इसी तरह और दूसरे। वगैरह। आदि।

इत्र-पुं० दे० 'अतर'।

इधर-क्रि० वि० [सं० इतर] इस ओर। इस तरफ।

मुहा०-**इधर-उधर** = १. आस-पास। इनारे-किनारे। २. चारों ओर। सब ओर। **इधर-उधर करना** = १. टाल-मटूल करना। २ उलट-पुलट करना। तितर-बितर करना। **इधर-उधर की बात**= १. सुनी-सुनाई बात। २. बे-ठिकाने की बात। **इधर की उधर करना या लगाना**=झगड़ा लगाना।

इन-सर्व० हिं० 'इस' का बहु०।

इनाम-पुं० दे० 'पुरस्कार'।

इनायत-स्त्री० [अ०] १. कृपा। दया। अनुग्रह। २ एहसान।

इने-गिने-वि० [अनु० इन+हिं० गिनना] कतिपय। कुछ थोड़े से। चुने-चुने।

इन्कार-पुं० दे० 'अस्वीकृति'।

इन्सान-पुं० दे० 'मनुष्य'।

इफरात-वि० [अ०] बहुत अधिक।

इबारत-स्त्री० [अ०] [वि० इबारती] १ लेख। २ लेख-शैली।

इमरती-स्त्री० [सं० अमृत] एक प्रकार की मिठाई।

इमली-स्त्री० [सं० अम्ल+हिं० ई (प्रत्य०)] १. एक बड़ा पेड़ जिसकी गूदेदार लम्बी फलियाँ खटाई की तरह खाई जाती है। २. इस पेड़ का फल।

इमाम-पुं० [अ०] १. अगुआ। २. मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करानेवाला।

इमाम-बाड़ा-पुं० [अ० इमाम+हिं० बाड़ा] वह अहाता जिसमें शीया मुसलमान ताजिया गाड़ते हैं।

इमारत-स्त्री० १ दे० 'भवन'। २. दे० 'वास्तु'।

इमि*-क्रि० वि० [सं० एवम्] इस प्रकार।

इम्तहान- पुं० दे० 'परीक्षा'।

इयत्ता-स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. सदस्यों की वह कम से कम नियत संख्या जो किसी सभा का कार्य संचालित करने के लिए आवश्यक हो। गण-पूर्त्ति। (कोरम)

इरषा*-स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'।

इरादा-पुं० [अ०] विचार। संकल्प।

इर्द-गिर्द-क्रि० वि० [अनु० इर्द+फा० गिर्द] १ चारों ओर। २. आस-पास।

इर्षना*-स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।

इलजाम-पुं० दे० 'अभियोग'।

इला-स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी। २ पार्वती। ३. सरस्वती। वाणी। ४. गौ।

इलाका-पुं० [अ०] १. संबंध। लगाव। २ कई गाँवों की जमींदारी।

इलाज-पुं० [अ०] १. दवा। औषध। २. चिकित्सा। ३. उपाय। युक्ति।

इलाम*-पुं० [अ० ऐलान] १. इत्तला-नामा। २. हुक्म। आज्ञा।

इलायची-स्त्री० [सं० एला] एक सदा-बहार पेड़ जिसके फल के सुगंधित बीज मसाले में पड़ते हैं।

इलाही-पुं० [अ०] ईश्वर। खुदा। वि० दैवी। ईश्वरीय।

इल्म-पुं० [सं०] १. विद्या। २. ज्ञान।

इल्लत-स्त्री० [अ०] १. रोग। बीमारी। २. झंझट। बखेड़ा। ३. दोष। अपराध।

इव-अव्य [सं०] उपमावाचक शब्द। समान। नाईं। तरह।

इशारा-पुं० [अ०] १. संकेत। २. संक्षिप्त कथन। ३. हलका सहारा। ४. गुप्त प्रेरणा।

इश्क-पुं० [अ०] [वि० आशिक, माशूक] मुहब्बत। चाह। प्रेम।

इश्तहार-पुं० [अ०] विज्ञापन।

इषणा*-स्त्री० दे० 'एषणा'।

इष्ट-वि० [सं०] १. अभिलषित। चाहा हुआ। वांछित। २. पूजित।

पुं० १. अग्निहोत्र आदि शुभ कर्म्म। २. इष्टदेव। कुल-देव। ३. मित्र।

इस-सर्व० [सं० एषः] 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले का रूप। जैसे-इसको।

इसबगोल-पुं० [फा० इस्पगोल] एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज दवा में काम आते हैं।

इसराज-पुं० [?] सारंगी की तरह का एक बाजा।

इसारत*-स्त्री० दे० 'इशारा'।

इसे-सर्व० [सं० एषः] 'यह' का कर्म कारक और संप्रदान कारक का रूप।

इस्तमरारी-वि० [अ०] सदा रहने-वाला। नित्य।

यौ०-**इस्तमरारी बन्दोबस्त**=जमीन का वह बन्दोबस्त जिसमें मालगुजारी सदा के लिए नियत हो जाय।

इस्तरी-स्त्री० [सं० स्तरी=तह करनेवाली] कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरजियों का एक औजार।

इस्तीफा-पुं० दे० 'त्याग-पत्र'।

इस्तेमाल-पुं० [अ०] उपयोग।

इस्पंज-पुं० [अं० स्पंज] समुद्र में एक प्रकार के बहुत छोटे कीड़ों के योग से बना हुआ रूई की तरह का मुलायम सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है। मुर्दा बादल।

इस्पात-पुं० [सं० अयस्पत्र, अथवा पुर्त० स्पेडा] एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

इस्लाम-पुं० [अ०] मुसलमानी धर्म्म।

इह-क्रि० वि० [सं०] इस जगह।

वि० यह।

इह-लीला-स्त्री० [सं०] इस लोक की लीला या जीवन। जिन्दगी।

इहाँ*-क्रि० वि० दे० 'यहाँ'।

ई

ई-हिन्दी वर्ण-माला का चौथा अक्षर और 'इ' का दीर्घ रूप जिसका उच्चारण तालु से होता है।

कभी कभी इसका प्रयोग 'यह' के अर्थ में सर्वनाम के रूप में और कभी कभी जोर देने के लिए 'ही' के अर्थ में अव्यय के रूप में भी होता है।

ईंगुर-पुं० [सं० हिंगुल, प्रा० इंगुल] एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुन्दर होती है। सिंगरफ।

ईंचना*-स० दे० 'खींचना'।

ईंट-स्त्री० [सं० इष्टका] १. ढला हुआ मिट्टी का चौकोर लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार बनाई जाती है।

मुहा०-**ईंट से ईंट बजाना**=किसी नगर या घर को ढाना या ध्वस्त करना। **ईंटें चुनना**=दीवार बनाने के लिए ईंट पर ईंट रखना। **डेढ़ ईंट की मसजिद अलग बनाना**=जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना। **ईंट-पत्थर**=व्यर्थ की चीजें।

२. धातु का चौखूँटा टुकड़ा।

ईंडुरी-स्त्री० [सं० कुंडली] कपड़े की गोल गद्दी जिसे घड़ा या बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं।

ईंधन-पुं० [सं० इंधन] जलाने की लकड़ी या कंडा। जलावन।

ईक्षण-पुं० [सं०] [वि० ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य] १. दर्शन। देखना। २. आँख। ३. विवेचन। विचार। ४. जाँच।

ईख-स्त्री० [सं० इक्षु] शर जाति की एक घास जिसके डंठलों में मीठा रस रहता है। इसी रस से गुड़ और चीनी बनती है। गन्ना। ऊख।

ईखना*-स० [सं० ईक्षण] देखना।

ईछन*-पुं० [सं० ईक्षण] आंख।

ईछना*-स० [सं० इच्छा] इच्छा करना।

ईजाद-स्त्री० दे० 'आविष्कार।

ईठ*-पुं० [सं० इष्ट] मित्र। सखा।

ईठना*-पुं० [सं० इष्ट] इच्छा करना।

ईठि-स्त्री० [सं० इष्टि] १ मित्रता। दोस्ती। २. चेष्टा। प्रयत्न।

ईढ़*-स्त्री० [सं० इष्ट] जिद। हठ।

ईतर*-वि० [हिं० इतराना] इतराने-वाला। ढीठ। शोख। गुस्ताख।

ईति-स्त्री० [सं०] १ खेती को हानि पहुँचानेवाले उपद्रव। जैसे-अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना, पक्षियों की अधिकता या सेना की चढ़ाई। २. बाधा। ३. पीड़ा। दुःख।

ईद-स्त्री० [अ०] मुसलमानों का एक प्रसिद्ध त्योहार।

ईदृश-क्रि० वि० [स०] इस प्रकार। वि० इस प्रकार का। ऐसा।

ईप्सा-स्त्री० [सं०] [वि० ईप्सित, ईप्सु] इच्छा। वांछा। अभिलाषा।

ईमान-पुं० [अ०] [वि० ईमानदार, भाव० ईमानदारी] १. धर्म पर विश्वास। आस्तिक्य बुद्धि। २ चित्त की सद्‌वृत्ति। अच्छी नीयत। ३. धर्म्म। ४. सत्य।

ईरखा*-स्त्री० दे० 'ईर्ष्या'।

ईर्ष्या- स्त्री० [सं०] दूसरे का लाभ या हित देखकर दुःखी होना। जलना। डाह।

ईर्ष्यालु-वि० [सं०] ईर्ष्या करनेवाला।

ईश-पुं० [सं०] [स्त्री० ईशा, ईशी, भाव० ईशता] १. स्वामी। मालिक। २. राजा। ३ ईश्वर। ४. शिव। ५. ग्यारह की संख्या।

ईशान-पुं० [सं०] [स्त्री० ईशानी] १. स्वामी। अधिपति। २. शिव। ३. पूरब और उत्तर के बीच का कोना।

ईशिता-स्त्री० [सं०] आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है।

ईशित्व-पुं० दे० 'ईशिता'।

ईश्वर-पुं० [सं०] [स्त्री० ईश्वरी, भाव० ईश्वरता] १. क्लेश, कर्म-विपाक और आशय से अलग पुरुष। परमेश्वर। भगवान्। २. मालिक। स्वामी।

ईश्वरीय-वि० [सं०] १. ईश्वर-संबंधी। २. ईश्वर का।

ईषत्-वि० [सं०] थोड़ा। कुछ।

ईषना*-स्त्री० [सं० एषणा] प्रबल इच्छा।

ईसवी-वि० [फा०] ईसा से संबंध रखनेवाला। ईसा का।

यौ०-**ईसवी सन्**=ईसा मसीह के जन्म-काल से चला हुआ संवत्।

ईसा-पुं० [अ०] एक प्रसिद्ध धर्म-प्रवर्त्तक जिनका चलाया हुआ धर्म ईसाई कहलाता है।

ईसाई-वि० [फा०] ईसा को माननेवाला। ईसा के चलाये धर्म्म पर चलनेवाला।

उ

उ-हिन्दी वर्ण-माला का पाँचवाँ स्वर जिसका उच्चारण ओष्ठ से होता है। कभी-कभी कविता में इसका प्रयोग अव्यय के रूप में 'वह' के अर्थ में भी होता है।

उँगली-स्त्री० [सं० अंगुलि] हथेली के आगे निकले हुए पाँच अवयव जिनसे चीजें पकड़ी या छूई जाती हैं।

मुहा०-**उँगली उठाना**=१. निन्दा का लक्ष्य बनाना। लांछित करना। दोषी ठहराना। २ तनिक भी हानि पहुँचाना। **उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना**= थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना। **उँगलियों पर नचाना**=१. जैसा चाहे, वैसा कराना। २ अपनी इच्छा के अनुसार चलाना। **कानों में उँगली देना**=किसी बात से उदासीन होकर उसकी चर्चा न सुनना। **पाँचों उँगलियाँ घी में होना**=सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना।

उँघाई-स्त्री० दे० 'ऊँघ'।

उंचन-स्त्री० [सं० उदञ्चन=ऊपर खींचना या उठाना] खाट की वह रस्सी जो पैताने की ओर कसी रहती है। अदवान।

उंचना-स० [सं० उदंचन] अदवान खींचना या तानना। उंचन कसना।

उँचाना*-स० [हिं० ऊँचा] ऊँचा करना।

उंछ-स्त्री० [सं०] खेत में बिखरे हुए अन्न के दाने जीविका के लिए चुनना। सीला।

उंछ-वृत्ति-स्त्री० [सं०] खेत में गिरे हुए दाने चुनकर जीवन-निर्वाह करना।

उंछशील-वि० [सं०] उंछ वृत्ति से जीवन निर्वाह करनेवाला।

उँडेलना-स० [सं० उद्धारण] १. तरल पदार्थ को दूसरे बरतन में डालना। ढालना। २. तरल पदार्थ गिराना।

उँहु-अव्य० [अनु०] १. अस्वीकार घृणा या बे-परवाही का सूचक शब्द। २. वेदना सूचक शब्द। कराहने का शब्द।

उअना*-अ० दे० 'उगना'।

उआना*-स० १. दे० 'उगाना'। २. दे० 'उठाना'।

उऋण-वि० [सं० उत्+ऋण] ऋण से मुक्त। जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो।

उकचना*-अ० दे० 'उखाड़ना'।

उकटना-स० दे० 'उघटना'।

उकटा--वि० [हिं० उकटना] [स्त्री० उकटी] उघटनेवाला। एहसान जताने-वाला।

पुं० किसी के किये हुए अपराध या अपने उपकार का बार बार कथन।

यौ०-**उकटा पुराण** = गई-बीती और दबी-दबाई बातों का विस्तारपूर्वक कथन।

उकडूँ-पुं० [सं० उत्कुतोरु] घुटने मोड़कर बैठने की मुद्रा।

उकताना-अ० [सं० आकुल] १. ऊबना। २. जल्दी मचाना।

उकति*-स्त्री० दे० 'उक्ति'।

उकलना-अ० दे० 'उधड़ना'।

उकवथ-पुं० [सं० उत्कोथ] एक प्रकार का चर्म-रोग।

उकसना-अ० [सं० उत्कर्षण या उत्सुक] १. उभरना। २. निकलना। अंकुरित होना। ३. उधड़ना।

उकसाना-स० [हिं० उकसना का प्रे० रूप] [भाव० उकसाहट] १. ऊपर उठाना। २. उभाड़ना। उत्तेजित

करना । ३. उठा या हटा देना । ४. (दीये की बत्ती) बढ़ाना या खसकाना।

उकसौहाँ-वि० [हिं० उकसना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० उकसौहीं] उभड़ता हुआ।

उक्त-वि० [सं०] १. जो कहा गया हो। कथित । २. जिसका पहले या ऊपर उल्लेख या कथन हो चुका हो । पूर्वोक्त ।

उकासना*-स० [हिं० उकसना] १ उभाड़ना । २. खोदकर ऊपर फेंकना । ३. खोलना ।

उकेलना-स० [हिं० उकलना] १ तह या परत अलग करना । उचाड़ना । २. लिपटी हुई चीज को छुड़ाना या अलग करना । उधेड़ना ।

उक्ति-स्त्री० [सं०] १. कथन । वचन । २. अनोखा वाक्य। चमत्कारपूर्ण कथन।

उखड़ना-अ० [सं० उत्कर्षण] १ जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना। 'जमना' का उलटा। २. किसी दृढ़ स्थिति से अलग होना। ३. जोड़ से हट जाना। ४. (घोड़े के लिए) चाल में भेद पड़ना। गति ठीक न रहना। ५. तितर-बितर हो जाना। ६. टूटना।

मुहा०-उखड़ी उखड़ी बातें करना=उदासीनता दिखाते हुए बातें करना। पैर या पंख उखड़ना=मुकाबले के लिए सामने न ठहर सकना।

उखली-स्त्री० दे० 'ऊखल'।

उखाड़-पुं० [हिं० उखाड़ना] १. उखाड़ने की क्रिया या भाव। २. उखाड़ने या रद्द करने की युक्ति।

उखाड़ना-स० [हिं० उखड़ना का स० रूप] १. किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु को हटाकर अलग करना। २. हटाना। ३. नष्ट करना। ध्वस्त करना।

मुहा०-गड़े मुरदे उखाड़ना=पुरानी बातों को फिर से छेड़ना। पैर उखाड़ देना=हटाना। भगाना।

उखारी-स्त्री० [हिं० ऊख] ईख का खेत।

उखेलना*-स० [सं० उल्लेखन] चित्र बनाना।

उगना-अ० [सं० उद्गमन] १. सूर्य, चन्द्र आदि का निकलना। उदय या प्रकट होना। २. जमना। अंकुरित होना। ३. उपजना। उत्पन्न होना।

उगरना*-अ० [सं० उद्गरण] भरा हुआ पानी आदि निकलना।

उगलना-स० [सं० उद्गिलन] १. पेट या मुँह में गई हुई वस्तु मुँह से बाहर थूकना। २. पचाया हुआ माल विवश होकर वापस करना। ३. गुप्त बात प्रकट कर देना।

उगाना-स० [हिं० उगना का स० रूप] १ जमाना। अंकुरित करना। उत्पन्न करना। (पौधा या अन्न आदि) २. उदय करना। प्रकट करना।

उगारना*-स० [सं० अग्र] १. सामने लाना। २. निकालना।

उगाल*-पुं० [सं० उद्गार, प्रा० उग्गाल] पीक। थूक। खखार।

उगालदान-पुं० दे० 'पीकदान'।

उगाहना-स० [सं० उद्ग्रहण] दूसरों से धन आदि लेकर इकट्ठा करना। वसूल करना।

उगाही-स्त्री० [हिं० उगाहना] १. रुपया-पैसा वसूल करने का काम। वसूली। २. वसूल किया हुआ रुपया-पैसा।

उग्र-वि० [सं०] [भाव० उग्रता] प्रचंड। उत्कट। तेज।

पुं० १. महादेव। २. वत्सनाग विष। बछनाग जहर। ३. क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न एक संकर जाति। ४. केरल देश। ५. सूर्य्य।

उघटना-अ० [सं० उत्कथन] १. दबी-दबाई बात उभाड़ना। २. कभी के किये हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध का उल्लेख करके ताना देना।

उघटा-वि० [हिं० उघटना] किये हुए उपकार को बार बार कहनेवाला। एहसान जतानेवाला। उघटनेवाला।

पु० [सं०] उघटने का कार्य्य।

उघड़ना-अ० [सं० उद्‌घाटन] १. आवरण हटना। खुलना। २. नंगा होना। ३. प्रकट होना। ४. भंडा फूटना।

उघरारा*-वि० [हिं० उघरना] [स्त्री० उघरारी] खुला हुआ।

उघाड़ना-स० [हिं० उघड़ना का स० रूप] १. आवरण हटाना। खोलना। २. नंगा करना। ३. प्रकट करना। ४. गुप्त बात खोलना। भंडा फोड़ना।

उघाड़ा-वि० [हिं० उघड़ना] जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। नंगा।

उचकन-पुं० [सं० उच्च+करण] ईंट आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर कोई चीज़ एक ओर से ऊँची करते है।

उचकना-अ० [सं० उच्च=ऊँचा+करण=करना] १. ऊँचा होने के लिए एड़ी उठाकर खड़े होना। २. उछलना।

स० उछलकर लेना या छीनना।

उचका*-क्रि० वि० दे० 'औचक'।

उचक्का-पुं० [हिं० उचकना] [स्त्री० उचक्की] चीज उठाकर ले भागनेवाला आदमी। चाई।

उचटना-अ० [सं० उच्चाटन] १. जमी हुई वस्तु का उखड़ना। उचड़ना। २. अलग होना। छूटना। ३. भड़कना। बिचकना। ४. विरक्त होना।

उचटाना*-स० [सं० उच्चाटन] १. नोचना। २. अलग करना। छुड़ाना। ३. उदासीन या विरक्त करना।

उचड़ना-अ० दे० 'उखड़ना'।

उचन*-अ० [सं० उच्च] १. ऊँचा होना। २. उचकना।

स० ऊँचा करना। उठना।

उचरना*-स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। बोलना।

अ० मुँह से शब्द निकलना।

अ० दे० 'उखड़ना'।

उचाट-पुं० [स० उच्चाट] मन का उचटना। विरक्ति। उदासीनता।

उचाटना-स० [स० उच्चाटन] १. उच्चाटन करना। जी हटाना। विरक्त करना। २. दे० 'उचाड़ना'।

उचाटी*-स्त्री० दे० 'उचाट'।

उचाड़ना-स० दे० 'उखाड़ना'।

उचाना*-स० [सं० उच्च+करण] १. ऊँचा करना। २. ऊपर उठाना।

उचारना*-स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना। मुँह से शब्द निकालना।

स० दे० 'उखाड़ना'।

उचित-वि० [हिं० उचाना] (वह दी हुई रकम) जिसका हिसाब बाद में या खर्च होने पर मिलने को हो। (सस्पेन्स)

उचित-वि० [सं०] [संज्ञा औचित्य] जैसा होना चाहिए, वैसा। योग्य। ठीक। मुनासिब। वाजिब।

उचौहाँ*-वि०[हिं०ऊँचा+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० उचौहीं] ऊँचा उठा हुआ।

उच्च-वि० [सं०] १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

उच्चतम-वि० [सं०] सबसे ऊँचा ।

उच्चता-स्त्री० [सं०] १. ऊँचाई । २. श्रेष्ठता । उत्तमता ।

उच्चरण-पुं० [सं०] [वि० उच्चरणीय, उच्चरित] कंठ तालू, जिह्वा आदि से शब्द निकलना । मुँह से शब्द निकलना ।

उच्चरना*-स० [सं० उच्चारण] उच्चारण करना । बोलना ।

उच्चरित-वि० [सं०] १. जिसका उच्चारण हुआ हो । २. जिसका उल्लेख हुआ हो ।

उच्चाकांक्षा-स्त्री० [सं०] बड़ी या महत्व की आकांक्षा ।

उच्चाटन-पुं० [सं०] [वि० उच्चाटनीय, उच्चाटित] १ उचाड़ना । उखाड़ना । २. किसी का चित्त कहीं से हटाना । (तंत्र के छः अभिचारों में से एक) ३. अनमना-पन । विरक्ति ।

उच्चार-पुं० [सं०] मुँह से शब्द निकालना । बोलना । कथन ।

उच्चारण-पुं० [सं०] [वि० उच्चारणीय, उच्चारित, उच्चार्य] १ मनुष्यों का मुँह से व्यक्त और स्पष्ट ध्वनि निकालना । मुँह से स्वर और व्यंजन-युक्त शब्द निकालना । २. वर्णों या शब्दों के बोलने का ढंग ।

उच्चारित-वि० दे० 'उच्चरित' ।

उच्चैःश्रवा-पुं० [सं०] इन्द्र या सूर्य का सफेद घोड़ा जो समुद्र से निकला था । वि० ऊँचा सुननेवाला । बहरा ।

उच्छन्न-वि० [सं०] दबा हुआ । लुप्त ।

उच्छव*-पुं० दे० 'उत्सव' ।

उच्छाह*-पुं० दे० 'उछाह' ।

उच्छिन्न-वि० [सं०] १. कटा हुआ । खंडित । २. उखाड़ा हुआ । ३. नष्ट ।

उच्छिष्ट-वि० [सं०] १. किसी के खाने से बचा हुआ । जूठा । २. दूसरे का बरता हुआ ।

उच्छू-पुं० [सं० उत्थान, पं० उत्थू] वह खाँसी जो गले में पानी आदि रुकने से आती है ।

उच्छृंखल-वि० [सं०] [भाव० उच्छृंखलता] १. जो शृंखलाबद्ध न हो । क्रम-रहित । अंड-बंड । २. मनमाना काम करनेवाला । निरंकुश । स्वेच्छाचारी । ३. उद्दंड । अक्खड़ ।

उच्छेद(न)-पुं० [सं०] १ उखाड़-पखाड़ । खंडन । २. नाश ।

उच्छ्वास-पुं० [सं०] [वि० उच्छ्वसित उच्छ्वासी] १ ऊपर को खींचा हुआ साँस । उसास । २ साँस । श्वास । ३. ग्रन्थ का प्रकरण ।

उछंग*-पुं० [सं० उत्संग] १ गोद । क्रोड़ । २ हृदय । छाती ।

उछल-कूद-स्त्री० [हिं० उछलना+कूदना] १ उछलने और कूदने की क्रिया या भाव । २. खेल-कूद ।

उछलना-अ० [सं० उच्छलन] १ वेग से ऊपर उठना । २ कूदना । ३ अत्यन्त प्रसन्न होना । खुशी से फूलना ।

उछाँटना-स० १. दे० उचाटना' । २ दे० 'छाँटना' ।

उछाल-स्त्री० [सं० उच्छालन] १. उछलने की क्रिया या भाव । २. छलाँग । चौकड़ी । कुदान । ३. वह ऊँचाई जहां तक कोई उछल सके । ४. वमन । कै ।

उछालना-स० [सं० उच्छालन] १. ऊपर की ओर फेंकना । २. प्रकट करना । (व्यंग्य)

उछाही*-वि० [हिं० उछाह] १. आनन्द मनानेवाला । २. उत्साही ।

उछीर*-पुं० [हिं० छीर=किनारा] अव-काश। जगह।

उजड़ना-अ० [?] [वि० उजाड़] १. टूट-फूटकर नष्ट होना। उखड़ना-पुखड़ना। उच्छिन्न होना। ध्वस्त होना। २. गिर-पड़ जाना। ३. तितर-बितर होना। ४. बरबाद होना। नष्ट होना।

उजड्ड-वि० [सं० उद्दंड] [भाव०उजड्डपन] १. वज्र मूर्ख। २. अशिष्ट। असभ्य। ३. उद्दंड। निरंकुश।

उजबक-पुं० [तु०] १. तातारियों की एक जाति। २. उजड्ड। मूर्ख।

उजरत-स्त्री० [अ०] १. पारिश्रमिक। २. मजदूरी।

उजरा*-वि० दे० 'उजला'।

उजराना*-स० दे० 'उजालना'।

उजलत-स्त्री० [अ०] शीघ्रता। जल्दी।

उजला-वि० [सं० उज्वल] [स्त्री०उजली] [भाव० उजलापन] १. श्वेत। सफेद। २ स्वच्छ। साफ। निर्मल।

उजागर-वि० [सं० उद=ऊपर+जागर= जागना] [स्त्री० उजागरी] १. प्रकाशित। जाज्वल्यमान। जगमगाता हुआ। २ प्रसिद्ध। विख्यात।

उजाड़-पुं० [हिं० उजड़ना] १. उजड़ा हुआ स्थान। वह जगह जहां बस्ती न रह गई हो। २. निर्जन स्थान। ३ वन। वि० १ ध्वस्त। उच्छिन्न। गिरा-पड़ा। २. जो आबाद या बसा हुआ न हो।

उजाड़ना-स० [हिं० उजड़ना] १. ध्वस्त करना। गिराना-पड़ाना। २. उधेड़ना। ३. उच्छिन्न या नष्ट करना।

उजान-क्रि० वि० दे० 'उजल'।

उजारा*-पुं० दे० 'उजाला'।

उजालना-स० [सं० उज्ज्वलन] १. साफ करना। चमकाना। निखारना। २. प्रकाशित करना। ३. बालना। जलाना।

उजाला-पुं० [सं० उज्ज्वल] [स्त्री० उजाली] प्रकाश। चांदना। रोशनी। वि० प्रकाशवान। 'अँधेरा' का उलटा।

उजाली-स्त्री० [हिं० उजाला] चांदनी। चन्द्रिका।

उजास-पुं० [हिं० उजाला] [क्रि० उजासना] प्रकाश। उजाला।

उजियारना*-स० दे० 'उजालना'।

उजियारा*-पुं० दे० 'उजाला'।

उजेर*-पुं० दे० 'उजाला'।

उजेला-पुं० दे० 'उजाला'।

उज्जल-क्रि० वि० [सं० उद्=ऊपर+जल= पानी] बहाव से उलटी ओर। नदी के चढ़ाव की ओर। उजान।

* वि० दे० 'उज्ज्वल'।

उज्यारा*-पुं० दे० 'उजाला'।

उज्र-पुं० [अ०] १ विरोध। आपत्ति। विरुद्ध वक्तव्य। २ किसी बात के विरुद्ध नम्रतापूर्वक कुछ कहना।

उज्रदार-वि० [फा०] [भाव० उज्रदारी] उज्र या आपत्ति करनेवाला।

उज्ज्वल-वि० [सं०] [भाव० उज्ज्वलता] १. दीप्तिमान्। प्रकाशवान्। २. शुभ्र। स्वच्छ। निर्मल। ३. बेदाग। ४. सफेद।

उझकना*-अ० [हिं० उचकना] १. उचकना। उछलना। २. ऊपर उठना। उभड़ना। ३. देखने के लिए सिर उठाना। ४. चौंकना।

उझलना†- स० दे० 'उँडेलना'।

* अ० उमड़ना। बढ़ना।

उटंग-वि० [सं० उत्तुंग] पहनने में ऊंचा या छोटा। (कपड़ा)

उटकना*-स० [सं० उत्कलन] अनुमान

करना। अटकल लगाना।

उटज-पुं० [सं०] झोंपड़ी।

उट्टी-स्त्री० [देश०] खेल या लाग-डाँट में बुरी तरह हार मानना।

उठँगना-अ० [सं० उत्थ+अंग] १. किसी ऊँची वस्तु का कुछ सहारा लेना। टेक लगाना। २. लेटना। पड़ रहना।

उठना-अ० [सं० उत्थान] १ ऐसी स्थिति में होना जिसमें विस्तार पहले से अधिक ऊँचाई तक पहुँचे। ऊँचा होना। मुहा०-**उठ जाना**=मर जाना। **उठती जवानी**=युवावस्था का आरंभ। **उठते-बैठते**=प्रति क्षण। हर समय। २. ऊपर जाना या ऊपर चढ़ना। ३. बिस्तर छोड़ना। जागना। ४. निकलना। उदय होना। ५. उत्पन्न होना। पैदा होना। जैसे-मन में विचार उठना, दर्द उठना। ६. तैयार होना। उद्यत होना। ७. किसी अंक या चिह्न का स्पष्ट होना। उभड़ना। ८. खमीर आना। सड़कर उफनना। ९. किसी दूकान या कारखाने का काम बन्द होना। १०. किसी प्रथा का बन्द या अन्त होना। ११. काम में लगना। व्यय होना। जैसे-रुपया उठना। १२. बिकना या भाड़े पर जाना। १३. याद आना। ध्यान पर चढ़ना। १४. गाय, भैंस, घोड़ी आदि का मस्ताना। अलंग पर आना।

उठल्लू-वि० [हिं० उठना+लू (प्रत्य०)] १. एक स्थान पर जमकर न रहनेवाला। २. आवारा। बे-ठिकाने का। मुहा०-**उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा**= व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला।

उठाईगीरा-वि० [हिं० उठाना+फा० गीर] आँख बचाकर चीज उठाकर ले भागनेवाला। उचक्का। चाई।

उठान-स्त्री० [सं० उत्थान] १. उठने की क्रिया या भाव। २. बढ़ने का ढंग। बाढ़। वृद्धि-क्रम। ३. गति की प्रारम्भिक अवस्था।

उठाना-स० [हिं० उठना का स० रूप] १. पड़ी या बेड़ी स्थिति से खड़ी या उठी स्थिति में करना। जैसे-लेटे हुए आदमी को उठाकर बैठाना। २. नीचे से ऊपर ले जाना। ३. जगाना। ४. आरम्भ करना। शुरू करना। छेड़ना। जैसे-बात उठाना। ५. तैयार करना। उद्यत करना। ६. मकान या दीवार आदि तैयार करना। ७. कोई प्रथा बन्द करना। ८. खर्च करना। लगाना। ९. भाड़े या किराये पर देना। १० प्राप्त या हस्तगत करना। जैसे-लाभ उठाना। ११. अनुभव करना। जैसे-मजा उठाना। १२. कोई वस्तु हाथ में लेकर कसम खाना। जैसे-गंगा-जल उठाना।

उठौनी-स्त्री० [हिं० उठाना] १. उठाने की क्रिया या भाव। २. वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार आदि खरीदने के लिए पेशगी दिया जाय। दादनी। ३. वह धन या अन्न जो किसी देवता की पूजा के लिए अलग रखा जाय। ४. किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोगों का इकट्ठा होकर कुछ रस्म और लेन-देन करना।

उठौआ-वि० [हिं० उठाना] १. जिसका कोई स्थान नियत न हो। जो नियत स्थान पर न रहता हो। २. जो उठाया जाता हो।

उड़ंकू-वि० [हिं० उड़ना+अंकू (प्रत्य०)] उड़नेवाला। जो उड़े।

उड़न-खटोला-पुं० [हिं०उड़ना+खटोला] १. उड़नेवाला खटोला। (कल्पित) २. विमान।

*__उड़नछू__-वि० [हिं० उड़ना] देखते-देखते अदृश्य। चम्पत। गायब।

उड़न-झाँई-स्त्री० [हिं० उड़ना+झाँई] चकमा। झुत्ता। धोखा।

उड़ना-अ० [सं० उड्डयन] १. चिड़ियों आदि का आकाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २.आकाश-मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३. हवा में ऊपर उठना या फैलना। जैसे-पतंग या गुड्डी उड़ना। ४. इधर-उधर हो जाना। छितराना। बिखरना। ५.फहराना। फरफराना। जैसे-झंडा उड़ना। ६. खूब तेज़ चलना। ७. पृथक् होना। हटना। ८. खर्च होना। ९. किसी भोग्य वस्तु का भोगा जाना। जैसे-लड्डू उड़ना। १०. आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार होना। ११. रंग आदि का फीका या धीमा पड़ना। १२. मार पड़ना। १३. बातों में बहलाना। भुलावा देना। चकमा देना। १४. फलांग मारना। कूदना। (कुश्ती)

मुहा०-उड़ चलना=१. तेज़ दौड़ना। सरपट भागना। २. शोभित होना। ३. स्वादिष्ट बनना। ४. कुमार्ग में लगना। ५. इतराना। घमंड करना।

यौ०-उड़ती खबर=बाजारू खबर। किंवदन्ती।

वि० उड़नेवाला। उड़ाका।

उड़प-पुं० [हिं० उड़ना] नृत्य का एक भेद। *पुं० दे० 'उडुप'।

उड़व-पुं० दे० 'ओड़व'।

उड़ाई-स्त्री० [हिं० उड़ाना] १. दे० 'उड़ान'। २. उड़ाने का पारिश्रमिक।

उड़ाऊ-वि० [हिं० उड़ना] १. उड़नेवाला। उड़ाका। २. बहुत खर्च करनेवाला। खरचीला।

उड़ाका-वि० [हिं० उड़ना] १. बहुत उड़नेवाला। जो उड़ता हो। २. वायुयान चलानेवाला।

उड़ान-स्त्री० [सं० उड्डयन] १. उड़ने की क्रिया या भाव। २. छलांग। कुदान। ३. उतनी दूरी, जितनी एक दौड़ में तै करें। *४. कलाई। गट्टा। पहुँचा।

उड़ाना-स० [हिं० उड़ना] १. किसी वस्तु या जीव को उड़ने में प्रवृत्त करना। २. हवा में फैलाना। जैसे-धूल उड़ाना। ३. झटके से अलग करना। काटकर दूर फेंकना। ४. हटाना। दूर करना। ५. चुराकर ले लेना। ६. नष्ट करना। बरबाद करना। ७. खाने-पीने की चीज़ खूब स्वाद से खाना-पीना। ८. आमोद-प्रमोद की वस्तु का भोग करना। ९. प्रहार करना। मारना। १०. भुलावा या चकमा देना। ११. किसी की विद्या इस प्रकार सीखना कि उसे खबर न हो।

उड़ायक*-वि०[हिं० उड़ान+क(प्रत्य०)] उड़ानेवाला।

उड़ास*-स्त्री० [सं० वास] रहने का स्थान। वास-स्थान।

उड़ासना-स० [सं० उद्वासन] १. बिछौना समेटना। * २. तहस-नहस करना। उजाड़ना। ३. बैठने या सोने में विघ्न डालना।

उड़िया-वि० [हिं० उड़ीसा] उड़ीसा देश का रहनेवाला।

स्त्री० उड़ीसा देश की भाषा।

उड़ी-स्त्री० [हिं० उड़ना] १. मालखंभ

की एक कसरत। २. कलाबाजी।

उडु-पुं० [सं०] १. नक्षत्र। तारा। २. पक्षी। चिड़िया। ३. केवट। मल्लाह। ४. जल। पानी।

उडुपति-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

उड़ैनी*-स्त्री० दे० 'जुगनू'।

उड़ौहाँ-वि० [हिं० उड़ना] उड़नेवाला।

उड्डयन-पुं० [सं०] उड़ना।

उड्डयन विभाग-पुं० [सं०] राज्य का वह विभाग जिसके जिम्मे सब तरह के हवाई जहाजों आदि की व्यवस्था हो।

उढ़रना-अ० [सं० ऊढ़ा] [स० उढ़ारना] स्त्री का पर-पुरुष के साथ निकल भागना।

वि० [सं० उत्तुङ्ग] १. ऊँचा। २. श्रेष्ठ।

उतंत*-वि० दे० 'उत्पन्न'।

उत*-क्रि० वि० [सं० उत्तर] उधर।

उतन*-क्रि० वि० [हिं० उ+तनु] उधर।

उतना-वि० [हिं० उस+तना (हिं० प्रत्य०)] उस मात्रा का। जितना वह है, उसके बराबर।

उतपति*-स्त्री० दे० 'उत्पत्ति'।

उतपानना*-स० [सं० उत्पन्न] उत्पन्न करना। उपजाना।

अ० उत्पन्न होना।

उतरन-स्त्री० [हिं० उतरना] पहनकर उतारे हुए पुराने कपड़े।

उतरना-अ० [सं० अवतरण] १. ऊँचे स्थान से क्रम से नीचे की ओर आना। २. अवनति पर होना। ढलना। ३. शरीर के किसी जोड़ या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना। ४. कान्ति, तेज आदि का फीका पड़ना। ५. प्रभाव या उद्वेग कम होना। ६. वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना। ७. धीरे-धीरे होनेवाला काम पूरा होना। जैसे-गंजी उतरना। ८. भाव कम होना। ९. डेरा करना। ठहरना। टिकना। १०. प्रतिलिपि का अंकित होना। ११. भभके में खिंचकर तैयार होना। जैसे-अरक उतरना। १२. धारण की हुई वस्तु का अलग होना। १३. तौल में ठहरना। १४. बाजे की कसन का ढीला होना। १५. अवतार लेना। १६. आदर के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारों ओर घुमाया जाना। जैसे-आरती उतरना। १७. वसूल होना। जैसे-चन्दा उतरना। मुहा०-**उतरकर**=नीचे दरजे का। घटकर। **चित्त से उतरना**=१. विस्मृत होना। भूल जाना। २. अप्रिय लगना। **चेहरा उतरना**=चेहरे पर उदासी छाना।

स० [सं० उत्तरण] नदी आदि पार करना।

उतराई-स्त्री० [हिं० उतरना] १. ऊपर से नीचे आने की क्रिया या भाव। उतार। २. नदी के पार उतारने का महसूल। ३. नीचे को ढलती हुई भूमि।

उतराना-अ० [सं० उत्तरण] १. पानी के ऊपर आना। पानी की सतह पर तैरना। २. उबलना। उफान खाना। ३. प्रकट होना। हर जगह दिखाई देना।

अ० 'उतारना' क्रिया का प्रे० रूप।

उतरौहाँ*-क्रि० वि० [सं० उत्तर+हा (प्रत्य०)] उत्तर की ओर।

उतरिन*-वि० दे० 'उऋण'।

उतलाना*-अ०[हिं०आतुर] जल्दी करना।

उतान-वि० [सं० उत्तान] जमीन पर पीठ लगाये हुए। चित।

उतायली-स्त्री० दे० 'उतावली'।

उतार-पुं० [हिं० उतरना] १. उतरने की क्रिया या भाव। २. क्रमशः नीचे की

ओर प्रवृत्ति। ३. उतरने योग्य स्थान। ४. किसी वस्तु की मोटाई या घेरे में क्रमशः होनेवाली कमी। ५. घटाव। कमी। ६. नदी में हलकर पार करने योग्य स्थान। ७. समुद्र का भाटा। ८. वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष आदि का प्रभाव दूर हो। मारक। परिहार। ९. किसी चीज का भाव कम होना। दर गिरना। (डेप्रिसिएशन) १०. दे० 'उतरना'।

उतारना-स० [सं० अवतारण] १. ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। २. प्रतिलिपि या प्रतिरूप बनाना। ३. लगी हुई वस्तु को अलग करना। उचाड़ना। ४ उधेड़ना। ५. पहनी हुई चीज अलग करना। ६. ठहराना। टिकाना। डेरा देना। ७. कोई वस्तु चारों ओर घुमाकर भूत-प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना। उतारा करना। ८. निछावर करना। वारना। ९. वसूल करना। उगाहना। जैसे-चंदा उतारना। १०. कोई उग्र प्रभाव दूर करना। ११. पीना। घूँटना। १२. ऐसी वस्तु तैयार करना जो खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाय। १३. बाजे आदि की कसन ढीली करना। १४. भभके से खींचकर अरक बनाना। स० [सं० उत्तरण] नदी के पार पहुँचाना।

उतारा-पुं० [हिं० उतरना] १. डेरा डालने या ठहरने का कार्य्य। २. उतरने का स्थान।

पुं० [हिं० उतारना] १. प्रेत-बाधा या रोग की शान्ति के लिए किसी व्यक्ति के चारों ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे आदि पर रखना। २. उतारे की सामग्री।

उतारू-वि० [हिं० उतरना] किसी बात या काम के लिए उद्यत। तत्पर।

उताली*-स्त्री० दे० 'उतावली'।
क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

उतावला-वि० [सं० उद्+त्वर] [स्त्री० उतावली] जल्दी मचानेवाला। जल्दबाज।

उतावली-स्त्री० [सं० उद्+त्वर] जल्दी। शीघ्रता। जल्दबाज़ी।

उताहल*-क्रि० वि० [सं० उद्+त्वर] जल्दी से।

उतृण*-वि० दे० 'उऋण'।

उतै*[1]-क्रि० वि० [हिं० उत] उधर।

उत्कंठा-स्त्री० [सं०] [वि० उत्कंठित] १. किसी बात की प्रबल इच्छा। तीव्र अभिलाषा। २. किसी कार्य के होने में विलम्ब न सहकर उसे चटपट करने की अभिलाषा। (साहित्य)

उत्कंठित-वि० [सं०] उत्कंठायुक्त। चाव से भरा हुआ।

उत्कंठिता-स्त्री० [सं०] संकेत-स्थान में प्रिय के न मिलने पर तर्क-वितर्क करनेवाली नायिका।

उत्कट-वि० [सं०] [संज्ञा उत्कटता] तीव्र। विकट। उग्र।

उत्कर्ष-पुं० [सं०] १. बड़ाई। प्रशंसा। २. श्रेष्ठता। उत्तमता। ३. समृद्धि। ४. भाव, मूल्य, महत्व आदि का बढ़ना या चढ़ना। (गद्य)

उत्कल-पुं० [सं०] उड़ीसा देश।

उत्कलित-वि० [सं०] १. लहराता हुआ। २. खिला हुआ।

उत्कीर्ण-वि० [सं०] १. लिखा हुआ। २. खुदा हुआ। ३. छिपा हुआ।

उत्कृष्ट-वि० [सं०] [भाव० उत्कृष्टता] उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।

उत्कोच-पुं० [सं०] घूस। रिशवत।

उत्क्रांत-वि० [सं०] [संज्ञा उत्क्रान्ति] १. ऊपर की ओर चढ़नेवाला। २. जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण हुआ हो।

उत्खनन-पुं० [सं०] [वि० उत्खात] खोदने की क्रिया। खोदाई।

उत्तंग*-वि० दे० 'उत्तुंग'।

उत्तंस*-पुं० दे० 'अवतंस'।

उत्त*-पुं० [सं० उत्] १. आश्चर्य। २. संदेह।

उत्तप्त-वि० [सं०] १. खूब तपा हुआ। बहुत गरम। २. दुःखी। पीड़ित। सन्तप्त।

उत्तम-वि० [सं०] [स्त्री० उत्तमा] श्रेष्ठ। अच्छा। सबसे भला।

उत्तमतया-क्रि० वि० [सं०] अच्छी तरह से। भली-भाँति।

उत्तमता-स्त्री० [सं०] उत्तम होने की क्रिया या भाव। श्रेष्ठता। उत्कृष्टता।

उत्तम पुरुष-पुं० [सं०] वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष का सूचक होता है। जैसे 'मैं' या 'हम'।

उत्तमर्ण-पुं० [सं०] ऋण देनेवाला व्यक्ति। महाजन। (क्रेडिटर)

उत्तमा दूती-स्त्री० [सं०] वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से समझा-बुझाकर मना लावे।

उत्तमा नायिका-स्त्री० [सं०] वह स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल रहने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहे।

उत्तमोत्तम-वि० [सं०] अच्छे से अच्छे।

उत्तर-पुं० [सं०] १. दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। उदीची। २. कोई प्रश्न या बात सुनकर उसके समाधान के लिए कही हुई बात। जवाब। ३. प्रतिकार। बदला। ४. एक काव्यालंकार जिसमें उत्तर सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है या प्रश्न के वाक्यों में ही उत्तर भी होता अथवा बहुत-से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।
वि० १. पिछला। बाद का। २. ऊपर का। ३. बढ़कर। श्रेष्ठ।
क्रि० वि० पीछे। बाद।

उत्तर क्रिया-स्त्री० दे० 'अंत्येष्टि'।

उत्तरदाता-पुं० [सं० उत्तरदातृ] [स्त्री० उत्तरदात्री] वह जिससे किसी कार्य के बनने-बिगड़ने पर पूछ-ताछ की जाय। जवाबदेह। जिम्मेदार। (रेस्पॉन्सिबुल)

उत्तर दान-पुं० [सं०] उत्तराधिकार के रूप में मिली हुई वस्तु या सम्पत्ति। (लॉगेसी)

उत्तरदायित्व-पुं० [सं०] जवाबदेही। जिम्मेदारी। (रेस्पॉन्सिबिलिटी)

उत्तरदायी-वि० [सं०] जिसपर कोई उत्तरदायित्व हो। जिम्मेदार।

उत्तराखंड-पुं० [सं० उत्तर+खंड] भारतवर्ष का हिमालय के पास का भाग।

उत्तराधिकार-पुं० [सं०] वह अधिकार जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी सम्पत्ति अथवा उसके हटने पर उसका पद या स्थान पाता है।

उत्तराधिकारी-पुं० [सं०] [स्त्री० उत्तराधिकारिणी] १. वह जो किसी के मर जाने पर नियमतः उसकी सम्पत्ति आदि का अधिकारी हो। २. वह जो किसी के हट जाने या न रहने पर उसके पद या स्थान का अधिकारी हो। (सक्सेसर)

उत्तरायण-पुं० [सं०] १. सूर्य की मकर रेखा से उत्तर कर्क रेखा की ओर गति। २. वह छः महीने का समय जब सूर्य इस गति से बराबर उत्तर की ओर

बढ़ता रहता है।

उत्तरार्द्ध-पुं० [सं०] पिछला आधा। पीछे का आधा भाग।

उत्तरित-वि० [सं०] जिसका उत्तर या जवाब दिया जा चुका हो। (रिप्लायड)

उत्तरीय-पुं० [सं०] उपरना। दुपट्टा। वि० १. ऊपर का। ऊपरवाला। २. उत्तर दिशा का। ३. उत्तर दिशा संबंधी।

उत्तरोत्तर-क्रि० वि० [सं०] १. एक के पीछे एक। एक के अनन्तर दूसरा। २. क्रमशः। लगातार।

उत्तान-वि० [सं०] जमीन पर पीठ लगाये हुए। चित। सीधा।

उत्ताप-पुं० [सं०] [वि० उत्तप्त, उत्तापित] १. गरमी। तपन। ताप। २. वेदना। पीड़ा। ३. कष्ट। दुःख।

उत्तीर्ण-वि० [सं०] १. पार गया हुआ। पारंगत। २. मुक्त। ३. परीक्षा में कृत-कार्य्य। जो पारित (या पास) हो चुका हो।

उत्तुंग-वि० [सं०] बहुत ऊँचा।

उत्तू-पुं० [फा०] १. वह औजार जिससे बेल-बूटे या चुनट के निशान डालते हैं। २. बेल-बूटे का वह काम जो इस औजार से बनता है।

मुहा०-उत्तू करना=बहुत मारना।

वि० १. बद-हवास। २. नशे में चूर।

उत्तेजक-वि० [सं०] १. उभाड़ने, बढ़ाने या उकसानेवाला। प्रेरक। २. मनोवेगों को तीव्र करनेवाला।

उत्तेजना-स्त्री० [सं०] [वि० उत्तेजित, उत्तेजक] १. प्रेरणा। बढ़ावा। प्रोत्साहन। २. वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

उत्तोलन-पुं० [सं०] [वि० उत्तोलक] १. ऊँचा करना। तानना। २. तौलना।

उत्थनि*-स्त्री० दे० 'उत्थान'।

उत्थपना*-स० [सं० उत्थापन] १ आरम्भ करना। २. उठाना।

उत्थान-पुं० [सं०] १. उठने का कार्य्य या भाव। २. उठान। आरम्भ। ३. उन्नति।

उत्थापन-पुं० [सं०] १. ऊपर उठाना। २. जगाना।

उत्थित-वि० [सं०] १. उठा हुआ। उन्नत। २. जो उठकर खड़ा हुआ हो।

उत्पत्ति-स्त्री० [सं०] [वि० उत्पन्न] १. पहले-पहल अस्तित्व में आना। उद्भव। २. जन्म। पैदाइश।

उत्पन्न-वि० [सं०] [स्त्री० उत्पन्ना] १. जिसकी उत्पत्ति हुई हो। पैदा। २. जिसने जन्म लिया हो। जात। जैसे-पुत्र उत्पन्न होना। ३. जो किसी प्रकार अस्तित्व में आया हो। उद्भूत। जैसे-सन्देह उत्पन्न होना।

उत्पल-पुं० [सं०] कमल।

उत्पाटन-पुं० [सं०] [वि० उत्पाटित, कर्त्ता उत्पाटक] उखाड़ना।

उत्पात-पुं० [सं०] १. कष्ट पहुँचाने-वाली आकस्मिक घटना। उपद्रव। आफत। २. अशांति। हलचल। ३. ऊधम। दंगा। ४. शरारत।

उत्पाती-पुं० [सं० उत्पातिन्] [स्त्री० उत्पातिनी] १. उत्पात या उपद्रव मचाने-वाला। उपद्रवी। २. नटखट। शरारती।

उत्पादक-वि० [सं०] [स्त्री० उत्पादिका] उत्पन्न करनेवाला।

उत्पादन-पुं० [सं०] [वि० उत्पादित] १.उत्पन्न करना। पैदा करना। २. बनाना।

उत्पीड़न-पुं० [सं०] [कर्त्ता उत्पीड़क, वि० उत्पीड़ित] किसी को पीड़ा या कष्ट पहुँचाना। बहुत दुःख देना। सताना।

उत्पीड़ित-वि० [सं०] जिसे पीड़ा या

कष्ट पहुँचाया गया हो। सताया हुआ।

उत्प्रेक्षक-वि० [सं०] उत्प्रेक्षा करनेवाला।

उत्प्रेक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० उत्प्रेक्ष्य] १. उद्भावना। २. उपेक्षा। ३. एक अर्थालंकार जिसमें भेद-ज्ञान पर भी उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है। जैसे- पुस्तक मानो रत्न है।

उत्फुल्ल-वि० [सं०] [संज्ञा उत्फुल्लता] १. विकसित। खिला हुआ। २. प्रसन्न।

उत्संग-पुं० [सं०] १ गोद। क्रोड़। अंक। २ मध्य भाग। बीच। ३ ऊपर का भाग।

वि० निर्लिप्त। विरक्त।

उत्सन्न-वि० दे० 'उत्सादित'।

उत्सर्ग-पुं० [सं०] १. किसी के नाम पर या किसी उद्देश्य से छोड़ना। जैसे- वृषोत्सर्ग। २. छोड़ना। त्यागना। ३. दान। ४. निछावर। ५. समाप्ति। अन्त। ६. कोई साधारण या व्यापक नियम, जिसमें कोई अपवाद भी हो।

उत्सर्जन-पुं० [सं०] [वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट] १ त्याग। छोड़ना। २. दान। ३ किसी कर्मचारी को उसके पद से हटाना या अलग करना। (डिस्चार्ज)

उत्सर्जित-वि० [सं०] १. त्यागा या छोड़ा हुआ। २. अपने पद या कार्य्य से हटाया हुआ। ३. किसी के लिए दान रूप में या त्यागपूर्वक छोड़ा हुआ।

उत्सव-पुं० [सं०] १. उछाह। मंगल-कार्य्य। धूम-धाम। २. आनन्द-मंगल का समय। ३. त्योहार। पर्व।

उत्सादन-पुं० [सं०] [वि० उत्सादित] १. कोई पद या स्थान आदि न रहने देना। (एबॉलिशन) २. किसी की आज्ञा या निश्चय रद करना। (सेट-एसाइड)

उत्सादित-वि० [सं०] १. पद आदि जो न रहने दिया गया हो। (एबॉलिश्ड) २ आज्ञा या निश्चय जो रद कर दिया गया हो। (सेट-एसाइड)

उत्साह-पुं० [सं०] [वि० उत्साहित, उत्साही] १. उमंग। उछाह। जोश। हौसला। २. हिम्मत। साहस। (वीर रस का स्थायी भाव)

उत्साहिल*-वि० दे० 'उत्साही'।

उत्साही-वि० [सं० उत्साहिन्] उत्साह-युक्त। हौसलेवाला।

उत्सुक-वि० [सं०] [स्त्री० उत्सुका] १. उत्कंठित। अत्यन्त इच्छुक। २. चाही हुई बात में देर न सहकर उसके उद्योग में तत्पर होनेवाला।

उत्सुकता-स्त्री० [सं०] १. प्रबल इच्छा। २. किसी कार्य में विलम्ब न सहकर उसमें तत्पर होना। (एक संचारी भाव)

उत्सृष्ट-वि० [सं०] छोड़ा हुआ। त्यक्त।

उथपना*-स० [सं० उत्थापन] १. उठाना। २. उखाड़ना। ३. उजाड़ना।

उथलना-अ० [सं० उत्+स्थल] १. डगमगाना। डाँवाँडोल होना। उलट-पुलट होना। ३. पानी का उथला होना। स० नीचे-ऊपर या इधर-उधर करना।

उथल-पुथल-स्त्री० [हिं० उथलना] उलट-पुलट। विपर्य्यय। क्रम-भंग। वि० उलट-पुलट। अंड का बंड।

उथला-वि० दे० 'छिछला'।

उद्-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें ये विशेष बातें उत्पन्न करता है—(क) ऊपर; जैसे-उद्गमन। (ख) पार जाना; जैसे-

उत्तीर्ण। (ग) प्रबलता; जैसे-उद्वेग। (घ) प्रकाश; जैसे-उच्चारण।

उदक-पुं० [सं०] जल। पानी।

उदक-क्रिया-स्त्री० [सं०] तिलांजलि।

उदकना*-अ० [देश०] कूदना।

उदगरना*-अ० [सं० उद्गरण] १. निकलना। बाहर होना। २. प्रकाशित या प्रकट होना। ३. उभड़ना।

उदगारना*-स० [सं० उद्गार] १. बाहर निकालना। बाहर फेंकना। २. उभाड़ना। भड़काना। उत्तेजित करना।

उदगारी*-वि० [सं० उद्गार] १. उगलनेवाला। २. बाहर निकालनेवाला।

उदग्ग*-वि० दे० 'उदग्र'।

उदग्र-वि० [सं०] १. उच्च। ऊँचा। २. विशाल। बड़ा। ३. उद्दंड। ४. विकट। ५. तीव्र। तेज़।

उदघटना*-अ० [सं० उद्घटन] प्रकट होना। उदय होना।

उदघाटना*-स० [सं० उद्घाटन] प्रकट करना। प्रकाशित करना। खोलना।

उदजन-पुं० [सं० उद्+जन] एक प्रकार का अदृश्य, गंधहीन और वर्णहीन वाष्प जिसकी गणना तत्वों में होती है। (हाइड्रोजन)

उदथ*-पुं० [सं० उद्गीथ] सूर्य।

उदधि-पुं० [सं०] १. समुद्र। २. मेघ।

उदबस*-वि० [हिं० उद्वासन] १. उजाड़। सूना। २. एक स्थान पर न रहनेवाला। खाना-बदोश।

उदबासना-स० [सं० उद्वासन] १. तंग करके स्थान से हटाना। रहने में विघ्न डालना। भगा देना। २. उजाड़ना।

उदमद*-वि० दे० 'उन्मत्त'।

उदमदना*-अ० [सं० उद्+मद] पागल या उन्मत्त होना।

उदमाद*-पुं० दे० 'उन्माद'।

उदमानना*-अ० [सं० उन्मत्त] उन्मत्त होना। पागल होना।

उदय-पुं० [सं०] [वि० उदित] १. ऊपर आना। निकलना। प्रकट होना। (विशेषत. ग्रहों के लिए)

मुहा०-उदय से अस्त तक=पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक। सारी पृथ्वी में। २. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। ३. निकलने का स्थान। उद्गम। ४. उदयाचल।

उदयना*-अ० [हिं० उदय] उदय होना।

उदयाचल-पुं० [सं०] पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य का निकलना माना जाता है।

उदर-पुं० [सं०] १. पेट। जठर। २. अन्दर या बीच का भाग। मध्य। पेटा।

उदरना*-अ० दे० 'ओदरना'।

उदसना*-अ० [सं० उदसन] १. उजड़ना। २. उदास होना।

उदात्त-वि० [सं०] १. ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ। २. दयावान्। कृपालु। ३. दाता। उदार। ४. श्रेष्ठ। बड़ा। ५. स्पष्ट। विशद। ६. समर्थ। पुं० [सं०] १. वेद के स्वर के उच्चारण का एक भेद। २. एक काव्यालंकार जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है।

उदान-पुं० [सं०] वह प्राण-वायु जिससे डकार और छींक आती है।

उदाम-वि० दे० 'उद्दाम'।

उदायन*-पुं० [सं० उद्यान] बाग।

उदार-वि० [सं०] [संज्ञा उदारता] १. दाता। दानशील। २. बड़ा। श्रेष्ठ। ३. ऊँचे दिल का। ४. विचारों की

संकीर्णता और दुराग्रह से दूर रहकर किसी विषय पर विचार करनेवाला। (लिबरल)

उदार-चरित-वि० [सं०] जिसका चरित्र उदार हो। ऊँचे दिल का।

उदारचेता-वि० दे० 'उदार-चरित'।

उदारता-स्त्री० [सं०] १. दानशीलता। २. उच्च विचार।

उदारना*-स० [सं० उदारण] १. दे० 'ओदारना'। २. गिराना। तोड़ना।

उदाराशय-वि० [सं०] जिसके विचार और उद्देश्य उच्च हों। महापुरुष।

उदास-वि० [सं० उदास्] १ जिसका चित्त किसी पदार्थ से दुःखी होकर हट गया हो। विरक्त। २. झगड़े से अलग। निरपेक्ष। तटस्थ। ३. दुःखी। रंजीदा।

उदासना*-अ० [हिं० उदास] उदास होना।

स० [सं० उदसन] १. उजाड़ना। २ तितर-बितर करना। ३. उदास करना।

उदासी-पुं० [सं० उदास+हिं० ई (प्रत्य०)] १ विरक्त या त्यागी पुरुष। २ नानकशाही साधुओं का एक भेद।

स्त्री० १. उदास होने की क्रिया या भाव। खिन्नता। २. दुःख।

उदासीन-वि० [सं०] [संज्ञा उदासीनता] १ जिसका चित्त दुःखी होकर किसी बात से हट गया हो। विरक्त। २. झगड़े-बखेड़े से अलग। ३. जो परस्पर विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो। निष्पक्ष। तटस्थ।

उदासीनता-स्त्री० [सं०] १. विरक्ति। त्याग। २. निरपेक्षता। तटस्थता। ३. उदासी। खिन्नता।

उदाहरण-पुं० [सं०] १.बहुत-सी घटनाओं या बातों में से ली हुई कोई ऐसी घटना या बात, जिससे उन सब घटनाओं या बातों का स्वरूप मालूम हो जाय। (इलस्ट्रेशन) २. ऐसा कार्य जो आदर्श रूप हो और जिसे देखकर लोग वैसा ही कार्य करने के लिए उत्साहित हों। (एग्जाम्पुल) ३. कही या बतलाई हुई ऐसी घटना या तथ्य जिससे किसी विषय या परिस्थिति का ठीक स्वरूप समझ में आ जाय। दृष्टांत। मिसाल। (इन्सटेन्स)

उदियाना*-अ० [सं० उद्विग्न] उद्विग्न होना। घबराना।

स० उद्विग्न करना।

उदित-वि० [सं०] [स्त्री० उदिता] १. जो उदय हुआ हो। निकला हुआ। २. प्रकट। जाहिर। ३. उज्ज्वल। स्वच्छ।

उदीची-स्त्री० [सं०] उत्तर दिशा।

उदीच्य-वि० [सं०] १. उत्तर का रहनेवाला। २. उत्तर दिशा का।

उदीयमान-वि० [सं०] [स्त्री०उदीयमाना] १. जिसका उदय हो रहा हो। २. उठता या उभड़ता हुआ।

उदुंबर-पुं० [सं०] [वि० औदुंबर] १. गूलर। २. देहली। ड्योढ़ी। ३. नपुंसक। ४. एक प्रकार का कोढ़।

उद्गेग*-पुं० दे० 'उद्वेग'।

उदोत*-पुं० [सं० उद्योत] प्रकाश।

वि० १. प्रकाशित। दीप्त। २. उत्तम।

उद्गम-पुं० [सं०] १. उदय। आविर्भाव। २. उत्पत्ति का स्थान। उद्भव-स्थान। निकास। ३. वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो।

उद्गार-पुं० [सं०] [वि० उद्गारी, उद्गारित] १. उबाल। उफान। २. वमन। कै। ३. थूक। कफ। ४. घोर

शब्द। ५. बहुत दिनों से मन में रखी हुई बात एक-बारगी कहना। ६. मन के विचार या भाव।

उद्दंड-वि० [सं०] [संज्ञा उद्दंडता] जिसे दंड का भय न हो। अक्खड़। उद्धत।

उद्दाम-वि० [सं०] १. बंधन-रहित। २. निरंकुश। उद्दंड। बे-कहा। ३. स्वतंत्र। ४. महान्। ५. गंभीर।

उद्दित*-वि० १. दे० 'उदित'। २. दे० 'उद्धत'। ३. दे० 'उद्यत'।

उद्दिष्ट-वि० [सं०] १. दिखाया हुआ। इंगित किया हुआ। २. जो उद्देश्य रूप में सामने हो। लक्ष्य। अभिप्रेत।
पुं० वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कोई छन्द मात्रा-प्रस्तार का कौन-सा भेद है।

उद्दीपक-वि० [सं०] [स्त्री० उद्दीपिका] उत्तेजित या उद्दीप्त करनेवाला।

उद्दीपन-पुं० [सं०] [वि० उद्दीप्त, उद्दीप्य] १. उत्तेजित करने की क्रिया या भाव। उभाड़ना। बढ़ाना। जगाना। २. उद्दीप्त या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ। ३. काव्य में वे पदार्थ जो रस को उत्तेजित करते हैं। जैसे-ऋतु, पवन आदि।

उद्दीप्त-वि० [सं०] १. जिसका उद्दीपन हुआ हो। २. उभड़ा, बढ़ा या जागा हुआ। ३. उत्तेजित।

उद्देश-पुं० [सं०] [वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य, उद्देशित] १. अभिलाषा। चाह। मंशा। २. कारण। ३. न्याय-शास्त्र में प्रतिज्ञा।

उद्देश्य-वि० [सं०] लक्ष्य। इष्ट।
पुं० १. वह वस्तु जिसपर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय। अभिप्रेत वस्तु या बात। इष्ट। २. व्याकरण में वह जिसके संबंध में कुछ कहा जाय। विशेष्य। 'विधेय' का उलटा। ३. मतलब। मंशा।

उद्दोत*-पुं० [सं० उद्योत] प्रकाश।
वि० १. चमकीला। २. उदित। ३. उत्पन्न।

उद्ध*-क्रि० वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

उद्धत-वि० [सं०] १. उग्र। प्रचंड। २. अक्खड़। ३. प्रगल्भ।

उद्धना*-अ० [सं० उद्धरण] १. ऊपर उठना। २. उड़ना या फैलना।

उद्धरण-पुं० [सं०] [वि० उद्धरणीय, उद्धृत] १. ऊपर उठना। २. मुक्त होना। ३. बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में आना। ४. पढ़ा हुआ पिछला पाठ अभ्यास के लिए फिर फिर पढ़ना। ५. किसी लेख का कोई अंश दूसरे लेख में ज्यों का त्यों रखना। (कोटेशन)

उद्धरणी-स्त्री० [सं० उद्धरण+हिं० ई (प्रत्य०)] १. पढ़ा हुआ पिछला पाठ अभ्यास के लिए बार बार पढ़ना। २. दे० 'उद्धरण'।

उद्धरना*-स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना। उबारना।
अ० बचना। छूटना।

उद्धव-पुं० [सं०] १. उत्सव। २. कृष्ण के एक प्रसिद्ध सखा जिन्हें उन्होंने द्वारका से गोपियों को सान्त्वना देने के लिए ब्रज में भेजा था।

उद्धार-पुं० [सं०] १. मुक्ति। छुटकारा। निस्तार। २. सुधार। दुरुस्ती। ३. कर्ज से छुटकारा। ४. वह ऋण जिसपर ब्याज न लगे। ५. उधार।

उद्धारणिक-पुं० [सं०] वह जिसने किसी से ऋण या उधार लिया हो। कर्ज

लेनेवाला। (बॉरोवर)

उद्धारना*-स० [सं० उद्धार] १. उद्धार करना। २. छुटकारा दिलाना।

उद्धार-विक्रय-पुं० [सं०] उधार बेचना। (क्रेडिट सेल)

उद्धृत-वि० [सं०] १. उगला हुआ। २. ऊपर उठाया हुआ। ३. अन्य स्थान से उद्धरण के रूप में ज्यों का त्यों लिया हुआ।

उद्बुद्ध-वि० [सं०] १. विकसित। खिला हुआ। २. प्रबुद्ध। ३ चैतन्य। जिसे ज्ञान हो गया हो। ४ जागा हुआ।

उद्बोध-पुं० [सं०] थोड़ा ज्ञान।

उद्बोधन-पुं० [सं०] [वि० उद्बोधक, उद्बोधनीय, उद्बोधित] १ बोध या ज्ञान कराना। जताना। २. प्रकाशित, प्रकट या सूचित करना। ३. उत्तेजित करना। ४ जगाना।

उद्भट-वि० [सं०] [संज्ञा उद्भटता] १. प्रबल। प्रचंड। २. श्रेष्ठ। ३. बहुत बड़ा।

उद्भव-पुं० [सं०] [वि० उद्भूत] १. उत्पत्ति। जन्म। २. वृद्धि। बढ़ती।

उद्भावना-स्त्री० [सं०] १. कल्पना। मन की उपज। २. उत्पत्ति।

उद्भिज्ज-पुं० [सं०] वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। वनस्पति। पेड़-पौधे।

उद्भिद-पुं० दे० 'उद्भिज'।

उद्भूत-वि० [सं०] उत्पन्न।

उद्भूति-स्त्री० [सं०] [वि० उद्भूत] १. उत्पत्ति। जन्म। २. उन्नति।

उद्भेदन-पुं० [सं०] १. तोड़ना-फोड़ना। २. फोड़कर निकलना।

उद्भ्रम-पुं० [सं०] १. ऊपर की ओर उठना या भ्रमण करना। २. बुद्धि का विनाश। विभ्रम। ३. मन का उद्वेग।

उद्भ्रांत-वि० [सं०] १. घूमता या चक्कर खाता हुआ। २. भूला-भटका हुआ। ३. चकित। भौचक्का। ४. उन्मत्त। पागल। ५. विकल। विह्वल।

उद्यत-वि० [सं०] १. तैयार। तत्पर। प्रस्तुत। मुस्तैद। २. उठाया हुआ।

उद्यम-पुं० [सं०] [वि० उद्यमी, उद्यत] १. प्रयास। प्रयत्न। उद्योग। २. मेहनत। ३. काम-धंधा। रोजगार।

उद्यमी-वि० [सं० उद्यमिन्] उद्यम करनेवाला। उद्योगी। प्रयत्नशील।

उद्यान-पुं० [सं०] बगीचा। बाग।

उद्यापन-पुं० [सं०] किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य। जैसे-हवन, ब्राह्मण-भोजन आदि।

उद्युक्त-वि० [सं०] उद्योग में लगा हुआ।

उद्योग-पुं० [सं०] [वि० उद्योगी, उद्युक्त] १. प्रयत्न। प्रयास। कोशिश। २. मेहनत। ३. उद्यम। काम-धंधा।

उद्योगी-वि० [सं० उद्योगिन्] [स्त्री० उद्योगिनी] उद्योग करनेवाला। मेहनती।

उद्योत-पुं० [सं०] १. प्रकाश। उजाला। २. चमक। आभा।

उद्रेक-पुं० [सं०] [वि० उद्रिक्त] १. वृद्धि। बढ़ती। अधिकता। २. एक काव्यालंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मन्द पड़ने का वर्णन होता है।

उद्वासन-पुं० [सं०] [वि० उद्वासनीय, उद्वासक, उद्वासित, उद्वास्य] १. स्थान छुड़ाना। भगाना। खदेड़ना। २.उजाड़ना। वास-स्थान नष्ट करना। ३. मारना।

उद्वाह-पुं० [सं०] विवाह।

उद्विग्न-वि० [सं०] [भाव० उद्विग्नता] उद्वेगयुक्त। आकुल। घबराया हुआ।

उद्वेग-पुं० [सं०] [वि० उद्विग्न] १. चित्त की व्याकुलता। घबराहट। (संचारी भावों में से एक) २. मनोवेग। चित्त की तीव्र वृत्ति। आवेश। जोश। ३. झोंक।

उद्वेजक-पुं० [सं०] उद्विग्न करनेवाला।

उद्वेजन-पुं० [सं०] उद्विग्न करना।

उद्वेल-पुं० [सं०] [वि० उद्वेलित] १ किसी चीज़ में भर जाने के कारण इधर-उधर बिखरना। २ छलकना। छलछलाना।

उधड़ना-अ० [सं० उद्धरण] १. खुलना। उघड़ना। २. सिला, जमा या लगा न रहना। ३ उजड़ना।

उधम-पुं० दे० 'ऊधम'।

उधर-क्रि० वि० [सं० उत्तर] उस ओर। उस तरफ। दूसरी तरफ।

उधरना*-अ० [सं० उद्धरण] १. मुक्त होना। २. दे० 'उधड़ना'।

उधार-पुं० [सं० उद्धार] १. वह धन जो चुका देने के वादे पर माँगकर लिया गया हो। क़र्ज़। ऋण।

मुहा०-उधार खाये बैठना=१. किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना। २. हर समय तैयार रहना।

२ इस प्रकार किसी से धन लेने की क्रिया या भाव। ३. किसी एक वस्तु का दूसरे के पास केवल कुछ दिनों के व्यवहार के लिए जाना। मँगनी।

*पुं० दे० 'उद्धार'।

उधारक*-वि० दे० 'उद्धारक'।

उधारना-स० [सं० उद्धरण] उद्धार करना।

उधारी*-वि० दे० 'उद्धारक'।

उधेड़ना-स० [सं० उद्धरण] १. मिली हुई परतों को अलग अलग करना। २. सिलाई के टाँके खोलना। ३. छित-राना। बिखराना।

उधेड़-बुन-स्त्री० [हिं० उधेड़ना+बुनना] १. सोच-विचार। ऊहा-पोह। २. युक्ति बांधना।

उनंत*-वि० [सं० अवनत] झुका हुआ।

उन-सर्व० हिं० उस'का बहुवचन।

उनचन-स्त्री० [हिं० उनचना] वह रस्सी जो चारपाई में पैताने की ओर उसकी बुनावट कसने के लिए लगाई जाती है।

उनचना-स० [हिं० ऐंचना] चारपाई की उनचन ढीली हो जाने पर कसना।

उनदौहाँ*-वि० दे० 'उनींदा'।

उनमद*-वि० दे० 'उन्मत्त'।

उनमान*-पुं० दे० 'अनुमान'।

पुं० [सं० उद्+मान] १. परिमाण। २. नाप-तौल। थाह। ३. शक्ति। सामर्थ्य। वि० तुल्य। समान।

उनमानना*-स० [हिं० उनमान] अनु-मान करना। ख़याल करना।

उनमुना* वि० दे० 'अनमना'।

उनमूलना*-स० दे० 'उखाड़ना'।

उनमेख*-पुं० दे० 'उन्मेष'।

उनमेखना*-स० [सं० उन्मेष] १. आँखों का खुलना। उन्मीलित होना। २. विकसित होना। (फूलों आदि का)

उनमेद-पुं० [?] बरसात के आरंभ में होनेवाले जल का जहरीला फेन। माँजा।

उनरना*-अ० [सं० उन्नरण=ऊपर जाना] १. उठना। उमड़ना। २. कूदकर चलना।

उनवना*-अ० [सं० उन्नमन] १. झुक-ना। लटकना। २. छाना। घिर आना। ३. आ टूटना। ऊपर पड़ना।

उनवर*-वि० [सं० ऊन] कम। न्यून।

उनवान*-पुं० दे० 'अनुमान'।

उनहानि*-स्त्री० [हिं० अनुहार] समता। बराबरी।

उनहार*-वि० दे० 'अनुसार'।

उनाना*-स० [सं० उन्नमन] १. झुकाना। २. लगाना। प्रवृत्त करना। अ० आज्ञा मानना।

उनारना*-स० [सं० उन्नमन] १. उठाना। २. बढ़ाना। ३. दे० 'उनाना'।

उनींदा-वि० [सं० उन्निद्र] [स्त्री० उनींदी] बहुत जागने के कारण अलसाया हुआ। नींद से भरा हुआ। ऊँघता हुआ।

उन्नत-वि० [सं०] १. ऊँचा। ऊपर उठा हुआ। २. बढ़ा हुआ। समृद्ध। ३. श्रेष्ठ।

उन्नति-स्त्री० [सं०] १. ऊँचाई। चढ़ाव। २. वृद्धि। समृद्धि। ३. पहले की अवस्था से अच्छी या ऊँची अवस्था की ओर बढ़ना।

उन्नतोदर-पुं० [सं०] १. चाप या वृत्त-खंड के ऊपर का तल। २. वह वस्तु जिसका वृत्त-खंड ऊपर उठा हो।

उन्नयन-पुं० [सं०] [वि० उन्नीत] १. ऊपर की ओर उठाना या ले जाना। २. ऊँची कक्षा या पद पर भेजा जाना। (प्रोमोशन)

उन्नाब-पुं० [अ०] एक प्रकार का बेर जो हकीमी दवाओं में पड़ता है।

उन्नायक-वि० [सं०] [स्त्री० उन्नायिका] १. ऊँचा करनेवाला। उन्नत करनेवाला। २. बढ़ानेवाला।

उन्निद्र-वि० [सं०] १. निद्रा-रहित। जैसे-उन्निद्र रोग। २. जिसे नींद न आई हो। ३. विकसित। खिला हुआ। पुं० नींद न आने का रोग। (इन्सोम्निया)

उन्नीत-वि० [सं०] ऊपर चढ़ाया या पहुँचाया हुआ। २. ऊपर की कक्षा में या पद पर पहुँचाया हुआ। (प्रोमोटेड)

उन्नीस-वि० [सं० एकोनविंशति] एक कम बीस। दस और नौ।

मुहा०-उन्नीस बिस्वे = १. अधिकतर। प्रायः। २. अधिकांश। उन्नीस होना= १. मात्रा में कुछ कम होना। थोड़ा होना। २. गुण में घटकर होना। (दो वस्तुओं का परस्पर) उन्नीस-बीस होना=दो वस्तुओं का प्रायः समान या एक का दूसरी से कुछ ही अच्छा होना।

उन्मत्त-वि० [सं०] [संज्ञा उन्मत्तता] १. मतवाला। मदांध। २. जो आपे में न हो। बेसुध। ३. पागल। बावला।

उन्मद-पुं० [सं०] १. उन्मत्त। प्रमत्त। २. पागल। बावला। ३. उन्माद। पागलपन।

उन्मन*-वि० दे० 'अन्यमनस्क'।

उन्मनी-स्त्री० [सं०] हठ योग में नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाना।

उन्माद-पुं० [सं०] [वि० उन्मादक, उन्मादी] १. वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्य्य-क्रम बिगड़ जाता है। पागलपन। विक्षिप्तता। चित्त-विभ्रम। २. रस के ३३ संचारी भावों में से एक, जिसमें वियोग के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता।

उन्मादन-पुं० [सं०] १. उन्मत्त या मतवाला करना। २. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

उन्मादी-वि० [स्त्री० उन्मादिनी] दे० 'उन्मत्त'।

उन्मान-पुं० [सं०] किसी का मान, मूल्य या महत्व समझना। (एप्रिसिएशन)

उन्मीलन-पुं० [सं०] (वि० उन्मीलक, उन्मीलनीय, उन्मीलित] १ खुलना।

(नेत्र)। २. विकसित होना। खिलना।

उन्मीलित-वि० [सं०] खुला हुआ। पुं० एक काव्यालंकार जिसमें दो वस्तुओं में इतना अधिक सादृश्य दिखाया जाता है कि केवल एक बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़ता है।

उन्मुक्ति-स्त्री० [सं०] [वि० उन्मुक्त] १. मुक्त होने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २. अभियोग आदि से छुटकारा। (एक्विटल) ३. नियम के बंधनों से किसी विशेष कारण से मुक्त होना। (एग्जेम्पशन)

उन्मुख-वि० [सं०] [स्त्री० उन्मुखा, संज्ञा उन्मुखता] १. ऊपर मुँह किये हुए। २. उत्कंठित। उत्सुक। ३. उद्यत।

उन्मूलक-वि० [सं०]समूल नष्ट करनेवाला। बरबाद करनेवाला।

उन्मूलन-पुं० [सं०] [वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित] १. जड़ से उखाड़ना। समूल नष्ट करना। २. पहले की आज्ञा, निश्चय या कार्य न रहने देना। ३. अस्तित्व मिटाना। (एबॉलिशन)

उन्मूलित-वि० [सं०] १ जिसका उन्मूलन हुआ हो। २. जिसका अस्तित्व न रहने दिया गया हो। (एबॉलिश्ड)

उन्मेष-पुं० [सं०] [वि० उन्मेषित] १. खुलना। (आँखों का) २. विकास। खिलना। ३. थोड़ा प्रकाश।

उन्मोचन-पुं० [सं०] [कर्त्ता उन्मोचक] १. दे० 'मोचन'। २. किसी विशेष कारण से किसी को किसी नियम के बंधन आदि से मुक्त या अलग रखना। (एग्ज़ेम्प्शन)

उन्हारि*-स्त्री० [सं० अनुसार] १. समानता। एक-रूपता। २. आकृति। शकल। सूरत।

उप-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता उत्पन्न करता है—(क) समीपता; जैसे-उपकूल, उपनयन। (ख) सामर्थ्य या अधिकता; जैसे-उपकार। (ग) गौणता या न्यूनता; जैसे-उपमंत्री, उप-सभापति। (घ) व्याप्ति; जैसे-उपकीर्ण।

उपकरण-पुं० [सं०] १. सामग्री। २. राजाओं के छत्र, चँवर आदि राज-चिह्न। ३. वह वस्तु जिसके द्वारा या जिसकी सहायता से कोई काम हो। साधन।

उपकरना*-स० [सं० उपकार] उपकार करना। भलाई करना।

उपकल्पन-पुं० [सं०] किसी काम की तैयारी। आयोजन। (प्रिपरेशन)

उपकार-पुं० [सं०] १. हित-साधन। भलाई। नेकी। २. लाभ। फायदा।

उपकारक-वि० [सं०] [स्त्री० उपकारिका] उपकार या भलाई करनेवाला।

उपकारी-वि० [सं० उपकारिन्] [स्त्री० उपकारिणी] १. उपकार करनेवाला। २. लाभ पहुँचानेवाला।

उपकृत-वि० [सं०] [स्त्री० उपकृता] १. जिसके साथ उपकार किया गया हो। २. कृतज्ञ।

उपक्रम-पुं० [सं०] १. कार्यारंभ की पहली अवस्था। अनुष्ठान। उठान। २. कोई कार्य आरम्भ करने के पहले का आयोजन। तैयारी। (प्रिपरेशन) ३. भूमिका।

उपक्रमणिका-स्त्री० [सं०] किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषय-सूची।

उपक्षेप-पुं० [सं०] १. अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तान्त का

संक्षेप में कथन। २. आक्षेप। ३. कोई वस्तु किसी के सामने ले जाकर रखना या उसे देना। (टेंडर) ४. कोई कार्य या ठेका पाने के लिए उसके व्यय आदि के विवरणों से युक्त पत्र जो वह कार्य या ठेका पाने से पहले (प्रायः प्रतियोगिता के रूप में) देना पड़ता है। (टेंडर)

उपखंड-पुं० [सं०] विधि-विधानों में किसी धारा या उपधारा के अंश या खंड का कोई विभाग। (सब-क्लॉज)

उपखान*-पुं० दे० 'उपाख्यान'।

उपगत-वि० [सं०] १. प्राप्त। उपस्थित। २. ज्ञात। जाना हुआ। ३. स्वीकृत। ४ व्यय, भार आदि के रूप में अपने ऊपर आया, लगा या चढ़ा हुआ। (इन्कर्ड)

उपगति-स्त्री० [सं०] १ प्राप्ति। २ स्वीकार। ३. ज्ञान।

उपग्रह-पुं० [सं०] १ पकड़ा जाना। गिरफ्तारी। २ कारावास। कैद। ३. बँधुआ। कैदी। ४ वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता हो। जैसे-पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा है।

उपघात-पुं० [सं०] [कर्त्ता उपघातक, उपघाती] १. नाश करने की क्रिया। २ इन्द्रियों का अपने अपने काम में असमर्थ होना। अशक्ति। ३. रोग। व्याधि। ४. आघात। चोट। (इंजरी)

उपचना*-अ० [सं० उपचय] १. उन्नत होना। बढ़ना। २. उफनना। उबलकर बाहर निकलना।

उपचय-पुं० [सं०] १. वृद्धि। उन्नति। बढ़ती। २. संचय। जमा करना।

उपचर्या-स्त्री० [सं०] १. सेवा-शुश्रूषा। २. चिकित्सा। इलाज।

उपचार-पुं० [सं०] १. व्यवहार। प्रयोग। २. चिकित्सा। इलाज। ३. रोगी की सेवा-शुश्रूषा। ४. किसी की हानि या अपकार का प्रतिकार। (रेमेडी) ५. पूजन के अंग या विधान। जैसे-षोड-शोपचार। ६. खुशामद। ७. घूस। रिशवत। ८. एक प्रकार की सन्धि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है। जैसे-निःछल से निश्छल।

उपचारक-वि० [सं०] [स्त्री० उप-चारिका] १ उपचार या सेवा करने-वाला। २. विधान करनेवाला। ३. चिकित्सा करनेवाला।

उपचारना*-स० [सं० उपचार] १ व्यवहार में लाना। २. विधान करना।

उपचारतः-क्रि० वि० [सं०] केवल व्यवहार, दिखावे या रसम अदा करने के रूप में। (फॉर्मल)

उपचारी-वि० दे० 'उपचारक'।

उपज-स्त्री० [हिं० उपजना] १. उपजने की क्रिया या भाव। उत्पत्ति। उद्भव। २. वह वस्तु जो उपज के रूप में प्राप्त हो। पैदावार। जैसे-खेत की उपज। ३. नई सूझ। उद्भावना। ४. मन-गढ़ंत बात। ५. गाने में राग की सुन्दरता के लिए उसमें बँधी हुई तानों के सिवा कुछ तानें अपनी ओर से मिलाना।

उपजना-अ० [सं० उत्पद्यते] १. उत्पन्न होना। पैदा होना। २. उगना।

उपजाऊ-वि०[हिं०उपज+आऊ(प्रत्य०)] जिसमें अच्छी उपज हो। उर्वर। (भूमि)

उपजाति-स्त्री० [सं०] वे वृत्त जो इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवंशा और वंशस्थ के मेल से बनते हैं।

उपजाना-स० [हिं० उपजना का स०

रूप] उत्पन्न करना। पैदा करना।

उपजीविका-स्त्री० [सं०] १. प्रधान जीविका के सिवा निर्वाह या जीवन बिताने का और कोई आर्थिक साधन। २. जीवन-निर्वाह के लिए कहीं से मिलनेवाली अतिरिक्त सहायता या वृत्ति। (एलाउएन्स)

उपजीवी-वि० [सं० उपजीविन्] [स्त्री० उपजीविनी] दूसरे के सहारे जीवन बितानेवाला।

उपज्ञा-स्त्री० [सं०] कोई नया पदार्थ, यंत्र या प्रक्रिया ढूँढ़ निकालना। ईजाद। (इन्वेन्शन)

उपटन-पुं० दे० 'उबटन'।
पुं० [सं० उत्पतन] वह अंक या चिह्न जो आघात, दबाने या लिखने से पड़ जाय। निशान। सौंट।

उपटना-अ० [सं० उपट=पट के ऊपर] १. आघात, दाब या लिखने का चिह्न पड़ना। निशान पड़ना। २ उखड़ना।

उपटाना*-स० [हिं० उबटना का प्र० रूप] उबटन लगवाना।
स० [सं० उत्पाटन] १. उखड़वाना। २. उखाड़ना।

उपटारना*-स० [सं० उत्पटन] १. उच्चाटन करना। २. उठाना। ३ हटाना।

उपत्यका-स्त्री० [सं०] पर्वत के पास की नीची भूमि। तराई।

उपदंश-पुं० [सं०] गरमी या आतशक नामक रोग। फिरंग रोग।

उप-दिन्सा-स्त्री० [सं०] दित्सापत्र या वसीयतनामे के अन्त में लिखा हुआ परिशिष्ट रूप में कोई संक्षिप्त लेख या टिप्पणी, जो किसी प्रकार की व्याख्या या स्पष्टीकरण के रूप में होती है। (कॉडिसिल)

उप-दिशा-स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

उपदिष्ट-वि० [सं०] १. जिसे उपदेश दिया गया हो। २. जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो। ज्ञापित।

उपदेश-पुं० [सं०] [वि० उपदिष्ट] १. हित की बात बतलाना। शिक्षा। सीख। नसीहत। २. दीक्षा। गुरु-मंत्र।

उपदेशक-पुं० [सं०] [स्त्री० उपदेशिका] १. उपदेश करनेवाला। अच्छी बातों की शिक्षा देनेवाला। २. वह जो घूम-घूमकर अच्छी बातों का प्रचार करता हो।

उपदेष्टा-पुं० दे० 'उपदेशक'।

उपदेसना*-स० [सं० उपदेश] उपदेश करना या देना।

उपद्रव-पुं० [सं०] [वि० उपद्रवी] १. हलचल। विप्लव। २. उत्पात। ऊधम। दंगा-फसाद। ३ किसी प्रधान रोग के बीच में होनेवाले दूसरे विकार या पीड़ाएँ।

उपद्रवी-वि० [सं० उपद्रविन्] १. उपद्रव या ऊधम मचानेवाला। २. नटखट।

उपधातु-स्त्री० [सं०] अप्रधान धातु, जो या तो लोहे, ताँबे आदि धातुओं के योग से बनती है अथवा खानों से निकलती है। जैसे-कसा।

उपनना*-अ० [सं० उत्पन्न] पैदा होना।

उपनय-पुं० [सं०] १ किसी के पास या सामने ले जाना। २. उपनयन संस्कार। ३. कोई उदाहरण देकर उसका धर्म या सिद्धान्त और कहीं सिद्ध करना। ४. अपने पक्ष का समर्थन करने या इसी प्रकार के और किसी काम के लिए किसी उक्ति, सिद्धान्त विधि आदि का उल्लेख या कथन करना। (साइटेशन)

उपनयन-पुं० [सं०] [वि० उपनीत] यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनागरिका-स्त्री० [सं०] अलंकार में वृत्ति अनुप्रास का एक भेद जिसमें मधुर वर्ण आते हैं।

उपनाना*-स० [हिं० उपनना] उत्पन्न या पैदा करना।

उपनाम-पुं० [सं०] १. नाम के सिवा दूसरा नाम। प्रचलित नाम। २. पदवी।

उपनायक-पुं० [सं०] नाटकों में प्रधान नायक का साथी या सहकारी।

उपनिधि-स्त्री० [सं०] अमानत।

उप-निबंधक-पुं० [सं०] वह जो किसी निबंधक के अधीन रहकर उसका या उसके समान काम करता हो। (सब-रजिस्ट्रार)

उप-नियम-पुं० [सं०] किसी नियम के अंतर्गत बना हुआ कोई और छोटा नियम। (सब-रूल)

उपनिविष्ट-वि० [सं०] दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

उपनिवेश-पुं० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसना। २ अन्य स्थान से आये हुए लोगों की बस्ती। (कॉलोनी)। ३ बाहरी तत्वों, कीटाणुओं आदि का किसी स्थान पर होनेवाला जमाव। (कॉलोनी)

उपनिषद्-स्त्री० [सं०] १ किसी के पास बैठना। २. ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति के लिए गुरु के पास बैठना। ३. वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अन्तिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है।

उपनीत-वि० [सं०] १. जो किसी के सामने लाया गया हो। २ जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो। ३. वह उल्लेख या चर्चा जो अपने पक्ष का समर्थन करने अथवा इसी प्रकार के और किसी काम के लिए की गई हो। (साइटेड)

उपन्यास-पुं० [सं०] [वि० उपन्यस्त] १. वाक्य का उपक्रम। बंधान। २. वह कल्पित और बड़ी आख्यायिका जिसमें बहुत-से पात्र और विस्तृत घटनाएँ हों।

उपपति-पुं० [सं०] वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे। यार।

उपपत्ति-स्त्री० [सं०] १. हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय। २. चरितार्थ होना। मेल मिलना। संगति। ३. युक्ति।

उपपन्न-वि० [सं०] १. पास या शरण में आया हुआ। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३ लगा हुआ। युक्त। ४. उपयुक्त।

उपपादन-पुं० [सं०] [वि० उपपादित, उपपन्न, उपपाद्य] १. सिद्ध करना। ठीक ठहराना। २. कार्य पूरा करना।

उपपुराण-पुं० [सं०] १८ मुख्य पुराणों के अतिरिक्त और छोटे पुराण जो १८ हैं।

उपबरहन*-पुं० दे० 'तकिया'।

उपभुक्त-वि० [सं०] १. काम में लाया हुआ। २. जूठा। उच्छिष्ट।

उपभोक्ता-वि० [सं० उपभोक्तृ] [स्त्री० उपभोक्त्री] वस्तुओं का उपभोग करने-वाला। (कन्ज़्यूमर)

उपभोग-पुं० [सं०] [वि० उपभोग्य] १ किसी वस्तु के व्यवहार का सुख या मजा लेना। २. काम में लाना। बरतना।

उपभोग्य-वि० [सं०] उपभोग या व्यवहार करने के योग्य।

उपमंडल-पुं० [सं०] किसी मंडल या जिले का एक विशेष छोटा भाग। तहसील।

उपमंत्री-पुं० [सं०] वह मंत्री जो प्रधान मंत्री के नीचे हो।

उपमर्दन-पुं० [सं०] [वि० उपमर्दित] १ बुरी तरह से दबाना या रौंदना । २. उपेक्षा या तिरस्कार करना ।

उपमा-स्त्री० [सं०] १. किसी वस्तु, कार्य या गुण को दूसरी वस्तु, कार्य या गुण के समान बतलाना । तुलना । मिलान । जोड़ । २. एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) में भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है ।

उपमाता-पुं० [सं० उपमातृ] [स्त्री० उपमात्री] उपमा देनेवाला ।

उप-माता-स्त्री० [उप + मातृ] दूध पिलानेवाली दाई । धाय ।

उपमान-पुं० [सं०] १. वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय । वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु बतलाई जाय । २. न्याय में चार प्रकार के प्रमाणों में से एक । किसी पदार्थ के साधर्म्य से साध्य का साधन ।

उपमाना*-स० [सं०उपमा] उपमा देना ।

उपमित-वि० [सं०] जिसकी उपमा दी गई हो ।

पुं० वह समास जो दो शब्दों के बीच उपमावाचक शब्द का लोप करके बनाया जाता है । जैसे-पुरुष-सिंह ।

उपमिति-स्त्री० [सं०] उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान ।

उपमेय-वि०[सं०] जिसकी उपमा दी जाय ।

उपमेयोपमा-स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान को और उपमान की उपमेय हो ।

उपयना*-अ० [सं० उत्पयाण] न रह जाना । उड़ जाना ।

उपयुक्त-वि० [सं०] [भाव० उपयुक्तता] १. जो किसी के साथ ठीक बैठे । २. उचित । वाजिब । मुनासिब ।

उपयोग-पुं० [सं०] [वि० उपयोगी, उपयुक्त] १. व्यवहार । इस्तेमाल । प्रयोग । २. योग्यता । ३. फायदा । लाभ । ४. प्रयोजन । आवश्यकता ।

उपयोगिता-स्त्री० [सं०] काम में आने की योग्यता । लाभकारिता ।

उपयोगिता-वाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें प्रत्येक वस्तु और बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है ।

उपयोगी-वि० [सं० उपयोगिन्] [स्त्री० उपयोगिनी] १. काम में आनेवाला । प्रयोजनीय । २. लाभदायक । फ़ायदेमन्द । ३ अनुकूल । मुआफ़िक ।

उपयोजन-पुं० [सं०] अपने उपयोग या काम में लाना । (एप्रोप्रिएशन)

उपरंजन-पुं० [सं०] [वि० उपरंजित, उपरक्त] एक वस्तु या बात का दूसरी वस्तु या बात पर पड़नेवाला ऐसा अनिष्ट प्रभाव जिससे प्रभावित होनेवाला वस्तु या बात की उपयोगिता कम होती हो । (एफेक्टेशन)

उपरंजित-वि० दे० 'उपरक्त' ।

उपरक्त-वि० [सं०] जिसपर किसी का कोई प्रतिकूल या अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो । (एफेक्टेड)

उपरत-वि० [सं०] जो रत न हो । विरक्त ।

उपरति-स्त्री० [सं०] विषय-वासना के भोग से विराग । विरति । त्याग । २. उदासीनता । ३. मृत्यु । मौत ।

उपरत्न-पुं० [सं०] कम दाम के या घटिया रत्न । जैसे सोप, मरकत मणि ।

उपरना-पुं० [हिं० ऊपर] दुपट्टा या चादर जो ऊपर ओढ़ते हैं ।

*अ० दे० 'उखड़ना'।

उपरांत-क्रि० वि० [सं०] अनन्तर। बाद। पीछे।

उपराग-पुं० [सं०] १. रंग। २. किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास। ३. विषयों में अनुरक्ति। ४. चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण।

उपराज-पुं० [सं०] राजा का वह प्रतिनिधि जो किसी देश का शासक हो।

*स्त्री० दे० 'उपज'।

उपराजना*-स० [सं० उपार्जन] १ पैदा या उत्पन्न करना। २. रचना। बनाना। ३ उपार्जन करना। कमाना।

उपराना†-अ० [सं० उपरि] १. ऊपर आना। २. प्रकट होना। ३. उतराना। स० ऊपर करना। उठाना।

उपराहना*-अ० [?] प्रशंसा करना।

उपराही*-क्रि० वि० दे० ऊपर'।

वि० बढ़कर। श्रेष्ठ।

उप-रूपक-पुं० [सं०] साहित्य में छोटा नाटक जिसके १८ भेद कहे गये हैं।

उपरैना*-पुं० दे० 'उपरना'।

उपरोक्त-वि० दे० 'उपर्युक्त'।

उपरोध-पुं० [सं०] [वि० उपरोधक, उपरोध्य] १. बाधा। रुकावट। २. आच्छादन। ढकना।

उपर्युक्त-वि० [सं०] जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका हो। ऊपर कहा हुआ।

उपल-पुं० [सं०] १. पत्थर। २. ओला। ३. रत्न। ४. मेघ। बादल।

उपलक्ष्य-पुं० [सं०] १. संकेत। चिह्न। २. दृष्टि। उद्देश्य।

यौ०-उपलक्ष्य में=दृष्टि से। विचार से।

उपलब्ध-वि० [सं०] [संज्ञा उपलब्धि] १. पाया हुआ। प्राप्त। २. आना हुआ।

उपला-पुं० [सं० उत्पल] [स्त्री० अल्पा० उपली] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर। कंडा। गोहरा।

उपल्ला-पुं० [हिं० ऊपर+ला (प्रत्य०)] किसी वस्तु की ऊपरी तह या परत।

उपवन-पुं० [सं०] १. बाग। बगीचा। फुलवारी। (पार्क) २. छोटा जंगल।

उपवना*-अ० [सं० उत्पयाण] १. गायब होना। २. उदय होना।

उप-वाक्य-पुं० [सं०] किसी बड़े वाक्य का वह अंश जिसमें कोई समापिका क्रिया हो।

उपवास-पुं० [सं०] [वि० उपवासी] १. भोजन का छूटना। फाका। २. वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता।

उप-विधि-स्त्री० [सं०] किसी विधि के अधीन या अन्तर्गत बनी हुई कोई छोटी विधि। (बाई-लॉ)

उप-विष-पुं० [सं०] हलका जहर। जैसे-अफीम या धतूरा।

उपविष्ट-वि० [सं०] बैठा हुआ।

उपवीत-पुं० [सं०] [वि० उपवीती] १. जनेऊ। यज्ञसूत्र। २. उपनयन।

उपवेद-पुं० [सं०] वे विद्याएँ जो वेदों से निकली हैं। जैसे-धनुर्वेद।

उपवेशन-पुं० [सं०] [वि० उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट] १. बैठना। २. स्थित होना। जमना।

उपशम-पुं० [सं०] १. वासनाओं को दबाना। इन्द्रिय-निग्रह। २. निवृत्ति। शांति। ३. किसी के कष्टों या आपत्तियों आदि के निवारण का उपाय। इलाज। (रिलीफ)

उपशाला-स्त्री० [सं०] मकान के पास का, उठने-बैठने के लिए दालान या छोटा

कमरा। बैठक।

उप-शिष्य-पुं० [सं०] शिष्य का शिष्य।

उप-संपादक-पुं० [सं०] [स्त्री० उप-संपादिका] १. किसी कार्य्य में मुख्य कर्त्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य्य करनेवाला व्यक्ति। २. किसी सामयिक पत्र में संपादक के अधीन रहकर उसके सहायक के रूप में काम करनेवाला व्यक्ति।

उपसंहार-पुं० [सं०] १. परिहार। २. समाप्ति। अन्त। ३. किसी पुस्तक के अन्त का वह अध्याय जिसमें उसका सारांश या परिणाम संक्षेप में बतलाया गया हो। ४. सारांश।

उप-सभापति-पुं० [सं०] किसी संस्था का वह अधिकारी जिसका पद सभापति के उपरान्त या उससे छोटा, पर मन्त्री से बड़ा होता है और जो सभापति की अनुपस्थिति में उसके सब कार्य्य करता है। (वाइस-प्रेसिडेंट)

उप-समिति-स्त्री० [सं०] किसी बड़ी समिति या सभा की बनाई हुई छोटी समिति।

उपसर्ग-पुं० [सं०] वह अव्यय जो किसी शब्द के पहले लगकर उसमें किसी अर्थ की विशेषता करता है। जैसे-अनु, अव, उप, उद् इत्यादि। २. अपशकुन। ३ दैवी उत्पात।

उप-सागर-पुं० [सं०] छोटा समुद्र। समुद्र का एक भाग। खाड़ी।

उपस्करण-पुं० [सं०] घर, स्थान आदि सजाने की क्रिया या भाव। (फरनिशिंग)

उपस्कार-पुं० [सं०] वे वस्तुएँ जिनका उपयोग मुख्यतः घर की सजावट के लिए होता है। जैसे-मेज, कुरसी, आलमारी आदि। (फरनिचर)

उपस्कृत-वि० [सं०] (घर या कमरा) जो उपस्कारों से सजा हो। (फरनिश्ड)

उपस्थ-पुं० [सं०] १. नीचे या मध्य का भाग। २. पेड़ू। ३. पुरुष-चिह्न। लिंग। ४. स्त्री-चिह्न। भग। ५. गोद।

उपस्थान-पुं० [सं०] [वि० उपस्थानीय, उपस्थित] १. पास या सामने आना। २ अभ्यर्थना या पूजा के लिए निकट आना। ३. सभा। समाज।

उपस्थापक-पुं० [सं०] १. वह जो विचार और स्वीकृति के लिए कोई विषय किसी सभा में उपस्थित करे। उपस्थित करनेवाला। २. वह जो न्यायालय में अभियोगों और वादों आदि से सम्बन्ध रखनेवाले कागज-पत्र न्यायकर्त्ता अधिकारी के सामने उपस्थित करता और उनपर आज्ञाएँ आदि लिखता है। पेशकार। (रीडर)

उपस्थापन-पुं [सं०] [कर्त्ता उपस्थापक] किसी अधिकारी या सभा-समाज के सामने कोई प्रस्ताव या स्वीकृति के लिए कोई विषय उपस्थित करना।

उपस्थित-वि० [सं०] १ समीप बैठा हुआ। सामने या पास आया हुआ। विद्यमान। मौजूद। हाजिर। (प्रेजेन्ट) २. ध्यान में आया हुआ। याद।

उपस्थिति-स्त्री० [सं०] विद्यमानता। मौजूदगी। हाजिरी।

उपस्थिति अधिकारी-पुं० [सं०] शिक्षा-संबंधी संस्था का वह अधिकारी जो विद्यार्थियों की ठीक उपस्थिति की देख-भाल करता अथवा उपस्थिति बढ़ाने का प्रयत्न करता हो। (एटेंडेन्स ऑफिसर)

उपस्थिति पंजिका-स्त्री० [सं०] वह

पंजिका (रजिस्टर) जिसमें विद्यार्थियों, कर्मचारियों आदि की उपस्थिति लिखी जाती हो। (एटेंडेन्स रजिस्टर)

उपहत-वि० [सं०] १. नष्ट या बरबाद किया हुआ। २ बिगाड़ा हुआ। दूषित। ३. संकट में पड़ा हुआ। ४ जिसे चोट लगी हो। (हर्ट) ५. जिसपर किसी प्रकार का अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो। (एफ़ेक्टेड)

उपहसित-पुं० [सं०] नाक फुलाकर, आँखें टेढ़ी करके और गर्दन हिलाते हुए हँसना। (हास का एक भेद)

उपहार-पुं० [सं०] बड़े या प्रिय को दी जानेवाली कोई अच्छी वस्तु। भेंट। नजर। (प्रेजेन्ट)

उपहास-पुं० [सं०] [वि० उपहास्य] १. हँसी। दिल्लगी। २. हँसते हुए किसी को निन्दित ठहराना या उसकी बुराई करना। हास्ययुक्त निन्दा।

उपहासास्पद-वि० [सं०] १. उपहास के योग्य। हँसी उड़ाने के लायक। २. निन्दनीय। खराब। बुरा।

उपहास्य-वि० दे० 'उपहासास्पद'।

उपहासी*-स्त्री० दे० 'उपहास'।

उपही*-पुं० [हिं० ऊपर+हा (प्रत्य०)] अपरिचित, बाहरी या विदेशी आदमी।

उपांग-पुं० [सं०] १. अंग का भाग। अवयव। २. किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति करनेवाली वस्तु। जैसे-वेद के उपांग।

उपांत-पुं० [सं०] १. अन्त की ओर का भाग। आखिरी हिस्सा। २. आस-पास का भाग या स्थान। ३. कागज में, लिखने के समय, एक या दोनों ओर खाली छोड़ा जानेवाला वह स्थान जिसपर आवश्यकता होने पर कोई और छोटी-मोटी काम की बात या लेख्य की साक्षी, शीर्षक आदि लिखे जाते हैं। हाशिया। (मार्जिन)

उपांतस्थ-वि० [सं०] उपांत पर होने, रहने या लिखा जानेवाला। (मार्जिनल) जैसे-किसी लेख्य पर का उपांतस्थ साक्षी।

उपांतस्थ साक्षी-पुं० [सं०] वह साक्षी जिसने किसी लेख्य के उपान्त पर हस्ताक्षर या अँगूठे का चिह्न किया हो। (मार्जिनल विटनेस)

उपाउ*-पुं० दे० 'उपाय'।

उपाकर्म-पुं० [सं०] १ विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन। २. यज्ञोपवीत संस्कार।

उपाख्यान-पुं० [सं०] १. पुरानी कथा। पुराना वृत्तान्त। २ किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा। ३. वृत्तान्त।

उपाटना*-स० दे० 'उखाड़ना'।

उपाती*-स्त्री० दे० 'उत्पत्ति'।

उपादान-पुं० [सं०] [भाव० उपादानता] १.प्राप्ति। मिलना। २.ग्रहण। स्वीकार। ३ ज्ञान। बोध। ४. वह कारण जो स्वयं कार्य्य के रूप में परिणत हो जाय। ५ वह सामग्री जिससे कोई वस्तु बने।

उपादेय-वि० [सं०] [भाव० उपादेयता] १ ग्रहण करने योग्य। २. उत्तम। श्रेष्ठ।

उपाधि-स्त्री० [सं०] १.कुछ को कुछ और बतलाने का छल। कपट। २. वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे। ३. उपद्रव। उत्पात। ४. कर्त्तव्य का विचार। ५. प्रतिष्ठा-सूचक पद। खिताब। (टाइटिल)

उपाधि-धारी-पुं० [सं० उपाधिधारिन्] वह जिसे कोई उपाधि या खिताब मिला हो।

उपाध्यक्ष-पुं० [सं०] किसी संस्था आदि में अध्यक्ष के सहायक रूप में, पर उसके अधीन काम करनेवाला अधिकारी। (वाइस-चेयरमैन)

उपाध्याय-पुं० [सं०] [स्त्री० उपाध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी] १. वेद-वेदांग पढ़ानेवाला। २. अध्यापक। शिक्षक।

उपानह-पुं० [सं०] जूता।

उपाना*-स० [सं० उत्पन्न] १. उत्पन्न करना। पैदा करना। २. सोचना।

उपाय-पुं० [सं०] [वि० उपायी, उपेय] १ पास पहुँचना। निकट आना। २. वह कार्य या प्रयत्न जिससे अभीष्ट तक पहुँचें। साधन। युक्ति। तरकीब।

उपायन-पुं० [सं०] भेंट। उपहार।

उपारना*-स० दे० 'उखाड़ना'।

उपार्जन-पुं० [सं०] [वि० उपार्जनीय, उपार्जित] परिश्रम या प्रयत्न करके धन प्राप्त करना। कमाना।

उपार्जित-वि० [सं०] १. कमाया हुआ। २. प्राप्त किया हुआ। ३. संगृहीत।

उपालंभ-पुं० [सं०] [वि० उपालब्ध] उलाहना। शिकायत। निन्दा।

उपाव*-पुं० दे० 'उपाय'।

उपाश्रित-वि० [सं०] (आज्ञा, नियम, विधि आदि) जो किसी दूसरी आज्ञा, नियम, विधि आदि पर अवलम्बित या उसका आश्रित हो। (सब्जेक्ट टू) जैसे-यह नियम नीचे लिखी बातों का उपाश्रित है।

उपास*-पुं० दे० 'उपवास'।

उपासक-वि० [सं०] [स्त्री० उपासिका] पूजा या उपासना करनेवाला। भक्त।

उपासना-स्त्री० [सं० उपासन] [वि० उपासनीय, उपास्य, उपासित] १. पास बैठने की क्रिया। २. ईश्वर या देवता की आराधना। पूजा। परिचर्या।
*स० [सं० उपासन] उपासन, पूजा या सेवा करना। भजना।
अ० [सं० उपवास] १. उपवास करना। भूखा रहना। २. निराहार व्रत रहना।

उपासी-वि० [सं० उपासिन्] [स्त्री० उपासिनी] उपासना करनेवाला।
वि० [सं०उपवास] उपवास करनेवाला।

उपास्य-वि० [सं०] पूजा के योग्य। जिसकी सेवा की जाती हो। आराध्य।

उपेंद्र-पुं० [सं०] इन्द्र के छोटे भाई वामन या विष्णु भगवान्।

उपेक्षणीय-वि० दे० 'उपेक्ष्य'।

उपेक्षा-स्त्री० [सं०] १ उदासीनता। लापरवाही। विरक्ति। २. किसी को तुच्छ या नगण्य समझना। अयोग्य समझकर ध्यान न देना या आदर न करना। (डिस-रिगार्ड)

उपेक्षित-वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा की गई हो। तिरस्कृत।

उपेक्ष्य-वि० [सं०] जिसकी उपेक्षा करना ही ठीक हो।

उपेत-वि० [सं०] १ बीता हुआ। गत। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३. संयुक्त।

उपैना*-वि० [सं० उ+पल्लव] [स्त्री० उपैनी] १ खुला हुआ। २. नंगा।
अ० [?] लुप्त होना। उड़ना।

उपोद्घात-पुं० [सं०] पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य। प्रस्तावना। भूमिका।

उपोषण-पुं० दे० 'उपवास'।

उपोसथ-पुं० [सं० उपवसथ] निराहार व्रत। उपवास। (जैन और बौद्ध)

उफनना*-अ० [सं० उत्+फेन] १. उबलकर उठना। जोश खाना। (दूध

आदि का) २. उमड़ना ।

उफान-पुं० [सं० उत्=फेन] गरमी पाकर फेन के साथ ऊपर उठना । उबाल।

उफाल-स्त्री० [हिं० फाल] लम्बा डग ।

उबकना*-अ० [हिं० उबाक] कै करना ।

उबकाई*-स्त्री० [हिं० ओकाई] वमन ।

उबट*-पुं० [सं० उद्वाट] बीहड़ रास्ता। वि० ऊबड़-खाबड़ । ऊँचा-नीचा ।

उबटन-पुं० [सं० उद्वर्तन] शरीर पर मलने के लिए सरसों, तिल, चिरौंजी आदि का लेप । बटना । अभ्यंग ।

उबना*-अ० १. दे० 'उगना' । २. दे० 'ऊबना' ।

उबरना-अ० [सं० उद्वारण] १. उद्धार या निस्तार पाना । मुक्त होना । छूटना। २. शेष रहना । बाकी बचना ।

उबलना-अ० [सं० उद्=ऊपर+वलन= जाना] १. आग पर चढ़े हुए तरल पदार्थ का फेन के साथ ऊपर उठना। उफनना । २. वेग से निकलना । उमड़ना।

उबहन.*-स० [सं० उद्वहन] १. हथियार उठाना । शस्त्र उठाना । २. पानी फेंकना । उलीचना । ३. उभरना ।
स० [सं० उद्वहन] जोतना । (खेत)
वि० [स० उपाहन] बिना जूते का ।

उबाँत*-स्त्री० दे० 'वमन' ।

उबार-पुं० [सं० उद्वारण] उबरने का क्रिया या भाव । निस्तार । छुटकारा ।

उबारना-स० [सं० उद्वारण] उद्धार करना । कष्ट से छुड़ाना या बचाना ।

उबाल-पुं० [हिं० उबलना] १. उबलने की क्रिया या भाव । उफान । २.आवेश ।

उबालना-स० [सं० उद्वालन] तरल पदार्थ आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठने लगे । खौलाना ।

उबासी-स्त्री० दे० 'जँभाई' ।

उबीठना*-अ० [सं० अव+स० इष्ट] १. ऊबना । २ घबराना ।

उबीधना*-अ० [सं० उद्विद्ध] १. फँसना । उलझना । २ धँसना । गड़ना ।

उबीधा*-वि० [सं० उद्विद्ध] [स्त्री० उबीधी] १. धँसा या गड़ा हुआ । २. काँटों से भरा या झाड़-झंखाड़वाला ।

उबेना*-वि० [हिं० उ=नहीं+सं० उपानह] नंगे पैर । बिना जूते का ।

उबेहन.*-स० [सं० उद्वेधन] १ जड़ना । बैठाना । २. पिरोना ।

उभटना*-अ० [हिं० उभरना] १. अभिमान करना । २ दे० 'उभड़ना' ।

उभड़ना-अ० [सं० उद्भरण] १ किसी तल या सतह का आस-पास की सतह से कुछ ऊँचा होना । उकसना । २. ऊपर निकलना । उठना । जैसे-अंकुर उभड़ना। ३. उत्पन्न होना । पैदा होना । ४. प्रकाशित होना । सामने आना । ५. अधिक या प्रबल होना । बढ़ना । ६. हट जाना । ७. जवानी पर आना । ८. गाय, भैंस आदि का मस्त होना ।

उभना*-अ० दे० 'उभड़ना' ।

उभय-वि० [सं०] दोनों ।

उभयतः-क्रि० वि० [सं०]दोनों ओर से ।

उभय-निष्ठ-वि० [स०] १. जो दोनों में निष्ठा रखता हो । २ जो दोनों में सम्मिलित हो ।

उभरना*-अ० दे० 'उभड़ना' ।

उभरौहाँ*-वि० [हिं० उभरना+औहाँ (प्रत्य०)] उभार पर आया हुआ ।

उभाड़-पुं० [सं० उद्भिदन] १. उभड़ने की क्रिया या भाव । उठान । २. ऊँचा-

पन। ऊँचाई। ३. ओज। वृद्धि।
उभाड़ना-स० [हिं० उभड़ना] १. भारी वस्तु को धीरे धीरे ऊपर की ओर उठाना। उकसाना। २. उत्तेजित करना।
उभाना*-अ० दे० 'असुआना'।
उभार-पुं० दे० 'उभाड़'।
उभिटना*-अ० [?] हिचकना।
उभै*-वि० दे० 'उभय'।
उमंग-स्त्री० [सं० उद्=ऊपर+मंग= चलना] १. मन में उत्पन्न होनेवाला वह सुखदायक मनोवेग जो कोई प्रिय या अभीष्ट काम करने के लिए होता है। मौज। लहर। उल्लास। २. उभाड़।
उमग*-स्त्री० दे० 'उमंग'।
उमगना-अ० [हिं० उमंग] १. उभड़-ना। उमड़ना। भरकर ऊपर उठना। २. उल्लास में होना। हुलसना।
उमगाना-स० हिं० 'उमगना' का स०।
उमचना-अ० [सं० उन्मंच] १. दे० 'हुमचना'। २. चौकन्ना होना।
उमड़-स्त्री० [हिं० उमड़ना] १. उमड़ने की क्रिया या भाव। २. धावा।
उमड़ना-अ० [सं० उन्मंडन] १. द्रव वस्तु का बहुतायत के कारण ऊपर उठना। उतराकर बह चलना। २. उठकर फैलना। छाना। जैसे-बादल उमड़ना।
यौ०-उमड़ना-घुमड़ना = घूम घूमकर फैलना या छाना। (बादल)
३. उमंग या आवेश में आना।
उमड़ाना-स० हिं० 'उमड़ना' का प्रे०। *अ० दे० 'उमड़ना'।
उमदना*-अ० दे० 'उमगना'।
उमदाना*-अ० [सं० उन्मद] १. मतवाला होना। २. दे० 'उमगना'।
उमर-स्त्री० [अ० उम्र] १. वर्षों के विचार से जीवन के बीते हुए दिन। अवस्था। वय। २. पूरा जीवन-काल। आयु।
उमरा-पुं० [अ०] 'अमीर' का बहुवचन। प्रतिष्ठित लोग। सरदार।
उमराव*-पुं० दे० 'उमरा'।
उमस-स्त्री० [सं० ऊष्म] [क्रि० उमसना] वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है।
उमहना*-अ० दे० 'उमड़ना'।
उमहाना*-स० दे० उमाहना'।
उमा-स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. दुर्गा। ३. कीर्ति। ४. कांति।
उमाकना*-अ० [?] १. खोदकर फेंक देना। २. नष्ट करना।
उमाचना*-स० दे० 'उभाड़ना'।
उमाद*-पुं० दे० उन्माद'।
उमाह*-पुं० दे० 'उमंग'।
उमाहना-अ० दे० 'उमड़ना'। स० उमड़ाना। उमगाना।
उमाहल*-वि० [हिं० उन्माद] उमंग से भरा हुआ।
उमेठना-स० [सं० उद्वेष्टन] [भाव० उमेठन] इस प्रकार मरोड़ना कि रस्सी की तरह बल पड़ जाय। ऐंठना।
उमेठवाँ-वि० [हिं० उमेठना] जिसमें उमेठन पड़ी हो। पेंठनदार।
उमेड़ना*-स० दे० 'उमेठना'।
उमेलना*-स० [सं० उन्मीलन] १. खोलना। प्रकट करना। २. वर्णन करना।
उमैना*-अ० [हिं० उमंग] मनमाना आचरण करना।
उम्दगी-स्त्री० [फा०] अच्छापन। भलापन। खूबी।
उम्दा-वि० [अ० उम्दः] अच्छा। भला।
उम्मत-स्त्री० [अ०] १. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। २. समिति।

समाज । ३. औलाद । सन्तान ।

उम्मीद-स्त्री० दे० 'उम्मेद'।

उम्मेद-स्त्री० [फा०] १ आशा । २. भरोसा । आसरा ।

उम्मेदवार-पुं० [फा०] १. आशा या उम्मेद रखनेवाला । २. काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से कहीं बिना वेतन लिये या थोड़े वेतन पर काम करने-वाला आदमी । अन्तेवासी । ३ किसी पद पर चुने जाने के लिए खड़ा होने-वाला आदमी ।

उम्मेदवारी-स्त्री० [फा०] १. उम्मेद-वार होने की क्रिया या भाव । २.आशा । आसरा । ३. बिना वेतन या थोड़े वेतन पर उम्मेदवार होकर काम करना । ४. गर्भवती को सन्तान होने की आशा ।

उम्र-स्त्री० दे० 'उमर' ।

उर-पुं० [सं० उरस्] १ वक्षस्थल । छाती । २. हृदय । मन । चित्त ।

उरकना*-अ० दे० 'रुकना' ।

उरगना*-स० [सं० उररीकरण] १. स्वीकार या अंगीकार करना । २. सहना ।

उरगारि-पुं० [सं०] गरुड़ ।

उरगिनी*-स्त्री० [सं० उरगी] सर्पिणी।

उरज, उरजात*-पुं० दे० 'उरोज' ।

उरझना*-अ० दे० 'उलझना' ।

उरझेर*-पुं० [?] हवा का झोंका ।

उरण-पुं० [सं०] १ भेड़ा । मेढ़ा । २. युरेनस नामक ग्रह ।

उरद-पुं० [सं० ऋद्ध, पा० उद्ध] [स्त्री० अल्पा० उरदी] एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीजों या दानों की दाल होती है । माष ।

उरध*-क्रि० वि० दे० 'ऊर्ध्व' ।

उरबी*-स्त्री० दे० 'उर्वी' ।

उरमन*-अ० दे० 'लटकना' ।

उरमाल*-पुं० दे० 'रूमाल' ।

उरमी*-स्त्री० [सं० ऊर्मि] १. लहर । तरंग । २. दुःख । पीड़ा । कष्ट ।

उरविज-पुं० [सं० उर्वी] मंगल ग्रह ।

उरला-वि० [सं० अपर, अवर+हिं० ला (प्रत्य०)] १. इधर का । इस ओर का । २. पिछला । पीछे का । वि० [हिं० विरल] निराला ।

उरस*-वि० [सं० कुरस] फीका । नीरस । पुं० [सं० उरस्] १. छाती । वक्षस्थल । २ हृदय । चित्त ।

उरसना*-अ० [हिं० उड़सना] ऊपर-नीचे करना । उथल-पुथल करना ।

उरसिज-पुं० [सं०] स्तन ।

उरहना*-पुं० दे० 'उलाहना' ।

उरा-स्त्री० [सं० उर्वी] पृथिवी ।

उराना*-अ० दे० 'ओराना' ।

उरारा*-वि० [सं० उरु] विस्तृत ।

उराव-पुं० [सं० उरस्+आव (प्रत्य०)] १ चाव । चाह । २ उमंग । उत्साह ।

उराहना-पुं० दे० 'उलाहना' ।

उरिन*-वि० दे० 'उऋण' ।

उरु-वि० [सं०] लम्बा-चौड़ा । *पुं० [सं० ऊरु] जंघा । जांघ ।

उरुवा*-पुं० [सं० उलूक, प्रा० उल्लूअ] उल्लू की तरह की एक चिड़िया । रुरुआ ।

उरूज-पुं० [अ०] बढ़ती । वृद्धि ।

उरे*-क्रि० वि० [सं० अवर] १. परे । आगे । २ दूर । ३. इस तरफ ।

उरेखना*-स० [सं० आलेखन] १. चित्र अंकित करना । २. दे० 'अवरेखना' ।

उरेह*-पुं० [सं० उल्लेख] चित्रकारी ।

उरेहना-स० [सं० उल्लेखन] खींचना । लिखना । (चित्र)

उरोज-पुं० [सं०] स्तन । कुच ।

उर्द-पुं० दे० 'उरद' ।

उर्दू-स्त्री० [तु०] १. छावनी का बाजार। २ हिन्दी का वह रूप जिसमें अरबी-फारसी के शब्द अधिक होते हैं और जो फारसी लिपि में लिखी जाती है ।

उर्ध*-वि० [सं०] ऊर्ध्व ।

उर्फ-पुं० [अ०] पुकारने का या प्रसिद्ध नाम । उपनाम ।

उर्मि*-स्त्री० दे० 'ऊर्मि' ।

उर्वरा-स्त्री० [सं०] उपजाऊ भूमि । वि० स्त्री० उपजाऊ । (ज़मीन)

उर्वशी-स्त्री० [सं०] एक अप्सरा ।

उर्वी-स्त्री० [सं०] पृथिवी । वि० स्त्री० १. विस्तृत । २. सपाट ।

उर्वीजा-स्त्री० [सं०] सीता ।

उलंग*-वि० [सं० उन्नग्न] नंगा ।

उलंघन*-पुं० दे० 'उल्लंघन' ।

उलका*-स्त्री० दे० 'उल्का' ।

उलचना-स० दे० 'उलीचना' ।

उलछना*-स० [हिं० उलीचना] १ छितराना । बिखराना । २. उलीचना ।

उलछारना*-स० दे० 'उछालना' ।

उलझन-स्त्री० [सं० अवरुंधन] १. उलझने की क्रिया या भाव । अटकाव । फँसाव । २. गिरह । गाँठ । ३. बाधा । ४ समस्या । ५ चिन्ता । फिक्र ।

उलझना-अ० [सं० अवरुंधन] १. फँसना अटकना । जैसे-काँटों में उलझना । 'सुलझना' का उलटा । २. बहुत से घुमावों के कारण फेर में फँसना । ३. लिपटना । ४. काम में लिप्त या लीन होना । ५. हुज्जत करना । झगड़ना । ६. कठिनाई या अड़चन में पड़ना ।

उलझा*-पुं० दे० 'उलझन' ।

उलझाना-स० [हिं० उलझना] १. फँसाना । अटकाना । २. लगाये रखना । लिप्त रखना । ३. टेढ़ा करना । *अ० उलझना । फँसना ।

उलझौंहाँ-वि० [हिं० उलझना] १. अटकाने या फँसानेवाला । २.लुभानेवाला ।

उलटना-अ० [सं० उल्लोटन] १. ऊपर का नीचे या नीचे का ऊपर होना । औंधा होना । पलटना । २. पीछे मुड़ना । घूमना । ३. तितर-बितर या अस्त-व्यस्त होना । ४. जैसा पहले रहा हो, उसके या पुराने रूप के विरुद्ध रूप में होना । ५. बरबाद होना । नष्ट होना । ६. बेहोश होना । बेसुध होना । ७. गिरना । ८. चौपायों का पहली बार गर्भ न ठहरना । स० १ नीचे का भाग ऊपर या ऊपर का भाग नीचे करना । औंधा करना । पलटना । फेरना । २. औंधा गिराना । ३. पटकना । गिरा देना । ४. लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर उठाना । ५. अंडबंड करना । अस्त-व्यस्त करना । ६. जैसा पहले रहा हो, उसके विरुद्ध या विपरीत करना । पुराने रूप के विरुद्ध रूप में लाना । (सेट-असाइड) ७. उत्तर-प्रत्युत्तर करना । विवाद करना । ८. खोदकर फेंकना । उखाड़ डालना । ९. बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिए खेत जोतना । १०. बेसुध करना । बेहोश करना । ११. कै करना । वमन करना । १२. उँडेलना । ढालना । १३. बरबाद करना । नष्ट करना ।

उलट-पलट (पुलट)-स्त्री० [हिं०] १. अदल-बदल । २. अव्यवस्था । गड़बड़ी ।

उलट-फेर-पुं० [हिं० उलटना+फेर] १. परिवर्तन । अदल-बदल । हेर-फेर ।

२. जीवन की भली-बुरी दशा।

उलटा-वि० [हिं० उलटना] [स्त्री० उलटी] १. जिसके ऊपर का भाग नीचे या नीचे का भाग ऊपर हो। औंधा।

मुहा०-उलटा साँस चलना=रुक-रुककर साँस चलना। (मरने के समय) उलटे मुँह गिरना=धोखा खाकर बुरी तरह विफल होना।

२. जिसका आगे का भाग पीछे अथवा दाहिनी ओर का भाग बाईं ओर हो। इधर का उधर। क्रम-विरुद्ध।

मुहा०-उलटा फिरना या लौटना=तुरन्त लौट आना। उलटा हाथ=बायाँ हाथ। उलटी गंगा बहना=अनहोनी या नियम-विरुद्ध बात होना। उलटी माला फेरना=बुरा मनाना। अहित चाहना। उलटे छुरे से मूँड़ना=मूर्ख बनाकर फँसना। उलटे पाँव फिरना=तुरन्त लौट पड़ना।

३. (काल-क्रम में) आगे का पीछे या पीछे का आगे। ४.विरुद्ध। विपरीत। ५. उचित के विरुद्ध। अयुक्त।

मुहा०-उलटा ज़माना=ऐसा समय,जब भली बात बुरी समझी जाय। अंधेर का समय। उलटा-सीधा=क्रम-रहित। अव्यवस्थित। उलटी खोपड़ी का=जड़। मूर्ख। उलटी-सीधी सुनाना=खरी-खोटी सुनाना। भला-बुरा कहना।

क्रि० वि० १. विरुद्ध क्रम से। २. बे-ठिकाने। अंडबंड। ३. जैसा होना चाहिए, उसके विरुद्ध प्रकार से।

पुं० १. सामने की या सीधे पक्ष की विरुद्ध दिशा में या पीछे रहनेवाला पक्ष। जैसे-छापे के कपड़े का उलटा या सिक्के का उलटा। (रिवर्स) २. बेसन से बननेवाला एक पकवान। चिलड़ा। चिल्ला।

उलटाना-स० हिं० 'उलटना' का स०। * अ० दे० 'उलटना'।

उलटा-पुलटा-वि० [हिं० उलटा+पलटना] इधर का उधर। अंडबंड।

उलटा-पुलटी-स्त्री० [हिं० उलटना] फेर-फार। अदल-बदल।

उलटाव-पुं० [हिं० उलटना] १. उलटने की क्रिया या भाव। (रिवर्सल) २. पलटाव। फेर।

उलटी-स्त्री० [हिं० उलटना] १. वमन। कै। २. कलैया। कलाबाजी।

उलटे-क्रि० वि० [हिं० उलटा] १. विरुद्ध या विपरीत क्रम से। २. विपरीत व्यवस्था से। विरुद्ध न्याय से।

उलथना*-अ० [सं० उद्=नहीं+स्थल=जमना] ऊपर-नीचे होना। उथल-पुथल होना। उलटना।

स० ऊपर-नीचे करना। उलटना-पलटना।

उलथा-पुं० [हिं० उलथना] १. नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना। २. कलाबाजी। कलैया।

पुं० दे० 'उल्था'।

उलदना*-स० [हिं० उलटना] [भाव० उलद] उँडेलना। उलटना। ढालना। अ० खूब बरसना।

उलमना*-अ० [सं० अवलम्बन] लटकना। झुकना।

उलारना*-अ० [सं० उल्ललन] १. उछलना। २. नीचे-ऊपर होना। ३. झपटना।

उलसना*-अ० [सं० उल्लसन] १. शोभित होना। सोहना। २. उल्लसित होना। प्रसन्न होना। हुलसना।

उलहना*-अ० [सं० उल्लंभन] १.

उभड़ना। निकलना। प्रस्फुटित होना। २. प्रसन्न होना। हुलसना।
पुं० दे० 'उलाहना'।

उलही*-स्त्री० दे० 'उलाहना'।

उलार-वि० [हिं० ओलरना=लेटना] जो बोझ के कारण पीछे की ओर झुका हो। (गाड़ी)

उलारना*-स० दे० 'उछालना'।

उलाह-पुं० दे० 'उल्लास'।

उलाहना-पुं० [सं० उपालंभन] १. किसी की भूल या अपराध उसे दुःखपूर्वक जताना। शिकायत। २. किसी के दोष या अपराध को उससे संबंध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना। शिकायत।
*स० १. उलाहना देना। २ दोष देना। निन्दा करना।

उलीचना-स० [सं० उल्लुंचन] हाथ या बरतन से पानी उछालकर फेंकना।

उलूक-पुं० [सं०] १ उल्लू नामक पक्षी। २. इन्द्र। ३. कणाद मुनि का एक नाम। यौ०-उलूक दर्शन=वैशेषिक दर्शन।
पुं० [सं० उल्का] लुक। लौ।

उलूखल-पुं० [सं०] १ ओखली। ऊखल। २. खल। खरल।

उलेड़ना*-स० दे० 'उँडेलना'।

उलेल*-स्त्री० [हिं० कुलेल] १ उमंग। जोश। २. उछल-कूद। ३. बाढ़।
वि० १. बे-परवाह। २ अल्हड़।

उल्का-स्त्री० [सं०] १. प्रकाश। तेज। २. जलती लकड़ी। लुक। ३ मशाल। ४. दीआ। दीपक। ५. एक प्रकार के चमकीले पिंड जो कभी कभी रात को आकाश में इधर से उधर जाते या पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई देते हैं।

उल्कापात-पुं० [सं०] आकाश से पृथ्वी पर उल्का गिरना। तारा टूटना।

उल्था-पुं० [हिं० उलथना] भाषान्तर। अनुवाद। तरजुमा।

उल्लंघन-पुं० [सं०] १. लाँघना। डाँकना। २. अतिक्रमण। ३. न मानना।

उल्लसन-पुं० [सं०] [वि० उल्लसित, उल्लासी] १. हर्ष करना। खुशी मनाना। २. रोमांच।

उल्लसित-वि० [सं०] [स्त्री० उल्लसिता] १. उल्लास या हर्ष से भरा हुआ। प्रसन्न। २. जिसे रोमांच हुआ हो। रोमांचित।

उल्लास-पुं० [सं०] [वि० उल्लासक, उल्लसित] १. प्रकाश। चमक। २. आनन्द। प्रसन्नता। ३. ग्रन्थ का भाग। अध्याय। पर्व। ४. एक अलंकार जिसमें एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या दोष का होना बतलाया जाता है।

उल्लासना*-स० [सं० उल्लासन] १. प्रकट करना। २. प्रसन्न करना।

उल्लिखित-वि० [सं०] १ जिसका ऊपर या पहले उल्लेख हुआ हो। पूर्वोक्त। पूर्व-कथित। २ जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो। कहा हुआ। कथित।

उल्लू-पुं० [सं० उलूक] १. दिन में न देखनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी। खूसट। मुहा०-कहीं उल्लू बोलना=उजाड़ होना। २. बेवकूफ। मूर्ख।

उल्लेख-पुं० [सं०] [वि० उल्लेखनीय] १. लिखना। लेख। २. वर्णन। बयान। ३. चर्चा। जिक्र। ४. चित्र खींचना। ५. एक काव्यालंकार जिसमें एक ही वस्तु के अनेक रूपों में दिखाई पड़ने का वर्णन होता है।

उल्लेखनीय-वि० [सं०] लिखने के योग्य। उल्लेख करने के योग्य।

उल्व-पुं० [सं०] १. वह झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ पैदा होता है। आँवल। २. गर्भाशय।

उवना*-अ० दे० 'उगना'।

उशीर-पुं० [सं०] गाँडर की जड़। खस।

उषा-स्त्री० [सं०] १ प्रभात। तड़का। ब्राह्म वेला। २. अरुणोदय की लाली। ३.बाणासुर की कन्या, अनिरुद्ध की पत्नी।

उषा-काल-पुं० [सं०] प्रभात।

उष्ट्र-पुं० [सं०] ऊँट।

उष्ण-वि० [सं०] [भाव० उष्णता] १. तासीर में गरम। २ फुरतीला। तेज।

उष्ण कटिबंध-पुं० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है।

उष्णता-स्त्री० [सं०] गरमी। ताप।

उष्णीष-पुं० [सं०] १ पगड़ी। साफा। २. मुकुट। ताज।

उष्म-पुं० [सं०] १. गरमी। ताप। २. धूप। ३ गरमी की ऋतु।

उष्मज-पुं० [सं०] छोटे कीड़े जो पसीने और मैल आदि से पैदा होते हैं। जैसे-खटमल, मच्छर आदि।

उष्मा-स्त्री० [सं०] १. गरमी। २. धूप। ३. गुस्सा। क्रोध।

उस-सर्व० उभ० [हिं० वह] 'वह' शब्द का वह रूप जो विभक्ति लगने पर उसे प्राप्त होता है। जैसे-उसने।

उसकन-पुं० [सं० उत्कर्षण] वह घास-पात जिससे बरतन माँजते हैं।

उसकाना-स० दे० 'उकसाना'।

उसनना-स० दे० 'उबालना'।

उसरना*-अ० [सं० उद्+सरण=जाना] १. हटना। दूर होना। २. बीतना। गुजरना। ३. भूलना। विस्मृत होना।

उससना*-स० [सं० उत्+सरण] खिसकना। टलना।

स० [हिं० उसास] सांस लेना।

उसाँस-पुं० [सं० उत्+श्वास] १ ऊपर को खींचा हुआ लम्बा साँस। ठंढा सांस। श्वास।

उसार-पुं० [सं० अवसार=फैलाव] विस्तार। फैलाव।

उसारना*-स० [हिं० उसार] १. उखाड़ना। २ हटाना। टालना। ३. बनाकर खड़ा करना।

उसारा-पुं० [हिं० उसार] [स्त्री० उसारी] १ दलान। २. छाजन।

उसालना*-स० [सं० उत्+सारण] १. उखाड़ना। २ टालना। ३. भगाना।

उसास-पुं० दे० 'उसांस'।

उसूल-पुं० [अ०] सिद्धान्त।

उस्तरा-पुं० [फा०] बाल मूँड़ने का छुरा।

उस्ताद-पु० [फा०] [स्त्री० उस्तानी] गुरु। शिक्षक। अध्यापक।

वि० १. चालाक। धूर्त। २.निपुण। दक्ष।

उस्तादी-स्त्री० [फा०] १. शिक्षक की वृत्ति। गुरुआई। २. दक्षता। निपुणता। ३. विज्ञता। ४. चालाकी। धूर्तता।

उस्तानी-स्त्री० [फा० उस्ताद] १ उस्ताद की स्त्री। गुरु-पत्नी। २ वह स्त्री जो शिक्षा दे। शिक्षिका।

उस्वास*-पुं० दे० 'उसांस'।

उहटना*-अ० दे० 'हटना'।

उहाँ*-क्रि० वि० दे० 'वहां'।

उहै*-सर्व० दे० 'वही'।

ऊ

ऊ-संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का छठा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। कहीं कहीं अव्यय के रूप में यह 'भी' और सर्वनाम के रूप में 'वह' का अर्थ देता है।

ऊँघ-स्त्री० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] उँघाई। झपकी। अर्द्ध-निद्रा।

ऊँघना-अ० [सं० अवाङ्=नीचे मुँह] झपकी लेना। नींद में झूमना।

ऊँच*†-वि० दे० 'ऊँचा'।

यौ०-ऊँच-नीच=१. छोटी जाति का और बड़ी जाति का। २. हानि और लाभ। भला और बुरा।

ऊँचा-वि० [सं० उच्च] [स्त्री० ऊँची] १. दूर तक ऊपर की ओर गया हुआ। उठा हुआ। उन्नत।

मुहा०-ऊँचा-नीचा-१. ऊबड़-खाबड़। जो सम-तल न हो। २. भला-बुरा। हानि-लाभ।

२. जिसका सिरा बहुत नीचे तक न हो। जिसका लटकाव कम हो। जैसे-ऊँचा पाजामा। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। महान्।

मुहा०-ऊँचा-नीचा या ऊँची-नीची सुनाना=खोटी-खरी सुनाना। भला-बुरा कहना।

४. जोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)

मुहा०-ऊँचा सुनना=केवल जोर की आवाज़ सुनना। कम सुनना।

ऊँचाई-स्त्री० [हिं० ऊँचा+ई (प्रत्य०)] १. ऊपर की ओर का विस्तार। उठान। उच्चता। २. गौरव। बड़ाई।

ऊँचे-क्रि० वि० [हिं० ऊँचा] १. ऊँचे पर। ऊपर की ओर। २. जोर से (शब्द करना)।

मुहा०-ऊँचे-नीचे पैर पड़ना=बुरे काम में प्रवृत्त होना।

ऊँट-पुं० [सं० उष्ट्र, पा० उट्ट] [स्त्री० ऊँटनी] एक प्रसिद्ध ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ लादने के काम में आता है।

ऊँड़ा*-पुं० [सं० कुंड] १. वह बरतन जिसमे धन रखकर भूमि में गाड़ देते हैं। २. चहबच्चा। तहखाना।

वि० गहरा। गम्भीर।

ऊँदर*-पुं० [स० इंदुर] चूहा।

ऊँहूँ-अव्य० [अनु०] १. नाहीं। २. कभी नहीं। कदापि नहीं। (उत्तर में)

ऊअना*-अ० दे० 'उगना'।

ऊक*-पुं० [सं० उल्का] १. दे० 'उल्का'। २. दाह। जलन। ताप।

स्त्री० [हिं० चूक का अनु०] भूल। चूक। गलती।

ऊकना*-अ० [हिं० चूकना का अनु०] १. वार खाली जाना। लक्ष्य पर न पहुँचना। २. भूल करना। गलती करना।

स० १. भूल जाना। २. उपेक्षा करना।

स० [हिं० ऊक] १. जलाना। २. सताना।

ऊख-पुं० [सं० इक्षु] ईख। गन्ना।

*वि० [सं० उष्ण] तपा हुआ। गरम।

ऊखम*-पुं० दे० 'ऊष्म'।

ऊखल-पुं० [सं० उलूखल] काठ या पत्थर का वह गहरा बरतन जिसमें धान आदि मूसल से कूटते है। ओखली।

मुहा०-ऊखल में सिर देना=झंझट या जोखिम के काम मे पड़ना।

ऊज*-पुं० [सं० उद्धन] १. उपद्रव। ऊधम। २. अंधेर।

ऊजड़-वि० दे० 'उजाड़'।

ऊजर*-वि० १. दे० 'उजला'। २. दे० 'उजाड़'।

ऊटक नाटक-पुं० [सं० उत्कट+नाटक] १. व्यर्थ का काम। २. इधर-उधर का साधारण काम।

ऊटना*-अ० [हिं०औटना] १. उत्साहित होना। उमंग में आना। २. तर्क-वितर्क या सोच-विचार करना।

ऊट-पटाँग-वि० [हिं० ऊँट+पर+टाँग] १. अटपट। टेढ़ा-मेढ़ा। बेढंगा। बेमेल। २. निरर्थक। व्यर्थ। वाहियात।

ऊढ़ना*-स० [सं० ऊढ] विवाह करना।

ऊड़ा-पुं० [सं० ऊन] १. कमी। टोटा। घाटा। २. मँहगी। ३. अकाल। ४. नाश। लोप।

ऊढ़ना*-अ० [सं० ऊह] तर्क-वितर्क करना; सोच-विचार करना।

अ० [सं० ऊढ] विवाह करना।

ऊढ़ा-स्त्री० [सं०] १. विवाहित स्त्री। २. वह ब्याही हुई स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करे।

ऊत-वि० [सं० अपुत्र] १. बिना पुत्र का। निःसंतान। निपूता। २. उजड्ड।

ऊतर*-पुं० १. दे० 'उत्तर'। २. दे० 'बहाना'।

ऊतला*-वि० [हिं० उतावला] १. चंचल। चपल। २. बेगवान। तेज।

ऊद-पुं० [अ०] अगर का पेड़ या लकड़ा। पुं० [सं० उद्] ऊदबिलाव।

ऊद-बत्ती-स्त्री० [अ० ऊद+हिं० बत्ती] अगर की बत्ती जो सुगंध के लिए जलाते हैं। अगर-बत्ती।

ऊद-बिलाव-पुं० [सं० उद्+बिडाल] नेवले की तरह का एक जन्तु जो जल और स्थल दोनों में रहता है।

ऊदल-पुं० [उदयसिंह का संक्षिप्त रूप] महोबे के राजा परमाल के मुख्य सामन्तों में से एक वीर।

ऊदा-वि० [अ० ऊद अथवा फा० कबूद] लाली लिये हुए काले रंग का। बैंगनी।

ऊधम-पुं० [सं० उद्धम] उपद्रव। उत्पात।

ऊधमी-वि० [हिं० ऊधम] [स्त्री० ऊधमिन] ऊधम करनेवाला। उत्पाती।

ऊधो-पुं० दे० 'उद्धव'।

ऊन-पुं० [सं० ऊर्ण] भेड़, बकरी आदि के रोएँ जिनसे कम्बल और दूसरे गरम कपड़े बनते हैं।

वि० [सं०] [भाव० ऊनता] १. कम। थोड़ा। २ तुच्छ।

पुं० स्त्रियों के व्यवहार के लिए एक प्रकार की छोटी तलवार।

ऊना-वि० [सं० ऊन] १. कम। न्यून। थोड़ा। २. तुच्छ। हीन।

पुं० खेद। दुःख। रंज।

ऊनी*-वि० [सं० ऊन] कम। न्यून।

स्त्री० १. कमी। न्यूनता। २. उदासी।

वि० [हिं० ऊन] ऊन का बना हुआ।

स्त्री० दे० 'ओप'।

ऊप*-स्त्री० दे० 'ओप'।

ऊपर-क्रि० वि० [सं० उपरि] [वि० ऊपरी] १. ऊँचे स्थान में। ऊँचाई पर। २. आधार पर। सहारे पर। ३. ऊँची श्रेणी में। उच्च कोटि में। ४. (लेख में) पहले। ५. अधिक। ज्यादा। ६. प्रकट में। देखने में। ७. तट पर। किनारे पर। ८ अतिरिक्त। सिवा।

मुहा०-**ऊपर ऊपर**=बिना और किसी के जताये। चुपके से। **ऊपर की आमदनी**=इधर-उधर से मिलनेवाली

रक्रम। ऊपर-तले के=वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहन न हुई हो। ऊपर लेना=(किसी कार्य का) जिम्मा लेना। हाथ में लेना। ऊपर से=१. ऊँचाई से। २. इसके अतिरिक्त। इसके सिवा। ३. वेतन से अधिक। (घूस या रिश्वत के रूप में) ४. दिखाने के लिए। ऊपर से देखने पर = जो रूप दिखाई देता हो, उसके विचार से। (प्राइमा फेसी)

ऊपरी-वि० [हिं० ऊपर] १. ऊपर का। २. बाहर का। बाहरी। ३. बँधे हुए के सिवा। ४. दिखौआ। नुमाइशी।

ऊब-स्त्री० [हिं० ऊबना] ऊबने की क्रिया या भाव। व्याकुलता। उद्वेग। घबराहट। स्त्री० [हिं० उभ] उत्साह। उमंग।

ऊबट*-वि० दे० 'ऊबड़-खाबड़'। पुं० कठिन या विकट मार्ग।

ऊबड़-खाबड़-वि० [अनु०] ऊँचा-नीचा। जो सम-तल न हो। अटपट।

ऊबना-अ० [सं० उद्वेजन] उकताना। घबराना। अकुलाना।

ऊबर¹-पुं० [हिं० उबरना] उबरने की क्रिया या भाव। वि० किसी चीज़ के अन्दर भरे जाने पर बचा या निकला हुआ। अवशिष्ट।

ऊभ*-वि० [हिं० ऊभना] उभरा हुआ। स्त्री० [हिं० ऊब] १. व्याकुलता। २. उमस। गरमी। ३ हौसला। उमंग।

ऊभना*-अ० दे० 'उठना'।

ऊमक*-स्त्री० [सं० उमंग] झोंक। वेग।

ऊमना*-अ० दे० 'उमड़ना'।

ऊरध*-वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

ऊरु-पुं० [सं०] जानु। जाँघ।

ऊरुस्तंभ-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।

ऊर्ज-वि० [सं०] बलवान्। शक्तिमान्। पुं० [सं०] [वि० ऊर्जस्वल, ऊर्जस्वी] १. बल। शक्ति। २. एक काव्यालंकार जिसमें सहायकों के घटने पर भी अहंकार न टूटने का वर्णन होता है।

ऊर्जस्वित-वि० [सं०] चढ़ा हुआ।

ऊर्जस्वी-वि० [सं०] १. बलवान्। शक्तिमान्। २. तेजवान। ३. प्रतापी।

ऊर्जित-वि० दे० 'ऊर्ज'।

ऊर्ण-पुं० दे० 'ऊन'।

ऊर्ध्व-क्रि० वि० [सं०] ऊपर। वि० १. ऊँचा। २ खड़ा।

ऊर्ध्वगामी-वि० [सं०] १. ऊपर की ओर जानेवाला। २. मुक्त।

ऊर्ध्व मंडल-पुं० [सं०] वायु-मंडल का वह भाग जो अधोमंडल से ऊपर है और पृथ्वी-तल से २० मील की ऊँचाई तक माना जाता है। इसमें ताप-क्रम स्थिर रहता है।

ऊर्ध्व लोक-पुं० [सं०] आकाश।

ऊर्ध्व श्वास-पुं० [सं०] १. ऊपर चढ़ता हुआ साँस। (मरने या दम फूलने के समय)

ऊर्ध-क्रि० वि०, वि० दे० 'ऊर्ध्व'।

ऊर्मि-स्त्री० [सं०] [वि० ऊर्मिल] १ लहर। तरंग। २. पीड़ा। दुःख।

ऊर्मिल-वि० [सं०] जिसमें लहरें उठती हों। तरंगित।

ऊल-जलूल-वि० [देश०] १. असंबद्ध। बे-सिर पैर का। अंडबंड। २. वाहियात।

ऊलना*-अ० [हिं० उछलना] १. उछलना। २. प्रसन्न होना।

ऊषा-स्त्री० [सं०] पौ फटने की लाली। अरुणोदय।

ऊषा काल-पुं० [सं०] सवेरा।

ऊष्म-पुं० [सं०] १. गरमी २. भाप । वि० गरम ।

ऊष्म वर्ण-पुं० [सं०] श, ष, स और ह अक्षर ।

ऊसर-पुं० [सं० ऊषर] वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और जो खेती के योग्य न हो ।

ऊह-पुं० [सं०] १. अनुमान । २. तर्क ।

ऊहापोह-पुं० [सं० ऊह+अपोह] मन में होनेवाला तर्क-वितर्क । सोच-विचार ।

ऋ

ऋ-हिन्दी वर्ण-माला का सातवां वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है ।

ऋक्-स्त्री० [सं०] वेदों की ऋचा । पुं० दे० 'ऋग्वेद' ।

ऋक्ष-पुं० [सं०] [स्त्री० ऋक्षी] १. रीछ । भालू । २. तारा । नक्षत्र ।

ऋक्षपति-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा । २. जांबवान् ।

ऋग्वेद-पुं० [सं०] चार वेदों में से एक, जो पद्य मे है ।

ऋचा-स्त्री० [सं०] १. वह वेद-मंत्र जो पद्य में हो । २. स्तोत्र ।

ऋजु-वि० [सं०] [भाव० ऋजुता] १. जो टेढ़ा न हो । सीधा । २. सरल । सुगम । सहज । ३. सरल चित्त का । सजन । ४. अनुकूल । प्रसन्न ।

ऋण-पुं० [सं०] [वि० ऋणी] १. कुछ समय के लिए द्रव्य लेना । कर्ज़ । उधार । मुहा०-ऋण उतरना=कर्ज़ अदा होना। ऋण पटाना=उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना ।
२. किसी को किसी काम के लिए दिया हुआ धन । जैसे-अप्रतिदेय ऋण । (परमनेन्ट ऐडवान्स)

ऋण-ग्राही-पुं० [सं०] वह जिसने किसी से ऋण लिया हो । (बॉरोवर)

ऋणपत्र-पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसके आधार पर कोई किसी से ऋण लेता है । २. वह पत्र जिसके आधार पर कोई संस्था जन-साधारण से ऋण लेती है । (डिबेन्चर)

ऋणी-वि० [सं० ऋणिन्] १. जिसने ऋण लिया हो । कर्ज लेनेवाला । अधमर्ण । (डेटर) । २. किसी के उपकार से दबा हुआ । अनुगृहीत ।

ऋतु-स्त्री० [सं०] १. प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो दो महीनों के छः विभाग जो ये है—वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त और शिशिर । २. रजोदर्शन के उपरान्त वह काल जिसमे स्त्रियां गर्भ-धारण के योग्य होती है ।

ऋतुचर्या-स्त्री० [सं०] ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार रखना ।

ऋतुमती-वि० स्त्री० [सं०] १. रजस्वला । २. जिस (स्त्री) के रजोदर्शन के उपरान्त १६ दिन न बीते हों और जो गर्भाधान के योग्य हो ।

ऋतुराज-पुं० [सं०] वसन्त ऋतु ।

ऋतु-स्नान-पुं० [सं०] [वि० स्त्री० ऋतुस्नाता] रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान ।

ऋत्विज-पुं० [सं०] वह जिसका यज्ञ में वरण किया जाय । इनकी संख्या १६ होती है जिनमें होता, अध्वर्यु, उद्गाता

और ब्रह्मा मुख्य हैं।

ऋद्ध-वि० [सं०] सम्पन्न। समृद्ध।

ऋद्धि-स्त्री० [सं०] १. एक लता जिसका कन्द दवा के काम में आता है। २. समृद्धि। बढ़ती।

ऋद्धि-सिद्धि-स्त्री० [सं०] समृद्धि और सफलता। (गणेश जी की दासियाँ)

ऋषभ-पुं० [सं०] १. बैल। २. श्रेष्ठता-वाचक शब्द। ३. संगीत के सात स्वरों में से दूसरा।

ऋषि-पुं० [सं०] [भाव० ऋषिता, ऋषित्व] १. वेद-मंत्रों का प्रकाश करनेवाला। मंत्र-द्रष्टा। २. आध्यात्मिक और भौतिक तत्वों का ज्ञाता।

ऋषि-ऋण-पुं० [सं०] ऋषियों के प्रति कर्तव्य जो वेदों का पठन-पाठन है।

ए

ए-संस्कृत वर्ण-माला का ग्यारहवां और नागरी वर्ण-माला का आठवां स्वर-वर्ण जो अ और इ के योग से बना है।

ऍच-पॅच-पुं० [फा० पेच] १. उलझन। २. दे० 'दाँव-पेच'।

एंजन-पुं० दे० 'इंजन'।

एंड़ा-बेंड़ा-वि० [हिं० बेड़ा] उलटा-पुलटा। अंड-बंड।

एकंगा-वि० [हिं० एक+अंग] [स्त्री० एकंगी] एक पक्ष का। एक-तरफा।

एकंत*-वि० दे० 'एकांत'।

एक-वि० [सं०] १. एकाइयों में सबसे छोटी और पहली पूरी संख्या।

मुहा०-एक अंक या आँक=१. ध्रुव या पक्की बात। २. एक बार। एक-आध= थोड़ा। कुछ। एक आँख से देखना=सबके साथ समान भाव रखना। एक एक=१. हर एक। प्रत्येक। २. अलग अलग। एक एक करके=धीरे धीरे। एक टक=१. अनिमेष या स्थिर दृष्टि से। २. लगातार देखते हुए। एक-तार=१. एक ही रूप-रंग का। समान। २. लगातार। एक तो=पहले तो। पहली बात तो यह है कि। एक-दम=१. बिना रुके। लगातार। २. तुरन्त। उसी समय। ३. एक-बारगी। एक दूसरे का, को, पर, में या से=परस्पर। एक न चलना =कोई युक्ति काम न आना। एक बात= १. दृढ़ प्रतिज्ञा। २. ठीक या सच्ची बात। एक-सा=समान। बराबर। एक-से-एक=एक से एक बढ़कर।

२. अद्वितीय। बे-जोड़। ३. कोई अनिश्चित। ४. समान। तुल्य।

एकक-वि० [सं० एक] एक से संबंध रखनेवाला। जिसमें एक ही हो। (सोल)

एकक शारीरक-पुं० [सं०] वह शारीरक (संस्था) जो एक ही व्यक्ति से सम्बन्ध रखती हो। जैसे-राजा एकक शारीरक है। (कॉरपोरेशन सोल)

एक-चक्र-पुं० [सं०] १. सूर्य्य का रथ। २. सूर्य्य।

वि० चक्रवर्त्ती।

एक-छत्र-वि० [सं०] जिसमें कहीं और किसी का प्रभुत्व या अधिकार न हो। जैसे एक-छत्र राज्य। (एबसोल्यूट मॉनर्की)

क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।

पुं० [सं०] वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार केवल

एक (राजा या अधिनायक) को प्राप्त हो।

एकज*-वि० [सं० एक+एव] एक ही।

एकड़-पुं० [अं०] भूमि की एक नाप जो डेढ़ बीघे से कुछ बड़ी होती है।

एकतंत्र-पुं०, वि० दे० 'एक-छत्र'।

एकतः-क्रि० वि० [सं०] एक ओर से।

एकत*-क्रि० वि० दे० 'एकत्र'।

एक-तरफा-वि० [फा०] १ एक ओर का। एक पक्ष का।

मुहा०-एक-तरफा डिगरी=वह डिगरी जो मुद्दालेह के हाजिर न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो।

२. जिसमें पक्षपात हुआ हो। ३. एक-रुखा। एक पार्श्व का।

एकता-स्त्री० [सं०] १ सब के मिल-कर एक होने का भाव। ऐक्य। मेल। २. समानता। बराबरी।

वि० [फा०] अद्वितीय। बे-जोड़।

एक-तान-वि० [सं०] १. तन्मय। लीन। एकाग्र-चित्त। २. मिलकर एक।

एक-तारा-पुं० [हिं० एक+तार] एक तार का सितार या बाजा।

एक-तारी-स्त्री० [हिं० एक+तार] छाती पर पहनी जानेवाली एक तार की जाली। (आभूषण)

एकत्र-क्रि० वि० [सं०] इकट्ठा किया या एक जगह लाया हुआ।

एकत्रित-वि० दे० 'एकत्र'।

एकत्व-पुं० [सं०] १. एकता। २. एक ही तरह का या बिलकुल एक-सा होना। पूरी समानता।

एकदंत-पुं० [सं०] गणेश।

एक-देशीय-वि० [सं०] जो एक ही अवसर या स्थल के लिए हो। जो सर्वत्र न घटे।

एकानिष्ठ-वि० [सं०] एक ही पर निष्ठा या श्रद्धा रखनेवाला।

एक-पक्षीय-वि० [सं०] एक-तरफ़ा।

एक-पत्नी-व्रत-पुं० [सं०] एक को छोड़-कर दूसरी स्त्री से विवाह या प्रेम-संबंध न रखने का नियम।

एक-बारगी-क्रि० वि० [फा०] १. एक बार में। एक समय में। २. अचानक। अकस्मात्। ३ बिलकुल। निपट।

एक-मत-वि० [सं०] एक या समान मत रखनेवाले। एक राय के।

एक-रंग-वि० [हिं० एक+रंग] १. समान। तुल्य। २. कपट-शून्य। ३ जो सब तरह से एक-सा हो।

एक-रदन-पुं० [सं०] गणेश।

एक-रस-वि० [सं०] आदि से अन्त तक एक-सा।

एक-राजतंत्र-पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें एक राजा कुछ मंत्रियों की सहायता से सारे राज्य का शासन करता हो। एक राजा का राज्य।

एक-रूप-वि० दे० 'एक-रस'।

एकल*-वि० [हिं० एक] १. अकेला। २. अनुपम। बे-जोड़।

एक-लिंग-पुं० [सं०] १. शिव का एक नाम। २. एक शिव-लिंग जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के कुल-देवता हैं।

एकलौता-वि० दे० 'इकलौता'।

एक-वचन-पुं० [सं०] व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता है।

एकवाँज-स्त्री० [हिं० एक+बाँझ] वह स्त्री जिसे एक बच्चे के सिवा दूसरा बच्चा न हो। काक-बंध्या।

एक-वाक्यता-स्त्री० [सं०] कुछ लोगों का कथन या मत एक ही होना।

ऐकमत्य।

एक-वेणी-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो अपने सब बालों की एक ही लट या वेणी बनाकर रखे। (वियोगिनी या विधवा का लक्षण)

एकसर*।-वि० [हिं० एक+सर (प्रत्य०)] एक पल्ले या परत का।

वि० [फा०] बिलकुल। तमाम। सारा।

एक-सॉ-वि० [फा०] तुल्य। समान।

एक-हत्था-वि० [हिं० एक+हाथ] (काम या व्यवसाय) जो एक ही के हाथ में हो।

एकहरा-वि० [सं० एक+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० एकहरी] १. एक परत का। जैसे-एकहरा कुरता। २. एक लड़ी का।

यौ०-एकहरा बदन = दुबला-पतला शरीर।

एकांकी-पु० [सं०] १. दस प्रकार के रूपकों में से एक। इसमें ऐसे प्रसिद्ध नायक का चरित्र होता है, जिसका आख्यान रसयुक्त हो। इसकी भाषा सरल और वाक्य छोटे होने चाहिऐं। २. वह नाटक जो एक ही अंक में समाप्त हो।

एकांगी-वि० [सं०] १ एक अंगवाला। २. एक-तरफा। ३. हठी। जिद्दी।

एकांत-वि० [सं०] १. अत्यन्त। बिलकुल। २. अलग। ३. अकेला। ४. निर्जन। सूना।

पु० [सं०] निर्जन या सूना स्थान।

एकांत-वास-पुं० [सं०] [वि० एकांतवासी] निर्जन स्थान या अकेले में रहना।

एकांतिक-वि० दे० 'एक-देशीय'।

एका-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

पुं० [सं० एक] बहुत-से लोगों के मिलकर एक होने का भाव। एकता।

एकाई-स्त्री० [हिं० एक+आई (प्रत्य०)] १. एक का भाव या मान। २. वह मात्रा जिसके गुणन या विभाग से दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाता है। (यूनिट) विशेष दे० 'मात्रक'। ३. अंकों की गिनती में पहला अंक या उसका स्थान।

एकाएक-क्रि० वि० [हिं० एक] अकस्मात्। अचानक। सहसा।

एकाएकी*-क्रि० वि० दे० 'एकाएक'।

वि० [सं० एकाकी] अकेला।

एकाकार-पुं० [सं०] किसी के साथ मिल-मिलाकर एक होने की दशा।

वि० १. एक-से आकार का। समान। २. जो किसी में मिलकर उसी के आकार का हो गया हो।

एकाकी-वि० [सं० एकाकिन्] [स्त्री० एकाकिनी] अकेला।

एकाकीपन-पुं० [सं० एकाकी] अकेलापन।

एकाक्ष-वि० [सं०] जिसकी एक ही आँख हो। काना।

पुं० १. कौआ। २. शुक्राचार्य।

एकाक्षरी-वि० [सं० एकाक्षरिन्] १. जिसमें एक ही अक्षर हो। २. एक अक्षर से संबंध रखनेवाला।

एकाग्र-वि० [सं०] [संज्ञा एकाग्रता] १. एक रूप में स्थिर। चंचलता-रहित। २. जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकाग्र-चित्त-वि० [सं०] जिसका ध्यान किसी एक बात या विचार में लगा हो।

एकात्मता-स्त्री० [सं०] १. एकता। अभेद। २ मिल-मिलाकर एक होना।

एकात्म वाद-पुं० [सं०] [वि० एकात्मवादी] यह सिद्धान्त कि सारे संसार के प्राणियों और वस्तुओं में एक ही आत्मा व्याप्त है।

एकादश-वि० [सं०] ग्यारह ।

एकादशाह-पुं० [सं०] मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य । (हिन्दू)

एकादशी-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के शुक्ल और कृष्ण-पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जो व्रत का दिन माना जाता है ।

एकाधिकार-पुं० [सं०] किसी वस्तु कार्य या व्यापार आदि पर किसी एक व्यक्ति, दल या समाज का होनेवाला अधिकार । (मॉनोपोली)

एकाधिपत्य-पुं० [सं०] १. किसी कार्य या देश पर किसी एक व्यक्ति, दल या समाज का होनेवाला आधिपत्य । २. दे० 'एकाधिकार' ।

एकार्थक-वि० [सं०] १. जिसका एक ही अर्थ हो । २. जिनके अर्थ समान हों । समानार्थक ।

एकावली-स्त्री० [सं०] १ एक अलंकार जिसमें पूर्व का और पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाता है । २. एक लड़ का हार ।

एकाह-वि० [सं०] एक दिन में पूरा होनेवाला । जैसे-एकाह पाठ ।

एकीकरण-पुं० [सं०] [वि० एकीकृत] दो या अधिक वस्तुओं को मिलाकर एक करना । (एमल्गमेशन)

एकीभूत-वि० [सं०] १. मिला हुआ । मिश्रित । २. जो मिलकर एक हो गया हो ।

एकेंद्रिय-पुं० [सं०] वह जीव जिसके केवल एक इन्द्रिय अर्थात् त्वचा मात्र होती है । जैसे-जोंक, केंचुआ आदि ।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध)-पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो एक के उद्देश्य से किया जाय ।

एकौंझा*-वि० दे० 'अकेला' ।

एक्का-वि० [हिं० एक+का (प्रत्य०)] एक से संबंध रखनेवाला । २. अकेला । यौ०-**एक्का-दुक्का**=अकेला-दुकेला । पुं० १. वह पशु या पक्षी जो अकेला चरता या घूमता हो । २. एक प्रकार की दो पहियों की गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है । ३. वह वीर या सैनिक जो अकेला बड़े बड़े काम कर सकता हो।

एक्कावान-पुं० [हिं० एक्का+वान (प्रत्य०)] एक्का नाम की सवारी हाँकनेवाला ।

एक्की-स्त्री० [हिं० एक] १. वह बैल-गाड़ी जिसमे एक ही बैल जोता जाय । २. दे० एक्का' ।

एड़-स्त्री० [सं० एडुक] एड़ी ।
मुहा०-**एड़ करना**=१. एड़ लगाना । २.चलना । रवाना होना । **एड़ देना या लगाना**=१. लात मारना । २. घोड़े को आगे बढ़ाने के लिए एड़ से मारना । ३. उसकाना । उत्तेजित करना । ४. बाधा डालना ।

एड़ी-स्त्री० [सं० एडुक=हड्डी] पैर के नीचे का पिछला भाग ।
मुहा०-**एड़ी रगड़ना**=बहुत दिनों से क्लेश या बीमारी में पड़े रहना । **एड़ी से चोटी तक**=१. सिर से पैर तक । २. आदि से अन्त तक ।

एतद्-सर्व० [सं०] यह ।

एतदर्थ-क्रि० वि० [सं०] इसके लिए। वि० इसी काम के लिए बना हुआ । (एड हॉक) जैसे-एतदर्थ समिति ।

एतद्देशीय-वि० [सं०] इस देश का ।

एतबार-पुं० [अ०] विश्वास । प्रतीति ।

एतराज-पुं० [अ०] विरोध । आपत्ति ।

एतवार-पुं० [सं० आदित्यवार] शनिवार के बाद का दिन । रविवार ।

एता*-वि० [स्त्री० एती] दे० 'इतना'।
एतावता-क्रि० वि० [सं०] इसलिए।
एतिक-वि० स्त्री० [हिं० एती] इतनी।
एरंड-पुं० [सं०] रेंड़। रेंडी।
एराक-पुं० [अ०] [वि० एराकी] अरब का एक प्रदेश जहाँ का घोड़ा अच्छा होता है।
एराकी-वि० [फा०] एराक का। पुं० एराक देश का घोड़ा।
एलची-पुं० [तु०] १. दूत। २. राजदूत।
एला-स्त्री० [सं०] इलायची।
एवं-क्रि० वि० [सं०] ऐसे ही। इसी प्रकार।
अव्य० ऐसे ही और। और।
एव-अव्य० [सं०] १. एक निश्चयार्थक शब्द। ही। २. भी।
एवज-पुं० [अ०] १. प्रतिफल। प्रतिकार। २. परिवर्त्तन। बदला। ३. दूसरे की जगह पर कुछ दिनों तक के लिए काम करनेवाला। स्थानापन्न पुरुष।
एवजी-स्त्री० दे० 'एवज' ३।
एवमस्तु-अव्य० [सं०] ऐसा ही हो। (शुभाशीर्वाद)
एषण-पुं० [सं०] १. जाना। गमन। २ छान-बीन। अन्वेषण। ३ तलाश। खोज। ४. इच्छा। ५. लोहे का बाण।
एषणा-स्त्री० [सं०] इच्छा। अभिलाषा।
एह*-सर्व०, वि० दे० 'यह'।
एहतियात-स्त्री० [अ० इहतियात] १. बुरे या अनुचित काम से बचना। परहेज। २. रक्षा। बचाव। ३. सतर्कता। सावधानी।
एहसान-पुं० [अ०]कृतज्ञता। निहोरा।
एहसानमंद-वि० [अ०] [भाव० एहसानमन्दी] कृतज्ञ।
एहि*-सर्व० [हिं० एह] 'एह' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। इसको। इसे।

ऐ

ऐ-संस्कृत वर्ण-माला का बारहवाँ और देवनागरी वर्ण-माला का नवाँ स्वर वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है। अव्यय के रूप में इसका व्यवहार संबोधन के लिए होता है। जैसे-ऐ लड़के!
ऐं-अव्य० [अनु०] १. एक अव्यय जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी हुई बात फिर से जानने के लिए होता है। २. एक आश्चर्य-सूचक अव्यय।
ऐंचना-स० [हिं० खींचना] १. खींचना। २. दूसरे का कर्ज अपने जिम्मे लेना।
ऐंचा-ताना-वि० [हिं० ऐंचना+तानना] ताकने में जिसकी पुतली दूसरी ओर को खिंचती हो। भेंगा।
ऐंचा-तानी-स्त्री० दे० 'खींचा-खींची'।
ऐंछना*-स० [सं० उच्छन्=चुनना] १. झाड़ना। साफ करना। २. (बालों में) कंघी करना।
ऐंठ-स्त्री० [हिं० ऐंठन] १. ऐंठने की क्रिया या भाव। २. अकड़। ठसक। ३. गर्व। घमंड।
ऐंठन-स्त्री० [सं० आवेष्टन] १. ऐंठने की क्रिया या भाव। २. मरोड़। बल। ३. तनाव।
ऐंठना-स० [सं० आवेष्टन] १. घुमाव या बल देना। मरोड़ना। २. दबाव

डालकर या धोखा देकर लेना। फँसना।
अ० १. बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २ तनना। खिंचना। ३. मरना। ४. अकड़ दिखाना। घमंड करना।
ऐंड़-स्त्री० [हिं० ऐंठ] १. ऐंठ। गर्व। २. पानी का भँवर।
वि० निकम्मा। रद्दी।
ऐंड़दार-वि० [हिं० ऐंड़+फा० दार] १. ठसकवाला। घमंडी। २. बाँका-तिरछा।
ऐंड़ना-अ० [हिं० ऐंठना] १. ऐंठना। बल खाना। २. अँगड़ाई लेना। ३. इतराना। घमंड करना।
स० १. ऐंठना। बल देना। २. बदन तोड़ना। अँगड़ाई लेना।
ऐंड़-बैंड़*-वि० दे० 'अंड-बंड'।
ऐंड़ा-वि० [हिं० ऐंड़ना] [स्त्री० ऐंड़ी] ऐंठा हुआ। टेढ़ा।
मुहा०-अंग ऐंड़ा करना=ऐंठ दिखाना।
ऐंड़ाना-अ० [हिं० ऐंड़ना] १. अँगड़ाई लेना। २. इठलाना। ३. अकड़ दिखाना।
ऐंद्रजालिक-वि० [सं०] इन्द्रजाल के खेल करनेवाला। जादूगर।
ऐकमत्य-पुं० [सं०] किसी विषय में कुछ लोगों के एक-मत होने का भाव। मतैक्य।
ऐक्य-पुं० दे० 'एकता'।
ऐगुन*-पुं० दे० 'अवगुण'।
ऐच्छिक-वि० [सं०] १. जो अपनी इच्छा या पसन्द पर हो। २. अपनी इच्छा से किया हुआ। ३. इच्छा या पसन्द से लिया या दिया जानेवाला। ४. जिसे करना या न करना अपनी इच्छा पर हो। वैकल्पिक। (ऑप्शनल)
ऐंत*-वि० दे० 'इतना'।
ऐतिहासिक-वि० [सं०] [भाव० ऐतिहासिकता] १. इतिहास-सम्बन्धी। २. जो इतिहास में हो।
ऐतिह्य-पुं० [सं०] वह प्रमाण कि लोक में बहुत दिनों से ऐसा ही सुनते आये हैं।
ऐन-पुं० दे० 'अयन'।
वि० [अ०] १. ठीक। उपयुक्त। सटीक। २. बिलकुल। पूरा-पूरा।
ऐनक-स्त्री० [अ० ऐन=आँख] आँख में लगाने का चश्मा।
ऐपन-पुं० [सं० लेपन] हल्दी के साथ गीला पिसा हुआ चावल जिसमें देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं।
ऐब-पुं० [अ०][वि० ऐबी] १. दोष। २. अवगुण।
ऐबी-वि० [अ०] १. जिसमें ऐब हो। खोटा। बुरा। २. नटखट। दुष्ट। ३. विकलांग; विशेषतः काना।
ऐया-स्त्री० [सं० आर्या, प्रा० अज्जा] १. बड़ी-बूढ़ी स्त्री। २. दादी।
ऐयार-पुं० [अ०] [स्त्री० ऐयारा, भाव० ऐयारी] १. चालाक। धूर्त। धोखेबाज। २. वह जो भेस बदलकर विकट और विलक्षण कार्य करता हो।
ऐयाश-वि० [अ०] [संज्ञा ऐयाशी] १. बहुत ऐश या आराम करनेवाला। २. विषयी। लम्पट।
ऐरा-गैरा-वि० [अ० गैर] १. बेगाना। अजनबी (आदमी)। २. तुच्छ। हीन।
ऐरापति*-पुं० दे० 'ऐरावत'।
ऐरावत-पुं० [सं०] [स्त्री० ऐरावती] १. बिजली से चमकता हुआ बादल। २. इन्द्र-धनुष। ३. इन्द्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है।
ऐरावती-स्त्री० [सं०] १. ऐरावत हाथी

की हथिनी। २. बिजली। ३. रावी नदी।

ऐल-पुं० [सं०] इला का पुत्र, पुरूरवा।

पुं० [?] १. बाढ़। २. अधिकता। बहुतायत। ३. कोलाहल।

ऐश-पुं० [अ०] आराम। चैन। भोग-विलास।

ऐश्वर्य-पुं० [सं०] १. विभूति। धन-संपत्ति। २. अणिमा आदि सिद्धियाँ। ३. प्रभुत्व। आधिपत्य।

ऐश्वर्यवान्-वि० [सं०] [स्त्री० ऐश्वर्यवती] वैभवशाली। सम्पन्न।

ऐस*-वि० दे० 'ऐसा'।

ऐसा-वि० [सं० ईदृश] [स्त्री० ऐसी] इस प्रकार का। इस ढंग का।

मुहा०-ऐसा-वैसा=साधारण या तुच्छ।

ऐसे-क्रि० वि० [हिं० ऐसा] इस प्रकार।

ऐहिक-वि० [सं०] इस लोक से संबंध रखनेवाला। सांसारिक।

ओ

ओ-संस्कृत वर्ण-माला का तेरहवाँ और हिन्दी वर्ण-माला का दसवाँ स्वर-वर्ण, जिसका उच्चारण ओष्ठ और कंठ से होता है। अव्यय के रूप में यह सम्बोधन और आश्चर्य-सूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है।

ओं-अव्य० [अनु०] पर-ब्रह्म का वाचक शब्द। प्रणव मंत्र।

ओंइछना*-स० [सं० अंचन] निछावर करना।

ओंकना*-अ० [अनु०] हट या फिर जाना। (मन का)

अ० दे० 'ओकना'।

ओंकार-पुं० [सं०] परमात्मा का सूचक 'ओं' शब्द।

ओंठ-पुं० [सं० ओष्ठ, प्रा० ओट्ठ] मुँह के बाहर ऊपर नीचे उभरे हुए अंश जिनसे दाँत ढके रहते हैं। होंठ।

मुहा०-ओंठ चबाना=चुप रहकर केवल मुद्रा से बहुत क्रोध प्रकट करना। ओंठ चाटना=कोई वस्तु खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओंठों पर जीभ फेरना।

ओंड़ा*-वि० [सं० कुंड] गहरा।

पुं० १. गड्ढा। २. सेंध।

ओक-पुं० [सं०] १. घर। निवास-स्थान। २. आश्रय। ठिकाना।

स्त्री० [अनु०] मिचली। कै।

पुं० [हिं० बूक] अंजली।

ओकना-अ० [अनु०] १. कै करना। २. भैंस की तरह चिल्लाना।

ओकपात-पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. चन्द्रमा।

ओकाई-स्त्री० [हिं० ओकना] वमन। कै।

ओखली-स्त्री० दे० 'ऊखल'।

ओखा*-पुं० [सं० ओख] मिस। बहाना।

वि० १. रूखा-सूखा। २. कठिन। विकट। ३. जो शुद्ध या खालिस न हो। खोटा। 'चोखा' का उलटा। ४. झीना। विरल।

ओग*-पुं० [?] १. कर। २. चन्दा।

ओघ-पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २. घनत्व। घनापन। ३. बहाव। ४. धारा।

ओछा-वि० [सं० तुच्छ] [भाव० ओछा-पन] १. जो गम्भीर या उच्चाशय न हो। तुच्छ। क्षुद्र। छिछोरा। २. जो

गहरा न हो। छिछला। ३. हलका। जैसे-श्रोछा वार।

ओज-पुं० [सं०ओजस्] १.प्रताप। तेज। २.उजाला। प्रकाश। रोशनी। ३.कविता का वह गुण जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश उत्पन्न हो। ४.शरीर के अन्दर के रसों का सार भाग।

ओजना*-स० [सं० अवरुन्धन] अपने ऊपर लेना। सहना।

ओजस्विता-स्त्री० [सं०] तेज। कांति।

ओजस्वी-वि० [सं० ओजस्विन्] [स्त्री० ओजस्विनी] १.शक्तिशाली। २. प्रभावशाली। ३. तेजपूर्ण।

ओझर-पुं० [सं० उदर, हिं० ओझल] १. पेट की थैली। पेट। २. ऑंत।

ओझल-पुं० [सं० अवरुंधन] ओट। आड़।

ओझा-पुं० [सं० उपाध्याय] १. सरजूपारी और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। २. मैथिलों की उपाधि। ३.भूत-प्रेत झाड़नेवाला। सयाना।

ओझाई-स्त्री० [हिं० ओझा] ओझा की वृत्ति। भूत-प्रेत झाड़ने का काम।

ओट-स्त्री० [सं० उट=घास-फूस] १. ऐसी रोक जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े। व्यवधान। आड़। २. शरण। पनाह। रक्षा।

ओटना-स० [सं० आवर्त्तन] १. कपास को चरखी में रखकर रूई और बिनौले अलग करना। २. बराबर अपनी ही बात कहते जाना।

अ० [हिं० ओट] अपने ऊपर सहना।

ओटनी-स्त्री० [हिं० ओटना] कपास ओटने की चरखी। बेलनी।

ओठँगना-अ० दे० 'उठँगना'।

ओड़न*-पुं० [हिं० ओड़ना] १. वार रोकने की चीज़। २. ढाल। फरी।

ओड़ना-स० [हिं० ओट] १. रोकना। वारण करना। २. फैलाना। पसारना।

ओड़व-पुं० [सं०] वह राग जिसमें कोई पाँच स्वर ही लगें, कोई दो न लगें।

ओड़ा-पुं० [?] १. दे० 'ओंड़ा'। २. बड़ा टोकरा। खाँचा।

पुं० कमी। टोटा।

ओढ़ना-स० [सं० उपवेष्टन] १. शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना। २. अपने सिर लेना। अपने ऊपर या जिम्मे लेना।

पुं० ओढ़ने का वस्त्र। चादर।

ओढ़नी-स्त्री० [हिं० ओढ़ना] स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र। चादर।

ओन-स्त्री० [सं० अवधि] १. आराम। चैन। २. आलस्य। ३. किफ़ायत।

स्त्री० [हिं० आना] प्राप्ति। लाभ।

वि० [सं०] बुना हुआ।

ओत-प्रोत-वि० [सं०] बहुत मिला-जुला। इतना मिला हुआ कि उसका अलग करना असम्भव-सा हो।

पुं० ताना-बाना।

ओता*-वि० दे० 'उतना'।

ओदन-पुं० [सं०] पका हुआ चावल।

ओदर*-पुं० दे० 'उदर'।

ओंदरना-अ० [हिं० ओदारना] १. विदीर्ण होना। फटना। २. छिन्न-भिन्न या नष्ट होना।

ओदा-वि० दे० 'गीला'।

ओदारना-स० [सं० अवदारण] १. विदीर्ण करना। फाड़ना। २. छिन्न-भिन्न करना। नष्ट करना।

ओनंत*-वि० [सं० अनुनत] झुका

हुआ। नत।

ओना-पुं० [सं० उद्गमन] तालाब में से पानी निकलने का मार्ग। निकास।

ओनामासी-स्त्री० [सं० ॐ नमः सिद्धम्] १. पढ़ाई का आरम्भ। २.प्रारंभ। शुरू।

ओप-स्त्री० [हिं० ओपना] १. चमक। दीप्ति। आभा। कान्ति। २. शोभा। ३. जिला। (पॉलिश)

ओपची-पुं० [सं० ओप] कवचधारी योद्धा।

ओपना-स० [सं० आवपन] चमकाना। अ० चमकना।

ओपनि-स्त्री० दे० 'ओप'।

ओपनी-स्त्री० [हिं० ओपना] १. यशब या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं। बट्टी।

ओपित-वि० [हिं० ओप] १. चमकीला। २. सुन्दर।

ओर-स्त्री० [सं० अवार] १. किसी नियत स्थान के आस पास का विस्तार जिसे दाहिना, बायाँ, ऊपर, सामने आदि शब्दों से सूचित करते हैं। तरफ। दिशा। २ पक्ष।

पुं० १. सिरा। छोर। किनारा।

मुहा०-ओर निभाना=१. अन्त तक साथ देना।

२. आदि। आरम्भ।

ओरना*-अ० दे० 'ओराना'।

ओरमना*-अ० दे० 'लटकना'।

ओराना-अ० [हिं० ओर] समाप्त होना। स० समाप्त करना। खतम करना।

ओराहना-पुं० दे० 'उलाहना'।

ओरी-स्त्री० दे० 'ओलती'।

ओलंदेज-वि० [हॉलैंड देश] हॉलैंड देश सम्बन्धी। हॉलैंड देश का।

ओलंबा*-पुं० दे० 'उलाहना'।

ओल-पुं० [सं०] सूरन। जिमींकन्द। वि० [?] गीला। तर।

स्त्री० [सं० क्रोड] १. गोद। २. आड़। ओट। ३. शरण। पनाह। ४. किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरे के पास जमानत के रूप में तब तक रहना, जब तक कुछ रुपया न मिले या कोई शर्त पूरी न हो। (होस्टेज) ५. वह वस्तु या व्यक्ति जो इस प्रकार जमानत में रहे। ६. बहाना। मिस।

ओलती-स्त्री० [हिं० ओलमना] छप्पर का वह किनारा जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है। ओरी।

ओलना-स० [हिं० ओल] १. परदा करना। आड़ करना। २. रोकना। ३. ऊपर लेना। सहना।

स० [हिं० हूल] घुसाना।

ओला-पुं० [सं० उपल] १. वर्षा के गिरते हुए जल के जमे हुए गोले। पत्थर। बिनौरी। २. मिसरी का लड्डू।

वि० ओले के समान बहुत ठंडा।

पुं० [हिं० ओल] १. परदा। ओट। २. गुप्त बात। भेद। रहस्य।

ओलियाना*-स० [हिं० ओल=गोद] १. गोद में भरना। २. गिराकर ढेर लगाना।

स० [हिं० हूलना] घुसाना।

ओली-स्त्री० [हिं० ओल] १. गोद। २ अंचल। पल्ला।

मुहा०-ओली ओड़ना=आँचल फैलाकर कुछ माँगना।

ओषधि-स्त्री० [सं०] १. वह वनस्पति या जड़ी-बूटी जो दवा के काम आती है।

ओष्ठ-पुं० [सं०] होंठ। ओंठ।

ओष्ठ्य-वि० [सं०] १. ओंठ संबंधी। २. (वर्ण) जिसका उच्चारण ओंठ से हो। जैसे-उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

ओस-स्त्री० [सं० अवश्याय] हवा में मिली हुई भाप जो रात की सरदी से जम-कर कणों के रूप मे गिरती है। शबनम। मुहा०-**ओस पड़ना या पड़ जाना**= १. कुम्हलाना। रौनक न रह जाना। २. उमंग बुझ जाना।

ओसाना-स० [सं० आवर्षण] [भाव० ओसाई] दाँए हुए अनाज को हवा में उड़ाना जिससे भूसा अलग हो जाय। बरसाना। डाली देना।

ओह-अव्य० [अनु०] आश्चर्य, दुःख या बे-परवाही का सूचक शब्द।

ओहदा-पुं० [अ०] किसी विभाग में कार्यकर्त्ता का पद या स्थान।

ओहदेदार-पुं० दे० 'पदाधिकारी'।

ओहार-पुं० [सं० अवधार] रथ या पालकी के ऊपर आड़ करने का कपड़ा।

औ

औ-संस्कृत वर्ण-माला का चौदहवाँ और हिन्दी वर्ण-माला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ और ओ के संयोग से बना है। अव्यय के रूप में कविता मे यह 'और' का अर्थ देता है।

औंगना-स० [सं० अंजन] गाड़ी के पहियों की धुरी में तेल देना।

औंगा-वि० [भाव० औंगी] दे० 'गूँगा'।

औंघना'-अ० दे० 'ऊँघना'।

औंजना*-अ० [सं० आवेजन] ऊबना। स० [देश०] ढालना। उँडेलना।

औंठ-स्त्री० [सं० ओष्ठ] उठा या उभड़ा हुआ किनारा। बारी। बाढ़।

औंड़*-पुं० [सं० कुंड] मिट्टी खोदने-वाला मजदूर। बेलदार।

औंदना*'-अ० [सं० उन्माद या उद्विग्न] १. उन्मत्त या बेसुध होना। २. व्याकुल होना। घबराना।

औंधना-अ० [हिं० औंधा] उलट जाना। स० उलटा कर देना।

औंधा-वि० [सं० अधोमुख] [स्त्री० औंधी] १.जिसका मुँह नीचे की ओर हो। उलटा। २. पेट के बल लेटा हुआ। पट। मुहा०-**औंधी खोपड़ी का**=मूर्ख। जड़। **औंधी समझ**=उलटी समझ। जड़ बुद्धि। **औंधे मुँह गिरना**=धोखा खाना। पुं० उलटा या चिलड़ा नाम का पकवान।

औंधाना-स० [सं० अधः] १. औंधा करना। उलटना। (बरतन) २. लटकाना।

औंसना-अ० [हिं० उमस] उमस होना।

औकात-स्त्री० एक० [अ० 'वक्त' का बहु०] १. वक्त। समय। २. हैसियत। बिसात। वित्त।

औगत*-स्त्री० दे० 'दुर्गति'। वि० दे० 'अवगत'।

औगाहना*-स० दे० 'अवगाहना'।

औगुन*-पुं० दे० 'अवगुण'।

औघट*-वि० दे० 'अवघट'।

औघड़-पुं० [सं० अघोर] [स्त्री० औघड़िन] अघोर मत का अनुयायी पुरुष। अघोरी। वि० [सं० अव+घड़ना] अंड-बंड। उलटा-पुलटा।

औंघर*-वि० [सं० अव+घट] १. अटपट। अनगढ़। अंडबंड। 'सुघर' का उलटा। २. अनोखा। विलक्षण।

औचक-क्रि० वि० दे० 'अचानक'।

औचट-स्त्री० [?] संकट। कठिनता। क्रि० वि० १. अचानक। २. भूल से।

औचिंत*-वि० [सं० अव+चिंता] १. निश्चिंत। २ बे-खबर।

औचित्य-पुं० [सं०] 'उचित' या ठीक होने का भाव। उपयुक्तता।

औज*-पुं० दे० 'ओज'।

औजार-पुं० [अ०] वे यन्त्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं। हथियार। उपकरण।

औझड़-क्रि० वि० [सं० अव+हिं झड़ी] लगातार। निरन्तर।
वि० १. झक्की। २. अक्खड़।

औटना-स० [सं० आवर्तन] [भाव० औटन] १. दूध या कोई पतली चीज आंच पर चढ़ाकर गाढ़ी करना। खौलाना। २. व्यर्थ घूमना।
अ० तरल वस्तु का आंच या गरमी पाकर गाढ़ा होना।

औटाना-स० दे० 'औंटाना'।

औठपाय*-पुं० [सं० उत्पात] शरारत। पाजीपन। नटखटी।

औंढर-वि० [सं० अव+हिं० ढार या ढाल] जिस ओर हो, उसी ओर ढल पड़नेवाला। मन-मौजी।

औतरना*-अ० दे० 'अवतारना'।

औतार*-पुं० दे० 'अवतार'।

औत्तापिक-वि० [सं०] उत्ताप-संबंधी।

औत्पत्तिक-वि० [सं०] उत्पत्ति-संबंधी।

औथरा*-वि० दे० 'उथला'।

औदरिक-वि० [सं०] १. उदर-संबंधी। २. बहुत खानेवाला। पेटू।

औदसा*-स्त्री० दे० 'दुर्दशा'।

औदुंबर-पुं० [सं०] १. गूलर की लकड़ी का बना एक यज्ञ-पात्र। २. एक प्रकार के मुनि।

औद्योगिक-वि० [सं०] १.उद्योग-संबंधी। २. वस्तुएँ तैयार करने के काम से सम्बन्ध रखनेवाला। (इन्डस्ट्रियल)

औद्योगीकरण-पुं० [सं० उद्योग+करण] किसी देश के उद्योग-धंधों आदि को बढ़ाने और उसमें कल-कारखाने आदि खोलने का काम। (इन्डस्ट्रियलाइजेशन)

औध*-पुं० दे० 'अवध'।
स्त्री० दे० 'अवधि'।

औधारना-स० दे० 'अवधारना'।

औधि*-स्त्री० दे० 'अवधि'।

औनि*-स्त्री० दे० 'अवनि'।

औनिप*-पुं० [सं० अवनिप] राजा।

औना-पौना-वि० [हिं० ऊन (कम)+ पौना] आधा-तीहा। थोड़ा-बहुत।
क्रि० वि० कमती-बढ़ती पर।
मुहा०=**औने-पौने करना**=जितना दाम मिले, उतने पर बेच डालना।

औपचारिक-वि० [सं०] १. उपचार संबंधी। २. जो केवल कहने-सुनने या दिखलाने भर के लिए हो।

औपनिवेशिक-पुं० [सं०] उपनिवेश में रहनेवाला।
वि० १. उपनिवेश-सम्बन्धी। (कॉलोनियल) २. जैसा उपनिवेशों में होता है, वैसा। जैसे-औपनिवेशिक स्वराज्य।

औपनिवेशिक स्वराज्य-पुं० [सं०] ब्रिटिश साम्राज्य-प्रणाली के अनुसार एक प्रकार का स्वराज्य जो अधीनस्थ उपदेशों (जैसे-कनाडा, आस्ट्रेलिया) को प्राप्त

है। इसमें उपनिवेशों को ब्रिटिश अधनी-श्वर की अधीनता तथा इसी प्रकार की दो तीन छोटी छोटी बातें माननी पड़ती हैं; शेष बातों में वे स्वतन्त्र रहते हैं।

औपन्यासिक-वि० [सं०] १. उपन्यास-विषयक। उपन्यास-संबंधी। २. उपन्यास में वर्णन करने के योग्य। ३. अद्भुत। पुं० उपन्यास-लेखक।

औपपत्तिक-वि० [सं०] तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला।

और-अव्य० [सं० अपर] दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला अव्यय।
वि० १. दूसरा। अन्य। भिन्न।
मुहा०-और का और=कुछ का कुछ। विपरीत। अंड-बंड। और क्या=हों। ऐसी ही है। (उत्तर में) और तो क्या=और बातों का तो जिक्र ही क्या। २ अधिक। ज्यादा।

औरत-स्त्री० [अ०] १. स्त्री। महिला। २. पत्नी। जोरू।

औरस-वि० [सं०] जो विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो।

औरसना*-अ० [सं० अव=बुरा+रस] रुष्ट होना।

औरेब-पुं० [सं० अव+रेब=गति] १. वक्र गति। तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट। ३. पेंच। उलझन। ४. पेंच या चाल की बात। ५. साधारण या थोड़ी हानि अथवा खराबी।

औलना*-अ० १. दे० 'जलना'। २. दे० 'औसना'।

औलाद-स्त्री० [अ०] सन्तान। सन्तति।

औलिया-पुं० [अ० वली का बहु०] मुसलमान सिद्ध। पहुँचा हुआ फकीर।

औवल-वि० [अ०] १. पहला। २. प्रधान। मुख्य। ३. सर्व-श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

औषध-पुं० [सं०] रोग दूर करने-वाली ओषधियों का मिश्रित रूप। दवा। (मेडिसिन)

औषधालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ दवाएँ मिलती, बनती या बिकती हों। (डिस्पेन्सरी)

औसत-पुं० [अ०] बराबर का परता। समष्टि का सम-विभाग। सामान्य। (एवरेज)
वि० माध्यमिक। साधारण।

औसान-पुं० दे० 'अवसान'।
पुं० [फा०] सुध-बुध। होश-हवास।

औसि*-क्रि० वि० दे० 'अवश्य'।

औसेर*-स्त्री० दे० 'अवसेर'।

औहन*-स्त्री० [सं० अपघात] १. अपमृत्यु। २. दुर्गति। दुर्दशा।

औहाती*-स्त्री० दे० 'अहिवाती'।

क

क-हिन्दी वर्ण-माला का पहला व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है। इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं।

कंक-पुं० [सं०] [स्त्री० कंका] सफेद चील।

कंकड़-पुं० [सं० कर्कर] [स्त्री० अल्पा० कंकड़ी, वि० कँकड़ीला] १. चिकनी मिट्टी और चूने से बने रोड़े जिनसे सड़क बनती है। २. पत्थर या और किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा। अँकड़ा। ३. सूखा या सेंका हुआ तमाकू का पत्ता।

कँकड़ीला–वि० [हिं० कंकड़] [स्त्री० कँकड़ीली] जिसमें कंकड़ हों।

कंकण–पुं० [सं०] १ कलाई में पहनने का एक गहना। कंगन। २. वह धागा जो विवाह से पहले वर और वधू के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।

कंकरीट–स्त्री० [अ० कांक्रीट] १. चूने, कंकड़, बालू आदि के मेल से बना गच बनाने का मसाला। छर्रा। बजरी। २. छोटी कंकड़ियाँ जो सड़कों पर बिछाई और कूटी जाती हैं। (कांक्रीट)

कंकाल–पुं० [सं०] अस्थि-पंजर।

कंकालिनी–स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. दुष्ट और लड़ाकी स्त्री। कर्कशा।

कंगन–पुं० [सं० कंकण] १. हाथ में पहनने का एक गहना। कंकण। २. लोहे का चक्र जो अकाली सिर पर बाँधते हैं।

कँगनी–स्त्री० [हिं० कँगना] छोटा कंगन। स्त्री० [सं० कंगु] एक अन्न जिसके चावल खाये जाते हैं। काकुन।

कंगला–वि० दे० 'कंगाल'।

कंगाल–वि० [सं० कंकाल] जिसके पास कुछ न हो। बहुत दरिद्र या गरीब।

कँगूरा–पुं० [फा० कुंगरा] [वि० कँगूरेदार] १. शिखर। चोटी। २. किले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए वे ऊँचे स्थान जहाँ खड़े होकर सिपाही लड़ते हैं। बुर्ज। ३. छपाई, गहने आदि में शिखर के आकार की बनावट।

कंघा–पुं [सं० कंक] [स्त्री० अल्पा० कंघी] १.लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई वह चीज जिससे सिर के बाल झाड़ते हैं। २. जुलाहों का एक औजार जिससे वे तागे कसते हैं। बय। बौला।

कंघी–स्त्री० [सं० कंकती] १. छोटा कंघा। मुहा०–कंघी-चोटी = बनाव-सिंगार। २. एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। ३. दे० 'कंघा'।

कंचन–पुं० [सं० कांचन] १. सोना। सुवर्ण। २. धन। सम्पत्ति। ३. धतूरा। ४. [स्त्री० कंचनी] एक जाति जिसकी स्त्रियां प्रायः वेश्या का काम करती हैं। वि० १. नीरोग। स्वस्थ। २. स्वच्छ।

कंचनी–स्त्री० [हिं० कंचन] वेश्या।

कंचुक–पुं० [सं०] [स्त्री० कंचुकी] १. जामे या चपकन की तरह का एक पुराना पहनावा। २. चोली। अँगिया। ३. वस्त्र। कपड़ा। ४. बकतर। कवच। ५. साँप की केंचुली।

कंचुकी–स्त्री० [सं०] अँगिया। चोली। पुं० [सं० कंचुकिन्] प्राचीन काल में राजाओं के रनिवास की दास-दासियों का अध्यक्ष। अंतःपुर का रक्षक।

कंज–पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २ कमल। ३. अमृत। ४. सिर के बाल। केश।

कंजई–वि० [हिं० कंजा] कंजे या धूएँ के रंग का। खाकी। पुं० १. खाकी रंग। २. वह घोड़ा जिसकी आँखें कंजई रंग की हों।

कंजड़(र)–पुं० [देश० या कालिंजर] [स्त्री० कंजड़िन] एक घूमने-फिरनेवाली जाति जो रस्सी बटने, सिरकी बनाने आदि का काम करती है।

कंजा–पुं० [सं० करंज] एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली औषध के काम आती है। वि० [स्त्री० कंजी] १. कंजे के रंग का। गहरा खाकी। २. जिसकी आँखें इस रंग की हों।

कंजूस–वि० [सं० कण+हिं० चूस] [संज्ञा कंजूसी] जो धन का भोग या

व्यय न करे। कृपण। सूम।

कंटक-पुं० [सं०] [वि० कंटकित] १. काँटा। २. कार्य में होनेवाली बाधा। विघ्न। बखेड़ा। ३. ऐसी बात या कार्य जिससे किसी को कष्ट पहुँचे। (नुएजेन्स) ४. रोमांच। ५. कवच।

कंटकित-वि० [सं०] १. काँटेदार। कँटीला। २ जिसे रोमांच हो आया हो। पुलकित।

कंटर-पुं० [अं० डिकैंटर] शीशे की वह सुराही जिसमें शराब और सुगन्धित द्रव्य रखे जाते हैं।

कंटिका-स्त्री० [सं०] सूई के आकार की लोहे-पीतल आदि की छोटी तीली जिसमें कागज़ एक में नत्थी किये जाते हैं। आलपीन। (पिन)

कँटिया-स्त्री० [हिं० काँटी] १. छोटा काँटा या कील। २. मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी। ३.अँकुसियों का वह गुच्छा जिससे कूएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं। ४. सिर का एक गहना।

कँटीला-वि० [हिं० काँटा+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० कँटीली] जिसमें काँटे हों।

कंठ-पुं० [सं०] [वि० कंठ्य, भाव० कंठता] १. गला। २. गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है। और आवाज़ निकलती है। घाँटी।

मुहा०-**कंठ फूटना**=१. वर्णों के स्पष्ट उच्चारण का आरंभ होना। २. मुँह से शब्द निकलना। **कंठ करना**=जबानी याद करना।

कंठ-तालव्य-वि० [सं०] (वर्ण) जिनका उच्चारण कंठ और तालु-स्थानों से मिलकर हो। 'ए' और 'ऐ' वर्ण।

कंठ-माला-स्त्री० [सं०] गले का एक रोग जिसमें फोड़े निकलते हैं।

कंठस्थ-वि० [सं०] १. गले में अटका हुआ। कंठ-गत। २ जबानी याद। कंठाग्र।

कंठा-पुं० [हिं० कंठ] [स्त्री० अल्पा० कंठी] १. वह रेखा जो तोते आदि पक्षियों के गले के चारों ओर होती है। हँसली। गले का एक गहना जिसमें बड़े बड़े मनके होते हैं। ३. कुरते या अँगरखे का वह अर्ध-चन्द्राकर भाग जो गले पर रहता है।

कंठाग्र-वि०[सं०] कंठस्थ। जबानी। (याद)

कंठी-स्त्री० [हिं० कंठा का अल्पा०] १. छोटी गुरियों का कंठा। २. तुलसी आदि मनियों की माला। (वैष्णव)

कंठोष्ठ्य-वि० [सं०] जो एक साथ कंठ और ओंठ के सहारे से बोला जाय। 'ओ' और 'औ' वर्ण।

कंठ्य-वि० [सं०] १ गले से उत्पन्न। २. जिसका उच्चारण कंठ से हो।

पुं० वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठ से हो। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग।

कंडरा-स्त्री० [सं०] रक्त की नाड़ी।

कंडा-पुं० [सं० स्कंदन] [स्त्री० अल्पा० कंडी] १ जलाने का सूखा गोबर। २. लंबे आकार में पाथा हुआ सूखा गोबर जो जलाने के काम में आता है। उपला। ३ सूखा मल। गोटा। सुद्दा।

कंडाल-पुं० [सं० करनाल] तुरही। पुं० [सं० कंडोल] पानी रखने का लोहे, पीतल आदि का बड़ा बरतन।

कंडी-स्त्री० [हिं० कंडा] १. छोटा कंडा। गोहरी। उपली। २. सूखा मल। गोटा।

कंडील-स्त्री० [अ० कंदील] मिट्टी, अबरक, कागज आदि की बनी हुई वह लालटेन जिसका मुँह ऊपर की ओर होता है।

कंडु-स्त्री० [सं०] खुजली।

कंडोल-पुं० [सं०] वह बड़ा पात्र जो सड़कों पर कूड़ा फेंकने के लिए रक्खा रहता है।
कंत, कंथ*-पुं० दे० 'कांत'।
कंथा-स्त्री० [सं०] गुदड़ी।
कंथी-पुं० [सं० कंथा=गुदड़ी] १. गुदड़ी पहननेवाला। साधु। २. भिखमंगा।
कंद-पुं० [सं०] १. गूदेदार और बिना रेशे की जड़। जैसे-सूरन, शकरकन्द आदि। २. बादल।
पुं० [फा०] जमाई हुई चीनी। मिसरी।
कंदन-पुं० [सं०] नाश। ध्वंस।
कंदरा-स्त्री० [सं०] गुफा। गुहा।
कंदर्प-पुं० [सं०] कामदेव।
कंदला-पुं० [सं० कंदल=सोना] चांदी का वह लंबा छड़ जिससे तारकश तार बनाते है। पासा। गुल्ला। २. सोने या चांदी का पतला तार।
कंदा-पुं० [सं० कंद] १. दे० 'कंद'। २ शकरकन्द।
कंदील-स्त्री० दे० 'कंडाल'।
कंदुक-पुं० [सं०] १ गेंद। २. छोटा गोल तकिया।
कंध*-पुं० [सं०स्कंध] १. डाली। शाखा। २. दे० 'कंधा'।
कंधनी*-स्त्री० दे० 'करधनी'।
कंधर-पुं० [सं०] १. गरदन। २. बादल।
कंधा-पुं० [सं० स्कन्ध] १ शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है। २ बाहु-मूल। मोढ़ा।
कंधार-पुं० [सं० कर्णधार] १. केवट। २. पार लगानेवाला।
पुं० [सं० गान्धार] अफगानिस्तान का एक नगर और प्रदेश।
कंधारी-वि० [हिं० कंधार] कंधार का। पुं० घोड़ों की एक जाति।
कँधावर-स्त्री० [हिं० कंधा+आवर (प्रत्य०)] १. जूए का वह भाग जो बैल के कंधों पर रहता है। २. चादर।
कँधेला-पुं० [हिं० कंधा+एला (प्रत्य०)] स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।
कंप-पुं० [सं०] कँपकँपी। कांपना। (सात्विक अनुभावों में से एक)
पुं० [अं० कैंप] पड़ाव। छावनी।
कँपकँपी-स्त्री० [हिं० कांपना] थरथराहट। कांपना। कम्पन।
कंपन-पुं० [सं०] [वि० कंपित] कांपना। थरथराहट। कँपकपी।
कँपना-अ० दे० 'काँपना'।
कंपनी*-स्त्री० [अं०] व्यापारियों का वह समूह जो एक-साथ मिलकर कोई व्यापार करता हो।
कँपनी*-स्त्री० दे० 'कँपकँपी'।
कंपा-पुं० [हिं० कांपा] बांस की तीलियां जिनमें बहेलिए लासा लगाकर चिड़ियां फँसाते हैं।
कँपाना-स० हिं० 'कांपना' का प्रे०।
कपायमान-वि० दे० 'कंपित'।
कंपित-वि० [सं०] १. कांपता या हिलता हुआ। २. भयभीत। डरा हुआ।
कंपू-पुं० दे० 'छावनी'।
कंबख्त-वि० [फा०] [भाव० कंबख्ती] अभागा। भाग्यहीन।
कंबल-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कमली] १. ऊन का बना हुआ वह मोटा कपड़ा जो ओढ़ने-बिछाने के काम में आता है। २ एक बरसाती कीड़ा। कमला।
कंबुक-पुं० [सं०] १. शंख। २. शंख की चूड़ी। ३. घोंघा।

कंबोज-पुं० [सं०] [वि०कांबोज] अफगानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम।

कँवल-पुं० दे० 'कमल'।

कंस-पुं० [सं०] १. कांसा। २. कटोरा। ३. सुराही। ४. मँजीरा। झांझ। ५. मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का जिसे कृष्ण ने मारा था।

कँसताल-पुं० दे० 'झांझ'।

कई-वि० [सं० कति, प्रा० कई] एक से अधिक। अनेक।

ककड़ी-स्त्री० [सं० कर्कटी] एक बेल जिसमें लम्बे फल लगते हैं।

ककुद्-पुं० [सं०] १. बैल के कंधे पर का कूबड़। डिल्ला। २. राज-चिह्न।

ककुभ-पुं० [सं०] दिशा।

कक्कड़-पुं० [सं० कर्कर] सूखी या सेंकी हुई सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चिलम पर रखकर पीते हैं।

कक्का-पुं० [सं० केकय] केकय देश। पुं० [सं०] नगाड़ा। दुंदुभी। पुं० दे० 'काका'।

कक्ष-पुं० [सं०] १. कांख। बगल। २. कांछ। कछौटा। लांग। ३. कछार। ४. जंगल। ५. सूखी घास। ६. कमरा। कोठरी। ७. पाप। दोष। ८. कांख का फोड़ा। कखरवार। ९. दरजा। श्रेणी। १०. सेना के अगल-बगल का भाग।

कक्षा-स्त्री० [सं०] १. परिधि। घेरा। २. ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग। ३. श्रेणी। दर्जा। जैसे=विद्यालय की सातवीं कक्षा। (क्लास) ४. कांख। बगल। ५. घर की दीवार या पाख। ६. कछौटा।

कखौरी-स्त्री० [हिं० कांख] १. दे० 'कांख'। २. कांख का फोड़ा।

कगर-पुं० [सं० क=जल+ अग्र] १ ऊँचा किनारा। बाढ़। २. मेंड़। डाँड़।

कगार-पुं० [हिं० कगर] १. ऊँचा किनारा। २. नदी का करारा। ३. टीला।

कच-पुं० [सं०] १. बाल। २. फोड़ा या घाव। ३. झुंड। ४. बादल। पुं० [अनु०] १. धँसने या चुभने का शब्द या भाव। २. कुचले जाने का शब्द। वि० 'कच्चा' का अल्प रूप जो समास में शब्द के पहले लगने पर होता है; जैसे-कच-लहू।

कचक-स्त्री० [हिं० कच] वह चोट जो दबने या कुचले जाने से लगे।

कचकच-स्त्री० दे० 'किचकिच'।

कचकोल-पुं० [फा० कशकोल] दरियाई नारियल का भिक्षापात्र। कपाल। कासा।

कच-दिला-वि० [हिं० कच्चा+फा० दिल] कच्चे दिल का। जिसे कष्ट, पीड़ा आदि सहने या देखने का साहस न हो।

कचनार-पुं० [सं० काञ्चनार] एक छोटा पेड़ जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं।

कच पच-स्त्री० [अनु०] १. थोड़े से स्थान में बहुत-सी चीजों या लोगों का भर जाना। गिचपिच।

कचपची*-स्त्री० [हिं० कचपच] १. कृत्तिका नक्षत्र। २. वे चमकीले बुन्दे जो स्त्रियां माथे पर लगाती हैं।

कचर-कचर-स्त्री० [अनु०] १. कच्चे फल के खाने का शब्द। २. दे० 'किचकिच'।

कचर-कूट-पुं० [हिं० कचरना+कूटना] १. खूब मारना-पीटना। २. खूब पेट भर भोजन। इच्छा-भोजन।

कचरना*-स० [सं० कचरण] १. पैर से कुचलना। रौंदना। २. खूब खाना।

कचरा-पुं० [हिं० कच्चा] १. कच्चा खरबूजा या ककड़ी। २. कूड़ा-करकट। रद्दी

बीज। ३. समुद्र की सेवार।

कचरी-स्त्री० [हिं० कच्चा] १. ककड़ी की जाति की एक बेल जिसके फल पकाकर खाये जाते हैं। पेंहटा। २.कचरी या कच्चे पेंहटे या किसी और फल के सुखाये हुए टुकड़े, जो तलकर खाये जाते हैं।

कच-लहू-पुं० [हिं० कच्चा+ लोहू] वह पनछा या पानी जो घाव से बहता है।

कचहरी-स्त्री० [हिं कचकच=वाद-विवाद] १. गोष्ठी। जमावड़ा। २. दरबार। राज-सभा। ३. न्यायालय। अदालत। (कोर्ट) ४.कार्यालय। दफ्तर। (ऑफिस)

कचाई-स्त्री० दे० 'कच्चापन'।

कचाना-अ० [हिं० कच्चा] १. हिम्मत हारकर पीछे हटना। २ डरना।

कचायँध-स्त्री० [हिं० कच्चा+गंध] कच्चेपन की गंध।

कचारना-स० [हिं० पछाड़ना] पटक पटक कर कपड़ा धोना।

कचालू-पुं० [हिं० कच्चा+आलू] १. एक प्रकार की अरवी। बंडा। २. आलू आदि की बनी एक प्रकार की चाट।

कचियाना-अ० दे० 'कचाना'।

कचीची*-स्त्री० [अनु० कच=कुचलने का शब्द] जबड़ा। डाढ़।

मुहा०-कचीची बँधना=दाँत बैठना। (मरने के समय)

कचुल्ला*-पुं० दे० 'कटोरा'।

कचूमर-पुं० [हिं० कुचलना] १. कुचल-कर बनाया हुआ अचार। कुचला। २. कुचली हुई वस्तु।

मुहा०-कचूमर निकालना=१. चूर-चूर करना। कुचलना। २. खूब पीटना।

कचूर-पुं० [सं० कर्चूर] हलदी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ में कपूर की-सी गंध होती है। नर-कचूर।

कचोरा-पुं० दे० 'कटोरा'।

कचौरी-स्त्री० [हिं० कचरी] एक प्रकार की पूरी जिसके अन्दर उरद आदि की पीठी भरी रहती है।

कच्चा-वि० [सं० कषण][भाव० कच्चापन] १. जो पका न हो। हरा और बिना रस का। अपक्व। २. जो आँच पर पका न हो। जैसे-कच्चा चावल। ३. जो पुष्ट न हुआ हो। अ-परिपुष्ट। ४. जिसके तैयार होने में कसर हो। ५. अदृढ़। कमजोर।

मुहा०-कच्चा जी या दिल=कम साहस-वाला और विचलित होनेवाला चित्त। कच्चा करना=डराना। भयभीत करना।

६. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। बे-ठीक।

मुहा०-कच्चा करना=१ अप्रामाणिक ठहराना। झूठा सिद्ध करना। २. लज्जित करना। शरमाना। कच्ची-पक्की= दुर्वचन। गाली। कच्ची बात= अश्लील बात।

७. जो प्रामाणिक तौल या माप से कम हो। जैसे-कच्चा सेर। ८.अपटु। अनाड़ी। पुं० १. दूर-दूर पर पड़ा हुआ तागे का डोभ जिसपर बखिया करते हैं। २. ढाँचा। ढड्ढा। ३. पांडुलेख। मसौदा।

कच्चा चिट्ठा-पुं० [हिं० कच्चा+चिट्ठा] १. ज्यों का त्यों कहा जानेवाला और भीतरी हाल या लेखा। २. गुप्त भेद। रहस्य।

कच्चा माल-पुं० [हिं० कच्चा+माल] वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनती हों। सामग्री। जैसे-रूई, तिल।

कच्चा हाथ-पुं० वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। अनभ्यस्त हाथ।

कच्ची-स्त्री० दे० 'कच्ची रसोई'।

कच्ची आय-स्त्री० [हिं० कच्ची+आय]

वह समूची आय जिसमें से लागत, परिव्यय आदि घटाये न गये हों।

कच्ची चीनी-स्त्री० [हिं० कच्ची+चीनी] वह चीनी जो अच्छी तरह साफ न की गई हो।

कच्ची बही-स्त्री० [हिं० कच्ची+बही] वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो।

कच्ची रसोई-स्त्री० [हिं० कच्ची+रसोई] केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। जैसे-रोटी, दाल, भात आदि।

कच्चू-पुं० [सं० कंचु] १. अरुई। घुइयाँ। २. बंडा।

कच्चे-बच्चे-पुं० [हिं० कच्चा+बच्चा] बहुत छोटे-छोटे बच्चे। बहुत-से लड़के-बाले।

कच्छ-पुं० [सं०] [वि० कच्छी] १. जल-प्राय देश। अनूप देश। २. गुजरात के समीप का एक प्रदेश।

पुं० [सं० कक्ष] धोती की लाँग।

*पुं० [सं० कच्छप] कछुआ।

कच्छप-पुं० [सं०] [स्त्री० कच्छपी] १. कछुआ। २. विष्णु के २४ अवतारों में से एक।

कच्छा-पुं० [सं० कच्छ] १ एक प्रकार की बड़ी नाव। २. कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बड़ा बेड़ा।

कच्छी-वि० [हिं० कच्छ] कच्छ देश का। पुं० [हिं० कच्छ] १. कच्छ देश का निवासी। २ घोड़े की एक जाति। स्त्री०कच्छ देश की भाषा।

कच्छू-पुं० दे० 'कछुआ'।

कछनी-स्त्री० [हिं० काछना] १. घुटने तक ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती। २. वह वस्तु जिससे कोई चीज़ काछी जाय।

कछान(ा)-पुं० [हिं० काछना] धोती पहनने का वह प्रकार जिसमें वह घुटनों के ऊपर चढ़ाकर कसी जाती है।

कछार-पुं० [सं० कच्छ] समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि।

कछुं*-वि० दे० 'कुछ'।

कछुआ-पुं० [सं० कच्छप] [स्त्री० कछुई] एक प्रसिद्ध जन्तु जिसकी पीठ पर कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

कछुक*-वि० दे० 'कुछ'।

कछौटा-पुं० १. दे० 'कछाना'। २. दे० 'कछनी'।

कज-पुं० [फा०] १ टेढ़ापन। २. दोष। ऐब।

कजरा¹-पुं० [हिं० काजल] १. दे० 'काजल'। २ काली आँखोंवाला बैल।

कजरारा-वि० [हिं० काजल + आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० कजरारी] १. नेत्र जिनमें काजल लगा हो। अंजन-युक्त। २. काजल के समान काला।

कजलाना-अ० [हिं० काजल] १. काला पड़ना। २. आग का बुझना।

कजली-स्त्री० [हिं० काजल] १. कालिख। २. पिसे हुए पारे और गंधक की बुकनी। ३. रस फूँकने में धातु का वह अंश जो पात्र में लग जाता है। ४.वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो। ५. एक बरसाती त्योहार। ६. एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है।

कजलौटा-पुं० [हिं० काजल+औटा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० कजलौटी] काजल रखने की डंडीदार लोहे की डिबिया।

कजाक*-पुं० दे० 'डाकू'।

कजाकी-स्त्री० [फा० कजाक] १. लुटेरा-पन। २. छल-कपट। धोखेबाजी।

कजावा-पुं० [फा०] ऊँट की काठी।

कजिया-पुं० [अ०] झगड़ा। बखेड़ा।

कजी-स्त्री० [फा०] १. टेढ़ापन। २. दोष।

कज्जल-पुं० [सं०] [वि० कज्जलित, भाव० कज्जलता] १. अंजन। काजल। २. सुरमा। ३. कालिख।

कज्जाक-पुं० दे० 'डाकू'।

कट-पुं० [सं०] १. हाथी का गंड-स्थल। २. खस, सरकंडा आदि घास या उनकी टट्टी। ३. शव। लाश। ४. श्मशान। पुं० [हिं० कटना] 'काट' का संक्षिप्त रूप, जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है। जैसे-कट-खना कुत्ता।

कटक-पुं० [सं०] १. सेना। फौज। २. राज-शिविर। ३. कंकण। कड़ा। ४. पर्वत का मध्य भाग। ५. समूह। झुंड।

कटकई*-स्त्री० [सं० कटक=सेना] फौज।

कटकट-स्त्री० [अनु०] १. दाँतों के बजने का शब्द। २. लड़ाई-झगड़ा।

कटकटाना-अ० [हिं० कटकट] क्रोध में आकर दाँत पीसना।

कटकाई*-स्त्री० दे० 'कटकई'।

कटकीना-पुं० [हिं० काट] गहरी चाल या युक्ति। हथ-कंडा।

कट-खना-वि० [हिं० काटना+खाना] काट खानेवाला। दाँत से काटनेवाला।

कट-घरा-पुं० [हिं० काठ+घर] १. काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो। २. बड़ा पिंजड़ा।

कटत(ी)-स्त्री० [हिं० कटना] बिक्री के माल की खपत। बिक्री।

कटनस*-पुं० [हिं० काटना+नाश] काटने और नष्ट करने की क्रिया।

कटनांस-पुं० [देश०] नीलकंठ। (पक्षी)

कटनि*-स्त्री० [हिं० कटना] १. काट। २. आसक्ति। रीझ।

कटनी-स्त्री० [हिं० कटना] १. काटने का औजार। २. काटने का काम। ३. खेत की फसल का काटा जाना।

कटर-पुं० [अं०] १ वह जिससे कुछ काटें। २. काटनेवाला। ३. एक प्रकार की नाव।

कटरा-पुं० [हिं० कटहरा] छोटा चौकोर बाजार। पुं० [सं० कटाह] भैंस का नर बच्चा।

कटवाँ-वि० [हिं० कटना+वाँ (प्रत्य०)] १. जो कटकर बना हो। कटा हुआ। २. (ब्याज) जो एक एक रकम और एक एक दिन के हिसाब से जोड़ा जाय।

कटहरा-पुं० दे० 'कटघरा'।

कटहल-पुं० [सं० कंटकिफल] १. एक पेड़ जिसमें बड़े और भारी फल लगते हैं। २. इस पेड़ का फल।

कटहा*-वि० [हिं० काटना+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० कटही] काट खानेवाला।

कटा*-पुं० [हिं० काटना] १. मार-काट। २. वध। हत्या।

कटाइक*-वि०[हिं०काटना]काटनेवाला।

कटाई-स्त्री० [हिं० काटना] १. काटने का काम, भाव या मजदूरी। (विशेषतः फसल की)

कटा-कट(ी)-स्त्री० [हिं० काट] १. कटकट शब्द। २. लड़ाई। ३. वैमनस्य। वैर।

कटाक्ष-पुं० [सं०] १. तिरछी चितवन। तिरछी नजर। २. व्यंग्य। आक्षेप।

कटाग्नि-स्त्री० [सं०] घास-फूस की वह आग जिसमें लोग जल मरते थे।

कटाछनी-स्त्री० दे० 'कटाकट'।

कटान-स्त्री० [हिं० काटना] काटने की क्रिया, भाव या ढंग।

कटाना-स० हिं० 'काटना' का प्रे० रूप।

कटार(ी)-स्त्री० [सं० कट्टार] [स्त्री० अल्पा० कटारी] १. प्रायः एक बित्ते का दुधारा हथियार। २. दे० 'कटास'।

कटाव-पुं० [हिं० काटना] १. कटने या काटने की क्रिया या भाव। २.काट-छांट। कतर-ब्योंत। ३. काटकर बनाये हुए बेल-बूटे।

कटास-पुं० [हिं० काटना] एक प्रकार का वन-बिलाव। कटार।

कटाह-पुं० [सं०] १. कड़ाहा। बड़ी कड़ाही। २. कछुए की खोपड़ी। ३. भैंस का बच्चा।

कटि-स्त्री० [सं०] १. कमर। २. हाथी का गंड-स्थल।

कटि-बंध-पुं० [सं०] १. कमरबन्द। २. गरमी-सरदी के विचार से किये हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक।

कटिबद्ध-वि० [सं०] १ कमर बाँधे हुए। २. तैयार। तत्पर। उद्यत।

कटि-सूत्र-पुं० [सं०] मेखला।

कटीला-वि० [हिं०काटना] [स्त्री०कटीली] १. काट करनेवाला। तीक्ष्ण। चोखा। २. बहुत तीव्र प्रभाव डालनेवाला। ३. मोहित करनेवाला।

कटु-वि० [सं०] [भाव० कटुता] १. छः रसों में से एक। चरपरा। कडुआ। २. बुरा लगनेवाला। अप्रिय।

कटूक्ति-स्त्री० [सं०] अप्रिय बात।

कटैया†-पुं० [हिं० काटना] काटनेवाला। स्त्री० काटे जाने की क्रिया या भाव।

कटोरदान-पुं० [हिं० कटोरा+दान (प्रत्य०)] वह ढकनदार बरतन जिसमें भोजन आदि रखते है।

कटोरा-पुं० [हिं० काँसा+ओरा (प्रत्य०) =कँसोरा] नीची दीवार और चौड़े पेंदे का एक छोटा बरतन। प्याला।

कटोरी-स्त्री० [हिं० कटोरा का अल्पा०] १. छोटा कटोरा। प्याली। २. अँगिया का वह भाग जिसमें स्तन रहते हैं। ३. फूल के सींके का सिरा जिसपर दल रहते है।

कटौती-स्त्री० [हिं० कटना] कोई रकम देते समय उसमें से कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना।

यौ०-कटौती का प्रस्ताव=(विधायिका सभा में) यह प्रस्ताव कि अमुक प्रस्तावित व्यय में इतनी कमी की जाय। (कट मोशन)

कट्टर-वि० [हिं० काटना] [भाव० कट्टरपन] १. काट खानेवाला। कटहा। २. अपने विश्वास पर बहुत दृढ़ रहनेवाला। अंध-विश्वासी। ३. हठी। दुराग्रही।

कट्टा-वि० [हिं० काठ] १. मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। २. बलवान। बली। पुं० जबड़ा।

मुहा०-कट्टे लगना=किसी दूसरे के कारण अपनी वस्तु का उसके हाथ लगना।

कट्ठा-पुं० [हिं० काठ] पाँच हाथ, चार अंगुल की जमीन की एक नाप।

कठड़ा-पुं० [हिं० कठघरा] १. कठघरा। कटहरा। २ काठ का बड़ा सन्दूक। ३ कठौता।

कठ-पुतली-स्त्री० [हिं० काठ+पुतली] १. काठ की गुड़िया या पुतली जिसे डोरे की सहायता से नचाते हैं। २. वह जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे।

कठ-फोड़वा-पुं० [हिं० काठ+फोड़ना] एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल छेदती है।

कठ-बाप-पुं० [हिं० काठ+बाप] सौतेला

बाप।

कठ-मलिया-पुं० [हिं० काठ+माला] १. काठ की माला या कंठी पहननेवाला। वैष्णव। २. झूठ-मूठ कंठी पहननेवाला। बनावटी साधु या संत।

कठ-मस्त-वि० [हिं० काठ+फा० मस्त] [भाव० कठमस्ती] संड-मुसंड।

कठला-पुं० [सं० कठ+ला (प्रत्य०)] बच्चों के पहनने की एक प्रकार की माला।

कठवत-स्त्री० दे० 'कठौत'।

कठिन-वि० [सं०] १. कड़ा। सख्त। कठोर। २. मुश्किल। दुष्कर। दुःसाध्य।

कठिनता-स्त्री० [सं०] १. कठोरता। कड़ाई। कड़ापन। सख्ती। २. मुश्किल। दिक्कत। ३. निर्दयता। बेरहमी। ४. मजबूती। दृढ़ता।

कठिया-वि० [हिं० काठ] जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो। जैसे-कठिया बादाम।

कठुआना[+]-अ० [हिं० काठ+आना] सूखकर काठ की तरह कड़ा होना।

कठूमर-पुं० [हिं० काठ+ऊमर] जंगली गूलर।

कठेठ(ा)*-वि० [सं० काठ] [स्त्री० कठेठी] १. कड़ा। कठोर। सख्त। २ कटु। अप्रिय। ३. अधिक बलवाला।

कठोर-वि० [सं०] [स्त्री० कठोरा, भाव० कठोरता] १. कठिन। सख्त। कड़ा। २. निर्दय। निष्ठुर। बे-रहम।

कठोरता-स्त्री० [सं०] १. कड़ाई। सख्ती। २ निर्दयता। बेरहमी।

कठौता-पुं० [हिं० कठौत] काठ का बना एक बड़ा और चौड़ा बरतन।

कड़क-स्त्री० [हिं० कड़कड़] १. कड़कने की क्रिया या भाव। २. कड़कड़ाहट का कठोर शब्द। २. तड़प। डपेट। ३. गाज। वज्र। ४. वह दर्द जो रुक रुककर हो। कसक।

कड़कड़ाता-वि० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ शब्द करता हुआ। २. कड़ाके का। बहुत तेज। प्रचंड। जैसे-कड़कड़ाता जाड़ा।

कड़कड़ाना-अ० [अनु०] १. कड़कड़ शब्द होना। २. कड़कड़ शब्द के साथ टूटना। ३. घी, तेल आदि का आँच पर तपकर कड़कड़ शब्द करना।

स० १. 'कड़कड़' शब्द करना या 'कड़कड़' शब्द के साथ तोड़ना। २. घी, तेल आदि खूब तपाना।

कड़कड़ाहट-स्त्री० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ाने की क्रिया या भाव। २. कड़कड़ शब्द। घोर नाद। गरज।

कड़कना-अ० [हिं० कड़कड़] १. कड़कड़ शब्द होना। २. चिटकने का शब्द होना। ३ चिटकना। फटना।

कड़क-नाल-स्त्री० [हिं० कड़क+नाल] एक प्रकार की तोप।

कड़क-बिजली-स्त्री० [हिं० कड़क+बिजली] १. कान का एक गहना। चाँद-बाला। २. तोड़ेदार बन्दूक।

कड़खा-पुं० [हिं० कड़क] लड़ाई के समय गाया जानेवाला एक तरह का गीत।

कड़खैत-पुं० [हिं० कड़खा+ऐत (प्रत्य०)] १. कड़खा गानेवाला। २. भाट। चारण।

कड़वी-स्त्री० [सं० कांड, हिं० कॉंडा] ज्वार का वह पेड़ जो चारे के लिए छोड़ा हो।

कड़ा-पुं० [सं० कटक] [स्त्री० कड़ी] १. हाथ या पाँव में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना। २. इस आकार का लोहे या और किसी धातु का छल्ला या कुंडा।

वि० [सं० कडु] [स्त्री० कड़ी, भाव० कड़ाई] १. जो दबाने से जल्दी न दबे। कठोर। कठिन। सख्त। २. जिसकी प्रकृति कोमल न हो। उग्र। ३. कसा हुआ। चुस्त। ४. जो बहुत गीला न हो। ५. हृष्ट-पुष्ट। तगड़ा। दृढ़। ६. जोर का। प्रचंड। तेज। जैसे-कड़ी चोट, कड़ा जाड़ा। ७. सहनशील। झेलनेवाला। ८. दुष्कर। दुःसाध्य। कठिन। ९. तीव्र प्रभाव-वाला। तेज।

कड़ाई-स्त्री० हिं० 'कड़ा' का भाव०।

कड़ाका-पुं० [हिं० कड़कड़] १. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।

मुहा०-**कड़ाके का**=जोर का। तेज। २. उपवास। लंघन। फाका।

कड़ाबीन-स्त्री० [तु० कराबीन] १ चौड़े मुँह की बन्दूक। २. छोटी बन्दूक।

कड़ाहा-पुं० [सं० कटाह, प्रा० कड़ाह] [स्त्री० अल्पा० कड़ाही] आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन।

कड़ाही-स्त्री० [हिं० कड़ाह] छोटा कड़ाहा।

कड़ियल-वि० [हिं० कड़ा] कड़ा।

कड़ी-स्त्री० [हिं० कड़ा] १. सिकड़ी की लड़ी का कोई छल्ला। २. वह छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने के लिए लगाया जाय। ३. गीत का एक पद।

स्त्री० [सं० कांड] काठ की छोटी धरन।

स्त्री० [हिं० कड़ा=कठिन] संकट। दुःख।

कड़ुआ-वि० [सं०कटुक] [स्त्री० कड़ुई, भाव० कड़ुआहट] १. स्वाद में उग्र और अप्रिय। जैसे-नीम, चिरायता आदि का। २. तीखी प्रकृति का। अक्खड़। ३ जो भला न लगे। अप्रिय।

मुहा०-**कड़ुआ करना**=१. व्यर्थ रुपए लगाना। २. कुछ दाम खड़ा करना। **कड़ुआ होना**=१. बुरा बनना। २. क्रोध करना।

३. विकट। टेढ़ा। कठिन।

मुहा०-**कड़ुए-कसैले दिन**=१. बुरे दिन। कष्ट के दिन। २. दो-रसे दिन, जिनमें रोग फैलते हैं। ३. गर्भ के दिन। **कड़ुआ घूँट**=कठिन काम।

कड़ुआ तेल-पुं० [हिं० कड़ुआ+तेल] सरसों का तेल।

कड़ुआना-अ० [हिं० कड़ुआ] १. कड़ुआ लगना। २. बिगड़ना। खीझना। ३. आँख में किरकिरी पड़ने का-सा दर्द होना।

कढ़ना-अ० [सं० कर्षण] १ निकलना। बाहर आना। २. उदय होना। ३. (प्रतिद्वंद्विता में) आगे निकल जाना। बढ़ जाना। ४ स्त्री का उप-पति के साथ घर छोड़कर चला जाना। ५. दूध आदि का औटकर गाढ़ा होना।

कढ़लाना*-स० [हिं० काढ़ना+लाना] घसीटकर बाहर करना।

कढ़ाई-स्त्री० [हिं० काढ़ना] कढ़न या कढ़ाने की क्रिया या भाव।

कढ़ाव-पुं० [हिं० काढ़ना] १ कशीदे का काढ़ा हुआ काम। २. बेल-बूटों का उभार।

कढ़िहार*-वि० [हिं० काढ़ना] १. काढ़ने या निकालनेवाला। २. उद्धार करनेवाला।

कढ़ी-स्त्री० [हिं० कढ़ना=गाढ़ा होना] एक प्रकार का सालन जो बेसन को गाढ़ा पकाने से बनता है।

मुहा०-**कढ़ी का-सा उबाल**=शीघ्र ही घट जानेवाला आवेश।

कढ़ैया*-पुं० दे० 'कढ़िहार'।

कढ़ोरना*-स० [सं० कर्षण] घसीटना।

कण-पुं० [सं०] १. बहुत छोटा टुकड़ा।

तिनका। रवा। २. चावल का छोटा टुकड़ा। कना। ३. अन्न के कुछ दाने।
कणिका-स्त्री० [सं०] छोटा टुकड़ा।
कत*-अव्य०[सं०कुतः] क्यों। किस लिए।
कतक*-अव्य० [सं० कुतः] किस लिए। क्यों।
अव्य० दे० 'कितना'।
कतना-अ० [हिं० कातना] काता जाना।
कतरन-स्त्री० [हिं० कतरना] कपड़े, कागज आदि के वे छोटे रद्दी टुकड़े जो कोई चीज काटने पर बच रहते हैं।
कतरना-स० [सं० कर्त्तन] कैंची या किसी औजार से काटना।
कतरनी-स्त्री० [हिं० कतरना] बाल, कपड़े, धातु आदि काटने की कैंची।
कतर-ब्योंत-स्त्री० [हिं० कतरना+ब्योंत] १. काट-छाँट। २. उलट-फेर। इधर का उधर करना। ३. उधेड़-बुन। सोच-विचार। ४. युक्ति। जोड़-तोड़।
कतरा-पुं० [हिं० कतरना] कटा हुआ टुकड़ा। खंड।
पुं० [अ०] बूँद। बिन्दु।
कतराना-अ० [हिं० कतरना] [भाव० कतराई] किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना।
स० [हिं०] 'कतरना' का प्रे० रूप।
कतल-पुं० [अ० कत्ल] वध। हत्या।
कतलाम-पुं० [अ० कत्ल-आम] सर्व-साधारण का वध। सर्व-संहार।
कतली-स्त्री० [फा० कतरा] मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा।
कतवार-पुं० [हिं० पतवार=पताई] कूड़ा-करकट।
यौ०-कतवार-खाना = कूड़ा फेंकने की जगह।
*पुं० [हिं० कातना] कातनेवाला।
कतहुं(हूं)-अव्य० दे० 'कहीं'।
कताई-स्त्री० [हिं० कातना] कातने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
कतान-स्त्री० [फा०] १. अलसी की छाल का बढ़िया कपड़ा जो पहले बनता था। २. एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।
कताना-स० हिं० 'कातना' का प्रे० रूप।
कतार-स्त्री० [अ०] १. पंक्ति। श्रेणी। २. समूह। झुंड।
कतारा-पुं० [सं० कांतार] [स्त्री० अल्पा० कतारी] एक प्रकार का मोटा गन्ना।
कति, कतिक*-वि० [सं० कति] १. कितना। २. बहुत।
कतिपय-वि० [स०] १. कितने ही। कई। २. कुछ। थोड़े से।
कतीरा-पुं० [देश०] गुलू नामक वृक्ष का गोंद।
कतेक*-वि० दे० 'कतिक'।
कत्ती-स्त्री० [सं० कर्त्तरी] १. चाकू। छुरी। २. छोटी तलवार। ३. कटारी। ४. सोनारों का कतरनी। ५. बत्ती की तरह बटकर बाँधा जानेवाली पगड़ी।
कत्थई-वि० [हिं० कत्था] कत्थे या खैर के रंग का।
कत्थक-पुं० [सं० कथक] एक जाति जिसका काम गाना-बजाना है।
कत्था-पुं० [सं० क्वाथ] [वि० कत्थई] १. खैर की लकड़ियों को उबालकर नि-काला हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जो पान पर लगाकर खाते हैं। २. खैर का पेड़।
कत्ल-पुं० दे० 'कतल'।
कथंचित्-क्रि० वि० [सं०] शायद।
कथक-पुं० [सं०] १. कथा कहनेवाला। पौराणिक। २. कत्थक।

कथक्कड़-पुं० [सं० कथा+कड़ (प्रत्य०)] बहुत कथा कहनेवाला।

कथन-पुं० [सं०] १. कुछ कहना या बोलना। २. कही हुई बात। उक्ति। ३. किसी के सामने दिया हुआ वक्तव्य। बयान। (स्टेटमेन्ट)

कथना*-स० [सं० कथन] १. कहना। बोलना। २. निन्दा या बुराई करना।

कथनी*-स्त्री० [सं० कथन+ई (प्रत्य०)] १. कथन। बात। २. हुज्जत। बकवाद।

कथनीय-वि० [सं०] १. कहने योग्य। वर्णनीय। २. निन्दनीय। बुरा।

कथरी-स्त्री० [सं० कंथा+री (प्रत्य०)] पुराने चिथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना। गुदड़ी।

कथा-स्त्री० [सं०] १. वह जो कहा जाय। बात। २. धर्म-विषयक व्याख्यान। ३. चर्चा। ज़िक्र। ४. समाचार। हाल।

कथानक-पुं० [सं०] १. कथा। २. छोटी कथा। कहानी।

कथा-वस्तु-स्त्री० [सं०] उपन्यास या कहानी का ढांचा। (प्लॉट)

कथा-वार्त्ता-स्त्री० [सं०] १ अनेक प्रकार की बात-चीत। २. पौराणिक आख्यान।

कथित-वि० [सं०] कहा हुआ।

कथोद्‌घात-पुं० [सं०] १. प्रस्तावना। कथा का प्रारंभ। २. (नाटक में) सूत्र-धार की बात, अथवा उसके आशय के अनुसार पहले-पहल पात्र का आना और अभिनय आरम्भ करना।

कथोपकथन-पुं० [सं०] १. वार्त्तालाप। बात-चीत। २. वाद-विवाद।

कथ्य-वि० [सं०] १. कहने के योग्य। कथनीय। २. साधारण बोल-चाल की भाषा में प्रचलित। ३. जो कहा जाता हो। कहलानेवाला।

कदंब-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध वृक्ष। कदम। २. समूह। झुंड। ३. ढेर। राशि।

कद-स्त्री० [अ० कद्] [वि० कद्दी] १. द्वेष। शत्रुता। २. हठ। ज़िद।

† अव्य० [सं० कदा] कब। किस समय।

पुं० [अ० कद] ऊँचाई। (प्राणियों, वृक्षों आदि की)

कदन-पुं० [सं०] १. विनाश। २. वध। हिंसा। ३ युद्ध। ४. पाप। ५. दुःख।

कदन्न-पुं० [सं०] घटिया या मोटा अन्न। जैसे-कोदो, साँवाँ आदि।

कदम-पुं० [सं० कदंब] १. एक सदा-बहार बड़ा पेड़ जिसमें गोल फल लगते हैं। २. इस वृक्ष का फल।

पुं० [अ० कदम] १. पैर। पांव।

मुहा०-कदम उठाना=१ चलना। २. कोई काम करने के लिए आगे बढ़ना। कदम छूना=१ प्रणाम करना। २. शपथ खाना। कदम बढ़ाना=१. तेज़ चलना। २. उन्नति करना। कदम रखना=प्रवेश करना।

२. पैर का चिह्न।

मुहा०-कदम पर कदम रखना=अनु-करण करना।

३. चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अन्तर। पैंड। पग। फाल। ४. घोड़े की वह चाल जिसमें उसके पैरों में तो गति होती है, पर बदन नहीं हिलता।

कदर-स्त्री० [अ०] १. मात्रा। मिकदार। २. मान। प्रतिष्ठा। आदर।

कदराई*-स्त्री० दे० 'कायरता'।

कदरदान-वि० [फा०] गुण-ग्राहक।

कदरमस*-स्त्री० [सं० कदन] मार-पीट।

कदराई*-स्त्री० दे० 'कायरता'।

कदराना*-अ० [हिं० कादर] १. कायरता दिखाना। २. डरना।

कदर्थ-वि० [सं०] कुत्सित। बुरा।

कदर्थना-स्त्री० [सं०] [वि० कदर्थित] १. दुर्दशा। दुर्गति। २. निन्दा।

कदली-स्त्री० [सं०] केला।

कदा-क्रि० वि० [सं०] कब। किस समय। मुहा०-यदा कदा=कभी कभी। जब-तब।

कदाकार-वि० [सं०] बुरे आकार का। बद-शकल। भद्दा।

कदाच*-क्रि० वि० दे० 'कदाचित्'।

कदाचार-पुं० [सं०] [वि० कदाचारी] बुरी चाल। बुरा आचरण। बद-चलनी।

कदाचित्-क्रि० वि० [सं०] १. कभी। किसी समय। २. शायद।

कदापि-क्रि० वि० [सं०] कभी। हर्गिज़।

कदूरत-स्त्री० [अ०] मन-मोटाव।

कद्दू-पुं० [फा० कदू] लौकी। घीया।

कधी†-क्रि० वि० दे० 'कभी'।

कन-पुं० [सं० कण] १. बहुत छोटा टुकड़ा। कण। २. अन्न का दाना या उसका टुकड़ा। ३. प्रसाद। जूठन। ४. भीख का अन्न। ५. शारीरिक शक्ति। पुं० 'कान' का संक्षिप्त रूप जो यौगिक शब्दों के पहले आता है। जैसे कन-पटी।

कनक-पुं० [सं०] १. सोना। सुवर्ण। २. धतूरा। ३. पलाश। ढाक। पुं० दे० 'गेहूँ'।

कनक-चंपा-पुं० [सं० कनक+हिं० चंपा] एक प्रकार का चंपा (फूल)।

कन-कटा-वि० [हिं० कान+कटना) १. जिसका कान कटा हो। बूचा। २. कान काट लेनेवाला।

कनकना-[वि०] [हिं० कनकनाना] [स्त्री० कनकनी] १. जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो। २. चुनचुनानेवाला। ३. अरुचिकर। ४. चिड़चिड़ा।

कनकनाना-अ० [हिं०काट, पु०हिं०कान] [संज्ञा कनकनाहट] १. सूरन, अरवी आदि तरकारियों के स्पर्श से अंगों में चुनचुनाहट होना। चुनचुनाना। २. अरुचिकर लगाना। अ० [हिं० चौंकना] १. चौकन्ना होना। २. रोमांचित होना।

कनका-पुं० [सं० कण] [स्त्री० कनकी] किसी चीज के टूटे-फूटे दाने या टुकड़े।

कनकूत-स्त्री० [सं० कण+हिं० कूत] खेत में खड़ी फसल की उपज का अनुमान।

कन-कौआ-पुं० [हिं० कन्ना+कौआ] कागज की बड़ी गुड्डी। पतंग।

कन-खजूरा-पुं० [हिं० कान+खर्जु=एक कीड़ा] एक जहरीला छोटा कीड़ा जिसके बहुत-से पैर होते हैं। गोजर।

कनखा-पुं० [सं० काण्ड] १. कोंपल। २. शाखा। डाली।

कनखियाना-स० [हिं० कनखी] १. कनखी या तिरछी निगाह से देखना। २. आंख से इशारा करना।

कनखी-स्त्री० [हिं० कोना+आंख] १. पुतली को आंख के कोने पर ले जाकर और दूसरों की दृष्टि बचाकर देखना। २. आंख का इशारा। मुहा०-कनखी मारना=आंख से इशारा या मना करना।

कन-छेदन-पुं० [हिं० कान+छेदना] हिन्दुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चों के कान छेदे जाते है। कर्णवेध।

कन-टोप-पुं० [हिं० कान+टोपी] वह टोपी जिससे सिर और दोनों कान

ढँक जायँ।

कन-पटी-स्त्री० [हिं० कान+सं० पट] कान और आँख के बीच का स्थान।

कन-पेड़ा-पुं० [हिं० कान+पेड़ा] एक रोग जिसमें कान के पास सूजन होती है।

कन-फटा-पुं० [हिं० कान+फटना] गोरख-पंथी योगी जो कानों में बिल्लौर की मुद्राएँ पहनते हैं।

कन-फुँका-वि० [हिं० कान+फूँकना] [स्त्री० कनफुँकी] १. कान में मंत्र सुनाकर दीक्षा देनेवाला। २. जिसने दीक्षा ली हो।

कनमनाना-अ० [अनु०] १. किसी की आहट पाकर कुछ हिलना-डोलना। २. किसी बात के विरुद्ध धीरे से कुछ कहना या चेष्टा करना।

कनय*-पुं० [सं० कनक] सोना। सुवर्ण।

कन-रसिया-पुं० [हिं० कान+रसिया] गाना-बजाना सुनने का शौकीन।

कन-सुई-स्त्री० [हिं० कान+सुनना] आहट। टोह।

मुहा०-**कनसुई या कनसुइयाँ लेना**=छिपकर किसी की बात सुनना।

कनस्तर-पुं० [अं० कैनिस्टर] टीन का चौखूँटा पीपा, जिसमें घी-तेल आदि रक्खे जाते हैं।

कनहार*-पुं० [सं० कर्णधार] मल्लाह।

कनागत-पुं० [सं० कन्यागत (सूर्य)] पितृपक्ष जिसमें श्राद्ध होते हैं।

कनात-स्त्री० [तु०] कपड़े का वह परदा जिससे कोई स्थान घेरा जाता है।

कनिगर*-पुं० [हिं० कानि+फा० गर] अपनी मर्य्यादा का ध्यान रखनेवाला।

कनियाना-अ० दे० 'कतराना'।

† अ० [?] गोद में उठाना।

कनियार-पुं० दे० 'कनक-चंपा'।

कनिष्ठ-वि० [सं०] [स्त्री० कनिष्ठा, भाव० कनिष्ठता] १. बहुत छोटा। सबसे छोटा। २. जो पीछे उत्पन्न हुआ हो। ३. पद, मर्यादा, अवस्था आदि में छोटा। 'वरिष्ठ' का उलटा। (जूनियर)। ४. हीन। निकृष्ट।

कनिहार*-पुं० [सं० कर्णधार] मल्लाह।

कनी-स्त्री० [सं० कण] १. छोटा टुकड़ा। २. हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा।

मुहा०-**कनी खाना या चाटना**=हीरे की कनी निगलकर प्राण देना।

३. चावल के छोटे टुकड़े। कनकी। ४. वर्षा की बूँद।

कनूका*-पुं० दे० 'कनका'।

कने-क्रि० वि० [सं० करणे=स्थान में] १. पास। निकट। २. ओर। तरफ।

कनैठी-स्त्री० [हिं० कान+ऐंठना] कान मरोड़ने की सजा।

कनेर-पुं० [सं० कर्णेर] एक पेड़ जिसमें लाल या पीले सुन्दर फूल लगते हैं।

कनैव-पुं० [हिं० काना+एव] चारपाई का टेढ़ापन।

कनौखी*-वि०, स्त्री० दे० 'कनखी'।

कनौजिया-वि० [हिं० कन्नौज+इया (प्रत्य०)] कन्नौज का निवासी।

कनौड़ा-[हिं० कान+औड़ा (प्रत्य०)] १. काना। २. जिसका कोई अंग खंडित हो। अपंग। खोड़ा। ३. कलंकित। निन्दित। ४. लज्जित। संकुचित। ५. कृतज्ञ। ६. तुच्छ। हीन।

पुं० [हिं० कीनना=मोल लेना] मोल लिया हुआ दास।

कनौती-स्त्री० [हिं० कान+औती (प्रत्य०)] १. पशुओं के कान। २. घोड़ों के कान उठाये रखने का ढंग। ३. कान में पहनने

की बाली ।

कन्ना-पुं० [सं० कर्ण, प्रा० कण्ण] [स्त्री० कन्नी] १. पतंग के बीच में बांधा जानेवाला डोरा । २. किनारा । कोर ।

पुं० [सं० कण] चावल का टुकड़ा ।

कन्नी-स्त्री० [हिं० कन्ना] १. पतंग या कनकौए के दोनों ओर के किनारे । २. किनारा ।

मुहा०-**कन्नी काटना**=सामने न आना।

कन्यका-स्त्री० दे० 'कन्या' ।

कन्या-स्त्री० [सं०] १. अविवाहिता लड़की । क्वारी लड़की । २ पुत्री । बेटी। ३ बारह राशियों में से छठी राशि ।

कन्या कुमारी-स्त्री० [सं०कन्या+कुमारी] भारत के दक्षिण में रामेश्वर के पास का एक अन्तरीप । रास कुमारी ।

कन्या-दान-पुं० [सं०] विवाह में वर को दान रूप में कन्या देने की रीति ।

कन्हाई, कन्हैया-पुं० दे० 'श्रीकृष्ण' ।

कपट-पुं० [सं०] [वि० कपटी] १. अभिप्राय साधने के लिए हृदय की बात छिपाना । छल । धोखा । २. दुराव । छिपाव ।

कपटना-स० [सं० कल्पन] १. काट या निकालकर अलग करना ।

कपटी-वि० [सं०] कपट करनेवाला ।

कपड़-छन-पुं० [हिं० कपड़ा+छानना] पिसी हुई बुकनी को कपड़े में छानना ।

कपड़-द्वार-पुं०[हिं० कपड़ा+द्वार] कपड़ों का भंडार । वस्त्रागार । तोशाखाना ।

कपड़-मिट्टी-स्त्री० [हिं० कपड़ा+मिट्टी] औषध फूँकने के संपुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया । कपड़ौटी ।

कपड़ा-पुं० [सं० कर्पट] १. रूई, रेशम, ऊन आदि के तागों से बुना हुआ शरीर का आच्छादन । वस्त्र । पट ।

मुहा०-**कपड़ों से होना**=मासिक धर्म्म से होना । रजस्वला होना । (स्त्रियों का)

२. पहनावा । पोशाक ।

यौ०-**कपड़ा-लत्ता**=पहनने के कपड़े ।

कपर्द(क)-पुं० [सं०] [स्त्री० कपर्दिका] १. (शिव का) जटा-जूट । २. कौड़ी ।

कपर्दिका-स्त्री० [सं०] कौड़ी ।

कपर्दी-पुं० [सं० कपर्दिन्] शिव ।

कपाट-पुं० [सं०] किवाड़ । दरवाजा ।

कपार*-पुं० दे० 'कपाल' ।

कपाल-पुं०[सं०] [वि० कपाली, कपालिका] १. खोपड़ा । खोपड़ी । २. ललाट । मस्तक । ३. अदृष्ट । भाग्य । ४. मिट्टी का भिक्षा-पात्र । खप्पर ।

कपालक*-वि० दे० 'कापालिक' ।

कपाल-क्रिया-स्त्री० [सं०] शव-दाह का एक कृत्य जिसमें शव की खोपड़ी बांस या लट्ठे से तोड़ते हैं ।

कपालिका-स्त्री० [सं०] रण-चंडी ।

कपाली-पुं० [सं० कपालिन्] [स्त्री० कपालिनी] १ शिव । महादेव । २. भैरव । ३.ठीकरा लेकर भीख मांगनेवाला।

कपास-स्त्री० [सं० कर्पास] [वि० कपासी] एक प्रसिद्ध पौधा जिसके डोडों से रूई निकलती है ।

कपिंजल-पुं० [सं०] १.चातक । पपीहा। २. गौरा पक्षी । ३. तीतर ।

वि० [सं०] पीले रंग का ।

कपि-पुं० [सं०] १.बंदर । २. हाथी । ३. सूर्य ।

कपित्थ-पुं० [सं०] कैथ का पेड़ या फल ।

कपिल-वि० [सं०] [स्त्री० कपिला, भाव० कपिलता] १. भूरा । मटमैला । तामड़े

रंग का। २. सफेद। ३. भोला-भाला।
पुं० १. अग्नि। २. महादेव। ३. सूर्य। ४. सांख्य-शास्त्र के कर्त्ता एक मुनि।

कपिला-स्त्री० [सं०] १. सफेद रंग की गाय। २. सीधी गाय।

कपिश-वि० [सं०] १. मट-मैला। २. पीला-भूरा या लाल-भूरा।

कपीश-पुं० [सं०] वानरों का राजा। जैसे-हनुमान, सुग्रीव आदि।

कपूत-पुं० [सं० कुपुत्र] बुरी चाल-चलन का पुत्र। बुरा लड़का।

कपूर-पुं० [सं० कर्पूर] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध सुगन्धित द्रव्य जो दारचीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है।

कपूर-कचरी-स्त्री० [हिं० कपूर+कचरी] एक बेल जिसकी सुगन्धित जड़ दवा के काम में आती है।

कपूरी-वि० [हिं० कपूर] १. कपूर का बना हुआ। २. हलके पीले रंग का।
पुं० १. कुछ हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का पान।

कपोत-पुं० [सं०] [स्त्री० कपोतिका, कपोती] १. कबूतर। २. परेवा। ३. पक्षी। चिड़िया।

कपोत-व्रत-पुं० [सं०] चुपचाप दूसरे के अत्याचार सहने का व्रत।

कपोती-स्त्री० [सं०] १. कबूतरी। २. पेंडुकी। ३. कुमरी।

कपोल-पुं० [सं०] गाल।

कपोल-कल्पना-स्त्री० [सं०] [वि० कपोल-कल्पित] मन-गढ़ंत या बनावटी बात।

कफ-पुं० [सं०] शरीर के अन्दर की वह गाढ़ी लसीली वस्तु जो खाँसने या थूकने से मुँह या नाक से निकलती है। श्लेष्मा। बलगम।
पुं० [अ०] कमीज या कुरते में आस्तीन का वह अगला भाग जिसमें दोहरी पट्टी होती और बटन लगते हैं।

कफन-पुं० [अ०] वह कपड़ा जिसमें शव लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है।

कफन-खसोट-वि० [अ० कफन+हिं० खसोटना] अत्यन्त लोभी और निन्दनीय कर्म करनेवाला।

कफनाना-स० [हिं० कफन] शव को कफन में लपेटना।

कफनी-स्त्री० [हिं० कफन] १. वह कपड़ा जो शव के गले में पहनाते हैं। २. गले में पहनने का साधुओं का कपड़ा।

कबंध-पुं० [सं०] १. कंकाल। २. बादल। ३. पेट। ४. बिना सिर का धड़। रुंड।

कब-क्रि० वि० [सं० कदा] किस समय? किस वक्त?
मुहा०-कब का, कब के, कब से=देर से। कब नहीं = बराबर। सदा।

कबड्डी-स्त्री० [देश०] लड़कों का एक खेल जो दो दलों में होता है।

कबर-स्त्री० दे० 'कब्र'।

कबरा-वि० दे० 'चित-कबरा'।

कबरी-स्त्री० [सं० कवरी] स्त्रियों के सिर की चोटी।

कबल-अव्य० [अ०] पहले। पूर्व।

कबा-पुं० [अ०] एक प्रकार का लम्बा ढीला पहनावा।

कबाड़-पुं० [सं० कर्पट] [वि० कबाड़ी] १. काम में न आनेवाली वस्तु। २. व्यर्थ का काम।

कबाड़ा-पुं० [हिं० कबाड़] झंझट। बखेड़ा।

कबाड़िया, कबाड़ी-पुं० [हिं० कबाड़]

१. टूटी-फूटी चीजें बेचनेवाला आदमी। २. झगड़ालू।

कबाब-पुं० [अ०] सीखों पर भूना हुआ मांस।

कबाब-चीनी-स्त्री० [अ० कबाब+हिं० चीनी] एक झाड़ी जिसके गोल फल दवा के काम में आते हैं।

कबाबी-वि० [अ० कबाब] १. कबाब बेचनेवाला। २. मांसाहारी।

कबायली-पुं० [अ०] पश्चिमी पाकिस्तान में रहनेवाले किसी कबीले का आदमी।

कबार-पुं० [हिं० कबाड़] १. रोजगार। व्यवसाय। २. दे० 'कबाड़'।

कबारना-स० दे० 'उखाड़ना'।

कबाला-पुं० [अ०] वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकार में चली जाय। जैसे-बैनामा।

कबाहत-स्त्री० [अ०] १. बुराई। खराबी। २. झंझट। अड़चन।

कबीर-पुं० [अ० कबीर=बड़ा, श्रेष्ठ] १. एक प्रसिद्ध भक्त जो जुलाहे थे। २. एक प्रकार का अश्लील गीत जो होली में गाया जाता है।

कबीर-पंथी-वि० [हिं० कबीर+पंथ] कबीर के सम्प्रदाय का।

कबीला-पुं० [अ० कबील.] १. समूह। झुंड। २. एक वंश के सब लोगों का वर्ग। स्त्री० जोरू। पत्नी।

कबुलवाना-स० हिं० 'कबूलना' का प्रे०।

कबूतर-पुं० [फा० मि० सं० कपोत] [स्त्री० कबूतरी] झुंड में रहनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी।

कबूल-पुं० [अ०] स्वीकार। मंजूर।

कबूलना-स० [अ० कबूल+ना (प्रत्य०)] स्वीकार करना। मंजूर करना। सकारना।

कबूलियत-स्त्री० [अ०] वह कागज जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में पट्टा देनेवाले को लिखकर देता है।

कबूली-स्त्री० [फा०] चने की दाल की खिचड़ी।

कब्ज-पुं० दे० 'कब्जियत'।

कब्जा-पुं० [अ०] १. मूठ। दस्ता। २. किवाड़ या सन्दूक में जड़े जानेवाले लोहे या पीतल की चादर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े जो पेंच से जड़े जाते हैं। ३. दखल। अधिकार। ४. वश। इख्तियार।

कब्जियत-स्त्री० [अ०] पाखाना साफ न आना। मलावरोध।

कब्र-स्त्री० [अ०] १. वह गड्ढा जिसमें मुसलमान, ईसाई आदि अपने मुरदे गाड़ते हैं। २. वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है।

मुहा०-कब्र में पैर लटकाना=मरने के समीप होना।

कब्रिस्तान-पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं।

कभी-क्रि० वि० [हिं० कब+ही] १. किसी समय। किसी अवसर पर।

मुहा०-कभी का=बहुत देर से। कभी न कभी=आगे चलकर किसी अवसर पर।

२. किसी समय भी। कदापि। हरगिज।

कभू*-क्रि० वि० दे० 'कभी'।

कमंगर-पुं० [फा० कमानगर] १. कमान बनानेवाले। २. जोड़ की उखड़ी हुई हड्डी बैठानेवाले। ३. चितेरा।

कमंडल-पुं० [सं० कमंडलु] संन्यासियों का जल-पात्र जो धातु या दरियाई नारियल आदि का होता है।

कमंद*-पुं० दे० 'कबंध'।

स्त्री० [फा०] १. वह फन्देदार रस्सी जिसे फेंककर, जंगली पशु फँसाये जाते हैं। फंदा। पाश। २. वह फन्देदार रस्सी जिसके सहारे चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कम-वि० [फा०] १. थोड़ा। न्यून। अल्प।
मुहा०-**कम से कम**=अधिक नहीं, तो इतना तो अवश्य। और नहीं, तो इतना जरूर।
२. बुरा। जैसे-कमबख्त।
क्रि० वि० प्रायः नहीं। बहुधा नहीं।

कम-असल-वि० [फा० कम+अ० असल] १. वर्ण-संकर। दोगला। २. नीच।

कमखाब-पुं० [फा०] एक प्रकार का बूटेदार रेशमी कपड़ा।

कमची-स्त्री० [तु०, मि० सं० कंचका] १. वह पतली लचीली टहनी जिससे टोकरियाँ बनाते हैं। तीली। २. पतली लचीली छड़ी।

कमच्छा-स्त्री० दे० 'कामाख्या'।

कमजोर-वि० [फा०] दुर्बल। अशक्त।

कमजोरी-स्त्री० [फा०] दुर्बलता।

कमठ-पुं० [सं०] [स्त्री० कमठी] १. कछुआ। २. साधुओं का तूँबा। ३. बाँस।

कमठी-पुं० [सं०] कछुआ।
स्त्री० [सं० कमठ] बाँस की पतली लचीली धज्जी। फट्टी।

कमना*-अ० [फा० कम] कम होना।

कमनी*-वि० दे० 'कमनीय'।

कमनीय-वि० [सं०] [भाव० कमनीयता] सुन्दर। मनोहर।

कमनैत-पुं० [फा० कमान] [भाव० कमनैती] कमान चलानेवाला। तीरंदाज़।

कमर-स्त्री० [फा०] शरीर में पेट और पीठ के नीचे और पेडू तथा चूतड़ के ऊपर का अंग।
मुहा०-**कमर कसना या बाँधना**=तैयार होना। उद्यत होना। २. चलने की तैयारी करना। **कमर टूटना**=कुछ करने के योग्य न रह जाना।
२. किसी लम्बी वस्तु के बीच का पतला भाग। जैसे-कोल्हू की कमर।

कमरख-स्त्री० [सं० कर्मरंग, फा० कम्मरंग] एक पेड़ जिसके फांक वाले लम्बे लम्बे फल खट्टे होते हैं। कमरंग।

कमरखी-वि० [हिं० कमरख] जिसमें कमरख की तरह उभरी हुई फांकें हों।

कमर-बंद-पुं० [फा०] १. वह लम्बा कपड़ा जिससे कमर बांधते हैं। पटका। २. पेटी। ३. इजारबन्द। नारा।

कमर-बल्ला-पुं० [फा० कमर+हिं० बल्ला] वह छोटी दीवार जो किलों और चारदीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और झरोखे होते हैं।

कमरा-पुं० [लै० कैमेरा] १. कोठरी। २. छाया-चित्र या फोटो उतारने का यंत्र।

कमरी-स्त्री० दे० 'कमली'।

कमल-पुं० [सं०] १. पानी में होनेवाला एक पौधा जो अपने सुन्दर फूलों के लिए प्रसिद्ध है। २. इस पौधे का फूल। ३. इस फूल के आकार का एक मांस-पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है। क्लोमा। ४. जल। पानी। ५ योनि के अन्दर की एक कमलाकार गाँठ। फूल। धरन। ६. एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं। पांडु।

कमल-गट्टा-पुं० [सं० कमल+हिं० गट्टा] कमल का बीज। पद्मबीज।

कमल-नयन-वि० [सं०] [स्त्री० कमलनयनी] जिसकी आँखें कमल की तरह

बड़ी और सुन्दर हों ।
पुं० विष्णु ।
कमलनाभ-पुं० [सं०] विष्णु ।
कमल-नाल-स्त्री० [सं०] कमल की डंडी, जिसपर फूल रहता है । मृणाल ।
कमल-बाई-स्त्री० दे० 'कमल' (रोग) ।
कमला-स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी । २. धन-सम्पत्ति । ३. एक प्रकार की बड़ी नारंगी । संतरा ।
पुं० [सं० कंबल] १. एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर से छू जाने से खुजली होती है । सूँडी । २ अनाज या सड़े फलों आदि में पड़नेवाला कीड़ा । ढोला ।
कमलासन-पुं० [सं०] १. ब्रह्मा । २. योग का पद्मासन ।
कमलिनी-स्त्री० [सं०] १. छोटा कमल । २. वह तालाब जिसमें कमल हों ।
कमली-स्त्री० [हिं० कंबल] छोटा कम्बल ।
कमवाना-स० [हिं० 'कमाना' का प्रे०] कमाने का काम दूसरे से कराना ।
कमाई-स्त्री० [हिं० कमाना] १ कमाया हुआ धन । अर्जित द्रव्य । २. कमाने का काम ।
कमाऊ-वि० [हिं० कमाना] कमाने-वाला ।
कमाच-पुं० [?] १. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा । २. दे० 'कौंछ' ।
कमान-स्त्री० [फा०] १. धनुष ।
मुहा०-**कमान चढ़ना**=१. दौर-दौरा होना । २. त्योरी चढ़ना । क्रोध में होना ।
२. इन्द्रधनुष । ३. मेहराब । ४ तोप । ५. बन्दूक ।
स्त्री० [अं० कमांड] १. आज्ञा । हुक्म । २. फौजी आज्ञा । ३. फौजी नौकरी ।
मुहा०-**कमान पर जाना**=लड़ाई पर जाना । **कमान बोलना**=सिपाही को नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।
कमाना-स० [हिं० काम] १. काम-धंधा करके धन पैदा करना । २. सुधारकर काम के योग्य बनाना ।
यौ०-**कमाई हुई हड्डी या देह**=कसरत से बलिष्ठ किया हुआ शरीर । **कमाया साँप**=वह साँप जिसके विषैले दाँत उखाड़ लिये गये हों ।
३. सेवा संबंधी छोटे काम करना । जैसे-पाखाना कमाना (उठाना) । दाढ़ी कमाना (हजामत बनाना) ।
४. कर्म का संचय करना । जैसे-पाप कमाना ।
अ० १. मेहनत-मजदूरी करना । २. स्त्री का व्यभिचार से धन उपार्जित करना । कसब करना ।
स० [हिं० कम] कम करना । घटाना ।
कमानी-स्त्री० [फा० कमान] [वि० कमानीदार] १ तार अथवा और कोई लचीली वस्तु, जो इस प्रकार बैठाई हो कि दब और उठ जाय । २. झुकाई हुई लोहे की लचीली तीली । ३. एक प्रकार की चमड़े की पेटी जिसे आंत उतरने के रोगी कमर में बांधते हैं ।
कमाल-पुं० [अ०] [भाव० कमालियत] १. परिपूर्णता । पूरापन । २. निपुणता । कुशलता । ३. अद्भुत या अनोखा काम ।
कमासुत-वि० [हिं० कमाना+सुत] कमाई करनेवाला । धन कमानेवाला ।
कमी-स्त्री० [फा० कम] १. कम होने की क्रिया या भाव । न्यूनता । अल्पता । २. हानि । नुकसान ।
कमीज-स्त्री० [अ० क़मीज़] वह कुरता जिसमें कली और चौबगले नहीं होते ।

कमीना-वि॰ [फा॰] [स्त्री॰ कमीनी] [भाव॰ कमीनापन] नीच । क्षुद्र ।

कमुकंदर*।-पुं॰ [सं॰ कार्मुक+दर] शिव का धनुष तोड़नेवाले, रामचन्द्र ।

कमेरा-पुं॰ [हिं॰ काम+एरा (प्रत्य॰)] छोटा काम करनेवाला । जैसे-मजदूर ।

कमेला-पुं॰ [हिं॰ काम+एला (प्रत्य॰)] वह जगह जहाँ पशु मारे जाते हैं । बध-स्थान । कसाई-खाना ।

कमोदिन*।-स्त्री॰ दे॰ 'कुमुदिनी' ।

कमोरा-पुं॰ [सं॰ कुंभ+ओरा (प्रत्य॰)] [स्त्री॰ कमोरी, कमोरिया] मिट्टी का वह बड़ा बरतन जिसमें दूध, दही या पानी रखा जाता है । घड़ा । कछरा ।

कम्युनिज्म-पुं॰ [अं॰] वह मतवाद या सिद्धान्त जिसमें सम्पत्ति का अधिकार समष्टि या समाज का माना जाना चाहिए, व्यक्ति विशेष या व्यष्टि का स्वत्व नहीं होना चाहिए । समष्टिवाद ।

कम्युनिस्ट-पुं॰ [अं॰] वह जो कम्यूनिज्म के सिद्धान्त मानता और उनका प्रचार चाहता हो ।

कया*-स्त्री॰ दे॰ 'काया' ।

कयाम-पुं॰ [अ॰] १. ठहराव । टिकाव । २. ठहरने की जगह । विश्राम-स्थान । ३. निश्चय । स्थिरता ।

कयामत-स्त्री॰ [अ॰] १. मुसलमानों, ईसाइयों आदि के अनुसार सृष्टि का वह अन्तिम दिन जब सब मुरदे उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनका न्याय होगा । २. प्रलय ।

कयास-पुं॰ [अ॰] अनुमान ।

करंज-पुं॰ [सं॰] १. कंजा । २. एक प्रकार का छोटा जंगली पेड़ ।
पुं॰ [सं॰ कलिंग] मुरगा ।

करंजुआ-वि॰ [सं॰ करंज] करंज के रंग का । खाकी ।

करंड-पुं॰ [सं॰] १. मधु-मक्खी का छत्ता । २. तलवार । ३. कारंडव नाम का हंस ।
पुं॰ [सं॰ कुरविंद] कुरुल पत्थर जिस-पर रखकर हथियार आदि तेज किये जाते हैं ।

कर-पुं॰ [सं॰] १. हाथ । २. हाथी का सूँड़ जिससे वह हाथ के समान काम लेता है । ३. सूर्य्य या चन्द्रमा की किरण । ४. आकाश से गिरनेवाला पत्थर । ओला । ५. वह नियत धन जो किसी व्यक्ति या किसी संपत्ति, व्यापार आदि की आय में से कोई अधिकारिकी अपने लिए लेती है । महसूल । (टैक्स) जैसे-आय-कर, मार्ग-कर ।
*प्रत्य॰ [सं॰ कृत] सम्बन्ध कारक का चिह्न । का । जैसे-तिनकर ।

करक-स्त्री॰ दे॰ 'कसक' ।

करकट-पुं॰ [हिं॰ खर+सं॰ कट] कूड़ा । कतवार ।

करकना*-अ॰ दे॰ 'कड़कना' ।
वि॰ दे॰ 'करकरा' ।

करकरा-पुं॰ [सं॰ कर्करेटु] एक प्रकार का सारस ।
वि॰ [सं॰ कर्कर] खुरखुरा ।

करकराहट-स्त्री॰ [हिं॰ करकरा+आहट (प्रत्य॰)] १. कड़ापन । २. खुरखुराहट । ३. आँख में किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा ।

करका-पुं॰ दे॰ 'ओला' ।

करखना*-अ॰ [सं॰ कर्षण] १. खींचना । २. आवेश में आना ।

करखा*-पुं॰ [सं॰ कर्ष] उत्तेजना । बढ़ावा ।
पुं॰ १. दे॰ 'कालिख' । २. दे॰ 'कड़खा' ।

करखाना*-अ० [हिं० कालिख] कालिख से युक्त होना। काला पड़ना।
स० कालिख लगाकर काला करना।
अ० हिं० 'करखना' का प्रेर०।

करगत-वि० [सं०] हाथ में आया हुआ। हस्तगत।

करगता-पुं० दे० 'करधनी'।

करगह-पुं० दे० 'करघा'।

करघा-पुं० [फा० कारगाह] जुलाहों का वह यंत्र जिससे वे कपड़ा बुनते हैं। खड्डी।

करचंग-पुं० [हिं० कर+चंग] १. ताल देने का एक बाजा। २. डफ।

करज-पुं० [सं०] १. नाखून। २. उँगली।

करण-पुं० [सं०] १. कोई काम करने की क्रिया या भाव। कार्य। जैसे-साधारणीकरण, सरलीकरण। २. वह वस्तु जिसके द्वारा कोई कार्य किया जाय। करने का साधन। जैसे-हथियार, औजार आदि। (इन्स्ट्रुमेन्ट) ३. विधिक क्षेत्र में वह लेख्य जो किसी कार्य, व्यवहार, संविदा, प्रक्रिया आदि का सूचक हो और जिसके द्वारा कोई अधिकार या दायित्व उत्पन्न, अंतरित, परिमित, विस्तारित, निर्वापित या अभिलिखित होता हो। साधन-पत्र। (इन्स्ट्रुमेन्ट) ४. व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्त्ता कोई क्रिया सिद्ध करता है। (इसका चिह्न 'से' है।) ५. गणित में वह संख्या जिसका पूरा पूरा वर्ग-मूल न निकल सके।
*पुं० दे० 'कर्ण'।
वि० करनेवाला। कर्त्ता। (यौगिक शब्दों के अन्त में) जैसे-मंगलकरण।

करणिक-पुं० [सं०] १. वह जो किसी का कोई काम करता हो। कार्यकर्त्ता। २. किसी कार्यालय में लिखा-पढ़ी का काम करनेवाला कर्मचारी। (क्लर्क)

करणीय-वि० [सं०] करने योग्य।

करतब-पुं० [सं० कर्त्तव्य] [वि० करतबी] १. कार्य। काम। २. कला। हुनर। ३. करामात। जादू।

करतबी-वि० [हिं० करतब] १. अच्छा और बहुत काम करनेवाला। २. निपुण। ३. बाजीगर।

करतरी*-स्त्री० दे० 'कर्त्तरी'।

करतल-पुं० [सं०] [वि० करतली] हाथ की हथेली।

करता*-पुं० दे० 'कर्त्ता'।

करतार-पुं० [सं० कर्त्तार] ईश्वर।
*पुं० दे० 'करताल'।

करतारी-स्त्री० [हिं० करतार] कर्त्तार या ईश्वर की लीला।
*स्त्री० दे० 'कर-ताली'।

करताल-पुं० [सं०] १. दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। ताली बजना। २. ताल देने का एक प्रकार का बाजा। ३. झाँझ। मँजीरा।

कर-ताली-स्त्री० [सं० कर+ताल] दोनों हाथों से तालियाँ बजाने की क्रिया।

करतूत-स्त्री० [सं० कर्तृत्व] १. कर्म। करनी। काम। २. कला। हुनर।

करद-वि० [सं०] किसी प्रकार का कर या राजस्व देनेवाला।

करदा-पुं० [हिं० गर्द] १. बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा-करकट। २. दाम में वह कमी जो ऐसे कूड़े-करकट के कारण की जाय। कटौती।

करधनी-स्त्री० [सं० किंकिणी] कमर में पहनने का एक गहना।

करन*-पुं० १. दे० 'कर्ण'। २. दे० 'करण'।

करन-फूल-पुं० [सं० कर्ण+हिं० फूल] कान का एक गहना। तरौना। कॉप।

करना-स० [सं० करण] १. क्रिया को आरम्भ से समाप्ति की ओर ले जाना। निपटाना। भुगताना। सम्पादित करना। २. पकाकर तैयार करना। ३. पति या पत्नी के रूप में ग्रहण करना। ४. भाड़े पर सवारी ठहराना। ५ रोशनी बुझाना। ६. एक रूप से दूसरे रूप में लाना। बनाना। ७. कोई वस्तु पोतना। जैसे-रंग करना।

पुं० [सं० कर्ण] सुदर्शन नामक पौधा जिसमें सफ़ेद फूल लगते हैं।

* पुं० दे० 'करनी'।

करनाटक-पुं० [सं० कर्णाटक] मद्रास प्रान्त का एक भाग।

करनाटकी-पुं० [सं० कर्णाटकी] १. करनाटक प्रदेश का निवासी। २. कसरत दिखानेवाला मनुष्य। ३. जादूगर।

करनाल-पुं० [अ० करनाय] १ सिंघा। नरसिंहा। भोंपा। २. एक प्रकार की तोप।

करनी-स्त्री० [हिं० करण] १ कार्य। कर्म। करतब। २. अन्त्येष्टि कर्म। मृतक-संस्कार। ३. दीवार पर पलस्तर या गारा लगाने का एक औज़ार। कन्नी।

करपर*-स्त्री० [सं० कर्पर] खोपड़ी।

वि० [सं० कृपण] कंजूस।

करपरी*-स्त्री० [देश०] पीठी की बरी।

कर-पलई-स्त्री० दे० 'कर-पल्लवी'।

कर-पल्लवी-स्त्री० [सं०] उँगलियों के संकेत से शब्द या भाव प्रकट करना।

कर-पिचकी-स्त्री० [सं० कर+हिं० पिचकी] हथेलियों से पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने की मुद्रा या कार्य।

करबरना*-अ० [अनु०] १. कुलबुलाना। २ पक्षियों का कलरव करना। चहकना।

करबूस-पुं० [?] घोड़े की जीन में लगी वह रस्सी या तसमा जिसमें हथियार लटकाते हैं।

करभ-पुं० [सं०] [स्त्री० करभी] १. हथेली के पीछे का भाग। २. ऊँट का बच्चा। ३. हाथी का बच्चा। ४. कमर।

करभोरु-पुं० [सं०] हाथी के सूँड़ के समान जाँघें।

वि० सुन्दर जाँघोंवाली (स्त्री)।

करम-पुं० [सं० कर्म] १. कर्म। काम।

यौ०-**करम-भोग**=वह दुःख जो अपने किये हुए कर्मों के कारण हो।

२ कर्म का फल। भाग्य। किस्मत।

मुहा०-**करम फूटना**=भाग्य मंद होना।

यौ०-**करम-रेख**=भाग्य में लिखी बात।

पुं० [अ०] मेहरबानी। कृपा। दया।

करम-कल्ला-पुं० [अ० करम+हिं० कल्ला] एक प्रकार की गोभी। बंद-गोभी।

करमठ*-वि० [सं० कर्मठ] १. कर्मनिष्ठ। २ कर्मकांडी।

करमान*-पुं० [सं० कर्म्म] भाग्य।

कर-माला-स्त्री० [सं०] उँगलियों के पोर पर उँगली रखकर जप की गिनती करना।

करमाली-पुं० [सं०] सूर्य्य।

करमी-वि० [सं० कर्म्म] १. कर्म करनेवाला। २ कर्मठ। ३. कर्मकांडी।

करर-पुं० [देश०] १. एक प्रकार का जहरीला कीड़ा। २. रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद।

कररना*-अ० [अनु०] १. चरमराकर टूटना। २. कर्कश शब्द करना।

करल*-पुं० [सं० कटाह] कड़ाही।

करवट-स्त्री० [सं० करवर्त] हाथ या पार्श्व के बल लेटने की स्थिति या मुद्रा।

मुहा०-**करवट बदलना या लेना**=१.

एक ओर से दूसरी ओर घूमकर लेटना। २. बदल जाना। और का और हो जाना। **करवट न लेना**=किसी कर्तव्य का ध्यान न रखना। सन्नाटा खींचना। **करवटें बदलना**=बिस्तर पर बेचैन रहना। तड़पना।
पुं० [सं० करपत्र] १. करवत। आरा। २. वे प्राचीन आरे या चक्र जिनसे कट-कर लोग शुभ फल की आशा से मरते थे।

करवत-पुं० [सं० करपत्र] आरा।

करवर*-स्त्री० [देश०] विपत्ति। आफ़त।

करवरना*-अ० [सं० कलरव] कलरव करना। चहकना।

करवा-पुं० [सं० करक] टोंटीदार लोटा।

करवानक-पुं० दे० 'गौरैया'।

करवाना-स० हिं० 'करना' का प्रे०।

करवार*-स्त्री० [सं० करवाल] तलवार।

करवाल-पुं० [सं० करवाल] १. नाखून। २. तलवार।

करवीर-पुं० [सं०] १. कनेर का पेड़। २. तलवार। ३. स्मशान।

करवैया-वि० [हिं०] करनेवाला।

करश्मा-पुं० [फ़ा०] अद्भुत काम। चमत्कार। करामात।

करष-पुं० [सं० कर्ष] १. खिंचाव। तनाव। २. मन-मोटाव। द्वेष। ३. लड़ाई का जोश।

करषना*-स० [सं० कर्षण] १. खींचना। २. घसीटना। ३. सोख लेना। ४. बुलाना। ५. समेटना।

करसान*-पुं० दे० कृषाण'।

करसायल-पुं० [सं० कृष्णसार] काला हिरन।

करह*-पुं० [सं० करभ] ऊँट।
पुं० [सं० कलिका] फूल की कली।

करहाट(क)-पुं० [सं०] १. कमल की जड़। भसींड़। २. कमल का छत्ता।

करांकुल-पुं० [सं० कलांकुर] पानी के पास रहनेवाला कूँज नामक जल-पक्षी।

कराई-स्त्री० [हिं० केराना] उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी।
स्त्री० [हिं० करना] करने का भाव।
*स्त्री० [हिं० काला] कालापन।

करात-पुं० [अ० क़ीरात] चार जौ की एक तौल जो सोना-चाँदी तोलने के काम में आती है।

कराना-स० हिं० 'करना' का प्र०।

करावा-पुं० [अ०] शीशे का वह बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।

करामात-स्त्री० [अ०] चमत्कार।

करामाती-वि० [हिं० करामात]करामात या करश्मा दिखानेवाला।

करार-पुं० [अ०] १. स्थिरता। ठहराव। २. धैर्य। तसल्ली। सन्तोष। ३. आराम। चैन। ४. वादा। ५. प्रतिज्ञा।

करारना*-अ० [अनु०] कर्कश स्वर निकालना।

करारा-पुं० [सं० कराल] १. नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बना हो। २. टीला। ढूह।
वि० [हिं० कड़ा, कर्रा] १. कठोर। कड़ा। २. दृढ़-चित्त। ३. इतना तला या सेंका हुआ कि तोड़ने से कुर कुर शब्द करे। ४. तेज। तीक्ष्ण। ५. अधिक गहरा या भारी।

कराल-वि० [सं०] [स्त्री० कराली] डरावना। भयानक।

कराहना-अ० [हिं० करना+आह] मुँह से व्यथासूचक शब्द निकालना। आह आह करना।

करिंद*-पुं० [सं० करींद्र] १. बड़ा हाथी। २. इन्द्र का हाथी, ऐरावत।
करि-पुं० [सं०] [स्त्री० करिणी] हाथी।
करिया*-पुं० [सं० कर्ण] १. नाव की पतवार। २. केवट। मल्लाह।
*।-वि० दे० 'काला'।
करिल*-स्त्री० [हिं० कोंपल] कोंपल। नया कल्ला।
वि० दे० 'काला'।
करि-वदन-पुं० [सं०] गणेश।
करीना-पुं० [अ०] ढंग। तरीका।
करीब-क्रि० वि० [अ०] १. समीप। पास। निकट। २. लगभग।
करील-पुं० [सं० करीर] एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं।
करुआ।*-वि० दे० 'कड़ुआ'।
पुं० दे० 'करवा'।
करुखी*-स्त्री० दे० 'कनखी'।
करुण-पुं० [सं०] १. दे० 'करुणा'। २ परमेश्वर।
वि० जिसके मन में करुणा हो। करुणा-युक्त। दयार्द्र।
करुणा-स्त्री० [सं०] १. मन का वह दुःखद भाव जो दूसरों के दुःख देखने से उत्पन्न होता है और वह दुःख दूर करने की प्रेरणा करता है। दया। रहम। २ प्रिय को वियोग से होनेवाला दुःख।
करुणानिधि-वि० [सं०] जिसका हृदय करुणा से भरा हो। बहुत बड़ा दयालु।
करुणामय-वि० [सं०] जिसमें बहुत अधिक करुणा हो।
करुणार्द्र-वि० [सं०] जिसका मन करुणा से द्रवित हुआ हो।
करेजा*-पुं० दे० 'कलेजा'।
करेणु-पुं० [सं०] हाथी।
करेब-स्त्री० [अं० क्रेप] एक प्रकार का महीन रेशमी कपड़ा।
करेर*।-वि० दे० 'कठोर'।
करेला-पुं० [सं० कारवेल्ल] एक बेल जिसके हरे कड़ुए फल तरकारी के काम में आते हैं।
करैत-पुं० [हिं० काला] काला साँप।
करैया*-वि० दे० 'कर्त्ता'।
करैल-स्त्री० [हिं० काला] एक प्रकार की काली मिट्टी जो प्रायः तालों के किनारे मिलती है।
करोटी*-स्त्री० दे० 'करवट'।
करोड़-वि० [सं० कोटि] सौ लाख की संख्या। १००००००० ।
करोड़पति-वि० [हिं० करोड़+सं० पति] वह जिसके पास करोड़ों रुपये हों।
करोछना-स० दे० 'खुरचना'।
करौंछा*।-वि० [हिं० काला] कुछ-कुछ काला।
करौंदा-पुं० [सं० करमर्द] १. एक कँटीला झाड़ जिसके फल छोटे और खट्टे होते हैं।
करौत-पुं० दे० 'आरा'।
करौला*-पुं० [हिं० रौला] हँकवा करने-वाला। शिकारी।
करौली-स्त्री० [सं० करवाली] एक प्रकार की सीधी छुरी।
कर्क(ट)-पुं० [सं०] १. केकड़ा। २. बारह राशियों में से चौथी राशि।
कर्कर-पुं० दे० 'कुरंड'।
कर्कश-वि० [सं०] [भाव० कर्कशता] १. कठोर। कड़ा। जैसे-कर्कश स्वर। २. खुरखुरा। काँटेदार। ३. तीव्र। प्रचंड।
कर्कशा-वि० स्त्री० [सं०] झगड़ालू। झगड़ा करनेवाली। लड़ाकी। (स्त्री)

कर्ज़-पुं० [अ०] ऋण । उधार ।
मुहा०-कर्ज उतारना=कर्ज चुकाना । कर्ज खाना=१. कर्ज लेना । २. उपकृत होना । वश में होना ।

कर्ज़दार-वि० [फ़ा०] उधार लेनेवाला ।

कर्ण-पुं० [सं०] १. सुनने की इन्द्रिय । कान । २. कुन्ती का सब से बड़ा पुत्र जो बहुत दानी था ।
मुहा०-कर्ण का पहरा=प्रभात काल । (दान-पुण्य का समय)
३. नाव की पतवार ।

कर्ण-कटु-वि० [सं०] कान को अप्रिय । जो सुनने में कर्कश लगे ।

कर्णधार-पुं० [सं०] १. माँझी । मल्लाह । २. पतवार । किलवारी । ३. वह जो कोई काम चलाता हो ।

कर्ण-भूषण-पुं० [सं०]कान मे पहनने का एक गहना ।

कर्णवेध-पुं० दे० 'कन-छेदन' ।

कर्णाटी-स्त्री० [सं०] १ कर्णाट देश की स्त्री । २. कर्णाट देश की भाषा । ३ शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमे केवल कवर्ग के अक्षर आते हैं ।

कर्णिका-स्त्री० [सं०] १. करनफूल । २. हाथ की बिचली उँगली । ३. कलम ।

कर्णिकार-पुं० [सं०] कनक-चम्पा ।

कर्त्तन-पुं० [सं०] १. काटना । कतरना । २. कातना (सूत आदि) ।

कर्त्तनी-स्त्री० [सं०] कैंची ।

कर्त्तरी-स्त्री० [सं०] १. कैंची । कतरनी । २. कटारी । ३. करताल ।

कर्त्तव्य-वि० [सं०] १. करने के योग्य । २. जिसे करना आवश्यक हो ।
पुं० अवश्य करने योग्य कार्य्य । धर्म्म । फर्ज । (ड्यूटी)
यौ०-कर्त्तव्याकर्त्तव्य = करने और न करने योग्य काम ।

कर्त्तव्यता-स्त्री०[सं०]१.कर्त्तव्य का भाव।
यौ०-इतिकर्त्तव्यता=उद्योग की हद ।
२. कर्म-कांड कराने की दक्षिणा ।

कर्त्ता-पुं० [सं०] [स्त्री० कर्त्री] १. करनेवाला । २. रचने या बनानेवाला ।
यौ०-कर्त्ता-धर्त्ता=१. जिसे किसी कार्य में सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों । २. सब कुछ करने-धरनेवाला ।
३. ईश्वर । ४. व्याकरण के छः कारकों में से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का बोध होता है ।

कर्त्तार-पुं० [सं० कर्तृ] ईश्वर ।

कर्तृक-वि० [सं०] किया हुआ । सम्पादित ।
पुं० कार्यकर्त्ताओं या कर्मचारियों का सारा समूह । (स्टाफ)

कर्तृत्व-पुं० [सं०] १. कर्त्ता का भाव । २. कर्त्ता का धर्म्म ।

कर्तृ-निरीक्षक-पुं० [सं०] वह जो कर्तृ-वर्ग या कर्मचारियों के कामों का निरीक्षण करता हो । (स्टाफ इन्स्पेक्टर)

कर्तृ-वर्ग-पुं० [सं०] किसी कार्यालय के कर्मचारियों का समूह या वर्ग । कर्तृक । (स्टाफ)

कर्तृवाचक-वि० [सं०] कर्त्ता का बोध करानेवाला । (व्या०)

कर्दम-पुं० [सं०] १. कीचड़ । २. पाप ।

कर्पटी-पुं० [सं० कर्पटिन्] [स्त्री० कर्पटिनी] चिथड़े-गुदड़े पहननेवाला । भिखारी ।

कर्पर-पुं० [सं०] १ कपाल । खोपड़ी । २. खप्पर । ३. कछुए की खोपड़ी । ४. एक प्रकार का शस्त्र ।

कर्बुर-पुं० [सं०] १. सोना । स्वर्ण ।

२. धतूरा। ३. जल। ४. पाप। ५. राक्षस।

वि० रंग-बिरंगा। चित-कबरा।

कर्म-पुं० [सं० कर्मन् का प्रथमा रूप] १. वह जो किया जाय। क्रिया। कार्य। काम। २. धार्मिक कृत्य। ३. व्याकरण में वह शब्द जिसके वाच्य पर कर्त्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े। ४. भाग्य।

कर्म-कांड-पुं० [सं०] [कर्त्ता कर्मकांडी] १. धर्म-संबंधी कृत्य। २. वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्म्मों का विधान हो। ३. किसी धर्म्म के वे धार्मिक और औपचारिक कृत्य जो विशेष अवसरों पर होते हैं।

कर्मकार-पुं० [सं०] १. लोहे या सोने का काम बनानेवाला। २ नौकर। सेवक।

कर्मक्षेत्र-पुं० [सं०] १. कार्य्य करने का स्थान। २. भारतवर्ष।

कर्मचारी-पुं० [सं० कर्मचारिन्] १. काम करनेवाला। कार्यकर्त्ता। २. वह जिसके हाथ में कोई प्रबन्ध या कार्य हो। (मिनिस्टीरियल सर्वेन्ट)

कर्मठ-वि० [सं०] १. काम में चतुर। २. धर्म संबंधी कृत्य करनेवाला। कर्मनिष्ठ।

कर्मणा-क्रि० वि० [सं०] कर्म से। कर्म के अनुसार। जैसे-कर्मणा जाति मानना।

कर्मण्य-वि० [सं०] [भाव० कर्मण्यता] बहुत और अच्छा काम करनेवाला।

कर्मधारय-पुं० [सं०] वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण हो।

कर्म-निष्ठ-वि० [सं०] १. संध्या, अग्निहोत्र आदि कर्तव्य करनेवाला। क्रियावान्। २. अच्छी तरह कार्य करनेवाला।

कर्म-भोग-पुं० [सं०] किये हुए कर्मों का फल।

कर्म-योग-पुं० [सं०] १. चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र-विहित कर्म। २. कर्त्तव्य का वह पालन जो सिद्धि और विफलता में समान भाव रखकर किया जाय।

कर्मयोगी-पुं० [सं० कर्मयोगिन्] वह जो कर्मयोग के सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करे।

कर्म-रेख-स्त्री० [सं० कर्म+रेखा] कर्म या भाग्य का लेख।

कर्म-विपाक-पुं० [सं०] पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल।

कर्मशील-पुं० [सं०] [भाव० कर्मशीलता] १. वह जो फल की अभिलाषा छोड़कर काम करे। कर्मवान्। २. उद्योगी।

कर्महीन-वि० [सं०] [भाव० कर्महीनता] अभागा।

कर्मिष्ठ-वि० दे० 'कर्म-निष्ठ'।

कर्मी-वि० [सं० कर्मिन्] [स्त्री० कर्मिणी] १. कर्म करनेवाला। २ मजदूर।

कर्मेंद्रिय-स्त्री० [सं०] वे इंद्रियाँ जिनसे काम किये जाते हैं। जैसे-हाथ, पैर आदि।

कर्राना*'-अ० [हिं० कर्रा] कड़ा होना।

कर्षक-पुं० [सं०] १. खींचनेवाला। २. किसान। खेतिहर।

कर्षण-पुं० [सं०] [वि० कर्षित, कर्षक] १. खींचना। २. खरोंचकर लकीर बनाना। ३. जमीन जोतना।

कर्षना*-स० दे० 'खींचना'।

कलंक-पुं० [सं०] [वि० कलंकित] १. दाग। धब्बा। २. चन्द्रमा पर का काला दाग। ३. कालिख। कजली। ४. लांछन। बदनामी। ५. ऐब। दोष।

कलंकी-वि० [सं० कलंकित] [स्त्री० कलंकिनी] जिसे कलंक लगा हो। दोषी। पुं० [सं० कल्कि] कल्कि अवतार।

कलंदर-पुं० [अ० कलंदर] १. एक प्रकार के मुसलमान फकीर। २. रीछ और बन्दर नचानेवाला।

कल-पुं० [सं०] १. अव्यक्त मधुर ध्वनि। जैसे-पक्षियों या नदियों का।
वि० १. सुंदर। २. मधुर।
स्त्री० [सं० कल्प] १. आरोग्य। तन्दुरुस्ती। २. आराम। सुख।
मुहा०-कल से=१. चैन से। २. धीरे-धीरे।
क्रि० वि० [सं० कल्य] १. आगामी दूसरा दिन। आनेवाला दिन। २. बीता हुआ अन्तिम दिन।
मुहा०-कल का=थोड़े दिनों का।
स्त्री० [सं० कला] १. पार्श्व। बगल। पहलू। २. अंग। अवयव। ३. युक्ति। ढंग। ४. पेचों और पुरजों से बनी हुई वह वस्तु या उपकरण जिससे कोई काम लिया जाय। यंत्र।
यौ०-कलदार=(यंत्र से बना) रुपया।
५. पेंच। पुर्जा।
वि० [हिं०] 'काला' शब्द का संक्षिप्त रूप। (यौगिक में, शब्दों के पहले; जैसे-कल-मुहाँ)

कलई-स्त्री० [अ०] [वि० कलईदार] १. रांगा। २. रांगे आदि का वह पतला लेप जो बरतनों आदि पर उन्हें चमकाने के लिए लगाते हैं। मुलम्मा। ३. बाहरी चमक-दमक। तड़क-भड़क।
मुहा०-कलई खुलना=असली भेद खुलना। वास्तविक रूप प्रकट होना। कलई न लगना=युक्ति न चलना।
४. दीवारों पर का चूने का लेप। सफेदी।

कल-कंठ-पुं० [सं०] [स्त्री० कलकंठी] १. कोयल। २. हंस।
वि० मीठी ध्वनि करनेवाला।

कलक-पुं० [अ० क़लक़] १. बेचैनी। घबराहट। २. रंज। दुःख। खेद।

कलकना*-अ० [हिं० कलकल] १. चिल्लाना। शोर करना। २. चीत्कार करना।

कल-कल-पुं० [सं०] १. झरनों आदि के जल के गिरने या चलने का शब्द। २. कोलाहल। शोर।
स्त्री० झगड़ा। वाद-विवाद।

कलगा-पुं० [तु० कलगी] १. मरसे की जाति का एक पौधा। जटाधारी। २. दे० 'कलगी'।

कलगी-स्त्री० [हिं० कलगा, मि० सं० कलिंग] कुछ पक्षियों के सुन्दर पर या इस आकार के बने गुच्छे, जो टोपी, पगड़ी आदि में लगाये जाते हैं।

कलछी-स्त्री० [सं० कर+रक्षा] बड़ी डाँड़ी का चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं।

कल-जिब्भा-वि० [हिं० काला+जीभ] [स्त्री० कल-जिब्भी] १. (पशु) जिसकी जीभ काली हो। २. (मनुष्य) जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः पूरी होकर रहें।

कलत्र-पुं० [सं०] पत्नी। जोरू।

कलदार-वि० [हिं० कल+दार] जिसमें कोई कल या पेंच लगा हो।
पुं० सरकारी रुपया।

कलधौत-पुं० [सं०] १. सोना। २. चाँदी।

कलन-पुं० [सं०] [वि० कलित] १. उत्पन्न करना। बनाना। २. धारण करना। ३. आचरण। ४. लगाव। संबंध। ५. गणित की क्रिया करना। हिसाब लगाना। (कैलकुलेशन) जैसे-संकलन,

व्यवकलन । ६. ग्रहण ।

कलना-स्त्री० [सं०] १. धारण या ग्रहण करना । २. विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना । ३. गणना । विचार । ४. लेन-देन । व्यवहार ।

कलप-पुं० [सं० कल्प] १. कलफ़ । २. खिजाब । ३. दे० 'कल्प' ।

कलपना-अ० [सं० कल्पन] १. विलाप करना । बिलखना । २. कल्पना करना । स० [सं० कल्पन] कतरना ।

कलपाना-स० हिं० 'कल्पना' का प्रे० ।

कलफ-पुं० दे० 'माँड़ी ।

कल-बल-पुं० [सं० कला+बल] उपाय। दाँव-पेंच । युक्ति ।
पुं० [अनु०] शोर-गुल ।

कलबूत-पुं० [फा० कालबुद] १ साँचा । २. वह ढाँचा जिसपर चढ़ाकर जूता सीया या टोपी, पगड़ी आदि बनाई जाती है।

कलभ-पुं० [सं०] १. हाथी या उसका बच्चा । २. ऊँट का बच्चा ।

कलम-स्त्री० [सं०] १. वह उपकरण जिसकी सहायता से, स्याही के संयोग से, कागज पर लिखते हैं । लेखनी ।
मुहा०-**कलम चलना**=लिखाई होना । **कलम चलाना**=लिखना । **कलम तोड़ना**=अच्छी चीज लिखने की हद कर देना ।
२. बही-खाते आदि में लिखा जानेवाला कोई पद । (आइटम) जैसे-इसमें एक कलम छूट गई है । ३. पेड़ की वह टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैबंद लगाने के लिए काटी जाय ।
मुहा०-**कलम करना**=काटना-छाँटना ।
४. वे बाल जो हजामत बनवाने में कनपटियों के पास छोड़ दिये जाते हैं । ५. बालों या गिलहरी की पूँछ की बनी वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं । ६. चित्र अंकित करने की किसी विशेष स्थान या परम्परा की शैली। जैसे-पहाड़ी कलम, राजस्थानी कलम । ७. शीशे का कटा हुआ लम्बा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है । ८. किसी चीज का जमा हुआ छोटा टुकड़ा । रवा । ९. वह औजार जिससे महीन चीज काटी, खोदी या नकाशी जाय ।

कलमख*-पुं० दे० 'कल्मष' ।

कलम-तराश-पुं० [फा०] कलम बनाने का चाकू ।

कलम-दान-पुं० [फा०] कलम, दावात आदि रखने का पात्र ।

कलमलना*-अ० [अनु०] दाब में पड़ने के कारण अंगों का हिलना-डोलना ।

कलमस*-पुं० दे० कल्मष' ।

कलमा-पुं० [अ० कलम:] १. वाक्य । २ वह वाक्य जो मुसलमानी धर्म्म का मूल मंत्र है ।
मुहा०-**कलमा पढ़ना**=मुसलमान होना ।

कलमी-वि० [फा०] १. लिखा हुआ । लिखित । २. जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो । जैसे-कलमी आम । ३. जो कलम या रवे के रूप में हो । जैसे-कलमी शोरा ।

कल-मुँहाँ-वि० [हिं० काला+मुँह] १. जिसका मुँह काला हो । २. कलंकित । लांछित । ३. अभागा । (गाली)

कलयिता-पुं० [सं०] कलन करने या हिसाब लगानेवाला । गणित करनेवाला। (कैलकुलेटर)

कल-रव-पुं० [सं०] [वि० कल-रवित] १ मधुर शब्द । २. कोकिल । कोयल ।

कलल-पुं० [सं०] गर्भाशय में का वह बुलबुला जो बढ़कर गर्भ का रूप धारण करता है।

कलवरिया-स्त्री० [हिं० कलवार] कलवार की दूकान। शराब बिकने की जगह।

कलवार-पुं [सं० कल्यपाल] एक जाति जो शराब बनाती और बेचती है।

कलश-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० कलशी] १. घड़ा। गगरा। २. मन्दिर आदि का शिखर या ऊपरी भाग। ३. चोटी। सिरा।

कलसा-पुं० [सं० कलश] [स्त्री० अल्पा० कलसी] १. पानी रखने का बरतन। गगरा। घड़ा। २. मंदिर का शिखर।

कलहंस-पुं० [सं०] १. हंस। २. राजहंस। ३. श्रेष्ठ राजा। ४. परमात्मा।

कलह-पुं० [सं०] [वि० कलहकारी, कलही] विवाद। झगड़ा।

कलहांतरिता-स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक का अपमान करके पछताती हो।

कलहार*-वि० [स्त्री० कलहारी] दे० 'कलही'।

कलही-वि० [सं० कलहिन्] [स्त्री० कलहिनी] झगड़ालू। लड़ाका।

कलाँ-वि० [फा०] बड़ा। दीर्घाकार।

कला-स्त्री० [सं०] १. अंश। भाग। २. चन्द्रमा या उसके प्रकाश का सोलहवाँ भाग। ३. सूर्य या उसके प्रकाश का बारहवाँ भाग। ४. समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है। ५. राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग। ६. राशि-चक्र के एक अंश का ६० वाँ भाग। ७. छंदःशास्त्र में मात्रा। ८. किसी कार्य को भली भाँति करने का कौशल। हुनर। (काम-शास्त्र के अनुसार कलाएँ ६४ हैं।) ९. विभूति। तेज। १० शोभा। छटा। प्रभा। ११. कौतुक। खेलवाड़। १२. छल। कपट। १३. ढंग। युक्ति। १४. नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे करके उलटता है। १५. सभा या समिति के कार्यों का संक्षिप्त विवरण। (मिनट)

कलाई-स्त्री० [सं० कलाची] हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता है। मणिबंध। गट्टा।

स्त्री० [सं० कलाप] सूत का लच्छा।

कलाकंद-पुं० [फा०] बरफी। (मिठाई)

कलाकार-पुं० [सं०] वह जो कोई कलापूर्ण कार्य करता हो। कला-कुशल। जैसे-कवि, अभिनेता आदि। (आर्टिस्ट)

कला-कौशल-पुं० [सं०] १. किसी कला की निपुणता। कारीगरी। २. शिल्प।

कलादा*-पुं० दे० 'कलावा'।

कलाधर-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. शिव। ३ वह जो कलाओं का ज्ञाता हो।

कलानिधि-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

कला-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पुस्तक जिसमें किसी सभा-समिति का संक्षिप्त कार्य-विवरण लिखा जाता है। (मिनट बुक)

कलाप-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। जैसे-क्रिया-कलाप। २. मोर की पूँछ। ३. तूणीर। तरकश। ४.कमरबन्द। पेटी। ५. चन्द्रमा। ६. कलावा। ७. व्यापार। ८. जेवर। गहना।

कलापिनी-स्त्री० [सं०] रात्रि। रात।

कलापी-पुं० [सं० कलापिन्] [स्त्री० कलापिनी] १. मोर। २. कोकिल।
वि० १. जिसके पास तूणीर या तरकश हो। २. झुंड में रहनेवाला।

कलाबत्तू-पुं० [तु० कलाबतून] रेशम पर बटा हुआ सोने-चांदी आदि का तार।

कलाबाज-वि० [हिं०+फा०] [भाव० कलाबाजी] नट की क्रिया करने या कसरत दिखानेवाला।

कलाम-पुं० [अ०] १. वाक्य। वचन। २. बात-चीत। ३. उज्र। एतराज।

कलार(ल)-पुं० दे० 'कलवार'।

कलावंत-पुं० [सं० कलावान्] १. गवैया। २. कलाबाजी करनेवाला। नट। वि० कलाओं का ज्ञाता।

कलावा-पुं० [सं० कलापक] [स्त्री० अल्पा० कलाई] १. सूत का लच्छा। २. वह डोरा जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ पर बांधते हैं। ३. हाथी की गरदन।

कलावान-वि० [सं०] [स्त्री० कलावती] कला का ज्ञाता। कला-कुशल।

कलिंग-पुं० [सं०] १. कुलंग पक्षी। २ तरबूज। ३. एक प्राचीन देश जो गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच में था।

कलिंद-पुं० [सं०] सूर्य्य।

कलिंदजा-स्त्री० [सं०] यमुना।

कलिंदी*-स्त्री० दे० 'कालिंदी'।

कलि-पुं० [सं०] १. कलह। झगड़ा। २. पाप। ३. क्लेश। ४. संग्राम। युद्ध। ५. दे० 'कलि युग'।

कलिका-स्त्री० [सं०] कली। (फूल की)

कलि-काल-पुं० [सं०] कलि युग।

कलिया-पुं० [अ०] रसेदार पकाया हुआ मांस।

कलि युग-पुं० [सं०] वर्त्तमान युग, जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता मानी जाती है।

कलींदा-पुं० [सं० कलिंद] तरबूज।

कली-स्त्री० [सं० कलिका] १. बिना खिला हुआ फूल।

मुहा०-**दिल की कली खिलना**=चित्त प्रसन्न होना।

२. कुरते आदि में लगनेवाला तिकोना टुकड़ा। ३. हुक्के का नीचेवाला भाग। स्त्री० [अ० कलई] पत्थर का चूना जो दीवारों पर पोता जाता है।

कलीट*-वि० [हिं० काला] काला-कलूटा।

कलुष-पुं० [सं०] [वि० कलुषित, कलुषी] १. मलिनता। २ पाप। ३. क्रोध।

वि० [स्त्री० कलुषा, कलुषी] १. मलिन। मैला। २. निन्दित।

कलूटा-वि० [हिं० काला] [स्त्री० कलूटी] काले रंग का। बहुत काला।

कलेऊ-पुं० दे० 'कलेवा'।

कलेजा-पुं० [सं० यकृत्] १ प्राणियों का वह अवयव जो छाती में बाईं ओर होता है और जिससे शरीर में रक्त चलता है। हृदय। दिल।

मुहा०-**कलेजा काँपना**=बहुत डर लगना। **कलेजा थामकर बैठ या रह जाना**=दुःख का वेग दबाकर रह जाना। **कलेजा धड़कना**=भय से व्याकुल होना। **कलेजा निकालकर रखना**=अत्यन्त प्रिय वस्तु या सर्वस्व दे देना। **कलेजा पक जाना**=दुःख सहते सहते तंग आ जाना। **पत्थर का कलेजा**=कठोर चित्त। **कलेजा फटना**=मन में अत्यन्त कष्ट होना। **कलेजा मुँह को आना**=जी घबराना। व्याकुलता होना। **कलेजे पर साँप लोटना**=अत्यन्त दुःख होना।

२. छाती। वक्ष-स्थल।
मुहा०-कलेजे से लगाना=गले से लगाना। आलिंगन करना।
३. जीवट। साहस। हिम्मत।

कलेजी-स्त्री० [हिं० कलेजा] बकरे आदि के कलेजे का माँस।

कलेवर-पुं० [सं०] १. शरीर। देह।
मुहा०-कलेवर बदलना = १. एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना। २. जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्त्ति के स्थान पर नई मूर्त्ति का स्थापित होना।
३. ढाँचा।

कलेवा-पुं० [सं० कल्यवर्त] १. जलपान। २. विवाह की एक रीति जिसमें वर ससुराल में भोजन करने जाता है। खिचड़ी।

कलैया-स्त्री० [सं० कला] सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाना। कलाबाज़ी।

कलोर-स्त्री० [सं० कल्या] वह गाय जो बरदाई या ब्याई न हो।

कल्लोल-पुं० [सं० कल्लोल] [क्रि० कलोलना] आमोद-प्रमोद। क्रीड़ा।

कलौंजी-स्त्री० [सं० कालाजाजी] १. मँगरैला। २. भूनी हुई मसालेदार साबुत तरकारी।

कलौंस-वि० [हिं० काला] कालापन लिये।
स्त्री० १. कालापन। २. कलंक।

कल्क-पुं० [सं०] १. चूर्ण। बुकनी। २. पीठी। ३. गूदा। ४. मैल। कीट। ५. पाप। ६. अवलेह।

कल्कि-पुं० [सं०] विष्णु का दसवाँ अवतार जो एक कुमारी कन्या के गर्भ से होगा।

कल्प-पुं० [सं०] १. विधान। विधि। २. वेद के छः अंगों में से एक जिसमें यज्ञादि का विधान है। ३. वैद्यक में शरीर या किसी अंग को फिर से नया और नीरोग करने की युक्ति। जैसे-केश-कल्प। ४. काल का एक विभाग जिसमें १४ मन्वंतर या ४३२००००००० वर्ष होते हैं।
वि० तुल्य। समान। जैसे-ऋषि-कल्प।

कल्पक-पुं० [सं०] नाई। हज्जाम।
वि० १ रचनेवाला। २. काटनेवाला। ३. कल्पना करनेवाला।

कल्पतरु-पुं० [सं०] कल्प-वृक्ष।

कल्पना-स्त्री० [सं०] १. अच्छी रचना। सजावट। २. वह शक्ति जो अन्तःकरण में नई और अनोखी वस्तुओं के स्वरूप उपस्थित करती है। उद्‌भावना। ३. किसी वस्तु में दूसरी वस्तु का आरोप। ४. मान लेना। अनुमान करना।

कल्प-लता-स्त्री० दे० 'कल्प-वृक्ष'।

कल्प-वास-पुं० [सं०] माघ में महीने भर गंगा-तट पर रहना।

कल्पांत-पुं० [सं०] प्रलय।

कल्पित-वि० [सं०] १. जिसकी कल्पना की गई हो। २. मन से गढ़ा हुआ। मन-गढ़ंत। ३ बनावटी। नकली।

कल्मश-पुं० [सं०] १. पाप। २. मैल।

कल्यपाल-पुं० [स०] कलवार।

कल्याण-पुं० [सं०] मंगल। भलाई।

कल्लर-पुं० [देश०] १. नोनी मिट्टी। २. रेह। ३. ऊसर। बंजर।

कल्ला-पुं० [सं० करीर] १. पौधे का अंकुर। २. नई टहनी। ३. लालटेन या लंप का सिरा, जिसमें बत्ती जलती है। (बर्नर)

पुं० [फा०] जबड़ा ।

कल्लोल-पुं० [सं०] १. पानी की लहर। तरंग । २. आमोद-प्रमोद । क्रीड़ा ।

कल्लोलिनी-स्त्री० [सं०] नदी ।

कल्हारना-स० [हिं० कड़ाह] कड़ाही में भूनना या तलना ।

अ० [सं० कल्ल=शोर] चिल्लाना ।

कवर-पुं० [सं०] [स्त्री० कवरी] १ केश-पाश । २. गुच्छा ।

पुं० दे० 'कौर' ।

पुं० [अं०] १. ढकना । २. पुस्तक का आवरण-पृष्ठ ।

कवरी-स्त्री० [सं०] चोटी । जूड़ा ।

कवल-पुं० [सं०] [वि० कवलित] कौर । ग्रास ।

कवलित-वि० [सं०] खाया हुआ । जैसे-काल-कवलित ।

कवायद-स्त्री० [अ० कायदा का बहु०] १. नियम । व्यवस्था । २. व्याकरण । ३ सिपाहियों की युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया ।

कवि-पुं० [सं०] काव्य या कविता रचनेवाला । शायर ।

कविता-स्त्री० [सं०] कवि की की हुई पद्यात्मक रचना । शायरी । काव्य ।

कवित्त-पुं० [सं० कवित्व] १. कविता । काव्य । २. ३१ अक्षरों का एक वृत्त ।

कवित्व-पुं० [सं०] कविता का भाव या गुण ।

कविराज-पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ कवि । २. भाट । ३. वैद्यों की उपाधि ।

कविलास-पुं० दे० 'कैलास' ।

कश-पुं० [सं०] [स्त्री० कशा] चाबुक । पुं० [फा०] १. खिंचाव । यौ०-कश-मकश । २. हुक्के या चिलम का दम । फूँक ।

कशा-स्त्री० [सं०] कोड़ा ।

कशिश-स्त्री० [फा०] आकर्षण ।

कश्चित्-वि० [सं०] कोई । कोई-एक । सर्व० [सं०] कोई (व्यक्ति) ।

कश्ती-स्त्री० [फा०] १. नौका । नाव । २. पान, मिठाई आदि रखने के लिए धातु या काठ की एक प्रकार की थाली ।

कश्मल-पुं० [सं०] १. पाप । २. मोह ।

कष-पुं० [सं०] १. सान । २. कसौटी । (पत्थर) ३. परीक्षा । जांच ।

कषाय-वि० [सं०] १. कसैला । २. सुगन्धित । ३. गेरू के रंग का । गैरिक । पुं० [सं०] क्रोध, लोभ आदि विकार ।

कष्ट-पुं० [सं०] १. मन में होनेवाला वह अप्रिय अनुभव जिससे मनुष्य बचना या छुटकारा पाना चाहता है । पीड़ा । तकलीफ । २. संकट । मुसीबत ।

कष्ट-कल्पना-स्त्री० [सं०] बहुत खींच-खचकर कठिनता से बैठनेवाली युक्ति ।

कष्ट-साध्य-वि० [सं०] कठिनता से होनेवाला ।

कस-पुं० [सं० कष] १. परीक्षा । जाँच । २ कसौटी । ३. तलवार की लचक जिससे उसकी उत्तमता की परख होती है । पुं० १. बल । जोर । २ वश । काबू । मुहा०-कस का=जिसपर वश या अधिकार हो । ३. रोक । अवरोध । पुं० [सं० कषाय] १. 'कसाव' का संक्षिप्त रूप । २. सार । तत्व । *क्रि० वि० १. कैसे । २. क्यों ।

कसक-स्त्री० [सं० कष्] १. हलका या मीठा दर्द । टीस । २. बहुत दिनों का भीतरी द्वेष या वैर । ३. हौसला ।

अभिलाषा।

कसकना-अ० [हिं० कसक] हलका दर्द करना। सालना। टीसना।

कसकुट-पुं० दे० 'काँसा'।

कसना-स० [सं० कर्षण] [भाव० कसन] १. बंधन दृढ़ करने के लिए डोरी आदि खींचना। २. बंधन खींचकर बँधी हुई वस्तु को खूब दबाना।

मुहा०-कसकर=१. ज़ोर से। २. अच्छी तरह।

३. जकड़कर बाँधना। ४. पुरजों को दृढ़ करके बैठाना। ५. साज रखकर सवारी के लिए घोड़ा, गाड़ी आदि तैयार करना।

मुहा०-कसा-कसाया=चलने के लिए तैयार।

६. ठूसकर भरना।

अ० १. बंधन का खिंचना जिसमे वह अधिक जकड़ जाय। २. बँधना। ३. खूब भर जाना।

स० [सं० कषण] १. परखने के लिए सोने को कसौटी पर रगड़ना। २. परखना। जाँचना। ३. तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना। ४. दूध गाढ़ा करके खोया बनाना।

*स० [सं० कषण] कष्ट देना।

कसब-पुं० [अ०] १. परिश्रम। मेहनत। २. पेशा। रोजगार। ३. बेश्या-वृत्ति।

कस-बल-पुं० [हिं० कस+बल] १. शक्ति। बल। २. साहस। हिम्मत।

कसबा-पुं० [अ० क़स्बः] [वि० कसबाती] गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती। (टाउन)

कसबी-स्त्री० [अ० कसब] १. वेश्या। रंडी। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

कसम-स्त्री० [अ०] शपथ। सौगंध।

मुहा०-कसम उतारना=१. शपथ का प्रभाव दूर करना। २. नाम-मात्र के लिए कोई काम करना। कसम खाने को=नाम मात्र को।

कसमसाना-अ० [अनु०] [भाव० कसमसाहट] १. उकताकर हिलना-डोलना। २. घबराना। ३. हिचकना।

कसर-स्त्री० [अ०] १. कमी। न्यूनता। त्रुटि। २. द्वेष। वैर।

मुहा०-कसर निकालना=बदला लेना।

३. टोटा। घाटा। ४. दोष। ऐब। ५. किसी वस्तु के सूखने या उसमे कूड़ा-करकट निकलने से होनेवाली कमी।

कसरत-स्त्री० [अ०] [वि० कसरती] व्यायाम।

स्त्री० [अ०] अधिकता। ज्यादती।

कसरती-वि० [अ० कसरत] १. कसरत करनेवाला। २. (कसरत से) पुष्ट और बलवान। जैसे-कसरती बदन।

कसहँड़ा-पु० [हिं०कासा] [स्त्री० कसहँडी] काँसे का एक प्रकार का बड़ा बरतन।

कसाई-पुं० [अ० कस्साब] [स्त्री० कसाइन] १. वधिक। २. बूचड़।

वि० निर्दय। बे-रहम। निठुर।

कसाना-अ० [हिं० कांसा] काँसे के योग से कसैला हो जाना।

कसार-पुं० [सं० कृसर] चीनी मिला हुआ भुना आटा या सूजी। पँजीरी।

कसाला-पुं० [सं० कष] १. कष्ट। तकलीफ। २. कठिन परिश्रम। मेहनत।

कसाव-पुं० [सं० कषाय] कसैलापन।

कसीटना*-स० दे० 'कसना'।

कसीदा-पुं० [फा० कशीदा] कपड़े पर सुई-डोरे से बेल-बूटे बनाने का काम।

कसीस-पुं० [सं० कासीस] एक खनिज

पदार्थ जो लोहे का एक विकार है।

कसीसना*-अ० दे० 'खींचना'।

कसूँभी-वि० [हिं० कुसुम] १. कुसुम के रंग का। २. कुसुम के फूलों के रंग से रँगा हुआ।

कसूर-पुं० [अ०] १. अपराध। २. दोष।

कसूरवार-वि० [फा०] दोषी।

कसेरा-पुं० [हिं० काँसा] काँसे, फूल आदि के बरतन बनाने और बेचनेवाला।

कसेरू-पुं० [सं० कशेरुक] एक प्रकार के मोथे की जड़ जो फल के रूप में खाई जाती है।

कसैया*-पुं० [हिं० कसना] कसने, परखने या जाँचनेवाला।

कसैला-वि० [हिं० कसाव] जिसके स्वाद में कसाव हो। जैसे-आँवला, हड़ आदि।

कसैली-स्त्री० [हिं० कसैला] सुपारी।

कसोरा-पुं० [हिं० काँसा+ओरा (प्रत्य०)] १. कटोरा। २. मिट्टी का प्याला।

कसौटी-स्त्री० [सं० कषपट्टी] १. एक प्रकार का काला पत्थर जिसपर रगड़कर सोने की उत्तमता परखते हैं। २.परीक्षा। जाँच।

कस्तूरी-स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगन्धित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।

कस्तूरी मृग-पुं०[सं०] बहुत ठंढे पहाड़ों पर रहनेवाला एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

कहँ*-प्रत्य० [सं० कः] के लिए। (अवधी)

क्रि० वि० दे० 'कहाँ'।

कहँवाँ-क्रि० वि० दे० 'कहाँ'।

कह*-वि० [सं० कः] क्या।

कहगिल-स्त्री० [फा० कार=घास+गिल= मिट्टी] दीवार में लगाने का गारा।

कहत-पुं० [अ०] दुर्भिक्ष। अकाल।

कहन-स्त्री० [सं० कथन] १. कथन। उक्ति। २. बात। ३. कहावत।

कहना-स० [सं० कथन] १. मुँह से बात निकालना। बोलना।

मुहा०-**कह-बदकर** = प्रतिज्ञा करके। **कहने को**=१. नाम मात्र को। २. भविष्य में स्मरण के लिए। **कहने की बात** = वह बात जो वास्तव में न हो।

२. सूचना देना। खबर देना। ३. नाम रखना। पुकारना।

पुं० कही हुई बात। कथन।

कहनूत†-स्त्री० दे० 'कहावत'।

कहर-पुं० [अ० कह्र] विपत्ति। आफत।

कहरना-अ० दे० 'कराहना'।

कहरवा-पुं० [हिं० कहार] १. पाँच मात्राओं का एक ताल। २. वह नाच या गाना जो इस ताल पर होता है।

कहरी वि० [अ० कह्र] कहर करने या आफ़त ढानेवाला।

कहल*†-पुं० [देश०] १. उमस। ओस। २. ताप। ३. कष्ट।

कहलना*- अ० [हिं० कहल] १. व्याकुल होना। २. दहलना।

कहलाना-स० [कहना का प्रे० रूप] १. दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना। २. सँदेसा भेजना।

अ० १. दे० 'कहलना'। २. पुकारा जाना।

कहवा-पुं० [अ०] एक पेड़ का बीज जिसका चूर्ण चाय की तरह पीया जाता है।

कहवैया†-वि० [हिं० कहना] कहनेवाला।

कहाँ-क्रि० वि० [सं० कुहः] किस जगह? किस स्थान पर?

मुहा०-**कहाँ का**=१. न जाने किस स्थान

का। २. असाधारण। बहुत भारी। ३. कहीं का नहीं। **कहाँ का कहाँ**=बहुत दूर। **कहाँ की बात**=यह बात ठीक नहीं है।

कहा*- पुं० [सं० कथन] आज्ञा या उपदेश के रूप में कहा हुई बात।

*सर्व० [सं० कः] क्या।

कहा-कही*- स्त्री० दे० 'कहा-सुनी'।

कहाना-स० दे० 'कहलाना'।

कहानी-स्त्री० [सं० कथानिका] १. मन से गढ़ी या किसी वास्तविक घटना के आधार पर प्रस्तुत किया हुआ विवरण। कथा। किस्सा। आख्यायिका। २ झूठी या मन-गढ़ंत बात।

यौ०-**राम-कहानी**=लम्बा-चौड़ा वृत्तान्त।

कहार-पुं० [सं० कं=जल+हार] एक जाति जो पानी भरने और डोली ढोने का काम करती है।

कहाल-पुं० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

कहावत-स्त्री० [हिं० कहना] १. लोक में प्रचलित ऐसा बँधा चमत्कार-पूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो। लोकोक्ति। मसल। २. कही हुई बात। उक्ति।

कहा-सुनी-स्त्री० [हिं० कहना+सुनना] जबानी लड़ाई। वाद-विवाद। तकरार।

कहियां*-क्रि० वि० [सं० कुहः] कब।

कहीं-क्रि० वि० [हिं० कहां] १. किसी अनिश्चित या अन-जाने स्थान में।

मुहा०-**कहीं और**=दूसरी जगह। अन्यत्र। **कहीं का**=न जाने कहां का। **कहीं का न रहना**=किसी काम का अथवा कहीं मान्य न रहना। **कहीं न कहीं**=किसी न किसी स्थान पर अवश्य। २. नहीं। कभी नहीं। (प्रश्न रूप में और निषेधार्थक) जैसे-यह भी कहीं होता है! ३. यदि। अगर। जैसे-कहीं वह न आया तो? ४. बहुत अधिक। जैसे-यह उससे कहीं बढ़कर है।

कही-स्त्री० [हिं० कहना] विधि, उपदेश आदि के रूप में कही हुई बात। कथन। जैसे-हमारी कही मानो।

कहुँ(हूँ)*-क्रि० वि० दे० 'कहीं'।

काँइयाँ-वि० [अनु०] चालाक। धूर्त।

काँकरी*-स्त्री० दे० 'कंकड़'।

मुहा०-**काँकरी चुनना** = वियोग के कारण किसी काम में मन न लगना।

कांक्षा-स्त्री० [वि० कांक्षित] दे० 'आकांक्षा'।

कांक्षी-वि० [सं० कांक्षिन्] [स्त्री० कांक्षिणी] कांक्षा करने या चाहनेवाला।

काँख-स्त्री० [सं० कक्ष] बाहुमूल के नीचे का गड्ढा। बगल।

काँखना-अ० [अनु०] १. श्रम या पीड़ा से उँह-आह आदि शब्द करना। २. मल-त्याग के लिए पेट की वायु नीचे दबाना।

काँखा-सोती-स्त्री० [हिं० काँख+सं० श्रोत्र] दाहिनी बगल के नीचे से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालना।

काँच-स्त्री० [सं० कक्ष] १. धोती का वह छोर जो जाँघों के बीच से ले जाकर पीछे खोंसा जाता है। २. गुदेन्द्रिय के अन्दर का भाग। गुदा-चक्र।

मुहा०-**काँच निकलना**=आघात, परि-श्रम आदि से दुर्दशा होना।

पुं० [सं० कांच] एक प्रसिद्ध पारदर्शक मिश्र वस्तु जो बालू, रेह आदि के योग से बनती है। शीशा।

कांचन-पुं० [सं०] [वि० कांचनीय] १. स्वर्ण। सोना। २. कचनार। ३. चम्पा। ४. धतूरा।

काँचली*-स्त्री० दे० 'केंचुली'।

काँचा*-वि० दे० 'कच्चा'।

कांची-स्त्री० [सं०] १. मेखला। करधनी। २. घुँघची। ३. हिन्दुओं की सात पुरियों में से एक (कांजीवरम्)।

कांचुरी[1]-स्त्री० दे० 'केंचुली'।

काँजी-स्त्री० [सं० कांजिक] १. पिसी हुई राई आदि घोलकर बनाया हुआ एक प्रकार का खट्टा रस। २. मठा। छाछ।

काँजी-हौद-पुं० [अं० काइन हाउस] सरकारी मवेशी-खाना जिसमें लोगों के छूटे हुए पशु बन्द करके रखे जाते हैं।

काँटा-पुं० [सं० कंटक] [वि० कँटीला] बहुत कड़ा नुकीला अंकुर। कंटक।

मुहा०-**काँटा निकलना**=बाधा या संकट दूर होना। (रास्ते में) **काँटे बिछाना**=बाधा डालना। **काँटे बोना**= १. बुराई या अनिष्ट करना। २. अड़चन डालना। **काँटे-सा खटकना**=बुरा लगना। दुःखदायी होना। **काँटों पर लोटना**=कष्ट से तड़पना।

२. इस आकार का वह अंग जो नर मोर, तीतर आदि के पंजे में निकलता है। खाँग। ३. वह छोटी नुकीली फुंसियाँ जो जीभ में निकलती है। ४. लोहे की बड़ी कील। ५. मछली पकड़ने की अँकुड़ी। ६. लोहे की अँकुड़ियों का वह गुच्छा जिससे कूएँ में गिरे हुए बरतन निकालते हैं। ७. कोई लंबी नुकीली वस्तु। जैसे-साही का कांटा। ८. लोहे का वह तराजू जिसकी डाँड़ी पर सूई लगी होती है।

मुहा०-**काँटे की तौल**=न कम, न अधिक। पूरा और ठीक।

९. नाक में पहनने की कील। लौंग। १०. पंजे के आकार का वह उपकरण जिससे पाश्चात्य लोग खाना खाते हैं। ११. गणित में गुणन-फल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की एक क्रिया।

काँटी-स्त्री० [हिं० काँटा] १. छोटा काँटा। २. कील। ३. अँकुड़ी। ४. बेड़ी।

काँठा*-पुं० [सं० कंठ] १. गला। २ किनारा। तट। ३. पार्श्व। बगल।

कांड-पुं० [सं०] १. बांस आदि का वह अंश जो दो गांठों के बीच में होता है। पोर। २.सरकंडा। ३.वृक्षों का तना। ४. शाखा। डाली। ५. किसी कार्य या विषय का विभाग।

काँड़ना*[1]-स० [सं० कंडन] १. रौंदना। कुचलना। २ खूब मारना।

काँड़ी-स्त्री० [सं० कांड] लकड़ी का पतला लट्ठा।

मुहा०-**काँड़ी-कफन**=मुरदे की रथी का सामान।

कांत-पुं० [सं०] १. पति। शौहर। २. चन्द्रमा। ३. एक प्रकार का बढ़िया लोहा। कांतिसार।

वि० १. सुन्दर। मनोहर। २. प्रिय।

कांता-स्त्री० [सं०] १. सुन्दरी स्त्री। २. भार्य्या। पत्नी।

कांतार-पु० [सं०] भयानक वन।

कांति-स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। छवि।

कांतिमान्-वि० [सं० कांतिमत्] [स्त्री० कांतिमती] १. कान्तिवाला। दीप्तियुक्त। २. सुन्दर।

कांतिसार-पुं० [सं० कांत] एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

काँथरि*-स्त्री० दे० 'कथरी'।

काँदना-अ० दे० 'रोना'।

काँदो*-पुं० [सं० कर्दम] कीचड़।

काँध*-पुं० दे० 'कंधा'।

काँधना*-स० [हिं० काँध] १. कंधे पर उठाना। २. ठानना। मचाना।

काँधर, काँधा*-पुं० दे० 'कान्ह'।

काँप-पुं० [सं० कंपा] १. बाँस आदि की पतली लचीली तीली। २. सूअर का खाँग। ३. हाथी का दाँत। ४. कान में पहनने का एक गहना।

काँपना-अ० [सं० कंपन] बार बार हिलना। थरथराना। थर्राना।

काँव-काँव-स्त्री० [अनु०] १. कौए का शब्द। २. व्यर्थ की बकवाद।

काँवर-स्त्री० दे० 'बहँगी'।

काँवरा-वि० [पं० कमला] घबराया हुआ।

काँवरिया-पुं० दे० 'कांवारथी'।

काँवरू-पुं० दे० 'कामरूप'।

कांवारथी-पुं० [सं० कामार्थी] वह जो किसी कामना से कावर लेकर तीर्थ-यात्रा करने जाय।

काँस-पुं० [सं० काश] एक प्रकार की लम्बी घास।

काँसा-पुं० [सं० कांस्य] [वि० काँसी] ताँबे और जस्ते के संयोग से बनी एक धातु। कसकुट। भरत।

पुं० [फा० कास] भीख माँगने का ठीकरा।

का-प्रत्य० [सं० प्रत्य० कः] संबंध या षष्ठी का चिह्न या विभक्ति। जैसे-पुस्तक का मूल्य।

काई-स्त्री० [सं० कावार] १. जल में होनेवाली एक प्रकार की छोटी घास।

मुहा०-काई छुड़ाना=१. मैल दूर करना। २. दरिद्रता दूर करना। काई-सा फट जाना=तितर-बितर हो जाना।

२. मल। मैल।

काउन्सिल-स्त्री० [अं०] कुछ विशिष्ट विषयों पर विचार करनेवाली सभा या समिति।

काऊ*-क्रि० वि० [सं० कदा] कभी।

सर्व० [सं० कः] १. कोई। २. कुछ।

काक-पुं० [सं०] कौआ।

काक-गोलक-पुं० [सं०] कौए की आँख की पुतली। (कहते हैं कि कौए की आँखें तो दो, पर पुतली एक ही होती है; और वही दोनों आँखों में आती-जाती रहती है।)

काक-तालीय-वि० [सं०] केवल संयोग-वश होनेवाला।

यौ०-काक-तालीय न्याय=उसी प्रकार संयोग-वश कोई काम हो जाना, जिस प्रकार कौए के बैठते ही ताड़ का पेड़ गिर जाय।

काक-पक्ष-पुं० [सं०] बालों के पट्टे जो पुराने जमाने में दोनों ओर कानों के ऊपर रखे जाते थे।

काक-पद-पुं० [सं०] वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिए पंक्ति के नीचे बनाया जाता है।

काकरी*-स्त्री० दे० 'ककड़ी'।

काकरेजा-पुं० [हिं० काकरेजी] काक-रेजी रंग का कपड़ा।

काकरेजी-पुं० [फा०] लाल और काले के मेल से बननेवाला एक रंग।

वि० इस रंग का। (पदार्थ)

काकली-स्त्री० [सं०] मधुर ध्वनि। कल नाद।

काका-पुं० [फा० कोका=बड़ा भाई] [स्त्री० काकी] बाप का भाई। चाचा।

काका-कौआ-पुं० [मला० ककातुआ] एक प्रकार का बड़ा तोता।

काकु-पुं० [सं०] १. व्यंग्य। ताना। २.

अलंकार में वक्रोक्ति का एक भेद, जिसमें शब्दों की ध्वनि से ही दूसरा अभिप्राय लिया जाता है। जैसे-भला आप वहाँ क्यों जायँगे ! अर्थात् आप वहां नहीं जायँगे।

काकुल-पुं० [फा०] कनपटी पर लटकते हुए लम्बे बाल । जुल्फें ।

काग-पुं० [सं० काक] कौआ ।

पुं० [अं० कॉर्क] १ बलूत की जाति का एक बड़ा पेड़ । २ बोतल या शीशी की डाट जो इस पेड़ की छाल से बनती है।

कागज़-पुं० [अ०] [वि० कागज़ी] १. घास, बांस आदि सड़ाकर बनाया हुआ वह महीन पत्र जिसपर अक्षर लिखे या छापे जाते है ।

यौ०-**कागज़-पत्र**=१. लिखे हुए कागज़ । २. प्रामाणिक लेख । लेख्य ।

मुहा०-**कागज़ काला करना या रँगना**=व्यर्थ कुछ लिखना । **कागज़ की नाव**=न टिकनेवाली चीज। **कागज़ी घोड़े दौड़ाना**=व्यर्थ लिखा पढ़ी करना। २. लिखा हुआ प्रामाणिक लेख। लेख्य। ३. समाचार-पत्र । अखबार ।

कागद(र)†-पुं० दे० 'कागज़' ।

कागरी*-वि० [हिं० कागज] तुच्छ । हेय।

कागा-रोल-पुं० [हिं० काग=कौआ+रोर= शोर] कौओं की तरह मचाया जानेवाला हल्ला । हुल्लड़ ।

काची*-स्त्री० [हिं० कच्चा] १ दूध रखने की हाँडी । २ तीखुर सिंघाड़े आदि का हलुआ ।

काछ-स्त्री० [सं० कक्ष] १. पेड़ू और जाँघ तथा उसके नीचे का स्थान । २. धोती का वह भाग जो पीछे खोंसा जाता है। लांग । ३ अभिनय के लिए नटों का वेश धारण करना

मुहा०-**काछ काछना**=भेष बनाना ।

काछना-स०[सं०कक्ष]१. धोती का पल्ला पीछे खोंसना । २. बनाना । सँवारना । स० [सं० कषण] उँगली आदि से तरल पदार्थ किनारे की ओर खींचकर उठाना ।

काछनी-स्त्री० [हिं० काछना] १. धोती पहनने का वह ढंग जिसमें दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं । कछनी । २. घाघरे की तरह का एक पहनावा ।

काछा-पुं० दे० 'काछनी' और 'काछ'।

काछी-पुं० [सं०कच्छ=जल-प्राय देश] एक जाति जो तरकारी बोती और बेचती है ।

काछे*-क्रि०वि० [सं० कक्ष] निकट। पास।

काज-पुं० [सं० कार्य] १ कार्य। काम। २. व्यवसाय । रोज़गार । ३ प्रयोजन । मतलब । ४. कोई शुभ कर्म ।

पुं० [अ० काज़ा] पहनने के कपड़ों मे वह छेद जिसमें बटन फँसाते है ।

काजर†-पुं० दे० 'काजल' ।

काजरी*-स्त्री० [सं० कज्जली] वह गौ जिसकी आंखों पर काला घेरा हो ।

काजल-पुं० [स० कज्जल] दीपक के धूएँ की कालिख जो आंखों में लगाई जाती है। मुहा०-**काजल घुलना, डालना या सारना**=(आंखों में) काजल लगाना । **काजल पारना**=दीपक के धूएँ से काजल बनाना या जमाना। **काजल की कोठरी**= वह स्थान जहां जाने से कलंक लगे ।

काज़ी-पुं० [अ०] न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी । (मुसल०) ·

काजू-भोजू-वि० [हिं० काज+भोग] जो अधिक दिनों तक काम न आ सके ।

काट-स्त्री० [हिं० काटना] १. काटने की क्रिया या भाव ।

यौ०-**काट-छाँट**=कमी-बेशी । घटाव-

बढ़ाव। मार-काट=तलवार आदि की लड़ाई।
२. काटने का ढंग। कटाव। तराश। ३. घाव। जख्म। ४. कपट। चालबाजी। ५. कुश्ती में पेंच का तोड़।

काटना-स० [सं० कर्त्तन] १. शस्त्र आदि से किसी वस्तु के दो खंड करना।
मुहा०-काटो तो खून नहीं=बिलकुल सन्न या स्तब्ध हो जाना।
२. चूर करना। पीसना। ३ घाव करना। ४ किसी वस्तु में से कोई अंश निकालना। ५. युद्ध में मारना। ६. नष्ट करना। ७. समय बिताना। ८. रास्ता तै करना। ६. अनुचित ढंग से प्राप्त करना। १०. कलम की लकीर से लिखावट रद्द करना। मिटाना। ११.ऐसे काम करना जो दूर तक सीधे चले गये हों। जैसे-सड़क काटना, नहर काटना। १२. जेलखाने में क़ैद भोगना। १३.विषैले जन्तु का डंक मारना। डसना। १४. किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लगकर जलन पैदा करना। १५. एक रेखा का दूसरी रेखा के ऊपर से निकल जाना। १६. (किसी मत का) खंडन करना। १७. दुःखदायी लगना।
मुहा०-काटने दौड़ना=१. बहुत बुरा लगना। २. सूना और उजाड़ लगना।

काटर*-वि० [सं० कठोर] १. कड़ा। कठिन। २. कट्टर। ३ काटनेवाला।

काटू-पुं० [हिं० काटना] १. काटनेवाला। २. डरावना। भयानक।

काठ-पुं० [सं० काष्ठ] १ पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर सूख गया हो। लकड़ी।
यौ०-काठ-कबाड़=टूटा-फूटा सामान।
मुहा०-काठ का उल्लू=बहुत बड़ा मूर्ख। काठ होना=१. सन्न या स्तब्ध होना। २. सूखकर कड़ा हो जाना।
काठ की हाँडी=ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके।
४. जलाने की लकड़ी। ईंधन। ३. लकड़ी की बनी हुई बेड़ी।
मुहा०-काठ मारना या काठ में पाँव देना=काठ की बेड़ी पहनाना।

काठिन्य-पुं० दे० 'कठिनता'।

काठी-स्त्री० [हिं० काठ] १. घोड़ों आदि की पीठ पर कसने की जीन। २. शरीर की गठन या बनावट।
वि० [काठियावाड़ देश] काठियावाड़ का।

काढ़ना-स० [सं० कर्षण] १. निकालना। अलग करना। २. आवरण हटाकर दिखाना। ३. कपड़े पर बेल-बूटे बनाना। ४. उधार लेना।

काढ़ा-पुं० [हिं० काढ़ना] ओषधियों को पानी में उबालकर बनाया हुआ रस। क्वाथ।

कातना-स० [सं० कर्त्तन] रूई या ऊन से तागे बनाना।

कातर-वि [सं०] [भाव० कातरता] १. अधीर। व्याकुल। २. डरा हुआ। भयभीत। ३. आर्त्त। दुःखित।

कातिब-पुं० [अ०] दस्तावेज आदि लिखनेवाला। लेखक।

कातिल-वि० [अ०] १. घातक। २. हत्यारा।

काती-स्त्री० [स० कर्त्री] १. कैंची। २. चाकू। छुरी। ३. छोटी तलवार।

कात्यायनी-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

कादंबरी-स्त्री० [सं०] १. कोयल। २. सरस्वती। ३. मदिरा। शराब।

कादंबिनी-स्त्री० [सं०] बादलों का समूह । मेघ-माला ।

कादर-वि० [सं० कातर] १ डरपोक। भीरु । २. अधीर । ३. व्याकुल ।

कान-पुं० [सं० कर्ण] १. सुनने की इन्द्रिय । श्रवण । श्रुति । श्रोत्र ।
मुहा०-**कान उमेठना**=१. दंड देने के लिए किसी का कान मरोड़ देना । २. कोई काम न करने की प्रतिज्ञा करना । **कान करना**=ध्यानपूर्वक सुनना । **कान काटना**=मात करना । बढ़कर होना । **कान का कच्चा**=जो किसी के कहने पर बिना सोचे-समझे विश्वास कर ले । **कान खाना या खा जाना**=बहुत शोर करना । **कान गरम करना**=दे० 'कान उमेठना'। **(बात पर) कान देना या धरना**=ध्यान से सुनना । **(किसी बात से) कान पकड़ना**=कोई काम फिर न करने की प्रतिज्ञा करना । **कान पर जूँ न रेंगना**=कुछ भी परवा न होना । **कान फूँकना**=दीक्षा देना । चेला बनाना । **कान भरना**=किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना । **कान मलना**=दे० 'कान उमेठना' । **कान में तेल डालकर बैठना**=कुछ ध्यान न देना । **कान में डाल देना**=सुना देना । **कानो-कान खबर न होना**=किसी को जरा भी खबर न होना ।
२. कान में पहनने का सोने का एक गहना । ३. चारपाई का टेढ़ापन । कनेव । ४. किसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना जो भद्दा जान पड़े । ५.नाव की पतवार। स्त्री० दे० 'कानि' ।

कानन-पुं० [सं०] १. जंगल । २. घर ।

काना-वि० [सं० काण] [स्त्री० कानी] जिसकी एक आँख फूट गई हो । एकाक्ष । वि० [सं० कर्णक] (फल) जिसका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो ।

काना-गोसी*-स्त्री० दे० 'काना-फूसी' ।

काना-फूसी-स्त्री० [हिं० कान+फुस अनु०] वह बात जो कान के पास धीरे से कही जाय ।

काना-बाती-स्त्री० दे० 'काना-फूसी' ।

कानीन-पुं० [सं०] वह जो किसी कुमारी कन्या के गर्भ से पैदा हुआ हो ।

कानून-पुं० [अ०, यू० केनान] [वि० कानूनी] १. राज्य में शान्ति रखनेवाले नियम । राज-नियम । विधि ।
मुहा०-**कानून छाँटना**=कुतर्क या हुज्जत करना ।
२. किसी विषय के नियमों का संग्रह । विधान ।

कानून-गो-पुं० [फा०] माल-विभाग का वह कर्मचारी जो पटवारियों के कागजों की जाँच करता है ।

कानून-दाँ-पुं० [फा०] कानून जानने-वाला । विधिज्ञ ।

कान्यकुब्ज-पुं० [सं०] १ एक प्राचीन प्रान्त जो वर्तमान समय के कन्नौज के आस-पास था । २.इस देश का निवासी।

कान्ह(र)*-पुं० [सं० कृष्ण] श्रीकृष्ण ।

कापर*-पुं० दे० 'कपड़ा' ।

कापालिक-पुं० [सं०] शैव मत का तांत्रिक साधु ।

कापी-स्त्री० [अं०] १. नकल। प्रतिलिपि। २. लिखने की कोरे कागजों की पुस्तक ।

का-पुरुष-पुं० दे० 'कायर' ।

काफिया-पुं० [अ०] अन्त्यानुप्रास। तुक।
मुहा०-**काफिया तंग करना**=हैरान करना । नाकों दम करना ।

काफिर-वि० [अ०] १. मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म्म माननेवाला। २. ईश्वर को न माननेवाला। ३.निर्दय।

काफिला-पुं० [अ०] यात्रियों का दल।

काफी-वि० [अ०] जितना आवश्यक हो, उतना। पर्याप्त। यथेष्ट। पूरा।

काबर-वि० दे० 'चित-कबरा'।

काबा-पुं० [अ०] अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहां मुसलमान हज करने जाते हैं।

काबिज-वि० [अ०] १. जिसका कब्जा या अधिकार हो। २. मल का अवरोध करनेवाला।

काबिल-वि० [अ०] [संज्ञा काबिलीयत] १. योग्य। लायक। २. विद्वान्।

काबुक-स्त्री० [फा०] कबूतरों का दरबा।

काबुल-पुं० [सं० कुभा][वि० काबुली] अफगानिस्तान की राजधानी।

काबू-पुं० [तु०] वश। अधिकार।

काम-पुं० [सं०] [वि० कामुक, कामी] १. इच्छा। मनोरथ। २. इन्द्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति। ३. सहवास या मैथुन की इच्छा। ४. चतुर्वर्ग या चार पदार्थों में से एक। पुं० [सं० कर्म्म, प्रा० कम्म] १. वह जो किया जाय। व्यापार। कार्य।
मुहा०-**काम आना**=१. उपयोग में आना। २. लड़ाई में मारा जाना। **काम करना**=प्रभाव दिखलाना।
२. कठिन परिश्रम या कौशल का कार्य्य।
मुहा०-**काम रखता है**=बहुत कठिन कार्य है।
३. प्रयोजन। अर्थ। मतलब।
मुहा०-**काम निकलना**=१. प्रयोजन सिद्ध होना। २.आवश्यकता पूरी होना। **काम पड़ना**=आवश्यकता होना।
४. संबंध। वास्ता। सरोकार।
मुहा०-**किसी से काम पड़ना**=किसी प्रकार का व्यवहार या संबंध होना। **काम से काम रखना**=अपने प्रयोजन का ध्यान रखना।
५. उपभोग। व्यवहार। इस्तेमाल।
मुहा०-(वस्तु का) **काम देना**=व्यवहार में आना। उपयोगी होना। **काम में लाना**=व्यवहार करना।
६. व्यवसाय। रोजगार। ७. कारीगरी। अच्छी रचना। ८. बेल-बूटे या नक्काशी।

काम-काज-पुं० [हिं० काम+काज] १. काम-धन्धा। कार्य्य। २. व्यापार।

काम-काजी-वि० [हिं० काम+काज] काम या उद्योग में लगा रहनेवाला।

कामगार-पुं० १. दे० 'कामदार'। २ दे० 'मजदूर'।

काम-चलाऊ-वि० [हिं० काम+चलाना] जिससे किसी प्रकार काम निकल सके।

काम-चोर-वि० [हिं० काम+चोर] काम से जी चुरानेवाला। अ-कर्मण्य।

कामज-वि० [सं०] काम या वासना से उत्पन्न।

कामतः-क्रि० वि० [सं०] मन में कोई कामना या इच्छा रखकर। जान-बूझकर कोई उद्देश्य पूरा करने के लिए। (परपजली)

कामतरु-पुं० दे० 'कल्प-वृक्ष'।

कामता*-पुं० [सं० कामद] चित्रकूट।

कामद-वि० [सं०] [स्त्री० कामदा] मनोरथ पूरा करनेवाला। जैसे-कामद मणि=चिन्तामणि।

काम-दानी-स्त्री० [हिं० काम+दानी (प्रत्य०)] बादले के तार या सलमे-सितारे से बने बेल-बूटे।

कामदार-पुं० [हिं० काम+दार (प्रत्य०)] कर्मचारी। कारिन्दा। अमला।
वि० जिसपर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों। जैसे-कामदार टोपी।

कामदेव-पुं० [सं०] स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता। मदन।

काम-धाम-पुं० दे० 'काम-काज'।

कामधुक*-स्त्री० दे० 'काम-धेनु'।

काम-धेनु-स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय, वही मिलता है। सुरभी।

कामना-स्त्री० [सं०] मन की इच्छा। मनोरथ। ख्वाहिश।

कामयाब-वि० दे० 'सफल'।

कामर, कामरी*-स्त्री० दे० 'कंबल'।

कामरूप-पुं० [सं०] १. आसाम प्रदेश का एक जिला जहा कामाख्या देवी का स्थान है। २. देवता।
वि० जो मन-माना रूप बना सके।

कामला-पुं० दे० 'कमल' (रोग)।

कामली*-स्त्री० दे० 'कमली'।

काम-शास्त्र-पुं० [सं०] वह विद्या जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।

कामांध-वि० [सं०] जिसे काम-वासना की प्रबलता में भले-बुरे का ज्ञान न रहे।

कामातुर-वि० [सं०] काम के वेग से व्याकुल या उद्विग्न।

कामायनी-स्त्री० [सं०] वैवस्त मनु की पत्नी श्रद्धा का एक नाम।

कामारि-पुं० [सं०] महादेव।

कामित*-स्त्री० दे० 'कामना'।

कामिनी-स्त्री० [सं०] १. कामवती स्त्री। २. सुन्दरी स्त्री। ३. मदिरा।

कामिल-वि० [अ०] १. पूरा। पूर्ण। समूचा। २. योग्य।

कामी-वि० [सं०कामिन्] [स्त्री०कामिनी] १ कामना रखनेवाला। २. कामुक।

कामुक-वि० [सं०] [स्त्री० कामुका] जिसे काम-वासना बहुत हो। विषयी।

कामोद्दीपक-वि० [सं०] [भाव० कामोद्दीपन] जिससे स्त्री-सहवास या प्रसंग की इच्छा बढ़े।

काम्य-वि० [सं०] १. जिसकी कामना की जाय। २ जिससे कामना सिद्ध हो।
पुं० [सं०] वह धर्म्म-कार्य जो किसी कामना की सिद्धि के लिए किया जाय। जैसे-पुत्रेष्टि।

कायजा-पुं० [अ० कायज] घोड़े की लगाम में लगी हुई वह डोरी जो उसकी पूँछ तक बँधी रहती है।

कायथ-पुं० दे० 'कायस्थ'।

कायदा-पुं० [अ० कायदः] १ विधि। नियम। २ चाल। दस्तूर। ३. रीति। ढंग। ४. क्रम। व्यवस्था।

कायफल-पुं० [सं० कट्फल] एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

कायम-वि० [अ०] १. दृढ़तापूर्वक ठहरा हुआ। स्थिर। २. स्थापित। ३. निर्धारित। निश्चित। मुकर्रर।

कायम-मुकाम-वि० [अ०] स्थानापन्न।

कायर-वि० [सं० कातर] [भाव० कायरता] डरपोक। भीरु।

कायल-वि० [अ०] जिसने तर्क-वितर्क से सिद्ध बात मान ली हो।

कायली-स्त्री० [सं० चवेलिका] मथानी।
स्त्री० [हिं० कायर] ग्लानि। लज्जा।
स्त्री० [अ० कायल] कायल (तर्क में) परास्त होने का भाव।
यौ०-कायली-माकूली=तर्क करना और

तर्क-सिद्ध बात मानना।

कायस्थ-वि० [सं०] काय में स्थित। शरीर में रहनेवाला।

पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २. परमात्मा। ३. हिन्दुओं की एक जाति का नाम।

काया-स्त्री० [सं० काय] शरीर। तन। मुहा०-काया पलट जाना=रूपान्तर हो जाना। और से और हो जाना।

काया-कल्प-पुं० [सं०] औषध के द्वारा वृद्ध या रुग्न शरीर को फिर से तरुण और सशक्त करने की क्रिया।

काया-पलट-पुं० [हिं० काया+पलटना] १. बहुत बड़ा परिवर्तन। २. एक शरीर या रूप छोड़कर दूसरा शरीर या रूप धारण करना।

कायिक-वि० [सं०] १. काय या शरीर संबंधी। २. शरीर से किया हुआ या उत्पन्न। जैसे-कायिक पाप।

कारंड (व)-पुं० [सं०] हंस या बतख की जाति का एक पक्षी।

कारंधमी-पुं० [सं०] लोहे आदि को सोना बनानेवाला। कीमियागर।

कार-पुं० [सं०] १. क्रिया। कार्य्य। जैसे-उपकार, स्वीकार। २. बनाने या रचनेवाला। जैसे-चित्रकार। ३. एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के साथ लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है। जैसे-ककार, मकार। ४. एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है। जैसे-फूत्कार।

पुं० [फा०] कार्य्य। काम।

स्त्री० [अं०] मोटर (गाड़ी)।

*वि० दे० 'काला'।

कारक-वि० [सं०] [स्त्री० कारिका] १. करनेवाला। जैसे-हानिकारक। २. किसी के स्थान पर या प्रतिनिधि के रूप में काम करनेवाला। (ऐक्टिंग)

पुं० [सं०] व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था या रूप जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है।

कार-कुन-पुं० [फा०] १. इन्तजाम करनेवाला। प्रबन्धकर्त्ता। २. कारिंदा।

कारखाना-पुं० [फा०] १. वह स्थान जहां व्यापार के लिए कोई वस्तु अधिक मात्रा या मान में बनती हो। (फैक्टरी)

कार-गुजार-वि० [फा०] [संज्ञा कार-गुजारी] अच्छी तरह काम पूरा करनेवाला।

कारचोब-पुं० [फा०] [वि० कारचोबी] १. लकड़ी का वह चौकठा, जिसपर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता है। अड्डा। २. दे० 'जरदोज'।

कारज*-पुं० दे० 'कार्य्य'।

कारटा*-पुं० [सं० करट] कौआ।

कारण-पुं० [सं०] १. वह जिसके प्रभाव से या फल-स्वरूप कोई काम हो। सबब। वजह। (कॉज) जैसे-धूएँ का कारण आग है। २. वह जिसके विचार से या जिसका ध्यान रखकर कोई काम किया जाय। हेतु। निमित्त। प्रयोजन। (रीज़न) जैसे-आप से मिलने का एक कारण था। ३. वह जिससे कुछ उत्पन्न या प्रकट हो। आदि। मूल। जैसे-सृष्टि का कारण ब्रह्म है। ४. साधन। ५. तांत्रिक उपचार या कर्म।

कारण-माला-स्त्री० [सं०] १. कारणों या हेतुओं की शृंखला। २. काव्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न होनेवाले कार्य्य से पुनः किसी अन्य कार्य्य के होने का वर्णन होता है।

कारणिक-वि० [सं०] किसी कार्यालय में लिखने-पढ़ने का काम करनेवाले कर्मचारी या करणिक से संबंध रखनेवाला। (मिनिस्टीरियल)

कारणिक सेवा-स्त्री० [सं०] वह सेवा, कार्य-विभाग या कर्मचारियों का वर्ग जो करणिकों से संबंध रखता हो या करणिकों का हो। (मिनिस्टीरियल सरविस)

कारतूस-पुं० [पुर्त्त० कारटूश] बारूद भरी एक नली जो बंदूकों में भरकर चलाते हैं। गोली।

कारन*-पुं० दे० 'कारण'।
स्त्री० [सं० कारुण्य] रोने का आर्त्त या करुण स्वर।

कारनी*-पुं० [सं० कारण] प्रेरक।
पुं० [सं० कारीनि] १ भेद करानेवाला। भेदक। २. बुद्धि पलटनेवाला।

कार-परदाज-वि० [फा०] [भाव० कार-परदाजी] १ किसी की ओर से उसका कोई काम करनेवाला। कारकुन। कारिन्दा। २. प्रबन्धकर्त्ता।

कार-बार-पुं० [फा०] [वि० कारबारी] १. काम-काज। व्यापार। २. पेशा। व्यवसाय।

कार-बारी-वि० [फा०] काम-काजी।
पुं० कारकुन। कारिन्दा।

कार-रवाई-स्त्री० [फा०] १ काम। कृत्य। कार्य। २. कार्य-तत्परता। कर्मण्यता। ३. गुप्त प्रयत्न। चाल।

कार-साज-वि० [फा०] [संज्ञा कारसाजी] बिगड़ा हुआ काम बनाने या ठीक तरह से कोई काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला।

कारस्तानी-स्त्री० [फा०] १. कारसाजी। कारवाई। २. चालबाजी।

कारा-स्त्री० [सं०] १. बन्धन। कैद। २. कारागार। ३. पीड़ा। क्लेश।
*वि० दे० 'काला'।

कारागार-पुं० [सं०] वह स्थान जिसमें दंड पाये हुए लोगों को बन्द करके रक्खा जाता है। बन्दीगृह। जेलखाना। (जेल)

कारागृह-पुं० दे० 'कारागार'।

कारादंड-पुं० [सं०] कारागार में बन्द रखने का दण्ड। जेल की सजा।

कारारोध-पुं० [सं०] कारागार में बन्द करने या होने की क्रिया या भाव। (इम्प्रिजनमेन्ट)

कारावास-पुं० [सं०] कारागार में बन्द होकर रहना। बन्दी रहना। कैद में रहना।

कारिंदा-पुं० [फा०] दूसरे की ओर से उसका कोई काम करनेवाला। गुमाश्ता।

कारिका-स्त्री० [सं०] किसी सूत्र की श्लोक-बद्ध व्याख्या।

कारिख*-स्त्री० दे० 'कालिख'।

कारिणी-वि० स्त्री० [सं०] 'कारी' का स्त्री० रूप। करनेवाली। (शब्दों के अन्त में, जैसे-प्रबन्ध-कारिणी समिति)

कारित-वि० [सं०] कराया हुआ।

कारी-वि० [सं० कारिन्] [स्त्री० कारिणी] करनेवाला। बनानेवाला। जैसे-कार्यकारी।
वि० [फा०] घातक। मर्म-भेदी।
स्त्री० [सं० कारिता] करने का काम। जैसे-पत्रकारी, चित्रकारी।

कारीगर-पुं० [फा०] [संज्ञा कारीगरी] लकड़ी, पत्थर आदि से सुन्दर वस्तुओं की रचना करनेवाला। शिल्पकार।
वि० हाथ से काम बनाने में कुशल। निपुण। हुनरमन्द।

कारु-पुं० [सं०] [भाव० कारुता] शिल्पी। कारीगर। दस्तकार।

कारुणिक-वि० [सं०] कृपालु । दयालु ।

कारुण्य-पुं० [सं०] 'करुणा' का भाव । दया । मेहरबानी ।

कारूँ-पुं० [अ०] हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बहुत बड़ा धनी, पर कंजूस था । यौ०-कारूँ का खजाना=अनन्त सम्पत्ति।

कारूनी-स्त्री० [?] घोड़ों की एक जाति ।

कारूरा-पुं० [अ०] मूत्र । पेशाब ।

कारोबार-पुं० दे० 'कार-बार' ।

कार्ड-पुं० [अं०] १. मोटे कागज का तख्ता । २. ऐसे कागज का वह टुकड़ा जिसपर समाचार और पता आदि लिखा जाता है ।

कार्त्तिक-पुं० [सं०] वह चान्द्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है ।

कार्त्तिकेय-पुं० [सं०] शिव के पुत्र, स्कन्द जी । षडानन ।

कार्मण-पुं० [सं०] मंत्र-तंत्र आदि का प्रयोग ।

कार्मना*-पुं० दे० 'कार्मण' ।

कार्मुक-पुं० [सं०] १. धनुष । २. परिधि का एक भाग । चाप । ३. इन्द्र-धनुष ।

कार्य-पुं० [सं०] १. वह जो कुछ किया जाय । काम । व्यापार । धन्धा । २. काम करने की अवस्था । क्रिया । (ऐक्शन) ३. वह जो कारण का विकार या परिणाम हो, अथवा जिसे लक्ष्य करके कोई काम किया जाय । ४. किसी सिद्धि के लिए होनेवाला प्रयत्न । काम । (वर्क) ५. व्यवसाय, सेवा, जीविका आदि के विचार से किया जानेवाला काम ।

कार्य-कर्त्ता-पुं० [सं०] १. वह जो कोई काम करता हो । कोई विशेष काम करनेवाला । २. कर्मचारी ।

कार्य-कारिणी-स्त्री० दे० 'कार्य-समिति' ।

कार्यकारी-पुं० [सं०] [स्त्री० कार्यकारिणी] १. विशेष रूप से कोई कार्य करनेवाला । २. किसी पदाधिकारी की अनुपस्थिति में उसके पद पर रहकर उसके सब काम करनेवाला । (ऐक्टिंग)

कार्यक्रम-पुं० [सं०] १. होने या किये जानेवाले कार्यों का क्रम । २. इस प्रकार का क्रम बतलानेवाली कार्यों की सूची । (प्रोग्राम)

कार्य-दिवस-पुं० [सं०] दिवस या दिन का उतना अंश जितने में बराबर कोई आदमी कुछ कार्य करता रहता है और जिसकी गिनती एक पूरे दिन में होती है । (वर्किंग डे)

कार्य-समिति-स्त्री० [सं०] १. किसी विशिष्ट कार्य्य या व्यवस्था आदि के लिए बनी हुई समिति । २. प्रबन्ध-कारिणी या कार्य-कारिणी समिति ।

कार्य-हेतु-पुं० [सं०] वह कारण या हेतु जिससे कोई कार्य या व्यवहार (मुकदमा) न्यायालय के सामने विचार के लिए रखा जाता है । (कॉज ऑफ ऐक्शन)

कार्याधिकारी-पुं० [सं०] वह अधिकारी या कार्य-कर्त्ता जिसपर कोई विशेष कार्य या प्रबन्ध करने का भार हो ।

कार्याध्यक्ष-पुं० [सं०] वह जो सबके ऊपर रहकर किसी कार्य या उसके प्रबन्ध आदि की देख-रेख करता हो ।

कार्यान्वित-वि० [सं० कार्य+अन्वित] १. कार्य या काम में लगा या आया हुआ । २. प्रत्यक्ष कार्य के रूप में किया हुआ । जैसे-यह प्रस्ताव कार्यान्वित होगा ।

कार्यार्थी-वि० [सं०] १. कार्य की सिद्धि चाहनेवाला । २. कोई गरज रखनेवाला ।

कार्यालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ

किसी विशेष व्यापार या कार्य की व्यवस्था करनेवाले अधिकारी बैठकर सब काम बराबर नियमित रूप से करते हों। दफ्तर। (ऑफिस)

कार्यावली-स्त्री० [सं०] उन कार्यों की सूची जो किसी सभा-समिति में किसी एक दिन अथवा एक बैठक में होने को हों। (एजेंडा)

कार्रवाई-स्त्री० दे० 'कार-रवाई'।

कार्षापण-पुं० [सं०] एक प्रकार का पुराना सिक्का।

काल-पुं० [सं०] १. संबंध की वह सत्ता जिसके द्वारा भूत, वर्तमान आदि का बोध होता है। समय। वक्त। (टाइम) मुहा०-**काल पाकर**=कुछ दिनों के बाद। २. अन्तिम काल। मृत्यु। ३. यमराज। ४. उपयुक्त समय। अवसर। मौका। ५. अकाल। महँगी। दुर्भिक्ष। ६. [स्त्री० काली] शिव का एक नाम। *वि० काले रंग का।

‡क्रि० वि० दे० 'कल'।

कालकूट-पुं० [सं०] एक प्रकार का अत्यन्त भयंकर विष। काला बछनाग।

काल-कोठरी-स्त्री० [हिं० काल+कोठरी] जेलखाने की वह बहुत छोटी और अँधेरी कोठरी जिसमें कैद-तनहाई की सजा पानेवाले कैदी रखे जाते हैं।

काल-क्षेप-पुं० [सं०] १. दिन काटना। वक्त बिताना। २. निर्वाह। गुजर। बसर।

काल-चक्र-पुं० [सं०] १. समय का हेर-फेर। जमाने की गर्दिश। २. एक अस्त्र।

कालज्ञ-पुं० [सं०] १. समय का हेर-फेर जाननेवाला। २. ज्योतिषी।

काल-ज्ञान-पुं० [सं०] १. स्थिति और अवस्था की जानकारी। २. अपनी मृत्यु का समय पहले से जान लेना।

काल-पुरुष-पुं० [सं०] १. ईश्वर का विराट् रूप। २. काल।

काल-बंजर-पुं० [सं० काल+हिं० बंजर] वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो।

काल-यापन-पुं० [सं०] काल-क्षेप। दिन काटना। गुज़ारा करना।

कालर-पुं० दे० 'कल्लर'।

पुं० [अं० कॉलर] १. कुत्ते आदि के गले में बाँधने का पट्टा। २. कोट या कमीज में की वह पट्टी जो गले के चारों ओर रहती है।

काल-रात्रि-स्त्री० [सं०] १. अँधेरी और भयावनी रात। २. ब्रह्मा की रात जिसमें सारी सृष्टि का लय हो जाता है। प्रलय की रात। ३. मृत्यु की रात। ४. दिवाली की रात।

काल-सर्प-पुं० [सं० काल (मृत्यु)+सर्प] [स्त्री० काल-सर्पिणी] वह साँप जिसके काटने से आदमी अवश्य मर जाय।

काला-वि० [सं० काल] [स्त्री० काली] १. काजल या कोयले के रंग का। स्याह। मुहा०-(अपना) **मुँह काला करना**= १. कुकर्म, पाप या व्यभिचार करना। २. किसी बुरे आदमी का दूर होना। (दूसरे का) **मुँह काला करना**=१. किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अथवा व्यक्ति को दूर करना। २. कलंक का कारण होना। बदनामी का सबब होना। जैसे-अपने कुकर्म से बड़ों का मुँह काला करना। **काला मुँह होना या मुँह काला होना**=कलंकित होना। बदनाम होना। २. कलुषित। बुरा। ३. भारी। प्रचंड। मुहा०-**काले कोसों**=बहुत दूर।

पुं० [सं० काल] काला साँप।

काला-कलूटा-वि० [हिं० काला+कलूटा]

बहुत काला। अत्यन्त श्याम। (मनुष्य)

कालाग्नि-पुं०[सं०]प्रलय-काल की अग्नि।

काला चोर-पुं० [सं०] १. बहुत भारी चोर। २. बुरे से बुरा आदमी।

कालातीत-वि० [सं०] जिसका समय बीत गया हो। बीता हुआ। विगत।

काला नमक-पुं० [हिं० काला+फा० नमक] काले रंग का एक प्रकार का पाचक लवण। सोंचर।

काला नाग-पुं० [हिं० काला+नाग] १. काला साँप। विषधर सर्प। २. बहुत दुष्ट या खोटा आदमी।

काला पानी-पुं० [हिं० काला+पानी] बंगाल की खाड़ी का वह अंश जहाँ का पानी अत्यन्त काला है। २ ऐंडमन और निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश-निकाले के कैदी भेजे जाते थे। ३. देश-निकाले का दंड। द्वीपान्तर-वास का दंड। ४. शराब। मदिरा।

काला-भुजंग-वि० [हिं० काला+भुजंग] बहुत काला।

कालास्त्र-पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण जिसके प्रहार से शत्रु का मरना निश्चित समझा जाता था।

कालिंदी-स्त्री० [सं०] कलिंद पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी।

कालि-क्रि० वि० दे० 'कल'।

कालिक-वि० [सं०] १. समय संबंधी। जैसे-पूर्व-कालिक। २. समयोचित। ३. जिसका समय नियत हो।

कालिका-स्त्री० [सं०] काली देवी।

कालिख-स्त्री० [सं० कालिका] वह काला अंश जो धूएँ के जमने से लग जाता है।

मुहा०-मुँह में कालिख लगना=बदनामी के कारण मुँह दिखलाने लायक न रह जाना।

कालिब-पुं० दे० 'कलबूत'।

कालिमा-स्त्री० [सं०] १ कालापन। २. कालिख। कलौंछ। ३. अँधेरा। ४. कलंक। लांछन।

काली-स्त्री० [सं०] १. चंडी। कालिका। २. पार्वती। गिरिजा।

पुं० [सं० कालिन्] एक नाग जो यमुना में रहता था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

काली ज़बान-स्त्री० [हिं० काली+फा० ज़बान] वह ज़बान जिससे निकली हुई अशुभ बातें प्रायः सत्य घटा करें।

काली दह-पुं० [सं० कालिय+हि० दह] वृन्दावन में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें काली नामक नाग रहा करता था।

काली मिर्च-स्त्री० [हिं० काली+मिर्च] गोल मिर्च।

कालौंछ-स्त्री०[हिं० काला+औंछ प्रत्य०)] १. कालापन। स्याही। २. कालिख।

काल्पनिक-पुं०[सं०]कल्पना करनेवाला। वि० [सं०] जिसकी कल्पना की गई हो, पर जो वास्तव में न हो। कल्पित। मन-गढ़ंत।

कावा-पुं० [फा०] घोड़े को एक वृत्त मे चक्कर देने की क्रिया।

मुहा०-कावा काटना=१. वृत्त में दौड़-ना। चक्कर खाना। २ आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना। कावा देना=चक्कर देना।

काव्य-पुं० [सं०] १ वह रचना, विशेषतः पद्य-रूप की रचना, जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो जाय। कविता। २. वह पुस्तक जिसमें कविता हो। काव्य का ग्रंथ।

काश-पुं० [सं०] १. एक प्रकार की घास। कांस। २. खाँसी।

काशिका-स्त्री० [सं०] काशी पुरी।

काशीफल-पुं० [सं० कोशफल] कुम्हड़ा।

काश्त-स्त्री० [फा०] १. खेती। कृषि। २. ज़मींदार को कुछ वार्षिक लगान देकर उसकी ज़मीन पर खेती करने का स्वत्व।

काश्तकार-पुं० [फा०] [भाव० काश्तकारी] १. किसान। कृषक। खेतिहर। २. वह जिसने जमींदार को लगान देकर उसकी ज़मीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो।

काषाय-वि० [सं०] १. हड़, बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। २. गेरू में रँगा हुआ। गेरुआ।

काष्ठ-पुं० [सं०] १. काठ। २ ईंधन।

कास-पुं० [सं०] खांसी।
पुं० [सं० काश] कांस नामक घास।

कासनी-स्त्री० [फा०] १. एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं। २. इस पौधे का बीज। वि० कासनी के फूल के रंग की तरह नीला।

कासा-पुं० [फा०] १. प्याला। कटोरा। २. दरियाई नारियल का वह बरतन जो फकीर भीख मांगने के लिए रखते हैं।

काहाँ-अव्य० दे० 'कहँ'।

काह*-क्रि० वि० [सं० कः, को] क्या?

काहि*-सर्व० [हिं० काहूँ] १. किसको? किसे? २. किससे?

काहिल-वि० [अ०] सुस्त।

काहु*-सर्व० दे० 'काहू'।

काहू-सर्व० [हिं० का+हू (प्रत्य०)] किसी।
पुं० [फा०] गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

काहे*-क्रि० वि० [सं० कथं] क्यों?
यौ०-काहे को=किस लिए? क्यों?

किं-अव्य० दे० 'किम्'।

किंकर-पुं० [सं०] [स्त्री० किंकरी] १. दास। २. राक्षसों का एक वर्ग।

किंकर्त्तव्य-विमूढ़-वि० [सं०] जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए। हक्का बक्का। भौचक्का।

किंकिणी-स्त्री० [सं०] १. क्षुद्र-घंटिका। २. करधनी।

किंगरी-स्त्री० [सं० किन्नरी] छोटी सारंगी जिसे बजाकर जोगी भीख मांगते हैं।

किंचन-पुं० [सं०] थोड़ी वस्तु।

किंचित्-वि० [सं०] कुछ। थोड़ा।
यौ०-किंचिन्मात्र=बहुत ही थोड़ा।
क्रि० वि० कुछ। थोड़ा।

किंजल्क-पुं० [सं०] १ कमल का केसर। २. कमल।
वि० [सं०] कमल के केसर के रंग का।

किंतु-अव्य० [सं०] १. पर। लेकिन। परन्तु। २ वरन्। बल्कि।

किंपुरुष-पुं० [सं०] १. किन्नर। २. प्राचीन काल की एक मनुष्य जाति।

किंभूत-वि० [सं०] १. किस प्रकार का? कैसा? २. विलक्षण। अद्भुत। अजीब। ३. भोंडा। भद्दा।

किंवदंती-स्त्री० [सं०] अफवाह। उड़ती खबर। जन-रव।

किंवा-अव्य० [सं०] या। अथवा।

किंशुक-पुं० [सं०] पलाश। ढाक। टेसू।

कि-सर्व० [सं० किम्] क्या? किस प्रकार?
अव्य० [सं० किम्, फा० कि] १. एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है। २. इतने में। ३. या।

किचकिच-स्त्री० [अनु०] १. व्यर्थ का वाद-विवाद। बकवाद। २. झगड़ा।

किचकिचाना-अ० [अनु०] [भाव० किचकिचाहट] १. (क्रोध से) दाँत पीसना। २. भर-पूर बल लगाने के लिए दाँत पर दाँत रखकर दबाना।

किचड़ाना-अ० [हिं० कीचड़+आना (प्रत्य०)] (आँख का) कीचड़ से भरना।

किछु*-वि० दे० 'कुछ'।

किटकिट-स्त्री० दे० 'किचकिच'।

किटकिटाना-अ० [अनु०] [संज्ञा किटकिट] १. क्रोध से दाँत पीसना। २. दाँत के नीचे कंकड़ की तरह कड़ा लगना।

किटकिना-पुं० [सं० कृतक] १. वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठेके की चीज का ठेका दूसरे असामियों को देता है। २. युक्ति। तरकीब।

किट्ट-पुं० [सं०] १. धातु का मैल। २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल।

कित¹-क्रि० वि० [सं० कुत्र] १ कहाँ? २. किस ओर? किधर? ३. ओर। तरफ।

कितक*-वि० क्रि० वि० दे० 'कितना'।

कितना-वि० [सं० कियत्] [स्त्री० कितनी] १. किस परिमाण, मात्रा या संख्या का? (प्रश्नवाचक) २. अधिक। बहुत।

क्रि० वि० १. किस परिमाण या मात्रा में? कहाँ तक? २. अधिक। बहुत। ज्यादा।

किता-पुं० [अ० कितऽ] १. सिलाई के लिए कपड़े की काट-छाँट। ब्योंत। २. ढंग। चाल। ३. संख्या। अदद। जैसे-दो किता मकान।

किताब-स्त्री० [अ०] [वि० किताबी] १. पुस्तक। ग्रंथ।

मुहा०-किताबी कीड़ा=वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो।

२. पंजी। बही।

किताबी-वि० [अ० किताब] १. किताब के आकार का। २. लंबोतरा। जैसे-किताबी चेहरा।

कितिक*¹-वि० दे० 'कितना'।

कितेक*¹-वि० [सं० कियदेक] १. कितना। २. बहुत।

कितो(ँ)*¹- क्रि० वि० [सं० कुत्र] १. कहाँ। किस जगह। २. किधर।

कित्ति*-स्त्री० दे० 'कीर्त्ति'।

किधर-क्रि० वि० [सं० कुत्र] किस ओर? किस तरफ?

किधौं*-अव्य० [सं० किम्] १. अथवा। या। २. या तो। न जाने।

किन-सर्व० हिं० 'किस' का बहुवचन।

*क्रि० वि० [सं० किम्+न] १. क्यों न। चाहे। २. क्यों नहीं?

*पुं० [सं० किण] चिह्न। दाग।

किनका-पुं० [सं० कणिक] [स्त्री० अल्पा० किनकी] अन्न का टूटा हुआ दाना।

किनारदार-वि० [फा० किनारा+दार] (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो।

किनारा-पुं० [फा०] १. किसी वस्तु का वह भाग जहाँ उसकी लम्बाई या चौड़ाई समाप्त होती है। अंतिम सिरा। २. नदी या जलाशय का तट। तीर।

मुहा०-किनारे लगना=(किसी कार्य का) समाप्ति पर पहुँचना। समाप्त होना।

३. कपड़े आदि में छोर पर का वह भाग जो भिन्न रंग या बुनावट का होता है। हाशिया। ४. पार्श्व। बगल।

मुहा०-किनारा खींचना=दूर या अलग हो जाना। किनारे न जाना=अलग रहना। पास न जाना। बचना। किनारे बैठना, रहना या होना=अलग

हो जाना। छोड़कर दूर हटना।

किनारी-स्त्री० [फा० किनारा] सुनहला या रुपहला पतला गोटा।

किनारे-क्रि० वि० [हिं० किनारा] १. सीमा की ओर। सिरे पर। २. तट पर। ३. अलग।

किन्नर-पुं० [सं०] [स्त्री० किन्नरी] १. एक प्रकार के देवता जिनका मुख घोड़े के समान माना जाता है। २ गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।

किन्नरी-स्त्री० [सं०] किन्नर जाति की स्त्री। स्त्री० [सं० किन्नरी वीणा] १. एक प्रकार का तँबूरा। २. छोटी सारंगी। किंगरी।

किफायत-स्त्री० [अ०] मित-व्यय।

किफायती-वि० [अ० किफायत] १. कम खर्च करनेवाला। २. कम दाम का। सस्ता।

किबला-पुं० [अ०] १. पश्चिम दिशा, जिस ओर मुख करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। २. मक्का नगर। ३. पूज्य व्यक्ति। ४. पिता। बाप।

किबलानुमा-पुं० [फा०] दिग्दर्शक यंत्र।

किम्-वि०, सर्व० [सं०] १ क्या? २. कौन-सा?

यौ०-किमपि=१. कोई। २. कुछ भी।

किमाकार-वि० दे० 'किंभूत'।

किमि*-क्रि० वि० [सं० किम्] कैसे?

किम्मत[1]-स्त्री० [अ० हिकमत] १. चतुराई। होशियारी। २. वीरता। बहादुरी।

कियत्-वि० [सं०] कितना।

कियाह-पुं० [सं०] लाल रंग का घोड़ा।

किरकिरा-वि० [सं० कर्कट] जिसमें महीन और कड़े रवे हों।

मुहा०-**मजा किरकिरा हो जाना**=रंग में भंग हो जाना। आनन्द में विघ्न पड़ना।

किरकिराना-अ० [हिं० किरकिरा][भाव० किरकिराहट] १. किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा करना। २. दे० 'किटकिटाना'।

किरकिरी-स्त्री० [सं० कर्कर] १. धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा देता है। २. अपमान। हेठी।

किरकिल*-पुं० दे० 'गिरगिट'।

किरच-स्त्री० [सं० कृति=कैंची (अस्त्र)] १. एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है। २. छोटा नुकीला टुकड़ा (जैसे-हीरे, काँच आदि का)।

किरण-स्त्री० [सं०] १. ज्योति की वे अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य, चन्द्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई देती हैं। रोशनी की लकीर।

मुहा०-**किरण फूटना**=सूर्योदय होना। २. बादले की झालर।

किरण-चित्र-पुं० [सं०] किरणों की सहायता से आँखों की पुतलियों पर बननेवाला वह चिह्न जो किसी चमकीले रंगीन पदार्थ पर से सहसा दृष्टि हटा लेने पर भी कुछ समय तक बना रहता है।

किरणमाली-पुं० [सं०] सूर्य।

किरन-स्त्री० दे० 'किरण'।

किरनारा-वि० [हिं० किरन+आर (प्रत्य०)] किरणोंवाला।

किरपा*-स्त्री० दे० 'कृपा'।

किरपान*-पुं० दे० 'कृपाण'।

किरम-पुं० [सं० कृमि] कीड़ा।

किरमाल*-पुं० [सं० करवाल] तलवार।

किरमिच-पुं० [अं० कैन्वस] एक प्रकार का मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते आदि बनते और जिसपर तैल-चित्र अंकित होते हैं। (कैन्वस)

किरमिज-पुं० [सं० कृमि+ज] [वि० किरमिजी] १. मटमैलापन लिये हुए करोंदिया रंग। हिरमिजी। २. इस रंग का घोड़ा।
किरराना-अ० [अनु०] क्रोध से दाँत पीसना।
किरवान*-पुं० दे० 'कृपाण'।
किरवार*-पुं० दे० 'करवाल'।
किरात-पुं० [सं०] [स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती] १. एक प्राचीन जंगली जाति। २. हिमालय का पूर्वीय भाग तथा उसके आस-पास का देश।
स्त्री० [अ० केरात] जवाहरात की एक तौल जो चार जौ के बराबर होती है।
किराना-पुं० [सं० क्रपण] हल्दी, मिर्च आदि मसाले जो पंसारियों के यहाँ बिकते हैं।
किरानी-पुं० [अं० क्रिश्चियन] १. वह जिसके माता पिता में से एक युरोपियन और दूसरा भारतीय हो। २.दे० 'लिपिक'।
किराया-पुं० [अ०] वह दाम जो दूसरे की कोई वस्तु काम में लाने के बदले में उसके मालिक को दिया जाय। भाड़ा। (रेन्ट)
किरायेदार-पुं० [फा० किरायादार] वह जो किराये पर मकान या दूकान ले।
किरावल-पुं० [तु० करावल] वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के लिए आगे जाती है।
किरासन-पुं० दे० 'मिट्टी का तेल'।
किरिया*-स्त्री० [सं० क्रिया] १. शपथ। सौगन्ध। कसम। २. मृत व्यक्ति के श्राद्धादि कर्म।
यौ०-किरिया-करम = मृतक-कर्म।
किरीट-पुं० [सं०] [वि० किरीटी] सिर पर बाँधने का एक आभूषण।
किरीरा*-स्त्री० दे० 'क्रीड़ा'।
किरोध*-पुं० दे० 'क्रोध'।
किल-अव्य० [सं०] १. निश्चय। अवश्य। २. सचमुच।
किलक-स्त्री० [हिं० किलकना] १. किलकने या हर्ष-ध्वनि करने की क्रिया। २ हर्ष-ध्वनि। किलकार।
स्त्री० [फा० किलक] एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।
किलकना-अ० [सं० किलकिला] किलकारी मारना। हर्ष-ध्वनि करना।
किलकारना-अ० [सं० किलकिला] [भाव० किलकारी] आनन्द या उत्साह के समय जोर से अस्पष्ट और गम्भीर शब्द करना। हर्ष-ध्वनि करना।
किलकारी-स्त्री० [हिं०किलक] हर्ष-ध्वनि।
किलकिंचित-पुं० [सं०] संयोग-शृंगार के ११ हावों में से एक, जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है।
किलकिला-स्त्री० [सं०] किलकारी।
किलकिलाना-अ० [अनु०] [भाव० किलकिलाहट] १. दे० 'किलकारना'। २. चिल्लाना। ३. झगड़ा करना।
किलना-अ० [हिं० कील] १. कीलन होना। कीला जाना। २. वश में किया जाना। ३. गति का रोका जाना।
किलनी-स्त्री० [स० कीट, हिं० कीड़ा] पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक छोटा कीड़ा।
किललाना-अ० दे० 'चिल्लाना'।
किलवाँक-पुं० [देश०] एक प्रकार का काबुली घोड़ा।
किलविष*-पुं० दे० 'किल्विष'।
किला-पुं० [अ०] लड़ाई के समय बचाव

के लिए बनाया हुआ सुदृढ़ स्थान। दुर्ग। गढ़। कोट।

किलेदार-पुं० [अ० किला+फा० दार] [भाव० किलेदारी] किले का प्रधान अधिकारी। दुर्गपति।

किलेबंदी-स्त्री० [फा०] १. लड़ाई के लिए किले या मोरचे बनाने का काम। २ किसी प्रकार के आक्रमण से अपनी रक्षा करने की योजना।

किलोल-पुं० दे० 'कलोल'।

किल्लत-स्त्री० [अ०] १. कमी। २. तंगी। ३. कठिनता।

किल्ला-पुं० दे० 'खूँटा'।

किल्ली-स्त्री० [हिं० कीला] १. कीला। खूँटी। मेख। २. सिटकिनी। बिल्ली। ३. कल या पेंच चलाने की मुठिया। मुहा०-किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना=किसी का वश किसी पर होना। किल्ली घुमाना या ऐंठना= १. युक्ति लगाना। २. किसी ओर घुमाना।

किल्विष-पुं० [सं०] [वि० किल्विषी] १. पाप। २. अपराध। दोष। ३. रोग।

किवाँच-पुं० दे० 'कौंछ'।

किवाड़(ा)-पुं० [सं० कपाट] [स्त्री० किवाड़ी] लकड़ी का पल्ला जो दरवाजा बन्द करने के लिए चौखट में जड़ा रहता है। पट। कपाट।

किशमिश-स्त्री० [फा०] [वि० किशमिशी] सुखाया हुआ छोटा बेदाना अंगूर।

किशलय-पुं० [सं०] नया निकला हुआ कोमल पत्ता। कल्ला।

किशोर-पुं० [सं०] [स्त्री० किशोरी] १. ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. पुत्र। बेटा।

किश्त-स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना। शह।

किश्ती-स्त्री० दे० 'कश्ती'।

किष्किंध-पुं० [सं०] मैसूर के आसपास के देश का प्राचीन नाम।

किष्किंधा-स्त्री० [सं०] किष्किंध देश की एक पर्वत-श्रेणी।

किस-सर्व० [सं० कस्य] 'कौन' और 'क्या' का वह रूप जो विभक्ति लगने पर उन्हें प्राप्त होता है।

किसनई-स्त्री० दे० 'किसानी'।

किसबत-स्त्री० [अ०] वह थैला जिसमें नाई अपने उस्तरे, कंघा आदि रखते हैं।

किसमती*-पुं० [अ० कसबी] श्रमजीवी।

किसलय-पुं० दे० 'किशलय'।

किसान-पुं० [सं० कृषाण] कृषि या खेती करनेवाला। खेतिहर।

किसानी-स्त्री० [हिं० किसान] किसान का काम। खेती-बारी।

किसी-सर्व० वि० [हिं० किस+ही] 'कोई' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है।

किसू*-सर्व० दे० 'किसी'।

किस्त-स्त्री० [अ०] १. कई बार करके ऋण या देना चुकाने का ढंग। खंडी। २. ऋण या देने का वह भाग जो इस प्रकार दिया जाय। (इन्स्टॉलमेन्ट)

किस्तबंदी-स्त्री० [फा०] थोड़ा-थोड़ा करके देन अदा करने का ढंग।

किस्तवार-क्रि० वि० [फा०] किस्त के ढंग से। किस्त करके।

किस्म-स्त्री० [अ०] १. प्रकार। भाँति। तरह। २. ढंग। तर्ज।

किस्मत-स्त्री० [अ०] १. भाग्य। मुहा०-किस्मत आजमाना=कोई काम

हाथ में लेकर देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। किस्मत चमकना या जागना=भाग्य प्रबल होना। बहुत भाग्यवान् होना। किस्मत फूटना= भाग्य मन्द हो जाना।

२. किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई जिले हों। कमिश्नरी।

किस्सा-पुं० [अ०] १. कहानी। २. वृत्तान्त। हाल। ३. झगड़ा-बखेड़ा।

किहिं*-सर्व० [सं० कः] १. किसका। २. किसको। किस।

कीक-पुं० [अनु०] चीत्कार। चीख।

कीकट-पुं० [सं०] १. मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम। २. इस देश का निवासी। ३. घोड़ा।

कीकना-अ० [अनु०] की की करके चिल्लाना। चीत्कार करना।

कीकर-पुं० [सं० किंकराल] बबूल।

कीका-पुं० [सं० ककाण] घोड़ा।

कीकान-पुं० [सं० ककाण (देश)] १ पश्चिमोत्तर का ककाण देश। २. इस देश का घोड़ा। ३. घोड़ा।

कीच-पुं० दे० 'कीचड़'।

कीचड़-पुं० [हिं० कीच+ड़ (प्रत्य०)] १. पानी में मिली हुई धूल या मिट्टी। कर्दम। पंक। २. आँख का सफेद मल।

कीट-पुं० [सं०] कीड़ा-मकोड़ा। स्त्री० [सं० किट्ट] जमी हुई मैल।

कीड़ना*-अ० [सं०क्रीडन] क्रीड़ा करना।

कीड़ा-पुं० [सं० कीट, प्रा० कीड] १. उड़ने या रेंगनेवाला छोटा जन्तु। (जैसे-जूँ, खटमल, फतिंगा आदि) कीट। मकोड़ा। २. साँप।

कीड़ी-स्त्री० दे० 'च्यूँटी'।

कीदहुँ*-अव्य० दे० 'किधौं'।

कीनना*-स० [सं० क्रीणन] खरीदना।

कीना-पुं० [फा०] द्वेष। बैर।

कीप-स्त्री० [अ० कीफ] वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन पर रखकर द्रव पदार्थ डालते हैं। छुच्छी।

कीमत-स्त्री०[अ०] १. मूल्य। २. महत्व।

कीमती-वि० [अ०] अधिक दामों का। बहुमूल्य।

कीमा-पुं० [अ०] बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।

कीमिया-स्त्री० [फा०] [कर्त्ता कीमियागर] रासायनिक क्रिया। रसायन।

कीर-पुं० [सं०] तोता।

कीरति*-स्त्री० दे० 'कीर्त्ति'।

कीर्ण-वि० [सं०] १. बिखरा या फैला हुआ। २. छाया हुआ।

कीर्त्तन-पुं० [सं०] १. गुणों या यश का वर्णन। २ ईश्वर या उसके अवतारों के सम्बन्ध का भजन और कथा आदि।

कीर्त्तनियाँ-पुं० [सं० कीर्तन] कीर्त्तन करनेवाला।

कीर्त्ति-स्त्री०[सं०] १. पुण्य। २. ख्याति। बड़ाई। यश। ३. वह अच्छा या बड़ा काम जिससे किसी के बाद उसका नाम चले।

कीर्त्तिमान-वि० [सं०] यशस्वी।

कीर्त्ति स्तम्भ-पुं० [सं०] १. वह स्तम्भ जो किसी की कीर्त्ति का स्मरण कराने के लिए बनाया जाय। २. वह कार्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्त्ति स्थायी हो।

कील-स्त्री० [सं०] १. लोहे या काठ की मेख। काँटा। २. वह मूढ़ गर्भ जो योनि में अटक जाता है। ३. लौंग नाम का गहना। ४. मुँहासे का मांस।

कीलक-पुं० [सं०] १. खूँटी। कील।

२. वह मंत्र जिससे दूसरे मंत्रों की शक्ति या प्रभाव नष्ट किया जाय।

वि० कीलनेवाला।

कील-काँटा-पुं० [हिं० कील+काँटा] १. कील और मेख आदि सामग्री। २. कोई कार्य सम्पन्न करने के लिए समस्त उपयोगी और आवश्यक सामग्री।

कीलन-पुं० [सं०] [वि० कीलित] १. बाँधना या रोकना। २. मंत्र का प्रभाव रोकना या नष्ट करना।

कीलना-स० [सं० कीलन] १. मेख जड़ना। कील लगाना। २ कील ठोककर मुँह बन्द करना। जैसे-तोप कीलना। ३. किसी मंत्र या युक्ति का प्रभाव नष्ट करना। ४. साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके।

कीला-पुं० दे० 'खूँटा'।

कीलाक्षर-पुं० [सं० कील+अक्षर] बाबुल की एक बहुत प्राचीन लिपि जिसके अक्षर देखने में कील या काँटे के आकार के होते थे।

कीलाल-पुं० [सं०] १. पानी। २. रक्त। लहू। ३. अमृत। ४ शहद। ५. पशु।

वि० बंधन दूर करनेवाला।

कीली-स्त्री० [सं० कील] १. चक्र के बीच की वह कील जिसपर वह घूमता है। २. दे० 'कील'।

कीश-पुं० [सं०] बंदर।

कीसा-पुं० [फा०] १. थैली। २. जेब।

कुँअर-पुं० दे० 'कुँवर'।

कुँआँ-पुं० दे० 'कुआँ'।

कुँआरा-वि०[स्त्री०कुँआरी] दे०'कुँवारा'।

कुँई-स्त्री० दे० 'कुमुदिनी'।

कुंकुम-पुं० [सं०] १. केसर। २. रोली।

कुंचन-पुं० [सं०] सिकुड़ना।

कुंचित-वि० [सं०] १. घूमा हुआ। टेढ़ा। २ घुँघरवाले। छल्लेदार (बाल)।

कुंज-पुं० [सं०] वृक्षों या लताओं के झुरमुट से मंडप की तरह ढका हुआ स्थान।

कुंजक*-पुं० दे० 'कंचुकी'।

कुंज-गली-स्त्री० [हिं० कुंज+गली] १. बगीचों में लताओं से छाई हुई पग-डंडी। २. पतली तंग गली।

कुँजड़ा-पुं० [सं० कुंज+ड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० कुँजड़ी, कुँजड़िन] तरकारी बोने और बेचनेवाली एक जाति।

कुंजर-पुं० [सं०] [स्त्री० कुंजरा, कुंजरी] १. हाथी। २. बाल। ३. आठ की संख्या।

वि० श्रेष्ठ। जैसे-नर-कुंजर।

कुंजविहारी-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

कुंजित-वि० [सं०] कुंजों से युक्त।

कुंजी-स्त्री० [सं० कुंचिका] १. चाभी। ताली।

मुहा०-(किसी की) कुंजी हाथ में होना=किसी का वश में होना।

२. वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ खुले। टीका।

कुंठित-वि० [सं०] १. जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो। कुन्द। गुठला। २. मन्द्रिम या धीमा पड़ा हुआ। मन्द।

कुंड-पुं० [सं०] १. चौड़े मुँह का मिट्टी का गहरा और बड़ा बर्तन। कुंडा। २. छोटा तालाब। ३ खोदा हुआ वह गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ वह पात्र, जिसमें आग जलाकर हवन करते हैं। ४. सधवा स्त्री का जारज लड़का। ५. दे० 'कूँड'।

कुंडल-पुं० [सं०] १. कान में पहनने का एक गहना। २. वह वलय जो कनफटे साधु कानों में पहनते हैं। ३.

रस्सी आदि का गोल घेरा। मंडल। जैसे-साँप का कुंडल। ४. वह मंडल जो बदली में चन्द्रमा या सूर्य्य के चारों ओर दिखाई देता है।

कुंडलिनी-स्त्री० [सं०] हठ योग में शरीर में का एक कल्पित अंग जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी के नीचे माना गया है।

कुंडलिया-स्त्री०[सं०कुंडलिका] दोहे और एक रोला के योग से बननेवाला छन्द।

कुंडली-स्त्री० [सं०] १. कुंडलिनी। २. जन्म-काल में ग्रहों की स्थिति सूचित करनेवाला वह चक्र जिसमें बारह घर होते है। (ज्योतिष) ३. गेंडुरी। ४. साप के गोलाकार बैठने की मुद्रा।

कुंडा-पुं० [सं० कुंड] [स्त्री० अल्पा० कुंडी] मिट्टी का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन। बड़ा मटका।

पुं० [सं० कुंडल] दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोढ़ा जिसमें साकल फँसाकर ताला लगाया जाता है।

कुंडी-स्त्री० [सं० कुंड] कटोरे के आकार का पत्थर या मिट्टी का बरतन।

स्त्री० [हिं० कुंडा] १. जंजीर की कड़ी। कुंडा। २. किवाड़ में लगी हुई सांकल।

कुंत-पुं० [सं०] भाला। बरछी।

कुंतल-पुं० [स०] १. सिर के बाल। केश। २. एक देश जो कोंकण और बरार के बीच में था। ३. बहुरूपिया।

कुंती-स्त्री० [सं०] युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता। पृथा।

स्त्री० [सं० कुंत] बरछी। भाला।

कुंद-पुं० [सं०] १. जूही की तरह का एक पौधा। २. कनेर का पेड़। ३. कमल।

वि०[फा०] १. कुंठित। गुठला। २. मन्द।

कुंदन-पुं० [सं० कुंद] १. बढ़िया सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर नगीने जड़ते हैं। २. बढ़िया सोना।

वि० १. कुंदन की तरह चोखा। २. नीरोग।

कुंदा-पुं० [फा० मिलाओ सं० स्कंध] १. लकड़ी का बड़ा और बिना चीरा टुकड़ा। लक्कड़। २. लकड़ी का वह टुकड़ा जिस-पर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते या कुंदीगर कपड़े की कुन्दी करते हैं। ३. बन्दूक का पिछला चौड़ा भाग। ४. दस्ता। मूठ। बेंट। ५. लकड़ी की बड़ी मुँगरी।

पुं० [सं० स्कंद] डैना। पंख।

पुं० [सं० कदन] भुना हुआ दूध। खोआ।

कुंदी-स्त्री० [हिं० कुंदा] १. कपड़ों की तह जमाने के लिए उसे मुँगरी से कूटने की क्रिया। २. खूब मारना। ठोंक-पीट।

कुंदीगर-पुं० [हिं० कुंदी+गर (प्रत्य०)] कपड़ों की कुन्दी करनेवाला।

कुंदुर-पुं० [सं०] एक प्रकार का पीला गोंद।

कुंभ-पुं० [सं०] १. मिट्टी का घड़ा। २. हाथी के सिर के दोनों ओर का ऊपरी भाग। ३. ज्योतिष मे दसवीं राशि। ४. एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है।

कुंभक-पुं० [सं०] प्राणायाम में साँस लेकर वायु को शरीर में रोकना।

कुंभीनस-पुं० [सं०] १. साँप। २. रावण।

कुंभीपाक-पुं० [सं०] एक नरक।

कुंभीर-पुं० [सं०] नक्र या नाक नामक जल-जन्तु।

कुँवर-पुं० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवरि] १. लड़का। बालक। २. पुत्र। बेटा। ३ राजा का लड़का। राजपुत्र।

कुँवरेटा-पुं० [हिं० कुँवर] छोटा लड़का।

(बड़े आदमियों का)

कुँवारा-वि० [सं० कुमार] [स्त्री० कुँवारी] जिसका ब्याह न हुआ हो। बिन-ब्याहा।

कुँहकुँह*-पुं० दे० 'कुंकुम'।

कु-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर उसके अर्थ में 'नीच' 'कुत्सित' आदि का भाव बढ़ाता है। जैसे-कुमार्ग।

कुअंक-पुं० [सं० कु+अंक] १. दूषित अंक। २. दुर्भाग्य। बद-किस्मती।

कुआँ-पुं० दे० 'कूआँ'।

कुआर-पुं० 'दे० आश्विन'।

कुइयाँ-स्त्री० [हिं० कूआं] छोटा कूआं।

कुई-स्त्री० दे० 'कुइयां'।

स्त्री० [सं० कुव] कुमुदिनी।

कुकड़ी-स्त्री० [सं० कुक्कुटी] तकले पर लपेटा हुआ कच्चे सूत का लच्छा।

कुकर्म-पुं० [सं०] बुरा काम।

कुकर्मी-वि० [हिं० कुकर्म] १. बुरा काम करनेवाला। २. पापी।

कुकुर-मुत्ता-पुं० [हिं० कुक्कुर+मूत] एक प्रकार की बदबूदार खुमी। (वनस्पति)

कुकुही*[1]-स्त्री० [सं० कुक्कुभ] बनमुर्गी।

कुक्कुट-पुं० [सं०] मुरगा। मुर्ग।

कुक्कुर-पुं०[सं०] [स्त्री० कुक्कुरी] कुत्ता।

कुक्ष-पुं० [सं०] पेट। उदर।

कुक्षि-स्त्री० [सं०] १ पेट। २. कोख।

कुखेत-पुं० [सं० कुक्षेत्र] बुरा स्थान।

कुख्यात-वि० [सं०] [संज्ञा कुख्याति] बदनाम।

कुगति-स्त्री० [सं०] बुरी गति। दुर्दशा।

कु-गहनि*[1]-स्त्री० [सं० कु+ग्रहण] अनुचित आग्रह या हठ।

कुघा*-स्त्री० [सं० कुक्षि] दिशा। ओर।

कुघात-पुं० [हिं० कु+घात] १. अनुपयुक्त अवसर। बे-मौका। २. बुरी तरह से किया हुआ घात।

कुच-पुं० [सं०] स्तन। छाती।

कुचकुचाना-स० [अनु० कुचकुच] १. लगातार कोंचना। बार बार नुकीली चीज गड़ाना या धँसाना।

कुचक्र-पुं० [कर्त्ता कुचक्री] दे० 'षड्यन्त्र'।

कुचना*-अ० दे० 'सिकुड़ना'।

कुचलना-स० [अनु०] १. बार बार ऐसी दाब या चोट पहुँचाना कि विकृत हो जाय।

मुहा०-सिर कुचलना=पूरी तरह से पराजित करना।

२. पैरों से रौंदना।

कुचला-पुं० [सं० कचीर] एक वृक्ष के विषैले बीज जो औषध के काम में आते हैं।

कुचाल-स्त्री० [सं० कु+हिं० चाल] [वि० कुचाली] १. बुरा आचरण या चाल-चलन। २. पाजीपन। शरारत।

कुचील[1]*-वि० [सं० कुचैल] जो मैले वस्त्र पहने हो। मैला-कुचैला।

कुचेष्टा-स्त्री० [सं०] [वि० कुचेष्ट] १. हानि पहुँचाने का यत्न। बुरी चाल। २. चेहरे का बुरा भाव।

कुचैन*-स्त्री० [सं० कु+हिं० चैन] कष्ट। वि० बेचैन। व्याकुल।

कुचैला-वि० [सं० कुचैल] [स्त्री० कुचैली] १. मैले कपड़ोंवाला। २. मैला।

कुच्छि=स्त्री० दे० 'कुक्षि'।

कुच्छित*-वि० दे० कुत्सित'।

कुछ-वि० [सं० किंचित्] १. थोड़ी संख्या या मात्रा का। जरा। थोड़ा सा।

मुहा०-कुछ कुछ=थोड़ा। कुछ न कुछ=

थोड़ा-बहुत।

२. गण्य। मान्य। प्रतिष्ठित।

मुहा०-कुछ लगाना=(अपने को) बड़ा या श्रेष्ठ समझना। कुछ हो जाना= किसी योग्य हो जाना।

सर्व० [सं० कश्चित्] कोई। (वस्तु) कुछ का कुछ=और का और। उलटा। कुछ कहना=कड़ी बात कहना। कुछ कर देना=जादू-टोना कर देना। (किसी को) कुछ हो जाना=कोई रोग या भूत-प्रेत की बाधा हो जाना। कुछ हो= चाहे जो हो।

पुं० १. बड़ी या अच्छी बात। २. सार वस्तु। काम की वस्तु।

कुजंत्र*-पुं० [सं० कुयंत्र] बुरा या दुष्ट अभिचार। टोटका। टोना।

कुज-पुं० [सं०] मंगल ग्रह।

कुजाति-स्त्री० [सं०] बुरी या छोटी जाति। पुं० १. छोटी जाति का आदमी। २. पतित या अधम पुरुष। ३. जाति से निकाला हुआ व्यक्ति।

कुजोग*-पुं० [सं० कुयोग] १. बुरा मेल। २. बुरा अवसर।

कुट-पुं० [सं०] [स्त्री० कुटी] १. घर। गृह। २. कोट। गढ़। ३. कलश।

स्त्री० [सं० कुष्ठ] एक झाड़ी जिसकी जड़ दवा के काम में आती है।

पुं० [सं० कुट=कूटना] कूट कर बनाया हुआ खंड। जैसे-तिलकुट।

कुटकी-स्त्री० [सं० कटु+कीट] उड़नेवाला कोई छोटा कीड़ा।

कुटन-पन-पुं० [सं० कुट्टनी] १. कुटनी का काम। २. झगड़ा लगाने का काम।

कुटना-पुं० [हिं० कुटनी] [स्त्री० कुटनी] स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाला। दलाल। २. दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला।

पुं० [हिं० कूटना] वह हथियार जिससे कोई चीज कूटी जाय।

अ० [हिं० कूटना] कूटा जाना।

कुटनाना-स० [हिं० कुटना] किसी स्त्री को बहकाकर पर-पुरुष से मिलाना।

कुटनी-स्त्री० [सं० कुट्टनी] १. स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलानेवाली स्त्री। दूती। २. झगड़ा करानेवाली।

कुटिया-स्त्री० [सं० कुटी] झोपड़ी। कुटी।

कुटिल-वि० [सं०] [स्त्री० कुटिला, भाव० कुटिलता] १. वक्र। टेढ़ा। २. घूमा या बल खाया हुआ। ३. छल्लेदार। घुँघराला। ४. कपटी। छली।

कुटिलता-स्त्री० [सं०] १. टेढ़ापन। २. छल। कपट।

कुटिलाई*-स्त्री० दे० 'कुटिलता'।

कुटी-स्त्री० [सं०] घास-फूस से बना छोटा घर। कुटिया। झोपड़ी।

कुटीर-पुं० दे० 'कुटी'।

कुटुंब-पुं० [सं०] एक साथ रहनेवाले परिवार के लोग। परिवार। कुनबा। (फैमिली)

कुटुम*-पुं० दे० 'कुटुंब'।

कुटेक-स्त्री० [सं० कु+हिं० टेक] अनुचित हठ।

कुटेव-स्त्री० [सं० कु+हिं० टेव] खराब या बुरी आदत।

कुट्टनी-स्त्री० दे० 'कुटनी'।

कुट्टमित-पुं० [सं०] संयोग के समय स्त्रियों की बनावटी दुःख-चेष्टा जो हावों में मानी गई है।

कुट्टी-स्त्री० [हिं० काटना] १. चारे के छोटे छोटे टुकड़े। २. कूटा और सड़ाया

हुआ कागज जिससे टोकरियाँ बनती है। १. लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे मित्रता तोड़ने के समय करते है।

कुठला-पुं० [सं० कोष्ठ] [स्त्री० अल्पा० कुठली] अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

कुठाँव*-स्त्री० [सं० कु+हिं० ठाँव] बुरी ठौर। बुरी जगह।

मुहा०-**कुठाँव मारना**=ऐसे स्थान पर मारना, जहाँ बहुत कष्ट हो।

कुठार-पुं० [सं०] [स्त्री० कुठारी] १. कुल्हाड़ी। २. परशु। फरसा।

वि० नाशक। (यौ० के अन्त में)

कुठाराघात-पुं० [सं०] १. कुल्हाड़ी का आघात। २. गहरी चोट।

कुठाली-स्त्री० [सं० कु+स्थाली] मिट्टी की घरिया जिसमें सोना-चाँदी गलाते है।

कुठाहर*-पुं० दे० 'कुठौर'।

कुठौर-पुं० [सं० कु+हिं० ठौर] १. कुठाँव। बुरी जगह। २. बे-मौका।

कुड़कुड़ाना-अ० [अनु०] मन में कुढ़ना।

कुडमल-पुं० [सं० कुड्मल] कली।

कुड़व-पुं० [सं०] अन्न नापने का एक पुराना मान।

कुडौल-वि० [सं० कु+हिं० डौल] बेढंगा। भद्दा। भोंडा।

कुढंग-पुं० [सं० कु+हिं० ढंग] बुरा ढंग। कुचाल। बुरी रीति।

वि० १. दे० 'कुढंगा'। २. दे० 'कुढंगी'।

कुढंगा-वि० [हिं० कुढंग] [स्त्री० कुढंगी] १. जो काम करने का ढंग न जानता हो। बेशऊर। उजड्ड। २. बेढंगा। भद्दा।

कुढंगी-वि० [हिं० कुढंग] कुमार्गी। बुरे चाल-चलन का।

कुढ़(न)-स्त्री० [सं० क्रुद्ध] मन-ही-मन होनेवाला दुःख।

कुढ़ना-अ० [सं० क्रुद्ध] १. मन-ही-मन दुःख करना, खीजना या चिढ़ना। २. डाह करना। जलना।

कुढब-वि० [सं० कु+हिं० ढब] १. बुरे ढंग का। बेढब। २. कठिन। दुस्तर।

पुं० बुरा ढब। खराब आदत।

कुढर-वि० [हिं० कु+ढर=ढलना] १. जो ठीक तरह से न ढला हो। २. भद्दा। भोंडा।

कुढ़ाना-स० [हिं० कुढ़ना] ऐसा काम करना जिससे कोई कुढ़े। दुःखी करना।

कुतका-पुं० [हिं० गतका] १ गतका। २. मोटा डंडा। सोंटा।

कुतना-अ० हिं० 'कूतना' का अ०।

कुतरना-स० [सं० कर्तन] १. दाँतो से छोटा टुकड़ा काट लेना। २. बीच ही मे से कुछ अंश उड़ा लेना।

कुतर्क-पुं० [सं०] बुरा तर्क। बेढंगी दलील। वितंडा।

कुतर्की-पुं० [सं० कुतर्किन्] व्यर्थ तर्क करनेवाला। बकवादी। वितंडावादी।

कुतवार (ल)*-पुं० दे० 'कोतवाल'।

कुतिया-स्त्री० हिं० 'कुत्ता' का स्त्री०।

कुतुब-पुं० [अ०] ध्रुव तारा।

कुतुब-नुमा-पुं० [अ०] दिग्दर्शक यन्त्र।

कुतूहल-पुं० [सं०] [वि० कुतूहली] १. कोई वस्तु या बात देखने या सुनने की प्रबल इच्छा। विनोदपूर्ण उत्कंठा। २. क्रीड़ा। कौतुक। खेलवाड़। ३. आश्चर्य। अचम्भा।

कुत्ता-पुं० [सं० कुक्कुर] [स्त्री० कुत्ती] १. भेड़िए, गीदड़ आदि की जाति का एक प्रसिद्ध पशु जो घर की रखवाली के लिए पाला जाता है। श्वान। कूकुर।

यौ०-कुत्ते-खसी=व्यर्थ और तुच्छ कार्य । मुहा०-क्या कुत्ते ने काटा है=क्या पागल हुए हैं ? कुत्ते की मौत मरना= बहुत बुरी तरह से मरना ।
२. लपटौवाँ नामक घास । ३. वह पुरजा जो किसी चक्कर को पीछे की ओर घूमने से रोकता है । ४. लकड़ी का वह टुकड़ा जिसके नीचे गिरा देने पर दरवाज़ा नहीं खुल सकता । बिल्ली । ५. बन्दूक का घोड़ा । ६ नीच या तुच्छ मनुष्य ।

कुत्सा-स्त्री० [सं०] निन्दा ।

कुत्सित-वि० [सं०] १. नीच । अधम । २. निन्दित । गर्हित । ३. बुरा । खराब ।

कुदकना-अ० दे० 'कूदना' ।

कुदरत-स्त्री० [अ०] [वि० कुदरती] १. शक्ति । अधिकार । प्रभुत्व । २. प्रकृति । ३. ईश्वरी शक्ति । ४. रचना ।

कुदरती-वि० दे० 'प्राकृतिक' ।

कुदर्शन-वि० [सं०] जो देखने में अच्छा न हो । कुरूप । बदसूरत ।

कुदलाना*-अ० [हि० कूदना] कूदते हुए चलना ।

कुदाँई *-वि० [हिं० कुदाँव] बुरे ढंग से दाँव-घात करनेवाला । विश्वासघाती ।

कुदाँव-पुं० [सं० कु+हिं० दाव] १. बुरा दाँव । कुघात । २. विश्वासघात । दगा । धोखा । ३. संकट की स्थिति । ४. बुरा या विकट स्थान । ५. मर्म-स्थान ।

कुदान-पुं० [सं०] १. बुरा दान (लेनेवाले के लिए) । जैसे-शय्यादान, गजदान आदि । २. कुपात्र या अयोग्य आदि को दिया जानेवाला दान ।
स्त्री० [हिं० कूदना] १. कूदने की क्रिया या भाव । २. उतनी दूरी, जितनी एक बार में पार की जाय ।

कुदाना-स० हिं० 'कूदना' का प्रे० ।

कुदाम*-पुं० [सं० कु+हिं० दाम] खोटा सिक्का । खोटा रुपया ।

कुदायँ*-पुं० दे० 'कुदाँव' ।

कुदाल-स्त्री० [सं० कुद्दाल] [स्त्री० अल्पा० कुदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औजार ।

कुदिन-पुं० [सं०] १. आपत्ति का समय । खराब दिन । २. वह दिन जिसमें ऋतु-विरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों ।

कुदृष्टि-स्त्री० [सं०] बुरी नजर । पाप-दृष्टि । बदनिगाह ।

कुदेव-पुं० [सं० कु=बुरा+देव] राक्षस ।

कुधर-पुं० [सं० कुध्र] १ पहाड़ । पर्वत । २. शेषनाग ।

कुनकुना-वि० [सं० कदुष्ण] थोड़ा गरम । गुनगुना । (तरल पदार्थ)

कुनना-स० [सं० क्षुणन] १. बरतन आदि खरादना । २. खरोचना ।

कुनबा-पुं० [सं० कुटुंब] कुटुंब ।

कुनबी-पु० दे० 'कुर्मी' ।

कुनह-स्त्री० [फा० कीनः] [वि० कुनही] १. द्वेष । मनोमालिन्य । २. पुराना वैर ।

कुनाई-स्त्री० [हिं० कुनना] १. किसी वस्तु को खरादने या खुरचने पर निकलनेवाला चूरा । बुरादा । २. कूनने या खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

कुनाम-पुं० [सं०] बदनामी ।

कुनित*-वि० दे० 'क्वणित' ।

कुनैन-स्त्री० [अं० क्विनिन] सिनकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो शीत-ज्वर के लिए उपकारी माना जाता है ।

कुपंथ-पुं० [सं० कुपथ] [वि० कुपंथी] १. बुरा मार्ग । २. निषिद्ध आचरण । कुचाल । ३. बुरा मत । कुत्सित सिद्धान्त

या सम्प्रदाय ।

कुपढ़-वि० [सं० कु+हिं० पढ़ना] अनपढ़ ।

कुपथ-पुं० [सं०] १. बुरा रास्ता । २. निषिद्ध आचरण । बुरी चाल ।

यौ०-कुपथ-गामी=निषिद्ध आचरण-वाला ।

* पुं० दे० 'कुपथ्य' ।

कुपथ्य-पुं० [सं०] वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य को खराब करे । बद-परहेजी ।

कुपना*-अ० दे० 'कोपना' ।

कुपाठ-पुं० [सं०] दुष्टता का परामर्श या शिक्षा । बुरी सलाह ।

कुपात्र-वि० [सं०] १ बुरा या अयोग्य पात्र । अनधिकारी । अयोग्य । नालायक । २. वह जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध हो ।

कुपार*-पुं० [सं० अकूपार] समुद्र ।

कुपित-वि० [सं०] १ जिसे कोप हुआ हो । क्रुद्ध । २. अप्रसन्न । नाराज़ ।

कुपटना†-स० दे० 'कपटना' ।

कुपुत्र-पुं० [सं०] वह पुत्र जो कुपथ-गामी हो । दुष्ट पुत्र । कपूत ।

कुप्पा-पुं० [सं० कूपक या कुतुप] [स्त्री० अल्पा० कुप्पी] घड़े के आकार का चमड़े का वह बरतन जिसमें घी, तेल आदि रखते हैं ।

मुहा०-फूलकर कुप्पा होना या हो जाना=१. फूल जाना । २. बहुत मोटा हो जाना । ३. बहुत प्रसन्न होना ।

कुप्रबंध-पुं० [सं० कु+प्रबंध] बुरा या खराब प्रबन्ध । बद-इंतज़ामी । (मिस-मैनेजमेन्ट)

कुप्रयोग-पुं० [सं०] किसी वस्तु, पद, अधिकार आदि का अनुचित या बुरा प्रयोग । (एब्यूज)

कुफर*†-पुं० दे० 'कुफ्र' ।

कुफ्र-पुं० [अ०] १. मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत । २. मुसलमानी धर्म के विरुद्ध बात ।

कुबंड*-पुं० [सं० कोदंड] धनुष ।

वि० [कु+बंठ=खंज] टूटे-फूटे अंगों-वाला । विकृतांग ।

कुबर*-पुं० दे० 'कूबड़' ।

कुबजा-स्त्री० दे० 'कुब्जा' ।

कुबड़ा-पुं० [सं० कुब्ज] [स्त्री० कुबड़ी] वह जिसकी पीठ फूली, टेढ़ी या झुकी हुई हो ।

वि० झुका हुआ । टेढ़ा ।

कुबड़ी-स्त्री० [हिं० कुबड़ा] १. दे० 'कबरी' । २. वह मोटी छड़ी जिसका सिरा झुका हो ।

कुबत*-स्त्री० [सं० कु+हिं० बात] १. बुरा बात । २. निन्दा । ३. बुरी चाल ।

कुबरी-स्त्री० दे० 'कुब्जा' ।

कुबाक*-पुं० दे० 'कुवाच्य' ।

कुबानि-स्त्री० [सं० कु+हिं० बानि] बुरी आदत । बुरी लत । कुटव ।

कुबानी-स्त्री० [सं० कु+वार्ता (वाणिज्य)] बुरा व्यवसाय या वाणिज्य ।

स्त्री० [सं० कु+वार्ता] बुरी या अशुभ बात ।

कुबुद्धि-वि० [सं०] दुर्बुद्धि । मूर्ख ।

स्त्री०[सं०] १. बुरी बुद्धि । खराब अक्ल । २. मूर्खता । बेवकूफी । ३. बुरी सलाह ।

कुबेला-स्त्री० [सं० कुवेला] १. बुरा समय । २. अनुपयुक्त समय ।

कुबोल-पुं० [सं० कु+हिं० बोल (बात)] बुरी, अनुचित या अशुभ बात ।

कुबोलना*-वि० [हिं०कु+बोलना] [स्त्री० कुबोलनी] बुरी या अशुभ बातें कहनेवाला ।

कुब्ज-वि० [सं०] [स्त्री० कुब्जा] जिसकी पीठ टेढ़ी हो । कुबड़ा ।

कुब्जा-स्त्री० [सं०] १. कुबड़ी स्त्री । २. कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचन्द्र से प्रेम रखती थी । कुबरी ।

कुभाव-पुं० [सं०] बुरा या दुष्ट भाव ।

कुमंडी*-स्त्री० [सं० कमठबांस] पतली लचीली टहनी ।

कुमक-स्त्री [तु०] १. सहायता । मदद । २. सैनिकों आदि के रूप में मिलनेवाली सहायता ।

कुमकुम-पुं० [सं० कुंकुम] केसर । पुं० दे० 'कुमकुमा' ।

कुमकुमा-पुं० [तु० कुमकुम] १. लाख का बना वह पोला गोला जिसमें अबीर या गुलाल भरकर एक दूसरे पर फेंकते हैं । २.एक प्रकार का तंग मुँह का लोटा। ३ कांच का बना हुआ पोला छोटा गोला ।

कुमाच-पुं० [अ० कुमाश] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

कुमार-पुं० [सं०] [स्त्री० कुमारी] १. पांच वर्ष की अवस्था का बालक । २. युवावस्था या उससे कुछ पहले की अवस्था का पुरुष । ३. पुत्र । बेटा । ४ युवराज । ५. सनक, सनन्दन, सनत और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं । ६. कार्त्तिकेय । ७. एक ग्रह जिसका उपद्रव बालकों पर होता है । वि० [सं०] बिना ब्याहा । कुँवारा ।

कुमारग*-पुं० दे० 'कुमार्ग' ।

कुमार-तंत्र-पुं० [सं०] बच्चों के रोगों के निदान और चिकित्सा का शास्त्र । बालतन्त्र ।

कुमार-भृत्य-पुं० [सं०] १. गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या । २. गर्भिणी और नव-प्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा ।

कुमारामात्य-पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय राज्यों में वह अधिकारी जो किसी मंत्री या दंड-नायक के अधीन और उसके सहायक के रूप में रहकर काम करता था। (इस पद पर प्रायः राज-परिवार के लोग रखे जाते थे; इसी लिए इसमें 'अमात्य' के पहले 'कुमार' लगा है ।)

कुमारिका-स्त्री० [सं०] कुमारी ।

कुमारी-स्त्री० [सं०] १ बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या । २ घीकुवार । ३. पार्वती । ४. दुर्गा । ५. एक अंतरीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है। *वि० स्त्री० बिना ब्याही । कुँआरी ।*

कुमारी-पूजन-पुं० [सं०] वह देवी-पूजा जिसमें कुमारी बालिकाओं का पूजन करके उन्हें भोजन कराया जाता है ।

कुमार्ग-पुं० [सं०] [वि० कुमार्गी] १ बुरा मार्ग । बुरी राह । २. अधर्म ।

कुमार्गी-वि० [सं० कुमार्गिन्] [स्त्री० कुमार्गिनी] १ बद-चलन । कुचाली । २. अधर्मी । धर्म-हीन ।

कुमुद-पुं० [सं०] १. कुईं । कोका । २. लाल कमल । ३. चांदी । ४. विष्णु ।

कुमुदिनी-स्त्री० [सं०] १. सफेद कमल का पौधा । कुईं । कोईं ।

कुमेरु-पुं० [सं०] दक्षिणी ध्रुव ।

कुमोद*-पुं० दे० 'कुमुद' ।

कुमोदिनी-स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' ।

कुम्मैत-पुं० [तु० कुमेत] १. घोड़े का एक रंग, जो स्याही लिये लाल होता है। लाखी । २. इस रंग का घोड़ा । कुरंग । यौ०-आठो गाँठ कुम्मैत=अत्यन्त चतुर। छँटा हुआ । चालाक । धूर्त्त ।

कुम्हड़ा-पुं० [सं० कूष्मांड] एक बेल

जिसके फलों की तरकारी होती है।

मुहा०-कुम्हड़े की बतिया=१. कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल। २. अशक्त और निर्बल मनुष्य।

कुम्हड़ौरी-स्त्री० [हिं० कुम्हड़ा+बरी] पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई हुई बरी।

कुम्हलाना-अ० [सं० कु+म्लान] १. पौधे का हरापन जाता रहना। मुरझाना। २. सूखने पर होना। ३. कान्ति का मलिन पड़ना। प्रभा-हीन होना।

कुम्हार-पुं० [सं० कुम्भकार] [स्त्री० कुम्हारिन] मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

कुम्ही*-स्त्री० [सं० कुम्भी] जलकुम्भी।

कुयश-पुं० [सं० कु+यश] अपयश। बदनामी।

कुरंग-पुं० [सं०] [स्त्री० कुरंगी] १. बादामी या तामड़े रंग का हिरन। २.हिरन। पुं० [सं०कु+हिं०रंग] बुरा ढंग या लक्षण। वि० बुरे रंग का। बदरंग। पुं० दे० 'कुम्मैत'।

कुरंड-पुं० [सं० कुरुविंद] एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण लाख आदि में मिलाकर हथियार तेज करने की सान बनाते हैं।

कुरकी-स्त्री० दे० 'कुर्की'।

कुरकुरा-वि० [हिं० कुरकुर] [स्त्री० कुरकुरी] जिसे तोड़ने पर कुरकुर शब्द हो। खरा और करारा।

कुरकुरी-स्त्री० [अनु०] पतली मुलायम हड्डी। जैसे-कान की हड्डी।

कुरता-पुं० [तु०] [स्त्री० कुरती] धड़ और कमर को ढकनेवाला एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है।

कुरबान-वि० [अ०] निछावर।

कुरबानी-स्त्री० [अ०] बलिदान।

कुरमी-पुं० दे० 'कुर्मी'।

कुरलना*-अ० [सं० कलरव] मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना।

कुरला*-स्त्री० [?] क्रीड़ा।

कुरव-पुं० [सं० कु+रव] बुरा या अशुभ शब्द। वि० बुरी बोली बोलनेवाला।

कुरवना-स० [हिं० कुरा ना० धा०] एक-बारगी बहुत-सा एक जगह रख देना। ढेर या राशि लगाना।

कुरवारना*-स० [सं० कर्त्तन] १. खोदना। २. खरोचना। करोदना।

कुरविंद-पुं० दे० 'कुरुविंद'।

कुरसी-स्त्री० [अ०] १ एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीठ के सहारे के लिए पटरी लगी रहती है।

यौ०-आराम-कुरसी=एक प्रकार की बड़ी कुरसी जिसपर आदमी लेट सकता है। २. वह चबूतरा जिसपर इमारत बनाई जाती है। ३. पीढ़ी। पुश्त।

कुरसीनामा-पुं० दे० 'वंश-वृक्ष'।

कुराय*-स्त्री० [सं० कु+फा० राह] जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा।

कुराह-स्त्री० [सं० कु+फा० राह] [वि० कुराही] १. कुमार्ग। बुरी राह। २. बुरा चाल। खोटा आचरण।

कुराहर*-पुं० दे० 'कोलाहल'।

कुरियाल-स्त्री० [सं० कल्लोल] चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना।

मुहा०-कुरियाल में आना=१.चिड़ियों का आनन्द में होना। २. मौज में आना।

कुरिहार*-पुं० दे० 'कोलाहल'।

कुरी*-स्त्री० [हिं० कूरा] १. छोटा धुस या टीला। २. खंड। टुकड़ा।

स्त्री० [सं० कुल] १ वंश । घराना । २. ढेर । समूह ।

कुरीति-स्त्री० [सं०] १. बुरी रीति । कु-प्रथा । २. बुरी चाल ।

कुरु-पुं० [सं०] १. वैदिक आर्यों का एक कुल । २. हिमालय के पश्चिम और दक्षिण का एक प्रदेश । ३. एक राजा जिसके वंश में पाण्डु और धृतराष्ट्र हुए थे।

कुरुई-स्त्री० [सं० कुडव] बांस या मूँज की बुनी हुई छोटी डलिया । मौनी ।

कुरुक्षेत्र-पुं० [सं०] एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो अम्बाले और दिल्ली के बीच में है । (महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था।)

कुरुम*पुं० [सं० कूर्म] कछुआ ।

कुरुविंद-पुं० [सं०] दर्पण । शीशा ।

कुरूप-वि० [सं०] [स्त्री० कुरूपा, भाव० कुरूपता] १.बुरी शकल का । बदसूरत । २. बेडौल । बेढंगा ।

कुरेदना-स० [सं० कर्त्तन] १. खुरचना । खरोचना। करोदना । २.खोदना। ३.राशि या ढेर को इधर-उधर चलाना ।

कुरेर*-स्त्री० दे० 'कलेल' ।

कुरेलना-स० दे० 'कुरेदना' ।

कुरैना-स० दे० 'कुरवना' ।

कुरैया-स्त्री० [सं० कुटज] सुन्दर फूलों-वाला एक पेड़ जिसके बीज 'इन्द्र-जौ' कहलाते हैं ।

कुरौन *-स० [हिं०कूरा=ढेर] ढेर लगाना।

कुर्क-वि० [तु० कुर्क़] [संज्ञा कुर्की] (माल) जिसकी कुर्की हुई हो । जब्त ।

कुर्क-अमीन-पुं० [तु० कुर्क़+फा० अमीन] वह सरकारी कर्मचारी जो जायदाद कुर्क करता है ।

कुर्की-स्त्री० [तु० क़ुर्क़] कर्जदार का ऋण या अपराधी का जुरमाना वसूल करने के लिए राज्य द्वारा होनेवाला किसी की सम्पत्ति पर अधिकार । आसंजन । (एटैचमेन्ट)

कुर्मी-पुं० [सं० कूर्मि] तरकारियाँ आदि बोनेवाली एक जाति । कुनबी । गृहस्थ ।

कुर्री-स्त्री० [देश०] १. हेंगा । पटरा । २. कुरकुरी हड्डी । ३. गोल टिकिया ।

कुलंग-पुं० [फा०] १. मटमैले रंग का एक पक्षी । २. मुरगा ।

कुल-पुं० [सं०] १ एक ही पूर्व-पुरुष से उत्पन्न व्यक्तियों का वर्ग या समूह । वंश। घराना । खानदान । २. जाति । ३. समूह । समुदाय । झुंड । ४.घर । मकान । ५. वाम मार्ग । कौल धर्म ।

वि० [अ०] समस्त । सब । सारा ।

यौ०-कुल जमा=१. सब मिलाकर । २. केवल । मात्र ।

कुलकना-अ० [हिं० किलकना] प्रसन्न होकर उछलना ।

कुल-कलंक-पुं० [सं०] अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला ।

कुल-कानि-स्त्री० [सं० कुल+हिं० कान= मर्यादा] कुल की मर्यादा । कुल की लज्जा ।

कुलकुलाना-अ० [अनु०] कुल कुल शब्द होना ।

मुहा०-आँतें कुलकुलाना =भूख लगना।

कुलक्षण-पुं० [सं०] [स्त्री० कुलक्षणा] १. बुरा लक्षण । २ कुचाल । बदचलनी ।

वि० [सं०] बुरे लक्षणवाला ।

कुलच्छन*-पुं० दे 'कुलक्षण' ।

कुलट-वि० पुं० [सं०] [स्त्री० कुलटा] १. व्यभिचारी । बद-चलन । २.औरस के अतिरिक्त और प्रकार का पुत्र । जैसे-क्षेत्रज, दत्तक आदि ।

कुलटा-वि० स्त्री० [सं०] अनेक पुरुषों

से अनुचित संबंध रखनेवाली। छिनाल। स्त्री॰ [सं॰] वह परकीया नायिका जो कई पुरुषों से प्रेम रखती हो।

कुल-तन्त्र-पुं॰ [सं॰] प्राचीन काल की वह शासन-प्रणाली जिसमें किसी विशिष्ट कुल के नायक ही राज्य के शासन का सब काम करते थे। सरदार-तंत्र।

कुल-तारन-वि॰ [सं॰ कुल+हिं॰ तारना] [स्त्री॰ कुल-तारनी] कुल को तारने या उसका यश बढ़ानेवाला।

कुलथी-स्त्री॰ [सं॰ कुलत्थिका] एक प्रकार का मोटा अन्न।

कुल-देवता-पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ कुलदेवी] वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परम्परा से होती आई हो।

कुल-धर्म-पुं॰ [सं॰] किसी परिवार में प्रचलित नियम या परंपरा। कुल की रीति।

कुलपति-पुं॰ [सं॰] १. घर का मालिक। २. वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। ३ वह ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे। ४. किसी विश्व-विद्यालय का उप-प्रधान सर्वोच्च अधिकारी। (वाइस चान्सलर)

कुल-पूज्य-वि॰ [सं॰] जिसका मान कुल-परंपरा से होता आया हो।

कुलफ*-पुं॰ [अ॰ कुफ्ल] ताला।

कुलफा-पुं॰ [फा॰ खुर्फः] एक प्रकार का साग। बड़ी जाति की अमलोनी।

कुलफी-स्त्री॰ [हिं॰ कुलफ] १. पेंच। २. टीन का वह चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ की तरह जमाते हैं। ३ इस प्रकार जमा हुआ दूध या शरबत।

कुलबुलाना-अ॰ [अनु॰ कुलबुल] [भाव॰ कुलबुली, कुलबुलाहट] १. बहुत-से छोटे छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना-डोलना। इधर-उधर रेंगना। २. चंचल होना। आकुल होना।

कुल-बोरन-वि॰ [हिं॰ कुल+बोरना] वंश की मर्यादा नष्ट करनेवाला।

कुल-राज्य-पुं॰ दे॰ 'कुल-तंत्र'।

कुलवत-वि॰ [स्त्री॰ कुलवंती] दे॰ 'कुलीन'।

कुल-वधू-स्त्री॰ [सं॰] अच्छे कुल या घर की और मर्यादा से रहनेवाली स्त्री।

कुलह-स्त्री॰ [फा॰ कुलाह] १. टोपी। २. शिकारी चिड़ियों की आँखों पर की पट्टी या ढक्कन। अँधियारी।

कुलही-स्त्री॰ [फा॰ कुलाह] १. बच्चों के पहनने की टोपी। २. कनटोप।

कुलांगार-पुं॰ [सं॰] कुल को कलंकित करनेवाला।

कुलाँच(ट)*-स्त्री॰ [तु॰ कुलाच] चौकड़ी। छलाँग। उछाल।

कुलाचार-पुं॰ [सं॰] वह आचार या रीति-व्यवहार जो किसी वंश या कुल में बहुत दिनों से होता आया हो।

कुलाबा-पुं॰ [अ॰] १. लोहे का वह छल्ला जिसके द्वारा चौखट से किवाड़ जकड़ा रहता है। पायजा। २. मोरी।

कुलाह-पुं॰ [सं॰] भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर काले हों।

स्त्री॰ [फा॰] पश्चिमी भारत की एक प्रकार की टोपी जिसके ऊपर पगड़ी बाँधी जाती है।

कुलाहल*-पुं॰ दे॰ 'कोलाहल'।

कुलिंग-पुं॰ [सं॰] चिड़िया। पक्षी।

कुलिक-पुं॰ [सं॰] १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २. अच्छे कुल में उत्पन्न पुरुष। ३ कुल का प्रधान पुरुष।

कुलिश-पुं० [सं०] १. हीरा। २. वज्र। बिजली। गाज। ३. कुठार।
कुली-पुं०[तु०] बोझ ढोनेवाला। मजदूर। यौ०-कुली-कबारी=छोटे दरजे के लोग।
कुलीन-वि० [सं०] [भाव० कुलीनता] उत्तम कुल में उत्पन्न। अच्छे वंश या घराने का। खानदानी।
कुलेल-स्त्री० [सं० कल्लोल] [क्रि० कुलेलना] प्रसन्न होकर की जानेवाली उछल-कूद। क्रीड़ा। कलोल।
कुल्या-स्त्री० [सं०] १ नहर। २ नाली।
कुल्ला-पुं० [सं० कवल][स्त्री० कुल्ली] मुँह साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा।
पुं० [?] वह घोड़ा जिसकी रीढ़ पर काली धारी हो।
संज्ञा [फा० काकुल] बालों की लटें। जुल्फ। काकुल।
पुं० दे० 'कुलाह'।
कुल्ली-स्त्री० दे० 'कुल्ला'।
कुल्हड़-पुं० [सं० कुल्हर] [स्त्री० कुल्हिया] मिट्टी का छोटा गोल पात्र। पुरवा। चुक्कड़।
कुल्हाड़ा-पुं० [सं० कुठार] [स्त्री० अल्पा० कुल्हाड़ी] पेड़ काटने और लकड़ी चीरने का एक औजार।
कुल्हाड़ी-स्त्री०हिं०'कुल्हाड़ा'का अल्पा०।
कुल्हिया-स्त्री० [हिं० कुल्हड़] छोटा पुरवा या कुल्हड़। चुक्कड़।
मुहा०-कुल्हिया में गुड़ फोड़ना=इस प्रकार कोई कार्य्य करना, जिसमें किसी को कुछ भी खबर न हो।
कुवलय-पुं० [सं०] [स्त्री० कुवलयिनी] १. नीली कोईं। कोका। २. नील कमल। ३. भू-मंडल।
कुवाच्य-वि० [सं०] जो कहने योग्य न हो। गन्दा। बुरा। (कथन) पुं० दुर्वचन। गाली।
कुविचार-पुं० [सं०] बुरा विचार।
कुबेर-पुं० [सं०] यक्षों के राजा जो इन्द्र की निधियों के भंडारी माने जाते हैं।
कुव्यवहार-पुं० [सं०] १. बुरा या अनुचित व्यवहार। २. दे० 'कुप्रयोग'।
कुश-पुं० [सं०] [स्त्री० कुशा, कुशी] १. कास की तरह की एक घास जिसका यज्ञों में उपयोग होता था। २. जल। पानी। ३. रामचन्द्र का एक पुत्र। ४. हल की फाल। कुसी।
कुशल-वि० [सं०] [स्त्री० कुशला, भाव० कुशलता] १. चतुर। दक्ष। प्रवीण। (एफीशिएन्ट)। २. श्रेष्ठ। अच्छा। भला। ३. पुण्यशील। ४. क्षेम। मंगल। खैरियत।
कुशल-क्षेम-पुं० [सं०] राजी-खुशी। खैर-आफियत।
कुशलता-स्त्री० [सं०] १. चतुराई। चालाकी। २. योग्यता। प्रवीणता।
कुशलाई (त)-स्त्री० दे० 'कुशलता'।
कुशा-स्त्री० दे० 'कुश'।
कुशाग्र-वि० [सं०] कुश की नोक की तरह ताखा। तीव्र। तेज। जैसे-कुशाग्र बुद्धि।
कुशादा-वि० [फा०] [संज्ञा कुशादगी] १. चारो ओर से खुला हुआ। २.लम्बा-चौड़ा।
कुशासन-पुं० [सं० कुश+आसन] कुश का बना हुआ आसन।
पुं० [सं० कु+शासन] बुरा शासन।
कुशीलव-पुं० [सं०] १. कवि। २. नट।
कुशेशय-पुं० [सं०] कमल।
कुश्ता-पुं० [फा० कुश्तः] धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया हुआ

चूर्ण । भस्म ।

कुश्ती-स्त्री० [फा०] दो आदमियों का एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिए लड़ना । मल्ल-युद्ध । मुहा०-कुश्ती मारना=कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना । कुश्ती खाना=कुश्ती में हार जाना ।

कुष्ट-पुं० [सं०] कोढ़ । (रोग)

कुष्मांड-पुं० [सं०] कुम्हड़ा ।

कुसंग-पुं० दे० 'कुसंगति' ।

कु-संगति-स्त्री० [सं०] बुरों का संग-साथ । बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना ।

कु-संस्कार-पुं० [सं०] बुरा संस्कार, जिससे चित्त में बुरी बातें आती हैं । बुरी वासना ।

कु-सगन-पुं० [सं० कु+हिं० सगुन] बुरा सगुन । असगुन ।

कु-समय-पुं० [सं०] १. बुरा समय । खराब वक्त । २. वह समय जो किसी कार्य के लिए ठीक न हो । अनुपयुक्त अवसर । ३. नियत से आगे या पीछे का समय ।

कुसल¹*-वि० दे० 'कुशल' ।

कुसल²*-स्त्री० दे० 'कुशलता' ।

कुसली*-वि० दे० 'कुशला' ।

†स्त्री० [हिं० कसैला] १. आम की गुठली । २. गोझा या पिराक नामक पकवान ।

कुसाइत-स्त्री० [सं० कु+अ० साअत] १. बुरी साइत या मुहूर्त । २. अनुपयुक्त समय ।

कुसी-पुं० [सं० कुशी] हल की फाल ।

कुसुंभ-पुं० [सं०] १. कुसुम । बर्रें । २. केसर । कुमकुम ।

कुसुंभा-पुं० [सं० कुसुंभ] १. कुसुम का रंग । २. अफीम और भांग के योग से बना हुआ एक मादक द्रव्य ।

कुसुंभी-वि० [सं० कुसुंभ] कुसुम के रंग का । लाल ।

कुसुम-पुं० [सं०] [वि० कुसुमित] १. फूल । पुष्प । २. वह गद्य जिसमें छोटे छोटे वाक्य हों । ३. स्त्रियों का रज । पुं० [सं० कुसुंभ] एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं । बर्रें ।

कुसुम-बाण-पुं० [सं०] कामदेव ।

कुसुमशर-पुं० [सं०] कामदेव ।

कुसुमांजली-स्त्री० [सं०] हाथ की अँजुली में फूल भरकर देवता पर चढ़ाना । पुष्पांजलि ।

कुसुमाकर-पुं० [सं०] वसन्त ऋतु ।

कुसुमायुद्ध-पुं० [सं०] कामदेव ।

कुसूत-पुं० [सं० कु+सूत्र] कुप्रबंध ।

कुहक-पुं० [सं०] १. माया । धोखा । जाल । फरेब । २ धूर्त । मक्कार । ३ मुर्गे की बांग । ४. इन्द्रजाल जाननेवाला । स्त्री० पक्षी विशेषत: कोयल का मधुर शब्द ।

कुहकना-अ० [सं० कुहुक या कुहू] पक्षी का मधुर स्वर में बोलना । पीकना ।

कुहकिनी-स्त्री० दे० 'कोयल' ।

कुहर-पुं० [सं०] १. छेद । सूराख । २. गले का छेद ।

कुहराम-पुं० [अ० कहर+आम] १. विलाप । रोना-पीटना । २. हलचल ।

कुहाना¹*-अ० दे० 'रूठना' ।

कुहारा*-पुं० दे० 'कुल्हाड़ा' ।

कुहासा¹-पुं० दे० 'कोहरा' ।

कुही-स्त्री० [सं० कुधि] एक प्रकार की शिकारी चिड़िया । पुं० [फा० कोही=पहाड़ी] घोड़े की एक जाति । टांगन ।

*वि० [हिं० कोह=क्रोध] क्रोधी ।

कुहुक-पुं० दे० 'कुहक'।
कुहुकना*-अ० दे० 'कुहकना'।
कुहुक-बान-पुं०[हिं० कुहकना+बाण] एक प्रकार का बाण जिसके चलते समय शब्द निकलता है।
कुहुकिनी-स्त्री० दे० 'कोयल'।
कुहू-स्त्री० [सं०] १.अमावस्या की रात। २. मोर या कोयल की बोली।
कुहो*-स्त्री० दे० 'कूक'।
कूँच-स्त्री० दे० 'घोड़ा-नस'।
कूँचना-स० दे० 'कुचलना'।
कूँचा-पुं० [सं० कूर्च] [स्त्री० कूँची] झाड़ू।
कूँची-स्त्री० [हिं० कूँचा] १.छोटा कूँचा या झाड़ू। २. कुटा हुई मूँज का वह गुच्छा जिससे चीजों की मैल साफ करते या दीवारों पर रंग लगाते हैं। ३. चित्रकार की रंग भरने का कलम।
कूँज-स्त्री० [सं० क्रौंच] क्रौंच पक्षी।
कूँड़-पुं० [सं० कुंड] १. लोहे की वह ऊँची टोपी जो लड़ाई के समय पहनते थे। खोद। २. सिंचाई के लिए कूएँ से पानी निकालने का डोल।
कूँड़ा-पुं० [सं० कुंड] [स्त्री० कूँड़ी] १. पानी रखने का काठ या मिट्टी का गहरा बरतन। २. गमला। ३. रोशनी करने की शीशे का बड़ी हाँड़ी।
कूँड़ी-स्त्री० [हिं० कूँड़ा] १. पत्थर की प्याली। पथरी। २. छोटी नांद।
कूआँ-पुं० [सं० कूप] १. पानी निकालने के लिए पृथ्वी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कूप।
मुहा०-किसी के लिए कूआँ खोदना= हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। कूआँ खोदना=जीविका के लिए प्रयत्न करना। कूएँ में गिरना=विपत्ति में पड़ना। कूएँ में बाँस डालना=बहुत ढूँढ़ना। कूएँ में भाँग पड़ना=सब की बुद्धि खराब होना।
कूईं-स्त्री० [सं० कुब+ई (प्रत्य०)] जल में होनेवाला एक पौधा, जिसके फूलों का चांदनी रात में खिलना प्रसिद्ध है। कुमुदिनी। कोकाबेली।
कूक-स्त्री० [सं० कूजन] १. लम्बी सुरीली ध्वनि। २. मोर या कोयल की बोली।
स्त्री० [हिं० कुंजी] घड़ी, बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया या भाव।
कूकना-अ० [सं० कूजन] १. कोयल, मोर आदि का बोलना।
स० [हिं० कुंजी] घड़ी या बाजे में कुंजी देना।
कूकर-पुं० दे० 'कुत्ता'।
कूकस-पुं० [?] अन्न की भूसी।
कूच पुं० [तु०] कहीं से यात्रा आरंभ करना। प्रस्थान। रवानगी।
मुहा०-कूच कर जाना=मर जाना। (किसी के) देवता कूच कर जाना= भय से स्तब्ध हो जाना। कूच बोलना= प्रस्थान करना।
कूचा-पुं० [फा०] १. छोटा रास्ता। गली। २. 'दे० 'कूँचा'।
कूज-स्त्री० [हिं० कूजना] ध्वनि।
कूजन-पुं० [सं०] [वि० कूजित] मधुर शब्द करना (पक्षियों का)।
कूजना-अ० [सं० कूजन] कोमल और मधुर शब्द करना।
कूजा-पुं० [फा० कूज़ः] १. मिट्टी का पुरवा। कुल्हड़। २. मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई मिस्री।
कूजित-वि० [सं०] १. बोला या कहा

हुआ। ध्वनित। २. गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण (स्थान)। ३. पक्षियों के मधुर शब्दों से युक्त।

कूट-पुं० [सं०] [भाव० कूटता] १. पहाड़ की ऊँची चोटी। जैसे-चित्र-कूट। २. सींग। ३. राशि। ढेर। जैसे-अन्न-कूट। ४. छल। धोखा। ५. गुप्त रहस्य। ६. वह पद जिसका अर्थ जल्दी स्पष्ट न हो। जैसे-सूर के कूट। ७. वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो।

वि० [सं०] १. झूठा। मिथ्यावादी। २. धोखा देनेवाला। कपटी। छली। ३. कृत्रिम। बनावटी। नकली। जैसे-कूट-मुद्रा। ४. प्रधान। श्रेष्ठ। मुख्य।

स्त्री० [हिं० कूटना] कूटने, पीटने आदि की क्रिया या भाव।

कूटना-स० [सं० कुट्टन] [भाव० कूट, कूटन] १. कोई चीज़ तोड़ने, पीसने आदि के लिए उसपर बार बार आघात करना। जैसे-धान कूटना।

मुहा०-**कूट-कूटकर भरना**=खूब कस-कर भरना। ठसा-ठस भरना।

२. मारना। पीटना। ३. सिल, चक्की आदि में टाँकी से छोटे-छोटे गड्ढे करना।

कूटनीति-स्त्री० [सं०] दाँव-पेंच की नीति या चाल। छिपी हुई चाल। (डिप्लोमेसी)

कूटमुद्रा-स्त्री० [सं०] खोटा या जाली सिक्का।

कूट-युद्ध-पुं० [सं०] १. वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाय। २. नकली लड़ाई।

कूटयोजना-स्त्री० [सं०] षड्यंत्र।

कूटसाक्षी-पुं० [सं०] झूठा गवाह।

कूटस्थ-वि० [सं०] १. सबसे ऊपर का। २. अटल। अचल। ३. अविनाशी। ४. छिपा हुआ। गुप्त।

कूटू-पुं० [देश०] एक पौधा जिसके बीजों का आटा फलाहार के रूप में खाया जाता है। कुट्टू। कोटू।

कूड़ा-पुं० [सं० कूट, प्रा० कूड=ढेर] १. जमीन पर पड़ी हुई धूल और टूटी-फूटी या रद्दी चीज़ें जिन्हें साफ करने के लिए झाड़ू देते हैं। कतवार। २. निकम्मी चीज़।

कूड़ा-कोठ-पुं० [हिं० कूड़ा + कोठा = पात्र] वह स्थान या पात्र जिसमें कूड़ा फेंका जाता है। (डस्ट-बिन)

कूड़ा-खाना-पुं० [हिं० कूड़ा+फा० खाना] वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता है।

कूढ़-वि० [सं० कूढ, पा० कूध] ना-समझ। मूढ़। बेवकूफ।

कूढ़-मग्ज़-वि० [हिं० कूढ़+फा० मग्ज़] [भाव० कूढ़मग्ज़ी] मन्द-बुद्धि। मूढ़।

कूतना-स० [हिं० कूत] १. अनुमान करना। अंदाज़ लगाना। २. बिना गिने, नापे या तौले संख्या, मूल्य, मात्रा आदि का अनुमान करना।

कूद-स्त्री० [हिं० कूदना] कूदने की क्रिया या भाव।

यौ०-**कूद-फाँद**=१. कूदना और उछल-ना। २. व्यर्थ का प्रयत्न।

कूदना-अ० [सं० स्कुदन] १. पृथ्वी पर से वेगपूर्वक उछलकर शरीर को किसी ओर गिराना। उछलना। फाँदना।

मुहा०-**किसी के बल पर कूदना**= किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना।

२. जान-बूझकर ऊपर से नीचे को गिरना। ३. अचानक बीच में आ पड़ना।

स० उल्लंघन करना। लाँघना।

कूनना-स० दे० 'कुनना'।

कूप-पुं० [सं०] १. कूआँ। २. छेद। सूराख़। जैसे-रोम-कूप। ३. गहरा गड्ढा।

कूपन-पुं० [अं०] कागज का वह छपा टुकड़ा जो इस बात का सूचक होता है कि इसके स्वामी को अमुक वस्तु इतनी मात्रा में प्राप्त करने का अधिकार है।

कूप मंडूक-पुं० [सं०] १. वह जो बाहरी जगत का कुछ भी ज्ञान न रखता हो। २. बहुत थोड़ी जानकारी रखनेवाला।

कूबड़-पुं० [सं० कूबर] १. पीठ का टेढ़ापन या उभाड़ जो एक प्रकार का रोग है। २. किसी चीज़ का उभाड़दार टेढ़ापन।

कूबरी-स्त्री० दे० 'कुब्जा'।

कूर-वि० [सं० क्रूर] [भाव० कूरता, कूरपन] १. दया-रहित। निर्दय। २. भयंकर। डरावना। ३. दुष्ट। नीच। ४. अकर्मण्य। निकम्मा। ५. मूर्ख। जड़।

कूरा-पुं० [सं० कूट] [स्त्री० कूरी] १. ढेर। राशि। २. भाग। अंश। हिस्सा।

कूर्म-पुं० [सं०] १. कच्छप। कछुआ। २. विष्णु का दूसरा अवतार जो कछुए के रूप में हुआ था।

कूल-पुं० [सं०] १. किनारा। तट। तीर। २. नहर। ३. तालाब।

अव्य० समीप। पास। निकट।

कूल्हा-पुं० [सं० क्रोड] कमर या पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।

कूवत-स्त्री० [अ०] शक्ति। बल।

कूष्मांड-पुं० [सं०] १. कुम्हड़ा। २. पेठा।

कूह*-स्त्री० [हिं० कूक] १. हाथी की चिंघाड़। २. चीख़। चिल्लाहट।

कृच्छ्र-पुं० [सं०] १. कष्ट। दुःख। २. पाप। ३. मूत्र-कृच्छ्र रोग। ४. वह व्रत जिसमें पंचगव्य खाकर दूसरे दिन उपवास किया जाता है।

वि० कष्ट-साध्य। मुश्किल। कठिन।

कृत-वि० [सं०] १. किया हुआ। सम्पादित। २. बनाया हुआ। रचित।

कृत-कार्य-वि०[सं०][भाव० कृतकार्यता] जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो। सफल-मनोरथ।

कृतघ्न-वि० [सं०] [संज्ञा कृतघ्नता] अपने साथ किया हुआ उपकार न माननेवाला। अ-कृतज्ञ।

कृतघ्नी*-वि० दे० 'कृतघ्न'।

कृतज्ञ-वि० [सं०] [भाव० कृतज्ञता] अपने साथ किया हुआ उपकार माननेवाला। एहसान माननेवाला।

कृतयुग-पुं० [सं०] सतयुग।

कृत-विद्य-वि० [सं०] जिसे किसी विद्या का बहुत अच्छा ज्ञान हो। पंडित।

कृतांत-पुं० [सं०] १. यम। धर्मराज। २. मृत्यु। ३. पाप। ४. देवता।

कृतार्थ-वि० [सं०] १. जो अपना कार्य हो जाने के कारण प्रसन्न और सन्तुष्ट हो। कृत-कृत्य। २. किसी की कृपा या उपकार से सन्तुष्ट और प्रसन्न।

कृति-स्त्री० [सं०] १. किया हुआ काम। कार्य। २. चित्र, ग्रन्थ, वास्तु आदि के रूप में बनाई हुई वस्तु। ३. कोई अच्छा या बड़ा काम। ४. इन्द्रजाल। जादू।

कृती-पुं० [सं०] १. वह जिसने कोई बहुत अच्छा या बड़ा काम किया हो। कृति करनेवाला। २. कुशल। निपुण। दक्ष। ३. साधु। ४. पुण्यात्मा।

कृत्ति-स्त्री० [सं०] १. हिरन का चमड़ा। मृग-चर्म। २. चमड़ा। खाल।

कृत्तिका-स्त्री० [सं०] १. सत्ताईस नक्षत्रों में से तीसरा नक्षत्र। २. छकड़ा।

कृत्तिवास-पुं० [सं०] महादेव।

कृत्य-पुं० [सं०] १. वह जो कुछ किया जाय। कार्य। काम। (ऐक्ट) २. वह कार्य जो धार्मिक दृष्टि से आवश्यक और कर्तव्य हो। जैसे-यज्ञ, सन्ध्या आदि।

कृत्या-स्त्री० [सं०] १. तांत्रिकों के अनुसार एक भयंकर राक्षसी जो शत्रुओं को नष्ट करनेवाली मानी गई है। २. मंत्र-तंत्र द्वारा किये जानेवाले घातक कर्म। पुरश्चरण। अभिचार। ३. कर्कशा स्त्री।

कृत्रिम-वि० [सं०] [भाव० कृत्रिमता] जो असली न हो। बनावटी। नकली।

कृदंत-पुं० [सं०] वह शब्द जो धातु में कृत् प्रत्यय लगाने से बने। जैसे-पाचक।

कृपण-वि० [सं०] [भाव० कृपणता, *कृपनाई] १ कंजूस। सूम। २ नीच।

कृपया-क्रि० वि० [सं०] कृपा करके। अनुग्रह-पूर्वक।

कृपा-स्त्री० [सं०] [वि० कृपालु] बिना किसी प्रति-फल की आशा के या दया आदि की भावना से दूसरे की भलाई करने की वृत्ति। अनुग्रह। दया। मेहरबानी।

कृपाण-पुं० [सं०] १. तलवार। २. कटार।

कृपा-पात्र-पुं० [सं०] वह जो कृपा प्राप्त करने का अधिकारी हो।

कृपालु-वि० [सं०] [भाव० कृपालुता] कृपा करनेवाला।

कृमि-पुं० [सं०] [वि० कृमिज] १. छोटा कीड़ा। २. हिरमजी कीड़ा या मिट्टी। किरमिजी। ३. लाह। लाख।

कृमि-रोग-पुं० [सं०] आमाशय और पक्वाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

कृश-वि० [सं०] [भाव० कृशता, *कृशताई] १. दुबला-पतला। क्षीण। २. अल्प। सूक्ष्म। ३. छोटा।

कृशानु-पुं० [सं०] अग्नि।

कृशित-वि० दे० 'कृश'।

कृषक-पुं० [सं०] १. किसान। खेतिहर। काश्तकार। २. हल की फाल।

कृषि-स्त्री० [सं०] [वि० कृष्य] खेतों में अनाज आदि बोने और उनमें पैदावार करने का काम। खेती। (एग्रिकलचर)

कृषिक-वि० [सं० कृषि] कृषि या खेतीबारी से सम्बन्ध रखनेवाला। (एग्रिकलचरल)

कृष्ण-वि० [सं०] [स्त्री० कृष्णा] १. काले रंग का। श्याम। काला। २. नीला। पुं० १. यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं। २ अथर्ववेद के अन्तर्गत एक उपनिषद्। ३. वेद-व्यास। ४ अर्जुन। ५. अँधेरा पक्ष।

कृष्णचन्द्र-पुं० दे० 'कृष्ण' १.।

कृष्णा-स्त्री० [सं०] १. द्रौपदी। २. दक्षिण देश की एक नदी। ३ काली दाख। ४. काली (देवी)।

कृष्णाभिसारिका-स्त्री० [सं०] वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात में प्रेमी के पास संकेत-स्थान में जाय।

कृष्य-वि० [सं०] खेती करने योग्य (जमीन)।

केंचुआ-पुं० [सं० किंचिलिक] १. सूत की तरह का एक बरसाती कीड़ा जो एक बित्ता लम्बा होता है। २. केंचुए के आकार का सफेद कीड़ा जो पेट से मल के साथ निकलता है।

केंचुली-स्त्री० [सं० कंचुक] सर्प आदि के शरीर पर का वह झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर या उतर जाता है।

केंद्र-पुं० [सं०] १. किसी वृत्त या परिधि के ठीक बीचोबीच का बिन्दु। नाभि।

२. वह मूल या मुख्य स्थान जहाँ से चारों ओर दूर दूर तक फैले हुए कार्यों का संचालन या प्रबन्ध होता है। ३. बीच या मध्य। (सेन्टर; उक्त सभी अर्थों में)

केंद्रित-वि० [सं०] एक ही केंद्र में इकट्ठा किया हुआ। एक जगह लाया या आया हुआ। (सेन्ट्रलाइज्ड)

केंद्री-वि० [सं० केंद्रिन्] केन्द्र में स्थित। केन्द्र में रहनेवाला।

केंद्रीकरण-पुं० [सं०] चीजों, शक्तियों, अधिकारों आदि को किसी एक केंद्र में लाकर इकट्ठा करना। (सेन्ट्रलाइजेशन)

केंद्रीय-वि० [सं० केंद्र] केंद्र से सम्बन्ध रखनेवाला। मध्य-स्थानीय। जैसे-केंद्रीय शासन। (सेन्ट्रल)

के-प्रत्य० [हिं० का] १. संबंध-सूचक 'का' विभक्ति का बहुवचन रूप। जैसे-राम के खेत। २. 'का' विभक्ति का वह रूप जो उसे संबंधवान में विभक्ति लगने से प्राप्त होता है। जैसे-राम के घर पर।

*सर्व० [सं० क.] कौन ?

केउ¹-सर्व० [हिं० के+उ] कोई।

केउर*-पुं० दे० 'केयूर'।

केकड़ा-पुं० [सं० कर्कट] पानी में रहनेवाला एक जन्तु जिसके आठ पैर और दो पंजे होते हैं।

केकय-पुं० [सं०] १. उत्तर भारत के एक देश का प्राचीन नाम। (यह अब कश्मीर में है)। २. केकय देश का राजा या निवासी। ३. दशरथ के श्वसुर और कैकेयी के पिता।

केकयी-स्त्री० दे० 'कैकेयी'।

केकी-पुं० [सं० केकिन्] मोर। मयूर।

केचित्-सर्व० [सं०] कोई कोई।

केत-पुं० [सं०] १. घर। भवन। मकान। २. स्थान। जगह। ३. ध्वजा।

केतक-पुं० [सं०] केवड़ा।

*वि० [सं० कति+एक] १. कितने। २. बहुत। ३. बहुत कुछ।

केतकर*-स्त्री० दे० 'केतकी'।

केतकी-स्त्री० दे० 'केवड़ा'।

केतन-पुं० [सं०] १. निमंत्रण। २. ध्वजा। ३. चिह्न। ४. घर। भवन। मकान। ५. स्थान। जगह।

केता¹*-वि० [स्त्री० केती] दे० 'कितना'।

केतारा-पुं० [देश०] एक तरह का ऊख।

केतिक¹*-वि० दे० 'कितना'।

केतु-पुं० [सं०] १. ज्ञान। २. दीप्ति। चमक। ३. ध्वजा। पताका। ४. निशान। चिह्न। ५ पुराणानुसार एक राक्षस का कबंध जो नौ ग्रहों में माना जाता है। ६. एक प्रकार का तारा जिसके साथ प्रकाश की एक पूँछ-सी दिखाई देती है। पुच्छल तारा। (कॉमेट)

केतो*-वि० दे० 'कितना'।

केम*-पुं० दे० 'कदंब'।

केयूर-पुं० [सं०] बाँह में पहनने का बिजायठ। अंगद। भुजबन्द।

केर¹-प्रत्य० [सं० कृत] [स्त्री० केरी] संबंध-सूचक विभक्ति। का। (अवधी)

केराना-पुं० दे० 'किराना'।

केराव¹-पुं० [सं० कलाय] मटर।

केरि*-प्रत्य० [सं० कृत] दे० 'केरी'। स्त्री० दे० 'केलि'।

केरी*-प्रत्य० [सं० कृत] की। 'के' विभक्ति का स्त्री-लिंग रूप।

स्त्री० [देश०] आम का कच्चा और छोटा नया फल। अँबिया।

केरोसिन-पुं० [सं०] मिट्टी का तेल।

केला-पुं० [सं० कदल, प्रा० कयल] एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके पत्ते गज सवा गज लंबे और फल लंबे, गूदेदार और मीठे होते हैं।

केलि-स्त्री० [सं०] १. खेल। क्रीड़ा। २. रति। मैथुन। स्त्री-प्रसंग। ३. हँसी। ठट्ठा। दिल्लगी।

केलि-कला-स्त्री० [सं०] स्त्री-प्रसंग। समागम। रति।

केवट-पुं० [सं० कैवर्त्त] एक जाति जो आज-कल नाव खेने का काम करती है। मल्लाह।

केवटी दाल-स्त्री० [?] दो या अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दालें।

केवड़ा-पुं० [सं० केविका] १. सफेद केतकी का पौधा। २. इस पौधे का प्रसिद्ध, सुगन्धित, काँटेदार फूल। ३. इस फूल का उतारा हुआ अरक।

केवल-वि० [सं०] १. एकमात्र। अकेला। २. शुद्ध। पवित्र। ३. उत्कृष्ट। उत्तम। ४. जिसमें और किसी चीज या बात का मेल या योग न हो। (एब्सोल्यूट)

केवली-पुं० [सं० केवल+ई (प्रत्य०)] मुक्ति का अधिकारी साधु। केवल-ज्ञानी।

केवाँच-स्त्री० दे० 'कौंछ'।

केवा-पुं० [सं० कुव=कमल] १. कमल। २. केतकी। केवड़ा।

पुं० [सं० किंवा] बहाना। टाल-मटोल।

केश-पुं० [सं०] १. रश्मि। किरण। २. विश्व। ३. विष्णु। ४. सूर्य। ५. सिर के बाल।

केश-पाश-पुं० [सं०] बालों की लट।

केशर-पुं० दे० 'केसर'।

केशरी-पुं० दे० 'केसरी'।

केशव-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. कृष्णचन्द्र। ३. ब्रह्म। परमेश्वर।

केश-विन्यास-पुं० [सं०] बालों को सजा या सँवारकर उनका जूड़ा बाँधना।

केशी-पुं० [सं० केशिन्] १. एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था। २. घोड़ा।
वि० १. [स्त्री० केशिनी] १. किरण या प्रकाशवाला। २ अच्छे बालोंवाला।

केसर-पुं० [सं०] १. वे पतले सींके या सूत जो फूलों के बीच में होते हैं। २. ठंढे देशों में होनेवाला एक पौधा जिसके सींके उत्कृष्ट सुगन्ध के लिए प्रसिद्ध हैं। कुंकुम। जाफरान। ३. घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल। अयाल। ४. नागकेसर।

केसरिया-वि० [सं० केसर+इया (प्रत्य०)] १. केसर के रंग का। पीला। जर्द। २. जिसमें केसर मिला या पड़ा हो।

केसरी-पुं० [सं० केसरिन्] १. सिंह। २. घोड़ा। ३. नागकेसर। ४. हनुमान जी के पिता का नाम।

केसारी-स्त्री० दे० 'खेसारी'।

केसू-पुं० दे० 'टेसू'।

केहरी*-पुं० दे० 'केसरी'।

केहा-पुं० [सं० केका] मोर। मयूर।

केहि*-वि० [हिं० के+हि (विभक्ति)] किसको। (अवधी)

केहूँ*-क्रि० वि० [सं० कथम्] किसी प्रकार। किसी भाँति। किसी तरह।

केहु†-सर्व० [हिं० के] कोई।

कै*-अव्य० दे० 'के'।

कैंचा-वि० [हिं० काना+ऐंचा=कनैचा] ऐंचा-ताना। भेंगा।
पुं० [तु० कैंची] बड़ी कैंची।

कैंची-स्त्री० [तु०] १. बाल, कपड़े

आदि कतरने का एक प्रसिद्ध औज़ार। कतरनी। २. वे दो सीधी तीलियाँ या और वस्तुएँ जो कैंची की तरह एक दूसरी के ऊपर तिरछी रक्खी या जड़ी हों।

कैंड़ा-पुं० [सं० कांड] १. वह यंत्र जिससे किसी चीज का नकशा ठीक किया जाता है। २. नापने का पात्र। पैमाना। मान। नपना। ३. कोई काम अच्छी तरह करने का ढंग। ढब।

कै*-वि० [सं० कति प्रा० कइ] कितना। किस कदर।

अव्य० [सं० किम्] या। वा। अथवा।

स्त्री० [अ० क़ै] वमन। उलटी।

कैकस-पुं० [सं०] [स्त्री० कैकसी] राक्षस।

कैकेयी-स्त्री० [सं०] १. केकय गोत्र या देश में उत्पन्न स्त्री। २. राजा दशरथ की वह रानी जिसने रामचन्द्र को बन-वास दिलवाया था।

कैटभ-पुं० [सं०] एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।

कैटभारि-पुं० [सं०] विष्णु।

कैतव-पुं० [सं०] १. धोखा। छल। कपट। २. जूआ। द्यूत-क्रीड़ा। ३. वैदूर्य मणि। लहसुनियाँ।

वि० १. धोखेबाज। छली। २. धूर्त। शठ। ३. जुआरी।

कैतवापह्नुति-स्त्री० [सं०] वह अप-ह्नुति अलंकार, जिसमें वास्तविक विषय का स्पष्ट रूप से गोपन या निषेध न करके किसी बहाने से किया जाता है।

कैतून-स्त्री० [अ०] एक प्रकार की पतली लैस या सुनहरी किनारी जो कपड़ों पर टाँकी जाती है।

कैथ-पुं० [सं० कपित्थ] एक कँटीला पेड़ जिसमें बेल के आकार के कसैले और खट्टे फल लगते हैं।

कैथिन-स्त्री० [हिं० कायथ] कायस्थ जाति की स्त्री।

कैथी-स्त्री० [हिं० कायस्थ] बिहार में प्रचलित एक पुरानी लिपि जिसमें शीर्ष-रेखा नहीं होती।

क़ैद-स्त्री० [अ०] [वि० क़ैदी] १. बंधन। अवरोध। २. अपराधी को दंड देने के लिए बन्द स्थान में रखना। कारावास।

मुहा०-क़ैद काटना या भोगना=क़ैद में दिन बिताना।

३. वह शर्त या प्रतिबन्ध जिसके पूरे होने पर ही कोई बात या काम हो।

क़ैदक-स्त्री० [अ०] कागज की वह पट्टी जिसमें बाँधकर कागज-पत्र रक्खे जाते हैं।

क़ैद-खाना-पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ क़ैदी रक्खे जाते हैं। कारागार। बन्दी-गृह। जेलखाना।

क़ैद-तनहाई-स्त्री० [अ०+फा०] वह क़ैद जिसमें क़ैदी को तंग कोठरी में अकेले रक्खा जाता है। काल-कोठरी।

क़ैदी-पुं० [अ०] वह जिसे क़ैद की सजा दी गई हो। बंदी। बँधुवा।

कैधों*-अव्य०[हिं०कै+धौं] या। अथवा।

कैफ़ियत-स्त्री० [अ०] १. विवरण। हाल। वर्णन।

मुहा०-कैफ़ियत तलब करना=कोई भूल या अनुचित कार्य्य होने पर उसके कारण आदि का विवरण माँगना या कारण पूछना।

२. विलक्षण या सुखद घटना।

कैबर-स्त्री० [देश०] तीर का फल।

कैबा[+]-स्त्री०, अव्य० [हिं० कै=कई+

बार] १. कितनी बार ? २. कई बार ।

कैम-पुं० दे० 'कदंब' ।

कैरट-पुं० [अ०] १.मोती और जवाहरात आदि तौलने की एक तौल जो चार ग्रेन या लगभग चार जौ के होती है । करात । २. सोने की चीज में विशुद्ध सोने का मान। (विशुद्ध सोना २४ कैरट का माना जाता है । यदि कोई चीज २० कैरट की कही जाय, तो इसका अर्थ यह होगा कि उसमें २० हिस्सा सोना और ४ हिस्सा मेल है ।)

कैरव-पुं० [सं०] [स्त्री० कैरवी] १. कुमुद । २. सफेद कमल । ३. शत्रु ।

कैरवाली-स्त्री० [सं०] कैरवों का समूह ।

कैरा-पुं० [सं० कैरव] [स्त्री० कैरी] १. भूरा (रंग) । २. वह सफेदी जिसमें लाली की झलक या आभा हो । ३. वह बैल जिसके चमड़े पर लाली झलकती हो । सोकन ।

वि० १. कैरे रंग का । २. जिसकी आँखें भूरी हों । कंजा ।

कैलास-पुं० [सं०] १. हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत में है और जिसपर शिव जी का निवास माना जाता है । यौ०-कैलासनाथ, कैलासपति=शिव । कैलासवास=मरण । मृत्यु ।

कैलेंडर-पुं० दे० 'दिन-पत्र' ।

कैवर्त्त-पुं० [सं०] केवट । मल्लाह ।

कैवल्य-पुं० [सं०] १. 'केवल' का भाव । शुद्धता । २.निर्लिप्तता । ३.मुक्ति । मोक्ष ।

कैशिकी-स्त्री० [सं०] नाटक की एक वृत्ति जिसमें नृत्य-गीत तथा भोग-विलास आदि के वर्णन होते हैं । यह करुण, हास्य और शृंगार रसों के लिए उपयुक्त होती है ।

कैसर-पुं० [लै० सीज़र] सम्राट् ।

कैसा-वि० [सं० कीदृश्] [स्त्री० कैसी] १. किस प्रकार का ? किस ढंग का ? किस रूप या गुण का ? २. (निषेधार्थक, प्रश्न में) किसी प्रकार का नहीं । जैसे-जब काम ही नहीं किया, तब वेतन कैसा ? ३. सदृश । समान । जैसा ।

कैसे-क्रि० वि० [हिं० कैसा] १. किस प्रकार से ? किस ढंग से ? २. किस लिए ? क्यों ?

कैसो†*-वि० दे० 'कैसा' ।

कैहूं*-क्रि० वि० [हिं० कै=कैसे + हूँ (प्रत्य०)] किसी तरह । किसी प्रकार ।

कोंई-स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' ।

कोंचना-स० [सं० कुच्] नुकीली चीज़ चुभाना । गड़ाना । धँसाना ।

कोंचा-पुं० दे० 'क्रौंच' ।

पुं० [हिं० कोंचना] बहेलियों का वह लम्बा छड़ जिसके सिरे पर वे, चिड़ियाँ फँसाने के लिए, लासा लगाते हैं ।

कोंछना-स० [हिं० कोंछ] (स्त्रियों का) अंचल या कोने में कोई चीज बाँध या रखकर कमर में खोंसना ।

कोंढ़ा-पुं० [सं० कुंडल] [स्त्री० अल्पा० कोंढ़ी] धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाय ।

कोंपर-पुं० [हिं० कोंपल] छोटा अध-पका या डाल का पका हुआ आम ।

कोंपल-स्त्री० [सं० कोमल या कुपल्लव] नई और मुलायम पत्ती । अंकुर । कल्ला ।

कोंवर*-वि० दे० 'कोमल' ।

कोंहड़ा†-पुं० दे० 'कुम्हड़ा' ।

कोंहड़ौरी†-स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी' ।

को*-सर्व० [सं० कः] कौन ?

प्रत्य० कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति । जैसे-बैल को हटाओ ।

कोआ-पुं० [सं० कोश या हिं० कोसा] १. रेशम के कीड़े का कोश या घर। कुसियारी। २. टसर नामक रेशम का कीड़ा। ३. महुए का पका फल। गोलैंदा। ४. कटहल के पके बीज-कोष। ५. आँख का डेला। ६. आँख का कोना।

कोइली-स्त्री० [हिं० कोयल] १. काले दागवाला वह कच्चा आम जिसमें एक विशेष प्रकार की सुगन्ध होती है। २. आम की गुठली।

कोई-सर्व०, वि० [सं० कोपि] १. ऐसा (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो। न जाने कौन सा।

मुहा०-कोई न कोई=एक नहीं तो दूसरा। यह न सही, तो वह।

२. बहुतों में से चाहे जो। अविशिष्ट वस्तु या व्यक्ति। ३. एक भी।

क्रि० वि० लगभग। करीब-करीब। जैसे-कोई सौ आदमी गये थे।

कोउ(ऊ)*[1]-सर्व० दे० 'कोई'।

कोक-पुं० [सं०] [स्त्री० कोकी] १. चकवा पक्षी। चक्रवाक। २. मेढक।

कोकई-वि० [तु० कोक] ऐसा नीला जिसमें गुलाबी की भी झलक हो।

कोकनद-पुं० [सं०] लाल कमल।

कोकशास्त्र-पुं० [सं०] कामशास्त्र।

कोका-उभय० [तु०] धाय की संतान। दूध-भाई या दूध-बहिन।

पुं० [सं० कोक] [स्त्री० कोकी] चकवा। स्त्री० दे० 'कोकाबेली'।

कोकाबेली-स्त्री० [सं० कोकनद+हिं० बेल] नीली कुमुदिनी।

कोकिल(ा)-स्त्री० [सं०] कोयल।

कोकी-स्त्री० [सं०] मादा चकवा।

कोकेन-स्त्री० [अं०] कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से बना एक मादक पदार्थ जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।

कोको-स्त्री० [अनु०] एक कल्पित जीव का नाम, जिसका प्रयोग बच्चों को बहकाने के लिए होता है। जैसे-जल्दी खा लो, नहीं तो कोको ले जायगी।

कोख-स्त्री० [सं० कुक्षि] १. उदर। जठर। पेट। २. पेट के दोनों तरफ का स्थान। ३. गर्भाशय।

यौ०-कोख-जली=जिसकी सन्तान मर गई हो या मर जाती हो।

मुहा०-कोख उजड़ जाना=१. सन्तान मर जाना। २. गर्भ गिर जाना। कोख बन्द होना=बन्ध्या होना। कोख, या कोख-माँग से, ठंढी या भरी रहना= बालक, या बालक और पति का सुख भोगते रहना। (आसीस)

कोच-पुं० [अं०] १. एक प्रकार की चौ-पहिया घोड़ा-गाड़ी। २. गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुरसी।

कोचकी-पुं० [?] एक रंग जो लाली लिये भूरा होता है।

कोंचना-पुं० [हिं० कोंचना] नुकीले काँटोंवाला एक यंत्र जिससे अचार-मुरब्बे आदि के लिए फल कोंचे जाते हैं।

स० दे० 'कोंचना'।

कोच-बकस-पुं० [अं० कोच+बॉक्स] घोड़ा-गाड़ी आदि में वह ऊँचा स्थान जहाँ हाँकनेवाला बैठता है।

कोचवान-पुं० [अं० कोचमैन] घोड़ा-गाड़ी हाँकनेवाला।

कोंचा-पुं० [हिं० कोंचना] १. तलवार, कटार आदि का हलका घाव। २. लगती हुई बात। व्यंग्य। ताना।

कोजागर-पुं० [सं०] आश्विन मास की

पूर्णिमा। शरद पूनो। (जागने की रात)

कोट-पुं० [सं०] १. दुर्ग। गढ़। किला। २. शहर-पनाह। प्राचीर। ३. महल।
*पुं० [सं० कोटि] समूह। यूथ।
पुं० [अं०] अँगरेजी ढंग का एक प्रसिद्ध पहनावा।

कोटपाल-पुं० [सं०] दुर्ग की रक्षा करनेवाला। किलेदार।

कोटर-पुं० [सं०] १. पेड़ का खोखला भाग। २. दुर्ग के आस-पास का वह बन जो रक्षा के लिए लगाते हैं।

कोटा-पुं० [अं०] सम्पूर्ण में का वह भाग या अंश जो किसी के देने या पावने आदि के जिम्मे पड़े। किसी के लिए निश्चित किया हुआ हिस्सा जो उसे दिया जाय या उससे लिया जाय। यथांश।

कोटि-स्त्री० [सं०] १ धनुष का सिरा। २. अस्त्र की नोक या धार। ३. एक-ही तरह की चीजों या व्यक्तियों की वह श्रेणी या विभाग जो क्रमिक उत्तमता या श्रेष्ठता के विचार से किया गया हो। वर्ग। श्रेणी। दर्जा। (ग्रेड) ४. किसी वाद-विवाद का पूर्व पक्ष। ५. उत्कृष्टता। उत्तमता। ६. समूह। जत्था।
वि० [सं०] सौ लाख। करोड़।

कोटिक-वि० [सं० कोटि] १. करोड़। २. अनगिनत। बहुत अधिक।

कोटि-क्रम-पुं० [सं०] कोई विषय प्रतिपादित या स्थापित करने का क्रम।

कोटि-च्युत-वि० [सं०] जो अपनी कोटि (ग्रेड) से नीचे की कोटि में भेज दिया गया हो। (डिग्रेडेड)

कोटि-च्युति-स्त्री० [सं०] कोटि-च्युत होने की क्रिया या भाव। अपनी कोटि से नीचे की कोटि में भेजा जाना। (डिग्रेडेशन)

कोटि-बंध-पुं० [सं०] बहुत-सी वस्तुओं, व्यक्तियों या कार्य-कर्त्ताओं को उनके महत्त्व या वेतन के अनुसार अलग अलग कोटियों में स्थान देना। कोटियां स्थिर करना। (ग्रेडेशन)

कोटि-बद्ध-वि० [सं०] १. किसी विशिष्ट कोटि में रक्खा हुआ। २. जो छोटी-बड़ी कोटियों में विभक्त हो। (ग्रेडेड)

कोटिशः-क्रि० वि० [सं०] अनेक प्रकार से। बहुत तरह से।
वि० बहुत अधिक। अनेकानेक।

कोट्ट-पुं० दे० 'कूट'।

कोठ-वि० [सं० कुंठ] १. ऐसा खट्टा (पदार्थ) कि चबाया न जा सके। २. अधिक खट्टे होने से कोई वस्तु न चबा सकनेवाले (दांत)।

कोठरी-स्त्री० [हिं० कोठा] चारों ओर दीवारों से घिरा और छाया हुआ छोटा कमरा।

कोठा-पुं० [सं० कोष्ठक] १. बड़ी कोठरी। २. भंडार। ३. मकान में छत के ऊपर का कमरा। अटारी।
यौ०-**कोठेवाली** = वेश्या।
४. उदर। पेट।
मुहा०-**कोठा बिगड़ना**=अपच आदि रोग होना। **कोठा साफ होना**=साफ दस्त होना।
५. गर्भाशय। ६. खाना। घर।

कोठार-पुं० [हिं० कोठा] भंडार।

कोठारी-पुं० [हिं० कोठार+ई (प्रत्य०)], वह अधिकारी जो भंडार का प्रबन्ध करता हो। भंडारी।

कोठी-स्त्री० [हिं०कोठा] १.बड़ा और पक्का मकान। हवेली। २. वह मकान जिसमें

रुपयों का लेन-देन या कोई कार-बार होता हो। बड़ी दूकान। ३. अनाज रखने का कुठला। ४. कूएँ की दीवार या पुल के खम्भे में पानी के नीचे जमीन तक होनेवाली ईंट-पत्थर की जोड़ाई।

स्त्री० [सं० कोटि=समूह] एक जगह मंडलाकार उगे हुए बांसों का समूह।

कोठीवाल-पुं० [हिं० कोठी+वाला] महाजन। साहूकार। बड़ा व्यापारी।

कोठीवाली-स्त्री० [हिं० कोठी] १. कोठी चलाने का काम। २. एक प्रकार की लिपि।

कोड़ना-स० [सं० कुंड] १. खेत की मिट्टी खोदकर उलटना। २. खोदना।

कोड़ा-पुं० [सं० कवर] १. वह बटे हुए सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के समय मारते हैं। चाबुक। २ उत्तेजक या मर्म-स्पर्शी बात।

कोड़ाई-स्त्री० [हिं० कोड़ना] कोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कोड़ी-स्त्री० [अं० स्कोर] बीस का समूह। बीसी।

कोढ़-पुं० [सं० कुष्ठ] [वि० कोढ़ी] रक्त और त्वचा का एक प्रसिद्ध रोग।

मुहा०-**कोढ़ चूना या टपकना**= कोढ के कारण अंगों का गल-गलकर गिरना। **कोढ़ में खाज**=दुःख पर दुःख।

कोण-पुं० [सं०] १. कोना। २. दो दिशाओं के बीच की दिशा। विदिशा। यथा-अग्नि, नैर्ऋति, ईशान और वायव्य।

कोत*-स्त्री० दे० 'कूवत'।

कोतल-पुं० [फा०] १. बिना सवार का कसा हुआ सजा-सजाया घोड़ा। २. राजा की सवारी का घोड़ा।

कोतवाल-पुं० [सं० कोटपाल] १. पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी। पुलिस का इन्स्पेक्टर। २. पंडितों की सभा, बिरादरी अथवा साधुओं की बैठक, भोजन आदि का निमंत्रण देनेवाला व्यक्ति।

कोतवाली-स्त्री० [हिं० कोतवाल] १. कोतवाल का पद या काम। २. वह स्थान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय रहता है।

कोता*[1]-वि० दे० 'कोताह'।

कोताह-वि० [फा०] १. छोटा। २. कम। थोड़ा।

कोताही-स्त्री० [फा०] त्रुटि। कमी।

कोति*-स्त्री० दे० 'कोद'।

कोदंड-पुं० [सं०] धनुष। कमान।

कोद*-स्त्री० [सं० कोण] १. दिशा। २. ओर। तरफ। ३. कोना।

कोदों-पुं० [सं० कोद्रव] एक प्रसिद्ध कदन्न जो प्रायः सारे भारत में होता है।

मुहा०-**कोदों देकर पढ़ना या सीखना**=अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना। **छाती पर कोदों दलना**=किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना जो उसे बहुत बुरा लगे।

कोध*-स्त्री० दे० 'कोद'।

कोना-पुं० [सं० कोण] १ बिन्दु पर मिलती हुई या एक दूसरी को काटती हुई दो रेखाओं के बीच का अन्तर। अंतराल। २. वह स्थान जहा दो सिरे मिलते हों। अंतराल। ३. एकान्त स्थान।

मुहा०-**कोना झाँकना**=भय या लज्जा से मुँह छिपाना। बगलें झांकना।

कोनियाँ-स्त्री० [हिं० कोना] १. दीवार के कोने पर चीजें रखने की पटरी या पटिया। २. चित्र या मूर्ति आदि के चारो कोनों का अलंकरण।

कोप-पुं० [सं०] [वि० कुपित] क्रोध।

कोपन-वि॰ दे॰ 'कोपी'।

कोपना*-अ॰ [सं॰ कोप] क्रोध करना।

कोप-भवन-पुं॰ [सं॰] वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठकर जा रहे।

कोपी-वि॰ [सं॰ कोपिन्] कोप करनेवाला। क्रोधी।

कोपीन-पुं॰ दे॰ 'कौपीन'।

कोमल-वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ कोमला] १. मुलायम। नरम। २. सुकुमार। नाजुक। ३. अपरिपक्व। कच्चा। ४. सुन्दर। मनोहर। ५. वह स्वर जो साधारण से कुछ नीचा हो। (संगीत)

कोमलता-स्त्री॰ [सं॰] १. 'कोमल' होने का भाव। मुलायमत। नरमी। २. मधुरता। ३. नजाकत।

कोमलताई*-स्त्री॰ दे॰ 'कोमलता'।

कोमला-स्त्री॰ [सं॰] वह वृत्ति या अक्षर-योजना जिसमें कोमल पद हों।

कोमलाई*-स्त्री॰ दे॰ 'कोमलता'।

कोय*¹-सर्व॰ दे॰ 'कोई'।

कोयर-पुं॰ [हिं॰ कोपल] हरा चारा।

कोयल-स्त्री॰ [सं॰ कोकिल] बहुत सुन्दर बोलनेवाला काले रंग का एक पक्षी।

कोयला-पुं॰ [सं॰ कोकिल=अंगारा] १. लकड़ी का बुझा हुआ काला टुकड़ा जो आग जलाने के काम आता है। २. इसी प्रकार का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ। पत्थर का कोयला।

कोया-पुं॰ दे॰ 'कोआ'।

कोर-स्त्री॰ [सं॰ कोण] १. किनारा। सिरा। २. कोना।

मुहा॰-**कोर दबना**=किसी प्रकार के दबाव या वश में होना।

३ द्वेष। वैर। वैमनस्य। ४. दोष। ऐब। बुराई। ५ हथियार की धार। बाढ़।

कोरक-पुं॰ [सं॰] १. कली। २. फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ। फूल की कटोरी। ३. कमल की नाल।

कोर-कसर-स्त्री॰ [हिं॰ कोर+फा॰ कसर] दोष और त्रुटि। ऐब और कमी।

कोरना-स॰ [हिं॰ कोर+ना (प्रत्य॰)] १. लकड़ी आदि में कोर या किनारा निकालना। २. छीलकर ठीक करना।

कोरमा-पुं॰ [तु॰] भुना हुआ मांस।

कोरा-वि॰ [सं॰ केवल] [स्त्री॰ कोरी] १. जो काम में न लाया गया हो। नया।

मुहा॰-**कोरी धार या बाढ़**=हथियार की वह धार जिसपर अभी सान चढ़ी हुई हो।

२. (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया न गया हो। जिसपर पानी न पड़ा हो। ३. जिसपर कुछ लिखा या चित्रित न हो। सादा।

मुहा॰-**कोरा जवाब**=स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार।

४. रहित। विहीन। ५. दोषों आदि से रहित। बे-दाग। ६. मूर्ख या अपढ़। ७ धन-हीन। दरिद्र।

क्रि॰ वि॰ केवल। सिर्फ।

पुं॰ बिना किनारे की रेशमी धोती।

²पुं॰ [सं॰ क्रोड] गोद। उछंग।

कोरि*-वि॰ दे॰ 'कोटि'।

कोरी-पुं॰ दे॰ 'कोली'।

कोल-पुं॰ [सं॰] १. सूअर। शूकर। २. गोद। उत्संग। ३. बेर। बदरी फल। ४. काली मिर्च। ५. एक जंगली जाति।

कोलना-स॰ [?] बेचैन होना।

कोलाहल-पुं॰ [सं॰] शोर। हौरा।

कोली-स्त्री॰ [सं॰ क्रोड] गोद।

पुं॰ हिन्दू जुलाहा। कोरी।

कोल्हू-पुं॰ [हिं॰ कूल्हा ?] बीजों का

तेल या गन्ने का रस निकालने का यंत्र। मुहा०-कोल्हू का बैल=बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला। कोल्हू में डालकर पेरना=बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना।

कोविद-वि० [सं०] [स्त्री० कोविदा] पंडित। विद्वान्।

कोविदार-पुं० [सं०] कचनार।

कोश-पुं० [सं०] १. अंड। अंडा। २. अंड-कोश। ३. डिब्बा। गोलक। ४. फूल की कली। ५. आवरण। गिलाफ। ६. वेदान्त के अनुसार अन्नमय आदि पाँच संपुट जो मनुष्यों में होते हैं। ७ संचित धन। ८. वह ग्रन्थ जिसमें शब्दों के अर्थ या पर्याय हों। अभिधान। ९ रेशम का कोआ। कुसियारी।

कोशकार-पुं० [सं०] १ म्यान बनानेवाला। २. शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करके उनके अर्थ बतानेवाला। शब्द-कोश बनानेवाला। ३ रेशम का कीड़ा।

कोशपाल-पुं० [सं०] खजाने का रक्षक।

कोशल-पुं० [सं०] १. सरयू नदी के दोनों ओर का देश। २ अयोध्या नगरी।

कोशागार-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ कोश या बहुत-सा धन रहता हो। खजाना। (ट्रेजरी)

कोशिश-स्त्री० [फा०] प्रयत्न। चेष्टा।

कोष-पुं० [सं०] १. दे० 'कोश'। २. खजाना।

कोषाध्यक्ष-पुं० [सं०] १. वह जिसके पास कोष रहता हो। खजानची। (ट्रेजरर) २. वह जिसके पास आय-व्यय और रोकड़ आदि रहती हो। रोकड़िया।

कोष्ठ-पुं० [सं०] १. पेट का भीतरी भाग। २ शरीर के अन्दर का वह भाग जिसमें कोई विशेष शक्ति हो। जैसे-पक्वाशय या आमाशय। ३. कोठरी। ४. वह स्थान जहाँ अन्न रखा जाता है। गोला। ५ कोश। भंडार। खजाना। ६.प्राकार। शहर-पनाह। ७.दे०'कोष्ठक'।

कोष्ठक-पुं० [सं०] १. दीवार, लकीर आदि से घिरा हुआ स्थान। खाना। कोठा। २. वह चक्र जिसमें बहुत-से खाने या घर हों। सारिणी। ३. लिखने में एक प्रकार के चिह्नों का जोड़ा जिसके अन्दर केवल व्याख्या या सूचना के रूप में कुछ लिखा जाता है। जैसे-[ ], ( )।

कोष्ठ-बद्धता-स्त्री० [सं०] पेट में मल का रुकना। दस्त न होना। कब्जियत।

कोस-पुं० [सं० क्रोश] दूरी की एक नाप जो आज-कल दो मील की होती है। मुहा०-कोसों या काले कोसों=बहुत दूर। कोसों दूर रहना=बहुत दूर या अलग रहना।

कोसना-स०[सं० क्रोशण] शाप के रूप में गालियाँ देना। बुरा मनाना। मुहा०-पानी पी-पीकर कोसना=बहुत अधिक कोसना। कोसना काटना= शाप और गालियाँ देना।

कोसा-पुं० [सं० कोश] एक प्रकार का रेशम। पुं० दे० 'कसोरा'।

कोसा-काटी-स्त्री० [हिं०कोसना+काटना] कोसने की क्रिया। शाप और गाली।

कोहँड़ौरी-स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी'।

कोह-पुं० [फा०] पर्वत। पहाड़। *पुं० [सं० क्रोध] क्रोध। गुस्सा।

कोहनी-स्त्री० [सं० कफोणि] बाँह के बीच का वह जोड़ जहाँ से हाथ और कलाई मुड़कर ऊपर उठती है।

कोह-नूर-पुं० [फा० कोह+अ०नूर] भारत

का एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध हीरा ।

कोहबर-पुं० [सं० कोष्ठवर] वह स्थान जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किये जाते हैं ।

कोहरा-पुं० [सं० कुहेडी] ओले के वे सूक्ष्म कण जो वातावरण में भाप के रूप में जम जाते हैं ।

कोहान-पुं० [फा०] ऊँट की पीठ का कूबड़ । डिल्ला ।

कोहाना*-अ० [हिं० कोह] १. रूठना । मान करना । २. क्रोध करना ।

कोही-वि० [हिं० कोह] क्रोधी ।

वि० [फा० कोह] पहाड़ का । पहाड़ी ।

कौं*-अव्य० दे० 'को' ।

कौंछ-स्त्री० [सं० कच्छु] एक बेल जिसमें तरकारी के रूप में खाई जानेवाली फलियाँ लगती हैं । केवाँच ।

कौंतेय-पुं० [सं०] १. कुन्ती के युधिष्ठिर आदि पुत्र ।

कौंध-स्त्री० [हिं० कौंधना] १. कौंधने की क्रिया या भाव । २. बिजली की चमक ।

कौंधना-अ० [सं० कनन=चमकना+अंध] बिजली का चमकना ।

कौआ-पुं० [सं० काक] १. एक काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर और चालाकी के लिए प्रसिद्ध है । काक ।

यौ०-**कौआ-गुहार या कौआ-रोर**= १.बहुत अधिक बकबक । २. बहुत शोर ।

२. बहुत धूर्त्त मनुष्य । काइयाँ । ३. छाजन की वह लकड़ी जो बँडेरी के सहारे के लिए लगाई जाती है । कौहा । ३. गले के अन्दर का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा । घाँटी । लंगर । ४. एक तरह की मछली ।

कौटिल्य-पुं० [सं०] १. कुटिलता । टेढ़ापन । २. कपट । ३. चाणक्य का एक नाम ।

कौटुंबिक-वि० [सं०] १. कुटुम्ब संबंधी । २. परिवारवाला । गृहस्थ ।

कौड़ा-पुं० [सं० कपर्दक] बड़ी कौड़ी । पुं० [सं० कंड] तापने के लिए जलाई हुई आग । अलाव ।

कौड़ियाला-वि० [हिं० कौड़ी] कौड़ी के रंग का । नीला और गुलाबी । कोकई ।

पुं० १. एक प्रकार का जहरीला साँप । २. एक पौधा जिसमें छोटे फूल लगते हैं । ३. कौड़िल्ला पक्षी ।

कौड़िल्ला-पुं० [हिं० कौड़ी] मछली खानेवाली एक चिड़िया । किलकिला ।

कौड़ी-स्त्री० [सं० कपर्दिका] [वि० कौड़िया] १ घोंघे की तरह का एक कीड़ा जो अस्थि-कोश में रहता है । २.उक्त अस्थि-कोश जो सबसे कम मूल्य के सिक्के के रूप में चलता था । वराटिका ।

मुहा०-**कौड़ी काम का न होना**= निकम्मा या निकृष्ट होना । **कौड़ी का या दो कौड़ी का**=१.तुच्छ । २.निकृष्ट । खराब । **कौड़ी के तीन होना** = १. बहुत सस्ता होना । २. तुच्छ होना । **कौड़ी कौड़ी जोड़ना**=बहुत कष्ट से थोड़ा थोड़ा करके धन इकट्ठा करना । **कौड़ी भर**=बहुत थोड़ा ।

यौ०-**चित्ती कौड़ी**=वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई गाँठें होती हैं ।

२. धन । द्रव्य । ३. वह कर जो सम्राट् अपने अधीनस्थ राजाओं से लेता था । ४. जंघे, काँख या गले की गिल्टी जो कभी कभी सूज जाती है । ५. कटार की नोक ।

कौतिग*-पुं० दे० 'कौतुक' ।

कौतुक-पुं० [सं०] [वि० कौतुकी] १. कुतूहल। २. आश्चर्य। अचम्भा। ३. विनोद। दिल्लगी। ४. आनंद। प्रसन्नता। ५. खेल-तमाशा।

कौतुकी-वि० [सं०] १. कौतुक करनेवाला। विनोद-शील। २. विवाह-संबंध स्थिर करानेवाला। ३. खेल-तमाशा करनेवाला।

कौतूहल-पुं० दे० 'कुतूहल'।

कौथ-स्त्री० [हिं० कौन] १. कौन तिथि? २. क्या संबंध? क्या वास्ता?

कौथा-वि० [हिं० कौथ] गणना में किस स्थान का?

कौन-सर्व० [सं० कः, किम्] एक प्रश्न-वाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है।

मुहा०-कौन होना है?=क्या अधिकार रखता है?

कौपीन-पुं० [सं०] संन्यासियों आदि के पहनने की लँगोटी। चीर।

कौम-स्त्री० [अ०] जाति।

कौमार-पुं० [सं०] [स्त्री० कौमारी] १. कुमार होने की अवस्था या भाव। २. जन्म से १६ वर्ष तक की अवस्था। ३. कुमार।

कौमी-वि० [अ० कौम] १. कौम का। जातीय। २. राष्ट्र संबंधी। राष्ट्रिय।

कौमुदी-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा का प्रकाश। ज्योत्स्ना। चाँदनी। २ कार्तिकी पूर्णिमा।

कौमोदकी-स्त्री० [सं०] विष्णु की गदा।

कौर-पुं० [सं० कवल] उतना भोजन, जितना एक बार मुँह में डाला जाय। ग्रास। गस्सा। निवाला।

मुहा०-मुँह का कौर छीनना=किसी को मिलता हुआ अंश छीन लेना।

कौरव-पुं० [सं०] [स्त्री० कौरवी] कुरु राजा की सन्तान। कुरु का वंशज। वि० [सं०] कुरु-संबंधी।

कौल-पुं० [सं०] १. उत्तम कुल या वंश का। २. वाम-मार्गी।

कौवाली-स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार का ईश्वर-प्रेम संबंधी मुसलमानी गीत। २. इस की धुन में गाई जानेवाली गजल।

कौशल-पुं० [सं०] कोई काम बहुत अच्छी तरह करने का ढंग। कुशलता। निपुणता। (एफीशिएन्सी) २. कोशल देश का निवासी।

कौशल-बाध-पुं० [सं०] कार्यालयों की या राजकीय सेवा में उन्नति के मार्ग में वह बन्धन जो अपना काम कुशलता-पूर्वक करने पर दूर होता है। (एफीशिएन्सी बार)

कौशल्या-स्त्री० [सं०] राजा दशरथ की प्रधान स्त्री और रामचन्द्र की माता।

कौशिक-पुं० [सं०] १. इन्द्र। २. कुशिक राजा के पुत्र, गाधि। ३. विश्वामित्र।

कौशिकी-स्त्री० [सं०] १. चंडिका। २. दे० 'कैशिकी' (वृत्ति)।

कौशेय-वि० [सं०] रेशम का। रेशमी। पुं० रेशमी कपड़ा।

कौसिला*-स्त्री० दे० 'कौशल्या'।

कौस्तुभ-पुं० [सं०] एक रत्न जो विष्णु अपने वक्षस्थल पर पहने रहते हैं।

क्या-सर्व० [सं० किम्] अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा का सूचक शब्द। कौन-सी वस्तु या बात?

मुहा०-क्या कहना है या क्या खूब!= धन्य! वाह वा! बहुत अच्छा है! क्या जाता है!=क्या हानि है! कुछ हर्ज नहीं। क्या जानें!=कुछ नहीं

जानते। ज्ञात नहीं। मालूम नहीं। क्या पड़ी है ?=क्या आवश्यकता है ? कुछ जरूरत नहीं। और क्या !=हाँ ऐसा ही है।
वि० १ कितना ? २. बहुत अधिक। ३. अपूर्व। विलक्षण।
क्रि० वि० क्यों ? किस लिए ?
अव्य०-प्रश्न-सूचक शब्द। जैसे-क्या है ?

क्यारी-स्त्री० [सं० केदार] १. खेतों, बगीचों आदि में थोड़ी थोड़ी दूर पर मेड़ों से बनाये हुए वे विभाग जिनमें पौधे बोये या लगाये जाते हैं। २. इसी प्रकार का वह विभाग जिसमें नमक बनाने के लिए समुद्र का पानी भरते हैं।

क्यों-क्रि० वि० [सं० किम्] १. किसी बात के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द। किस वास्ते ? किस लिए ?
यौ०-**क्योंकि**=इसलिए कि। **क्योंकर**=किस प्रकार ? कैसे ?
मुहा०-**क्यों नहीं** !=१. ऐसा ही है। ठीक है। २. निःसंदेह। जरूर। ३. कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता।
* २. किस तरह ? किस प्रकार ?

क्रंदन-पुं० [सं०] रोना। विलाप।

क्रतु-पुं० [सं०] १. निश्चय। संकल्प। २. इच्छा। ३. विवेक। ४. यज्ञ।

क्रम-पुं० [सं०] १. पैर रखने या डग भरने की क्रिया। २. वस्तुओं या कार्यों के आगे-पीछे होने की योजना। सिलसिला। तरतीब। ३. उचित रूप से काम करने का ढंग।
मुहा०-**क्रम क्रम से** = धीरे धीरे। ४. वेद-पाठ की प्रणाली। ५. वह काव्यालंकार जिसमें कही हुई बातों या वस्तुओं का क्रम से वर्णन किया जाता है।
* पुं० दे० 'कर्म'।

क्रमशः-क्रि० वि० [सं०] १. क्रम से। सिलसिलेवार। २. धीरे-धीरे। थोड़ा-थोड़ा करके।

क्रम-संख्या-स्त्री० [सं०] एक क्रम से लिखे जानेवाले नामों, बातों या चीजों के पहले क्रम से लिखी जानेवाली संख्या। (सीरियल नम्बर)

क्रमांक-पुं० दे० 'क्रम-संख्या'।

क्रमागत-वि० [सं०] १. जो क्रम-क्रम से आया या बना हो। २. जो क्रम से बराबर होता आया हो। परम्परा-गत। ३ जिसका क्रम न टूटे। धारा-वाहिक।

क्रमात्-क्रि० वि० [सं०] १. क्रम या सिलसिले से। २. जिस क्रम या सिलसिले से पहले कुछ बातें कही गई हों, उसी क्रम या सिलसिले से आगे भी। जैसे-ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य क्रमात् आकर अपने अपने स्थान पर बैठे। ३ क्रम-क्रम से। धीरे-धीरे।

क्रमानुसार-क्रि० वि० दे० 'क्रमात्'।

क्रमिक-वि० [सं०] १. क्रम-युक्त। २. परंपरा-गत। ३. क्रम-क्रम से होनेवाला।

क्रमेलक-पुं० [सं०, यूना० क्रमेलस] ऊँट।

क्रय-पुं० [सं०] मोल लेना या खरीदना।
यौ०-**क्रय-विक्रय**=चीजें खरीदने और बेचने का काम। व्यापार। रोजगार।

क्रयी-पुं० [सं० क्रयिन्] मोल लेनेवाला।

क्रय्य-वि० [सं०] १. जो बिक्री के लिए रक्खा जाय। २. जो खरीदा जाने को हो।

क्रव्य-पुं० [सं०] मांस।

क्रांत-वि० [सं०] १. दबा या ढका हुआ। २. जिसपर आक्रमण हुआ हो। ३. दबाया या दबोचा हुआ। अभिभूत। ४. अपनी सीमा, मर्यादा आदि से आगे बढ़ा हुआ।

क्रांति-स्त्री० [सं०] १. गति। चाल। २. दे० 'क्रांति-मंडल'। ३. वह बहुत भारी परिवर्त्तन या फेर-फार जिससे किसी स्थिति का स्वरूप बिलकुल बदलकर और का और हो जाय। उलट-फेर। (रिवो-ल्यूशन) जैसे-राज्य-क्रान्ति।

क्रांति-मंडल-पुं० [सं०] वह वृत्त जिस-पर सूर्य पृथ्वी के चारो ओर घूमता हुआ जान पड़ता है।

क्रियमाण-पुं० [सं०] १. वह जो किया जा रहा हो। २. इस समय किये जाने-वाले कर्म, जिनका फल आगे मिलेगा।

क्रिया-स्त्री० [सं०] १. किसी काम का होना या किया जाना। कर्म। (ऐक्शन) २. प्रयत्न। चेष्टा। ३. हिलना-डोलना। गति। हरकत। ४. कार्य का अनुष्ठान या आरंभ। ५ व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या किया जाना सूचित होता है। जैसे-खाना, तोड़ना। ६. स्नान, पूजन आदि नित्य-कर्म। ७. मृतक के श्राद्ध आदि कर्म।
यौ०-क्रिया-कर्म=अन्त्येष्टि क्रिया और श्राद्ध आदि।

क्रियात्मक-वि० [सं०] १. जिसमें क्रिया हो। क्रिया-संबंधी। २.क्रिया या कार्य के रूप में आया हुआ। जो सचमुच करके दिखलाया गया हो।

क्रिया-विशेषण-पुं० [सं०] व्याकरण मे वह शब्द जिससे किसी विशेष प्रकार या रीति से कार्य होने का बोध होता है। जैसे-ऐसे, जल्दी, अचानक आदि।

क्रिस्तान-पुं० [अं० क्रिश्चियन्] ईसा का अनुयायी। ईसाई।

क्रीट*-पुं० दे० 'किरीट'।

क्रीड़न-पुं० [सं०] १. क्रीड़ा करना। खेलना-कूदना। २.क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद।

क्रीड़ना*-अ०[सं०क्रीडन] क्रीड़ा करना। खेलना-कूदना।

क्रीड़ा-स्त्री० [सं०] [वि० क्रीड़ित] केवल मन बहलाने के लिए किया जाने-वाला काम। खेल-कूद। आमोद-प्रमोद।

क्रीड़ा-स्थल-पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ किसी ने क्रीड़ाएँ की हों। जैसे-मथुरा भगवान कृष्णचन्द्र का क्रीड़ा-स्थल है। २. वह स्थान जहाँ तरह तरह के खेल होते हों। (प्ले ग्राउंड)

क्रीत-वि० [सं०] मोल लिया हुआ। खरीदा हुआ।
पुं० [सं०] किसी से मोल लेकर अपना बनाया हुआ (क) पुत्र (ख) दास।

क्रुद्ध-वि० [सं०] जिसे क्रोध हो। क्रोध से भरा हुआ।

क्रूर-वि० [सं०] [भाव० क्रूरता] १.दूसरें को कष्ट पहुँचानेवाला। पर-पीड़क। २. निर्दय। निष्ठुर। ३ कठिन। ४. तीक्ष्ण।

क्रूस-पु० [अं० क्रॉस] ईसाइयों का एक धर्म-चिह्न जो उस सूली का सूचक है, जिसपर ईसा मसीह चढ़ाये गये थे।

क्रेता-पुं० [सं०] खरीदनेवाला।

क्रोड़-पुं० [सं०] १. आलिंगन के समय दोनों बाँहों के बीच का भाग। २. गोद।

क्रोड़-पत्र-पुं० [सं०] वह अलग छपा हुआ पत्र जो समाचार-पत्रों या मासिक-पत्रों आदि के साथ बँटता है। अतिरिक्त-पत्र। (सप्लिमेन्ट)

क्रोध-पुं० [सं०] चित्त का वह उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है। कोप। रोष। गुस्सा।

क्रोधित*-वि० [हिं० क्रोध] कुपित। क्रुद्ध।

क्रोधी-वि० [सं० क्रोधिन्] [स्त्री० क्रोधिनी] स्वभाव से ही अधिक क्रोध करनेवाला । गुस्सावर ।

क्रौंच-पुं० [सं०] १. करांकुल नामक पक्षी । २. हिमालय की एक चोटी । ३. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक । ४. एक प्रकार का अस्त्र ।

क्लांति-स्त्री० [सं०] [वि० क्लांत] थकावट ।

क्लिष्ट-वि० [सं०] [भाव० क्लिष्टता] १. क्लेशयुक्त । दुःख से पीड़ित । दुःखी । २. बे-मेल या पूर्वापर-विरुद्ध (बात) । ३. कठिन । मुश्किल । ४. जिसका अर्थ कठिनता से निकले ।

क्लिष्टत्व-पुं० [सं०] १. क्लिष्ट का भाव । क्लिष्टता । २. काव्य का वह दोष जिससे उसका भाव जल्दी समझ में नहीं आता।

क्लीव-वि० पुं० [सं०] [भाव० क्लीवता] १. नपुंसक । नामर्द । २. डरपोक ।

क्लेद-पुं० [सं०] १. गीलापन । २. पसीना ।

क्लेश-पुं० [सं०] १. दुःख । कष्ट । २. व्यथा । वेदना । ३. झगड़ा । लड़ाई ।

क्लोम-पुं० [सं०] फेफड़ा ।

क्वचित्-क्रि० वि० [सं०] कभी कोई । शायद ही कोई । बहुत कम ।

क्वण-पुं० [सं०] १. घुँघरू का शब्द । २. वीणा की झंकार ।

क्वणित-वि० [सं०] १. शब्द करता हुआ । २. गुंजार करता हुआ । ३. बजता हुआ ।

क्वाँरा-पुं०, वि० दे० 'क्वारा' ।

क्वाथ-पुं० [सं०] औषधियों को पानी में उबालकर निकाला हुआ गाढ़ा रस । काढ़ा । जोशांदा ।

क्वान*-पुं० [सं० क्वण] १. घुँघरुओं के बजने का शब्द । २. वीणा की झंकार ।

क्वारपन-पुं० [हिं० क्वारा+पन (प्रत्य०)] क्वारा होने का भाव । कुमारता ।

क्वारा-पुं०, वि० [सं० कुमार] [स्त्री० क्वारी] कुआरा । बिना ब्याहा ।

क्वैला*-पुं० दे० 'कोयला' ।

क्षंतव्य-वि० दे० 'क्षम्य' ।

क्षण-पुं० [सं०] [वि०क्षणिक] १. काल या समय का सबसे छोटा मान । पल का चौथाई भाग । २. काल । ३. अवसर । मौका ।

क्षणदा-स्त्री० [सं०] रात ।

क्षण-भंगुर-वि० [सं०] १. शीघ्र या क्षण भर में नष्ट हो जानेवाला । २. अनित्य ।

क्षणिक-वि० [सं०] १. क्षण भर टहरने-वाला । २. क्षण-भंगुर । अनित्य ।

क्षणेक*-क्रि० वि० [सं० क्षण+एक] क्षण भर । बहुत थोड़ी देर ।

क्षत-वि० [सं०] जिसे क्षति या आघात पहुँचा हो । घायल ।

क्षतज-वि० [सं०] क्षत से उत्पन्न । जैसे-क्षतज ज्वर ।
पुं० [सं०] रक्त । रुधिर । खून ।

क्षत-योनि-वि० [सं०] (स्त्री) जिसका पुरुष के साथ समागम हो चुका हो ।

क्षत-विक्षत-वि० [सं०] जिसे बहुत चोटें लगी हों । लहू-लुहान ।

क्षति-स्त्री० [सं०] १. हानि । नुकसान । २. क्षय । नाश । ३. वह घाटा या हानि जो किसी को किसी कार्य में हो । (डैमेज)

क्षत्र-पुं० [सं०] १. बल । २. राष्ट्र । ३. धन । ४. शरीर । ५. जल । ६. [स्त्री० क्षत्राणी] क्षत्रिय ।

क्षत्र-धर्म-पुं० [सं०] क्षत्रियों के काम । यथा-अध्ययन, दान, प्रजा-पालन आदि ।

क्षत्रप-पुं० [सं० या पुरानी फा०] ईरान के

प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि, जो भारत के शक राजाओं ने धारण की थी।

क्षत्रपति-पुं० [सं०] राजा।

क्षत्रिय-पुं- [सं०] [स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी, भाव० क्षत्रियत्व] हिन्दुओं के चार वर्णों में से दूसरा। इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना था।

क्षपणक-वि० [सं०] निर्लज्ज।
पुं० [सं०] १. नंगा रहनेवाला जैन यती। २. बौद्ध संन्यासी।

क्षपा-स्त्री० [सं०] रात। रात्रि।

क्षपाकर-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

क्षम-वि० [सं०] जिसमें कोई काम करने की शक्ति या योग्यता हो। योग्य। समर्थ। (यौगिक में) जैसे-कार्य्य-क्षम।
पुं० [सं०] शक्ति। बल।

क्षमता-स्त्री० [सं०] १. सामर्थ्य। शक्ति। २. योग्यता, विशेषतः कोई काम करने या कुछ धारण करने की योग्यता या शक्ति। (कैपैसिटी)

क्षमना*-स० [सं० क्षमा] क्षमा करना।

क्षमा-स्त्री० [सं०] १ चित्त की वह वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाया हुआ कष्ट सह लेता है और उसके प्रतिकार या दंड की इच्छा नहीं करता। शांति। माफी। २. सहिष्णुता। सहन-शीलता। ३. पृथ्वी। ४. दुर्गा।

क्षमाई*-स्त्री० [हिं० क्षमा] क्षमा करना।

क्षमावान्-वि० दे० 'क्षमाशील'।

क्षमाशील-वि० [सं०] १. क्षमा करनेवाला। क्षमावान्। २. शान्त प्रकृति का।

क्षम्य-वि० [सं०] क्षमा किये जाने के योग्य। जो क्षमा किया जा सके। क्षंतव्य।

क्षय-पुं० [सं०] [भाव० क्षयित्व] १. धीरे-धीरे घटना या नष्ट होना। ह्रास। अपचय। २. नाश। ३. क्षयी नामक रोग। ४. अन्त। समाप्ति।

क्षय मास-पुं० [सं०] बहुत दिनों पर पड़नेवाला एक चांद्र मास, जिसमें दो संक्रांतियां होती हैं और जिसके तीन मास पहले और तीन मास पीछे एक एक अधिमास भी पड़ता है।

क्षयी-वि० [सं०] १. क्षीण होनेवाला। २. जिसे क्षय रोग हो।
पुं० [सं०] चन्द्रमा।
स्त्री० [सं० क्षय] एक प्रसिद्ध असाध्य रोग, जिसमें रोगी का फेफड़ा सड़ जाता है और सारा शरीर धीरे धीरे गल जाता है। तपेदिक। यक्ष्मा।

क्षर-वि० [सं०] नाशवान्। नष्ट होनेवाला।
पुं० [सं०] १. जल। २. मेघ। ३. जीवात्मा। ४ शरीर। ५. अज्ञान।

क्षरण-पुं० [सं०] १. रस-रसकर चूना। स्राव होना। रसना। २. क्षीण होना।

क्षात्र-वि० [सं०] क्षत्रिय-संबंधी।

क्षाम-वि० [सं०] [स्त्री० क्षामा] १. क्षीण। २. कृश। दुबला-पतला।

क्षार-पुं० [सं०] १. दाहक या जारक ओषधियों अथवा खनिज पदार्थों से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार की हुई राख का नमक जो ओषधि के रूप में काम में आता है। खार। (एसिड) २. शोरा। ३. सोहागा। ४. भस्म। राख।

क्षालन-पुं० [सं०][वि० क्षालित] धोना।

क्षिति-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. वास-स्थान। जगह। ३. क्षय।

क्षितिज-पुं० [सं०] १. मंगल ग्रह। २. वृक्ष। पेड़। ३. दृष्टि की पहुँच की अन्तिम सीमा पर का वह गोलाकार स्थान जहाँ

आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं।

क्षिप्त-वि० [सं०] १. फेंका हुआ। २. छोड़ा या त्यागा हुआ। ३. तिरस्कृत। अपमानित। ४. पतित। ५. उचटा हुआ या चंचल। (चित्त)

क्षिप्र-क्रि० वि० [सं०] १. शीघ्र। जल्दी। २. तत्काल। तुरन्त।
वि० [सं०] १. तेज। जल्द। २. चंचल।

क्षीण-वि० [सं०] [भाव० क्षीणता] १. दुबला-पतला। २. सूक्ष्म। ३. क्षय-शील। ४. घटा हुआ।

क्षीणक-वि० [सं०] क्षीण करनेवाला।

क्षीणक रोग-पुं० [सं०] वह रोग जिसमें शरीर दिन पर दिन क्षीण होता या गलता जाता है। (वेस्टिंग डिज़ीज़)

क्षीर-पुं० [सं०] १. दूध। २. द्रव या तरल पदार्थ। ३. जल। पानी। ४. पेड़ों का रस या दूध। ५. खीर।

क्षीरधि-पुं० [सं०] समुद्र।

क्षीर-सागर-पुं० [सं०] सात समुद्रों में से एक, जो दूध का माना जाता है।

क्षीरोद-पुं० [सं०] क्षीर-सागर।
यौ०-क्षीरोद-तनय=चन्द्रमा। क्षीरोद-तनया=लक्ष्मी।

क्षुण्ण-वि० [सं०] १. अभ्यस्त। २. टुकड़े टुकड़े या चूर्ण किया हुआ। ३. जिसका कोई अंश टूट या कट गया हो। खंडित।

क्षुद्र-वि० [सं०] [भाव० क्षुद्रता] १. कृपण। कंजूस। २. अधम। नीच। ३. छोटा या थोड़ा। ४. दरिद्र।

क्षुद्र-घंटिका-स्त्री० [सं०] १. घुँघरूदार करधनी। २. घुँघरू।

क्षुद्र-प्रकृति-वि० [सं०] ओछे या तुच्छ स्वभाववाला। नीच प्रकृति का।

क्षुद्र-बुद्धि-वि० [सं०] १. दुष्ट या नीच बुद्धिवाला। २. ना-समझ। मूर्ख।

क्षुद्राशय-वि० [सं०] नीच-प्रकृति। कमीना। 'महाशय' का उलटा।

क्षुधा-स्त्री० [सं०] [वि० क्षुधित, क्षुधालु] भोजन करने की इच्छा। भूख।

क्षुधातुर, क्षुधित-वि० [सं०] भूखा।

क्षुप-पुं० [सं०] छोटी डालियोंवाला छोटा वृक्ष। पौधा। झाड़ी।

क्षुब्ध-वि० [सं०] १. जिसे क्षोभ हुआ हो। २. चंचल। चपल। ३. व्याकुल। विकल। ४. कुपित। क्रुद्ध।

क्षुभित-वि० दे० 'क्षुब्ध'।

क्षुर-पुं० [सं०] १. छुरा। २. उस्तरा। ३. पशुओं के पाँव का खुर।

क्षेत्र-पुं० [सं०] १. खेत। २. भूमि का बड़ा या लम्बा-चौड़ा टुकड़ा। ३. प्रदेश। ४. स्थान। ५. रेखाओं या सीमा आदि से घिरा हुआ स्थान। ६ धार्मिक या पुण्य-स्थान। तीर्थ।

क्षेत्र-गणित-पुं० [सं०] क्षेत्रों को नापकर उनका क्षेत्र-फल निकालने का गणित।

क्षेत्रज-वि० [सं०] जो क्षेत्र में या क्षेत्र से उत्पन्न हो।
पुं० [सं०] वह पुत्र जो किसी मृत या असमर्थ पुरुष की स्त्री ने दूसरे पुरुष के संयोग से उत्पन्न किया हो।

क्षेत्रज्ञ-पुं० [सं०] १. जीवात्मा। २. परमात्मा। ३. खेतिहर। किसान।

क्षेत्रपाल-पुं० [सं०] १. खेत का रक्षक। २. किसी स्थान का प्रधान प्रबन्धकर्ता। भूमिया।

क्षेत्र-फल-पुं० [सं०] किसी भूमि, स्थान या पदार्थ के ऊपरी तल की लंबाई-चौड़ाई आदि की नाप। वर्ग-फल।

(एरिया)

क्षेत्रिक-वि० [सं०] १. क्षेत्र-संबंधी। २. खेत या कृषि से संबंध रखनेवाला। (एग्रेरियन)

क्षेत्री-पुं० [सं० क्षेत्रिन्] १. खेत का मालिक। २. नियोग करनेवाली स्त्री का विवाहित पति। ३. स्वामी।

क्षेप-पुं० दे० 'क्षेपण'।

क्षेपक-वि० [सं०] १. फेंकनेवाला। २. ऊपर से या बाद में मिलाया हुआ। पुं० [सं०] ग्रन्थों आदि में ऊपर से या बाद में मिलाया हुआ वह अंश जो उसके मूल कर्त्ता की रचना न हो।

क्षेपण-पुं० [सं०] १. फेंकना। २. गिराना। ३. बिताना। गुजारना।

क्षेमंकरी-स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की चील। २. एक देवी का नाम।

क्षेम-पुं० [सं०] १. संकट, हानि, घटी, नाश आदि से किसी वस्तु को बचाना। रक्षा। सुरक्षा। (सेफ्टी) २. कुशल-मंगल। ३. सुख। आनन्द। ४. मुक्ति।

क्षोणि-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

क्षोणिप-पुं० [सं०] राजा।

क्षोभ-पुं० [सं०] [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १. क्षुब्ध होने की अवस्था या भाव। २. खलबली। ३. व्याकुलता। ४. भय। डर। ५. रंज। शोक। ६. क्रोध।

क्षोभित*-वि० दे० 'क्षुब्ध'।

क्षोभी-वि० [सं० क्षोभिन्] १. जल्दी क्षुब्ध होनेवाला। उद्वेगशील। २. व्याकुल। विकल। ३. चंचल।

क्षौम-पुं० [सं०] १. सन आदि के रेशों से बुना हुआ कपड़ा। २. कपड़ा। वस्त्र।

क्षौर-पुं० [सं०] हजामत।

ख

ख-हिन्दी वर्ण-माला में स्पर्श व्यंजनों के अन्तर्गत क-वर्ग का दूसरा अक्षर। संज्ञा के रूप में, यह खाली स्थान, आकाश, स्वर्ग, बिन्दु, ब्रह्म और शब्द आदि का वाचक होता है।

खख-वि० [सं० कंक] १. रिक्त। खाली। २. उजाड़। वीरान। ३. निर्धन। दरिद्र।

खँखरा†-पुं० [देश०] चावल आदि पकाने का ताँबे का बड़ा देग। वि० [देश०] १. जिसमें बहुत-से छेद हों। २. झीना।

खंग-पुं० [सं०] १ तलवार। २. गैंडा।

खंगना†-अ० [सं० क्षय] कम होना।

खँगालना-स० [सं० क्षालन] १. हल-का या थोड़ा धोना। (बरतन, कपड़ा आदि) २. सब कुछ उड़ा ले जाना।

खँगी-स्त्री० [हिं० खँगना] कमी। घटी।

खँगैल-वि० [हिं० खाँग] जिसे खाँग या दाँत निकले हो।

खँचना†-अ० हिं० 'खाँचना' का अ०।

खँचाना†-स० १. दे० 'खाँचना'। २. दे० 'खींचना'।

खँचिया-स्त्री० दे० 'खाँची'।

खंज-पुं० [सं०] १. एक रोग, जिसमें मनुष्य के पैर जकड़ जाते हैं। २. लँगड़ा। *पुं० [सं० खंजन] खंजन पक्षी।

खंजन-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् और शीत काल में दिखाई देता है। खँड़रिच। ममोला। २. खँड़रिच के रंग का घोड़ा।

खंजर-पुं० [फा०] कटार।

खँजरी-स्त्री० [सं० खंजरीट=एक ताल] डफली की तरह का एक छोटा बाजा। स्त्री० [फा० खंजर] धारीदार कपड़ा।

खंड-पुं० [सं०] १. काटकर अलग किया हुआ भाग। टुकड़ा। २. देश। जैसे-भरत-खंड। ३. नौ की संख्या का सूचक शब्द। ४. खाँड़। कच्ची चीनी। ५. विधि-विधान में किसी धारा या उप-धारा का कोई स्वतंत्र अंश। (क्लॉज) वि० १. खंडित। २. छोटा। *पुं० दे० 'खाँड़ा'।

खंडक-वि० [सं०] १. खंड या टुकड़े करनेवाला। २. किसी मत या सिद्धान्त का खंडन करनेवाला।

खंड-काव्य-पुं० [सं०] वह छोटा प्रबन्ध-काव्य जिसमें कोई पूरी कथा हो।

खंडन-पुं० [सं०] [वि० खंडनीय, खंडित] १. तोड़ने-फोड़ने या काटने का काम। छेदन। २. किसी बात को गलत ठहराना। काटना। 'मंडन' का उलटा।

खँडना¹-पुं० दे० 'खँडरा'।

खंडना*-स० [सं० खंडन] १. खंड या टुकड़े करना। तोड़ना। २. बात काटना।

खंडनी-स्त्री० [सं० खंडन] मालगुजारी या कर की किस्त। खंडी।

खंडपाल-पुं० [सं०] हलवाई।

खँड-पूरी-स्त्री० [हिं० खाँड+पूरी] एक प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी।

खंड-प्रलय-पुं० [सं०] वह प्रलय जो एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है।

खँड-बरा-पुं० [हिं० खाँड+बरा] १. मीठा बड़ा। (पकवान) २. दे० 'खँडौरा'।

खँडरना*-स० दे० 'खंडना'।

खँडरा-पुं० [सं० खंड+हिं० बरा] बेसन का एक प्रकार का चौकोर बड़ा।

खँडरिच-पुं० [सं० खंजरीट] खंजन।

खँडपानी-स्त्री० [हिं० खाँड+पानी] १. खाँड़ का रस। शरबत। २. बरातियों को जल-पान या शरबत भेजने की रसम।

खँडविला-पुं० [?] एक प्रकार का धान।

खँडसाल-स्त्री० [सं० खंड+शाला] खाँड़ या शक्कर बनाने का कारखाना।

खँडहर-पुं० [सं० खंड + हिं० घर] टूटे या गिरे हुए मकान का बचा अंश।

खंडिका-स्त्री० [सं०] कुछ निश्चित समयों पर थोड़ा-थोड़ा करके दिया जानेवाला देन का अंश। किस्त। (इन्स्टॉलमेन्ट)

खंडित-वि० [सं०] १. टूटा हुआ। भग्न। २. जो पूरा न हो। अपूर्ण।

खंडिता-स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसका नायक रात को किसी अन्य स्त्री के पास रहकर सवेरे उसके पास आवे।

खंडी-स्त्री० दे० 'खंडिका'।

खँडौरा¹-पुं० [हिं० खाँड़] मिसरी का लड्डू। ओला।

खंता-¹-पुं० [सं० खनित्र] [स्त्री० अल्पा० खंती] १. कुदाल। २. फावड़ा।

खंदक-स्त्री० दे० 'खाई'।

खँधवाना*-स० [?] खाली कराना।

खँधार*¹-पुं० [सं० स्कन्धावार] १. स्कंधावार। छावनी। २. डेरा। खेमा। पुं० [सं० खंडपाल] सामन्त। सरदार।

खंभ-पुं० दे० 'खंभा'।

खंभा-पुं० [सं० स्कंभ या स्तंभ] [स्त्री० खँभिया] पत्थर आदि का वह ऊँचा लबा टुकड़ा जिसके सहारे छत या पाटन रहती है। स्तंभ।

खँभार*¹-पुं० [सं० क्षोभ, प्रा० खोभ] १. आशंका। भय। २. घबराहट। व्या-

कुलता। ३. चिन्ता। ४. शोक। रंज।

खँभिया-स्त्री० [हिं० खंभा] छोटा खंभा।

खई*¹-स्त्री० [सं० क्षयी] १. क्षय। २. युद्ध। ३. लड़ाई। झगड़ा।

खक्खा*-पुं० [अनु०] १. जोर की हँसी। अट्टहास। २ अनुभवी पुरुष। ३. बड़ा हाथी।

खखार-पुं० [अनु०] वह कफ़ जो खखारने से निकले।

खखारना-अ० [अनु०] गले से शब्द करते हुए थूक या कफ बाहर करना।

खखेटना*-स० [सं० आखेट] १. दबाना। २. भगाना। ३. घायल करना।

खखेटा*-पुं० [हिं० खखेटना] १ भगदड़। २. घाव। चोट। ३. शंका। खटका। ४. छेद।

खग-पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. गन्धर्व। ३. बाण। तीर। ४. ग्रह, तारे आदि। ५. सूर्य। ६. चंद्रमा।

खगना*¹-अ० [हिं० खांग=काँटा] १. धँसना। २. चित्त में बैठना या जमना। ३. लग जाना। लीन होना। ४. चिह्नित या अंकित होना। ५. रुकना।

खगनाथ-पुं० [सं०] १. सूर्य। २ गरुड।

खगेश-पुं० [सं०] गरुड़।

खगोल-पुं० [सं०] १. आकाश-मंडल। २ खगोल विद्या।

खगोल-विद्या-स्त्री० [सं०] ज्योतिष शास्त्र।

खग्ग*-पुं० [सं० खड्ग] तलवार।

खग्रास-पुं० [सं०] वह ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्र का पूरा बिम्ब ढँक जाय।

खचन-पुं० [सं०] [वि० खचित] १. बाँधना। जड़ना। २. अंकित करना।

खचना*-अ० [सं० खचन] १. जड़ा जाना। २. अंकित या चिह्नित होना। ३. बहुत भरना। ४. अटकना। फँसना। स० १. जड़ना। २. अंकित करना।

खचरा-वि० [हिं० खच्चर] १. वर्ण-संकर। दोगला। २. दुष्ट। पाजी।

खचाखच-क्रि० वि० [अनु०] कसकर भरा हुआ। ठसाठस।

खचित-वि० [सं०] १. खींचा या अंकित किया हुआ। चित्रित या लिखित। २. जड़ा हुआ।

खचेरना*-स० [हिं० खदेरना] दबाकर वश में करना।

खच्चर-पुं० [देश०] गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक प्रसिद्ध पशु।

खज*-वि० दे० 'खाद्य'।

खजला-पुं० दे० 'खाजा'।

खजहजा*-पुं० [सं० खाद्याद्य] उत्तम खाद्य पदार्थ।

खजानची-पुं० [फा०] खजाने का अधिकारी। कोषाध्यक्ष।

खजाना-पुं० [अ०] १. धन आदि का कोश। २. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु संचित हो। ३. राजस्व। कर।

खजीना-पुं० दे० 'खजाना'।

खजूर-स्त्री० [सं० खर्जूर] १. ताड़ की तरह का एक पेड़, जिसके फल खाये जाते हैं। २. एक प्रकार की मिठाई।

खजूरी-वि० [हिं० खजूर] १. खजूर-संबंधी। खजूर का। २. तीन लड़ों में गूँथा हुआ। जैसे-खजूरी चोटी।

खट-पुं० [अनु०] टकराने, टूटने या ठोंकने-पीटने का शब्द।

मुहा०-**खट से**=तुरन्त। तत्काल।

खटक-स्त्री० [अनु०] १. खटकने की क्रिया या भाव। २. खटका। आशंका।

खटकना-अ० [अनु०] १. 'खट खट'

शब्द होना। २. रह-रहकर हलकी पीड़ा होना। ३. ठीक न जान पड़ना। बुरा मालूम होना। खलना। ४. झगड़ा होना। ५ अनिष्ट की आशंका होना।

खटका-पुं० [हिं० खटकना] १. 'खट खट' शब्द। २. डर। आशंका। ३. चिंता। फिक्र। ४. वह पेंच या कमानी, जिसके घुमाने, दबाने आदि से कोई काम होता हो। ५. पेड़ में बँधा हुआ वह बाँस, जिसे खड़खड़ाकर चिड़ियाँ उड़ाते हैं।

खटकाना-स० हिं० 'खटकना' का स०।

खट-कीड़ा-पुं० दे० 'खटमल'।

खट खट-स्त्री० [अनु०] १. ठोकने-पीटने आदि का शब्द। २. झंझट। बखेड़ा। ३ लड़ाई-झगड़ा।

खटखटाना-स० [अनु०] 'खट-खट' शब्द करना। खड़खड़ाना।

खटना-स० [?] धन कमाना।

अ० १. काम में लगना। २. परिश्रम करना।

खट-पट-स्त्री० [अनु०] अनबन। झगड़ा।

खटमल-पुं० [हिं० खाट+मल=मैल] एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में रहता है। खट-कीड़ा।

खट-मीठा-वि० [हिं० खट्टा+मीठा] कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

खटराग-पुं० दे० 'षट्राग'।

खटाई-स्त्री० [हिं० खट्टा] १. खट्टापन। तुरशी। २. खट्टी चीज।

मुहा०-**खटाई में डालना**=अनिश्चित अवस्था में रखना। कुछ निर्णय न करना।

खटाखट-क्रि०वि० [अनु०] १. 'खट खट' शब्द के साथ। २. जल्दी-जल्दी।

खटाना-अ० [हिं० खट्टा] किसी वस्तु का खट्टा हो जाना।

अ० [सं० स्कन्ध]१ .हो निव । ।हम

मिभना। २. ठहरना। ३. आँच में पूरा उतरना।

स० १. परिश्रम कराना। २. आर्थिक लाभ कराना।

खटास-पुं० [सं० खट्वास] गंध-बिलाव। स्त्री० [हिं० खट्टा] खट्टापन।

खटिक-पुं० [सं० खट्टिक] [स्त्री० खट-किन] तरकारी बेचनेवाली एक जाति।

खटिया-स्त्री० दे० 'खाट'।

खटोला-पुं० [हिं० खाट+ओला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० खटोली] छोटी खाट।

खट्टा-वि० [सं० कटु] कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का। तुर्श। अम्ल।

मुहा०-**जी खट्टा होना**=चित्त विरक्त होना। मन फिर जाना।

पुं० [हिं० खट्टा] नीबू की तरह का एक बहुत खट्टा फल। गलगल।

खट्टू-पुं० [हिं० खटना] कमानेवाला।

खड़ंजा-पुं० [हिं० खड़ा+अंग] फर्श पर की ईंटों की बिछाई।

खड़खड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० खड़खड़ाहट] खड़खड़ शब्द होना।

स० खड़खड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे-किवाड़ खड़खड़ाना।

खड़खड़िया-स्त्री० [अनु०] पालकी।

खड्ग*-पुं० दे० 'खड्ग'।

खड्गी*-वि० [सं० खड्गिन] तलवार लिये हुए। तलवारवाला।

पुं० [सं० खड्ग] गैंडा।

खड़बड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० खड़बड़, खड़बड़ी] १. विचलित होना। घबराना। २. सिलसिला टूटना।

स० १. कुछ उलट-पुलटकर खड़बड़ शब्द करना। २. उलट-फेर करना। ३. घबरा देना।

खड़मंडल-पुं० [सं० खंड+मंडल] अ-व्यवस्था। गड़बड़ी।

वि० १. उलट-पुलट। २. नष्ट-भ्रष्ट।

खड़ा-वि० [सं० खड़क=खंभा] १. ऊपर की ओर सीधा उठा हुआ। जैसे-झंडा खड़ा करना। २. टाँगें सीधी करके उनके आधार पर शरीर ऊँचा किये हुए। दंडायमान।

मुहा०-**खड़ा जवाब**=साफ इनकार।

३. ठहरा या टिका हुआ। स्थिर। ४. प्रस्तुत। तैयार। ५. (घर, दीवार आदि) निर्मित। बना हुआ। ६. जो अभी उखाड़ा या काटा न गया हो। जैसे-खड़ी फसल। ७. समूचा।

खड़ाऊँ-स्त्री० [हिं० काठ + पाँव या 'खटखट' अनु०] काठ के तल्ले का खुला जूता। पादुका।

खड़िया-स्त्री० [सं० खटिका] एक प्रकार की सफ़ेद मिट्टी।

खड़ी बोली-स्त्री० [हिं० खड़ी (खरी ?) +बोली] वर्त्तमान हिन्दी का वह पूर्व रूप जिसमें संस्कृत के शब्द मिलाकर वर्त्तमान हिन्दी भाषा और फारसी तथा अरबी के शब्द मिलाकर उर्दू भाषा बनाई गई है। ठेठ हिन्दी।

खड्ग-पुं० [सं०] १. एक प्रकार की तलवार। खाँड़ा। २. गैंडा।

खड्ड-पुं० [सं० खात] गड्ढा।

खत-पुं० [सं० क्षत] घाव। जख्म।

पुं० [अ०] १. पत्र। चिट्ठी। २. रेखा। लकीर। ३. ललाट के ऊपरी बाल।

खतना-अ० [हिं० खाता] खाते में लिखा जाना। खतियाया जाना।

पुं० [अ० खतनः] लिंग के अगले भाग का ऊपरी चमड़ा काटने की मुसलमानी रसम। सुन्नत। मुसलमानी।

खतम-वि० [अ० खत्म] (काम) जिसका अन्त हो गया हो। समाप्त।

मुहा०-**खतम करना**=मार डालना।

खतरा-पुं० [अ०] १. डर। भय। २. आशंका। खटका।

खतरेटा-पुं० दे० 'खत्री'।

खता-स्त्री० [अ०] १. कसूर। अपराध। २. धोखा। ३. भूल। गलती।

खतियाना-स० [हिं० खाता] अलग अलग खातों या मदों में हिसाब लिखना।

खतियौनी-स्त्री० [हिं० खतियाना] १. वह बही जिसमें सब मदों के अलग अलग खाते हों। खाता। २. खतियाने का काम।

खत्ता-पुं० [सं० खात] [स्त्री० खत्ती] १. गड्ढा। २. अन्न रखने का स्थान।

खत्म-वि० दे० 'खतम'।

खत्री-पुं० [सं० क्षत्रिय] [स्त्री० खतरानी] पंजाब के क्षत्रियों की एक जाति।

खदान-स्त्री० दे० 'खान'।

खदेड़ना-स० [हिं०खदना] डरा-धमकाकर हटाना। दूर करना।

खद्दड़(र)-पुं० [?] हाथ के काते हुए सूत का हाथ से बुना कपड़ा। खादी।

खद्योत-पुं० [सं०] जुगनूँ।

खन*-पुं० १. दे० 'क्षण'। २. दे० 'खंड'।

खनक-पुं० [सं०] जमीन खोदनेवाला।

स्त्री० [अनु०] धातु-खंडों के टकराने या बजने की क्रिया या शब्द।

खनकना-अ० [अनु०] धातु-खंडों के टकराने से खनखन शब्द होना।

खनना*-स० दे० 'खोदना'।

खनिज-वि० [सं०] खान में से खोदकर निकाला हुआ।

खनोना*-स० दे० 'खनना'।

खपची-स्त्री० [तु० कमची] बाँस की पतली तीली । कमठी ।

खपड़ा-पुं० [सं० खर्पर] मिट्टी का पका टुकड़ा जो छप्पर छाने के काम आता है ।

खपत-स्त्री० [हिं० खपना] १. खपने की क्रिया या भाव । २. समाई । गुंजाइश । ३. माल की कटती या बिक्री ।

खपना-अ० [सं० क्षेपण] [भाव० खपत] १. काम में आना या लगना । २. गुजारा होना । निभना । ३. नष्ट होना । ४. बहुत परिश्रम करना ।

खपरैल-स्त्री० [हिं० खपड़ा] खपड़े से छाई हुई छाजन ।

खपाना-स० [सं० क्षेपण] १. किसी प्रकार काम में लाना या लगाना । २.नष्ट करना । ३.समाप्त करना । ४ तंग करना ।

ख-पुष्प-पुं० दे० 'आकाश-कुसुम' ।

खप्पर-पुं० [सं० खर्पर] १ तसले के आकार का कोई पात्र । २. भिक्षा-पात्र । ३. खोपड़ी ।

खफा-वि० [अ०] [भाव० खफगी] १. अप्रसन्न । नाराज । रुष्ट । २. क्रुद्ध ।

खफीफ-वि० [अ०] १. थोड़ा । कम । २. हलका । सामान्य । ३. लज्जित ।

खबर-स्त्री० [अ०] १. समाचार । वृत्तांत । मुहा०-खबर उड़ना=चर्चा फैलना । अफवाह होना ।
२. ज्ञान । जानकारी । ३. भेजा हुआ समाचार । सूचना । ४. सुधि । होश ।

खबरदार-वि० [फा०] सावधान ।

खबरदारी-स्त्री० [फा०] सावधानी ।

खबीस-पुं० [अ०] पुराना दुष्ट ।

खब्त-पुं० [अ०] [वि० खब्ती]-सनक । झक ।

खभरना*¹-स०[हिं०भरना] १. मिलाना । २. उथल-पुथल मचाना ।

खम-पुं० [फा०] टेढ़ापन । झुकाव । मुहा०-खम खाना=टेढ़ा होना । झुकना । खम ठोंककर=दृढ़तापूर्वक ।

खमीर-पुं० [अ०] गूँधे हुए आटे या फल आदि का सड़ाव ।

खमीरा-वि० [अ०] [स्त्री० खमीरी] खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाकर बनाया हुआ ।

खय*¹-स्त्री० दे० 'क्षय' ।

खया-पुं० दे० 'खवा' ।

खयानत-स्त्री० [अ०] धरोहर या अमानत में से कुछ दबा रखना ।

खयाल-पुं० [अ०] [वि० खयाली] १. मन की वृत्ति या प्रवृत्ति । ध्यान । २. स्मृति । याद ।
मुहा०-खयाल में उतरना=याद न रहना ।
३. मत । विचार । ४. एक प्रकार का पक्का गाना ।

खर-पुं० [सं०] १. गधा । २. खच्चर । ३ तृण । तिनका ।
वि० [सं०] १. कड़ा । सख्त । २. तेज । तीक्ष्ण । ३. अशुभ । जैसे-खर मास । ४. तेज धारवाला ।

खरक-पुं० [सं० खड्] चौपायों को रखने का घेरा । बाड़ा । २. पशुओं के चरने का स्थान । चरागाह ।

खरका-पुं० [हिं० खर] तिनका ।
पुं० दे० 'खरक' ।

खर-खौकी*-स्त्री०[हिं०खर+खाना]आग ।

खरग*-पुं० दे० 'खड्ग' ।

खरगोश-पुं० [फा०] चूहे की तरह का, पर उससे बड़ा, एक प्रसिद्ध जन्तु । खरहा ।

खरच-पुं० दे० 'खर्च' ।

खरचना-स० [फा० खर्च] १. धन व्यय करना। खर्च करना। २. वस्तु व्यवहार या उपयोग में लाना।

खरतल-वि० [हिं० खरा] १. खरा। स्पष्टवादी। २. शुद्ध हृदयवाला। ३. साफ। स्पष्ट। ४. प्रचंड। उग्र।

खरदुक-पुं० [?] एक प्रकार का पुराना पहनावा।

खर-धार-वि० [सं०] तेज धारवाला।

खरब-पुं० [सं०खर्व] सौ अरब की संख्या।

खरबूजा-पुं० [फा० खर्पजः] एक प्रसिद्ध गोल फल।

खरभर-पुं० [अनु०] [क्रि० खरभरना] १. शोर। गुल। २. हलचल।

खरभरना-अ० [हिं० खरभर] १. क्षुब्ध होना। २. घबराना।

खरभराना-स० हिं०'खरभरना' का स०।

खरमंडल-वि० दे० 'खड्मंडल'।

खर-मस्ती-स्त्री० [फा०] हँसी में किया जानेवाला पाजीपन।

खर-मास-पुं० [सं०] पूस और चैत के महीने जिनमें विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित हैं।

खर-मिटाव-पुं० दे० 'जल-पान'।

खरल-पुं० [सं० खल] पत्थर की वह कूँड़ी जिसमें चीजें कूटी जाती हैं। खल।

खरवाँस-पुं० दे० 'खर मास'।

खरसा-पुं० [सं० षड्रस] एक प्रकार का पकवान।

खरसान-स्त्री० [हिं० खर+सान] हथियार तेज करने की एक प्रकार की सान।

खरहरा-पुं० [हिं० खरहरना] [स्त्री० अल्पा० खरहरी] १. अरहर के डंठलों का झाड़ू। झँखरा। २. घोड़े के रोएँ साफ करने की दाँतीदार कंघी या बुरुश।

खरहरी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फल या मेवा (कदाचित् खजूर)।

खरहा-पुं० दे० 'खरगोश'।

खरा-वि० [सं० खर=तीक्ष्ण] १. अच्छा। बढ़िया। २.विशुद्ध। बिना मिलावट का। ३. सेंककर करारा किया हुआ। ४. जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी या धोखा न हो। ६. नगद (दाम)। मुहा०-रुपये खरे होना=रुपये मिलना या मिलने का निश्चय होना। ७. साफ कहनेवाला। स्पष्ट-वक्ता।

खराई-स्त्री० [हिं० खरा+ई (प्रत्य०)] 'खरा' का भाव। खरापन। स्त्री० [देश०] सबेरे जल-पान न करने के कारण तबियत खराब होना।

खराद-स्त्री० [फा० खर्राद] १ लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी करने का एक औजार। २. खरादने का भाव या काम।

खरादना-स० [हिं० खराद] १. खराद पर चढ़ाकर साफ और सुडौल करना। काट-छाँटकर ठीक करना।

खराब-वि० [अ०] [भाव० खराबी] १ बुरा। निकृष्ट। २. मर्यादा-भ्रष्ट। पतित।

खरायँध-स्त्री० [सं० क्षार+गंध] मूत्र या क्षार की-सी दुर्गंध।

खरारि-पुं० [सं०] १. रामचंद्र। २. विष्णु। ३ कृष्णचन्द्र।

खरिया-स्त्री० [हिं० खर+इया (प्रत्य०)] १.घास-भूसा बाँधने की जाली। २.झोली। स्त्री० दे० 'खड़िया'।

खरियाना-स० [हिं० खरिया=झोली] १. झोली या थैले में भरना। २. झोली में से गिराना या उलटना।

खरीता-पुं० [अ०] [स्त्री० अल्पा० खरीती] १. थैली। २. जेब। खीसा। ३.

वह बड़ा लिफाफा जिसमें राजकीय आज्ञा-पत्र आदि भेजे जाते हैं।

खरीद-स्त्री० [फा०] १. मोल लेने की क्रिया या भाव। क्रय। २.खरीदी हुई चीज।

खरीददार-पुं० [फा०] १. मोल लेने-वाला। ग्राहक। २. चाहनेवाला।

खरीदना-स० [फा० खरीदन] मोल लेना। क्रय करना।

खरीफ-स्त्री० [अ०] असाढ़ से अगहन तक में काटी जानेवाली फसल।

खरे*-क्रि० वि० [हिं० खरा] सचमुच।

खरोंटना-स० [सं० क्षुरण] १. नाखून गड़ाकर शरीर में घाव करना। २. दे० 'खरोंचना'।

खरोष्ठी-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन लिपि जो दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गांधार लिपि।

खर्ग*-पुं० दे० 'खड्ग'।

खर्च-पुं० [अ०] १. किसी काम में किसी वस्तु का लगना या लगाना। व्यय। खपत। २. वह धन जो किसी काम में लगाया जाय।

खर्चीला-वि० [हिं० खर्च] बहुत खर्च करनेवाला।

खर्पर-पुं० दे० 'खप्पर'।

खर्रा-पुं० [अनु०] १. कोई लम्बा कागज जिसपर कोई लेख या विवरण लिखा हो। (स्क्रोल या रोल) २. एक रोग जिसमें पीठ पर फुन्सियाँ निकलती हैं।

खर्राटा-पुं० [अनु०] वह शब्द जो सोते समय किसी किसी की नाक से निकलता है। मुहा०-खर्राटा भरना या लेना=बे-सुध होकर सोना।

खर्व-वि० [सं०] १. जिसका अंग टूटा हो। जो अपूर्ण हो। २. छोटा। लघु। ३. वामन। बौना। ४ नाटा।
पुं० [सं०] सौ अरब की संख्या। खरब।

खल-वि० [सं०] [भाव० खलता] १. क्रूर। २. नीच। अधम। ३. दुष्ट।
पुं० [सं०] खरल।

खलक-पुं० [अ०] १. सृष्टि के प्राणी या लोग। २. दुनियां। संसार।

खलड़ी-स्त्री० दे० 'खाल'।

खलबलाना-अ० [हिं० खलबल] १. खलबल शब्द करना। २. खौलना। ३. हिलना-डोलना। ४. विचलित होना।
स० खलबली डालना या मचाना।

खलबली-स्त्री० [हिं० खलबल] १. हलचल। २. घबराहट। व्याकुलता।

खलल-पुं० [अ०] विघ्न। बाधा।

खलाना*-स० [हिं० खाली] १. खाली करना। २. गड्ढा करना। ३. तल नीचे धँसाना। पिचकाना।

खलार-पुं० [हिं० खाल=नीचा] नीची भूमि।

खलास-वि० [अ०] १ छूटा हुआ। मुक्त। २.समाप्त। ३. च्युत। गिरा हुआ।

खलासी*-स्त्री० [हिं० खलास] मुक्ति। छुटकारा। छुट्टी।
पुं० जहाज पर काम करनेवाला आदमी।

खलित*-वि० [सं० स्खलित] १. चलाय-मान। चचल। २. गिरा हुआ।

खलियान-पुं०[सं०खल+स्थान] वह स्थान जहाँ फसल काटकर रक्खी जाती है।

खलियाना-स० [हिं० खाल] मरे हुए पशु की खाल या चमड़ा उतारना।
† स० [हिं० खाली] खाली करना।

खली-स्त्री० [सं० खल] तेल निकल जाने पर तेलहन की बची हुई सीठी।

खलीता-पुं० दे० 'खरीता'।

खलीफा-पुं० [अ०] १. अध्यक्ष । अधिकारी । २. कोई बूढ़ा व्यक्ति । ३. खुर्राट । ४. दरजी । ५. हज्जाम । नाई ।

खलु-क्रि० वि० [सं०] निश्चयपूर्वक । अव्यय मत । नहीं ।

खल्लड़-पुं० [सं० खल्ल] १. चमड़े की मशक या थैला । २. चमड़ा । ३.खरल ।

खल्वाट-पुं० [सं०] गंज रोग, जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं ।

वि० जिसके बाल झड़ गये हों । गंजा ।

खवा-पुं० [सं० स्कंध] कन्धा ।

खवाना*-स० दे० 'खिलाना' ।

खवास-पुं० [अ०] [स्त्री० खवासिन] राजाओं और रईसों के खास खिदमतगार।

खवैया-पुं० [हिं० खाना] खानेवाला ।

खस-पुं० [सं०] १ गढ़वाल प्रदेश का प्राचीन नाम । २ इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति ।

स्त्री० [फा० खस] गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़ ।

खसकना-अ० [अनु०] धीरे धीरे किसी ओर बढ़ना । सरकना ।

खसकाना-स० [हिं० खसकना] १ धीरे धीरे किसी ओर बढ़ाना । सरकाना । गुप्त रूप से कोई चीज हटाना ।

खसखस-स्त्री० [सं० खस्खस] पोस्ते का दाना ।

खसखसा-वि० [अनु०] भुरभुरा ।

वि० [हिं० खसखस] बहुत छोटे (बाल)।

खस-खाना-पुं० [फा०] खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी ।

खसना*-अ० दे० 'खसकना' ।

खसम-पुं० [अ०] १. पति । खाविन्द । २. स्वामी । मालिक ।

खसरा-पुं० [अ०] १. पटवारी का वह कागज जिसमें खेत का नम्बर, रकबा आदि लिखे रहते हैं । २. हिसाब का कच्चा चिट्ठा ।

पुं० [फा० खारिश] एक प्रकार की खुजली।

खसाना-स० [हिं० खसना] नीचे गिराना ।

खसिया-वि० [अ० खस्सी] १. जिसके अंडकोश निकाल लिये गये हों । बधिया । २. नपुंसक । हिजड़ा ।

खसी-पुं० [अ० खस्सी] बकरा ।

खसीस-वि० [अ०] कंजूस । कृपण ।

खसोट-स्त्री० [हिं० खसोटना] १. उखाड़ने या नोचने की क्रिया । २.उचकने या छीनने की क्रिया । जैसे-नोच-खसोट ।

खसोटना-स० [सं० कृष्ट] १. झटके से उखाड़ना । नोचना । २. छीनना ।

खसोटी-स्त्री० दे० 'खसोट' ।

खस्ता-वि० [फा० खस्त.] बहुत थोड़े दबाव से टूट जानेवाला । भुरभुरा ।

ख-स्वस्तिक-पुं० [सं०] वह कल्पित बिन्दु, जो सिर के ऊपर आकाश में माना जाता है । शीर्ष-बिन्दु ।

खस्सी-पुं० [अ०] बकरा ।

खाँखर*-वि० दे० 'खँखरा' ।

खाँग-पुं० [सं० खड्ग] १. काँटा । कंटक । २. वह काँटा जो तीतर आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है । ३. गैंडे के मुंह पर का सींग । ४.जंगली सूअर का बड़ा दांत ।

स्त्री० [हिं० खँगना] त्रुटि । कमी ।

खाँच-स्त्री० [हिं० खांचना] १. संधि । जोड़ । २.खींचकर बनाया हुआ चिह्न ।

खाँचना*-स० [सं० कर्षण] [वि० खँचैया] १. अंकित करना । चिह्न बनाना । २. खींचना । ३. जल्दी-जल्दी लिखना ।

खाँचा-पुं० [हिं० खांचना] [स्त्री० खाँची]

बड़ा टोकरा। झाबा।

खाँड़-स्त्री० [सं० खंड] बिना साफ की हुई चीनी। शक्कर।

खाँड़ना*-स० [सं०खंड=टुकड़ा] १.कुचल-कुचलकर खाना। चबाना। २. दे० 'खंडना'।

खाँड़ा-पुं० [सं० खड्ग] खड्ग (अस्त्र)। पुं० [सं० खंड] भाग। टुकड़ा।

खाँधना*-स० [सं० खादन] खाना।

खाँवाँ-पुं० [सं० खं] १. मिट्टी की चहार-दीवारी। २. चौड़ी खाई।

खाँसना-अ० [हिं० खाँसी] गले में कफ या और कोई अटकी हुई चीज निकालने के लिए वायु को, कुछ शब्द करते हुए, गले से बाहर निकालना।

खाँसी-स्त्री० [सं० काश, कास] १. अधिक खाँसने का रोग। काश रोग। २ खाँसने का शब्द या भाव।

खाई-स्त्री० [सं० खानि] वह छोटी नहर जो किले आदि के चारों ओर रक्षा के लिए खोदी जाती है। खंदक।

खाऊ-वि० [हिं० खाना] १. बहुत खानेवाला। पेटू। २. दूसरे का धन या अंश हड़पनेवाला।

खाक-स्त्री० [फा०] १. मिट्टी। २. धूल।

खाकसार-वि० [फा०] [संज्ञा खाकसारी] १ धूल में मिला हुआ। २. तुच्छ। अकिंचन। (नम्रतासूचक)

पुं० १. मुसलमानों का एक आधुनिक संघटन या दल जो अपने आपको लोक-सेवक कहता है। २.इस दल का सदस्य।

खाका-पुं० [फा० खाकः] १. चित्र, नकशे आदि का डौल। ढाँचा। २.कच्चा चिट्ठा। ३. मसौदा। आलेख।

खाकी-वि० [फा०] १. मिट्टी के रंग का। भूरा। २. बिना सींची हुई (भूमि)। स्त्री० भूरे रंग के कपड़े की सैनिकों की वर्दी।

खाज-स्त्री० [सं० खर्जु] खुजली।

मुहा०-कोढ़ में खाज=दुःख में दुःख बढ़ानेवाली बात।

खाजा-पुं० [सं० खाद्य] १. भक्ष्य या खाद्य पदार्थ। २. एक प्रकार की मिठाई।

खाजी*-स्त्री० दे० 'खाजा'।

खाट-स्त्री० [सं० खट्वा] चारपाई।

खाड़*-पुं० [सं० खात] गड्ढा। गर्त।

खाड़ी-स्त्री० [हिं० खाड़] समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो।

खात-पुं० [सं०] १. खोदना। खोदाई। २ तालाब। ३. कूआँ। ४. गड्ढा। ५. खाद के लिए कूड़ा-करकट इकट्ठा करने का गड्ढा।

खातमा-पुं० [फा०] अन्त।

खाता-पुं० [सं० खात] १. अन्न रखने का गड्ढा। खत्ता। २. किसी व्यक्ति, कार्य, विभाग आदि के लेन-देन या आय-व्यय का अलग लेखा। (एकाउन्ट) ३. दे० 'खाता-बही'।

खाता-बही-स्त्री० [हिं० खाता+बही] वह बही जिसमें लोगों या मदों के अलग अलग खाते या हिसाब रहते हैं। (लेजर)

खातिर-स्त्री० [अ०] आदर। सम्मान। अव्य० [अ०] वास्ते। लिए।

खातिर-जमा-स्त्री० [अ०] सन्तोष। इतमीनान। तसल्ली।

खातिरदारी-स्त्री० [फा०] आये हुए का सम्मान। आव-भगत।

खातिरी-स्त्री० [फा० खातिर] १. खातिर-दारी। २. खातिर-जमा। तसल्ली।

खाती-स्त्री० [सं० खात] १. खोदी हुई भूमि। २.जमीन खोदनेवाली एक जाति।

खेती। ३. बढ़ई।

खाद्-स्त्री० [सं० खाद्य] वे सड़े-गले पदार्थ जो खेत की उपज बढ़ाने के लिए उसमें डाले जाते हैं। पाँस।

खादक-वि० [सं०] खानेवाला।

खादन-पुं० [सं०] [वि० खादित, खाद्य] भक्षण। भोजन। खाना।

खादर-पुं० [हिं० खात] नीची जमीन। 'बाँगर' का उलटा। कछार।

खादित-वि० [सं०] खाया हुआ।

खादी-स्त्री० दे० 'खद्दर'।

खाद्य-वि० [सं०] खाने योग्य।

पुं० [सं०] खाने की वस्तु। भोजन।

खाधु*†-पुं० [सं० खाद्य] भोज्य पदार्थ।

खाधुक*-वि० [सं० खादक] खानेवाला।

खान-पुं० [हिं० खाना] १. खाने की क्रिया। भोजन। २. भोजन की सामग्री। ३. भोजन करने का ढंग या आचार।

यौ०-खान-पान।

स्त्री० [सं० खानि] १. वह स्थान जहाँ से धातुएँ आदि खोदकर निकाली जाती है। आकर। खदान। २. वह स्थान जहाँ कोई वस्तु अधिकता से होती हो।

पुं० [ता० काङ्=सरदार] १. सरदार। २. पठानों की उपाधि।

खानगी-वि० [फा०] १.निज का। आपस का। २. घरेलू। घरू।

स्त्री० [फा०] कसब करनेवाली। कसबी।

खानदान-पुं० [फा०] वंश। कुल।

खानदानी-वि० [फा०] १. ऊँचे वंश या कुल का। २. वंश-परंपरागत। पैतृक।

खान-पान-पुं० [सं०] १. अन्न-पानी। आब-दाना। २. खाना-पीना। ३. खाने-पीने का आचार। ४. साथ बैठकर खाने-पीने का संबंध या व्यवहार।

खानसामाँ-पुं० [फा०] अंगरेजों, मुसलमानों आदि का रसोइया।

खाना-स० [सं० खादन] १. भोजन करना। भक्षण करना।

मुहा०-**खाना कमाना**=काम-धंधा करके जीविका उपार्जित करना। **खा-पका जाना या डालना**=खर्च कर डालना। उड़ा डालना। **खाना न पचना**=चैन न पड़ना। जी न मानना।

२. हिंसक जन्तुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना। ३. विषैले कीड़ों का काटना। डसना। ४. तंग करना। कष्ट देना। ५. उड़ा देना। न रहने देना। ६. बेईमानी से लेना। हड़प जाना। ७. रिशवत आदि लेना। ८. (आघात, प्रभाव आदि) सहना। बरदाश्त करना।

पुं० भोजन।

पुं० [फा०] १. घर। मकान। २. स्थान। जगह। जैसे-डाकखाना, दवाखाना। ३. किसी चीज के रखने का घर। (केस) ४. सारिणी, चक्र, घर आदि में बना हुआ विभाग। कोष्ठक।

खाना-तलाशी-स्त्री०[फा०] कोई खोई या चुराई हुई चीज किसी के घर ढूँढ़ना।

खाना-पुरी-स्त्री० [फा० खाना+फा० पुर=पूर्ण] किसी चक्र या सारणी के कोठों में यथा-स्थान संख्या, विवरण आदि लिखना। नकशा भरना।

खाना-बदोश-वि० [फा०] जिसका घर-बार न हो। इधर-उधर घूमनेवाला।

खानि-स्त्री० [सं० खनि] १. दे० 'खान'। २. ओर। तरफ। ३. प्रकार। तरह।

खाम-पुं० [हिं० खामना] १. चिट्ठी रखने का लिफाफा। २. संधि। जोड़।

*† वि० [सं० क्षाम] कटा-फटा या

टूटा-फूटा हुआ। क्षीण।

वि० [फा०] १ कच्चा। २. जिसे अनुभव न हो।

खामखाह-क्रि० वि० दे० 'व्यर्थ'।

खामना-स० [सं० स्कंभन] १. गीली मिट्टी आदि से पात्र का मुँह बन्द करना। २. चिट्ठी रखकर लिफाफा बन्द करना।

खामोश-वि० [फा०] चुप। मौन।

खामोशी-स्त्री० [फा०] मौन। चुप्पी।

खार-पुं० [सं० क्षार] १ दे० 'क्षार'। २. सज्जी। ३. नोना। रेह। ४. धूल। राख।

पुं० [फा०] १ काँटा। कंटक। २ खाँग। ३. डाह। जलन।

मुहा०-**खार खाना**=मन में वैर रखना।

खारा-पुं० [सं० क्षार] [स्त्री० खारी] १. क्षार या नमक के स्वाद का। २. अरुचिकर। अप्रिय।

पुं० [सं० क्षारक] १. एक प्रकार का धारीदार कपड़ा। २ घास बाँधने का जाला। ३ टोकरा। खाँचा। ४ सरकंडे की बनी एक प्रकार की चौकी।

खारिक*†-पुं० [सं० क्षारक] छोहारा।

खारिज-वि० [अ०] १ बाहर किया या निकाला हुआ। बहिष्कृत। २. भिन्न। अलग। ३ जिस (अभियोग) की सुनाई करने से इनकार किया गया हो या जो ठीक न माना गया हो।

खारी-स्त्री० [हिं० खारा] एक प्रकार का क्षार या नमक।

वि० क्षार-युक्त। जिसमें खार हो।

खाल-स्त्री० [सं० क्षाल] १. शरीर का ऊपरी आवरण। चमड़ा। त्वचा।

मुहा०-**खाल उधेड़ना या खींचना**= बहुत मारना, पीटना या कड़ा दंड देना। २. धौंकनी। ३. मृत शरीर।

स्त्री० [सं० खात] १. नीची भूमि जिसमें बरसात का पानी जमा हो जाता हो। २. खाड़ी। ३. खाली जगह।

खालसा-वि० [अ० खालिस=शुद्ध] १. जिसपर केवल एक का अधिकार हो। २. राज्य का। सरकारी।

पुं० सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

खाला-वि० [हिं० खाल] [स्त्री० खाली] नीचा। निम्न।

स्त्री० [अ० खालः] मौसी। मासी।

खालिस-वि० [अ०] जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो। बे-मेल। विशुद्ध।

खाली-वि० [अ०] १ जिसके अन्दर का स्थान शून्य हो। जो भरा न हो। रीता। रिक्त। २. जिसमें कोई एक विशेष वस्तु न हो। ३ रहित। विहीन। ४. जिसे कुछ काम न हो। ५. जो व्यवहार में न हो। जिसका काम न हो। (वस्तु) ६. व्यर्थ। निष्फल। जैसे-निशाना या बात खाली जाना।

खाविंद-पुं० [फा०] १. पति। २. मालिक।

खास-वि० [अ०] १. विशेष। मुख्य। प्रधान। 'आम' का उलटा।

मुहा०-**खासकर**=विशेषतः। प्रधानतः। २. निज का। आत्मीय। ३. स्वयं। खुद। ४. ठेठ। विशुद्ध।

स्त्री० [अ० कीसा] मोटे कपड़े की थैली।

खासा-पुं० [अ०] १. राजा का भोजन। राज-भोग। २. राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी। ३. एक प्रकार का सूती कपड़ा।

वि० पुं० [देश०] [स्त्री० खासी] १. अच्छा। बढ़िया। २. सुडौल। सुन्दर। ३. भरपूर। पूरा।

खासियत-स्त्री० [अ०] १. स्वभाव। प्रकृति। २. गुण। ३. विशेषता।

खिचना-अ० [सं० कर्षण] १. किसी ओर ताना या घसीटा जाना। तनना। २.आकृष्ट होना। प्रवृत्त होना। ३.काम में आना। लगना। खपना। ४. भभके से अरक, शराब आदि तैयार होना। ५. प्रभाव, गुण आदि निकल जाना। जैसे-दर्द खिंचना। ६. अंकित या चित्रित होना। ७ अनुराग या सम्बन्ध कम होना। ८. माल कहीं जाना या खपना।

खिचवाना-स० हिं० 'खींचना' का प्रे०।

खिंचाव-पुं० हिं० 'खिंचना' का भाव०।

खिंडाना-स० [सं० क्षिप्त] बिखराना।

खिखिंध*-पुं० दे० 'किष्किंधा'।

खिचड़वार-पुं० [हिं० खिचड़ी+वार] मकर संक्रान्ति।

खिचड़ी-स्त्री० [सं० कृसर] १. एक में मिला या पका हुआ चावल और दाल। मुहा०-खिचड़ी पकाना=गुप्त रूप से सलाह करना। ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना=सबसे अलग होकर कोई कार्य करना या मत रखना। २. एक ही में मिले हुए कई प्रकार के पदार्थ। ३. मकर संक्रान्ति।

वि० मिला-जुला।

खिजना-अ० दे० 'खिजलाना'।

खिजमत*-स्त्री० दे० 'खिदमत'।

खिजलाना-अ०[हिं०खीजना] कुँझलाना। चिढ़ना।

स० हिं० 'खीजना' का प्रे०।

खिझना-अ० दे० 'खीजना'।

खिझौना-वि० [हिं० खिझाना] [स्त्री० खिझौनी] खिझाने या दिक करनेवाला।

खिड़की-स्त्री० [सं० खटक्किका] दीवार में छोटे दरवाजे की तरह की बनावट। दरीचा। झरोखा।

खिताब-पुं० [अ०] पदवी। उपाधि।

खित्ता-पुं० [अ०] प्रान्त। देश।

खिदमत-स्त्री० [फा०] सेवा। टहल।

खिदमतगार-पुं० [फा०] छोटी सेवाएँ करनेवाला। सेवक। टहलुआ।

खिन्न-वि० [सं०] [भाव० खिन्नता] १. उदासीन। २. चिन्तित। ३. अप्रसन्न।

खिराज-पुं० [अ०] राजस्व। कर।

खिरिरना*-स० [अनु०] १. अनाज छानना। २. खुरचना।

खिलअत-स्त्री० [अ०] राजा या बड़े की ओर से मिलनेवाले सम्मान-सूचक कपड़े।

खिलकत-स्त्री० [अ०] १.सृष्टि। २.भीड़।

खिलखिलाना-अ० [अनु०] खिलखिल शब्द करके हँसना। जोर से हँसना।

खिलत-स्त्री० [हिं० खिलना] खिलने की क्रिया या भाव।

स्त्री० दे० 'खिलअत'।

खिलना-अ० [सं० स्खल] १. कली का फूल के रूप में होना। फूल विकसित होना। २. प्रसन्न होना। ३. शोभित होना। अच्छा या सुन्दर लगना। ४. बीच से फटना। दरार पड़ना।

खिलवत-स्त्री० [अ०] एकान्त स्थान।

खिलवाड़-पुं० दे० 'खेलवाड़'।

खिलाई-स्त्री० [हिं० खाना] खाने या खिलाने का काम, भाव या नेग।

स्त्री० [हिं० खेलाना (खेल)] बच्चों को खेलानेवाली दाई।

खिलाड़ी-पुं० [हिं०खेल] [स्त्री०खिलाडिन] १. खेलनेवाला। २. कुश्ती लड़ने, पटा-बनेठी खेलने आदि के काम करनेवाला। ३. बाजीगर।

खिलाना-स० [हिं० खाना] भोजन कराना।

स० हिं० 'खिलना' का प्रे०।

खिलौना-पुं० [हिं० खेल] बच्चों के खेलने की चीज। जैसे-मूर्त्ति, लट्टू, चरखी आदि।

खिल्ली-स्त्री० [हिं० खिलना] हँसी-ठट्ठा। दिल्लगी।

स्त्री० [हिं० खील] पान का बीड़ा।

खिसकना-अ० दे० 'खसकना'।

खिसाना†*-अ० दे० 'खिसियाना'।

खिसियाना-अ० [हिं० खीस=दाँत] १ लज्जित होना। शरमाना। २. नाराज होना। बिगड़ना।

खिसी†*-स्त्री० [हिं० खिसियाना] १ लज्जा। शरम। २. ढिठाई। धृष्टता।

खिसौहाँ*-वि० [हिं० खिसियाना] खिसियाया हुआ। लज्जित। संकुचित।

खींच-स्त्री० हिं० 'खींचना' का भाव०।

खींच-तान-स्त्री० [हिं० खींचना+तानना] १. दो व्यक्तियों का एक दूसरे के विरुद्ध उद्योग। खींचा-खींची। २. शब्द या वाक्य का जबरदस्ती भिन्न अर्थ करना।

खींचना-स० [सं० कर्षण] [प्रे० खिंचवाना] १. बलपूर्वक अपनी तरफ लाना।

मुहा०-**हाथ खींचना**=देना या और कोई काम रोकना।

२. कोश आदि में से अस्त्र बाहर निकालना। ३. सोखना। चूसना। ४. भभके से अर्क, शराब आदि बनाना। ५. किसी वस्तु का गुण या प्रभाव निकाल लेना। ६. लकीरों से आकार या रूप बनाना।

खींचा-तानी-स्त्री० दे० 'खींच-तान'।

खीज-स्त्री० [हिं० खीजना] १. खीजने का भाव। २. खिजानेवाली (बात)।

खीजना-अ० [सं० खिद्यते] दुःखी होकर क्रोध करना। झुँझलाना। खिजलाना।

खीझ-स्त्री० दे० 'खीज'।

खीन†*-वि० [सं० क्षीण] क्षीण।

खीर-स्त्री० [सं० क्षीर] १. दूध। २. दूध में पकाये हुए चावल।

खील-स्त्री० [हिं० खिलना] भूना हुआ धान। लावा।

खीवन*-स्त्री० [सं० क्षीवन] मत-वालापन। मत्तता।

खीस†*-वि० [सं० किष्क] नष्ट। बरबाद।

स्त्री० [हिं० खीज] १. अप्रसन्नता। नाराजगी। २. क्रोध। गुस्सा।

स्त्री० [हिं० खिसियाना] लज्जा। शरम।

स्त्री० [सं० कीश=बन्दर] खुले हुए दाँत।

मुहा०-**खीस निकालना** = निर्लज्जता से हँसना।

खीसा-पुं० [फा० कीसः] [स्त्री० अल्पा० खीसी] १ थैला। २. जेब।

खुँदाना-स० [सं० क्षुण्ण] (घोड़ा) कुदाना।

खुक्ख-वि० [सं० शुष्क] १. जिसके पास कुछ न हो। २. परम निर्धन।

खुखड़ी-स्त्री० [देश०] १. तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत। कुकड़ी। २. नैपाली छुरा।

खुगीर-पुं० [फा०] १. वह ऊनी कपड़ा जो घोड़े के चारजामे के नीचे रखा जाता है। नमदा। २. चारजामा। जीन।

मुहा०-**खुगीर की भरती**=व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का समूह।

खुचर-स्त्री० [सं० कुचर] झूठमूठ अव-गुण दिखलाना। छिद्रान्वेषण।

खुजलाना-स० [सं० खर्जु] खुजली मिटाने के लिए नाखूनों से अंग रगड़ना। सहलाना।

अ० खुजली मालूम होना।

खुजली-स्त्री० [हिं० खुजलाना] १. वह स्थिति जिसमें खुजलाने को जी चाहे। खुजलाहट। सुरसुरी। २. एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है।

खुजाना-स०, अ० दे० 'खुजलाना'।

खुटक*-स्त्री० [हिं० खटकना] आशंका।

खुटकना-स० [सं० खुड्] ऊपर से तोड़ना या नोचना।

खुटका-पुं० दे० 'खटका'।

खुट-चाल-स्त्री० [हिं० खोटी+चाल] [वि० खुटचाली] १. दुष्टता। पाजीपन। २. खराब चाल-चलन।

खुटना¹*-अ० [सं० खुड] खुलना। अ० समाप्त होना। खतम होना।

खुटपन-पुं० [हिं० खोटा] खोटापन।

खुटाना¹-अ० [सं० खुड्] समाप्त होना।

खुड्डी-स्त्री० [हिं० गड्ढा] १. पाखाने में पैर रखने का पावदान। २. पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतबा-पुं० [अ०] १.तारीफ। प्रशंसा। २.सामयिक राजा की प्रशंसा की घोषणा। मुहा०-किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना=किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना। (मुसल०)

खुत्थी¹*-स्त्री० [हिं० खूँटी] १.फसल कट जाने पर पौधों का बचा भाग। खूँटी। २. थाती। धरोहर। अमानत। ३. हिमयानी। बसनी। ४. धन। दौलत।

खुद-अव्य० [फा०] स्वयं। आप। मुहा०-खुद-ब-खुद=आपसे आप।

खुद-काश्त-स्त्री० [फा०] वह जमीन जिसका मालिक उसे स्वयं जोते।

खुद-गरज-वि० दे० 'स्वार्थी'।

खुदना-अ० हिं० 'खोदना' का० अ०।

खुद-मुख्तार-वि० [फा०] जिसपर किसी का शासन न हो। स्वतंत्र।

खुदरा-पुं० [सं० क्षुद्र] १. छोटी और साधारण वस्तु। २. फुटकर चीज़ें।

खुदवाना-स० हिं० 'खोदना' का प्रे०।

खुदा-पुं० [फा०] ईश्वर।

खुदाई-स्त्री० [हिं० खुदना] १. खोदे जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। वि० [फा०] ईश्वरीय। स्त्री० १. ईश्वरता। २. सृष्टि।

खुदाई खिदमतगार-पुं० [फा०] पश्चिमी सीमा-प्रान्त के एक विशेष प्रकार के राष्ट्रिय स्वयंसेवक जो सामाजिक और राजनीतिक कार्य करते हैं।

खुदावंद-पुं० [फा०] १. ईश्वर। २. हुजूर। सरकार।

खुदाव-पुं० [हिं० खोदना] खोदे जाने की क्रिया या भाव। २. खोदकर बनाये हुए बेल-बूटे। नक्काशी।

खुद्दी-स्त्री० [सं० क्षुद्र] अन्न के बहुत छोटे टुकड़े।

खुनस-स्त्री० [सं० खिन्न-मनस्] [वि० खुनसी, क्रि० खुनसाना] क्रोध। गुस्सा।

खुफिया-वि० [फा०] गुप्त। छिपा हुआ।

खुफिया पुलिस-स्त्री० [फा० खुफिया+अं० पुलीस] सरकारी जासूस। भेदिया।

खुभना-अ० दे० 'चुभना'।

खुभराना*-अ० [सं० क्षुब्ध] उपद्रव करने के लिए इधर-उधर घूमना।

खुभी-स्त्री० [हिं० खुभना] कान में पहनने का फूल।

खुमान¹*-वि० [सं० आयुष्मान्] बड़ी आयुवाला। दीर्घजीवी। (आशीर्वाद)

खुमारी-स्त्री० [अ० खुमार] १. मद। नशा। २. नशा उतरने के समय की

या रात भर जागने से होनेवाली थकावट।

खमी-स्त्री० [अ० कुमः] एक उद्भिज्ज वर्ग जिसके अन्तर्गत ढिंगरी, कुकुरमुत्ता आदि वनस्पतियाँ हैं।

खुरंड-पुं० [सं० क्षुर] सूखे घाव पर जमनेवाली पपड़ी।

खुर-पुं० [सं० क्षुर] सींगवाले चौपायों के पैर का निचला भाग, जो बीच से फटा होता है।

खुरखरा-वि० दे० 'खुरदरा'।

खुरचन-स्त्री० [हिं० खुरचना] १. खुरच-कर निकाली हुई वस्तु। २. एक प्रकार की गाढ़ी रबड़ी।

खुरचना-अ० [सं० क्षुरण] किसी जमी हुई वस्तु को छीलकर अलग करना।

खुर-चाल-स्त्री० दे० 'खुट-चाल'।

खुरजी-स्त्री० [फा०] घोड़े, बैल आदि पर सामान लादने का थैला।

खुरपा-पुं० [सं० क्षुरप्र] [स्त्री० अल्पा० खुरपी] घास छीलने का एक औजार।

खुरमा-पुं० [अ०] १ छोहारा। २. एक प्रकार की मिठाई।

खुराक-स्त्री० [फा०] १. भोजन। खाना। २. मात्रा। (औषध की)

खुराकी-स्त्री० [फा०] वह धन जो खुराक के लिए दिया जाय। भोजन-व्यय।

खुराफात-स्त्री० [अ०] १. वेहूदा और वाहियात बात। २. झगड़ा। बखेड़ा।

खुरुक*-स्त्री० [हिं० खुटका] आशंका।

खुर्राट-वि० [देश०] १. बूढ़ा। वृद्ध। २. अनुभवी। तजरुबेकार। ३. चालाक।

खुलना-अ० [सं० खुड्, खुल=भेदन] १. सामने का अवरोध या ऊपर का आवरण हटना। बन्द न रहना। जैसे-किवाड़ या सन्दूक खुलना। २. दरार होना। फटना। ३. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु का हटना। ४. प्रचलित होना। चलना। जैसे-सड़क या नहर खुलना। ५. नित्य का कार्य आरम्भ होना। ६. किसी सवारी का रवाना हो जाना। ७. गुप्त या गूढ़ बात प्रकट होना। मुहा०-खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान=सब के सामने; छिपाकर नहीं। ८. अपने मन की बात या भेद कहना।

खुलवाना-स० हिं० 'खोलना' का प्रे०।

खुला-वि० [हिं० खुलना] १. जो बँधा या ढका न हो। २. जिसे कोई रुकावट न हो। अवरोध-हीन। ३. स्पष्ट। प्रकट। जाहिर।

खुलासा-पुं० [अ०] सारांश। वि० [हिं० खुलना] १. खुला हुआ। २. अवरोध-रहित। ३. साफ। स्पष्ट।

खुल्लम-खुल्ला-क्रि० वि० [हिं० खुलना] प्रकाश्य रूप से। खुले आम।

खुश-वि० [फा०] १. प्रसन्न। आनन्दित। २. अच्छा। (यौगिक के आरम्भ में)

खुश-किस्मत-वि० [फा०] भाग्यवान्।

खुश-खबरी-स्त्री० [फा०] प्रसन्न करने-वाला समाचार। अच्छी खबर।

खुशबू-स्त्री० [फा०] सुगन्ध।

खुशामद-स्त्री० [फा०] [वि० खुशामदी] किसी को प्रसन्न करने के लिए झूठी प्रशंसा करना। चापलूसी।

खुशी-स्त्री० [फा०] प्रसन्नता।

खुश्क-वि० [फा० मि० सं० शुष्क] १. जो तर न हो। सूखा। शुष्क। २. जिसमें रसिकता न हो। रूखा। ३. (वेतन) जिसके साथ भोजन न हो।

खुश्की-स्त्री० [फा०] १. शुष्कता। २. नीरसता। ३. स्थल या भूमि। 'तरी'

का उलटा।

खुसाल, खुस्याल*-वि० [फा० खुश-हाल] प्रसन्न। आनन्दित।

खुसिया-पुं० [अ०] अंड-कोश।

खूँट-पुं० [सं० खंड] १. छोर। कोना। २. ओर। तरफ। ३. भाग। हिस्सा।

स्त्री० [हिं० खोंट] कान की मैल।

खूँटा-पुं० [सं० क्षोड] पशु या खेमे की रस्सी आदि बाँधने के लिए गड़ी लकड़ी।

खूँटी-स्त्री० [हिं० खूँटा] १. छोटा खूँटा। २. पौधों का वह अंश जो फसल काट लेने पर खेत में रह जाता है। ३. हजामत के बाद मुँडे हुए बालों के बचे हुए अंकुर। ४. सीमा। हद।

खूँद-स्त्री० हिं० 'खूँदना' का भाव०।

खूँदना-अ० [सं० क्षुंदन=खोदना] [भाव० खूँद] १. चंचल घोड़ों का पैर उठा-उठाकर जमीन पर पटकना। २. पैरों से रौंदकर खराब करना।

खूटना*-अ० [सं० खुंडन] छेड़ना। रोक-टोक करना।

अ० दे० 'खुटना'।

खूटा*-वि० दे० 'खोटा'।

खूद-पुं० दे० 'सीठी'।

खून-पुं० [फा०] १. रक्त। लहू।

मुहा०-खून उबलना या खौलना=बहुत क्रोध होना। खून का प्यासा=वध का इच्छुक। सिर पर खून सवार होना=किसी को मार डालने या कोई बड़ा अनिष्ट करने पर उद्यत होना। खून पीना=१. मार डालना। २. बहुत तंग करना। सताना।

२. वध। हत्या। कतल।

खून-खराबी-स्त्री० [हिं०] मार-काट।

खूनी-वि० [फा०] १. खून करने या मार डालनेवाला। हत्यारा। घातक। २. अत्याचारी।

वि० खून-सम्बन्धी। जैसे-खूनी बवासीर।

खूब-वि० [फा०] [संज्ञा खूबी] अच्छा। भला। उत्तम।

खूबसूरत-वि० [फा०] सुन्दर।

खूबसूरती-स्त्री० [फा०] सुन्दरता।

खूबी-स्त्री० [फा०] १. भलाई। अच्छाई। अच्छापन। २. गुण। विशेषता।

खूसट-पुं० [सं० कौशिक] उल्लू।

वि० शुष्क-हृदय। अ-रसिक।

खेचर-पुं० [सं०] वह जो आसमान में चले या उड़े। आकाश-चारी। जैसे-पक्षी, विमान, वायु, राक्षस आदि।

खेटक-पुं० [सं० आखेट] शिकार।

खेटकी-पुं० [सं०] भड्डरी। भड़ेरिया।

पुं० [सं० आखेट] १. शिकारी। २. वधिक। हत्यारा।

खेड़ा-पुं० [सं० खेटक] छोटा गाँव।

खेड़ी-स्त्री० [देश०] वह मांस-खंड जो जरायुज जीवों के बच्चों की नाल के दूसरे सिरे पर लगा रहता है।

खेत-पुं० [सं० क्षेत्र] १. अनाज पैदा करने के लिए जोतने-बोने की जमीन।

मुहा०-खेत करना=१. भूमि समथल करना। २. चन्द्रमा का उदित होकर प्रकाश फैलाना।

२. खेत में खड़ी हुई फसल। ३. किसी चीज के, विशेषतः पशुओं आदि के, उत्पन्न होने का प्रदेश। ४. समर-भूमि।

मुहा०-खेत आना या रहना=युद्ध में मारा जाना। खेत रखना=समर में विजय प्राप्त करना।

५. तलवार का फल।

खेत-बँट-स्त्री० [हिं० खेत+बाँटना] खेतों

के बँटवारे का वह प्रकार जिसमें हर खेत टुकड़े टुकड़े करके बाँटा जाता है। 'चक-बँट' का उलटा।

खेतिहर-पुं० [सं० क्षेत्रधर] खेती करनेवाला। कृषक। किसान।

खेती-स्त्री० [हिं० खेत+ई (प्रत्य०)] १ खेत में अनाज बोने और उपजाने का काम। कृषि। किसानी। २. खेत में बोई हुई फसल।

खेती-बारी-स्त्री० दे० 'खेती'।

खेद-पुं० [सं०] [वि० खेदित, खिन्न] १. किसी उचित, आवश्यक या प्रिय बात के न होने पर मन में होनेवाला दुःख। रंज। २. शिथिलता। थकावट।

खेदना[+]-स० दे० 'खदेड़ना'।

खेदा-पुं० [हिं० खेदना] १. पशुओं को मारने या पकड़ने के लिए घेरकर एक स्थान पर लाना। २. शिकार। आखेट।

खेना-स० [सं० क्षेपण] १. डाँड़ों से नाव चलाना। २. समय बिताना या काटना।

खेप-स्त्री० [सं० क्षेप] १. उतनी वस्तु, जितनी एक बार में लाद या ढोकर ले जाई जाय। २. गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना-स०[सं०क्षेपण] बिताना। (समय)

खेम*-पुं० दे० 'क्षेम'।

खेमटा-पुं० [देश०] १. बारह मात्राओं का एक ताल। २. इस ताल पर होनेवाला गाना या नाच।

खेमा-पुं० [अ०] तम्बू। डेरा।

खेरौरा[+]-पुं० [हिं० खाँड़] मिसरी का लड्डू। खँड़ौरा। ओला।

खेल-पुं० [सं० केलि] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिए उछल-कूद, दौड़-धूप या और कोई मनोरंजक कृत्य, जिसमें हार-जीत भी होती है। क्रीड़ा। मुहा०-**खेल खेलाना**=व्यर्थ की बातों या काम में फँसाये रखना। २. बहुत हलका या तुच्छ काम। ३. अभिनय, तमाशा, स्वांग या करतब आदि। ४. अद्भुत या विचित्र लीला।

खेलक*-पुं० दे० 'खिलाड़ी'।

खेलना-अ० [सं० केलि, केलन] [प्रे० खेलाना] १. मन बहलाने या व्यायाम के लिए इधर-उधर उछलना, कूदना, आदि। क्रीड़ा करना। २. भूत-प्रेत के प्रभाव से सिर और हाथ-पैर हिलाना। अभुआना। ३. विचरना। चलना। स० १. मन-बहलाव का काम करना। जैसे-गेंद खेलना, ताश खेलना। मुहा०-**जान या जी पर खेलना**=ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो। २ नाटक या अभिनय करना।

खेल-भूमि-स्त्री० [हिं० खेल+भूमि] वह स्थान जो लड़कों के खेलने के लिए हो। लड़कों के खेलने की जगह। (प्ले ग्राउंड)

खेलवाड़-पुं० [हिं० खेल+वाड़] १ खेल। क्रीड़ा। २. मन-बहलाव। दिल्लगी। ३. तुच्छ अथवा बहुत ही साधारण रूप से किया हुआ काम।

खेलवाड़ी-वि०[हिं०खेलवाड़+ी(प्रत्य०)] १. बहुत खेलनेवाला। २. विनोदशील।

खेला-पुं० दे० 'सट्टा'।

खेलाड़ी-वि० १. दे० 'खिलाड़ी'। २ दे० 'खेलवाड़ी'।

खेलाना-स० हिं० 'खेलना' का प्रे०।

खेलौना-पुं० दे० 'खिलौना'।

खेवक*-पुं० [सं० क्षेपक] मल्लाह।

खेवट-पुं० [हिं० खेत+वट (प्रत्य०)]

पटवारी का वह कागज जिसमें हर पट्टीदार का हिस्सा लिखा रहता है।
पुं० [हिं० खेना] मल्लाह। माँझी।
खेवा-पुं० [हिं० खेना] [भाव० खेवाई] १. नाव का किराया। २. नाव द्वारा नदी पार करने का काम। ३. बार। दफा। ४. बोझ से लदी नाव।
खेस-पुं० [देश०] बहुत मोटे सूत की एक प्रकार की लम्बी चादर।
खेसारी-स्त्री० [सं० कृसर] एक प्रकार का मटर। दुविया मटर। लतरी।
खेह(र)-स्त्री० [सं० क्षार] धूल। राख। मुहा०-खेह खाना=१. धूल फाँकना। व्यर्थ समय खोना। २.दुर्दशा-ग्रस्त होना।
खैंचना-स० दे० 'खींचना'।
खैर-पुं० [सं० खदिर] १. एक प्रकार का बबूल। कथ-कीकर। २. इस वृक्ष की लकड़ी का सत। कत्था।
स्त्री० [फा०] कुशल। क्षेम।
अव्य० १. कुछ चिन्ता नहीं। कुछ परवा नहीं। २. अस्तु। अच्छा।
खैर-आफियत-स्त्री० [फा०] कुशल-मंगल।
खैर-ख्वाह-वि० [फा०] [संज्ञा खैरख्वाही] भलाई चाहनेवाला। शुभ-चिन्तक।
खैर-भैर-पुं० [अनु०] १. हो-हल्ला। २. हलचल।
खैरा-वि० [हिं० खैर] खैर के रंग का। कत्थई।
खैरात-स्त्री० [अ०] [वि० खैराती] दान।
खैरियत-स्त्री० [फा०] १. कुशल-क्षेम। राजी-खुशी। २. भलाई। कल्याण।
खैलर†-स्त्री० दे० 'मथानी'।
खोंगाह-पुं० [सं०] पीलापन लिये सफेद रंग का घोड़ा।
खोंच-स्त्री० [सं० कुच] १. नुकीली चीज से छिलने का आघात। खरोंट। २. काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना।
खोंचा-पुं० [सं० कुच] बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लम्बा बाँस।
खोंची†-स्त्री० [हिं० खूँट] भिक्षा। भीख।
खोंटना-स० [सं० खुंड] [भाव० खोंट] किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना।
खोंडर-पुं० [सं० कोटर] पेड़ का भीतरी खोखला भाग या गड्ढा।
खोंड़ा-वि० [सं० खुंड] १. जिसका कोई अंग भंग हो।
खोंसना-स० [सं० कोश+ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु को कहीं स्थिर रखने के लिए उसका कुछ भाग किसी दूसरी वस्तु में घुसेड़ देना। अटकाना।
खोआ-पुं० [सं० क्षुद्र] ऐसा गाढ़ा किया हुआ दूध जिसकी पिंडी बन सके। मावा। खोया।
खोई-स्त्री० [सं० क्षुद्र] १.रस निकल जाने पर बची हुई गन्ने के टुकड़ों की सीठी। २. भुने हुए धान आदि की खील। लावा। ३. एक प्रकार के अन्न के दाने, जिनसे लड्डू आदि बनते हैं।
स्त्री० [हिं० खोना] सट्टे आदि में होने-वाली हानि। जैसे-आज खोई है, तो कल कमाई होगी।
खोखला-वि० [हिं० खुक्ख+ला (प्रत्य०)] जिसके अन्दर कुछ न हो। पोला।
खोखा-पुं० [हिं० खुक्ख] १. वह कागज जिसपर हुंडी लिखी जाती है। २. वह हुंडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो।
खोगीर-पुं० दे० 'खुगीर'।
खोज-स्त्री० [हिं० खोजना] १. खोजने या ढूँढ़ने की क्रिया या भाव। अनुसंधान।

तलाश। २. चिह्न। निशान। पता। ३. गाड़ी के पहिए की लीक अथवा पैर आदि के चिह्न।

खोजना-स० दे० 'ढूँढना'।

खोजा-पुं० [फा० ख्वाजः] १. वह नपुंसक जो मुसलमानी महलों में सेवक की भाँति रहता था। २. सेवक। नौकर। ३. माननीय व्यक्ति। सरदार। ४. गुजराती मुसलमानों की एक जाति।

खोजी-वि० [हिं० खोज] खोजनेवाला।

खोट-स्त्री० [हिं० खोटा] १. दोष। ऐब। बुराई। २. किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट वस्तु की मिलावट।

खोटना*-स्त्री० दे० 'खोटाई'।

खोटा-वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० खोटी] जिसमें ऐब हो। बुरा। 'खरा' का उलटा। मुहा०-**खोटी-खरी सुनाना**=डाटना। फटकारना।

खोटाई-स्त्री० [हिं० खोटा+ई (प्रत्य०)] १. बुराई। २. दुष्टता। ३. छल। कपट। ४. दोष। ऐब।

खोटापन-पुं० दे० 'खोटाई'।

खोड़-स्त्री० [हिं० खोट] भूत-प्रेत आदि की बाधा।

खोद-पुं० [फा० ख़ोद] युद्ध में पहनने का लोहे का टोप। कूँड़। शिरस्त्राण।

खोदना-स० [सं० खुद्=भेदना] १. ऊपर की मिट्टी आदि हटाकर गहरा गड्ढा करना। खनना। २. इस प्रकार मिट्टी हटाकर कोई चीज उखाड़ना या गिराना। ३. किसी कड़ी चीज में उभारदार बेल-बूटे बनाना। नक्काशी करना। ४. उँगली, छड़ी आदि से दबाना। गड़ाना। ५. छेड़-छाड़ करना। ६. उत्तेजित करना। उसकाना। उभाड़ना।

यौ०-**खोद-विनोद**=अनुचित पूछ-ताछ।

खोदवाना-स० हिं० 'खोदना' का प्रे०।

खोदाई-स्त्री० [हिं० खोदना] खोदने का काम, भाव या मजदूरी।

खोना-स० [सं० क्षपण] १. अपने पास की वस्तु असावधानी से निकल जाने देना। गँवाना। २. नष्ट करना। बिगाड़ना। अ० पास की वस्तु का असावधानी से कहीं छूट या निकल जाना।

पुं० दे० 'दोना'।

खोनचा-पुं० [फा० ख्वानचः] बड़ा परात या थाल, जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।

खोपड़ा-पुं० [सं०खर्पर] १. दे० 'खोपड़ी'। २. सिर। ३. गरी का गोला। ४. नारियल।

खोपड़ी-स्त्री० [हिं० खोपड़ा] १. सिर की हड्डी। कपाल। २ सिर।

मुहा०-**औंधी या औंधी खोपड़ी का**=ना-समझ। मूर्ख। **खोपड़ी खा या चाट जाना**=बहुत बातें करके दिक करना। **खोपड़ी गंजी होना**=मार या व्यय आदि के कारण परेशान होना।

खोपा-पुं० [सं० खर्पर, हिं० खोपड़ा] १. छप्पर का कोना। २. स्त्रियों की गुथी हुई चोटी की तिकोनी बनावट। जूड़ा। ३. गरी का गोला।

खोभरा*-पुं० [हिं० खुभना] १. रास्ते में पड़नेवाली वह उभरी हुई चीज, जो चुभती हो या जिससे ठोकर लगती हो। २. कूड़ा-करकट।

खोभार-पुं० [?] कूड़ा-करकट फेंकने का गड्ढा।

खोम*-पुं० [अ० कौम] समूह।

खोया-पुं० दे० 'खोआ'।

खोर-स्त्री० [हिं० खर] १. तंग गली।

कूचा। २.चौपायों को चारा देने की नांद। स्त्री० [हिं० खोरना] स्नान। नहान।
खोरना-अ० [सं० क्षालन] नहाना।
खोरा-पुं० [सं० खोलक या फा० आबखोरा] [स्त्री० अल्पा० खोरिया] कटोरा। वि० दे० 'खोंड़ा'।
खोरि*-स्त्री० [हिं० खर] तंग गली। स्त्री० [सं० खोट या खोर] १. ऐब। दोष। २. बुराई।
खोरिया-स्त्री० [हिं० खोरा] १. छोटी कटोरी। २. माथे पर लगाने के चमकीले बुंदे। (स्त्रियां)
खोरी-स्त्री० दे० 'कटोरी'।
खोल-पुं० [सं० खोल=कोश] १.आवरण। गिलाफ। २. कीड़ों का वह ऊपरी चमड़ा जो समय समय पर वे बदला करते है। ३. मोटी चादर।
खोलना-स० [सं० खुड्, खुल्=भेदना] १. ढकने, बांधने, जोड़ने या रोकनेवाली वस्तु हटाना। २. दरार या छेद करना। ३. कोई क्रम चलाना या जारी करना। ४. सड़क, नहर आदि चलती करना। ५. व्यापार या दैनिक कार्य आरम्भ करना। ६. गुप्त या गूढ़ बात प्रकट या स्पष्ट कर देना।
खोली-स्त्री० [हिं० खोल] आवरण। गिलाफ। जैसे-तकिये की खोली।
खोसना†-स० दे० 'छीनना'।
खोह-स्त्री० [सं० गोह] गुफा। कन्दरा।
खोही-स्त्री० [सं० खोलक] १. पत्तों की छतरी। २. घोघी।
खौं-स्त्री० [सं० खन्] १. गड्ढा। २. अन्न रखने का गड्ढा। खाती।
खौंट*-स्त्री० [हिं० खोंटना] १. खोंटने की क्रिया या भाव। २. दे० 'खरोंट'।
खौफ-पुं० [अ०] [वि० खौफनाक] डर। भय। भीति। दहशत।
खौर-पुं० [सं० क्षौर या क्षुर] [क्रि० खौरना] १. चन्दन का तिलक। टीका। २. स्त्रियों के सिर का एक गहना।
खौरहा†-वि० [हिं० खौरा+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० खौरही] १. जिसके बाल झड़ गये हों। २. जिसे खौरा का रोग हुआ हो। (पशु)
खौरा-पुं० [सं० क्षौर, या फा० बालखोरा] पशुओं की एक प्रकार की खुजली, जिसमें उनके बाल झड़ जाते हैं। वि० जिसे खौरा रोग हुआ हो।
खौलना-अ० दे० 'उबलना'।
ख्यात-वि० [सं०] प्रसिद्ध।
ख्याति-स्त्री० [सं०] १.प्रसिद्धि। शोहरत। २.अच्छा काम करने से होनेवाली बड़ाई। कीर्ति। यश।
ख्याल*-पुं०[हिं०खेल]१.खेल। २.दिल्लगी। पुं० दे० 'खयाल'।
ख्याली-वि० दे० 'खयाली'।
ख्रिष्टान-पुं० दे० 'ईसाई'।
ख्रिष्टीय-वि० दे० 'ईसवी'।
ख्रीष्ट-पुं० दे० 'ईसा' (मसीह)।
ख्वाजा-पुं० [फा०] १. मालिक। २. सरदार। ३. ऊँचे दरजे का मुसलमान फकीर। ४. रनिवास का नपुंसक भृत्य। ख्वाजासरा।
ख्वार-वि० [फा०] [संज्ञा ख्वारी] १. खराब। २. बरबाद। ३. तिरस्कृत।
ख्वाह-अव्य० [फा०] या। अथवा। यौ०-**ख्वाह-म-ख्वाह**=१. चाहे कोई चाहे या न चाहे। जबर्दस्ती। २.अवश्य।
ख्वाहिश-स्त्री० [फा०] इच्छा।
ख्वैना*-स० दे० 'खोना'।

ग

ग-व्यंजन में कवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान कंठ है। प्रत्यय रूप में इसके अर्थ होते हैं—१. गानेवाला ; जैसे-सामग। २. जानेवाला; जैसे-निम्नग।

गंग-स्त्री० दे० 'गंगा'।

गंग-बरार-वि० [हिं० गंगा+फा० बरार] (वह जमीन) जो किसी नदी का पानी हटने से निकल आती है।

गंग-शिकस्त-वि० [हिं० गंगा+फा० शिकस्त] (वह जमीन) जिसे कोई नदी काट ले गई हो।

गंगा-स्त्री० [सं०] भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध पवित्र नदी।

गंगा-गति-स्त्री० [सं०] मृत्यु।

गंगा-जमनी-वि० [हिं० गंगा+जमुना] १. मिला-जुला। दो-रंगा। २. जिसमें दो या कई धातुएँ, वस्तुएँ या रंग मिले हों।

गंगा-जली-स्त्री० [सं० गंगा-जल] १. वह सुराही या बरतन जिसमें यात्री गंगा-जल ले जाते हैं।

गंगाधर-पुं० [सं०] शिव।

गंगापुत्र-पुं० [सं०] १. भीष्म। २. एक प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के तट पर बैठकर दान लेते हैं।

गंगा-यात्रा-स्त्री० [सं०] १. मरते हुए मनुष्य को नदी के तट पर मरने के लिए ले जाना। २. मृत्यु। मौत।

गंगाल-पुं० दे० 'कंडाल'।

गंगा-लाभ-पुं० [सं०] मृत्यु।

गंगावतरण-पुं० [सं०] गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना।

गंगा-सागर-पुं० [हिं० गंगा+सागर] १. एक तीर्थ जो उस स्थान पर है, जहाँ गंगा समुद्र में मिलती है। २. एक प्रकार की बड़ी झारी।

गंगोभ*-पुं० [सं० गंगोदक] गंगा-जल।

गंगोदक-पुं० [सं०] गंगा-जल।

गँगौटी-स्त्री० [हिं० गंगा+मिट्टी] गंगा के किनारे की मिट्टी।

गंज-पुं० [सं० कंज या खंज] सिर के बाल झड़ने का रोग। खल्वाट।
पुं० [फा०, सं०] १. खजाना। कोष। २. ढेर। राशि। ३. समूह। झुंड। ४. अनाज की मंडी। ५. हाट। बाजार।

गंजन-पुं० [सं०] १. अवज्ञा। तिरस्कार। २. पीड़ा। कष्ट। ३. नाश।

गंजना*-स० [सं० गंजन] १. अवज्ञा करना। निरादर करना। २. चूर-चूर करना। ३. नष्ट करना।

गंजा-पुं० [सं० खंज या कंज] वह जिसके सिर के बाल झड़ गये हों।

गँजाना*-अ० दे० 'गँजना'।
स० हिं० 'गोंजना' का स०।

गंजी-स्त्री० [हिं० गंज] १. ढेर। समूह। २. शकर-कंद। कंदा।
स्त्री० बुनी हुई छोटी कुरती। बनियायन।
पुं० दे० 'गँजेड़ी'।

गंजीफा-पुं० [फा०] १. एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है। २. ताश।

गँजेड़ी-वि० [हिं० गाँजा+एड़ी (प्रत्य०)] गाँजा पीनेवाला।

गँठ-जोड़ा (बंधन)-पुं० [हिं० गाँठ+जोड़ना] १. विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के दुपट्टे को परस्पर बाँध

देते हैं। २. दो चीजों या व्यक्तियों का प्रायः बना रहनेवाला साथ।

गंड-पुं० [सं०] १. कपोल। गाल। २. कनपटी। ३. गंडा, जो गले में पहना जाता है। ४. फोड़ा। ५. चिह्न या निशान। ६. गोल मंडलाकार चिह्न या लकीर। गंडा। ७. गाँठ।

गंडक (ी)-स्त्री० [सं०] गंगा में मिलनेवाली उत्तर भारत की एक नदी।

गँडदार-पुं० दे० 'गड़दार'।

पुं० [सं० गंड या गंडासा+फा० दार (प्रत्य०)] महावत। हाथीवान।

गंड-माला-स्त्री०दे० 'कंठ-माला' (रोग)।

गंड-स्थल-पुं० [सं०] कनपटी।

गंडा-पुं० [सं० गंडक] गाँठ।

पुं० मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ वह धागा जो रोग या प्रेत-बाधा दूर करने के लिए गले या हाथ में बाँधते हैं।

पुं० [सं०गंडक] गिनने में चार का समूह।

पुं० [सं० गंड=चिह्न] १. आड़ी लकीरों की पंक्ति। २. तोते आदि चिड़ियों के गले की रंगीन धारी। कंठी। हँसली।

गँडासा-पुं० [हिं० गँड़ी+सं० असि] [स्त्री० अल्पा० गँडासी] चौपायों का चारा या घास के टुकड़े काटने का हथियार।

गँडेरी-स्त्री० [सं० कांड या गंड] ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।

गंदगी-स्त्री० [फा०] १. गंदा होने का भाव। मैलापन। मलिनता। २. अपवित्रता। अशुद्धता। ३. विष्ठा। मल।

गंदना-पुं० [सं० गंधन] लहसुन या प्याज की तरह का एक कंद।

गँदला-वि० दे० 'गंदा'।

गंदा-वि० [फा० गन्दः] [स्त्री० गंदी] १. मैला। मलिन। २. अशुद्ध। ३. घृणित।

गंदुमी-वि० [फा० गंदुम=गेहूँ] १. गेहूँ या उसके आटे का बना हुआ। २. गेहूँ के रंग का। गेहुँआ।

गंध-स्त्री० [सं०] १. वायु में मिले हुए किसी वस्तु के सूक्ष्म कणों का प्रसार, जिसका ज्ञान या अनुभव नाक से होता है। बास। महक। २. सुगंध। ३. वह सुगन्धित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है। ३. सूक्ष्म अंश। लेश।

गंधक-स्त्री० [सं०] [वि० गंधकी] एक जलनेवाला पीला खनिज पदार्थ।

गंधकी-वि० [हिं० गंधक] गंधक के रंग का। हलका पीला।

गंधर्व-पुं० [सं०] [सं० स्त्री० गंधर्वी, हिं० स्त्री०गंधर्विन] १. देवताओं की एक कोटि जो गाने में निपुण है। २. प्रेतात्मा। ३. एक जाति जिसकी कन्याओं का काम नाचना-गाना है।

गंधर्व-नगर-पुं० [सं०] १. मिथ्या या काल्पनिक नगर। २. मिथ्या ज्ञान। ३ चन्द्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है।

गंधवह-पुं० [सं०] १. वायु। २. चन्दन। वि० १. गन्ध ले जाने या पहुँचानेवाला। २. सुगंधित। खुशबूदार।

गंधा-वि०स्त्री० [सं०] गंधवाली। (यौगिक शब्दों के अंत में: जैसे-मत्स्यगंधा)

गंधाना-अ० [हिं० गंध] १. गंध देना। २. दुर्गंध करना।

गंधा-बिरोजा-पुं० [हिं० गंध+बिरोजा] चीड़ नामक वृक्ष का गोंद।

गंधार-पुं० दे० 'गांधार'।

गंधी-पुं० [सं० गंधिन्] [स्त्री० गंधिनी, गंधिन] १. सुगंधित तेल आदि बेचनेवाला। अत्तार। २. गँधिया घास। गाँधी।

३. गँधिया कीड़ा।

गँधीला-वि० [हिं० गंध] बदबूदार।

गंभीर-वि० [सं०] [भाव० गंभीरता, गांभीर्य] १. बहुत गहरा। २. घना। ३. जिसका अर्थ कठिन हो। गूढ़। जटिल। ४. विकट। भारी। ५. शांत। धीर।

गँवँ-स्त्री० [सं० गम्य] १. घात। दांव। २. मतलब। प्रयोजन। ३. अवसर। मौक़ा। मुहा०-गँवँ से=धीरे से। चुपके से।

गँवर-मसला-पुं० [हिं० गँवार+अ० मसल] ग्रामीण कहावत या उक्ति।

गँवाना-स० दे० 'खोना'।

गँवार-वि० [हिं० गांव+आर (प्रत्य०)] [स्त्री० गँवारिन, वि० गँवारू, गँवारी] १. ग्रामीण। देहाती। २. असभ्य। ३. बेवकूफ। मूर्ख।

गँवारी-स्त्री० [हिं० गँवार] १. गँवारपन। २. मूर्खता। बेवकूफी। ३. गँवार स्त्री। वि० १. ग्राम्य। गांव का। २. गँवारों का-सा। ३ भद्दा।

गँवारू-वि० दे० 'गँवारी'।

गांस*-पुं० [सं० ग्रंथि] १. द्वेष। बैर। २. चुभनेवाली बात। ताना। स्त्री० [सं० कषा] तीर की नोक।

गँसना*-स० [सं० ग्रंथन] १. कसना। जकड़ना। २. बुनावट में सूतों को खूब पास-पास सटाना। अ० १ बुनावट का ठस होना। २. कसा या जकड़ा जाना।

गँसीला-वि० [हिं० गांसी] [स्त्री० गँसीली] तीर के समान नोकदार।

गइंद*-पुं० दे० 'गयंद'।

गइनाही*-स्त्री० [सं० ज्ञान] जानकारी।

गई करना*-अ० [हिं० गई+करना] अनुचित बात पर ध्यान न देना। तरह देना। उपेक्षा करना। छोड़ देना।

गई-बहोर-वि० [हिं० गया+बहुरना] खोई हुई वस्तु वापस दिलाने अथवा बिगड़ा हुआ काम बनानेवाला।

गऊ-स्त्री० [सं० गो] गाय। गौ।

गगन-पुं० [सं०] आकाश। आसमान।

गगनगढ़-पुं० [सं० गगन+गढ़] बहुत ऊँचा महल या इमारत।

गगन-चुंबी-वि० दे० 'गगन-भेदी'।

गगन-धूल-स्त्री० [सं० गगन+हिं० धूल] १. एक प्रकार का कुकुरमुत्ता। २. केतकी के फूल की धूल।

गगन-भेदी (स्पर्शी)-वि० [सं०] आकाश तक पहुँचनेवाला। बहुत ऊँचा।

गगरा-पुं० [सं० गर्गर] [स्त्री० अल्पा० गगरी] धातु का बड़ा घड़ा। कलसा।

गच-स्त्री० [अनु०] १ किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द। २. चूने-सुरखी का मसाला। ३. चूने-सुरखी से बनी ज़मीन। पक्का फ़र्श।

गचकारी-स्त्री० [हिं० गच+फा० कारी] गच का काम। चूने-सुरखी का काम।

गचना*-स० [अनु० गच] १. बहुत कसकर भरना। २. दे० 'गासना'।

गछना*-अ० [सं० गच्छ] जाना। चलना। स० १. चलाना। निभाना। २. अपने जिम्मे लेना। अपने ऊपर लेना।

गजंद*-पुं० दे० 'गयंद'।

गज-पुं० [सं०] [स्त्री० गजी] १ हाथी। २. आठ की संख्या। पुं० [फा० गज़] १. लम्बाई नापने की एक नाप जो कपड़ों के लिए सोलह गिरह या तीन फुट और लकड़ी के लिए दो फुट की होती है। २. इस नाप का लोहे या लकड़ी का छड़। ३. लोहे या लकड़ी का

वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बन्दूक या तोप भरी जाती थी। ४ एक प्रकार का तीर।

गजक-स्त्री० [फा० कज़क] १. वह चीज़ जो शराब पीने के समय खाई जाती है। चाट। जैसे-कबाब आदि। २. जल-पान।

गज-गति-स्त्री० [सं०] १. हाथी की-सी मन्द और मस्त चाल।

गजगा-पुं० [सं० गज] हाथियों का एक प्रकार का गहना।

गज-गामिनी-वि० स्त्री० [सं०] हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली।

गजगाह-पुं० दे० 'झूल' (हाथी की)।

गज-गौन*-पुं० [सं० गज-गमन] हाथी की सी मस्त चाल।

गज-दंत-पुं० [सं०] [वि० गजदंती] १. हाथी का दांत। २. दीवार में गड़ी खूँटी। ३ दांत के ऊपर निकला हुआ दांत।

गजदान-पुं० [सं०] हाथी का मद।

गजना*-अ० दे० 'गाजना'।

गजनाल-स्त्री० [सं०] वह बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे।

गजपति-पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा हाथी। २. वह जिसके पास बहुत से हाथी हों।

गजब-पुं० [अ०] १. कोप। गुस्सा। २.आपत्ति। आफत। ३.अंधेर। अन्याय। ४. विलक्षण बात।

मुहा०-गजब का=बहुत विलक्षण।

गजबाँक (बाग)-पुं० [सं० गज+बांक या बाग] हाथी का अंकुश।

गजमणि (मुक्ता)-स्त्री० [सं०] वह कल्पित मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है।

गज-मोती-पुं० दे० 'गजमणि'।

गजर-पुं० [सं० गर्जन, हिं० गरज] १. पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द। २. बहुत सबेरे के समय घंटा बजना।

गजरा-पुं० [हिं० गंज] १. फूलों की बड़ी माला। २. एक गहना जो कलाई पर पहना जाता है।

गजराज-पुं० [सं०] बड़ा हाथी।

गजल-स्त्री० [फा०] फारसी और उर्दू में एक प्रकार का पद्य।

गज-वदन-पुं० [सं०] गणेश।

गजवान-पुं० [हिं० गज+वान] हाथीवान।

गजशाला-स्त्री० [सं०] हाथियों के बांधने का स्थान। फीलख़ाना।

गजा-पुं० [फा० गज] नगाड़ा बजाने का डंडा।

गजाधर-पुं० दे० 'गदाधर'।

गजानन-पुं० [सं०] गणेश।

गजी-स्त्री० [फा० गज़] एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा। गाढ़ा।
स्त्री० [सं०] हथिनी।

गजेन्द्र-पुं० [सं०] बड़ा हाथी।

गज्जूह*-पुं० [सं० गज+व्यूह] हाथियों का झुंड।

गझिन-वि० [हिं० गझना] १ सघन। घना। २ ठस बुनावट का।

गटकना-स० [गट से अनु०] १. निगलना। २. हड़पना।

गटकीला-वि० [हिं० गटकना] गटकने या निगलनेवाला।

गट गट-स्त्री० [अनु०] निगलने या घूँटने के समय गले में होनेवाला शब्द।

गट-पट-स्त्री० [अनु०] १. बहुत अधिक मेल। घनिष्ठता। २. सहवास। संभोग।

गटर-माला-स्त्री० [गटर ? + माला] बड़े दानों की माला।

गटा*-पुं० दे० 'गट्टा'।

गटी*-स्त्री० [सं० ग्रंथि] गाँठ।

गट्टा-पुं० [सं० ग्रंथ, प्रा० गंठ, हिं० गाँठ] १. हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। कलाई। २. पैर की नली और तलवे के बीच की गाँठ। ३. एक प्रकार की मिठाई।

गट्ठर-पुं० [हिं० गांठ] बड़ी गठरी।

गट्ठा-पुं० [हिं० गाँठ] [स्त्री० अल्पा० गट्ठी, गठिया] १. घास, लकड़ी आदि का बोझ। २. बड़ी गठरी। गट्ठर।

गठन-स्त्री० [सं० घटन] बनावट।

गठना-अ० [सं० ग्रथन] १. दो वस्तुओं का मिलकर एक होना। जुड़ना। सटना। यौ०-**गठा बदन**=हृष्ट-पुष्ट शरीर। २. कोई गुप्त विचार या कुचक्र करना। ३. अनुकूल या ठीक होना। सधना। ४. अच्छी तरह बनना या होना। ५. बहुत मेल-मिलाप होना।

गठरी-स्त्री० [हिं० गट्ठर] १ कपड़े में गाँठ लगाकर बाँधा हुआ सामान। बड़ी पोटली। २. माल। रकम। धन। मुहा०-**गठरी मारना**=अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना। ठगना।

गठवाना-स० [हिं० गाँठना] १. गठाना। सिलवाना। २. जोड़ लगवाना।

गाँठत-वि०[सं० घटित] गठा हुआ।

गाँठबंध*-पुं० दे० 'गँठ-जोड़ा'।

गाँठया-स्त्री० [हिं० गाँठ] १. बोझ लादने का बोरा या थैला। २. बड़ी गठरी। ३. एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

गठियाना[1]-स० [हिं० गाँठ] १. गाँठ लगाना। २. गाँठ में बाँधना।

गठीला-वि० [हिं० गाँठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री०गठीली] जिसमें बहुत-सी गाँठें हों। वि० [हिं० गठना] १. गठा हुआ। चुस्त। २. मजबूत। दृढ़।

गठौत-स्त्री० [हिं० गठना] १. मेल-मिलाप। मित्रता। २ मिलकर पक्की की हुई गुप्त बात। अभिसंधि।

गड़ंग[1]-पुं० [सं० गर्व] [वि० गड़ंगिया] १. घमंड। शेखी। २. आत्म श्लाघा। अपनी बड़ाई। डींग।

गड-पुं० दे० 'गड्डु'।

गड़कना*-अ० [अ० गर्क़] डूबना। अ० दे० 'गरजना'।

गड़गड़ा-पुं० [अनु०] बड़ा हुक्का।

गड़गड़ाना-अ० [हिं० गड़गड़] [भाव० गड़गड़ाहट] गड़गड़ शब्द होना। स० गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना।

गड़दार-पुं० [हिं० गँड़ासा+दार] १. वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ भाला लेकर चलता है। २. महावत।

गड़ना-अ० [सं० गर्त] १. धँसना। चुभना। २. खुरखुरा लगना। ३. दर्द करना। दुखना। ४. मिट्टी के नीचे दबना। दफन होना। मुहा०-**गड़े मुरदे उखाड़ना**=दबी-दबाई या पुरानी बातें उठाना। ५. समाना। ६. जमकर खड़ा होना।

गड़पना-स० [अनु०] १. निगलना। २. अनुचित रूप से दबा बैठना।

गड़प्पा-पुं० [हिं० गाड़] १. गड्ढा। २. धोखा खाने का स्थान।

गड़-बड़-वि० [हिं० गड्ढा+बड़=बड़ा ऊँचा] [वि० गड़बड़िया] १. ऊँचा-नीचा। २. अव्यवस्थित। ३. खराब। बुरा। पुं० १. क्रम-भंग। २. अव्यवस्था। कुप्रबन्ध। यौ०-**गड़-बड़ झाला**=दे० 'गड़बड़'। ३. उपद्रव। दंगा। फसाद।

गड़बड़ाना-अ० [हिं० गड़बड़] १. भूल करना। चूक जाना। भ्रम में पड़ना। २. क्रम-भ्रष्ट होना। अव्यवस्थित होना।
स० १. गड़बड़ी या चक्कर में डालना। २. भ्रम में डालना। भुलवाना। ३. गड़बड़ी या खराबी करना।

गड़बड़ी-स्त्री० दे० 'गड़-बड़'।

गड़रिया-पुं० [सं० गड्डरिक] [स्त्री० गड़ेरिन] भेड़ बकरी पालनेवाली एक जाति।

गड़हा-पुं० [स्त्री० अल्पा० गड़ही] दे० 'गड्ढा'।

गड़ा-पुं० [सं० गण] ढेर। राशि।

गड़ाना-स० [हिं० गड़ना] चुभाना।

गड़ायत*-वि० [हिं० गड़ना] गड़ने या चुभनेवाला।

गडुआ-पुं० [हिं० गेरना] टोंटीदार लोटा।

गडुई-स्त्री० [हिं० गडुआ] पानी रखने का टोंटीदार छोटा बरतन। झारी।

गड़ेरिया-पुं० दे० 'गड़रिया'।

गड़ोना-स० दे० 'गड़ाना'।

गड्ड-पुं० [सं० गण] [स्त्री० गड्डी] एक पर एक रखी हुई एक-सी वस्तुओं की राशि। ढेर।
*पुं० [सं० गर्त] गड्ढा।

गड्ड-बड्ड (मड्ड)-पुं० [हिं० गड्ड] बे-मेल की मिलावट। घाल-मेल।
वि० १. बे-सिलसिले रखा हुआ। २. अंड-बंड।

गड्डी-स्त्री० दे० 'गड्ड'।

गड्ढा-पुं० [सं० गर्त, प्रा० गड्ड] १. गहरा तल या स्थान। गड़हा। २. थोड़े घेरे की गहराई।
मुहा०-किसी के लिए गड्ढा खोदना=किसी के अनिष्ट का उपाय करना।

गढ़ंत-वि० [हिं० गढ़ना] कल्पित। बनावटी (बात)। जैसे-मन-गढ़ंत।
स्त्री० गढ़ने की क्रिया या भाव।

गढ़-पुं० [सं० गड=खाईं] [स्त्री० अल्पा० गढ़ी] १. खाईं। २. किला। दुर्ग।
मुहा०-गढ़ जीतना या तोड़ना=१. किला जितना। २. बहुत कठिन काम पूरा करना।

गढ़न-स्त्री० [हिं० गढ़ना] १. गढ़ने की क्रिया या भाव। २. बनावट। गठन।

गढ़ना-स० [सं० घटन] १. काट-छांट-कर काम की चीज बनाना। रचना। २. सुडौल करना। सँवारना। ३. बात बनाना। ४. मारना। पीटना।

गढ़पति-पुं० [हिं० गढ़+पति] १. किलेदार। २. राजा। ३. सरदार।

गढ़वै*-पुं० दे० 'गढ़पति'।

गढ़ाई-स्त्री० [हिं० गढ़ना] गढ़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गढ़ाना-स० हिं० 'गढ़ना' का प्रे० रूप।

गाढ़िया-पुं० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला।

गढ़ी-स्त्री० [हिं० गढ़] छोटा किला।

गढ़ीश-पुं० [हिं० गढ़+सं० ईश] गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी।

गढ़ैया-वि० [हिं० गढ़ना] गढ़नेवाला।

गढ़ाइ*-पुं० दे० 'गढ़पति'।

गण-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। जैसे-लेखक-गण। २. ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो। ३. शिव के पारिषद्। ४. दूत। ५. सेवक। ६. अनुचरों का दल।

गणक-पुं० [सं०] १. गणना करने या गिननेवाला। २. ज्योतिषी।

गण-तन्त्र-पुं० दे० 'गण-राज्य'।

गणना-स्त्री० [सं०] १ गिनना। २. गिनती। ३. हिसाब।

गफिलाई*-स्त्री० दे० 'ग़फ़लत'।

गबन-पुं० [अ०] दूसरे का धन अनुचित रूप से अपने काम में लाना।

गबरू-वि० [फा० खूबरू] १. उभड़ती जवानी का। पट्ठा। २. भोला-भाला। पुं० दूल्हा। पति।

गब्बर-वि० [सं० गर्व, पा० गब्ब] १. घमंडी। अहंकारी। २.जल्दी काम न करने या उत्तर न देनेवाला। मट्ठर। ३. बहु-मूल्य। कीमती। ४. धनी।

गभस्ति-पुं [सं०] १. किरण। २. सूर्य्य। ३. बाँह। हाथ।

गभस्तिमान्-पुं० [सं०] सूर्य्य।

गभीर*-वि० [स्त्री० गभीरा] दे० 'गंभीर'।

गभुआर†-वि० [सं०गर्भ+आर (प्रत्य०)] १. गर्भ का। जन्म-समय का (बाल)। २.जिसका मुंडन न हुआ हो। ३.अनजान।

ग़म-स्त्री० [सं० गम्य] (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश। पहुँच। गति। पुं० [अ०] १. दुःख। २. शोक।

मुहा०-ग़म खाना=क्षमा करना। जाने देना। ध्यान न देना।

३. चिन्ता। फिक्र।

गमक-पुं० [सं०] १. जानेवाला। २. बतलानेवाला। बोधक। सूचक।

स्त्री० १. संगीत में एक श्रुति या स्वर से दूसरी श्रुति या स्वर पर जाने का ढंग। २ तबले की गंभीर आवाज। ३. सुगंध।

गमकना-अ० [हिं० गमक] महकना।

ग़म-खोर-वि० [फा० ग़मख्वार] [संज्ञा गमखोरी] सहिष्णु। सहन-शील।

गमन-पुं० [सं०] [वि० गम्य] १. जाना। चलना। प्रस्थान। २ संभोग। जैसे-वेश्या-गमन।

गमना*-अ० [सं० गमन] १. जाना। २. चलना।

अ० [अ० ग़म] १. सोच या चिन्ता करना। २. रंज करना। ३. ध्यान देना।

गमला-पुं० [?] १. फूलों के पौधे लगाने का पात्र। २. पाखाना फिरने का बरतन। (कमोड)

गमाना*-स० दे० 'गँवाना'।

ग़मी-स्त्री० [अ० ग़म] १. वह शोक जो किसी आत्मीय के मरने पर मनाते हैं। सोग। २. मृत्यु। मरनी।

गम्य-वि० [सं०] १. जाने योग्य। २. प्राप्य। लभ्य। ३. संभोग करने योग्य। ४. भोग्य। ५. साध्य। सरल। सहज।

गयंद*-पु० [सं० गजेन्द्र] बड़ा हाथी।

गय*-पुं० [सं० गज] हाथी।

गयनाल-स्त्री० दे० 'गजनाल'।

गया-पुं० [सं०] बिहार का एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ हिन्दू पिंड-दान करते है।

अ० [सं० गम] 'जाना' क्रिया का भूत-कालिक रूप।

मुहा०-गया-गुजरा या गया-बीता= १. दुर्दशा को पहुँचा हुआ। २. निकृष्ट। गई करना=ध्यान न देना। जाने देना।

गर-पुं० [सं०] रोग। बीमारी।

*†-पुं० [हिं० गल] गला। गरदन।

प्रत्य० [फा०] करने या बनानेवाला। जैसे-कारीगर, सिकलीगर।

अव्य० दे० 'अगर'।

गरक़-वि० [अ० गर्क़] १. डूबा हुआ। निमग्न। २. नष्ट। बरबाद।

गरगज-पुं० [हिं० गढ़+गज] १. किले का बुर्ज। २. वह ऊँची भूमि जहाँ से शत्रु का पता लगाया जाता है। ३. फाँसी की टिकठी।

† वि० बहुत बड़ा। विशाल।

गरज-स्त्री० [सं० गर्जन] बहुत गंभीर शब्द ; जैसे-बादल या सिंह का। स्त्री० [अ०] १. आशय। प्रयोजन। मतलब। २. आवश्यकता। ३. इच्छा। ४. स्वार्थ।
अव्य० १. निदान। आखिरकार। २. मतलब यह कि।

गरजना-अ० [सं० गर्जन] १. गंभीर और घोर शब्द करना। २. मोती का चटकना, तड़कना या फूटना।
*वि० गरजनेवाला।

गरज-मंद-वि० [फा०] [भाव०गरजमंदी] १. जिसे गरज या आवश्यकता हो। २. इच्छुक। चाहनेवाला।

गरजी(जू)-वि० दे० 'गरजमंद'।

गरट्ट*-पुं० [सं० ग्रंथ] झुंड।

गरद-स्त्री० दे० 'गर्द'।

गरदन-स्त्री० [फा० गर्दन] १. धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। गला। मुहा०-**गरदन उठाना**=१.विरोध करना। २. विद्रोह करना। **गरदन काटना या मारना**=१. मार डालना। २. हानि पहुँचाना। ३.सर्वनाश करना। **गरदन में हाथ देना या डालना**=गरदन पकड़कर निकाल देना।
२. बरतनों आदि में मुँह के नीचे का भाग।

गरदनियाँ-स्त्री० [हिं० गरदन+इयाँ (प्रत्य०)] गरदन पकड़कर धक्का देना या बाहर निकालना।

गरदा-पुं० [फा० गर्द] धूल। गुबार।

गरदान-वि० [फा०] घूम-फिरकर एक ही जगह पर आनेवाला।
पुं० १. शब्दों का रूप-साधन। २. वह कबूतर जो घूम-फिरकर पुनः अपने स्थान पर आ जाता हो। ३. फेर। चक्कर।

गरदानना-स० [फा० गरदान] १. शब्दों के रूप साधना। २. उद्धरणी करना। ३. कुछ समझना या मानना।

गरना*-अ० १. दे० 'गलना'। २. दे० 'गड़ना'। ३. दे० 'निचुड़ना'।

गरनाल-स्त्री० [हिं० गर+नली] बहुत चौड़े मुँह की तोप। घननाल।

गरब*-पुं० [सं० गर्व] १.दे० 'गर्व'। २. हाथी का मद।

गरबई*-स्त्री० दे० 'गर्व'।

गरब-गहेला-वि० [हिं० गर्व+गहना] गर्व करनेवाला। घमंडी।

गरबना*-अ० [सं० गर्व] गर्व करना।

गरबीला-वि० [सं० गर्व] घमंडी।

गरभ-पुं० दे० 'गर्भ'।

गरभाना-अ० [हिं० गर्भ] १.गर्भवती होना। २. धान, गेहूँ आदि में बाल लगना।

गरम-वि० [फा० गर्म] १. जलता हुआ। तप्त। उष्ण। २ तीक्ष्ण। उग्र। ३ क्रुद्ध। मुहा०-**मिजाज गरम होना**= १. क्रोध आना। २. पागल होना।
४. तीव्र। प्रचंड। ५. गरमी पैदा करने या बढ़ानेवाला।
यौ०-**गरम कपड़ा**=ऊनी कपड़ा। **गरम मसाला** = धनियाँ, लौंग, इलायची, जीरा, मिर्च आदि मसाले।
६. उत्साहपूर्ण। जोश से भरा हुआ।

गरमाई-स्त्री० दे० 'गरमी'।

गरमागरम-वि० [फा० गर्म] १. बहुत गरम। २. ताजा।

गरमागरमी-स्त्री० [हिं० गरमा+गरम] १. मुस्तैदी। २. कहा-सुनी।

गरमाना-अ० [हिं० गरम] १. गरम या उष्ण होना। २. उमंग में आना।

मस्ताना। ३. क्रोध या आवेश में आना। ४. कुछ देर तक परिश्रम करने पर शरीर या अंग का वेग पर आना।
स० गरम करना। तपाना।

गरमाहट-स्त्री० [हिं० गरम] १. 'गरम' होने का भाव। २. साधारण या हलका ताप।

गरमी-स्त्री० [फा०] १. उष्णता। ताप। २.जलन। ३. तेज़ी। उग्रता। प्रचंडता।
मुहा०-**गरमी निकालना** = गर्व दूर करना।
४. क्रोध। गुस्सा। ५. उमंग। जोश। ६.ग्रीष्म काल। ७.दुष्ट मैथुन से उत्पन्न एक रोग। आतशक या फिरंग रोग।

गररा*-पुं० दे० 'गर्रा'।

गरराना-अ० [अनु०] गरजना।

गरल-पुं० [सं०] विष। ज़हर।

गरवा*-वि० [सं० गुरु] १. भारी। २. महान्।
पुं० दे० 'गला'।

गरसना-स० दे० 'ग्रसना'।

गरहन।-पुं० दे० 'ग्रहण'।

गराँव-पुं० [हिं० गर=गला] वह रस्सी जो चौपायों के गले में बाँधी जाती है।

गरा।*-पुं० दे० 'गला'।

गराज*-स्त्री० [सं० गर्जन] गरजने की क्रिया या भाव। गरज।

गराड़ी-स्त्री० [अनु० गड़गड़ या सं० कुंडली] काठ या धातु का वह गोल चक्कर जिसपर रस्सी डालकर कूएँ से पानी निकालते या पंखा खींचते हैं। चरखी।

गराना*-स० दे० 'गलाना'।
स० हिं० 'गारना' का प्रे०।

गरानि(नी)*-स्त्री० दे० 'ग्लानि'।

गरारा-वि० [सं० गर्व+आर (प्रत्य०)] १. गर्वयुक्त। २. प्रबल। प्रचंड।
पुं० [अ० ग़रग़रा] १. कुल्ला। २. कुल्ला करने की दवा।
पुं० [हिं० घेरा] १. पायजामे की ढीली मोहरी। २. बड़ा थैला।

गरासना*-स० दे० 'ग्रसना'।

गरिमा-स्त्री० [सं० गरिमन्] १. गुरुत्व। भारीपन। २. महिमा। महत्व। गौरव। ३ घमंड। अहंकार। ४. आत्म-श्लाघा। शेखी। ५. आठ सिद्धियों में से एक, जिसके द्वारा साधक अपना शरीर भारी कर सकता है।

गरियार-वि० [हिं० गड़ना=एक जगह रुक जाना] सुस्त। मट्ठर। (चौपाया)

गरिष्ठ-वि० [सं०] १. बहुत गुरु। बहुत भारी। २. जो जल्दी न पचे।

गरी-स्त्री० [सं० गुलिका] १ नारियल के फल के अन्दर का मुलायम गूदा। २. बीज के अन्दर की गिरी। मींगी।

गरीब-वि० [अ० ग़रीब] १. नम्र। दीन-हीन। २. दरिद्र। निर्धन।

गरीब-निवाज़-वि०[फा०गरीब+निवाज़] गरीबों पर दया करनेवाला। दयालु।

गरीब-परवर-वि० [फा० गरीब+परवर] गरीबों को पालनेवाला। दीन-प्रतिपालक।

गरीबी-स्त्री० [अ० गरीब] १. दीनता। नम्रता। २. दरिद्रता। निर्धनता।

गरीयस-वि० [सं०] [स्त्री० गरीयसी] १.बहुत भारी। गुरु। २. महान्।

गरु(आ)*।-वि० [सं० गुरु] [स्त्री० गरुई, भाव० गरुआई] १.भारी। वजनी। २. गौरवशाली। ३. जिसका स्वभाव गंभीर हो। शान्त। धीर।

गरुआना।-अ० [सं० गुरु] भारी होना।

गरुड़-पुं० [सं०] १. पक्षियों के राजा,

जो विष्णु के वाहन हैं।
गरुड़ध्वज-पुं० [सं०] विष्णु।
गरुड़-सिंह-पुं० [सं०] वह कल्पित आकृति, जिसका अगला भाग गरुड़ के समान तथा पिछला सिंह के समान हो।
गरुता-स्त्री० दे० 'गुरुता'।
गरुवाई*-स्त्री० दे० 'गुरुता'।
गरू†-वि० दे० 'गुरु'।
गरूर-पुं० [अ०] घमंड। अभिमान।
गरूरत(ा)-स्त्री० दे० 'गरूर'।
गरूरी†-वि० [अ० गुरूर] घमंडी।
* स्त्री० अभिमान। घमंड।
गरेरना-स० दे० 'घेरना'।
गरोह-पुं० [फा०] झुंड। जत्था। दल।
गर्ज-स्त्री० दे० 'गरज'।
गर्जन-पुं० [सं०] घोर शब्द करना। गरजना।
गर्जना-अ० दे० 'गरजना'।
स्त्री० दे० 'गर्जन'।
गर्त्त-पुं० [सं०] १. गड्ढा। २. दरार।
गर्द-स्त्री० [फा०] धूल। राख।
गर्दखोर(ा)-वि० [फा० गर्दखोर] जो गर्द या धूल पड़ने से जल्दी मैला न हो।
पुं० पैर पोछने का टाट आदि।
गर्द-गुबार-पुं० [फा०] धूल-मिट्टी।
गर्दन-स्त्री० दे० 'गरदन'।
गर्दभ-पुं० [सं०] गधा।
गर्दिश-स्त्री० [फा०] १. घुमाव। चक्कर। २. विपत्ति। आफत।
गर्भ-पुं० [सं०] १. पेट के अन्दर का बच्चा। २. गर्भाशय। पेट।
मुहा०-गर्भ गिरना = गर्भपात होना। गर्भ रहना=पेट में बच्चा आना।
गर्भ-केसर-पुं० [सं०] फूलों में के वे पतले सूत जो गर्भनाल में होते हैं।
गर्भ-गृह-पुं० [सं०] १. मकान के अन्दर की कोठरी। २. आँगन। ३. मन्दिर में वह कोठरी जिसमें मूर्ति रहती है।
गर्भ-पात-पुं० [सं०] गर्भ के बच्चे का पूरी बाढ़ से पहले पेट में से निकल जाना। गर्भ गिरना।
गर्भवती-वि० स्त्री० [सं०] जिसके पेट में बच्चा हो। गर्भिणी।
गर्भस्थ-वि० [सं०] जो गर्भ में हो।
गर्भ-स्राव-पुं० [सं०] चार महीने से कम का गर्भ गिरना।
गर्भांक-पुं० [सं०] १.एक नाटक में किसी दूसरे नाटक का दृश्य। २. नाटक के अंक में का कोई दृश्य।
गर्भागार-पुं० दे० 'गर्भ-गृह'।
गर्भाधान-पुं० [सं०] १. गर्भ ठहरना। गर्भ-धारण। २. गर्भ-धारण के समय का एक संस्कार।
गर्भाशय-पुं० [सं०] स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें गर्भ या बच्चा रहता है।
गर्भिणी-स्त्री० [सं०] गर्भवती।
गर्भित-वि० [सं०] किसी के अन्दर भरा या पड़ा हुआ।
गर्भीला-वि० [हिं० गर्भ] (रत्न) जिसके अन्दर से आभा निकलती हो।
गर्रा-वि० [देश०] लाख के रंग का।
पुं० १. लाख का रंग। २. इस रंग का घोड़ा। ३. इस रंग का कबूतर।
गर्व-पुं० [सं०] अहंकार। घमंड। शेखी।
गर्वाना*-अ० [सं० गर्व] गर्व करना।
गर्विणी-वि०स्त्री०[सं०] घमंड करनेवाली।
गर्विता-स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण आदि का घमंड हो।
गर्वीला-वि० [सं० गर्व+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० गर्वीली] घमंडी। अभिमानी।

गर्हण-पुं० [सं०] निन्दा। शिकायत।

गर्हित-वि० [सं०] दूषित। बुरा।

गल-पुं० [सं०] गला। कंठ।

गल-कंबल-पुं० [सं०] गौ के गले के नीचे की झालर।

गलका-पुं० [हिं० गलना] १. एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों में होता है। २. एक प्रकार का चाबुक।

गल-गंज पुं० [हिं० गाल+गाजना] [क्रि० गलगंजना] शोर-गुल। हल्ला।

गलगल-स्त्री० [देश०] १. मैना की तरह की एक चिड़िया। सिरगोटी। २. एक प्रकार का बहुत बड़ा नीबू।

गलगला*-वि० [हिं० गीला] तर।

गलगाजना-अ० [हिं० गाल+गाजना] १. डींग मारना। २. हर्षित होना।

गल-गुथना-वि० [हिं० गाल] जिसका बदन खूब भरा और गाल खूब फूले हों।

गल-ग्रह-पुं० [सं०] आई हुई वह आपत्ति जो कठिनता से टले।

गलछुट-स्त्री० दे० 'गलफड़ा'।

गल-जँदड़ा-पुं० [सं० गल+यंत्र, पं० जंदरा] १. पीछा न छोड़नेवाला व्यक्ति, पदार्थ आदि। २. चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिए गले से बँधी हुई पट्टी।

गल-झंप-पुं० [हिं० गला+झाँपना] हाथी के गले की लोहे की जंजीर।

गलतंस-पुं० [सं० गलित+वंश] निः-सन्तान व्यक्ति की सम्पत्ति। ला-वारिस जायदाद या माल।

गलत-वि० [अ०] [संज्ञा गलती] १. अशुद्ध। २. असत्य। मिथ्या।

गल-तकिया-पुं० [हिं० गाल+तकिया] गालों के नीचे रखने का तकिया।

गलतान-वि० [फा० गल्ताँ] लुढ़कता या लड़खड़ाता हुआ।

पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

गलती-स्त्री० [अ० गलत+ई] १. भूल। चूक। २. अशुद्धि।

गल-थना-पुं० [सं० गल-स्तन] वे झूठे थन जो कुछ बकरियों के गले में होते हैं।

गलन-पुं० [सं०] १. गिरना। २ गलना।

गलना-अ० [सं० गरण] १. किसी चीज का घनत्व घटना। द्रव या कोमल होना। २. बहुत जीर्ण होना। ३. शरीर क्षीण होना। ४. सरदी से हाथ-पैर ठिठुरना। ५. बेकाम होना।

गलफड़ा-पुं० [हिं० गाल+फटना] १. जल-जंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं। २.गाल का चमड़ा।

गल-फाँसी-स्त्री० [हिं० गला+फाँसी] १. गले की फाँसी। २.कष्टदायक बात।

गल-बहियाँ(बाँहीं)-स्त्री० [हिं० गला+ बाँह] गले में बाँहें डालना। आलिंगन। गले लगाना।

गल-मँदरी-स्त्री० [हिं० गाल+सं० मुद्रा] शिव जी के पूजन के समय गाल बजाना। गल-मुद्रा।

गल-मुच्छा-पुं० [हिं० गाल+हिं० मूँछ] गालों पर के बढ़े हुए बाल। गल-गुच्छा।

गल-मुद्रा-स्त्री० दे० 'गल-मँदरी'।

गलवाना-स० हिं० 'गलना' का प्रे० रूप।

गल-शुंडी-स्त्री० [सं०] १.जीभ की जड़ के पास की छोटी घंटी। जीभी। कौआ। २. एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है।

गल-सुई*-स्त्री० दे० 'गल-तकिया'।

गल-स्तन-पुं० [सं०] गल-थना।

गलही-स्त्री० [हिं० गला] नाव का अगला उठा हुआ कोना।

गला-पुं० [सं० गल] १. सिर को धड़ से जोड़नेवाला अंग। कंठ। गरदन।
मुहा०-गला काटना=१. धड़ से सिर अलग करना। २.बहुत हानि पहुँचाना। ३. सूरन आदि का गले में जलन उत्पन्न करना। गला घुटना=साँस रुकना। गला घोंटना=१. जोर से गला दबाना। २. जबरदस्ती करना। गला छूटना= छुटकारा या मुक्ति मिलना। गला दबाना=अनुचित दबाव डालना। गले का हार=कभी अलग न होनेवाला। (बात) गले के नीचे या गले में उतरना=मन में बैठना। मन में जँचना। गले पड़ना=इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना। गले बाँधना या मढ़ना=किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। गले लगाना=१.छाती से लगाकर मिलना। २. किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। गले मढ़ना।
२. गले की नाली जिससे शब्द निकलता और भोजन अन्दर जाता है।
मुहा०-गला फाड़ना=बहुत जोर से चिल्लाना।
३. कंठ का स्वर। ४. बरतन के मुँह के नीचे का भाग।

गलाना-स० हिं० 'गलना' का स०।

गलानि*-स्त्री० दे० 'ग्लानि'।

गलित-वि० [सं०] १. गिरा हुआ। च्युत। २. गला हुआ। ३. अत्यन्त जीर्ण और खंडित। ४. चूआ हुआ। ५. बहुत पका या सड़ा हुआ।

गलित कुष्ट-पुं० [सं०] वह कोढ़ जिसमें अंग गल-गलकर गिरने लगते हैं।

गलित-यौवना-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।

गलियारा-पुं० [हिं० गली] गली की तरह का छोटा तंग रास्ता।

गली-स्त्री० [सं० गल] १. बस्ती में का तंग रास्ता। कूचा।
मुहा०-गली गली मारे फिरना=१. इधर-उधर व्यर्थ घूमना या भटकना। २ चारों ओर अधिकता से मिलना।

गलीचा-पुं० दे० 'कालीन'।

गलीज-वि० [अ०] १. गन्दा। मैला। २. अशुद्ध। अपवित्र।
पुं० १. गन्दगी। २. मल। गुह।

गलीत*-वि०[अ०गलीज] मैला-कुचैला।

गले-बाजी-स्त्री० [हिं० गला+बाजी] १ बहुत बढ़-बढ़कर बातें बनाना। डींग। २. पक्का गाना गाते समय बहुत तानें आदि लेना।

गल्प-स्त्री० [सं० जल्प या कल्प] १ मिथ्या प्रलाप। गप्प। २. छोटी कहानी।

गल्ला-पुं०[फा०गल्ल.] (पशुओं का) झुंड।
पुं० [अ० ग़ल्लः] १. अन्न। अनाज। २. वह सन्दूक जिसमें दूकान की रोज की बिक्री के रुपये रहते हैं। गोलक।

गल्हाना*-अ० [सं० गल्प] बात करना।

गवन*-पुं० [सं० गमन] १. गमन। जाना। २. गौना। (रस्म)

गवनचार-पुं० [हिं० गवन+चार] वधू का पहले-पहल वर के घर जाना। गौना।

गवनना*-अ० [सं० गमन] जाना।

गवाक्ष-पुं० [सं०] छोटी खिड़की।

गवाख*-पुं० दे० 'गवाक्ष'।

गवाना-स० हिं० 'गाना' का प्रे०।

गवारा-वि० [फा०] १. अंगीकार करने योग्य। २. सह्य।

गवास*-पुं० [सं० गवाशन] कसाई।
स्त्री० [हिं० गाना] गाने की इच्छा।

गवाह-पुं० [फा०] [भाव० गवाही] १. वह मनुष्य जिसने कोई घटना स्वयं देखी हो। २. वह जो किसी विवाद के विषय में अपनी जानकारी बतलावे। साक्षी।

गवाही-स्त्री० [फा०] गवाह का कथन या बयान। साक्षी का कथन। साक्ष्य।

गवेजा*-पुं० [?] बात-चीत।

गवेषणा-स्त्री० [सं०] खोज। अन्वेषण।

गवेषी-वि० [सं० गवेषिन्] [स्त्री० गवेषिणी] खोजनेवाला।

गवेसना*-स० [सं० गवेषण] ढूँढ़ना।

गवैया-वि० [हिं० गाना] गायक। अच्छा गानेवाला।

गव्य-वि० [सं०] जो गाय से उत्पन्न या प्राप्त हो। जैसे-दूध, दही, घी आदि।
पुं० १. गायों का झुंड। २. पचगव्य।

गश-पुं० [अ० गशी से फा०] मूर्च्छा। बेहोशी।

गश्त-पुं० [फा०] [वि० गश्ती] १. टहलना। घूमना। भ्रमण। २. पहरा देने के लिए चक्कर लगाना। पहरा।

गश्ती-वि० [फा०] १. घूमनेवाला। २. चलता-फिरता हुआ। ३. कुछ विशेष प्रकार के लोगों के पास पहुँचनेवाला (पत्र या चिट्ठी आदि)।
वि० स्त्री० व्यभिचारिणी। कुलटा।

गसीला-वि० [हिं० गसना] [स्त्री० गसीली] १. जकड़ा, गठा या गुथा हुआ। २. (कपड़ा) जिसके सूत खूब सटे या मिले हों। गफ।

गस्सा-पुं० [सं० ग्रास] ग्रास। कौर।

गह-स्त्री० [सं० ग्रह] १. पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़। २. हथियार आदि की मूठ। दस्ता।

गहकना-अ० [सं० गद्‌गद] १. चाह या लालसा से भरना। ललकना। २. उमंग में आना।

गहगड्ड-वि० [सं० गह=गहरा+गड्ड=ढेर] गहरा। घोर। (नशा)

गहगह(ा)-वि० [सं० गद्‌गद] १. उमग से भरा हुआ। प्रफुल्लित। प्रसन्न। २. धूमधामवाला। (बाजा)

गहगहाना-अ० [हिं० गहगहा] १. आनन्द से फूलना। बहुत प्रसन्न होना। २. पौधों का लहलहाना।

गहगहे-क्रि० वि० [हिं० गहगहा] १. बहुत प्रसन्नता से। २. धूम से।

गहडोरना-स० [देश०] पानी मथकर गंदा करना।

गहन-वि० [सं०] [भाव० गहनता] १. गम्भीर। २. दुरूह। कठिन। ३. दुर्गम। दुर्भेद्य। ४. निविड़। घना।
पुं० १. गहराई। थाह। २. दुर्गम स्थान। ३. वन मे का गुप्त स्थान।
पुं० [सं० ग्रहण] १. ग्रहण। उपराग। २. लेना। पकड़ना। ३. कलक। ४. कष्ट। विपत्ति। ५ बन्धक। रेहन।
स्त्री० [हिं० गहना=पकड़ना] १. गहने या पकड़ने की क्रिया या भाव। पकड़। २. हठ। जिद्।

गहना-पुं० [सं० ग्रहण=धारण करना] १. आभूषण। जेवर। २. रेहन। बन्धक।
स० [सं० ग्रहण] पकड़ना।

गहवर*-वि० [सं० गह्वर] १. दुर्गम। विषम। २ व्याकुल। उद्विग्न। ३. मनोवेग से विकल।

गहवरना*-अ० [सं० गह्वर] १. घबराना। व्याकुल होना। २. करुणा आदि से जी भर आना।

गहर-स्त्री० [?] देर । विलम्ब । पुं० [सं० गह्वर] १. दुर्गम । २. गूढ़ ।

गहरना-अ० [हिं० गहर=देर] देर लगाना । विलम्ब करना । अ० [सं० गह्वर] १. झगड़ना । २. कुढ़ना ।

गहरा-वि० [सं० गंभीर] [स्त्री० गहरी] १. (पानी) जिसकी थाह बहुत नीचे हो । गम्भीर ।

मुहा०-गहरा पेट=ऐसा हृदय जिसमें सब बातें छिप जायँ ।

२. जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो । ३. बहुत अधिक । ज्यादा ।

मुहा०-गहरा असामी=बड़ा या मालदार आदमी । गहरे लोग=चतुर लोग । धूर्त्त लोग । गहरा हाथ=१. भारी आघात । २. भारी रकम ।

४. भारी । विकट । ५. गाढ़ा ।

मुहा०-गहरी घुटना या छनना= १. खूब गाढ़ी भंग छनना । २. बहुत मित्रता या घनिष्ठता होना ।

गहराई-स्त्री० [हिं० गहरा+ई (प्रत्य०)] 'गहरा' का भाव । गहरापन ।

गहराना-अ०[हिं० गहरा] गहरा होना । स० गहरा करना । *अ० दे० 'गहरना' ।

गहवाना-स० हिं० 'गहना' का प्रे० ।

गहवारा-पुं० [हिं० गहना=पकड़ना] १. पालना । २. झूला । हिंडोला ।

गहाई*-स्त्री० [हिं० गहना] गहने का भाव । पकड़ । गहन ।

गहागडु-वि० दे० 'गहगडु' ।

गहाना-स० हिं० 'गहना' का प्रे० ।

गहासना*-स० दे० 'ग्रसना' ।

गहिर*-वि० [सं० गंभीर] गहरा ।

गहीला-वि० [स्त्री०गहीली] दे०'गहेला' ।

गहेला-वि० [हिं० गहना=पकड़ना] [स्त्री० गहेली] १. हठी । जिद्दी । २. घमंडी । ३. पागल । ४. गँवार ।

गहैया-वि० [हिं० गहना+ऐया (प्रत्य०)] १. पकड़नेवाला । २. स्वीकार करनेवाला ।

गह्वर-पुं० [सं०] १. अँधेरी जगह । २. विवर । बिल । ३. विषम स्थान । ४. गुफा । ५. कुंज । लतागृह । ६. जंगल । वि० १ दुर्गम । २. विषम । ३. गुप्त ।

गांग-वि० [सं०] गंगा-संबंधी । गंगा का ।

गांगेय-पुं० [सं०] १. भीष्म । २. कार्तिकेय ।

गाँज-पुं० [फा० गंज] राशि । ढेर ।

गाँजना-स० [हिं० गाँज, फा० गंज] राशि या ढर लगाना ।

गाँजा-पुं० [सं० गंजा] भांग की तरह का एक पौधा जिसकी कलियों का धूँआँ नशे के लिए पीते हैं ।

गाँठ-स्त्री० [सं० ग्रंथि, प्रा० गंठि] [वि० गँठीला] १. रस्सी, कपड़े आदि में विशेष प्रकार से फेरा देकर बनाया हुआ बन्धन । गिरह ।

मुहा०-हृदय की गाँठ खोलना=१. भीतरी इच्छा या बात प्रकट करना । गाँठ जोड़ना=गँठ-बन्धन करना । मन में गाँठ पड़ना=मन-मुटाव होना ।

२. कपड़े के पल्ले में रुपया आदि लपेटकर लगाया हुआ बन्धन ।

मुहा०-गाँठ का=पल्ले का । पास का । गाँठ का पूरा=धनी । गाँठ में बाँधना= (बात) सदा स्मरण रखना ।

३. बोझ । गट्ठा । ४. अंग का जोड़ । ५. बाँस आदि की पोर । ६. हल्दी आदि का गोल टुकड़ा । ७. जड़ ।

गाँठ-गोभी-स्त्री० [हिं० गाँठ+गोभी] गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में बड़ी गोल गाँठें होती हैं।

गाँठना-स० [सं० ग्रंथन, पा० गंठन] १. गाँठ लगाना। जोड़ना। २. मिलाना। सटाना। ३. गूँथना। ४. क्रम लगाना। ५. अपने अनुकूल या वश में करना। मुहा०-**मतलब गाँठना**=काम निकालना।

६. वार रोकना।

गाँडर-स्त्री० [सं० गंडाली] १. गंडदूर्वा नाम की घास। २. दे० 'गाडर'।

गांडीव-पुं० [सं०] अर्जुन का धनुष।

गाँती-स्त्री० दे० 'गाती'।

गाँथना*-स० [सं० ग्रंथन] गूँथना।

गांधर्व-वि० [सं०] गंधर्व संबंधी।

गांधर्व विवाह-पुं० [सं०] वह विवाह जो वर और कन्या स्वेच्छा से कर लेते हैं।

गांधर्व वेद-पुं० [सं०] १. सामवेद का उपवेद। २. संगीत-शास्त्र।

गांधार-पुं० [सं०] [वि० गांधारी] सिंधु नद के पश्चिम का देश। २. इस देश का निवासी। ३. संगीत के सात स्वरों में से तीसरा स्वर।

गांधी-स्त्री० [सं० गान्धिक] १. गंधिया कीड़ा। २. गँधिया घास। ३. गंधी। ४. गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांभीर्य-पुं० [सं०] 'गंभीर' का भाव।

गाँव-पुं० [सं० ग्राम] बहुत छोटी बस्ती। खेड़ा।

गाँस-स्त्री० [हिं० गाँसना] १. ईर्ष्या। द्वेष। २. कपट। ३. भेद। रहस्य। ४. गाँठ। ५. तीर या बरछी का फल। ६. अंकुश। ७. शासन। ८. संकट।

गाँसना-स० [हिं० ग्रंथन] १. गूँथना। २. सालना। छेदना। ३. (ताने में) सूत कसना, जिससे बुनावट ठस हो। ४. वश या शासन में रखना। ५. तेजी से पकड़ना। दबोचना। ६. कसकर भरना। ठूँसना।

गाँसी-स्त्री० [हिं० गाँस] १. तीर आदि का फल। २. हथियार की नोक। ३. गाँठ। गिरह। ४. कपट। ५. मनोमालिन्य।

गाइ(ई)†-स्त्री० दे० 'गाय'।

गाकरी†-स्त्री० [?] १. लिट्टी। बाटी। २. रोटी।

गागर(रि)-स्त्री० दे० 'गगरी'।

गाछ-पुं० [सं० गच्छ] पेड़। वृक्ष।

गाज-स्त्री० [सं० गर्ज] १. गर्जन। २. बिजली की कड़क। ३. बिजली। वज्र। मुहा०-**गाज पड़ना**=१. बिजली गिरना। २. आफत आना। ३. नाश होना।

पुं० [अनु० गजगज] फेन। झाग।

गाजना-अ० [सं० गर्जन, पा० गजन] १ हुंकार करना। गरजना। २. प्रसन्न होना।

गाजर-स्त्री० [सं० गृंजन] एक पौधा जिसका कंद मीठा होता है।

मुहा०-**गाजर-मूली**=तुच्छ वस्तु।

गाजी-पुं० [अ०] १. मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिए युद्ध करे या प्राण दे। २. बहादुर। वीर।

गाटा-पुं० [देश०] भूमि या खेत का टुकड़ा। (प्लॉट)

गाड़-स्त्री० [सं० गर्त] १. गड्ढा। २. वह गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है।

गाड़ना-स० [हिं० गाड़] १. गड्ढा खोदकर उसमें कोई चीज मिट्टी से ढकना। दफनाना। २. लंबी चीज का एक सिरा गड्ढे में जमाकर उसे खड़ा करना। ३.

फँसाना। ४. छिपाना।

गाडर†-स्त्री० [सं० गड्डरी] भेड़।

गाड़ा†*-पुं० [सं० शकट] बड़ी बैल-गाड़ी। छकड़ा।

पुं० [सं० गर्त, प्रा० गड्ड] वह गड्ढा जिसमें छिपकर शत्रु का पता लेते हैं।

गाड़ी-स्त्री० [सं० शकट] एक जगह से दूसरी जगह सामान या आदमियों को पहुँचानेवाला यान।

गाड़ीवान-पुं० [हिं० गाड़ी+वान (प्रत्य०)] गाड़ी हाँकनेवाला।

गाढ़-वि० [सं०] [भाव० गाढ़ता] १. अधिक। बहुत। २ दृढ। मजबूत। ३. घना। ४. गाढ़ा। ५ बहुत गहरा। ६. विकट। कठिन।

स्त्री० आपत्ति। संकट।

गाढ़ा-वि० [सं० गाढ] [स्त्री० गाढ़ी] १. जिसमें जल के साथ कोई चूर्ण मिला हो। २. घना। ठस। मोटा (कपड़ा आदि)। ३. घनिष्ठ। गहरा। ४. कठिन। विकट।

मुहा०-**गाढ़ की कमाई**=मेहनत की कमाई। **गाढ़ का साथी**=विपत्ति का साथी। **गाढ़े दिन**=संकट के दिन।

पुं० [सं० गाढ] १. एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा। गजी। २. मस्त हाथी।

गाढ़े*-क्रि० वि० [हिं० गाढ़ा] १. दृढ़ता से। जोर से। २. अच्छी तरह।

गात-पुं० [सं० गात्र] शरीर। देह।

गाता-वि० [सं० गातृ] गानेवाला।

गाती-स्त्री० [सं० गात्री] १ वह चादर जो गले में बाँधते हैं। २. चादर ओढ़ने का एक विशेष ढंग।

गात्र-पुं० [सं०] देह। शरीर।

गाथ-पुं० [सं० गाथा] यश। प्रशंसा।

गाथा-स्त्री० [सं०] १. स्तुति। प्रशंसा। २. प्राकृत भाषा का एक प्रसिद्ध छन्द। ३. कथा। वृत्तान्त।

गाद-स्त्री० [सं० गाध] १ तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी मैल। तलछट। २. तेल की कीट।

गादर*-वि० दे० 'कायर'।

गादा-पुं० [सं० गाधा=दलदल] खेत में का अध-पका अन्न। बिना पकी फसल।

गादी-स्त्री० [हिं० गद्दी] १. एक प्रकार का पकवान। † २. दे० 'गद्दी'।

गाध-पुं० [सं०] १. स्थान। जगह। २. जल के नीचे का स्थल। थाह।

वि० [स्त्री० गाधा] १. कम गहरा। २. थोड़ा। स्वल्प।

गाधी*-स्त्री० दे० 'गद्दी'।

गान-पुं० [सं०] [वि० गेय] १. गाने की क्रिया। गाना। २. गाने की चीज। गीत।

गाना-स० [सं० गान] १. ताल और स्वर के नियम के अनुसार या आलाप के साथ ध्वनि निकालना। २ मधुर ध्वनि करना। ३. विस्तार से कहना।

मुहा०-**अपनी ही गाना**=अपनी ही बात कहते जाना।

४. स्तुति करना। प्रशंसा करना।

पुं० १. गाने की क्रिया। २. गीत।

गाफिल-वि० [अ०] [संज्ञा गफलत] १. बेसुध। बे-खबर। २. अ-सावधान।

गाभ-पुं० [सं० गर्भ, पा० गब्भ] १ पशुओं का गर्भ। २. दे० 'गाभा'।

गाभा-पुं० [सं० गर्भ] [वि० गाभिन] १. नया निकला हुआ नरम पत्ता। कल्ला। कोंपल। २. केले आदि के डंठल के अन्दर का कोमल भाग। ३. कच्चा अनाज। खड़ी खेती।

गाभिन-वि० स्त्री० [सं० गर्भिणी] गर्भिणी। (चौपायों के लिए)

गाम*-पुं० [सं० ग्राम] गाँव।

गामी-वि० [सं० गामिन्] [स्त्री० गामिनी] १. चलनेवाला। जैसे-शीघ्रगामी। २. सम्भोग करनेवाला। जैसे-वेश्यागामी।

गाय-स्त्री० [सं० गो] १. सींगवाला एक प्रसिद्ध मादा पशु जो अपने दूध के लिए प्रसिद्ध है। २. सीधा मनुष्य।

गायक-पुं० [सं०] [स्त्री० गायिका, गायिनी] गानेवाला। गवैया।

गायकी-स्त्री० [सं०] गानेवाली स्त्री। स्त्री० [हिं० गाना या सं० गायक] १. गान-विद्या का पूरा ज्ञान। २. गान-विद्या के नियमों के अनुसार ठीक तरह से गाना। ३. गान-विद्या।

गाय-गोठ-स्त्री० दे० 'गोशाला'।

गायत्री-स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक मंत्र जो हिन्दू-धर्म में सबसे अधिक पवित्र माना जाता है। २. दुर्गा। ३. गंगा।

गायन-पुं० [सं०] [स्त्री० गायिनी] १. गवैया। २. गाना। गीत।

गायब-वि० [अ०] लुप्त। अंतर्धान।

गार-पुं० [अ०] १. गहरा गड्ढा। २. गुफा। कन्दरा।

गारत-वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।

गारद-स्त्री० [अं० गार्ड] १. सिपाहियों का वह दल जो रक्षा के लिए नियत होता है। २. पहरा। चौकी।

गारना-स० [सं० गालन] १. निचोड़ना। २. पानी के साथ घिसना। जैसे-चन्दन गारना। ३. निकालना। ४. त्यागना।

*-स० [सं० गल] १ गलाना। मुहा०-तन या शरीर गारना=१. तप करके शरीर को कष्ट देना। तप करना। २. नष्ट या बरबाद करना।

गारा-पुं० [हिं० गारना] मिट्टी, चूने आदि का वह लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है। ईंटें जोड़ने का मसाला।

गारी*-स्त्री० दे० 'गाली'।

गारुड़ी-पुं० [सं० गारुडिन्] मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला।

गारो*-पुं० [सं० गौरव, प्रा० गारव] १. अहंकार। घमंड। २. गौरव।

गार्हपत्याग्नि-स्त्री० [सं०] वह प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार अपने घर में प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए।

गार्हस्थ्य-पुं० [सं०] गृहस्थाश्रम।

गाल-पुं० [सं० गड, गल्ल] १. मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल अंग। गंड। कपोल। मुहा०-गाल फुलाना=रूठना। गाल बजाना या मारना=डींग हाँकना। २. बकवाद करने की लत। मुहा०-गाल करना=बढ़-बढ़कर या उद्दंडतापूर्वक बातें करना। ३. मध्य। बीच। ४. कौर। ग्रास।

गाल-गूल*-पुं० [हिं० अनु०] व्यर्थ की बातें। गप-शप।

गाला-पुं० [हिं० गाल=ग्रास] १. धुनी हुई रूई का वह पहल जो चरखे पर कातने के लिए बनाया जाता है। पूनी। मुहा०-रूई का गाला=बहुत उज्वल। २. उद्दंडतापूर्ण बात। ३. ग्रास।

गाली-स्त्री० [सं० गालि] १. निन्दा या कलंक की बात। दुर्वचन। मुहा०-गाली खाना = दुर्वचन या गालियाँ सुनना। गाली देना=दुर्वचन

कहना ।

२. कलंक-पूर्ण आरोप ।

गाली-गलौज-स्त्री० [हिं० गाली+अनु० गलौज] परस्पर गाली देना ।

गाली-गुफ्ता-पुं० दे० 'गाली-गलौज' ।

गाल(ल्ह)ना-अ० [सं० गल्प=बात] बातें करना । बोलना ।

गालू-वि० [हिं० गाल] गाल बजाने या व्यर्थ बकवाद करनेवाला । बकवादी ।

गाव-पुं० [सं० गो, फा० गाव] गाय ।

गाव-तकिया-पुं० [फा०] बड़ा और लंबा तकिया । मसनद ।

गावदी-वि० [हिं० गाय+दी (प्रत्य०)] १. कुंठित बुद्धि का । २. अबोध । नासमझ ।

गाव-दुम-वि० [फा०] जो ऊपर से गौ की पूँछ की तरह पतला होता आया हो ।

गासिया-पुं० [अ० गाशियः] जीनपोश ।

गाह-पुं० [सं० ग्राह] १ ग्राहक ो गाहक । २ पकड़ । घात । ३. ग्राह ।

गाहक-पुं० [सं०] अवगाहन करनेवाला ।
पुं० [सं० ग्राहक] १. मोल लेनेवाला । खरीददार । क्रेता ।

मुहा०-**जी या प्राण का गाहक**=१. प्राण लेने का इच्छुक । २. दिक या तंग करनेवाला ।

२. कदर करनेवाला । चाहनेवाला ।

गाहकताई*-स्त्री० [सं० ग्राहकता] गुण-ग्राहकता । कदरदानी ।

गाहन-पुं० [सं०] [वि० गाहित] गोता लगाना । स्नान करना ।

गाहना-स० [सं० अवगाहन] १. डूबकर थाह लेना । २. मथना । विलोड़ना । ३. धान आदि के डंठल झाड़ना जिसमें दाने नीचे गिर जायँ । ओसाना । ४. व्यर्थ चलना ।

गाहा*-स्त्री० दे० 'गाथा' ।

गाही-स्त्री० [हिं० गहना] फल आदि गिनने का पाँच पाँच का एक मान ।

गिंजना-अ० [हिं० गींजना] किसी चीज (विशेषतः कपड़े) का उलटे-पुलटे जाने से खराब हो जाना । गींजा जाना ।

गिंजाई-स्त्री० [सं० गृंजन] एक प्रकार का बरसाती कीड़ा ।
स्त्री० [हिं० गींजना] गींजने का भाव ।

गिंडुरी-स्त्री० दे० 'इँडुआ' ।

गिंदौड़ा-पुं० [हिं० गेंद] मोटी रोटी के आकार में ढाली हुई चीनी ।

गिउ*-पुं० [सं० ग्रीवा] गला । गरदन ।

गिच-पिच-वि० [अनु०] जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न हो ।

गिजगिजा-वि० [अनु०] १. ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न लगे । २. जो छूने पर कोमल मालूम हो ।

गिजा-स्त्री० [अ०] भोजन । खूराक ।

गिटकिरी-स्त्री०[अनु०] गाने में तान लेते समय विशेष प्रकार से स्वर कँपाना ।

गिटपिट-स्त्री० [अनु०] निरर्थक शब्द ।
मुहा०-**गिटपिट करना**=टूटी-फूटी या साधारण भाषा बोलना ।

गिट्टक-स्त्री० [हिं० गिट्टा] १. चिलम के छेद पर रखने का कंकड़ । गिट्टी । २. धातु आदि का छोटा और मोटा टुकड़ा ।

गिट्टी-स्त्री० [हिं० गिट्टा] १. पत्थर के वे छोटे टुकड़े जो प्रायः सड़क कूटने में काम आते हैं । २. चिलम की गिट्टक ।

गिड़गिड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० गिड़गिड़ाहट] अत्यन्त नम्र होकर कोई बात कहना या प्रार्थना करना ।

गिद्ध-पुं० [सं० गृध्र] एक प्रसिद्ध मांसाहारी बड़ा पक्षी।

गिनती-स्त्री० [हिं०गिनना+ती (प्रत्य०)] १. गिनने की क्रिया या भाव। गणना। मुहा०-गिनती में आना या होना= कुछ महत्त्व का समझा जाना। गिनती गिनने के लिए=नाम मात्र को। २. संख्या। तादाद। मुहा०-गिनती के=बहुत थोड़े। ३ उपस्थिति की जांच। हाजिरी। (सिपाही) ४. एक से सौ तक की अंक-माला।

गिनना-स० [सं० गणन] १. गिनती करना। संख्या जानना। मुहा०-दिन गिनना=१.आशा में समय बिताना। २.किसी प्रकार समय बिताना। २. गणित करना। हिसाब लगाना। ३. कुछ महत्त्व का समझना।

गिनाना-स० हिं० 'गिनना' का प्रे०।

गिनी-स्त्री० [अं०] सोने का एक अंगरेजी सिक्का।

गियं*-पुं० दे० 'गिउ'।

गियाह-पुं० [?] एक तरह का घोड़ा।

गिर-पुं० [सं० गिरि] १. पहाड़। २. दे० 'गिरि'।

गिरगिट-पुं० [सं०कृकलास या गलगति] छिपकली की जाति का एक जन्तु जो दिन में दो बार रंग बदलता है।

गिरजा-पुं० [पुर्त० इग्रिजिया] ईसाइयों का प्रार्थना-मन्दिर।

गिरदा-पुं० [फा० गिर्द] १. चक्कर। २. तकिया। ३. काठ की थाली। ४. ढाल। फरी।

गिरदावर-पुं० दे० 'गिर्दावर'।

गिरधर-पुं० दे० 'गिरिधर'।

गिरना-अ० [सं० गलन] १. ऊपर से, बीच में आधार न रहने के कारण, नीचे आ जाना। २. जमीन पर पड़ या लेट जाना। ३. अवनति या घटाव पर होना। बुरी दशा में होना। ४. किसी जल-धारा का किसी बड़े जलाशय में जा मिलना। ५. शक्ति या मूल्य आदि का कम या मन्द होना। ६. बहुत चाव या तेजी से आगे बढ़ना। टूट पड़ना। ७. किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर से नीचे को आता हुआ माना जाता है। जैसे-फालिज गिरना। ८. लड़ाई में मारा जाना।

गिरनार-पुं० [सं० गिरि+नार=नगर] [वि० गिरनारी] गुजरात में रैवतक नाम का पर्वत जो जैनियों का तीर्थ है।

गिरफ्त-स्त्री० [फा०] १. पकड़। २. दोष या भूल का पता लगाने का ढंग।

गिरफ्तार-वि० [फा०] १. पकड़ा या कैद किया हुआ। २. ग्रसा हुआ। ग्रस्त।

गिरफ्तारी-स्त्री० [फा०] गिरफ्तार होने की क्रिया या भाव।

गिरमिट-पुं० [अं० गिमलेट] (लकड़ी में छेद करने का) बड़ा बरमा। पुं० [अं० एग्रीमेन्ट = इकरारनामा] १. इकरार-नामा। शर्तनामा। २. स्वीकृति की प्रतिज्ञा। इकरार।

गिरवान*-पुं० दे० 'गीर्वाण'। पुं० [फा० गरेबान] १. कुरते आदि में गले का भाग। २. गर्दन। गला।

गिरवाना-स० हिं० 'गिरना' का प्रे०।

गिरवी-वि० [फा०] गिरो रक्खा हुआ। बन्धक। रेहन।

गिरवीदार-पुं० [फा०] वह व्यक्ति जिसके यहां कोई वस्तु बन्धक रक्खी हो।

गिरह-स्त्री० [फा०] १. गाँठ। ग्रन्थि। २. जेब। खीसा। खरीता। ३.दो पोरों के

जुड़ने का स्थान। गाँठ। ४. एक गज का सोलहवाँ भाग। ५. कलैया। कलाबाजी।

गिरह-कट-वि० [फा० गिरह=गाँठ+हिं० काटना] जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला।

गिरहबाज-पुं० [फा०] एक प्रकार का कबूतर जो उड़ते उड़ते उलटकर कलैया खा जाता है।

गिरही*-पुं० दे० 'गृही'।

गिराँ-वि० [फा० गराँ] १. बहुमूल्य। २. मँहगा। ३. भारी। ४. अप्रिय।

गिरा-स्त्री० [सं०] १. वाणी। २. बोलने की शक्ति। ३. जिह्वा। ४. सरस्वती।

गिराना-स० [हिं० गिरना का स०] १. खड़ा न रहने देकर जमीन पर या नीचे डाल देना। २. बल, महत्त्व आदि कम करना। अवनत करना। घटाना। ३. प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना। ४. लड़ाई में मार डालना।

गिरानी-स्त्री० [फा०] १. महँगी। २. अकाल। ३. कमी। ४. पेट का भारीपन।

गिरापितु*-पुं० [सं० गिरा+पितृ] सरस्वती के पिता, ब्रह्मा।

गिरावट-स्त्री० [हिं० गिरना] गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।

गिरास*-पुं० दे० "ग्रास"।

गिरासना*- स० दे० 'ग्रसना'।

गिराह*-पुं० दे० 'ग्राह'।

गिरि-पुं० [सं०] १. पहाड़। २. दशनामी सम्प्रदाय के एक प्रकार के संन्यासी। ३. परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिजा-स्त्री० [सं०] १. पार्वती। २. गंगा।

गिरिधर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

गिरिधारी-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

गिरिपथ-पुं० [सं०] १ दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा। २. पहाड़ी रास्ता।

गिरिराज-पुं० [सं०] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. गोवर्द्धन पर्वत। ४. सुमेरु।

गिरिव्रज-पुं० [सं०] १. केकय देश की राजधानी। २. जरासंध की राजधानी, जिसे बाद में राजगृह कहते थे।

गिरिसुत-पुं० [सं०] मैनाक पर्वत।

गिरिसुता-स्त्री० [सं०] पार्वती।

गिरीन्द्र-पुं० [सं०] १. बड़ा पर्वत। २. हिमालय। ३. शिव।

गिरी-स्त्री० [हिं० गरी] बीज के अन्दर का गूदा।

गिरीश-पुं० [सं०] १. शिव। २. हिमालय पर्वत। ३. सुमेरु पर्वत। ४. कैलाश पर्वत। ५. गोवर्द्धन पर्वत। ६. बड़ा पहाड़।

गिरो-वि०[फा०] रेहन। बंधक। गिरवी।

गिर्द-अव्य० [फा०] १. आस-पास। २. चारो ओर।

यौ०-इर्द-गिर्द=चारो ओर।

गिर्दावर-पुं० [फा०] १. घूमने या दौरा करनेवाला। २. घूम-घूमकर काम की जाँच करनेवाला कर्मचारी।

गिल-स्त्री०[फा०] १. मिट्टी। २. गारा।

गिलकारी-स्त्री० [फा०] गारा लगाने या पलस्तर करने का काम।

गिलगिली-पुं० [देश०] घोड़े की एक जाति।

गिलट-पुं० [अं० गिल्ड] १. किसी धातु पर सोना, चाँदी आदि चढ़ाने का काम। २. चाँदी-सी सफेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु।

गिलटी-स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. चेप की गोल छोटी गाँठ जो शरीर के अन्दर जोड़ों में रहती है । २. वह रोग जिसमें ऐसी गाँठें सूज आती हैं ।

गिलन-पुं० [सं०] [वि० गिलित] निगलना । लीलना ।

गिलना*-स०[सं० गिलन] १. निगलना । २. मन में छिपाकर रखना ।

गिलम-स्त्री० [फा० गिलीम=कम्बल] १. नरम और चिकना ऊनी कालीन । २. मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना । वि० कोमल । नरम । मुलायम ।

गिलहरी-स्त्री० [सं० गिरि=चुहिया] चूहे की तरह का सफेद और काली धारियों-वाला और मोटी रोएँदार पूँछवाला एक जन्तु जो पेड़ों पर रहता है ।

गिला-पुं० [फा०] १ उलाहना । २. शिकायत । निन्दा ।

गिलान*-स्त्री० दे० 'ग्लानि' ।

गिलाफ-पुं० [अ०] १ लिहाफ आदि की खोल । २ बड़ी रजाई । लिहाफ । ३ कोश । म्यान ।

गिलावा-पुं० [फा० गिल+आब] गारा ।

गिलास-पुं० [अं० ग्लास] पानी पीने का एक गोल लंबोतरा बरतन ।

गिलिम-स्त्री० दे० 'गिलम' ।

गिली-स्त्री० दे० 'गुल्ली' ।

गिलौरी-स्त्री० [देश०] पान का बीड़ा ।

गिल्टी-स्त्री० दे० 'गिलटी' ।

गींजना-स० [हिं० मींजना] किसी कोमल पदार्थ, विशेषतः कपड़े आदि को इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाय ।

गीउ*-स्त्री० दे० 'गीव' ।

गीत-पुं० [सं०] वह वाक्य, पद या छन्द जो गाया जाता हो । गाना । मुहा०-**गीत गाना** = बड़ाई करना । **अपना ही गीत गाना**=अपनी ही बात कहते जाना ।

गीता-स्त्री० [सं०] १. ज्ञानमय उपदेश । २. भगवद्‌गीता । ३. वृत्तान्त । कथा ।

गीति-स्त्री० [सं०] गान । गीत ।

गीतिका-स्त्री० [सं०] १. एक मात्रिक छन्द । २. गीत । गाना ।

गीति-रूपक-पुं० [सं०] वह रूपक जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक हों ।

गीदड़-पुं० [सं० गृध्र, फा० गीदी] १ कुत्ते की तरह का एक जंगली पशु । सियार । शृगाल ।
यौ०-**गीदड़ भबकी**=मन में डरते हुए ऊपर से दिखावटी क्रोध करना ।
वि० डरपोक । कायर ।

गीध-पुं० दे० 'गिद्ध' ।

गीधना*-अ० [सं० गृध्र=लुब्ध] एक बार कोई लाभ उठाकर सदा उसकी इच्छा रखना । परचना ।

गीर्वाण-पुं० [सं०] देवता । सुर ।

गीला-वि० [हिं० गलना] [स्त्री० गीली, भाव० गीलापन] भींगा हुआ । तर ।

गीव(ा)*-स्त्री० दे० 'ग्रीवा' ।

गुंग(ा)-पुं० दे० 'गूँगा' ।

गुंची-स्त्री० दे० 'घुँघची' ।

गुंज-स्त्री० [सं० गुंजन] १. भौंरों के भन-भनाने का शब्द । गुंजार । २. आनंद-ध्वनि । कल-रव । ३. दे० 'गुंजा' ।

गुंजन-पुं० [सं०] १. भौंरों की गूँज । भनभनाहट । २. कोमल मधुर ध्वनि ।

गुंजना-अ० [सं० गुंज] १. भौंरों का भनभनाना । २. मधुर ध्वनि निकलना ।

गुंजरना-अ० [हिं० गुंजार] १. गुंजार

करना । २. शब्द करना । ३. गरजना ।

गुंजा-स्त्री० [सं०] घुँघची ।

गुंजाइश-स्त्री० [फा०] १. अँटने या समाने की जगह । अवकाश । समाई । २. सुबीता ।

गुंजान-वि० [फा०] घना । सघन ।

गुंजार-पुं० [सं० गुंज] भौंरों की गूँज । भनभनाहट ।

गुंजारित-वि० दे० 'गुंजित' ।

गुंजित-वि० [सं०] भौंरों आदि के गुंजार से युक्त ।

गुंडई-स्त्री० [हिं० गुंडापन] अकारण लोगों से झगड़ना या उन्हें मारना-पीटना।

गुँडली-स्त्री० [सं० कुंडली] १. फेंटा । कुंडली । २. गेंडुरी । इँडुरी ।

गुंडा-पुं० [सं० गुंडक] [स्त्री० गुंडी, भाव० गुंडई, गुंडापन] १. अकारण लोगों से लड़ने या उन्हें मारने-पीटने-वाला । बदमाश । २. छैला ।

गुँथना-अ० [सं० गुत्स=गुच्छा] १. (तागों, बालों की लटों आदि का) उलझना । २. मोटे टाँकों से सिलना ।

गुँधना-अ० [सं० गुध] गूँधा या माँड़ा जाना ।

+ अ० दे० 'गुँथना' ।

गुँधाई-स्त्री० हिं० 'गूँधना' का भाव० ।

गुंफ-पुं० [सं०] [वि० गुंफित] १ उलझन । फँसाव । २. गुच्छा । ३. दाढ़ी। ४. गल-मुच्छा ।

गुंफन-पुं० [सं०] [वि० गुंफित] गूँथना ।

गुंबज(द)-पुं० [फा० गुंबद] गोल और ऊँची उभरी हुई छत ।

गुंभी*-स्त्री० [सं० गुंफ] अंकुर । गाभ ।

गुग्गुल-पुं० [सं०] एक पेड़ जिसका गोंद सुगन्ध के लिए जलाते हैं । गूगल ।

गुच्छ(क)-पुं० [सं०] १. गुच्छा । २. वह पौधा जिसमें केवल पत्तियाँ या पतली टहनियाँ फैलें । झाड़ । ३. मोर की पूँछ ।

गुच्छा-पुं० [सं० गुच्छ] १. एक में लगे या बँधे हुए पत्तों और फूलों का समूह । २. एक में लगी या बँधी हुई छोटी वस्तुओं का समूह । जैसे-तालियों का गुच्छा । ३. फुँदना । झब्बा ।

गुच्छी-स्त्री० [सं० गुच्छ] १. करंज । कंजा । २. एक प्रकार की खुमी, जिसकी तरकारी बनती है ।

गुजर-पुं० [फा०] १. निकास । गति । २. पैठ । पहुँच । प्रवेश । ३. निर्वाह ।

गुजरना-अ० [फा० गुजर+ना (प्रत्य०)] १. (समय) बीतना या कटना ।

मुहा०-किसी पर गुजरना=किसी पर (संकट या विपत्ति) पड़ना ।

२.किसी स्थान से होकर आना या जाना ।

मुहा०-गुजर जाना=मर जाना ।

३. निर्वाह होना । निभना ।

गुजर-बसर-पुं० [फा०] निर्वाह । गुजारा । काल-क्षेप ।

गुजरान-पुं० दे० 'गुजर' ३. ।

गुजराना*-स० दे० 'गुजारना' ।

गुजरिया-स्त्री० दे० 'गूजरी' ।

गुजरी-स्त्री० [हिं० गूजर] १. कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची । २. कान-कटी भेंड़ । ३. दे० गूजरी' ।

गुजरेटा-पुं० [हिं० गूजर] [स्त्री० गुजरेटी] १. गूजर जाति का लड़का। २. दे० 'गूजर' ।

गुजारना-स० [फा० गुजर] १.बिताना । २. सामने रखना । पेश करना ।

गुजारा-पुं० [फा०] १. निर्वाह । २. वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाह के लिए मिलती हो। ३.महसूल चुकाने का स्थान ।

गुजारिश-स्त्री० [फा०] निवेदन।

गुझरौट-पुं० [सं० गुह्य+आवर्त्त] १. कपड़े की सिकुड़न। शिकन। सिलवट। २. स्त्रियों की नाभि के आस-पास का भाग।

गुझाना*-स० दे० 'छिपाना'।

गुझिया-स्त्री० [सं० गुह्यक] १. एक प्रकार का पकवान। कुसली। पिराक। २. खोए की एक मिठाई।

गुझौट*-पुं० दे० 'गुझरौट'।

गुटकना-अ० [अनु०] कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।

स० १. निगलना। २. खा जाना।

गुटका-पुं० [सं० गुटिका] १. दे० 'गुटिका'। २. छोटे आकार की पुस्तक। ३. लट्टू। ४. गुपचुप नाम की मिठाई।

गुटरगूँ-स्त्री० [अनु०] कबूतरों की बोली।

गुटिका-स्त्री० [सं०] १. गोली। २. एक प्रकार की सिद्धि जिसमें एक गोली मुँह में रखने से मनुष्य दिखाई नहीं देता।

गुट्ट-पुं० [सं० गोष्ठ] १. समूह। २. दल।

गुट्ठल-वि० [हिं० गुठली] १. (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो। २. जड़। मूर्ख। ३. गुठली के आकार का।

पुं० १. किसी वस्तु के इकट्ठे होने से बँधी हुई गाँठ। गुलथी। २. गिलटी।

गुट्ठी-स्त्री० [सं० गोष्ठ] मोटी गाँठ।

गुठली-स्त्री० [सं० गुटिका] ऐसे फल का बीज, जिसमें एक ही बड़ा बीज होता हो। जैसे-आम की गुठली।

गुठाना-अ० [हिं० गुठली] १. गुठली-सी बँध जाना। २. निकम्मा हो जाना।

गुड़ंबा-पुं० [हिं० गुड़+अँब, आम] शीरे में उबाला हुआ कच्चा आम।

गुड़-पुं० [सं०] ऊख, खजूर आदि का रस पकाकर जमाई हुई बट्टी या भेली।

मुहा०-कुल्हिया में गुड़ फोड़ना=गुप्त रीति से कोई कार्य या सलाह करना।

गुड़गुड़-पुं० [अनु०] वह शब्द जो बन्द चीज में हवा के चलने से होता है। जैसे-हुक्के या पेट में गुड़गुड़ होना।

गुड़गुड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० गुड़-गुड़ाहट] गुड़गुड़ शब्द होना।

स० [अनु०] १. गुड़गुड़ शब्द करना। २. हुक्का पीना।

गुड़गुड़ी-स्त्री० [हिं० गुड़गुड़ाना] एक प्रकार का हुक्का। फरशी।

गुड़ना*-स्त्री० दे० 'गुणन'।

गुड़-धानी-स्त्री० [हिं०गुड़+धान] भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर बाँधा हुआ लड्डू।

गुड़हल-पुं० [हिं० गुड़+हर] अड़हुल का पेड़ या फूल। जपा।

गुड़ाकू-पुं० [हिं० गुड़] गुड़ मिला हुआ पीने का तमाकू।

गुडाकेश-पुं० [सं०] १. शिव। २. अर्जुन।

गुड़िया-स्त्री० [हिं० गुड्डा] कपड़े की वह पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।

मुहा०-गुड़ियों का खेल=सहज काम।

गुड़ी*-स्त्री० दे० 'गुड्डी'।

गुडूची-स्त्री० [सं०] गुरुच। गिलोय।

गुड्डा-पुं० [सं० गुड=खेलने की गोली] कपड़े का बना हुआ पुतला।

मुहा०-किसी के नाम का गुड्डा बाँधना=किसी की निन्दा करते फिरना।

पुं० [हिं० गुड्डी] बड़ी पतंग।

गुड्डी-स्त्री० [हिं० गुड्डा] कागज का वह प्रसिद्ध खिलौना जो हवा में उड़ाया जाता है। पतंग। कनकौआ।

स्त्री० [सं० गुटिका] १. घुटने की हड्डी। २. एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गुड़*-पुं० [सं० गूढ़] छिपकर रहने का स्थान।

गुड़ना-अ० [सं० गूढ़] १. छिपना। २. गूढ़ अर्थ समझना। जैसे-पढ़ना-गुढ़ना।

गुढ़ा-पुं० [सं० गूढ़] छिपने की जगह। गुप्त स्थान।

गुढ़ी-स्त्री० [सं० गूढ़] गाँठ। गुत्थी।

गुण-पुं० [सं०] [वि० गुणी] १. किसी वस्तु में पाई जानेवाली वह बात जिसके द्वारा वह दूसरी वस्तु से अलग मानी जाय। धर्म। (प्रॉपर्टी) २. प्रकृति के तीन भाव-सत्त्व, रज और तम। ३. निपुणता। प्रवीणता। ४. कला या विद्या। हुनर। ५. असर। तासीर। (एफेक्ट) ६. अच्छा स्वभाव। शील।

मुहा०-गुण गाना=प्रशंसा करना। गुण मानना=एहसान मानना।

७. विशेषता। (क्वालिटी) ८. तीन की संख्या। ९. प्रकृति। १०. रस्सी या तागा। डोरा। ११. धनुष की डोरी।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो संख्या-वाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे-त्रिगुण।

गुणक-पुं० [सं०] वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करते हैं।

गुणकारक-वि० [सं०] गुण या फायदा करनेवाला। लाभदायक।

गुण-गौरी-स्त्री० [सं०] १. पतिव्रता। २. सुहागिन। ३. स्त्रियों का एक व्रत।

गुण-ग्राहक-पुं० [सं०] गुणों या गुणियों का आदर करनेवाला। कदरदान।

गुणग्राही-वि० दे० 'गुणग्राहक'।

गुणज्ञ-वि०[सं०] १. गुणों को पहचानने-वाला। गुणों का पारखी। २. गुणी।

गुणन-पुं० [सं०] [वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित] १. गुणा करना। जरब देना। २. गिनना। ३. अनुमान करना। ४. उद्धरणी करना। रटना। ५. मनन करना। सोचना।

गुणन-फल-पुं० [सं०] वह संख्या जो एक संख्या को दूसरी से गुणा करने से निकले।

गुणना-स० [सं० गुणन] १. गुणा करना। २. दे० 'गुनना'।

गुणवंत-वि० दे० 'गुणवान्'।

गुण-वाचक-पुं० [सं०] १. वह जो गुणों का वर्णन करे। २. व्याकरण में वह संज्ञा, जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो। विशेषण।

गुणवान्-वि० [सं० गुणवत्] [स्त्री० गुणवती] गुणवाला। गुणी।

गुणा-पुं० [सं० गुणन] [वि० गुण्य, गुणित] गणित में जोड़ की एक संक्षिप्त रीति, जिसमें कोई संख्या एक बार में ही कई गुनी कर ली जाती है। जरब।

गुणाकर-वि० [सं०] जिसमें बहुत-से गुण हों। गुण-निधान।

गुणानुवाद-पुं० [सं०] गुण-वर्णन।

गुणित-वि० [सं०] गुणा किया हुआ।

गुणी-वि० [सं० गुणिन्] गुणवाला। जिसमें कोई या कई गुण हों।

पुं० १. कला-कुशल पुरुष। हुनरमन्द। २. झाड़-फूँक करनेवाला। ओझा।

गुण्य-पुं० [सं०] १. वह अंक जिसको गुणा करना हो। २. गुणी।

गुत्थम-गुत्था-पुं० [हिं० गुथना] १. उलझाव। फँसाव। २. हाथा-बाँही।

गुत्थी-स्त्री० [हिं० गुथना] एक में गुथने से बनी हुई गाँठ। उलझन।

गुथना-अ० [सं० गुत्सन] १. कई का

एक में उलझ जाना। २. भद्दी तरह से सीया जाना। ३. किसी से लड़ने के लिए उससे लिपट जाना।

गुदकारा-वि० [हिं० गूदा या गुदार] १. गूदेदार। २. गुदगुदा।

गुदगुदा-वि० [हिं० गूदा] १. गूदेदार। २. मांस से भरा हुआ। ३. मुलायम।

गुदगुदाना-अ० [हिं० गुदगुदा] १. हँसाने या छेड़ने के लिए किसी का तलवा, बगल आदि सहलाना। २. विनोद के लिए छेड़ना। ३. उत्कंठा उत्पन्न करना।

गुदगुदी-स्त्री० [हिं० गुदगुदाना] १. वह मधुर अनुभव जो बगल आदि कोमल अंगों को छूने या सहलाने से होता है। २. उत्कंठा। उमंग।

गुदड़ी-स्त्री० [हिं० गूथना] फटे-पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना या ओढ़ना। कंथा।

मुहा०-गुदड़ी में का लाल=तुच्छ स्थान में की उत्तम वस्तु।

गुदड़ी बाजार-पुं० [हिं० गुदड़ी+फा० बाजार] वह बाजार जिसमें पुरानी या टूटी-फूटी चीजें बिकती हैं।

गुदना-पुं० दे० 'गोदना'।

अ० [हिं० गोदना] गोदा जाना।

गुदर*-स्त्री० [फा० गुजर] १. दे० 'गुजर'। २ निवेदन। प्रार्थना। ३. निवेदन आदि के लिए किसी की सेवा में होनेवाली उपस्थिति। हाजिरी।

गुदरना†*-अ० दे० 'गुजरना'।

स० १. निवेदन करना। २. उपस्थित या पेश करना।

गुदराननां†*-स० [फा० गुजरान] १. पेश करना। सामने रखना। २. निवेदन करना।

गुदरैन†*-स्त्री० [हिं०गुदरना] १. पढ़ा हुआ पाठ सुनाना। २. परीक्षा।

गुदा-स्त्री० [सं०] मल-द्वार।

गुदाना-स० [हिं० गोदना का प्रे०] गोदने का काम कराना।

गुदार-वि० [हिं० गूदा] गूदेदार।

गुदारना*-स० [फा० गुजर, हिं० गुदरना] १. उपेक्षा करना। ध्यान न देना। २. निवेदन करना। सेवा में उपस्थित करना। ३. बिताना। गुजारना।

गुदारा†*-पुं० [फा० गुजारा] १. नाव से नदी पार करने का काम। उतारा। २. दे० 'गुजारा'।

गुद्दी†-स्त्री० [हिं० गूदा] १. बीज के अन्दर का गूदा। गिरी। २. सिर का पिछला भाग।

गुन†*-पुं० दे० 'गुण'।

गुनगुना-वि० दे० 'कुनकुना'।

गुनगुनाना-अ० [अनु०] १. गुनगुन शब्द करना। २ नाक में बोलना। ३. बहुत धीरे-धीरे अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनना-स० [सं० गुणन] १. गुणा करना। जरब देना। २. गिनना। ३. उद्धरणी करना। रटना। ४. सोचना। ५. समझना। मानना। जैसे-वह तुम्हें क्या गुनता है!

गुनह-गार-वि० [फा०] १. पापी। २. दोषी। अपराधी।

गुनही†-पुं० दे० 'गुनहगार'।

गुना-पुं० [सं० गुणन] १. एक प्रत्यय जो किसी संख्या में लगकर उसका उतनी ही बार और होना सूचित करता है। जैसे-सात-गुना। २. गुणा। (गणित) पुं० [?] एक प्रकार का पकवान।

गुनावन*-स्त्री० [हिं० गुनना] मन में

कुछ सोचने की क्रिया। विचार।

गुनाह-पुं० [फा०] १. पाप। पातक। २. कसूर। अपराध।

गुनाही-पुं० दे० 'गुनहगार'।

गुनिया†-पुं० [हिं० गुणी] गुणवान।

गुनियाला*-वि० दे० 'गुनिया'।

गुनी(ला)-वि० पुं० दे० 'गुणी'।

गुपचुप-क्रि० वि० [हिं० गुप्त+चुप] गुप्त रीति से। चुपचाप। पुं० एक प्रकार की मिठाई।

गुप्त-वि० [सं०] [भाव० गुप्तता] १. छिपा हुआ। २. जिसे जानना कठिन हो। गूढ़।

गुप्तचर-पुं० [सं०] गुप्त रूप से किसी बात का पता लगानेवाला। दूत। भेदिया। जासूस।

गुप्त दान-पुं० [सं०] वह दान जिसे देते समय केवल दाता जाने, दूसरों को पता न लगे।

गुप्ता-स्त्री० [सं०] १.प्रेम-सम्बन्ध छिपानेवाली नायिका। २. रखेली। रखनी।

गुप्ती-स्त्री० [सं० गुप्त] वह छड़ी जिसके अन्दर किरच या पतली तलवार छिपी हो।

गुफा-स्त्री० [सं० गुहा] जमीन या पहाड़ के नीचे या अन्दर विस्तृत और अँधेरी खाली जगह। कंदरा। गुहा।

गुबरैला-पुं० [हिं० गोबर+ऐला (प्रत्य०)] गोबर आदि में रहनेवाला एक कीड़ा।

गुबार-पुं० [अ०] १. गर्द। धूल। २. मन में दबा हुआ क्रोध, दुःख, द्वेष आदि।

गुबिंद*-पुं० दे० 'गोविन्द'।

गुब्बारा-पुं० [हिं० कुप्पा] कागज, रबर आदि की वह थैली जो धूआँ या हवा भरकर आकाश में उड़ाते हैं।

गुम-वि० [फा०] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. अप्रसिद्ध। ३. खोया हुआ।

गुमटा-पुं० [सं० गुंबा+टा (प्रत्य०)] वह सूजन जो सिर पर चोट लगने से होती है।

गुमटी-स्त्री० [फा० गुंबद] १. मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी आदि की ऊँची छत। २. चौकीदार के रहने का छोटा गोलाकार घर। ३. दे० 'गुमटा'।

गुमना-अ० [फा० गुम] खो जाना।

गुम-नाम-वि० [फा०] १. अप्रसिद्ध। अज्ञात। २. जिसमें या जिसका नाम न हो।

गुमर-पुं० [फा० गुमान] १. घमंड। शेखी। २. मन का गुबार। ३. कानाफूसी।

गुमराह-वि० [फा०] १. कुमार्ग पर चलनेवाला। २. रास्ता भूला हुआ।

गुमान-पुं० [फा०] १.अनुमान। कल्पना। २. घमंड। अभिमान।

गुमाना-स० दे० 'गँवाना'।

गुमानी-वि० [हिं० गुमान] घमंडी।

गुमाश्ता-पुं० [फा०] किसी की ओर से माल खरीदने और बेचने के लिए नियुक्त मनुष्य। (एजेंट)

गुम्मट-पुं० [फा० गुंबद] गुंबद।

गुर-पुं० [सं० गुरुमंत्र] वह उपाय जिससे कोई काम तुरन्त हो जाय। मूल युक्ति। *पुं० दे० 'गुरु'।

गुरगा-पुं० [सं० गुरुग] [स्त्री० गुरगी] १. चेला। २. नौकर। ३. जासूस।

गुरगाबी-पुं० [फा०] मुंडा जूता।

गुरदा-पुं० [फा० गुर्द] १. रीढ़दार जीवों का एक भीतरी अंग जो कलेजे के पास होता है। २ साहस। हिम्मत। ३. एक तरह की छोटी तोप।

गुर-मुख-वि० दे० 'गुरुमुख'।

गुराई-स्त्री०=गोरापन।

गुराव-पुं० [देश०] तोप लादने की गाड़ी।

गुरिया-स्त्री० [सं० गुटिका] १. माला में का दाना या मनका। २. चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा। ३. मछली के मांस की बोटी या टुकड़ा।

गुरीरा*-वि० [हिं० गुड़+ईरा (प्रत्य०)] १. गुड़ का-सा मीठा। २. उत्तम। बढ़िया।

गुरु-वि० [सं०] [स्त्री० गुर्वी] १ बड़े आकार का। २. भारी। वजनी। ३. देर से पचनेवाला। (भोजन)
पुं० [सं०] [स्त्री० गुरुआनी] १. बृहस्पति। २. बृहस्पति नामक ग्रह। ३. बृहस्पतिवार। ४. किसी मंत्र का उपदेष्टा। ५. विद्या या कला सिखलानेवाला। उस्ताद। ६. दो मात्राओंवाला या दीर्घ अक्षर। (पिंगल)

गुरुआनी-स्त्री० [सं० गुरु+आनी (प्रत्य०)] १. गुरु की स्त्री। २ पढ़ानेवाली स्त्री।

गुरुआई-स्त्री० [सं० गुरु+आई (प्रत्य०)] १. गुरु का पद या काम। २. धूर्तता।

गुरु-कुल-पुं० [सं०] १. वह स्थान जहां गुरु विद्यार्थियों को अपने पास रखकर शिक्षा देता हो। २. वह आधुनिक संस्था, जिनमें विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय ढंग से और ब्रह्मचर्यपूर्वक रखकर शिक्षा दी जाती है।

गुरुच-स्त्री० [सं० गुडूची] एक प्रकार की कड़वी बेल जो दवा के काम आती है। गिलोय।

गुरुज*-पुं० दे० 'गुर्ज'।

गुरु-जन-पुं० [सं०] बड़े लोग। माता, पिता, गुरु आदि।

गुरुडम-पुं० [सं० गुरु+अं० डम] स्वयं गुरु बनकर दूसरों से अपनी पूजा कराना।

गुरुता-स्त्री० [सं०] १. दे० 'गुरुत्व'। २. गुरुआई। गुरुपन।

गुरुताई*-स्त्री०=गुरुता।

गुरुत्व-पुं० [सं०] १. भारीपन। २. वजन। बोझ। ३. महत्व। बड़प्पन।

गुरुत्वाकर्षण-पुं० [सं०] पृथ्वी की वह शक्ति जिसके द्वारा सभी वस्तुएँ उसी की ओर खिंचकर आती हैं।

गुरु-दक्षिणा-स्त्री० [सं०] वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ लेने पर गुरु को दी जाय।

गुरु-द्वारा-पुं० [सं० गुरु+द्वारा] सिक्खों का धर्म-स्थान या मन्दिर।

गुरुविनी*-स्त्री० दे० 'गर्भिणी'।

गुरु-भाई-पुं० [सं० गुरु+हिं० भाई] एक ही गुरु के शिष्य।

गुरु-मुख-वि० [सं० गुरु+मुख] जिसने गुरु से दीक्षा ली हो। दीक्षित।

गुरुमुखी-स्त्री० [सं० गुरु+मुखी] गुरु नानक की चलाई हुई एक लिपि जो पंजाब में प्रचलित है।

गुरुवार-पुं० [सं०] बृहस्पति का दिन। बृहस्पतिवार।

गुरू-पुं० [सं०गुरु] १.अध्यापक। २.धूर्त। यौ०-**गुरू घंटाल**=बहुत बड़ा चालाक।

गुरेरना-स० [सं० गुरु=बड़ा+हेरना] क्रोध से देखना। घूरना।

गुरेरा*-पुं० दे० 'गुलेला'।

गुर्ज-पुं० [फा०] गदा। सोंटा। यौ०-**गुर्ज-बर्दार**=गदाधारी योद्धा।
पुं० दे० 'बुर्ज'।

गुर्जर-पुं० [सं०] १. गुजरात देश। २. इस देश का निवासी। ३. गूजर।

गुर्राना-अ० [अनु०] १. कुत्ते आदि का घुर घुर शब्द करना। २. क्रोध में आकर कर्कश स्वर से बोलना।

गुर्विणी-वि० स्त्री० [सं०] गर्भवती ।

गुल-पुं० [फा०] १. गुलाब का फूल । २. फूल । पुष्प ।
मुहा०-गुल खिलना = १. विलक्षण घटना होना । २.नया बखेड़ा खड़ा होना । ३. पशुओं के शरीर पर का फूल के आकार का दाग़ । ४. वह गड्ढा जो हँसने के समय गालों में पड़ता है । ५. गरम धातु से दागने से शरीर पर पड़नेवाला चिह्न । दाग़ । छाप । ६. दीये की बत्ती का जला हुआ अंश ।
मुहा०-(चिराग) गुल करना=बुझाना । ७. तमाकू का जला हुआ अंश । जट्टा ।
पुं० [फा० गुल] शोर । हल्ला ।

गुलकंद-पुं० [फा०] चीनी मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पंखड़ियाँ जो दस्तावर होती हैं ।

गुलकारी-स्त्री०[फा०] बेल-बूटे का काम ।

गुल-गपाड़ा-पुं० [अ० गुल + गप्प] खिलखिलाहट । शोर । गुल ।

गुलगुला-वि० दे० 'गुदगुदा' ।
पुं० एक प्रकार का मीठा पकवान ।

गुलगुलाना-स० [हिं० गुलगुल] गूदेदार चीज़ को बार बार दबाकर मुलायम करना ।

गुल-गोथना-वि० दे० 'गल-गुथना' ।

गुलचना*-स० दे० 'गुलचाना' ।

गुलचा-पुं० [हिं० गुल या गाल] प्रेमपूर्वक गालों पर धीरे से किया हुआ हाथ का आघात ।

गुलचाना*-स० [हिं० गुलचा+ना] गुलचा मारना या लगाना ।

गुल-छर्रा-पुं० [हिं० गुल+छर्रा ?] स्वच्छन्दतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जानेवाला भोग-विलास ।

गुलजार-पुं० [फा०] बाग़ । वाटिका ।
वि० १. हरा-भरा । २. आनन्द और शोभा से युक्त । ३. अच्छी तरह बसा हुआ और रौनकवाला ।

गुलथी-स्त्री० [हिं० गोल+सं० अस्थि] १. किसी तरल पदार्थ के गाढ़े होकर जमने से बनी हुई गुठली । २. माँस की जमी हुई गाँठ ।

गुल-दस्ता-पुं० [फा०] फूलों का गुच्छा ।

गुल दाउदी-स्त्री० [फा० गुल+दाऊदी] एक सुन्दर गुच्छेदार फूलोंवाला पौधा ।

गुल-दान-पुं० [फा०] फूलों का गुच्छा रखने का पात्र ।

गुलदार-वि० दे० 'फूलदार' ।

गुल दुपहरिया-स्त्री० [फा० गुल+हिं० दुपहरिया] एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं ।

गुलनार-पुं० [फा०] १. अनार का फूल । २. इस फूल का-सा गहरा लाल रंग ।

गुल बकावली-स्त्री० [फा० गुल+सं० बकावली] हल्दी की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद सुन्दर फूल होते हैं ।

गुल-बदन-पुं० [फा०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

गुल मेंहदी-स्त्री०[फा० गुल+हिं० मेंहदी] एक प्रकार का फूलदार पौधा ।

गुल-मेख-स्त्री० [फा०] बड़े गोल सिरे-वाली कील । फुलिया ।

गुललाला-पुं० दे० 'गुल्लाला' ।

गुलशन-पुं० [फा०] वाटिका । बाग ।

गुल-शब्बो-स्त्री० [फा०] रजनीगन्धा का पौधा या फूल । सुगन्धिराज ।

गुलाब-पुं० [फा०] १. एक प्रसिद्ध कँटीला पौधा जिसमें सुन्दर सुगन्धित फूल लगते हैं । २. गुलाब-जल ।

गुलाब-जल-पुं० [हिं० गुलाब+जल] गुलाब के फूलों का अरक।

गुलाब जामुन-पुं० [हिं० गुलाब+हिं० जामुन] १. एक प्रकार की मिठाई। २. एक पेड़ जिसका स्वादिष्ट फल कुछ चपटा होता है।

गुलाब-पाश-पुं० [हिं० गुलाब+फा० पाश] वह पात्र जिसमें गुलाब-जल भरकर लोगों पर छिड़कते हैं।

गुलाबी-वि० [फा०] १. गुलाब के रंग का। २. गुलाब सम्बन्धी। ३. थोड़ा या कम। हलका। जैसे-गुलाबी नशा।

गुलाम-पुं० [अ०] १. मोल लिया हुआ दास। २. साधारण सेवक। नौकर।

गुलामी-स्त्री० [अ० गुलाम+ई (प्रत्य०)] २. दासत्व। २. सेवा। नौकरी। ३. पराधीनता।

गुलाल-पुं० [फा० गुल्लालः] वह लाल चूर्ण जो हिन्दू होली के दिनों में एक दूसरे पर छिड़कते है।

गुलाला-पुं० दे० 'गुल्लाला'।

गुलिस्ताँ-पुं० [फा०] बाग। वाटिका।

गुलूबंद-पुं० [फा०] १. सिर पर या गले में लपेटने की एक लम्बी पट्टी। २. गले का एक गहना।

गुलेनार-पुं० दे० 'गुलनार'।

गुलेल-स्त्री० [फा० गिलूल] वह छोटा धनुष जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुलेला-पुं० [फा० गुलूलः] १. मिट्टी की वह गोली जो गुलेल से फेंकी या चलाई जाती है। २. गुलेल।

गुल्फ-पुं० [सं०] एँड़ी पर की गाँठ।

गुल्म-पुं० [सं०] १. ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई तनों के रूप में निकले। जैसे-ईख, बाँस आदि। २. सेना की वह टुकड़ी जिसमें ९ हाथी, ९ रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल होते थे। ३. पेट का एक रोग।

गुल्लक-स्त्री० दे० 'गोलक'।

गुल्ला-पुं० दे० 'गुलेला'।
पुं० [अ० गुल] शोर। हल्ला।

गुल्लाला-पुं० [फा० गुलेलालः] एक पौधा जिसमें लाल फूल होते हैं।

गुल्ली-स्त्री० [सं० गुलिका=गुठली] १. गठली। २. महुए की गुठली। ३. काठ या धातु आदि का गोल लम्बोतरा टुकड़ा।

गुल्ली-डंडा-पुं० [हिं० गुल्ली+डंडा] लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जो एक गुल्ली और एक डंडे से खेला जाता है।

गुवा*-पुं० दे० 'गुवाक'।

गुवाक-पुं० [सं०] सुपारी।

गुविंद*-पुं० दे० 'गोविन्द'।

गुसाँई*-पुं० दे० 'गोसाईं'।

गुसा*-पुं० दे० 'गुस्सा'।

गुस्ताख-वि० [फा०] [भाव० गुस्ताखी] बड़ों का संकोच न करनेवाला। धृष्ट। अ-शालीन।

गुस्ल-पुं० [अ०] स्नान। नहाना।

गुस्ल-खाना-पुं० [अ० गुस्ल+फा० खानः] नहाने का कमरा। स्नानागार।

गुस्सा-पुं० [अ० गुस्सः] [वि० गुस्सावर, गुस्सैल] क्रोध। कोप।
मुहा०-गुस्सा उतरना या निकलना=क्रोध शान्त होना। (किसी पर) गुस्सा चढ़ना=क्रोध का आवेश होना।

गुस्सैल-वि० [हिं० गुस्सा+हिं० ऐल (प्रत्य०)] जल्दी क्रोध करनेवाला। क्रोधी।

गुह-पुं० [सं०] १. कार्तिकेय। २. घोड़ा। ३. विष्णु। ४. राम का मित्र

एक विवाद। ४. गुफा। ६. हृदय।
† पुं० [सं० गुह्य] गू। मैला। मल।
गुहना†-स०=गूँथना।
गुहराना†-स०=पुकारना।
गुहांजनी-स्त्री० [सं० गुह्य+अंजन] आँख की पलक पर होनेवाली फुन्सी। बिलनी।
गुहा-स्त्री० [सं०] गुफा। कंदरा।
गुहाई†-स्त्री० [हिं० गुहना] गुहने की क्रिया, ढंग, भाव या मजदूरी।
गुहार-स्त्री० दे० 'गोहार'।
गुहारना*-स० [हिं० गुहार] रक्षा के लिए पुकार मचाना। दुहाई देना।
गुह्य-वि० [सं०] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. गोपनीय। छिपाने योग्य। ३. जिसका तात्पर्य सहज में न खुले। गूढ़।
गूँगा-वि०[फा०गुंग] [स्त्री० गूँगी] जिसमें बोलने की शक्ति न हो।
मुहा०-गूँगे का गुड़=वह सुखद अनुभव, जिसका वर्णन न हो सके।
गूँज-स्त्री० [सं० गुंज] १. भौंरों के गूँजने का शब्द। गुंजार। २. प्रतिध्वनि। ३. खेलने के लट्टू में की कील। ४. नथ या बाली में लपेटा हुआ पतला तार।
गूँजना-अ० [सं० गुंजन] भौंरों का मधुर ध्वनि करना। गुंजारना। २. प्रतिध्वनि से व्याप्त होना या भरना।
गूँथना-स० १. दे० 'गूँधना'। २. दे० 'पिरोना'।
गूँधना-स० [सं०गुध=क्रीड़ा] [भाव० गुँधाई, गुँधावट] पानी में मिलाकर हाथों से दबाना या मलना। माँड़ना। स० दे० 'पिरोना'।
गूजर-पुं० [सं० गुर्जर] [स्त्री० गूजरी, गुजरिया] अहीरों की एक जाति। ग्वाला।
गूजरी-स्त्री० [सं० गुर्जरी] १. गूजर जाति की स्त्री। ग्वालिन। २. एक प्रकार का गहना।
गूढ़-वि० [सं०] [भाव० गूढ़ता] १. छिपा हुआ। २. जिसमें बहुत अभिप्राय छिपा हो। ३. जिसका आशय समझना कठिन हो।
गूढ़-गेह*-पुं० [सं० गूढ़+हिं० गेह] १. मकान के अंदर का छिपा हुआ कमरा। तहखाना। २. मंत्रणा-गृह। ३. यज्ञशाला।
गूढ़ोक्ति-स्त्री० [सं०] १. गूढ़ कथन या बात। २. कोई गुप्त बात किसी को सुनाकर किसी और से कहना।
गूथना-स० दे० 'गूँथना'।
गूदड़-पुं० [हिं० गूदड़ी] फटे-पुराने कपड़े। चिथड़ा।
गूदा-पुं० [?] [स्त्री० गूदी] १. फल के अन्दर का कोमल खाद्य अंश। २. खोपड़ी का सार भाग। भेजा। ३. मींगी। गिरी।
गून-स्त्री० [सं० गुण] नाव खींचने की रस्सी।
गूलर-पुं० [सं० उदुंबर] १. बरगद की जाति का एक पेड़ जिसके फल के अन्दर छोटे छोटे कीड़े होते हैं। २. इस पेड़ का फल। उदुंबर। ऊमर।
मुहा०-गूलर का फूल=दुर्लभ व्यक्ति या पदार्थ।
गूह-पुं० [सं० गुह्य] मैला। विष्ठा।
गृध्र-पुं० [सं०] गिद्ध पक्षी।
गृह-पुं० [सं०] [वि० गृही] घर।
गृहपति-पुं० [सं०] [स्त्री० गृह-पत्नी] १. घर का मालिक। २. अग्नि।
गृह-मंत्री-पुं० दे० 'गृह-सचिव'।
गृह-युद्ध-पुं० [सं०] १. घर का झगड़ा।

२. देश के अन्दर की या देश-वासियों की आपसी लड़ाई। (सिविल वार)

गृह-सचिव-पुं० [सं०] राज्य का वह मन्त्री जो देश की भीतरी बातों की व्यवस्था करता हो। (होम मिनिस्टर)

गृहस्थ-पुं० [सं०] १. गृहस्थाश्रम में रहनेवाला व्यक्ति। ज्येष्ठाश्रमी। २. घर-बार या बाल-बच्चोंवाला। ३. किसान।

गृहस्थाश्रम-पुं० [सं०] चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम, जिसमें लोग विवाह करके घर का काम-काज देखते हैं।

गृहस्थी-स्त्री० [सं० गृहस्थ+ई (प्रत्य०)] १. गृहस्थाश्रम। २. घर के काम-धंधे। ३. परिवार। ४. घर का सामान। ५. खेती-बारी।

गृहिणी-स्त्री० [सं०] १ घर की मालिकिन। २. भार्या। पत्नी।

गृही-पुं० [सं० गृहिन्] [स्त्री० गृहिणी] १. गृहस्थ। गृहस्थाश्रमी। २. यात्री। (भड्डरी की बोली)

गृहीत-वि० [सं०] [स्त्री० गृहीता] १. जो ग्रहण किया गया हो। स्वीकृत। २. २. लिया, पकड़ा या रक्खा हुआ।

गृह्य-वि० [सं०] गृह संबंधी। घर का।

गृह्यसूत्र-पुं० [सं०] विवाह आदि संस्कारों की वैदिक पद्धति।

गेंड़ुआ-पुं० दे० 'गेंदुआ'।

गेंडुरी-स्त्री० [सं० कुंडली] १. दे० 'इँडुआ'। २. गोल चक्कर। कुंडली।

गेंद-पुं० [सं० गेंदुक, कंदुक] कपड़े, चमड़े आदि का वह गोला जिससे लड़के खेलते हैं। कंदुक।

गेंद-तड़ी-स्त्री० [हिं० गेंद+तड़ (अनु०)] एक खेल जिसमें लड़के एक दूसरे को गेंद से मारते हैं।

गेंदा-पुं० [हिं० गेंद] १. पीले रंग का एक फूल। २. इस फूल का पौधा।

गेंदुआ-पुं० [सं० गेंदुक] १. गोल तकिया। २. गेंद।

गेंदुक*-पुं० दे० 'गेंद'।

गेड़ना-स० [सं० गंड=चिह्न या हिं० गंडा] १. लकीर आदि से घेरना। २. परिक्रमा करना। चारो ओर घूमना। ३. खेत की मेंड़ बनाना।

गेय-वि० [सं०] गाने के योग्य। जो गाया जा सके। जैसे-गेय पद।

गेरना-स० दे० 'गिराना'।

गेरुआ-वि० [हिं० गेरू+आ (प्रत्य०)] १. मटमैले लाल रंग का। २. गेरू से रँगा हुआ। गैरिक। जोगिया। भगवा।

गेरू-पुं० [सं० गवेरुक] एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी। गिरमाटी। गैरिक।

गेह-पुं० [सं० गृह] घर। मकान।

गेहनी*-स्त्री० दे० 'गृहिणी'।

गेही*-पुं० [स्त्री० गेहिनी] दे० 'गृहस्थ'।

गेहुँअन-पुं० [हिं० गेहूँ] मटमैले रंग का एक जहरीला साँप।

गेहुँआँ-वि० [हिं० गेहूँ] गेहूँ के रंग का।

गेहूँ-पुं० [सं० गोधूम] एक प्रसिद्ध अनाज जिसके आटे की रोटी बनती है।

गैंड़ा-पुं० [सं० गंडक] भैंसे के आकार का कड़ी खालवाला एक जंगली पशु।

गैन*-पुं० [सं० गमन] गैल। मार्ग। *पुं० दे० 'गगन'।

गैनी*-वि० स्त्री० [हिं० गैन (गमन)+ई (प्रत्य०)] चलनेवाली। गामिनी। (यौगिक शब्दों के अन्त में) †स्त्री० दे० 'खंता'।

गैब-पुं० [अ०] वह जो प्रत्यक्ष या सामने न हो। परोक्ष।

गैबर*-पुं० [सं० गजवर] १. बड़ा हाथी। २. एक प्रकार की चिड़िया।

गैबी-वि० [अ० ग़ैब] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. अजनबी। अपरिचित। ३. ईश्वर या अप्रत्यक्ष शक्ति की ओर का।

गैयर*-पुं० दे० 'हाथी'।

गैया-स्त्री० [सं० गो] गाय। गौ।

गैर-वि० [अ०] १. अन्य। दूसरा। २. अपने कुटुम्ब या समाज से बाहर का। पराया। ३. अभाव या निषेध-सूचक शब्द। जैसे-गैर-हाजिर। *स्त्री० [?] अत्याचार। अंधेर।

गैर-जिम्मेदार-वि० [अ०+फा०] [संज्ञा गैर-जिम्मेदारी] अपनी जिम्मेदारी या उत्तरदायित्व न समझनेवाला।

गैरत-स्त्री० [अ०] लज्जा। शरम।

गैर-मनकूला-वि० [अ०] (सम्पत्ति) जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जा सकें। स्थावर। अचल।

गैर-मामूली-वि० [अ०] असाधारण।

गैर-मुनासिब-वि० [अ०] अनुचित।

गैर-मुमकिन-वि० [अ०] असंभव।

गैर-वाजिब-वि० [अ०] अनुचित।

गैर-सरकारी-वि० [अ०+फा०] १. जो सरकारी न हो। २. जिसके लिए सरकार उत्तरदायी न हो। (वक्तव्य आदि)

गैर-हाजिर-वि० [अ०] अनुपस्थित।

गैर-हाजिरी स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति।

गैरिक-पुं० [सं०] १. गेरू। २. सोना। वि० गेरू से रँगा हुआ।

गैल-स्त्री० [हिं० गली] छोटा रास्ता।

गोंठ-स्त्री० [सं० गोष्ठ] धोती की लपेट जो कमर पर पड़ती है।

गोंठना-स० [सं० गुंठन] १. किसी अस्त्र की नोक या धार कुंठित करना। २. गुझिया या मालपूए की कोर मोड़ना। स० [सं० गोष्ठ] चारों ओर से घेरना।

गोंड़-पुं० [सं० गोंड] एक जंगली जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है।

गोंडरा†-पुं० [सं० कुंडल] [स्त्री० गोंडरी] १. चरसे का मँडरा। २. गोल आकार की कोई वस्तु। मँडरा। ३. गोल घेरा।

गोंद-पुं० [सं० कुंदुरु या हिं० गूदा] पेड़ों के तनों से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार स्राव। निर्यास।

यौ०-**गोंद-दानी** = वह बरतन जिसमें गोंद भिगोकर रखते हैं।

गोंद-पँजीरी-स्त्री० [हिं० गोंद+पँजीरी] गोंद मिली हुई पँजीरी जो प्रसूता स्त्रियों को खिलाई जाती है।

गोंद्री-स्त्री० [सं० गुंद्रा] १. पानी में होनेवाली एक घास। २. इस घास की बनी चटाई।

गोंदी-स्त्री० दे० 'हिंगोट'।

गो-स्त्री० [सं०] १. गाय। गौ। २. किरण। ३. वृष राशि। ४. इन्द्रिय। ५. वाणी। ६. सरस्वती। ७. आंख। दृष्टि। ८. बिजली। ९ पृथ्वी। १०. दिशा। ११. माता। १२. बकरी, भैंस आदि दूध देनेवाले पशु। १३ जीभ। जबान। पुं० [सं०] १. बैल। २. नंदी नामक शिवगण। ३. घोड़ा। ४. सूर्य। ५ चन्द्रमा। ६. बाण। तीर। अव्य० [फा०] यद्यपि।

गोइँठा†-पुं० दे० 'उपला'।

गोइंदा-पुं० [फा०] गुप्तचर। जासूस।

गोइ*-पुं० दे० 'गेंद'।

गोइन-पुं० [?] एक प्रकार का हिरन।

गोइयाँ-पुं० [हिं० गोहन] साथी। स्त्री० सखी। सहेली।

गोई*-स्त्री० दे० 'गोइयाँ'।

गोऊ†*-वि० [हिं० गोना+ऊ (प्रत्य०)] छिपानेवाला।

गोकर्ण-पुं० [सं०] १. मलावार का एक शैव क्षेत्र। २. वहाँ की शिवमूर्त्ति। वि० [सं०] गौ के-से लम्बे कानोंवाला।

गोकुल-पुं० [सं०] १. गौओं का झुंड। गो-समूह। २. गो-शाला। ३. मथुरा के पूर्व-दक्षिण का एक प्राचीन गाँव।

गोखरू-पुं० [सं० गोक्षुर] १. एक छोटी झाड़ी जिसमें छोटे कँटीले फल लगते हैं। २.धातु के वे गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिए उनके रास्ते में बिछाये जाते हैं। ३. गोटे और बादले के तारों से बना कपड़ों पर लगाने का एक साज। ४. कड़े के आकार का हाथ का एक गहना।

गोखा-पुं० दे 'झरोखा'।

गो-ग्रास-पुं० [सं०] पके हुए अन्न का वह थोड़ा सा अंश जो भोजन या श्राद्ध आदि के समय गौ के लिए निकाला जाता है।

गोचर-पुं० [सं०] १. वह जिसका ज्ञान इन्द्रियों से हो सके। २.चरागाह। चरी।

गोचर भूमि-स्त्री० [सं०] वह भूमि जो गौओं के चरने के लिए खाली छोड़ दी गई हो।

गोज-पुं० [फा०] अपान वायु। पाद।

गोजई-स्त्री० [हिं० गेहूँ+जौ] एक में मिला हुआ गेहूँ और जौ।

गोजर-पुं० [सं० खर्जु] कन-खजूरा।

गोजी†-स्त्री० [सं० गवाजन] बड़ी लाठी।

गोझनवट†-स्त्री० [देश०] १. साड़ी का अंचल। पल्ला। २. फुबती।

गोझा-पुं० [सं० गुह्यक] [स्त्री० अल्पा० गुझिया] १. गुझिया। २. एक कँटीली घास। गुखा। ३. झोंक।

गोट-स्त्री० [सं० गोष्ठ] १. वह पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है। मगजी। २. किसी प्रकार का लगा हुआ किनारा।

स्त्री० [सं० गोष्ठी] मंडली। गोष्ठी।

स्त्री० [सं० गुटक] चौपड़ आदि खेलने का मोहरा। नरद। गोटी।

गोटा-पुं० [हिं० गोट] १. बादले का वह पतला फीता जो कपड़ों पर लगाया जाता है। २. धनियां। ३. कतरकर एक में मिलाई हुई इलायची, सुपारी और खरबूजे या बादाम की गिरी। ४. सूखा हुआ मल। कंडी।

गोटी-स्त्री० [सं० गुटिका] १. पत्थर या मिट्टी का वह छोटा टुकड़ा जिससे लड़के खेलते हैं। २. चौपड़ खेलने का मोहरा। नरद। ३. गोटियों का एक प्रकार का खेल। ४. लाभ का योग।

गोठ-स्त्री० [सं० गोष्ठ] १. गोशाला। २. गोष्ठी। ३. श्राद्ध। ४. सैर।

गोड़†-पुं० [सं० गम, गो] पैर।

गोड़इत-पुं० [हिं० गोइँड़+ऐत (प्रत्य०)] गांव में पहरा देनेवाला चौकीदार।

गोड़ना-स० [हिं० कोड़ना] मिट्टी खोदना और उलट-पुलट देना जिससे वह पोली और भुरभुरी हो जाय। कोड़ना।

गोड़ा†-पुं० [हिं० गोड़] १. पलंग आदि का पाया। २. घोड़िया।

गोड़ाई-स्त्री० [हिं० गोड़ना] गोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गोड़ाना-स० हिं० 'गोड़ना' का प्रे०।

गोड़ा-पाई-स्त्री० [हिं० गोड़+पाई= जुलाहों का ढाँचा] बार बार आना-जाना।

गोड़ारी†-स्त्री० [हिं० गोड़=पैर+आरी (प्रत्य०)] १. पैताना । २. जूता ।

गोत-पुं० [सं० गोत्र] १. कुल । वंश । खानदान । २. समूह । जत्था । दल ।

गोतना†-स० [हिं० गोता] १. गोता देना । डुबाना । २. नीचे की तरफ ले जाना ।

अ० १. नीचे की तरफ झुकना । २. निद्रा या तन्द्रा आदि के वश में होना ।

गोतम-पुं० [स०] एक प्रसिद्ध ऋषि ।

गोतमी-स्त्री० [सं०] अहल्या ।

गोता-पुं० [अ० ग़ोतः] डुबकी ।
मुहा०-गोता खाना=धोखे में आना । छल में फँसना । गोता मारना=१. डुबकी लगाना । डूबना । २. बीच में अनुपस्थित रहना ।

गोताखोर-पुं० [अ०] १. पानी में डुबकी लगाकर चीजें ढूँढनेवाला । २. डुबकनी नाव ।

गोतिया-पुं० दे० 'गोती' ।

गोती-पुं० [सं० गोत्रीय] अपने गोत्र का वह व्यक्ति जिसके साथ शौचाशौच का संबंध हो । गोत्रीय । भाई-बंद ।

गोत्र-पुं० [सं०] १. सन्तान । २. नाम । ३. राजा का छत्र । ४. दल । जत्था । ५. वंश । ६ हिन्दू कुल या वंश की वह विशिष्ट संज्ञा जो किसी मूल पुरुष या गुरु के नाम पर होती है ।

गोत्रोच्चार-पुं० [सं०] विवाह के समय वर और वधू के वंश, गोत्र और पूर्वजों आदि का दिया जानेवाला परिचय ।

गोद-नशीन-पुं० [हिं० गोद+फा०नशीन] वह जिसे किसी ने गोद लिया हो । दत्तक ।

गोदनहारी-स्त्री० [हिं० गोदना+हारी (प्रत्य०)] गोदना गोदने का व्यवसाय करनेवाली स्त्री ।

गोदना-स० [हिं० खोदना] १. चुभाना । गड़ाना । २. उकसाना । ३. चुभती या लगती हुई बात कहना । ताना देना ।
पुं० तिल के आकार का वह नीला चिह्न या फूल-पत्ते जो शरीर में सूइयों से पाछकर बनाये जाते हैं ।

गो-दान-पुं० [सं०] १. विधिवत् संकल्प करके ब्राह्मण को गौ दान करने की क्रिया । २. मुंडन संस्कार ।

गोदाम-पुं० [अं० गोडाउन] वह स्थान जहाँ बिक्री का बहुत-सा माल इकट्ठा करके रक्खा जाता हो । (गोडाउन)

गोदी-स्त्री० दे० 'गोद' ।

गो-धन-पुं० [सं०] १. गौएँ । २. गौ रूपी सम्पत्ति । ३. एक प्रकार का तीर ।
†*पुं० [सं० गोवर्द्धन] गोवर्द्धन पर्वत ।

गोधूम-पुं० [सं०] गेहूँ ।

गोधूलि(ी)-स्त्री० [सं०] सन्ध्या का समय ।

गोन-स्त्री० [सं० गोणी] वह दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है ।
स्त्री० [सं० गुण] वह रस्सी जो नाव खींचने के लिए मस्तूल में बाँधते हैं ।

गोना*-स० [सं० गोपन] छिपाना ।

गोप-पुं० [सं०] १. गौ का रक्षक । २. ग्वाला । अहीर । ३.गोशाला का अध्यक्ष । ४. राजा । ५. गाँव का मुखिया ।
पुं० [सं० गुंफ] गले में पहनने का एक गहना ।

गोपति-पुं० [सं०] १. शिव । २. विष्णु । ३. श्रीकृष्ण । ४. ग्वाला । गोप । ५. राजा । ६. सूर्य ।

गोपन-पुं० [सं०] १. छिपाव । दुराव । २. छिपाना । लुकाना । ३. रक्षा ।

गोपना*-स० [सं० गोपन] छिपाना।
गोपनीय-वि० [सं०] छिपाने के लायक।
गोपांगना-स्त्री० [सं०] गोपी।
गोपाल-पुं० [सं०] १. गौ का पालक। २. अहीर। ग्वाला। ३. श्रीकृष्ण।
गोपिका-स्त्री० दे० 'गोपी'।
गोपी-स्त्री० [सं०] १. ग्वालिनी। गोप-पत्नी। २ श्रीकृष्ण की प्रेमिका ब्रज की गोप जाति की स्त्रियाँ।
गोपी चंदन-पुं० [सं०] एक प्रकार की पीली मिट्टी।
गोपुर-पुं० [सं०] १. नगर या किले का बड़ा फाटक। २. फाटक। ३. स्वर्ग।
गोपेंद्र-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
गोप्ता-वि० [सं० गोप्तृ] रक्षा करने-वाला। रक्षक।
गोप्य-वि० [सं०] गुप्त रखने योग्य। छिपाने योग्य। गोपनीय। (सीक्रेट)
गोफन(ा)-पुं० [सं० गोफणा] छींके की तरह का वह जाल जिसमें ढेले आदि भरकर शत्रुओं पर चलाते है। ढेलवाँस। फन्नी।
गोबर-पुं० [सं० गोमय] गौ का मल।
गोबर-गणेश-वि० [हिं० गोबर+गणेश] १. भद्दा। बदसूरत। २. मूर्ख। बेवकूफ।
गोबरी-स्त्री० [हिं० गोबर+ई (प्रत्य०)] गोबर की लिपाई।
गोभा-स्त्री० [?] लहर।
गोभी-स्त्री० [सं० गोजिह्वा या गुंफ= गुच्छा] १.एक प्रकार की घास। गाजिया। बन-गोभी। २. एक प्रकार का शाक। फूल-गोभी।
गोमय-पुं० [सं०] गोबर।
गोमुख-पुं० [सं०] १. गौ का मुँह। यौ०-गोमुख नाहर या व्याघ्र= देखने में सीधा, पर वास्तव में क्रूर। २ गौ के मुँह के आकार का शंख। ३. नरसिंहा नाम का बाजा।
गोमुखी-स्त्री० [सं०] एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं। जप-माली। जप-गुथली।
गो-मूत्रिका-स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का चित्रकाव्य। २. चित्रण आदि में लहरियेदार बेल। बेल-मुतनी।
गोमेद(क)-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध मणि या रत्न। राहु रत्न।
गोमेध-पुं० [सं०] एक यज्ञ जिसमें गौ के मांस से हवन किया जाता था।
गोय*-पुं० दे० 'गेंद'।
गोया-क्रि० वि० [फा०] मानो।
गोर-स्त्री० [फा०] कब्र।
†वि० [सं० गौर] गोरा।
गोरख-धंधा-पुं० [हिं० गोरख+धंधा] कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों का वह समूह जिन्हें विशेष युक्ति से पर-स्पर जोड़ या अलग कर लेते हैं। २. कोई उलझन की बात या काम।
गोरखनाथ-पुं० [हिं० गोरखनाथ] एक प्रसिद्ध हठयोगी अवधूत।
गोरखा-पुं० [हिं० गोरख] १. नेपाल के अन्तर्गत एक प्रदेश। २. इस देश का निवासी।
गोरज-पुं० [सं०] गौ के खुरों से उड़ने-वाली धूल।
गोरटा*-वि० दे० 'गोरा'।
गोरस-पुं० [सं०] १. दूध। २. दही। ३. मठा। छाछ। ४. इन्द्रियों का सुख।
गोरसी-स्त्री० [सं० गोरस+ई (प्रत्य०)] दूध गरम करने की अँगीठी।
गोरा-वि० [सं० गौर] १. (मनुष्य का)

साफ और सफेद रंग। २. ऐसे रंगवाला। (मनुष्य)

पुं० युरोप, अमेरिका आदि देशों का निवासी। फिरंगी।

गोराई-स्त्री० [हिं० गोरा + ई] १. गोरापन। २. सुन्दरता। सौन्दर्य।

गोरिल्ला-पुं० [अफ्री०] बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बन-मानुस।

गोरी-स्त्री० [सं० गौरी] सुन्दर और गोरे रंग की स्त्री। रूपवती स्त्री।

गोरू-पुं० [सं० गो] सींगवाला पशु। चौपाया। मवेशी। (कैटल)

गोरू-चोर-पुं० [हिं० गोरू+चोर] वह जो दूसरों की गौएँ, भैंसें आदि चुराता हो। (एबैक्टर)

गोरोचन-पुं० [सं०] एक पीला सुगन्धित द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।

गोलंदाज-पुं० [फा०] तोप में गोला रखकर चलानेवाला। तोपची।

गोलंबर-पुं० [हिं० गोल+अंबर] १. गुंबद। २. गुंबद के आकार का पदार्थ। ३. गोलाई। ४. कलबूत। कालिब।

गोल-वि० [सं०] १. वृत्त या चक्र के आकार का। २.ऐसे घनात्मक आकार का जिसके तल का प्रत्येक बिन्दु उसके अन्दर के मध्य बिन्दु से समान दूरी पर हो। गेंद आदि के आकार का। सर्व-वर्त्तुल। मुहा०-गोल बात=ऐसी अस्पष्ट बात जिसके कई अर्थ हों।

पुं० [सं०] १. मंडलाकार क्षेत्र। वृत्त। २. गोलाकार पिंड। वटक। गोला।

पुं० [फा० गोल] मंडली। झुंड।

गोलक-पुं० [सं०] १. गोलोक। २. गोल पिंड। ३. विधवा का जारज पुत्र। ४. मिट्टी का बड़ा कुंडा। ५. आँख का डेला। ६. आँख की पुतली। ७. गुंबद। ८. वह सन्दूक या थैली जिसमें धन संग्रह किया जाय। गल्ला। गुल्लक। ९. वह कोश जिसमें किसी विशेष कार्य के लिए सभी स्थानों से लाकर धन या कोई और पदार्थ संचित किया जाय। (पूल)

गोल-गप्पा-पुं० [हिं० गोल+अनु० गप] एक प्रकार की करारी फुलकी।

गोल-माल-पुं० [सं० गोल (योग)] गड़बड़ी। अव्यवस्था।

गोल मिर्च-स्त्री० दे० 'काली मिर्च'।

गोल-मेज-स्त्री० [हिं० गोल+फा० मेज] वह गोल मेज जिसके चारों ओर बैठकर कुछ लोग पूर्ण समानता के भाव से कुछ विचार करें। जैसे-गोल-मेज कान्फरेन्स।

गोला-पुं० [हिं० गोल] १. वृत्त या पिंड की तरह की बड़ी गोल चीज। २. लोहे का वह गोल पिंड जो तोपों में भरकर शत्रुओं पर फेंकते हैं। ३.वायुगोला रोग। ४. जंगली कबूतर। ५. गरी का गोला। ६.वह बाजार जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दूकानें हों। ७. लकड़ी का लम्बा लट्ठा। कोड़ी। बल्ला। ८. रस्सी, सूत आदि की लपेटी हुई गोल पिंडी।

गोलाई-स्त्री० [हिं० गोल+आई (प्रत्य०)] गोल होने का भाव। गोलापन।

गोलाकार-वि० [सं०] जिसका आकार गोल हो। गोल शक्लवाला।

गोलार्द्ध-पुं० [सं०] पृथ्वी का कोई आधा भाग जो उसे एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बीचो-बीच काटने से बनता है।

गोली-स्त्री० [हिं० गोला का अल्पा०] १. छोटा गोलाकार पिंड। वटिका। २. औषध की वटिका। बटी। ३. मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोल पिंड जिससे

लड़के खेलते हैं । ४ सीसे आदि की ढली हुई गोली जो बन्दूक में भरकर किसी को मारने के लिए चलाई जाती है ।

गो-लोक-पुं० [सं०] कृष्ण का निवास-स्थान जो सब लोकों से ऊपर माना गया है ।

गोवना*-स० दे० 'गोना' ।

गोवर्द्धन-पुं० [सं०] वृन्दावन का एक पवित्र पर्वत ।

गोविंद-पुं० [सं० गोपेन्द्र] श्रीकृष्ण ।

गोश-पुं० [फा०] कान ।

गोशवारा-पुं० [फा०] १.कान का बाला । कुंडल । २. वह बड़ा मोती जो सीप में एक ही हो । ३.तुर्रा । कलगी । सिर-पेच । ४. जोड़ । योग । ५. वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर मद का आय-व्यय अलग अलग दिखलाया गया हो ।

गोशा-पुं० [फा०] १. कोना । २ एकान्त स्थान । ३. नोक । ४. धनुष की कोटि ।

गोशाला-स्त्री० [सं०] १ गौओं के रहने का स्थान । गोष्ठ । २. वह स्थान जहाँ गौएँ रखी जाती हैं और उनका दूध, मक्खन, घी आदि बेचा जाता है। (डेअरी)

गोश्त-पुं० [फा०] मांस ।

गोष्ठ-पुं० [सं०] १. गोशाला । २. परामर्श । सलाह । ३. दल । मंडली ।

गोष्ठी-स्त्री० [सं०] १. सभा । मंडली । २. बात-चीत । ३. परामर्श । सलाह ।

गोसाईं-पुं० [सं० गोस्वामी] १. गौओं का स्वामी । २. ईश्वर । ३. संन्यासियों का एक भेद । ४. विरक्त साधु । ५. मालिक । प्रभु ।

गोसैयाँ-पुं० दे० 'गोसाईं' ।

गोस्वामी-पुं० [सं०] १. जितेन्द्रिय । २. वैष्णव सम्प्रदाय में आचार्यों के वंशधरों या उनकी गद्दी के अधिकारी ।

गोह-स्त्री० [सं० गोधा] छिपकली की तरह का एक जंगली जानवर ।

गोहन*-पुं० [सं० गोधन] १. संग रहनेवाला । साथी । २. संग । साथ ।

गोहरा-पुं० [सं० गो+ईल्ल या गोहल्ल] [स्त्री० अल्पा० गोहरी] सुखाया हुआ गोबर । कंडा । उपला ।

गोहराना*-अ० दे० 'पुकारना' ।

गोहार-स्त्री० [सं० गो+हार (हरण)] १. रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाना । पुकार । दुहाई । २. हल्ला-गुल्ला । शोर ।

गोही*-स्त्री० [सं० गोपन] १. दुराव । छिपाव । २. छिपी हुई बात । गुप्त वार्त्ता ।

गौं-स्त्री० [सं० गम, प्रा० गवँ] १ प्रयोजन सिद्ध होने का अवसर । सुयोग । मौका । २. प्रयोजन । मतलब । ३. गरज । स्वार्थ ।

यौ०-**गौं का यार**=मतलबी । स्वार्थी ।

मुहा०-**गौं निकलना**=काम निकलना । स्वार्थ सिद्ध होना । **गौं पड़ना** = गरज होना ।

३. ढंग । ढब । तर्ज । ४. पार्श्व । पक्ष ।

गौ-स्त्री० [सं०] गाय । गऊ ।

गौख-स्त्री० [सं० गवाक्ष] १. छोटी खिड़की । २. दालान या बरामदा । ३. आला । ताक । ताखा ।

गौखा-पुं० दे० 'गौख' ।

गौगा-पुं० [अ०] १. शोर । गुल-गपाड़ा । हल्ला । २. जनश्रुति । अफवाह ।

गौचरी-स्त्री० [हिं० गौ+चरना] किसी स्थान पर गौएँ चराने का कर ।

गौड़-पुं० [सं०] १. बंग देश का एक प्राचीन विभाग । २.ब्राह्मणों का एक वर्ग ।

गौड़ी-स्त्री० [सं०] १.गुड़ से बनी शराब ।

२. काव्य में एक रीति या वृत्ति जिसमें संयुक्त अक्षर और समास अधिक आते हैं।
गौण-वि० [सं०] मुख्य से कम महत्व का। अ-प्रधान। साधारण।
गौतम-पुं० [सं०] १. गोतम ऋषि के वंशज ऋषि। २. न्याय-शास्त्र के प्रसिद्ध एक आचार्य ऋषि। ३. बुद्ध देव।
गौतमी-स्त्री० [सं०] १. अहल्या। २. गोदावरी नदी। ३. दुर्गा।
गौन*-पुं० दे० 'गमन'।
गौनहर-स्त्री० [हिं०गौना+हर(प्रत्य०)] वह स्त्री जो वधू के साथ उसकी ससुराल जाती है।
स्त्री० [हिं० गाना+हर (प्रत्य०)] गाने का पेशा करनेवाली स्त्री।
गौना-पुं० [सं० गमन] विवाह के बाद की एक रसम जिसमें वधू को वर अपने साथ घर लाता है। द्विरागमन।
गौमुखी-स्त्री० दे० 'गोमुखी'।
गौर-वि० [सं०] १. गोरा। २. सफेद।
पुं० [सं०] १. लाल रंग। २.पीला रंग। ३. चन्द्रमा। ४ सोना। ५. केसर।
पुं० [अ०ग़ौर] १.सोच-विचार। चिन्तन। २. खयाल। ध्यान।
गौरव-पुं० [सं०] १. 'गुरु' या भारी होने का भाव। भारीपन। २. बड़प्पन। महत्व। ३. सम्मान। इज्जत।
गौरवान्वित-वि० [सं०] १. गौरव या महिमा से युक्त। २. मान्य। सम्मानित।
गौरवित-वि० दे० 'गौरवान्वित'।
गौरिया-स्त्री० [?] १. एक काला जल-पक्षी। २. मिट्टी का छोटा हुक्का।
गौरी-स्त्री० [सं०] १. गोरे रंग की स्त्री। २. पार्वती। गिरिजा। ३. आठ वर्ष की कन्या। ४. तुलसी। ५. सफेद गौ।
गौरीशंकर-पुं० [सं०] १. शिवजी। २. हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी।
गौरैया-स्त्री० दे० 'गौरिया'।
गौहर-पुं० [फा०] मोती।
ग्याति-स्त्री० दे० 'ज्ञाति'।
ग्यान-पुं० दे० 'ज्ञान'।
ग्रंथ-पुं० [सं०] १. पुस्तक। किताब। २. गाँठ लगाना। ग्रंथन।
ग्रंथकर्त्ता (कार)-पुं० [सं०] ग्रंथ की रचना करनेवाला। लेखक।
ग्रंथ चुंबन-पुं० [सं० ग्रंथ+चुंबन] [वि० ग्रंथ-चुंबक] सरसरी तौर पर कहीं कहीं से कोई ग्रंथ पढ़ना।
ग्रंथन-पुं० [सं०] १. गोंद लगाकर चिपकाना। २. गाँठ लगाकर जोड़ना या बाँधना। ३. गूँथना।
ग्रंथना*-स० दे० 'ग्रंथन'।
ग्रंथ साहब-पुं० [हिं० ग्रंथ+साहब] सिक्खों की धर्म-पुस्तक।
ग्रंथि-स्त्री० [सं०] १. [वि० ग्रंथित] १. गाँठ। २. बन्धन। ३. माया-जाल।
ग्रंथि-बंधन-पुं० [सं०] गँठ-बंधन।
ग्रसन-पुं० [सं०] १. निगलना। २. पकड़ना। ३. ग्रहण।
ग्रसना-स० [सं० ग्रसन] १. बुरी तरह से पकड़ना। २. सताना।
ग्रसित-वि० दे० 'ग्रस्त'।
ग्रस्त-वि० [सं०] [स्त्री० ग्रस्ता] १ पकड़ा हुआ। २.पीड़ित। ३.खाया हुआ।
ग्रस्तास्त-पुं० [सं०] ग्रहण में चन्द्रमा या सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।
ग्रस्तोदय-पुं० [सं०] चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगे रहने की अवस्था में उदय होना।
ग्रह-पुं० [सं०] १. वह तारा जो सूर्य्य की

परिक्रमा करता हो। जैसे-पृथ्वी, बुध। मुहा०-ग्रच्छे ग्रह=ग्रच्छा या सुख का समय। बुरे ग्रह=संकट या दुःख के दिन। २. नौ की संख्या। ३. ग्रहण करना। लेना। ४. चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। †वि० तंग करनेवाला।

ग्रहण-पुं०[सं०] १.सूर्य, चन्द्रमा या दूसरे ज्योति-पिंड के प्रकाश की वह रुकावट जो उस पिंड के सामने किसी दूसरे पिंड के ग्रा जाने से होती है। उपराग। २. पकड़ने या लेने की क्रिया। ३. स्वीकार।

ग्रह-दशा-स्त्री० [सं०] १. ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था। २. अभाग्य।

ग्रह-वेध-पुं० [सं०] वेध करके ग्रहों की स्थिति, गति आदि जानना।

ग्रांडील-वि० [ग्रं० ग्रैंडियर]ऊँचे कद का।

ग्राम-पुं० [सं०] १. गाँव। २. बस्ती। आबादी। ३. समूह। ४.शिव। ५.संगीत में सात स्वरों का समूह। सप्तक।

ग्रामणी-पुं० [सं०] १.गाँव का मालिक। २. प्रधान। मुखिया।

ग्राम-देवता-पुं० [सं०] किसी गाँव में पूजा जानेवाला वहाँ का प्रधान देवता।

ग्रामीण-वि० [सं०] देहाती। गँवार।

ग्राम्य-वि० [सं०] १. गाँव या देहात से सम्बन्ध रखनेवाला। (रूरल) २. ग्रामीण। देहाती। ३. मूर्ख। बेवकूफ। ४. प्रकृत। ठेठ। ५. अश्लील। अशिष्ट।

ग्रास-पुं० [सं०] १.उतना भोजन, जितना एक बार मुँह में डाला जाय। कौर। निवाला। २. पकड़ने की क्रिया। ३. ग्रहण। उपराग।

ग्रासना-स० दे० 'ग्रसना'।

ग्राह-पुं० [सं०] १. मगर। घड़ियाल। २.ग्रहण। उपराग। ३.पकड़ना। लेना।

ग्राहक-पुं० [सं०] १. ग्रहण करनेवाला। २. खरीदनेवाला। खरीददार। ३. लेने का इच्छुक। चाहनेवाला।

ग्राहना*-स० [सं० ग्रहण] ग्रहण करना। लेना।

ग्राही-वि० [सं०] [स्त्री० ग्राहिणी] १. ग्रहण या स्वीकार करनेवाला। २. मल रोकनेवाला (खाद्य पदार्थ या औषध)।

ग्राह्य-वि० [सं०] १. लेने योग्य। २. स्वीकार करने योग्य। ३. जानने योग्य।

ग्रीवा-स्त्री० [सं०] गर्दन। गला।

ग्रीषम|*-स्त्री० दे० 'ग्रीष्म'।

ग्रीष्म-स्त्री० [सं०] १. गरमी की ऋतु। जेठ-असाढ़ के दिन। २.उष्णता। गरमी।

ग्रेह*-पुं० दे० 'गेह'।

ग्रेही*-पुं० दे० 'गृहस्थ'।

ग्लानि-स्त्री० [सं०] १. शारीरिक या मानसिक शिथिलता। २. अपनी दशा या दोष आदि देखकर मन में होनेवाला खेद। ३. पश्चात्ताप।

ग्वार-स्त्री० [सं० गोराणी] एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल बनती है। कौरी। खुरथी।

ग्वार-पाठा-पुं० दे० 'घी कुआँर'।

ग्वाल(ा)-पुं० [सं० गो+पाल, प्रा० गोवाल] अहीर।

ग्वालिन-स्त्री० [हिं० ग्वाल] १.ग्वाले की स्त्री। ग्वाल जाति की स्त्री। २. ग्वार की फली।

ग्वैंठना|*-स० [सं० गुंठन, हिं० गुमेठ-ना] मरोड़ना। ऐंठना। घुमाना।

ग्वैंड़ा|*-पुं० दे० 'गोइँड़'।

घ

घ-हिन्दी वर्ण-माला में क-वर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण कंठ से होता है।

घँघोलना-स० [हिं० घन+घोलना] १. पानी में हिलाकर घोलना या मिलाना। २. पानी को हिलाकर मैला करना।

घंट-पुं० [सं० घट] १.वह घड़ा जो मृतक की क्रिया में पीपल में बाँधा जाता है। २. दे० 'घंटा'।

घंटा-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० घंटी] १.धातु का एक प्रसिद्ध बाजा। घड़ियाल। २. घड़ियाल बजाकर दी जानेवाली समय की सूचना। ३. दिन-रात का चौबीसवाँ भाग। साठ मिनट का समय।

घंटा-घर-पुं० [हिं० घंटा+घर] वह मीनार जिसपर लगी हुई घड़ी चारो ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसके घंटे का शब्द दूर तक सुनाई दे। (क्लॉक टावर)

घंटिका-स्त्री० [सं०] १. छोटा घंटा। २. घुँघरू।

घंटी-स्त्री० [सं० घंटिका] पीतल या फूल की छोटी लुटिया।

स्त्री० [सं० घंटा] १. छोटा घंटा। २. घंटी बजने का शब्द। ३. गरदन की वह हड्डी जो कुछ आगे निकली रहती है। ४. गले के अन्दर मांस की वह छोटी पिंडी जो जीभ की जड़ के पास होती है। कौआ।

घई-स्त्री० [सं० गंभीर] १. भँवर। पानी का चक्कर। २. थूनी। टेक।

वि० [सं० गंभीर] बहुत गहरा।

घघरा-पुं० दे० 'घाघरा'।

घट-पुं० [सं०] १. घड़ा। २. शरीर। ३. मन या हृदय।

मुहा०-घट में बसना या बैठना=मन में बसना। ध्यान पर चढ़ा रहना।

वि० [हिं० घटना] घटा हुआ। कम।

घटक-पुं० [सं०] १. बीच में पड़नेवाला। मध्यस्थ। २. विवाह-संबंध ठीक करानेवाला। बरेखिया। ३. दलाल। ४. काम पूरा करनेवाला, चतुर व्यक्ति।

घटती-स्त्री० [हिं० घटना] १. कमी। न्यूनता।

मुहा०-घटती से=अंकित या नियत मूल्य से कम मूल्य पर। (बिलो पार) २. हीनता।

घटन-पुं० [सं०] [वि० घटनीय, घटित] १. गढ़ा जाना। २. उपस्थित होना।

घटना-अ० [सं० घटन] १. होना। २.ठीक बैठना। लगना। ३. ठीक उतरना।

अ० [हिं० कटना] १. कम होना। थोड़ा होना। २. पूरा न रह जाना।

स्त्री० [सं०] कोई विलक्षण या विकट बात जो हो जाय। वाकया। वारदात। (एक्सिडेन्ट)

घटना-स्थल-पुं० [सं०] वह स्थल या स्थान जहाँ कोई घटना हुई हो। (प्लेस ऑफ अकरेन्स)

घट-बढ़-स्त्री० [हिं० घटना+बढ़ना] कमी-बेशी। न्यूनाधिकता।

घट-योनि-पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि।

घटवाई-पुं० [हिं० घाट+वाई] घाट का कर लेनेवाला।

घटवार(ल)-पुं० [हिं० घाट+पाल या वाला] १. घाट का महसूल लेनेवाला। २. मल्लाह। ३. घाटिया। गंगापुत्र।

घटवाही-स्त्री० दे० 'घट्ट-कर'।

घट-स्थापन-पुं० [सं०] १. मंगल-कार्य के पहले जल से भरा घड़ा पूजन के स्थान

पर रखना। २. नवरात्र का पहला दिन।

घटा-स्त्री० [सं०] मेघों का घना समूह। उमड़े हुए बादल। मेघ-माला।

घटाई*-स्त्री० [हिं० घटना+ई (प्रत्य०)] १. हीनता। २. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

घटाटोप-पुं० [सं०] १. घनघोर घटा। २. गाड़ी या पालकी को ढकने का परदा। ओहार।

घटाना-स० [हिं० घटना] १. कम करना। क्षीण करना। २. बाकी निकालना। ३. प्रतिष्ठा कम करना।

स० [सं० घटन] १. घटित करना। अर्थ आदि के विचार से ठीक या पूरा उतारना।

घटाव-पुं० [हिं० घटना] १. थोड़े या कम होने का भाव। न्यूनता। कमी। २. अवनति। ३. नदी के पानी का उतार।

घटिका-स्त्री० [सं०] १. छोटा घड़ा या नाँद। २. घटी यंत्र। घड़ी। ३. एक घड़ी या २४ मिनट का समय।

घटित-वि० [सं०] १. जो घटना के रूप में हुआ हो। २. रचित। निर्मित। ३. अर्थ आदि के विचार से ठीक या पूरा उतरा हुआ।

घटिताई*-स्त्री० [हिं० घटी] कमी।

घटिया-वि० [हिं० घट+इया (प्रत्य०)] १.अपेक्षाकृत खराब या सस्ता। २.तुच्छ।

घटी-स्त्री० [सं०] १. चौबीस मिनट का समय। घड़ी। २. समय-सूचक यंत्र। घड़ी।

स्त्री० [हिं० घटना] १. कमी। न्यूनता। २. हानि। नुकसान। घाटा। ३. मूल्य या महत्व आदि में होनेवाली कमी। (डेप्रिसिएशन)

घटूका*-पुं० दे० 'घटोत्कच'।

घटोत्कच-पुं० [सं०] हिडिंबा से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घट्ट-पुं० [सं०] नदी आदि का घाट।

घट्ट-कर-पुं० [सं०] वह कर जो किसी घाट पर नदी पार करनेवालों से लिया जाता है। (फेरी टोल)

घट्ठा-पुं० [सं० घट्ट] शरीर पर उभड़ा हुआ चिह्न जो किसी वस्तु की रगड़ लगने से पड़ जाता है।

घड़घड़ाना-अ० [अनु०] [भाव० घड़घड़ाहट] गड़गड़ या धड़धड़ शब्द करना। गड़गड़ाना।

घड़नई(नैल)-स्त्री० [हिं० घड़ा+नैया (नाव)] बाँसों में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा, जिसपर चढ़कर छोटी नदियाँ पार करते हैं।

घड़ना-स० दे० 'गढ़ना'।

घड़ा-पुं० [सं० घट] पानी भरने का धातु या मिट्टी का बरतन। बड़ी गगरी।

मुहा०-घड़ों पानी पड़ जाना=अत्यन्त लज्जित होना। लज्जा के मारे गड़ जाना।

घड़ाना-स० दे० 'गढ़ाना'।

घड़िया-स्त्री० दे० 'घरिया'।

घड़ियाल-पुं० [सं० घटिकालि] वह घंटा जो पूजा में या समय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है।

पुं० [सं० ग्राह ?] एक बड़ा और हिंसक जल-जन्तु। ग्राह।

घड़ियाली-पुं० [हिं० घड़ियाल] घड़ियाल या घन्टा बजानेवाला।

घड़िला*-पुं० दे० 'घड़ोला'।

घड़ी-स्त्री० [सं० घटी] १. दिन-रात का ३२ वाँ भाग। २४ मिनट का समय।

मुहा०-घड़ी घड़ी=बार बार। थोड़ी थोड़ी देर पर। घड़ियाँ गिनना=१.

उत्सुकतापूर्वक आसरा देखना। २. मरने के निकट होना।

२. समय। ३. अवसर। ४. वह यन्त्र जिससे घंटे और मिनट के हिसाब से समय का पता मिलता है।

घड़ी-दीया-पुं० [हिं०घड़ी+दीया=दीपक] वह घड़ा और दीया जो किसी के मरने पर घर में रक्खा जाता है।

घड़ीसाज़-पुं० [हिं० घड़ी+फा० साज़] घड़ी की मरम्मत करनेवाला।

घड़ोला-पुं० [हिं० घड़ा] छोटा घड़ा।

घातयाना-स० [हिं० घात] १. अपनी घात या दाँव में लाना। मतलब पर चढ़ाना। २. चुरा या छिपाकर लेना।

घन-पुं०[सं०] १. बादल। २. लोहारों का बड़ा हथौड़ा। ३. समूह। ४. कपूर। ५. वह गुणन-फल जो किसी अंक को उसी अंक से दो बार गुणा करने से आता है। ६. लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) का सम्मिलित विस्तार। ७. वह वस्तु या आकार जिसकी लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई आदि समान हों। ८. ताल देने का बाजा। ९. पिंड। शरीर। वि० १. घना। गझिन। २. गठा या भरा हुआ। ठोस। ३. दृढ़। मजबूत। ४. बहुत अधिक। ज्यादा।

घनक-स्त्री० [अनु०] गड़गड़ाहट। गरज।

घनकना-अ० [अनु०] गरजना।

घनकारा-वि० [हिं०घनक] गरजनेवाला।

घन-गरज-स्त्री० [हिं० घन+गर्जन] १. बादल की गरज। २.एक प्रकार की तोप।

घनघनाना-अ० [अनु०] [भाव० घनघनाहट] घंटे की-सी ध्वनि निकलना। स० [अनु०] घन घन शब्द करना।

घन-घोर-पुं० [सं० घन+घोर] १. भीषण ध्वनि। २. बादल की गरज। वि० १. बहुत घना या गहरा। जैसे-घनघोर घटा। २. भीषण। विकट।

घन-चक्कर-पुं० [सं० घन+चक्कर] १. चंचल बुद्धिवाला। २. मूर्ख। ३. वह जो व्यर्थ इधर-उधर फिरता हो। आवारा।

घनता-स्त्री० दे० 'घनत्व'।

घनत्व-पुं० [सं०] १. 'घना' होने का भाव। घनापन। २. लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई के सम्मिलित रूप का भाव। ३. ठोसपन। (डेन्सिटी)

घन-फल-पुं० [सं०] १. लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों के मान का गुणन-फल। २. वह गुणन-फल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त होता है।

घन-बान-पुं० [हिं० घन+बाण] एक प्रकार का बाण, जिसके प्रयोग से बादल छा जाते थे। (कल्पित)

घन-मूल-पुं० [सं०] गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक। जैसे-६४ का घनमूल ४ होगा।

घन-वर्धन-पुं० [सं०] धातुओं आदि को पीटकर बढ़ाना।

घन-श्याम-पुं० [सं०] १. काले बादल। २. श्रीकृष्ण।

घनसार-पुं० [सं०] कपूर।

घना-वि० [सं० घन] [स्त्री० घनी] १. जिसके अवयव या अंश पास-पास या सटे हों। सघन। गझिन। २. पास-पास बसा हुआ। ३.घनिष्ठ। बहुत पास का। ४. बहुत। अधिक।

घनाक्षरी-स्त्री० [सं०] कवित्त नामक छन्द।

घनात्मक-वि० [सं०] जिसकी

लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई। (ऊँचाई या गहराई) समान हो।

घनाली-स्त्री० [सं० घन+अवली] बादलों की पंक्ति या समूह।

घनिष्ठ-वि० [सं०] [भाव० घनिष्ठता] १. घना। २. निकट का। (संबंध)

घने-वि० [सं० घन] बहुत-से। अनेक।

घनेरा*-वि० [हिं० घना] [स्त्री० घनेरी] बहुत अधिक।

घपला-पुं० [अनु०] [भाव० घपलेबाजी] १. बिना क्रम की मिलावट। २.गड़-बड़ी। गोल-माल।

घबराना-अ० [सं० गह्वर या हिं० गड़-बड़ाना] १. भय या दुःख से मन चंचल होना। व्याकुल होना। २. भौचक्का होना। किंकर्तव्य-विमूढ़ होना। ३.उतावली में होना। ४. मन न लगना।
स० १. व्याकुल या अधीर करना। २. भौचक्का करना। ३. हैरान करना।

घबराहट-स्त्री० [हिं० घबराना] १. व्याकुलता। उद्विग्नता। २. किंकर्तव्य-विमूढ़ता। ३. उतावली। जल्दी।

घमंड-पुं० [सं० गर्व] १. किसी विषय या कार्य में अपने को औरों से बढ़कर समझना। अभिमान। शेखी। अहंकार। २ (किसी का) भरोसा।

घमंडी-वि० [हिं० घमंड] घमंड या अभिमान करनेवाला। अभिमानी।

घमकना-अ० [अनु० घम] 'घम घम' का-सा गंभीर शब्द होना। घहराना।
स० घूँसा मारना।

घमघमाना-अ० [अनु०] 'घम घम' शब्द होना।
स० घम घम करके मारना।

घमर-पुं० [अनु०] नगाड़े, ढोल आदि का घोर शब्द। गंभीर ध्वनि।

घमसान-वि० दे० 'घमासान'।

घमाका-पुं० [अनु० घम] १. गदा या घूँसे का प्रहार। २. भारी आघात का शब्द।

घमाघम-स्त्री० [अनु० घम] १. घम घम की ध्वनि। २. धूम-धाम। चहल-पहल। क्रि० वि० 'घम घम' शब्द के साथ।

घमासान- वि० [अनु०] बहुत गहरा या भीषण। जैसे-घमासान युद्ध।

घर-पुं० [सं० गृह] [वि० घराऊ, घरू, घरेलू] १. मनुष्यों के रहने का वह छाया हुआ स्थान, जो दीवारों से घेरकर बनाया जाता है। आवास। मकान।
मुहा०- **घर करना**=१. बस जाना। २ समाने या अँटने की जगह निकालना। ३. घुसना। धँसना। **मन में घर करना**=बहुत पसन्द आना। अत्यन्त प्रिय होना। **घर का**=१. निज का। अपना। २. आपस का। संबंधियों या आत्मीय जनों के बीच का। **घर का, न घाट का**=१. बे-ठिकाने का। २. निकम्मा। आवारा। **घर के बाढ़**= घर में डींग मारनेवाला। **घर-घाट**=१ रंग-ढंग। चाल-ढाल। २. ढब। ढंग। ३. ठौर-ठिकाना। घर-बार। ४. स्थिति। हैसियत। **घर घालना**=१. किसी के घर कलह या दुःख फैलाना। २. कुल में कलंक लगाना। **(किसी स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना**=किसी की पत्नी बनकर रहना। किसी को पति बनाना। **घर में**=पत्नी। **घर से**=पास से। पल्ले से।
२. जन्म-भूमि। स्वदेश। ३. कुल। वंश। ४. कोठरी। कमरा। ५. रेखाओं

आदि से घिरा हुआ स्थान। कोठा। खाना। ६. कोई वस्तु रखने का डिब्बा। कोश। खाना। (केस) ७. अँटने या समाने की जगह। ८. मूल कारण। जैसे- रोग का घर खाँसी।

घरघराना-अ० [अनु०] कफ के कारण, साँस लेते समय गले से घरं घरं शब्द निकलना।

घर-घालक(न)-वि० [हिं० घर + घालना] [स्त्री० घर-घालिनी] १. अपना या दूसरों का घर बिगाड़नेवाला। २. कुल में दाग लगानेवाला।

घर-जाया-पुं० [हिं० घर+जाया= पैदा] गृह-जात दास। घर का गुलाम।

घर-दासी*-स्त्री० दे० 'घरनी'।

घर-द्वार-पुं० दे० 'घर-बार'।

घरनाल-स्त्री० [हिं० घड़ा+नाली] एक प्रकार की पुरानी तोप। रहकला।

घरनी-स्त्री० [सं० गृहिणी, प्रा० घरणी] पत्नी। भार्या। गृहिणी।

घर-फोरा-पुं० [हिं० घर+फोड़ना] [स्त्री० घर-फोरी] दूसरों के परिवार में कलह फैलानेवाला।

घर-बसा-पुं० [हिं० घर+बसना] [स्त्री० घर-बसी] १. पति। २. उपपति।

घर-बार-पुं० [हिं० घर+बार=द्वार] [वि० घर-बारी] १. निवास-स्थान। २. घर का सामान और परिवार। गृहस्थी।

घर-बारी-पुं० [हिं० घर+बार] बाल-बच्चोंवाला। गृहस्थ। कुटुंबी।

स्त्री० घर-गृहस्थी का काम।

घरमना*-अ० [सं० घर्म्म+ना (प्रत्य०)] प्रवाह के रूप में गिरना। बहना।

घरवात†*-स्त्री०[हिं०घर+वात (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी का सामान।

घरवाला-पुं० [हिं० घर+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० घरवाली] १. घर का मालिक। २ पति। स्वामी।

घरसा*-पुं० [सं० घर्ष] रगड़।

घरहाई†*-वि० स्त्री० [हिं०घर+सं०घाती, हिं० हाई] १. घर में फूट डालनेवाली। २. लोगों की अपकीर्ति फैलानेवाली।

घराती-पुं० [हिं०घर+आती (प्रत्य०)] विवाह में कन्या-पक्ष के लोग।

घराना-पुं० [हिं० घर+आना (प्रत्य०)] खानदान। वंश। कुल।

घरिया-स्त्री० [सं० घटिका] १. मिट्टी का प्याला। २. वह पात्र जिसमें रख-कर सोना, चाँदी आदि धातुएँ गलाते हैं।

घरी-स्त्री० [?] तह। परत।

घरीक†*-क्रि० वि० [हिं० घड़ी+एक] घड़ी भर। थोड़ी देर।

घरू-वि० [हिं० घर+ऊ (प्रत्य०)] घर से संबंध रखनेवाला। घरेलू।

घरेलू-वि० [हिं० घर+एलू (प्रत्य०)] १.पालतू। २.घर का। निज का। घरू। ३.घर का बना हुआ या घर में होनेवाला।

घरौंदा(धा)-पुं० [हिं० घर + औंदा (प्रत्य०)] कागज, मिट्टी आदि का छोटा घर, जिससे बच्चे खेलते हैं।

घर्रा-पुं० [अनु०] १.गले की घरघराहट जो कफ के कारण होती है। २.(जेल में) कोल्हू पेरने या कूएँ से चरसा खींचने का कठिन काम।

घर्राटा-पुं० दे० 'खर्राटा'।

घर्षण-पुं० [सं०] रगड़। घिस्सा।

घर्षित-वि० [सं०] [स्त्री० घर्षिता] १. रगड़ा हुआ। २. रगड़ खाया हुआ।

घलना-अ० हिं० 'घालना' का अ०।

घलुआ†-पुं० [हिं० घाल] खरीदने में

तौल से कुछ अधिक मिली हुई वस्तु।

घवरि†*-स्त्री० दे० 'घौद'।

घस-खुदा-पुं० [हिं० घास+खोदना] १. घसियारा। २. अनाड़ी। मूर्ख।

घसना†*-अ० दे० 'घिसना'।

घसिटना-अ० [हिं० घसीटना] घसीटा जाना।

घसियारा-पुं० [हिं० घास] [स्त्री० घसियारी, घसियारिन] घास छील या खोदकर बेचनेवाला।

घसीट-स्त्री० [हिं० घसीटना] १. घसीटने की क्रिया या भाव। २. जल्दी जल्दी लिखने का भाव। ३. जल्दी में लिखा हुआ अस्पष्ट लेख।

घसीटना-स० [सं० घृष्ट+ना(प्रत्य०)] १ किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई आवे। २. जल्दी जल्दी लिखकर चलता करना। ३. किसी को किसी काम में जबरदस्ती शामिल करना।

घहन।ना†*-अ० [अनु०] घंटे आदि से ध्वनि निकालना। घहराना।

घहरना-अ० [अनु०] गरजने का-सा शब्द करना। गंभीर ध्वनि करना।

घहराना-अ० [अनु०] १. घहरना। २. भारी आवाज के साथ गिरना। ३. टूट पड़ना। सहसा आ उपस्थित होना।

घहरारा*-पुं० [हिं० घहराना] घोर शब्द। गंभीर ध्वनि। गरज।
वि० घोर शब्द करनेवाला।

घाँ*-स्त्री० [सं० क, या घाट=ओर ?] १. दिशा। दिक्। २. ओर। तरफ।

घाँघरा-पुं० दे० 'घाघरा'।

घाँटी†-स्त्री० [सं० घंटिका] १. गले के अन्दर की घंटी। कौआ। २. गला।

घाँहा†*-स्त्री० [हिं० घाँ] १. ओर। तरफ।

घा*-स्त्री० दे० 'घाँ'।

घाइ*-पुं० दे० 'घाव'।

घाई†*-स्त्री० [हिं० घाँ या घा] १. ओर। तरफ। २. ओड़। संधि। ३. बार। दफा। ४. पानी में का भँवर।

घाई-स्त्री० [सं० गभस्ति=उँगली] दो उँगलियों के बीच की जगह। अंटी।
स्त्री० [हिं० घाव] १. दे० 'घाव'। २. धोखा। चालबाजी।

घाऊ-घप-वि० [हिं० खाऊ+गप अनु०] चुपचाप दूसरों का माल हजम करनेवाला।

घाघ-पुं० १. एक प्रसिद्ध अनुभवी और चतुर व्यक्ति, जिसकी कहावतें उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हैं। २. भारी चालाक।

घाघरा-पुं० [सं० घर्घर=क्षुद्र घंटिका] [स्त्री० अल्पा० घाघरी] स्त्रियों का कमर में पहनने का चुननदार और घेरदार पहनावा जिससे नीचे का अंग ढका रहता है। बड़ा लहँगा।
स्त्री० [सं० घर्घर] सरजू नदी।

घाट-पुं० [सं० घट्ट] १. नदी या जलाशय के किनारे वह स्थान जहां लोग पानी भरते, नहाते या नाव पर चढ़ते हैं। २. चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग। ३. पहाड़। जैसे-पूर्वी या पश्चिमी घाट। ४. ओर। तरफ। दिशा। ५. रंग-ढंग। चाल-ढाल। ६. तलवार की धार।
†स्त्री० दे० 'घात'।
†वि० [हिं०घट] १. थोड़ा। २. घटिया।

घाटा-पुं० [हिं० घटना] १. घटने की क्रिया या भाव। २. घटी। हानि।

घाटारोह†*-पुं० [हिं० घाट+सं० रोध] घाट से जाने न देना। घाट रोकना।

घाटि†*-वि० [हिं० घटना] कम

मान का। बड़कर।

स्त्री० [सं० घात] १.नीच कर्म। २.पाप।

घाटिया-पुं० [हिं० घाट] घाट पर बैठकर दान लेनेवाला, गंगापुत्र।

घाटी-स्त्री० [हिं० घाट] दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा।

घात-पुं० [सं०] [वि० घाती] १.प्रहार। चोट। २. वध। हत्या। ३. अहित। बुराई। ४. (गणित में) गुणनफल। स्त्री० १. सुयोग। दाँव।

मुहा०-घात पर चढ़ना=अभिप्राय-साधन के अनुकूल होना। हत्थे चढ़ना। घात लगाना=युक्ति लगाना। घाते में=१. मुफ्त में। २. प्राप्य के अतिरिक्त। ३. यों ही। व्यर्थ।

२. आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध कोई कार्य करने के लिए अनुकूल अवसर की खोज। ताक। ३. दाँव-पेंच। छल। ४. रंग-ढंग। तौर-तरीका।

घातक-वि० [सं०] [स्त्री० घातिका] १. जो घात करे। घात करनेवाला। २. जिससे कोई मर सके। जैसे-घातक प्रहार। पुं० वह जो किसी को मार डाले। हत्यारा।

घाती-वि० [सं० घातिन्] [स्त्री० घातिनी] १. घातक। २. नाश करनेवाला। ३. धोखेबाज। छली।

घान-पुं० [सं० घन=समूह] १. जितना एक बार कोल्हू में डालकर पेरा या चक्की में पीसा जाय, उतना अंश। २. जितना एक बार में बनाया या पकाया जाय, उतना अंश।

पुं० [हिं० घन] प्रहार। चोट।

घाना*-स० [सं० घात] मारना।

घानी-स्त्री० दे० 'घान'।

घामा-स्त्री० [सं० घर्म] धूप। सूर्य्यातप।

घामड़-वि० [हिं० घाम] १. घाम या धूप से व्याकुल (चौपाया)। २. मूर्ख।

घाय*- पुं० दे० 'घाव'।

घायल-वि० [हिं० घाव] जिसे घाव लगा हो। आहत। जख्मी। चुटैल।

घाल-पुं० [हिं० घालना] घलुआ।

मुहा०-घाल न गिनना=तुच्छ समझना।

घालक-पुं० [हिं० घालना] [स्त्री० घालिका, घालिनी, भाव० घालकता] मारने या नाश करनेवाला।

घालना- स० [सं० घटन] १. रखना। डालना। २. फेंकना। चलाना। (अस्त्र) ३.बिगाड़ना। नष्ट करना। ४.मार डालना।

घाल-मेल-पुं० [हिं० घालना+मेल] १. भिन्न प्रकार की वस्तुओं की एक में मिलावट। गड्ड-बड्ड। २. मेल-जोल।

घाव-पुं० [सं० घात, प्रा० घाअ] १. शरीर पर का कटा या चिरा हुआ स्थान। २.वार। आघात। ३.चोट। क्षत। जख्म।

मुहा०-घाव पर नमक या नोन छिड़कना=दुःख के समय और भी दुःख देना। घाव पूजना या भरना=घाव का अच्छा होना।

घाव-पत्ता-पुं० [हिं० घाव+पत्ता] एक लता जिसके पत्ते घाव, फोड़े आदि पर बाँधे जाते हैं।

घावरिया*-पुं० [हिं० घाव+वाला] घावों की चिकित्सा करनेवाला।

घास-स्त्री० [सं०] वे प्रसिद्ध छोटे उद्भिद् जो चौपाये चरते हैं। तृण।

यौ०-घास-पात या घास-फूस=१. तृण और वनस्पति। २. कूड़ा-करकट।

मुहा०-घास काटना, खोदना या छीलना=१. तुच्छ काम करना। २. व्यर्थ

का काम करना।

घासलेट-पुं० [अं० गैस-लाइट] [वि० घासलेटी] १. मिट्टी का तेल। २. तुच्छ, निन्दनीय या अग्राह्य पदार्थ।

घासलेटी-वि०[हिं०घासलेट+ई(प्रत्य०)] १. तुच्छ, निन्दनीय और निम्न कोटि का। २. अश्लील। गन्दा।

घाह*-स्त्री० १. दे० 'घाई'। २. दे० 'घाँह'।

घिग्घी-स्त्री० [अनु०] १. लगातार रोने से साँस की रुकावट। हिचकी। २. भय के कारण बोलने में रुकावट।

घिघियाना-अ० [हिं० घिग्घी] करुण स्वर से प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाना।

घिच-पिच-स्त्री० [सं० घृष्ट+पिष्ट] थोड़े स्थान में बहुत-सी वस्तुओं का जमाव। वि० (वह लिखावट) जो बहुत काट-छाँट के कारण अस्पष्ट हो। गिचपिच।

घिन-स्त्री० दे० 'घृणा'।

घिनाना-अ० [हिं० घिन] घृणा करना।

घिनौना[1]-वि० [हिं० घिन] [स्त्री० घिनौनी] जिसे देखने से मन में घृणा उत्पन्न हो।

घिन्नी-स्त्री० १. दे० 'घिरनी'। २. दे० 'गिन्नी'।

घिरना-अ० [सं० ग्रहण] १ सब ओर से घेरा या रोका जाना। आवृत्त होना। २. चारों ओर से एक साथ आना।

घिरनी-स्त्री० [सं० घूर्णन] १. गराड़ी। चरखी। २. चक्कर। फेरा।

घिराव-पुं० [हिं० घेरना] १. घेरने या घिरने की क्रिया या भाव। २. घेरा।

घिरित*-पुं० दे० 'घृत'।

घिस-घिस-स्त्री० [हिं० घिसना] १. कार्य में शिथिलता या अनुचित विलम्ब। २. व्यर्थ का अनिश्चय।

घिसना-स० [सं० घर्षण] एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दबाकर शीघ्रता से चलाना या फिराना। रगड़ना। अ० रगड़ खाकर कम होना। छीजना।

घिसाई-स्त्री० [हिं० घिसना] घिसने या घिसाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घिस्सा-पुं० [हिं० घिसना] १. रगड़। २. धक्का। ठक्कर। ३. कोहनी और कलाई से गरदन पर किया जानेवाला आघात। कुंदा। रद्दा। (पहलवान)

घी-पुं०[सं० घृत, प्रा० घीअ] दूध का वह प्रसिद्ध चिकना सार जो भोजन का मुख्य अंग है। तपाया हुआ मक्खन। घृत। मुहा०-घी के दीये जलना=१. मनोरथ सफल होना। २. आनन्द-मंगल होना। पाँचों उंगलियाँ घी में होना=१. खूब सुख-चैन का अवसर मिलना। २. खूब लाभ होना।

घी-कुँआर-पुं० [सं० घृतकुमारी] ग्वारपाठा। गोंडपट्ठा।

घीया-स्त्री० [हिं० घी] एक बेल के फल जिसकी तरकारी बनती है। कद्दू।

घीया-कश-पुं० दे० 'कद्दू-कश'।

घुँघची-स्त्री० [सं० गुंजा] एक प्रकार की बेल जिसके बीज लाल होते हैं। गुंजा।

घुँघनी-स्त्री० [अनु०] भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।

घुँघराले-वि० [हिं० घुमरना+वाले] [स्त्री० घुँघराली] घूमे हुए और बल खाये हुए। छल्लेदार। (बाल)

घुँघरू-पुं० [अनु० घुन घुन] पीतल की वह पोली गुरिया जो हिलने से घन घन बजती है। २. ऐसी गुरियों की लड़ी। चौरासी। मंजीर। ३. ऐसी गुरियों का बना हुआ पैर का गहना।

घुँघुवारे*-वि० दे० 'घुँघराले'।

घुंडी-स्त्री० [सं० ग्रंथि] १. कपड़े का गोल बटन। २. पहनने के कपड़ों के सिरे पर की गाँठ। ३. कोई गोल गाँठ।

घुग्घी-स्त्री० [देश०] १. सिर पर से चादर आदि ओढ़ने का एक प्रकार। २. इस प्रकार ओढ़ने का वस्त्र। घोघी।

घुग्घू-पुं० [सं० घूक] उल्लू पक्षी।

घुघुआना-अ० [हिं० घुग्घू] १. उल्लू का बोलना। २. बिल्ली का गुर्राना।

घुटकना-स० [हिं० घूँट+करना] १. घूँट घूँट करके पीना। २. निगलना।

घुटना-पुं० [सं० घुंटक] टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ।

अ० [हिं० घोटना] १. साँस रुकना। मुहा०-घुट घुटकर मरना=साँस रुकने के कारण साँसत से मरना।

२. उलझकर कड़ा पड़ जाना। फँसना। ३. गाँठ या बंधन का दृढ़ होना। मुहा०-घुटा हुआ=बहुत चालाक। ४. घिसकर चिकना होना। ५. पिसकर महीन होना। ६. घनिष्ठता या मेल-जोल होना।

घुटन्ना-पुं० [हिं० घुटना] पायजामा।

घुटरूँ-पुं० [सं० घुट] घुटना।

घुटवाना-स० हिं० 'घोटना' का प्रे०।

घुटाई-स्त्री० [हिं० घुटना] घोटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घुटुरुअन*-क्रि० वि० [हिं० घुटना] घुटनों के बल। (चलना, विशेषत: बच्चों का)

घुट्टी-स्त्री० [हिं० घूँट] छोटे बच्चों के पीने की एक पाचक दवा।

मुहा०-घुट्टी में पड़ना=स्वभाव में होना।

घुड़कना-स० [सं० घुर] जोर से बोलकर डराना। कड़ककर डाँटना।

घुड़की-स्त्री० [हिं० घुड़कना] १. घुड़कने की क्रिया। २. डाँट-डपट। फटकार।

यौ०-बँदर-घुड़की=झूठमूठ डर दिखाना।

घुड़-चढ़ा-पुं० दे० 'घुड़-सवार'।

घुड़-चढ़ी-स्त्री० [हिं० घोड़ा+चढ़ना] १. विवाह की वह रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढ़कर ब्याहने जाता है। २. घुड़नाल। ३. निम्न कोटि की गानेवाली वेश्या।

घुड़-दौड़-स्त्री० [हिं० घोड़ा+दौड़] घोड़ों की वह दौड़ जिसके लिए हार-जीत की बाजी लगती है।

घुड़-नाल-स्त्री० [हिं० घोड़ा+नाल] एक प्रकार की तोप जो घोड़ों पर चलती थी।

घुड़-बहल-स्त्री० [हिं० घोड़ा+बहल] वह रथ जिसमें घोड़े जुतते हों।

घुड़-सवार-पुं० [हिं० घोड़ा+फा० सवार] भाव० घुड़-सवारी] वह जो घोड़े पर सवार हो। अश्वारोही।

घुड़साल-स्त्री० [हिं० घोड़ा+शाला] अश्वशाला। अस्तबल।

घुणाक्षर-न्याय-पुं० [सं०] १. घुन के कारण लकड़ी आदि पर बने हुए अक्षरों के समान चिह्नों का दृष्टान्त। २. अनजान में ही कोई काम हो या बन जाना।

घुन-पुं० [सं० घुण] एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है। मुहा०-घुन लगना=अन्दर ही अन्दर किसी वस्तु का क्षीण होना।

घुनना-अ० [हिं० घुन] १. लकड़ी आदि में घुन लगना। २. अन्दर से छीजना।

घुन्ना-वि० [अनु० घुनघुनाना] [स्त्री० घुन्नी] क्रोध, द्वेष आदि भाव मन ही में रखनेवाला। चुप्पा।

घुमक्कड़-वि० [हिं० घूमना] बहुत घूमने-

वाला। (व्यक्ति)

घुमटा-पुं० [हिं० घूमना] सिर का चक्कर। सिर घूमना।

घुमड़-स्त्री० [हिं० घुमड़ना] बादलों की घेर-घार।

घुमड़ना-अ० [हिं० घूम+अटना] घिरना। उमड़ना। छा जाना। (बादल)

घुमाना-स० [हिं० घूमना] १. घूमने में प्रवृत्त करना। चारों ओर फिराना। २. टहलाना। सैर कराना। ३. मोड़ना। ४. प्रवृत्त करना।

घुमाव-पुं० [हिं० घुमाना] [वि० घुमावदार] चक्कर। मोड़।

मुहा०-घुमाव-फिराव की बात = पेचीली या हेर-फेर की बात।

घुरघुराना-अ० [अनु० घुर घुर] गले से घुर घुर शब्द निकलना।

घुरना*-अ० दे० 'घुलना'।

घुर-बिनिया-स्त्री० [हिं० घूरा+बीनना] कूड़े में से दाने चुने या गली-कूचों में टूटी-फूटी चीजें चुनने का काम।

घुरमना*-अ० दे० 'घूमना'।

घुर्मित*-वि० [सं० घूर्णित] घूमता हुआ।

घुलना-अ० [सं० घूर्णन, प्रा० घुलन] १. किसी द्रव वस्तु में अच्छी तरह मिल जाना। हल होना।

मुहा०-घुल-घुलकर बातें करना= खूब मिल-जुलकर बातें करना।

२. पिघलना। ३ पककर पिलपिला होना। ४.रोग या चिन्ता से दुर्बल होना।

मुहा०-घुल घुलकर मरना=बहुत दिनों तक रोग आदि का कष्ट भोगकर मरना।

घुलवाना-स० हिं० 'घोलना' का प्रे०।

घुलाना-स० [हिं०घुलना] १. पिघलाना। २. शरीर दुर्बल करना। ३. यन्त्रणा देना। ४.गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना।

घुलावट-स्त्री० [हिं० घुलना] घुलने या घुलाने की क्रिया या भाव।

घुसना-अ० [सं० कुश=आलिंगन; अथवा घर्षण] १. प्रवेश करना। अन्दर जाना। २. धँसना। ३. बिना अधिकार के कहीं पहुँचना। ४. बात की तह तक पहुँचना।

घुस-पैठ-स्त्री० [हिं० घुसना+पैठना] पहुँच। गति। प्रवेश।

घुसाना-स० [हिं० घुसना] १. अन्दर घुसेड़ना। पैठाना। २ चुभाना। धँसाना।

घुसेड़ना-स० दे० 'घुसाना'।

घूँघट-पुं० [सं० गुंठ] १. साड़ी का वह खिंचा हुआ भाग जो मुँह ढके रहता है। २. ओट। परदा। ३. सेना का अचानक दाहिने या बाएँ घूम पड़ना।

घूँघर-पुं० [हिं० घुमरना] बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़।

घूँट-पुं० [अनु० घुट घुट] उतना द्रव पदार्थ, जितना एक बार गले के नीचे उतारा जाय।

घूँटना-स० [हिं० घूँट] द्रव पदार्थ गले के नीचे उतारना। पीना।

घूँटा*-पुं० दे० 'घुटना'।

घूँटी-स्त्री० दे० 'घुट्टी'।

घूँसा-पुं० [हिं० घिस्सा] १. मारने के लिए तानी हुई मुट्ठी। मुक्का। २. मुट्ठी का प्रहार।

घूआ-पुं० [देश०] काँस, मूँज आदि के फूल।

घूमना-अ० [सं० घूर्णन] १. चारों ओर फिरना। चक्कर खाना। २. सैर करना। टहलना। ३. यात्रा करना। ४. गोलाई में मुड़ना। ५. उन्मत्त या मतवाला होना।

मुहा०-घूम पड़ना=सहसा क्रुद्ध होना।

घूर-पुं० [सं० कूट, हिं० कूरा] कूड़े-करकट का ढेर। कतवार।

घूरना-स० [सं० घूर्णन] बुरे भाव से आँखें गड़ाकर देखना।

घूस-स्त्री० [देश०] चूहे की तरह का, पर उससे बड़ा एक जन्तु।
स्त्री० [हिं० घुसना] अपने अनुकूल कार्य कराने के लिए अनुचित रीति से दिया जानेवाला द्रव्य। रिशवत। उत्कोच।
यौ०-घूसखोर=घूस खानेवाला।

घृणा-स्त्री० [सं०] बुरी बात या चीज़ को देखकर उससे दूर रहने की इच्छा या भावना। घिन। नफ़रत।

घृणित-वि० [सं०] घृणा करने योग्य।

घृत-पुं० [सं०] घी।

घेघा-पुं० [देश०] १. गले की नली जिससे खाना-पानी पेट में जाता है। २. गला सूजने का एक रोग।

घेर-पुं० [हिं० घेरना] घेरा। परिधि।

घेर-घार-स्त्री० [हिं० घेरना] १. घेरने की क्रिया या भाव। २. विस्तार। ३. खुशामद मिली हुई विनती।

घेरना-स० [सं० ग्रहण] १. चारो ओर से रोकना, छेंकना या घेरे में लाना। २. बहुत आग्रह या खुशामद करना।

घेरा-पुं० [हिं० घेरना] १. सीमा। परिधि। २. सीमा या परिधि का मान। ३. घेरनेवाली चीज़। (जैसे-दीवार, रेखा आदि) ४. घिरा हुआ स्थान। अहाता। ५. सेना का किसी दुर्ग आदि को घेरना या उसका मार्ग बन्द करना।

घैया-स्त्री० [हिं० घी या सं० घात] १. गौ के थन से निकलती हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पीई जाय। २. ताजे दूहे हुए दूध के ऊपर से मक्खन उठाने की क्रिया।
स्त्री० [हिं० घाइँ या घा] ओर। तरफ़।

घैरा*-पुं० [देश०] १. अपयश। बदनामी। २. चुगली। शिकायत।

घोंघा-पुं० [देश०] [स्त्री० घोंघी] शंख की तरह का एक कीड़ा। शंबुक।
वि० १. जिसमें कुछ सार न हो। २. मूर्ख।

घोंटना-स० १. दे० 'घूँटना'। २. दे० 'घोटना'।

घोंसला-पुं० [सं० कुशालय] घास-फूस से बना हुआ पक्षी का घर। नीड़।

घोंसुआ*†-पुं० दे० 'घोंसला'।

घोखना-स० [सं० घुष] बार बार याद करना। रटना। (पाठ)

घोटक-पुं० [सं० घोटक] घोड़ा।

घोटना-स० [सं० घुट] १. रगड़ना। माँजना। २. महीन पीसना। ३. रगड़कर मिलाना। हल करना। ४. अभ्यास करना। मश्क करना। ५. (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाय।
पुं० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औज़ार।

घोटाई-स्त्री० [हिं० घोटना+आई (प्रत्य०)] घोटने का काम, भाव या मजदूरी।

घोटाला-पुं० [देश०] घपला। गड़बड़ी।

घोड़साल-स्त्री० दे० 'घुड़साल'।

घोड़ा-पुं० [सं० घोटक, प्रा० घोड़ा] [स्त्री० घोड़ी] १. एक प्रसिद्ध चौपाया जो गाड़ी खींचने और सवारी के काम में आता है। अश्व।
मुहा०-**घोड़ा कसना**=घोड़े पर ज़ीन कसना। **घोड़ा डालना या फेंकना**= वेग से घोड़ा दौड़ाना। **घोड़ा निकालना**=घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना। **घोड़ा बेचकर सोना**= बे-फ़िक्र होकर सोना

२. बंदूक का वह खटका जिसे दबाने से गोली चलती है। ३. दीवार से बाहर निकला हुआ, पत्थर का वह टुकड़ा जो ऊपरी भार सँभालने के लिए लगाया जाता है। ४. शतरंज का एक मोहरा।

घोड़ा-गाड़ी-स्त्री० [हिं० घोड़ा+गाड़ी] वह गाड़ी जिसे घोड़े खींचते हैं।

घोड़ा-नस-स्त्री० [हिं० घोड़ा+नस] एड़ी के पीछे की मोटी नस। कूँच। पै।

घोड़िया-स्त्री० [हिं० घोड़ी+इया (प्रत्य०)] छज्जे का भार सँभालनेवाला पत्थर। विशेष दे० 'घोड़ा' ३.।

घोर-वि० [सं०] १. भयंकर। विकराल। २. सघन। ३. दुर्गम। कठिन। ४. बहुत अधिक। ५. गंभीर और भयानक।

घोरना*-अ० [सं० घोर] भारी शब्द करना। गरजना।

स० दे० 'घोलना'।

घोरिला*¹-पुं० [हिं० घोड़ा] लड़कों के खेलने का काठ आदि का घोड़ा।

घोल-पुं० [हिं० घोलना] वह पानी जिसमें कोई चीज घोली गई हो।

घोलना-स० [हिं० घुलना] पानी या अन्य द्रव पदार्थ में चूर्ण आदि अच्छी तरह मिलाना। हल करना।

घोष-पुं० [सं०] १ अहीरों की बस्ती। २. अहीर। ३. गोशाला। ४. शब्द। नाद। ५. गर्जन। गरज।

घोषणा-स्त्री० [सं०] १. उच्च स्वर से दी हुई सूचना। २. सार्वजनिक रूप से निकली हुई राजाज्ञा आदि। (प्रोक्लेमेशन) ३. मुनादी। डुग्गी। ४. दे० 'विज्ञापन'।

यौ०-घोषणापत्र=वह पत्र जिसमें सर्व-साधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हों।

५. गर्जन। ६. ध्वनि। शब्द। आवाज।

घोसी-पुं० [सं० घोष] अहीर। ग्वाल।

घौद-पुं० [देश०] केलों का गुच्छा।

घ्राण-पुं० [सं०] [वि० घ्रेय] १. नाक। २. सूँघने की शक्ति। ३. सुगन्ध।

ङ

ङ-कंठ और नासिका से उच्चरित होनेवाला कवर्ग का अन्तिम व्यंजन अक्षर।

च

च-हिन्दी वर्ण-माला का छठा व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंक्रमण-पुं० [सं०] टहलना। घूमना।

चंग-स्त्री० [फा०] डफ की तरह का एक बाजा।

स्त्री० [सं० चं=चन्द्रमा] पतंग। गुड्डी।

मुहा०-चंग चढ़ना या उमहना= वैभव या प्रताप की वृद्धि होना। खूब बढ़ती होना। चंग पर चढ़ाना=किसी का मन बढ़ाकर उसे अपने अनुकूल करना।

चंगना*-स० [हिं० चंग या फा० तंग] १. कसना। २. खींचना।

चंगा-वि० [सं० चंग] [स्त्री० चंगी] १. स्वस्थ। नीरोग। २. अच्छा। बढ़िया।

चंगु*-पुं० दे० 'चंगुल'।

चंगल-पुं० [हिं० चौ=चार+अंगुल] १.

पक्षियों या पशुओं का मुड़ा हुआ पंजा। २. हाथ के पंजों की वह मुद्रा जो उँगलियों से कोई वस्तु पकड़ने के समय होती है। बकोटा।

मुहा०-चंगुल में फँसना=वश में आना।

चँगेर-स्त्री० [सं० चंगेरिक] १. बाँस की छोटी टोकरी या डलिया। डगरी। २. वह टोकरी जिसमें बच्चों को सुलाकर पालने की तरह झुलाते हैं।

चँगेली-स्त्री० दे० 'चँगेर'।

चंच*-पुं० दे० 'चंचु'।

चंचरीक-पुं० [सं०] भौंरा।

चंचल-वि० [सं०] [स्त्री० चंचला, भाव० चंचलता] १. जो स्थिर न रह-कर हिलता-डुलता रहे। चलायमान। अस्थिर। हिलता-डोलता। २. एकाग्र न रहनेवाला। अ-व्यवस्थित। ३. घबराया हुआ। उद्विग्न। ४. नटखट। ५. चुल-बुला। चंचल।

चंचलता-स्त्री० [सं०] १. अस्थिरता। २. चपलता। ३. नटखटी। शरारत।

चंचलताई*-स्त्री० दे० 'चंचलता'।

चंचला-स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. बिजली।

चंचलाई*-स्त्री०=चंचलता।

चंचु-पुं० [सं०] १. चेंच नाम का साग। २. मृग। हिरन।

स्त्री० चिड़ियों की चोंच।

चट-वि० [सं० चंड] चालाक। धूर्त।

चंड-वि० [सं०] [स्त्री० चंडा] [भाव० चंडता] १. तेज। तीक्ष्ण। २. उग्र। प्रखर। ३. जिसे दबाना कठिन हो। दुर्दमनीय। ४. कठोर। कठिन। ५. उद्धत। ६. क्रोधी।

पुं० [सं० चंड] १. ताप। गरमी। २. एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था।

चंडकर-पुं० [सं०] सूर्य।

चंडांशु-पुं० [सं०] सूर्य्य।

चँड़ाई*-स्त्री० [सं० चंड=तेज] १. शीघ्रता। जल्दी। २. प्रबलता। ३. ऊधम। उपद्रव। ४. अत्याचार।

चंडाल-पुं० दे० 'चांडाल'।

चंडालिनी-स्त्री० [सं०] १ चंडाल वर्ण की स्त्री। २. दुष्टा या पापिनी स्त्री।

चंडावल-पुं० [सं० चंड+आवलि] १. 'हरावल' का उलटा। सेना के पीछे का भाग। २. वीर सिपाही। ३. सन्तरी।

चंडिका-स्त्री० दे० 'चंडी'।

चंडी-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. कर्कशा और दुष्ट स्त्री।

चंडू-पुं० [सं० चंड=तीक्ष्ण] अफीम का वह किवाम जो नशे के लिए तमाकू की तरह पीते हैं।

चंडू-खाना-पुं० [हिं० चंडू+फा० खानः] वह स्थान जहाँ लोग चंडू पीते हैं।

मुहा०-चंडू-खाने की गप=नशेबाजों की झूठी बकवाद। बिलकुल झूठ बात।

चंडूबाज-पुं० [हिं० चंडू+फा० बाज (प्रत्य०)] चंडू पीनेवाला।

चंडूल-पुं० [देश०] १. खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया। २. परम मूर्ख।

चंडोल-पुं० [सं० चन्द्र+दोल] एक प्रकार की पालकी।

चंद-पुं० दे० 'चंद्र'।

वि० [फा०] थोड़े से। कुछ।

चंदक-पुं० [सं० चन्द्र] चन्द्रमा। स्त्री० १. चाँदनी। २. माथे पर पहनने का एक गहना। ३. गहनों में चन्द्रमा या पान के आकार की बनावट।

चंदचूर*-पुं० दे० 'चंद्रचूड़'।

चंदन-पुं० [सं०] १. एक पेड़ जिसके हीर की लकड़ी सुगन्धित होती है। श्रीखंड। संदल। २. इस वृक्ष की लकड़ी का टुकड़ा जिसे घिसकर लेप लगाते हैं।

चंदनगिरि-पुं० [सं०] मलयाचल।

चंदनाक-पुं० दे० 'चन्द्रमा'।

चंदनी-स्त्री० दे० 'चाँदनी'।

चँदला-वि० [हिं० चाँद=खोपड़ी] जिसके सिर या चाँद के बाल उड़ गये हों। गंजा।

चँदवा-पुं० [सं० चंद्र या चंद्रोदय] कपड़े, फूलों आदि का छोटा मंडप।

पुं० [सं० चंद्रक] १. गोल चकती। २. मोर की पूँछ पर का अर्द्ध-चंद्राकार चिह्न।

चंदसिरी-स्त्री० [सं० चंद+श्री] एक बड़ा गहना जो हाथियों के मस्तक पर पहनाया जाता है।

चंदा-पुं० [सं० चंद या चंद्र] १.चंद्रमा। २ पीतल आदि की गोल चद्दर या टुकड़ा।

पुं० [फा० चंद=कई एक] १. थोड़ी थोड़ी करके कई आदमियों से ली हुई आर्थिक सहायता। २. किसी पत्र, पत्रिका आदि का वार्षिक मूल्य। ३. किसी संस्था को उसके सदस्यों से नियत समय पर नियमित रूप से मिलनेवाला धन।

चंदावल-पुं० दे० 'चंडावल'।

चंदिका-स्त्री० दे० 'चंद्रिका'।

चंदिनि-स्त्री० दे० 'चाँदनी'।

चंदेल-पुं० [सं०] क्षत्रियों की एक जाति।

चँदोआ-पुं० दे० 'चँदवा'।

चंद्र-पुं० [सं०] १. चंद्रमा। २. एक की संख्या। ३. मोर की पूँछ पर का चंद्राकार चिह्न। ४. कपूर। ५. जल। ६. सोना। सुवर्ण। ७. सानुनासिक वर्णों के ऊपर लगाई जानेवाली बिन्दी।

चंद्र-कला-स्त्री० [सं०] १. चंद्र-मंडल का सोलहवाँ अंश। २. चन्द्रमा की ज्योति। ३. माथे पर पहनने का एक गहना।

चंद्रकांत-पुं० [सं०] एक कल्पित रत्न जिसके विषय में कहा जाता है कि वह चन्द्रमा के सामने रखने पर पसीजता है।

चंद्रकांता-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा की स्त्री। २. रात्रि। रात।

चंद्र ग्रहण-पुं० [सं०] चन्द्रमा का ग्रहण जो उसके सूर्य की आड़ में पड़ने पर होता है।

चंद्रचूड़-पुं० [सं०] शिव।

चंद्रधर-पुं० [सं०] शिव।

चंद्र-पाषाण-पुं० दे० 'चंद्रकांत'।

चंद्र-प्रभा-स्त्री० [सं०] चंद्रमा की ज्योति। चाँदनी। चंद्रिका।

चंद्र-बधूटी-स्त्री० दे० 'वीर-बहूटी'।

चंद्र-बाण-पुं० [सं०] एक प्रकार का बाण जिसका फल अर्द्ध-चन्द्राकार होता था।

चंद्रबिंब-पुं० [सं०] चन्द्रमा का मंडल।

चंद्रभाल-पुं० [सं०] शिव।

चंद्रमणि-पुं० [सं०] चंद्रकांत मणि।

चंद्रमा-पुं० [सं० चंद्रमस्] रात को प्रकाश देनेवाला वह उपग्रह जो सूर्य के प्रकाश के प्रतिबिम्ब से चमकता है। चाँद। शशि। विधु।

चंद्रमौलि-पुं० [सं०] शिव।

चंद्र वंश-पुं० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि कुलों में से एक।

चंद्रवार-पुं० [सं०] सोमवार।

चंद्र-बिन्दु-पुं० [सं०] अर्द्ध अनुस्वार की सूचक बिन्दी। जिसका रूप यह है ँ।

चंद्रशाला-स्त्री० [सं०] १. चाँदनी। चंद्रमा का प्रकाश। २. घर के ऊपर की कोठरी। अटारी।

चंद्रशेखर-पुं० [सं०] शिव।

चंद्रहार-पुं० [सं०] एक प्रकार की माला या हार। नौ-लखा हार।

चंद्रहास-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा का प्रकाश। २. खड्ग। तलवार।

चंद्रा-स्त्री० [सं० चंद्र] मरने के समय आँखों की वह अवस्था, जब टकटकी बँध जाती है।

चंद्रातप-पुं० [सं०] १. चाँदनी। चन्द्रिका। २. चँदवा।

चंद्रार्क-पुं० [सं०] चाँदी और ताँबे या सोने के योग से बनी एक मिश्रित धातु।

चंद्रिका-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी। कौमुदी। २. मोर की पूँछ पर का गोल चिह्न। ३. माथे पर पहनने का एक गहना। बेंदी। बेंदा।

चंद्रोदय-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा का उदय होना। २. वैद्यक में एक रस।

चंपई-वि० [हि० चंपा] चंपा के फूल के रंग का। पीला।

चंपक-पुं० [सं०] १. चम्पा का फूल। २. चंपा केला।

चंपत-वि० [देश०] गायब। अन्तर्धान।

चँपना-अ० [सं० चंप्] १. बोझ से दबना। २. गुण, बल या उपकार आदि के सामने दबना।

चंपा-पुं० [सं० चंपक] १. एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के सुगन्धित फूल लगते हैं। २. एक पुरी जो अंग देश की राजधानी थी। ३. एक प्रकार का बढ़िया केला। ४. एक प्रकार का घोड़ा।

चंपा-कली-स्त्री० [हिं० चंपा+कली] गले में पहनने का एक गहना।

चंपारण्य-पुं० [सं०] वह भू-भाग जिसे आज-कल चम्पारन कहते हैं।

चंपी-स्त्री० दे० 'मुक्की' ३।

चंपू-पुं० [सं०] गद्य-पद्य मिश्रित काव्य।

चंबल-स्त्री० [सं० चर्मण्वती] १. मध्य भारत की एक नदी। २. पानी की बाढ़।

चँवर-पुं० [सं० चामर] [स्त्री० अल्पा० चँवरी] १. सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो डंडी में बाँधकर राजाओं या देव-मूर्त्तियों के ऊपर डुलाया जाता है। २. कलगी। ३. झालर।

चँवरढार-पुं० [हिं० चँवर+ढारना] चँवर डुलानेवाला सेवक।

चक-पुं० [सं० चक्र] १. चक्रवाक। चकवा पक्षी। २. चक्र नामक अस्त्र। ३. पहिया। ४. जमीन का बड़ा टुकड़ा। ५. छोटा गाँव।

वि० भरपूर। यथेष्ट।

वि० [सं०] चकपकाया हुआ। चकित।

चकई-स्त्री० [हिं० चकवा] मादा चकवा। मादा सुरखाब।

स्त्री० [सं० चक्र] गराड़ी के आकार का एक खिलौना।

चकचकाना-अ० [अनु०] १. द्रव पदार्थ का रसकर ऊपर या बाहर आना। २. भींगना।

चकचाना*-अ० दे० 'चौंधियाना'।

चक-चाल*-स्त्री० [सं० चक+हिं० चाल] चक्कर। फेरा।

चकचाव*-पुं० [अनु०] चकाचौंध।

चकचून(र)-वि० [सं० चक्र+चूर्ण] चूर किया हुआ। चकनाचूर।

चकचूरना*-स० [हिं० चकचूर] चूर-चूर करना। चकनाचूर करना।

चकचौंध-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकचौंधना*-अ० [सं० चक्षु+अंध] चकाचौंध होना।

स० चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंह*-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चकचौहना-अ० [देश०] चाह भरी दृष्टि से देखना।

चकचौहाँ-वि० [देश०] देखने योग्य। सुन्दर।

चकती-स्त्री० [सं० चक्रवत्] १. चमड़े, कपड़े आदि का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा। २. पैवन्द। थिगली।

मुहा०-बादल में चकती लगाना= असम्भव कार्य करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता-पुं० [सं० चक्र+वर्त्त] रक्त-विकार आदि के कारण शरीर पर पड़ने-वाला गोल दाग या सूजन। ददोरा।

पुं० [तु० चग़ताई] १. तातार अमीर चगताई खाँ, जिसके वंश में बाबर, अकबर आदि हुए थे। २. चगताई वंश का पुरुष।

चकना*-अ० [सं० चक=भ्रांत] १. चकित या भौचक्का होना। २. चौंकना।

चकना-चूर-वि० [हिं० चक=भरपूर+चूर] १. जो बिलकुल टुकड़े-टुकड़े हो गया हो। चूर चूर। २. बहुत थका हुआ।

चक-पक(बक)-वि० [सं० चक] चकित। स्तम्भित।

चकपकाना-अ० [सं० चक=भ्रांत] १. आश्चर्य से इधर-उधर देखना। भौचक्का होना। २. चौंकना।

चक-फेरी-स्त्री० दे० 'परिक्रमा'।

चक-बँट-स्त्री० [हिं० चक+बाँटना] बहुत-से खेतों को बाँटने का वह प्रकार, जिसमें हर खेत अलग अलग नहीं बांटा जाता, बल्कि कई कई खेत अलग अलग चकों के विचार से बांटे जाते हैं।

चक-बंदी-स्त्री० [हिं० चक+फा० बंदी] भाम को कई भागों या चकों में बाँटना।

चकमक-पुं० [तु०] एक प्रकार का पत्थर, जिसपर चोट पड़ने से आग निकलती है।

चकमा-पुं० [सं० चक=भ्रांत] भुलावा। धोखा।

चकर*-पुं० दे० 'चकवा'।

चकरा-वि० [सं० चक्र] [स्त्री० चकरी] चौड़ा। विस्तृत।

यौ०-चौड़ा-चकरा।

चकराना-अ० [सं० चक्र] १. (सिर का) चक्कर खाना या घूमना। २. चक्कर या धोखे में पड़ना। भ्रान्त होना। ३. चकपकाना। चकित होना।

स० चकित करना।

चकरी-स्त्री० [सं० चक्री] १. चक्की। २. चकई। (खिलौना)

चकला-पुं० [सं० चक्र, हिं० चक+ला (प्रत्य०)] १. पत्थर या काठ का वह गोल पाटा जिसपर रोटी, पूरी आदि बेलते हैं। चौका। २. भूमि-खंड। इलाका। ३. वेश्याओं का बाजार।

वि० [स्त्री० चकली] चौड़ा।

चकलेदार-पुं०[हिं० चकला] किसी भूमि-खंड या चकले का कर संग्रह करनेवाला।

चकल्लस-स्त्री० [अनु० चक] १. झगड़ा-बखेड़ा। झंझट। २. चार मित्रों में बैठकर हँसी-मजाक करना।

चकवँड़-पुं० [सं० चक्रमर्द] एक बर-साती पौधा।

चकवा-पुं० [सं० चक्रवाक] [स्त्री० चकवी, चकई] एक जल-पक्षी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह रात को अपने जोड़े से दूर हो जाता है। सुरखाब।

चकवाना*-अ० दे० 'चकपकाना'।

चकवार*-पुं० दे० 'कछुआ'।

चकवाह*-पुं० दे० 'चकवा'।
चकहा†*-पुं० दे० 'पहिया'।
चका†*-पुं० [सं० चक्र] १. पहिया। २. चकवा पक्षी।
चकाचक-वि० [अनु०] १. चटकीला। २. मजेदार।
क्रि० वि० बहुत। भर-पूर।
चकाचौंध-स्त्री० [सं० चक्=चमकना+चौ=चारो ओर+अंध] बहुत तेज चमक से आँखों में होनेवाली झपक। तिलमिली।
चकाना*-अ० दे० 'चकपकाना'।
चकाबू-पुं० १. दे० 'चक्रव्यूह'। २. दे० 'भूल-भुलैयां'।
चकासना*-अ० दे० 'चमकना'।
चकित-वि० [सं०] [स्त्री० चकिता] १. चकपकाया हुआ। विस्मित। हक्का-बक्का। २. घबराया हुआ। ३. सशंकित।
चकुला†*-पुं० [देश०] चिड़िया का बच्चा। चेंटुआ।
चकृत*-वि० दे० 'चकित'।
चकैया*-स्त्री० दे० 'चकई'।
चकोटना-स० [हिं० चिकोटी] चुटकी या चिकोटी काटना।
चकोतरा-पुं० [सं० चक्र=गोला] एक प्रकार का बड़ा नीबू।
चकोर-पुं० [सं०] [स्त्री० चकोरी, चकोरिया] एक प्रकार का तीतर जो चन्द्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला माना जाता है।
चकौंध*-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।
चक्क-पुं० [सं० चक्र] १. चक्रवाक पक्षी। २. कुम्हार का चाक। ३. दे० 'चक'।
चक्कर-पुं० [सं० चक्र] १. पहिये की तरह (घूमनेवाली) कोई गोल वस्तु। चाक। २. गोल घेरा। मंडल। ३. गोलाई में घूमना। परिक्रमा। फेरा। ४. पहिये की तरह अक्ष पर घूमना।
मुहा०-चक्कर काटना=चारों ओर घूमना। मँडराना। चक्कर खाना=१. पहिये की तरह घूमना। २. भटकना। हैरान होना।
५. रास्ते का घुमाव-फिराव। फेर। ६. हैरानी। ७. बखेड़ा। झंझट।
मुहा०-किसी के चक्कर में आना या पड़ना=किसी के धोखे में फँसना।
८. सिर घूमना। घुमटा।
चक्कवइ*-वि० दे० 'चक्रवर्त्ती'।
चक्का-पुं० [सं० चक्र, प्रा० चक्क] १. पहिया। २. पहिये के आकार की कोई गोल वस्तु। ३. कोई ठोस बड़ा टुकड़ा।
चक्की-स्त्री० [सं० चक्री] आटा आदि पीसने का पत्थर का यंत्र। जाँता।
मुहा०-चक्की पीसना=कठोर परिश्रम करना।
चक्र-पुं० [सं०] १. पहिया। २. कुम्हार का चाक। ३. चक्की। ४. पहिये की तरह की कोई गोल वस्तु। ५. पहिये के आकार का एक अस्त्र। ६. समुदाय। मंडल। ७. योग के अनुसार शरीर में के ६ पद्म। ८. फेरा। चक्कर।
चक्रधर-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।
चक्रपाणि-पुं० [सं०] विष्णु।
चक्र-पूजा-स्त्री० [सं०] तांत्रिकों की एक प्रकार की पूजा।
चक्र-बंध-पुं० [सं०] चक्र के आकार का एक प्रकार का चित्र-काव्य।
चक्रवर्त्ती-वि० [सं० चक्रवर्तिन्] [स्त्री० चक्रवर्तिनी] वह राजा जिसका राज्य बहुत दूर दूर तक चारो ओर फैला हो।
चक्रवाक-पुं० [सं०] चकवा पक्षी।
चक्रवात-पुं० [सं०] बवंडर।

चक्र-वृद्धि-स्त्री० [सं०] ब्याज पर भी लगनेवाला ब्याज। सूद-दर-सूद।

चक्र-व्यूह-पुं० [सं०] १. प्राचीन काल के युद्ध में एक प्रकार की सैनिक मोरचे-बन्दी। २. दे० 'भूल-भुलैयाँ'।

चक्रांक-पुं० [सं०] [वि० चक्रांकित] विष्णु के चक्र का चिह्न जो वैष्णव अपने शरीर पर दगवाते हैं।

चक्रित*-वि० दे० 'चकित'।

चक्री-पुं० [सं० चक्रिन्] १. वह जो चक्र धारण करे। २. विष्णु। ३. चक्रवाक। चकवा। ४. चक्रवर्त्ती राजा।

चक्षु-पुं० [सं० चक्षुस्] आँख। नेत्र।

चख*-पुं० [सं० चक्षुस्] आँख।

चख-चख-स्त्री० [अनु०] तकरार। कलह।

चखचौंध*-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।

चखना-स० [सं० चष] थोड़ा खाकर स्वाद देखना।

चखाचखी-स्त्री० [हिं० चख=झगड़ा] १. लाग-डाँट। प्रतियोगिता। २. दे० 'चख-चख'।

चखाना-स० [हिं० 'चखना' का प्रे०] स्वाद का परिचय करना।

चखु*-पुं० दे० 'चक्षु'।

चखोड़ा*-पुं० दे० 'डिठौना'।

चगड़-वि० [देश०] चतुर। चालाक।

चगताई-पुं० [तु०] तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश। विशेष दे० 'चकत्ता'।

चचा-पुं० दे० 'चाचा'।

चचेरा-वि० [हिं० चचा] १. चाचा से उत्पन्न। जैसे-चचेरा भाई। २. चाचा के विचार से संबद्ध। जैसे-चचेरी सास।

चचोड़ना-स० [अनु०] दाँत से नोच या खींचकर खाना।

चट-क्रि० वि० [सं० चटुल=चंचल] जल्दी से। झट। तुरन्त।

स्त्री० [अनु०] शीशे, हड्डी आदि के टूटने का शब्द।

वि० [हिं० चाटना] चाट-पोंछकर खाया हुआ।

मुहा०-चट कर जाना=सब खा जाना।

चटक-पुं० [सं०] [स्त्री० चटका] गौरैया। चिड़ा। (पक्षी)

स्त्री० [सं० चटुल=सुन्दर] चटकीलापन। चमक-दमक।

†वि० १. चटकीला। २. फुर्तीला।

स्त्री० [सं० चटुल] तेजी। फुरती।

वि० चटपटा। चटकारा।

चटकदार-वि० दे० 'चटकीला'।

चटकना-अ० दे० 'चिटकना'।

†पुं० [अनु० चट] तमाचा। थप्पड़।

चटक-मटक-स्त्री० [हिं० चटक+मटक] १. बनाव-सिंगार। २. नाज-नखरा।

चटकाई*-स्त्री०[हिं०चटक] चटकीलापन।

चटकाना-स० [अनु० चट] १. किसी वस्तु को चटकने में प्रवृत्त करना। तोड़ना। २.ऐसा करना जिसमें 'चट चट' शब्द हो।

मुहा०-जूतियाँ चटकाना=मारा मारा फिरना।

३. अलग या दूर करना। ४. चिढ़ाना।

चटकारा*-वि० दे० 'चटपटा'।

चटकाली-स्त्री० [सं० चटक+आलि] चिड़ियों की पंक्ति या समूह।

चटकीला-वि० [हिं० चटक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चटकीली] १. जिसका रंग तेज हो। शोख। भड़कीला। २. चमकीला। चमकदार। ३. चटपटा।

चटकोरा†-पुं० [देश०] एक प्रकार का खिलौना।

चटखना-स०, पुं० दे० 'चटकना'।

चटचटाना-अ० [सं० चट=भेदन] चटचट करते हुए टूटना, फूटना या जलना।

चट-चेटक-पुं० [सं० चेटक] इन्द्रजाल।

चटनी-स्त्री० [हिं० चाटना] १. वह चीज जो चाटकर खाई जाय। अवलेह। २. भोजन के साथ चाटने की गीली चटपटी वस्तु।

चटपट-क्रि० वि० [अनु०] तुरन्त।

चटपटा-वि० [हिं० चाट] [स्त्री० चटपटी] मिर्च, मसाले आदि से युक्त और खाने में मजेदार।

चटपटाना*-अ० दे० 'छटपटाना'।

चटपटी-स्त्री० [हिं० चटपट] [वि० चटपटिया] १. उतावली। २. घबराहट।

चटशाला-स्त्री० दे० 'चटसार'।

चटसार*-स्त्री० [हिं० चट्टा=चेला+सार=शाला] पाठशाला। विद्यालय।

चटाई-स्त्री० [सं० कट=चटाई] फूस, सींक आदि का बना हुआ बिछावन। साथरी। स्त्री० [हिं० चाटना] चाटने या चटाने की क्रिया या भाव।

चटाना-स० [हिं० चाटना का प्रे०] १. चाटने में प्रवृत्त करना। २. थोड़ा थोड़ा खिलाना। ३. घूस या रिश्वत देना। ४. छुरी, तलवार आदि की धार तेज करना।

चटापटी-स्त्री० [हिं० चटपट] शीघ्रता।

चटावन-पुं० [हिं० चटाना] अन्न-प्राशन।

चटिक*क्रि० वि० [हिं० चट] चटपट।

चटियल-वि० [देश०] जिसमें पेड़-पौधे न हों। निचाट। (मैदान)

चटिया*-पुं० [हिं० चटशाला] चेला।

चटी-स्त्री० दे० 'चटसार'।
स्त्री० दे० 'चट्टी'।

चटुल-वि० [सं०] [स्त्री० चटुला] १. चंचल। चपल। २. सुंदर। ३. मधुर-भाषी।

चटुला-स्त्री० [सं०] बिजली।

चटोरा-वि० [हिं० चाट+ओरा (प्रत्य०)] [भाव० चटोरापन] जिसे स्वादिष्ट चीजें खाने की लत हो। स्वाद-लोलुप।

चट्टा-पुं० [देश०] १. चटियल मैदान। २. चकत्ता। ददोरा।

चट्टान-स्त्री० [हिं० चट्टा] १. पहाड़ी भूमि में पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा। २. भारी और बड़ा पत्थर।

चट्टा-बट्टा-पुं० [हिं० चट्टू+बट्टा=गोला] १. एक प्रकार का काठ का खिलौना। २. वे गोले आदि जो बाजीगर झोले में से निकालकर तमाशे में दिखाते हैं।
मुहा०-एक ही थैली के चट्टे-बट्टे=एक ही तरह के लोग। चट्टे-बट्टे लड़ाना=झगड़ा या लड़ाई कराना।

चट्टी-स्त्री० [देश०] टिकान। पड़ाव। स्त्री० [हिं० चपटा या अनु० चट चट] खुली एँड़ी का जूता। स्लिपर।

चट्टू-वि० [हिं० चाट] चटोरा। पुं० [अनु०] पत्थर का बड़ा खरल।

चड्ढी-स्त्री० [हिं० चढ़ना] एक खेल जिसमें लड़के एक दूसरे की पीठ पर चढ़कर कुछ दूर तक चलते हैं।

चढ़त(न)-स्त्री० [हिं० चढ़ना] देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु या धन।

चढ़ना-अ० [सं० उच्चलन] १. ऊपर की ओर जाना। ऊँचाई की तरफ जाना। २. ऊपर की ओर सिकुड़ना। ३. ऊपर से मढ़ा जाना। ४. उन्नति करना। ५. (नदी या पानी का) तल ऊँचा होना या बढ़ना। ६. धावा या चढ़ाई होना। ७. महँगा होना। दाम या भाव बढ़ना। ८. सुर

ऊँचा होना। ६. देवता आदि को भेंट दिया जाना। १०. सवार होना। ११. संवत्, मास, नक्षत्र आदि आरम्भ होना। १२.खाते आदि में लिखा जाना। टँकना। दर्ज होना। १३. पकने के लिए चूल्हे पर रक्खा जाना।

चढ़वाना-स० [हिं० चढ़ना का प्रे०] चढ़ने या चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई-स्त्री० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने की क्रिया या भाव। २. ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि। ३. धावा। आक्रमण।

चढ़ा-ऊपरी-स्त्री० [हिं० चढ़ना+ऊपर] किसी को पीछे करके आप उससे आगे बढ़ने का प्रयत्न। प्रतियोगिता। लाग-डाँट। होड़।

चढ़ाना-स० [हिं० 'चढ़ना' का प्रे०] १. 'चढ़ना' का सकर्मक रूप। ऊपर की ओर ले जाना। २. भेंट के रूप में देना। ३. पीना। ४. पद, मर्यादा, वर्ग आदि में बढ़ाना या ऊपर पहुँचाना। ५. दाम बढ़ाना।

चढ़ाव-पुं० [हिं० चढ़ना] १. चढ़ने या चढ़ाने की क्रिया या भाव।

यौ०-**चढ़ाव-उतार**=ऊँचा-नीचा स्थान। २. तेजी। महँगी। ३. वृद्धि। बढ़ती।

यौ०-**चढ़ाव-उतार**=एक ओर मोटे और दूसरी ओर पतले होने का भाव। गावदुमी आकृति।

४. वह दिशा जिधर से जल की धारा बहकर आती हो। 'बहाव' का उलटा। ५. दे० 'चढ़ावा'।

चढ़ावा-पुं० [हिं० चढ़ना] १. विवाह के दिन दूल्हे की ओर से दुलहिन के लिए दिये जानेवाले गहने। २. देवता पर चढ़ाई जानेवाली सामग्री। पुजापा। ३. उत्तेजना। बढ़ावा।

चढ़ैया*-वि० [हिं०चढ़ना+ऐया(प्रत्य०)] चढ़ाने या चढ़नेवाला।

चणक-पुं० [सं०] चना।

चतर*-पुं० दे० 'छत्र'।

चतुःसीमा-स्त्री० [सं०] किसी भवन या क्षेत्र आदि के चारो ओर की सीमा। चौहद्दी। (एब्बटल)

चतुरंग-पुं० [सं०] १. सेना के ये चार अंग-हाथी, घोड़े, रथ और पैदल। २. चतुरंगिणी सेना। ३. शतरंज।

चतुरंगिणी-स्त्री० [सं०] हाथी, घोड़े, रथ और पैदल इन चार अंगोंवाली सेना।

चतुर-वि० [सं०] [स्त्री० चतुरा] [भाव० चतुरता, चतुराई] १.बुद्धिमान्। २. व्यवहार-कुशल। ३. निपुण। दक्ष। ४. धूर्त्त। चालाक।

चतुरानन-पुं० [सं०] ब्रह्मा।

चतुर्थ-वि० [सं०] चौथा।

चतुर्थांश-पुं० [सं०] चौथाई।

चतुर्थी-स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की चौथी तिथि। चौथ।

चतुर्दशी-स्त्री० [सं०] पक्ष की चौदहवीं तिथि। चौदस।

चतुर्दिक-क्रि० वि० [सं०] चारो ओर।

चतुर्भुज-वि० [सं०] [स्त्री० चतुर्भुजा] चार भुजाओंवाला। जिसकी चार भुजाएँ हों।

पुं० १. विष्णु। २. चार भुजाओंवाला क्षेत्र।

चतुर्भुजी-वि० दे० 'चतुर्भुज'।

चतुर्मुख-पुं० [सं०] ब्रह्मा।

क्रि० वि० चारो ओर।

चतुर्युगी-स्त्री० [सं०] चारो युगों का समूह या समय। ४३२०००० वर्ष का समय। चौकड़ी।

चतुर्वर्ग-पुं० [सं] अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष, ये चारो पदार्थ।

चतुर्वर्ण-पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र।

चतुर्वेदी-पुं० [सं० चतुर्वेदिन्] १. चारो वेदों का ज्ञाता। २.ब्राह्मणों का एक वर्ग।

चतुष्कल-वि० [सं०] जिसमें चार कलाएँ या मात्राएँ हों।

चतुष्कोण-वि० [सं०] चौकोर।

चतुष्टय-पुं० [सं०] चार चीज़ों का समूह।

चतुष्पथ-पुं० [सं०] चौराहा।

चतुष्पद-पुं० [सं०] चौपाया। वि० चार पदोंवाला।

चत्वर-पुं० [सं०] १. चौराहा। २. चबूतरा। वेदी। ३. कोई चौकोर घिरा हुआ स्थान। (स्क्वेयर)

चद्दर-स्त्री० [फा० चादर] १. किसी धातु का लम्बा-चौड़ा चौकोर पत्तर। २. दे० 'चादर'।

चनक*-पुं० दे० 'चना'।

चनकना†-अ० दे० 'चटकना'।

चनन*-पुं० दे० 'चंदन'।

चना-पुं० [सं० चणक] एक प्रसिद्ध अन्न। बूट। छोला।
मुहा०-नाकों चने चबवाना=बहुत तंग करना। लोहे के चने चबाना=बहुत कठिन काम करना।

चपकन-स्त्री० [हिं० चपकना] १. एक प्रकार का अंगा। अँगरखा। २. किवाड़, संदूक आदि में लोहे, पीतल आदि का वह दोहरा साज जिसमें ताला लगाकर वह बन्द किया जाता है।

चपकना-अ० दे० 'चिपकना'।

चप-कुलिश-स्त्री० [तु०] १. झंझट। २ असमंजस। ३. भीड़-भाड़।

चपटना†-अ० दे० 'चिपकना'।

चपटी नत्थी-स्त्री० गत्ते की बनी वह साधारण नत्थी या दफ़्ती, जिसपर कागज की नत्थियां रखकर बाँधी जाती हैं। (फ्लैट फाइल)

चपड़ा-पुं० [हिं० चपटा] १. साफ की हुई लाख का पत्तर। २. एक प्रकार का लाल फतिंगा।

चपत-पुं० [सं० चर्पट] १. तमाचा। थप्पड़। २. आर्थिक हानि।

चपना-अ० दे० 'चँपना'।

चपनी-स्त्री० [हिं० चपना] १. कोई चीज़ ढँकने का छोटा कटोरा। कटोरी। २. दरियाई नारियल का कमंडल।

चपर-गट्टू-वि० [हिं० चौफेर+गटपट] १. चारो ओर से पकड़कर दबाया हुआ। २. विपत्ति का मारा। अभागा।

चपरना†*-स० [अनु० चपचप] १. दे० 'चुपड़ना'। २. परस्पर मिलाना। अ० [सं० चपल] जल्दी मचाना।

चपरास-स्त्री० [हिं० चपरासी] चौकीदार, अरदली आदि का बिल्ला।

चपरासी-पुं० [फा० चप=बायाँ+रास्त=दाहिना] १. वह नौकर जो चपरास लगाता हो। २. कार्यालय के कागज-पत्र आदि लाने-ले जानेवाला नौकर।

चपरि*-क्रि०वि० [सं०चपल] जल्दी से।

चपल-वि० [सं०] [भाव० चपलता] १. स्थिर या शान्त न रहनेवाला। २. चंचल। चुलबुला। ३. उतावला। जल्दबाज। ४. चालाक।

चपलता-स्त्री० [सं०] १. 'चपल' का भाव। २. चंचलता। ३. तेजी। ४. धृष्टता। ढिठाई।

चपला-वि० 'चपल' का स्त्री०।

स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी । २. बिजली । ३. पुंश्चली स्त्री । ४.जीभ । जिह्वा ।
चपलाई*-स्त्री०=चपलता ।
चपलाना*-अ० [सं० चपल] १. चलना । २. हिलना-डोलना ।
स० १. चलाना । २. हिलाना ।
चपाक*-क्रि० वि० दे० 'चटपट' ।
चपाती-स्त्री० [सं० चर्पटी] पतली रोटी ।
चपेट-स्त्री० [हिं० चपाना] १ थप्पड़ । २. धक्का । ३. झोंका । ४. संकट ।
चपेटना-स० [हिं० चपेट] १. दबाना । दबोचना । २. फटकार बताना । डाँटना ।
चपेरना*-स०=दबाना ।
चप्पड़-पुं० दे० 'चिप्पड़' ।
चप्पल-स्त्री० दे० 'चट्टी' ।
चप्पा-पुं० [सं० चतुष्पाद] १. थोड़ा या छोटा भाग । २. छोटा भूमि-खंड । ३. चौड़ा टुकड़ा । चिप्पड़ ।
चप्पी-स्त्री० [हिं० चाँपना=दबाना] १. सेवा के लिए हाथ-पैर दबाने की क्रिया । २ दे० 'चिप्पी' ।
चप्पू-पुं० [हिं० चाँपना] नाव का वह डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है । किलवारी ।
चबाना-स० [सं० चर्वण] १ दाँतों से कुचलना या कुचलकर खाना ।
मुहा०-चबा-चबाकर बातें करना= रुक रुककर एक एक शब्द बोलना । मठार मठारकर बातें करना ।
२. दाँतों से काटना या दरदराना ।
चबाव(न)-पुं० दे० 'चवाव' ।
चबूतरा-पुं० [सं० चत्वर] १. बैठने के लिए चौरस और ऊँची जगह । चौतरा ।
चबेना-पुं० [हिं० चबाना] भुना हुआ अनाज जो चबाकर खाया जाता है । चर्वण ।
चभाना-स०[हिं०चाभना] भोजन कराना ।
चभोरना-स० [हिं० डुभकी] १. डुबाना । २. तरल पदार्थ से तर करना ।
चमक-स्त्री० [चमसे अनु०] १. प्रकाश । रोशनी । २. कांति । आभा । ३.कमर या पीठ में अचानक उठा हुआ दर्द । चिलक ।
चमकताई*-स्त्री० दे० 'चमक' ।
चमक-दमक-स्त्री० [हिं० चमक+दमक] १. दीप्ति । आभा । २. तड़क-भड़क ।
चमकदार-वि० दे० 'चमकीला' ।
चमकना-अ० [हिं० चमक] १. कान्ति या आभा से युक्त होना । जगमगाना । दमकना । ३. उन्नति करना । ४ वृद्धि पर होना । ५. चौंकना । भड़कना । ६. उँगलियाँ आदि हिलाकर स्त्रियों की तरह मटकना । ७. झटका लगने से अचानक कहीं दर्द होना ।
चमकाना-स० [हिं० चमकना] १. 'चमकना' का सकर्मक रूप । २. घोड़े को तेजी से बढ़ाना । ३. उँगलियाँ आदि हिलाकर चिढ़ाना या नकल उतारना । मटकाना ।
चमकारा*-वि० दे० 'चमकीला' ।
चमकारी*-स्त्री० दे० 'चमक' ।
चमकी-स्त्री० [हिं० चमक] रुपहले या सुनहले पत्तरों के छोटे गोल टुकड़े । सितारे । तार ।
चमकीला-वि० [हिं० चमक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० चमकीली] जिसमें चमक हो । चमकनेवाला । चमकदार ।
चमगादड़-पुं० [सं० चर्मचटक] एक प्रकार का उड़नेवाला प्रसिद्ध जंतु, जिसके पैर जालदार होते हैं ।
चमचम-स्त्री० [देश०] एक मिठाई । क्रि० वि० दे० 'चमाचम' ।

चमचमाना-अ० दे० 'चमकना'।
स० चमकाना। चमक लाना।
चमचा-पुं० दे० 'चम्मच'।
चमड़ा-पुं० [सं० चर्म] १ प्राणियों के शरीर का ऊपरी आवरण। चर्म। त्वचा।
मुहा०-चमड़ा उधेड़ना या खींचना= १. शरीर से चमड़ा खींचकर अलग करना। २. बहुत कड़ा दंड देना।
२. मृत पशुओं की उतारी हुई खाल, जिससे जूते आदि बनते हैं।
मुहा०-चमड़ा सिझाना = विशेष प्रक्रिया से चमड़े को मुलायम करना।
३. छाल। छिलका।
चमड़ी-स्त्री० दे० 'चमड़ा'।
चमत्कार-पुं० [सं०] [वि० चमत्कारी, चमत्कृत] १. आश्चर्यजनक कार्य या व्यापार। आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना। करामात। २. अनूठापन। विचित्रता।
चमत्कृत-वि० [सं०] चकित। विस्मित।
चमन-पुं० [फा०] १. हरी क्यारी। २. बगीचा। फुलवारी।
चमर-पुं० [सं०] [स्त्री० चमरी] १. सुरागाय। २. दे० 'चँवर'।
चमरख-स्त्री० [हिं० चाम+रखा] चमड़े की वह चकती जिसमें चरखे का तकला पहनाया रहता है।
चमरी-स्त्री० दे० 'चमर'।
चमाऊ*-पुं० [सं० चामर] चँवर।
चमाचम-वि०[अनु०]खूब चमकता हुआ।
चमार-पुं० [सं० चर्मकार] [स्त्री० चमारिन, चमारी] १. एक जाति जो चमड़े की चीजें बनाती है। २. एक जाति जो गलियों में झाड़ू देती है।
चमू-स्त्री० [सं०] १. सेना। फौज। २. वह सेना जिसमें ७२१ हाथी, ७२१ रथ, २१८७ सवार और ३६४५ पैदल हों।
चमेली-स्त्री० [सं० चम्पकवेलि] १. सुगन्धित फूलोंवाला एक पौधा। २. इस पौधे का सफेद, छोटा फूल।
चमोटा-पुं० [हिं० चाम+ओटा (प्रत्य०)] चमड़े का वह टुकड़ा जिसपर नाई छुरे की धार तेज करते हैं।
चमोटी-स्त्री० [हिं० चाम+ओटी (प्रत्य०)] १. चाबुक। कोड़ा। २. पतली छड़ी। कमची। बेंत। ३. दे० 'चमोटा'।
चमौवा-पुं० [हिं० चाम] एक तरह का भद्दा देशी जूता।
चम्मच-पुं० [फा०, मि० सं० चमस्] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी। चमचा।
चय-पुं० [सं०] १. समूह। राशि। २. टीला। ढूह। ३. गढ़। किला। ४. चहार-दीवारी। ५. चबूतरा।
चयन-पुं० [सं०] १. संग्रह। संचय। २. चुनने का काम। चुनाई। ३. यज्ञ के लिए अग्नि का एक संस्कार।
चयनक-पुं० [सं०] कुछ चुने हुए व्यक्तियों का वह वर्ग या समूह, जिसमें से किसी विशेष कार्य के लिए कोई या कुछ व्यक्ति फिर से चुने या किसी कार्य के लिए नियत किये जाते हैं। (पैनेल)
चयनिका-स्त्री० [सं०] १. चुनी हुई वस्तुओं या बातों का संग्रह। २. पत्र-पत्रिकाओं आदि का वह विभाग जिसमें दूसरों से ली हुई अच्छी बातें रहती हैं।
चयना*-स० [सं० चयन] संचय करना। इकट्ठा करना।
चर-पुं० [सं०] १.राजा या राज्य की ओर से नियुक्त वह मनुष्य जो घूम-घूमकर भीतरी

बातों का पता लगाता हो। भेदिया। जासूस। २. विशेष कार्य के लिए भेजा हुआ आदमी। दूत। ३. नदी किनारे की भूमि। ४.नदियों के बीच का टापू। रेता। वि० [सं०] १. चलनेवाला। जैसे-शुभचर, जलचर। २.जो इधर-उधर हटाया जा सके। जंगम। चल।

चरकना*-अ० दे० 'तड़कना'।

चरका-पुं० [फा० चरक:] १. हलका घाव या जख्म। २.हानि। ३.धोखा।छल।

चरख-पुं० [फा० चर्ख] १. घूमनेवाला गोल चक्कर। २. खराद। ३. ढेलवाँस। ४. वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है। ५. दे० 'चरग'।

चरखा-पुं० [फा० चर्ख] १. घूमनेवाला बड़ा गोल चक्कर। २. सूत कातने का लकड़ी का एक प्रसिद्ध यंत्र। ३. कूएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। ४. गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकाला जाता है। खड़खड़िया। ५. झंझट का काम।

चरखी-स्त्री० [हिं० चरखा का स्त्री० अल्पा०] १. घूमनेवाली कोई गोल वस्तु। छोटा चरखा। २. कपास ओटने का यंत्र। ओटनी। ३ कूएँ से पानी खींचने की गड़ारी।

चरग-पुं० [फा० चरग़] १. एक शिकारी चिड़िया। चरख। २. लकड़बग्घा।

चरचना-स० [सं० चर्चन] १. शरीर में चन्दन आदि का लेप करना। २.ताड़ना। अनुमान करना।

चरचराना-अ० [अनु० चरचर] १. चर चर शब्द के साथ टूटना। २. शरीर के अंग का तनाव या रगड़ से दर्द करना। चर्राना। स० चरचर शब्द करते हुए तोड़ना।

चरचा-स्त्री० दे० 'चर्चा'।

चरचारी*-पुं० [हिं० चरचा] १. चर्चा करनेवाला। २. निंदक।

चरजना*-अ० [सं० चर्चन] १. सुलावा या धोखा देना। बहकाना। २. अन्दाज लगाना। अनुमान करना।

चरण-पुं० [सं०] १. पग। पैर। २. बड़ों का संग। ३. पद्य या श्लोक का कोई पद। ४.चौथाई भाग। ५.आचरण। ६. सूर्य आदि की किरण। ७. चलना। ८. भक्षण करना। खाना।

चरणदासी-स्त्री० [सं० चरण+दासी] १. जोरू। पत्नी। २. जूता।

चरण-पादुका-स्त्री० [सं०] १. खड़ाऊँ। पाँवड़ी। २. पूजन के लिए बनाया हुआ चरण-चिह्न।

चरण-सेवा-स्त्री० [सं० चरण+सेवा] १. पैर दबाना। २. बड़ों की सेवा।

चरणामृत-पुं० [सं०] १. पूज्य व्यक्ति के चरणों की धोवन। २. दूध, दही, घी, चीनी और शहद का वह मिश्रण, जिसमें किसी देव-मूर्त्ति को स्नान कराया गया हो या उसके चरण धोये गये हों।

चरणोदक-पुं० [सं०] चरणामृत।

चरन*-पुं० दे० 'चरण'।

चरना-स० [सं० चर=चलना] पशुओं का खेत में उगी हुई घास आदि खाना। अ० [सं० चर] घूमना-फिरना।

चरनि*-स्त्री० [सं० चर=गमन] चाल।

चरनी-स्त्री० [हिं० चरना] १. चरी। चरागाह। २. वह नाँद जिसमें पशुओं को चारा दिया जाता है। ३.पशुओं का चारा।

चरपरा-वि० [अनु०] [स्त्री० चरपरी] तीक्ष्ण स्वादवाला। झालदार। तीता।

चरपराहट-स्त्री० [हिं० चरपरा] १. स्वाद की तीक्ष्णता । चरपरापन । झाल । २. डाह । ईर्ष्या । (क्व०)

चरफराना†*- अ० दे० 'तड़पना' ।

चरबाँक-वि० [सं० चार्वाक] १. चतुर। चालाक । २. उद्धत । उद्दंड ।

चरबा-पुं० [फा० चरबः] १. लेखे आदि का लिखा हुआ पूर्व रूप । खाका । २. प्रतिलिपि । नकल ।

चरबी-स्त्री० [फा०] वह चिकना, लसीला और सफेद पदार्थ जो कुछ प्राणियों के शरीर में पाया जाता है । मेद । वसा । मुहा०-**चरबी चढ़ना या छाना**=१. बहुत मोटा होना । २.मद में अंधा होना ।

चरम-वि० [सं०] १. पराकाष्ठा या हद तक पहुँचा हुआ । २. अंतिम । ३. सबसे आगे या ऊपर का ।

चरम-पंथ-पुं० दे० 'वाम-पंथ' ।

चरमर-पुं० [अनु०] कड़ी या चिमड़ी वस्तु के दबने या मुड़ने का शब्द ।

चरमराना-अ०, स० [अनु०] चरमर शब्द होना या करना ।

चरमवती†*-स्त्री० दे० 'चर्मण्वती' ।

चरवाई (ही)-स्त्री० [हिं० चराना] चराने का काम, भाव या मजदूरी ।

चरवाहा-पुं० [हिं० चरना+वाहा= वाहक] गौ, भैंस आदि चरानेवाला ।

चरस-स्त्री० [सं० चर्म] १. चमड़े का बहुत बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिए कूएँ से पानी निकाला जाता है । चरसा । मोट । २. भूमि की एक नाप जो २१०० हाथ की होती है । ३. गाँजे के पेड़ का गोंद या चेप, जिसका धूआँ तमाकू की तरह पीने से नशा होता है ।

चरसा-पुं० [हिं० चरस] १. चरस । मोट । २. भैंस, बैल आदि का चमड़ा ।

चरसी-पुं० [हिं० चरस+ई (प्रत्य०)] वह जो चरस पीता हो ।

चराई-स्त्री० [हिं० चरना] १ चरने या चराने का काम । २. चराने की मजदूरी ।

चरागाह-पुं० [फा०] पशुओं के चरने का मैदान । चरनी । चरी ।

चराचर-वि० [सं०] १. चर और अचर। चेतन और जड़ । २. जगत् । संसार ।

चराना-स० [हिं० चरना] [प्रे० चरवाना] १. चरने के लिए छोड़ना । २. बहकाना ।

चरावर*†-स्त्री० = बकवाद ।

चरिंदा-पुं० [फा०] चरनेवाला पशु ।

चरित-पुं० [सं०] १.आचरण । २. कार्य । ३. किसी के जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन । जीवन-कथा । जीवनी ।

चरित-नायक-पुं० [सं०] वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का किसी काव्य, नाटक आदि में वर्णन हो ।

चरितार्थ-वि० [सं०] [भाव० चरितार्थता] १. कृतार्थ । कृतकृत्य । २. ठीक उतरनेवाला । सार्थक ।

चरित्तर-पुं० [सं० चरित्र] १. बुरा चरित्र । २. छलपूर्ण आचरण ।

चरित्र-पुं० [सं०] १. स्वभाव । २. जीवन में किये जानेवाले कार्य या आचरण । ३. इस प्रकार के कार्यों या आचरणों का स्वरूप जो किसी की योग्यता, मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है । (कैरेक्टर) ४ करनी । करतूत । ५. दे० 'चरित' ।

चरित्र-नायक-पुं० दे० 'चरित-नायक' ।

चरित्र-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमें किसी कर्मचारी के आचरण, कर्तव्य-पालन आदि का समय

समय पर उल्लेख किया जाता है। (कैरेक्टर रोल)

चरित्रवान्-वि० [सं०][स्त्री०चरित्रवती] सदाचारी। अच्छे चरित्रवाला।

चरी-स्त्री० [हिं० चरना] १. चरागाह। २. चारे के लिए ज्वार के हरे पेड़। कड़वी।

चरु-पुं० [सं०] [वि० चरव्य] १. हवन के लिए पकाया हुआ अन्न। हविष्यान्न। २. ऐसा अन्न पकाने का पात्र।

चरैया†-पुं० [हिं० चरना] १. चरनेवाला। २. चरानेवाला।

चर्चक-पुं० [सं०] चर्चा करनेवाला।

चर्चन-पुं० [सं०] १. चर्चा। २. लेपन। पोतना। जैसे-अंग में चन्दन का चर्चन।

चर्चरी-स्त्री० [सं०] १. दे० 'चाचर'। २. करतल-ध्वनि।

चर्चा-स्त्री० [सं०] १. किसी विषय की बात-चीत। जिक्र। वर्णन। २.जन-श्रुति। अफवाह। ३. लेपन। ४. गायत्री।

चर्चित-वि० [सं०] १. लगाया या पोता हुआ। लपित। २. जिसकी चर्चा हो।

चर्म-पुं० [सं०] १. चमड़ा। २. ढाल।

चर्मकार-पुं० [सं०] [भाव० चर्मकारी] चमड़े का काम करनेवाली जाति। चमार।

चर्म-चक्षु-पुं० [सं०] नेत्र। आँख। 'ज्ञान-चक्षु' का उलटा।

चर्मण्वती-स्त्री० [सं०] चंबल नदी।

चर्मदण्ड-पुं० [सं०] चमड़े का कोड़ा।

चर्म-दृष्टि-स्त्री० [सं०] आँख की दृष्टि। 'ज्ञान-दृष्टि' का उलटा।

चर्म-पादुका-स्त्री० [सं०] जूता।

चर्या-स्त्री० [सं०] १. कार्य। (ऐक्शन) २. आचरण। ३. रहन-सहन। प्रति दिन का कार्य-क्रम। ४. वृत्ति। जीविका। ५. सेवा। ६. चलना। गमन।

चर्राना-अ० [अनु०] १. टूटने के समय लकड़ी आदि में चर चर शब्द होना। २. सूखकर, सिकुड़ने या तनने से (चमड़े में) दर्द होना। ३. सूखने या सिकुड़ने के कारण चिटकना या फटना। ४. इच्छा प्रबल होना।

चर्वण-पुं० [सं०] [वि० चर्व्य] १. चबाना। २. चबाने के लिए भूना हुआ दाना। चबेना।

चर्वित-वि० [सं०] चबाया हुआ।

चर्वित-चर्वण-पुं० [सं०] किया हुआ काम या कही हुई बात फिर से करना या कहना। पिष्ट-पेषण।

चल-वि० [सं०][भाव०चलता] १ ंचल। अस्थिर। २. चलता हुआ। ३ (सम्पत्ति आदि) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सके। जैसे-गहने, कपड़े आदि।

पुं० [सं०] १.पारा। २.शिव। ३.विष्णु।

चलक-पुं०[सं०]माल। असबाब। (गुड्स)

चलाचल-वि० [सं०] १. चल और अचल। २ चंचल।

चल-चित्र-पुं० [सं०] वे चित्र जो परदे पर जीवित मनुष्यों की भाँति काम करते हुए दिखाये जाते हैं। (सिनेमा)

चलचूक-स्त्री० [सं० चल=चंचल+चूक] धोखा। छल। कपट।

चलता-वि० [हिं० चलना] [स्त्री० चलती] १. चलता हुआ। गति-युक्त। मुहा०-चलता करना=१.रवाना करना। भेजना। २ कोई काम जैसे-तैसे निपटाना। चलता बनना=चल देना।

२. जिसका क्रम बराबर चला चले। चालू। जारी। (रनिंग) ३. प्रचलित। (करेन्ट) ४. काम चलाने या करने योग्य। ५. चालाक।

पुं० [देश०] १ एक बड़ा पेड़ जिसमें बेल के-से गोल फल लगते हैं। २. कवच।

चलता खाता-पुं० [हिं० चलता+खाता] बंक आदि का वह खाता जिसमें लेन-देन बराबर जारी रहे और जब चाहें, तब रुपये जमा कर सकें या ले सकें। (करेन्ट एकाउन्ट)

चलती-स्त्री० [हिं० चलना] किसी की आज्ञा या महत्त्व का सब जगह माना जाना। अधिकार या प्रभुत्व चलना।

चलतू-वि० दे० 'चलता'।

चल-दल-पुं० [सं०] पीपल।

चल-द्रव्य-पुं० दे० 'चलक'।

चलन-पुं० [हिं० चलना] १. चलने का भाव। चाल। २. प्रथा। रवाज। ३. बराबर होता रहनेवाला व्यवहार या आचरण। प्रचलन। प्रचार।

चलन-सार-वि० [हिं० चलन+सार (प्रत्य०)] १. व्यवहार में प्रचलित। चलता हुआ। २. अधिक दिनों तक चलनेवाला। टिकाऊ।

चलना-अ० [सं० चलन] १. पैर उठाते हुए एक जगह से दूसरी जगह जाना। गमन करना। २. हिलना-डोलना।

मुहा०-**पेट चलना**=१. दस्त आना। २. निर्वाह होना। **बस चलना**=शक्ति का काम करना। **मन चलना**=इच्छा या लालसा होना। **चल बसना**= मर जाना। **अपने चलते**=भर-सक। यथा-शक्ति।

३. सपरना। निभना। ४. उन्नति पर होना। ५. आगे बढ़ना। ६. आरंभ होना। छिड़ना। ७. जारी रहना। ८. बराबर काम देना। टिकना। ९. लेन-देन में काम आना। १०. प्रचलित या जारी होना। ११. उपयोग में आना। १२ तीर, गोली, लाठी आदि का प्रयोग या प्रहार होना। १३. पढ़ा जाना। बाँचा जाना। १४. उपाय या युक्ति लगना। १५. आचरण या व्यवहार होना।

स० ताश, चौसर, शतरंज आदि खेलों में पत्ता या मोहरा सामने रखना या आगे बढ़ाना।

चलनी†-स्त्री० दे० 'छलनी'।

चल-पत्र-पुं० [सं०] १. पीपल। २ कागज के रूप में नित्य चलनेवाला वह धन जो सिक्के की जगह काम में आता है। (करेन्सी नोट)

चलवंत-पुं० [हिं० चलना] पैदल सिपाही।

चल-विचल-वि० [सं० चल+विचल] १. अस्त-व्यस्त। उखड़ा-पुखड़ा। बे-ठिकाने। २. अस्थिर। डाँवाँडोल।

पुं० नियम या क्रम का भंग।

चलाऊ-वि० [हिं० चलना] १. चलाने-वाला। २. टिकाऊ।

चलाक*-वि० दे० 'चालाक'।

चलाका*†-स्त्री० [सं० चला] बिजली।

चलाचल*-स्त्री० [हिं० चलन] १. चलाचली। २. गति। चाल।

वि० [सं०] चंचल। चपल।

चलाचली-स्त्री० [हिं० चलना] १. प्रस्थान या चलने की तैयारी। २. प्रस्थान। ३. मरने का समय निकट होना।

चलान-स्त्री० [हिं० चलाना] १. माल या सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने या भेजे जाने का कार्य। २. अप-राधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए भेजा जाना। ३. बाहर से आया हुआ माल। ४. (किसी की सूचना के लिए) भेजी हुई चीजों की सूची या धन का

विवरण । रचना ।

चलाना-स० [हिं० चलना] [प्रे० चल-वाना] चलने में प्रवृत्त करना । ऐसा करना कि चले ।

मुहा०-किसी की चलाना=किसी की बात कहना । मुँह चलाना=खाना । हाथ चलाना=मारना ।

२. व्यवहार या आचरण कराना । ३. कार्य आदि की ऐसी व्यवस्था करना कि वह अच्छी तरह आगे बढ़ता रहे । (कन्डक्ट) ४. अस्त्र-शस्त्र आदि व्यवहार में लाना । जैसे-लाठी या गोली चलाना ।

चलायमान-वि० [सं०] १. चलता हुआ । २. चंचल । ३. विचलित ।

चलावा-पुं० [हिं० चलना] १. रीति । रस्म । रवाज । २. द्विरागमन । गौना । ३. गोवों में संक्रामक रोग फैलने के समय का एक प्रकार का उतारा ।

चलित-वि० [सं०] १. जो चलता या चल रहा हो । चलायमान । २. जिसका प्रचलन या व्यवहार हो । (करेन्ट) ३. जो इस समय हो या होता हो । जैसे-चलित प्रथा ।

चवाव*-स्त्री० [हिं० चौ+बाई=वायु] चारो ओर से एक साथ बहनेवाली हवा ।

चवाई-पुं० [हिं० चवाव] [स्त्री० चवाइन] बदनामी फैलानेवाला । निन्दक ।

चवाव-पुं० [हिं० चौ+बाई=वायु] १. चारो ओर फैली हुई चर्चा । अफवाह । २. बदनामी । ३. निन्दा । चुगली ।

चश्म-स्त्री० [फा० चश्मा] नेत्र । आँख ।

चश्मदीद-वि० [फा०] १. आँखो से देखा हुआ । २. जिसने कोई घटना देखी हो । यौ०-चश्मदीद गवाह = प्रत्यक्षदर्शी गवाह या साक्षी ।

चश्मा-पुं० [फा०] १. ऐनक । २. पानी का सोता या नाला ।

चष*-पुं० [सं० चक्षु] आँख ।

चषक-पुं० [सं०] १. मद्य पीने का प्याला । २. मधु । शहद ।

चष-चोल*-पुं० [हिं० चष+चोल=वस्त्र] आँख की पलक ।

चसका-पुं० [सं० चषण] १. शौक । २. आदत । लत ।

चसना-अ० [हिं० चाशनी] १. दो चीजों का एक में सटना । लगना । चिपकना । २. मरना । ३. कपड़े का खिंच या दबकर जरा-सा फट जाना ।

चसम*-स्त्री० दे० 'चश्म' ।

चस्पाँ-वि० [फा०] चिपका हुआ ।

चह-पुं० [सं० चय] १ नाव पर चढ़ने के लिए बना हुआ चबूतरा । २. नदी पर बना पीपे आदि का अस्थायी पुल ।

*स्त्री० [फा० चाह] गड्ढा ।

चहक-स्त्री० [हिं० चहकना] पक्षियो का कलरव । चहचहा ।

चहकना-अ० [अनु०] १. पक्षियों का आनंदित होकर मधुर शब्द करना । २. प्रसन्न होकर खूब बोलना ।

चहचहा-पुं० [हिं० चहचहाना] १. चहक । २. हँसी । ठहाका ।

वि० उल्लास-या आनन्द-युक्त ।

चहचहाना-अ० [अनु०] चिड़ियों का चह चह शब्द करना । चहकना ।

चहना*-स० दे० 'चाहना' ।

चहनि*-स्त्री० दे० 'चाह' ।

चह-बच्चा-पुं० [फा० चाह=कूआँ+बच्चा] १. पानी जमा करने का छोटा गड्ढा या हौज । २. धन छिपाकर रखने का छोटा तहखाना ।

चहर†*-स्त्री० दे० 'चहल'।

चहरना†*-अ० [हिं० चहल] आनन्दित होना। प्रसन्न होना।

चहल-स्त्री० [अनु० चहचह] आनन्द की धूम। आनंदोत्सव।

चहल-कदमी-स्त्री० [हिं० चहल+फा० कदम] धीरे धीरे टहलना या घूमना।

चहल-पहल-स्त्री० [अनु०] १. आनन्द की भीड़-भाड़। धूम-धाम। २. रौनक।

चहला-पुं० [सं० चिकिल] कीचड़।

चहार-दीवारी-स्त्री० [फा०] चारो ओर की दीवार। घेरा। प्राचीर।

चहारुम-पुं० [फा०] चौथाई। चतुर्थांश।

चहु(हूं)*-वि० [हिं० चार] चारो।

चहूंटना-अ० [हिं० चिमटना] सटना। लगना। मिलना।

चहेटना-स० [?] १. गारना। निचोड़ना। २. खदेड़ना। भगाना।

चहेता-वि० [हिं० चाहना+एता (प्रत्य०)] [स्त्री० चहेती] जिसे चाहा जाय। प्यारा। प्रिय।

चहोरना†-अ० [देश०] १. पौधा रोपना या बैठाना। २. सहेजना।

चाँई-पुं० [देश०] १. ठग। उचक्का। २. चालाक। धूर्त।

चाँकना-स० दे० 'चाकना'।

चाँचर(रि)-स्त्री० दे० 'चाचर'।

चाँचु*-पुं० दे० 'चोंच'।

चाँड़-वि० [सं० चंड] १. प्रबल। बलवान्। २. उद्धत। उद्दंड। ३. श्रेष्ठ। स्त्री० [सं० चंड=प्रबल] १. भार सँभालने के लिए नीचे लगाया जानेवाला खम्भा। टेक। थूनी। २. अत्यन्त आवश्यकता।

मुहा०-चाँड़ सरना = इच्छा या आवश्यकता पूरी होना।

३. संकट। ४. प्रबलता।

चाँड़ना-स० [?] १. खोदकर गिराना। २. उखाड़ना। ३. उजाड़ना।

चांडाल-पुं० [सं०] [स्त्री० चांडाली, चांडालिन] १ एक छोटी जाति। डोम। श्वपच। २. पतित मनुष्य। (गाली)

चाँड़िला*-वि० दे० 'चाँड़'।

चाँद-पुं० [सं० चंद्र] १. चन्द्रमा।

मुहा०-चाँद का टुकड़ा=अत्यन्त सुन्दर। किधर चाँद निकला है?=आज आप बहुत दिनों पर कैसे दिखाई पड़े?

२. दूज के चाँद के आकार का एक गहना। ३. वह काला दाग जिसपर अभ्यास के लिए निशाना लगाया जाता है।

स्त्री० खोपड़ी का बिचला भाग।

मुहा०-चाँद गंजी होना=बहुत मार पड़ना।

चाँदना-पुं० [हिं० चाँद] १. प्रकाश। उजाला। २. चाँदनी।

चाँदनी-स्त्री० [हिं० चाँद] १. चन्द्रमा का प्रकाश। चाँद का उजाला। चन्द्रिका।

मुहा०-चार दिन की चाँदनी=थोड़े दिनों का सुख या आनन्द।

२. बिछाने या ऊपर तानने की चादर।

चाँद-मारी-स्त्री० [हिं० चाँद+मारना] किसी तल पर बने हुए बिन्दुओं पर गोली चलाने या निशाना लगाने का अभ्यास।

चाँदी-स्त्री० [हिं० चाँद] एक सफेद चमकीली धातु, जिसके सिक्के, गहने और बरतन आदि बनते हैं। रजत।

मुहा०-चाँदी का जूता=घूस। रिशवत। चाँदी काटना=खूब रुपये पैदा करना। चाँदी होना=१. बहुत लाभ

होना। २. जलकर राख होना।

चांद्र-वि० [सं०] १. चन्द्रमा संबंधी। २. जो चन्द्रमा के विचार से हो। जैसे-चान्द्र मास।

चांद्र मास-पुं० [सं०] उतने दिन, जितने चन्द्रमा को पृथ्वी की एक बार परिक्रमा करने में लगते हैं। पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का महीना।

चांद्रायण-पुं० [सं०] १. महीने भर का एक व्रत जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं।

चाँप-स्त्री० [हिं० चपना] १. दे० 'चाप'। २.बलवान की प्रेरणा या दबाव। †*पुं० [हि० चंपा] चंपा का फूल।

चाँपना-स० [सं० चपन] दबाना।

चाइ(उ)*-पुं० दे० 'चाव'।

चाक-पुं० [सं० चक्र] १ कील पर घूमनेवाला वह चक्राकार पत्थर जिसपर कुम्हार बरतन बनाते हैं। कुलाल-चक्र। २. पहिया। ३. गराड़ी। ४. मंडलाकार रेखा। ५. दे० 'चोक'।

पुं० [फा०] दरार। चीर।

वि० [तु०] १. दृढ़। मजबूत। २. हृष्ट-पुष्ट। हट्टा कट्टा।

यौ०-चाक-चौबंद=१. हृष्ट-पुष्ट। २. चालाक और फुरतीला।

चाक-चक*-वि०=मजबूत।

चाकचक्य-पुं० [सं०] १. चमक-दमक। उज्वलता। २ सुन्दरता।

चाकना-स० [हिं० चाक] १. चारो ओर रेखा खींचकर किसी वस्तु को घेरना। हद बनाना। २. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी आदि से छापा लगाना, जिसमें कोई कुछ निकाले तो पता चल जाय। ३. पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।

चाकर-पुं० [फा०] [स्त्री० चाकरानी, भाव० चाकरी] भृत्य। सेवक। नौकर।

चाकरी-स्त्री० [फा०] सेवा। नौकरी।

चाकी†-स्त्री० दे० 'चक्की'। *स्त्री० [सं० चक्र] बिजली।

चाकू-पुं० [तु०] छुरी।

चाक्षुष-वि० [सं०] १. चक्षु-संबंधी। २. जिसका ज्ञान नेत्रों से हो।

चाखना*-स० दे० 'चखना'।

चाचर (रि)-स्त्री० [सं० चर्चरी] १. होली का एक गीत। चर्चरी। २ होली में होनेवाले खेल-तमाशे। ३.हल्ला-गुल्ला।

चाचा-पुं० [सं० तात] [स्त्री० चाची] पिता का छोटा भाई। काका। पितृव्य।

चाट-स्त्री० [हिं० चाटना] १. चटपटी चीज खाने की प्रबल इच्छा। २. एक बार किसी वस्तु का स्वाद पाकर फिर उसे पाने की चाह। चसका। शौक। लालसा। ३. प्रबल इच्छा। ४. लत। आदत। ५. खाने की चटपटी और नमकीन चीजें।

चाटना-स० [अनु० चट चट] १. जीभ से रगड़कर या उठाकर खाना। २. पोंछकर खा लेना। ३. (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना।

यौ०-चूमना-चाटना=प्यार करना।

४. कीड़ों का कागज, कपड़े आदि खा जाना।

चाटुकार-पुं० [सं०] खुशामदी।

चाटुकारी-स्त्री०=खुशामद।

चाड़*-स्त्री० दे० 'चोंड़'।

चाढ़ा†*-वि० [हिं० चोंड़] [स्त्री० चाढ़ी] प्यारा। प्रिय।

चाणक्य-पुं० [सं०] राजनीति के एक प्रसिद्ध आचार्य और सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री। कौटिल्य।

चातक-पुं० [सं०] [स्त्री० चातकी] पपीहा नामक पक्षी।

चातुर्मासिक-वि० [सं०] १. चार महीने में या पर होनेवाला। २. चातुर्मास-सम्बन्धी।

चातुर्मास्य-पुं० [सं०] चौमासे या वर्षा काल में किया जानेवाला एक व्रत।

चातुर्वर्ण्य-पुं० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चारो वर्ण।

चात्रिक*-पुं० दे० 'चातक'।

चादर-स्त्री० [फा०] १. बिछाने या ओढ़ने का लम्बा-चौड़ा कपड़ा। २. हलका ओढ़ना। दुपट्टा। ३. दे० 'चद्दर'। ४. किसी पहाड़ या चट्टान से गिरनेवाली पानी की चौड़ी धार। ५ पवित्र स्थान पर चढ़ाये जानेवाले फूल। (मुसल०)

चान*-पुं० दे० 'चंद्रमा'।

चानक*-क्रि० वि० दे० 'अचानक'।

चानन*-पुं० दे० 'चंदन'।

चाना*-अ० [हिं० चाव+ना (प्रत्य०)] चाव या उमंग में आना।

चाप-पुं० [सं०] १. धनुष। कमान। २. वृत्त की परिधि का कोई भाग। स्त्री० [सं० चाप=धनुष] १. दबाव। २. पैर की आहट।

चापना-स० [सं० चाप] दबाना।

चापल*-वि० दे० 'चपल'।

चापलूस-वि० [फा०] खुशामदी।

चापलूसी-स्त्री० [फा०] खुशामद।

चापल्य-पुं०=चपलता।

चाब-स्त्री० [हिं० चाबना] १. चबानेवाले चौखूँटे दाँत। डाढ़। चौघड़।

चाबना-स० [सं० चर्वण] १. चबाना। २. खूब भोजन करना। भर-पेट खाना।

चाबी-स्त्री० [हिं० चाप]कुंजी। ताली।

चाबुक-पुं० [फा०] १. कोड़ा। २. तीव्र प्रेरणा।

चाबुक-सवार-पुं०[फा०] [संज्ञा चाबुक-सवारी] घोड़े को चाल सिखानेवाला।

चाभना-स० [हिं० चाबना] खाना।

चाभी-स्त्री० दे० 'चाबी'।

चाम-पुं० [सं० चर्म] चमड़ा। खाल। मुहा०-**चाम के दाम चलाना**=मन-मानी या अंधेर करना।

चामर-पुं० दे० 'चँवर'।

चामीकर-पुं० [सं०] १. सोना। स्वर्ण। २. धतूरा।

चामुंडा-स्त्री० [सं०] एक देवी जिसने चंड,मुंड आदि दैत्यों का नाश किया था।

चाय-स्त्री० [चीनी चा] १. एक पौधा जिसकी पत्तियां उबलते हुए पानी में डालकर तथा चीनी और दूध मिलाकर एक गरम पेय बनाते हैं। २ इस प्रकार बनाया हुआ प्रसिद्ध पेय पदार्थ। यौ०-**चाय-पानी**=जल-पान। *पुं० दे० 'चाव'।

चायक*-पुं० [हिं० चाव] चाहनेवाला।

चार-वि० [सं० चतुः] दो का दूना। मुहा०-**चार चाँद लगना**=सौन्दर्य या प्रतिष्ठा बहुत बढ़ जाना। **चारो फूटना**=दृष्टि और बुद्धि दोनों नष्ट होना। पुं० [सं०] [वि० चरित] १. गति। चाल। गमन। २. कारागार। ३. गुप्त-चर। जासूस। ४. दास। सेवक। ५. रीति। रसम।

चार-आइना-पुं० [फा०] एक प्रकार का कवच या बकतर।

चार-कर्म-पुं० [सं०] भेदिये, गुप्तचर या जासूस का काम । जासूसी । (एस्पॉयनेज)

चारखाना-पुं० [फा०] वह कपड़ा जिसमें धारियों से चौखूँटे घर बने हों ।

चारजामा-पुं० [फा०] घोड़े की ज़ीन ।

चारण-पुं० [सं०] १. भाट । बन्दीजन । २. राजपूताने की एक जाति ।

चार-दीवारी-स्त्री० [फा०] १. चहारदीवारी । २ शहर-पनाह । प्राचीर ।

चारना†*- स० [सं० चारण] चराना ।

चारपाई-स्त्री० [हिं० चार+पाया] छोटा पलंग । खाट । खटिया ।

मुहा०-**चारपाई धरना**, **पकड़ना या चारपाई से लगना**=चारपाई से न उठ सकना । बहुत बीमार होना ।

चार-यारी-स्त्री० [हिं० चार+फा० यार] १. चार मित्रों की गोष्ठी । २. सुन्नी मुसलमानों का एक वर्ग ।

चारा-पुं० [हिं० चरना] पशुओं के खाने की घास, डंठल आदि ।

पुं० [फा०] उपाय । तदबीर ।

चाराजोई-स्त्री० [फा०] फरियाद ।

चारित-वि० [सं०] चलाया हुआ ।

चारित्र-पुं० [सं०] १. कुल की रीति । २. चरित्र । ३. व्यवहार ।

चारी-वि० [सं० चारिन्] [स्त्री० चारिणी] १. चलनेवाला । २. आचरण करनेवाला ।

पुं० पैदल सिपाही ।

चारु-वि० [सं०] [भाव० चारुता] सुन्दर । मनोहर ।

चारु-हासिनी-वि० स्त्री० [सं०] सुन्दर हँसी हँसनेवाली । मनोहर मुसकानवाली ।

चार्वाक-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध नास्तिक तार्किक । २. इसका चलाया हुआ मत या दर्शन ।

चाल-स्त्री० [हिं० चलना] १. गति । चलने की क्रिया । २. चलने का ढंग । ३. आचरण । बरताव । व्यवहार । ४. रीति । रवाज । प्रथा । परिपाटी । ५. युक्ति । तरकीब । ६. छल । धूर्तता । ७. प्रकार । तरह । ८. शतरंज, ताश, चौसर आदि के खेल में, पत्ता या मोहरा दाँव पर रखने या आगे बढ़ाने का काम । ९. चलने का शब्द । आहट ।

चालक-वि० [सं०] चलानेवाला । जैसे-वायु-यान का चालक ।

चाल-चलन-पुं० [हिं० चाल+चलन] आचरण । व्यवहार । (कैरेक्टर)

चाल-ढाल-स्त्री० [हिं० चाल+ढाल] १. आचरण । व्यवहार । २. रंग-ढंग ।

चालन-पुं० [सं०] चलाने की क्रिया ।

पुं० [हिं० चालना] भूसी या चोकर जो कोई चीज छानने से निकलता है ।

स्त्री० दे० 'छलनी' ।

चालना†*-स० [सं० चालन] १. दे० 'चलाना' । २. (बहू) बिदा कराके ले आना । ३. आटा आदि छानना ।

अ० दे० 'चलना' ।

स० दे० 'छानना' ।

चालबाज-वि० [हिं० चाल+फा० बाज] [संज्ञा चालबाजी] धूर्त । छली ।

चाला-पुं० [हिं० चाल] १. प्रस्थान । कूच । २. नई बहू का पहले-पहल ससुराल से मैके जाना । ३. यात्रा का मुहूर्त । ४. उतारा या टोटका एक गाँव से दूसरे गाँव में ले जाना ।

चालाक-वि०[फा०] १. चतुर । २. धूर्त ।

चालाकी-स्त्री० [फा०] १. चतुराई ।

२. व्यवहार-कुशलता । दक्षता । पटुता । ३. धूर्त्तता । चालबाजी ।

चालान-पुं० दे० 'चलान' ।

चालिया-वि० दे० 'चालबाज' ।

चाली-वि० [हिं० चाल] १. चालबाज। २. चंचल । ३. नटखट ।

चालू-वि० [हिं० चलना] १. जो चल रहा हो । २. जिसका चलन रुका न हो । प्रचलित । चलता हुआ । (करेन्ट)

चाव-पुं० [हिं० चाह] १. अभिलाषा । वासना । २. प्रेम । अनुराग । ३. शौक । चाह । ४. उमंग । उत्साह ।

चावना*-स० दे० 'चाहना' ।

चावल-पुं० [सं० तंडुल] १. एक प्रसिद्ध अन्न जो भूसी उतारा हुआ धान है। तंडुल । २. भात । ३. चावल के आकार के दाने । ४. एक रत्ती की तौल ।

चाशनी-स्त्री० [फा०] १. आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और लसीला किया हुआ चीनी, मिस्री, गुड़ आदि का रस । २. चसका । मजा । ३. सोने का वह नमूना जो मिलान के लिए सुनार को सोना देनेवाला गाहक अपने पास रखता है ।

चाष-पुं० [सं०] १. नीलकंठ पक्षी । २. चाहा पक्षी ।

चासा-पुं० [देश०] १. हलवाहा । २. खेतिहर ।

चाह-स्त्री० [सं०इच्छा] १. इच्छा । अभिलाषा । २. प्रेम । प्रीति । ३. पूछ । आदर । कदर । ४. आवश्यकता । जरूरत । *स्त्री० [हिं० चाल=आहट] १. खबर। समाचार । २. गुप्त भेद । मर्म । रहस्य ।

चाहक*-पुं० [हिं० चाहना] १. चाहनेवाला । २. प्रेमी ।

चाहत-स्त्री० [हिं० चाह] चाह । प्रेम ।

चाहना-स० [हिं० चाह] १. इच्छा या अभिलाषा करना । २. प्रेम करना । ३. माँगना । * ४. देखना । ५. ढूँढ़ना । *स्त्री० दे 'चाह' ।

चाहा-पुं० [सं० चाष] बगले की तरह का एक जल-पक्षी ।

चाहि*-अव्य० [सं० चैव=और भी] अपेक्षा । तुलना में ।

चाहिए-अव्य० [हिं० चाहना] १. उचित है । २. आवश्यक है ।

चाही-वि० स्त्री० [हिं० चाह] चहेती । प्यारी ।

वि० [फा० चाह=कूआँ] कूएँ से सींची जानेवाली (जमीन) ।

चाहे-अव्य० [हिं० चाहना] १. यदि इच्छा हो । २. यदि उचित हो । ३. अथवा । या ।

चिउँटी-स्त्री० दे० 'च्यूँटी' ।

चिंघाड़ना-अ० [सं० चीत्कार] [संज्ञा चिंघाड़] १. चीखना । चिल्लाना । २. हाथी का बोलना या चिल्लाना ।

चिंचिनी*-स्त्री० [सं० तिंतिड़ी] इमली का पेड़ या फल ।

चिंजा(ा)*-पुं० [सं० चिरंजीव] [स्त्री० चिंजी] १. लड़का । २. पुत्र । बेटा ।

चिंड-पुं० [?] नाच का एक प्रकार ।

चिंतक-वि० [सं०] [भाव० चिंतकता] चिन्तन करनेवाला ।

चिंतन-पुं० [सं०] [स्त्री० चिंतना] १. बार बार होनेवाला स्मरण । ध्यान । भावना । २. विचार । गौर ।

चिंतना*-अ०, स० [सं० चिंतन] १.ध्यान करना । २. सोचना ।

चिंतनीय-वि० [सं०] १.चिंतन या चिंता करने योग्य । २. संदिग्ध । विचारणीय ।

चितवन*-पुं० दे० 'चितन'।
चिंता-स्त्री० [सं०] १. चिंतन। २. किसी विषय या कार्य की सिद्धि के संबंध में मन में बार बार होनेवाला विचार। सोच।
चिंतामणि-पुं० [सं०] १. सब मनोरथ सिद्ध करनेवाला एक कल्पित रत्न। २. ब्रह्मा। ३. परमेश्वर। ४. सरस्वती का एक मंत्र जो लड़के की जीभ पर इसलिए लिखा जाता है कि उसे खूब विद्या आवे।
चिंतित-वि० [सं०] [स्त्री० चिंतिता] जिसे चिन्ता हो। चिन्ता-युक्त।
चिन्त्य-वि० दे० 'चिंतनीय'।
चिंदी-स्त्री० [देश०] बहुत छोटा टुकड़ा। मुहा०-हिन्दी की चिन्दी निकालना= व्यर्थ के सूक्ष्म तर्क करना।
चिंपांजी-पुं० [अं०] एक प्रकार का बन-मानुष।
चिउड़ा-पुं० दे० 'चिड़वा'।
चिक-स्त्री० [तु० चिक़] बाँस की तीलियों का बना हुआ परदा। चिलमन।
पुं० पशुओं को मारकर उनका मांस बेचनेवाला, जिसकी दूकान के आगे चिक पड़ी रहती है। कसाई।
चिकट-वि० [सं० चिक्किद] १. तेल और मैल से गन्दा और चिपचिपा।
चिकटना-अ० [हिं० चिकट या चिकट] बहुत मैल से चिपचिपा होना।
चिकन-स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बूटी-दार सूती कपड़ा।
चिकना-वि० [सं० चिक्कण] [स्त्री० चिकनी, भाव० चिकनाई, चिकनापन, चिकनाहट] १. जो खुरदुरा न हो। साफ और बराबर। २. जिसमें तेल लगा या मिला हो।
मुहा०-चिकना घड़ा=निर्लज। बेहया।
चिकनी चुपड़ी बातें=बनावटी स्नेह से भरी या खुशामद की बातें।
३. कृत्रिम व्यवहार करनेवाला। खुशा-मदी। ४. स्नेही। प्रेमी।
पुं० तेल, घी आदि चिकने पदार्थ।
चिकनाना-स० [हिं० चिकना+आना (प्रत्य०)] चिकना करना या बनाना। अ० १. चिकना होना। २. स्निग्ध होना। ३. हृष्ट-पुष्ट होना। मोटा होना।
चिकनिया-वि० [हिं० चिकना] छैला।
चिकनी सुपारी-स्त्री० [सं० चिक्कणी] एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।
चिकरना-अ० दे० 'चिंघाड़ना'।
चिकार*-पुं० दे० 'चिंघाड़'।
चिकारा-पुं० [हिं० चिकार] [स्त्री० अल्पा० चिकारी] १. सारंगी की तरह का एक बाजा। २. हिरन की तरह का एक जानवर।
चिकित्सक-पुं० [सं०] रोग का इलाज या चिकित्सा करनेवाला। वैद्य।
चिकित्सक-प्रमाणक-पुं० [सं०] वह प्रमाणपत्र जो, अस्वस्थता, वयस्कता आदि सिद्ध करने के लिए किसी चिकित्सक से प्राप्त किया जाता है। (मेडिकल सरटिफिकेट)
चिकित्सन-वैचारिक-विज्ञान-पुं०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें चिकित्सा संबंधी मूल सिद्धान्तों या तत्वों का विवेचन हो। (मेडिकल ज्यूरिसप्रूडेन्स)
चिकित्सा-स्त्री० [सं०] [वि० चिकित्सित, चिकित्स्य] रोग दूर करने की युक्ति या प्रक्रिया। इलाज।
चिकित्सालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ रोगियों की चिकित्सा या दवा होती हो। दवाखाना। अस्पताल।

चिकित्सावकाश-पुं० [सं०] वह अवकाश या छुट्टी जो किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के लिए मिलती है। (मेडिकल लीव)

चिकुटी*-स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चिकुर-पुं० [सं०] १. केश। बाल। २. पर्वत। ३. रेंगनेवाले जन्तु। सरीसृप।

चिकोटी†-स्त्री० दे० 'चुटकी'।

चिक्कट-वि० दे० 'चिकट'।

चिक्कण-वि० [सं०] चिकना।

चिक्करना-अ० दे० 'चिंघाड़ना'।

चिक्कार-पुं० दे० 'चिंघाड़'।

चिचड़ा-पुं० [देश०] एक जंगली पौधा जो दवा के काम में आता है। अपामार्ग। लटजीरा।

चिचड़ी-स्त्री० दे० 'किलनी'।

चिचान*-पुं० [सं० सचान] बाज पक्षी।

चिचुकना-अ० दे० 'चुचुकना'।

चिचोड़ना†-स० दे० 'चचोड़ना'।

चिजारा-पुं० दे० 'मेमार' या 'राज'।

चिट-स्त्री० [सं० चीर] १. कागज का कम चौड़ा और अधिक लम्बा टुकड़ा जिसपर कोई बात या लेखा लिखा जाय। (स्लिप) २. कपड़े की ऐसी ही धज्जी।

चिटकना-अ० [अनु०] [स० चिटकाना] १ चिट शब्द करके टूटना। २. जगह जगह से फटना। ३. लकड़ी का जलते समय 'चिट चिट' शब्द करना। ४. चिढ़ना। ५. कली का फूटकर खिलना।

चिट-नवीस-पुं० [हिं० चिट+फा० नवीस] लेखक। मुहर्रिर। लिपिक।

चिटनीस-पुं० दे० 'चिट-नवीस'।

चिट्टा-वि० [सं० सित] सफेद। श्वेत। पुं० [?] झूठा बढ़ावा।

मुहा०-चिट्टा लड़ाना=ऐसी बात कहना जिससे दो आदमियों में झगड़ा हो।

चिट्ठा-पुं० [हिं० चिट] १. आय-व्यय का हिसाब। लेखा। २. वर्ष भर की लाभ-हानि का पत्रक। फर्द। ३. सिलसिलेवार सूची या विवरण। ४. मजदूरी या वेतन में बाँटा जानेवाला धन।

यौ०-कच्चा चिट्ठा=विस्तृत और भीतरी विवरण।

चिट्ठी-स्त्री० [हिं० चिट] १. वह कागज जिसपर किसी के जानने के लिए कोई बात या समाचार लिखा हो। पत्र। खत। २. पुरजा। रुक्का। ३. वह कागज जिससे कोई काम करने या माल पाने, लाने या ले जाने का अधिकार मिले।

चिट्ठी-पत्री-स्त्री० [हिं० चिट्ठी+सं० पत्र] १. किसी के यहाँ पत्र जाना और उसके यहाँ से उत्तर आना। पत्र-व्यवहार। २. इस प्रकार भेजे हुए पत्र और उनके उत्तर।

चिट्ठी-रसाँ-पुं० दे० 'डाकिया'।

चिड़चिड़ा-वि० [हिं० चिड़चिड़ाना] जरा-सी बात में चिढ़ने या अप्रसन्न हो जानेवाला।

चिड़चिड़ाना-अ० [अनु०] जरा जरा सी बातों पर बिगड़ पड़ना।

चिड़वा-पुं० [सं० चिपिट] हरे धान को भून और कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना। चिउड़ा।

चिड़ा-पुं० [सं० चटक] गौरा पक्षी।

चिड़िया-स्त्री० [सं० चटक] पंख और चोंचवाला द्विपद। पक्षी। पखेरू।

चिड़ियाखाना-पुं० [हिं० चिड़िया+फा० खाना] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी देखने के लिए रक्खे जाते हैं।

चिड़िहार†*-पुं० दे० 'बहेलिया'।

चिड़ी-मार-पुं० दे० 'बहेलिया'।

चिढ़ना-अ० [हिं० चिढ़चिढ़ाना] [संज्ञा चिढ़] १. अप्रसन्न होना। बिगड़ना। २. द्वेष रखना।

चिढ़ाना-स० [हिं० चिढ़ना] जान-बूझकर ऐसा काम करना कि कोई चिढ़े।

चित्-स्त्री० [सं०] चैतन्य। ज्ञान।

चित-पुं० [सं० चित्त] चित्त। मन। वि० [सं० चित=ढेर किया हुआ] पीठ के बल लेटा या पड़ा हुआ। 'पट' का उलटा।

चितउन०-स्त्री० दे० 'चितवन'।

चित-कबरा-वि० [सं० चित्र+कर्बुर] [स्त्री० चितकबरी] भिन्न भिन्न रंगों के धब्बोंवाला।

चित-चोर-पुं० [हिं० चित+चोर] चित्त चुरानेवाला। प्यारा। प्रिय।

चित-भंग-पुं० [सं० चित्त+भंग] १. उचाट। उदासी। २. बद-हवासी।

चितरना*-स० [सं० चित्त] चित्रित या अंकित करना। चीतना।

चितला-वि० दे० 'चित-कबरा'।

चितवन-स्त्री० [हिं० चेतना] ताकने या देखने का भाव या ढंग। अवलोकन। दृष्टि।

चितवना*-स० [हिं० चेतना] देखना।

चिता-स्त्री०[सं०चित्या] १.चुनी हुई लकड़ियों का वह ढेर जिसपर मुरदा जलाते है।

चिताना-स० [हिं० चेतना] १. सावधान या होशियार करना। २. स्मरण या याद कराना। ३. उपदेश करना। ४. (आग) जलाना या सुलगाना।

चितावनी-स्त्री० [हिं० चिताना] १. सावधान करने के लिए कही हुई बात। २. उपदेश।

चिति-स्त्री० [सं०] १. चिता। २. समूह। ढेर। ३. चुनना। चयन। ४. चैतन्य। ५. चित्‌शक्ति। ६. दुर्गा।

चितेरा-पुं० दे० 'चित्रकार'।

चितौनी*-स्त्री० दे० 'चितवन'।

चित्त-पुं० [सं०] अंतःकरण। मन। दिल। मुहा०-**चित्त चढ़ना**=दे० 'चित्त पर चढ़ना'। **चित्त चुराना**=मन मोहना। **चित्त देना**=ध्यान देना। **चित्त पर चढ़ना**=१. मन में ध्यान बना रहना। २. याद आना। **चित्त बँटना**=चित्त एकाग्र न रहना। **चित्त में जमना या बैठना**=१. हृदय में दृढ़ होना। २. समझ में आना। **चित्त से उतरना**= १. भूल जाना। २. मन में पहले का-सा प्रेम या आदर न रह जाना।

चित्त-विक्षेप-पुं० [सं०] चित्त की चंचलता या अस्थिरता।

चित्त-विभ्रम-पुं० [सं०] १. भ्रान्ति। भ्रम। धोखा। २. उन्माद।

चित्त-वृत्ति-स्त्री० [सं०] चित्त की वह अवस्था, जिसके अनुसार मनुष्य कोई विचार या काम करता है।

चित्ती-स्त्री० [सं० चित्र] छोटा धब्बा। स्त्री० [हिं० चित] जूआ खेलने की एक प्रकार की चिपटी कौड़ी।

चित्तौर-पुं० [सं०चित्रकूट] राजपूताने का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर।

चित्र-पुं० [सं०] [वि० चित्रित] १. चंदन आदि का तिलक। २. रेखाओं या रंगों से बनी हुई किसी वस्तु की आकृति। तसवीर। ३. प्रतिकृति। (फोटो) ४. सजीव और विस्तृत वर्णन। मुहा०-**चित्र उतारना या खींचना**= ऐसा वर्णन करना कि सब बातें चित्र के दृश्य की तरह सामने आ जायँ। ५. काव्य का एक भेद जिसमें व्यंग्य का

चमत्कार नहीं रहता। ६. काव्य में वह रचना जिसमें विशेष क्रम से लिखे पद्य के अक्षरों से घोड़े, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं। ७. आकाश। ८. एक प्रकार का कोढ़। ९. चित्रगुप्त।
वि० १ अद्भुत। विचित्र। २. रंग-बिरंगा।

चित्रक-पुं० [सं०] १. चित्रकार। २. चीता। बाघ। ३. चीता नामक ओषधि।

चित्र-कला-स्त्री० [सं०] चित्र बनाने की विद्या या कला।

चित्रकार-पुं० [सं०] चित्र बनानेवाला। चितेरा।

चित्रकारी-स्त्री० [हिं० चित्रकार] १. चित्र बनाने की कला। २. बनाये हुए चित्र।

चित्रकूट-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पर्वत, जिसपर बनवास में राम और सीता बहुत दिनों तक रहे थे। २. चित्तौर।

चित्रगुप्त-पुं० [सं०] वह देवता जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं।

चित्र-जल्प-पुं० [सं०] वह भाव-गर्भित बात जो नायक और नायिका रूठकर एक दूसरे से कहते हैं।

चित्रण-पुं० [सं०] किसी सम अथवा असम तल पर रंगों से आकृति बनाकर उसमें लंबाई, चौड़ाई, गोलाई रूप आदि दिखलाना। चित्र अंकित करना। तसवीर बनाना।

चित्रना*-स० [सं० चित्र+ना (प्रत्य०)] १. चित्रित करना। २. रंग भरना। ३. बेल बूटे बनाना।

चित्र-पट-पुं० [सं०] [स्त्री० चित्रपटी] वह कपड़ा, कागज आदि जिसपर चित्र बनाये जाते हैं। चित्राधार।

चित्र-विचित्र-वि० [सं०] १. रंग-बिरंगा। कई रंगों का। २. बेल-बूटेदार।

चित्र-शाला-स्त्री० [सं०] १. वह घर जिसकी दीवारों पर चित्र बने हों। २. चित्रों से सजा हुआ घर।

चित्रसारी-स्त्री० [सं० चित्र+शाला] १. चित्रशाला। २. सजा हुआ शयन-गृह। विलास-भवन। रंग-महल। ३. चित्रकारी।

चित्रस्थ-वि० [सं०] १. चित्र में अंकित किया हुआ। २. चित्र में अंकित व्यक्ति के समान निस्तब्ध या निश्चल।

चित्रा-स्त्री० [सं०] १. सत्ताइस नक्षत्रों में से एक। २. ककड़ी या खीरा।

चित्राधार-पुं० [सं०] १. वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के चित्र रक्खे जाते हैं। चित्र-संग्रह। (एल्बम) २. चित्रपट।

चित्रिणी-स्त्री० [सं०] काम-शास्त्र में स्त्रियों के चार भेदों में से एक।

चित्रित-वि० [सं०] १. चित्र में खींचा हुआ। २. बेल-बूटों, चित्तियों या धारियों से युक्त। ३. वर्णित। ४. अंकित।

चिथड़ा-पुं० [सं० चीर्ण या चीर] फटा-पुराना कपड़ा।

चिथाड़ना-स० [सं० चीर्ण] १. चीरना। फाड़ना। २. डाँटना। डपटना।

चिदात्मा-पुं० [सं०] ब्रह्म।

चिदानंद-पुं० [सं०] ब्रह्म।

चिदाभास-पुं० [सं०] अंतःकरण पर का ब्रह्म का आभास या प्रतिबिम्ब।

चिद्रूप-पुं० [सं०] ज्ञान-स्वरूप परमात्मा।

चिद्विलास-पुं० [सं०] चैतन्य-स्वरूप ईश्वर की माया।

चिनगारी-स्त्री० [सं० चूर्ण, हिं० चून+अंगार] आग का छोटा कण या टुकड़ा। अग्नि-कण।

मुहा०-आँखों से चिनगारी छूटना= क्रोध से आँखें लाल होना।

चिनगी-स्त्री० [हिं० चिनगारी] १. चिनगारी। २. वह लड़का जो नटों के साथ बाँस पर चढ़ता और तरह तरह के खेल दिखाता है।

चिनाना*-स० दे० 'चुनवाना'।

चिनिया-वि० [हिं० चीनी] १. चीनी के रंग का। २. चीन देश का।

पुं० एक प्रकार का रेशा या नकली रेशम।

चिनिया बदाम-पुं० दे० 'मूँगफली'।

चिन्मय-वि० [सं०] [स्त्री० चिन्मयी] ज्ञान-मय। चेतना-युक्त।

पुं० परमेश्वर।

चिन्ह*-पुं० दे० 'चिह्न'।

चिन्हानी-स्त्री० [हिं० चिह्न] १. याद दिलानेवाली वस्तु। २. स्मारक।

चिन्हार-वि० [हिं० चीन्हना] जान-पहचान का। परिचित।

चिन्हारी-स्त्री०=जान-पहचान।

चिपकना-अ० [अनु० चिपचिप] १.गोंद आदि लसीली चीजों से दो वस्तुओं का आपस में जुड़ना। २.लिपटना। चिमटना।

चिपकाना-स० [हिं० चिपकना] लसीली वस्तु से जोड़ना।

चिपचिपा-वि० [अनु० चिपचिप] चिपकनेवाला। लसीला।

चिपचिपाना-अ० [हिं० चिपचिप] छूने से चिपचिपा मालूम होना।

चिपटना-अ० दे० 'चिमटना'।

चिपटा-वि० [सं० चिपिट] [स्त्री० चिपटी] जिसकी सतह उठी हुई न हो। दबा हुआ।

चिपड़ी-स्त्री० दे० 'उपला'।

चिप्पड़-पुं० [सं० चिपिट] छिला या उखड़ा हुआ चिपटा टुकड़ा। चप्पड़।

चिप्पी-स्त्री० [हिं० चिपकना] १. कागज का वह छोटा टुकड़ा जो किसी वस्तु पर चिपकाया जाय। २. दे० 'अंकितक'।

चिबुक-पुं० [सं०] ठोढ़ी।

चिमटना-अ० [हिं० चिपटना] १. चिपकना। २. कसकर लिपटना। ३. पीछा या पिंड न छोड़ना।

चिमटा-पुं० [हिं० चिमटना] स्त्री० अल्पा० चिमटी] दबाकर पकड़ने या उठानेवाला फैले मुँह का एक औजार।

चिमटाना-स० हिं० 'चिमटना' का स०।

चिमड़ा-वि० दे० 'चीमड़'।

चिमनी-स्त्री० [अं०] १. मकान का धूआँ निकालनेवाला छेद या नल। २. लम्प या लालटेन पर का शीशा।

चिरंजीव-वि० [सं०] बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला। चिरजीवी।

अव्य० यह आशीर्वाद कि बहुत दिनों तक जीते रहो।

पुं० पुत्र। बेटा।

चिरंतन-वि० [सं०] पुराना। प्राचीन।

चिर-वि० [सं०] दीर्घ। बहुत। (समय)

क्रि० वि० बहुत दिनों तक।

चिरई-स्त्री० दे० 'चिड़िया'।

चिर-काल-पुं० [सं०] दीर्घ काल।

चिर-कालिक(कालीन)-वि० [सं०] बहुत दिनों का। पुराना।

चिरकुट-पुं० दे० 'चिथड़ा'।

चिर-जीवन-पुं० [सं०] सदा बना रहनेवाला जीवन। अमर जीवन।

वि० दे० 'चिरजीवी'।

चिरजीवी-वि० [सं०] १.अधिक दिनों तक जीनेवाला। दीर्घायु। २. अमर।

चिरना-अ० [सं०चीर्ण] सीध में फटना।

चिर-निद्रा-स्त्री० [सं०] [वि० चिर-निद्रित] मृत्यु। मौत।
चिरमी(मिटी)-स्त्री० [देश०] घुँघची।
चिरवाना-स० हिं० 'चीरना' का प्रे०।
चिर-स्थायी-वि० [सं० चिरस्थायिन्] बहुत दिनों तक बना रहनेवाला।
चिर-स्मरणीय-वि० [सं०] बहुत दिनों तक याद रहने या रखने योग्य।
चिराई-स्त्री० [हिं० चीरना] चीरने का भाव, काम या मजदूरी।
चिराक*-पुं० दे० 'चिराग'।
चिराग-पुं० [फा०] दीपक। दीया।
चिरागदान-पुं० [फा०] दीयट।
चिरातन*-वि० दे० 'चिरंतन'।
चिराना-स० हि० 'चीरना' का प्रे०।
*वि० [सं० चिरंतन] १. पुराना। २. टूटा-फूटा। जीर्ण।
चिरायँध-स्त्री० [सं० चर्म+गंध] चमड़ा, बाल, मांस आदि जलने की दुर्गंध।
चिरायता-पुं० [सं०चिरतिक्त या चिरात्] दवा के काम में आनेवाला एक बहुत कड़वा पौधा।
चिरायु-वि० [सं०] बड़ी आयुवाला।
चिरिहार*-पुं० दे० 'बहेलिया'।
चिरी*-स्त्री० दे० 'चिड़िया'।
चिरौंजी-स्त्री० [सं० चार+बीज] पयाल नामक वृक्ष के बीजों की गिरी।
चिरौरी-स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना।
चिलक-स्त्री० [हिं० चिलकना] १. चमक। कांति। २. हड्डी या नस में अचानक उठनेवाला दर्द। चमक।
चिलकना-अ० [हिं०चिल्ली=बिजली, या अनु०] १. रह रहकर चमकना। २. चिलक (दर्द) होना।
चिलकाई*-स्त्री० [हि० चिलक+आई (प्रत्य०)] चमचमाहट। चमक।
चिलकाना-स० [हिं०चिलक] चमकाना।
चिलगोजा-पुं० [फा०] एक प्रकार का मेवा जो चीड़ या सनोबर का फल है।
चिलचिलाना-अ० दे० 'चिलकना'।
स० [अनु०] चमकाना।
चिलबिल-पुं० [सं० चिलबिल्व] १. एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष। २. एक प्रकार का बरसाती पौधा।
चिलबिला(ल्ला)-वि० [सं० चल+बल] [स्त्री० चिलबिली(ल्ली)] चंचल। चपल।
चिलम-स्त्री० [फा०] मिट्टी की एक तरह की नलीदार कटोरी जिसपर तम्बाकू रखकर उसका धूआँ पीते हैं।
चिलमची-स्त्री० [फा०] चौड़े मुँह का वह बरतन जिसमें हाथ-मुँह धोते हैं।
चिलमन-स्त्री० दे० 'चिक'।
चिलवाँस-पुं० [?] चिड़ियाँ फँसाने का फन्दा।
चिल्लड़-पुं० [सं० चिल=वस्त्र] जूँ के आकार का एक सफेद कीड़ा।
चिल्ल-पों-स्त्री० [हिं० चिल्लाना+अनु० पों] चिल्लाहट। शोर-गुल।
चिल्ला-पुं० [फा०] १. चालिस दिनों का समय।
मुहा०-चिल्ले का जाड़ा=कड़ी सरदी जो प्रायः ४० दिनों तक रहती है।
पुं० [देश०] १. चने, मूँग आदि की घी में सिंकी रोटी। उलटा। २. धनुष की डोरी। पतंचिका।
चिल्लाना-अ० [हिं० चीत्कार] [भाव० चिल्लाहट, प्रे० चिल्लवाना] जोर से बोलना। शोर या हल्ला करना।
चिल्ली-स्त्री० [सं०] झिल्ली (कीड़ा)।

स्त्री० दे० 'बिजली'।
चिहुँकना*-अ० दे० 'चौंकना'।
चिहुँटना*-स० [हिं० चिमटना] १. चुटकी काटना। २.चिपटना। लिपटना।
चिहुँटी-स्त्री० दे० 'चुटकी'।
चिहुर*-पुं० [सं० चिकुर] केश। बाल।
चिह्न-पुं० [सं०] १. दिखाई देने या समझ में आनेवाला ऐसा लक्षण, जिससे कोई चीज पहचानी जा सके या किसी बात का कुछ प्रमाण मिले। निशान। (मार्क)। २. किसी चीज या बात का पता देनेवाला कोई तत्व। ३. किसी चीज की पहचान के लिए उसपर लगाया हुआ अंक या निशान। ४.किसी चीज के सम्पर्क, संघर्ष या दाब से पड़ा हुआ निशान। छाप। (इम्प्रेशन) जैसे-चरण-चिह्न। ५. पताका। झंडा।
चिह्नित-वि० [सं०] १.चिह्न किया हुआ। २. जिसपर चिह्न हो।
ची-चपड़-स्त्री० [अनु०] विरोध में बहुत दबते हुए कुछ कहना।
चींटवा(टा)-पुं० दे० 'च्यूँटा'।
चींतना*-स० दे० 'चित्रना'।
चींथना-स० [सं०चीर्ण] नोचकर फाड़ना।
चीक-स्त्री० दे० 'चिल्लाहट'।
चीकट-पुं० [हिं० कीचड़]. १ तेल की मैल। २. लसदार मिट्टी।
वि० दे० 'चिकट'।
चीकना-अ० [सं० चीत्कार] जोर से चिल्लाकर बोलना। चिल्लाना।
*वि दे० 'चिकना'।
चीख-स्त्री० दे० 'चिल्लाहट'।
चीखना-स० दे० 'चखना'।
अ० दे० 'चीकना'।
चीखर(ल)*-पुं० दे० 'कीचड़'।
चीज-स्त्री० [फा०] १. पदार्थ। वस्तु। द्रव्य। २. अलंकार। गहना। ३. गीत। ४. विलक्षण या महत्व की वस्तु या बात।
चीठी-स्त्री० दे० 'चिट्ठी'।
चीड़(ढ़)-पुं० [सं० चीड़ा] एक बहुत ऊँचा और लम्बा पेड़ जिसके गोंद से गंधा-बिरोजा निकलता है।
चीत*-पुं० [सं० चित्रा] चित्रा नक्षत्र।
चीतना*-अ० दे० 'चेतना'।
स० [सं०चित्र] चित्र या बेल-बूटे बनाना।
चीतल-पुं० [हिं० चित्ती] १. एक प्रकार का हिरन। २.एक प्रकार का बड़ा साँप।
चीता-पुं० [सं० चित्रक] १. एक प्रसिद्ध हिंसक जंगली पशु। २ ओषध के काम का एक पेड़।
वि० [हिं० चेतना] मन में सोचा हुआ।
चीत्कार-पुं० [सं०] चिल्लाहट। शोर।
चीथड़ा-पुं० दे० 'चिथड़ा'।
चीथना-स० [सं० चीर्ण] फाड़कर टुकड़े टुकड़े करना।
चीन-पुं० [सं०] १. झंडी। पताका। २. तागा। ३.एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४. भारत के पूर्व का एक प्रसिद्ध देश।
चीनांशुक-पुं० [सं०] १. चीन देश की लाल बनात। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, जो पहले चीन से आता था।
चीना-वि० [सं० चीन] चीन देश का।
चीनी-स्त्री० [चीन (देश)+ई (प्रत्य०)] सफेद चूर्ण के रूप में मिठास का सार, जो ईख या खजूर आदि के रस से बनता है। शकर।
वि० चीन देश का।
चीनी मिट्टी-स्त्री० [हिं० चीनी (वि०)+मिट्टी] एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।

चीन्हना-स० दे० 'पहचानना'।
चीप-पुं० १.दे० 'चिप्पड़'। २.दे०'चेप'।
चीमड़-वि० [हिं० चमड़ा] जो बिना टूटे खींचा, मोड़ा या झुकाया जा सके।
चीयाँ-पुं० [सं० चिंचा] इमली का बीज।
चीर-पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. पेड़ की छाल। ३. चिथड़ा। लत्ता। ४. मुनियों या बौद्ध भिक्षुओं का वस्त्र। स्त्री० [हिं० चीरना] १. चीरने की क्रिया या भाव। २. चीरने से बनी हुई दरार।
चीरक-पुं० [सं०] १. लेख्य। (डाकुमेन्ट) २. मुट्ठे की तरह लपेटा हुआ लम्बा कागज। (रोल स्क्रोल)
चीर-घर-पुं० वह स्थान जहाँ आकस्मिक दुर्घटनाओं से मरनेवालों के शव चीर-फाड़ करके मृत्यु का कारण जानने के लिए भेजे जाते हैं। (मॉच्युअरी)
चीर चरम*-पुं० दे० 'बाघंबर'।
चीरना-स० [सं०चीर्ण] १. तेज धारवाले हथियार से बीच में से काटना। २.फाड़ना। मुहा०-माल या रुपया चीरना=अनुचित रूप से धन प्राप्त करना।
चीर-फाड़-स्त्री० [हिं० चीर+फाड़ना] १. फाड़ने का काम या भाव। २. अंगों या फोड़ों को चीरने का काम या भाव। शस्त्र-चिकित्सा। (ऑपरेशन)
चीरा-पुं० [हिं० चीरना] १. एक प्रकार का धारीदार रंगीन कपड़ा जिसकी पगड़ी बनती है। २ चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।
चीरी*†-स्त्री० दे० 'चिड़िया'।
चीर्ण-वि० [सं०] फटा या चिरा हुआ।
चील-स्त्री० [सं० चिल्ल] गिद्ध की जाति की एक चिड़िया।
चीलर-पुं० दे० 'चिल्लड़'।
चीवर-पुं० [सं०] १. संन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा।
चुंगल-पुं० दे० 'चंगुल'।
चुंगी-स्त्री० [हिं० चंगुल] १. चुटकी या चंगुल भर चीज। २. शहर में आनेवाले बाहरी माल पर लगनेवाला महसूल।
चुँघाना-स० [हिं० चुसाना] चुसाना।
चुंडित*-वि० [हिं० चुंडी] चुंदीवाला।
चुँदरी-स्त्री० दे० 'चूनरी'।
चुंदी-स्त्री० [सं० चूड़ा] बालों का वह गुच्छा जो हिन्दू सिर के ऊपरी मध्य भाग में रखते हैं। शिखा। चोटी।
चुंधा-वि० [हिं० चौ+चार+अंध] [स्त्री० चुंधी] १. अन्धा। २. छोटी आँखोंवाला।
चुंधियाना-अ० दे० 'चौंधियाना'।
चुंबक-पुं० [सं०] १. वह जो चुंबन करे। १. ग्रंथों को केवल इधर-उधर से उलटने-पलटनेवाला। ३. वह पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचता है।
चुंबकत्व-पुं० [सं०] १. चुंबक का गुण या भाव। २. आकर्षण शक्ति।
चुंबन-पुं० [सं०] [वि० चुंबनीय, चुंबित] १. चूमने की क्रिया। २. चुम्मा। बोसा। ३ स्पर्श।
चुंबना*-स० दे० 'चूमना'।
चुंबी-वि० [सं० चुम्बिन्] १. चूमनेवाला। २. छूने या स्पर्श करनेवाला।
चुअना*-अ० दे० 'चूना'।
चुआना-स० हिं० 'चूना' का स०।
चुकंदर-पुं० [फा०] गाजर की तरह का एक कन्द।
चुक-पुं० दे० 'चूक'।
चुकता(ी)-वि० [हिं० चुकना] (हिसाब या ऋण) जो चुका दिया गया हो। निःशेष। अदा।

चुकना-अ० [सं० च्युत्कृत] १. समाप्त होना। बाकी न रहना। २.दिया जाना। चुकता होना। ३. तै होना। निपटना। * ४. दे० 'चूकना'। ५. समाप्ति-सूचक संयोज्य क्रिया। जैसे-खा चुकना।

चुकाना-स० [हिं० चुकना] १. चुकता कर देना। बाकी न रखना। (देन) २. तै करना। निपटाना।

चुक्कड़-पुं० [सं० चषक] मिट्टी का छोटा बरतन। कुल्हड़। पुरवा।

चुगना-स० [सं० चयन] चिड़ियों का चोंच से दाने या चारा उठाकर खाना।

चुगलखोर-पुं० [फा०] चुगली खाने या शिकायत करनेवाला। लुतरा।

चुगली-स्त्री० [फा०] झगड़ा लगानेवाली किसी की वह बात जो उसके परोक्ष में किसी से कही जाती है। शिकायत।

चुगाना-स० हिं० 'चुगना' का स०।

चुगुल*†-पुं० दे० 'चुगलखोर'।

चुचकारना-स० दे० 'चुमकारना'।

चुचाना*-अ० दे० 'चूना'।

चुचुकना†-अ० [सं०शुष्क+ना (प्रत्य०)] ऐसा सूखना कि झुर्रियाँ पड़ जायँ।

चुटकना-स० [हिं० चुटकी] १. चुटकी से तोड़ना। २. साँप का काटना।

चुटकी-स्त्री० [अनु० चुट चुट] १. पकड़ने के लिए अँगूठे और तर्जनी का योग।

मुहा०-**चुटकी बजाना**=एक विशेष प्रकार से अँगूठे को बीच की उँगली पर छटकाकर शब्द निकालना। **चुटकी बजाते**=बात की बात में। तुरन्त। **चुटकी भर**=जरा सा। **चुटकियों में**=बहुत शीघ्र। **चुटकियों में उड़ाना**=बहुत सहज समझना।

२. चुटकी बजने का शब्द। ३. चुटकी भर अन्न। थोड़ा अन्न।

मुहा०-**चुटकी माँगना**=भिक्षा माँगना।

४. अँगूठे और तर्जनी से किसी के शरीर का चमड़ा पकड़कर दबाना जिससे उसे कुछ पीड़ा हो। चिकोटी।

मुहा०-**चुटकी भरना या काटना**=१. अँगूठे और तर्जनी से चमड़े को दबाकर पीड़ित करना। २. चुभती हुई बात कहना। **चुटकी लेना**=१. हँसी उड़ाना। २. चुभती हुई बात कहना।

चुटकुला-पुं० [हिं० चोट+कला] १. चमत्कारपूर्ण हँसी की या छोटी मजेदार बात।

मुहा०-**चुटकुला छोड़ना**=ऐसी बात कहना जिससे झगड़ा खड़ा हो।

२.दवा का छोटा और गुणकारी नुसखा। लटका।

चुटफुट†-स्त्री० [अनु०] फुटकर वस्तु।

चुटिया-स्त्री० [हिं० चोटी] शिखा। चोटी।

चुटीला-वि० [हिं० चोट] जिसे चोट लगी हो। घायल।

चुटैल-वि० [हिं० चोट] १. घायल। २. चोट करनेवाला।

चुड़िहारा-पुं० [हिं० चूड़ी+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० चुड़िहारिन] चूड़ियों का व्यवसायी।

चुड़ैल-स्त्री० [सं० चूड़ा+ऐल (प्रत्य०)] १ भूतनी। डायन। २. कुरूपा स्त्री। ३. क्रूर और लड़ाकी स्त्री।

चुनचुना-वि० [हिं० चुनचुनाना] जिसके शरीर में लगने से जलन लिये हुए खुजली हो।

चुनचुनाना-अ० [अनु०] कुछ जलन लिये हुए हलकी खुजली होना।

चुनट-स्त्री० दे० 'चुनन'।

चुनन-स्त्री० [हिं० चुनना] कपड़े आदि

में बनाई हुई सिलवट।

चुनना-स० [सं० चयन] १. छोटी छोटी चीजें हाथ से उठाकर इकट्ठी करना। जैसे-फूल चुनना। २. बहुत-सी चीजों में से कुछ अच्छी चीजें पसन्द करके अलग करना। छाँटना। ३. कुछ लोगों में से किसी को अपना प्रतिनिधि बनाने के लिए कहना। निर्वाचित करना। ४. अच्छी चीज में से खराब चीज या कूड़ा-करकट छाँटकर अलग करना। जैसे-दाल या चावल चुनना। ५.सजाकर या एक पर एक करके ठीक तरह से रखना। जैसे-मेज पर खाना या दीवार की ईंटें चुनना।

मुहा०-किसी को दीवार में चुनना=किसी के प्राण लेने के लिए उसे खड़ा करके उसके चारो ओर दीवार उठाना। ६. कपड़े में छोटी छोटी तह लगाना या उसे सुन्दर बनाने के लिए उसमें जगह जगह बल या सिकुड़न डालना।

चुनरी-स्त्री० [हिं० चुनना] १. दे० 'चूनरी'। २. चुन्नी। (रत्न)

चुनाई-स्त्री० [हिं० चुनना] चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

चुनाव-पुं० [हिं० चुनना] १. चुनने की क्रिया या भाव। २. किसी कार्य के लिए किसी व्यक्ति को चुनना। निर्वाचन। (इलेक्शन)

चुनिंदा-वि० [हिं० चुनना+इंदा (प्रत्य०)] १. चुना हुआ। २. बढ़िया।

चुनी*-स्त्री० दे० 'चुन्नी'।

चुनौटी-स्त्री० दे० 'चूनेदानी'।

चुनौती-स्त्री० [हिं० चुनना] शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी को दी जानेवाली ललकार।

चुन्नी-स्त्री० [सं० चूर्ण] १. मानिक आदि का बहुत छोटा टुकड़ा। बहुत छोटा रत्न। रत्न-कण। २. अनाज या लकड़ी का चूरा। ३. चमकी। सितारा।

चुप-वि० [सं० चुप (चोपन)=मौन] जो कुछ न बोले। अवाक्। मौन।

यौ०-चुप-चाप=१.बिना कुछ कहे-सुने। शांत भाव से। २. छिपे छिपे। ३. चेष्टा या प्रयत्न से रहित। ४. निर्विरोध।

चुपका-वि० [हिं० चुप] मौन।

मुहा०-चुपके से=१. बिना कुछ कहे-सुने। २. गुप्त रूप से। चुप-चाप।

चुप-चाप-वि० दे० 'चुप' में यौ०।

चुपड़ना-स० [हिं० चिपचिपा] १. लेप करना। २. इधर-उधर की बातों से दोष या भूल छिपाना। ३. चिकनी-चुपड़ी बातें कहना।

चुपाना*-अ० [हिं० चुप] चुप होना।

चुप्पा-वि० [हिं० चुप] [स्त्री० चुप्पी] प्रायः चुप रहने और कम बोलनेवाला।

चुप्पी-स्त्री० [हिं० चुप] मौन।

चुभना-अ० [अनु०] [स० चुभाना] १ नुकीली वस्तु नरम स्तर में घुसना। गड़ना। धँसना। २ खटकना। बुरा लगना। ३. मन में बैठना।

चुभलाना-स० [अनु०] मुँह में रखकर घुलाना या इधर-उधर करना।

चुभाना-स० हिं० 'चुभना' का स०।

चुमकार-स्त्री० [हिं० चूमना+कार] चूमने का-सा प्यार का शब्द। पुचकार।

चुमकारना-स० [हिं० चुमकार] प्रेम-पूर्वक चूमने का-सा शब्द करना। पुचकारना। दुलारना।

चुम्मा-पुं० दे० 'चुंबन'।

चुर-पुं० [देश०] जंगली पशुओं की माँद। विवर।

*वि० [सं० प्रचुर] बहुत। अधिक।

चुरना[1]-अ० [सं० चूर=जलना, पकना] १. पानी में उबलकर पकना। सीझना। २. गुप्त मंत्रणा होना।

चुरमुरा-वि० [अनु०] चुरचुर शब्द करके सहज में टूटनेवाला।

चुरमुराना-अ० [अनु०] चुर-चुर शब्द करके टूटना।

स० [अनु०] चुर-मुर शब्द करके तोड़ना।

चुराना-स० [सं० चुर=चोरी करना] [प्रे० चुरवाना] १. दूसरे की चीज छिपकर लेना। चोरी करना।

मुहा०-**चित्त चुराना** = मन मोहित करना। **जी चुराना** = मन न लगाना।

२ आड़ में करना। छिपाना।

मुहा०-**आँखें चुराना**=सामने न आना।

स० [हिं० चुरना] उबालना। पकाना।

चुरी[1]*-स्त्री० दे० 'चूड़ी'।

चुरुट-पुं० [अं० शेरूट] पत्तों में लपेटा हुआ तंबाकू का चूरा जिसका धूआं पीते हैं। (सिगार)

चुरू[1]*-पुं० दे० 'चुल्लू'।

चुल-स्त्री० [सं० चल=चंचल] १. अंग के सहलाये जाने की इच्छा। खुजली। २. कोई काम करने की प्रबल वासना।

चुलचुलाना-अ० [हिं० चुल] चुलचुली या हलकी खुजली होना।

चुलचुली-स्त्री० दे० 'चुल'।

चुलबुला-वि० [सं० चल+बल] [स्त्री० चुलबुली] [भाव० चुलबुलाहट] १. चंचल। चपल। २. नटखट।

चुलबुलाना-अ० [हिं० चुलबुल] [भाव० चुलबुलाहट] चंचल होना। चपलता करना।

चुलाना-स० दे० 'चुआना'।

चुल्लू-पुं० [सं० चुलुक] कुछ लेने या पीने के लिए गहरी की हुई हथेली। अँजुली।

मुहा०-**चुल्लू भर पानी में डूब मरना**=लज्जा के मारे गड़ जाना।

चुवना*-अ० दे० 'चूना'।

चुवाना*-स० दे० 'चुआना'।

चुसकी-स्त्री० [हिं० चूसना] १. सुरक कर पीने की क्रिया। २. सुरक। घूँट।

चुसना-अ० [हिं० चूसना] १. चूसा जाना। २. सार या रस से हीन किया जाना। ३. धन देते देते निर्धन हो जाना।

चुसनी-स्त्री० [हिं० चूसना] १. (बच्चों का) मुँह में डालकर चूसने का खिलौना। २. छोटे बच्चों को दूध पिलाने की शीशी।

चुसाना-स० हिं० 'चूसना' का प्रे०।

चुस्त-वि० [फा०] १. कसा हुआ। तंग। २. फुरतीला। ३. दृढ़। मजबूत।

चुस्ती-स्त्री० [फा०] १. फुरती। तेजी। २. कसावट। ३. दृढ़ता। मजबूती।

चुहचुहाता-वि० [हिं० चुहचुहाना] १. सरस। मजेदार। २. चटकीला।

चुहचुहाना-अ० [अनु०] १. रसना। २. चटकीला होना। ३. चहचहाना।

चुहल-स्त्री० [अनु० चुहचुह=चिड़ियों की बोली] हँसी। ठठोली।

यौ०-**चुहलबाज़**-वि०=दिल्लगीबाज।

चुहिया-स्त्री० [हिं० चूहा] 'चूहा' का स्त्री० और अल्पा० रूप।

चुहुँटना*[1]-स० दे० 'चिमटना'।

चुहुँटनी-स्त्री० [देश०] गुंजा। घुँघची।

चूँ-स्त्री० [अनु०] १. छोटी चिड़ियों की बोली। २. बहुत धीमा शब्द।

मुहा०-**चूँ करना**=नाम मात्र का प्रतिवाद करना।

चूँकि-क्रि० वि० [फा०] क्योंकि। यतः।

चूक-स्त्री० [हिं० चूकना] १. भूलने या चूकने की क्रिया या भाव। २. भूल या चूक से छूटी हुई बात या काम। (ओमिशन)
पुं० [सं० चूक] १. खट्टे फलों के रस से बना हुआ एक बहुत खट्टा पदार्थ। २. एक प्रकार का खट्टा साग।
वि० बहुत अधिक खट्टा।

चूकना-अ० [सं० च्युतकृत] १. भूल करना। २. लक्ष्य से विचलित होना। ३. अवसर खो देना।

चूची-स्त्री० [सं० चूचुक] स्तन। कुच।

चूजा-पुं० [फा०] मुरगी का बच्चा।

चूड़ांत-वि० [सं०] चरम सीमा का।
क्रि० वि० अत्यन्त। बहुत अधिक।

चूड़ा-स्त्री० [सं०] १. शिखा। चोटी। २. मोर की कलँगी। ३. घुँघची। ४. चूड़ाकरण संस्कार।
पुं० [सं० चूड़ा] १. हाथ में पहनने का कड़ा। २. एक प्रकार की हाथी-दांत की चूड़ियां।

चूड़ाकर्म-पुं० [सं०] मुंडन संस्कार।

चूड़ापाश-पुं० [सं०] १. स्त्रियों के सिर के बालों का जूड़ा। २. प्राचीन काल की स्त्रियों का एक प्रकार का केश-विन्यास।

चूड़ामणि-पुं० [सं०] १. सिर का एक गहना। सीसफूल। २. सब से श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु।

चूड़ी-स्त्री० [हिं० चूड़ा] १. कोई वृत्ताकार वस्तु। २. छल्ला। ३. स्त्रियों, मुख्यतः सुहागिनों के हाथ का एक गहना।
मुहा०-**चूड़ियाँ ठंढी करना**-स्त्रियों का नई चूड़ियां पहनने के लिए पुरानी चूड़ियां तोड़ना। **चूड़ियाँ पहनना**= स्त्रियों की तरह कायर बनना।
४. ग्रामोफोन बाजे का वह तवा जिसमें गाना भरा रहता है। (रेकार्ड)

चूड़ीदार-वि० [हिं० चूड़ी +फा० दार] जिसमें चूड़ियाँ, छल्ले या घेरे पड़े हों।
यौ०-**चूड़ीदार पाजामा** = तंग मोहरी का एक प्रकार का पाजामा।

चूतड़-पुं० [हिं चूत+तल] पीठ की ओर का, कमर और जाँघ के बीच का मांसल भाग। नितंब।

चून-पुं० [सं० चूर्ण] आटा।

चूनर(री)-स्त्री० [हिं० चुनना] स्त्रियों के पहनने या ओढ़ने का वह रंगीन कपड़ा जिसमें छोटी छोटी बुन्दकियाँ होती हैं।

चूना-पुं० [सं० चूर्ण] पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को फूँककर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सफेद क्षार।
अ० [सं० च्यवन] १. बूँद बूँद गिरना। टपकना। २. अचानक ऊपर से नीचे गिरना। ३. किसी चीज में ऐसा छेद हो जाना जिसमें से कोई द्रव पदार्थ टपके। ४. गर्भपात होना।

चूनेदानी-स्त्री० [हिं० चूना+फा० दान] चूना रखने की डिबिया। चुनौटी।

चूनी-स्त्री० दे० 'चुन्नी'।

चूमना-स० [सं० चुंबन] होंठों से किसी का कोई अंग स्पर्श करना। चुम्मा लेना।

चूमा-पुं० दे० 'चुंबन'।

चूर-पुं० दे० 'चूर्ण'।
वि० थका हुआ। शिथिल।

चूरन-पुं० दे० 'चूर्ण'।

चूरना*-स० [सं० चूर्णन] १. चूर या छोटे टुकड़े करना। २. तोड़ना।

चूरमा-पुं० [सं० चूर्ण] घी और चीनी मिला हुआ रोटी या बाटी का चूर।

चूरा-पुं० [सं० चूर्ण] चूर्ण। बुरादा।
चूर्ण-पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ के टूटे या पिसे हुए बारीक टुकड़े। चूरा। बुकनी। २.पाचक दवा की बुकनी। चूरन। वि० १. चूर। २. टूटा-फूटा।
चूर्णित-वि० [सं०] चूर किया हुआ।
चूल-पुं० [सं०] १. शिखा। २. बाल। स्त्री० [देश०] दूसरी लकड़ी के छेद में बैठाने के लिए किसी लकड़ी का पतला सिरा।
चूल्हा-पुं० [सं० चुल्लि] आग का वह पात्र जिसपर भोजन पकाते हैं।
मुहा०-चूल्हा जलाना या फूँकना=भोजन बनाना। चूल्हे में जाय=नष्ट हो।
चूषण-पुं० [सं०] चूसना।
चूष्य-वि० [सं०] चूसने के योग्य।
चूसना-स० [सं० चूषण] १. कोई चीज मुँह से दबाकर उसका रस पीना। २. धीरे धीरे अनुचित रूप से किसी से रुपये वसूल करना।
चूहड़ा-पुं० [?] [स्त्री० चूहड़ी] भंगी या मेहतर। चांडाल। श्वपच।
चूहा-पुं० [अनु० चू+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० चुहिया] एक छोटा जन्तु जो घरों या खेतों में बिल में रहता और अन्न आदि खाता है। मूसा।
चूहा-दंती-स्त्री० [हिं० चूहा+दाँत] स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची।
चूहादान-पुं० दे० 'चूहेदानी'।
चूहेदानी-स्त्री० [हिं० चूहा+फा० दान] चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजड़ा।
चें चें-स्त्री० [अनु०] १. चिड़ियों, बच्चों आदि के बोलने का शब्द। चीं चीं। २. बकवाद। बकबक।
चेंपें-स्त्री० [अनु०] चिल्लाहट।
चेक-पुं० [अँ०] १. आड़ी और बेड़ी पड़ी हुई धारियाँ। चारखाना। २. वह कागज जिसपर किसी बैंक के नाम यह लिखा रहता है कि अमुक व्यक्ति को हमारे खाते में से इतना धन दे दो। ३. यह देखना कि कोई काम ठीक तरह से या नियम-पूर्वक हुआ है या नहीं।
चेचक-स्त्री० [फा०] शीतला रोग।
चेट-पुं० [सं०] [स्त्री० चेटी या चेटिका] १. दास। २. पति। ३. कुटना। ४.भाँड।
चेटक-पुं० [सं०] [स्त्री० चेटकी] १. दास। २. दूत। ३. जादू। माया।
चेटकनी*-'चेटी'।
चेटका*-स्त्री० [सं० चिता] १. चिता। २. श्मशान। मरघट।
चेटकी-पुं० [सं०] १. जादूगर। २. कौतुक करनेवाला। कौतुकी। स्त्री० 'चेटक' का स्त्री०
चेटिया-पुं० [सं० चेटक] १. चेला। शिष्य। २. दास।
चेटी-स्त्री० [सं०] दासी।
चेत-पुं० [सं० चेतस्] १. चेतना। होश। २. ज्ञान। बोध। ३. सावधानी। चौकसी। ४. स्मरण। सुध। खयाल।
चेतक-वि० [सं०] १. चेतना उत्पन्न करनेवाला। २. चेतानेवाला। पुं० वह अधिकारी जो किसी सभा-समिति के सदस्यों को यह स्मरण कराता है कि अमुक कार्य के संबंध में मत देने के लिए आपकी उपस्थिति आवश्यक है। (व्हिप)
चेतन-वि० [सं०] चेतना-युक्त। पुं० १. आत्मा। २. प्राणी। ३. ईश्वर।
चेतनता-स्त्री० [सं०] चेतन का धर्म्म। चैतन्य। संज्ञा। होश।

चेतना-स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। २. बोध करने की वृत्ति या शक्ति। ३. चेतनता। अ० [हिं० चेत+ना (प्रत्य०)] १. ध्यान देना। २.सावधान होना। ३.होश में आना।

चेता-वि० [सं०] चित्तवाला। (यौ० के अन्त में; जैसे-दृढ़चेता।)

चेताना-स० दे० 'चिताना'।

चेतावनी-स्त्री० दे० 'चितावनी'।

चेतिका*-स्त्री० [सं० चिति] चिता।

चेदि-पुं० [सं०] एक प्राचीन देश।

चेदिराज-पुं० [सं०] शिशुपाल।

चेप-पुं० दे० 'लासा'।

चेर(ा)*-पुं० [सं० चेटक] [स्त्री० चेरी, भाव० चेराई] १. सेवक। दास। २. चेला।

चेला-पुं० [सं० चेटक] [स्त्री० चेलिन, चेली] १. दीक्षित शिष्य। २. वह जिसे कुछ सिखाया गया हो। शिष्य।

चेष्टा-स्त्री० [सं०] १ अंगों की गति। २. मन का भाव प्रकट करनेवाली अंगो की स्थिति। मुद्रा। ३. प्रयत्न। कोशिश। ४. कार्य्य। ५. परिश्रम। ६. इच्छा।

चेहरई-स्त्री० [फा० चेहरा] चित्र या मूर्त्ति आदि में चेहरे की रंगत या बनावट।

चेहरा-पुं० [फा०] १. गले से ऊपर के अंग का अगला भाग। मुख। बदन। यौ०-चेहरा-शाही=नगद रुपया। प्रचलित रुपया।
मुहा०-चेहरा उतरना=चेहरे का रंग फीका पड़ना। चेहरा होना=सेना में भरती होना।
२. किसी चीज का अगला भाग। आगा। ३. मुख की आकृति का साँचा जो स्वाँग बनाने के लिए चेहरे पर पहना जाता है।

चै*-पुं० दे० 'चय'।

चैत-पुं० [सं० चैत्र] वर्ष का पहला हिन्दी महीना। (भारतीय)

चैतन्य-पुं० [सं०] १. चेतन आत्मा। २. ज्ञान। चेतना। ३. ब्रह्म। ४. ईश्वर। ५. बंगाल के एक प्रसिद्ध वैष्णव महात्मा। वि० जो होश में हो। सचेत।

चैती-स्त्री० [हिं० चैत+ई (प्रत्य०)] १. चैत में कटनेवाली फसल। २. चैत-बैसाख में गाने का एक चलता गाना। वि० चैत संबंधी। चैत का।

चैत्य-पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. देव-मन्दिर। ३ यज्ञ-शाला। ४. किसी देवी-देवता के नाम पर बना हुआ चबूतरा। ५. बुद्ध की मूर्त्ति। ६. बौद्ध मठ। विहार। ७. चिता।

चैत्र-पुं० [सं०] १. चैत का महीना। २. बौद्ध भिक्षु। ३. यज्ञ-भूमि। ४. मन्दिर।

चैन-पुं० [सं० शयन] आराम। सुख। मुहा०-चैन उड़ाना=मौज करना।

चैल-पुं० [सं०] कपड़ा। वस्त्र।

चैला-पुं० [हिं० छीलना] [स्त्री० अल्पा० चैली] जलाने के लिए चीरी हुई लकड़ी।

चोंक-स्त्री० [देश०] चूमने पर दाँत लगने से पड़नेवाला निशान।

चोंगा-पुं० [?] कुछ रखने के लिए कागज, टीन आदि की नली।

चोंच-स्त्री० [सं० चंचु] पक्षी का मुँह। मुहा०-दो दो चोंचें होना=साधारण कहा सुनी होना।

चोंटना-स० [हिं० चिकोटी] नोचना।

चोंथ-पुं० [अनु०] एक बार में गिरा हुआ गोबर।

चोंथना-स० [अनु०] नोचना। खसोटना।

चौंधर-वि० [हिं० चौंधियाना] १. बहुत

छोटी आँखोंवाला। २. जिसे कम दिखाई दे। ३. मूर्ख।

चोश्रा-पुं० [हिं० चुश्राना] १. कई सुगंधित वस्तुओं का एक प्रकार का सार या रस। २. दे० 'चोटा'।

चोकर-पुं० [हिं० चून=आटा+कराई=छिलका] पिसे हुए गेहूँ, जौ आदि को छानने पर निकलनेवाले छिलके। भूसी।

चोका-पुं० [सं० चूषण] १. चूसने की क्रिया। चूसना। २. स्तन। छाती। (विशेषतः वह छाती जिसमें दूध भरा हो।)

चोखा-वि० [सं० चोक्ष] १. शुद्ध। बे-मिलावट का। २. उत्तम। ३. पैना। धारदार।
पुं० नमक-मिर्च के साथ मसला हुआ, उबाला या भूना हुआ बैगन, आलू आदि। भरता।

चोगा-पुं० [तु०] घुटनों तक लटकता हुआ एक प्रकार का पहनावा। लबादा।

चोचला-पुं० [अनु०] १. जवानी या उमंग की चेष्टाएँ। हाव-भाव। २. नखरा।

चोज-पुं० [?] १ चमत्कारपूर्ण और विनोदात्मक उक्ति। सुभाषित। २. हँसी-ठट्ठा। ३. व्यंग्यपूर्ण उपहास।

चोट-स्त्री० [सं० चुट] १. किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु के वेगपूर्वक आकर गिरने से होनेवाला परिणाम, जो बहुधा अनिष्ट या हानि करता है। आघात। २. इस क्रिया से होनेवाली हानि या अनिष्ट। ३. इस क्रिया से शरीर पर होनेवाला चिह्न या घाव। जखम। (इंजरी) ४. आक्रमण के समय होनेवाला हथियार का वार। ५. किसी को हानि पहुँचाने के लिए चली जानेवाली चाल। ६. चुभती हुई बातों की बौछार। व्यंग्य। ताना। ७. बार। दफा। जैसे-आज तीन चोट भोजन हुआ है।

चोटा-पुं० [हिं० चोश्रा] राब का छाना हुआ पसेव। चोश्रा।

चोटियाना-स० [हिं० चोटी] १. चोटी पकड़ना। २. वश में करना।

चोटी-स्त्री० [सं० चूडा] १. शिखा। चुन्दी। मुहा०-चोटी दबना=किसी से दबने के कारण लाचार होना। चोटी हाथ में होना=बस में होना।
२. एक में गूँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल। ३. सिर के बाल बाँधने का डोरा। ४. जूड़े में पहनने का एक गहना। ५. मुरगे आदि के सिर पर के उठे हुए पर। कलगी। ६. ऊपरी भाग। शिखर।
मुहा०-चोटी का=सर्वोत्तम।

चोट्टा-पुं० [हिं० चोर] [स्त्री० चोट्टी] चोर।

चोड़-पुं० दे० 'चोल'।

चोप*-पुं० [हिं० चाव] १. चाह। इच्छा। २. चाव। शौक। ३. उत्साह। उमंग। ४. दे० 'चेप'।

चोपना*-अ० [हिं० चोप] रीझना। मुग्ध होना।

चोपी*-वि० [हिं० चोप] चोप से युक्त।

चोब-स्त्री० [फा०] १. शामियाने का बड़ा खम्भा। २ नगाड़ा बजाने की लकड़ी। ३. सोने या चाँदी से मढ़ा सोंटा।

चोबदार-पुं० [फा०] १ चोब रखनेवाला नौकर। आसा-बरदार। २. द्वारपाल।

चोर-पुं० [सं०] १. चोरी करनेवाला। तस्कर। २. मन का संदेह। खटका।
मुहा०-मन में चोर बैठना=१. संदेह होना। २. मन में दुर्भाव आना।
३. घाव का अन्दर ही अन्दर बढ़नेवाला विकार। ४. संधि। दरज। ५. खेल में

दूसरों को दाँव देनेवाला व्यक्ति, जिसे दंड-स्वरूप कोई काम करना पड़ता है। वि० आन्तरिक भावों को छिपानेवाला।
चोरकट-पुं० [हिं० चोर] उचक्का।
चोरटा-पुं० दे० 'चोट्टा'।
चोर-दरवाजा-पुं० [हिं० चोर+दरवाजा] मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार।
चोरना-स० दे० 'चराना'।
चोर-बाजार-पुं० [हिं० चोर+बाजार] [भाव० चोर-बाजारी] वह बाजार या क्रय-विक्रय का स्थान, जिसमें चोरी से चीजें बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर खरीदी और बेची जायँ। (ब्लैक मार्केट)
चोर-बाजारी-स्त्री० [हिं० चोर+बाजार] चोरी से कोई चीज बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर खरीदना या बेचना।
चोर-महल-पुं० [हिं० चोर+महल] राजा या रईस की रखेली का महल।
चोर-मिहीचनी*-स्त्री०=आँख-मिचौली।
चोरा-चोरी*-क्रि० वि० [हिं० चोरी] छिपे छिपे। चुपके चुपके। चोरी चोरी।
चोरी-स्त्री० [हिं० चोर] १. छिपकर दूसरे की वस्तु लेने की क्रिया या भाव। २. किसी से कोई बात गुप्त रखना या छिपाना।
चोल-पुं० [सं०] १. दक्षिण का एक प्राचीन देश। २. इस देश का निवासी। ३. चोली। ४. ढीला कुरता। चोला। ५. कवच। बकतर।
चोलना*-पुं० दे० 'चोला'।
चोला-पुं० [सं० चोल] १. साधुओं-फकीरों का लंबा ढीला-ढाला कुरता। २. नये जनमे हुए बालक को पहले-पहल कपड़े पहनाने की रसम। ३. शरीर। देह।
मुहा०-चोला छोड़ना या बदलना= शरीर त्याग करना। मरना। (साधु)
चोली-स्त्री० [सं० चोल] अँगिया की तरह का स्त्रियों का एक पहनावा।
मुहा०-चोली-दामन का साथ=बहुत अधिक या गहरा संग-साथ।
चोषण-पुं० [सं०] [वि० चोष्य] चूसना।
चौंकना-अ० [?] [भाव० चौंक] १. भय आदि से अचानक काँप उठना। २. चौकन्ना या खबरदार होना। ३. चकित होना। भौचक्का होना। ४. शंकित होना। भड़कना।
चौंध-स्त्री० [सं० चक्=चमकना] चमक।
चौंधना*-अ० [हिं० चौंध] इस प्रकार चमकना कि किसी की आँखों के आगे चकाचौंध हो।
चौंधियाना-अ० [हिं० चौंध] १. तेज चमक के सामने आँखें झिलमिलाना। चकाचौंध होना। २. आँख से न सूझना।
चौंधी-स्त्री० दे० 'चकाचौंध'।
चौंर-पुं० दे० 'चँवर'।
चौंराना*-स० [हिं० चँवर] १. चँवर डुलाना। चँवर करना। २. झाड़ू देना।
चौंरी-स्त्री० [हिं० चौंर] १. चँवर। २. चोटी बाँधने की डोरी। चोटी। ३. सफेद पूँछवाली गाय।
चौ-वि० [सं० चतुः] चार (संख्या)। (केवल यौगिक में; जैसे-चौ-पहल।) पुं० मोती तौलने की एक तौल।
चौआ-पुं० [हिं० चौ=चार] १. हाथ की चार उँगलियों का समूह। २. हाथ की उँगलियों की पंक्ति पर लपेटा हुआ तागा। ३. चार अंगुल की नाप।
†पुं० दे० 'चौपाया'।
चौआना*-अ० [हिं० चौंकना] चक-पकाना। चकित होना।

चौक-पुं० [सं० चतुष्क, प्रा० चउक्क] १. चौकोर खुली भूमि। २. घर के बीच में चौकोर खुला स्थान। आँगन। सहन। ३. चौखूँटा चबूतरा। बड़ी वेदी। ४. पूजा के लिए आटे, अबीर आदि की लकीरों से बना हुआ चौकोर चित्रण। ५. चौहट्टा। ६.चौसर खेलने की बिसात। ७. सामने के चार दाँतों की पंक्ति।

चौकड़ी-स्त्री० [हि० चौ=चार+सं०कला=अंग] १. हिरन का चारो पैर एक साथ उठाते हुए दौड़ना। छलाँग।

मुहा०-**चौकड़ी भूल जाना**=सिटपिटा या घबरा जाना।

२. चार आदमियों का गुट। मंडली।

यौ०-**चंडाल चौकड़ी**=उपद्रवियो या दुष्टों की मंडली।

३. एक प्रकार का गहना। ४. चार युगा का समूह। चतुर्युगी। ५. जांघें और घुटने जमीन पर टेककर बैठने की एक मुद्रा। पलथी।

स्त्री० [हि० चौ+घोड़ा] वह गाड़ी जिसमें चार घोड़े जुते हों।

चौकन्ना-वि० [हिं० चौ=चारों ओर+कान] १.सावधान। २. चौंका हुआ। शंकित।

चौकस-वि० [हिं० चौ=चार+कस=कसा हुआ] १. सावधान। २. ठीक। दुरुस्त।

चौकसाई*-स्त्री दे० 'चौकसी'।

चौकसी-स्त्री०[हिं०चौकस]१. सावधानी। २. रखवाली।

चौका-पुं० [सं० चतुष्क] १. पत्थर का चौकोर टुकड़ा। चौखूँटी सिल। २. रोटी बेलने का चकला। ३. अगले चार दाँतों की पंक्ति। ४. सीस-फूल। ५. हिन्दुओं का रसोई का स्थान। ६. सफाई के लिए धरती पर मिट्टी या गोबर का लेप।

मुहा०-**चौका लगाना**=चौपट करना।

७. एक ही तरह की चार चीजों का समूह। जैसे-अँगोछों का चौका।

चौकी-स्त्री० [सं० चतुष्की] १. चार पायों का चौकोर आसन। छोटा तख्त। २. मंदिर में मंडप का प्रवेश-द्वार। ३. पड़ाव। टिकान। ४. वह स्थान जहाँ रक्षा के लिए कुछ सिपाही रहते हों। ५. पहरा। ६. देवता या पीर आदि को चढ़ाई जानेवाली भेंट। ७. गले का एक गहना।

चौकी-घर-पुं० [हिं० चौकी=पहरा+घर] वह स्थान या छोटा-सा घर जिसमें चौकीदार खड़ा होकर पहरा देता है। (स्टैंड-पोस्ट)

चौकीदार-पुं० [हिं० चौकी+फा० दार] १. पहरा देनेवाला। २. गोंड़ैत।

चौकीदारी-स्त्री० [हिं० चौकीदार] १. चौकीदार का काम या पद। २. चौकीदार रखने के लिए लगनेवाला चन्दा या कर।

चौकोना-वि० [सं० चतुष्कोण] चार कोनोंवाला। चौखूँटा।

चौकोर-वि० [सं० चतुष्कोण] जिसके चारो कोने या पार्श्व बराबर हों। (स्केयर)

चौखट-स्त्री० [हिं० चौ=चार+काठ] १. लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ जड़े रहते हैं। २. देहली। डेहरी।

चौखटा-पुं० [हिं० चौखट] चित्र या शीशा जड़ने का चौकोर ढाँचा। (फ्रेम)

चौखानि*-स्त्री० [हिं० चौ=चार+खानि=जाति] चार प्रकार के जीव—अंडज, पिंडज, स्वेदज और उद्भिज।

चौखूँटा-वि० दे० 'चौकोना'।

चौगड्डा-पुं० दे० 'चौराहा'।

चौगान-पुं० [फा०] १. गेंद-बल्ले का एक खेल। २. यह खेल खेलने का

मैदान। ३. नगाड़ा बजाने की लकड़ी। चोब।

चौगिर्द-क्रि० वि०=चारों तरफ।

चौगुना-वि० [सं० चतुर्गुण] [स्त्री० चौगुनी] जितना हो, उतना ही चार बार और। चतुर्गुण।

चौगोशिया-वि० [फा०] चौकोर।
स्त्री० एक प्रकार की टोपी।
पुं० तुरकी घोड़ा।

चौघड़-पुं० [हिं० चौ=चार+दाढ़] चौड़े, चिपटे चबानेवाले दाँत। चौभर।

चौघड़ा-पुं० [हिं० चौ=चार+घर=खाना] १. पान-इलायची रखने का चार खानों का डिब्बा। २. तरकारियों या मसाले रखने का चार खानों का बरतन। ३ पत्ते में बँधे हुए चार बीड़े पान। ४. दे० 'चौडोल'।

चौचंद*-पुं० [हिं० चौथ+चंद या चवाव+चंद] कलंक-सूचक चर्चा। बदनामी। निन्दा।

चौचंदहाई*-वि० स्त्री० [हिं० चौचंद+हाई (प्रत्य०)] वह जो सबकी निन्दा करती फिरती हो।

चौड़ा-वि० [सं० चिपिट=चिपटा] [स्त्री० चौड़ी] १. जिसमें चौड़ाई हो। २. विस्तृत।

चौड़ाई-स्त्री० [हिं० चौड़ा+ई (प्रत्य०)] लंबाई से कम या थोड़ा और उसका उलटा विस्तार। अर्ज। पनहा।

चौड़ान-स्त्री० दे० 'चौड़ाई'।

चौडोल-पुं० [हिं० चंडोल] १. एक प्रकार का बाजा। २. दे० 'चंडोल'।

चौतनी-स्त्री० [हिं० चौ=चार+तनी=बंद] चार बंदोंवाली बच्चों की टोपी।

चौताल-पुं० [हिं० चौ+ताल] १. होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। २. एक प्रकार का ताल। (संगीत)

चौथ-स्त्री० [सं० चतुर्थी] १. चतुर्थी। चौथी तिथि।
मुहा०-**चौथ का चाँद**=भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी का चन्द्रमा, जिसे देखने से झूठा कलंक लगना माना जाता है।
२. आमदनी का चतुर्थांश जो मराठे कर के रूप में लेते थे।
*वि० दे० 'चौथा'।

चौथपन*-पुं०=बुढ़ापा।

चौथाई-पुं० [हिं० चौथा+ई (प्रत्य०)] चौथा भाग। चतुर्थांश।

चौथी-स्त्री० [हिं० चौथा] १. विवाह के चौथे दिन वर-कन्या के कंगन खोलने की रसम। २. जमींदार को मिलनेवाला फसल का चौथाई अंश।

चौ-दंता-वि० [हिं० चौ+दाँत] १. चार दाँतोंवाला। २. उद्दंड। उद्धत।

चौदंत*-पुं० [हिं० चौ=चार+दाँत] दो हाथियों की लड़ाई।

चौधराई-स्त्री० [हिं० चौधरी] चौधरी का काम, भाव या पद।

चौधरी-पुं० [सं० चतुर+धर] किसी समाज या बिरादरी का मुखिया या प्रधान।

चौपट-क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+पट=किवाड़] चारों ओर से (खुला हुआ)।
वि० नष्ट-भ्रष्ट। बरबाद।

चौपटा-वि० [हिं० चौपट] चौपट करनेवाला।

चौपड़-स्त्री० दे० 'चौसर'।

चौपथ-पुं० [सं० चतुष्पथ] चौराहा।

चौपद*-पुं० दे० 'चौपाया'।

चौ-पहल-वि० [हिं० चौ+फा० पहलू] चार पहल या पार्श्ववाला। वर्गात्मक।

चौपाई-स्त्री० [सं० चतुष्पदी] सोलह मात्राओं का एक प्रसिद्ध छंद ।

चौपाया-पुं०[सं० चतुष्पद] चार पैरोंवाला पशु । जैसे-गौ, घोड़ा या बकरी ।

चौपाल-पुं० [हिं० चौबार] १. चारों ओर से खुली हुई बैठक । २. दालान । ३. एक प्रकार की पालकी ।

चौबाई- स्त्री० [हिं० चौ+बाई=हवा] चारों ओर से चलनेवाली हवा ।

चौबार-पुं० [हिं० चौ+बार] १. बँगला। छत के ऊपर का कमरा । २. चारों ओर से खुली हुई कोठरी ।

क्रि० वि० [हिं० चौ=चार+बार=दफा] चौथी दफा । चौथी बार ।

चौबोला-पुं० [हिं० चौ+बोल] एक प्रकार का मात्रिक छन्द ।

चौभड़-पुं० दे० 'चौघड़' ।

चौ-मसिया-वि० [हिं० चौ+मास] चौमासे में होनेवाला । वर्षा-कालीन ।

स्त्री० [हिं० चौ+माशा] चार माशे का बटखरा ।

चौमासा-पुं० [सं० चातुर्मास] १. वर्षा के ये चार महीने—आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन । २. वर्षा ऋतु संबंधी गीत या कविता ।

चौमुखा-वि० [हिं० चौ=चार+मुख] [स्त्री० चौमुखी] जिसके चारो ओर चार मुख हो ।

चौमुहानी-स्त्री० [हिं० चौ=चार+फा० मुहाना] वह स्थान जहाँ चारों ओर से आकर चार रास्ते मिलते हों । चौराहा । चौरास्ता । चतुष्पथ ।

चौरंग-पुं० [हिं० चौ=चार+रंग] तलवार चलाने का एक ढंग ।

वि० तलवार से पूरा कटा हुआ ।

चौर-पुं० [सं०] १. दूसरों का माल चुरानेवाला । चोर । २. एक गंध-द्रव्य ।

चौरस-वि० [हिं० चौ=चार+(एक) रस=समान] १. जो ऊँचा-नीचा न हो । सम-तल । बराबर । २. चौपहल ।

चौरसाना-स० [हिं० चौरस] चौरस या सम-तल करना ।

चौरस्ता-पुं० दे० 'चौमुहानी' ।

चौरा-पुं० [सं० चतुर्] [स्त्री० अल्पा० चौरी] १. चबूतरा । वेदी । २ किसी देवता, सती, मृत महात्मा या भूत-प्रेत आदि के नाम पर बना हुआ चबूतरा । ३. चौपाल । ४. चौबारा ।

चौराई-स्त्री० दे० 'चौलाई' ।

चौरासी-पुं० [सं० चतुरशीति] १. अस्सी और चार की संख्या । २. जीवों की योनियां जो चौरासी लाख मानी गई है । मुहा०-**चौरासी में पड़ना या भरमना**=बार बार अनेक योनियों में जन्म लेना और मरना । (कष्टकर)

४. वे घुँघरू जो नाचते समय पैरों में बांधे जाते हैं ।

चौराहा-पुं० दे० 'चौमुहानी' ।

चौरेठा-पुं० [हिं० चावल+पीठा] पीसा हुआ चावल ।

चौर्य-पुं० [सं०] चोरी ।

चौलाई-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का साग ।

चौवा-पुं० दे० 'चौआ' ।

चौसर-स्त्री० [सं० चतुस्सारि] बिसात पर चार रंगों की चार चार गोटियों से खेला जानेवाला एक खेल । चौपड़ ।

पुं० [चतुरसृक] चार लड़ों का हार ।

चौहट्ट*-पुं० दे० 'चौहट्टा' ।

चौहट्टा-पुं० [हिं० चौ=चार+हाट] १.

वह चौकोर बाजार जिसमें चारों ओर दूकानें हों। चौक। २. चौमुहानी।

चौहद्दी-स्त्री॰ [हिं॰ चौ=चार+हद] किसी मकान या जमीन के चारों ओर के मकानों या जमीनों आदि का विस्तार या विवरण।

चौहरा-वि॰ [हिं॰ चौ=चार+हरा (प्रत्य)] १. जिसमें चार परतें या तहें हों। २. चौगुना।

चौहैं*-क्रि॰ वि॰ [हिं॰ चौ] चारों ओर।

च्युत-वि॰ [सं॰] [भाव॰ च्युति] १. गिरा या झड़ा हुआ। २. भ्रष्ट। ३. अपनी जगह से हटा या गिरा हुआ। ४. विमुख। पराङ्मुख।

च्यूँटा-पुं॰ [हिं॰ चिमटना] च्यूँटी की जाति का, पर उससे बड़ा एक कीड़ा।

च्यूँटी-स्त्री॰ [हिं॰ चिमटना] एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा। चींटी। पिपीलिका। मुहा॰-**च्यूँटी की चाल चलना**=बहुत धीमी चाल से चलना। **च्यूँटी के पर निकलना**=मृत्यु या विनाश का समय पास आना।

छ

छ-देवनागरी वर्ण-माला में चवर्ग का दूसरा तालव्य व्यंजन।

छंग*-पुं॰ दे॰ 'उछंग'।

छँगुली-स्त्री॰[हिं॰ छोटी+उँगली] सब से छोटी उँगली। कनिष्ठिका।

छँटना-अ॰ [सं॰ चटन] १. काटा या छाँटा जाना। छिन्न होना। २. चुनकर अलग कर लिया जाना। मुहा॰-**छँटा हुआ**=चालाक। धूर्त्त। ३. दूषित अंश निकलना। साफ होना। ४. (मोटाई या आकार) कम होना। क्षीण होना।

छँटनी-स्त्री॰ [हिं॰ छाँटना+ई (प्रत्य॰)] १. छांटने की क्रिया या भाव। छँटाई। २. निकालने या हटाने के लिए छांटने का काम; विशेषतः कार्यालय के कर्मचारियों को। (रिडक्शन)

छँटवाना-स॰ हिं॰ 'छाँटना' का प्रे॰।

छँटाई-स्त्री॰ [हिं॰ छाँटना] १. छांटने या चुनकर अलग करने का काम, भाव या मजदूरी। २. दे॰ 'छँटनी'।

छँटैल-वि॰ [हिं॰ छँटना] १. छांटा या चुना हुआ। २. धूर्त्त। चालाक।

छँड़ना*-स॰ [हिं॰ छोड़ना] १. त्यागना। २. अन्न कूटना। छांटना।

छँड़ाना*-स॰ [हिं॰छुड़ाना] १. छुड़ाना। २. छीन लेना।

छंद-पुं॰ [सं॰ छंदस्] १. वेद। २. वर्णं, मात्रा आदि की गिनती के विचार से होनेवाली वाक्य-रचना। पद्य। ३. अभिलाषा। इच्छा। ४. मन-माना आचरण। ५. बंधन। गाँठ। ६. संघात। समूह। ७. कपट। छल। ८. चाल। युक्ति। ९ रंग-ढंग। १०. अभिप्राय। मतलब।

पुं॰ [सं॰ छंदक] हाथ का एक गहना।

छंदोबद्ध-वि॰ [सं॰] छन्द के रूप में बँधा या रचा हुआ।

छंदोभंग-पुं॰ [सं॰] १. छंद-रचना में नियम-पालन की वह त्रुटि जिससे उसमें

ठीक गति का अभाव होता है।

छः-वि० [सं० षड्, प्रा० छ] पाँच और एक।

छकड़ा-पुं० [सं० शकट] बोझ लादने की बैल-गाड़ी।

छकना-अ० [सं० चकन] [संज्ञा छाक] १. खा-पीकर तृप्त होना। अघाना। २. नशे में चूर होना।

अ० [सं० चक्र=भ्रान्त] १. चकराना। २. धोखा खाना। ३. परेशान होना।

छकाना-स० हिं० 'छकना' का स०।

छकीला-वि० [हिं० छकना] १. छका हुआ। तृप्त। २. मस्त। मत्त।

छक्का-पुं० [सं० षट्] १. छः का समूह। २. छः अवयवोंवाली वस्तु। ३ जूए का वह दाँव जिसमें छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें। मुहा०-**छक्का-पंजा**=छल-कपट। ४. धूर्तता। चालाकी। ५. साहस। मुहा०-**छक्के छूटना**=चालाकी या उपाय न सूझना या न चलना।

छगन-पुं० [सं० छगट=एक छोटी मछली] छोटा बालक। (प्यार का शब्द)

छगुनी-स्त्री० दे० 'छँगुली'।

छछिया-स्त्री० [हिं० छाछ] छाछ पीने या रखने का एक प्रकार का छोटा बरतन।

छछूँदर-पुं० [सं० छछुंदरी] १ चूहे की तरह का एक जन्तु। २. एक प्रकार की छोटी आतश-बाजी।

छजना-अ० [सं० सज्जा] १. शोभा देना। सजना। २. ठीक जँचना।

छज्जा-पुं० [हिं० छाजन या छाना] १. कोठे या पाटन का, दीवार से बाहर निकला हुआ भाग। २. ओलती। ओरी।

छटकना-अ० [अनु० या हिं० छूटना] १. भार या धक्के से किसी वस्तु का वेग से दूर जाना। २. दूर या अलग रहना। ३. बन्धन से निकल जाना। ४. कूदना।

छटकाना-स० हिं० 'छटकना' का स०।

छटपटाना-अ० [अनु०] पीड़ा से हाथ-पैर पटकना या फेंकना। तड़फड़ाना। २. बेचैन होना। व्याकुल होना।

छटपटी-स्त्री० [अनु०] १. बेचैनी। २ प्रबल उत्कंठा। आकुलता।

छटाँक-स्त्री० [हिं० छ+टांक] एक तौल जो एक सेर का सोलहवां भाग होती है।

छटा-स्त्री० [सं०] १. शोभा। सौन्दर्य। २. बिजली।

वि० दे० 'छठा'।

छठ-स्त्री० [सं० षष्ठी] पक्ष की छठी तिथि।

छठा-वि० [हिं० छ:] गिनती में छः के स्थान पर पड़नेवाला।

छठी-स्त्री० [सं० षष्ठी] बालक के जन्म से छठे दिन होनेवाले कृत्य। मुहा०-**छठी का दूध याद आना**= १. शेखी या हेकड़ी भूल जाना। २.बहुत दुःख या कष्ट का अनुभव करना।

छड़-पुं० [सं० शर] [स्त्री० अल्पा० छड़ी] धातु लकड़ी आदि का लम्बा, पतला टुकड़ा।

छड़ा-पुं० [हिं० छड़] पैर का एक गहना।

छड़िया-पुं० [हिं० छड़ी] द्वारपाल।

छड़ी-स्त्री० [हिं० छड़] १. हाथ में लेकर चलने की सीधी पतली लकड़ी। २. पीरों की मजार पर चढ़नेवाली झंडी।

छत-स्त्री० [सं० छत्र] १. चूने, कंकड़ आदि से बनी हुई घर की छाजन। पाटन। २. ऊपर का ढका भाग।

*पुं० दे० 'क्षत'।

*क्रि०वि०[सं० सत्] रहते हुए। आछत।

छतगीर(ी)-स्त्री० [हिं० छत+फा० गीर] छत पर तानी जानेवाली चाँदनी।

छतनाॐ-पुं० [हिं० छाता] बड़े पत्तों से बना हुआ छाता।

छतनार†-वि० [हिं० छाता या छतना] [स्त्री० छतनारी] जिसकी शाखाएँ छितरी या फैली हुई हों। (वृक्ष)

छतरी-स्त्री० [सं० छत्र] १. छाता। २. एक प्रकार का बहुत बड़ा छाता, जिसके सहारे आज-कल सैनिक लोग हवाई जहाजों से जमीन पर उतरते हैं। (पैराशूट) यौ०-छतरी फौज=छतरियों के सहारे हवाई जहाजों से उतरनेवाली सेना। ३. मंडप। ४. समाधि का मंडप। ५. कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की पट्टियों का टट्टर। ६ खुमी।

छतियाना-स० [हिं० छाती] १. छाती के पास ले आना। २.छाती से लगाना।

छतीसा-वि० [हिं० छत्तीस] [स्त्री० छतीसी] १ चतुर। चालाक। २. धूर्त।

छत्तर†-पुं० १. दे० 'छत्र'। २. दे० 'सत्र'।

छत्ता-पुं० [सं० छत्र] १. छाता। छतरी। २ रास्ते के ऊपर की छत या पटाव। ३. मधुमक्खी आदि का घर। ४ छतनारी चीज। ५. कमल का बीज-कोश।

छत्तेदार-वि० [हिं० छत्ता+फा० दार (प्रत्य०)] १. जिसपर पटाव या छत हो। २. मधुमक्खी के छत्ते के आकार का।

छत्र-पुं० [सं०] राज-चिह्न के रूप में राजाओं पर लगाया जानेवाला बड़ा छाता। यौ०-छत्रछाँह,छत्रछाया=रक्षा। शरण।

छत्रक-पुं० [सं०] १. खुमी। कुकुरमुत्ता। २. ताल मखाने की जाति का एक पौधा। ३. मंदिर। ४. मंडप। ५. शहद की मक्खियों का छत्ता।

छत्रधर-पुं० [सं०] वह जो राजाओं पर छत्र लगाता हो।

छत्रधारी-वि० [सं० छत्र-धारिन्] छत्र धारण करनेवाला। जैसे-छत्रधारी राजा।

छत्रपति-पुं० [सं०] राजा।

छत्रपनॐ-पुं० दे० 'क्षत्रियत्व'।

छत्र-भंग-पुं० [सं०] १. राजा का नाश या मृत्यु। २. ज्योतिष का एक योग जो राजा का नाशक माना गया है। ३. अराजकता।

छत्री-वि० [सं० छत्रिन्] छत्रयुक्त। पुं० दे० 'क्षत्रिय'।

छद-पुं० [सं०] १. आवरण। २. चिड़िया का पंख। ३. पत्ता।

छदाम-पुं० [हिं० छः+दाम] पैसे का चौथाई भाग।

छद्म-पुं० [सं० छद्मन्] १. छिपाव। गोपन। २. व्याज। बहाना। ३. कपट।

छद्मी-वि० [सं० छद्मिन्] [स्त्री० छद्मिनी] १.कृत्रिम वेशवाला। २. छली। कपटी।

छन-पुं० दे० 'क्षण'।

छनक-पुं० [अनु०] छन् छन् शब्द। स्त्री० [अनु०] चौंककर भागना। ॐपुं०[हिं०छन+एक] एक क्षण। क्षण भर।

छनकना-अ० [अनु० छन छन] १ छन् छन् शब्द करना। २. दे० 'छनछनाना'। अ० [अनु०] चौकन्ना होकर भागना।

छनक-मनक-स्त्री० [अनु०] १. गहनों की झनकार। २. सज-धज। ३. ठसक। ४. नखरा। चोचला।

छनछनाना-अ० [अनु०] १. तपी हुई कड़ाही या तवे पर अथवा खौलते हुए घी में तरल पदार्थ पड़ने से छन छन शब्द होना। २. छन छन बजना। ३.

क्रोध से तिलमिलाना।

छन-छबि*-स्त्री० [सं० क्षण+छबि] बिजली।

छनदा*-स्त्री० दे० 'क्षणदा'।

छनना-अ० [सं० क्षरण] १. किसी चूर्ण या तरल पदार्थ का कपड़े आदि में से इस प्रकार गिरना कि मैल या सीठी ऊपर रह जाय।

मुहा०-गहरी छनना=खूब मेल-जोल होना। गाढ़ी मैत्री होना।

२. लड़ाई होना। ३. कड़ाही में से पूरी, पकवान आदि निकलना।

छनिक*-वि० दे० 'क्षणिक'।

*पुं० [हिं० छन+एक] क्षण भर।

छन्न-पुं० [अनु०] १. तपी हुई चीज पर पानी आदि पड़ने का शब्द। २.झनकार।

छन्ना-पुं० [हिं० छानना] वह कपड़ा जिससे कोई चीज छानी जाय। साफी।

छप-स्त्री० [अनु०] १. पानी पर किसी चीज के गिरने का शब्द। २. जोर से छींटा पड़ने का शब्द।

छपका-पुं० [अनु०] पानी का छींटा।

छपछपाना-अ० [अनु०] छपछप शब्द होना।

स० [अनु०] छपछप शब्द उत्पन्न करना।

छपद-पुं० [सं० षट्पद] भौंरा।

छपन†-वि० [हिं० छिपना] छिपा हुआ।

पुं० [सं० क्षपण] नाश।

छपना-अ०[हिं०चपना=दबना] १.छापे के यंत्र या ठप्पे आदि से छापा जाना। मुद्रित होना। २. चिह्नित या अंकित होना।

†अ० दे० 'छिपना'।

छपर-खट-स्त्री० [हिं० छप्पर+खाट] मसहरीदार पलंग।

छपरी*-स्त्री० [हिं० छप्पर] झोंपड़ी।

छपवाना-स० दे० 'छपाना'।

छपा*-स्त्री० दे० 'क्षपा'।

छपाई-स्त्री० [हिं० छापना] १. छपाने का काम या भाव। मुद्रण। २. छापने की मजदूरी।

छपाकर-पुं० दे० 'क्षपाकर'।

छपाका-पुं० [अनु०] १. पानी पर जोर से गिरने का शब्द। २. दे० 'छपका'।

छपाना-स० हिं० 'छापना' का प्रे०।

*स० दे० 'छिपाना'।

छप्पय-पुं० [सं० षट्पद] एक मात्रिक छंद जिसमें छ: चरण होते हैं।

छप्पर-पुं० [हिं० छोपना] घर की फूस आदि की छाजन। छान।

मुहा०-छप्पर फाड़कर देना=अनायास या अकस्मात् देना।

छब-नखत†-स्त्री० [हिं० छवि + अ० तकर्ताअ] शरीर की सुन्दर बनावट।

छबना-अ० [हिं० छबि] छबि से युक्त होना। सुन्दर होना या लगना।

छबि-स्त्री० दे० 'छवि'।

छबिमान-वि० दे० 'छबीला'।

छबीला-वि० [हिं० छबि+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० छबीली] छबिवाला। सुन्दर।

छम-स्त्री० [अनु०] घुँघरू का शब्द।

*पुं० दे० 'क्षम'।

छमकना-अ०[हिं०छम अनु०] १.घुँघरुओं या गहनों की झनकार होना। २.चमकना।

छमछम-स्त्री० [अनु०] १. दे० 'छम'। २. पानी बरसने का शब्द।

क्रि० वि० छम छम शब्द के साथ।

छमछमाना-अ० [अनु०] १. छमछम शब्द उत्पन्न करना। २. चमकना।

छमता*-स्त्री० दे० 'क्षमता'।

छमना†-स० [सं० क्षमन्] क्षमा करना।

छमा(ई)*-स्त्री० दे० 'क्षमा'।

छमाछम-क्रि० वि० [अनु०] जोर से छम छम शब्द करते हुए।

छमासी-स्त्री० [हिं० छ+मास] मृत्यु के छः महीने बाद होनेवाला श्राद्ध। स्त्री० [हिं० छ+माशा] छः माशे की तौल या बटखरा।

छमुख-पुं० दे० 'षडानन'।

छय*।-पुं० दे० 'क्षय'।

छयना*-अ० [हिं० छय] क्षीण होना। छीजना।

अ० दे० 'छाना'।

छर-पुं० १. दे० 'छल'। २. दे० 'क्षर'।

छरकना*-अ० दे० 'छलकना'।

छरछंद*-पुं० दे० 'छलछंद'।

छरछराना-अ० [स० क्षार] [संज्ञा छरछराहट] घाव पर नमक आदि लगने से जलन या चुनचुनी होना।

छरना-अ० [सं० क्षरण] चूना। टपकना। ।*स० दे० 'छलना'।

छरभार।*-पुं० [सं० सार+भार] १. कार्य का भार। २. झंझट। बखेड़ा।

छरहरा-वि० [हिं० छड़+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० छरहरी] १. दुबला-पतला और हलका। २. तेज। फुरतीला।

छरिंदा।-वि० दे० 'छरीदा'।

छरी*-स्त्री० १.दे०'छड़ी'। २.दे० 'छली'।

छरीदा-वि० [फ़ा० जरीदः] १. अकेला। २. जिसके पास बोझ या असबाब न हो। (यात्री)

छर्रा-पुं० [अनु० छर छर] १. कंकड़ी या कण। २. बन्दूक की छोटी गोली।

छल-पुं० [सं०] १. कपट का व्यवहार। धोखा। २. मिस। बहाना। ३. धूर्तता। ४. कपट।

छलक(न)-स्त्री० [हिं० छलकना] छलकने की क्रिया या भाव।

छलकना-अ० [अनु०] १. बरतन हिलने से किसी तरल पदार्थ का उछलकर बाहर गिरना। २.भरे होने के कारण उमड़ना।

छलकाना-स० हिं० 'छलकना' का स०।

छलछंद-पुं० [हिं० छल+छंद] [वि० छलछंदी] धूर्तता। चालबाजी।

छलछलाना-अ० [अनु०] भर आने के कारण पानी आदि थोड़ा थोड़ा करके गिरना या गिरने को होना।

छल-छिद्र-पुं० [सं०] धूर्तता। धोखेबाजी।

छलना-स० [सं० छलन] १. धोखे या भुलावे में डालना। २. मोहित करना। स्त्री० [सं०] धोखा। छल।

छलनी-स्त्री० दे० 'चलनी'।

छलहाया।*-वि० [स्त्री० छलहाई] दे० 'छली'।

छलाँग-स्त्री० [हिं० उछल+अंग] उछलकर कहीं पहुँचना। कुदान। फलाँग।

छला।*-पुं० दे० 'छल्ला'।

छलाई*-स्त्री० दे० 'छल'।

छलावा-पुं० [हिं० छल] १. भूत-प्रेत आदि की वह छाया जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है। २. दलदलों या जंगलों में रह-रहकर दिखाई पड़नेवाला प्रकाश। अगिया बैताल। उल्का-मुख प्रेत। ३. इन्द्रजाल। जादू।

छलिया(ली)-वि० [सं० छलिन्] छल करनेवाला। कपटी। धोखेबाज।

छल्ला-पुं० [सं० छल्ली=लता] १. मुँदरी। २. मंडलाकार वस्तु। कड़ा। वलय।

छल्लेदार-वि० [हिं० छल्ला+फा० दार] मंडलाकार चिह्न या घेरेवाला।

छवा।*-पुं० दे० 'छौना'। पुं० [देश०] एँड़ी।

छवाई-स्त्री० [हिं० छाना] १. छाने या छवाने का काम, भाव या मजदूरी।
छवाना-स० हिं० 'छाना' का प्रे०।
छवि-स्त्री० [सं०] [वि० छबीला] १. शोभा। सौन्दर्य। २. कान्ति। प्रभा।
छवी-स्त्री० [?] एक प्रकार का बड़ा चाकू या छोटा कृपाण जो सिक्ख लोग अपने पास रखते हैं।
छहरना*-अ० [सं० क्षरण] छितराना।
छहराना*-अ० दे० 'छितराना'।
स० बिखराना। छितराना।
छहरीला†-वि० [हिं० छरहरा] [स्त्री० छहरीली] छितराने या बिखरनेवाला।
छहियाँ-स्त्री० दे० 'छाँह'।
छाँउँ*-स्त्री० दे० 'छाँह'।
छाँगुर-पुं० [हिं० छः+अंगुल] वह जिसके हाथ में छः उँगलियाँ हों।
छाँट-स्त्री० [हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया या ढंग। २. छाँटकर अलग की हुई निकम्मी वस्तु।
†स्त्री० [सं० छर्दि] वमन। कै।
छाँटना-स० [सं० खंडन] १. काटकर अलग करना। २. किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना। ३. अनाज में से कन या भूसी कूट या फटककर अलग करना। ४. चुनना। बराना। ५. दूर या अलग करना। ६. साफ करना। ७. अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना। जानकारी बघारना।
छाँटा-पुं० [हिं० छाँटना] १. छाँटने की क्रिया या भाव। २. किसी को छल से अलग या दूर करना।
मुहा०-छाँटा देना=किसी को छल से संग-साथ से अलग करना।
छाँड़ना*†-स० दे० 'छोड़ना'।
छाँदना-स० [सं० छंदन] १. बाँधना। कसना। २. पशु के पिछले पैर सटाकर इसलिए बाँधना कि वह भाग न सके।
छाँदा-पुं० [हिं० छाँदना] १. वह भोजन जो ज्योनार आदि में से अपने घर लाया जाय। परोसा। २. हिस्सा। भाग।
छाँव-स्त्री० दे० 'छाँह'।
छाँवड़ा*-पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छाँवड़ी, छाँड़ी] १. जानवर का बच्चा। छौना। २. छोटा बच्चा। बालक।
छाँह-स्त्री० [सं० छाया] १. वह स्थान जहाँ धूप या प्रकाश आने में रुकावट हो। छाया। २. ऊपर से छाया हुआ स्थान। ३. रक्षा का स्थान। शरण। ४. परछाँई।
मुहा०-छाँह न छूना=पास तक न जाना। छाँह बचाना=बहुत दूर रहना।
५. प्रतिबिंब। ६. भूत-प्रेत का प्रभाव।
छाक-स्त्री० [हिं० छकना] १. तृप्ति। इच्छा की पूर्ति। २. दोपहर का कलेवा। ३. नशा। ४. मस्ती।
छाकना†*-अ० दे० 'छकना'।
छाग-पुं०[सं०] बकरा।
छागल-पुं० [सं०] बकरा।
स्त्री० [हिं० साँकल] पैर का एक गहना।
छाछ-स्त्री० [सं० छच्छिका] मक्खन निकाला हुआ पनीला दही या दूध का पानी। मट्ठा। मही।
छाज-पुं० [सं० छाद] १. अनाज फटकने का सींकों का बना एक उपकरण। सूप। २. छप्पर। ३. दे० 'छज्जा'।
पुं० [हिं० छजना] १. छजने की क्रिया या भाव। २. सजावट। सजा। साज।
छाजन-पुं० [सं० छादन] वस्त्र। कपड़ा।
स्त्री० १. छाने का काम। छवाई। २.

छप्पर। ३. छाया के लिए ऊपर की बनावट।

छाजना-अ० दे० 'छजना'।

छाता-पुं० [सं० छत्र] १. वर्षा या धूप से बचने के लिए पत्तों या कपड़े का बना एक प्रसिद्ध आच्छादन। २ दे० 'छतरी'।

छाती-स्त्री० [सं० छादिन्] १. पेट और गरदन के बीच की हड्डी की ठठरियों की बनावट। वक्षस्थल। सीना।

मुहा०-छाती पत्थर की करना=हृदय कठोर करना। छाती पर मूँग या कोदों दलना=किसी को दिखाकर उसका जी दुखानेवाला काम करना। छाती पर पत्थर रखना=दुःख सहने के लिए जी कड़ा करना। छाती पर साँप लोटना या फिरना=१.कलेजा दहल जाना। २. ईर्ष्या से व्यथा होना। छाती पीटना= बहुत दुःखी होकर छाती पर आघात करना। छाती फटना=बहुत अधिक दुःख से हार्दिक कष्ट होना। छाती लगाना= गले लगाना।

२. हृदय। मन। जी।

मुहा०-छाती जलना=शोक, ईर्ष्या या दबाये हुए क्रोध से हृदय में संताप होना। छाती ठंढी होना=मन को शान्ति मिलना।

३. स्तन। कुच। ४. हिम्मत। साहस।

छात्र-पुं० [सं०] १. शिष्य। २.विद्यार्थी।

छात्र-वृत्ति-स्त्री० [सं०] विद्यार्थी को सहायतार्थ मिलनेवाली वृत्ति या धन।

छात्रावास-पुं० [सं०] विद्यार्थियों या छात्रों के रहने का स्थान। (बोर्डिंग हाउस)

छात्रालय-पुं० दे० 'छात्रवास'।

छादन-पुं० [सं०] [वि० छादित] १. छाने या ढकने का काम। २. वह जिससे कुछ छाया या ढका जाय। आवरण। आच्छादन। ३. छिपाव। ४. कपड़ा।

छाद्मिक-वि० [सं०] १. वह जिसने भेस बदला हो। २. बहुरूपिया। ३. ढोंगी।

छान-स्त्री० [सं० छादन] छप्पर।

छानना-स० [सं० चालन या क्षरण] १.चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े, चलनी आदि के पार निकालना, जिससे उसका कूड़ा-करकट या मोटा अंश ऊपर रह जाय। २. परखना। ३. ढूँढना। ४. भेदकर पार करना। ५. नशा पीना। स० दे० 'छाँदना'।

छान-बीन-स्त्री० [हिं० छानना+बीनना] अच्छी तरह की जानेवाली जाँच-पड़ताल। गहरी खोज।

छाना-स० [सं० छादन] १. ढकना। आच्छादित करना। २. छाया के लिए ऊपर से कोई वस्तु तानना या फैलाना। अ० १. फैलना। पसरना। २. डेरा डालकर या जमकर कहीं रहना।

छानी-स्त्री० [हिं० छाना] घास-फूस की छाजन।

छाप-स्त्री० [हिं० छापना] १. छापने से पड़ा हुआ चिह्न। मुद्रा। अंक। २. वैष्णवों के अंगों पर गरम धातु से अंकित शंख, चक्र आदि के चिह्न। मुद्रा। ३. ठप्पेदार अँगूठी। ४. कवि का उपनाम। ५. निशान। चिह्न।

छापना-स० [सं० चपन] १. स्याही आदि की सहायता से एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दबाकर उसकी आकृति उतारना। २. ठप्पे से निशान डालना। ३. मोहर से अंकित करना। ४. छापे की कल से अक्षर या चित्र अंकित करना।

मुद्रित करना। मुद्रण।

छापा-पुं० [हिं० छापना] १. वह साँचा जिसपर स्याही या रंग लगाकर उसपर खुदे चिह्न या आकार वस्तु पर छापते या उतारते हैं। ठप्पा। २. मोहर। मुद्रा। ३. ठप्पे या मोहर से अंकित चिह्न या अक्षर। ४. मंगल अवसरों पर हलदी आदि से छापा हुआ पंजे का चिह्न। (दीवार, कपड़े आदि पर) ५. बे-खबर लोगों पर होनेवाला आक्रमण।

छापाखाना-पुं० [हिं० छापा + फा० खाना] वह स्थान जहाँ पुस्तकें आदि छापी जाती हैं। मुद्रणालय। (प्रिन्टिंग प्रेस)

छापामार-पुं० [हिं० छापा=अचानक आक्रमण+मार (प्रत्य०)] वह जो अचानक आक्रमण करता हो। छापा मारनेवाला। (विशेषतः सैनिक या हवाई जहाज)

छाबड़ी-स्त्री० [देश०] वह दौरी या थाल जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर बेची जाती हैं। खोनचा।

छाम*-वि० दे० 'क्षाम'।

छाया-स्त्री० [सं०] १. दे० 'छाँह'। २. प्रतिकृति। अनुहार। ३. अनुकरण। नकल। ४. कांति। दीप्ति। ५. अंधकार।

छाया-चित्र-पुं० [सं०] वह चित्र जो किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब मात्र पड़ने से एक विशेष प्रकार के शीशे पर उतर आता और उस शीशे पर से छापा जाता है। (फोटो)

छाया-चित्रण-पुं० [सं०] वह कला या क्रिया जिससे किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब मात्र से उसका चित्र एक विशेष प्रकार के शीशे पर ले लिया जाता और तब उस शीशे पर से एक विशेष प्रकार के कागज पर छापा जाता है। (फोटोग्राफी)

छायाभ-वि० [सं० छाया+भ (प्रत्य०)] १. छाया से युक्त। २. जिसपर छाया पड़ी हो।

छायावाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसके अनुसार अव्यक्त या अज्ञात को विषय या लक्ष्य बनाकर उसके प्रति प्रणय, विरह आदि के भाव प्रगट करते हैं।

छायावादी-वि० [सं०] १. छायावाद संबंधी। छायावाद का। २. छायावाद का सिद्धान्त मानने या उसके अनुसार कविता करनेवाला।

छार-पुं० [सं० क्षार] १. जली हुई वनस्पतियों या धातुओं की राख का नमक। क्षार। २. खारा नमक। ३. खारा पदार्थ। ४. भस्म। राख।

यौ०-**छार खार करना**=नष्ट-भ्रष्ट करना। ५. धूल। गर्द।

छाल-स्त्री० [सं० छल्ल] पेड़ों के धड़ आदि का ऊपरी आवरण। वल्कल।

छाला-पुं० [सं० छाल] १ ऊपरी छाल या चमड़ा। जैसे-मृग-छाला। २. जलने आदि से चमड़े का जल-भरा उभार। फफोला।

छालित*-वि० [सं० प्रक्षालित] धोया हुआ।

छालिया(ली)-स्त्री० दे० 'सुपारी'।

छावनी-स्त्री० [हिं० छाना] १. छप्पर। २ डेरा। पड़ाव। ३. सैनिकों का पड़ाव। ४. सैनिकों के पड़ाव के आस-पास की बस्ती, जिसकी व्यवस्था कुछ अलग नियमों के अनुसार होती है। (कैन्टून्मेन्ट)

छावरा*-पुं० दे० 'छौना'।

छावा-पुं० [सं० शावक] १. बच्चा। २.

पुत्र । बेटा ।

छिउँकी-स्त्री० [हिं० च्यूँटी] १. एक प्रकार की च्यूँटी । २. एक छोटा उड़ने-वाला कीड़ा । ३. चिकोटी ।

छिछ*-स्त्री० [अनु०] छींटा ।

छि-अव्य० [अनु०] घृणा, तिरस्कार आदि का सूचक शब्द ।

छिकना-अ० [हिं० छेकना] १. छेंका या घेरा जाना । घिरना । २. काटा या मिटाया जाना । (नाम पड़ी हुई रकम)

छिगुनी-स्त्री० [सं० क्षुद्र+अँगुली] सबसे छोटी उँगली । कनिष्ठिका ।

छिच्छ*- स्त्री० दे० 'छींटा' ।

छिछकारना-स० दे० 'छिड़कना' ।

छिछला-वि० [हिं० छूछा+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० छिछली] कम गहरा । उथला ।

छिछोरा-वि० [हिं० छिछला] [स्त्री० छिछोरी, भाव० छिछोरपन] क्षुद्र । ओछा ।

छिटकना-अ० [सं० क्षिप्त] इधर-उधर फैलना । बिखरना ।
स० चारो ओर फैलाना । बिखेरना ।

छिटकाना-स० [हिं० छिटकना] चारो ओर फैलाना । बिखराना ।

छिड़कना-स० [हिं० छींटा+करना] पानी आदि के छींटे डालना ।

छिड़का-पुं० दे० 'छिड़काव' ।

छिड़काव-पुं० [हिं० छिड़कना] पानी आदि छिड़कने की क्रिया या भाव ।

छिड़ना-अ० [हिं० छेड़ना] किसी बात या कार्य का आरंभ होना । शुरू होना । जैसे-चर्चा छिड़ना, लड़ाई छिड़ना ।

छितराना-अ० [सं० क्षिप्त+करण] बिखरना । फैलना । तितर-बितर होना । स० १. बिखराना । फैलाना । २. दूर दूर या विरल करना । ३.तितर-बितर करना ।

छिति*-स्त्री० दे० 'क्षिति' ।

छितिज-पुं० दे० 'क्षितिज' ।

छितिपाल*-पुं०[सं०क्षिति+पाल] राजा ।

छितीस*-पुं० [सं० क्षितीश] राजा ।

छिदना-अ० [हिं० छेदना] १. छेदा जाना । २. घायल होना । ३. चुभना ।

छिदाना-स० हिं० 'छेदना' का प्रे० ।

छिद्र-पुं० [सं०] [वि० छिद्रित] १. छेद । सूराख । २. गड्ढा । विवर । बिल । ३. दोष । ऐब ।

छिद्रान्वेषण-पुं० [सं०] [वि० छिद्रान्वेषी] किसी व्यक्ति या बात के दोष ढूँढ़ना । खुचुर निकालना ।

छिद्रान्वेषी-वि० [सं० छिद्रान्वेषिन्] [स्त्री० छिद्रान्वेषिणी] दूसरों के दोष ढूँढ़नेवाला ।

छिन*-पुं० दे० 'क्षण' ।

छिनक*-क्रि० वि० [हिं० छिन+एक] क्षण भर । थोड़ी देर ।

छिनकना-स० [हिं० छिड़कना] जोर से साँस निकालकर नाक साफ करना ।

छिनछवि*-स्त्री० दे० 'बिजली' ।

छिनना-अ० हिं० 'छीनना' का अ० ।

छिनभंग-वि० दे० 'क्षण-भंगुर' ।

छिनाना-स० दे० 'छिनवाना' ।

छिनाल-वि० [सं० छिन्ना+नारी] १. व्यभिचारिणी । कुलटा । २. व्यभिचारी ।

छिनाला-पुं० [हिं० छिनाल] स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास । व्यभिचार ।

छिन्न-वि० [सं०] कटा हुआ । खंडित ।

छिन्न-भिन्न-वि० [सं०] १. कटा-हुआ । टूटा-फूटा । २. तितर-बितर । ३.नष्ट-भ्रष्ट ।

छिपकली-स्त्री० [हिं० चिपकना] एक रेंगनेवाला जन्तु जो प्रायः दीवारों पर दिखाई देता है। गृह-गोधिका । बिस्तुइया ।

छिपना-अ० [सं० क्षिप=डालना] आड़ में होना। दिखाई न पड़ना।

छिपाना-स० [सं० क्षिप=डालना] [भाव० छिपाव] १. आँख से ओझल करना। २. प्रकट न करना। गुप्त रखना।

छिप्र*-क्रि० वि० दे० 'क्षिप्र'।

छिमा*-स्त्री० दे० 'क्षमा'।

छिया-स्त्री० [सं० क्षिम] १. घृणित वस्तु। २. मल। गूह।

छिरकना*-स० दे० 'छिड़कना'।

छिरना*-अ० दे० 'छिलना'।

छिलका-पुं० [हिं० छाल] १. फल आदि का आवरण। २. ऊपरी परत।

छिलन-स्त्री० [हिं० छिलना] १. छिलने की क्रिया या भाव। २. शरीर के चमड़े का ऊपर से छिल जाना। खरोंच। (एब्रेजेन)

छिलना-अ० [हिं० छीलना] १. छिलका अलग होना। २.ऊपरी चमड़ा निकालना।

छींक-स्त्री० [सं० छिक्का] एक शारीरिक व्यापार जिसमें नाक की वायु बहुत जोर से और कुछ शब्द करती हुई निकलती है।

छींकना-अ० [हिं०छींक] छींक निकालना।

छींका-पुं० [सं० शिक्य] १. रस्सियों का वह जाल जो खाने-पीने की चीजें रखने के लिए लटकाया जाता है। सिकहर। २. बैलों के मुँह पर बाँधा जानेवाला जाल। ३. रस्सियों का बना हुआ झूलनेवाला पुल। झूला।

छींट-स्त्री० [सं० क्षिप्त] १. महीन बूँद। जल-कण। २. रंगीन बेल-बूटेदार कपड़ा।

छींटना-स० दे० 'छितराना'।

छींटा-पुं० [सं० क्षिप्त, प्रा० छित्त] १.द्रव-पदार्थ की छिटकी हुई बूँदें। जल-कण। सीकर। २.हलकी वृष्टि। ३ बूँद की तरह का चिह्न या दाग। ४. मदक या चंडू की एक मात्रा। ५. व्यंग्यपूर्ण उक्ति।

छींवी-स्त्री० [सं० शिंबी] १. मटर की फली। २. गौ का स्तन।

छी-अव्य० [अनु०] घृणा-सूचक शब्द। मुहा०-छी छी करना=अरुचि या घृणा प्रकट करना।

छीछड़ा-पुं० [सं० तुच्छ, या हिं० छी ?] खाये जानेवाला मांस का छोटा और निकम्मा टुकड़ा।

छीछा-लेदर-स्त्री० [हिं० छी छी] दुर्दशा। दुर्गति।

छीजना-अ० [सं० क्षयण] [संज्ञा छीज] रगड़ खाने या काम म आने से क्षीण होना। उपयोग में आने से कम होना।

छीति*-स्त्री० [सं० क्षति] १. हानि। घाटा। २. बुराई। खराबी।

छीन*-वि० दे० 'क्षीण'।

छीनना-स० [सं० छिन्न+ना (प्रत्य०)] १. काटना। २. जबरदस्ती लेना। हरण करना। ३ दे० 'रेहना'।

छीना-झपटी-स्त्री०[हि०छीनना+झपटना] छीनकर लेने की क्रिया या भाव।

छीपी-पुं० [हिं० छापा] [स्त्री० छीपिन] कपड़ों पर बेल-बूटे आदि छापनेवाला।

छीर-पुं० दे० 'क्षीर'।

पुं० [हिं० छोर] कपड़े की लम्बाईवाले सिरे का किनारा।

छीरप*-पुं० [सं०क्षीरप] दूध-पीता बच्चा।

छीलना-अ० [हि० छाल] १. छिलका उतारना। २. खुरचकर अलग करना।

छीलर-पुं० [हि० छिछला] पानी भरा हुआ छोटा गड्ढा। तलैया।

छुँगनी*-स्त्री० दे० 'छुँगुली'।

छुँगली*-स्त्री० [हि० छुँगुली] एक प्रकार

की घुँघरूदार अँगूठी।
छुआना-स० दे० 'छुलाना'।
छुगुन्*-पुं० दे० 'घुँघरू'।
छुच्छा-वि० दे० 'छूँछा'।
छुच्छी-स्त्री० [हिं० छूछा] पतली नली।
छुट-अव्य० [हिं० छूटना] छोड़कर। सिवा। अतिरिक्त।
छुटकाना*-स० [हिं० छूटना] १. अलग करना। छोड़ना। २. मुक्त करना।
छुटकारा-पुं० [हिं० छूटना] १ मुक्ति। रिहाई। २. छुट्टी। निस्तार।
छुटपन-पुं० [हिं० छोटा+पन (प्रत्य०)] १. छोटाई। लघुता। २ बचपन।
छुट्टा-वि० [हिं० छूटना] [स्त्री० छुट्टी] १. जो बँधा न हो। खुला और अलग। २. एकाकी। अकेला। ३. फुटकर।
छुट्टी-स्त्री० [हिं० छूटना] १. छूटने या छोड़े जाने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २. काम कर चुकने पर मिलनेवाला खाली समय। अवकाश। फुरसत। ३.काम बन्द रहने का वह दिन, जिसमें नियमित रूप से लोग काम पर उपस्थित नहीं रहते। तातील। (हॉलिडे) ४. काम से मिलने-वाला वह अवकाश जो किसी विशेष कारण से अधिकारियों से प्राप्त किया जाता है। अवकाश। रुखसत। (लीव) ५. कहीं से चलने या जाने की अथवा इसी प्रकार के और किसी काम की अनु-मति या आज्ञा।
छुड़ाना-स० [हिं० छोड़ना] १. बंधन या उलझन से निकालना। २ दूसरे के अधिकार से अलग करना। ३. (धब्बा) मिटाना। साफ करना। ४ नौकरी से हटाना। बरखास्त करना। ५. (आदत) दूर करना।
छुत*-स्त्री० [सं० क्षुत्] भूख।
छुतहा-वि० १. दे० 'संक्रामक'। २. दे० 'छुतिहा'।
छुतिहा-वि० [हिं० छूत+हा (प्रत्य०)] १. छूतवाला। २. अस्पृश्य।
छुद्र*-वि० दे० 'क्षुद्र'।
छुद्रावलि*-स्त्री० दे० 'क्षुद्र-घंटिका'।
छुधा*-स्त्री० दे० 'क्षुधा'।
छुप*-पुं० दे० 'क्षुप'।
छुपना*-अ० दे० 'छिपना'।
छुभित*-वि० [सं० क्षुभित] क्षुब्ध।
छुभिराना*-अ०, स० [हिं० क्षोभ] १.क्षुब्ध होना या करना। २. विचलित होना या करना।
छुर-धार*-स्त्री० [सं० क्षुरधार] छुरे की धार।
छुरा-पुं० [सं० क्षुर] [स्त्री० अल्पा० छुरी] १ बड़ी छुरी। २. उस्तरा।
छुरी-स्त्री० [हिं० छुरा] काटने या चीरने आदि का एक छोटा औजार। चाकू।
छुलछुलाना-अ० [अनु०] थोड़ा-थोड़ा करके मूतना।
छुलाना-स० [हिं० छूना] 'छूना' का प्रेरणार्थक रूप। स्पर्श कराना।
छुवाना-स० दे० 'छुलाना'।
छुहना*-अ० [हिं० छूना] छूआ जाना। स० दे० 'छूना'।
छुहारा-पुं० [सं० क्षुत+हारा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का खजूर। खुरमा। २ पिंड-खजूर।
छूँछा-वि० [सं० तुच्छ] [स्त्री० छूँछी] १.खाली। रिक्त। २.निःसार। ३.निर्धन।
छू-पुं० [अनु०] मंत्र पढ़कर फूँक मारने का शब्द।
मुहा०-छू-मंतर होना=गायब होना।
छूआछूत-स्त्री० [हिं० छूना + छूत]

अस्पृश्य को न छूने या उससे बचने का विचार या प्रथा।

छूई-मूई-स्त्री० [हिं० छूना+मूना=मरना] लजालू या लजावती नाम का पौधा।

छूट-स्त्री० [हिं० छूटना] १. छूटने की क्रिया या भाव। छुटकारा। २. असावधानता के कारण कार्य के किसी अंग पर ध्यान न जाने या उसके छूट अथवा रह जाने का भाव। चूक। (ओमिशन) ३. वह अनुमति जो किसी को अपना कोई कार्य करने अथवा न करने के लिए मिले। (एग्जेम्पशन) ४ किसी प्राप्य धन का पूरा अथवा कुछ अंश छोड़ दिया जाना। पूरा या कुछ बाकी रुपया न लिया जाना। (रेमिशन, रिबेट) ५. किसी बात या कार्य की स्वतन्त्रता। ६. गाली-गलौज की या गन्दी दिल्लगी।

छूटना-अ० [?] १. किसी वस्तु का बंधन आदि से अलग या मुक्त होना।
मुहा०-शरीर छूटना=मृत्यु होना।
२.बन्धन खुलना। ३.साफ होना। मिटना। जैसे-कपड़े का दाग या धब्बा छूटना। ४. मुक्त होना। ५. रवाना होना। ६. अलग होना। बिछुड़ना। ७. पीछे रह जाना। ८. अस्त्र का चलना। ९. बन्द होना। न रह जाना।
मुहा०-नाड़ी छूटना=नाड़ी की गति बन्द हो जाना। (मरने का लक्षण)
१०.व्रत, नियम आदि भंग होना। ११.तेजी से निकलना। १२. रस-रसकर (पानी) निकलना। १३. कण या छींटे निकलकर फैलना। (जैसे-फुहारा, आतशबाजी)। १४. भूल से रह जाना। १५. काम या नौकरी से हटाया जाना।

छूत-स्त्री० [हिं० छूना] १.निषिद्ध संसर्ग। २. गन्दी वस्तु का स्पर्श या संसर्ग।
यौ०-छूत का रोग=रोगी के संसर्ग से फैलनेवाला रोग। संक्रामक रोग।
३. अपवित्र वस्तु छूने का दोष। ४. अस्पृश्यता। ५. भूत-प्रेत का प्रभाव।

छूना-अ० [सं० छुप] एक वस्तु का दूसरी से सटना या लगना। स्पर्श होना। स० १. किसी वस्तु से अपना कोई अंग सटाना या लगाना। स्पर्श करना।
मुहा०-आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना।
२. उँगली या हाथ लगाना। ३. दान के लिए कोई वस्तु स्पर्श करना। ४. दौड़ या खेल की बाजी में जा पकड़ना। ५. लेप करना। पोतना।

छेंकना-स० [सं० छद] १. स्थान घेरना। २. जाने से रोकना। न जाने देना। ३. लकीरों से घेरना। ४. काटना। मिटाना। जैसे-किसी के नाम लिखी हुई रकम छेंकना।

छेकानुप्रास-पुं० [सं०] एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक ही चरण में दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अन्तर पर होती है।

छेड़-स्त्री० [हिं० छेद ?] १. छेड़ने की क्रिया या भाव। २. किसी को कुढ़ाने या चिढ़ानेवाली बात। चुटकी। ३. रगड़ा। झगड़ा। ४.कोई कार्य आरंभ करना। पहल।

छेड़ना-स० [हिं० छेदना ?] १. खोद-खाद करना। खोंचना। २.तंग करना। ३. विरोधी को चिढ़ाना। ४. मजाक करना। चुटकी लेना। ५. (बात या कार्य) आरंभ करना। उठाना। ६. बाजा बजाने के लिए उसमें से स्वर निकालना आरम्भ करना।

छेत्र*-पुं० दे० 'क्षेत्र'।

छेद-पुं० [सं०] १. छेदन। काटना। २.

विनाश।

पुं० [सं० छिद्र] १. सूराख। छिद्र। २. बिल। विवर। ३. दोष। दूषण।

छेदन-पुं० [सं०] [वि० छेदक=छेदन करनेवाला] १. छेद या काटकर अलग करना। २. नाश। ध्वंस।

छेदना-स० [सं० छेदन] १. छेद करना। बेधना। भेदना। २. क्षत या घाव करना। ३. छिन्न करना। काटना।

छेना-पुं० [सं० छदन] फाड़ा हुआ दूध, जिसका पानी निकाल लिया गया हो।

छेनी-स्त्री० [हिं० छेना] पत्थर आदि काटने का लोहे का एक औजार। टाँकी।

छेम*-पुं० दे० 'क्षेम'।

छेरी-स्त्री० [सं० छेलिका] बकरी।

छेव*-पुं० [सं० छेद] १. क्षत। घाव। २. कपटपूर्ण व्यवहार। ३. आपत्ति की आशंका। जोखिम।

छेवना*-स्त्री० [हिं० छेना] ताड़ी।

स० [हिं० छेदना] १. काटना। छिन्न करना। २. चिह्न लगाना।

स० [सं० क्षपण] १. फेंकना। २. डालना।

छेह*-पुं० [हिं० छेव] १. दे० 'छेव'। २. ध्वंस। नाश। ३. परंपरा का भंग।

वि० १. खंडित। २. न्यून। कम।

* स्त्री० दे० 'खेह'।

छै-वि० दे० 'छः'।

* पुं० दे० 'क्षय'।

छैना-पुं० [?] करताल या जोड़ी की तरह का एक बाजा। झाँझ।

* अ० [सं० क्षय] क्षीण होना।

छैया*-पुं० [हिं० छवना] बच्चा।

छैल*-पुं० १. दे० 'छैला'। २. दे० 'हठ'।

छैल-चिकनियाँ-पुं० दे० 'छैला'।

छैल-छबीला-पुं० दे० 'छैला'।

छैला-पुं० [सं० छवि+ऐला (प्रत्य०)] बना-ठना सुन्दर आदमी। बाँका-तिरछा।

छैलाना-अ० [हिं० छैल] लड़कों का कोई चीज लेने के लिए हठ करना।

छोंक्रा*-पुं० [सं० चत्रे] मथानी।

छोआ-पुं० दे० 'खोई'।

छोई-स्त्री० [?] १. दे० 'खोई'। २. निस्सार वस्तु।

छोकरा-पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोकरी] लड़का। बालक। (बुरे या उपेक्षा के भाव से)

छोटा-वि० [सं० क्षुद्र] [स्त्री० छोटी, भाव० छोटाई] १. लम्बाई, विस्तार या डील-डौल में कम।

यौ०-छोटा-मोटा=साधारण।

२. अवस्था या उम्र में कम। ३. पद या प्रतिष्ठा में घटकर। ४. तुच्छ। हीन। ५. ओछा। क्षुद्र।

छोड़ना-स० [सं० छोरण] १. अपनी पकड़ से अलग या बन्धन से मुक्त करना। २. अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना। परित्याग करना। ३. ग्रहण न करना। न लेना। ४. कहीं से प्रस्थान करना। स्थान से हटना। ५. किसी का पीछा करने के लिए किसी को लगाना। जैसे-किसी आदमी पर जासूस छोड़ना। ६. किसी को पीछे रखकर आप आगे बढ़ना। ७. वेग से बाहर निकालना या गिराना। ८ पद, कार्य या कर्तव्य से अलग या विरत होना। ९ रोग या व्याधि का किसी के शरीर से हट जाना। १० बचाकर रखना। शेष रखना।

मुहा०-छोड़कर=अतिरिक्त। सिवा।

११. अभियोग आदि से मुक्त करना।

(डिस्चार्ज) १२. कारागार या बन्धन से मुक्त करना। (डिस्चार्ज)
छोनिप*-पुं० दे० 'क्षोणिप'।
छोनी*-स्त्री० दे० 'क्षोणी'।
छोपना-स० [सं० क्षेपण] १. अधिक मात्रा में गीली वस्तु किसी दूसरी वस्तु पर रखना। गाढ़ा लेप करना। थोपना। २. धर दबाना। दबोचना। ३. ढकना।
छोभना*-अ० [सं० क्षोभ] क्षुब्ध होना। स० क्षुब्ध करना।
छोभित*-वि० दे० 'क्षोभित'।
छोम*-वि० [सं० क्षोम] १. चिकना। २. कोमल। मुलायम।
छोर-पुं० [हिं० ओर का अनु०] १. चौड़ाई का अन्तिम भाग। किनारा। सिरा। यौ०-ओर-छोर = आदि और अन्त। २. अन्तिम सीमा। सिरा। ३. नोक।
छोरना¹-स० [सं० छोरण] १. खोलना। २. छीनना।
छोरा¹-पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छोरी] छोकरा। लड़का।
छोरा-छोरी-स्त्री० [हिं० छोरना] छीना-झपटी। छीना-छीनी।
छोलना¹-स०=छीलना।
छोह-पुं० [सं० क्षोभ] १. प्रेम। स्नेह। २. दया। अनुग्रह।
छोहना*-अ० [हिं० छोह] १. विचलित या क्षुब्ध होना। २. प्रेमपूर्वक दया करना।
छोहरा*¹-पुं० दे० 'छोरा'।
छोहाना*-अ० दे० 'छोहना'।
छोहिनी*-स्त्री० दे० 'अक्षौहिणी'।
छोही¹*-वि० [हिं० छोह] प्रेमपूर्वक दया रखनेवाला। अनुरागी।
छौंक-स्त्री० [अनु०] बघार। तड़का।
छौंकना-स० [अनु० छांव छांव] सुगन्धित या सोंधा करने के लिए हींग, मिर्च आदि से मिला हुआ कड़कड़ाता घी दाल आदि में डालना। बघारना। अ० [सं० चतुष्क] वार करने के लिए झपटना।
छौंड़ा¹-पुं० दे० 'छोकरा'। पुं० [सं० चुंडा] अनाज रखने का गड्ढा। खत्ता।
छौना-पुं० [सं० शावक] [स्त्री० छौनी] पशु का बच्चा। जैसे-मृग-छौना।
छौलदारी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा तंबू।

ज

ज-हिन्दी वर्ण-माला का एक व्यंजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है। छंदः शास्त्र में यह जगण का सूचक या संक्षिप्त रूप माना जाता है। प्रत्यय रूप में यह शब्दों के अन्त में लगकर 'में उत्पन्न' या 'से उत्पन्न' का अर्थ देता है। जैसे-देशज, जलज आदि।
जंग-स्त्री० [फा०] [वि० जंगी] युद्ध। पुं० [फा० ज़ंग] लोहे का मोरचा।
जंगम-वि० [सं०] १. चलने-फिरने-वाला। चर। २. जो एक जगह से दूसरी जगह लाया या पहुँचाया जा सके। जैसे-जंगम सम्पत्ति।
जंगल-पुं० [सं०] [वि० जंगली] वह स्थान जहाँ बहुत दूर तक पेड़ ही पेड़ आपसे आप उगे हों। वन।

जँगला-पुं० [पुर्त्त० जगिला] १. वह खिड़की या दरवाजा, जिसमें लोहे के छड़ लगे हों। कटहरा। बाढ़। २.वह चौखट जिसमें छड़ लगे हों।

जंगली-वि० [हिं० जंगल] १. जंगल सम्बन्धी। जंगल का। २. जंगल में होने या मिलनेवाला। ३. आपसे आप उगने-वाला (पौधा)। ४. जंगल में रहने-वाला। बनैला।

जंगार-पुं० [फा०] [वि०जंगारी] तूतिया।

जंगाल-पुं० दे० 'जंगार'।

जंगी-वि० [फा०] १. लड़ाई से संबंध रखनेवाला। जैसे-जंगी तैयारी। २. सेना संबंधी। फौजी। सैनिक। ३. बहुत बड़ा। दीर्घ-काय।

जंगी कानून-पुं० दे० 'फौजी कानून'।

जंगी जहाज-पुं० [हिं० जंगी+जहाज] जल-युद्ध में काम आनेवाला वह बहुत बड़ा जहाज जिसपर बहुत-सी तोपें लगी रहती हैं। युद्ध-पोत।

जंघा-स्त्री० [सं०] जाँघ। रान।

जँचना-अ० [हिं० जाँचना] १. जाँचा जाना। २. अच्छा लगना। ३. जान पड़ना। प्रतीत होना।

जंजल*-वि० दे० 'जर्जर'।

जंजाल-पुं० [हिं० जग+जाल] १. झंझट। बखेड़ा। २. उलझन। ३. पानी का भँवर। ४.पुराने ढंग की एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक। ५. चौड़े मुँह की एक प्रकार की तोप। ६. मछलियाँ पकड़ने का बहुत बड़ा जाल।

जंजीर-स्त्री० [फा०] १. कड़ियों की लड़ी। २. बेड़ी। ३. किवाड़ की कुंडी। सिकड़ी।

जंतर-पुं० [सं० यंत्र] १. कल। यंत्र। २. तांत्रिक यंत्र। ३. गले आदि में पहनने का धातु का वह छोटा आधान जिसके अंदर कोई तांत्रिक यंत्र या टोटके की वस्तु भरी रहती है।

जंतर-मंतर-पुं० [हिं० यंत्र+मंत्र] १. यंत्र-मंत्र। टोना-टोटका। जादू-टोना। २. वेध-शाला।

जंतरी-स्त्री० [सं० यंत्र] १. छोटा जंता, जिससे सोनार तार खींचते हैं। २.पंचांग। तिथि-पत्र। ३. जादूगर। ४. बाजा बजानेवाला। वादक।

जँतसर-पुं० [हिं० जाँता] वह गीत जो स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं।

जँतसार-स्त्री० [हिं० जाँता] वह स्थान जहाँ जाँता या चक्की गड़ी रहती है।

जंता-पुं० [सं० यंत्र] [स्त्री० अल्पा० जंती, जंतरी] १ यंत्र। कल। २. सोनारों आदि का तार खींचने का एक औजार। वि० [सं० यंतृ=यंता] दंड देनेवाला।

जंती*-स्त्री० दे० 'जननी'।

जंतु-पुं० [सं०] १. जन्म लेनेवाला। २. जीव। प्राणी। ३. पशु। जानवर। यौ०-जीव-जंतु=प्राणी और जानवर।

जंतुघ्न-वि० [सं०] कीड़ों का नाश करनेवाला। जंतु-नाशक।

जंत्र-पुं० दे० 'यंत्र'।

जंत्रना*-स० [हिं० जंत्र] १. ताला बन्द करना। २. बाँध या रोक रखना। *स्त्री० दे० 'यंत्रणा'।

जंत्र-मंत्र-पुं० दे० 'जंतर-मंतर'।

जंत्रित-वि० [सं० यंत्रित] १. दे० 'यंत्रित'। २. बंद किया या बँधा हुआ।

जंद-पुं० [फा० ज़ंद, मि० सं० छन्द] १. पारसियों का प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थ। २. वह भाषा जिसमें यह धर्म-ग्रंथ है।

जंपना*-स० [सं० जल्पन] बोलना।
जंबु-पुं० [सं०] जामुन। (फल)
जंबुक-पुं० [सं०] १ बड़ा जामुन। फरेंदा। २. श्रृगाल। गीदड़।
जंबुद्वीप-पुं० [सं०] पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक, जिसमें भारतवर्ष है।
जंबू-पुं० [सं०] जामुन। (फल)
जंबूर-पुं० दे० 'जंबूरा'।
जंबूरची-पुं० [फा०] तोपची।
जंबूरा-पुं० [फा० जबूर=भौंरा] १. वह गाड़ी जिसपर तोप लादी जाती है। २. एक प्रकार की छोटी तोप। ३. भँवर-कली। ४. एक प्रकार की बड़ी चिमटी।
जंभ-पुं० [सं०] १. दाढ़। चौभड़। २. जबड़ा। ३. जँभाई। ४. एक दैत्य का नाम। ५. जँबीरी नीबू।
जँभाई-स्त्री० [सं० जृंभा] निद्रा या आलस्य के कारण होनेवाली मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया। उबासी।
जँभाना-अ० [सं० जृंभण] जँभाई लेना।
जई-स्त्री० [हिं० जौ] १ जौ की तरह का एक पौधा। २. जौ का छोटा अंकुर जो मंगल-द्रव्य माना जाता है। ३ वह फूल जिसमें कली के रूप में फल का मूल रूप भी हो। जैसे-कुम्हड़े की जई। *वि० दे० 'जयी'।
जऊ*-अव्य० दे० 'यद्यपि'।
जकंद*-स्त्री० [फा०] छलाँग।
जकंदना*-अ० [हिं० जकंद] १ कूदना। उछलना। २. टूट पड़ना।
जक*-पुं० [सं० यक्ष] १. यक्ष। २. कंजूस। कृपण।
स्त्री० [हिं० झक] [वि० जक्की] १. जिद। हठ। अड़। २. धुन। रट।
स्त्री० [फा० ज़क] १. हार। पराजय।
२. हानि। घाटा। ३. लज्जा।
जकड़ना-स० [सं० युक्त+करण] [भाव० जकड़] कसकर बाँधना या पकड़ना। अ० तनाव, सूजन आदि के कारण अंगों का हिल-डुल न सकना।
जकड़-बंद-वि० [हिं० जकड़ना+बंद] चारों ओर से अच्छी तरह बँधा हुआ।
जकना*-अ० [हिं० जक या चक] १. भौचक्का होना। २. व्यर्थ बकना।
जकात-स्त्री० [अ०] १. दान। खैरात। २. कर। महसूल।
जकित*-वि० दे० 'चकित'।
जख्म-पुं० [फा० जख्म] १. क्षत। घाव। २. मानसिक कष्ट या आघात। मुहा०--जख्म हरा हो आना=पिछला कष्ट फिर याद आना।
जख्मी-वि० [फा० जख्मी] घायल।
जखीरा-पुं० [अ० ज़खीरः] १ वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत-सी चीजें हों। २. ढेर। समूह। ३. वह स्थान जहाँ पेड़-पौधे और बीज बिकते हों।
जग-पुं० [सं० जगत्] १. संसार। दुनिया। २. संसार के लोग।
*पुं० दे० 'यज्ञ'।
जगजगा[1]-वि०=चमकीला।
जगजगाना[1]-अ० दे० जगमगाना'।
जगड्वाल-पुं० [सं०] व्यर्थ का आयोजन या आडंबर।
जगण-पुं० [सं०] पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि तथा अंत के लघु होते हैं। जैसे-रमेश।
जगत्-पुं० [सं०] संसार। दुनियाँ।
जगत-स्त्री० [सं० जगति] कूएँ के ऊपर का चबूतरा।
पुं० दे० 'जगत्'।

जगत-सेठ-पुं० [हिं० जगत+हिं० सेठ] बहुत बड़ा महाजन या सेठ।

जगती-स्त्री० [सं०] १. संसार। दुनियाँ। २. पृथ्वी। ३. जीवन।

जगदंबा-स्त्री० दे० 'जगदंबिका'।

जगदंबिका-स्त्री० [सं०] १. जगत की माता। २. दुर्गा।

जगदाधार-पुं० [सं०] ईश्वर।

जगदीश-पुं० [सं०] परमेश्वर।

जगद्गुरु-पुं० [सं०] १. परमेश्वर। २. अनेक देशों में अत्यन्त पूज्य और मान्य व्यक्ति।

जगद्धात्री-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

जगद्वंद्य-वि० [सं०] जिसकी वन्दना सारा जगत करे। संसार भर में पूज्य।

जगना-अ० [सं० जागरण] १. नींद छोड़कर उठना। जागना। २. सचेत या सावधान होना। ३. देवी-देवता आदि का अपना प्रभाव दिखाना। ४. उत्तेजित होना। ५. (आग का) अच्छी तरह जलना। ६. जगमगाना। चमकना।

जगन्नाथ-पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. पुरी (उड़ीसा) के एक प्रसिद्ध देवता।

जगन्नियंता-पुं० [सं० जगन्नियंतृ] ईश्वर।

जगवंद*-वि० दे० 'जगद्वंद्य'।

जगमग(ा)-वि० [अनु०] १. जो प्रकाश पड़ने पर चमकता हो। २. चमकीला। ३. जहाँ बहुत-से दीपक या चमकते हुए पदार्थ हों।

जगमगाना-अ० [अनु०] [भाव० जगमगाहट] खूब चमकना।

जगरन*-पुं० दे० 'जागरण'।

जगर-मगर-वि० दे० 'जगमग'।

जगह-स्त्री० [फा० जायगाह] १. स्थान। स्थल। २. मौका। अवसर। ३ पद। ओहदा।

जगात†-पुं० दे० 'जकात'।

जगाना-स० [हिं० जागना] १. हिं० 'जागना' का प्रे०। सोये हुए को उठने में प्रवृत्त करना। २. होश या चेत में लाना। ३. (आग) सुलगाना। ४. ऐसा साधन करना कि यंत्र-मंत्र अपना प्रभाव दिखलावें।

जगीत*-स्त्री० दे० 'जगत'।

जघन-पुं० [सं०] १. पेड़ू। २. चूतड़।

जघन्य-वि० [सं०] बहुत बुरा या निन्दनीय। गर्हित।

जच्चा-स्त्री० [फा० ज़च्चः] प्रसूता स्त्री। यौ०-जच्चा-खाना=सूतिका-गृह। सौरी।

जच्छ*-पुं० दे० 'यक्ष'।

जज-पुं० [अं०] १. किसी प्रकार का निर्णय करनेवाला। निर्णायक। २. न्याय-विभाग का वह अधिकारी जो प्रायः जिले भर के मुकदमे सुनता या उनपर पुनर्विचार करता है।

जजमान-पुं० दे० 'यजमान'।

जजिया-पुं० [अ०] १. दंड। २. मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्मवालों पर लगनेवाला एक प्रकार का कर।

जजी-स्त्री० [अं० जज] १. जज का पद या काम। २. जज की कचहरी।

जज्ञ*-पुं० दे० 'यज्ञ'।

जटना-स० [हिं० जाट या सं० जटन ?] धोखा देकर अधिक मूल्य या कोई वस्तु लेना। ठगना।

*स० [सं० जटन] जड़ना।

जटल-स्त्री० [सं० जटिल] गप्प।

जटा-स्त्री० [सं०] १. लट के रूप में गुथे हुए सिर के बहुत बड़े बड़े बाल। २. वृक्षों की जड़ के पतले सूत। झकरा। ३. जूट। पटसन।

जटा-जूट-पुं० [सं०] १. जटा या लंबे

बालों का समूह । २. शिव की जटा ।

जटाधारी-वि० [सं०] जिसके सिर पर जटा हो ।

पुं० शिव । महादेव ।

जटाना-अ० [हिं० जटना] ठगा जाना ।

जटामासी-स्त्री० [स० जटामांसी] एक सुगन्धित वनस्पति । बाल-छड़ ।

जटित-वि० [सं०] जड़ा हुआ ।

जटिल-वि० [सं०] [भाव० जटिलता] १. जटाधारी । २. जो जल्दी समझ में न आवे । दुरूह । दुर्बोध ।

जठर-पुं० [सं०] पेट का भीतरी भाग ।

वि० १. वृद्ध । बूढ़ा । २. कठिन ।

जठराग्नि-स्त्री० [सं०] पेट में की अन्न पचानेवाली गरमी ।

जड़-वि० [सं०] १. जिसमें चेतनता न हो । चेतना-रहित । २. चेष्टा-हीन । स्तब्ध । ३. ना-समझ । मूर्ख । ४. ठढा ।

स्त्री० [सं० जटा] १. वृक्षों आदि का जमीन के अन्दर रहनेवाला वह भाग जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार मिलता है । मूल । सोर । २. नींव । बुनियाद ।

मुहा०-जड़ उखाड़ना या खोदना= १. ऐसा नष्ट करना कि फिर जल्दी न उभड़ सके । २. अपकार या अहित करना । जड़ जमना=चल या बढ़ सकने की स्थिति में होना ।

३.कारण । सबब । ४.आधार । आश्रय ।

जड़ता-स्त्री० [सं०] १. जड़ का भाव । चेतनता का विपरीत भाव । अ-चेतनता । २. मूर्खता । बेवकूफी । ३. चेष्टा न करने या स्तब्ध रहने की दशा, जो साहित्य में एक संचारी भाव है ।

जड़त्व-पुं० दे० 'जड़ता' ।

जड़ना-स० [सं० जटन] १. एक चीज़ को दूसरी चीज़ में इस प्रकार बैठाना कि वह जल्दी उखड़ या निकल न सके । २. प्रहार करना । मारना । ३. ठोंकना । ४. चुगली खाना ।

जड़वाना-स० हिं० 'जड़ना' का प्रे० ।

जड़हन-पुं० [देश०] वह धान जो पहले एक जगह बोया और तब वहाँ से उखाड़-कर दूसरी जगह रोपा जाता हो । शालि ।

जड़ाई-स्त्री० [हिं० जड़ना] जड़ने का का काम, भाव या मजदूरी ।

जड़ाऊ-वि० [हिं० जड़ना] जिसपर नगीने या रत्न जड़े हों ।

जड़ाना-स० दे० 'जड़वाना' ।

* अ० [हिं० जाड़ा] सरदी खाना ।

जड़ाव-पुं० [हिं० जड़ना] १. जड़ने की क्रिया या भाव । २. जड़ाऊ काम ।

जड़ावर-पुं० [हिं० जाड़ा] जाड़े में पहनने के गरम कपड़े ।

जड़ित*-वि० [सं० जटित] १. अच्छी तरह बैठाया या जड़ा हुआ । २. जिसमें नगीने जड़े हों । ३. अच्छी तरह बँधा या जकड़ा हुआ ।

जड़िमा-स्त्री० [सं०] जड़ता ।

जड़िया-पुं० [हिं० जड़ना] गहनों पर नगीने जड़ने का काम करनेवाला ।

जड़ी-स्त्री० [हिं० जड़] वनस्पति की वह जड़ जो औषध के काम में आती हो ।

जड़ीभूत-वि० [सं०] जो बिलकुल जड़ के समान हो गया हो । सुन्न ।

जड़ैया।-स्त्री० दे० 'जूड़ी' ।

पुं० दे० 'जड़िया' ।

जत।*-वि० [सं० यत्] जितना ।

जतन।*-पुं० दे० 'यत्न' ।

जतलाना-स० दे० 'जताना' ।

जताना-स० [सं० ज्ञात] १. बतलाना ।

परिचित कराना। २.पहले से सूचना देना।

जती-पुं० दे० 'यती'।

जतेक*-क्रि० वि० दे० 'जितना'।

जत्था-पुं० [सं०यूथ]मनुष्यों का झुंड। दल। गरोह।

जथा*-क्रि० वि० दे० 'यथा'।

स्त्री० [सं० गथ] पूँजी। धन।

जद|-क्रि० वि० दे० 'जब'।

अव्य० दे० 'यदि'।

जदपि*-क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।

जदवार-स्त्री० [अ०] निर्विषी।

जदु*-पुं० दे० 'यदु'।

जदुपति*-पुं० दे० 'यदुपति'।

जदुपुर-पुं० [सं० यदुपुर] मथुरा नगरी।

जदुराई(य)-पुं०[सं० यदुराज] श्रीकृष्ण।

जद्द|*-वि० [अ० ज़्याद.] ज्यादा।

वि० [फा० जद] प्रचंड। प्रबल।

जद्दपि|*-क्रि० वि० दे० 'यद्यपि'।

जद्दी-वि० [फा० जद] बाप-दादा के समय का।

वि० बहुत बड़ा या भारी।

जन-पुं० [सं०] १. लोक। लोग। २. प्रजा। ३. अनुयायी। अनुचर। ४. समूह। समुदाय। ५. सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।

जनक-पुं० [सं०] १. जन्मदाता। २. पिता। बाप। ३. सीता के पिता।

जनकजा-स्त्री० [सं०] सीता।

जनकौर*-पुं० [सं० जनक+पुर] १. जनकपुर। २. राजा जनक के परिवार के लोग।

जनखा-वि० [फा० ज़नख़ः] हिजड़ा। नपुंसक।

जन-गणना-स्त्री० दे० 'मनुष्य-गणना'।

जनता-स्त्री० [सं०] १. 'जन' का भाव। २. जन-समूह। ३. किसी देश या स्थान के सब या बहुत-से निवासी। सर्व-साधारण। (पब्लिक)

जनन-पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। उद्भव। २. जन्म। ३. आविर्भाव। ४. पिता।

जनना-स० [सं० जनन] १. जन्म देना। उत्पन्न करना। २. गर्भ से उत्पन्न या बाहर करना। ब्याना।

जननी-स्त्री० [सं०] १. उत्पन्न करने-वाली। (स्त्री या वस्तु) २. माता। माँ।

जननेंद्रिय-स्त्री० [सं०] भग। योनि।

जनपद-पुं० [सं०] बसा हुआ स्थान। बस्ती। आबादी।

जनप्रिय-वि० [सं०] जिससे सब लोग प्रेम रखते हों। सर्व-प्रिय।

जनम-पुं० दे० 'जन्म'।

जनम-घूँटी-स्त्री० [हिं० जनम+घूँटी] पौष्टिक ओषधियों का बना हुआ वह पेय पदार्थ जो बच्चों को जन्म के समय से एक दो वर्ष तक पिलाया जाता है।

मुहा०-(किसी बात का) जनम-घूँटी में पड़ना=जन्म से ही (किसी बात का) अभ्यास या चसका होना।

जनमना-अ० [सं० जन्म] जन्म लेना।

जनम-सँघाती|*-पुं० [हिं० जन्म+संघाती] १. वह जो जन्म से ही साथ रहा हो। २. वह जो जन्म भर साथ रहे।

जनमाना-स० [सं० जन्म] जन्म देने का प्रसव करने में सहायता देना।

जन-यात्रा-स्त्री० दे० 'जलूस'।

जनयिता-पुं० [सं० जनयितृ] पिता।

जनयित्री-स्त्री० [सं०] माता। जननी।

जन-रव-पुं० [सं०] १. किंवदंती। अफ-वाह। २. बदनामी। ३. कोलाहल। शोर।

जनवाई-स्त्री० दे० 'जनाई'।

जनवाना-स० दे० 'जनाना'।

जनवासा-पुं० [सं० जन+वास] १. सब लोगों के ठहरने या टिकने का स्थान। २. बरातियों के ठहरने का स्थान।

जन-श्रुति-स्त्री० [सं०] लोक में प्रचलित खबर। अफवाह। किंवदंती।

जन-संख्या-स्त्री० [सं०] किसी नगर या देश में बसनेवाले मनुष्यों की गिनती या तायदाद। आबादी। (पॉपुलेशन)

जन-स्थान-पुं० [सं०] १. मनुष्यों का निवास-स्थान। २. दंडकारण्य का एक पुराना प्रदेश।

जनाई-स्त्री० [हिं० जनना] १. बच्चा जनाने का काम करानेवाली स्त्री। दाई। २. बच्चा जनाने का पारिश्रमिक।

जनाउ†*-पुं० दे० 'जनाव'।

जनाजा-पुं० [अ०] अरथी या वह सन्दूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने के लिए ले जाते हैं।

जनानखाना-पुं० [फा०] घर का वह भाग जिसमें स्त्रियां रहती हैं। अन्तःपुर।

जनाना-स० [हिं० जनना] बच्चा जनने का काम कराना। सन्तान प्रसव कराना। स० दे० 'जताना'।
वि० [फा०] [स्त्री० जनानी, भाव० जनानापन] १. स्त्रियों का। स्त्री-संबंधी। २. स्त्रियों का-सा।
पुं० १ हिजड़ा। जनखा। २. अंतःपुर। जनानखाना। ३. पत्नी। जोरू।

जनाद-पुं० [अ०] महाशय।

जनार्दन-पुं० [सं०] विष्णु।

जनाश्रय-पुं० [सं०] १. धर्मशाला। २. सराय। ३. घर। मकान।

जनि-स्त्री० [सं०] १ उत्पत्ति। जन्म। २. नारी। स्त्री। ३. माता। ४. पत्नी।
*†-अव्य० मत। नहीं। न।

जनित-वि० [सं०] [स्त्री० जनिता] १. जनमा हुआ। उत्पन्न। २. किसी के कारण होनेवाला या किसी से उद्भूत। जैसे-रोग-जनित दुर्बलता।

जनित्री-स्त्री० [सं०] माता। माँ।

जनियाँ-स्त्री० दे० 'जानी'।

जनी-स्त्री० [सं० जन] १. दासी। अनुचरी। २. स्त्री। ३. माता। ४. बेटी।

जनु-क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो। (उत्प्रेक्षावाचक)

जनून-पुं० [अ०] पागलपन। उन्माद।

जनेऊ†-पुं० [सं० यज्ञ] १. यज्ञोपवीत। ब्रह्मसूत्र। २. यज्ञोपवीत संस्कार।

जनेत-स्त्री० दे० 'बरात'।

जनेव*-पुं० दे० 'जनेऊ'।

जनैया-वि० [हिं०जानना+ऐया (प्रत्य०)] जाननेवाला। जानकार।

जनो†-क्रि० वि० [हिं० जानना] मानो।

जन्म-पुं० [सं०] १. गर्भ से निकलकर जीवन धारण करना। उत्पत्ति। पैदाइश। २. अस्तित्व में आना। आविर्भाव। ३. सारा जीवन। जिंदगी। ४. आयु। जीवन-काल। जैसे-जन्म भर।

जन्म-कुंडली-स्त्री० [सं०] वह चक्र जिसमें किसी के जन्म-समय के ग्रहों की स्थिति लिखी रहती है। (फलित ज्योतिष)

जन्मना-क्रि० वि० [सं०] जन्म से। जैसे-जन्मना जाति मानना।
अ० [सं० जन्म] १. जन्म लेना। पैदा होना। २. अस्तित्व में आना। आविर्भूत होना।

जन्म-पंजी-स्त्री० [सं०] स्थानिक परिषदों की वह पंजी जिसमें किसी क्षेत्र

में जन्म लेनेवाले बच्चों का जन्म-समय, पिता का नाम, जन्म-स्थान आदि बातें लिखी जाती हैं। (बर्थ रजिस्टर)

जन्म-पत्री-स्त्री० [सं०] वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी के जीवन-काल के ग्रहों की स्थितियों और उनके फलों आदि का उल्लेख रहता है।

जन्म-भूमि-स्त्री० [सं०] वह स्थान (या देश) जहां किसी का जन्म हुआ हो।

जन्म-सिद्ध-वि० [सं०] जिसकी सिद्धि जन्म से ही हो। जन्म-मात्र में प्राप्त। जैसे-जन्म-सिद्ध अधिकार।

जन्मांतर-पुं० [सं०] दूसरा जन्म।

जन्मा-पुं० [सं० जन्मन्] वह जिसका जन्म हुआ हो। (समास के अंत में) वि० जो पैदा हुआ हो। उत्पन्न।

जन्माना-स० [हिं० जन्मना] उत्पन्न करना। जन्म देना।

जन्मोत्सव-पुं० [सं०] किसी के जन्म के समय या जन्म-दिन पर होनेवाला उत्सव।

जन्य-पुं० [सं०] [स्त्री० जन्या] १. साधारण मनुष्य। २. राष्ट्र। ३. पुत्र। बेटा। ४. पिता। ५. जन्म। वि० १. जन-संबंधी। २. राष्ट्रिय। जातीय। ३. जो किसी से उत्पन्न हुआ हो। उद्भूत। जैसे रोग-जन्य दुर्बलता।

जन्हु-पुं० दे० 'जह्नु'।

जप-पुं० [सं०] किसी मंत्र, नाम या वाक्य का बार बार किया जानेवाला उच्चारण।

जप-तप-पुं० [हिं० जप+तप] पूजा, जप और पाठ आदि। पूजा-पाठ।

जपना-स० [सं० जपन] १. कोई नाम, वाक्य या शब्द बार बार कुछ देर तक कहना या रटना। जप करना। २.अनुचित रूप से दूसरे की चीज ले लेना।

जपनी-स्त्री० [हिं० जपना] १.जप-माला। २ गोमुखी।

जप-माला-स्त्री० [सं०] वह माला जिसे हाथ में रखकर जप करते हैं।

जपा-स्त्री० [सं०] जवा। अड़हुल। पुं० [हिं० जप] जपनेवाला।

जपिया(पी)-वि० [हिं० जप] जपने या जप करनेवाला।

जप्त-वि० दे० 'जब्त'।

जफील-स्त्री० [क्रि०जफीलना] दे०'सीटी'।

जब-क्रि०वि० [सं० यावत्] जिस समय। मुहा०-जब जब=जब कभी। जिस जिस समय। जब तब=कभी कभी। जब देखो, तब=प्राय। अक्सर।

जबड़ा-पुं० [सं० जंभ] मुँह में ऊपर-नीचे की वे हड्डियां जिनमें दाँत उगे होते हैं। कल्ला।

जबर-वि० [फा० ज़बर] १. बलवान्। २. पक्का। दृढ़।

जबरदस्त-वि० [फा०] [संज्ञा जबरदस्ती] १. बलवान्। २. दृढ। मजबूत।

जबरदस्ती-स्त्री० [फा०] अत्याचार। बल-प्रयोग। क्रि० वि० बलपूर्वक।

ज़बह-पुं० [अ०] पशु या पक्षी का गला काटकर प्राण लेने की क्रिया।

जबहा-पुं० [?] जीवट। साहस।

ज़बान-स्त्री० [फा०] १. जीभ। जिह्वा। मुहा०-ज़बान पर आना=मुँह से निकलना। ज़बान में लगाम न होना=सोच समझकर बोलने का ज्ञान न होना। दबी जबान से बोलना या कहना=अस्पष्ट रूप से या धीरे से बोलना।

विशेष दे० 'जीभ' के मुहा०।
यौ०-बे-ज़बान=बहुत सीधा।
२. बात। बोल। ३. प्रतिज्ञा। ४. भाषा।

जबान-दराज़-वि० [फा०] [संज्ञा जबान-दराजी] बढ़-बढ़कर अनुचित बातें कहनेवाला।

जबान-बंदी-स्त्री० [फा०] १. किसी घटना के संबंध में लिखा जानेवाला इज़हार या गवाही। २. मौन। चुप्पी। ३. चुप रहने या न बोलने की आज्ञा।

जबानी-वि० [हिं० ज़बान] १. जो केवल जबान से कहा गया हो। मौखिक। २. जो कहा तो गया हो, पर लिखित न हो। मौखिक।

जब्त-पुं० [अ०] किसी अपराध में राज्य के द्वारा हरण किया हुआ। सरकार द्वारा छीना हुआ। जैसे-मकान जब्त होना।

जब्ती-स्त्री० [अ० ज़ब्त] जब्त होने की क्रिया या भाव।

जब्र-पुं० [अ०] ज्यादती। सख्ती।

जभी-क्रि० वि० [हिं० जब+ही (प्रत्य०)] १ जिस समय ही। २. ज्योंही।

जम-पुं० दे० 'यम'।

जम-कात(र)*-पुं० [सं० यम+हिं० कातर] पानी का भँवर।
स्त्री० [सं० यम+कर्त्तरी] १. यम का खाँड़ा। २. खाँड़ा।

जमघंट-पुं० दे० 'यमघंट'।

जमघट-पुं० [हिं० जमना+घट्ट] मनुष्यों की भीड़-भाड़। जमावड़ा।

जम-डाढ़-स्त्री० [सं० यम+डाढ़] कटारी की तरह का एक हथियार।

जमधर-पुं० दे० 'जम-डाढ़'।

जमन*-पुं० दे० 'यवन'।

जमना-अ० [सं० यमन] १. तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना। जैसे-दही जमना। २ अच्छी तरह बैठना। ३. स्थिर या निश्चल होना। ४. जमा या इकट्ठा होना। ५. हाथ से काम करने का पूरा अभ्यास होना। ६. मानव समाज के सामने होनेवाले काम का अच्छी तरह सम्पन्न होना। जैसे-गाना जमना। ७. काम का अच्छी तरह चलने योग्य होना।
अ० [सं० जन्म+ना (प्रत्य०)] उगना। उपजना। जैसे-घास या बाल जमना।
स्त्री० दे० 'यमुना'।

जमनिका*-स्त्री० [सं० यवनिका] १. यवनिका। परदा। २. काई। ३. मैल।

जमवट-स्त्री० [हिं० जमना] काठ का वह चक्कर जो कूआँ बनाने के समय उसके तल में रखा जाता है।

जम-वार-पु०[सं० यमद्वार] यम का द्वार।

जमा-वि० [अ०] १. संग्रह किया हुआ। एकत्र। इकट्ठा। २. सब मिलाकर। ३. किसी खाते में आय-पक्ष में लिखा हुआ (धन या पदार्थ)।
स्त्री० [अ०] १. मूल-धन। पूँजी। २. धन। रुपया-पैसा। ३. भूमि-कर। ४. खाते का वह अंग या पक्ष जिसमें आया हुआ धन या माल लिखा जाता है।

जमाई-पुं० [सं० जामातृ] दामाद।
स्त्री० [हिं० जमना] जमने या जमाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जमा-खर्च-पुं० [फा० जमा+खर्च] १. आय और व्यय। २. किसी के यहाँ से आई हुई रकम जमा करके उसके नाम पड़ी हुई रकम का हिसाब पूरा करना।

जमात-स्त्री० [अ० जमाअत] १. मनुष्यों का समूह। २. कक्षा। श्रेणी। दरजा।

जमादार-पुं० [फा०] [भाव जमादारी]

सिपाहियों आदि का सरदार।

जमानत-स्त्री० [अ०] किसी व्यक्ति या कार्य की वह जिम्मेदारी जो जबानी, कुछ लिखकर अथवा कुछ रुपये जमा करके अपने ऊपर ली जाती है। जामिनी।

जमानत-नामा-पुं० [अ०+फा०] वह कागज जो किसी की जमानत करते समय लिखा जाता है।

जमाना-स० हिं० 'जमना' का स०। पुं० [फा० ज़मानः] १. समय। काल। वक्त। २. बहुत अधिक समय। मुद्दत। ३. प्रताप या गौरव के दिन। ४. संसार।

जमा-बंदी-स्त्री० [फा०] पटवारी का वह खाता, जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी रहती हैं।

जमा-मार-वि० [हिं० जमा+मारना] दूसरों का माल दबा रखनेवाला।

जमाल-गोटा-पुं० [सं० जयपाल] एक पौधा जिसके बीज अत्यन्त रेचक होते हैं।

जमाव-पुं० [हिं० जमाना] १. जमने या जमाने का भाव। २. दे० 'जमावड़ा'।

जमावट-स्त्री० दे० 'जमाव'।

जमावड़ा-पुं० [हिं० जमना = एकत्र होना] बहुत-से लोगों का एक जगह इकट्ठा होना। भीड़।

जमीकंद-पुं० दे० 'सूरन'।

जमींदार-पुं० [फा०] वह जो जमीन का मालिक हो और किसानों को लगान पर जोतने-बोने के लिए खेत देता हो।

जमींदारी-स्त्री० [फा०] १ जमींदार की जमीन। २. जमींदार का पद।

जमीन-स्त्री० [फा०] १. पृथ्वी (ग्रह)। २. (जल से भिन्न) पृथ्वी का वह ऊपरी भाग, जिसपर हम सब लोग रहते हैं। भूमि। धरती।

मुहा०-जमीन-आसमान एक करना=बड़े बड़े प्रयत्न करना। जमीन-आसमान का फरक=बहुत अधिक अंतर। जमीन देखना=१. कुश्ती में पटका जाना। २. नीचा देखना।

३. वह आधार जिसपर बेल-बूटे आदि बने हों। ४. वह वस्तु जिसका उपयोग किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार-रूप से हुआ हो। ५. चित्र बनाने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह या तल।

मुहा०-जमीन बाँधना=अस्तर या मसाला लगाकर चित्र के लिए सतह तैयार करना।

६. आधार-पृष्ठ। ७. डौल। उपक्रम।

जमुहाना।-अ० दे० 'जँभाना'।

जमूरक(रा)-पुं० [फा० जंबूरक] एक प्रकार की छोटी तोप।

जमोग-पुं० [हिं० जमोगना] जमोगने अर्थात् स्वीकार करने या कराने की क्रिया।

जमोगना।-स० [अ० जमा+योग] १. आय-व्यय की जाँच करना। २. भार या देन से मुक्त होने के लिए दूसरे को वह भार या देन सौंपना। सरेखना। (एसाइन्मेन्ट)

जमौआ-वि० [हिं० जमाना] जमाकर बनाया हुआ। जैसे-जमौआ कम्बल।

जम्हाना-अ० दे० 'जँभाना'।

जयंत-वि० [सं०] [स्त्री० जयंती] १. विजयी। २. बहुरूपिया। पुं० [सं०] १. रुद्र। २. इंद्र के पुत्र उपेंद्र का एक नाम। ३. स्कंद। कार्त्तिकेय।

जयंती-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. पार्वती। ३. ध्वजा। पताका। ४. किसी महापुरुष या संस्था की जन्म-तिथि अथवा किसी

महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने की वार्षिक तिथि पर होनेवाला उत्सव। (जुबिली) ६. जैत नामक बड़ा पेड़। ७. दे० 'जई'।

जय-स्त्री० [सं०] १. युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों का पराभव। जीत।
मुहा०-जय मनाना=विजय या समृद्धि की कामना करना।
पुं० १. विष्णु के एक पार्षद का नाम। २. महाभारत का पुराना नाम।

जय-जयकार-स्त्री० [सं०] किसी की जय मनाने का घोष।

जयजीव*-पुं० [हिं० जय+जी] एक प्रकार का अभिवादन, जिसका अर्थ है—जय हो और जीते रहें।

जयति-अव्य० [सं०] जय हो।

जयना*-अ० [सं० जयन्] जीतना।

जयपत्र-पुं० [सं०] १. वह पत्र जो हारा हुआ पुरुष अपनी हार के प्रमाण-स्वरूप विजयी को लिखकर देता है। विजय-पत्र। २. वह पत्र जो किसी के किसी विवाद में विजयी होने पर लिखा जाता है। डिगरी। (डिक्री)

जयफर*-पुं० दे० 'जायफल'।

जय-माल-स्त्री० [सं० जयमाला] १. किसी के विजयी होने पर उसे पहनाई जानेवाली माला। २. वह माला जो विवाह या स्वयंवर के समय कन्या अपने भावी पति को पहनाती है।

जय-स्तंभ-पुं० [सं०] युद्ध में किसी की विजय का स्मारक-स्तंभ। धरहरा।

जया-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. पार्वती। ३. हरी दूब। ४. पताका। ध्वजा।
वि० जय दिलानेवाली।

जयी-वि० [सं० जयिन्] विजयी।

जर*-पुं० [सं० जरा] बुढ़ापा।
पुं० [फा० ज़र] १. सोना। स्वर्ण। २. धन। दौलत।

जरकटी-पुं० [देश०] एक तरह की शिकारी चिड़िया।

जरकस(ी)*-वि० [फा० जरकश] जिसपर सोने के तार आदि लगे हों।

जरठ-वि० [सं०] १. कठोर। कड़ा। २. वृद्ध। बुड्ढा। ३. जीर्ण। पुराना।

जरत्-वि० [सं०] [स्त्री० जरती] १. बुड्ढा। वृद्ध। २. पुराना। प्राचीन।

जरतार*-पुं० दे० 'जरी'।

जरद-वि० [फा० जर्द] पीला। पीत।

जरदा-पुं० [फा० ज़र्दः] १. चावलों से बननेवाला एक व्यंजन। २. पान के साथ खाने की सुगंधित सुरती। ३. पीले रंग का घोड़ा।

जरदी-स्त्री० [फा०] १. पीलापन। २. अंडे के अन्दर का पीला गूदा।

जरदोज-पुं० [फा०] जरदोजी का काम करनेवाला।

जरदोजी-स्त्री० [फा०] कपड़े पर सलमे-सितारे आदि से किया हुआ काम।

जरन*-स्त्री० दे० 'जलन'।

जरना*-अ० दे० 'जलना'।
स० दे० 'जड़ना'।

जरनि*-स्त्री० दे० 'जलन'।

जरब-स्त्री० [अ०] १. आघात। चोट। २. गुणा। (गणित)

जर-बफ्त-पुं० [फा०] वह रेशमी कपड़ा जिसमें कलाबत्तू के बेल-बूटे हों।

जरबाफी-वि० दे० 'जरदोजी'।

जरबीला*-वि० [फा०जरब] भड़कीला।

जरर-पुं० [अ०] १. हानि। नुकसान। क्षति। २. आघात। चोट।

जरवारा*-वि० [फा० जर+हिं० वाला] धनी। सम्पन्न।
जरा-स्त्री० [सं०] बुढ़ापा।
क्रि० वि० [अ० ज़र्रः] थोड़ा। कम।
जराऊ*-वि० दे० 'जड़ाऊ'।
जरा-ग्रस्त-वि० [सं०] वृद्ध। बुड्ढा।
जराना*-स० दे० 'जलाना'।
जरायु-पुं० [सं०] १. वह झिल्ली, जिसमें गर्भ से उत्पन्न होनेवाला बच्चा बँधा रहता है। आँवल। खेड़ी। उल्व। २. गर्भाशय।
जरायुज-पुं० [सं०] वह प्राणी जो जरायु में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो। (पिंडज का एक भेद)
जरिया*-पुं० दे० 'जड़िया'।
वि० [हिं० जलना] जो जलाकर बनाया गया हो। जैसे-जरिया नमक।
पुं० [अ० ज़रीअ.] १. संबंध। लगाव। २. सबब। हेतु। ३. साधन।
जरी-स्त्री० [फा०] १.बादले से बुना हुआ ताश नामक कपड़ा। २. सोने के वे तार, जिनसे कपड़ों पर बेल-बूटे बनते हैं।
जरीब-स्त्री०[फा०] भूमि नापने की जंजीर।
जरूर-क्रि० वि० [अ०] अवश्य।
जरूरत-स्त्री० [अ०] आवश्यकता।
जरूरी-वि० [अ० से फा०] आवश्यक।
जरोट*†-वि० [हिं० जड़ना] जड़ाऊ।
जर्जर-वि० [सं०] १. जो पुराना होने के कारण काम का न रह गया हो। जीर्ण। २.टूटा-फूटा। खंडित। ३.वृद्ध। बुड्ढा।
जर्जरित-वि० दे० 'जर्जर'।
जर्द-वि० [फा०] पीला। पीत।
जर्दा-पुं० दे० 'जरदा'।
जर्दी-स्त्री० [फा०] पीलापन।
जर्राह-पुं० [अ०] [संज्ञा जर्राही] फोड़ों आदि की चीर-फाड़ करनेवाला। शस्त्र-चिकित्सक।
जल-पुं० [सं०] पानी।
जल-अलि-पुं० दे० 'जल-भौंरा'।
जल-कर-पुं० [हिं० जल+कर] १. जलाशयों में होनेवाले पदार्थ। जैसे-मछली, कमल-गट्टा आदि। २ ऐसे पदार्थों पर लगनेवाला कर।
जल-कल-स्त्री० [सं० जल+हिं० कल] १. नगर के सब घरों में नल या कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला विभाग। २. पानी देनेवाली कल। ३. आग बुझाने का दम-कला।
जल-क्रीड़ा-स्त्री० [सं०] वे क्रीड़ाएँ या खेल जो जलाशय में किये जाते हैं।
जल-घड़ी-स्त्री० [हिं० जल+घड़ी] एक प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे हुए जल में एक छोटे छेदवाली कटोरी रहती थी; और उस कटोरी में भरे हुए जल के परिमाण से समय का अनुमान किया जाता था।
जल-चर-पुं० [सं०] [स्त्री० जलचरी] जल में रहनेवाले जन्तु।
जलचारी-पुं० दे० 'जलचर'।
जलज-वि० [सं०] जो जल में उत्पन्न हो।
पुं० [सं०] १. कमल। २. शंख। ३. मछली। ४. जल-जंतु। ५. मोती।
जल-जान*-पुं० दे० 'जल-यान'।
जल-डमरूमध्य-पुं० [सं०] भूगोल में जल की वह पतली प्रणाली जो दो बड़े समुद्रों या खाड़ियों के मध्य में हो और दोनों को मिलाती हो।
जल-तरंग-पुं० [सं०] जल से भरी कटोरियों पर आघात करके बजाया जानेवाला बाजा।

जल-त्रास-पुं० दे० 'जलातंक'।

जल-थंभ-पुं० [सं० जल-स्तंभ] १. मंत्रों आदि से जल का स्तंभन करने या रोकने की क्रिया। २. दे० 'जल-स्तंभ'।

जलद-वि० [सं०] जल देनेवाला। पुं० [सं०] १. मेघ। बादल। २. वंशज, जो पितरों को जल देता है।

जलदागम-पुं० [सं०] १. वर्षा ऋतु का आगमन या आरम्भ। २. आकाश में बादलों का घिरना।

जल-धर-पुं०[सं०] १.बादल। २.समुद्र।

जलधरी-स्त्री० [सं०] वह अर्घा जिसमें शिव-लिंग रहता है। जलहरी।

जलधि-पुं० [सं०] समुद्र।

जलन-स्त्री० [हिं० जलना] १. जलने की पीड़ा या कष्ट। दाह। २. ईर्ष्या के कारण होनेवाला मानसिक कष्ट।

जलना-अ० [सं० ज्वलन] १. आग के स्पर्श से अंगारे या लपट के रूप में होना। दग्ध होना। बलना। २.आग पर रक्खे जाने के कारण भाप आदि के रूप में होना। ३ अग्नि के स्पर्श से किसी अंग का पीड़ित होना। झुलसना।

मुहा०-जले पर नमक छिड़कना= दुखी को और दुःख देना।

४. ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण मन में बहुत दुखी होना।

मुहा०-जली-कटी सुनाना=डाह या क्रोध आदि के कारण कड़वी बातें कहना।

जल-पक्षी-पुं० [सं० जलपक्षिन्] जल के आस-पास रहनेवाले पक्षी।

जलपना-अ० [सं० जल्पन] १. लंबी-चौड़ी बातें करना। २. बकवाद करना।

जल-पान-पुं० [सं०] पूरे भोजन से पहले किया जानेवाला थोड़ा और हलका भोजन। कलेवा। नाशता।

जल-प्रपात-पुं० [सं०] नदी, नाले आदि का पहाड़ पर से नीचे गिरनेवाला रूप।

जल-प्रवाह-पुं० [सं०] १. पानी का बहाव। २. कोई चीज नदी में डालकर बहाना।

जल-प्लावन-पुं० [सं०] १. पानी की बाढ़। २. एक प्रकार का प्रलय।

जल-भौंरा-पुं० [हिं० जल+भौंरा] पानी पर चलनेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा। भौंतुआ।

जल-मानुष-पुं० [सं०] [स्त्री० जल-मानुषी] एक कल्पित जल-जन्तु जिसका कमर से ऊपर का भाग मनुष्य का-सा और नीचे का मछली का-सा माना जाता है।

जल-यान-पुं० [सं०] जल में चलनेवाला यान या सवारी। जैसे-नाव या जहाज।

जलरुह-पुं० [सं०] कमल।

जलवाना-स० हिं० 'जलाना' का प्रे०।

जल-विहार-पुं० [सं०] १. नदी, तालाब आदि में नाव पर घूमकर सैर करना। २ दे० 'जल-क्रीड़ा'।

जल-शायी-पुं० [सं०जलशायिन्] विष्णु।

जलसा-पुं० [अ० जल्सः] १. खाने-पीने या गाने-बजाने का समारोह। २. सभा-समिति आदि का बड़ा अधिवेशन। बैठक।

जल-सेना-स्त्री० [सं०] समुद्र में रहकर जहाजों पर से लड़नेवाली फौज।

जल-स्तंभ-पुं० [सं०] एक प्राकृतिक घटना जिसमें जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तम्भ का रूप धारण कर लेता है। सूँड़ी।

जलहर-वि० [हिं० जल] जल से भरा हुआ। जल-मय।

जलहरी-स्त्री० दे० 'जलधरी'।

जलांजलि-स्त्री० [सं०] मृतक के उद्देश्य से दी जानेवाली जल की अंजलि।

जलातंक-पुं० [सं०] जल से लगनेवाला वह डर जो कुत्ते आदि के काटने पर होता है। (हाइड्रोफोबिया)

जलाद*-पुं० दे० 'जल्लाद'।

जलाना-स० [हिं० 'जलना' का स०] १. प्रज्वलित करना। सुलगाना। २. आग पर रखकर भाप आदि के रूप में लाना या उड़ाना। ३. किसी के मन में संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलापा-पुं०[हिं०जलाना] ईर्ष्या। जलन।

जलावतरण-पुं० [सं०] १. जल में उतरना। २. नये जहाज का तैयार होने पर पहले-पहल पानी या समुद्र में उतरना या पहुँचना।

जलावन-पुं० [हिं० जलाना] १. ईंधन। २. किसी वस्तु का वह अंश जो जलाये जाने पर कम हो जाता है।

जलावर्त्त-पुं० [सं०] १. पानी का भँवर। नाल। २. एक प्रकार का मेघ।

जलाशय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ पानी जमा होकर ठहरा या बना रहता हो। जैसे-झील, नदी आदि।

जलाहल-वि० [हिं०जलाजल] जल-मय।

जलूस-पुं० [अ०] बहुत-से लोगों का किसी सवारी के साथ या प्रदर्शन के लिए निकलना। जन-यात्रा।

जलेबी-स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार की मिठाई। २. गोल घेरा। कुंडली।

जलोदर-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें पेट के भीतरी भाग में पानी भरने से वह फूल जाता है।

जल्द-क्रि० वि० दे० 'जल्दी'।

जल्दबाज-वि० [फा०] [संज्ञा जल्दबाजी] हर काम में बहुत जल्दी मचानेवाला।

जल्दी-स्त्री० [अ०] शीघ्रता। क्रि० वि० [अ० जल्द] १. शीघ्र। चट-पट। २. तेजी या फुरती से।

जल्प-पुं० [सं०] १. कथन। कहना। २. बकवाद। प्रलाप।

जल्पक-वि० [सं०] बकवादी। वाचाल।

जल्पना*-अ० [सं० जल्पन] १. व्यर्थ बक बक करना। २. डींग मारना।

जल्लाद-पुं० [अ०] १. प्राण-दंड पाये हुए अपराधियों को मार डालनेवाला-पुरुष। वधिक। बधुआ। २. क्रूर व्यक्ति।

जवनिका-स्त्री० दे० 'यवनिका'।

जवा-स्त्री० दे० 'जपा'। पुं० [सं० यव] लहसुन का दाना।

जवाई-स्त्री० [हिं० जाना] जाने की क्रिया या भाव। गमन।

जवान-वि० [फा०] १. युवा। तरुण। २. वीर। बहादुर। पुं० १. पुरुष। आदमी। २. सिपाही।

जवानी-स्त्री० [फा०] यौवन।

जवाब-पुं० [अ०] १. कोई प्रश्न होने पर उसके समाधान के लिए कही जानेवाली बात। उत्तर। २. किसी काम का बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला काम। ३. मुकाबले या बराबरी की चीज। जोड़। ४. नौकरी से अलग किया जाना।

जवाबदार-वि० दे० 'जवाब-देह'।

जवाब-दावा-पुं० [अ०] वह पत्र या लेख जो वादी के अभियोग के उत्तर में प्रतिवादी न्यायालय में देता है।

जवाब-देह-वि० [फा०] [संज्ञा जवाब-देही] उत्तरदाता। जिम्मेदार।

जवाबी-वि० [फा०] १. जवाब का।

जैसे-जवाबी कार्ड। २. जिसका जवाब देना हो। ३. जो किसी के जवाब में हो।

जवाल-पुं० [अ० ज़वाल] १. अवनति। पतन। २. जंजाल। आफत। झंझट।

जवाहर-पुं० [अ०] रत्न। मणि।

जवाहरात-पुं० अ० 'जवाहर' का बहु०।

जवाहरी*-पुं० दे० 'जौहरी'।

जवाहिर-पुं० दे० 'जवाहर'।

जवैया-वि० [हिं० जाना] जानेवाला।

जशन-पुं० [फा०] नाच-रंग आदि का बहुत बड़ा समारोह या जलसा।

जस*-क्रि० वि० [सं० यथा] जैसा। पुं० दे० 'यश'।

जसोवै*-स्त्री० दे० 'यशोदा'।

जस्ता-पुं० [सं० जसद] मटमैले रंग की एक प्रसिद्ध धातु।

जहँ-क्रि० वि० दे० 'जहाँ'।

जहँड़ना-अ० [सं० जहन] १. घाटा उठाना। २. धोखे में आना। ठगा जाना।

जहतिया-पुं० [हिं० जगात] जगात या कर उगाहनेवाला।

जहदजहल्लक्षणा-स्त्री० [सं०] लक्षणा का वह प्रकार जिसमें वक्ता के शब्दों के कई अर्थों में से केवल एक अर्थ या भाव ग्रहण किया जाता है।

जहद्दम*-पुं० दे० जहन्नुम'।

जहना*-अ० [सं० जहन] १. त्यागना। छोड़ना। २. नष्ट करना।

जहन्नुम-पुं० [अ०] नरक। दोजख।

जहमत-स्त्री० [अ०] १. आपत्ति। मुसीबत। २. झंझट। बखेड़ा।

जहर-स्त्री० [अ० ज़ह्र] १ विष। गरल। मुहा०-जहर उगलना=लगती हुई बहुत कटु बात कहना। जहर का घूँट पीकर रह जाना=बहुत अधिक क्रोध आने पर भी चुप रह जाना। जहर का बुझाया हुआ=बहुत अधिक दुष्ट या पाजी। २. बहुत अधिक अप्रिय बात या काम। वि० १. मार डालनेवाला। घातक। २. बहुत हानि पहुँचानेवाला। (खाद्य पदार्थ) *पुं० दे० 'जौहर'।

जहरबाद-पुं० [फा०] एक तरह का जहरीला बड़ा फोड़ा।

जहर-मोहरा-पुं० [फा० ज़ह्रमुहरः] एक काला पत्थर जिसमें शरीर में से साँप का विष सोखने का गुण माना जाता है।

जहरी(ला)-वि० [हिं० जहर] जिसमें जहर हो। विषैला।

जहाँ-क्रि० वि० [सं० यत्र] जिस स्थान पर। जिस जगह। मुहा०-जहाँ का तहाँ=जिस जगह था या हो, उसी जगह पर। जहाँ तहाँ= १. इधर-उधर। २. जगह जगह।

जहाँगीरी-स्त्री० [फा०] हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना।

जहाज-पुं० [अ०] [वि० जहाजी] समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव।

जहाद-पुं० [अ० जिहाद] मुसलमानों का वह धर्म-युद्ध जो इस्लाम का प्रचार या रक्षा करने के लिए किया जाता हो।

जहान-पुं० [फा०] संसार। जगत्।

जहिया*।-क्रि०वि०[सं०यद्] जिस दिन।

जहीं-अव्य० [सं० यत्र] जहां ही। * अव्य दे० ज्यों ही'।

जहेज-पुं० दे० 'दहेज'।

जह्नु-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. एक राजर्षि जिन्होंने गंगा को पीकर कान से निकाला था। (इसी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा है।)

जह्नु-तनया(नंदिनी)-स्त्री० [सं०] गंगा।

भागीरथी ।

जाँग-पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।

जाँगर-पुं० [हिं० जान या जाँघ] शरीर का बल । बूता ।

जांगल-पुं० [सं०] ऊसर देश ।
वि० जंगल-संबंधी । जंगली ।

जाँगलू-वि० [फा० जंगल] जंगली ।

जाँघ-स्त्री० [सं० जंघा] घुटनों के ऊपर और कमर के नीचे का अंग । रान ।

जाँघिया-पुं० [हिं० जाँघ+इया (प्रत्य०)] जांघों में पहनने का घुटनों तक का एक पहनावा । काछा ।

जाँघिल।-वि० [हिं० जाँघ] जिसका पैर, चलने में, लचकता हो । (पशु)
पुं० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया ।

जाँच-स्त्री० [हिं० जांचना] १. जांचने की क्रिया या भाव । २. यह देखना कि कोई काम ठीक तरह से हुआ है या नहीं । (चेक) ३. घटना आदि के कारणों या वास्तविक स्वरूप अथवा तथ्य का पता लगाना । अनुसन्धान । (एन्क्वायरी)

जाँचक*-पुं० दे० 'याचक' ।
पुं० [हिं० जांच] जाँच, परीक्षा या आलोचना करनेवाला ।

जाँचना-स० [सं० याचन] १. यह देखना कि कोई काम ठीक हुआ है या नहीं । । २. प्रार्थना करना । ३. माँगना ।

जाँजरा*-वि० दे० 'जाजरा' ।

जाँझ*-स्त्री० [सं० झंझा] वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो ।

जांतव-वि० [सं० जान्तव] १. जंतु-संबंधी । जीव-जंतुओं का । २. जीव-जन्तुओं से उत्पन्न या मिलनेवाला । जैसे-जान्तव विष ।

जाँता-पुं० [सं० यंत्र] आटा पीसने की बड़ी चक्की ।

जाँबा।*-पुं० दे० 'जामुन' ।

जांबवान-पुं० [सं०] सुग्रीव का मंत्री जो राम की ओर से रावण से लड़ा था ।

जाँवत*-अव्य० दे० 'यावत्' ।

जाँवर।*-पुं० [हिं० जाना] जाना ।

जा-स्त्री० [सं०] १. माता । माँ । २. देवर की स्त्री । देवरानी ।
वि० स्त्री० उत्पन्न । संभूत । (यौ० के अन्त में जैसे-जनक-जा ।)
*। सर्व० [हिं० जो] जिस ।
वि० [फा०] मुनासिब । उचित ।

जाइ।*-वि० [हिं० जाना] व्यर्थ। वृथा ।
वि० [फा० जा] उचित । वाजिब ।

जाई-स्त्री० [सं० जा] बेटी । पुत्री ।

जाउनि*-स्त्री० दे० 'जामुन' ।

जाक*-पुं० [सं० यक्ष] यक्ष ।

जाकड़-पुं० [हिं० जाकर] इस शर्त पर कोई चीज ले आना कि यदि यह पसन्द न होगी तो फेर दी जायगी । 'पक्का' का उलटा ।

जाकेट-स्त्री० [अं० जैकेट] एक प्रकार की कुरती या सदरी ।

जाखिनी*-स्त्री० दे० 'यक्षिणी' ।

जाग-पुं० [सं० यज्ञ] यज्ञ ।
।स्त्री० [हिं० जगह] जगह । स्थान ।
स्त्री० [हिं० जागना] जागरण ।

जागता-वि० [हिं० जागना] १. अपनी महिमा या प्रभाव तुरन्त और प्रत्यक्ष दिखानेवाला । जैसे-जागता जादू, जागती ज्योति । २. प्रकाशमान्' ।

जागतिक-वि० [सं०] जगत या संसार से सम्बन्ध रखनेवाला । संसार का । जैसे-जागतिक स्थिति ।

जागना-अ० [सं० जागरण] १. सोकर

उठना। नींद त्यागना। २. निद्रा-रहित रहना। जाग्रत होना। ३. सजग या सावधान होना। ४. उदित होना। ५. प्रसिद्ध या विख्यात होना। ६. जलना।

जागरण-पुं० [सं०] १. जागना। २. किसी उत्सव या पर्व पर रात भर जागना। जागा।

जागरित-पुं० [सं०] जागे या होश में रहने की अवस्था।

जागरूक-पुं० [सं०] १. वह जो जाग्रत अवस्था में हो। २. रखवाला। पहरेदार।

जागरूप-वि० [हिं० जागना+रूप] जो बिलकुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।

जागर्ति-स्त्री० [सं०] १. जागरण। जाग्रति। २. चेतनता।

जागा-पुं० दे० 'जागरण' २.।

जागी*-पुं० [सं० यज्ञ] भाट।

जागीर-स्त्री० [फा०] [वि० जागीरी] राज्य की ओर से मिली हुई भूमि या प्रदेश।

जागीरदार-पुं० [फा०] वह जो जागीर का मालिक हो।

जागृत-वि० दे० 'जाग्रत'।

जाग्रत-वि० [सं०] १. जो जाग रहा हो। जागता हुआ। २. (शक्ति, गुण आदि) जो अपना काम कर रहा हो, निष्क्रिय न हो। 'सुप्त' का उलटा। (ऑरमेन्ट)
पुं० वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान होता रहता है।

जाग्रति-स्त्री० [सं० जाग्रत] जागरण।

जाचक*-पुं० दे० 'याचक'।

जाचना*-स० [सं० याचन] माँगना।

जाजरा*-वि० दे० 'जर्जर'।

जाजिम-स्त्री० [तु० जाजम] फर्श पर बिछाने की छपी हुई चादर।

जाज्वल्य(मान)-वि० [सं०] १. प्रज्वलित। दीप्तिमान्। २. तेजस्वी।

जाट-पुं० [?] भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति।

जाठ-पुं० [सं० यष्टि] १. वह लट्ठा जो कोल्हू की कूँडी के बीच में लगा रहता है। २. तालाब के बीच में गड़ा हुआ लट्ठा।

जाठर-वि० [सं०] १. जठर-संबंधी। जठर का। २. जठर से उत्पन्न।
पुं० १. जठर। पेट। २. भूख।

जाड़ा-पुं० [सं० जड] १. वह ऋतु जिसमें बहुत सरदी पड़ती है। शीत काल। २. सरदी। शीत। ठंढ।

जाड्य-पुं० [सं०] जड़ता।

जात-पुं० [सं०] १. जन्म। २. पुत्र। बेटा। ३. जीव। प्राणी।
वि० [स्त्री० जाता] १. उत्पन्न। जनमा हुआ। जैसे-नव जात। २. व्यक्त। प्रकट।
स्त्री० दे० 'जाति'।
स्त्री० [अ०ज़ात] १.शरीर। २. व्यक्तित्व।

जातक-पुं० [सं०] १. बच्चा। २. महात्मा बुद्ध के पूर्व-जन्मों की बौद्ध कथाएँ।

जात-कर्म्म-पुं० [सं०] बालक के जन्म के समय होनेवाला संस्कार।

जातना*-स्त्री० दे० 'यातना'।

जात-पाँत-स्त्री० [सं० जाति+पंक्ति] जाति और उपजाति के विभाग।

जाति-स्त्री० [सं०] १. जन्म। पैदाइश। २. हिन्दुओं का वह सामाजिक विभाग, जो पहले कर्म्मानुसार था, पर अब जन्मानुसार माना जाने लगा है। (कास्ट) ३. देश या वंश-परंपरा के विचार से मानव-समाज का विभाग। (रेस) ४. पदार्थों या जीव-जन्तुओं के धर्म्म, आकृति आदि की समानता के विचार से किया हुआ विभाग। कोटि। वर्ग। (जेनस)

जाति-च्युत-वि० [सं०] जाति से निकाला हुआ। जाति-बहिष्कृत।
जाति-पाँति-स्त्री० दे० 'जात-पाँत'।
जाती-स्त्री० [सं०] चमेली की जाति का एक पौधा और फूल। जाही।
वि० [अ० ज़ाती] १. व्यक्ति-गत। २. अपना। निज का।
जातीय-वि० [सं०] १. जाति-संबंधी। २ सारी जाति या राष्ट्र का। (नेशनल)
जातीयता-स्त्री० [सं०] १. 'जातीय' का भाव। २. अपनी जाति, राष्ट्र या देश की उन्नति, महत्त्व और कल्याण की प्रबल कामना का भाव।
जातुधान-पुं० [सं०] राक्षस।
जादव[1]*-पुं० दे० 'यादव'।
जादू-पुं० [फा०] १. ऐसा आश्चर्य-जनक काम जिसे लोग अलौकिक और अ-मानवी समझें। इन्द्रजाल। तिलस्म। २. वह अद्भुत खेल या कृत्य जिसका रहस्य दर्शकों की समझ में न आवे। ३. टोना। टोटका। ४. दूसरे को मोहित करने की शक्ति। मोहिनी।
जादूगर-पुं० [फा०] [भाव० जादूगरी] वह जो जादू के खेल करता हो।
जादौ[1]*-पुं० दे० 'यादव'।
जादौराय[1]*-पुं० [सं० यादव] श्रीकृष्ण।
जान-स्त्री० [सं० ज्ञान] १. ज्ञान। जानकारी। परिचय।
यौ०-**जान-पहचान**=परिचय।
२. खयाल। अनुमान।
वि० सुजान। चतुर।
* पुं० दे० 'यान'।
स्त्री० [फा०] १. प्राण। जीवन।
मुहा०-**जान के लाले पड़ना**=प्राण बचना कठिन होना। **जान खाना**=तंग या दिक करना। **जान छुड़ाना या बचाना**=किसी झंझट से अपना पीछा छुड़ाना। **जान जोखिम**=प्राण जाने का डर। **जान निकलना**=१.मरना। २.भय या चिन्ता से प्राण सूखना। **जान पर खेलना** = अपना जीवन भारी संकट में डालना। **जान से जाना**=मरना।
२. बल। शक्ति। बूता। सामर्थ्य।
मुहा०-**जान में जान आना**=विपत्ति से छुटकारा मिलने पर निश्चिन्तता होना।
३.सार। तत्व। ४.शोभा बढ़ानेवाली वस्तु।
मुहा०-**जान आना**=शोभा बढ़ना।
जानकार-वि० [हिं० जानना+कार (प्रत्य०)] [संज्ञा जानकारी] १. जानने-वाला। ज्ञाता। २. विज्ञ। चतुर।
जानकी-स्त्री० [सं०] सीता।
जानकी-जीवन-पुं० [सं०] रामचन्द्र।
जानदार-वि० [फा०] १. जिसमें जान हो। २ प्रबल। बलवान्।
जाननहार*-वि०=जाननेवाला।
जानना-स० [सं० ज्ञान] १. ज्ञान प्राप्त करना। अभिज्ञ या परिचित होना। मालूम करना। २. सूचना या खबर रखना। ३ अनुमान करना। समझना।
जानपद-वि० [सं०] १. जन-पद संबंधी। जन-पद का। २ सारे देश से संबंध रखने-वाला, पर सैनिक और धार्मिक क्षेत्रों से भिन्न। (सिविल) जैसे-जानपद सेवा (सिविल सर्विस), जानपद विधि (सिविल लॉ), जानपद न्यायालय (म्युनिसिपल कोर्ट)।
पुं० १. जनपद का निवासी। २. देश।
जान-पना[1]*-पुं० [हिं० जान+पन (प्रत्य०)] १. जानकार होने का भाव। २. बुद्धि-मत्ता। चतुराई।

जान-मनि*-पुं० [हिं० जान+मणि] ज्ञानियों में श्रेष्ठ। बहुत बड़ा ज्ञानी।
जानराय-पुं० दे० 'जान-मनि'।
जानवर-पुं० [फा०] १. प्राणी। जीव। २. पशु। हैवान।
जानहार*-वि० दे० 'जाननेवाला'।
जानहु*-अव्य० [हिं० जानना] मानों।
जाना-अ० [सं० यान=जाना] १. एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने के लिए चलना। गमन करना। २. प्रस्थान करना। मुहा०-जाने दो=ध्यान मत दो। किसी बात पर जाना=१. किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना। २. किसी बात पर ध्यान देना। ३.किसी वस्तु का अधिकार से निकलना। ४. गायब या गुम होना। खोना। ५. बीतना। गुजरना। ६. नष्ट होना। मुहा०-गया घर=दुर्दशा-प्राप्त घराना। गया-बीता=निकृष्ट। रद्दी। ७.निकलना या बहना। जैसे-खून जाना। *स० [सं० जनन] जन्म देना।
जानी-वि० [फा०] १. जान से संबंध रखनेवाला। २. जान का। यौ०-जानी दुश्मन=जान लेने को तैयार दुश्मन। जानी दोस्त=गहरा दोस्त। स्त्री० [फा० जान] प्राण-प्यारी।
जानु-पुं० [सं०] जाँघ और पिंडली के बीच का भाग। घुटना। पुं० [फा० ज़ानू] जाँघ। रान।
जानो-अव्य० [हिं० जानना] मानों। जैसे।
जाप-पुं० दे० 'जप'।
जापा-पुं० [सं०जनन] प्रसूतिका-गृह।सौरी।
जापी-पुं० [सं०] जपनेवाला।
जाफा-पुं० [अ० ज़ोफ़] १. बेहोशी। मूर्च्छा। २. चक्कर। घुमटा।
जाब्ता-पुं० [अ०] नियम। कायदा। यौ०-जाब्ता दीवानी=आर्थिक व्यवहार या लेन-देन से संबंध रखनेवाला कानून। जाब्ता फौजदारी=दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला विधान।
जाम-पुं० [सं० याम] पहर। प्रहर। पुं० [फा०] प्याला। कटोरा। वि० [अं० जैम, मि० हिं० जमना] १. अधिकता, दबाव आदि के कारण रुका हुआ। २.जिसमें चलने के लिए अवकाश न हो। जैसे-रास्ता जाम होना। ३. मैल आदि के कारण अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा, ठहरा या रुका हुआ।
जामदानी-स्त्री० [फा० जामःदानी] एक प्रकार का फूलदार कपड़ा।
जामन-पुं० [हिं० जमाना] दूध जमाकर दही बनाने के लिए उसमें डाला जानेवाला थोड़ा दही या खट्टा पदार्थ।
जामना*-अ० दे० 'जमना'।
जामा-पुं० [फा० जाम] १. पहनावा। पोशाक। २. चुननदार घेरे का एक विशेष प्रकार का पहनावा। ३ शरीर। मुहा०-जामे से बाहर होना=आपे से बाहर होना। बहुत क्रोध करना।
जामाता-पुं० [सं० जामातृ] दामाद।
जामिक*-पुं० दे० 'पहरेदार'।
जामिनदार-पुं० [अ०] जमानत करनेवाला। प्रतिभू।
जामिनी*-स्त्री० दे० 'यामिनी'। स्त्री० दे० 'जमानत'।
जामी*-स्त्री० दे० 'जमीन'।
जामुन-पुं० [सं० जंबु] एक सदा-बहार पेड़ जिसके फल बैंगनी या काले होते हैं।
जामेवार-पुं० [फा० जामः+वार] १. एक प्रकार का दुशाला जिसमें सब जगह

बेल-बूटे बने रहते हैं। २. इसी प्रकार की छींट।

जायं*-अव्य० [फा० जा] वृथा। व्यर्थ। वि० उचित। वाजिब। ठीक।

जायका-पुं० [अ०] स्वाद।

जायज-वि० [अ०] उचित। मुनासिब।

जायजा-पुं० [अ०] १. जांच-पड़ताल। २. हाजिरी।

जायदाद-स्त्री० [फा०] भूमि, धन या सामान आदि, जिनका कुछ मूल्य हो। सम्पत्ति।

जायफल-पुं० [सं० जातीफल] एक सुगन्धित फल जो औषध और मसाले के काम में आता है।

जाया-स्त्री० [सं०] पत्नी। जोरू।

जार-पुं० [सं०] १. पर-स्त्री से अनुचित संबंध रखनेवाला पुरुष। २.उपपति। यार।

जारज-पुं० [सं०] किसी स्त्री के उपपति से उत्पन्न सन्तान।

जारण-पुं० [सं०] जलाना।

जारना*-स० दे० 'जलाना'।

जारिणी-स्त्री० [सं०] दुश्चरित्रा स्त्री।

जारी-वि० [अ०] १. बहता हुआ। प्रवाहित। २. चलता हुआ। प्रचलित। स्त्री० [सं० जार] छिनाला।

जाल-पुं० [सं०] १. एक में बुने या गुथे हुए बहुत-से डोरों का समूह। २. तार या सूत आदि का वह पट, जिसका व्यवहार मछलियों और चिड़ियों आदि को फँसाने के लिए होता है। ३. किसी को फँसाने या वश में करने का षड्यंत्र। ४. समूह। ५. एक प्रकार की तोप। पुं० [अ० जअल, मि० सं० जाल] किसी को फँसाने के लिए चली हुई चाल या झूठी कार्रवाई। फरेब।

जालदार-वि० [सं० जाल+हिं० दार] जिसमें जाल की तरह बहुत-से छोटे-छोटे छेद हों।

जालना*-स० दे० 'जलाना'।

जालरंध्र-पुं० [सं०] झरोखा।

जाल-साज-पुं० [अ० जअल + फा० साज] धोखा देने के लिए किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करनेवाला।

जाला-पुं० [सं० जाल] १. मकड़ी का जाल जिसमें वह कीड़े-मकोड़ों को फँसाती है। २. आँख का एक रोग जिसमें पुतली के आगे झिल्ली-सी पड़ जाती है। ३. घास-भूसा आदि बांधने का जाल। ४. पानी रखने का मिट्टी का बड़ा घड़ा।

जालिम-वि० [अ०] जुल्म करनेवाला।

जालिया-वि० दे० 'जाल-साज'।

जाली-स्त्री० [हिं० जाल] १. किसी चीज में बने हुए बहुत-से छोटे छोटे छेदों का समूह। २. एक प्रकार का कपड़ा जिसमें बहुत-से छोटे छोटे छेद होते हैं। ३. कच्चे आम के अन्दर का तंतु-जाल। वि० [अ० जअल] नकली। बनावटी।

जावक*-पुं० दे० 'अलता'।

जावत*-अव्य० दे० 'यावत्'।

जावन*- पुं० दे० 'जामन'।

जावर-पुं० [?] एक प्रकार की खीर।

जावित्री-स्त्री० [सं० जातिपत्री] जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका।

जाषिनी*-स्त्री०=यक्षिणी।

जासु*-वि० [हिं० जो] जिसको।

जासूस-पुं० [अ०] [भाव० जासूसी] गुप्त रूप से किसी बात या अपराध का पता लगानेवाला। भेदिया। गुप्तचर।

जाहिर-वि० [अ०] १. प्रकट। स्पष्ट।

खुला हुआ। २. विदित। जाना हुआ।

जाहिरा-क्रि० वि० [अ०] देखने में। प्रकट रूप में। प्रत्यक्ष में।

जाहिरी-वि० [अ०] जो जाहिर हो। प्रकट।

जाहिल-वि० [अ०] १. मूर्ख। ना-समझ। २. अनपढ़। अशिक्षित।

जाही-स्त्री० [सं० जाति] चमेली की तरह का एक सुगन्धित पौधा और फूल।

जाह्नवी-स्त्री० [सं०] जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गंगा नदी।

ज़िंदगानी-स्त्री० दे० 'ज़िंदगी'।

ज़िंदगी-स्त्री० [फा०] १. जीवन। २ जीवन-काल। आयु।

ज़िंदा-वि० [फा०] जीवित। जीता हुआ।

ज़िंदा-दिल-वि० [फा०] [संज्ञा ज़िंदा-दिली] सदा प्रसन्न रहने और हँसने-हँसानेवाला।

जिवाना[1]-स० दे० 'जिमाना'।

जिंस-स्त्री० [फा० जिन्स] १. प्रकार। तरह। २. चीज। वस्तु। ३. सामग्री। सामान। ४. गेहूँ, चावल आदि अनाज।

जिंसवार-पुं० [फा०] पटवारियों का वह कागज जिसमें वे खेतों में बोई हुई फसलों का विवरण लिखते हैं।

जिश्राना[1]*-स० दे० 'जिलाना'।

जिउ[1]-पुं० दे० 'जीव'।

जिउकिया-पुं० [हिं० जीविका] १. जीविका के लिए कोई काम करनेवाला। २. वे पहाड़ी लोग जो जंगलों से चीजें लाकर नगरों में बेचते हैं।

ज़िक्र-पुं० [अ०] चर्चा।

जिगर-पुं० [फा०, मि० सं० यकृत्] [वि० जिगरी] १. कलेजा। २. चित्त। मन। ३. साहस। हिम्मत।

जिगरा-पुं० [हिं० जिगर] साहस।

जिगरी-वि० [फा०] १. आन्तरिक। दिली। २. अत्यन्त घनिष्ठ। अभिन्न-हृदय।

जिगीषा-स्त्री० [सं०] १. जीतने की इच्छा। २. उद्योग। प्रयत्न।

जिच(च्छ)-स्त्री० [?] १. बेबसी। मजबूरी। २. शतरंज के खेल में वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न मिले। ३. पारस्परिक विवाद में वह अवस्था, जिसमें दोनों पक्ष अपनी शर्तों पर अड़े रहें और समझौते या निपटारे का कोई मार्ग दिखाई न दे। (डेड-लॉक) वि० विवश। मजबूर। बे-बस।

जिज्ञासा-स्त्री० [सं०] १. कोई बात जानने की इच्छा। २. पूछ-ताछ।

जिज्ञासु-वि० [सं०] जिज्ञासा करने या जानने की इच्छा रखनेवाला।

जित्-वि० [सं०] जीतनेवाला। जेता।

जित[1]*-क्रि० वि० [सं० यत्र] जिधर।

जितना-वि० [हिं० जिस+तना (प्रत्य०)] [स्त्री० जितनी] जिस मात्रा या परिमाण का। क्रि० वि० जिस मात्रा या परिमाण में।

जितवार(वैया)-वि० [हिं० जीतना] जीतनेवाला।

जितात्मा-वि० दे० 'जितेंद्रिय'।

जिताना-स० हिं० 'जीतना' का प्रे०।

जितेंद्रिय-वि० [सं०] जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।

जिते*-वि०=जितना (बहु०)

जितै*-क्रि० वि० [सं० यत्र] जिधर।

जितैया-वि० [हिं० जीतना] जीतनेवाला।

जितो[1]*-वि०, क्रि० वि० दे० 'जितना'।

जित्वर-वि० [सं०] जेता। विजयी।

ज़िद-स्त्री० [अ०] [वि० ज़िद्दी] हठ।

अड़। दुराग्रह।

जिद्दी-वि० [फा०] जिद करनेवाला। हठी। दुराग्रही।

जिधर-क्रि० वि० [हि० जिस+ धर (प्रत्य०)] जिस ओर। जिस तरफ।

जिन-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. बुद्ध। ३. जैनों के तीर्थंकर।

वि०, सर्व० [सं०यानि]'जिस' का बहु०।

पुं० [अ०] भूत। प्रेत।

जिना-पुं० [अ० ज़िना] व्यभिचार।

जिनि†-अव्य० [हिं० जनि] मत। नहीं।

जिनिस=स्त्री० दे० 'जिस'।

जिन्ह†*-सर्व० दे० 'जिन'।

जिबह-पुं० दे० 'जबह'।

जिब्भा-स्त्री० दे० 'जिह्वा'।

जिमाना-स० [हिं० 'जीमना' का स०] भोजन कराना। खिलाना।

जिमि*-क्रि० वि०=जैसे।

जिम्मा-पुं० [अ०] १. किसी कार्य विषय या, बात का लिया जानेवाला भार। दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा। जवाबदेही। २. सपुर्दगी। देख-रेख। सरक्षा।

जिम्मादार(वार)-पुं० दे० 'जिम्मेदार'।

जिम्मेदार(वार)-पुं० [फा०] उत्तरदायी।

जिय†-पुं० [सं० जीव] मन। चित्त।

जिय-वधा*-पुं० [सं० जीव+वध] हत्याकारी। हत्यारा।

जियरा*-पुं० [हिं० जीव] जी। हृदय।

जियान-पुं० [अ०] १. घाटा। टोटा। २. हानि। नुकसान।

जियाना*-स० दे० 'जिलाना'।

जियारी*-स्त्री० [हिं० जीना] १. जीवन। जिंदगी। २. जीविका। ३. वृत्ति। साहस।

जिरगा-पुं० [फा० जिर्गः] १. झुंड। गरोह। २. मंडली। दल। ३. पठानों आदि में कई वर्गों या दलों के लोगों की सभा।

जिरह-स्त्री०[अ०जरह या जुरह] १. हुज्जत। तकरार। २. किसी की कही हुई बातों की सत्यता की जांच के लिए की जानेवाली पूछ-ताछ।

स्त्री० [फा० जिरह] लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच। वर्म। बकतर।

जिरही-वि० [हिं० जिरह] कवचधारी।

जिराफा-पुं० दे० 'जुराफा'।

जिला-स्त्री० [अ०] १. माँजकर या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का काम। मुहा०-जिला देना=माँजकर चमकाना। २. चमक-दमक।

पुं० [अ० जिलअ] १. प्रान्त। प्रदेश। २. किसी प्रान्त का वह विभाग जो एक कलक्टर या डिप्टी कमिश्नर के अधीन हो। ३. किसी क्षेत्र या इलाके का छोटा विभाग।

जिलाना-स० [हिं० 'जीना' का स०] १ जीवित रहने में सहायता करना। २. पालना। पोसना।

जिलाद*-पुं० [अ०जल्लाद] अत्याचारी।

जिलेदार-पुं० [अ०] जमींदार का वह कर्मचारी जो किसी जिले या इलाके में कर या लगान उगाहता है।

जिल्द-स्त्री० [अ०] [वि० जिल्दी] १. खाल। चमड़ा। त्वचा। २. वह दफ्ती जो किसी किताब के ऊपर-नीचे उसकी रक्षा के लिए मढ़ी जाती है। ३. पुस्तक की एक प्रति। ४. पुस्तक का भाग। खंड।

जिल्दबंद-पुं० [फा०] किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। दफ्तरी।

जिल्लत-स्त्री० [अ०] १. अपमान। बेइज्जती। २. दुर्दशा। दुर्गति।

जिव*-पुं० दे० 'जीव'।

जिवाना*-स० दे० 'जिलाना'।

जिष्णु-वि० [सं०] सदा जीतनेवाला। परम विजयी।

पुं० १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. इन्द्र। ४. सूर्य। ५. अर्जुन।

जिस-वि० [सं० यः या यस्] 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति-युक्त विशेष्य के पहले रहने पर प्राप्त होता है। जैसे-जिस स्थान पर।

सर्व०-'जो' का वह रूप जो उसमें विभक्ति लगने पर होता है।

जिस्ता-पुं०१.दे०'जस्ता'। २.दे०'दस्ता'।

जिस्म-पुं० [फा०] शरीर। देह।

जिह*-स्त्री० [फा० जद, सं० ज्या] धनुष की डोरी। पतंचिका। रोदा।

जिहाद-पुं० दे० 'जहाद'।

जिह्वा-स्त्री० [सं०] जीभ। जबान।

जिह्वाग्र-वि० [सं०] जीभ की नोक पर। कंठस्थ। (बात या पाठ)

जींगन-पुं० दे० 'जुगनूँ'।

जी-पुं० [सं० जीव] १. मन। दिल। मुहा०-**जी अच्छा होना**=शरीर स्वस्थ या नीरोग होना। **किसी पर जी आना**= किसी पर प्रेम होना। **जी खट्टा होना**= मन में विरक्ति होना। **जी खोलकर**= बिना किसी संकोच के। दिल खोलकर। **जी चलना**=जी चाहना। इच्छा होना। **जी चुराना**=कुछ करने से भागना। **जी छोटा करना**=१. हताश होना। २. उदारता छोड़ना। कंजूसी करना। **जी दुखना**=मन में कष्ट होना। **जी निढाल होना**=श्रम, चिन्ता आदि के कारण चित्त ठिकाने न रहना। **जी पर आ बनना**=प्राणों पर संकट आना। **जी पर खेलना**=ऐसा काम करना, जिसमें मरने तक का डर हो। **जी बहलाना**=चिन्ता से छूटकर प्रसन्न होना। **जी भरना**=१. (अपना) संतोष होना। २. तृप्ति होना। ३. (दूसरे का) संदेह दूर करना। खटका मिटाना। **जी भर आना**=चित्त में दुःख या करुणा उत्पन्न होना। **जी मचलाना**=उलटी या कै मालुम होना। **जी में आना**= मन में विचार उत्पन्न होना। **जी लगना**= कोई काम अच्छा लगने पर मन का उसमें प्रवृत्त और लीन होना। **जी से**= मन लगाकर। ध्यान देकर। **जी से जाना**=मर जाना।

२. हिम्मत। साहस। ३. संकल्प। विचार। अव्य० [सं० जित् या श्री (युत)] १. कुछ कहने या बुलाने पर उत्तर में कहा जानेवाला एक आदर-सूचक शब्द। २ एक सम्मान-सूचक शब्द। ३. किसी बड़े के कथन, प्रश्न या सम्बोधन के उत्तर में संक्षिप्त प्रति-सम्बोधन के रूप में कहा जानेवाला शब्द।

जीअ(उ)-पुं० दे० 'जी' और 'जीव'।

जीअन*-पुं० दे० 'जीवन'।

जीगन-पुं० दे० 'जुगनूँ'।

जीजा-पुं० [हिं० जीजी] बड़ी बहन का पति। बड़ा बहनोई।

जीजी-स्त्री० [अनु०] बड़ी बहन।

जीत-स्त्री० [सं० जिति] १.लड़ाई में शत्रु या विपक्षी को दबाकर प्राप्त की जानेवाली सफलता। जय। विजय। फतह। २. ऐसी प्रतियोगिता में मिलनेवाली सफलता, जिसमें दो या अधिक विरुद्ध पक्ष हों। ३. लाभ। फायदा।

जीतना-स० [हिं० जीत+ना (प्रत्य०)] १. लड़ाई में शत्रु या विपक्षी के विरुद्ध

सफल होना। विजय पाना। २. प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करना।

जीता-वि० [हिं० जीना] १. जिसमें जीवन या जान हो। जीवित। २. तौल या नाप में कुछ अधिक या बढ़ा हुआ।

जीन-स्त्री० [फा०] १. घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी। चारजामा। २. एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा।

*वि० दे० 'जीर्ण'।

जीना-अ० [सं० जीवन] १. जीवित रहकर जीवन बिताना। जिंदा रहना।

मुहा०-**जीना-जागता**=जीवित और सक्रिय। भला-चंगा। **जीना भारी हो जाना**=जीवन कष्ट-कर रहना।

२. अभीष्ट वस्तु पाकर बहुत प्रसन्न होना।

पुं० [फा० ज़ीनः] सीढ़ी।

जीभ-स्त्री० [सं० जिह्वा] १. मुँह के अन्दर का वह लम्बा चिपटा मांस-पिंड जिससे रसों का आस्वादन और शब्दों का उच्चारण होता है। रसना। जबान।

मुहा०-**जीभ चलना**=भिन्न भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने की इच्छा होना। **जीभ निकालना**=दंड देने के लिए जीभ उखाड़ लेना। **जीभ पकड़ना**=बोलने न देना। बोलने से रोकना। **जीभ हिलाना**=मुँह से कुछ कहना। **जीभ के नीचे जीभ होना**=झूठ बोलने की आदत होना।

२. जीभ के आकार की कोई लंबी वस्तु।

जीभी-स्त्री० [हिं० जीभ] १. धातु का वह पतला धनुषाकार पत्तर जिससे जीभ छीलकर साफ करते हैं। २. कलम के आगे लगनेवाला धातु का वह टुकड़ा जिससे लिखा जाता है। (निब)

जीमना-स० [सं० जेमन] भोजन करना।

जीमूत-पुं० [सं०] १. पर्वत। २. बादल। ३. इंद्र। ४. सूर्य।

जीय*-पुं० दे० 'जी'।

जीयति*-स्त्री० [हिं० जीना] जीवन।

जीर*-पुं० [फा० जिरह] जिरह। कवच।

*वि० [सं० जीर्ण] जीर्ण। पुराना।

जीरना*-अ० [सं० जीर्ण] १. जीर्ण या पुराना होना। २. कुम्हलाना। मुरझाना। ३. फटना।

जीरा-पुं० [सं० जीरक] १. एक पौधा जिसके सुगन्धित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम में लाये जाते हैं। २. इस आकार की कोई छोटी, महीन, लंबी चीज। ३. फूलों का केसर।

जीर्ण-वि० [सं०] [भाव० जीर्णता] १. बुढ़ापे के कारण दुर्बल और क्षीण। २. टूटा-फूटा और पुराना।

यौ०-**जीर्ण-शीर्ण**=फटा-पुराना।

३. पेट में अच्छी तरह पचा हुआ।

जीर्णोद्धार-पुं० [सं०] टूटी-फूटी पुरानी वस्तु, मुख्यतः भवन आदि का, फिर से उद्धार, सुधार या मरम्मत।

जीला*†-वि० दे० 'झीना'।

जीवंत-वि० दे० 'जीवित'।

जीव-पुं० [सं०] १. प्राणियों का वह चेतन तत्व जिससे वे जीवित रहते हैं। प्राण। जान। २. जीवात्मा। आत्मा। ३. प्राणी। जीवधारी।

यौ०-**जीव-जंतु**=१. सभी जानवर और प्राणी। २. कीड़े-मकोड़े।

जीवट-पुं० [सं० जीवथ] हृदय की दृढ़ता। साहस। हिम्मत।

जीव-दान-पुं० [सं०] अपने वश में आये हुए शत्रु या अपराधी को बिना प्राण लिये छोड़ देना। प्राण-दान।

या ठंढा करना । २. शान्त और सुखी करना ।

स० दे० 'जोड़वाना' ।

जुड़ाना|-अ० [हिं० जूड़] १. ठंढा होना । २. शान्त होना । ३. तृप्त होना । स० १. ठंढा करना । शीतल करना । २. शान्त करना । ३. संतुष्ट या तृप्त करना ।

जुत*-वि० दे० 'युक्त' ।

जुतना-अ० [हिं० युक्त] १. बैल, घोड़े आदि पशुओं का हल, गाड़ी आदि में लगना । जोता जाना । नधना । २. किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना ।

जुतवाना-स० हि० 'जोतना' का प्रे० ।

जुताई-स्त्री० दे० 'जोताई' ।

जुतियाना-स० [हिं० जूता+इयाना (प्रत्य०)] १. जूते से मारना । २. अत्यन्त अनादर करना ।

जुत्थ*-पुं० दे० 'यूथ' ।

जुदा-वि० [फा०] १. पृथक् । अलग । २. भिन्न । निराला ।

जुदाई-स्त्री० [फा०] १. जुदा होने का भाव । १ बिछोह । वियोग ।

जुद्ध*-पुं० दे० 'युद्ध' ।

जुन्हाई-स्त्री० [सं० ज्योत्स्ना,प्रा० जोन्हा] १. चाँदनी । चन्द्रिका । २. चंद्रमा ।

जुन्हैया|-स्त्री० दे० 'जुन्हाई' ।

जुपना|-अ० [हिं० जुड़ना] (दीपक का) बुझना ।

जुमला-वि० [फा०] सब । कुल । पुं० पूरा वाक्य ।

जुमा-पुं० [अ०] शुक्रवार ।

जुमिल-पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा ।

जुरना*-स० दे० 'जुड़ना' ।

जुरमाना-पुं० [फा०] वह दंड जिसमें अपराधी को कुछ धन देना पड़े । अर्थ-दंड ।

जुरा*-स्त्री० दे० 'जरा' ।

जुराना*-अ० दे० 'जुड़ाना' ।

जुराफा-पुं० [अ० ज़ुर्राफ़ः] एक जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की सी लम्बी होती है ।

जुर्म-पुं० [अ०] अपराध ।

जुर्रा-पुं० [फा०] नर बाज़ ।

जुर्राब-स्त्री० [तु०] मोजा । पायताबा ।

जुल-पुं० [सं० छल] धोखा । दम-झाँसा ।

जुलाब-पुं० [फा०] दस्त लानेवाली दवा । रेचक औषध ।

जुलाहा-पुं० [फा० जौलाह] कपड़ा बुननेवाला । तंतुवाय । तंतुकार ।

जुल्फ-स्त्री० [फा०] सिर के वे लंबे बाल जो पीछे या इधर-उधर लटके रहते हैं । पट्टा । कुल्ला ।

जुल्फी-स्त्री० दे० 'जुल्फ' ।

जुल्म-पुं० [अ०] अत्याचार ।

मुहा०-जुल्म ढाना = १. अत्याचार करना । २ अद्भुत काम कर दिखाना ।

जुलूस-पुं० दे० 'जलूस' ।

जुहाना-स० [सं० यूथ] १. एकत्र करना । संचित करना । २. इमारत के काम में पत्थर आदि यथा-स्थान बैठाना । ३ चित्र में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को यथा-स्थान बैठाना । संयोजन ।

जुहार-स्त्री० [सं० अवहार] क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन ।

जुही-स्त्री० दे० 'जूही' ।

जूँ-स्त्री० [सं० यूका] सिर के बालों में होनेवाला एक छोटा स्वेदज कीड़ा ।

मुहा०-कानों पर जूँ तक न रेंगना= किसी पर किसी घटना का कुछ भी प्रभाव न पड़ना ।

जू-अव्य० [सं० (श्री) युक्त] एक आदर-सूचक शब्द जो ब्रज, बुन्देलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगता है। जी।

जूआ-पुं० [सं० युग] १. गाड़ी के आगे की वह लकड़ी जो बैलों के कन्धे पर रहती है। २. चक्की में की वह लकड़ी जिसे पकड़कर वह चलाई जाती है। पुं० [सं० द्यूत, प्रा० जूआ] वह खेल जिसमें हारनेवाले को कुछ धन देना पड़ता है और वह धन जीतनेवाले को मिलता है। हार-जीत का खेल। द्यूत।

जूआ-घर-पुं० [हिं० जूआ+घर] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग जूआ खेलते हों। द्यूतशाला। जूआ-खाना।

जूआ-चोर-पुं० [हिं० जूआ+चोर] भारी धूर्त्त और ठग।

जूजू-पुं० [अनु०] बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित जीव। हौआ।

जूझ*-स्त्री० [सं० युद्ध] लड़ाई।

जूझना*-अ० [सं० युद्ध] १. लड़ना। २. लड़कर मर जाना।

जूट-पुं० [सं०] १. जटा की गाँठ। जूड़ा। २ लट। जटा। ३. पटसन।

जूठन-स्त्री० [हिं० जूठा] १. किसी के खान-पीने से बची हुई वस्तु। उच्छिष्ट भोजन। २. वह पदार्थ जो एक-दो बार पहले काम में लाया जा चुका हो।

जूठा-वि० [सं० जुष्ट] [स्त्री० जूठी। क्रि० जुठारना] १. किसी के खाने से बचा हुआ। उच्छिष्ट। २. जिसका किसी ने पहले उपभोग कर लिया हो। भुक्त। पुं० दे० 'जूठन'।

जूड़ा-पुं० [सं० जूट] १. सिर के बालों को लपेटकर उनकी बाँधी हुई गाँठ। २. चोटी। कलगी। ३. मूँज आदि का पूला।

जूड़ी-स्त्री० [हिं० जूड़=जाड़ा] जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर।

जूता-पुं० [सं० युक्त] चमड़े आदि का वह उपकरण जो ठोकर, काँटों आदि से बचने के लिए पैरों में पहना जाता है। पाद-त्राण। उपानह।

मुहा०-(किसी का) जूता उठाना= किसी की तुच्छ सेवा करना। २. खुशामद करना। जूता उछलना या चलना=मार-पीट होना। झगड़ा होना। जूता खाना=१. जूतों की मार सहना। २. तिरस्कृत या अपमानित होना। जूतों दाल बँटना=आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।

जूती-स्त्री० [हिं० जूता] स्त्रियों का जूता।

जूती-पैजार-स्त्री० [हिं० जूती+पैजार] १. जूतों की मार-पीट। २. बहुत ही भद्दी तरह की लड़ाई।

जूथ*-पुं० दे० 'यूथ'।

जून¹-पुं० [सं० द्युवन्] समय। काल। पुं० [सं० जूर्ण] तृण। घास।

जूप-पुं० [सं० द्यूत] जूआ। द्यूत। पुं० दे० 'यूप'।

जूमना¹*-अ० [अ० जमा] इकट्ठा होना।

जूर*-पुं० [हिं० जुरना] १. जोड़। २. संचय। ३. ढेर। राशि।

जूरना*-स० दे० 'जोड़ना'।

जूरा*-पुं० दे० 'जूड़ा'।

जूरी-स्त्री० [हिं० जुरना] १. घास या पत्तों का पूला। जुट्टी। २. एक प्रकार का पकवान।

पुं० [अं० ज्यूरी] एक प्रकार के परामर्श-दाता जो जज के साथ बैठकर मुकदमे सुनते हैं।

जूस-पुं० [सं० जूष] पकी हुई दाल या

उबाली हुई चीज का रस । रसा ।
पुं० [सं० युक्त] युग्म या सम संख्या । जैसे-दो, चार, दस आदि ।
जूसी-स्त्री० [हिं० जूस] ईख के पके हुए रस में की गाढ़ी तल-छट । चोटा ।
जूह*-पुं० दे० 'यूथ' ।
जूहर*-पुं० दे० 'जौहर' ।
जूही-स्त्री० [सं० यूथी] एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूल चमेली से मिलते हुए होते हैं ।
जृंभ-पुं० [सं०] [स्त्री० जृंभा, वि० जृंभक] १. जँभाई । २. आलस्य ।
जृंभक-वि० [सं०] जँभाई लेनेवाला । पुं० एक अस्त्र जिसके विषय में कहा जाता है कि इसके चलने से शत्रु जँभाई लेने लगते या सो जाते थे ।
जेँउँ-क्रि० वि० दे० 'ज्यों' ।
जेँगना।-पुं० दे० 'जुगनूँ' ।
जेँना-स० दे० 'जेवना' ।
जेँवन-पुं० [सं० जेमन] १. भोजन करना । खाना । २ खाने की चीजें । ३. ज्योनार ।
जेँवना-स० [सं० जेमन] खाना ।
जे।*-सर्व० [सं० ये] 'जो' का बहु० ।
जेइ(उ)।*-सर्व० दे० 'जो' ।
जेटी-स्त्री० [अं०] वह स्थान जहाँ जहाजों पर माल चढ़ता या उतरता है ।
जेठ-पुं० [सं० ज्येष्ठ] १. बैसाख और असाढ़ के बीच का महीना । ज्येष्ठ । २. [स्त्री०जेठानी] पति का बड़ा भाई । भसुर ।
जेठा-वि० [सं० ज्येष्ठ] [स्त्री० जेठी] १. अग्रज । बड़ा । २. सबसे अच्छा ।
जेठानी-स्त्री० [हिं० जेठ] पति के बड़े भाई की स्त्री ।
जेठी-वि० [हिं० जेठ] जेठ का ।
जेठी मधु-स्त्री० [सं० यष्टिमधु] मुलेठी ।
जेता-पुं० [सं० जेतृ] जीतनेवाला । *वि० दे० 'जितना' ।
जेतिक।*-क्रि० वि० [सं० यः] जितना ।
जेते।*-वि० [सं० यः, यत्] जितने ।
जेतो।*-क्रि० वि० [सं० यः,यत्] जितना ।
जेन्य-वि० [सं०] १. उच्च कुल में उत्पन्न । अभिजात । २. जो बनावटी न हो । असली । सच्चा । (जेनुइन)
जेब-पुं० [फा०] पहनने के कपड़ों में की वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं । खीसा । खरीता ।
जेब-कट-पुं० [फा० जेब+हिं० काटना] वह जो दूसरों के जेब काटकर रुपये-पैसे निकालता हो । गिरह-कट ।
जेब-खर्च-पुं० [फा०] खास अपने खर्च के लिए मिलनेवाला धन ।
जेब-घड़ी-स्त्री० [फा० जेब+घड़ी] वह छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है ।
जेबी-वि० [फा०] १. जो जेब में रखा जा सके । २. जिसका आकार-प्रकार नियमित या साधारण से बहुत छोटा हो ।
जेय-वि० [सं०] जीतने योग्य ।
जेर-स्त्री० दे० 'आँवल' ।
वि० [फा० ज़ेर] [संज्ञा जेर-बारी] १ परास्त । पराजित । २. जो बहुत दबाया या तंग किया गया हो ।
जेल-पुं० [अं०] वह जगह जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी कुछ समय के लिए बन्द रखे जाते हैं । कारागार । वंदीगृह ।
*पुं० [फा० ज़ेर] झंझट ।
जेलखाना-पुं० दे० 'जेल' ।
जेलाटिन-पुं० [अं०] सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मांस, हड्डी और खाल से निकाला जाता है ।

जेवनार-स्त्री० दे० 'ज्योनार'।
जेवर-पुं० [फा०] गहना। आभूषण।
जेवरी-स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।
जेह-स्त्री० [फा० जिह=चिल्ला] धनुष की डोरी में वह अंश जो आँख के पास लाया जाता है और जो निशाने की सीध में रक्खा जाता है। चिल्ला।
जेहन-पुं० [अ०][वि० जहीन] बुद्धि।
जेहर†-स्त्री० [?] पाजेब। (जेवर)
जेहाद-पुं० दे० 'जहाद'।
जेहि*-सर्व० [सं० यस्] १. जिसको। जिसे। २. जिससे।
जै-स्त्री० दे० 'जय'।
†वि० [सं० यावत्] जितने।
जै-जैकार-स्त्री० दे० 'जय-जयकार'।
जैत†*-स्त्री० [सं० जयति] विजय।
जैतपत्र*-पुं० [सं० जयति+पत्र] जयपत्र।
जैतवार†*-पुं० [हिं० जैत+वार] जीतने-वाला। विजयी। विजेता।
जैतून-पुं० [अ०] एक सदा-बहार पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।
जैन-पुं० [सं०] १. भारत का एक ना-स्तिक धर्म्म-संप्रदाय जिसमें अहिंसा परम धर्म्म माना जाता है। २. जैनी।
जैनी-पुं० [हिं० जैन] जैन-मतावलंबी।
जैनु†*-पुं० [हिं० जेंवना] भोजन।
जैबो*-अ० दे० 'जाना'।
जैमाल-स्त्री० दे० 'जयमाल'।
जैस*-वि० दे० 'जैसा'।
जैसा-वि० [सं० यादृश] [स्त्री० जैसी] १. जिस प्रकार का। जिस तरह का।
मुहा०-जैसे का तैसा=ज्यों का त्यों। जैसा पहले था, वैसा ही। जैसा चाहिए = उपयुक्त।
२. जितना। (केवल विशेषण के साथ) ।३. समान। सदृश। तुल्य।
क्रि० वि० जिस परिमाण का। जितना।
जैसे-क्रि० वि० [हिं० जैसा] जिस तरह। जिस प्रकार।
मुहा०-जैसे-तैसे=किसी प्रकार। कठिन-ता से।
जैसो†-वि०, क्रि० वि० दे० 'जैसा'।
जों†*-क्रि० वि० दे० 'ज्यों'।
जोंक-स्त्री० [सं० जलौका] १. पानी में रहनेवाला एक लंबा कीड़ा जो जीवों के शरीर में लगकर उनका खून चूसता है। २. वह जो अपना मतलब निकालने के लिए पीछे पड़ जाय।
जोंधरी-स्त्री० [सं० जूर्ण] १. छोटी ज्वार। २ बाजरा। (क्व०)
जो-सर्व० [सं० यः] एक संबंधवाचक सर्वनाम जिसका प्रयोग पहले कही हुई किसी बात अथवा पहले आई हुई संज्ञा, सर्वनाम या पद के संबंध में कुछ और कहने से पहले किया जाता है। जैसे-वह किताब जो आप ले गये थे, लौटा दीजिए।
*अव्य० [सं० यद्] यदि। अगर।
जोअना†-स० दे० 'जोवना'।
जोइ†*स्त्री० [सं० जाया] जोरू।
†सर्व० दे० 'जो'।
जोइसी*-पुं० दे० 'ज्योतिषी'।
जोखना-स० [सं० जुष=जाँचना] १. तौलना। वजन करना। २. जाँचना।
जोखा-पुं० [हिं० जोखना] जोखने या नापने-तौलने की क्रिया या भाव।
जोखिउँ*-स्त्री० दे० 'जोखिम'।
जोखिता*-स्त्री० दे० 'योषिता'।
जोखिम-स्त्री० [हिं० झोंका] १. संकट या विपत्ति की संभावनावाली स्थिति। झोंकी।

मुहा०-जोखिम उठाना या सहना= ऐसा काम करना, जिसमें अनिष्ट की संभावना हो।

२. वह पदार्थ या कार्य जिसके कारण भारी विपत्ति आ सकती हो।

जोखों-स्त्री० दे० 'जोखिम'।

जोगंधर-पुं० [सं० योगंधर] शत्रु के चलाये हुए अस्त्र से अपना बचाव करने की एक युक्ति।

जोग-पुं० दे० 'योग'।

अव्य० [सं० योग्य] को। के निकट। के वास्ते। (पुरानी हिन्दी)

जोगड़ा-पुं० [हिं० जोग+ड़ा (प्रत्य०)] १. बना हुआ योगी। पाखंडी। २. बहुत साधारण योगी या साधु।

जोगवना*-स० [सं० योग+अवना (प्रत्य०)] १. यत्न से रखना। २. संचित या एकत्र करना। ३. ध्यान रखना। ४. आदर करना। ५. जाने देना। ध्यान न देना। ६. पूरा करना।

जोगिंद*-पुं० दे० 'योगींद्र'।

जोगिन-स्त्री० [सं० योगिनी] १. जोगी की स्त्री। २. साधुनी। ३. पिशाचिनी।

जोगिनी-स्त्री० दे० 'योगिनी'।

जोगिया-वि० [हिं० जोगी] १. जोगी संबंधी। जोगी का। २. गेरू के रंग में रँगा हुआ। गैरिक।

जोगी-पुं० [सं० योगी] १. योगी। २. एक प्रकार के साधु जो सारंगी पर भजन गाकर भीख माँगते है।

जोगीड़ा-पुं० [हिं० योगी+ड़ा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का चलता गाना। २. गाने-बजानेवालों का एक विशेष प्रकार का दल।

जोगेश्वर-पुं० दे० 'योगीश्वर'।

जोजन*-पुं० दे० 'योजन'।

जोट*-पुं० [सं० योटक] १. जोड़ी। २. साथी।

जोटा*-पुं० [सं० योटक] जोड़ा। युग।

जोटिंग-पुं० [सं०] शिव।

जोटी*-स्त्री० दे० 'जोड़ी'।

जोड़-पुं० [सं० योग] १. कई संख्याओं को जोड़ने की क्रिया। २. कई संख्याओं को जोड़ने से निकलनेवाली संख्या। योग। टीक। (टोटल) ३. दो या अधिक अंगों, टुकड़ों, पुरजों या पदार्थों के जुड़ने का चिह्न या स्थान। सन्धि। ४ वह टुकड़ा जो किसी चीज में लगा हो। ५. एक ही तरह की अथवा साथ-साथ काम में आनेवाली दो चीजें। जोड़ा। ६. बराबरी। समानता। ७. वह जो किसी की बराबरी का हो। जोड़ा। ८. एक बार में पहनने के सब कपड़ों का समूह। पूरी पोशाक। ९. दाँव-पेंच।

यौ०-जोड़-तोड़=१. दाँव-पेंच। छल-कपट। २.विशेष युक्ति या उपाय। तरकीब।

जोड़न-स्त्री० दे० 'जामन'।

जोड़ना-स० [हिं० जोड़+बांधना या सं० युक्त] १. दो वस्तुओं को किसी प्रकार मिलाकर एक करना। २. किसी प्रकार का संबंध स्थापित करना। ३. वस्तुएँ या सामग्री क्रम से रखना या लगाना। ४. संचित या एकत्र करना। इकट्ठा करना। ५. संख्याओं का योग-फल निकालना। जोड़ लगाना। ६. वाक्यों या पदों की योजना करना। ७. (दीया या आग) जलाना।

जोड़वाना-स० हिं० 'जोड़ना' का प्रे०।

जोड़ा-पुं० [हिं० जोड़ना] [स्त्री० जोड़ी] १. एक ही तरह की दो चीजें।

२. जूते। उपानह। ३. एक आदमी के पहनने के सब कपड़े। पूरी पोशाक। ४. स्त्री और पुरुष या नर और मादा का युग्म। ५.वह जो बराबरी का हो। जोड़।

जोड़ाई-स्त्री० [हिं० जोड़ना+आई (प्रत्य०)] जोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़ी-स्त्री० [हिं० जोड़ा] १. एक ही तरह की दो चीजें। जोड़ा। २. दो घोड़ों या दो बैलों का युग्म। ३. कसरत करने के दोनों मुग्दर। ४.मँजीरा। (बाजा)

जोत-स्त्री० [हिं० जोतना] १. चमड़े का वह तस्मा या मोटी रस्सी जो एक ओर जोते जानेवाले जानवर के गले में और दूसरी ओर खींची जानेवाली चीज में बँधी रहती है। २. वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले बँधे रहते हैं।

'स्त्री० दे० 'ज्योति'।

जोतना-स० [सं० योजन या युक्त] १. गाड़ी कोल्हू, हल आदि चलाने के लिए उनके आगे घोड़े, बैल आदि बाँधना। २. जबरदस्ती किसी काम में लगाना। ३. खेत में कुछ बोने से पहले हल चलाना।

जोता-पुं० [हिं० जोतना] १. दे० 'जोत'। २. बहुत बड़ा शहतीर। ३. वह जो हल जोतता हो।

जोताई-स्त्री०[हिं० जोतना+आई (प्रत्य०)] जोतने का काम, भाव या मजदूरी।

जोति*-स्त्री० दे० 'ज्योति'।

जोती'*-स्त्री० [हिं० जोतना] जोतने-बोने योग्य भूमि।

जोधा'*-पुं० दे० 'योद्धा'।

जोनि*-स्त्री० दे० 'योनि'।

जोन्ह (न्हाई)'*-स्त्री० दे० 'जुन्हाई'।

जो-पै*-अव्य० [हिं० जो+पर] १. यदि। अगर। २. यद्यपि। अगरचे।

जोम-पुं० [अ० ज़ोम] १. उमंग। उत्साह। २. जोश। आवेश। ३.अभिमान। शेखी।

जोय'*-स्त्री० [सं० जाया] जोरू। स्त्री। सर्व० १. जो। २. जिस।

जोयना'*-स० दे० 'जलाना'। स० दे० 'जोवना'।

जोयसी'*-पुं० दे० 'ज्योतिषी'।

जोर-पुं० [फा०] १. बल। शक्ति। मुहा०-(किसी बात पर) जोर देना=किसी बात को बहुत आवश्यक या महत्वपूर्ण ठहराना। जोर मारना या लगाना=पूरा प्रयत्न करना। यौ०-जोर जुल्म=अत्याचार। २. प्रबलता। तेजी। ३. उन्नति। बढ़ती। मुहा०-जोरों पर होना=१. पूरे बल पर या बहुत प्रबल होना। २. खूब उन्नत होना।

४. वश। अधिकार। ५. वेग। ६. भरोसा। आसरा। ७. व्यायाम। कसरत।

जोरदार-वि० [फा०] जिसमें बहुत जोर या बल हो। जोरवाला। बलवान।

जोरना'-स० दे० 'जोड़ना'।

जोर-शोर-पुं० [फा०] बहुत अधिक प्रबलता, तीव्रता या तेजी।

जोरा-जोरी'-स्त्री०, क्रि० वि० दे० 'जबर-दस्ती'।

जोरावर-वि० [फा०] [संज्ञा जोरावरी] शक्ति-शाली। बलवान। ताकत-वर।

जोरी'*-स्त्री० दे० 'जोड़ा'। स्त्री० [फा० जोर] जबरदस्ती।

जोरू-स्त्री० [हिं० जोड़ा] स्त्री। पत्नी।

जोलाहल'*-स्त्री० दे० 'ज्वाला'।

जोली'*-स्त्री० [हिं० जोड़ी] बराबरी।

जोवना*-स० दे० 'जोहना'।

जोश-पुं० [फा०] १. उफान । उबाल । २. चित्त की प्रबल वृत्ति । मनोवेग । ३. सगे-संबंधियों में होनेवाले रक्त-संबंध की उत्कट भावना या आवेश ।

मुहा०-खून का जोश=प्रेम का वह आवेश जो अपने सगे-संबंधी के लिए हो ।

जोशन-पुं० [फा०] १. भुजाओं पर पहनने का एक गहना । २. जिरह-बकतर ।

जोशी-पुं० दे० 'जोषी' ।

जोशीला-वि०[फा० जोश+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जोश हो । आवेशपूर्ण । जोशवाला ।

जोषिता-स्त्री० [सं०] स्त्री । नारी ।

जोषी-पुं० [सं० ज्योतिषी] १ गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति । २ ज्योतिषी । (क्व०)

जोह[1]*-स्त्री० [हिं० जोहना] १. खोज । तलाश । २. प्रतीक्षा । इंतजार । ३. कृपा-दृष्टि ।

जोहना-स० [सं० जुषण=सेवन] १. देखना । २. पता लगाना । ढूँढ़ना । ३. प्रतीक्षा करना । रास्ता देखना ।

जोहार-स्त्री० [सं० जुषण=सेवन] अभिवादन । प्रणाम ।

पुं० दे० 'जौहर' ।

जोहारना[1]-अ० [हिं० जोहार] जोहार या अभिवादन करना ।

जौं[1]-अव्य० [सं० यद्] यदि । जो ।

क्रि० वि० दे० 'ज्यों' ।

जौंरे*-क्रि० वि० [फा० जवार] पास । निकट ।

जौ-पुं० [सं० यव] १. गेहूँ की तरह का एक पौधा जिसके दानों का आटा बनता है । २. छः राई की एक तौल ।

† अव्य० [सं० यद्] यदि । अगर ।

*† क्रि० वि० जब ।

जौक*-पुं० [तु० जूक] १. झुंड । जत्था । २. सेना । फौज ।

जौन[1]*-सर्व०, वि० [सं० यः] जो ।

* पुं० दे० 'यवन' ।

जौ-पै[1]*-अव्य० [हिं० जौ+पै] यदि ।

जौवति*-स्त्री० दे० 'युवती' ।

जौहर-पुं० [फा० गौहर का अरबी रूप] १. रत्न । बहुमूल्य पत्थर । २. सार वस्तु । सारांश । तत्व । ३ धारदार हथियार की चमक । ओप । पानी । ४ विशेषता । खूबी । ५. उत्तमता । श्रेष्ठता । ६. राजपूतों की एक प्रथा जिसमें अपने नगर या गढ़ का पतन निश्चित होने पर स्त्रियाँ और बच्चे दहकती हुई चिता में जल मरते थे । ७ सम्मान की रक्षा के लिए होनेवाली आत्म-हत्या ।

जौहरी-पुं० [फा०] १. रत्न परखने या बेचनेवाला । रत्न-पारखी या विक्रेता । २. किसी वस्तु के गुण-दोष परखनेवाला । पारखी ।

ज्ञ-ज और ञ के योग से बना हुआ एक संयुक्त अक्षर । प्रत्यय के रूप में यह शब्दों के अंत में लगकर ज्ञाता या जाननेवाला का अर्थ देता है । जैसे-बहुज्ञ, विशेषज्ञ ।

ज्ञप्त-वि० [सं०] जाना हुआ ।

ज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] १. किसी को कोई बात जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव । २. वह बात जो किसी को जतलाई या बतलाई जाय । (इन्फॉर-मेशन) ३. जानकारी । ४. बुद्धि ।

ज्ञात-वि० [सं०] जाना हुआ । विदित ।

ज्ञात-यौवना-स्त्री० [सं०] वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन का ज्ञान हो ।

ज्ञातव्य-वि० [सं०] १. जो जाना

जा सके। ज्ञेय। बोधगम्य। २. जिसे जानना हो। (विषय या बात)
ज्ञाता-वि० [सं० ज्ञातृ] [स्त्री० ज्ञात्री] १. ज्ञान रखनेवाला। जानकार।
ज्ञाति-स्त्री० दे० 'जाति'।
ज्ञातृत्व-पुं० [सं०] जानकारी।
ज्ञान-पुं० [सं०] १. वस्तुओं और विषयों की वह जानकारी जो मन या विवेक में होती है। बोध। जानकारी। २.यथार्थ बात या तत्व की पूरी जानकारी। तत्वज्ञान।
ज्ञान-योग-पुं० [सं०] ज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त करने का उपाय या साधन।
ज्ञानवान्-वि० [सं०] ज्ञानी।
ज्ञानी-वि० [सं० ज्ञानिन्] १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवान्। २. ब्रह्म-ज्ञानी।
ज्ञानेंद्रिय-स्त्री० [सं०] वे पाँच इन्द्रियाँ जिनसे विषयों का ज्ञान होता है। यथा-आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।
ज्ञापक-वि० [सं०] जतानेवाला। सूचक।
ज्ञापन-पुं० [सं०] [वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य] जताने या बताने का कार्य या भाव।
ज्ञापित-वि० [सं०]जताया हुआ। सूचित।
ज्ञेय-वि० [सं०] १. जानने योग्य। २. जो जाना जा सके।
ज्या-स्त्री० [सं०] १. धनुष की डोरी। २. किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा। ३. पृथ्वी।
ज्यादती-स्त्री० [फा०] १. अधिकता। बहुतायत। २. अत्याचार। जबरदस्ती।
ज्यादा-वि० [फा०] अधिक। बहुत।
ज्यान*-पुं० [फा० ज़ियान] हानि।
ज्याना*-स० दे० 'जिलाना'।
ज्यामिति-स्त्री० [सं०] गणित का वह अंग जिसमें भूमि की नाप-जोख, रेखा, कोण, तल आदि का विवेचन होता है। क्षेत्र-गणित। रेखा-गणित।
ज्यारना†*-स० दे० 'जिलाना'।
ज्यावना†*-स० दे० 'जिलाना'।
ज्यूँ†-अव्य० दे० 'ज्यों'।
ज्येष्ठ-वि० [सं०] [भाव० ज्येष्ठता] १. बड़ा। जेठा। २. वृद्ध। बड़ा बूढ़ा। ३. पद, मर्यादा, वय आदि में किसी से बड़ा या बढ़कर। (सीनियर)
पुं० १. जेठ का महीना। २. परमेश्वर।
ज्येष्ठता-स्त्री० [सं०] १. ज्येष्ठ होने का भाव। २. पद, मर्यादा, वय आदि में किसी से बड़े या ज्येष्ठ होने की क्रिया या भाव। (सीनियॉरिटी)
ज्येष्ठा-स्त्री० [सं०] १ अठारहवाँ नक्षत्र जो तीन तारों का है। २.अपने पति की सबसे अधिक प्यारी स्त्री। ३. मध्यमा उँगली। वि० स्त्री० बड़ी।
ज्यों*-क्रि० वि० [सं० यः+इव] १. जिस प्रकार। जैसे। जिस तरह या ढंग से। मुहा०-ज्यों त्यों=किसी न किसी प्रकार। २. जिस क्षण। जिस समय। मुहा०-ज्यों ज्यों=१. जिस क्रम से। २. जिस मात्रा में। जितना।
अव्य० मानो। जैसे।
ज्योति-स्त्री० [सं० ज्योतिस्] १. प्रकाश। उजाला। २. लपट। लौ। ३. अग्नि। ४. सूर्य। ५. दृष्टि। ६. परमात्मा।
ज्योतित-वि० [सं० ज्योति] ज्योति से भरा हुआ। प्रकाशमान्। चमकता हुआ।
ज्योतिरिंगण-पुं० [सं०] जुगनूँ।
ज्योतिमान-वि० दे० 'ज्योतिर्मय'।
ज्योतिर्मय-वि० [सं०] प्रकाशमय। जगमगाता या चमकता हुआ।
ज्योतिर्मान-वि० दे० 'ज्योतिर्मय'।
ज्योतिर्लिंग-पुं० [सं०] १. शिव। २.

शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।

ज्योतिष-पुं० [सं०] वह विद्या जिससे ग्रहों, नक्षत्रों आदि की दूरी, गति आदि जानी जाती है। (यह गणित और फलित दो प्रकार का होता है।)

ज्योतिषी-पुं० [सं० ज्योतिषिन्] ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता। दैवज्ञ।

ज्योत्स्ना-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा का प्रकाश। चाँदनी। २. चाँदनी रात।

ज्योनार-स्त्री० [सं० जेमन=खाना] १. बहुत-से लोगों का साथ बैठकर होनेवाला भोजन। भोज। दावत। २. पका हुआ भोजन। रसोई।

ज्योरी†-स्त्री० [सं० जीवा] रस्सी।

ज्योहत (हर)†*-पुं० दे० 'आत्म-हत्या'।

ज्यौतिष-वि० [सं०] ज्योतिष-संबंधी।

ज्वर-पुं० [सं०] शरीर की अस्वस्थता का सूचक ताप। बुखार।

ज्वरा*-स्त्री० [सं० जरा] मृत्यु।

ज्वलंत-वि० [सं०] १. प्रकाशमान्। चमकता हुआ। २. अत्यन्त स्पष्ट।

ज्वलन-पुं० [सं०] १. जलने की क्रिया या भाव। २. जलन। दाह। ३. अग्नि। आग।

ज्वलित-वि० [सं०] १. जलता हुआ। २. चमकता हुआ। ३. उज्वल। स्वच्छ।

ज्वार-स्त्री० [सं० यवनाल] १. एक प्रकार का पौधा जिसके दानों की गिनती अनाजों में होती है। २. समुद्र के जल का खूब लहराते हुए आगे बढ़ना या ऊपर उठना। 'भाटा' का उलटा।

ज्वार-भाटा-पुं० [हिं० ज्वार+भाटा] समुद्र के जल का खूब लहराते हुए आगे बढ़ना और पीछे हटना, जो चन्द्रमा और सूर्य के आकर्षण से होता है। (इसके चढ़ाव को 'ज्वार' और उतार को 'भाटा' कहते हैं।)

ज्वालक-वि० [सं०] प्रज्वलित करने या जलानेवाला।

पुं० दीपक या लम्प का वह भाग जो बत्ती के जलनेवाले अंश के नीचे रहता है और जिसके कारण दीप-शिखा नीचे के तेल तक नहीं पहुँचने पाती। (बर्नर)

ज्वाला-स्त्री० [सं०] १. अग्नि-शिखा। लपट। २. विष आदि की जलन या गरमी। ३. बहुत अधिक गरमी। ताप।

ज्वालामुखी पर्वत-पुं० [सं०] वह पर्वत जिसकी चोटी के गड्ढे में से धूआँ, राख या आग बराबर अथवा समय समय पर निकला करती है।

झ

झ-हिन्दी वर्णमाला का नवां व्यंजन और चवर्ग का चौथा अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

झंकना-अ० दे० 'झीखना'।

झंकार-स्त्री० दे० 'झनकार'।

झंकारना-अ०, स० दे० 'झनकारना'।

झंकृत-वि० [सं०] जिसमें झनकार हुई हो।

झंकृति-स्त्री० दे० 'झनकार'।

झंखना-अ० दे० 'झीखना'।

झंखाड़-पुं० [हिं० झाड़ का अनु०] १. घनी और कांटेदार झाड़ी या पौधा। २ व्यर्थ की और रद्दी चीजों का समूह।

झँगुली*-स्त्री० दे० 'झगा'।

झंझट-स्त्री० [अनु०] बखेड़ा । प्रपंच ।

झँझरा-वि० [अनु०] [स्त्री० झँझरी] जिसमें बहुत-से छोटे-छोटे छेद हों ।

झँझरी-स्त्री० [हिं० झर-झर से अनु०] १. लकड़ी, लोहे आदि में बनाये हुए बहुत-से छोटे-छोटे छेदों का समूह । जाली । २. झरोखा ।

झंझा-स्त्री० [सं०] वह तेज आंधी जिसके साथ पानी भी बरसता हो ।

झंझानिल (वात)-पुं० दे० 'झंझा' ।

झँझोड़ना-स० [सं० झंझन] कोई चीज झटके से इस तरह हिलाना कि वह टूट-फूट जाय । झकझोरना ।

झंडा-पुं० [सं० जयंत] [स्त्री० अल्पा० झंडी] वह तिकोना या चौकोर कपड़ा जिसका एक सिरा डंडे में लगा रहता है और जिसका व्यवहार सत्ता, संकेत या उत्सव आदि सूचित करने के लिए होता है । पताका । निशान । ध्वजा ।

मुहा०-झंडा गाड़ना या फहराना= किसी स्थान पर अपना अधिकार करके उसके चिह्न-स्वरूप वहां झंडा लगाना ।

झंडी-स्त्री० [हिं० झंडा] छोटा झंडा ।

झँडूला-वि० [हिं० झंड+ऊला (प्रत्य०)] १. जिसका अभी मुंडन-संस्कार न हुआ हो । (बालक) २. घनी पत्तियोंवाला । सघन । (वृक्ष)

झंप-पुं० [सं०] उछाल । फलाँग ।

पुं० [देश०] घोड़े के गले का एक गहना ।

झँप(क)ना-अ० [सं० झंप] १. आड़ में होना । छिपना । २. उछलना । कूदना । ३. एक दम से जा पहुँचना । ४. टूट पड़ना । ५. झेंपना ।

झंपान-पुं० [सं० झंप] पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकारकी खटोली । झप्पान ।

झंपित*-वि० [सं० झंप] ढका या छिपा हुआ ।

झँपोला-पुं० [हिं० झाँपा] [स्त्री० अल्पा० झँपोली] छोटा झाँपा या झाबा । टोकरी ।

झंब*-पुं० [देश०] गुच्छा ।

झँवकार*-वि० [हिं० झाँवला] झाँवले रंग का । कुछ कुछ काला ।

झँवराना-अ० [हिं० झाँवला] १. कुछ काला पड़ना । २. कुम्हलाना । ३. फीका या मन्द पड़ना ।

झँवाँ*-पुं० दे० 'झाँवाँ' ।

झँवाना-अ० [हिं० झाँवाँ] १. झाँवें के रंग का या कुछ काला हो जाना । २. आग का मन्द होकर बुझने को होना । ३. कुम्हलाना । मुरझाना । ४. फीका या मन्द होना ।

स० १. झाँवें के रंग का या कुछ काला कर देना । २. चमक या आभा घटाना । ३. झाँवें से रगड़ना या रगड़वाना ।

झँसना-स० [अनु०] १. सिर या तलुए आदि पर कोई चिकना पदार्थ रगड़ना । २. धोखे से धन आदि ले लेना ।

झँई*-स्त्री० दे० 'झाईं' ।

झक-स्त्री० [अनु०] पागलों की-सी धुन । सनक । खब्त ।

वि० चमकीला । उज्वल ।

*स्त्री० दे० 'झख' ।

झक-झक-स्त्री० [अनु०] १. व्यर्थ की कहा-सुनी । हुज्जत । तकरार । २. बकवाद ।

झकझोरना-स० दे० 'झँझोड़ना' ।

झकझोरा-पुं० [अनु०] झटका ।

झकना-अ० [अनु०] १. बकवाद करना । २. क्रोध में आकर अनुचित बात कहना ।

झका*-वि० [हिं० झक] चमकीला ।

झकाझक-वि० [अनु०] खूब साफ और

चमकता हुआ। उज्वल।

झकुराना*-अ० [हिं० झकोरा] झकोरा लेना। झूमना ।

झकोर*-स्त्री०[अनु०] १.हवा का झोंका। २. झटका। धक्का। ३. लहर।

झकोरना-अ० [अनु०] हवा का झोंका मारना।

झकोरा-पुं० [अनु०] हवा का झोंका।

झक्क-वि० [अ०] साफ और चमकता हुआ। स्त्री० दे० 'झक'।

झक्कड़-पुं० [अनु०] तेज आंधी। वि० दे० 'झक्की'।

झक्की-वि० [हिं० झक] जिसे कुछ झक या सनक हो। सनकी।

झखना*-अ० दे० 'झीखना'।

झख-स्त्री० [हिं० झीखना] झीखने की क्रिया या भाव।

मुहा०-झख मारना-व्यर्थ के कामों में समय नष्ट करना।

झखना-अ० दे० 'झीखना'।

झखी*-स्त्री० [सं० झष] मछली।

झगड़ना-अ० [अनु०] झगड़ा करना।

झगड़ा-पुं० [हिं० झक-झक से अनु०] किसी बात पर होनेवाली कहा-सुनी या विवाद। लड़ाई। हुज्जत। तकरार।

झगड़ालू-वि० [हिं० झगड़ा] बात बात पर झगड़नेवाला। कलह-प्रिय। लड़ाका।

झगरी*-स्त्री० दे० 'झगड़ालू'।

झगा*-पुं० [?] बच्चों के पहनने का एक प्रकार का कुरता।

झगुली*-स्त्री० दे० 'झगा'।

झझक-स्त्री० [हिं० झझकना] १. झझकने की क्रिया या भाव। २. झुँझलाहट। ३. रह रहकर आनेवाली दुर्गंध। ४. रह रहकर होनेवाला पागलपन का हलका दौरा।

झझकना-अ० [अनु०] १. डर या चौंककर अकस्मात् रुक जाना। ठिठकना। भड़कना। २. झुँझलाना।

झझकारना-स०[अनु०] [संज्ञा झझकार] १. डाँटना। २. दुरदुराना।

झट-क्रि० वि० [सं० झटिति] तत्काल। उसी समय। तुरंत। झट-पट।

झटकना-स० [हिं० झट] १ इस प्रकार झोंके से हिलाना कि गिर पड़े। जोर से झटका या झोंका देना। धोखा देकर या जबरदस्ती किसी से कुछ ले लेना। ऐंठना। अ० रोग या चिन्ता से क्षीण होना।

झटका-पुं० [अनु०] १.झटकने की क्रिया या भाव। २. हलका धक्का। झोंका। ३ मांस के लिए पशु-पक्षी काटने का वह प्रकार जिसमें उसे हथियार के एक ही वार से काट डाला जाता है। ४. आपत्ति, रोग, शोक आदि का आघात।

झटकारना-स० दे० 'झटकना'।

झट-पट-अव्य० [हिं० झट+अनु० पट] बहुत शीघ्र। तुरंत। तत्काल।

झटिति*-क्रि० वि० [सं०] १. झट। चट-पट। २. बिना समझे-बूझे।

झड़-स्त्री० दे० 'झड़ी'।

झड़कना-स० दे० 'झिड़कना'।

झड़झड़ाना-स० १. दे० 'झिड़कना'। २. दे० 'झँझोड़ना'।

झड़न-स्त्री० [हिं० झड़ना] १. झड़ने की क्रिया या भाव। २. झड़ी हुई चीज।

झड़ना-अ० [सं० क्षरण] १. किसी चीज के छोटे छोटे अंगों या अंशों का कट या टूटकर गिरना। २ झाड़ा या साफ किया जाना।

झड़प-स्त्री० [अनु०] थोड़ी कहा-सुनी।

सामान्य झगड़ा या तकरार।

झड़पना-अ० [अनु०] १. वेग से किसी पर आक्रमण करना। २. दे० 'झटकना'।

झड़-बेरी-स्त्री० [हिं० झाड़+बेर] जंगली बेर।

झड़वाना-स० हिं० 'झाड़ना' का प्रे०।

झड़ाका-पुं० [अनु०] मुठ-भेड़। झड़प। *क्रि० वि० झट से। चट-पट।

झड़ाझड़-क्रि० वि० [अनु०] लगातार।

झड़ी-स्त्री० [हिं० झड़ना] १. किसी चीज से लगातार कुछ झड़ने की क्रिया। २. कुछ समय तक लगातार होनेवाली वर्षा। ३. लगातार बहुत-सी बातें कहते जाना या चीजें रखते जाना।

झनक-स्त्री० [अनु०] झन झन शब्द।

झनकना-अ० [अनु०] १. झनकार का शब्द करना। २. क्रोध आदि में हाथ-पैर पटकना। ३. दे० 'झीखना'।

झनक वात-स्त्री० [हिं० झनक+वात] एक प्रकार का वात-रोग।

झनकार-स्त्री० [सं० झंकार] १ झन-झन शब्द। झनझनाहट। २. झींगुर आदि छोटे कीड़ों के बोलने का शब्द।

झनकारना-अ०, स० [हिं० झनकार] झन झन शब्द होना या करना।

झनझनाना-अ०, स० [अनु०] झन झन शब्द होना या करना।

झनस-पुं० [?] एक प्रकार का बाजा।

झनाझन-स्त्री० [अनु०] झकार का शब्द। क्रि० वि० झन झन शब्द के साथ।

झप-क्रि० वि० [सं० झंप] जल्दी से।

झपक-स्त्री० [हिं० झपकना] १. पलक गिरने भर का समय। २. झपकी।

झपकना-अ० [सं० झंप] १. पलक का गिरना। २. झपकी लेना। ऊँघना।

झपकाना-स० [अनु०] पलक गिराना।

झपकी-स्त्री० [अनु०] १. हलकी नींद। २. आंख झपकने की क्रिया या भाव।

झपकौहाँ*-वि० [हिं० झपकना] [स्त्री० झपकौहीं] १. नींद या नशे से झपकता हुआ (नेत्र)।

झपट-स्त्री० [सं० झंप] १. झपटने की क्रिया या भाव। २. दे० 'झड़प'।

झपटना-अ० [सं० झंप] आक्रमण करने या चलने के लिए तेजी से आगे बढ़ना।

झपटान-स्त्री० [हिं० झपटना] झपटने की क्रिया या भाव। झपट।

झपटाना-स० हिं० 'झपटना' का प्रे०।

झपटानी-पुं० [हिं० झपटना] एक प्रकार का लड़ाई का हवाई जहाज, जो झपट-कर शत्रुओं के हवाई जहाजों पर आक्रमण करता है।

झपट्टा-पुं० दे० 'झपट'।

झपना-अ० [अनु०] १. (पलकों का) गिरना। आंखें झपकना। २. झुकना। ३. झेंपना।

झपलैया*-स्त्री० दे० 'झँपोला'।

झपाका-पुं० [हिं० झप] शीघ्रता। क्रि० वि० झट से। चट-पट।

झपाटा-पुं० [हिं०झपट] झपट। चपेट।

झपाना-स० [हि० झपना] १. मूँदना। बन्द करना (पलकें)। २. झुकाना।

झपित-वि० [हिं० झपना] १. झपका या मुँदा हुआ। २. नशे या नींद से झपकता हुआ (नेत्र)। ३. लज्जित।

झपेट-स्त्री० दे० 'झपट'।

झपेटना-स० [अनु०] १. आक्रमण करके दबा लेना। दबोचना। २. झिड़कना।

झपेटा-पुं० [अनु०] १. चपेट। झपट। २. भूत-प्रेतादि की बाधा। ३. झिड़की।

झप्पान-पुं० दे० 'झंपान'।

झबरा-वि० [अनु०] [स्त्री० झबरी] बहुत लंबे-लंबे बिखरे हुए बालोंवाला।

झबा*-पुं० दे० 'झब्बा'।

झबिया-स्त्री० [हिं० झब्बा] छोटा झब्बा।

झबूकना*-अ० दे० 'चोंकना'।

झब्बा-पुं० [अनु०] तारों या सूतों आदि का गुच्छा या फुँदना जो कपड़ों या गहनों में शोभा के लिए लगाते हैं।

झमक-स्त्री० [अनु०] १. 'चमक' का अनुकरण। २. प्रकाश। उजाला। ३. झमझम शब्द। ४ नखरे या ठसक की चाल।

झमकना-अ० [हिं० झमक] १. रह-रहकर चमकना। २ झमझम शब्द या झनकार होना। ३ लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना।

झमकाना-स० [हिं० झमकना का स०] १.चमकाना। २ गहने या हथियार आदि दिखाने के लिए बजाना और चमकाना।

झमकार*-वि० [हिं० झमझम] बरसने-वाला (बादल)।

झमकीला-वि० [हिं० झमकना] १. चमकीला। २. चंचल।

झमझम-स्त्री० [अनु०] १ घुंघरू आदि के बजने का शब्द। छम-छम। २. पानी बरसने का शब्द।

क्रि० वि० १. झमझम शब्द के साथ। २. चमक-दमक के साथ। झमाझम।

झमना*-अ० [अनु०] १. झुकना। २. दबना।

झमा*-पुं० दे० 'झाँवाँ'।

झमाका-पुं० [अनु०] १. पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द। २. ठसक। नखरा।

झमाझम-क्रि० वि० [अनु०] कांति या चमक-दमक के साथ।

झमाना-अ० दे० 'झँवाना'।

झमेला-पुं० [अनु० झाँव झाँव] १. बखेड़ा। झंझट। झगड़ा। २. भीड़-भाड़।

झमेलिया-पुं० [हिं० झमेला+इया (प्रत्य०)] झमेला करनेवाला। झगड़ालू।

झर-स्त्री०[सं०] १.पानी का झरना। सोता। २. समूह। ३. लगातार वृष्टि। झड़ी।

झरक*-स्त्री० दे० 'झलक'।

झरकना*-अ० १. दे० 'झलकना'। २. दे० 'झिड़कना'।

झरझर-स्त्री० [अनु०] जल के बहने या बरसने अथवा हवा के चलने का शब्द।

झरझराना-स० [हिं० झरझर] १ झरझर शब्द के साथ गिराना। २. दे० 'झड़झड़ाना'।

झरन-स्त्री० [हिं० झरना] १. झरने की क्रिया या भाव। २. दे० 'झड़न'।

झरना*-अ० [सं० क्षरण] १. दे० 'झड़ना'। २. ऊँची जगह से पानी या और कोई चीज लगातार नीचे गिरना। पुं० [सं० झर] १.ऊँचे स्थान से गिरने-वाला जल-प्रवाह। २. लगातार बहनेवाली पानी की छोटी धारा। सोता। चश्मा। पुं० [सं० क्षरण] १. अनाज छानने की एक प्रकार की छलनी। २. लंबी डंडी की झँझरीदार चिपटी कलछी। पौना। वि० [स्त्री० झरनी] झरनेवाला।

झरप*-स्त्री० [अनु०] १. झोंका। झकोर। २. वेग। तेजी। ३. चिक। चिलमन। ४. दे० 'झड़प'।

झरपना*-अ० [अनु०] १. बौछार मारना। २. दे० 'झड़पना'

झरसना*-अ०, स० दे० 'झुलसना'।

झरहरना*-अ० [अनु०] झरझर शब्द

करना ।

झराझर-क्रि० वि० [अनु०] १. झरझर शब्द के साथ । २ लगातार । बराबर । ३. वेगपूर्वक । जोर या तेजी से ।

झरिफ*-पुं०[हिं०झरप] चिलमन। चिक।

झरी-स्त्री० [हिं० झरना] १. पानी का झरना । सोता । २. वह कर जो किसी बाजार में सौदा बेचनेवालों से नित्य लिया जाता है । ३ दे० 'झड़ी' ।

झरोखा-पुं० [अनु० झरझर+गोखा] वायु और प्रकाश आने के लिए दीवारों में बनी हुई जालीदार छोटी खिड़की। गवाक्ष ।

झल-स्त्री० [सं० ज्वल=ताप] १. दाह । जलन । २. उत्कट इच्छा । उग्र कामना । ३. क्रोध । गुस्सा ।

झलक-स्त्री० [सं० झल्लिका] १. चमक । दमक । आभा । २. आकृति का आभास या प्रतिबिम्ब । ३ बहुत थोड़े समय के लिए या एक बार जरा-सा होनेवाला सामना या दर्शन । ४. वह प्रधान रंगत या आभा जो किसी समूचे चित्र में व्याप्त हो।

झलकना-अ० [सं०झल्लिका] १. चमकना । २. कुछ कुछ प्रकट होना । आभास होना ।

झलकनि*-स्त्री० दे० 'झलक' ।

झलका-पुं० दे० 'फफोला' ।

झलकाना-स० हिं० 'झलकना' का स० ।

झलझल-स्त्री० [हिं० झलकना] चमक । क्रि० वि० रह-रहकर चमकते हुए प्रकाश या आभा के साथ ।

झलझलाना-अ०=चमकना । स०=चमकाना ।

झलना-स० [हिं० झलझल (हिलना)] हवा करने के लिए पंखा या और कोई चीज हिलाना ।

अ० १. इधर-उधर हिलाना । २. झेलना । अ० हिं० 'झालना' का अ० रूप ।

झलमल-पुं० [सं० ज्वल=दीप्ति] १. अँधेरे में रह-रहकर होनेवाला हलका या सूक्ष्म प्रकाश । २. चमक-दमक । क्रि० वि० दे० 'झलझल' ।

झलमलाना-अ० [हिं० झलमल] १. रह-रहकर चमकना । चमचमाना । २. प्रकाश का हिलना-डोलना । स० प्रकाश को हिलाना-डुलाना ।

झलरा[1]-पुं० दे० 'झालर' ।

झलराना[1]*-अ० [हिं० झालर] झालर के रूप में या यों ही फैलकर छाना ।

झला[1]*-पुं० [हिं० झड] १. हलकी वर्षा । २. झालर । ३. पंखा । ४. समूह ।

झलाझल--वि०[अनु०] चमकता हुआ ।

झलाबोर-पुं० [हिं० झलमल] १. कलाबत्तू का बुना हुआ साड़ी या दुपट्टे का चौड़ा आँचल । २. कारचोबी । वि० चमकीला । चमकदार ।

झल्ल-स्त्री० [अनु०] पगलपन ।

झल्ला-पुं० [देश०] १. बड़ा टोकरा । झाबा । २. वर्षा । वृष्टि । ३. बौछार । [1] [हिं० झल] १. पागल । २. मूर्ख ।

झल्लाना-अ० [हिं० झल] क्रुद्ध होकर बोलना । खिजलाना ।

झष-पुं० [सं०] १. मछली । २. मगर । स्त्री० दे० 'झख' ।

झहनना*-अ० [अनु०] १. सन्नाटे में आना । २. रोएँ खड़े होना । रोमांच होना । ३. झन-झन शब्द होना ।

झहरना*-अ० [अनु०] १. झरझर शब्द करना । २. शिथिल या ढीला होना । ३. झल्लाना । ४. हिलना ।

झहराना*-अ० दे० 'झहरना' ।

स० हिं० 'झहरना' का स०।

झाँई-स्त्री० [सं० छाया] १. परछाईं। छाया। २. अंधकार। अँधेरा। ३. धोखा। छल। ४. रक्त-विकार से शरीर पर पड़ने-वाले हलके काले धब्बे। ५. किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग़।

झाँक-स्त्री० [हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। जैसे ताक झाँक।

झाँकना-अ० [सं० अध्यक्ष] १. आड़ में से या इधर-उधर से कुछ झुक या छिपकर देखना।

झाँकनी।*-स्त्री० दे० 'झाँकी'।

झाँका-पुं० दे० 'झरोखा'।

झाँकी-स्त्री० [हिं० झाँकना] १. झाँकने की क्रिया या भाव। २. दर्शन। अवलो-कन। ३. दृश्य। ४. झरोखा।

झाँखना।*-अ० दे० 'झीखना'।

झाँझ-स्त्री० [झनझन से अनु०] १. मँजीरे की तरह के गोलाकार टुकड़ों का जोड़ा जो पूजन आदि के समय बजाया जाता है। छैना। २. क्रोध। गुस्सा। ३ पाजीपन। शरारत। ४. दे० 'झाँझन'।

झाँझड़ी।*-स्त्री० दे० 'झाँझन'।

झाँझन-स्त्री० [अनु०] पैर में पहनने का एक गहना। पैजनी। पायल।

झाँझर।*-स्त्री० [अनु०] १. झाँझन। पैजनी। २. छलनी।

वि० १ पुराना। जर्जर। २.दे० 'झँझरा'।

झाँझरी-स्त्री० दे० 'झंझरी'।

झाँप-स्त्री० [हिं० झाँपना] १. वह जिससे कोई चीज़ ढाँकी जाय। ऊपरी आवरण। २. झपकी। ३. कान का एक गहना।

झाँपना-स० [सं० उत्थापन] १. ढकना। आड़ में करना। २. झेंपना। लजाना। शरमाना। ३. दबोचना।

झाँवँ झाँवँ-स्त्री० [अनु०] १. बकवाद। बकबक। २. हुज्जत। तकरार।

झाँवना।*-स० दे० 'झँवाना'।

झाँवरा।-वि० [सं० श्यामल] १. झाँवें के रंग का। कुछ कुछ काला। २.मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ३. मन्द। धीमा।

झाँवली-स्त्री० [हिं० छाँव=छाया] १. झलक। २. आँख से किया हुआ संकेत। कनखी।

झाँवाँ-पुं० [सं० झामक] जली हुई ईंट जिससे रगड़कर पैर साफ करते हैं।

झाँसा-पुं० [सं० अध्यास] बहकाने की चाल। धोखा। दम-बुत्ता।

यौ०-**झाँसा-पट्टी**=बातें बनाकर दिया जानेवाला धोखा।

झाग-पुं० [हिं० गाज] फेन। गाज।

झागड़।*-पुं० दे० 'झगड़ा'।

झाड़-पुं० [सं० झाट] १ वह छोटा पेड़ जिसकी डालियाँ ज़मीन के बहुत पास से निकलकर चारों ओर फैलती हैं। २. इस आकार का रोशनी करने का शीशे का वह उपकरण जो छत में लट-काया या ज़मीन पर रखा जाता है।

स्त्री० [हिं० झाड़ना] १. झाड़ने की क्रिया या भाव। २. फटकार। डाँट-डपट। ३. मंत्र पढ़कर झाड़ने या फूँकने की क्रिया।

यौ०-झाड़-फूँक।

झाड़खंड-पुं० [हिं० झाड़+खंड] जंगल।

झाड़-झंखाड़-पुं० [हिं० झाड़+झंखाड़] १. काँटेदार या व्यर्थ के पेड़-पौधों का समूह। २.निकम्मी और टूटी-फूटी चीज़ें।

झाड़न-स्त्री० [हिं० झाड़ना] १. वह जो झाड़ने पर निकले। २. वह कपड़ा जिससे चीज़ें झाड़ी या साफ की जाती हैं। (डस्टर)

झाड़ना-स० [सं० शरण या शायन] १.

ऊपर पड़ी हुई चीज झटके से हटाना या गिराना। २. दूर करना। हटाना। ३ अपनी योग्यता दिखलाने के लिए गढ़-गढ़कर बातें करना।

स० [सं० क्षरण] १. किसी चीज पर पड़ी हुई धूल हटाने के लिए उसे उठाकर झटका देना या उसपर झाड़ू देना। २. किसी चीज पर पड़ी या लगी हुई कोई दूसरी चीज़ झटके से गिराना। झटकारना। ३. किसी से धन ऐंठना। झटकना। ४. रोग या प्रेत-बाधा दूर करने के लिए मंत्र पढ़कर फूँकना। ५. फटकारना। डाँटना।

झाड़-फूँक-स्त्री० [हिं० झाड़ना+फूँकना] रोग या भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर करने के लिए मंत्र-पढ़कर झाड़ना-फूँकना।

झाड़ा-पुं० [हिं० झाड़ना] १ झाड़-फूँक। २. तलाशी। ३. मल। गुह। ४. पाखाना फिरने की जगह। टट्टी।

झाड़ी-स्त्री० [हिं० झाड़] १. छोटा झाड़ या पौधा। २. छोटे पेड़ों का समूह।

झाड़ू-पुं० [हिं० झाड़न] १. लंबी सींकों या रेशों आदि का बना हुआ वह उपकरण जिससे जमीन या फर्श झाड़ते हैं। कूँचा। बुहारी।

मुहा०- झाड़ू फिरना=कुछ न बचना। २ पुच्छल तारा। केतु।

झापड़-पुं०[सं० चपट] थप्पड़। तमाचा।

झाबा-पुं० [हिं० झाँपना] १. टोकरा। खाँचा। २. दे० 'झब्बा'।

झाम*-पुं० [देश०] [वि० झामी] १. झब्बा। गुच्छा। २. डाँट-फटकार। ३. धोखा। छल।

झामर*-पुं० दे० 'झमर'।

झामरा*-वि० [हिं० झाँवला] मैला।

झार*-वि० [सं० सर्व] १. एक मात्र। निपट। केवल। २.समस्त। कुल। सब। पुं० समूह। झुंड।

स्त्री० दे० 'झाल'।

झारखंड-पुं० [हिं० झाड़+खंड] १. एक प्राचीन प्रदेश जो वैद्यनाथ से जगन्नाथ पुरी तक था। २. जंगल।

झारना*-स० दे० 'झाड़ना'।

झारी-स्त्री० [हिं० झरना] पानी रखने का एक प्रकार का लंबा टोंटीदार बरतन।

झाल-पुं० [सं० झल्लक] झाँझ (बाजा)। स्त्री० [सं० ज्वाला] १. चरपराहट। तीतापन। २. तरंग। लहर। ३. ज्वाला। ताप। ४. ईर्ष्या। डाह।

स्त्री० [हिं० झड़] वर्षा की झड़ी।

झालना-स० [?] १. धातु की चीजों को टाका लगाकर जोड़ना। २. पीने की चीज ठंढी करने के लिए बरफ में रखना।

झालर-स्त्री० [सं० झल्लरी] १. किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिए बनाया या लगाया हुआ लटकनेवाला किनारा। २. इस आकार की लटकती हुई कोई चीज। ३. झाँझ।

पुं० [?] एक प्रकार का पकवान।

झिझकना-अ० दे० 'झझकना'।

झिझकारना-स० १. दे० 'झझकारना'। २. दे० 'झटकना'। ३. दे० 'झिड़कना'।

झिड़कना-स० [अनु०] अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक बिगड़कर कड़ी बात कहना।

झिड़की-स्त्री० [हिं० झिड़कना] झिड़ककर कही हुई बात। डाँट। फटकार।

झिपना-अ० दे० 'झेंपना'।

झिपाना-स०हिं० 'झेंपना' का स०।

झिरना*-अ० दे० 'झरना'।

झिरी-स्त्री० [हिं० झरना] १. वह छोटा

छेद जिसमें से कोई चीज़ निकलती रहे। २.पानी का छोटा सोता। ३. पाला। तुषार।

झिलना-अ० [?] १. जबरदस्ती अन्दर घुसना या धँसना। २. तृप्त होना। अघाना। ३. झेला या सहा जाना।

झिलम-स्त्री० [हिं० झिलमिला] लोहे की वह टोपी जो युद्ध के समय सिर और मुँह पर पहनी जाती थी। खोद।

झिलमिल-स्त्री० [अनु०] १. हिलता हुआ प्रकाश। २. एक प्रकार का बढ़िया और मुलायम कपड़ा। ३. दे० 'झिलम'। वि० रह रहकर चमकता हुआ।

झिलमिला-वि० [अनु०] १. चमकता हुआ। २. जो बहुत स्पष्ट न हो।

झिलमिलाना-अ० [अनु०] [भाव० झिलमिलाहट] १. रह-रहकर चमकना। २ प्रकाश का रह-रहकर हिलना। स० १. किसी चीज़ को हिलाकर बार बार चमकाना। २. हिलाना।

झिलमिली-स्त्री० [हिं० झिलमिल] १. बेड़ी पटरियों की वह बनावट जो किवाड़ों में हवा या प्रकाश आने के लिए लगी रहती है। खड़खड़िया। २. चिक। चिलमन।

झिलाना-स० हिं० 'झेलना' का प्रे०।

झिल्लड़-वि० [हिं० झिल्ली] पतला और झँझरा। 'गफ़' का उलटा। (कपड़ा)

झिल्ली-स्त्री० [सं०] झींगुर। स्त्री० [सं० चैल] ऊपर की ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई दे।

झीकना-अ० दे० 'झीखना'।

झीका-पुं० [देश०] उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिए डाला जाय।

झींगुर-पुं० [अनु० झीं+झीं] एक छोटा बरसाती कीड़ा जो बहुत तेज़ झीं झीं शब्द करता है। झिल्ली।

झींसी-स्त्री० [अनु० या हिं० झीना] छोटी छोटी बूँदों की वर्षा। फुहार।

झीख-स्त्री० [हिं० खीज] झीखने की क्रिया या भाव। कुढ़न।

झीखना-अ० [हिं० खीजना] १. पछताना और कुढ़ना। २. अपना दुखड़ा रोना।

झीना-वि० [सं० क्षीण] १. बहुत महीन। झिल्लड़। बारीक। (कपड़ा) २. जिसमें पास पास बहुत-से छेद हों। झँझरा। ३. दुबला। दुर्बल।

झील-स्त्री० [सं० क्षीर] लंबा-चौड़ा प्राकृतिक जलाशय या तालाब। सर।

झीवर-पुं० [सं० धीवर] मल्लाह।

झुँझलाना-अ० [अनु०] [भाव० झुँझलाहट] खिसलाना। चिड़चिड़ाना।

झुंड-पुं० [सं० यूथ] बहुत-से मनुष्यों, पशुओं आदि का समूह। वृंद। गरोह।

झुकना-अ० [सं० युज] १. ऊपरी भाग का नीचे की ओर कुछ लटक आना। निहुरना। नवना। २. किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों का किसी ओर दबना। ३. मन का किसी ओर प्रवृत्त होना। ४. नम्र या विनीत होना। ५. हार मानना।

झुकराना-अ०[हिं० झोंका] झोंका खाना।

झुकाना-स० [हिं० झुकना] १. किसी खड़ी चीज को झुकने में प्रवृत्त करना। नवाना। २.प्रवृत्त करना। ३.रजू करना। ४. नम्र करना। विनीत बनाना। ५. हार मनवाना।

झुकामुखी-स्त्री० दे० 'झुटपुटा'।

झुकाव-पुं० [हिं० झुकना] झुकने या प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव।

झुटपुटा-पुं०[अनु०] ऐसा समय जब कि कुछ अँधेरा और कुछ प्रकाश हो।

झुटुंग-वि० [हिं० झोंटा] १. बड़े और बिखरे हुए बालोंवाला। २. भूत-प्रेत।

झुठकाना-स० [हिं० झूठ] झूठी बातें कहकर बहकाना या विश्वास दिलाना।

झुठलाना-स० [हिं० झूठ] १. सच्चे को झूठा ठहराना या बनाना। २. झूठ कहकर धोखा देना। फुसलाना।

झुठाई*†-स्त्री० [हिं० झूठ] झूठापन।

झुठाना-स० [हिं० झूठ+आना (प्रत्य०)] झूठा ठहराना।

झुनक-स्त्री० [अनु०] [क्रि० झुनकना, झुनकाना] नूपुर का शब्द।

झुनझुन-पुं० [अनु०] घुँघरू आदि के बजने का शब्द।

झुनझुना-पुं० [हिं० झुनझुन से अनु०] बच्चों का वह खिलौना जिसे हिलाने से झुनझुन शब्द होता है। घुनघुना।

झुनझुनाना-अ०, स० [अनु०] झुन-झुन शब्द होना या करना।

झुनझुनी-स्त्री० [हिं०झुनझुनाना] १.हाथ या पैर में रक्त का संचार रुकने से होनेवाली सनसनाहट। २. एक प्रकार का रोग जिसमें ऐसी सनसनाहट होती है।

झुबझुबी-स्त्री० [देश०] कान में पहनने का एक गहना।

झुमका-पुं० [हिं० झूमना] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना।

झुमाना-स० हिं० 'झूमना' का स०।

झुरझुरी-स्त्री० [अनु०] कँपकपी।

झुरना-अ० [हिं० झूरा या चूर] १. सूखना। खुश्क होना। २. किसी के लिए बहुत अधिक दुःखी होना।

झुरमुट-पुं० [सं० झुंट=झाड़ी] १. पास-पास उगे हुए कई झाड़ या क्षुप। २. बहुत-से लोगों का समूह। गरोह। ३. कपड़े से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया।

झुरसना†*-अ० दे० 'झुलसना'।

झुराना†-स० [हिं० झुरना] सुखाना। अ० १. सूखना। २. झुरना।

झुर्री-स्त्री० [हिं० झुरना] शरीर के चमड़े पर होनेवाली सिकुड़न। शिकन।

झुलनी-स्त्री० [हिं० झूलना] मोतियों का वह गुच्छा जो स्त्रियाँ नथ में लगाती हैं।

झुलसन-स्त्री० [हिं० झुलसना] १. झुलसने की क्रिया या भाव। २. शरीर झुलसानेवाली गरमी।

झुलसना-अ० [सं० ज्वल+अंश] अधिक गरमी या जलने के कारण किसी चीज के ऊपरी भाग का सूख या जलकर काला पड़ना। स० ऊपरी तल इस प्रकार थोड़ा जलाना कि उसका रंग काला हो जाय। झौंसना। अध-जला करना।

झुलाना-स० [हिं० झूलना] १. किसी को झूलने में प्रवृत्त करना। २. कुछ देने या करने के लिए किसी को आसरे में रखना और दौड़ना।

झुलावना†*-स० दे० 'झुलाना'।

झुल्ला-पुं०[देश०] एक प्रकार का कुरता।

झूँका†*-पुं० दे० 'झोंका'।

झूँखन*-अ० दे० 'झीखना'।

झूँझल-स्त्री० दे० 'झुँझलाहट'।

झूँका†*-पुं० दे० 'झोंका'।

झूठ-पुं० [सं० अयुक्त, प्रा० अयुत्त] कोई बात जैसी हो, उसके विपरीत रूप में कहना। 'सच' का उलटा।

मुहा०-झूठ-सच कहना या लगाना= झूठी शिकायत करना।

झूठ-मूठ-क्रि०वि०[हिं०झूठ+मूठ(अनु०)]

१.बिना किसी आधार के। २.या ही। व्यर्थ।

झूठा-वि० [हिं० झूठ] १. जो सच्चा, ठीक या वास्तविक न हो। मिथ्या। असत्य। २. झूठ बोलनेवाला। मिथ्यावादी। ३. केवल रूप-रंग आदि में असल चीज के समान। नकली। बनावटी। ४. बिगड़ जाने के कारण ठीक काम न देनेवाला (पुरजा या अंग आदि)। †वि० दे० 'जूठा'।

झूठों-क्रि० वि० दे० 'झूठ-मूठ'।

झूमक-पुं० [हिं० झूमना] १. एक प्रकार का गीत जो फागुन में स्त्रियाँ झूम-झूमकर नाचती हुई गाती है। झूमर। झूमकरा। २ इस गीत के साथ होनेवाला नाच। ३.गुच्छा। ४. छोटे झुमकों या गुच्छों की वह पंक्ति जो साड़ी आदि में सिर पर पड़नेवाले भाग में टँकी रहती है। ५. दे० 'झुमका'।

झूमक-स,ड़ी-स्त्री० [हिं० झूमक+साड़ी] वह साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि की झालर लगी हो।

झूमड़-पुं० दे० 'झूमर'।

झूमना-अ० [सं० झम्प] [भाव० झूम] १. बार-बार आगे-पीछे, नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना। झोंके खाना। २. मस्ती या नशे में सिर और धड़ को आगे-पीछे और इधर-उधर हिलाना।

झूमर-पुं० [हिं० झूमना] १. सिर पर पहनने का एक गहना। २. झुमका। ३. झूमक नाम का गीत और नाच। ४. एक प्रकार का काठ का खिलौना। ५. एक ही तरह की कई चीजों का एक स्थान पर एकत्र होना।

झूरा†-वि० [सं० शुष्क ?] सूखा। खुश्क। पुं० वर्षा का अभाव। अ-वर्षण।

झूल-स्त्री० [हिं० झूलना] १. शोभा के लिए चौपायों की पीठ पर डाला जानेवाला कपड़ा। २. दे० 'झूला'।

झूलन-पुं० [हिं० झूलना] वर्षा-ऋतु का वह उत्सव जिसमें मूर्तियाँ झूले पर बैठाकर झुलाई जाती है। हिंडोला।

झूलना-अ० [सं० दोलन] १. नीचे लटककर बार बार आगे-पीछे या इधर-उधर झोंके से दूर तक हिलना। २. झूले पर बैठकर पेंग लेना। ३. किसी बात या काम की आशा में बराबर कहीं आते-जाते रहना।

वि० झूलनेवाला। जो झूलता हो। जैसे-झूलना पुल या बिस्तर।

*पुं० दे० 'झूला'।

झूला-पुं० [सं० दोला] १. पेड़ या छत आदि में लटकाई हुई रस्सियाँ या रस्से जिनपर बैठकर झूलते है। हिंडोला। २. बड़े रस्सों आदि का बना हुआ झूलनेवाला पुल। ३. एक प्रकार का बिस्तर जिसके दोनों सिर दोनों ओर ऊँची जगहों में बँधे रहते है। ४. दे० 'झूलन'।

झेंपना-अ० [हि० झिपना] लज्जित होना। शरमाना।

झेर†*-स्त्री० [फा० देर] १. विलंब। देर। २. बखेड़ा। झंझट। ३. दे०'झिल'।

झेरना†*-स० [हिं० झेलना] १. तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाना। २. हलका झटका या झोंका खाना।

झेल-स्त्री० [हिं० झेलना] १. झेलने की क्रिया या भाव। २. हलका धक्का या झोंका।

स्त्री० विलंब। देर।

झेलना-स० [सं० चक्षेल ?] १. अपने ऊपर लेना। सहना। बरदाश्त करना।

२. तैरते समय हाथ-पैरों से पानी हटाना। ३. पानी में उतरना। हेलना। ४. ढकेलना।

झोंक-स्त्री० [हिं० झुकना] १. झुकाव। प्रवृत्ति। २. बोझ। भार। ३. प्रबल या तीव्र गति। वेग। तेजी।

यौ०-**नोक-झोंक**=१. ठाट-बाट। धूम-धाम। २. प्रतिद्वंद्विता। विरोध।

झोंकना-स० [हिं० झोंक] १. कोई वस्तु जलाने के लिए आग में फेंकना।

मुहा०-**भाड़ झोंकना**=व्यर्थ के और निकम्मे काम करना।

२. जबरदस्ती आगे की ओर या संकट की स्थिति में ढकेलना। बुरी जगह की ओर धक्का देकर बढ़ाना। ३ किसी काम में अंधाधुंध खर्च करना।

झोंका-पुं० [हिं० झोंक] १. झटका। धक्का। रेला। जैसे-हवा का झोंका। २. पानी का हिलोरा। ३ इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया।

झोंकी-स्त्री० [हिं० झोंक] १. उत्तर-दायित्व। जवाबदेही। २. जोखिम।

झोंझ-स्त्री० [देश०] १ पक्षियों का घोंसला। २. कुछ पक्षियों के गले का नीचे लटकता हुआ मांस।

झोंझल-स्त्री० दे० 'झुँझलाहट'।

झोंटा-पुं० [सं० जूट] १. सिर के बड़े बड़े बालों का समूह।

पुं० [हिं० झोंका] झूले की पेंग।

झोंटी†*-स्त्री० दे० 'झोंटा'।

झोंपड़ा-पुं० [हिं० छोपना ?] [स्त्री० अल्पा० झोंपड़ी] घास-फूस आदि का वह छोटा घर जो गांवों या जंगलों में कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारें उठाकर बनाते हैं। कुटी। पर्णशाला।

झोटिंग-वि० दे० 'झुटुंग'।

पुं० भूत-प्रेत या पिशाच आदि।

झोरना†-स० [सं० दोलन] झटका देते हुए कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि उसपर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीजें गिर जायँ।

झोरी†*-स्त्री० दे० 'झोली'।

स्त्री० [?] एक प्रकार की रोटी।

झोल-पुं० [हिं० झाल] १. तरकारी आदि का गाढ़ा रसा। शोरबा। २. चावलों का मांड़। पीच। ३ धातु पर का मुलम्मा। ४. झंझट, बखेड़े या धोखे की बात।

पुं० [हिं० झूलना] १. कपड़े का वह अंश जो ढीला होने के कारण झूल या लटक जाय। 'तनाव' या 'कसाव' का उलटा। २. पल्ला। आंचल। ३. परदा। ४. ओट। आड़।

पुं० [हिं० झिल्ली] १ थैली के आकार की वह झिल्ली जिसमें गर्भ से निकलने के समय बच्चे या अंडे बंद रहते हैं। २.गर्भ।

पुं० [सं० ज्वाल] १. राख। भस्म। २. दाह। जलन।

झोलदार-वि० [हिं० झोल+फा० दार] १. जिसमें झोल या रसा हो। २. जिस-पर गिलट या मुलम्मा हुआ हो। ३. ढीला-ढाला (कपड़ा)।

झोला-पुं० [हिं० झूलना] १. झोंका। झटका। २. हिलोर। लहर।

पुं० [हिं० झूलना] [स्त्री० अल्पा० झोली] १. कपड़े की बड़ी झोली। २. साधुओं का ढीला कुरता। चोला। ३ वात का एक रोग जिसमें कोई अंग निर्जीव होकर झूलने लगता और बे-काम हो जाता है। लकवा। ४. पाले, लू आदि के कारण पेड़ों के कुम्हला या सूख जाने का रोग।

५. झटका । झोंका ।

झोली-स्त्री० [हिं० झूलना] १. चीजें रखने की कपड़े की थैली । २.घास बाँधने का जाला । ३. मोट । चरसा । पुर । ४. दे० 'झूला' ३. ।

स्त्री० [सं० ज्वाल] राख । भस्म ।

मुहा०-झोली बुझाना=१.सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने चलना । २. निराश होकर या व्यर्थ बैठना ।

झौंर*-पुं० [सं० युग्म] १. झुंड । समूह । २. फूलों या फलों का गुच्छा । ३. एक प्रकार का गहना । झब्बा ।

झौंरना-अ० [अनु०] १. गूँजना । गुंजारना । २. दे० 'झौरना' ।

झौंरा-पुं० [?] झुंड । दल ।

झौंराना-अ० [हिं० झूमना] इधर-उधर हिलना । झूमना ।

अ० [हिं० झांवला] १. रंग काला पड़ जाना । २. मुरझाना । कुम्हलाना ।

झौंसना-स० दे० 'झुलसना' ।

झौंआ-पुं० [हिं० झावा] खँचिया ।

झौंर-पुं० [अनु० झव झंव] १. हुज्जत । तकरार । २. डाँट-फटकार ।

झौंरना-स० [हिं० झपटना] दबाने के लिए झपटकर पकड़ना । छाप लेना ।

झौंरे-क्रि० वि० [हिं० धौरे] १. समीप । पास । निकट । २. साथ । संग ।

झौलना*-स० [सं० ज्वाल] जलाना ।

झौहाना-अ० [अनु०] बहुत क्रोध से या बिगड़कर कुछ कहना ।

ञ

ञ-हिन्दी वर्ण-माला का दसवाँ व्यंजन जो च-वर्ग का पाँचवा वर्ण है । इसका उच्चारण-स्थान तालु और नासिका है ।

ट

ट-नागरी वर्ण-माला में ग्यारहवाँ व्यंजन और टवर्ग का पहला वर्ण, जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है ।

टंक-पुं० [सं०] १. चार माशे की एक पुरानी तौल । २. सिक्का । ३. पत्थर गढ़ने की टाँकी। छेनी। ४. कुल्हाड़ी। ५. सुहागा। पुं० [अं० टैंक] १. तालाब । २. पानी रखने का बड़ा हौज या खजाना । ३. लोहे की एक प्रकार की गाड़ी जिसपर तोपें चढ़ी रहती है । (यह ऊबड़-खाबड़ जमीन पर भी चल सकता है और पहाड़ियों पर भी चढ़ या उनपर से उतर सकता है ।)

टंकक-पुं० [सं०] वह जो टंकण-यंत्र पर टंकण का काम करता हो । (टाइपिस्ट)

टंकण-पुं०[सं०] १. सुहागा । २. धातु की चीज़ में टाका या जोड़ लगाना । ३. घोड़े की एक जाति । ४. टंकण-यंत्र पर उसकी सहायता से कुछ लिखने या मुद्रित करने का काम । (टाइप-राइटिंग)

टंकण-यंत्र-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध यंत्र जिसकी सहायता से थोड़ी संख्या में पत्र, सूचनाएँ आदि प्रायः उसी प्रकार छापी जाती हैं, जिस प्रकार छापे के यंत्र

से छपती हैं। (टाइप-राइटर)

टँकना-अ० [सं० टंकण] १. टाँका जाना। २. सीकर अटकाया जाना। सिलना। ३ लिखा जाना। दर्ज किया जाना। ४. सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना। कुटना।

टंकशाला-स्त्री० [सं०] टकसाल।

टंका-पुं० [सं० टंक] १. एक तोले की तौल। २. ताँबे का एक पुराना सिक्का।

टँकाई-स्त्री० [हिं० टाँकना] टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टँकाना-स० [हिं० टाँकना] १. टाँकों से जोड़वाना या सिलवाना। २. याद रखने के लिए लिखवाना।

टंकार-स्त्री० [सं०] [क्रि० टंकारना] १ टन-टन शब्द जो कसे हुए डोरे या तार आदि पर उँगली का आघात करने से होता है। २. धातु के टुकड़े पर आघात लगने का शब्द। ठनाका। झनकार।

टंकारना-स० [सं० टंकार] धनुष की डोरी खींचकर उससे शब्द उत्पन्न करना।

टंकी-स्त्री०[सं० टंक=गड्ढा या अं० टैंक] पानी रखने का छोटा कुंड या बड़ा बरतन। टाँका।

टंकोर-पुं० दे० 'टंकार'।

टँगना-अ० [सं० टंगण] टाँगा जाना। विशेष दे० 'टाँगना'।

पुं० १. दोनों ओर दो जगहों पर बँधी हुई वह रस्सी जिसपर कपड़े टाँगे जाते हैं। अलगनी। २. इस काम के लिए कुछ इसी प्रकार का बना हुआ काठ का ढाँचा।

टँगारी-स्त्री० [सं० टंग] कुल्हाड़ी।

टंचा-वि० [सं० चंड] १. सूम। कंजूस। २. कठोर-हृदय। निष्ठुर। ३. धूर्त।

वि० [हिं० टिचन] तैयार। मुस्तैद।

टंट-घंट-पुं० [अनु० टन टन+घंट] १. घड़ी-घंटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच। २. रद्दी सामान।

टंटा-पुं० [अनु० टन टन] १. व्यर्थ की झंझट। खटराग। २. उपद्रव। उत्पात। ३. झगड़ा। लड़ाई।

टँडैल-पुं०[अं०जनरल] मजदूरों का सरदार।

टई*-स्त्री० दे० 'टही'।

टक-स्त्री० [सं० टक या त्राटक] १. बिना पलक गिराये देर तक देखना। २. स्थिर दृष्टि।

मुहा०-**टक टक देखना**=चकित होकर कुछ देर तक देखते रहना। **टक लगाना**=आसरा देखते रहना।

टकटका*-पुं० दे० 'टकटकी'।

टकटकाना-स० [हिं० टक] १. टक लगाकर ताकना। स्थिर दृष्टि से देखना। २. टकटक शब्द उत्पन्न करना।

टकटकी-स्त्री० [हिं० टक] देर तक इस प्रकार देखना कि पलक न गिरे। स्थिर दृष्टि।

टकटोरना-स० दे० 'टटोलना'।

टकराना-अ० [हिं० टक्कर] १. जोर से भिड़ना। टक्कर खाना। २. मारे मारे फिरना। व्यर्थ घूमना।

स० एक चीज पर दूसरी चीज जोर से मारना। टक्कर देना।

टकसाल-स्त्री० [सं० टंकशाला] वह स्थान जहाँ सिक्के ढलते हैं।

मुहा०-**टकसाल बाहर**=(वाक्य या प्रयोग) जिसका व्यवहार शिष्ट या सर्वमान्य न हो।

टकसाली-वि० [हिं० टकसाल] टकसाल का। टकसाल संबंधी। २. खरा। चोखा। ३. विशेषज्ञों या शिष्टों द्वारा माना हुआ।

शिष्ट-सम्मत। ४.ऊँचा हुआ। बिलकुल ठीक। पुं० टकसाल का अधिकारी।

टका-पुं० [सं० टंक] १. चाँदी का एक पुराना सिक्का। २. ताँबे का एक पुराना सिक्का जो दो पैसों के बराबर होता था। अधन्नी। (आज-कल इसकी जगह निकल का छोटा चौकोर सिक्का चला है।)

मुहा०-**टके गज की चाल**=पुरानी और भद्दी चाल।

३. रुपया-पैसा।

टकासी-स्त्री० [हिं० टका] टके या दो पैसे फी रुपये सूद पर ऋण लेने या देने का व्यवहार।

टकुआ-पुं० दे० 'तकला'।

टकोर-स्त्री० [सं० टंकार] [क्रि० टकोरना] १. हलकी चोट या आघात। ठेस। २. नगाड़े पर होनेवाला आघात। ३. नगाड़े का शब्द। ४. धनुष की डोरी खींचने का शब्द। टंकार। ५. दवा की गरम पोटली से किसी अंग पर किया जानेवाला सेंक।

टक्कर-स्त्री० [अनु० ठक] १. दो वस्तुओं के वेगपूर्वक एक दूसरी से भिड़ने से होनेवाला आघात। कड़ी ठोकर।

मुहा०-**टक्कर खाना**=१.जोर से टकराना। २. मारा मारा फिरना।

२. मुकाबला। सामना।

मुहा०-**टक्कर का**=बराबरी या जोड़ का। समान। तुल्य। **टक्कर खाना**=१. मुकाबला करना। भिड़ना। २. समान या तुल्य होना। **टक्कर लेना**=१ वार सहना। २. बराबरी का होना।

३. पशुओं या मनुष्यों का एक दूसरे के सिर पर अपना सिर जोर से मारना।

मुहा०-**टक्कर मारना**=व्यर्थ का बहुत अधिक प्रयत्न करना।

४. घाटा। हानि।

टखना-पुं० [सं० टंक] एड़ी के ऊपर और पिंडली के नीचे की गाँठ। गुल्फ।

टगण-पुं०[सं०] छः मात्राओं का एक गण।

टघरना[1]-अ० दे० 'पिघलना'।

टटका-वि० दे० 'ताजा'।

टटकाई*-स्त्री० [हिं० टटका] ताजापन।

टटोना[1]-स० दे० 'टटोलना'।

टटोलना-स० [सं० त्वक्+तोलन] [भाव० टटोल] १. मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना। २ ढूँढने के लिए इधर-उधर हाथ फैलाना या दौड़ाना। ३. बात-चीत करके किसी के मन का भाव जानना। थाह लेना।

टटोहना*-स० दे० 'टटोलना'।

टट्टर-पुं० [सं० स्थाता ?] ओट या रक्षा के लिए बाँस की पट्टियाँ जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा या परदा।

टट्टी-स्त्री०[हिं० टट्टर] १ बाँस की पट्टियों का बना हुआ छोटा और हलका टट्टर।

मुहा०-**टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना**=१. किसी की आड़ में रहकर औरों के साथ कोई चाल चलना। २. छिपकर बुरा काम करना। **धोखे की टट्टी**=धोखा देनेवाली बात या चीज़। अविश्वसनीय वस्तु या बात।

२. चिक। चिलमन। ३ पतली दीवार। ४. पाखाना। ५. बाँस की पट्टियों का वह परदा या छाजन जिसपर बेलें चढ़ाई जाती है। जैसे-अंगूर की टट्टी।

टट्टू-पुं० [अनु०] छोटा घोड़ा। टाँगन।

मुहा०-**भाड़े का टट्टू**=केवल धन के लोभ से दूसरे की ओर से काम करनेवाला।

टनकना-अ० [अनु० टन] १. टन टन बजना। २. धूप या गरमी लगने के

कारण सिर में दर्द होना।

टनटन-स्त्री॰ [अनु॰] घंटे का शब्द।

टनटनाना-स॰ [हिं॰ टनटन] धातु के टुकड़े पर कोई चीज मारकर 'टनटन' शब्द उत्पन्न करना।

अ॰ 'टनटन' शब्द होना।

टनमन-पुं॰ दे॰ 'टोना'।

वि॰ दे॰ टनमना'।

टनमना-वि॰ [सं॰ तन्मनस्] स्वस्थ। चंगा। 'अनमना' का उलटा।

टनाटन-स्त्री॰ [अनु॰] लगातार होनेवाला 'टनटन' शब्द।

वि॰ बिलकुल ठीक दशा में और दृढ़।

क्रि॰ वि॰ 'टनटन' शब्द के साथ।

टप-पुं॰ [हिं॰ टोप] किसी चीज के ऊपर का ओहार या छाजन। जैसे-गाड़ी का टप।

पुं॰ [अं॰ टब] १. पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन। टोका। २. कान में पहनने का फूल।

स्त्री॰ [अनु॰] १. बूँद बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द। २. अचानक ऊपर से गिरने का शब्द।

टपक-स्त्री॰ [हिं॰ टपकना] १. टपकने की क्रिया या भाव। २. बूँद बूँद गिरने का शब्द। ३ रह-रहकर होनेवाला दर्द।

टपकना-अ॰ [अनु॰ टप टप] १. बूँद बूँद करके गिरना। चूना। रसना। २. ऊपर से सहसा आकर गिरना या पड़ना। ३.कोई भाव प्रकट होना। जाहिर होना। झलकना। ४. रह-रहकर दर्द करना। चिलकना। टीस मारना।

टपका-पुं॰ [हिं॰ टपकना] बूँद बूँद गिरने का भाव। रसाव। २. टपकी हुई वस्तु। ३. पककर आपसे आप गिरा हुआ फल। ४. दे॰ 'टपक'।

टपकाना-स॰ [हिं॰ टपकना] १. बूँद बूँद करके गिराना। चुआना। २. भबके से अर्क खींचना। चुआना।

टपना-अ॰ [हिं॰ तपना] व्यर्थ आसरे में रहकर कष्ट उठाना।

स॰ १. किसी चीज को पार करके आगे बढ़ना। लाँघना। २. कूदना। फाँदना।

टपाटप-क्रि॰ वि॰ [अनु॰] १. लगातार टपटप शब्द के साथ (गिरना)। २. जल्दी जल्दी।

टपाना-स॰ [हिं॰ टपना] व्यर्थ आसरे में रखकर कष्ट देना।

स॰ [हिं॰टपना] पार कराना। फँदाना।

टप्पा-पुं॰ [हिं॰ टाप] १. उतनी दूरी जितनी कोई फेंकी हुई वस्तु पार करे। २ उछाल। फलाँग। ३. दो स्थानों के बीच में पड़नेवाला बड़ा मैदान। ४. जमीन का छोटा टुकड़ा। ५. अंतर। फरक। ६. एक प्रकार का पक्का गाना, जिसमें गले से स्वरों के बहुत छोटे छोटे टुकड़े या दाने एक विशेष प्रकार से निकाले जाते हैं।

टप्पैत-वि॰ [हिं॰ टप्पा] १. टप्पे (गाने) से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे-टप्पैत गला। २. टप्पा गानेवाला।

टब-पुं॰ [अं॰] १. पानी रखने का एक प्रकार का बड़ा बरतन। २. दे॰ 'टप'।

टमटम-स्त्री॰ [अं॰ टैंडम] ऊँचे पहियों की एक प्रकार की हलकी घोड़ा-गाड़ी।

टमाटर-पुं॰ [अं॰ टोमैटो] एक प्रकार का खट्टा विलायती बैंगन।

टर-स्त्री॰ [अनु॰] १. कर्कश या कर्ण-कटु शब्द। कड़ई बोली।

मुहा॰-**टर टर करना या लगाना**= ढिठाई से या व्यर्थ बहुत बोलते चलना।

२. मेंढक की बोली । ३. अविनीत आचरण या चेष्टा । उद्दंडता । ४. हठ । जिद । टेक ।

टरकना-अ० दे० 'टल' ।

टरटराना-अ० [हिं० टर] १. टर टर शब्द करना । २. टर्राना ।

टरना†-स० दे० 'टलना' ।

टर्रा-वि० [अनु० टर टर] [भाव० टर्रापन] अविनीत भाव से कठोर उत्तर देनेवाला । टर्रानेवाला । उद्धत । उद्दंड ।

टर्राना-अ० [अनु० टर] अविनीत भाव से कठोर उत्तर देना ।

टलना-अ० [सं० टलन] १ सामने से हटना । खिसकना । २. जगह से हटना । मुहा०-**अपनी बात से टलना**=प्रतिज्ञा पूरी न करना । कहकर मुकरना ।
३. (किसी कार्य के लिए) निश्चित समय से और आगे का समय स्थिर होना । स्थगित होना । ४ (किसी बात का) अन्यथा सिद्ध होना । ठीक न उतरना । ५. (किसी आदेश या अनुरोध का) न माना जाना । उल्लंघित होना । ६ समय बीतना । ७. छोड़कर अलग होना ।

टला-टली-स्त्री० दे० 'टाल-मटोल' ।

टल्लो†-स्त्री० [?] छोटी टहनी ।

टस-स्त्री० [अनु०] किसी भारी चीज़ के खिसकने या टसकने का शब्द या भाव । मुहा०-**टस से मस न होना**=१. भारी चीज का अपने स्थान से न हिलना । २. अपना हठ न छोड़ना । बात पर अड़े रहना ।

टसक-स्त्री० [अनु०] टीस । कसक ।

टसकना-अ० [हिं० टस] १ टलना । खिसकना । २. रह-रहकर दर्द करना । टीसना । ३. हठ छोड़ना ।

टसर-पुं० [सं० त्रसर] एक प्रकार का घटिया मोटा रेशम ।

टसुआ-पुं० [हिं० अँसुआ] आँसू ।

टहकना-अ० [अनु०] १. रह-रहकर दर्द करना । कसकना । २. पिघलना ।

टहनी-स्त्री० [सं० तनुः] वृक्ष की पतली या छोटी शाखा । डाली ।

टहल-स्त्री० [हिं० टहलना] छोटी और हीन सेवा । खिदमत ।

टहलना-अ० [सं० तत्+चलन] व्यायाम या मन-बहलाव के लिए धीरे धीरे चलना । घूमना-फिरना ।
मुहा०-**टहल जाना**=खिसक जाना ।

टहलनी-स्त्री० [हिं० टहल] दासी ।

टहलाना-स० [हिं० टहलना] १ धीरे धीरे चलना । २. सैर कराना । घुमाना-फिराना ।

टहलुआ-पुं० [हिं० टहल] [स्त्री० टहलुई, टहलनी] सेवक । दास ।

टहोका-पुं० [हिं० ठोकर] हाथ या पैर से दिया हुआ धक्का । झटका ।

टाँक-स्त्री० [सं० टंक] १. तीन या चार माशे की एक तौल । (जौहरी) २. कूत । अंदाज । आँक ।
स्त्री० [हिं० टाँकना] १. टाँके जाने की क्रिया या भाव । २. कलम की नोक ।

टाँकना-स० [सं० टंकन] १. सूई-डोरे आदि से कोई छोटी चीज किसी बड़ी चीज के साथ जोड़ना या लगाना । सीकर अटकाना । २. सिल-चक्की आदि में छोटे गड्ढे करके उन्हें खुरदुरा करना । रेहना । ३. कोई बात याद रखने के लिए लिख लेना । ४ खाते आदि में लिखना या चढ़ाना । ५. भोजन करना । खाना । ६. अनुचित रूप से ले लेना । हड़पना ।

टाँका-पुं० [हिं० टाँकना] १. वह चीज

जो दो चीजों को जोड़कर एक करती हो। २. धातु जोड़ने का मसाला। ३. सिलाई। सीवन। ४. टँकी हुई चकती या टुकड़ा। थिगली। पैवन्द।
पुं० [सं० टंक] [स्त्री० अल्पा० टांकी] पानी रखने का छोटा कुंड या बड़ा बरतन।

टाँकी-स्त्री० [सं० टंक] पत्थर गढ़ने या काटने की छेनी।

टाँग-स्त्री० [सं० टंग] कमर के नीचेवाले दोनों अंग जिनसे प्राणी चलते या दौड़ते हैं। चलने का अवयव।
मुहा०-**टाँग अड़ाना**=१ व्यर्थ किसी काम में दखल देना। २ विघ्न डालना। **टाँग तले से (या नीचे से) निकलना**=हार मानना।

टाँगन-पुं० [सं० तुरंगम्] छोटा घोड़ा। टट्टू।

टाँगना-स० [हिं० टेंगना] १. एक वस्तु किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार रखना कि उसका सब या बहुत-सा भाग नीचे लटकता रहे। लटकाना। २. फांसी पर चढ़ाना।

टाँगा-पुं० [हिं० टँगना] दो पहियों की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

टाँगी-स्त्री० [हिं० टांगा] कुल्हाड़ी।

टाँच-स्त्री० [हिं० टाँकी] दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात या कथन। भाँजी।

टाँचना-स० दे० 'टांकना'।

टाँड़-स्त्री० [सं० स्थाणु] लकड़ी के खम्भों पर बनाई हुई वह पाटन, जिसपर चीजें रखते हैं। (रैक)
पुं० [सं० ताड़] बाँह पर पहनने का एक गहना।

टाँड़ा-पुं० [हिं० टांड़=समूह] १. व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड, जो व्यापारी लेकर चलते हैं। बरदी। २. बिक्री के माल की खेप। ३. कुटुम्ब। परिवार।

टाँय-टाँय-स्त्री० [अनु०] १. कर्कश शब्द। टें टें। २. व्यर्थ की बकवाद।
मुहा०-**टाँय टाँय फिस**=बातें बहुत, पर काम या फल कुछ भी नहीं।

टाइप-पुं० [अं०] छापने के लिए सीसे के ढले हुए अक्षर।

टाइप राइटर-पुं० दे० 'टंकण-यंत्र'।

टाट-पुं० [सं० तंतु] सन या पटुए की डोरियों का बना हुआ मोटा कपड़ा। २. साथ बैठनेवाली बिरादरी या उसका विभाग। ३. महाजन की गद्दी।
मुहा०-**टाट उलटना**=दिवाला मारना।

टाटी*-स्त्री० दे० 'टट्टी'।

टाड़-स्त्री० दे० 'टाड़'।

टान-स्त्री०[सं० तान] १. तानने की क्रिया या भाव। २. आकर्षण। ३. छापे के यंत्र में कागज हर बार छापे जाने का भाव। जैसे-हजार टान, दो हजार टान।

टानना-स० [सं० तान] १. तानना। २. खींचना। ३. छापे के यंत्र में कागज लगाकर कुछ छापना।

टाप-स्त्री० [सं० स्थापन] १. घोड़े के पैर का वह भाग जो जमीन पर पड़ता है। सुम। खुर। २. घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द। ३. दे० 'टापा'।

टापना-अ० [हिं० टाप+ना (प्रत्य०)] १. घोड़ों का खड़े खड़े पैर पटकना। खूँद करना। २. दे० 'टपना'।

टापा-पुं० [सं० स्थापन] १. लम्बा-चौड़ा मैदान। टप्पा। २. उछाल। ३. किसी वस्तु को ढककर या बन्द करके रखने का टोकरा। झाबा।

टापू-पुं० [हिं० टप्पा] चारो ओर जल से घिरा हुआ स्थल या जमीन। द्वीप।

टाबर†-पुं० [पंजाबी टब्बर] १. बालक। लड़का। २. परिवार। कुटुम्ब।

टारना†-स० दे० 'टालना'।

टाल-स्त्री० [सं० अट्टाल] १ ऊँचा ढेर। राशि। अटाला। २. लकड़ी, भूसे आदि का दूकान।

स्त्री० [हिं० टालना] टालने का भाव। पुं० [सं० टार] स्त्री और पुरुष का समागम करानेवाला दलाल। कुटना।

टाल-टूल-स्त्री० दे० 'टाल-मटोल'।

टालना-स० [हिं० टलना] १. हटाना। दूर करना। २. न रहने देना। मिटाना। ३. किसी कार्य के लिए आगे का समय स्थिर करना। स्थगित या मुलतवी करना। ४. (आदेश या अनुरोध) न मानना। ५. बहाना करक पीछा छुड़ाना। ६. हिलाना।

टाल-मटोल-स्त्री० [हिं० टालना] केवल टालने के लिए किया जानेवाला बहाना।

टाला-वि० [?] आधा। (दलाल)

टाली-स्त्री० [देश०] १. गाय-बैल आदि के गले में बांधने की घंटी। २ चंचल जवान गाय या बछिया। ३. अठन्नी। (दलाल)

टाहली*-पुं० दे० 'टहलुआ'।

टिकट-पुं० [अं०] १. कागज, गत्ते आदि का वह छोटा टुकड़ा जो कोई विशेष कार्य करने का अधिकार पाने के लिए मूल्य देने पर मिलता है। जैसे-तमाशे का टिकट, रेल का टिकट, डाक का टिकट। २. कागज का वह छोटा टुकड़ा जो किसी वस्तु पर उसके परिचय के लिए लगाया जाता है। चिप्पी।

पुं० [अँ० टैक्स] किसी प्रकार का कर या महसूल।

टिकठी-स्त्री० [सं० त्रिकाष्ठ] १. वह ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ-पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेंत या कोड़े लगाये जाते है या उनके गले में फांसी का फन्दा लगाया जाता है। २. वह रत्थी जिसपर शव लकर चलते हैं।

टिकड़ा-पुं० [हिं० टिकिया] [स्त्री० अल्पा० टिकड़ी] १. वह चिपटा गोल टुकड़ा जो किसी चीज में, विशेषतः गहनों में, लगाया जाता है। २. अंगारों पर सेंकी हुई रोटी।

टिकना-अ० [सं० स्थित] १. कुछ समय के लिए रुकना या ठहरना। २.कुछ दिनों तक काम देना। ३. स्थित रहना। बना या अड़ा रहना।

टिकरी-स्त्री० [हि० टिकिया] १. एक प्रकार का नमकीन पकवान। २.टिकिया।

टिकली-स्त्री० [हिं० टिकिया] १. छोटी टिकिया। २ पन्नी, कांच या धातु की बहुत छोटी बिन्दी, जो स्त्रियां माथे पर लगाती हैं।

टिकस-पुं० १. दे० 'टिकट'। २. दे० 'टैक्स'।

टिकसार*-वि० दे० 'टिकाऊ'।

टिकाऊ-वि० [हिं० टिकना] टिकने या कुछ दिनों तक काम देनेवाला। मजबूत।

टिकान-स्त्री० [हिं० टिकना] १. टिकने या ठहरने की क्रिया या भाव। २. टिकने का स्थान। पड़ाव।

टिकाना-स० [हिं० टिकना] १. टिकने या ठहरने के लिए जगह देना। ठहराना। २. दे० 'टेकाना'।

टिकाव-पुं० [हिं० टिकना] १. स्थिति।

ठहराव। २. स्थिरता। स्थायित्व।

टिकिया-स्त्री० [सं० वटिका] १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। जैसे-रंग या दवा की टिकिया। २. कोयले की बुकनी से बना हुआ वह गोल टुकड़ा जिसे सुलगाकर तमाकू पीते हैं। ३. इस आकार की एक मिठाई।

टिकुली-स्त्री० दे० 'टिकली'।

टिकैत-पुं० [हिं० टीका+ऐत (प्रत्य०)] १. राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २. अधिष्ठाता। ३. सरदार।

टिकोरा-पुं० [हिं० टिकिया] आम का छोटा, कच्चा फल।

टिक्कड़-पुं० [हिं० टिकिया] १. बड़ी टिकिया। २. सेंकी हुई मोटी रोटी।

टिक्की-स्त्री० [हिं० टिकिया] छोटा टिक्कड़। स्त्री० [हिं० टीका] १. माथे पर लगाने की बिंदी। २. ताश पर की बूटी।

टिघलना-अ० दे० 'पिघलना'।

टिचन-वि० [अं० अटेन्शन] १. तैयार। प्रस्तुत। २. उद्यत। मुस्तैद। ३. ठीक। दुरुस्त।

टिटकारना-स० [अनु०] [संज्ञा टिटकारी] 'टिक टिक' करके हाँकना।

टिटिहरी-स्त्री० [सं० टिट्टिभ] पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया। कुररी।

टिट्टिभ-पुं० [सं०] [स्त्री० टिट्टिभी] १. टिटिहरी। कुररी। २. टिड्डी।

टिड्डा-पुं० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार का छोटा काला फतिंगा।

टिड्डी-स्त्री० [सं० टिट्टिभ] एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा जो दल बाँधकर चलता और पेड़-पौधों की पत्तियों या खेतों की पैदावार खा जाता है।

टिपारा-पुं० [हिं० तीन+फा० पारः=टुकड़ा] मुकुट के आकार की एक प्रकार की तिकोनी टोपी।

टिप्पणी-स्त्री० [सं०] १. गूढ़ वाक्य आदि का विस्तृत अर्थ बतानेवाला छोटा लेख। २. घटना आदि का संक्षिप्त विवरण या उसके सम्बन्ध में सम्पादक का विचार जो समाचार-पत्र में प्रकाशित होता है। (नोट) ३. किसी व्यक्ति, विषय या कार्य के सम्बन्ध में प्रकट किया जानेवाला संक्षिप्त विचार। (रिमार्क) ४. स्मरण रखने के लिए लिखी हुई छोटी बात। (नोट)

टिप्पन-पुं० [सं०] १. टीका। व्याख्या। टिप्पणी। २. जन्म-कुंडली। ३. जन्मपत्री।

टिमटिमाना-अ० [सं० तिम=ठंढा होना] १. (दीपक का) मंद रूप से जलना। थोड़ा प्रकाश देना। २. बुझने पर हो-होकर फिर जल उठना।

टिर-स्त्री० दे० 'टर'।

टिर्राना-अ० दे० 'टर्राना'।

टीक-स्त्री० [सं० तिलक] १. गले में पहनने का एक गहना। २. माथे पर पहनने का एक गहना।

टीकना*-स० [हिं० टीका] १. टीका या तिलक लगाना। २. चिह्न या रेखा बनाना।

टीका-पुं० [सं० तिलक] १. चन्दन, केसर आदि से मस्तक आदि पर सम्प्रदाय-सूचक संकेत के लिए लगाया जानेवाला चिह्न। तिलक। २. कन्या-पक्ष के लोगों का वर के मस्तक पर तिलक लगाकर विवाह निश्चित करना। तिलक। ३. शिरोमणि। श्रेष्ठ-पुरुष। ४. राज-सिंहासन या गद्दी पर बैठने के समय होनेवाला धार्मिक कृत्य। राज-तिलक। ५. राज्य का उत्तराधिकारी। युवराज। ६.

किसी रोग को रोकने के लिए उस रोग का चेप या रस शरीर में सूई के द्वारा प्रविष्ट करने की क्रिया।
स्त्री० [सं०] अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य, पद या ग्रंथ। व्याख्या। तिलक।

टीकाकार-पुं० [सं०] किसी ग्रंथ का अर्थ या आशय बतलाने के लिए उसकी टीका लिखनेवाला।

टीन-पुं० [अं० टिन] १. रांगा। २ रांगे का कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर। ३. इस चद्दर का बना हुआ डिब्बा।

टीप-स्त्री० [हिं० टीपना] १. दबाव। दाब। २. गच कूटने का काम। ३. गाने में खींची हुई लम्बी तान। ४. स्मरण के लिए किसी बात को झट-पट लिख लेने की क्रिया। टांक लेने का काम। ५. सूचना, व्याख्या या आलोचना के रूप मे लिखी हुई कोई बात। (नोट) ६. दस्तावेज। ७. जन्मपत्री।

टीप-टाप-स्त्री० [हिं० टाप] १. बनावटी सिंगार। २. आडम्बर।

टीपन-स्त्री० [हिं० टीपन] जन्मपत्री।

टीपना-स० [सं० टेपन] १. दबाना। चांपना। २. धीरे धीरे ठोकना या दबाना। ३. चित्र बनाने से पहले उनका रेखाएँ खींचना। रेखा-कर्म। खत-कशी। (स्कचिंग) स० [सं० टिप्पनी] ४. याद रखने के लिए लिख या टांक लेना। टांकना।

टीबा-पुं० दे० 'टीला'।

टीम-टाम-स्त्री० [अनु०] बनाव-सिंगार।

टीला-पुं० [सं० अष्टीला] १. मिट्टी-पत्थर का कुछ उभरा हुआ भू-भाग। ढूह। भीटा। २. मिट्टी का ऊँचा ढेर। धुस। ३. छोटी पहाड़ी।

टीस-स्त्री० [अनु०] [क्रि० टीसना] रह-रहकर उठनेवाला दर्द। कसक।

टुंडा-वि० [सं० तुंड] [स्त्री० टुंडी] १. (वृक्ष) जिसकी डाल या टहनी कट गई हो। ठूँठा। २. जिसका हाथ कटा हो। लूला। लुंजा। ३. जिसका कोई अंग खंडित हो।

टुक-वि० [सं० स्तोक] थोड़ा। जरा।

टुकड़-गदाई-पुं० [हिं० टुकड़ा+फा० गदा] भिखारी। भिखमंगा।
वि० १. तुच्छ। २. दरिद्र। कंगाल।
स्त्री० टुकड़े या भीख मांगने का काम।

टुकड़-तोड़-पुं० [हिं० टुकड़ा+तोड़ना] दूसरों का दिया हुआ अन्न खाकर रहनेवाला (तुच्छ व्यक्ति)।

टुकड़ा-पुं० [सं० स्तोक] [स्त्री० अल्पा० टुकड़ी] १ किसी वस्तु का वह भाग जो उससे कट-छँटकर अलग हो गया हो। खंड। २. चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश। भाग। ३. रोटी का तोड़ा हुआ अंश या खंड।
मुहा०-**दूसरों के टुकड़े तोड़ना**= दूसरों के दिये हुए भोजन पर निर्वाह करना। **टुकड़ा मांगना**=भीख मांगना।

टुकड़ी-स्त्री० [हिं० टुकड़ा] १. छोटा टुकड़ा। खंड। २. दल। जत्था। ३. सेना का एक छोटा विभाग। सैनिक-दल।

टुक्का-पुं०[हिं० टूक] १. टुकड़ा। खंड। २. किसी चीज का बहुत थोड़ा अंश।
मुहा०-**टुक्का-सा जवाब देना**=साफ इन्कार करना। कोरा जवाब देना।
टुक्का-सा मुँह लेकर रह जाना= लज्जित होकर रह जाना।

टुच्चा-वि० [सं० तुच्छ] १. ओछा। २. अपूर्ण या खंडित और भद्दा।

टुट-पुँजिया-वि० [हिं० टूटी+पूँजी]

जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।

टुटरूँ-पुं० [अनु०] छोटी पंडुकी।

टुटरूँ-टूँ-स्त्री० [अनु०] पंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द।

वि० १ अकेला। २. दुबला-पतला।

टूँगना-स० [हिं० टुनगा] थोड़ा थोड़ा काटकर खाना।

टूँड़-पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टूँड़ी] कीड़ों के मुँह पर की वे पतली नालियाँ जिन्हें गड़ाकर वे कुछ खाते या चूसते है। २. अनाज की बाल में दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अंश। ३. डाढी। नाभी। ४. किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

टूक*-पुं० दे० 'टुकड़ा'।

टूट-स्त्री० [हिं० टूटना का भाव०] १ टूटकर अलग निकला हुआ खंड। टूटन। टुकड़ा। २ भूल। त्रुटि। ३ टाटा। घाटा।

टूटना-अ० [सं० त्रुट] १. कई टुकड़े होना। खंडित होना। भग्न होना। २. किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना। ३. लगातार चलनेवाली क्रिया का क्रम रुकना। ४. किसी ओर एक-बारगी वेग से बढ़ना। ५ एक-बारगी बहुत-सा आ पड़ना। ६. अचानक धावा करना। ७. पृथक् या अलग होना। ८. दुर्बल, क्षीण या अशक्त होना। ९. युद्ध में किले का शत्रु के हाथ में जाना। १०. घाटा या कमी होना। ११. शरीर में ऐंठन या तनाव लिये हुए पीड़ा होना।

टूठना*-अ० [सं० तुष्ट] सन्तुष्ट होना। स० सन्तुष्ट या तृप्त करना।

टूठनि*-स्त्री० [हिं०टूठना] संतोष। तुष्टि।

टूम-स्त्री० [अनु०] गहना। आभूषण। मुहा०-**टूम-टाम**=१.गहने-कपड़े। बना-भूषण। २. बनाव-सिंगार।

टें-स्त्री० [अनु०] तोते की बोली। मुहा०-**टें टें**=व्यर्थ की बकवाद। **टें होना या बोलना**=चटपट मर जाना।

टेंट-स्त्री० [देश०] धोती की वह मंडलाकार ऐंठन जो कमर पर पड़ती है।

टेंटर-पुं० दे० 'ढेंढर'।

टेंटी-स्त्री० [देश०] करील। पुं० दे० 'टर्रा'।

टें टें-स्त्री० [अनु०] १. तोते की बोली। २. व्यर्थ की बकवाद।

टेक-स्त्री० [हिं० टिकना] १. भारी वस्तु को टिकाये रखने के लिए उसके नीचे लगाई हुई लकड़ी। चाँड़। थूनी। थंभ। २. ढासना। सहारा। ३. आश्रय। अवलंब। ४. ऊँचा टीला। ५. हठ। जिद। मुहा०-**टेक निभना या रहना**=प्रतिज्ञा या जिद पूरी होना। **टेक पकड़ना या गहना**=हठ करना। अड़ना। ६ गीत का पहला पद। स्थायी।

टेकना-स० [हिं० टेक] १. सहारे के लिए किसी वस्तु पर भार रखना। सहारा लेना या ढासना लगा लेना। २ ठहराना या रखना।

मुहा०-**माथा टेकना**=१.प्रणाम करना। २. अधीनता प्रकट करना।

३. सहारे के लिए पकड़ना। हाथ का सहारा लेना। * । ४. हठ करना। ५ बीच में रोकना या पकड़ना।

टेकरा-पुं० [हिं० टेक] [स्त्री० अल्पा० टेकरी] १. ऊँचा टीला। २. छोटी पहाड़ी।

टेकला*।-स्त्री० [हिं० टेक] धुन। रट।

टेकान-स्त्री० [हिं० टकना] १. ऊपर की वस्तु सँभालने के लिए उसके नीचे लगाई हुई लकड़ी। टेक। चाँड़। २.

वह स्थान जहाँ बोझ ढोनेवाले बोझ रखकर सुस्ताते हैं। ३. वह स्थान जहाँ से जुआरियों को जूए के अड्डे का पता मिलता है।

टेकाना–स० हिं० 'टेकना' का प्रे०।

टेकी–पुं० [हिं० टेक] हठी। जिद्दी।

टेकुआ†–पुं० दे० 'तकला'।

टेकुरी–स्त्री० दे० 'तकली'।

टेटका–पुं० [सं० ताटंक] कान में पहने का एक गहना।

टेढ़*–स्त्री० [हिं० टेढ़ा] टेढ़ापन। वक्रता। † वि० दे० 'टेढ़ा'।

टेढ़-बिड़ंगा–वि०[हिं०टेढ़ा+बेढंगा] टेढ़ा।

टेढ़ा–वि० [सं० तिरस्=टेढ़ा] [स्त्री० टेढ़ी] १. जो बीच में इधर-उधर झुका या घूमा हो। जो सीधा न हो। वक्र। कुटिल। २. जो समानान्तर या सीधा न गया हो। तिरछा। ३. कठिन। मुश्किल। मुहा०–**टेढ़ी खीर**=मुश्किल काम। ४. बात बात में लड़ जानेवाला। उद्धत। मुहा०–**टेढ़ा पड़ना या होना**=१. उग्र रूप धारण करना। बिगड़ना। २. अकड़ना। टर्राना। **टेढ़ी सीधी सुनाना**=भला-बुरा कहना। कटु बातें कहना।

टेढ़ाई–स्त्री०=टेढ़ापन।

टेढ़ापन–पुं० [हिं० टेढ़ा+पन] टेढ़े होने का भाव। वक्रता।

टेढ़े–क्रि० वि० [हिं० टेढ़ा] घुमाव-फिराव के साथ। सीधी तरह से नहीं।

टेना–स० [देश०] १. तेज करने के लिए पत्थर आदि पर हथियार रगड़ना। २. मूँछ के बालों को खड़ा और तना रखने के लिए उमेठना।

टेबुल–पुं० [अं०] १. एक प्रकार की बड़ी ऊँची चौकी। मेज। २. सारिणी। जैसे-टाइम टेबुल।

टेम–स्त्री० [हिं० टिमटिमाना] दीप-शिखा। दीये की लौ। लाट।

टेर–स्त्री० [सं० तार] १. गाने में ऊँचा स्वर। तान। टीप। २. बुलाने का ऊँचा शब्द। पुकार।

टेरना–स० [हिं० टेर+ना (प्रत्य०)] १. ऊँचे स्वर से गाना। २. पुकारना। स० [सं० तीरण=तै करना] बिताना। व्यतीत करना। (कष्ट का समय)

टेलिफोन–पुं० [अं०] वह तार जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात बहुत दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है।

टेव–स्त्री० [हिं० टेक] आदत। बान।

टेवना†–स० दे० 'टेना'।

टेवा–पुं० [सं० टिप्पन] जन्म-कुंडली।

टेसू–पुं० [सं० किंशुक] १. पलाश। ढाक। २. शारदीय नवरात्र का एक उत्सव जिसमें लड़के गाते हुए घूमते हैं। ३. इस उत्सव पर गाया जानेवाला गीत।

टैक्स–पुं० [अं०] कर। महसूल। यौ०–इन्कम-टैक्स=आमदनी पर लगने-वाला कर। आय-कर।

टोंटा–पुं० [सं० तुंड] [स्त्री० अल्पा० टोंटी] पानी आदि ढालने के लिए बरतन में लगा हुआ नल। २. कारतूस।

टोक†–स्त्री० [सं० स्तोक] १. टोकने की क्रिया या भाव। यौ०–**रोक-टोक**=किसी को रोककर उससे कुछ पूछना या उसे मना करना। २. किसी के टोकने से लगनेवाली नजर। (स्त्रियाँ)

टोकना–स० [हिं० टोक] किसी के कोई काम करने पर उसे कुछ कहकर रोकना और उससे कुछ पूछ-ताछ करना।

पुं० [?] [स्त्री० टोकनी] १. टोकरा। झाबा। २.एक प्रकार का हंडा। (बरतन)

टोकरा-पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० टोकरी] बाँस या पतली टहनियों का बना हुआ गोल और गहरा बरतन। डला। झाबा।

टोका-पुं० [सं० स्तोक] १. सिरा। छोर। २. नोक।

टोकारा-पुं० [हिं० टोक] वह बात जो किसी को कुछ चेताने या स्मरण दिलाने के लिए रोक या टोककर कही जाय।

टोटक-हाई-स्त्री० [हिं० टोटका] टोटका, टोना या जादू करनेवाली।

टोटका-पुं० [सं० त्रोटक] दैवी बाधा दूर करने के लिए वह प्रयोग जो किसी अलौकिक शक्ति या भूत-प्रेत पर विश्वास करके किया जाय। टोना।

टोटा-पुं० [सं० तुंड] बचा या कटा हुआ खंड। टुकड़ा।

पुं० [हिं० टूटना] १ घाटा। हानि। २ कमी। त्रुटि। ३. अभाव।

टोडी-पुं० [अं०] १. नीच और तुच्छ वृत्ति का मनुष्य। कमीना और खुशामदी।

यौ०-**टोडी-बच्चा**=सरकारी अफसरों का खुशामदी।

टोनहा(हाया)-पुं० [हिं० टोना] [स्त्री० टोनहाई] टोना या जादू करनेवाला।

टोना-पुं० [सं० तंत्र] १. टोटका। जादू। २. विवाह का एक प्रकार का गीत।

†स०[सं० त्वक्+ना] टटोलना।

टोप-पुं० [हिं० तोपना=ढाँकना] १. बड़ी टोपी। २. शिरस्त्राण। खोद।

†पुं० [अनु० टप] बूँद।

टोपा-पुं० [हिं० टोप] बड़ी टोपी।

पुं० [हिं० तोपना] टोकरा।

†पुं० [हिं० तोपना] सिलाई का टाँका। डोभ।

टोपी-स्त्री० [हिं० तोपना] १. सिर पर पहना जानेवाला सिला हुआ परिधान। २. इस आकार की कोई गोल और गहरी चीज। ३. इस आकार का धातु का वह गहरा ढक्कन जिसे बंदूक पर चढ़ाकर घोड़ा गिराने से आग पैदा होती है। ४. वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है।

टोरना†-स० [सं० त्रुट] तोड़ना।

मुहा०-**आँख टोरना**=लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या नीची करना।

टोल-स्त्री० [सं० तोलिका] १. मंडली। जत्था। झुंड। २. चटसार। पाठशाला।

पु० [अं०] वह कर जो किसी विशेष सुभीते के लिए या यात्रियों आदि पर लगता है।

टोला-पुं० [सं० तोलिका=घेरा, बाड़ा] [स्त्री० टोली] आदमियों की बड़ी बस्ती या नगर का एक भाग। महल्ला। पाड़ा।

टोली-स्त्री० [सं० तोलिका] १. छोटा महल्ला। नगर या बस्ती का छोटा भाग। २. समूह। जत्था।

टोवना†-स० दे० 'टोना'।

टोह-स्त्री० [हिं० टटोलना ?] १. टटोल। खोज। ढूँढ। २. खबर। पता। (किसी व्यक्ति या बात के सम्बन्ध में)

टोही-स्त्री० [हिं० टोह] टोह लेने या पता लगानेवाला।

टौरना-स० [हि० टेरना] १. जाँच करना। परखना। २. पता लगाना।

ठ

ठ-व्यंजनों में बारहवाँ और टवर्ग का दूसरा व्यंजन, जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

ठंठ-वि० [सं० स्थाणु] ठूँठा। (पेड़)

ठढ-स्त्री० [हिं० ठंडा] शीत। सरदी।

ठढ़ई-स्त्री० दे० 'ठंढाई'।

ठंढक-स्त्री० [हिं० ठंढा] १. शीत। सरदी। जाड़ा। २. ताप या जलन का विरोधी तत्त्व। तरी। ३. संतोष। तृप्ति।

ठंढा-वि० [सं० स्तब्ध] [स्त्री० ठंढी] १. जिसमें ठंढक हो। सर्द। शीतल। मुहा०-**ठंढा साँस**=दुःख से भरा लम्बा सांस। शोकोच्छ्वास। आह। २. जो जलता या दहकता हुआ न हो। बुझा हुआ। ३. जिसके स्वभाव में क्रोध या आवेश न हो। धीर। शांत। मुहा०-**ठंढा करना**=१. क्रोध शांत करना। २. ढारस या तसल्ली देना। **ठंढे ठंढे**=बिना विरोध या प्रतिवाद किये। चुपचाप। ४. जिसमें उत्साह या उमंग न हो। ५. सुस्त। धीमा। ६. जिसमें पुंसत्व न हो या कम हो। ७ मृत। मरा हुआ। मुहा०-**ठंढा होना**=मर जाना। (कोई पवित्र या पूज्य पदार्थ) **ठंढा करना**=तोड़कर अलग करना।

ठंढाई-स्त्री० [हिं० ठंढा] १. वे मसाले जिनसे शरीर की गरमी शान्त होती और ठंढक आती है। २. पिसी हुई भाँग।

ठक-स्त्री० [अनु०] ठोंकने का शब्द। वि० सन्नाटे में आया हुआ। भौचक्का।

ठक-ठक-स्त्री० [अनु०] कहा-सुनी।

ठकुर-सुहाती-स्त्री० [हिं० ठाकुर+सुहाना] लल्लो-चप्पो। खुशामद।

ठकुराइन-स्त्री० दे० 'ठकुरानी'।

ठकुराई-स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. ठाकुर का अधिकार, पद या भाव। २.सरदारी। प्रधानता। ३. वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो। ४. बड़प्पन। महत्व।

ठकुरानी-स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. ठाकुर की स्त्री। २. रानी। ३ स्वामिनी।

ठकुरायत-स्त्री० दे० 'ठकुराई'।

ठक्कर-स्त्री० दे० 'टक्कर'।

ठग-पुं० [सं० स्थग] [स्त्री० ठगनी, भाव० ठगी] १. वह जो छल और धूर्त्तता से दूसरों का माल ले लेता हो। २. धूर्त्त।

ठगण-पुं० [सं०] पिंगल में ५ मात्राओं का एक गण।

ठगना-स० [हिं० ठग] १. धोखा देकर माल ले लेना। २. धोखा देना। मुहा०-**ठगा-सा** = चकित। भौचक्का। ३. सौदा बेचने में अधिक दाम लेना या रद्दी चीज देना। अ० १. धोखा खाना। किसी के चक्कर में आना। २. चकित होना। दंग रह जाना।

ठगनी-स्त्री० दे० 'ठगिन'।

ठग-पना-पुं० [हिं० ठग+पन] १. ठगने का भाव या काम। २. धूर्त्तता।

ठग-मूरी-स्त्री० [हिं० ठग+मूरि] वह नशीली चीज जो किसी को बेहोश करके उसका माल लूटने के लिए ठग उसे खिलाते थे।

ठग-मोदक-पुं० दे० 'ठग-लाड़ू'।

ठग-लाड़ू-पुं०[हिं० ठग+लड्डू] ठगों का वह लड्डू जिसमें नशीली या बेहोश

करनेवाली चीज़ मिली रहती थी।

मुहा०-ठग-लाड़ू खाना=मतवाला या बेसुध होना।

ठगवाहू-पुं० दे० 'ठग'।

ठग-विद्या-स्त्री०=धूर्तता।

ठगाना-अ० [हिं० ठगना] ठगा जाना।

ठगिन(नी)-स्त्री० [हिं० ठग] १. धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री। लुटेरिन। २ ठग की स्त्री। ३. कुटनी।

ठगिया-पुं० दे० 'ठग'।

ठगी-स्त्री० [हिं० ठग] १. धोखा देकर दूसरे का माल लूटने का काम या भाव। २. धूर्तता। चालबाजी।

ठगौरी-स्त्री० [हिं० ठग+बौरा] १. सुध-बुध भुलानेवाली बात या शक्ति। २. टोना।

ठट्ठा-पुं० [सं० अट्टहास] परिहास। हँसी-दिल्लगी।

ठठ-पुं०[सं० स्थाता] १.बहुत-सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह। २. दे० 'ठाठ'।

ठठ्ठा-स्त्री० दे० 'ठट्ठा'।

ठठकना-अ० दे० 'ठिठकना'।

ठठकीला-वि० [हिं० ठाट] ठाटदार।

ठठना-स० [हिं० ठाठ] १. ठहराना। निश्चित करना। २. सजाना।

अ० १. खड़ा रहना। अड़ना। डटना। २. ठाठ बनाना। सुसज्जित होना।

ठठनि-स्त्री० [हिं० ठटना] १. बनावट। रचना। २. ठाठ। सजावट।

ठठरी-स्त्री० [हिं० ठाठ] १. किसी के शरीर की हड्डियों का ढाँचा। २. किसी वस्तु का ढाँचा। ३. मुरदा ले चलने की अरथी। रथी।

ठठाना-स०[अनु०ठक] मारना। पीटना। अ० [सं० अट्टहास] जोर से हँसना।

ठठेरा-पुं० [अनु० ठक ठक] [स्त्री० ठठेरिन] बरतन बनानेवाला। कसेरा।

मुहा०-ठठेरे ठठेरे बदलौअल=जैसे के साथ तैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली=ठठेरे की बिल्ली का सा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न डरे।

ठठेरी-स्त्री० [हिं० ठठेरा] १. ठठेरे की स्त्री। २. ठठेरे का काम।

यौ०-ठठेरी बाजार=कसेरों का बाजार।

ठठोल-पुं० [हिं० ठट्ठा] १. दिल्लगी-बाज़। मसखरा। २. दे० 'ठठोली'।

ठठोली-स्त्री० [हिं०ठट्ठा] हँसी। दिल्लगी।

ठड्डा(ढ़ा)-वि० दे० 'खड़ा'।

ठन-स्त्री० [अनु०] धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

ठनक-स्त्री० [अनु०ठन ठन] १. चमड़े से मढ़े हुए बाजे पर आघात पड़ने का शब्द। २. टीस। कसक।

ठनकना-अ० [अनु० ठन ठन] [स० ठनकाना] १. ठन ठन शब्द होना।

मुहा०-तबला ठनकना = नाच-गाना होना।

२. हलकी पीड़ा होना। टीस मारना।

मुहा०-माथा ठनकना=कुछ खटका या सन्देह होना।

ठनकार-स्त्री [अनु०] ठनठन शब्द।

ठन-गन-स्त्री०[अनु०ठन ठन] मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिए आग्रह या हठ।

ठनठन गोपाल-पुं० [अनु० ठनठन+गोपाल] १. निःसार वस्तु। २. निर्धन मनुष्य।

ठनठनाना-स० [अनु०] ठनठन शब्द उत्पन्न करना। बजाना।

अ० ठनठन शब्द होना।

ठनना-अ० [हिं० ठानना] १. (किसी

कार्य का) तत्परता से आरंभ किया जाना। अनुष्ठित होता। छिड़ना। २. (मन में) ठहरना। पक्का होना। ३. उद्यत या तैयार होना।

ठनाठन-क्रि० वि० [अनु० ठनठन] ठनठन शब्द के साथ।

ठप-वि० [अनु०] बन्द या रुका हुआ। जैसे-व्यापार ठप होना।

ठप्पा-पुं० [सं० स्थापन] १. लकड़ी या धातु का वह खंड जिसपर कोई आकृति या बेल-बूटे आदि खुदे हों और उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने से वे आकृतियां उतर या बन जायँ। सांचा। २. सांचे के द्वारा बनाये हुए बेल-बूटे आदि। छापा।

ठमकना-अ० [सं० स्तंभ] [भाव० ठमक] चलते-चलते ठहर जाना। ठिठकना। कुछ रुकना।

ठमकाना(कारना)-स० [हिं० ठमकना] चलते हुए को रोकना। ठहराना।

ठयना*-स० [सं० अनुष्ठान] १. ठानना। २ पूरी तरह से करना। ३. निश्चित करना। अ० दे० 'ठनना'।

स० [सं० स्थापन] १ स्थापित करना। बैठाना। ठहराना। २. प्रयुक्त करना।

अ० १. स्थित होना। बैठना। जमना। २. काम में आना। प्रयुक्त होना।

ठरना-अ० [सं० स्तब्ध] १. सरदी से अकड़ना या सुन्न होना। २. बहुत अधिक सरदी पड़ना या लगना।

ठर्रा-पुं० [देश०] १. बहुत मोटा सूत। २. महुए की निकृष्ट शराब।

ठवन-स्त्री० [सं० स्थापन] १. बैठने का भाव। स्थिति। २.बैठने या खड़े होने का ढंग। मुद्रा। (पोज़)

ठवना*-स० दे० 'ठयना'।

ठस-वि० [सं० स्थास्नु] १. ठोस। कड़ा। २ (कपड़ा) जिसकी बुनावट घनी हो। गफ। ३. दृढ़। मजबूत। ४. भारी। वजनी। ५. सुस्त। आलसी। ६. (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो। ७. कृपण। कंजूस।

ठसक-स्त्री० [हिं० ठस] १. गर्वपूर्ण चेष्टा। २. नखरा। ३. ठाट-बाट। शान।

ठसका-पुं० [अनु०] १. सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले। २. ठोकर। धक्का।

ठसाठस-क्रि० वि० [हिं० ठस] खूब कसकर भरा हुआ। खचाखच।

ठस्सा-पुं० [देश०] १. ठसक। २ घमंड। ३. ठाट-बाट।

ठहना*-अ० [अनु०] १. घोड़ों का हिनहिनाना। २. शब्द करना। बजना। अ० [सं० संस्था] बनाना। सँवारना।

ठहर-पुं० [सं० स्थल] १ स्थान। जगह। २. रसोई का स्थान। चौका।

ठहरना-अ० [सं० स्थैर्य] १. चलते चलते कुछ रुकना। थमना। २ डेरा डालना। टिकना। ३. एक स्थान पर बना रहना। स्थित रहना। ४. जल्दी खराब या नष्ट न होना। टिकाऊ होना। चलना। ५. घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का थिराना। ६. धैर्य रखना। ७. निश्चित या पक्का होना।

मुहा०-किसी बात का ठहरना=किसी बात का पक्का होना। ठहरा=है। जैसे-वह हमारा मित्र ठहरा। (बोल-चाल)

ठहराना-स० [हिं० ठहरना] [भाव० ठहराई, ठहराव] १. चलने से रोकना। गति बन्द करना। २.डेरा देना। टिकाना। ३. अड़ाना। टिकाना। ४. इधर-उधर न

जाने देना। ५. पक्का करना। तै करना।

ठहराव-पुं० [हिं० ठहरना] १. ठहरने की क्रिया या भाव। २. गति का अभाव। स्थिरता। ३. कोई बात ठहरने या निश्चित होने का भाव। समझौता। (एग्रिमेन्ट)

ठहरौनी-स्त्री० [हिं० ठहरना] विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन-देन का निश्चय या करार।

ठहाका-पुं० [अनु०] जोर की हँसी। अट्टहास।

ठाँ-स्त्री०, पुं० दे० 'ठांव'।

ठाँई-स्त्री० [हिं० ठांव] १. स्थान। जगह। २. समीप। पास।

ठाँउँ-पुं०, स्त्री० दे० 'ठांयँ'।

ठाँठ-वि० [अनु० ठन ठन] १. जिसका रस सूख गया हो। नीरस। २. (गाय या भैंस) जो दूध न देती हो।

ठाँयँ-पुं०, स्त्री० [सं० स्थान] स्थान। जगह। अव्य० समीप। निकट। पास।

स्त्री० [अनु०] बन्दूक छूटने का शब्द।

ठाँयँ ठाँयँ-स्त्री० [अनु०] कहा-सुनी। बक-झक। झगड़ा।

ठाँव-पुं०, स्त्री० [सं० स्थान] १. स्थान। जगह। २. ठिकाना।

ठाँसना-स० दे० 'ठूसना'।

अ० ठन ठन शब्द करते हुए खांसना।

ठाकुर-पुं० [सं० ठक्कुर] [स्त्री० ठकुराइन, ठकुरानी] १. देवता। देव-मूर्ति। २. ईश्वर। भगवान्। ३. पूज्य व्यक्ति। ४. किसी प्रदेश का अधिपति या नायक। सरदार। ५. जमींदार। ६. क्षत्रियों की उपाधि। ७. नाइयों की उपाधि।

ठाकुर-द्वारा-पुं० [हिं० ठाकुर+द्वार] मंदिर। देव-स्थान।

ठाकुर-बाड़ी-स्त्री० दे० 'ठाकुर-द्वारा'।

ठाकुरी-स्त्री० [हिं० ठाकुर] १. स्वामित्व। आधिपत्य। २. शासन। ३. दे० 'ठकुराई'।

ठाठ-पुं० [सं० स्थातृ] १. लकड़ी या बाँस की पट्टियों का बना हुआ ढाँचा। २. किसी वस्तु के मूल अंगों और पार्श्वों का वह समूह जिसके आधार पर शेष रचना होती है। ढड्ढा। (फ्रेम) ३. शृंगार। सजावट।

मुहा०-**ठाठ बदलना**=१. वेष बदलना। २. झूठ मूठ अधिकार या बड़प्पन जताना। रंग बांधना।

४. आडंबर। तड़क-भड़क। ५. ढंग। शैली। ६. आयोजन। तैयारी। ७ सामान। सामग्री।

पुं० [हिं० ठाट] १. समूह। झुंड। २. बहुतायत। अधिकता।

ठाठना*-स० [हिं० ठाठ] १. निर्मित करना। रचना। बनाना। २. अनुष्ठान या आयोजन करना। ठानना। ३. सजाना।

ठाठ-बाट-पुं० [हिं० ठाट] १. सजावट। सज-धज। २. तड़क-भड़क। आडम्बर।

ठाठर-पुं० [हिं० ठाठ] १. टट्टर। टट्टी। २. ठठरी। पंजर। ३. ढांचा। ४. कबूतर आदि के बैठने की छतरी। ५. ठाट-बाट।

ठाढ़ा*-वि० [सं० स्थातृ] १. खड़ा। २. समूचा। साबुत। पूरा।

ठानना-स० [सं० अनुष्ठान] [भाव० ठान] १. (कार्य) तत्परता के साथ आरम्भ करना। अनुष्ठित करना। छेड़ना। २. पक्का करना। ठहराना। ३. दृढ़ संकल्प करना।

ठाना*-स० [सं० अनुष्ठान] १. ठानना। २. स्थापित करना। रखना।

ठाम*-पुं० [सं० स्थान] १. स्थान। जगह। २. ठवन। मुद्रा।

ठार-पुं० [सं० स्तब्ध] १. कड़ा जाड़ा।

गहरी सरदी। २. पाला। हिम।

ठाला-पुं० [हिं० निठल्ला] रोजगार का न चलना या आमदनी का न होना।

वि० जिसे कुछ काम-धंधा न हो। निठल्ला।

ठाली-वि० [हिं० निठल्ला] १. जिसे कुछ काम न हो। निठल्ला। २.खाली। रिक्त।

ठावना*-स० दे० 'ठाना'।

ठाहना-स० [हिं० ठहरना] संकल्प करना। मन में विचार पक्का करना।

ठाहर-पुं० दे० 'ठिकाना'।

ठिंगना-वि० [हिं० हेठ+अंग] [स्त्री० ठिंगनी] छोटे डील या कद का। नाटा।

ठिक-ठैना*-पुं० [हिं० ठीक+ठयना] व्यवस्था। प्रबन्ध। आयोजन।

ठिकरा-पुं० दे० 'ठीकरा'।

ठिकाना-पुं० [हिं० टिकान] १. स्थान। जगह। २. रहने या ठहरने की जगह। निवास-स्थान।

मुहा०-ठिकाने आना=बहुत सोच-विचार के बाद यथार्थ निर्णय पर पहुँचना। ठिकाने की बात=ठीक, उचित या समझदारी की बात। ठिकाने पहुँचाना या लगाना=१. नष्ट कर देना। न रहने देना। २. समाप्त करना।

३. निर्वाह या आश्रय का स्थान। ४. निश्चित अस्तित्व या स्थिति। स्थिरता। ठहराव। ५. प्रबन्ध। आयोजन। बन्दोबस्त। ६. सीमा। अन्त। हद। ७. जागीर। (कुछ रियासतों में)

स० [हिं० टिकाना] अपने पास रख, छिपा या ठहरा लेना। (दलाल)

ठिकानेदार-पुं० [हिं० ठिकाना+फा० दार] वह जिसे रियासत की ओर से ठिकाना या जागीर मिली हो।

ठिठकना-अ० [सं० स्थित+करण] १. चलते-चलते अचानक रुक जाना। २. स्तम्भित होना। ठक रह जाना।

ठिठुरना-अ० [सं० स्थित] सरदी से ऐंठना या सिकुड़ना।

ठिनकना-अ० [अनु०] (बच्चों का) रुक-रुककर रोना।

ठिरना-अ० दे० 'ठरना'।

ठिलना-अ० [हिं० ठेलना] १. ठेला या ढकेला जाना। २. घुसना। धँसना।

ठिलिया-स्त्री० [सं० स्थाली] मिट्टी का छोटा घड़ा। गगरी।

ठिलुआ-वि० [हिं० निठल्ला] निठल्ला।

ठिल्ला-पुं०[हिं०ठिलिया] मिट्टी का घड़ा।

ठीक-वि० [हिं० ठिकाना] जैसा हो या होना चाहिए, वैसा ही। यथार्थ। प्रामाणिक। २. उपयुक्त। उचित। मुनासिब। ३. शुद्ध। ४. दुरुस्त। ५. जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे। ६. सीधे रास्ते पर आया हुआ। ७. ठहराया या निश्चित किया हुआ। स्थिर। पक्का।

क्रि० वि० जैसे चाहिए, वैसे। उचित रूप या प्रकार से।

पुं० १ पक्की बात। २. निश्चय। ३. स्थिर प्रबन्ध। ठहराव। ४. जोड़। योग।

ठीक-ठाक-पुं० [हिं० ठीक] १. निश्चित प्रबन्ध। पक्का बन्दोबस्त या आयोजन। २. निश्चय। ठहराव। पक्की बात।

वि० अच्छी तरह दुरुस्त या तैयार।

ठीकरा-पुं० [हिं० टुकड़ा] [स्त्री० अल्पा० ठीकरी] १. मिट्टी के बरतन का टुकड़ा। २. भीख माँगने का बरतन। भिक्षा-पात्र। ३. तुच्छ वस्तु।

ठीका-पुं० [हिं० ठीक] १. कुछ धन आदि के बदले में किसी का कोई काम

पूरा करने का जिम्मा लेना। (कन्ट्रैक्ट) २.कुछ काल के लिए कोई चीज इस शर्त पर दूसरे के सपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता रहेगा। इजारा। पट्टा।

ठीकापत्र-पुं० [हिं० ठीका+पत्र] वह पत्र या लेख्य जिसमें किसी ठीके के सम्बन्ध की ऐसी बातें या शर्तें लिखी हों, जिनका पालन दोनों पक्षों के लिए आवश्यक हो। संविदा-पत्र। (कन्ट्रैक्ट डीड)

ठीकेदार-पुं० [हिं० ठीका+फा० दार] वह जिसने कोई काम करने का ठीका लिया हो। ठीका लेनेवाला। (कन्ट्रैक्टर)

ठीलना[1]-स० दे० 'ठेलना'।

ठीवन*-पुं० [सं० ष्ठीवन] थूक।

ठीहा-पुं० [सं० स्था] १ लकड़ी का वह कुन्दा जिसपर लोहार, बढई आदि कोई चीज पीटते, छीलते या गढ़ते हैं। २. बैठने के लिए कुछ ऊँचा स्थान। गद्दी। ३. हद। सीमा।

ठुंठ-पुं० दे० 'ठूँठ'।

ठुकना-अ० [अनु०] १. ठोका जाना। २. आर्थिक हानि या नुकसान होना।

ठुकराना-स० [हिं० ठोकर] १. ठोकर लगाना। लात से आघात करना। २. तुच्छ समझकर दूर हटाना।

ठुड्डी-स्त्री० दे० 'ठोढ़ी'।

स्त्री० [हिं० ठड़ी] वह भुना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो।

ठुमकना-अ० [अनु०] [भाव० ठुमक] १. बच्चों का उमंग में थोड़ी थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना। २. नाच में पैर पटककर चलना जिसमें घुँघरू बजें।

ठुमकी-स्त्री० [अनु०] १. ठिठक। रुकावट। २. छोटी खरी पूरी।

ठुमरी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का चलता गाना, जिसमें एक स्थायी और एक ही अन्तरा होता है।

ठुर्री-स्त्री० [हिं० ठड़ा=खड़ा] वह भूना हुआ दाना जो भूनने पर भी खिला न हो।

ठुसना-अ० [हिं० ठूँसना] कसकर भरा या ठूसा जाना।

ठुसाना-स० [हिं० ठूँसना] १. कसकर भरवाना। २. पेट भर खिलाना। (व्यंग्य)

ठूँठ-पुं० [सं० स्थाणु] १. वह पेड़ जिसकी डालें, पत्तियाँ आदि न रह गई हों। सूखा पेड़। २. जिसका हाथ कटा हो।

ठूँठा-वि० [सं०स्थाणु] १. बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़)। २. कटे हुए हाथवाला। लूला। ३. रिक्त। खाली।

ठूसना-स० [हिं० ठस] १. खूब कसकर भरना। २. घुसेड़ना। घुसाना। ३. खूब पेट भरकर खाना। (व्यंग्य)

ठेंगना-वि० दे० 'ठिंगना'।

ठेंगा-पुं० [हिं० अँगूठा] अँगूठा।

मुहा०-**ठेंगा दिखाना**=आशा में रखकर भी अन्त में उपेक्षापूर्वक निराश करना।

ठेंठी-स्त्री० [देश०] १. कान की मैल। २. कोई चीज बन्द करने के लिए उसपर लगाई हुई डाट।

ठेक-स्त्री० [हिं०टिकना] १.सहारे के लिए नीचे लगाई जानेवाली चीज। टेक। चाँड़। २ पेंदा। तल। ३. घोड़ों की एक चाल। ४. छड़ी या लाठी की सामी।

ठेकना-स० [हिं० टेक] टेक या सहारा लगाना।

अ० टिकना। ठहरना।

ठेका-पुं० [हिं० टिकना] १. सहारे की वस्तु। ठेक। २. ठहरने या रुकने की जगह। अड्डा। ३. तबला या ढोल बजाने

का वह प्रकार जिसमें केवल ताल दिया जाता है। ४. तबले के साथ बजाया जानेवाला बाँयाँ। ५. ठोकर। धक्का।
पुं० दे० 'ठीका'।

ठेगना*-अ० [हिं० टेकना] १. टेकना। सहारा लेना। २. सहारा लगाना। ३. मना करना।

ठेठ-वि० [देश०] १. निपट। निरा। बिलकुल। २. जिसमें कुछ मेल-जोल न हो। खालिस। ३. शुद्ध। निर्मल। ४. आरंभ। शुरू।
स्त्री० वह बोली जिसमें लिखने-पढ़ने की भाषा के शब्दों का मेल न हो, केवल बोल-चाल के शब्द हों। सीधी-सादी बोली।

ठेलना-स० दे० 'ढकेलना'।

ठेला-पुं० [हिं० ठेलना] १. ठेलने की क्रिया या भाव। २. वह छोटी गाड़ी जिसपर चीजें रखकर हाथ से ठेलते या ढकेलते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाई जाती है। ३. धक्का। टक्कर। ४ भीड़-भाड़।

ठेस-स्त्री० [हिं० ठस] हलका आघात। साधारण धक्के की चोट।

ठैन*-स्त्री० [सं० स्थान] स्थान। जगह।

ठोंकना-स० [अनु० ठक ठक] १. अन्दर धँसाने के लिए ऊपर जोर से चोट लगाना।
मुहा०-ठोंकना बजाना=अच्छी तरह जाँचना। परखना।
२. प्रहार करना। मारना-पीटना। ३. (नालिश, अरजी आदि) दाखिल करना। दायर करना। ४. काठ में डालना। बेड़ियों से जकड़ना। (दंड)

ठोंग-स्त्री० [सं० तुंड] १. चोंच या उसकी मार। २. उँगली की ठोकर।

ठोंगा-पुं० [देश०] कागज का बना हुआ एक खास तरह का दोना या पात्र।

ठो-अव्य० [हिं० ठौर] एक शब्द जो संख्यावाचक शब्दों के साथ लगता है। संख्या। अदद। (पूरबी) जैसे-चार ठो।

ठोकर-स्त्री० [हिं० ठोकना] १. वह आघात जो चलने में कंकड़ पत्थर आदि के धक्के से पैर में लगता है।
ठोकर लेना=चलते समय ठोकर खाना।
२. वह उभरा हुआ पत्थर या कंकड़ जिससे पैर में चोट लगे। ३. पैर या जूते के पंजे से किया जानेवाला आघात। ४ कड़ा आघात। धक्का।
मुहा०-ठोकर या ठोकरें खाना=१. किसी भूल के कारण या दुर्दशा में पड़कर दुःख सहना। २. धोखे में आना।

ठोढ़ा(ढ़ी)-स्त्री० [सं० तुंड] होंठों के नीचे का गोलाई लिये उभरा हुआ भाग। ठुड्डी। चिबुक। दाढ़ी।

ठोर-पुं० [देश०] एक प्रकार की मीठी मठरी। (पकवान)
*पुं० [सं० तुंड] चोंच। चंचु।

ठोली-स्त्री० दे० 'ठठोली'।
स्त्री० [देश०] रखेली स्त्री। उप-पत्नी।

ठोस- वि० [हिं० ठस] १. जो पोला या खोखला न हो। २. दृढ़। मजबूत।

ठोसा-पुं० दे० 'ठेंगा'।

ठोहना*-स० [हिं० ढूँढ़ना] टोह या पता लगाना। खोजना। ढूँढ़ना।

ठौनि*-स्त्री० दे० 'ठवन'।

ठौर-पुं० [हिं० ठाँव] १. जगह। स्थान।
मुहा०-ठौर-कुठौर=बुरे ठिकाने। अनुपयुक्त स्थान पर। ठौर रखना=मार गिराना। ठौर रहना=१. जहाँ का तहाँ पड़ा रहना। २. मर जाना।
२. मौका। अवसर।

ड

ड-नागरी वर्णमाला में व्यंजनों का तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप और उच्चारण हैं—(क) जैसे-डंडा में के दोनों ड; और (ख) जैसे-गड़बड़ में के दोनों ड़।

डंक-पुं॰ [सं॰ दंश] १. बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों के पीछे का जहरीला काँटा जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाकर जहर पहुँचाते हैं। २.कलम की जीभी। (निब)

डंकना|-अ॰ [अनु॰] गरजना।

डंका-पुं॰ [सं॰ ढक्का] एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा।

मुहा॰-डंके की चोट कहना=खुल्लम-खुल्ला कहना। सबको सुनाकर कहना।

डंकिनी-स्त्री॰ दे॰ 'डाकिनी'।

डँगरी-स्त्री॰ [हिं॰ डांगर] ककड़ी।

स्त्री॰ [हिं॰ डोगर] चुड़ैल। डाइन।

डँगवारा-पुं॰ [हिं॰ डंगर] किसानों में होनेवाली पारस्परिक हल-बैल आदि की सहायता या लेन-देन का व्यवहार।

डंगू ज्वर-पुं॰ [अं॰ डेंगू] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।

डंटल-पुं॰ [सं॰ दंड] छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंठी|-स्त्री॰ [सं॰ दंड] १. डंठल। २. किसी चीज़ में लगा हुआ कोई लंबा अंश।

डंड-पुं॰ [सं॰ दंड] १. डंडा। सोंटा। २. बाहु-दंड। बाँह। ३. हाथ-पैर के पंजों के बल की जानेवाली एक प्रकार की कसरत।

मुहा॰-डंड पेलना=आनन्द करना।

४.दंड। सजा। ५.अर्थ-दंड। जुरमाना। ६. हानि। नुकसान।

डंड-पेल-पुं॰ [हिं॰ डंड+पेलना] डंड पेलनेवाला। कसरती। पहलवान।

डंडवत-स्त्री॰ दे॰ 'दंडवत्'।

डँडवी|-पुं॰ दे॰ 'करद'।

डंडा-पुं॰ [सं॰ दंड] [स्त्री॰ अल्पा॰ डंडी] १. लकड़ी या बाँस का सीधा लम्बा टुकड़ा। २. मोटी और बड़ी छड़ी। सोंटा। लाठी। ३. चार-दीवारी। डाँड़।

डंडाकरन*-पुं॰ दे॰ 'दंडकारण्य'।

डंडा-डोली-स्त्री॰ [हिं॰ डंडा+डोली] लड़कों का एक खेल जिसमें दो लड़के मिलकर किसी तीसरे लड़के को अपने हाथों पर बैठाकर चलते हैं।

डँड़िया-स्त्री॰ [हिं॰ डाँड़ी=रेखा] १. वह साड़ी जिसके बीच में गोटे टाँककर लकीरें या डंडियां बनाई गई हों। २. गेहूँ के पौधे की सींकोंवाली बाल।

|पुं॰ [हिं॰ डाँड़] कर उगाहनेवाला।

डंडी-स्त्री॰ [हिं॰ डंडा] १. छोटी लंबी पतली लकड़ी। २. किसी वस्तु का वह लम्बा पतला अंग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३. तराजू की वह लकड़ी जिसमें पलड़े बँधे रहते हैं। डाँड़ी। ४. वह लम्बा डंठल जिसमें फूल या फल लगते हैं। नाल। ५. झप्पान नाम की पहाड़ी सवारी।

*वि॰ [सं॰ द्वंद्व] चुगलखोर।

डँडोरना|-स॰[अनु॰] ढूँढ़ना। खोजना।

डंबर-पुं॰ [सं॰] १. आडंबर। २. विस्तार। ३. एक प्रकार का चँदवा।

यौ॰-मेघ-डंबर = बड़ा शमियाना। दल-बादल। अंबर-डंबर=वह लाली जो

सन्ध्या समय आकाश में दिखाई देती है।

डंस-पुं० [सं० दंश] १. एक प्रकार का बड़ा मच्छर। डाँस। २. दे० 'दंश'।

डक-पुं० [अं०] १. एक प्रकार का टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं। २. एक प्रकार का मोटा कपड़ा।
[अं० डेक] जहाज की ऊपरी छत।

डकरना-अ० [अनु०] बैल या भैंसे का बोलना।

डकार-पुं० [अनु०] १. पेट भरे होने का सूचक वह शरीरिक व्यापार जिसमें पेट की वायु कुछ शब्द करती हुई गले से निकलती है।
मुहा०-डकार तक न लेना=किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना।
२. शेर आदि की गरज। दहाड़।

डकारना-अ० [हिं० डकार+ना] १. पेट की वायु शब्दपूर्वक मुँह से निकालना। डकार लेना। २. किसी का माल लेकर पचा जाना। ३. शेर आदि का दहाड़ना।

डकैत-पुं० [हिं० डाका] [भाव० डकैती] डाका डालनेवाला। डाकू।

डग-पुं० [हिं० डाँकना] १. एक जगह से पैर उठाकर दूसरी जगह रखना। फाल। क़दम।
मुहा०-डग भरना या मारना=कदम बढ़ाना। लम्बे पैर रखना।
२. चलने में उतनी दूरी, जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह पैर पड़ता है। पग। पैंड़।

डगडगाना-अ० दे० 'डगमगाना'।

डगडोलना*-अ० दे० 'डगमगाना'।

डगण-पुं० [सं०] पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।

डगना*†-अ० [हिं० डग] १. हिलना। खिसकना। २. भूल करना। चूकना। ३. डगमगाना। लड़खड़ाना।

डगमग-वि० [हिं० डग+मग] १. लड़खड़ाता हुआ। २. विचलित।

डगमगाना-अ० [हिं० डगमग] १. चलने में कभी इस ओर कभी उस ओर झुकना। लड़खड़ाना। २. विचलित होना। दृढ़ न रहना।

डगर-स्त्री० [हिं० डग] मार्ग। रास्ता।

डगरना*†-अ० [हिं० डगर] चलना।

डगरा†-पुं० [देश०] बाँस की पतली पट्टियों का बना हुआ छिछला पात्र।

डगाना-स० दे० 'डिगाना'।

डटना-अ० [हिं० ठाढ़ा] [स० डटाना] जमकर खड़ा होना। अपनी जगह पर अड़ना या ठहरा रहना।
*स० [सं० दृष्टि] देखना।

डट्टा-पुं० दे० 'डाट'।

डड़ढारा*-वि० [हिं० डाढ़ी] १. बड़ी दाढ़ीवाला। २. वीर। बहादुर।

डढ़न*-स्त्री० [सं० दग्ध] जलन।

डढ़ना*-अ० [सं० दग्ध] जलना।

डढ़ार(ा)-वि० [हिं० डाढ़] १ वह जिसके डाढ़ें हों। २. वह जिसे दाढ़ी हो।

डढ़ियल-वि० दे० 'दढ़ियल'।

डढ़ना*-स० [सं० दग्ध] जलाना।

डढ़ोरा*-वि० दे० 'दढ़ियल'।

डपट-स्त्री० [सं० दर्प] [क्रि० डपटना] डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव। डाँट। झिड़की। घुड़की।
स्त्री० [हिं० रपट] घोड़े की तेज चाल।

डपोर-शंख-पुं० [अनु० डपोर=बड़ा+शंख] १. जो कहे बहुत, पर करे कुछ भी न। डींग मारनेवाला। २. बड़े डील-डौल का, पर मूर्ख।

डफ(ला)-पुं० [अ० दफ़] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा। चंग।
डफली-स्त्री० [हिं० डफ] छोटा डफ।
डफाली-पुं० [हिं० डफ] डफ, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।
डबकना-अ० [अनु०] १. पीड़ा करना। टीस मारना। २. आँखों में आँसू आना।
डबकौंहाँ*-वि० [हिं० डबकना] [स्त्री० डबकौंहीं] आँसू भरा हुआ। डबडबाया हुआ। (नेत्र)
डबडबाना-अ० [अनु०] आँसुओं से (आँखें) भर आना। अश्रुपूर्ण होना।
डबरा-पुं० [सं० दभ्र] [स्त्री० डबरी] पानी का छिछला गड्ढा।
डबल-वि० [अं०] १. दोहरा। २. मोटा, बड़ा या भारी।
पुं० एक पैसेवाला सिक्का। पैसा।
डबल रोटी-स्त्री० दे० 'पाव रोटी'।
डबी*-स्त्री० दे० 'डब्बी'।
डबोना-स० दे० 'डुबाना'।
डब्बा-पुं० [सं० डिंब] [अल्पा० डिबिया] १. ढकनदार छोटा गहरा बरतन। संपुट। २. रेल-गाड़ी में की एक गाड़ी।
डब्बू-पुं० [हिं० डब्बा] खाने की चीजें रखने का एक प्रकार का डब्बा।
डभकना-अ० [अनु० डभ डभ] १. पानी में डूबना-उतराना। डुबकियाँ लेना। २. आँखो में जल भर आना।
डभकौंहाँ-वि० दे० 'डबकौंहाँ'।
डभकौरी-स्त्री० दे० 'डुभकौरी'।
डमरू-पुं० [सं० डमरु] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है।
डमरू-मध्य-पुं० [सं० डमरु+मध्य] धरती का वह तंग या पतला भाग जो दो बड़े भूमि-खंडों के बीच में हो और उन दोनों को मिलाता हो।
डयन-पुं० [सं०] १. उड़ान। २. पंख।
डर-पुं० [सं० दर] १. अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होनेवाला भाव। भय। भीति। खौफ। २. अनिष्ट की संभावना को मन में होनेवाली कल्पना। आशंका।
डरना-अ० [हिं० डर] १. अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना। भयभीत होना। २. आशंका करना।
डरपना-अ० दे० 'डरना'।
डरपोक-वि० [हिं० डरना+पोंकना] बहुत डरनेवाला। भीरु। कायर।
डरवाना-स० दे० 'डराना'।
डरा*-पुं० दे० 'डला'।
डराना-स० [हिं० डरना] किसी के मन में डर उत्पन्न करना। भयभीत करना।
डरावना-वि० [हिं० डर] जिसे देखने से डर लगे। भयानक। भयंकर।
डरावा-पुं० [हिं० डराना] डराने के लिए कही हुई बात।
डल-पुं० [सं० दल] टुकड़ा। खंड।
स्त्री० [सं० तल] झील।
डलना-अ० [हिं० डालना] डाला या उँड़ेला जाना। पड़ना।
डला-पुं० [सं० दल] [स्त्री० डली] मोटा बड़ा टुकड़ा। खंड।
पुं० [सं० डलक] [स्त्री० डलिया] बड़ी डलिया। टोकरा। दौरा।
डलिया-स्त्री० [हिं०डला] १.छोटा डला। टोकरी। दौरी। २.एक प्रकार की तश्तरी।
डली-स्त्री० [हिं० डला] १. छोटा टुकड़ा या खंड। २. कटी हुई सुपारी।
स्त्री० दे० 'डलिया'।
डसना-स० [सं० दशन] [भाव०

डसन] १. विषवाले कीड़े का दाँत से काटना। २. डंक मारना।

डसाना-स० हिं० 'डसना' का प्रे०।

डहकना-स०[हिं० ठगना ?] १. धोखा देना, ठगना। २. ललचाकर न देना। अ० धोखा खाना।

अ० [हिं० दहाड़, धाड़] १. बिलखना। विलाप करना। २. दहाड़ मारना।

अ० [देश०] छितराना। फैलना।

डहकाना-अ० [हिं० ठगना] धोखे में आकर पास का धन गँवाना। ठगा जाना। स० १. धोखा देकर किसी की चीज ले लेना। ठगना। जटना। २. कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर भी न देना।

डहडहा-वि० [अनु०] [स्त्री० डहडही] [भाव० डहडहाट] १. जो सूखा या मुरझाया न हो। हरा-भरा। ताजा। २. प्रसन्न। आनन्दित। ३.तुरन्त का। ताजा।

डहडहाना-अ० [हिं० डहडहा] १ पेड़-पौधों का हरा-भरा या ताजा होना। २. प्रसन्न या आनन्दित होना।

डहन*-पुं० [सं० डयन] १. पंख। पर। २. डैना।

डहना-अ० [सं० दहन] १. जलना। भस्म होना। २.द्वेष करना। बुरा मानना। स० १. जलाना। भस्म करना। २. सन्तप्त करना। कष्ट पहुँचाना।

डहर-स्त्री० [हिं० डगर] १. रास्ता। मार्ग। पथ। २. आकाश-गंगा।

डहरना-अ० [हिं० डहर] चलना।

डहार*-पुं० [हिं० डाहना] डाहने या सन्तप्त करनेवाला।

डाँक-स्त्री० [हिं० दमक] ताँबे या चाँदी का वह बहुत पतला पत्तर जो नगीनों के नीचे उनकी चमक बढ़ाने के लिए लगाया जाता है।

स्त्री० [हिं० डाँकना] कै। वमन।

स्त्री० दे० 'डाक'।

डाँकना-स० दे० 'लाँघना'।

अ० [हिं०डोक] वमन करना। कै करना।

डाँग-पुं० [देश०] जंगल। वन।

स्त्री० बड़ा डंडा या लाठी।

डाँगर-वि० [देश०] पशु। चौपाया।

वि० १. दुबला-पतला। २. मूर्ख।

डाँट-स्त्री० [सं० दांति] १. डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव। २. डाँट या बिगड़कर कही हुई बात। डपट। ३. दबाव।

डाँटना-स० [हिं० डाँट] डराने के लिए क्रोध-पूर्वक जोर से बोलना। घुड़कना।

डाँड़-पुं० [सं० दंड] १. सीधी लकड़ी। डंडा। २.गदका। ३.नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४. ऊँची मेड़। ५. सीमा। हद। ६. अर्थ-दंड। जुरमाना। ७. कर्तव्य, प्रतिज्ञा या निश्चय का पालन न कर सकने के बदले में दिया जानेवाला धन। हरजाना। (पेनैलिटी)

डाँड़ना-स० [हिं० डाँड़] १. अर्थ-दंड से दंडित करना। जुरमाना करना। २. डाँड़ या हरजाना लेना। ३. दंड देना। ४. दे० 'डाँटना'।

डाँड़ा-पुं० दे० 'डाँड़'।

डाँड़ी-स्त्री० [हिं० डाँड़] १. दे० 'डंडी'। २. हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें जिनपर बैठने की पटरी रखी जाती है। ३. डाँड़ खेनेवाला आदमी। ४. लीक। मर्यादा। ५. डंडे में बँधी हुई झोली के आकार की पहाड़ी सवारी। झप्पान।

डाँवाँ-डोल-वि०[हिं०डोलना]अपनी ठीक

या एक स्थिति में न रहनेवाला। अ-स्थिर।

डाँस-पुं० [सं० दंश] १. बड़ा मच्छर। २. एक प्रकार की मक्खी।

डाइन-स्त्री० [सं० डाकिनी] १. भूतनी। चुड़ैल। २. वह स्त्री जिसकी कुदृष्टि के प्रभाव से बच्चे मर जाते या बीमार पड़ जाते हों। टोनहाई। ३. कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाक-पुं० [हिं० डाँकना] १. सवारी का ऐसा प्रबन्ध जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान आदि बदले जाते हों। मुहा०-डाक बैठाना या लगाना= शीघ्र यात्रा पूरी करने के लिए स्थान-स्थान पर सवारी बदलने की व्यवस्था करना। यौ०-डाक-चौकी=मार्ग में पड़नेवाला वह स्थान जहाँ यात्रा के घोड़े, हरकारे या सवारियाँ बदली जाती हों। २. राज्य की ओर से चिट्ठियों के आने-जाने की व्यवस्था। ३. कागज-पत्र आदि, जो इस प्रकार भेजे जायँ या आवें। स्त्री० [अनु०] वमन। कै। पुं० [बँग०] नीलाम की बोली।

डाकखाना-पुं० दे० 'डाकघर'।

डाक-गाड़ी-स्त्री० वह रेल-गाड़ी जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है।

डाक-घर-पुं० [हिं० डाक+हिं० घर] वह सरकारी दफ्तर जहाँ से लोग चिट्ठी-पत्री आदि भेजते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं।

डाकना-अ० [हिं० डाक] कै करना। स० [हिं० डाक+ना] फाँदना। लाँघना।

डाक-बँगला-पुं० [हिं० डाक+बँगला] वह मकान जो सरकार की ओर से परदेसियों या सरकारी अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो।

डाका-पुं० [हिं० डाकना या सं० दस्यु] माल-असबाब लूटने के लिए दल बाँधकर किया जानेवाला धावा। बट-मारी।

डाका-जनी-स्त्री०[हिं० डाका+फा०जनी] डाका मारने का काम। बट-मारी।

डाकिन-स्त्री० दे० 'डाकनी'।

डाकिनी-स्त्री० [सं०] डाइन। चुड़ैल।

डाकू-पुं० [हिं० डाक या सं० दस्यु] डाका डालनेवाला। डकैत।

डाकोर-पुं० [सं० ठकुर] १. ठाकुर। देवता। २. विष्णु भगवान्। (गुजरात)

डाक्टर-पुं० [अं०] १. किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान् या पंडित। २. वह जिसे अंग्रेजी ढंग से चिकित्सा करने की शिक्षा मिली हो और चिकित्सा करने का अधिकार प्राप्त हो।

डाक्टरी-स्त्री० [अं० डाक्टर] डाक्टर का काम, पद, भाव या उपाधि।

डाट-स्त्री० [सं० दांति] १. वह वस्तु जो बोझ सँभालने के लिए उसके नीचे लगाई जाय। टेक। चाँड़। २. छेद बन्द करने की वस्तु। ३. बोतल, शीशी आदि का मुँह बन्द करने की वस्तु। काग। डट्टा। ४. मेहराब को रोके रखने के लिए ईंटों की जोड़ाई। स्त्री० दे० 'डाँट'।

डाटना-स० [हिं० डाट] १. एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर बैठाना। २. टेक या चाँड़ लगाना। ३. छेद या मुँह बन्द करना। ४. कसकर या ठूस-कर भरना। ५. खूब पेट भर खाना। ६. ठाठ से कपड़े, गहने आदि पहनना।

डाढ़-स्त्री० [सं० द्रष्टा] चबाने के चौड़े दाँत। चौभड़। दाढ़।

डाढ़ना*-स० [सं० दग्ध] जलाना ।
डाढ़ा-स्त्री० [सं० दग्ध] १. दावानल । वन की आग । २. आग । ३. ताप ।
डाढ़ी-स्त्री० दे० 'दाढ़ी' ।
डाबर-पुं० [सं०दभ्र] १. वह नीची जमीन या छोटा गड्ढा जिसमें पानी ठहरा रहे । २. वह बरतन जिसमें हाथ-मुँह धोते हैं । चिलमची । ३. मैला या गँदला पानी ।
डाभ-पुं० [सं० दर्भ] १ एक प्रकार का कुश । २ आम की मंजरी या मौर । ३.कच्चा नारियल जिसके अन्दर का पानी पीया जाता है ।
डामर-पुं० [सं०] १. शिव-प्रणीत माना जानेवाला एक तंत्र । २. हलचल । ३. धूम । ४. आडम्बर । ५. चमत्कार ।
पुं० [देश०] १. साल वृक्ष का गोंद । राल । २. एक प्रकार की मधु-मक्खी जो राल बनाती है ।
डामल-पुं० [अ० दायमुल हब्स] १. उम्र भर के लिए क़ैद । २. देश-निकाला ।
डायन-स्त्री० दे० 'डाइन' ।
डायरी-स्त्री० [अं०] रोचनामचा । दैनिकी ।
डार*-स्त्री० दे० 'डाल' ।
स्त्री० [सं० डलक] डलिया । चँगेरी ।
डारना*-स० दे० 'डालना' ।
डाल-स्त्री० [सं० दारु] १. पेड़ के धड़ में की वह लम्बी लकड़ी जिसमें पत्तियाँ और कल्ले निकलते हैं । शाखा । शाख । २.शीशे के गिलास लगाने के लिए दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी । ३. तलवार का फल । ४. डंडी । डाँड़ी ।
स्त्री० [हिं० डला] १. डलिया । चँगेरी । २. वे कपड़े और गहने जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिये जाते हैं ।
डालना-स० [सं० तलन] १. नीचे गिराना या छोड़ना ।
मुहा०-डाल रखना=१. रख छोड़ना । २. रोक रखना ।
२. एक वस्तु या पात्र में ऊपर से कोई वस्तु गिराना । छोड़ना । ३ मिलाना । ४. प्रविष्ट करना । घुसाना । ५.फैलाना । बिछाना । ६. शरीर पर धारण करना । पहनना । ७ गर्भपात करना । (चौपायों के लिए) ८. कै करना । वमन करना । ९.(स्त्री को) पत्नी की तरह घर में रखना । १०. बिछाना ।
डाली-स्त्री० [हिं० डला] १. डलिया । चँगेरी । २. फल, फूल और मेवे जो डलिया में सजाकर किसी बड़े के पास उसके सम्मानार्थ भेजे जाते हैं ।
स्त्री० दे० 'डाल' ।
डावरा-पुं० [सं० डिंब] बेटा ।
डासना-स० [हिं० डासन] बिछाना ।
पुं० दे० 'बिछौना' ।
स० [हिं० डसना] डसना । काटना ।
डाह-स्त्री० [सं० दाह] ईर्ष्या । जलन ।
डाहना-स० [सं० दाहन] १. किसी के मन में ईर्ष्या या डाह उत्पन्न करना । ज-लाना । २. कष्ट पहुँचाना । पीड़ित करना ।
डाही-वि० [हिं० डाह] डाह या ईर्ष्या करनेवाला ।
डिंगर-पुं० [सं०] १. मोटा आदमी । २. दुष्ट । पाजी । ३. दास । गुलाम ।
डिंगल-वि० [सं० डिंगर] नीच । बुरा ।
स्त्री० [सं० पिंगल का अनु०] राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावलियाँ लिखते हैं ।
डिंडिम-पुं० [सं०] डुगडुगी । डुग्गी ।
डिंब-पुं०[सं०] १. बावैला । रोना-धोना ।

२. दंगा। फसाद। ३. अंडा। ४. कीड़े का छोटा बच्चा।

डिंभ-पुं०[सं०] १.छोटा बच्चा। २.मूर्ख। *पुं० [सं० दंभ] १. आडंबर। पाखंड। २. अभिमान। घमंड।

डिगना-अ० [हिं०डग] १.अपनी जगह से टलना। खिसकना। २. निश्चय या विचार पर दृढ़ न रहना। विचलित होना।

डिगरी-स्त्री० [अं०] १. विश्वविद्यालय की परीक्षा की पदवी। २. अंश। कला। स्त्री० [अं० डिक्री] दीवानी अदालत का वह फैसला जिसमें वादी को कोई अधिकार मिलता है। जयपत्र। (डिक्री)

डिगरीदार-वि० [हिं० डिगरी+फा०दार] वह जिसके पक्ष में डिगरी या अधिकार का निर्णय हुआ हो।

डिगलाना*-अ० दे० 'डगमगाना'।

डिगाना-हिं० 'डिगना' का स०।

डिठार(ठियार)-वि० [हिं० डीठ = दृष्टि] जिसे दिखाई दे। दृष्टिवाला।

डिठौना(रा)-पुं० [हिं० डीठ] वह काला टीका जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाया जाता है।

डिढ़*-वि० दे० 'दृढ़'।

डिढ्या-स्त्री० [देश०] अत्यन्त लालच। परम लोभ या लालसा।

डिबिया-स्त्री० [हिं० डिब्बा] छोटा डिब्बा या संपुट।

डिब्बा-पुं० दे० 'डब्बा'।

डिभगना*-स० [देश०] १. मोहित करना। २. छलना।

डिम-पुं० [सं०] वह नाटक जिसमें इन्द्रजाल, युद्ध आदि के दृश्य हों।

डिमडिमी-स्त्री० [सं० डिंडिम] डुग्गी।

डिल्ला-पुं० [हिं० टीला] बैल के कंधे पर का उठा हुआ कूबड़। कूब्बा। ककुद्।

डींग-स्त्री० [सं० डीन] शेखी से बहुत बढ़कर कही जानेवाली बात। सीट।

डीठ-स्त्री० [सं० दृष्टि] १. दृष्टि। नजर। निगाह। २. देखने की शक्ति। ३. ज्ञान। समझ। ४. बुरी नजर।

डीठना†*-अ० [हिं० डीठ] दिखाई देना। स० १. देखना। २. नजर लगाना।

डीठबंध*-पुं० दे० 'इन्द्रजाल'।

डीठमूठि†*-स्त्री० [हिं० डीठि+मूठ] टोना। जादू।

डील-पुं०[देश०] १ प्राणियों के शरीर की ऊँचाई, चौड़ाई, मोटाई आदि। क़द। उठान।

यौ०-**डील-डौल**=१. देह की लंबाई-चौड़ाई। २. शरीर का ढांचा। आकार। काठी। २. शरीर। देह।

डीह-पुं० [फा० देह] १. छोटा गाँव। २. ग्राम-देवता।

डुगडुगी-स्त्री० [अनु०] चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा, जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है। डुग्गी।

डुग्गी-स्त्री० दे० 'डुगडुगी'।

डुबकनी-स्त्री० [हिं० डुबकी] पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की नाव। पनडुब्बी। (सब-मरीन)

डुबकी-स्त्री० [हिं० डूबना] १. पानी में डूबने की क्रिया या भाव। गोता। २. पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।

डुबाना-स० [हिं० डूबना] १. पानी या किसी द्रव पदार्थ में समूचा डालना। गोता देना। २. चौपट या नष्ट करना।

मुहा०-**नाम डुबाना**=नाम या मर्यादा नष्ट करना। **लुटिया डुबाना**=१. महत्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना। २. काम

बिगाड़ना।

डुबाव-पुं० [हिं० डूबना] पानी की डूबने भर की गहराई।

डुबोना।-स० दे० 'डुबाना'।

डुब्बा-पुं० दे० 'पन-डुब्बा'।

डुब्बी-स्त्री० १. दे० 'डुबकी'। २. दे० 'डुबकनी'।

डुभकौरी।-स्त्री० [हिं० डुबकी+बरी] पीठी की बिना तली बरी।

डुलना*।-अ० दे० 'डोलना'।

डुलाना-स० [हिं० डोलना] १. डोलने में प्रवृत्त करना। चलाना। २. हटाना।

डूँगर-पुं० [सं० तुंग] १. टीला। २. छोटी पहाड़ी।

डूबना-अ० [अनु० डुब डुब] १ पानी या और किसी तरल पदार्थ में पूरा समाना। गोता खाना।

मुहा०-चुल्लू भर पानी में डूब मरना=लज्जा के मारे मुँह दिखाने योग्य न रहना। जी डूबना=१. चित्त व्याकुल होना। २. हृदय की धड़कन बन्द होती हुई जान पड़ना।

२.सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रहों या नक्षत्रों का अस्त होना। ३.चौपट होना। नष्ट होना।

मुहा०-नाम डूबना=प्रतिष्ठा नष्ट होना।

४. व्यवसाय में लगाया या ऋण-स्वरूप दिया हुआ धन नष्ट होना। ५ लीन या तन्मय होना। लिप्त होना।

डेंड़सी-स्त्री० [सं० टिंडिश] ककड़ी की तरह की एक तरकारी। टिंड। टिंडसी।

डेड़हा।-पुं० [सं० डुंडुभ] पानी में रहने-वाला साँप जिसमें विष नहीं होता।

डेढ़-वि० [सं० अध्यर्द्ध] पूरा एक और उसका आधा।

मुहा०-डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना=अपना तुच्छ या अमान्य विचार या कार्य सबसे अलग रखना या चलाना।

डेढ़ा-वि० दे० 'ड्योढ़ा'।

डेमरेज-पुं० [अं०] बन्दरगाह या रेल के मालगोदाम में पड़े रहनेवाले माल का किराये के रूप में लिया जानेवाला हरजाना जो माल छुड़ानेवाले को देना पड़ता है।

डेरा-पुं० [हिं० डालना या ठहरना] १. थोड़े समय के लिए रहने का स्थान या व्यवस्था। टिकान। पड़ाव।

मुहा०-डेरा डालना=१. अस्थायी रूप से निवास करना। टिकना। ठहरना। २. कहीं जमकर बैठ जाना।

२. खेमा। तम्बू। ३. नाचने-गानेवालों का दल। ४ वेश्या का घर। ५. मकान। घर। (पूरब)

*। वि० [सं० दहर ?] बायाँ। सव्य।

डेराना।-अ० दे० 'डरना'।

स० दे० 'डराना'।

डेला-पुं० [सं० दल] १ आँख में का वह सफेद उभरा हुआ भाग जिसमें पुतली रहती है। कोया। २. डला। ३. ढेला।

डेवढ़-वि० [हिं० डेवढ़ा] डेढ़गुना।

पुं० १. सिलसिला। क्रम। तार। २. विकट अवस्था में भी काम निकालने या ठीक करने की व्यवस्था। (ऐडजस्टमेन्ट)

डेवढ़ा-वि०, पुं० दे० 'ड्योढ़ा'।

डेवढ़ी-स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी'।

डेहरी-स्त्री० दे० 'दहलीज'।

डैन*-पुं० दे० 'डैना'।

डैना-पुं० [सं० डयन] चिड़ियों के एक ओर के परों का समूह। पंख।

डोंगर-पुं० [सं० तुंग] [स्त्री० अल्पा० डोंगरी] १. पहाड़ी। २. टीला।

डोंगा-पुं० [सं० द्रोण] बड़ी नाव ।
डोंगा-स्त्री० [सं० द्रोणी] छोटी नाव ।
डोंड़ी-स्त्री० [सं० तुंड] पोस्ते का फल जिसमें से अफीम निकलती है ।
डोई-स्त्री० [हिं०डोकी] वह करछी जिससे चाशनी चलाते या घी निकालते हैं ।
डोकी-स्त्री०[हिं० डोका] काठ की कटोरी ।
डोब-पुं० दे० 'डुबकी' ।
डोम-पुं० [सं० डम] [स्त्री० डोमिन, डोमनी] १. एक प्रसिद्ध जाति जो श्मशान पर शव को आग देती और टोकरियाँ आदि बनाकर बेचती है । २. ढाढ़ी । मीरासी ।
डोमड़ा-पुं० दे० 'डोम' १. ।
डोमनी-स्त्री० [हिं० डोम] १. डोम जाति की स्त्री । २ ढाढी या मीरासी की स्त्री जो गाने-बजाने का काम करती है ।
डोर-स्त्री० [सं०] पतला तागा । डोरा ।
मुहा०-**डोर पर लगाना**=प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना । ढब पर लाना ।
डोरा-पुं० [सं० डोरक] १ रूई, रेशम, ऊन आदि को बटकर बनाया हुआ मोटा सूत या तागा । धागा । २. धारी । लकीर । ३. आँखों की वे महीन लाल नसें जो नशे या यौवन की उमंग में दिखाई देने लगती हैं । ४. तलवार की धार । ५. तपे हुए घी की धार । ६. स्नेह-सूत्र । प्रेम का बन्धन ।
मुहा०-**किसी पर डोरे डालना**=किसी को अपने प्रेम-पाश में फँसाने का प्रयत्न करना ।
७. काजल या सुरमे की रेखा ।
डोरिया-पुं० [हिं० डोरा] एक प्रकार का कपड़ा जिसमें कुछ मोटे सूतों की या रंगीन धारियाँ होती हैं ।
डोरिहार*-पुं० दे० 'पटवा' ।
डोरी-स्त्री० [हिं० डोरा] १.रस्सी । रज्जु ।
मुहा०-**डोरी ढीली छोड़ना**=नियंत्रण या देख-रेख कम करना ।
२. पाश । बन्धन । ३. डंडीदार कटोरा । डोई ।
डोरे*-क्रि०वि० [हिं० डोर] साथ । संग ।
डोल-पुं० [सं० दोल] १. पानी रखने या भरने का लोहे का गोल बरतन । २. हिंडोला । झूला । ३. डोली । पालकी । ४. हल-चल ।
* वि० [हिं० डोलना] चंचल ।
डोलची-स्त्री० [हिं० डोल] छोटा डोल ।
डोलना-स० [सं० दोलन] १. गति में होना । हिलना । २. चलना । फिरना । ३. (चित्त) विचलित होना । डिगना ।
डोला-पुं० [सं० दोल] [स्त्री० डोली] १. स्त्रियों के बैठने की बड़ी डोली, जिसे कहार ढोते हैं ।
मुहा०-**डोला देना**=१. किसी राजा या सरदार को भेंट की तरह अपनी लड़की देना । २. कन्या को वर के घर इसलिए भेजना कि वहीं उसका ब्याह हो ।
२. झूले का झोंका । पेंग ।
डोलाना-स० [हिं० डोलना] डोलने में प्रवृत्त करना । चलाना ।
डोली-स्त्री० [हिं० डोला] एक प्रकार की सवारी जो कहार कंधे पर लेकर चलते हैं ।
डौंड़ी-स्त्री० [हिं०डुग्गी] १.दे०'डुगडुगी' । २. घोषणा । मुनादी ।
डौल-पुं० [?] १. ढाँचा । ढड्ढा ।
मुहा०-**डौल पर लाना**=१. काट-छाँट-कर सुडौल या दुरुस्त करना । २. दे० 'डौलियाना' ।
२. बनावट का ढंग । रचना-प्रकार । ३.

तरह। प्रकार। ३. युक्ति। उपाय।
मुहा०-डौल बाँधना या लगाना= उपाय करना। युक्ति बैठाना।
४. रंग-ढंग। लक्षण।

डौलियाना†-स० [हिं० डौल] १. फुसलाकर अपने अनुकूल करना। २. गढ़कर दुरुस्त करना।

ड्योढ़ा-वि० [हिं० डेढ़] जितना हो, उसका आधा और। डेढ़-गुना।
पुं० अंकों की डेढ़-गुनी संख्या का पहाड़ा।

ड्योढ़ी-स्त्री० [सं० देहली] १. फाटक। दरवाजा। २. मकान में घुसने का स्थान। द्वार।

ड्योढ़ीदार-पुं० [हिं० ड्योढ़ी+फा० दार] ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार। द्वारपाल। दरबान।

ढ

ढ-हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण और टवर्ग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इसके दो रूप होते हैं-(क) जैसे- 'ढकना' में का 'ढ'; और (ख) बढ़ना में का 'ढ़'।

ढँकना-स० दे० 'ढाँकना'।

ढंख†*-पुं० दे० 'ढाक'।

ढंग-पुं० [सं० तंग (तंगन)] १. कोई काम करने की प्रणाली या शैली। ढब। रीति। (मेथड) २. प्रकार। तरह। ३. रचना। बनावट। ४. युक्ति। उपाय।
मुहा०-ढंग पर चढ़ाना या लाना= अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना।
५. चाल-चलन। आचरण। ६. लक्षण।
यौ०-रंग-ढंग=ऊपरी लक्षण।

ढँगलाना†-स० दे० 'लुढ़काना'।

ढंगी-वि० [हिं० ढंग] १. चाल-बाज। धूर्त्त। २. चतुर। चालाक। ३. दे० 'ढागी'।

ढँढोरना†-स० दे० 'ढूँढ़ना'।

ढँढोरा-पुं० [अनु० ढम+ढोल] १. घोषणा करने का ढोल। डुगडुगी। डौंड़ी। २. ढोल बजाकर की जानेवाली घोषणा।

ढँढोरिया-पुं० [हिं० ढँढोरा] ढँढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला।

ढँपना-अ० दे० 'ढकना'।

ढकना-पुं० [सं० ढक=छिपना] [स्त्री० अल्पा० ढकनी] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।
अ० किसी वस्तु के नीचे या आड़ में होने पर दिखाई न देना। छिपना।
स० दे० 'ढाँकना'।

ढकनी-स्त्री० [हिं० ढकना] ढाँकने की वस्तु। ढक्कन।

ढका†*-पुं० [सं० ढक्का] बड़ा ढोल।
*पुं० [अनु०] धक्का। टक्कर।

ढकिलाई†*-स्त्री० [हिं० ढकेलना] चढ़ाई। आक्रमण। धावा।

ढकेलना-स० [हिं० धक्का] धक्के से या ठेलकर आगे गिराना या बढ़ाना।

ढकोसला-पुं० [हिं० ढंग+सं० कौशल] प्रयोजन सिद्ध करने के लिए बनाया हुआ झूठा रूप। आडंबर।

ढक्कन-पुं० [सं०] ढाँकने की वस्तु। ढकना।

ढक्का-पुं० [सं०] बड़ा ढोल।

ढगण-पुं० [सं०] तीन मात्राओं का एक गण। (पिंगल)

ढचर-पुं० [हिं० ढाँचा ?] १. झंझट। बखेड़ा। २. आडम्बर। ढकोसला।

ढड्ढा-वि० [देश०] आवश्यकता से

अधिक बड़ा और बेढंगा।

पुं० [हिं० ठाट] १. ढाँचा। २. झूठा ठाट-बाट। आडम्बर।

ढड्ढो-स्त्री०[हिं०ढड्ढा] बुढ़िया। (व्यंग्य)

ढपना-पुं० दे० 'ढकना'।

अ० [हिं० ढकना] ढका होना।

ढब-पुं० [सं० धव=गति] १. कोई काम करने की विशेष प्रक्रिया। ढंग। रीति। तरीका। २. प्रकार। तरह। ३. बनावट। गढ़न। ४. युक्ति। उपाय। तदबीर।

मुहा०-ढब पर चढ़ाना, लगाना या लाना=किसी को इस प्रकार फुसलाना कि उससे कुछ काम निकले।

५.प्रकृति। स्वभाव। ६. आदत। बान।

ढयना-अ० दे० 'ढहना'।

ढरकना-अ० [हिं० ढार या ढाल] १. ढलकना। २. लेटना।

ढरका-पुं० [हिं० ढरकना] बांस की वह नली जिससे चौपायों को दवा पिलाते हैं।

ढरकाना-स० दे० 'ढलकाना'।

ढरकी-स्त्री० [हिं० ढरकना] करघे का वह अंग जिससे बाने का सूत इधर-उधर आता जाता है।

ढरना*-अ० दे० 'ढलना'।

ढरनि-स्त्री० [हिं० ढरना] १. ढलने या गिरने की क्रिया या भाव। २.हिलने-डोलने की क्रिया। गति। ३. चित्त की प्रवृत्ति। झुकाव। ४.दयालुता। अनुग्रह।

ढरहरना*-अ० दे० 'ढलना'।

ढरारा*-वि० [हिं०ढार या ढाल] [स्त्री० ढरारी] १.शीघ्र ढलने, लुढ़कने या प्रवृत्त होनेवाला। २. ढालुआँ।

ढर्रा-पुं० [हिं० ढरना] १. काम करने की बँधी हुई शैली। ढंग। तरीका। २. आचरण-पद्धति। चाल-चलन।

ढलकना-अ० [हिं० ढाल] १. द्रव पदार्थ का आधार से नीचे की ओर जाना। ढलना। २. लुढ़कना। ३. (किसी पर) अनुरक्त या कृपालु होना।

ढलका-पुं० [हिं० ढलकना] आँखों से पानी ढलने या बहने का रोग।

ढलकाना-स० [हिं०ढलकना] ढलकने में प्रवृत्त करना।

ढलना-अ० [हिं० ढाल] १.द्रव पदार्थ का नीचे की ओर आना। बहना।

मुहा०-दिन ढलना=संध्या होना। सूरज या चाँद ढलना=सूर्य या चन्द्रमा का डूबने के समीप होना।

२. उँडेला या लुढ़काया जाना। ३. किसी ओर आकृष्ट या प्रवृत्त होना। ४. किसी पर प्रसन्न होना। रीझना। ५. साँचे में ढाला जाना।

मुहा०-साँचे में ढला=बहुत सुडौल और सुन्दर।

ढलवाँ-वि० [हिं० ढालना] १. जिसमें ढाल या नीचे की ओर उतार हो। २. साँचे में ढालकर बनाया हुआ।

ढलवाना-स० हिं० 'ढालना' का प्रे०।

ढलाई-स्त्री० [हिं० ढालना] ढालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

ढलाना-स० दे० 'ढलवाना'।

ढलैत-पुं० [हिं० ढाल] ढाल रखने-वाला सिपाही।

ढवरी*-स्त्री० [हिं० ढलना] लौ। लगन।

ढहना-अ० [सं० ध्वंसन] १. (मकान आदि का) गिर पड़ना। ध्वस्त होना। २. नष्ट होना। मिट जाना।

ढहरना*-अ० दे० 'ढलना'।

ढहाना-स० [सं० ध्वंसन] किसी से

ढाने का काम कराना। ध्वस्त कराना।

ढाँकना-स० [सं० ढक=छिपाना] ऊपर से कोई वस्तु रखकर (किसी वस्तु को) ओट में करना। ढकना।

ढाँचा-पुं० [सं० स्थाता] १. कोई चीज बनाने के पहले उसके अंगों को जोड़कर तैयार किया हुआ पूर्व रूप। ठाठ। डौल। २. इस प्रकार जोड़े हुए खंड कि उनके बीच में कोई वस्तु जमाई या लगाई जा सके। (फ्रेम) ३. पंजर। ठठरी। ४. गढ़न। बनावट।

ढाँपना।-स० दे० 'ढाँकना'।

ढाँसना-अ० [अनु०] सूखी खाँसी खाँसना।

ढाँसी-स्त्री० [हिं० ढाँसना] सूखी खाँसी।

ढाई-वि० [सं०अर्द्धद्वितीय, पु०हिं०अढ़ाई] दो और आधा।

ढाक-पुं०[सं०आपाढक] पलाश का पेड़। मुहा०-ढाक के तीन पात=सदा एक सा या ज्यों का त्यों। (व्यंग्य) पुं० [सं० ढक्का] लड़ाई का ढोल।

ढाड़-स्त्री० [अनु०] १. चिंघाड़। २. दहाड़। ३. चिल्लाहट। मुहा०-ढाड़ मारना=चिल्लाकर रोना।

ढाढ़ी-पुं० [देश०] [स्त्री० ढाढिन] एक प्रकार के मुसलमान गवैये।

ढाना-स० [हिं० ढाहना] १. दीवार, मकान आदि तोड़कर गिराना। २. गिराना।

ढार*-स्त्री० [सं० धार] १. ढाल। उतार। २ पथ। मार्ग। ३. ढाँचा। ४. रचना। बनावट।

ढारना।-स० दे० 'ढालना'।

ढारस-पुं० [सं० दृढ़] १. किसी का दुःख या चिन्ता कम करने के लिए उसे समझाना। सान्त्वना। आश्वासन। २. साहस। हिम्मत।

ढाल-स्त्री० [सं०] तलवार आदि का अथवा और किसी प्रकार का वार रोकने का एक प्रसिद्ध उपकरण। चर्म। फलक। स्त्री० [सं० धार] १. वह जगह जो बराबर नीची होती चली गई हो। उतार। २. ढंग। तरीका। प्रकार। स्त्री०[हिं० ढाल] ढालने की क्रिया या भाव।

ढालना-स० [सं० धार] १. पानी या कोई तरल पदार्थ नीचे गिराना। उँड़ेलना। २. शराब पीना। ३. बेचना। ४. कोई चीज बनाने के लिए उसकी सामग्री साँचे में डालना।

ढालुआँ-वि० [हिं० ढाल] [स्त्री० ढालवीं] १ जो बराबर नीचा होता गया हो। २ जिसमें ढाल हो। ढालू।-(स्थान) ३.जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो।

ढालू-वि० दे० 'ढालुआँ'।

ढासना-पुं० [सं० धारण+आसन] वह चीज जिसपर पीठ का सहारा लगाया जाय। सहारा। टेक।

ढाहना।-स० दे० 'ढाना'।

ढिंढोरा-पुं० [अनु० ढम+ढोल] वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है। डुगडुगिया। डुग्गी।

ढिग-क्रि०वि० [सं०दिक्] पास। निकट। स्त्री० १.निकटता। सामीप्य। २.किनारा।

ढिठाई-स्त्री० [हिं० ढीठ] १. ढीठ होने की क्रिया या भाव। धृष्टता। २. अनुचित साहस।

ढिबरी-स्त्री० [हिं० डिब्बी] मिट्टी का तेल जलाने की डिबिया। स्त्री० [हिं० डपना] कसे जानेवाले पेंच के दूसरे सिरे पर लगाया जानेवाला

लोहे का छल्ला ।

ढिलाई-स्त्री० [हिं० ढीला] १. ढीला होने का भाव । २. शिथिलता । सुस्ती ।

ढिसरना†*-अ० [सं० ध्वंसन] १. फिसल या सरक पड़ना । २. प्रवृत्त होना । झुकना ।

ढींगर†-पुं० [सं० डिंगर] १. हट्टा-कट्टा आदमी । २. पति । ३ उप-पति । यार ।

ढींढा†-पुं० [सं० ढुंढि=लंबोदर, गणेश] १. निकला हुआ पेट । २. गर्भ । हमल ।

ढीठ-वि० [सं० धृष्ट] २ बड़ों का उचित आदर या संकोच न करनेवाला । धृष्ट । बे-अदब । शोख । २. अनुचित या आवश्यकता से अधिक साहस करनेवाला ।

ढीठता†*-स्त्री० दे० 'ढिटाई' ।

ढील-स्त्री० दे० 'ढिलाई' ।

†स्त्री० सिर के बालों का कीड़ा । जूं ।

ढीलना-स० [हिं० ढीला] १. ढीला करना । २. बन्धन से अलग करना । छोड़ देना । ३. (रस्सी या डोर) इस प्रकार ढीली करना, जिसमें वह बराबर आगे की ओर बढ़ती जाय । ४. नियंत्रण कम करना । थोड़ी स्वतंत्रता देना ।

ढीला-वि० [सं० शिथिल] १. जो कसा या तना हुआ न हो । २. जो दृढ़ता से बँधा, जकड़ा या लगा न हो । ३. जो बहुत गाढ़ा न हो । गीला । ४. जो अपने संकल्प या कर्तव्य पर स्थिर न रहे । ५. धीमा । मन्द । ६ सुस्त । आलसी ।

ढीलापन-पुं० [हिं० ढीला+पन (प्रत्य०)] ढीला होने का भाव । शिथिलता ।

ढुँढ़वाना-स० हिं० 'ढूँढ़ना' का प्रे० ।

ढुंढिराज-पुं० [सं०] गणेश ।

ढुकना-अ० [देश०] १ घुसना । प्रवेश करना । २. अचानक धावा करना । टूट पड़ना । ३. टोह लेने के लिए आड़ में छिपना । कहीं छिपकर पता लेना ।

ढुटौना*-पुं० दे० 'ढोटा' ।

ढुरकना†-अ० दे० 'ढुलकना' ।

ढुरना-अ० [हिं० ढार] १. ढुलकना । २.कभी इधर और कभी उधर होना । ३. प्रवृत्त होना । झुकना । ४. अनुकूल या प्रसन्न होना ।

ढुलकना-अ० [हिं० ढाल] १. बराबर ऊपर-नीचे चक्कर खाते हुए नीचे गिरना । लुढ़कना । २. किसी पर अनुरक्त या प्रसन्न होना ।

ढुलना-अ० [हिं० ढाल] ढुलकना । अ० [हिं० ढोना] ढोया जाना ।

ढुलवाना-स० हिं० 'ढोना' का प्रे० ।

ढुलाई-स्त्री० [हिं० ढोना] ढोने या ढुलाने का काम, भाव या मजदूरी ।

ढुलाना-स० [हिं० ढाल] १. लुढ़काना । गिराना । २. प्रवृत्त करना । झुकाना । ३. अनुकूल करना । प्रसन्न करना । ४. इधर-उधर घुमाना । जैसे-चँवर ढुलाना । स० [हिं० ढोना] ढोने का काम दूसरे से कराना ।

ढूँढ़ना-स० [सं० ढुंढन] यह देखना कि कोई व्यक्ति या वस्तु कहाँ है । पता लगाना । तलाश करना । खोजना ।

ढूह-पुं० [सं० स्तूप] १. ढेर । अटाला । २. टीला । भीटा ।

ढेंकली-स्त्री० [हिं० ढेंक (चिड़िया)] १.सिंचाई के लिए कूएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। २. धान कूटने का एक यंत्र।

ढेंकी-स्त्री० दे० 'ढेंकली' ।

ढेंढर-पुं० [हिं०ढेंढ] आँख के डेले पर का उभरा या निकला हुआ मांस । (रोग)

ढेपनी†-स्त्री० [हिं० ढेंप] १. पत्ते या

फल का वह भाग जिससे वह टहनी से जुड़ा रहता है। ढेंपी। २. स्तन के ऊपर का काला गोल दाना।

ढेर-पुं० [हिं० धरना ?] एक जगह रखी हुई बहुत-सी वस्तुओं का कुछ ऊँचा समूह। राशि। अटाला।
मुहा०-**ढेर करना**=मार डालना। **ढेर हो रहना या जाना** = मरकर अथवा बहुत शिथिल होकर गिर पड़ना।
†वि० बहुत। अधिक। ज्यादा।

ढेरी-स्त्री० [हिं० ढेर] ढेर। राशि।

ढेलवाँस-स्त्री० [हिं० ढेला+सं० पाश] रस्सी का वह फन्दा जिसमें ढेले भरकर चारों ओर फेंकते हैं। गोफना।

ढेला-पुं० [सं० दल] १. मिट्टी, ईंट, कंकड़ आदि का छोटा कड़ा टुकड़ा। चक्का। २ टुकड़ा। डला।

ढैया-पुं० [हिं० ढाई] १. ढाई सेर का बटखरा। २. ढाई गुने का पहाड़ा।

ढोका-पुं० [?] पत्थर या और किसी चीज का बड़ा अनगढ़ टुकड़ा।

ढोंग-पुं० [हिं० ढंग] ढकोसला। पाखंड।

ढोंगी-वि० [हिं० ढोंग] ढोंग रचनेवाला। पाखंडी।

ढोंढ़-पुं० [सं० तुंड] १. कपास, पोस्ते आदि का डोड़ा। २. कली।

ढोंढ़ी-स्त्री० [हिं० ढोंढ़] नाभि।

ढोटा-पुं० [सं० दुहितृ=लड़की] [स्त्री० ढोटी] १. पुत्र। बेटा। २. लड़का।

ढोना-स० [सं० वोढ] १. सिर या पीठ पर बोझ लादकर ले जाना। भार ले चलना। २. कहीं से सम्पत्ति आदि उठा ले जाना। ३. विपत्ति, कष्ट आदि में निर्वाह करना। दिन बिताना।

ढोर-पुं० [हिं० ढुरना] चौपाया। पशु।

ढोरना-स० [हिं० ढारना] १. ढरकाना। ढालना। २. लुढ़काना। ३. डुलाना। (चँवर आदि)

ढोल-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का लंबोतरा बाजा जिसके दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा होता है। २. कान के अन्दर का परदा।

ढोलक-स्त्री० [सं० ढोल] छोटा ढोल।

ढोलकिया-वि० [हिं० ढोलक] ढोलक बजानेवाला।

ढोलना-पुं० [हिं० ढोल] १. ढोलक के आकार का छोटा जन्तर।
|स० १.दे०'ढालना'। २.दे०'डोलाना'।

ढोला-पुं० [हिं० ढोल] १ सड़े हुए फल आदि में का एक प्रकार का छोटा कीड़ा। २. हद का निशान। ३.शरीर। देह। ४. प्रियतम। ५.पति। ६.एक प्रकार का गीत।

ढोली-स्त्री० [हिं० ढोल] २०० पानों की गड्डी।

ढोवा-पुं० [हिं० ढाना] १. ढोये जाने की क्रिया या भाव। ढोवाई। २. दूसरों का माल अनुचित रूप से बहुत अधिक मात्रा में उठा ले जाना। ३. वे पदार्थ जो मंगल अवसरों पर राजा या सरदार को भेंट करते हैं।

ढोहना*-स०१.दे०'ढोना'। २.दे०'ढूँढ़ना'।

ढौंचा-पुं० [सं० अर्द्ध+हिं० चार] साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौरना*-स० [हिं० ढाल] इधर-उधर घुमाना। जैसे-चँवर ढौरना।

ढौरी*-स्त्री० [देश०] रट। धुन।

ण

ण-हिन्दी या संस्कृत वर्ण-माला का पन्द्रहवाँ व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। कविता में यह 'णगण' का सूचक चिह्न या संक्षिप्त रूप माना जाता है।

णगण-पुं० [सं०] दो मात्राओं का एक गण।

त

त-हिन्दी वर्ण-माला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दन्त है। छन्दःशास्त्र में यह तगण का संक्षिप्त रूप माना जाता है; और कविता में क्रिया-विशेषण के रूप में यह 'तो' का अर्थ देता है।

तंग-वि० [फा०] १. जितना खुला या चौड़ा होना चाहिए, उससे कम। सँकरा। २. सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ३. चुस्त। कसा। ४. विकल। परेशान। मुहा०-तंग करना=सताना। दुःख देना। हाथ तंग होना=रुपये-पैसे की कमी होना।

पुं० [फा०] घोड़े की जीन कसने का तसमा। कसन।

तंगी-स्त्री० [फा०] १. तंग होने का भाव। २. संकीर्णता। सँकरापन। ३. आर्थिक कष्ट। ४. न्यूनता। कमी।

तंजेब-स्त्री० [फा०] एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।

तंडुल-पुं० [सं०] चावल।

तंता*-पुं० १.दे० 'तंतु'। २.दे० 'तत्व'। ३. दे० 'तंत्र'।

स्त्री० [हिं० तुरंत] आतुरता।

वि० जो तौल में ठीक हो।

तंतु-पुं० [सं०] १. सूत। तागा। डोरा। २. सन्तान। औलाद। ३. विस्तार। फैलाव। ४. तांत।

तंतुवाय-पुं० [सं०] जुलाहा।

तंत्र-पुं० [सं०] १. तंतु। तांत। २.सूत। ३. कुटुम्ब का भरण-पोषण। ४.झाड़ने-फूँकने का मन्त्र या शास्त्र। ५. राज्य या और किसी कार्य का प्रबन्ध। ६. अधीनता। पर-वशता। ७. हिन्दुओं का उपासना संबंधी एक शास्त्र जो शिव का चलाया हुआ माना जाता है और जिसके सिद्धान्त गुप्त रखे जाते हैं।

तंत्रकार-पुं० [सं०] [कर्त्ता तंत्रकारी] बाजा बजानेवाला।

तंत्री-स्त्री० [सं०] १. सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. तारों की सहायता से बजनेवाला बाजा। ३. शरीर की नस। ४. रस्सी।

पुं० [सं०] वह जो बाजा बजाता हो।

तंदुरुस्त-वि० [फा०] नीरोग। स्वस्थ।

तंदुरुस्ती-स्त्री० [फा०] तन्दुरुस्त होने की अवस्था या भाव। स्वास्थ्य।

तंदुल*-पुं० दे० 'तंडुल'।

तंदूर-पुं० [फा० तनूर] रोटी पकाने की मिट्टी की एक प्रकार की बड़ी भट्टी।

तंदेही-स्त्री० [फा० तनदिही] १. परिश्रम। मेहनत। २.प्रयत्न। कोशिश। ३. ताकीद। ४. तल्लीनता।

तंद्रा-स्त्री० [सं०] १. वह अवस्था जो पूरी नींद आने के आरंभ में होती है। ऊँघ। २. हलकी बे-होशी।

तंद्रालस-पुं० [सं० तन्द्रा+आलस्य] तंद्रा या ऊँघ के कारण होनेवाला आलस्य।

तंबाकू-पुं० दे० 'तमाकू'।

तँबिया-पुं० [हिं० तांबा] तांबे, पीतल आदि का छोटा तसला।

तंबीह-स्त्री० [अ०] १. नसीहत। शिक्षा। २. ताकीद। चेतावनी।

तंबू-पुं० [हिं० तनना] कपड़े, टाट आदि का बना हुआ बड़ा खेमा। शामियाना।

तंबूर-पुं० [फा०] एक प्रकार का ढोल।

तंबूरा-पुं० [हिं० तानपूरा] सितार की तरह का, पर उससे कुछ बड़ा, एक बाजा। तानपूरा।

तंबूल†*-पुं० दे० 'तांबूल'।

तँबोली-पुं० दे० 'तमोली'।

तंभ(न)*-पुं० [सं० स्तंभ] शृंगार रस में स्तंभ नामक भाव।

तई*-प्रत्य० [हिं० तें] से।
प्रत्य० [प्रा० हुतो] १.प्रति। को। २ से।
अव्य० [सं० तावत्] लिए। वास्ते।

तई-स्त्री० [हिं० तवा] छोटा तवा।

तउ†*-अव्य० १ दे० 'तब'। २.दे० त्यों'।

तऊ†*-अव्य० [हिं० तब+ऊ (प्रत्य०)] तो भी। तथापि। तिसपर भी।

तक-अव्य० [सं० अंत+क] किसी बात या कार्य की सीमा अथवा अवधि सूचित करनेवाली एक विभक्ति। पर्यंत।

तकदमा-पुं० [अ० तखमीना] तखमीना। अन्दाज। कूत।

तकदीर-स्त्री० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

तकदीरवर-वि० [अ०] भाग्यवान्।

तकना†-अ० [हिं० ताकना] १. देखना। २. शरण लेना।
पुं० [हिं० ताकना] बहुत ताकनेवाला।

तकमा†-पुं० १. दे० 'तमगा'। २. दे० 'तुकमा'।

तकरार-स्त्री० [अ०] हुज्जत। विवाद।

तक़रीर-स्त्री० [अ०] १. बात-चीत। २. वक्तृता। भाषण।

तकला-पुं० [सं० तर्कु][स्त्री० अल्पा० तकली] १. चरखे में लोहे की वह सलाई, जिसपर कता हुआ सूत लिपटता है। टेकुआ। २. रस्सी बटने का एक उपकरण।

तकली-स्त्री० [हिं० तकला] सूत कातने का एक छोटा यन्त्र, जिसमें काठ के एक लट्टू में छोटा-सा तकला लगा रहता है।

तकलीफ-स्त्री० [अ०] १. कष्ट। क्लेश। दुःख। २. विपत्ति। संकट।

तकल्लुफ-पुं० [अ०] शिष्टाचार। (विशेषतः दिखौआ)

तकसीम-स्त्री० [अ०] बाटने की क्रिया या भाव। विभाग। बँटाई।

तकसीर-स्त्री० [अ०] अपराध। कसूर।

तकाजा-पुं० दे० 'तगादा'।

तकाना-स० हिं० 'ताकना' का प्रे०।

तकावी-स्त्री० [अ०] वह धन जो खेतिहरों को बीज, चारा आदि खरीदने के लिए सरकार की ओर से उधार दिया जाता है।

तकिया-पुं० [फा०] १. रूई आदि से भरा हुआ वह थैला जो लेटने या सोने के समय सिर के नीचे रखते हैं। बालिश। २. रोक या सहारे के लिए लगाई जानेवाली पत्थर की पटिया। मुतक्का। ३. विश्राम करने का स्थान। ४. आश्रय। सहारा। आसरा। ५. मुसलमान फकीर या पीर के रहने का स्थान।

तकिया-कलाम-पुं०दे०"सखुन-तकिया"।

तकुआ-पुं० दे० 'तकला'।

तक्र-पुं० [सं०] मट्ठा । छाछ ।

तक्षक-पुं० [सं०] १. एक नाग जिसने राजा परीक्षित को काटा था । २. भारत की एक प्राचीन अनार्य जाति । ३.साँप । सर्प । ४. बढ़ई ।

तक्षण-पुं० [सं०] लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्त्तियाँ आदि बनाना ।

तक्ष-शिला-स्त्री० [सं०] भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी जो रावलपिंडी के पास खोदकर निकाली गई है ।

तखमीना-पुं० [अ०] अंदाज । अनुमान । अटकल । (व्यय आदि का)

तख्त-पुं० [फा०] १. राज-सिंहासन । २. तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी ।

तख्तपोश-पुं० [फा०] तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर ।

तख्तबंदी-स्त्री० [फा०] तख्तों की बनी हुई दीवार ।

तख्ता-पुं० [फा० तख्तः] १. लकड़ी का, अधिक लम्बा और कम चौड़ा टुकड़ा । पल्ला ।

मुहा०-**तख्ता उलटना**=१ बना-बनाया काम बिगड़ना या बिगाड़ना । २. व्यवस्था आदि का स्वरूप बिलकुल बदल जाना या बदल देना । **तख्ता हो जाना**=अकड़ जाना ।

२.अरथी । टिखटी । ३.कागज का ताव ।

तख्ती-स्त्री० [हिं० तख्ता] १. छोटा तख्ता । २. काठ की वह पटरी जिसपर लड़कों को लिखना सिखाते हैं । पटिया ।

तगड़ा-वि० [हिं० तन+कड़ा] [स्त्री० तगड़ी] १. सबल । बलवान् । मजबूत । २. अच्छा और बड़ा ।

तगण-पुं० [सं०] पहले दो गुरु और तब एक लघु वर्ण का समूह या गण । (पिंगल)

तगदमा-पुं० दे० 'तकदमा' ।

तगमा-पुं० दे० 'तमगा' ।

तगा*†-पुं० दे० 'तागा' ।

तगाई-स्त्री० [हिं० तागना] तागने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

तगादा-पुं० [अ० तकाजः] १. किसी से अपना प्राप्य धन पाने या आवश्यक कार्य करने के लिए फिर से कहना या स्मरण कराना ।

तगार-पुं० [अ० तग़ार] [स्त्री० अल्पा० तगारी] १. उखली गाड़ने का गड्ढा । २ वह स्थान जहाँ इमारत के लिए चूना, गारा आदि साना जाता है ।

तगीर*-पुं० [अ० तग़य्युर] परिवर्त्तन ।

तचना†-अ० दे० 'तपना' ।

तचा†-स्त्री० दे० 'त्वचा' ।

तचाना-स० [हिं० तपाना] १. तपाना । गरम करना । २. सन्तप्त या दुःखी करना ।

तचित*-वि० [हिं० तचना] १. तपा हुआ । तप्त । २. दुःखी । सन्तप्त ।

तच्छक*-पुं० दे० 'तक्षक' ।

तच्छिन*-क्रि० वि० दे० 'तत्क्षण' ।

तज-पुं० [सं० त्वच] १. दारचीनी की तरह का एक सदाबहार पेड़ जिसके पत्ते 'तेजपत्ता' कहलाते हैं । २. इस पेड़ की सुगन्धित छाल या लकड़ी ।

तजन*†-पुं० [सं० त्यजन] त्याग । पुं० [सं० तर्जन ? मि० फा० ताजियाना] कोड़ा । चाबुक ।

तजना-स० [सं० त्यजन] त्यागना ।

तजरबा-पुं० [अ०] १. अनुभव । २. प्रयोग ।

तजरबाकार-पुं०=अनुभवी ।

तजवीज-स्त्री० [अ०] १. सम्मति। राय। २. फैसला। निर्णय।
यौ०-**तजवीज सानी**=अभियोग की फिर से होनेवाली सुनवाई।
३. बन्दोबस्त। ४. प्रस्ताव।

तज्जन्य-वि० [सं०] उससे उत्पन्न।

तज्ञ-वि० [सं०] तत्वज्ञ।

तटंक-पुं० दे० 'ताटंक'।

तट-पुं० [सं०] १. प्रदेश। २. किनारा। तीर।
क्रि० वि० पास। निकट।

तटनी*-स्त्री० [सं० तटिनी] नदी।

तटस्थ-वि० [सं०] १. तट या किनारे रहनेवाला। २ पास रहनेवाला। ३ परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहने वाला। उदासीन। निरपेक्ष। (न्यूट्रल)

तटिनी(टी)-स्त्री० [सं०] नदी।

तड़-पुं० [सं० तट] एक ही जाति या समाज के अलग अलग विभाग।
पुं० [अनु०] कोई चीज पटकने या मारने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

तड़क-स्त्री० [हिं० तड़कना] १. तड़कने की क्रिया या भाव। २. तड़कने के कारण पड़ने वाला चिह्न।

तड़कना-अ० [अनु० तड़] १. 'तड़' शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना। चटकना। २. किसी चीज का सूखकर फट जाना।

तड़क-भड़क-स्त्री० [अनु०] ठाट-बाट।

तड़का-पुं० [हिं० तड़कना] १. सबेरा। सुबह। प्रातःकाल। २. छौंक। बघार।

तड़काना-स० हिं० 'तड़कना' का स०।

तड़तड़ाना-अ०, स० [अनु०] तड़ तड़ शब्द होना या करना।

तड़प-स्त्री० [हिं० तड़पना] १. तड़पने की क्रिया या भाव। २. चमक। आभा।

तड़पना-अ० [अनु०] १. अधिक पीड़ा के कारण छटपटाना। २. गरजना।

तड़पाना-स० [हिं० तड़पना] ऐसा काम करना जिसमें कोई तड़पे।

तड़बंदी-स्त्री० दे० 'दलबंदी'।

तड़ाक-स्त्री० [अनु०] तड़ाके का शब्द।
क्रि० वि० १ 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के साथ। २. जल्दी से। चटपट। तुरंत।

तड़ाका-पुं० [अनु०] 'तड़' शब्द।
क्रि० वि० चटपट। तुरन्त।

तड़ाग-पुं० [सं०] तालाब। सरोवर।

तड़ागना*-अ० [अनु०] १.डींग होकना। २. हाथ-पैर हिलाना। प्रयत्न करना।

तड़ातड़-क्रि० वि० [अनु०] तड़ तड़ शब्द के साथ।

तड़ाना-स० [हिं० ताड़ना] अनजान बनकर इस तरह कोई काम करना जिसमें लोग ताड़ें या देखें।

तड़ावा-पुं० [हिं० तड़ाना] केवल तड़ाने या दिखाने के लिए धारण किया हुआ रूप।

तड़ित- स्त्री० [सं० तडित्] बिजली।

तड़ी-स्त्री० [तड़ से अनु०] १. चपत। धौल। २. धोखा। छल। (दलाल)

तत्-पुं० [सं०] १. ब्रह्म। परमात्मा। २. वायु। हवा।
सर्व० उस। जैसे-तत्काल। तत्संबंधी।

तत-पुं० [सं०] १.वायु। २.विस्तार। ३. पिता। ४. पुत्र। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों।
*वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम।
*पुं० दे० 'तत्व'।

ततखन*-क्रि० वि० दे० 'तत्क्षण'।

ततवाउ*-पुं० दे० 'तंतुवाय'।

ततसार*-स्त्री० [सं० तप्तशाला] कोई चीज तपाने की जगह।

तताई*-स्त्री० [हिं० तत्ता] गरमी।

ततुवाऊ*-पुं० दे० 'तंतुवाय'।

ततोधिक-वि० [सं०] उनसे बढ़कर।

तत्काल-क्रि० वि० [सं०] उसी समय तुरन्त। फौरन्।

तत्कालिक-वि० दे० 'तात्कालिक'।

तत्कालीन-वि० [सं०] उस समय का।

तत्क्षण-क्रि० वि० [सं०] उसी समय।

तत्त*-पुं० दे० 'तत्व'।

तत्ता*-वि० [सं० तप्त] गरम। उष्ण।

तत्ताथेई-स्त्री० [अनु०] नाचने में पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द।

तत्तो-थंबो-पुं० [हिं०तत्ता=गरम+थामना] १. दम-दिलासा। बहलावा। २. लड़ते हुए लड़कों को शान्त करते हुए समझाना-बुझाना। बीच-बचाव।

तत्त्व-पुं० [सं०] १. वास्तविक या मौलिक बात, गुण या आधार। असलियत। २. जगत् का मूल कारण। (सांख्य में २५ तत्व माने गये हैं।) ३ पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पांचो भूत। ४. ब्रह्म। ५. सार वस्तु।

तत्त्वज्ञ-पुं० [सं०] १. तत्व या यथार्थता जाननेवाला। तत्वज्ञानी। २. ब्रह्मज्ञानी। ३. दार्शनिक।

तत्त्व-ज्ञान-पुं० [सं०] १. ब्रह्म, आत्मा और ईश्वर आदि के संबंध का सच्चा और ठीक ज्ञान। २. ब्रह्म-ज्ञान।

तत्त्वज्ञानी-पुं० दे० 'तत्वज्ञ'।

तत्त्वदर्शी-पुं० दे० 'तत्वज्ञ'।

तत्त्व विद्या-स्त्री० [सं०] दर्शनशास्त्र।

तत्त्ववेत्ता-पुं० दे० 'तत्वज्ञ'।

तत्त्वशास्त्र-पुं० दे० 'दर्शन शास्त्र'।

तत्त्वावधान-पुं० [सं०] किसी काम की ऊपर से होनेवाली देख-रेख।

तत्पर-वि० [सं०] [संज्ञा तत्परता] १. उद्यत। मुस्तैद। सन्नद्ध। २. चतुर।

तत्पुरुष-पुं० [सं०] १. वह समास जिसमें पहले पद में कर्त्ता कारक तो होता ही नहीं, और शेष कारकों की विभक्तियां लुप्त होती है और अन्तिम पद का अर्थ प्रधान होता है। जैसे-नभ-चर।

तत्र-क्रि० वि० [सं०] उस जगह। वहाँ।

तत्सम-पुं० [सं०] किसी भाषा का विशेषतः संस्कृत का वह शब्द जिसका व्यवहार दूसरी अथवा देशी भाषाओं में उसके मूल रूप में या ज्यों का त्यों हो। जैसे-सूर्य, पृथ्वी, समय, तकाजा, कोट आदि।

तत्सामयिक-वि० [सं०] उस समय का।

तथा-अव्य० [सं०] १. और। व। २. इसी तरह। ऐसे ही।

यौ०-**तथास्तु**=ऐसा ही हो। एवमस्तु।

तथा-कथित-वि० [सं०] जो कोई काम करनेवाला या कुछ होनेवाला कहा तो जाय, पर जिसके संबंध में उस कार्य के कर्त्ता होने अथवा स्वयं उसके वैसे होने का कोई पुष्ट प्रमाण न हो या जिसके वास्तविक कर्त्ता आदि होने में किसी प्रकार का संदेह या आपत्ति हो। यों ही अथवा केवल कहा जाने या कहलानेवाला।

तथा-कथ्य-वि० दे० 'तथा-कथित'।

तथागत-पुं० [सं०] गौतम बुद्ध।

तथापि-अव्य० [सं०] तो भी। फिर भी।

तथैव-अव्य० [सं०] १. वैसा ही। उसी प्रकार का। २. जो ऊपर या पहले है, वही यहाँ भी। (डिट्टो)

तथोक्त-वि० दे० 'तथा-कथित'।
तथ्य-वि० [सं०] सचाई। यथार्थता।
तद्-वि० [सं०] वह। (यौगिक के आरम्भ में) जैसे-तद्गत। तदनन्तर।
ᐧक्रि०वि० [सं० तदा] उस समय। तब।
तदंतर, तदनंतर-क्रि० वि० [सं०] उसके उपरान्त।
तदनुरूप-वि० [सं०] १ (जैसा पहले कोई हो) उसके अनुरूप, सदृश या समान। २. (पहलेवाले से) मेल मिलाने या मेल खानेवाला। (कारेस्पांडिंग)
तदनुसार-वि०, क्रि० वि० [सं०] जो हो या हुआ हो, उसके अनुसार। पहलेवाले के मुताबिक।
तदपि-अव्य० [सं०] तो भी। तथापि।
तदबीर-स्त्री० [अ०] काम पूरा या ठीक करने का उपाय। युक्ति। तरकीब।
तदर्थ-अव्य० [सं०] १. उसके लिए। २. (उस या) किसी विशेष काम के लिए। जैसे-तदर्थ समिति।
तदर्थ समिति-स्त्री० [सं०] किसी विशेष कार्य के लिए बनी हुई समिति। (एड हॉक कमिटी)
तदाकार-वि० [सं०] १.उसी आकार या रूप का। तद्रूप। २. तन्मय। तल्लीन।
तदारुक-पुं० [अ०] १. अभियुक्त आदि की खोज। २. दुर्घटना की जाँच। ३. दुर्घटना रोकने के लिए पहले से किया जानेवाला प्रबन्ध या उपाय।
तदीय-सर्व० [सं०] [भाव० तदीयता] १. उससे संबंध रखनेवाला। २. उसका।
तदुपरांत-क्रि० वि० [सं०] उसके बाद।
तद्गत-वि० [सं०] १. उससे संबंध रखनेवाला। २. उसके अन्तर्गत। उसमें व्याप्त।
तद्गुण-पुं० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्यागकर पास के किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण करने का वर्णन हो।
तद्धित-पुं० [सं०] व्याकरण में वह प्रत्यय जिसे संज्ञा के अन्त में लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ या विशेषण बनाते है। जैसे-'मित्रता' में का 'ता' या 'पाश्चात्य' में का 'त्य'।
तद्भव-पुं० [सं०] किसी भाषा विशेषतः संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप दूसरी अथवा देशी भाषाओं में कुछ बदल या बिगड़ गया हो। अपभ्रंश रूप। जैसे-संस्कृत सूत्र से बना हुआ हिन्दी सूत या अँगरेजी 'लैन्टर्न' से बना हिं० 'लालटेन' तद्भव है।
तद्रूप-वि० [सं०] [भाव० तद्रूपता] किसी के रूप के समान। सदृश।
तद्वत्-वि० [सं०] उसी के समान।
तन-पुं० [सं० तनु] शरीर। देह।
मुहा०-**तन को लगना**=१. मन में पूरी चिन्ता या ध्यान होना। २. (खाद्य पदार्थ का) पचकर शरीर को पुष्ट करना।
तन देना=मन लगाना।
*क्रि० वि० तरफ। ओर।
*वि० दे० 'तनिक'।
तनकीह-स्त्री०[अ०]१.जाँच।तहकीकात। २. किसी मुकदमे की वे मूल बातें जिनका विचार और निर्णय करना आवश्यक हो।
तनख्वाह-स्त्री० [फा० तनख्वाह] वेतन।
तनगना*-अ० दे० 'तिनकना'।
तनज्जुल-वि० [अ०] [भाव० तनज्जुली] १. नीचे आया हुआ। अवनत। २. पद या महत्त्व से उतारा या घटाया हुआ।
तनतनाना-अ०[अनु०]क्रोध दिखलाना।

बिगड़ना ।

तनत्राण-पुं० दे० 'तनुत्राण'।

तनना-अ० [सं० तन या तनु] १. खिंचाव आदि के कारण अपने पूरे विस्तार तक पहुँचना । २. ताना जाना । ३. अकड़कर सीधा खड़ा होना । ४. अभिमानपूर्वक रुष्ट होना ।

तनपात-पुं० दे० 'तनुपात'।

तनय-पुं० [सं०] बेटा । पुत्र ।

तनया-स्त्री० [सं०] बेटी । पुत्री ।

तनरुह*-पुं० दे० 'तनूरुह'।

तनवाना-स० हिं० 'तानना' का प्रे० ।

तनहा-वि० [फा०] [भाव० तनहाई] जिसके साथ और कोई न हो । अकेला । एकाकी ।

क्रि० वि० बिना किसी साथी के। अकेले ।

तना-पुं० [फा० मि० सं० तनु.] वृक्ष का वह नीचेवाला भाग जिसमें डालियां नहीं होतीं । पेड़ का धड़ ।

तनाई-स्त्री० [हिं० तानना] तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

तनाउ-वि० दे० 'तनाव'।

तनाकु*-क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

तनाजा-पुं० [अ०] झगड़ा ।

तनाना-स० दे० 'तनवाना'।

तनाव-स्त्री० [अ०] खेमे आदि खींचकर बांधने की रस्सी ।

तनाव-पुं० [हिं० तनना] तनने की क्रिया या भाव ।

तनि(क)-वि० [सं० तनु=अल्प] १. थोड़ा । कम । २. छोटा ।

क्रि० वि० बहुत थोड़ा । जरा । टुक ।

तनिमा-स्त्री० [सं०] शरीर का दुबलापन। कृशता ।

तनिया-स्त्री० [हिं० तनी] १. लँगोटी । कौपीन । २. कछनी । काछा । ३. चोली ।

तनी-स्त्री० [हिं० तानना] १. डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो पहनने के कपड़ों में उनके पल्ले बाँधने के लिए लगाया जाता है । बंद । बन्धन । २. दे० 'तनिया'।

तनु*-वि० [सं०] [भाव० तनुता] १. दुबला-पतला । २. थोड़ा । कम । ३. कोमल । नाजुक । ४. सुन्दर । बढ़िया ।

स्त्री० [सं०] १. शरीर । २. स्त्री ।

तनुक*-क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

तनुज-पुं० [सं०] बेटा । पुत्र ।

तनुजा-स्त्री० [सं०] पुत्री । बेटी ।

तनुत्राण-पुं० [सं०] कवच । बखतर ।

तनुधारी-वि० [सं०] शरीरधारी ।

तनूज*-पु० दे० 'तनुज'।

तनूजा-स्त्री० [सं० तनुजा] पुत्री । बेटी ।

तनूरुह-पुं० [सं०] १. रोम । रोआँ । २. पुत्र । बेटा ।

तनेना-वि० [हिं० तनना] [स्त्री० तनेनी] १. तननेवाला । २. टेढ़ा । तिरछा । ३. क्रुद्ध । नाराज ।

तनैया*-स्त्री० [सं० तनया] बेटी ।

वि० [हिं० तानना] ताननेवाला ।

तनोज*-पुं० [सं० तनूज] १ रोम । रोआं । २. पुत्र । बेटा ।

तनोरुह*-पुं० दे० 'तनूरुह'।

तन्मय-वि० [सं०] [स्त्री० तन्मयी, भाव० तन्मयता] किसी काम में बहुत मग्न या लगा हुआ । दत्त-चित्त । लव-लीन ।

तन्मात्र-पुं० [सं०] पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप । ये पांच है-शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ।

तन्मात्रा-स्त्री० दे० 'तन्मात्र'।

तन्यता-स्त्री० [सं०] धातुओं आदि का

वह गुण जिससे उनके तार खींचे जाते हैं।
तन्वंग-वि० [सं० तनु+अंग] [स्त्री० तन्वंगी] दुबले-पतले अंगोंवाला।
तन्वी-वि० स्त्री० [सं०] दुबली या कोमल अंगोंवाली।
तप-पुं० [सं० तपस्] १. वे कष्टकर धार्मिक कार्य जो चित्त को भोग-विलास से हटाने के लिए किये जायँ। तपस्या। २. शरीर या इन्द्रिय को वश में रखना। पुं० [सं०] १. ताप। गरमी। २. ग्रीष्म-ऋतु। ३. ज्वर। बुखार।
तपकना*-अ० [हिं० टपकना] १. धड़कना। उछलना। २. चमकना। ३. दे० 'टपकना'।
तपन-पुं० [सं०] १ तपने की क्रिया या भाव। ताप। २. सूर्य। ३ धूप। ४. वह शारीरिक व्यापार जो नायक के वियोग में नायिका से होते हैं।
स्त्री० [हिं० तपना] गरमी। ताप।
तपना-अ० [सं० तपन] १. अधिक गरमी के कारण खूब गरम होना। तप्त होना। २. प्रभुत्व या अधिकार दिखाना। ३. बुरे कामों में बहुत अधिक खर्च करना। *अ० [सं० तप] तपस्या करना।
तप-रितु-स्त्री० [हिं० तपना+ऋतु] गरमी का मौसिम।
तपश्चरण-पुं० दे० 'तपश्चर्या'।
तपश्चर्या-स्त्री० [सं०] तपस्या।
तपस-पुं० दे० 'तपस्या'।
तपसा-स्त्री० [सं० तपस्या] १. तपस्या। तप। २. तापती नदी।
तपसी-पुं० [स० तपस्वी] तपस्वी।
तपस्या-स्त्री० [सं०] तप करने की क्रिया या भाव। विशेष दे० 'तप'।
तपस्विनी-स्त्री० [सं०] १. तपस्या करनेवाली स्त्री। २. तपस्वी की स्त्री।
तपस्वी-पुं० [सं० तपस्विन्] [स्त्री० तपस्विनी] तपस्या करनेवाला।
तपाक-पुं० [फा०] १. आवेश। जोश। २. वेग। तेजी।
तपाकर-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. बहुत बड़ा तपस्वी।
तपाना-स० [हिं० तपना] १. गरम करना। तप्त करना। २. दुःख देना।
तपावंत-पुं० दे० 'तपस्वी'।
तपित*-वि० [सं०] तपा हुआ। गरम।
तपिया*-पुं० दे० 'तपस्वी'।
तपिश-स्त्री० [फा०] गरमी। तपन।
तपी-पुं० [हिं० तप] तपस्वी।
तपेदिक-पुं० दे० 'क्षयी' (रोग)।
तपोधन-पुं० [सं०] बड़ा तपस्वी।
तपोबल-पुं० [सं०] तप का प्रभाव या शक्ति।
तपोभूमि-स्त्री०=तपोवन।
तपोवन-पुं० [सं०] वह वन जो तपस्वियों के रहने या तपस्या करने के योग्य हो।
तप्त-वि० [सं०] १. तपाया या तपा हुआ। गरम। उष्ण। २.दुःखित। पीड़ित।
तप्तकुंड-पुं० [सं०] वह प्राकृतिक जल-धारा या कुंड जिसका पानी गरम हो।
तप्तमुद्रा-स्त्री० [सं०] शंख, चक्रादि के के वे छापे जो वैष्णव लोग अपने अंगों पर दगवाते हैं।
तफरीह-स्त्री० [अ०] १. खुशी। प्रसन्नता। २. दिल्लगी। हँसी।
तफसील-स्त्री० [अ०] १. विस्तृत वर्णन या विवरण। २. टीका। व्याख्या।
तब-अव्य० [सं० तदा] १. उस समय। उस वक्त। २. इस कारण से। इस

वजह से।
तबक-पुं० [अ०] १. लोक। तल। २. परत। तह। ३. चाँदी, सोने के पत्तरों को पीटकर बनाया हुआ बहुत पतला वरक। ४. एक प्रकार की चौड़ी थाली।
तबकगर-पुं० [अ० तबक+फा० गर] सोने, चाँदी के पत्तर कूटकर तबक बनाने-वाला। तबकिया।
तबका-पुं० [अ० तबक.] १. भूमि का खंड या विभाग। २. लोक। तल। ३. आदमियों का समूह।
तबकिया-पुं० दे० 'तबकगर'।
तबदील-वि० [अ०] [संज्ञा तबदीली] १. बदला हुआ। परिवर्तित। २. एक स्थान या पद से हटाकर दूसरे स्थान या पद पर भेजा हुआ।
तबर-पुं० [फा०] कुल्हाड़ी।
तबलची-पुं० [अ० तबलः] वह जो तबला बजाता हो। तबलिया।
तबला-पुं० [अ० तबलः] ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा।
तबलिया-पुं० दे० 'तबलची'।
तबादला-पुं० [अ०] १. बदला जाना। परिवर्त्तन। २. किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। अन्तरण।
तबाशीर-पुं० [सं० तवक्षीर] बंसलोचन।
तबाह-वि० [फा०] [संज्ञा तबाही] पूरी तरह से चौपट। नष्ट। बरबाद।
तबाही-स्त्री० [फा०] नाश। बरबादी।
तबीअत-स्त्री० [अ०] १. चित्त। मन। मुहा०-(**किसी पर) तबीअत आना**=(किसी पर) प्रेम होना। अनुराग होना। **तबीअत फड़क उठना**=किसी बात से चित्त का बहुत प्रसन्न होना। **तबीअत लगना**=१. मन को अच्छा लगना। २. ध्यान लगा रहना। ३. किसी से अनुराग या प्रेम होना।
२. बुद्धि। समझ। ज्ञान।
तबीअतदार-वि० [अ० तबीअत+फा० दार] १. समझदार। २. भावुक। रसिक।
तबीयत-स्त्री० दे० 'तबीअत'।
तबेला-पुं० [अ० तवेलः] अस्तबल। मुहा०-**तबेले में लत्ती चलना**=आपस में लड़ाई झगड़ा होना।
तब्बर*-पुं० दे० 'टाबर'।
तभी-अव्य० [हिं० तब+ही] १. उसी समय। २. इसी कारण।
तमंचा-पुं० [फा०] १. छोटी बंदूक। पिस्तौल। २. वह पत्थर जो दरवाजे के बगल में खड़े बल में लगाया जाता है।
तम-पुं० [सं० तमस्] [भाव० तमता] १ अंधकार। अँधेरा। २. राहु। ३ पाप। ४. क्रोध। ५. अज्ञान। ६ कालिख। कालिमा। ७. नरक। ८ मोह। ९. दे० 'तमोगुण'।
प्रत्य० एक प्रत्यय जो विशेषण के अन्त में लगकर 'सबसे बढ़कर' का अर्थ देता है। जैसे-श्रेष्ठतम।
तमक-पुं० [हिं० तमकना] १. जोश। उद्वेग। २. तेजी। तीव्रता। ३. क्रोध।
तमकना-अ० [अनु०] १. क्रोध का आवेश दिखलाना। २. दे०'तमतमाना'।
तमगा-पुं० [तु०] पदक।
तमचर-पुं० [सं० तमीचर] राक्षस।
तमचुर-पुं० [सं० ताम्रचूड़] मुरगा।
तमचोर*-पुं० दे० 'तमचुर'।
तमच्छन्न-वि० दे० 'तमाच्छन्न'।
तमतमाना-अ० [सं० ताम्र] धूप या

क्रोध आदि के कारण चेहरा लाल होना।

तमन्ना-स्त्री० [अ०] कामना । इच्छा ।

तमयी*-स्त्री० [सं० तम+मयी] रात ।

तमस-पुं० [सं०] १. अन्धकार । २. पाप ।

तमसा-स्त्री० [सं०] टौंस नदी ।

तमस्विनी-स्त्री० [सं०] अँधेरी रात ।

तमस्वी-वि० [सं० तमस्विन्] अंधकार-पूर्ण ।

तमस्सुक-पुं० [अ०] वह कागज जो ऋण लेनेवाला उसके संबंध में महाजन को लिखकर देता है । दस्तावेज ।

तमहाया*-वि० [सं० तम+हाया (प्रत्य०)] १. तम या अन्धकार से भरा हुआ । अँधेरा । २. तमोगुण से युक्त ।

तमा-पुं० [सं० तमस्] राहु ।

स्त्री० रात । रात्रि । रजनी ।

*स्त्री० [अ० तमअ] लोभ । लालच ।

तमाकू-पुं० [पुर्त्त० टुबैको] १.एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में नशे के लिए काम में लाये जाते हैं । सुरती । २. इन पत्तों से बना एक विशेष प्रकार का कुछ गीला पदार्थ जिसे चिलम पर रख और सुलगाकर उसका धूआँ पीते हैं ।

तमाखू†-पुं० दे० 'तमाकू' ।

तमाचा-पुं० [फा० तबान्चः] पूरी हथेली से गाल पर किया जानेवाला आघात । थप्पड़ । झापड़ ।

तमाच्छन्न-वि० [सं०] तम या अन्धकार से घिरा या भरा हुआ ।

तमाच्छादित-वि० दे० 'तमाच्छन्न' ।

तमादी-स्त्री० [अ०] किसी बात की विधि-विहित अवधि या मियाद गुजर जाना ।

तमाम-वि० [अ०] १. पूरा । सम्पूर्ण । कुल । २. समाप्त । खतम ।

तमारि-पुं० [हिं० तम+अरि] सूर्य ।

तमाल-पुं० [सं०] १ एक बहुत ऊँचा सुन्दर सदाबहार वृक्ष । २. तेजपत्ता । ३. एक प्रकार की तलवार । ४. तमाकू ।

तमाशबीन-पुं० [अ० तमाशः+फा० बीन] [भाव० तमाशबीनी] १. तमाशा देखने-वाला । २. वेश्यागामी । ऐयाश ।

तमाशा-पुं० [अ०] १. वह खेल या कार्य जिसे देखने से मन प्रसन्न हो । २. अद्‌भुत व्यापार । अनोखी बात ।

तमिस्र-पुं० [सं०] १. अन्धकार । अँधेरा । २. क्रोध । गुस्सा ।

वि० [स्त्री० तमिस्रा] अंधकारपूर्ण ।

तमिस्रा-स्त्री० [सं०] काली या अँधेरी रात ।

तमी-स्त्री० [सं०] रात ।

तमीचर-पुं० [सं०] राक्षस ।

तमीज़-स्त्री० [अ०] १. भले और बुरे का ज्ञान या परख । विवेक । २. ज्ञान । बुद्धि ।

तमीपति(मीश)-पुं० [सं०] चन्द्रमा ।

तमोगुण-पुं० [सं०] [वि० तमोगुणी] प्रकृति के तीन गुणों में से अन्तिम जो दूषित तथा निकृष्ट माना गया है ।

तमोर*†-पुं० [सं० तांबूल] पान ।

तमोरी-*†-पुं० दे० 'तमोली' ।

तमोल-*†-पुं० [सं० तांबूल] पान का बीड़ा ।

तमोली-पुं० [सं० तांबूल] सादे पान या पान के लगे हुए बीड़े बेचनेवाला । पनवाड़ी ।

तय-वि० दे० 'तै' ।

तयना†*-अ० दे० 'तपना' ।

तयार(य्यार)†*-वि० दे० 'तैयार' ।

तरंग-स्त्री० [सं०] १. पानी की लहर । हिलोर । २. प्राकृतिक अथवा कृत्रिम

कारणों से उत्पन्न होनेवाली किसी वस्तु की लहर जो किसी शरीर या वातावरण में दौड़ती है। (वेव) जैसे-संगीत में स्वरों की लहर, बिजली की लहर, शीत या ताप की लहर। ३. चित्त की उमंग। मन की मौज।

तरंगवती-स्त्री० [सं०] नदी।

तरंगायित-वि० [सं०] १. जिसमें तरंगें उठती हों। तरंगित। २. तरंगों की तरह का। लहरियादार। लहरदार।

तरंगिणी-वि० [सं०] तरंगवाली। जिसमें तरंगें हों।
स्त्री० नदी।

तरंगित-वि० [सं०] १. जिसमें तरंगें हों या उठ रही हो। हिलोरें मारता या लहराता हुआ। २. नीचे-ऊपर उठता हुआ।

तरंगी-वि० [सं० तरंगिन्] [स्त्री० तरंगिणी] १. जिसमें तरंगें हो। २. मनमौजी।

तर-वि० [फा०] १. भींगा हुआ। गीला। २. शीतल। ठंढा। ३. जो सूखा न हो। हरा। ४. मालदार। धनवान।
क्रि० वि० [सं० तल] तले। नीचे।
प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों के अन्त में लगकर दूसरों की अपेक्षा उनका आधिक्य या विशेषता सूचित करता है। जैसे-उच्चतर, अधिकतर, कोमलतर।

तरक-स्त्री० दे० 'तड़क'।
पुं० दे० 'तर्क'।

तरकना*-अ० दे० 'तड़कना'।
अ० [सं० तर्क] १. तर्क करना। बहस करना। २. मन में सोच-विचार करना।
अ० [अनु०] उछलना। कूदना।

तरकश-पुं० [फा०] तीर रखने का चोंगा। भाथा। तूणीर।

तरका-पुं० [अ० तर्कः] मरे हुए व्यक्ति की वह सम्पत्ति जो उसके उत्तराधिकारी को मिलती है।

तरकारी-स्त्री० [फा० तरः=सब्जी+कारी] १. वे डंठल, फल, कन्द आदि जिन्हें पकाकर रोटी, चावल आदि के साथ खाते हैं। भाजी। सब्जी। २. पकाया हुआ मांस। (पं०)

तरकी-स्त्री० [सं० ताडंकी] कान में पहनने का एक प्रकार का फूल। (गहना)

तरकीब-स्त्री० [अ०] १. बनावट। रचना। २. रचना-प्रणाली। ३. युक्ति। उपाय। ४ ढंग। ढब।

तरक्की-स्त्री० [अ०] १. वृद्धि। २. उन्नति।

तरखा-पुं० [सं० तरंग] नदी आदि का तेज बहाव।

तरखान-पुं० [सं० तक्षण] बढ़ई।

तरछाना*-अ० [हिं० तिरछा] १. तिरछी नजर से देखना। २. आँख से इशारा करना।

तरजना-अ० [सं० तर्जन] डाँटना। डपटना। बिगड़ना।

तरजनी-स्त्री० दे० 'तर्जनी'।
स्त्री० [सं० तर्जन] भय। डर।

तरजीला-वि० [सं० तर्जन] १. क्रोध-पूर्ण। २. उग्र। प्रचंड।

तरजुमा-पुं० [अ०] अनुवाद। उलथा।

तरजौहाँ-वि० दे० 'तरजीला'।

तरण-पुं० [सं०] १. तरना। २. तैरना। ३. पार जाना।

तरणि-स्त्री० दे० 'तरणी'।

तरणिजा-स्त्री० [सं०] यमुना।

तरणि-तनूजा-स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

तरणी-स्त्री० [सं०] नौका । नाव ।

तरतराना*-अ० [अनु०] १. तड़ तड़ शब्द करना । तड़तड़ाना । २. घी आदि में बिलकुल तर करना ।

तरतीब-स्त्री० [अ०] वस्तुओं का उपयुक्त स्थानों पर लगाया हुआ क्रम । सिलसिला ।

तरद्दुद-पुं० [अ०] १. सोच । फिक्र । चिन्ता । २. अन्देशा । खटका ।

तरन*-पुं० १. दे० 'तरण' । २. दे० 'तरौना' ।

तरनतार-पु० [सं० तरण] निस्तार । मोक्ष । मुक्ति ।

तरनतारन-पुं० [सं० तरण+हिं० तारना] १. उद्धार । निस्तार । २. भव-सागर से पार करनेवाला । (-ईश्वर)

तरना-स० [सं० तरण] १. तैरना । २. तैरकर या नाव आदि से पार करना । अ० मुक्त होना । सद्गति प्राप्त करना । *अ० दे० 'तलना' ।

तरनि-स्त्री० दे० 'तरणि' ।

तरनी-स्त्री० [सं० तरणि] १. नाव । नौका । २. वह ऊँचा मोढा जिसपर खोन्चा रखा जाता है । तन्नी ।

तरपना*-अ० दे० 'तड़पना' ।

तर-पर-क्रि० वि० [हिं० तर=तले+पर] १. नीचे-ऊपर । २. एक के बाद दूसरा ।

तरपीला*-वि० [हिं० तड़प] चमकदार ।

तरफ-स्त्री० [अ०] १. ओर । दिशा । २. पार्श्व । बगल । ३. पक्ष ।

तरफदार-वि० [अ० तरफ+फा० दार] [संज्ञा तरफदारी] पक्ष में रहनेवाला । हिमायती ।

तरफराना-अ० दे० 'तड़पना' ।

तर-बतर-वि० [फा०] भीगा हुआ । आर्द्र ।

तरबूज-पुं० [फा० तर्बुज] एक प्रकार की बेल जिसके बड़े गोल फल खाने के काम में आते हैं ।

तरबोना*-अ० [हिं० तर] तर करना । भिगाना ।

तरराना*-अ० [अनु०] मरोड़ना । ऐंठना ।

तरल-वि० [सं०] [भाव० तरलता] १. हिलता-डोलता । चलायमान । २. क्षण-भंगुर । ३. पानी की तरह बहनेवाला । द्रव । ४. चमकीला । ५. कोमल । मंद ।

तरलाई*-स्त्री०=तरलता ।

तरवन-पुं० [सं० ताटंक] कान में पहनने की तरकी या फूल । (गहना)

तरवर-पुं० दे० 'तरुवर' ।

तरवरिया*-वि० [हिं० तलवार] तलवार चलानेवाला ।

तरवार-स्त्री० दे० 'तलवार' । पुं० दे० 'तरुवर' ।

तरस-पुं० [सं० त्रस] दया । रहम । मुहा०-(किसी पर) तरस खाना= दयार्द्र होना । रहम करना ।

तरसना-अ० [सं० तर्षण] बिलकुल न पाने के कारण किसी वस्तु के लिए लालायित या विकल रहना ।

तरसाना-स० हिं० 'तरसना' का स० । ऐसा काम करना जिसमें कोई तरसे ।

तरसौंहाँ*-वि० [हिं० तरसना] तरसनेवाला ।

तरह-स्त्री० [अ०] १. प्रकार । भाँति । किस्म । २. अलंकारिक रचना-प्रकार । बनावट और रूप-रंग । ३. प्रणाली । रीति । ढंग । ४. युक्ति । उपाय । मुहा०-तरह देना=ख्याल न करना ।

जाने देना।

तरहदार-वि० [फा०] [संज्ञा तरहदारी] १. सुन्दर बनावट का। सजीला। २. शौकीन।

तरहर(हारि)†-क्रि० वि० [हिं० तर+हर (प्रत्य०)] तले। नीचे।
वि० १. नीचे का। २. निकृष्ट। बुरा।

तरहुँड़*-क्रि० वि० दे० 'तरहर'।

तरहेल-वि० [हिं० तर+हेल (प्रत्य०)] १. अधीन। २. वश में आया हुआ।

तराई-स्त्री० [हिं० तर=नीचे] १. पहाड़ के नीच का मैदान या प्रदेश।

तराजू-पुं० [फा०] १. चीज तौलने का वह प्रसिद्ध उपकरण जिसमें एक डांड़ी के दोनों सिरों पर दो पल्ले लटकते रहते हैं। तुला। २. दे० 'कांटा' ८।

तराटक-पुं० दे० 'त्राटिका'।

तराना-पुं० [फा०] १. एक प्रकार का चलता गाना जिसमें सितार, नाच आदि के बोल होते हैं। जैसे-ता नूम त ना ना दे रा ना। २. गीत। गान।

तराप!*-स्त्री० [अनु०] बन्दूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द।

तराबोर-वि० [फा० तर+हि० बोरना] पूरी तरह से भींगा हुआ। तर-बतर।

तराभर-स्त्री० [अनु०] १. जल्दी-जल्दी होनेवाली कार्रवाई। २. धूम।

तरायला-वि० [हिं० तर ?] १. तरल। २. चपल। चंचल।

तरारा-पुं०[तर तर से अनु०] १.उछाल। छलांग। २. कुछ देर तक बराबर गिरती रहनेवाली पतली धार।

तरावट-स्त्री०[फा० तर+आवट (प्रत्य०)] १. तर होने का भाव। गीलापन। नमी। २. ठंढक। शीतलता। ३. शरीर की गरमी शान्त करनेवाले आहार आदि। ४. स्निग्ध भोजन।

तराश-स्त्री० [फा०] १. काटने का ढंग या भाव। काट। २. बनावट। रचना-प्रकार।

तराशना-स० [फा०] काटना। कतरना।

तरासना*-स० [सं० त्रसन] त्रास या कष्ट देना।
स० दे० 'तराशना'।

तराही*-क्रि० वि० [हिं० तले] नीचे।

तरिका-स्त्री० [सं० तडित्] बिजली।

तरिता*-स्त्री० दे० 'तड़िता'।

तरियाना-स० [हिं० तरे=नीचे] १. नीचे कर देना। तह मे या नीचे बैठा देना। २. ढाँकना।
अ० तले बैठ जाना। तह में जमना।
स०[फा०तर] तर या गीला करना। जैसे-मसाला रखने से पहले जमीन तरियाना।

तरिवन-पुं० दे० 'तरवन'।

तरिवर*-पुं० दे० 'तरुवर'।

तरी-स्त्री० [सं०] नाव। नौका।
स्त्री० [फा० तर] १. गीलापन। आर्द्रता। नमी। २. ठंढक। शीतलता।
स्त्री० [हिं० तर=तले] १. वह नीची भूमि जहाँ बरसाती पानी जमा होकर जमीन में समाता हो। कछार। २. तराई। तरहटी।
*स्त्री० दे० 'तरवन'।

तरीका-पुं० [अ० तरीक़ः] १. ढंग। विधि। रीति। २. चाल। व्यवहार। ३. उपाय। तदबीर।

तरु-पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़।

तरुण-वि० [सं०] [स्त्री० तरुणी] [भाव० तरुणता] जिसने अभी बाल्यावस्था पार की हो। युवा। जवान। २.

वस्तु को पाने के लिए किसी के शरीर या घर आदि की देख-भाल।

मुहा०-तलाशी लेना=खोई या छिपाई हुई वस्तु ढूँढने के लिए सन्दिग्ध व्यक्ति के घर जाकर देख-भाल करना।

तली-स्त्री० [सं० तल] १. नीचे की जगह या भाग। पेंदी। तल। २. तलछट। ३. हाथ की हथेली। *४. तलवार।

तलुआ-पुं० दे० 'तलवा'।

तले-क्रि० वि० [सं० तल] नीचे।

मुहा०-तले-उपर=१. एक के ऊपर दूसरा। २. उलट-पुलट किया हुआ। तले ऊपर के=ऐसे दो बच्चे जिनमें से एक दूसरे के ठीक बाद पैदा हुआ हो।

तलेटी-स्त्री० दे० 'तराई'।

तलैया-स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल।

तलौंछ-स्त्री० दे० 'तल-छट'।

तल्ला-पुं० [सं० तल] १. पहनने के दोहरे कपड़े के नीचे का अस्तर। भितल्ला। परत। २.ऊपर नीचे के विचार से मकान के खंड। मंजिल। ३. जूते के नीचे का वह चमड़ा जिसपर तलवा रहता है। *४ निकटता। सामीप्य।

तल्लीन-वि० [सं०] [भाव० तल्लीनता] किसी विषय या कार्य में लीन। निमग्न।

तव-सर्व० [सं०] तुम्हारा।

तवक्षीर-पुं० [सं०, मि० फा० तबाशीर] १. तबाशीर। तीखुर। २. बंस-लोचन।

तवज्जह-स्त्री० [अ०] १. किसी बात की ओर दिया जानेवाला ध्यान। रुख। २. कृपा-दृष्टि।

तवना-अ० [सं० तपन] १. तपना। गरम होना। २. दुःख आदि से पीड़ित होना। ३. प्रताप या तेज दिखलाना। ४. गुस्से से लाल होना।

तवा-पुं० [हिं० तवना=जलना] [स्त्री० अल्पा० तवी, तौनी] १. लोहे का वह प्रसिद्ध गोल बरतन जिसपर रोटी पकाई जाती है।

कहा०-तवे पर की बूँद=१. तुरन्त समाप्त हो जानेवाला पदार्थ। २.बहुत थोड़ा। २. वह गोल ठीकरा जो तमाकू पीने के लिए चिलम पर रक्खा जाता है।

तवारीख-स्त्री० [अ०] इतिहास।

तवालत-स्त्री० [अ०] १. लम्बाई। २. अधिकता। ३. झंझट।

तवेला-पुं० दे० 'तबेला'।

तशरीफ-स्त्री० [अ०] १. महत्व। बड़प्पन। २. सम्मानित व्यक्तित्व।

मुहा०-तशरीफ रखना = विराजना। तशरीफ लाना = पदार्पण करना। पधारना।

तश्त-पुं० [फा०] बड़ा थाल।

तश्तरी-स्त्री० [फा०] छोटी छिछली थाली के आकार का छिछला हलका बरतन। रिकाबी।

तष्टा-पुं० [सं०] १. छील या गढ़कर ठीक करनेवाला। २. विश्वकर्मा।

पुं० [फा० तश्त] [स्त्री० अल्पा० तष्टी] ताँबे की छोटी तश्तरी।

तस-वि० [सं० तादृश] तैसा। वैसा।

तसदीक-स्त्री० [अ०] १. सचाई। २. प्रमाणों के आधार पर होनेवाली सचाई की परीक्षा या निश्चय। ३. गवाही।

तसदीह*-स्त्री० [अ० तसदीअ] १. सिर का दर्द। २. कष्ट। दुःख।

तसमा-पुं० [फा०] कोई चीज बाँधने के लिए चमड़े या कपड़े का फीता।

तसला-पुं० [देश०] [स्त्री० तसली] एक प्रकार का बड़ा और गहरा बरतन।

तसलीम-स्त्री० [अ०] १. सलाम। अभिवादन। २. मान्यता। स्वीकृति।
तसल्ली-स्त्री० [अ०] १. ढारस। सान्त्वना। आश्वासन। २. धैर्य।
तसवीर-स्त्री० [अ०] चित्र।
वि० चित्र के समान सुन्दर। मनोहर।
तसू-पुं० [सं० त्रि+शूक] इमारती काम के लिए प्रायः डेढ़ इंच की एक नाप।
तस्कर-पुं० [सं०] [भाव० तस्करता] चोर।
तस्करी-स्त्री० [सं० तस्कर] १. चोरी। २. चोर की स्त्री। ३. चोर स्त्री।
तस्मात्-अव्य० [सं०] इसलिए।
तस्य-सर्व० [सं०] उसका।
तस्सू-पुं० दे० 'तसू'।
तँह(वाँ)*-क्रि० वि० दे० 'तहाँ'।
तह-स्त्री० [फा०] १. किसी वस्तु पर पड़ा हुआ किसी दूसरी वस्तु का मोटा विस्तार। परत।
मुहा०-तह करना या लगाना=फैली हुई वस्तु मोड़कर समेटना। तह कर रखो=अपने पास रहने दो। हमें नहीं चाहिए। (किसी चीज की) तह देना=हलका पुट या रंगत देना।
२. नीचे का विस्तार। तल। पेंदा।
मुहा०-तह तोड़ना=झगड़े का मूल नष्ट कर देना। तह की बात=वास्तविक और मुख्य बात। गुप्त रहस्य। (किसी बात की) तह तक पहुँचना=वास्तविक बात जान लेना।
३. जलाशय के नीचे की जमीन। तल। थाह।
मुहा०-तह तोड़ना=कूएँ का सब पानी निकाल देना।
४. महीन परत। वरक। झिल्ली।
तहकीकात-स्त्री० [अ० तहकीक का बहु०] किसी विषय या घटना की मूल बातों का पता लगाना। अनुसंधान। जाँच।
तहखाना-पुं० दे० 'तल-घर'।
तह-दरज-वि० [फा०] (कपड़ा या और कोई चीज) जिसकी तह तक न खुली हो। बिलकुल नया।
तहना*-अ० दे० 'तपना'।
अ० [हिं० तेह] बहुत क्रोध करना।
तहमत-स्त्री० [फा० तहमद] कमर में लपेटा जानेवाला एक प्रकार का बड़ा अँगोछा। लुंगी।
तहरी-स्त्री० [देश०] १. पेठे की बरी या मटर और चावल की खिचड़ी।
तहरीर-स्त्री० [अ०] [वि० तहरीरी] १. लिखावट। लिखाई। २. लेख-शैली। ३. लिखी हुई बात या कागज। लेख। ४ (अदालत के मुंशियों आदि का) लिखने का पारिश्रमिक। लिखाई।
तहलका-पुं० [अ०] १. बरबादी। नाश। २. खलबली। हलचल।
तहवील-स्त्री० [अ०] खजाना। कोश।
तहस-नहस-वि० [देश०] पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट।
तहसील-स्त्री० [अ०] १. लोगों से रुपये वसूल करने की क्रिया या भाव। वसूली। उगाही। २. वह धन जो वसूल करने से इकट्ठा हो। ३. तहसीलदार की कचहरी।
तहसीलदार-पुं० [अ० तहसील+फा० दार] १. कर उगाहनेवाला अधिकारी। २. तहसील का वह प्रधान अधिकारी जो जमींदारों से सरकारी मालगुजारी वसूल करता और माल के छोटे मुकदमे सुनता है।
तहसीलना-स०[अ०तहसील]कर, लगान, चन्दा आदि उगाहना या वसूल करना।

तहाँ-क्रि० वि० दे० 'वहाँ'।

तहाना-स० [हिं० तह] तह करना या लगाना।

तहीं-क्रि० वि० [हिं० तहाँ] उसी जगह।

ताँई-क्रि० वि० दे० 'ताईं'।

ताँगा-पुं० दे० 'टाँगा'।

तांडव-पुं० [सं०] १ शिव का नृत्य। २. पुरुषों का नृत्य। ३. वह नाच जिसमें बहुत उछल-कूद हो। उद्धत नृत्य।

ताँत-स्त्री० [सं० तंतु] १. पशुओं की अँतड़ियों या पुट्ठों को बटकर बनाया हुआ तागा। २ धनुष की डोरी। ३. जुलाहों की राछ। ४. तंतु।

ताँता-पुं० [सं० तति=श्रेणी] १. श्रेणी। पंक्ति। कतार।

मुहा०-ताँता लगना=एक के बाद एक लगातार आता या होता चलना।

ताँती-स्त्री० दे० 'ताँता'।

पुं० [हिं० ताँत] कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा।

तांत्रिक-वि० [सं०] तंत्र सम्बन्धी। तंत्र का।

पुं० [स्त्री० तांत्रिकी] तंत्र-शास्त्र का जानने और प्रयोग करनेवाला।

ताँबा-पुं० [सं० ताम्र] लाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिससे बरतन आदि बनते हैं।

तांबूल-पुं० [सं०] १. पान। २. पान का बीड़ा।

ताँसना*-स० [सं० त्रास] १. डाँटना। २. धमकाना। ३. सताना।

ता-प्रत्य० [सं०] एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा के अन्त में लगता है। जैसे-उत्तमता या विशेषता में का 'ता'।

*[सं० तद्] १. उस। २. उसे।

ताईं-अव्य० [सं० तावत्] १. तक। पर्यंत। २. पास। समीप। निकट। ३. (किसी के) प्रति। को। ४. लिए। वास्ते।

ताऊ-पुं० [सं० तात] पिता का बड़ा भाई। ताया।

यौ०-बछिया के ताऊ=परम मूर्ख।

ताक-स्त्री० [हिं० ताकना] १. ताकने की क्रिया या भाव। अवलोकन। २ टकटकी। ३. अवसर की प्रतीक्षा। घात।

मुहा०-ताक में रहना या ताक लगाना=किसी व्यक्ति या अवसर की प्रतीक्षा में रहना।

४ खोज। तलाश।

पुं० [अ० ताक] आला। ताखा। (दीवार में का)

मुहा०-ताक पर रखना=अनावश्यक या व्यर्थ समझकर अलग करना।

वि० १. जो बिना खंडित हुए दो सम भागों में न बँट सके। 'जूम' का उलटा। विषम। जैसे-पाँच, सात, नौ आदि। २. अद्वितीय। अनुपम। बे-जोड़।

ताक-झाँक-स्त्री० [हिं० ताकना+झाँकना] १. कुछ जानने या देखने के लिए रह-रहकर ताकने-झाँकने की क्रिया। २. छिप-कर देखने की क्रिया।

ताकत-स्त्री० [अ०] १. जोर। बल। २. शक्ति। सामर्थ्य।

ताकतवर-वि० [फा०] १. शक्तिशाली। बलिष्ठ। २. शक्तिमान्। समर्थ।

ताकना-स० [सं० तर्कण] १. अवलोकन करना। देखना। (विशेषतः कुछ बुरे भाव या विचार से) २. मन में सोचना। ३. समझ जाना। ताड़ना। ४. पहले से देखकर स्थिर करना। तजवीज करना।

५. देख-रेख या रखवाली करना। ६. अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना।
ताकि-अव्य० [फा०] इसलिए कि।
ताकीद-स्त्री० [अ०] १. किसी काम या बात के लिए जोर देकर कहना। २.अच्छी तरह चेताकर कही जानेवाली बात।
ताखा-पुं० [अ० ताक] गत्ते पर लपेटा हुआ कपड़े का थान।
पुं० आला। ताक। (दीवार में का)
ताग-स्त्री० [हिं० तागना] १. तागने की क्रिया या भाव।
*पुं० दे० 'तागा'।
तागड़ी-स्त्री० दे० 'करधनी'।
तागना-स० [हिं० तागा] तागे से दूर दूर पर मोटी सिलाई करना।
तागा-पुं० [सं० तार्गव] रूई, रेशम, ऊन आदि का वह लंबा रूप जो बटने से तैयार होता है। डोरा। धागा।
पुं० दे० 'प्रत्याय'।
ताज-पुं० [अ०] १. राज-मुकुट। २. मोर, मुरगे आदि के सिर पर की चोटी। शिखा। ३. आगरे का ताज-महल नामक प्रसिद्ध मकबरा।
ताजक-पुं० [फा०] एक ईरानी जाति।
ताजगी-स्त्री० [फा०] १. ताजापन। २ प्रफुल्लता-पूर्ण स्वस्थता।
ताजदार-पुं० [फा०] बादशाह।
ताजन*-पुं० [फा० ताजियानः] कोड़ा।
ताज-पोशी-स्त्री० [फा०] राज-सिंहासन पर बैठकर राजमुकुट धारण करने का कृत्य।
ताजा-वि० [फा० ताज़ः] [स्त्री० ताजी] १. जो अभी बनकर तैयार हुआ हो। बिलकुल नया। २. जो सूखा या कुम्हलाया न हो। हरा-भरा। ३. (फल, फूल आदि) जो अभी पेड़ से तोड़ा गया हो। ४. जो थका-माँदा न हो। स्वस्थ और प्रसन्न।
यौ०-मोटा-ताजा=हृष्ट-पुष्ट।
५. जो अभी व्यवहार में आने को हो। बिलकुल नया।
ताजिया-पुं० [फा०] मकबरे के आकार का बनाया हुआ वह छोटा मंडप जो मुहर्रम में शीया मुसलमान दस दिन तक रखकर गाड़ते हैं।
ताजी-वि० [फा०] अरब देश का।
पुं० १. अरब देश का घोड़ा। २. एक प्रकार का शिकारी कुत्ता।
ताजीर-स्त्री० [अ०] [वि० ताजीरी] दंड।
ताजीरात-पुं० [अ०] आपराधिक दंडों से सम्बन्ध रखनेवाले कानूनों का संग्रह।
ताजीरी-वि० [अ०] दंड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ। जैसे-ताजीरी कर, ताजीरी पुलिस।
ताजीरी कर-पुं० [अ०+सं०] वह कर जो किसी स्थान पर दंड-स्वरूप पुलिस नियत होने पर उसका खर्च निकालने के लिए लगता है।
ताजीरी पुलिस-स्त्री० [अ० ताजीरी+ अ० पुलिस] पुलिस के सिपाहियों के वे दस्ते जो किसी ऐसे स्थान में दंड-स्वरूप रक्खे जाते हैं, जहाँ कोई विशेष उपद्रव होता है और जिनका खर्च उस स्थान के निवासियों से लिया जाता है।
ताज्जुब-पुं० [अ० तअज्जुब] आश्चर्य। विस्मय। अचम्भा।
ताटंक-पुं० [सं०] करन-फूल। तरकी।
ताड़-पुं० [सं०] १. एक बड़ा और प्रसिद्ध पेड़ जो खम्भे के रूप में सीधा ऊपर बढ़ता है और जिसके सिरे पर बड़े बड़े पत्ते होते हैं। २. ताड़न। प्रहार। मार।

ताड़का-स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसे रामचन्द्र जी ने मारा था।

ताड़न-पुं० दे० 'ताड़ना'।

ताड़ना-स्त्री० [सं०] १. प्रहार। मार। २. डाँट-डपट। ३. दंड। सजा। ४. उत्पीड़न। कष्ट देना।

*स० १. मारना। पीटना। २. डाँटना-डपटना। ३. कष्ट पहुँचाना।

स० [सं० तर्कण] छिपी हुई बात लक्षणों से समझ लेना। भाँपना। लखना।

ताड़ित-वि० [सं०] जिसे ताड़ना की या दी गई हो।

ताड़ी-स्त्री० [हिं० ताड़] ताड़ के डंठलों का नशीला रस, जो मद्य की तरह पीया जाता है। नीरा।

तात-पुं० [सं०] १. पिता। बाप। २. पूज्य या मान्य व्यक्ति। ३ भाई या मित्र और विशेषत. छोटों के लिए व्यवहृत एक प्रेमपूर्ण सम्बोधन।

*वि० दे० 'ताता'।

ताता*-वि० [सं० तप्त] तपा हुआ। गरम।

ताता-थेई-स्त्री० दे० 'तत्ताथेई'।

तातार-पुं० [फा०] मध्य एशिया का एक देश जो फारस के उत्तर है।

तातारी-वि० [फा०] तातार देश का। पुं० तातार देश का निवासी।

स्त्री० तातार देश की भाषा।

तातील-स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिन।

तात्कालिक-वि० [सं०] १. तत्काल या तुरन्त का। २. उस समय का।

तात्पर्य-पुं० [सं०] १. आशय। अभिप्राय। मतलब। २. तत्परता।

तात्विक-वि० [सं०] १. तत्त्व या मूल सिद्धान्त संबंधी। जैसे-तात्विक मत-भेद। २ तत्त्व-ज्ञान-युक्त। ३. यथार्थ। वास्तविक।

तादात्म्य-पुं० [सं०] १. एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर उसके साथ एक हो जाना। २. देख-समझकर यह कहना कि यह वही है। पहचानना। (आईडेन्टिफिकेशन)

तादाद-स्त्री० [अ०] संख्या। गिनती।

तादृश-वि० [सं०] [स्त्री० तादृशी] उस तरह का। उसके समान। वैसा।

तान-स्त्री० [सं०] १. तानने की क्रिया या भाव। खींच। २. संगीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार।

मुहा०-**तान उड़ाना या लड़ाना**=तान लेते हुए गीत गाना। किसी पर **तान तोड़ना**=किसी पर सारा दोष मढ़ना या गुस्सा उतारना।

तानना-स० [सं० तान] १. कसने के लिए जोर से अपनी ओर या ऊपर खींचना। २. खींचकर फैलाना।

मुहा०-**तानकर सोना**=निश्चिंत होजाना। ३. ऊपर फैलाकर बाँधना। ४ मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना।

तानपूरा-पुं० [सं० तान+हिं० पूरना] सितार की तरह का, पर उससे बड़ा, एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा। तंबूरा।

तान-बान*-पुं० दे० 'ताना-बाना'।

ताना-पुं० [हिं० तानना] कपड़े की बुनावट में लम्बाई के बल के सूत।

स० [हिं० ताप+ना (प्रत्य०)] १ तपाना। गरम करना। २. तपाकर परीक्षा करना। (सोना आदि धातुएँ) ३. जाँचना। परखना।

पुं० [अ०] आक्षेप-पूर्ण बात। बोली-ठोली। व्यंग्य।

ताना-पाई-स्त्री० [हिं० ताना+पाई]

व्यर्थ बार बार आना-जाना।

ताना-बाना-पुं० [हिं० ताना+बाना] कपड़े की बुनावट में लम्बाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत।

ताना-रीरी-स्त्री० [हिं० तान+अनु० रीरी] साधारण गाना।

ताना शाह-पुं० वह जो अपने अधिकारों का बहुत मन-माना दुरुपयोग करे।

ताना शाही-स्त्री० १. अधिकारों का मन-माना उपयोग। २. वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो।

तानी¹-स्त्री० [हिं० ताना] कपड़े की बुनावट मे करघे में लम्बाई के बल लगे हुए या लगनेवाले सूत।

ताप-पुं० [सं०] [वि० तापक] १. वह प्राकृतिक शक्ति जिसके प्रभाव से चीजें गरम होकर पिघल या भाप के रूप मे हो जाती हैं और जिसका अनुभव गरमी या जलन के रूप मे होता है। उष्णता। गरमी। २. आँच। लपट। ३. ज्वर। बुखार। ४. कष्ट। दुःख। (हमारे यहाँ यह तीन प्रकार का माना गया है-आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक।)

ताप-क्रम-पुं० [सं०] किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थ का वह ताप जो विशेष अवस्थाओं में घटता-बढ़ता रहता है।

ताप-क्रम यंत्र-पुं० [सं०] वह यन्त्र जिससे किसी स्थान या पदार्थ के घटने या बढ़नेवाले ताप-क्रम का पता चलता है। (थैरोमीटर)

ताप-चालक-पुं० [सं०] वह पदार्थ जिसमें ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक व्याप्त हो जाता हो। जैसे-धातु।

ताप-चालकता-स्त्री० [सं०] पदार्थों का वह गुण जिससे गरमी या ताप उनके एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँचता या उसमें व्याप्त होता है।

ताप-तरंग-स्त्री० [सं०] ग्रीष्म ऋतु में ताप या गरमी की वह तरंग जो कुछ विशिष्ट प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होकर किसी दिशा में बढ़ती है और जिसके कारण दो-चार दिनों के लिए गरमी साधारण से बहुत अधिक हो जाती है। (हीट वेव)

ताप-तिल्ली-स्त्री०[हिं० ताप=ज्वर+तिल्ली] तिल्ली बढ़ने और सूजने का रोग।

तापती-स्त्री० [सं०] १. सूर्य की कन्या तापी। २. भारत की एक पवित्र नदी।

ताप-त्रय-पुं० [सं०] आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीनों ताप या कष्ट।

तापन-पुं० [सं०] १. ताप देनेवाला। २. सूर्य। ३. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४. शत्रु को पीड़ित करनेवाला एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग।

तापना-अ० [सं० तापन] आग की आँच से अपना शरीर गरम करना। स० १. जलाना। २. नष्ट करना। (धन)

ताप-मान-पुं० [सं०] किसी पदार्थ अथवा शरीर में की गरमी या सरदी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है। जैसे-वातावरण का ताप-मान या शरीर का ताप-मान।

ताप-मापक यंत्र-पुं० [सं०] ज्वर के समय शरीर का ताप नापने का एक विशेष प्रकार का यन्त्र। (थरमामीटर)

तापस-पुं० [सं०] [स्त्री० तापसी] तप करनेवाला। तपस्वी।

तापसी-स्त्री० [सं०] १. तपस्या करने-

वाली स्त्री । २. तपस्वी की स्त्री ।

तापित-वि० [सं०] १. जो तपाया गया हो । २. जिसे कष्ट दिया गया हो ।

तापी-वि० [सं० तापिन्] ताप देने या तपानेवाला ।

तापता-पुं० [फा०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

ताब-स्त्री० [फा०] १. ताप । गरमी । २. चमक । आभा । दीप्ति । ३. कोई काम करने की शक्ति । सामर्थ्य । ताकत ।

ताबड़-तोड़-क्रि० वि० [अनु०] १. लगातार । निरन्तर । २.तुरन्त । तत्काल ।

ताबूत-पुं० [अ०] वह सन्दूक जिसमें लाश रखकर गाड़ी जाती है ।

ताबे-वि० [अ० ताबऽ] १ वशीभूत । अधीन । २. आज्ञा माननेवाला ।

ताबेदार-वि० [अ० ताबऽ+फा०दार] [संज्ञा ताबेदारी] १. आज्ञाकारी । २. सेवक । नौकर ।

ताम-पुं० [सं०] १ दोष । विकार । २. व्याकुलता । बेचैनी । ३. दुःख । क्लेश । वि०१ भीषण । डरावना । २. व्याकुल । *पुं०[सं०तामस] १. क्रोध । २. अँधेरा ।

तामजान(म)-पुं० [?] एक प्रकार की छोटी खुली पालकी ।

तामड़ा-वि० [हिं० ताँबा] ताँबे के रंग का । कुछ लाली लिये हुए भूरा ।

तामरस-पुं० [सं०] १. कमल । २. सोना । ३ ताँबा । ४. धतूरा ।

तामलेट-पुं० [अं० टंबलर] टीन का रोगन किया हुआ बरतन ।

तामस-वि० [सं०] [स्त्री० तामसी] तमोगुण से युक्त । तमोगुणवाला । पुं० १. साँप । २. दुष्ट । ३ क्रोध । ४. अपकार । ५. अज्ञान । मोह ।

तामसी-वि० स्त्री० [सं०] तमोगुणवाली । वि० दे० 'तामस' ।

तामिल-पुं० [देश०] दक्षिण-भारत की एक जाति ।
स्त्री० उक्त जाति के लोगों की भाषा ।

तामिस्र-पुं० [सं०] १ एक नरक का नाम । २. क्रोध । ३. द्वेष ।

तामीर-स्त्री० [अ०] [बहु० तामीरात] इमारत बनाने का काम ।

तामील(ी)-स्त्री० [अ०]१. (आज्ञा का) पालन । २ (सूचना आदि) अभीष्ट स्थान पर पहुँचाया जाना ।

तामोर*-पुं० दे० 'ताम्बूल' ।

ताम्र-पुं० [सं०] ताँबा ।

ताम्रचूड़-पुं० [सं०] मुर्गा ।

ताम्रपट-पुं० दे० 'ताम्र-पत्र' ।

ताम्र-पत्र-पुं० [सं०] ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिसपर प्राचीन काल में दानपत्र आदि लिखकर खोदे जाते थे ।

ताम्रपर्णी-स्त्री० [सं०] १. बावली । तालाब । २. मदरास की एक छोटी नदी ।

ताम्र-युग-पुं० [सं०] पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय, जब कि वह पहले-पहले ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी । यह युग प्रस्तर-युग के बाद और लौह-युग के पहले पड़ता है । (ब्रांज एज)

ताम्रलिप्त-पुं० [सं०] मेदिनीपुर (बंगाल) जिले का तमलूक नामक स्थान ।

ताम्र-लेख-पुं० दे० 'ताम्र-पत्र' ।

ताय*-पुं० दे० 'ताप' ।
*सर्व० दे० 'ताहि' ।

तायफा-पुं० [फा०] वेश्या और उसके समाजियों की मंडली ।
स्त्री० गाने-बजानेवाली वेश्या ।

तायना*–स० [हिं० ताप] तपाना ।

ताया–पुं० [सं० तात] [स्त्री० ताई] पिता का बड़ा भाई । बड़ा चाचा ।

तार–पुं० [सं०] १. रूपा । चांदी । २. धातु को खींचकर बनाया हुआ तंतु । धातु-तंतु । ३. उक्त स्वरूप का वह तंतु जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार भेजे जाते हैं । (टेलिग्राफ) ४. इस प्रकार भेजा या आया हुआ समाचार । (टेलिग्राम) ५ सूत । तागा । मुहा०–**तार-तार करना**=कपड़ा नोच-कर उसके टुकड़े टुकड़े करना ।
६. अखंड परंपरा । सिलसिला । क्रम । ७. कार्य-सिद्धि का योग या सुभीता । ८. संगीत में एक ऊँचा सप्तक जिसे 'उच्च' भी कहते हैं ।
वि० [सं०] निर्मल । स्वच्छ ।
*पुं० [सं० ताल] करताल (बाजा) ।
*पुं० [सं० तल] तल । सतह ।
*पुं० [हिं० ताड़] ताटंक या तरकी नाम का गहना ।

तारक–पुं० [सं०] १. नक्षत्र । तारा । २. आँख की पुतली । ३.दे० 'तारकासुर' । ४. 'ओं रामाय नमः' का मन्त्र ।
वि० तारने या पार लगानेवाला ।

तार-कश–पुं० [हिं० तार+फा० कश] [भाव० तारकशी] धातु के तार खींचने या बनानेवाला कारीगर ।

तारका–स्त्री० [सं०] १. नक्षत्र । तारा । २. आँख की पुतली ।
*स्त्री० दे० 'ताड़का' ।

तारकासुर–पुं० [सं०] एक असुर जिसे कार्तिकेय ने मारा था ।

तारकेश–पुं० [सं०तारका+ईश] चन्द्रमा ।

तारकेश्वर–पुं० [सं०] शिव ।

तारकोल–पुं० दे० 'अलकतरा' ।

तार-घर–पुं० [हिं० तार+घर] वह स्थान जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजे जाते हैं ।

तार-घाट–पुं० [हिं० तार+घात] मतलब निकलने का सुभीता या अवसर ।

तारण–पुं० [सं०] १. पार उतारने का काम । २.उद्धार । निस्तार । ३ तारनेवाला ।

तारतम्य–पुं० [सं०] [वि० तारतम्यिक] १. एक दूसरे की तुलना में कमी-बेशी का विचार । न्यूनाधिक्य । २. कमी-बेशी या ऊँच-नीच के विचार से क्रम । ३. गुण, परिमाण आदि का पारस्परिक मिलान ।

तार-तोड़–पुं० [हिं० तार] कारचोबी का काम ।

तारन*–पुं० दे० 'तारण' ।

तारना–स० [सं० तारण] १. पार लगाना । पार करना । २. सांसारिक कष्टों से मुक्त करना । सद्गति या मोक्ष देना ।

तारपीन–पुं० [अं० टरपेन्टाइन] चीड़ के वृक्ष से निकला हुआ तेल जो औषध आदि के काम में आता है ।

तारल्य–पुं० [सं०] १. तरलता । द्रवत्व । २. चंचलता । चपलता ।

तारा–पुं० [सं०] १. नक्षत्र । सितारा । मुहा०–**तारे गिनना**=चिन्ता या वियोग में जागकर रात काटना । **तारा टूटना**=आकाश से चमकता हुआ पिंड पृथ्वी पर गिरना । उल्कापात होना । **तारा डूबना**=शुक्र का अस्त होना । **आकाश के तारे तोड़ लाना**=बहुत ही कठिन काम कर दिखाना । **तारों की छाँह**=बहुत सवेरे । तड़के ।
२ आँख की पुतली । ३. भाग्य । किस्मत ।
स्त्री० [सं०] १. दस महाविद्याओं में से एक । २. बृहस्पति की स्त्री, जिसे

चन्द्रमा ने रख लिया था और जिससे बुध का जन्म हुआ था। ३. बालि नामक बन्दर की स्त्री।

*पुं० दे० 'ताला'।

ताराधिप-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. शिव। ३. वृहस्पति। ४. बालि नामक बन्दर।

ताराधीश-पुं० दे० 'ताराधिप'।

तारा-पथ-पुं० [सं०] आकाश।

तारा-मंडल-पुं० [सं०] तारों या नक्षत्रों का समूह।

तारिका*-स्त्री० दे० 'तारका'।

तारिणी-वि० स्त्री० [सं०] तारनेवाली। स्त्री० तारा देवी।

तारी*-स्त्री० १. दे० 'ताली'। २. दे० 'ताड़ी'।

तारीक-वि० [फा०] [संज्ञा तारीकी] १. काला। स्याह। २. धुंधला। अँधेरा।

तारीख-स्त्री० [फा०] १. महीने का हर एक दिन (२४ घंटा का)। तिथि। २ वह तिथि जिसमें कोई विशेष घटना हुई हो। ३ नियत तिथि।

मुहा०-**तारीख डालना** = तारीख या दिन नियत करना।

तारीफ-स्त्री० [अ०] १. लक्षण बतानेवाली परिभाषा। २. वर्णन। विवरण। ३. प्रशंसा। ४. विशेषता। मुख्य गुण।

तारुण्य-पुं० [सं०] तरुणता। जवानी।

तारेश-पुं० [हिं० तारा+ईश] चन्द्रमा।

तार्किक-पुं० [सं०] १. तर्कशास्त्र का जाननेवाला। २. तत्ववेत्ता। दार्शनिक।

ताल-पुं० [सं०] १. कर-तल। हथेली। २. करतल-ध्वनि। ताली। ३. नाचने-गाने में उसके समय का परिमाण ठीक रखने का एक साधन। ४.जांघ या बाँह पर जोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया जानेवाला शब्द। (पहलवान)

मुहा०-**ताल ठोंकना**=लड़ने के लिए ललकारना।

५. मँजीरा। झाँझ। ६. चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला या टुकड़ा। ७. ताड़ का पेड़। ८. ताला।

पुं० [सं० तल्ल] तालाब।

तालपत्र-पुं० [सं०] ताड़ वृक्ष का पत्ता, जिसका व्यवहार प्राचीन काल में ग्रन्थ आदि लिखने के लिए, कागज की तरह, होता था।

ताल-बैताल-पुं० [सं० ताल+बेताल] दो कल्पित यक्ष जिनके विषय में कहा जाता है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध करके वश में किया था।

ताल-मखाना-पुं० [हिं० ताल+मखाना] एक पौधा जिसके गोल या चिपटे सफेद बीज खाये जाते हैं।

ताल-मेल-पुं० [हिं० ताल+मेल] १. ताल और स्वर का सामंजस्य। २. उपयुक्त और ठीक संयोग या मेल।

तालव्य-वि० [सं०] तालु-सम्बन्धी। पुं० तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण। जैसे-इ, ई, च, छ, य, श आदि।

ताला-पुं० [सं० तलक] १. धातु का वह यंत्र जो किवाड़, सन्दूक आदि बन्द करने के लिए कुंडी में लगाया जाता है। २ लोहे का वह तवा जो योद्धा लोग युद्ध के समय छाती पर पहनते थे।

तालाब-पुं० [सं० तल्ल] पानी का बड़ा कुंड। सरोवर। पोखरा।

तालिका-स्त्री० [सं०] १ ताली। कुंजी। २. सूची। फेहरिस्त। (लिस्ट)

तालिम*-स्त्री० [सं० तल्प] बिछौना।

ताली-स्त्री० [सं०] १. ताले के साथ का वह उपकरण जिससे वह खोला और बन्द किया जाता है। कुंजी। चाबी। २. ताड़ का मद या रस। ताड़ी। नीरा।
स्त्री० [सं० ताल] १. शब्द उत्पन्न करने के लिए हथेलियों को एक दूसरी पर मारने की क्रिया। करतल-ध्वनि। थपोड़ी। २. इस प्रकार हथेलियाँ मारने से उत्पन्न शब्द। करतल-ध्वनि।
स्त्री० [हिं० ताल] छोटा ताल। तलैया।

तालीम-स्त्री० [अ०] शिक्षा।

तालु-पुं० [सं०] तालू।

तालुका-पुं० दे० 'ताल्लुका'।

तालू-पुं० [सं० तालु] मुँह के अन्दर का ऊपरी अंग या भाग।
मुहा०-**तालू में दाँत जमना**=दुर्दशा या विनाश के दिन निकट होना। **तालू में जीभ न लगना**=चुपचाप न रहा जाना। बराबर कुछ न कुछ बोलते जाना।

ताल्लुक-पुं० [अ० तअल्लुक] सम्बन्ध। लगाव। वास्ता।

ताल्लुका-पुं० [अ० तअल्लुकः] बहुत-से गाँवों का समूह। बड़ा इलाका।

ताल्लुकेदार-पुं० [अ० तअल्लुकः+फा० दार] १. किसी ताल्लुके का जमींदार। २. अवध में एक विशेष प्रकार के जमींदार जिन्हें कुछ विशिष्ट अधिकार होते थे।

ताव-पुं० [सं० ताप] १. कोई चीज तपाने या पकाने के लिए पहुँचाई जानेवाली गरमी।
मुहा०-**ताव खाना**=आँच पर गरम होना। **ताव देना**=तपाना। गरम करना। **मूछों पर ताव देना**=विजय, अभिमान आदि के कारण मूछों पर हाथ फेरना।
२. अधिकार-मिश्रित क्रोध का आवेश।
मुहा०-**ताव दिखाना**=अभिमानपूर्वक क्रोध प्रकट करना।
३. शेखी या ऐंठ की झोंक। ४ ऐसी इच्छा जिसमें उतावलापन अधिक हो।
मुहा०-**ताव चढ़ना**=प्रबल इच्छा या प्रवृत्ति होना।
पुं० [देश०] कागज का तख्ता।

तावत्-क्रि० वि० [सं०] १. उतनी देर तक। तब तक। २. उतनी दूर तक। वहाँ तक। ('यावत्' का संबंध-पूरक)

तावना*-स० [सं० तापन] १. तपाना। गरम करना। २. दुःख या कष्ट पहुँचाना।

तावरी-स्त्री० [सं० ताप] १. ताप। गरमी। २. धूप। घाम। ३. बुखार। ज्वर। ४. गरमी के कारण सिर में आनेवाला चक्कर। ५. ईर्ष्या। जलन।

तावान-पुं० [फा०] किसी क्षति का पूर्ति के लिए दिया जानेवाला धन। दंड। डाँड़।

तावीज़-पुं० [अ० तअवीज] १. वह यंत्र-मंत्र या कवच जो किसी संपुट में बन्द करके पहना जाय। २. धातु का वह संपुट जिसमें लिखित यंत्र आदि भरकर जिसे गले में या बाँह पर पहनते हैं। जंतर।

ताश-पुं० [अ० तास] १. एक प्रकार का जरदोजी का कपड़ा। २. खेलने के लिए मोटे कागज के ५२ चौखूँटे छपे टुकड़े, जिनपर रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं। ३. वह छोटी दफ्ती जिसपर कपड़े सीने का तागा लपेटा रहता है।

ताशा-पुं० [अ० तास] चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।

तासीर-स्त्री० [अ०] १. प्रभाव। असर। २. किसी वस्तु की गुण-सूचक प्रकृति।

तासु*-सर्व० [सं० तस्य] उसका ।
तासों*-सर्व० [हिं० तासु] उससे ।
ताहम-अव्य० [फा०] तो भी । तिस पर भी ।
ताहि*-सर्व० [हिं० ता] उसको । उसे ।
ताहीं-अव्य० दे० 'ताईं' या 'तईं' ।
तिआ*-स्त्री० दे० 'तिया' ।
तिआह-पुं० [हिं० ति=तीन+विवाह] १. तीसरा विवाह । २. वह जिसका तीसरा ब्याह हुआ हो या होने को हो ।
तिकड़म-पुं० [सं०त्रि+क्रम ?] [कर्त्ता- तिकड़मी] गहरी और गुप्त युक्ति या चाल।
तिकोना-वि० [सं० त्रिकोण] जिसमें तीन कोने हों । तीन कोनोंवाला । पुं० समोसा नाम का पकवान ।
तिकोनिया-वि० दे० 'तिकोना' ।
तिक्का-पुं०[फा०तिक:] माँस की बोटी ।
तिक्ख*-वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तीखा । २.चोखा । तेज । ३.तीव्र-बुद्धि । चालाक ।
तिक्त-वि० [सं०] [भाव० तिक्तता] नीम या चिरायते के-से स्वादवाला । तीता ।
तिच्छ*-वि० दे० 'तीक्ष्ण' ।
तिखटी*स्त्री० दे० 'टिकठी' ।
तिखारना-अ० [सं० त्रि+हिं० आखर= अक्षर] जोर देने के लिए कोई बात कई बार कहना । ताकीद करना ।
तिखूँटा-वि० दे० 'तिकोना' ।
तिगुना-वि० [सं० त्रिगुण] जितना हो, उसका दूना और । तीन गुना ।
तिच्छ*-वि० दे० 'तीक्ष्ण' ।
तिच्छन*-वि० दे० 'तीक्ष्ण' ।
तिजहरी*-स्त्री० [हिं० तीन+पहर] दिन का तीसरा पहर ।
तिजारत-स्त्री० [अ०] [वि० तिजारती] वाणिज्य । व्यापार । रोजगार ।
तिजारी-स्त्री० [हिं० तीजा=तीसरा] हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर ।
तिजोरी-स्त्री० [देश०] लोहे का वह सन्दूक या छोटी अलमारी जिसमें रुपये आदि रक्खे जाते हैं । (सेफ)
तिड़ी-स्त्री० [हिं० तीन] ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं ।
तिड़ी-बिड़ी'-वि० दे० तितर-बितर' ।
तित*-क्रि० वि० [सं० तत्र] १. वहाँ । उस जगह । २. उधर । उस ओर ।
तितना'-क्रि० वि० दे० 'उतना' ।
तितर-बितर-वि०[हिं०तिधर+अनु०] १. जो यथा-स्थान या क्रम से न हो । छित- राया या बिखरा हुआ । २. अस्त-व्यस्त ।
तितली-स्त्री० [हिं० तीतर ?] १. एक उड़नेवाला सुन्दर पतिंगा जो फूलों पर मँडलाता है । २. एक प्रकार की घास ।
तितलौकी'-स्त्री० [हिं० तीता+लौआ] कड़ुआ कद्दू ।
तितारा-पुं० [हिं० त्रि+तार] सितार की तरह का तीन तारोंवाला एक बाजा ।
तितिक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० तितिक्षु] १. सरदी-गरमी या शारीरिक कष्ट सहने की शक्ति। सहिष्णुता। २. क्षमा। शान्ति।
तिते*-वि० [सं० तति] उतने ।
तितेक*-वि० [हिं० तिते+एक] उतना ।
तिथि-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष का कोई दिन, जिसका नाम संख्या के विचार से होता है । मिती । (प्रतिपदा से अमावस या पूर्णिमा तक १५ तिथियाँ होती हैं ।)
तिथिपत्र-पुं० [सं०] पंचांग । पत्रा ।
तिन-सर्व० [सं० तेन] 'तिस' का बहु० । *पुं० [सं० तृण] तिनका । तृण ।
तिनउर*-पुं० [सं० तृण+उर या और

(प्रत्य०)] तिनकों का ढेर । तृण-समूह ।

तिनकना-अ० [अनु०] कुछ नाराज होना । चिड़चिड़ाना । चिढ़ना ।

तिनका-पुं० [सं० तृण] सूखी घास आदि का टुकड़ा । तृण ।

मुहा०-दाँतों में तिनका पकड़ना या लेना=क्षमा या कृपा के लिए गौ की तरह दीनता प्रकट करना । तिनका तोड़ना= १. संबंध तोड़ना । २. नजर से बचाने के लिए टोटका करना । तिनके का सहारा=थोड़ा-सा सहारा । तिनके को पहाड़ बनाना=जरा-सी बात को बहुत बढ़ाना ।

तिनगना-अ० दे० 'तिनकना' ।

तिन-पहला-वि० [हिं० तीन+पहल] जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों ।

तिनूका*-पुं० दे० 'तिनका' ।

तिन्नी-स्त्री० [सं० तृण] एक प्रकार का जंगली धान ।

तिन्ह†-सर्व० दे० 'तिन' ।

तिपति*-स्त्री० दे० 'तृप्ति' ।

तिपाई-स्त्री० [हिं० तीन+पाया] तीन पायों की छोटी ऊँची चौकी ।

तिबारा-वि० [हिं० तीन+बार] तीसरी बार ।

पुं० [हिं० तीन+बार=दरवाजा] वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे हों ।

तिबासी-वि० [हिं० तीन+बासी] तीन दिनों का बासी (खाद्य पदार्थ) ।

ति-मंजिला-वि० [हिं०तीन+अ० मंजिल] [स्त्री० तिमंजली] तीन खंडों का । तीन मरातिब का । (मकान)

तिमि*-अव्य० [सं० तद्+इमि] उस प्रकार । उस तरह । वैसे ।

तिमिर-पुं० [सं०] १. अन्धकार । अँधेरा । २. आँखों से धुँधला दिखाई देना ।

तिमिरारि-पुं० [सं०] सूर्य ।

तिमिरारी-स्त्री०[सं०तिमिरालि]अंधकार।

तिय*-स्त्री० [सं० स्त्री] १. स्त्री । औरत । २. पत्नी । जोरू ।

तिरकना-अ० [?] बाल सफेद होना । अ० दे० 'तड़कना' ।

तिरखूँटा-वि० दे० 'तिकोना' ।

तिरछई†-स्त्री० दे० 'तिरछापन' ।

तिरछा-वि० [सं० तिरश्चीन] [क्रि० तिरछाना] १. जो सीधा नहीं, बल्कि इधर-उधर हट-बढ़कर गया हो । २.जिसमें टेढ़ापन या वक्रता हो । टेढ़ा । वक्र ।

यौ०-तिरछी चितवन या नजर= बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर देखना । (प्रेम, क्रोध आदि का सूचक) तिरछी बात या वचन=कटु या अप्रिय बात ।

तिरछौंहाँ*-वि० [हिं० तिरछा+औंहाँ (प्रत्य०)] जो कुछ तिरछा हो ।

तिरना-अ० [सं० तरण] १. पानी पर तैरना या उतराना । २. पार होना । ३. भव-सागर से पार या आवागमन से मुक्त होना ।

तिरप-पुं० [सं० त्रि] नृत्य में तिहाई आने पर तीन बार पैर पटकना ।

तिरपट-वि० [देश०] १. तिरछा । टेढ़ा । २. मुश्किल । कठिन । विकट ।

तिरपाई-स्त्री० दे० 'तिपाई' ।

तिरपाल-पुं० [अं० टरपोलिन] रोगन किया हुआ एक प्रकार का टाट जो धूप और वर्षा से रक्षा के लिए चीजों के ऊपर डाला या ताना जाता है ।

तिरपित*-वि० दे० 'तृप्त' ।

तिरबेनी-स्त्री० दे० 'त्रिवेणी' ।

तिरमिरा-पुं० [सं० तिमिर] [क्रि०

तिरमिराना] १. आँखों का एक रोग जिसमें कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देता है। २. तेज रोशनी में नजर न ठहरना। चकाचौंध।

तिरमिराना-अ० [हिं० तिरमिरा] प्रकाश या चमक के सामने (आँखों का) चौंधियाना।

तिर-मुहानी-स्त्री० [हिं० तीन+मुहाना] वह स्थान जहाँ तीन रास्ते मिलते हों।

तिरलोक†-पुं० दे० 'त्रिलोक'।

तिरस्कार-पुं० [सं०] [वि० तिरस्कृत] १ अनादर। अपमान। २. डाँट-डपट। फटकार। ३.अनादर या उपेक्षापूर्वक त्याग।

तिरस्कृत-वि० [सं०] [स्त्री० तिरस्कृता] जिसका तिरस्कार हुआ हो। अनादृत।

तिराना-स० [हिं० तिरना] १ पानी पर तैराना। २.पार करना। ३ उबारना। उद्धार करना।

तिराहा-पुं० दे० 'तिर-मुहानी'।

तिरिन*-पुं० दे० 'तृण'।

तिरिया-स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत। यौ०-तिरिया-चरित्तर = स्त्रियों की स्वाभाविक धूर्तता या छल-कपट, जिसे पुरुष जल्दी नहीं समझ सकते।

तिरीछा*-वि० दे० 'तिरछा'।

तिरोधान-पुं० [सं०] अंतर्द्धान।

तिरोभाव-पुं० [सं०] १. अन्तर्द्धान। अदर्शन। २. गोपन। छिपाव।

तिरोहित-वि० [सं०] १. छिपा हुआ। अंतर्हित। २. गायब। लुप्त।

तिरौंछा†-वि० दे० 'तिरछा'।

तिर्यक्-वि० [सं०] तिरछा। टेढ़ा। पुं० पशु, पक्षी आदि जीव।

तिर्यग्गति-स्त्री० [सं०] १. तिरछी या टेढ़ी चाल। २.पशु-योनि में जन्म लेना।

तिर्यग्योनि-स्त्री० [सं०] पशु, पक्षी आदि जीव या उनकी जीवन-दशा।

तिलंगा-पुं० [सं० तैलंग] भारतीय सैनिक। देशी सिपाही।

तिलंगाना-पुं० [सं० तैलंग] तैलंग देश।

तिलंगी-वि० [सं० तैलंग] तिलंगाने का निवासी।

स्त्री० [हिं० तीन+लंग] गुड्डी।

तिल-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दानों से तेल निकलता है।

मुहा०-तिल का ताड़ करना=जरा-सी बात को बहुत बढ़ा देना। तिल तिल= थोड़ा थोड़ा करके। तिल धरने की जगह न होना=जरा-सी भी जगह खाली न रहना। तिल भर=जरा सा। थोड़ा सा। २. शरीर पर होनेवाला काले रंग का बहुत छोटा प्राकृतिक चिह्न या दाग। ३. उक्त चिह्न के आकार का गोदना। ४. आँख की पुतली के बीच की बिन्दी।

तिलक-पुं० [सं०] १. चन्दन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर लगाया जानेवाला साम्प्रदायिक चिह्न। टीका। २ राज्याभिषेक। राज-गद्दी। ३. विवाह पक्का करने की एक रीति जिसमें भावी वर के मस्तक पर टीका लगाकर उसे कुछ दिया जाता है। टीका। ४. माथे पर पहनने का एक गहना। टीका। ५. ग्रन्थ की अर्थ-सूचक व्याख्या। टीका।

तिलकना†-अ० दे० 'फिसलना'।

तिलक-मुद्रा-स्त्री० [सं०] चन्दन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि के छापे या मुद्राएँ जो धार्मिक लोग अपने अंगों पर लगाते हैं।

तिल-कुट-पुं० [हिं० तिल] कूटे हुए तिलों की मीठी टिकिया या पट्टी।

तिल-चटा-पुं० [हिं० तेल+चाटना] एक प्रकार का झींगुर। चपड़ा।

तिल-चावला-वि० [हिं० तिल+चावल] काला और सफेद मिला हुआ।

तिलछना*-अ० [अनु०] विकल होना। छटपटाना। बेचैन रहना।

तिलड़ी-स्त्री० [हिं० तीन+लड़] तीन लड़ों की माला या हार।

तिलमिल-स्त्री० [हिं० तिरमिर] चकाचौंध। तिरमिराहट।

तिलमिलाना-अ० [अनु०] अचानक कष्ट या पीड़ा होने से विकल होना।

तिलस्म-पुं० [यू० टलिस्मन] [वि० तिलस्मी] १.जादू। इन्द्रजाल। २.अद्भुत या अलौकिक व्यापार। करामात। चमत्कार।

तिलांजलि-स्त्री० [सं०] १. किसी के मरने पर अँजुली में जल और तिल लेकर उसके नाम से छोड़ना। २. सदा के लिए परित्याग करने का संकल्प।

तिलाक-पुं० दे० 'तलाक'।

तिलेदानी-स्त्री० [हिं० तिल्ला+फा० दानी] सिलाई के लिए सूई-तागा आदि रखने की थैली।

तिलोत्तमा-स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक परम रूपवती अप्सरा।

तिलोदक-पुं० दे० 'तिलांजलि'।

तिलौंछना-स० [हिं० तेल+औंछना] थोड़ा-सा तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा-वि० [हिं० तेल+औंछना] जिसमें तेल का मेल, स्वाद, गंध या रंगत हो।

तिलौरी-स्त्री० [हिं० तिल+बरी] वह बरी जिसमें तिल भी मिला हो।

तिल्ला-पुं० [अ० तिला] १. कलाबत्तू या बादले आदि का काम। २. दुपट्टे या साड़ी आदि का बादले या कलाबत्तू का अंचल।

तिल्लाना-पुं० दे० 'तराना' १.।

तिल्ली-स्त्री० [सं० तिलक] १. पेट के भीतरी भाग का वह छोटा अवयव जो पसलियों के नीचे बाईं ओर होता है। प्लीहा। २. इस अंग के सूजने का रोग। स्त्री० [सं० तिल] तिल नाम का बीज।

तिल्लेदार-वि० (कपड़ा) जिसमें बादले या कलाबत्तू का अंचल हो।

तिवारी-पुं० दे० 'त्रिपाठी'।

तिष्टना*-स० [सं० सृष्टि] बनाना। रचना।

तिष्ठना*-अ० [सं० तिष्ठ] १. ठहरना। रुकना। २. बैठना।

तिष्पन*-वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तिस!-सर्व० [सं० तस्मिन्] 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है।

मुहा०-तिस पर=इतना होनेपर भी।

तिसना*-स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिसरैत-पुं० [हिं० तीसरा] १. परस्पर विरोधी पक्षों से अलग, तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २. तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना*-अ०[सं०तृषा] प्यासा होना।

तिहाई-स्त्री० [सं० त्रि+भाग] १. तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीयांश। २. संगीत में सम पर का और उसके ठीक पहलेवाले दो ताल या उनके खंड।

तिहायत*-पुं० दे० 'तिसरैत'।

तिहारा(रो)*-सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तिहि-सर्व० दे० 'तेहि'।

तिहूं!-वि० [हिं० तीन] तीनों।

ती*-स्त्री० [सं० स्त्री] १. स्त्री। औरत। २. जोरू। पत्नी।

तीखण(न)*-वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीक्ष्ण-वि० [सं०] [भाव० तीक्ष्णता] १. तेज नोक या धारवाला। २. प्रखर। तीव्र। तेज। ३. उग्र। प्रचंड। ४. जिसका स्वाद तीखा या चरपरा हो। ५. सुनने में अप्रिय। कर्ण-कटु। ६. जो सहा न जा सके।

तीक्ष्ण-बुद्धि-वि० [सं०] जिसकी बुद्धि बहुत तीव्र या तेज हो।

तीखन!*-वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीखा-वि० [सं० तीक्ष्ण] १. तेज धार-वाला। तीक्ष्ण। २. तीव्र। प्रखर। तेज। ३. जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ४. सुनने में अप्रिय। कटु। ५. अच्छा। बढ़िया।

तीखुर-पुं० [सं० तवक्षीर] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ के सत्त का व्यव-हार पकवान आदि बनाने में होता है।

तीछन(ला)*-वि० दे० 'तीक्ष्ण'।

तीज-स्त्री० [सं० तृतीया] १. चान्द्र मास के पक्ष की तीसरी तिथि। २ दे० 'हरतालिका'।

तीजा-पुं० [हिं० तीन] मुसलमानों में किसी के मरने पर तीसरे दिन के कृत्य। वि० दे० 'तीसरा'।

तीतर-पुं० [सं० तित्तिर] एक प्रसिद्ध पक्षी जो लड़ाने के लिए पाला जाता है।

तीता-वि० [सं० तिक्त] १. तीखे और चरपरे स्वादवाला। तिक्त। मिर्च आदि के स्वाद का। २. कड़ुआ। कटु। नीम आदि के स्वाद का।

तीतुरी!*-स्त्री० दे० 'तितली'।

तीतुल*-पुं० दे० 'तीतर'।

तीन-वि० [सं० त्रीणि] दो और एक। पुं० दो और एक के जोड़ की सूचक संख्या। मुहा०-तीन पाँच करना=घुमाव-फिराव या चालाकी की बातें करना। तीन तेरह होना = तितर-बितर या छिन्न-भिन्न होना। अलग अलग होना। मुहा०-न तीन में, न तेरह में=जो किसी गिनती में न हो।

तीय-स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।

तीरंदाज-पुं० [फा०] [भाव० तीरं-दाजी] तीर चलानेवाला।

तीर-पुं० [सं०] नदी का किनारा। कूल। तट। क्रि० वि० पास। निकट। पुं० [फा०] बाण। शर।

तीरथ-पुं० दे० 'तीर्थ'।

तीरवर्त्ती-वि० [सं०] १. तट या किनारे पर होनेवाला। २. पास रहने-वाला। पार्श्ववर्त्ती।

तीर्थंकर-पुं० [सं०] जैनियों के २४ उपास्य देवता जो सब देवताओं से श्रेष्ठ और मुक्तिदाता माने जाते हैं।

तीर्थ-पुं० [सं०] १. वह पवित्र या पुण्य-स्थान जहाँ लोग धर्म-भाव से पूजा, दर्शन या उपासना के लिए जाते हैं। २. कोई पवित्र स्थान। ३. शास्त्र। ४. यज्ञ। ५ संन्यासियों का एक भेद।

तीर्थ-यात्रा-स्त्री० [सं०] तीर्थ-स्थानों में धार्मिक फल प्राप्त करने के लिए जाना।

तीर्थराज-पुं० [सं०] प्रयाग।

तीर्थाटन-पुं० [सं०] तीर्थ-यात्रा।

तीला-पुं० [फा० तीर] [अल्पा० तीली] बड़ा तिनका। सींक।

तीव*-स्त्री० [सं० स्त्री] स्त्री। औरत।

तीवर-पुं० [सं०] १. समुद्र। २. व्याधा। शिकारी। ३. मछुआ।

तीव्र-वि० [सं०] [भाव० तीव्रता] १. अतिशय। अत्यन्त। २. तीक्ष्ण। तीखा।

तेज। ३. कटु। कड़ुआ। ४. न सहने योग्य। असह्य। ५. द्रुत गतिवाला। वेगवान्। तेज। ६. कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढ़ा या चढ़ा हुआ (स्वर)।

तीसरा-वि० [हिं० तीन] १. गिनती या क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला। २. जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई सम्बन्ध न हो। तटस्थ।

तीसी-स्त्री० दे० 'अलसी'।

तुंग-वि० [सं०] [भाव० तुंगता] १. उन्नत। ऊँचा। २. उग्र। प्रचंड। ३. प्रधान। मुख्य। पुं० पर्वत। पहाड़।

तुंड-पुं० [सं०] १. मुख। मुँह। २. चंचु। चोंच। ३. कुछ आगे निकला हुआ मुँह। थूथन। ४. शिव। महादेव।

तुंडि-स्त्री० [सं०] १. मुँह। २. चोंच। ३. नाभि।

तुंडी-वि० [सं० तुंडिन्] आगे निकले हुए मुँह, चोंच या थूथनवाला। पुं० गणेश।

तुंद-पुं० [सं०] पेट। उदर। वि० [फा०] तेज। प्रचंड। विकट।

तुंदिल-वि० [सं०] तोंदवाला।

तुंदैल-वि० [सं० तुंदिल] तोंद या बड़े पेटवाला।

तुंबर*-पुं० दे० 'तुँबुरु'।

तुंबा-पुं० दे० 'तूँबा'।

तुंबुरु-पुं० [सं०] १. धनिया। २. एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिये के आकार का होता है।

तुअ*-सर्व० १. दे० 'तुव'। २. दे० 'तव'।

तुअना*-अ० [हिं० चूना] १. चूना। टपकना। २. खड़ा न रह सकना। गिर पड़ना। ३. (गर्भ) गिरना।

तुक-स्त्री० [हिं० टूक] १. किसी कविता या गीत का कोई चरण या पद। कड़ी। २. पद्य के अन्तिम अक्षरों की ध्वनि-संबंधी एकता या मेल। अन्त्यानुप्रास। काफिया। मुहा०-तुक जोड़ना=भद्दी या बहुत साधारण कविता करना। ३. दो बातों या कार्यों का पारस्परिक सामंजस्य। ४. किसी बात की उपयुक्तता या संगति। जैसे-आखिर इस विरोध में क्या तुक है?

तुक-बंदी-स्त्री० [हिं० तुक+फा० बन्दी] १. काव्य के गुणों से रहित और केवल तुक जोड़कर साधारण कविता करना। २. भद्दी या साधारण कविता, जिसमें काव्य के गुण न हों।

तुकमा-पुं० [फा०] वह फंदा जिसमें पहनने के कपड़ों की घुंडी फँसाई जाती है।

तुकांत-पुं० [हिं० तुक+सं० अन्त] पद्य के चरणों के अन्तिम अक्षरों या तुक का मेल। अन्त्यानुप्रास। काफिया।

तुकार-स्त्री० [हिं० तू+सं० कार] 'तू' का प्रयोग जो अपमानजनक या अशिष्टता-सूचक माना जाता है।

तुकारना-स० [हिं० तुकार] तू तू करके बुलाना। अशिष्ट सम्बोधन करना।

तुक्कल-स्त्री० [फा० तुक्कः] बड़ी पतंग।

तुक्का-पुं० [फा० तुक्कः] वह तीर जिसमें गाँसी या फल न हो। (इसका प्रयोग केवल निशाना साधने में होता है।)

तुखार-पुं० [सं०] १. हिमालय के उत्तर-पश्चिम का एक प्राचीन देश। (यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे होते थे।) २. इस देश का निवासी। ३. इस देश का घोड़ा। *पुं० दे० 'तुषार'।

तुच्छ-वि० [सं०] [भाव० तुच्छता]

१. हीन। क्षुद्र। हेय। २. ओछा। ३. नीच। ४ अल्प। थोड़ा।

तुच्छातितुच्छ-वि० [सं०] बहुत ही तुच्छ। अत्यन्त हेय या क्षुद्र।

तुझ-सर्व० [सं० तुभ्यम्] 'तू' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के सिवा दूसरी विभक्तियां लगने से पहले प्राप्त होता है।

तुझे-सर्व० [हिं० तुझ] 'तू' का कर्म और सम्प्रदान कारकों में रूप। तुझको।

तुट*-वि० [सं० त्रुट] बहुत थोड़ा।

तुट्ठना*-स० [सं० तुष्ट] तुष्ट या प्रसन्न करना। राजी करना।

अ० तुष्ट या प्रसन्न होना।

तुड़ाना-स० [हिं० 'तोड़ना' का प्र०] [भाव० तुड़ाई] १ दूसरे से तोड़ने का काम कराना। तुड़वाना। २. संबंध छोड़कर अलग होना। ३. बड़े सिक्के को उतने ही मूल्य के छोटे छोटे सिक्कों से बदलना। भुनाना।

तुतराना*-अ० दे० 'तुतलाना'।

तुतरौहाँ*-वि० दे० 'तोतला'।

तुतलाना-अ० [हिं० तोता] (तोते की तरह) शब्दों और वर्णों का रुक-रुककर अधूरा और अस्पष्ट उच्चारण करना। (जैसे-बच्चों का)

तुत्थ-पुं० [सं०] तूतिया।

तुन-पुं० [सं० तुन्न] एक बड़ा पेड़ जिसके फूलों से बसंती रंग निकलता है।

तुनक-वि० [फा०] १. दुर्बल। कमजोर। २ कोमल। नाजुक।

यौ०-**तुनक-मिजाज** = बात बात पर रूठने या बिगड़नेवाला।

तुनीर*-पुं० दे० 'तूणीर'।

तुपक-स्त्री० [तु० तोप] १. छोटी तोप। २. बन्दूक। कड़ाबीन।

तुफंग-स्त्री० [तु० तोप] १. हवाई बन्दूक। २. वह नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ भरकर फूँक के जोर से चलाते हैं।

तुभना*-अ० [सं० स्तोभन] स्तब्ध होना। चकित रह जाना।

तुम-सर्व० [सं० त्वम्] 'तू' शब्द का बहुवचन रूप, जिसका व्यवहार सम्बोधित पुरुष के लिए होता है।

तुमड़ी-स्त्री० दे० 'तूँबी'।

तुमरा(रो)-सर्व० दे० 'तुम्हारा'।

तुमुर*-पुं० दे० 'तुमुल'।

तुमुल-पुं० [सं०] १. सेना या युद्ध का कोलाहल या धूम। २ सेना की गहरी मुठ-भेड़। घोर युद्ध।

तुम्हारा-सर्व० [हिं० तुम] 'तुम' का सम्बन्ध कारक का रूप।

तुम्हें-सर्व० [हिं०तुम] कर्म और सम्प्रदान में 'तुम' का विभक्ति-युक्त रूप। तुमको।

तुरग(म)-पुं० [सं० तुरंग] १. घोड़ा। २. चित्त। ३ सात की संख्या।

तुरंज-पुं० [फा०] १. चकोतरा नीबू। २. बिजौरा नीबू।

तुरंत-क्रि० वि० [सं० तुर] जल्दी से। अत्यन्त शीघ्र। चटपट।

तुरई-स्त्री० दे० 'तोरी'।

तुरकटा-पुं० [फा० तुर्क] मुसलमान। (उपेक्षा-सूचक)

तुरकाना-पुं० [फा० तुर्क] १. तुर्कों का देश। तुर्किस्तान। २. तुर्कों का महल्ला या बस्ती।

वि० तुर्कों का-सा।

तुरकिन-स्त्री० [फा० तुर्क] १. तुर्क जाति की स्त्री। † २. मुसलमान स्त्री।

तुरकी-वि० [फा०] तुर्क देश का।

स्त्री० [फा०] तुर्किस्तान की भाषा।

तुरग-पुं० [सं०] घोड़ा।

तुरत-अव्य० [सं० तुर] तुरन्त। चटपट।

तुरपन-स्त्री० [हिं० तुरपना] १. तुरपे या सीये जाने की क्रिया या भाव। २. सीवन।

तुरपना-स० [हिं० तोपा] तोपे लगाना। सिलाई करना।

तुरय*-पुं० [सं० तुरग] घोड़ा।

तुरही-स्त्री० [सं० तूर] फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का लम्बा बाजा।

तुरा*-स्त्री० दे० 'त्वरा'।

*पुं० [सं० तुरग] घोड़ा।

तुराई*-स्त्री० [सं० तूलिका] १ गद्दा। २ दुलाई।

तुराना*-अ० [सं० तुर] आतुर होना। जल्दी मचाना।

स० दे० 'तुड़ाना'।

तुरावती-वि० स्त्री० [सं० त्वरावती] वेगपूर्वक चलने या बहनेवाली।

तुरिया*-स्त्री० दे० 'तुरीय'।

तुरीय-वि० [सं०] चतुर्थ। चौथा। स्त्री० १. वाणी का वह रूप या अवस्था, जब वह मुंह में आकर उच्चरित होती है। वैखरी। २ प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अन्तिम अवस्था जो मोक्ष है। (वेदान्त)

तुरुष्क-पुं० [सं०] १. तुर्क जाति। तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य। २. तुर्किस्तान देश। ३. इस देश का घोड़ा।

तुर्क-पुं० [सं० तुरुष्क] १. तुर्किस्तान का निवासी। २. मुसलमान।

तुर्कमान-पुं० [फा० मि० फा० तुर्क] १. तुर्क जाति का मनुष्य। २. तुर्की घोड़ा।

तुर्की-वि० [फा० तुर्क] तुर्किस्तान का। स्त्री० १. तुर्किस्तान की भाषा। २. तुर्किस्तान का घोड़ा। ३. तुर्कों का-सा अभिमान या अक्खड़पन।

तुर्रा-पुं० [अ०] १. वह पर या कलगी जो पगड़ी में लगाई जाती है। गोशवारा। मुहा०-तुर्रा यह कि=तिसपर विशेषता यह कि।

२. फूलों का वह गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है। ३. पक्षियों के सिर पर की कलगी या चोटी।

वि० [फा०] अनोखा। अद्भुत।

तुर्श-वि० [फा०] [संज्ञा तुर्शी] खट्टा।

तुल*-वि० दे० 'तुल्य'।

तुलना-स्त्री० [सं०] १. कई वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरे से कम या अधिक अथवा अच्छी या बुरी होने का विचार। मिलान। तारतम्य। २.सादृश्य। समानता। ३. उपमा।

अ० [सं० तुल] १. तराजू पर तौला जाना। २. तौल या मान में बराबर उतरना। ३. आधार पर इस प्रकार जमकर खड़ा होना या ठहरना कि कोई भाग किसी ओर झुका न रहे। ४. नियमित होना। बँधना। ५. गाड़ी के पहियों का ओंगा जाना। ६. उद्यत होना।

तुलनात्मक-वि० [सं०] जिसमें और प्रकार के विवेचनों या विचारों के सिवा किसी के साथ हो सकनेवाली तुलना का भी विचार हो। (कम्पेरेटिव)

तुलवाना-स० [हिं० तौलना] [संज्ञा तुलवाई] १. तौल या वजन कराना। २. गाड़ी के पहियों में तेल दिलाना। ओंगवाना।

तुलसी-स्त्री० [सं०] पवित्र माना जानेवाला एक छोटा पौधा, जिसकी पत्तियों में गन्ध होती है।

तुलसी-दल-पुं० [सं०] तुलसी के पौधे की पत्तियाँ जो देवताओं पर चढ़ती हैं।

तुला-स्त्री० [सं०] १. तुलना। मिलान। २. गुरुत्व या भार नापने का यन्त्र। तराजू। काँटा। ३. मान। तौल। ४. बारह राशियों में से सातवीं राशि।

तुलाई-स्त्री० [हिं० तुलना] १. तौलने का काम, भाव या मजदूरी। २. तूलने या औंगने का भाव या मजदूरी।

स्त्री० दे० 'दुलाई'।

तुला-दान-पुं० [सं०] सोलह महादानों में से एक जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर अन्न या दूसरे पदार्थ दान किये जाते हैं।

तुलाना*-अ० [हिं० तुलना] १. आ पहुँचना। २ पूरा उतरना।

स० दे० 'तुलवाना'।

तुला-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें आय, व्यय, बचत, लाभ आदि का लेखा लिखा रहता है। (बैलेन्स शीट)

तुल्य-वि० [सं०] [भाव० तुल्यता] १.समान। बराबर। २.सदृश। अनुरूप।

तुल्य-योगिता-स्त्री० [सं०] एक अलंकार जिसमें बहुत-से उपमेयों या उपमानों का एक ही धर्म बतलाया जाता है।

तुव*-सर्व० दे० 'तव'।

तुष-पुं० [सं०] १. अन्न का छिलका। भूसी। २. अंडे का ऊपरी छिलका।

तुषानल-पुं० [सं०] भूसी या घास-फूस की आग, जिसमें लोग प्रायश्चित्त करने के लिए जल मरते थे।

तुषार-पुं० [सं०] १. हवा में मिली हुई भाप जो जमकर पृथ्वी पर गिरती है। पाला। २.हिम। बरफ। ३.दे०'तुखार'।

तुष्ट-वि० [सं०] [भाव० तुष्टता] १. जिसका तोष या तृप्ति हो चुकी हो। तृप्त। २. प्रसन्न। खुश।

तुष्टना*-अ० [सं० तुष्ट] तुष्ट या प्रसन्न होना।

तुष्टि-स्त्री० [सं०] १. किसी विषय या कार्य के ठीक तरह से होने पर मन में होनेवाली प्रसन्नता और सन्तोष। परितोष। २. किसी बात या काम से अच्छी तरह जी भर जाना। तृप्ति।

तुसी-स्त्री० [सं० तुष] भूसी।

सर्व० वि० [पं०] आप।

तुहिं-सर्व० [हिं० तू] तुझको।

तुहिन-पुं० [सं०] १. पाला। कुहरा। तुषार। २. हिम। बरफ। ३. चाँदनी। ज्योत्स्ना। ४ ठंढक। शीत।

तुहिनांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

तुहिनाचल-पुं० [सं०] हिमालय।

तूँ-सर्व० दे० 'तू'।

तूँबा-पुं० [सं० तुंबक] [स्त्री० अल्पा० तूँबी] १. कडुआ गोल कद्दू। तितलौकी। २. कद्दू को खोखला करके बनाया हुआ वह पात्र जो साधु जल के लिए अपने साथ रखते हैं। तुंबा।

यौ०-तूँबा-फेरी=इधर की चीज उधर करना या एक की चीज दूसरे को देना।

तू-सर्व० [सं० त्वम्] मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम। (अशिष्ट) जैसे-तू क्या बकता है!

मुहा०-तू-तुकार या तू-तू मैं-मैं करना=अशिष्ट शब्दों में झगड़ा करना।

तूटना*-अ० दे० 'टूटना'।

तूठना*-अ० [सं० तुष्ट] १. सन्तुष्ट होना। तृप्त होना। २. प्रसन्न होना।

तूण(णीर)-पुं० [सं०] तीर रखने का चोंगा। तरकश। भाथा।

तूतिया-पुं० दे० 'नीला-थोथा'।

तूती-स्त्री० [फा०] १. छोटी जाति का तोता। २. एक छोटी चिड़िया जो बहुत सुन्दर बोली बोलती है। ३. मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।

मुहा०-किसी की तूती बोलना=किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना।

कहा०-नक्कारखाने में तूती की आवाज=भीड़-भाड़ या बहुत बड़े लोगों के सामने कही हुई ऐसी बात, जिसपर किसी का ध्यान न जाय।

तूदा-पुं० [फा०] १. राशि। ढेर। २. सीमा का चिह्न। हद-बन्दी। ३. मिट्टी का वह ढूह जिसपर निशाना साधते है।

तून-पुं० [सं० तुन्नक] १. तुन का पेड़। २. तूल नाम का लाल कपड़ा।

*पुं० दे० 'तृण'।

तूफान-पुं०[अ०,चीनी ताई फू] १.समुद्र-तल पर चलनेवाली बहुत तेज आंधी। २. वह तेज आंधी जिसमें खूब धूल उड़े और पानी बरसे। ३. आपत्ति। आफत। ४. हल्ला-गुल्ला। ५. झगड़ा। बखेड़ा। ६. झूठा दोषारोपण या अभियोग। तोहमत।

तूफानी-वि० [फा०] १. बखेड़ा करनेवाला। उपद्रवी। २. झूठा अभियोग या कलंक लगानेवाला। ३. उग्र। प्रचंड। ४. तूफान की तरह तेज। जैसे-तूफानी दौरा।

तूमड़ी-स्त्री० [हिं० तूँबा] १. छोटा तूँबा। २. तूँबी का बना हुआ सँपेरों का एक प्रकार का बाजा।

तूम-तड़ाक-स्त्री० [फा०] १. तड़क-भड़क। शान-शौकत। २. ठसक।

तूमना-स० [सं० स्तोम] १. रूई के रेशे या पहल अलग अलग करना। २.धज्जी-धज्जी करना। ३. हाथ से मसलना।

तूमार-पुं० [अ०] साधारण बात का व्यर्थ विस्तार। बात का बतंगड़।

तूर-पुं० [सं०] १. नगाड़ा। २. तुरही।

तूरज*-पुं० दे० 'तूर्य'।

तूरण(न)*-क्रि० वि० दे० 'तूर्ण'।

तूरना*-स० दे० 'तोड़ना'।

पुं० [सं० तूर] तुरही।

तूरा-पुं० दे० 'तुरही'।

तूल-पुं० [सं०] १. आकाश। २. कपास, सेमल आदि के डोंड़ों के अन्दर का घूआ। ३. रूई।

पुं० [हिं० तून] १. चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा। २. गहरा लाल रंग।

*वि० [सं० तुल्य] तुल्य। समान।

पुं० [अ०] लम्बाई। विस्तार।

मुहा०-तूल खींचना या पकड़ना=किसी बात का बहुत बढ़ जाना।

यौ०-तूल-कलाम=१.लम्बी-चौड़ी बातें। २.कहा-सुनी। तूल तवील=लम्बा चौड़ा।

तूलना-स० [हिं० तुलना] पहिये की धुरी में तेल या चिकना देना। औंगना।

तूलिका-स्त्री० [सं०] चित्र अंकित करने की कलम या कूँची।

तूली-स्त्री० दे० 'तूलिका'।

तूस-पुं० [सं० तुष] १.भूसी। २ भूसा। पुं० [सं० दूष्य, तिब्बती थोश] १. एक प्रकार का बढ़िया ऊन जिससे दुशाले बनते है। पशम। पशमीना। २. इस ऊन का बना कपड़ा, विशेषतः चादर।

तूसना*-अ०, स० [सं० तुष्ट] सन्तुष्ट, तृप्त या प्रसन्न होना या करना।

तृखा-स्त्री० दे० 'तृषा'।

तृजग*-वि० दे० 'तिर्यक्'।

तृण-पुं० [सं०] १. वह उद्भिज्ज जिसमें हीर या काठ नहीं होता। जैसे-घास, सरपत आदि।
मुहा०-**तृण गहना या पकड़ना**=गौ की तरह हीनता या दीनता प्रकट करना। **तृणवत्**=अत्यन्त तुच्छ। कुछ भी नहीं। **तृण तोड़ना**=कोई सुन्दर वस्तु देखकर उसे नजर से बचाने के लिए तिनका तोड़ने की प्रक्रिया या टोना।

तृणमय-वि० [सं०] घास का बना हुआ।

तृतीय-वि० [सं०] तीसरा।

तृतीयांश-पुं० [सं०] तीसरा भाग।

तृतीया-स्त्री० [सं०] १ चान्द्र मास के किसी पक्ष की तीसरी तिथि। तीज। २ व्याकरण में करण कारक।

तृन*-पुं० दे० 'तृण'।

तृपति*-स्त्री० दे० 'तृप्ति'।

तृप्त-वि० [सं०] जिसकी इच्छा या वासना पूरी हो चुकी हो। अघाया हुआ।

तृप्ति-स्त्री० [सं०] इच्छा या वासना पूरी होने पर मिलनेवाली शान्ति, सन्तोष या आनन्द।

तृषा-स्त्री० [सं०] १ प्यास। २ इच्छा। अभिलाषा। ३ लोभ। लालच।

तृषित-वि० [सं०] १. प्यासा। २ अभिलाषी। इच्छुक। ३. ललचाया हुआ।

तृष्णा-स्त्री० [सं०] १. कोई वस्तु पाने के लिए आकुल करनेवाली इच्छा। वासना। २ लोभ। लालच। ३. प्यास।

तें*-प्रत्य० [सं० तस्] से। (देखो)

तेंदुआ-पुं० [देश०] चीते की तरह का एक हिंसक पशु।

तेंदू-पुं० [सं० तिंदुक] मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी आबनूस कहलाती है।

ते*-अव्य० दे० 'से'।
सर्व० [सं० ते] वे। वे लोग।

तेखना*-अ० [हिं० तेहा] क्रुद्ध होना।

तेग-स्त्री० [अ०] तलवार।

तेगा-पुं० [अ० तेग] खड्ग।

तेज-पुं० [सं० तेजस्] १. दीप्ति। कांति। चमक। आभा। २. पराक्रम। बल। ३. वीर्य। ४. सार भाग। तत्त्व। ५. ताप। गरमी। ६. तेजी। प्रखरता। ७. प्रताप। रोब-दाब। ८. पांच महाभूतों में से तीसरा, जिसमें ताप और प्रकाश होता है। अग्नि।
वि० [फा० तेज़] १. तीक्ष्ण धारवाला। जिसकी धार पैनी हो २. जल्दी चलनेवाला। ३ चटपट काम करनेवाला। फुरतीला। ४. तीक्ष्ण। तीता। झालदार। ५. भाव या दर में बढ़ा हुआ। महँगा। ६ उग्र। प्रचंड। ७. तुरन्त अधिक प्रभाव दिखलानेवाला। ८ प्रखर या तीव्र बुद्धिवाला।

तेजना*-स० दे० 'तजना'।

तेज-पत्ता-पुं० [सं०तेजपत्र] दारचीनी की जाति के एक पेड़ का पत्ता जो तरकारियों में मसाले की तरह डाला जाता है।

तेजमान(वंत)-वि० दे० 'तेजवान्'।

तेजवान्-वि० [सं० तेजोवान्] १.जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २. वीर्यवान्। ३. बलवान्।

तेजस्-पुं० दे० 'तेज'।

तेजसी*-वि० दे० 'तेजस्वी'।

तेजस्वी-वि० [सं० तेजस्विन्] [भाव० तेजस्विता] १. जिसमें तेज हो। तेज से युक्त। २ प्रतापी।

तेजाब-पुं० [फा०] [वि० तेजाबी] क्षार का वह तरल और अम्ल सार जो

द्रावक होता है ।

तेजाबी-वि० [फा० तेजाब] १. तेजाब सम्बन्धी । २. तेजाब की सहायता से बनाया या ठीक किया हुआ ।

पुं० वह सोना जो पुराने गहनों को गलाकर और तेजाब की सहायता से अच्छी तरह साफ करके तैयार किया जाता है ।

तेजी-स्त्री० [फा०] १. तेज होने का भाव । २. तीव्रता । प्रखरता । ३. उग्रता । प्रचंडता । ४. शीघ्रता । जल्दी । ५. भाव या दर का तेज होना । महँगी । 'मंदी' का उलटा ।

तेजोमय-वि० [सं०] बहुत आभा, कान्ति, तेज या ज्योतिवाला ।

तेजोहत-वि० [सं०] जिसका तेज नष्ट हो गया हो । श्री-हत ।

तेता*-वि० पुं० [स्त्री० तेती] दे० 'उतना' ।

तेतिक*-वि० [हि० तेता] उतना ।

तेतो*-वि० दे० 'उतना' ।

तेरस-स्त्री० [सं० त्रयोदशी] किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि । त्रयोदशी ।

तेरह-वि० [सं० त्रयोदश] दस और तीन ।

पुं० दस और तीन का जोड़ ।

मुहा०-**तेरह-बाइस करना**=इधर-उधर की बातें करना । बहाने-बाजी करना ।

तेरहीं-स्त्री० [हिं० तेरह] किसी के मरने के दिन से तेरहवाँ दिन जिसमें पिंड-दान होता है और ब्राह्मण-भोजन कराके घर के लोग शुद्ध होते है ।

तेरा-सर्व० [सं० तव] [स्त्री० तेरी] मध्यम पुरुष एक-वचन सर्वनाम जो 'तू' का संबंध-कारक रूप है ।

तेरुस*-पुं० दे० 'त्योरस' ।

स्त्री० दे० 'तेरस' ।

तेल-पुं० [सं० तैल] १. बीजों आदि से निकाला जानेवाला अथवा आपसे आप निकलनेवाला प्रसिद्ध, चिकना तरल पदार्थ । चिकना । रोगन । २. विवाह से पहले की एक रीति जिसमें वर और वधू को हल्दी मिलाकर तेल लगाया जाता है ।

मुहा०-**तेल उठना या चढ़ना**=विवाह से पहले उक्त रसम होना ।

तेलगू-स्त्री० [सं० तैलंग] तैलंग देश की भाषा ।

तेलहन-पुं० [हिं० तेल] वे बीज जिनसे तेल निकलता है । जैसे-सरसों, तिल ।

तेलहा-वि० पुं० [हिं० तेल] जिसमें तेल हो या लगा हो ।

तेलिया-वि० [हिं० तेल] तेल की तरह काला, चिकना और चमकीला ।

पुं० १. काला रंग । २. इस रंग का घोड़ा । ३. सींगिया नामक विष ।

तेलिया पखान-पुं० [हिं० तेलिया+पाषाण] एक प्रकार का चिकना पत्थर ।

तेली-पुं० [हिं० तेल] [स्त्री० तेलिन] एक जाति जो तिल, सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का काम करती है ।

कहा०-**तेली का बैल**=हर समय काम में जुता रहनेवाला व्यक्ति ।

तेवन*-पुं० [सं० अंतेवन] १. घर या महल के सामने का छोटा बाग । नजरबाग । २. आमोद-प्रमोद का स्थान या वन । ३. क्रीड़ा । मनोविनोद ।

तेवर-पुं० [हिं० तेह=क्रोध] १. देखने का ढंग । दृष्टि । चितवन ।

मुहा०-**तेवर चढ़ना**=दृष्टि का क्रोध-पूर्ण होना । **तेवर बदलना या बिगड़ना**=व्यवहार में क्रोध या उदासीनता प्रकट करना ।

२. भौंह । भृकुटी ।

तेवाना*-अ० [देश०] सोचना।

तेहु*-पुं० [हिं० तेखना] १. क्रोध। २. घमंड। ३. तेजी। प्रचंडता।

तेहरा-वि० पुं० [हिं० तीन+हरा] १. तीन परतों या लपेटों का। २. जो एक साथ तीन हों। ३. तिगुना। (क्व०)

तेहराना-स० [हिं० तेहरा] कोई काम दोहराने के बाद फिर तीसरी बार करना, देखना या जोचना।

तेहवार-पुं० दे० 'त्योहार'।

तेहा-पुं० [हिं० तेह] १. क्रोध। गुस्सा। २. अहंकार। घमंड। ३. उग्रता। तेजी।

तेहि*-सर्व० [सं० ते] उसको। उसे।

तेही-पुं० [हिं० तेह+ई (प्रत्य०)] १. गुस्सा करनेवाला। क्रोधी। २.अभिमानी। घमंडी। ३. उग्र स्वभाववाला।

तै-सर्व० [सं० त्वम्] तू।

*क्रि० वि० [हिं० ते] से।

तै-क्रि० वि० [सं० तत्] उतना।

पुं० [अ०] १. निपटारा। फैसला।

यौ०-तै-तमाम=जिसका निपटारा हो चुका हो।

२. काम पूरा होना।

वि० १ जिसका निपटारा या फैसला हो चुका हो। निपटा हुआ। निर्णीत। २. जो पूरा हो चुका हो। ३. ठहराया या पक्का किया हुआ। निश्चित।

तैनात-वि० [अ० तअय्युन] [संज्ञा तैनाती] किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ। नियुक्त। मुकर्रर।

तैयार-वि० [अ०] १. जो काम में आने के योग्य और ठीक हो गया हो। दुरुस्त। लैस।

मुहा०-हाथ तैयार होना=किसी काम में हाथ का अभ्यस्त और कुशल होना। २. उद्यत। तत्पर। मुस्तैद। ३. प्रस्तुत। ४. उपस्थित। मौजूद। ५. हृष्ट-पुष्ट।

तैयारी-स्त्री० [हिं० तैयार+ई (प्रत्य०)] १. तैयार होने की क्रिया या भाव। दुरुस्ती। २. तत्परता। मुस्तैदी। ३. शरीर की पुष्टता। मोटाई। ४. किसी बड़े काम के लिए प्रबन्ध आदि के रूप में पहले से होनेवाले काम। ५. सजावट।

तैयो*-क्रि० वि० दे० 'तऊ'।

तैरना-अ० [सं० तरण] १. पानी पर उतराना। २. हाथ-पैर आदि हिलाकर पानी में उतराते हुए आगे-पीछे होना। तरना। पैरना।

तैराई-स्त्री० [हिं० तैरना+आई (प्रत्य०)] तैरने की क्रिया, भाव या पुरस्कार।

तैराक-वि०[हिं० तैरना+आक (प्रत्य०)] बहुत अच्छी तरह तैरनेवाला।

तैराना-स० [हिं० तैरना का प्रे०] १. दूसरे को तैरने मे प्रवृत्त करना। २. घुसाना। जैसे-पेट में कटार तैराना।

तैलंग-पु० [सं० त्रिकलिंग] दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश।

तैलंगी-पुं० [हिं० तैलंग+ई (प्रत्य०)] तैलंग देश का निवासी।

स्त्री० तैलंग देश की भाषा।

तैल-पुं० [सं०] [भाव० तैलत्व] तेल।

तैल-चित्र-पुं० [सं०] मोटे कपड़े पर तेल मिले हुए रंगों की सहायता से बना हुआ चित्र जो बहुत स्थायी होता है। (ऑयल पेन्टिंग)

तैसा-वि० [सं० तादृश] उस प्रकार या तरह का। 'वैसा' का पुराना रूप।

तैसे-क्रि० वि० दे० 'वैसे'।

तों*-क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

तोंअर*-पुं० दे० 'तोमर'।

तोंद-स्त्री० [सं० तुंड] फूले हुए पेट का आगे बढ़ा या निकला हुआ भाग।

तोंदल-वि० [हिं० तोंद+ल (प्रत्य०)] जिसका पेट आगे निकला हो। तोंदवाला।

तो-अव्य० [सं० तु] एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी शब्द या बात पर जोर देने के लिए अथवा कभी कभी यों ही होता है। अव्य० [सं० तद्] उस दशा में। तब। *सर्व० [सं० तव] १. तुझ (ब्रज०) २. तेरा।

*अ० [हिं० हतो=था] था (क्व०)

तोइ*-पुं० [सं० तोय] पानी। जल।

तोई-स्त्री० [देश०] मगजी। गोट।

तोख*-पुं० दे० 'तोष'।

तोड़-पुं० [हिं० तोड़ना] १. तोड़ने की क्रिया या भाव। २. नदी आदि के जल का तेज बहाव। तरखा। ३. प्रभाव, वार, युक्ति या दाँव से बचने के लिए की हुई युक्ति दाँव या वार। प्रतिकार। मारक। ४. बार। दफा। जैसे—आज चार तोड़ पानी बरसा।

तोड़क-वि० [हिं० तोड़ना] तोड़नेवाला। (अशुद्ध रूप)

तोड़ना-स० [हिं० टूटना] १. आघात या झटके से किसी पदार्थ के खंड या टुकड़े करना। अंग को मूल वस्तु से जुदा करना। २ किसी वस्तु का कोई अंग खंडित, भग्न या बे-काम करना। ३. खेत में पहले-पहल हल चलाना। ४. क्षीण, दुर्बल या अशक्त करना। ५. संघटन, व्यवस्था, स्वरूप आदि नष्ट-भ्रष्ट करना। ६. निश्चय, आज्ञा, नियम आदि का उल्लंघन करना।

तोड़र*-पुं० [हिं० तोड़ा] पैर में पहनने का तोड़ा। (गहना)

तोड़वाना-स० दे० 'तुड़वाना'।

तोड़ा-पुं० [हिं० तोड़ना] १. सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर जो हाथों, पैरों या गले में पहनी जाती है। २. रुपये रखने की टाट की वह थैली जिसमें १०००) आते हैं।

मुहा०-**तोड़े उलटना या गिनना**=बहुत धन देना।

३. घटी। टोटा। ४. नाच का कुछ विशेष प्रकार का कोई टुकड़ा या विभाग। पुं० [सं० तुंड या हिं० टोटा] तोड़ेदार बन्दूक छोड़ने की नारियल की जटा की रस्सी।

यौ०-**तोड़ेदार बन्दूक**=पुरानी चाल की वह बन्दूक जो तोड़ा या पलीता लगाकर छोड़ी जाती है।

तोण*-पुं० [सं० तूण] तरकश।

तोना-पुं० [फा० तोदः] ढेर। राशि।

तोतई-वि० [हिं० तोता+ई (प्रत्य०)] तोते के रंग का-सा। धानी।

तोतक*-पुं० [हिं० तोता] पपीहा।

तोतराना*-अ० दे० 'तुतलाना'।

तोतला-वि० [हिं० तुतलाना] तुतलाकर या अस्पष्ट बोलनेवाला।

तोता-पुं० [फा०] हरे या लाल रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो आदमियों की बोली की नकल करता और इसी लिए पाला जाता है। शुक। कीर। सूआ।

मुहा०-**हाथों के तोते उड़ जाना**=भारी अनिष्ट के कारण बहुत घबरा जाना। **तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना**=बहुत बे-मुरौवत होना। **तोता पालना**=जान बूझकर कोई दुर्व्यसन या रोग अपने पीछे लगाना या बढ़ाना।

तोता-चश्म-पुं० [फा०] तोते की तरह

आँखें फेर लेनेवाला ; बे-मुरौवत ;

तोदन-पुं० [सं०] १. चाबुक । कोड़ा । २. व्यथा । कष्ट । ३. पीड़ा । दर्द ।

तोप-स्त्री० [तु०] एक प्रसिद्ध आधुनिक अस्त्र जिसमें गोला रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर छोड़ा जाता है।

मुहा०-तोप कीलना=तोप की नली इस प्रकार बन्द करना कि वह गोला न छोड़ सके। तोप की सलामी उतारना= किसी मान्य अधिकारी के आने अथवा किसी महत्वपूर्ण घटना के समय तोप में खाली बारूद भरकर तुमुल शब्द करना।

तोपखाना-पुं० [अ० तोप+फा० खाना] १. वह स्थान जहाँ तोपें रहती हैं। २. युद्ध के लिए प्रस्तुत तोपों का समूह।

तोपची-पुं० [अ० तोप+ची (प्रत्य०)] तोप चलानेवाला। गोलंदाज।

तोपा-पुं० [देश०] एक टाँके में होनेवाली या एक टाँके भर का सिलाई।

तोबड़ा-पुं० [फा० तोबरः] चमड़े या टाट की वह थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाने के लिए उसके मुँहपर बाँधते हैं।

मुहा०-किसी के मुँह पर तोबड़ा चढ़ाना=किसी को बोलने से रोकना।

तोबा-स्त्री० [अ० तौबः] भविष्य में कोई बुरा काम न करने का दृढ़ प्रतिज्ञा।

मुहा०-तोबा-तिल्ला करना या मचाना=रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए रक्षा की प्रार्थना करना। तोबा बुलवाना=१. पूर्ण रूप से परास्त करना। २. भविष्य में कोई काम न करने की पक्की प्रतिज्ञा कराना।

तोम-पुं० [सं० स्तोम] समूह। ढेर।

तोमर-पुं० [सं०] १ एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में लोहे का बड़ा फल लगा रहता था। २. एक प्रकार का छन्द। ३. एक प्राचीन देश। ४. इस देश का निवासी।

तोय-पुं० [सं०] जल। पानी।

तोयधर-पुं० [सं०] मेघ। बादल।

तोयधि-पुं० [सं०] समुद्र।

तोयनिधि-पुं० [सं०] समुद्र।

तोर*-पुं० दे० 'तोड़'।

*वि० दे० 'तेरा'।

तोरई-स्त्री० दे० 'तोरी'।

तोरण-पुं० [सं०] १. घर या नगर का बाहरी बड़ा फाटक। २ सजावट के लिए खम्भों और दीवारों में लटकाई जानेवाली मालाएँ, पत्तियाँ आदि। बन्दनवार।

तोरन*-पुं० दे० 'तोरण'।

तोरना-स० दे० 'तोड़ना'।

तोरा*-सर्व० दे० 'तेरा'।

तोराना*-स० दे० 'तुड़ाना'।

तोरावान्*-वि० [सं० त्वरावत] [स्त्री० तोरावती] वेगवान। तेज।

तोरी-स्त्री० [स० तूर] एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है।

तोल-स्त्री० दे० 'तौल'।

तोलन-पुं० [सं०] १. वजन करना। तौलना। २ ऊपर उठाना।

तोलना-स० दे० 'तौलना'।

तोला-पुं० [सं० तोलक] १. बारह माशे की तौल। २. इस तौल का बाट।

तोशक-स्त्री० [तु०] बिछाने का रूईदार हलका गद्दा।

तोशदान-पुं० [फा० तोशःदान] १. वह थैली जिसमें यात्रा के समय जल-पान आदि आवश्यक चीजें रहती हैं। २ सिपाहियों की कारतूस रखने की थैली।

तोशा-पुं० [फा० तोश.] वह खाद्य पदार्थ

जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रखता है। पाथेय।

तोशाखाना-पुं० [फा० तोशः या तु० तोशक+फा० खाना] वह स्थान जहाँ राजाओं या अमीरों के पहनने के कपड़े, गहने आदि रहते हैं।

तोष-पुं० [सं०] [वि० तोषक, तोषित, तुष्ट] १. अघाने या मन भरने का भाव। २. असन्तोष, कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार हो जाने पर मन में होनेवाली तुष्टि। तृप्ति। (सोलेस) ३. प्रसन्नता। आनन्द।

तोषक-वि० [सं] सन्तुष्ट करनेवाला।

तोषण-पुं०[सं०] १. तृप्ति। सन्तोष। २. सन्तुष्ट करने की क्रिया या भाव। तोष।

तोषणिक-पुं० [सं०] वह धन जो किसी को तुष्ट करने के लिए दिया जाय। वि० तोष संबंधी।

तोषना*-अ०, स० [सं० तोष] सन्तुष्ट होना या करना।

तोस*-पुं० दे० 'तोष'।

तोसा*-पुं० दे० 'तोशा'।

तोसागार*-पुं० दे० 'तोशाखाना'।

तोहफा-पुं० [अ०] सौगात। उपहार। वि० [भाव० तोहफगी] बढ़िया।

तोहमत-स्त्री० [अ०] झूट-मूठ लगाया हुआ दोष। झूठा अभियोग या कलंक।

तोहीं*-सर्व०[हिं० तू या तै] तुझको। तुझे।

तौंकना*-अ० दे० 'तौसना'।

तौंस-स्त्री० [हिं० ताप+ऊमस] १. गरमी। ताप। २. ऊमस।

तौंसना-अ० [हिं० तौंस] [भाव० तौंस] १. गरमी से झुलसना। २. ऊमस होना।

तौ-क्रि० वि० दे० 'तो'।

*अ० [हिं० हतो] था।

तौक-पुं० [अ०] १. वह भारी गोल पटरी जो अपराधी या पागल के गले में उसे कहीं भागने से रोकने के लिए पहनाई जाती थी। २. इस आकार का गले में पहनने का एक गहना। ३. इस आकार का वह प्राकृतिक चिह्न जो कुछ पक्षियों के गले में होता है। हँसुली।

तौन-सर्व० [सं० ते] वह।

तौनी-स्त्री० [हिं० तवा का स्त्री० अल्पा०] रोटी पकाने का छोटा तवा। तई। तवी।

तौबा-स्त्री० दे० 'तोबा'।

तौर-पुं० [अ०] १ ढंग। तरीका। २. प्रकार। भाँति। तरह। ३. चाल-चलन।

यौ०-**तौर तरीका**=१ चाल चलन। २. रंग-ढंग।

तौरि*-स्त्री० [हिं० तांवरि] सिर में आनेवाला चक्कर। घुमटा।

तौरेत-स्त्री० [इब्रा०] हजरत मूसा कृत यहूदियों का प्रधान धर्म-ग्रन्थ।

तौल-स्त्री० [सं० तोलन] १. किसी पदार्थ के गुरुत्व या भारीपन का परिमाण। भार का मान। वजन। २. तौलने की क्रिया या भाव। ३. बटखरों के मान के विचार से तौलने की नियत प्रणाली या मानक। जैसे-छोटी या बड़ी तौल, कच्ची या पक्की तौल।

तौलना-स० [सं० तोलन] [स० तौलाना] १. तराजू, काँटे आदि पर रखकर किसी वस्तु के गुरुत्व या भारीपन का परिमाण जानना। वजन करना। २. अस्त्र आदि चलाने के लिए हाथ में लेकर ठीक स्थिति में लाना। साधना। ३. तुलना करके कमी और अधिकता जानना। मिलान करना। ४. दे० 'तुलना'।

तौलवाना-स० हिं० 'तौलना' का प्रे०।

तौलिया-पुं० [अं० टॉवेल] एक विशेष

प्रकार का मोटा अँगोछा।

तौहीन-स्त्री० [अ०] अपमान।

त्यक्त-वि० [सं०] [वि० त्यक्तव्य= त्यक्त करने के योग्य] जिसका त्याग किया गया हो। छोड़ा या त्यागा हुआ।

त्यजन-पुं० [सं०] [वि० त्यक्त, त्यजनीय] त्यागने या छोड़ने का काम। तजना। त्याग।

त्याग-पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने अधिकार से निकालने की क्रिया या भाव। उत्सर्ग। २. कोई काम या संबंध छोड़ने की क्रिया। ३. वैराग्य आदि के कारण सांसारिक भोगों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया या भाव। ४. किसी अच्छे काम के लिए अपना सुख, लाभ आदि छोड़ने की क्रिया या भाव। (सैक्रिफाइस)

त्यागना-स० [सं० त्याग] छोड़ना। तजना।

त्याग-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो अपने कार्य या पद से अलग होते समय उसके त्याग के प्रमाण-स्वरूप लिखकर दिया जाता है। इस्तीफा। (रेज़िग्नेशन)

त्यागी-वि० [सं० त्यागिन्] १. सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला। २. अपने स्वार्थ या हित का त्याग करनेवाला। (विशेषत: किसी अच्छे काम के लिए)

त्याजना*-स० दे० 'त्यागना'।

त्याज्य-वि० [सं०] त्यागने या छोड़ने योग्य।

त्यूँ†-क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

त्यों-क्रि०वि० [सं० तत्+एवम्] १ उस प्रकार। उस तरह। २. उसी समय।

त्योरस†-पुं० [हिं० ति=तीन+बरस] १ पिछले दो वर्षों से पहले का तीसरा वर्ष। २. आनेवाला तीसरा बरस।

त्योराना*-अ० [?] सिर में चक्कर आना।

त्योरी-स्त्री० [हिं० त्रिकुटी] देखने का ढंग या भाव। अवलोकन। दृष्टि। निगाह। मुहा०-**त्योरी चढ़ाना या बदलना**= आँखों से क्रोध और अप्रसन्नता प्रकट करना।

त्योहार-पुं० [सं० तिथि+वार] कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाने का दिन। पर्व-दिन।

त्योहारी-स्त्री० [हिं० त्योहार] वह धन जो किसी त्योहार के दिन छोटों या आश्रितों को दिया जाता है।

त्यौं*-क्रि० वि० दे० 'त्यों'।

त्यौनार*-पुं० [हिं० तेवर] ढंग। तर्ज।

त्यौनारा*-वि० [हिं० त्यौनार] जिसका रंग-ढंग या तर्ज अच्छा हो। बढ़िया।

त्यौर-पुं० दे० 'त्योरी'।

त्र-त और र के योग से बना हुआ एक संयुक्त अक्षर या वर्ण। कुछ शब्दों के अन्त में प्रत्यय के रूप में लगकर यह 'एक स्थान पर' (किया या लाया हुआ आदि) का अर्थ देता है। जैसे-एकत्र, सर्वत्र।

त्रय-वि० [सं०] १. तीन। २. तीसरा।

त्रयी-स्त्री० [सं०] तीन वस्तुओं का समूह। जैसे वेद-त्रयी, देव-त्रयी।

त्रयोदशी-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।

त्रसन-पुं० [सं०] १. त्रस्त करने की क्रिया या भाव। २. भय। डर।

त्रसना*-अ० [सं० त्रसन] १. भय से काँप उठना। बहुत डरना। २.कष्ट पाना। स० १. डराना। २. कष्ट देना।

त्रसरेणु-पुं० [सं०] बहुत सूक्ष्म कण।

त्रसाना*-स० [हिं० त्रसना] डराना।

त्रसित*-वि० दे० 'त्रस्त'।

त्रस्त-वि० [सं०] १. भयभीत। डरा

हुआ। २. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित। ३. घबराया हुआ। व्याकुल।

त्राण-पुं० [सं०] [वि० त्राता] १. रक्षा। बचाव। २.वह वस्तु जिसके द्वारा रक्षा हो। ३. कवच। बकतर।

त्राता(र)-पुं० [सं० त्रातृ] रक्षक।

त्रास-पुं० [सं०] १. डर। भय। २. कष्ट। तकलीफ।

त्रासक-पुं० [सं०] [स्त्री० त्रासिका] १. डरानेवाला। २. कष्ट देनेवाला। ३. हटाने या दूर करनेवाला। निवारक।

त्रासना*-स० [सं० त्रासन] १. डराना। २. कष्ट पहुँचाना।

त्रासमान*-वि० [सं० त्रास + मान (प्रत्य०) डरा हुआ। भयभीत।

त्रासित-वि० दे० 'त्रस्त'।

त्राहि-अव्य० [सं०] रक्षा करो। बचाओ।

त्रिंवक*-पुं० दे० 'त्र्यंबक'।

त्रि-वि० [सं०] तीन। जैसे-त्रिकाल।

त्रिकाल-पुं० [सं०] १. भूत, वर्त्तमान और भविष्य ये तीनों काल। २. प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों काल।

त्रिकालज्ञ-पुं० [सं०] वह जो भूत, वर्त्तमान और भविष्य की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ।

त्रिकालदर्शी-पुं० दे० 'त्रिकालज्ञ'।

त्रिकुटी-स्त्री० [सं० त्रिकूट] भौहों के बीच का ऊपरी भाग।

त्रिकोण-पुं० [सं०] १. ऐसा क्षेत्र जिसके तीन कोने हों। त्रिभुज क्षेत्र। २. तीन कोनोंवाली कोई चीज।

त्रिकोण-मिति-स्त्री० [सं०] गणित की वह प्रक्रिया या अंग जिसमें त्रिभुज के कोण, बाहु, वर्ग-विस्तार आदि का मान निकाला जाता है।

त्रिखा*-स्त्री० दे० 'तृषा'।

त्रिगर्त्त-पुं० [सं०] जालंधर और काँगड़े के आस-पास के प्रान्त का पुराना नाम।

त्रिगुण-पुं० [सं०] सत्व, रज और तम ये तीनों गुण।
वि० [सं०] तीन गुना। तिगुना।

त्रिजग*-पुं० १. दे० 'तिर्यक्'। २. दे० 'त्रिलोक'।

त्रिजामा*-स्त्री० दे० 'रात्रि'।

त्रिज्या-स्त्री० [सं०] वृत्त के केन्द्र से परिधि तक की रेखा जो व्यास की आधी होती है।

त्रिण*-पुं० दे० 'तृण'।

त्रिताप-पुं० [सं०] दैहिक, दैविक और भौतिक ताप या कष्ट।

त्रिदेव-पुं० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता।

त्रिदोष-पुं० [सं०] १. वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष। २. सन्निपात रोग जिसमें उक्त तीनों दोष बढ़ते हैं।

त्रिदोषना*-अ० [सं० त्रिदोष] १. वात, पित्त और कफ के प्रकोप में पड़ना। २. काम, क्रोध और लोभ के फेर में फँसना।

त्रिधा-क्रि० वि० [सं०] तीन प्रकार से।
वि० [सं०] तीन प्रकार का।

त्रिन*-पुं० दे० 'तृण'।

त्रिनयन-पुं० [सं०] महादेव।

त्रिपथगा-स्त्री० [सं०] गंगा।

त्रिपाठी-पुं० दे० 'त्रिवेदी'।

त्रिपिटक-पुं० [सं०] भगवान बुद्ध के उपदेशों का तीन खंडों (सुत्रपिटक, विनय-पिटक और अभिधम्म पिटक) का वह संग्रह जो बौद्धों का प्रधान धर्म-ग्रन्थ है।

त्रिपिताना†-अ०, स० [सं० तृप्त+ आना (प्रत्य०)] तृप्त या सन्तुष्ट

होना या करना।

त्रिपुंड-पुं० [सं० त्रिपुंड्र] भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का वह तिलक जो शैव लोग माथे पर लगाते हैं।

त्रिपुरारि-पुं० [सं०] शिव।

त्रिफला-स्त्री० [सं०] आंवले, हड़ और बहेड़े का समूह।

त्रिबली-स्त्री० [सं०] पेट के ऊपर दिखाई पड़नेवाले तीन बल या रेखाएँ। (सौन्दर्य-सूचक)

त्रिबेनी-स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

त्रिभंग-पुं० [सं०] खड़े होने की वह मुद्रा जिसमें टाँग, कमर और गरदन तीनों अंग कुछ कुछ टेढ़े रहते हैं।

त्रिभुज-पुं० [सं०] तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हुआ धरातल।

त्रिभुवन-पुं० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

त्रिमात्रिक-वि० [सं०] तीन मात्राओंवाला। प्लुत।

त्रिमूर्त्ति-स्त्री० [सं०] ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता।

त्रिय(ा)*-स्त्री० [सं० स्त्री] औरत।

यौ०-**त्रिया चरित्र** = दे० 'तिरिया' के अन्तर्गत 'तिरिया चरित्तर'।

त्रियामा-स्त्री० [सं०] रात्रि। रात।

त्रिलोक-पुं० [सं०] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।

त्रिलोकी-स्त्री० दे० 'त्रिलोक'।

त्रिलोचन-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

त्रिवर्ग-पुं०[सं०] १.अर्थ, धर्म और काम का वर्ग या समूह। २. सत्त्व, रज और तम ये तीनों गुण। ३. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों जातियाँ या वर्ण।

त्रिविध-वि० [सं०] तीन प्रकार का। क्रि० वि० [सं०] तीन प्रकार से।

त्रिवेणी-स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ मिलती हों। २. गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में है। ३. इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना इन तीनों नाड़ियों का संगम-स्थान। (हठ योग)

त्रिवेदी-पुं० [सं०] १. ऋक्, यजुः और साम इन तीनों वेदों का ज्ञाता। २. ब्राह्मणों का एक भेद। त्रिपाठी।

त्रिशंकु-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध सूर्य-वंशी राजा जिन्होंने इसी शरीर से स्वर्ग जाने के लिए यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध के कारण बीच आकाश में ही रोक दिये गये थे।

त्रिशूल-पुं० [सं०] १. एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं। (शिव जी का अस्त्र) २. दे० 'त्रिताप'।

त्रिषित*-वि० दे० 'तृषित'।

त्रिसंध्या-स्त्री० [सं०] प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों सन्धि-काल।

त्रुटि-स्त्री० [सं०] १. कमी। न्यूनता। २. अभाव। ३. भूल। चूक।

त्रुटित-वि० [सं०] १. कटा या टूटा हुआ। २. आहत। घायल। ३. त्रुटिपूर्ण।

त्रेता-पुं० [सं०] चार युगों में से दूसरा, जो १२९६००० वर्षों का माना गया है।

त्रै-वि० [सं० त्रय] तीन।

त्रैकालिक-वि० [सं०] १. भूत, भविष्य और वर्त्तमान तीनों कालों में या सदा होनेवाला। २. प्रातः, मध्याह्न और सायं तीनों कालों में होनेवाला।

त्रैमासिक-वि० [सं०] हर तीन महीनों पर या हर तीसरे महीने होनेवाला।

त्रैराशिक-पुं० [सं०] गणित की वह

प्रक्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का मान जाना जाता है।

त्रैलोक्य-पुं० दे० 'त्रिलोक'।

त्रैवार्षिक-वि० [सं०] हर तीन वर्षों पर या में होनेवाला। २. तीन वर्षों का।

त्रोटक-पुं० [सं०] नाटक का एक भेद जिसमें ५, ७, ८ या ९ अंक होते हैं।

त्र्यंबक-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

त्वक्-पुं० [सं०] १. छाल। २. चमड़ा। खाल। ३. पाँच ज्ञानेन्द्रियों में से एक जो सारे शरीर के ऊपरी भाग पर फैली हुई है।

त्वचकना*-अ० [सं० त्वचा] वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमड़ा झूलना।

त्वचा-स्त्री० [सं०] १. शरीर पर का चमड़ा। २. छाल। वल्कल। ३ साँप की केंचुली।

त्वदीय-सर्व० [सं०] तुम्हारा।

त्वरा-स्त्री० [सं०] शीघ्रता। जल्दी।

त्वरित-वि० [सं०] १. जल्दी चलने, जाने या पहुँचनेवाला। २. जिसका जल्दी पहुँचना या जिसके सम्बन्ध में जल्दी कार्रवाई होना आवश्यक हो। (एक्सप्रेस) क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी से।

त्विष-पुं० [सं० त्विषस्] १. उत्साह। उमंग। २ भाव का आवेग। आवेश।

थ

थ-हिन्दी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और त-वर्ग का दूसरा अक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान दन्त है।

थंडिल*-पुं० [सं० स्थंडिल] यज्ञ की वेदी।

थंब(भ)-पुं० [सं० स्तंभ] [स्त्री० थंभी] १. खंभा। स्तंभ। २. सहारा। टेक।

थभन-पुं० दे० 'स्तंभन'।

थंभित*-वि० [सं० स्तंभित] १. रुका या ठहरा हुआ। २. अचल। स्थिर। ३. स्तंभित। चकित।

थकन-स्त्री० दे० 'थकावट'।

थकना-अ० [सं० स्था+कृ] १. परिश्रम करते करते इतना शिथिल होना कि फिर और परिश्रम न हो सके। क्लांत होना। २. ऊबना। ३. बुढ़ापे के कारण अशक्त होना। ४. मोहित होना।

थकान-स्त्री० दे० 'थकावट'।

थकाना-स० हिं० 'थकना' का स०।

थका-माँदा-वि० [हिं० थकना+माँदा] जो थककर चूर हो गया हो। श्रान्त।

थकावट-स्त्री० [हिं० थकना] थकने का शारीरिक परिणाम या भाव। शिथिलता। थकान।

थकित-वि० [हिं०थकना] १ थका हुआ। श्रान्त। शिथिल। २. मोहित। मुग्ध।

थकौंहाँ-वि० [हिं० थकना] [स्त्री० थकौंहीं] थका हुआ। शिथिल।

थक्का-पुं० [सं० स्था+कृ] [स्त्री० थक्की, थकिया] जमी हुई गाढ़ी चीज की मोटी तह या दल। जैसे-खून का थक्का।

थगित-वि० [हिं० थकित] १. ठहरा या रुका हुआ। २. शिथिल। ढीला। ३ मन्द। धीमा।

थति*-स्त्री० दे० 'थाती'।

थन-पुं० [सं० स्तन] चौपायों विशेषतः दूध देनेवाले चौपायों का स्तन।

थनैत-पुं० [हिं० थान] १. गाँव का मुखिया । २. गाँव का लगान वसूल करनेवाला कर्मचारी । ३. दे० 'थाँगी' ।
थपक-स्त्री० दे० 'थपकी' ।
थपकना-स० [अनु० थप थप] १. प्यार से या आराम पहुँचाने के लिए किसी के शरीर पर धीरे धीरे हथेली से आघात करना । २. धीरे धीरे ठोकना ।
थपका*-पुं० १. दे० 'धक्का' । २. दे० 'थपकी' ।
थपकी-स्त्री० [हिं० थपकना] थपकने की क्रिया या भाव ।
थपथपी-स्त्री० दे० 'थपकी' ।
थपन*-पुं० दे० 'स्थापन' ।
थपना*-स० [सं० स्थापन] १. स्थापित करना । बैठाना । जमाना । २. थोपना । अ० स्थापित होना । जमना ।
थपेड़ना-स० [हिं० थपेड़ा] थपेड़ा लगाना।
थपेड़ा-पुं० [अनु० थप थप] १. थप्पड़ । २ आघात । ३ धक्का । टक्कर ।
थपोड़ी-स्त्री०दे० 'तार्ली' । (करतल-ध्वनि)
थप्पड़-पुं० [अनु० थप थप] १. हथेली के द्वारा जोर से किया जानेवाला आघात । तमाचा । झापड़ । २. भारी आघात । गहरा धक्का ।
थम*-पुं० दे० 'स्तम्भ' ।
थमकारी*-वि० [सं० स्तंभन] स्तंभन करने या रोकनेवाला ।
थमना-अ० [सं० स्तंभन] १. चलते चलते रुकना । ठहरना । २. प्रचलित या चलता न रहना । बन्द हो जाना । ३. धीरज धरना । सब्र करके ठहरा रहना ।
थर-स्त्री० [सं० स्तर] तह । परत । पुं० [सं० स्थल] १. दे० 'थल' । २. हिंसक पशु की माँद ।
थरकना*-अ० दे० 'थर्राना' ।
थरकौहाँ*-वि० [हिं०थरकना] काँपता या हिलता हुआ ।
थर-थर-स्त्री० [अनु०] डर से काँपना । क्रि० वि० डर से काँपते हुए ।
थरथराना-अ० [अनु० थर थर] १. डर से काँपना । २. काँपना । हिलना ।
थरथराहट-स्त्री० [अनु० थर थर] थरथराने की क्रिया या भाव ।
थरथरी-स्त्री०=कँपकँपी ।
थरी-स्त्री० [सं० स्थली] १. शेरों आदि की माँद । २ गुफा ।
थरु*-पुं० [सं० स्थल] जगह ।
थर्राना-अ० [अनु० थर थर] १. डर से काँपना । २. भयभीत होना । दहलना ।
थल-पुं० [सं० स्थल] १. स्थान । जगह । २. जल से रहित भूमि । ३. स्थल का मार्ग । ४. शेर, चीते आदि जंगली पशुओं की माँद ।
थलकना-अ० [सं०स्थूल] १. भारी चीज का कुछ ऊपर-नीचे हिलना । २. मोटाई के कारण शरीर के माँस का हिलना ।
थलचर-पुं० [सं० स्थलचर] पृथ्वी पर या स्थल में रहनेवाले जीव ।
थलज-पुं० [हिं० थल] गुलाब ।
थलथलाना-अ० [हिं० थलकना] मोटे शरीर के मांस का झूलकर या ऊपर-नीचे हिलना । थलकना ।
थलपति-पुं० [सं० स्थल+पति] राजा ।
थलरुह*-वि० [सं० स्थलरुह] स्थल पर उत्पन्न होनेवाले जीव, वृक्ष आदि ।
थली-स्त्री० [सं० स्थली] १. स्थान । जगह । २. जल के नीचे की भूमि । ३. ठहरने या बैठने का स्थान ।
थवई-पुं० [सं० स्थपति] राजगीर ।

थहना*-स० [हिं० थाह] थाह लेना।
थहरना-अ० [अनु० थर थर] १. दुर्बलता, भय आदि से कांपना। २ थर्राना।
थहाना-स० [हिं० थाह] गहराई, गुण आदि की थाह लेना या पता लगाना।
थाँग-स्त्री० [सं० स्थान] १. चोरों या डाकुओं के छिपकर रहने का स्थान। २. खोज। तलाश।
थाँगी-पुं० [हिं० थाग] १. चोरी का माल खरीदने या अपने पास रखनेवाला आदमी। २. चोरों का सरदार। ३. जासूस। भेदिया।
थाँवला-पु० दे० 'थाला'।
था-अ० [सं० स्था] 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप।
थाक-पुं० [सं० स्था] १.गांव की हद। २. एक पर एक रक्खी हुई चीजों का ढेर।
थाकना*-अ० दे० 'थकना'।
थात*-वि० दे० 'स्थित'।
थाती-स्त्री० [सं० स्थाता] १. कठिन समय पर काम आने के लिए बचाकर रखा हुआ धन। २. जमा। पूँजी। ३. धरोहर। अमानत।
थान-पुं० [सं० स्थान] १. जगह। स्थान। २. निवास-स्थान। डेरा। ३. घोड़ों या चौपायों के बांधे जाने का स्थान। ४. कुछ निश्चित लम्बाई का कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा। ५. संख्या। अदद। जैसे-चार थान मोती।
थाना-पुं० [सं० स्थान] १. टिकने या बैठने का स्थान। अड्डा। २. पुलिस विभाग का वह भवन जहाँ सरकारी सिपाही रहते हैं। पुलिस की बड़ी चौकी।
थानु-सुत*-पुं० [सं० स्थाणु+सुत] गणेश जी।
थानेदार-पुं० [हिं० थाना+फा० दार] पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी।
थानैत-पुं० [हिं० थाना+ऐत (प्रत्य०)] चौकी या अड्डे का प्रधान। पुं० [सं० स्थान] ग्राम-देवता।
थाप-स्त्री० [सं० स्थापन] १. तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे से किया जानेवाला आघात। २. थप्पड़। ३. छाप। ४. गुण, प्रधानता आदि की धाक। ५. शपथ। कसम।
थापन*-पुं० [सं०स्थापन] स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया या भाव।
थापना*-स० [सं० स्थापन] १. स्थापित करना। जमाकर बैठाना या लगाना। २.हाथ या सांचे से पीट अथवा दबाकर कोई चीज बनाना। जैसे-कंडे थापना। स्त्री० [सं० स्थापना] १. स्थापन। प्रतिष्ठा। २. नव-रात्र में दुर्गा-पूजा के लिए घट-स्थापन।
थापर*-पुं० दे० 'थप्पड़'।
थापा-पुं० [हिं० थाप] १. दीवारों आदि पर लगाई जानेवाली पंजे की छाप। २. खलिहान में अनाज के ढेर पर मिट्टी, आदि से लगाया हुआ चिह्न। ३. वह सांचा जिससे कोई चिह्न अंकित किया जाय। छापा। ४. ढेर। राशि।
थापी-स्त्री० [हि० थापना] वह चिपटी मुँगरी जिससे गच पीटकर जमाते हैं।
थामना-स० [सं० स्तंभन] १. पकड़ना। २. गिरती या चलती हुई चीज रोकना। ३. सहारा देना। सँभालना। ४. अपने ऊपर कार्य्य का भार लेना।
थायी*-वि० दे० 'स्थायी'।
थाल-पुं० [हिं० थाली] बड़ी थाली।
थाला-पुं० [सं० स्थल, हिं० थल]

पेड़-पौधों के चारों ओर बनाया हुआ घेरा या गड्ढा। थाँवला। आल-वाल।

थाली-स्त्री० [सं० स्थाली] भोजन करने का एक प्रसिद्ध बड़ा छिछला बरतन। बड़ी गोल तश्तरी।

मुहा०-थाली का बैंगन = लाभ और हानि देखकर कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में हो जानेवाला आदमी।

थावर*-वि० दे० 'स्थावर'।

थाह-स्त्री० [सं० स्था] १. गहराई ज्ञान, महत्व आदि का अन्त या सीमा। २. गहराई, ज्ञान, महत्व आदि का पता या परिचय। ३ सीमा। हद।

थाहना-स० [हिं० थाह] थाह लेना। गहराई का पता लगाना।

थाहरा*-वि० [हिं० थाह] छिछला।

थिगली-स्त्री० [हिं० टिकली] कपड़े आदि का छेद बन्द करने के लिए ऊपर से लगाया जानेवाला टुकड़ा। चकती। पैबंद।

मुहा०-बादल में थिगली लगाना= अत्यन्त कठिन काम करना।

थित*-वि० दे० 'स्थित'।

थिति*-स्त्री० दे० 'स्थिति'।

थिर*-वि० दे० 'स्थिर'।

थिरकना-अ० [सं० अस्थिर+करण] [भाव० थिरक] नाचने के समय पैर बार बार उठाना और पटकना।

थिरकौहाँ*-वि० [हिं० थिरकना] थिरकने या बार बार हिलनेवाला।

वि० [हिं० स्थिर] ठहरा हुआ। स्थिर।

थिर-जीह*-स्त्री०[सं०स्थिरजिह्व] मछली।

थिरता(ई)*-स्त्री० [सं० स्थिरता] १. ठहराव। २. स्थायित्व। ३ शान्ति।

थिर-थानी*-वि० [सं० स्थिर+स्थान] एक जगह जमकर रहनेवाला।

थिरना-अ० [सं० स्थिर] १. पानी आदि का हिलना-डोलना बन्द होना। २. स्थिर होना। ३. निथरना।

थिरा*-स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी।

थिराना-स० [हिं० थिरना] १. हिलते-डोलते हुए जल को स्थिर होने देना। २. स्थिर करना। २. निथारना।

*अ० दे० 'थिरना'।

थीता*-पुं० [सं० स्थित] १. स्थिरता। २. शान्ति। ३. आराम। चैन। सुख।

थीथी*-स्त्री० [सं० स्थिति] १. स्थिरता। २. स्थिति। अवस्था। ३ धैर्य। धीरज।

थीर*-वि० दे० 'थिर'।

थुकाना-स० [हिं थूकना का प्रे०] १. किसी को थूकने में प्रवृत्त करना। २. उगलवाना। ३. किसी की बहुत निन्दा कराना।

थुक्का-फजीहत-स्त्री० [हिं० थूक + अ० फजीहत] बहुत निकृष्ट कोटि का लड़ाई-झगड़ा।

थुड़ी-स्त्री० [अनु० थू थू] १ घृणा और तिरस्कारपूर्वक थूकने का शब्द। २. धिक्कार। लानत।

मुहा०-थुड़ी थुड़ी करना=धिक्कारना।

थुथकार-स्त्री० [हिं० थूक] थूकने की क्रिया, भाव या शब्द।

थुथकारना-स० [हिं० थुथकार] थुड़ी थुड़ी करना। परम घृणा प्रकट करना।

थुर-हथा*-वि० [हिं० थोड़ा+हाथ] १. हाथ छोटे होने के कारण जिसकी हथेली में थोड़ी चीज आवे। २. कम खर्च करनेवाला। मितव्ययी।

थू-अव्य० [अनु०] १. थूकने का शब्द। २. घृणा या तिरस्कार का शब्द। छिः।

थूक-स्त्री० [अनु० थू थू] वह गाढ़ा,

लसीला सफेद रस जो मुँह से निकलता है। खखार। लार।

मुहा०-थूकों सत्तू सानना=बहुत किफायत से कोई बड़ा काम करने चलना।

थूकना-अ० [हिं० थूक] मुँह से थूक निकालकर बाहर फेंकना।

मुहा०-किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना=अत्यन्त तुच्छ या घृणित समझकर दूर रहना। थूककर चाटना= १.कहकर मुकर जाना अथवा देकर लौटा लेना। २. भविष्य में कोई अनुचित काम न करने की प्रतिज्ञा करना।

स० मुँह में रक्खी हुई वस्तु बाहर गिराना। उगलना।

थूथन-पुं० [देश०] कुछ लम्बा और मोटा आगे निकला हुआ मुँह। जैसे-सूअर का।

थूनी-स्त्री० [स० स्थूणा] किसी बोझ को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाया जानेवाला खंभा। चांड़। टेक।

थूरना-स० [सं० थूर्वण] १ कूटना। २. मारना। पीटना। ३ कसकर भरना।

थूल*-वि० [सं० स्थूल] १. मोटा और भारी। २ भद्दा।

थूहर-पुं० [सं० स्थूण] एक छोटा पेड़ जिसके डंठल डंडे के आकार के होते हैं। सेंहुड़।

थेई-थेई-स्त्री० [अनु०] १. थिरक थिरक कर नाचने की मुद्रा। २. नाच का बोल।

थेथर-वि० [देश०] [भाव० थेथरई] १. लस्त-पस्त। बहुत थका हुआ। २. परेशान।

थैला-पुं० [सं० स्थल] [स्त्री० अल्पा० थैली] कपड़े आदि का एक प्रकार का झोला जिसमें चीजें रखी जाती हैं। बड़ा बटुआ। झोला।

थैली-स्त्री० [हिं० थैला] छोटा थैला।

थोक-पुं० [सं० स्तोमक] १. ढेर। राशि। २. दल। झुंड। ३. एक साथ बहुत-सा या इकट्ठा माल खरीदने या बेचने का काम। 'खुदरा' का उलटा। ४. सारी वस्तु। कुल या पूरी चीज।

थोड़ा-वि० [सं० स्तोक] [स्त्री० थोड़ी] मात्रा या परिमाण में उचित या आवश्यक से कम या घटकर। न्यून। अल्प। कम।

यौ०-थोड़ा-बहुत=न बहुत थोड़ा और न पूरा। कुछ कुछ।

क्रि० वि० जरा। तनिक।

थोथा-वि० [देश०] [स्त्री० थोथी] १. जिसमें कुछ सार या तत्व न हो। २. खोखला। पोला। ३. व्यर्थ का।

थोपना-स० [सं० स्थापन] १. गीली वस्तु का पिंड ऊपर से डाल, रख या जमा देना। मोटा लेप चढ़ाना। २.(दोष) मत्थे मढ़ना। झूठा अभियोग लगाना।

थोबड़ा-पुं० दे० 'तोबड़ा'।

थोर(1)*-वि० दे० 'थोड़ा'।

थोरिक*-वि० [हिं० थोड़ा] थोड़ा-सा।

थौंद*-स्त्री दे० 'तोंद'।

द

द-संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन और त-वर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण दंत-मूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से होता है। शब्दों के अन्त में लगकर यह 'देनेवाला' का अर्थ देता है। जैसे-करद, जलद आदि।

दंग-वि० [फा०] विस्मित। चकित।

दंगई-वि० [हि० दंगा] १. दंगा करनेवाला। उपद्रवी। २. प्रचंड। विकट।
†स्त्री० दे० 'दंगा'।

दंगल-पुं० [फा०] १. बराबर के पहलवानों की वह कुश्ती जो जोड़ बदकर लड़ी जाय और जिसमें जीतनेवाले को कुछ इनाम मिले। २. किसी प्रकार के कौशल की प्रतियोगिता।
वि० बहुत बड़ा। भारी।

दंगली-वि० [फा० दंगल] १ दंगल संबंधी। २. बहुत बड़ा।

दंगा-पुं० [फा० दंगल] बहुत से लोगों का ऐसा झगड़ा जिसमें मार-पीट भी हो। उपद्रव।

दंड-पुं० [सं०] १. डंडा। सोटा। लाठी। २ डंडे की तरह की कोई चीज। जैसे-भुज-दंड। ३. किसी चीज में लगी हुई लम्बी लकड़ी। ४. दंडवत्। ५. अपराधी को उसके अपराध के फलस्वरूप पहुँचाई हुई पीड़ा या आर्थिक हानि। सजा। ६.हरजाने के रूप में दिया जानेवाला धन। हरजाना। (पेनैलिटी)
मुहा०-दंड भरना=दूसरे का नुकसान धन देकर पूरा करना। दंड सहना= हानि या घाटा सहना।
७. दमन। शमन। ८. एक प्रकार का व्यायाम जो पंजो के बल औंधे लेटकर किया जाता है। ९. साठ पल या चौबीस मिनट का समय। घड़ी।

दंडक-पुं० [सं०] १. डंडा। २. दंड देनेवाला पुरुष। शासक। ३. वे छन्द जिनमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो।

दंडक वन-पुं० दे० 'दंडकारण्य'।

दंडकारण्य-पुं० [सं०] विन्ध्य पर्वत से गोदावरी के किनारे तक फैला हुआ एक प्राचीन वन।

दंडधर-पुं० [सं०] १. यमराज। २. शासनकर्त्ता। ३.संन्यासी। ४. चोबदार। ५. दे० 'दंड-नायक'।

दंडना*-स० [सं० दंडन] दंड देना।

दंड-नायक-पुं० [सं०] १. सेनापति। २. दंड-विधान करने या अपराधियों को दंड देनेवाला एक प्राचीन अधिकारी।

दंड-नीति-स्त्री० [सं०] दंड देकर शासन या वश मे रखने की नीति।

दंडनीय-वि० [सं०] [स्त्री० दंडनीया] १. (व्यक्ति) जो दंडित होने के योग्य हो। जिसे दंड देना उचित हो। २. (कार्य या अपराध) जिसके लिए किसी को दंड दिया जाना उचित हो।

दंड-पाणि-पुं० [सं०] १. यमराज। २ भैरव की एक मूर्त्ति।

दंड-प्रणाम-पुं० [सं०] दंडवत्। सादर अभिवादन।

दंडमान*-वि० दे० 'दंडनीय'।

दंडवत्-पुं० [सं०] १. दंड के समान सीधे पृथ्वी पर लेटकर किया जानेवाला नमस्कार। साष्टांग प्रणाम। २. प्रणाम।

दंड-विधि-स्त्री० [सं०] वह नियम या विधान जिसमें अपराधों के लिए दंडों का विवेचन या विधान होता है।

दंडाकरन*-पुं० दे० 'दंडकारण्य'।

दंडायमान-वि० [सं०] खड़ा।

दंडित-वि० [सं०] [स्त्री० दंडिता] जिसे दंड मिला हो। सजा पाया हुआ।

दंडी-पुं० [सं० दंडिन्] १. वह जो दंड धारण करता हो। २. एक विशेष प्रकार के संन्यासी जो सदा हाथ में दंड रखते हैं।

दंड्य-वि० दे० 'दंडनीय'।

दंत-पुं० [सं०] १. दाँत। २. बत्तीस की संख्या।

दंत-कथा-स्त्री० [सं०] वह बात जो परम्परा से लोग सुनते चले आये हों, पर जिसके ठीक होने का कोई प्रमाण न हो।

दंत-धावन-पुं० [सं०] १. दाँत और मुँह धोना या साफ करना। २. दातुन।

दंत-मूलीय-वि० [सं०] दाँतो के मूल से उच्चारण किया जानेवाला (वर्ण)। जैसे-तवर्ग।

दंतार†-वि० [हिं० दाँत] बड़े दाँतोंवाला।

दँतिया-स्त्री० [हिं० दाँत] छोटा दाँत।

दँतुरिया*-स्त्री० दे० 'दँतिया'।

दँतुला-वि० [सं० दंतुल] [स्त्री० दँतुली] जिसके दाँत बड़े हों।

दंत्य-वि० [सं०] १. दंत-संबंधी। २. (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। जैसे-त, थ, द, ध।

दंद*-पुं० १. दे० 'द्वंद्व'। २. दे० 'दाँत'।

दंदन*-वि० [सं० द्वंद्व] [स्त्री० दंदनी] दमन करनेवाला।

दंदाना-पुं० [फा०] [वि० दंदानेदार] दाँत की तरह उभरी हुई सींकों या दानों की पंक्ति। जैसी कंघी या आरे में की।

दंपति(ती)-पुं० [सं०] पति और पत्नी का जोड़ा।

दंपा*-स्त्री० [हिं० दमकना] बिजली।

दंभ-पुं० [सं०] [वि० दंभी] महत्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिए अपने आपको बहुत बड़ा समझने के कारण होनेवाला अभिमान।

दंभान*-पुं० दे० 'दंभ'।

दंभी-वि० [सं० दंभिन्] [स्त्री० दंभिनी] १. जिसे दंभ हो। २. पाखंडी। ढकोसलेबाज। ३ अभिमानी। घमंडी।

दँवरी-स्त्री० [सं० दमन, हिं० दाँवना] फसल की बालों से दाने निकलवाने का काम जो प्रायः बैलों से लिया जाता है।

दँवारि*-स्त्री० दे० 'दावानल'।

दंश-पुं० [सं०] १. वह घाव जो दाँत काटने या लगने से हुआ हो। दंत-क्षत। २. दाँत काटने या गड़ाने की क्रिया। ३. विषैले जंतुओं का डंक।

दंशक-पुं० [सं०] १. दाँत से काटनेवाला। २. डसनेवाला।

दंशन-पुं० [सं०] [वि० दंशित, दंशी] १. दाँत से काटना। २. डंक मारना। डसना।

दंशना*-स० दे० 'दंशन'।

दंष्ट्र-पुं० [सं०] दाँत।

दंस*-पुं० दे० 'दंश'।

दइत*-पुं० दे० 'दैत्य'।

दई-पुं० [सं० दैव] १. ईश्वर। विधाता। मुहा०-दई का मारा=जिसपर ईश्वर का कोप हो। अभागा। कमबख्त। दई दई= हे दैव! हे दैव। (रक्षा के लिए ईश्वर से की जानेवाली पुकार) २. दैवी संयोग। ३. अदृष्ट। प्रारब्ध। भाग्य।

दई-मारा-वि० [हिं० दई+मारना] [स्त्री० दई-मारी] १. जिसपर दैव या ईश्वर का कोप हो। २. अभागा। कमबख्त।

दकन-पुं० [सं० दक्षिण] दक्षिणी भारत।

दकनी-पुं० [हिं० दकन] दक्षिण भारत का निवासी।

स्त्री० १. दक्षिण भारत की भाषा। २. उर्दू भाषा का पुराना नाम।

वि० दक्षिण भारत का।

दकियानूसी-वि० [अ०] बहुत ही पुराना और प्राय. निकम्मा।

दक्खिन-पुं० [सं० दक्षिण] [वि० दक्खिनी] १. उत्तर के सामने की दिशा।

२. दे० 'दकन'।

दक्खिनी-वि०[हिं०दक्खिन]दक्खिन का। पुं० दक्षिण देश का निवासी।

दक्ष-वि० [सं०] [भाव० दक्षता] १. निपुण। कुशल। २. चतुर। होशियार। ३. दक्षिण। दाहिना।
पुं० एक प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे।

दक्ष-कन्या-स्त्री० [सं०] शिवजी की पहली पत्नी, सती।

दक्षिण-वि० [सं०] १ 'बायाँ' का उलटा। दाहिना। २.जो किसी की कार्य-सिद्धि में अनुकूल या सहायक हो। ३. निपुण। दक्ष। ४. चतुर।
पुं० १. उत्तर के सामने की दिशा। २. वह नायक जो अपनी सब नायिकाओं पर एक-सा प्रेम रखता हो। ३. प्रदक्षिणा।

दक्षिण-मार्ग-पुं० [सं०] [वि० दक्षिण-मार्गी] १. आधुनिक राजनीति में वह मार्ग या पक्ष जो साधारण और वैधानिक रीति से विकास चाहता हो और उग्र उपायों से क्रान्ति करने का विरोधी हो। (राइट विंग) २. तन्त्र के अनुसार एक प्रकार का आचार। 'वाम भाग' का उलटा।

दक्षिणा-स्त्री० [सं०] १. दक्षिण दिशा। २. वह धन जो किसी दान की हुई चीज के साथ ब्राह्मणों को दिया जाता है। ३. भेंट के रूप में नगद दिया जानेवाला धन। ४. वह नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखने पर भी उससे बराबर पूरी प्रीति रखती और सद्व्यवहार करती हो।

दक्षिणा पथ-पुं० [सं०] विन्ध्य पर्वत के दक्षिण ओर का प्रदेश।

दक्षिणायन-वि० [सं०] भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर। जैसे-दक्षिणायन सूर्य।
पुं० सूर्य्य का कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर जाना या खिसकना, जो २१ जून से २२ दिसम्बर तक होता है।

दक्षिणावर्त्त-वि० [सं०] जिसका मुख या प्रवृत्ति दाहिनी ओर हो।

दक्षिणी-वि०[सं०दक्षिणीय] दक्षिण का।

दखल-पुं० [अ०] १ अधिकार। कबजा। २. हस्तक्षेप। ३. पहुँच। प्रवेश।

दखल-दिहानी-स्त्री० [अ०+फा०] अदालत से किसी को किसी सम्पत्ति पर दखल दिलाने का काम।

दखिन-पुं० दे० 'दक्षिण'।

दखील-वि० [अ०] जिसका दखल या कबजा हो। अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार-पुं० [अ० दखील+फा०कार] [भाव० दखीलकारी] वह किसान जिसे किसी जमींदार का खेत कम से कम बारह वर्षों तक जोतने-बोने के कारण उसपर सदा के लिए अधिकार मिल गया हो।

दगड़-पुं० [?] बड़ा ढोल।

दगदगा-पुं०[अ०]१.डर। भय। २.सन्देह।

दगदगी-स्त्री० दे० 'दगदगा'।

दगध[1]-पुं० दे० 'दाह'।
वि० दे० 'दग्ध'।

दगधना*-अ० [सं० दग्ध] जलना।
स० १. जलाना। २. दुःख देना।

दगना-अ० [सं० दग्ध+ना (प्रत्य०)] १. दागा या दग्ध किया जाना। २. (बंदूक, तोप आदि का) दागा या छोड़ा जाना। छूटना। चलना। ३. झुलस जाना। ४. अंकित होना। ५. किसी नाम या विशेष नाम से प्रसिद्ध होना।
*स० दे० 'दागना'।

दगल(ा)-पुं० [?] १. रूईदार अँगरखा। २. मोटा और भारी लबादा।

दगवाना-स० हिं० 'दागना' का प्रे०।

दगहा-वि० [हिं० दाग] जिसमें या जिसपर दाग हो। दागवाला।

वि० [हिं० दाह=प्रेत कर्म+हा (प्रत्य०)] जिसने मृतक का दाह-कर्म किया हो और जो अभी श्राद्ध आदि करके शुद्ध न हुआ हो।

वि० [सं० दग्ध] १. दग्ध किया या जलाया हुआ। २. दागा या चिह्न लगाया हुआ।

दगा-स्त्री० [अ०] छल-कपट। धोखा।

दगादार-वि० दे० 'दगाबाज'।

दगाबाज-वि० [फा०] [भाव० दगाबाजी] धोखा देनेवाला। धोखेबाज। छली।

दगैल-वि० [अ० दाग+ऐल (प्रत्य०)] १. जिसमें या जिसपर दाग हो। दागदार। २. जो कारागार का दंड भोग चुका हो।

दग्ध-वि० [सं०] १. जला या जलाया हुआ। २ जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।

दग्धाक्षर-पुं० [सं०] छंद-शास्त्र मे झ, ह, र, भ और ष ये पाँचों अक्षर जिनका छंद के आरंभ में रखना अशुभ माना जाता है।

दग्धित*-वि० दे० 'दग्ध'।

दचक-स्त्री० [हिं० दचकना] दचकने की क्रिया या भाव।

दचकना-अ० [अनु०] [भाव दचक] १. झटका, ठेस या हलकी ठोकर खाना। २. कुछ दब जाना।

स० १. ठेस या हलका धक्का लगाना। झटका देना। २. दबाना।

दचका-पुं० दे० 'दचक'।

दच्छना*-स्त्री० दे० 'दक्षिणा'।

दच्छिन*-वि० दे० 'दक्षिण'।

दढ़ना*-अ० [सं० दहन] जलना।

दढ़ियल-वि० [हिं०दाढ़ी+इयल (प्रत्य०)] जिसे दाढ़ी हो। दाढ़ीवाला।

दतवन-स्त्री० दे० 'दतुअन'।

दतुअन(वन)-स्त्री० [हिं० दाँत+अवन (प्रत्य०)] १. वह छोटी टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं। दातुन। २. दाँत और मुँह साफ करने की क्रिया।

दत्त-पुं० [सं०] १. दत्तात्रेय। २. दान। ३. दत्तक।

यौ०-दत्त-विधान=दत्तक पुत्र लेना।

वि० [सं०] १. जो दिया जा चुका हो। दिया हुआ। २. जिसका कर, देन, परिव्यय आदि चुका दिया गया हो। चुकता किया हुआ। (पेड)

दत्तक-पुं० [सं०] वह जो अपना पुत्र न होने पर भी शास्त्र या विधि के अनुसार अपना पुत्र बना लिया गया हो। गोद लिया हुआ लड़का। मुतबन्ना। (एडॉप्टेड सन)

दत्त-चित्त-वि० [सं०] जिसका किसी काम में खूब जी लगा हो।

ददिऔरा-पुं० दे० 'ददिहाल'।

ददिहाल-पुं० [हिं० दादा+आलय] १. दादा का वंश। २. दादा का घर।

ददोरा-पुं० [हि० दाद] किसी जन्तु के काटने या रक्त-विकार आदि के कारण चमड़े पर होनेवाली थोड़ी सूजन। चकत्ता।

दद्रु-पुं० [सं०] दाद रोग।

दध*-पुं० दे० 'दधि'।

दधि-पुं० [सं०] १. दही। २. कपड़ा।

*पुं० [सं० उदधि] समुद्र। सागर।

दधि-काँदो-पुं० [सं० दधि+हिं० काँदो

=कीचड़] जन्माष्टमी का एक प्रकार का उत्सव जिसमें हलदी मिला हुआ दही लोग एक दूसरे पर छिड़कते हैं।

दनदनाना-अ० [अनु०] १. दनदन शब्द करना। २. आनन्द करना। ३. निःशंक होकर कोई काम करना।

दनादन-क्रि० वि० [अनु०] १. दनदन शब्द के साथ। २. लगातार। निरन्तर।

दनुज-पुं० [सं०] [भाव० दनुजता, दनुजत्व] असुर। राक्षस।

दपट-स्त्री० [हिं० डपट] डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव। डपट।

दपटना-अ० [हिं० डपट] डांटना।

दपु*-पुं० दे० 'दर्प'।

दपेट-स्त्री० दे० 'दपट'।

दफन-पुं० [अ०] कोई चीज विशेषतः मृत शरीर जमीन मे गाड़ना।

दफनाना-स० [अ० दफ़न+आना] दफन करना। गाड़ना। (विशेषतः मृत शरीर)

दफा-स्त्री०[अ०दफअ] १ बार। मरतबा। २. विधान आदि का वह कोई एक अंश जिसमें किसी एक अपराध, विषय या कार्य के संबंध में कोई बात कही गई या कोई विधान किया गया हो। धारा। मुहा०-दफा लगाना=अभियुक्त पर किसी दफा के नियम घटाते हुए, अधिकारी का यह निश्चय करना कि अभियुक्त इस दफा के अनुसार दंडित हो सकता है।

वि० [अ० दफ़ऽ] दूर किया या हटाया हुआ। तिरस्कृत।

दफ्तर-पुं० [फा०] १. कार्यालय। २. सविस्तर वृत्तान्त। चिट्ठा।

दफ्तरी-पुं० [फा०] १. किसी दफ्तर के कागज आदि सँभालकर रखनेवाला कर्मचारी। २. किताबों की जिल्द बाँधनेवाला। जिल्दसाज। जिल्दबन्द।

दफ्ती-स्त्री० [अ० दफ्तीन] कागज की परतों को जोड़कर बनाया हुआ मोटा वरक। गत्ता।

दबंग-वि० [हिं० दबाव या दबाना] प्रभावशाली। दबाववाला।

दबकगर-पुं० [फा० तबकगर] धातु के पत्तर पीटकर तबक या पत्तर बनाना।

दबकना-अ० [हिं० दबाना] १. भय, संकोच, लज्जा आदि के कारण छिपना। २ लुकना। छिपना।

स० धातु का पत्तर पीटकर बड़ा करना।

दबकाना-स० [हिं० दबकना] आड़ में करना। छिपाना।

दबकिया-पुं० दे० 'दबकगर'।

दबदबा-पुं० [अ०] आतंक। रोब-दाब।

दबना-अ० [सं० दमन] १. भारी चीज के नीचे आना या होना। बोझ के नीचे पड़ना। २ किसी ओर से बहुत जोर पड़ने पर अपने स्थान से पीछे हटना। ३. ऊपरी तल का कुछ नीचा हो जाना। ४. किसी के दबाव मे पड़कर उसके इच्छानुसार काम करने के लिए विवश होना। ५. किसी के सामने हलका ठहरना। ६. किसी बात का जहाँ का तहाँ रह जाना और उसपर कोई कार्रवाई न होना। ७. अपनी चीज या प्राप्य धन का किसी दूसरे के अधिकार में चला या रह जाना। ८. बात-चीत या झगड़े में धीमा या मन्द पड़ना। ९. संकोच करना। मुहा०-दबी जबान से कहना=बहुत ही धीरे से, दृढ़ता छोड़कर या संकोचपूर्वक कोई बात कहना। डरते डरते और दबते हुए कुछ कहना।

दबाना-स० [सं० दमन] [संज्ञा दाब, दबाव] १.ऊपर से इस प्रकार भार रखना, जिसमें कोई चीज नीचे की ओर धँसे या इधर-उधर हट न सके। २. किसी पर किसी ओर से इस प्रकार जोर पहुँचाना कि उसे पीछे हटना पड़े। ३.किसी पर ऐसा जोर पहुँचाना कि वह कुछ कह या कर न सके। ४. मुकाबले में मन्द या हलका कर देना। ५ किसी बात को बढ़ने न देना। ६. जमीन में गाड़ना। ७. उभड़ते हुए वेग, विरोध आदि का दमन करना। शान्त करना। ८. अपने हाथ में आई हुई किसी दूसरे की चीज अपने पास रोक रखना।

दबाव-पुं० [हिं० दबाना] दबाने की क्रिया या भाव। चांप।

दबैल-वि० [हिं० दबना+ऐल (प्रत्य०)] १. जिसपर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २. बहुत दबने या डरनेवाला।

दबोचना-स० [हिं० दबाना] १. किसी को झट से पकड़कर दबा लेना। धर दबाना। २. छिपाना।

दबोरना*-स०=दबाना।

दमंकना*-अ०=दमकना।

दम-पुं० [सं०] १. वह दंड जो दमन करने के लिए दिया जाता है। सजा। २. इन्द्रियों को वश में रखना और उन्हें बुरे कामों में न लगने देना।

पुं० [फा०] १. साँस। श्वास।

मुहा०-दम अटकना=मरने के समय साँस रुकना। दम खींचना=१. चुप रह जाना। कुछ न बोलना। २. साँस ऊपर चढ़ाना। दम घुटना-हवा की कमी के कारण साँस लेने में कष्ट होना। दम तोड़ना=मरने के समय अन्तिम साँस लेना। दम फूलना=१. अधिक परिश्रम या दमे के रोग आदि के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना। दम भरना=१. किसी के प्रेम, मित्रता आदि का पूरा भरोसा रखकर अभिमान-पूर्वक उसकी चर्चा करना। २. परिश्रम के कारण इतना अधिक थक जाना कि और अधिक परिश्रम न हो सके। दम मारना=१. विश्राम करना। सुस्ताना। २. बोलना। कुछ कहना। दम लेना=विश्राम करना। सुस्ताना। दम साधना=१. श्वास की गति रोकना। २. आवश्यकता होने पर भी चुप होना। मौन रहना।

२. नशे आदि के लिए मुँह से धूआँ खींचने की क्रिया।

मुहा०-दम मारना या लगाना=गाँजे का धूआँ खींचना या पीना।

३. उतना समय, जितना एक बार साँस लेने में लगता है। पल।

मुहा०-दम के दम=क्षण भर। थोड़ी देर। दम पर दम=बहुत ही थोड़े थोड़े समय पर।

४. प्राण। जान। जी।

मुहा०-नाक में दम आना=बहुत तंग या परेशान होना। दम निकलना=मृत्यु होना। मरना। दम सूखना=बहुत डर के कारण साँस लेने तक का साहस न होना। प्राण सूखना।

६.किसी व्यक्ति या पदार्थ की वह जीवनी शक्ति जिससे वह अपना अस्तित्व बनाये रखता और काम देता है। ७. व्यक्ति का अस्तित्व। व्यक्तित्व।

मुहा०-किसी का दम गनीमत होना=(किसी के) अस्तित्व या जीवित रहने के कारण कुछ न कुछ उपयोगिता

या लाभ होता रहना।

८. किसी बरतन में कोई चीज रखकर और उसका मुँह बन्द करके उसे आग पर पकाना। ९. धोखा। छल। कपट।

यौ०-दम-झाँसा=छल-कपट। दम-दिलासा, दम-पट्टी या दम-बुत्ता= केवल फुसलाने या शान्त रखने के लिए कही जानेवाली झूठी बात।

मुहा०-दम देना=बहकाना। धोखा देना।

दमक-स्त्री० दे० 'चमक'।

दमकना-अ०=चमकना।

दम-कल-स्त्री० [हि० दम+कल] वह यंत्र जिसके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर अथवा और किसी ओर झोंक से फेंका जाता है। (पंप) २. वह यंत्र जिसकी सहायता से पानी डालकर लगी हुई आग बुझाई जाती है। (पंप) ३. कूएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र। (पंप) ४. दे० 'दम-कला'।

दम-कला-पुं० [हिं० दम-कल] १. एक प्रकार का बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी से जन-समूह पर गुलाब-जल या रंग छिड़का जाता है। २. दे० 'दम-कल'। ३. दे० 'दम-चूल्हा'।

दम-खम-पुं० [फा०] १. दृढ़ता। मज-बूती। २. जीवनी शक्ति। प्राण। ३. तलवार की धार, घाट और लचीलापन। ४. मूर्ति की सुन्दर और सुडौल गढ़न। ५. चित्र में वह गोलाई लिए लगातार चलनेवाली रेखाएँ जिनसे वह जानदार मालूम होता है।

दम-चूल्हा-पुं० [हिं० दम+चूल्हा] एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दमड़ी-स्त्री० [सं० द्रविण=धन] पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा-पुं० [फा०] मोरचा। धुस।

दमदार-वि० [फा०] १. जिसमें पूरा दम या जीवनी-शक्ति हो। २. मजबूत।

दमन-पुं० [सं०] १. दबाने या रोकने की क्रिया। जैसे-इन्द्रियों या वासनाओं का दमन। निग्रह। २. विरोध, उपद्रव, विद्रोह आदि को बल का प्रयोग करके दबाना। (रिप्रेशन) ३. दंड। सजा। *स्त्री० दे० 'दमयंती'।

दमनशील-वि० [सं०] जिसकी प्रकृति दमन करने की हो।

दमनीय-वि० [सं०] १. जिसका दमन किया जा सके। २. जिसका दमन करना आवश्यक हो।

दम-बाज-वि० [फा० दम+बाज़] १. दम-बुत्ता या चकमा देनेवाला। फुस-लानेवाला। २. गाजा, चरस आदि पीने-वाला। गाँजा का दम लगानेवाला।

दमयती-स्त्री०[सं०] विदर्भ के राजा भीम-सेन की कन्या जो नल को ब्याही थी।

दमा-पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस बहुत कष्टपूर्वक और कुछ जोर से चलता है।

दमाद-पुं० [सं० जामातृ] कन्या का पति। जँवाई। जामाता।

दमामा-पुं० [फा०] नगाड़ा। डंका।

दमारि*-पुं० दे० 'दावानल'।

दमैया*-वि० दे० 'दमनशील'।

दयंत*-पुं० दे० 'दैत्य'।

दया-स्त्री० [सं०] वह मनोवेग जो दूसरे का दुःख देखकर वह दुःख दूर करने की प्रेरणा करता है। करुणा। रहम।

दया-दृष्टि-स्त्री० [सं०] दया या अनुग्रह की दृष्टि। मेहरबानी की नजर।

दयानत-स्त्री० [अ०] सत्य-निष्ठा। ईमानदारी।

दयानतदार-वि०=ईमानदार।

दयाना*-अ० [हिं० दया+ना (प्रत्य०)] दया करना। कृपालु होना।

दया-निधान-पुं० दे० 'दया-निधि'।

दया-निधि-पुं० [सं०] १. बहुत दयालु पुरुष। २. ईश्वर।

दया-पात्र-पुं० [सं०] वह जो दया किये जाने के योग्य हो अथवा जिसपर दया करना उचित या आवश्यक हो।

दयामय-पुं० [सं०] १. दया से पूर्ण। दयालु। २. ईश्वर।

दयार-पुं० [अ०] १ प्रान्त। प्रदेश। २. आस-पास का स्थान।

दयार्द्र-वि० [सं०] [भाव० दयार्द्रता] दया-पूर्ण। दयालु।

दयाल*-वि० दे० 'दयालु'।

दयालु-वि० [सं०] [भाव० दयालुता] बहुत दया करनेवाला। दयाशील।

दयावंत*-वि० दे० 'दयालु'।

दयावना*-वि० [हिं० दया] [स्त्री० दयावनी] दया के योग्य। दीन।
अ० दया या कृपा करना।

दयावान्-वि० [सं०] [स्त्री० दयावती] जिसके मन में दया हो। दयालु।

दया-सागर-पुं० दे० 'दया निधि'।

दर-पुं० [सं०] १. शंख। २. गड्ढा। दरार। ३. गुफा। कंदरा। ४. फाड़ने की क्रिया या भाव। विदारण।
*पुं० दे० 'दल'।
पुं० [फा०] १. द्वार। दरवाजा। २. मकान के अन्दर का विभाग। ३. मकान की मंजिल। खंड।
मुहा०-दर दर मारा फिरना=दुर्दशा-ग्रस्त होकर इधर-उधर घूमना।
स्त्री० १. वह निश्चित या स्थिर मूल्य या पारिश्रमिक जिसपर कोई चीज बिकती या कोई काम होता हो। भाव। निर्ख। (रेट) २. प्रतिष्ठा। आदर।
*स्त्री० [सं० दारु] ईख। ऊख।

दरक-स्त्री० [हिं० दरकना] १. दरकने की क्रिया या भाव। २. सन्धि। दरज।
वि० [सं०] डरपोक। कायर।

दरकना-अ०[सं०दर=फाड़ना] दाब पड़ने या आघात लगने से फटना। चिरना।

दरका-पुं० [हिं० दरकना] १. दरक। दरार। २. ऐसी चोट या धक्का जिससे कोई चीज दरक या फट जाय।

दरकार-स्त्री० [फा०] आवश्यकता।

दरकारी-वि० [फा०] १. आवश्यक। २. अपेक्षित।

दर-किनार-क्रि० वि० [फा०] बिलकुल अलग। एक किनारे। दूर।

दरखत*-पुं० दे० 'दरख्त'।

दरखास्त-स्त्री० [फा० दरख्वास्त] १. निवेदन। प्रार्थना। २. प्रार्थनापत्र।

दरख्त-पुं० [फा०] वृक्ष। पेड़।

दरगाह-स्त्री०[फा०] किसी सिद्ध पुरुष का समाधि-स्थान। मकबरा। (मुसल०)

दरज-स्त्री० दे० 'दरार'।

दरजन-पुं० [अं० डज़न] गिनती मे बारह का समूह।

दरजा-पुं० [फा० दर्जः] १. ऊँचे-नीचे या छोटे-बड़े के क्रम के विचार से नियत स्थान। श्रेणी। वर्ग। २.इस प्रकार किया हुआ विभाग। ३. पद। ओहदा।

दरजी-पुं० [फा० दर्जी] [स्त्री० दरजिन] १. वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करता हो। २. एक प्रकार का पक्षी।

दरण-पुं० [सं०] १. दलने या पीसने की क्रिया या भाव। २. ध्वंस। विनाश।

दरद-पुं० [फा० दर्द] १. पीड़ा। व्यथा। २. दया। करुणा।
पुं० १. काश्मीर के पश्चिम का एक प्राचीन देश। २. एक प्राचीन म्लेच्छ जाति जो उक्त देश में रहती थी।

दर-दर-क्रि० वि० [फा० दर] द्वार द्वार। लोगों के दरवाजे-दरवाजे।

दरदरा-वि० [सं० दरण=दलना] [स्त्री० दरदरी] जिसके कण या रवे महीन न हों, कुछ मोटे हों।

दरदवंत(द)-वि० [फा० दर्द+वंत (प्रत्य०)] १. दूसरों का कष्ट समझने-वाला। कृपालु। २. पीड़ित। दुःखी।

दरन*-वि०, पुं० दे० 'दलन'।

दरना¹-स० दे० 'दलना'।

दरप*-पुं० दे० 'दर्प'।

दरपन*-पुं० दे० 'दर्पण'।

दरपना*-अ० [सं० दर्पण] १. दर्प या क्रोध करना। २. घमंड करना।

दर-बंदी-स्त्री० [फा०] १. अलग अलग दर या विभाग बनाना। २ चीजों की दर या भाव निश्चित करना।

दरब*-पुं० [सं० द्रव्य] धन। दौलत।

दरबा-पुं० [फा० दर] पक्षियों के रहने के लिए काठ का बना हुआ खानेदार घर।

दरबान-पुं० [फा०, मि० सं० द्वारवान्] ड्योढ़ीदार। द्वारपाल।

दरबार-पुं० [फा०] [वि० दरबारी] १. वह स्थान जहाँ राजा-महाराज अपने सरदारों या मुसाहबों के साथ बैठते हैं। २. राज-सभा। ३. महाराज। राजा। (रियासतों में)

दरबार-दारी-स्त्री० [फा०] किसी के यहाँ प्रायः जाकर बैठना और उसे प्रसन्न करनेवाली बातें करना।

दरबार-विलासी*-पुं० दे० 'दरबान'।

दरबारी-पुं० [फा०] किसी के दरबार में प्रायः जाकर बैठनेवाला आदमी।
वि० १. दरबार का। २. दरबार के योग्य।

दरबी-स्त्री० [सं० दर्वी] कलछी।

दरभ-पुं० दे० 'दर्भ'।
पुं० [?] बन्दर।

दर-माहा-पुं० [फा०] मासिक वेतन।

दरमियान-पुं० [फा०] मध्य। बीच।
क्रि० वि० बीच या मध्य में।

दरमियानी-वि० [फा०] बीच का।

दररना*-स० दे० 'दरेरना'।

दरवाजा-पुं० [फा०] १ द्वार। फाटक। २. किवाड़। कपाट।

दरवी-स्त्री० [सं० दर्वी] १. कलछी। पौनी। २. साँप का फन।

दरशन-पुं० दे० 'दर्शन'।

दरशनी-स्त्री० [सं० दर्शन] दर्पण।

दरशनी हुंडी-स्त्री० दे० 'दर्शनी हुंडी'।

दरशाना-अ०, स० दे० 'दरसाना'।

दरस-पुं० [सं० दर्श] १ देखा-देखी। दर्शन। दीदार। २. भेंट। मुलाकात। ३. छवि। शोभा।

दरसना*-अ०[सं०दर्शन] दिखाई देना।
स० [सं० दर्शन] देखना।

दरसनियाँ-पुं० [सं० दर्शन] वह जो शीतला आदि की शान्ति के लिए पूजा और उपकार कराता हो।

दरसनी*-स्त्री० [सं० दर्शन] दर्पण।

दरसाना-स० [सं० दर्शन] १. दिख-लाना। २. कुछ कुछ प्रकट करना। झलकाना।
*अ० दिखाई देना।

दराज-वि० [फा०] १. बहुत। २. लंबा। स्त्री० [अं० ड्रॉअर] टेबुल या मेज में लगा हुआ वह खाना जो बाहर खींचा या खोला जा सकता हो।

दरार-स्त्री० [सं० दर] किसी चीज के फटने पर बीच में पड़नेवाली खाली जगह। सन्धि। दरज।

दरिद्र-वि० [सं०] [स्त्री० दरिद्रा] जिसके पास कुछ भी धन-सम्पत्ति न हो। बहुत गरीब। निर्धन। कंगाल।

दरिद्रता-स्त्री० [सं०]निर्धनता। गरीबी।

दरिद्र-नारायण-पुं० [सं०] दरिद्रों और दीन-दुःखियों के रूप में रहने या माने जानेवाले नारायण या ईश्वर।

दरिद्री-वि० दे० 'दरिद्र'।

दरिया-पुं० [फा०] नदी।

दरियाई-वि० [फा०] १. दरिया या नदी संबंधी। २. नदी के पास या किनारे का। ३. समुद्र सम्बन्धी।
स्त्री० [फा० दाराई] एक प्रकार का पतला रेशमी कपड़ा।

दरियाई घोड़ा-पुं० गैंड़े की तरह का एक जानवर जो जलाशयों के पास रहता है।

दरियाई नारियल-पुं० एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र या कमंडल बनता है।

दरिया-दिल-वि० [फा०] [स्त्री० दरिया-दिली] उदार। दानी। दाता।

दरियाफ्त-वि० [फा०] जिसके सम्बन्ध की बातें जान ली गई हों। ज्ञात। मालूम।
पुं० पूछकर कुछ जानने की क्रिया या भाव।

दरिया-बरार-पुं० [फा०] किसी नदी की धारा पीछे हट जाने से निकली हुई भूमि।

दरिया-बुर्द-पुं० [फा०] वह भूमि जिसे कोई नदी काट ले गई हो।

दरियाव*-पुं० दे० 'दरिया'।

दरी-स्त्री० [सं०] १. गुफा। खोह। २. वह पहाड़ी नीचा स्थान जहाँ कोई नदी या नाला गिरता हो।
स्त्री० [सं० स्तर] मोटे सूतों का बुना हुआ एक प्रकार का बिछौना। शतरंजी।

दरीचा-पुं० [फा० दरीचः] [स्त्री० दरीची] खिड़की। झरोखा।

दरीबा-पुं० [?] वह बाजार जिसमें पान बिकते हों।

दरेरना-स० [सं० दरण] १. रगड़ना। २. मोटा या दरदरा पीसना।

दरेरा-पुं० [सं० दरण] १. दरेरने या रगड़ने की क्रिया या भाव। २. बहाव का जोर। पानी का तोड़। तरारा।

दरेस-स्त्री० [अं० ड्रेस] १. एक प्रकार का फूलदार महीन कपड़ा। २. पोशाक।
वि० बना-बनाया। तैयार।

दरेसी-स्त्री० [हिं० दरेस] ऊबड़-खाबड़ जमीन सम-तल या बराबर करना।

दरैया*-पुं० [सं० दरण] १. दलनेवाला। २. घातक। विनाशक।

दरोग-पुं० [अ०] झूठ। असत्य।

दरोग-हलफी-स्त्री० [अ०] न्यायालय के सामने सच बोलने की कसम खाकर या हलफ लेकर भी झूठ बोलना।

दर्ज-स्त्री० दे० 'दरज'।
वि० [फा०] कागज या अपने स्थान पर लिखा या चढ़ा हुआ।

दर्जन-पुं० दे० 'दरजन'।

दर्जा-पुं० दे० 'दरजा'।

दर्जी-पुं० दे० 'दरजी'।

दर्द-पुं० [फा०] १. पीड़ा। व्यथा। २.

दुःख। तकलीफ। कष्ट। ३. किसी का कष्ट देखकर मन में उत्पन्न होनेवाली दया।

दर्दमंद-वि० [फा०] [संज्ञा दर्दमंदी] १. पीड़ित। दुःखी। २. दयावान्।

दर्दी-वि० दे० 'दर्दमंद'।

दर्दुर-पुं० [सं०] मेंढक।

दर्प-पुं० [सं०] [वि० दर्पित] १. घमंड। अभिमान। गर्व। २. अहंकार मिला हुआ क्रोध। मान। ३. उद्दंडता। अक्खड़पन। ४. आतंक। रोब।

दर्पण-पुं० [सं०] वह शीशा जिसमें मुँह देखते हैं। आइना।

दर्पी-पुं० [सं० दर्पिन्] दर्प से भरा हुआ। अभिमानी। घमंडी।

दर्ब*-पुं० [सं० द्रव्य] १. द्रव्य। धन। २. धातु। (सोना, चांदी आदि)

दर्भ-पुं० [सं०] कुश। डाभ।

दर्रा-पुं० [फा०] दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता। घाटी।

दर्श-पुं० [सं०] १. दर्शन। २. अमावास्या तिथि। ३. अमावास्या के दिन होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

दर्शक-पुं० [सं०] १. दिखानेवाला। २.वह जो कहीं उपस्थित होकर कोई काम होता हुआ देखता हो। देखनेवाला।

दर्शन-पुं० [सं०] १. नेत्रों के द्वारा होनेवाला बोध या ज्ञान। साक्षात्कार। २. किसी देवता, देव-मूर्ति या बड़े से होनेवाला साक्षात्कार। (श्रद्धा, भक्ति और नम्रता-सूचक) ३ दे० 'दर्शन शास्त्र'।

दर्शन शास्त्र-पुं० [सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा और जीवन के अन्तिम लक्ष्य आदि का विवेचन होता है। तत्त्व-ज्ञान। (फिलासफी)

दर्शनीय-वि० [सं०] १. दर्शन करने या देखने योग्य। २. सुन्दर। मनोहर।

दर्शनी हुंडी-स्त्री० [सं० दर्शन] वह हुंडी जिसे देखते ही उसमें लिखा हुआ धन चुका देना पड़े।

दर्शाना-स० दे० 'दरसाना'।

दर्शित-वि० [सं०] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

पुं० वे पत्र, लेख्य या वस्तुएँ जो किसी पक्ष की ओर से प्रमाण के रूप में न्यायालय मे उपस्थित की जायँ। (एग्ज़िबिट)

दर्शी-वि० [सं० दर्शिन्] देखनेवाला।

दल-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का वह खंड जो उसी प्रकार के दूसरे खंड से जुड़ा हो, पर जरा सा दबाव पड़ने से अलग हो जाय। जैसे-दाल के दो दल। २. पौधों का पत्ता। पत्र। ३. फूल की पंखड़ी। जैसे-कमल के दल। ४. समूह। झुंड। गरोह। ५. किसी एक कार्य या उद्देश्य की सिद्धि के लिए बना हुआ लोगों का गुट्ट। (पार्टी) ६. सेना। फौज। ७. परत की तरह फैली हुई किसी लंबी चीज की मोटाई।

दलक(न)-स्त्री० [हिं० दलक] १. दलकने की क्रिया या भाव। २.आघात। ३. थरथराहट। धमक। ४. रह-रहकर होनेवाली पीड़ा। टीस।

दलकना-अ० [सं० दलन] १. फटना। चिरना। २. थर्राना। कांपना। ३. चौंकना। ४. उद्विग्न या विकल होना। स० [सं० दलन] डराना।

दलदल-स्त्री० [सं० दलाढ्य] [वि० दलदली] वह गीली जमीन जिसपर खड़े होने से पैर नीचे धँसता हो।

मुहा०-**दलदल में फँसना**=झंझट या बखेड़े में पड़ना।

दलदार-वि० [हिं० दल+फा० दार] मोटे दल, तह या परतवाला।

दलन-पुं० [सं०] [वि० दलनीय, दलित] १. दलने की क्रिया या भाव। २. संहार। वि०संहार या नाश करनेवाला। (यौ० के अन्त में। जैसे-दुष्ट-दलन।)

दलना-स० [सं० दलन] १. चक्की आदि में पीसकर छोटे छोटे टुकड़े करना। मोटा चूर्ण करना। २. रौंदना। कुचलना। ३. मसलना। मींड़ना। ४. नष्ट या ध्वस्त करना।

दलपति-पुं० [सं०] १ मुखिया। सरदार। २. सेनापति।

दलबंदी-स्त्री० [हिं० दल+फा० बंदी] किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए लोगों का अपने अलग अलग दल बनाना।

दल-बल-पुं० [सं०] १. लाव-लश्कर। फौज। २. संगी-साथी, नौकर-चाकर और अनुयायी आदि।

दल-बादल-पुं० [हिं० दल+बादल] १. भारी सेना। २. बहुत बड़ा शामियाना।

दलमलाना-स० [हिं० दलना+मलना] १.मसलना। २.कुचलना। ३.नष्ट करना।

दलवाल*-पुं० दे० दलपति'।

दलवैया*-वि० [हिं० दलना] १. दलन या नाश करनेवाला। २. दलने या चूर्ण करनेवाला।

दलहन-पुं० [हिं० दाल+अन्न] वह अन्न जिसकी दाल बनती है। जैसे-अरहर, मूँग आदि।

दलान-पुं० दे० 'दालान'।

दलाल-पुं० [अ० मि० हिं० दिलाना] [संज्ञा दलाली] १. वह जो लोगों को सौदा खरीदने या बेचने में, कुछ पारिश्रमिक लेकर, सहायता देता हो। २.कुटना।

दलाली-स्त्री० [फा०] १. दलाल का काम। २ दलाल का पारिश्रमिक।

दलित-वि० [सं०] [स्त्री० दलिता] १. मसला, रौंदा या कुचला हुआ। २. नष्ट किया हुआ।

दलित वर्ग-पुं० [सं०] समाज का वह वर्ग जो सबसे नीचा माना गया हो या दुःखी और दरिद्र हो और जिसे उच्च वर्ग के लोग उठने न देते हों। जैसे-भारत की छोटी या अछूत मानी जानेवाली जातियों का वर्ग। (डिप्रेस्ड क्लास)

दलिया-पुं० [हिं० दलना] मोटा या दरदरा पीसा हुआ अन्न।

दली-वि० [हिं० दल] १. दलवाला। २. पत्तोंवाला।

दलील-स्त्री० [अ०] १. तर्क। २. सोच-विचार।

दलेल-स्त्री० [अं० ड्रिल] सिपाहियों की वह कवायद या कठिन कार्य जो उन्हें मिलनेवाले दंड के रूप में करना पड़े।

दव-पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. जंगल में आपसे आप लगनेवाली आग। दावाग्नि। दावानल।

दवन*-पुं० [सं० दमन] नाश।

दवना*-पुं० दे० 'दौना'।
अ० [सं० दव] जलना।
स० जलाना।

दवनी-स्त्री० [सं० दमन] फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर उनमें से दाने निकालने का काम। दँवरी।

दवा-स्त्री० [फा०] १. रोग दूर करनेवाली ओषधि या औषध। २. रोग दूर करने का उपाय। चिकित्सा। इलाज। ३. ठीक या दुरुस्त करने की तरकीब।
*स्त्री० दे० 'दव'।

दवाई-स्त्री० दे० 'दवा'।
दवाखाना-पुं० [फा०] औषधालय।
दवागि(गी)*-स्त्री० दे० 'दावानल'।
दवाग्नि-स्त्री० दे० 'दावानल'।
दवात-स्त्री० [अ० दावात] वह छोटा बरतन जिसमें लिखने की स्याही रहती है। मसि-पात्र।
दवामी-वि० [अ०] जो सदा के लिए हो। स्थायी।
दवामी बन्दोबस्त-पुं० [फा०] खेती की जमीन का वह बन्दोबस्त जिसमें कुछ दिन पहले सरकारी मालगुजारी सदा के लिए स्थिर कर दी गई थी।
दवारी*-स्त्री० दे० 'दावानल'।
दशकंधर-पुं० [सं०] रावण।
दशक-पुं० [सं०] १. दस वस्तुओं या वर्षों आदि का समूह। २. सन्, संवत् आदि में हर एक इकाई से दहाई तक के दस दस वर्षों के समूह। (डिकेड)
दश-गात्र-पुं० [सं०] किसी के मरने से दस दिनों तक होनेवाला पिंडदान आदि।
दशन-पुं० [सं०] १. दाँत। २. कवच।
दशना-वि० स्त्री० [सं०] दशन या दाँतोंवाली। (यौ० के अन्त में)
दशनाम-पुं० [सं०] संन्यासियों के ये दस भेद तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।
दशनामी-पुं०[हिं०दश+नाम] संन्यासियों का दशनाम वर्ग, जो शंकराचार्य के शिष्यों से चला है।
वि० दशनाम सम्बन्धी।
दशनावली-स्त्री० [सं०] दाँतों की पंक्ति।
दशमलव-पुं० [सं०] १. गणित में इकाई से कम मान अथवा इकाई का कोई अंश सूचित करनेवाले वे अंक (भिन्न) जिनको भाग देनेवाला अंक (हर) १० या उसका दस-गुना, सौ-गुना, हजार-गुना आदि (कोई अंक) हो। जैसे-३.७ का अर्थ होगा-पूरे तीन और एक के दस भागों में से सात भाग; या ४.८४ का अर्थ होगा पूरे चार और एक के सौ भागों में से चौरासी भाग। (डेसिमल) २. सिक्के, तौल आदि के मान स्थिर करने की वह प्रणाली जिसमें हर मान या तो दूसरे का दसवाँ भाग या दस-गुना होता है। जैसे-यदि दस पैसों का एक आना और दस आनों का एक रुपया अथवा दस तोले की एक छटाँक और दस छटाँक का एक सेर मान लिया जाय तो यह दशमलव प्रणाली के अनुसार होगा। (डेसिमल)
दशमी-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि।
दश-मुख-पुं० [सं०] रावण।
दशशीश*-पुं [सं० दशशीर्ष] रावण।
दशहरा-पुं० [सं०] १. ज्येष्ठ शुक्ला दशमी। गंगा दशहरा। २.विजयादशमी।
दशांग-पुं०[सं०] देव-पूजन के समय जलाने का एक प्रकार का सुगन्धित धूप।
दशा-स्त्री० [सं०] १ अवस्था। हालत। २. साहित्य में रस के अन्तर्गत विरही या विरहिणी की अवस्था। ३. मनुष्य के जीवन में अलग अलग ग्रहों के निश्चित भोग-काल। (फलित ज्योतिष)
दशानन-पुं० [सं०] रावण।
दशार्ण-पुं० [सं०] १. विन्ध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश। २. उक्त देश का निवासी।
दशाह-पुं० [सं०] १. दस दिनों का

समय। २. किसी के मरने से दसवाँ दिन, जिसमें कुछ विशेष कृत्य होते हैं।

दस-वि० [सं० दश] जो गिनती में नौ से एक अधिक हो। आठ और दो।

दसखत-पुं० दे० 'दस्तखत'।

दसन*-पुं दे० 'दशन'।

दसना-अ० [हिं० डासना] बिछाया जाना। बिछना। (बिछौना)

स० बिछाना। (बिछौना)

पुं० बिछौना। बिस्तर।

दस-माथ*-पुं०=रावण।

दसमी-स्त्री० दे० 'दशमी'।

दसवाँ-वि० [हिं० दस] गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला।

पुं० किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला कृत्य।

दसा*-स्त्री० दे० 'दशा'।

दसाना*-स० [हिं० डासना] बिछाना।

दसौंधी-पुं० [सं० दास + बंदी=भाट] चारणों की एक जाति। ब्रह्म-भट्ट।

दस्तंदाजी-स्त्री० [फा०] हस्तक्षेप।

दस्त-पुं० [फा०, मि० सं० हस्त] १. हाथ। २. पतला पाखाना।

दस्तक-स्त्री० [फा०] १. बुलाने के लिए हाथ से दरवाजे का कुंडा खटखटाने की क्रिया। २. मालगुजारी वसूल करने या माल ले जाने का परवाना। ३. कर। ४. महसूल।

दस्तकार-पुं० [फा०] कारीगर। शिल्पी।

दस्तकारी-स्त्री० [फा०] [कर्त्ता दस्तकार] हाथ की कारीगरी। शिल्प।

दस्तखत-पुं० [फा०] हस्ताक्षर।

दस्त-बरदार-वि० [फा०] [संज्ञा दस्त-बरदारी] जिसने किसी वस्तु पर से अपना अधिकार या स्वत्व छोड़ दिया हो।

दस्ता-पुं० [फा० दस्तः] १. औजार, हथियार आदि का वह अंग जो हाथ में पकड़ा जाता है। मूठ। बेंट। २. सिपाहियों का छोटा दल। गारद। ३. कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी।

दस्ताना-पुं० [फा० दस्तानः] हाथ की उंगलियों या हथेली में पहनने का मोजा।

दस्तावर-वि० [फा०] जिसे खाने या पीने से दस्त आवे। दस्त लानेवाला। विरेचक।

दस्तावेज-स्त्री० [फा०] वह कागज जिसपर कुछ लोगों के पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन की शर्तें लिखी हों और जिसपर उन लोगों के दस्तखत हों। व्यवहार-संबंधी लेख्य।

दस्ती-वि० [फा० दस्त=हाथ] १. हाथ में रहनेवाला। जैसे-दस्ती छड़ी, दस्ती मशाल। २. किसी आदमी के हाथ आने या जानेवाला। जैसे-दस्ती वारन्ट या परवाना।

स्त्री० हाथ में लेकर चलने की बत्ती।

दस्तूर-पुं० [फा०] १. रवाज। चाल। प्रथा। २. नियम। विधि। कायदा।

दस्तूरी-स्त्री० [फा० दस्तूर] वह धन जो मालिक का सौदा खरीदने पर नौकर को दुकानदार से पुरस्कार के रूप में मिले।

दस्यु-पुं० [सं०] [भाव० दस्युता] १. डाकू। चोर। २. असुर। राक्षस। ३. अनार्य। म्लेच्छ। ४. दास। गुलाम।

दह-पुं० [सं० ह्रद] १. नदी में वह स्थान जहाँ आस-पास की अपेक्षा पानी बहुत अधिक गहरा हो। पाल। २. कुंड। हौज।

*स्त्री० [सं० दहन] ज्वाला। लपट।

दहकना-अ० [सं० दहन] १. लपट फेंकते

हुए जलना। धधकना। २. तपना।

दहकाना-स० [हिं० दहकना] १. आग अच्छी तरह सुलगाना। धधकाना। २. क्रोध दिलाना। भड़काना।

दहन-पुं० [सं०] [वि० दहनीय] १.जलने की क्रिया या भाव। दाह। २. आग।

दहना-*अ० [सं० दहन] १. जलना। भस्म होना। २. क्रोध से संतप्त होना। स० १. जलाना। भस्म करना। २. संतप्त या दुःखी करना। कष्ट पहुँचाना। ३. क्रोध दिलाना। भड़काना। अ० [हिं० दह] धँसना। नीचे बैठना। वि० दे० 'दाहिना'।

दहपटना-स० [दश०] [भाव० दहपट] १. ध्वस्त या नष्ट करना। २. रौंदना।

दहर*-पुं० दे० 'दह'।

दहरना*-अ० दे० 'दहलना'। स० दे० 'दहलाना'।

दहरौरा*-पुं० [हिं० दही+बड़ा] १. दही में पड़ा हुआ बड़ा। २. एक प्रकार का गुलगुला।

दहलना-अ०[सं०दर=डर+ल+ना(प्रत्य०)] [भाव० दहल] डरकर थम जाना। भय से स्तंभित होकर रुक जाना।

दहलाना-स० [हिं० दहलना] ऐसा डराना कि कोई काम करने से आदमी रुक जाय।

दहलीज-स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट में नीचेवाली लकड़ी या पत्थर। देहली।

दहशत-स्त्री० [फा०] डर। भय।

दहाई-स्त्री० [फा० दह=दस] १. दस का मान या भाव। २. कई अंक लिखने के समय स्थानों की गिनती के विचार से दूसरा स्थान, जिसपर लिखे हुए अंक से उसके दस-गुने का बोध होता है।

दहाड़-स्त्री० [अनु०] [क्रि० दहाड़ना] १. शेर आदि का घोर शब्द। गरज। २. चिल्लाकर रोने की आवाज। आर्त्त-नाद।

दहाड़ना-अ० [अनु०] १. घोर शब्द करना। गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

दहाना-पुं० [फा०] १. चौड़ा मुँह। २. वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में मिलती है। मुहाना।

दहिना-वि० दे० 'दाहिना'।

दही-पुं० [सं० दधि] खटाई के योग से जमाया हुआ दूध।

मुहा०-दही-दही करना=सबसे कहते फिरना कि यह ले लो, यह ले लो।

दहु*-अव्य० [सं० अथवा] १. अथवा। या। २. कदाचित्। शायद।

दहेंड़ी-स्त्री० [हिं० दही+हंडी] दही जमाने का मिट्टी का बरतन या हाँड़ी।

दहेज-पुं० [अ० जहेज] वह धन, वस्त्र और गहने आदि जो विवाह के समय कन्या-पक्ष से वर-पक्ष को मिलते हैं। दायजा। यौतुक।

दहेला-वि० [हिं० दहन+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दहेली] १. जला हुआ। दग्ध। २ संतप्त। दुःखी। ३.भींगा हुआ। गीला।

दह्यो*-पुं० दे० 'दही'।

दाँ*-पुं० [सं०दाच् (प्रत्य०) जैसे-एकदा] दफा। बार। बारी।

पुं० [फा०] ज्ञाता। जाननेवाला। (यौ० के अन्त में; जैसे-कानून-दाँ)

दाँकना*-अ० दे० 'गरजना'।

दाँग-पुं० [हिं० डंका] नगाड़ा। धौंसा। पुं० [हिं० डूँगर] छोटी पहाड़ी। टीला।

दाँज†-स्त्री० [सं० उदाहार्य] बराबरी।

दाँड़ना-स० [सं० दंड] १. दंड या सजा देना। २. जुरमाना करना।

दाँत-पुं० [सं० दंत] १. जीवों के मुँह, तालु, गले आदि में अंकुर के रूप में निकली हुई वह हड्डी या हड्डियों की ऊपर-नीचे की वे पंक्तियाँ जिनसे वे कुछ खाते, किसी को काटते या जमीन खोदते हैं। दंत। रद। दशन।

मुहा०-दाँत-काटी रोटी होना=अत्यन्त घनिष्ठ मित्रता होना। दाँत खट्टे करना= प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में बहुत परेशान करना। दाँत किटकिटाना या पीसना=(क्रोध में) दाँतों पर दाँत रखकर इस प्रकार रगड़ना कि जान पड़े कि यह खा जायगा। दाँत बजना= सरदी से दाँतों के हिलने या काँपने के कारण उनके टकराने का शब्द होना। दाँत बैठ जाना=दाँतों की पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार सट जाना कि मुँह न खुल सके। दाँत लगाना या गड़ाना= कोई चीज पाने की ताक में रहना। दाँतों तले उँगली दबाना = परम चकित होना। दंग रह जाना। दाँतों में तिनका लेना=दया के लिए गौ की तरह दीन बनकर विनती करना। (किसी वस्तु पर)

२. दाँतों की तरह निकली या उभरी हुई कोई वस्तु या पंक्ति। दंदाना। दाँता।

दांत-वि० [सं०] १. जिसका दमन हुआ हो। दबाया हुआ। २. इन्द्रियों को वश में रखनेवाला। संयमी।

दाँता-पुं० [हिं० दाँत] दाँतों की तरह का उभरा हुआ कोई भाग।

दाँता-किटकिट-स्त्री० [हिं० दाँत+किट-किट (अनु०)] नित्य या बराबर होती रहनेवाली कहा-सुनी या झगड़ा।

दांति-स्त्री० [सं०] १. इन्द्रिय-निग्रह। इन्द्रियों का दमन। २. विनय-शीलता।

दाँती-स्त्री० [सं० दात्री] हँसिया।

स्त्री० [हिं० दाँत] १. दाँतों की पंक्ति। दंतावलि। २.छोटा दाँत। ३.दे० 'दर्रा'।

दाँना-स० [सं० दमन] फसल के डंठलों में से दाने अलग करना।

दांपत्य-वि० [सं०] दंपति या पति-पत्नी से संबंध रखनेवाला। जैसे-दांपत्य प्रेम।

दांभिक-वि० [सं०] १. दंभ करने या अपने को बड़ा समझनेवाला। २.आडंबर रचनेवाला। पाखंडी। ३. अभिमानी।

दाँव-पुं० [सं० दा प्रत्य० जैसे-एकदा] १. बार। दफा। मरतबा। २.कोई कार्य करने या खेल खेलने का वह अवसर या पारी जो सब खेलाड़ियों को बारी बारी से मिलती है। पारी। ३. उपयुक्त या अनुकूल अवसर। मौका।

मुहा०-दाँव लगना=अनुकूल अवसर मिलना। दाँव लेना=बदला लेना।

४. कुश्ती में विपक्षी को हराने या दबाने के लिए काम में लाई जानेवाली युक्ति। चाल। पेंच। ५. पासे, जूए की कौड़ियों आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो। ६. वह धन जो ऐसे खेलों के समय हार-जीत के लिए खेलाड़ी सामने रखते हैं। ७. स्थान। ठौर। जगह। ८. कार्य-साधन की युक्ति। चाल।

मुहा०-दाँव पर चढ़ना=ऐसी विवश स्थिति में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल सके।

दाँवरी-स्त्री० [सं० दाम] रस्सी। डोरी।

दाइ-*-पुं० १.दे० 'दाय'। २. दे० 'दाँव'।

दाइज(ा)-पुं० दे० 'दहेज'।

दाई-वि० स्त्री० [हिं० दायाँ] दाहिनी।

स्त्री० [सं० दाक] दफा। बार।

दाई-स्त्री० [सं० धात्री, मि० फा० दायः] १. दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलाने या उसकी देख-रेख करनेवाली स्त्री। धाय। २. प्रसूता का उपचार और सेवा-शुश्रूषा करनेवाली स्त्री। ३. दासी। मजदूरनी।

दाऊ-पुं० [सं० देव] १. बड़ा भाई। २. कृष्ण के बड़े भाई, बलदेव।

दाक्षायण-वि० [सं०] दक्ष-संबंधी।

दाक्षायणी-स्त्री० [सं०] १. दक्ष की कन्या, सती। २. दुर्गा।

दाक्षिणात्य-वि० [सं०] दक्षिण का। पुं० १. भारतवर्ष का वह विभाग जो विन्ध्याचल के दक्षिण है। दक्षिण भारत। २. इस भाग का निवासी।

दाक्षिण्य-पुं० [सं०] १. दक्षिण (अनुकूल कुशल, प्रसन्न आदि) होने का भाव। २. दूसरे को अनुकूल या प्रसन्न करने की शक्ति। ३ कौशल। दक्षता। वि० १. दक्षिण का। २. दक्षिणा संबंधी।

दाख-स्त्री० [सं० द्राक्षा] १. अंगूर। २. मुनक्का। ३. किशमिश।

दाखिल-वि० [फा०] १. घुसा या पैठा हुआ। प्रविष्ट। २. दिया या जमा किया हुआ। ३. पहुँचा या आया हुआ।

दाखिल-खारिज-पुं० [फा०] सरकारी कागजों पर किसी सम्पत्ति के पुराने मालिक की जगह नये मालिक का नाम चढ़ना।

दाखिल-दफ्तर-वि० [फा०] बिना विचार के दफ्तर में डाल रखा हुआ (कागज)।

दाखिला-पुं० [फा०] प्रवेश।

दाग-पुं० [सं० दग्ध] १. जलाने का काम। दाह। २.मुरदा जलाने की क्रिया। मुहा०-दाग देना=मुरदे को जलाना। ३.जलन। डाह। ४.जले होने का चिह्न। पुं० [फा० दाग़] [वि० दाग़ी] १. धब्बा। चित्ती। (विशेषतः किसी वस्तु के दूषित होने के कारण दिखाई देनेवाला धब्बा) यौ०-सफेद दाग (देखो)। ३. निशान। चिह्न। अंक। ४. फलों आदि पर पड़ा हुआ सड़ने या दबने का चिह्न। ५. ऐब। दोष। ६. जले होने का चिह्न।

दागदार-वि० [फा०] जिसपर या जिसमें दाग़ या धब्बा हो।

दागना-स० [हिं०दाग] १.जलाना। दग्ध करना। २.तपे हुए लोहे, तेजाब या दवा आदि से किसी का अंग इतना जलाना कि उसपर दाग पड़ जाय। ३.तोप, बन्दूक आदि छोड़ना। ४. रंग आदि से चिह्न या दाग़ लगाना। अंकित करना।

दाग-बेल-स्त्री० [फा० दाग़+हिं० बेल] भूमि पर के वे चिह्न जो सड़कें बनाने, नींव खोदने आदि से पहले सीमा या विस्तार सूचित करने के लिए बनाये जाते हैं।

दाग़ी-वि० [फा० दाग़] १. जिसपर किसी प्रकार का दाग या धब्बा हो। २. कलंकित। ३ लांछित। ४. जिसको जेल की सजा मिल चुकी हो।

दाघ-पुं० [सं०] गरमी। ताप।

दाज(झ)ना*-अ० [सं० दाहन] १. जलना। २. संतप्त या दुःखी होना। ३. ईर्ष्या या डाह करना। स० १. जलाना। २. बहुत कष्ट देना।

दाड़िम-पुं० [सं०] अनार।

दाढ़-स्त्री० [सं० दंष्ट्रा या दाढ़क] जबड़े के अन्दर के बड़े चौड़े दाँत। चौभर। स्त्री० दे० 'दहाड़'।

दाढ़ना*-स० [सं० दाहन] १. जलाना।

२. संतप्त या दुःखी करना। ३. किसी के मन में ईर्ष्या उत्पन्न करना। जलाना।

दाढ़ा-पुं० दे० 'डाढ़ा'।

पुं० [हिं० दाढ़] १. वन की आग। दावानल। २. आग। ३. जलन। ४. बहुत बड़ी दाढ़ी।

दाढ़ी-स्त्री० [हिं दाढ] १. ओंठ के नीचे का उभरा हुआ गोल भाग। चिबुक। ठोढ़ी। २. इस स्थान पर उगनेवाले बाल। श्मश्रु।

दात*-पुं० [सं० दातव्य] दान।

*पुं० दे० 'दाता'।

दातव्य-वि० [सं०] १. दिये जाने के योग्य। २. जो दिया जाने को हो। ३. दान संबंधी। दान का।

पुं० १ दान। २.दानशीलता। ३.वह धन जो देना या चुकाना आवश्यक या अनिवार्य हो। जैसे-कर या महसूल। (ड्यू)

दाता-पुं० [सं०] १. वह जो प्रायः दान देता हो। दान-शील। २. देनेवाला।

दातार-पुं० [सं० दाता का बहु०] दाता।

दाती*-स्त्री० [सं० दात्री] देनेवाली।

दातुन-स्त्री० दे० 'दतुअन'।

दातृत्व-पुं० [सं०] दान-शीलता।

दात्री-स्त्री० [सं०] देनेवाली।

दाद-स्त्री० [सं० दद्रु] एक प्रसिद्ध चर्म-रोग जिसमें बहुत खुजली होती है।

स्त्री० [फा०] न्याय। इन्साफ।

मुहा०-दाद देना=किसी अच्छे काम की, न्याय-दृष्टि से, प्रशंसा करना।

दादनी-स्त्री० [फा०] १. वह रकम जो चुकानी हो। दातव्य। देन। २. वह रकम जो पेशगी दी जाय। अग्रिम।

दादरा-पुं० [?] एक प्रकार का चलता गाना।

दादा-पुं० [सं० तात] [स्त्री० दादी] १. पिता का पिता। पितामह। आजा। २. बड़ा भाई। ३. बड़ों के लिए आदर-सूचक शब्द।

दादि*-स्त्री० [फा० दाद] न्याय।

दादुर*-पुं० [सं० दर्दुर] मेंढक।

दादूदयाल-पुं० अहमदाबाद के एक साधु जो अकबर के समय हुए थे और जिनके नाम पर एक पंथ चला है।

दादू-पंथी-पुं० [दादूदयाल+पंथी] दादूदयाल के चलाये हुए पंथ का अनुयायी।

दाध*-स्त्री० [सं० दाद] जलन। दाह।

दाधना*-स० [सं० दग्ध] जलाना।

दान-पुं० [सं०] १. देने का कार्य। देना। २. वह धर्मार्थ कृत्य जिसमे श्रद्धा या दयापूर्वक किसी को धन आदि दिया जाता है। खैरात। ३. वह वस्तु जो इस प्रकार या और किसी रूप में किसी को सदा के लिए दी जाय। (गिफ्ट) ४. कर, महसूल, चुंगी आदि। ५. राजनीति मे धन-सम्पत्ति देकर शत्रु या विरोधी को दबाने और अपना काम निकालने की नीति। ६. हाथी का मद।

दान-पत्र-पुं० [सं०] वह लेख या पत्र जिसमे कोई सम्पत्ति किसी को सदा के लिए प्रदान करने का उल्लेख हो।

दान-प्रतिष्ठा-स्त्री० दे० 'दक्षिणा' १।

दान-लेख-पुं० [सं०] वह लेख जिसमें किसी किये हुए दान का उल्लेख हो।

दानव-पुं० [सं०] [स्त्री० दानवी] कश्यप के वे पुत्र जो उनकी 'दनु' नाम की पत्नी से उत्पन्न हुए थे और जो देवताओं के घोर शत्रु थे। असुर। राक्षस।

दान-वारि-पुं० [सं०] हाथी का मद।

दानवी-वि० [सं० दानवीय] दानव का।

स्त्री० दानव जाति की स्त्री । राक्षसी ।

दान-वीर-पुं० [सं०] वह जो प्रायः बहुत अधिक दान देता हो । बहुत बड़ा दानी ।

दानशील-वि०[सं०] [भाव०दानशीलता] दान करनेवाला । दानी ।

दाना-पुं० [फा० दानः] १. अनाज का बीज या कण । कन ।

मुहा०-**दाने-दाने को तरसना या मोहताज होना**=दरिद्रता आदि के कारण भोजन का बहुत अधिक कष्ट सहना ।

२. अनाज । अन्न । ३ सूखा भुना हुआ अन्न । चबेना । ४. फल या उसका छोटा बीज । ५. कोई छोटी गोल वस्तु । जैसे-मोती, अनार या घुँघरू का दाना । ६.उक्त प्रकार की वस्तुओं की संख्या का सूचक शब्द । अदद । जैसे-चार दाना आम । ७. रवा । कण । ८. कोई छोटा गोल उभार । ९. गाने, विशेषतः टप्पा गाने के समय किसी स्वर का बहुत ही छोटे-छोटे खंडों में गले से निकलनेवाला रूप ।

वि० [फा०] बुद्धिमान् । समझदार ।

दानादेश-पुं० [सं०] वह पत्र या आदेश जिसके अनुसार किसी को कुछ दिया या कोई देन चुकाया जाता है । (पेमेन्ट आर्डर)

दाना-पानी-पुं० [फा० दाना+हिं० पानी] खान-पान । अन्न-जल । (किसी स्थान पर रहने या किसी से जीविका प्राप्त होने के विचार से)

मुहा०-**दाना पानी उठना** = दूसरी जगह जाने का संयोग होना । **दाना-पानी छोड़ना**=अन्न-जल ग्रहण न करना।

दानी-वि० [सं० दानिन्] [स्त्री० दानिनी] बहुत दान करनेवाला । उदार । दाता ।

पुं० [सं० दानीय] कर उगाहनेवाला ।

दानेदार-वि० [फा०] जिसमें या जिस-पर दाने या रवे हों ।

दानौ*-पुं० दे० 'दानव' ।

दाप-पुं० [सं० दर्प, प्रा० दप्प] १. अभिमान । घमंड । शेखी । २. शक्ति । बल । ३. उत्साह । उमंग । ४. दबदबा । आतंक । ५. क्रोध । गुस्सा । ६. जलन ।

दापना*-स० [हिं० दाप] १ दबाना । २ वारण या मना करना । रोकना ।

दाब-पुं० [हिं० दबना] १. दबने या दबाने की क्रिया या भाव । २. वह वस्तु जो किसी दूसरी वस्तु के ऊपर रहकर उसे दबाये रखती हो । भार । ३ पत्थर, शीशे आदि का वह छोटा टुकड़ा जो कागजों को उड़ने से बचाने और उन्हें दबाये रखने के लिए उनपर रखा जाता है । (पेपर-वेट) ४. आतंक । जैसे-रोब-दाब ।

दाबना-स० दे० 'दबाना' ।

दाबा-पुं० [हिं० दबाना] कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी जमीन में गाड़ना ।

दाभ-पुं० [सं० दर्भ] कुश । डाभ ।

दाम-पुं०[सं०] १. रस्सी । डोरी । २.गले में पहनने की माला या हार । ३.समूह ।

पुं० [फा०] जाल । फंदा । पाश ।

पुं० [सं० द्रम्म] १. एक प्रकार का बहुत छोटा पुराना सिक्का ।

मुहा०- **दाम दाम भर देना**=पाई पाई चुका देना । कुछ (देन) बाकी न रखना।

२. वह धन जो बेची हुई वस्तु के बदले में बेचनेवाले को मिलता है । मूल्य । कीमत । (प्राइस)

मुहा०-**दाम खड़ा करना**=कुछ बेचकर रुपये लेना । **दाम चुकाना**=१. मूल्य दे देना । २. मूल्य ठहराना । **दाम भरना**=किसी चीज के खोने या टूट-फूट

जाने पर दंड-स्वरूप उसका दाम देना। ३. धन। रुपया-पैसा। ४. सिक्का।
मुहा०-चाम के दाम चलाना=अधिकार पाकर उसका मन-माना और अनुचित उपयोग करना।
पुं० [सं० दामन्] राजनीति में शत्रु-पक्ष के लोगों को धन द्वारा वश में करना।
दामन-पुं० [फा०] १. गले में या वक्षः-स्थल पर पहने जानेवाले कपड़ों में कमर से नीचे का भाग। पल्ला। २. पहाड़ के नीचे की भूमि।
दामर*-स्त्री० [सं० दामन्] रस्सी।
दामा*-स्त्री० [सं० दावा] दावानल।
स्त्री०[देश०] काले रंग की एक चिड़िया।
दामाद-पुं० दे० 'दमाद'।
दामिनी-स्त्री० [सं०] १.बिजली। विद्युत्। २. दे० 'दावनी'। (गहना)
दामी-वि० [हिं० दाम] अधिक मूल्य का। कीमती।
दामोदर-पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. विष्णु।
दायँ-पुं० दे० 'दांव'।
स्त्री० दे० 'दांज'।
दाय-पुं० [सं०] १. वह धन जो किसी को दिया जाने को हो। दातव्य। २.दान, दहेज आदि के रूप में दिया जानेवाला धन। ३. वह पैतृक या किसी संबंधी का धन जो उत्तराधिकारियों में बँटता या बँट सकता हो। ४. दान।
*पुं० दे० 'दाव'।
दायक-पुं० [सं०] [स्त्री० दायिका] देनेवाला। दाता। (यौ० के अन्त मे; जैसे-सुख-दायक।)
दायज(ा)-पुं० दे० 'दहेज'।
दाय भाग-पुं० [सं०] पैतृक धन-संपत्ति के पुत्रों, पौत्रों या दूसरे उत्तराधिकारी संबंधियों में बांटे जाने की व्यवस्था। (हिन्दू धर्म-शास्त्र का एक प्रधान विषय)
दायमुलहब्स-पुं० [अ०] जन्म-भर कैद में रहने की सजा। काला पानी।
दायर-वि० [फा०] १. चलता। जारी। २. न्यायालय में उपस्थित किया हुआ। (अभियोग)
दायरा-पुं० [अ०] १. गोल घेरा। कुंडल। मंडल। २. वृत्त। घेरा।
दायाँ-वि० दे० 'दाहिना'।
दाया*-स्त्री० दे० 'दया'।
स्त्री० [फा०] दाई। धाय।
दायाद-पुं० [सं०] [स्त्री० दायादा] वह जो दायभाग के नियमों के अनुसार किसी की सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी हो। सपिंड कुटुंबी।
दायित्व-पुं० [सं०] १. किसी बात या काम के लिए उत्तरदायी होने का भाव। जिम्मेदारी। २. किसी देन के देनदार होने का भाव। (लायबिलिटी)
दायी-वि० [सं० दायिन्] [स्त्री० दायिनी] १. दायक। देनेवाला। जैसे-सुखदायी। २. जिसपर किसी प्रकार का दायित्व या भार हो। (लायबुल)
दार-स्त्री० [सं०] पत्नी। भार्या। जोरू।
*पुं० दे० 'दारु'।
प्रत्य० [फा०] रखनेवाला। (यौ० के अन्त में। जैसे-मकानदार, दुकानदार)
दारचीनी-स्त्री० [सं० दारु+चीन (देश)] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी सुगन्धित छाल दवा और मसाले के काम आती है।
दारण-पुं० [सं०] [वि० दारित] १. चीरने-फाड़ने का काम। २. फोड़े आदि चीरने का काम। शस्त्र-चिकित्सा। ३.

इस काम में आनेवाले औजार।

दारना*-स० [सं० दारण] १. फाड़ना। २. नष्ट करना।

दार-परिग्रह-पुं०[सं०]पुरुष का विवाह।

दार-मदार-पुं० [फा०] १. आश्रय। ठहराव। २. किसी कार्य या बात का किसी दूसरे कार्य या बात पर अवलम्बन।

दारा-स्त्री० [सं० दार] पत्नी। भार्या।

दारि*-स्त्री० १. दे० 'दाल'। २. दे० 'दार'।

दारिउँ*-पुं० दे० 'दाड़िम'।

दारिद*-पुं० [सं० दारिद्र्य] दरिद्रता।

दारिद्र्य-पुं०[सं०] दरिद्रता। निर्धनता।

दारिम*-पुं० दे० 'दाड़िम'।

दारी-स्त्री०=दासी।

दारी-जार-पुं० [हिं० दारी+सं०जार] दासी या लौंडी का पति या पुत्र। (गाली)

दारु-पुं० [सं०] १. काठ। लकड़ी। २. बढ़ई। ३. कारीगर। शिल्पी।

दारुण-वि० [सं०] १ भयंकर। भीषण। घोर। २. कठिन। प्रचंड। विकट।

दारु-योषित-स्त्री० [सं०] कठ-पुतली।

दारु-हलदी-स्त्री० [सं० दारुहरिद्रा] एक पौधा जिसकी जड़ और डंठल दवा के काम में आते हैं।

दारू-स्त्री० [फा०] दवा। औषध। पुं० १. मद्य। शराब। २. बारूद।

दारों*-पुं० दे० 'दाड़िम'।

दारोगा-पुं० [फा०] १ किसी काम की ऊपर से देख-भाल रखने या प्रबन्ध करनेवाला व्यक्ति। २. पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी। थानेदार।

दारयों*-पुं० दे० 'दाड़िम'।

दार्शनिक-वि० [सं०] १. दर्शन-शास्त्र का ज्ञाता। तत्त्व-ज्ञानी। २.दर्शन-शास्त्र का।

दाल-स्त्री० [सं० दालि] १. दले हुए अरहर, मूँग आदि अन्न, जो सालन की तरह पकाकर खाये जाते हैं। २. रोटी, भात आदि के साथ खाने के लिए उक्त अन्नों का उबाला या पकाया हुआ रूप। मुहा०-(किसी की) दाल गलना=(किसी का) प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। दाल में कुछ काला होना=कुछ खटके या सन्देह की जगह होना। जूतियों दाल बँटना=आपस में खूब लड़ाई-झगड़ा होना। यौ०-दाल-दलिया=रूखा-सूखा भोजन। दाल-रोटी=सादा और सामान्य भोजन। ३. दाल के आकार की कोई गोल, चिपटी चीज। ४. चेचक, फुन्सी आदि के अच्छे हो जाने पर उनके ऊपर का वह गोल चमड़ा जो सूखकर गिर जाता है। खुरंड।

दाल-चीनी-स्त्री० दे० 'दार-चीनी'।

दाल-मोठ-स्त्री० [हिं० दाल+मोठ=एक कदन्न] घी आदि में तली हुई दाल या उसके साथ मिले हुए कुछ और पदार्थ।

दालान-पुं० [फा०] १. कमरे का वह सामनेवाला लम्बा भाग जो ऊपर से छाया और सामने से खुला हो। २. बरामदा।

दालिम*-पुं० दे० 'दाड़िम'।

दावँ-पुं० दे० 'दाँव'।

दाव-पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. वन की आग। ३. आग। ४. जलन। पुं० [देश०] बड़े डंठल आदि काटने का एक प्रकार का औजार।

दावत-स्त्री० [अ० दअवत] १. ज्योनार। भोज। २. निमन्त्रण। बुलावा।

दावना*-स० दे० 'दाँना'। स० [हिं० दावन] दमन करना।

दावनी-स्त्री० [सं० दामिनी] माथे पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

दावा-पुं०[अ०] १. किसी वस्तु पर अपना अधिकार जतलाना। किसी चीज पर अपना हक बतलाना। २. स्वत्व। हक। ३. सम्पत्ति या अधिकार की रक्षा या प्राप्ति के लिए चलाया हुआ मुकदमा। ४. नालिश। अभियोग। ५. वश। जोर। जैसे-उनपर हमारा इतना दावा है कि हम उनसे जो चाहें, वह करा लें। ६. दृढ़तापूर्वक कुछ कहना।
स्त्री० दे० 'दावानल'।

दावाग्नि-स्त्री० दे० 'दावानल'।

दावात-स्त्री० दे० 'दवात'।

दावानल-पुं० [सं०] वन में वृक्षों की रगड़ से आपसे आप लगनेवाली आग।

दावेदार-पुं० [अ० दावा+फा० दार] दावा करनेवाला। अपना हक जतानेवाला।

दाशमिक-वि० [सं०] १. 'दशम' संबंधी। 'दशम' का। २. जिसका संबंध प्रत्येक दस या उसके घात से हो। ३. दशमलव के अनुसार दस या उसके घात से संबंध रखनेवाला। विशेष दे० 'दशमलव'।

दाशरथि-पुं० [सं०] दशरथ के पुत्र, श्री रामचन्द्र आदि।

दास-पुं० [सं०] [स्त्री० दासी] [भाव० दासता] १. दूसरे की सेवा करनेवाला। सेवक। चाकर। नौकर। २. दूसरे के अधीन या वश में रहनेवाला। ३. एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के पीछे लगती है।
*पुं० दे० 'डासन'।

दासता-स्त्री० [सं०] 'दास' होने की क्रिया या भाव। गुलामी।

दासन*-पुं० दे० 'डासन'।

दासपन-पुं०=दासता।

दासा-पुं० [सं० दासी=वेदी] १. दीवार से सटाकर बनाया हुआ पुश्ता या चबूतरा। २. वह तख्ता या पत्थर जो दरवाजे के चौखटे के ऊपर रहता है।

दासानुदास-पुं० [सं०] सेवक का सेवक। अत्यन्त तुच्छ सेवक। (नम्रता)

दासी-स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली स्त्री। मजदूरनी। लौंडी।

दासेय-वि० [सं०] [स्त्री० दासेयी] दास से उत्पन्न। दास या गुलाम का वंशज।

दास्तान-स्त्री० [फा०] १. वृत्तान्त। हाल। २. कहानी। किस्सा। ३. वर्णन।

दास्य-पुं० [सं०] १ दासता। सेवा। २. भक्ति के नौ भेदों में से एक, जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उसका दास समझता है।

दाह-पुं० [सं०] १. जलाने की क्रिया या भाव। २. शव जलाने या मुरदा फूँकने का काम। ३. जलन। ताप। ४. अत्यन्त दुःख। संताप। ५. डाह। ईर्ष्या।

दाहक-वि० [सं०] [भाव० दाहकता] १. जलानेवाला। २. जलन पैदा करनेवाला।

दाह-कर्म-पुं० दे० 'दाह' २।

दाहन-पुं० [सं०] जलाना।

दाहना-स०[सं० दाहन] १. भस्म करना। जलाना। २. बहुत दुःख पहुँचाना।
वि० दे० 'दाहिना'।

दाहिना-वि० [सं० दक्षिण] [स्त्री० दाहिनी] १. शरीर के उस पार्श्व का जिसके अंगों में अपेक्षाकृत अधिक शक्ति होती है और जिससे मनुष्य अधिकतर काम लेता है। बायाँ का उलटा। दक्षिण।
मुहा०-(किसी का) दाहिना हाथ होना=बहुत बड़ा सहायक होना।
२. दाहिने हाथ की ओर पड़नेवाला। जैसे-

मकान का दाहिना। ३.अनुकूल। प्रसन्न।

दाहिनावर्त्त*-वि० दे० 'दक्षिणावर्त्त'।

दाहिने-क्रि० वि० [हिं० दाहिना] दाहिने हाथ की तरफ। दाहिनी ओर।

मुहा०-दाहिने होना = अनुकूल या प्रसन्न होना।

यौ०-दाहिने-बाएँ = इधर-उधर। दोनों ओर।

दाही-वि० दे० 'दाहक'।

दिअना*-पुं० दे० 'दीया'।

दिअली-स्त्री० [हिं० 'दीया' का स्त्री० अल्पा०] मिट्टी का बहुत छोटा दीया।

दिआ*-पुं० दे० 'दीया'।

दिआना*-स० दे० 'दिलाना'।

दिउली†-स्त्री० १. दे० 'दाल' ४. । २. दे० 'दिअली'।

दिक्-स्त्री० [सं०] दिशा। ओर।

दिक-वि० [अ०] १. जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित। २.हैरान। परेशान। ३.अस्वस्थ। बीमार। ('तबीयत' के साथ) पुं० क्षयी रोग। तपेदिक।

दिक्कत-स्त्री०[अ०] १.'दिक' का भाव। परेशानी। २. तकलीफ। ३. कठिनता।

दिक्करी-पुं० दे० 'दिग्गज'।

दिक्पाल-पुं० [सं०] पुराणानुसार दसों दिशाओं के रक्षक देवता। जैसे-उत्तर के कुबेर, दक्षिण के यम आदि।

दिक्शूल-पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं में काल का वास, जो यात्रा के लिए अशुभ माना जाता है। (फलित ज्योतिष)

दिखना-अ० [हिं० देखना] दिखाई देना।

दिखराना*-स० दे० 'दिखलाना'।

दिखरावनी*-स्त्री० [हिं० दिखलाना] दिखाने की क्रिया, भाव या पुरस्कार।

दिखलाई-स्त्री० [हिं० दिखलाना] १. दिखलाने की क्रिया, भाव, पारिश्रमिक या पुरस्कार। २. वह धन जो देखने या दिखाने के बदले में दिया जाय।

दिखलाना-स० हिं० 'देखना' का प्रे०।

दिखहार*-पुं०=देखनेवाला।

दिखाई-स्त्री० दे० 'दिखलाई'।

दिखाऊ†-वि० दे० 'दिखौआ'।

दिखा-दिखी-स्त्री० दे० 'देखा-देखी'।

दिखाना-स० हिं० 'देखना' का प्रे०।

दिखाव-पुं० [हिं० देखना] १. देखने की क्रिया या भाव। २. दृश्य। नजारा।

दिखावट-स्त्री० [हिं० दिखाना] १. ऊपर से दिखाई देनेवाला रूप-रंग। ऊपरी बनावट। २. दिखौआ ठाट-बाट। ऊपरी तड़क-भड़क।

दिखावटी-वि० दे० 'दिखौआ'।

दिखावा-पुं० [हिं० देखना] १. केवल ऊपर से दिखलाने के लिए किया हुआ काम। २.ऊपरी तड़क-भड़क। आडम्बर।

दिखैया*-पुं०[हिं०देखना+ऐया(प्रत्य०)] देखने या दिखलानेवाला।

दिखौआ-वि० [हिं० दिखाना] वह जो देखने भर को हो, पर काम का या सार-युक्त न हो।

दिगंगना-स्त्री०[सं०] दिशा-रूपिणी स्त्री।

दिगंत-पुं० [सं०] १ दिशा का छोर या अन्त। २. क्षितिज। ३. सब दिशाएँ। पुं० [सं० दृक्+अन्त] आँख का कोना।

दिगंतर-पुं० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

दिगंबर-पुं० [सं०] [भाव० दिगंबरता] १. शिव। महादेव। २. नंगा रहनेवाला जैन यति। ३. अन्धकार। अँधेरा। वि० नंगा। नग्न।

दिगंश-पुं० [सं०] क्षितिज वृत्त का ३६० वाँ भाग या अंश ।

दिग-स्त्री० दे० 'दिक्' ।

दिग्गज-पुं० [सं०] पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाये रखते और उनकी रक्षा करते हैं । वि० बहुत बड़ा या भारी ।

दिग्घ*-वि० दे० 'दीर्घ' ।

दिग्दंत*-पुं०=दिग्गज ।

दिग्दर्शक यंत्र-पुं० [सं०] घड़ी के आकार का वह यंत्र जिससे दिशाओं का पता चलता है । कुतुबनुमा ।

दिग्दर्शन-पुं० [सं०] १. वह जो उदाहरण-स्वरूप उपस्थित किया जाय । नमूना । २. नमूना दिखाने या स्वरूप का साधारण परिचय कराने का काम ।

दिग्दाह-पुं० [सं०] एक अशुभ दैवी घटना जिसमें संध्या समय दिशाएँ लाल हो जाती और जलती हुई जान पड़ती हैं ।

दिग्देवता-पुं०=दिक्पाल ।

दिग्पति-पुं०=दिक्पाल ।

दिग्पाल-पुं० दिक्पाल ।

दिग्भ्रम-पुं० [सं०] दिशाओं के संबंध में भ्रम होना । दिशा भूल जाना ।

दिग्मंडल-पुं० [सं०] दिशाओं का समूह । सब दिशाएँ ।

दिग्विजय-स्त्री० [सं०] १. प्राचीन काल के राजाओं का, अपना महत्त्व दिखलाने के लिए, दूसरे देशों में अपनी सेनाएँ ले जाकर युद्ध करना और उन्हें जीतना । २. अपने गुणों के द्वारा आस-पास के देशों में अपना महत्त्व स्थापित करना ।

दिग्विजयी-वि० [सं०] [स्त्री० दिग्विजयिनी] जिसने दिग्विजय किया हो ।

दिग्शूल-पुं० दे० 'दिक्शूल' ।

दिच्छित*-पुं०, वि० दे० 'दीक्षित' ।

दिठवन-स्त्री० दे० 'देवोत्थान' ।

दिठा-दिठी-स्त्री० दे० 'देखा-देखी' ।

दिठाना*-अ० [हिं० दीठ] बुरी दृष्टि या नजर लगना ।
स० बुरी दृष्टि या नजर लगाना ।

दिठौना†-पुं० [हिं० दीठ=दृष्टि+औना (प्रत्य०)] वह काली बिन्दी जो बालकों को नजर से बचाने के लिए उनके माथे, गाल आदि पर लगाई जाती है ।

दिढ़*-वि० दे० 'दृढ़' ।

दिढ़ाना*-स० [सं० दृढ़+आना (प्रत्य०)] १. दृढ़ या मजबूत करना । २. निश्चित करना । पक्का करना ।
अ० दृढ़ या पक्का होना ।

दिढ़ाव*-पुं०=दृढ़ता ।

दिति-स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषि की एक पत्नी जिससे दैत्य उत्पन्न हुए थे ।

दिति-सुत-पुं० [सं०] दैत्य । राक्षस ।

दित्सा-स्त्री० [सं०] १. देने की इच्छा । २ वह व्यवस्था जिसके अनुसार कोई व्यक्ति यह निश्चय करता है कि मेरे मरने पर मेरी सम्पत्ति अमुक अमुक व्यक्तियों को इस प्रकार दी या बाँटी जाय । वसीयत । (विल)

दित्सा-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र या लेख जिसमें कोई व्यक्ति यह लिखता है कि मेरी सम्पत्ति अमुक अमुक व्यक्तियों को इस प्रकार मिले । वसीयतनामा । (विल)

दिदार*-पुं० दे० 'दीदार' ।

दिन-पुं० [सं०] १. सूर्य निकलने से उसके अस्त होने तक का समय ।
मुहा०-दिन को तारे दिखाई देना= इतना कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे । दिन को दिन, रात को रात, न

समझना=कोई काम करते समय अपने विश्राम का ध्यान छोड़ देना। दिन छिपना या डूबना=सूर्य अस्त होना। दिन ढलना=संध्या का समय निकट आना। दिन-दहाड़े=ठीक दिन के समय। दिन दूना, रात चौगुना होना या बढ़ना=बहुत जल्दी जल्दी और बराबर बढ़ते रहना।

यौ०-दिन-रात=सदा। हर समय।

२. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। आठ पहर या चौबीस घंटों का समय।

मुहा०-दिन-दिन या दिन-पर-दिन= नित्य प्रति। सदा। हर रोज।

३. समय। काल। वक्त।

मुहा०-दिन काटना या पूरे करना= किसी प्रकार कष्ट का समय बिताना। दिन बिगड़ना=संकट या अवनति के दिन आना।

४. नियत, उपयुक्त या उचित समय।

मुहा०-दिन धरना=दिन निश्चित करना।

५. उतना समय जितने में कोई विशेष कार्य या बात हो। जैसे-जाड़े के दिन, छुट्टी के दिन।

मुहा०-दिन चढ़ना = गर्भ-काल का आरंभ होना। दिन फिरना=विपत्ति या दरिद्रता के दिनों के बाद सुख या सम्पन्नता के दिन आना।

दिनअर(कर)*-पुं०=सूर्य।

दिनकर-पुं०=सूर्य।

दिन-चर्य्या-स्त्री० [सं०] नित्य दिन भर में किया जानेवाला काम-धंधा।

दिन-दानी*-पुं०[सं० दिन+दानी] नित्य बहुत दान करनेवाला। बड़ा दानी।

दिननाथ-पुं०=सूर्य।

दिन-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र या पत्र-समूह जिसमें दिन या वार, तिथियाँ और तारीखें आदि दी रहती हैं। (कैलेंडर)

दिनमणि-पुं० [सं०] सूर्य।

दिन-मान-पुं० [सं०] सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय या दिन भर का मान।

दिनांक-पुं० [सं० दिन+अंक] गिनती के विचार से महीने का कोई दिन। तारीख। जैसे-दिनांक ६ चैत्र सं० २००६.

दिनांत-पुं० [सं०] सध्या।

दिनांध-पुं० दे० 'दिवांध'।

दिनाई*-स्त्री० [सं० दिन+हिं० आना] वह जहरीली चीज जिसके खाने से तुरन्त मृत्यु हो जाय।

दिनातीत-वि० [सं०] आज-कल की रुचि या प्रचलन के विचार से पिछड़ा हुआ। जिसका अब प्रचलन या उपयोगिता न रह गई हो। (आउट-आफ-डेट)

दिनाप्त-वि० [सं०] आज-कल की रुचि, उपयोगिता या प्रचलन के अनुसार, ठीक। (अप-टु-डेट)

दिनार*-पुं० दे० 'दीनार'।

दिनियर*-पुं० [स० दिनकर] सूर्य्य।

दिनौंधी-स्त्री० [हिं० दिन + अंध] दिन के समय न दिखाई देने का रोग।

दिपति*-स्त्री० दे० 'दीप्ति'।

दिपना*-अ० [सं० दीप्ति] चमकना।

दिपाना-अ० दे० 'दिपना'।

स० [हिं० दिपना] दीप्त करना। चमकाना।

दिब*-पुं० दे० 'दिव्य'।

दिमाक*-पुं० दे० 'दिमाग'।

दिमाग-पुं० [अ०] १. सिर के अन्दर का गूदा। मस्तिष्क। भेजा।

मुहा०-दिमाग खाना या चाटना= व्यर्थ की बातें करके तंग करना। दिमाग

खाली करना=ऐसा काम करना जिसमें मानसिक शक्ति क्षीण हो। मगज-पच्ची करना।
२. मानसिक शक्ति। बुद्धि। समझ।
मुहा०-दिमाग लड़ाना=अच्छी तरह सोचना-समझना।
३. अभिमान। घमंड। शेखी।

दिमाग-चट-वि० [हिं० दिमाग+चाटना] बक-बककर सिर खानेवाला। बकवादी।

दिमागदार-वि० [अ० दिमाग+फा० दार] १. अच्छी मानसिक शक्तिवाला। बहुत समझदार। २. घमंडी।

दिमागी-वि० [अ०] १. दिमाग-संबंधी। दिमाग का। २. दे० 'दिमागदार'।

दिमात*-वि० [सं० द्विमातृ] जिसकी दो माताएँ हों।
वि० [सं० द्विमात्रा] जिसमें दो मात्राएँ हों।

दिमाना*-वि० दे० 'दीवाना'।

दियरा-पुं० [हिं० दीआ+रा (प्रत्य०)] १. एक प्रकार का पकवान। २.दे० 'दीया'।

दियारा-पुं० [फा० दयार=प्रदेश] १. नदी के पास की जमीन। कछार। खादर। २. छोटा भू-भाग।

दिरद*-पुं० दे० 'द्विरद'।

दिरमान(ी)-पुं० [फा० दरमान] चिकित्सक।

दिल-पुं० [फा०] १. कलेजा। हृदय। २. मन। चित्त।
मुहा०-दिल कड़ा करना=हिम्मत या साहस करना। दिल का गवाही देना=मन का किसी काम के लिए अनुकूल या सम्मत होना। दिल के फफोले फोड़ना=भली-बुरी बातें कहकर मन का क्रोध या दुःख कम करना। दिल जमना=१. किसी काम में ध्यान या जी लगना। २. संतोष होना। जी भरना। दिल ठिकाने होना=१. मन में शांति, सन्तोष या धैर्य होना। २. चित्त स्थिर होना। दिल देना=किसी से प्रेम करना। दिल बुझना=मन में उत्साह या उमंग न रह जाना। दिल में फरक आना=पहले का-सा सद्भाव न रह जाना। मन-मोटाव होना। दिल से दूर करना=भुला देना। ध्यान छोड़ देना।
३. साहस। हिम्मत। ४.प्रवृत्ति। इच्छा।

दिल-चला-वि० दे० 'मन चला'।

दिल-चस्प-वि०[फा०] [भाव०दिलचस्पी] जिसमें दिल लगे। मनोरंजक।

दिल-जमई-स्त्री० [फा० दिल+अ० जमअई] किसी विषय में मन का सन्देह दूर हो जाना। इतमीनान। तसल्ली।

दिल-जला-वि० [फा० दिल+हिं० जलना] जिसे बहुत मानसिक कष्ट पहुँचा हो।

दिलदार-वि० [फा०] [भाव० दिलदारी] १. उदार। दाता। २. रसिक। ३. प्रेमी। ४. प्रिय।

दिलबर-वि० [फा०] प्यारा। प्रिय।

दिलहा-पुं० दे० 'दिल्ला'।

दिलाना-स० हिं० 'देना' का प्रे०।

दिलासा-पुं० [फा० दिल] आश्वासन। ढारस। तसल्ली।
यौ०-दम-दिलासा=१.तसल्ली। धैर्य। २. धोखे या चकमे की बात।

दिली-वि० [फा० दिल] १. हृदय या दिल संबंधी। हार्दिक। २. बहुत घनिष्ठ।

दिलेर-वि० [फा०] [भाव० दिलेरी] १.बहादुर। वीर। २.साहसी। हिम्मती।

दिल्लगी-स्त्री० [फा० दिल+हिं० लगना] १. दिल लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. केवल मन बहलाने या हँसने

हँसाने की बात। परिहास। ठट्ठा। मजाक। मुहा०-दिल्लगी उड़ाना=(किसी को) अमान्य या तुच्छ ठहराने के लिए (उसके सम्बन्ध में) हँसी की बातें कहना। उपहास करना।

दिल्लगी-बाज-पुं० [हि० दिल्लगी+फा० बाज] हँसी-दिल्लगी करनेवाला। ठठोल।

दिल्ला-पुं० [देश०] किवाड़ के पल्ले में के वे चौकोर टुकड़े जो शोभा के लिए लगाये जाते हैं।

दिव-पुं० [सं०] [भाव० दिवता] १. स्वर्ग। २. आकाश। ३. दिन।

दिवला*-पुं० दे० 'दीया'।

दिवस-पुं० [सं०] दिन। रोज।

दिवसपति-पुं० [सं०] सूर्य।

दिवांध-वि० [सं०] जिसे दिन में न दिखाई देता हो।

पुं० १. दिन में भी न दिखाई देने का रोग। २. उल्लू।

दिवा-पुं० [सं०] दिन। दिवस।

दिवाकर-पुं० [सं०] सूर्य।

दिवाना†-पुं० दे० 'दीवाना'।

* स० दे० 'दिलाना'।

दिवाभिसारिका-स्त्री० [सं०] दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिए संकेत-स्थल में जानेवाली नायिका।

दिवाल-वि० [हिं० देना+वाल (प्रत्य०)] जो देता हो। देनेवाला।

†स्त्री० दे० 'दीवार'।

दिवाला-पुं० [हिं०दीया+बालना] १. वह आर्थिक हीन अवस्था जिसमें ऋण चुकाने के लिए पास में कुछ भी न रह जाय। मुहा०-दिवाला निकालना या मारना=ऋण चुकाने में असमर्थता प्रकट करना। २. कोई चीज या गुण बिलकुल न रह जाना। जैसे-बुद्धि का दिवाला।

दिवालिया-वि० [हिं० दिवाला+इया (प्रत्य०)] जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ भी न रह गया हो।

दिवाली-स्त्री० दे० 'दीवाली'।

दिवैया*-वि० [हिं० देना] देनेवाला।

दिव्य-वि० [सं०] [स्त्री० दिव्या] १. स्वर्ग अथवा आकाश से संबंध रखनेवाला। २. अलौकिक। ३. खूब साफ, सुन्दर, चमकीला या बढ़िया।

पुं० [सं०] १. तीन प्रकार के नायकों में से वह जो स्वर्ग में रहनेवाला या अलौकिक हो। जैसे राम, कृष्ण आदि। २. एक प्रकार की पुरानी परीक्षा जिससे किसी मनुष्य के दोषी या निर्दोष होने का निर्णय किया जाता था। ३ शपथ। सौगंध। कसम।

दिव्यदृष्टि-स्त्री० [सं०] १. वह अलौकिक दृष्टि जिससे गुप्त पदार्थ दिखाई दें। २ ज्ञान-दृष्टि।

दिव्य पुरुष-पुं० [सं०] वह व्यक्ति जो लौकिक न हो, बल्कि जिसके स्वर्गीय होने की कल्पना की गई हो। जैसे-देवी-देवता, यक्ष, गन्धर्व आदि।

दिव्यांगना-स्त्री० [सं०] १. किसी देवता की स्त्री। २. अप्सरा।

दिव्या-स्त्री० [सं०] तीन प्रकार की नायिकाओं में से वह जो स्वर्ग में रहनेवाली या अलौकिक हो। जैसे-राधा।

दिव्यास्त्र-पुं० [सं०] देवता का दिया हुआ या मंत्र से चलनेवाला अस्त्र।

दिश-स्त्री० [सं०] दिशा। दिक्।

दिशा-स्त्री० [सं०] [वि० दिश्य] १. नियत या वर्ण्य स्थान के इधर-उधर का

शेष विस्तार। ओर। तरफ। २. क्षितिज वृत्त के चार कल्पित (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) विभागों में से किसी ओर का विस्तार। (हर दो दिशाओं के बीच के चारो कोणों की भी चार दिशाएँ तथा इनके सिवा, सिर के ऊपर की और पैर के नीचे की ये दो दिशाएँ और मानी जाती हैं।) ३. दस की संख्या।

दिशा-भ्रम-पुं० दे० 'दिग्भ्रम'।

दिशाशूल-पुं० दे० 'दिक्शूल'।

दिशि-स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिश्य-वि० [सं०] दिशा-संबंधी। वि० दे० 'निर्दिष्ट'।

दिष्ट-बधक-पुं० दे० 'दृष्ट-बंधक'।

दिष्टि*-स्त्री० दे० 'दृष्टि'।

दिसंतर*-पुं० [सं० देशांतर] पर-देस। क्रि० वि० बहुत दूर तक।

दिस*-स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिसना*-अ० दे० 'दिखना'।

दिसा-स्त्री० दे० 'दिशा'। स्त्री० [सं० दिशा=ओर] मल-त्याग।

दिसावर-पुं० [सं० देशांतर] [वि० दिसावरी] दूसरा देश। पर-देस। विदेश।

दिसि*-स्त्री० दे० 'दिशा'।

दिसिराज*-पुं० दे० 'दिक्पाल'।

दिसैया*-वि० [हिं० दिसना] देखने या दिखानेवाला।

दिस्ता-पुं० दे० 'दस्ता'।

दिहंदा-वि० [फा०] देनेवाला।

दिहाड़ा-पुं० दे० 'दिन' १.।

दीआ-पुं० दे० 'दीया'।

दीक्षक-पुं० [सं०] १.दीक्षा देनेवाला। गुरु। २. शिक्षक।

दीक्षांत-पुं०[सं०] १.वह अवभृथ यज्ञ या स्नान जो किसी यज्ञ के अन्त में उसकी त्रुटियों या दोषों की शांति के लिए हो। २. किसी महाविद्यालय की पढ़ाई का सफलतापूर्ण अन्त।

दीक्षांत भाषण-पुं० [सं०] किसी बड़े विद्वान् का वह भाषण जो किसी विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्रों के समक्ष उन्हें उपाधि या प्रमाण-पत्र आदि देने के समय होता है। (कॉन्वोकेशन एड्रेस)

दीक्षा-स्त्री० [सं०] १. यज्ञों का संकल्प-पूर्वक अनुष्ठान। यजन। २. गुरु या आचार्य का मंत्रोपदेश।

दीक्षा-गुरु-पुं० [सं०] वह गुरु जिससे किसी मन्त्र का उपदेश या दीक्षा मिली हो।

दीक्षित-वि० [सं०] १. जिसने संकल्प करके यज्ञ आरम्भ किया हो। २. जिसने गुरु से दीक्षा या मंत्र लिया हो। पुं० ब्राह्मणों की एक जाति।

दीखना-अ० [हिं० देखना] दिखाई देना।

दीर्घा-स्त्री० [सं० दीर्घिका] तालाब।

दीच्छा*-स्त्री० दे० 'दीक्षा'।

दीठ-स्त्री० [सं० दृष्टि] १. दृष्टि। नजर। निगाह। २. किसी अच्छी वस्तु पर ऐसी बुरी दृष्टि लगना जिसका बुरा प्रभाव पड़े। नजर।

मुहा०-दीठ उतारना या झाड़ना=किसी उपचार से बुरी दृष्टि का प्रभाव नष्ट करना। दीठ जलाना=बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करने के लिए राई-नोन आदि आग में डालना।

३. देख-भाल। ४. परख। पहचान। ५. कृपा-दृष्टि। ६. आशा की भावना।

दीठ-बंदी*-स्त्री० [हिं० दीठ-बंद] जादू।

दीठवंत-वि० [सं० दृष्टि+वंत] १. जिसे दिखाई दे। सुझाखा। २. ज्ञानी।

दीदा-पुं० [फा० दीदः] १. दृष्टि।

नजर। २. आँख। नेत्र।

मुहा०-दीदा लगना=किसी काम में मन लगना।

दीदार-पुं० [फा०] दर्शन। देखा-देखी।

दीदी-स्त्री० [पुं० हिं० दादा=बड़ा भाई] बड़ी बहन।

दीन-वि० [सं०] [स्त्री० दीना, भाव० दीनता] १. दरिद्र। गरीब। २. दुःखी। ३. संतप्त। ४ नम्र। विनीत।
पुं० [अ०] मत। मजहब।

दीनता-स्त्री० [सं०] १ दीन होने की क्रिया या भाव। २. गरीबी। ३.नम्रता।

दीनताई*-स्त्री०=दीनता।

दीन-दयालु-वि० [सं०] दीनों पर दया करनेवाला।

दीन-दुनिया-स्त्री० [अ० दीन+दुनिया] यह लोक और पर-लोक।

दीन-बंधु-पुं० [सं०] १. दीन-दुखियों का सहायक और मित्र। २. ईश्वर।

दीनानाथ-पुं० [सं० दीन+नाथ] १. दीनों का नाथ या रक्षक। २. ईश्वर।

दीनार-पुं० [सं०] स्वर्ण-मुद्रा। मोहर।

दीप-पुं० [सं०] दीया। चिराग।
*पुं० दे० 'द्वीप'।

दीपक-पुं० [सं०] १. दीया। चिराग। २. एक अर्थालंकार जिसमें वर्णित वस्तु का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा कई उपमान क्रियाओं का एक ही कर्त्ता होता है। ३.छः रागों में से दूसरा राग।
वि० [सं०] [स्त्री० दीपिका] १. प्रकाश या उजाला करनेवाला। २. पाचन शक्ति बढ़ानेवाला। ३. मन की उमंग बढ़ानेवाला। उत्तेजक।

दीपकर-पुं० [सं०] वह जिसका काम दीपक जलाना हो। दीया जलानेवाला।

दीप-ज्वालक-पुं० दे० 'दीपकर'।

दीपति*-स्त्री० दे० 'दीप्ति'।

दीप-दान-पुं० [सं०] १. देवता के सामने दीपक जलाना। २. मरते हुए व्यक्ति से आटे के जलते हुए दीये का दान या संकल्प कराना।

दीपन-पुं० [सं०] [वि० दीप्ति, दीप्य] १. प्रकाश करने के लिए जलाना। प्रकाशन। २. भूख तेज करना। ३. मन में आवेग उत्पन्न करना। उत्तेजन।
वि० १. पाचन-शक्ति बढ़ानेवाला। २. उत्तेजना उत्पन्न करनेवाला।

दीपना*-अ० [सं० दीपन] चमकना। स० चमकाना।

दीप-मालिका-स्त्री० [सं०] दीवाली।

दीप-शिखा-स्त्री० [सं०] दीये की लौ।

दीप-स्तंभ-पुं०[सं०] १. वह स्तंभ जिसके ऊपर या चारों ओर रखकर दीपक जलाये जाते हों। २. समुद्र में जहाजों को रात के समय रास्ता दिखाने या उन्हें चट्टानों आदि से बचाने के लिए बना हुआ उक्त प्रकार का स्तंभ। (लाइट हाउस)

दीपावलि-स्त्री० दे० 'दीवाली'।

दीपिका-स्त्री० [सं०] १. छोटा दीया। २. किसी ग्रन्थ का अर्थ बतलानेवाली पुस्तक।
वि० स्त्री० प्रकाश फैलानेवाली।

दीपित-वि० दे० 'दीप्त'।

दीप्त-वि० [सं०] १. जलता हुआ। २. चमकता हुआ। चमकीला।

दीप्ति-स्त्री० [सं०] १. प्रकाश। उजाला। २. चमक। द्युति। ३. शोभा। छवि।

दीप्तिमान्-वि० दे० 'दीप्त'।

दीबो†-पुं० [हिं० देना] देने की क्रिया या भाव।

दीमक-स्त्री० [फा०] च्यूँटी की तरह का

एक सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि में लगकर उन्हें खा जाता है। वल्मीक।

दीयट-स्त्री० [हिं० दीया] लकड़ी या धातु का वह आधार जिसपर रखकर दीया जलाते हैं।

दीया-पुं० [सं० दीपक] १. प्रकाश करने के लिए किसी आधार में रखकर जलाई जानेवाली बत्ती। दीपक। चिराग।

मुहा०-**दीया ठंढा करना या बढ़ाना**= दीया बुझाना।

२. [अल्पा० दिवली] छोटा कसोरा।

दीया-सलाई-स्त्री० [हिं०] लकड़ी की वह छोटी पतली तीली जिसका एक सिरा गंधक आदि मसाले लगे रहने के कारण रगड़ने से जल उठता है।

दीरघ*-वि० दे० 'दीर्घ'।

दीर्घ-वि० [सं०] १. विस्तृत। लम्बा। २. बड़ा। विशाल।

पुं० 'ह्रस्व' का उलटा। जैसे-'अ' का दीर्घ 'आ' या 'उ' का दीर्घ 'ऊ' है।

दीर्घ-काय-वि० [सं०] बड़े डील-डौलवाला। बहुत बड़ा।

दीर्घ-जीवी-वि० [सं० दीर्घ-जीविन्] जो बहुत दिनों तक जीता रहे।

दीर्घ-सूत्री-वि० [सं०] [भाव० दीर्घ-सूत्रता] हर काम में बहुत देर लगाने-वाला।

दीर्घायु-वि० दे० 'दीर्घ-जीवी'।

दीर्घिका-स्त्री० [सं०] छोटा तालाब।

दीर्ण-वि०[सं०] १.फटा हुआ। विदीर्ण। २. टूटा हुआ। भग्न।

दीवट-स्त्री० दे० 'दीयट'।

दीवा-पुं० दे० 'दीया'।

दीवान-पुं० [अ०] १. वह स्थान जहाँ राजा का दरबार लगता हो। राज-सभा। २. राज्य का मंत्री। वजीर। ३. किसी शायर की सब गजलों का संग्रह।

दीवान-आम-पुं० [अ०] वह दरबार जिसमें साधारणतः सब लोग राजा के सामने जा सकते हों।

दीवानखाना-पुं० [फा०] वह कमरा जिसमें बड़े आदमी बैठकर लोगों से मिलते और बातें करते हैं। बैठक।

दीवान-खास-पुं० [फा०+अ०] वह दरबार जिसमें राजा अपने मंत्रियों या मुख्य सरदारों के साथ बैठकर परामर्श करता है। खास दरबार।

दीवाना-वि० [फा०] [स्त्री० दीवानी] पागल। विक्षिप्त।

दीवानी-स्त्री० [फा०] १. दीवान का पद या कार्य। २. वह न्यायालय जिसमें सम्पत्ति या अर्थ सम्बन्धी मुकदमों का विचार होता है।

दीवार-स्त्री० [फा०] १. पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि के द्वारा खड़ा किया हुआ वह परदा जिससे कोई स्थान घेरकर कोठरी या मकान आदि बनाते हैं। भीत। २. किसी वस्तु का कुछ ऊपर उठा हुआ घेरा।

दीवारगीर-पुं० [फा०] दीया आदि रखने का दीवार में लगा आधार।

दीवाल-स्त्री० दे० 'दीवार'।

दीवाली-स्त्री० [सं० दीपावली] कार्त्तिक की अमावास्या का एक प्रसिद्ध उत्सव जिसमें रात को बहुत से दीपक जलाकर लक्ष्मी का पूजन किया जाता और प्रायः जूआ खेला जाता है।

दीसना-अ० [सं० दृश्=देखना] दिखाई देना। दृष्टिगोचर होना।

दीह*-वि० [सं० दीर्घ] लम्बा और बड़ा।

दुंद*-पुं० [सं० द्वंद्व] १. दे० 'द्वंद्व'। २. उत्पात। उपद्रव।
पुं० [सं० दुंदुभि] नगाड़ा। डंका।

दुंदभ-पुं० [सं०] नगाड़ा।
*पुं० [सं० द्वंद्व] बार बार जन्म लेने और मरने का कष्ट।

दुंदुभि-स्त्री० [सं०] नगाड़ा। धौंसा।

दुंदुह*-पुं० [सं० डुंडुभ] पानी में रहनेवाला साँप। डेड़हा।

दुंबा-पुं० [फा० दुंबालः] एक प्रकार का मेढ़ा, जिसकी दुम बहुत भारी और मोटी होती है।

दुःख-पुं० [सं०] १. मन की वह कष्ट देनेवाली अवस्था जिससे छुटकारा पाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। 'सुख' का उलटा। तकलीफ। कष्ट। क्लेश।
मुहा०-दुःख बाँटना=किसी के संकट के समय उसका साथ देना। दुःख भरना=कष्ट के दिन बिताना।
२. संकट। आपत्ति। ३. मानसिक कष्ट। खेद। रंज। ४. पीड़ा। दर्द। ५ रोग।

दुःखकर-पुं० दे० 'दुःखद'।

दुःखद(दायक)-वि० [सं०] [स्त्री० दुःखदायिका] दुःख या कष्ट देनेवाला।

दुःखदायी-वि० दे० 'दुःखद'।

दुःखवाद-पुं० [सं०] [वि० दुःखवादी] वह सिद्धांत जिसमें सारा संसार और उसकी सब बातें दुःखमय मानी जाती हैं। (पेसिमिज़्म)

दुःखांत-वि० [सं०] १. जिसका अन्त दुःखपूर्ण हो। २. जिसके अन्त का वर्णन दुःखपूर्ण हो। जैसे-दुःखान्त कहानी।
पुं० १ दुःख की समाप्ति। २. दुःख की पराकाष्ठा या हद।

दुःखित-वि० [सं०] जिसे दुःख पहुँचा हो। दुःखी।

दुःखी-वि० दे० 'दुःखित'।

दुःशील-वि० [सं०] [भाव० दुःशीलता] बुरे शील या स्वभाववाला।

दुःसह-वि० [सं०] जिसे सहन करना बहुत कठिन हो।

दुःसाध्य-वि० [सं०] १. जिसका साधन कठिन हो। २. बहुत कठिनता से होनेवाला। ३. जिसका उपाय या प्रतीकार करना कठिन हो।

दुःसाहस-पुं० [सं०] [वि० दुःसाहसी] १. व्यर्थ का, बुरा या अनुचित साहस। २. ढिठाई। धृष्टता।

दु-वि० [हिं० दो] 'दो' का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने में शब्द के पहले लगता है। जैसे-दुबिधा, दुचित्ता।
उप० दे० 'दुर्'।

दुअन-पुं० दे० 'दुवन'।

दुअन्नी-स्त्री० [हिं० दो+आना] दो आने का सिक्का।

दुआ-स्त्री० [अ०] १. ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना। २. आशीर्वाद।
मुहा०-दुआ लगना=आशीर्वाद फलदायक होना।

दुआबा-पुं० दे० 'दोआबा'।

दुआल-स्त्री० दे० 'दुवाल'।

दुआह-पुं० [हिं० दो+विवाह] पहली स्त्री मर जाने पर पुरुष का होनेवाला दूसरा विवाह।

दुइ-वि० दे० 'दो'।

दुइज*-स्त्री० दे० 'दूज'।
*पुं० [सं० द्विज] दूज का चन्द्रमा।

दुई-स्त्री० [हिं० दो] अपने को दूसरे से अलग समझना। दुजायगी।

दुऊ*-वि० दे० 'दोनों'।

दुकड़ा-पुं० [हिं० दु+कड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकड़ी] १. एक साथ या एक में लगी हुई दो वस्तुएँ। जोड़ा। २. एक पैसे का चौथाई भाग। छदाम।

दुकड़ी-स्त्री० [हिं० दो] १. दो रुपये। २. धोतियों आदि का जोड़ा। (दलाल)

दुकना*-अ० [देश०] लुकना। छिपना।

दुकान-स्त्री० [फा०] १. वह स्थान जहाँ बिक्री की चीजें रहती और बिकती हैं। माल बिकने का स्थान। हट्ट।

मुहा०-दुकान बढ़ाना=दुकान बन्द करना। दुकान लगाना=दुकान का सामान सजाकर बिक्री के लिए रखना।

२. इधर-उधर फैली हुई बहुत-सी चीजें।

दुकानदार-पुं० [फा०] [भाव० दुकानदारी] १ दुकान पर बैठकर चीजें बेचनेवाला। दुकानवाला। २. वह जिसने धन कमाने के लिए परोपकारी होने का ढोंग रच रखा हो।

दुकानदारी-स्त्री० [हिं० दुकानदार] १. दुकानदार का काम या भाव। २. चीजों का दाम बहुत बढ़ाकर कहना। ३. किसी को अपने जाल में फँसाने या ठगने के लिए तरह तरह की बातें करना।

दुकाल-पुं० दे० 'अकाल'।

दुकूल-पुं० [सं०] वस्त्र। कपड़ा।

दुकूलिनी-स्त्री० [सं०] नदी।

दुकेला-पुं० [हिं० दुका] [स्त्री० दुकेली] जिसके साथ कोई एक और भी हो।

यौ०-अकेला-दुकेला=जो अकेला हो या जिसके साथ कोई एक और साथी हो।

दुक्कड़-पुं० [हिं० दो+कूँड़] १. शहनाई के साथ बजनेवाले दो (चमड़े से मढ़े) बाजों का जोड़ा। २. एक में बँधी हुई दो बड़ी नावों का जोड़ा।

दुक्का-वि० [सं० द्विक्] [स्त्री० दुक्की] जो एक साथ दो हो।

यौ०-इक्का-दुक्का=दे० 'दुकेला' के अन्तर्गत 'अकेला-दुकेला'।

दुख-पुं० दे० 'दुःख'।

दुखड़ा-पुं० [हिं० दुःख+ड़ा (प्रत्य०)] १. किसी के दुःख या कष्ट का वर्णन।

मुहा०-दुखड़ा रोना=अपना दुःख दीनतापूर्वक किसी से कहना।

२. विपत्ति। संकट। आफत।

दुखदानि*-वि० दे० 'दुःखद'।

दुख-दुंद*-पुं० [सं० दुःखद्वंद्व] दुःख और आपत्ति अथवा उनसे होनेवाला सन्ताप।

दुखना-अ० [सं० दुःख] (शरीर के किसी अंग का) दर्द करना। पीड़ा होना।

दुखहाया*-वि० दे० 'दुःखित'।

दुखाना-स० [सं० दुःख] १. दुखी करना या दुःख देना। कष्ट पहुँचाना।

मुहा०-जी दुखाना=किसी को मानसिक कष्ट पहुँचाना।

२. किसी का मर्म-स्थान या पका घाव आदि छूना, जिससे उसे पीड़ा हो।

†अ० दे० 'दुखना'।

दुखारा(ी)-वि० दे० 'दुःखी'।

दुखित*-वि० दे० 'दुःखित'।

दुखिया-वि० दे० 'दुःखित'।

दुःखी-वि० [सं० दुःखिन्] १. जिसे दुःख या कष्ट पहुँचा हो। दुःख में पड़ा हुआ। २ जिसके मन में खेद हुआ हो। खिन्न। ३. रोगी। बीमार।

दुखौंहाँ*-वि०[हिं०दुःख+औंहाँ(प्रत्य०)] [स्त्री० दुखौंहीं] दुःख देनेवाला।

दुगदुगी-स्त्री० दे० 'धुकधुकी'।

दुगना-वि० दे० 'दूना'।

दुगुण*-वि० दे० 'दूना'।

दुग्ग*-पुं० दे० 'दुर्ग'।
दुग्ध-पुं० [सं०] दूध। पय।
दुचंद-वि० [फा० दोचंद] दूना। दुगना।
दुचित*-वि० दे० 'दुचित्ता'।
दुचितई(ताई)*-स्त्री० [हिं० दुचित्ता] १. चित्त की अस्थिरता। दुबधा। २. खटका। आशंका।
दुचित्ता-वि० [हिं० दो+चित्त] [स्त्री० दुचित्ती] [संज्ञा दुचित्तापन] १. जिसका चित्त दो बातों में लगा हो। जो दुबधा या चिन्ता में हो। २.संदेह में पड़ा हुआ।
दुज*-पुं० दे० 'द्विज'। ('दुज' के यौ० के लिए दे० 'द्विज' के यौ०)
दुजायगी-स्त्री० दे० 'दुई'।
दुटूक-वि० [हिं० दो+टूक] दो टुकड़ों या खंडों में बँटा हुआ।
दुत-अव्य० [अनु०] एक शब्द जो किसी को घृणा या उपेक्षापूर्वक दूर हटाने के लिए कहा जाता है।
दुतकारना-स० [हिं० दुत] [भाव० दुतकार] १. दुत दुत कहकर किसी को अपने पास से तिरस्कारपूर्वक हटाना। २. धिक्कारना।
दुति*-स्त्री० दे० 'द्युति'।
दुतिय*-वि० दे० 'द्वितीय'।
दुतिया-स्त्री० दे० 'द्वितीया'।
दुतिवंत*-वि० [हिं० दुति+वंत (प्रत्य०)] १. चमकीला। २. सुन्दर।
दुतीय*-वि० दे० 'द्वितीय'।
दुदलाना।-स० दे० 'दुतकारना'।
दु-दिला-वि० दे० 'दुचित्ता'।
दुद्धी-स्त्री० [हिं० दूध] खड़िया मिट्टी।
दुध-मुँहाँ-वि० [हिं० दूध+मुँह] १. जिसके दूध के दाँत न टूटे हों। २. जो अभी माता के दूध से ही पलता हो। बहुत छोटा (बच्चा)।
दुधमुख*-वि० दे० 'दुधमुँहाँ'।
दुधार-वि०स्त्री०[हिं०दूध+आर (प्रत्य०)] जो दूध देती हो। दूध देनेवाली। (गौ, भैंस आदि)
दुधारा-वि० [हिं० दो+धार] (शस्त्र) जिसमें दोनों ओर धारें हों। पुं० एक प्रकार का खाँड़ा।
दुधारी(रू)-वि० स्त्री० दे० 'दुधार'।
दुधिया-वि० पुं० दे० 'दूधिया'।
दुधैल-वि० दे० 'दुधार'।
दुनना।*-स० [?] १. कुचलना। २. नष्ट करना।
दुनरना(वना)*-अ० [हिं० दो+नवना= झुकना] लचकर दोहरा-सा हो जाना। स० लचाकर दोहरा-सा करना।
दुनाली-वि० स्त्री० [हिं० दो+नाल] दो नलोंवाली। जैसे-दुनाली बन्दूक।
दुनियाँ-स्त्री० [अ० दुनिया] १. संसार। जगत्।
मुहा०-दुनियाँ के परदे पर=सारे संसार में। दुनियाँ की हवा लगना= १. सांसारिक अनुभव या ज्ञान होना। २. सांसारिक छल-कपट या दुर्व्यसनों में लगना। दुनिया भर का=बहुत-सा। २. संसार के लोग। जनता।
दुनियाँदार-पुं० [फा० दुनियादार] [भाव० दुनियाँदारी] १.सांसारिक झगड़ों में पड़ा हुआ मनुष्य। गृहस्थ। २ युक्ति से अपना काम निकालनेवाला मनुष्य। ३. व्यवहार-कुशल।
दुनी*-स्त्री० दे० 'दुनियाँ'।
दुपटा*-पुं० दे० 'दुपट्टा'।
दुपट्टा-पुं० [हिं० दो+पाट] [अल्पा० दुपट्टी] १. ओढ़ने का कपड़ा। चादर।

मुहा०-दुपट्टा तानकर सोना=निश्चिन्त हो जाना ।

२. कन्धे पर रखने का कपड़ा ।

दुपट्टी*-स्त्री० दे० 'दुपट्टा' ।

दुपद*-वि० पुं० दे० 'द्विपद' ।

दुपहर-स्त्री० दे० 'दोपहर' ।

दुपहरिया-स्त्री० [हिं० दो+पहर] १. दोपहर । २. एक छोटा फूलदार पौधा ।

दुपहरी-स्त्री० दे० 'दोपहर' ।

दु-फसली-वि० [हिं० दो+अ० फस्ल] रबी और खरीफ दोनों फसलों में होने-वाला (पदार्थ) ।

स्त्री० दुबधा की बात ।

दुबधा-स्त्री० [सं० द्विविधा] १. उपस्थित दो बातों में से कोई बात स्थिर न कर सकने की क्रिया या भाव । मन का अनिश्चय या अस्थिरता । २. संशय । सन्देह । ३. असमंजस । आगा-पीछा । ४. आशंका । खटका ।

दुबरा†-वि० दे० 'दुबला' ।

दुबला-वि० [सं० दुर्बल] [स्त्री० दुबली] [भाव० दुबलापन] १. हलके और पतले बदनवाला । कृश । २. अशक्त । निर्बल ।

दुबारा-क्रि० वि० दे० 'दोबारा' ।

दुबिधा-स्त्री० दे० 'दुबधा' ।

दुभाषिया-पुं० [सं० द्विभाषी] दो भाषाएँ जाननेवाला वह मनुष्य जो उन भाषाओं में बात-चीत करनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे की बात समझाता है ।

दुमंजिला-वि० [फा०] [स्त्री० दुमंजिली] दो मरातिब या दो खंड का । (मकान)

दुम-स्त्री० [फा०] १. पूँछ । पुच्छ ।

मुहा०-दुम दबाकर भागना=डरकर चुपचाप भागना । दुम हिलाना=दीनतापूर्वक प्रसन्नता या अधीनता प्रकट करना ।

२. पूँछ की तरह पीछे लगी हुई वस्तु या व्यक्ति । ३. किसी काम का अन्तिम और सूक्ष्म अंश ।

दुमची-स्त्री० [फा०] घोड़े के साज में का वह दोहरा तसमा जो उसकी पूँछ या दुम के नीचे दबा रहता है ।

दुमदार-वि०[फा०] १.दुम या पूँछवाला । २. जिसके पीछे पूँछ की-सी कोई चीज लगी हो । जैसे-दुमदार सितारा ।

दुमन(ा)-वि० दे० 'दुचित्ता' ।

दुमाता-वि० [सं० दुर्मातृ] १. बुरी या दुष्ट माता । २. सौतेली माँ । विमाता ।

दुमाहा-वि० [हिं० दो+माह] हर दो महीने में या पर होनेवाला ।

दुमुँहाँ-वि० दे० 'दोमुँहाँ' ।

दुरंगा-वि० [हिं० दो+रंग] [स्त्री० दुरंगी] १. जिसमें दो रंग हों । २. दो तरह का । ३. दोहरी चाल चलनेवाला ।

दुरंगी-स्त्री० [हिं० दुरंगा] कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में हो जाना । दोनों तरफ रहना या चलना ।

दुरंत-वि० [सं०] १. बहुत भारी । २. दुस्तर । कठिन । ३. घोर । भीषण । ४. जिसका अंत या परिणाम बुरा हो । ५. दुष्ट । पाजी ।

दुरंध्र*-वि० [सं० द्विरंध्र] १. दो छेदों-वाला । २. आर-पार छेदा हुआ ।

दुर्-उप०[सं०] दूषण या निषेध का सूचक एक उपसर्ग । जैसे-दुर्दशा, दुराग्रह ।

दुर-अव्य० [हिं० दूर] 'दूर हो' का संक्षिप्त रूप । (तिरस्कार-सूचक)

मुहा०-दुर दुर करना=तिरस्कारपूर्वक कुत्ते की तरह हटाना या भगाना ।

पुं० [फा०] १. नथ या नाक में पहना जानेवाला मोती का लटकन। लोलक। २. कान में पहनने की छोटी बाली।

दुरजन*-पुं० दे० 'दुर्जन'।

दुरथल*-पुं० [सं० दु+स्थल] बुरी जगह।

दुरद*-पुं० दे० 'द्विरद'।

दुरदाम*-वि० दे० 'दुःसाध्य'।

दुरदाल*- पुं० [सं० द्विरद] हाथी।

दुरदुराना-स० [हिं० दुर दुर] तिरस्कार-पूर्वक 'दूर-दूर' कहकर हटाना।

दुरदृष्ट-पुं० [सं०] १. दुर्भाग्य। अभाग्य। २. अभागा। ३. पाप। दुष्कर्म।

दुरना*-अ० [हिं० दूर] १. सामने से दूर होना। २. छिपना।

दुरपदी*-स्त्री० दे० 'द्रौपदी'।

दुरभिसंधि-स्त्री० [सं०] दुष्ट अभिप्राय से गुट बांधकर की हुई सलाह।

दुरभेव*-पुं० [सं० दुर्भाव] १. बुरा भाव। २. मन-मोटाव। मनोमालिन्य।

दुरमुस-पुं० [सं० दुर (उप०)+मुस= कूटना] कंकड़ या मिट्टी पीटकर सतह बनाने का एक उपकरण।

दुरलभ*-वि० दे० 'दुर्लभ'।

दुरवस्था-स्त्री० [सं०] १. बुरी दशा। बुरा हाल। २. दुःख, कष्ट आदि की दशा।

दुराग्रह-पुं० [सं०] [वि० दुराग्रही] १. किसी व्यर्थ की या अनुचित बात के लिए अड़ना। अनुचित हठ। २. अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उसपर अड़े रहना।

दुराचरण-पुं० दे० 'दुराचार'।

दुराचार-पुं० [सं०] [वि० दुराचारी] दुष्ट आचरण। बुरा चाल-चलन।

दुराज*-पुं० [सं० दुर्+राज्य] खराब राज्य या शासन।

दुराजी-वि० [सं० द्विराज्य] दो राजाओं का। जिसमें दो राजा हों। (देश)

पुं० दे० 'दुराज'।

दुरात्मा-वि० [सं० दुरात्मन्] दुष्ट और नीच प्रकृति का। नीचाशय।

दुरादुरी-स्त्री० [हिं० दुरना=छिपना] छिपाव। गोपन।

दुराधर्ष-वि० [सं०] १. जिसका दमन करना कठिन हो। २. प्रचंड। उग्र।

दुराना-अ० [हिं० दूर] १. दूर होना। टलना। २. छिपना।

स० १. दूर करना। हटाना। २. छोड़ना। त्यागना। ३ छिपाना।

दुराव-पुं० [हिं० दुराना] किसी से कोई बात गुप्त रखने या छिपाने का भाव।

दुराशय-पुं० [सं०] दुष्ट आशय या उद्देश्य।

वि० बुरे आशय या उद्देश्यवाला। खोटा। नीच।

दुराशा-स्त्री० [सं०] वह आशा जो पूरी न हो सके। व्यर्थ की आशा।

दुरित-पुं० [सं०] पाप। पातक।

वि० [स्त्री० दुरिता] पापी। पातकी।

दुरियाना-स० [हिं० दूर] दूर करना।

दुरुपयोग-पुं० [सं०] किसी चीज का अनुचित या बुरे ढंग से किया जानेवाला उपयोग। वह उपयोग जो ठीक या अच्छा न हो। (एब्यूज)

दुरुस्त-वि० [फा०] [भाव० दुरुस्ती] १. जो अच्छी या ठीक दशा में हो। जो टूटा-फूटा या खराब न हो। ठीक। २. जिसमें दोष या त्रुटि न हो। ३. उचित।

दुरूह-वि० [सं०] [भाव दुरूहता] जल्दी समझ में न आनेवाला। कठिन।

दुर्गंध-स्त्री० [सं०] बुरी गंध या महक। बदबू।

दुर्ग-वि० [सं०] दे० 'दुर्गम'।
पुं० विशेष प्रकार का वह बड़ा और दृढ़ भवन जिसमें राजा और सिपाही आदि रहते हैं। गढ़। कोट। किला।
दुर्गत-स्त्री० दे० 'दुर्गति'।
दुर्गति-स्त्री० [सं०] बुरी गति। दुर्दशा।
दुर्गपाल-पुं० [सं०] दुर्ग या गढ़ का रक्षक। किलेदार।
दुर्गम-वि० [सं०] [भाव० दुर्गमता] १. (स्थान) जहाँ पहुँचना कठिन हो। औघट। २. जिसे जानना या समझना कठिन हो। दुर्ज्ञेय। ३. कठिन। विकट।
दुर्गा-स्त्री० [सं०] १. देवी का एक रूप। (यह आदि शक्ति मानी जाती है।) २.एक देवी जिसका अनेक असुरों को मारना प्रसिद्ध है। (काली, भवानी, चंडी आदि इसी के रूप हैं।) ३.नौ वर्ष की कन्या।
दुर्गुण-पुं० [सं०] बुरा गुण। दोष। ऐब।
दुर्गोत्सव-पुं० [सं०] नवरात्र में होनेवाला दुर्गा-पूजा का उत्सव।
दुर्घट-वि० [सं०] जिसका होना कठिन हो।
दुर्घटना-स्त्री० [सं०] ऐसी आकस्मिक बात जिसमें कष्ट या शोक हो। अशुभ और बुरी घटना। वारदात। (एक्सिडेंट)
दुर्घात-पुं० [सं०] १. बुरी तरह से किया जानेवाला घात या प्रहार। २. बुरी तरह से किया जानेवाला छल। धोखेबाजी।
दुर्जन-पुं० [सं०] [भाव० दुर्जनता] दुष्ट या खोटा आदमी। खल।
दुर्जय-वि० [सं०] जो जल्दी जीता न जाय।
दुर्जेय-वि० दे० 'दुर्जय'।
दुर्ज्ञेय-वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।
दुर्दम-वि० दे० 'दुर्दमनीय'।
दुर्दमनीय-वि० [सं०] जिसका दमन करना या जिसे दबाना बहुत कठिन हो।
दुर्दम्य-वि० दे० 'दुर्दमनीय'।
दुर्दर*-वि० दे० 'दुर्द्धर'।
दुर्दशा-स्त्री० [सं०] बुरी दशा या अवस्था। दुर्गत।
दुर्दांत-वि० [सं०] जिसे दबाना बहुत कठिन हो। दुर्दमनीय।
दुर्दिन-पुं० [सं०] १. बुरे दिन। २. ऐसा दिन जिसमें बादल छाये हों और पानी बरसता हो। मेघाच्छन्न दिन। ३. दुर्दशा, दुःख और कष्ट के दिन।
दुर्दैव-पुं० [सं०] दुर्भाग्य।
दुर्द्धर-वि० [सं०] १. जिसे पकड़ना कठिन हो। २. प्रबल। प्रचंड।
दुर्नाम-पुं० [सं० दुर्नामन्] १. बदनामी। कलंक। २. गाली।
दुर्निवार-वि० दे० 'दुर्निवार्य्य'।
दुर्निवार्य्य-वि० [सं०] १. जो जल्दी रोका या हटाया न जा सके। २. जिसका होना प्रायः निश्चित हो।
दुर्नीति-स्त्री० [सं०] १. बुरी नीति। २. अन्याय। ३. बुरा आचरण।
दुर्बल-वि० [सं०] [भाव० दुर्बलता] १. जिसमें बल न हो। कमजोर। २. दुबला।
दुर्बलता-स्त्री० [सं०] १. बल न होना। कमजोरी। २. कृशता। दुबलापन। ३. कोई ऐसा दोष जो किसी व्यक्ति में विशेष रूप से और प्रायः स्वाभाविक हो।
दुर्बोध-वि० [सं०] जो जल्दी समझ में न आवे। कठिन।
दुर्भाग्य-पुं० [सं०] मन्द या बुरा भाग्य। खोटी किस्मत।
दुर्भाव-पुं० [सं०] १. बुरा भाव। २. भीतरी वैर या द्वेष।
दुर्भावना-स्त्री० [सं०] १. बुरी भावना।

२. खटका । आशंका ।

दुर्भाषा-स्त्री० [सं०] १. बुरी बातें । २. गाली-गलौज । दुर्वाच्य ।

दुर्भिक्ष-पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें अन्न बहुत कठिनता से मिले । अकाल ।

दुर्भेद(द्य)-वि० [सं०] १. जो जल्दी भेदा न जा सके । २. जिसे पार करना बहुत कठिन हो ।

दुर्मति-स्त्री० [सं०] बुरी बुद्धि ।
वि० १. जिसकी समझ बहुत खराब हो । दुष्ट बुद्धिवाला । २. खल । दुष्ट ।

दुर्मद-वि०[सं०] १. घमंडी । २. मद-मत्त ।

दुर्रा-पुं० [फा० दुर्रः] कोड़ा । चाबुक ।

दुर्लंघ्य-वि० [सं०] जिसे जल्दी या सहज में लाँघ न सकें ।

दुर्लक्ष्य-पुं०[सं०] १. वह जो कठिनता से देखा जा सके । २.बुरा लक्ष्य या उद्देश्य ।

दुर्लभ-वि० [सं०] [भाव० दुर्लभता] १.जिसे पाना सहज न हो । जो जल्दी न मिले । दुष्प्राप्य । २. अनोखा । बहुत विलक्षण और बढ़िया ।

दुर्ललित-वि० [सं०] १ जिसका रंग-ढंग अच्छा न हो । २. बुरा । खराब ।

दुर्लेख्य-पुं० [सं०] वह लेख या विलेख जो विधिक व्यवहार में नियम-विरुद्ध या अप्रामाणिक माना जाय । (इनवैलिड डीड)

दुर्वचन-पुं० [सं०] गाली ।

दुर्विनीत-वि० [सं०] जो विनीत या नम्र न हो । अशिष्ट । अक्खड़ ।

दुर्विपाक-पुं०[सं०] १.अशुभ और दुःखद घटना । दुर्घटना । (ट्रेजेडी) २. बुरा परिणाम या फल ।

दुर्वृत्त-वि० [सं०] [भाव० दुर्वृत्ति] दुश्चरित्र । दुराचारी ।

दुर्व्यवस्था-स्त्री० [सं०] कुप्रबंध । बुरी व्यवस्था ।

दुर्व्यवहार-पुं० [सं०] बुरा या अनुचित व्यवहार । बुरा बर्त्ताव ।

दुर्व्यसन-पुं० [सं०] [वि० दुर्व्यसनी] किसी बुरी और हानिकारक बात की आदत । बुरा व्यसन । लत ।

दुलकना-स० दे० 'दुलखना' ।

दुलकी-स्त्री० [हिं० दलकना] घोड़े की एक चाल जिसमें वह हर पैर अलग अलग उठाकर उछलता हुआ दौड़ता है ।

दुलखना-स० [हिं० दो+लखना] कोई बात दो बारा कहना या बतलाना ।
अ० कहकर मुकरना ।

दुलड़ी-स्त्री० [हिं० दो+लड़] दो लड़ों की माला या हार ।

दुलत्ती-स्त्री० [हिं० दो+लात] घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैर उठाकर किसी को मारना । पुश्तक ।

दुलदुल-पुं० [अ०] वह खच्चरी जो असकंदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को भेंट की थी । (लोग इसे भूल से घोड़ा समझते और मुहर्रम में इसका जलूस निकालते हैं ।)

दुलना*-अ० दे० 'डुलना' ।

दुलरा*-वि० दे० 'दुलारा' ।

दुलराना-अ० [हिं० दुलार] १. बच्चों का दुलार या लाड़ करना । २ दुलारे बच्चों का-सा व्यवहार या आचरण करना ।
स० बच्चों से दुलार या लाड़ करना ।

दुलहन-स्त्री० [हिं० दुलहा] नई ब्याही हुई स्त्री । नव-वधू ।

दुलहा-पुं० [सं० दुर्लभ] १. वह जिसका ब्याह तुरन्त होने को हो या हुआ हो । वर । २. पति । स्वामी ।

दुलही-स्त्री० दे० 'दुलहन' ।

दुलहेटा-पुं० [हिं० दुलारा+बेटा] १. लाड़ला या दुलारा लड़का। २. दुलहा।

दुलाई-स्त्री० [सं० तूल] ओढ़ने की रूईदार चादर। हलकी रजाई।

दुलाना*-स० दे० 'डुलाना'।

दुलार-पुं० [हिं० लाड़] १ बच्चों को प्रसन्न करने की प्रेमपूर्ण चेष्टा। लाड़।

दुलारा-वि० [हिं० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार हो। लाडला।

दुलारी-स्त्री० [हिं० दुलार] एक प्रकार की माता या चेचक (रोग)।

दुलीचा(लैचा)*-पुं० दे० 'गलीचा'।

दुलोही-स्त्री० [हिं० दो+लोहा] एक प्रकार की तलवार।

दुल्लभ*-वि० दे० 'दुर्लभ'।

दुव-वि० [सं० द्वि] दो।

दुवन*-पुं० [सं० दुर्मनस्] १. दुष्ट। दुर्जन। २. शत्रु। ३. राक्षस।

दुवाज-पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादस*-वि० दे० 'द्वादश'।

दुवादसबानी*-वि० [सं० द्वादश=सूर्य+वर्ण] बारह बानी का। खरा। (विशेषतः स्वर्ण या सोना)

दुवार†-पुं० दे० 'द्वार'।

दुवाल-स्त्री० [फा०] रिकाब में का चमड़ा या तस्मा।

दुवाली-स्त्री० [देश०] वह घोंटा जिससे घोंटकर कपड़ों पर चमक लाते हैं।
स्त्री० [फा० दुवाल] कमर में तलवार आदि लटकाने का चमड़े का परतला।

दुविधा-स्त्री० दे० 'दुबधा'।

दुवो*-वि० [हिं० दुव=दो] दोनों।

दुशवार-वि० [फा०] कठिन। दुरूह।

दुशाला-पुं० [सं० द्विशाट] एक प्रकार की ऊनी (प्रायः दोहरी) चादर जिसके किनारों पर बेल-बूटे बने रहते हैं।

दुश्चरित्र-वि० [सं०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे या निन्दनीय चरित्रवाला। बद-चलन।

दुश्चिंता-स्त्री०[सं०] बुरी या विकट चिंता।

दुष्प्रयोग-पुं० दे० 'दुरुपयोग'।

दुष्प्रवृत्ति-स्त्री०[सं०]बुरी या दूषित प्रवृत्ति। वि० दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।

दुश्मन-पुं० [फा०] शत्रु। वैरी।

दुश्मनी-स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुता।

दुष्कर-वि० [सं०] जिसे करना कठिन हो। दुःसाध्य।

दुष्कर्म-पुं० [सं०] बुरा या अनुचित काम।

दुष्कीर्त्ति-स्त्री०[सं०] बदनामी। अपयश।

दुष्ट-वि० [सं०] [स्त्री० दुष्टा] [भाव० दुष्टता] १. जिसमें दोष हो। दूषित। दोष-ग्रस्त। २. बुरे स्वभाववाला। दुर्जन।

दुष्टात्मा-वि० [सं०] जिसका अन्तःकरण बुरा हो। दुराशय।

दुष्प्राप्य-वि० [सं०] जो सहज में न मिल सके। कठिनता से मिलनेवाला।

दुसराना*-स० दे० 'दोहराना'।

दुसरिहा*-वि० [हिं० दूसरा] १. साथी। संगी। २. प्रतिद्वन्द्वी।

दुसह*-वि० दे० 'दुःसह'।

दुसार(ल)*-पुं० [हिं० दो+सालना] आर-पार किया हुआ छेद।
क्रि० वि० इस पार से उस पार तक।

दुसूती-स्त्री० [हिं० दो+सूत] दोहरे सूतों की मोटी चादर।

दुसेजा-पुं० [हिं० दो+सेज] पलंग।

दुस्तर-वि० [सं०] [भाव० दुस्तरता] १. जिसे पार करना कठिन हो। २. विकट। कठिन।

दुस्सह-वि० दे० 'दुःसह'।

दुहता*-पुं० दे० 'दोहता'।

दुहत्थड़-क्रि० वि० [हिं० दो+हाथ] दोनों हाथों से (मारना)।
पुं० दोनों हाथों से होनेवाला प्रहार।
दुहना-स० [सं० दोहन] १. गौ, भैंस आदि के स्तन से दूध निकालना। ('दूध' और 'दूहा जानेवाला पशु' दोनों के लिए) २. सत्त या सार खींचना। ३. खूब धन वसूल करना।
दुहनी-स्त्री० दे० 'दोहनी'।
दुहरा-वि० दे० 'दोहरा'।
दुहाई-स्त्री० [सं० द्वि+आह्वान] १. उच्च स्वर से या चिल्लाकर सबको दी जानेवाली सूचना। मुनादी। घोषणा। २. अपनी रक्षा के लिए किसी को चिल्लाकर बुलाना।
मुहा०-दुहाई देना=अपने बचाव के लिए किसी को पुकारना।
३. शपथ। कसम। सौगन्ध।
स्त्री० [हिं० दुहना] गाय, भैंस आदि दुहने का काम भाव या मजदूरी।
दुहाग-पुं० [सं० दुर्भाग्य] [वि० दुहागी] १. दुर्भाग्य। २ वैधव्य। रँडापा।
दुहागिन-स्त्री० [हिं० दुहाग] विधवा। 'सुहागिन' का उलटा।
दुहागिल-वि० [हिं० दुहाना] १. अभागा। २.अनाथ। ३.सुनसान। सूना। निर्जन।
दुहाना-स० हिं० 'दुहना' का प्रे०।
दुहावनी-स्त्री० [हिं० दुहना] दूध दुहने की मजदूरी। दुहाई।
दुहिता-स्त्री० [सं० दुहितृ] बेटी। पुत्री।
दुहुँघा*-क्रि० वि० [?] दोनों ओर।
दुहूँ-वि० [हिं० दो] दोनों।
दुहेला-पुं० [सं० दुर्हेल] दुःख। विपत्ति।
दुहेला-वि० [सं० दुर्हेल] [स्त्री० दुहेली] १. दुःखदायी। २. दुःसाध्य। कठिन। ३. दुःखी।
पुं० विकट या दुःखदायक कार्य।
दुहोतरा*-वि० [सं० दु या द्वि+उत्तर] दो अधिक। दो ऊपर या और।
दूँद*-पुं० दे० 'दुंद'।
दूँदना*-अ० [हिं० दुंद] लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव करना।
दूँदि*-स्त्री० दे० 'दुंद'।
दूइज-¹-स्त्री० दे० 'दूज'।
दूक*-वि० [सं० द्वैक] दो-एक। कुछ।
दूकान-पुं० दे० 'दुकान'।
दूखना*-स० [सं० दूषण+ना (प्रत्य०)] दोष या ऐब लगाना।
अ० दे० 'दुखना'।
दूज-स्त्री० [सं० द्वितीया] चान्द्र मास के किसी पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया।
मुहा०-दूज का चाँद होना=बहुत दिनों पर मिलना या दिखाई देना।
दूजा*-वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।
दूत-पुं० [सं०] [स्त्री० दूती] [भाव० दूतता] १. वह जो कोई विशेष कार्य करने या सँदेसा पहुँचाने के लिए कहीं भेजा जाय। बसीठ। २. प्रेमी और प्रेमिका का सँदेसा एक दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य।
दूत-कर्म-पुं [सं०] दूत का काम।
दूतता-स्त्री० [सं०] दूत का काम या भाव।
दूतपन-पुं० दे० 'दूतता'।
दूत-मंडल-पुं० [सं०] किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों का समूह या दल।
दूतर*-वि० दे० 'दुस्तर'।
दूतायन-पुं० दे० 'दूतावास'।
दूतावास-पुं० [सं०] किसी नगर का वह स्थान जहाँ दूसरे राष्ट्र या राज्य का दूत और उसके साथी, कर्मचारी आदि

रहते हों। (ऋोगेशन)

दूतिका-स्त्री० दे० 'दूती'।

दूती-स्त्री० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका का समाचार एक दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री। कुटनी।

दूध-पुं०[सं० दुग्ध] १. वह प्रसिद्ध सफेद तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों से निकलता है और जो उनके छोटे बच्चे पीते हैं। पय। दुग्ध।

मुहा०-दूध का दूध और पानी का पानी होना=ऐसा न्याय होना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो। दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक देना=किसी को तुच्छ या पराया समझकर बिलकुल अलग कर देना। दूध के दाँत न टूटना=बहुत छोटा या बच्चा होना। सयाना न होना। दूधों नहाओ, पूतों फलो=धन और सन्तान की वृद्धि हो। (आशीर्वाद) दूध फटना या बिगड़ना=खटाई आदि पड़ने या किसी और प्राकृतिक कारण से दूध का जल अलग और सार भाग अलग हो जाना। (छाती में) दूध भर आना=बच्चे के प्रेम से माता के स्तनों में दूध उतर आना।

२. अनाज के हरे बीजों या पौधों की पत्तियों और डंठलों का वह सफेद रस जो उन्हें तोड़ने पर निकलता है।

दूध-पिलाई-स्त्री० [हिं० दूध+पिलाना] १. दूध पिलानेवाली दाई। २ दूध पिलाने के बदले में मिलनेवाला धन।

दूध-पूत-पुं० [हिं० दूध+पूत] धन और सन्तति।

दूध-भाई-पुं० [हिं० दूध+भाई] [स्त्री० दूध बहन] पारस्परिक संबंध के विचार से ऐसे बालकों में से आपस में हर एक, जो एक-ही स्त्री का दूध पीकर पले हों, पर अलग अलग माता-पिता से उत्पन्न हों।

दूध-मुँहाँ-वि० दे० 'दुध-मुँहाँ'।

दूधमुख-वि० दे० 'दुधमुँहाँ'।

दूधिया-वि० [हिं० दूध+इया (प्रत्य०)] १. जिसमें दूध मिला हो या जो दूध से बना हो। २. जिसमें दूध होता हो। ३. दूध के रंग का। सफेद।

पुं० १. एक प्रकार का सफेद रत्न। २. एक प्रकार का सफेद, मुलायम और चिकना पत्थर जिसकी कटोरियाँ बनती है। ३. दुद्धी नाम की घास। ४. खड़िया मिट्टी।

दून-स्त्री० [हिं० दूना] १. दूना होने का भाव।

मुहा०-दून की लेना या हाँकना=बढ़-बढ़कर बातें करना। शेखी हाँकना।

२. संगीत में गाने की गति का अपेक्षाकृत कुछ बढ़ या तेज हो जाना।

पुं० [देश०] तराई। घाटी।

दूनर*-वि० [सं० द्विनम्र] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

दूना-वि० [सं० द्विगुण] जितना हो, उतना ही और। दुगुना।

दूनौं-*-वि० दे० 'दोनो'।

दूब-स्त्री० [सं० दूर्वा] एक बहुत प्रसिद्ध घास, जो हरी और सफेद दो प्रकार की होती है।

दू-बदू-क्रि० वि० [हिं० दो या फा० रूबरू] आमने-सामने। मुकाबले में।

दूबरा*-वि० दे० 'दुबला'।

दूबा*-स्त्री० दे० 'दूब'।

दूभर-वि० [सं० दुर्भर] कठिनता से सहा जानेवाला।

दूमना*-अ० [सं० द्रुम] हिलना।

दूर-क्रि० वि० [सं०] [भाव० दूरता, दूरी] विस्तार, काल, संबंध आदि के विचार से बहुत अन्तर पर। 'पास' या 'निकट' का उलटा।
मुहा०-दूर करना=१. अलग करना। हटाना। २ न रहने देना। नष्ट करना।
यौ०-दूर की बात=१.बहुत बारीक और समझदारी की बात। २. कठिन बात।
दूर भागना या रहना = बहुत बचकर और अलग रहना।
वि० जो अन्तर या फासले पर हो।

दूरता-स्त्री० [सं०] दूर होने का भाव। अंतर। दूरी। फासला।

दूरदर्शक-वि० [सं०] दूर तक की बात देखने या समझनेवाला।

दूरदर्शक यंत्र-पुं० [सं०] दूरबीन।

दूरदर्शिता-स्त्री० [सं०] दूर की बात सोचने या समझने का गुण।

दूरदर्शी-वि० [सं०] भविष्य में बहुत दूर तक की बातें देखने या सोचनेवाला। अग्रशोची।

दूरबीन-स्त्री० [फा०] वह प्रसिद्ध यंत्र जिससे दूर की चीजें पास, साफ और बड़ी दिखाई देती हैं।

दूरवर्त्ती-वि० [सं०] दूर का। जो दूर हो।

दूरस्थ-वि० [सं०] दूर का।

दूरागत-वि० [सं०] दूर से आया हुआ।

दूरी-स्त्री० [सं० दूर+ई (प्रत्य०)] दो वस्तुओं के बीच का स्थान। अन्तर। फासला।

दूर्वा-स्त्री० [सं०] दूब। (घास)

दूलन*-पुं० दे० 'दोलन'।

दूलह-पुं० दे० 'दुलहा'।

दूलित*-वि० दे० 'दोलित'।

दूल्हा-पुं० दे० 'दुलहा'।

दूषक-वि० [सं०] १. दूसरों पर दोष लगाने और उनकी निन्दा करनेवाला। २. दोष उत्पन्न करनेवाला (पदार्थ)।

दूषण-पुं० [सं०] [वि० दूषणीय] १. अवगुण। दोष। ऐब। बुराई। २. दोष या ऐब लगाना।

दूषना*-स० [सं० दूषण] दोष लगाना।

दूषित-वि० [सं०] १. जिसमें दोष हो। दोषयुक्त। २. बुरा। खराब।

दूष्य-वि० [सं०] १.जिसमे दोष लगाया या निकाला जा सके। २. निन्दनीय।

दूसना-स० दे० 'दूषना'।

दूसर*-वि० दे० 'दूसरा'।

दूसरा-वि० [हिं० दो] १. क्रम में पहले के बाद पड़नेवाला। द्वितीय। २. जिसका प्रस्तुत विषय या बात से कोई संबंध न हो। अन्य। अपर।

दूहना-स० दे० 'दुहना'।

दूहा*-पुं० दे० 'दोहा'।

दृक्पथ-पुं० [सं०] दृष्टि-पथ।

दृक्पात-पुं० [सं०] दृष्टि-पात।

दृगंचल-पुं० [सं०] पलक।

दृग*-पुं० [सं० दृक्] १. आँख। २. दृष्टि। ३. दो की संख्या।

दृग-मिचाव-पुं० दे० 'आँख-मिचौली'।

दृग्गोचर-वि० [सं०] जो आँख से दिखाई दे।

दृढ़-वि० [सं०] [भाव० दृढ़ता] १. अच्छी तरह बँधा या मिला हुआ। प्रगाढ़। २. पुष्ट। मजबूत। ३. कड़ा। ठोस। ४. बलवान। ५. हृष्ट-पुष्ट। ६. जो जल्दी खराब न हो। स्थायी। ७. निश्चित। ध्रुव। पक्का।

दृढ़-चेता-वि० [सं० दृढ़-चेतस्] पक्के

विचारोंवाला।

दृढ़-प्रतिज्ञ-वि० [सं०] अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।

दृढ़ाई*-स्त्री०=दृढ़ता।

दृढ़ाना*-स० अ० [सं० दृढ़] दृढ़ या पक्का करना या होना।

दृढ़ायन-पुं० [सं०] १ दृढ़ या पक्का करना। २. किसी की कही हुई बात, किये हुए काम अथवा किसी की नियुक्ति आदि को पक्का या ठीक ठहराना। (कनफर्मेशन)

दृप्त-वि० [सं०] १. उग्र। प्रचंड। २. प्रज्वलित। ३. तेज-युक्त। ४. अभिमानी।

दृप्ति-स्त्री० [सं०] १. चमक। आभा। २. तेजस्विता। ३. प्रकाश। रोशनी। ४. अभिमान। गर्व। ५. उग्रता। प्रचंडता।

दृश्य-वि० [सं०] १. जो देखने में आ सके। जिसे देख सकें। २. देखने योग्य। दर्शनीय। ३. सुन्दर।

पुं० १. वह पदार्थ, घटना या स्थल आदि जो आँखों के सामने हो। दिखाई देने-वाली चीजें या घटना। २. वह काव्य जिसका अभिनय हो। नाटक।

दृश्यालेख्य-पुं० [सं०] घटना आदि के स्थान का रेखा-चित्र। (साइट-प्लान)

दृष्ट-वि० [सं०] १. देखा हुआ। २. जाना हुआ। ज्ञात। ३. गोचर। प्रत्यक्ष।

दृष्ट-कूट-पुं० [सं०] १. पहेली। २. वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाचकार्थ से नहीं, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से निकलता हो।

दृष्टमान*-वि० [सं० दृश्यमान] प्रकट।

दृष्ट-बंधक-पुं० [सं० दृष्टि+बंधक] रेहन का वह प्रकार जिसमें महाजन को रेहन रखी हुई चीज के भोग का अधिकार न हो और चीज पर रुपये देनेवाले का कोई कब्जा न हो। उसे केवल ब्याज मिलता रहे।

दृष्टवाद-पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धान्त जो केवल प्रत्यक्ष को मानता है।

दृष्टव्य-वि० [सं०] देखने योग्य।

दृष्टांत-पुं० [सं०] १. दे० 'उदाहरण'। २. एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उसके साधारण धर्म्म का वर्णन करके उसकी तुलना में उपमान और उसके धर्म का वर्णन होता है।

दृष्टार्थ-पुं० [सं०] वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो या समझ में आवे।

दृष्टि-स्त्री० [सं०] १. वह वृत्ति या शक्ति जिससे मनुष्य या जीव सब चीजें देखते हैं। २. आँख की पुतली की सीध में किसी वस्तु के होने की स्थिति। नजर। निगाह। ३. आँख का वह व्यापार, जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का ज्ञान होता है।

मुहा०-(किसी से) **दृष्टि जुड़ना**=देखा-देखी या सामना होना। (किसी से) **दृष्टि जोड़ना**=आँखें मिलाना। सामना करना। **दृष्टि मिलाना**=दे० 'दृष्टि जोड़ना'। **दृष्टि रखना**=ध्यान या देख-रेख रखना।

४. परख। पहचान। ५. कृपा-दृष्टि। ६. आशा की दृष्टि। आशा। उम्मीद।

दृष्टि-कूट-पुं० दे० 'दृष्ट-कूट'।

दृष्टि-कोण-पुं० [सं०] वह अंग या कोण जिससे कोई चीज देखी या कोई बात सोची-समझी जाय।

दृष्टि-क्रम-पुं० [सं०] चित्रों आदि में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथा-क्रम प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर और ठीक मान में दिखाई दे। मुनासिबत।

(पर्सपेक्टिव)

दृष्टि-गत-वि०[सं०]जो दिखाई पड़ता हो।

दृष्टि-गोचर-वि०[सं०] जो देखने में आवे।

दृष्टि-परंपरा-स्त्री० दे० 'दृष्टि-क्रम'।

दृष्टि-पात-पुं० [सं०] देखना।

दृष्टिबंद(ध)-पुं०[सं०] इन्द्रजाल। जादू।

दृष्टिवंत-वि० [सं० दृष्टि+वंत (प्रत्य०)] १. जिसे दृष्टि हो। २. ज्ञानी। ज्ञानवान्।

देख-स्त्री० [हिं० देखना] देखने की क्रिया या भाव। (यौ० में; जैसे-देख-रेख।)

देखन*-स्त्री० दे० 'देख'।

देखनहारा*-पुं० [हिं० देखना] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

देखना-स० [सं० दृश्] १. आँखों से किसी व्यक्ति या पदार्थ के रूप-रंग और आकार-प्रकार आदि का ज्ञान प्राप्त करना। अवलोकन करना।

मुहा०-देखते-देखते=तुरन्त। चटपट। देखते रह जाना=चकित होकर चुपचाप रह जाना। देखना-सुनना=जानकारी प्राप्त करना। पता लगाना। देखा जायगा=जो कुछ होगा, वह समझ लिया जायगा। (उपेक्षा)

२ जांच या निरीक्षण करना। ३. ढूँढ़ना। पता लगाना। ४. परीक्षा करना। आजमाना। परखना। ५. देख-भाल या निगरानी करना। ६. अनुभव करना। भोगना। ७. ग्रन्थ, पत्र आदि पढ़ना।

देख-भाल-स्त्री० [हिं० देखना+भालना] १.जांच-पड़ताल। २ देख-रेख। निगरानी।

देखराना*-स० दे० 'दिखलाना'।

देखरावना*-स० दे० 'दिखलाना'।

देख-रेख-स्त्री० [हिं० देखना+सं०प्रेक्षण] १. देख-भाल। २. निरीक्षण। निगरानी।

देखा-देखी-स्त्री० [हिं० देखना] एक दूसरे को देखने की क्रिया, दशा या भाव। साक्षात्कार।

क्रि०वि० दूसरे को कुछ करते देखकर उसी के अनुकरण पर (कोई काम करना)।

देखाना*-स० दे० 'दिखाना'।

देखावना-स० दे० 'दिखाना'।

देग-पुं० [फा०] दाल-चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन।

देगचा-पुं० [फा० देगचः] [स्त्री० अल्पा० देगची] छोटा देग।

देदीप्यमान-वि० [सं०] चमकता हुआ।

देन-स्त्री० [हिं० देना] १. देने की क्रिया या भाव। दान। २. किसी की दी हुई या किसी से मिली हुई वस्तु। प्रदत्त या प्राप्त वस्तु। जैसे-ईश्वरीय देन। (गिफ्ट) ३. वह धन जो किसी को देना या चुकाना हो। बाकी रकम। (लायबिलिटी)

देनदार-पुं० [हिं० देना+फा० दार] १. ऋणी। कर्जदार। २. वह जिसके जिम्मे कुछ देन या देना बाकी हो। (लायबुल)

देन-लेन-पुं०[हिं० देना+लेना] कुछ लेने और देने का व्यवहार।

देनहारा*-वि० [हिं० देना] देनेवाला।

देना-स० [सं० दान] १. अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में पहुँचाना। दान करना। २. हवाले करना। सौंपना। ३. अनुभव कराना। भोगाना। जैसे-कष्ट देना। ४. अपने में से उत्पन्न करके या निकालकर किसी को लाभ पहुँचाना। ५. प्रहार करना। मारना। ६. किसी प्रकार पूरा करना, रखना, लगाना, डालना आदि। (संयोज्य क्रिया के रूप में) जैसे-रख देना, खपा देना, मिटा देना।

पुं० उधार लिया हुआ रुपया। कर्ज।

देमान*-पुं० दे० 'दीवान'।

देय-वि० [सं०] १. जो दिया जा सके। २. जो बाकी होने के कारण दिया जाने को हो। देन। दातव्य। (ड्यू) जैसे-किसी पर कुछ देय रखना। ३. (वस्तु) जो किसी दूसरे को दी जा सकती हो। (अलीनिएबुल)

देयादेश-पुं० [सं०] १ वह आज्ञा या आदेश जो किसी को धन आदि देने के सम्बन्ध में हो। यह आज्ञा कि अमुक व्यक्ति को इतना धन दे दो। (पे आर्डर) २. वह पत्र, जिसमें किसी के नाम, विशेषतः बंक के नाम यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को हमारे खाते में से इतने रुपये दे दो। (चेक)

देयासी†-वि० [?] [स्त्री० देयासिन] झाड़-फूँक करनेवाला। ओझा।

देर-स्त्री० [फा०] १. जितना समय लगना चाहिए, उससे अधिक समय। अतिकाल। विलम्ब। २. समय। वक्त। जैसे-यह काम कितनी देर में होगा ?

देव-पुं० [सं०] [स्त्री० देवी] १. देवता। २. पूज्य व्यक्ति। ३. बड़ों के लिए आदर-सूचक सम्बोधन।
पुं० [फा०] दैत्य। राक्षस।

देव-ऋण-पुं० [सं०] देवताओं के ऋण से मुक्त होने के लिए किये जानेवाले यज्ञादि धार्मिक कृत्य।

देव-ऋषि-पुं० दे० 'देवर्षि'।

देव-कन्या-स्त्री० [सं०] देवता की कन्या या पुत्री।

देव-कार्य-पुं० [सं०] देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किये जानेवाले होम, पूजा आदि धार्मिक कार्य्य।

देवकी-स्त्री [सं०] वसुदेव की स्त्री जिसके गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।

देवकीनंदन-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

देवगज-पुं० [सं०] ऐरावत।

देवगुरु-पुं० [सं०] बृहस्पति।

देवठान-पुं० दे० 'देवोत्थान'।

देवता-पुं०[सं०] स्वर्ग में रहनेवाले वे अमर प्राणी जो पूज्य माने जाते हैं। सुर।

देवत्व-पुं० [सं०] 'देवता' का भाव।

देवदार-पुं० [सं०देवदारु] एक बहुत बड़ा पेड़ जिससे अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल निकलता है।

देव-दासी-स्त्री० [सं०] १. किसी देवता के नाम पर उत्सर्ग की हुई या उसके मन्दिर में रहनेवाली दासी या नर्त्तकी। २. वेश्या। (दक्षिण भारत)

देवधुनि-स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

देव-नागरी-स्त्री० [सं०] भारत की राष्ट्र-लिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी, मराठी, राजस्थानी आदि अनेक देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं।

देव-पथ-पुं० [सं०] आकाश।

देवपुरी-स्त्री० [सं०] अमरावती।

देव-भाषा-स्त्री० [सं०] संस्कृत भाषा।

देव-मंदिर-पुं० [सं०] देवता का मन्दिर। देवालय।

देव-यान-पुं० [सं०] वह मार्ग जिससे जीवात्मा ब्रह्म-लोक को जाता है।

देव-योनि-स्त्री० [सं०] स्वर्ग, अन्तरिक्ष आदि में रहनेवाले वे जीव, जो देवताओं के समान माने जाते हैं। जैसे-अप्सरा, यक्ष, किन्नर आदि।

देवर-पुं० [सं०] [स्त्री० देवरानी] स्त्री के लिए, उसके पति का छोटा भाई।

देवरा†-पुं० [सं० देव] छोटा देवता।

देवराज-पुं० [सं०] इन्द्र।

देवरानी-स्त्री० [हिं० देवर] पति के छोटे भाई अर्थात् देवर की स्त्री ।

देवराय*-पुं० दे० 'देवराज'।

देवर्षि-पुं० [सं०] नारद, अत्रि, मरीचि, भृगु आदि जो ऋषि होने पर भी देवता माने जाते हैं।

देवल-पुं० [सं० देवालय] देव-मंदिर।

देव-लोक-पुं० [सं०] स्वर्ग।

देव-वधू-स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। २. देवी। ३. अप्सरा।

देव-वाणी-स्त्री० [सं०] १ संस्कृत भाषा। २. आकाश-वाणी ।

देव-सभा-स्त्री० [सं०] देवताओं की सभा या समाज।

देव-स्थान-पुं० [सं०] देव-मन्दिर।

देवांगना-स्त्री० [सं०]. १. देवता की स्त्री। २. अप्सरा।

देवार्पण-पुं० [सं०] देवता के निमित्त किसी वस्तु का अर्पण, दान या उत्सर्ग।

देवाला-वि० [हिं० देना] १. देनेवाला। २. बेचनेवाला।

देवालय-पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. वह स्थान जहाँ देवता की मूर्त्ति हो। मन्दिर।

देवी-स्त्री० [सं०] १. देवता की स्त्री। २. प्राचीन भारत में वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक होता था। पट-रानी। ३.सदाचारिणी स्त्री। ४. स्त्रियों के नाम के साथ लगनेवाली एक आदर-सूचक उपाधि।

देवेंद्र-पुं० [सं०] इन्द्र।

देवैया-वि० [हिं० देना] देनेवाला।

देवोत्तर-पुं० [सं०] देवता को चढ़ाया हुआ धन या सम्पत्ति।

देवोत्थान-पुं० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला एकादशी को विष्णु का सोकर उठना, जो एक पर्व माना जाता है।

देश-पुं० [सं०] १. पृथ्वी का वह विशिष्ट विभाग जिसमें अनेक प्रान्त, नगर आदि हों। जनपद। २. एक राजा या शासक के अधीन अथवा एक शासन-पद्धति के अन्तर्गत रहनेवाला भू-भाग। राष्ट्र। ३. स्थान। जगह।

देशज-वि० [सं०] १. देश में उत्पन्न। २. (शब्द) जो किसी दूसरी भाषा से न निकला हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से बन गया हो।

देश-निकाला-पुं० [हिं० देश+निकाला] देश से निकाले जाने का दंड। निर्वासन।

देश-भाषा-स्त्री० [सं०] किसी देश या प्रदेश की भाषा। जैसे-बँगला या पंजाबी।

देशांतर-पुं० [सं०] १. दूसरा देश। विदेश। पर-देस। २. पृथ्वी के मान-चित्र पर उत्तर-दक्षिण खींची हुई एक सर्व-मान्य मध्य-रेखा से पूर्व या पश्चिम के देशों या स्थानों की दूरी। लंबांश। (भूगोल)

देशाचार-पुं० [सं०] वह आचार या रीति-व्यवहार जो किसी देश में बहुत दिनों से होता आया हो।

देशाटन-पुं० [सं०] दूर दूर के देशों की यात्रा या भ्रमण।

देशी-वि० [सं० देशीय] १. देश का। देश-संबंधी। २. अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ। स्वदेश का। जैसे-देशी कपड़ा।

देशीय-वि० दे० 'देशी'।

देश्य-वि० [सं०] देश-संबंधी। देश का।

देस-पुं० दे० 'देश'।

देसावर-पुं० दे० 'दिसावर'।

देह-स्त्री० [सं०] शरीर। बदन। तन।

देह-त्याग-पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

देह-धारण-पुं० [सं०] १. शरीर की रक्षा और पालन। २. जन्म।

देह-धारी-पुं० [सं०] [स्त्री० देह-धारिणी] वह जिसने देह या शरीर धारण किया हो। शरीरी।

देह-पात-पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

देहरा-पुं० [हिं० देव+घर] देवालय।
पुं० [हिं० देह] मनुष्य का शरीर।

देहरी*-स्त्री० दे० 'देहली'।

देहली-स्त्री० [सं०] दरवाजे में चौखट के नीचे की लकड़ी या पत्थर। देहलीज।

देहली-दीपक-पुं० [सं०] १. देहली पर रक्खा हुआ दीपक, जो अन्दर और बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है।
यौ०-देहली-दीपक न्याय=(देहली पर रक्खे हुए दीपक की तरह) दोनों तरफ लगनेवाला शब्द या बात।
२. एक अर्थालंकार जिसमें बीच के किसी शब्द का अर्थ आगे और पीछे दोनों ओर लगता है।

देहवान्-वि० [सं०] शरीरधारी।

देहांत-पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

देहात-पुं० [फा० देह (गाँव) का बहु०] [वि० देहाती] गाँव। ग्राम।

देहाती-क्रि० [फा० देहात] १. गाँव का। २. गाँव में रहनेवाला। ग्रामीण। ३. गँवार।

देहात्मवाद-पुं० [सं०] देह या शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धान्त।

देही-पुं० [सं० देहिन्] १. आत्मा। २. शरीरधारी। प्राणी।
स्त्री० दे० 'देह'।

दैं*-अव्य० [अनु०] से। जैसे-धपाक दैं।

दैउ*-पुं० दे० 'दैव'।

दैत्य-पुं० [सं०] १. असुर। राक्षस। २. लम्बा-चौड़ा या असाधारण बल-वाला मनुष्य।

दैत्यारि-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. इन्द्र।

दैनंदिन-वि० [सं०] नित्य का।
क्रि० वि० १. प्रति दिन। २. दिनोदिन।

दैनंदिनी-स्त्री० दे० 'दैनिकी'।

दैन*-वि० =दायक। (यौगिक के अन्त में)

दैनिक-वि० [सं०] १. प्रति दिन से संबंध रखनेवाला। नित्य या रोज का। जैसे-दैनिक कार्य-क्रम। २. प्रति दिन या नित्य होनेवाला।
पुं० दे० 'दैनिक-पत्र'।

दैनिक पत्र-पुं० [सं०] वह समाचार-पत्र जो नियमित रूप से नित्य प्रकाशित होता हो। हर रोज छपनेवाला अखबार।

दैनिकी-स्त्री० [सं० दैनिक] वह पुस्तिका जिसमें नित्य दिन भर के किये हुए कार्य आदि लिखे जाते हैं। (डायरी)

दैन्य-पुं० [सं०] १. दीनता। विनीत भाव। २. वियोग, दुःख आदि से चित्त का बहुत नम्र हो जाना, जो काव्य में एक संचारी भाव माना गया है। कातरता।

दैया*-पुं० [हिं० दैव] दैव। ईश्वर।
स्त्री० [हिं० दाई] माता। माँ।

दैव-पुं० [सं०] [वि० दैवी] १. देवता-संबंधी। २. देवता का किया हुआ।
पुं० १. प्रारब्ध। भाग्य। २. होनेवाली बात। होनहार। ३. ईश्वर। ४. आकाश।
मुहा०-दैव बरसना=पानी बरसना।

दैव-कृत-वि० [सं०] ईश्वर का किया हुआ (मनुष्य का नहीं)। दैवी।

दैव-गति-स्त्री० [सं०] १. ईश्वरीय बात या घटना। २. भाग्य।

दैवज्ञ-पुं० [सं०] ज्योतिषी।

दैवत-वि० [सं०] देवता-संबंधी । पुं० १. देवता की प्रतिमा । २. देवता ।

दैव-योग-पुं० [सं०] संयोग । इत्तफाक ।

दैववश (वशात्)-क्रि० वि० [सं०] संयोग से । दैव योग से । अकस्मात् ।

दैव-वाणी-स्त्री० [सं०] १. आकाश-वाणी । २. संस्कृत ।

दैव-वादी-पुं०[सं०] १. दैव को ही प्रधान कर्त्ता माननेवाला । २. भाग्य के भरोसे रहनेवाला ।

दैव विवाह-पुं० [सं०] आठ प्रकार के विवाहों में से वह, जिसमें यज्ञ करनेवाला पुरोहित को अपनी कन्या देता है ।

दैवागत-वि० [सं०] दैवी । आकस्मिक ।

दैवात्-क्रि० वि० [सं०] अकस्मात् । दैव-योग से । अचानक ।

दैविक(वी)-वि० [सं०] १. देवता-संबंधी । २. देवताओं का किया हुआ । ३. प्रारब्ध या संयोग से होनेवाला । ४. अचानक और आपसे आप होनेवाला । आकस्मिक ।

दैशिक-वि० दे० 'जानपद' ।

दैहिक-वि० [सं०] १. देह-संबंधी । शारीरिक । २ देह से उत्पन्न ।

दो-वि० [सं० द्वि] एक और एक । यौ०-दो-एक या दो-चार=कुछ। थोड़े। मुहा०-दो दिन का=थोड़े दिनों का ।

दोआब(1)-पुं०[फा०] किसी देश का वह भाग जो दो नदियों के बीच में पड़ता हो।

दोउ (ऊ)*-वि० [हिं० दो] दोनो ।

दोख*-पुं०=दोष ।

दोखना*-स० [हिं० दोष] दोष लगाना ।

दोखी*-पुं०=दोषी ।

दोगला-पुं० [फा० दोगलः] [स्त्री० दोगली] १. वह जो अपनी माता के उप-पति से उत्पन्न हुआ हो । जारज । २. वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न-भिन्न वर्गों या जातियों के हों ।

दोच(न)*-स्त्री० [हिं० दबोचना] १. दुबधा । असमंजस । २.दबाव । ३.दुःख ।

दोचना*-स०[हिं० दोच] दबाव डालना ।

दो-चित्ता-वि० [हिं० दो+चित्त] [भाव० दो-चित्ती] जिसका मन दो तरह की बातों में लगा हो । उद्विग्न-चित्त ।

दोजख-पुं० [फा०] नरक ।

दो-तरफा-वि० [फा०] दोनो ओर होने या लगनेवाला । क्रि० वि० दोनो तरफ । दोनो ओर ।

दो-तल्ला-वि० [हिं० दो+तल] दो तल्ले या खंड का । दो-मंजिला । (मकान)

दोतारा-पुं० [हिं० दो+तार (धातु का)] दो तारों का एक प्रकार का बाजा ।

दो-धारा-वि० [हिं० दो+धार] [स्त्री० दो-धारी] (शस्त्र) जिसमें दोनो ओर धारें हों ।

दोन-पुं० [हिं० दो] १. तराई । दून । २. दो नदियों के बीच का प्रदेश । दोआबा ।

दो-नली-वि० [हिं० दो+नल] जिसमें दो नलियां हों । जैसे-दो-नली बन्दूक ।

दोना-पुं० [सं० द्रोण] [स्त्री० दोनी] पत्तों का बना, कटोरे के आकार का पात्र ।

दोनो-वि० [हिं० दो] वे विशिष्ट दो जिनमे से कोई छोड़ा न जा सके । उभय ।

दो-पल्ली-वि० [हिं० दो+पल्ला] जिसमें दो पल्ले हों । स्त्री० एक प्रकार की हलकी टोपी ।

दो-पहर-पुं० [हिं० दो+पहर] वह समय जब सूर्य मध्य आकाश में पहुँचता है । मध्याह्न ।

दो-पीठा-वि० [हिं० दो+पीठ] १. दे०

'दो-रुखा'। २.दोनों ओर छपा या लिखा हुआ (कागज)।

दो-फसली-वि० [हिं० दो+अ० फसल] १. रबी और खरीफ दोनों फसलों से संबंध रखनेवाला। २. जो दोनों ओर लग सके और सन्दिग्ध हो। जैसे-दो-फसली बात।

दोबल-पुं० [?] दोष। अपराध।

दोबा*-पुं० दे० 'दुबधा'।

दोबारा-क्रि० वि० [फा०] एक बार हो चुकने पर फिर दूसरी बार। एक बार और।

दो-मंजिला-वि० दे० 'दो-तल्ला'।

दो-मुँहाँ-वि० [हिं० दो+मुँह] १. जिसके दो मुँह हों। जैसे-दो-मुँहाँ साँप। २. दोहरी चाल चलनेवाला। कपटी।

दोय*-वि०१. दे० 'दो'। २. दे० 'दोनों'।

दो-रंगा-वि० [हिं० दो+रंग] [भाव० दो-रंगी] १. दो रंगोंवाला। २. जो दोनों ओर लग या चल सके।

दोरदंड*-वि० दे० 'दुर्दंड'।

दो-रसा-वि० [हिं० दो+रस] दो प्रकार के रस या स्वादवाला।

यौ०-दो-रसे दिन=१. गर्भावस्था के दिन। २. दो ऋतुओं के बीच के दिन। पुं० एक प्रकार का पीने का तमाकू।

दो-रुखा-वि०[फा०] १. जिसके दोनों ओर समान रंग या बेल-बूटे हों। २. जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।

दोल-पुं० दे० 'दोला'।

दो-लत्ती-स्त्री० दे० 'दुलत्ती'।

दोला-स्त्री० [सं०] [वि० दोलित] १. हिंडोला। झूला। २. डोली या चंडोल।

दोलित-वि० [सं०] [स्त्री० दोलिता] हिलता या झूलता हुआ।

दोष-पुं० [सं०] १. ऐसी बात जिसके कारण कोई व्यक्ति या वस्तु खराब समझी जाय। अवगुण। बुराई। खराबी।

मुहा०-दोष लगाना=किसी के संबंध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है। २. लगाया हुआ अपराध। अभियोग। ३. अपराध। कसूर। ४. पाप। पातक। ५.शरीर में के वात, पित्त और कफ, जिनके बिगड़ने से रोग उत्पन्न होते हैं। *पुं [सं० द्वेष] द्वेष। वैर।

दोषन*-पुं० [सं० दूषण] दोष।

दोषना*-स० [सं० दूषण+ना(प्रत्य०)] १. दोष लगाना। २. अपराध लगाना।

दोषारोपण-पुं० [सं० दोष+आरोपण] किसी पर कोई दोष लगाना। यह कहना कि इसने अमुक दोष या अपराध किया है।

दोषिनी-स्त्री० [हि० दोषी] १. अपराधिनी। २. पाप करनेवाली स्त्री। ३. दुष्ट स्वभाववाली स्त्री।

दोषिल*-वि० दे० 'दूषित'।

दोषी-पुं० [सं० दोषिन्] १. जिसमें दोष हो। २. अपराधी। कसूरवार। ३. पापी। ४. अभियुक्त।

दोस*-पुं० दे० 'दोष'।

दोसदारी*-स्त्री० दे० 'दोस्ती'।

दोस्त-पुं० [फा०] मित्र। स्नेही।

दोस्ताना-पुं० [फा०] मित्रता। वि० दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती-स्त्री० [फा०] मित्रता। पुं० वह रोटी या परौंठा जो दो अलग अलग पेड़े बेलकर और तब दोनों को एक साथ सटाकर पकाते है।

दोह*-पुं० दे० 'द्रोह'।

दोहता-पुं० [सं० दौहित्र] [स्त्री० दोहती] लड़की का लड़का। नाती।

दो-हत्थड़-वि० [हिं० दो+हाथ] दोनों हाथों से मारा जानेवाला । (थप्पड़)

दोहद-स्त्री० [सं०] १. गर्भवती स्त्री की इच्छा या वासना । २. गर्भावस्था । ३. गर्भ के लक्षण या चिह्न । ४. यह प्राचीन भारतीय विश्वास कि सुन्दर स्त्री के स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, पैरों के आघात से अशोक, देखने से तिलक, मधुर गान से आम, और नाचने से कचनार आदि वृक्ष फूलते है ।

दोहदवती-स्त्री० [सं०] गर्भवती ।

दोहन-पुं० [सं०] १. गाय, भैंस आदि का दूध दुहना । २. दोहनी ।

दोहना*-स० [सं० दूषण] १. दोष लगाना । २ तुच्छ ठहराना ।
स० दे० 'दुहना' ।

दोहनी-स्त्री० [सं०] १. वह बरतन जिसमें दूध दुहते है । २. दूध दुहने का काम ।

दोहर-स्त्री० [हिं० दो+धड़ी=तह] दो पल्लों या परतों की एक प्रकार की चादर ।

दोहरना-अ० [हिं० दोहरा] १. दे० 'दोहराना' । २. दोहरा करना ।

दोहरा-वि० [हिं० दो+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दोहरी] १. जिसमें दो पल्ले, परतें या तहें हों । २. दो बार या दूसरी बार का ।
*पुं० दोहा नाम का छन्द ।

दोहराई-स्त्री० [हिं० दोहराना] दोहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

दोहराना-स०[हिं०दोहरा] १. कोई बात या काम दूसरी बार कहना या करना । पुनरावृत्ति करना । (रिपीट) २. किसी किये हुए काम को जाँचने के लिए फिर से अच्छी तरह देखना । (रिवाइज) ३. कपड़े, कागज आदि की दो तहें करना । दोहरा करना ।

दोहा-पुं० [हिं० दो+हा (प्रत्य०)] दो चरणों का एक प्रसिद्ध हिन्दी छन्द । (इसके चरण के खंडों को उलट देने से सोरठा हो जाता है ।)

दोहाई-स्त्री० दे० 'दुहाई' ।

दोहाग*-पुं० दे० 'दुहाग' ।

दौं*-अव्य० १. दे० 'धौं' । २. दे० 'दे' ।

दौंकना*-अ० दे० 'दमकना' ।

दौंचना*-स० दे० 'दोचना' ।

दौंरी-स्त्री० दे० 'दँवरी' ।

दौ*-स्त्री० [सं०दव] १. जंगल की आग । २. संताप । कष्ट । ३. दाह । जलन ।

दौड़-स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव ।
मुहा०-दौड़ मारना या लगाना=१ दौड़ते हुए जाना । २. लम्बी यात्रा करना ।
२. धावा । चढ़ाई । ३. प्रयत्न में इधर-उधर घूमना । ४. दौड़ने की प्रतियोगिता । ५. गति, बुद्धि, उद्योग आदि की सीमा । पहुँच । ६. विस्तार । लम्बाई । ७. अपराधियों को छापा मारकर पकड़ने के लिए सिपाहियों का दौड़ते हुए कहीं जाना ।

दौड़-धूप-स्त्री० [हिं० दौड़+धपना] वह प्रयत्न जिसमें इधर-उधर दौड़ना पड़े ।

दौड़ना-अ० [सं० धोरण] १. बहुत जल्दी जल्दी पैर उठाकर चलना ।
मुहा०-चढ़ दौड़ना=धावा या चढ़ाई करना । दौड़-दौड़कर जाना=बार बार किसी के पास जाना ।
२. प्रयत्न में इधर-उधर आना-जाना । ३. फैलना । व्याप्त होना। जैसे-बिजली दौड़ना।

दौड़ा-दौड़-क्रि० वि० [हिं० दौड़] दौड़ते हुए ।

दौड़ान-स्त्री० [हिं० दौड़ना] १. दौड़ने की क्रिया या भाव। २. लंबाई। विस्तार।

दौड़ाना-स० [हिं० दौड़ना का स०] १. दूसरे को दौड़ने में प्रवृत्त करना। २. किसी को जल्दी या बार-बार कहीं भेजना। ३. कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह तक खींच या तानकर ले जाना। जैसे-रस्सी या तार दौड़ाना।

दौत्य-पुं० [सं०] दूत का काम।

दौन*-पुं० दे० 'दमन'।

दौना-पुं० [सं० दमनक] एक पौधा जिसकी पत्तियों से तेज गंध निकलती है।
पुं० दे० 'दोना'।
*स० [सं० दमन] दमन करना।

दौर-पुं० [अ०] १. चक्कर। भ्रमण। फेरा। २. उन्नति या वैभव के दिन। यौ०-दौर-दौरा=वैभव या प्रताप के दिन। ३. बारी। पारी। ४. दे० 'दौरा'।

दौरना*-अ० दे० 'दौड़ना'।

दौरा-पुं० [अ० दौर] १. चक्कर। भ्रमण। २. अधिकारी का अपने अधिक्षेत्र में जाँच-पड़ताल के लिए अनेक स्थानों पर जाना।
मुहा०-(मुकदमा) दौरा सपुर्द करना= विचार के लिए सेशन जज के न्यायालय में भेजना।
३. बीच बीच में आते-जाते रहना। फेरा। ४. उस रोग का प्रकट होना जो समय समय पर या रह-रहकर होता हो।
पुं० बाँस की पट्टियों का बना टोकरा।

दौरात्म्य-पुं० [सं०] दुरात्मा होने का भाव। दुर्जनता।

दौरान-पुं० [फा०] १. दौरा। चक्कर। २. दो घटनाओं के बीच का समय।

दौरी-स्त्री० [हिं० दौरी] छोटी टोकरी।

दौर्बल्य-पुं० [सं०] दुर्बलता।

दौलत-स्त्री० [अ०] धन। संपत्ति।

दौलत-खाना-पुं०[फा०] निवास-स्थान। घर। (बड़ों के लिए आदरार्थक)

दौलतमंद-वि० [फा०] धनवान।

दौवारिक-पुं० [सं०] द्वारपाल।

दौहित्र-पुं० [सं०] दोहता। नाती।

द्याना(वना)*-स० दे० 'दिखाना'।

द्यु-पुं० [सं०] १. आकाश। २. स्वर्ग। ३. सूर्य-लोक।

द्युति-स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा।

द्युतिमान्-वि० [सं० द्युतिमत्] [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें चमक या आभा हो।

द्युलोक-पुं० [सं०] स्वर्ग-लोक।

द्योतक-वि०[सं०] १. प्रकाश करनेवाला। २. दिखलाने या बतलानेवाला। सूचक।

द्योतन-पुं० [सं०] [वि० द्योतित] प्रकाशित करना, दिखलाना या जतलाना।

द्योहरा*-पुं० दे० 'देवालय'।

द्यौस*-पुं० दे० 'दिवस'।

द्रव-वि० [सं०] [भाव० द्रवता] १. पानी की तरह पतला। तरल। २. गीला। ३. गला या पिघला हुआ।

द्रवण-पुं० [सं०] [वि० द्रवित] १. गलने, पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव। २. चित्त के कोमल होने की वृत्ति।

द्रवण-शील-वि० [सं०] जो पिघलता या पसीजता हो।

द्रवना*-अ० [सं० द्रवण] १. प्रवाहित होना। बहना। २. पिघलना। पसीजना। ३. दयार्द्र होना।

द्रविड़-पुं० [सं० तिरमिक] १. दक्षिण भारत का एक देश। २. इस देश का

निवासी। ३. ब्राह्मणों का एक विभाग जिसके अंतर्गत आंध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड़, और महाराष्ट्र ये पाँच वर्ग हैं।

द्रवित-वि० दे० 'द्रवीभूत'।

द्रवीभूत-वि० [सं०] १. जो तरल या द्रव हो गया हो। २. पिघला हुआ। ३. दयार्द्र। दयालु।

द्रव्य-पुं० [सं०] १. वस्तु। पदार्थ। चीज। २. वह मूल तथा विशुद्ध तत्व जिसमें केवल गुण अथवा उसके साथ कोई क्रिया भी हो, तथा जो समवायि कारण हो और जिसमें कोई दूसरा तत्व या द्रव्य न मिला हो। (वैशेषिक में ये नौ द्रव्य कहे गये हैं-पृथ्वी, जल, तेज वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। पर आज-कल के वैज्ञानिकों का मत है कि जल और वायु आदि वस्तुतः द्रव्य नहीं हैं, बल्कि कई दूसरे मूल द्रव्यों के योग से बने हैं और वास्तविक द्रव्य सौ के लगभग हैं।) ३. सामग्री। सामान। ४. धन। दौलत।

द्रष्टव्य-वि० [सं०] १. देखने योग्य। दर्शनीय। २. जो दिखाया जाने को हो।

द्रष्टा-वि० [सं०] देखनेवाला। दर्शक। पुं० सांख्य के अनुसार पुरुष और योग के अनुसार आत्मा।

द्राक्षा-स्त्री० [सं०] दाख। अंगूर।

द्राव-पुं० [सं०] १. गमन। २. क्षरण। ३. बहने या पसीजने की क्रिया।

द्रावक-वि० [सं०] [स्त्री० द्राविका] १. ठोस चीज को पानी की तरह पतला करने, गलाने या बहानेवाला। २. हृदय को दयार्द्र बनानेवाला।

द्रावण-पुं० [सं०] गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव।

द्राविड़-वि० [सं०] [स्त्री० द्राविड़ी] द्रविड़ देश का।

यौ०-**द्राविड़ प्राणायाम**=कोई काम सीधी तरह से नहीं, बल्कि कुछ घुमा-फिराकर या उलटे ढंग से करना।

द्राविड़ी-वि० [सं०] द्रविड़-संबंधी।

मुहा०-**द्राविड़ी प्राणायाम** = दे० 'द्राविड़' के अन्तर्गत 'द्राविड़ प्राणायाम'।

द्रुत-वि० [सं०] १. द्रवीभूत। गला या पिघला हुआ। २. शीघ्रगामी। तेज। पुं० १. संगीत में ताल की एक मात्रा का आधा। २. संगीत में मध्यम से कुछ तेज लय। दून।

द्रुतगामी-वि० [सं० द्रुतगामिन्] [स्त्री० द्रुतगामिनी] जल्दी या तेज चलनेवाला।

द्रुम-पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़।

द्रोण-पुं० [सं०] १. जल आदि रखने का लकड़ी का एक पुराना बरतन। कठवत। २. चार आढ़क या सोलह सेर की एक पुरानी तौल। ३. पत्तों का दोना। ४. बड़ी नाव। डोंगा। ५. दे० 'द्रोणाचार्य'।

द्रोणाचार्य-पुं० [सं०] महाभारत काल के प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो भरद्वाज ऋषि के पुत्र थे।

द्रोणी-स्त्री० [सं०] १. डोंगी। नाव। २. छोटा दोना। ३. काठ का बड़ा थाल। कठवत। ४. दो पहाड़ों के बीच की भूमि। दून। ५. दर्रा।

द्रोह-पुं० [सं०] [वि० द्रोही] दूसरे को हानि पहुँचाने की वृत्ति। वैर। द्वेष।

द्रोही-वि० [सं० द्रोहिन्] [स्त्री० द्रोहिणी] द्रोह करने या हानि पहुँचानेवाला।

द्रौपदी-स्त्री० [सं०] राजा द्रुपद की कन्या कृष्णा, जो प्रवाद के अनुसार पाँचों पांडवों को ब्याही गई थी।

द्वंद्-पुं० [सं०] १. युग्म । मिथुन । जोड़ा । २. प्रतिद्वंद्वी । जोड़ । ३. दो पक्षों या आदमियों की लड़ाई । द्वंद्व-युद्ध । ४.झगड़ा । कलह । ५. दो वस्तुओं का जोड़ा । जैसे-रात-दिन या सुख-दुख आदि । ६. कष्ट । दुःख । ७. उपद्रव । ऊधम । ८. दुबधा । असमंजस ।
स्त्री० [सं० दुदुभी] दुंदुभी ।

द्वंदर*-वि० [सं० द्वंद्व] झगड़ालू ।

द्वंद्व-पुं० [सं०] १. दे० 'द्वंद' । २. एक प्रकार का समास जिसमें दोनो पद प्रधान होते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है । जैसे-दाल-चावल ।

द्वंद्व-युद्ध-पुं० [सं०] दो पुरुषों या दलों में होनेवाली बराबरी की लड़ाई ।

द्वय-वि० [सं०] दो ।

द्वयता-स्त्री० [सं० द्वय+ता (प्रत्य०)] १. दो का भाव । द्वैत । २. अपनेपन और परायेपन का भाव । भेद-भाव ।

द्वादश-वि० [सं०] १. दस और दो । बारह । २. बारहवाँ ।

द्वादश-बानी-वि० दे० 'बारह-बानी' ।

द्वादशाह-पुं० [सं०] किसी के मरने पर बारहवें दिन होनेवाला श्राद्ध ।

द्वादशी-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष की बारहवीं तिथि ।

द्वादस-बानी*-वि० दे० 'बारह-बानी' ।

द्वापर-पुं० [सं०] चार युगों में से तीसरा युग, जो ८६४००० वर्षों का माना गया है ।

द्वार-पुं० [सं०] १. इधर-उधर घिरे हुए स्थान के बीच में वह खुला स्थान, जिससे होकर लोग अन्दर-बाहर आते-जाते हों । २. घर में आने-जाने के लिए दीवार में बना हुआ थोड़ा-सा खुला स्थान। दरवाजा । ३. इन्द्रियों के मार्ग या छेद । जैसे-आँख, नाक, कान आदि । ४. कोई काम करने का वह मार्ग जो उपाय या साधन के अंग के रूप में हो । (चैनेल)

द्वारका-स्त्री० [सं०] काठियावाड़ की एक प्राचीन पवित्र पुरी या नगरी ।

द्वारकाधीश-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।

द्वारकानाथ-पुं० दे० 'द्वारकाधीश' ।

द्वार-चार-पुं० दे० 'द्वार-पूजा' ।

द्वार-पटी-स्त्री० [सं०] दरवाजे पर टाँगने का परदा ।

द्वारपाल-पुं० [सं०] दरबान ।

द्वार-पूजा-स्त्री० [सं०] विवाह की एक रसम जो लड़कीवाले के द्वार पर बरात पहुँचने के समय होती है और जिसमें वर का पूजन होता है ।

द्वारा-पुं० [सं० द्वार] द्वार । दरवाजा ।
अव्य०[सं०द्वारात्] जरिये से । साधन से ।

द्वारी*-स्त्री० [सं० द्वार] छोटा दरवाजा ।
पुं० दे० 'द्वारपाल' ।

द्वि-वि० [सं०] दो ।

द्विक-वि० [सं०] जिसमें दो हों ।

द्विकर्मक-वि० [सं०] (क्रिया) जिसके दो कर्म हों । (व्याकरण)

द्विकल-पुं० [हिं० द्वि+कला] छंदः-शास्त्र में दो मात्राओं का समूह या वर्ग ।

द्विगु-पुं० [सं०] वह कर्मधारय समास जिसमें पूर्व-पद संख्यावाचक होता है ।

द्विगुण-वि० [स०] दुगना । दूना ।

द्विगुणित-वि० [सं०] १. दो से गुणा किया हुआ । २. दूना । दुगना ।

द्विगूढ़-पुं० [सं०] वह गीत जिसमें सब पद सम और सुन्दर हों, संधियाँ वर्तमान हों तथा जो रस और भाव से पूर्ण रूप से युक्त हो । (नाट्य-शास्त्र)

द्विज-वि० [सं०] दो बार जन्मा हुआ। पुं० [सं०] १. अंडज प्राणी जो पहले अंडे में आते और तब अंडे से निकल कर दोबारा जन्म लेते हैं। जैसे—चिड़िया, साँप आदि। २. ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिनका यज्ञोपवीत संस्कार के समय फिर से जन्म लेना माना जाता है। ३. ब्राह्मण। ४. चन्द्रमा।

द्विजन्मा-वि० पुं०=द्विज।

द्विजपति(राज)-पुं० [सं०] १. ब्राह्मण। २. चन्द्रमा।

द्विजाति-पुं० दे० 'द्विज'।

द्विजेंद्र(जेश)-पुं० दे० 'द्विजपति'।

द्वितक-पुं० [सं०] १. किसी दी जानेवाली पावती (रसीद), आप्यक या सूचना आदि की वह प्रतिलिपि जो अपने पास रखी जाती है। २. किसी दिये हुए लेख आदि की वह दूसरी प्रतिलिपि जो पानेवाले को फिर से दी जाय। (डुप्लिकेट)

द्वितीय-वि०[सं०] [स्त्री०द्वितीया] दूसरा।

द्वितीया-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष की दूसरी तिथि। दूज।

द्वित्व-पुं० [सं०] १. दो का भाव। २ दोहरे होने का भाव। दोहरापन।

द्विदल-वि० [सं०] जिसमें दो दल हों। पुं० दो दलोंवाला अन्न। दाल।

द्विधा-क्रि० वि० [सं०] १. दो प्रकार से। दो तरह से। २ दो भागों में।

द्विपद-वि० [सं०] दो पैरोंवाला। पुं० मनुष्य।

द्विबाहु-वि० [सं०] दो बाँहोंवाला।

द्विभाषी-पुं० दे० 'दुभाषिया'।

द्विरद-पुं० [सं०] हाथी। वि० [स्त्री० द्विरदा] दो दाँतोंवाला।

द्विरागमन-पुं० [सं०] विवाह के बाद वधू का अपने ससुराल में दूसरी बार आना। गौना।

द्विरुक्ति-स्त्री० [सं०] पहले का एक बार कही हुई बात फिर से कहना।

द्विरेफ-पुं० [सं०] भ्रमर। भौंरा।

द्विविध-वि० [सं०] दो तरह का। क्रि० वि० दो तरह से।

द्विविधा*-स्त्री० दे० 'दुबधा'।

द्विवेदी-पुं० [सं० द्विवेदिन्] ब्राह्मणों की एक जाति। दूबे।

द्वीन्द्रिय-पुं० [सं०] वह जन्तु जिसे दो ही इन्द्रियाँ हों।

द्वीप-पुं० [सं०] १. चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थल। टापू। २. पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग। यथा-जंबू द्वीप, लंका द्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुश द्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप।

द्वेष-पुं०[सं०] १.कोई बात मन को अप्रिय लगने की वृत्ति। चिढ़। २ शत्रुता। वैर।

द्वेषी-वि० [सं० द्वेषिन्] [स्त्री० द्वेषिणी] १.द्वेष रखने या करनेवाला। २ शत्रु।

द्वेष्टा-वि० दे० 'द्वेषी'।

द्वै*-वि० [सं० द्वय] १. दो। २. दोनों।

द्वैज*-स्त्री० दे० 'दूज'।

द्वैत-पुं० [सं०] १. दो का भाव। युग्म। युगल। २. अपने और पराये का भाव। भेद-भाव।

द्वैत वाद-पुं० [सं०] वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें आत्मा और परमात्मा या जीव और ईश्वर को दो भिन्न तत्त्व मानकर विचार किया जाता है।

द्वैध-पुं० [सं०] १. विरोध। २. राजनीति में मुख्य उद्देश्य छिपाकर दूसरा उद्देश्य प्रकट करना। (डिप्लोमेसी) ३. वह शासन-प्रणाली जिसमें कुछ विभाग

सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में हों। (डायार्की)

द्वैपायन-पुं० [सं०] वेद व्यास।

द्वैमातुर-पुं० [सं०] गणेश।

द्वौ*-वि० [हिं० दो+ऊ; दोउ] दोनों।

वि० दे० 'दव'।

ध

ध-हिन्दी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और त-वर्ग का चौथा वर्ण, जिसका उच्चारण दंत-मूल से होता है। संगीत में यह 'धैवत' स्वर का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

धंधक-पुं० [हिं० धंधा] संसार के काम-धंधों का झगड़ा। जंजाल।

धंधक-धोरी-पुं० [हिं० धंधक+धोरी] सदा किसी न किसी काम या जंजाल में लगा या फँसा रहनेवाला। बहु-धंधी।

धंधरक*-पुं० दे० 'धंधक'।

धँधला*-पुं० [हिं० धंधा] १. आडम्बर। ढोंग। २. बहाना। मिस।

धँधलाना-अ० [हिं० धँधला] १. छल-कपट करना। २. आडम्बर या ढोंग रचना।

धंधा-पुं० [सं० धन-धान्य] १. जीविका के लिए किया जानेवाला काम। उद्योग। काम-काज। २. व्यवसाय। कार-बार।

धंधार-स्त्री० [हिं० धुआँ] आग की लपट।

धंधारी*-स्त्री० दे० 'गोरख-धंधा'।

धँधोर*-पुं० [अनु० धायँ धायँ=आग जलना] १. होली। २. आग की लपट।

धँवना*-स० दे० 'धौंकना'।

धँसना-अ० [सं० दंशन] [भाव० धँसन, धँसान] १. ऊपर से दाब पाकर कड़ी वस्तु का अपेक्षाकृत कोमल वस्तु में घुसना। गड़ना। मुहा०-जी या मन में धँसना=मन पर प्रभाव उत्पन्न करना। २. अपने लिए जगह निकालते हुए आगे बढ़ना या अन्दर घुसना। ३. नीचे की ओर धीरे धीरे बैठना या जाना। *अ० [सं० ध्वंसन] नष्ट होना।

धँसान-स्त्री० [हिं० धँसना] १. धँसने की क्रिया, भाव या ढंग। २. वह जगह जिसपर कोई चीज धँसे।

धँसाना-स० हिं० 'धँसना' का स०।

धँसाव-पुं० दे० 'धँसान'।

धक-स्त्री० [अनु०] १. भय आदि से हृदय की गति तीव्र होने का भाव या शब्द। मुहा०-जी धक धक करना=कलेजा धड़कना। जी धक हो जाना=१. डर, दुःख आदि से जी दहल जाना। २. चौंक उठना।

२ मन की उमंग।

क्रि० वि० अचानक। सहसा।

धकधकाना*-अ० [अनु० धक] १. भय, उद्वेग आदि से हृदय की गति का तीव्र होना। २. (आग) दहकना।

धकधकी-स्त्री० [अनु० धक] १. हृदय की धड़कन। २. पेट और छाती के बीच का वह गड्ढा जिसके नीचे धड़कन होती है। धुकधुकी। ३. हृदय। कलेजा।

धकपकाना-अ० [अनु० धक] जी में धक-पक होना। डर या आशंका होना।

धकपेल*-स्त्री० दे० 'धकम-धक्का'।

धका*-पुं० दे० 'धक्का'।

धकेलना-स० दे० 'ढकेलना'।

धक्कम-धक्का-पुं० [हिं० धक्का] १. भीड़ में आदमियों का एक दूसरे को धक्का देना। धकापेल। २. ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से धक्के खाते हों।

धक्का-पुं० [सं० धम, हिं० धमक] १. एक वस्तु का दूसरी के साथ वेग-पूर्ण स्पर्श। टक्कर। २. झोंका। ३. ढकेलने की क्रिया या भाव। ४. बहुत भीड़। कश-मकश। ५. दुःख, शोक, हानि आदि का आघात। ५. विपत्ति। संकट। ६. हानि।

धक्का-मुक्की-स्त्री० [हिं० धक्का+मुक्का] एक दूसरे को ढकेलना और मुक्के मारना।

धक्काड़-वि० [अनु० धाक] १. जिसकी खूब धाक जमी हो। २. किसी विषय या बात में बहुत बढ़ा-चढ़ा। ३.बहुत बड़ा।

धगड़ा-पुं० [सं० धव=पति] [स्त्री० धगड़ी] स्त्री का यार। उप-पति।

धगधागना*-अ० दे० 'धकधकाना'।

धगा*-पुं० दे० 'धागा'।

धचका-पुं०[अनु०] १.धक्का। २.झटका।

धज-स्त्री० [सं० ध्वज] १. सजावट या बनावट का सुन्दर ढंग।

यौ०-**सज-धज**=तैयारी। सजावट।

२. सुन्दर चाल या ढंग। ३. बैठने-उठने का ढंग। ठवन। ४. शोभा।

धजा*-स्त्री० दे० 'ध्वजा'।

धजीला-वि० [हिं० धज+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० धजीली] अच्छी धजवाला। सजीला। सुन्दर।

धज्जी-स्त्री० [सं० धटी] धातु, लकड़ी, कपड़े, कागज आदि की लम्बी पतली पट्टी।

मुहा०-**धज्जियाँ उड़ाना**=१ टुकड़े-टुकड़े करना। २. (किसी की) पूरी दुर्गति या खंडन आदि करना।

धड़ंग-वि० [हिं० धड़+अंग] नंगा।

धड़-पुं० [सं० धर] १. शरीर में गले के नीचे से कमर तक का सारा भाग। २ पेड़ का तना।

स्त्री० [अनु०] अचानक गिरने या टकराने आदि का गम्भीर शब्द।

धड़क-स्त्री० [अनु० धड़] १. हृदय के उछलने की क्रिया, भाव या शब्द। हृदय का स्पंदन। धकधकी। २.आशंका। खटका।

यौ०-**बे-धड़क**=बिना भय या संकोच के।

धड़कन-स्त्री० [हिं० धड़क] भय, दुर्बलता आदि के कारण होनेवाला हृदय का स्पंदन। कलेजा धक धक करना।

धड़कना-अ० [हिं० धड़क] भय, दुर्बलता आदि के कारण हृदय का स्पंदित होना। हृदय का धक धक करना।

मुहा०-**कलेजा, छाती, जी या दिल धड़कना**=भय या आशंका से हृदय का स्पंदन या धड़कन बढ़ जाना।

धड़का-पुं [अनु० धड़] १. दे० 'धड़क'। २. चिड़ियों को डराने के लिए खेतों में खड़ा किया हुआ पुतला आदि। धोखा।

धड़काना-स० हिं० 'धड़कना' का स०।

धड़धड़ाना-अ० [अनु० धड़ धड़] भारी चीज के गिरने का-सा धड़ धड़ शब्द होना।

मुहा०-**धड़धड़ाता हुआ**=बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के। बे-धड़क।

स० धड़ धड़ शब्द करना।

धड़ल्ला-पुं० [अनु० धड़] धड़ाका।

मुहा०-**धड़ल्ले से**=१. बिना रुके। तेजी से। २ बे-धड़क।

धड़ा-पुं० [सं० धट] १. बँधी हुई तौल की वह चीज जिसके बराबर तराजू पर कोई चीज तौलते हैं। बाट। बटखरा।

मुहा०-**धड़ा करना या बाँधना**=कोई वस्तु तौलने से पहले आवश्यकतानुसार

किसी ओर कुछ भार रखकर तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना। २. चार सेर की एक तौल। ३. तराजू।

धड़ाका-पुं० [अनु० धड़] जोर से गिरने का 'धड़' शब्द। धमाका।

मुहा०-**धड़ाके से**=जल्दी से। चटपट।

धड़ाधड़-क्रि० वि० [अनु० धड़] १. लगातार 'धड़ धड़' शब्द के साथ। २. लगातार और जल्दी जल्दी।

धड़ा-बंदी-स्त्री० [हिं० धड़ा+बंद] १. तौलने के समय धड़ा बांधना। २.युद्ध के समय दोनों पक्षों का अपना सैनिक बल शत्रु के सैनिक बल के बराबर करना।

धड़ाम-पुं० [अनु० धड़] ऊँचाई से कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी-स्त्री० [सं० धटिका, धटी] १. चार सेर की एक तौल। २. मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़नेवाली लकीर।

धत्-अव्य० [अनु०] तिरस्कारपूर्वक हटाने या दुतकारने का शब्द।

धतकारना-स० दे० 'दुतकारना'।

धता-वि० [अनु०धत्] दूर भगाया हुआ।

मुहा०-**धता करना या बताना**=किसी को उपेक्षापूर्वक हटाना या भगाना।

धतूरा-पुं० [सं० धुस्तूर] एक पौधा जिसके फलों के बीज बहुत विषैले होते है।

धधकना-अ० [हिं० धधक] [भाव० धधक, स० धधकाना] १.आग का लपट के साथ जलना। दहकना। २.भड़कना।

धधाना*-अ० दे० 'धधकना'।

धन-पुं० [सं०] १. रुपया-पैसा, सोना-चाँदी आदि। द्रव्य। दौलत। २. वह सभी मूल्यवान् सामग्री जो किसी के पास हो और जो खरीदी और बेची जा सकती हो। सम्पत्ति। जायदाद। ३ अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। ४. गणित में जोड़ का चिह्न। 'ऋण' का उलटा। ५.मूल। पूँजी। *स्त्री० [सं० धन्या] युवती स्त्री या वधू। *वि० दे० 'धन्य'।

धन-कुबेर-पुं० [सं०] अत्यन्त धनी।

धनद-वि० [सं०] धन देनेवाला।

धन-धान्य-पुं० [सं०] धन और अन्न आदि, जो सम्पन्नता के सूचक माने गये हैं।

धन-धाम-पुं० [सं०] घर-बार और रुपया-पैसा।

धन-धारी-पुं० [सं० धन+धारी] १. कुबेर। २. बहुत बड़ा अमीर।

धन-पक्ष-पु० [सं०] १. बही-खाते आदि में वह पक्ष या अंग जिसमें आने या दूसरों से मिलनेवाले रुपये आदि लिखे जाते हैं। जमावाला पक्ष। (क्रेडिट साइड) २. वह पक्ष जिसमें पूँजी, लाभ या उपयोगी बातों का विचार या उल्लेख हो।

धन-पति-पुं०[सं०] १. कुबेर। २. धनी।

धनवंत-वि० दे० 'धनवान्'।

धनवान्-वि० [सं०] [स्त्री० धनवती] धनी : सम्पन्न। अमीर।

धनहीन-वि० [सं०] निर्धन। गरीब।

धना*-स्त्री० [सं० धन्या] पत्नी। वधू।

धनाढ्य-वि० [सं०] धनवान्। अमीर।

धनाणु-पुं० [सं०] वह अणु जो सदा धनात्मक विद्युत् से आविष्ट रहता है। (पॉजिटिव)

धनि*-स्त्री० [सं० धन्या] पत्नी। वधू। वि० दे० 'धन्य'।

धनिक-पुं०[सं०]१.धनी मनुष्य। २.पति।

धनियाँ-पुं० [सं० धन्या] १. सुगंधित पत्तियोंवाला एक छोटा पौधा। २. इस पौधे के दाने जो मसाले के काम आते हैं। *स्त्री० [सं० धन्या] युवती स्त्री या वधू।

धनी-वि० [सं० धनिन्] धनवान्।
यौ०-धनी-धोरी=मालिक या रक्षक। बात का धनी=बात पर दृढ़ रहनेवाला।
पुं० १. धनवान् पुरुष। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३. पति।
स्त्री० [सं०] युवती स्त्री या वधू।

धनु-पुं० दे० 'धनुष'।

धनुआ-पुं०[सं० धन्वा] [स्त्री० धनुई] १. धनुष। कमान। २.रुई धुनने की धुनकी।

धनुक*-पुं० १. दे० 'धनुष'। २. दे० 'इन्द्र-धनुष'।

धनुर्द्धर(र्धर)-पुं० [सं०] १. धनुष धारण करनेवाला पुरुष। २. धनुष चलाने में निपुण व्यक्ति।

धनुर्द्धारी-पुं० दे० 'धनुर्द्धर'।

धनुर्वात-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का लकवा (रोग)। २. दे० 'धनुष-टंकार'। (रोग)

धनुर्विद्या-स्त्री० [सं०] धनुष चलाने की विद्या या कला। तीर चलाने का हुनर।

धनुर्वेद-पुं० [सं०] यजुर्वेद का उपवेद, जिसमें धनुर्विद्या का विवेचन है।

धनुष-पुं० [सं० धनुस्] १. बाँस या लोहे के छड़ को कुछ झुकाकर उसके दोनों सिरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया हुआ अस्त्र, जिससे तीर चलाते हैं। कमान। २.दूरी की चार हाथ की एक माप।

धनुष-टंकार-स्त्री० [सं०] वह 'टन' शब्द जो धनुष पर बाण रखकर खींचने से होता है।
पु० व्रण या क्षत के विषाक्त होने के कारण होनेवाला एक भीषण और घातक रोग जिसमें रोगी की गरदन और पीठ अकड़कर धनुष के समान कुछ टेढ़ी हो जाती है। (टिटानस)

धनुहाई*-स्त्री० [हिं०धनु+हाई (प्रत्य०)] धनुष से होनेवाली लड़ाई।

धनुही†-स्त्री० [हिं० धनु+ही (प्रत्य०)] लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धन्न*-वि० दे० 'धन्य'।

धन्ना सेठ-पुं० [हिं० धन+सेठ] बहुत बड़ा धनी। परम धनाढ्य।

धन्य-वि० [सं०] [स्त्री० धन्या] १. प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। २. पुण्य-वान्। सुकृती।

धन्यवाद-पुं० [सं०] १. साधु-वाद। प्रशंसा। २. उपकार, अनुग्रह आदि के बदले में कृतज्ञता प्रकट करने का शब्द।

धन्वा-पुं० [सं० धन्वन्] धनुष।

धन्वाकार-वि० [सं०] धनुष के आकार का। आधी गोलाई के रूप में झुका हुआ।

धपना-अ० [सं० धावन, या हिं० धाप] १. तेज़ी से आगे बढ़ना। झपटना। २. मारना। पीटना।

धब्बा-पुं० [देश०]. १. किसी तल पर पड़ा हुआ भद्दा चिह्न या निशान। दाग। २. कलंक। लांछन।
मुहा०-नाम में धब्बा लगाना=कीर्ति नष्ट करनेवाला काम करना।

धमकना*-स० [?] नष्ट करना।

धम-स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।
यौ०-धमाधम=लगातार धम धम शब्द के साथ।

धमक-स्त्री० [अनु० धम] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. चलने से पृथ्वी पर होनेवाला कम्प और शब्द। ३. आघात आदि से होनेवाला कम्प।

धमकना-अ० [हिं० धमक] १. 'धम' शब्द करते हुए गिरना। धमाका करना।

मुहा०-आ धमकना=अवांछित रूप से आ पहुँचना।

२. दर्द करना। (सिर)

धमकाना-स० [हिं० धमक] धमकी देते हुए डराना। भय दिखाना।

धमकी-स्त्री० [हिं० धमकाना] दंड देने या हानि पहुँचाने का भय दिखाना।

मुहा०-धमकी में आना=किसी के डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।

धम-गजर-पुं० [देश०] उपद्रव। उत्पात।

धमधमाना-अ० [अनु० धम] 'धम धम' शब्द उत्पन्न करना।

धमनी-स्त्री० [सं०] १. शरीर में की वह नली जिसमें रक्त आदि का संचार होता रहता है। (सुश्रुत में ये २४ कही गई हैं, पर इनकी हजारों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई हैं) २. वह नली जिसमें से हृदय का शुद्ध रक्त निकलकर शरीर में फैलता है। नाड़ी। (आधु०)

धमाका-पुं० [अनु०] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. बन्दूक, तोप आदि छूटने का शब्द। ३. हाथी पर से चलाई जानेवाली एक प्रकार की बड़ी तोप।

धमा-चौकड़ी-स्त्री० [अनु० धम+हिं० चौकड़ी] १. उछल-कूद। २. उपद्रव।

धमाना*-स० [?] जोर से हवा करना या भरना। धौंकना।

धमार-स्त्री० [अनु०] १. उछल-कूद। धमा-चौकड़ी। २. एक विशेष प्रकार की कला या युक्ति से साधुओं का दहकती हुई आग पर चलना।

पुं० एक प्रकार का गीत।

धर-वि० [सं०] १. रखने या धारण करनेवाला। जैसे-मुरलीधर, धनुर्धर। २. अपने ऊपर धारण करके भार सँभालनेवाला। जैसे-धरणीधर।

स्त्री० [हिं० धरना] पकड़ने की क्रिया या भाव। जैसे-धर-पकड़।

धरक*-स्त्री० दे० 'धड़क'।

धरणि-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

धरणिधर-पुं० [सं०] १. पृथ्वी को उठाये रखनेवाला, कच्छप। २. पर्वत। ३. विष्णु। ४. शेषनाग।

धरणी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

धरता-पुं० [हिं० धरना] १. किसी के रुपयों का देनदार। ऋणी। २. किसी कार्य का भार लेनेवाला।

यौ०-करता-धरता = सब कुछ करने-धरनेवाला।

३. ऋण। कर्ज।

धरती-स्त्री० [सं० धरित्री] पृथ्वी।

धरधर*-पुं० दे० 'धराधर'।

धरधरा*-पुं० [अनु०] धड़कन।

धरन-स्त्री० [हिं० धरना] १. धरने की क्रिया, भाव या ढंग। २. छत का बोझ सँभालने के लिए दीवारों या खंभों पर आड़ा रक्खा हुआ लम्बा मोटा शहतीर। बड़ी कड़ी। ३. गर्भाशय को धारण करनेवाली उसके नीचे की नस। ४. गर्भाशय। ५. हठ। जिद।

धरनहार*-वि० [हिं० धरना+हार (प्रत्य०)] १. धारण करनेवाला। २. पकड़नेवाला।

धरना-स० [सं० धारण] [प्रे० धराना, धरवाना] १. पकड़ना। थामना। २. लेना। ग्रहण करना।

मुहा०-धर-पकड़कर = जबरदस्ती।

३. स्थित या स्थापित करना। रखना।

मुहा०-धरा रह जाना=काम न आना।

४. अधिकार या रक्षा में लेना। ५.

धारण करना। पहनना। ६. किसी का पल्ला पकड़ना। आश्रय लेना। ७. फैलनेवाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु में लगना या उसपर अपना प्रभाव डालना। जैसे-आग धरना। ८. गिरवी, रेहन या बंधक रखना।

पुं० किसी से कोई काम कराने का निश्चय करके उसके पास या कहीं अड़कर बैठना।

धरनी-स्त्री० दे० 'धरणी'।

स्त्री० [हिं० धरना] हठ। टेक।

धरम*-पुं० दे० 'धर्म'।

धरमसार*-स्त्री० [सं० धर्म्मशाला] १. धर्मशाला। २. सदावर्त।

धरमाई*-स्त्री० [सं० धर्म्म+आई (प्रत्य०)] धार्मिक होने का भाव। धार्मिकता।

धरषना*-अ० स० दे० 'धरसना'।

धरसना*-अ० [सं० धर्षण] १. दब जाना। २. डर या सहम जाना।

स० १. दबाना। २. अपमानित करना।

धरसनी*-स्त्री० दे० 'धर्षणी'।

धरहरना*-अ० १. दे० 'धड़कना'। २. दे० 'धड़धड़ाना'।

धरहरा-पुं० [हिं० धुर=ऊपर+घर] खम्भे की तरह की वह बहुत ऊँची इमारत जिसपर चढ़ने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनी होती है। धौरहर। मीनार।

धरा-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। जमीन। २. संसार। दुनियाँ।

धराऊ-वि० [हिं० धरना+आऊ (प्रत्य०)] १. जो दुर्लभ होने के कारण केवल विशेष अवसरों के लिए रक्खा रहे। २. बहुत दिनों का रक्खा हुआ। पुराना।

धरातल-पुं० [सं०] १. पृथ्वी। धरती। २. वह तल जिसमें केवल लम्बाई-चौड़ाई हो, मोटाई आदि न हो। पृष्ठ। तल। सतह। ३. क्षेत्र-फल। रकबा।

धराधर-पुं० [सं०] १. शेषनाग। २. पर्वत। पहाड़। ३. विष्णु।

धराधरन*-पुं० दे० 'धराधर'।

धराशायी-वि० [सं० धराशायिन्] [स्त्री० धराशायिनी] जमीन पर गिरा, पड़ा या लेटा हुआ।

धरित्री-स्त्री० [सं०] धरती। पृथ्वी।

धरेजा-पुं० [हिं० धरना=रखना+एजा (प्रत्य०)] १. किसी स्त्री को पत्नी की तरह घर में रखने की क्रिया या प्रथा।

स्त्री० दे० 'धरेल'।

धरेल(ली)-स्त्री० [हिं० धरना] उपपत्नी। रखेली।

धरोहर-स्त्री० [हिं० धरना] जरूरत पर काम आने के लिए किसी के पास रक्खी हुई दूसरे की वस्तु या द्रव्य। थाती। अमानत।

धर्त्ता-पुं० [सं० धर्तृ] १. धारण करनेवाला। २. अपने ऊपर भार लेनेवाला।

यौ०-कर्त्ता-धर्त्ता = सब कुछ करने-धरनेवाला। सब कामों का मालिक।

धर्म-पुं० [सं० धर्म्म] १. किसी वस्तु या व्यक्ति में सदा रहनेवाली उसकी मूल वृत्ति। प्रकृति। स्वभाव। मूल गुण। २. गुण। वृत्ति। ३. स्वर्गादि शुभ फल देनेवाले कार्य्य। ४. किसी जाति, वर्ण, पद आदि के लिए निश्चित किया हुआ कार्य या व्यवहार। कर्त्तव्य। जैसे-क्षत्रिय का धर्म्म, सेवक का धर्म्म। ५. सदाचार। ६. पुण्य। सत्कर्म।

मुहा०-धर्म कमाना=धर्म का या अच्छा काम करके उसका शुभ फल संचित करना। धर्म बिगाड़ना=१. धर्म भ्रष्ट करना। २. स्त्री का सतीत्व नष्ट करना।

६ पर-लोक, ईश्वर आदि के संबंध में विशेष प्रकार का विश्वास और उपासना की विशेष प्रणाली। ७.मत। सम्प्रदाय। पंथ। मजहब। ८. नैतिक व्यवस्था। नीति। कानून। जैसे-हिन्दू-धर्मशास्त्र। ९ विवेक। ईमान।

मुहा०-**धर्म लगती कहना**=उचित बात कहना। **धर्म से कहना**=सच कहना।

धर्म-कर्म-पुं० [सं०] किसी धर्म-ग्रंथ मे बतलाये हुए आवश्यक कृत्य।

धर्म-क्षेत्र-पुं० [स०] १. कुरुक्षेत्र। २. भारतवर्ष जो धर्म-कार्यों के लिए विशिष्ट क्षेत्र माना गया है।

धर्म-ग्रंथ-पुं० [सं०] वह ग्रन्थ या पुस्तक जिसमे धर्म की शिक्षा हो।

धर्म घड़ी-स्त्री० [सं० धर्म+हिं० घड़ी] दीवार पर टांगने की घड़ी।

धर्म-चक्र-पुं० [सं०] महात्मा बुद्ध का धर्म-प्रचार जो काशी से आरम्भ हुआ था।

धर्म-चर्य्या-स्त्री० [सं०] धर्म का आचरण और पालन।

धर्मचारी-वि० [सं० धर्मचारिन्] [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला।

धर्म-च्युत-वि० [स०] [संज्ञा धर्म-च्युति] अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ।

धर्मज्ञ-वि० [सं०] धर्म्म जाननेवाला।

धर्मणा-क्रि० वि० [सं०] धर्म के विचार से या अनुसार।

धर्मतः-अव्य० दे० 'धर्मणा'।

धर्मध्वज-पुं० [सं०] धर्म का आडंबर खड़ा करके स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य।

धर्म-निष्ठ-वि० [सं०] [संज्ञा धर्म-निष्ठा] धर्म में निष्ठा या श्रद्धा रखनेवाला। धार्मिक। धर्म-परायण।

धर्म-पत्नी-स्त्री० [सं०] धर्म की रीति से ब्याही हुई स्त्री। विवाहिता स्त्री।

धर्म-पुस्तक-स्त्री० [सं० धर्म+पुस्तक] वह पुस्तक जो किसी धर्म का मूल आधार हो। किसी धर्म का आधार ग्रन्थ।

धर्म-बुद्धि-स्त्री० [सं०] धर्म-अधर्म या भले-बुरे का विचार।

धर्म-भीरु-वि० [सं०] जिसे धर्म का भय हो। अधर्म से डरनेवाला।

धर्म-युद्ध-पुं० [सं०] १. वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अधर्म या अन्याय न हो। २. धर्म के लिए या किसी बहुत अच्छे उद्देश्य से किया जानेवाला युद्ध। (क्रूसेड)

धर्मराज-पुं० [सं०] १ धर्म का पालन करनेवाला राजा। २. युधिष्ठिर। ३. यमराज। ४. न्यायाधीश।

धर्मराय*-पुं० दे० 'धर्मराज'।

धर्म-लिपि-स्त्री० [सं०] १. वह लिपि जिसमें किसी धर्म की मुख्य धर्म-पुस्तक लिखी हो। जैसे-अरबी मुसलमानों की धर्म-लिपि है। २. स्तम्भों पर खुदे हुए सम्राट् अशोक के प्रज्ञापन।

धर्मलुप्ता उपमा-स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें समान धर्म का कथन न हो।

धर्म-वीर-पुं० [सं०] वह जो धर्म-संबंधी कार्य करने में साहसी हो।

धर्मशाला-स्त्री० [सं०] यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मार्थ बना हुआ मकान।

धर्म-शास्त्र-पुं० [सं०] [वि० धर्म-शास्त्री] १. किसी धर्म्म के वे शास्त्र या ग्रन्थ, जिनमें समाज के शासन और व्यवस्था से संबंध रखनेवाले नैतिक और आचा-

रिक नियमों का उल्लेख हो। २. किसी धर्म के अनुयायियों की निजी विधि या नैतिक नियम। (पर्सनल लॉ) जैसे-हिन्दू धर्म-शास्त्र। (हिन्दू लॉ)

धर्म-शास्त्री-पुं० [सं०] वह जो धर्म-शास्त्र का ज्ञाता या पंडित हो।

धर्म-शील-वि०[सं०] [संज्ञा धर्म-शीलता] जिसकी धर्म में प्रवृत्ति हो। धार्मिक।

धर्म-सभा-स्त्री० [सं०] न्यायालय।

धर्मांध-वि० [सं०] [भाव० धर्मांधता] जो धर्म के नाम पर अंधा हो रहा हो और उसके लिए बुरे से बुरा काम करे।

धर्माचार्य-पुं० [सं०] किसी धर्म का वह आचार्य या गुरु जो लोगों को उस धर्म के अनुसार चलने की शिक्षा देता हो।

धर्मात्मा-वि०[सं० धर्मात्मन्] धर्म-शील।

धर्माधिकरण-पुं० [सं०] न्यायालय।

धर्माधिकारी-पुं० [सं०] १ धर्म और अधर्म की व्यवस्था देनेवाला, न्यायाधीश। २. किसी राजा की ओर से दान के प्रबन्ध के लिए नियुक्त व्यक्ति। दानाध्यक्ष।

धर्माध्यक्ष-पुं० दे० 'धर्माधिकारी'।

धर्मार्थ-क्रि० वि० [सं०] केवल धर्म या पुण्य के विचार से। परोपकार के लिए।

धर्मावतार-पुं० [सं० साक्षात्] परम धर्म-शील। अत्यन्त धर्मात्मा।

धर्मासन-पुं०[सं०]न्यायाधीश का आसन।

धर्मिष्ठ-वि० [सं०] [भाव० धर्मिष्ठता] धर्मशील। धार्मिक। पुण्यात्मा।

धर्मी-वि० [सं०] [स्त्री० धर्मिणी] १. जिसमें कोई धर्म या गुण हो। २.धार्मिक। ३. कोई मत या धर्म माननेवाला। पुं० गुण या धर्म का आश्रय। (पदार्थ)

धर्मोपदेशक-पुं० [सं०] धर्म-संबंधी उपदेश देनेवाला।

धर्षण-पुं० [सं०] [वि० धर्षक, धर्षणीय, धर्षित] १. अपमान। २. दबोचना। ३. आक्रमण। ४. दबाना या दमन करना।

धर्षणी-स्त्री०[सं०]व्यभिचारिणी। कुलटा।

धव-पुं० [सं०] १.ओषध के काम का एक जंगली पेड़। २. पति। स्वामी। जैसे-माधव। ३. पुरुष। मर्द।

धवनी*-स्त्री० दे० 'धौंकनी'।

धवर*-वि०[सं०धवल] सफेद। उजला।

धवरी-स्त्री० [हिं० धवरा] सफेद गाय।

धवल-वि० [सं०] [भाव० धवलता] १.श्वेत। उजला। २.निर्मल। ३.सुन्दर।

धवलना*-स० [सं० धवल] उज्वल या स्वच्छ करना। चमकाना।

धवला-वि० [सं०] सफेद। उजली। स्त्री० सफेद गाय।

धवलाई*-स्त्री० [सं० धवलता] सफेदी।

धवलागिरि-पुं० [सं० धवल+गिरि] हिमालय पर्वत की एक प्रसिद्ध चोटी।

धवलित-वि० [सं०] १. सफेद। उजला। २. उज्वल।

धवलिमा-स्त्री० [सं०] १. सफेदी। २. उज्वलता।

धवली-स्त्री० [सं०] सफेद गाय।

धवाना*-स० [हिं० धाना] दौड़ाना।

धसक-स्त्री० [अनु०] १.सूखी खाँसी में गले का ठन ठन शब्द। २.सूखी खाँसी। स्त्री० [हिं० धसकना] १. धसकने की क्रिया या भाव। २. ईर्ष्या। डाह।

धसकना-अ० [हिं० धँसना] १. नीचे की ओर धँसना या बैठना। २. ईर्ष्या करना। ३. डरना।

धसना*-अ० [सं ध्वंसन] ध्वस्त या नष्ट होना। मिटना। स० नष्ट करना। मिटाना।

धसमसाना*-अ० दे० 'धँसना'।
धसान-स्त्री० दे० 'धँसान'।
धाँधना*-स० [देश०] १. बन्द करना। २. बहुत अधिक खा लेना।
धाँधल (ी)-स्त्री० [हिं० धांधना + ल (प्रत्य०)] १ उपद्रव। उत्पात। शरारत। २.बहुत अधिक जल्दी। ३.स्वेच्छाचारिता। ४. जबरदस्ती अपनी गलत बात आगे या ऊपर रखना।
धाँस-स्त्री० [अनु०] सुँघनी, मिर्च आदि की, वायु में मिली हुई, उग्र गंध।
धा-प्रत्य० [सं०] तरह। भांति। जैसे-बहुधा, नवधा आदि।
पुं० [सं० धैवत] १. संगीत में धैवत स्वर का संकेत या सूचम रूप। ध। २. मृदंग, तबले आदि का एक बोल।
धाई*-स्त्री० दे० 'दाई'।
धाक-स्त्री० [अनु०] १. रोब। आतंक। मुहा०-धाक जमना या बँधना=रोब या दबदबा होना।
२. ख्याति। प्रसिद्धि। शोहरत।
धाकना*-अ० [हिं० धाक+ना (प्रत्य०)] धाक या रोब जमाना।
धागा-पुं० [हिं० तागा] बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।
धाड़-स्त्री० १. दे० 'डाढ़'। २ दे० 'दहाड़'। ३. दे 'दाढ़'।
स्त्री० [हिं० धार] १. डाकुओं का आक्रमण। २. जत्था। झुंड। दल।
धाता-पुं [सं० धातृ] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. महादेव। ४. विधाता।
वि० १. पालन करनेवाला। पालक। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक। ३. धारण करनेवाला। धारक।
धातु-स्त्री० [सं०] १. वह अपारदर्शक चमकीला खनिज विशुद्ध द्रव्य जिससे बरतन, तार, गहने, शस्त्र आदि बनते हैं। जैसे-सोना, चाँदी, लोहा, तांबा आदि। २. शरीर को बनाये रखनेवाले भीतरी तत्व या पदार्थ जो वैद्यक के अनुसार सात हैं—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। ३. शुक्र। वीर्य।
पुं० १. भूत। तत्व। २. क्रिया का मूल रूप। जैसे-संस्कृत में भू, कृ, घृ, आदि।
धातु-पुष्ट(वर्द्धक)-वि० [सं०] (ओषधि) जिससे वीर्य बढ़े और गाढ़ा हो।
धात्री-स्त्री० [सं०] १. माता। माँ। २. बच्चे को दूध पिलाने और उसका लालन-पालन करनेवाली स्त्री। धाय। दाई। ३. गायत्री-स्वरूपिणी भगवती। ४. गंगा। ५ पृथ्वी। ६. गाय। गौ।
धात्री विद्या-स्त्री० [सं०] स्त्री को प्रसव कराने और बच्चे पालने आदि की विद्या।
धात्वर्थ-पुं० [सं०] किसी शब्द का धातु से निकलनेवाला मूल अर्थ।
धान-पुं० [सं० धान्य] एक पौधा जिसके बीजों में से चावल निकलते हैं। शालि।
धानक-पुं० दे० 'धानुक'।
धान-पान-वि० [हिं० धान+पान] १. दुबला-पतला। २. कोमल। नाजुक।
धाना*-अ० [सं० धावन] १. दौड़ना। २. दौड़-धूप या प्रयत्न करना।
धानी-स्त्री० [सं०] १. वह जिसमें कोई चीज रक्खी जाय। २. स्थान। जगह। जैसे-राजधानी।
स्त्री० [हिं० धान] हलका हरा रंग।
वि० हलके हरे रंग का।
स्त्री०[सं०धाना] भूना हुआ जौ या गेहूँ।
स्त्री० दे० 'धान्य'।
धानुक-पुं० [सं० धानुष्क] १. धनुष

चलानेवाला। २.रुई धुननेवाला।धुनियाँ।

धान्य-पुं० [सं०] १.धान। २.अन्न मात्र।

धाप-पुं० [हिं० टप्पा] १. दूरी की एक नाप जो प्रायः एक मील की होती है। २. लम्बा-चौड़ा मैदान।

स्त्री० [सं० तृप्ति] तृप्ति। संतोष।

धापना*-अ० [सं० तर्पण] सन्तुष्ट या तृप्त होना। अघाना।

स० सन्तुष्ट या तृप्त करना।

अ० [सं० धावन] दौड़ना।

धावा-पुं० [देश०] १. अटारी। २. कच्ची या पक्की रसोई बिकने का स्थान।

धा-भाई-पुं० दे० 'दूध-भाई'।

धाम-पुं० [सं० धामन्] १.मकान। घर। २. किसी चीज के रहने का स्थान। जैसे-शोभा-धाम। ३.शरीर। ४. शोभा। ५. देव स्थान या पुण्य-स्थान। जैसे-चारो धाम। ६ स्वर्ग।

धामिन-स्त्री० [हिं० धाना=दौड़ना] एक प्रकार का जहरीला साँप जो बहुत तेज दौड़ता है।

धाय-स्त्री० [सं० धात्री] दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करनेवाली स्त्री। धात्री। दाई।

धार-पुं० [सं०] १. औषध के काम के लिए इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल। २. उधार। ऋण। ३. प्रान्त। प्रदेश।

स्त्री० [सं० धारा] १. पानी आदि के गिरने या बहने का क्रम। प्रवाह।

मुहा०-धार चढ़ाना=देवी-देवता आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना।

२. पानी का सोता। ३. जोर की वर्षा। ४. धारदार हथियार का तेज सिरा या किनारा। बाढ़। ५. किनारा। सिरा। ६. सेना। ७. समूह। ८. रेखा। लकीर। ९. ओर। दिशा। १०. पहाड़ की कोई छोटी श्रेणी।

धारक-वि० [सं०] १.धारण करनेवाला। २. रोकनेवाला। ३. उधार लेनेवाला।

धारण-पुं० [सं०] १. थामना, रखना या अपने ऊपर लेना। २. पहनना। ३. अंगीकार करना। ४. ऋण लेना।

धारणा-स्त्री० [सं०] १. धारण करने की क्रिया या भाव। २. मन में धारण करने या रखने, लाने आदि की शक्ति। बुद्धि। समझ। ३. मन में होनेवाला विचार। ४. याद। स्मृति। ५. योग के आठ अंगों में से एक।

धारणिक-पुं० [सं०] १. ऋणी। धरता। कर्जदार। २.वह आदमी जिसके पास या वह कोठी जिसमें धन जमा किया जाय।

धारणीय-वि० [सं०] [स्त्री० धारणीया] धारण करने योग्य।

धारना*-स० [सं० धारण] १. धारण करना। २. मन में निश्चय करना।

स्त्री० दे० 'धारणा'।

धारा-स्त्री० [सं०] १. दे० 'धार' (पानी, हथियार आदि की)। २. विधान आदि का वह विशेष या स्वतन्त्र अंग जिसमें किसी एक विषय की सब बातें या आदेश हों। (प्रायः इसके साथ क्रमांक रहते हैं।) जैसे-इसकी ४० वीं धारा अ-स्पष्ट है।

धाराधर-पुं० [सं०] बादल।

धारा-यंत्र-पुं० [सं०] १. पिचकारी। २. फुहारा।

धारा-वाहिक(वाही)-वि० [सं०] धारा के रूप में बिना रुके आगे बढ़ने या चलनेवाला। २. बराबर कुछ समय तक क्रम से चलनेवाला। जैसे-धारावाहिक उपन्यास या लेख। (पत्र-पत्रिका आदि में

क्रमशः छपने के समय)

धारा सभा-स्त्री० दे० 'विधायिका'।

धारि*-स्त्री० दे० 'धार'।

धारिणी-स्त्री० [सं०] धरणी। पृथ्वी। वि० धारण करनेवाली।

धारी-वि० [सं० धारिन्] [स्त्री० धारिणी] धारण करनेवाला। जैसे-शरीर-धारी। स्त्री० [सं० धारा] १. सेना। फौज। २. समूह। झुंड। ३. रेखा। लकीर।

धारोष्ण-वि० [सं०] थन से निकला हुआ, ताजा और गरम (दूध)।

धार्तराष्ट्र-पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के वंशज।

धार्मिक-वि० [सं०] १. धर्म से सम्बन्ध रखनेवाला। धर्म का। जैसे-धार्मिक कृत्य या विचार। २. (व्यक्ति) जिसे धर्म का विशेष ध्यान रहता हो। धर्म-शील।

धार्य-वि० [सं०] धारण करने के योग्य। जैसे-शिरोधार्य।

धावक-पुं० [सं०] दौड़कर कोई काम करने, विशेषतः पत्र ले जानेवाला। हरकारा।

धावन-पुं० [सं०] १. बहुत जल्दी या दौड़कर जाना। २. दूत। हरकारा। ३. धोकर साफ करना। ४. वह जिससे कोई चीज धोई या साफ की जाय।

धावना*-अ० दे० 'धाना'।

धावनि*-स्त्री०[सं०धावन] धावा। चढ़ाई।

धावरा*-वि० [स्त्री० धावरी] = धवल।

धावरी*-स्त्री० दे० 'धवरी'।

धावा-पुं० [सं० धावन] १. आक्रमण। चढ़ाई। २. कहीं पहुँचने के लिए जल्दी जल्दी या दौड़ते हुए जाना। दौड़। मुहा०-**धावा मारना**=जल्दी चलना।

धावित-वि० [सं०] दौड़ता हुआ।

धाह*-स्त्री० [अनु०] जोर से या चिल्लाकर रोना। धाड़।

धाही*-स्त्री० दे० 'धाय'।

धिक्(क)-स्त्री० दे० 'धिक्कार'।

धिकना-अ० [स० धिकाना] = दहकना।

धिक्कार-स्त्री० [सं०] [क्रि० धिक्कारना] तिरस्कार या घृणा व्यंजक शब्द। लानत।

धिग*-स्त्री० दे० 'धिक्कार'।

धिय(।)*-स्त्री० [सं० दुहिता] १. पुत्री। बेटी। २. लड़की। बालिका।

धिरना(रवना)*-स० दे० 'धमकाना'।

धिराना*-स० दे० 'धमकाना'। अ० [सं० धीर] १. धीमा पड़ना। मन्द होना। २. धैर्य्य रखना।

धींग-पुं० [सं० दृढांग] [क्रि० धिंगाना, भाव० धिंगाई] १. हट्टा-कट्टा। मजबूत। २. बदमाश। लुच्चा। ३. पापी।

धींगड़ा(रा)-पुं०[स्त्री०धींगड़ी]दे०'धींग'।

धींगा-धींगी-स्त्री० [हिं० धींग] अनुचित बल-प्रयोग या दबाव। जबर्दस्ती।

धींगा-मुश्ती-स्त्री० दे० 'धींगा-धींगी'।

धींद्रिय-स्त्री० दे० 'ज्ञानेंद्रिय'।

धींवर-पुं० दे० 'धीवर'।

धी-स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। २. मन। स्त्री० [सं० दुहिता] बेटी। पुत्री।

धीजना*-स० [सं० धैर्य्य] ग्रहण, स्वीकार या अंगीकार करना। अ० १. धीरज धरना। २. सन्तुष्ट होना।

धीमर*-पुं० दे० 'धीवर'।

धीमा-वि० [सं० मध्यम] [स्त्री० धीमी] १. धीरे चलनेवाला। मंद गतिवाला। २. साधारण से नीचा। मन्द (स्वर)।

धीमान्-पुं० [सं० धीमत्] बुद्धिमान्।

धीय(।)-स्त्री० दे० 'धिय'।

धीर-वि० [सं०] [भाव० धीरता] १. दृढ़ और शान्त मनवाला। धैर्य्यवान्। २. गम्भीर। ३. मंद। धीमा

*पुं० [सं० धैर्य्य] धीरज। ढारस।
धीरक*-पुं० दे० 'धैर्य्य'।
धीरज-पुं० दे० 'धैर्य्य'।
धीरना*-अ० [हिं० धीर+ना (प्रत्य०)] धैर्य्य धारण करना। धीरज धरना। स० धैर्य्य धारण कराना। धीरज धराना।
धीर-ललित-पुं० [सं०] सदा बना-ठना और प्रसन्न रहनेवाला नायक। (साहित्य)
धीर-शांत-पुं० [सं०] सुशील, दयावान् और गुणवान् नायक। (साहित्य)
धीरा-स्त्री० [सं०] अपने नायक में पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर व्यंग्य से कोप प्रकट करनेवाली नायिका। (साहित्य) वि० [सं० धीर] मन्द। धीमा।
धीराधीरा-स्त्री० [सं०] अपने नायक में पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से अपना क्रोध प्रकट करनेवाली नायिका। (साहित्य)
धीरे-क्रि० वि० [हिं० धीर] १. आहिस्ते से। मन्द या धीमी गति से। २. हलके या नीचे स्वर से। ३. चुपके से।
धीरोदात्त-पुं० [सं०] दयालु, बलवान्, धीर और योद्धा नायक। (साहित्य)
धीरोद्धत-पुं० [सं०] बहुत प्रचंड, चंचल और अपने गुणों का आप वर्णन करनेवाला नायक। (साहित्य)
धीवर-पुं० [सं०] [स्त्री० धीवरी] मछली पकड़ने और बेचने का काम करनेवाली एक जाति। मछुआ। मल्लाह।
धुँगार-स्त्री० [सं० धूम्र+आधार] [क्रि० धुँगारना] बघार। तड़का। छौंक।
धुंध-स्त्री० [सं० धूम्र+अंध] १. हवा में मिली हुई धूल या भाप के कारण होनेवाला अँधेरा। २. हवा में उड़ती हुई धूल। ३. आँख का एक रोग जिसमें चीजें धुँधली दिखाई देती हैं।
धुंधकार-पुं० [हिं०धुँकार] १.गड़गड़ाहट। २. गर्जना। गरज।
धुंधर†-स्त्री० [हिं० धुंध] १. हवा में उड़ती हुई धूल। २. अँधेरा।
धुँधला-वि०[हिं०धुंध+ला(प्रत्य०)][क्रि० धुँधलाना, भाव० धुँधलापन] १. कुछ कुछ काला या अँधेरा-सा। २. जो साफ दिखाई न दे। अ-स्पष्ट।
धुँधलाई*-स्त्री० दे० 'धुँधलापन'।
धुँधाना-अ० [हिं०धुंध+आना (प्रत्य०)] १.धूआँ देना। २.धूआँ देते हुए जलना। ३. दे० 'धुँधलाना'। स० किसी चीज में धूआँ लगाना।
धुँधुआना-अ०, स० दे० 'धुँधाना'।
धुंधुरि*-स्त्री०[हिं०धुंध] [वि० *धुंधरित] गर्द-गुबार या धूएँ से होनेवाला अँधेरा।
धुँधुवाना*-अ०, स० दे० 'धुँधाना'।
धुअ*-पुं० दे० 'ध्रुव'।
धुआँ-पुं० दे० 'धूआँ'।
धुआँना-अ० [हिं० धूआं+ना (प्रत्य०)] दूध, पकवान आदि का, धूआं लगने के कारण, स्वाद और गंध बिगड़ जाना।
धुआँयँध-स्त्री० [हिं० धूआँ+गंध] धूएँ की-सी गंध। स्त्री० अपच में आनेवाला डकार। धूम।
धुआँस-स्त्री० [हिं० धूर+माष] उरद का आटा।
धुआ†-पुं० [?] शव। लाश।
धुकड़-पुकड़-स्त्री० [अनु०] १.भय आदि से चित्त की व्याकुलता या अस्थिरता। घबराहट। २. आगा-पीछा। असमंजस।
धुकधुकी-स्त्री० [धुकधुक से अनु०] १. पदिक या जुगनूँ नाम का गहना। २. दे० 'धकधकी'।

धुकना*-अ० [हिं० झुकना] [स० धुकाना] १. नीचे झुकना। नवना। २. गिर पड़ना। ३. झपटना। टूट पड़ना। स० [सं० धूम+करण] धूनी देना।

धुकार(ी)-स्त्री० [धु से अनु०] नगाड़े का शब्द।

धुज(ा)*-स्त्री० दे० 'ध्वजा'।

धुजनी*-स्त्री० [सं० ध्वजा] सेना।

धुड़गा*-वि० [हिं० धूर+अंग] [स्त्री० धुड़गी] १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो। २. जिसपर धूल पड़ी हो।

धुतकार-स्त्री० दे० 'दुतकार'।

धुताई*-स्त्री०=धूर्तता।

धुतारा*-वि० दे० 'धूर्त'।

धुधुकार-स्त्री० [धू धू से अनु०] १ जोर का धू धू शब्द। २. घोर शब्द। गरज।

धुन-स्त्री० [हिं० धुनना] १. बिना आगा-पीछा सोचे बराबर काम करते रहने की प्रवृत्ति या दशा। लगन।
यौ०-धुन का पक्का=आरंभ किये हुए काम में बराबर लगा रहनेवाला।
२. मन की तरंग। मौज। ३. चिन्ता। स्त्री० [सं० ध्वनि] १. किसी गीत के विशिष्ट स्वर-क्रम या लय से गाये जाने का ढंग। किसी गाने की खास तर्ज। २. दे० 'ध्वनि'।

धुनकना-स० दे० 'धुनना'।

धुनकी-स्त्री० [सं० धनुस्] १. धुनियों की वह कमान जिससे वे रूई धुनते हैं। २. लड़कों के खेलने की छोटी कमान।

धुनना-स० [हिं०धुनकी] [प्रे० धुनवाना] १. धुनकी की सहायता से रूई में से बिनौले अलग करना। २. खूब मारना-पीटना। ३. दूसरे की बात बिना सुने अपनी बात बराबर कहते जाना। ४. कोई काम लगातार करते जाना।

धुनि*-स्त्री०१.दे०'ध्वनि'। २. दे०'धुनी'।

धुनियाँ-पुं० [हिं० धुनना] वह जो रूई धुनने का काम करता हो। बेहना।

धुनी-स्त्री० [सं०] नदी।
*स्त्री० दे० 'धूनी'।

धुप्पस-स्त्री० [देश०] किसी को डराने या धोखा देने के लिए किया जानेवाला कार्य। धौंस।

धुमिला*-वि० दे० 'धूमिल'।

धुमिलाना*-अ० [हिं० धूमिल] धूमिल होना। काला पड़ना।

धुरंधर-वि० [सं०] [भाव० धुरंधरता] १. भार उठानेवाला। २. जो सबमें बहुत बड़ा, मान्य या बलवान हो। ३ श्रेष्ठ। प्रधान।

धुर-पुं० [सं० धुर्] १. गाड़ी का धुरा। अक्ष। २. शीर्ष या उच्च स्थान। ३. आरम्भ। शुरू। ४. दे० 'धूर'।
अव्य० [सं० धुर] १. बिलकुल ठीक या ठिकाने तक।
मुहा०-धुर सिर से=बिलकुल शुरू से।
वि० [सं० ध्रुव] पक्का। दृढ़। २. सीधे। ३. बहुत दूर।

धुरजटी*-पुं० दे० 'धूर्जटी'।

धुरना*-स० [सं० धूर्वण] १. मारना। पीटना। २. बजाना।

धुरवा*-पुं०[सं०धुर+वाह] बादल। मेघ।

धुरा-पुं० [सं० धुर] [स्त्री० अल्पा० धुरी] लोहे का वह डंडा जिसके दोनों सिरों पर गाड़ी आदि के पहिये लगे रहते हैं। अक्ष।

धुरी-स्त्री० [हिं० धुरा] गाड़ी का धुरा।

धुरीण-वि० [सं०] १. बोझ सँभालने-वाला। २. मुख्य। प्रधान। ३. धुरंधर।

धुरी राष्ट्र-पुं० [हिं० धुरी+सं० राष्ट्र] दूसरे महायुद्ध से पहले सार्वराष्ट्रीय राजनीति में जरमनी, इटली और जापान ये तीनों राष्ट्र, जिनका एक गुट बना था।

धुरेटना*-स० [हिं० धुर + लपेटना] धूल से लपेटना। धूल लगाना।

धुर्रा-पुं० [हिं० धूर] १. धूल। चूर्ण। मुहा०-धुर्रा करना = शीत से शरीर सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना। धुर्रे उड़ाना=१. किसी वस्तु के टुकड़े टुकड़े कर डालना। २ किसी के मत का खंडन आदि करके बहुत दुर्दशा करना।

धुलना-अ० [हिं० धोना का अ० रूप] [प्रे० धुलाना] पानी से साफ किया जाना। धोया जाना।

धुलाई-स्त्री० [हिं० धोना] धोने का काम, भाव या मजदूरी।

धुलेंडी-स्त्री० [हिं० धूल+उड़ाना] होली जलने के दूसरे दिन होनेवाला त्योहार। (इस दिन लोग एक दूसरे पर अबीर-गुलाल आदि डालते हैं।)

धुव*-पुं० दे० 'ध्रुव'।

धुवाँ-पुं० दे० 'धूआँ'

धुवाँस-स्त्री० दे० 'धुआँस'।

धुस्स-पुं० [हिं० ढूह या देश०] १. ढूह। टीला। २. नदी का बाँध। बंद।

धुस्सा-पुं० [सं० द्विशाट] ऊन की मोटी लोई या चादर।

धूँधर*-वि० दे० 'धुँधला'।

धूँसना*-अ०[देश०]जोर का शब्द करना।

धू*-वि० दे० 'ध्रुव'।

धूआँ-पुं० [सं० धूम] १. आग से निकलनेवाली काली भाप। धूम। यौ०-धूएँ का धौरहर=क्षण-भंगुर वस्तु। मुहा०-धूएँ के बादल उड़ाना=भारी गप हाँकना। अनहोनी बात कहना। २.घटाटोप उमड़ता हुआ ढेर। भारी समूह।

धूआँ-कश-पुं० [हिं० धूआँ+फा० कश] भाप के जोर से चलनेवाला जहाज। अगिन-बोट। (स्टीमर)

धूआँधार-वि०[हिं०धुआँ+धार] १.धूएँ से भरा हुआ। २. गहरे काले रंग का। भड़कीला काला। ३.बहुत जोर का। घोर। क्रि० वि० बहुत अधिक या बहुत जोर से।

धूई-स्त्री० [हिं० धूआँ] धूनी।

धूकना*-अ० दे० 'ढुकना'।

धूजट*-पुं० [सं० धूर्जटि] शिव।

धूजना-अ० [सं० धूत] १. हिलना। २ काँपना।

धूत-वि० [सं०] १. हिलता या काँपता हुआ। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३.चारों ओर से रुका या घिरा हुआ।
*वि० [सं० धूर्त] १.धूर्त। २ दगाबाज।

धूतना*-स० [हिं० धूर्त] धूर्तता करना।

धूताई*-स्त्री०=धूर्तता।

धूतुक(तू)-पुं० [अनु०] १. तुरही। २ धू धू शब्द करनेवाला कोई बाजा।

धू धू-पुं० [अनु०] आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द।

धूनना*-स० [हिं० धूनी] कुछ जलाकर उसका धूआँ उठाना। धूआँ या धूनी देना। स० दे० 'धुनना'।

धूनी-स्त्री०[हिं०धूआँ]१.गुग्गुल आदि गन्ध-द्रव्य जलाकर निकाला हुआ धूआँ। मुहा०-धूनी देना=कोई चीज जलाकर उसका धूआँ उठाना। २. साधुओं के तापने की आग। मुहा०-धूनी जगाना, रमाना या लगाना=१.साधुओं का आग जलाकर उसके

सामने बैठना। २.साधु या विरक्त होना।

धूप-पुं० [सं०] गंध-द्रव्यों को जलाकर निकाला हुआ धूआँ। सुगंधित धूम। स्त्री० १. एक प्रसिद्ध मिश्रित गंध-द्रव्य जिसे जलाने से सुगंधित धूआँ निकलता है। २. सूर्य की किरणों का विस्तार। सूर्यातप। घाम।

मुहा०-धूप खाना=शरीर गरम करने के लिए धूप में बैठना। धूप दिखाना= धूप में रखना। धूप में बाल सफेद करना=बिना कुछ सीखे या अनुभव प्राप्त किये उम्र बिताना।

धूप-घड़ी-स्त्री० [हिं० धूप+घड़ी] धूप की सहायता से समय का ज्ञान प्राप्त करने का एक यंत्र। (इसमें एक गोल चक्कर के बीच में गड़ी हुई कील की परछाईं से समय जाना जाता है।)

धूप-छाँह-स्त्री० [हिं० धूप+छाँह] एक विशेष प्रकार से बनाया हुआ वह कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई देता है, कभी दूसरा।

धूप-दान-पुं०[सं०धूप+आधान] [अल्पा० धूपदानी] धूप या गंध-द्रव्य जलाने का पात्र।

धूपना*-अ०[सं०धूपन] धूप या और कोई गंध-द्रव्य जलाकर उसका धूआँ उठाना। स० सुगन्धित धूएँ से बासना। स० [सं० धूपन=श्रांत होना] दौड़ना। हैरान होना। जैसे-दौड़ना-धूपना।

धूप-बत्ती-स्त्री० [हिं० धूप+बत्ती] धूप आदि सुगंधित मसालों से बनी हुई वह बत्ती जिसे जलाने से सुगन्धित धूआँ निकलता है।

धूपित-वि० [सं०] १. धूप जलाकर सुगन्धित किया हुआ। २. थका हुआ।

धूम-पुं० [सं०] १. धूआँ। २. अपच में उठनेवाला डकार। धुआँयँध। ३.धूमकेतु। स्त्री० [सं० धूम=धूआँ] १. बहुत-से लोगों के इकट्ठे होकर शोर मचाने आदि का व्यापार। २. हलचल। आन्दोलन। ३.उपद्रव। ऊधम। ४.ठाठ-बाट। समारोह। ५. कोलाहल। हल्ला। शोर। ६. प्रसिद्धि। ख्याति।

धूम-केतु-पुं० [सं०] पुच्छल तारा।

धूम-धड़क्का-पुं० दे० 'धूम-धाम'।

धूम-धाम-स्त्री० [हिं० धूम+धाम (अनु०)] बहुत अधिक तैयारी। ठाठ-बाट। समारोह।

धूम-पान-पुं० [सं०] तमाकू, बीड़ी आदि (का धूआँ) पीना।

धूम-पोत-पुं० [सं०] धूआँकश।

धूमर*-वि० दे० 'धूमिल'।

धूमिल*-वि० [सं० धूमल] १. धूएँ के रंग का। काला। २. धुँधला।

धूम्र-वि० [सं०] धूएँ के रंग का। पुं० दे० 'धूम' (धूआँ)।

धूम्र-पान-पुं० दे० 'धूम-पान'।

धूर*-स्त्री० दे० 'धूल'। पुं० [सं० धुर] एक बिस्वे का बीसवाँ भाग। बिस्वांसी।

धूर-धुरेटा-पुं० [हिं० धूल] वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो। वि० धूल में लिपटा हुआ।

धूरा-पुं० १ दे० 'धुर्रा'। २. दे० 'धूर'।

धूरि*-स्त्री० दे० 'धूल'।

धूर्जटि-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

धूर्त्त-वि० [सं०] [भाव० धूर्त्तता] १. मायावी। छली। २. वंचक। ठग। ३. दाव-पेंच या चालबाजी से काम निकालनेवाला।

धूल-स्त्री० [सं० धूलि] १. मिट्टी, बालू आदि का बहुत महीन चूर। रज। गर्द।

मुहा०-(कहीं) धूल उड़ना=१. बर-बादी आना। २.रौनक न रहना। (किसी की) धूल उड़ना=१. बहुत दोष प्रकट होना। २. बदनामी या उपहास होना। (किसी की) धूल उड़ाना= १. बदनामी करना। २. हँसी उड़ाना। धूल की रस्सी बटना=१. असम्भव कार्य के पीछे पड़ना। २. कोरी धूर्त्तता से काम निकालना। धूल चाटना= अत्यन्त अधीनता दिखाना। (किसी बात पर) धूल डालना=उपेक्षापूर्वक छोड़ देना। धूल फाँकना=मारा मारा फिरना। धूल में मिलना=चौपट होना। सिर पर धूल डालना=सिर धुनना। पछताना। २. धूल के समान तुच्छ वस्तु।

मुहा०-पैर की धूल होना=किसी की तुलना में अत्यन्त तुच्छ होना।

धूलि-स्त्री० [सं०] धूल। गर्द।

धूलि-चित्र-पुं० [सं०] वे चित्र, कोष्ठक आदि जो रंगो के चूर्ण जमीन पर भुरककर बनाये जाते हैं। सांझी।

धूसर-वि० [सं०] १. धूल या मिट्टी के रंग का। मटमैला। खाकी। २. धूल से लिपटा या भरा हुआ।

यौ०-धूल-धूसर=धूसर।

धूसरित-वि० दे० 'धूसर'।

धूक(ग)*-पुं० दे० 'धिक्कार'।

धृत-वि० [सं०] [स्त्री० धृता] १. पकड़ा हुआ। २. धारण किया हुआ। ३. ग्रहण किया हुआ। ४.स्थिर किया हुआ।

धृति-स्त्री० [सं०] १.धरने या पकड़ने की क्रिया या भाव। धारण। २. स्थिर रहने या होने की क्रिया या भाव। ठहराव। ३. मन की दृढ़ता। ४. धैर्य। धीरज।

धृती-वि० [सं० धृतिन्] धीर। धैर्यवान्।

धृष्ट-वि० [सं०] [स्त्री० धृष्टा, भाव० धृष्टता] १.निर्लज्ज। बेहया। २.ढीठ। उद्धत। पुं० वह नायक जो अपराध करता रहता, तिरस्कार सहता जाता और फिर भी नायिका के पीछे लगा रहता है। (साहित्य)

धेनु-स्त्री० [सं०] १. थोड़े दिनों की ब्याई हुई गाय। स-वत्सा गौ। २. गाय।

धेनुमुख-पुं० [सं०] नरसिंहा (बाजा)।

धेयना*-अ० [सं० ध्यान] ध्यान करना।

धेरी--स्त्री० [सं० दुहिता] पुत्री। बेटी।

धेली-स्त्री० [हिं० आधा] अठन्नी।

धैर्य-पुं० [सं०] १.संकट या कठिनाई के समय मन की स्थिरता। धीरता। धीरज। २. चित्त में उद्वेग या उतावलापन न उत्पन्न होने का भाव। ३ शान्ति। सब्र।

धैवत-पुं० [सं०] संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जिसका संकेत धा या ध है।

धोई-स्त्री० [हिं० धोना] वह दाल, जिसका छिलका धोकर अलग कर दिया गया हो।

धोखा-पुं०[सं०धूकता=धूर्त्तता] १.भ्रम में डालनेवाला मिथ्या व्यवहार। भुलावा। छल। दगा। २.किसी के झूठे व्यवहार से उत्पन्न भ्रम। भुलावा। भ्रान्ति।

मुहा०-धोखा खाना=ठगा या छला जाना। धोखा दे जाना=असमय में मरना या नष्ट होना। धोखा देना=भ्रम में डालना। छलना।

३. भ्रम उत्पन्न करनेवाली बात या वस्तु।

यौ०-धोखे की टट्टी=१. वह टट्टी या आवरण जिसकी आड़ से शिकारी शिकार करते हैं। २. दूसरों को भ्रम में डालने-वाली चीज़ या बात।

मुहा०-धोखा खड़ा करना = आडंबर रचना।

४. अज्ञान से होनेवाली भूल।
मुहा०-धोखे में या धोखे से=भूल से।
५. अनिष्ट की संभावना। जोखिम। ६. आशा या विश्वास के विरुद्ध होनेवाला कार्य या फल। जैसे-धोखा हो गया। ७. चिड़ियों को डराने के लिए खेत में खड़ा किया हुआ पुतला। बिजूखा। ८. चिड़ियाँ उड़ाने के लिए पेड़ में बँधी हुई लकड़ी। खट-खटा। ९. बेसन का एक प्रकार का पकवान।

धोखेबाज-वि० [हिं० धोखा+फा० बाज] [भाव० धोखे-बाजी] दूसरों को धोखा देनेवाला। कपटी। धूर्त्त।

धोटा*-पुं० दे० 'ढोटा'।

धोती-स्त्री० [सं० अधोवस्त्र] कमर से घुटनों के नीचे तक (और स्त्रियों का प्रायः सारा शरीर) ढकने के लिए कमर में लपेटकर पहनने का कपड़ा।
मुहा०-धोती ढीली होना=हिम्मत छूट जाना।
स्त्री० दे० 'धौति'।

धोना-स० [सं० धावन] [प्रे०धुलाना] १ पानी से रगड़कर पानी में डुबाकर साफ करना। प्रक्षालित करना। पखारना।
मुहा०-(किसी वस्तु से) हाथ धोना=खो या गँवा देना। वंचित होना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=जी-जान से किसी व्यक्ति या काम के पीछे लग जाना।
२. दूर करना। हटाना या मिटाना।
मुहा०-धो बहाना=न रहने देना।

धोप*।-स्त्री० [?] तलवार।

धोब-पुं० [हिं० धोना] १ धोये जाने की क्रिया। (गिनती के विचार से) जैसे-इस कपड़े पर चार धोब पड़े हैं।

धोबी-पुं० [हिं० धोना] [स्त्री० धोबिन] कपड़े धोने का काम करनेवाला। रजक।
कहा०-धोबी का कुत्ता=व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला। निकम्मा आदमी।

धोरी-पुं० [सं० धौरेय] १. धुरा या भार उठानेवाला। २.रक्षक। ३.बैल। वृषभ। ४. प्रधान। मुखिया। ५. श्रेष्ठ पुरुष।

धोरे*-वि० [सं० धर] पास। निकट।

धोवन-स्त्री० [हिं० धोना] १. धोने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज धोने पर निकला या बचा हुआ पानी।

धोवना*-स०=धोना।

धोवा*-पुं० [हिं० धोना] १. धोवन। २. जल। ३. अरक।

धोवाना*-स० [हिं० धोना] धुलाना। अ० धोया जाना। धुलना।

धौं*-अव्य० [हिं० दहँ, दहुँ] १. एक अव्यय जो ऐसे प्रश्नों के पहले आता है, जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और सन्देह का भाव अधिक होता है। न जानें। मालूम नहीं। २. विकल्प या सन्देह-सूचक वाक्यों के पहले लगनेवाला अव्यय। कि। या। अथवा। ३. जोर देने के लिए 'तो' या 'भला' के अर्थ में आनेवाला शब्द। ४.विधि, आदेश आदि में केवल जोर देने के लिए एक शब्द।

धौंकना-स० [सं० धम्=धौंकना] [भाव० धौंक] १. आग सुलगाने के लिए भाथी को हवा देना। २. ऊपर डालना। ३. दंड आदि देना या लगाना।

धौंकनी-स्त्री० [हिं० धौंकना] १. बाँस या धातु की बनी हुई आग सुलगाने की नली। २. भाथी।

धौंकी।-स्त्री० १. दे० 'धौंकनी'। २. दे० 'भाथी'।

धौंज*-स्त्री० [हिं० धौंजना] १. दौड़-

धूप। २. घबराहट। उद्विग्नता।

धौंजना*-अ० [सं० ध्वंजन] दौड़-धूप करना।

स० पैरों से रौंदना। कुचलना।

धौंताल-वि० [हिं० धुन+ताल] १. जिसे असाधारण धुन हो। २. फुरतीला। ३. चालाक। ४. साहसी। ५. हैकड़।

धौंस-स्त्री० [सं० दंश] १. धमकी। घुड़की। २. धाक। रोब। ३. झांसा-पट्टी।

धौंसना-स० [सं० ध्वंसन] १. धमकाना। २. मारना-पीटना। ३. दमन करना।

धौंसर*-वि० दे० 'धूसर'।

धौंसा-पुं० [हिं० धौंसना] १. बड़ा नगाड़ा। डंका। २. सामर्थ्य। शक्ति।

धौत-वि० [सं०] १. धोया और साफ किया हुआ। २. उजला। सफेद।

पुं० चांदी। रूपा।

धौति-स्त्री० [सं०] १. शुद्धि। २. शरीर को अन्दर और बाहर से शुद्ध करने के लिए हठ-योग की एक विशेष क्रिया।

धौरहर-पु० दे० 'धरहरा'।

धौरा-वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौरी] सफेद। उजला।

पुं० १ सफेद बैल। २. पंडुक पक्षी।

धौराहर-पुं० दे० 'धरहरा'।

धौरिय*-पुं० [स० धौरेय] बैल।

धौरी-स्त्री० [हिं० धौरा] १. सफेद गाय। कपिला। २ एक प्रकार की चिड़िया।

धौरे*-क्रि० वि० दे० 'धोरे'।

धौल-स्त्री० [अनु०] १. सिर पर लगने-वाला थप्पड़। २. नुकसान। हानि।

* वि० [सं० धवल] उजला। सफेद।

यौ०-**धौल धूर्त्त**=बहुत बड़ा धूर्त्त।

धौलहर*-पुं० दे० 'धरहरा'।

धौला-वि० [सं० धवल] [स्त्री० धौली, भाव०*धौलता, धौलाई] सफेद। उजला।

धौलागिरि-पुं० दे० 'धवलागिरि'।

ध्याता-वि० [सं० ध्यातृ] [स्त्री० ध्यात्री] ध्यान करने या लगानेवाला।

ध्यान-पुं० [सं०] किसी बात या कार्य मे मन के लीन होने की क्रिया, दशा या भाव। २. मानस अनुभूति या प्रत्यक्ष।

मुहा०-**ध्यान में डूबना या मग्न होना**=सब बातें भूलकर किसी एक बात पर मन में विचार करना। तल्लीन होना। **ध्यान धरना**=मन लगाना। चिंतन। ३ चित्त की ग्रहण या विचार करने की वृत्ति या शक्ति। मन।

मुहा०-**ध्यान में न लाना**=१. चिन्ता न करना। ध्यान न देना। २. न विचारना।

४. चेतना की वृत्ति। चेत। खयाल।

मुहा०-**ध्यान जमना** = चित्त एकाग्र होना। **ध्यान दिलाना** = चेताना। सुझाना। **ध्यान देना**=विचार या गौर करना। **ध्यान पर चढ़ना**=खयाल लगा या बना रहना। चित्त से न हट-ना। **ध्यान बँटना**=खयाल इधर-उधर होना। **ध्यान लगना**=चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना।

६. बोध या ज्ञान करानेवाली वृत्ति या शक्ति। समझ। बुद्धि। ७.स्मृति। याद।

मुहा०-**ध्यान आना**=याद आना। **ध्यान दिलाना**=स्मरण कराना। **ध्यान पर चढ़ना**=स्मरण होना। **ध्यान रखना**=याद रखना। **ध्यान से उतर-ना**=याद न रहना। भूलना।

८ चित्त की एकाग्रता। ९. योग का सातवाँ तथा समाधि के पूर्व का अंग।

मुहा०-**ध्यान छूटना**=चित्त की एकाग्रता भंग होना। **ध्यान करना**=परमात्मा के

चिंतन के लिए चित्त एकाग्र करके बैठना।

ध्याना*-स० [सं० ध्यान] ध्यान करना या लगाना। (किसी को) जैसे- ईश्वर को ध्याना।

ध्यानी-वि० [सं० ध्यानिन्] १. ध्यान में लगा हुआ। २.समाधि लगानेवाला।

ध्येय-वि० [सं०] १. ध्यान करने योग्य। २. जिसका ध्यान किया जाय। ३. जिसे ध्यान में रखकर कोई काम किया जाय। उद्देश्य। (ऑब्जेक्ट)

ध्रुपद-पुं० [सं० ध्रुवपद] एक प्रकार का पक्का गाना जिसकी लय और स्वर बिलकुल बँधे हुए होते हैं और जिसमें देवताओं की स्तुति आदि होती है।

ध्रुव-वि० [सं०] [भाव० ध्रुवता] १. सदा एक ही स्थान पर या एक ही अवस्था में रहनेवाला। स्थिर। अचल। २ निश्चित। दृढ़। पक्का।

पुं० १. आकाश। २. शंकु। कील। ३ पहाड़। ४. ध्रुपद। ५. भगवान के एक प्रसिद्ध भक्त जो राजा उत्तानपाद के पुत्र थे और जिनकी माता का नाम सुनीति था। ६ उत्तर आकाश में सदा एक ही स्थान पर रहनेवाला एक तारा जो उत्तानपाद का उक्त पुत्र माना जाता है। ७ पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिरे, जिनके बीचो-बीच अक्षरेखा की स्थिति मानी जाती है।

ध्रुव-दर्शक-पुं० [सं०] १. सप्तर्षि-मंडल। २. एक प्रसिद्ध यंत्र जिसकी सूई सदा उत्तरी ध्रुव की ओर रहती है और जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है। कुतुबनुमा।

ध्वंस-पुं० [सं०] विनाश। नाश।

ध्वंसक-वि० [सं०] नाश करनेवाला। पुं० शत्रु के जहाज नष्ट करनेवाला जहाज। (डिस्ट्रॉयर)

ध्वंसन-पुं० [सं०] [वि० ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त] ध्वंस या नाश करने की क्रिया या भाव। क्षय। विनाश।

ध्वंसावशेष-पुं० [सं०] १. किसी चीज के टूट-फूट जाने पर बचा हुआ अंश। २. खँडहर।

ध्वंसी-वि० [स्त्री०ध्वंसिनी] दे०'ध्वंसक'।

ध्वज-पुं० [सं०] १. चिह्न। निशान। २. लंबे या ऊँचे डंडे के सिरे पर लगा हुआ कोई कपड़ा या कागज जो चिह्न के रूप में काम आता है। पताका। झंडा।

ध्वजा-स्त्री० [सं० ध्वज] पताका। झंडा।

ध्वजी-वि० [सं० ध्वजिन्] [स्त्री० ध्वजिनी] चिह्न या पताका रखनेवाला।

ध्वनि-स्त्री० [सं०] १. श्रवणेंद्रिय का विषय। वह जो सुनाई दे। शब्द। आवाज। २. आवाज की गूँज। ३. वह कथन जिसमें वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यंग्यार्थ का अधिक चमत्कार होता है। ४.झलकता हुआ अर्थ। व्यंग्य अर्थ।

ध्वनिक्षेपक-वि० [सं०] ध्वनि को चारो ओर फैलानेवाला।

ध्वनिक्षेपक यंत्र-पुं० [सं०] वह यंत्र जिसकी सहायता से किसी एक स्थान पर उत्पन्न होनेवाली ध्वनि एक विशेष प्रकार की वैद्युत् क्रिया से चारो ओर बहुत दूर दूर तक पहुँचाई या फैलाई जाती है।

ध्वनि-क्षेपण-पुं० [सं०] (आधुनिक रेडियो आदि में) किसी स्थान पर उत्पन्न होनेवाली ध्वनि, एक विशेष प्रकार के वैद्युत् यंत्र की सहायता से चारो ओर बहुत दूर तक फैलाना या पहुँचाना।

ध्वनित-वि० [सं०] १. जो ध्वनि या शब्द के रूप में प्रकट हुआ हो। २.शब्द से युक्त। ३. झलकता हुआ। व्यंजित।

४. बजाया हुआ। वादित।

ध्वन्यात्मक-वि० [सं०] १. ध्वनि-युक्त। २. जिसमें व्यंग्य अर्थ प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ-पुं० [सं० ध्वन्यर्थ] शब्द की व्यंजना शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

ध्वन्यालेखन-पुं० [सं० ध्वनि+आलेखन] आधुनिक बोलते चित्र-पट में वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पात्रों की बातचीत या संगीत आदि की ध्वनियाँ एक विशेष यंत्र के द्वारा इस प्रकार गृहीत और अंकित की जाती हैं कि आवश्यकता पड़ने पर चित्र-पट दिखाने के समय उसके साथ सुनाई जा सकें।

न

न-हिन्दी वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान दंत है। अव्यय के रूप में इसका व्यवहार (क) 'नहीं' या 'मत' के अर्थ में, निषेधवाचक शब्द के रूप में और (ख) प्रश्नात्मक वाक्य के अन्त में 'या नहीं' के अर्थ में (जैसे-तुम मानोगे नहीं न ?) होता है।

नंग-पुं० [हिं० नंगा] १. नग्नता। नंगापन। २. स्त्री या पुरुष का गुप्त अंग।

नंग-धड़ंग-वि०[हिं०नंगा+धड़ंग(अनु०)] बिलकुल नंगा। दिगंबर। वि-वस्त्र।

नंगा-वि० [सं० नग्न] १. जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो। दिगंबर। वस्त्र-हीन। २. जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। ३.निर्लज्ज। बेहया। ४.लुच्चा। पाजी।

नंगा-झोली-स्त्री० [हिं० नंगा+झोरना] छिपाई हुई वस्तु ढूँढने के लिए या सन्देह-वश किसी के कपड़े आदि उतरवाकर अथवा यों ही अच्छी तरह देखना। पहने हुए कपड़ों की तलाशी।

नंगा-बूचा-वि०[हिं० नंगा+बूचा=खाली] जिसके पास कुछ भी न हो। परम निर्धन।

नंगा-लुच्चा-वि० [हिं० नंगा+लुच्चा] नीच और दुष्ट। बदमाश।

नँगियाना-स० [हिं० नंगा] १. नंगा करना। शरीर पर से वस्त्र उतार लेना। २. कपट का आवरण हटाना। ३ सब कुछ छीन लेना।

नँग्याना*-स० दे० 'नँगियाना'।

नंद-पुं० [सं०] १. आनंद। हर्ष। २. परमेश्वर। ३. पुराणानुसार नौ निधियों में से एक। ४. विष्णु। ५. बेटा। पुत्र। ६. गोकुल के गोपों के मुखिया, वसुदेव के मित्र और श्रीकृष्ण के पालक पिता।

नंदकिशोर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदकुमार-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदनदन-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

नंदनंदिनी-स्त्री० [सं०] योग-माया।

नंदन-पुं० [सं०] १. स्वर्ग में इन्द्र का उपवन। २. शिव। ३. विष्णु। ४.बेटा। जैसे-नंदनंदन। ५. मेघ। बादल। वि० आनंद देने या प्रसन्न करनेवाला।

नंदना*-अ० [सं० नंद] आनंदित होना। स० आनन्दित या प्रसन्न करना। स्त्री० [सं० नंद=बेटा] लड़की। बेटी।

नंदनी-स्त्री० दे० 'नंदिनी'।

नंद-रानी-स्त्री०=यशोदा।

नंदलाल-पुं०=श्रीकृष्ण।

नंदा-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २ एक प्रकार की कामधेनु। ३. संपत्ति। धन-दौलत। ३. पति की बहन। ननद।
वि०स्त्री०१. आनंद देनेवाली। २. शुभ।

नंदि-पुं० [सं०] १. आनंद। २. परमेश्वर। ३. दे० 'नंदी'।

नंदित-वि० [सं०] आनंदित। प्रसन्न।
*वि० [हिं० नादना] बजता हुआ।

नंदिन*-स्त्री० [सं० नंदिनी] लड़की।

नंदिनी-स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. उमा। दुर्गा। ३ गंगा। ४.पति की बहन। ननद। ५. वसिष्ठ की कामधेनु, जिसकी सेवा करके राजा दिलीप ने रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था। ६ पत्नी। जोरू।

नंदी-पुं० [सं० नंदिन्] १ शिव के एक प्रकार के गण। २. शिव का द्वार-पाल, बैल। ३. शिव के नाम पर दाग-कर छोड़ा हुआ बैल। ४. गाँठों से युक्त शरीरवाला बैल। (यह खेती के काम का नहीं होता।) ५. विष्णु।
वि० आनंद-युक्त। प्रसन्न।

नंदी-गण-पुं० [हिं० नंदी+गण] १. शिव का द्वारपाल, बैल। २. किसी के नाम पर दागकर छोड़ा हुआ बैल। साँड़।

नंदीमुख-पुं० दे० 'नांदीमुख'।

नंदीश्वर-पुं० [सं०] १. शिव। २. शिव का एक गण।

नंदेऊ*-पुं० दे० 'नंदोई'।

नंदोई-पुं० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] ननद का पति। पति का बहनोई।

नंबर-वि० [अं०] संख्या। अदद।
पुं०१.संख्या। अंक। २. दे०'नंबरी गज'। ३. दे० 'अंक'।

नंबरदार-पुं०[अं०नंबर+फा०दार(प्रत्य०)] १.गाँव का वह अधिकारी जो मालगुजारी आदि वसूल करता है। २. मुखिया।

नंबरवार-क्रि०वि० [अं० नंबर+फा०वार] संख्या के क्रम से। एक एक करके। क्रमशः।

नंबरी-वि० [अं० नंबर+ई(प्रत्य०)] १. जिसपर नंबर लगा हो। २.नंबर सम्बन्धी। नंबर का। जैसे-नंबरी गज। ३.मशहूर। ४. बहुत बड़ा। जैसे-नंबरी चोर।

नंबरी गज-पुं० [हिं० नंबरी+गज] कपड़े नापने का ३६ इंच का गज।

नंबरी सेर-पुं० [हिं० नंबरी+सेर] अँगरेजी रुपयों से ८० रुपए भर का सेर।

नस*-वि० [सं० नाश] नष्ट। बरबाद।

नई*-वि० [सं० नय] नीतिज्ञ।
*स्त्री०१. दे०'नदी'। २.'नया' का स्त्री०।

नउ*-वि० १. दे० 'नव'। २ दे० 'नौ'।

नउका*-स्त्री० दे० 'नौका'।

नउज*-अव्य० दे० 'नौज'।

नउत*-वि० दे० 'नत'।

नउलि*-वि० [सं० नवल] नया।

नओढ़*-स्त्री० दे० 'नवोढ़ा'।

नक-कटा-वि० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नक-कटी] १. जिसकी नाक कटी हो। २. निर्लज्ज। बे-हया।

नकटा-पुं० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नकटी] १. एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाती हैं। २. दे० 'नक-कटा'।

नकद-वि०, पुं० दे० 'नगद'।

नकदी-स्त्री० दे० 'नगदी'।

नकना*-स० [हिं० नाकना] १. लाँघना। फाँदना। २. त्यागना।
अ० [हिं० नकियाना] १. नाक में दम होना। हैरान होना। २. चलना।

नकब-स्त्री० दे० "सेंध"।

नक-बानी*-स्त्री० [हिं० नाक+बानी]

नाक में दम । हैरानी । परेशानी ।

नक-बेसर-स्त्री० [हिं० नाक+बेसर] छोटी नथ । बेसर ।

नकल-स्त्री०[अ०] १.किसी दूसरे के आकार या प्रकार के अनुसार तैयार की हुई वस्तु । अनुकृति । २. कोई वस्तु या कार्य देखकर उसके अनुसार वैसी ही कोई वस्तु बनाना या कार्य करना । अनुकरण । ३. लेख आदि की अक्षरशः की या उतारी हुई प्रतिलिपि । ४ अभिनय । ५. हास्य रस की कोई छोटी कहानी । चुटकुला । ६. दे० 'स्वाँग' ।

नकल-नवीस-पुं० [अ० नकल+फा० नवीस] वह जो दूसरों के लेखों आदि की नकल करता हो । (अदालती)

नकल-बही-स्त्री० [हिं० नकल+बही] वह बही जिस पर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है ।

नकली-वि० [अ०] १ नकल करके बनाया हुआ । २.कूट । बनावटी । जाली । झूठा ।

नकवानी*-स्त्री० दे० 'नक-बानी' ।

नकशा-पुं० दे० 'नक्शा' ।

नकसीर-स्त्री० [हिं० नाक+सं० क्षीर=जल] एक रोग जिसमे नाक से रक्त बहता है ।

नकाना*-अ० दे० 'नकना' ।

स० दे० 'नकियाना' ।

नकाब-स्त्री० [अ०] १. चेहरा छिपाने के लिए उसपर डाला हुआ कपड़ा ।

यौ०-**नकाब-पोश**=जो नकाब पहने हो ।

२. स्त्रियों के मुख पर का घूँघट ।

नकार-पुं० [सं०] १. अस्वीकृति-सूचक शब्द या बात । नहीं । २. इनकार । अस्वीकृति । ३. 'न' अक्षर ।

नकारना-अ० [हिं० नहीं] १. किसी बात के संबंध में कहना कि यह ऐसी नहीं है, हमने ऐसा नहीं किया अथवा हम ऐसा नही करेंगे । 'नहीं' कहना या करना । २. अस्वीकृत करना ।

नकाशना†-स० [अ० नक्काशी] धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र या बेल-बूटे आदि बनाना ।

नकाशी-स्त्री० दे० 'नक्काशी' ।

नकियाना†-अ० [हिं० नाक] १. बोलते समय शब्दों का अनुनासिक-युक्त उच्चारण करना । २. 'नकना' ।

स० बहुत परेशान या तंग करना ।

नकीब-पुं० [अ०] १. बंदीजन । भाट । २. दे० 'कड़खैत' ।

नकुल-पुं० [सं०] १. नेवला (जंतु) । २. राजा पांडु के चौथे पुत्र, जो माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे ।

नकेल-स्त्री० [हिं० नाक] ऊँट, बैल आदि की नाक में पिरोई हुई रस्सी जो लगाम का काम देती है । मुहरा ।

मुहा०-**किसी की नकेल हाथ में होना**=किसी व्यक्ति पर पूरा वश या नियंत्रण होना ।

नक्कारखाना-पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ नगाड़ा बजता है । नौबतखाना ।

कहा०-**नक्कारखाने में तूती की आवाज**=बड़े-बड़ों के सामने छोटों को न सुनी जानेवाली बात ।

नक्कारा-पुं० दे० 'नगाड़ा' ।

नक्काल-पुं० [अ०] १. किसी का अनुकरण या नकल करनेवाला । २. भाँड़ ।

नक्काश-पुं० [अ०] नक्काशी करनेवाला ।

नक्काशी-स्त्री० [अ०] [वि० नक्काशीदार] १. धातु, काठ, पत्थर आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने की कला । २. इस प्रकार बनाये हुए बेल-बूटे ।

नक्की-वि० [देश०] १. पक्का। दृढ़। २. ठीक। ३. निश्चित।

नक्की-मूठ-स्त्री०[हिं०नक्की+मूठ] कौड़ियों से खेला जानेवाला एक प्रकार का जूआ।

नक्कू-वि० [हिं० नाक] १. बड़ी नाकवाला। २. अपने आपको बहुत बड़ा समझनेवाला। ३. सबसे अलग रहकर उलटा या बुरा काम करनेवाला।

नक्र-पुं० [सं०] १ नाक नामक जलजंतु। २. मगर। ३. घड़ियाल। कुंभीर।

नक्श-वि० [अ०] अंकित, चित्रित या लिखित।

पुं० [अ०] १. तसवीर। चित्र। २. खोदकर या कलम से बनाये हुए बेल-बूटे। ३.मोहर। छाप। ४ यंत्र। तावीज।

नक्शा-पुं० [अ०] १. रेखाओं द्वारा आकार का निर्देश। रेखा-चित्र। २. आकृति। गढ़न। ३. चाल-ढाल। ढंग। ४. अवस्था। दशा। ६. सांचा। ठप्पा। ७. पृथ्वी या खगोल के किसी भाग की स्थिति आदि के विचार से बनाया हुआ उसका सूचक वह चित्र, जिसमें देश, नगर, नदी, पहाड़, समुद्र आदि दिखाये गये हों। ८. भवन आदि का उक्त प्रकार का रेखा-चित्र।

नक्शा-नवीस-पुं० [अ०+फा०] नक्शा बनाने या अंकित करनेवाला।

नक्शाबंद-पुं० [अ०+फा०] वह जो धोतियों, साड़ियों आदि के बेल-बूटे के नक्शे या तर्ज तैयार करता है।

नक्षत्र-पुं० [सं०] चंद्रमा के मार्ग में पड़नेवाले विशेष तारों के समूह, जिनके भिन्न भिन्न नाम हैं और जो २७ हैं।

नक्षत्रराज-पुं० [सं०] चंद्रमा।

नक्षत्री-पुं० [सं० नक्षत्रिन्] चंद्रमा।

वि० [सं० नक्षत्र] भाग्यवान्।

नख-पुं० [सं०] १.नाखून। २.एक प्रसिद्ध गंध द्रव्य। ३. खंड। टुकड़ा।

स्त्री० [फा० नख] गुड्डी उड़ाने की डोर।

नख-क्षत-पुं० [सं०] शरीर पर नाखून लगने के कारण बना हुआ चिह्न।

नखच्छत*-पुं० दे० 'नख-क्षत'।

नख-छोलिया*-पुं० दे० 'नख-क्षत'।

नखत(र)*-पुं० दे० 'नक्षत्र'।

नखतराज(तेस)*-पुं०=चंद्रमा।

नखना*-अ० [हिं० नाखना] डांका, लांघा या पार किया जाना।

स० लांघकर पार करना।

स० [सं०नष्ट] १.नष्ट करना। २.डांकना।

नखवान*-पुं० [हिं० नख] नाखून।

नखरा-पुं० [फा०] किसी को रिझाने या झूठ-मूठ अपनी अस्वीकृति या सुकुमारता सूचित करने के लिए स्त्रियों की अथवा स्त्रियों की-सी चेष्टा। चोचला।

नखरा-तिल्ला-पुं० दे० 'नखरा'।

नखरीला-वि० दे० 'नखरेबाज'।

नख-रेख*-स्त्री०[सं० नख+रेखा] शरीर में लगा हुआ नखों का चिह्न जो प्रायः संभोग का सूचक होता है। नखरौटा।

नखरेबाज-वि० [फा०] [भाव० नखरेबाजी] बहुत नखरा करनेवाला।

नखरौटा-पुं० दे० 'नख-रेख'।

नख-शिख-पुं० [सं०] १. नख से शिख तक के सब अंग। २. नख से शिख तक के सब अंगों का वर्णन।

नखायुध-पुं०[सं०] १. शेर, चीता आदि नखों से फाड़नेवाले जानवर। २. नृसिंह।

नखास-पुं० [अ० नख्खास] वह बाजार जिसमें पशु, विशेषतः घोड़े बिकते हैं।

नखियाना*-स० [सं० नख+इयाना

(प्रत्य०)] नाखून गड़ाना।
नखी-पुं० दे० 'नखायुध'।
स्त्री० [सं०] नख नामक गंध-द्रव्य।
नखेद*-पुं० दे० 'निषेध'।
नखोटना*-स०[सं०नख+ओटना(प्रत्य०)] नाखूनों से खरोचना या नोचना।
नग-पुं०[सं०] १.पर्वत। पहाड़। २.वृक्ष। ३. सात की संख्या। ४. साप। ५. सूर्य। पुं० [फा०नगीना, मि० सं० नग] १ दे० 'नगीना'। २. अदद। संख्या।
नगण-पुं० [सं०] तीन लघु अक्षरों का एक गण। जैसे-कमल। (पिंगल)
नगण्य-वि० [सं०] [भाव० नगण्यता] जिसकी कोई गिनती न हो। गया-बीता। दीन, हीन या तुच्छ।
नगद-पुं० [अ० नकद] वह धन जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-पैसा। रोक। वि० १. (रुपया) जो तैयार या सामने हो। २. जिसका मूल्य रुपये-पैसे आदि के रूप में दिया या चुकाया जाए। रोक। क्रि० वि० तुरंत दिये हुए रुपये के बदले में। 'उधार' का उलटा।
वि० बढ़िया। अच्छा।
नगन*-वि० दे० 'नग्न'।
नगपति-पुं० [सं०] १. हिमालय पर्वत। २. शिव। ३. सुमेरु।
नगमा-पुं० [अ० नग्मः] १. संगीत। २. राग।
नगर-पुं० [सं०] मनुष्यों की वह बस्ती, जो गाँव और कस्बे से बहुत बड़ी होती है और जिसमें सब तरह के बहुत-से लोग रहते और बाजार होते हैं। शहर।
नगर-कीर्त्तन-पुं०[सं०] नगर की गलियों में घूम-घूमकर होनेवाला धार्मिक गाना-बजाना या कीर्त्तन।
नगर-नारि-स्त्री० [सं०] वेश्या।
नगर पार्षद-पुं० [सं०] वह जो नागर-परिषद् का सदस्य हो। (म्युनिसिपल कमिश्नर)
नगरपाल-पुं० [सं०] एक प्राचीन अधिकारी जिसका काम नगर की रक्षा और व्यवस्था करना होता था।
नगराई*-स्त्री० [हिं० नगर + आई (प्रत्य०)] १. नागरिकता। २. चतुराई।
नगरी-स्त्री० [सं०] छोटा नगर। कस्बा। (टाउन)
वि० दे० 'नागर'।
पुं० दे० 'नागरिक'।
नगरी क्षेत्र-पुं० [सं०] कोई नगरी और उसके आस-पास का वह क्षेत्र जिसकी लोक-हित संबंधी व्यवस्थाएँ स्थानिक संस्था के अधीन हों। (टाउन एरिया)
नगवास*-पुं० दे० 'नागपाश'।
नगाड़ा-पुं० [फा० नक्कारः] डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगाड़ा। डंका। धौंसा।
नगाधिप-पुं० [सं०] १. हिमालय पर्वत। २ सुमेरु पर्वत।
नगारि-पुं० [सं०] इंद्र।
नगी-स्त्री० [सं० नग=पर्वत+ई (प्रत्य०)] १. रत्न। नग। २. पार्वती।
नगीना-पुं० [फा०] रत्न। मणि।
नगेंद्र (गेश)-पुं० [सं०] हिमालय।
नगेसरि*-पुं० दे० 'नाग-केसर'।
नग्न-वि० [सं०] [भाव० नग्नता] १. नंगा। २. आवरण-रहित।
नग्मा-पुं० दे० नगमा'।
नग्र*-पुं० दे० 'नगर'।
नघना-स० दे० 'नखना'।
नचना*-अ० [हिं० नाचना] नाचना।

वि०[स्त्री०नचनी] नाचने या हिलनेवाला।

नचनि*-स्त्री० [हिं० नाचना] नाच।

नचनियाँ-पुं० [हिं० नाचना] नाचने का पेशा करनेवाला। नर्त्तक।

नचवैया-पुं० [हिं० नाच] नाचने या नचानेवाला।

नचाना-स० [हिं० नाचना का प्रे०] १. किसी को नाचने में प्रवृत्त करना। २. किसी को कोई काम करने के लिए बार बार दौड़ाना या तंग करना। ३. कोई चीज हाथ में लेकर इधर-उधर घुमाना या हिलाना।

नचीला-वि० [हिं० नाच] जो नाचता या इधर-उधर घूमता रहे। चंचल।

नचौंहाँ*-वि० [हिं० नाचना+औंहाँ (प्रत्य०)] बराबर नाचता या इधर-उधर घूमता रहनेवाला।

नछत्र*-पुं० दे० 'नक्षत्र'।

नछत्री-वि० दे० 'नक्षत्री'।

नजदीक-वि० [फा०] [संज्ञा, वि० नजदीकी] निकट। पास।

नजर-स्त्री० [अ०] १. दृष्टि। निगाह। मुहा०-**नजर आना**=दिखाई पड़ना। **नजर पर चढ़ना**=पसंद आ जाना। **नजर पड़ना**=दिखाई देना। **नजर बाँधना**=ऐसा जादू करना कि लोगों को कुछ का कुछ दिखाई पड़े। २. कृपा-दृष्टि। ३. निगरानी। देख-रेख। ४. ध्यान। खयाल। ५.परख। पहचान। ६. किसी सुन्दर या प्रिय मनुष्य या वस्तु पर पड़नेवाला दृष्टि का बुरा प्रभाव। मुहा०-**नजर उतारना**=किसी उपचार से बुरी दृष्टि का प्रभाव नष्ट करना। **नजर लगना**=बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना। स्त्री० [अ०] १. भेंट। उपहार। २. राजाओं आदि के सामने भेंट रखकर अधीनता सूचित करने की एक प्रथा।

नजरबंद-वि० [अ० नजर+फा०बंद] [भाव० नजरबंदी] ऐसी निगरानी में रखा हुआ कि निश्चित स्थान या सीमा से बाहर न जा सके। पुं० जादू आदि का वह खेल जो लोगों की नजर को धोखा देकर किया जाता है।

नजर-बाग-पुं० [अ०] महलों आदि के सामने या चारों ओर का बाग।

नजरा-वि० [अ० नजर] जो देखते ही अच्छी या बुरी अथवा मँहगी या सस्ती चीज पहचान ले।

नजरानना*-स० [हिं० नजर+आनना (प्रत्य०)] १. नजर या भेंट करना। उपहार-स्वरूप देना। २. नजर लगाना।

नजराना-अ०, स० [हिं० नजर] ऐसी बुरी नजर लगना या लगाना जिससे कुछ अनिष्ट हो। पुं० [अ०] १. भेंट। उपहार। २. किराये, पट्टे आदि पर मकान या जमीन लेने से पहले उसके स्वामी को भेंट-स्वरूप दिया जानेवाला धन। पगड़ी।

नजला-पुं० [अ०] जुकाम। सरदी।

नजाकत-स्त्री० [फा०] नाजुक होने का भाव। सुकुमारता

नजिकाना*-अ० [हिं० नजीक (नजदीक)] निकट या पास पहुँचना।

नजीक*-क्रि०वि०[फा०नज़दीक] निकट।

नजीर-स्त्री० [अ०] १. उदाहरण। २. दृष्टान्त।

नजूल-पुं० [अ०] नगर की वह भूमि जो सरकार के अधिकार में चली गई हो। राजग।

नट-पुं० [सं०] [भाव० नटता] १.

नाट्य या अभिनय करनेवाला मनुष्य। २.एक जाति जो प्रायः गा-बजाकर, खेल-तमाशे करके या कुश्ती-कलाबाजी दिखा-कर निर्वाह करती है।

नटई-स्त्री० [देश०] १.गला। गरदन। २. गले की घंटी। घांटी।

नट-खट-वि० [हिं० नट+अनु० खट] [भाव० नटखटी] १. पाजी। दुष्ट। २. चालाक। धूर्त।

नटन-पुं० [सं०] १. नृत्य। नाचना। २. नाट्य या अभिनय करना।

नटना*-अ० [सं० नट] १. नाट्य या अभिनय करना। २. नाचना। ३. कह-कर मुकर जाना।

नटनि*-स्त्री० [सं० नर्त्तन] नृत्य। नाच। स्त्री० [हिं०नटना] इनकार। अस्वीकृति।

नटनी-स्त्री० [सं० नट+नी (प्रत्य०)] नट की या नट जाति की स्त्री।

नटराज-पुं० [सं०] महादेव। शिव।

नटवर-पुं० [सं०] १. नाट्य-कला का अच्छा ज्ञाता। २. श्रीकृष्ण।

नटसार*-स्त्री० दे० 'नाट्यशाला'।

नटसारी*-स्त्री०[हिं०नट] नट का काम।

नटसाल-स्त्री० [?] १. शरीर में गड़े हुए काँटे या तीर की गाँसी का वह भाग जो टूटकर शरीर में रह गया हो। २. कसक।

नटिन-स्त्री० दे० 'नटनी'।

नटी-स्त्री० [सं०] १. नट जाति की स्त्री। २. अभिनेत्री। ३. नर्त्तकी।

नटेश-पुं० [सं०] महादेव।

नटैया-स्त्री० दे० 'नटई'।

नठना*-अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना। स० नष्ट करना।

नढ़ना†-स० [हिं० नाथना] १. गूँथना। पिरोना। २. बाँधना। ३. कसना।

नत-वि० [सं०] झुका हुआ।

नतन-पुं० [सं०] 'नत' होने या झुकने की क्रिया या भाव। झुकाव।

नतर(रु)*-क्रि० वि० [हिं० न+तो] नहीं तो। अन्यथा।

नति-स्त्री० [सं०] १. झुकाव। उतार। २. प्रणाम। ३. विनय। नम्रता।

नतीजा-पुं० [फा०] परिणाम। फल।

नतु*-क्रि० वि० [हिं० न+तो] नहीं तो।

नतुवा-अव्य० [सं०] नहीं तो क्या ?

नतैत-पुं० [अ० नाता] नातेदार। संबंधी।

नतैती-स्त्री० [हिं० नतैत] रिश्तेदारी। संबंध।

नत्थी-स्त्री० [हिं० नथ या नाथना] १. कागज आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर नाथना या फँसाना। २. इस प्रकार नाथे हुए कागज़ों आदि का समूह। मिसिल। (फाइल)

नथ-स्त्री० [हिं० नाथना] नाक में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना।

नथना-पुं० [सं० नस्त] नाक का अगला भाग, जिसमें दोनों छेद होते हैं।

मुहा०-**नथना फुलाना**=रुष्ट होना।

अ० [हिं० 'नाथना' का अ० रूप] १. किसी के साथ नत्थी होना या नाथा जाना। २. छेदा जाना।

नद-पुं० [सं०] वह बड़ी नदी जिसका नाम पुंलिंग-वाची हो। जैसे-सोन, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु आदि।

नदना*-अ० [सं० नदन=शब्द करना] १.पशुओं का-सा शब्द करना। २.रँभाना। बँबाना। ३. शब्द करना। बजना।

नदारद-वि० [फा०] जो सामने या प्रस्तुत न हो। लुप्त। गायब।

नदी-स्त्री० [सं०] १. जल का वह

प्राकृतिक प्रवाह जो किसी पर्वत, झील आदि से निकलकर निश्चित मार्ग से होता हुआ समुद्र या किसी दूसरी नदी में गिरता है। दरिया।
कहा०-**नदी नाव संयोग**=इत्तफ़ाक़ से होनेवाली भेंट या मिलाप।
२ किसी तरल पदार्थ का प्रवाह। जैसे-खून की नदी।
नदीश-पुं० [सं०] समुद्र।
नद्‌ना*-अ० दे० 'नदना'।
नधना-अ० [सं० नद्ध+ना (प्रत्य०)] १. बैल का हल, गाड़ी आदि के आगे बँधना। जुतना। २. संयुक्त या संबद्ध होना। जुड़ना। ३. कार्य का आरम्भ होना।
ननकारना*-अ० [हिं० न+करना] इन्कार या अस्वीकार करना।
ननद-स्त्री० [सं० ननंद] पति की बहन।
ननदोई-पुं० दे० 'नंदोई'।
ननसार-स्त्री० दे० 'ननिहाल'।
ननिआउर-पुं० दे० 'ननिहाल'।
ननिहाल-पुं० [हिं० नाना+आलय] नाना का घर। ननसार।
नन्हा-वि० [सं० न्यंच] [स्त्री० नन्ही] बहुत छोटा।
नन्हाई*-स्त्री० [हिं० नन्हा+ई (प्रत्य०)] १ छोटापन। छोटाई। २.अप्रतिष्ठा। हेठी।
नन्हैया*- वि० दे० 'नन्हा'।
नपाई-स्त्री० [हिं० नाप+आई (प्रत्य०)] नापने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
नपाक*-वि० [फ़ा० नापाक] अपवित्र।
नपुंसक-पुं० [सं०] [भाव० नपुंसकता] १. वह पुरुष जिसमें स्त्री-संभोग की शक्ति न हो या बहुत ही कम हो। २. हिंजड़ा।
नपुत्री*-वि० दे० 'निपुत्री'।
नफ़र-पुं० [फ़ा०] १. सेवक। २. व्यक्ति।
नफरत-स्त्री० [अ०] घृणा।
नफरी-स्त्री०[फ़ा०] किसी मजदूर या कारीगर की दिन भर की मज़दूरी या काम।
नफा-पुं० [अ०] लाभ। फायदा।
नफीरी-स्त्री० [फ़ा०] तुरही।
नफ़ीस-वि० [अ०] [भाव० नफासत] १. अच्छा। बढ़िया। २. सुंदर।
नबी-पुं० [अ०] वह जिसे लोग ईश्वर का दूत मानते हों। पैगंबर। रसूल।
नबेड़ना-स०[संज्ञा नबेड़ा] दे०'निबेड़ना'।
नब्ज़- स्त्री० [अ०] कलाई की नाड़ी।
नभ-पुं० [सं० नभस्] १. आकाश। २. जल। ३. मेघ। बादल। ४. वर्षा।
नभगामी-पुं० [सं० नभोगामिन्] १. सूर्य, चंद्र या तारा। २. देवता। ३.पक्षी। वि० आकाश में चलनेवाला।
नभचर-पुं० दे० 'नभगामी'।
नभधुज*-पुं० [सं० नभःध्वज] मेघ।
नभवार*-पुं० [सं० नभ+बाल=व्योमकेश] शिव। महादेव।
नभश्चर-पुं० दे० 'नभगामी'।
नभोवाणी-स्त्री० दे० 'रेडियो'।
नम-वि० [फ़ा०] [भाव० नमी] भीगा हुआ। गीला। तर।
नमक-पुं० [फ़ा०] १. भोज्य पदार्थों में एक विशेष स्वाद उत्पन्न करने के लिए, थोड़ी मात्रा में डाला जानेवाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ। लवण। नोन।
मुहा०-**नमक अदा करना**=अपने मालिक के उपकार का अच्छा बदला चुकाना। **(किसी का) नमक खाना**=किसी के दिये हुए अन्न से पेट भरना। **कटे या जले पर नमक छिड़कना**=अत्यंत दुखी को और दुःख देना। **नमक फूटकर निकलना**=कृतघ्नता का बुरा

फल या दंड मिलना। नमक मिर्च मिलाना=किसी बात में अपनी ओर से भी कुछ मिलाना या बढ़ाना।
२. सलोनापन। लावण्य।

नमक-हराम-पुं० [फा० नमक+अ० हराम] [भाव० नमक-हरामी] किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उससे द्रोह करनेवाला। कृतघ्न।

नमक-हलाल-पुं० [फा० नमक + अ० हलाल] [भाव० नमक-हलाली] स्वामी या अन्नदाता का कार्य या सेवा ईमानदारी से करनेवाला। स्वामिभक्त।

नमकीन-वि० [फा०] १. नमक मिला हुआ या नमक के स्वादवाला। २.खूबसूरत। पुं० नमक डालकर बनाया हुआ पकवान।

नमदा-पुं० [फा०] एक प्रकार का ऊनी कंबल जो ऊन जमाकर बनाया जाता है।

नमना*-अ० [सं० नमन] १. झुकना। २. प्रणाम करना।

नमनीय-वि०[सं०]१.जिसके आगे झुककर नमस्कार किया जाय। पूजनीय। २. जो झुक सके या झुकाया जा सके।

नमस्कार-पुं० [सं०] झुककर आदर-पूर्वक अभिवादन करना। प्रणाम।

नमस्कारना*-स०=नमस्कार करना।

नमस्ते-पुं० [सं०] आपको नमस्कार है।

नमाज-स्त्री० [फा०, मि० सं० नमन] मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना।

नमाज़ी-पुं० [फा०] नमाज पढ़नेवाला।

नमाना*-स० [सं० नमन] १. झुकाना। २. झुका या दबाकर अपने अधीन करना।

नमित-वि० [सं०] झुका हुआ।

नमी-स्त्री० [फा०] गीलापन। तरी।

नमूना-पुं० [फा०] १. किसी पदार्थ के प्रकार या गुण का परिचय कराने के लिए उसमें से निकाला हुआ थोड़ा अंश। बानगी। २. वह जिसे देखकर उसके अनुसार वैसा ही कुछ और बनाया जाय। आदर्श। विशेष दे० 'प्रतिमान'। ३ ढांचा।

नम्र-वि० [सं०] [भाव० नम्रता] १. जो सबसे झुककर या विनयपूर्वक व्यवहार करे। विनीत। २. झुका हुआ।

नय-पुं० [सं०] १. नीति। २. नम्रता। *स्त्री० [सं० नद] नदी। दरिया।

नयकारी*-पुं० [सं० नृत्यकारी] नाचनेवाला। नचनियां।

नयन-पुं० [सं०] १. आँख। २.ले जाना।

नयन-गोचर-वि० [सं०] आँखों से दिखाई देनेवाला।

नयन-पट-पुं० [सं०] आँख की पलक।

नयना*-अ० [सं० नमन] १.नम्र होना। विनयपूर्ण व्यवहार करना। २. झुकना। पुं० [सं० नयन] आँख। नेत्र।

नयनी-स्त्री० [सं०] आँख की पुतली। वि०स्त्री० आँखोंवाली। जैसे-*मृग-नयनी*।

नयनूँ-पुं० [सं० नवनीत] १. मक्खन। २. एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

नयर*-पुं० [सं० नगर] नगर।

नय-शील-वि० [सं०] १. नीतिज्ञ। २. विनीत। नम्र।

नया-वि० [सं० नव मि० फा० नौ] १. थोड़े समय का। नवीन। हाल का। मुहा०-**नया करना**=ऋतु का कोई फल या अनाज उस ऋतु में पहले-पहल खाना। **नया पुराना करना**=१. पुराना देना चुकाकर नया हिसाब चलाना। (महाजनी) २. पुराने के स्थान पर नया लाकर रखना। २. जिसका पता हाल में चला हो। ३. पुराने के स्थान पर आनेवाला। ४. जिससे अभी तक काम न लिया गया हो। ५.

अनुभव-हीन। ६. नौ-सिखुआ।

नर-पुं० [सं०] [भाव० नरता, नरत्व] १. विष्णु। २. शिव। ३. अर्जुन। ४. पुरुष। मर्द। ५. सेवक।

वि० पुरुष जाति का (प्राणी)। 'मादा' का उलटा।

नरकंत*-पुं० [सं० नरकांत] राजा।

नरक-पुं० [सं०] १. धार्मिक विचारों के अनुसार वह स्थान जहाँ पापियों या दुराचारियों की आत्माएँ दंड भोगने के लिए भेजी जाती हैं। दोज़ख। जहन्नुम। २. बहुत ही गंदा या कष्टदायक स्थान।

नरक-गामी-वि० [सं०] जो अपने पापों के कारण नरक में गया हो या जाने को हो।

नरकट-पुं० [सं० नल] बेंत की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा, जिसके डंठलों से कलमें, चटाइयाँ आदि बनती हैं।

नर-केहरी-पुं० दे० 'नृसिंह'।

नरगिस-स्त्री० [फा०] एक पौधा जिसमें सफेद रंग के फूल लगते हैं। (उर्दू कवि इन फूलों से आँखों की उपमा देते हैं।)

नरद-स्त्री० [फा० नर्द] चौसर खेलने की गोटी।

*स्त्री० [सं० नर्द] ध्वनि। नाद।

नरदमा(दा)-पुं० [फा० नाबदान] मैले पानी का नल। पनाला।

नर-नाथ-पुं० [सं०] राजा।

नर-नारि-स्त्री० [सं०] द्रौपदी।

नरनाह*-पुं० दे० 'नरनाथ'।

नर-नाहर-पुं० दे० 'नृसिंह'।

नरपति-पुं० [सं०] राजा।

नर-पिशाच-पुं० [सं०] मनुष्य होने पर भी पिशाचों के-से काम करनेवाला।

नरम-वि० [फा० नर्म मि० सं० नम्र] [भाव० नरमी] १.कोमल। मुलायम। २. लचीला। ३. 'तेज' का उलटा। मंदा। ४. धीमा। सुस्त। आलसी। ५. जल्दी पचनेवाला। लघु-पाक। ६. जिसमें पौरुष या पुंसत्व कम हो।

नरमा-स्त्री० [हिं० नरम] १. एक प्रकार की कपास। देव-कपास। २. सेमर की रूई। ३. कान के नीचे का लटकता हुआ भाग। लोल।

पुं० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

नरमाना-अ० [हिं० नरम] १. कोमल, मुलायम या नरम पड़ना। २. व्यवहार में उग्रता छोड़कर नम्र होना।

स० नरम या मुलायम करना।

नरमाहट-स्त्री० दे० 'नरमी'।

नरमी-स्त्री० [फा० नर्म] नरम होने की क्रिया या भाव। कोमलता।

नर-मेध-पुं० [सं०] १. प्राचीन काल में मनुष्य के मांस की आहुति से होनेवाला एक यज्ञ। २. मनुष्यों का संहार।

नर-लोक-पुं० [सं०] संसार। जगत।

नर-वध-पुं० [सं०] किसी मनुष्य को जान-बूझकर या किसी उद्देश्य से मार डालना। (मर्डर)

नर-वाहन-पुं० [सं०] वह सवारी जिसे मनुष्य उठाकर या खींचकर ले चलते हों। जैसे-पालकी, रिक्शा आदि।

नरसल-पुं० दे० 'नरकट'।

नरसिंघ-पुं० दे० 'नृसिंह'।

नरसिंघा-पुं० [हिं० नर=बड़ा+सिंघा=सींग] तुरही की तरह का एक बड़ा बाजा।

नरसिंह-पुं० दे० "नृसिंह"।

नर-हत्या-स्त्री०[सं०] मनुष्य की साधारण चोट से होनेवाली वह मृत्यु, जिसमें मारने या चोट पहुँचानेवाले का उद्देश्य यह न हो कि वह मर जाय। (होमीसाइड)

नरहरि-पुं० [सं०] नृसिंह भगवान, जो चौथे अवतार माने जाते हैं ।

नराच-पुं० [सं० नाराच] तीर । बाण ।

नराज*-वि० दे० 'नाराज' ।

नराजना*-अ०स० [फा० नाराज़] अप्रसन्न या नाराज होना या करना ।

नराट*-पुं० [सं० नरराट्] राजा ।

नराधिप-पुं० [सं०] राजा ।

नरिंद*-पुं० [सं० नरेंद्र] राजा ।

नरियर†-पुं० दे० 'नारियल' ।

नरियरी-स्त्री० दे० 'नरेली' ।

नरियाना†-अ० [देश०] चिल्लाना ।

नरी-स्त्री० [फा०] १. सिझाया हुआ मुलायम चमड़ा । २. करघे की वह नली जिसपर सूत लपेटा रहता है । नार ।
† स्त्री० [सं० नलिका] नली । नाली ।
*स्त्री० [सं० नर] स्त्री । नारी ।

नरेंद्र-पुं० [सं०] राजा । नृप ।

नरेंद्र-मंडल-पुं० [सं०] अँगरेजी शासन में भारत की देशी रियासतों के राजाओं की वह संस्था, जो देशी रियासतों की समुचित व्यवस्था और हित-रक्षा के लिए बनी थी । (चेम्बर ऑफ प्रिन्सेज़)

नरेली-स्त्री० [हिं० नारियल] १. नारियल की खोपड़ी । २. नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का ।

नरेश-पुं० [सं०] राजा । नृप ।

नरोत्तम-पुं० [सं०] ईश्वर ।

नर्क*-पुं० दे० 'नरक' ।

नर्त्तक-पुं० [सं०] [स्त्री० नर्त्तकी] नाचने या नृत्य करनेवाला । नचनियाँ ।

नर्त्तकी-स्त्री० [सं०] १. नाचनेवाली स्त्री । २. वेश्या ।

नर्त्तन-पुं० [सं०] नृत्य । नाच ।

नर्त्तना*-अ० [सं० नर्त्तन] नाचना ।

नर्त्तित-वि० [सं०] नृत्य करता हुआ । नाचता हुआ ।

नर्द-स्त्री० [फा०] चौसर की गोटी ।

नर्दन-स्त्री० [सं०] भीषण ध्वनि । गरज ।

नर्म-पुं० [सं० नर्मन्] १. परिहास । हँसी-ठट्ठा । २. साहित्य में नायक का हँसी-ठट्ठा करनेवाला सखा ।
वि० दे० 'नरम' ।

नर्मद-पुं० [सं०] १.मसखरा । २ भाँड़ ।

नर्मदेश्वर-पुं० [सं०] नर्मदा नदी से निकलनेवाले अंडाकार शिव-लिंग ।

नर्म-सचिव-पुं० [सं०] विदूषक ।

नल-पुं० [सं०] १ नरकट । २ कलम । ३. निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र, जिनका विवाह विदर्भ के राजा भीम की कन्या दमयंती से हुआ था । ४. राम की सेना का एक बंदर जिसने समुद्र पर पुल बाँधा था ।
पुं० [सं० नाल] १. पोली गोल लंबी चीज । २ गंदगी और मैला आदि बहने का मार्ग । ३.पेड़ू में की वह नाड़ी जिससे पेशाब उतरता है ।

नलिका-स्त्री० [सं०] १. नल के आकार की कोई चीज । चोंगा । नली । २. एक प्रकार का गंध-द्रव्य । ३.प्राचीन काल का नाल नाम का अस्त्र । नाल । ४.तरकश ।

नलिन-पुं० [सं०] १. कमल । २. जल । ३. सारस । ४. नीली कुमुदिनी ।

नलिनी-स्त्री० [सं०] १.कमलिनी । कमल । २. वह प्रदेश जहाँ कमल बहुत हों । ३. नलिका नामक गंध-द्रव्य । ४. नदी ।

नली-स्त्री० [हिं० नल का स्त्री० अल्पा०] १.छोटा या पतला नल । चोंगा । २. नल के आकार की पोली हड्डी, जिसके अन्दर मज्जा होती है । ३. घुटने के नीचे, आगे

की ओर की हड्डी। पैर की पिंडली का अगला भाग। ४. बंदूक का वह अगला भाग जिसमें होकर गोली निकलती है।

नलुआ-पुं० [हिं० नल] छोटा नल।

नव-वि० [सं०] [संज्ञा नवता] १. नवीन। नूतन। नया। २. बिलकुल नये सिरे से या पहले-पहल बना हुआ। (ओरिजिनल)

वि० [सं० नवन्] आठ और एक। नौ।

नवक-पुं० [सं०] एक ही तरह की नौ चीजों का समूह।

वि० १. नया। २. अनोखा।

नव-खंड-पुं० [सं०] पृथ्वी के ये नौ खंड—भरत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य केतुमाल, इलावृत्त, कुश और रम्य।

नव-ग्रह-पुं० [सं०] सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, और केतु ये नौ ग्रह।

नवछावरि*-स्त्री० दे० 'न्योछावर'।

नव-जात-वि० [सं०] अभी या हाल का जनमा हुआ।

नवतन*-वि० [सं० नवीन] नया।

नव दुर्गा-स्त्री० [सं०] नौ दुर्गाएँ जिनका नवरात्र में पूजन होता है। यथा-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्मांडा, स्कन्द-माता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवधा भक्ति-स्त्री० [सं०] भक्ति के नौ प्रकार जो ये हैं-श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्म-निवेदन।

नवना*-अ० [सं० नमन] १. झुकना। २. नम्र या विनीत होना।

नवनीत-पुं० [सं०] मक्खन।

नवम-वि० [सं०] संख्या-क्रम में नवाँ।

नव-मल्लिका-स्त्री० [सं०] चमेली।

नवमी-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।

नव-युवक-पुं० [सं०] [स्त्री० नव-युवती] तरुण। जवान।

नव-यौवना-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसने अभी यौवन-काल में प्रवेश किया हो। नौजवान औरत।

नव-रत्न-पुं० [सं०] १. मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनियाँ, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २. गले में पहनने का उक्त नौ रत्नों का हार। ३. एक प्रकार की चटनी।

नव-रस-पुं० [सं०] काव्य के ये नौ रस-शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक वीभत्स, अद्भुत और शांत।

नवरात्र-पुं० [सं०] चैत सुदी प्रतिपदा से नवमी तक और कुँआर सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन, जिनमें नव-दुर्गा का व्रत और पूजन होता है।

नवल-वि० [सं०] [स्त्री० नवला] १. नवीन। नया। २.सुंदर। ३.जवान। युवा।

नवलकिशोर-पुं० [सं०] श्रीकृष्णचंद्र।

नव-शिक्षित-पुं० [सं०] १. वह जिसने हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो। नौ-सिखुआ। २.वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

नवसत*-पुं० [सं० नव+सत=सप्त] (नव और सात) सोलह शृंगार।

नव-ससि*-पुं० [सं० नवशशि] द्वितीया का चंद्रमा। नया चाँद।

नवाई-स्त्री० [हिं० नवना] नवने या विनीत होने की क्रिया या भाव।

* वि० [सं० नव] नया। नवीन।

नवागत-वि० [सं०] नया आया हुआ।

नवाज-वि० [फा०] कृपा करनेवाला। (यौ० के अन्त में। जैसे-गरीब-नवाज।)

नवाजना*-स०[फा०नवाज़]कृपा करना।

नवाड़ा-पुं० [देश०] १. एक प्रकार की छोटी नाव। २.नाव को बीच धारा में ले जाकर चक्कर देने की जल-क्रीड़ा। नावर।

नवाना-स० [सं० नवन] १. झुकाना। २. विनीत या नम्र करना।

नवान्न-पुं०[सं०] नया उपजा हुआ अनाज।

नवाब-पुं० [अ० नव्वाब] १. मुगल बादशाहों का वह प्रतिनिधि जो किसी प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त होता था। २. एक उपाधि जो आज-कल कुछ रईस मुसलमान अपने नाम के साथ लगाते हैं।

वि० खूब ठाठ-बाट से रहने और खूब खर्च करनेवाला।

नवाबी-स्त्री० [हिं० नवाब] १. नवाब का पद या काम। २. नवाबों का शासन-काल। ३. नवाबों की-सी अमीरी।

नवाभ्युत्थान-पुं० [सं०] १. नये सिरे से या फिर से होनेवाला उत्थान। २. किसी देश में विद्याओं और कला-कौशल आदि का नये ढंग से होनेवाला आरंभ या उत्थान। (रिनैसेन्स)

नवासा-पुं० [स्त्री० नवासी] दे० 'नाती'।

नवीन-वि० [सं०] [भाव० नवीनता] १. जिसे बने, निकले या प्रस्तुत हुए थोड़े ही दिन हुए हों। बहुत ही थोड़े दिनों का। हाल का। नया। २.जो पहले-पहल या मूल रूप में बना हो। (ओरिजिनल) ३ अपूर्व। विचित्र।

नवीस-पुं० [फा०] लिखनेवाला। लेखक। जैसे-अरजी-नवीस।

नवेद-वि० [सं० निवेदन] निमंत्रण।

नवेला-वि० [सं० नवल] [स्त्री० नवेली] १. नया। २. युवक। जवान।

नवोढ़ा-स्त्री० [सं०] १. नई ब्याही हुई स्त्री। वधू। २. युवती स्त्री। ३. साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत वह ज्ञात-यौवना नायिका जो लज्जा और भय से नायक के पास न जाती हो।

नव्य-वि० [सं०] [संज्ञा नव्यता] नया।

नशना*-अ०=नष्ट होना।

नशा-पुं० [फा० या अ० नशः] १. वह मानसिक अवस्था जो शराब, भाँग आदि मादक पदार्थों का सेवन करने से होती है। मुहा०-**नशा जमना**=अच्छी तरह नशा चढ़ना। **नशा हिरन होना**=किसी अप्रिय घटना के कारण नशा या अभिमान बिलकुल दूर हो जाना।

२. नशा लानेवाली चीज। मादक द्रव्य। यौ०-**नशा-पानी**=नशे का सामान।

३. धन, विद्या, अधिकार आदि का अभिमान। घमंड।

मुहा०-**नशा उतारना**=घमंड दूर करना।

नशाखोर-पुं० दे० 'नशेबाज'।

नशाना*-अ०, स० [सं० नाश] नष्ट होना या करना।

नशावन*-वि० दे० 'नाशक'।

नशीन-वि० [फा०] [भाव० नशीनी] बैठनेवाला। जैसे-गद्दी-नशीन।

नशीला-वि० [फा० नशा+ईला (प्रत्य०)] १. जिससे नशा होता हो। मादक। २. जिसपर नशे का प्रभाव हो।

नशेबाज-पुं० [फा०] वह जो नित्य किसी नशे का सेवन करता हो।

नश्तर-पुं० [फा०] फोड़े चीरने का बहुत तेज छोटा चाकू।

नश्वर-वि० [सं०] [भाव० नश्वरता] जो

जल्दी नष्ट हो जाय। नष्ट हो जानेवाला।

नपत*-पुं० दे० 'नक्षत्र'।

नष्ट-वि० [सं०] [भाव० नष्टता] १. जिसका नाश हो गया हो। २. जो दिखाई न दे। ३. अधम। नीच। ४. निष्फल। व्यर्थ।

नष्ट-भ्रष्ट-वि० [सं०] जो पूरी तरह से रद्दी या बरबाद हो गया हो।

नष्टा-स्त्री० [सं०] बद-चलन स्त्री। कुलटा।

नसंक*-वि० दे० 'नि:शंक'।

नस-स्त्री० [सं० स्नायु] १. शरीर में तंतु के रूप की वह नली जो पेशी को किसी कड़े स्थान से जोड़ती है। २ कोई शरीर-तंतु या रक्त-वाहिनी नली।

मुहा०-**नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना**=किसी नस का अपनी जगह से कुछ हट या बल खा जाना। **नस नस में**=सारे शरीर में। **नस नस फड़क उठना**=बहुत अधिक प्रसन्नता होना।

३ पत्तों मे दिखाई देनेवाले पतले तंतु।

नस-तरंग-पुं० [हिं० नस+तरंग] शहनाई की तरह का एक बाजा जो गले की नसों पर रखकर बजाया जाता है।

नसना*-अ०=नष्ट होना।

अ० [हिं० नटना] भागना।

नसल-स्त्री० [अ०] वंश। कुल।

नसवार-स्त्री० दे० 'सुँघनी'।

नसाना*-अ० स० दे० 'नशाना'।

नसीत*-स्त्री० दे० नसीहत'।

नसीब-पुं० [अ०] भाग्य। तकदीर।

नसीबवर-वि० [अ०] भाग्यवान्।

नसीहत-स्त्री० [अ०] १. अच्छा और भलाई का उपदेश। सीख। २.बुरे काम से फल-स्वरूप मिलनेवाली अच्छी शिक्षा।

नसेनी-स्त्री० [सं० श्रेणी] सीढ़ी।

नस्तित-वि० [सं०] नस्ती या नत्थी में लगाया हुआ। नत्थी किया हुआ। (फाइल्ड)

नस्ती-स्त्री० दे० 'नत्थी'।

नस्य-पुं० [सं०] सुँघनी। नास।

नहँ†-पुं० दे० 'नाखून'।

नहछू-पुं० [सं० नख-क्षौर] विवाह से पहले की एक रीति जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और उसे मेंहदी लगाई जाती है।

नहना*-स० दे० 'नाधना'।

नहर-स्त्री० [फा०] सिंचाई, यात्रा आदि के लिए छोटी नदी के रूप में तैयार किया हुआ कृत्रिम जल-मार्ग। कुल्या।

नहरनी-स्त्री० [सं० नखहरणी] नाखून काटने का एक प्रसिद्ध औजार।

नहरुआ-पुं० [देश०] एक रोग जिसमें घाव मे से सूत की तरह का लंबा सफेद कीड़ा निकलता है।

नहलाई-स्त्री० [हिं० नहलाना] नहलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नहलाना-स० हिं० 'नहाना' का स०।

नहवाना-स० दे० 'नहलाना'।

नहान-पुं० [सं० स्नान] १. नहाने की क्रिया या भाव। २. स्नान का पर्व।

नहाना-अ० [सं० स्नान] १. शरीर साफ करने के लिए उसे जल से धोना। स्नान करना।

पद-**दूधों नहाओ पूतों फलो**=दे० 'दूध' के अन्तर्गत।

२.तरल पदार्थ से सारे शरीर का तर होना।

नहार-वि०[फा०,मि०सं०निराहार] जिसने सबेरे से कुछ खाया न हो। बासी-मुँह।

नहारी-स्त्री० दे० 'जल-पान'।

नहीं-अव्य०[सं०नहि] निषेध या अस्वीकृति सूचित करनेवाला एक अव्यय।

मुहा०-**नहीं तो**=यदि ऐसा न हो तो।
नहूसत-स्त्री० [अ०] मनहूस होने का भाव। मनहूसी।
नाँ-अव्य० दे० 'नहीं'।
नाँउँ*-पुं० दे० 'नाम'।
नाँगा*-वि० दे० 'नंगा'।
नाँघना*-स० दे० 'लाँघना'।
नाँठना*-अ०=नष्ट होना।
नाँद-स्त्री० [सं० नंदक] मिट्टी का वह बड़ा बरतन जिसमें पशुओं को चारा दिया या पानी पिलाया जाता है।
नाँदना*-अ० [सं० नाद] १. शब्द करना। २. छींकना।
अ० [सं० नंदन] १. प्रसन्न होना। २. बुझने से पहले दीपक का भभकना।
नांदी-स्त्री० [सं०] १. अभ्युदय। समृद्धि। २. वह आशीर्वादात्मक पद्य जो सूत्रधार नाटक आरंभ करने के पहले पढ़ता है। मंगलाचरण।
नांदी-मुख-पुं० [सं०] एक मांगलिक श्राद्ध जो विवाह आदि मंगल अवसरों से पहले होता है।
नाँधना-स० दे० 'नाधना'।
नाँयँ*-पुं० दे० 'नाम'।
अव्य० दे० 'नहीं'।
नाँवँ-पुं० दे० 'नाम'।
नाँह-*पुं० [सं० नाथ] स्वामी।
अव्य० दे० 'नहीं'।
ना-अव्य० [सं०] नहीं। न।
नाइन-स्त्री० [हिं० नाई] नाई की स्त्री।
नाइब*-पुं० दे० 'नायब'।
नाई-स्त्री० [सं० न्याय] समान दशा।
अव्य० १. समान। तुल्य। २. की तरह।
नाई-पुं० [सं० नापित] वह जो हजामत बनाने का काम करता हो। हज्जाम।
नाउँ*-पुं० दे० 'नाम'।
नाउन†-स्त्री० दे० 'नाइन'।
ना-उम्मेद-वि० [फ़ा०] निराश।
नाऊ†-पुं० दे० 'नाई'।
नाकंद-वि० [फ़ा० ना+कंद.] १ बिना निकाला हुआ (घोड़ा)। २. अल्हड़।
नाक-स्त्री० [सं० नक्र] १. होंठों के ऊपर की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय। नासिका।
मुहा०-**नाक कटना**=अप्रतिष्ठा होना। इज्जत जाना। **नाक का बाल होना**=सदा साथ रहकर घनिष्ट मित्र या मंत्री होना। **नाकों चने चबवाना**=बहुत तंग करना। हैरान करना। **नाक-भौं चढ़ाना या सिकोड़ना**=अरुचि या अप्रसन्नता प्रकट करना। **नाक में दम करना**=बहुत तंग करना या सताना। **नाक रगड़ना**=गिड़गिड़ाकर विनती करना।
२. सिर की नसों आदि का मल जो नाक से निकलता है। रेंट। नेटा। ३. प्रतिष्ठा या शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। ४. प्रतिष्ठा। मान। इज्जत।
मुहा०-**नाक कटना**=अप्रतिष्ठा या बेइज्जती होना। **नाक रख लेना**=प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।
पुं० [सं० नक्र] मगर की तरह का एक जल-जंतु।
पुं० [सं०] १. स्वर्ग। २. आकाश।
नाकड़ा-पुं० [हिं० नाक] नाक का एक रोग जिसमें वह पक जाती है।
नाकना*-स० [सं० लंघन] १. लाँघना। २. आगे बढ़ जाना। मात करना।
नाका-पुं० [हिं० नाकना] १. रास्ते का सिरा। मुहाना। २. नगर, दुर्ग, क्षेत्र आदि का प्रवेश-स्थान।

मुहा०-नाका छेंकना=आने-जाने का रास्ता रोकना ।

३. वह स्थान जहाँ पहरा देने या कर उगाहने के लिए सिपाही रहते हों । ४. सूई में का छेद ।

नाका-बंदी-स्त्री० [हिं० नाका+फा०बंदी] कहीं जाने या घुसने का मार्ग रोकना ।

नाकेदार-पुं० [हि० नाका+फा० दार] नाके पर रहनेवाला पहरेदार या अधिकारी ।

नाखना*-स० [सं० नष्ट] १. नष्ट करना । २. फेंकना ।

स० दे० 'लांघना'।

ना-खुश-वि० [फा०] अप्रसन्न ।

नाखून-पुं० [फा० नाखुन मि० सं० नख] उँगलियों के सिरे पर होनेवाली हड्डी की-सी कड़ी वस्तु । नख । नहँ ।

नाग-पुं० [सं०] [स्त्री० नागिन] १. साँप, विशेषतः फनवाला साँप ।

मुहा०-नाग से खेलना=ऐसा कार्य करना जिसमें प्राण जाने का भय हो ।

२. कद्रु से उत्पन्न कश्यप के वंशज, जिनका निवास पाताल में माना गया है । ३. हिमालय की एक प्राचीन जाति । ४. हाथी । ५. राँगा । ६. सीसा । (धातु) ७ पान । तांबूल । ८. बादल । ९. आठ की संख्या ।

नाग-कन्या-स्त्री० [सं०] नाग जाति की कन्या जो बहुत सुंदर मानी जाती है ।

नाग-केसर-पुं० [सं० नागकेशर] एक पेड़ जिसके सूखे फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं ।

नाग-झाग*-पुं० दे० 'अफीम' ।

नाग-नग-पुं० [सं०] गज-मुक्ता ।

नागना*-अ० [हिं० नागा] नागा करना । अंतर डालना ।

नाग-पाश-पुं० [सं०] शत्रुओं को बाँधने का एक प्राचीन अस्त्र ।

नाग-फनी-स्त्री० [हिं० नाग+फन] थूहर की जाति का एक कँटेदार पौधा ।

नाग-फाँस-पुं० दे० 'नाग-पाश' ।

नाग-बंध-पुं० [सं०] किसी चीज को लपेटकर बाँधने का वह विशेष प्रकार, जो प्रायः वैसा ही होता है, जैसा नाग का किसी जीव-जंतु या वृक्ष आदि को अपने शरीर से लपेटने का होता है ।

नागबेल-स्त्री० [सं० नागवल्ली] पान ।

नागर-वि० [सं०] [स्त्री० नागरी भाव० नागरता] १. नगर से संबंध रखनेवाला । २. नगर-निवासियों से संबंध रखनेवाला । (सिविल) जैसे-नागर अधिकार ।

पुं० १. नगर का निवासी । २. वह जो चतुर, सभ्य और शिष्ट हो । भला आदमी ।

नागर-मोथा-पुं० [सं० नागरमुस्ता] एक प्रकार की घास जिसकी जड़ दवा के काम आती है ।

नागर युद्ध-पुं० [सं०] वह आपसी युद्ध या लड़ाई जो किसी राष्ट्र के नागरिकों में होती है । (सिविल वार)

नागर-विवाह-पुं० [सं०] वह विवाह जो धार्मिक बन्धनों से रहित होता और विशुद्ध नागरिक की हैसियत से किया जाता है । (सिविल मैरिज)

नागराज-पुं० [सं०] १. शेषनाग । २. ऐरावत ।

नागरिक-वि०[सं०] (भाव०नागरिकता) १. नगर-संबंधी । नगर का । २. नगर में रहनेवाला । शहरी । ३. चतुर । सभ्य ।

नागरिक शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें व्यक्ति, समाज और देश के हित

के विचार से, संस्कृति, परिस्थितियों और आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए वास्तविक उत्तम और सद् जीवन व्यतीत करने का विवेचन होता है। (सिविक्स)

नागरी-स्त्री० [सं०] १. नगर की रहने-वाली चतुर स्त्री। २. देव-नागरी लिपि। ३. हिन्दी भाषा। (क्व०)

नाग-लोक-पुं० [सं०] पाताल।

नागवल्ली-स्त्री० [सं०] पान।

नागवार-वि० [फा०] न रुचनेवाला। अप्रिय।

नागा-पुं० [सं० नग्न] १ एक प्रसिद्ध शैव संप्रदाय। २. इस संप्रदाय के साधु जो प्रायः नंगे रहते हैं।

पुं० [सं० नाग] आसाम के पूर्व की एक जंगली जाति।

पुं० [अ० नाग़ः] नियत समय पर होते रहनेवाले काम का किसी बार न होना।

नागिन-स्त्री० [हिं० नाग] १. नाग या साँप की मादा। २. पीठ पर की एक प्रकार की लंबी भौंरी या रोम-राजी। (अशुभ)

नागेंद्र-पुं० [सं०] १. शेष, वासुकि आदि बड़े नाग। २. ऐरावत।

नागेसर*-पुं० दे० 'नाग-केसर'।

नागौरी-वि० [हिं० नागौर (नगर)] नागौर का (बैल या बछड़ा जो अच्छा समझा जाता है)।

वि० स्त्री० नागौर की (अच्छी गाय)।

स्त्री० एक प्रकार की बहुत छोटी खस्ती पूरी।

नाच-पुं० [सं० नाट्य] १. नाचने की क्रिया या भाव।

मुहा०-**नाच काछना**=नाचने को तैयार होना। **नाच दिखाना**=विलक्षण आचरण करना। **नाच नचाना**=१. जैसा चाहना, वैसा काम कराना। २. हैरान या तंग करना।

२. नाचने का उत्सव या जलसा।

नाच-कूद-स्त्री० [हिं० नाच+कूदना] १. नाच-तमाशा। २. योग्यता, शौर्य आदि प्रकट करने का निरर्थक प्रयत्न।

नाच-घर-पुं० दे० 'नृत्यशाला'।

नाचना-अ० [हिं० नाच] १. प्रसन्न होकर उछलना-कूदना। २. संगीत के साथ ताल-स्वर के अनुसार हाव-भाव-दिखाते हुए उछलना, घूमना और इसी प्रकार की दूसरी चेष्टाएँ करना। नृत्य करना। ३. चक्कर लगाना। मँडराना।

मुहा०-**सिर पर नाचना**=१. घेरना। ग्रसना। २. बहुत पास आना। **आँख के सामने नाचना**=प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना।

४. प्रयत्न में दौड़ना-धूपना। ५. क्रोध में उछलना-कूदना।

नाच-रंग-पुं० [हिं० नाच+रंग] संगीत या गाने-नाचने का जलसा।

नाज†-पुं० दे० 'अनाज'।

पुं० [फा० नाज़] १. नखरा।

मुहा०-**नाज उठाना**=चोचले सहना।

२. घमंड। गर्व।

नाज-बरदारी-स्त्री०[फा०] नाज उठाना। चोचले सहना।

ना-जायज-वि० [अ०] १. जो जायज या वैध न हो। अवैध। २. अनुचित। ना-मुनासिब।

नाजिम-पुं० [अ०] १. मुसलमानी राज्य-काल का वह प्रधान कर्मचारी जो किसी देश का प्रबंध करता था। २. आज-कल किसी न्यायालय-संबंधी कार्यालय का प्रबन्धकर्त्ता।

नाजिर-पुं०[अ०] १.निरीक्षक। देख-भाल करनेवाला। २. न्यायालय के क्लिपिकों का अधिकारी। ३. वेश्याओं का दलाल।

नाजी-पुं० [जर० नात्सी] १. जरमनी का एक बहुत बलवान दल जो अपने आपको राष्ट्रीय साम्यवादी कहता था और जिसका पराभव दूसरे महायुद्ध में हुआ था। २. इस दल का सदस्य।

नाजुक-वि०[फा०] १.कोमल। सुकुमार। यौ०-नाजुक-मिजाज=जो कुछ भी कष्ट न सह सके।
२. पतला। महीन। ३ सूक्ष्म। ४. गूढ़। ५.जरा से आघात से टूट-फूट जानेवाला। ६. जिसमें हानि या अनिष्ट का डर हो। जोखिम का।

नाजो-वि० स्त्री० [हिं० नाज] १. दुलारी। २. प्रियतमा। ३. कोमलांगी।

नाटक-पुं० [सं०] १. रंग-मंच पर अभिनेताओं का हाव-भाव, वेष और कथोपकथन द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन। अभिनय। २. वह ग्रंथ जिसमें इस प्रकार दिखाया जानेवाला चरित्र या घटना हो। दृश्य-काव्य।

नाटकिया(की)-पुं० दे० 'नट'।

नाटकीय-वि० [सं०] १. नाटक-संबंधी। २. नाटक या नटों की तरह का।

नाटना*-अ० दे० 'नटना'।

नाटा-वि० [सं० नत=नीचा] [स्त्री० नाटी] छोटे डील या कद का। कम ऊँचा।

नाटिका-स्त्री० [सं०] चार अंकों का एक प्रकार का दृश्य-काव्य।

नाट्य-पुं० [सं०] १. नटों का काम—नृत्य, गीत, वाद्य और अभिनय आदि। अभिनय। २. स्वाँग।

नाट्यकार-पुं० [सं०] १. नट। २. वह जो नाटक लिखता हो।

नाट्य-मंदिर-पुं० [सं०] नाट्य-शाला।

नाट्य-शाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ नाटक या अभिनय होता हो।

नाट्य-शास्त्र-पुं० [सं०] नृत्य, गीत, अभिनय आदि की विद्या या शास्त्र।

नाठ*-पुं० [सं० नष्ट] [क्रि० नाठना] १. नाश। ध्वंस। २. अभाव।

नाठना*-स० [सं० नष्ट] नष्ट करना। अ० नष्ट होना।
अ० [हिं० नाटना] भागना।

नाड़-स्त्री० [सं० नाल] ग्रीवा। गर्दन।

नाड़ा-पुं० [सं० नाड़ी] १. घाँघरा, पाजामा आदि बाँधने की डोरी। इज़ारबंद। नीवी। २. वह मांगलिक लाल सूत जो देवताओं पर चढ़ाया या हाथ में बाँधा जाता है। मौली।

नाड़ी-स्त्री० [सं०] १. नली। २. शरीर के अन्दर की वे नलियाँ जिनमें से होकर रक्त बहता है। धमनी।
मुहा०-**नाड़ी चलना**=कलाई की नाड़ी में स्पंदन या गति होना। (जीवन का लक्षण) **नाड़ी छूटना**=१. नाड़ी का न चलना। २. मृत्यु हो जाना। **नाड़ी देखना**=कलाई की नाड़ी पर हाथ रखकर रोग का पता लगाना।
३. हठ योग में अनुभूति और श्वास-प्रश्वास संबंधी नालियाँ। ४. काल का एक मान जो छः क्षण का होता है।

नाड़ी-मंडल-पुं० दे० 'विषुवद्रेखा'।

नात[1]-पुं० [सं०ज्ञाति] १. नाता। संबंध। २. नातेदार।
स्त्री० [अ० नअत] १. ईश्वर की प्रशंसा। २.ईश्वर की प्रशंसा या अध्यात्म से संबंध रखनेवाला गीत। (मुसल०)

नातरु*-अव्य० [हिं० न+तो+अरु] नहीं तो। अन्यथा।

नाता-पुं० [सं० ज्ञाति] १. मनुष्यों का वह पारस्परिक संबंध जो एक ही कुल में जन्म लेने या विवाह आदि करने से होता है। ज्ञाति-संबंध। २. संबंध। रिश्ता।

नाती-पुं० [सं० नप्तृ] [स्त्री० नतिनी, नातिन] लड़की का लड़का। दोहता।

नाते-क्रि०वि० [हिं०नाता] १. संबंध से। जैसे-मित्र के नाते। २. वास्ते। लिए।

नातेदार-वि० [हिं० नाता+फा० दार] [संज्ञा नातेदारी] संबंधी। रिश्तेदार।

नात्सी-पुं० दे० 'नाज़ी'।

नाथ-पुं० [सं०] १. प्रभु। स्वामी। मालिक। २. पति।

स्त्री० बैल, भैंसे आदि की नाक में नाथने की रस्सी।

नाथना-स० [सं० नाथ] [भाव० नाथ, नथाई] १. बैल, भैंसे आदि को वश में रखने के लिए उनकी नाक छेदकर उसमें रस्सी पिरोना। नकेल डालना। २. पिरोना। ३. नत्थी करना।

नाद-पुं० [सं०] १. शब्द। आवाज। २. वर्णों के उच्चारण में वह प्रयत्न जिसमें कंठ को न तो बहुत फैलाकर और न बहुत सिकोड़कर वायु या ध्वनि निकालनी पड़ती है। ३. संगीत।

यौ०-नाद विद्या=संगीत-शास्त्र।

नादना*-स० [सं० नदन] बजाना।

अ० १. बजना। २. गरजना।

अ० [सं० नंदन] प्रफुल्लित होना।

नादली-स्त्री० दे० 'हौल-दिली'।

नादान-वि० [फा०] [भाव० नादानी] ना-समझ। मूर्ख।

नादित-वि० [सं०] जिसमें नाद या शब्द होता हो। शब्दित।

नादिर-वि० [फा०] अद्भुत। अनोखा।

नादिर-शाही-स्त्री० [नादिर शाह] १. मनमानी आज्ञाएँ प्रचलित करना। २. भारी अंधेर या अत्याचार।

वि० बहुत कठोर या विकट (आज्ञा, कार्य आदि)।

ना-दिहंद-वि० [फा०] ऋण न चुकानेवाला। जिससे पावना जल्दी वसूल न हो।

नादी-वि० [सं० नादिन्] [स्त्री० नादिनी] १ शब्द करनेवाला। २. बजनेवाला।

नाधना-स० [हिं०नाथना] १. बैल, घोड़े आदि को सवारी आदि खींचने के लिए उसके आगे बाँधना। जोतना। २. लगाना। ३. गूँथना। पिरोना। ४. आरंभ करना। ठानना। ५. दे० 'नाथना'।

नानक-पुं० एक प्रसिद्ध पंजाबी महात्मा जो सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक और सिक्खों के आदि-गुरु थे।

नानक-पंथी (शाही)-पुं० [हिं० नानक-पंथ] गुरु नानक के संप्रदाय का, सिक्ख।

नान-खताई-स्त्री० [फा०] एक प्रकार की सोंधी मीठी टिकिया।

नान-बाई-पुं० [फा० नानबा] रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला। (मुसल०)

नाना-वि० [सं०] १. अनेक प्रकार के। तरह तरह के। २. अनेक। बहुत।

पुं० [देश०] [स्त्री० नानी] माता का पिता। मातामह।

†स० [सं० नमन] १. दे० 'नवाना'। २. डालना या घुसाना। प्रविष्ट करना।

पुं० [अ०] पुदीना।

यौ०-अर्क नाना=पुदीने का अरक।

नानिहाल-पुं० [हिं० नाना] नाना-नानी का घर।

नानी-स्त्री० [देश०] माता की माता। मुहा०-**नानी याद आना या मर जाना**=संकट या आपत्ति-सी आ जाना।
ना-नुकर-पुं० [हिं० न] इनकार।
नान्हा‡-वि० दे० 'नन्हा'।
नाप-स्त्री०[हिं०नापना] १.किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि जिसका विचार किसी निर्दिष्ट लंबाई के आधार पर या तुलना में होता है। परिमाण। माप (मेजर)। २. वह क्रिया जिससे किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई आदि जानी या स्थिर की जाती है। नापने का काम। (मेज़रमेन्ट) ३. वह निर्दिष्ट लंबाई जिसे एक मानकर किसी वस्तु की लबाई-चौड़ाई या विस्तार स्थिर किया जाता है। मान। ४. निर्दिष्ट लंबाईवाली वह वस्तु जिससे इस प्रकार का विस्तार स्थिर किया जाता है। जैसे-गज, फुट आदि।
नाप-जोख (तौल)-स्त्री० [हिं० नाप+जोख या तौल] १. नापने-जोखने या तौलने की क्रिया या भाव। २. नाप या तौलकर स्थिर किया हुआ परिमाण।
नापना-स० [सं० मापन] १. लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई आदि का हिसाब लगाना। मापना।
मुहा०-**गरदन नापना** = धक्का देकर हटाना या बाहर निकालना। **सिर नापना**=सिर काटना।
२. किसी बात की गहराई या थाह का या किसी व्यक्ति की जानकारी आदि का पता लगाना।
ना-पसंद-वि० [फा०] जो पसंद न हो।
ना-पाक-वि० [फा०] [भाव० नापाकी] १. अ-पवित्र। २. मैला-कुचैला।
ना-पास-वि० [हिं० ना+अं० पास] जो पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण।
नापित-पुं० [सं०] नाई। हज्जाम।
नापैद-वि० [फा० ना+पैदा] १. जो पैदा न हुआ हो। २. विनष्ट। ३. अप्राप्य।
नाफा-पुं० [फा० नाफ़ः] कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है।
नाबदान-पुं० दे० 'पनाला'।
ना-बालिग-वि० [अ०+फा०] [भाव० नाबालिगी] जो अभी पूरा जवान न हुआ हो। अ-वयस्क।
नाबूद-वि० [फा०] नष्ट। ध्वस्त।
नाभि-स्त्री० [सं०] १. पहिये का मध्य भाग। चक्र-मध्य। २. जरायुज जंतुओं के पेट पर का मध्य का वह गड्ढा जहाँ गर्भावस्था में जरायुनाल रहता है। ढोंढी।
ना-मंजूर-वि० [फा०+अ०] [भाव० नामंजूरी] जो मंजूर न हो। अस्वीकृत।
नाम-पुं० [सं० नामन्] [वि० नामी] १. वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का बोध हो या वह पुकारा जाय। संज्ञा। आख्या।
मुहा०-**नाम उछालना**=बदनामी कराना। **नाम का, नाम के लिए या नाम को**=१. बहुत थोड़ा। २. दिखाने भर को, काम के लिए नहीं। **नाम चढ़ना**=किसी नामावली में नाम लिखा जाना। **नाम चलना**=लोक में नाम का स्मरण या यश बना रहना। **नाम जपना**=बार बार नाम लेना। **(किसी का) नाम धरना** = १. बदनाम करना। २. दोष निकालना। **नाम न लेना**=दूर या अलग रहना। **नाम निकल जाना** = प्रसिद्धि हो जाना। **किसी के नाम पर**=१. किसी को

अर्पित करके। किसी के निमित्त। २. किसी की ओर से। (किसी के) **नाम पर बैठना**=किसी के भरोसे संतोष करके चुपचाप बैठे रहना। **नाम बिकना**=प्रसिद्धि के कारण आदर या पूछ होना। **नाम मिटना**=१ स्मारक या कीर्ति नष्ट होना। २. नाम तक बाकी न रहना। **नाम मात्र**=बहुत थोड़ा। (किसी का) **नाम लगाना**=दोष मढ़ना। अपराध लगाना। **नाम लेना**= १. दे० 'नाम जपना'। २. गुण गाना। प्रशंसा करना। (किसी के) **नाम से काँपना**=नाम सुनते ही डर जाना। २. यश या कीर्ति की सूचक प्रसिद्धि।

मुहा०-**नाम कमाना**=प्रसिद्धि प्राप्त करना। **नाम को मरना**=१. यश या कीर्त्ति पाने के लिए प्रयत्न करना। २. यह ध्यान रखना कि बदनामी न हो। **नाम जगाना**=अच्छी कीर्त्ति प्राप्त करना। **नाम डूबना**=यश और कीर्त्ति का नाश होना। **नाम पाना**=प्रसिद्ध होना। **नाम रह जाना**=कीर्त्ति की चर्चा होती रहना। यश बना रहना।

३. बही-खाते का वह विभाग या अंश जिसमें किसी को दिया हुआ धन या माल लिखा जाता है।

मुहा०-**नाम डालना** = खाते में यह लिखना कि अमुक व्यक्ति को इतना धन या माल दिया गया।

नामक-वि० [सं०] नाम से प्रसिद्ध। नामवाला।

नाम-करण-पुं० [सं०] १. किसी का नाम निश्चित करना। २. हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बालक का नाम रखा या स्थिर किया जाता है।

नाम-कीर्त्तन-पुं० [सं०] ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

नाम-चढ़ाई-स्त्री० [हि० नाम+चढाना] वह क्रिया जिसमें सम्पत्ति आदि के स्वामित्व पर से एक व्यक्ति का नाम हटाकर दूसरे का नाम चढ़ाया जाता है। दाखिल खारिज। (म्यूटेशन)

नाम-ज़द-वि० [फा०] [भाव० नामज़दगी] १. जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित किया या चुना गया हो। नामांकित। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

नाम-ज़दगी-स्त्री० [फा०] कोई काम करने के लिए या किसी चुनाव आदि में खड़े होने के लिए किसी का नाम निश्चित किया जाना।

नामतः-क्रि० वि० [सं०] नाम अथवा नाम के उल्लेख से।

नामदार-वि० दे० 'नामवर'।

नाम-धराई-स्त्री० दे० 'बदनामी'।

नाम-धाम-पुं० [हिं० नाम+धाम] नाम और रहने का पता-ठिकाना।

नामधारी-वि० [सं०] नामक।

नाम-निवेश-पुं० [सं०] किसी विशेष कार्य के लिए किसी बही या नामावली में किसी का नाम लिखा जाना। (एनरोलमेन्ट)

नाम-निशान-पुं० [फा०] चिह्न।

नाम-पट्ट-पुं० [सं०] वह पट्ट या तख्ता आदि जिसपर किसी व्यक्ति, दूकान या संस्था आदि का नाम लिखा रहता है। (साइनबोर्ड)

नामर्द-वि० [फा०] [भाव० नामर्दी] १. नपुंसक। २. डरपोक। कायर।

नाम-लिखाई-स्त्री० [हिं० नाम+लिखना] १. किसी पंजी, तालिका आदि में नाम

लिखा जाना। (एनरोलमेन्ट) २. वह धन जो इस प्रकार नाम लिखाने के लिए शुल्क के रूप में लिया या दिया जाता है।

नाम-लेवा-पुं० [हिं० नाम+लेना] १. नाम लेने या स्मरण करनेवाला। २. संतति। औलाद।

नामवर-वि० [फा०] [भाव० नामवरी] प्रसिद्ध। मशहूर।

नाम-शेष-वि० [सं०] १ जिसका केवल नाम रह गया हो। २. नष्ट। ध्वस्त। ३. मरा हुआ। मृत।

नामांक-पुं० [सं०] किसी सूची में आये हुए बहुत-से नामों में प्रत्येक नाम के साथ लगा हुआ उसका क्रमांक। (रोल नम्बर)

नामांकन-पुं० [सं०] [वि० नामांकित] किसी कार्य विशेषतः किसी निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए किसी का नाम लिखा जाना। नाम-जदगी। (नॉमिनेशन)

नामांकित-वि० [सं०] १. जिसपर नाम लिखा या खुदा हो। २. जिसका किसी काम या पद के लिए नाम लिखा गया हो। नामजद। ३.प्रसिद्ध। मशहूर।

नामांतर-पुं० [सं०] एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।

नामांतरण-पुं० [सं०] किसी सम्पत्ति पर चढ़े हुए एक नाम को हटाकर उसकी जगह दूसरा नाम लिखा या चढ़ाया जाना। दाखिल खारिज। (म्यूटेशन)

नामावली-स्त्री० [सं०] १. एक ही व्यक्ति या वस्तु के बहुत-से नामों अथवा बहुत-से व्यक्तियों या वस्तुओं के नामों की तालिका। २. वह कपड़ा जिसपर राम, कृष्ण आदि नाम छपे रहते हैं।

नामी-वि० [हिं० नाम] १. नामधारी। नामवाला। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

ना-मुनासिब-वि० [फा०] अनुचित।

ना-मुमकिन-वि० [फा०+अ०] असम्भव।

नामूसी-स्त्री० दे० 'बदनामी'।

नायँ*-पुं० दे० 'नाम'। अव्य० दे० 'नहीं'।

नायक-पुं० [सं०] [स्त्री० नायिका] १. लोगों को अपनी आज्ञा के अनुसार चलानेवाला आदमी। नेता। अगुआ। २. अधिपति। स्वामी। मालिक। ३ किसी दल या समुदाय का प्रधान। सरदार। ४. साहित्य में वह पुरुष, विशेषतः रूप-यौवनवाला पुरुष, जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक में आया हो।

नायका-स्त्री० [सं० नायिका] १. वह वृद्धा स्त्री जो किसी वेश्या को अपने पास रखकर उससे पेशा कराती हो। २. कुटनी। दूती। ३. दे० 'नायिका'।

नायन-स्त्री० [हिं० नाई] नाई की स्त्री।

नायब-पुं० [अ०] १. किसी की ओर से काम करनेवाला। मुख्तार। २.सहायक। सहकारी।

नायाब-वि०[फा०] १.जो जल्दी न मिले। अप्राप्य या दुष्प्राप्य। २. बहुत बढ़िया।

नायिका-स्त्री० [सं०] रूप-गुण से युक्त युवती स्त्री जो शृंगार रस का आलंबन हो या किसी काव्य, नाटक आदि में जिसका चरित्र दिखाया गया हो।

नारंगी-स्त्री० [सं० नागरंग, अ० नारंज] नीबू की जाति का एक पेड़ जिसके फल मीठे, सुगंधित और रसीले होते हैं। वि० पीलापन लिये कुछ लाल रंग का।

नार-स्त्री० [सं० नाल] १. गरदन। ग्रीवा। २. जुलाहों की ढरकी। नाल। पुं० १. आँवल नाल। नाल। २.

बहुत मोटा रस्सा । ३.इजारबंद । नारा । नाला ।

स्त्री० दे० 'नारी' ।

नारकी-वि० [सं० नारकिन्] १ नरक में जाने योग्य । बहुत बड़ा पापी । २. नरक में रहनेवाला ।

नारद-पुं० [सं०] १. ब्रह्मा के पुत्र, एक प्रसिद्ध हरि-भक्त देवर्षि । (कुछ लोगों का मत है कि नारद किसी व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि साधुओं के एक संप्रदाय का नाम था ।) २. लोगों में झगड़ा करानेवाला व्यक्ति ।

वि० १. जल देनेवाला । २. वंशज ।

नारा-पुं० [अ० नअ्रः] किसी विशेष सिद्धान्त, पक्ष या दल का वह घोष जो लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए होता है । घोष । (स्लोगन)

पुं० १. दे० 'नाड़ा' । २. नाला ।

नाराच-पुं० [सं०] लोहे का बाण ।

नाराज-वि० [फा०] [भाव० नाराजगी, नाराजी] अप्रसन्न । रुष्ट । खफा ।

नाराजगी(जी)-स्त्री०[फा०] अप्रसन्नता । रोष ।

नारायण-पुं० [सं०] १. विष्णु । २. भगवान् । ईश्वर ।

नारायणी-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा । २. लक्ष्मी । ३. गंगा ।

नारि-स्त्री० दे० 'नारी' ।

नारिदा*-पुं० दे० 'नाबदान' ।

नारियल-पुं० [सं० नारिकेल] १. खजूर की जाति का एक पेड़ जिसके बड़े गोल फलों में मीठी गिरी होती है । २. उक्त फल की खोपड़ी का बना हुआ हुक्का ।

नारी-स्त्री० [सं०] [भाव० नारीत्व] स्त्री । औरत ।

*स्त्री० १. दे० 'नाड़ी' । २.दे० 'नाली' ।

नारू-पुं० [देश०] १. जूँ । ढील । २. नहरुआ नामक रोग ।

नालंब*-वि० [सं० निरवलंब] [स्त्री० नालबा*] जिसका कोई अवलंब या सहारा न हो । निरवलंब । असहाय ।

नाल-स्त्री० [सं०] १. कमल, कोई आदि फूलों की पोली लंबी डंडी । २. पौधे का डंठल । कांड । ३.गेहूँ, जौ आदि की बाल, जिसमें दाने होते हैं । ४.नली । जैसे-बंदूक की । ५. सुनारों की फुकनी । ६. रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय से मिली होती है । आँवल नाल । नारा ।

स्त्री० [अ०] १. वह अर्द्धचंद्राकार लोहा जो घोड़ों की टाप के नीचे या जूतों की एँड़ी में जड़ा जाता है । २.पत्थर का वह भारी कुंडलाकार टुकड़ा, जो कसरत करनेवाले उठाते हैं । ३. लकड़ी का वह चक्कर जो कूएँ की नींव में रक्खा जाता है और जिसके ऊपर उसकी जोड़ाई होती है । ४. वह रुपया जो जूए के अड्डे का मालिक जीतनेवाले से अपने अंश के रूप में लेता है ।

नालकी-स्त्री० [सं० नाल=डंडा या डंडी] एक प्रकार की मेहराबदार छाजनवाली पालकी ।

नालबंद-पुं० [अ०+फा०] जूते की एँड़ी या घोड़े के पैरों में नाल जड़नेवाला ।

नाला-पुं० [सं० नाल] [स्त्री० अल्पा० नाली] १.वह प्रणाली या जल-मार्ग जिसमें वर्षा का पानी बहता है । प्रणाली । २. गन्दे जल के बहने का मार्ग या प्रणाली ।

ना-लायक-वि० [फा०+अ०] अयोग्य ।

ना-लायकी-स्त्री० [अ०+फा०] अयोग्यता।

नालिश-स्त्री० [फा०] न्यायालय में या किसी बड़े के सामने किसी के विरुद्ध होनेवाली फरियाद। अभियोग।

नाली-स्त्री० [हिं० नाला] १. जल बहने का छोटा नाला। २.गन्दा पानी बहने की मोरी। (ड्रेन) ३.गहरी लकीर। ४.छोटा पतला नल। नली।

नावँ*-पुं० दे० 'नाम'।

नाव-स्त्री० [सं० नौका] जल में चलने-वाली, लकड़ी, लोहे आदि की बनी सवारी। जल-यान। नौका। किश्ती।

नावक-पुं० [फा०] बाण। तीर।

* पु० दे० 'नाविक'।

नावना¹-स० [सं० नामन] १. झुकाना। नवाना। २. डालना।

नावर*-स्त्री० [हिं० नाव] १. नाव। नौका। २. नाव को नदी के बीच में ले जाकर चक्कर देना। (जल-विहार)

नाविक-पुं० [सं०] १. मल्लाह। केवट। २. जहाज चलाने या जहाज पर काम करनेवाला व्यक्ति।

नाश-पु० [सं०] अस्तित्व न रह जाना। ध्वस। बरबादी।

नाशक-वि० [सं०] १. नाश करनेवाला। २. वध करनेवाला। ३. दूर करने या हटानेवाला।

नाशन-पुं० [सं०] नाश करना।

वि० [स्त्री० नाशिनी] नाश करनेवाला।

नाशना*-स०=नाश करना।

नाशमय(वान)-वि० दे० 'नश्वर'।

नाशी-वि० [सं० नाशिन्] [स्त्री० नाशिनी] १. नाशक। २. नश्वर।

नाश्ता-पुं० [फा०] जल-पान।

नास-स्त्री० [सं० नासा] १. नाक से सूँघी जानेवाली दवा। २. सुँघनी।

नासना*-स० [सं० नाशन] १. नष्ट करना। २. मार डालना।

ना-समझ-वि० [हिं०ना+समझ] [भाव० ना-समझी] जिसे समझ न हो। मूर्ख।

नासा-स्त्री० [सं०] [वि० नास्य] १. नाक। २. नाक का छेद। नथना।

नासिका-स्त्री० [सं०] नाक।

नासीर-पुं० [अ०] सेना का अगला भाग।

नासूर-पुं० [अ०] दूर तक अंदर गया हुआ वह छोटा घाव जिससे बराबर मवाद निकला करता हो। नाड़ी-व्रण।

नास्तिक-पुं०[सं०] [भाव० नास्तिकता] ईश्वर, पर-लोक आदि को न माननेवाला।

नाह*-पुं० दे० 'नाथ'।

नाहक-क्रि० वि० [फा०] वृथा। व्यर्थ।

नाहर-पुं० [सं० नरहरि] शेर।

नाहरू*-पुं०१.दे०'नहरुआ'।२.दे०'नाहर'।

नाहिनै*-अव्य०[हिं०नाहीं] १.नहीं(है)।

नाहीं-अव्य० १. दे० 'नहीं'। २. कदापि नहीं। कभी नहीं।

नित*-क्रि० वि० दे० 'नित्य'।

निंद*-वि० दे० 'निंदनीय'।

निंदक-वि० [सं०] निंदा करनेवाला।

निंदना*-स०=निंदा करना।

निंदनीय-वि० [सं०] जिसकी निंदा करना उचित हो। निन्दा के योग्य। बुरा। खराब।

निंदरना*-स० दे० 'निंदना'।

निंदरिया*-स्त्री० दे० 'नींद'।

निंदा-स्त्री० [सं०] १. किसी की वास्तविक या कल्पित बुराई या दोष बतलाना। २. अपकीर्त्ति। बदनामी।

निंदाई-स्त्री० दे० 'निराई'।

निंदाना-स० दे० 'निराना'।

निंदासा-वि० [हिं० नींद] जिसे नींद

आ रही हो। उनींदा।

निंदित-वि० [सं०] [स्त्री० निंदिता] १. जिसकी निंदा होती हो। २.दूषित। बुरा।

निंदिया†-स्त्री० दे० 'नींद'।

निंद्य-वि० दे० 'निंदनीय'।

निंबू-पुं० दे० 'नीबू'।

निःशंक-वि० [सं०] निडर। निर्भय।

निःशब्द-वि० [सं०] १. जहाँ या जिसमें शब्द न हो। २. जो शब्द न करे।

निःशुल्क-वि० [सं०] जिसपर या जिससे शुल्क न लिया जाय। बिना शुल्क का।

निःशेष-वि० [सं०] जो बच न रहा हो। समाप्त। खतम।

निःश्वास-पुं० [सं०] १. नाक से साँस बाहर निकलना। २. नाक से निकली हुई वायु।

यौ०-दीर्घ निःश्वास = गहरा या ठंढा साँस।

निःसंकोच-क्रि० वि० [सं०] संकोच के बिना। बे-धड़क।

निःसंग-वि० [सं०] १. बिना संपर्क या लगाव का। २. किसी से संबंध न रखने-वाला। निर्लिप्त। ३. जिसके साथ कोई और न हो। अकेला।

निःसंतान-वि० [सं०] जिसे संतान या बाल-बच्चा न हो।

निःसंदेह-वि० [सं०] जिसमें कुछ भी संदेह न हो। संदेह-रहित।

अव्य० किसी प्रकार के संदेह के बिना।

निःसत्त्व-वि० [सं०] जिसमें कुछ भी सत्त्व या सार न हो। निःसार।

निःसरण-पुं० [सं०] [वि० निःसृत] १. निकालना। २. निकलने का मार्ग। निकास।

निःसार-वि० दे० 'निःसत्त्व'।

निःसीम-वि० [सं०] १. जिसकी सीमा न हो। बेहद। २. बहुत बड़ा या अधिक।

निःस्पंद-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का स्पंदन न हो। निश्चल।

निःस्पृह-वि० [सं०] १. जिसे कोई स्पृहा या आकांक्षा न हो। २. जिसे कुछ लेने या पाने की इच्छा न हो। निर्लोभ।

निःस्वन-वि० दे० 'निःशब्द'।

पुं० ध्वनि। शब्द।

निःस्वार्थ-वि० [सं०] १ जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो। २. (काम या बात) जो अपने लाभ या स्वार्थ के लिए न हो।

नि-अव्य० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर अर्थ-सम्बन्धी ये विशेषताएँ उत्पन्न करता है-झुंड या समूहः जैसे-निकर। अधोभावः जैसे-निपतित। अत्यंतः जैसे-निग्रह। आदेशः जैसे-निदेश।

पुं० संगीत में 'निषाद' (स्वर) का सूचक संक्षिप्त रूप।

निअर*-अव्य० [सं० निकट] निकट। पास।

वि० समान। तुल्य।

निअराना*-स० [हिं० निअर] पास पहुँचाना।

अ० पास आना या पहुँचना।

निआउ*-पुं० दे० 'न्याय'।

निआथी*-स्त्री० [सं० निः+अर्थ] धन-हीनता। दरिद्रता। गरीबी।

वि० दे० 'निआरथी'।

निआन*-पुं० [सं० निदान] अंत।

अव्य० अंत में। आखिर।

निआना*-वि० दे० 'न्यारा'।

निआरथी*-वि० [हिं० नि+अर्थ] निर्धन।

निकंदन-पुं० [सं० नि+कंदन=नाश] १. नाश। विनाश। २. मार डालना। वध।

निकंदना*-स०=नष्ट करना।

निकट-वि० [सं०] [भाव० निकटता] १. पास का। समीप का। २.(संबंध) जिसमें अधिक अंतर न हो।
क्रि० वि० पास। समीप। नज़दीक।
मुहा०-किसी के निकट=१. किसी से। २. किसी की समझ में या विचार से।
निकटवर्त्ती-वि० दे० 'निकटस्थ'।
निकटस्थ-वि० [सं०] दूरी, संबंध आदि के विचार से, पास का।
निकम्मा-वि० [सं० निष्कर्म्म] [स्त्री० निकम्मी] १.जो कोई काम न करता हो। २. जो किसी काम का न हो। निरर्थक।
निकर-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. राशि। ढेर। ३. निधि। कोश।
पुं० [अं०] एक प्रकार का अँगरेजी जाँघिया। आधा पायजामा।
निकरना*-अ० दे० 'निकलना'।
निकलंक*-वि०[सं०निष्कलंक]दोष-रहित।
निकल-स्त्री० [अं०] सफेद रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिसके सिक्के आदि बनते हैं।
निकलना-अ० [हिं० निकालना] १. बाहर आना। निर्गत होना।
मुहा०-निकल जाना=१. आगे बढ़ या चला जाना। २. पास में न रह जाना। ३. कम हो जाना। ४. पहुँच या पकड़ के बाहर होना। (स्त्री का) निकल जाना=पर-पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर से चला जाना।
२. मिली, सटी या लगी हुई चीज़ अलग होना। ३. एक ओर से दूसरी ओर चला जाना। पार होना। ४. प्रस्थान करना। जाना। ५. उदय होना। ६. अपने उद्‌गम स्थान से प्रादुर्भूत, निर्गत या प्रकाशित होना। जैसे-आज्ञा निकलना, पुस्तक निकलना, नदी निकलना आदि। ७. किसी ओर को बढ़ा हुआ होना। ८. स्पष्ट होना। प्रकट होना। जैसे-अर्थ निकला। ६. सिद्ध या पूरा होना। सरना। जैसे-मतलब या काम निकलना। १०. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना। ११. मुक्त होना। छूटना। १२.आविष्कृत होना। १३. शरीर पर उत्पन्न होना। १४. कहकर नहीं करना। मुकरना। १५.माल की खपत या बिक्री होना। बिकना। १६. हिसाब होने पर कुछ धन किसी के ज़िम्मे ठहरना। १७. पास से जाता रहना। हाथ में न रह जाना। १८. व्यतीत होना। बीतना। गुज़रना। १६. घोड़े, बैल आदि का गाड़ी या सवारी लेकर चलना आदि सीखना।
निकलवाना-स०हिं०'निकालना' का प्रे०।
निकष-पुं० [सं०] १. कसौटी का पत्थर। २. तलवार की म्यान।
निकसना|-अ० दे० 'निकलना'।
निकाई*-पुं० दे० 'निकाय'।
स्त्री० [हिं० नीक] १. नीक या अच्छे होने का भाव। अच्छापन। २. सुन्दरता।
निकाना|-स० दे० 'निराना'।
निकाम*-वि० १. दे० 'निकम्मा'। २. दे० 'निष्काम'।
क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदा।
*वि० [?] प्रचुर। बहुत अधिक।
निकाय-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. ढेर। राशि। ३. घर। मकान।
निकारना*-स०=निकालना।
निकालना-स० [सं० निष्कासन] १. अन्दर से बाहर करना या लाना। निर्गत करना। २. मिली, सटी या लगी हुई चीज़ अलग करना। ३. किसी से आगे बढ़ा ले जाना। ४. गमन कराना।

चलाना या ले जाना। ५. आगे की ओर बढ़ाना। ६. निश्चित करना। ठहराना। जैसे-अर्थ निकालना। ७. सबके सामने उपस्थित करना या रखना। ८.स्पष्ट करना। खोलना। ९. आरंभ करना। चलाना। छेड़ना। १०. स्थान स्वामित्व, अधिकार, पद आदि से अलग करना। ११. घटाना। कम करना। १२. नौकरी से छुड़ाना या हटाना। १३. दूर करना। हटाना। १४.बेचकर अलग करना। १५. निभाना। बिताना। १६. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। हल करना। १७ जारी करना। प्रचलित करना। १८. आविष्कृत करना। ईजाद करना। १९ निस्तार या उद्धार करना। २०. प्रकाशित करना। २१. रकम ज़िम्मे ठहराना। किसी पर ऋण या देना निश्चित करना। २२.ढूँढ़कर सामने रखना। बरामद करना। २३. पशु या व्यक्ति को कोई काम करने की शिक्षा देकर आगे बढ़ाना। २४. कपड़े पर सूई से बेल-बूटे बनाना।

निकाला-पुं० [हिं० निकालना] १. निकालने की क्रिया या भाव। २. कहीं से निकाले जाने का दंड। निष्कासन।

निकास-पुं० [हिं० निकासना] १.निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। २. निकलने के लिए खुला स्थान या मार्ग। ३. बाहर का खुला स्थान। मैदान। ४. उद्गम। मूल-स्थान। ५. रक्षा या बचत का उपाय। ६. आमदनी का रास्ता। ७. आय। आमदनी। ८. दे० 'निकासी'।

निकासना†-स० दे० 'निकालना'।

निकासी-स्त्री० [हिं० निकास] १. निकलने या निकालने की क्रिया या भाव। (इश्यू) २. यात्रा के लिए निकलना। प्रस्थान। रवानगी। ३. वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कहीं से निकलकर बाहर जा सके। (ट्रान्ज़िट पास) ४. आय। आमदनी। ५. लाभ। मुनाफा। ६. बिक्री के लिए माल बाहर जाना। लदाई। भरती। ७. माल की बिक्री। खपत।

निकाह-पुं० [अ०] मुसलमानी विधि के अनुसार होनेवाला विवाह।

निकिष्ट*-वि० दे० 'निकृष्ट'।

निकुंज-पुं० [सं०] घनी लताओं से छाया या घिरा हुआ स्थान। लता-मंडप।

निकृष्ट-वि० [सं०] [भाव० निकृष्टता] खराब। बुरा।

निकेत(न)-पुं० [सं०] १ घर। मकान। २. स्थान। जगह। ३. आगर। भंडार।

निक्षिप्त-वि० [सं०] १. फेंका हुआ। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३. भेजा हुआ। (कन्साइन्ड) ४ जमा किया हुआ। कहीं रखा हुआ। (डिपॉजिटेड)

निक्षिप्तक-पुं० [सं०] १. वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय। (कन्साइन्मेन्ट) २. वह धन जो किसी खाते या कोश में जमा किया, डाला या रखा जाय।

निक्षिप्ति-स्त्री० दे० 'निक्षेप'।

निक्षिप्ती-पुं० [सं० निक्षिप्त] वह जिसके नाम कोई वस्तु (विशेषतः पोट, पारसल आदि) भेजी गई हो। (कन्साइनी)

निक्षेप-पुं० [सं०] १. फेंकने, डालने, चलाने, छोड़ने आदि की क्रिया या भाव। २.भेजने की क्रिया या भाव। ३.वह वस्तु जो भेजी जाय। ४. कहीं धन जमा करने की क्रिया या भाव। ५. वह धन जो कहीं जमा किया जाय। (डिपॉज़िट) ६.

अमानत। धरोहर। थाती।

निक्षेपक-पुं० [सं०] १. वह जो कहीं कोई माल भेजे। (कन्साइनर) २. वह जो कहीं कुछ धन जमा करे। (डिपॉजिटर)

निक्षेपण-पुं० [सं०] [वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य] १. फेंकना। डालना। २. चलाना। ३. छोड़ना। त्यागना। ४. दे० 'निक्षेप'।

निखंग*-पुं० दे० 'निषंग'।

निखट्टू-वि० [हिं० उप० नि=नहीं+खटना=कमाना] जो कुछ कमाता न हो।

निखरचे-क्रि० वि० [हिं० नि+खरच] बिना किसी प्रकार का ऊपरी खर्च जोड़े या मिलाये हुए। जैसे-यह माल आपको १०) मन नि-खरचे मिलेगा। (अर्थात् इसकी ढुलाई, बार-दाना, दलाली आदि आपको देनी पड़ेगी।)

निखरना-अ० [सं० निक्षरण] १. मैल छूट जाने पर साफ या निर्मल होना। २. रंगत का खुलता या साफ होना।

निखरी-स्त्री० [हिं०निखरना] पक्की या घी में पकी हुई रसोई। 'सखरी' का उलटा।

निखवख*-वि० [सं० न्यक्ष=सब] पूरा। सब।

क्रि० वि० पूरा। बिलकुल।

निखाद*-पुं० दे० 'निषाद'।

निखार-पुं० [हिं० निखरना] १. निखरने की क्रिया या भाव। २.निर्मलता। स्वच्छता।

निखारना-स० हिं० 'निखरना' का स०।

निखालिस-वि० दे० 'खालिस'।

निखिद्ध*-वि० दे० 'निषिद्ध'।

निखिल-वि०[सं०] संपूर्ण। सारा। पूरा।

निखुटना-अ० [?] समाप्त होना।

निखेध*-पुं० दे० 'निषेध'।

निखेधना*-स०=निषेध करना।

निखोट*-वि० [हिं० उप० नि+खोट] १. जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो। निर्दोष। २. स्पष्ट या खुला हुआ।

क्रि० वि० बिना संकोच के। बे-धड़क।

निखोटना-स० [हिं० नख] नाखून से नोचना, तोड़ना या काटना।

निगंदना-स० [फा० निगंदः=बखिया] रूई भरे हुए कपड़े में दूर दूर पर मोटी और लंबी सिलाई करना।

निगंध*-वि० [सं० निर्गंध] गंध-हीन।

निगड-स्त्री० [सं०] १. हाथी के पैर में बाँधने का सिक्कड़। आँदू। २. बेड़ी।

निगद(न)-पुं० [सं०] [वि० निगदित] भाषण। कथन।

निगम-पुं० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। २. वेद। ३. हाट। बाजार। ४. मेला। ५. व्यापार। रोजगार। ६. व्यापारियों का संघ। ७ निश्चय।

निगर*-वि०, पुं० दे० 'निकर'।

निगरना*-स० दे० 'निगलना'।

निगरानी-स्त्री० [फा०] निरीक्षण। देख-रेख।

निगरु*-वि० [सं० नि+गुरु] हलका।

निगलना-स० [सं० निगरण] १. मुँह में रखकर गले के नीचे उतार लेना। लीलना। २. दूसरे का धन दबा लेना।

निगह-स्त्री० दे० 'निगाह'।

निगहबान-पुं० [फा०] रक्षक।

निगाली-स्त्री० [देश०] हुक्के की वह (काठ की)नली जिससे धूआँ खींचते हैं।

निगाह-स्त्री० [फा०] १. दृष्टि। नजर। २. देखने का ढंग। चितवन। ३. कृपा-दृष्टि। ४. परख। पहचान।

निगिभ*-वि०[सं०निगुह्य] बहुत प्यारा।

निगुरा-वि० [हिं० उप० नि+गुरु] जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। (उपेक्ष्य)

निगूढ़-वि० [सं०] अत्यन्त गुप्त।

निगृहीत-वि० [सं०] जिसका निग्रह हुआ हो। विशेष दे० 'निग्रह'।

निगोड़ा-वि०[हिं०निगुरा] [स्त्री०निगोड़ी] १. जिसके ऊपर या आगे-पीछे कोई न हो। २.अभागा। ३.दुष्ट। बुरा। (स्त्रियाँ)

निग्रह-पुं० [सं०] [वि० निगृहीत] १. रोकने की क्रिया, भाव या साधन। रोक। अवरोध। २. दमन। ३ दंड। ४. पीड़न। सताना। ५. बंधन।

निग्रहना*-स०[सं०निग्रहण] १.पकड़ना। २. रोकना। ३. दंड देना।

निग्रही-वि० [सं० निग्रहिन्] १. रोकने या दबानेवाला। २. दमन करनेवाला। ३. दंड देनेवाला।

निघंटु-पुं० [सं०] १. वैदिक शब्दों का कोश। २. शब्द-संग्रह मात्र।

निघटना*-अ० दे० 'घटना'।

निघर-घट-वि० [हिं० नि=नहीं+घर+घाट] १. जिसका कहीं घर-घाट या ठौर-ठिकाना न हो। २. निर्लज्ज। बेहया।

निचय-पुं० [सं०] १. समूह। राशि। २. निश्चय। ३. संचय। ४. किसी विशेष कार्य के लिए इकट्ठा या जमा किया जानेवाला धन। (फंड)

निचल*-वि० दे० 'निश्चल'।

निचला-वि० [हिं० नीचे+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० निचली] नीचे का। नीचेवाला। वि० [सं० निश्चल] स्थिर। शांत।

निचाई(चान)-स्त्री० [हिं० नीचा] १. नीचापन। २. नीचे की ओर का विस्तार। *स्त्री० [हिं०नीच] नीचता। कमीनापन।

निचिंत*-वि० दे० 'निश्चिंत'।

निचुड़ना-अ०हिं० 'निचोड़ना' का अ०।

निचै*-पुं० दे० 'निचय'।

निचोड़-पुं० [हिं० निचोड़ना] १. निचोड़ने की क्रिया या भाव। २. निचोड़ने पर निकलनेवाला अंश। ३.सार। सत। ४. कथन या मत का सारांश।

निचोड़ना-स० [सं० नि+च्यवन] १. गीली या रसदार चीज को दबाकर उसका पानी या रस निकालना। गारना। २. किसी चीज का सार-भाग निकालना। ३. अधिकतर धन हरण कर लेना।

निचोना(चोवना)*-स०दे०'निचोड़ना'।

निचौहाँ*-वि०[हिं०नीचा+औहाँ(प्रत्य०)] [स्त्री० निचौहीं] नीचे झुका हुआ। नत।

निचौहें*-क्रि० वि० [हिं० निचोहाँ] नीचे की ओर।

निछत्र-वि० [सं० निश्छत्र] १. बिना छत्र का। २. बिना राज-चिह्न का।

निछल*-वि० [सं० निश्छल] छल-हीन।

निछावर-स्त्री० [सं० न्यासावर्त्त, मि० अ० निसार] १ किसी की मंगल-कामना से कोई वस्तु उसके सिर के ऊपर से घुमाकर दान करने या कहीं रख आने का उपचार या टोटका। वारा-फेरा। २. वह धन या वस्तु जो इस प्रकार घुमाकर दी या छोड़ी जाय। उतारा।

निछोह (ी)-वि० [हिं० नि+छोह] १ जिसे किसी के प्रति छोह या प्रेम न हो। २. निर्दय। निठुर।

निज-वि० [सं०] १. अपना। स्वकीय। २ मुख्य। प्रधान। ३. ठीक। यथार्थ। अव्य०१.निश्चित रूप से। २.विशेष रूप से। मुख्यतः।

निजस्व-पुं० [सं०] १. अपनापन। निजता। २. मौलिकता।

निजाअ-पुं० [अ०] १. झगड़ा। तकरार। २. शत्रुता। वैर।
निजाई-वि० [अ०] जिसके संबंध में निजाअ या झगड़ा हो। विवादास्पद।
निजाम-पुं० [अ०] १. व्यवस्था। बंदोबस्त। २.हैदराबाद के शासकों की उपाधि।
निजी-वि० [सं० निज] १. निज का। अपना। २. व्यक्ति-गत।
निजी सहायक-पुं० [सं०] वह जो किसी बड़े आदमी, विशेषत: अधिकारी के साथ रहकर उसके कार्यों में सहायता देता हो। (पर्सनल असिस्टेन्ट)
निजू†-वि०[हिं०निज] निज का। अपना।
निजोर*-वि० दे० 'निर्बल'।
निझरना-अ० [हिं० उप० नि+झरना] १ अच्छी तरह झड़ना। २ सार भाग से रहित या वंचित होना। ३. अपने आपको निर्दोष सिद्ध करना।
निट्ठि*-क्रि० वि० दे० 'नीठि'।
निठल्ला-वि० [हिं० नि+टहल=काम] जिसके पास कोई काम-धन्धा न हो। खाली।
निठल्लू-वि० दे० 'निठल्ला'।
निठाला-पु० दे० 'ठाला'।
निठुर-वि० दे० 'निष्ठुर'।
निठुरई*-स्त्री० दे० 'निष्ठुरता'।
निडर-वि० [हिं० उप०नि+डर] १. जिसे किसी का डर न हो। निर्भय। २. साहसी। ३. ढीठ।
निडै*-क्रि० वि० दे० 'निकट'।
निढाल-वि० [हिं० नि+ढाल=गिरा हुआ] १. शिथिल। थका-माँदा। २. अशक्त।
निढिल*-वि० [हिं० नि+ढीला] १. कसा या तना हुआ। २. कड़ा। कठोर।
नितंत*-क्रि० वि० दे० 'नितांत'।
नितंब-पुं० [सं०] १. चूतड़ (विशेषत: स्त्रियों का)। २. कंधा।
नितंबिनी-स्त्री० [सं०] सुंदर नितंबोंवाली स्त्री।
नित-अव्य० दे० 'नित्य'।
नितांत-वि०[बँगला] १. बहुत अधिक। २. बिलकुल। एक-दम। ३. परम। हद दरजे का।
निति*-अव्य० दे० 'नित्य'।
नित्य-वि० [सं०] [भाव० नित्यता] सदा ज्यों का त्यों बना रहनेवाला। शाश्वत। अविनाशी।
अव्य० १. प्रति दिन। हर रोज। २. सदा। हमेशा।
नित्य-कर्म-पुं०[सं०] १. नित्य का काम। २. प्रति दिन आवश्यक रूप से किये जानेवाले कार्य विशेषत: धर्म-कार्य।
नित्य-क्रिया-स्त्री० दे० 'नित्य-कर्म'।
नित्य-नियम-पुं० [सं०] प्रति दिन का बँधा हुआ नियम या कायदा।
नित्य-प्रति-अव्य० [सं०] हर रोज।
नित्यशः-अव्य० [सं०] १. प्रति दिन। हर रोज। २. सदा। हमेशा।
निथंभ*-पुं० दे० 'खंभा'।
निथरना-अ०[हिं०नि+थिर+ना(प्रत्य०)] तरल पदार्थ मे घुली हुई चीज या मैल आदि नीचे बैठ जाना।
निथारना-स० [हिं० निथरना] [भाव० निथार] तरल पदार्थ इस प्रकार स्थिर करना कि उसमें घुली हुई चीज या मैल नीचे बैठ जाय।
निदई*-वि० दे० 'निर्दय'।
निदरना*-स० [हिं० निरादर] १. अनादर या अपमान करना। २. तिरस्कार करना। ३. मात करना। दबाना।
निदर्शन-पुं० [सं०] १. दिखाने या

प्रदर्शित करने का काम या भाव। २. वह वस्तु या बात जो आदर्श या प्रमाण-रूप में सामने रखी जाय। उदाहरण। (इलस्ट्रेशन)

निदर्शना-स्त्री० [सं०] एक अर्थालंकार जिसमें एक बात या काम से कोई दूसरी बात या काम ठीक तरह से कर दिखलाने का वर्णन होता है।

निदलन*-पुं० दे० 'निर्दलन'।

निदहना*-स०=जलाना।

निदाघ-पुं० [सं०] १. गरमी। ताप। २.धूप। ३. ग्रीष्म ऋतु। गरमी के दिन।

निदान-पुं० [सं०] १. कारण, विशेषत: मूल या आदि कारण। २. चिकित्सक का यह निश्चय करना कि रोगी को कौन रोग है। रोग की पहचान। ४.अंत। अवसान। अव्य०१.अंत में। आखिर। २.इसलिए।

निदाह*-पुं० दे० 'निदाघ'।

निदिध्यासन-पुं० [सं०] फिर फिर स्मरण करना। बार बार ध्यान में लाना।

निदेश-पुं० [सं०] १. शासन। २. आज्ञा। हुक्म। ३. कथन। उक्ति। ४. किसी आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के संबंध में लगाई हुई कोई शर्त या बन्धन। (प्रॉविजन)

निदोष*-वि० दे० 'निर्दोष'।

निद्धि*-स्त्री० दे० 'निधि'।

निद्रा-स्त्री०[सं०] प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी चेतन वृत्तियां बीच बीच में कुछ समय के लिए निश्चेष्ट होकर रुकी रहती हैं और उन्हें शारीरिक तथा मानसिक विश्राम मिलता है। नींद।

निद्रालु-पुं० [सं०] जिसे नींद आ रही हो।

निद्रित-वि० [सं०] सोया हुआ।

निधड़क-क्रि० वि० दे० 'बे-धड़क'।

निधन-पुं० [सं०] १. विनाश। २. मृत्यु। मौत। (श्रेष्ठ या आदरणीय व्यक्तियों के लिए) (डिमाइज) *वि० दे० 'निर्धन'।

निधान-पुं० [सं०] १. आधार। आश्रय। २.निधि। कोश। ३.वह जिसमें किसी गुण की परिपूर्णता हो। जैसे-दया-निधान।

निधि-स्त्री०[सं०]१.गड़ा हुआ खजाना।२. कुबेर के ये नौ रत्न-पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और वर्च्च। ३.नौ की संख्या का सूचक शब्द। ४.वह धन जो किसी विशेष कार्य के लिए अलग रखा या जमा कर दिया जाय। (एन्डाउमेन्ट) ५ वह स्थान जहां इस प्रकार धन रखा जाय। ६. समुद्र। ७ आगार। घर। जैसे-गुण-निधि।

निधिपाल-पुं० [सं०] वह जिसकी देख-रेख में कोई निधि, सम्पत्ति या कुछ वस्तुएँ रखी गई हों या रहती हों। (कस्टोडियन)

निनरा*-वि० दे० 'न्यारा'।

निनाद-पुं० [सं०] [वि० निनादित] १. शब्द। आवाज। २. जोर का शब्द।

निनादना*-अ० [सं० निनाद] निनाद या शब्द करना।

निनान*-क्रि०वि० अव्य० दे० 'निदान'। वि० बुरा। निकृष्ट।

निनारा-वि० दे० 'न्यारा'।

निनावाँ-पुं० [देश०] मुँह के भीतरी भाग में निकलनेवाले छोटे छाले।

निन्यारा*-वि० दे० 'न्यारा'।

निपंक(ग)*-वि० दे० 'पंगु'।

निपजना*-अ० [सं० निष्पद्यते] १. उत्पन्न होना। उपजना। २. बनना। ३. पुष्ट या पक्का होना।

निपजी*-स्त्री० [हिं० निपजना] १. लाभ । मुनाफा । २. उपज ।

निपट-अव्य० [देश०] १. निरा । विशुद्ध । केवल । २. सरासर । एक-दम । बिलकुल ।

निपटना-अ० [सं० निवर्त्तन] [संज्ञा निपटारा] १. निवृत्त होना । छुट्टी पाना । २ समाप्त या पूरा होना । ३. निर्णीत या तै होना । ४ खतम होना । ५. शौच, स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होना ।

निपटाना-स० [हिं० निपटना] १. पूरा करना । समाप्त करना । २ चुकाना । (देन, ऋण आदि) ३. समाप्त या तै करना । (काम, झगड़ा आदि) (डिस्पोज)

निपटारा (टेरा)-पुं० [हिं० निपटना] १. निपटने की क्रिया या भाव । २. किसी बात के तै या निश्चित होने की क्रिया या भाव । (सेटिलमेन्ट) ३. अन्त । समाप्ति । ४. फैसला । निर्णय ।

निपत्र-वि०[सं०निष्पत्र] पत्र-हीन । ठूँठा । (वृक्ष, पौधे आदि)

निपान-पुं० [सं०] १. पतन । गिरना । २. विनाश । ३. मृत्यु । ४. क्षय । नाश । ५. वह शब्द जो व्याकरण के नियमों के विरुद्ध बना हो और फलतः अशुद्ध हो । *वि० [हिं० नि+पत्ता] बिना पत्तों का । (वृक्ष या पौधा)

निपातन-पुं० [सं०] [वि० निपातित] १.गिराने की क्रिया या भाव । २. नाश । ३. वध करना । मार डालना ।

निपातना*-स० [सं० निपातन] १. काटकर या यों ही नीचे गिराना । २. नष्ट करना । ३. मार डालना ।

निपाती-वि० [सं० निपातिन्] १. गिरानेवाला । २. मार डालनेवाला । *वि०[हिं० नि+पाती] बिना पत्तों का । (वृक्ष या पौधा)

निपीड़ना*-स० [सं० निष्पीड़न] १. दबाना । २. कष्ट पहुँचाना ।

निपुण-वि०[सं०] [भाव०निपुणता] दक्ष । कुशल । प्रवीण । (कला या विद्या में)

निपुणाई*-स्त्री०=निपुणता ।

निपुन*-वि० दे० 'निपुण' ।

निपूत(ा)*-वि० [हिं० नि+पूत=पुत्र] [स्त्री० निपूती] जिसे पुत्र न हो । पुत्र-हीन । निःसन्तान । (गाली)

निफन*-वि० [सं० निष्पन्न] पूर्ण । पूरा । क्रि० वि० पूरी तरह से ।

निफरना*-अ० [हिं० नि+फाड़ना] चुभ या धंसकर आर पार होना । अ० [सं० नि+स्फुट] १. खुलना । २. स्पष्ट होना ।

निफल*-वि० दे० 'निष्फल' ।

निबंध-पुं० [सं०] १. अच्छी तरह बांधने की क्रिया या भाव । २. बंधन । ३. किसी विषय का वह सविस्तर विवेचन जिसमें उससे संबंध रखनेवाले अनेक मतों, विचारों, मन्तव्यों आदि का तुलनात्मक और पांडित्य-पूर्ण विवेचन हो । (एसे)४. उक्त प्रकार का वह छोटा लेख जो विद्यार्थी अपनी लेखन-शक्ति और विवेचन-बुद्धि बढाने के लिए अभ्यास के रूप में लिखते हैं ।

निबंधक-पुं० [सं०] १. निबंधन करनेवाला । २. वह अधिकारी जो लेख आदि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए उन्हें राजकीय पंजो में प्रतिलिपि के रूप में निबंधित करता या लिखता है । (रजिस्ट्रार, न्याय और शासन विभाग का) २. इसी से मिलता-जुलता वह अधिकारी

जो किसी विभाग या संस्था के सब प्रकार के लेख रखता और निबंधित करता है। जैसे-विश्वविद्यालय या सहयोग समितियों का निबंधक। महाधिकरण या हाई कोर्ट का निबंधक। (रजिस्ट्रार)

निबंधन-पुं० [सं०] [वि० निबंधित, निबद्ध] १. बाँधना। २. बंधन। ३. बँधा हुआ ढंग या नियम। बंधेज। ४. हेतु। कारण। ५. लेखों आदि का प्रामाणिक सिद्ध होने के लिए किसी राजकीय पंजी में लिखा या चढाया जाना। रजिस्टरी होना। (रजिस्ट्रेशन)

निबंधित-वि० [सं०] जिसका निबंधन हुआ हो। रजिस्टरी किया हुआ। (रजिस्टर्ड)

निबकौरी-स्त्री० दे० 'निबौरी'।

निबटना(बड़ना)-अ० दे० 'निपटना'।

निबद्ध-वि० [सं०] १. बँधा हुआ। २ रुका हुआ। ३. गुथा हुआ। ४. बैठा या जड़ा हुआ। ५. दे० 'निबंधित'।

निबर-वि० दे० 'निर्बल'।

निबरना*-अ० [सं० निवृत्त] १. अलग होना। छूटना। २. मुक्त होना। उद्धार पाना। ३. एक में मिली-जुली वस्तुओं का अलग होना। ४. अड़चन दूर होना। ५. दूर होना। ६ दे० 'निपटना'।

निबल*-वि० [सं० निर्बल] [भाव० *निबलाई] दुर्बल। अशक्त। कमजोर।

निबहना-अ० दे० 'निभना'।

निबाह-पुं० [सं० निर्वाह] १. निभने या निभाने की क्रिया या भाव। गुजारा। २. प्रथा, परम्परा आदि के अनुसार व्यवहार करके उसकी रक्षा या पालन करना। ३. आज्ञा, कार्य आदि पूरा करना। पालन।

निबाहना-स० दे० 'निभाना'।

निबुकना*-अ० [सं० निर्मुक्त] काम से छुट्टी पाना। काम पूरा करके निश्चिंत होना।

निबेड़ना-स० [सं० निवृत्त] १. बंधन से छुड़ाना। २. चुनना। छाँटना। ३. हटाना। ४. दे० 'निपटाना'।

निबेड़ा-पुं० [हिं० निबेड़ना] १. निबेड़ने, निपटाने या सुलझाने की क्रिया या भाव। निपटारा। २. छुटकारा। मुक्ति। ३. बचाव। रक्षा। ४. निर्णय। फैसला।

निबेहना*-स० दे० 'निबेड़ना'।

निबौरी(ली)-स्त्री० [हिं० नीम+औरी (प्रत्य०)] नीम का फल।

निभ-पुं० [सं०] १ प्रकाश। २. कपट। वि० तुल्य। समान।

निभना-अ० [हिं० निबहना] १. संबंध, व्यवहार आदि का ठीक तरह से चलता रहना। गुजारा होना। २. छुट्टी या छुटकारा पाना। ३ जारी या चलता रहना। ४. पूरा होना। भुगतना। ५. पालन या चरितार्थ होना। (आज्ञा, कार्य आदि)

निभरम*-वि० [सं० निर्भ्रम] जिसे या जिसमें कोई भ्रम न हो। शंका-रहित। क्रि० वि० बे-खटके। बे-धड़क।

निभरोसी*-वि० [हिं० नि=नहीं+भरोसा] जिसे किसी का भरोसा न हो या न रह गया हो। निराश्रय।

निभाउ*-वि० [हिं० नि (उप०)+सं० भाव] भाव-रहित। पुं० दे० 'निबाह'।

निभागा-वि० दे० 'अभागा'।

निभाना-स० [हिं० 'निभना' का स०] १. संबंध, व्यवहार आदि ठीक तरह से

चलाये चलना। २. चरितार्थ करना। ३. बराबर पूरा करते आना। चलाना।

निभृत-वि० [सं०] १. रखा हुआ। २. निश्चल। ३. अटल। ४. छिपा हुआ। गुप्त। ५. निश्चित। स्थिर। ६. शांत। धीर। ७. निर्जन। एकांत। ८. भरा हुआ।

निभ्रांत*-वि० दे० 'निर्भ्रांत'।

निमंत्रण-पुं० [सं०] [वि० निमंत्रित] १. किसी कार्य्य के लिए या किसी अवसर पर आने के लिए किसी से आदरपूर्वक कहना। बुलावा। आह्वान। न्योता। २. भोजन के लिए दिया जानेवाला बुलावा।

निमंत्रण-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि आप अमुक समय पर हमारे यहाँ आने की कृपा करें।

निमंत्रना*-स०[सं०निमंत्रण]न्योता देना।

निमंत्रित-वि० [सं०] जिसे निमंत्रण दिया गया हो। बुलाया हुआ। आहूत।

निमकौड़ी-स्त्री० दे० 'निबौरी'।

निमगाग्ना*-अ० [?] उत्पन्न करना।

निमग्न-वि० [सं०] [स्त्री० निमग्ना] १. डूबा हुआ। मग्न। २. तन्मय। लीन।

निमज्जन-पुं० [सं०] [वि० निमज्जित] गोता लगाकर किया जानेवाला स्नान।

निमज्जना*-अ० [सं० निमज्जन] १. गोता लगाना। २. लीन होना।

निमटना†-अ० दे० 'निपटना'।

निमता*-वि० [हिं० नि+माता=मत्त] १. जो उन्मत्त न हो। २. धीर। शांत।

निमर्म-वि० [सं० नि+मर्म] जिसमें मर्म न हो। मर्म-रहित।

निमाज*-वि० दे० 'नवाज'।

स्त्री० दे० 'नमाज'।

निमान*-पुं० [सं० निम्न] १. नीचा स्थान। २. जलाशय।

निमाना-वि० [सं० निम्न] [स्त्री० निमानी] १. नीचे की ओर गया हुआ। ढालुआँ। २ नम्र। विनीत। ३. दब्बू।

निमिख*-पुं० दे० 'निमेष'।

निमित्त-पुं० [सं०] १. वह बात या कार्य जिससे कोई दूसरी बात या कार्य हो। हेतु। २. वह बात जिसके विचार या उद्देश्य से कोई काम या बात हो। कारण। ३. वह जो नाम मात्र के लिए सामने आया हो, वास्तविक कर्त्ता न हो। ४. उद्देश्य।

अव्य० वास्ते। लिए।

निमित्तक-वि० [सं०] किसी हेतु से अथवा किसी के लिए होनेवाला।

निमित्त कारण-पुं० [सं०] वह जिसकी सहायता या कर्तृत्व से कोई काम हो या कोई वस्तु बने। (न्याय)

निमिराज*-पुं० [सं०] राजा जनक।

निमिष (मेख)*-पुं० दे० 'निमेष'।

निमीलन-पुं० [सं०] [वि० निमीलित] १. बंद करना। मूँदना। २. सिकोड़ना।

निमूँद*-वि० [हिं० मुँदना] मुँदा हुआ।

निमेट*-वि० [हिं० नि+मिटना] न मिटनेवाला। अमिट।

निमेष-पुं० [सं०] १. पलक गिरना या झपकना। २. पलक गिरने भर का समय। पल। क्षण।

निम्न-वि० [सं०] नीचा।

निम्न-लिखित-वि० [सं०] नीचे लिखा हुआ।

निम्नोक्त-वि० [सं०] नीचे कहा हुआ।

नियंता-पुं० [सं० नियंतृ] [स्त्री० नियंत्री] १. नियम बनानेवाला। २. नियंत्रण या व्यवस्था करनेवाला। ३. कार्य चलानेवाला। ४. नियम के अनुसार

चलानेवाला। ४. शासक।

नियंत्रक-पुं० दे० 'नियंता'।

नियंत्रण-पुं० [सं०] १. नियम या किसी प्रकार के बंधन में बाँधना। व्यवस्थित करना। २. अपने अधिकार में लेकर या अपनी देख-रेख में रखकर कार्य, व्यापार आदि चलाना। (कन्ट्रोल)

नियंत्रित-वि० [सं०] १ जिसपर नियंत्रण हो। नियम से बँधा हुआ। २. कायदे में रखा लाया या बाँधा हुआ।

नियत-वि० [सं०] १. नियम, प्रथा, बंधेज आदि के द्वारा निश्चित किया हुआ। २. समझौते आदि के द्वारा ठीक किया या ठहराया हुआ। निश्चित। मुकर्रर। ३. आज्ञा, विधान आदि के द्वारा स्थिर किया हुआ। ४. पद, कार्य्य आदि पर नियुक्त किया हुआ। नियोजित। नियुक्त।

नियत तिथि-स्त्री० [सं०] वह तिथि या दिन जो कोई काम पूरा करने या कोई देन चुकाने के लिए नियत हो।

नियति-स्त्री० [सं०] १. नियत होने की क्रिया या भाव। बंधेज। २. ईश्वरीय या अदृश्य शक्ति के द्वारा पहले से नियत वह बात जो अवश्य होकर रहे। होनी। ३. भाग्य। अदृष्ट।

नियतिवाद-पुं० [सं०][वि०नियतिवादी] यह सिद्धांत कि जो कुछ होता है, वह सब पहले से ईश्वर द्वारा नियत रहता है और किसी प्रकार टल नहीं सकता।

नियम-पुं० [सं०] [वि० नियमित] १. व्यवहार या आचरण के विषय में नीति, विधि, धर्म आदि के द्वारा निश्चित सिद्धांत, ढंग या प्रतिबंध। कायदा। (रूल) २. किसी प्रकार की ठहराई हुई रीति या व्यवस्था। ३. वे निश्चित बातें जिनके अनुसार कोई संस्था या उसका काम चलता है। ४. किसी बात का बहुत दिनों से बँधा या चला आया हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ५. योग के आठ अंगों में से एक जिसमें पवित्रता और संतोषपूर्वक रहकर तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर का चिन्तन किया जाता है। ६. एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात के किसी एक या विशेष स्थान में ही होने का वर्णन होता है।

नियमतः-क्रि० वि० [सं०] नियम के अनुसार।

नियमन-पुं० [सं०] [वि० नियमित] किसी विषय या कार्य्य को नियमों में बांधने या नियमित करने की क्रिया या भाव। नियम-बद्ध करना।

नियम-बद्ध-वि० दे० 'नियमित'।

नियमित-वि० [सं०] [भाव०नियमितता] १. नियमों से बँधा हुआ। नियम-बद्ध। २. नियम, कायदे या कानून के अनुसार बना हुआ। ३. बराबर या ठीक समय पर होता रहनेवाला।

नियर-अव्य० दे० 'निकट'।

नियराना-अ० [हिं० नियर+आना (प्रत्य०)] निकट या पास आना।

नियाई*-वि० दे० 'न्यायी'।

नियाज-स्त्री० [फा०] १. इच्छा। २. दीनता। ३ बड़ों का प्रसाद। ४.मृतक के उद्देश्य से दरिद्रों को दिया जानेवाला भोजन। (मुसल०) ५.बड़ों से होनेवाली भेंट।

नियान*-पुं०, अव्य० दे० 'निदान'।

नियामक-पुं०[सं०] [स्त्री०नियामिका] १. नियम बनाने या नियमों से बाँधकर रखनेवाला। २.व्यवस्था या विधान करनेवाला।

नियामत-स्त्री० दे० 'न्यामत'।

नियार-पुं० [हिं० न्यारा] जौहरियों या सुनारों की दूकान का वह कूड़ा-कर्कट जिसमें से न्यारिये सोने या रत्न के टुकड़े आदि ढूँढ़कर निकालते है।

नियारा-वि० दे० 'न्यारा'।

नियारिया-पुं० दे० 'न्यारिया'।

नियाव*-पुं० दे० 'न्याय'।

नियुक्त-वि०[सं०]१.किसी काम पर लगाया हुआ। तैनात। मुकर्रर। (एपॉइन्टेड) २. नियत या स्थिर किया हुआ।

नियुक्ति-स्त्री० [सं०] नियुक्त होने की क्रिया या भाव। मुकर्ररी।

नियोक्ता-पुं० [सं० नियोक्तृ] १. नियोग करनेवाला। २. लोगों को अपने यहाँ काम पर नियुक्त करनेवाला। (एम्प्लॉयर)

नियोग-पुं० [सं०] १. नियोजित करना या किसी काम मे लगाना। तैनाती। मुकर्ररी। २. राज्य की आज्ञा से किसी कार्य, विशेषतः सैनिक कार्य्य के लिए किसी व्यक्ति या व्यक्तियों की होनेवाली नियुक्ति। (कमिशन) ३ प्राचीन आर्यों की एक प्रथा जिसके अनुसार कोई स्त्री पति के न रहने पर या अपने पति से संतान न होने पर देवर या पति के किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी।

नियोगस्थ-वि० [सं०] १. जिसका नियोग हुआ हो। २. जो राज्य की आज्ञा से किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त हुआ हो। (कमिशण्ड)

नियोगी-पुं० [सं०] १. वह जिसका नियोग हुआ हो। २. वह जो राज्य की आज्ञा से किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त हुआ हो। (कमिश्नर)

नियोजक-पुं० [सं०] काम में लगाने या नियुक्त करनेवाला। मुकर्रर करनेवाला।

नियोजन-पुं० [सं०] १. किसी काम में लगाने या नियुक्ति करने की क्रिया या भाव। नियुक्ति। तैनाती। २. राज्य की आज्ञा से किसी व्यक्ति का किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त होना। (कमिशन)

निरंकार*-पुं० दे० 'निराकार'।

निरंकुश-वि० [सं०] [स्त्री० निरंकुशा, भाव० निरंकुशता] जिसके लिए कोई अंकुश या रुकावट न हो; अथवा जो कोई अंकुश या रुकावट न माने।

निरंजन-वि० [सं०] १. बिना अंजन या काजल का। जैसे-निरंजन नेत्र। २. दोष रहित। ३. माया से अलग (ईश्वर)। पुं० परमात्मा।

निरंतर-वि० [सं०] [भाव० निरंतरता] १. जिसके बीच में अंतर न पड़े। अविच्छिन्न। २. लगातार या बराबर होनेवाला। ३.सदा बना रहनेवाला। नित्य। स्थायी। क्रि०वि०१.सदा। हमेशा। २.बिना रुके।

निरकार*-वि० दे० 'निराकार'।

निरकेवल-वि० [सं० निस्+केवल] १. बिना मेल का। विशुद्ध। २. स्वच्छ।

निरक्ष देश-पुं० [सं०] भूमध्य रेखा के पास के वे देश जिनमें रात और दिन दोनो प्रायः बराबर परिमाण के होते हैं।

निरक्षन*-पुं० दे० 'निरीक्षण'।

निरक्षर-वि० [सं०] जिसने कुछ भी पढ़ा न हो। अपढ़।

निरक्ष-रेखा-स्त्री० दे० 'नाड़ी-मंडल'।

निरखना*-स० दे० 'देखना'।

निरग*-पुं० दे० 'नृग'।

निरगुन*-वि० दे० 'निर्गुण'।

निरच्छ*-वि० [सं० निरक्षि] अंधा।

निरजोस*-पुं० [सं० निर्यास] १. निचोड़। सार। २. निर्णय।

निरत-वि० [सं०] किसी काम में लगा हुआ। लीन।
* पुं० दे० 'नृत्य'।
निरतना*-स०=नाचना।
निरतिशय-वि० [सं०] १.हद दरजे का। परम। २. सबसे बढ़कर।
निरदई*-वि० दे० 'निर्दय'।
निरदोषी*-वि० दे० 'निर्दोष'।
निरधार*-पुं० दे० 'निर्धार'।
निरधारना*-स० [सं० निर्धारण] १. निर्धारण या निश्चय करना। २. मन में समझना।
निरनुनासिक-वि० [सं०] (वर्ण) जो अनुनासिक न हो। जिसमें अनुस्वार न हो।
निरन्न-वि० [सं०] १. अन्न-रहित। २. जिसने कुछ खाया न हो। निराहार।
निरपना*-वि० [सं० निर+हिं० अपना] १. जा अपना न हो। २. पराया। गैर।
निरपराध-वि० [सं०] जिसका कोई अपराध न हो। बेकसूर। निर्दोष।
क्रि० वि० बिना कोई अपराध किये।
निरपवाद-वि० [सं०] १. जिसमें कोई अपवाद न हो। २. जिसमें कोई दोष न हो। निर्दोष।
निरपेक्ष-वि० [सं०] [संज्ञा निरपेक्षा] १. जिसे किसी बात की अपेक्षा या कामना न हो। बे-परवा। २. जो किसी पर आश्रित न हो। ३. जो दोनों में से किसी पक्ष में न हो। अलग। तटस्थ।
निरबंसी-वि० दे० 'निर्वंश'।
निरबल*-वि० दे० 'निर्बल'।
निरबहना*-अ० दे० 'निभना'।
निरबेद*-पुं० दे० 'निर्वेद'।
निरबेरा*-पुं० दे० 'निपटारा'।
निरभिमान-वि० [सं०] जिसे अभिमान न हो। अहंकार-रहित।
निरभिलाष-वि० [सं०] जिसे किसी बात की अभिलाषा न हो।
निरभ्र-वि० [सं०] बिना बादल का।
निरमना*-स० दे० 'बनाना'।
निरमर(ल)*-वि० दे० 'निर्मल'।
निरमाना*-स० दे० 'बनाना'।
निरमायल*-पुं० दे० 'निर्माल्य'।
निरमूलना*-स० [सं० निर्मूलन] १. निर्मूल करना। २. नष्ट करना।
निरमोल-वि० दे० 'अनमोल'।
निरमोही*-वि० दे० निर्मोही'।
निरय-पुं० [सं०] नरक।
निरयण-पुं० [सं०] ज्योतिष में गणना की वह रीति जो अयन-रहित होती है।
निरर्थ-वि० दे० 'निरर्थक'।
निरर्थक-वि० [सं०] जिसका कोई अर्थ न हो। अर्थ-शून्य। २. बिना मतलब का। व्यर्थ। ३. निष्फल।
निरवच्छिन्न-वि० [सं०] जिसका क्रम न टूटा हो। सिलसिलेवार।
निरवद्य-वि० [सं०] निन्दा या दोष से रहित।
निरवधि-वि० [सं०] १. जिसकी कोई अवधि न हो। २. असीम। अनन्त।
क्रि० वि० लगातार। निरंतर।
निरवलंब-वि० [सं०] १. अवलंब-हीन। आधार-रहित। बिना सहारे का। २. जिसका कोई सहायक न हो।
निरवारना*-स०[सं०निवारण]१.रोकनेवाली चीज आगे से हटाना। २. मुक्त करना। छुड़ाना। ३. छोड़ना। त्यागना। ४. गाँठ आदि खोलना या सुलझाना। ५. निर्णय करना।

निरवाह*-पुं० दे० 'निर्वाह'।

निरवाहना*-अ० [सं० निर्वाह] निर्वाह करना। निभाना।

निरशन-पुं० [सं०] भोजन न करना। लंघन। उपवास।

निरसंक*-वि० दे० 'निःशंक'।

निरस-वि० दे० 'नीरस'।

निरसन-पुं० [सं०] [वि० निरस्त] १. दूर करना। हटाना। २. पहले का निश्चय या आज्ञा आदि रद करना। (कैन्सिलेशन) ३. निराकरण। ४. परिहार। ५. नाश। ६. वध। ७. निकालना। बाहर करना। (डिसचार्ज)

निरस्त-वि० [सं०] १ जिसका निरसन हुआ या किया गया हो। २. जो रद या व्यर्थ कर दिया गया हो। (कैन्सिल्ड) जैसे-कोई आज्ञा या निर्णय निरस्त करना।

निरस्त्र-वि० [सं०] जिसके पास अस्त्र या हथियार न हो। अस्त्र-हीन।

निरहेतु*-वि० दे० निर्हेतु।

निरा-वि० [सं० निरालय] [स्त्री० निरी] १. बिना मेल का। विशुद्ध। खालिस। २. केवल। सिर्फ। ३. निपट। एकदम। बिलकुल।

निराई-स्त्री० [हिं० निराना] निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

निराकरण-पुं० [सं०] [वि० निरा-करणीय, निराकृत] १ अलग अलग करना। छाँटना। २. सोच-समझकर ठीक निर्णय करना या परिणाम निकालना। ३. मिटाना। रद करना। ४. शमन। निवारण। परिहार। ५. किसी की युक्ति का खंडन।

निराकांक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० निरा-कांक्षी] आकांक्षा या कामना का अभाव।

निराकार-वि० [सं०] जिसका कोई आकार न हो। आकार-हीन। पुं० १. ईश्वर। २. आकाश।

निराखर*-वि० [सं० निरक्षर] १. मौन। चुप। २. अशिक्षित। अपढ़।

निराट-वि० दे० 'निरा'।

निराटा-वि० [हिं० निराला] [स्त्री० निराटी] निराला। अनोखा।

निरादर-पुं०[हिं०निर+आदर]'आदर'का अभाव या उलटा। अपमान। बेइज्जती।

निराधार-वि० [सं०] १. जिसका कोई आधार न हो। २. जो प्रमाणों से सिद्ध न हो सके। अयुक्त। ३. जिसकी जीविका या निर्वाह का सहारा न हो।

निरानंद-वि० [सं०] आनंद-रहित। जिसमें आनंद न हो। पुं० आनंद का अभाव। दुःख।

निराना-स० [सं० निराकरण] [भाव० निराई] पौधों के आस-पास की घास निकालना जिसमें पौधों की बाढ़ ठीक तरह से हो। नींदना। निकाना।

निरापद-वि० [सं०] १. जिसमें कोई आशंका या आपत्ति न हो। सुरक्षित। २. जिसमें हानि या अनर्थ का डर न हो।

निरापन*-वि० दे० 'पराया'।

निरामय-वि० [सं०] नीरोग। स्वस्थ।

निरामिष-वि० [सं०] १. (भोजन) जिसमें मांस न मिला हो। २. मांस न खानेवाला।

निरालंब-वि० दे० 'निराधार'।

निराल†-वि० [हिं० निराला] १. बिना किसी प्रकार के मेल या मिलावट का। २ निरा। खालिस।

निराला-पुं० [सं० निरालय] ऐसा स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो।

एकांत स्थान।
वि० १. [स्त्री०निराली] जहाँ कोई आदमी या बस्ती न हो। एकांत। निर्जन। २. सबसे अलग तरह का। अद्भुत। विलक्षण। ३. अनूठा। अपूर्व। बहुत बढ़िया।

निरावृत-वि० [सं०] बिना ढँका हुआ।

निराश-वि० [हिं० नि+आशा] जिसे आशा न रह गई हो। ना-उम्मीद।

निराशा-स्त्री० [हिं० निर+आशा] आशा का अभाव। ना-उम्मेदी।

निराशावाद-पुं० [हिं० निराशा+सं० वाद] [वि० निराशावादी] सदा सब बातों के संबंध में निराश और फलतः हतोत्साह रहने का सिद्धान्त या वृत्ति। सदा यही मानना या सोचना कि अंत में सफलता का शुभ परिणाम नहीं होगा।

निराशी*-वि० दे० 'निराश'।

निराश्रय-वि० [हिं०] १. जिसे कहीं आश्रय न मिलता हो। अशरण। २. असहाय।

निरास*-वि० दे० 'निराश'।

निरासी*-वि० [हिं० निराश] १. दे० 'निराश'। २. जिसमें चहल-पहल या रौनक न हो। उदास।

निराहार-वि० [सं०] १. जिसने भोजन न किया हो। २. (व्रत आदि) जिसमें भोजन न किया जाता हो।

निरिंद्रिय-वि० [सं०] जिसे या जिसमें कोई इंद्रिय न हो। इंद्रिय-रहित। (इनॉर्गनिक)

निरिच्छन*-पुं० दे० 'निरीक्षण'।

निरीक्षक-पुं० [सं०] १. देखनेवाला। २. निरीक्षण या देख-रेख करनेवाला। (इन्सपेक्टर)

निरीक्षण-पुं० [सं०] [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य] १. देखना। दर्शन। २. यह देखना कि सब बातें ठीक हैं या नहीं। देख-रेख। (इन्सपेक्शन) ३. देखने की मुद्रा या ढंग। चितवन।

निरीश्वर- वि० [सं०] जिसमें ईश्वर न हो। ईश्वर से रहित।
पुं०=निरीश्वरवादी।

निरीश्वरवाद-पुं० [सं०] [अनुयायी निरीश्वरवादी] वह सिद्धान्त जिसमें ईश्वर का अस्तित्व न माना जाता हो।

निरीस*-वि० [सं० निरीश] १. दे० 'निरीश'। २. जो बड़ों का आदर करना न जानता हो।

निरीह-वि० [सं०] [भाव० निरीहता] १. चुपचाप पड़ा रहनेवाला। २. जिसे कोई अभिलाषा न हो। ३. विरक्त। उदासीन। ४. सीधा-सादा और निर्दोष। बेचारा।

निरुआर†-पुं० दे० 'निरुवार'।

निरुक्त-वि०[सं०] १.निश्चित रूप से कहा या बताया हुआ। २.निश्चित किया हुआ। पुं० छः वेदांगों में से एक जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है।

निरुक्ति-स्त्री० [सं०] १. किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा विवेचन हो। २. एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मन-माना परन्तु युक्ति-संगत अर्थ किया जाता है।

निरुज*-वि० दे० 'नीरुज'।

निरुत्तर-वि० [सं०] १. जिसका कुछ उत्तर न हो। २. जो उत्तर न दे सके।

निरुत्साह-वि० [सं०] जिसमें उत्साह न हो। उत्साह-हीन।

निरुत्सुक-वि० [सं०] जो उत्सुक न

हो। जिसमें किसी बात के लिए उत्सुकता का अभाव हो।

निरुद्देश्य-वि० [सं०] जिसका कोई उद्देश्य न हो।

क्रि० वि० बिना किसी उद्देश्य के।

निरुद्ध-वि० [सं०] रुका या बँधा हुआ।

निरुद्यम-वि० [सं०] [भाव० निरुद्यमता] जिसके हाथ में कोई उद्यम या काम न हो। निकम्मा।

निरुपम-वि० [सं०] [स्त्री० निरुपमा] जिसकी उपमा न हो। उपमा-रहित। बेजोड़।

निरुपयोगी-वि० [सं०] जो काम में न आ सके। व्यर्थ का।

निरुपाधि(क)-वि० [सं०] १. जो सब प्रकार की उपाधियों, बन्धनों और बाधाओं से रहित हो। परम। (एब्सोल्यूट) २. सांसारिक बंधनों या माया-जाल से रहित और मुक्त।

पुं० ब्रह्म।

निरुपाय-वि० [सं०] १. जो कोई उपाय न कर सकता हो। २. जिसका कोई उपाय न हो सके।

निरुवरना*-अ० [सं० निवारण] कठिनता या उलझन दूर होना।

निरुवार†-पुं० [सं० निवारण] [क्रि० निरुवारना] १. छुड़ाना। मोचन। २. छुटकारा। ३. सुलझाने का काम। ४. तय करना। निपटाना। ५. निर्णय। फैसला।

निरूढ़-वि० [सं०] १. उत्पन्न। २. प्रसिद्ध। विख्यात। ३. बिन-ब्याहा। कुँआरा।

निरूढ़-लक्षणा-स्त्री० [सं०] वह लक्षणा जिसमें शब्द का नया माना हुआ अर्थ चल पड़ा हो और वह केवल प्रसंग या प्रयोजन-वश ही न लिया जाता हो।

निरूपक-वि० [सं०] [स्त्री० निरूपिका, निरूपिणी] निरूपण करनेवाला।

निरूपण-पुं० [सं०] [वि० निरूपित, निरूप्य] सोच-समझकर किया जानेवाला विचार या निर्णय।

निरूपना*-अ०=निरूपण करना।

निरेखना*-स० दे० 'निरखना'।

निरै*-पुं० [सं० निरय] नरक।

निरैठा*-पुं० [?] मस्त। मन-मौजी।

निरोग(गी)‡-पुं० दे० 'नीरोग'।

निरोध-पुं० [सं०] १. रोक। अवरोध। रुकावट। २. घेरा। ३. नाश। ४. (योग में) चित्त की वृत्तियों को रोकना।

निरोधक-वि० [सं०] रोकनेवाला।

निरोधी-वि० दे० 'निरोधक'।

निर्ख-पुं० [फा०] भाव। दर।

निर्खनामा-पुं० [फा०] वह पत्र जिसपर सब चीजों के निर्ख या भाव लिखे हों।

निर्खबंदी-स्त्री० [फा०] चीजों के भाव या दर निश्चित करना।

निर्गंध-वि० [सं०] [भाव० निर्गंधता] जिसमें कोई गंध न हो। गंध-रहित।

निर्गत-वि०[सं०] [स्त्री० निर्गता] निकला या बाहर आया हुआ।

निर्गम-पुं० [सं०] [वि० निर्गमित] १. बाहर निकलने की क्रिया या भाव। निकासी। २. वह मार्ग जिससे कोई चीज बाहर निकलती हो। निकास। ३. आज्ञा आदि का निकलना या प्रकाशित होना। ४. किसी वस्तु, विशेषतः धन आदि का किसी स्थान या देश से बहुत अधिक मात्रा में बाहर जाना। (ड्रेन)

निर्गमना*-अ० [सं० निर्गमन] निकलना।

निर्गुण-वि० [सं०] [भाव० निर्गुणता] १. सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे। २. जिसमें कोई अच्छा गुण न हो। गुण-रहित।

निर्गुणिया-वि० [सं० निर्गुण+इया (प्रत्य०)] निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाला।

निर्छल*-वि० दे० 'निश्छल'।

निर्जन-वि० [सं०] (स्थान) जहाँ कोई न हो। एकांत। सुनसान।

पुं० [वि० निर्जित] ब्याज, लाभ आदि के रूप में बढ़कर प्राप्त होनेवाला धन।

निर्जल-वि० [सं०] १. बिना जल का (स्थान)। २. (व्रत) जिसमें जल तक पीने का विधान न हो।

निर्जित-वि० [सं०] ब्याज या लाभ आदि के रूप में बढ़कर मिला हुआ। (एक्रूड)

निर्जीव-वि० [सं०] १. जीव-रहित। बे-जान। २ मुरदों का-सा। अशक्त। ३. उत्साह-हीन।

निर्झर-पुं० [स०] पानी का झरना। सोता। चश्मा।

निर्झरिणी-स्त्री० [सं०] १. नदी। दरिया। २. पानी का सोता। झरना।

निर्णय-पु० [सं०] १. औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके यह निश्चय करना कि यह ठीक या वास्तविक है अथवा ऐसा होना चाहिए। २. वादी और प्रतिवादी की बातें और तर्क सुनकर उनके ठीक होने या न होने के विषय में मत स्थिर करना। फैसला। निपटारा।

निर्णायक-पुं० [सं०] वह जो निर्णय या फैसला करे।

निर्णायक मत-पुं० [सं०] सभा-संस्था आदि के सभापति का वह मत (वोट) जो वह उस समय देता है, जब किसी विषय में उपस्थित सदस्यों के मत दो समान भागों में विभक्त हों और उनके मत-दान से उस विषय का निर्णय न होता हो। (सभापति के ऐसे मत से ही उस समय किसी प्रश्न का निर्णय होता है, और इसी लिए इसे निर्णायक मत कहते हैं।) (कास्टिंग वोट)

निर्णीत-वि० [सं०] जिसका या जिसके विषय में निर्णय हो चुका हो।

निर्त*-पुं० दे० 'नृत्य'।

निर्तक*-पुं० दे० 'नर्त्तक'।

निर्तना*-अ० दे० 'नाचना'।

निर्दंभ-वि० [सं०] जिसे दंभ या अभिमान न हो। अहंकार-शून्य।

निर्दई*-वि० दे० 'निर्दय'।

निर्दय-वि० [सं०] जिसके मन में दया न हो। निष्ठुर। बेरहम।

निर्दयता-स्त्री० [सं०] निर्दय होने की क्रिया या भाव। बेरहमी। निष्ठुरता।

निर्दयपन-पुं० दे० 'निर्दयता'।

निर्दयी*-वि० दे० 'निर्दय'।

निर्दल-वि०[सं०] १. जिसमें दल या पत्र न हो। २. जिसका कोई दल या जत्था न हो। ३. जो किसी दल में न हो। तटस्थ।

निर्दहना*-स० [सं० दहन] जलाना।

निर्दिष्ट-वि० [सं०] १. जिसका निर्देश हुआ हो। २. बतलाया या नियत किया हुआ। ठहराया हुआ। ३. किसी को दिया, सौंपा या सहेजा हुआ। (एसाइन्ड)

निर्दूषण*-वि० दे० 'निर्दोष'।

निर्देश-पुं० [सं०] [वि० निर्देशित, निर्दिष्ट] १. विशेष रूप से यह बतलाना

कि यह वस्तु या कार्य है। २. किसी कार्य का स्वरूप, प्रकार या विधि बतलाना। (डाइरेक्शन) ३.आज्ञा। हुकुम। ४. किसी अन्य स्थान पर आई या कही हुई किसी बात का उल्लेख या कथन। चर्चा। ५. ऐसा उल्लेख या चर्चा जिससे किसी विषय की विशेष ज्ञातव्य बातों का पता चल सके। (रेफरेन्स) ६. किसी को कोई चीज किसी काम के लिए देना या सौंपना। (एसाइन्मेन्ट) ७. वर्णन। वृत्तान्त। ८. नाम।

निर्देशक-पुं० [सं०] १. वह जो किसी प्रकार का निर्देश करता या कुछ बतलाता हो। २. आधुनिक रजत-पट की कला में वह अधिकारी जो पात्रों की वेष-भूषा, भूमिका या आचरण और दृश्यों के स्वरूप आदि निश्चित करता है। (डाइरेक्टर)

निर्देशन-पुं० [सं०] १. निर्देश करने की क्रिया या भाव। २.आधुनिक रजतपट में वे सब कार्य जो उसके निर्देशक को करने पड़ते हैं। विशेष दे० 'निदेशक' ४.

निर्देशिका-स्त्री० [सं०] वह पुस्तक जिसमें किसी विशेष व्यापार, व्यवसाय विभाग आदि की जानने योग्य सब बातें और उनसे संबंध रखनेवाले लोगों के नाम, पते आदि रहते हैं। (डाइरेक्टरी)

निर्दोष-वि० [सं०] [भाव० निर्दोषता] १. जिसमें कोई दोष न हो। बे-ऐब। २. निरपराध। बे-कसूर।

निर्दोषी-वि० दे० 'निर्दोष'।

निर्द्वंद (द्व)-वि० [सं०] १. जिसका विरोध करनेवाला कोई न हो। २. राग, द्वेष आदि द्वंद्वों से रहित। ३. स्वच्छंद।

निर्धंधा-वि० [हिं० नि+धंधा] जिसके हाथ में काम-धन्धा न हो। बे-रोजगार।

निर्धन-वि०[सं०][भाव०निर्धनता]जिसके पास धन न हो। धन-हीन। गरीब।

निर्धार-पुं० दे० 'निर्धारण'।

निर्धारक-पुं० [सं०] [स्त्री० निर्धारिका, निर्धारिणी] वह जो किसी बात का निर्धारण या निश्चय करता हो।

निर्धारण-पुं० [सं०] १. कोई बात ठहराना या निश्चित करना। २. न्याय में एक तरह के बहुत-से पदार्थों में से गुण, कर्म आदि की समानता के विचार से कुछ का अलग वर्ग बनाना। ३. यह निश्चित करना कि इसका मूल्य या महत्त्व क्या है अथवा इसपर कितना कर लगना चाहिए। (एसेस्मेन्ट)

निर्धारना*-स० [सं० निर्धारण] निश्चित या निर्धारित करना। ठहराना।

निर्धारित-वि० [सं०] निश्चित किया या ठहराया हुआ।

निर्धारिती-पुं०[सं०निर्धारित]वह जिसके संबंध में यह निर्धारित किया जाय कि इसे इतना कर देना होगा। (एसेसी)

निर्निमेष-क्रि० वि० [सं०] बिना पलक झपकाये। एक-टक।
वि० १. जिसकी पलक न गिरे। २. जिसमें पलक न गिरे।

निर्बंध-पुं० [सं०] १ रुकावट। बाधा। अड़चन। २. हठ। जिद। ३. आग्रह।

निर्बल-वि० [सं०] [भाव० निर्बलता] जिसमें बल या शक्ति न हो। कमजोर।

निर्बहना*-अ० [सं० निर्वाह] १. पार होना। २. अलग या दूर होना। ३. पालन होना। निभना।

निर्बाध(धित)-वि० [सं०] जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो। बाधा-रहित।
क्रि० वि० बिना किसी बाधा के।

निर्बुद्धि-वि० [सं०] मूर्ख । बेवकूफ ।

निर्बोध-वि० [सं०] जिसे अच्छे-बुरे का ज्ञान न हो । अज्ञान । अनजान ।

निर्भय-वि० [सं०] [भाव० निर्भयता] जिसे भय या डर न हो । निडर ।

निर्भर-वि० [सं०] १. भरा हुआ । पूर्ण । २. मिला हुआ । युक्त । ३. अवलंबित । आश्रित । (आधु०)

निर्भीक-वि० [सं०] [भाव० निर्भीकता] जिसे भय न हो । निडर ।

निर्भ्रम-वि० [सं०] जिसे भ्रम न हो । भ्रम-रहित । शंका-रहित ।
क्रि० वि० बे-धड़क । बे-खटके ।

निर्भ्रांत-वि० [सं०] १. जिसमें कोई भ्रम या संदेह न हो । २. जिसको कोई भ्रम या सन्देह न हो ।

निर्मना*-स० दे० 'निर्माना' ।

निर्मम-वि० [सं०] [भाव० निर्ममता] १.जिसे ममता या मोह न हो । निर्मोही । २ जिसको कोई वासना न हो । निष्काम ।

निर्मल-वि० [सं०] [भाव० निर्मलता] १. जिसमें किसी प्रकार का मल या दोष न हो । शुद्ध । पवित्र । निर्दोष । २ जिसमें किसी प्रकार की मैल या मलिनता न हो । मल-रहित । साफ । स्वच्छ । जैसे-निर्मल जल । ३. जो अपने विशुद्ध रूप में हो । जैसे-निर्मल आकाश ।

निर्मली-स्त्री० [सं० निर्मल] एक प्रकार का वृक्ष, जिसके बीजों के चूर्ण से गँदला पानी साफ किया जाता है । चाकसू ।

निर्माण-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का बनाया जाना । बनाने का काम । रचना । २ वह वस्तु जो बनकर तैयार हुई हो । जैसे-भवन, ग्रन्थ आदि ।

निर्माता-पुं० [सं०निर्मातृ] निर्माण करने या बनानेवाला ।

निर्मान-वि० [हिं० नि+मान] बहुत अधिक । अपार ।
*पुं० दे० 'निर्माण' ।

निर्माना*-स० [सं० निर्माण] बनाना ।

निर्मायल*-वि० दे० 'निर्माल्य' ।

निर्माल्य-पुं० [सं०] किसी देवता पर चढ़ा हुआ पदार्थ ।

निर्मित-वि० [सं०] जिसका निर्माण हुआ हो । बनाया हुआ । रचित ।

निर्मुक्ति-स्त्री० [सं०] बहुत से अपराधियों, विशेषतः राजनीतिक बन्दियों को एक-साथ क्षमा करके छोड़ देना । (एम्नेस्टी)

निर्मूल-वि० [सं०] १ बिना जड़ या मूल का । २. जड़ से उखाड़ा हुआ । ३.जिसका कोई आधार न हो । निराधार । ४. जो बिलकुल नष्ट हो चुका हो ।

निर्मोल*-वि० दे० 'अनमोल' ।

निर्मोही-वि० [सं० निर्मोह] जिसे मोह या ममता न हो ।

निर्यात-पुं० [सं०] १. वह जो कहीं से बाहर निकले । २. देश से माल बाहर जाने की क्रिया । ३. देश से बाहर जाने-वाला माल । (एक्सपोर्ट)

निर्यातक-पुं० [सं०] वह जो बिक्री के लिए माल देश से बाहर भेजने का काम करता हो । (एक्सपोर्टर)

निर्यात कर-पुं० [सं०] वह कर जो किसी देश में वहाँ से बाहर जानेवाली वस्तुओं या माल पर लगता है ।

निर्यातन-पुं० [सं०] १. बदला लेना । २. मार डालना । ३. दे० 'निर्यात' ।

निर्यास-पुं० [सं०] १. वृक्षों या पौधों में से निकलनेवाला रस । २. गोंद । ३. बहना या झरना । क्षरण ।

निर्लज्ज-वि० [सं०] [भाव० निर्लज्जता] जिसे लज्जा न हो। बे-शर्म। बेहया।

निर्लिप्त-वि० [सं०] जो किसी विषय में लिप्त या आसक्त न हो।

निर्लेप-वि० दे० 'निर्लिप्त'।

निर्लोभ-वि० [सं०] जिसे लोभ न हो।

निर्वंश-वि० [सं०] [भाव० निर्वंशता] जिसका वंश या परिवार नष्ट हो गया हो।

निर्वचन-पुं० [सं०] निश्चित रूप से कोई बात कहना। निरूपण। वि० चुप। मौन।

निर्वसन-वि० [सं०] [स्त्री० निर्वसना] वस्त्र-हीन। नग्न। नंगा।

निर्वहण-पुं० दे० 'निर्वाह'।

निर्वहना*-अ० दे० 'निभना'।

निर्वाक्-वि० [सं०] मौन। चुप।

निर्वाचक-पुं० [सं०] वह जो निर्वाचन करे या चुने। चुननेवाला। (इलेक्टर)

निर्वाचक सूची-स्त्री० [सं०] वह सूची जिसमें निर्वाचकों के नाम-पते आदि लिखे रहते हैं। (इलेक्टरल रोल)

निर्वाचन-पुं० [सं०] किसी काम के लिए बहुतों में से एक या कुछ को प्रतिनिधि के रूप में चुनना। (इलेक्शन)

निर्वाचन-अधिकारी-पुं० [सं०] वह अधिकारी जो किसी निर्वाचन की देख-रेख और व्यवस्था के लिए नियुक्त हो और उसका परिणाम बतलाता हो। (रिटर्निंग ऑफिसर)

निर्वाचन-क्षेत्र-पुं० [सं०] वह स्थान या क्षेत्र जिसे अपना प्रतिनिधि चुनने का अधिकार हो। (कॉन्स्टिट्युएन्सी)

निर्वाचित-वि० [सं०] चुना हुआ।

निर्वाण-पुं० [सं] १.बुझना। ठंढा होना। २. न रह जाना। समाप्ति। ३. अस्त होना। डूबना। ४. मृत्यु। ५. मुक्ति।

निर्वापण-पुं० [सं०] [वि० निर्वापित, निर्वाप्य] १. बुझने या बुझाने का काम। २. (अधिकार या स्वत्व का) अंत या समाप्ति करना। (एक्सटिंक्शन)

निर्वासक-पुं० [सं०] १. वह जो निर्वासन करता हो। २. देश-निकाला देनेवाला।

निर्वासन-पुं०[सं०]१.मार डालना। वध। २. गाँव, नगर, देश आदि से दंड-स्वरूप बाहर निकाल देना। देश-निकाला।

निर्वासित-वि० [सं०] जिसे देश-निकाले का दंड मिला हो। अपने निवास-स्थान से निकाला हुआ।

निर्वाह-पुं० [सं०] १. क्रम या परंपरा का चलता रहना। निबाह। २. किसी निश्चय या प्रथा के अनुसार होनेवाला आचरण। पालन। ३. समाप्ति।

निर्वाहक-वि० [सं०] १. निर्वाह करने-वाला। निभानेवाला। २. आज्ञा का निर्वाहण या पालन करनेवाला। (एक्-जिक्यूटर)

निर्वाहण-पुं० [सं०] [वि० निर्वाहणिक, निर्वाहणीय] १.निर्वाह करना। निभाना। २.किसी की आज्ञा या निश्चय के अनुसार ठीक तरह से काम करना। ३. कुछ समय के लिए किसी दूसरे का काम या भार अपने ऊपर लेना। अस्थायी रूप से स्थानापन्न के रूप में काम करना।

निर्वाहणिक-वि० [सं०] १. निर्वाहण संबंधी। निर्वाहण का। २.जो किसी कार्य का निर्वाह करता हो। निर्वाहण करने-वाला। ३. किसी के पद पर अस्थायी रूप से रहकर उसके कार्य का निर्वाहण करने-वाला। स्थानापन्न। (ऑफिशिएटिंग)

निर्वाहना*-अ०=निभाना।

निर्विकल्प-वि० [सं०] १. जिसमें विकल्प, परिवर्त्तन या भेद न हो। (एब्सोल्यूट) २. स्थिर। निश्चित।

निर्विकार-वि० [सं०] जिसमें कोई विकार या परिवर्त्तन न होता हो।

निर्विघ्न-वि० [सं०] जिसमें विघ्न या बाधा न हो।

क्रि० वि० बिना किसी विघ्न या बाधा के।

निर्विरोध-वि० [सं०] जिसमें कोई विरोध बाधा या रुकावट न हो।

क्रि० वि० बिना किसी विरोध, बाधा या रुकावट के।

निर्विवाद-वि० [सं०] जिसमे कोई विवाद या झगड़े की बात न हो।

निर्बीज-वि० [सं०] १. जिसमें बीज न हो। बीज-रहित। २. जो कारण से रहित हो। ३. जिसका बीज तक न रह गया हो। सर्वथा नष्ट।

निर्वीर्य्य-वि० [सं०] १. वीर्य्य-हीन। बल या तेज-रहित। २. अशक्त। कमजोर।

निर्वेद-पुं० [सं०] १. (अपना) अपमान। २. खेद। दुःख। ३. वैराग्य।

निर्वैर-वि० [सं०] वैर या द्वेष से रहित।

निर्व्याज-वि० [सं०] १. निष्कपट। छल-रहित। २. विघ्न या बाधा से रहित।

निलज्ज-वि० दे० 'निर्लज्ज'।

निलय-पुं० [सं०] १. मकान। घर। २. स्थान। जगह।

निवछुरा*-वि० [सं० निवृत्त] (ऐसा समय) जिसमें बहुत काम-काज न हो।

निवसना*-अ०=निवास करना।

निवाज-वि० दे० 'नवाज'।

निवाजना*-अ० दे० 'नवाजना'।

निवाड़ा-पुं० दे० 'नवाड़ा'।

निवार-स्त्री० [फा० नवार] मोटे सूत की बुनी वह पट्टी जिससे पलंग बुनते हैं।

निवारक-वि० [सं०] १. निवारण करने या रोकनेवाला। २. दूर करनेवाला।

निवारण-पुं० [सं०] १. रोकना। २. हटाना। दूर करना। ३. निवृत्ति। छुटकारा।

निवारना*-स० [सं० निवारण] १. रोकना। २. दूर करना। हटाना। ३. अपनी रक्षा का ध्यान रखते हुए बचकर रहना। ४. निषेध या मना करना।

निवारी-स्त्री० [सं० नेपाली] जूही की तरह का सफेद फूलों का एक पौधा।

निवाला-पुं० [फा०] भोजन का कौर। ग्रास।

निवास-पुं० [सं०] १. कहीं रहने की क्रिया या भाव। २. रहने का स्थान।

निवास-स्थान-पुं० [सं०] रहने की जगह।

निवासी-पुं० [सं० निवासिन्] [स्त्री० निवासिनी] रहने या बसनेवाला। वासी।

निविड़-वि० [सं०] १. घना। २. घोर। ३. गम्भीर। गहरा।

निविष्ट-वि० [सं०] १. जिसका चित्त एकाग्र हो। २. ठहराया या रखा हुआ। स्थापित। ३. बाँधा हुआ। ४ कहीं लिखा, दर्ज किया या चढ़ाया हुआ। (एन्टर्ड)

निविष्टि-स्त्री० [सं०] १. खाते आदि में लिखने, दर्ज करने या चढ़ाने की क्रिया का भाव। २. इस प्रकार चढ़ी हुई बात या रकम। ३. प्रवेश। (एन्ट्री)

निवृत्ति-स्त्री० [सं०] १. मुक्ति। 'प्रवृत्ति' का उलटा। २ मोक्ष। ३. छुटकारा।

निवेद*-वि० दे० 'नैवेद्य'।

निवेदक-पुं० [सं०] निवेदन करनेवाला। प्रार्थी।

निवेदन-पुं० [सं०] [वि० निवेदित] १. नम्रतापूर्वक किसी से कुछ कहना।

विनती। प्रार्थना। २. समर्पण।

निवेदना*-स० [हिं० निवेदन] १. विनती या प्रार्थना करना। २. नैवेद्य चढ़ाना। ३. अर्पित या भेंट करना।

निवेरना*-स० दे० 'निपटाना'।

निवेरा*-वि० [हिं० नि+सं० वरण] १. चुना या छाँटा हुआ। २. अनोखा।

निवेश-पुं०[सं०] [वि० निवेशित, निविष्ट] १.विवाह। २.डेरा। खेमा। ३.प्रवेश। ४. घर। ५.ठहराया या रखा जाना। स्थापन।

निशंक-वि० दे० 'निःशंक'।

निशंग*-पुं० दे० निषंग'।

निश-स्त्री० दे० 'निशा'।

निशांत-पुं० [सं०] रात का अंत, अर्थात् प्रभात। तड़का।

निशा-स्त्री० [सं०] रात। रजनी।

निशाकर-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

निशा-खातिर-स्त्री० [अ० खातिर+फा० निशाँ] निश्चिंतता। तसल्ली। इतमीनान।

निशाचर-पुं० [सं०] १. राक्षस। २. गीदड़। ३. उल्लू। ४. साँप। ५. भूत-प्रेत। ६. चोर।

वि० जो रात को बाहर निकले या चले।

निशाचरी-स्त्री० [सं०] १. राक्षसी। २. कुलटा। ३. अभिसारिका नायिका।

वि० [हिं० निशाचर] १. निशाचर-संबंधी। २. निशाचरों का-सा। जैसे-निशाचरी माया।

निशान-पुं० [फा०] १. ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय या जिससे किसी बात या घटना का परिचय मिले। २. बना या बनाया हुआ चिह्न। ३. शरीर या किसी पदार्थ पर का प्राकृतिक या और किसी प्रकार का चिह्न या दाग। ४. वह चिह्न जो अशिक्षित लोग अपने हस्ताक्षर के बदले में बनाते हैं। ५. पता। ठिकाना।

मुहा०-**निशान देना** = सम्मन आदि तामील करने के लिए यह बताना कि यही असामी है।

६. दे० 'लक्षण'। ७. दे० 'निशाना'। ८. दे० 'निशानी'। ९. दे० 'झंडा'।

निशाना-पुं० [फा०] १. वह जिसपर अस्त्र, शस्त्र आदि का लक्ष्य या वार किया जाय। लक्ष्य। २. किसी को लक्ष्य बनाकर उसपर वार करने की क्रिया।

मुहा०-**निशाना मारना या लगाना**= ताककर अस्त्र आदि का वार करना।

३.वह जिसे लक्ष्य करके कोई बात कहें।

निशानाथ-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशानी-स्त्री० [फा०] १ स्मृति बनाये रखने के लिए दिया या रखा हुआ पदार्थ। स्मृति-चिह्न। यादगार। २. वह चिह्न जिससे कोई वस्तु पहचानी जाय। निशान।

निशापति-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशामुख-पुं० [सं०] संध्या का समय।

निशास्ता-पुं० [फा०] १. गेहूँ या आटे का जमाया हुआ सत या गूदा। २. माँड़ी। कलफ।

निशि-स्त्री० [सं०] रात।

निशिकर-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशिचर(चारी)-पुं० दे० 'निशाचर'।

निशित-वि०[सं०]धारदार। तेज धारवाला।

पुं० लोहा।

निशिनाथ-पुं० [सं०] चंद्रमा।

निशि-वासर*-क्रि० वि० [सं०] १. रात-दिन। २. सदा। हमेशा।

निशीथ-पुं० [सं०] रात।

निश्चय-पुं० [सं०] १. ऐसी धारणा या ज्ञान जिसमें कोई भ्रम या दुबधा न हो।

२. विश्वास। यकीन। ३. निर्णय। ४. दृढ़ संकल्प या विचार। पक्का इरादा। ५. सभा-समिति आदि में ठहराई या स्थिर की हुई बात। ६. एक अर्थालंकार जिसमें एक बात का निषेध करके प्रकृत या यथार्थ बात के स्थापन का उल्लेख होता है।

निश्चयात्मक-वि० [सं०] पूरी तरह से निश्चित। ठीक। पक्का।

निश्चल-वि० [सं०] [स्त्री० निश्चला, भाव० निश्चलता] १. जो अपने स्थान से न हटे। स्थिर। २. अचल। अटल।

निश्चिंत-वि० [सं०] [भाव० निश्चितता] जिसे कोई चिंता या फिक्र न हो। बे-फिक्र।

निश्चिंतई*-स्त्री०=निश्चिंतता।

निश्चिंतता-स्त्री० [सं०] निश्चिन्त होने की क्रिया या भाव। बे-फिक्री।

निश्चित-वि० [सं०] १. जिसके संबंध में निश्चय हो चुका हो। निर्णीत। २.जिसमें कोई परिवर्त्तन न हो सके। दृढ़। पक्का।

निश्चेतन-वि० [सं०] १.बेहोश। २.जड़।

निश्चेष्ट-वि० [सं०] १. जिसमें चेष्टा या गति न हो। २. बेहोश। अचेत। ३. निश्चल। स्थिर।

निश्चै*-पुं० = निश्चय।

निश्छल-वि० [सं०] जो छल-कपट न जानता हो। सरल प्रकृति का। सीधा।

निश्वास-पुं० [सं०] नाक या मुँह के बाहर निकलनेवाला श्वास या साँस।

निश्शंक-वि० दे० निःशंक'।

निश्शेष-वि० दे० 'निःशेष'।

निषंग-पुं० [सं०] [वि० निषंगी] १. तरकश। २. खड्ग।

निषाद-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन अनार्य्य जाति जो भारत में आर्य्यों के आने से पहले रहती थी। २. एक प्राचीन देश जो कदाचित् शृंगवेरपुर के पास था। ३ संगीत में सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।

निषादी-पुं० [सं० निषादिन्] हाथीवान।

निषिद्ध-वि०[सं०] १.जिसका निषेध किया गया हो। मना किया हुआ। २. बुरा।

निषेध-पुं० [सं०] १. यह कहना कि अमुक काम या बात मत करो। वर्जन। मनाही। २. बाधा। रुकावट'।

निषेधक-वि० [सं०] १. निषेध या मना करनेवाला। २. (आज्ञा या कथन) जिसके द्वारा निषेध या मनाही की जाय। (प्रॉहिबिटरी)

निष्कंटक-वि० [सं०] जिसमें कोई कंटक, बाधा या बखेड़ा न हो। बिना झंझट का।

निष्कंप-वि० [सं०] जो काँपता या हिलता न हो। स्थिर।

निष्क-पुं० [सं०] १. वैदिक काल का सोने का एक सिक्का। २. वैद्यक में चार माशे की तौल। टंक।

निष्कपट-वि० [सं०] [भाव० निष्कपटता] जिसके मन में कपट न हो। निश्छल। छल-रहित। सीधा। सरल।

निष्करुण-वि० [सं०] जिसमें या जिसके मन में करुणा न हो। करुणा-रहित।

निष्कर्ष-पुं० [सं०] १.सारांश। खुलासा। २.विचार या विवेचन के अंत में निकलनेवाला सिद्धान्त। निचोड़। सार।

निष्कलंक-वि० [सं०] जिसमें कलंक न हो। निर्दोष। बे-ऐब।

निष्काम-वि० [सं०] [भाव० निष्कामता] १. (मनुष्य) जिसके मन में कोई कामना या इच्छा न हो। २. बिना किसी कामना या इच्छा के किया जानेवाला (काम)।

निष्कारण-वि० [सं०] बिना कारण का।

क्रि० वि० १. बिना किसी कारण के। २. व्यर्थ। वृथा। बे-फायदा।

निष्कासन-पुं० [सं०] [वि० निष्कासित] १.निकालना। बाहर करना। २.किसी को दंड आदि के रूप में किसी स्थान, क्षेत्र आदि से हटाकर बाहर या दूर करना।

निष्कृत-वि० [सं०] [भाव० निष्कृति] १. निकला हुआ। २ छूटा हुआ। मुक्त।

निष्क्रमण-पुं० [सं०] [वि० निष्क्रांत] बाहर निकलना।

निष्क्रमणार्थी-पुं० [सं०] १. कहीं से निकलने की इच्छा रखनेवाला। २. दे० 'निष्क्रमिती'।

निष्क्रमिती-पुं० [सं० निष्क्रमित] वह जो किसी संकट आदि से बचने के लिए अपना निवास-स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाय या जाना चाहे। (इवैकुई)

निष्क्रय-पुं० [सं०] १. वेतन। तन-खाह। २. विनिमय। बदला। ३. किसी वस्तु के स्थान पर दिया जानेवाला धन।

निष्क्रांत-वि० [सं०] [भाव० निष्क्रांति] १.निकला या निकाला हुआ। २. मुक्त।

निष्क्रिय-वि० [सं०][भाव० निष्क्रियता] जिसमें कोई क्रिया, चेष्टा या व्यापार न हो। क्रिया या चेष्टा-रहित।

निष्क्रिय प्रतिरोध-पुं० [सं०] किसी अनुचित आज्ञा या निर्णय का वह विरोध जिसमें उचित काम बराबर किया जाता है और दंड की परवा नहीं की जाती।

निष्ठ-वि० [सं०] १. ठहरा हुआ। स्थित। २. काम में लगा हुआ। तत्पर। ३. किसी के प्रति निष्ठा, श्रद्धा या भक्ति रखनेवाला। (लॉयल)

निष्ठा-स्त्री० [सं०] १. स्थिति। ठहराव। २. विश्वास। निश्चय। ३.धर्म, देवता, राज्य या बड़े आदि के प्रति पूज्य बुद्धि और भक्ति का भाव। (फेथ, लॉयल्टी)

निष्ठुर-वि० [सं०] [स्त्री० निष्ठुरा, भाव० निष्ठुरता] निर्दय। बे-रहम।

निष्ण(ष्णात)-वि० [सं०] किसी विषय का पूरा ज्ञाता या पंडित।

निष्पंद-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का स्पंदन, कंप या गति न हो।

निष्पक्ष-वि० [सं०] [भाव० निष्पक्षता] जो विरोधियों में से किसी का पक्ष न करे। पक्षपात-रहित। तटस्थ। (इम्पार्शल)

निष्पत्ति-स्त्री० [सं०] १. समाप्ति। अंत। २.निर्वाह। ३.निश्चय। निर्धारण।

निष्पन्न-वि० [सं०] (काम) जो आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के अनुसार समाप्त या पूरा किया जा चुका हो। (एक्जिक्यूटेड)

निष्पादक-पुं० [सं०] १. आज्ञा, नियम आदि के अनुसार कोई काम करने-वाला व्यक्ति। २.वह जो किसी की दिस्सा या वसीयत में लिखी बातों का पालन या व्यवस्था करने का अधिकारी बनाया गया हो। (एक्जिक्यूटर)

निष्पादन-पुं० [सं०] [वि० निष्पाद्य, निष्पादनीय, निष्पादित] १. आज्ञा, नियम आदि के अनुसार कोई काम ठीक तरह से पूरा करना। २ किसी अधिकारी आदि के बतलाये हुए काम ठीक तरह से पूरे करना। (एक्जिक्यूशन)

निष्पाप-वि०[सं०] १ जो पाप से दूर रहे। २. जिसमें पाप न हो। पाप-रहित।

निष्प्रभ-वि०[सं०] जिसमें प्रभा या चमक न हो या न रह गई हो। प्रभा-रहित।

निष्प्रयोजन-वि० [सं०] १. जिसमें कोई प्रयोजन न हो। २. व्यर्थ। क्रि० वि० १. बिना किसी प्रयोजन या

मतलब के। २. व्यर्थ। वृथा। फजूल।
निष्प्राण-वि० [सं०] जिसमें प्राण न हों।
निष्फल-वि० [सं०] जिसका कोई फल या परिणाम न हो। व्यर्थ। निरर्थक। (एबोर्टिव)
निसंक*-वि० दे० 'निःशंक'।
निसंग*-वि० दे० 'निःसंग'।
निसँठ*-वि० दे० 'निर्धन'।
निसंस*-वि० दे० 'नृशंस'।
वि० [हिं० नि+सांस] १. जिसमें सांस न हो। मृत। २ मृत-प्राय। मुरदा-सा।
निसंसना*-अ० = हाँफना।
निस*-स्त्री० दे० 'निशा'।
निसक*-वि० दे० 'अशक्त'।
निसकर*-पुं० = निशाकर। (चन्द्रमा)
निसत*-वि० दे० 'निःसत्त्व'।
निसतरना*-अ० [सं० निस्तार] निस्तार या छुटकारा पाना। मुक्त होना।
निसद्यौस*-क्रि० वि० [सं० निशि+दिवस] १. रात-दिन। २. सदा। नित्य।
निसनेहा*-पुं० दे० 'निर्मोही'।
निसबत-स्त्री० [अ०] १. संबंध। लगाव। २. विवाह-संबंध स्थिर करने की प्रथा। मँगनी। ३. तुलना। मुकाबला।
निसयाना*-वि० [हिं० नि+सयाना] जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।
निसरना*-अ०=निकलना।
निसरावन-पुं० [सं० निस्सरण] ब्राह्मण को दिया जानेवाला कच्चा अन्न। सीधा।
निसर्ग-पुं० [सं०] १. प्रकृति। (नेचर) २. रूप। आकृति। ३. दान। ४. सृष्टि।
निस-बासर*-क्रि०वि०दे० 'निस-द्यौस'।
निसस*-वि० दे० 'निसांस'।
निसाँक-वि० दे० 'निःशंक'।
निसाँस(ा)*-पुं० [सं० निः+श्वास] ठंढा साँस। दीर्घ श्वास। निश्वास।
वि० १. जिसमें साँस न हो। २. मृत-प्राय।
निसा*-स्त्री० दे० 'निशा'।
निसान*-पुं० दे० 'निशान'।
निसानन*-पुं० [सं० निशानन] संध्या।
निसाफ*-पुं० दे० 'न्याय'।
निसार-पुं० [अ०] निछावर। सदका।
*वि० दे० 'निस्सार'।
निसारना*-स०=निकालना।
निसास (ा)*-पुं० दे० 'निसाँस'।
निसि-स्त्री० दे० 'निशि'।
निसि-दिन*-क्रि०वि० दे० 'निस-दिन'।
निसियर*-पुं०=निशाकर। (चन्द्रमा)
निसिवासर*-क्रि०वि०दे० 'निस-दिन'।
निसीठा*-वि० दे० 'निःसार'।
निसु*-स्त्री० दे० 'निशा'।
निसुका*-वि० [सं० निस्वक्] १ गरीब। निर्धन। २. बेचारा।
निसृष्ट-वि० [सं०] १. छोड़ा या निकाला हुआ। २. भेजा हुआ। ३. दिया हुआ।
निसेनी†-स्त्री० दे० 'सीढ़ी'।
निसेष*-वि० दे० 'निःशेष'।
निसेस*-पुं० [सं० निशेश] चंद्रमा।
निसोग*-वि० [सं० नि शोक] जिसे शोक या दुःख न हो। शोक-रहित।
निसोच*-वि०[सं०निःशोच] चिंता-रहित।
निसोध(धु)*-स्त्री० [हिं० सुध] १. सुध। होश। २. हाल। खबर। ३. सँदेसा।
निस्तंद्र-वि० [सं०] १. जिसे तंद्रा न आई या न आती हो। २. जागा हुआ। जाग्रत।
निस्तत्त्व-वि० [सं०] १. जिसमें कोई तत्त्व या सार न हो। निस्सार।
निस्तब्ध-वि० [सं०] [भाव० निस्तब्धता] १. जो हिलता-डुलता न हो। २. जड़

के समान निश्चेष्ट ।

निस्तरंग-वि० [सं०] जिसमें तरंग या लहर न हो। २.शांत । ३.जिसमें कुछ भी गति या शब्द न हो। जैसे-निस्तब्ध रात्रि।

निस्तरण-पुं० दे० 'निस्तार'।

निस्तरना*-अ० [सं० निस्तार] निस्तार या छुटकारा पाना। मुक्त होना।

निस्तल-वि० [सं०] [भाव० निस्तलता] १. जिसका तल न हो। २. जिसके तल की थाह न हो। बहुत गहरा। ३. गोल। वृत्ताकार। ४. नीचा। निम्न।

निस्तार-पुं० [सं०] १. पार होने का भाव। २. छुटकारा। उद्धार। ३. काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना।

निस्तारना*-स०=निस्तार करना।

निस्तेज-वि० [सं० निस्तेजस्] जिसमें तेज न हो। तेज-रहित।

निस्पंद-वि० [सं०] [भाव० निस्पंदता] १. जो हिलता-डोलता न हो। स्थिर। निश्चल। २. निश्चेष्ट। स्तब्ध।

निस्पृह-वि० [सं०] [भाव० निस्पृहता] जिसे किसी प्रकार का लोभ या कामना न हो। निर्लोभ।

निस्फ-वि० [अ०] आधा। अर्द्ध।

निस्बत-स्त्री० दे० 'निसबत'।

निस्वन-पुं० [सं०] ध्वनि। शब्द।

निस्संकोच-वि० [सं०] जिसे या जिसमें संकोच या लज्जा न हो। बेधड़क। क्रि० वि० बिना किसी संकोच के।

निस्संग-वि० [सं०] १. जो किसी से कोई संबंध न रखता हो। २. विषय-वासनाओं आदि से रहित। ३. निर्जन। एकांत। ४. अकेला।

निस्संतान-वि० [सं०] जिसे कोई सन्तान या बाल-बच्चा न हो। संतति रहित।

निस्संदेह-क्रि० वि० [सं०] १. बिना संदेह के। २. अवश्य। जरूर। वि० जिसमें संदेह न हो।

निस्संबल-वि०[सं०] जिसका कोई संबल, सहारा या ठिकाना न हो।

निस्सरण-पुं० [सं०] १. निकलने का मार्ग। २. निकलना। (डिस्चार्ज)

निस्सहाय-वि० [सं०] जिसका कोई सहायक न हो। असहाय।

निस्सार-वि० [सं०] १. सार-रहित। २. जिसमें काम की बात न हो।

निस्सारण-पुं० [सं०] निकालने की क्रिया या भाव। (डिस्चार्ज)

निस्सीम-वि० [सं०] १. जिसकी कोई सीमा न हो। असीम। (एब्सोल्यूट) २. बहुत अधिक। बे-हद।

निस्स्नेह-वि० [सं०] जिसमें या जिसे स्नेह या प्रेम न हो।

निस्स्वार्थ-वि० [सं०] जिसमें या जिसे अपने स्वार्थ या हित का कोई विचार न हो।

निहंग(म)-वि० [सं० निःसंग] १. एकाकी। अकेला। २. स्त्री से संबंध न रखने और अकेला रहनेवाला। ३. नंगा। ४. निर्लज्ज। पुं० सिक्खों का एक सम्प्रदाय।

निहंग-लाडला-वि० [हिं० निहंग+लाडला] जो लाड या दुलार के कारण उद्दंड और स्वेच्छाचारी हो गया हो।

निहकाम*-वि० दे० 'निष्काम'।

निहचय*-पुं० दे० 'निश्चय'।

निहचल*-वि० दे० 'निश्चल'।

निहत-वि० [सं०] १. नष्ट। २. जो मार डाला गया हो।

निहत्था-वि० [हिं० नि+हाथ] १.

जिसका हाथ न हो। २. जिसके हाथ में कोई अस्त्र या शस्त्र न हो।

निहननाॐ-स० दे० 'हनना'।

निहपापॐ-वि० दे० 'निष्पाप'।

निहफलॐ-वि० दे० 'निष्फल'।

निहाई-स्त्री० [सं० निघाति, मि० फा० निहाली] लोहे का वह आधार जिसपर सोनार, लोहार आदि कोई चीज रखकर हथौड़े से पीटते हैं।

निहाउॐ-पुं० दे० 'निहाई'।

निहायत-वि० [अ०] अत्यंत। बहुत।

निहार-पुं० [सं०] १. कुहरा। पाला। २. ओस। ३. हिम। बरफ।

निहारना-स० दे० देखना'।

निहाल-वि० [फा०] भली-भाँति संतुष्ट और प्रसन्न। पूर्ण-काम।

निहाली-स्त्री० [फा०] १. गद्दा। तोशक। २. रजाई। ३. निहाई।

निहित-वि० [सं०] कहीं या किसी के अंदर रखा, पड़ा या छिपा हुआ।

निहितार्थ-पुं० [सं०] वाक्य का वह गूढ़ अर्थ या आशय जो साधारणतः देखने पर न खुले, पर जो वस्तुतः महत्व रखता हो। (इम्पोर्ट)

निहुरना†-अ० दे० 'झुकना'।

निहुराई-स्त्री० [हिं० निहुरना] निहुरने या झुकने की क्रिया या भाव।

ॐस्त्री० दे० 'निष्ठुरता'।

निहुराना-स० हिं० 'निहुरना' का स०।

निहोरनाॐ-स० [सं०मनोहार] १.प्रार्थना या विनय करना। २ मनाना। ३.निहोरा या उपकार मानना। कृतज्ञ होना।

निहोरा†-पुं० [सं० मनोहार] १. एहसान। कृतज्ञता। २. विनती। प्रार्थना। ३. भरोसा। सहारा। आसरा।

क्रि० वि० १. कारण से। द्वारा। २. के लिए। वास्ते। निमित्त।

नींद-स्त्री० [सं० निद्रा] प्राणियों की वह अवस्था जिसमें बीच-बीच में अथवा नित्य रात को उनकी चेतन क्रियाएँ रुक जाती हैं और शरीर तथा मस्तिष्क विश्राम करता है। सोने की अवस्था। निद्रा। स्वप्न।

मुहा०-नींद उचटना, खुलना या टूटना=नींद का अन्त होना। जाग पड़ना। नींद हराम होना=चिंता आदि के कारण नींद तक न आना।

नींदड़ीॐ-स्त्री० दे० 'नींद'।

नींदनाॐ-अ० [हिं० नींद] नींद लेना। सोना।

स० दे० 'निंदाना'।

नींबू-पुं० [सं० निंबूक, अ० लेमूँ] एक छोटा पेड़ जिसके गोल, छोटे फल खट्टे होते हैं। (कई प्रकार के नींबू मीठे और बड़े भी होते हैं)

यौ०-नींबू-निचोड़=बहुत बड़ा कंजूस।

नींव-स्त्री० [सं० नेमि, प्रा० नेइ] १. मकान आदि बनाने के समय उसका वह मूल भाग जो दीवारों की दृढ़ता के लिए जमीन खोदकर और उसमें से दीवारों की जोड़ाई आरम्भ करके बनाया जाता है। २. किसी वस्तु या कार्य का आरम्भिक भाग।

मुहा०-नींव जमाना या डालना=दे० 'नींवँ देना'। नींव देना=१.गड्ढा खोदकर दीवार का मूल भाग बनाना। २. कारण या आधार खड़ा करना। जड़ खड़ी करना। उपक्रम करना। नींव पड़ना=१. घर की दीवार का बनना आरम्भ होना। २.कार्य का सूत्रपात होना।

३. जड़। मूल। ४. आधार।

नीक(ा)*-वि० [सं० निक्त=स्वच्छ] [स्त्री० नीकी] उत्तम। अच्छा। बढ़िया। †पुं० उत्तमता। अच्छापन।

नीके-क्रि० वि० [हिं० नीक] अच्छी तरह।

नीच-वि० [सं०] [भाव० नीचता] १. जाति, गुण आदि में बहुत घटकर या कम। २. अधम। बुरा। निकृष्ट।

यौ०-**नीच-ऊँच**=१. अच्छा-बुरा। २. अच्छा और बुरा परिणाम। हानि-लाभ। ३ सुख-दु:ख।

नीचा-वि० [सं० नीच] [स्त्री० नीची] १. जो कुछ उतार या गहराई में हो। गहरा। निम्न। 'ऊँचा' का उलटा।

यौ०-**ऊँचा-नीचा या नीचा-ऊँचा**=कहीं कुछ गहरा और कहीं कुछ उठा हुआ। ऊबड़-खाबड़।

२. जो अधिक ऊपर तक न गया हो। ३. निम्न स्तर की ओर दूर तक आया हुआ।

मुहा०-**नीचा दिखाना**=१. तुच्छ ठहराना। अपमानित करना। २. परास्त करना। हराना। ३. लज्जित करना। **नीचा देखना**=१. तुच्छ ठहरना। २. हारना। परास्त होना। **नीची दृष्टि करना**=लज्जा या संकोच से सिर झुकाना। सामने या ऊपर न ताकना।

४. झुका हुआ। नत। ५. जो तीव्र या जोर का न हो। धीमा। मद्धिम। ६. जाति, गुण आदि में घटकर। ७. ओछा। क्षुद्र।

नीचाशय-वि० [सं०] क्षुद्र। ओछा।

नीचू†-क्रि० वि० दे० 'नीचे'।

स्त्री० दे० 'लीची'।

नीचे-क्रि० वि० [हिं० नीचा] १. निम्न तल की ओर। अधोभाग में। 'ऊपर' का उलटा।

यौ०-**नीचे ऊपर**=१. एक पर एक। २. अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित।

मुहा०-**नीचे गिरना**=अवनत या पतित होना। **ऊपर से नीचे तक**=सिर से पैर तक। एक सिरे से दूसरे सिरे तक।

२. तुलना में घटकर या कम। ३. अधीनता या मातहती में।

नीजन*-वि० दे० 'निर्जन'।

नीझर*-पुं० दे० 'निर्झर'।

नीठि*-स्त्री० [सं० अनिष्टि] इच्छा या रुचि न होना।

क्रि० वि० १. किसी न किसी प्रकार। जैसे-तैसे। २. कठिनता से।

नीठो*-वि० [सं० अनिष्ट] १. अनिष्टकारी। बुरा। २. अप्रिय। अरुचि-कर।

नीड़-पुं० [सं०] १. चिड़ियों का घोंसला। २. ठहरने या रहने का स्थान।

नीड़ज-पुं० [सं०] चिड़िया। पक्षी।

नीति-स्त्री० [सं०] १. ले जाने या ले चलने की क्रिया या भाव। २. व्यवहार या बरताव का ढंग। आचार-पद्धति। ३. व्यवहार की वह रीति जिससे अपना हित हो और दूसरों को कष्ट या हानि न पहुँचे। ४. जनता या समाज के हित के लिए निश्चित आचार-व्यवहार। अच्छा व्यवहार और चलन। नय। ५. राज्य और राष्ट्र की रक्षा तथा हित के लिए निश्चित रीति या व्यवहार। राज-विद्या। ६. कोई कार्य्य ठीक तरह से पूरा करने के लिए की जानेवाली युक्ति या उपाय। हिकमत।

नीतिज्ञ-वि० [सं०] नीति जाननेवाला।

नीतिमान्-वि० [सं० नीतिमत्] [स्त्री० नीतिमती] १. नीति-परायण। २. सदाचारी।

नीतिवादी-पुं० [सं०] वह जो सब काम नीति-शास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार करना चाहता या करता हो।

नीति विज्ञान(शास्त्र)-पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र का ध्यान रखकर सबके आचरण करने के नियम रहते हैं। २. वह शास्त्र जिसमें समाज के कल्याण के लिए आचार-व्यवहार बतलाये गये हों।

नीधना*-वि० दे० 'निर्धन'।

नीपना*-स० दे० 'लीपना'।

नीवी*-स्त्री० दे० 'नीवी'।

नीबू-पुं० दे० 'नींबू'।

नीम-पुं० [सं० निंब] एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके सभी अंग कड़ुए होते हैं।

वि० [फा०] आधा। अर्द्ध।

नीमा-पुं० [फा०] जामे के नीचे पहना जानेवाला एक पहनावा।

नीमास्तीन-स्त्री० [फा० नीम+आस्तीन] आधी बाँह की कुरती या फतूही।

नीयत-स्त्री० [अ०] मन में रहनेवाला भाव, लक्ष्य या उद्देश्य। आशय। मंशा।

मुहा०-**नीयत बदल जाना या नीयत में फरक आना**=दे०'नीयत बिगड़ना'। **नीयत बाँधना**=संकल्प करना। इरादा करना। **नीयत बिगड़ना**=अच्छे संकल्प या विचार का बुरा हो जाना। **नीयत भरना**=मन भरना। तृप्ति होना। **नीयत लगी रहना**-लालसा बनी रहना।

नीर-पुं० [सं०] [भाव० नीरता] १. पानी। जल।

मुहा०-**नीर ढलना**=मरते समय आँखों से पानी बहना।

२. तरल पदार्थ या रस। ३. छाले आदि से निकलनेवाला चेप।

नीरज-पुं [सं०] १. जल में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ। २. कमल। ३. मोती।

नीरद-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

वि० [सं०] जल देनेवाला।

वि०[सं० निः+रद] बे-दाँत का। अदंत।

नीरधर-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

नीरधि-पुं० [सं०] समुद्र।

नीरव-वि० [सं०] [भाव० नीरवता] १. जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो। निःशब्द। २.जो कुछ न बोलता हो। चुप।

नीरस-वि० [सं०] १. जिसमें रस न हो। रस-हीन। २. सूखा। शुष्क। ३ जिसमें कोई स्वाद न हो। फीका। ४. जिसमें कोई आकर्षक या रुचिकर बात या तत्त्व न हो।

नीरांजन-पुं० [सं०] देवता की आरती।

नीरा-स्त्री० [सं० नीर] ताड़ के वृक्ष का वह रस जो प्रातःकाल उतारा जाता है और जो पीने में बहुत स्वादिष्ट और गुणकारी होता है।

*क्रि० वि० [हिं० नियर] समीप। पास।

नीराजना*-अ० [सं०नीराजन] १.आरती करना। २.शस्त्र आदि साफ करके चमकाना।

नीरुज-वि० दे० 'नीरोग'।

नीरे*-क्रि० वि० दे० 'नियर'।

नीरोग-वि० [सं०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो। स्वस्थ। तन्दुरुस्त।

नील-वि० [सं०] नीले रंग का।

पुं० [सं०] १. नीला रंग। गहरा आसमानी रंग। २. एक प्रसिद्ध पोधा जिससे नीला रंग निकलता है। ३. इस पौधे से निकलनेवाला नीला रंग।

मुहा०-**नील का टीका लगाना**=कलंक लगाना। **आँखों में नील की सलाई फेरवाना** = आँखें फोड़वा डालना।

अंधा करा देना।

४. शरीर पर पड़ा हुआ चोट का नीले रंग का दाग। ५. सौ अरब की संख्या। ६. राम की सेना का एक बन्दर। ७. नौ निधियों में से एक।

नील-गाय-स्त्री० [हिं० नील+गाय] एक प्रकार का बड़ा हिरन।

नीलम-पुं० [फा०, सं० नीलमणि] नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न। नील-मणि।

नील-मणि-पुं० [सं०] नीलम।

नीलांबर-पुं० [सं०] नीले रंग का कपड़ा।

नीलांबुज-पुं० [सं०] नीला कमल।

नीला-वि० [सं० नील] आकाश या नील के रंग का।

मुहा०-चेहरा नीला पड़ जाना=भय आदि के कारण चेहरे का रंग उतर जाना।

नीलाम-पुं० [पुर्त्त० लीलाम] चीजें बेचने का वह ढंग जिसमें सबसे अधिक बोली बोलनेवाले (दाम लगानेवाले) आदमी के हाथ माल बेचा जाता है।

नीलिका-स्त्री० [सं०] १ एक रोग जिसमें आँखें तिलमिलाती हैं। २. चोट आदि के कारण शरीर पर पड़ा हुआ नीला दाग या निशान। नील।

नीलिमा-स्त्री० [सं० नीलिमन्] १. नीलापन। २. श्यामता। स्याही।

नीलोत्पल-पुं० [सं०] नीला कमल।

नीलोफर-पुं० [फा०; मि० सं० नीलोत्पल] १ नीला कमल। २. कुई। कुमुद।

नीवँ-स्त्री० दे० 'नींव'।

नीवि-स्त्री० [सं०] १. कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ जो धोती को नीचे खिसकने से रोकने के लिए बाँधी जाती है। २. वह डोरी जिससे स्त्रियाँ लहँगे की गाँठ बाँधती हैं। फुफँदी। फुफ्ती।

नीवी-स्त्री० १. दे० 'नीवि'। २. दे० 'नींव'।

नीसक*-वि० [सं० निःशक्त] कमजोर।

नीहार-पुं० [सं०] १. कुहरा। २. पाला। ३. हिम। बरफ।

नीहारिका-स्त्री० [सं०] आकाश में दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ वह प्रकाश-पुंज जो अँधेरी रात में सफेद धारी की तरह दिखाई देता है।

नुकता-पुं० [अ० नुक़्तः] बिंदु। बिन्दी।

नुकता-चीनी-स्त्री० [फा०] छिद्रान्वेषण। ऐब या दोष निकालना।

नुकती-स्त्री० [फा० नख़ुदी=चने का] बेसन की महीन मीठी बुँदिया।

नुकना*-अ० दे० 'लुकना'।

नुकरा-पुं० [अ० नुकरः] १. चाँदी। २. सफेद रंग का घोड़ा।

नुकसान-पुं० [अ०] १. हानि। क्षति।

मुहा०-नुकसान उठाना=हानि सहना। नुकसान पहुँचाना=किसी की हानि करना। नुकसान भरना=किसी की क्षति की पूर्ति करना।

२. कमी। ३. घाटा। घटी। ४. शारीरिक क्षति। स्वास्थ्य में होनेवाली हानि।

नुकीला-वि० [हिं० नोक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नुकीली] १ जिसमें नोक हो। नोकदार। २. बाँका-तिरछा।

नुक्कड़-पुं० [हिं० नोक] मकान का गली या रास्ते पर आगे की ओर निकला हुआ सिरा या कोना।

नुक्स-पुं० [अ०] दोष। ऐब।

नुचना-अ० हिं० 'नोचना' का अ० रूप।

नुत्फा-पुं० [अ०] १. वीर्य्य। शुक्र। २. संतान। औलाद।

नुनखारा-वि० दे० 'खारा'।

नुनना*-स० दे० 'लुनना'।

नुनाई*-स्त्री० दे० 'लावण्य'।
नुनेरा-पुं० दे० 'नोनिया'।
नुमाइंदा-पुं० [फा०] प्रतिनिधि।
नुमाइश-स्त्री० [फा०] १. प्रदर्शन। दिखावा। २. तड़क-भड़क। ठाट-बाट। ३. दे० 'प्रदर्शनी'।
नुमाइशी-वि० [फा० नुमाइश] १. देखने भर का। दिखौआ। २. देखने योग्य। दर्शनीय। सुन्दर।
नुसखा-पुं० [अ० नुस्खः] १. वह काग़ज़ जिसपर रोगी के लिए औषध और उसकी सेवन विधि लिखी रहती है। २. व्यय का अवसर या योग।
नूतन-वि० [सं०] [भाव० नूतनता] १. नया। नवीन। २. अद्भुत। अनोखा।
नून-पुं० [सं० लवण] नमक। वि० [भाव०* नूनताई] दे० 'न्यून'।
नूपुर-पुं० [सं०] १. पैरों में पहनने का पैंजनी नामक गहना। २. घुँघरू।
नूर-पुं० [अ०] १. ज्योति। प्रकाश। यौ०-नूर का तड़का = प्रातःकाल। नूर का पुतला = परम रूपवान्। २. कांति। शोभा।
मुहा०-नूर बरसना = बहुत अधिक प्रभा या शोभा प्रकट होना।
नृतक*-पुं० दे० 'नर्तक'।
नृत्त-पुं० [सं०] उच्च कोटि का और सु-संस्कृत अभिनय।
नृतना*-अ० = नाचना।
नृत्य-पुं० [सं०] नाच। नर्तन।
नृत्यकी*-स्त्री० दे० 'नर्तकी'।
नृत्यशाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ नृत्य या नाच होता हो। नाच-घर।
नृप(ति)-पुं० [सं०] राजा।
नृशंस-वि० [सं०] [भाव० नृशंसता] १. क्रूर। निर्दय। २. अत्याचारी।
नृसिंह-पुं० [सं०] १. विष्णु का चौथा अवतार जो आधे पुरुष और आधे सिंह के रूप में हुआ था। २. श्रेष्ठ पुरुष।
नृहरि-पुं० [सं०] नृसिंह।
ने-प्रत्य० [सं० प्रत्य० टा=एण] एक विभक्ति जो सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्त्ता का चिह्न है।
नेई*-स्त्री० दे० 'नींव'।
नेक-वि०[फा०][भाव०नेकी]भला। अच्छा। *क्रि० वि० दे० 'तनिक'।
नेक-चलन-वि० [फा० नेक+हि० चलन] [संज्ञा नेक-चलनी] अच्छे चाल-चलन-वाला। सदाचारी।
नेक-नाम-वि० [फा०] [संज्ञा नेक-नामी] जिसका अच्छा नाम हो। कीर्त्तिशाली।
नेक-नीयत-वि० [फा० नेक+अ० नीयत] [भाव०नेक-नीयती] १. अच्छी नीयत या संकल्पवाला। २.उत्तम विचारोंवाला।
नेकी-स्त्री०[फा०] १. भलाई। उपकार। २. सज्जनता। भल-मनसी। यौ०-नेकी-बदी=१. भलाई-बुराई। २. पाप-पुण्य।
नेकु*-वि०, क्रि० वि० दे० तनिक'।
नेग-पुं० [सं० नैयमिक] १. विवाह आदि शुभ अवसरों पर सम्बन्धियों और आश्रितों आदि को कुछ धन आदि देने की प्रथा। २. इस प्रकार दी जानेवाली वस्तु या धन। ३. रीति। प्रथा।
नेग-चार (जोग)-पुं० दे० 'नेग'।
नेगटी*-पुं० [हिं० नेग] नेग या रीति का पालन करनेवाला।
नेगी-पुं० [हिं० नेग] नेग लेने या पाने का अधिकारी।
नेछावर†-स्त्री० दे० 'निछावर'।

नेजा-पुं० [फा०] भाला । बरछा ।
नेजाल*-पुं० दे० 'नेजा' ।
नेठना*-अ० दे० 'नाठना' ।
नेड़े†-क्रि० वि० [सं० निकट] पास ।
नेत-पुं० [सं० नेत्र] मथानी की वह रस्सी जिसे खींचने से वह चलती है ।
पुं० [सं० नियति] १. निर्धारण । ठहराव । २.संकल्प । इरादा । ३ व्यवस्था । प्रबन्ध ।
स्त्री० [देश०] स्त्रियों की चादर । ओढ़नी ।
पुं० [देश०] एक प्रकार का गहना ।
* स्त्री० दे० 'नीयत' ।
नेतक*-स्त्री० [देश०] चुँदरी । चूनर ।
नेता-पुं०[सं० नेतृ] [स्त्री० नेत्री] लोगों को रास्ता दिखाने के लिए उनके आगे चलनेवाला । अगुआ । नायक ।
पुं० [सं० नेत्र] मथानी की रस्सी ।
नेतागिरी-स्त्री० दे० 'नेतृत्व' ।
नेति-पुं० [सं०] एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'इति' या 'अंत' नहीं है और जिसका प्रयोग ईश्वर की महिमा के वर्णन के सम्बन्ध में होता है ।
नेती-स्त्री० [हिं० नेता] मथानी की रस्सी । नेत ।
नेती-धोती-स्त्री० [हिं० नेत+सं० धौति] हठ योग की एक क्रिया जिसमें मुँह के रास्ते पेट में कपड़ा डालकर आँतें साफ की जाती हैं । धौति ।
नेतृत्व-पुं० [सं०] नेता होने का भाव, कार्य या पद । नायकत्व । सरदारी ।
नेत्र-पुं० [सं०] १.आँख । २.दो की संख्या का सूचक शब्द । ३. मथानी की रस्सी ।
नेत्र-जल-पुं० [सं०] आँसू ।
नेपथ्य-पुं० [सं०] अभिनय आदि में रंग मंच के परदे के पीछे का वह स्थान जहाँ नट और नटियाँ वेष बनाती हैं ।
नेपुर*-पुं० दे० 'नूपुर' ।
नेफा-पुं० [फा०] पायजामे, लहँगे, तकिये आदि में वह जगह जिसमें नाड़ा, डोरा या इजारबन्द डाला जाता है ।
नेब*-पुं० दे० 'नायब' ।
नेम-पुं० [सं० नियम] १. बँधी हुई या बराबर होती रहनेवाली बात । नियम । २. रीति । दस्तूर । ३. धार्मिक क्रियाओं का पालन ।
यौ०-नेम-धरम=पूजा-पाठ, देव-दर्शन, व्रत आदि धार्मिक कृत्य ।
नेमत-स्त्री० दे० 'न्यामत' ।
नेमि-स्त्री० [सं०] १. पहिये का चक्कर । २. कूएँ की जगत ।
नेमी-वि० [हिं० नेम] १. नियम का पालन करनेवाला । २. नियमित रूप से पूजा-पाठ आदि धार्मिक कृत्य करनेवाला ।
नेरे†-वि० [हिं० नियर] निकट । पास ।
नेवग*-पुं० दे० 'नेग' ।
नेवज*-पुं० दे० 'नैवेद्य' ।
नेवता-पुं० दे० 'न्योता' ।
नेवना*-अ० [सं० नमन] झुकना ।
नेवर*-पुं० दे० 'नूपुर' ।
†वि० [सं० न+वर=श्रेष्ठ] बुरा । खराब ।
नेवरना*-अ० [सं० निवारण] १. निवारण होना । २. समाप्त होना ।
नेवला-पुं० [सं० नकुल] गिलहरी की तरह का एक मांसाहारी जन्तु जो साँप को खा जाता है ।
नेवाज*-वि० दे० 'निवाज' ।
नेवाना*-स० [सं० नमन] झुकाना ।
नेवारना*-स० दे० 'निवारना' ।
नेवारी-स्त्री० [सं० नेपाली] जूही की तरह का सफेद फूलोंवाला एक पौधा ।

नेसुक*-क्रि०वि०[हिं०नेकु]तनिक। जरा। वि० थोड़ा-सा।

नेस्त-वि० [फा०] जिसका अस्तित्व न हो या न रह गया हो।

यौ०-नेस्त-नाबूद=पूरी तरह सेमें नष्ट-भ्रष्ट।

नेह-पुं० दे० 'स्नेह'।

नेही*-वि० दे० 'स्नेही'।

नै*-स्त्री० दे० 'नय'।

*स्त्री० [सं० नदी] नदी।

स्त्री० [फा०] १. बाँस की नली। २. हुक्के की निगाली। ३. बाँसुरी।

नैऋ त*-वि०, पुं० दे० 'नैर्ऋत'।

क(कु)*-वि०२, क्रि० वि० दे० 'तनिक'।

नैगम-वि० [सं०] १. निगम सम्बन्धी। २. (ग्रन्थ) जिसमें ब्रह्म आदि का विवेचन हो।

नैचा-पुं० [फा० नैचः] हुक्का पीने की एक प्रकार की लचीली नली।

नैन*-अ० [?] सुअवसर। अच्छा मौका।

नैतिक-वि० [सं०] [भाव० नैतिकता] नीति सम्बन्धी। नीति का।

नैत्यिक-वि० [सं०] नित्य होने या किया जानेवाला। नित्य का। जैसे-नैत्यिक कर्म।

नैन*-पुं० दे० 'नयन'।

*पुं० [सं० नवनीत] मक्खन।

नैनूँ-पुं० [सं० नवनीत] मक्खन।

नैपुण्य-पुं० [सं०] निपुणता। दक्षता।

नैमित्तिक-वि० [सं०] जो किसी निमित्त से या कोई विशेष उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किया गया अथवा हुआ हो।

नैया*-स्त्री० [हिं० नाव] नाव। नौका।

नैयायिक-वि० [सं०] न्याय-शास्त्र का ज्ञाता। न्यायवेत्ता।

नैरंतर्य-पुं० = निरंतरता।

नैर*-पुं० [सं० नगर] १. नगर। शहर। नैदेश। जनपद।

नैराश्य-पुं० [सं०] निराश होने का भाव। ना-उम्मेदी।

नैर्ऋत-वि० [सं०] नैर्ऋति सम्बन्धी। पुं० १. राक्षस। २. पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।

नैर्ऋति-स्त्री० [सं०] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा या कोण।

नैर्मल्य-पुं० [सं०] निर्मलता।

नैवेद्य-पुं० [सं०] वह खाद्य पदार्थ जो देवता को चढ़ाया जाता है। भोग।

नैश-वि० [सं०] निशा सम्बन्धी। रात का।

नैष्ठिक-वि० [सं०] १. निष्ठा सम्बन्धी। २. निष्ठा रखनेवाला। ३. धर्म में निष्ठा रखनेवाला।

नैसर्गिक-वि०[सं०] १.निसर्ग या प्रकृति सम्बन्धी। प्राकृतिक। २. स्वाभाविक। (नेचुरल)

नैसा*-वि० [सं० अनिष्ट] बुरा। खराब।

नैसिक(सुक)-वि० [हिं० नेक] थोड़ा।

नैहर-पुं० दे० 'पीहर'।

नोइनी(ई)-स्त्री० [हिं० नोवना] वह रस्सी जो गौ दुहते समय उसके पिछले पैरों में बाँधी जाती है।

नोक-स्त्री० [फा०] [वि० नुकीला] १. अपेक्षाकृत बहुत पतला सिरा। अगला सूक्ष्म भाग। २. आगे की ओर निकला हुआ पतला भाग, सिरा या कोना।

नोक-झोंक-स्त्री० [फा० नोक+हिं० झोंक] १. बनाव-सिंगार। सजावट। २. तेज। दर्प। ३. चुभनेवाली बात। व्यंग्य। ताना। ४. आपस में होनेवाले आक्षेप या दबी हुई प्रतिद्वंद्विता।

नोकना-स० [?] ललचना।

नोखा[1]-वि० दे० 'अनोखा'।

नोच-स्त्री० [हिं० नोचना] नोचने की

क्रिया या भाव ।

नोच-खसोट-स्त्री० [हिं० नोचना+खसोटना] जबरदस्ती नोच या खसोटकर लेना । छीना-झपटी ।

नोचना-स० [सं० लुंचन] १. लगी हुई वस्तु को झटके से तोड़कर अलग करना । २. नाखून या दाँतों आदि से इस प्रकार फाड़ना कि कुछ अंश निकल आवे । ३. किसी को कष्ट देकर चटपट उससे कुछ माँगना या लेना ।

पुं० बाल नोचने या उखाड़ने की चिमटी ।

नोट-पुं० [अं०] १. ध्यान रहने के लिए टाँकने या लिख लेने का काम । २. पत्र । चिट्ठी । ३. टिप्पणी । ४. सरकार का चलाया हुआ वह कागज जिसपर कुछ रुपयों की संख्या छपी रहती है और जो उतने रुपयों के सिक्के के रूप में चलता है ।

नोन-पुं०=नमक ।

नोनचा-पुं० [हिं० नोन] १. नमक मिली हुई बदाम की गिरी । २.नमकीन अचार ।

नोन-हरामी-वि० दे० 'नमक-हराम' ।

नोना-पुं० [सं० लवण] [स्त्री० नोनी] १.वह क्षार जो पुरानी दीवारों या खारवाली जमीन में ऊपर निकल आता है । २. लोनी मिट्टी । ३. शरीफा । सीताफल ।

‡वि० दे० 'नमकीन' ।

स० दे० 'नोवना' ।

नोनिया-पुं० [हिं० नोना] नमक बनाने या निकालनेवाली एक जाति ।

नोर(ल)*-वि० दे० 'नवल' ।

नोवना*-स० [सं० नद्ध] गौ दुहते समय रस्सी से उसके पिछले पैर बाँधना ।

नोहरा-वि० [सं० नोपलभ्य] १. अलभ्य । दुर्लभ । २. विलक्षण । अनोखा ।

नौ-वि० [सं० नव] आठ और एक ।

मुहा०-नौ दो ग्यारह होना=चल देना ।

वि०नौका या जल-सम्बन्धी । जैसे-नौ-सेना

नौकर-पुं० [फा०] [स्त्री० नौकरानी] १. वेतन आदि पर किसी का काम करनेवाला मनुष्य । वैतनिक कर्मचारी । २. सेवक । ३. खिदमतगार ।

नौकर-शाही-स्त्री० [फा० नौकर+शाही] वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार बड़े बड़े राज-कर्मचारियों के हाथ में रहते हैं । (ब्यूरोक्रेसी)

नौकराना-पुं० [हिं० नौकर] नौकरों को मिलनेवाला वेतन, दस्तूरी आदि ।

नौकरी-स्त्री० [फा० नौकर] १. नौकर का काम । सेवा । टहल । खिदमत । २. वह पद या काम जिसके लिए वेतन मिलता हो ।

नौका-स्त्री० [सं०] नाव । किश्ती ।

नौ-गमन-पुं० [सं०] नदी, समुद्र आदि के मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना । जल-यात्रा । (नैविगेशन)

नौगर(गिरही)*-स्त्री० दे० 'नौग्रही' ।

नौग्रही-स्त्री० [हिं० नौ+ग्रह] हाथ पहनने का एक गहना ।

नौछावर†-स्त्री० दे० 'निछावर' ।

नौज-अव्य० [सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज] १. ईश्वर न करे । (अनिच्छा-सूचक) २. न हो । न सही । (उपेक्षा सूचक; स्त्रियाँ)

नौ-जवान-वि० [फा०] नव-युवक ।

नौजी-स्त्री० दे० 'न्योजी' ।

नौटंकी-स्त्री० [देश०] व्रज में होनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध नाटक जिसमें नगाड़े पर चौबोले गाकर अभिनय करते हैं ।

नौतन*-वि० दे० 'नूतन' ।

नौतम*-वि० [सं० नवतम] १. बिल्कुल नया । २. ताजा ।

पुं० [हिं० नवना] नम्रता। विनय।

नौता*-वि०, पुं० दे० 'नौतम'।

नौना*-अ० दे० 'नवना'।

नौबत-स्त्री० [फा०] १. बारी। पारी। २. दशा। हालत। ३ संयोग। ४. वैभव या मंगल-सूचक शहनाई आदि बाजे जो देव-मंदिरों आदि में बजते है। मुहा०-नौबत झड़ना या बजना= १. मंगल-उत्सव होना। २.प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा या वृद्धि होना।

नौबत-खाना-पुं० [फा०] फाटक के ऊपर का वह स्थान जहाँ नौबत बजती है। नक्कारखाना।

नौमि*-[सं० नमामि] मैं नमस्कार करता हूँ।

नौ-मुस्लिम-वि० [फा०नौ+अ०मुस्लिम] जो अभी हाल मे मुसलमान हुआ हो।

नौरंग*-पुं० औरंग(औरंगजेब)का अप०।

नौ-रतन-पुं० दे० 'नवरत्न'। पुं० [सं० नवरत्न] नौ-नगा गहना। स्त्री० एक प्रकार की चटनी।

नौल*-वि० दे० 'नवल'।

नौलखा-वि० [हिं०नौ+लाख] १.जिसका मूल्य नौ लाख हो। २.जड़ाऊ और बहुमूल्य।

नौ-शक्ति-स्त्री० [सं०] राज्य की वह शक्ति जो उसकी नौ-सेना के रूप में होती है। (नेवल फोर्स)

नौसर-पुं०[हिं०नौ+सर=बाजी] १.धूर्तता। चालबाजी। २. जालसाजी।

नौसरा-पुं० [हिं० नौ+सर=लड़ी] नौ लड़ियों का हार।

नौसरिया-वि० [हिं० नौसर] १. धूर्त। चालबाज। २. जालसाज।

नौसादर-पुं० [फा० नौशादर] एक प्रकार का तीक्ष्ण क्षार या नमक।

नौ-सिखुआ-वि० [सं० नव-शिक्षित] जिसने कोई काम अभी हाल में सीखा हो।

नौ-सेना-स्त्री० [सं०] वह सेना जो जहाजों पर रहती और नदी या समुद्र में रहकर युद्ध करती है। (नेवी)

नौहँड़ा-पुं० [सं० नव=नया+हिं० हाँड़ी] मिट्टी की हाँड़ी।

न्यस्त-वि० [सं०] १. रखा या धरा हुआ। २. बैठाया या जमाया हुआ। स्थापित। ३. चुनकर सजाया हुआ। ४. डाला हुआ। फेंका हुआ। ५. छोड़ा हुआ। त्यक्त। ६. न्यास के रूप में या अमानत रखा हुआ। ७. जमा किया हुआ।

न्याउ†-पुं० दे० 'न्याय'।

न्याति*-स्त्री० [सं० ज्ञाति] जाति।

न्याना*-वि० [सं० अज्ञान] ना-समझ।

न्यामत-स्त्री० [अ० निअमत] बहुत अच्छा, बहुमूल्य या अलभ्य पदार्थ।

न्याय-पुं० [सं०] १. उचित या नियम के अनुकूल बात। वाजिब बात। २. किसी व्यवहार या मुकदमे में दोषी और निर्दोष या अधिकारी और अनधिकारी आदि का विचारपूर्वक निर्णय। ३ छः दर्शनों में से एक दर्शन या शास्त्र जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए मतों या विचारों का उचित विवेचन होता है। ४. वह वाक्य जिसका व्यवहार लोक में दृष्टान्त के रूप में होता हो। जैसे-काकतालीय न्याय।

न्यायक*-पुं० दे० 'न्यायकर्त्ता'।

न्यायकर्त्ता-पुं० [सं०] न्याय करने-वाला अधिकारी।

न्यायतः-क्रि० वि० [सं०] १. न्याय के अनुसार। २. ठीक ठीक।

न्याय-परता-स्त्री० [सं०] न्यायी होने

का भाव। न्यायशीलता।

न्याय-मूर्त्ति-पुं० [सं०] किसी प्रान्त के सर्वोच्च या मुख्य अधिकरण या न्यायालय के विचारक या जज की उपाधि। (जस्टिस)

न्याय शुल्क-पुं० [सं०] वह शुल्क जो न्यायालय में कोई प्रार्थनापत्र उपस्थित करने के समय अंकपत्र (स्टाम्प) के रूप में देना पड़ता है। (कोर्ट फी)

न्याय-संगत-वि० [सं०] न्याय की दृष्टि से ठीक।

न्याय-सभा-स्त्री० दे० 'न्यायालय'।

न्यायाधीश-पुं० [सं०] किसी प्रान्त के प्रधान या सर्वोच्च अधिकरण या न्यायालय का विचारक या जज। (जस्टिस)

न्यायालय-पुं० [सं०] वह जगह जहाँ सरकार की ओर से मुकदमों का न्याय होता है। अदालत। कचहरी। (कोर्ट)

न्यायी-पुं० [सं०न्यायिन्] न्याय के अनुसार चलनेवाला। न्यायशील।

न्यायोचित-वि० दे० 'न्याय-संगत'।

न्याय्य-वि० [सं०] न्याय की दृष्टि से ठीक।

न्यारा-वि० [सं० निर्निकट] [स्त्री० न्यारी] १. अलग। दूर। जुदा। २. और कोई। अन्य। ३.निराला। अनोखा।

न्यारिया-पुं० [हिं० न्यारा] जौहरियों या सुनारों के नियार (कूड़ा-करकट) को धोकर सोना-चाँदी निकालनेवाला।

न्याव*-पुं० दे० 'न्याय'।

न्यास-पुं० [सं०] [वि० न्यस्त] १.स्थापन करना। रखना। २. धरोहर। थाती। ३. किसी विशेष कार्य के लिए निकाली या किसी को सौंपी हुई सम्पत्ति या धन। (ट्रस्ट) ४. संन्यास।

न्यास-भंग-पुं० [सं०] १. किसी की सौंपी हुई थाती का दुरुपयोग। २. किसी निश्चय की शर्तों के विरुद्ध कोई काम करना। (ब्रीच ऑफ ट्रस्ट)

न्यून-वि० [सं०] [भाव० न्यूनता] १. कम। थोड़ा। २. घटकर। हलका।

न्योछावर-स्त्री० दे० 'निछावर'।

न्योजी-स्त्री० दे० 'लीची' (फल)। स्त्री०[फा०नेज:] चिलगोजा। नेजा। (मेवा)

न्योतना-स० [हिं० न्योता+ना (प्रत्य०)] किसी को अपने यहाँ बुलाने के लिए न्योता देना। निमंत्रित करना।

न्योतहरी-पुं० [हिं० न्योता] न्योते में आया हुआ आदमी। निमंत्रित व्यक्ति।

न्योता-पुं० [सं० निमंत्रण] १. आनन्द, उत्सव या मंगल-कार्यों आदि में सम्मिलित होने के लिए लोगों को अपने यहाँ बुलाना। बुलावा। निमन्त्रण। २. वह धन जो इष्ट-मित्रों या सम्बन्धियों के यहाँ से निमन्त्रण आने पर भेजा जाता है। ३. भोजन के लिए ब्राह्मण को अपने यहाँ बुलाना।

न्योला-पुं० दे० 'नेवला'।

न्योली-स्त्री० [सं०नली] हठ योग में पेट के नलों को पानी से साफ करने की क्रिया।

न्यौनी*-स्त्री० दे० 'नोहनी'।

न्हाना*-अ० दे० 'नहाना'।

प

प-हिन्दी वर्ण-माला में स्पर्श व्यंजनों के अन्तिम वर्ग का पहला वर्ण। इसका उच्चारण ओठ से होता है; इसलिए यह स्पर्श वर्ण है। शब्दों के अन्त में यह

प्रत्यय के रूप में दो अर्थ देता है; (क) रक्षा या पालन करनेवाला; जैसे-भोखिप; (ख) पीनेवाला; जैसे-मद्यप। संगीत में यह 'पंचम' (स्वर) का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

पंक-पुं० [सं०] कीचड़। कीच।

पंकज-पुं० [सं०] कमल।

पंकजराग-पुं० [सं०] पद्मराग मणि।

पंकरुह-पुं० [सं०] कमल।

पंकिल-वि० [सं०] [स्त्री० पंकिला] १. जिसमें कीचड़ हो। २. मलिन। मैला।

पंक्ति-स्त्री० [सं०] १.ऐसी परम्परा जिसमें एक ही प्रकार की बहुत-सी वस्तुएँ, व्यक्ति या जीव एक दूसरे के बाद एक सीध में हों। श्रेणी। कतार। २. खींची हुई सीधी रेखा। लकीर। ३.सेना में दस दस योद्धाओं की श्रेणी। ४. दस की संख्या। ५. साथ बैठकर भोजन करनेवाले लोग।

पंक्ति-बद्ध-वि० [सं०] पंक्ति या कतार में बँधा, रखा या लगाया हुआ।

पंख-पुं० [सं० पक्ष] पर। डैना।
मुहा०-पंख जमना=१.मृत्यु या विनाश के लक्षण प्रकट होना। २. बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई पड़ना। पंख लगना=गति में बहुत वेग होना।

पंखड़ी-स्त्री० [सं० पक्ष्म] फूलों का वह रंगीन पटल जिसके खिलने या छितराने से फूल का रूप बनता है। पुष्प-दल।

पंखा-पुं० [हिं० पंख] [स्त्री० अल्पा० पंखी] विशेष प्रकारसे बनाया हुआ वह उपकरण जिससे हवा चलाते हैं। बेना।

पंखा-कुली-पुं० वह कुली या नौकर जो पंखा खींचता हो।

पंखी-पुं० [हिं० पंख] पक्षी। चिड़िया। स्त्री०१. पतंगा। फतिंगा। २. पंख। पर। ३. एक प्रकार की बढ़िया ऊनी चादर। स्त्री० [हिं० पंखा] छोटा पंखा।

पँखुड़ा†-पुं० [सं० पक्ष] कंधे और बाँह का जोड़। पखौरा।

पँखुड़ी*-स्त्री० दे० 'पंखड़ी'।

पंगत (ति)-स्त्री० [सं० पंक्ति] १. पंक्ति। कतार। २.एक साथ भोजन करने-वालों की पंक्ति या वर्ग। ३. समाज।

पंगु-वि० [सं०] जो पैरों से न चल सकता हो। लँगड़ा।

पंगुल-वि० [सं० पंगु] पंगु। लँगड़ा।

पंच-पुं०[सं०] १.पाँच की संख्या या अंक। २.समुदाय। समाज। ३.जनता। लोक। ४.कुछ आदमियों का चुना हुआ वह दल जो कोई झगड़ा या मामला निपटाने के लिए नियत हो। न्याय करनेवाला समाज। ५. वे लोग जो फौजदारी के मुकदमे सुनने के समय दौरा जज की सहायता के लिए उसके साथ बैठते हैं।

पंचक-पुं० [सं०] पाँच का समूह। स्त्री० धनिष्ठा से रेवती तक के पाँच नक्षत्र जो अशुभ माने जाते हैं। (फलित ज्योतिष)

पंच-कन्या-स्त्री० [सं०] अहल्या, द्रौपदी कुंती, तारा और मंदोदरी ये पाँच स्त्रियाँ जो सदा कन्या के समान मानी जाती हैं।

पंच-कल्याण-पुं० [सं०] लाल या काले रंग का वह घोड़ा जिसका सिर और पैर सफेद हो।

पंचकोश-पुं० दे० 'पंचक्रोशी'।

पंचक्रोशी-स्त्री० [सं० पंचक्रोश] १. पाँच कोश के घेरे में बसी हुई काशी। २. किसी तीर्थ-स्थान (प्रयाग, काशी आदि) की धार्मिक दृष्टि से होनेवाली परिक्रमा।

पंच-गंगा-स्त्री० [सं०] गंगा, यमुना,

सरस्वती, किरणा और धूतपापा इन पाँच नदियों का समूह या संगम।

पंचगव्य-पुं० [सं०] गौ से प्राप्त होनेवाले ये पाँच द्रव्य-दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र जो बहुत पवित्र माने जाते हैं।

पंच-गौड़-पुं०[सं०] सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल इन पांच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग।

पंचजन्य-पुं०[सं०] वह प्रसिद्ध शंख जिसे श्री कृष्णचन्द्र बजाया करते थे।

पंचतत्व-पुं० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। पंचभूत।

पंचत्व-पुं० [सं०] १. पाँच का भाव। २. मृत्यु। मौत।

पंच-देव-पुं० [सं०] आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी ये पांच देवता।

पंच-द्रविड़-पुं० [सं०] महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़ इन पांच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग।

पंच-नद-पुं० [सं०] १. पंजाब की ये पांच बड़ी नदियां जो सिंधु में गिरती हैं-सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम। २. पंजाब प्रदेश।

पंचनामा-पुं० [हिं० पंच+फा० नामा] १. वह कागज जो वादी और प्रतिवादी अपना झगड़ा निपटाने के लिए पंच चुनते समय लिखते हैं। २. वह कागज जिसपर पंचों ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो।

पंच-पल्लव-पुं०[सं०] आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल के पत्ते।

पंचपात्र-पुं० [सं०] पूजा के काम के लिए गिलास की तरह का एक छोटा बरतन।

पंचभूत-पुं० दे० 'पंचतत्व'।

पंचम-वि०[सं०] [स्त्री० पंचमी] पाँचवाँ। पुं० [सं०] १. सात स्वरों में से पाँचवा स्वर जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है। इसका संक्षिप्त रूप 'प' है। २. रागों में तीसरा राग।

पंच-मकार-पुं० [सं०] वाम-मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंच महापातक-पुं० [सं०] ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का संसर्ग, ये पांच पातक।

पंच महायज्ञ-पुं० [सं०] अध्यापन और संध्यावंदन, पितृतर्पण या पितृयज्ञ, होम या देवयज्ञ, बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ, और अतिथि-पूजन ये पाँच कृत्य जो गृहस्थों को नित्य करने चाहिएँ।

पंचमी-स्त्री० [सं०] १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि। २. द्रौपदी। ३. व्याकरण में अपादान कारक।

पँच-मेल-वि० [हिं० पाँच+मेल] १. जिसमें पांच प्रकार की चीजें मिली हों। २ जिसमें सब प्रकार की चीजें हो।

पंच-मेवा-पुं० [हिं० पाँच+मेवा] बदाम, छुहारा, किशमिश, चिरौंजी और गरी इन पांच मेवों का समूह।

पँचरंग(ा) वि० [हिं० पाँच+रंग] १. पाच रंगों का। २. अनेक रंगों का।

पंच-रत्न-पुं० [सं०] सोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती ये पांचो रत्न।

पंचराशिक-पुं० [सं०] गणित की एक क्रिया जिसमें चार ज्ञात राशियों की सहायता से पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पँच-लड़ा-वि० [हिं० पाँच+लड़] पाँच लड़ों का। जैसे-पँचलड़ा हार।

पंचबाण-पुं० [सं०] १. कामदेव के ये

पाँच बाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्माद । २. कामदेव के पाँच पुष्पबाण—कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल । ३. कामदेव ।

पंचशर-पुं० [सं०] कामदेव ।

पंचांग-पुं० [सं०] १. पाँच अंगोंवाली वस्तु । २.वृक्ष के ये पाँच अंग-जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल । (वैद्यक) ३ वह पुस्तिका जिसमें किसी सम्वत् के वार, तिथि, नक्षत्र योग और करण ब्योरेवार लिखे रहते हों । पत्रा । ४. प्रणाम करने का वह प्रकार जिसमें घुटने, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर आँखें देवता की ओर करके मुँह से 'प्रणाम' कहते हैं ।

पंचांग मास-पुं० [सं०] पहली से अन्तिम तिथि या तारीख तक का वह पूरा महीना जो पंचांग में किसी महीने के अन्तर्गत दिखाया जाता है ।

पंचांग वर्ष-पुं० [सं०] किसी पंचांग में दिखाया हुआ आदि से अन्त तक पूरा वर्ष ।

पंचाग्नि-स्त्री० [सं०] १. अन्वाहार्य्य, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच अग्नियाँ । २. एक प्रकार की तपस्या जिसमें चारो ओर आग सुलगाकर दिन में धूप में बैठा जाता है ।

पंचानन-वि० [सं०] पाँच मुँहोंवाला । पुं० १. शिव । २. सिंह ।

पंचामृत-पुं० [सं०] दूध, दही, घी, चीनी और शहद मिलाकर देवताओं के स्नान के लिए बनाया जानेवाला वह पदार्थ जो पवित्र मानकर पीया जाता है

पंचायत-स्त्री० [सं० पंचायतन] १. किसी विवाद या झगड़े का निपटारा करने के लिए चुने हुए लोगों का समाज या सभा । २. एक साथ बहुत-से लोगों की बकवाद । ३. झगड़ा । विवाद ।

पंचायतन-पुं० [सं०] किसी देवता और उसके साथ के चार देवताओं की मूर्तियों का समूह । जैसे-शिव-पंचायतन, राम-पंचायतन ।

पंचायती-वि० [हिं० पंचायत] १. पंचायत संबंधी । पंचायत का । २.बहुत से या सब लोगों का मिला जुला । साझे का ।

पंचाल-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन देश जो हिमालय और चंबल के बीच गंगा के दोनो ओर था । २. [स्त्री० पंचाली] पंचाल देशवासी । ३. महादेव । शिव ।

पंचाली-स्त्री० [सं०] १.बच्चों के खेलने की पुतली या गुड़िया । २. द्रौपदी ।

पँचौवर*-वि० [हिं० पाँच+सं० आवर्त] जिसकी पाँच तहें की गई हों । पाँच तह या परत किया हुआ । पँचहरा ।

पंछा-पुं० [हिं० पानी+छाला] प्राणियों के शरीर से या पेड़-पौधों के अंगों से निकलनेवाला स्राव ।

पंछी-पुं० [सं० पक्षी] चिड़िया । पक्षी ।

पंज-वि० दे० 'पाँच' ।

पंजक-पुं० [हिं० पंजा] हाथ के पंजे का वह निशान या छापा जो प्रायः मांगलिक अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है।

पंजर-पुं० [सं०] १. शरीर की हड्डियों का ढाचा जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराये रहता है । ठटरी । कंकाल । २. शरीर । देह । ३. पिंजड़ा ।

पँजरना*-अ० दे० 'पजरना' ।

पंजा-पुं० [फा०, मि० सं० पंचक] १. हाथ या पैर की पाँचो उँगलियों का समूह । मुहा०-**पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना**=जी-जान से लगना या तत्पर होना । **पंजे में**=पकड़ या वश में ।

२. पाँच का समूह । गाही । ३. उँगलियों और हथेली का संपुट । ४.दो व्यक्तियों में होनेवाली ऐसे संपुटों की बल-परीक्षा । ५. जूते का अगला भाग, जिसमें उँगलियाँ ढँकी रहती है । ६. पाँचो उँगलियों के आकार का अथवा सादा वह दो पल्लोंवाला उपकरण जिससे कागज-पत्र दबाकर रखे जाते हैं । ७. ताश का वह पत्ता जिसपर पाँच बूटियाँ होती हैं ।

यौ०-छक्का पंजा=दाँव-पेंच । चालबाजी । ८. दे० 'पंजक' ।

पंजिका-स्त्री० [सं०] १.पंचांग । २.पंजी ।

पंजी-स्त्री० [सं०] १.पंचांग । पंजिका । २. हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका । बही । (रजिस्टर) ३. गोलाई में लिपटा हुआ लम्बे कागज का मुट्ठा । (रोल)

पंजीयन-पुं० [सं०] १. किसी लेख या लेखे का पंजी में लिखा जाना । पंजी पर चढ़ाया जाना । २. नाम-सूची मे नाम लिखा या चढ़ाया जाना । (एनरोलमेन्ट)

पँजीरी-स्त्री० [हिं० पाँच+ईरा (प्रत्य०)] आटे को घी में भूनकर बनाया हुआ मीठा चूर्ण । कसार ।

पंडा-पुं० [सं० पंडित] [स्त्री० पंडाइन] किसी तीर्थ या मंदिर में लोगों को देव-दर्शन करानेवाला व्यक्ति ।

पंडाल-पुं० [?] सभा के अधिवेशन या उत्सव के लिए बनाया हुआ बड़ा मंडप ।

पंडित-वि० [सं०] [स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी] १. वह जिसे किसी विषय का बहुत अधिक और अच्छा ज्ञान हो । विद्वान् । २. कुशल । प्रवीण । पुं० १. शास्त्रज्ञ । २. ब्राह्मण ।

पंडिताई-स्त्री०[हिं०पंडित+आई(प्रत्य०)] १. विद्वत्ता । पांडित्य । २. पंडितों का काम या व्यवसाय ।

पंडिताऊ-वि० [हिं० पंडित] पंडितों की तरह या ढंग का । जैसे-पंडिताऊ हिंदी ।

पंडुक-पुं० [सं० पांडु] [स्त्री० पंडुकी] कबूतर की तरह का एक प्रसिद्ध पक्षी । पेंड़की । फाख्ता ।

पँत्यारी*-स्त्री० दे० 'पंक्ति' ।

पंथ-पुं० [सं० पथ] १. मार्ग । रास्ता । राह । २.आचार-व्यवहार का ढंग। रीति । मुहा०-पंथ गहना=१. रास्ता पकड़ना । चलना । २. आचरण ग्रहण करना । किसी के पंथ लगना=१. किसी का अनुयायी होना । २. किसी को तंग करने के लिए उसके पीछे पड़ना । *पंथ सेना=प्रतीक्षा करना । आसरा देखना । ३. धर्म-मार्ग । संप्रदाय । मत ।

पंथकी* पुं० दे० 'पथिक' ।

पंथाई-पुं० दे० 'पंथी' ।

पंथान*-पुं० [सं० पंथ] मार्ग । रास्ता ।

पंथिक*-पुं० दे० 'पथिक' ।

पंथी-पुं० [हिं० पंथ] १. राही । बटोही । पथिक । २. किसी संप्रदाय या पंथ का अनुयायी । जैसे-नानक-पंथी, दादू-पंथी ।

पंद-स्त्री० [फा०] शिक्षा । उपदेश ।

पंप-पुं० [अं०] १. वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचाई जाती है । २. एक प्रकार का जूता ।

पंपा-स्त्री०[सं०] १. दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी । २. इस नदी के किनारे का एक नगर । ३. इस नगर के पास का एक सर या तालाब । (रामायण)

पंपा सर-पुं० दे० 'पंपा' ३ ।

पँवरिया-पुं० दे० 'पौरिया'

पँवरी†-स्त्री० दे० 'ड्योढ़ी'।
स्त्री० [हिं० पाँव] खड़ाऊँ । पाँवरी ।
पँवाड़ा-पुं० [सं० प्रवाद] १. व्यर्थ के विस्तार से कही हुई बात । २. एक प्रकार का देहाती गीत ।
पँवारना†-स०=फेंकना ।
पंसारी-पुं० [सं० पण्यशाली] मिर्च, मसाले आदि बेचनेवाला बनिया ।
पंसा-सार*-पुं० [सं० पाशक+सारि= गोटी] पासे का खेल । चौसर ।
पंसेरी-स्त्री० दे० 'पसेरी' ।
पइठना(सना)*-अ० दे० 'पैठना' ।
पइसार†-पुं० [हिं० पइसना] पैठ । प्रवेश ।
पकड़-स्त्री० [सं० प्रकृष्ट] १. पकड़ने की क्रिया या भाव । ग्रहण । २. पकड़ने का ढंग । ३. लड़ाई या प्रतियोगिता में एक बार आकर परस्पर गुथना । ४.भिड़ंत । हाथा-पाई । ५. वह त्रुटि या सूत्र जिससे किसी बात के वास्तविक दोष या तथ्य का पता लगे ।
पकड़-धकड़-स्त्री० दे० 'धर-पकड़' ।
पकड़ना-स० [सं० प्रकृष्ट] १. कोई चीज इस प्रकार हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके । धरना । थामना । ग्रहण करना । २. (दोषी, अपराधी आदि को) अपने अधिकार या बंधन में लेना । गिरफ्तार करना । ३. ढूँढ निकालना । पता लगाना । ४. किसी बात में आगे बढ़े हुए के बराबर या पास हो जाना । ५. फैलनेवाली वस्तु में लगकर उसमें अपना संचार करना अथवा उसमें संचरित होना । सम्बन्ध होने के कारण फैलना । ६. अपने स्वभाव या वृत्ति के अन्तर्गत करना । ७. आक्रान्त करना । ग्रसना । घेरना । ८. किसी चलनेवाली चीज तक पहुँचना । जैसे-रेल पकड़ना ।
पकड़ाना-स० हिं० 'पकड़ना' का प्रे० ।
पकना-अ० [सं० पक्व] १. फल आदि का पुष्ट होकर खाने के योग्य होना । २. पूर्णता की अवस्था तक पहुँचना । मुहा०-बाल पकना=(वृद्धावस्था के कारण) बाल सफेद होना । ३. आग के ऊपर पहुँचकर गलना, बनना या तैयार होना । पका होना । सीझना । जैसे-रसोई पकना । ४. (फोड़े या घाव में) मवाद आ जाना । पीब से भरना । ५. दृढ़ या पक्का होना ।
पकरना*-स० दे० 'पकड़ना' ।
पकवान-पुं० [सं० पक्वान्न] घी में तला या घी से पकाया हुआ कोई खाद्य पदार्थ । जैसे-मालपूआ, समोसा आदि ।
पकाई-स्त्री० [हिं० पकाना] पकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।
पकाना-स०[हिं० पकना] [प्रे० पकवाना] १. फल आदि को पुष्ट और तैयार करना । २. आग पर रखकर गलाना या तैयार करना । रींधना । सिझाना । ३. फोड़े आदि को किसी उपचार से इस अवस्था में पहुँचाना कि उसमें मवाद आ जाय । ४. पक्का करना ।
पकावन*-पुं० दे० 'पकवान' ।
पकौड़ा-पुं० [हिं० पका+बरी, बड़ी] [स्त्री० अल्पा० पकौड़ी] एक पकवान जो बेसन आदि को छोटे टुकड़ों के रूप में घी या तेल में तलकर बनाया जाता है ।
पक्का-वि० [सं० पक्व] [स्त्री० पक्की] १. अपनी पूरी बाढ़ पर आकर या पुष्ट होकर पका हुआ । पुष्ट । २. जो आग पर पकाया गया हो । ३. जिसमें कोई कोर-कसर या त्रुटि न रह गई हो । ४. जिसमें

से व्यय, खामत या क्रीजम आदि निकल चुकी हो। ४. जिसे अभ्यास हो। अनुभवी। तजरुबेकार। ६.दृढ़। मजबूत। ७. ठहराया हुआ। निश्चित। ८.प्रामाणिक। मुहा०-पक्का कागज=वह कागज जिसपर लिखी हुई बात कानून या नियम से ठीक समझी जाय।
९. जिसका मान प्रामाणिक हो। (नाप या तौल) जैसे-पक्का सेर। १०.न टलनेवाला। अटल।

पक्का चिट्ठा-पुं० आय-व्यय का दोहराया हुआ और ठीक लेखा।

पक्की रसोई-स्त्री० घी के योग से पके या घी में तले हुए खाद्य पदार्थ।

पक्खर*-स्त्री० दे० 'पाखर'।
वि० [सं० पक्व] पक्का। दृढ़।

पक्व-वि० [सं०] [भाव० पक्वता] १. पका हुआ। २. पक्का। दृढ़। ३. परिपुष्ट।

पक्वान्न-पुं० [सं०] १. पका हुआ अन्न। २. दे० 'पकवान'।

पक्वाशय-पुं० [सं०] पेट के अन्दर का वह स्थान जहाँ पहुँचकर अन्न पचता है।

पक्ष-पुं० [सं०] १. किसी विशेष स्थिति से दाहिने या बाएँ पड़नेवाले विस्तार। ओर। पार्श्व। तरफ। २. किसी विषय के दो या अधिक परस्पर विरोधी तत्वों, सिद्धान्तों या दलों में से कोई एक। मुहा०-पक्ष गिरना=तर्क या युक्तियों से किसी पक्ष का अप्रामाणिक सिद्ध होना।
३. वह बात जिसे कोई सिद्ध करना चाहता हो और जिसका किसी ओर से विरोध होता या हो सकता हो। ४. झगड़ा या विवाद करनेवालों में से कोई एक व्यक्ति या दल। (पार्टी)
मुहा०-(किसी का) पक्ष करना= पक्षपात करना। (किसी का) पक्ष लेना=१. (झगड़े में) किसी की ओर होना। २. पक्षपात करना।
५.न्याय या तर्क में वह वस्तु या तत्त्व जिसके विषयमें साध्य की प्रतिज्ञा करते हैं। जैसे-'तेल जलता है' में 'तेल' पक्ष है और उसके सम्बन्ध में साध्य 'जलता है' की प्रतिज्ञा की गई है। ६.सहायकों या सवर्गों का दल। ७. चिड़ियों का डैना। पंख। पर। ८. तीर के पिछले भाग में लगा हुआ पर। ९. चांद्र मास के पंद्रह पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक।

पक्षक-पुं० [सं०] वह पक्ष जिसमें ऐसे लोग हों जो किसी विषय में या किसी कार्य के लिए मिलकर एक हो गये हों। दल। (पार्टी)

पक्षधर-पुं० दे० 'पक्षपाती'।

पक्षपात-पुं०[सं०] औचित्य या न्याय का विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनुरूप होनेवाली प्रवृत्ति या सहानुभूति और उस पक्ष का समर्थन।

पक्षपाती-पुं०[सं०] वह जो किसी के पक्ष का समर्थन या पोषण करे। तरफ़दार।

पक्षाघात-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें शरीर के किसी एक पार्श्व के सब अंग सुन्न और क्रिया-हीन हो जाते हैं। अर्द्धांग रोग।

पक्षिराज-पुं० [सं०] गरुड़।

पक्षी-पुं०[सं०] १.चिड़िया। २.तरफ़दार।

पक्ष्म-पुं० [सं०] [वि० पक्ष्मिल] आँख की बरौनी।

पख-स्त्री० [सं० पक्ष] १. ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बाधक बात या शर्त। अड़ंगा। २. झगड़ा। बखेड़ा। ३. दोष। त्रुटि।

पखड़ी-स्त्री० दे० 'पंखड़ी'।

पखराना-स० हिं० 'पखारना' का प्रे०।
पखरी-स्त्री० दे० 'पाखर'।
पखरैत-पुं० [हिं०पाखर+ऐत (प्रत्य०)] वह पशु जिसपर लोहे की पाखर पड़ी हो।
पखवाड़ा(रा)-पुं० [सं० पक्ष+वार] १. पंद्रह दिनों का समय। २. दे०'पक्ष' १.।
पखान*-पुं० दे० 'पाषाण'।
पखाना†-पुं० [सं० उपाख्यान] कहावत। पुं० दे० 'पाखाना'।
पखारना-स०=धोना।
पखाल-स्त्री० [सं० पय=पानी+खाल] १. बैल के चमड़े की बनी हुई पानी भरने की मशक। २. धौंकनी।
पखाली-पुं० दे० 'भिश्ती'।
पखावज-स्त्री० दे० 'मृदंग'।
पखावजी-पुं० [हिं० पखावज] पखावज या मृदंग बजानेवाला।
पखी(रा)*-पुं० दे० 'पक्षी'।
पखेरू-पुं० [सं० पक्षालु] पक्षी। चिड़िया।
पग-पुं० [सं० पदक] १. पैर। पाँव। २. चलने में एक जगह से पैर उठाकर दूसरी जगह रखना। डग। फाल।
पगडंडी-स्त्री० [हिं० पग+डंडी] जंगलों या खेतों में का वह पतला रास्ता जो लोगों के आने-जाने से बन जाता है।
पगड़ी-स्त्री० [सं० पटक] १. सिर पर लपेटकर बाँधा जानेवाला प्रसिद्ध लंबा कपड़ा। पाग। साफा। उष्णीष।
मुहा०-(किसी से) पगड़ी अटकना= मुकाबला होना। पगड़ी उछालना= बेइज्जती करना। पगड़ी उतारना= लूटना। ठगना। (किसी के सिर) पगड़ी बँधना=१. पद, स्थान या अधिकार मिलना। २. किसी बात का श्रेय या सम्मान प्राप्त होना। (किसी के साथ) पगड़ी बदलना=भाई का नाता जोड़ना।
२. वह धन जो मालिक अपना मकान या दूकान किराये पर देने के समय किराये के अतिरिक्त यों ही ले लेता है। नजराना।
पगतरी†-स्त्री० [हिं० पग+तल] जूता।
पग-दासी-स्त्री० [हिं० पग+दासी] १. जूता। २. खड़ाऊँ।
पगना-अ० [सं० पाक] १. शरबत या शीरे में पागा जाना। २. किसी बात के रस या व्यक्ति के प्रेम से पूर्ण होना।
पगरा*-पुं० दे० 'पग'।
*पुं० [फा० पगाह] प्रभात। तड़का।
पगला-वि०, पुं० दे० 'पागल'।
पगहा†-पुं० दे० 'पघा'।
पगाना-स० [सं० पाक] पगने में प्रवृत्त करना।
पगार*-पुं० [सं०प्राकार] चहार-दीवारी। पुं० [हिं० पग+गारना] १. पैरों से कुचली हुई मिट्टी या गारा। २. वह नाला या नदी जिसमें इतना कम पानी हो कि पैदल चलकर उसे पार कर सकें।
पगिआना*-स० दे० 'पगाना'।
पगिया*-स्त्री० दे० 'पगड़ी' १.।
पगुराना†-अ० [हिं० पागुर] पागुर या जुगाली करना। विशेष दे०'जुगाली'।
पघा-पुं० [सं० प्रग्रह] गौओं-भैंसों के गले में बाँधी जानेवाली मोटी रस्सी। पगहा।
पचकना-अ० दे० 'पिचकना'।
पचड़ा-पुं० [हिं० प्रपंच+ड़ा (प्रत्य०)] १. झंझट। बखेड़ा। पँवाड़ा। प्रपंच। २. वह गीत जो ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं। ३. लावनी की तरह का एक प्रकार का गीत।
पचन-पुं० [सं०] पचने या पकने की

क्रिया या भाव।

पचना-अ०[सं०पचन] १. खाई हुई वस्तु का हजम होकर रस आदि के रूप में परिणत होना। हजम होना। २. समाप्त या नष्ट होना। ३. पराया माल इस प्रकार हाथ में आ जाना कि अपना हो जाय। हजम हो जाना। ४.परिश्रम करके हैरान होना।

मुहा०-पच मरना=किसी काम के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना।

५. एक वस्तु का दूसरी में पूरी तरह से लीन होना। समाना। ६. खपना।

पचहरा-वि० [हिं० पाँच+हरा (प्रत्य०)] १. पाँच परतों या तहोंवाला। २. पाँच बार का। ३. पँचगुना।

पचाना-स० [हिं० पचना] १. 'पचना' का सकर्मक रूप। हजम करना। २. समाप्त, नष्ट या क्षीण करना। ३. पराया माल लेकर हज़म कर जाना। ४. परिश्रम कराके या कष्ट देकर किसी के शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ५. एक वस्तु का दूसरी वस्तु को अपने आप में आत्मसात् या लीन करना।

पचारना*-स० [सं० प्रचारण] लड़ने के लिए ललकारना।

पचासा-पुं० [हिं० पचास] १. एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह। २. वह घंटा जो किसी विकट अवसर पर सब सिपाहियों को थाने में बुलाने के लिए बजाया जाता है।

पचित-वि० [सं० पचित=पचा हुआ] १. पचा हुआ। २.पच्ची किया या जड़ा हुआ।

पचीसी-स्त्री० [हिं० पचीस] १. एक ही प्रकार की २५ वस्तुओं का समूह। २. आयु के प्रारंभिक २५ वर्ष। ३. वह गणना जिसमें सैकड़ा पचीस गाहियों अर्थात् १२५ चीजों का माना जाता है। ४. चौसर का एक प्रकार का खेल जो कौड़ियों से खेला जाता है। ५. चौसर खेलने की बिसात।

पचौनी-स्त्री० [हिं० पचना] पेट के अंदर की वह थैली जिसमें भोजन पचता है।

पच्चड़ (र)-पुं० [सं० पचित या पच्ची] लकड़ी की वह गुल्ली जो काठ की चीजों को कसने के लिए उनमें ठोकी जाती है।

पच्ची-स्त्री० [सं० पचित] १ पचने या पचाने की क्रिया या भाव। जैसे-सिर-पच्ची। २. जड़ाव का एक प्रकार, जिसमें जड़ी जानेवाली वस्तु अच्छी तरह जमकर बैठ जाती है।

पच्चीकारी-स्त्री० [हिं पच्ची+फा० कारी] १. पच्ची करने की क्रिया या भाव। २. पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

पच्छ*-पुं० दे० 'पक्ष'।

पच्छताई*-स्त्री०=पक्षपात।

पच्छिम-पुं०=पश्चिम।

पच्छिराज*-पुं०=गरुड़।

पच्छी*-पुं० [स्त्री०पच्छिनी] दे० 'पक्षी'।

पछड़ना-अ० [हिं० पीछा] १. पछाड़ा या पटका जाना। २. दे० 'पिछड़ना'।

पछताना*-अ० [हिं० पछतावा] अपने किये हुए किसी अनुचित कार्य के संबंध में पीछे से मन में दुःखी या खिन्न होना। पश्चात्ताप करना।

पछतानि*-स्त्री०=पछतावा।

पछतावा-पुं० [सं० पश्चात्ताप] पछताने की क्रिया या भाव। पश्चात्ताप।

पछना-अ० हिं० 'पाछना' का अ०। पुं० १. पाछने का औजार। २. फसद।

पछमन*-क्रि० वि० [हिं० पीछे] पीछे।

पछलगा‡-वि॰ दे॰ 'पिछलगा'।

पछवाँ-वि॰ [सं॰ पश्चिम] पश्चिम का।

पछाँह-पुं॰ [सं॰ पश्चिम] [वि॰ पछाँहियाँ, पछाँही] पच्छिम की ओर का देश।

पछाड़-स्त्री॰ [हिं॰ पछड़ना] १. पछाड़ने या पछड़ने की क्रिया या भाव। २.बे-सुध या मूर्च्छित होकर गिर पड़ना।

मुहा॰-पछाड़ खाना=बे-सुध होकर खड़े खड़े जमीन पर गिर पड़ना।

पछाड़ना-स॰ [हिं॰ पीछे] १. कुश्ती में विपक्षी को जमीन पर पटकना या गिराना। २. प्रतियोगिता में विपक्षी को हराना।

स॰ [सं॰ प्रक्षालन] कपड़ा धोते समय उसे जोर जोर से बार बार पटकना।

पछाननाॐ-स॰ दे॰ 'पहचानना'।

पछावरॐ-स्त्री॰ [देश॰] १. एक प्रकार का शिखरन या शरबत। २ छाछ का बना हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ।

पछिआवर-स्त्री॰ दे॰ 'पछावर'।

पछेली†-स्त्री॰ [हिं॰ पीछे+एली (प्रत्य॰)] हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

पछोड़न-स्त्री॰ [हिं॰ पछोड़ना] अनाज आदि का वह कूड़ा-करकट जो उन्हें पछोड़ने पर निकलता है।

पछोड़ना†-स॰ [सं॰ प्रक्षालन] अनाज के दाने सूप में रखकर उन्हें फटककर साफ करना। फटकना।

पजरनाॐ-अ॰ [सं॰ प्रज्वलन] जलना।

पजावा-पुं॰ [फा॰ पज़ावः] मिट्टी के बरतन या ईंटें पकाने का भट्ठा। आँवाँ।

पजोखा†-पुं॰ [?] मातम-पुरसी।

पटंबरॐ-पुं॰ [सं॰ पाट+अंबर] रेशमी कपड़ा। कौशेय।

पट-पुं॰ [सं॰] १. वस्त्र। कपड़ा। २. आड़ करनेवाली वस्तु। परदा। ३. धातु आदि का वह लम्बा-चौड़ा टुकड़ा या पट्टी जिसपर चित्र या लेख अंकित होता है।

पुं॰ [सं॰ पट्ट] १ दरवाजे के किवाड़।

मुहा॰-पट उघड़ना या खुलना= दर्शन के लिए मंदिर का दरवाज़ा खुलना।

२. सिंहासन। ३. समतल भूमि।

वि॰ भूमि पर पेट रखकर लेटा हुआ। 'चित' का उलटा। औंधा।

मुहा॰-पट पड़ना = मंद पड़ना। न चलना। जैसे-रोजगार पट पड़ना।

क्रि॰ वि॰ 'चट' का अनुकरण। तुरंत।

पटइन-स्त्री॰ [हिं॰ पटवा] 'पटवा' जाति की या गहने गूथनेवाली स्त्री।

पटकन†-स्त्री॰ [हिं॰ पटकना] १. पटकने की क्रिया या भाव। २.तमाचा। ३.छड़ी।

पटकना-स॰ [सं॰ पतन+करण] १ जोर से झोका देते हुए नीचे की ओर गिराना। २. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को जमीन पर गिराना या पछाड़ना।

अ॰ दे॰ 'पचकना'। २ दे॰ 'दरकना'।

पटकनियाँ(नी)-स्त्री॰ दे॰ 'पटकान'।

पटका-पुं॰ [सं॰ पट्टक] वह कपड़ा जो कमर में लपेटकर बाँधते हैं। कमरबंद।

पटकान-स्त्री॰ [हिं॰ पटकना] पटकने, पटके जाने या गिरने की क्रिया या भाव।

पट-चित्र-पुं॰ [सं॰] कपड़े पर बना हुआ ऐसा चित्र जो लपेटकर रखा जा सके।

पटझोलॐ-पुं॰ [हिं॰ पट+झोल] आँचल।

पटतरॐ-पुं॰[सं॰पट्ट+तल] १.समानता। बराबरी। २. उपमा।

ॐवि॰ सम-तल। चौरस।

पटतरनाॐ-अ॰ [हिं॰ पटतर] १. उपमा देना। २. तुलना करना।

पटतारनाॐ-स॰ [हिं॰ पटा+तारना=

अंदाज लगाना] चलाने के लिए अस्त्र या शस्त्र उठाना या खींचना।

स० [हिं० पटतर] ऊँची-नीची जमीन को समतल या चौरस करना।

पटना-अ०[हिं० पट=जमीन की सतह के बराबर] १. गड्ढे आदि का भरकर आस-पास के ऊँचे तल के बराबर हो जाना। २. किसी स्थान में किसी वस्तु का बहुत अधिक मात्रा में इकट्ठा होना। ३. दीवारों पर छत बनना। ४.खेत का सींचा जाना। ५. विचारों या स्वभाव में समानता होने के कारण मेल या निर्वाह होना। बनना। ६. लेन-देन आदि में मूल्य या शर्तें निश्चित होना। ७. (ऋण) चुकना।

पटनी-स्त्री० [हिं० पटना=तै होना] वह जमीन जो इस्तमरारी पट्टे पर मिली हो।

पटपटाना-अ० [हिं० पटकना] १.भूख-प्यास या गरमी आदि से बहुत कष्ट पाना। छटपटाना। २.पटपट शब्द होना। ३. खेद या दुःख करना।

स० पटपट शब्द उत्पन्न करना।

पटपर-वि०[हिं० पट] समतल। चौरस। पुं० लंबा-चौड़ा और उजाड़ स्थान।

पट-बंधक-पुं० [हिं० पटना+सं० बंधक] रेहन का वह प्रकार जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई संपत्ति की आय में से अपना सूद ले लेने के बाद शेष धन मूल ऋण के हिसाब में जमा करता चलता है।

पटबीजना†-पुं० दे० 'जुगनूँ'।

पटरा-पुं० [सं० पटल] [स्त्री० अल्पा० पटरी] १. काठ का अधिक लंबा और कम चौड़ा चौकोर और चौरस टुकड़ा। तख्ता। मुहा०-**पटरा कर देना**=१. मार-काटकर गिरा या बिछा देना। २.चौपट कर देना। २. काठ का पीढ़ा। ३. हेंगा। पाटा।

पटरानी-स्त्री० [सं० पट्ट+रानी] वह रानी जो राजा के साथ पट या सिंहासन पर बैठती हो। पाट-महिषी।

पटरी-स्त्री० [हिं० पटरा] १. छोटा और हलका पटरा।

मुहा०-**पटरी जमना या बैठना**=मन मिलना। पटना।

२. लिखने की तख्ती। पटिया। ३. सड़क के दोनों किनारों के वे भाग जिनपर लोग पैदल चलते हैं। ४.सुनहले या रुपहले तारों से बना हुआ फीता जो कपड़ों पर टाँका जाता है। ५. हाथ मे पहनने की एक प्रकार की चूड़ी। ६. लोहे के वे लंबे समान्तर छड़ जिनपर रेल के पहिये चलते हैं।

पटल-पुं० [सं०] [भाव० पटलता] १. छप्पर। २. आवरण। परदा। ३. परत। तह। ४. पहल। पार्श्व। ५. आँख की भीतरी बनावट के परदे। ६.पटरा। तख्ता। ७. परिच्छेद। अध्याय। ८. पंखड़ी।

पटवा-पुं० [सं० पाट+वाह (प्रत्य०)] [स्त्री० पटइन] १. वह जो गहनों के मनकों या दानों आदि को सूत या रेशम में गूथने या पिरोने का काम करता हो। २. पटसन। पाट।

पटवारी-पुं० [सं० पट्ट+हिं० वार] वह सरकारी अधिकारी जो गाँव की जमीन, उपज और लगान आदि का हिसाब-किताब रखता है।

स्त्री० [सं० पट+वारी (प्रत्य०)] रानियों को कपड़े और गहने पहनानेवाली दासी।

पटवास-पुं० [सं०] १. खेमा। तंबू। २. स्त्रियों का लहँगा।

पटसन-पुं० [सं० पाट+हिं सन] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी,

बोरे, टाट आदि बनते हैं। २. इस पौधे के रेशे। पाट। जूट।

पटह-पुं० [सं०] दुंदुभी। नगाड़ा।

पटहार-पुं० दे० 'पटवा'।

पटा-पुं० [सं० पट्ट] लोहे की वह पट्टी जिससे लोग तलवार का वार और उसका बचाव करना सीखते हैं।

पुं० [सं० पट] पीढ़ा। पटरा।

यौ०-**पटा-फेर**=विवाह की एक रीति जिसमें वर-वधू परस्पर आसन बदलते हैं।

मुहा०-**पटा बाँधना**=राजा का किसी रानी को अपनी पटरानी बनाना।

*पुं० [हिं० पटना] १. सौदा पटने की क्रिया या भाव। २. चौड़ी लकीर। धारी। ३ दे० 'पट्टा'

पटाई*-स्त्री० [हिं० पटना] पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पटाका-पुं० [पट (अनु०)] १. पट या पटाक शब्द। २. ऐसे शब्द से छूटनेवाली गोली के आकार की एक छोटी आतशबाजी। ३.तमाचा। थप्पड़।

पटान-स्त्री० [हिं० पटाना=ऋण चुकाना] ऋण आदि चुकाने या पटाने की क्रिया या भाव।

स्त्री० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। २ वह अंश जो गड्ढे, छत आदि पाटकर उसके ऊपर छत या पाटन के रूप में तैयार किया जाता है।

पटाना-स० [हिं० पट=सम-तल] १. पाटने का काम दूसरे से कराना। २. ऋण चुकाना। ३. सौदा या उसका दाम ठीक करना। ४. अपने अनुकूल करना। *अ० शांत होकर बैठना।

पटापट-क्रि० वि० [अनु० पट] लगातार 'पट' 'पट' शब्द के साथ।

पटाव-पुं० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। २. पाटकर समतल या ऊँचा किया हुआ अंश या स्थान। ३ छत की पाटन।

पटासन-पुं० [सं०] बैठने के लिए कपड़े का बना हुआ आसन।

पटिया-स्त्री० [सं० पट्टिका] १. पत्थर का चौकोर या लंबोतरा चौरस कटा हुआ टुकड़ा। फलक। २. खाट के चौखटे में बगल की लम्बी लकड़ी। पाटी। ३. दे० 'पट्टी'। ४. दे० 'पाटा'।

पटी-स्त्री० [सं०पट] १. कपड़े आदि की लंबी धज्जी। पट्टी। २ कमरबंद। पटका। ३. नाटक का परदा। यवनिका।

पटीलना-स० [हिं० पटाना] १. किसी को इधर-उधर की बातें समझाकर अपने अर्थ-साधन के अनुकूल करना। ढंग पर लाना। २. ठगना। छलना।

पटु-वि० [सं०] [भाव० पटुता] १. प्रवीण। निपुण। कुशल। दक्ष। २. चतुर। चालाक। होशियार।

पटुआ-पुं० [सं० पाट] १. पटसन। २. पटवा।

पटुका(टूका)*-पुं० दे० 'पटका'।

पटेबाज-पुं० [हिं० पटा+फा० बाज़] पटा खेलनेवाला। पटैत।

वि० व्यभिचारी और धूर्त।

पटेल-पुं० [हिं० पट्टा+एल (प्रत्य०)] गुजरात, मध्य प्रदेश आदि में गाँव का नंबरदार या मुखिया।

पटैत-पुं० दे० 'पटेबाज'।

पटोर-पुं० दे० 'पटोल'।

पटोरी-स्त्री० [सं० पट+ओरी (प्रत्य०)] रेशमी साड़ी या धोती।

पटोल-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का

रेशमी कपड़ा। २. परवल।

पटौतन-पुं० [हिं० पटना] ऋण आदि का परिशोध। कर्ज चुकना।

पटौनी-स्त्री० [हिं० पटना] पटने या पाटने की क्रिया या भाव।

पटौहाँ*-पुं० [हिं० पटना] १. पटा हुआ स्थान। पाटन। २. पट-बंधक।

पट्ट(क)-पुं० [सं०] १. पीढ़ा। पाटा। २. पटरी। तख्ती। ३. धातु की वह चिपटी पट्टी जिसपर राजाज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी। ४.किसी वस्तु का ऊपरी चिपटा या चौरस भाग। ५. ढाल। ६ पगड़ी, दुपट्टा आदि वस्त्र। ६. नगर। ७. राज-सिंहासन। ८.तलवार का वार रोकने की ढाल। ९.दे० 'पट्टा'। वि०[सं०]मुख्य। प्रधान। जैसे-पट्ट शिष्य। वि० (अनु०) दे० 'पट'।

पट्टन-पुं० [सं०] नगर।

पट्ट-महिषी-स्त्री० [सं०] पटरानी।

पट्टा-पुं० [सं० पट्ट] १. किसी स्थावर संपत्ति या भूमि के उपभोग का वह अधिकार-पत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को मिलता है। (लीज़) २. कोई अधिकारपत्र। सनद। ३. चमड़े आदि का वह तसमा जो कुत्तों, बिल्लियों आदि के गले में पहनाया जाता है। ४. पीढ़ा। ५. पीछे या दाहिने-बाएँ गिरे और बराबर कटे हुए कुछ लंबे बाल। ६.चमड़े का कमरबंद। पेटी।७.एक प्रकार की तलवार।

पट्टी-स्त्री० [सं० पट्टिका] १. लकड़ी की वह तख्ती या पटरी जिसपर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं। पाटी। पटिया। तख्ती। २. पाठ। सबक। ३ उपदेश। शिक्षा। ४. बुरी नीयत से दी जानेवाली सलाह। ५. धातु, लकड़ी, कागज, कपड़े आदि की लंबी धज्जी। जैसे-पलंग या खाट की पट्टी, घाव पर बाँधने की पट्टी। ६.तिल, दाल आदि को चाशनी में पागकर बनाई जानेवाली एक प्रकार की मिठाई। ७. पंक्ति। कतार। ८. सिर की माँग के दोनों ओर, कंघी से बैठाये हुए बाल जो देखने में पट्टी की तरह जान पड़ते हैं। पाटी। पटिया। ९. किसी संपत्ति या उससे होनेवाली आय का भाग या अंश। हिस्सा। पत्ती।

पट्टीदार-पुं० [हिं० पट्टी+फा० दार] १. वह जिसका किसी संपत्ति या आय में हिस्सा या पट्टी हो। हिस्सेदार। २. बराबर का अधिकारी।

पट्टू-पुं० [हिं० पट्टी] एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

पठमान*-वि०[सं०पठ्यमान] पढ़ने योग्य।

पट्ठा-पुं० [सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] [स्त्री० पठिया] १. जवान। तरुण। पाठा। २. कुश्तीबाज। अखाड़िया। ३. मांस-पेशियों को आपस में अथवा हड्डियों के साथ जोड़नेवाले मोटे तंतु या नसें। स्नायु। ४. लंबा और दलदार मोटा पत्ता। जैसे-घी-कुआर का पट्ठा। ५. एक प्रकार का चौड़ा गोटा।

पठन-पुं० [सं०] [वि० पठनीय] पढ़ना।

पठनेटा-पुं० [हिं० पठान+एटा=बेटा (प्रत्य०)] पठान का लड़का।

पठवना*-स० = भेजना।

पठान-पुं० [पश्तो पख्तून या पुख्ताना] [वि० स्त्री० पठानी] अफगानिस्तान और पश्चिमी सीमान्त प्रदेश आदि में बसनेवाली एक योद्धा मुसलमान जाति।

पठाना*-स० = भेजना।

पठावन†-पुं० [हिं० पठाना] दूत।

पठावनि(नी)-स्त्री० [हिं० पठाना] किसी को कोई चीज या सँदेसा पहुँचाने के लिए कहीं भेजने की क्रिया या भाव।

पठित-वि० [सं०] १. पढ़ा हुआ। जिसे पढ़ चुके हों। (ग्रन्थ, लेख आदि) २. जिसने कुछ पढ़ा हो। पढ़ा-लिखा। शिक्षित। (अशुद्ध प्रयोग)

पठिया-स्त्री० [हिं० पट्ठा+इया (प्रत्य०)] जवान और तगड़ी स्त्री।

पठौनी-स्त्री० दे० 'पठावनि'।

पड़छत्ती-स्त्री० [हिं० पाटना+छत] कमरे या कोठरी के ऊपरी भाग की वह पाटन जिसपर चीज-असबाब रखते हैं। टांड़।

पड़त*-स्त्री० दे० 'पड़ता'।

पड़ता-पुं० [हिं० पड़ना] १. किसी चीज की खरीद, लागत, ढुलाई आदि पर व्यय होनेवाला धन और उसका हिसाब जिसके विचार से उसका मूल्य निश्चित होता है।

मुहा०-**पड़ता खाना, पड़ना या बैठना**=ऐसी स्थिति होना जिसमें लागत, दाम और कुछ लाभ मिल जाय। खर्च और मुनाफा निकल आना। **पड़ता फैलाना या बैठाना**=लागत आदि का हिसाब लगाना।

२. भू-कर या लगान की दर।

पड़ताल-स्त्री० [सं० परितोलन] [क्रि० पड़तालना] १. किसी वस्तु या बात के ठीक होने की जांच। अनुसंधान (चेकिंग) २. पटवारी द्वारा खेतों और उन्हें जोतनेवालों के लेखे की एक प्रकार की जाँच।

पड़ती-स्त्री० [हिं० पड़ना] जोतने-बोने योग्य वह जमीन जो कुछ समय से खाली पड़ी हो, जोती-बोई न गई हो।

पड़ना-अ० [सं० पतन] १. ऊँची जगह से अचानक नीचे आ गिरना। पतित होना। २. दुःख, कष्ट भार आदि ऊपर आना। जैसे-मुसीबत पड़ना।

मुहा०-**(किसी पर) पड़ना**=१. विपत्ति या संकट आना। २. कार्य का भार या उत्तरदायित्व आना।

३. ठहरना। टिकना। ४. विश्राम के लिए लेटना या सोना। आराम करना। ५. बीमार होकर बिस्तर पर रहना। ६. प्राप्त होना। मिलना। ७. आय, लाभ आदि का हिसाब ठीक बैठना। पड़ता बैठना या लागत मिलना। ८. रास्ते में होना। मार्ग में मिलना। जैसे-रास्ते में नदी पड़ना। ९ स्थित या उपस्थित होना।

मुहा०-**बीच में पड़ना**=समझौता कराने या हस्तक्षेप करने के लिए सामने या बीच में आना।

१०. आवश्यकता या गरज होना। जैसे-हमें क्या पड़ी है जो हम बीच में बोलें।

पड़पड़ाना-अ० [अनु०] १. पड़पड़ शब्द होना। २. दे० 'परपराना'। स० 'पड़पड़' शब्द करना।

पड़पोता-पुं० दे० 'परपोता'।

पड़वा-स्त्री० दे० 'प्रतिपदा'।
पुं० (देश०) [स्त्री० पड़िया] भैंस का नर बच्चा।

पड़ाव-पुं० [हिं० पड़ना+आव (प्रत्य०)] १. पैदल यात्रा के समय कहीं बीच में कुछ समय या दिनों के लिए ठहरना। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार यात्री ठहरते हैं।

पड़िया-स्त्री० [हिं० पड़वा] भैंस का मादा बच्चा।

पड़ोस-पुं० [सं० प्रतिवेश या प्रतिवास] १. किसी स्थान के आस-पास का स्थान।

यौ०-**पास-पड़ोस**=समीपवर्ती स्थान।

मुहा०-**पड़ोस करना**=पड़ोस में बसना।

पड़ोसी-पुं० [हिं० पड़ोस] [स्त्री० पड़ोसिन] पड़ोस में रहनेवाला ।

पढ़ंत-स्त्री० दे० 'पढ़ाई' ।

पढ़त-स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. पढ़ने की क्रिया या भाव । पढ़ाई । २. मंत्र ।

पढ़ना-स० [सं० पठन] १.पुस्तक या लेख आदि में लिखी हुई बातें या विषय इस प्रकार देखना कि उनका ज्ञान हो जाय । २.शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने के लिए ग्रंथ आदि कई बार देखना । अध्ययन करना । ३. लेख के शब्दों का उच्चारण करना । बाँचना । ४. किसी को सुनाने के लिए स्मरण-शक्ति से मंत्र, कविता आदि कहना । ५. मंत्र पढ़कर फूँकना । जादू करना । ६. तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाये हुए शब्दों का उच्चारण करना।

पढ़वाना-स० हिं० 'पढ़ना' और 'पढ़ाना' का प्रे० ।

पढ़वैया-वि०[हिं०पढ़ना+वैया (प्रत्य०)] पढ़ने या पढ़ानेवाला ।

पढ़ाई-स्त्री० [हिं० पढ़ना+आई (प्रत्य०)] १ शिक्षा प्राप्त करने के लिए पढ़ने का काम । विद्याभ्यास । पठन । २. पढ़ने का काम, भाव या ढंग । ३ पढ़ने या पढ़ाने के बदले में मिलनेवाला धन ।
स्त्री० [हिं० पढ़ाना+आई (प्रत्य०)] १.पढ़ाने का काम या भाव । अध्यापन । २. पढ़ाने का ढंग । अध्यापन-शैली ।

पढ़ाना-स० [हिं० 'पढ़ना' का प्रे०] १. किसी को पढ़ने या सीखने में प्रवृत्त करना । अध्यापन करना । शिक्षा देना । २.कोई कला या हुनर सिखाना । ३.तोते, मैना, कोयल आदि पक्षियों को मनुष्यों की बोली बोलना सिखाना । ४. शिक्षा देना । सिखाना । समझाना ।

पढ़ैया-पुं० [हिं० पढ़ना] पढ़नेवाला । स्त्री० पढ़ने-पढ़ाने की क्रिया या भाव ।

पण-पुं० [सं०] १. हार-जीत की वह बात या खेल जिसमें बाजी बदी या शर्त्त लगाई जाय । जूआ । द्यूत । २. लेख या ठेके आदि की शर्त्त । (टर्म, कन्डिशन) ३. वह चीज जिसके देने का क़रार या शर्त्त हो । जैसे-किराया, शुल्क, मूल्य आदि । ४. संपत्ति । जायदाद । ५. क्रय-विक्रय की वस्तु । ६. व्यापार । व्यवसाय । ७.प्राचीन काल का ताँबे का एक सिक्का ।

पणाया-स्त्री० [सं०] किसी प्रकार का आदान-प्रदान या लेन-देन । (ट्रैन्-जैक्शन)

पण्य-वि० [सं०] जो खरीदा या बेचा जा सके (माल) ।
पुं० १. सौदा । माल । २. व्यापार । रोजगार । ३. बाजार । हाट । ४. दूकान ।

पण्य द्रव्य-पुं० [सं०] वे वस्तुएँ या पदार्थ जो खरीदने और बेचने के लिए बनते हैं । बिक्री की चीजें । (मर्चेन्डाइज)

पतंग-पुं० [सं०] १. पक्षी । चिड़िया । २. शलभ । टिड्डी । ३. भुनगा । फतिंगा। ४. सूर्य ।
पुं० [सं० पत्रंग] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिससे लाल रंग निकलता है ।
पुं० [सं० पतंग=उड़नेवाला] हवा में उड़नेवाला कागज का एक प्रसिद्ध खिलौना । गुड्डी । कनकौआ ।

पतंगबाज-पुं० [हिं० पतंग+फा० बाज] [भाव० पतंगबाजी] वह जिसे पतंग या गुड्डी उड़ाने का व्यसन हो ।

पतंगम*-पुं० [सं० पतंग] १. पक्षी । चिड़िया । २. फतिंगा । पतंगा ।

पतंगा-पुं० [सं० पतंग] उड़नेवाला

कोई छोटा कीड़ा-मकोड़ा। फतिंगा।

पतंचिका-स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी या ताँत। चिल्ला।

पत*-पुं० [सं० पति] १. पति। खसम। २. मालिक। स्वामी।

स्त्री० [सं० प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठा। इज्जत। यौ०-पत-पानी=प्रतिष्ठा। आबरू। मुहा०-पत उतारना या लेना=बे-इज्जती करना। पत रखना=इज्जत बचाना।

पतछीन*-वि० [हिं० पत्ता+छीन] जिसके पत्ते झड़ गये हों। बिना पत्तों का (वृक्ष)।

पतझड़-स्त्री० [हिं० पत=पत्ता+झड़ना] १. वह ऋतु जिसमें प्रायः पेड़ों की पुरानी पत्तियाँ झड़ जाती और नई निकलती हैं। फागुन और चैत के महीने। २. अवनति-काल।

पतझार†-स्त्री० दे० 'पतझड़'।

पतन-पुं०[सं०] [वि० पतनशील, पतित, पतनीय] १. ऊपर से नीचे आने या गिरने की क्रिया या भाव। गिरना। २. अवनति। अधोगति। ३. मृत्यु। ४. जाति से निकाला जाना। ५. किले, नगर आदि का शत्रु के सैनिकों के हाथ में चला जाना।

पतनोन्मुख-वि० [सं०] १. जो गिरने को हो। २. जिसका पतन या दुर्गति समीप आ रही हो।

पतर*-वि० [सं० पत्र] १. पतला। कृश। २. पत्ता। पर्ण। ३. पत्तल।

पतला-वि० [सं० पात्रट] स्त्री० पतली, भाव० पतलापन] १. कम घेरे, लपेट, मोटाई या चौड़ाईवाला। 'मोटा' का उलटा। २. जिसका घेर या तल स्थूल या मोटा न हो। कृश। ३. जो अधिक दलदार न हो। झीना। बारीक। ४. जिसमें जल का अंश अधिक हो। अधिक तरल। 'गाढ़ा' का उलटा। ५. अशक्त। असमर्थ। यौ०-पतला हाल=निर्धनता और विपत्ति की अवस्था।

पतलून-स्त्री० [अं० पैंटलून] अँगरेजी ढंग का एक प्रकार का पाजामा।

पतवार-स्त्री० [सं० पात्रपाल] नाव या जहाज का वह तिकोना पिछला अंग या उपकरण जो आधा जल में और आधा बाहर होता है और जिसके द्वारा नाव इधर-उधर घुमाई जाती है।

पता-पुं० [सं० प्रत्यय] १. ठिकाना या स्थान सूचित करनेवाली वह बात जिससे किसी तक पहुँच या किसी को पा सकें। यौ०-पता ठिकाना=किसी वस्तु या व्यक्ति का स्थान और उसका परिचय। २. पत्र आदि के ऊपर लिखा हुआ किसी का नाम और रहने का स्थान आदि। (एड्रेस)। ३. अनुसंधान। खोज। टोह। ४. अभिज्ञता। जानकारी। ५. गूढ़ तत्त्व। रहस्य। भेद। पद०-पते की बात=भेद प्रकट करने या वास्तविक स्वरूप बतलानेवाली बात।

पताका-स्त्री० [सं०] १. झंडा। ध्वजा। फरहरा। (मुहावरों के लिए दे० 'झंडा'।) २. वह डंडा जिसमें झंडे का कपड़ा पहनाया रहता है। ध्वज। ३. कागज आदि का वह छोटा टुकड़ा जो किसी बड़े कागज पर उसकी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए लगाया जाता है। (फ्लैग) ४. दस खर्व की संख्या। ५. नाटक का वह स्थल जहाँ एक पात्र कुछ सोचता रहता है और दूसरा पात्र आकर किसी और सम्बन्ध की कोई बात कहने लगता है।

पताकित-वि० [सं०] १. जिसमें

पताका लगी हो। पताका से युक्त। २. (कागज-पत्र) जिसमें विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करने के लिए पताका की तरह का कागज लगा हो। (फ्लैग्ड)

पताकिनी-स्त्री० [सं०] सेना।

पतार*-पुं० १. दे० 'पाताल'।

पुं० [?] जंगल। वन।

पताल-पुं० दे० 'पाताल'।

पतिंग-पुं० दे० 'पतंगा'।

पतिंवरा-वि० स्त्री० [सं०] जो अपना पति स्वयं चुने। स्वयंवरा। (स्त्री)

पति-पुं० [सं०] [स्त्री० पत्नी, भाव० पतित्व] १ मालिक। स्वामी। अधि-पति। २. स्त्री की दृष्टि से उसका विवा-हित पुरुष। दूल्हा। ३.मर्यादा। प्रतिष्ठा।

पतिआना|-अ० दे० 'पतियाना'।

पतिआर*-पुं०[हिं०पतिआना]विश्वास। वि० विश्वसनीय।

पतिकामा-वि० स्त्री० [सं०] पति पाने की कामना करनेवाली स्त्री।

पतित-वि० [सं०] [स्त्री० पतिता, भाव० पतितता] १. नीचे गिरा या आया हुआ। २.बहुत बड़ा पापी। महा-पापी। अति पातकी। ३.जाति से निकाला हुआ। जाति-च्युत। ४. अति नीच।

पतित-उधारन*-वि० [सं० पतित+हिं० उधारना] पतितों का उद्धार करनेवाला।

पतितेस*-पुं० [सं० पतित+ईश] पतितों का सरदार। बहुत बड़ा पतित।

पतित्व-पुं० [स०] पति या मालिक होने का भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व।

पतिनी*-स्त्री० दे० 'पत्नी'।

पतियाना|-अ० [सं० प्रत्यय] किसी की कही हुई बात ठीक मानकर उसपर विश्वास करना।

पतियार|-वि० [हिं० पतियाना] विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय।

पतियारा*-पुं०[हिं०पतियाना]विश्वास।

पतिवती-वि० दे० 'सौभाग्यवती'।

पतिव्रत-पुं० [सं०] पत्नी की अपने पति पर अनन्य प्रीति और भक्ति। पातिव्रत्य।

पतिव्रता-वि० स्त्री० [सं०] (स्त्री) जो अपने पति में अनन्य अनुराग रखती और यथा-विधि उसकी पूरी सेवा करती हो। सती। साध्वी।

पतीजना*-अ० [हिं० प्रतीत] विश्वास या एतबार करना।

पतीला-पुं० [सं० पातिली=हाँडी] [स्त्री० अल्पा० पतीली] ताँबे या पीतल की एक प्रकार की बटलोई।

पतुकी*-स्त्री० दे० 'पतीली'।

पतुरिया-स्त्री० [सं० पातिली] वेश्या।

पतोखा-पुं० [हिं० पत्ता] [स्त्री०अल्पा० पतोखी] १. पत्ते का बना पात्र। दोना। २. पत्तों का बना छोटा छाता। घोघी।

पतोह(हू)-स्त्री०[सं०पुत्रवधू] बेटे की स्त्री।

पतौआ*-पुं० दे० 'पत्ता'।

पत्तन-पुं० [सं०] १. नगर। शहर। २. नगरी। कस्बा। (टाउन)

पत्तन-क्षेत्र-पुं० [सं०] किसी पत्तन या कस्बे और उसके आस-पास का वह क्षेत्र जो सफाई, रोशनी, आरंभिक शिक्षा आदि के लिए एक स्वतंत्र मात्रा या एकाई के रूप में होता है और जिसकी व्यवस्था वहाँ के कुछ निर्वाचित लोगों के हाथ में होती है। (टाउन एरिया)

पत्तर-पुं० [सं० पत्र] धातु को पीटकर बनाया हुआ चिपटा लंबोतरा टुकड़ा। धातु की छोटी चादर या टुकड़ा।

पत्तल-स्त्री० [सं० पत्र] १. पत्तों को

जोड़कर बनाया हुआ वह बड़ा गोलाकार आधार जिसपर खाने के लिए चीजें रखते हैं।
कहा०-जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना = जिससे लाभ या प्राप्ति हो, उसी को हानि पहुँचाना। परम कृतघ्नता करना।
२. पत्तल पर रखी हुई एक आदमी के खाने भर की भोजन-सामग्री।

पत्ता-पुं० [सं० पत्र] [स्त्री० पत्ती] १ पेड़-पाधों में होनेवाला हरे रंग का वह पतला अवयव जो उसकी शाखाओं से निकलता है। पर्ण।
मुहा०-पत्ता खड़कना=खटके या संदेह की बात होना। पत्ता तक न हिलना= १. हवा बिलकुल बंद होना। २. किसी प्रकार की गति, विरोध आदि न होना।
२.कान में पहनने का एक गहना। ३.मोटे कागज का खंड। जैसे-ताश का पत्ता।

पत्ति-पुं० [सं०] १. पैदल सिपाही। प्यादा। पदातिक। २. शूरवीर। योद्धा।

पत्ती-स्त्री० [हिं० पत्ता+ई (प्रत्य०)] १. छोटा पत्ता। २. साझे का अंश। भाग। हिस्सा। ३. फूल की पंखड़ी। दल। ४. भांग। भग। ५. लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ कोई छोटा टुकड़ा।

पत्तीदार-पुं० [हिं० पत्ती+फा० दार] साझीदार। हिस्सेदार।

पत्थ*-पुं० दे० 'पथ्य'।

पत्थर-पुं० [सं० प्रस्तर] [वि० पथरीली, क्रि० पथराना] १. पृथ्वी के स्तर में का वह कठोर प्रसिद्ध पिंड या खंड जो चूने, बालू आदि के जमने से बना होता है। प्रस्तर। शिलाखंड।
पद०-पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय=ऐसा हृदय या मन जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियाँ न हों। पत्थर की लकीर = १. सदा सर्वदा बनी रहनेवाली (वस्तु)। २. बिलकुल निश्चित या पक्की बात।
मुहा०-पत्थर चटाना=औजार आदि पत्थर पर रगड़कर धार तेज करना। पत्थर तले हाथ आना या दबना= किसी भारी संकट में फँस जाना। पत्थर पर दूब जमना=अनहोनी या असंभव बात हो जाना। पत्थर से सिर फोड़ना या मारना=ऐसा प्रयत्न करना जिसमें फल-सिद्धि के बदले उलटे अपनी हानि हो।
२. सड़कों पर लगा हुआ दूरी या नाप बतानेवाला पत्थर। ३.ओला। बिनौली।
मुहा०-पत्थर पड़ना = १. आकाश से ओले गिरना। २. चौपट या नष्ट हो जाना।
यौ०-पत्थर-पानी=आंधी चलना और पानी बरसना। तूफान।
४.हीरा, लाल, पन्ना, नीलम आदि रत्न। ५. कठोर और भारी अथवा गलने, पचने आदि के अयोग्य वस्तु। ६. कुछ नहीं। बिलकुल नहीं। (तिरस्कृत अभाव का सूचक, जैसे-वह पत्थर समझते है।)

पत्थरकला-पुं० दे० 'पथरकला'।

पत्नी-स्त्री० [सं०] विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री। भार्या। सहधर्मिणी। जोरू।

पत्नीव्रत-पुं० [सं०] अपनी विवाहिता स्त्री को छोड़कर और किसी स्त्री से संबंध न रखने का संकल्प, नियम या व्रत।

पत्याना*-अ० दे० 'पतियाना'।

पत्यारी*-स्त्री० [सं०पंक्ति] पंक्ति। पाँत।

पत्र-पुं० [सं०] १. वृक्ष का पत्ता। पत्ती। पर्ण। २. लिखा हुआ कागज़, विशेषतः

वह कागज जिसपर किसी विषय की कोई महत्त्व की बात लिखी हो। ३. चिट्ठी। पत्री। खत। ४.समाचार-पत्र। अखबार। ५. पुस्तक या लेख का कोई पन्ना। पृष्ठ। ६. धातु का पत्तर। ७. दे० 'पत्रक'।

पत्रक-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर स्मृति के लिए या सूचना आदि के रूप में कोई बात लिखी हो। (मेमो, नोट)

पत्रकार-पुं० [सं०] [भाव० पत्रकारिता] १. समाचार-पत्र का संपादक। २. वह जो समाचार-पत्रों में बराबर लेख आदि लिखकर भेजता रहता हो।

पत्रजात-पुं० [सं०] १. किसी विषय से संबंध रखनेवाले पत्रों आदि का समूह। (पेपर्स) २. इस प्रकार के पत्रों की नत्थी। (फाइल)

पत्र-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या बही जिसमें आये हुए पत्रों अथवा उनके उत्तरों का विवरण रहता है। (लेटर बुक)

पत्र-पुष्प-पुं० [सं०] १. सत्कार या पूजा की बहुत साधारण सामग्री। २.सामान्य या तुच्छ उपहार।

पत्र-पेटी-स्त्री० [सं० पत्र+हिं० पेटी] १. वह पेटी या बक्स जिसमें डाक द्वारा बाहर जानेवाले पत्र छोड़े जाते है। २. किसी की वह निजी पेटी या बक्स जिसमें लोग उसके नाम के पत्र छोड़ जाते है। (लेटर बॉक्स)

पत्र-भंग-पुं० [सं०] वे बेल-बूटे या रेखाएँ जो स्त्रियाँ सौंदर्य-वृद्धि के लिए माथे, गाल आदि पर बनाती हैं।

पत्र-वारक-पुं०[सं०]धातु,लकड़ी, शीशे, पत्थर आदि का वह छोटा टुकड़ा जो काग़ज़-पत्रों को उड़ने से बचाने के लिए उनके ऊपर दाब या भार के रूप में रखा जाता है। (पेपर-वेट)

पत्रवाह-पुं० [सं०] १. वह जिसका काम पत्र आदि लोगों के यहाँ पहुँचाना होता है। २. डाक विभाग का वह कर्मचारी जिसका काम घर-घर लोगों के पत्र पहुँचाना होता है। डाकिया। (पियन)

पत्र-वाहक-पुं०[सं०]१.पत्र ले जानेवाला। २. डाकिया। हरकारा।

पत्रवाह पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या बही जिसपर पत्रवाह द्वारा भेजे जानेवाले पत्र चढ़ाये जाते हैं और जिसपर पत्र पाने वाले के हस्ताक्षर होते हैं। (पियन बुक)

पत्र-व्यवहार-पुं० [सं०] १. वह व्यवहार या संबंध जिसमें किसी को पत्र लिखे जाते है और उनके उत्तर आते है। पत्राचार। चिट्ठी-पत्री। २. इस प्रकार भेजे हुए पत्र और आये हुए उनके उत्तर।

पत्रा-पुं० [सं० पत्र] १. तिथिपत्र। जंत्री। पंचांग। २. पृष्ठ। पन्ना। वरक।

पत्राचार-पुं० [सं०] दो व्यक्तियों या पक्षों में चिट्ठियों का आना-जाना। पत्र-व्यवहार।

पत्राली-स्त्री० [सं०] सादे और लिखे जानेवाले चिट्ठी के कागजों का समूह जो प्रायः गड्डी के रूप में होता है। (पैड)

पत्रावली-स्त्री० दे० 'पत्र-भंग'।

पत्रिका-स्त्री० [सं०] १. चिट्ठी। खत। २. नियत समय पर प्रकाशित होनेवाला कोई सामयिक पत्र या पुस्तक।

पत्री-स्त्री० [सं०] १. चिट्ठी। खत। २. कोई छोटा लेख या लिपि-पत्रिका। ३. जन्म-पत्री।

पथ-पुं० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। राह। २. आचरण, व्यवहार आदि की रीति या ढंग।

पुं० दे० 'पथ्य'।

पथगामी-पुं० [सं० पथगामिन्] पथिक।

पथदर्शक (प्रदर्शक)-पुं० [सं०] रास्ता दिखानेवाला। मार्ग-दर्शक।

पथर-कला-पुं० [हि० पत्थर या पथरी+कल] पुरानी चाल की वह बंदूक जो चकमक पत्थर की रगड़ से आग उत्पन्न करके चलाई जाती थी। कड़ाबीन।

पथराना-अ० [हिं० पत्थर + आना (प्रत्य०)] १. पत्थर की तरह कड़ा हो जाना। २. नीरस और कठोर होना। ३. स्तब्ध हो जाना। सजीव न रहना।

पथरी-स्त्री० [हिं० पत्थर+ई (प्रत्य०)] १.पत्थर की बनी छोटी गोल कटोरी। २. एक रोग जिसमें मूत्राशय में पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े जम या बन जाते हैं। ३. चकमक पत्थर। ४. कुरंड पत्थर, जिससे औजार की धार तेज करते हैं।

पथरीला-वि० [हिं०पत्थर+ईला(प्रत्य०)] [स्त्री० पथरीली] पत्थरों से युक्त। (स्थान)

पथरौटा-पुं० [हिं० पत्थर] [स्त्री० अल्पा० पथरौटी] पत्थर का कटोरा।

पथिक-पुं० [सं०] [स्त्री० पथिका] मार्ग चलनेवाला। यात्री। मुसाफिर।

पथी-पुं० [सं० पथिन्] यात्री। पथिक।

पथु*-पुं० [सं० पथ] पथ। मार्ग।

पथेरा-पुं० [हिं० पाथना] १. पाथने का काम करनेवाला। २. कुम्हार।

पथौरा-पुं० [हिं० पाथना] वह स्थान जहाँ कंडे पाथे और रखे जाते हैं।

पथ्य-पुं० [सं०] १.वह जल्दी पचनेवाला भोजन जो रोगी को उपवास की समाप्ति पर दिया जाता है। २. उपयुक्त आहार। मुहा०-**पथ्य से रहना** = स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए संयमपूर्वक रहना।

पद-पुं० [सं०] १. व्यवसाय। काम। २. योग्यता के अनुसार कर्मचारी या कार्यकर्ता का नियत स्थान। (पोस्ट) ३. पैर। पाँव। ४. पैर का निशान। ५. किसी श्लोक या छंद का चतुर्थांश। श्लोक-पाद। ६. कोई विशेष अर्थ रखने-वाला शब्द या शब्द-समूह। (टर्म) ७. उपाधि। ८. ईश्वर-भक्ति संबंधी गीत। भजन। ९.दान के लिए जूते, छाते, कपड़े, आसन, बरतन आदि का समूह।

पदक-पुं० [सं०] १. देवता के पैरों के बनाये हुए चिह्न जिनकी पूजा की जाती है। २. धातु का कुछ विशिष्ट आकार का बनाया हुआ वह छोटा टुकड़ा जो किसी को कोई विशेष अच्छा कार्य करने पर प्रमाण और पुरस्कार रूप में अथवा सम्मानित करने के लिए दिया जाता है। तमगा। (मेडल)

पदचर-पुं० [सं०] पैदल।

पदचार(ण)-पुं० [सं०] १. पैदल चलना। २. घूमना-फिरना। टहलना।

पदचारी-पुं० [सं० पदचारिन्] [स्त्री० पदचारिणी] पैदल चलनेवाला।

पदच्छेद-पुं० [सं०] किसी वाक्य के पद, व्याकरण के विशिष्ट नियमों के अनुसार, अलग अलग करना।

पद-च्युत-वि० [सं०] [भाव० पदच्युति] जो अपने स्थान या पद से हटा दिया गया हो।

पद-तल-पुं० [सं०] पैर का तलवा।

पद-त्याग-पुं० [सं०] अपना पद या अधिकार छोड़ना। (एब्डिकेशन)

पदत्राण-पुं० [सं०] जूता।

पद-दलित-वि० [सं०] १. पैरों से रौंदा हुआ। २. जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

पद नाम-पुं० [सं०] १. वह नाम जो किसी अधिकारी के पद आदि का होता है। जैसे-मजिस्ट्रेट । २. किसी कार्य, संस्था या व्यवहार का वह मुख्य नाम जिससे वह प्रसिद्ध हो ।

पदम*-पुं० दे० 'पद्म' ।

पदमिनी-स्त्री० दे० 'पद्मिनी' ।

पद-मैत्री-स्त्री० [सं०] अनुप्रास ।

पद-योजना-स्त्री० [सं०] कविता में पदों को जोड़ने या बैठाने की क्रिया या भाव ।

पदवी-स्त्री० [सं०] १. वह प्रतिष्ठा-सूचक पद (शब्द-समूह) जो राज्य अथवा किसी मान्य संस्था की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है । उपाधि । खिताब । २. पद । ओहदा । दरजा ।

पदाक्रांत-वि० [सं०] पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ ।

पदाति(क)-पुं० [सं०] १ पैदल चलनेवाला । प्यादा । २. पैदल सिपाही । ३. नौकर । सेवक ।

पदाधिकार-पुं० [सं०] किसी पद या ओहदे पर होने के कारण प्राप्त होनेवाला अधिकार ।

पदाधिकारी-पुं० [सं०] वह जो किसी पद पर नियुक्त हो और जिसे उस पद के सब अधिकार प्राप्त हों । ओहदेदार । अधिकारी ।

पदाना-स० [हिं० 'पादना' का प्रे०] बहुत तंग या परेशान करना ।

पदार्थ-पुं० [सं०] १. शब्द-समूह या पद का अर्थ । २. वह जिसका कुछ नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके । ३. किसी दर्शन में प्रतिपादित वह विषय जिसके संबंध में यह माना जाता हो कि उसका ज्ञान मुक्ति-दायक होता है । ४. पुराणानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । ५. चीज़ । वस्तु ।

पदार्थवाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता है और जिसमें आत्मा अथवा ईश्वर आदि नहीं माने जाते ।

पदार्थ विज्ञान-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें भौतिक पदार्थों और व्यापारों का विवेचन होता है । (फीजिक्स)

पदार्थ विद्या-स्त्री० दे० 'पदार्थ विज्ञान' ।

पदार्पण-पुं० [सं०] कहीं पैर रखने या जाने की क्रिया । (बड़ों के लिए आदरसूचक)

पदावली-स्त्री० [सं०] १. वाक्या की श्रेणी । २. भजनों का संग्रह ।

पदिक-पुं० [सं०] पैदल सेना ।
*पुं० [सं० पदक] १. गले में पहनने का जुगनूँ नाम का गहना । २. हीरा ।
यौ०-पदिक-हार=रत्नहार । मणिमाला ।

पदी*-पुं० [सं० पद] पैदल । प्यादा ।

पदुमिनी*-स्त्री० दे० 'पद्मिनी' ।

पदेन-क्रि० वि० [सं०] किसी पद के अथवा किसी पद पर आरूढ़ होने के अधिकार से । (एक्स-ऑफीशियो)

पदोन्नति-स्त्री० [सं०] अधिकारी या कर्मचारी के पद में होनेवाली उन्नति । वर्तमान पद से ऊँचे पद पर भेजा जाना या पहुँचना । (प्रोमोशन)

पद्धति-स्त्री० [सं०] १. राह । पथ । मार्ग । २. रीति । रस्म । रवाज । ३. प्रणाली । विधि । ढंग ।

पद्म-पुं० [सं०] १. कमल का फूल या पौधा । २. सामुद्रिक के अनुसार पैर के तलवे का एक भाग्य-सूचक चिह्न । ३. विष्णु का एक अस्त्र । ४. गणित में सोलहवें स्थान की संख्या । (१०० नील)

पद्मनाभ-पुं० [सं०] विष्णु।

पद्मराग-पुं० [सं०] मानिक। लाल।

पद्मा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

पद्माकर-पुं० [सं०] वह तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हों।

पद्मासन-पुं०[सं०] योग-साधन में बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

पद्मिनी-स्त्री० [सं०] १. कमलिनी। २.वह जलाशय जिसमें कमल हो। ३. लक्ष्मी। ४. कोक-शास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से एक जो सर्वोत्तम मानी गई है।

पद्य-पुं० [सं०] नियमित मात्राओं या वर्णोंवाली कोई वाक्य-रचना या छन्द। 'गद्य' का उलटा।

पद्यात्मक-वि० [सं०] पद्य के रूप में बना हुआ। छंदोबद्ध।

पधराना-स० [हिं० पधारना] १. आदर-पूर्वक बैठाना। २. प्रतिष्ठित करना।

पधरावनी-स्त्री० [हिं० पधराना] १. किसी देवता की स्थापना। २. किसी को आदर-पूर्वक लाकर अपने यहाँ बैठाना।

पधारना-अ० [हिं० पग + धरना] आदरणीय व्यक्ति का आना या जाना।

पन-पुं०[सं०पण] १.प्रतिज्ञा। २.संकल्प। पुं० [सं० पर्वन्=विशेष अवस्था] आयु के चार भागों में से कोई एक। अवस्था। प्रत्य० भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगनेवाला एक प्रत्यय। जैसे-बचपन।

पन-काल-पुं० [हिं० पानी+अकाल] बहुत वर्षा के कारण पड़नेवाला अकाल।

पनग*-पुं० [स्त्री० पनगिन] दे० 'पन्नग'।

पनघट-पुं० [हिं० पानी+घाट] वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हों।

पनच*-स्त्री० दे० 'प्रत्यंचा'।

पन-चक्की-स्त्री०[हिं०पानी+चक्की] पानी के बहाव के ज़ोर से चलनेवाली चक्की या कल।

पन-डब्बा-पुं० दे० 'पानदान'।

पन-डुब्बा-पुं०[हिं०पानी+डूबना] पानी में गोता लगाकर तल की चीजें निकालने-वाला। गोताखोर।

पन-डुब्बी-स्त्री० [हिं० पानी+डूबना] पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की आधुनिक नाव। (सब मेरीन)

पनपना-अ० [सं० पर्णय=हरा होना] १. नये पौधे का पत्तों से युक्त और हरा-भरा होना। २. नये सिर से अथवा फिर से तन्दुरुस्त, समर्थ या सशक्त होना।

पन-भरा-पुं० दे० 'पनहरा'।

पनरंगा-वि० [हिं० पानी+रंग] [स्त्री० पनरंगी] पानी के रंग का। कुछ मट-मैलापन लिये हुए सफेद।

पनव*-पुं० दे० 'प्रणव'।

पनवाड़ी-पुं० दे० 'तमोली'।

पनवारी-स्त्री० [हिं० पान+बारी] पान के पौधों का भीटा।

पनसारी-पुं० दे० 'पंसारी'।

पनसाल-स्त्री० दे० 'पौसरा'। स्त्री० पानी की गहराई नापने का एक उपकरण।

पनसुइया-स्त्री० [हिं० पानी+सूई] एक प्रकार की छोटी नाव।

पनह*-स्त्री० दे० 'पनाह'।

पनहरा-पुं० [हिं० पानी+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पनहारन, पनहारिन, पनहारी] दूसरों के घर पानी भरने का काम करने-वाला आदमी। पन-भरा।

पनहा-पुं० [सं० परिणाह] १. कपड़े या दीवार की चौड़ाई। २.गूढ़ तात्पर्य। मर्म।

पनहारा-पुं० दे० 'पनहरा'।

पनही-स्त्री० [सं० उपानह] जूता।

पना-पुं० [सं० प्रपानक या पानीय] एक तरह का शरबत जो आम, इमली आदि से बनता है। प्रपानक। पन्ना।

पनाती-पुं० [सं० प्रनप्तृ] [स्त्री० पनातिन] पोते अथवा नाती का पुत्र।

पनाला-पुं० दे० 'परनाला'।

पनासना-स० दे० 'पालना'।

पनाह-स्त्री० [फा०] १. रक्षा। बचाव। मुहा०-(किसी से) पनाह माँगना= किसी से डरते हुए बहुत दूर रहना। २. रक्षा पाने का स्थान। शरण। आड़।

पनिच*-पुं० दे० 'प्रत्यंचा'।

पनिहा-वि० [हिं०पानी+हा (प्रत्य०)] १. पानी में रहनेवाला। २.पानी मिला हुआ। पुं० [?] भेदिया। जासूस।

पनिहार-पुं० दे० 'पनहार'।

पनीर-पुं०[फा०] १. दूध फाड़कर उसका पानी निकाला हुआ अंश। छेना। २.पानी निचोड़ा हुआ दही।

पनीरी-स्त्री० [देश०] १ वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिए लगाये जाते हैं। २. वह क्यारी जिसमें ऐसे पौधे लगाये जाते हैं।

पनीला-वि० दे० 'पनैला'।

पनैला-पुं० [हिं० पनीला=एक प्रकार का सन] एक प्रकार का रंगीन चमकीला कपड़ा। परमटा।

वि० [हिं० पानी] १. जिसमें पानी मिला हो। पनीला। २. जो पानी में रहता या होता हो।

पन्नग-पुं० [सं०] [स्त्री० पन्नगी] साँप। *[हिं० पन्ना] पन्ना। मरकत। (रत्न)

पन्ना-पुं० [सं० पर्ण ?] फीरोजी या हरे रंग का एक प्रसिद्ध रत्न। मरकत।

पुं० [हिं०पान] पृष्ठ। वरक। (पुस्तक का) पुं० दे० 'पना'।

पन्नी-स्त्री०[हिं०पन्ना=पन्ना] राँगे या पीतल का पतला पीटा हुआ पत्तर।

पपड़ी-स्त्री० [हिं० पापड़] [क्रि० पपड़ियाना] [वि०पपड़ीला] १.सूखकर या सिकुड़ने से जगह जगह चिटकी हुई किसी वस्तु की पतली परत। २. मवाद सूख जाने से घाव के ऊपर जमी हुई परत। खुरंड। ३. सोहन पपड़ी नाम की मिठाई।

पपीता-पुं० [मला० पपाया] एक प्रसिद्ध बड़ा पौधा जिसके फल खाये जाते हैं।

पपीलि*-स्त्री० [सं० पिपीलिका] च्यूँटी।

पपीहरा-पुं० दे० 'पपीहा'।

पपीहा-पुं० [पी पी से अनु०] वर्षा और वसन्त ऋतु में सुरीली ध्वनि में बोलने-वाला एक पक्षी। चातक।

पपोटा-पुं० [सं० प्र+पट] आँख के ऊपर की पलक। दगंचल।

पवारना*-स०=फेंकना।

पव्वय*-पुं० दे० 'पर्वत'।

पव्वि*-पुं० दे० 'पवि'।

पमाना*-अ० [?] डींग हाँकना।

पय-पुं० [सं०पयस्] १. दूध। २. पानी।

पयद*-पुं० दे० 'पयोद'।

पयधि*-पुं० दे० 'पयोधि'।

पयनिधि*-पुं० दे० 'पयोनिधि'।

पयस्विनी-स्त्री० [सं०] १. दूध देनेवाली गाय। २. नदी।

पयहारी-पुं० [सं०पयस्+आहारी] केवल दूध पीकर रहनेवाला तपस्वी या साधु।

पयान-पुं० [सं० प्रयाण] गमन। जाना।

पयार(ल)-पुं० [सं० पलाल] धान आदि के दाने झाड़े हुए सूखे डंठल। पुआल।

पयोद-पुं० [सं०] बादल । मेघ ।

पयोधर-पुं० [सं०] १. स्तन । २.बादल। ३. तालाब । ४. पहाड़ ।

पयोधि(निधि)-पुं० [सं०] समुद्र ।

परंच-अव्य०[सं०]१.और भी । २.परंतु ।

परंतु-अव्य० [सं०परं+तु] तो भी । पर । किंतु । लेकिन । मगर ।

परंपरा-स्त्री० [सं०] १. बहुत-सी घटनाओं, बातों या कामों के एक एक करके होने का क्रम । अनुक्रम । पूर्वापर क्रम । २. वह विचार प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में चला आया हो । (ट्रैडिशन) ३. किसी घटना, कार्य, पद आदि का बहुत दिनों से चला आया हुआ क्रम ।

परंपरागत-वि० [सं०] परंपरा से चला आया हुआ ।

पर-वि० [सं०] [भाव० परता, वि० परकीय]१.अपने से भिन्न । गैर । दूसरा । अन्य । और । २. दूसरे का । पराया । ३ पीछे या बाद का । जैसे-परवर्त्ती, परलोक । ४. दूर । अलग । ५. श्रेष्ठ । उप० [सं० प्र] एक उपसर्ग जो सम्बन्ध या रिश्ता बतलानेवाले कुछ शब्दों के पहले लगकर उनके ठीक पहले या ठीक बादवाली पीढ़ी का सूचक होता है । जैसे-पर-दादा या पर-पोता ।

प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर (क) निमग्न, लीन, उद्यत आदि (जैसे-तत्पर, स्वार्थपर आदि) और (ख) पीछे या साथ में लगा हुआ आदि अर्थ सूचित करता है । विशेष दे० 'परक' ।

प्रत्य० [सं० उपरि] सप्तमी या अधिकरण का चिह्न । जैसे-छतपर ।

अव्य० [सं० परम्] १. पश्चात् । पीछे । २. परंतु । लेकिन ।

पुं० [फा०] पक्षी का पंख । डैना । पक्ष । मुहा०-**पर जमना**=किसी में कोई नई अनिष्ट वृत्ति उत्पन्न होना । **पर न मारना**=किसी जगह या किसी के पास न आ सकना ।

परक-प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर 'पीछे या अन्त में लगा हुआ' का अर्थ सूचित करता है । जैसे-विष्णु-परक नामावली=ऐसी नामावली जिसके अन्त में 'विष्णु' या उसका वाचक और कोई शब्द हो ।

पर-कटा*-वि० [फा० पर+हिं० कटना] जिसके पर या पंख कटे हों ।

परकना*-अ० [हिं० परचना] [स० परकाना] १ परचना । हिलना-मिलना । २ अभ्यास पड़ना । चसका लगना ।

परकसना*-अ० [हिं० परकासना] १. जगमगाना । २. प्रकट होना ।

परकाजी-वि० दे० 'परोपकारी' ।

परकार-पुं० [फा०] [क्रि० परकारना] वृत्त या गोलाई खींचने का एक उपकरण । * पुं० दे० 'प्रकार' ।

परकाल-पुं० दे० 'परकार' ।

परकाला-पुं० [फा० परगालः] १. टुकड़ा । खंड । २. चिनगारी । पद०-**आफत का परकाला**=बहुत बड़ा उत्पाती या विकट मनुष्य ।

परकिति*-स्त्री० दे० 'प्रकृति' ।

परकीय-वि० [सं०] दूसरे का । पराया ।

परकीया-स्त्री०[सं०] अपने पति के सिवा दूसरे पुरुष से भी प्रेम करनेवाली स्त्री ।

परकोटा-पुं० [सं० परिकोट] १. रक्षा के लिए चारो ओर बनाई हुई दीवार या

घेरा। २. धुस। बाँध।

परख-स्त्री० [सं० परीक्षा] १. गुण-दोष की ठीक ठीक जाँच। (टेस्ट) २. गुण-दोष का ठीक पता लगानेवाली दृष्टि। पहचान।

परखना-स० [सं० परीक्षण] [प्रे० परखाना] १. गुण-दोष जानने के लिए पूरी जाँच करना। सूक्ष्म परीक्षा करना। २ अच्छे और बुरे की पहचान करना। * स० [हिं० परेखना] प्रतीक्षा करना।

परखैया-पुं०=परखनेवाला।

परगटना*-अ० [हिं०प्रगट] प्रकट होना। स० प्रकट करना।

परगना-पुं०[फा०, मि०सं० परिगण=घर] वह भू-भाग जिसमें बहुत-से गाँव हों।

परगसना*-अ० दे० 'परकसना'।

परगाछा-पुं० [हिं० पर+गाछ] दूसरे पेड़ों पर उगने या आश्रित रहनेवाले एक प्रकार के छोटे पौधे या वनस्पतियाँ।

परगास*-पुं० दे० 'प्रकाश'।

परचत*-स्त्री० दे० 'परिचय'।

परचना-अ० [सं० परिचयन] [स० परचाना] १. किसी के पास रहकर धीरे धीरे उससे हिलना-मिलना। धड़का खुलना। २. चसका लगना।

परचा-पुं० [फा०] १. कागज का टुकड़ा। २.पत्र। चिट्ठी। ३.परीक्षा का प्रश्नपत्र। पुं० [सं० परिचय] १. परिचय। २. परख। जाँच।

परचाव-पुं० [हिं० परचना+आव (प्रत्य०)] १. परचने की क्रिया या भाव। २. हेल-मेल। मेल-जोल।

परचून-पुं० [सं० पर + चूर्ण] आटा, दाल, मसाले आदि वस्तुएँ जो बनिये के यहाँ बिकती हैं।

'**परछत्ती**-स्त्री० [हिं० पर+छत] सामान रखने के लिए घर के अन्दर दीवार से लगाकर बनाई हुई पाटन। टाँड़।

परछन-स्त्री० [सं० परि+अर्चन] [क्रि० परछना] विवाह की एक रीति जिसमें स्त्रियाँ द्वार पर वर के आने के समय उसके ऊपर मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछाईं-स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १. प्रकाश के सामने आने से पीछे की ओर अथवा पीछे की ओर प्रकाश होने पर आगे की ओर पड़ी हुई किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया।

मुहा०-**किसी की परछाईं से डरना या भागना**=किसी के पास जाने तक से डरना।

२. जल, दर्पण आदि में दिखाई पड़नेवाला किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब। अक्स।

परछालना*-स० [सं० प्रक्षालन] धोना।

परजंक*-पुं० दे० 'पर्यंक'।

परजन*-पुं० दे० 'परिजन'।

परजन्य*-पुं० दे० 'पर्जन्य'।

परजरना(ज्वलना)*-अ०[सं०प्रज्वलन] प्रज्वलित होना। सुलगना। दहकना।

परजा-स्त्री० = प्रजा। (रैयत)

पर-जात-स्त्री० [सं० पर+जाति] दूसरी जाति।

वि० दूसरी जाति का।

परजाता-पुं० [सं० पारिजात] एक प्रकार का वृक्ष जिसमें पीली डंठीवाले छोटे सफेद फूल लगते हैं। पारिजात।

परजाय*-पुं० दे० 'पर्याय'।

परजौट-पुं० [हिं०परजा+औट (प्रत्य०)] [वि० परजौटी] घर आदि बनाने के लिए वार्षिक कर या देन पर जमींदार से जमीन लेने की व्यवस्था।

परखाना*-स० [सं० परिक्षयन] ब्याहना।

परतंत्र-वि० [सं०] [भाव० परतंत्रता] पराधीन। पर-वश।

परतः-अव्य० [सं० परतस्] १.दूसरे से। २.पश्चात्। पीछे। ३.और। आगे। परे।

परत-स्त्री० [सं० पत्र] १. सतह पर फैली हुई वस्तु की मोटाई। स्तर। तह। २. कपड़े आदि को लपेटने या मोड़ने पर बननेवाला उसका हर भाग या मोड़। तह।

परतर-वि० [सं०] [भाव० परतरता] बाद या पीछे का।

परतला-पुं० [सं० परितन] कंधे से कमर तक तिरछी पहनी जानेवाली चमड़े या कपड़े की चौड़ी गोलाकार पट्टी।

परता*-पुं० दे० 'पड़ता'।

परतिचा*-स्त्री० दे० 'पतंचिका'।

परतिग्या*-स्त्री० दे० 'प्रतिज्ञा'।

परती-स्त्री० दे० 'पड़ती'।

परतेजना*-स०=छोड़ना।

परत्व-पुं०सं०'पर' का भाव०रूप। परता।

परद*-पुं० दे० 'परदा'।

परदनी*-स्त्री० [सं० परिधान] धोती। स्त्री० [सं० प्रदान] दान-दक्षिणा।

परदा-पुं० [सं०] १. आड़ करने के लिए लटकाया हुआ कपड़ा, चिक आदि। मुहा०-परदा खोलना=छिपी हुई बात या रहस्य प्रकट करना। परदा डालना= छिपाना। आँखों पर परदा पड़ना= साफ बात भी दिखाई न देना।
२.आड़ करनेवाली कोई वस्तु। व्यवधान। ३. आड़। ओट। ४. दुराव। छिपाव। ५. स्त्रियों के बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने की प्रथा।
मुहा०-परदा करना=स्त्री का परदे में रहना और पर पुरुष के सामने न होना।
६. मर्यादा। इज्जत। लाज।
पद०-ढका परदा=१. छिपा हुआ दोष या कलंक। २. बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्यादा।
७. विभाग या आड़ करने के लिए उठाई हुई या मकान की कोई दीवार।

परदाज-पुं० [फा०] [भाव० परदाजी] १. सजाना। २. चित्र आदि के चारो ओर बेल-बूटे बनाना। ३. चित्रों में अभीष्ट रंगत लाने के लिए पास पास महीन विन्दु लगाना।

पर-दादा-पुं०[सं० प्र+हिं० दादा] [स्त्री० परदादी] दादा का बाप। प्रपितामह।

परदा-नशीन-वि० [फा०] परदे में रहनेवाली और पराये मरदों के सामने न आनेवाली (स्त्री)।

पर-देश-पुं० [सं०] [वि० परदेशी] अपने देश से भिन्न, दूसरा देश। विदेश।

परधान*-वि०, पुं० दे० 'प्रधान'। पुं० दे० 'परिधान'।

पर-धाम-पुं० [सं०] वैकुंठ धाम।

परन*-पुं० १.दे० 'प्रण'। २.दे० 'पर्ण'।

परनाला-पुं० [सं० प्रणाली] [स्त्री० अल्पा० परनाली] १. गन्दा पानी बहने की मोरी। पनाला। २.नाबदान। नाला।

परनि*-स्त्री०[हिं०पड़ना] बान। आदत।

परनौत*-स्त्री० दे० 'प्रणाम'।

परपंच*-पुं० दे० 'प्रपंच'।

परपट*-वि०, पुं० दे० 'पटपर'।

परपरा-वि० [अनु०] १. जो परपराता हो। २ परपर शब्द करके टूटनेवाला।

परपराना-अ० [अनु०] [भाव० परपराहट] मिर्च आदि कडुई चीजों का जीभ से या मुँह में लगकर एक प्रकार का तीव्र संवेदन उत्पन्न करना। चुनचुनाना।

पर-पार-पुं० [सं०] दूसरी ओर का तट।

पर-पीड़क-पुं० [सं०] १. दूसरों को दुःख देनेवाला। २. परायी पीड़ा या कष्ट समझनेवाला। (क्व०)

पर-पुरुष-पुं० [सं०] स्त्रियों के लिए अपने पति के अतिरिक्त दूसरे पुरुष।

परपूठा*-पुं० [सं० परिपुष्ट] पक्का।

परपोता-पुं० [सं० प्रपौत्र] पोते का लड़का। पुत्र के पुत्र का बेटा।

परब-पुं० = पर्व।

परबल*-वि० = प्रबल।

पर-वस-वि० [हिं० पर+वश] दूसरे के वश में पड़ा हुआ। परतंत्र। पराधीन।

परबसताई*-स्त्री० = पराधीनता।

परवाल-पुं० १ दे० 'परवाल'। २. दे० 'प्रवाल'।

परबीन*-वि० दे० 'प्रवीण'।

परबोधना*-स० [सं० प्रबोधन] १. जगाना। २.ज्ञान का उपदेश करना। ३. दिलासा या तसल्ली देना।

परब्रह्म-पुं० [सं०] निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म जो जगत से परे है।

परभाइ*-पुं० दे० 'प्रभाव'।

परम-वि० [सं०] [स्त्री० परमा] १. जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो। (एब्सोल्यूट) २. सबसे बढ़कर। उत्कृष्ट। ३. प्रधान। मुख्य। ४. आद्य। आदिम। ५. अत्यन्त।

परम आज्ञा-स्त्री० [सं०] ऐसी आज्ञा जो अन्तिम हो और जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन या फेर-बदल न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट आर्डर)

परम गति-स्त्री० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

परमटा-पुं० दे० 'पनैला'।

परम धाम-पुं० [सं०] वैकुंठ।

परम पद-पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

परम पुरुष-पुं० [सं०] परमात्मा।

परम सत्ता-स्त्री० [सं०] वह सत्ता या शक्ति जो सबसे बढ़कर हो और जिसके ऊपर और कोई सत्ता या शक्ति न हो। (एब्सोल्यूट पॉवर)

परम सत्ताधारी-पुं० [सं०] वह जिसे परम या सबसे बढ़कर सत्ता या अधिकार प्राप्त हो। (सॉवरेन)

परमहंस-पुं० [सं०] १. ज्ञान की परमावस्था तक पहुँचा हुआ संन्यासी। २. परमात्मा।

परमाणु-पुं० [सं०] किसी तत्त्व का वह अत्यन्त सूक्ष्म भाग जिसका और विभाग हो ही न सकता हो। (एटम)

परमात्मा-पुं० [सं० परमात्मन्] ईश्वर।

परमानंद-पुं०[सं०] १.ब्रह्म के साक्षात् या ज्ञान का सुख। ब्रह्मानंद। २. परब्रह्म।

परमान*-पुं० दे० 'प्रमाण'।

परमानना*-स० [सं० प्रमाण] १.प्रमाण मानना। २. स्वीकृत करना।

परमायु-स्त्री० [सं० परमायुस्] मनुष्य के जीवन-काल की चरम सीमा जो १०० वर्ष मानी जाती है।

परमार्थ-पुं० [सं०] [वि० परमार्थी] १. सबसे बढ़कर वस्तु या सत्ता। २. परोपकार। ३. मोक्ष। मुक्ति।

परमिट-पुं० [अं०] कोई विशेष कार्य करने या कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए मिलनेवाला आज्ञापत्र या अधिकारपत्र।

परमिति*-स्त्री० [सं०परम] चरम सीमा। अन्तिम मर्यादा या हद।

परमुख*-वि० [सं० पराङ्मुख] १. विमुख। २.प्रतिकूल आचरण करनेवाला।

परमेश(श्वर)-पुं०[सं०]सृष्टि का स्वामी।

ईश्वर। परमात्मा।

परमेष्ट-वि० [सं० परम+इष्ट] जो परम इष्ट या प्रिय हो।

परमोद*-पुं० दे० 'प्रमोद'।

परमोदना*-स० [सं० प्रबोध] १. दे० 'परबोधना'। २. मीठी मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाना।

परलउ(लय)*-पुं० दे० 'प्रलय'।

परला-वि० [सं० पर=उधर] [स्त्री० परली] उस ओर का। उधर का। मुहा०-परले दरजे या सिरे का=हद दरजे का। अत्यंत।

परलै*-स्त्री० दे० 'प्रलय'।

पर-लोक-पुं० [सं०] शरीर छोड़ने पर आत्मा का प्राप्त होनेवाला स्थान या लोक। (कल्पित) जैसे-स्वर्ग, वैकुंठ आदि। यौ०-परलोक-वास=मृत्यु। परलोक-वासी=मरा हुआ। मृत।

परवरिश-स्त्री० [फा०] पालन-पोषण।

पर-वश-वि० [सं०] [भाव० परवशता] पराधीन। परतंत्र।

परवश्य-वि० दे० 'परवश'।

परवा-स्त्री० [फा०] १. चिंता। फिक्र। २. (किसी की) महत्व, शक्ति आदि का ध्यान। स्त्री० दे० 'प्रतिपदा'।

परवान*-पुं० दे० 'प्रमाण'।

परवानगी-स्त्री० [फा०] अनुमति।

परवानना*-स० दे० 'परमानना'।

परवाना-पुं० [फा०] १. आज्ञापत्र। २. फतिंगा। पतंगा। ३. बरी-चूना आदि नापने का एक बड़ा मान या पात्र।

परवाल-पुं० [हिं०पर=दूसरा+बाल=रोयां] आँख की पलक के अन्दर का वह बाल जिससे आँख में बहुत पीड़ा होती है। *पुं० दे० 'प्रवाल'।

परवास*-पुं० दे० 'प्रवास'।

परवाह-स्त्री० दे० 'परवा'। *पुं० दे० 'प्रवाह'।

परवेश*-पुं० दे० 'परिवेश'।

परशु-पुं० [सं०] युद्ध में काम आनेवाली एक प्रकार की कुल्हाड़ी। तबर।

परस*-पुं० [सं० स्पर्श] [क्रि० परसना] छूने की क्रिया या भाव। स्पर्श। पुं० [सं० परश] पारस पत्थर।

परसना*-स० [सं० स्पर्श] छूना। स० दे० 'परोसना'।

परस-पखान-पुं० दे० 'पारस' (पत्थर)।

पर साल-पद० [सं० पर+फा० साल] १. गत वर्ष। पिछले साल। २.आगामी वर्ष। अगले साल।

परसेद*-पुं० दे० 'प्रस्वेद'।

परसों-अव्य० [सं० परश्वः] १. बीते हुए कल से पहलेवाला दिन। २.आगामी कल के बाद वाला दिन।

परसौहाँ-वि० [सं० स्पर्श] छूनेवाला।

परस्पर-वि० [सं०] एक दूसरे के साथ। आपस में।

परस्व-पुं० [सं०] १. 'पराया' होने का भाव। परायापन। 'निजत्व' का उलटा। २. पराधीनता। परतंत्रता।

परहरना*-स० = त्यागना।

परहेज-पुं० [फा०] [वि० परहेजगार] १. खाने-पीने आदि का संयम। २. दोषों, पापों या बुराइयों से दूर रहना।

परहेलना*-स० [सं० प्रहेलन] अनादर या तिरस्कार करना। अवज्ञा करना।

परांग-भक्षी-पुं० [सं० परांग+भक्षिन्] १.वह जो दूसरों के अंग खाकर रहता हो। २. कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियाँ और कीड़े-मकोड़े आदि जो दूसरे वृक्षों या

जीव-जन्तुओं के शरीर पर रहकर और उनका रस या खून चूसकर अपना निर्वाह करते हैं। जैसे-आकाश-बेल, पिस्सू आदि।

परांठा-पुं०[हिं० पलटना] वह चपाती जो घी लगाकर तवे पर सेंकी जाती है। परौठा।

परा-स्त्री० [सं०] १. चार प्रकार की वाणियों में पहली जो नाद स्वरूप मानी जाती है। २. परमार्थ का ज्ञान करानेवाली विद्या। ब्रह्म विद्या।

पुं० [हिं० पर=पंख ?] पंक्ति। कतार।

पराकाष्ठा-स्त्री० [सं०] चरम सीमा। किसी बात की सीमा या हद।

पराक्रम-पुं० [सं०] [वि० पराक्रमी] १. बल। शक्ति। २ पुरुषार्थ।

पराग-पुं० [सं०] १. फूलों के लंबे केसरों पर जमी हुई धूल या रज। पुष्प-रज। २. नहाने के पहले शरीर में मलने का एक सुगंधित चूर्ण। ३. चंदन। ४. उपराग।

पराग-केसर-पुं० [सं०] फूलों के बीच का केसर या सींका।

परागना*-अ०[सं०उपराग]अनुरक्त होना।

पराङ्मुख-वि० [सं०] १ मुँह फेरे हुए। विमुख। २. उदासीन। ३. विरुद्ध।

पराजय-स्त्री० [सं०] हार जाने की क्रिया या भाव। हार।

पराजित-वि० [सं०] हारा हुआ।

परात-स्त्री० [सं० पात्र] बड़ी थाली।

परात्पर-वि० [सं०] सर्व-श्रेष्ठ।

पुं० १. परमात्मा। २. विष्णु।

पराधीन-वि० [सं०] [भाव०पराधीनता] जो दूसरे के अधीन हो। परतंत्र। परवश।

पराना*-अ० [सं० पलायन] भागना।

परान्न-पुं० [सं०] पराया या दूसरे का दिया हुआ अन्न या भोजन।

पराभव-पुं०[सं०] १. पराजय। हार। २. तिरस्कार। मान-भंग। ३. दूसरे को दबाकर अपने अधीन करना। (सबजुगेशन)

पराभूत-वि० [सं०] १. पराजित। हारा हुआ। २. तिरस्कृत।

परामर्श-पुं० [सं०] १. किसी विषय का विवेचन। २. सलाह। मंत्रणा।

परायण-वि० [सं०] [भाव० परायणता, स्त्री० परायणा] १. गया हुआ। २. लगा हुआ। प्रवृत्त।

पराया-वि० [सं० पर] [स्त्री० पराई] १. दूसरे का। अन्य का। 'अपना' नहीं। २. जो आत्मीय न हो। दूसरा। गैर।

परार*-वि० दे० 'पराया'।

परार्थ-पुं०[सं०] [भाव० परार्थता] दूसरे का उपकार या भलाई। परोपकार।

वि० जो दूसरे के लिए हो।

परालब्ध-स्त्री० दे० प्रारब्ध'।

परावर्तन-पुं० [सं०] [वि० परावर्तित, परावृत] १ फिर अपने स्थान पर आना। लौटना। २. उलटकर फिर ज्यों का त्यों होना। (रिवर्शन)

परावर्ती-वि० [सं०] १. लौटकर फिर अपने स्थान पर आनेवाला। २. फिर से ज्यों का त्यों हो जानेवाला।

परावृत्त-वि० [सं०] [भाव० परावृत्ति] १. लौटा या लौटाया हुआ। २. बदला हुआ। परिवर्तित। ३. भागा हुआ।

परास*-पुं० दे० 'पलाश'।

परास्त-वि०[सं०] हारा हुआ। पराजित।

पराह्न-पुं० [सं०] दोपहर के बाद का समय। तीसरा पहर। अपराह्न।

परि-उप० [सं०] एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें ये अर्थ बढ़ाता है-चारो ओर; जैसे परिक्रमण।

अच्छी तरह ; जैसे परिपूर्ण । अतिशय ; जैसे परिवर्द्धन। पूर्णता ; जैसे परित्याग। दूषण ; जैसे परिहास।

परिकर-पुं० [सं०] १. पर्यंक। पलंग। २. परिवार। ३ समूह। झुंड। ४. अनुचर-वर्ग। ५. कमरबंद। पटका।

परिकलक-पुं० [सं०] १. वह जो परिकलन करता हो। हिसाब लगाने या लेखा ठीक करनेवाला। २. एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से बहुत बड़े हिसाब बहुत सहज में और थोड़े समय में लगाये जाते है। (कैलकुलेटर)

परिकलन-पुं० [सं०] [वि० परिकलित] गिनने या हिसाब लगाने का काम। गणना करना। (कैलकुलेशन)

परिकलित-वि० [सं०] जिसका परिकलन हो चुका हो। लेखा या हिसाब लगाकर ठीक किया हुआ। (कैलकुलेटेड)

परिकल्पना-स्त्री० [सं०] [वि० परिकल्पित] १. जिस बात की बहुत कुछ संभावना हो, उसे पहले ही मान लेना या उसकी कल्पना कर लेना। २. केवल तर्क के लिए कोई बात मान लेना। ३. ऐसी बात मान लेना जो अभी प्रमाणित न हुई हो पर हो सकती हो। (हाइपॉथेसिस) ४. कुछ विशिष्ट आधारों पर कोई बात ठीक मान लेना। (प्रिजम्पशन)

परिक्रम-पुं० [सं०] किसी काम की जाँच या निरीक्षण के लिए जगह जगह जाना या घूमना। दौरा। (टूर)

परिक्रमण-पुं० [सं०] १. किसी काम की देख-रेख के लिए जगह जगह जाना। दौरा करना। २. दे० 'परिक्रमा'।

परिक्रमा-स्त्री० [सं० परिक्रम] १. चारो ओर, विशेषतः देवता या पवित्र स्थान के चारो ओर, घूमना। २. मंदिर या तीर्थ के चारो ओर घूमने के लिए बना हुआ मार्ग।

परिखा-स्त्री० [सं०] खंदक। खाई।

परिगणन-पुं० [सं०] [वि० परिगणित] गणना करना। गिनना।

परिगत-वि० [सं०] चारो ओर से घिरा या घेरा हुआ। २. बीता हुआ। व्यतीत। गत। ३. मरा हुआ। मृत। ४. जाना हुआ। ज्ञात।

परिगृहीत-वि० [सं०] १. ग्रहण किया हुआ। स्वीकृत। २. मिला हुआ। प्राप्त।

परिग्रह-पुं० [सं०] [वि० परिग्राह्य, परिगृहीत] १. दान लेना। प्रतिग्रह। २. पाना। ३. आदरपूर्वक लेना। ४. धन आदि का संग्रह। ५. विवाह। ६. पत्नी। ७ परिवार। बाल-बच्चे।

परिघ-पुं० [सं०] १. भाला। २. घोड़ा। ३ फाटक। ४. घर। ५ तीर।

परिचना*-अ०=परचना।

परिचय-पुं० [सं०] १. जानकारी। अभिज्ञता। २. पहचान। लक्षण। ३. किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गुण-कर्म आदि से सम्बन्ध रखनेवाली सब या कुछ बातें जो किसी को बतलाई जायँ। ४. जान-पहचान।

परिचयपत्र-पुं० [सं०] १ वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय लिखा हो। २. किसी वस्तु या संस्था से संबंध रखनेवाला वह पत्रक या पुस्तिका जिसमें उस वस्तु की सब बातों या संस्था के उद्देश्यों, कार्य-क्षेत्रों और कार्य-प्रणालियों आदि का परिचय या विवरण दिया हो। (मेमोरैन्डम)

परिचर-पुं० [सं०] [स्त्री० परिचरी]

१. सेवक। २. रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचर्या-स्त्री० [सं०] १. सेवा। टहल। २. रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचायक-पुं० [सं०] १. परिचय करानेवाला। २.सूचित करानेवाला। सूचक।

परिचार-पुं० [सं०] सेवा। टहल।

परिचारक-पुं० [स्त्री० परिचारिका] दे० 'परिचर'।

परिचारना*-स० [सं० परिचारण] सेवा या टहल करना।

परिचारिका-स्त्री० [सं०] दासी।

परिचालक-पुं० [सं०] परिचालन करने या चलानेवाला। (कन्डक्टर)

परिचालन-पुं० [सं०] [वि० परिचालित] १. चलाना। २. किसी कार्य के चलते रहने की व्यवस्था करना। ३. हिलाना।

परिचित-वि० [सं०] १. जाना हुआ। ज्ञात। २. जिसका या जिसे परिचय हो। ३. जिससे जान-पहिचान हो।

परिच्छद-पुं० [सं०] १. ऊपर से ढकने का कपड़ा। आच्छादन। २. पहनने के पूरे कपड़े। पोशाक। ३. एक ही तरह के वे कपड़े जो किसी विशेष वर्ग या दल के सब लोगों के पहनने के लिए निर्धारित होते हैं। वर्दी। (यूनिफॉर्म) जैसे-सैनिकों का परिच्छद।

परिच्छन्न-वि० [सं०] १. ढका या छिपा हुआ। २.जो कपड़े पहने हो। ३.स्वच्छ।

परिच्छा*-स्त्री०=परीक्षा।

परिच्छिन्न-वि० [सं०] १. परिमित। सीमित। २. बँटा हुआ। विभक्त।

परिच्छेद-पुं० [सं०] १. खंड करना। विभाजन। २. ग्रंथ का अध्याय। प्रकरण।

परिजन-पुं० [सं०] १. आश्रित लोग। २. परिवार। ३. साथ रहनेवाले लोग या सेवक।

परिज्ञात-वि० [सं०] अच्छी तरह जाना हुआ।

परिज्ञान-पुं० [सं०] पूरा ज्ञान।

परिणत-वि० [सं०] [भाव० परिणति] १ एक रूप से दूसरे रूप में आया हुआ। रूपांतरित। २. पका या पचा हुआ।

परिणति-स्त्री० [सं०] १. रूप में परिवर्तन होना। २. परिपाक। ३. प्रौढ़ता। पुष्टि। ४. समाप्ति। अंत।

परिणय-पुं०[सं०][वि०परिणीत] विवाह।

परिणाम-पुं० [सं०] १. बदलने का भाव या कार्य। २. विकार। रूपान्तर। ३. विकास। वृद्धि। परिपुष्टि। ४. समाप्त होना। बीतना। ५. किसी कार्य के अन्त में उसके फल-स्वरूप होनेवाला कार्य या बात। नतीजा। फल। (रिजल्ट)

परिणाम-दर्शी-वि० [सं० परिणामदर्शिन्] फल या परिणाम का ध्यान रखकर कार्य करनेवाला। दूरदर्शी।

परिणीत-वि० [सं०] १. विवाहित। ब्याहा हुआ। २. समाप्त। पूर्ण।

परितप्त-वि० [सं०] १. तपा हुआ। उत्तप्त। २.जिसे दुःख पहुँचा हो; पीड़ित। ३. परिताप करने या पछतानेवाला।

परिताप-पुं० [सं०] [वि० परितापी] १. गरमी। आँच। २. दुःख। क्लेश। ३. शोक। ४. पश्चात्ताप। पछतावा।

परितुष्ट-वि० [सं०] [भाव० परितुष्टि] १. खूब संतुष्ट। २. प्रसन्न। खुश।

परितृप्त-वि० [सं०] [भाव० परितृप्ति] जिसका अच्छी तरह परितोष हो गया हो। भली भाँति तृप्त।

परितोष-पुं० [सं०] [वि० परितुष्ट] १. किसी काम या बात के ठीक तरह से होने

पर प्रसन्नता और सन्तोष होना। वह सुख जो मन के अनुसार काम होने पर होता है। तुष्टि। सन्तोष। (सैटिस्फैक्शन) २. प्रसन्नता। खुशी।

परितोषण-पुं० [सं०] १. किसी का परितोष करने की क्रिया या भाव। पूरी तरह से सन्तुष्ट करना या होना। २. वह धन जो किसी को संतुष्ट करने या उसका परितोष करने के लिए दिया जाय। (ग्रैटिफिकेशन)

परितोषद-वि० [सं०] परितोष देने या सन्तुष्ट करनेवाला। जिससे परितोष हो।

परितोस*-पुं०=परितोष।

परित्यक्त-वि० [सं०] [स्त्री० परित्यक्ता] त्यागा, छोड़ा या अलग किया हुआ। (अबैन्डन्ड)

परित्याग-पुं० [सं०] [वि० परित्यागी, परित्यक्त] १. छोड़ देना। त्याग देना। २ अपना अधिकार या स्वत्व सदा के लिए और पूरी तरह से छोड़ना। जैसे-पद या राज्य का परित्याग। ३ किसी वस्तु या प्राणी से सदा के लिए संबंध तोड़ लेना। जैसे पत्नी या शिशु का परित्याग।

परित्यागना*-स० [सं० परित्याग] छोड़ देना। त्यागना।

परित्यागी-पुं० [सं०] वह जिसने किसी व्यक्ति, सम्पत्ति या वस्तु का परित्याग कर दिया हो। त्यागने या छोड़ देनेवाला।

परित्याज्य-वि० [सं०] छोड़ देने योग्य।

परित्राण-पुं० [सं०] बचाव। रक्षा।

परित्राता-पुं० [सं० परित्रातृ] परित्राण या रक्षा करनेवाला।

परिदर्शन-पुं० [सं०] १. घूमकर देखना। २. देख-रेख करना। निरीक्षण। ३. न्यायालय में किसी व्यवहार या मुकदमे की होनेवाली सुनवाई। (ट्रायल)

परिधन*-पुं० [सं० परिधान] कमर और जाँघों पर पहनने का कपड़ा। धोती आदि।

परिधान-पुं० [सं०] १.वस्त्र। कपड़ा। २. पहनने के कपड़े। पोशाक। ३.पहनावा।

परिधि-स्त्री० [सं०] १. वृत्त को घेरने-वाली रेखा। २. नियत या नियमित और प्रायः गोलाकार वह मार्ग जिस पर कोई चीज चलती, घूमती या चक्कर लगाती हो। कक्षा। ३ परिधान। ४.दे०'परिवेश'।

परिधिक-वि० [सं०] १ परिधि संबंधी। परिधि का। २ जिसका कार्य-क्षेत्र किसी विशेष परिधि में हो। जैसे-परिधिक निरीक्षक। (सर्किल इन्सपेक्टर)

परिपक्व-वि० [सं०] [भाव० परिपक्वता] १ अच्छी तरह पका या पचा हुआ। २ पूरी तरह से विकसित। प्रौढ़। ३ बहुदर्शी। अनुभवी। ४. निपुण। कुशल। प्रवीण।

परिपत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी संस्था या दल के उद्देश्य, विचार कार्य-प्रणाली या संघटन के मूल नियम अथवा किसी विषय पर विचार या सम्मतियाँ आदि दी गई हों।

परिपाक-पुं० [सं०] १. पकना या पकाया जाना। २. पचना। ३. प्रौढ़ता। पूर्णता। ४. निपुणता। दक्षता।

परिपाटी-स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिल-सिला। २. चली आई हुई प्रणाली या शैली। ३ पद्धति। रीति।

परिपालन-पुं० [सं०] [वि० परिपाल्य परिपालित] १. रक्षा करना। बचाना। २. रक्षा। बचाव।

परिपुष्ट-वि० [सं०] १. जिसका भली भाँति पोषण हुआ हो। २. पूर्ण पुष्ट।

परिपूत-वि० [सं०] १. पवित्र। २. साफ किया हुआ और विशुद्ध।

परिपूरक-वि० [सं०] परिपूर्ण करनेवाला।

परिपूर्ण-वि० [सं०] [वि० परिपूरक, परिपूरित, भाव० परिपूर्णता] १. अच्छी तरह भरा हुआ। २. पूर्ण तृप्त। ३. समाप्त किया हुआ।

परिप्लव-पुं० [सं०] १. तैरना। २. बाढ़। ३. अत्याचार।

परिप्लावित-वि० दे० 'परिप्लुत'।

परिप्लुत-वि० [सं०] १. प्लावित। डूबा हुआ। २. भीगा हुआ। गीला। तर।

परिभावना-स्त्री० [सं०] १ चिन्ता। फिक्र। २. साहित्य में कुतूहल सूचित करनेवाली वह बात जिससे उत्सुकता बढ़े।

परिभाषा-स्त्री० [सं०] १. किसी शब्द या पद का अर्थ या भाव प्रकट करनेवाला स्पष्ट कथन। व्याख्या। (डेफिनेशन) २. वह शब्द जो किसी शास्त्र या विज्ञान में किसी एक कार्य या भाव का सूचक मान लिया गया हो। जैसे-जीव विज्ञान की परिभाषा। (टेकनिकल टर्म) ३. किसी शब्द की वह व्याख्या या स्पष्टीकरण, जिससे उसकी विशेषता और व्याप्ति पूरी तरह से निश्चित या स्पष्ट हो जाय।

परिभाषित-वि० [सं०] जिसकी परिभाषा या व्याख्या की गई हो। (डिफाइन्ड)

परिभ्रमण-पुं० [सं०] १. घूमना-फिरना। २. चारो ओर घूमना। चक्कर लगाना।

परिमल-पुं० [सं०] सुवास। सुगन्ध।

परिमाण-पुं० [सं०] [वि० परिमित, परिमेय] भार, विस्तार, घनत्व आदि का मान। नाप या तौल। मात्रा।

परिमाप-पुं० [सं०] [वि० परिमापक] १. नापने की क्रिया या भाव। २. वह पदार्थ या आदर्श जिससे दूसरे पदार्थों का माप किया जाय। मान दंड। मानक।

परिमार्जन-पुं० [सं०] [वि० परिमार्जित, परिमृज्य] १. माँज या धोकर साफ या ठीक करना। २. दोष, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक करना।

परिमित-वि० [सं०] १. जिसकी नाप-तौल की गई हो। २. जिसकी सीमा, संख्या या विस्तार नियत हो। सीमित। (लिमिटेड) ३. जो न अधिक हो न कम। ठीक या उचित मात्रा में। ४ थोड़ा। कम। जैसे-हमारा ज्ञान बहुत परिमित है।

परिमिति-स्त्री० [सं०] १. नाप, तौल, सीमा आदि। २. किसी क्षेत्र को घेरनेवाली रेखाएँ या उनका परिमाण। ३. मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा।

परिमेय-वि० [सं०] १. जो नापा या तौला जा सके। २. जिसे नापना या तौलना हो।

परिया-पुं० [तामिल परैयान] १. दक्षिण भारत की एक अस्पृश्य जाति। २. अछूत। अस्पृश्य। ३. क्षुद्र। तुच्छ।

परिरंभ(ण)-पुं० [सं०] [वि० परिरंभ्य, परिरंभित, क्रि० * परिरंभना] गले या छाती से लगाकर मिलना। आलिंगन।

परिलेख-पुं० [सं०] १. चित्र का ढाँचा। रेखा-चित्र। खाका। २. चित्र। तसवीर। ३. चित्र अंकित करने की कूँची या कलम। ४. उल्लेख। वर्णन। ५. बड़े अधिकारियों के पास भेजा जानेवाला विवरण। (रिटर्न)

परिलेखना*-स० [सं० परिलेख] कुछ महत्व का समझना या मानना।

परिवर्जन-पुं० [सं०] [वि० परिवर्जनीय, परिवर्जित] मना करना। रोकना।

परिवर्तक-वि० [सं०] १. घूमने-फिरने या चक्कर खानेवाला । २. घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला । ३. परिवर्तन करने या बदलनेवाला ।

परिवर्तन-पुं० [सं०] [वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती] १. घुमाव । चक्कर । २.कुछ घटा-बढ़ाकर रूप बदलना । उलट-फेर । ३ एक चीज के बदले में दूसरी लेना या देना । विनिमय । तबादला ।

परिवर्द्धन-पुं० [सं०] [वि० परिवर्द्धित] संख्या, गुण, तथ्य आदि में विशेष वृद्धि । परिवृद्धि ।

परिवा-स्त्री० दे० 'प्रतिपदा' ।

परिवाद-पुं० [सं०] १. निंदा । अपवाद । २. अधिकारियों के सामने की जानेवाली किसी की शिकायत । (कम्प्लेन्ट)

परिवार-पुं० [सं०] १. आवरण । २. म्यान । कोष । ३. किसी राजा या रईस के साथ उसे घेरकर चलनेवाले लोग । परिषद् । ४. घर के लोग । कुटुंब । ५. वंश । खानदान । ६. बाल-बच्चे । ७ एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग । कुल । जाति ।

परिवृत्त-वि० [सं०] १. उलटा-पलटा हुआ । २. घेरा या घिरा हुआ । पुं० घटना, कार्य आदि का वह संक्षिप्त विवरण जो किसी के सामने उपस्थित किया जाय । विवरण । (स्टेटमेन्ट)

परिवृत्ति-स्त्री० [सं०] १ घुमाव । चक्कर । २. घेरा । वेष्टन । ३. विनिमय । ४. समाप्ति । अंत । ५. दोहराने या फिर से करने की क्रिया या भाव । ६. किसी के किये हुए काम को देखकर उसके अनुसार वैसा ही और कोई काम करना ।

परिवेश-पुं० [सं०] (हलकी बदली में दिखाई देनेवाला) सूर्य या चन्द्रमा के चारो ओर का घेरा । मंडल ।

परिवेष(ण)-पुं० [सं०] [वि० परिवेष्टव्य, परिवेष्य] १. भोजन परोसना । २. घेरा। परिधि । ३. सूर्य या चंद्रमा के चारो ओर का मंडप । प्राचीर । ४. परकोटा ।

परिवेष्टन-पुं० [सं०] [वि० परवेष्टित] १. चारो ओर से घेरना । २. आच्छादन । ३. परिधि । घेरा ।

परिव्यय-पुं० [सं०] १.मूल्य । २ शुल्क । ३.पारिश्रमिक । ४ भाड़े आदि के रूप में होनेवाला वह व्यय जो किसी से लिया या किसी को दिया जाय । (चार्ज)

परिव्ययनीय-वि० [सं०] जो परिव्यय के रूप में किसी से लिया या किसी को दिया जा सके । (चार्जेबुल)

परिव्रज्या-स्त्री० [सं०] १. इधर उधर घूमना । २. तपस्या । ३. संसार से विरक्त होकर भिक्षुक की तरह जीवन बिताना ।

परिव्राज(क)-पुं० [सं०] १. सदा भ्रमण करता रहनेवाला संन्यासी । २. संन्यासी । यती । ३. परमहंस ।

परिशिष्ट-वि० [सं०] बचा हुआ । पुं० [सं०] पुस्तक, लेख आदि का वह अन्तिम भाग जिसमें वे आवश्यक या उपयोगी बातें रहती हैं जो पहले अपने स्थान पर न आ सकी हों । (एपेंडिक्स)

परिशीलन-पुं० [सं०] [वि० परिशीलित] खूब सोचते-समझते हुए पढ़ना । मनन-पूर्वक किया जानेवाला अध्ययन ।

परिशुद्ध-वि० [सं०] [भाव० परिशुद्धता] बिलकुल ठीक और पूरा । जिसमें कुछ भी कमी-बेशी या भूल आदि न हो ।(एक्युरेट)

परिशोध(न)-पुं० [सं०] [वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह

साफ या शुद्ध करना। २. ऋण या देन चुकाना। चुकती। (रि-पेमेन्ट)

परिश्रम-पुं० [सं०] १. ऐसा काम जिसे करते करते थकावट आने लगे। आयास। श्रम। मेहनत। (लेबर) २. थकावट।

परिश्रमी-वि० [सं० परिश्रमिन्] बहुत परिश्रम करनेवाला। मेहनती।

परिश्रांत-वि० [सं०] थका हुआ।

परिषद्-स्त्री० [सं०] १ विद्वान् ब्राह्मणों की वह सर्व-मान्य सभा जो प्राचीन काल में राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था। २. सभा। समाज। ३ चुने हुए या नियुक्त किये हुए सदस्यों की सभा। (काउन्सिल)

परिषद्-पुं० [सं०] १. दे० 'परिषद्'। २. सदस्य। सभासद। ३. मुसाहब।

परिष्करण-पुं० [सं०] १. स्वच्छ या शुद्ध करना। २. दोष या त्रुटियाँ दूर करके ठीक करना। (मॉडिफिकेशन)

परिष्कार-पुं० [सं०] १ संस्कार। शुद्धि। २. स्वच्छता। सफाई। ३ सजावट। सिंगार।

परिष्कृत-वि० [सं०] १. जिसका परिष्करण हुआ हो। २. सुधारा हुआ। ३. साफ या शुद्ध किया हुआ। ४. सँवारा या सजाया हुआ।

परिसंख्या-स्त्री० [सं०] १. गणना। गिनती। २. एक अर्थालंकार जिसमें कोई बात वैसी ही किसी दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से वर्जित करने के अभिप्राय से कही जाती है।

परिसंख्यान-पुं० [सं०] [वि० परिसंख्यात] कोष्ठक, सूची आदि के रूप में वह नामावली जो किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के अन्त में परिशिष्ट के रूप में लगाई जाती है। (शेड्यूल)

परिसंघ-पुं० [सं०] राज्यों, राष्ट्रों, संघों आदि का ऐसा संघटन जो एक दूसरे की सहायता करने और कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए सबको एक में रखने के लिए होता है। (कॉनफेडरेशन)

परिसर-पुं० [सं०] १. आस-पास की जमीन। २.मैदान। ३.पड़ोस। ४.स्थिति।

परिसिद्धक-पुं० [सं०] अपराधियों में से वह जो सरकार की ओर मिल गया हो और उसका साक्षी बनकर दूसरे अपराधियों का अपराध सिद्ध या प्रमाणित करने में उसे सहायता दे। सरकारी गवाह। (एप्रूवर)

परिसिद्धि-स्त्री० [सं०] [वि० परिसिद्ध] अपराधियों में से किसी का सरकार की ओर मिलकर और उसका गवाह बनकर दूसरे अपराधियों के अपराध सिद्ध करना।

परिसीमा-स्त्री० [सं० परि + सीमा] किसी विषय या बात की अन्तिम या चरम सीमा। (एक्स्ट्रीम)

परिसेवन(सेवा)-स्त्री० दे० 'सेवा'।

परिसोधना*-स० [सं० परिशोधन] अच्छी तरह साफ, शुद्ध या ठीक करना।

परिस्तान-पुं० [फा०] १. परियों का कल्पित देश। २. वह स्थान जहाँ सुन्दर मनुष्यों विशेषतः स्त्रियों का जमघट हो।

परिस्थिति-स्त्री० [सं०] किसी घटना, कार्य आदि के आस-पास या चारो ओर की वास्तविक या तर्क-संगत स्थिति या अवस्था। वे बातें या अवस्थाएँ जो किसी व्यक्ति या घटना के चारो ओर होती या रहती है। (सर्कमस्टैंसेज)

परिस्फुट-वि० [सं०] १.अत्यंत स्पष्ट। २. व्यक्त। प्रकाशित। ३. खूब मिला हुआ।

परिहरण-पुं० [सं०] [वि० परिहरणीय,

परिहृत, क्रि० *परिहरना] १ जबरदस्ती या बलपूर्वक लेना। छीन लेना। २.परित्याग। छोड़ना। ३ दोष, अनिष्ट आदि दूर करना।
परिहरना*-स० [सं० परिहरण] १. त्यागना। छोड़ना। २.दूर करना। हटाना।
परिहस*-पुं० दे० 'परिहास'।
परिहाना*-स० = प्रहार करना।
परिहार-पुं० [सं०] [वि० परिहारक, परिहारी] १. दोष, अनिष्ट आदि दूर करना। २ दोष दूर करने का उपाय। उपचार। ३ परित्याग। छोड़ना। ४ युद्ध में जीता या लूटा हुआ धन आदि। (लूट) ५. कर या लगान की माफी। छूट।
परिहारना*-स० दे० 'परिहरना'।
परिहार्य-वि० [सं०] जिसका परिहार हो सके या किया जाना उचित हो।
परिहास-पुं० [सं०] १ हँसी। दिल्लगी। २. ईर्ष्या। डाह। ३ निन्दा। उपहास।
परी-स्त्री० [फा०] १. फारस की अनुश्रुति के अनुसार काफ पर्वत पर बसनेवाली परों से युक्त कल्पित परम सुन्दरी स्त्रियाँ। २. परम रूपवती स्त्री।
परीक्षक-पुं० [सं०] [स्त्री० परीक्षिका] वह जो परीक्षा करता या लेता हो। इम्तहान करने या लेनेवाला। (इग्जामिनर)
परीक्षण-पुं० [सं०] १. परीक्षा लेने, परखने या जांच करने का काम। २. किसी वस्तु या व्यक्ति की इस बात की जाँच कि उससे ठीक तरह से काम निकल सकता है या नहीं या वह जैसा होना चाहिए, वैसा है या नहीं। (ट्रायल, प्रोबेशन) ३. दे० 'परीक्षा'।
परीक्षणिक-वि० [सं०] १. परीक्षण संबंधी। परीक्षण का। २.वह (कर्मचारी) जो परीक्षण के लिए पहले अस्थायी रूप से रखा गया हो। (प्रोबेशनरी)
परीक्षा-स्त्री० [सं०] १. योग्यता, विशेषता, सामर्थ्य, गुण आदि जानने के लिए अच्छी तरह से देखने या परखने की क्रिया या भाव। समीक्षा। इम्तहान। (इग्जामिनेशन) २. वह प्रयोग जो किसी वस्तु के गुण-दोष आदि का अनुभव करने के लिए हो। आजमाइश। (एक्सपेरिमेन्ट) ३. वह प्रक्रिया जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का पता लगाते थे। दिव्य। ४. जांच-पड़ताल। देख-भाल।
परीक्षित-वि० [सं०] जिसकी परीक्षा या जांच की गई हो या हो चुकी हो। पुं० अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, एक प्रसिद्ध राजा।
परीक्ष्य-वि०[सं०]जिसकी परीक्षा लेनी हो।
परीखना*-स० = परखना।
परीछत*-पुं० = परीक्षित।
परीछा*-स्त्री० = परीक्षा।
परीत*-पुं०=प्रेत।
परुख*-वि०[भाव०परुखाई] दे०'परुष'।
परुष-वि० [सं०] [स्त्री० परुषा, भाव० परुषता] १.कठोर। कड़ा। २. कटु। अप्रिय। (वचन आदि) ३.निष्ठुर। निर्दय।
परुषा-स्त्री० [सं०] साहित्य में वह वृत्ति या शब्द-योजना जिसमें टवर्गीय, द्वित्व, और संयुक्त वर्ण, रेफ और श, ष आदि कठोर वर्ण तथा लंबे लंबे समास आते और रचना में ओज गुण उत्पन्न होता है। यह वीर रस के लिए उपयुक्त होती है।
परे-अव्य० [सं० पर] १. उस ओर। उधर। २. दूर। अलग। ३ ऊपर। ४. आगे। बाद।
परेखना*-स० = परखना।

अ० [सं० प्रतीक्षा] प्रतीक्षा करना। राह देखना।

परेखा*-पुं० [सं० परीक्षा] १. परीक्षा। जाँच। २. विश्वास। प्रतीत।
पुं०=प्रतीक्षा।

परेग-स्त्री०[अं०पेग] छोटी कील। कँटिया।

परेड-स्त्री० [अं०] सैनिकों की कवायद।

परेता-पुं० [सं० परितः] १. तीलियों का बना हुआ वह उपकरण जिसपर जुलाहे सूत लपेटते हैं। २. वह उपकरण जिसपर पतंग उड़ाने की डोर लपेटी जाती है।

परेवा-पुं० [सं० पारावत] [स्त्री० परेई] १. पंडुक पक्षी। पेंडुकी। २. कबूतर।
*पुं० दे० 'पत्रवाहक'।

परेशान-वि० [फा०] [भाव० परेशानी] व्यग्र। आकुल। उद्विग्न।

परो*-वि० दे० 'परसों'।

परोक्ष-पुं० [सं०] १ अनुपस्थिति। गैरहाजिरी। २. अभाव। ३. आड़। ओट।
वि० [सं०] १. जो सामने या प्रत्यक्ष न हो। आँखा से ओझल। २. गुप्त।

परोजन*-पुं० [सं० प्रयोजन] १. घर-गृहस्थी से सम्बन्ध रखनेवला कोई ऐसा काम जिसमें सम्बन्धियों और इष्ट-मित्रों की उपस्थिति आवश्यक हो। २. दे० 'प्रयोजन'।

परोना-स० दे० 'पिरोना'।

परोपकार-पुं० [सं०] [वि० परोपकारी, भाव० परोपकारिता] दूसरों की भलाई या उपकार का काम।

परोपकारी-पुं० [सं० परोपकारिन्] [स्त्री० परोपकारिणी] दूसरों का उपकार या भलाई करनेवाला।

परोरना†-स० [?] मंत्र पढ़कर फूँकना।

परोल-पुं० दे० 'पेरोल'।

परोसना†-स० [सं० परिवेषण] खिलाने के लिए भोजन की सामग्री ला-लाकर खानेवाले के सामने रखना।

परोसा†-पुं० [हिं० परोसना] वह भोजन जो किसी के घर भेजा जाता है।

परोहन†-पुं०[सं०प्ररोहण] वह पशु जिसपर कोई सवार हो, या कुछ लादा जाय।

परौंठा-पुं० दे० 'पराँठा'।

पर्जक*-पुं० दे० 'पर्यंक'।

पर्जन्य-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

पर्ण-पुं० [सं०] १. पेड़ का पत्ता। पत्र। २. पुस्तक, पंजी आदि का कोई पृष्ठ। ३ कागज का वह टुकड़ा या परत जिसमें से वैसा ही दूसरा टुकड़ा या परत प्रतिलिपि के रूप में काटकर अलग करते हैं। (फॉयल)

पर्णकुटी(शाला)-स्त्री० [सं०] झोपड़ी।

पर्पटी-स्त्री० [सं०] १. गोपी-चंदन। २. पपड़ी। ३ स्वर्ण-पर्पटी नामक औषध।

पर्यंक-पुं० [सं०] पलंग। बड़ी खाट।

पर्यंत-अव्य० [सं०] तक।

पर्यंत-रेखा-स्त्री० [सं०] रेखाओं का वह समूह जो किसी वस्तु की सीमाएँ बतलाता हो। रूप-रेखा। खाका।

पर्यटन-पुं० [सं०] घूमना-फिरना।

पर्यवलोकन-पुं० [सं०] [वि० पर्यवलोकक] पूरे काम को आदि से अन्त तक सरसरी तौर पर समझने, देखने या जाँचने की क्रिया या भाव। (सर्वे)

पर्यवसान-पुं० [सं०] [वि० पर्यवसित] १. अंत। समाप्ति। २. समावेश। ३. ठीक ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्यवेक्षक-पुं० [सं०] १. देख-भाल या निगरानी करनेवाला। (सुपरवाइजर) २. किसी व्यवहार, बात या काम को

ध्यान से देखनेवाला। (आबजर्वर)

पर्यवेक्षण-पुं० [सं०] [वि० पर्यवेक्षित] १. अच्छी तरह देखना। निरीक्षण। २. किसी काम की देख-भाल या निगरानी। (सुपरविजन) ३. कोई काम या बात ध्यान से देखते रहना। (आब्जरवेशन)

पर्यसन-पुं० [सं०] [वि० पर्यस्त] १. दूर करना। हटाना। २. फेंकना। ३. नष्ट करना। ४. रद्द करना।

पर्याप्त-वि०[सं०] जितना चाहिए या जितना होना चाहिए, उतना। यथेष्ट। काफी।

पर्याप्ततः-क्रि० वि० [सं०] पूर्ण रूप से। पूरी तरह से। (सफिशेन्टली)

पर्याय-पुं० [सं०] १. समानार्थ-वाची शब्द। जैसे-'जल' का पर्याय 'वारि' है। २. क्रम। सिलसिला। ३. एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का क्रम से अनेक आश्रय लेना या अनेक वस्तुओं का एक ही के आश्रित होना कहा जाता है।

पर्यालोचना-स्त्री० दे० 'समीक्षा'।

पर्युपासन-पुं० [सं०] सेवा।

पर्व-पुं० [सं० पर्वन्] १. धर्म-कार्य या उत्सव आदि करने का समय। पुण्य-काल। २. चातुर्मास्य। ३. अवसर। ४. बड़ा उत्सव। ५. ग्रन्थ का विभाग या खंड।

पर्वणी-स्त्री० [सं०] पूर्णिमा।

पर्वत-पुं० [सं०] १. पहाड़। २. दशनामी संन्यासियों का एक भेद।

पर्वतराज-पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा पहाड़। २. पर्वतों का राजा, हिमालय।

पर्वतीय-वि० [सं०] १. पहाड़ी। पहाड़-संबंधी। २.पहाड़ पर रहने या होनेवाला।

पर्वरिश-स्त्री० [फा०] पालन-पोषण।

पर्हेज-पुं० दे० 'परहेज'।

पलका†-स्त्री० [हिं० लंका का अनु०] लंका की तरह, बहुत दूर का स्थान।

पुं० दे० 'पलंग'।

पलंग-पुं० [सं० पर्यंक] [स्त्री० अल्पा० पलँगड़ी] बड़ी चारपाई। पर्यंक।

पलँगड़ी-स्त्री० [हिं० पलंग] छोटा पलंग।

पल-पुं० [सं०] १. समय का एक सूक्ष्म विभाग जो २४ सेकेंड के बराबर होता है। २. तराजू। तुला। ३. एक पुरानी तौल या मान।

पुं० [सं० पलक] आंख की पलक।

मुहा०-**पल मारते**=तुरंत।

पलक-स्त्री० [सं० पल+क] १. आंख के ऊपर का चमड़े का परदा जिसके गिरने से वह बंद होती है।

मुहा०-**पलक झपकने**=बहुत थोड़े समय में। **पलकें बिछाना**=१. किसी का प्रेमपूर्वक स्वागत करना। २. उत्कंठा के साथ प्रतीक्षा करना। **पलक मारना**=आंखों से संकेत करना। **पलक लगना**=नींद आना। झपकी लगना। **पलक से पलक न लगना**=नींद न आना।

पलका*-पुं०१.दे०'पलंग'। २.दे०'पल्ला'।

पलटन-स्त्री० [अं० प्लैटून] १. सेना। २.सैनिकों का दल। ३. समुदाय। झुंड।

पलटना-अ० [सं० प्रलोठन] १. उलट जाना। २. अवस्था या दशा बदलना। ३. स्वरूप बिलकुल बदल जाना। पहला रूप न रहना और उसकी जगह दूसरा रूप प्राप्त होना। ४.लौटना। वापस होना। स० १. उलटा या औंधा करना। २. अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत दशा में लाना। उलटना। ३. बार बार उलटना। फेरना। ४. पहले की अवस्था या रूप बदलकर नई अवस्था या रूप में लाना। बदलना। ५. एक बात से मुकर-

कर दूसरी बात कहना। * ६. लौटाना। वापस करना। फेरना।

पलटनिया-पुं० [हिं० पलटन] पलटन का सिपाही। सैनिक।

पलटा-पुं० [हिं० पलटना] १. पलटने की क्रिया या भाव। परिवर्त्तन।

मुहा०-**पलटा खाना**=दशा का बिलकुल बदल जाना।

२. बदला। प्रतिफल। ३. गाने में थोड़े से स्वरों का जल्दी जल्दी हेर-फेरकर उच्चारण करना।

पलटाना--स० [हिं० पलटना] १ उलटना। २.लौटाना। ३ बदलना।(क्व०) *अ० दे० 'पलटना'।

पलटाव-पुं० [हिं० पलटा] पलटे या उलटे जाने की क्रिया या भाव।

पलटे-क्रि०वि० [हिं० पलटा] बदले में।

पलड़ा-पुं० [सं० पलल] १. तराजू का पल्ला। २. विरोधियों में से कोई पक्ष।

पलथी-स्त्री० [सं० पर्य्यस्त] दाहिने पैर का पंजा बाईं पिंडली के और बाएँ पैर का पंजा दाहिनी पिंडली के नीचे दबाकर बैठने की स्थिति या मुद्रा।

पलना-अ० [सं० पालन] १. पाला-पोसा जाना। २. खा-पीकर हृष्ट-पुष्ट होना। *पुं० दे० 'पालना'।

पलनाना*-स० दे० 'पलानना'।

पलवा*-पुं० [सं० पल्लव] अँगुली।

पलस्तर-पुं० [अं० प्लास्टर] १. दीवारों आदि पर लगाया जानेवाला चूने आदि के गारे का मोटा लेप।

मुहा०-**पलस्तर ढीला होना या बिगड़ना**=परिश्रम, हानि आदि के कारण शिथिल होना। मन्द या सुस्त पड़ना।

२. शरीर के रुग्ण अंग पर लगाया जानेवाला औषध का मोटा लेप।

पलहना*-अ० दे० 'पलुहना'।

पलहा*-पुं० [सं० पल्लव] कोंपल।

पला-पुं० १ दे० 'पल्ला'। २. दे० 'पलड़ा'।

पलान-पुं० [सं० पाल्याण, मि० फा० पलान] लादने या चढ़ने के लिए घोड़े आदि की पीठ पर कसी जानेवाली गद्दी। चार-जामा। जीन।

पलानना*-स० [हिं० पलान+ना (प्रत्य०)] १. घोड़े आदि पर पलान कसना। २. चलने या चढ़ाई की तैयारी करना।

पलाना*-अ०=भागना।

पलायक-पुं० [सं०] अपना पद, स्थान या उत्तरदायित्व छोड़कर या दंड के भय से भाग जानेवाला। (एब्सकांडर)

पलायन-पुं० [सं०] [वि० पलायित] १. भागने की क्रिया या भाव। भागना। २. अपना स्थान, कार्य, पद या उत्तरदायित्व छोड़कर अथवा दंड आदि से बचने के लिए भागना। (एब्सकांड)

पलाश-पुं० [सं०] १.पलास या ढाक का पौधा। टेसू। २.पत्र। पत्ता। ३.राक्षस।

पलास-पुं० [सं० पलाश] १. एक प्रसिद्ध पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। ढाक। टेसू। केसू। २.एक मांसाहारी पक्षी।

पली-स्त्री० [सं० पलिघ] बड़े बरतन में से तेल, घी आदि निकालने की एक प्रकार की छोटी कलछी।

मुहा०-**पली पली जोड़ना**=थोड़ा थोड़ा करके इकट्ठा या जमा करना।

पलीता-पुं० [फा० फलीतः] [स्त्री०अल्पा० पलीती] १. कोई मंत्र लिखकर जलाने के लिए बत्ती की तरह लपेटा हुआ कागज। २. बंदूक या तोप की रंजक में आग लगाने की बत्ती। ३. कपड़ा लपेट-

कर बनाई हुई जलाने की बत्ती।
पलीद-वि०[फा०] १.अपवित्र। २.नीच।
पलुआ†-पुं० [हिं० पलना] पालतू।
पलुहना*-अ० [सं० पल्लव] [स० पलुहाना] पल्लवित होना। हरा-भरा होना।
पलेड़ना*-स० = ढकेलना।
पलेथन-पुं० [सं० परिस्तरण] १. बेलने के समय आटे के पेड़े या लोई में लगाया जानेवाला सूखा आटा। परथन।
मुहा०-पलेथन निकालना=१. खूब मारना। २ तंग करना।
२. हानि होने पर साथ में होनेवाला आवश्यक व्यय।
पलोटना-स० [सं० प्रलोठन] १. पैर दबाना। २. सेवा करना।
अ० [हिं० लोटना] तड़पते हुए इधर-उधर लोटना।
पलोवना*-स० दे० 'पलोटना'।
पलोसना*-स० [हिं०परसना] १. धोना। २ मीठी मीठी बातें करके फुसलाना।
पल्लव-पु० [सं०] १. नये निकले हुए कोमल पत्ते। कोंपल। २.हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण।
पल्लवग्राही-वि० [सं०] केवल ऊपर ऊपर से थोड़ा ज्ञान प्राप्त करनेवाला।
पल्लवन-पुं० [सं०] १. (पौधों का) पल्लव उत्पन्न करना या निकालना। २. किसी बात या विषय का विस्तार करना।
पल्लवना*-अ०[सं०पल्लव] १.पल्लवित होना। पत्तों से युक्त होना। २.पनपना।
पल्लवित-वि० [सं०] १. नये पत्तों से युक्त। हरा-भरा। २. लंबा-चौड़ा। ३. जिसे रोमांच हुआ हो। कंटकित।
पल्ला-पुं० [सं० पटल] कपड़े का छोर या सिरा। आँचल।
मुहा०-पल्ला छूटना=पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। पल्ला पसारना= याचना करना। माँगना। पल्ले पड़ना= प्राप्त होना। मिलना। (किसी के) पल्ले बाँधना=जिम्मे लगाना।
पुं० [सं० पटल] १. दुपल्ली टोपी का आधा भाग। २.धोती, किवाड़ों आदि की जोड़ी में से कोई एक। ३.पहल। ४.दूरी।
पुं० [सं० पल] १. तराजू का पलड़ा। २. दो विरोधी पक्षों में से कोई एक।
मुहा०-पल्ला भारी होना=पक्ष बलवान् या प्रबल होना।
[वि० दे० 'परला'।
पल्ली-स्त्री० [सं०] छोटा गाँव।
पल्लू†-पुं० [हिं० पल्ला] १ आँचल। छोर। दामन। २. चौड़ी गोट। पट्टा।
पल्ले-अव्य० [हिं० पल्ला] १. अधिकार या पास में। २. गाँठ में।
पल्लेदार-पुं० [हिं० पल्ला+फा० दार] १. अनाज ढोनेवाला मजदूर। २. अनाज तौलनेवाला आदमी। बया।
पवन-पुं० [सं०] १ वायु। हवा। २. श्वास। साँस। ३. प्राण-वायु।
*वि० दे० 'पावन'।
पवनकुमार-पुं० [सं०] हनुमान्।
पवन-चक्की-स्त्री० [सं० पवन+हिं० चक्की] हवा के जोर से चलनेवाली चक्की।
पवन-सुत-पुं० [सं०] हनुमान्।
पवनी*-स्त्री० दे० 'पौनी'।
पवमान-पुं० [सं०] १. पवन। वायु। हवा। २. गार्हपत्य अग्नि।
वि० पवित्र करनेवाला।
पवि-पुं० [सं०] १ वज्र। २. बिजली।
पविताई*-स्त्री०=पवित्रता।
पवित्र-वि० [सं०] [भाव० पवित्रता]

जो गंदा या मैला न हो। निर्मल। साफ।

पवित्री-स्त्री० [सं० पवित्र] कर्मकांड में, अनामिका में पहनने का कुश का छल्ला।

पवित्रीकरण-पुं० [सं०] किसी अपवित्र वस्तु को पवित्र या शुद्ध करना। शुद्धि।

पशम-स्त्री० [फा० पश्म] १. बढ़िया मुलायम ऊन जिससे पशमीने आदि बनते हैं। २. बहुत तुच्छ वस्तु।

पशमीना-पुं० [फा०] १ पशम। २. पशम का बना हुआ बढ़िया कपड़ा।

पशु-पुं० [सं०] [भाव० पशुता] चार पैरों से चलनेवाला बड़ा जन्तु। चौपाया। जैसे-हाथी, घोड़ा, गौ, कुत्ता, हिरन।

पशु-चिकित्सा-स्त्री० [सं०] [वि० पशु-चिकित्सक] वह शास्त्र जिसमें पशुओं के रोगों की चिकित्सा का वर्णन होता है।

पशुपतास्त्र-पुं० [सं०] महादेव का शूल या त्रिशूल नामक अस्त्र।

पशुपति-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

पशु-पालन-पुं० [सं०] पशुओं के पालन-पोषण और उनकी नसल सुधारने की विद्या या कला।

पशु-मैथुन-पुं० [सं०] १.नर और मादा पशुओं का परस्पर संभोग या मैथुन। २. मनुष्य का बकरी, गधी आदि मादा पशुओं के साथ संभोग। (बेस्टियालिटी)

पश्चात्-अव्य० [सं०] पीछे। अनंतर। बाद। फिर।

पश्चात्ताप-पुं० [सं०] किये हुए अनुचित या बुरे कार्य से मन में होनेवाला खेद या ग्लानि। अनुताप। पछतावा।

पश्चिम-पुं० [सं०] सूर्य के अस्त होने की दिशा। पच्छिम।

पश्चिमी-वि० [सं०] पश्चिम का।

पश्म-स्त्री० दे० 'पशम'।

पष*-पुं० दे० 'पक्ष'।

पसंगा(घा)†-पुं० दे० 'पासंग'।

पसंद-वि० [फा०] रुचि के अनुकूल। अच्छा जान पड़नेवाला।
स्त्री० मन को अच्छा लगने की वृत्ति या भाव। रुचि।

पसर-पुं० [सं० प्रसर] इधर-उधर से सिकोड़ या दबाकर गहरी की हुई हथेली। आधी अंजली।
*पुं० [सं० प्रसार] विस्तार। फैलाव।

पसरना-अ० [सं० प्रसरण] १. फैलना। २. कुछ लेट या बहुत फैलकर बैठना।

पसर-हट्टा-पुं० [हिं० पसारी+हाट] वह बाजार जहाँ पंसारियों की दूकानें हों।

पसरौहाँ*-वि० [हिं० पसरना+औहाँ (प्रत्य०)] पसरने या फैलनेवाला।

पसली-स्त्री० [सं० पर्शुका] मनुष्य, पशु आदि की छाती के पंजर में की आड़ी और कुछ गोलाकार हड्डी।
मुहा०-**पसली तोड़ना**=बहुत मारना।

पसाउ*-पुं० [सं० प्रसाद] कृपा।

पसाना-स० [सं० प्रस्रावण] भात पक जाने पर उसमें से माड़ या बचा हुआ पानी निकालना।

पसार-पुं० [सं० प्रसार] १. प्रसार। फैलाव। २. लंबाई-चौड़ाई। ३.दालान।

पसारना-स० [सं० प्रसारण] फैलाना।

पसारा-पुं० दे० 'पसार'।

पसाव-पुं० [हिं० पसाना] माँड़। पीच।

पसाहन*-पुं० [सं० प्रसाधन] अंगराग।

पसित*-वि० [सं० पस्] बँधा हुआ।

पसीजना-अ० [सं० प्र+स्विद्] १. घन पदार्थ में से द्रव अंश का रस-रसकर बाहर निकलना। रसना। २. पसीने से तर होना। ३. मन में दया आना।

पसीना-पुं० [सं० प्रस्वेदन] परिश्रम अथवा गरमी के कारण शरीर से निकलनेवाला जल । प्रस्वेद । स्वेद ।

पसेरी-स्त्री० [हिं० पाँच+सेर+ई (प्रत्य०)] पाँच सेर का मान या बाट । पंसेरी ।

पसेव-पुं० [सं०प्रस्राव] १.पसीना। स्वेद। २. दे० 'पसाव' ।

पसोपेश-पुं० [फा० पस व पेश] आगा-पीछा। असमंजस। दुविधा। सोच-विचार।

पस्त-वि० [फा०] १.हिम्मत हारा हुआ। २. थका हुआ ।

पहँ*-अव्य० [सं० पार्श्व] १ निकट । पास । २. से ।

पह*-स्त्री० दे० 'पौ' ।

पहचान-स्त्री० [सं० प्रत्यभिज्ञान] १. पहचानने की क्रिया या भाव । २. किसी का गुण, मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया, भाव या योग्यता । परख । ३. लक्षण । चिह्न । ४. किसी को देखकर यह बतलाना कि यह वही है। (आइडेन्टि-फिकेशन) ५. जान-पहचान । परिचय ।

पहचानना-स० [हिं० पहचान] [प्रे० पहचनवाना] १. देखकर जान लेना कि यह कौन या क्या है । २. किसी वस्तु के रूप-रंग से परिचित होना । ३. अंतर समझना या करना । (डिस्टिंग्विश) ४. योग्यता या विशेषता को जानना ।

पहन*-पुं० दे० 'पाहन' ।

पहनना-स० [सं० परिधान] [भाव० पहनाई] वस्त्र, आभूषण आदि शरीर पर धारण करना । परिधान करना ।

पहनाना-स० [हिं० पहनना] किसी को कपड़े, गहने आदि पहनने में प्रवृत्त करना। धारण कराना ।

पहनावा-पुं० [हिं० पहनना] पहनने के मुख्य कपड़े । परिच्छद । पोशाक । २. विशेष स्थान अथवा समाज में पहने जानेवाले कपड़े ।

पहपट-स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार का स्त्रियों का गीत । २. शोर-गुल । हल्ला । ३. झगड़ा । तकरार ।

पहर-पुं० [सं० प्रहर] पूरे दिन-रात का आठवाँ भाग । तीन घंटों का समय ।

पहरना†-स०=पहनना ।

पहरा-पुं० [हिं० पहर] १. किसी वस्तु या व्यक्ति की देख-रेख या रक्षा आदि के लिए अथवा उसे निर्दिष्ट स्थान से हटने से रोकने के लिए आदमियों की नियुक्ति । रक्षा का प्रबंध । चौकसी चौकी । मुहा०-पहरा देना=रखवाली करना । पहरा बदलना=पुराने के स्थान पर नया रक्षक नियुक्त करना या होना । २. रखवाली । ३. रक्षा-कार्य का नियत समय। ४. एक समय या बार में रक्षा के लिए नियुक्त व्यक्ति या दल । ५. चौकी-दार का गश्त या फेरा । *६. समय । युग । जमाना ।

पहरादूत*-पुं० दे० 'पहरेदार' ।

पहराना†-स०=पहनाना ।

पहरावन-पुं०[हिं०पहराना] १.पहनावा । पोशाक । २. दे० 'पहरावनी' ।

पहरावनी-स्त्री० [हिं० पहराना] पहनने के वे सब कपड़े जो कोई बड़ा छोटे को देता है । खिलअत ।

पहरी-पुं० [सं० प्रहरी] पहरेदार ।

पहरुआ(रू)†-पुं० दे० 'पहरेदार' ।

पहरेदार-पुं० [हिं० पहरा+दार (प्रत्य०)] [भाव० पहरेदारी] पहरा देनेवाला । चौकीदार । रक्षक ।

पहल-पुं० [फा० पहलू , मि० सं० पटल]

१.घन पदार्थ के सिरों अथवा कोनों के बीच की सम भूमि। २. बगल। पहलू। २ पृष्ठ। सतह। ३.जमी हुई रूई अथवा ऊन का टुकड़ा।
पुं० [सं० पटल] तह। परत।
पुं० [हिं० पहला] किसी कार्य का अपनी ओर से आरंभ। छेड़।
पहलवान-पुं०[फा०] [भाव० पहलवानी] १ कुश्ती लड़नेवाला पुरुष। मल्ल। २. बलवान् और हृष्ट-पुष्ट।।
पहला-वि० [सं० प्रथम] [स्त्री० पहली] क्रम के विचार से आरंभ का। प्रथम।
पहलू-पुं० [फा०] १. करवट। बल। २ गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंग। पक्ष। (एस्पेक्ट)
पहले-अव्य० [हिं० पहला] १. आरंभ या आदि में। शुरू में। प्रथम। २ स्थिति या क्रम में सबसे आगे। प्रथम। ३.पुराने समय में। पूर्वकाल में। आगे।
पहले-पहल-अव्य० [हिं० पहले] सबसे पहले। पहली बार।
पहलौठा-वि० [हिं० पहला + औठा (प्रत्य०)] [स्त्री० पहलौठी] किसी स्त्री के गर्भ से पहले-पहल उत्पन्न (लड़का)।
पहलौठी-स्त्री० [हिं० पहलौठा] पहले-पहल बच्चा जनना। प्रथम प्रसव।
पहाँटना*-स० [?] ... ।
पहाड़-पुं० [सं० पाषाण] [स्त्री० अल्पा० पहाड़ी] १. भूमि का बहुत ऊँचा और प्रायः पथरीला प्राकृतिक भाग। पर्वत। **मुहा०-पहाड़ टूटना** = अचानक भारी आपत्ति आ पड़ना। **पहाड़ से टक्कर लेना** = बहुत बलवान् से भिड़ना। २. ऊँची राशि। बड़ा ढेर। ३. बहुत भारी वस्तु। ४. बहुत कठिन कार्य। **पहाड़ उठाना** = भारी काम अपने ऊपर लेना।
वि० बहुत बड़ा और भारी।
पहाड़ा-पुं० [सं० प्रस्तार] किसी अंक के गुणन-फलों की क्रमागत सूची जो बच्चे याद करते हैं। गुणन-सूची।
पहाड़ी-वि० [हिं०पहाड़+ई (प्रत्य०)] १. पहाड़ पर रहने या होनेवाला। पहाड़ का। २.जिसमें पहाड़ हों। जैसे-पहाड़ी देश।
स्त्री० [हिं० पहाड़] छोटा पहाड़।
पहार(रू)*-पुं० दे० 'पहरेदार'।
पहिती-स्त्री० [सं० पहित] पकी हुई दाल।
पहियाँ*-अव्य० दे० 'पहँ'।
पहिया-पुं० [सं० परिधि] गाड़ी अथवा कल में लगा हुआ वह चक्कर जिसके धुरी पर घूमने से गाड़ी या कल चलती है। चक्का। चक्र।
पहिला-वि० दे० 'पहला'।
पहीति*-स्त्री० दे० 'पहिती'।
पहुँच-स्त्री० [सं० प्रभूत] १. पहुँचने की क्रिया या भाव। २.किसी स्थान या बात तक पहुँचने की शक्ति या सामर्थ्य। गति। पैठ। प्रवेश। (ऐक्सेस) ३. किसी व्यक्ति या वस्तु के कहीं पहुँचने की सूचना। ४. कोई बात अच्छी तरह समझने की शक्ति। पकड़। ६. अभिज्ञता की सीमा। ज्ञान की सीमा। जानकारी की हद।
पहुँचना-अ० [सं० प्रभूत] १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत होना। **मुहा०-पहुँचा हुआ** = १. ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ सिद्ध। २. किसी बात का अच्छा जानकार।
२.किसी स्थान तक फैलना। ३.एक दशा या रूप से दूसरी दशा या रूप में जाना। ४. प्रविष्ट होना। घुसना। बैठना। ५.

अभिप्राय या आशय समझना । ६. भेजी हुई चीज का पानेवाले को मिलना । ७. बढ़कर किसी के बराबर या तुल्य होना ।

पहुँचा-पुं० [सं० प्रकोष्ठ] कुहनी के नीचे का भाग । कलाई । मणिबन्ध ।

पहुँचाना-स० [हिं० 'पहुँचना' का स०] १. ऐसा करना कि कोई वस्तु या व्यक्ति एक स्थान या अवस्था से दूसरे स्थान या अवस्था में चला या हो जाय । २. किसी के साथ किसी स्थान तक इसलिए जाना कि रास्ते में उसपर कोई संकट न आने पावे । ३. प्रविष्ट करना । ४. कोई चीज किसी के पास ले जाना । ६. किसी के समान बना देना ।

पहुँची-स्त्री० [हिं० पहुँचा] १. कलाई पर पहनने का एक गहना । २.युद्ध में कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण ।

पहुड़ना*-अ० १. दे० 'पौढ़ना' । २. दे० 'तैरना' ।

पहुनाई-स्त्री० [हिं० पहुना+ई (प्रत्य०)] १ पाहुना होना । अतिथि के रूप में कहीं जाना । २.अतिथि-सत्कार । मेहमानदारी ।

पहुप*-पुं० दे० 'पुष्प' ।

पहुमी-स्त्री०=पृथ्वी ।

पहेली-स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १. किसी वस्तु या विषय का ऐसा गूढ़ वर्णन जिसके आधार पर उत्तर देने या उस वस्तु का नाम बताने में बहुत सोच-विचार करना पड़े । बुझौवल । २. ऐसी जटिल बात जो जल्दी किसी की समझ में न आवे । समस्या । घुमाव-फिराव की बात ।

मुहा०-**पहेली बुझाना**=कोई बात इस प्रकार घुमा-फिराकर कहना कि जल्दी किसी की समझ में न आवे ।

पह्लव-पुं० [सं०] १. प्राचीन पारसी या ईरानी । २.पारस देश का पुराना नाम ।

पह्लवी-स्त्री० [फा० अथवा सं० पह्लव] प्राचीन पारसी और आधुनिक पारसी के मध्यवर्ती काल की फारस की भाषा ।

पाँइ(उ)*-पुं० = पाँव ।

पाँक-पुं० [सं० पंक] कीचड़ ।

पाँख-पुं० [सं० पक्ष] पंख । पर । स्त्री० दे० 'पंखड़ी' ।

पाँखी-स्त्री० [सं० पक्षी] १. पतिंगा । २. पक्षी । चिड़िया ।

पाँच-वि० [सं० पंच] चार और एक ।

मुहा०-**पाँचों उँगलियाँ घी में होना**= खूब लाभ होना । **पाँचो सवारों में नाम लिखाना**=अनुचित रूप से बड़ों में अपनी भी गिनती कराना ।

पुं० [सं० पंच] १. कुछ लोग । २. पंच या मुखिया लोग ।

पांचजन्य-पुं० [सं०] १. कृष्ण के शंख का नाम । २. अग्नि । आग ।

पांचाल-पुं० दे० 'पंचाल' ।

वि० [सं०] पंचाल देश का ।

पांचाली-स्त्री० [सं०] १. गुड़िया । २. साहित्य में वाक्य-रचना की वह शैली जिसमें बड़े बड़े समास और विकट पदावलियां होता है । ३. द्रौपदी ।

पाँजना-स० दे० 'झालना' ।

पाँजर-पुं० [सं० पंजर] १. शरीर में बगल और कमर के बीच का भाग । २. पसली । ३. पार्श्व । बगल ।

पांडव-पुं०[सं०] राजा पांडु के पाँचों पुत्र — युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ।

पांडित्य-पुं० [सं०] १. 'पंडित' होने का भाव । २. विद्वत्ता । पंडिताई ।

पांडु-पुं० [सं०] [भाव० पांडुता] १. कुछ लाली लिये हुए पीला रंग । २.

सफेद रंग। ३. एक रोग जिसमें शरीर का रंग पीला हो जाता है। पीलिया। ४. प्राचीन काल के एक राजा। (युधिष्ठिर आदि पांडव इन्हीं के पुत्र थे।)

पांडुर-वि० [सं०] [भाव० पांडुरता] १ पीला। २. सफ़ेद।

पांडुलिपि-स्त्री० [सं०] १. लेख आदि का वह प्रारंभिक रूप जो काट-छांट आदि के लिए तैयार किया जाता है। मसौदा। (ड्राफ्ट) २. पुस्तक, लेख आदि की हाथ की लिखी हुई वह प्रति जो छपने को हो। (मैनस्क्रिप्ट)

पांडुलेख-पुं० दे० 'पांडुलिपि'।

पांडु लेखक-पुं० [सं०] वह जो लेख्य आदि की पांडुलिपि लिखकर तैयार करता हो। (ड्राफ्टसमैन)

पांडु लेखन-पुं० [सं०] लेख्य आदि की पांडुलिपि लिखने का काम। (ड्राफ्टिंग)

पांडुलेख्य-पुं० दे० 'पांडुलिपि'।

पाँत-स्त्री० [सं० पंक्ति] १. पंक्ति। कतार। २. साथ बैठकर भोजन करनेवाले लोग।

पाइक*-पुं० दे० 'पायक'।

पाइट-स्त्री० [अं० ?] दीवार या मकान बनाने के लिए खड़ी की जानेवाली मचान।

पाइतरी*-स्त्री० दे० 'पायँता'।

पाई-स्त्री० [सं० पाद, हिं० पाय] १. घेरा बांधकर नाचने या चलने की क्रिया। चक्कर। घूमना। २. पैसे के तिहाई मूल्य का एक छोटा सिक्का। ३. किसी अंक के आगे $\frac{1}{4}$ का मान प्रकट करनेवाली सीधी खड़ी रेखा। जैसे-२। अर्थात् सवा दो। ४ पिंगल में दीर्घ स्वर की सूचक मात्रा। ५. लेख में पूर्ण विराम की सूचक खड़ी रेखा। स्त्री० [हिं० पापा=कीड़ा] धान आदि में लगनेवाला एक छोटा लंबा कीड़ा।

पाउँ*-पुं०=पाँव।

पाउडर-पुं० [अं०] १. चूर्ण। बुकनी। २. वर्ण का सौन्दर्य बढ़ाने के लिए चेहरे या शरीर पर लगाने का एक प्रसिद्ध चूर्ण।

पाक-पुं० [सं०] १. पकने या पकाने की क्रिया या भाव। २. रसोई। ३. पकवान। ४. चाशनी में मिलाकर बनाया हुआ औषध। ५. भोजन पचने की क्रिया। पाचन। ६ श्राद्ध में पिंड-दान के लिए पकाई हुई खीर या भात।

वि० [फा०] १. पवित्र। शुद्ध। २. पाप-रहित। ३ निर्दोष। ४. समाप्त। मुहा०-झगड़ा पाक करना=१. कोई बड़ा कार्य समाप्त करना। २ बाधा दूर करना। ३. मार डालना।

५. निर्मल। शुद्ध। साफ।

पाकना*-अ०=पकना।

पाकर-पुं० [सं० पर्कटी] [अल्पा० पाकरी] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

पाकशाला-स्त्री० [सं०] रसोई-घर।

पाकशासन-पुं० [सं०] इंद्र।

पाकस्थली-स्त्री० दे० 'पक्वाशय'।

पाकिस्तान-पुं० [फा०] [वि० पाकिस्तानी] भारत के कुछ अंशों को अलग करके बनाया हुआ वह नया मुसलमानी राज्य जिसमें सिन्ध, पश्चिमी पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त और पूर्वी बंगाल है।

पाकेट-पुं० [अं०] जेब। खीसा। यौ०-पाकेट-मार=गिरह-कट।

पाक्षिक-वि० [सं०] १. एक पक्ष या पन्द्रह दिनों का या उनसे संबंध रखनेवाला। २. हर पक्ष में या पन्द्रह दिनों पर प्रकाशित होनेवाला (पत्र)।

पाखंड-पुं० [सं० पाषंड] १. वेद-विरुद्ध आचरण। २. ढोंग। आडंबर। ३. छल।

धोखा। ४. धूर्तता। चालाकी।
मुहा०-पाखंड फैलाना=किसी को ठगने के लिए आडंबर या उपाय रचना।

पाखंडी-वि० [सं० पाषंडिन्] १. बनावटी धार्मिकता या सत्य-शीलता दिखानेवाला। ढोंगी। २. धोखेबाज। धूर्त।

पाख-पुं० [सं० पक्ष] १. पंद्रह दिन। पखवाड़ा। २.कच्चे मकानों की चौड़ाई की दीवारों के वे ऊँचे भाग जिनपर बँडेर रहती है। ३. पंख। पर।

पाखर-स्त्री० [सं० प्रखर] युद्ध में हाथी-घोड़ों पर डाली जानेवाली लोहे की झूल।

पाखा-पुं०[सं०पक्ष]१ कोना।२.दे०'पाख'।

पाखाना-पुं० [फा०] १ मल-त्याग करने का स्थान। शौच गृह। २.मल। गुह।

पाग-स्त्री० दे० 'पगड़ी'।
पुं० दे० 'पाक'।

पागना-स० [सं० पाक] शीरे या चाशनी में कोई चीज पकाना या लपेटना।

पागल-वि०[?] [स्त्री०पगली, पागलिनी, भाव० पागलपन] १ जिसका दिमाग़ ख़राब हो गया हो। बावला। विक्षिप्त। २. आपे से बाहर। ३. मूर्ख। बेवकूफ़।

पागलखाना-पुं० [हिं० पागल+फा० ख़ानः] वह स्थान जहाँ चिकित्सा के लिए पागल रखे जाते हैं।

पागलपन-पुं०[हिं०पागल] १. वह मानसिक रोग जिसमें मनुष्य की बुद्धि बेकाम हो जाती है। उन्माद। विक्षिप्तता। २. पागलों का-सा मूर्खतापूर्ण आचरण।

पागुर†-पुं० दे० 'जुगाली'।

पाचक-वि० [सं०] पचाने या पकानेवाला। पुं० [सं०] १. पाचन-शक्ति बढ़ानेवाली दवा। २.[स्त्री०पाचिका] रसोइया।

पाचन-पुं० [सं०] १. पचाना या पकाना। २. आहार के पचने या हज़म होने की क्रिया। ३ पाचक औषध। ४.खट्टा रस। ५. भोजन को पचाने की शक्ति। अग्नि।
वि० पचानेवाला (पदार्थ)।

पाचन-शक्ति-स्त्री० [सं०] वह शक्ति जिससे भोजन पचता है। हाज़मा।

पाचना*-स० दे० पकाना'।

पाच्छाह†-पुं० = बादशाह।

पाच्य-वि० [सं०] पचाने या पकाने योग्य।

पाछ-स्त्री० [हिं० पाछना] रक्त, रस आदि निकालने के लिए जंतु या पौधे के शरीर पर छुरी आदि से किया हुआ हलका घाव।
| पुं० [सं० पश्चात्] पीछा।
वि० क्रि० वि० पीछे।

पाछना-स० [हिं० पंछा] रक्त या रस निकालने के लिए छुरे आदि से शरीर या पौधे पर हलका घाव करना।

पाछा*-पुं०=पीछा।

पाछिल*- वि०=पिछला।

पाछे*- क्रि० वि०=पीछे।

पाज*-पुं० दे० 'पाजर'।

पाजामा-पुं० [फा०] पैर में पहना जानेवाला एक पहनावा जिससे कमर से एड़ी तक का भाग ढका रहता है।

पाजी-वि० [सं० पाय्य] [भाव० पाजीपन] दुष्ट। लुच्चा। शरारती।
*पुं० [सं० पदाति]
१. पैदल सिपाही। प्यादा। २. रक्षक।

पाजेब-स्त्री० [फा०] पैरों में पहनने का स्त्रियों का एक गहना। मंजीर। नूपुर।

पाटंबर-पुं० [सं०] रेशमी कपड़ा।

पाट-पुं० [सं० पट] १. रेशम। २. रेशम का तागा। ३.पटसन के रेशे। ४.कपड़ा। पुं०[सं०पट्ट] १.राज-सिंहासन। राज-गद्दी। २. चौड़ाई। ३. पटरा। पीढ़ा। ४. वह

पत्थर जिसपर धोबी कपड़े धोते हैं। ४. चक्की के ऊपर या नीचे के दो भाग या पत्थरों में से कोई एक।

पाटन-स्त्री० [हिं० पाटना] १. पाटने की क्रिया या भाव। पटाव। २. छत आदि, जो पाटकर बनाई जाय।

पाटना-स० [हिं० पाट] १. मिट्टी, कूड़े आदि से गड्ढा भरना। २. दीवारों के बीच में या किसी गहरे स्थान के आर-पार आधार बनाने के लिए बल्ले, धरन आदि बिछाना। छत बनाना। ३. ढेर लगाना।

पाटला-पुं०[सं०पाटल] १.पाडर का वृक्ष। २. बढ़िया और खरा सोना। (धातु)

पाटव-पुं० [सं०] पटुता। कुशलता।

पाटवी-वि० [हिं० पाट] १. पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार)। २.रेशमी (वस्त्र)।

पाटा-पुं० दे० 'पीढ़ा'।

पाटी-स्त्री० [सं०] १. परिपाटी। शैली। रीति। २. जोड़, बाकी, गुणा आदि गणित के क्रम। ३. श्रेणी। पंक्ति।

स्त्री० [सं० पट्टिका] १ पलंग या खाट के चौखटे की लम्बाई के बल की लकड़ी। २. दे० 'पट्टी'।

पाटी गणित-पुं० [सं०] गणित का वह अंग या शाखा जिसमें ज्ञात अंकों या संख्याओं की सहायता से अज्ञात या उद्दिष्ट अंक या संख्याएँ जानी जाती हैं। (एरिथमेटिक)

पाठ-पुं०[सं०] १.पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २. नियम या विधिपूर्वक धर्म-ग्रन्थ पढ़ने की क्रिया या भाव। ३. पढ़ने या पढ़ाने का विषय। ४. एक बार में पढ़ा जानेवाला अंश। संथा। सबक।

मुहा०-पाठ पढ़ाना=अपना स्वार्थ साधने के लिए किसी को बहकाना। उलटा पाठ पढ़ाना=कुछ का कुछ समझा देना।

५. ग्रन्थ, लेख आदि के शब्दों, पदों या वाक्यों का क्रम या योजना। (रीडिंग)

पाठक-पुं० [सं०] १. पढ़नेवाला। वाचक। २. पढ़ानेवाला। अध्यापक।

पाठन-पुं० [सं०] पढ़ाने की क्रिया या भाव। अध्यापन।

पाठना*-स०=पढ़ाना।

पाठ-भेद-पुं० दे० 'पाठांतर'।

पाठशाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ विद्यार्थी पढ़ते है। विद्यालय। मदरसा।

पाठांतर-पुं० [सं०] एक ही पुस्तक की दो या अधिक प्रतियों के लेखों में कहीं कहीं शब्द, पद या वाक्य में दिखाई पड़ने-वाला भेद। पाठ-भेद।

पाठा-पुं० [सं० पुष्ट] [स्त्री० पाठी] १ दे० 'पट्ठा'। २. जवान बैल, भैंसा या बकरा।

पाठावली-स्त्री० [सं०] १. पाठों का समूह। २ पाठों की पुस्तक।

पाठी-पुं० [सं० पाठिन्] पाठ करने या पढ़नेवाला। पाठक। (यौ० के अन्त में, जैसे-वेदपाठी।)

पाठ्य-वि० [सं०] १. पढने योग्य। पठनीय। २. पढ़ाया जानेवाला।

पाठ्य पुस्तक-स्त्री० [सं०] वह पुस्तक जो पाठशालाओं मे विद्यार्थियो को नि-यमित रूप से पढ़ाई जाती हो। पढ़ाई की किताब। (टेक्स्ट बुक)

पाड़-पुं० [हिं० पाट] १. धोती आदि का किनारा। २.मचान। पाड़ट। ३. कूएँ के मुँह पर रखने की जाली। चह। ४. बाँध। पुश्ता। ५. फाँसी का तख्ता।

पाड़ा-पुं० दे० 'महल्ला'।

पाढ़-पुं० [सं० पाटा] १. पाटा। २. वह मचान जिसपर बैठकर किसान खेत

को रखवाली करते हैं। ३. वह ढाँचा जिसपर बैठकर कारीगर काम करते हैं।

पाढ़त*-स्त्री० [हिं० पढ़ना] १. पाठ। २. शिक्षा। पढ़ाई। ३ मंत्र। जादू।

पाढ़र-पुं० दे० 'पाटल'।

पाढ़ा-पुं० [देश०] एक प्रकार का हिरन। चित्रमृग।

*स्त्री० दे० 'पाठा'।

पाणि-पुं० [सं०] हाथ।

पाणि-ग्रहण-पुं० [सं०] विवाह।

पात-पुं० [सं०] १ गिरने या गिराने की क्रिया या भाव। पतन। २ नाश। बरबादी। ३. मृत्यु। मौत।

*पुं० दे० 'पत्ता'।

पातक-पुं० [सं०] पाप। गुनाह।

पातकी-वि० [सं०] पापी।

पातन-पुं०[सं०] गिराने की क्रिया या भाव।

पातर*-स्त्री०१.दे०'पत्तल'।२.दे०'पातुर'।

*वि० दे० 'पतला'।

पातशाह-पुं० = बादशाह।

पाता*-पुं० = पत्ता।

पातावा-पुं०[फा०]पैरों में पहनने का मोजा।

पाताल-पुं० [सं०] १ पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में से सबसे नीचे का या सातवाँ लोक। २. पृथ्वी से नीचे का कोई लोक।

पातिव्रत(त्य)-पुं० [सं०] पतिव्रता होने का भाव।

पातिसाहि-पुं०=बादशाह।

पाती*-स्त्री० [सं० पत्री] १. चिट्ठी। पत्र। २. वृक्ष के पत्ते।

स्त्री० [हिं० पति] प्रतिष्ठा। पत।

पातुर।-स्त्री० [सं० पातली] वेश्या।

पात्र-पुं० [सं] [स्त्री० पात्री, भाव० पात्रता] १. वह जिसमें कुछ रखा जा सके। आधार। बरतन। २.कुछ पाने या लेने के योग्य (व्यक्ति)। जैसे-दान-पात्र। ३. नाटक में अभिनय करनेवाला। अभिनेता। नट। ४. कथानक, उपन्यास आदि में का वह व्यक्ति जिसका कथावस्तु में कोई स्थान हो या कुछ चरित्र दिखाया गया हो।

पात्री-स्त्री० [सं०] १ छोटा बरतन। २. कथानक, अभिनय आदि में स्त्री पात्र।

पाथ*-पुं० [सं० पथ] मार्ग। रास्ता।

पाथना-स० [सं० प्रथन] १. गीली मिट्टी आदि वस्तुओं को थाप, पीट या दबाकर (ईंट, खपड़े, उपले आदि के) विशेष आकार में लाना। २ दे०'पथना'।

पाथर*-पुं० दे० 'पत्थर'।

पाथेय-पुं० [सं०] १. पथ या रास्ते मे काम आनेवाला खाद्य पदार्थ। २ यात्रा की सामग्री और व्यय के लिए धन।

पाद-पुं० [सं०] १. पैर। पाँव। २. श्लोक या पद्य का चरण। पद। ३. चतुर्थांश। चौथाई भाग। ४. पुस्तक का प्रकरण। ५. नीचे का भाग। तल।

पुं० [सं० पर्द] अधोवायु। अपान वायु।

पाद-टिप्पणी-स्त्री० [सं०] वह टिप्पणी जो किसी ग्रन्थ में पृष्ठ के नीचे सूचना, निर्देश आदि के लिए लिखी जाती है। (फुटनोट)

पादत्राण-पुं० [सं०] जूता।

पादना-अ० [हिं० पाद] गुदा से वायु त्याग करना।

पादप-पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़।

पाद-पूरण-पुं०[सं०] १.कविता के किसी अधूरे चरण को पूरा करना। २. केवल पद या चरण पूरा करने के लिए उसमें अनावश्यक या भरती के शब्द रखना।

पादरी-पुं० [पुर्त्त० पैड्रे] ईसाई पुरोहित जो अन्य ईसाइयों के संस्कार और उपासना कराता है।

पादशाह-पुं० = बादशाह।

पादाक्रांत-वि० [सं०] १. पद-दलित। पैर से कुचला हुआ। २. विजित। पराजित।

पादारघ*-पुं० दे० 'पाद्यार्घ'।

पादुका-स्त्री० [सं०] १. खड़ाऊँ। २. जूता।

पाद्य-पुं० [सं०] पूजनीय व्यक्ति या देवता के लिए पैर धोने का जल।

पाद्यार्घ-पुं० [सं०] १. हाथ-पैर धोने के लिए दिया जानेवाला जल। २. पूजा या भेंट की सामग्री।

पाधा-पुं० दे० 'उपाध्याय'।

पान-पुं० [सं०] १ जल आदि द्रव पदार्थ पीना। २ पीने का पदार्थ। पेय द्रव्य। ३. मदिरा पीना।

पुं० [सं० पर्ण] १. पत्ता। २. एक प्रसिद्ध लता जिसके पत्तों पर कत्था, चूना आदि लगाकर और उनका बीड़ा बनाकर खाया जाता है। ताम्बूल।

मुहा०-**पान बनाना** = पान पर चूना, कत्था सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना। **पान लेना**=दे० 'बीड़ा लेना'। यौ०-**पान-पत्ता**=१. सामान्य पूजा या भेंट। पान-फूल। २. पान आदि सत्कार की सामग्री। **पान-फूल** = १. दे० 'पान-पत्ता'। २ बहुत कोमल वस्तु। *३. पुस्तक का पन्ना। वरक। पृष्ठ। *पुं० दे० 'पाणि'।

पानदान-पुं० [हिं० पान + फा० दान (प्रत्य०)] पान, चूना, कत्था आदि रखने का डिब्बा। पन-डब्बा।

पानही-स्त्री० दे० 'पनही'।

पाना-स०[सं०प्रापण] १. आने पर अपने पास या अधिकार में करना। प्राप्त करना। २. अच्छा या बुरा फल भोगना। ३. दी या खोई हुई चीज फिर से हाथ में लेना। ४. पड़ी हुई वस्तु उठाना। ५. देख या जान लेना। अनुभव करना। ६. समर्थ होना। सकना। (संयोज्य क्रिया में) ७. किसी के पास या निकट पहुँचना। ८. बराबरी कर सकना। ९. भोजन करना। खाना। (साधु)

पुं० पावना। प्राप्तव्य धन।

पानि*-पुं० [सं० पाणि] हाथ।

पानिप-पुं०[हिं०पानी] १. ओप। कांति। चमक। २ पानी। जल।

पानी-पुं० [सं० पानीय] १. नदी, कूएँ या वर्षा से मिलनेवाला वह प्रसिद्ध यौगिक द्रव पदार्थ जो पीने, नहाने, खेत आदि सींचने के काम आता है। जल। नीर। मुहा०-**पानी करना**=किसी का क्रोध या आवेश शान्त करना। **पानी की तरह बहाना**=अधिक खर्च करना। उड़ाना। **पानी के मोल होना**=बहुत सस्ता होना। **पानी देना**=१. सींचना। २. पितरों के नाम अंजलि में पानी लेकर गिराना। तर्पण करना। **पानी पढ़ना**=मंत्र पढ़कर पानी पर फूँकना। ***पानी परोरना**= दे० 'पानी पढ़ना'। **पानी पानी होना**= बहुत लज्जित होना। **पानी फूँकना**= मंत्र पढ़कर पानी पर फूँक मारना। **(किसी पर) पानी फेरना या फेर देना**=सर्वनाश कर देना। **पानी भरना**=१. तुलना में तुच्छ सिद्ध होना। २. अधीन या दास होकर रहना। ३. दुर्दशा झेलना। **पानी में आग लगाना**=जहाँ झगड़ा न हो सकता हो, वहाँ भी झगड़ा करा देना। **पानी में**

फेंकना=नष्ट करना। मुँह में पानी आना=खाने या लेने के लिए गहरा क्षोभ होना।

पद० पानी का बुलबुला=क्षण-भंगुर वस्तु। न टिकनेवाली चीज।

२. जीभ, आँख, घाव आदि में से रसने-वाला तरल पदार्थ। ३. वर्षा। मेंह। वृष्टि। ४. पानी की तरह पतली वस्तु। ५. रस। अरक। जूस। ६. चमक। कांति। ओप। ७ धारदार हथियारों के फल की वह रंगत या चमक जिससे उनकी उत्तम-ता प्रकट होती है। आब। जौहर। ८. मान। प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०-पानी उतारना=बेइज्जत करना।

९. वर्ष। जैसे-पाच पानी का पेड़। १०. मुलम्मा। ११. वीरता। बहादुरी। १२. स्वाद में पानी की तरह फीका पदार्थ। १३. लड़ाई या युद्ध। १४. बार। दफा। १५. जल-वायु।

*पुं० दे० 'पाणि'।

पानीदार-वि० [हिं० पानी+फा० दार (प्रत्य०)] १. चमकदार। २. इज्जत-दार। ३. जीवटवाला। साहसी।

पानूस*-पुं० दे० 'फानूस'।

पानौरा-पुं० [हिं० पान+बरा] पान के पत्ते की पकौड़ी।

पान्यो*-पुं० दे० 'पानी'।

पाप-पुं० [सं०] १. इस लोक में बुरा माना जानेवाला और परलोक में अशुभ फल देनेवाला कर्म, धर्म या पुण्य का उलटा। पातक। गुनाह।

मुहा०-पाप उदय होना=पिछले पापों का फल मिलने का योग या अवसर आना। पाप कटना=पापों का नाश होना। पाप कमाना या बटोरना= पाप करके उसके फल के भागी बनना।

२. अपराध। कसूर। जुर्म। ३. पाप करने का विचार। बुरी नीयत। ४. व्यर्थ की झंझट। बखेड़ा।

मुहा०-पाप कटना=झगड़े या जंजाल से पीछा छूटना। पाप मोल लेना= जान-बूझकर अपने सिर झंझट लेना। *पाप पड़ना=मुश्किल हो जाना।

पाप-कर्म-पुं० [सं०] पाप समझा जाने-वाला काम।

पापकर्मा-वि० दे० 'पापी'।

पाप-ग्रह-पुं० [सं०] शनि, राहु, केतु आदि अशुभ फल देनेवाले ग्रह। (फलित ज्योतिष)

पापघ्न-वि० [सं०] पाप-नाशक।

पापड़-पुं० [सं० पर्पट] उर्द या मूँग के आटे की मसालेदार पतली चपाती।

मुहा०-पापड़ बेलना=१ बहुत परि-श्रम करना। २. दुःख से दिन काटना। बहुत से पापड़ बेलना=बहुत तरह के काम कर चुकना।

पाप-नाशक-वि० [सं०]पापों का नाश करनेवाला। पापनाशी।

पापाचार-पुं० [सं०] [वि० पापाचारी] पाप का आचरण। दुराचार।

पापात्मा-वि० दे० 'पापी'।

पापिष्ठ-वि० [सं०] बहुत बड़ा पापी।

पापी-वि० [सं० पापिन्] [स्त्री० पापिनी] १. पाप करनेवाला। अघी। पातकी। २. क्रूर। निर्दय।

पाबंद-वि० [फा०] [स्त्री० पाबंदी] १. बँधा हुआ। बद्ध। २. नियम, विधि आदि का नियमित रूप से पालन करने-वाला या उनके पालन के लिए विवश।

पामर-वि०[सं०][भाव०पामरता] १.खल।

दुष्ट । कमीना । २. पापी । ३. नीच ।

पायँ*-पुं० = पाँव ।

पायँ-जेहरि*-स्त्री० दे० 'पाजेब' ।

पायँता-पुं० [हिं० पायँ+सं० स्थान] बिछौने या चारपाई का वह सिरा जिधर पैर रहते हैं । 'सिरहाना' का उलटा । पैताना ।

पायँदाज-पुं० [फा०] पैर पोंछने का बिछावन । पांवड़ा ।

पाय*-पुं० दे० 'पाव' ।

पायक-पुं० [सं० पादातिक, पायिक] १ दूत । हरकारा । २. दास । सेवक । ३. पैदल सिपाही ।

पायतन*-पुं० दे० 'पायँता' ।

पायदार-वि० [फा०] [भाव० पायदारी] बहुत दिनों तक काम आने या टिकनेवाला । दृढ़ । मजबूत । पक्का ।

पायल-स्त्री० [हिं० पाय+ल (प्रत्य०)] १. पाजेब नाम का पैर का गहना । २. तेज चलनेवाली हथिनी ।

पुं० वह बच्चा जिसके जन्म के समय पहले पैर बाहर निकले हों ।

पायस-पुं० [सं०] खीर ।

पायसा*-पुं० दे० 'पड़ोस' ।

पाया-पुं० [सं० पाद] १. पलंग, चौकी आदि में नीचे के वे छोटे खंभे जिनके सहारे उनका ढांचा खड़ा रहता है । गोड़ा । पावा । २. । खंभा । स्तंभ । ३. पद । दरजा । ओहदा ।

पायी-वि० [सं० पायिन्] पीनेवाला । (यौगिक में; जैसे-स्तनपायी ।)

पारंगत-वि० [सं०] [स्त्री० पारंगता] १. जो पार हो चुका हो । २. पूर्ण पंडित । पूरा जानकार ।

पारंपरीण-वि० [सं०] परंपरा से चला आया हुआ । परंपरागत ।

पारंपर्य्य-पुं०[सं०] १. 'परंपरा' का क्रम या भाव । २. वंश-परंपरा ।

पार-पुं०[सं०] १. जलाशयों में सामने या उस ओर का किनारा । दूसरी ओर का तट । यौ०-आर-पार=इस किनारे या सिरे से उस किनारे या सिरे तक ।

मुहा०-पार उतरना=१. नदी के उस पार पहुँचना । २. कोई काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना । (नदि आदि) पार करना=जलाशय आदि के इस किनारे से उस किनारे पहुँचना । पार लगना= नदी आदि के दूसरे किनारे पर पहुँचना । (किसी से)पार लगना=पूरा हो सकना । पार लगाना=१. उस पार या दूसरे किनारे पर पहुँचाना । २. संकट से उद्धार करना । ३. काम पूरा या समाप्त करना ।

२. सामनेवाला दूसरा पार्श्व । दूसरी तरफ । ३. अंत । सिरा । छोर ।

मुहा०-(किसी का) पार पाना= किसी की गहराई या थाह तक पहुँचना । (किसी से) पार पाना=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना या उससे जीत सकना ।

अव्य० परे । आगे । दूर ।

पारख(रिख)*-स्त्री० दे० 'परख' ।

पुं० दे०' पारखी' ।

पारखी-पुं० [हिं०परख] परख या पहचान रखनेवाला । परखनेवाला ।

पारग-वि० [सं०] १. जो पार चला गया हो । २. अच्छा ज्ञाता । जानकार ।

पारजात*-पुं० दे० 'पारिजात' ।

पारण-पुं० [सं०] [वि० पारित] १. पार करने या उतरने की क्रिया या भाव । २. परीक्षा या जाँच में पूरा उतरना । उत्तीर्ण होना । (पासिंग) ३. रुकावट

या बन्धन की जगह पार करके आगे बढ़ना। (पासिंग) ४. धार्मिक व्रत या उपवास के दूसरे दिन का पहला भोजन और तत्संबंधी कृत्य। ५. समाप्ति।

पारणपत्र-पुं० [सं०] १. वह पत्र जो किसी परीक्षा आदि में उत्तीर्ण होने का सूचक हो। २. वह पत्र जिसे दिखलाकर कोई कहीं आ-जा सके या इसी प्रकार का और कोई काम कर सके। (पास)

पारतंत्र्य-पुं० [सं०] परतंत्रता।

पारत्रिक-वि० दे० 'पारलौकिक'।

पारथ*-पुं० दे० 'पार्थ'।

पारद-पुं० [सं०] १. पारा। २. फारस देश की एक प्राचीन जाति।

पारदर्शक-वि० [सं०] १. जिसके सामने या बीच में रहने पर भी उस पार की चीज दिखाई पड़े। (ट्रान्सपेअरेन्ट) जैसे-शीशा पारदर्शक होता है।

पारदर्शिता-स्त्री० [सं०] पारदर्शी होने का भाव।

पारदर्शी-वि० [सं० पारदर्शिन्] [स्त्री० पारदर्शिनी] १.(किसी विषय में) बहुत दूर, उस पार या बाद तक की बात देखने या समझनेवाला। दूरदर्शी। २. दे० 'पारदर्शक'।

पारधी-पुं० [सं० परिधान] १. बहेलिया। व्याध। २ शिकारी। ३ हत्यारा।

पारन*-पुं० दे० 'पारण'।

पारना-स० [हिं० पारना (पड़ना) का स० रूप] १. डालना। गिराना। २. लेटाना। ३. कुश्ती या लड़ाई में पछाड़ना। ४. रखना या देना।

मुहा०-**पिंडा पारना**=पिण्डदान करना। ५. किसी के अंतर्गत करना। मिलाना। ६. शरीर पर धारण करना। पहनना। ७. बुरी बात या दुर्घटना घटित करना। ८. साँचे आदि में ढालना।

*अ० [हिं० पार+लगना] कर सकना। करने में समर्थ होना।

*स० दे० 'पालना'।

पारमार्थिक-वि०[सं०] परमार्थ संबंधी। जिससे परमार्थ सिद्ध हो।

पारलौकिक-वि०[सं०]१ परलोक संबंधी। २. परलोक में शुभ फल देनेवाला।

पारशव-पुं० [सं०] १. पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष। २. एक वर्ण-संकर जाति। ३ लोहा। ४. एक प्राचीन देश जहाँ मोती निकलते थे।

पारषद*-पुं० दे० 'पार्षद'।

पारस-पुं० [सं० स्पर्श] १. एक कल्पित पत्थर। कहते हैं कि यदि लोहा उससे छू जाय तो सोना हो जाता है। स्पर्श मणि। २. बहुत लाभदायक और उपयोगी वस्तु।

पुं० [हिं० परसना] खाने के लिए परोसा हुआ भोजन।

*अव्य० [सं० पार्श्व] पास। निकट।

पुं० [सं० पारस्य] अफगानिस्तान के पश्चिम का एक प्राचीन देश। फारस।

पारसनाथ-पुं० दे० 'पार्श्वनाथ'।

पारसल-पुं० [अं०] किसी चीज की पोटली या गठरी। (विशेषतः रेल, डाक आदि से कहीं भेजने के लिए)

पारसव*-पुं० दे० 'पारशव'।

पारसी-वि० [फा० फारस] पारस देश का। पारस देश-संबंधी।

पुं० १. पारस देश का निवासी। २. बंबई और गुजरात में हजारों वर्षों से बसे हुए वे फारस-निवासी जिनके पूर्वज मुसलमानों के भय से यहाँ चले आये थे।

पारसीक-पुं० [सं०] १. पारस देश।

२. यहाँ का निवासी। ३. यहाँ का घोड़ा।

पारस्परिक-वि० [सं०] [भाव० पारस्परिकता] परस्पर होनेवाला । एक दूसरे का। आपस का।

पारा-पुं० [सं० पारद] एक प्रसिद्ध, सफेद, बहुत वजनी और चमकीली धातु जो साधारणतः द्रव रूप में रहती है। मुहा०-**पारा पिलाना**=कोई वस्तु इतनी भारी करना कि मानों उसमें पारा भरा हो। पुं० [सं० पारि] मिट्टी का बड़ा कसोरा। परई। *पुं० [फा० पार:] टुकड़ा।

पारायण-पुं० [सं०] १ पूरा करने का काम। समाप्ति। २. नियत या नियमित समय पर होनेवाला किसी धर्म-ग्रंथ का आदि से अंत तक पाठ।

पारावत-पुं० [सं०] १ परेवा। पंडुक। २. कबूतर। कपोत। ३ पहाड़।

पारावार-पुं० [सं०] १. आर-पार। दोनों तट। २. सीमा। हद। ३. समुद्र।

पारि*-स्त्री० [हिं० पार] १. हद। सीमा। २. ओर। तरफ। ३. जलाशय का तट। किनारा।

पारिख*-स्त्री० दे० 'परख'।

पारिजात-पुं० [सं०] १. समुद्र-मन्थन के समय निकला हुआ एक कल्पित वृक्ष जो इन्द्र के नंदन कानन में लगा हुआ माना जाता है। २. परजाता। हरसिंगार।

पारित-वि० [सं०] १. जिसका पारण हो चुका हो। २. जो परीक्षा आदि में उत्तीर्ण या पार हो चुका हो। ३ (प्रस्ताव, विधेयक आदि) जो नियमानुसार ठीक मान लिया गया हो और जिसके अनुसार काम होने को हो। जो पास हो चुका हो।

पारितोषिक-पुं० [सं०] किसी से या उसके किसी काम से परितुष्ट या प्रसन्न होकर उसे दिया जानेवाला धन या पदार्थ। इनाम। (प्राइज)

पारिपार्श्विक-पुं० [सं०] १. सेवक। २. पारिषद्। ३. नाटक में वह नट जो स्थापक का अनुचर होता है।

पारिभाव्य-वि० [सं०] जमानत आदि के रूप में या कोई शर्त्त पूरी कराने के लिए लिया हुआ। जैसे-पारिभाव्य धन। (कॉशन मनी)

पारिभाषिक-वि० [सं०] १. 'परिभाषा' से संबंध रखनेवाला। २.(शब्द) जिसका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में, संकेत रूप से होता हो। (टकनिकल)

पारिभाषिकी-स्त्री० [सं०] विधान आदि का वह पूरक अंग या अंश जिसमें उनके विशिष्ट शब्दों की परिभाषायें रहती हैं।

पारिश्रमिक-पुं० [सं०] वह धन जो किसी को कुछ परिश्रम करने पर उसके बदले में या पारितोषिक आदि के रूप में दिया जाता है। (रिम्यूनरेशन)

पारिषद्-पुं० [सं०] १. परिषद् में बैठनेवाला। सभासद। सभ्य। २. अनुयायी वर्ग। गण।

पारी-स्त्री० [हिं० बार, बारी] किसी बात या कार्य के लिए वह अवसर जो कुछ अंतर देकर क्रम से प्राप्त हो। बारी।

पारुष्य-पुं०[सं०] १.'परुष' का भाव। २. वचन की कठोरता। बात का कड़वापन।

पार्क-पुं० [अं०] उद्यान। बाग।

पार्टी-स्त्री०[अं०] १. कुछ लोगों का दल। २ वह समारोह जिसमें लोगों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाता है।

पार्थ-पुं० [सं०] १. पृथ्वीपति। २.

(पृथा का पुत्र) अर्जुन। ३ युधिष्ठिर और भीम। ४. अर्जुन वृक्ष।

पार्थक्य-पुं० [सं०] १. पृथक् होने का भाव। अलगाव। भेद। २. वियोग।

पार्थिव-वि० [सं०] १. पृथ्वी-संबंधी। २. पृथ्वी से उत्पन्न। ३. पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ।
पुं० मिट्टी का शिवलिंग, जिसके पूजन का विशेष माहात्म्य कहा गया है।

पार्थी-वि० दे० 'पार्थिव'।

पार्लमेन्ट-स्त्री० दे० 'संसद्'।

पार्वण-पुं० [सं०] वह श्राद्ध जो किसी पर्व के समय किया जाता है।

पार्वती-स्त्री० [सं०] हिमालय पर्वत की कन्या और शिव की पत्नी। गौरी। भवानी। उमा। गिरिजा।

पार्वतीय-वि० [सं०] पहाड़ का। पहाड़ी।

पार्श्व-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु या शरीर का दाहिना या बायाँ भाग। बगल। २. अगल-बगल की जगह। पास का स्थान।

पार्श्वनाथ-पुं० [सं०] जैनों के तेईसवें तीर्थंकर।

पार्श्ववर्त्ती-पुं० [सं०] [स्त्री० पार्श्ववर्त्तिनी] किसी के पास या साथ रहनेवाला। मुसाहब।

पार्षद-पुं० [सं०] १. पास रहनेवाला। २. सेवक। पारिषद। ३. मुसाहब।

पाल-वि० [सं०] पालनकर्त्ता। पालक।
स्त्री० [हिं० पालना] कृत्रिम रूप से गरमी पहुँचाकर फलों को पकाने के लिए पत्तों आदि से ढककर रखने की विधि।
पुं० [सं० पट या पाट] १. वह बहुत बड़ा कपड़ा जो नाव के मस्तूल में इसलिए बाँधा जाता है कि उसपर पवन-वाले हवा के दबाव से नाव तेजी से चले। २. तंबू। शामियाना। ३. गाड़ी या पालकी को ऊपर से ढकने का ओहार।
स्त्री० [सं० पालि] १. पानी को रोकनेवाला बाँध या मेड़। २. ऊँचा किनारा।

पालक-वि० [सं०] [स्त्री० पालिका] पालन करनेवाला।
पुं० पाला हुआ लड़का। दत्तक पुत्र।
पुं० [सं० पालंक] एक प्रकार का साग।
* पुं० दे० 'पलंग'।

पालकी-स्त्री० [सं०पल्यंक] बड़े संदूक की तरह की एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधे पर लेकर चलते हैं। मियाना। खड़खड़िया।
स्त्री० [सं० पालंक] पालक का साग।

पालकी गाड़ी-स्त्री० [हिं० पालकी+ गाड़ी] पालकी के आकार की छायादार घोड़ा-गाड़ी।

पालट-पुं० [हिं० पालना] दत्तक पुत्र।

पालतू-वि० [हिं० पालना] पाला या पोसा हुआ (जानवर)।

पालथी-स्त्री० दे० 'पलथी'।

पालन-पुं० [सं०] [वि० पालनीय, पालित, पाल्य] १. भोजन, वस्त्र आदि देकर की जानेवाली जीवन-रक्षा। भरण-पोषण। परवरिश। (मेन्टेनेन्स) २. अनुकूल आचरण द्वारा किसी निश्चय की रक्षा या निर्वाह। (एबाइड) ३. आज्ञा, निर्देश, वचन, कर्त्तव्य आदि के अनुसार काम करना। (डिसचार्ज, कम्प्लायन्स) ४. जीव-जन्तुओं आदि को रखकर उनका वंश, सामर्थ्य या उनसे होनेवाली उपज आदि बढ़ाने का काम। जैसे-तरु-पालन, अश्व-पालन। (कलचर)

पालना-स० [सं० पालन] १. भोजन,

बच्चा आदि देकर जीवित रखना। भरण-पोषण करना। परवरिश करना। २. पशु-पक्षी आदि को मनोविनोद के लिए अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना। ३. भंग न करना। न टालना। (बात, आज्ञा आदि)
पुं० [सं० पर्यंक] छोटे बच्चों के लिए एक प्रकार का झूला या हिंडोला। गहवारा।
पालनीय-वि० [सं०] पालन करने के योग्य। जिसका पालन करना हो। पाल्य।
पालव[†]-पुं० दे० 'पल्लव'।
पाला-पुं० [सं० प्रालेय] १. हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणु जो ठंढक के कारण पृथ्वी पर सफेद तह के रूप में जम जाते हैं। हिम।
मुहा०-पाला मार जाना=पौधे या फसल का पाला गिरने से नष्ट हो जाना।
२. हिम। बरफ। ३. ठंढ। सरदी।
पुं० [हिं० पल्ला] व्यवहार करने का संयोग। संपर्क। वास्ता। साबिका।
मुहा०-(किसी से) पाला पड़ना=व्यवहार करने का संयोग होना। काम पड़ना। (किसी के) पाले पड़ना=वश में पड़ना या होना।
पुं० [सं० पट्ट, हिं० पाड़ा] १. प्रधान स्थान। २. सीमा निर्धारित करनेवाली मेंड़। ३ कुछ खेलों में प्रत्येक पक्ष या दल के लिए नियत स्थान जो ठीक आमने-सामने होते हैं। ४. अनाज भरने का मिट्टी का एक बड़ा पात्र। ५. अखाड़ा।
पालागन-स्त्री० [हिं० पाँय+लगना] प्रणाम। दंडवत्। नमस्कार।
पालिका-स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।
पालित-वि० [सं०] [स्त्री० पालिता] १. पाला-पोसा हुआ। २. रक्षित।
पालिनी-वि० स्त्री० [सं०] पालन करनेवाली।
पालिश-स्त्री० [अं०] १. चिकनाई और चमक। ओप। २. वह मसाला या क्रिया जिससे किसी चीज पर खूब चमक आती है।
पाली-वि० [सं० पालिन्] [स्त्री० पालिनी] पालन या रक्षा करनेवाला।
स्त्री० [सं० पालि] एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्म-ग्रंथ लिखे हुए हैं।
स्त्री० [हिं० पारी] १. पारी। बारी। २. कल-कारखाने आदि में कुछ निश्चित समय तक एक श्रमिक दल का काम करना जिसके बाद उतने समय तक दूसरा श्रमिक दल काम करता है। (शिफ्ट)
पालू-वि० दे० 'पालतू'।
पाल्य-वि० [सं०] पालने के योग्य।
पावँ-पुं० दे० 'पाँव'।
पावँर*-वि० [सं० पामर] १. तुच्छ। क्षुद्र। २. नीच। दुष्ट।
पुं० दे० 'पाँवड़ा'।
स्त्री० दे० 'पाँवड़ी'।
पाव-पुं० [सं० पाद] १. चौथाई भाग या अंश। २. एक सेर का चौथाई भाग, जो चार छटाक का होता है। ३. इतनी तौल का बटखरा।
पावक-पुं० [सं०] १. अग्नि। आग। २. तेज। ३. सदाचार। ४. सूर्य।
वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला।
पावती-स्त्री० [हिं० पावना] रुपये या और कोई चीज पाने का सूचक पत्र। रसीद।
पावदान-पुं० [हिं० पाँव+दान (प्रत्य०)] १. इक्के, गाड़ी आदि में पैर रखने के लिए बना हुआ स्थान। २. दे० 'पाँवड़ा'।
पावन-वि० [सं०] [स्त्री० पावनी,

भाव० पावनता] १. पवित्र करनेवाला। २. पवित्र। शुद्ध।
पुं० १. अग्नि। २. प्रायश्चित्त। ३. जल। ४. गोबर। ५. रुद्राक्ष।
पावना-पुं० [हिं० पाना] वह रुपया जो दूसरे से पाना हो। प्राप्य धन। लहना।
*स० दे० 'पाना'।
पावस*-पुं० [सं० प्रावृष] वर्षा ऋतु।
पावा*-पुं० दे० 'पाया'।
पाश-पुं० [सं०] १. रस्सी, तार आदि का वह फंदा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है और बंधन कसने से प्रायः मर भी जाता है। फंदा। २. पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल या फंदा। ३. किसी प्रकार का बंधन।
पाशव-वि० [सं०] [भाव०पाशवता] १. पशु-संबंधी। २. पशुओं का-सा।
पाशविक-वि० दे० 'पाशव'।
पाशा-पुं० [तु०, मि० फा०पादशाह] तुर्की सरदारों की उपाधि।
पाशुपत-वि० [सं०] पशुपति संबंधी। पुं० पशुपति या शिव का उपासक।
पाश्चात्य-वि० [सं०] १ पीछे का। पिछला। २. पश्चिम दिशा का। पश्चिमी।
पाश्चात्यीकरण-पुं०[सं०पाश्चात्य+करण] किसी देश या जाति आदि को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे में ढालना या पाश्चात्य ढंग का बनाना।
पाषंड-पुं० दे० 'पाखंड'।
पाषाण-पुं०[सं०] [वि०पाषाणीय] पत्थर। वि०[स्त्री० पाषाणी] निर्दय। हृदय-हीन।
पाषाणी-वि० [सं०] पत्थर की तरह कठोर हृदयवाली।
पासंग-पुं० [फा०] तराजू की डंडी या तौल बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ। पसंगा।
वि०१.बहुत थोड़ा। २.तुच्छ। (तुलना में)
मुहा०-(किसी का) पासंग भी न होना=किसी के सामने कुछ भी न होना।
पास-पुं० [सं० पार्श्व] १. बगल। ओर। तरफ। २. सामीप्य। निकटता। समीपता। ३. अधिकार। कब्जा।
अव्य० १. निकट। समीप। नजदीक।
यौ०-आस-पास=१. अगल-बगल। समीप। २. लगभग। करीब। प्रायः।
मुहा०-(किसी के) पास बैठना= संगत या साथ में रहना। पास न फटकना=निकट न जाना।
२. अधिकार में। कब्जे में। ३. किसी के प्रति। किसी से।
*पुं० दे० 'पासा'।
वि० [अं०] परीक्षा आदि में सफल। उत्तीर्ण।
पुं० [अं०] वह कागज जिसके द्वारा किसी को बे-रोक टोक कहीं आने-जाने का अधिकार या अनुमति हो। पारण-पत्र।
पासमान*-पुं०[हिं०पास+मान (प्रत्य०)] १. पास रहनेवाला। पार्श्ववर्ती। २. सेवक। दास।
पासवर्त्ती*-वि० दे० 'पार्श्ववर्ती'।
पासा-पुं० [सं० पाशक, प्रा० पासा] १. काठ या हड्डी के वे छः-पहले लंबे टुकड़े जिनके पहलों पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर और कई प्रकार के खेल या जूए खेलते हैं।
मुहा०-(किसी का) पासा पड़ना= भाग्य अनुकूल और प्रबल होना। पासा पलटना=१. अच्छे से बुरा भाग्य होना। २. युक्ति या उपाय का उलटा फल होना। ३. जो कुछ हो रहा है, उसे

उलटा करना। (सकर्मक में)
२. पासों से खेला जानेवाला खेल या जूआ। ३ मोटी बत्ती के आकार की गुल्ली। जैसे-चाँदी या सोने का पासा।
पासि (क)*-पुं० [सं० पाश] १ फंदा। २ बंधन।
पासी-पुं० [सं० पाशिन्] १ जाल या फंदा डालकर चिड़ियाँ पकड़नेवाला। २ एक जाति जो ताड़ के पेड़ों से ताड़ी उतारने का काम करती है।
स्त्री० [सं० पाश, हिं० पास+ई(प्रत्य०)] १. फंदा। पाश। २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी।
पासुरी*-स्त्री० दे० 'पसली'।
पाहँ*-अव्य०दे०'पाहिं'। (किसी के प्रति)
पाहन*-पुं० [सं० पाषाण] पत्थर।
पाहि*-अव्य० [सं० पार्श्व] १. पास। निकट। समीप। २. किसी के प्रति। किसी से।
पाहि-एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है—'रक्षा करो' या 'बचाओ'।
पाहीं*-अव्य० दे० 'पाहिं'।
पाहुना-पुं० [सं० प्राघूर्ण] [स्त्री० पाहुनी] १ अतिथि। मेहमान। २. दामाद।
पाहुनी-स्त्री० [हिं० पाहुना] रखेली स्त्री।
पिंग-वि० [सं०] पीलापन लिये हुए भूरा। तामड़ा।
पिंगल-वि० [सं०] १. पीला। पीत। २. भूरापन लिये हुए लाल। तामड़ा।
पुं० १. छंदः शास्त्र के पहले आचार्य एक प्राचीन मुनि। २. छंदः शास्त्र। ३. बंदर। ४. अग्नि। ५. उल्लू पक्षी।
पिंगला-स्त्री० [सं०] १. हठ योग और तंत्र में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक। २. लक्ष्मी।
पिंजड़ा-पुं० दे० 'पिंजरा'।
पिंजर-पुं० [सं०] १. शरीर के अन्दर, हड्डियों की ठठरी। पंजर। २. पिंजरा। ३. सोना। स्वर्ण। ४. भूरापन लिये लाल रंग का घोड़ा।
पिंजरा-पुं० [सं०पंजर] लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ वह झाबा जिसमें पक्षी बंद करके रखे जाते हैं।
पिंजरापोल-पुं०=गोशाला या पशुशाला।
पिंड-पुं० [सं०] १. गोल पदार्थ। ठोस गोला। २. पके हुए अन्न या उसके चूर्ण आदि का गोल लोंदा जो श्राद्ध में पितरों के नाम पर दिया जाता है। ३.शरीर। देह।
मुहा०-पिंड छोड़ना=साथ रहकर या पीछे लगकर तंग करने से विरत होना।
पिंड खजूर-स्त्री० [सं० पिंडखर्जूर] एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।
पिंडज-पुं० [सं०] गर्भ से शरीर या पिंड के रूप में और सजीव निकलनेवाले जंतु। जैसे-आदमी, कुत्ता, घोड़ा आदि।
पिंड-दान-पुं० [सं०] श्राद्ध में पितरों को पिंड देना।
पिंडरी*-स्त्री० दे० 'पिंडली'।
पिंडली-स्त्री० [सं० पिंड] घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग।
पिंडा-पुं० [सं० पिंड] १. दे० 'पिंड'।
मुहा०-पिंडा पानी देना=श्राद्ध और तर्पण करना।
२. शरीर। देह।
पिंडारी-पुं० [देश०] दक्षिण भारत की एक मुसलमान जाति जो लूट-मार का पेशा करती थी।
पिंडिका-स्त्री० [सं०] १. छोटा पिंड। २. पिंडली। ३. शिव की लिंग-मूर्ति।
पिंड़िया-स्त्री० [सं० पिंडिक] १. गुड़ या

कुछ पकवानों की छोटी लंबोत्तरी पिंडी। २. दे० 'पिंडी'।

पिंडी-स्त्री० [सं०] १. छोटा डला या पिंड। २. पिंडखजूर। ३. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा। ४ दे० 'पिंडिका'।

पिंडुरी*-स्त्री० दे० पिंडली'।

पिश्र-वि० पुं० दे० 'प्रिय'।

पिअराई*-स्त्री० [हिं० पीला] पीलापन।

पिउ*-पुं० [सं० प्रिय] पति।

पिक-पुं० [सं०] [स्त्री० पिकी] कोयल।

पिघलना-अ० [सं० प्र+गलन] [स० पिघलाना] १. घन पदार्थ का गरमी से गलकर तरल होना। द्रवीभूत होना। २. चित्त में दया उत्पन्न होना। पसीजना।

पिचकना-अ० [सं० पिच्च=दबना] [स० पिचकाना] फूले या उभरे हुए तल का दबना।

पिचकारी-स्त्री० [हिं० पिचकना] वह उपकरण या यंत्र जिसके द्वारा कोई तरल पदार्थ धार के रूप में डाला या फुहारे के रूप में छोड़ा जाता है।

पिचर्का*-स्त्री० दे० 'पिचकारी'।

पिचपिचा-वि० [अनु०] १. लसदार। चिपचिपा। २. दबा हुआ और गुलगुला।

पिच्छी-वि० दे० 'पक्षी'।

पिच्छल[1]-वि० १. दे० 'पिच्छिल'। २. दे० 'पिछला'।

पिच्छिल-वि० [सं०] [स्त्री० पिच्छिला] १. ऐसा गीला और चिकना जिसपर पैर पड़ने से फिसले। २. चूड़ायुक्त (पक्षी)। ३. खट्टा, फूला हुआ और कफकारी (पदार्थ)।

पिछड़ना-अ० [हिं० पिछाड़ा] १. साथ से छूटकर पीछे रह जाना। २.प्रतियोगिता आदि में पीछे रह जाना।

पिछलगा-पुं [हिं० पीछे+लगना] १. वह जो किसी के पीछे लगा फिरे। २. अनुगामी। ३. सेवक। ४ आश्रित।

पिछलग्गू[1]-पुं० दे० 'पिछलगा'।

पिछ-लत्ती-स्त्री० [हिं० पीछा+लात] घोड़ों आदि का पिछले पैरों से मारना।

पिछला-वि० [हिं० पीछा] [स्त्री० पिछली] १. जो पीछे की ओर हो। 'अगला' का उलटा। २ बाद का। परवर्त्ती। 'पहला' का उलटा।

यौ०-पिछला पहर=दिन या रात का अंतिम पहर। पिछली रात=आधी रात के बाद का समय।

३.बीता हुआ। गत। ४.आखिरी। अंतिम।

पिछवाई-स्त्री० [हिं० पीछा] आसन के पीछे की ओर लटकाया जानेवाला परदा।

पिछवाड़ा-पुं०[हिं०पीछा] १.घर आदि के पीछे का भाग। २.घर के पीछे की भूमि।

पिछाड़ी-स्त्री० [हिं० पीछा] १ पीछे का भाग। २. वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधते हैं।

पिछानना*-स० दे० 'पहचानना'।

पिछुआर*-पुं० दे० 'पिछवाड़ा'।

पिछेलना-स० [हिं० पीछे] १ धक्का देकर पीछे हटाना। २. पीछे छोड़ना।

पिछौंहैं*-क्रि० वि० [हिं० पीछा] १. पीछे की ओर। २. पीछे की ओर से।

पिछौरा[1]-पुं० [सं० पक्षपट] [स्त्री० पिछौरी] ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

पिटक-पुं० [सं०] १. पिटारा। २. ग्रंथ का कोई भाग। खंड।

पिटना-अ० [हिं० पीटना] 'पीटना' का अ० रूप। पीटा जाना।

[1]पुं० [हिं० पीटना] चूने आदि की छत पीटने का उपकरण। थापी।

पिटाई-स्त्री० [हिं० पीटना] १. पीटने या पीटे जाने का काम या भाव। २. पीटने की मजदूरी।

पिटाना-स० [हिं० 'पीटना' का स०] १. पीटने का काम दूसरे से कराना। पिटवाना। २. किसी को इतना तंग करना कि वह झुँझला जाय।
†अ० दे० 'पिटना'।

पिटारा-पुं० [सं० पिटक] [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस आदि की पट्टियों से बना हुआ ढकनेदार पात्र।

पिट्टस-स्त्री० [हिं० पीटना] शोक के समय जोर जोर से छाती पीटना।

पिट्ठू-पुं० [हिं० पीठ+ऊ (प्रत्य०)] १. गुप्त रूप से या पीछे से छिपकर सहायता या हिमायत करनेवाला। २. कुछ विशिष्ट खेलों में किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसके बदले उसे फिर से खेलने का अवसर या दाँव मिलता है। ३. दे० 'पिछलगा'।

पिठाली-स्त्री० [हिं० पीठ (पर होनेवाली)] छोटी बहन।

पिठौरी-स्त्री० [हिं० पीठी+बरी] पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।

पितंबर-पुं० दे० 'पीतांबर'।

पितर-पुं० [सं० पितृ] मरे हुए पूर्वज।

पिता-पुं० [सं० पितृ] किसी के संबंध के विचार से वह नर या पुरुष जिसने अपने वीर्य से उसे जन्म दिया हो। जनक। बाप।

पितामह-पुं० [सं०] [स्त्री० पितामही] १. पिता का पिता। दादा। २. भीष्म। ३. ब्रह्मा।

पितु*-पुं० दे० 'पिता'।

पितृ-पुं० [सं०] [भाव० पितृत्व] १. किसी व्यक्ति के मृत बाप, दादा, पर-दादा आदि पूर्वज। पूर्व-पुरुष। २. वह मृत पूर्व पुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो। ३. दे० 'पिता'।

पितृ-ऋण-पुं० [सं०] धर्म-शास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में एक। (पुत्र उत्पन्न करने से इस ऋण से उद्धार होता है।)

पितृगृह-पुं० [सं०] स्त्रियों के लिए उसके माता-पिता का घर। पीहर। मायका।

पितृ-तर्पण-पुं० [सं०] पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला तर्पण।

पितृत्व-पुं० [सं०] पिता या पितृ होने का भाव।

पितृ-पक्ष-पुं० [सं०] १. आश्विन की कृष्ण प्रतिपदा से अमावास्या तक का पक्ष जिसमें पितरों का श्राद्ध और ब्राह्मण-भोजन होता है। २. पिता, प्रपिता आदि से संबंध रखनेवाला पक्ष।

पितृ-भूमि-स्त्री० [सं०] १. पितरों के रहने का स्थान। २. पूर्वजों का देश।

पितृ-लोक-पुं० [सं०] वह लोक जिसमें मरे हुए पितृ रहते हैं।

पितृव्य-पुं० [सं०] पिता का भाई। चाचा।

पितृ-विसर्जन-पुं० [सं०] पितृपक्ष के अंतिम दिन अर्थात् आश्विन कृष्ण अमावास्या को समस्त पितरों का विसर्जन करने के लिए होनेवाला धार्मिक कृत्य।

पित्त-पुं० [सं०] शरीर के अन्दर का एक तरल पदार्थ जो यकृत् में बनता है और पाचन में सहायक होता है।

पित्तघ्न-वि० [सं०] पित्त-नाशक।

पित्ता-पुं० [सं०] १. दे० 'पित्ताशय'। २. पित्त।
मुहा०-**पित्ता मरना**=प्रकृति या मन में क्रोध, आवेश आदि न रह जाना। **पित्ता**

मारना=१. दूषित मनोविकार उभड़ने न देना। २. धैर्यपूर्वक कठिन परिश्रम का काम करना।
३. हिम्मत। साहस।

पित्ताशय-पुं० [सं०] यकृत् में की वह थैली जिसमें पित्त रहता है।

पित्ती-स्त्री० [सं० पित्त+ई (प्रत्य०)] १. एक रोग जिसमें शरीर में छोटे छोटे दाने निकल आते हैं। २ वे दाने जो गरमी के दिनों में शरीर में निकलते हैं। अँभौरी। गरमी-दाना।

पित्र्य-वि० दे० 'पैतृक'।

पिथौरा-पुं० दिल्ली के महाराज पृथ्वी राज चौहान के नाम का एक रूप।

पिदड़ी-स्त्री० दे० 'पिद्दी'।

पिदारा*-पुं० दे० 'पिद्दी'।

पिद्दा-पुं० दे० 'पिद्दी'।

पिद्दी-स्त्री० [अनु०] १. एक प्रकार की छोटी चिड़िया। २. वह जो बहुत ही तुच्छ और नगण्य हो।

पिधान-पुं० [सं०] १. आवरण। ढक्कन। २. तलवार की म्यान। ३. किवाड़ा।

पिनक-स्त्री० [हिं० पिनकना] किसी नशे विशेषतः अफीम के नशे में सिर का रह-रहकर आगे झुकना।

पिनकना-अ० [अनु०] अफीम के नशे में ऊँघना। पिनक लेना।

पिनपिनाना-अ० [पिनपिन से अनु०] पिन-पिन स्वर निकालते हुए रोना।

पिनाक-पुं० [सं०] १. शिव का धनुष जो रामचन्द्र जी ने तोड़ा था। अजगव। २ धनुष। ३. त्रिशूल।

पिन्नी-स्त्री० [सं० पिंडी] चावल या गेहूँ के आटे का एक प्रकार का लड्डू।

पिपासा-स्त्री० [सं०] [वि० पिपासित] जल पीने की इच्छा। तृषा। प्यास।

पिपीलिका-स्त्री० [सं०] च्यूँटी।

पिय*-पुं० [सं० प्रिय] पति। स्वामी।

पियरा†-वि०=पीला।

पियराई†-स्त्री०=पीलापन।

पियराना*-अ० = पीला पड़ना।

पियरी†-स्त्री० [हिं० पियरा] १. पीली रँगी हुई धोती। २. पीलापन।

पियार(ल)-पुं० [सं० प्रियाल] एक वृक्ष जिसके बीजों से चिरौंजी निकलती है।

पियूख*-पुं० = पीयूष।

पिरथी-स्त्री० = पृथ्वी।

पिराई-स्त्री० = पियराई।

पिराक-पुं० [सं० पिष्टक] गुझिया नामक पकवान।

पिराना*-अ० [हिं० पीर=पीड़ा] दर्द करना। दुखना। (किसी अंग का)

पिरीतम*-पुं० दे० 'प्रियतम'।

पिरीता*-वि० [सं० प्रिय] प्रिय। प्यारा।

पिरोना-स० [सं० प्रोत] १. सूत, तागे आदि में कुछ गूथना। पोहना। जैसे-माला पिरोना। २. सूई के छेद या नाके में तागा डालना।

पिरोहना*-स० दे० 'पिरोना'।

पिलकना*-अ०[सं०पिच्छिल] १.गिरना। १. झूलना या लटकना।

पिलना-अ० [सं० पिल=प्रेरण] १ वेग से किसी ओर टूट पड़ना। २. दृढ़ता-पूर्वक प्रवृत्त होना। भिड़ जाना। ३. रस या तेल निकालने के लिए पेरा जाना।

पिलपिला-वि० [अनु०] बहुत थोड़े दबाव से दब जानेवाला (कोमल पिंड)।

पिलपिलाना-स० [हिं० पिलपिला] बार बार दबाकर पिलपिला करना जिससे रस या गूदा बाहर निकलने लगे।

पिलाई-स्त्री० [हिं० पिलाना] १. पिलाने की क्रिया या भाव। २. तरल पदार्थ इस प्रकार उँड़ेलना कि वह नीचे के छेदों या सन्धियों में समा जाय। (ग्राउटिंग)

पिलाना-स० [हिं० पीना] १. पीने का काम दूसरे से कराना। पान कराना। २. पीने के लिए देना। ३. अन्दर भरना।

पिल्ला-पुं० [तामिल] कुत्ते का बच्चा।

पिल्लू-पुं० [सं० पीलु=कृमि] वह सफेद छोटा कीड़ा जो सड़े हुए फलों आदि में पड़ जाता है। ढोला।

पिव*-पुं० दे० 'पिय'।

पिवाना†-स० दे० 'पिलाना'।

पिशाच-पुं० [सं०] [स्त्री० पिशाचिनी, पिशाची] निम्न कोटि के और वीभत्स कर्म करनेवाला एक हीन देव-योनि। भूत। प्रेत।

पिशुन-पुं० [सं०] चुगलखोर।

पिष्ट-वि० [सं०] पिसा या पीसा हुआ।

पिष्ट-पेषण-पुं० [सं०] १. पिसे हुए को फिर से पीसना। २. कही हुई बात या किया हुआ काम व्यर्थ फिर फिर कहना या दोहराना।

पिसनहारी-स्त्री० [हिं० पीसना+हारी (प्रत्य०)] आटा पीसनेवाली स्त्री।

पिसना-अ० [हिं० पीसना] १. पीसा जाना। चूर्ण होना। २. कुचला जाना। ३. बहुत कष्ट या हानि सहना।

पिसवाज*-पुं० दे० 'पेशवाज'।

पिसवाना-स० हिं० 'पीसना' का प्रे०।

पिसाई-स्त्री० [हिं० पीसना] १. पीसने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २. बहुत अधिक परिश्रम। कड़ी मेहनत।

पिसाच*-पुं० दे० 'पिशाच'।

पिसान†-पुं० दे० 'आटा'।

पिसाना-स० हिं० 'पीसना' का प्रे०।

†अ० दे० 'पिसना'।

पिसुन*-पुं० दे० 'पिशुन'।

पिस्ता-पुं० [फा० पिस्तः] १. एक छोटा पेड़ जिसकी गिरी मेवों में मानी जाती है। २. इसके फल की गिरी।

पिस्तौल-स्त्री० [अं० पिस्टल] बन्दूक की तरह का एक छोटा अस्त्र। तमंचा।

पिस्सू-पुं० [फा० पश्शः] शरीर का रक्त चूसनेवाला एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

पिहकना-अ० [अनु०] कोयल, पपीहे आदि का चहकना या बोलना।

पिहित-वि० [सं०] छिपा हुआ।

पुं० एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का कोई भाव समझकर क्रिया द्वारा अपना भाव प्रकट करने का उल्लेख होता है।

पींजना-स० [सं० पिंजन] रूई धुनना।

पींजरा*-पुं० दे० 'पिंजरा'।

पींड†-पुं० [सं० पिंड] १. दे० 'पिंड'। २. वृक्ष का धड़। तना। ३. पिंड-खजूर।

पींडुरी*-स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पी*-पुं० दे० 'पिय'।

स्त्री० [अनु०] पपीहे की बोली।

पीक-स्त्री० [सं० पिच्च] खाये हुए पान आदि के रस की थूक।

पीकदान-पुं० दे० 'उगालदान'।

पीकना†-अ० दे० 'पिहकना'।

पीच-स्त्री० [सं० पिच्च] भात का माँड़।

पीछा-पुं०[सं०पश्चात्] १.पीछे की ओर का भाग। 'आगा' का उलटा। (रिवर्स) २. मनुष्य के शरीर में पीठ का भाग। मुहा०-पीछा दिखाना=पीठ दिखाकर भागना। पीछा देना=किसी काम में लगकर फिर पीछे हट जाना। ३. किसी के पीछे लगे रहने की क्रिया या भाव।

मुहा०-पीछा करना=१. किसी काम के लिए किसी को तंग करना। गले पड़ना। २. किसी को पकड़ने या उसका रहस्य आदि जानने के लिए उसके पीछे पीछे रहना। पीछा छुड़ाना=१. पीछा करनेवाले से जान बचाना। २. अप्रिय या अवांछित संबंध का अंत करना। पीछा छोड़ना=१. किसी व्यक्ति को तंग करने से विरत होना। २. हाथ में लिये हुए काम से अलग होना।

४.कोई बात हो जाने के बाद का समय।

पीछू*-अव्य०=पीछे।

पीछे-अव्य० [हिं० पीछा] १.पीठ की ओर। पृष्ठ भाग में या दूसरी ओर।

मुहा०-(किसी के) पीछे चलना=१. किसी का अनुगामी बनना। २. अनुकरण या नकल करना। (किसी के) पीछे छोड़ना या लगाना=किसी का पीछा करने के लिए किसी को नियत करना। (धन) पीछे डालना=भविष्य के लिए बचाकर रखना। पीछे पड़ना=१.कोई काम कर डालने पर तुल जाना। २.किसी काम के लिए किसी से बार बार कहना। तंग करना। ३. बराबर किसी की बुराई करते रहना। पीछे लगना=१. दे० 'पीछा करना'। २ साथ में लगा होना। (अपने) पीछे लगाना=१. बुरी बात से संबंध स्थापित करना। (किसी और के) पीछे लगाना=१. हानिकर बात से संबंध स्थापित करना। २. दे० 'पीछे छोड़ना'। पीछे हटना=वचन, कर्तव्य आदि का पालन न करना।

२. पीछे की ओर, कुछ दूर पर।

मुहा०-पीछे छूटना या पड़ना=किसी बात में किसी से घटकर होना। (किसी को) पीछे छोड़ना=किसी बात में किसी से आगे बढ़ जाना।

३. पश्चात्। उपरांत। बाद। ४. अंत में। ५. किसी की अनुपस्थिति या अभाव में। ६. लिए। वास्ते। जैसे-तुम्हारे पीछे मैं यह सब सहता हूँ।

पीटना-स० [सं० पीडन] १. हाथ से आघात लगाना। प्रहार करना। मारना।

मुहा०-छाती पीटना=दुःख या शोक से छाती पर हाथ से आघात करना।

२. बार बार आघात लगाकर चिपटा या चौड़ा करना। जैसे-चाँदी या सोने का पत्तर पीटना। ३ जैसे-तैसे कोई काम समाप्त करना या किसी से कुछ ले लेना।

पुं० १. किसी के मरने पर होनेवाला शोक। मातम। २. कठिनता। दिक्कत।

पीठ-पुं० [सं०] [स्त्री० पीठिका] १. लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आसन या स्थान। २. विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान। ३. किसी वस्तु के रहने या होने की जगह। अधिष्ठान। ४. सिंहासन। ५. वेदी। ६. कोई विशिष्ट पवित्र स्थान।

स्त्री० [सं० पृष्ठ] १. शरीर में पेट की दूसरी ओर का या पीछेवाला भाग। पृष्ठ।

मुहा०-पीठ ठोंकना=किसी की पीठ पर हाथ रखकर उसकी प्रशंसा करना या उसे उत्साहित करना। शाबाशी देना। पीठ दिखाना=दे० 'पीछा दिखाना'। पीठ दिखाकर जाना=स्नेह या ममता छोड़कर दूर चले जाना। पीठ देना=१. विमुख होना। मुँह मोड़ना। २. भाग जाना। ३. लेटना। पीठ पर=एक ही के गर्भ से किसी के पीछे जन्म लेने पर, या जन्म लेनेवाला। पीठ पर का=जन्म-क्रम में अपने बड़े सहोदर के बादवाला।

पीठ मींजना या पीठ पर हाथ फेरना=दे० 'पीठ ठोंकना'। पीठ पर होना=मदद या हिमायत पर होना। पीठ पीछे=अनुपस्थिति या परोक्ष में। पीठ फेरना=१. प्रस्थान करना। २ भाग जाना। ३. विमुख होना। ४. अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना। (घोड़े बैल आदि की) पीठ लगना=जीन की रगड़ से पीठ पर घाव हो जाना। पीठ लगाना=लेटकर विश्राम करना।

२. किसी वस्तु की बनावट का पीछेवाला भाग। पृष्ठ भाग।

पीठना*-स० दे० 'पीसना'।

पीठमर्द-पुं० [सं०] १. नायक का वह सखा जो मीठी बातों से रुष्ट नायिका को मना सके। २. रुष्ट नायिका को प्रसन्न कर सकनेवाला नायक।

पीठ-स्थान-पु० दे० 'पीठ' ६।

पीठा-पुं० [सं० पिष्टक] एक प्रकार का पकवान।

पीठिका-स्त्री० [सं०] १. आधार। २. आसन। ३. छोटा पीढ़ा। ४ परिच्छेद।

पीठी-स्त्री० [सं० पिष्टक] पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

पीड़-स्त्री० [सं० आपीड़] सिर पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण।

स्त्री० दे० 'पीड़ा'।

पीड़क-पुं०[सं०] पीड़ा या कष्ट देनेवाला।

पीड़न-पुं० [सं०] [वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित] १. दबाना। २. पेरना। ३. दुःख या कष्ट देना। ४. अत्याचार करना। ५. अच्छी तरह पकड़ना।

पीड़ा-स्त्री० [सं०] १. वेदना। व्यथा। दर्द। २. कष्ट। तकलीफ। ३. रोग। व्याधि।

पीड़ित-वि० [सं०] १. जिसे पीड़ा हो। २. जिसे पीड़ा या कष्ट पहुँचाया गया हो। सताया हुआ। ३. रोगी। बीमार। ४. जोर से दबाया हुआ।

पीडुरी*-स्त्री० दे० 'पिंडली'।

पीढ़ा†-पुं० [सं० पीठक] [स्त्री० अल्पा० पीढ़ी] काठ का छोटा और कम ऊँचा आसन। पाटा।

पीढ़ी-स्त्री० [सं० पीठिका] १. कुल-परंपरा में किसी के बाप, दादे, परदादे आदि अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के विचार से क्रमात् कोई स्थान। पुश्त। २. किसी विशेष समय में होनेवाले व्यक्तियों की समष्टि। (जेनरेशन)

†स्त्री० [हिं० पीढ़ा] छोटा पीढ़ा।

पीत-वि० [सं०] [स्त्री० पीता, भाव० पीतता] १. पीला। २. भूरा।

पुं० १. पीला रंग। २. भूरा रंग।

वि० [सं०'पान' का भूत०] पीया हुआ।

पीत धातु*-स्त्री० दे० 'गोपी-चंदन'।

पीतम*-वि० दे० 'प्रियतम'।

पीत मणि-पुं० [सं०] पुखराज।

पीतल-पु० [सं० पित्तल] तांबे और जस्ते के मेल से बनी हुई वह प्रसिद्ध पीली उपधातु जिससे बरतन बनते हैं।

पीतांबर-पुं० [सं०] १. पीला कपड़ा। २. रेशमी धोती जो पूजा-पाठ के समय पहनी जाती है। ३. श्रीकृष्ण।

पीद्दी-स्त्री० दे० 'पिद्दी'।

पीन-वि० [सं०] [भाव० पीनता] १. स्थूल। मोटा। २. पुष्ट। ३. भरा-पूरा।

पीनक-स्त्री० दे० 'पिनक'।

पीनस-पुं० [सं०] नाक का एक रोग। स्त्री० [फा० फीनस] पालकी। (सवारी)

पीना-स० [सं० पान] १. तरल वस्तु मुँह में रखकर गले के नीचे उतारना।

पान करना। २. कोई बात या मन का भाव छिपा या दबा जाना। कोई विचार या मनोविकार मन ही मन दबा देना। ३. शराब पीना। ४. तमाकू, गाँजे आदि का धूआँ मुँह में खींचकर बाहर निकालना। धूम्रपान करना। ५. सोखना।

पीप-स्त्री० [सं० पूय] फोड़े आदि में से निकलनेवाला सफेद लसीला विषाक्त पदार्थ। पीब। मवाद।

पीपरपर्न*-पुं० [हिं० पीपल+पर्न=पत्ता] कान में पहनने का एक गहना। पत्ता।

पीपल-पुं० [सं० पिप्पल] एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष जो हिन्दुओं में बहुत पवित्र माना जाता है।

स्त्री० [सं० पिप्पली] एक लता जिसकी चरपरी कलियाँ पाचक होती है।

पीपा-पुं० [?] काठ या लोहे का वह बड़ा गोल पात्र जिसमें घी, तेल, शराब, शीरा आदि रखे जाते है।

पीब-स्त्री० दे० 'पीप'।

पीय*-पुं० दे० 'पिय'।

पीयर*-वि० दे० 'पीला'।

पीयूख*-पुं० दे० 'पीयूष'।

पीयूष-पुं० [सं०] १. अमृत। सुधा। २. दूध। ३. दे० 'पेउस'।

पीर-स्त्री० [सं० पीड़ा] १. पीड़ा। दर्द। २. कष्ट। दुःख। ३. सहानुभूति।

वि० [फा०] [भाव० पीरी] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. महात्मा। सिद्ध। ३. गुरु। आचार्य। (मुसल०)

पीरना*-स० दे० 'पेरना'।

पीरा†-स्त्री० दे० 'पीड़ा'।

वि० [स्त्री० पीरी] दे० 'पीला'।

पीरी-स्त्री० [फा०] १. बुढ़ापा। वृद्धावस्था। २. स्वयं पीर बनकर दूसरों को चेला या अनुयायी बनाने का काम। ३. अनावश्यक रूप से प्रकट की जानेवाली योग्यता, सामर्थ्य आदि।

पील-पुं० [फा०] हाथी। गज।

पील-पाँव-पुं० [फा० फीलपा] श्लीपद नामक रोग, जिसमें हाथ या पैर फूल जाता है। फीलपा।

पीलपाल*-पुं० दे० 'फीलवान'।

पीलवान-पुं० दे० 'फीलवान'।

पीलसोज-पुं० [फा० फतीलसोज़] दीया जलाने की दीयट। चिरागदान।

पीला-वि० [सं० पीत] [स्त्री० पीली, भाव० पीलापन] १. हल्दी, केसर आदि के रंग का। जर्द। २. कांतिहीन। निस्तेज।

मुहा०-पीला पड़ना=१. भय, चिन्ता या रोग के कारण शरीर में रक्त का अभाव सूचित होना। २. भय से चेहरे पर सफेदी आना।

पुं० हल्दी की तरह का रंग।

पीलिया-पुं० [हिं० पीला] कमल रोग।

पीलू-पुं० [सं० पीलु] १. एक वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है। २. दे० 'पिल्लू'।

पुं० संगीत में एक प्रकार का राग।

पीव-पुं० [हिं० पिय] पिय। पति।

पीवना*-स० दे० 'पीना'।

पीवर-वि० [सं०] [स्त्री० पीवरा, भाव० पीवरता] १. मोटा। स्थूल। २. भारी।

पीसना-स० [सं० पेषण] १. रगड़कर आटे या चूर्ण के रूप में करना। २. जल की सहायता से रगड़कर महीन करना। ३. इस प्रकार दबाना या पीड़ित करना कि उभरने की शक्ति न रह जाय। ४. विशेष परिश्रम का काम करना।

पीहर-पुं० [सं० पितृ+हिं० घर] स्त्रियों

के लिए, माता-पिता का घर । मैका ।

पीहा-पुं० [अनु०] पपीहे की बोली ।

पुंगव-पुं० [सं०] बैल । वृष ।
वि० श्रेष्ठ । उत्तम ।

पुंगीफल-पुं० [सं०] सुपारी ।

पुँछार*-पुं० [हिं० पूँछ] मयूर । मोर ।

पुंज-पुं० [सं] राशि । ढेर ।

पुंजी*-स्त्री० दे० 'पूँजी' ।

पुंडरीक-पुं० [सं०] १. कमल । २ सिंह । शेर । ३. तिलक । टीका । ४. सफेद रंग का हाथी । ५ अग्नि कोण के दिग्गज का नाम । ६. अग्नि । आग ।

पुंडरीकाक्ष-पुं० [सं०] विष्णु ।

पुंलिंग-पुं० [सं०] १. पुरुष का चिह्न । २. व्याकरण में वह शब्द जो पुरुष जाति या उससे सम्बन्ध रखनेवाले विशेषणों, क्रियाओं आदि का बोधक हो ।

पुंश्चली-स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी या दुश्चरित्रा स्त्री । कुलटा । छिनाल ।

पुंस*-पुं० [सं०] पुरुष । मर्द ।

पुंसत्व-पुं० [सं०]१ पुरुषत्व । २. स्त्री के साथ संभोग करने की शक्ति ।

पुंसवन-पुं० [सं०] १. दूध । २. एक संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे महीने होता है ।

पुआ-पुं० दे० 'मालपूआ' ।

पुआल-पुं० दे० 'पयाल' ।

पुकार-स्त्री० [हिं० पुकारना] १. पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव । टेर । २. रक्षा, सहायता, प्रतिकार आदि के लिए बुलाना । दुहाई । ३. किसी वस्तु की बहुत अधिक माँग ।

पुकारना-स० [सं० प्रकुश=पुकारना] १. नाम लेकर बुलाना । आवाज देना । २. नाम रटना । ३ चिल्लाकर कहना, माँगना, सुनाना या बुलाना । ४. फरियाद करना । अभियोग लगाना ।

पुखर*-पुं० [सं० पुष्कर] तालाब ।

पुखराज-पुं० [सं० पुष्पराग] एक प्रकार का पीला रत्न ।

पुख्ता-वि० [फा० पुख्तः] [भाव० पुख्तगी] पक्का । दृढ़ । मज़बूत ।

पुगना-अ० दे० 'पूजना' ।

पुचकारना-स० [अनु०] [भाव० पुचकार, पुचकारी] चूमने का-सा शब्द करते हुए प्यार जताना । चुमकारना ।

पुचकारी-स्त्री० [हिं० पुचकारना] होंठों से निकाला हुआ चूमने का-सा प्रेम-सूचक शब्द । चुमकार ।

पुचारा-पुं० [पुच पुच से अनु० या पुतारा] १ गीले कपड़े से पोंछने या पतला लेप करने का काम । २. हलका लेप । ३. वह कपड़ा या घुली हुई वस्तु जिससे पोतते या पुचारा देते हैं । ४. प्रसन्न या उत्साहित करने के लिए कही जानेवाली बात । ५. झूठी प्रशंसा । चापलूसी । खुशामद ।

पुच्छ-स्त्री० [सं०] १. दुम । पूँछ । २. अंतिम या पिछला भाग ।

पुच्छल-वि० [हिं० पुच्छ] पूँछवाला । दुमदार ।
यौ०-पुच्छल तारा=दे० 'केतु' ६ ।

पुछल्ला-पुं० [हिं० पूँछ] १. पूँछ की तरह पीछे लगी हुई और प्रायः अनावश्यक वस्तु । २. सदा पीछे लगा रहनेवाला । पीछा न छोड़नेवाला ।

पुछवैया-वि० [हिं० पूछना] १. पूछनेवाला । २. खोज-खबर लेनेवाला ।

पुछार*-पुं० [हिं० पूछना] १.पूछनेवाला । २. महत्त्व समझकर आदर करनेवाला ।

पुजंता*-वि० दे० 'पूजक' ।

पुजना-अ० [हिं० पूजना] १. पूजा जाना। २. सम्मानित होना। ३. पूरा होना।
पुजवना*-स० [हिं० पूजना] १ पूजन करना। २ पूरा करना। भरना। ३. सफल या सिद्ध करना। (कामना आदि)
पुजवाना-स० [हिं० 'पूजना' का प्रे०] १. देवी-देवता पूजने का काम दूसरे से कराना। २. अपनी पूजा या सम्मान कराना।
पुजाना-स० [हिं० 'पूजना' का प्रे०] [भाव० पुजाई] १. पूजा कराना। २. अपना आदर या सम्मान कराना। ३ किसी को दबाकर उससे धन वसूल करना। *अ० दे० 'पुजना'।
पुजापा-पुं० [सं० पूजा+आपा (प्रत्य०)] देवी-देवता की पूजा की सामग्री।
पुजारी-पुं० [सं० पूजा+कारी] १. वह जो मन्दिर में देवता की पूजा करने के लिए नियुक्त हो। २. पूजा करनेवाला। पूजक। ३. किसी को देव-तुल्य मानकर उसकी भक्ति करनेवाला। उपासक।
पुजेरी-पुं० दे० 'पुजारी'।
पुजैया!-पुं० दे० पूजक'। स्त्री० [हिं० पूजा] १. दे० 'पूजा'। २. गाते-बजाते हुए कहीं पूजा करने जाना। वि० [हिं० पूजना=भरना] पूरा करने या भरनेवाला।
पुट-पुं०[अनु०] १. मुलायम या तर करने या हलका मेल मिलाने के लिए दिया जानेवाला छींटा। २. बहुत हलका मेल या रंगत। भावना। आभा। पुं० [सं०] १. ढकनेवाली चीज। आच्छादन। २. कटोरे या दोने के आकार का कोई पात्र। ३. औषध पकाने के लिए चारों ओर से बंद किया हुआ पिंड या पात्र। संपुट। (वैद्यक)
पुटकी-स्त्री० [सं० पुटक] पोटली। गठरी। स्त्री० [हिं० पटपटाना = मरना] १. आकस्मिक मृत्यु। २. दैवी विपत्ति।
पुटरी(ली)-स्त्री० दे० 'पोटली'।
पुटियाना†-स०[हिं०पुट देना] फुसलाना।
पुटी-स्त्री० [सं० पुट] १.छोटा दोना या कटोरा। २.पुड़िया। ३ कौपीन। लँगोटी।
पुटीन-स्त्री० [अं० पुटी] लकड़ी के जोड़, छेद आदि भरने का एक मसाला।
पुट्ठा-पुं० [सं० पुष्ट या पृष्ठ] १ चूतड़ के ऊपर का भाग। २. पुस्तक की जिल्द बाँधने के लिए बना हुआ गत्ते का आवरण।
पुठवार-क्रि० वि० [हिं० पुट्ठा] १. पीछे। २. बगल में।
पुठवाल*-पुं० [हिं० पुट्ठा+वाला] पृष्ठ-रक्षक। सहायक। मददगार।
पुड़ा-पुं० [सं० पुट] [स्त्री० अल्पा० पुड़ी, पुड़िया] बड़ा पुड़िया।
पुड़िया-स्त्री० [सं० पुटिका] १. कागज मोड़ या लपेटकर बनाया हुआ वह संपुट जिसमें कोई वस्तु रखी हो। २. इस प्रकार लपेटी हुई दवा का एक मात्रा। ३ धन-संपत्ति और पूँजी। जैसे-अब तो उनकी लाख रुपये की पुड़िया हो गई है।
पुण्य-वि० [सं०] १. पवित्र। २. शुभ। पुं० १. धार्मिक दृष्टि से शुभ फल देनेवाला काम। धर्म-कार्य। २.ऐसे शुभ कार्य का फल। ३. परोपकार आदि का काम।
पुण्य-काल-पुं० [सं०] दान-पुण्य या पवित्र कार्य करने का समय।
पुण्य-क्षेत्र-पुं० [सं०] तीर्थ-स्थान।
पुण्य-भूमि-स्त्री० [सं०] आर्यावर्त्त।
पुण्यवान्-वि० [सं० पुण्यवत्] [स्त्री० पुण्यवती] पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।
पुण्य-श्लोक-वि०[सं०][स्त्री०पुण्यश्लोका]

पवित्र आचरणवाला। शुद्ध-चरित्र।

पुण्य-स्थान-पुं० [सं०] तीर्थ-स्थान।

पुण्याई-स्त्री० [हिं० पुण्य] पुण्य का फल या प्रभाव।

पुण्यात्मा-पुं० [सं० पुण्यात्मन्] वह जो बराबर पुण्य करता रहे। धर्मात्मा।

पुतना-अ० [हिं० पोतना] [सं० पोतना] पोता जाना। पुताई होना।

पुतरा*-पुं० [स्त्री० पुतरी] दे० 'पुतला'।

पुतला-पुं० [सं० पुत्रक] [स्त्री० पुतली] लकड़ी, घास, कपड़ आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार।

मुहा०-(किसी का) पुतला बाँधना= चारों ओर किसी की बदनामी करते फिरना। पुतला जलाना=१. दूर देश में मरनेवाले का पुतला बनाकर दाह-कर्म करना। २. किसी के प्रति घृणा प्रकट करने या उसकी मृत्यु मनाने के लिए उसका पुतला बनाकर जलाना।

पुतली-स्त्री०[हिं०पुतला] १.छोटा पुतला। गुड़िया। २.आँख के बीच का काला दाग।

मुहा०-पुतली फिर जाना=मरने के समय आँखें पथरा जाना।

पुतली-घर-पुं० कारखाना, विशेषतः कपड़े बुनने का बड़ा कारखाना।

पुताई-स्त्री० [हिं० पोतना+आई (प्रत्य०)] पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पुतारा-पुं० दे० 'पुचारा'।

पुत्त*-पुं० दे० 'पुत्र'।

पुत्तरी*-स्त्री० १.दे०'पुत्री'। २.दे०'पुतली'।

पुत्तलिका(ली)-स्त्री० [सं०] १. पुतली। २. गुड़िया।

पुत्र-पुं०[सं०] [स्त्री० पुत्री] लड़का। बेटा।

पुत्रवती-वि०स्त्री०[सं०] जिसके पुत्र हो। पुत्रवाली (स्त्री)।

पुत्र-वधू-स्त्री० [सं०] पुत्र की स्त्री।

पुत्रवान्-वि० पुं० [सं०] [स्त्री०पुत्रवती] जिसके पुत्र हो। पुत्रवाला।

पुत्रिका-स्त्री० [सं०] १. लड़की। बेटी। २. पुत्र के स्थान पर और उसके समान मानी हुई कन्या। ३. गुड़िया। पुतली।

पुत्री-स्त्री० [सं०] लड़की। बेटी।

पुत्रेष्टि-पुं० [सं०] पुत्र-प्राप्ति की कामना से किया जानेवाला एक यज्ञ।

पुदीना-पुं० [फा० पोदीनः] एक छोटा पौधा जिसकी सुगन्धित पत्तियाँ मसाले के काम में आती हैं।

पुनः-अव्य०[सं०पुनर्] १.फिर से। दोबारा। दूसरी बार। २. उपरान्त। पीछे। बाद।

पुनःकरण-पुं० [सं०] १. फिर से कोई काम करना। २. दोहराना।

पुनःप्राप्ति-स्त्री० [सं०] गई, भेजी या खोई हुई चीज फिर से मिलना। (रिकवरी)

पुन*-पुं० दे० 'पुण्य'।

अव्य० दे० 'पुनः'।

पुनरपि-क्रि० वि० [सं०] फिर से।

पुनरागमन-पुं० [सं०] १. फिर से आना। दोबारा आना। २.फिर जन्म लेना।

पुनरारंभ-पुं० [सं०] छोड़ा या स्थगित किया हुआ काम फिर से आरंभ करना। (रिजम्पशन)

पुनरावर्तन-पुं० [सं०] [कर्त्ता पुनरावर्त्ती] १. लौटकर आना। २. बार बार संसार में जन्म लेना।

पुनरावृत्ति-स्त्री० [सं०] [वि० पुनरावृत्त] १. फिर से लौट या घूमकर आना। २. किया हुआ काम फिर से करना। दोहराना। ३. फिर से या दोबारा पढ़ना।

पुनरासीन-वि० [सं०] जो एक बार अपने स्थान से हटने या हटाये जाने पर

फिर उस स्थान पर आकर बैठे या लाकर बैठाया जाय। (रि-सीटेड)

पुनरीक्षण-पुं० [सं०] १ फिर से देखना। २. न्यायालय का एक बार सुने हुए मुकदमे को, कुछ विशेष अवस्थाओं में, फिर से सुनना। (रिवीजन)

पुनरुक्तवदाभास-पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें कोई बात सुनने से पुनरुक्ति जान पड़े, पर वास्तव में वह न हो।

पुनरुक्ति-स्त्री० [सं०] [वि० पुनरुक्त] १. एक बार कही हुई बात फिर कहना। २. दोबारा कही हुई बात। (रिपीटीशन)

पुनरुज्जीवन-पुं०[सं०][वि०पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना।

पुनरुत्थान-पुं० [सं०] १. फिर से उठना। २. पतन होने के बाद फिर से उठना, उन्नति करना या समर्थ होना।

पुनरुद्धार-पुं० [सं०]टूटी-फूटी या नष्ट हुई चीज को फिर से ठीक करके उसे यथावत् या उसका उद्धार करना। (रेस्टोरेशन)

पुनर्ग्रहण-पुं० [सं०] छोड़ा हुआ कार्य या पद फिर से ग्रहण करना। (रिजम्पशन)

पुनर्घटन-पुं० [सं०] किसी चीज का फिर से रचा या बनाया जाना।

पुनर्जन्म-पुं० [सं०] मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में जन्म लेना। फिर से दूसरा शरीर धारण करना।

पुनर्जीवन-पुं० १. दे० 'पुनरुज्जीवन'। २. दे० 'पुनर्जन्म'।

पुनर्निर्माण-पुं० [सं०] गिरे या टूट-फूटे हुए को फिर से बनाना।

पुनर्वाद-पुं० [सं०] किसी न्यायालय से विवाद का निर्णय हो जाने पर, उसके विरोध में, ऊँचे न्यायालय में फिर से उस विवाद पर विचार होने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। (अपील)

पुनर्वादी-पुं० [सं०] किसी ऊँचे न्यायालय में पुनर्वाद उपस्थित करनेवाला।(एपेलेन्ट)

पुनर्वासन-पुं०[सं०] (उजड़े हुए लोगों को) फिर से बसाना या आबाद करना।

पुनर्विधान-पुं० [सं०] किसी चीज का फिर से रचा या बनाया जाना। पुनर्घटन।

पुनर्विधायन-पुं० [सं०] [वि० पुनर्विधायित] किसी बने हुए विधान को घटा या बढ़ाकर नये सिर से विधान का रूप देना। (री-एनैक्टमेन्ट)

पुनर्विधायित-वि०[सं०] १.जिसका फिर से विधान किया गया हो। २. (पहले से बना हुआ विधान) जो फिर से घटा-बढ़ाकर बनाया गया हो। (रिऐक्टड)

पुनर्विवाह-पुं०[सं०] किसी का, विशेषतः विधवा स्त्री का, फिर से होनेवाला विवाह।

पुनि*-क्रि० वि० [सं०पुनः] फिर। पुनः।

पुनी*-पुं० दे० 'पुण्यात्मा'।
*स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।
*क्रि० वि० [सं० पुनः] पुनः। फिर।

पुनीत-वि०[सं०] [स्त्री० पुनीता] पवित्र।

पुन्न-पुं० दे० पुण्य'।

पुन्यता(ई)*-स्त्री० [सं० पुण्य] १ धर्मशीलता। २. पवित्रता। ३.दे०'पुण्याई'।

पुरंदर-पुं० [सं०] १. इन्द्र। २. विष्णु।

पुरः-अव्य०[सं०पुरस्] १ आगे। २.पहले।

पुरःदत्त-वि० [सं०] पहले से दिया हुआ। (शुल्क, परिव्यय आदि) (प्री-पेड)

पुरःदान-पुं० [सं०] (शुल्क, देन आदि) पहले से देना। (प्री-पेमेन्ट)

पुरःसंगी-वि० [सं०] किसी कार्य, विषय या तथ्य में उससे पहले, सहायक या संबद्ध रूप में होनेवाला। (एक्सेसरी

बिफोर दी फैक्ट)

पुरःसर-वि० [सं०] १. अगुआ। २. साथी। ३. मिला हुआ। युक्त।

पुर-पुं० [सं०] [स्त्री० पुरी] १. नगर। शहर। २. आगार। घर। ३ लोक। भुवन। ४. राशि। ढेर।

वि० [फा०] भरा हुआ। पूर्ण।

पुं० दे० 'पुरवट'।

पुरइन*-स्त्री० [सं० पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २. कमल।

पुर-कायस्थ-पुं० [सं०] प्राचीन भारत में किसी नगर का वह प्रधान अधिकारी जिसके पास मुख्य लेख्यों या दस्तावेज़ों आदि की नकल रहती थी। (इसका पद प्रायः आज-कल के रजिस्ट्रार के पद के समान होता था।)

पुरखा-पुं० [सं० पुरुष] [स्त्री० पुरखी] बाप, दादा आदि पूर्वज।

मुहा०-पुरखे तर जाना=(पुत्र आदि के शुभ कृत्य से) पूर्व-पुरुषों को पर-लोक में उत्तम गति मिलना।

पुरज़ा-पुं०[फा०पुर्ज़ः] १. टुकड़ा। खंड। २. कटा हुआ टुकड़ा। कतरन। ३. अवयव। अंग। ४ अंश। भाग। ५.यंत्र आदि का कोई महत्त्व-पूर्ण अंग या अंश।

मुहा०-चलता पुरज़ा=चालाक आदमी।

पुरट-पुं० [सं०] स्वर्ण। सोना।

पुरना-अ० [हिं० पूरा] १. समाप्त या पूरा होना। २.पूरा पड़ना। यथेष्ट होना।

पुरबिया-वि० [हिं० पूरब] पूरब का।

पुरवट*-पुं० [सं० पूर] चमड़े का वह बड़ा डोल जिसके द्वारा बैलों की सहायता से खेतों की सिंचाई के लिए पानी खींचा जाता है। चरसा। मोट।

पुरवना*-स० [हिं० पूरना] १. पूरना। २. भरना। ३ पूरा करना।

मुहा०-साथ पुरवना=अन्त तक पूरा साथ देना।

अ० १. पूरा होना। २. यथेष्ट होना।

पुरवा-पुं० [सं० पुर] छोटा गाँव।

पुं० दे० 'पुरवाई'।

पुं० [सं० पुटक] मिट्टी का छोटा गोल पात्र। कुल्हड़।

पुरवाई (वैया)-स्त्री० [सं० पूर्व+वायु] पूरब से चलने या आनेवाली वायु।

पुरश्चरण-पुं० [सं०] १. किसी काम के लिए पहले से उपाय सोचना और प्रबन्ध करना। २. तंत्र-शास्त्र में मंत्र, स्तोत्र आदि का किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए, नियमपूर्वक पाठ करना।

पुरसा-पुं० [सं० पुरुष] साढ़े चार या पाँच हाथ की ऊँचाई की एक नाप।

पुरस्कार-पुं० [सं०] [वि० पुरस्कृत] १. आगे करने या लाने की क्रिया। २.आदर। सम्मान। ३. किसी अच्छे काम के लिए आदरपूर्वक दिया जानेवाला धन या द्रव्य। पारितोषिक। इनाम। ४.स्वीकार।

पुरस्कृत-वि० [सं०] १. आगे किया, रखा या बढ़ाया हुआ। २. आदृत। सम्मानित। ३.जिसे पुरस्कार मिला हो।

पुरस्सर-वि० दे० 'पुरःसर'।

पुरहूत*-पुं० दे० 'पुरूहूत'।

पुरांगना-स्त्री० [सं०] नगर में रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।

पुरा-वि०[सं०] प्राचीन। पुराना। (यौ० के आरम्भ में; जैसे-पुराकाल, पुरातत्त्व।)

पुं० [सं० पुर] छोटा गाँव।

पुराण-वि० [सं०] प्राचीन। पुराना।

पुं० १. मनुष्यों, देवताओं, दानवों आदि की वे कथाएँ जो परंपरा से चली आ

रही हों। २. हिन्दुओं के वे १८ धार्मिक आख्यान या धर्म-ग्रंथ जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, लय और प्राचीन ऋषियों तथा राज-वंशों आदि के वृत्तांत और देवी-देवताओं, तीर्थों आदि के माहात्म्य हैं। ३. अठारह की संख्या।

पुरातत्व-पुं० [सं०] वह विद्या जिसमें प्राचीन काल की वस्तुओं के आधार पर पुराने अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है। प्रत्न-विज्ञान। (आर्कियॉलोजी)

पुरातन-वि० [सं०] प्राचीन। पुराना। पुं० विष्णु ।

पुरान†-वि० दे० 'पुराना'। पुं० दे० 'पुराण'।

पुराना-वि० [सं० पुराण] [स्त्री० पुरानी] १. जिसे हुए या बने बहुत दिन हो गये हों। बहुत दिनों का। प्राचीन। पुरातन। २. जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी या ठीक दशा में न रह गया हो। जीर्ण। ३. जिसे बहुत दिनों का अनुभव या ज्ञान हो। परिपक्व।

मुहा०-पुराना खुर्राट=बहुत अनुभवी। पुराना घाघ=बहुत बड़ा चालाक।

४. बहुत काल या समय का। ५. जिसका प्रचलन उठ गया हो।

*स०[हिं० 'पूरना' का प्रे०] १.पूरा करना या कराना। २.पालन करना या कराना।

पुरारि-पुं० [सं०] शिव।

पुराल*-पुं० दे० 'पयाल'।

पुरा लिपि-स्त्री० [सं०] प्राचीन काल में प्रचलित लिपि।

पुरा-लिपि-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें प्राचीन काल की (सैकड़ों-हजारों वर्ष पहले की) लिपियां पढ़ने का विवेचन होता है। (एपिग्राफी)

पुरावना*-स० दे० 'पुराना'।

पुरावृत्त-पुं० [सं०] प्राचीन काल का वृत्तांत या हाल।

पुरी-स्त्री० [सं०] १. नगरी। छोटा शहर। २. उड़ीसा की जगन्नाथ पुरी।

पुरीष-पुं० [सं०] विष्ठा। मल। गू।

पुरु-पुं० [सं०] १. देव-लोक। २.राक्षस। ३. शरीर। ४. एक प्राचीन राजा जो ययाति के पुत्र थे।

पुरुख*-पुं० दे० 'पुरुष'।

पुरुष-पुं० [सं०] [भाव० पुरुषत्व] १. नर जाति का मनुष्य। मर्द। २. सांख्य में एक अकर्त्ता और असंग चेतन पदार्थ जो प्रकृति से भिन्न और उसका पूरक अंग माना गया है। आत्मा। ३. विष्णु। ४. सूर्य। ५ जीव। ६. व्याकरण में सर्वनाम और उसके साथ आनेवाली क्रियाओं के रूपों का वह भेद जिससे यह जाना जाता है कि सर्वनाम या क्रियापद का प्रयोग वक्ता (कहनेवाले) के लिए हुआ है या श्रोता या संबोध्य (जिससे कहा जाय) के लिए अथवा किसी दूसरे के लिए। जैसे-'मैं' उत्तम पुरुष है, 'तुम' मध्यम पुरुष है, और 'वह' अन्य पुरुष। ७. पूर्वज। पुरखा। ८. पति। स्वामी। वि० नर जाति का (जीव)।

पुरुषानुक्रम-पुं० [सं०] पुरखों या पहले की पीढ़ियों से चली आई हुई परंपरा। एक के बाद एक पीढ़ी का क्रम।

पुरुषार्थ-पुं०[सं०] १. पुरुष के प्रयत्न का विषय या कार्य। २. पौरुष। पराक्रम। ३. सामर्थ्य। शक्ति।

पुरुषार्थी-वि० [सं० पुरुषार्थिन्] १. पुरुषार्थ करनेवाला। पौरुष रखनेवाला। २. उद्योगी। ३. परिश्रमी। ४. बलवान्।

पुरुषोत्तम-पुं० [सं०] १. वह जो पुरुषों में उत्तम या श्रेष्ठ हो। २. विष्णु। ३. जगन्नाथ। ४. नारायण। ५. मल-मास।

पुरुहूत-पुं० [सं०] इन्द्र।

पुरेन (रैन)-स्त्री० [सं० पुटकिनी] १ कमल का पत्ता। २. कमल।

पुरोगामी-पुं० [सं० पुरोगामिन्] [स्त्री० पुरोगामिनी, भाव० पुरोगामिता] १. वह जो सबसे आगे चलता हो। अग्रगामी। २. वह जो बराबर उन्नति करता हुआ आगे बढ़ता हो। ३. किसी विषय मे उदार विचार रखने और अग्रसर रहनेवाला।

पुरोडाश-पुं० [सं०] १ जौ के आटे की वह टिकिया जो यज्ञ में आहुति देने के लिए पकाई जाती थी। हवि।

पुरोधा-पुं० [सं० पुरोधस्] पुरोहित।

पुरोहित-पुं० [सं०] [स्त्री० पुरोहितानी, भाव० पुरोहिताई] वह ब्राह्मण जो यजमान के यहां कर्म-कांड के सब कृत्य और संस्कार कराता है।

पुरौ*-पुं० दे० 'पुरवट'।

पुरौनी[1]-स्त्री० दे० 'पूर्ति'।

पुल-पुं० [फा०] नदियों आदि के ऊपर, उन्हें पार करने के लिए, नावें पाटकर, मोटे रस्से बांधकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया हुआ रास्ता और उससे संबंध रखनेवाली सारी रचना। सेतु।
मुहा०-(किसी बात का) पुल बाँधना =बहुत अधिकता कर देना। झड़ी लगाना। (किसी वस्तु का) पुल टूटना=बहुत अधिक मान में आ पड़ना।

पुलक-पुं० [सं०] प्रेम, हर्ष आदि के आवेग से रोएँ खड़े होना। रोमांच।

पुलकना*-अ० [सं० पुलक] प्रेम, हर्ष आदि से रोएँ खड़े होना। पुलकित या गद्गद होना।

पुलकाई*-स्त्री० दे० 'पुलक'।

पुलकालि*-स्त्री० दे० 'पुलकावलि'।

पुलकावलि-स्त्री० [सं०] हर्ष के कारण खड़ी या प्रफुल्ल होनेवाली रोमावली।

पुलकित-वि० [सं०] जिसे प्रेम या हर्ष के आवेग से पुलक हुआ हो। गद्गद।

पुलट[1]-स्त्री० दे० 'पलट'।

पुलटिस-स्त्री० [अं० पाउल्टिस] फोड़े आदि पकाने के लिए उनपर लगाकर बाँधा जानेवाला दवाओं का मोटा लेप।

पुलपुला-वि० [अनु०] [क्रि० पुलपुलाना] १. इतना ढीला और मुलायम कि जरा-सा में दबाने से झट दब जाय। २. बार बार दबने और उभड़ने या खुलने और बन्द होनेवाला।

पुलहना*-अ० दे० 'पलुहना'।

पुलाक-पुं०[सं०] १.उबाला हुआ चावल। भात। २. पुलाव।

पुलाव-पुं०[सं०पुलाक] मांस और चावल एक में पकाकर बनाया हुआ एक व्यंजन। मांसोदन।

पुलिंदा-पुं० [हिं० पूला] लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का मुट्ठा। (बंडल)

पुलिन-पुं० [सं०] १. जल के हट जाने से निकली हुई जमीन। चर। २. तट। किनारा।

पुलिया-स्त्री० [हिं० पुल+इया (प्रत्य०)] वह बहुत छोटा पुल जो प्रायः छोटे नालों को पार करने के लिए सड़कों पर बनाया जाता है।

पुलिस-स्त्री०[अं०] १.प्रजा की जान और माल की रक्षा करनेवाला सिपाही या अफसर। आरक्षी। २. इस प्रकार के कार्य-कर्त्ताओं का विभाग।

पूजनेवाला।

पूजन-पुं० [सं०] [वि० पूजक, पूजनीय, पूज्य] १. देवता की पूजा, सेवा आदि करना। अर्चन। २. आदर। सम्मान।

पूजना-स० [सं० पूजन] १.देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी पूजा करना। २. आदर-सत्कार या सम्मान करना। ३. घूस या रिशवत देना।

अ० [सं० पूर्यते] १. पूर्ण या पूरा होना। भरना। २ गहराई या घाव आदि का भरना। ३.नियत समय आ पहुँचना। ४. पूरा या समाप्त होना। जैसे-महीना पूजना।

पूजनीय-वि० [सं०] १. जिसकी पूजा करना उचित हो। पूजने योग्य। अर्चनीय। २ आदरणीय। सम्मान के योग्य।

पूजबंद-पुं० [फा०] जानवरों के मुँह पर बाँधने की जाली।

पूजा-स्त्री० [सं०] १.वह कार्य जो ईश्वर या देवी-देवता को प्रसन्न या अनुकूल करने के लिए श्रद्धा-भक्तिपूर्वक किया जाय। २. किसी देवी-देवता पर जल, फूल आदि चढ़ाकर या उनके आगे कुछ रखकर किया जानेवाला धार्मिक कार्य। अर्चा। ३. आदर-सत्कार। खातिर। ४. किसी को प्रसन्न या अनुकूल करने के लिए उसे कुछ देना। ५ दंड। सजा।

पूजार्ह-वि० [सं०] पूजा के योग्य। पूज्य।

पूजित-वि० [सं०] [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो। अर्चित।

पूजी-स्त्री० [फा० पूजबंद] घोड़े का एक प्रकार का साज जो उसके मुँह पर रहता है।

पूज्य-वि० [सं०] [स्त्री० पूज्या] पूजा किये जाने के योग्य। पूजनीय। २. आदर के योग्य।

पूज्यपाद-वि० [सं०] जिसके पैर पूजे जाने के योग्य हों। अत्यंत पूज्य और मान्य।

पूठि*-स्त्री० [सं० पृष्ठ] पीठ।

पूड़ी-स्त्री० दे० 'पूरी'।

पूत-वि०[सं०][भाव०पूतता] पवित्र। शुद्ध।

पुं० [सं०] सत्य।

†पुं० दे० 'पुत्र'।

पूतना-स्त्री० [सं०] १. एक राक्षसी जिसको कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए गोकुल भेजा था और जिसे, स्तन में दाँत गड़ाकर, कृष्ण ने मार डाला था। २. एक प्रकार का बाल-ग्रह।

पूतनारि-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

पूतरा†-पुं० दे० 'पुतला'।

पूति-स्त्री० [सं०] १. पवित्रता। शुचिता। २. दुर्गन्ध। बदबू।

पूती-स्त्री० [सं० पोत=गट्ठा] १.गाँठ के रूप में होनेवाली जड़। २. लहसुन की गाँठ।

पूनिउँ*-स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पूनी-स्त्री० [सं० पिंजिका] सूत कातने के लिए तैयार की हुई धुनी रूई की बत्ती।

पूनें(नों)*-स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पूप-पुं० [सं०] मालपूआ।

पूय-पुं० [सं०] पीप। मवाद।

पूर-वि० [सं० पूर्ण] दे० 'पूर्ण'।

पुं०कचौरी, समोसे, गुझिया आदि पकवानों के अन्दर भरे जानेवाले मसाले। २. नदी आदि की बाढ़.

पूरक-वि० [सं०] १. पूर्ति या पूरा करनेवाला। २. किसी के साथ मिलकर उसे पूर्ण स्वरूप देनेवाला। (कॉम्प्लिमेन्टरी)

पुं० [सं०] १. प्राणायाम का वह पहला अंग या क्रिया जिसमें नाक से श्वास खींचते हुए अन्दर ले जाते हैं। २. वह

जो किसी वस्तु के साथ मिलकर उसे पूरा करता हो। पूर्ण बनाने या करनेवाला अंग। (कॉम्प्लिमेन्ट) ३. वह अंक जिससे गुणा किया जाता है। गुणक अंग।

पूरण-पुं० [सं०] [वि० पूरणीय] १ पूरा करने या भरने की क्रिया या भाव। २. समाप्त करना। ३.अंकों का गुणा करना। वि० दे० 'पूरक'।

पूरन*-वि० दे० 'पूर्ण'।

पूरन परव*-पुं० दे० 'पूर्णिमा'।

पूरना†-स० [सं० पूरण] १. पूरा करना। पूर्ति करना। २. आच्छादित करना। ढाँकना। ३ (मनोरथ) सफल या सिद्ध करना। ४. मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देव-पूजन के लिए गोल, तिखूँटे और चौकोर क्षेत्र बनाना। चौक बनाना। ५ बटना। जैसे-तागा पूरना। अ० १. पूर्ण होना। भर जाना। २. पूरने का काम होना। पूरा जाना।

पूरब-पुं० [सं० पूर्व] वह दिशा जिसमें सूर्य निकलता है। पूर्व। प्राची। *वि०, क्रि० वि० दे० 'पूर्व'।

पूरबल*-पुं० [हिं० पूरबला] १. पुराना समय। २. पूर्व-जन्म।

पूरबला*-वि०[सं०पूर्व+हिं०ला(प्रत्य०)] [स्त्री० पूरबली] १. प्राचीन काल का। पुराना। २. पिछले जन्म का।

पूरबी-वि० दे० 'पूर्वी'। स्त्री० बिहारी बोली का एक प्रकार का दादरा।

पूरा-वि० [सं० पूर्ण] [स्त्री० पूरी] १. जो खाली न हो। भरा हुआ। परिपूर्ण। २. समूचा। सारा। समस्त। ३. जिसमें कोई त्रुटि या कोर-कसर न हो। पूर्ण। ४. भर-पूर। यथेष्ट। काफी। ५. पूरी तरह से सम्पादित या सम्पन्न किया हुआ।

मुहा०-(कोई काम) पूरा उतरना=अच्छी तरह समाप्त होना। जैसा चाहिए, वैसा होना। (बात) पूरी उतरना=ठीक निकलना। सत्य ठहरना। दिन पूरे करना=किसी प्रकार समय बिताना। दिन पूरे होना=अंतिम समय आना। ६. तुष्ट। पूर्ण-काम।

पूरित-वि० [सं०] [स्त्री० पूरिता] १. पूरा किया हुआ। परिपूर्ण। २. गुणा किया हुआ। गुणित।

पूरी-स्त्री० [सं० पूलिका] १. खौलते हुए घी में छानकर बनाया हुआ रोटी की तरह का एक प्रसिद्ध पकवान। २. मृदंग, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा या उसपर लगी हुई गोल टिक्की।

पूर्ण-वि० [सं०] [भाव० पूर्णता] १. भरा हुआ। परिपूर्ण। पूरा। २. जिसमें किसी तरह की कमी या अपेक्षा न हो। सब अंगों से युक्त और पूरा। (एब्सोल्यूट) ३. जिसकी इच्छा पूरी हो चुकी हो। तृप्त। ४. भर-पूर। यथेष्ट। काफी। ५. समूचा। सारा। सब। समस्त। ६. सिद्ध। सफल। ७. (काम) जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।

पूर्ण-काम-वि० [सं०] जिसकी सब कामनाएँ या इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों।

पूर्ण घट-पुं० [सं०] जल से भरा हुआ घड़ा जो मंगल-सूचक माना जाता है।

पूर्णतः(तया)-क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

पूर्णमासी-स्त्री० दे० 'पूर्णिमा'।

पूर्ण विराम-पुं० [सं०] लेखां आदि में वह चिह्न जो किसी वाक्य की समाप्ति पर उसके अन्त में लगाया जाता है। यह गोल बिन्दी (.) और खड़ी पाई (।)

दो रूपों में होता है।

पूर्णायु-स्त्री० [सं० पूर्णायुस्] पूरी आयु। (मनुष्यों के लिए १०० वर्ष की) वि० सौ वर्षों तक जीनेवाला।

पूर्णाहुति-स्त्री० [सं०] १. यज्ञ या होम समाप्त होने पर अन्त में दी जानेवाली आहुति। २. किसी कार्य की समाप्ति के समय होनेवाला अन्तिम कृत्य।

पूर्णिमा-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास के शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि, जिसमें चन्द्रमा अपनी सब कलाओं से युक्त या पूरा दिखाई देता है।

पूर्णोपमा-स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह प्रकार जिसमें उसके चारो अंग (उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म) वर्त्तमान रहते हैं।

पूर्त-पुं० [सं०] १. पालन। २. मकान, कूएँ, बगीचे, सड़कें आदि बनाने का काम। वि० १. पूरित। २. ढका हुआ।

पूर्त विभाग-पुं० [सं० पूर्त+विभाग] वह राजकीय विभाग जो सड़कें, पुल आदि बनवाता है। तामीर का महकमा।

पूर्त्ति-स्त्री० [सं०] १. पूर्ण या पूरे होने अथवा करने की क्रिया या भाव। पूर्णता। पूरापन। २. आरंभ किये हुए कार्य की समाप्ति। ३. किसी प्रकार की त्रुटि, अपेक्षा या कमी पूरा करने की क्रिया या भाव। जैसे-अभाव की पूर्त्ति, समस्या की पूर्त्ति। ४. गुणा करने की क्रिया। गुणन।

पूर्व-पुं० [सं०] वह दिशा जिधर सूर्य का उदय होता है। पश्चिम के सामने की दिशा। वि० [सं०] १.पहले का। पुराना। २. आगे का। अगला। ३.पीछे का। पिछला। क्रि० वि० पहले। पेश्तर। आगे।

पूर्वक-क्रि० वि० [सं०] युक्त। सहित। के साथ। जैसे-कृपापूर्वक।

पूर्व-कालिक-वि० [सं०] १. पूर्व काल का। प्राचीन। पुराना। २. जिसकी उत्पत्ति या रचना पूर्व काल में हुई हो।

पूर्वज-पुं० [सं०] १. बड़ा भाई। अग्रज। २. बाप, दादा, परदादा आदि जो पहले हो गये हों। पूर्व-पुरुष। पुरखा।

पूर्व-जन्म-पुं० [सं० पूर्व-जन्मन्] इस जन्म से पहले का जन्म। पिछला जन्म।

पूर्वतर-वि० [सं०] [भाव० पूर्वतरता] १. पहला। २. पहले या पूर्व का।

पूर्व-दत्त-वि० [सं०] (शुल्क, कर आदि) जो पहले ही चुका दिया गया हो। (प्री-पेड)

पूर्व-दान-पुं०[सं०] देन, शुल्क, कर आदि जो देना हो, वह पहले ही दे देना। पहले ही चुका देना। पेशगी दे देना।

पूर्व पक्ष-पुं० [सं०] १. किसी विषय के संबंध में उठाई हुई चर्चा, प्रश्न या शंका, जिसका किसी को उत्तर देना या समाधान करना पड़े। २. मुद्दई का दावा या अभियोग।

पूर्व-रंग-पुं० [सं०] वह संगीत जो नाटक आरंभ होने से पहले विघ्नों की शांति या दर्शकों को सावधान करने के लिए होता है।

पूर्व राग-पुं० [सं०] साहित्य में किसी के गुण सुनकर या किसी का चित्र अथवा स्वयं किसी को देखकर उत्पन्न होनेवाला आरम्भिक प्रेम।

पूर्व रूप-पुं० [सं०] १. वह रूप जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो। २. किसी वस्तु का वह रूप जो उस वस्तु के पूर्ण रूप से प्रस्तुत होने के पहले बना हो।

पूर्ववत्-क्रि० वि० [सं०] पहले की तरह। जैसा पहले था, वैसा ही।

पूर्ववर्ती-वि०[सं० पूर्ववर्तिन्] १. पहले

का। २. जो पहले रह चुका हो।

पूर्वाधिकारी-पुं० [सं०] १. वह अधिकारी जो किसी पद पर उसके वर्त्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। २. सम्पत्ति का वह स्वामी या अधिकारी जो उसके वर्त्तमान अधिकारी से पहले रहा हो। 'उत्तराधिकारी' का उलटा। (प्रेडिसेसर)

पूर्वानुराग-पुं० दे० 'पूर्व राग'।

पूर्वापर-क्रि० वि० [सं०] आगे-पीछे। वि० आगे का और पीछे का। अगला और पिछला।

पूर्वार्द्ध-पुं०[सं०] आरंभ का आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।

पूर्वाह्न-पुं० [सं०] सवेरे से दोपहर तक का समय। दिन का पहला आधा भाग।

पूर्वी-वि० [सं० पूर्वीय] पूर्व दिशा से संबंध रखनेवाला। पूरब का। स्त्री० दे० 'पूरबी'।

पूर्वोक्त-वि० [सं०] पहले कहा हुआ। जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी हो।

पूला-पुं० [सं० पूलक] [अल्पा० पूली] सरपत, मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।

पूलिका-स्त्री० [सं०] १. छोटा पूला या मुट्ठा। २. पुलिंदा। पोटली।

पूस-पुं० [सं० पौष] अगहन के बाद और माघ के पहले का महीना। पौष।

पृच्छक-वि० [सं०] १. पूछनेवाला। प्रश्न करनेवाला। २. जिज्ञासु।

पृथक्-वि० [सं०] [भाव० पृथक्ता] १. भिन्न। अलग। जुदा। २.अपने कार्य या पद से हटाया हुआ।

पृथकता-स्त्री० दे० 'पृथक्ता'।

पृथक्करण-पुं० [सं०] पृथक् या अलग करने की क्रिया या भाव। २. किसी को किसी पद या अधिकार से हटाना या अलग करना। (रिमूवल)

पृथक्ता-स्त्री० [सं०] पृथक् या अलग होने का भाव। पार्थक्य। अलगाव।

पृथग्न्यास-पुं० [सं०] [वि० पृथग्न्यस्त] १. अलग करना, लगाना या रखना। २. आस-पास की परिस्थिति से अलग करना। ३. दो वस्तुओं के बीच में कोई ऐसी वस्तु लगाना जिससे एक के ताप या विद्युत् का दूसरी में संचार न होने पावे।

पृथिवी-स्त्री० दे० 'पृथ्वी'।

पृथु-वि० [सं०] [भाव० पृथुता] १. चौड़ा। विस्तृत। २. विशाल। महान्। ३. अगणित। असंख्य। ४. चतुर। प्रवीण। ५. कीर्त्तिशाली। यशस्वी। पुं० [सं०] १. अग्नि। २. विष्णु।

पृथुल-वि० [सं०] [भाव० पृथुलता] १. स्थूल। बड़ा। २. विशाल। ३. विस्तृत।

पृथ्वी-स्त्री० [सं०] [वि० पार्थिव] १ सौर जगत् का वह ग्रह जिसपर हम सब लोग रहते हैं। अवनी। धरा। २. मिट्टी, पत्थर आदि का बना पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जिसपर हम सब लोग चलते-फिरते हैं। भूमि। जमीन। धरती। ३. पंचभूतों या तत्त्वों में से एक, जिसका प्रधान गुण गंध है। ४. मिट्टी।

पृष्ट-वि० [सं०] पूछा हुआ।

पृष्ठ-पुं० [सं०] १. पीठ। २. किसी वस्तु का ऊपरी तल। ३. पीछे का भाग। पीछा। (रिवर्स) ४. पुस्तक के पन्ने के एक ओर का तल या भाग। पन्ना। (पेज)

पृष्ठ-पोषक-पुं० [सं०] १. पीठ ठोंकनेवाला। २. सहायक। मददगार।

पृष्ठभूमि-स्त्री० दे० 'पृष्ठिका' २.।

पृष्ठिका-स्त्री० [सं०] १. पिछला भाग। २. मूर्ति या चित्र में वह सबसे पीछे का

भाग जो अंकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है। पृष्ठ-भूमि।

पैंग-स्त्री० [हिं० पटेंग] झूलने के समय झूले का एक ओर से दूसरी ओर जाना। मुहा०-**पैंग मारना**=झूला झूलते समय इस प्रकार ज़ोर लगाना कि उसका वेग बढ़ जाय और वह दूर तक झूले।

पेंच-पुं० दे० 'पेच'।

पेंडुकी-स्त्री०१.दे०'पंडुक'। २.दे०'गुझिया'।

पेंदा-पुं० [सं० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पेंदी] किसी वस्तु का वह निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरी रहती है।

पेउस-पुं० दे० 'पेवस'।

पेखक*-पुं० दे० 'प्रेक्षक'।

पेखना*-स० [सं० प्रेक्षण] देखना।

पेच-पुं० [फा०] १. घुमाव। फिराव। लपेट। २. उलझन। झंझट। बखेड़ा। ३. चालबाज़ी। धूर्तता। ४. कल। यंत्र। ५. कल या यंत्र का कोई छोटा पुरज़ा। मुहा०-**पेच घुमाना**=ऐसी युक्ति करना, जिससे किसी का विचार या कार्य का स्वरूप बदल जाय।
६. एक प्रकार की कील या काँटा जिसके अगले नुकीले भाग पर चक्करदार गड़ारियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है। (स्क्रू) ७. पतंग या गुड्डी लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों या गुड्डियों की डोरों का एक दूसरी में फँस जाना। ८. कुश्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ने की युक्ति या चाल। ९. टोपी पर या पगड़ी में आगे की ओर शोभा के लिए लगाया जानेवाला एक आभूषण। कलगी। सिर-पेच।

पेचक-स्त्री० [फा०] बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी। पुं० [सं०] [स्त्री० पेचिका] उल्लू।

पेचकश-पुं० [फा०] १. वह औज़ार जिससे पेच जड़ा और निकाला जाता है। २. एक प्रकार का चक्करदार काँटा जिससे बोतल का काग निकाला जाता है।

पेचवान-पुं० [फा०] १ फरशी या बड़े हुक्के में लगाई जानेवाली बड़ी सटक। २. बड़ा हुक्का।

पेचिश-स्त्री० [फा०] पेट में आँव होने के कारण होनेवाला मरोड़।

पेचीदा-वि० दे० 'पेचीला'।

पेचीला-वि० [फा० पेच] १. जिसमें पेच हो। पेचदार। २. जो टेढ़ा-मेढ़ा या कठिन हो। विकट। मुश्किल।

पेज-स्त्री० [सं० पेय] रबड़ी। बसोंधी। पुं० [अं०] पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना।

पेट-पुं० [सं० पेट=थैला] १. शरीर में छाती के नीचे का वह अंग जिसमें पहुँच-कर भोजन पचता है। उदर। मुहा०-**अपना पेट काटना**=१. जान-बूझकर कम खाना, जिसमें कुछ बचत हो। (**किसी का**) **पेट काटना**=किसी को मिलनेवाले धन में कमी करना। **पेट का धंधा**=जीविका का उपाय। **पेट का पानी न पचना**=रहा न जाना। **पेट की आग** = भूख। †**पेट खलाना**=१. पेट पर हाथ फेर कर भूखे होने का संकेत करना। **पेट चलना**=दस्त आना। **पेट जलना**=बहुत भूख लगना। **पेट पालना**=जीवन निर्वाह करना। **पेट फूलना**=१. कोई काम करने या कोई बात कहने या सुनने के लिए बहुत उत्सुकता होना। २.बहुत हँसने के कारण पेट में हवा-सी भर जाना। ३. पेट में वायु का प्रकोप होना। पेट

मारकर मर जाना=आत्मघात करना। पेट में पाँव होना=अत्यंत दुष्ट या कपटी होना। (कोई वस्तु) पेट में होना=गुप्त रूप से पास में होना। पेट से पाँव निकालना=बढ़कर अनुचित काम करना।
२. गर्भ। हमल।
मुहा०-पेट गिरना=गर्भपात होना। पेट रहना=गर्भ रहना। पेट से होना= गर्भवती होना।
यौ०-पेटवाली=गर्भवती (स्त्री)।
३. अंतःकरण। मन। दिल।
पद-पेट की बात=मन की बात।
मुहा०-पेट में घुसना या बैठना=रहस्य जानने के लिए मेल-जोल बढ़ाना। पेट में होना=मन में होना।
४. पोली वस्तु के बीच का या खाली भाग। ५.गुंजाइश। अवकाश। समाई।
पेटा-पुं० [हिं० पेट] १. किसी पदार्थ के बीच का भाग। २. ब्योरा। विवरण। ३. सीमा। हद। ४. घेरा। वृत्त।
पेटागि*-स्त्री० [हिं० पेट+अग्नि] भूख।
पेटार्थी(र्थू)-वि० दे० 'पेटू'।
पेटिका-स्त्री० [सं०] १. संदूक। पेटी। २. पिटारी।
पेटी-स्त्री० [सं० पेटिका] १. छोटा संदूक। २. छाती और पेड़ू के बीच का पेट का आगे निकला हुआ नीचेवाला भाग।
मुहा०-पेटी पड़ना=तोंद निकलना।
३. कमर में बाँधने का चौड़ा तसमा। कमरबंद। ४ चपरास।
पेटू-वि० [हिं० पेट] जिसे सदा पेट भरने या खाने की चिन्ता रहती हो। भुक्खड़।
पेट्रोल-पुं० [अं०] मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जिसके ताप से मोटरें आदि चलती हैं।
पुं० [अं० पैट्रोल] १. सैनिक रक्षा के लिए घूम-घूमकर पहरा देना। २. वह सिपाही जो इस प्रकार पहरा देता हो।
पेठा-पुं० [देश०] सफेद कुम्हड़ा।
पेड़-पुं० [सं० पिंड] वृक्ष। दरख्त।
पेड़ा-पुं० [सं० पिंड] १. खोये की एक प्रसिद्ध गोलाकार चिपटी मिठाई। २. गुँधे हुए आटे की लोई जिसे बेलकर रोटी, पूरी आदि बनाते हैं।
पेड़ी-स्त्री० [हिं० पेड़] १. पेड़ का तना। धड़। कांड। २. मनुष्य का धड़। ३. पान का पुराना पौधा। ४. ऐसे पौधे के पान। ५. वह कर जो प्रति वृक्ष के हिसाब से लगता है।
पेड़ू-पुं० [हिं० पेट] १.मनुष्य की नाभि के नीचे और मूत्रेंद्रिय के ऊपर का भाग। उपस्थ। २. गर्भाशय।
पेन्शन-स्त्री० [अं०] वह वृत्ति जो किसी को उसकी पिछली या बहुत दिनों की सेवाओं के बदले में मिलती है।
पेन्सिल-स्त्री० [अं०] एक तरह की कलम जिससे बिना स्याही के लिखा जाता है।
पेन्हाना-स० दे० 'पहनाना'।
अ० [सं० पय:स्रवन] दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।
पेम*-पुं० दे० 'प्रेम'।
पेमचा-पुं० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
पेय-वि० [सं०] पीने योग्य।
पुं० [सं०] १. पीने की तरल वस्तु। २. जल। पानी। ३. दूध।
पेरना-स० [सं० पीडन] १. कोल्हू आदि में डालकर कोई वस्तु इस प्रकार दबाना कि उसका रस या तेल निकल आवे।

जैसे-ऊख या तिल पेरना। २.कष्ट देना। सताना।

अ०किसी काम में बहुत अधिक देर लगाना।

*स० [सं० प्रेरण] १. प्रेरणा करना। चलाना। २. भेजना।

पेरोल-पुं० [अं०] कैदी आदि का कुछ समय के लिए इस शर्त पर छोड़ा जाना कि अवधि पूरी होने पर अथवा बीच में आज्ञा मिलते ही वह तुरंत लौटकर जेल में आ जायगा।

पेलना-स० [सं० पीड़न] १. दबाकर अंदर घुसाना। धँसाना। २. धक्का देना। ढकेलना। ३. अवज्ञा करना। न मानना। ४. त्यागना। ५. हटाना। दूर करना। ६. जबरदस्ती करना। बल-प्रयोग करना। ७. दे० 'पेरना'।

स० [सं० प्रेरण] किसी पर आक्रमण करने के लिए हाथी, घोड़ा आदि उसके सामने छोड़ना या आगे बढ़ाना।

पेला*-पुं० [हिं० पेलना] १. पेलने की क्रिया या भाव। २. आक्रमण। धावा। चढ़ाई। ३. अपराध। कसूर। ४. झगड़ा।

पेवा-पुं० दे० 'प्रेम'।

पेवस-पुं० [सं० पीयूष] हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध जो कुछ पीला होता है और पीने योग्य नहीं होता।

पेश-क्रि० वि० [फा०] सामने। आगे।

मुहा०-**पेश आना**=१. बरताव करना। व्यवहार करना। २. घटित होना। सामने आना। **पेश करना**=१. उपस्थित करना। दिखलाना। २. भेंट करना। नजर करना। **पेश जाना या चलना**=वश चलना।

पेशकश-पुं० [फा०] भेंट। उपहार।

पेशकार-पुं० [फा०] न्यायालय में हाकिम के सामने कागज-पत्र पेश करने या रखनेवाला कर्मचारी।

पेशगी-स्त्री० [फा०] निश्चित पारिश्रमिक का वह थोड़ा अंश जो किसी को कोई काम करने के लिए पहले दे दिया जाय। अगाऊ।

पेशबंदी-स्त्री० [फा०] पहले से की हुई बचाव की युक्ति या प्रबंध।

पेशवा-पुं० [फा०] १. नेता। सरदार। २. महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि।

पेशवाई-स्त्री०[हिं० पेशवा+ई (प्रत्य०)] १.पेशवाओं की शासन-काल। २. पेशवा का पद या कार्य। ३. दे० 'अगवानी'।

पेशवाज-स्त्री० [फा०] नर्त्तकियों का बड़ा घाघरा जो वे नाचते समय पहनती हैं।

पेशा-पुं० [फा०] [कर्त्ता पेशावर] जीविका के लिए किया जानेवाला धंधा। उद्यम। व्यवसाय।

मुहा०-**पेशा कमाना**=स्त्री का व्यभिचार के द्वारा धन कमाना।

पेशाब-पुं० [फा०] मूत्र। मूत।

मुहा०-**पेशाब करना**= अत्यंत तुच्छ समझना। (**किसी के) पेशाब से चिराग जलना**=किसी का अत्यंत प्रतापी होना। बहुत अधिक दबदबा होना।

पेशाबखाना-पुं० [फा०] वह स्थान जहाँ लोग पेशाब करते हों।

पेशी-स्त्री० [फा०] १. सामने या आगे होने की क्रिया या भाव। २. न्यायालय अथवा अधिकारी के सामने किसी अभियोग या मुकदमे के पेश होने और सुने जाने की कार्रवाई।

स्त्री० [सं०] १. शरीर के अन्दर मांस की वह मांसल गुत्थी या गाँठ जिससे अंगों

का संचालन होता है।

पेश्तर-क्रि॰ वि॰ [फा॰] पहले। पूर्व।

पेषण-पुं॰ [सं॰] पीसना।

यौ॰-पिष्ट-पेषण। (देखो)

पेस*-क्रि॰ वि॰ दे॰ 'पेश'।

पैं*-अव्य॰[हिं॰ पहँ] पास।

पैंग*-स्त्री॰ दे॰ 'पेंग'।

पैंजनी-स्त्री॰ [हिं॰ पायँ+अनु॰ भनभन] पैरों में पहनने का भन भन बजनेवाला एक गहना। भाँभर।

पैंठ-स्त्री॰ [सं॰ पण्यस्थान] १. हाट। बाजार। २ दुकान।

पैंड़-पुं॰ [हिं॰ पायँ+ड़ (प्रत्य॰)] १. डग। कदम। २. मार्ग। रास्ता।

पैंड़ा-पुं॰ [हिं॰ पैंड़] १.रास्ता। मार्ग। मुहा॰-(किसी के) पैंड़े पड़ना=पीछे पड़ना। तंग करना।

२. घुड़साल। अस्तबल।

पैंत।*-स्त्री॰ [सं॰ पणकृत] दाँव। बाजी। वि॰ [देश॰] सात (संख्या)। (दलाल)

पैंतरा-पुं॰ [सं॰ पदांतर] १. वार करने या लड़ने के समय पैर जमाकर खड़े होने की मुद्रा या ढंग। २. चालाकी से भरी हुई चाल या युक्ति।

मुहा॰-पैंतरा दिखाना=चाल या युक्ति के द्वारा अपनी चालाकी दिखाना।

पै।*-अव्य॰ [सं॰परं] १ परंतु। लेकिन। यौ॰-जो पै=यदि। अगर। तो पै=तो। २. अवश्य। जरूर। ३. पीछे। बाद। अव्य॰ [हिं॰ पहँ] १. पास। समीप। निकट। २. प्रति। ३. ओर। तरफ। प्रत्य॰ [सं॰ उपरि] १ पर। ऊपर। २. से। द्वारा।

स्त्री॰ [सं॰ आपत्ति] दोष। त्रुटि। ऐब। पुं॰ दे॰ 'पय'।

स्त्री॰ दे॰ 'घोड़ा नस'।

पैकरमा*-स्त्री॰ दे॰ 'परिक्रमा'।

पैकार-पुं॰ [फा॰] घूम-घूमकर फुटकर सौदा बेचनेवाला छोटा व्यापारी।

पैकिंग-स्त्री॰ [अं॰] किसी चीज को कहीं भेजने या ले जाने के समय बक्स आदि के अन्दर अथवा कागज या कपड़े आदि में अच्छी तरह मजबूती और हिफाजत से बाँधने की क्रिया या भाव।

पैगंबर-पुं॰ [फा॰] वह धर्माचार्य जो ईश्वर का संदेशा लेकर मनुष्यों के पास आनेवाला माना जाता हो। जैसे-ईसा, मुहम्मद, मूसा आदि।

पैज*-स्त्री॰ [सं॰ प्रतिज्ञा] १. प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। २. प्रतिद्वंद्विता। होड़।

पैजार-स्त्री॰ [फा॰] जूता। जोड़ा। यौ॰-जूती-पैजार=बुरी तरह से होने-वाली तकरार या लड़ाई-झगड़ा।

पैठ-स्त्री॰ [सं॰ प्रविष्ट] १. पैठने या घुसने की क्रिया या भाव। प्रवेश। दखल। २. गति। पहुँच।

पैठना-अ॰ [हिं॰ पैठ] [स॰ पैठाना, भाव॰ पैठ] प्रविष्ट होना। प्रवेश करना।

पैठार।*-पुं॰ [हिं॰ पैठ+आर (प्रत्य॰)] १. पैठ। प्रवेश। २. फाटक। दरवाजा।

पैठारी।-स्त्री॰ दे॰ 'पैठ'।

पैड-पुं॰ [अं॰] १. सोख्ते या स्याही-सोख कागज की गद्दी। २. कोई छोटी मुलायम गद्दी। जैसे इंक-पैड। ३. छोटे कागजों की गड्डी।

पैड़ी-स्त्री॰ [हिं॰ पैर] सीढ़ी।

पैतरा-पुं॰ दे॰ 'पैंतरा'।

पैताना-पुं॰ दे॰ 'पायँता'।

पैतृक-वि॰ [सं॰] १. पितृ-संबंधी। २ बाप-दादा के समय से चला आया हुआ।

पुरतैनी। पुरखों का। जैसे-पैतृक संपत्ति।

पैत्रिक-वि० दे० 'पैतृक'।

पैदल-वि० [सं० पदाति] पैरों से चलकर कहीं जानेवाला।

क्रि० वि० पाँव-पाँव। पैरों से।

पुं० १.बिना किसी सवारी के पैरों से चलने की क्रिया। २. वह सिपाही जिसके पास घोड़ा या और कोई सवारी न हो और जो पैरों से चलकर कहीं जाता हो। पदाति।

पैदा-वि० [फा०] १. उत्पन्न। जन्मा हुआ। प्रसूत। २. प्रकट, आविर्भूत या घटित। ३. कमाया हुआ। अर्जित।

स्त्री० १. आय। आमदनी। २. लाभ।

पैदाइश-स्त्री० [फा०] उत्पत्ति। जन्म।

पैदाइशी-वि० [फा०] १.जन्म-काल से ही होनेवाला। २.स्वाभाविक। प्राकृतिक।

पैदावार-स्त्री० [फा०] अन्न आदि जो खेत में उपजा हो। उपज। फसल।

पैना-वि० [सं० पैण] [स्त्री० पैनी] १. पतली और चोखी धारवाला। २. नुकीला।

पैमाल*†-वि० दे० 'पामाल'।

पैयाँ†-स्त्री० [हिं० पायँ] पाँव। पैर।

क्रि० वि० पैरों के सहारे (चलना)।

पैर-पुं० [सं० पद] वह अंग जिससे प्राणी खड़े होते और चलते-फिरते हैं। पाँव। पग। मुहा०-**पैर उखड़ जाना**=लड़ाई या मुकाबले में ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। **पैर उठाना**=१. चलने के लिए कदम बढ़ाना। २. जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना। **पैर छूना**=१. बड़ों का आदर करने के लिए उनके पैरों पर हाथ रखना। चरण स्पर्श करना। २. दीनता-पूर्वक विनय करना। **पैर जमना**=१. स्थिर भाव से खड़ा होना। २.दृढ़ रहना। हटने या विचलित होने की अवस्था न आना। **पैर तोड़ना**=१. बहुत चलकर पैर थकाना। २. बहुत दौड़-धूप करना। **पैर तोड़कर बैठना**=१.कहीं न जाना। एक ही जगह रहना। २. हारकर बैठना। **बुरे रास्ते पर पैर धरना या रखना**=बुरे काम में प्रवृत्त होना। **पैर पकड़ना**=१ विनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना। २. पैर छूना। ३. दीनता से विनय करना। **पैरों पड़ना**=१. पैरों पर गिरना। साष्टांग दंडवत करना। २. अत्यन्त दीनता से विनय करना। **पैरों पर गिरना या पड़ना**= १. दंडवत् या प्रणाम करना। २.दीनता-पूर्वक विनय करना। **पैर पसारना या फैलाना**=१. आराम से लेटना या सोना। २.आडंबर खड़ा करना। ठाट-बाट करना। ३.दे० 'पाँव फैलाना'। **पैरों चलना**= पैदल चलना। **पैर पूजना**=बहुत आदर-सत्कार करना या पूज्य मानना। **फूँक फूँककर पैर रखना**=बहुत सँभलकर कोई काम करना। बहुत सावधानी रखना। **पैर बढ़ाना**=१. चलने में पैर आगे रखना। २. सीमा से आगे बढ़ना। अतिक्रमण करना। **पैर भर जाना**= चलने की थकावट से पैर में बोझ-सा मालूम होना। **पैर भारी होना**=गर्भ रहना। हमल होना। **पैर में (या से) पैर बाँधकर रखना**=सदा अपने पास रखना। अलग न होने देना। **पैर सो जाना**=रक्त का संचार रुकने से पैर सुन्न हो जाना। **(किसी के) पैर न होना**= ठहरने की शक्ति या साहस न होना। दृढ़ता न होना। **धरती पर पैर न रखना**=१. बहुत घमंड करना। २. फूले अंग न समाना। (शेष मुहा० के

लिए दे० 'टाँग' और 'पाँव' के मुहावरे।) २. धूल आदि पर पड़े हुए पैरों के चिह्न।
पैर-गाड़ी-स्त्री० [हिं० पैर+गाड़ी] वह हलकी गाड़ी जो पैरों के चलाने से चलती हो। जैसे-बाइसिकिल आदि।
पैरना-अ० दे० 'तैरना'।
पैरवी-स्त्री०[फा०]१.किसी के पीछे चलना। अनुगमन। २. मुकदमे आदि में अपने पक्ष के समर्थन आदि के लिए की जानेवाली कार्रवाई। ३.प्रयत्न। कोशिश।
पैरवीकार-पुं०[फा०] पैरवी करनेवाला।
पैराऊ*-पुं० दे० 'पैराव'।
पैराक-पुं० [हिं० पैरना] अच्छा तैरनेवाला। तैराक।
पैराव-पुं० [हिं० पैरना] उतना पानी, जितना चलकर नहीं, बल्कि तैरकर ही पार कर सकें।
पैराशूट-पुं० दे० 'छतरी' २.।
पैरी-स्त्री०१. दे० 'पाँड़ी'। २. दे० 'पैड़ी'।
पैरोकार-पुं० दे० 'पैरवीकार'।
पैवंद-पुं० [फा०] १. कपड़े आदि का छेद बंद करने के लिए लगाया जानेवाला छोटा टुकड़ा। चकती। थिगली। जोड़। २. किसी पेड़ की वह टहनी जो काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में बाँधी जाती है। (इससे फल बढ़ते या स्वादिष्ट होते हैं।)
पैवस्त-वि० [फा० पैवस्तः] (द्रव पदार्थ) जो किसी के अन्दर पहुँचकर सब जगह फैल या समा गया हो। समाया हुआ।
पैशाचिक-वि० [सं०] १. पिशाचों का। राक्षसी। २. घोर और वीभत्स।
पैशाची-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन प्राकृत भाषा।
पैसना*-अ०=पैठना।
पैसा-पुं० [सं० पाद या पणांश] १. तांबे का एक प्रसिद्ध सिक्का जो एक आने का चौथा भाग होता है। २. धन।
पैसार-पुं० [हिं० पैसना] पैठ। प्रवेश।
पैहारी-वि० [सं० पयस्+आहारी] केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।
पोंछ-स्त्री० दे० 'पूँछ'।
पोंछन-स्त्री० [हिं० पोंछना] १. किसी पात्र या आधार में लगी हुई वस्तु का बचा हुआ अंश जो पोंछने से ही निकले। पद-**पेट की पोंछन**=स्त्री की अन्तिम सन्तान, जिसके बाद उसे फिर कोई सन्तान न हुई हो।
पोंछना-स० [सं० प्रोञ्छन] १. लगी हुई वस्तु हाथ की रगड़ से हटाते हुए निकालना। काछना। २.रगड़कर धूल या मैल साफ करना। जैसे-खिड़की पोंछना। पुं० [स्त्री० पोंछनी] पोंछने का कपड़ा।
पोइया-स्त्री० [फा० पोयः] घोड़े की वह चाल जिसमें वह दो दो पैर साथ उठाकर दौड़ता है। सरपट चाल।
पोइस-स्त्री० [फा० पोयः, हिं० पोइया] सरपट दौड़। अव्य० [फा० पोश] हटो। बचो।
पोखना*-स० दे० 'पोसना'।
पोखरा-पुं० [सं० पुष्कर] [स्त्री० अल्पा० पोखरी] १. जमीन में बहुत बड़ा गड्ढा खोदकर बनाया हुआ जलाशय। तालाब। २. पाखाना।
पोगंड-पुं० दे० 'पौगंड'।
पोच-वि० [फा० पूच] १. तुच्छ। क्षुद्र। २. हीन। निकृष्ट। ३. अशक्त। निर्बल।
पोट-स्त्री०[सं०पोट=ढेर] १. चीजों की वह गठरी या पोटली जो चारों ओर से कपड़े, टाट, कागज आदि से बँधी हो। (पार-

सल) जैसे-पोट-डाक। २.बहुत-सी चीजों का अटाला। राशि। ढेर।

पोट-डाक-स्त्री॰ [हिं॰ पोट + डाक] १. डाक से चीजें भेजने की वह व्यवस्था जिसमें चीजें चारो ओर से कपड़े आदि में सीकर या टीन के डब्बों आदि में बन्द करके भेजी जाती हैं। (पारसल पोस्ट) २.इस प्रकार भेजी हुई कोई चीज।

पोटना*-स॰ [हिं॰ पुट] १. समेटना। बटोरना। २. फुसलाना। बहलाना।

पोटली-स्त्री॰ [हिं॰ पोट] कपड़े का वह छोटा टुकड़ा जिसमें कोई चीज बँधी हो। छोटी गठरी। जैसे-रत्नों की पोटली, औषध या ओषधि की पोटली।

पोटा-पुं॰ [सं॰ पुट=थैली] [स्त्री॰ अल्पा॰ पोटी] १. पेट की थैली। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३. समाई। औकात। ४. आँख की ऊपरी पलक। पपोटा। ५. उँगली का सिरा।

पुं॰ [सं॰ पोत] चिड़िया का बच्चा।

पोटी-स्त्री॰ [हिं॰ पोटा] कलेजा।

पोढ़ा-वि॰ [सं॰ प्रौढ़] [स्त्री॰ पोढ़ी, क्रि॰ पोढ़ाना, भाव॰ पोढ़ापन] १ पुष्ट। मजबूत। २ कड़ा। कठोर। ३.दृढ़। पक्का।

पोत-पुं॰ [सं॰] १. पशु या पक्षी का छोटा बच्चा। २. सूतों के मोटे या पतले होने के विचार से कपड़े की गफ या झीनी बुनावट। ३. बड़ी नाव। जहाज।

स्त्री॰ [सं॰ प्रोता] १. माला में का छोटा दाना। २.कांच की छोटी गुरिया।

पुं॰ [सं॰ प्रवृत्ति] १. ढंग। ढब। २. बारी। पारी।

पुं॰ [फा॰ फ़ोतः] जमीन का लगान।

पुं॰ [हिं॰ पोतना] पोतने की क्रिया या भाव। पुताई।

पोतड़ा-पुं॰ [हिं॰ पोतना] छोटे बच्चे के नीचे बिछाने का कपड़े का टुकड़ा।

पोतदार-पुं॰[हिं॰पोत+दार]१.खजानची। २. खज़ाने में रुपया परखनेवाला।

पोतना-स॰ [सं॰ पोतन=पवित्र] १. गीली वस्तु की तह चढ़ाना। २. कोई घोल किसी वस्तु पर इस प्रकार लगाना कि वह उसपर बैठ या जम जाय।

पुं॰ वह कपड़ा जिससे कोई गीली चीज पोती या लगाई जाय। पोता।

पोता-पुं॰ [सं॰पौत्र] बेटे का बेटा। पौत्र।

पुं॰ [फा॰ फ़ोतः] १ पोत। लगान। भूमि-कर। २. अंड-कोष।

पुं॰ [हिं॰ पोतना] १. गीली चीज पोतने का कपड़ा। पोतना। २ वह घोल जो किसी वस्तु पर पोता जाय।

पोताई-स्त्री॰ दे॰ 'पुताई'।

पोती-स्त्री॰ [हिं॰ पोता] पुत्र की पुत्री।

स्त्री॰ [हिं॰ पोतना] पोतने की क्रिया या भाव। पुताई।

पोथा-पुं॰ [हिं॰ पोथी] बड़ी पोथी, पुस्तक या लिखे हुए कागजों का समूह।

पोथी-स्त्री॰ [सं॰ पुस्तिका] पुस्तक।

पोद्दार-पुं॰ दे॰ 'पोतदार'।

पोना-स॰ [हिं॰ पूआ+ना (प्रत्य॰)] १. गीले आटे की लोई उँगलियों से दबाकर रोटी के रूप में बढ़ाना। २. (रोटी) पकाना।

स॰ दे॰ 'पिरोना'।

पोप-पुं॰ [अं॰] ईसाई धर्म का सबसे बड़ा प्रधान या आचार्य।

पोपला-वि॰ [हिं॰ पुलपुला] [क्रि॰ पोपलाना] १. जिसमें दाँत न हों। २. जिसके मुँह में दाँत न हों। ३.दे॰'पोला'।

पोप-लीला-स्त्री॰ [अं॰ पोप+सं॰ लीला]

पोपों और धर्म-पुरोहितों के आडंबर और सीधे-सादे धर्म-निष्ठ लोगों को अपने जाल में फँसानेवाली बातें या कार्य।

पोया-पुं०[सं०पोत] १ छोटा नरम पौधा। २.बहुत छोटा बच्चा, विशेषतः साँप का।

पोर-स्त्री०[सं० पर्व] १ उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुकती या मुड़ती है। २. उँगली में दो गाँठों के बीच का अंश। ३. ईख, बांस आदि की दो गाँठों के बीच का भाग। ४ जूए में किसी के जिम्मे बाकी पड़नेवाली रकम।

पोल-स्त्री० [हिं० पोला] १. खाली जगह। २. अवकाश। पोलापन। ३ बाहरी आडंबर के अन्दर की सार-हीनता।

मुहा०-(किसी की) पोल खुलना= भीतरी दशा प्रकट होना। भंडा फूटना।

स्त्री० [सं० प्रतोली] १. फाटक। २.आँगन।

पोला-वि० [सं० पोल] [स्त्री० पोली] १. जिसके अन्दर का भाग खाली हो। २. जो कड़ा या ठोस न हो। खोखला। ३ निःसार। तत्त्व-हीन।

पोलिया-पुं० दे० 'पौरिया'।

पोलो-पुं० [अं०] घोड़े पर चढ़कर खेला जानेवाला चौगान (खेल)।

पोश-पुं० [फा०] १. वह जिससे कोई चीज ढकी जाय। जैसे-मेज-पोश, तख्त-पोश। २. सामने से हटाने का संकेत, जिसका अर्थ है-बचो, हट जाओ।

वि० पहननेवाला। जैसे-सफेद-पोश।

पोशाक-स्त्री० [फा० पोश] पहनने के सब कपड़े। परिधान।

पोशीदा-वि० [फा०] छिपा हुआ। गुप्त।

पोषक-वि० [सं०] १. पोषण करनेवाला। २. बढ़ानेवाला। वर्द्धक। ३. पुष्टि, समर्थन या सहायता करनेवाला।

पोषण-पुं० [सं०] [वि० पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य] १. पुष्ट या पक्का करना। जैसे-किसी मत का पोषण। २.ऐसा काम करना या ऐसी सहायता देना जिससे कोई सुखपूर्वक जीवन बिता सके और जीवित रहकर बढ़ सके। पालना। (मेन्टनेन्स, एलिमेन्ट) ३ बढ़ाना। वर्द्धन।

पोष्य-वि० [सं०] १.पाले जाने के योग्य। पालनीय। २.पाला हुआ। जैसे-पोष्य पुत्र।

पोष्य पुत्र-पुं० [सं०] १. पुत्र की तरह पाला हुआ लड़का। २. दत्तक।

पोस-पुं० [सं० पोषण] पालनेवाले के प्रति होनेवाला प्रेम और कृतज्ञता।

पोसना-स० [सं० पोषण] १. पालन या रक्षा करना। २. अपने पास अपनी रक्षा में रखना।

*स० दे० 'पोछना'।

पोस्टर-पुं० दे० 'प्रज्ञापक' २.।

पोस्त-पुं० [फा०] १. छिलका। बकला। २ खाल। चमड़ा। ३.अफीम का पौधा। ४. अफीम के पौधे का डोढ़ा। पोस्ता।

पोस्ती-पुं० [फा०] नशे के लिए पोस्त के डोढ़े पीसकर पीनेवाला।

पोस्तीन-पुं० [फा०] १. समूर आदि पशुओं की खाल का बना हुआ एक गरम पहनावा। ३. ऐसी खाल का बना हुआ कोट या कुरता।

पोहना-स० [सं० प्रोत] १. पिरोना। गूँथना। २ छेदना। ३.पोतना। ४.अड़ना। ५. पीसना। ६. दे० 'पोना'।

पोहमी*-स्त्री० = पृथ्वी।

पौंचा-पुं० [सं० पौंडक] साढ़े पाँच का पहाड़ा।

पौंढ़ा-पुं०[सं०पौंड्रक] एक प्रकार का गन्ना।

पौ-स्त्री० [सं० पाद] प्रातःकाल के सूर्य के

प्रकाश की रेखा या मद्धिम ज्योति।
मुहा०-पौ फटना= सबेरे का प्रकाश दिखाई पड़ना। दिन निकलने लगना।
पुं० [सं० पाद] १. पैर। २. जड़।
स्त्री०[सं०पाद] पासे के खेल में एक दाँव।
मुहा०-पौ बारह होना=जीत, सफलता या लाभ का योग आना।
स्त्री० दे० 'पौसला'।

पौश्रा-पुं० [हिं० पाव] १ सेर का चौथाई भाग। पाव। २. इस तौल या मान का बटखरा या बरतन।

पौगंड-पुं० [सं०] बालक की पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था।

पौड़ना-अ० दे० 'तैरना'।

पौढ़ना-अ० [सं० प्लवन] झूलना।
अ० [सं० प्रलोठन] लेटना।

पौत्र-पुं० [सं०] [स्त्री० पौत्री] लड़के का लड़का। पोता।

पौद(ध)-स्त्री० [सं० पोत] १ वह छोटा पौधा जो एक जगह से हटाकर दूसरी जगह लगाया जा सके। २. उपज। पैदावार।
स्त्री० दे० 'पाँवड़ा'।

पौधा-पुं० [सं० पोत] १. उगनेवाले वृक्ष का आरम्भिक रूप। नया और छोटा पेड़। २. क्षुप। छोटे आकार का वृक्ष।

पौनःपुनिक-वि० [सं०] पुनः पुनः या बार बार होनेवाला।

पौन-उभय० [सं० पवन] १. हवा। २. प्राण-वायु। ३. प्रेत। भूत।
वि० [सं० पाद+ऊन] एक में से चौथाई कम। तीन चौथाई।

पौना-पुं०[सं०पाद+ऊन] पौन का पहाड़ा।
वि० दे० 'पौन'।
पुं० [हिं० पोना] [अल्पा० पौनी] एक [illegible]की कलछी।

पौनी-स्त्री० [हिं० पावना] नाई, धोबी आदि जो मंगल अवसरों पर नेग पाते हैं।
स्त्री० [हिं०पौना] छोटा पौना। (कलछी)

पौने-वि० [हिं० पौन] तीन-चौथाई। (संख्या के विचार से) जैसे-पौने चार।

पौर-वि० [सं०] पुर या नगर सम्बन्धी। नगर का।
स्त्री० दे० 'पौरी'।

पौरजन-पुं० [सं०] नगर-निवासी। नागरिक।

पौर-जानपद-पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय राज्य-तंत्र में पुर या नगर और जनपद या बाकी देश के प्रतिनिधियों की सभाओं का सम्मिलित रूप।
विशेष-प्रायः पौर और जानपद अलग अलग ही काम करते थे; पर कुछ विशिष्ट अवसरों पर दोनों के सम्मिलित अधिवेशन भी होते थे। इन दोनों का वही सम्मिलित रूप पौर-जानपद कहलाता था।

पौर-लेखक-पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय राज्य-तंत्र में वह अधिकारी जिसके पास पुर या नगर के लेख्यों या दस्तावेज़ों की नकल और विवरण रहता था।

पौरव-पुं० [सं०] पुरु का वंशज।

पौर-वृद्ध-पुं० [सं०] किसी पुर या नगर के वे बड़े और प्रधान प्रतिनिधि आदि जो प्राचीन भारतीय राज्य-तंत्र में नगर की व्यवस्था से सम्बन्ध रखनेवाले कुछ विशिष्ट कार्य करते थे।

पौरा-पुं० [हिं० पैर] (शुभ, अशुभ आदि के विचार से) किसी का आगमन। जैसे-बहू का पौरा अच्छा है।

पौराणिक-वि० [सं०] [स्त्री० पौराणिकी] १. पुराण-संबंधी। २. पुराना। प्राचीन।
पुं० १. पुराण का ज्ञाता। २. लोगों को

पुराणों की कथा सुनानेवाला, व्यास।

पौरिया-पुं० [हिं० पौरी] १. द्वारपाल। २. मंगल अवसरों पर द्वार पर बैठकर मंगल-गीत गानेवाला याचक।

पौरी-स्त्री० [सं० प्रतोली] ड्योढ़ी। स्त्री० [हिं० पैर] सीढ़ी। स्त्री० [हिं० पाँवरि] खड़ाऊँ।

पौरुख*-पुं०=पौरुष।

पौरुष-पुं० [सं०] १. 'पुरुष' का भाव। पुरुषत्व। २. पुरुषों के योग्य या उपयुक्त काम। पुरुषार्थ। ३. पराक्रम। साहस। ४. उद्योग। उद्यम। वि० पुरुष-सम्बन्धी। पुरुष का।

पौरुषेय-वि० [सं०] १. पुरुष-सम्बन्धी। २. आदमी का किया या बनाया हुआ।

पौरोहित्य-पुं० [सं०] 'पुरोहित' का काम या भाव। पुरोहिताई।

पौर्णमासी-स्त्री०[सं०] पूर्णिमा (तिथि)।

पौर्वापर्य-पुं० [सं०] 'पूर्वापर' का भाव। आगे-पीछे होने की क्रिया या भाव।

पौल-स्त्री० [सं० प्रतोली] नगर या दुर्ग का बड़ा फाटक।

पौलना*-स० [?] काटना।

पौलिया-पुं० दे० 'पौरिया'।

पौली-स्त्री० [सं० प्रतोली] ड्योढ़ी।

पौष-पुं० [सं०] अगहन के बाद और माघ के पहले का महीना। पूस।

पौष्टिक-वि० [सं०] १. पुष्ट करनेवाला। २. बल-वीर्य बढ़ानेवाला।

पौसरा(ला)-पुं० [सं० पयःशाला] वह स्थान जहाँ सर्व-साधारण को पानी पिलाया जाता है। सबील।

पौहारी-पुं० [सं० पयस्=दूध+आहार] अन्न छोड़कर और केवल दूध पीकर रहनेवाला।

प्याऊ-पुं० दे० 'पौसरा'।

प्याज-पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध कंद जिसकी उग्र गन्ध अप्रिय होती है।

प्याजी-वि०[फा०] हलके गुलाबी रंग का।

प्यादा-पुं० [फा०] पैदल सिपाही। दूत। हरकारा।

प्यार-पुं० [सं० प्रिय] मुहब्बत। प्रेम।

प्यारा-वि० [सं० प्रिय] [स्त्री० प्यारी] १. जिसे प्यार किया जाय। प्रेम-पात्र। प्रिय। २. भला मालूम होनेवाला।

प्याला-पुं० [फा०] [स्त्री० अल्पा० प्याली] १ छोटा कटोरा। २. तोप, बंदूक आदि में वह जगह जिसमें रंजक भरी जाती है।

प्यावना*-स०=पिलाना।

प्यास-स्त्री० [सं० पिपासा] १. जल पीने की प्रवृत्ति या इच्छा। तृषा। पिपासा। २. प्रबल वासना या कामना।

प्यासा-वि० [हिं० प्यास] जिसे प्यास लगी हो। तृषित।

प्यूनी*-स्त्री० दे० 'पूनी'।

प्यो*!-पुं० [हिं० पिय] पति। स्वामी।

प्योसर-पुं० दे० 'पेवस'।

प्योसार!-पुं० दे० 'मायका'।

प्यौर*-पुं० [सं०प्रिय] १. पति। स्वामी। २. प्रियतम।

प्रकंप(न)-पुं० [सं०] (वि० प्रकंपित) कँपकँपी। काँपना।

प्रकट-वि० [सं०] १. जो सबके सामने हो। सामने आया हुआ। जाहिर। २. आविर्भूत। ३. स्पष्ट। साफ।

प्रकटना*-अ० दे० 'प्रगटना'।

प्रकटित-वि० [सं०] प्रकट किया हुआ।

प्रकथन-पुं० [सं०] कही हुई बात या किये हुए काम की पुष्टि। (एफरमेशन)

प्रकरण-पुं० [सं०] १. उत्पन्न करना।

२. चर्चा। वर्णन। वृत्तांत। ३. प्रसंग। विषय। ४. ग्रन्थ के अंतर्गत उसका छोटा विभाग। अध्याय। ५. दृश्य-काव्य में रूपक का एक भेद।

प्रकरी-स्त्री० [सं०] १. नाटक में किसी स्थानिक घटना की अवांतर कथा की सहायता से कथा-वस्तु का प्रयोजन सिद्ध करना, जो एक अर्थ प्रवृत्ति है। २. वह कथा-वस्तु जो थोड़े समय तक चलकर रुक जाय।

प्रकर्ष-पुं०[सं०] १.उत्कर्ष। २. अधिकता।

प्रकला-स्त्री० [सं०] कला (समय) का साठवाँ भाग।

प्रकांड-वि० [सं०] बहुत बड़ा।

प्रकाम-वि० [सं०] १. प्रचुर। बहुत। अधिक। २. यथेष्ट। काफी।

प्रकाम्य-वि० दे० 'प्राकाम्य'।

प्रकार-पुं० [सं०] १. भेद। किस्म। २. तरह। भाँति।

स्त्री० दे० 'प्राकार'।

प्रकारांतर-पुं० [सं०] दूसरा प्रकार। मुहा०-प्रकारांतर से=सीधी तरह से नहीं, बल्कि घुमाव-फिराव से। अप्रत्यक्ष रूप से।

प्रकाश पुं०[सं०] १. वह शक्ति या तत्व जिसके योग से वस्तुओं का रूप आँखों को दिखाई देता है। आलोक। ज्योति। २. प्रकट या गोचर होना। अभिव्यक्ति। ३. पुस्तक का खंड। ४. धूप। घाम।

प्रकाशक-पुं० [सं०] १. वह जो प्रकाश करे। २. वह जो प्रकट करे। ३. वह जो पुस्तकें या समाचार-पत्र छापकर बेचता या बाँटता हो। (पब्लिशर)

प्रकाश-गृह-पुं० [सं०] वह ऊँची इमारत, विशेषतः समुद्र में बनी हुई इमारत, जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता हो। (लाइट हाउस)

प्रकाशन-पुं० [सं०] १. प्रकाशित करने का काम। २. वे ग्रंथ आदि जो प्रकाशित किये जायँ। प्रकाशित पुस्तक, पत्र आदि। (पब्लिकेशन)

प्रकाशमान-वि० [सं०] चमकता हुआ।

प्रकाशित-वि० [सं०] १. चमकता हुआ। २ प्रकट। ३. जो छपकर लोगों के सामने आ गया हो।

प्रकाश्य-वि० [सं०] १ प्रकट करने योग्य। २. सबके सामने या सबको सुनाकर कहा हुआ।

क्रि० वि० प्रकट रूप से। सबके सामने। 'स्वगत' का उलटा। (नाटक)

प्रकास*-पुं०=प्रकाश।

प्रकीर्ण-वि० [सं०] १. बिखरा हुआ। २.जिसमें कई तरह की वस्तुएँ मिली हों।

पुं० दे० 'प्रकीर्णक'।

प्रकीर्णक-पुं०[सं०] १.अध्याय। प्रकरण। २. वह जिसमें तरह तरह की चीजें मिली हों। फुटकर।

वि० जिसमें कई चीजें या मदें एक साथ मिली हों। फुटकर। (मिसलेनियस)

प्रकुपित-वि० [सं०] जिसका प्रकोप बहुत बढ़ा हुआ हो।

प्रकृत-वि० [सं०] [भाव० प्रकृतता, प्रकृतत्व] १. असली। सच्चा। २. जिसमें कोई विकार न हो। जो अपने ठीक या वास्तविक रूप या स्थिति में हो। (नॉर्मल) ३. प्रकृति संबंधी या प्रकृति-जन्य।

पुं० एक प्रकार का श्लेष अलंकार।

प्रकृति-स्त्री० [सं०] [वि० प्राकृतिक] १. वस्तु या व्यक्ति का मूल गुण।

स्वभाव। २. मिजाज। ३. वह मूल शक्ति जिसने अनेक रूपात्मक जगत् का विकास किया है और जिसका रूप दृश्यों में दिखाई देता है। कुदरत। (नेचर)

प्रकृति-विज्ञान(शास्त्र)-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे-वनस्पति, जीव-जन्तु, भू-गर्भ आदि) का विवेचन होता है।

प्रकृतिस्थ-वि० [सं०] १. जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो। २. स्वाभाविक। ३. जिसके होश-हवास ठिकाने हों।

प्रकृष्ट-वि० [सं०] १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. खिंचा हुआ। ३ जोता हुआ (खेत)।

प्रकोप-पुं० [सं०] १ बहुत अधिक कोप। २. क्षोभ। ३. बीमारी का बढ़ने-वाला जोर। ४ शरीर के वात पित्त आदि में विकार होना जिससे रोग होते हैं।

प्रकोष्ठ-पुं० [सं०] १ मुख्य द्वार के पास की कोठरी। २ बड़ा आँगन। ३. बड़ा कमरा। कोठा।

प्रक्रम-पुं० [सं०] १. क्रम। २. उपक्रम।

प्रक्रिया-स्त्री० [सं०] वह क्रिया या प्रणाली जिससे कोई वस्तु होती, बनती या निकलती हो। (प्रोसेस) २. किसी कृत्य विशेषत. अभियोग आदि की सुन-वाई में होनेवाले आदि से अन्त तक के सब कार्य या उनके ढंग। (प्रोसिजर)

प्रक्षक-वि० [सं० पृच्छक] पूछनेवाला।

प्रक्षालन-पुं० [सं०] [वि० प्रक्षालित] जल से साफ करना। धोना।

प्रक्षिप्त-वि० [सं०] १.फेंका या छितराया हुआ। २. पीछे से किसी में मिलाया या बढ़ाया हुआ। ३. आगे की ओर बढ़ा या निकला हुआ। (प्रोजेक्टेड)

प्रक्षेप-पुं० [सं०] १. दे० 'प्रक्षेपण'। २. वह जो पीछे से या बाद में बढ़ाया गया हो। ३ किसी बहुत बड़े काम की योजना। (प्रोजेक्ट)

प्रक्षेपण-पुं० [सं०] १.फेंकने, छितराने या बिखेरने की क्रिया या भाव। २. प्रक्षेप।

प्रखंड-पुं० [सं०] [वि० प्राखंडिक] किसी विशेष कार्य या विभाग के लिए बनाया हुआ प्रान्त का कोई खंड या भाग। (डिवीजन)

प्रखर-वि० [सं०] [भाव० प्रखरता] बहुत तीक्ष्ण या प्रचंड।

प्रख्यात-वि० [सं०] प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रख्यापक-पुं० [सं०] वह जो किसी प्रकार का प्रख्यापन करे। (डिक्लेरेटरी)

प्रख्यापन-पुं० [सं०] [वि० प्रख्यापनिक, प्रख्यापित] १. किसी को जतलाने के लिए कोई बात स्पष्ट रूप से कहना। २. वह लिखित वक्तव्य जो किसी अधिकारी के सामने अपने किसी कार्य या उत्तर-दायित्व के सम्बन्ध में उपस्थित किया जाय। (डिक्लेरेशन)

प्रख्यापनिक-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार का प्रख्यापन हो। (डिक्लेरेटरी)

प्रख्यापित-वि० [सं०] जिसके सम्बन्ध में कोई प्रख्यापन हुआ हो। (डिक्लेयर्ड)

प्रगट-वि० दे० 'प्रकट'।

प्रगटना*-अ० [सं० प्रकटन] [स० प्रगटाना] प्रकट होना। सामने आना।

प्रगति-स्त्री० [सं० प्र+गति] १. आगे की ओर बढ़ना। अग्रसर होना। २.उन्नति।

प्रगतिवाद-पुं०[सं०] वह सिद्धांत जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि को बराबर आगे की ओर बढ़ाते रहना ही हितकर माना जाता है। (आज-कल साधारणतः इसका यह अर्थ समझा जाता है कि

प्राचीन अथवा वर्त्तमान सभी बातें दूषित अथवा त्रुटिपूर्ण हैं; और नई बातें ग्रहण करना ही आगे बढ़ना है।

प्रगतिशील-स्त्री० [हि० प्रगति+सं०शील] वह जो बराबर आगे की ओर बढ़ता हो।

प्रगल्भ-वि० [सं०] [भाव० प्रगल्भता] १. चतुर। होशियार। २. प्रतिभाशाली। ३. निर्भय। निडर। ४. उद्धत। उद्दंड।

प्रगसना*-अ० दे० 'प्रगटना'।

प्रगाढ़-वि० [सं०] १ बहुत गाढ़ा या गहरा। २ बहुत अधिक।

प्रग्रह-पुं०[सं०] १.ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढंग। धारण। २. पग्रा।

प्रघट*-वि० = प्रकट।

प्रघट्टक*-वि०[सं०प्रकट]प्रकट करनेवाला।

प्रचंड-वि० [सं०] [भाव० प्रचंडता] १. बहुत तीव्र या तेज। प्रखर। २. भयंकर। ३. कठोर। कड़ा। ४. असह्य। ५. बहुत बड़ा। विशाल। भारी।

प्रचरना*-अ० [सं० प्रचार] प्रचार में आना। फैलना।

प्रचलन-पुं० [सं०] [वि० प्रचलित] १. चलते या जारी रहने की क्रिया या भाव। २.किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार, प्रयोग या चलन में आना, रहना या होना। (करेन्सी) ३. प्रथा। रवाज।

प्रचलित-वि० [सं०] १. जिसका प्रचलन या चलन हो। चलता हुआ। जारी। जैसे-प्रचलित सिक्का, प्रचलित प्रथा। २. जो इस समय चल रहा हो। जैसे-प्रचलित मास या वर्ष। (करेन्ट)

प्रचार-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु या बात का बराबर व्यवहार में आना या चलता रहना। चलन। रवाज। २. कोई विषय, मत या बात बहुत-से लोगों के सामने रखना। (प्रोपेगेंडा)

प्रचारक-वि० [सं०] [स्त्री० प्रचारिणी, प्रचारिका] प्रचार करनेवाला।

प्रचारण-पुं० [सं०] १. प्रचार करने की क्रिया या भाव। २. सूचना, विधान आदि का वह प्रकाशन जो उसके प्रचलित होने का ज्ञान करावे। (प्रोमल्गेशन)

प्रचारना*-स० [सं० प्रचारण] १. प्रचार करना। फैलाना। २. सामने आकर लड़ने के लिए ललकारना।

प्रचारित-वि० [सं०] जिसका प्रचार किया गया हो। फैलाया हुआ।

प्रचुर-वि० [सं०] [भाव० प्रचुरता] बहुत अधिक।

प्रच्छन्न-वि० [सं०] १. ढका या लपेटा हुआ। २. छिपा हुआ। गुप्त।

प्रच्छाय-पुं० [सं०] घनी छाया।

प्रच्छालना*-स०[सं०प्रच्छालन] धोना।

प्रजंत*-अव्य०=पर्यंत।

प्रजनन-पुं० [सं०] १. संतान उत्पन्न करना। २. जन्म। ३. बच्चा जनाने का काम। धात्री-कर्म।

प्रजरना*-अ० [सं० प्र+जरना] अच्छी तरह जलना।

प्रजा-स्त्री० [सं०] १. संतान। औलाद। २ किसी राज्य, राष्ट्र या देश में रहनेवाला जन-समूह। रिआया। रैयत।

प्रजातंत्र-पुं० [सं०] [वि० प्रजातंत्री] वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा ही समय समय पर अपने प्रतिनिधि और प्रधान शासक चुनती है। (रिपब्लिक)

प्रजातंत्री-वि० [सं०] १. प्रजातंत्र सम्बन्धी। २. जो प्रजातंत्र के सिद्धान्त के अनुसार हो। ३.प्रजातंत्र का पक्षपाती।

प्रजापति-पुं० [सं०] १. सृष्टि उत्पन्न

करनेवाला। सृष्टिकर्त्ता। २. ब्रह्मा। ३. मनु। ४. सूर्य्य। ५. घर का मालिक या बड़ा। ६. दे० 'प्राजापत्य'।

प्रजारना*-स० [सं० प्र+हिं० जारना] अच्छी तरह जलाना।

प्रजावान्-वि० [सं०] [स्त्री० प्रजावती] जिसके आगे बाल-बच्चे हों।

प्रजासत्ता-स्त्री० दे० 'प्रजातंत्र'।

प्रजा-सत्तात्मक-वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें प्रजा या उसके प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो। 'राज-सत्तात्मक' का उलटा।

प्रजुरना*-अ० [सं० प्रज्वलन] १. प्रज्वलित होना। जलना। २. प्रकाशित होना। चमकना।

प्रजूलित*-वि० प्रज्वलित।

प्रजोग*-पुं० प्रयोग।

प्रज्ञ-पुं० [सं०] विद्वान्।

प्रज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] १. जताने या सूचित करने की क्रिया या भाव। २. सूचना-पत्र। ३ सूचना। ४ वह पत्र जो माल के साथ सूचना-रूप में भेजा जाता है और जिसमें भेजे हुए माल का विवरण, मूल्य आदि रहता है। बीजक। (एडवाइस)

प्रज्ञा-स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। ज्ञान। समझ। २. सरस्वती।

प्रज्ञाचक्षु-पुं०[सं०]१. ज्ञानी। २. अंधा। (व्यंग्य)

प्रज्ञापक-पुं० [सं०] १. प्रज्ञापन करनेवाला। २. बड़े या मोटे अक्षरों में लिखा या छपा हुआ विज्ञापन। (पोस्टर)

प्रज्ञापन-पुं० [सं०] १. विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव। २. इस प्रकार का सूचक लेख आदि।

प्रज्ञाशील-पुं० [सं०] १. बुद्धिमान। समझदार। २. वह जिसमें सब काम अच्छी तरह समझ-बूझकर करने की शक्ति या योग्यता हो।

प्रज्वलन-पुं० [सं०] [वि० प्रज्वलित] जलने की क्रिया। जलना।

प्रण-पुं० [सं० पण] दृढ़ या पक्का निश्चय। प्रतिज्ञा।

प्रणत-वि० [सं०] १. झुका हुआ। २. झुककर प्रणाम करता हुआ। ३. नम्र।

प्रणत-पाल-पुं० [सं०] दीनों या भक्तों का पालन करनेवाला।

प्रणति-स्त्री० [सं०] १. प्रणाम। २. नम्रता। ३. निवेदन। प्रार्थना।

प्रणम्य-वि० [सं०] जिसके आगे झुककर प्रणाम करना उचित या कर्तव्य हो।

प्रणय-पुं० [सं०] १. प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना। २. प्रेम। ३. विश्वास।

प्रणयन-पुं० [सं०] रचना। बनाना।

प्रणयिनी-स्त्री० [सं०] १. प्रेमिका। २. पत्नी। भार्या।

प्रणयी-पुं० [सं० प्रणयिन्] [स्त्री० प्रणयिनी] १. प्रणय या प्रेम करनेवाला। प्रेमी। २. स्वामी। पति।

प्रणव-पुं०[सं०]१ ओंकार मंत्र।२.परमेश्वर।

प्रणवना*-अ० [सं० प्रणमन] प्रणाम या नमस्कार करना।

प्रणाम-पुं० [सं०] झुककर अभिवादन करना। नमस्कार। दंडवत्।

प्रणाली-स्त्री० [सं०] १. पानी निकलने या बहने की नली। २. जल के दो बड़े भागों को मिलानेवाला छोटा जल-मार्ग। (चैनेल) ३. रीति। प्रथा। चाल। ४. ढंग। रीति। तरीका। ५.कोई काम करने या चीज कहीं भेजने का उचित, उपयुक्त और नियत मार्ग या साधन। (चैनेल)

प्रणिधान-पुं० [सं०] १. रखा जाना। २. समाधि (योग की)। ३. परम भक्ति। ४. मन की एकाग्रता। ध्यान।

प्रणिधि-पुं० [सं०] १. राज्य के किसी विशेष कार्य से कहीं भेजा जानेवाला दूत। (एमिसरी) २. गुप्त रूप से काम करनेवाला दूत या अभिकर्त्ता। (सीक्रेट एजेन्ट)

स्त्री० १. प्रार्थना। निवेदन। २. मन की एकाग्रता। ३ तत्परता।

प्रणिपात-पुं० [सं०] १. सिर झुकाना। २. प्रणाम। नमस्कार।

प्रणीत-वि० [सं०] १. रचित। बनाया हुआ। २. भेजा हुआ। ३. लाया हुआ।

प्रणेता-पुं० [सं० प्रणेतृ] [स्त्री० प्रणेत्री] बनानेवाला। रचयिता।

प्रतंचा*†-स्त्री० दे० 'प्रत्यंचा'।

प्रतच्छ*†-वि० दे० 'प्रत्यक्ष'।

प्रतति-स्त्री० [सं०] १. लम्बाई-चौड़ाई। विस्तार। २.लम्बी-चौड़ी और बड़ी लता।

प्रतनु-वि०[सं०] १.हलके या छोटे शरीर-वाला। २. दुबला-पतला। ३. सूक्ष्म।

प्रताप-पुं० [सं०] १.पौरुष। वीरता। २. शक्ति, वीरता आदि का ऐसा प्रभाव या आतंक जिससे विरोधी दबे रहें। इकबाल।

प्रतापी-वि० [सं० प्रतापिन्] जिसका बहुत अधिक प्रताप हो। इकबालमंद।

प्रतारक-पुं० [सं०] १.धोखा देनेवाला। वंचक। ठग। २. चालाक। धूर्त्त।

प्रतारणा-स्त्री० [सं०] धोखा देना। वंचना। ठगी।

प्रतारित-वि०[सं०] १.जो ठगा गया हो। २. जिसे धोखा दिया गया हो।

प्रतिंचा-स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष की डोरी। चिल्ला।

प्रति-अव्य० [सं०] १. एक उपसर्ग जो शब्दों के आरम्भ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीतः जैसे-प्रतिवाद। सामनेः जैसे-प्रत्यक्ष। बदले मेंः जैसे-प्रत्युपकार। हर एकः जैसे-प्रति दिन। समानः जैसे-प्रतिनिधि। मुकाबले काः जैसे-प्रतिद्वंद्वी। अधीनस्थ कर्मचारी: जैसे-प्रति-समाहर्त्ता, प्रति-अधीक्षक आदि। २. ओर। तरफ।

स्त्री० [सं०] पुस्तक या समाचार-पत्र की नकल। (कॉपी)

प्रतिकर-पुं० [सं०] वह धन जो किसी को उसकी हानि होने पर उसके बदले में दिया जाय। हरजाना। (कम्पेन्सेशन)

प्रतिकरक-वि० [सं०] १. प्रतिकर या हरजाने से सम्बन्ध रखनेवाला। २. प्रतिकर या हरजाने के रूप में दिया जानेवाला। (कम्पेन्सेटरी)

प्रतिकरण-पुं० [सं०] किसी कार्य के विरोध प्रतिकार या उत्तर में किया जाने-वाला कार्य। (काउन्टर ऐक्शन)

प्रतिकार-पुं० [सं०] १ किसी कार्य का प्रभाव रोकने या कम करने के लिए अथवा उसका बदला चुकाने के लिए उसके मुकाबले में किया जानेवाला कार्य। २ कम करने या घटाने आदि का कार्य।

प्रतिकारक-पुं० [सं०] वह जो किसी बात का प्रतिकार करता हो।

प्रतिकूल-वि० [सं०] [भाव० प्रति-कूलता] १. जो अनुकूल न हो। २. विरुद्ध। विपरीत। उलटा। (कन्ट्रैरी)

प्रतिकृति-स्त्री० [सं०] किसी के अनु-करण पर बनाई हुई मूर्ति या रूप। जैसे-प्रतिमा, चित्र आदि। २. प्रतिबिम्ब। छाया। ३. बदला। प्रतिकार।

प्रतिक्रिया-स्त्री० [सं०] १. प्रतिकार। बदला। २. कोई क्रिया होने पर उसके विरोध में या परिणाम-स्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया। ३. विरुद्ध या विपरीत दिशा में होनेवाली क्रिया या गति। (रि-ऐक्शन)

प्रतिक्रियावादी-पुं० [सं०] वह जो उन्नति, सुधार आदि के विरुद्ध या विपरीत चलता हो। (रि-एक्शनरी)

प्रतिग्या*-स्त्री० = प्रतिज्ञा।

प्रतिग्रह-पुं० [सं०] १. किसी की दी हुई चीज ले लेना। दान ग्रहण या स्वीकृत करना। २. (ब्राह्मण का) वह दान लेना जो (उसे) विधिपूर्वक दिया जाय। ३. पाणि-ग्रहण। विवाह।

प्रतिग्राहक-पुं० [सं०] १. लेने या ग्रहण करनेवाला। २. वह जो किसी की दी हुई कोई वस्तु, संपत्ति आदि ग्रहण करता हो। (रिसीवर) ३. वह जो कोई संपत्ति रक्षापूर्वक रखने के लिए अपने अधिकार में ले। (कस्टोडियन)

प्रतिग्राही-पुं [सं०] वह जो दान ले।

प्रतिघात-पुं० [सं०] [वि० प्रतिघाती] १. वह आघात जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाय। २.सामने से होने-वाला ऐसा आघात जिससे रुकावट हो।

प्रतिच्छवि-स्त्री० [सं०] १. प्रतिबिम्ब। परछाईं। छाया। २. चित्र।

प्रतिच्छा*-स्त्री० = प्रतीक्षा।

प्रतिच्छाया-स्त्री० [सं०] [वि० प्रति-च्छायित] १. चित्र। तसवीर। २. पर-छाईं। प्रतिबिम्ब।

प्रतिच्छायित-वि० [सं०] जिसकी पर-छाईं कहीं पड़ी हो। २. जिसपर किसी की परछाईं पड़ी हो।

प्रतिछाँह-स्त्री० दे० 'परछाईं'।

प्रतिछाया-स्त्री० दे० 'प्रतिच्छाया'।

प्रतिज्ञा-स्त्री० [सं०] १. कुछ करने या न करने के सम्बन्ध में पक्का निश्चय। प्रण। २. शपथ। सौगन्द। कसम। ३. न्याय में वह बात जिसे सिद्ध करना हो।

प्रतिज्ञात-वि० [सं०] जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई हो।

प्रतिज्ञापत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो। इकरारनामा।

प्रतितुलन-पुं० [सं०] [वि० प्रतितुलित] किसी एक ओर पड़े हुए भार की बराबरी करने या उसका प्रभाव नष्ट करनेवाला दूसरी ओर का भार। (काउन्टर-बैलेन्स)

प्रतिदान-पुं० [सं०] [वि० प्रतिदत्त] १.लौटाना। वापस करना। २.परिवर्तन। बदला। ३. किसी दी हुई वस्तु के बदले में मिलनेवाली वस्तु। (रिटर्न)

प्रतिदेश-पुं० [सं०] सीमा पर का देश।

प्रतिद्वन्द्व-पुं० दे० 'प्रतिद्वंद्विता'।

प्रतिद्वंद्विता-स्त्री० [सं०] बराबरवालों की लड़ाई या विरोध। प्रतियोगिता।

प्रतिद्वंद्वी-पुं० [सं० प्रतिद्वंद्विन्] [भाव० प्रतिद्वंद्विता] सामने आकर लड़ने या विरोध करनेवाला।

प्रतिध्वनि-स्त्री० [सं०] [वि०प्रतिध्वनित] १. वह ध्वनि या शब्द जो अपनी उत्पत्ति के स्थान से चलकर कहीं टकराता हुआ लौटे और फिर वहीं सुनाई पड़े। प्रति-शब्द। गूँज। २. दूसरों के विचारों आदि का किसी दूसरे रूप में या इस प्रकार दोहराया जाना कि उससे मूल विचारों की ध्वनि या छाया निकलती हो।

प्रतिनंदन-पुं० [सं०] [वि० प्रतिनंदित] बधाई। (कॉंग्रैचुलेशन)

प्रतिना-स्त्री० दे० 'पृतना'।

प्रतिनिचयन-पुं०[सं०][वि०प्रतिनिचित] किसी का दिया हुआ धन, शुल्क आदि अधिक या अनुचित होने पर उसे लौटाना या उसके खाते में जमा करना। (रिफंड)

प्रतिनिधान-पुं० [सं०] वह व्यक्ति या व्यक्तियों का वह दल जो प्रतिनिधि बनाकर कहीं भेजा जाय। (डेलिगेसी)

प्रतिनिधायन-पुं० [सं०] १. प्रतिनिधि रूप में किसी को या कुछ लोगों को कहीं भेजना। (डेलिगेशन) २. प्रतिनिधियों का वह दल जो कहीं किसी काम के लिए जाय। (डेपुटेशन)

प्रतिनिधि-पुं० [सं०] [भाव० प्रतिनिधित्व] १. प्रतिमा। प्रतिमूर्त्ति। २. किसी की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त व्यक्ति। (रिप्रेजेन्टेटिव)

प्रतिनिधि-सत्तात्मक-वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो। 'राजसत्तात्मक' का उलटा।

प्रतिनियुक्त-वि० [सं०] प्रतिनिधि या अधीनस्थ अधिकारी के रूप में बनाकर कहीं भेजा हुआ (व्यक्ति)। (डेप्यूटेड)

प्रतिनियोजन-पुं० [सं०] किसी को कहीं भेजने के लिए अधीनस्थ कर्मचारी के रूप में नियुक्त करना। (डेप्यूटेशन)

प्रतिनिर्दिष्ट-वि० [सं०] जिसका प्रतिनिर्देश किया गया हो। प्रसंगवश जिसका उल्लेख या चर्चा की गई हो या जिसकी ओर संकेत किया गया हो। (रेफर्ड)

प्रतिनिर्देश-पुं० [सं०] [वि० प्रतिनिर्दिष्ट] साक्षी, संकेत, प्रमाण आदि के रूप में किया ... उल्लेख या चर्चा। (रेफरेन्स)

... पुं० [सं०] विरुद्ध पक्षवाला। विपक्षी। विरोधी।

प्रतिपत्ति-स्त्री० [सं०] १. प्राप्ति। पाना। २. ज्ञान। ३. अनुमान। ४. प्रतिपादन। निरूपण। ५. मानना। स्वीकृति। (ऐक्सेप्टेन्स)

प्रतिपदा-स्त्री० [सं०] किसी पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपद्। परिवा।

प्रतिपन्न-वि० [सं०] १. अवगत। ज्ञात। २. अंगीकृत। स्वीकृत। ३. प्रमाणित। ४ निश्चित। ५.भरा-पूरा। ६. शरणागत।

प्रति-परीक्षण-पुं० [सं०] [वि० प्रति-परीक्षित] किसी के कुछ कह चुकने पर उससे दबी-दबाई बातों का पता लगाने के लिए उससे कुछ और प्रश्न करना। (क्रॉस-इग्जामिनेशन)

प्रतिपर्ण-पुं० [सं०] दो टुकड़ोंवाली पावती या रसीद, प्रमाणपत्र आदि में का वह एक टुकड़ा जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिसपर किसी को दिये हुए दूसरे टुकड़े की प्रतिलिपि रहती है। (काउन्टर-फॉयल)

प्रतिपादन-पुं० [सं०] [कर्त्ता प्रतिपादक, वि० प्रतिपादित] १. अच्छी तरह समझाकर कोई बात कहना। प्रतिपत्ति। २. अपना मत पुष्ट करने के लिए प्रमाणपूर्वक कुछ कहना।

प्रतिपार*-पुं० दे० 'प्रतिपाल'।

प्रतिपाल(क)-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रतिपालिका] पालन-पोषण करनेवाला। पोषक।

प्रतिपालन-पुं० [सं०] [वि० प्रतिपालित] १. पालन करने की क्रिया या भाव। २. आज्ञा आदि का निर्वाह। तामील।

प्रतिपालना*-स० [सं० प्रतिपालन] १. पालन करना। २.रक्षा करना। बचाना। स्त्री० दे० 'प्रतिपालन'।

प्रतिपुरुष-पुं० [सं०] किसी के अधीन रहकर अथवा यों ही किसी के स्थान पर उसकी ओर से काम करनेवाला। (डेपुटी)
प्रतिप्राप्ति-स्त्री० [सं०] [वि०प्रतिप्राप्त] खोई या किसी के हाथ में गई हुई चीज फिर से प्राप्त करना। (रिकवरी)
प्रतिफल-पुं० [सं०] [वि०प्रतिफलित] १. परिणाम। नतीजा। २ बदला। ३. बदले में मिली हुई चीज।
प्रतिफलक-पुं० [सं०] वह यंत्र जो कोई प्रतिबिम्ब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो। (रिफ्लेक्टर)
प्रतिबंध-पुं० [सं०] [वि० प्रतिबद्ध, कर्त्ता प्रतिबन्धक] १. रोक। रुकावट। २. विघ्न। बाधा। ३. किसी बात या काम में लगाई हुई शर्त्त। अट। (कन्डिशन)
प्रतिबद्ध-वि० [सं०] जिसमे कोई प्रतिबन्ध हो। शर्त्त से बँधा हुआ।
प्रतिबिंब-पुं० [सं०] [वि० प्रतिबिंबित] १. परछाईं। २. मूर्त्ति। प्रतिमा। ३. चित्र। तसवीर। ४. शीशा। दर्पण।
प्रतिभा-स्त्री० [सं०] १. बुद्धि। समझ। २. वह विशिष्ट और असाधारण मानसिक शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम में बहुत अधिक योग्यता के कार्य कर दिखलाता है। असाधारण बुद्धि-बल। (जीनियस)
प्रतिभाग-पुं० [सं०] [वि० प्रातिभागिक] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का कर। २. आज-कल का वह शुल्क जो राज्य में बननेवाले कुछ विशिष्ट पदार्थों (यथा-नमक, मादक द्रव्य, दीया-सलाई, कपड़ों आदि) पर उनके बनते ही और बाजार में बिक्री के लिए जाने से पहले ले लिया जाता है। (एक्साइज ड्यूटी)
प्रतिभाज्य-वि० [सं०] जिसपर प्रतिभाग (शुल्क) लगता या लग सकता हो।
प्रतिभात-वि० [सं०] १ चमकता हुआ। प्रकाशित। प्रदीप्त। २. जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। सामने आया हुआ। ३. प्रतीत। ४. ज्ञात।
प्रतिभावान्(शाली)-वि० [सं०] जिसमें प्रतिभा हो। प्रतिभावाला।
प्रतिभू-पुं० [सं०] जमानत करनेवाला।
प्रतिभूति-स्त्री०[सं०] [वि०प्रतिभूत] वह धन जो प्रतिभू किसी बात की जमानत के लिए जमा करता हो। जमानत की रकम। यौ०-प्रतिभूति-न्यास=जमानत के रूप में धन जमा करना।
प्रतिभौ*-पुं० [सं० प्रतिभा] शरीर का बल और तेज।
प्रतिमंडल-पुं० [सं० प्रतिनिधि+मण्डल] प्रतिनिधियों का दल या मंडल।
प्रतिमा-स्त्री० [सं०] १. किसी के स्वरूप के अनुसार बनाई हुई मूर्त्ति, चित्र आदि। अनुकृति। २. देवताओं की मूर्त्ति। ३. प्रतिबिम्ब। छाया। ४. एक अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के न होने की दशा में उसी के समान किसी दूसरे पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का उल्लेख होता है।
प्रतिमान-पुं० [सं०] १. प्रतिबिम्ब। परछाँईं। २. समानता। बराबरी। ३. तौल। ४. तौलने का बाट। बटखरा। ५. दृष्टांत। उदाहरण। ६. वह वस्तु जो आदर्श रूप में सबके सामने रखी जाय। (मॉडल) ७. किसी आदर्श को देखकर उसके अनुरूप बनाई हुई वस्तु। (मॉडल) ८. दे० 'मानक'।
प्रतिमूर्त्ति-स्त्री० [सं०] १. किसी के अनुरूप ज्यों की त्यों बनी हुई मूर्त्ति।

२. प्रतिमा।

प्रतियोगिता-स्त्री० [सं०] १. किसी काम में औरों से आगे बढ़ने का प्रयत्न। प्रतिद्वंदिता। चढ़ा-ऊपरी। मुकाबला। २. ऐसा कार्य जिसमें बहुत-से लोग अलग अलग सफल होने का प्रयत्न करें।

प्रतियोगी-पुं० [सं०] १. प्रतियोगिता करनेवाला। २. हिस्सेदार। ३ शत्रु। वैरी। ४. सहायक। मददगार।

प्रतिरूप-पुं० [सं०] १. प्रतिमा। मूर्त्ति। २. तसवीर। चित्र। ३. प्रतिनिधि। ४. नमूना। (स्पेसिमेन)
वि० नकली या जाली। कृत्रिम। बनावटी। कूट। (काउन्टरफ़ीट)

प्रतिरूपक-पुं० [सं०] वह जो नकली या बनावटी चीजें, विशेषतः सिक्के, नोट आदि बनाता हो। (काउन्टरफ़ीटर)

प्रतिरोध-पुं० [सं०] [वि० प्रतिरोधक] १. विरोध। २. रुकावट। बाधा। ३. किसी आवेग, आक्रमण आदि को रोकने के लिए किया जानेवाला कार्य।

प्रतिलिपि-स्त्री० [सं०] [वि० प्रतिलिपित] लेख आदि की ज्यों का त्यों नकल। (कॉपी)

प्रतिलिपिक-पुं० [सं०] वह जो लेखों आदि की प्रतिलिपि करता हो। नकल करनेवाला। (कॉपिस्ट)

प्रतिलिपित-वि० [सं०] जिसकी प्रतिलिपि या नकल कर ली गई हो। प्रतिलिपि किया हुआ। (कॉपीड)

प्रतिलेखा-पुं० [सं० प्रति+हिं० लेखा] वह पुस्तिका जो बंक की ओर से उन लोगों को मिलती है, जिनके रुपये बंक में जमा ...गैर जिसपर बंक में जमा किये ...में से निकाले या लिये हुए रुपयों का हिसाब रहता हो। (पास बुक)

प्रतिलोम-वि० [सं०] १. प्रतिकूल। २. नीचे से ऊपर की ओर या उलटी दिशा में जानेवाला। उलटे क्रमवाला। 'अनुलोम' का उलटा। (कॉनवर्स)

प्रतिवचन-पुं० [सं०] १. उत्तर। जवाब। २. प्रतिध्वनि।

प्रतिवर्त्तन-पुं० [सं०] [वि० प्रतिवर्त्तित] १ चक्कर काटना। फेरा लगाना। घूमना। २. घूमकर फिर अपने स्थान पर आना। लौटना।

प्रतिवस्तूपमा-स्त्री० [सं०] वह काव्यालंकार जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का अलग अलग वर्णन हो।

प्रतिवाद-पुं० [सं०] [कर्त्ता प्रतिवादी] वह कथन जो किसी के मत, कथन या अभियोग को मिथ्या या अ-यथार्थ सिद्ध करने के लिए हो। विरोध। खंडन।

प्रतिवादी-पुं० [सं०] १. प्रतिवाद करनेवाला। २. वादी की बात का उत्तर देनेवाला। प्रतिपक्षी। (डिफेन्डेन्ट)

प्रतिवास-पुं० [सं०] पड़ोस।

प्रतिवासी-पुं० [सं०] पड़ोसी।

प्रतिविधान-पुं० [सं०] १. किसी विधान के मुकाबले में किया जानेवाला विधान। २. प्रतिकार।

प्रतिवेश-पुं० [सं०] १. पड़ोस। २. आस-पास की वस्तुएँ या परिस्थिति। (एनविरनमेन्ट)

प्रतिवेशी-पुं० [सं० प्रतिवेशिन्] पड़ोसी।

प्रतिशब्द-पुं० [सं०] १. प्रतिध्वनि। २. पर्याय। समानार्थक शब्द। (अशुद्ध प्रयोग)

प्रतिशोध-पुं० [सं० प्रति+शोध] किसी बात का बदला चुकाने लिए किया जानेवाला काम। बदला।

प्रतिश्याय-पुं० [सं०] जुकाम। (रोग)

प्रतिश्रुति-स्त्री० [सं०] [वि० प्रतिश्रुत] १. प्रतिध्वनि। २. प्रतिरूप। ३ मंजूरी। स्वीकृति। ४. किसी बात या काम के लिए दिया जानेवाला वचन। (प्रॉमिस)

प्रतिश्रुति-पत्र-पुं० [सं०] १. राज्य द्वारा चलाई हुई वह हुंडी जिसका रुपया निश्चित समय पर मिलता है। (प्रॉमिसरी नोट)

प्रतिषेध-पुं० [सं०] [वि० प्रतिषिद्ध, कर्त्ता प्रतिषेधक] १. निषेध। मनाही। २. कोई काम बिलकुल न करने का पूरा वर्जन या मनाही। (प्रोहिबिशन) ३ खण्डन। ४ एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अन्तर का इस प्रकार उल्लेख किया जाता है कि उसका कुछ विशेष अर्थ निकलने लगता है।

प्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] १. स्थापन। रखा जाना। जैसे-देवता की प्रतिमा की प्रतिष्ठा। २. मान-मर्यादा। गौरव। ३ यश। कीर्ति। ४ आदर। सत्कार। इज्जत।

प्रतिष्ठान-पुं० [सं०] १ स्थापित या प्रतिष्ठित करना। रखना या बैठाना। जमाना। २. देवमूर्त्ति की स्थापना।

प्रतिष्ठापत्र-पुं० [सं०] किसी का आदर-सम्मान करने या प्रतिष्ठा सूचित करने के लिए उसे दिया जानेवाला पत्र। सम्मानपत्र।

प्रतिष्ठित-वि० [सं०] १ जिसकी प्रतिष्ठा हो। सम्मानित। इज्जतदार। २ जो स्थापित किया गया हो। रखा हुआ।

प्रति-संस्कार-पुं० [सं०] टूटी फूटी चीज फिर से बनाकर ठीक करना। मरम्मत।

प्रतिसाम्य-पुं० [सं०] रूप, आकार, मान आदि के विचार से किसी रचना के भिन्न भिन्न अंगों में अनुपात और सुन्दरता के विचार से होनेवाली पारस्परिक समानता और एक-रूपता। भिन्न भिन्न अंगों का ठीक और समंजित विन्यास।

प्रतिस्थापन-पुं० [सं०] [वि० प्रतिस्थापित] १. अपने स्थान से हटी हुई वस्तु या व्यक्ति को फिर उसी स्थान पर रखना या बैठाना। (री-प्लेसमेंट)

प्रतिस्पर्द्धा-स्त्री० [सं०] किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न। प्रतियोगिता। लाग-डांट। चढ़ा-ऊपरी। होड़।

प्रतिस्पर्द्धी-पुं० [सं० प्रतिस्पर्द्धिन्] प्रतिस्पर्द्धा या होड़ करनेवाला।

प्रतिहत-वि० [सं०] जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। चोट खाया हुआ।

प्रतिहार-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रतिहारी] १. द्वारपाल। दरबान। २. प्राचीन काल का एक राज-कर्मचारी जो राजाओं को समाचार आदि सुनाता अथवा लोगों के पास राजा का सँदेसा ले जाता था। ४. चोबदार। नकीब।

प्रतिहारी-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जो प्राचीन काल में राजाओं के यहाँ प्रतिहार के काम करती थी।

प्रतिहिंसा-स्त्री० [सं०] मन में हिंसा का भाव रखकर वैर चुकाना या बदला लेना।

प्रतीक-पुं० [सं०] १. चिह्न। लक्षण। निशान। २. मुख। मुँह। ३ आकृति। रूप। सूरत। ४. किसी के स्थान पर या बदले में रखी हुई या काम आनेवाली वस्तु। प्रतिरूप। ५. प्रतिमा। मूर्त्ति। ६ वह जो किसी समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में और उसकी सब बातों का सूचक या प्रतिनिधि हो। (सिम्बल)

प्रतीकार-पुं० दे० 'प्रतिकार'।

प्रतीकोपासना-स्त्री० [सं०] ब्रह्म या

देवता का कोई प्रतीक बना या मानकर उसकी पूजा या उपासना करना।

प्रतीक्षा-स्त्री० [सं०] कोई काम होने या किसी के आने के आसरे रहना। आसरा। प्रत्याशा। इन्तजार।

प्रतीक्ष्य-वि० [सं०] १. प्रतीक्षा करने के योग्य। २. जिसकी प्रतीक्षा की जाय।

प्रतीची-स्त्री० [सं०] पश्चिम दिशा।

प्रतीच्य-वि० [सं०] पश्चिम का।

प्रतीत-वि० [सं०] १. ज्ञात। विदित। जाना हुआ। २. प्रसन्न। खुश।

प्रतीति-स्त्री० [सं०] १ ज्ञान। जानकारी। २. विश्वास। ३. वचन, लेन-देन आदि में मानी जानेवाली प्रामाणिकता। साख। (क्रेडिट) ४. प्रसन्नता।

प्रतीप-पुं० [सं०] १. आशा के विरुद्ध कोई बात होना। २. एक अर्थालंकार जिसमें उपमान ही उपमेय के समान मानकर उपमेय के द्वारा उपमान के तिरस्कार का वर्णन होता है।

वि० [भाव० प्रतीपता] १. प्रतिकूल। विरुद्ध। २. जैसा होना चाहिए उसका उलटा। विपरीत। (पर्वर्स) ३. विमुख।

प्रतीपता-स्त्री० [सं०] १. प्रतिकूलता। विरोध। २ विपरीतता। (पर्वर्सिटी)

प्रतीहार-पुं० दे० 'प्रतिहार'।

प्रतोद-पुं० [सं०] १. किसी को कोई काम करने के लिए उत्तेजित या विवश करना। २. चाबुक। कोड़ा। ३. अंकुश। ४. दे० 'चेतक'।

प्रत्न-वि० [सं०] पुराना। प्राचीन।

प्रत्न-जीव-विज्ञान-पुं०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें बहुत प्राचीन काल के ऐसे जीव-जन्तुओं की जातियों, आकृतियों आदि का विवेचन होता है जो अब कहीं नहीं मिलते। (पेलियनटॉलोजी)

प्रत्नतत्व (विज्ञान)-पुं० दे० 'पुरातत्व'।

प्रत्यंकन-पुं० [सं०] [वि० प्रत्यंकित] १. किसी अंकित वस्तु या आकृति की ठीक ठीक प्रतिकृति प्रस्तुत करना। हू-बहू नकल तैयार करना। २. किसी आकृति के ऊपर पतला कागज रखकर प्रस्तुत की हुई उसकी प्रतिकृति। (ट्रेसिंग)

प्रत्यंचा-स्त्री० [सं० पतंचिका] धनुष की डोरी जिसकी सहायता से बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।

प्रत्यंत-वि० [सं०] १. बिलकुल सीमा पर का। २. अंतिम सिरे का।

प्रत्यंतर-पुं० [सं०] किसी अन्तर या विभाग के अन्दर का और छोटा अन्तर या विभाग। जैसे-प्रत्यंतर दशा।

प्रत्यक्ष-वि० [सं०] [भाव० प्रत्यक्षता] १. जो आँखों के सामने हो और साफ दिखाई दे। २. जिसका ज्ञान इन्द्रियों से हो।

पुं० चार प्रकार के प्रमाणों में से वह जिसका आधार देखा या जानी हुई बातों पर होता है।

क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।

प्रत्यक्षदर्शी-पुं० [सं० प्रत्यक्षदर्शिन्] वह जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो।

प्रत्यक्षवाद-पुं०[सं०]वह सिद्धान्त जिसमें प्रत्यक्ष ही प्रमाण माना जाय।

प्रत्यक्षवादी-पुं० [सं० प्रत्यक्षवादिन्] [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] वह जो केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण माने।

प्रत्यक्षीकरण-पुं० [सं०] किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्षात्कार करना।

प्रत्यनंतर-पुं० [सं०] १. किसी के

उपरान्त उसके स्थान या पद पर बैठने-वाला। २. उत्तराधिकारी।

प्रत्यनीक-पुं० [सं०] १. एक अर्था-लंकार जिसमें किसी के पक्षपाती या सम्बन्धी के प्रति किसी हित या अहित का वर्णन होता है। २. शत्रु। दुश्मन। ३. प्रतिपक्षी। विरोधी।

प्रत्यपकार-पुं० [सं०] अपकार के बदले में किया जानेवाला अपकार।

प्रत्यभिज्ञान-पुं० [सं०] १. स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान। २. किसी वस्तु या व्यक्ति को देख या पहचानकर यह बतलाना कि यह अमुक ही है। पहचान। (आईडेन्टिफिकेशन)

प्रत्यभिज्ञापत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक हो और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। (आइडेन्टिटी कार्ड)

प्रत्यय-पुं० [सं०] १. विश्वास। प्रतीति। २. एतबार। साख। (क्रेडिट) ३. प्रमाण। सबूत। ४.विचार। खयाल। ५. बुद्धि। समझ। ६. व्याख्या। ७ आवश्यकता। जरूरत। ८. प्रसिद्धि। ९.चिह्न। लक्षण। १०. वे रीतियां जिनके द्वारा छंदों के भेद और उनकी संख्या जानी जाती है। ११.व्याकरण में वे अक्षर जो किसी धातु या मूल शब्द के अन्त में लगकर उसके अर्थ में कोई विशेषता लाते हैं। जैसे-सरलता में 'ता' प्रत्यय है।

प्रत्यय-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें यह लिखा रहता है कि इसे ले जानेवाले को इतना धन हमारे खाते में से या ऋण दे दिया जाय। (लेटर आफ क्रेडिट)

प्रत्यवाय-पुं० [सं०] [वि० प्रत्यवायी] १. पाप। दुष्कर्म। २. विरोध। ३. अपकार। हानि। ४. बाधा। ५.निराशा।

प्रत्यवेक्षण-पुं० [सं०] किसी कार्य या पदार्थ का किसी व्यक्ति की देख-रेख में रहना। अवधान। (चार्ज)

प्रत्याक्रमण-पुं० [सं०] किसी आक्रमण के उत्तर में किया जानेवाला आक्रमण। जवाबी हमला। (काउन्टर अटैक)

प्रत्याख्यान-पुं० [सं०] १. खंडन। २. निराकरण। ३. अनादरपूर्वक लौटाना। ४. ग्रहण या मान्य न करना। अग्राह्य या अमान्य करना।

प्रत्यागत-वि०[सं०] लौटकर आया हुआ।

प्रत्यागमन-पुं० [सं०] १. लौट आना। वापसी। २. दोबारा या फिर से आना।

प्रत्यानयन-पुं० [सं०] १. गई हुई चीज लौटाकर ला देना या उसके स्थान पर वैसी ही दूसरी वस्तु देना। २. टूटी-फूटी वस्तु फिर पूर्व रूप में लाना। (रेस्टोरेशन)

प्रत्यापतन-पुं० [सं०] उत्तराधिकारी के न रहने पर किसी संपत्ति का राज्य के अधिकार में आना। (एस्चेट)

प्रत्यारोप-पुं० [सं०] किसी आरोप के उत्तर में किया जानेवाला आरोप। (काउन्टर-चार्ज)

प्रत्यालोचन-पुं० [सं०] १. किसी के किये हुए निर्णय या निर्णीत व्यवहार को फिर से देखना कि वह ठीक है या नहीं। (रिव्यू) २. दे० 'प्रत्यालोचना'।

प्रत्यालोचना-स्त्री० [सं०] किसी ग्रन्थ या विषय की आलोचना का उत्तर या उस आलोचना में कही बातों की समीक्षा।

प्रत्यावर्तन-पुं० [सं०] [वि० प्रत्या-वर्तित] लौटकर अपने स्थान पर आना। वापस आना।

प्रत्याशा-स्त्री० [सं०] [वि० प्रत्याशित] आशा। उम्मेद।

प्रत्याहार-पुं० [सं०] १ योग के आठ अंगों में से एक, जिसमें इन्द्रियों को विषयों से हटाकर चित्त एकाग्र किया जाता है। इन्द्रिय-निग्रह। २. प्रतिकार। ३. किसी काम को न होने के बराबर करना। ४ फिर से ग्रहण या आरम्भ करना। (रिजम्प्शन)

प्रत्युत-अव्य० [सं०] बल्कि। वरन्। इसके विपरीत।

प्रत्युत्तर-पुं०[सं०] उत्तर मिलने पर दिया हुआ उसका उत्तर। जवाब का जवाब।

प्रत्युत्पन्न-वि० [सं०] १. जो फिर से उत्पन्न हो। २. जो ठीक समय पर सामने आवे।

यौ०-प्रत्युत्पन्न-मति=जो तुरंत कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले।

प्रत्युपकार-पुं० [सं०] किसी उपकार के बदले में किया जानेवाला उपकार।

प्रत्यूष-पुं० [सं०] प्रभात। तड़का।

प्रत्येक-वि० [सं०]बहुतों मे से हर एक।

प्रथम-वि० [सं०] १. गिनती में सबसे पहले आनेवाला। पहला। २. सर्व-श्रेष्ठ। सबसे अच्छा।

क्रि० वि० [सं०] पहले। आगे।

प्रथम कारक-पुं० [सं०] व्याकरण में 'कर्त्ता' कारक।

प्रथम पुरुष-पुं० दे० 'उत्तम पुरुष'।

प्रथमा-स्त्री० [सं०] व्याकरण में कर्त्ता कारक।

प्रथा-स्त्री० [सं०] बहुत दिनों से या बहुत-से लोगों में प्रचलित रीति। रवाज। चाल।

प्रथित-वि० [सं०] [स्त्री० प्रथिता] १. लंबा-चौड़ा। विस्तृत। २. प्रसिद्ध।

प्रद-वि० [सं०] देनेवाला। दायक। (यौगिक में; जैसे-फलप्रद)

प्रदक्षिणा-स्त्री० [सं०] देव-मूर्ति या तीर्थ के चारो ओर घूमना। परिक्रमा।

प्रदत्त-वि० [सं०] दिया हुआ।

प्रदर-पुं० [सं०] स्त्रियों का एक प्रकार का रोग जिसमें उनके गर्भाशय से लसीला सफेद पानी निकलता है।

प्रदर्शक-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदर्शिका] १. दिखलानेवाला। वह जो कोई चीज दिखलावे। २ प्रदर्शन करनेवाला।

प्रदर्शन-पुं० [सं०] १. दिखलाने का काम। २. जलूस, नारे आदि ऐसे काम जो किसी बात से अपना असन्तोष प्रकट करने या अपने विचार प्रकट करने तथा जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से किये जाते हैं। (डिमॉन्सट्रेशन) ३. दे० प्रदर्शनी'।

प्रदर्शनी-स्त्री० [सं०] १. तरह तरह की चीजें लोगों को दिखलाने के लिए एक जगह रखना। २. वह स्थान जहाँ इस प्रकार चीजें रखी जायँ। नुमाइश।

प्रदर्शिका-स्त्री० [सं०] वह पुस्तक जिसमें किसी स्थान आदि के संबन्ध की मुख्य मुख्य बातें लोगों को उनका सामान्य या विशेष ज्ञान कराने के लिए दी गई हों।

प्रदर्शित-वि० [सं०] १.दिखलाया हुआ। २. प्रदर्शनी में रखा हुआ।

प्रदाता-वि० दे० 'प्रदायक'।

प्रदान-पुं० [सं०] १. किसी को कुछ देने की क्रिया। २ वह जो दिया जाय।

प्रदानी*-वि० दे० 'प्रदायक'।

प्रदायक(दायी)-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला। जो दे।

प्रदाह-पुं० [सं०] ज्वर, फोड़े, सूजन आदि के कारण शरीर में होनेवाली जलन। दाह।

प्रदिशा-स्त्री० [सं०] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

प्रदिष्ट-वि० [सं०] जिसके संबंध में आज्ञा, नियम आदि के रूप में यह बतलाया गया हो कि यह इस प्रकार होना चाहिए। जिसके विषय में प्रदेशन हुआ हो। (प्रसक्राइब्ड)

प्रदीप-पुं० [सं०] दीपक। दीया।

प्रदीपन-पुं० [सं०] [वि० प्रदीप्त] १. प्रकाश या उजाला करना। २. उज्वल करना। चमकाना।

प्रदीप्ति-स्त्री० [स०] [वि० प्रदीप्त] १. उजाला। प्रकाश। २. चमक। आभा।

प्रदुमन*-पुं० दे० 'प्रद्युम्न'।

प्रदुष्ट-वि० [सं०] १ बहुत बड़े दोषों से युक्त। २. लोभ, स्वार्थ आदि के कारण नैतिक दृष्टि से पतित। (कोरप्ट)

प्रदेय-वि० [सं०] प्रदान करने के योग्य।

प्रदेश-पुं० [सं०] १. किसी देश का वह विभाग जिसके निवासियों की भाषा, रहन-सहन, व्यवहार, शासन-पद्धति आदि औरों से भिन्न और स्वतंत्र हो। प्रांत। सूबा। २. स्थान। जगह। ३ अंग। अवयव।

प्रदेशन-पुं० [सं०] [वि० प्रदिष्ट, प्रदेष्टा] आज्ञा, निर्देश, नियम आदि के रूप में यह बतलाना कि यह काम इस प्रकार होना चाहिए। (प्रेसक्रिप्शन)

प्रदेष्टा-पुं० [सं०] वह जो प्रदेशन करता हो। (प्रेसक्राइबर)

प्रदोष-पुं० [सं०] १.सूर्य के अस्त होने का समय। संध्या। २. प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को होनेवाला एक व्रत जिसमें संध्या समय शिव का पूजन करके भोजन किया जाता है। ३. बहुत बड़ा दोष या अपराध। ४. आर्थिक लोभ, स्वार्थ, पक्षपात आदि के कारण होनेवाला व्यक्तियों का नैतिक पतन। (कोरप्शन)

प्रद्युम्न-पुं० [सं०] १. कामदेव। कंदर्प। २. श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत-पुं० [सं०] १. किरण। २. दीप्ति। चमक।

प्रधान-वि० [सं०] [भाव० प्रधानता] सबमें श्रेष्ठ या मुख्य। खास।
पु० [सं०] १. मुखिया। सरदार। २. सचिव। मन्त्री। ३. कुछ नियत काल के लिए किसी संस्था का चुना हुआ मुख्य अधिकारी। (चेयरमैन)

प्रधान कार्यालय-पुं० [स०] व्यापारिक अथवा अन्य संस्थाओं का मुख्य और सब से बड़ा कार्यालय, जहाँ से उनके सब कार्यों तथा शाखाओं का संचालन होता है। (हेड ऑफिस)

प्रधानी*-स्त्री० [हिं० प्रधान+ई (प्रत्य०)] प्रधान का पद या कार्य।

प्रन*-पुं० दे० 'प्रण'।

प्रनति*-स्त्री० दे० 'प्रणति'।

प्रनवना*-अ० दे० 'प्रणमना'।

प्रनामी*-पुं० [सं० प्रणाम+ई (प्रत्य०)] प्रणाम करनेवाला। जो प्रणाम करे।
स्त्री० वह दक्षिणा जो गुरु, ब्राह्मण आदि के सामने प्रणाम करने के समय रखी जाय।

प्रनिपात*-पुं० दे० 'प्रणिपात'।

प्रनियम-पुं० [सं० प्र+नियम] विधि-विधानों में व्याकृति आदि के सर्व-सामान्य नियम। (क्लॉज)

प्रन्यास-पुं० [सं०प्र+न्यास] किसी विशेष कार्य के लिए किसी को या कुछ लोगों को

सौंपा हुआ धन या संपत्ति । (ट्रस्ट)

प्रपंच-पुं० [सं०] १. संसार और उसका जंजाल । २. विस्तार । फैलाव । ३. बखेड़ा । झगड़ा । झमेला । ४. आडंबर । ढोंग । ५. छल । कपट ।

प्रपंची-वि० [सं० प्रपंचिन्] १. प्रपंच रचनेवाला । ढोंगी । २. छली । कपटी ।

प्रपत्ति-स्त्री० [सं०] अनन्य भक्ति ।

प्रपन्न-वि० [सं०] १. आया हुआ । प्राप्त । २. शरणागत ।

प्रपात-पुं० [सं०] १. वह बहुत ऊँचा स्थान जहाँ से कोई वस्तु सीधी नीचे गिरे । २. पहाड़ या ऊंचे स्थान से गिरनेवाली जल की धारा । झरना । दरी ।

प्रपितामह-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपितामही] १. दादा का बाप । पर दादा ।

प्रपुत्र-पुं० दे० 'पौत्र' ।

प्रपूर्ण-वि०[सं०] [भाव० प्रपूर्णता] अच्छी तरह भरा हुआ ।

प्रपौत्र-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रपौत्री] पड़पोता । पोते का पुत्र ।

प्रफुलना*-अ० [सं० प्रफुल्ल] फूलना ।

प्रफुला*-स्त्री० [सं०प्रफुल्ल] १.कुमुदिनी । कूँई । २. कमलिनी । कमल ।

प्रफुलित-वि० दे० 'प्रफुल्ल' ।

प्रफुल्ल-वि० [सं०] १. खिला हुआ । विकसित (फूल) । २.जिसमें फूल लगे हों । (वृक्ष) ३. खुला हुआ । ४ प्रसन्न ।

प्रबंध-पुं० [सं०] १. कोई काम ठीक तरह से पूरा करने की व्यवस्था । इन्तजाम । बन्दोबस्त । (मैनेजमेन्ट) २. आयोजन । उपाय । ३. गद्य अथवा संबद्ध पद्यों में लिखा हुआ काव्य । ४. दे० 'निबंध' ।

प्रबन्धक(कर्त्ता)-पुं० [सं०] प्रबंध या इंतजाम करनेवाला । (मैनेजर)

प्रबन्ध-कारिणी-स्त्री० [सं०] वह समिति जो किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रबंध करती हो ।

प्रबल-वि० [सं०] [स्त्री० प्रबला] १. बलवान । २ जोर का । प्रचंड । उग्र । तेज । ३. घोर ।

प्रबुद्ध-वि० [सं०] १. जागा हुआ । २. होश में आया हुआ । ३. ज्ञानी ।

प्रबोध(न)-पुं० [सं०] [वि० प्रबुद्ध, कर्त्ता प्रबोधक] नींद खुलना । जागना । २. यथार्थ और पूरा ज्ञान । ३. ढारस । दिलासा ।

प्रबोधना-स० [सं०प्रबोधन] १. जगाना । २. सचेत या होशियार करना । ३. समझाना-बुझाना । ४. सान्त्वना या ढारस देना । तसल्ली देना ।

प्रभंजन-पुं० [सं०] १.बहुत अधिक तोड़-फोड़ । २. प्रचंड वायु । आंधी ।

प्रभव-पुं० [सं०] १. उत्पत्ति का कारण या स्थान । २. जन्म । ३. सृष्टि । संसार।

प्रभविष्णु-वि०[सं०][भाव०प्रभविष्णुता] १. प्रभावशाली । २. बलवान् ।

प्रभा-स्त्री० [सं०] आभा । चमक ।

प्रभाउ*-पुं० दे० 'प्रभाव' ।

प्रभाकर-पुं० [सं०] १.सूर्य । २. चंद्रमा । ३. अग्नि । ४. समुद्र ।

प्रभात-पुं० [सं०] सबेरा । तड़का ।

प्रभात-फेरी-स्त्री० [सं० प्रभात+हिं०फेरी] प्रचार आदि के लिए बहुत सबेरे दल बाँधकर गाते-बजाते और नारे लगाते हुए शहर का चक्कर लगाना ।

प्रभाती-स्त्री० [सं० प्रभात] एक प्रकार का गीत जो सबेरे गाया जाता है ।

प्रभा-मंडल-पुं० [सं०] देवताओं और दिव्य पुरुषों आदि के मुख के चारों ओर का वह प्रभा-पूर्ण मंडल जो चित्रों

या मूर्त्तियों में दिखलाया जाता है।

प्रभाव-पुं०[सं०]१.होना या सामने आना। प्रादुर्भाव। २. किसी वस्तु या बात पर किसी क्रिया का होनेवाला परिणाम या फल। असर। (एफेक्ट) जैसे-औषध का प्रभाव। ३. किसी व्यक्ति की शक्ति, आतंक सम्मान, अधिकार आदि का दूसरे व्यक्तियों, घटनाओं, कार्यों आदि पर होनेवाला परिणाम। (इन्फ्लुएन्स) ४. सामर्थ्य। शक्ति।

प्रभावक-वि० [सं०] प्रभाव करने, दिखलाने या डालनेवाला।

प्रभावान्वित-वि० [सं०] जिसपर प्रभाव पड़ा हो। प्रभावित।

प्रभावित-वि० [सं० प्रभाव] जिसपर प्रभाव पड़ा हो।

प्रभास-पुं० [सं०] १. दीप्ति। ज्योति। २. एक प्राचीन तीर्थ। सोम तीर्थ।

प्रभासना*-अ० [सं० प्रभासन] भासित होना। जान पड़ना।

प्रभु-पुं० [सं०] [भाव० प्रभुता] १ अधिपति। २.स्वामी। मालिक। ३.ईश्वर।

प्रभूत-वि० [सं०] १. निकला हुआ। २ उन्नत। ३. प्रचुर। बहुत अधिक।

प्रभृति-अव्य० [सं०] इत्यादि। वगैरह।

प्रभेद-पुं० [सं०] भेद। प्रकार। तरह।

प्रभेव*-पुं० दे० 'प्रभेद'।

प्रमंडल-पुं० [सं०] प्रदेश का वह विभाग जिसमें कई मंडल या जिले हों। (कमिश्नरी या डिवीजन)

प्रमत्त-वि० [सं०] [भाव० प्रमत्तता] १. नशे में चूर। मस्त। २.पागल। बावला। ३. जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

प्रमद-पुं० [सं०] १. मतवालापन। २. आनंद। प्रसन्नता। वि० १. मतवाला। मत्त। मस्त। प्रसन्न।

प्रमदा-स्त्री० [सं०] युवती स्त्री।

प्रमा-स्त्री०[सं०]१.शुद्ध और यथार्थ ज्ञान। २. माप। नाप।

प्रमाण-पुं० [सं०] १. वह कथन या तत्त्व जिससे कोई बात सिद्ध हो। सबूत। २. वह कथन या तत्त्व जिसे सब लोग ठीक मानते हों। ३. एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी एक का उल्लेख होता है। ४. सत्यता। सचाई। ५. मान। आदर। ६ इयत्ता। हद। अव्य० पर्यंत। तक।

प्रमाणक-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर प्रमाण के रूप में कोई लेख हो। प्रमाण-पत्र। सरटिफिकेट।

प्रमाणकर्त्ता-पुं० [सं०] वह जो कोई बात प्रमाणित करता हो। (सरटिफायर)

प्रमानना*-स० दे० 'प्रमानना'।

प्रमाणपत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर कोई बात प्रमाणित करनेवाला कोई लेख हो। प्रमाणक। (सरटिफिकेट)

प्रमाणिक-वि० दे० 'प्रामाणिक'।

प्रमाणित-वि० [सं०] जो प्रमाण द्वारा ठीक सिद्ध हुआ हो। साबित।

प्रमाणीकरण-पुं० [सं०] यह लिखना कि अमुक बात या लेख ठीक और प्रामाणिक है। (सरटिफिकेशन)

प्रमाता-पुं० [सं० प्रमातृ] १. प्रमा का ज्ञान रखनेवाला। २. आत्मा या चेतन पुरुष। ३. द्रष्टा। साक्षी। स्त्री० [सं०] पिता की माता। दादी।

प्रमाद-पुं० [सं०] [वि० प्रमादी] १. भूल-चूक। २. भ्रम। भ्रांति। धोखा। ३. अभिमान आदि के कारण कुछ का कुछ समझना या करना।

प्रमानना*-स०[सं०प्रमाण+ना (प्रत्य०)] १. प्रमाण के रूप में मानना। ठीक समझना। २. प्रमाणित या सिद्ध करना। ३. स्थिर या निश्चित करना।

प्रमानी*-वि० दे० 'प्रामाणिक'।

प्रमित-वि० [सं०] १. परिमित। २. ठीक या निश्चित।

प्रमीत-वि० [सं०] जिसकी मृत्यु हो गई हो। मरा हुआ। मृत। (डिसीज्ड) (केवल स्वाभाविक या प्रकृत रूप से मरनेवाले मनुष्यों के लिए)

प्रमीति-स्त्री० [सं०] मनुष्य का स्वाभाविक या प्रकृत रूप से मरना। साधारण मृत्यु। (डिसीज)

प्रमुख-वि० [सं०] १. प्रथम। पहला। २. प्रधान। मुख्य।

अव्य० इत्यादि। वगैरह।

प्रमुद-वि० दे० 'प्रमुदित'।

*पु० दे० 'प्रमोद'।

प्रमुदना*-अ० [सं० प्रमोद] प्रमुदित होना। प्रसन्न होना।

प्रमुदित-वि० [सं०] हर्षित। प्रसन्न।

प्रमेय-वि० [सं०] १. जो प्रमाण का विषय हो सके। २. जो प्रमाणित किया जाने को हो। ३. जो नापा जा सके।

प्रमेह-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें मूत्र के साथ या उसके मार्ग से शरीर की शुक्र आदि धातुएँ निकलती रहती हैं।

प्रमोद-पुं० [सं०] हर्ष। आनंद।

प्रयक*-पुं० दे० 'पर्यंक'।

प्रयत*-अव्य० दे० 'पर्यंत'।

प्रयत्न-पुं० [सं०] १. कार्य या उद्यम जो कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किया जाय। प्रयास। चेष्टा। कोशिश। २. वर्णों के उच्चारण में होनेवाली गले, मुख आदि की क्रिया। (व्याकरण)

प्रयत्नशील-वि० [सं०] जो प्रयत्न कर रहा हो। प्रयत्न या कोशिश में लगा हुआ।

प्रयाण-पुं० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना या चलना। प्रस्थान। यात्रा। (डिपार्चर) २.युद्ध-यात्रा। चढ़ाई। ३. यह लोक छोड़कर (मरकर) स्वर्ग या परलोक जाना।

प्रयास-पुं० [सं०] १. प्रयत्न। उद्योग। कोशिश। २. परिश्रम। मेहनत।

प्रयासी-वि० [सं० प्रयासिन्] प्रयत्न या कोशिश करनेवाला।

प्रयुक्त-वि० [सं०] १. अच्छी तरह मिलाया या जोड़ा हुआ। सम्मिलित। २. जिसका प्रयोग हो चुका हो या होता हो।

प्रयोक्ता-पुं० [सं० प्रयोक्तृ] प्रयोग या व्यवहार करनेवाला।

प्रयोग-पुं० [सं०] १ किसी काम में लगना। २. किसी वस्तु के कार्य में लाये जाने की क्रिया या भाव। व्यवहार। इस्तेमाल। बरता जाना। ३. कोई बात जानने या समझने के लिए अथवा परीक्षा, जाँच आदि के रूप में होनेवाला किसी क्रिया का साधन। (एक्सपेरिमेन्ट) ४. मारण, मोहन आदि तांत्रिक उपचार या कृत्य। ५. नाटक। अभिनय।

प्रयोगशाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ किसी विषय का विशेषतः रासायनिक प्रयोग या जाँच होती हो। (लेबोरेटरी)

प्रयोजक-पुं० [सं०] १. प्रयोग या अनुष्ठान करनेवाला। २. काम में लगानेवाला। प्रेरक।

प्रयोजन-पुं० [सं०] १. काम। अर्थ। २. उद्देश्य। अभिप्राय। ३.उपयोग। व्यवहार।

प्रयोजनवती लक्षणा-स्त्री० [सं०] वह

लक्षणा जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करती है।

प्रयोजनीय-वि० [सं०] प्रयोजन या काम में आनेवाला। काम का।

प्रयोज्य-वि० [सं०] १. प्रयोग के योग्य। २. काम में आने के योग्य।

प्ररोह(ण)-पुं० [सं०] १. आरोह। चढ़ाव। २ उगना। जमना।

प्रलंब-वि० [सं०] १. नीचे की तरफ कुछ दूर तक लटकता हुआ। २. लंबा। ३. आगे निकला हुआ।

प्रलंबी-वि०[सं०प्रलंबिन्][स्त्री०प्रलंबिनी] १. दे० 'प्रलंब'। २. सहारा लेनेवाला।

प्रलयंकर-वि० [सं०] [स्त्री० प्रलयंकरी] प्रलय का-सा सर्वनाश करनेवाला।

प्रलय-पुं० [सं०] १. लय को प्राप्त होना। न रह जाना। २. संसार का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, जो बहुत दिनों पर होता है और जिसके बाद फिर नई सृष्टि होती है। ३. एक सात्विक भाव जिसमें किसी वस्तु में तन्मय होने से स्मृति नष्ट हो जाती है। (साहित्य)

प्रलयकर-वि० दे० 'प्रलयंकर'।

प्रलाप-पुं० [सं०] [वि० प्रलापी] पागलों की तरह कही हुई व्यर्थ की बातें।

प्रलेखक-पुं० [सं०] वह जो लेख या दस्तावेज और प्रार्थनापत्र आदि लिखता हो। (अर्जीनवीस या कातिब।)

प्रलेखन-पुं० [सं०] लेख या दस्तावेज और प्रार्थना-पत्र आदि लिखने का काम।

प्रलेप-पुं० [सं०] अंग पर लगाई जानेवाली कोई गीली दवा। लेप।

प्रलेपन-पुं० [सं०] [वि० प्रलेपक, प्रलेप्य] लेप करने या लगाने की क्रिया।

प्रलोभ(न)-पुं० [सं०] [वि० प्रलोभित, प्रलोभक] १. लोभ दिखाना। लालच देना। २. वह बात या कार्य जो किसी को लुभाकर अपनी ओर खींचने या उससे कोई काम करानेवाला हो। (एल्योरमेन्ट)

प्रवंचन-पुं० दे० 'प्रवचना'।

प्रवंचना-स्त्री० [सं०] [वि० प्रवंचक] किसी को धोखा देने या ठगने का काम। छल। ठग-पना।

प्रवंचित-वि० [सं०] [स्त्री०प्रवंचिता] जो ठगा गया हो।

प्रवक्ता-पुं० [सं० प्रवक्तृ] १. अच्छी तरह समझकर कहनेवाला। २. किसी संस्था या विभाग की ओर से आधिकारिक रूप में कोई बात कहनेवाला। (स्पोक्समैन)

प्रवचन-पुं० [सं०] [वि० प्रवचनीय] १. अच्छी तरह समझाकर कहना। २. धर्म-ग्रन्थ या धार्मिक, नैतिक आदि बातों की जबानी की जानेवाली व्याख्या।

प्रवण-पुं० [सं०] [भाव० प्रवणता] १. क्रमशः नीचे गई हुई भूमि। ढाल। उतार। २. चौराहा। ३. उदर। पेट। वि० १.ढालुआं। २. झुका हुआ। नत। ३. प्रवृत्त। रत। ४. नम्र। विनीत। ५. उदार। ६. दक्ष। निपुण। ७. समर्थ।

प्रवत्स्यत्पतिका-स्त्री०[सं०] वह नायिका जिसका पति विदेश जाने को हो।

प्रवर-वि० [सं०] श्रेष्ठ। बड़ा। मुख्य। पुं० १. किसी गोत्र या वंश का प्रवर्त्तक कोई विशेष महत्त्व का मुनि। २.संतति।

प्रवर्त्तक-पुं० [सं०] १. कोई काम चलानेवाला। संचालक। २ प्रचलित या आरंभ करनेवाला। ३.किसी को किसी काम में, विशेषतः अनुचित या विधि-विरुद्ध काम में, लगाने और उसको सहायता करने-

वाला। (एबेटर) ४.कोई नया काम या बात निकालने या चलानेवाला। (ओरिजिनेटर) ५. नाटक में प्रस्तावना का वह प्रकार जिसमें सूत्रधार के वर्तमान समय का वर्णन करने पर पात्र उसी की चर्चा करता हुआ रंगमंच पर आता है।

प्रवर्त्तन-पुं० [सं०] [वि० प्रवर्त्तित, प्रवर्तनीय, प्रवर्तक] १. कार्य आरंभ करना। काम ठानना। २. प्रचलित करना। चलाना। ३. किसी को कोई अनुचित कार्य करने के लिए उकसाना और कुछ सहायता देना। (एबेटमेन्ट)

प्रवह-पुं० [सं०] १. तेज बहाव। २. सात वायुओं में से एक वायु।

प्रवहमान-वि० [सं० प्रवहमत्] जोरों से बहता या चलता हुआ।

प्रवाद-पुं० [सं०] १ बात-चीत। २. जन-साधारण में प्रचलित कोई ऐसी बात जिसका कोई पुष्ट आधार न हो। जन-श्रुति। जनरव। अफवाह। ३.झूठी बद-नामी। अपवाद। ४ किसी को दी जाने-वाली सूचना। (रिपोर्ट)

प्रवान*-पुं० दे० 'प्रमाण'।

प्रवाल-पुं० [सं०] मूँगा। विद्रुम।

प्रवास-पुं० [सं०] १. अपना देश छोड़-कर दूसरे देश में जा बसना। २.यात्रा।

प्रवासी-वि० [सं० प्रवासिन्] परदेस में जाकर बसने या रहनेवाला।

प्रवाह-पुं० [सं०] १. जल का बहाव। २. बहता हुआ पानी। धारा। ३. काम का चलना या जारी रहना। ४. चलता हुआ क्रम। तार। सिलसिला।

प्रवाहक-वि० [सं०] [स्त्री० प्रवाहिका] १. अच्छी तरह वहन करनेवाला। २. जोर से चलाने या बहानेवाला।

प्रवाहित-वि० [सं०] बहता हुआ।

प्रवाही-वि० [सं० प्रवाहिन्], [स्त्री० प्रवाहिनी] १.बहनेवाला। २.तरल। द्रव।

प्रविधान-पुं० [सं०] विधायिका सभा के द्वारा बनाया हुआ विधान। (स्टैट्यूट)

प्रविधि-स्त्री० [सं०] किसी विशेष विषय से संबंध रखनेवाली या किसी विशेष प्रकार की प्रविधि। जैसे-साक्ष्य प्रविधि (लॉ आफ एविडेन्स), संविदा प्रविधि (लॉ आफ कन्ट्रैक्ट)।

प्रविष्ट-वि० [सं०] जिसका प्रवेश हुआ हो। घुसा हुआ।

प्रविसना*-अ० [सं० प्रवेश] घुसना।

प्रवीण-वि० [सं०] [भाव० प्रवीणता] किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण। कुशल। दक्ष। होशियार।

प्रवृत्त-वि० [सं०] १. किसी बात की ओर झुका हुआ। २. किसी काम में लगा हुआ। ३ उद्यत। तैयार।

प्रवृत्तक-पुं० [सं०] वह जो किसी को किसी कार्य में, विशेषतः अनुचित या बुरे कार्य में, लगावें और उसकी सहायता करे। प्रवर्त्तक। (एबेटर)

प्रवृत्ति-स्त्री० [सं०] १. प्रवाह। बहाव। २. किसी ओर होनेवाला मन का झुकाव। (टेन्डेन्सी) ३. सांसारिक विषयों या भोगों का ग्रहण। 'निवृत्ति' का उलटा।

प्रवेक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० प्रवेक्षित] किसी काम या बात के होने के संबंध में पहले से की जानेवाली आशा या अनु-मान। (एन्टिसिपेशन)

प्रवेश-पुं० [सं०] १. अंदर जाना। घुसना। पैठना। २. गति। पहुँच। ३. किसी विषय का ज्ञान।

प्रवेशक-पुं० [सं०] १. प्रवेश कराने-

वाला। २. नाटक में वह स्थल जहाँ बीच की किसी घटना का परिचय केवल बात-चीत से कराया जाता है।

प्रवेशपत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसे दिखलाने पर किसी स्थान में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो। (पास या टिकट)

प्रवेश-शुल्क-पुं० [सं०] वह शुल्क जो किसी संस्था में सम्मिलित होने या पहले-पहल नाम लिखाने के समय देना पड़ता है। (एडमिशन फी) २. वह शुल्क जो किसी स्थान में प्रवेश करने के समय देना पड़ता है। (एन्ट्रेन्स फी)

प्रवेशिका-स्त्री० [सं०] १. वह पत्र या चिह्न जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने का अधिकार मिलता है। (पास) २.प्रवेश-शुल्क के रूप में दिया जानेवाला धन। ३ निम्न वर्ग की वह अन्तिम परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण होने पर उच्च वर्ग में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त होता है। (एन्ट्रेन्स)

प्रवेसना*-अ० [सं० प्रवेश] प्रवेश करना। घुसना। पैठना।

स० प्रविष्ट करना। पैठाना। घुसाना।

प्रव्रज्या-स्त्री० [सं०] संन्यास।

प्रशंस*-स्त्री० दे० 'प्रशंसा'।

वि० [सं० प्रशंस्य] प्रशंसा के योग्य।

प्रशसक-वि० [सं०] प्रशंसा करनेवाला।

प्रशंसन-पुं० [सं०] [वि० प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशस्य] प्रशंसा करना।

प्रशंसना*-अ० [सं० प्रशसन] प्रशंसा या तारीफ करना। सराहना।

प्रशंसनीय-वि० [सं०] प्रशंसा के योग्य। बहुत अच्छा।

प्रशंसा-स्त्री० [सं०] [वि० प्रशंसित, प्रशंसनीय] किसी व्यक्ति या वस्तु के गुणों या अच्छी बातों के संबंध में कही हुई आदर-सूचक बात, कथन या विचार। बड़ाई। तारीफ।

प्रशंसित-वि० [सं०] [स्त्री० प्रशंसिता] जिसकी प्रशंसा की गई हो।

प्रशंसोपमा-स्त्री० [सं०] वह उपमालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान को प्रशंसनीय ठहराते हैं।

प्रशम्य-वि० [सं०] प्रशंसनीय।

प्रशम(न)-पुं० [सं०] [वि० प्रशम्य] १. शमन। शांति। २. नष्ट या ध्वस्त करना। ३. आपस के समझौते से झगड़ा निपटाना या तै करना। (कम्पाउंडिंग)

प्रशम्य-वि० [सं०] १. जिसका शमन या शान्ति हो सके। २. (झगड़ा या विवाद) जिसे आपस में निपटा लेने का अधिकार दोनों पक्षों को हो। (कम्पाउंडेबुल)

प्रशस्त-वि० [सं०] १. प्रशंसनीय। अच्छा। २. श्रेष्ठ। उत्तम। ३.लंबा-चौड़ा या बड़ा। भव्य। ४. उचित। उपयुक्त।

प्रशस्ति-स्त्री० [सं०] १. प्रशंसा। स्तुति। २ प्राचीन काल के राजाओं के एक प्रकार के प्रज्ञापन जो चट्टानों या ताम्र-पत्रों आदि पर खोदे जाते थे। ३. प्राचीन ग्रन्थों के आदि या अंत की वे कतिपय पंक्तियाँ जिनमें पुस्तक के कर्त्ता, विषय, काल आदि का उल्लेख रहता है।

प्रशांत-वि० [सं०] १. चंचलता-रहित। स्थिर। २. निश्चल वृत्तिवाला। शांत। पुं० एशिया और अमेरिका के बीच का महासागर। (पैसिफिक ओशन)

प्रशांति-स्त्री० [सं०] प्रशांत या निश्चल होने का भाव। पूर्ण शांति।

प्रशाखा-स्त्री० [सं०] शाखा में से निकली हुई छोटी शाखा। टहनी।

प्रशासन-पुं० [सं०] [वि० प्रशासनिक]

राज्य के परिचालन का प्रबंध या व्यवस्था। (एडमिनिस्ट्रेशन)

प्रशासनिक-वि० [सं०] प्रशासन या राज्य-प्रबंध से संबंध रखनेवाला। (एडमिनिस्ट्रेटिव)

प्रशिक्षण-पुं० [सं०] किसी पेशे या कला-कौशल की क्रियात्मक रूप में दी जानेवाली शिक्षा। (ट्रेनिंग)

प्रश्न-पुं० [सं०] १. वह बात जो कुछ जानने या जाँचने के लिए कही जाय और जिसका कुछ उत्तर हो। जिज्ञासा। सवाल। २. पूछने की बात। ३ विचारणीय विषय। (इश्यू)

प्रश्न-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर परीक्षा के लिए विद्यार्थियों से किये जानेवाले प्रश्न लिखे होते हैं।

प्रश्नोत्तर-पुं० [सं०] १. सवाल-जवाब। प्रश्न और उत्तर। संवाद। २. वह काव्यालंकार जिसमें कुछ प्रश्न और उनके उत्तर रहते हैं।

प्रश्नोत्तरी-स्त्री० [सं० प्रश्नोत्तर] किसी विषय के प्रश्नों और उत्तरों का संग्रह।

प्रश्रय-पुं० [सं० आश्रय] १. आश्रय-स्थान। २. टेक। सहारा। आधार।

प्रश्रुति-स्त्री० [सं०] कोई कार्य करने के लिए की जानेवाली प्रतिज्ञा या दिया जानेवाला वचन।

प्रश्रुति-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी से धन उधार लेने पर उसके प्रमाण-स्वरूप और माँगने पर चुका देने के वचन के रूप में लिखा जाता है। (प्रो-नोट)

प्रश्वास-पुं० [सं०] नथने से बाहर निकलनेवाली वायु। 'श्वास' का उलटा।

प्रष्टव्य-वि० [सं०] १. पूछने योग्य। २. पूछने का। जो पूछना हो।

प्रसंग-पुं० [सं०] १. संबंध। लगाव। २. विषय का लगाव या सम्बन्ध। ३. स्त्री-पुरुष का संभोग। मैथुन। ४. बात। वार्ता। विषय। ५. उपयुक्त संयोग। अवसर। मौका। ६. प्रकरण। अध्याय।

प्रसंसना*-स० = प्रशंसा करना।

प्रसन्न-वि० [सं०] १. सन्तुष्ट। तुष्ट। २. हर्षित। खुश। ३. अनुकूल।

प्रसन्नता-स्त्री० [सं०] १. तुष्टि। संतोष। २. हर्ष। आनंद। ३ कृपा। अनुग्रह।

प्रसन्नित*-वि० = प्रसन्न।

प्रसर-पुं० [सं०] न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु को न्यायालय में उपस्थित करने का आदेश लिखा होता है। (प्रोसेस)

प्रसरण-पुं० [सं०] [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १. आगे बढ़ना या खिसकना। २ फैलना। बढ़ना। ३. विस्तार।

प्रसर-पाल-पुं० [सं०] वह जो न्यायालय से निकलनेवाले प्रसर लोगों के पास पहुँचाता हो। (प्रोसेस-सर्वर)

प्रसर-शुल्क-पुं० [सं०] वह शुल्क जो न्यायालय से कोई प्रसर निकलवाने के लिए देना पड़ता है। (प्रोसेस फी)

प्रसव-पुं० [सं०] १. बच्चा जनने की क्रिया। जनन। प्रसूति। (डेलिवरी) २. जन्म। उत्पत्ति। ३. बच्चा। संतान।

प्रसवना*-स० [सं० प्रसव] (बच्चा) उत्पन्न करना। गर्भ से सन्तान को जन्म देना।

प्रसवा(विनी)-स्त्री० [सं०] प्रसव करनेवाली। जन्म देनेवाली।

प्रसाद-पुं० [सं०] १. प्रसन्नता। २. अनुग्रह। कृपा। मेहरबानी। ३. वह खाने की वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय या चढ़ाई जा चुकी हो। ४. वह

वस्तु जो देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर भक्तों या छोटों को दें। ५.भोजन। मुहा०-प्रसाद पाना=भोजन करना। ६. काव्य का वह गुण जिससे भाषा स्वच्छ और साधु होती और सुनते ही समझ में आ जाती है। ७. शब्दालंकार के अंतर्गत कोमला वृत्ति।
* पुं० दे० 'प्रासाद'।

प्रसाद दान-पुं० [सं०] वह दान जो प्रसन्न होकर या प्रेम-भाव से किसी को दिया जाय। (एफेक्शनेट गिफ्ट)

प्रसादन-पुं० [सं०] किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना। (प्रॉपिसिएशन)

प्रसादना*-स०, अ० [सं० प्रसादन] प्रसन्न या सन्तुष्ट करना या होना।

प्रसादनीय-वि० [सं०] प्रसन्न किये जाने के योग्य।

प्रसादी-स्त्री० दे० 'प्रसाद' ३, ४।

प्रसाधक-पुं० [सं०] [स्त्री० प्रसाधिका] १. वह जो किसी कार्य का निर्वाह करे। संपादक। २ सजावट का काम करनेवाला। ३ दूसरों के शरीर या अंगों का शृंगार करनेवाला।

प्रसाधन-पुं० [सं०] १. अलंकार आदि से युक्त करना। शृंगार करना। सजाना। २. शृँगार की सामग्री। सजावट का सामान। ३. कार्य का संपादन। ४. कंघी से बाल झाड़ना।

प्रसाधिका-स्त्री० [सं०] वह दासी जो रानियों को गहने-कपड़े पहनाती और उनका शृंगार करती हो।

प्रसार-पुं० [सं०] १. विस्तार। फैलाव। पसार। २.संचार। ३.गमन। ४.कोई बात चारों ओर फैलाना या सब को सुनाना।

प्रसारण-पुं० [सं०] [वि० प्रसारित, प्रसार्य] १ फैलाना। २. बढ़ाना। ३. किसी विषय या चर्चा का प्रचार करना। ४. रेडियो के द्वारा कोई बात, कविता, गीत आदि लोगों को सुनाने के लिए चारों ओर फैलाना। (ब्रॉड-कास्टिंग)

प्रसिद्ध-वि०[सं०] [भाव०प्रसिद्धि] जिसे सब लोग जानते हों। विख्यात। मशहूर।

प्रसिद्धि-स्त्री० [सं०] [वि० प्रसिद्ध] प्रसिद्ध होने की क्रिया या भाव। ख्याति। शोहरत।

प्रसुप्त-वि० [सं०] १. सोया हुआ। २. रुका, थमा या दबा हुआ।

प्रसुप्ति-स्त्री० [सं०] नींद।

प्रसू-वि०स्त्री० [सं०] जन्म देने या उत्पन्न करनेवाली। जैसे-वीर-प्रसू।

प्रसूत-वि० [सं०] [स्त्री० प्रसूता] १. उत्पन्न। जात। पैदा। २.निकला हुआ। पुं० स्त्रियों को प्रसव के उपरांत होनेवाला एक रोग।

प्रसूता-स्त्री० [सं०] प्रसव करने या बच्चा जननेवाली स्त्री। जच्चा।

प्रसूति-स्त्री० [सं०] १. प्रसव। जनन। २. उद्भव। उत्पत्ति।

प्रसूतिका-स्त्री० दे० 'प्रसूता'।

प्रसून-पुं० [सं०] १. फूल। २. फल।

प्रसेद*-पुं० [सं० प्रस्वेद] पसीना।

प्रस्तर-पुं० [सं०] १. पत्थर। २. बिछौना। ३. चौड़ी सतह।

प्रस्तर-कला-स्त्री० [सं०] पत्थर को खोदने, गढ़ने और उसपर ओप आदि लाने की विद्या या कला।

प्रस्तर-मुद्रण-पुं० [सं०] मुद्रण या छापे की वह प्रक्रिया जिसमें छापे जानेवाले लेख आदि एक विशेष प्रकार के

कागज पर लिखकर पहले एक प्रकार के पत्थर पर उतारे और तब उस पत्थर पर से छापे जाते हैं। (लीथोग्राफ)

प्रस्तर युग-पुं० [सं०] पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति की संस्कृति के इतिहास में वह समय जब कि अस्त्र-शस्त्र और औजार आदि केवल पत्थर के बनते थे। (यह सभ्यता का बिलकुल आरंभिक काल था और इस काल तक धातुओं का आविष्कार नहीं हुआ था।) (स्टोन एज)

प्रस्तार-पुं०[सं०] १. फैलाव। विस्तार। २. अधिकता। ३. परत। तह। ४. छंद:-शास्त्र में वह प्रक्रिया जिसमे छंदों के भेदों की संख्याएँ और रूप जाने जाते हैं। ५. वस्तुओं, अंकों आदि के पंक्तिबद्ध समूहों या वर्गों के क्रम या विन्यास में संगत और संभव परिवर्त्तन या हेर-फेर करना। (परम्यूटेशन)

प्रस्ताव-पुं०[सं०] १ छिड़ी हुई चर्चा। प्रस्तुत प्रसंग। २ पुस्तक की भूमिका या प्रस्तावना। ३ वह बात जो किसी सभा या समाज में विचार या स्वीकृति के लिए उपस्थित की जाय। (रिज़ोल्यूशन) ४. विवाद आदि में अथवा यों ही किसी से यह कहना कि आप अमुक वस्तु या इतना धन लेकर झगड़ा निपटा लें या अमुक कार्य करें। (ऑफर)

प्रस्तावक-पुं० [सं०] १. वह जो किसी सभा या समाज के सामने स्वीकृति के लिए कोई प्रस्ताव उपस्थित करे। (प्रोपोजर) २. वह जो किसी के सामने यह मंतव्य प्रकट करे कि आप अमुक वस्तु या इतना धन लेकर अमुक कार्य करें। (ऑफरर)

प्रस्तावना-स्त्री० [सं०] १. आरंभ। २. पुस्तक की भूमिका। उपोद्घात। ३. अभिनय के पहले नाटक के विषय का परिचय देने के लिए छेड़ा हुआ प्रसंग।

प्रस्तावित-वि० [सं०] जिसके लिए या जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो।

प्रस्ताविती-पुं० [सं०प्रस्ताव] वह जिसके सामने कोई वस्तु या धन भेंट करने का प्रस्ताव भेंट करनेवाले की ओर से रखा जाय। (ऑफरी)

प्रस्तुत-वि० [सं०] १. जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो। २. जो कहा गया हो। उक्त। कथित। ३. उद्यत। तैयार। ४ प्रस्ताव के रूप में किसी के सामने रखा हुआ। ५. जो इस समय उपस्थित या वर्तमान हो। मौजूद। (प्रेजेंट)

प्रस्तुतालंकार-पुं० [सं०] एक अलंकार जिसमें किसी प्रस्तुत तथ्य के विषय में कुछ कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत तथ्य पर घटाया जाता है।

प्रस्तोता-पुं० [सं० प्रस्तोतृ] प्रस्ताव करनेवाला। प्रस्तावक।

प्रस्थ-पुं० [सं०] १ विस्तार। २ चौड़ाई।

प्रस्थान-पुं० [सं०] १ किसी स्थान से दूसरे स्थान को जाना या चलना। गमन। यात्रा। रवानगी। (डिपार्चर) २. मुहूर्त पर यात्रा न करने की दशा में अपना कोई वस्त्र यात्रा की दिशा में मुहूर्त साधने के लिए रखना। ३. दे० 'प्रयाण'।

प्रस्थाना-पुं० दे० 'प्रस्थान' २.।

प्रस्थानित-वि० [सं० प्रस्थान] जिसने प्रस्थान किया हो। जो चला गया हो।

प्रस्थानी-वि० [सं० प्रस्थान] प्रस्थान करने या जानेवाला।

प्रस्थापन-पुं० [सं०] [वि० प्रस्थापित,

प्रस्थाप्य] १. प्रस्थान कराना। २. स्थापन।

प्रस्थित-वि० [सं०] १ ठहरा या टिका हुआ। २. दृढ़। पक्का। ३.जिसने प्रस्थान किया हो। गया हुआ।

प्रस्थिति-स्त्री०[सं०] १. प्रस्थान। यात्रा। २. अभियान। ३. चढ़ाई।

प्रस्फुरण-पुं० [सं०] १. निकलना। २.फूलना। खिलना। ३.प्रकाशित होना।

प्रस्फुटित-वि० [सं०] १. फूटा या खुला हुआ। २.खिला हुआ। विकसित। (फूल)

प्रस्फोटन-पुं० दे० 'स्फोट'।

प्रस्रवण-पुं० दे० 'प्रस्राव'।

प्रस्राव-पुं० [सं०] १. जल आदि का टपकना या रसना। २ पेशाब।

प्रस्वेद-पुं० [सं०] पसीना।

प्रहर-पुं० [सं०] दिन-रात के आठ भागों में से एक। तीन घन्टे का समय। पहर।

प्रहरखना*-अ० [सं०प्रहर्षण] हर्षित या प्रसन्न होना।

प्रहरी-पुं० [सं० प्रहरिन्] पहरेदार।

प्रहर्षण-पुं० [सं०] १. आनंद। २. एक अलंकार जिसमें अनायास और बिना प्रयत्न किये किसी के अभीष्ट फल की सिद्धि का उल्लेख होता है।

प्रहसन-पुं० [सं०] १. हँसी। दिल्लगी। २.हास्य-रस-प्रधान एक प्रकार का रूपक।

प्रहसित-वि० [सं०] १. हँसी से भरा हुआ। २ जिसकी हँसी उड़ाई जाय। उपहासास्पद।

प्रहान*-पुं० [सं० प्रहाण] १. परित्याग। २. चित्त की एकाग्रता। ध्यान।

प्रहार-पुं० [सं०] [कर्ता प्रहारक, प्रहारी] १. आघात। वार। २. मार।

प्रहारना*-स० [सं० प्रहार] १. मारना। आघात करना। २. मारने के लिए अस्त्र आदि चलाना।

प्रहारित*-वि० [सं० प्रहार] जिसपर प्रहार हुआ हो।

प्रहेलिका-स्त्री० [सं०] पहेली।

प्रांगण-पुं० [सं०] घर का आँगन।

प्रांजल-वि० [सं०] १ सरल। सीधा २. स्वच्छ और शुद्ध (भाषा)।

प्रांत-पुं०[सं०] [वि० प्रांतीय, प्रांतिक] १. अंत। सीमा। २. किनारा। सिरा। ३. ओर। दिशा। ४. खंड। प्रदेश। ५. किसी बड़े देश का कोई शासनिक विभाग।

प्रांतर-पुं० [सं०] १. वह प्रदेश जिसमें जल और वृक्ष न हों। उजाड़। २. जंगल। वन। ३. वृक्ष का कोटर।

प्रांतिक, प्रांतीय-वि० [सं०] किसी एक प्रान्त से संबन्ध रखनेवाला।

प्रांतीयता-स्त्री० [सं०] १.प्रान्तीय होने का भाव। २. अपने प्रान्त का विशेष या अतिरिक्त पक्षपात या मोह।

प्राइवेट-वि० [अं०] व्यक्ति-गत। निजी। यौ०-प्राइवेट सेक्रेटरी = किसी बड़े आदमी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि कार्य करनेवाला।

प्राकाम्य-पुं० [सं०] १. आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक, जिसमें मनुष्य जहाँ चाहे, वहां आ-जा सकता है। २.प्रचुरता। अधिकता। ३. यथेष्टता।

प्राकार-पुं० दे० 'प्राचीर'।

प्राकृत-वि०[सं०] १ प्रकृति से उत्पन्न। २. निसर्ग या प्रकृति सम्बन्धी। स्वाभाविक। स्त्री० १. किसी स्थान की बोल चाल की भाषा। २ एक प्राचीन भारतीय बोल-चाल की भाषा जिसका संस्कार करके संस्कृत बनाई गई थी और जिससे भारत की आज-कल की आर्य भाषाएँ बनी हैं।

प्राकृतिक-वि० [सं०] १. प्रकृति संबंधी। प्रकृति का। २. स्वाभाविक। सहज। (नेचुरल)

प्राक्-वि० [सं०] पहले का। पुराना।

प्राक्कथन-पुं० [सं०] आरंभ में परिचय मात्र के लिए कही हुई कोई संक्षिप्त बात। भूमिका। (फोरवर्ड)

प्राखंडिक-वि० [सं०] किसी खंड या विशिष्ट भू-भाग से सम्बन्ध रखनेवाला। (डिविजनल)

प्रागैतिहासिक-वि० [सं०] जिस समय का निश्चित और पूरा इतिहास मिलता हो, उससे पहले का। इतिहास-पूर्व काल का। (प्री-हिस्टॉरिक)

प्राची-स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा। पूरब।

प्राचीन-वि० [सं०] [भाव० प्राचीनता] १ पूरब का। २.बहुत दिनों का। पुराना।

प्राचीर-पुं०[सं०] चारों ओर से घेरनेवाली दीवार। परकोटा। चहार-दीवारी।

प्राच्छित*-पुं० = प्रायश्चित्त।

प्राच्य-वि० [सं०] १ पूर्व दिशा का। २ पुराना। प्राचीन।

प्राजापत्य-वि० [सं०] १. प्रजापति सम्बन्धी। २. प्रजापति से उत्पन्न।

प्राजापत्य विवाह-पुं० [सं०] वह विवाह जिसमें पिता अपनी कन्या को यह कहकर वर के हाथ में देता था कि तुम लोग मिलकर धर्म का पालन करो।

प्राज्ञ-वि० [सं०] [स्त्री० प्राज्ञा, प्राज्ञी] १. बुद्धिमान। समझदार। २. विद्वान्।

प्राड्विवाक-पुं० [सं०] १. न्यायाधीश। २. वकील।

प्राण-पुं०बहु० [सं०] [भाव०प्राणता] १. वायु। हवा। २. शरीर की वह शक्ति जिससे मनुष्य और जीव-जन्तु जीवित रहते हैं। जीवनी शक्ति। जान। मुहा०-**प्राण गले तक आना**=मरने को होना। **प्राण जाना, छूटना या निकलना**=जीवन का अंत होना। मरना। **प्राण डालना** = जीवन प्रदान करना। **प्राण देना** = मरना। (**किसी पर**) **प्राण देना** = किसी के लिए मरने तक तैयार रहना। (**किसी के लिए**) **प्राण देना**=१. किसी के लिए मरने तक तैयार रहना। २ किसी के लिए बहुत अधिक परिश्रम या प्रयत्न करना। **प्राण निकलना** = १. मृत्यु होना। मरना। २. मरने का-सा कष्ट होना। **प्राण लेना या हरना** = मार डालना। **प्राण हारना** = १ मर जाना। २ उत्साहहीन होना। ३ श्वास। साँस। ४ बल। शक्ति। वि० परम प्रिय। बहुत प्यारा।

प्राण-अधार*-पुं० दे० 'प्राणाधार'।

प्राण-दंड-पुं० [सं०] वह दंड जिसमें किसी के प्राण ले लिये जाते हैं।

प्राण-दान-पुं० [सं०] किसी को मरने या मारे जाने से बचाना।

प्राण-नाथ-पुं० [सं०] १. प्रियतम। २. पति। स्वामी।

प्राणपति-पुं० [सं०] १. पति। स्वामी। २. प्रिय व्यक्ति। प्यारा।

प्राण-प्यारा--पुं० [हिं० प्राण+प्यारा] [स्त्री० प्राण-प्यारी] १. प्रियतम। परम प्रिय व्यक्ति। २. पति। स्वामी।

प्राण-प्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] कोई नई मूर्ति स्थापित करते समय मंत्रों द्वारा उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा या आरोप करना।

प्राण-प्रिय-वि० [सं०] [स्त्री० प्राण-प्रिया] १.प्राणों के समान परम प्रिय। २ प्रियतम।

प्राणांत-पुं० [सं०] मरण। मृत्यु।

प्राणांतक-वि० [सं०] १. प्राणों का अन्त करने या मार डालनेवाला। २. मरने-का सा कष्ट देनेवाला।

प्राणाधार-वि०[सं०]१.परम प्रिय। २ इतना प्यारा कि उसके बिना जीना कठिन हो। पुं० पति। स्वामी।

प्राणाधिक-वि० [सं०] प्राणों से भी बढ़कर प्यारा। परम प्रिय।

प्राणायाम-पुं० [सं०] योग-शास्त्र के अनुसार श्वास और प्रश्वास को वायुओं को नियंत्रित और नियमित रूप से खींचने और बाहर निकालने की प्रक्रिया।

प्राणी-वि० [सं० प्राणिन्] जिसमें प्राण हो। प्राणधारी।
पुं० १. जंतु। जीव। २. मनुष्य।

प्राणेश(श्वर)-पुं० दे० 'प्राणपति'।

प्रात-अव्य० [सं० प्रात] सबेरे। तड़के। पुं० सबेरा। प्रातः काल।

प्रातः-पुं० [सं० प्रातर्] सबेरा।

प्रातःकर्म-पुं० [सं०] प्रात काल किये जानेवाले कार्य। जैसे-शौच, स्नान आदि।

प्रातःकाल-पुं० [सं०] [वि० प्रातः-कालीन] दिन चढ़ने का समय। सबेरा।

प्रातःस्मरणीय-वि० [सं०] सबेरे उठते ही स्मरण करने के योग्य। (परम श्रेष्ठ और पूज्य)

प्रातिभागिक-वि० [सं०] प्रतिभाग नामक शुल्क से सम्बन्ध रखनेवाला। (एक्साइस)

प्रातिभाज्य-वि० [सं०] जिसपर प्रति-भाग-शुल्क लगता या लग सकता हो।

प्राथमिक-वि०[सं०] १.प्रथम का। प्रथम सम्बन्धी। २ आरम्भ का। प्रारंभिक। ३. सबसे अधिक महत्त्व का। मुख्य।

प्राथमिकता-स्त्री० [सं०] १. 'प्राथमिक' होने का भाव। २. किसी विषय में किसी व्यक्ति या वस्तु को किसी कार्य के लिए औरों से पहले मिलनेवाला स्थान, अवसर आदि। जैसे-आज-कल रेलवे में खाद्य पदार्थों को और सब चीजों से प्राथमिकता मिलती है। (प्रायारिटी)

प्रादुर्भाव-पुं०[सं०] १. आविर्भाव। प्रकट होना। २ उत्पत्ति।

प्रादुर्भूत-वि०[सं०] १ जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। सामने आया हुआ। २.उत्पन्न।

प्रादेशिक-वि० [सं०] प्रदेश संबंधी। किसी प्रदेश का।

प्रादेशिकता-स्त्री० दे० 'प्रांतीयता'।

प्राधान्य-पुं० [सं०] प्रधानता।

प्राधिकार-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति को विशेष रूप से मिलनेवाला वह अधिकार या सुभीता जो उसे कुछ कठिनाइयों या बाधाओं से बचाता हो। (प्रिविलेज)

प्राधिकृत-वि० [सं०] जिसे प्राधिकार या सुभीता मिला हो। (प्रिविलेज्ड)

प्राध्यापक-पुं०[सं०] १.बड़ा अध्यापक ; विशेषत. वह अध्यापक जो महाविद्यालय या कालेज आदि में पढ़ाता हो। २. किसी विषय का अच्छा विद्वान्। विशेषज्ञ। (प्रोफेसर)

प्रान*-पुं०=प्राण।

प्रापक-वि० [सं०] प्राप्त करने या पाने-वाला। आदाता।

प्रापण-पुं० [सं०] [वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त] प्राप्ति। मिलना।

प्रापति*-स्त्री०=प्राप्ति।

प्रापना*-स० [सं० प्रापण] प्राप्त करना। पाना।

प्राप्त-वि० [सं०] १. मिला या पाया हुआ। २.सामने आया हुआ। उपस्थित।

प्राप्तव्य-वि० दे० 'प्राप्य'।

प्राप्ति-स्त्री० [सं०] १. उपलब्धि । मिलना । २. पहुँच । रसीद । ३. आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक, जिसके प्राप्त होने पर सब कामनाएँ पूरी हो सकती हैं । ४ मिलनेवाला या मिला हुआ धन । ५ लाभ । फायदा । ६ नाटक का सुखद उपसंहार ।

प्राप्तिका-स्त्री० [सं०प्राप्ति] वह पत्र जिसपर किसी वस्तु की प्राप्ति या पहुँच का उल्लेख हो । रसीद । पावती । (रिसीट)

प्राप्य-वि० [सं०] १.जो प्राप्त हो सके। मिल सकने के योग्य । २. जो किसी से आवश्यक रूप से प्राप्त करना हो। बाकी धन या वस्तु जो किसी से लेनी हो। (ड्यू)

प्राप्यक-पुं०[सं०] वह पत्र जिसमें किसी के जिम्मे या नाम पड़ी हुई रकम या किसी को दिये हुए माल का ब्योरा और मूल्य लिखा रहता है । बाकी या प्राप्य धन का सूचक पत्र । (बिल)

प्राबल्य-पुं० [सं०] प्रबलता ।

प्रभाविक-वि० [सं०] प्रभाव दिखलाने या उत्पन्न करनेवाला । (एफेक्टिव)

प्रामाणिक-वि० [सं०] [भाव० प्रामाणिकता] १ जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो । २. प्रमाण के रूप में मानने योग्य । ३ ठीक । सत्य । ४ जिसकी साख हो । ठीक माना जानेवाला।

प्रामाण्य-पुं०[सं०] १ प्रमाण का भाव । प्रामाणिकता । २. मान-मर्यादा ।

प्रायः-अव्य० [सं०] १ अधिक अवसरों पर । अकसर । २.लगभग। करीब करीब।

प्राय-पुं०[सं०] १.समान । बराबर । जैसे-नष्टप्राय । २. लगभग । जैसे-प्रायद्वीप ।

प्रायद्वीप-पुं० [सं० प्रायोद्वीप] तीन ओर पानी से घिरा हुआ स्थल का भाग ।

प्रायशः-अव्य०[सं०प्रायः] अकसर। प्रायः।

प्रायश्चित्त-पुं० [सं०] कोई पाप करने पर उसके दोष से मुक्त होने के लिए किया जानेवाला कोई धार्मिक या अच्छा काम।

प्रायिक-वि० [सं०] १. प्रायः या बहुधा होनेवाला । २. साधारणतः सभी अवसरों पर अपने सामान्य नियमों के अनुसार होता रहनेवाला । (यूजुअल) ३. गिनती विचार या अनुमान से बहुत कुछ ठीक । लगभग । (एप्रॉक्सिमेट)

प्रायोगिक-वि०[सं०] १. प्रयोग संबंधी । २ प्रयोग के रूप में किया जानेवाला । (अप्लाएड)

प्रारंभ-पुं० [सं०] १. किसी काम का चलने लगना । कार्य आरंभ या शुरू होना २ किसी कार्य के आरंभ का अंश या भाग । आरंभ । आदि । शुरू ।

प्रारंभिक-वि० [सं०] आरंभ, आदि या शुरू का । सबसे पहले होनेवाला । पहले का । (प्रिलिमिनरी)

प्रारब्ध-वि० [सं०] आरंभ किया हुआ । पुं०१ वह कर्म जिसका फल भोग आरंभ हो चुका हो । २. भाग्य । किसमत ।

प्रार्थना-स्त्री० [सं०] १. किसी से कुछ देने या करने के लिए नम्रतापूर्वक कहना । याचना । २ विनय । निवेदन । विनती । *स० प्रार्थना या विनती करना ।

प्रार्थनापत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो । निवेदनपत्र । अरजी । (एप्लिकेशन)

प्रार्थित-वि० [सं०] जिसके लिए प्रार्थना की गई हो ।

प्रार्थी-वि० [सं०प्रार्थिन्] [स्त्री० प्रार्थिनी]

प्रार्थना या निवेदन करनेवाला।
प्रालब्ध*-स्त्री० दे० 'प्रारब्ध'।
प्रालेख-पुं० [सं०] लेख्य, विधान आदि का वह पूर्व रूप जो काट छाँट या घटाने-बढ़ाने के लिए तैयार किया गया हो। मसौदा। (ड्राफ्ट)
प्रालेय-पुं०[सं०]१.हिम। पाला। २ बरफ।
प्राविधानिक-वि० [सं०] १. प्रविधान संबंधी। प्रविधान का। २.जिसे प्रविधान में स्थान मिला हो। (स्टैच्यूटरी)
प्रावृट-पुं० [सं०] वर्षा ऋतु।
प्राशन-पुं०[सं०] [वि०प्राशी] १. खाना। भोजन। २. चखना। जैसे-अन्न-प्राशन।
प्रासंगिक-वि० [सं०] १. प्रसंग संबन्धी। प्रसंग का। २. प्रसंग द्वारा प्राप्त। ३. किसी प्रसंग में आकस्मिक रूप से सामने आनेवाला (व्यय आदि)। (कन्टिन्जेन्ट)
प्रासंगिकी-स्त्री० [सं० प्रसंग] आकस्मिक रूप से उपस्थित होनेवाला ऐसा प्रसंग जिसमें कुछ विशेष कार्य या व्यय आदि करने की आवश्यकता आ पड़े। (कन्टिन्जेन्सी)
प्रासाद-पुं० [सं०] बड़ा और ऊँचा पक्का घर। विशाल भवन। महल।
प्रियंवद-वि० दे० 'प्रियभाषी'।
प्रिय-वि० [सं०] १. जिससे प्रेम हो। प्यारा। २. मनोहर। सुन्दर।
पुं० [स्त्री० प्रिया] पति। स्वामी।
प्रियतम-वि० [सं०] [स्त्री० प्रियतमा] सबसे बढ़कर प्यारा। परम प्रिय।
पुं० स्वामी। पति।
प्रियभाषी-वि० [सं०प्रियभाषिन्][स्त्री० प्रियभाषिणी] मीठी बातें कहनेवाला।
प्रियवर-वि० [सं०] अति प्रिय। बहुत प्यारा। (पत्रों आदि में संबोधन)
प्रियवादी-पुं० दे० 'प्रियभाषी'।
प्रिया-स्त्री० [सं०] १. नारी। स्त्री। २. पत्नी। जोरू। ३. प्रेमिका।
प्रीत-वि० [सं०] प्रीतियुक्त।
*स्त्री० दे० 'प्रीति'।
प्रीतम-वि० पुं०=प्रियतम।
प्रीति-स्त्री०[सं०] १ संतोष। २. आनंद। प्रसन्नता। ३. प्रेम। प्यार।
प्रीति-भोज-पुं० [सं०] मित्रों और बन्धु-बान्धवों के साथ बैठकर प्रेमपूर्वक खाना-पीना। दावत।
प्रूफ-पुं० [अं०] १. प्रमाण। सबूत। २. छपनेवाली चीज का वह छपा हुआ नमूना जिसमें अशुद्धियाँ ठीक की जाती हैं।
प्रेक्षण-पुं० [सं०] देखना।
प्रेक्षा-स्त्री० [सं०] १. देखना। २. नृत्य, अभिनय आदि देखना। ३. दृष्टि। निगाह। ४ प्रज्ञा। बुद्धि।
प्रेक्षागार(गृह)-पुं० [सं०] १. मंत्रणा-गृह। २. नाट्यशाला।
प्रेक्ष्य-वि० [सं०] १. जो देखा जाय। २ जो देखने के योग्य हो। प्रेक्षणीय।
प्रेत-पुं० [सं०] [भाव० प्रेतत्व] १. मरा हुआ मनुष्य। मृत प्राणी। २. वह कल्पित शरीर जो मरने के बाद मनुष्य धारण करता है। ३. पिशाचों की तरह की एक कल्पित देव-योनि। ४. बहुत ही दुष्ट, स्वार्थी और धूर्त व्यक्ति।
प्रेत-कर्म(कार्य)-पुं० [सं०] हिन्दुओं में मृत शरीर जलाने से सपिंडी तक के सब कार्य।
प्रेतगृह-पुं० [सं०] श्मशान।
प्रेतगेह*-पुं० दे० 'प्रेतगृह'।
प्रेतनी-स्त्री० [सं० प्रेत] भूतनी। चुड़ैल।
प्रेत-यज्ञ-पुं० [सं०] एक प्रकार का यज्ञ

जो प्रेत-योनि प्राप्त करने के लिए किया जाता था।

प्रेत-लोक-पुं० [सं०] यमपुर।

प्रेत-विद्या-स्त्री० [सं०] मरे हुए लोगों की आत्माओं को बुलाकर उनसे सम्पर्क स्थापित करके बात-चीत करने की विद्या।

प्रेतात्मा-स्त्री [सं०] मरे हुए व्यक्ति की आत्मा।

प्रेती-पुं० [सं० प्रेत+ई (प्रत्य०)] भूत-प्रेत की उपासना करनेवाला।

प्रेम-पुं० [सं०] १. वह मनोवृत्ति जो किसी को बहुत अच्छा समझकर सदा उसके साथ या पास रहने की प्रेरणा करती है। स्नेह। प्रीति। मुहब्बत। २ वह पारस्परिक स्नेह और व्यवहार जो प्राय. रूप और काम-वासना के कारण उत्पन्न होता है। प्रीति। प्यार। मुहब्बत।

प्रेम-गर्विता-स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने पति के अपने ऊपर होनेवाले प्रेम या अनुराग का अभिमान हो।

प्रेमजल-पुं० दे० 'प्रेमाश्रु'।

प्रेमपात्र-पुं० [सं०] वह जिससे प्रेम किया जाय।

प्रेमवंत-वि० [सं० प्रेम+वंत (प्रत्य०)] १. प्रेम से भरा हुआ। २. प्रेमी।

प्रेमवारि-पुं० दे० 'प्रेमाश्रु'।

प्रेमालाप-पुं० [सं०] प्रेमपूर्वक होनेवाली या मुहब्बत की बात-चीत।

प्रेमालिंगन-पुं० [सं०] प्रेम से गले लगाना। गले मिलना।

प्रेमाश्रु-पुं० [सं०] प्रेम के कारण आँखों से निकलेवाले आँसू।

प्रेमिक-पुं०=प्रेमी।

प्रेमिका-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिससे प्रेम किया जाय। प्रेयसी।

प्रेमी-पुं० [सं० प्रेमिन्] प्रेम करनेवाला।

प्रेयसी-स्त्री० [सं०] प्रेमिका। •

प्रेरक-पुं० [सं०] प्रेरणा करनेवाला।

प्रेरण-पुं० दे० 'प्रेरणा'।

प्रेरणा-स्त्री० [सं०] किसी को किसी कार्य में प्रवृत्त करने या लगाने की क्रिया या भाव। हलकी उत्तेजना।

प्रेरणार्थक क्रिया-स्त्री० [सं०] क्रिया का वह रूप जिससे सूचित होता है कि वह क्रिया किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा हुई है। जैसे-'पढ़ना' या 'पढ़ाना' का प्रेरणार्थक पढ़वाना' है।

प्रेरना*-स० [सं० प्रेरणा] प्रेरणा करना।

प्रेरित-वि० [सं०] १. भेजा हुआ। प्रेषित। २ जिसे दूसरे से प्रेरणा मिला हो।

प्रेषक-पुं० [सं०] वह जो किसी के पास कोई चीज भेजे। (सेंडर)

प्रेषण-पुं० [सं०] १ कोई चीज कहीं से किसी के पास भेजना। रवाना करना। (रेमिट) २.वह वस्तु जो कहीं से किसी को भेजी जाय। (रेमिटेन्स, कन्साइन्मेन्ट)

प्रेषितक-पुं० [सं०] वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय। (कन्साइन्मेन्ट)

प्रेषिती-पुं० [सं० प्रेषित] वह जिसके नाम कोई वस्तु प्रेषित की या भेजी जाय। (एड्रेसी, कन्साइनी)

प्रेस-पुं० [अं०] १. छापाखाना। २. छापने की कल। ३ समाचार-पत्रों का वर्ग। ४. रूई आदि चीजें दबाने की कल।

प्रेसिडेंट-पुं० [अं०] १. सभापति। २. राष्ट्रपति।

प्रोक्त-वि० [सं०] कहा हुआ। कथित।

प्रोक्ति-स्त्री० [सं०] दूसरे की कही हुई वह बात या उक्ति जो कहीं उद्धृत की गई हो या की जाय (कोटेशन)

प्रोग्राम-पुं० [अं०] कार्य-क्रम।

प्रोत्साहन-पुं० [सं०] [वि० प्रोत्साहित] कोई काम करने के लिए उत्साह बढ़ाना। हिम्मत बँधाना।

प्रोन्नति-स्त्री० [सं०] [वि० प्रोन्नत] वर्ग, पद, मर्यादा आदि में ऊपर चढ़ाना या उन्नत करना। (प्रोमोशन)

प्रोफेसर-पुं० दे० 'प्राध्यापक'।

प्रोषित-वि० [सं०] विदेश गया हुआ।

प्रोषित नायक (पति)-पुं० [सं०] वह नायक या पति जो विदेश में होने के कारण अपनी पत्नी के वियोग से दुखी हो।

प्रोषितपतिका(नायिका)-स्त्री० [सं०] (वह नायिका) जो अपने पति के परदेस जाने पर दुखी हो।

प्रौढ़-वि०[सं०][स्त्री०प्रौढ़ा, भाव०प्रौढ़ता] १. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। २ जो युवावस्था पार कर चला हो। ३. पक्का।

प्रौढ़ा-स्त्री० [सं०] १ अधिक वयसवाली स्त्री। २. शृंगार रस में काम-कला आदि अच्छी तरह जाननेवाली, तीस चालीस वर्ष की अवस्थावाली नायिका। ३. साहित्य में वह शब्द-योजना जिसके द्वारा रचना में प्रासाद गुण आता है।

प्लॉट-पुं० [अं०] १. कथावस्तु। २. षड्यंत्र। ३ जमीन का बड़ा टुकड़ा।

प्लावन-पुं० [सं०] [वि० प्लावित] १. पानी की बाढ़। २ खूब अच्छी तरह धोना। ३ तैरना।

प्लीहा-स्त्री० दे० 'तिल्ली'।

प्लुत-पुं० [सं०] दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का स्वर।

प्लेग-पुं० [अं०] १. महामारी। २. एक भीषण संक्रामक रोग। ताऊन।

फ

फ-हिन्दी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन और प-वर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

फंका*-पुं० [स्त्री० फंकी] १ दे० 'फंकी'। २. दे० 'फाँक'।

फंकी-स्त्री० [हिं० फंका] १ फाकने के लिए चूर्ण के रूप में कोई दवा। २. उतनी मात्रा जितनी एक बार में फांकी जाय।

फंग*-पुं०[सं० बंध] १ फंदा। २. प्रेम।

फंद-पुं० [सं० बंध] १. बंधन। २ फंदा। जाल। ३ छल। धोखा। ४. दुःख।

फँदना*-अ० [हिं० फंद] फंदे में फँसना। स० दे० 'फाँदना'।

फंदा-पुं० [सं० बंध] १. किसी को बाँधने या फँसाने के लिए बनाया हुआ रस्सी आदि का घेरा। २. पाश। जाल। ३. कष्टदायक बंधन।

फँदाना-स० [हिं० फंद] फंदे या जाल में फँसाना।
स० [हिं० फाँदना] कुदाना।

फँसना-अ० [हिं० फाँस] १. बंधन या फंदे में इस प्रकार पड़ना कि निकलना कठिन हो। २. अटकना। उलझना।

फँसाना-स० [हिं० फँसना] १. फंदे में लाना या उलझाना। २. अपने जाल या वश में लाना।

फँसिहारा*-वि० [हिं० फाँस] [स्त्री० फँसिहारिन] १. फँसानेवाला। २. फाँसी देने या लगानेवाला।

फँसौरी-स्त्री० [हिं० फाँसी] १. फाँसी

की रस्सी। २. जाल। फंदा।

फक-वि० [अ० फ़क़] १. स्वच्छ। २. सफेद। ३. जिसका रंग बिगड़ गया हो।

फकत-वि० [अ०] केवल। सिर्फ।

फकीर-पुं० [अ०] [स्त्री० फकीरिन, फकीरनी, भाव० फकीरी] १. भीख माँगनेवाला। भिखमंगा। भिक्षुक। २. संसार-त्यागी। विरक्त। ३. निर्धन। गरीब।

फक्कड़-पुं० [सं० फक्किका] १. गाली-गलौज। गंदी बातें। २ सदा दरिद्र परन्तु मस्त रहनेवाला व्यक्ति। ३. वाहियात और उद्दंड आदमी।

फक्कड़बाजी-स्त्री० [हि० फक्कड़+फा० बाजी] गंदी और वाहियात बातें बकना।

फखर-पुं० [फा० फ़ख़] गौरव।

फग*-पुं० दे० 'फंग'।

फगुआ-पुं० १. दे० 'फाग'। २. दे० 'होली'।

फगुनहट-स्त्री० [हि० फागुन] फागुन में चलनेवाली तेज हवा।

फजर-स्त्री० [अ०] सबेरा।

फजल-पुं० [अ० फ़ज़्ल] अनुग्रह।

फजीहत-स्त्री० [अ०] दुर्दशा। दुर्गति।

फजूल-वि० [अ० फ़ज़ूल] व्यर्थ।

फजूल-खर्च-वि० [फा०] [भाव० फजूल-खर्ची] व्यर्थ और बहुत खर्च करनेवाला। अपव्ययी।

फटक*-पुं० दे० 'स्फटिक'।

फटकन-स्त्री० [हिं० फटकना] १ फटकने की क्रिया या भाव। २. वह रद्दी अंश जो कोई चीज फटकने पर निकले।

फटकना-स० [अनु० फट] १ फट फट शब्द करना। २. पटकना। ३. मारने के लिए चलाना (अस्त्र आदि)। ४. सूप में अन्न आदि रखकर उसे उछालते हुए साफ करना। ५. रूई आदि धुनना।

अ० [अनु०] १. कुछ पास जाना या पहुँचना। २. फड़फड़ाना।

फटकरना-अ० [हिं० फटकारना] फटकारा जाना।

स० [हिं० फटकना] फटकना।

फटका-पुं० [अनु०] १. रूई धुनने की धुनकी। २. काव्य के रस आदि गुणों से हीन कोरी तुक-बंदी।

पुं० दे० 'फाटक'।

फटकाना-स० [हिं० फटकना] १. फटकने का काम दूसर से कराना। २. दूर करना। हटाना। ३. फेंकना।

फटकार-स्त्री० [हिं० फटकारना] १. फटकारने की क्रिया या भाव। २ झिड़की। भर्त्सना। ३. दे० 'फिटकार'।

फटकारना-स० [अनु०] १. इस प्रकार झटका मारना कि ऊपर की चीजें छितरा-कर गिर जायँ। २ कुछ अनुचित रूप से धन प्राप्त करना। ३ कपड़ा पटक पटककर साफ करना। ४. खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना। ५ शस्त्र आदि चलाना।

फटन-स्त्री० [हिं० फटना] १. फटने की क्रिया या भाव। २. फटने के कारण होनेवाला शिगाफ या दरार। ३. (शरीर के किसी अंग में) फटने की-सी होने-वाली पीड़ा।

फटना-अ० [हिं० 'फाड़ना' का अ० रूप] १. ऊपर के तल में इस प्रकार दरार पड़ना कि कुछ भाग अलग हो जाय।

मुहा०-**छाती फटना**=बहुत दुःख होना। **मन या चित्त फटना**=मन में रोष होने पर संबंध रखने को जी न चाहना। **पद-फटे-हाल**-बहुत ही दुरवस्था में। २.अलग या पृथक् हो जाना। ३. द्रव पदार्थ में सार भाग से पानी अलग हो

जाना। जैसे-दूध फटना। ४. किसी बात का बहुत•अधिक होना।
मुहा०-फट पड़ना=१. अचानक आ पहुँचना। २ बहुत अधिक मात्रा में आ पहुँचना या प्राप्त होना।

फटफटाना-स० [अनु०] फटफट शब्द करना।
अ० १. फड़फड़ाना। २ कठिन स्थिति से निकलने के लिए जोर लगाना। ३. फटफट शब्द होना।

फटहा†-वि०[हि०फटना] १ फटा हुआ। २. गाली-गलौज बकनेवाला। लुच्चा।

फटा-वि० [हि० फटना] फटा हुआ।
मुहा०-किसी के फटे में पैर देना=दूसरे की आपत्ति अपने ऊपर लेना।

फटिक-पुं० [सं० स्फटिक] १ बिल्लौर। स्फटिक। २ संग-मरमर।

फड़-पुं० [सं० पण] १. वह जगह जहाँ दूकानदार बैठकर माल खरीदते और बेचते हैं। २ जूआ खेलने का स्थान।
पुं० [सं० पटल] तोप लादने की गाड़ी।

फड़कन-स्त्री० [अनु०] फड़कने की क्रिया या भाव।

फड़कना-अ० [अनु०] १ रह-रहकर नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना। फड़फड़ाना। जैसे-भुजा या आँख फड़कना।
मुहा०-फड़क उठना या जाना=बहुत प्रसन्न होना। बोटी बोटी फड़कना=अत्यंत चंचल होना।
२. कुछ करने के लिए व्यग्र होना।

फड़काना-स० हि० 'फड़कना' का प्रे०।

फड़नवीस-पुं० [फा० फर्दनवीस] मराठों के राज्य-काल का एक बड़ा अधिकारी।

फड़फड़ाना-स० दे० 'फटफटाना'।

फड़बाज-पुं० [हि० फड़+फा० बाज] वह जो लोगों को अपने यहाँ बैठाकर जूआ खेलाता और उसके बदले में उनसे कुछ धन लेता हो।

फड़िया-पुं० [हि० फड़] १ खुदरा अन्न बेचनेवाला। २. फड़बाज।

फण-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० फणी] १. साँप का फन। २ रस्सी का फंदा।

फणधर-पुं० [सं०] साँप।

फणीन्द्र-पुं० [सं०] १. शेषनाग। २. बड़ा साँप।

फणी-पुं० [सं० फणिन्] साँप।

फतवा-पुं० [अ०] किसी बात के उचित या अनुचित होने के सम्बन्ध में (विशेषतः मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार) दी जानेवाली व्यवस्था।

फतह-स्त्री० [अ०] १. विजय। जीत। २ सफलता।

फतिंगा-पुं० दे० 'पतंगा'।

फतीला-पुं० दे० 'पलीता'।

फतूर-पुं० [अ०] १. विकार। दोष। २. उपद्रव। उत्पात।

फतूरिया-वि० [अ० फतूर] फतूर या बखेड़ा खड़ा करनेवाला। उपद्रवी।

फतूह-स्त्री० [अ०] १. विजय। जीत। २ लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

फतूही-स्त्री० [अ० फतूह] १. बिना बाँह की एक प्रकार की कुरती। सदरी। २. दे० 'फतूह'।

फतेह*-स्त्री० दे० 'फतह'।

फन-पुं० [सं०फण] कुछ साँपों के सिर का वह रूप जो उसके फैलकर पत्ते का आकार धारण करने पर होता है।
पुं० [फा०फ़न] १ गुण। खूबी। २.विद्या। ३. कला-कौशल। ४. छल कपट।

फनाना*-अ०, स० [?] तैयार करना या

कराना।

फनिंद*-पुं० दे० फणींद्र'।

फनि-पुं० १.दे० 'फणी'। २.दे० 'फण'।

फनूस*-पुं० दे० 'फानूस'।

फन्नी-स्त्री० दे० 'पच्चर'।

फफसा†-पुं० [सं० फुस्फुस] फेफड़ा। वि० [अनु०] १ फूला हुआ और अंदर से पोला। २ (फल) जिसका स्वाद बिगड़ गया हो। बुरे स्वादवाला।

फफूँदी*-स्त्री० १. दे० 'नीबी'। २ दे० 'भुकड़ी'।

फफोला-पुं० [सं० प्रस्फोट] शरीर पर पड़नेवाला छाला।

मुहा०-दिल के फफोले फोड़ना=कुछ कहकर अपने मन की जलन या क्रोध शान्त करना।

फबती-स्त्री० [हिं० फबना] व्यंग्य।

मुहा०-फबती उड़ाना=हँसी उड़ाना। उपहास करना। फबती कसना= चुभती हुई या व्यंग्यपूर्ण बात कहना।

फबन-स्त्री० [हिं० फबना] १. फबने की क्रिया या भाव। २. शोभा। छवि।

फबना-अ० [सं० प्रभवन] सुंदर या सुहावना लगना। खिलना।

फबि*-स्त्री० दे० 'फबन'।

फबित*-वि० [हिं० फब+इत (प्रत्य०)] जो फब रहा हो। देखने मे भला या फबता हुआ जान पड़नेवाला।

फबीला-वि० [हिं०फबना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० फबीली] सुहावना या सुन्दर दिखाई देनेवाला।

फर*-पुं० दे० 'फल'।

फरक-पुं० [अ० फ़र्क] १. पार्थक्य। अलगाव। २. भेद। अंतर। ३. दूरी। क्रि० वि० अलग। पृथक्।

फरकन-स्त्री० दे० 'फड़क'।

फरकना*-अ० दे० 'फड़कना'।

फरकाना*-स०[हिं०फरक] अलग करना।

फरजी-वि०[फा०] १.नकली। बनावटी। २ माना हुआ। कल्पित। पुं० शतरंज में 'वज़ीर' नाम का मोहरा।

फरद-स्त्री० [अ० फ़र्द] १. स्मरण रखने के लिए लिखा हुआ लेखा या सूची आदि। २ एक साथ काम में आनेवाली या रहनेवाली दो चीजों में से कोई एक। वि० अनुपम। बे-जोड़।

फरना*-अ० दे० 'फलना'।

फरफंद-पुं० [हिं० फर+ फंदा] [वि० फरफंदी] १. छल-कपट। २. नखरा।

फरमा-पुं० [अं० फ्रेम] लकड़ी, मिट्टी, मोम, धातु आदि का वह साँचा जिसमें ढालकर चीजें बनाई जाती है। पु० [अं० फ़ॉर्म] कागज का पूरा ताव जो एक बार में छपता है।

फ़रमाइश-स्त्री० [फा०][वि० फरमाइशी] कोई चीज लाने या बनाने अथवा कोई काम करने के लिए दी जानेवाली आज्ञा।

फरमाइशी-वि० [फा०] १ फरमाइश करके बनवाया हुआ। २. बहुत अच्छा और बढ़िया।

फरमान-पुं० [फा०] १. राज्य या राजा की आज्ञा। २. वह पत्र जिसपर इस प्रकार की आज्ञा लिखी हो।

फरमाना-स० [फा० फरमान] किसी बड़े का कुछ कहना। (आदरार्थक)

फरश-पुं० [अ० फ़र्श] १. बैठने आदि के लिए समतल और पक्की भूमि। २. ऐसी भूमि पर बिछाया हुआ कपड़ा।

फरशी-स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बड़ा हुक्का। गुड़गुड़ी।

फरसा-पुं०[सं० परशु] १. एक प्रकार की तेज धार की कुल्हाड़ी। २ फावड़ा।

फरहरना‡-अ० [अनु० फरफर] १ फरफराना। २. फहराना।

फरहरा-पुं० दे० 'झंडा'।

फरहरी‡-स्त्री० दे० 'फलहरी'।

फलहर*-पुं० दे० 'फलाहार'।

फराक*-पुं० [फा० फ़राख] मैदान। वि० लंबा-चौड़ा। विस्तृत। [अं० फ्रोक] स्त्रियों और बच्चों का एक प्रकार का पहनावा।

फराख-वि० [फा०] लंबा-चौड़ा।

फरागत-स्त्री० [अ०] १. छुटकारा। मुक्ति। २. निश्चितता। बेफिक्री। ३. पाखाना फिरना।

फराना*-स० दे० 'फलाना'।

फ़रामोश-वि० [फा०] भूला हुआ।

फरार-वि० [अ०] भागा हुआ।

फरास*-पु० दे० 'फर्राश'।

फरियाद-स्त्री० [फा०] १. अत्याचार या दुःख से बचाये जाने के लिए होनेवाली नालिश या प्रार्थना। २.निवेदन। प्रार्थना।

फरियादी-वि०[फा०]फरियाद करनेवाला।

फरिश्ता-पुं० [फा०] १. ईश्वर का दूत। (मुसल०) २. देवता।

फरी-स्त्री० [सं० फल] चमड़े की वह छोटी ढाल जिससे गतके का वार रोकते हैं।

फरीक-पुं० [अ०] १. प्रतिद्वंद्वी। विपक्षी। २. दो पक्षों में से कोई एक पक्ष या किसी पक्ष का आदमी।

यौ०-फरीक सानी=प्रतिपक्षी। (कानून)

फरेब-पुं० [फा०] छल। कपट।

फरेबी-पुं० [फा० फ़रेब] फरेब या छल-कपट करनेवाला। धोखेबाज। कपटी।

फरेरी‡-स्त्री० [हिं० फल] जंगली फल।

फरोश-पुं० [फा०] [भाव० फरोशी] बेचनेवाला। (यौ० के अंत में, जैसे-मेवा फरोश।

फर्क-पुं० दे० 'फ़रक़'।

फर्ज-पुं० [अ०] १. कर्तव्य कर्म। २. मान लेना। कल्पना।

फर्जी-वि० दे० 'फरजी'।

फर्द-स्त्री० दे० 'फरद'।

फर्राटा-पुं० [अनु०] वेग। तेजी।

फर्रास-पुं० [अ०] [भाव० फर्राशी] खेमा या तंबू गाड़ने, फर्श बिछाने, सफाई करने और दीपक जलाने आदि का काम करनेवाला आदमी।

फर्श-पु० दे० 'फरश'।

फलंक-पुं० दे० 'फलाँग'। पुं० [फा० फलक] आकाश।

फलंगना*-अ० दे० 'फलांगना'।

फलत-स्त्री० [हिं० फलना+अंत (प्रत्य०)] (वृक्षों आदि के) फलने की क्रिया या भाव।

फल-पुं० [सं०] १. वह वस्तु जो किसी विशिष्ट ऋतु में खेतों में पैदा होती है। २. परिणाम। नतीजा। ३. धर्म की दृष्टि से सुख, दुःख आदि के रूप में मिलनेवाला कर्म का परिणाम। ४.शुभ कर्मों के ये चार परिणाम--अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ५. फलित ज्योतिष में सुख, दुःख आदि के रूप में होनेवाले ग्रहों के योग या स्थिति का परिणाम। ६. प्रतिफल। बदला। ७. बाण, छुरी आदि का वह धारदार भाग जिससे आघात किया जाता है। ८. गणित की क्रिया का परिणाम-सूचक अंक।

फलक-पुं० [सं०] १. तख्ता। पट्टी। २. वह लंबा-चौड़ा कागज जिसपर कोई मानचित्र, विवरण या कोष्ठक अंकित

हो। फरद। ३. परत। तबक। ४. पत्र। पृष्ठ। ५. हथेली।

पुं० [अ०] आकाश।

फल-कर-पुं० [हिं० फल+कर] वृक्षों के फलों पर लगनेवाला कर।

फलतः*-अव्य० [सं०] फल के रूप में। इसलिए।

फलत-स्त्री० [हिं० फल] वृक्षों में लगनेवाले फलों का समूह। पेड़ों से फलों आदि के रूप में होनेवाली उपज।

फलद-वि० [सं०] फल देनेवाला।

फल-दान-पुं० [हिं० फल+दान] विवाह सम्बन्ध स्थिर करने की एक रसम। (हिन्दू)

फलना-अ० [सं० फलन] १ वृक्षों का फल उत्पन्न करना। फलों से युक्त होना। २. शुभ फल देना। लाभदायक होना।

यौ०-फलना-फूलना=सुखी और सम्पन्न होना।

३. शरीर में छोटे छोटे दाने का निकलना।

फल भरना-स्त्री० [हिं० फल+भरना] फलों से युक्त या लदे होने का भाव।

फलवान्-वि० [सं०] १. फलों से युक्त। (वृक्ष) २. सफल।

फलहरी-स्त्री० [हिं० फल] वृक्षों के फल।

फलहार-पुं० दे० 'फलाहार'।

फलहारी-वि० [हिं० फलाहार] जिसकी गिनती फलहार में हो।

फलाँग-स्त्री० [सं० प्रलंघन] [क्रि० फलाँगना] १. एक जगह से उछलकर दूसरी जगह जाना। कुदान। २. एक फलाँग भर की दूरी या अन्तर।

फलाकना*-अ० दे० 'फलाँग' के अन्तर्गत 'फलाँगना'।

फलाना-वि० [अ०फलाँ] [स्त्री०फलानी] कोई अनिश्चित या अ-कथित। अमुक।

स० हिं० 'फलना' का प्रे०।

फलाहार-पुं० [सं०] १. केवल फल खाना। २. वह खाद्य पदार्थ जो केवल फलों से बना हो और जिसमें अन्न का अंश न हो।

फलाहारी-पुं० [सं० फलाहारिन्] [स्त्री० फलाहारिणी] केवल फल खाकर निर्वाह करनेवाला।

वि० दे० 'फलहारी'।

फलित-वि० [सं०] १ जिसका या जिसमें फल हो या हुआ हो। २. फल सम्बन्धी। फल का।

यौ०-फलित ज्योतिष=ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विचार होता है।

फली-स्त्री० [हिं० फल+ई (प्रत्य०) छोटे बीजोंवाला लंबा और चिपटा फल।

फलीता-पुं० दे० 'पलीता'।

फलीभूत-वि० [सं०] जिसका फल या परिणाम हो या हुआ हो।

फलोदय-पुं० [सं०] लगाई हुई पूँजी से होनेवाला लाभ। फायदा। (प्रॉफिट)

फसद-स्त्री० [अ० फस्द] नस छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

मुहा०-फसद खुलवाना या लेना= १. शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। २. मूर्खता या पागलपन की दवा करना।

फसल-स्त्री० [अ० फ़स्ल] १. ऋतु। मौसिम। २. समय। काल। ३. खेत की उपज। फलत। पैदावार।

फसली-वि० [सं०] फसल या ऋतु का। पुं० अकबर का चलाया हुआ एक संवत्, जिसका व्यवहार प्रायः खेती-बारी के कामों में होता है।

स्त्री० विशूचिका। हैजा।

फसाद-पुं० [अ०] [वि० फसादी] १. बिगाड़ । खराबी । २ उत्पात । उपद्रव । ३. लड़ाई । हुज्जत ।

फहरना-अ० [सं० प्रसरण] [भाव० फहर, फहरान] वायु में उड़ना या फरफराना । (झंडा आदि)

फहराना-स० [सं० प्रसारण] झंडा, कपड़ा आदि वायु में उड़ाना ।
*अ० दे० 'फहरना' ।

फाँक-स्त्री० [सं० फलक] फल आदि का काटा या चीरा हुआ लंबोतरा टुकड़ा ।

फाँकना-स० [हिं० फंकी] दाने या चूर्ण खाने के लिए ऊपर से मुँह में डालना ।
मुहा०-धूल फाँकना=व्यर्थ इधर-उधर घूमकर दुर्दशा भोगना ।

फाँट-पुं० [देश०] काढ़ा । क्वाथ ।

फाँटना-स० [हिं० फांट] काढ़ा बनाना ।

फाँड़*-पुं० दे० 'फांड़ा' ।

फाँड़ा-पुं० [सं० भांड ?] धोती आदि का वह अंश जो कमर पर लपेटकर बाँधा जाता है । मुहा० के लिए दे० 'फेंट' ।

फाँदना-अ० [सं० फणन] [भाव० फाँद] उछलना । (कूदना के साथ)
स० उछलकर किसी चीज को लांघते हुए उसके उस पार जाना ।
* स० [हिं० फंदा] फंदे में फँसाना ।

फाँस-स्त्री० [सं० पाश] १. पाश । फंदा । २. वह फंदा जिसमें पशु-पक्षी फँसाये जाते हैं । ३. शरीर में चुभा हुआ लकड़ी आदि का लंबा छोटा टुकड़ा ।

फाँसना-स० = फँसाना ।

फाँसी-स्त्री० [सं० पाश] १. फँसाने का फंदा । पाश । २. रस्सी का वह फंदा जिसमें गला फँसाने से दम घुटता और आदमी मर जाता है । ३.इस प्रकार गला घोंटकर दिया जानेवाला प्राण-दंड ।
मुहा०-फाँसी चढ़ाना=राज्य की ओर से किसी को प्राण-दंड देने के लिए उसके गले में फन्दा लगाना ।

फाइल-स्त्री० दे० 'नत्थी' ।

फाका-पुं० [अ० फाक़ः] उपवास ।

फाके मस्त-वि० [फा०] खाने-पीने का बहुत कष्ट उठाकर भी मस्त रहनेवाला ।

फाग-पुं० [हिं० फागुन] १. फागुन का उत्सव जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग डालते हैं । २. इस उत्सव के समय गाया जानेवाला गीत ।

फागुन-पुं० [सं० फाल्गुन] माघ के बाद का महीना । फाल्गुन ।

फाटक-पुं० [सं० कपाट] बड़ा दरवाजा ।

फाटना*-अ० दे० 'फटना' ।

फाड़ना-स० [सं० स्फाटन] [भाव० फाड़न] १ खींच से चीरकर दो भागों में करना । विदीर्ण करना । चीरना । जैसे-कपड़ा या पेट फाड़ना । २. संधि या जोड़ फैलाकर खोलना । जैसे-मुँह फाड़ना । ३. किसी गाढ़े द्रव पदार्थ में ऐसा विकार उत्पन्न करना कि पानी से सार भाग अलग हो जाय । जैसे-दूध फाड़ना ।

फानूस-पुं० [फा०] छत में टाँगने के लिए एक डंडे के चारों ओर लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें मोमबत्तियां जलती हैं ।

फावना*-अ० = फबना ।

फायदा-पुं० [अ० फाइदः] १. लाभ । नफा । २ हित । भलाई । ३. अच्छा फल या प्रभाव । (औषध आदि का)

फायदेमंद-वि० [फा०] लाभदायक ।

फार*-पुं० दे० 'फाल' ।

फारखती-स्त्री० [अ० फ़ारिग़+खती] इस बात का सूचक लेख कि अब हमारा कोई प्राप्य या अधिकार नहीं रह गया।
फारस-पुं० दे० 'पारस'। (देश)
फारसी-स्त्री० [फा०] फारस देश की भाषा जो संस्कृत परिवार का है।
फाल-स्त्री० [सं०] लहे का वह फल जो हल के नीचे लगा रहता है और जिससे जमीन खुदती या जुतती है।
स्त्री० [सं० फलक] १. पतले दल का कटा हुआ टुकड़ा। २. दे० 'डग'।
फालतू-वि० [हिं० फाल=टुकड़ा] १ आवश्यकता से अधिक। अतिरिक्त। २. व्यर्थ। निकम्मा।
फालूदा-पुं० [फा०] गेहूँ के सत्त से बननेवाला एक प्रकार का पेय पदार्थ।
फाल्गुन-पुं० दे० 'फागुन'।
फावड़ा-पुं० [सं० फाल] मिट्टी खोदने का फरसा। कुदाल।
फासला-पुं० [अ०] दूरी। अन्तर।
फाहा-पुं० [स० फाल] तेल अतर, मरहम आदि में तर की हुई रूई या कपड़े का टुकड़ा।
फाहिशा-वि० [अ०] छिनाल। (स्त्री)
फिकर-स्त्री० दे० 'फिक्र'।
फिकरा-पुं० [अ०] १. वाक्य। २ दम-बुत्ता। झांसा पट्टी। ३ व्यंग्य। फबती।
फिकैत-पुं० दे० 'फेकैत'।
फिक्र-स्त्री० [अ०] १. चिंता। सोच। २. ध्यान। विचार। ३ उपाय। यत्न।
फिटकार-स्त्री० [हिं० फिट (अनु०)+ कार (प्रत्य०)] धिक्कार। लानत।
फिटकिरी-स्त्री० [सं० स्फटिका] सफेद रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्रायः औषध के काम आता है।
फिटन-स्त्री० [अं०] एक प्रकार की बड़ी और खुली घोड़ा-गाड़ी।
फिट्टा-वि० [हिं० फिट] १. जिसपर फिटकार पड़ी हो। २. (अपमानित या लज्जित होने के कारण) श्री-हत।
फितूर-पुं० दे० 'फतूर'।
फिरंग-पुं० [अं० फ्रांक] १. युरोप का एक प्रधान देश। २. गरमी या आतशक नामक रोग।
फिरंगी-वि० [हिं० फिरंग] १. फिरंग देश में रहनेवाला। गोरा। २. फिरंग देश का। स्त्री० विलायती तलवार।
फिर-वि० [हिं० फिरना] १. एक बार हो जाने पर और एक बार। दोबारा। पुनः। यौ०-फिर फिर=बार बार।
२. भविष्य में किसी समय। बाद में।
३ उस दशा में। तब।
मुहा०-फिर क्या है ? = तब कोई हर्ज की बात नहीं है। तब ठीक है।
४. इसके अतिरिक्त या सिवा।
फिरका-पुं० [अ०] १. जाति। २. जत्था। दल। ३. पथ। संप्रदाय।
फिरकी-स्त्री० [हिं० फिरना] १. खूब घूमनेवाला काठ का एक गोल छोटा खिलौना। फिरहरी। २. कील के आधार पर घूमनेवाला कोई गोल टुकड़ा या चक्कर। ३ चकई नाम का खिलौना।
फिरगान*-वि० दे० 'फिरंगी'।
फिरता-वि० [हिं० फिरना] [स्त्री० फिरती] वापस किया या लौटाया हुआ।
फिरना-अ० [हिं० 'फेरना' का अ०] १. पीछे की ओर लौटकर आना। वापस होना। २. चक्कर खाना। घूमना। ३. चलना। टहलना। ४. मरोड़ा या बटा जाना। ५. मुड़ना। घूमना।

मुहा०-किसी ओर फिरना=प्रवृत्त होना। जी फिरना=चित्त विरक्त होना। ६. उलटा या विपरीत होना। मुहा०-सिर फिरना=बुद्धि भ्रष्ट होना। ७. मुकरना। ८. प्रचारित या घोषित होना। जैसे-डुग्गी फिरना। ९ किसी वस्तु पर पोता, लगाया या चढ़ाया जाना। जैसे-चूना या रंग फिरना।

फिरनी-स्त्री० [फा० फीरीनी] एक प्रकार की आटे की खीर।

फिराक-पुं० [अ०] १. वियोग। बिछोह। २. चिन्ता। सोच। ३ खोज।

फिराना-स० [हिं० फिरना] १. फिरने में प्रवृत्त करना। २. दे० 'फेरना'।

फिस-वि० [अनु०] कुछ नहीं। (व्यंग्य) पद-टाँयँ टाँयँ फिस = बहुत बातें होने पर भी अन्त में कुछ फल नहीं।

फिसड्डी-वि० [अनु० फिस] प्रतियोगिता, प्रयत्न आदि में सबसे पिछड़ा हुआ।

फिसलन-स्त्री० [हिं० फिसलना] ऐसी चिकनाहट जिसपर पैर फिसले।

फिसलना-अ० [सं० प्र+सरण] १. गीली चिकनाहट के कारण पैर आदि रखने पर अपने स्थान से आगे बढ़ या पीछे हट जाना। २.लोभ से प्रवृत्त होना।

फिहरिस्त-स्त्री० [फा०] सूची।

फी-अव्य० [अ०] प्रत्येक।

फीका-वि० [सं० अपक्व] १. स्वाद, रस आदि के विचार से हीन या निकृष्ट। २. रंग, कांति, शोभा आदि के विचार से हीन या तुच्छ।

फीता-पुं० [फा०] कोई वस्तु लपेटने, बाँधने आदि के लिए एक विशेष प्रकार की कपड़े की लम्बी धज्जी।

फीरनी-स्त्री० दे० 'फिरनी'।

फीरोजा-पुं० [फा०] [वि० फीरोजी] हरापन लिये नीले रंग का एक रत्न।

फील-पुं० [फा०] हाथी।

फीलबान-पुं० [फा०] हाथीवान।

फुंकना-अ० दे० 'फुकना'।

फुँदना-पुं० [हिं०फूल+फंदा] डोरी, झालर आदि के सिरे पर शोभा के लिए बना हुआ फूल के आकार का गुच्छा। झब्बा।

फुसी-स्त्री० [सं०पनसिका] छोटा फोड़ा।

फुकन-स्त्री० [हिं० फूँकना] १. फूँकने की क्रिया या भाव। २ जलन। दाह।

फुकना-अ० [हिं० फूँकना] [प्रे० फुकवाना] १. फूका या जलाया जाना। २. नष्ट या बरबाद होना। (धन) पुं० १. शरीर का वह अवयव जिसमें मूत्र रहता है। २. दे० 'फुकनी'।

फुकनी-स्त्री० [हिं० फूँकना] वह नली जिससे फूँक मारकर आग सुलगाते हैं।

फुट-वि० [सं० स्फुट] १ जोड़े या युग्म में से एक। २ एकाकी। अकेला। ३ अलग। पुं० [अं०] लबाई आदि नापने की १२ इंच की एक नाप।

फुटकर(कल)-वि० [सं० स्फुट+कर (प्रत्य०)] १. विषम। फुट। अकेला। २ अलग। पृथक्। ३. कई प्रकार का। मिला-जुला। ४. थोड़ा थोड़ा। इकट्ठा नहीं। 'थोक' या 'इकट्ठा' का उलटा।

फुटकी-स्त्री० [सं० फुटक] किसी वस्तु पर पड़ा हुआ कोई छोटा दाग या दाना।

फुट-मत-पुं० [हिं० फुट+मत] मत-भेद। फूट।

फुदकना-अ० [अनु०] चिड़ियों का उछलते हुए चलना।

फुन*-अव्य० [सं० पुनः] पुनः। फिर।

फुनगी-स्त्री० [सं० पुलक] पौधे की

शाखाओं का ऊपरी भाग।

फुप्फुस-पुं० [सं०] फेफड़ा।

फुफँदी-स्त्री० दे० 'नीवी'।

फुफकारना-अ० [अनु०] [भाव० फुफकार] क्रोध में साँप का फू फू करते हुए मुँह बढाना। फूत्कार करना।

फुफू*-स्त्री० दे० 'बूआ'।

फुफेरा-वि० [हिं० फूफा] [स्त्री० फुफेरी] फूफा के सम्बन्ध से सम्बद्ध या रिश्ते में। जैसे- फुफेरा भाई, फुफेरी सास।

फुर।-वि० [हिं० फुरना] सत्य। सच्चा।

फुरती-स्त्री० [सं० स्फूर्ति] चटपट काम करने की शक्ति या भाव। शीघ्रता। जल्दी।

फुरतीला-वि० [हिं० फुरती] [स्त्री० फुरतीली] हर काम फुरती से करनेवाला। तेज।

फुरना*-अ० [सं० स्फुरण] १ सामने आना। प्रकट होना। २. चमकना। ३. फड़कना। फड़फड़ाना। ४. मुँह से शब्द निकलना। ५. पूरा या ठीक उतरना।

फुरसत-स्त्री० [अ०] १ काम से खाली होने का समय या भाव। अवकाश। छुट्टी। २. रोग में होनेवाली कमी।

फुरहरी-स्त्री० [अनु०] १.चिड़ियों का पर फड़फड़ाना। फड़फड़ाहट। २ दे०'फुरेरी'।

फुराना*-स० [हिं० फुर] बात सच्ची करके दिखलाना। कथन पूरा उतारना। अ० दे० 'फुरना'।

फुरेरी-स्त्री० [हिं० फुरफुराना] १. अतर, तेल, दवा आदि में डुबाई हुई वह सींक जिसके सिरे पर रूई लिपटी हो। २. रोमांच के साथ होनेवाली कँपकपी।

मुहा०-फुरेरी लेना=१.काँपना। थरथराना। २. चिड़ियों का पर फड़फड़ाना।

फुलका-पुं० [हिं० फूलना] १. हलकी, पतली और फूली हुई रोटी। चपाती। २. दे० 'छाला'।

फुलझड़ी-स्त्री० [हिं० फूल+झड़ना] १. एक प्रकार की छोटी लंबी आतशबाजी। २. झगड़ा लगानेवाली बात।

फुलवाई*-स्त्री०=फुलवारी।

फुलवार*-वि० दे० 'प्रफुल्ल'।

फुलवारी-स्त्री० [हिं० फूल+वारी] १ फूलों के पौधों का छोटा बाग। पुष्पवाटिका। उद्यान। बगीचा। २. कागज के बने हुए फूल और पेड़ जो बरात के साथ शोभा के लिए चलते हैं। ३ बाल-बच्चे और परिवार के लोग।

फुलहारा-पुं०[स्त्री०फुलहारी]दे०'माली'।

फुलाना-स० [हिं० फूलना] फूलने में प्रवृत्त करना। विशेष दे० 'फूलना'।

मुहा०-मुँह फुलाना=रोष प्रकट करनेवाली आकृति बनाना।

*अ० दे० 'फूलना'।

फुलायल*-पुं०=फुलेल।

फुलिंग*-पुं०=स्फुलिंग।

फुलिया-स्त्री० [हिं० फूल] फूल के आकार का काँटा या कील।

फुलेल-पुं० [हिं० फूल+तेल] फूलों से बासा या सुगन्धित किया हुआ तेल।

फुलौरी-स्त्री० [हिं०फूल+बरी] पीसी हुई दाल की पकौड़ी।

फुल्ल-वि०[सं०] [भाव०फुल्लता] १.खिला या फूला हुआ। विकसित। २. प्रसन्न।

फुसकारना*-अ०=फुफकारना।

फुसफुसा-वि० [अनु०] जल्दी टूटने या चूर-चूर हो जानेवाला।

फुसफुसाना-स० [अनु०] बहुत ही धीमे स्वर से कान में कुछ कहना।

फुसलाना-स० [हिं० फिसलाना] मीठी

मीठी बातें कहकर सन्तुष्ट या अनुकूल करना ; बहकाना । (जैसे-बच्चों को)

फुहार-स्त्री० [सं० फूत्कार] १. ऊपर से गिरनेवाले जल के बहुत छोटे टुकड़े, छींटे या बूँदें । २ हलकी वर्षा । झींसी ।

फुहारा-पुं० [हिं० फुहार] वह उपकरण जिसमें से ऊपरी दबाव के कारण जल की पतली धार या छींट जोर से निकलकर चारो ओर गिरते हैं ।

फुही-स्त्री० दे० 'फुहार' ।

फूँक-स्त्री० [अनु० फू फू] १. फूँकने पर मुँह से निकलनेवाली हवा और शब्द । यौ०-**झाड़ फूँक**=मंत्र-तंत्र का उपचार । २. साँस । श्वास ।

मुहा०-**फूँक निकल जाना**=मर जाना ।

फूँकना-अ० [हि० फूँक] मुँह बहुत थोड़ा खुला रखकर जोर से हवा छोड़ना ।

मुहा०-**फूँक फूँककर पैर रखना या चलना**=सावधानी से कोई काम करना । स०१. मंत्र पढ़कर किसी पर फूँक मारना । २. शंख फूँककर बजाना । ३. जलाना । ४. व्यर्थ खर्च कर देना । धन उड़ाना । यौ०-**फूँकना तापना**=व्यर्थ खर्च करके धन गँवाना ।

फूँका-पु० [हि० फूँक] वह प्रक्रिया जिसमे बाँस का नली में तीक्ष्ण ओषधियों भरकर और गौ-भैंस आदि के स्तन में लगाकर, उनका सारा दूध बाहर निकाल लेने के लिए, फूँकते हैं ।

फूँदा*-पुं०१.दे०'फुँदना' । २ दे०'नीवी' ।

फूट-स्त्री० [हि० फूटना] १. फूटने की क्रिया या भाव । २. विरोध या वैमनस्य के कारण होनेवाला भेद । ३. एक प्रकार की बड़ी ककड़ी ।

फूटन-स्त्री० [हिं० फूटना] १. फूटकर अलग होनेवाला अंश । २. जोड़ों या हड्डियों में होनेवाला दर्द ।

फूटना-अ० [सं० स्फुटन] १. कड़ी या ठोस वस्तु का आघात से थोड़ा टूटना । २.ऐसी वस्तु का फटना जिसके अन्दर का भाग पोला अथवा मुलायम चीज से भरा हो । ३.भर आने के कारण आवरण फाड़कर निकलना । जैसे-फोड़ा फूटना या शरीर में भरा हुआ जहर फूटना ।

मुहा०-**फूट-फूटकर रोना** = बहुत अधिक रोना । विलाप करना ।

४. अंकुर, शाखा आदि निकलना । ५. एक पक्ष छोड़ कर दूसरे पक्ष में हो जाना । ६ मुँह स शब्द निकलना । ७. व्यक्त या प्रकट होना । ८ गुप्त बात या रहस्य प्रकट हो जाना । ९. शरीर के जोड़ों में दर्द होना । *१०. दे० 'फूलना' ।

फूत्कार-पुं० [सं०] मुँह से फू फू करते हुए हवा छोड़ने का शब्द । फुफकार ।

फूफा-पुं० [अनु०] फूफी या बूआ का पति । पिता का बहनोई ।

फूफी-स्त्री० [अनु०]पिता की बहन। बूआ।

फूल-पुं० [स० फुल्ल] १. पौधों में वह अंग जो गोल या लम्बी पंखड़ियों का बना होता है और जिसमें फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है । पुष्प । कुसुम । सुमन । मुहा०-**फूल सा**=बहुत हलका, कोमल या सुन्दर । **फूल सूँघकर रहना**=बहुत थोड़ा भोजन करना । (व्यंग्य)

२. फूल के आकार के बनाये हुए बेल-बूटे । ३ फूल के आकार का कोई गहना । जैसे-करनफूल । ४. कुष्ट रोग के कारण शरीर पर पड़नेवाले सफेद या लाल दाग । ५. स्त्रियों का मासिक रज । पुष्प । ६. वे हड्डियाँ जो शव जलाने पर बच

रहती हैं। ७ ताँबे और राँगे के मेल से बननेवाली एक मिश्र धातु।

फूलदान-पुं० [हिं० फूल + फा० दान (प्रत्य०)] फूलों के गुच्छे रखने का काँच, धातु, मिट्टी आदि का लंबा बरतन। गुलदान।

फूलना-अ० [हिं० फूल] [प्रे० फुलाना, भाव० फुलाव] १. वृक्षों का फूलों से युक्त या पुष्पित होना।

मुहा०-फूलना फलना = सन्तान से सुखी और धन से सम्पन्न होना।

२ (फूल की) पंखड़ियाँ फैलना। विकसित होना। खिलना। ३ किसी वस्तु के अन्दर का भाग हवा, जल आदि के भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना अथवा ऊँचा हो जाना। ४. शरीर का कोई अंग सूजना। ५. मोटा या स्थूल होना। ६. घमंड करना। ७ बहुत प्रसन्न होना।

मुहा०-फूले फूले फिरना=बहुत प्रसन्न होकर रहना या घूमना। फूले अंग न समाना=बहुत प्रसन्न होना।

८. मुँह फुलाना। रूठना। मान करना।

फूली-स्त्री० [हिं० फूलना] एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर कुछ उभरा हुआ सफेद दाग पड़ जाता है।

फूस-पुं० [सं० तुष] सूखी लम्बी घास या डंठल आदि। सूखा तृण। खर।

फूहड़-वि० [अनु०] १. जिसे अच्छी तरह काम करने का ढंग न आता हो। बेशऊर। २. बे-ढंगा। भद्दा। ३.अश्लील। गन्दा। (कथन या वार्त्तालाप)

फूही-स्त्री० दे० 'फुहार'।

फेंकना-स० [सं० प्रेषण] १. झोंके से दूर हटाना या डालना। २ एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर डालना। ३. असावधानी या भूल से कोई चीज कहीं छोड़ या गिरा देना। ४. तिरस्कारपूर्वक छोड़ना। ५. व्यर्थ धन व्यय करना।

फेंट-स्त्री० [हिं० पेट या पेटी] १. कमर का घेरा या मंडल। २. धोती का वह भाग जो कमर पर लपेटा जाता है।

मुहा०-फेंट धरना या पकड़ना=फेंट इस प्रकार पकड़ना कि आदमी भागने न पावे। फेंट कसना या बाँधना=कोई काम करने के लिए कमर कसकर तैयार होना।

३. कमर में बांधने का कपड़ा। पटका। कमरबंद। ४. फेरा। लपेट। घुमाव।

स्त्री० [हिं० फेंटना] फेंटने या मिलाने की क्रिया या भाव।

फेंटना-स० [सं० पिष्ट] [भाव० फेंट] १.द्रव पदार्थ में कुछ डालकर अच्छी तरह मिलाने के लिए घुमा घुमाकर हिलाना। २ गड्डी के ताश को ऊपर-नीचे या आगे पाछे करके अच्छी तरह मिलाना।

फेंटा-पुं० [हिं० फट] १. दे० 'फेंट'। २. छोटी पगड़ी।

फेकरना-अ० [हिं० फेंकना] (सिर) नंगा होना या खुलना।

अ०[अनु०] चिल्लाकर या जोर से रोना।

फेकैत-पुं०[हिं० फेंकना] १.वह जो फेंकता हो। २.पहलवान। ३ वह जो गदका-फरी या पटा बनेठी खेलता हो।

फेन-पुं० [सं०] [वि० फेनिल] पानी के छोटे बुलबुलों का कुछ गठा या सटा हुआ समूह। झाग।

फेना*-पुं० दे० 'फेन'।

फेनिल-वि० [सं०] फेन या झाग से युक्त या भरा हुआ।

फेनी-स्त्री० [सं०फेनिका] १. सूत के लच्छे

की तरह की एक मिठाई। २. दे० 'फेन'।

फेफड़ा-पुं० [सं० फुप्फुम+ड़ा (प्रत्य०)] छाती के अन्दर का वह अवयव जिसके चलने से जीव साँस लेते हैं। फुप्फुस।

फेर-पुं० [हिं० फेरना] १ फिरने या फेरने का भाव। २. चक्कर। घुमाव।

पद-निन्नानबे का फेर=निन्नानबे रुपये मिलने पर सौ रुपये पूरे करने की धुन। कुछ धन जमा करने का चसका।

मुहा०-फेर खाना=सीधे न जाकर घूमते हुए दूर के रास्ते से जाना।

३. परिवर्तन। रद्-बदल। हेर-फेर।

यौ०-हेर-फेर=१ उलट-फेर। २ व्यापार में कुछ लेते देते या खरीदते बेचते रहना।

पद-दिनों का फेर=समय के प्रभाव से होनेवाला, विशेषतः अच्छे से बुरे रूप में होनेवाला परिवर्तन।

४.झंझट। ५.भ्रम। धोखा। ६ चालबाजी। धूर्त्तता। ७. युक्ति। उपाय। ढंग। ८. अदला-बदला। परिवर्तन। विनिमय। ९. हानि। घाटा। *१० ओर। दिशा।

*अव्य०फिर। पुनः। एक बार और।

फेरना-स० [सं० प्रेरण] १. किसी ओर घुमाना। मोड़ना। २ स्वयं या दूसरे से कोई चीज लौटाना। वापस करना। ३. चक्कर देना। घुमाना। ४. इधर उधर चलाना। जैसे हाथ फेरना, घोड़ा फेरना। ५. तह चढ़ाना। पोतना।

मुहा०-(किसी चीज या बात पर) पानी फेरना=नष्ट करना।

६. उलट पलट या इधर-उधर करना। जैसे-पान फेरना। ७. सबके सामने बारी बारी से उपस्थित करना। घुमाना।

फेर-फार-पुं० [हिं० फेर] १. परिवर्त्तन। उलट-फेर। २. घुमाव-फिराव। पेच। चक्कर ३. धूर्तता। चालबाजी।

फेरवट-स्त्री० [हिं० फेरना] १. फिरने का भाव। फेरा। २ धूर्तता। चालबाजी।

फेरा-पुं० [हिं० फेरना] चारों ओर घूमने की क्रिया। परिक्रमण। चक्कर। २. लपेटने या चक्कर लगाने में हर बार का घुमाव। लपेट। ३ बार बार आना-जाना। ४. लौटकर आना। ५. आवर्त। घेरा। मण्डल।

फेरि*-अव्य० दे० 'फिर'।

फेरी स्त्री० [हिं० फेरना] १. दे० 'फेरा'। २. दे० 'फेर'। ३. परिक्रमा। प्रदक्षिणा।

फेरीदार-पुं० [हिं० फेरी+फा० दार] वह नौकर जो घूम-घूमकर अपने मालिक के लिए कर्जदारों से रुपये वसूल करता है।

फेरीवाला-पुं० [हिं० फेरी+वाला] घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेल-पुं० [अ०] कर्म्म। काम।

वि० [अं०] १. जो परीक्षा में पूरा न उतरे। अनुत्तीर्ण। २. जो समय पर ठीक या पूरा काम न दे।

फेहरिस्त-स्त्री० दे० 'सूची'।

फैल*-पुं० [अ० फ़ेल] १. काम। कार्य। २. क्रीड़ा। खेल।

स्त्री० [हिं० फैलना] १. हठ। दुराग्रह। २ वह हठ जो लड़के रोते हुए करते हैं।

फैलना-अ० [सं० प्रसरण] १. कुछ दूर तक आगे बढ़कर और अधिक स्थान घेरना। २ अधिक बड़ा या विस्तृत होना। पसरना। ३ मोटा होना। ४. वृद्धि होना। ५. छितराना। बिखरना। ६ प्रचलित या प्रसिद्ध होना। ७ अधिक पाने के लिए हठ करना। मचलना।

फैलसूफ-वि० [अ०फिलसफः] [भाव०

फैलसूफी] फजूल-खर्च। अपव्ययी।

फैलाना-स० [हिं० फैलना] १. फैलाने में प्रवृत्त करना। २. विस्तृत करना। पसारना। ३. इधर-उधर बिखेरना। छितराना। ४. बढ़ती करना। बढ़ाना। ५. प्रचलित या प्रसिद्ध करना। प्रकट करना। ६ हिसाब या लेखा लगाना। गणित करना। जैसे-ब्याज फलाना।

फैलाव-पुं० [हिं० फैलाना] विस्तार। प्रसार। (फैले होने का भाव)

फैशन-पुं० [अं०] १. ढंग। तर्ज। २. रीति। प्रथा। ३ बनाव-सिंगार, सजावट आदि का नया, अच्छा या शिष्ट-सम्मत ढंग।

फैसला-पुं० [अ०] निर्णय। निपटारा।

फैसिज्म-पुं० [अं०] फैसिस्ट दल का संघटन और सिद्धान्त।

फैसिस्ट-पुं० [अं०] १. इटली के राष्ट्रवादियों का एक आधुनिक दल जो दूसरे महायुद्ध से पहले बोल्शेविकों का विरोध करने के लिए बना था। २ वह जो सारा अधिकार अपने (अथवा अपने नेता या दल के) ही हाथ में रखना चाहता हो, प्रजा के प्रतिनिधि रखने का विरोधी हो।

फोंक-पुं० [स० पुंख] तीर का पिछला सिरा जिसपर पंख लगाये जाते है।

फोक-पुं० दे० 'सीठी'।

फोकट-वि० [हिं० फोक] निःसार।

मुहा०-फोकट में=मुफ्त में। या हीं।

फोकला[1]-पुं० [सं० वल्कल] छिलका।

फोका-वि० [हिं० फोकला] थोथा। निस्सार। तत्व-हीन।

पुं० दे० 'फोकला'।

फोटक*-वि० दे० 'फोकट'।

फोटा-पुं० १ दे० 'टीका'। २. दे० 'बिंदी'।

फोटो-पुं० [अं०] १. छाया के द्वारा उतारा हुआ चित्र। छाया-चित्र। २. प्रतिबिम्ब।

फोड़ना-स० [सं० स्फाटन] १. फूटने में प्रवृत्त करना। तोड़ना। २. किसी को दूसरे पक्ष से निकालकर अपना और मिलाना। ३ भेद-भाव उत्पन्न करना। ४ (भेद) खोलना। (रहस्य) प्रकट करना।

फोड़ा-पुं० [सं० स्फोटक] [स्त्री० अल्पा० फोड़िया] शरीर में कहीं विष एकत्र होने से उत्पन्न वह शोथ जिसमें रक्त सड़कर मवाद बन जाता है। व्रण।

फोता-पुं० [फा०] १ भूमि-कर। २. रुपये रखने का थैली। ३. अण्डकोष।

फोतेदार-पुं० [फा०] १ खजानची। २ रोकड़िया।

फौज-स्त्री० [अ०] १ सेना। २. झुण्ड।

फौजदार-पुं० [फा०] सेनापति।

फौजदारी-स्त्री० [फा०] १ लड़ाई झगड़ा। मार-पीट। २ वह अदालत जिसमें अपराधिक अभियोगों का विचार और निर्णय होता है।

फौजी-वि० [फा०] सैनिक।

फौजी कानून-पुं० सैनिक शासन से सम्बन्ध रखनेवाले कानून जो साधारण कानूनों से बहुत कठोर होते है और किसी बड़े उपद्रव या सैनिक आक्रमण आदि के समय हो साधारण नागरिकों के लिए प्रयुक्त होते है। (मार्शल लॉ)

ब

ब-हिन्दी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन और प-वर्ग का तीसरा वर्ण जो ओष्ठ्य है।

बंक-वि० [सं० वक्र, वंक] १. टेढ़ा। तिरछा। २. दुर्गम। ३. पराक्रमी। वीर। पुं० [अं० बैंक] वह संस्था जो लोगों के रुपये अपने यहाँ जमा करती है और उन्हें यों ही माँगने पर अथवा ऋण के रूप में देती है।

बंका*-वि० [भाव० बंकाई] दे० 'बंक'।

बंकुरता-स्त्री० = टेढ़ापन।

बंग-पुं० दे० 'वंग'।
*वि० [सं० वक्र] १. टेढ़ा। २ उद्दंड। ३. अज्ञानी।

बँगला-वि० [हिं० बंगाल] बंगाल देश का। बंगाल संबंधी।
स्त्री० बंगाल देश की भाषा।
पुं० १. चारों ओर से खुला हुआ वह मकान जो एक ही खंड या मंजिल का हो। २. ऊपरवाली छत पर बना हुआ छोटा कमरा।

बंगाल-पुं० [सं० बंग] पूर्वी भारत का एक प्रसिद्ध देश।

बंगाली-पुं० [हिं० बंगाल] बंगाल देश का निवासी।
स्त्री० बंगाल की भाषा।
वि० बंगाल का।

बंचक*-पुं० दे० 'वंचक'।

बंचना*-स्त्री० [सं० वंचना] ठगी।
*स० [सं० वंचन] ठगना।
स० [सं० वाचन] पढ़ना।

बंछना*-स० [सं० वांछा] अभिलाषा या इच्छा करना। चाहना।

बंछित*-वि० दे० 'वांछित'।

बंज-पुं० दे० 'बनिज'।

बंजर-पुं० दे० 'ऊसर'।

बंजारा-पुं० दे० 'बनजारा'।

बंझा-वि०, स्त्री० दे० 'बाँझ'।

बँटना-अ० [सं० वितरण] १. हिस्से के अनुसार कुछ मिलना या दिया जाना। २. कुछ हिस्सों में अलग अलग होना।

बँटवाना-स० हिं० 'बाँटना' का प्रे०।

बँटवारा-पुं० [हिं० बाँटना] बाँटने की क्रिया या भाव। विभाग।

बंटा-पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बंटी] छोटा डब्बा।

बँटा₂-स्त्री० [हिं० बाँटना] १. बाँटने का काम या भाव। २. खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से जमीन का मालिक उपज का कुछ अंश लेता है।

बंटाधार-वि० [?] विनष्ट। बरबाद।

बँटाना-स० [हिं० बँटना] १. बँटवाना। २. दूसरे का भार या कष्ट हलका करने के लिए उसका कुछ अंश अपने ऊपर लेना।

बँटावन*-वि० [हिं० बँटाना] बँटानेवाला।

बंडल-पुं० [अं०] पुलिंदा।

बंडी-स्त्री० [हिं० बंद] एक प्रकार की कुरती।

बंद-पुं० [फा०, मि० सं० बंध] १. वह चीज जिससे कुछ बाँधा जाय। जैसे-लोहे की पत्ती, फीता आदि। २. बाँध। ३. शरीर के अंगों का जोड़। ४. बंधन। ५. कैद।
वि० [फा०] १. चारों ओर से रुका हुआ। २. जिसके मुँह पर कोई आवरण या अवरोध हो। ३. जो खुला न हो। ४. जिसका चलना रुक गया हो। स्थगित। ५. जो किसी तरह की कैद या बन्धन में हो।

बंदगी-स्त्री० [फा०] १.ईश्वर की वंदना। उपासना। २. सलाम। नमस्ते।
बंदन-पुं० दे० 'वंदन'।
बंदनवार-स्त्री० [सं० बंदनमाला] फूल-पत्तों की वह झालर जो मंगल अवसरों पर दीवारों में बाँधी जाती है। तोरण।
बंदना-स्त्री० दे० 'वदना'।
अ० [सं० वंदन] प्रणाम करना।
बंदनी*-वि० दे० 'वंदनीय'।
बंदनी-माल-स्त्री० [सं० बंदनमाल] घुटनों तक लटकनेवाली लंबी माला।
बंदर-पुं० [सं० वानर] वृक्षों पर रहनेवाला एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया। कपि। मर्कट।
बंदरगाह-पुं० [फा०] समुद्र के किनारे जहाज ठहरने का स्थान।
बंदर-घुड़की-स्त्री० ऐसी धमकी जो दिखाने भर को हो, पर जो पूरी न की जाय।
बंदर बाँट-स्त्री० [हिं० बंदर+बाँटना] न्याय के नाम पर ऐसा बँटवारा करना जिसमें न तो वादी को ही कुछ मिले, न प्रतिवादी को हो; सब बँटवारा करनेवाले के पास पहुँच जाय।
बंदर-भभकी-स्त्री० दे० 'बंदर-घुड़की'।
बंदवान-पुं० दे० 'बंदीवान'।
बंदसाल†-स्त्री० दे० 'कारागार'।
बंदा-पुं० [फा० बन्दः] सेवक। दास।
पुं० [सं० वंदी] बंदी। कैदी।
बंदिश-स्त्री० [फा०] १. बाँधने की क्रिया या भाव। २. पहले से किया हुआ प्रबंध। ३. गीत, कविता आदि की शब्द-योजना।
बंदी-पुं० [सं०] भाट। चारण।
स्त्री० [हिं० बेंदी] स्त्रियों का सिर पर पहनने का एक गहना।
पुं० [सं० बन्दिन्] कैदी।
स्त्री० [फा०] १. बंद होने की क्रिया या भाव। जैसे-बाजार की बन्दी। २. स्थिर या निश्चित होने की क्रिया या भाव। जैसे-दर-बन्दी, मेंड़-बन्दी।
बंदीखाना-पुं० दे० 'कारागार'।
बंदी-छोर*-पुं० [फा० बंदी+हिं० छोरना] कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।
बंदीवान-पुं०[हिं० बंदी]कारागार का रक्षक।
बंदूक-स्त्री०[अ०] एक प्रसिद्ध अस्त्र जिससे शत्रु पर गोली चलाई जाती है।
बंदूकची-पुं० [फा०] बंदूक चलानेवाला सिपाही।
बंदेरा*-पुं० १.दे० 'बंदी'। २.दे० 'बंदा'।
बंदोबस्त-पुं० [फा०] १. प्रबंध। व्यवस्था। २. खेत आदि नापकर उनका कर निर्धारित करने का काम। ३. वह सरकारी विभाग जिसके अधीन यह काम रहता है।
बंध-पुं०[सं०] १.बंधन। २.गाँठ। गिरह। ३ वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। बंद। ४. कैद। ५. पानी रोकने का बाँध। ६.स्त्री-संभोग के समय की मुद्रा या आसन। ७. योग-साधन की कोई मुद्रा या आसन। ८. चित्र-काव्य के अंतर्गत ऐसी पद्यात्मक रचना जिससे अक्षरों के विशेष प्रकार के विन्यास से किसी तरह की आकृति या चित्र बन जाता है।
बंधक-पुं० [सं०] १. बाँधनेवाला। २. किसी से कुछ ऋण लेकर उसके बदले कोई चीज उसके पास रखना। गिरों। रेहन।
बंधन-पुं० [सं०] १. बाँधने की क्रिया या भाव। २.वह वस्तु जिससे कोई चीज बाँधी जाय। ३. रुकावट। प्रतिबंध। ४. कारागार। कैदखाना। ५. शरीर के अंगों का संधि-स्थान। जोड़।

बँधना-अ० [सं० बंधन] १. किसी प्रकार के बंधन में आना। बाँधा जाना। २. कैद होना। ३. प्रतिज्ञा, वचन आदि प्रतिबंधों से बद्ध होना। ४. ठीक बैठना। दुरुस्त होना। ५. क्रम निर्धारित होना। पुं० [सं० बंधन] वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। बन्द।

बँधवाना-स० हिं० 'बाँधना' का प्रे०।

बंधान-पुं० [हिं० बँधना] लेन देन, व्यवहार आदि की नियत या बँधी हुई प्रथा। (कस्टम)

बँधाना-स०=बँधवाना।

बंधी-पुं० [सं० बंधिन] बँधुआ। कैदी। स्त्री० [हिं० बँधना] निश्चित रूप से नित्य या नियमित समय पर होनेवाला कार्य; विशेषतः कोई वस्तु कहीं देना।

बंधु-पुं० [स०] [भाव० बन्धुता] १. भाई। २. सहायक। ३. मित्र। दोस्त।

बँधुआ-पुं० [हिं० बँधना] कैदी। बदी।

बंधुक-पुं०[सं०] गुलदुपहरिया का फूल।

बंधेज-पुं० दे० 'बंधान'।

बंध्या-वि० स्त्री० [सं०] (वह स्त्री या मादा) जिसे संतान न होती हो और न हो सकती हो। बाँझ।

बंध्या-पुत्र-पुं० [सं०] ठीक वैसी ही असंभव बात, जैसी बंध्या को पुत्र होने की है।

बं-पुलिस-पुं० [अनु० बं+अ० प्लेस] नगरों में मल-त्याग के लिए बना हुआ सार्वजनिक स्थान।

बंब-स्त्री० [अनु०] १. युद्ध के समय वीरों का नाद। रण-नाद। २ नगाड़ा। डंका।

बंबा-पुं० [अनु०] १.दे०'बम'। २.पानी की कल का वह अगला भाग जिसमें से पानी निकलता है।

बंबाना-अ० दे० 'रँभाना'।

बंबू-पुं० [मलाया बँबू=बाँस] १. चंडू पीने की बाँस की नली। २ लम्बी मोटी नली।

बंबू काट-पुं० [मलाया बँबू=बँस+कार्ट=गाड़ा] ताँगे की तरह की एक प्रकार की सवारी। (पश्चिम)

बँभनाई-स्त्री० [हिं०ब्राह्मण] ब्राह्मणत्व।

बंस-पुं० दे० 'वंश'।

बंसकार*-पुं० = बंसुरी।

बंस-लोचन-पुं०[सं०वंशलोचन] बाँस का सार भाग जो छोटे सफेद टुकड़ों के रूप में होता और औषध के काम में आता है।

बँसवाड़ी-स्त्री० [हिं० बाँस] एक जगह उगे हुए बाँसों का झुरमुट या समूह।

बंसी-स्त्री० [सं० वंशी] १. वंशी। मुरली। २. मछली फँसाने की कँटिया।

बंसीधर-पुं०=श्रीकृष्ण।

बँहगा-स्त्री० दे० 'बहँगी'।

बँहुटा-पुं० [हिं० बाह] बाँह पर पहनने का एक गहना।

बँहालनी*-स्त्री० [हिं० बाँह] आस्तीन।

बउरा*-वि० दे० 'बावला'।

बक-पुं० [सं० वक] बगला। स्त्री० दे० 'बकवाद'।

बकतर-पुं० [फा०] युद्ध के समय पहनने का एक प्रकार का कवच। सन्नाह।

बकता(र)*-वि० दे० 'वक्ता'।

बक-ध्यान-पुं० [सं० बक-ध्यान] बगले की तरह चुपचाप शान्त भाव से दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए बैठे रहना। बनावटी साधु भाव।

बकना-स० [सं० वचन] व्यर्थ बहुत बोलना या बातें करना। प्रलाप करना।

बकबक-स्त्री० दे० 'बकवाद'।

बकर-कसाव-पुं० दे० 'कसाई'।

बकरना-स० [हिं० बकना] १. आप ही आप कुछ कहना। बड़बड़ाना। २. अपना दोष आप कह देना।

बकरा-पुं० [सं० वर्कर] [स्त्री० बकरी] एक प्रसिद्ध चौपाया।

बकवाद(स)-स्त्री० [हिं० बकना+वाद] [वि० बकवादी] व्यर्थ की बातें। बकबक।

बक-वृत्ति-स्त्री० [सं०] बक-ध्यान लगाने-वालों की वृत्ति।

वि० बक-ध्यान लगानेवाला।

बकस-पुं० [अं० बॉक्स] चीज़ें रखने का चौकोर संदूक।

बकसना*-स० [फा० बख्श] १ प्रदान करना। २. क्षमा करना। माफ करना।

बकसीस*-स्त्री० [फा० बख़शीश] १ दान। २. पुरस्कार। इनाम।

बकाना-स० हिं० 'बकना' का प्र०।

बकाया-पुं० दे० 'बाकी'।

बकारी-स्त्री० [सं० 'ब'+कार] मुँह से निकलनेवाला शब्द।

बकावली-स्त्री० दे० 'गुल-बकावली'।

बकासुर-पुं० [सं० वकासुर] एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

बकुचना*-अ० दे० 'सिकुड़ना'।

बकुरना*-स० दे० 'बकरना'।

बकुल-पुं० [सं०] मौलसिरी।

बकुला- पुं० दे० 'बगला'।

बकेन-स्त्री० [सं० वष्कयणी] वह गाय या भैंस जो बच्चा देने के साल भर बाद भी दूध देती हो। 'लवाई' का उलटा।

बकैयाँ-क्रि०वि०[सं०वक्र+ऐया(प्रत्य०)] बच्चों का घुटनों के बल चलना।

बकोटना-स० [?] नाखूनों से नोचना।

बकौरी*-स्त्री० दे० 'गुल-बकावली'।

बक्कल-पुं० [सं० वल्कल] १. छिलका। २. छाल।

बक्की-वि०=बकवादी।

बक्स-पुं० दे० 'बकस'।

बख़तर-पुं० दे० 'बकतर'।

बख़रा-पुं० [फा० बख़रः] भाग। हिस्सा।

बखरी-स्त्री० [हिं० बखार] कच्चा मकान।

बखान-पुं० [सं० व्याख्यान] १. वर्णन। २. प्रशंसा। बड़ाई।

बखानना-स० [हिं० बखान+ना] १. वर्णन करना। २. प्रशंसा करना। ३. गाली देना। (व्यंग्य)

बखार-पुं० [सं० प्राकार] [स्त्री० अल्पा० बखारी] वह गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान अन्न रखते हैं।

बखिया-पुं० [फा०] [क्रि०बखियाना] एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई।

बख़ील-वि० [अ०] कंजूस। कृपण।

बख़ूबी-क्रि० वि० [फा०] अच्छी तरह।

बखेड़ा-पुं० [हिं० बखेरना] [वि० बखेड़िया] १. झंझट। २. झगड़ा। ३. कठिनता। मुश्किल।

बखेरना-स० दे० 'बिखराना'।

बख़शना-स० [फा० बख़्श] १. प्रदान करना। २ क्षमा करना। माफ़ करना।

बख़शवाना-स० हिं० 'बख़शना' का प्र०।

बख़्शिश-स्त्री० [फा०] १. दान। २. इनाम।

बगछुट(टुट)-क्रि० वि० [हिं० बाग+छूटना या टूटना] सरपट या बहुत वेग से। (दौड़ना, भागना)

बगदना-अ० [हिं० बिगड़ना] [स० बगदाना] १ नष्ट या बरबाद होना। २. भ्रम में पड़ना। भूलना।

बगदहा*-वि०[हिं० बगदना+हा(प्रत्य०)] [स्त्री० बगदही] चौंकने या भड़कनेवाला।

बग-मेल-पुं० [हिं० बाग+मेल] १.दूसरे

के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना। २. बराबरी। समानता।

क्रि० वि० १. घोड़े की सवारी में किसी के साथ बाग मिलाये हुए। २. साथ साथ।

बगर*-पुं० [सं० प्रघण] १. महल। प्रासाद। २. कोठरी। ३ आँगन। ४. गौएँ-भैंसे बाँधने की जगह। गोठ।

*स्त्री० दे० 'बगल'।

बगरना*-अ०, स० दे० 'छितराना'।

बगरूरा*-पुं० दे० 'बगूला'।

बगल-स्त्री० [फा०] १ कंधे के नीचे का गड्ढा। कोख। २ दाहिने-बाएँ या इधर-उधर का भाग। पार्श्व।

मुहा०-बगल में दबाना या धरना=ले लेना। बगलें झाँकना=उत्तर न दे सकना। बगलें बजाना=बहुत प्रसन्नता प्रकट करना।

बगल-गंध-स्त्री० [हिं० बगल + गंध] एक रोग जिसमें बगल से बहुत दुर्गंध निकलती है।

बगलबंदी-स्त्री० [हिं० बगल+बंद] एक प्रकार की कुरती।

बगला-पुं० [सं० बक] [स्त्री० बगली] सफ़ेद रंग का एक प्रसिद्ध बड़ा पक्षी।

बगला भगत=पुं० साधु बना रहने-वाला, कपटी।

बगली-वि० [हिं० बगल] १. बगल से संबंध रखनेवाला। २. बगल या पास का।

पद-बगली घूँसा = पास या साथ रहकर धोखे से किया जानेवाला वार।

बगलेदी-स्त्री० [हिं० बगला] एक प्रकार का पक्षी।

बगसना*-स० दे० 'बख़शना'।

बगा*-पुं० १.दे०'बागा'। २.दे०'बगला'।

बगाना*-स० [हिं० 'बगना' का प्रे०] टहलाना। घुमाना।

*अ० भागना।

बगारना*-स० [सं० विकिरण] १. फैलाना। २. छितराना। बिखेरना।

बगावत-स्त्री० [अ०] विद्रोह।

बगिया*-स्त्री० [फा० बाग] छोटा बाग।

बगीचा-पुं० [फा० बाग़चः] [अल्पा० बगीची] वाटिका। छोटा बाग।

बगूला-पुं० [हिं० बाउ+गोला] एक ही स्थान पर चक्कर काटनेवाली आँधी या हवा।

बग़ैर-अव्य० [अ०] बिना।

बग्घी-स्त्री० [अं० बोगी] चार पहियों की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

बघछाला-स्त्री० दे० 'बाघंबर'।

बघनहाँ-पुं० [हिं० बाघ+नहँ=नाखून] बाघ के नाखूनों के आकार का एक प्रकार का हथियार। शेर-पंजा।

बघना*-पुं० दे० 'बघनहाँ'।

बघार-पुं० [हिं० बघारना] १. बघारने की क्रिया या भाव। २. वह मसाला जो दाल आदि बघारते समय घी में डाला जाता है। तड़का। छौंक।

बघारना-स० [सं०अवघारण] १.छौंकना। तड़का लगाना। २. योग्यता दिखाने के लिए आवश्यकता से अधिक बोलना।

बघूरा*-पुं० दे० 'बगूला'।

बच*-पुं० [सं० वचः] वचन।

स्त्री० [सं० वच] औषधि के काम में आनेवाली एक वनस्पति।

बचका-पुं०[देश०] एक प्रकार का पकवान।

बचकाना-वि० [हिं० बच्चा] [स्त्री० बचकानी] १. बच्चों के योग्य। २. बच्चों का-सा।

बचत-स्त्री० [हिं० बचना] १. बचने का भाव। २. बचा हुआ अंश। ३. लाभ।

बचन*-पुं० [सं० वचन] वचन।
मुहा०-बचन डालना=कुछ माँगना। बचन बाँधना=प्रतिज्ञा कराना। बचन हारना=कुछ करने का पक्का वादा करना।

बचना-अ० [सं० वंचन=न पाना] १. संगति, दोष, विपत्ति आदि से रक्षित, दूर या अलग रहना। २. काम में आने पर भी कुछ बाकी रहना। ३. दूर या अलग रहना।
*स० [सं० वचन] कहना।

बचपन-पुं० [हिं० बच्चा] 'बच्चा' होने का भाव या दशा। लड़कपन। बाल्यावस्था।

बचवैया-पुं० [हिं० बचाना] बचानेवाला।

बचा*-पुं० दे० 'बच्चा'।

बचाना-स० [हिं० बचना] १ आपत्ति, कष्ट, प्रभाव आदि से रक्षित रखना। २. कुछ अंश काम में आने या खर्च होने से रोक रखना। ३ पता न लगने देना। ४. अलग या दूर रखना।

बचाव-पुं० [हिं० बचाना] बचने या बचाने का भाव। रक्षा। त्राण।

बच्चा-पुं० [फा०बच्चः मि०सं०वत्स] [स्त्री० बच्ची] १. नवजात शिशु। २. बालक।
पद-बच्चों का खेल=सहज काम।

बच्छल*-वि० दे० 'वत्सल'।

बच्छस*-पुं० दे० 'वत्स'।

बच्छा-पुं० दे० 'बछड़ा'।

बछड़ा-पुं० [सं० वत्स] [स्त्री० बछड़ी, बछिया] गाय का बच्चा।

बछनाग-पुं० [सं० वत्सनाभ] एक प्रकार का विष। सींगिया। तेलिया।

बछल*-वि० दे० 'वत्सल'।

बछेड़ा-पुं० [सं० वत्स] घोड़े का बच्चा।

बछेरू*-पुं० दे० 'बछड़ा'।

बजंत्री-पुं० दे० 'बजनियाँ'।

बजट-पुं० दे० 'आयव्यय'।

बजना-अ० [हिं० बाजा] १.आघात आदि के कारण शब्द होना। २. बाजे आदि से शब्द उत्पन्न होना। ३. शस्त्रों का चलना। ४. लड़ाई या मार-पीट होना। ५. प्रसिद्ध होना। ६. हठ या ज़िद करना। अड़ना। (क्व०)

बजनियाँ-उभय० [हिं० बजाना] बाजा बजानेवाला (या वाली)।

बजमारा*-वि०[हिं०वज्र+मारा] [स्त्री० बजमारी] वज्र से मारा हुआ। (गाली)

बजरंग*-वि० [सं० वज्रांग] वज्र के समान दृढ़ अंगोंवाला।

बजरंग बली-पुं० दे० 'हनुमान'।

बजरबट्टू-पुं० [हिं० वज्र+बट्टा] एक प्रकार के वृक्ष का बीज जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए पहनाते हैं।

बजरा-पुं० [सं० वज्रा] एक प्रकार की छायादार बड़ी नाव।
पुं० दे० 'बाजरा'।

बजरागि*-स्त्री०=बिजली। (वज्र)

बजरी†-स्त्री० [सं० वज्र] १. कंकड़ या पत्थर के बहुत छोटे टुकड़े। २. ओला।

बजवैया†-वि०[हिं० बजाना]बजानेवाला।

बजा-वि० [फा०] उचित। ठीक।

बजागि*-स्त्री०=बिजली। (वज्र)

बजाज-पुं० [अ० बज़ाज़] कपड़े बेचनेवाला। कपड़ों का व्यवसायी।

बजाजा-पुं० [फा०] वह बाजार जिसमें बजाजों या कपड़ों की दूकानें हों।

बजाजी-स्त्री० [फा०] बजाज का काम या व्यापार।

बजाना-स० [हिं० बाजा] १.आघात करके या और किसी प्रकार शब्द उत्पन्न करना।
मुहा०-बजाकर=खुल्लमखुल्ला। पहले

से कहकर।

यौ०-ठोंकना बजाना=जाँचने के लिए अच्छी तरह देखना-भालना।

२. आघात पहुँचाना।

स० [फा० बजा] पालन करना। जैसे-हुकुम बजाना।

बजार*-पुं० दे० 'बाजार'।

बज्जर*-पुं० दे० 'बज्र'।

बझना-अ० [सं० बद्ध] १. बँधना। २. फँसना। ३.झगड़ना। ४. हठ करना।

बझाना।*-स० हिं०'बझना' का स०।

बट-पुं० [सं० वट] १.दे० 'वट'। २. दे० 'बड़ा'। (पकवान) ३. गोला।

पुं०[हिं० बटना] रस्सी की ऐंठन या बल।

पुं० [हिं० बाट] मार्ग। रास्ता।

बटखरा-पुं० [सं० वटक] तौलने के लिए कुछ निश्चित मान का पत्थर लोहे आदि का टुकड़ा। बाट।

बटन-पुं०[अं०] पहनने के कपड़ों में लगने-वाली चिपटी कड़ी घुंडी। बुताम।

स्त्री० [हिं० बटना] १ बटने की क्रिया या भाव। २. ऐंठन। बल।

बटना-स० [सं० वट=बटना] तागों, तारों आदि को एक में मिलाकर इस प्रकार मरोड़ना कि वे मिलकर रस्सी आदि के रूप में एक हो जायँ।

स० दे० 'पीसना'।

पुं० दे० 'उबटन'।

बटपार(मार)-पुं० [हिं० बाट+मारना] रास्ते में लोगों को लूटनेवाला। डाकू।

बटली, बटलोई-स्त्री० दे० 'देगचा'।

बटवार*-पुं० [हिं० बाट+वाला] १. पहरेदार। २. मार्ग का कर उगाहनेवाला।

बटा*-पुं० [सं० वटक][स्त्री० अल्पा० बटिया] १. गोला। २. गेंद। ३. रोड़ा। ढेला। ४ यात्री। पथिक।

बटाई-स्त्री० [हिं० बटना] बटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बटाऊ-पुं० [हिं० बाट] पथिक।

बटाक*-वि०=बड़ा। (विशाल)

बटाना†-अ० [हिं० पटाना] बंद होना।

बटिया-स्त्री० [हिं० बटा=गोला] १. छोटा गोला। २ छोटा बट्टा।

बटी-स्त्री० [सं० वटी] १. गोली। २. 'बड़ा' नामक पकवान।

*स्त्री०=वाटिका। (बाग)

बटुआ-पुं० [सं० वर्त्तुल] १. कई खानों-वाली एक प्रकार की छोटी थैली। २.देगचा।

बटुक-पुं० दे० 'बटुक'।

बटुरना-अ० [सं० वर्त्तुल] १. इकट्ठा या एकत्र होना। २. सिमटना। सिकुड़ना।

बटेर-पुं० [सं० वर्त्तक] तीतर की तरह की एक छोटी चिड़िया।

बटोरना-स० [हिं० बटुरना] १. बिखरी हुई वस्तुएँ एक जगह करना। समेटना। २. इकट्ठा या जमा करना।

बटोही-पु० [हिं० बाट] रास्ता चलने-वाला। पथिक। यात्री।

बट्टा-पुं० [सं०वार्त्त] किसी विशेष कारण से मूल्य में होनेवाला कमी (डिस्काउन्ट)। २. दलाली। दस्तूरी। ३. धातु आदि में मिलावट या उस मिलावट के कारण मूल्य में होनेवाली कमी। ४. टोटा। घाटा। हानि। ५. कलंक। दाग।

पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बट्टी, बटिया] कूटने-पीसने आदि का पत्थर। लोढ़ा। २. छोटा गोल डिब्बा।

बट्टा खाता-पुं० [हिं० बट्टा+खाता] न वसूल होनेवाली रकमों का लेखा या मद।

बट्टी-स्त्री० [हिं० बट्टा] १ किसी चीज़

का गोल छोटा टुकड़ा। २. टिकिया।

बट्टू-पुं० दे० 'बजरबट्टू'।

बट्टेबाज-वि० [हिं० बट्टा+फा० बाज] [भाव० बट्टेबाजी] १. जादूगर। २. धूर्त।

बड़-स्त्री० [अनु० बड़बड़] बकवाद। पुं० [सं० वट] बरगद का पेड़। *वि० दे० 'बड़ा'।

बड़क-स्त्री० [हिं बड़] १. डींग। शेखी। २. बकवाद।

बड़प्पन-पुं० [हिं०बड़ा] १. 'बड़ा' होने का भाव। २. महत्त्व। बड़ाई।

बड़बड़-स्त्री० [अनु०] बकवाद।

बड़बड़ाना-अ० [अनु०] १ बकवाद करना। २. धीरे धीरे और अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना।

बड़बोल(ा)-वि० [हिं० बड़ा+बोल] बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला।

बड़भाग(ी)-वि०=भाग्यवान।

बड़रा*-वि० दे० 'बड़ा'।

बड़वाग्नि-पुं० [सं०] वह आग जो समुद्र के अन्दर जलती हुई मानी जाती है।

बड़वानल-पुं० दे० 'बड़वाग्नि'।

बड़हार-पुं० [हिं० बर+आहार] विवाह के बाद होनेवाली बरातियों की ज्योनार।

बड़ा-वि० [सं०वर्द्धन] १ अधिक विस्तार-वाला। लंबा-चौड़ा और विशाल। यौ०-बड़ा घर=कैदखाना। २. अधिक अवस्था या उमर का। ३. श्रेष्ठ। ४. महत्त्व का। ५. बढ़कर। अधिक। पुं० [सं० वटक] [स्त्री० अल्पा० बड़ी] उर्द की पीठी की गोल टिकिया जो तलकर खाई जाती है।

बड़ाई-स्त्री० [हिं० बड़ा+ई (प्रत्य०)] १. 'बड़ा' होने का भाव। २. बड़प्पन। श्रेष्ठता। ३. महिमा। महत्त्व। ४. प्रशंसा। तारीफ़।

बड़ा दिन-पुं०[हिं०बड़ा+दिन] २५ दिसम्बर जो ईसाइयों का प्रसिद्ध त्योहार है।

बड़ी-स्त्री० [हिं० बड़ा] दाल, आलू आदि पीसकर सुखाई हुई छोटी टिकिया।

बड़ी माता-स्त्री० दे० 'चेचक'।

बड़ेरा*-वि० दे० 'बड़ा'।

बड़ौना*-पुं० दे० 'बड़ाई'।

बढ़-स्त्री० दे० 'बढ़ती'।

बढ़ई-पुं० [सं० वर्द्धकि] लकड़ी गढ़कर दरवाजे, मेज़, चौकियाँ आदि बनानेवाला।

बढ़ती-स्त्री० [हिं० बढ़ना] १.तौल, गिनती मान आदि में होनेवाली अधिकता। २ धन-संपत्ति आदि की वृद्धि या उन्नति। ३ मूल्य की वृद्धि।
मुहा०-बढ़ती से=साधारणतः जो मूल्य निश्चित या अंकित हो, उससे कुछ अधिक मूल्य पर। (एबव पार)

बढ़ना-अ० [सं० वर्द्धन] १. विस्तार, मान आदि में पहले से अधिक होना। २ गिनती या नाप-तौल में अधिक होना। ३ मूल्य, अधिकार, योग्यता, सामर्थ्य आदि में वृद्धि होना। ४ किसी स्थान से आगे जाना या चलना। ५. किसी बात में किसी से अधिक होना। ६. (दूकान आदि का) बंद होना। ७. (दीपक) बुझना।

बढ़नी*-स्त्री०=झाड़ू। स्त्री० [हिं० बढ़ाना] अग्रिम। पेशगी।

बढ़ाना-स० [हिं० बढ़ना] १.विस्तार या परिमाण में अधिक करना। २. बढ़ने में प्रवृत्त करना। ३.अधिक व्यापक, विस्तृत प्रबल या उन्नत करना। ४. आगे चलाना। ५. (दूकान) बंद करना। ६. (दीया) बुझाना।

बढ़ाव-पुं० [हिं० बढ़ना] १. बढ़ने की क्रिया का भाव। २. नदी आदि के जल का बढ़ना। बाढ़। ३. मूल्य आदि का बढ़ना, चढ़ना या ऊँचा होना।

बढ़ावा-पुं० [हिं० बढ़ाव] कुछ करने के लिए किसी का मन बढ़ानेवाली बात। प्रोत्साहन। उत्तेजना।

बढ़िया-वि० [हिं० बढ़ना] उत्तम। अच्छा।

बढ़ैया-वि० [हिं०बढ़ना] बढ़ानेवाला।

बढ़ोतरी-स्त्री० दे० 'बढ़ती'।

वणिक-पुं० [सं०] १. व्यापार या व्यवसाय करनेवाला। व्यवसायी। रोजगारी। २ बनिया।

बत-कही-स्त्री० [हिं० बात+कहना] १. साधारण या मन-बहलाव के लिए होनेवाली बात-चीत। वार्तालाप। २. वाद-विवाद।

बत-बढ़ाव-पुं० [हिं० बात+बढ़ाव] व्यर्थ की बात पर झगड़ा बढ़ाना।

बत-बाती-स्त्री० [हिं० बात] १.बे-सिर-पैर की बात। २. छेड़-छाड़।

बतर*-वि० दे० 'बदतर'।

बतरस-पुं० [हिं० बात+रस] [वि० बतरसिया] बात-चीत का आनंद।

बतरान-स्त्री० [हिं० बात] १. बात-चीत। २. बोली।

बतराना*-स्त्री० [हिं० बात] बात-चीत करना।

बतरौहाँ*-वि० [हिं० बात] [स्त्री० बतरौहीं] बात-चीत करने का इच्छुक।

बतलाना-स०=बताना।

बताना-स० [हिं०बात+ना (प्रत्य०)] १. परिचित कराना। जताना। २. ज्ञान कराना। ३. निर्देश करना। दिखाना। ४. नाच-गाने में अंगों की चेष्टा से भाव प्रकट करना।

बतास-स्त्री० [सं० वात] वायु। हवा।

बतासा-पुं० [हिं० बतास=हवा] १. चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी गोल मिठाई। २. एक प्रकार की छोटी आतशबाजी।

बतिया-स्त्री० [हिं० बत्ती] बत्ती के आकार का छोटा, कच्चा लंबा फल।

बतियाना†-अ० [हिं बात] बातें करना।

बतौरी-स्त्री० [सं० वात] शरीर में माँस का उभड़ा हुआ अंश। गुमड़ो।

बतू*-पुं० दे० 'कलाबत्तू'।

ब-तौर-क्रि० वि० [अ०] १. तरह पर। रीति से। २. सदृश। समान।

बत्तक-स्त्री० [अ० बत] हंस की जाति का एक प्रकार का जल-पक्षी।

बत्तिस†-वि० [सं० द्वात्रिंशत] तीस से दो अधिक। तीस और दो।

बत्ती-स्त्री० [सं० वर्त्ति] १ रूई या सूत का बटा हुआ लच्छा जो दीपक में रखकर जलाते हैं। २. मोमबत्ती। ३. दीपक। चिराग। ४. पलीता। ५ सलाई के आकार की कोई वस्तु। ६. कपड़े की वह धज्जी जो घाव में मवाद सोखने के लिए रखी जाती है।

बत्तीसा-पुं० [हिं० बत्तीस] १. बत्तीस मसालों का बना एक प्रकार का लड्डू। २. एक प्रकार की बड़ी आतशबाजी।

बत्तीसी-स्त्री० [हिं० बत्तीस] १. बत्तिस का समूह। २. मनुष्य के बत्तिस दाँतों का समूह।

मुहा०-बत्तीसी खिलना=हँसी आना।

बथुआ-पुं० [सं० वास्तुक] एक प्रकार का साग।

बद-वि० [फा०] १. बुरा। खराब। २.

दुष्ट । नीच ।

स्त्री० [सं० वर्ष्म=गिलटी] बाघी नामक रोग ।

स्त्री० [सं० वर्त्त] १. पलटा । बदला । २. पक्ष । ३ जोखिम ।

मुहा०-बद का=ओर से । जिम्मे का । जैसे-इतना माल हमारी बद का ले लो ।

बद-अमली-स्त्री० [फा० बद+अ० अमल] राज्य का कुप्रबंध । अराजकता ।

बद-इंतज़ामी-स्त्री०[अ०+फा०] कुप्रबंध । अव्यवस्था ।

बद-कार-वि० [फा०] [भाव० बदकारी] १. कुकर्मी । २. व्यभिचारी ।

बद-किस्मत-वि० [फा०+अ०] अभागा ।

बद-चलन-वि० [फा०] दुश्चरित्र ।

बद-ज़बान-वि० [फा०] [भाव० बद-ज़बानी] गाली-गलौज बकनेवाला ।

बदज़ात-वि०[फा०+अ०] नीच । लुच्चा ।

बदतर-वि० [फा०] किसी की अपेक्षा और भी बुरा । निकृष्ट-तर ।

बद-दुआ-स्त्री० दे० 'शाप' ।

बदन-पुं० [फा०] शरीर । देह ।

बद-नसीब-वि० [फा०+अ०] अभागा ।

बदना-स० [सं० वद=कहना] १. वर्णन करना । कहना । २. मान लेना । ३. नियत करना । ठहराना ।

मुहा०-बदा होना=भाग्य में लिखा होना । बदकर=१ जान-बूझकर और हठ-पूर्वक (कुछ करना) । २.दृढ़तापूर्वक कहकर । ४. बाजी या शर्त लगाना । ५. कुछ महत्त्व का मानना या समझना ।

बदनाम-वि० [फा०] [भाव० बदनामी] जिसे लोग बुरा कहते हों । कुख्यात ।

बदनामी-स्त्री० [फा०] लोक-निंदा । कुख्याति । अपवाद ।

बदबू-स्त्री० [फा०] दुर्गंध ।

बद-मस्त-वि० [फा०] [भाव० बदमस्ती] नशे में चूर । मस्त ।

बदमाश-वि० [फा० बद+अ० मआश= जीविका] १ बुरे कामों से जीविका चलाने-वाला । दुर्वृत्त । २. पाजी । दुष्ट । ३ दुराचारी ।

बदमाशी-स्त्री० [हिं० बदमाश] १. दुष्कर्म । २. पाजीपन । ३. व्यभिचार ।

बदरा†-पुं०=बादल ।

बदरिया-स्त्री०=बदली । (मेघ)

बद-रोब वि० [फा०+अ०] [भाव० बद-रोबी] १. जिसका कुछ रोब न हो । २. तुच्छ । ३. भद्दा ।

बदराह-वि० दे० 'बद-चलन' ।

बदलना-अ० [अ० बदल] १. जैसा हो, उससे भिन्न प्रकार का हो जाना । परिवर्त्तित होना । २. एक की जगह दूसरा हो जाना । ३. एक जगह से दूसरी जगह नियुक्त होना ।

स० १. जैसा हो, उससे भिन्न रूप देना । परिवर्त्तित करना । २. एक चीज हटाकर उसकी जगह दूसरी रखना ।

मुहा०-बात बदलना=पहले कुछ कहकर फिर कुछ और कहना ।

३. एक चीज देकर दूसरी लेना ।

बदला-पुं० [हिं० बदलना] १. परस्पर कुछ लेने और तब कुछ देने का व्यवहार । विनिमय । २. किसी प्रकार की हानि या किसी स्थान की पूर्त्ति के लिए दी हुई या किसी के स्थान पर मिलनेवाली दूसरी वस्तु । पलटा । एवज । ३.किसी के व्यव-हार के उत्तर में दूसरे पक्ष से होनेवाला वैसा ही व्यवहार । पलटा । प्रतीकार ।

मुहा०-बदला लेना=किसी के बुराई करने

पर उसके साथ भी वैसी ही बुराई करना। ४. किये हुए काम का फल। नतीजा।

बदली-स्त्री० [हिं० बादल] छाया हुआ बादल। मेघ।

स्त्री० [हिं० बदलना] १. बदले जाने की क्रिया या भाव। २ एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर की जानेवाली नियुक्ति। तबादला। (ट्रान्सफरेन्स)

बदलौवल-स्त्री० [हिं० बदलना] अदल-बदल। विनिमय।

बद शकल-वि० [फा०] भद्दा। कुरूप।

ब-दस्तूर-क्रि० वि० [फा०] जैसा पहले रहा हो, वैसा ही। परंपरा के अनुसार।

बद-हजमी-स्त्री०[फा०] अजीर्ण। अपच।

बद-हवास-वि० [फा०] [भाव० बद-हवासी] १. जिसके होश ठिकाने न हों। २. उद्विग्न।

बदा-वि० [हिं० बदना] भाग्य में लिखा हुआ।

मुहा०-बदा होना = भाग्य में लिखा होना। अवश्यंभावी होना।

बदान-स्त्री० [हिं० बदना] शर्त्त या बाजी बदे जाने की क्रिया या भाव। (बेटिंग)

बदाम-पुं० दे० 'बादाम'।

बदि*-स्त्री० दे० बदला'।

अव्य० १. बदले मे। २. लिए। वास्ते।

बदी-स्त्री० [?] चान्द्र मास का कृष्ण पक्ष। अँधेरा पाख। जैसे-जेठ बदी दूज।

स्त्री० [फा०] बुराई। खराबी।

बदूख*-स्त्री० दे० 'बंदूक'।

ब दौलत-क्रि० वि० [फा०] (किसी की) कृपा या अनुग्रह के द्वारा।

बद्दर(ल)*-पुं० = बादल।

बद्ध-वि० [सं०] [भाव० बद्धता] १. बाँधा या बँधा हुआ। २. संसार के बंधन में पड़ा हुआ। ३. जिसके लिए कोई रुकावट या बंधन हो। ४.निर्धारित।

बद्ध-कोष्ठ-पुं० [सं०] कब्जियत।

बद्ध-परिकर-वि० [सं०] कमर कसे हुए। उद्यत। तैयार।

बद्धांजलि-वि० [सं०] जो हाथ जोड़े हुए हो। कर-बद्ध।

बद्धी-स्त्री० [सं० बद्ध] १ डोरी या बाँधने की कोई चीज। २ गले का एक गहना।

बधना-स० [सं० बध] मार डालना।

पुं० टोंटीदार लोटा।

बधाई-स्त्री० [सं० वर्द्धन] १. वृद्धि। बढ़ती। २ मंगल अवसर पर होनेवाला गाना-बजाना। मंगलाचार। ३. मंगल-उत्सव। ४ किसी के यहां कोई शुभ बात या काम होने और शुभ कामना पर आनंद प्रकट करनेवाली बातें। मुबारकबाद।

बधाना-स० हिं० 'बधना का प्रे०।

बधावना(रा)-पुं० = बधावा।

बधावा-पुं० [हिं० बधाई] १. बधाई। २. वह उपहार जो संबंधियों या मित्रों के यहां मंगल अवसरो पर गाजे-बाजे के साथ भेजा जाता है।

बधिक-पुं० [सं० बधक] [भाव० बधिकता] १. बध करनेवाला। हत्यारा। २. जल्लाद। ३. व्याध। बहेलिया।

बधिया-पुं० [हिं० बध=मारना] वह पशु जिसका अडकोश निकाल दिया गया हो।

मुहा०-बधिया बैठना=बहुत घाटा होना।

बधिर-पुं० [सं०] जो कान से सुनता न हो। न सुन सकनेवाला। बहरा।

बधूटी-स्त्री० [सं० वधूटी] १. पुत्र-बधू। २. सुहागिन स्त्री। ३. नई आई हुई बहू।

बधैया*-स्त्री० दे० 'बधाई'।

पुं० १. दे० 'बधिक'। २. दे० 'बधावा'।

बन-पुं० [सं०वन] १. जंगल। कानन। २. समूह। ३ जल। पानी। ४.बगीचा। बाग। स्त्री० [हिं० बनना] १. सज-धज। सजावट। २. बाना। भेस।

बन-कटा-वि० [हिं० बन] जंगल।

बन-कर-पुं० [सं० वन+कर] जंगल में होनेवाली लकड़ी, घास आदि का कर।

बनखंडी-स्त्री० [हिं० बनखंड] छोटा बन। पुं० बन में रहनेवाला।

बनचर-पुं० [सं० वनचर] १. बन या जंगल में रहनेवाले आदमी। २.जानवर।

बनज-पुं० दे० 'वाणिज्य'।

बनजना*-अ० [हिं० बनज] व्यापार या रोजगार करना।

बनजारा-पुं० [हिं० बनिज] बैलों पर अन्न लादकर जगह जगह बेचनेवाला।

बनत-स्त्री० [हिं० बनना] १. रचना। बनावट। २. अनुकूलता। मेल।

बनताई*-स्त्री० [हिं० बन] बन या जंगल की सघनता और भयंकरता।

बनद*-पुं० [सं० वनद] बादल। मेघ।

बनदाम-स्त्री० दे० 'बन-माला'।

बनना-अ० [सं० वर्णन] १. उचित रूप प्राप्त करना। तैयार होना। रचा जाना। मुहा०-**बना रहना**=१. जीता रहना। २. उपस्थित या वर्त्तमान रहना। २. काम में आने के योग्य या ठीक होना। ३. एक रूप से बदलकर दूसरे रूप में हो जाना। ४. पद, मर्यादा या अधिकार का अधिकारी होना। ५. अच्छी दशा में पहुँचना। ६. हो सकना। ७.निभना। पटना। ८. मूर्ख या उपहासास्पद सिद्ध होना। ९. अधिक योग्य या गंभीर होने की झूठी मुद्रा धारण करना।

बननि*-स्त्री० [हिं० बनना] १. बनावट। २. बनाव-सिंगार।

बनपट*-पुं० [सं० वन+पट] छाल आदि से बना हुआ आच्छादन या कपड़ा।

बनबास-पुं० [सं० वनवास] [वि० बन-बासी] बन में जाकर बसना या रहना।

बन-मानुस-पुं०[हिं०बन+मानुष] आकृति आदि में मनुष्य से मिलता-जुलता जंगली जंतु। जैसे गोरिल्ला, चिंपैजी आदि।

बनर-पुं० [देश०] एक प्रकार का अस्त्र।

बन-रखा-पुं० [हिं० बन+रखना=रक्षा करना] जंगल की रखवाली करनेवाला।

बनरा*-पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनरी] १. बर। दूल्हा। २. विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। पुं० दे० 'बंदर'।

बन-राय*-पुं० [सं०वनराज] १. सिंह। शेर। २ बहुत बड़ा पेड़।

बनवाना-स० हिं० 'बनाना' का प्रे०।

बनवारी-पुं० [सं० वनमाली] श्रीकृष्ण।

बना-पुं० [हिं० बनना] [स्त्री० बनी] दूल्हा। वर।

बनाइ(य)*-क्रि० वि० [हिं० बनाकर= अच्छी तरह] १. अत्यंत। निपट। २. अच्छी तरह। भली-भाँति।

बनाउरि*- स्त्री० दे० 'बाणावली'।

बनात-स्त्री० [हिं० बाना] एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

बनाना-स० [हिं० बनना] १. अस्तित्व में लाना। तैयार करना। रचना। मुहा०-**बनाकर** = अच्छी तरह। २. ठीक दशा या रूप में लाना। ३. एक से दूसरे रूप में लाना। ४. किसी पद, मर्यादा या अधिकार का अधिकारी करना। ५. अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना। ६. किसी को इस प्रकार मूर्ख

या उपहासास्पद ठहराना कि वह जल्दी समझ न सके।
बना-बनत*-स्त्री० [हिं० बनना+बनाव] विवाह-संबंध के लिए लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।
ब-नाम-अव्य० [फा०] १ के नाम। नाम पर। के विरुद्ध। जैसे-सरकार बनाम रामनन्दन का अर्थ होगा—रामनन्दन पर चलाया हुआ सरकार का मुकदमा। २ आज-कल 'तुलना में' के अर्थ में प्रचलित (अशुद्ध प्रयोग)।
बनाव-पुं० [हिं० बनाना] १. बनावट। २ सजावट। ३ युक्ति। तदबीर। उपाय।
बनावट-स्त्री० [हिं० बनाना] १. बनने या बनाने का भाव या ढंग। रचना। २. ऊपरी दिखावा। आडंबर। ३ कृत्रिमता।
बनावटी-वि० [हिं० बनावट] नकली।
बनावरि*-स्त्री० दे० 'बाणावली'।
बनासपती-स्त्री० = बनस्पति।
बनि*-वि० [हिं० बनना] सब। कुल।
बनिज-पुं० [सं० वाणिज्य] १ व्यापार। रोजगार। २.क्रय-विक्रय की वस्तु। सौदा।
बनिजना*-अ०=व्यापार करना। स० वश में करना।
बनित*-स्त्री० दे० 'भेस'।
बनिया-पुं० [सं० वणिक्] [स्त्री० बनियाइन, बनैनी] १ व्यापार करनेवाला व्यक्ति। व्यापारी। २.आटा, दाल आदि बेचनेवाला। मोदी। ३. वैश्य।
बनियाइन-स्त्री० दे० 'गंजी'।
ब-निस्वत-अव्य० [फा०] तुलना में। अपेक्षाकृत।
बनी-स्त्री० [हिं० बन] १.वन-स्थली। वन का कोई भाग। २. वाटिका। बाग। स्त्री०[हिं०बना] १ दुलहिन। २.नायिका।
बनौनी*-स्त्री० दे० 'बनैनी'।
बनीर*-पुं० दे० 'बेंत'।
बनेठी-स्त्री० [हिं० बन+सं० यष्टि] पटे-बाजों का वह डंडा जिसके सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।
बनैनी-स्त्री० [हिं० बनिया] बनिये की या वैश्य जाति की स्त्री। वैश्य स्त्री।
बनैला-वि० [हिं० बन] जंगली। (पशु)
बप*-पुं० [सं० वप्र] बाप। पिता।
बप-तिस्मा-पुं० [अं० बैप्टिज्म] ईसाइयों का वह संस्कार जो नव-जात बालक या किसी विधर्मी को ईसाई बनाने के समय होता है।
बपना*-स० [सं० वपन] बीज बोना।
बपुख*-पुं० [सं० वपुस्] शरीर। देह।
बपौती-स्त्री० [हिं० बाप] बाप से मिली हुई या बाप की सम्पत्ति।
बप्पा[1]-पुं० दे० 'बाप'।
बफारा-पुं० [हिं०भाप] औषध मिले जल का भाप से शरीर का कोई अंग सेंकना।
बफौरी-स्त्री० [हिं० बाफ=भाप] भाप से पकी हुई बरी।
बबर-पुं० [फा०] बड़ा शेर। सिंह।
बबा*-पुं० दे० 'बाबा'।
बबुआ[1]-पुं० [हिं० बाबू] [स्त्री० बबुई] लड़कों के लिए प्यार का संबोधन। पूरब)
बबूल-पुं० दे० 'कीकर'।
बबूला-पुं० १. दे० 'बगूला'। २. दे० 'बुलबुला'।
बभूत-स्त्री० १. दे० 'भभूत'। २. दे० 'विभूति'।
बम-पुं० [अं० बॉंब] विस्फोटक पदार्थों का वह गोला जो शत्रुओं पर उन्हें मारने के लिए फेंका जाता है। पुं० [अनु०] शिव को प्रसन्न करने का

'बम' 'बम' शब्द।

मुहा०-बम बोलना या बोल जाना=किसी चीज का अन्त हो जाना। कुछ न बचा रह जाना।

पुं० [कनाडी बंबू=बांस] एक्के-गाड़ी आदि में आगे के वे बांस जिनमें घोड़े जोते जाते हैं।

बमकना-अ० [अनु०] डींग हांकना।

बमना*-स० [सं० वमन] कै करना।

बम-बाज़-पुं० [हिं० बम+फा० बाज] [भाव० बमबाजी] शत्रुओं पर बम के गोले फेंकनेवाला। (व्यक्ति)

बम-मार-वि० [हिं० बम+मारना] बम मारनेवाला।

पुं० एक प्रकार का बड़ा हवाई जहाज जिससे शत्रुओं पर बम फेंके जाते हैं।

बमूजिब-क्रि० वि० [फा०] अनुसार।

बयन*-पुं० = वचन।

बयना*-स० दे० 'बोना'।

स० [सं० वचन] वर्णन करना। कहना।

बया-पुं० [स० वयन=बुनना] एक प्रकार का प्रसिद्ध पक्षी।

पुं० [अ० बायः = बेचनेवाला] अनाज तौलने का काम करनेवाला आदमी।

बयान-पुं० [फा०] १.वर्णन। कथन। २. विवरण। वृत्तान्त।

बयाना-पुं०[अ०बै+फा०आना:(प्रत्य०)] मूल्य, पारिश्रमिक आदि का वह अंश जो कोई काम कराने या कोई चीज खरीदने की बात-चीत पक्की करने के समय पहले लिया या दिया जाता है। पेशगी।

बयार*-स्त्री० [सं० वायु] हवा।

बर-पुं० [सं० वट] बरगद।

पुं० [हिं० बल] १. रेखा। लकीर।

मुहा०-बर खाँचना=१. किसी बात में बहुत दृढ़ता दिखलाना। २. जिद करना।

३ किसी व्यापार में वह कोई विशेष पदार्थ जो उसी मेल के और पदार्थों से अलग हो। जैसे-कपड़ों में साड़ी का बर, साफ़े का बर।

अव्य० [फा०] ऊपर।

मुहा०-बर आना या पाना=मुक़ाबले या प्रतियोगिता में सामने ठहरना।

वि० १. श्रेष्ठ। २. पूरा। पूर्ण। (आशा)

* अव्य० [सं० वरं] बरन्। बल्कि।

पुं० १ दे० 'वर'। २ दे० 'बल'।

बरई†-पुं० दे० 'तमोली'।

बरकंदाज़-पुं० [अ०+फा०] वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी या तोड़ेदार बंदूक रहती है।

बरकत-स्त्री० [अ०] [वि० बरकती] १. किसी चीज की वह यथेष्टता जिससे वह जल्दी कम नहीं होती। बहुतायत। २. लाभ। फ़ायदा। ३. प्रसाद। कृपा।

बरकना†-अ० [सं० वर्जन] १. मना करना। रोकना। २ हटना। दूर रहना।

बरखा*-स्त्री० = वर्षा।

बरखास्त-वि० [फा०] १. जो नौकरी से हटा दिया गया हो। २. विसर्जित। (सभा आदि का)

बर-ख़िलाफ़-क्रि० वि० [फा०] विरुद्ध।

बरग*-पुं० १. दे० 'वर्ग'। २. दे० 'वरक'।

बरगद-पुं० [सं० वट, हिं० बड़] पीपल की तरह का एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़।

बरछा-पुं०[सं०व्रश्चन][स्त्री०बरछी] भाला।

बरछैत-पुं० [हिं० बरछा] बरछा चलाने या रखनेवाला।

बरजनि*-स्त्री० दे० 'वर्जन'।

बर-ज़बान-वि० [फा०] जो ज़बानी याद हो। कंठस्थ।

बर-जोर-वि० [हिं० बल+फा० ज़ोर] १. प्रबल । बलवान् । २. अत्याचारी । क्रि० वि० जबरदस्ती । बलपूर्वक ।

बर-जोरी*-स्त्री० [हिं० बर-जोर] १. जबरदस्ती । बल-प्रयोग । २ अत्याचार । क्रि० वि० ज़बरदस्ती । बलपूर्वक ।

बरत-पु० दे० 'व्रत' ।

बरतन-पुं० [सं०वर्त्तन] धातु, शीशे, मिट्टी आदि का वह आधार जिसमें खाने-पीने की चीजें रखी जाती है । पात्र । भांडा ।

बरतना-अ० [सं० वर्त्तन] १ व्यवहार या बरताव करना । (व्यक्तियों से) स० काम में लाना । (चीज़)

बर-तरफ़-वि० [फा० बर+अ० तरफ़] १ किनारे । अलग । २. नौकरी से हटाया हुआ । बरखास्त ।

बरताना-स०=बाँटना ।

बरताव-पुं० [हिं० बरतना] बरतने का ढंग या भाव । व्यवहार ।

बरदाना†-स० [हिं० बरधा=बैल] गौ, घोड़ी आदि का उनकी जाति के पशुओं से संयोग कराना । जोड़ा खिलाना । अ० मादा पशु का अपनी जाति के नर पशु से जोड़ा खाकर गर्भ धारण करना ।

बरदार-वि० [फा०] १. वहन करने या ढोनेवाला । २.धारण करनेवाला । ३. पालन करने या माननेवाला । (यौ० में)

बरदाश्त-स्त्री० [फा०] सहन करने की शक्ति, क्रिया या भाव । सहन ।

बरधा-पुं० [सं० बलिवर्द] बैल ।

बरधाना-स०, अ० दे० 'बरदाना' ।

बरन*-पुं० दे० वर्ण' ।

बरनना*-स०=वर्णन करना ।

बरना-स० [सं० वरण] १. वर या वधू के रूप में ग्रहण करना । वरण करना । ब्याहना । २. किसी काम के लिए किसी को चुनना । वरण करना । *स० दान देना ।

†अ० दे० 'बलना' । ' जलना)

बरनेत-स्त्री० [सं० वरण] विवाह की एक रीति ।

बरफ़-पुं० [फा० बर्फ़] भाप के अणुओं की वह तह जो वातावरण की ठंडक के कारण धूएँ के रूप में ऊपर से जमीन पर गिरती है । २. मशीनों आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी, जिससे पीने के लिए जल आदि ठंडा करते हैं । ३. कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों आदि का रस । ४. दे० 'ओला' ।

बरफ़ानी-वि० [फा०] जिसमें या जिस पर बरफ हो । (देश, पर्वत आदि).

बर्फिस्तान-पुं० [फा०] वह स्थान या प्रदेश जहाँ बरफ ही बरफ हो ।

बरफी-स्त्री० [फा० बर्फ़] एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई ।

बरफीला-वि० दे० 'बरफानी' ।

बरबंड*-वि० [सं० बलवंत] १. बलवान् । शक्तिशाली । २. उद्दंड । उद्धत । ३ प्रचंड । प्रखर । तेज ।

बरबट*-क्रि० वि० दे० 'बर बस' ।

बर-बस-क्रि० वि० [सं० बल+वश] १. बलपूर्वक । जबरदस्ती । २. व्यर्थ ।

बरबाद-वि० [फा०] [भाव० बरबादी] नष्ट । चौपट ।

बरम*-पुं० दे० 'कवच' । (वर्म)

बरमा-पुं० [देश०] [स्त्री० अल्पा० बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का एक औजार।

बरमी-पुं० [हिं० बरमा+ई (प्रत्य०)] बरमा देश का निवासी ।

स्त्री० बरमा देश की भाषा।
वि०बरमा देश का। जैसे-बरमी चावल।
बरम्हा-पुं० = ब्रह्मा।
बरम्हाना*-स० [सं० ब्रह्म] [भाव० बरम्हाव] (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना।
बरराना*-अ० दे० 'बर्राना'।
बरवट-स्त्री० दे० 'तिल्ली' (रोग)।
बरवै-पुं० [देश०] एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ११ मात्राएँ होती हैं।
बरषा*-स्त्री०=वर्षा।
बरषासन*-पुं० [सं० वर्षाशन] वर्ष भर की भोजन-सामग्री।
बरस-पुं० [सं० वर्ष] वर्ष। साल।
बरस-गाँठ-स्त्री० [हिं० बरस+गांठ] किसी पूरे वर्ष के बाद आनेवाला जन्म-दिन। साल-गिरह।
बरसना-अ० [सं० वर्षा] १. आकाश से जल गिरना। वर्षा होना। २. वर्षा के जल की तरह ऊपर या चारों ओर से अधिक मात्रा में आना या गिरना। जैसे-फूल या रुपये बरसना। मुहा०-बरस पड़ना=बहुत क्रुद्ध होकर लगातार उलटी-सीधी बातें सुनाना। ३. अच्छी तरह प्रकट होना।
बरसाइत-स्त्री० [सं० वट+सावित्री] जेठ बदी अमावस। (इस दिन स्त्रियाँ वट-सावित्री की पूजा करती हैं।)
बरसात-स्त्री० [सं० वर्षा] सावन-भादों के दिन, जब बहुत पानी बरसता है। वर्षा-काल। वर्षा ऋतु।
बरसाती-वि० [सं० वर्षा] बरसात में होनेवाला। बरसात का।
स्त्री० एक प्रकार के मोमजामे का कपड़ा जिसे पहन लेने पर वर्षा से शरीर नहीं भींगता।
बरसाना-स०[हिं० 'बरसना' का प्रे०] १. जल की वर्षा करना। २.वर्षा के जल की तरह ऊपर या इधर-उधर से लगातार बहुत-सा गिराना। ३. दाँया हुआ अन्न इस प्रकार हवा में गिराना जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाय। डाली देना। ओसाना।
बरसी-स्त्री० [हिं० बरस+ई (प्रत्य०)] मृतक का वार्षिक श्राद्ध।
बरसौला-वि०=बरसनेवाला।
बरहा-पुं० [हिं० बहा] [अल्पा० बरही] १. खेत सींचने की नाली। २. रस्सा।
पुं० [सं० बर्हि] मोर। (पक्षी)
बरही-पुं० [सं० बर्हि] १.मोर। २ मुरगा।
स्त्री० [हिं० बारह] १. सन्तान उत्पन्न होने के बारहवें दिन का प्रसूता का स्नान और तत्सम्बन्धी उत्सव तथा कृत्य।
बरहीपीड़*-पुं०=मोर-मुकुट।
बरहीमुख*-पुं०=देवता।
बरा-पुं० [सं० वटा] पीठी का बना एक प्रकार का पकवान। बड़ा।
बराक-पुं०[सं०वराक] १.शिव। २.युद्ध।
वि० १ नीच। अधम। २. बेचारा।
बरात-स्त्री० [सं० वर-यात्रा] विवाह के समय वर के साथ कुछ लोगों का कन्या-वालों के यहाँ जाना। जनेत।
बराती-पुं० [हिं० बरात] वर पक्ष से बरात में जानेवाले लोग।
बराना-अ० [सं० वारण] [भाव० बराव] १. प्रसंग या अवसर आने पर भी कोई बात न कहना या काम न करना। २. रक्षा करना। बचाना।
स० जान-बूझकर किसी को किसी काम या बात से अलग करना।

स० [सं० वरण] चुनना । छाँटना ।
†स० दे० 'बालना' । (जलाना)

बराबर-वि० [फा० वर] [भाव०बराबरी] १.समान।तुल्य । एक-सा । २. समतल । मुहा०-बराबर करना=न रहने देना । समाप्त कर देना ।
क्रि० वि० १. लगातार । निरंतर । २. एक साथ । ३. सदा । हमेशा ।

बराबरी-स्त्री० [हिं० बराबर+ई (प्रत्य०)] १. बराबर होने की क्रिया या भाव । समता । समानता । २. सादृश्य । ३. तुलना । मुकाबला ।

बरामद-वि० [फा०] निकलकर सबके सामने आया हुआ । (छिपा हुआ माल) ।

बरामदा-पुं० [फा०] मकानों में आगे या कुछ बाहर निकला हुआ छायादार छज्जा । २. दालान ।

बरिआत-स्त्री० दे० 'बरात' ।

बरिया*-वि० दे० 'बलवान्' ।

बरियाई†-क्रि० वि० [सं० बलात्] बलपूर्वक । जबरदस्ती ।
स्त्री० बलवान् होने का भाव । शक्तिमत्ता ।

बरिस†-पुं० [सं० वर्ष] वर्ष । साल ।

बरी-स्त्री०[सं०वटी]१.छोटी गोल टिकिया। बटी । २.पीठी के सुखाये हुए छोटे टुकड़े।
वि० [फा०] छूटा हुआ । मुक्त ।
*वि० दे० 'बली' ।

बरीसना-अ०=बरसना ।

बरु(क)*-अव्य० [वरन्] १.भले ही । चाहे । २ बल्कि । वरन् ।

बरुनी-स्त्री० [सं० वरण] पलकों के आगे के बाल ।

बरेंड़ा-पुं० [सं० बरंडक] वह लकड़ी जो खपरैल या छाजन में लंबाई के बल लगी रहती है ।

बरे*-क्रि०वि० [सं०बल] १.ज़ोर से । २. बलपूर्वक। जबरदस्ती । ३. ऊँचे स्वर से।
अव्य०[सं०वर्त्त] १.बदले में । २.वास्ते ।

बरेखी-स्त्री० [देश०] बाँह पर पहनने का एक गहना ।
स्त्री० [हिं० बर+देखना] विवाह संबन्ध स्थिर करने के लिए वर या कन्या को देखना।

बरेठा-पुं० [स्त्री० बरेठिन] दे० 'धोबी' ।

बरोक-पुं० [हिं० बर+रोकना] वह धन जो कन्या-पक्ष से वर-पक्ष को विवाह-सम्बन्ध स्थिर करने के समय दिया जाता है ।
क्रि० वि० [सं० बलौकः] जबरदस्ती ।
*पुं० [सं० बलौकः] सेना ।

बरोठा-पुं० [सं० द्वार] १. ड्योढ़ी । पद-बरोठे का चार=द्वार-पूजा ।
२. बैठक ।

बरोह-पुं० [सं० वट+रोह=उगनेवाला] बरगद की डालियों का वह अंश जो जमीन पर आकर जम जाता और नये वृक्ष का रूप धारण करता है । बरगद की जटा ।

बर्गनी-स्त्री० दे० 'बरुनी' ।

बर्णना*-स० = वर्णन करना ।

बर्त्तना-स० = बरतना ।

बर्न-पुं० दे० 'वर्ण' ।

बर्फ-स्त्री० दे० 'बरफ' ।

बर्बर-पुं०[सं०] [भाव० बर्बरता] आर्यों के अनुसार वर्णाश्रम धर्म न माननेवाला और असभ्य मनुष्य । जंगली आदमी ।

बर्राना-अ० [अनु० बर बर] १. व्यर्थ बकना । २. नींद या बेहोशी में बकना ।

बर्रे*-पुं० दे० 'भिड़' ।

बलंद-वि० [फा०] [भाव०बलंदी] ऊँचा ।

बल-पुं० [सं०] १. किसी व्यक्ति या वस्तु की वह शक्ति जो दूसरे व्यक्ति या वस्तु को दबाती, वश में रखती या उसका

परिचालन करती है। सामर्थ्य। ताकत जोर। २ भार उठाने की शक्ति। संभार। ३. किसी से प्राप्त होनेवाली सहायता या आश्रय। सहारा। आसरा। भरोसा। ४ सेना। फ़ौज। ५. पार्श्व। अंग। पक्ष। पुं०[सं० वलि] १ ऐंठन। २. फेरा। लपेट। मुहा०-बल खाना=टेढ़ा होना। ३. टेढ़ापन। ४. सिकुड़न। शिकन। ५. लचक। झुकाव। ६ कमी। घाटा। मुहा०-बल खाना=दबकर हानि सहना। ७. अन्तर। फरक।

बलकना-अ० [अनु०] १. उबलना। २ आवेश में आना। उमगना।

बलकल*-पुं० दे० 'वल्कल'।

बलकारक-वि० [सं०] बल बढ़ानेवाला।

बलगना-अ० दे० 'बलकना'।

बलगम-पुं० [अ०] कफ। श्लेष्मा।

बल-तंत्र-पुं० [सं०] शक्ति या सेना आदि का प्रबंध। सैनिक व्यवस्था।

बलना-अ० [सं० वहँण] जलना। *स० [हिं० बल] बल डालना। बटना।

बलबलाना-अ० [अनु०] [भाव० बल-बलाहट] ऊँट का बोलना।

बलबीर*-पुं० [हिं० बल=बलराम+ बीर=भाई] बलराम के भाई श्रीकृष्ण।

बलभी-स्त्री० [सं० वलभि] मकान में ऊपरवाली कोठरी। चौबारा।

बलम-पुं० दे० 'बालम'।

बल्मीक-स्त्री० दे० 'बाँबी'। (दीमकों की)

बलराम-पुं० [सं०] कृष्णचंद्र के बड़े भाई जो रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

बलवंड*-वि० दे० 'बलवान्'।

बलवंत-वि० दे० 'बलवान्'।

बलवत्-वि० [सं०] (ऐसा विधान या नियम) जिसमें प्राणों का संचार हो चुका हो और जो अपना व्यापार, कार्य या फल आरंभ करने में समर्थ हो। (इन-फोर्स)

बलवत्ता-स्त्री० [सं०] बलवान् होने का भाव। शक्ति-सम्पन्नता।

बलवा-पुं० दे० 'विद्रोह'।

बलवाई-पुं० दे० 'विद्रोही'।

बलवान्-वि० [सं०] [स्त्री० बलवती] मजबूत। जिसमें शक्ति हो। ताक़तवर।

बलशाली-वि० = बलवान्।

बला-स्त्री० [सं०] १. वैद्यक के अनुसार पौधों की एक जाति। २.पृथ्वी। ३.लक्ष्मी। स्त्री०[अ०]१ आपत्ति। आफत। २.दुःख। कष्ट। ३. भूत-प्रेत या उनकी बाधा। मुहा०-बला का=घोर। विकट।

बलाक-पुं० [सं०] बगला।

बलाका-स्त्री० [सं०] बगलों की पंक्ति।

बलाढ्य-वि० = बलवान्।

बलात्-क्रि० वि० [सं०] बलपूर्वक। जबरदस्ती।

बलात्कार-पुं० [सं०] किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध, बलपूर्वक संभोग।

बलाधिकृत-पुं० [सं०] प्राचीन भारत में किसी राज्य के सेना-विभाग का प्रधान अधिकारी और राजमंत्री।

बलाय-स्त्री० दे० 'बला'। (आपत्ति)

बलाह-पुं० [सं० वोल्लाह] वह घोड़ा जिसकी गरदन और दुम पीली हो। बुलाह।

बलाहक-पुं० [सं०] मेघ। बादल।

बलि-पुं० [सं०] १.राज-कर। २.उपहार। भेंट। ३ पूजा की सामग्री। ४. नैवेद्य। भोग। ५. किसी देवता के नाम पर मारा जानेवाला पशु। मुहा०-बलि चढ़ना=१.किसी देवता के नाम पर मारा जाना। २.किसी के लिए भारी हानि सहना। बलि जाना=

निछावर होना।

*स्त्री० [सं० बला=छोटी बहन] सहेली।

बलित*-वि० [हिं० बलि] १. जिसका बलिदान हुआ हो। २. मारा हुआ। हत।

बलिदान-पुं० [सं०] [वि० बलिदानी] देवी-देवता के उद्देश्य से बकरे आदि पशु काटकर मारना।

बलि-पशु-पुं० [हिं० बलि+पशु] वह पशु जो देवता के लिए बलि चढ़ाया जाय।

बलिया-वि०=बलवान्।

बलिष्ठ-वि०=बलवान्।

बलिहारना*-स० [हिं० बलि] निछावर करना।

बलिहारी-स्त्री० [हिं०बलि+हारना] प्रेम, श्रद्धा आदि के कारण अपने आपको किसी के अधीन या किसी पर निछावर कर देना। मुहा०-**बलिहारी जाना**=निछावर होना।

बली-वि० [सं० बलिन्] बलवान्।

बलीमुख*-पुं०=बंदर।

बलीयस्-वि० [सं०] [स्त्री० बलीयसी] बहुत अधिक बलवान।

बलु*-अव्य० दे० 'बरु'।

बलुआ-वि० दे० 'रेतीला'।

बलूची-पुं० दे० 'बलोच'।

बलैया-स्त्री० [अ० बला] बला। आपत्ति। मुहा०-**(किसी की) बलैया लेना**=किसी का रोग या कष्ट अपने उपर लेने की कामना प्रकट करना।

बलोच-पुं० एक जाति जिसके नाम पर उसके देश का नाम बलोचिस्तान पड़ा है।

बलोतरा-पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

बल्कि-अव्य० [फा०] १. अन्यथा। इसके विरुद्ध। प्रत्युत। २. अच्छा यह कि।

बल्लम-पुं० [सं० बल, हिं० बल्ला] १. सोंटा। डंडा। २.वह सुनहला या रुपहला डंडा जो चोबदार बड़े आदमियों के आगे लेकर चलते हैं। ३. बरछा।

बल्लमटेर-पुं० दे० 'स्वयंसेवक'।

बल्ला-पुं० [सं० बल] [स्त्री० अल्पा० बल्ली] लंबा, मोटा और बड़ा शहतीर या डंडा। २ गेंद खेलने का लकड़ी का डंडा।

बवंडर-पुं० [सं० वायु+मंडल] १. चक्कर की तरह घूमती हुई हवा। चक्रवात। २ आँधी। तूफान।

बवघूरा*-पुं० दे० 'बवंडर'।

बवन*-पुं० दे० 'वमन'।

बवना*-स० दे० 'बोना'। अ० छितराना। बिखरना।

बवासीर-स्त्री० [अ०] एक रोग जिसमें गुदेंद्रिय में मस्से निकलते हैं। अर्श।

बसंत-पुं०=वसंत।

यौ०-**उल्लू बसंत**=भारी मूर्ख।

बसंती-वि० [हिं० बसंत] १. बसंत ऋतु का। २ पीले रंग का।

बसंदर-पुं० [सं० वैश्वानर] आग।

बस-वि० [फा०] यथेष्ट। भर-पूर। अव्य० १. पर्याप्त। काफी। २. केवल। पुं० दे० 'वश'।

बसनि(नी)*-स्त्री० दे० 'बस्ती'।

बसना-अ० [सं० वसन] १. जीवन बिताने के लिए कहीं निवास करना। रहना। (व्यक्ति का) २ निवासियों से युक्त होना। आबाद होना। (स्थान का) मुहा०-**घर बसना**=घर में स्त्री और बाल-बच्चे होना।

३. आकर रहना। टिकना।

मुहा०-**मन में बसना**=बहुत प्रिय होने के कारण ध्यान में बना रहना।

अ० [सं० वेशन] बैठना।

अ० [हिं० बास=गन्ध] बास या सुगंध से

युक्त होना ।
पुं० दे० 'बस्ता' ।
बसनि*-स्त्री० [हिं० बसना] निवास ।
बसर-पुं० [फा०] गुजर । निर्वाह ।
बसाँधा[1]-वि० [हिं० बास] बसाया या बासा हुआ । सुगंधित किया हुआ ।
बसाना-स० [हिं० बसना] १. बसने या रहने के लिए जगह देना या प्रवृत्त करना । २. आबाद करना ।
मुहा०-घर बसाना=विवाह करके सुख-पूर्वक रहने का प्रबन्ध करना ।
३. टिकाना । ठहराना ।
*स० [सं०वेशन] १.बैठाना । २ रखना ।
* अ० बसना । रहना ।
* अ० [हिं० वश] वश चलना ।
अ० [हिं० बास] गन्ध से युक्त होना ।
बसिऔरा[1]-पुं० [हिं० बासी] १. वह दिन जिसमें बासी भोजन खाये जाते हैं । बासी । २. बासी भोजन ।
बसीकत(गत)*-स्त्री० [हिं० बसना] १. बसने की क्रिया या भाव । रहन । २. बस्ती । आबादी ।
बसीकरन-पुं० = वशीकरण ।
बसीठ-पुं० [सं० अवसृष्ट] [भाव० बसीठी] समाचार ले जानेवाला दूत ।
बसीता*-पुं० [हिं० बसना] १. निवास । २. निवास-स्थान ।
बसीना*-अ० = बसना ।
पुं० [हिं० बसना] बसने या रहने की क्रिया या भाव । निवास ।
बसूला-पुं० [सं० वासि] [स्त्री० अल्पा० बसूली] लकड़ी गढ़ने का बढ़इयों का एक औजार ।
बसेरा-पुं० [हिं० बसना] १. ठहरने या टिकने की जगह ।
मुहा०-बसेरा देना = रहने के लिए स्थान या आश्रय देना । बसेरा लेना= विश्राम के लिए ठहरना या रहना ।
२. वह जगह जहाँ पक्षी रात बिताते हैं ।
बसेरी*-वि० [हिं० बसेरा] निवासी ।
बसैया*-वि०[हिं० बसना] बसनेवाला ।
बसोवास-पुं० [हिं० वास+आवास] रहने की जगह । निवास-स्थान ।
बसौंधी-स्त्री० दे० 'रबड़ी' ।
बस्ता-पुं० [फा०] १. वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियें आदि बांधी जाती हैं । बेठन । बसना । २. इस प्रकार बाँधी हुई पुस्तकें या कागज आदि ।
बस्ती-स्त्री०[सं० बसति] वह स्थान जहाँ कुछ लोग घर बनाकर रहते हों । आबादी ।
बहँगी-स्त्री० [सं०विहंगिका] बोझ ढोने के लिए वह ढाँचा, जिसमें लकड़ी के दोनों ओर बड़े छींके लटके रहते हैं । कांवर ।
बहकना-अ० [हिं० बहना] १. उचित व्यवहार छोड़कर दूसरी ओर जा पड़ना । पथ-भ्रष्ट होना । २. ठीक रास्ते पर न जाकर भूल से दूसरी ओर जा पड़ना । ३ किसी के धोखे में आ जाना । ४ किसी प्रकार के मद या आवेश में चूर होना ।
मुहा०-बहकी बहकी बातें करना= पागलों की-सी या बढ़ी-चढ़ी बातें करना ।
बहकाना-स० [हिं० बहकना] १. ठीक रास्ते से हटाकर धोखे से दूसरी तरफ़ ले जाना । २. लक्ष्य से हटाकर इधर-उधर करना । ३. दे० 'बहलाना' ।
बहतोल*-स्त्री० [हिं० बहता] पानी बहने की नाली ।
बहन-स्त्री० [सं० भगिनी] १. (भाई के लिए उसकी) माता की कन्या । २. चाचा, मामा, बूआ आदि की लड़की ।

बहना-अ० [सं०वहन] १. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर चलना। प्रवाहित होना। मुहा०-बहती गंगा में हाथ धोना= किसी अवसर से सहज में लाभ उठाना। २. पानी की धारा में पड़कर निरन्तर उसके साथ चलना। ३. निरन्तर रस के रूप में निकलना। ४. (हवा) चलना। ५. दुर्दशा-ग्रस्त होकर इधर-उधर घूमना। मारा-मारा फिरना। ६. कुमार्गी या आवारा होना। ७. गर्भ-पात होना। (चौपायों के लिए) ८. (रुपया आदि) नष्ट हो जाना। ९. निर्वाह होना। स० १. कोई चीज अपने ऊपर लाद या खींचकर ले चलना। २. धारण करना।

बहनापा-पुं० [हिं० बहन+आपा (प्रत्य०)] बहन का जोड़ा या माना हुआ संबंध।

बहनी*-स्त्री० [सं० वह्नि] आग। †स्त्री० [सं० भगिनी] बहन।

बहनु*-पुं० [सं० वाहन] सवारी।

बहनेली-स्त्री० [हिं० बहन] वह जिसके साथ बहन का नाता लगाया जाय। (स्त्रियाँ)

बहनोई-पुं० [हिं० बहन] बहन का पति।

बहरा-वि० [सं० बधिर] [स्त्री० बहरी] जो कान से न सुने या कम सुने।

बहराना-स० [हिं० भुलाना] १.बहलाना। २. बहकाना। फुसलाना। पुं० [हिं० बाहर] शहर या बस्ती का बाहरी भाग। स० [हिं० बाहर] १. बाहर की ओर करना या ले जाना। २. अलग करना।

बहरियाना†-स०=बाहर करना।

बहरी-स्त्री० [अ०] एक शिकारी चिड़िया। वि० बाहर का। बाहरी। यौ०-बहरी अलंग या ओर=नगर का बाहरी भाग।

बहल-स्त्री० दे० 'बहली'।

बहलना-अ० [हिं० बहलाना] [भाव० बहलाव] १. चिन्ता या दुख की बात भूलकर चित्त का दूसरी ओर लगना। २. मनोरंजन होना। ३. भुलावे में आना।

बहलाना-स० [हिं० भूलना] १. इधर-उधर की बातें करके चिन्तित या दुःखी व्यक्ति का मन दूसरी ओर ले जाना। २ चित्त प्रसन्न करना। ३. बातों में लगाकर भुलावा देना। बहकाना।

बहली-स्त्री० [सं० वहल=बैल] रथ की तरह की बैल-गाड़ी।

बहल्ला*-पुं० [हिं० बहलना] आनंद।

बहस-स्त्री० [अ०] किसी की बातें सुनते हुए उनके उत्तर देते चलना। तर्क-वितर्क। विवाद।

बहसना*-अ० [अ० बहस+ना] तर्क या विवाद करना।

बहा-पुं० [हिं० बहना] पानी बहने का बड़ा नाला या छोटी नहर।

बहादुर-वि० [फ़ा०] [भाव० बहादुरी] १. शूर-वीर। २. पराक्रमी।

बहादुराना-वि० [फ़ा०] बहादुरों का-सा। वीरता-पूर्ण।

बहाना-स० [हिं० बहना] १.द्रव पदार्थों को नीचे की ओर जाने में प्रवृत्त करना। प्रवाहित करना। २. पानी की धारा में डालना। ३ (हवा) चलाना। ४. व्यर्थ व्यय करना। गँवाना। ५.सस्ता बेचना। स० [हिं० बाहना] बाहने का काम दूसरे से कराना। पुं० [फ़ा० बहानः] १.अपना बचाव करने या मतलब निकालने के लिए कही हुई झूठी बात। मिस। हीला। २.नाम मात्र

का कारण। तुच्छ निमित्त।

बहार-स्त्री० [फा०] १. वसंत ऋतु। २. मौज। मजा। आनंद। ३. रमणीयता।

बहाल-वि० [फा०] १ अपने स्थान पर फिर से या पूर्ववत् स्थित। २. भला-चंगा। स्वस्थ।

बहाली-स्त्री० [फा०] फिर उसी जगह पर बहाल या नियुक्त होना। पुनर्नियुक्ति। स्त्री० दे० 'बहाना'।

बहाव-पुं० [हिं० बहना] १. बहने की क्रिया या भाव। प्रवाह। २. बहता हुआ पानी। ३. प्रबल वेग या प्रवृत्ति।

बहिक्रम*-पुं० [सं० वय.क्रम] अवस्था। वय। उम्र।

बहिन-स्त्री० = बहन।

बहियाँ-स्त्री० = बाँह।

बहिरंग-वि० [सं०] बाहरी। बाहर का। 'अंतरंग' का उलटा।

बहिर*-वि० दे० 'बहरा'।

बहिर्गत-वि० [सं०] बाहर निकला या आया हुआ।

बहिर्जगत्-पुं० [सं०] बाहरी या दृश्य जगत्।

बहिर्मुख-वि० [सं०] विमुख। विपरीत।

बहिर्लापिका-स्त्री० [सं०] वह पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द उसकी पद-योजना में नहीं रहता। 'अंतर्लापिका' का उलटा।

बहिर्वाणिज्य-पुं० [सं०] किसी देश का दूसरे या बाहरी देशों के साथ होनेवाला वाणिज्य या व्यापार। (एक्स्टर्नल ट्रेड)

बहिश्त-पुं० [फा० बिहिश्त] मुसलमानों के अनुसार, स्वर्ग।

बहिष्कार-पुं० [सं०] [वि० बहिष्कृत] १. बाहर करना। निकालना। २. सब प्रकार का सम्बन्ध छोड़ देना।

बहिष्कृत-वि० [सं०] १. बाहर किया या निकाला हुआ। २. छोड़ा या त्यागा हुआ।

बही-स्त्री० [हिं० बँधी ?] हिसाब-किताब लिखने की (विशेषतः लंबी) पुस्तक। यौ०-बही-खाता।

बहीर-स्त्री० [फा०] १. सेना के साथ साथ चलनेवाले नौकर-चाकर दूकानदार आदि। २ सेना की सामग्री। ३.दे० 'भीड़'। * अव्य० दे० 'बाहर'।

बहु-वि० [सं०] बहुत। अनेक।

बहुक-वि० [सं०] १. बहुतों से सम्बन्ध रखनेवाला। २ जिसमें बहुत-से लोग हों।

बहुक शारीरक-पुं० [सं०] वह शारीरक जिसमें बहुत से लोग हों या जिसका संबंध बहुत-से लोगों से हो। (कारपोरेशन एग्रिगेट)

बहुज्ञ-वि०[सं०] [भाव० बहुज्ञता] बहुत-सी बातें जाननेवाला। अच्छा जानकार।

बहुत-वि० [सं० बहुतर] १. गिनती में अधिक। अनेक। २. मात्रा या परिमाण में अधिक। ३. यथेष्ट। काफी।

पद०-बहुत अच्छा=ठीक है। ऐसा ही होगा। बहुत कुछ=यथेष्ट। बहुत खूब=बहुत अच्छा।

मुहा०-बहुत करके=१. संभव है। २. बहुधा। प्राय।

क्रि० वि० खूब ज्यादा।

बहुतक*-वि० दे० 'बहुतेरा'।

बहुतायत-स्त्री० [हिं० बहुत] 'बहुत' का भाव। आधिकता। ज्यादती।

बहुतेरा-वि० [हिं० बहुत] [स्त्री० बहुतेरी] बहुत-सा। अधिक।

क्रि० वि० अनेक प्रकार से।

बहुत्व-पुं० [सं०] 'बहु' का भाव।

बहुदर्शी-पुं० [सं० बहुदर्शिन्] [भाव० बहुदर्शिता] जिसने संसार या व्यवहार की बहुत-सी बातें देखी हों।

•बहु-धंधी-वि० [हिं० बहु=बहुत+धंधा] जो बहुत-से काम एक साथ अपने हाथ में ले लेता हो।

बहुधा-क्रि० वि० [सं०] प्रायः। अकसर।

बहुभाषज्ञ-वि० [सं०] बहुत-सी भाषाएँ जाननेवाला।

बहुभाषी-वि० [सं० बहुभाषिन्] बहुत बोलनेवाला।

बहुभुज-पुं० [सं०] वह क्षेत्र जिसमें बहुत-से भुज या किनारे हों। (पॉलिगन)

बहु मत-पुं० [सं०] १ बहुत-से लोगों का अलग अलग मत। २.बहुत-से लोगों का एक मत या राय। (मेजॉरिटी)

बहुमूत्र-पुं० [सं०] बहुत अधिक और बार बार पेशाब होने का रोग।

बहुमूल्य-वि० [सं०] जिसका मूल्य बहुत या अधिक हो। कीमती। दामी।

बहुरंगा-वि० [हिं०बहु+रंग] कई मिले-जुले रंगों का।

बहुरंगी-वि० [हिं० बहुरंग+ई] १. बहुत-से रंगोंवाला। २. अनेक प्रकार के कौतुक दिखानेवाला। ३. बहुरूपिया।

बहुरना-अ० दे० 'लौटना'।

बहुरि*-क्रि० वि० [हिं० बहुरना] १. पुनः। फिर। २. उपरांत। पीछे। बाद।

बहुरिया-स्त्री० [हिं० बहू] नई बहू।

बहुरूपिया-पुं० [हिं० बहु+रूप] वह जो तरह तरह के रूप या भेस बनाकर दिखाता और इसी से निर्वाह करता हो।

बहुल-वि० [सं०] अधिक। ज्यादा।

बहुलता-स्त्री० [सं०] १. ज्यादती। अधिकता। २. फालतूपन। व्यर्थता।

बहुवचन-पुं० [सं०] व्याकरण में वह शब्द जो एक से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों का वाचक होता है।

बहुवर्षी-वि० [सं०] (पेड़ या पौधा) जो एक ही वर्ष के अन्दर नष्ट न हो जाय, बल्कि बहुत वर्षों तक हरा-भरा बना रहे। (पेरेनियल)

बहुविद्-वि० दे० 'बहुज्ञ'।

बहु-विवाह-पुं० [सं०] एक पुरुष का कई स्त्रियों के साथ अथवा एक स्त्री का कई पुरुषों के साथ विवाह करना। (पॉलिगैमी)

बहुव्रीहि-पुं० [सं०] व्याकरण में वह समास जिसमें दो या अधिक पदों के मेल से बननेवाला समस्त-पद किसी दूसरे पद का विशेषण होता है।

बहुशः-वि० [सं०] बहुत। अधिक। क्रि० वि० १ प्रायः। २.बहुत प्रकार से।

बहुश्रुत-वि० [सं०] [भाव० बहु-श्रुतत्व] जिसने बहुत सी बातें सुनी हों। (अच्छा जानकार)

बहु-संख्यक-वि० [सं०] १. गिनती में बहुत। २ जो दूसरों की अपेक्षा या तुलना में गिनती में अधिक हो।

बहू-स्त्री० [सं० वधू] १ लड़के की स्त्री। पुत्र-वधू। २.पत्नी। स्त्री। ३. दुलहिन।

बहेरी*-स्त्री० दे० 'बहाना'।

बहेलिया-पुं० [सं० बध+हेला] पशु-पक्षियों को फँसाने या मारने का काम करनेवाला। चिड़ीमार।

बहोर*-पुं० [हिं० बहुरना] 'बहुरना' का भाव। फेरा। चक्कर।

बहोरना-स० [हिं० बहुरना] लौटाना।

बहोरि*-अव्य०[हिं०बहोर] पुनः। फिर।

बाँक-स्त्री० [सं० बंक] १. बाँह पर

पहनने का एक गहना। २.पैरों में पहनने का एक गहना। ३. कमान। धनुष। ४. एक प्रकार की छुरी।
*वि०[सं०वंक] १.टेढ़ा। २.बाँका-तिरछा।

बाँकड़ी-स्त्री० [सं० वंक] बादले या कलाबत्तू का एक प्रकार का फीता।

बाँक-डोरी-स्त्री० [हिं० बाँक] एक प्रकार का शस्त्र।

बाँकपन-पुं० [हिं०बाँका+पन] १. 'बाँका' होने का भाव। २. छवि। शोभा।

बाँका-वि० [सं० वंक] १ टेढ़ा। २.सुंदर और बना-ठना। छैला। ३. बहादुर।

बाँकुर(ा)*-वि० [हिं० बांका] १ बाँका। टेढ़ा। २.तेज धार का। ३ कुशल। चतुर।

बाँग-स्त्री० [फा०] १. पुकार। चिल्लाहट। २. लोगों को मसजिद में नमाज के समय बुलाने के लिए मुल्ला की पुकार। अजान। ३. मुरगे का सबेरे बोलना।

बाँगड़-पुं० [देश०] हिसार, रोहतक और करनाल तथा इनके आस-पास का प्रदेश। हरियाना।

बाँगड़ू-स्त्री० [हिं० बांगड़] बांगड़ प्रदेश की भाषा। हरियानी।
वि० उजड्ड। जंगली।

बाँचना†-स० = पढ़ना।
* स० दे० 'बचना'।
स० दे० 'बचाना'।

बाँछना*-स० [सं० वांछा] १. इच्छा करना। चाहना। २. चुनना। छाँटना।

बांछा*-स्त्री० दे० 'वांछा'।

बांछी*-पुं० [सं० वांछिन्] अभिलाषा करने या चाहनेवाला।

बाँझ--स्त्री० [सं० बंध्या] [भाव० बाँझपन] वह स्त्री या स्त्री-जाति का पशु जिसे संतान होती ही न हो। बंध्या।

बाँट-स्त्री० [हिं० बाँटना] १. बांटने की क्रिया या भाव। २. भाग।

बाँटना-स० [सं० वितरण] १. किसी चीज के कई भाग करके अलग अलग रखना, लगाना या जमाना। २. हिस्सा या विभाग करके लोगों को देना। वितरण करना।

बाँटा-पुं० [हिं० बांटना] १. बांटने की क्रिया या भाव। २. भाग। हिस्सा।
मुहा०-**बाँटे पड़ना**=हिस्से में आना।

बाँड़ा-वि० [देश०] १. बिना पूँछ का। दुम-कटा। (पशु) २. असहाय। दीन।

बाँदा-पुं० [सं० वंदाक] वृक्षों की शाखाओं पर फलनेवाली एक बनस्पति।

बाँदी-स्त्री० [फा० बंदा] लौंडी। दासी।

बाँध-पुं० [हिं० बाँधना] १. नदी या जलाशय का जल रोकने के लिए उसके किनारे बना हुआ मिट्टी, पत्थर आदि का धुस्स। पुश्ता। बंद। २. वह बन्धन जो किसी बात को रोकने या उसके आगे बढ़ने पर नियंत्रण रखने के लिए लगा जाता हो। (बार)

बाँधना-स० [सं० बंधन] १. कसने या जकड़ने के लिए घेरकर रोकना। २. रस्सी, कपड़े आदि में लपेटकर उसमें गांठ लगाना। ३. पकड़कर बन्द या कैद करना। ४. नियम, निश्चय आदि द्वारा किसी सीमा में रखना। पाबंद करना। ५.मंत्र आदि की सहायता से कोई काम होने से रोकना। ६. प्रेम-पाश में बद्ध करना। ७.क्रम, व्यवस्था आदि ठीक या नियत करना। ८. नदी या जलाशय का पानी रोकने के लिए बाँध बनाना। ९.चूर्ण आदि को पिंड के रूप में लाना। जैसे-लड्डू या गोली बाँधना। १०. उपक्रम या

योजना करना। ११. अस्त्र-शस्त्र आदि धारण करना।

बाँधनी-पौरि*-स्त्री० [हिं० बाँधना+पौरि] पशुओं को बाँधकर रखने का स्थान। बाड़ा।

बाँधनूँ-पुं० [हिं० बाँधना] १. पहले से ठीक की हुई योजना या विचार। उप-क्रम। मंसूबा। २ मन-गढ़ंत बात।

बांधव-पुं० [सं०] १. भाई। बंधु। २. रिश्तेदार। सम्बन्धी। ३. मित्र। दोस्त।

बाँबी-स्त्री० [सं० वल्मीक] १. दीमकों के रहने का मिट्टी का ढूह या भीटा। २. साँप का बिल।

बाँवना*-स० = रखना।

बाँस-पुं० [सं० वंश] १. एक प्रसिद्ध लंबी, दृढ़ वनस्पति जिसके कांडों में जगह जगह गाँठें होती हैं और जो छाजन, टोकरे आदि बनाने के काम आता है।

बाँसपूर-पुं० [हिं० बाँस+पूरना] एक प्रकार का बढ़िया पतला कपड़ा।

बाँसली-स्त्री०=बाँसुरी।

बाँसा¹-पुं० [सं० वंश=रीढ़] १. नथनों के ऊपरवाली नाक के बीच की हड्डी। २. रीढ़ की हड्डी।

बाँसुरी-स्त्री० [हिं० बाँस] बाँस का बना हुआ, मुँह से फूँककर बजाया जाने-वाला एक प्रसिद्ध बाजा। वंशी।

बाँह-स्त्री० [सं० बाहु] १. भुजा। हाथ। मुहा०-**बाँह गहना या पकड़ना**=१. किसी की सहायता करने का भार लेना। २. अपनाना। ३. विवाह करना। **बाँह देना**=सहारा देना।
२.बल। शक्ति। ३ सहायक। ४.सहारा। मदद। ५. भरोसा। सहारा। ६.भुजाओं का बल बढ़ानेवाली एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं। ७. गले में पहनने के कपड़ों का वह अंश जिसमें बाँहें रहती हैं। आस्तीन।

बाँह-बोल-पुं० [हिं० बाँह+बोल=वचन] रक्षा करने या सहायता देने का वचन।

बाँहाँजोड़ी-क्रि०वि० [हिं० बाँह जोड़ना] कंधे के साथ कंधा मिलाकर। साथ-साथ।

बा-पुं० [सं० बा=जल] जल। पानी। स्त्री० [फा० बार] बार। दफा। *स्त्री० दे० 'बाई'। (स्त्रियों का संबोधन)

बाइबिल-स्त्री० [अं०] ईसाइयों की मुख्य और प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक।

बाइसिकिल-स्त्री० [अं०] दो पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जो पैरों से चलाते हैं।

बाई-स्त्री० [सं० वायु] त्रिदोषों में से वात नामक दोष। विशेष दे० 'वात'। पद-**बाई की झोंक** = रोग आदि के समय वायु का प्रकोप या वेग जिसमें आदमी अंड-बंड बातें बकता है। मुहा०-**बाई चढ़ना**=१ वायु का प्रकोप होना। २. आवेश या क्रोध के मारे पागल होना। **बाई पचना** = अभिमान का आवेश नष्ट हो जाना। घमंड टूटना। स्त्री०[हिं० बाबा, बाबो] १.स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द। २ वेश्याओं के नाम के साथ लगनेवाला एक शब्द।

बाउ¹-पुं०=वायु।

बाउर¹-वि० दे० 'बावला'।

बाएँ-क्रि० वि० [हिं० बायाँ] बाईं ओर या तरफ।

बाक*-पुं० [सं० वाक्य] बात। वचन।

बाकचाल*-वि० दे० 'वाचाल'।

बाकना*-अ० दे० 'बकना'।

बाकल¹-पुं० दे० 'वल्कल'।

बाका*-स्त्री० दे० 'वाचा'।

बाकी-वि० [अ०] १. जो बच रहा

हो। अवशिष्ट। शेष। २. जो हिसाब करने पर निकले या बच रहे।
स्त्री० १. बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर बची हुई संख्या। २. गणित में, इस प्रकार घटाने की प्रक्रिया।
अव्य० लेकिन। परंतु।
बाकुल*-पुं० दे० 'बल्कल'।
बाखरि*-स्त्री० दे० 'बखरी'
बाग-पुं० [अ०] उद्यान। वाटिका।
स्त्री० [सं० वल्गा] घोड़े की लगाम।
मुहा०-बाग मोड़ना=किसी ओर घुमाना, प्रवृत्त करना या लगाना।
बागडोर-स्त्री० [हिं० बाग+डोर] लगाम।
बागना*-अ० [सं० वक=चलना] यों ही चलना-फिरना। टहलना।
अ० [सं० वाक्] बोलना।
बागबान-पुं० [फा०] [भाव० बाग-बानी] माली।
बागल*-पुं० दे० 'बगला'।
बागा-पुं० [देश०] अंगे की तरह का एक पुराना पहनावा। जामा।
बागी-पुं० [अ०] वह जो किसी के विरुद्ध विद्रोह करे। विद्रोही।
बागीचा-पुं० [फा० बागच.] छोटा बाग।
बागुर*-पुं० [?] जाल। फंदा।
बाघंबर-पुं० [सं० व्याघ्रांबर] बाघ की खाल, जो ओढ़ने-बिछाने के काम आती है।
बाघ-पुं० [सं० व्याघ्र] शेर नामक जंतु।
बाघी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फोड़ा जो गरमी या आतशक के रोगियों को जाँघ की संधि में होता है।
बाच*-वि० [सं० वाच्य] १. वर्णन करने के योग्य। अच्छा। २. सुंदर। बढ़िया।
बाचना†-अ० [हिं० बचना] बचना।
स० बचाना।
बाचा*-स्त्री० दे० 'वाचा'।
बाचा-बंध*-वि० [सं० वाचा+बद्ध] जिसने कोई वचन दिया हो। प्रतिज्ञा-बद्ध।
बाछा-पुं० [सं० वत्स, प्रा० बच्छ] १. गौ का बछड़ा। २. बालक। लड़का।
बाज-पुं० [अ० बाज़] १. एक प्रसिद्ध बड़ी शिकारी चिड़िया। २. तीर के पीछे लगा हुआ पर।
प्रत्य० [फा०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर रखनेवाले, व्यसनी, शौकीन या कर्त्ता आदि का अर्थ देता है। जैसे-बहानेबाज, नशेबाज।
वि० [फा०] वंचित। रहित।
मुहा०-बाज आना=१. जान-बूझकर वंचित या रहित होना। २. दूर रहना।
बाज रखना=रोकना। मना करना।
वि० [अ०] कोई कोई। कुछ विशिष्ट।
*पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा।
पुं० [सं० वाद्य] बाजा।
बाज-दावा-पुं० [फा०] १. अपने दावे, अधिकार या माँग का परित्याग करना।
बाजन*-पुं० दे० 'बाजा'। २. वह पत्र जिस पर ऐसे परित्याग का उल्लेख होता है।
बाजना†-अ० [हिं० बजना] १. बजना। २. झगड़ा करना। लड़ना। ३. किसी नाम से प्रसिद्ध होना। ४. आघात लगना।
पुं० दे० 'बाजा'।
बाजरा-पुं० [सं० वर्जरी] एक प्रकार का मोटा अन्न। जोन्हरी।
बाजा-पुं० [सं० वाद्य] वह यंत्र जिसपर आघात करके स्वर निकालते या ताल देते हैं। बजाने का यंत्र। वाद्य। जैसे-मृदंग, करताल, सितार, तबला आदि।
यौ०-बाजा-गाजा=अनेक प्रकार के बजते हुए बाजों का समूह।

बा-जाब्ता-क्रि० वि० [फा०] जाब्ते या नियम के अनुसार।
वि० जो जाब्ते या नियम के अनुकूल हो।

बाजार-पुं० [फा०] १. वह स्थान जहाँ तरह तरह की चीजों की दूकानें हों। मुहा०-बाजार करना=बाजार में जाकर चीजें खरीदना या बेचना। बाजार गर्म होना=किसी बात की बहुत अधिकता होना। बाजार तेज होना=किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना। बाजार उतरना या मंदा होना=किसी चीज का भाव या दाम घटना। २. वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय, तिथि वार या अवसर पर दूकानें लगती हों। हाट। पैंठ।

बाजारी-वि० [फा०] १ बाजार संबन्धी। बाजार का। २. साधारण। मामूली। ३. बाजार में रहने या बैठनेवाला। जैसे-बाजारी औरत।

बाजारू-वि० दे० 'बाजारी'।

बाजि*-पुं० [सं० वाजिन्] १. घोड़ा। २. तीर। ३. चिड़िया।
वि० गमन करने या चलनेवाला।

बाजी-स्त्री० [फा० बाज़ी] १. ऐसी शर्त जिसमें हार-जीत होने पर कुछ धन लिया या दिया जाय। शर्त। बदान। मुहा०-बाजी मारना=किसी बात में जीतना। बाजी ले जाना=प्रतियोगिता में आगे बढ़ जाना या सफल होना। २. आदि से अंत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें हार-जीत हो या दाँव लगा हो।
†पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा।

बाजीगर-पुं० [फा०] १. जादूगर। २. कसरत के खेल दिखानेवाला, नट।

बाजु*-पुं० [फा० बाजू] १. भुजा। बाँह। २. बाजूबंद। (गहना)

बाजूबंद-पुं० [फा०] बाँह पर पहनने का एक गहना। भुजबंद। बाजू।

बाजूबीर*-पुं० दे० 'बाजूबंद'।

बाझ*-अव्य० [फा०] बगैर। बिना।

बाझन*-स्त्री० [हिं० बझना=फँसना] १. बझने या फँसने की क्रिया या भाव। २. उलझन। पेंच। ३. बखेड़ा। झंझट।

बाझना*-अ० दे० 'बझना'।

बाट-पुं० [सं० वाट] मार्ग। रास्ता। मुहा०-बाट करना=नया रास्ता खोलना या निकालना। मार्ग बनाना। बाट जोहना या देखना=प्रतीक्षा करना। आसरा देखना। (किसी के) बाट पड़ना=पीछे पड़ना। तंग करने के लिए किसी के काम में बाधक होना। बाट पड़ना=डाका पड़ना। बाट पारना=डाका डालना।
पुं० [सं० वटक] १. बटखरा। २. बट्टा।

बाटकी*-स्त्री० दे० 'बटलोई'।

बाटना†-स० [हिं० बट्टा] पीसना।
स० दे० 'बटना'।

बाटिका-स्त्री०[सं०] छोटा बाग। बगीचा।

बाटी-स्त्री० [सं० वटी] १. बड़ी गोली। पिंडी। २. उपलों पर सेंककर बनाई जानेवाली एक प्रकार की गोल रोटी।
स्त्री० दे० 'कटोरी'।

बाड़*-स्त्री० दे० 'बाढ़'।

बाड़व-पुं० दे० 'बड़वानल'।

बाड़ा-पुं० [सं० वाट] १. चारों ओर से घिरा हुआ बड़ा मैदान। २.पशु-शाला।

बाड़ी†-स्त्री० [सं० वारी] वाटिका।

बाढ़-स्त्री० [हिं० बढ़ना] १ बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ाव। वृद्धि। २.अधिक पानी बरसने के कारण नदी या तालाब

के जल का बढ़ जाना। जल-प्लावन। सैलाब। ३. एक प्रकार का गहना। ४. बंदूक या तोप का लगातार छूटना।
मुहा०-बाढ़ दगना=बन्दूकों या तोपों में से गोली-गोलों का लगातार छूटना या उनके छूटने का खाली शब्द होना।
स्त्री० [सं० वार] [हिं० बारी] तल-वार, छुरी आदि शस्त्रों की धार।

बाढ़ना*-अ०='बढ़ना'।

बाढ़ि(ढ़ी)*-स्त्री० दे० 'बाढ़'।

बाढ़ीवान-वि० [हिं० बाढ़] शस्त्रों आदि पर बाढ़ या सान रखनेवाला।

बाण-पुं० [सं०] १. तीर। शर। २. पाँच की संख्या।

बाणिज्य-पु० [सं०] व्यवसाय। रोजगार। सौदागरी। व्यापार।

बात-स्त्री० [सं० वार्त्ता] १. कहा हुआ सार्थक वाक्य। कथन। वचन। वाणी।
मुहा०-बात उठाना=१ चर्चा छेड़ना। २ कठोर वचन सहना। ३. बात न मानना। बात कहते=बहुत थोड़े समय में। तुरंत। झट। बात काटना=१. किसी के बोलते समय बीच में बोल उठना। २. किसी की बात का विरोध या खंडन करना। बात की बात में= बहुत थोड़े समय में। झट। तुरंत। बात खाली जाना=प्रार्थना या कथन का मान्य न होना। बात टालना=१. सुनकर भी ध्यान न देना। २. कहना न मानना। बात न पूछना=कुछ भी आदर न करना। (किसी की) बात पर जाना=१. बात पर ध्यान देना। २.कहने पर भरोसा करना। बात पूछना= १. पता रखना। ख़बर लेना। २. आदर करना। बात बढ़ना=साधारण बात-चीत का बढ़कर विवाद या झगड़े का रूप धारण करना। बात या बातें बनाना= इधर-उधर की झूठी बातें कहना। बात उठना, चलना या छिड़ना= प्रसंग या चर्चा छिड़ना। बात का बतंगड़ करना=साधारण-सी बात को व्यर्थ बहुत बड़ा रूप देना। बात बनना= १. काम बनना। प्रयोजन सिद्ध होना। २. बोल-बाला होना। बात बात पर या में=प्रत्येक अवसर पर। हर समय।
२. घटित होनेवाली या प्रस्तुत अवस्था। परिस्थिति। ३. संदेश। सँदेसा। ४. वार्त्तालाप। बात-चात। ५. कुछ निश्चय करने के लिए उसके संबंध की चर्चा। ६ फँसाने या धोखा देनेवाली बात।
मुहा०-(किसी की) बातों में आना= कथन या व्यवहार से धोखा खाना।
७. वचन। वादा।
मुहा०-बात का धनी, पक्का या पूरा=अपने वचन या बात का पालन करनेवाला। (अपनी) बात रखना= १.वचन पूरा करना। २. अपनी बात पर अड़ा रहना। बात हारना=वचन देना।
८. साख। प्रतीति। एतबार। ९. मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। इज़्ज़त।
मुहा०-(अपनी) बात खोना=प्रतिष्ठा गँवाना। इज़्ज़त बिगाड़ना।
१०.उपदेश। नसीहत। ११.रहस्य। भेद। १२.तारीफ़ या प्रशंसा का विषय। १३. चमत्कारपूर्ण कथन। विलक्षण उक्ति। १४. अभिप्राय। तात्पर्य। आशय। १५. विशेष गुण। खूबी। १६. कथन का सार तत्त्व। मर्म। १८. कोई काम करने का उचित मार्ग, साधन या उपाय।
*पुं० दे० 'वात'।

बात-चीत-स्त्री० [हिं० बात+चिंतन] दो या कई मनुष्यों में होनेवाला कथोपकथन। वार्तालाप।

• बाती-स्त्री० दे० 'बत्ती'।

बातुल-वि० [सं० वातुल] पागल।

बातूनिया(नी)-वि० [हिं० बात+ऊनी (प्रत्य०)] बहुत या व्यर्थ की बातें करनेवाला। बकवादी।

बाथ†-पुं० [?] गोद। अंक। क्रोड़।

बाद-अव्य० [अ०] उपरांत। पीछे।

वि० १. अलग हटाया या छोड़ा हुआ। २.दस्तूरी, छूट आदि के रूप में दाम में से काटा हुआ (धन)। ३.अतिरिक्त। सिवा।

पुं० दे० 'वाद'।

*पुं० [हिं० बदना] शर्त्त। बाजी।

मुहा०-बाद मेलना=बाजी लगाना।

अव्य० [सं० वाद] व्यर्थ। बे-फायदा।

बादना†-अ० [सं० वाद+ना (प्रत्य०)] १. बकवाद करना। २. हुज्जत करना। झगड़ना। ३ ललकारना।

बादर†-पुं० दे० 'बादल'।

वि० [?] प्रसन्न। खुश।

बादरिया†-स्त्री० दे० 'बदली'। (मेघ)

बादल-पुं० [सं०वारिद, हिं०बादर] पृथ्वी पर के जल से निकली हुई वह भाप जो घनी होकर आकाश में फैल जाती है और जिससे पानी बरसता है। मेघ। घन। मुहा०-बादल उठना, उमड़ना, घिरना या चढ़ना=बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में आना। बादल गरजना=मेघों की रगड़ से आकाश में घोर शब्द होना। बादल छँटना=मेघों का इधर-उधर हट या छितरा जाना।

बादला-पुं० [?] एक प्रकार का सुनहला या रुपहला चिपटा चमकीला तार।

बादशाह-पुं० [फा०] [भाव० बादशाहत, वि० बादशाही] १ बड़ा राजा। शासक। २. किसी विषय या कार्य में सबसे श्रेष्ठ पुरुष। ३. मनमाने काम करनेवाला।

बाद-हवाई-वि० [फा० बाद+अ० हवा] बिना सिर-पैर का। ऊट-पटांग।

बादाम-पुं० [फा०] एक वृक्ष जिसके प्रसिद्ध फल मेवों में गिने जाते हैं।

बादामी-वि० [फा० बादाम+ई (प्रत्य०)] १. बादाम के छिलके के रंग का। हलका पीला। २. बादाम के आकार का।

बादि*-अव्य०[सं०वादि] व्यर्थ। फजूल।

बादित*-वि०[सं०वादन] बजाया हुआ।

बादी-वि० [फा०] १. वायु विकार-संबंधी। २ शरीर में वायु का विकार उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला।

स्त्री० शरीर में वायु का प्रकोप।

बादीगर*-पुं० दे० 'बाजीगर'।

बादुर-पुं० [देश०] चमगादड़।

बाध-पुं० [सं०] १.बाधा। अड़चन। २. पीड़ा। कष्ट। ३. कठिनता। दिक्कत।

†पुं० [सं० वद्ध] खाट बुनने की मूँज की रस्सी। बान।

बाधक-पुं० [सं०] [स्त्री० बाधिका] १. रुकावट डालनेवाला। २. कष्टदायक।

बाधन-पुं० [सं०] [वि० बाधित, बाध्य] १.बाधा या रुकावट डालना। २.कष्ट देना।

बाधना*-स० [सं० बाधन] बाधा या रुकावट डालना।

बाधा-स्त्री० [सं०] १. वह बात जिससे कोई काम रुके। विघ्न। रुकावट। अड़चन। २.भूत-प्रेत आदि के कारण शारीरिक कष्ट।

बाधित-वि० [सं०] १. जो रोका या दबाया गया हो। २. जिसके साधन में

रुकावट हो। ३. ग्रस्त।

बाध्य-वि० [सं०] [भाव० बाध्यता] १. जो रोका या दबाया जानेवाला हो। २. विवश या मजबूर होनेवाला।

बान-पुं० [सं० बाण] १. बाण। तीर। २. पानी की ऊँची लहर। ३. एक प्रकार की आतशबाजी। ४.दे०'बाध'। (मूँज का)

स्त्री० [हिं० बनना] १. बनाव-सिंगार। सज-धज। २. अभ्यास। आदत।

*पुं० [सं० वर्ण] १. चमक। २. बाना नामक हथियार।

बानक-स्त्री० [हिं० बनना] १. वेश। भेस। सज-धज। २.परिस्थिति। संयोग। (पश्चिम में यह शब्द पुं०बोला जाता है।)

बानगी-स्त्री० [हिं० बनना] नमूना।

बानना*-स० [हिं० बाना] १. किसी बात का बाना ग्रहण करना। २. किसी बात का उपक्रम करना। ठानना।

स० दे० 'बनाना'।

बानर-पुं० दे० 'बंदर'।

बाना-पुं० [हिं० बनाना] १. पहनावा। पोशाक। २ वेश-विन्यास। भेस। ३. रीति। चाल। ४. व्यापार में कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं का समूह या वर्ग। जैसे-बिसात-बाना।

पुं० [सं० बाण] १. तलवार की तरह का एक दुधारा हथियार। २. भाले की तरह का एक हथियार।

पुं० [सं० वयन=बुनना] १. बुनावट। विशेषतः कपड़े की बुनावट में वेड़े बल में लगनेवाले सूत। भरनी। २. वह महीन रेशमी डोरा जिससे कपड़े सीते और पतंग उड़ाते हैं।

स० [सं० व्यापन] १. सिकुड़नेवाली वस्तु का (अपना) मुँह या छेद फैलाना। जैसे-मुँह बाना। २.बालों में कंघी करना।

बानावरी*-स्त्री० [हिं० बान=तीर] बाण या तीर चलाने की कला या विद्या।

बानि*-स्त्री० दे० 'बानी'।

बानिक-स्त्री० दे० 'बानक'।

बानिया-पुं० = बनिया।

बानी-स्त्री० [सं० वाणी] १. मुँह से निकलनेवाला सार्थक शब्द। वचन। २. मनौती। मन्नत। ३. सरस्वती। ४.साधु-महात्मा का उपदेश। जैसे-दादूदयाल की बानी, कबीर की बानी।

स्त्री० [सं० बाण] बाना नामक हथियार।

* पुं० दे० 'बनिया'।

स्त्री० [सं० वर्ण] चमक। आभा।

स्त्री० दे० वाणिज्य'।

बानैत-पुं० [हिं० बाण या बाना=बनैठी] १. पटा या बाना फेरनेवाला। २ तीर चलानेवाला। ३. योद्धा। सैनिक।

पुं० [हिं० बाना] किसी प्रकार का भेस या बाना धारण करनेवाला।

बाप-पुं० [सं० वाप=बीज बोनेवाला] पिता। जनक।

यौ०-बाप-दादा=पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप-माँ=पालन और रक्षण करनेवाला।

बापुरा-वि० [सं० बर्बर=तुच्छ] [स्त्री० बापुरी] बेचारा। दीन-हीन।

बापू-पुं० १. दे० 'बाप'। २ दे० 'बाबू'।

बाफता-पुं० [फा०] एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

बाबत-अव्य० [अ०] १. संबंध में। २. विषय में।

बाबा-पुं० [तु०] १. पिता। २. पिता का पिता। दादा। ३. साधु-संन्यासियों या बूढ़ों के लिए आदर-सूचक शब्द। ४. लड़कों के लिए प्यार का सम्बोधन।

बाबी*-स्त्री० [हिं० बाबा=साधु] १. साधु स्त्री। २. लड़कियों के लिए प्यार का सम्बोधन।

***बाबुल**-पुं० [हिं०बाबू] १.पिता। २.बाबू।

बाबू-पुं० [हिं० बाबा] १. बड़े आदमियों, शिक्षितों, भले आदमियों और बड़ों के लिए आदर-सूचक शब्द। २. पिता के लिए संबोधन।

बाभन-पुं०१ दे०'ब्राह्मण'।२ दे०'भूमिहार'।

बाम*-वि० दे० 'वाम'।
स्त्री० दे० 'वामा'।

बाय*-स्त्री० [सं०वायु] १ हवा। २.बाई।
स्त्री० दे० 'बावली'। (जल की)

बायक*-पुं० [सं० वाचक] १ कहने या बतलानेवाला। २. पढ़नेवाला। ३.दूत।

बॉयकाट-पुं० [अं०] बहिष्कार।

बायन*-पुं० [सं० वायन] १. वह मिठाई आदि जो मंगल अवसरों पर इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती है। २ उपहार।
पुं० [अ० बयाना] बयाना। पेशगी।
मुहा०-**बायन देना**=छेड़-छाड़ करना।

बायवी-वि०[सं०वायवीय] १.बाहरी। २. अपरिचित। ३.नया आया हुआ। अजनबी।

बायला-वि० [हिं० बाय=बात+ला (प्रत्य०)] १ बात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला। २.जिसे वायु का प्रकोप हो।
पुं० दे० 'बायबी'।

बायस-पुं० [सं० वायस] कौआ।

बायाँ-वि० [सं० वाम] [स्त्री० बाईं] १. शरीर के उस भाग का, जो किसी के पूरब को तरफ मुँह करके खड़े होने पर उत्तर की ओर हो। 'दहिना' का उलटा।
मुहा०-**बायाँ देना**=१. किनारे से निकल जाना। बचा जाना। २. छोड़ देना।
२ उलटा। विपरीत। ३. अहित, अपकार या हानि करनेवाला। विरोधी या शत्रु।
पुं० तबले के साथ बाएँ हाथ से बजाया जानेवाला बाद्य। डुग्गी।

बायें-वि० दे० 'बाएँ'।

बारंबार-क्रि० वि०=बार बार।

बार-पुं० [सं० वार] १ द्वार। दरवाजा। २. आश्रय-स्थान। ठौर-ठिकाना। ३. राज-सभा। दरबार।
स्त्री० [सं०] १. काल। समय। २. देर। विलम्ब। ३. दफा। मरतबा।
मुहा०-**बार बार**=रह रहकर। फिर फिर।
पुं० [फा०, मि०सं० भार] बोझ। भार।
स्त्री० दे० 'बाढ़' और 'बारी'।
पुं० दे० 'बाल'।
वि० १. दे० 'बाल'। २ दे० 'बाला'।

बारगाह-स्त्री० [फा० बारगाह] १.ड्योढ़ी। २ डेरा। खेमा। ३. प्रताप। ऐश्वर्य।

बारजा-पुं० [हिं० बार=द्वार] १. छज्जा। २. बरामदा। ३. कोठा।

बारता*-स्त्री० दे० 'वार्त्ता'।

बार-तिय*-स्त्री० = वेश्या।

बारदाना-पुं० [फा०] वह सन्दूक, लकड़ियाँ, बन्द, टाट आदि जिनमें व्यापार की चीजें बाँधकर कहीं भेजी जाती हैं।

बारन*-पुं० दे० 'वारण'।

बारना*-अ० [सं० वारण] मना करना।
*स० [हिं० बलना] बालना। जलाना।

बार-बधू*-स्त्री०=वेश्या।

बार-बरदार-पुं० [फा०] [भाव० बार-बरदारी] सामान या बोझ ढोनेवाला।

बारह-वि० [सं० द्वादश] [वि० बारहवाँ] जो संख्या में दस और दो हो।
मुहा०-**बारह बाट करना या घालना**=तितर-बितर या नष्ट-भ्रष्ट करना।

बारह-खड़ी-स्त्री० [हिं० बारह+अखरी]

देवनागरी वर्ण-माला में प्रत्येक व्यंजन के साथ अ, आ, इ, ई आदि बारह स्वरों को मात्रा के रूप में लगाकर, बोलने या लिखने की प्रक्रिया।

बारह-दरी-स्त्री० [हिं० बारह+फा० दर] वह बैठक जिसमें चारो ओर बारह दर या दरवाजे हों।

बारह-बानी-वि० [सं० द्वादश (आदित्य) + वर्ण] १. सूर्य के समान प्रकाशमान। २. चोखा। (सोना) ३. निर्दोष। शुद्ध। ४. पूरा। पक्का। स्त्री० सूर्य की सी उज्वल चमक।

बारह-मासा-पुं० [हिं० बारह+मास] वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों के विरह का वर्णन होता है।

बारह-मासी-वि० [हिं० बारह+मास] १. सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला। सदा-बहार (वृक्ष)। २. बारहों महीने होनेवाला।

बारहसिंगा-पुं० [हिं० बारह+सींग] एक प्रकार का बड़ा हिरन।

बारहाँ-वि० [?] बहादुर। वीर।

बारहा-क्रि० वि० [फा० बा] कई बार।

बारा*-वि० [सं० बाल] [स्त्री० बारी] बालक। बच्चा।
पुं० पुत्र। बेटा।

बारात-स्त्री० = बरात।

बारानी-वि०[फा०] बरसाती। वर्षा का। स्त्री० वह भूमि जिसमें केवल वर्षा के जल से फसल होती हो।

बारिगर*-पुं० दे० 'बाढ़ीवान'।

बारिज*-पुं० [सं० वारिज] कमल।

बारिधर-पुं० [सं० वारिधर] बादल।

बारिश-स्त्री० [फा०] १. वर्षा। वृष्टि। २. वर्षा ऋतु। बरसात।

बारी-स्त्री० [सं० अवार] १. किनारा। तट। २ छोर पर का भाग। हाशिया। ३. चारो ओर बना हुआ घेरा। बाढ़ा। ४. बरतन का ऊपरी घेरा। औंठ। ५. हथियार की धार। बाढ़।
स्त्री० [सं० वाटी] १. बाग। बगीचा। २. खेत या बाग की क्यारी। ३ घर। मकान। ४ खिड़की। झरोखा। ५ बंदरगाह।
स्त्री० [हिं० बार] आगे-पीछे के क्रम से आनेवाला अवसर या मौका। पारा।
मुहा०-बारी बारी से = क्रम से। एक के पीछे एक। बारी बँधना=आगे-पीछे का क्रम नियत होना।
स्त्री० [हिं० बार (बाल)=छोटा] १. छोटी लड़की। बालिका। २. युवती।
*स्त्री० दे० 'बाली'।
पुं० दोने, पत्तल आदि बनानेवाली एक जाति।

बारीक-वि० [फा०] [भाव० बारीकी] १ महीन। पतला। २. बहुत छोटा। सूक्ष्म। ३ जिसमें कला की निपुणता और सूक्ष्मता प्रकट हो। ४ गंभीर। गूढ़।

बारूद-स्त्री० [तु० बारूत] एक प्रसिद्ध विस्फोटक चूर्ण जो आग लगने से भड़क उठता है और जिससे तोप-बंदूक चलती हैं। दारू।
यौ०-गोली-बारूद=युद्ध की सामग्री।

बारूदखाना-पुं०[हिं०बारूद+फा०खाना] वह स्थान जहाँ गोला-बारूद रहती है।

बारे-क्रि० वि० [फा०] अंत को (या में)।

बारे में-अव्य० [फा० बारः+हिं० में] विषय में। संबंध में।

बाल-पुं०[सं०] [स्त्री० बाला] १. बालक। लड़का। २. ना-समझ। अनजान।
*स्त्री० दे० 'बाला'।

वि० १. जो सयाना न हुआ हो। २. जो पूरी बाढ़ को न पहुँचा हो। ३. जो अभी निकला हो। जैसे-बाल-सूर्य।

• पुं० [सं०] सूत की तरह की वह पतली लंबी वस्तु जो जंतुओं के चमड़े के ऊपर निकली रहती है। केश।

मुहा०-बाल बाँका न होना=नाम को भी कष्ट या हानि न पहुँचना। (किसी काम में) बाल पकाना=(कोई काम करते करते) बुड्ढे हो जाना। बहुत दिनों का अनुभवी होना। बाल बाल बचना=संकट आदि से इस प्रकार बचना कि बहुत थोड़ी कसर रह जाय।

स्त्री० [?] जौ, गेहूँ आदि के पौधों का वह अगला भाग जिसपर दाने उगते हैं।

बालक-पुं० [सं०] [भाव० बालकता, स्त्री० बालिका] १. मनुष्य का कम उम्र का बच्चा। लड़का। २. पुत्र। बेटा। ३. अनजान या थोड़े ज्ञान का आदमी।

बालकताई*-स्त्री० दे० 'बालपन'।

बालकपन-पुं० दे० 'बालपन'।

बालकृष्ण-पुं० [सं०] बाल्यावस्था के कृष्ण।

बालखोरा-पुं० [फा०] सिर के बाल झड़ने या उड़ने का रोग। गंज।

बालगोविंद-पुं० दे० 'बालकृष्ण'।

बालचर-पुं० [सं०] वह बालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाओं की शिक्षा मिली हो। (बॉय स्काउट)

बालटी-स्त्री० [अं० बकेट] पानी भरने के लिए धातु की एक प्रकार की डोलची।

बालतंत्र-पुं० [सं०] बालकों के पालन-पोषण की विद्या। कौमार-भृत्य।

बाल-तोड़-पुं० [हिं० बाल + तोड़ना] बाल टूटने से होनेवाला फोड़ा।

बालधि-पुं० [सं०] दुम। पूँछ।

बालना-स० [सं० ज्वलन] जलाना।

बालपन-पुं० [सं० बाल+पन (प्रत्य०)] १ बालक होने का भाव। बाल्यावस्था। लड़कपन। २. बालकों की-सी मूर्खता।

बाल-बच्चे-पुं० [सं० बाल+हिं० बच्चा] लड़के-बाले। संतान। औलाद।

बाल-बोध-पुं० [सं०] देवनागरी लिपि।

बाल ब्रह्मचारी-पुं० [सं०] [स्त्री० बाल-ब्रह्मचारिणी] वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया हो।

बाल-भोग-पुं० [सं०] वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे सवेरे रखा जाता है।

बालम-पुं० [सं० वल्लभ] १. पति। स्वामी। २. प्रणयी। प्रेमी।

बालमुकुंद-पुं० दे० 'बालकृष्ण'।

बाल-लीला-स्त्री० [सं०] बालकों के खेल या क्रीड़ा।

बाल-विधवा-वि० [सं०] (स्त्री) जो बाल्यावस्था में ही विधवा हो गई हो।

बाल-सूर्य-पुं० [सं०] सबेरे निकलते हुए सूर्य।

बाला-स्त्री० [स०] १. बारह-तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की जवान स्त्री। २ पत्नी। जोरू। ३ स्त्री। ४. कन्या।

पुं० [सं० वलय] १ हाथ में पहनने का कड़ा। २.कान में पहनने की बड़ी बाली।

वि० [फा०] जो ऊपर हो। ऊँचा।

मुहा०-बोल-बाला रहना = सम्मान और वैभव बना रहना। (शुभ-कामना)

पुं० [हिं० बाल] १. बालकों के समान अनजान। २. सरल। निश्छल।

यौ०-बाला भोला=बहुत सीधा सादा।

बालाई-वि० [फा०] ऊपर का। ऊपरी।

स्त्री० दे० 'मलाई'।

बालाखाना-पुं० [फा०] मकान के ऊपर की बैठक या कमरा।

बाला-नशीन-पुं० [फा०] १. बैठने का सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान। २. वह जो सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हो।
वि० सबसे अच्छा। बहुत बढ़िया।

बालापन-पुं० दे० 'बालपन'।

बालार्क-पुं० दे० 'बाल सूर्य'।

बालिका-स्त्री० [सं०] १ छोटी लड़की। कन्या। २. पुत्री। बेटी।

बालिग-पुं० [अ०] वह जो बाल्यावस्था पार करके जवान हो चुका हो। वयस्क। 'ना-बालिग' का उलटा।

बालिश-स्त्री० [फा०] तकिया।
वि० [सं०] [भाव० बालिश्य] अज्ञान। ना-समझ।

बालिश्त-पुं० दे० 'बित्ता'।

बालिश्य-पुं० [सं०] १. बाल्यावस्था। लड़कपन। २ किसी मनुष्य में ज्ञान उत्पन्न ही न होना, अथवा उत्पन्न होने पर भी बहुत कम विकसित होना। बड़े होने पर भी छोटे बालकों की तरह अबोध और कम समझ होना। (एमेन्शिया)

बाली-स्त्री० [सं० बालिका] [पुं० बाला] कान में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना।
स्त्री०दे०'बाल'। (जौ गेहूँ आदि की)

बालुका-स्त्री० [सं०] रेत। बालू।

बालू-पुं० [सं० बालुका] पत्थर का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ आकर नदियों के किनारे जम जाता या ऊसर जमीनों और रेगिस्तानों में भरा हुआ मिलता है। रेणुका। रेत।
पद-बालू की भीत = जल्दी नष्ट हो जानेवाला और अविश्वसनीय। (पदार्थ)

बाल्य-पुं० [सं०] १. 'बाल' का भाव या अवस्था। २. लड़कपन। बचपन।
वि० १. बालक का। २. बचपन का।

बाल्यावस्था-स्त्री० [सं०] १. मनुष्यों में सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन। २. छोटी या कम अवस्था।

बाव*-पुं० [सं० वायु] १. वायु। हवा। २. वायु का प्रकोप। बाई। ३. अपान वायु। पाद।

बावजूद-क्रि० वि० [फा०] इतना होने पर भी। इस पर भी।

बावड़ी-स्त्री० दे० 'बावली'।

बावन-पुं० दे० 'वामन'।
वि० [सं० द्विपंचाशत] पचास और दो।
कहा-बावन तोले, पाव रत्ती = सब तरह से। बिलकुल ठीक और पूरा।

बावन-वीर-पुं० [सं० वामन+वीर] बहुत अधिक वीर और चतुर।

बावर*-वि० दे० 'बावला'।

बावरची-पुं०[फा०]रसोइया।(मुसल०)

बावरचीखाना-पुं० [फा०] रसोईघर।

बावरा-वि०दे० 'बावला'।

बावला-वि० [सं० वातुल] [भाव० बावलापन] १. पागल। २. मूर्ख।

बावली-स्त्री० [सं० वाप+ई या ली (प्रत्य०)] १. वह बड़ा और चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे उतरने के लिए सीढ़िया भी हों। २. छोटा गहरा तालाब।

बावाँ*-वि० दे० बायाँ'।

बाशिंदा-पुं० [फा०] निवासी।

बास-पुं० [सं० वास] १. रहने की क्रिया या भाव। निवास। २. रहने का स्थान। ३. गंध। महक। ४. कपड़ा।
स्त्री० [सं० वासना] वासना। इच्छा।
स्त्री० [सं० वाशिः] १. अग्नि। आग। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३. तोप के

गोले के अन्दर भरी हुई छुरियाँ या तेज़ धारवाले दूसरे छोटे अस्त्र।

बासन-पुं०=बरतन।

बासना-स्त्री० [सं० वास] गंध। महक। स० [सं० वास] सुगंधित करना।

बासमती-पुं० [हिं० बास=महक+मती (प्रत्य०)] एक प्रकार का बढ़िया चावल।

बासा-पुं० [सं० वास] वह स्थान जहाँ पकी हुई रसोई बिकती है। पुं० दे० 'वास'।

बासी-वि० [हिं० बास=गंध] १. देर का पका हुआ। 'ताजा' का उलटा। (भोजन) कहा०-बासी कढ़ी में उबाल आना= बहुत समय बीत जाने पर किसी काम के लिए उत्सुकतापूर्ण प्रयत्न होना। २. कुछ समय का रखा हुआ। ३ सूखा या कुम्हलाया हुआ।

बाहकी*-स्त्री० [सं० वाहक] पालकी ढोनेवाली स्त्री। कहारिन।

बाहना-स० [सं०वहन] १ ढोना, लादना या चढ़ाकर ले आना। २. चलाना। (हथियार) ३. गाड़ी आदि हाँकना। ४ धारण करना। ५. बहाना। प्रवाहित करना। ६. खेत जोतना। ७. बाल आदि कंघी की सहायता से एक तरफ करना।

बाहनी*-स्त्री० दे० 'वाहिनी'।

बाहर-क्रि० वि० [सं० बाह्य] १.सीमा के उस पार, अलग, परे या आगे निकला हुआ। 'भीतर' या 'अंदर' का उलटा। मुहा०-बाहर आना या होना=सामने आना। प्रकट होना। बाहर करना= निकालना। हटाना।

मुहा०-बाहर बाहर=अलग या दूर से। २.किसी दूसरी जगह। अन्य स्थान में। ३. अधिकार, प्रभाव आदि से बाहर या परे।

बाहरजामी*-पुं० [सं० बाह्ययामी] ईश्वर के राम, कृष्ण आदि सगुण रूप।

बाहरी-वि० [हिं० बाहर] १. बाहर का। बाहरवाला। २. पराया। गैर। ३ बाहर या ऊपर से दिखाई देनेवाला। ऊपरी।

बाहिज*-पुं० [सं० बाह्य] ऊपर से देखने में। बाह्य रूप में।

बाहिनी*-स्त्री० दे० 'वाहिनी'। (सेना)

बाहु-स्त्री० [सं०] १. भुजा। बाँह। २ दे० 'भुज' ४.।

बाहुज-पुं० [सं०] १. वह जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो। २. क्षत्रिय।

बाहु-त्राण*-पुं० [सं०] युद्ध में हाथों की रक्षा के लिए पहना जानेवाला दस्ताना।

बाहु-बल-पुं० [सं०] शारीरिक शक्ति। पराक्रम। बहादुरी।

बाहु-मूल-पुं० [सं०] कंधे और बाँह के बीच का जोड़।

बाहु-युद्ध-पुं० [सं०] कुश्ती।

बाहुल्य-पुं० [सं०] १. 'बहुल' का भाव। बहुतायत। अधिकता। २. व्यर्थता। फालतूपन।

बाह्य-वि० [सं०] बाहरी। बाहर का।

बाह्य-नाम-पुं० [सं०] पत्रों आदि के ऊपर लिखा जानेवाला (पानेवाले का) नाम और ठिकाना। पता। (एड्रेस)

बाह्य-नामिक-पुं० [सं०] वह जिसके नाम पत्र आदि भेजे जायँ। (एड्रेसी)

बाह्येंद्रिय-स्त्री० [सं०] आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पाँचो इंद्रियाँ जिनसे बाहरी विषयों का ज्ञान होता है।

बिंग*-पुं० दे० 'व्यंग्य'।

बिंजन*-पुं० दे० 'व्यजन'। (पंखा)

बिंदा-पुं० दे० 'बेंदा'।

बिंदी-स्त्री०[सं०बिंदु] १. शून्य का सूचक

चिह्न, जो यह है—० । सुन्ना । सिफर। बिंदु । २. माथे पर लगाया जानेवाला छोटा गोल टीका । ३. इस आकार का कोई चिह्न या पदार्थ ।
बिंदु*-पुं० दे० 'बिंदु' ।
स्त्री० दे० 'बिंदी' ।
बिंदुली-स्त्री० दे० 'बिंदी' ।
बिंध¹-पुं० दे० विंध्याचल' ।
बिंधना-अ० [सं० वेधन] १. बींधा या छेदा जाना । २. फँसना । उलझना ।
बिंब-पुं० [सं० बिम्ब] [वि० बिंबित] १. प्रतिबिंब । छाया । २. प्रतिमूर्ति । ३. कुँदरू नामक फल । ४. सूर्य, चंद्रमा आदि का मंडल । ५. आभास ।
बिंबा-पुं० [सं० बिंब] कुँदरू (फल) ।
बिंबित-वि० [सं० बिम्बित] जिसका बिंब या छाया पड़ रही हो ।
बिआना-स० दे० 'ब्याना' ।
बिआहना*-स०=ब्याहना ।
बिकना-अ० [सं० विक्रय] किसी पदार्थ का कुछ धन के बदले में दूसरे के हाथ में जाना । बेचा जाना । बिक्री होना ।
मुहा०-किसी के हाथ बिकना = किसी का पूरा अनुयायी या दास होना ।
बिकरम¹-पुं० १. दे० 'विक्रमादित्य' । २. दे० 'विक्रम' ।
बिकरार*-वि०=विकराल ।
बिकल¹-वि०=विकल ।
बिकली*-स्त्री०=विकलता ।
बिकलाई*-स्त्री०=व्याकुलता ।
बिकलाना*-अ० [सं० विकल] व्याकुल या विकल होना । बेचैन होना ।
स० व्याकुल या बेचैन करना ।
बिकवाल-पुं० [हिं० बेचना] बेचनेवाला ।
बिकसना-अ० [सं० विकसन] [स० बिकसाना, बिकासना] १. खिलना । फूलना । २. बहुत प्रसन्न होना ।
बिकाऊ-वि० [हिं० बिकना] जो बिकने के लिए हो । बिकनेवाला ।
बिकाना¹-अ०=बिकना ।
बिकार*-पुं०=विकार ।
वि०=विकराल ।
बिकारी-स्त्री० [सं० विकृत या वंक] वह टेढ़ी पाई जो अंकों आदि के आगे रुपयों की संख्या या मन, सेर आदि का मान सूचित करने के लिए लगाते हैं ।
बिकासना*-स० [सं० विकासन] १. विकसित करना । २. (फूल आदि) खिलाना ।
बिकुंठ*-पुं०=वैकुंठ ।
बिकुख*-पुं०=विष ।
बिक्री-स्त्री० [सं० विक्रय] १ किसी चीज के बेचे जाने की क्रिया या भाव । विक्रय । २ बेचने से मिलनेवाला धन ।
बिक्री-कर-पुं० [हिं०] वह राजकीय कर जो ग्राहकों से उनके हाथ बेची हुई चीजों पर लिया जाता है । (सेल्स टेक्स)
बिख-पुं०=विष ।
बिखम-वि०=विषम ।
बिखरना-अ० [सं० विकीर्ण] तितर-बितर होना । छितराना ।
बिखराना-स० दे० 'बिखेरना' ।
बिखाद*-पुं० दे० 'विषाद' ।
बिखान*-पुं० दे० 'विषाण' ।
बिखेरना-स० [हिं० 'बिखरना' का स०] इधर उधर फैलाना । छितराना ।
बिगड़ना-अ० [सं० विकृत] १. गुण, रूप आदि में विकार होना । खराब हो जाना । २. बनते समय किसी वस्तु में कोई ऐसी खराबी होना जिससे वह ठीक

न उतरे। ३. बुरी दशा में आना। ४. नीति-पथ से भ्रष्ट होना। बद-चलन होना। ५. क्रुद्ध होना। नाराज होना। ६. विरोधी होना। विद्रोह करना। ७. (पशुओं का) क्रुद्ध होकर चलानेवाले के अधिकार से बाहर हो जाना। ८. परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। ९. व्यर्थ व्यय होना।

बिगड़े-दिल-वि० [हिं० बिगड़ना+फा० दिल] १ कुमार्ग पर चलनेवाला। २. दे० 'बिगड़ैल'।

बिगड़ैल-वि० [हिं० बिगड़ना] बात बात में बिगड़ने या लड़ पड़नेवाला।

बिगर-क्रि० वि० दे० 'बगैर'।

बिगरना*-अ०=बिगड़ना।

बिगसना*-अ० दे० 'विकसना'।

बिगहा-पुं० दे० 'बीघा'।

बिगाड़-पुं० [हिं० बिगड़ना] १ बिगड़ने की क्रिया या भाव। २ खराबी। दोष। ३ वैमनस्य। मन-मुटाव।

बिगाड़ना-स० [सं० विकार] १. किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप में बिकार उत्पन्न करना। २ कुछ बनाते समय उसमें ऐसा दोष उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे। ३ बुरी दशा में लाना या पहुँचाना। ४. अनीति या बुरे मार्ग में लगाना। ५ व्यर्थ खर्च करना।

बिगारी-स्त्री०=बेगारी।

बिगास*-पुं०=विकास।

बिगिर*-क्रि० वि०=बगैर।

बिगुन-वि० [सं० विगुण] जिसमें कोई गुण न हो। गुण-हीन।

बिगुर-वि० दे० 'निगुरा'।

बिगुरचिन*-स्त्री० दे० 'बिगूचन'।

बिगुरदा*-पुं० [देश०] एक प्रकार का पुराना हथियार।

बिगुल*-पुं० [अं०] सैनिकों को एकत्र करने के लिए बजाई जानेवाली तुरही।

बिगूचन-स्त्री० [सं० विकुंचन] १. वह अवस्था जिसमें कर्त्तव्य का निश्चय न हो सके। असमंजस। २. कठिनता।

बिगूचना-अ० [हिं० बिगूचन] अड़चन या असमंजस में पड़ना। २. पकड़ा या दबाया जाना।

स० दे० 'दबोचना'।

बिगोना-स० [सं० विगोपन] १. खराब करना। बिगाड़ना। २. छिपाना। ३. तंग करना। ४. बहकाना। ५. बिताना।

बिघटना*-स० [सं० विघटन] १ विघटित करना। २. विनष्ट करना। ३. बिगाड़ना। ४. तोड़ना-फोड़ना।

बिघन-पुं०=विघ्न।

बिघनहरन*-वि० [सं० विघ्नहरण] विघ्न या बाधा दूर करनेवाला। पुं० गणेश।

बिच-क्रि० वि० दे० 'बीच'।

बिचकना-अ० [अनु०] १. (मुँह का) टेढ़ा होना। २. भड़कना। चौंकना।

बिचकाना-स० [अनु०] १. चिढ़ाना। (मुँह) २. (अप्रिय बात या वस्तु देख-कर) मुँह टेढ़ा करना। (मुँह) बनाना। ३. भड़काना। चौंकाना।

बिचच्छन*-वि० दे० 'विचक्षण'।

बिचरना*-अ० दे० 'विचरना'।

बिचलना*-अ० दे० 'विचलना'।

बिचला-वि० [हिं० बीच] [स्त्री० बिचली] जो बीच में हो। मध्य का।

बिचवई-पुं० [हिं० बीच] बीच में पड़कर झगड़ा निपटानेवाला। मध्यस्थ। स्त्री० बीच में पड़कर झगड़ा निपटाने की क्रिया या भाव। मध्यस्थता।

बिचवानी-पुं० दे० 'बिचवई'।

बिचहुत*-पुं० [हिं० बीच] १. अंतर। फरक। २. दुबधा। संदेह।

बिचारना*-अ० दे० 'विचारना'।

बिचारा-वि० दे० 'बेचारा'।

बिचारी*-पुं०=विचार करनेवाला।

बिचाल*-पुं० [सं० विचाल] १. अलग करना। २. अलगाव। ३. अंतर। भेद।

बिचेत*-वि० [सं० विचेतस्] १. मूर्च्छित। अचेत। २. घबराया हुआ।

बिचौनी(हाँ)-पुं० दे० 'बिचवई'।

बिच्छी-स्त्री० दे० 'बिच्छू'।

बिच्छू-पुं० [सं०वृश्चिक] १. एक प्रसिद्ध जहरीला छोटा जानवर। २. एक तरह की जहरीली घास।

बिच्छेप-पुं० दे० 'विक्षेप'।

बिछड़ना-अ० [सं० विच्छेद] [भाव० बिछड़न, बिछोड़ा] अलग या जुदा होना।

बिछना-अ० हिं० 'बिछाना' का अ०।

बिछलन-स्त्री० दे० 'फिसलन'।

बिछलना-अ०=फिसलना।

बिछाई-स्त्री० [हिं० बिछाना] १ बिछाने की क्रिया या भाव। जैसे-सड़क पर कंकड़ की बिछाई। २. बिछाने के पारिश्रमिक रूप में मिलनेवाला धन। बिछाने की मजदूरी। ३. दे० 'बिछौना'।

बिछाना-स० [सं० विस्तरण] [प्रे० बिछवाना] १. (बिस्तर या कपड़ा) जमीन पर पूरी दूरी तक फैलाना। २.कोई चीज या चीजें जमीन पर कुछ दूर तक फैलाना। बिखेरना। बिखराना। ३. मारते-मारते जमीन पर गिराना या लेटाना।

बिछायत*-स्त्री० दे० 'बिछौना'।

बिछावन-पुं० दे० 'बिछौना'।

बिछिआ-स्त्री० [हिं० बिच्छू] पैर की उँगलियों में पहनने का घुँघुरूदार छल्ला।

बिछिप्त*-वि० दे० 'विक्षिप्त'।

बिछुआ-पुं० [हिं० बिच्छू] १. पैर में पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार की छुरी। ३. एक प्रकार की करधनी।

बिछुड़ना-अ० दे० 'बिछड़ना'।

बिछुरंता*-पुं० [हिं० बिछुड़ना] १. बिछड़नेवाला। २. बिछड़ा हुआ।

बिछुरना*-अ० दे० 'बिछड़ना'।

बिछूना*-पुं०[हिं०बिछुड़ना]बिछड़ा हुआ।

बिछोड़ा-पुं० [हिं० बिछड़ना] बिछड़ने की क्रिया या भाव। वियोग।

बिछोह-पुं० दे० 'बिछोड़ा'।

बिछौना-पुं० [हिं० बिछाना] वे कपड़े जो सोने या बैठने के लिए बिछाये जाते हैं। बिछावन। बिस्तर।

बिजन*-पुं० [सं० व्यजन] छोटा पंखा। वि० [सं० विजन] एकांत (स्थान)। वि० जिसके साथ कोई न हो। अकेला।

बिजली-स्त्री० [सं० विद्युत्] १ कुछ विशिष्ट क्रियाओं से उत्पन्न की जानेवाली एक प्रसिद्ध शक्ति जिससे वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण तथा ताप और प्रकाश होता है। विद्युत्। २. आकाश में सहसा क्षण भर के लिए दिखाई देने-वाला वह प्रकाश जो बादलों में वाता-वरण की उक्त शक्ति के संचार के कारण होता है। चपला।

मुहा०-बिजली गिरना या पड़ना= आकाश से बिजली का वेगपूर्वक पृथ्वी की ओर आना। (इसके स्पर्श से मार्ग में पड़नेवाली चीजें गलकर नष्ट हो जाती हैं और मनुष्य तथा जीव प्रायः मर जाते हैं। बिजली कड़कना=आकाश में बिजली फैलने से मेघों में ज़ोर का शब्द होना।

३. आम की गुठली के अंदर की गिरी। ४. गले का एक गहना। ५. कान का एक गहना।
वि० बहुत अधिक चंचल या प्रकाशमान्।
बिजली-घर-पुं० [हिं० बिजली+घर] वह स्थान जहाँ से सारे नगर या आस-पास के स्थानों में बिजली पहुँचाई जाती है।
बिजहन-वि० [हिं० बीज+हनन] जिसका बीज तक नष्ट हो गया हो।
बिजाती-वि० दे० 'विजातीय'।
बिजान*-पुं० दे० 'अनजान'।
बिजायट-पुं० [सं० विजय] बाजूबंद। (गहना)
बिजुरी'-स्त्री० = बिजली।
बिजूका(खा)'-पुं० [देश०] १. पक्षियों आदि को डराने के लिए खेत में उलटी टाँगी हुई काली हाँड़ी या इसी तरह की कोई चीज। २. दे० 'धोखा'।
बिजोग*-पुं० = वियोग।
बिजोना*-स० [हिं० जोवना] अच्छी तरह देखना।
बिजोरा-वि० [सं०वि+फा०जोर] जिसमें जोर या बल न हो। कमजोर। निर्बल।
बिजौरी-स्त्री० दे० 'कुम्हड़ौरी'।
बिज्जु*-स्त्री० = बिजली।
बिज्जुपात*-पुं० दे० 'वज्रपात'।
बिज्जुल*-पुं० दे० 'छिलका'।
स्त्री० [सं० विद्युत्] बिजली।
बिज्जू-पुं० [देश०] बिल्ली की तरह का एक जंगली जानवर।
बिझुकना*-अ० [हिं० झोंका] [स० बिझुकाना] १. भड़कना। २. डरना। ३. तनने के कारण कुछ टेढ़ा होना।
बिटारना-स० [सं० विलोड़न] [अ० बिटरना] घँघोलकर गंदा करना।
बिटिया'-स्त्री० दे० 'बेटी'।
बिठाना-स० = बैठाना।
बिडर-वि० [हिं० बिडरना] बिखरा या छितराया हुआ।
'वि० दे० 'निडर'।
बिडरना*-अ०[सं०विट्][स०बिडराना] १. इधर-उधर होना। बिखराना। २. बिचकना। बिदकना। (पशुओं का) ३. नष्ट होना।
बिडवना*-स०=तोड़ना।
बिडारना-स० १. दे० 'बिगाड़ना'। २. दे० 'डराना'।
बिढ़ता*-पुं० [हिं० बढ़ना] लाभ। नफा।
बिढ़वना*-स० [हिं० बढ़ाना] १. कमाना। २. संचित या इकट्ठा करना।
बिढ़ाना*-स० दे० 'बिढ़वना'।
बित*-स्त्री० दे० 'वित्त'।
बितत*-वि० [सं० व्यतीत] बीता हुआ।
बितताना-अ० [सं० व्यथित] १.व्याकुल होना। २. दुखी होकर बिलखना।
स० संतप्त करना। सताना।
बितरना*-स०=बाटना।
बितवना*-स०=बिताना।
बिताना-स० [सं० व्यतीत] (समय) व्यतीत करना। गुजारना। काटना।
बितावना*-स०=बिताना।
बितीतना*-अ० [सं० व्यतीत] बीतना।
स० बिताना। गुजारना।
बितु*-स्त्री० दे० 'वित्त'।
बित्त-स्त्री० [सं० वित्त] १. धन। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३.ऊँचाई या आकार।
बित्ता-पुं० [?] हाथ की उँगलियाँ पूरी फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की लंबाई। बालिश्त।

बिथकना*-अ० [हिं० थकना] १. थकना। २. चकित होना। ३. मोहित होना।

बिथकाना-अ० दे० 'बिथकना'। स० [हिं० 'बिथकना' का स०] १. थकाना। २. चकित करना। हैरान करना।

बिथरना-अ० दे० 'बिखरना'।

बिथा*-स्त्री० दे० 'व्यथा'।

बिथारना[1]-स० [हिं० बिथरना] छितराना। बिखेरना।

बिथित*-वि० दे० 'व्यथित'।

बिथुरना-अ० दे० 'बिखरना'।

बिथुरित*-वि० [हिं० बिखरना] बिखरा-या छितराया हुआ।

बिथोरना*-स० दे० 'बिथारना'।

बिदकना-अ० [स० विदारण] [स० बिदकाना] १. फटना। चिरना। २. घायल होना। ३. भड़कना। बिचकना।

बिदरन*-स्त्री० [सं० विदीर्ण] दरार। दरज। वि० फाड़ने या चीरनेवाला।

बिदरना*-अ० [सं० विदारण] फटना। अ० [सं० विदलन] नष्ट होना।

बिदायगी-स्त्री० दे० 'बिदाई'।

बिदारना[1]-स० [सं० विदारण] १. चीरना-फाड़ना। २. नष्ट करना।

बिदीरना*-स० [सं० विदीर्ण] फाड़ना।

बिदुराना*-अ०=मुस्कराना।

बिदुरानी*-स्त्री०=मुस्कराहट।

बिदूषना*-अ० [सं० विदूषण] १. दोष या कलंक लगाना। २. खराब करना। बिगाड़ना।

बिदोख*-पुं० दे० 'विद्वेष'।

बिदोरना[1]-स० [सं० विदारण] (मुँह या दाँत) खोलकर दिखाना।

बिद्दत-स्त्री० [अ० बिद्अत] १. खराबी। बुराई। २. कष्ट। तकलीफ। ३. विपत्ति। आफत। ४ अत्याचार। जुल्म। ५. दुर्दशा। दुर्गति।

बिधँसना*-स० [सं० विध्वंसन] विध्वंस या नाश करना।

बिध-स्त्री० [सं० विधि] १. प्रकार। तरह। भाँति। २. तरकीब। उपाय। मुहा०-**बिध बैठना**=उपाय या रास्ता निकलना।

३. ब्रह्मा।

स्त्री० [सं० विधा=लाभ] जमा-खर्च का हिसाब जो अंत में मिलाया जाता है। मुहा०-**बिध मिलाना**=१. इस बात की जाँच करना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं या नहीं। रोकड़ मिलाना। २ संयोग कराना।

बिधना-पुं० [सं० विधि] बिधाता। अ० दे० 'बिंधना'।

बिधवपन-पुं० दे० 'वैधव्य'।

बिधाँसना* स० [सं० विध्वंसन] विध्वंस या नाश करना।

बिधाई*-पुं० दे० 'विधायक'।

बिधानी*-पुं० [स० विधान] विधान करने या बनानेवाला। रचनेवाला।

बिधुंसना*-स०=नष्ट करना।

बिन*-अव्य० दे० 'बिना'।

बिनई*-पुं० दे० 'विनयी'।

बिनउ*-स्त्री० दे० 'विनय'।

बिनति(ती)-स्त्री० [सं० विनय] प्रार्थना। निवेदन। विनय।

बिनकार-वि० [हिं० बुनना] [संज्ञा बिनकारी] जुलाहा।

बिनन-स्त्री० [हिं० बिनना=चुनना] १. बिनने या चुनने की क्रिया, भाव या ढंग। २. वह कूड़ा-करकट जो किसी चीज़ को चुनने या बिनने पर निकले।

बिनना-स० [सं० वीक्षण] १. छोटी छोटी चीजें एक एक करके उठाना। चुनना। २. छांटकर अलग करना।
*स० दे० 'बुनना'।
बिनवट-स्त्री० [हिं० बनेठी] पटा-बनेठी चलाने की क्रिया या खेल।
बिनवना*-अ० [सं० विनय] विनय या प्रार्थना करना।
बिनवाना-अ० [हिं० बीनना या बुनना] बुनने या बीनने का काम दूसरे से कराना।
बिनसना*-अ० [सं० विनाश] [स० बिनसाना] नष्ट होना। बरबाद होना।
स० नष्ट या बरबाद करना।
बिना-अव्य०[सं०विना] छोड़कर। बगैर।
बिनाई-स्त्री० [हिं० बिनना] १. बीनने या चुनने की क्रिया भाव या मजदूरी। २. बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी। बुनाई।
स्त्री० [अ० बिनाऽ] मूल आधार। कारण।
बिनानी†-स्त्री० दे० 'बिनती'।
बिनानी*-वि० [सं० विज्ञानी] १. ज्ञानवान। ज्ञानी। २. अनजान।
स्त्री० [सं० विज्ञान] अच्छी तरह होनेवाला विचार। विवेचन। गौर।
बिनावट-स्त्री०=बुनावट।
बिनास*-पुं०=विनाश।
बिनासना*-स० [सं० विनाश] विनष्ट या बरबाद करना।
बिनाह*-पुं०=विनाश।
बिनि(नु)*-अव्य० दे० 'बिना'।
बिनूठा*-वि० दे० 'अनूठा'।
बिनै*-स्त्री०=विनय।
बिनौरी-स्त्री० [?] ओले के छोटे टुकड़े।
बिनौला--पुं० [?] कपास का बीज।
बिपच्छ*-पुं० दे० 'विपक्ष'।
बिपच्छी*-पुं० दे० 'विपक्षी'।
बिपत(द)*-स्त्री० दे० 'विपत्ति'।
बिपर*-पुं० दे० 'विप्र'।
बिफर*-वि० दे० 'विफल'।
बिफरना*-अ० [सं० विप्लवन] १. विद्रोही या बागी होना। २. नाराज होना।
बिबछना*-अ० [सं० विपक्ष] १. विरोध करना। २. उलझना। फँसना।
बिबरन*-वि० दे० 'विवर्ण'।
पुं० दे० 'विवरण'।
बिबस*-वि० दे० 'विवश'।
बिबसना*-अ०=विवश होना।
बिबहार*-पुं०=व्यवहार।
बिबाक*-वि० दे० 'बेबाक'।
बिबि-वि० [सं० द्वि] दो।
बिभाना*-अ० [स० बिभा] चमकना।
बिभिचारी*-वि० दे० 'व्यभिचारी'।
बिभोर-वि० दे० 'विभोर'।
बिमन*-वि० दे० 'विमन'।
बिमानी*-वि० [सं० वि+मान] जिसे अभिमान न हो। निरभिमान।
बिमोहना-स० दे० 'मोहना'।
अ० मोहित होना। लुभाना।
बिय*-वि० [सं० द्वि] १. दो। २. दूसरा। ३. अन्य। और।
*पुं० दे० 'बीज'।
बियापना*-स० दे० 'व्यापना'।
बियाबान-पुं० [फा०] १. उजाड़ जगह। २. जंगल। ३. सुनसान मैदान।
बियारी(लू)*-स्त्री० दे० 'व्यालू'।
बियाह*-पुं०=विवाह।
बिरई†-स्त्री० [हिं० बिरवा] १. छोटा बिरवा। २. जड़ी-बूटी।
बिरछ*-पुं० दे० 'वृक्ष'।
बिरझना†-अ० [सं० विरुद्ध] झगड़ना।
बिरतंत*-पुं०=वृत्तांत।

बिरता-पुं० [सं०वृत्ति] सामर्थ्य । शक्ति ।

बिरताना*-स० दे० 'बरताना' ।

बिरथा†-वि०=वृथा ।

बिरद†-पुं० दे० 'विरुद' ।

बिरदैत-पुं० [हिं० बिरद] प्रसिद्ध वीर या योद्धा ।

वि० प्रसिद्ध । नामी । मशहूर ।

बिरध-वि० दे० 'वृद्ध' ।

बिरधाई*-स्त्री० [सं० वृद्ध] वृद्धावस्था ।

बिरमना†-अ०[सं०विलंब] १.दे० 'बिलमना'। २. मोहित होकर कहीं रुक रहना ।

बिरमाना†-स० [हिं० बिरमना] १. रोक रखना । ठहराना । २. मोहित करके रोक रखना । ३ बिताना ।

बिरवा-पुं० [सं० विरुह] वृक्ष । पेड़ ।

बिरसना*-अ०[सं० विलास] विलास करना । भोगना ।

बिरह-पुं०=विरह ।

बिरहा-पुं० [सं० विरह ?] एक प्रकार का देहाती गीत । (पूरबी युक्त प्रान्त)

बिरहाना-अ० [सं० विरह] विरह से पीड़ित होना ।

बिरही-पुं० दे० 'विरही' ।

बिराजना-अ० [स० वि+रंजन] १. शोभित होना। २ बैठना। (आदर सूचक)

बिरादर-पुं० [फा०] भाई । भ्राता ।

बिरादरी-स्त्री० [फा०] एक जाति के लोगों का समूह या वर्ग ।

बिरान*-वि० दे० 'बेगाना' ।

अ० [सं० विरव=शब्द] मुँह चिढ़ाना ।

बिरावना†-स० दे० 'चिढ़ाना' ।

बिरिख*-पुं० १ दे०'वृष' । २.दे०'वृक्ष' ।

बिरिछ*-पुं०=वृक्ष ।

बिरियाँ-स्त्री० [हिं० बेला] समय ।

स्त्री० [सं० वार] बार । दफा ।

बिरी*-स्त्री०१.दे०'बीड़ी' । २.दे०'बीड़ा' ।

बिरुझना†-अ० [सं० विरुद्ध] झगड़ना ।

बिरुदैत-पुं० दे० 'बिरदैत' ।

बिरुधाई-स्त्री० १. दे० 'बुढ़ापा' । २. दे० 'विरोध' ।

बिरोग-पुं० [सं० वियोग] १. वियोग । बिछोह । २. दुःख । कष्ट । ३. चिंता ।

बिरोधना†-अ० [सं० विरोध] विरोध या वैर करना । द्वेष करना ।

बिरोलना*-स० दे० 'बिलोरना' ।

बिलंद-वि०[फा०बुलंद] १ ऊँचा। २.बड़ा। ३ जो विफल हो गया हो । (व्यंग्य)

बिलंबना*-अ० दे० 'बिलमना' ।

बिल-पुं० [सं० बिल] जमीन के अंदर खोदकर बनाई हुई जीव-जन्तुओं के रहने की तंग छोटी जगह । विवर ।

पुं० [अं०] १ पावने का वह हिसाब जिसमें प्राप्य मूल्य या पारिश्रमिक का ब्योरा रहता है । २. कानून का मसौदा जो स्वीकृति के लिए उपस्थित होता है ।

बिलकुल-क्रि० वि० [अ०] १. पूरा पूरा । सब । २. निरा । निपट ।

बिलखना-अ० [सं० विलाप] [स० बिलखाना] १. बहुत रोना । विलाप करना । २. दुखी होना । ३. सिकुड़ना ।

बिलग-वि० [सं० विलग्न] अलग ।

पुं० १. अलग होने का भाव । पार्थक्य । २. मैत्री या सम्पर्क का अभाव या परित्याग ।

बिलगाना*-अ० [हिं० बिलग] अलग या जुदा होना ।

स० १. अलग करना । २. चुनना ।

बिलगाव-पुं० [हिं० बिलग+आव (प्रत्य०)] बिलग या अलग होने की क्रिया या भाव । अलगाव । पार्थक्य ।

बिलच्छन-वि०=विलक्षण।

बिलछना*-अ० [सं० लक्ष] देखकर समझ लेना। ताड़ना।

बिलटी-स्त्री० [अं० बिलेट] रेल से भेजे जानेवाले माल की वह रसीद जिसे दिखलाने पर पानेवाले को वह माल मिलता है।

बिलनी-स्त्री० [हिं०बिल ?] १.मिट्टी की दीवारों पर रहनेवाली काली भौंरी। २. वह छोटी फुन्सी जो आँख की पलक पर होती है। गुहांजनी।

बिलपना*-अ० [सं० विलाप] रोना।

बिलबिलाना-अ० [अनु०] १. छोटे कीड़ों का रेंगना। २ दे० 'बिलखना'।

बिलम*-पुं० दे० 'विलंब'।

बिलमना*-अ० [सं० विलंब] [स० बिलमाना] १. विलंब या देर करना। २. ठहरना। ३. किसी से प्रेम हो जाने के कारण उसके पास रुक या रह जाना।

बिललाना-अ० दे० 'बिलखना'।

बिलल्ला-वि० [अनु०] [स्त्री० बिलल्ली] जिसे किसी बात का कुछ भी शऊर या ढंग न हो। गावदी। मूर्ख।

बिलसना*-अ० [सं० विलसन] [स० बिलसाना] शोभा देना। भला या सुन्दर लगना। अच्छे जचना। स० भोग करना। भोगना।

बिला-अव्य० [अ०] बिना। बगैर।

बिलाई-स्त्री० दे० 'बिल्ली'।

बिलाना-अ० [सं० विलयन] [प्र० बिलवाना] १ नष्ट होना। २.अदृश्य होना।

बिलापना*-अ० = विलाप करना।

बिलारी-स्त्री० दे० 'बिल्ली'।

बिलाव-पुं० [हिं० बिल्ली] नर बिल्ली।

बिलासना-स० [सं० विलसन] भोगना।

बिलुठना*-अ० [सं० लुंठन] जमीन पर लोटना। (कष्ट, पीड़ा आदि से)

बिलूर*-पुं० दे० 'बिल्लौर'।

बिलैया†-स्त्री०=बिल्ली।

बिलोकना*-स० [सं० विलोकन] १. देखना। २. परीक्षा करना। जाँचना।

बिलोकनि*-स्त्री०[सं०विलोकन] १.देखने की क्रिया या भाव। देखना। २. दृष्टि। चितवन। निगाह।

बिलोचन-पुं० [सं० लोचन] आँख।

बिलोड़ना*-स० [सं० विलोड़न] १. दूध आदि मथना। २.अस्त-व्यस्त करना।

बिलोन*-वि० [सं० वि+लवण] १. बिना नमक का। २. कुरूप। भद्दा।

बिलोना-स० [सं० विलोड़न] १. दूध आदि मथना। २. डालना। उड़लना।

बिलोरना*-स० १. दे० 'बिलोड़ना'। २. दे० 'बिखरना'।

बिलोलना*-स०=हिलना।

बिलोवना*-स० दे० 'बिलोना'।

बिल्ला-पुं० [सं० विड़ाल] [स्त्री० बिल्ली] बिल्ली का नर। पुं० कपड़े का वह पतला पट्टा जो कुछ चपरासी या स्वयंसेवक आदि अपनी पहचान के लिए लगाते हैं। परतला।

बिल्लाना-अ०=विलाप करना।

बिल्ली-स्त्री० [सं० विड़ाल, हिं० बिलार] १. शेर, चीते आदि की जाति का पर उनसे बहुत छोटा एक प्रसिद्ध पशु जो प्रायः घरों में रहता और पाला जाता है। २. दरवाजे में ऊपर या नीचे लगाने का एक प्रकार का सिटकिनी। बिलैया।

बिल्लौर-पुं० [सं० वैदूर्य्य, मि० फा० बिल्लूर] [वि० बिल्लौरी] १. एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर। स्फटिक।

२. बहुत साफ, मोटा और बढ़िया शीशा।
बिवरना*-अ० दे० 'ब्योरना'।
बिवराना*-स० [हिं० 'बिवरना' का प्रे०] बाल सुलझाना या सुलझवाना।
बिवाई-स्त्री० [सं० विपादिका] पैरों की उँगलियों के नीचे का चमड़ा फटने का प्रसिद्ध रोग।
बिसंच*-पुं० [सं० वि+संचय] १. संचय का अभाव। सँभालकर न रखना। २. बाधा। विघ्न। ३. भय। डर।
बिसंभर*-पुं० दे० 'विश्वंभर'।
*वि० [सं० उप० वि+हिं० सँभार] १. जो ठीक तरह से सँभालकर न रख सके। २. बे-खबर। असावधान। ३. जिसे ठीक तरह से सँभालकर न रखा जाय। ४. दे० 'बिसँभार'।
बिसँभार†-वि० [सं० उप० वि+हिं० सँभार]जिसे अपने शरीर की सुध-बुध न हो।
बिस-पुं० [सं० विष] जहर।
पद-बिस की गाँठ=बहुत बड़ा दुष्ट।
बिसतरना*-अ० [सं० विस्तरण] विस्तार करना। फैलाना या बढ़ाना।
बिसद*-वि० दे० 'विशद'।
बिसन*-पुं० दे० 'व्यसन'।
बिसनी-वि० [सं० व्यसन] १. दे० 'व्यसनी'। २. छैला। ३. वेश्या-गामी।
बिसपना†-अ० [?] अस्त होना। डूबना। (सूर्य आदि का)
बिसमउ-*पुं० दे० 'विस्मय'।
बिसमरना*-स०[सं०विस्मरण] भूलना।
बिसमिल-वि० [फा० बिस्मिल] जबह करते समय जिसका अभी आधा ही गला कटा हो।
बिसयक*-पुं० [सं० विषय] १. देश। २. राज्य।
बिसरना-स० [सं० विस्मरण] भूलना।
बिसरात*-पुं० [सं०वेशर] खच्चर। (पशु)
बिसराना-स० [हिं० बिसरना] ध्यान में न रखना। भुलाना।
बिसराम*-पुं० = विश्राम।
बिसवास*-पुं० = विश्वास।
बिसवासी-वि० [सं० विश्वासिन्] १. विश्वास करनेवाला। २. विश्वास करने योग्य। विश्वसनीय।
वि० [सं० अविश्वासिन्] जिसपर विश्वास न किया जा सके।
बिससना*-स० [सं० विश्वसन] विश्वास या भरोसा करना।
स० [सं० विशसन] १. मार डालना। २. शरीर के अंग काटना।
बिसहना*-स० दे० 'बिसाहना'।
बिसहर*-पुं० [सं० विषधर] सर्प। साँप।
बिसाख*-स्त्री० दे० 'विशाखा'।
बिसात-स्त्री० [अ०] १. हैसियत। वित्त। औकात। २. जमा। पूँजी। ३. सामर्थ्य। शक्ति। ४ वह कपड़ा या दफ्ती जिसपर शतरंज या चौपड़ खेलते हैं।
बिसातखाना-पुं० [हिं० बिसात+फा० खाना] बिसाती के यहाँ मिलनेवाली चीज़ें; जैसे-सुई, तागा, कलम, खिलौने आदि।
बिसाती-पुं० [अ०] बिसातखाने की चीज़ें बेचनेवाला।
बिसाना-अ० [सं० वश] वश चलना।
†-अ० [हिं० विष+ना (प्रत्य०)] विष का प्रभाव होना। ज़हर भरना।
बिसायँध-वि० [सं० वसा=चरबी+गंध] जिसमें सड़ी मछली की-सी गंध हो।
बिसारना-स० [हिं० बिसरना] याद न रखना। भूल जाना।
बिसारा*-वि० [सं० विषालु] [स्त्री०

बिसारी] विष-युक्त। विषाक्त। जहरीला। स्त्री० सड़ी मछली की-सी गंध।
बिसास*-पुं० = विश्वास।
बिसासिन-स्त्री० [सं० अविश्वासिनी] (स्त्री) जिसका विश्वास न हो।
बिसासी*-वि० दे० 'बिसवासी'।
बिसाह-पुं०=विश्वास।
बिसाहना-स० [हिं० बिसाह + ना (प्रत्य०)] १. खरीदना। मोल लेना। २. (विपत्ति, झंझट आदि) जान-बूझकर अपने ऊपर लेना या पीछे लगाना।
बिसाहनी*-स्त्री० [हिं० बिसाहना] मोल ली जानेवाली वस्तु। सौदा।
बिसाहा*-पुं० दे० 'बिसाहनी'।
बिसिख*-पुं० दे० 'विशिख'।
बिसियर*-वि० [सं० विषधर] जहरीला।
बिसूरना-अ० [सं० विसूरण=शोक] १. मन में खेद या दुःख करना। २. सिसक सिसककर रोना।
स्त्री० चिन्ता। फ़िक्र। सोच।
बिसेख*-वि० दे० 'विशेष'।
बिसेखना*-अ० [सं० विशेष] १. विशेष प्रकार से या ब्योरेवार वर्णन करना। २. निर्णय या निश्चय करना। ३. विशेषता से युक्त होना।
बिसेस*-वि० = विशेष।
बिसेसर*-पुं० = विश्वेश्वर।
बिसैंधा†-वि० [हिं० बिसायँध] १. जिसमें से बिसायँध या दुर्गंध आती हो। २.मांस, मछली आदि की सी गंधवाला।
बिस्तर-पुं० [फा० मि० सं० विस्तर] बिछाने के कपड़े। बिछौना। बिछावन।
बिस्तरना-अ० [सं० विस्तरण] विस्तृत होना। फैलना या बढ़ना।
स० १. फैलाना। २. विस्तारपूर्वक वर्णन करना।
बिस्तर-बंद-पुं० [फा०] वह डोरी या चमड़े का तस्मा या इन चीजों से युक्त कपड़े, चमड़े आदि का लंबा थैला जिसमें यात्रा के समय बिस्तर या बिछौना बाँधकर ले जाते हैं।
बिस्तरा-पुं० दे० 'बिस्तर'।
बिस्तुइया†-स्त्री० = छिपकली।
बिस्मिल्लाह-[अ०] एक अरबी पद का पूर्वार्द्ध जिसका अर्थ है—ईश्वर के नाम से। (इसका प्रयोग कोई कार्य आरंभ करते समय या जानवर को जबह करते समय होता है।)
बिस्वा-पुं० [हिं० बीसवाँ] एक बीघे का बीसवा भाग। (जमीन की नाप)
बिस्वास-पुं०=विश्वास।
बिहंगी*-वि०[हिं०बेढंगा] कुरूप। भद्दा।
बिहंडना*-स०[सं०विघटन] १.तोड़ना। २. नष्ट करना। ३. मार डालना।
बिहँसना-अ०=मुस्कराना।
बिहँसाना*-अ० [सं० विहसन] १. दे० 'बिहँसना'। २ खिलना। (फूल का)
स० हँसाना।
बिहँसौहाँ*-वि०=हँसता हुआ।
बिहग*-पुं० दे० 'विहंग'।
बिहद्द*-वि० दे० 'बेहद'।
बिह्वल*-वि० दे० 'विह्वल'।
बिहरना*-अ० [सं० विहरण] विहार या सैर करना। घूमना-फिरना।
*स० [सं० विघटन] १. फटना। २. टूटना-फूटना।
बिहराना*-अ० दे० 'फटना'।
स० दे० 'फाड़ना'।
बिहान-पुं० [सं० विभात] १. सबेरा। २. आनेवाला दूसरा दिन। कल।

बिहाना*-स० [सं० विहीन] छोड़ना ।
अ० [?] व्यतीत होना । बीतना ।
बिहारना-अ० [सं० विहरण] विहार या क्रीड़ा करना ।
बिहाल-वि० [फा० बेहाल] १. विकल । बेचैन । २. थका हुआ । शिथिल ।
बिहिश्त-पुं० [फा०] स्वर्ग । (मुसल०)
बिहुरना*-अ० दे० 'बिछुरना' ।
बिहून*-वि०[हिं०विहीन] बिना । बग़ैर ।
बिहोरना*-अ० दे० 'बिछुड़ना' ।
बींदना*-स० १. दे० 'चुभाना' । २ दे० 'बींधना' ।
अ० [?] अनुमान करना ।
बींधना*-अ० [सं० विद्ध] फँसना ।
स० विद्ध करना । वेधना । छेदना ।
बी-स्त्री० दे० 'बीबी' ।
बीका†-वि० [सं० वक्र] टेढ़ा ।
बीख*-पुं० [सं० वीक्षा] कदम । डग ।
बीघा-पुं० [सं० विग्रह] ज़मीन, खेत आदि की बीस बिस्वे की एक नाप ।
बीच-पुं० [सं० विच] १ किसी पदार्थ का मध्य भाग । मध्य ।
मुहा०-बीच खेत=१. खुले मैदान । सबके सामने । २ अवश्य । ज़रूर । बीच बीच में=१ थोड़ी थोड़ी देर में । २. थोड़ी थोड़ी दूरी पर । बीच में पड़ना=१ झगड़ा निपटाने के लिए मध्यस्त होना । (किसी से) बीच रखना = पराया समझना । बीच में कूदना = व्यर्थ हस्तक्षेप करना । (ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना = (ईश्वर आदि की) शपथ या क़सम खाना ।
२. दो चीज़ों के बीच का अंतर या स्थान । ३.अन्तर ।भेद । फरक । अवकाश । ४. अवसर । मौका ।
क्रि० वि० अंदर । में ।
*स्त्री० [सं० वीचि] लहर । तरंग ।
बीचि-स्त्री० [सं० वीचि] लहर । तरंग ।
बीचु*-पुं० दे० 'बीच' ।
बीचोबीच-क्रि० वि० [हिं० बीच] बिलकुल या ठीक बीच में ।
बीछना*-स० दे० 'चुनना' ।
बीछी*-स्त्री० दे० 'बिच्छू' ।
बीछू-पुं० १. दे० 'बिच्छू' । २. दे० 'बिछुआ' । (हथियार और गहना)
बीज-पुं० [सं०] १. फूलवाले पौधों या अनाजों के वे दाने अथवा वृक्षों के फलों की वे गुठलियां, जिनसे वैसे ही नये पौधे, अनाज या वृक्ष उत्पन्न होते हैं । बीया । २ प्रधान कारण । मूल । ३. जड़ ।
मुह ०-बीज बोना=किसी बात या कार्य का आरंभ या सत्रपात करना ।
४.हेतु । कारण । ५ अव्यक्त संख्या-सूचक संकेत । विशेष दे० 'बीज गणित' । ६. तंत्र में वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें किसी देवता को अनुकूल या प्रसन्न करने की शक्ति मानी जाती है । ७.दे० 'वीर्य' ।
*स्त्री० दे० 'बिजली' ।
बीजक-पुं०[सं०] १ सूची । तालिका । २ वह सूची जिसमें भेजे हुए माल का ब्योरा, दर आदि लिखी हो । (इन्वॉयस) ३ गड़े हुए धन की वह सूची जो उसके साथ मिलती है । ४. कबीरदास के पदों के एक संग्रह का नाम ।
बीज-गणित-पुं० [सं०] गणित का वह प्रकार जिसमें अक्षरों को संख्याओं के स्थान पर मानकर अज्ञात मान या संख्याएँ जानी जाती हैं । (अलजबरा)
बीजन*-पुं० दे० 'पंखा' ।
बीजना-स० दे० 'बोना' ।

बीजपूर-पुं० [सं०] १. बिजौरा नीबू। १. चकोतरा।

बीज-मंत्र-पुं० [सं०] १. किसी देवता की उपासना का मूल मंत्र। २. वह मूल तत्व या सिद्धान्त जिससे कोई कार्य तुरंत सिद्ध हो जाय। गुर।

बीजरी*-स्त्री० दे० 'बिजली'।

बीजा-वि० [सं० द्वितीय] दूसरा।

बीजाक्षर-पुं० [सं०] तंत्र में किसी बीज-मंत्र का पहला अक्षर।

बीजी-स्त्री० [सं० बीज+ई (प्रत्य०)] १. गिरी। मींगी। २ गुठली।

बीजु(जू)-स्त्री० दे० 'बिजली'।

बीजू-वि० [हिं० बीज+ऊ (प्रत्य०)] (वृक्ष या फल) जो बीज बोने से हो। 'कलमी' का उलटा।

पुं० दे० 'बिजू'।

बीझना*-अ० दे० 'बझना'।

बीझा*-वि० [सं० विजन] निर्जन। एकांत। (स्थान)

बीट-स्त्री० [सं० विट्] चिड़ियों की विष्ठा या मल।

बीड़-स्त्री० [हिं० बीड़ा] एक के ऊपर एक रखे हुए बहुत-से सिक्के।

बीड़ा-पुं० [सं० वीटक] पान का वह रूप जो कत्था, चूना लगाकर उसे लपेटने या तह करने पर होता है। गिलौरी।

मुहा०-**बीड़ा उठाना**=कोई काम करने का भार अपने ऊपर लेना।

बीड़ी-स्त्री० [हिं० बीड़ा] १. दे० 'बीड़ा'। २. दे० 'बीड़'। ३ ओठों पर की मिस्सी की धड़ी। ४. पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जो चुरुट आदि की तरह सुलगाकर पीया जाता है।

बीतना-अ० [सं० व्यतीत] १. समय विगत होना या कटना। गुजरना। २. घटित होना। घटना। पड़ना। जैसे-जिसपर बीते, वही जाने।

बीता†-पुं० दे० 'बित्ता'।

बीथित*-वि० दे० 'व्यथित'।

बीधना*-अ० [सं० विद्ध] फँसना। स० दे० 'बींधना'।

बीन-स्त्री० [सं० वीणा] १. सितार की तरह का एक प्रसिद्ध बड़ा बाजा। वीणा। २ सँपेरों के बजाने की तूमड़ी।

बीनकार-पुं० [हिं० बीन+फा० कार] वह जो बीन बजाता हो। वीन बजानेवाला।

बीनना*-स० १. दे० 'चुनना'। २. दे० 'बींधना'। ३ दे० 'बुनना'।

बीबी-स्त्री० [फा०] १. भले घर की स्त्री। महिला। २. पत्नी। जोरू।

बीमा-पुं० [फा० बीम=भय] १. किसी प्रकार की हानि होने पर कुछ रकम देने की जिम्मेदारी, जो कुछ निश्चित धन एक साथ या कुछ किस्तों में लेकर उसके बदले में ली जाती है। (इन्श्योरेन्स) २. भेजा जानेवाला वह पत्र या पारसल जिसकी क्षति-पूर्ति का इस प्रकार डाकखाने ने भार लिया हो।

बीमार-वि० [फा०] जिसे कोई बीमारी हुई हो। रोगी।

बीमारी-स्त्री० [फा०] १.रोग। व्याधि। २. झंझट। ३ दुर्व्यसन। बुरी आदत।

बीय*-वि० दे० 'बीजा'।

बीया*-वि० [सं० द्वितीय] दूसरा। पुं० [सं० बीज] वृक्ष या पौधे का बीज।

बीर-पुं० [सं० वीर] भाई। भ्राता। स्त्री० १. सखी। सहेली। २. कान का एक गहना। तरना। बीरी। ३. कलाई में पहनने का एक गहना। ४. गोचर-

भूमि । चरागाह ।
वि० [सं० वीर] बहादुर ।
बीरउ*-पुं० दे० 'बिरवा' ।
बीरज*-पुं० दे० 'वीर्य' ।
बीरन-पुं० [सं० वीर] भाई ।
बीर-बहूटी-स्त्री० [सं० वीर+वधूटी] गहरे लाल रंग का एक छोटा, सुंदर और कोमल बरसाती कीड़ा । इंद्रवधू ।
बीरा*-पुं० [हिं० बीड़ा] १. दे० 'बीड़ा' । २. देवता के प्रसाद के रूप में मिलनेवाले फल-फूल आदि ।
बीरी*-स्त्री०[हिं०बीड़ा] १.पान का बीड़ा । २. दे० 'बीर' । (गहना)
बीरो'-पुं० [हिं० बिरवा] वृक्ष । पेड़ ।
बील-वि० [सं० बिल] पोला । खोखला । पुं० नीची भूमि ।
पुं० [सं० बीज-मंत्र] मंत्र ।
बीवी-स्त्री० दे० 'बीबी' ।
बीस-वि० [सं० विंशति] १. जो गिनती में उन्नीस से एक अधिक हो ।
पद-बीस बिस्वे=बहुत संभव है ।
२. किसी से कुछ बढ़कर या अच्छा ।
बीसी-स्त्री० [हिं० बीस] १. बीस चीज़ों का समूह । कोड़ी । २. ज्योतिष में साठ संवत्सरों के बीस बीस वर्षों के तीन विभागों में से कोई एक । ३. बीस गाहियों का सैकड़ा ।
बीह*-वि०=बीस ।
बीहड़-वि० [सं० विकट] १. जो सरल न हो । २. ऊँचा-नीचा । ऊबड़-खाबड़ ।
बुंद-स्त्री० दे० 'बूँद' ।
बुँदकी-स्त्री० [सं० बिंदु+की (प्रत्य०)] छोटी गोल बिंदी या धब्बा ।
बुंदा-पुं० [सं० बिंदु] १. कान में पहनने का एक गहना । लोलक । २. माथे पर लगाने की बिन्दी । टिकली ।
बुँदिया-स्त्री० दे० 'बूँदी' ।
बुँदौरी*-स्त्री० [हिं० बूँदी] बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई ।
बुआ-स्त्री० दे० 'बूआ' ।
बुकचा-पुं० [तु० बुकचः] [स्त्री० अल्पा० बुकची] गठरी ।
बुकनी-स्त्री० [हिं० बुकना+ई (प्रत्य०)] महीन पीसा हुआ चूर्ण ।
बुकवा*-पुं० [हिं० बुकना] १ उबटन । २. बुक्का ।
बुक्का-पुं० [हिं० बुकना=पीसना] अबरक या अभ्रक का चूरा ।
बुखार-पुं० [अ०] १. वाष्प । भाप । २. शरीर में होनेवाला ज्वर (रोग) । ताप । ३. दुःख, क्रोध आदि का आवेग ।
मुहा०-जी का बुखार निकालना=मन का दुःख या व्यथा कहकर प्रकट करना और इस प्रकार जी हलका करना ।
बुजदिल-वि० [फा०] [भाव० बुजदिली] कायर । डरपोक ।
बुजुर्ग-वि० [फा०] [भाव० बुजुर्गी] वृद्ध । बड़ा ।
पुं० बहु० बाप-दादा । पूर्वज । पुरखे ।
बुझना-अ० [?] १. अग्नि का जलना आपसे आप, या जल पड़ने के कारण समाप्त होना । जैसे-आग बुझना । २. गरम चीज का पानी में पड़कर ठंढा होना । ३. पानी का तपाई हुई चीज से छौंका जाना । ४. उत्साह आदि मंद पड़ना ।
बुझाना-स० [हिं० 'बुझना' का स०] १. किसी पदार्थ के आग से जलने का अन्त करना । अग्नि शीतल या शान्त करना । २. तपी हुई चीज पानी में डालकर ठंढी करना ।

मुहा०-जहर में बुझाना=शस्त्र का फल तपाकर किसी जहरीले तरल पदार्थ में डुबाना जिसमें वह भी जहरीला हो जाय। ३. उत्साह आदि शान्त या भंग करना। स० [हिं० 'बुझना' का प्रे० रूप] १. किसी को बूझने में प्रवृत्त करना। २. बोध या ज्ञात कराना। समझाना। ३. धैर्य या सान्त्वना देना। जैसे-समझाना-बुझाना।

बुझौवल-स्त्री० दे० 'पहेली'।

बुटा*-स्त्री० दे० 'बूटी'।

बुटना*-अ० [?] भागना।

बुड़ना|-अ०=डूबना।

बुड़बुड़ाना-अ०[अनु०] मन ही मे कुढ़कर धीरे धीरे कुछ बोलना। बड-बड करना।

बुड़ाना*-स०=डुबाना।

बुड़ीत-वि० [हिं० बूड़ना = डूबना] (प्राप्य धन) जो डूब गया हो या वसूल न हो सकता हो।

बुड्ढा|-वि० [सं० वृद्ध] [स्त्री० बुढ़िया] १. ६० वर्ष से अधिक अवस्थावाला। वृद्ध। (मनुष्यों के लिए) २. जो अपनी उमर का आधे से अधिक या तीन चौथाई भाग पार कर चुका हो। (जीव)

बुढ़वा|-वि०=बुड्ढा।

बुढ़ाई-स्त्री०=बुढ़ापा।

बुढ़ाना-अ० [हिं० बूढ़ा] वृद्ध या बूढ़ा होना।

बुढ़ापा-पुं० [हिं० बूढ़ा] वृद्धावस्था। बुड्ढे होने की अवस्था। वृद्धावस्था।

बुढ़िया-स्त्री०[सं०वृद्धा] ५०-६० वर्ष या इससे अधिक अवस्थावाली स्त्री। वृद्धा। पद-बुढ़िया का काता = एक प्रकार की मिठाई जो काते हुए सूत के लच्छों की तरह होती है।

बुढ़ौती|-स्त्री० दे० 'बुढ़ापा'।

बुत-पुं० [फा०, मि० सं० बुद्ध] १. मूर्ति। प्रतिमा। २. वह जिससे प्रेम किया जाय। प्रियतम।

बुतना|-अ०=बुझना।

बुताना|-अ०=बुझना। स० = बुझाना।

बुताम-पुं० [अं० बटन ?] १. बटन। २. घुंडी।

बुत्ता-पुं० [देश०] १. धोखा। झाँसा-पट्टी। २. बहाना। हीला।

बुदबुद-पुं० [सं०] पानी का बुलबुला।

बुद्ध-वि० [सं०] १. जागा हुआ। जागरित। २. ज्ञानी। ३. विद्वान्। पुं० बौद्ध धर्म के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध महात्मा जिनका जन्म ई० पू० ५५० में नेपाल की तराई में हुआ था।

बुद्धि-स्त्री० [सं०] १. सोचने-समझने और निश्चय करने की शक्ति। अक्ल।

बुद्धि-जीवी-वि० [सं०] वह जो केवल बुद्धि-बल से जीविका उपार्जन करता हो।

बुद्धि-भ्रंश-पुं० [सं०] पागलपन के अन्तर्गत एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें बुद्धि ठीक तरह से और पूरा काम नहीं देती। (डिमेन्शिया)

बुद्धिमत्ता-स्त्री० [सं०] बुद्धिमान् होने का भाव। समझदारी। अक्लमंदी।

बुद्धिमान्-वि० [सं०] [भाव० बुद्धिमत्ता] वह जिसमें बहुत बुद्धि हो। समझदार।

बुद्धिमानी-स्त्री० दे० 'बुद्धिमत्ता'।

बुद्धि-वाद-पुं०[सं०] वह सिद्धांत जिसमें केवल बुद्धि-संगत या समझ में आनेवाली बातें मानी जाती हैं। (रैशनलिज्म)

बुद्धिशाली-वि० दे० 'बुद्धिमान्'।

बुद्धिहीन-वि० [सं०] मूर्ख। बेवकूफ।

बुधंगड़-पुं० [हिं० बुद्ध] मूर्ख। बेवकूफ।

बुध-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध ग्रह जो सूर्य्य के बहुत पास है। २. देवता। ३. बुद्धिमान् और विद्वान् (व्यक्ति)।

बुधवान्*-वि० दे० 'बुद्धिमान्'।

बुधि*-स्त्री०=बुद्धि।

बुधिवाही*-वि० दे० 'बुद्धिमान्'।

बुनकर-पुं० [हिं० बुनना] कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा।

बुनत-स्त्री० [हिं० बुनना] बुनने की क्रिया या भाव। बुनाई।

बुनना-स० [सं० वयन] १. तागों की सहायता से करघे पर कपड़ा तैयार करना। जैसे-साड़ी बुनना। २. हाथ या यंत्र से कुछ सूतों को ऊपर और कुछ को नीचे से निकालकर कोई चीज बनाना। जैसे-मोजा या गंजी बुनना।

बुना*-स्त्री० [फा० बिनाऽ] मूल कारण। आधार।

बुनाई-स्त्री० [हिं० बुनना+ई (प्रत्य०)] बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बुनावट-स्त्री० [हिं० बुनना + आवट (प्रत्य०)] बुनने की क्रिया, भाव या ढंग।

बुनिया-पुं० दे० 'बुनकर'।

बुनियाद-स्त्री० [फा०] १ जड़। मूल। २. नींव। ३.असलियत। वास्तविकता।

बुनियादी-स्त्री० [फा०] १ बुनियाद या जड़ से संबंध रखनेवाला। २. बिलकुल प्रारंभिक। आधारिक।

बुबुकारी-स्त्री० [अनु०] ज़ोर से रोने का शब्द।

बुभुक्षा-स्त्री० [सं०] भूख। क्षुधा।

बुभुक्षित-वि० [सं०] भूखा। क्षुधित।

बयाम-पुं० [अं० ?] चीनी मिट्टी का एक प्रकार का बड़ा पात्र।

बुरकना-स० [अनु०] चूर्ण आदि किसी चीज पर छिड़कना। भुरभुराना।

बुरका-पुं० [अ०] एक प्रकार का पहनावा जिससे मुसलमान स्त्रियाँ सिर से पैर तक के सब अंग ढकती हैं।

बुरा-वि० [सं० विरूप] अच्छा या उत्तम का उलटा। निकृष्ट। मंद। खराब। मुहा०-बुरा मानना=अनुचित या खराब समझना। (किसी से) बुरा मानना=द्वेष या वैर रखना। सद्भाव त्यागना। यौ०-बुरा भला=१. हानि-लाभ। २. गाली गलौज।

बुराई-स्त्री० [हिं० बुरा+ई (प्रत्य०)] १. बुरा होने का भाव। बुरापन। खराबी। २ अवगुण। दोष। दुर्गुण। ३. शिकायत। निंदा। ४. द्वेष। दुर्भाव।

बुरादा-पुं० [फा०] लकड़ी चीरने पर निकलनेवाला उसका चूर्ण। कुनाई।

बुरुश-पुं० [अं० ब्रश] रँगने या सफाई करने के लिए खास तरह की बनी कूँची।

बुर्ज-पुं० [अ०] १ किले आदि की दीवारों में वह ऊपरी भाग जिसमें बैठने के लिए थोड़ा स्थान होता है। गरगज। २ मीनार का ऊपरी भाग। ३. इस आकार की इमारत की कोई बनावट।

बुलंद-वि० [फा० बलंद] ऊँचा।

बुलकारना*-स० दे० 'पुचकारना'।

बुलबुल-स्त्री० [फा०] एक प्रसिद्ध सुरीली बोलनेवाली काली छोटी चिड़िया।

बुलबुला-पुं० [सं० बुद्‌बुद] पानी का बुल्ला। बुद्‌बुद।

बुलवाना-स० हिं० 'बुलाना' का प्रे०।

बुलाक-स्त्री० [तु०] नथ में का लंबोतरा या सुराहीदार मोती।

बुलाकी-पुं० [तु० बुलाक] एक प्रकार

का घोड़ा।

बुलाना-स० [हिं० 'बोलना' का स० रूप] १. अपने पास आने के लिए पुकारकर कहना। आवाज देना। पुकारना। २. किसी को बोलने में प्रवृत्त करना।

बुलावा-पुं० [हिं० बुलाना] बुलाने की क्रिया या भाव। निमंत्रण।

बुलाह-पुं० [सं० वोल्लाह] वह घोड़ा जिसकी गरदन और दुम के बाल पीले हों।

बुलाहट-स्त्री० दे० 'बुलावा'।

बुलौआ-पुं० दे० 'बुलावा'।

बुल्ला-पुं० दे० 'बुलबुला'।

बुहारना-स० [सं० बहुकर] झाड़ू से जगह साफ करना। झाड़ू देना।

बुहारी-स्त्री० दे० 'झाड़ू'।

बूँद-स्त्री० [सं० बिंदु] १. गिरने के समय जल आदि का वह थोड़ा अंश जो प्रायः छोटी गोली के समान बन जाता है। कतरा। टोप।

मुहा०-**बूँदें पड़ना**=हलकी वर्षा होना। २. वीर्य। ३. बहुत छोटी बूटियों का एक प्रकार का कपड़ा।

बूँदा-बाँदी-स्त्री० [हिं० बूँद] हलकी बूँदों की थोड़ी वर्षा।

बूँदी-स्त्री० [हिं० बूँद+ई (प्रत्य०)] १. बेसन के तले हुए छोटे गोल टुकड़े। २. इन टुकड़ों से बना हुआ लड्डू। ३. बरसनेवाले जल की बूँदें।

बू-स्त्री०[फा०] १ गंध। महक। २ दुर्गंध।

बूआ-स्त्री० [देश०] १. पिता की बहन। फूफी। २. बड़ी बहन। (मुसल०)

बूक-पुं० [हिं० बकोटा] कोई वस्तु उठाने के लिए हथेली की गहरी की हुई मुद्रा। चंगुल। बकोटा।

बूकना-स० [देश०] १. महीन पीसना। २. केवल योग्यता दिखाने के लिए बातें करना। जैसे-अँगरेज़ी बूकना।

बूका-पुं० १ दे० 'गग-यरार'। २. दे० 'बुक्का'।

बूचड़-पुं० [अं० बुचर] कसाई।

बूचा-वि० [?] १ जिसके कान कटे हुए हों। कन-कटा। २ जो किसी अंग के न होने या कटे होने से कारण भद्दा या बुरा जान पड़े।

बूजना-स० [?] धोखा देना।

बूझ-स्त्री० [सं० बुद्धि] १. समझ। बुद्धि। अक्ल। २ बुझौवल। पहेली।

बूझना-स० [हिं० बूझ=बुद्धि] १. समझना। जानना। २. पूछना। ३. पहेली का उत्तर निकालना।

बूट-पुं० [सं० विटप] १ चने का हरा पौधा या दाना। २ पेड़ या पौधा।

पुं० [अं०] एक प्रकार का जूता।

बूटना*-अ० [?] भागना।

बूटनि*-स्त्री० दे० 'बीर-बहूटी'।

बूटा-पुं० [सं० विटप] १. छोटा वृक्ष। पौधा। २ कपड़ा, दीवारों आदि पर बने हुए फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न। बड़ी बूटी।

बूटी-स्त्री० [हिं० 'बूटा' का स्त्री० अल्पा० रूप] १. बनस्पति। जड़ी। २. भांग। ३. छोटे फूलों के-से वे चिह्न जो किसी चीज़ पर बने होते हैं। छोटा बूटा।

बूड़ना†-स० = डूबना।

बूड़ा†-पुं० [हिं० डूबना] १. जल की बाढ़। २. आदमी के डूबने भर का गहरा पानी।

बूढ़ा-वि० = बुड्ढा।

बूता-पुं० [हिं० वित्त] कोई काम करने की शक्ति। सामर्थ्य।

बूरना*-अ० = डूबना।

बूरा-पुं० [हिं० भूरा] १. भूरे रंग की

कच्ची चीनी। शक्कर। २. साफ की हुई चीनी। ३. बुकनी। चूर्ण।

बृच्छ*-पुं० = वृक्ष।

बृहत्(द्)-वि०[सं०]बहुत बड़ा। विशाल।

बृहस्पति-पुं० [सं०] १ सब देवताओं के गुरु, एक प्रसिद्ध वैदिक देवता। २. सौर जगत् का पाचवां ग्रह।

बेंग-पुं० [सं० भेक] मेढ़क।

बेंच-स्त्री० [अं०] १. लकड़ी, लोहे आदि की एक प्रकार की लंबी चौकी। २. सरकारी न्यायालय के न्यायकर्त्ता।

बेंट(ठ)-स्त्री० [देश०] औजारों में लगी हुई काठ की मूठ। दस्ता।

बेंड़-स्त्री० [हिं० बेड़ा] टेक। चोड़।

बेंड़ना*-स० दे० 'बेढ़ना'।

बेंड़ा-वि० [हिं० 'आड़ा' का अनु०] १. आड़ा। तिरछा। २ विकट। कठिन।

बेंत-पुं० [सं० वेतस्] एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठलों से छड़ियां और टोकरियां बनती और कुरसियां बुनी जाती है।

मुहा०-बेंत की तरह काँपना=डर से थर थर कांपना।

बेंदा-पुं० [सं० बिंदु] १. माथे पर लगाने की गोल बड़ी बिंदी। बड़ी गोल टिकली। २ दे० 'बेंदी'।

बेंदी-स्त्री० [सं० विदु, हिं० बिंदी] १ १. दे० 'बिंदी'। २. दावनी (गहना)।

बेंवत-स्त्री० दे० 'ब्योंत'।

बे-अव्य० [फा०, मि० सं० वि] रहित। हीन। जैसे-बे-होश, बे दम।

अव्य० [हिं० हे] तिरस्कारपूर्ण संबोधन।

बे-अंत*-वि० [हिं० बे+सं० अंत] जिसका कोई अंत न हो। अनंत। बेहद।

बे-अदब-वि० [फा० बे+अ० अदब] [भाव० बे-अदबी] जो बड़ों का आदर-सम्मान करना न जाने या न करे। उद्दंड।

बे-आबरू-वि० [फा०] बेइज्जत।

बे-इज्जत-वि० [फा० बे+अ० इज्जत] [भाव० बेइज्जती] १. जिसकी कुछ इज्जत न हो। अप्रतिष्ठित। २. अपमानित।

बे-ईमान-वि० [फा०] [भाव० बेईमानी] १. जो ईमान या धर्म का विचार न करे। अधर्म्मी। २. छल-कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करनेवाला।

बे-कदर-वि० [फा०] [भाव० बेकदरी] बेइज्जत। अप्रतिष्ठित।

बे-कदरा-वि० [फा० बेकद्र] १. जिसकी कोई कदर या आदर न हो। २. जो कदर या आदर करना न जाने। ३. जो किसी का महत्त्व न जानता हो।

बे-करार-वि० [फा०] [भाव० बेक़रारी] जिसे शांति या चैन न हो। विकल।

बेकल*-वि० [सं० विकल] व्याकुल।

बेकली-स्त्री० [हिं० बेकल+ई (प्रत्य०)] १. घबराहट। बेचैनी। व्याकुलता। २. स्त्रियों का गर्भाशय संबंधी एक रोग।

बे-कसूर-वि० [फा०+अ०] जिसका कोई क़सूर न हो। निर्दोष। निरपराध।

बे-कहा-वि० [हिं० बे+कहना] किसी का कहना न माननेवाला। उद्धत।

बे-काम-वि० [हिं० बे+काम] १. जिसे कोई काम न हो। निकम्मा। २. जो किसी काम का न हो। निरर्थक।

बे-कायदा-वि० [फा० बे+अ० क़ायदः] कायदे या नियम के विरुद्ध।

बेकार-वि० [फा०] [भाव० बेकारी] १. निकम्मा। निठल्ला। २. निरर्थक। व्यर्थ।

क्रि० वि० बिना किसी अर्थ या प्रयोजन के। व्यर्थ। बे-फायदा।

बेकारथो*-पुं० [हिं० बिकारी] १.

बुलाने का शब्द। जैसे-अरे, हो आदि। २. मुँह से निकलनेवाला कोई शब्द।
बेख*-पुं० दे० 'भेस'।
बे-खटके-क्रि०वि० [हिं०बे+हिं० खटका] बिना किसी संकोच के। निस्संकोच।
बे-खबर-वि० [फा०] [भाव० बेखबरी] १. अनजान। नावाकिफ़। २. बेहोश।
बेग*-पुं० दे० 'वेग'।
पुं० [तु०] [स्त्री० बेगम] सरदार।
पुं० [अ० बैग] एक प्रकार का थैला।
बेगम-स्त्री० [तु० बेग का स्त्री० रूप] १. रानी। राज-पत्नी। २. स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द। ३. पत्नी। जोरू जैसे-बेगम मुहम्मद अली।
बेगर†-वि० दे० 'बहर'।
क्रि० वि० दे० 'बग़ैर'।
बे-गरज-वि० [फा० बे+अ० ग़रज] जिसे कोई गरज या परवा न हो।
बेगाना-वि० [फा०] १. ग़ैर। दूसरा। पराया। २. अपरिचित। अनजान।
बेगार-स्त्री०[फा०] १. बिना मजदूरी दिये जबरदस्ती लिया जानेवाला काम। २. वह काम जो मन लगाकर न किया जाय। मुहा०-बेगार टालना = बिना मन लगाये यों ही कुछ काम कर देना।
बेगारी-स्त्री० [फा०] १. बेगार में काम करनेवाला आदमी। २ दे० 'बेगार'।
बेगि*-क्रि० वि० [सं० वेग] जल्दी से।
बे-गुनाह-वि० [फा०] [भाव० बेगुनाही] जिसने कोई गुनाह न किया हो। निरप-राध। बेकसूर।
बेचना-स० [सं० विक्रय] मूल्य लेकर किसी को कुछ देना। विक्रय करना। मुहा०-बेच खाना=१. बेचकर मूल्य खा जाना। २. रहित या हीन हो जाना। जैसे-तुमने तो अक्ल बेच खाई है।
बेचवाल-पुं० [हिं० बेचना] बेचनेवाला।
बेचारा-वि० [फा०] [स्त्री० बेचारी] दीन और निस्सहाय। संबल-रहित।
बेची-स्त्री० [हिं० बेचना] १. बेचने की क्रिया या भाव। २. वह लेख जो हुंडी आदि की पीठ पर उसे बेचनेवाला यह सूचित करने के लिए लिखता है कि मैंने इसे अमुक के हाथ बेच दिया।
बेचू-वि० [हिं० बेचना] बेचनेवाला।
बेचैन-वि० [फा०] [भाव० बेचैनी] १. जिसे चैन न मिलता हो। २. व्याकुल।
बे-जबान-वि० [फा०] १ जिसमें बोलने की शक्ति न हो। २. गूँगा। मूक। ३. जो विरोध करना न जानता हो। दीन।
बेजा-वि०[फा०] अनुचित। ना-मुनासिब।
बे-जान-वि० [फा०] १. जिसमें जान न हो। निर्जीव। २. मुरदा। मृतक। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. बहुत दुबल या कमजोर।
बे-जाब्ता-वि० [फा०+अ०] [भाव० बे-जाब्तगी] जाब्ते या नियम आदि के विरुद्ध।
बे-जोड़-वि० [फा० बे+हिं० जोड़] १. जिसमें जोड़ न हो। अखंड। २. जिसकी जोड़ी का और कोई न हो। अद्वितीय।
बेझना*-स० दे० 'बेचना'।
बेझा*-पुं० [सं० वेध] निशाना। लक्ष्य।
बेट-पुं० [सं०विष्टि] बेगार।
स्त्री० दे० 'बेंट'।
बेटकी*-स्त्री०=बेटी।
बेटला*-पुं०=बेटा।
बेटा-पुं० [सं० बटु=बालक] [स्त्री० बेटी] नर सन्तान। पुत्र। लड़का।
बेठन-पुं० [सं० वेष्टन] वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियाँ, थान आदि बाँधे

जाते हैं। बस्ता।

बे-ठिकाने-वि० [फा० बे+हिं० ठिकाना] १. जो अपनी ठीक जगह पर न हो। २. अनुपयुक्त। ३. व्यर्थ। निरर्थक।

बेड़-पुं० [हिं० बाड़] १ वृक्ष के चारो ओर की मेंड़। २. रुपया। (दलाल)

बेड़ना-स० दे० 'बेढ़ना'।

बेड़ा-पुं० [सं० बेष्ट] १. नदी पार करने के लिए लट्ठा आदि से बनाया हुआ ढाँचा। तिरना।

मुहा०-बेड़ा पार करना या लगाना= संकट से पार या मुक्त करना।

२. बहुत-सी नावों, जहाजों या हवाई जहाजों आदि का समूह या दल।

वि० [हिं० आड़ा का अनु०] १. जो आँखों के समानान्तर दाहिनी ओर से बाईं ओर गया हो। आड़ा। २ कठिन। मुश्किल। विकट।

बेड़िन(नी)-स्त्री० [?] नट जाति की नाचने-गानेवाली स्त्री।

बेड़ी-स्त्री० [सं० वलय] लोहे के कड़ों की वह जोड़ी जो अपराधियों के पैरों में उन्हें बाँध रखने के लिए पहनाई जाती है।

स्त्री० [हिं० बेड़ा] नौका। छोटी नाव।

बे-डौल-वि० [हिं० बे+डौल] १. भद्दी बनावट का। भद्दा। २ दे० 'बेढंगा'।

बेढंगा-वि०[हिं० ढंग] [भाव० बेढंगापन] १.जिसका ढंग ठीक न हो। २.भद्दी तरह से लगाया, रखा या सजाया हुआ। बे-सिलसिले। ३. भद्दा। कुरूप।

बेढ़-पुं० [?] नाश। बरबादी।

बेढ़ई-स्त्री० [हिं० बेढ़ना] कचौड़ी।

बेढ़ना-स० [सं० वेष्टन] १. वृक्षों आदि को, रक्षा के लिए, चारों ओर मेंड़ बनाकर घेरना। रूँधना। २. चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।

बेढब-वि० [हिं० बे+ढब] १. जिसका ढब अच्छा या ठीक न हो। २.बेढंगा। भद्दा।

बे-तकल्लुफ़-वि०[फा०बे+अ०तकल्लुफ़] [भाव० बेतकल्लुफ़ी] १. जो तकल्लुफ़ या बनावट न करता हो। २. अपने मन की बात साफ साफ कहनेवाला।

क्रि० वि० १. बिना किसी तकल्लुफ़ के। बेधड़क। निःसंकोच।

बे-तमीज़-वि० [फा० बे+अ० तमीज़] [भाव० बे-तमीज़ी] जिसे तमीज़ या शऊर न हो। बेहूदा। उजड्ड।

बे-तरह-क्रि० वि० [फा० बे+अ०तरह] १. बुरी तरह से। २. असाधारण रूप से। वि० बहुत अधिक।

बे-तहाशा-क्रि० वि० [फा० बे + अ० तहाशा] १ बहुत तेज़ी से। २. बहुत घबराकर और बिना सोचे-समझे।

बेताब-वि० [फा०] [भाव० बेताबी] १. अशक्त। दुर्बल। २. विकल। व्याकुल।

बे-तार-वि० [हिं० बे+तार] बिना तार का। जिसमें तार न हो।

पद-बेतार का तार=बिना तार के और केवल बिजली के द्वारा भेजा हुआ समाचार या इस प्रकार समाचार भेजने की प्रक्रिया।

बेताल-पुं० दे० 'वेताल'।

पुं० [सं० वैतालिक] भाट। बंदी।

वि० [हिं० बे+ताल] (गाना-बजाना) जिसमें ताल का ठीक और पूरा ध्यान न रहे।

बेताला-वि० [हिं० बे+ताल] १. गाने-बजाने में ताल का ध्यान न रखनेवाला। २. दे० 'बेताल'।

बे-तुका-वि० [फा० बे+हिं० तुक] १. जिसमें कोई तुक या सामंजस्य न हो।

बे-मेल। २. बेढंगा। बेढब।

बे-दखल-वि० [फा०] [भाव० बेदखली] जिसका दखल, कब्जा या अधिकार हटा दिया गया हो। अधिकार-च्युत।

बे-दखली-स्त्री० [फा०] संपत्ति पर से दखल या अधिकार हटाया जाना।

बेदम-वि० [फा०] १. मृतक। निर्जीव। २. मृतप्राय। अधमरा। ३ जर्जर। बोदा।

बेदर्द-वि० [फा०] [भाव० बेदर्दी] जो किसी की व्यथा या कष्ट पर ध्यान न दे। कठोर-हृदय।

बेदाग-वि० [फा०] १. जिसमें दाग या धब्बा न हो। साफ। २. निरपराध। बेकसूर।

बेदाना-पुं० [हिं० बिहीदाना] १. एक प्रकार का बढ़िया अनार। २. बिहीदाना नामक फल का बीज।

बेदाम-वि० [फा०] बिना दाम का। मुफ्त। पुं० दे० 'बादाम'।

बेध-पुं० [सं० वेध] १. छेद। २. दे० 'वेध'।

बे-धड़क-क्रि० वि० [फा० बे+हिं० धड़क] १. बिना किसी प्रकार की धड़क या संकोच के। निःसंकोच। २. निडर होकर।
वि० १. जिसे कोई संकोच या खटका न हो। निर्द्वंद्व। २. निर्भय। निडर।

बेधना-स० [सं० वेधन] नुकीली चीज से छेदना। भेदना।

बे-धर्म-वि० [सं० विधर्म] १. जिसे अपने धर्म का ध्यान न हो। २. जिसने अपना धर्म छोड़ दिया हो।

बेधीर*-वि० दे० 'अधीर'।

बेना-पुं० [सं०वेणु] १. मुरली। बाँसुरी। २. बाँस।

बे-नसीब-वि० = अभागा।

बेना-पुं० [सं० वायु] [स्त्री० बेनिया] १. बाँस का छोटा पंखा। २.बाँस। ३.खस।

बेनिमून*-वि० दे० 'बेजोड़'।

बेनिया-स्त्री० [हिं० बेना] छोटा पंखा। पंखी।

बेनी-स्त्री० [सं०वेणी] १.स्त्रियों की चोटी। २. दे० 'त्रिवेणी'।

बेनु-पुं० दे० 'वेन'।

बे-परद-वि० [फा० बे+परदा] [भाव० बेपर्दगी] १. जिसके आगे कोई परदा या ओट न हो। अनावृत। २. नंगा। नग्न।

बेपरवा(ह)-वि० [फा०बेपरवाह] [भाव० बेपरवाही] १. जिसे कोई परवा न हो। बेफिक्र। २. परम उदार।

बेपाइ*-वि० [हिं० बे+उपाय] जिसे कोई उपाय न सूझे। हक्का-बक्का।

बेपीर-वि० दे० 'बेदर्द'।

बेपेंदी-वि० [हिं० बे+पेंदा] जिसमें पेंदा या तल न हो।
बोल०-बेपेंदी का लोटा=जिसका कोई निश्चित मत या सिद्धान्त न हो।

बेफायदा-वि०, क्रि० वि० [फा०] व्यर्थ।

बेफिक्र-वि० [फा०] [भाव० बेफिक्री] जिसे कोई फिक्र न हो। निश्चिन्त।

बेबस-वि० [सं० विवश] [भाव० बेबसी] १. जिसका वश न चले। लाचार। २. पराधीन। पर-वश।

बेबाक-वि० [फा०] [भाव० बेबाकी] चुकता किया या चुकाया हुआ। (ऋण, देन आदि)

बेमुरव्वत-वि० [फा०] [भाव० बे-मुरव्वती] जो मुरव्वत न करे। तोता-चश्म।

बेमौका-वि० [फा०] जो ठीक मौके या अवसर पर न हो।
पुं० मौके का न होना।

बे-मौसिम-वि० [फा०] १. मौसिम न होने पर भी होनेवाला। २. जिसका मौसिम न हो।

बेर-पुं० [सं० बदरी] एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके फल खाये जाते हैं।

स्त्री० [हिं० बार] १. बार। दफ़ा। २. विलम्ब। देर।

बे-रहम-वि० [फा० बेरह्म] [भाव० बेरहमी] दयाशून्य। निर्दय। निठुर।

बेरा†-पुं० [सं० वेला] १. समय। वक्त। २. सबेरा। प्रात काल।

बेराम†-वि० दे० 'बीमार'।

बेरियाँ†-स्त्री० [हिं० बेर] समय। वक्त।

बेरी-स्त्री० १. दे० 'बेर'। २. दे० 'बेड़ी'।

बेरुख-वि० [फा०] [भाव० बेरुखी] १. जो काम पड़ने पर रुख (मुँह) फेरकर उदासीन या अप्रसन्न हो जाय। बे-मुरव्वत। २. अप्रसन्न। नाराज।

बेलंब*-पुं० दे० 'विलंब'।

बेल-पुं० [सं० बिल्व] १. एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते हैं। श्रीफल।

स्त्री० [सं० वल्ली] १. वह बहुत ही पतली पेड़ी और पतले डंठलों का वह छोटा कोमल पौधा जो दूसरे वृक्षों आदि के आधार पर ऊपर की ओर बढ़ता हो। वल्ली। लता।

मुहा०-बेल मँढ़े चढ़ना=कोई काम ठीक तरह से पूरा उतरना।

२. संतान। वंश। ३. कपड़े आदि पर लंबाई के बल में बनी हुई फूल-पत्तियाँ। ४. नाव खेने का डाँड़।

पुं० [फा० बेलचः] १. एक प्रकार की कुदाली। २. सीमा निश्चित करने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीरें।

*पुं० बेले का फूल।

बेलचा-पुं० [फा०] कुदाल। कुदारी।

बे-लज्जत-वि०[फा०] [भाव० बेलज्जती] जिसमें कोई लज्जत या स्वाद न हो।

बेलदार-पुं० [फा०] फावड़ा चलानेवाला मजदूर।

बेलन-पुं० [सं० वेलन] लंबोतरे आकार का वह भारी गोल खंड जिससे कोई स्थान समतल करते अथवा कंकड़-पत्थर कूटकर सड़कें बनाते हैं। (रोलर) २. यंत्रों में लगा हुआ इस आकार का कोई बड़ा पुरजा। ३. रूई धुनने की मुठिया या हत्था।

बेलना-पुं० [सं० वेलन] काठ, पीतल आदि का वह प्रसिद्ध उपकरण जिससे रोटी, पूरी आदि बेलते हैं।

स० १. रोटी, पूरी आदि बनाने के लिए आटे के पेड़े को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ाकर बड़ा और पतला करना। २ चौपट या नष्ट करना।

मुहा०-पापड़ बेलना=व्यर्थ के या निष्फल काम करना।

३. विनोद के लिए पानी के छींटे उड़ाना।

बेलपत्ती-स्त्री० दे० 'बेलपत्र'।

बेलपत्र-पुं० [सं० बिल्वपत्र] बेल (वृक्ष) के पत्ते जो शिव जी पर चढ़ाये जाते है।

बेलरी*-स्त्री० दे० 'बेल'।

बेलसना-अ० [सं० विलास+ना (प्रत्य०)] भोग करना। सुख लेना।

बेला-पुं०[सं० मल्लिका] चमेली की तरह का सुगंधित फूलोंवाला एक छोटा पौधा।

पुं० [सं० बेला] १. लहर। २. चमड़े की वह छोटी कुप्पिया जिससे तेल दूसरे पात्र में डालते हैं। ३. कटोरा। ४. समुद्र का किनारा। ५. समय। वक्त।

पुं० [फा०] रुपये-आदि रखने की थैली।

बे-लाग-वि० [फा० बे + हिं० लाग = सम्बन्ध] १. जो किसी पर टिका न हो।

बिना आधार का। २. बिलकुल अलग। ३. व्यवहार में सच्चा और साफ। खरा।

बेली-पुं० [सं० बल] संगी। साथी।

बे-लौस-वि० [हिं० बे+फा० लौस] १. पक्षपात न करनेवाला। २.सच्चा। खरा।

बेवकूफ-वि० [फा०] [भाव० बेवकूफी] मूर्ख। ना-समझ।

बे-वक्त-क्रि० वि० [फा०] कुसमय में।

बेवट†-स्त्री० [?] १ संकट। २. विवशता।

बेवपार*-पुं० दे० 'व्यापार'।

बेवरा*-पुं० दे० 'व्योरा'।

बेवहरना*-अ० [सं० व्यवहार] १ व्यवहार करना। बरताव करना। बरतना। २. व्यापार या रोजगार करना।

बेवहरिया*-पुं० [सं० व्यवहार] लेन-देन का व्यापार करनेवाला। महाजन।

बेवा-स्त्री० [फा० बेवः] विधवा। राँड़।

बेवाई-स्त्री० दे० 'बिवाई'।

बेवान*-पुं० दे० 'विमान'।

बेशक-क्रि० वि० [फा० बे+अ०शक] अवश्य। निःसंदेह। जरूर।

बेशरम-वि० [फा० बेशर्म] जिसे शरम न हो। निर्लज्ज। बे-हया।

बेशी-स्त्री० [फा०] अधिकता।

बे-शुमार-वि० [फा०] जिसकी गिनती न हो सके। अगणित। असंख्य।

बेसंदर*-पुं० [सं० वैश्वानर] अग्नि।

बेसँभर(भार)-वि० दे० 'बेसुध'।

बेस*-पुं० [सं० वेष] भेस।

बेसन-पुं० [देश०] चने की दाल का महीन चूर्ण या आटा।

बेसनी-स्त्री० [हिं० बेसन] बेसन की बनी या भरी हुई रोटी या पूरी।

बे-सबरा-वि० [फा० बे+अ० सब्र] १. जिसे सब्र या संतोष न हो। २.उतावला।

बे-समझ-वि० [हिं० बे+समझ] [भाव० बे-समझी] ना-समझ। मूर्ख।

बेसर-पुं० [सं० वेशर] खच्चर। पुं० [?] नाक में पहनने की नथ।

बेसवा(सा)*-स्त्री० दे० वेश्या'।

बेसारा*-वि० [हिं० बैठना] बैठाने, रखने या जमानेवाला।

बेसाहना†-स० [सं० व्यसन] [भाव० बेसाहनी] १. मोल लेना। खरीदना। २. जान-बूझकर अपने सिर लेना। (बैर, विरोध, संकट आदि)

बेसुध-वि० [हिं० बे+सुध=होश] जिसे सुध या होश न हो। अचेत। बद-हवास।

बेसुर(ा)-वि० [हिं० बे+सुर=स्वर] १. अपने नियत स्वर से हटा हुआ (संगीत)। २. बे-मौका।

बेहंगम-वि० [सं० विहंगम] १. भद्दा। बेढंगा। २. बेढब। विकट।

बेहँसना*-अ० दे० 'बिहँसना'।

बेह*-पुं० [सं० वेध] छेद। छिद्र।

बेहतर-वि० [फा०] [भाव० बेहतरी] किसी की तुलना में अच्छा। बढ़कर। अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द। अच्छा।

बेहद-वि० [फा०] १ जिसकी हद न हो। असीम। २. बहुत अधिक।

बेहना†-पुं० [देश०] धुनिया।

बे-हया-वि० [फा०] [भाव० बेहयाई] जिसे हया या शरम न हो। निर्लज्ज।

बेहरा-वि० [देश०] अलग। जुदा। पुं० [अं० बेयरर] बड़े अधिकारियों का निजी चपरासी या अरदली।

बेहरी†-स्त्री० [?] बहुत से लोगों से चंदे के रूप में लिया जानेवाला धन।

बे-हाल-वि० [फा० बे + अ० हाल] [भाव० बेहाली] १. जिसका हाल या

दशा अच्छी न हो। २. व्याकुल। बेचैन।

बे-हिसाब-वि० [फा० बे+अ० हिसाब] १. जिसका ठीक और पूरा हिसाब न रखा जाय। २. बहुत अधिक। बेहद।

बे-हुनरा-वि० [हिं० बे+फा० हुनर] जिसे कोई हुनर या विद्या न आती हो।

बेहूदा-वि० [फा०] [भाव० बेहूदगी] जिसमें शिष्टता न हो। अशिष्ट।

बेहून*-क्रि० वि० [सं० विहीन] बिना। बगैर।

बेहोश-वि० [फा०] जिसे होश न हो। मूर्च्छित। बेसुध।

बेहोशी-स्त्री० [फा०] मूर्च्छा। अचेतनता।

बैंक-पुं० दे० 'बंक'।

बैंगन-पुं० [सं० वंगण ?] एक पौधा जिसके फलों की तरकारी बनती है। भंटा।

बैंगनी(जनी)-वि० [हिं० बैंगन] बैंगन की तरह लाली लिये नीले रंग का।

बैंड-पुं० [अं०] अँगरेजी बाजे या उनके बजानेवालों का समूह।

बैंड़ा*-वि० दे० 'बेंड़ा'।

बैंत-स्त्री० १. दे० 'बेंत'। २ दे० 'बेंत'।

बै-स्त्री० [सं० वाय] १. बैसर। कंघी। (जुलाहों की) २. दे० 'वय'। स्त्री० [अ०] बेचना। बिक्री।

बैकना*-अ० दे० 'बहकना'।

बैकल-वि० [सं० विकल] १. विकल। २. पागल। उन्मत्त।

बैकुंठ-पुं० दे० 'वैकुंठ'।

बैग-पुं० दे० 'बेग'। (थैला)

बैजंती-स्त्री० दे० 'वैजयंती'।

बैटरी-स्त्री० [अं०] १ चीनी या शीशे आदि का वह पात्र जिससे रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम में लाई जाती है। २. इसी प्रकार की प्रक्रिया से तैयार किया हुआ लोहे आदि का छोटा मुँह-बंद पात्र जो रोशनी आदि करने के लिए होता है। ३. तोपखाना।

बैठक-स्त्री० [हिं० बैठना] १ बैठने का स्थान या आसन। २. वह स्थान जहाँ बहुत-से लोग बैठते हों। चौपाल। ३. बैठने की मुद्रा या ढंग। ४. मूर्त्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी। पदस्तल। ५. सभा-समिति आदि का एक बार का अधिवेशन। (सिटिंग) ६. दे० 'बैठकी'।

बैठकबाज-वि० [हिं० बैठक+फा० बाज] [भाव० बैठकबाजी] केवल बातें बनाकर काम निकालनेवाला। धूर्त्त। चालाक।

बैठकी-स्त्री० [हिं० बैठक+ई (प्रत्य०)] १ एक कसरत जो बार-बार कुछ विशेष प्रकार से उठ और बैठकर की जाती है। बैठक २ दीपक के लिए धातु आदि का बना हुआ आधार। ३. दे० 'बैठक'।

बैठना-अ० [सं० वेशन] १. टांगों का आश्रय छोड़कर ऐसी स्थिति में होना कि चूतड़ किसी आधार पर रहें। २ स्थित या आसीन होना। आसन जमाना।

मुहा०-बैठे-बैठाये या बैठे-बैठे=१. बिना कुछ किये। २ अचानक। एकाएक। **बैठते-उठते**=हर समय। सदा।

२. किसी जगह ठीक तरह से जमना। ३. अभ्यस्त होना। जैसे-हाथ बैठना। ४.जल आदि में घुली हुई वस्तु का नीचे तल में जा लगना। ५. पचकना। ६. (कार-बार) बिगड़ना। ७.तौल में ठहरना या उतरना। ८. लागत आना। ९ लक्ष्य या निशाने पर लगना। १०. पौधे का जमीन में लगाया या रोपा जाना। ११. किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी-रूप में जा रहना। १२. पक्षियों का अंडे सेना। १३.

निर्वाचन आदि में उम्मेदवार का प्रतियोगिता से हट जाना। खड़ा न रहना।

बैठाना-स० [हिं० बैठना] [प्रे० बैठवाना] 'बैठना' का स०। किसी को बैठने में प्रवृत्त करना। विशेष दे० 'बैठना'।

बैठारना(लना)*-स० = बैठाना।

बैढ़ना†-स० दे० बेढ़ना'।

बैत-स्त्री० [अ०] छन्दोबद्ध रचना। पद्य।

बैतरनी-स्त्री० दे० 'वैतरणी'।

बैताल-पुं० दे० 'वेताल'।

बैद-पुं० दे० 'वैद्य'।

बैदगी-स्त्री० [हिं० बैद] वैद्य या चिकित्सक का काम या व्यवसाय।

बैदाई*-स्त्री० दे० 'बैदगी'।

बैदेही-स्त्री० दे० 'वैदेही'।

बैन*-पुं० [सं० वचन] वचन। बात। मुहा०-*बैन झरना=मुँह से वचन या बात निकलना।

बैना-पुं० [सं० वायन] वह मिठाई आदि जो मंगल अवसरों पर संबंधियों और इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

* स० [सं० वपन] बोना।

बैनामा-पुं० [अ० बै+फा० नामः] वह पत्र जिसमें किसी वस्तु विशेषतः मकान या जमीन आदि के बेचने और उससे संबंध रखनेवाली शर्तों आदि का उल्लेख होता है। विक्रय-पत्र।

बैपार-पुं० दे० 'व्यापार'।

बैयर*-स्त्री० [सं० वधूवर] औरत। स्त्री।

बैयाँ*-क्रि० वि० [?] घुटनों के बल।

बैया*-पुं० [सं० वाय] बै। बैसर।

बैरंग-वि० [अं० बयरिंग] १. डाक से भेजी जानेवाली वह चिट्ठी आदि जिसका महसूल भेजनेवाले ने न चुकाया हो। २. विफल।

बैर-पुं० [सं० वैर] १. शत्रुता। दुश्मनी। २. वैमनस्य। द्वेष।

मुहा०-बैर निकालना=बदला लेना। बैर ठानना=दुश्मनी खड़ी करना। बैर पड़ना=शत्रु होकर पीछे लगना। बैर बिसाहना या मोल लेना=दे० 'बैर ठानना'। बैर लेना=दे० 'बैर निकालना'।

पुं० [सं० बदरी] बेर का वृक्ष या फल।

बैरख-पुं० [तु० बैरक] सैनिक झंडा।

बैराग-पुं० दे० 'वैराग्य'।

बैरागी-पुं० [सं० विरागी] [स्त्री० बैरागिन] एक प्रकार के वैष्णव साधु।

बैरिस्टर-पुं० [अं०] [भाव० बैरिस्टरी] एक प्रकार के विधिज्ञ या कानूनदाँ जिनकी मर्यादा वकीलों से बढ़कर होती है।

बैरी-वि० दे० 'वैरी'।

बैल-पुं० [सं० बलद] १. गौ जाति का बधिया किया हुआ वह नर चौपाया जो हलों और गाड़ियों में जोता जाता है। २. मूर्ख।

बैल-मुतनी-स्त्री० दे० 'गो-मूत्रिका'।

बैलून-पुं० [अं०] गुब्बारा।

बैसंदर-पुं० [सं० वैश्नावर] अग्नि।

बैस-स्त्री० दे० 'वयस्' या 'वय'।

बैसना*-अ० = बैठना।

बैसाख-पुं० दे० 'वैशाख'।

बैसाखी-स्त्री० [सं० विशाख] वह डंडा जिसे बगल के नीचे रखकर लँगड़े लोग सहारे से टेकते हुए चलते हैं।

बैसारना*-स०=बैठाना।

बैसिक*-पुं० [सं० वैशिक] वेश्या से संभोग करनेवाला। वेश्यागामी।

बैहर*-वि० [सं० वैर = भयानक] १. भयानक। २. क्रोधी।

†स्त्री० [सं० वायु] वायु। हवा।

बोंडा-पुं० [देश०] बारूद में आग लगाने का पलीता।

बोआई-स्त्री०[हिं० बोना] बीज बोने का काम भाव या मजदूरी।

बोज-पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

बोझ-पुं० [?] १. एक में बँधा हुआ वस्तुओं का भारी ढेर। भार। २. भारीपन। गुरुत्व। वजन। ३. कठिन या रुचि-विरुद्ध काम। ४. किसी कार्य का उत्तरदायित्व। भार। ५. एक आदमी या पशु के एक बार ले जाने योग्य भार।

बोझना-स० [हिं० बोझ] बोझ लादना।

बोझल (झिल)-वि० [हिं० बोझ] भारी बोझवाला। वजनी।

बोझा-पुं० दे० 'बोझ'।

बोट-स्त्री० [अं०] नाव। नौका।

बोटा-पुं० [सं०वृन्त] कटा हुआ टुकड़ा।

बोटी-स्त्री० [हिं० बोटा] मांस का छोटा कटा हुआ टुकड़ा।

मुहा०-**बोटी बोटी करना या काटना** = शरीर को काटकर टुकड़े टुकड़े करना।

बोड़ना-स० दे० 'बोरना'।

बोड़ा-पुं० [देश०] १. अजगर। २. एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है। लोबिया।

बोड़ी-स्त्री०[?] एक प्रकार के पौधे की कली जिसकी तरकारी और अचार बनता है।

बोत-पुं० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

बोतल-स्त्री० [अं० बॉटल] लंबी गरदनवाला काँच का एक प्रसिद्ध पात्र।

मुहा०-**बोतल ढालना**=शराब पीना।

बोदरी-स्त्री० [देश०] खसरा नामक रोग।

बोदा-वि० [सं० अबोध] [भाव० बोदापन] १. मूर्ख। गावदी। २. सुस्त। ३. जो पक्का या कड़ा न हो। कमजोर।

बोध-पुं० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २. सान्त्वना। ३. धैर्य। तसल्ली।

बोधक-वि० [सं०] १. ज्ञान करानेवाला। २. सूचक। ३. वाचक।

पुं० शृंगार रस में एक हाव जिसमें संकेत से अपने मन का भाव प्रकट किया जाता है।

बोधगम्य-वि० [सं०] समझ में आने योग्य।

बोधन-पुं० [सं०] [वि० बोध्य, बोधित] १ बोध या ज्ञान कराना। २. जगाना।

बोधना*-स० [सं०बोधन] १.समझाना। २. ज्ञान कराना।

बोधि वृक्ष-पुं० [सं०] गया के पास पीपल का वह वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध भगवान् को बोध या ज्ञान हुआ था।

बोधिसत्त्व-पुं० [सं०] वह जो बुद्ध बनने का अधिकारी हो गया हो। (महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम)

बोना-स० [सं० वपन] १. खेत में उपजाने के लिए बीज छिड़कना या बिखेरना। २. किसी बात का सूत्रपात करना। अंकुर लगाना।

बोर-पु० [हिं० बोरना] कपड़े को रंग में बोरने या डुबाने की क्रिया या भाव।

बोरना[†]-स० [हिं० बूड़ना] १. दे० 'डुबाना'। २ कलंकित या बदनाम करके नष्ट करना। (नाम, कीर्त्ति आदि) ३. पानी मिले हुए रंग में डुबाकर रँगना।

बोरसी[†]-स्त्री० दे० 'अँगीठी'।

बोरा-पुं० [सं० पुर=दोना] [स्त्री० अल्पा० बोरी] टाट का वह बड़ा थैला जिसमें अनाज आदि भरकर रखते हैं।

बोरिया-पुं० [फा०] १. चटाई। २. टाट आदि का साधारण बिछौना।

मुहा०-बोरिया बाँधना या बोरिया बिस्तर उठाना = सारा सामान लेकर चलने की तैयारी करना।

बोरी-स्त्री० [हिं० बोरा] छोटा बोरा।

बोरो-पुं० [हिं० बोरना] एक प्रकार का घटिया या मोटा धान।

बोर्ड-पुं० [अं०] १. किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति। २. माल के मामलों का फैसला करनेवाला अधिकरण। ३. कागज की मोटी दफ्ती। ४ नाम-पट्ट।

बोर्डिंग हाउस-पुं० दे० 'छात्रावास'।

बोल-पुं० [हिं० बोलना] १. बोली या कही हुई बात। वाणी। वचन। उक्ति। २. ताना। व्यंग्य। ३ गीत और बाजे के बँधे या गठे हुए शब्द। जैसे-मृदंग या सितार के बोल। ४. दृढ़ता-पूर्ण कथन। प्रतिज्ञा।

मुहा०-(किसी का) बोल-बाला रहना या होना = मान-मर्यादा बनी रहना और बढ़ना।

बोल-चाल-स्त्री० [हिं० बोल+चाल] १. बात-चीत। कथोपकथन। २. नित्य के व्यवहार की बँधी हुई कथन-प्रणाली जो मुहावरे की तरह होने पर भी उससे कुछ भिन्न होती है।

बोलता-पुं० [हिं० बोलना] १. आत्मा। जीवनी शक्ति। २. प्राण।

वि० बहुत बोलनेवाला। वाचाल।

बोलती-स्त्री० [हिं० बोलना] बोलने की शक्ति। वाणी।

बोलनहारा*-पुं० दे० 'बोलता'।

बोलना-अ० [सं० ब्रू, ब्रूयते] १. मुँह से शब्द उच्चारण करना। बात कहना।

मुहा०-बोल जाना = १. मर जाना। (अशिष्ट) २. समाप्त हो जाना। ३. टूटने-फूटने के कारण व्यवहार के योग्य न रह जाना।

२. किसी चीज का आवाज निकालना। जैसे-रुपया बोलना, तबला बोलना।

स० १. कहना। २. बात पक्की करना। ठहराना। ३. रोक-टोक करना। कुछ कहकर बाधक होना। ४.छेड़-छाड़ करना। *५. बुलाना।

मुहा०-*बोलि पठाना=बुला भेजना।

बोलसर- पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

*स्त्री० दे० 'मौलसिरी'।

बोला-चाली-स्त्री० दे० 'बोल-चाल' १.।

बोली-स्त्री० [हिं० बोलना] १. मुँह से निकली हुई बात या शब्द। वाणी। २. सार्थक शब्द या बात। ३. नीलाम के समय चीज का चिल्लाकर दाम लगाना। डाक। ४. किसी विशिष्ट स्थान के शब्दों का बना वह कथन-प्रकार, जिसका व्यवहार केवल बात-चीत में होता है, पर प्रायः जिसका कोई साहित्य नहीं होता। (डाइलेक्ट) ५. ताना। व्यंग्य।

मुहा०-बोली छोड़ना, बोलना या मारना=किसी को लक्ष्य करके व्यंग्य-पूर्ण बात कहना।

बोल्लाह-पुं०[देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

बोल्शेविक-पुं० [रूसी] रूस के साम्य-वादी दल का चरम-पंथी सदस्य।

वि० उक्त दल संबंधी।

बोल्शेविज्म-पुं० [अं०] रूस के साम्य-वादी दल के चरम-पंथ का सिद्धान्त।

बोवना-स० दे० 'बोना'।

बोवाना-स० हिं० 'बोना' का प्रे०।

बोह*-स्त्री० [हिं० बोर] डुबकी। गोता।

बोहनी-स्त्री० [सं० बोधन=जगाना] किसी चीज या दिन की पहली बिक्री।

बोहित*-पुं० [सं० बोहित्थ] बड़ी नाव।

बौंड़ी-स्त्री० [सं० वृन्त] १. पौधों, लताओं आदि के कच्चे फल या कलियाँ। २. फली। छीमी। ३. दमड़ी। छदाम।

बौखलाना-अ० [?] क्रोध में आकर अंड-बंड बातें कहना।

बौछार-स्त्री० [सं० वायु+क्षरण] १. हवा के झोंके से आनेवाली वर्षा की झड़ी। २. किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या या मात्रा में आकर गिरना या पड़ना। झड़ी। ३.लगातार कही जानेवाली व्यंग्य-पूर्ण या कटु आलोचना की बातें।

बौड़ाना-अ० दे० 'बौराना'।

बौद्ध-पुं०[सं०] गौतम बुद्ध के चलाए हुए धर्म का अनुयायी।

बौद्ध-धर्म-पुं० [सं०] गौतम बुद्ध का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध भारतीय धर्म।

बौना-पुं० [सं० वामन] [स्त्री० बौनी] बहुत ठिंगने या नाटे कद का मनुष्य।

बौर†-पुं० [सं० मुकुल] आम की मंजरी। मौर।

बौरना-अ० [हिं० बौर] आम के पेड़ में बौर या मंजरी निकलना। मौरना।

बौरहा†-वि० दे० 'बावला'।

बौरा-वि० [स्त्री० बौरी] दे० 'बावला'।

बौराना†-अ० [हिं० बौरा] [भाव० बौरापन, बौराई] १ पागल हो जाना। सनक जाना। २. पागलों की तरह काम या बातें करना।

स० किसी को बौरा या पागल करना।

बौराह*-वि० दे० 'बावला'।

बौलसिरी*-स्त्री० दे० 'मौलसिरी'।

ब्यतीतना*-स० दे० 'बिताना'।

अ० दे० 'बीतना'।

ब्यवहरिया-पुं० [हिं० ब्यवहार] लोगों को रुपये उधार देनेवाला। महाजन।

ब्यवहार-पुं० दे० 'ब्यवहार'।

ब्याज-पुं० [सं० व्याज] १. किसी को उधार दिये हुए रुपयों के बदले में उस समय तक मिलनेवाला वह कुछ निश्चित धन, जिस समय तक मूल धन चुका न दिया जाय। सूद। २. दे० 'व्याज'।

ब्याजू-वि० [हिं० ब्याज] ब्याज या सूद पर दिया जानेवाला (धन)।

ब्याना-स० [हिं० बिया=दूसरा या ब्याह] गर्भ से उत्पन्न करना। जनना।

ब्यापना*-अ० [सं० व्यापन] १. व्याप्त होना। २. चारो ओर छाना। फैलना। ३ प्रभाव दिखाना।

ब्यारी-स्त्री० दे० 'ब्यालू'।

ब्यालू-पुं० [?] रात का भोजन। ब्यारी।

ब्याह-पुं० [सं० विवाह] वह धार्मिक या सामाजिक कृत्य या उसकी रीति जो स्त्री और पुरुष में पति-पत्नी का संबंध स्थापित करने के लिए होती है। विवाह। पाणि-ग्रहण। शादी।

ब्याहता-वि० [सं० विवाहित] जिसके साथ विवाह हुआ हो। (विशेषतः स्त्री के लिए)

ब्याहना-स० [सं० विवाह+ना (प्रत्य०)] [वि० ब्याहता] १. ब्याह करके पुरुष का स्त्री को अपनी पत्नी या स्त्री का पुरुष को अपना पति बनाना। २. किसी का किसी के साथ ब्याह कराना।

ब्याहुला†-वि० [हिं० ब्याह] विवाह का।

ब्योंचना-अ० [सं० विकुंचन] अचानक जोर से मुड़ जाने के कारण नस का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है। मुड़कना।

स० मरोड़ना।

ब्योंड़ा-पुं०[हिं० बेड़ा] वह लंबी गोलाकार लकड़ी जो दरवाजा बंद करके अंदर से उसे खुलने से रोकने के लिए लगाई जाती है। अरगल।

ब्योंत-स्त्री० [सं० व्यवस्था] १ काम पूरा करने की युक्ति, उपाय या व्यवस्था। २. ढब। ढंग। तरीका। ३. साधन या सामग्री आदि की सीमा। समाई। ४. पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़े की काट-छांट।

ब्योंतना-स० [हिं० ब्योंत] [स० ब्योंताना] पहनने का कपड़ा बनाने के लिए कपड़ा नापकर उसे काटना-छांटना।

ब्योपार-पुं० दे० 'व्यापार'।

ब्योरना-स० [हिं० ब्योरा] [भाव० ब्योरन] उलझे हुए बालों या सूतों को सुलझाना।

ब्योरा-पुं० [सं० विवरण] १ किसी विषय की हर एक बात का सविस्तर उल्लेख या कथन। विवरण। तफ़सील। २. वृत्तान्त। हाल। ३. अंतर। फ़रक।

ब्योरेवार-क्रि० वि० [हिं० ब्योरा] ब्योरा बतलाते हुए। विस्तार के साथ।

ब्योहर-पुं० [हि० व्यवहार] रुपये उधार देने का काम या व्यापार।

ब्योहरिया-पुं० [सं० व्यवहार] सूद पर रुपये उधार देने का काम करनेवाला।

ब्योहार-पुं० = व्यवहार।

ब्रंद*-पुं० दे० 'वृंद'।

ब्रज-पुं० दे० 'व्रज'।

ब्रजना*-अ० [सं० व्रजन] चलना।

ब्रह्म-पुं० [सं० ब्रह्मन्] १.वह सबसे बड़ी, परम और नित्य चेतन-सत्ता जो जगत् का मूल कारण और सत्, चित्, आनंद-स्वरूप मानी गई है। २. ईश्वर। परमात्मा। ३. आत्मा। ४. ब्राह्मण (समास में)। ५ ब्रह्मा। (समास में) ६. एक की संख्या। ७. दे० 'ब्रह्म-राक्षस'।

ब्रह्मचर्य-पुं० [सं०] चार आश्रमों में से पहला, जिसमें स्त्री-संभोग आदि से बचकर केवल अध्ययन किया जाता है।

ब्रह्मचारी-पुं० [सं० ब्रह्मचारिन्] [स्त्री० ब्रह्मचारिणी] संयमपूर्वक रहकर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करनेवाला।

ब्रह्म-ज्ञान-पुं० [सं०] [वि० ब्रह्मज्ञानी] ब्रह्म या पारमार्थिक सत्ता का ज्ञान।

ब्रह्मण्य-वि०[सं०] ब्रह्म या ब्रह्मा-संबंधी। पुं० ब्राह्मणों का भक्त।

ब्रह्मत्व-पुं० [सं०] १. ब्रह्म का भाव। २ ब्राह्मण का भाव।

ब्रह्म-पद-पुं० [सं०] मोक्ष। मुक्ति।

ब्रह्मपुरी-स्त्री० [सं०] १. ब्राह्मणों की बस्ती। २. उन बहुत-से मकानों का समूह जो राजा-महाराज ब्राह्मणों को एक साथ दान करते थे। ३. ब्रह्म-लोक।

ब्रह्म-भोज-पुं० [सं०] ब्राह्मण-भोजन।

ब्रह्म-राक्षस-पुं० [सं०] वह ब्राह्मण जो अकाल-मृत्यु से मरकर राक्षस या प्रेत हो गया हो।

ब्रह्मर्षि-पुं० [सं०] ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्म-लेख-पुं०[सं०] ब्रह्मा का लिखा हुआ भाग्य का लेख जो ध्रुव माना जाता है।

ब्रह्म-लोक-पुं०[सं०]ब्रह्मा के रहने का लोक।

ब्रह्मवाद-पुं० दे० 'अद्वैतवाद'।

ब्रह्मविद्-वि० [सं०] ब्रह्म को जानने और समझनेवाला। ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्म विद्या-स्त्री० [सं०] ब्रह्म के स्वरूप, और तत्त्व आदि की विद्या जिसकी चर्चा उपनिषदों में है।

ब्रह्म-समाज-पुं० दे० 'ब्राह्म समाज'।

ब्रह्म-सूत्र-पुं० [सं०] यज्ञोपवीत । जनेऊ ।
ब्रह्म-हत्या-स्त्री० [सं०] ब्राह्मण को मार डालना, जो महापातक माना गया है ।
ब्रह्मांड-पुं० [सं०] १. अनंत लोकों या भुवनों से युक्त संपूर्ण विश्व । २. खोपड़ी ।
ब्रह्मा-पुं० [सं०] ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में वह पहला रूप जो सृष्टि की रचना करनेवाला माना गया है । विधाता ।
ब्रह्मानंद-पुं० [सं०] ब्रह्म के ज्ञान से मिलनेवाला आनंद ।
ब्रह्मावर्त्त-पुं० [सं०] सरस्वती और दृशद्वती नदियों के बीच का प्रदेश ।
ब्रह्मास्त्र-पुं० [सं०] १. मंत्र से चलनेवाला एक प्रकार का प्राचीन कल्पित अस्त्र । २. कभी विफल न होनेवाली युक्ति ।
ब्रह्मीभूत-वि० [सं०] १. जो ब्रह्म में मिलकर उसके साथ एक हो गया हो । २. मृत । स्वर्गीय । (साधु-महात्माओं के लिए)
ब्रात*-पुं० दे० 'व्रात्य' ।
ब्राह्म-वि० [सं०] ब्रह्म-संबंधी ।
पुं० हिंदुओं के आठ प्रकार के विवाहों में से वह जो आज-कल प्रचलित है ।
ब्राह्मण-पुं० [सं०] [स्त्री० ब्राह्मणी] हिंदुओं के चार वर्णों में पहला और सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसके मुख्य काम पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि हैं । २. उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य । ३. वेद के मंत्र-भाग से भिन्न भाग ।
ब्राह्मण-भोजन-पुं० [सं०] धार्मिक दृष्टि से ब्राह्मणों को कराया जानेवाला भोजन ।
ब्राह्म मुहूर्त्त-पुं० [सं०] सूर्योदय से दो घड़ी पहले का समय । प्रभात ।
ब्राह्म समाज-पुं० [सं०] [वि० ब्राह्म-समाजी] एक मात्र ब्रह्म की उपासना करनेवाला एक आधुनिक सम्प्रदाय ।
ब्राह्मी-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा । २. भारत की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं । ३. एक बूटी जो बुद्धि बढ़ानेवाली मानी जाती है ।
ब्राह्मो-पुं० [सं०] ब्राह्म-समाज का अनुयायी ।
ब्रीड़ना*-अ० [सं० व्रीडन] लज्जित होना ।
ब्लॉक-पुं० [अं०] १. छापे के काम के लिए काठ, तांबे, जस्ते आदि पर बना हुआ चित्रों आदि का ठप्पा । २. इमारतों का वह समूह जिसके चारों ओर कुछ खाली जगह छूटी हो ।

भ

भ-हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवां और पवर्ग का चौथा वर्ण, जिसका उच्चारण ओष्ठ से होता है । छंद:शास्त्र में यह 'भगण' का सूचक या संक्षिप्त रूप है ।
भंकार*-पुं० [अ०] विकट शब्द ।
भंग-पुं० [सं०] [वि० भग्न] १. टूटने, खंडित होने या विघटित होने की क्रिया या भाव । २. निश्चय, प्रतीति, नियम आदि में पड़नेवाला अंतर । बीच । ३. ध्वंस । विनाश । ४. टेढ़े होने या झुकने की क्रिया या भाव । टेढ़ापन ।
स्त्री० दे० 'भाँग' ।
भंगड़-वि० दे० 'भँगेड़ी' ।
भंगना†-अ० [हिं० भंग] १. टूटना । २. दबना ।
स० १. तोड़ना । २. दबाना ।

भँगरा-पुं० [हिं० भाँग] भाँग के रेशों का बना हुआ कपड़ा।

भंगिमा-स्त्री० [सं०] १. टेढ़ापन। कुटिलता। २. स्त्रियों के हाव-भाव या कोमल चेष्टाएँ। ३. लहर। ४. प्रतिकृति।

भंगी-वि० [सं० भंगिन्] [स्त्री० भंगिनी] भंग या नाश होनेवाला।

पुं० [सं० भक्त] [स्त्री० भंगिन] मैला या विष्ठा उठानेवाली एक जाति।

स्त्री० दे० 'भंगिमा'।

पुं० [हिं० भाँग] भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।

भंगुर-वि० [सं०] १. जल्दी भंग या नष्ट होनेवाला। नाशवान्। २. टेढ़ा।

भँगेड़ी-वि० [हिं भाँग] बहुत या नित्य भाँग पीनेवाला। भंगड़।

भँगेला-पुं० दे० 'भँगरा'।

भंजक-वि० [सं०] [स्त्री० भंजिका] भंग करने या तोड़नेवाला।

भंजन-पुं० [सं०] १.तोड़ना। भग करना। २. ध्वंस। नाश।

वि० तोड़नेवाला। भंजक। (यौ० में)

भँजना-अ०[सं०भंजन] १. टुकड़े होना। टूटना। २. दे० 'भुनना'। (सिक्का)

अ० [हिं० भाँजना] १. भाँजा जाना। २. कागज के तावों का कई परतों में मोड़ा जाना। (दफ्तरी)

भंजना-स० [हिं० भंजन] तोड़ना।

भँजाई-स्त्री० [हिं० भाँजना] भाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

स्त्री० दे० 'भुनाई'।

भँजाना†-स० [सं० भंजन] १. भाँजने, तोड़ने आदि का काम दूसरे से कराना। २. दे० 'भुनाना'। (सिक्का)

भंटा†-पुं० दे० 'बैंगन'।

भंड-पुं० दे० 'भाँड़'।

वि० [सं०] १. गंदी, भद्दी या अश्लील बातें बकनेवाला। २. धूर्त। ३. पाखंडी।

भँड़ताल(तिल्ला)-पुं० [हिं० भाँड़+ताल] १.तालियाँ बजा-बजाकर गाया जानेवाला, निम्न कोटि का, एक प्रकार का गाना। २. इस गाने के साथ होनेवाला नाच।

भंडना-स० [सं० भंडन] १. हानि पहुँचाना। २.बिगाड़ना। ३.तोड़ना-फोड़ना। अ० चारों ओर बदनामी करते फिरना।

भंडर-पुं० दे० 'भड्डर'।

वि० [सं० भंड] १. पाखंडी। २. धूर्त।

भँडरिया-स्त्री० [हिं० भंडार] दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताख या छोटी अलमारी।

भंडा-पुं० [सं० भांड] १. बरतन। पात्र। भाँड़ा। २. भेद। रहस्य।

मुहा०-भंडा फूटना=रहस्य प्रकट होना।

भँडाना-स० दे० 'भंडना'।

भंडा-फोड़-पुं० [हिं० भाँडा+फूटना] भेद प्रकट होना। रहस्य खुलना।

भंडार-पुं० [सं० भांडागार] १ कोष। खजाना। २. खाने-पीने की चीजें रखने का स्थान। कोठार। ३. पेट। उदर। ४. दे० 'भंडारा'।

भंडारा-पुं० [हिं०भंडार] १. दे०'भंडार'। २. समूह। झुंड। ३. साधु-सन्तों का भोज।

भंडारी-पुं० [हिं०भंडार] १. कोषाध्यक्ष। २. भंडार का प्रबन्ध करनेवाला अधिकारी। ३. रसोइया।

भँडेरिया-पुं० दे० 'भड्डर'।

भँड़ौआ-पुं० [हिं० भाँड़] १. भाँड़ों के गाने का अशिष्टता-पूर्ण गीत या कविता। २. हास्यपूर्ण निम्न कोटि की कविता।

भँभेरि*†-स्त्री० दे० 'भय'।

भँवन*-स्त्री०=घूमना।

भँवना-अ० [सं० भ्रमण] १. घूमना। २ चक्कर या फेरा लगाना।

भँवर-पुं० [सं०भ्रमर] १. भौंरा। २ नदी के बहाव में वह स्थान जहाँ पानी चक्कर की तरह घूमता है। ३. गड्ढा। गर्त।

भँवर-कली-स्त्री० [हिं० भँवर+कली] वह ढीली कड़ी जो कील में इस प्रकार लगी रहती है कि चारो ओर घूम सके।

भँवर-जाल-पुं० [हिं० भ्रमर+जाल] सांसारिक झगड़े-बखेड़े। भ्रम-जाल।

भँवरी-स्त्री० [हिं० भंवरा] १. पानी का चक्कर। भँवर। २. दे० 'भौंरी'। स्त्री० दे० 'भाँवर'।

भँवाना*-स० [हिं०भँवना] १. घुमाना। चक्कर देना। २. धोखे में डालना।

भँवारा†-वि०[हिं०भँवना+आरा(प्रत्य०)] चक्कर लगाने या घूमनेवाला।

भइया-पुं० [हिं० भाई] १. भाई। २. भाई या बराबरवालों के लिए संबोधन।

भकभकाना-अ० [अनु०] १. भक भक शब्द करके जलना। २. चमकना।

भकाऊँ-पुं० [अनु०] हौआ।

भकुआ†-वि० [सं० भेक] मूर्ख।

भकुआना-अ० [हिं० भकुआ] चकपकाना। भौचक्का होना।
स० १ चकपका देना। २ मूर्ख बनाना।

भकोसना-स० [सं० भक्षण] जल्दी या भद्देपन से खाना। (व्यंग्य)

भक्त-वि० [सं०] १. कई भागों में बाँटा हुआ। २. देने के लिए बांटा हुआ। ३. निकाला या अलग किया हुआ। ४. ईश्वर या देवता की भक्ति करनेवाला। ५.किसी बड़े पर श्रद्धा रखनेवाला।

भक्त-वत्सल-वि० [सं०] [भाव० भक्त-वत्सलता] भक्तों पर कृपा करनेवाला।

भक्ताई*†-स्त्री० दे० 'भक्ति'।

भक्ति-स्त्री० [सं०] १. अलग अलग भाग या टुकड़े करना। २. भाग। विभाग। ३. विभाग करनेवाली रेखा। ४. देवी-देवता या ईश्वर के प्रति होनेवाली विशेष श्रद्धा और प्रेम, जो नौ प्रकार का माना गया है। यथा-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन। ५.किसी बड़े के प्रति होनेवाली श्रद्धा या आदर-भाव।

भक्ष-पुं० दे० 'भक्षण'।

भक्षक-वि० [सं०] [स्त्री० भक्षिका] १. खानेवाला। खादक। २. अपने स्वार्थ के लिए किसी का सर्वनाश करनेवाला।

भक्षण-पुं० [सं०] [वि० भक्ष्य,भक्षित] भोजन करना। खाना।

भक्षना*-स० = भोजन करना।

भक्षित-वि० [सं०] खाया हुआ।

भक्षी-वि० [स्त्री० भक्षिणी] दे० 'भक्षक'।

भक्ष्य-वि० [सं०] जो खाया जा सके। पुं० आहार। भोजन।

भख*-पुं० [सं० भक्ष] भोजन।

भखना*-स० [सं० भक्षण] खाना।

भगंदर-पुं० [सं०] गुदा के भीतरी भाग में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।

भग-पुं० [सं०] १ सूर्य। २. धन-सम्पत्ति। ऐश्वर्य। ३. सौभाग्य। स्त्री० स्त्री की योनि या जननेन्द्रिय।

भगण-पुं० [सं०] १. खगोल में ग्रहों का ३६० अंशों का पूरा चक्कर। २. छंदः-शास्त्र में एक गण जिसमें पहले एक वर्ण गुरु और तब दो वर्ण लघु होते हैं। जैसे-मानस। इसका रूप यह है —।ऽऽ

भगत-वि० [सं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] १. भक्त। सेवक। २. वह जो

मांस आदि न खाता हो। ३. दे० 'भगतिया'।

भगत-बछल*–वि० दे० 'भक्त-वत्सल'।

भगति*–स्त्री० दे० 'भक्ति'।

भगतिया–पुं० [हिं० भक्त] [स्त्री० भगतिन] गाने-बजाने का काम करनेवाली राजपूताने की एक जाति।

भगती–स्त्री० दे० 'भक्ति'

भगदड़–स्त्री० [हिं० भागना + दौड़ना] बहुत-से लोगों का एक-साथ इधर-उधर या किसी एक ओर भागना।

भगन*–वि० दे० 'भग्न'।

भगना†–अ० दे० 'भागना'।

पुं० दे० 'भानजा'।

भगर(ल)*–पुं० [देश०] [वि० भगरी(ली)] १. छल। कपट। २ ढोंग। ३ जादू।

भगवंत–*†–पुं० दे० 'भगवत्'।

भगवत्–पुं० [सं०] परमेश्वर।

भगवती–स्त्री० [सं०] १. देवी। २. दुर्गा।

भगवदीय–वि० [सं० भगवत्] १. भगवत्-संबंधी। २. भगवान् का भक्त।

भगवान्(न)–वि० [सं० भगवत्] १. धन-सम्पत्ति या ऐश्वर्यवाला। २. पूज्य।

पुं० १ ईश्वर। परमेश्वर। २. पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

भगाना–स० [हिं० 'भागना' का प्रे०] १. किसी को कहीं से जल्दी हटने या भागने में प्रवृत्त करना। २. ऐसा काम करना जिससे कोई कहीं से हट या भाग जाय। ३. स्त्री-बच्चे आदि को उनके घर के लोगों से छुड़ाकर अपने साथ कहीं ले जाना। अपनयन। (एब्डक्शन)

*अ० दे० 'भागना'।

भगिनी–स्त्री० [सं०] बहन।

भगीरथ–पुं० [सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्य्य-वंशी राजा जो उत्कट तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाये थे।

वि० [सं०] (भगीरथ की तपस्या की तरह का) बहुत बड़ा या भारी।

भगोड़ा–पुं० [हिं० भागना] वह जो अपना काम, पद या कर्तव्य छोड़कर भाग गया हो। काम या दंड के डर से भागा हुआ। (एब्सकांडर)

भगोल–पुं० दे० 'खगोल'।

भगौती*†–स्त्री० = भगवती।

भगौहाँ–वि० [हिं० भागना] १. भागने के लिए सदा तैयार रहनेवाला। २. कायर।

भग्गी‡–स्त्री० दे० 'भगदड़'।

भग्गुल†–वि० दे० 'भगोड़ा'।

भग्गू†–वि० [हिं० भागना] डरकर भागनेवाला। कायर।

भग्न–वि० [सं०] [स्त्री० भग्ना] टूटा हुआ।

भग्नांश–पुं० [सं०] किसी पूरी या समूची संख्या या वस्तु का कोई भाग या अंश। (फ्रैक्शन) जैसे-$\frac{1}{2}$ जो १ का भग्नांश है।

भग्नावशेष–पुं० [सं०] १. टूटी-फूटी इमारत या उजड़ी हुई बस्ती का बचा-खुचा अंश। खँडहर। २. किसी चीज के टूटे फूटे और बचे हुए टुकड़े।

भग्नाश–वि० [सं०] जिसकी आशा भंग हो गई हो। निराश।

भचकना–अ० [हिं० भौचक] आश्चर्य से स्तब्ध होकर रह जाना।

अ० [अनु० भच] [भाव० भचक], चलने में पैर इस प्रकार लचककर पड़ना कि देखने में चलनेवाला लँगड़ाता हुआ जान पड़े।

भच्छ*–पुं० दे० 'भक्ष्य'।

भच्छना†*–स० [सं० भक्षण] खाना।

भजन-पुं० [सं०] १. बार बार ईश्वर या देवता का नाम लेना। २. वह गीत जिसमें ईश्वर या देवता के गुणों या सत्कर्मों का श्रद्धा-पूर्ण वर्णन हो।

भजना-अ० [सं० भजन] १. देवता आदि का नाम रटना। भजन करना। जपना। २. सेवा करना।

*अ० [सं० प्रजन, पा० वजन] १. भागना। २. प्राप्त होना। पहुँचना।

भजनानंदी-पुं० [सं० भजनानंद+ई] ईश्वर-भजन में मग्न रहनेवाला।

भजनी (क)-पुं० [हिं० भजन] भजन गानेवाला गायक।

भजाना-*स० दे० 'भगाना'।

भट-पुं० [सं०]१. योद्धा। २. सैनिक। ३. पहलवान। मल्ल।

भटई-स्त्री० [हिं० भाट] १. भाट का काम या भाव। भाटपन। २ दूसरों की झूठी प्रशंसा और खुशामद।

भटकना-अ० [सं०भ्रम ?] १.कुछ ढूँढ़ने के लिए या यों ही इधर-उधर भूलकर घूमते फिरना। २. रास्ता भूलकर इधर-उधर चला जाना। ३. भ्रम में पड़ना।

भटकाना-स० हिं० 'भटकना' का स०।

भटकैया*-पुं० [हिं० भटकना] १. भटकनेवाला। २. भटकानेवाला।

भटकौहाँ*-वि० [हिं० भटकना] भटकानेवाला।

भट-भेरा*‡-पुं० [हिं० भट+भिड़ना] १. दो वीरों का आपस में भिड़ना। भिड़ंत। २. धक्का। टक्कर। ३. रास्ते में अनायास हो जानेवाली भेंट।

भट्टा-स्त्री० [सं० वधू] स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक सम्बोधन।

भट्ट-पुं० [सं० भट] १. ब्राह्मणों की एक उपाधि। २. भाट। ३. योद्धा। सूर।

भट्टारक-पुं० [सं०] [स्त्री० भट्टारिका] १. ऋषि। २. पंडित। ३. सूर्य। ४. राजा। ५. देवता।

वि० माननीय। मान्य।

भट्ठा-पुं० [सं० भ्राष्ट्र] १. बड़ी भट्ठी। २. ईंटें आदि पकाने का पजावा।

भट्ठी-स्त्री० [सं० भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ] १. ईंटों आदि का बना वह बड़ा चूल्हा जिस-पर कारीगर अनेक प्रकार की वस्तुएँ पकाते हैं। २. देशी शराब बनाने का स्थान या कारखाना। ३. देशी शराब की दूकान।

भठियारा-पुं० [हिं० भट्ठी] [स्त्री० भठियारिन, भाव० भठियारपन] सराय और उसमें ठहरनेवालों के भोजन आदि का प्रबंध करनेवाला या रक्षक।

भड़वा-पुं० [सं० विडंबन] आडंबर।

भड़क-स्त्री० [अनु०] १. भड़कने की क्रिया या भाव। २. भड़कीले होने का भाव। ऊपरी चमक-दमक।

भड़कदार-वि० दे० 'भड़कीला'।

भड़कना-अ० [भड़क (अनु०)+ना (प्रत्य०)] १. तेजी से जल उठना। जैसे-आग भड़कना। २. अचानक चौंकना। डरकर पीछे हटना। (पशुओं का) ३ अचानक कुछ उग्र रूप धारण करना। (मनुष्य या उसके मनोविकार का)

भड़काना-स० हिं० 'भड़कना' का स०।

भड़कीला-वि० [हिं० भड़क] तड़क-भड़क या चमक-दमकवाला।

भड़-भड़-स्त्री० [अनु०] १. आघात आदि से होनेवाला भड़ भड़ शब्द। २. व्यर्थ की बकवाद।

भड़भड़ाना-स० [अनु०] आघात करके भड़-भड़ शब्द उत्पन्न करना।

भड़भड़िया-वि० [हिं० भड़भड़] बहुत बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बातें करनेवाला।

भड़भूँजा-पुं०[हिं०भाड़+भूँजना] भाड़ में अन्न भूनने का काम करनेवाली एक जाति।

भड़साईं-स्त्री० दे० 'भाड़'।

भड़ार*।-पुं० दे० 'भंडार'।

भड़ास-स्त्री० [अनु०] मन में छिपा हुआ सन्तोष या क्रोध।

भड़िहाई*।-क्रि० वि० [सं० भांडहर] चोरों की तरह लुक-छिपकर।

भड़ी-स्त्री० [हिं०भड़काना] झूठा बढ़ावा।

भड़ुआ-पुं० [हिं० भांड़] १. वेश्याओं का दलाल। २ सपरदाई।

भडेरिया-पुं० दे० 'भड्डर'।

भड़ैत-पुं० [हिं० भाड़ा] किरायादार।

भड़ौआ-पुं० [हिं०भांड़] १. वह हास्य-रसपूर्ण कविता जो भांड़ों की तरह किसी का उपहास करने के लिए हो। २ किसी की कविता के अनुकरण पर बनी हुई, पर उसका उपहास करनेवाली अथवा हास्य-पूर्ण कविता। (पैरोडी)

भड्डर-पुं० [सं० भद्र] एक प्रकार के ब्राह्मण जो सामुद्रिक आदि के द्वारा अथवा तीर्थों में लोगों को देव-दर्शन कराके जीविका चलाते हैं। भडर।

भणना*।-अ० [सं० भणन] कहना।

भणित-वि० [सं०] कहा हुआ।

भतार।-पुं० [सं० भर्तार] पति। खसम।

भतीजा-पुं० [सं० भ्रातृज] [स्त्री० भतीजी] भाई का लड़का।

भत्ता-पुं० [सं० भक्तक] वह मासिक या दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा, मँहगी आदि के समय अथवा कोई अतिरिक्त कार्य करने के लिए मिलता है। (एलाउएन्स)

भदंत-वि० [सं० भद्र] पूज्य। मान्य। पुं० बौद्ध भिक्षुक या साधु।

भदई-स्त्री० [हिं० भादों] भादों में तैयार होनेवाली फसल।

भद्दा-वि० [अनु० भद] [स्त्री० भद्दी, भाव० भद्दापन] १. जो देखने में अच्छा न लगे। कुरूप। २. अश्लील।

भद्र-वि० [सं०] [भाव० भद्रता] १. सभ्य। शिष्ट। २. मंगलकारी। ३. श्रेष्ठ। ४. साधु। पुं० [सं० भद्राकरण] सिर, दाढ़ी आदि के बालों का मुंडन।

भद्रा-स्त्री० [सं०] १. गाय। २. दुर्गा। ३. पृथ्वी। ४ फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग। ५ बाधा। विघ्न। अड़चन।

भनक-स्त्री० [सं० भणन] १. धीमा शब्द। ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।

भनकना*-स०=कहना।

भनना*-स०=कहना।

भनभनाना-अ० [अनु०] [भाव० भन-भनाहट] भन भन शब्द करना। गुंजारना।

भनित*-वि० दे० 'भणित'।

भबका-पुं० [हिं० भाप] अरक उतारने का एक प्रकार का घड़ा। करावा।

भभक-स्त्री० [अनु०] १.भभकने की क्रिया या भाव। २.रह-रहकर आनेवाली दुर्गंध।

भभकना-अ० [अनु०] १. उबलना। २.जोर से जलना। भड़कना। (आग का)।

भभकी-स्त्री० [हिं० भभक] झूठी धमकी या घुड़की।

भभरना*।-अ० [हिं० भय] १. डरना। २. घबरा जाना। ३. भ्रम में पड़ना।

भभूका-पुं० [हिं० भभक] ज्वाला।

भभूत-स्त्री० [सं० विभूति] वह भस्म जो

शैव मस्तक और भुजाओं पर लगाते हैं।

भभ्भड़-पुं० [हिं०भीड़] १. भीड़-भाड़। २. हो-हल्ला। शोर।

भयंकर-वि० [सं०] [स्त्री० भयंकरी, भाव० भयंकरता] १. जिसे देखने से भय या डर लगे। भयानक। डरावना। २. बहुत उग्र और विकट।

भय-पुं० [सं०] आपत्ति या अनिष्ट की आशंका से मन में उत्पन्न होनेवाला विकार या भाव। डर। खौफ।

मुहा०-भय खाना=डरना।

*वि० दे० 'हौआ'।

भयकर-वि० [सं०] [स्त्री० भयकरी] भयानक। भयंकर।

भयप्रद-वि० दे० 'भयानक'।

भयभीत-वि० [सं०] डरा हुआ।

भयवाद-पुं० = भाई-बंद।

भयहारी-वि० [सं० भयहारिन्] भय या डर दूर करनेवाला।

भया(ा)*।-अ० दे० 'हुआ'।

पुं० दे० 'भाई'।

भयातुर-वि० [सं०] [भाव० भयातुरता] भय से विकल। डरा और घबराया हुआ।

भयान*-वि० दे० 'भयानक'।

भयानक-वि० [सं०] जिसे देखने से भय या डर लगे। भयंकर। डरावना।

पुं० साहित्य में नौ रसों में से एक जिसमें विकट दृश्यों या बातों का वर्णन होता है।

भयाना*।-अ० [सं० भय] डरना।

स० भयभीत करना। डराना।

भयारा।-वि० दे० 'भयानक'।

भयावन(ा)-वि० [हिं० भय] डरावना।

भयावह-वि० [सं०] १. जिसे देखकर भय या डर लगे। भय उत्पन्न करनेवाला। भयानक। २. जिसके कारण कोई विकट या विपत्ति-जनक घटना होने की संभावना या आशंका हो।

भरंत-स्त्री० [हिं० भरना] भरने की क्रिया या भाव। भराई।

*स्त्री० [सं० भ्रांति] संदेह।

भर-वि० [हिं० भरना] कुल। पूरा। सब।

*क्रि०वि० [हिं० भार] बल से। द्वारा।

*पुं० [सं०भार] १.बोझ। २ दे०'भराव'।

पुं० [सं० भरत] हिन्दुओं में एक जाति।

भरकना*।-अ० दे० 'भड़कना'।

भरका-पुं० [देश०] पहाड़ों या जंगलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर-डाकू छिपते हैं।

भरण-पुं० [सं०] १. भरने की क्रिया या भाव। २ पालन। पोषण। ३. किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ पहुँचाना। (सप्लाई)

भरत-पुं० [सं०] १ रामचंद्र के छोटे भाई जो कैकेयी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। २.शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत क पुत्र, जिनके नाम पर इस देश का 'भारतवर्ष' नाम पड़ा है। ३. नाट्य-शास्त्र के प्रधान आचार्य एक प्रसिद्ध मुनि।

पुं० [सं० भरद्वाज] लवा पक्षी।

पुं० [देश०] कोसा नामक धातु।

भरतखंड-पुं० = भारतवर्ष।

भरता-पुं० [देश०] १. बैगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सालन। चोखा। २.वह जो दबने आदि से बिलकुल विकृत हो गया हो।

भरतार-पुं० [सं० भर्त्ता] पति। खसम।

भरती-स्त्री० [हिं० भरना] १. किसी चीज में (या के) भरे जाने का काम या भाव। २. सेना, कक्षा आदि में प्रविष्ट होने या लिये जाने का भाव। ३. केवल

स्थान-पूर्ति के लिए रखी या भरी व्यर्थ की चीजें या बातें।

मुहा०-भरती का=बहुत ही साधारण, व्यर्थ का या निकम्मा।

भरत्थ*|-पुं० दे० 'भरत'।

भरथरी-पुं० दे० 'भर्तृहरि'।

भरदूल-पुं० [सं०भरद्वाज] लवा (पक्षी)।

भरना-स० [सं० भरण] १. खाली जगह को पूरा करने के लिए उसमें कोई चीज डालना। पूर्ण करना। जैसे-हवा भरना। २. उँडलना। उलटना। डालना। जैसे-पानी भरना। ३ तोप या बंदूक में गोला, गोली, बारूद आदि रखना। ४. ऋण चुकाना या क्षति-पूर्ति करना। चुकाना। देना। ५ गुप्त रूप से किसी के सम्बन्ध में किसी से कुछ निन्दात्मक बातें करना। ६ निर्वाह करना। निबाहना। जैसे-दिन भरना। ७. सहना। झेलना। भागना।

अ० १. रिक्त पात्र आदि के खाली स्थान का किसी और पदार्थ के आने से पूर्ण होना। २.उँडेला या डाला जाना। ३ तोप या बंदूक में गोला, गोली, बारूद आदि रखा जाना। ४.ऋण या देन का चुकाया जाना। ५ मन का क्रोध, असंतोष या अप्रसन्नता से युक्त होना। ६. घाव का अच्छे होने पर आना। ७.अधिक परिश्रम के कारण किसी अंग का दर्द करने लगना। ८.शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना। ९. घोड़ी आदि का गर्भवती होना।

पुं० १. भरने की क्रिया या भाव। २. रिश्वत। घूस।

भरनि*|-स्त्री० [सं० भरण] पहनावा।

भरनी-स्त्री० [हिं० भरना] करघे में की ढरकी। नार।

भर-पाई-स्त्री० [हिं० भरना+पाना] १. पूरा पूरा पावना पा जाना। २. इस प्रकार पूरा पा जाने पर लिखी जानेवाली रसीद।

भर-पूर-वि० [हिं० भरना+पूरा] १. पूरी तरह से भरा हुआ। २. जिसमें कोई कमी न हो। पूरा पूरा।

क्रि० वि० पूरी तरह से।

भरभराना-अ० [अनु०] १. (शरीर के रोएँ) खड़ होना। २. घबराना। ३. अचानक नीचे आ गिरना।

भरभेंटा*|-पुं० १.दे० 'भेंट'। २.मुठभेड़।

भरम*|-पुं० [सं० भ्रम] १. भ्रम। संदेह। २. भेद। रहस्य।

मुहा०-भरम गँवाना=बँधी या जमी हुई धाक नष्ट करना।

भरमना*-अ०[सं०भ्रमण][सं०भरमाना] १. भ्रम में पड़कर इधर-उधर घूमना। २. मारा-मारा फिरना। ३. भटकना। ४. किसी के धोखे में आना।

स्त्री० [सं० भ्रम] १. भूल। गलती। २. भ्रम। धोखा।

भरमाना-स०हिं०'भरमना' का स०।

भर-मार-स्त्री०[हिं० भरना+मार=अधिकता] बहुतायत। अधिकता।

भरवाना-स० [भाव० भरवाई] हिं० 'भरना' का प्रे०।

भर-सक-क्रि० वि० [हिं० भर=पूर+सक=शक्ति] जहां तक हो सके। यथा-शक्ति।

भरसन*|-स्त्री० दे० 'भर्त्सना'।

भरसाई-स्त्री० दे० 'भाड़'।

भराई-स्त्री० [हिं० भरना] भरने या भराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भराना-स० दे० 'भरवाना'।

भराव-पुं० [हिं० भरना+आव (प्रत्य०)] १. भरने का काम या भाव। २. भराकर

तैयार किया हुआ अंश। भरत।

भरित-वि० [सं०] भरा हुआ।

भरी-स्त्री० [हिं० भर] दस माशे की एक तौल।

भरु*-पुं० [सं० भार] बोझ। भार।

भरैया†-वि० [सं० भरण] १. भरण या पालन करनेवाला। पालक। २. भरनेवाला।

भरोसा-पुं० [सं० वर + आशा] १. यह विचार कि अमुक कार्य हो जायगा। आशा। उम्मेद। २. आश्रय। सहारा। अवलंब। ३. दृढ़ विश्वास।

भर्त्ता-पुं० [सं० भर्तृ] १. भरण-पोषण करनेवाला। २. अधिपति। ३. स्वामी। मालिक। ४. पति।

भर्त्तार-पुं० [सं० भर्तृ] पति। स्वामी।

भर्तृहरि-पुं० [सं०] संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जो राजा विक्रमादित्य के भाई थे।

भर्त्सना-स्त्री० [सं०] किसी अनुचित काम के लिए बुरा-भला कहना। फटकार।

भर्म*†-पुं० दे० 'भ्रम'।

भर्मन*†-पुं० दे० 'भ्रमण'।

भर्रा-पुं० [अनु०] झाँसा। दम-पट्टी।

भर्राना-अ० [अनु०] १. भर्र भर्र शब्द होना। जैसे-आवाज का। २. भरभराना।

भर्सन*†-स्त्री०=भर्त्सना।

भलका†-पु० [हिं० फल] तीर का फल। गाँसी।

भलपति-पुं० [हि० भाला+सं० पति] भाला रखने या चलानेवाला सैनिक।

भलमनसत(सी)-स्त्री० [हि० भला + मनुष्य] भला मानस होने का भाव। सज्जनता। सौजन्य।

भला-वि० [सं० भद्र] १. उत्तम। श्रेष्ठ। २. बढ़िया। अच्छा।

यौ०-भला-बुरा=किसी को कही जाने-वाली अनुचित या भर्त्सना की बात।

भला-चंगा = स्वस्थ और सशक्त।

पुं० १ कुशल। भलाई। २. लाभ। हित।

यौ०-भला-बुरा=हानि और लाभ।

अव्य० १. अच्छा। खैर। अस्तु। २. काकु से 'नहीं' का सूचक अव्यय। (वाक्यों के आरंभ अथवा मध्य में)

मुहा०-भले ही=ऐसा हुआ करे। कुछ चिन्ता या हर्ज नहीं।

भलाई-स्त्री० [हिं० भला] १. 'भला' होने का भाव। भलापन। २. उपकार। नेकी। ३ हित। लाभ।

भले-क्रि० वि० [हिं० भला] भली-भाँति। अच्छी तरह।

अव्य० खूब। वाह। जैसे-भले आये।

भलेरा*†-पुं० दे० 'भला'।

भवग(म)*-पुं० [सं० भुजंग] साँप।

भव-पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. शिव। ३ मेघ। बादल। ४. संसार। जगत्। ५. कामदेव।

वि० १. शुभ। २. उत्पन्न।

*पुं० [सं० भय] डर। भय।

भव-जाल-पुं० [सं० भव+जाल] १. संसार का जाल या माया। २. झंझट।

भवदीय-सर्व० [सं०] [स्त्री० भवदीया] आपका। (पत्रों के अन्त में)

भवन-पुं० [सं०] १. मकान। घर। २. प्रासाद। महल। ३. आश्रय या आधार का स्थान।

पुं० [सं० भुवन] जगत्। संसार।

भवना*†-अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भव-भय-पुं० [सं०] बार-बार जन्म लेने और मरने या संसार में आने का भय।

भव-भूप*†-पुं० [सं०] संसार के भूषण।

भव-सागर-पुं० [सं०] संसार रूपी सागर।

भवाँना†-स० [सं० भ्रमण] घुमाना।

भवानी-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

भवाब्धि, भवार्णव-पुं० [सं०] संसार रूपी सागर।

भवितव्य-पुं० [सं०] होनहार। भावी।

भवितव्यता-स्त्री० दे० 'भवितव्य'।

भविष्य-पुं० [सं० भविष्यत्] आनेवाला काल या समय।

भविष्यगुप्ता-स्त्री० [सं०] वह गुप्ता नायिका जो अपने पति से मिलने को हो, पर पहले से उसे छिपाने का प्रयत्न करे।

भविष्यत्-पुं० [सं०] भविष्य।

भविष्यद्वक्ता-पुं० [सं०] १. भविष्य में होनेवाली बातें पहले से कहनेवाला। २. ज्योतिषी।

भविष्यद्वाणी-स्त्री० [सं०] आगे चलकर होनेवाली वह बात जो पहले से ही किसी ने कह दी हो।

भवीला*†-वि० [हिं० भाव+ईला(प्रत्य०)] १. भावयुक्त। भावपूर्ण। २. बाँका-तिरछा।

भवेश-पुं० [सं०] महादेव। शिव।

भव्य-वि० [सं०] [भाव० भव्यता] १. देखने में विशाल और सुंदर। शानदार। २. शुभ। मंगलकारक। ३. सत्य। सच्चा। ४. आगे चलकर होनेवाला।

भष*-पुं० [सं० भक्ष] भोजन।

भषना†-स० [सं० भक्षण] खाना।

भसना‡-अ० [बँ०] १. पानी पर तैरना। २. पानी में डूबना।

भसम-पुं० वि० दे० 'भस्म'।

भसान-पुं० [बँ० भसाना] पूजा के उपरान्त मूर्ति को नदी में बहाने की क्रिया।

भसाना-स० [बँ०] १. किसी चीज को पानी में तैरने के लिए छोड़ना। २. पानी में डुबाना या डालना।

भसींड़-स्त्री० [देश०] कमल की जड़। कमल-नाल। मुरार।

भसुंड-पुं० [सं० भुशुंड] हाथी। वि० मोटा-ताजा।

भसुर-पुं० [हिं० ससुर का अनु०] पति का बड़ा भाई। जेठ।

भस्म-पुं० [सं० भस्मन्] १. राख। २. अग्निहोत्र की राख जो शिव के भक्त मस्तक पर लगाते या शरीर पर मलते हैं। वि० जो जलकर राख हो गया हो।

भस्मीभूत-वि० [सं०] जलकर राख बना हुआ। पूरी तरह से जला हुआ।

भहराना-अ० [अनु०] १. अचानक नीचे आ गिरना। २. टूट पड़ना।

भाउँ*-पुं० [सं० भाव] अभिप्राय।

भाँउर-स्त्री० दे० 'भाँवर'।

भाँग-स्त्री० [सं० भृंगी] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ लोग नशे के लिए पीसकर पीते हैं। भंग। विजया। बूटी।

कहा०-घर में भूँजी भाँग न होना= बहुत दरिद्र होना।

भाँज-स्त्री० [हिं० भाँजना] १. भाँजने की क्रिया या भाव। २. वह बट्टा जो रुपये, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाता है। भुनाई। ३. कई तहों में कागज मोड़ने की क्रिया या भाव।

भाँजना-स० [सं० भंजन] १. तह करना। मोड़ना। २. मुगदर आदि घुमाना। (व्यायाम) ३. कागज आदि मोड़कर तह लगाना।

भाँजी†-स्त्री० [हिं० भाँजना = मोड़ना] किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिए कही जानेवाली बात। चुगली।

भाँटा†-पुं० दे० 'बैंगन'।

भाँड़-पुं० [सं० भंड] १. विदूषक। मसखरा। २. महफिलों आदि में नाच-गाकर और हास्यपूर्ण अभिनय करके

जीविका चलानेवाला व्यक्ति। ३. विनाश।
पुं० [सं० भांड] १. बरतन । भाँडा।
२.भंडाफोड़। रहस्योद्‌घाटन। ३.उपद्रव।
भांड-पुं० [सं०] १. भाँड़ा। बरतन।
२. व्यापार की वस्तुएँ। पण्य द्रव्य। माल। ३. दे० 'भांडागार'।
भाँड़ना*†-अ० [सं०भंड] १. व्यर्थ इधर-उधर घूमना। २. चारों ओर किसी की निन्दा या बदनामी करते फिरना।
स० १. बिगाड़ना। २. नष्ट करना।
भाँड़ा-पुं० [सं० भांड] बरतन। पात्र।
मुहा०-*भाँड़े भरना=पछताना।
भांडागार-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ बहुत-सी वस्तुएँ किसी उद्देश्य से रक्खी हों। भंडार। कोश। (माल-खाना)
भांडागारिक-पुं० [सं०] भंडारी।
भांडार-पुं० [सं० भांडागार] १. वह स्थान जहाँ तरह तरह की बहुत-सी चीजें रक्खी रहती हों। भंडार। २ वह स्थान जहाँ बेची जानेवाली बहुत-सी चीजें इकट्ठी रहती हों। (स्टॉक) ३ खजाना। कोश। ४.बहुत अधिक मात्रा में गुण आदि का आश्रय या आधार-स्थान। जैसे-विद्या के भांडार।
भांडार-पंजी-स्त्री० [सं०] वह बही या पंजी जिसमें भांडार में रहनेवाली चीजों की सूची और उनके आने-जाने का लेखा रहता है। (स्टॉक बुक)
भांडारपाल-पुं० [सं०] वह जिसकी देख-रेख में कोई भांडार रहता हो। भांडार का मुख्य अधिकारी। (स्टॉक-कीपर)
भांडारिक-पुं० [सं०] वह जो बेचने के लिए अपने पास वस्तुओं का भांडार रखता हो। (स्टॉकिस्ट)
भाँति-स्त्री० [सं०भेद] १. तरह। प्रकार। २. रीति। ढंग।
भाँपना†-स० [?] १. दूर से देखकर समझ लेना। ताड़ना। २. देखना।
भाँयँ भाँयँ-पुं० [अनु०] निर्जन स्थान या सन्नाटे में आपसे आप होनेवाला शब्द।
भाँवना†-स० [सं० भ्रमण] १. चक्कर देना। २. खरादना। ३. खूब गढ़कर सुन्दरतापूर्वक बनाना।
भाँवर-स्त्री० [सं० भ्रमण] १. चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। २ अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह होने पर वर और वधू करते हैं।
*पुं० दे० 'भौंरा'।
भाँस†-स्त्री० [?] आवाज। शब्द।
भा-स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. शोभा। ३. किरण। ४. बिजली।
*†अव्य० चाहे। या। वा।
भाइ*†-पुं० [सं० भाव] १. प्रेम। प्रीति। २. स्वभाव। ३. विचार।
स्त्री० [हि० भाँति] १. प्रकार। तरह। २. चाल-ढाल। ३. रंग-ढंग।
* स्त्री० [सं० भाव] चमक। दीप्ति।
भाइप*†-पुं० दे० 'भाईचारा'।
भाई-पुं० [सं० भ्रातृ] १. एक ही माता-पिता से उत्पन्न व्यक्तियों में से एक के लिए दूसरा व्यक्ति। सहोदर। भ्राता। २. किसी वंश की किसी पीढ़ी के व्यक्ति के लिए मातृ-या पितृ-कुल की उसी पीढ़ी का दूसरा व्यक्ति। जैसे-चचेरा या मौसेरा भाई। ३. बराबरवालों के लिए आदर-सूचक संबोधन।
भाईचारा-पुं० [हि०भाई+चारा(प्रत्य०)] भाई के समान परम प्रिय होने का भाव और व्यवहार।
भाई दूज-स्त्री० [हिं० भाई+दूज] कार्तिक शुक्ल द्वितीया, जिस दिन भाई को बहन

टीका लगाती है। भैया दूज।

भाई-बंद-पुं० [हिं० भाई+बंधु] १.एक ही वंश या गोत्र के लोग। २. भाई और मित्र-बंधु आदि।

भाई-बिरादरी-स्त्री०[हिं०भाई+बिरादरी] जाति या समाज के लोग।

भाउ*-पुं० [सं० भाव] १. चित्त-वृत्ति। २. विचार। ३. भाव। ४. प्रेम। पुं० [सं० भव] उत्पत्ति। जन्म।

भाऊ*-पुं० [सं० भाव] १. प्रेम। स्नेह। २. मन की भावना। ३. स्वभाव। ४. दशा। अवस्था। ५. स्वरूप। शक्ल। ६.सत्ता। ७ विचार।

भाएँ*†-क्रि० वि० [सं० भाव] (किसी की) समझ में। बुद्धि के अनुसार।

भाखना*†-स० [सं० भाषण] कहना।

भाखा†-स्त्री० दे० 'भाषा'।

भाग-पुं० [सं०] १. हिस्सा। खंड। (पार्ट) २. अंश। (पोर्शन)। ३.पार्श्व। तरफ। ओर। ४. भाग्य। किस्मत। ५. भाग्य का कल्पित स्थान, माथा। ललाट। ६. सौभाग्य। ७. गणित में किसी राशि या संख्या को कई अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।

भागड़-स्त्री० दे० 'भगदड़'।

भाग-दौड़-स्त्री० [हिं० भागना+दौड़ना] १. भगदड़। भागड़। २. दौड़-धूप।

भागधेय-पुं० [सं०] १. भाग्य। २. राजस्व। राज-कर। ३.दायाद। सपिंड।

भागना-अ० [सं० व्रज] १.संकट के स्थान से डरकर या अपने कर्त्तव्य आदि से विमुख होकर जल्दी से निकल जाना। पलायन करना।

मुहा०-सिर पर पैर रखकर भागना=१. बहुत तेजी से भागना। २. कोई काम करने से डरना या बचना। ३. दे० 'दौड़ना'।

भाग-फल-पुं० [सं०] भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त होनेवाली संख्या या अंक। लब्धि। जैसे-यदि २० को ४ से भाग दें तो भाग-फल ५ होगा।

भागवंत†-वि० दे० 'भाग्यवान्'।

भागवत-पुं० [सं०] १. अठारह पुराणों में से एक जो वेदान्त की टीका के रूप में माना जाता है। २. ईश्वर का भक्त। वि० भगवत्-संबंधी। भगवत का।

भागाभ.ग-स्त्री० दे० 'भागड़'।

भागिनेय-पुं० [सं०] बहन का लड़का। भानजा।

भागी-पुं० [सं० भागिन्] [स्त्री० भागिनी] १. हिस्सेदार। अंशी। २. अधिकारी। हकदार।

* वि० [सं० भाग्य] भाग्यवाला। (यौ० के अंत में) जैसे-बड़-भागी।

भागीरथ-पुं० दे० 'भगीरथ'।

भागीरथी-स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

भाग्य-पुं० [सं०] वह निश्चित और अटल दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य्य पहले ही से नियत किये हुए माने जाते हैं और जिसका स्थान माथा या ललाट माना गया है। तकदीर। किस्मत। नसीब।

वि० हिस्सा करने के लायक।

भाग्यवान-पुं० [सं०] [स्त्री० भाग्यवती] वह जिसका भाग्य अच्छा हो। सौभाग्यशाली। किस्मतवर।

भाजक-वि० [सं०] विभाग करनेवाला। पुं० वह अंक जिससे किसी संख्या या राशि का भाग किया जाय। (गणित)

भाजन-पुं० [सं०] १. बरतन। भाँड़ा।

२. आधार। पात्र। जैसे-स्नेह-भाजन।

भाजना*-अ० = भागना।

भाजी-स्त्री० [सं०] १. तरकारी, साग आदि खाने की वनस्पतियाँ और फल। २. माँड़। पीच।

भाज्य-पुं० [सं०] वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है।

वि० विभक्त किये जाने के योग्य।

भाट-पुं० [सं० भट्ट] [स्त्री० भाटिन] १. राजाओं की कीर्ति का वर्णन करनेवाला व्यक्ति या जाति। चारण। बंदी। २ खुशामदी।

भाटक-पुं० [सं०] भाड़ा। किराया। (रेन्ट)

भाटक-अधिकारी-पुं० [सं०] वह अधिकारी जो लोगों से भाटक इकट्ठा करता है। (रेन्ट-ऑफिसर)

भाटक-समाहर्ता-पुं० [सं०] वह अधिकारी जिसका काम भाटक (भाड़ा) उगाहना होता है। (रेन्ट कलेक्टर)

भाटा-पुं० [हिं० भाट] १. पानी का उतार। २. समुद्र के जल का उतार या पीछे हटना। 'ज्वार' का उलटा।

भाट्यौ*†-पुं० दे० 'भटई'।

भाठी*†-स्त्री० दे० 'भट्ठी'।

भाड़-पुं० [सं० भ्राष्ट्र] भड़भूँजों की अनाज भूनने की भट्ठी।

मुहा०-**भाड़ झोंकना**=तुच्छ या नगण्य काम करना। **भाड़ में झोंकना या डालना**=१. उपेक्षा से फेंकना। २. नष्ट करना।

भाड़ा-पुं० [सं० भाटक] किसी स्थान पर रहने, किसी सवारी पर चढ़ने या कोई चीज कहीं भेजने के लिए बदले में दिया जानेवाला कुछ निश्चित धन। किराया।

पद-**भाड़े का टट्टू**=केवल धन के लोभ से दूसरों का काम करनेवाला।

भाण-पुं० [सं०] १. हास्य-रस का वह दृश्य-काव्य या रूपक जिसमें एक ही अंक होता है। २. व्याज। बहाना। मिस।

भात-पुं० [सं० भक्त] १. पानी में उबाला हुआ चावल। २. विवाह की एक रसम जिसमें वर-पक्ष वालों को दाल-भात खिलाया जाता है।

भाति-स्त्री० [सं०] १. शोभा। २. कान्ति। चमक।

भाथा-पुं० [सं० भस्त्रा, प्रा० भत्था] १ तरकश। तूणीर। २. बड़ी भाथी।

भाथी-स्त्री० [सं० भस्त्रा] भट्ठी की आग सुलगाने की धौंकनी।

भान-पुं० [सं०] १. प्रकाश। रोशनी। २. दीप्ति। चमक। ३. ज्ञान। ४. ऐसा ज्ञान या अनुभव जिसका कोई पुष्ट आधार न हो। जान पड़ना। प्रतीति। आभास। ५. कल्पित विचार या भ्रमपूर्ण धारणा।

भानजा-पुं० [हिं० बहन+जा] [स्त्री० भानजी] बहन का लड़का। भागिनेय।

भानना*†-स० [सं० भंजन] १. काटना या तोड़ना। भंग करना। २. नष्ट करना। ३. हटाना।

स० [हिं० भान] समझना।

भानमती-स्त्री० [सं० भानुमती] एक प्रसिद्ध, पर कदाचित् कल्पित, जादूगरनी।

पद०-**भानमती का पिटारा** = ऐसा बे-मेल संग्रह जिसमें बहुत तरह की चीजें हों।

भानवी*-स्त्री० [सं० भानवीया] यमुना।

भाना*†-अ० [सं० भान=ज्ञान] १. जान पड़ना। ज्ञात होना। २. अच्छा लगना। पसंद आना। ३. शोभा देना।

स० [सं० भा=प्रकाश] चमकाना।

भानु-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. किरण।

३. राजा।
भानुज-पुं० [सं०] यम।
भानुजा-स्त्री० [सं०] यमुना।
भाप(फ)-स्त्री० [सं० वाष्प, पा० बप्प] १.पानी के खौलने पर उसमें से निकलनेवाले बहुत छोटे छोटे जल-कण जो धूएँ के रूप में ऊपर उठते हुए दिखाई देते हैं। वाष्प। २. भौतिक शास्त्र के अनुसार घन या द्रव पदार्थों की वह अवस्था जो उनके बहुत तपकर विलीन होने पर होती है।
भाभर-पुं० [सं० वप्र] पहाड़ों के नीचे, तराई में का जंगल।
भाभरा*†-वि० [हिं० भा=चमक] लाल।
भाभी-स्त्री० [हिं० भाई] बड़े भाई की स्त्री। बड़ी भौजाई।
भाम*-स्त्री० [सं० भामा] स्त्री। औरत।
भामता*-वि० दे० 'भावता'।
भामा(मनी)-स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
भाय†-पुं० [हिं० भाई] भाई।
*पुं० दे० 'भाव'।
भायप-पुं० दे० 'भाईचारा'।
भार-पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ का वह गुरुत्व जो तौल के द्वारा जाना जाता है। बोझ। २. वह बोझ जो किसी अंग, यान या वाहन पर रखकर ढोया जाता है। ३. किसी प्रकार का कार्य चलाने, कुछ धन चुकाने या किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का उत्तरदायित्व। (चार्ज)
मुहा०-भार उठाना = उत्तरदायित्व लेना। भार उतरना=कर्त्तव्य पूरा हो चुकने पर उससे मुक्त होना।
४. दो हजार पल की एक पुरानी तौल। ५. देख-भाल। सँभाल। रक्षा।
*†पुं० दे० 'भाड़'।
भार-ग्रस्त-वि० दे० 'भारित'।
भारत-पुं० [सं०] १. भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। २.महाभारत का वह मूल या पूर्व-रूप जो २४००० श्लोकों का था। ३. लंबी-चौड़ी कथा। ४. घोर युद्ध। भारी लड़ाई। ५. दे० 'भारतवर्ष'।
भारतवर्ष-पुं० [सं०] हमारा वह महादेश जो हिमालय से कन्या कुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। (अब इसके कुछ पूर्वी और पश्चिमी प्रान्त पाकिस्तान बन गये हैं)। आर्यावर्त्त। हिन्दुस्तान।
भारतवासी-पुं० [सं०] भारतवर्ष का रहनेवाला भारतीय।
भारती-स्त्री० [सं०] १. वचन। वाणी। २. सरस्वती। ३. नाटक में एक वृत्ति जिसके अनुसार केवल पुरुष पात्र रहते हैं और उच्च वर्ग के लोग संस्कृत में कथोपकथन करते है। यह प्रायः सभी रसों में काम आती है। ४. ब्राह्मी बूटी। ५. दशनामी संन्यासियों का एक भेद।
भारतीय-वि० [सं०] [भाव० भारतीयता] भारत संबंधी। भारत का। पुं० भारतवर्ष का निवासी।
भार-धारक-पुं० [सं०] वह जिसपर कोई कार्य करने-कराने या किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का भार हो। भार धारण करनेवाला। (चार्ज-होल्डर)
भारना*†-स० [हिं० भार] १. बोझ लादना। २. भार डालना। ३. दबाना।
भार-प्रमाणक-पुं० [सं०] वह प्रमाणक (प्रमाण-पत्र) जो इस बात का सूचक हो कि अमुक व्यक्ति ने दूसरे को अमुक कार्य, पद, कर्तव्य आदि का भार सौंप दिया है। (चार्ज-सर्टिफिकेट)
भारवाह(क)-वि०[सं०] बोझ ढोनेवाला।

भारवाही-पुं० [सं० भारवाहिन्] [स्त्री० भारवाहिनी] भार या बोझ ढोनेवाला।

भार-शिव-पुं० [सं०] एक प्राचीन शैव सम्प्रदाय जिसके अनुयायी सिर पर शिव की मूर्ति रखते थे।

भारा[1]-वि० दे० 'भारी'।

भारित-वि० [सं०] १. जिसपर कोई भार या बोझ हो। २. जिसपर किसी प्रकार का ऋण या देन हो। (एनूकम्बर्ड)

भारी-वि० [हिं० भार] [भाव० भारीपन] १ जिसमें या जिसका अधिक भार या बोझ हो। गुरु। बोझिल। २. कठिन। विकट। ३. विशाल। बड़ा। यौ०-भारी भरकम=बड़ा और भारी। ४. असह्य। दूभर। ५. सूजा या फूला हुआ। ६ प्रबल। ७ गम्भीर और शान्त।

भारीपन-पुं० [हिं० भारी+पन (प्रत्य०)] 'भारी' होने का भाव। गुरुत्व।

भारोपीय-वि० [सं० भारत+युरोपीय] भारत और युरोप दोनों में समान रूप से पाये जानेवाले या दोनों के समान मूल से उत्पन्न। (जाति-समूह या भाषा-वर्गः मुख्यतः भारतीय, पारसी, अरमनी, यूनानी, इटालियन आदि जातियों और भाषाओं के सम्बन्ध में प्रयुक्त)

भार्गव-पुं० [सं०] १. भृगु के वंश या गोत्र में उत्पन्न पुरुष। २. परशुराम। ३. संयुक्त प्रान्त में रहनेवाला एक जाति। वि० भृगु-संबंधी। भृगु का।

भार्या-स्त्री० [सं०] पत्नी। जोरू।

भाल-पुं० [सं०] कपाल। ललाट। पुं० [हिं० भाला] १. भाला। बरछा। २. तीर का फल। गाँसी। *पुं० दे० 'भालू'।

भालचंद्र-पुं० [सं०] महादेव।

भालना[1]-स० [?] १.अच्छी भाँति देखना। २. तलाश करना। ढूँढ़ना।

भाला-पुं० [सं० भल्ल] बरछा।

भाला-बरदार-पुं० [हिं० भाला+फा० बरदार] बरछा लेकर चलने या बरछा चलानेवाला। बरछैत।

भालि(ली)*[1]-स्त्री० [हिं० भाला] १. बरछी। साँग। २. शूल। काँटा।

भालू-पुं० [सं० भल्लुक] एक प्रसिद्ध स्तनपायी हिंसक चौपाया। रीछ।

भावंता*[1]-पुं० दे० 'भावता'। पुं० [सं० भावी] होनहार। भावी।

भाव-पुं० [सं०] १. होने की क्रिया या तत्व। सत्ता। अस्तित्व। 'अभाव' का उलटा। २. मन में उत्पन्न होनेवाला कोई विचार। खयाल। ३. अभिप्राय। तात्पर्य। मतलब। ४. मन का कोई विशेष विकार या वृत्ति प्रकट करनेवाली मुख या अंगों की आकृति या चेष्टा। ५ किसी वस्तु, कार्य, गुण आदि की मूल प्रकृति, विशेषता आदि का सूचक और आधार-भूत तत्व। ६ प्रेम। मुहब्बत। ७ ढंग। तरीका। ८. प्रकार। तरह। ९ दशा। अवस्था। हालत। १०.किसी चीज की बिक्री आदि का प्रचलित या निश्चित किया हुआ मूल्य। दर। निर्ख। (रेट) मुहा०-भाव उतरना या गिरना=दाम घट जाना। भाव चढ़ना=दाम बढ़ जाना। ११. ईश्वर, देवता आदि के लिए मन में होनेवाली श्रद्धा। १२. किसी को देखकर या उसके सम्बन्ध की किसी बात का स्मरण करने पर मन में होनेवाला विकार। १३. नृत्य, गीत आदि में अंगों का वह संचालन जो प्रसंग या

विषय के अनुसार मानसिक विकारों या विचारों का सूचक होता है।

मुहा०-भाव बताना=आकृति आदि से अथवा अंगो को संचालित करके मन का भाव प्रकट करना।

भावइ*†-अव्य० [हिं० भाना] यदि जी चाहे तो। इच्छा हो तो।

भावक*-क्रि०वि०[सं०भाव] थोड़ा। जरा। वि० दे० 'भावुक'।

भावज-स्त्री० [सं० भ्रातृजाया] भाई की पत्नी। भाभी। भौजाई।

भावज्ञ-वि० [सं०] [भाव० भावज्ञता] मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला।

भावता-वि० [हिं० भावना] [स्त्री० भावती] १. जो भला लगे। २. प्रेम-पात्र। प्रिय।

भाव-ताव-पुं० [हिं० भाव] १ किसी चीज का मूल्य या भाव आदि। दर। २. रंग ढग।

भावन*†-वि० [हिं० भावना] मन को भाने या अच्छा लगनेवाला। प्रिय।

भावना-स्त्री० [सं०] १. अनुभव और स्मृति से मन में उत्पन्न होनेवाला कोई विकार। ध्यान। विचार। खयाल। २. साधारण विचार या कल्पना। ३. इच्छा। चाह। ४. चूर्ण आदि किसी तरल पदार्थ में मिलाकर घोटना, जिसमें घोटी जानेवाली वस्तु में उस तरल पदार्थ का कुछ गुण या गन्ध आ जाय। पुट। (वैद्यक) ५. इस प्रक्रिया से किसी चीज में आया हुआ गुण या गन्ध।

स० दे० 'भाना'।

वि० [हिं० भाना] प्रिय। प्यारा।

भावनि*†-स्त्री० [हिं० भाना] वह बात जो मन या जी में आवे।

भावनीय-वि० [सं०] भावना करने या सोचने-विचारने के योग्य।

भाव-प्रवण-वि० दे० 'भावुक'।

भाव-भक्ति-स्त्री० [सं० भाव+भक्ति] १. ईश्वर की भक्ति का भाव। २. आदर। सत्कार।

भावली-स्त्री० [देश०] जमींदार और असामी में होनेवाली उपज की बँटाई।

भाव-वाचक-पुं० [सं०] व्याकरण में किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित करनेवाली संज्ञा। जैसे-सज्जनता।

भावार्थ-पुं० [सं०] १. वह अर्थ जिस में मूल का भाव मात्र हो। २. अभि-प्राय। आशय। तात्पर्य।

भावित-वि० [सं०] १. जिसका ध्यान या विचार किया गया हो। जो सोचा गया हो। २. चिन्तित। उद्विग्न। ३. जिसमें किसी पदार्थ की भावना या सुगंध दी गई हो। विशेष दे० 'भावना' ४.।

भावी-स्त्री० [सं० भाविन्] १. भविष्यत काल। आनेवाला समय। २. भविष्य में अवश्य होनेवाली बात। भवितव्यता। होनी। ३. भाग्य। तकदीर।

वि० भविष्य में आने या होनेवाला। जैसे-भावी युग।

भावुक-वि० [सं०] १. भावना करने या सोचनेवाला। २. जिसके मन में कोमल भावों की प्रबलता हो अथवा जिसपर कोमल भावों का जल्दी और अधिक प्रभाव पड़ता हो।

भावै†-अव्य० [हिं० भाना] चाहे।

भाव्य-वि० [सं०] भावना या चिन्ता करने या सोचने योग्य। विचारणीय।

भाषण-पुं० [सं०] १ बात-चीत। २. बहुत-से लोगों के सामने किसी विषय

का सविस्तर कथन। व्याख्यान। वक्तृता।
भाषना*†-अ० [सं० भाषण] बोलना।
अ० [सं० भक्षण] भोजन करना।
भाषांतर-पुं० [सं०] [वि० भाषांतरित] एक भाषा के लेख का दूसरी भाषा में किया हुआ अनुवाद। उलथा।
भाषा-स्त्री० [सं०] १. मुँह से निकलनेवाली व्यक्त ध्वनियों या सार्थक शब्दों और वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरों पर प्रकट किये जाते हैं। बोली। ज़बान। वाणी। २. किसी देश के निवासियों में प्रचलित बात-चीत करने का ढंग। बोली। ३. आधुनिक हिन्दी। ४. वाणी।
भाषा-बद्ध-वि० [सं०] १. भाषा के रूप में आया या लाया हुआ। २. साधारण देश-भाषा में बना हुआ।
भाषासम-पुं० [सं०] एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें केवल ऐसे शब्दों की योजना होती है, जो कई भाषाओं में समान अर्थ में चलते हों।
भाषित-वि० [सं०] कथित। कहा हुआ।
भाषी-पुं० [सं० भाषिन्] [स्त्री० भाषिणी] कहने या बोलनेवाला।
भाष्य-पुं० [सं०] १. सूत्रों की व्याख्या या टीका। २. किसी गूढ़ विषय की विस्तृत व्याख्या या विवेचन।
भास-पुं० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. प्रकाश। ३. किरण। ४. इच्छा।
भासना-अ० [सं० भास] १. चमकना। २. कुछ-कुछ मालूम होना। जान पड़ना। ३. दिखाई देना। ४. लीन या लिप्त होना। फँसना।
*†अ० [सं० भाषण] कहना।
भासमान-वि० [सं०] जान पड़ता हुआ।
भासित-वि० [सं०] १. चमकीला। २. कुछ-कुछ प्रकट या व्यक्त होनेवाला।
भास्कर-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. आग। ३. पत्थर पर बेल-बूटे आदि बनाना।
भास्वर-पुं० [सं०] १. दिन। २. सूर्य।
भिंग*-पुं० [सं० भृंग] १. भौंरा। २. बिलनी। (कीड़ा)
भिंजाना (जोना)-स० दे० 'भिगोना'।
भिंदिपाल-पुं० [सं०] एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था।
भिक्षा-स्त्री० [सं०] १. याचना। माँगना। २. दीनतापूर्वक खाने आदि के लिए कुछ माँगना। भीख। ३. इस प्रकार माँगने पर मिलनेवाली चीज। भीख।
भिक्षा-पात्र-पुं० [सं०] वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं।
भिक्षु-पुं० [सं०] [स्त्री० भिक्षुणी] १. भिखमंगा। २. बौद्ध संन्यासी।
भिक्षुक-पुं० [सं०] भिखमंगा।
भिखमंगा-पुं० [हिं० भीख+माँगना] वह जो भीख माँगता हो। भिक्षुक।
भिखारिणी-स्त्री० दे० 'भिखारिन'।
भिखारिन-स्त्री० [हिं० भिखारी] भीख माँगनेवाली स्त्री। भिखमंगिन।
भिखारी-पुं० दे० 'भिखमंगा'।
भिगाना-स० दे० 'भिगोना'।
भिगोना-स० [सं० अभ्यंज] किसी चीज को पानी या तरल पदार्थ से तर करने के लिए उसमें डुबाना। भिगाना।
भिच्छा-स्त्री० दे० 'भिक्षा'।
भिजवना*†-स० [हिं० भिगोना] १. भिगोना। २. किसी को भिगोने में प्रवृत्त करना।
भिजवाना-स० हिं० 'भेजना' का प्रे०।
भिजाना-स० १. दे० 'भिगोना'। २.

दे० 'भिगवाना'।

भिजोना*†-स० दे० 'भिगोना'।

भिज्ञ-वि० [सं०] जानकार। ज्ञाता।

भिड़ंत-स्त्री० [हिं० भिड़ना] भिड़ने की क्रिया या भाव। मुठ-भेड़।

भिड़-स्त्री० [हिं० बर्रें ?] बर्रें। ततैया।

भिड़ना-अ० [हिं० भड़ से अनु० ?] १. टक्कर खाना। टकराना। २. मुकाबले में आकर लड़ना। ३.साथ लगना। सटना।

भितरिया-पुं० [हिं० भीतर] मंदिर के भीतरी भाग में रहनेवाला पुजारी। वि० भीतरी। अंदर का।

भितल्ला-पुं० [हिं० भीतर+तल] दोहरे कपड़े में अन्दर का पल्ला। अस्तर। वि० भीतर या अंदर का।

भिताना*†-अ० स० [सं० भीति] डरना या डराना।

भित्ति-स्त्री० [सं०] १. दीवार। २. वह पदार्थ जिसपर चित्र बनाया जाता है। ३. डर। भय।

भित्तिचित्र-पुं० [सं०] दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र।

भिदना-अ० [सं० भिद्] १. अन्दर धँसना। २. छेदा जाना। ३. घायल होना।

भिनकना-अ० [अनु०] १. दे० 'भिन-भिनाना'। २.मन में घृणा उत्पन्न होना।

भिनभिनाना-अ० [अनु०] भिन भिन शब्द करना। (मक्खियों का)

भिन्न-वि० [सं०] [भाव० भिन्नता] १. अलग। पृथक्। जुदा। २.दूसरा। अन्य। पुं०एकाई से कुछ कम या उसका कोई भाग सूचित करनेवाली कोई संख्या। (गणित)

भिन्नाना-अ० [अनु०] १. (दुर्गंध आदि से) सिर चकराना। २. खिजलाना।

भियना*†-अ० [सं० भीत] डरना।

भिलनी-स्त्री० [हिं० भील] भील का स्त्री।

भिलावाँ-पुं० [सं० भल्लातक] एक पेड़ जिसका जहरीला फल औषध के काम में आता है।

भिल्ल-पुं० दे० 'भील'।

भिश्त*†-पुं० दे० 'बिहिश्त'।

भिश्ती-पुं० [?] मशक में भरकर पानी ढोनेवाला व्यक्ति। सक्का। माशकी।

भिषक्(ज)-पुं० [सं०] वैद्य।

भींचना†-स० [हिं० खींचना] १. खींचना। तानना। २. दे० 'मीचना'।

भींजना*†-अ० [हिं० भीगना] १. दे० 'भीगना'। २. पुलकित या गद्गद होना। ३. मेल-मिलाप या आपसदारी पैदा करना। ४. नहाना। ५. अच्छी तरह किसी के अन्दर समाना।

भी-अव्य० [हिं० ही] १. किसी के साथ या सिवा और निश्चयपूर्वक या अवश्य। जैसे-वह भी आया है। २. अधिक। ज्यादा। जैसे-यह और भी बुरा है। तक। जैसे-यहाँ हवा भी नहीं आती। *स्त्री० [सं०] भय। डर।

भीउँ*-पुं० दे० 'भीमसेन'।

भीख-स्त्री० दे० 'भिक्षा'।

भीगना-अ० [सं० अभ्यंज] पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग से तर या मुलायम होना। आर्द्र होना।

भीटा-पुं० [देश०] १.टीले की तरह कुछ ऊँची जमीन। २. टीले की तरह बनाई हुई वह बालुआँ ऊँची जमीन जिसपर पान के पौधे लगाये जाते है।

भीड़-स्त्री० [हिं० भिड़ना] १. एक स्थान पर एक ही समय में होनेवाला बहुत-से आदमियों का जमाव। जन-समूह। ठठ। मुहा०-भीड़ छँटना=भीड़ न रह जाना।

२.संकट। आपत्ति। मुसीबत। ३.किसी बात की अधिकता। जैसे-काम की भीड़।
भीड़ना*†-स०[हिं०भिड़ाना] १ हिं०'भिड़ना' का स०। २.बन्द करना। ३.मलना।
भीड़-भड़क्का-पुं० दे० 'भीड़-भाड़'।
भीड़-भाड़-स्त्री० [हिं० भीड़+भाड़ (अनु०)] एक ही स्थान पर बहुत-से लोगों का जमाव। जन-समूह। भीड़।
भीड़ा†-वि०[हिं०भिड़ना] संकुचित। तंग।
भीत-स्त्री० [सं० भित्ति] १ दीवार।
मुहा०-*भीत में दौड़ना=सामर्थ्य से बाहर अथवा असंभव कार्य में लगना।
भीत के बिना चित्र बनाना = बिना किसी आधार के कोई काम करना।
२. चटाई। ३. छत। गच।
भीतर-क्रि० वि० [?] अंदर।
पुं० १. अंतःकरण। हृदय। २.रनिवास। अंत:पुर। जनानखाना।
भीतरी-वि० [हिं० भीतर] १. अन्दर का। २. छिपा हुआ। गुप्त।
भीति-स्त्री० [सं०] डर। भय।
स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार।
भीती*†-स्त्री०१.दे० 'भित्ति'। २.दे०'भीति'।
भीन*†-पुं० [हिं० बिहान] सबेरा।
भीनना-अ० [हिं० भीगना] किसी वस्तु से भर या युक्त हो जाना। पैवस्त होना।
भीम-पुं० [सं०] [भाव० भीमता] १.भयानक रस। २.शिव। ३.भीमसेन।
पद-भीम के हाथी = भीमसेन के फेंके हुए हाथी। (कहते हैं कि एक बार भीमसेन ने सात हाथी ऊपर फेंके थे, जो आज तक आकाश में चक्कर खा रहे हैं।)
वि० १ भयानक। २. बहुत बड़ा।
भीमसेन-पुं० [सं०] पाँचो पांडवों में से एक जो बहुत अधिक बलवान थे। भीम।
भीमसेनी कपूर-पुं० एक प्रकार का बढ़िया कपूर। बरास।
भीमाथली-पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।
भीर*-स्त्री० [हिं० भीड़] १. दे० 'भीड़'। २. कष्ट। दुःख। ३. विपत्ति। आफत।
*वि० [सं० भीरु] १. डरा हुआ। भयभीत। २. डरपोक। कायर।
भीरना*-अ० [हिं० भीरु] डरना।
भीरु-वि०[सं०] [भाव०भीरुता] डरपोक।
भीरे*†-क्रि० वि० [हिं० भिड़ना] समीप। निकट। पास।
भील-पुं० [सं० भिल्ल] [स्त्री० भीलनी] एक प्रसिद्ध जंगली जाति।
भीवँ*-पुं०=भीमसेन।
भीषज*†-पुं० [सं० भेषज] वैद्य।
भीषण-वि० [सं०] [भाव० भीषणता] १ भयानक। डरावना। २ विकट। घोर।
पु० [सं०] भयानक रस।
भीष्म-पुं० [सं०] गंगा के गर्भ से उत्पन्न राजा शान्तनु के पुत्र। देवव्रत। गांगेय।
वि० भीषण। भयंकर।
भीष्म पितामह-पुं० दे० 'भीष्म'।
भुँइ*-स्त्री० [सं० भूमि] पृथिवी।
भुँइहरा†-पुं० [हिं० भुइँ+घर] जमीन के नीचे खोदकर बनाया हुआ घर या रहने का स्थान। तहखाना।
भुँकाना-स० [हिं० भूँकना] किसी को भूँकने में प्रवृत्त करना।
भुँजना†-अ० दे० 'भुनना'।
भुंडा-वि० [सं० रुंड का अनु०] १ बिना सींग का। २. दुष्ट। बदमाश।
भुअंग*†-पुं० [सं० भुजंग] साँप।
भुअन*-पुं० दे० 'भुवन'।
भुआल*-पुं० [सं० भूपाल] राजा।

भुइँ*-स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी।
भुइँचाल(डोल)-पुं० दे० 'भूकंप'।
भुक-पुं० [सं० भुज्] १. भोजन। आहार। २. अग्नि। आग।
भुकड़ी-स्त्री० [अनु०] सड़े हुए खाद्य पदार्थों पर निकलनेवाली एक वनस्पति।
भुकराँद (रायँध)-स्त्री० [हिं०भुकड़ी] वनस्पतियों आदि के सड़ने की दुर्गंध।
भुक्खड़-पुं० [हिं० भूख+अड़ (प्रत्य०)] १. जिसे सदा भूख लगी रहती हो। पेटू। २. कंगाल।
भुक्त-वि० [सं०] १. खाया हुआ। भक्षित। २ भोगा हुआ। उपभुक्त। ३. (अधिकार-पत्र आदि) जिसका नगद धन या प्राप्य वस्तु ले ली गई हो। जो भुना लिया गया हो। (कैश्ड)
भुक्ति-स्त्री० [सं०] १. भोजन। आहार। २. लौकिक सुख-भोग। ३. कब्जा। ४. अधिकार-पत्र के अनुसार रुपये या और कोई चीज लेना। भुनाना। (कैश)
भुख-मरा-वि० [हिं० भूख+मरना] १. जो भूखों मरता हो। २. भुक्खड़। पेटू।
भुख-मरी-स्त्री० [हिं०भूख+मरना] वह अवस्था जिसमें लोग अन्न के अभाव में भूखों मरते हों। घोर अकाल।
भुखाना-अ० [हिं० भूख] भूखा होना।
भुगत*|-स्त्री० दे० 'भुक्ति'।
भुगतना-स० [सं० भुक्ति] भोगना। अ० १. समाप्त या पूरा होना। निपटना। २. बीतना। ३ चुकती होना।
भुगतान-पुं० [हिं० भुगतना] १ भुगताने की क्रिया या भाव। २. मूल्य, देन आदि चुकाना या देना। (पेमेन्ट)
भुगताना-स० [हिं० 'भुगतना' का स०] १.'भुगतना' का सकर्मक रूप। २.(काम) पूरा करना। संपादन करना। ३. बिताना। ४. (देन आदि) चुकाना। ५. दुःख देना या भोगवाना।
भुगाना-स० दे० 'भोगवाना'।
भुगुती*-स्त्री० दे० 'भुक्ति'।
भुच्च(ड़)-वि० [हिं० भूत+चढ़ना] मूर्ख।
भुजंग-पुं० [सं०] [स्त्री० भुजंगिनी] साँप।
भुजंगा-पुं० [हिं० भुजंग] १. काले रंग की एक चिड़िया। २. दे० 'भुजंग'।
भुजंगिनी(गी)-स्त्री० [सं०] साँपिन।
भुजंगेंद्र(गेश)-पुं० [सं०] शेषनाग।
भुज-पुं० [सं०] १. बाहु। बाँह। मुहा०-*भुज में भरना=गले लगाना। २. हाथ। ३. हाथी का सूँड़। ४. वृक्ष की शाखा। डाली। ५.ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा। (आर्म) ६. सम कोणों का पूरक कोण। ७. दो की संख्या का सूचक शब्द।
भुजइल*-पुं० दे० 'भुजंगा'।
भुजग-पुं० [सं०] साँप।
भुज-दंड-पुं० [सं०] बाहु रूपी दंड।
भुजपात*-पुं० दे० 'भोजपत्र'।
भुज पाश-पुं० [सं०] दोनों हाथों की वह मुद्रा जिससे किसी को गले लगाते हैं।
भुजबंद-पुं० [सं० भुजबंध] बाजूबंद।
भुजबाथ*-पुं० दे० 'भुज-पाश'।
भुज-मूल-पुं० [सं०] १.कंधा। २ कोख।
भुजा-स्त्री० [सं०] बाँह। हाथ। मुहा०-*भुजा उठाना या टेकना = प्रतिज्ञापूर्वक कुछ कहना।
भुजाली-स्त्री० [हिं०भुज+आली (प्रत्य०)] एक प्रकार की बरछी।
भुजिया|-पुं० [हिं० भूँजना=भूनना] १. उबाले हुए धान का चावल। २. बिना रसे की भूनी हुई तरकारी।

भुट्टा-पुं० [सं० भृष्ट, प्रा० भुट्ट] मक्के, ज्वार, बाजरे आदि अनाजों की बाल।

भुठौर-पुं० [हिं० भुड़+ठौर] घोड़ों की एक जाति।

भुथरा-वि० दे० 'भोथरा'।

भुनगा-पुं० [अनु०] [स्त्री० भुनगी] कोई छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

भुनना-अ० हिं० 'भूनना' का अ०।

भुनभुनाना-अ० [अनु०] १. भुन भुन शब्द करना। २. मन ही मन कुढ़कर बहुत धीरे धीरे कुछ कहना। बड़बड़ाना।

भुनवाई(नाई)-स्त्री० [हिं० भुनाना] भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भुनाना-स० हिं० 'भूनना' का प्रे०।
स० [सं० भंजन] १. बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्कों आदि से बदलना। २. किसी आज्ञा-पत्र आदि में लिखी हुई चीज नियत स्थान से लेना। भुक्ति। (कैश) जैसे-चेक भुनाना।

भुवि*-स्त्री० [सं० भू] पृथ्वी। भूमि।

भुरकना-अ० [सं० भुरण] [स० भुरकाना] १. सूखकर भुरभुरा हो जाना। २. भूलना।
स० दे० 'भुरभुराना'।

भुरकुस-पुं० [हिं० भुरकना] किसी वस्तु का वह रूप जो उसे खूब कुचलने या कूटने से प्राप्त होता है।
मुहा०-भुरकुस निकलना = आघात आदि से दुर्दशा-ग्रस्त होना।

भुरता-पुं० दे० 'भरता'।

भुरभुरा-वि० [अनु०] जरा-सा आघात लगने पर चूर चूर हो जानेवाला।

भुरभुराना*-स० [अनु०] १.(चूर्ण आदि) छिड़कना। बुरकना। २. भुरभुरा करना।

भुरवना*-स० [सं० भ्रमण] १. भ्रम में डालना। २. फुसलाना।

भुराई*-स्त्री० [हिं० भोला] भोलापन।
पुं० [हिं० भूरा] भूरापन।

भुराना*†-स० दे० 'भुरवना'।
अ० दे० 'भूलना'।

भुलक्कड़-वि० [हिं० भूलना] जिसका स्वभाव भूलने का हो। प्रायः भूलनेवाला।

भुलवाना-स० [हिं० 'भूलना' का प्रे०] १ भ्रम में डालना। २. दे० 'भुलाना'।

भुलाना-स० [हिं० भूलना] १. 'भूलना' का प्रे०। २. भ्रम में डालना।
अ० स० दे० 'भूलना'।

भुलावा-पुं० [हिं० भूलना] धोखा।

भुवंग-पुं० [सं० भुजंग] साँप।

भुवः-पुं० [सं०] भूमि और सूर्य्य के बीच का लोक या आकाश। अंतरिक्ष लोक।

भुव-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
*स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह। भ्रू।

भुवन-पुं०[सं०] १. जगत्। २. जल। ३. जन। लोग। ४. लोक, जो पुराणानुसार चौदह हैं। यथा-भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात ऊपर के लोक और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत, महातल, रसातल और पाताल ये सात नीचे के। ५. चौदह की संख्या। ६. सृष्टि।

भुवनपति(पाल)*-पुं० दे० 'भूपाल'।

भुवर्लोक-पुं० [सं०] अंतरिक्ष लोक।

भुवाल*-पुं० [सं० भूपाल] राजा।

भुशुंडी-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन अस्त्र।

भुस-पुं० दे० 'भूसा'।

भुसी*-स्त्री० दे० 'भूसी'।

भूँकना-अ०[अनु०] १.भूँ भूँ या भौं भौं शब्द करना। (कुत्तों का) २.व्यर्थ बकना।

भूँचाल-पुं० दे० 'भूकंप'।

भूँजना†-स० दे० 'भूनना'।
*अ० दे० 'भोगना'।
भूँडोल-पुं० दे० 'भूकंप'।
भू-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. स्थान।
*स्त्री० [सं० भ्रू] भौंह।
भूकंप-पुं० [सं०] प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के भीतरी भाग में कुछ उथल-पुथल होने से ऊपरी भाग का सहसा हिलना। भूचाल।
भूखंड-पुं० [सं०] १. पृथ्वी का कोई खंड, भाग या अंश। २. जमीन का छोटा टुकड़ा। (प्लॉट)
भूख-स्त्री० [सं० बुभुक्षा] १. खाने की इच्छा। क्षुधा। २. आवश्यकता। जरूरत। (माल आदि खरीदने की)
भूखना*†-स० [सं० भूषण] सजाना।
भूख-हड़ताल-स्त्री० दे० 'अनशन'।
भूखा-वि० [हिं० भूख] [स्त्री० भूखी] १. जिसे भूख लगी हो। क्षुधित। २ किसी बात का अभिलाषी। इच्छुक। ३. दरिद्र। गरीब।
भूगर्भ-पुं० [सं०] पृथ्वी का भीतरी भाग।
भूगर्भ-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जो यह बतलाता है कि पृथ्वी के ऊपरी और भीतरी भाग किन किन तत्वों से बने हैं, उसके भीतरी भाग में क्या क्या वस्तुएँ हैं और उसे अपना वर्त्तमान रूप किस प्रकार प्राप्त हुआ है। (जियॉलोजी)
भूगोल-पुं० [सं०] १. पृथ्वी। २. वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और प्राकृतिक विभागों (नदियों, पहाड़ों, देशों आदि) का विवेचन या वर्णन होता है। (जियॉग्रैफी)
भूचर-पुं०[सं०]भूमि पर रहनेवाले प्राणी।
भूचाल (डोल)-पुं० दे० 'भूकंप'।
भू-चुंगी-स्त्री० [सं०+हिं०] वह चुंगी या राज-कर जो भू-संपत्ति पर लगता है। (एस्टेट ड्यूटी)
भूत-पुं० [सं०] [भाव० भूतत्व] १. वे मूल द्रव्य जिनसे सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य (एलिमेन्ट) २. सृष्टि के सभी जड़ पदार्थ और चेतन प्राणी।
यौ०-भूत-दया=जड़ और चेतन सब पर की जानेवाली दया।
३. प्राणी। जीव। ४.बीता हुआ समय। ५. व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो किसी कार्य या व्यापार के समाप्त हो चुकने का सूचक हो। ६. मृत शरीर या उसकी आत्मा। ७. प्रेत। शैतान।
मुहा०-भूत चढ़ना या सवार होना=बहुत अधिक आवेश या क्रोध होना। भूतों का पकवान=सहज में नष्ट हो जानेवाला पदार्थ।
वि०१ बीता हुआ। गत। २. मिला हुआ। ३. समान। तुल्य। ४. जो हो चुका हो।
भूतनाथ-पुं० [सं०] शिव।
भूत-पूर्व-वि० [सं०] इस समय से पहले का। वर्त्तमान से पूर्व का।
भूतल-पुं० [सं०] १. पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग। २. संसार। दुनिया।
भूतवाद-पुं० दे० 'पदार्थवाद'।
भूति-स्त्री० [सं०] १. वैभव। धन-संपत्ति। २. भस्म। राख। ३. उत्पत्ति। ४. वृद्धि।
भूतिनी-स्त्री०[हिं०भूत] भूत-योनि की स्त्री।
भूदेव-पुं० [सं०] ब्राह्मण।
भूधर-पुं० [सं०] पहाड़। पर्वत।
भू-धृति-स्त्री० [सं०] जोतने-बोने के लिए जमीन पर होनेवाला किसान का अधिकार। (लैंड टेन्योर)

भूनक†-पुं० दे० 'भूण'।

भूनना-स० [सं० भर्जन] १. जल की सहायता के बिना गरम करके पकाना। २. बहुत अधिक कष्ट देना।

भूप-पुं० [सं०] राजा।

भूपति(पाल)-पुं० [सं०] राजा।

भूभल-स्त्री० [?] गरम राख या धूल। तत्तूर।

भूभुरी*-स्त्री० दे० 'भूभल'।

भूमंडल-पुं० [सं०] पृथ्वी।

भूमध्य सागर-पुं० [सं०] युरोप और अफ्रिका के बीच का समुद्र। (मेडिटरेनियन)

भू-माप-पुं० [सं०] १. भूमि के किसी खंड या टुकड़े की नाप या परिमाण। २. दे० भू-मापन'।

भू-मापक-पुं० [सं०] वह जिसका काम भू-माप करना हो। जमीन की नाप-जोख करनेवाला। (सर्वेयर)

भू-मापन-पुं० [सं०] खेतों-बारी के लिए जमीन के टुकड़ों या किसी देश-प्रदेश आदि की भूमि की नाप-जोख। (सर्वे)

भूमि-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी-तल के ऊपर का वह ठोस भाग जिसपर नदियाँ, पर्वत आदि हैं और जिसपर लोग रहते और वनस्पतियाँ उगती हैं। ज़मीन। मुहा०-*भूमि होना=पृथ्वी पर गिरना। २. उक्त का कोई छोटा टुकड़ा जिसपर किसी का अधिकार हो या जिसमें कुछ उपज आदि हो। (एस्टेट) ३. स्थान। जगह। ४. नींव, पेंदे, आधार आदि के रूप में वह सबसे नीचेवाला अंग जिसपर उसके और अंग बने या ठहरे हों। (बेस)

भूमिका-स्त्री० [सं०] १. रचना। २. किसी ग्रंथ के आरंभ का वह वक्तव्य जिससे उस ग्रंथ की ज्ञातव्य बातों का पता चले। मुख-बंध। ३. वह आधार जिसपर कोई दूसरी चीज खड़ी की जाय। पृष्ठ-भूमि। (बैक-ग्राउंड) ४ नाटकों आदि में किसी पात्र का अभिनय। स्त्री० [सं० भूमि] पृथ्वी। जमीन।

भूमिज-वि० [सं०] भूमि से उत्पन्न।

भूमि-धर-पुं० [सं० भूमि + धर] वह खेतिहर जिसने भूमि या खेत पर स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो।

भूमिया-पुं० [सं० भूमि+इया (प्रत्य०)] १. जमींदार। २. ग्राम-देवता।

भूमिहार-पुं० [सं०] विहार और संयुक्त-प्रान्त मे पाई जानेवाली एक जाति।

भूयसी-वि० [सं०] १. बहुत अधिक। क्रि० वि० बार बार।

भूयसी दक्षिणा-स्त्री० [सं० भूयसी+ दक्षिणा] वह दक्षिणा जो मंगल-कार्य के अन्त में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।

भूर-वि० [सं० भूरि] बहुत। अधिक। पुं० [हिं० भुरभुरा] बालू।

भूर-पूर*†-वि०, क्रि० वि०=भर-पूर।

भूरसी दक्षिणा=स्त्री० दे० 'भूयसी दक्षिणा'।

भूरा-पुं० [सं० बभ्रु] १.मिट्टी की तरह का या खाकी रंग। २.कच्ची चीनी। ३.चीनी। वि० मटमैले रंग का। खाकी।

भू-राजस्व-पुं० [सं०] जोती-बोई जानेवाली जमीन पर लगनेवाला सरकारी कर। लगान। (लैंड रेविन्यू)

भूरि-पुं० [सं०] [भाव० भूरिता] १. ब्रह्मा। २. स्वर्ण। सोना। वि० [सं०] १. बहुत। २. भारी।

भूल-स्त्री० [हिं० भूलना] १. भूलने का भाव। २. गलती। चूक। ३. दोष। अपराध। कसूर। ४. अशुद्धि। गलती।

भूलक*†-पुं० [हिं० भूल] भूल करनेवाला।

भूलना-स० [सं० विह्वल ?] १. विस्मृत करना । याद न रखना । २. याद न रहने से खो देना ।
अ० १ विस्मृत होना । याद न रहना । २. गलती होना । ३. आसक्त होना । लुभाना । ४. घमंड में रहना ।
वि० भूलनेवाला । जैसे-भूलना स्वभाव ।

भूल-भुलैयाँ-स्त्री० [हिं० भूल+भुलाना +ऐयाँ (प्रत्य०)] १. वह चक्करदार वास्तु-रचना जिसमें आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि जल्दी ठिकाने पर नहीं पहुँच सकता । चकाबू । २.रेखाओं आदि से बनाई हुई इस प्रकार की आकृति ।

भूलोक-पुं० [सं०] संसार । जगत् ।

भूशायी-वि० [सं० भूशायिन्] १ पृथ्वी पर सोनेवाला । २. पृथ्वी पर गिरा, लेटा या पड़ा हुआ ।

भूषण-पुं० [सं०] १. अलंकार । गहना । जेवर । २. शोभा बढ़ानेवाली चीज़ ।

भूषना*।-स० [सं० भूषण] सजाना ।

भूषा-स्त्री० [सं० भूषण] १. आभूषण । गहना । २.सजाने की क्रिया । सजावट । ३. सजाने की सामग्री ।

भूषित-वि० [सं०] १ गहने पहने हुए। अलंकृत । २ सजाया हुआ । सज्जित ।

भू-संपत्ति-स्त्री० [सं०] वह संपत्ति जो खेत-बारी, जंगल, मकान आदि के रूप में हो । (एस्टेट)

भूसना*-अ० दे० 'भूँकना' ।

भूसा-पुं० [सं० तुष] अनाजों के पौधों के डंठलों का महीन चूरा ।

भूसी-स्त्री० [हिं० भूसा] १. भूसा । २. दाने आदि के ऊपर का छिलका ।

भूसुर-पुं० [सं०] ब्राह्मण ।

भू-स्वामी-पुं० [सं०] वह जो किसी भूमि-खंड का स्वामी हो, और वह भूमि दूसरों को लगान, भाड़े आदि पर देता हो । जमीन का मालिक । (लैंड-लॉर्ड)

भृहरा*-पुं० दे० 'भुँइहरा' ।

भृंग-पुं० [सं०] भौंरा ।

भृंगराज-पुं० [सं०] १. भँगरैया । (वनस्पति २ काले रंग की एक चिड़िया।

भृंगी-पुं०[सं०भृंगिन्]शिव जी का एक गण।
स्त्री० [सं०] १ भृंग या भौंरे की मादा । भौंरी । २. बिलनी ।

भृकुटी-स्त्री० [सं०] भौंह ।

भृगु-पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने विष्णु की छाती पर लात मारी थी । २. परशुराम । ३. समुद्र-तट की ऊँची ढालुआँ चट्टान । कगार । (क्लिफ)

भृगु-रेखा-स्त्री० [सं०] विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु की लात लगने से हुआ था ।

भृगुवार-पुं० [सं०] शुक्रवार ।

भृत-पुं० [सं०] [स्त्री० भृता] दास ।
वि० [सं०] १. भरा हुआ । पूरित । २. पाला-पोसा हुआ ।

भृति-स्त्री० [सं०] १. भरने की क्रिया या भाव । २. सेवा । नौकरी । ३. मजदूरी। ४.वेतन । तनख्वाह । ५. मूल्य। दाम। ६. पालन करना । पालना । ७. वह धन जो पत्नी को निर्वाह के लिए पति द्वारा त्यागे जाने पर मिलता है। (एलिमनी) ८. जीविका-निर्वाह के लिए मिलनेवाला धन । वृत्ति । ९. दे० 'भत्ता' ।

भृत्य-पुं० [सं०] नौकर । सेवक ।

भेंगा-पुं० [देश०] वह जिसकी आँखों की पुतलियाँ टेढ़ी-तिरछी चलती या रहती हों।

भेंट-स्त्री० [हिं० भेंटना] १. मिलना । मुलाकात । २. उपहार । नजराना ।

भेंटना*†-अ० [हिं० मिलना ?] मुलाकात करना। मिलना।
स० गले लगाना।

भेइ(उ)*†-पुं० [सं० भेद] रहस्य।

भेक-पुं० दे० 'मेंढक'।

भेख*-पुं० दे० 'वेष'।

भेखज*-पुं० दे० 'भेषज'।

भेजना-स० [सं० व्रजन्] १. किसी को कहीं जाने के लिए चलने में प्रवृत्त करना। २.कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए रवाना करना। प्रेषण।

भेजवाना-स० हिं० 'भेजना' का प्रे०।

भेजा-पुं० [?] सिर के अन्दर का गूदा। मग़ज।

भेड़-स्त्री० [सं० मेष] [पुं० भेड़ा] बकरी की तरह का एक प्रसिद्ध चौपाया। कहा०-भेड़िया - धसान=बिना सोचे-समझे दूसरों का अनुसरण करना।

भेड़ा-पुं० [हिं० भेड़] भेड़ जाति का नर। मेढ़ा। मेष।

भेड़िया-पुं० [हिं० भेड़] कुत्ते की जाति का एक प्रसिद्ध जंगली हिंसक जंतु जो छोटे जानवरों को उठा ले जाता है।

भेड़ी-स्त्री० दे० 'भेड़'।

भेद-पुं० [सं०] १. भेदने या छेदने की क्रिया। २. शत्रु-पक्ष के लोगों को एक-दूसरे का विरोधी बनाकर कुछ लोगों को अपनी ओर मिलाना। ३. भीतरी छिपा हुआ हाल। रहस्य। ४. मर्म। तात्पर्य। ५. अन्तर। फरक। ६. प्रकार। तरह।

भेदक-वि० [सं०] १. भेदने या छेदनेवाला। २. रेचक। दस्तावर। (वैद्यक)

भेदकातिशयोक्ति-स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें 'औरै' 'औरै' कहकर किसी वस्तु की अति या अधिकता का वर्णन किया जाता है।

भेदन-पुं० [सं०] [वि०भेदनीय, भेद्य] १. भेदने की क्रिया या भाव। २. छेदना। बेधना। ३.भेद लेने की क्रिया या भाव। (एस्पॉयनेज)

भेदना-स० [सं०भेदन] बेधना। छेदना।

भेद-भाव-पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट लोगों के साथ अंतर या भेद का विचार या भाव रखना।

भेदिया-पुं० [सं० भेद+इया (प्रत्य०)] १. जासूस। गुप्तचर। २ भेद या भीतरी रहस्य जाननेवाला।

भेदी-पुं० दे० 'भेदिया'।
वि० [सं० भेदिन्] भेदन करनेवाला।

भेदू-पुं० दे० 'भेदिया'।

भेरा*†-पुं० दे० 'बेड़ा'।

भेरी-स्त्री० [सं०] लड़ाई में बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल। ढक्का। दुंदुभी।

भेला*†-पुं० [हिं० भेंट] १. भिड़ंत। २. भेंट। मुलाकात।
†पुं० दे० 'भिलावाँ'।
पुं० [?] बड़ा गोला या पिंड।

भेली-स्त्री० [?] गुड़ आदि की गोल बट्टी या पिंडी।

भेव*†-पुं० [सं० भेद] १. भेद। रहस्य। २. बारी। पारी।

भेष-पुं० दे० 'वेष'।

भेषज-पुं० [सं०] औषध। दवा।

भेषना*-स० दे० 'भेसना'।

भेस-पुं० [सं० वेष] १. केवल दूसरों को दिखाने के लिए बनाया हुआ बाहरी रूप-रंग और पहनावा आदि। वेष। २. किसी के अनुकरण पर बनाया हुआ कृत्रिम रूप और पहने हुए वस्त्र आदि।

भेसना*†-स० [हिं० भेस] १. भेस बनाना। २. कपड़े पहनना।
भैंस-स्त्री० [सं० महिष] गाय की तरह का, एक प्रसिद्ध काला चौपाया (मादा), जो दूध के लिए पाला जाता है।
भैंसा-पुं० [हिं० भैंस] भैंस का नर।
भैंसासुर-पुं० दे० 'महिषासुर'।
भै*-पुं० दे० 'भय'।
भैचक(क्क)*†-वि० दे० 'भौचक'।
भैजन,भैदा*-वि० दे० 'भयानक'।
भैन(ा)-स्त्री० दे० 'बहन'।
भैया-पुं० [हिं० भाई] १. भाई। २. बराबरवालों के लिए संबोधन का शब्द।
भैयाचारी-स्त्री० दे० 'भाईचारा'।
भैरव-वि० [सं०] १ भीषण शब्दवाला। २. भयानक। विकट।
पुं० [सं०] १.शिव के एक प्रकार के गण। २. साहित्य में भयानक रस। ३. छः रागों में से एक। (संगीत)
भैरवी-स्त्री० [सं०] २. एक देवी का नाम। चामुंडा। २ सवेरे गाई जानेवाली एक रागिनी। ३.सवेरे होनेवाला संगीत।
भैरवी चक्र-पुं० [सं०] तांत्रिकों का वह मंडल जो देवी के पूजन के लिए एकत्र होता है।
भैरवी यातना-स्त्री० [सं०] वह कष्ट जो प्राणियों को मरते समय भैरव जी देते हैं।
भैषज(ज्य)-पुं० [सं०] औषध। दवा।
भैहा*।-पुं० [हिं०भय] १.भयभीत। डरा हुआ। २. जिसपर भूत का आवेश हो।
भोंकना-स० [भक से अनु०] नुकीली चीज जोर से धँसाना। घुसाना।
भोंडा-वि०[हिं०भद्दा?] [भाव०भोंडापन, स्त्री० भोंडी] भद्दा। बदसूरत। कुरूप।
भोंदू-वि० [हिं० बुद्धू] मूर्ख।
भोंपा(पू)-पुं० [भों अनु०+पू (प्रत्य०)] १. फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा। २. कल-कारखानों आदि के कर्मचारियों को सचेत करने लिए बहुत जोर से बजनेवाली एक प्रकार की सीटी।
भो*-अ० [हिं० भया] हुआ।
भोकस*†-वि० [हिं० भूख] भुक्खड़। पुं० [?] एक प्रकार के राक्षस।
भोक्ता-वि० [सं० भोक्तृ] [भाव० भोक्तृत्व] भोग करने या भोगनेवाला।
भोग-पुं० [सं०] १. सुख, दुःख आदि का अनुभव करना। २. कोई वस्तु अपने अधिकार में करके उससे सुख या लाभ उठाना। ३. स्त्री-संभोग। विषय। ४. भक्षण। खाना। ५. पाप-पुण्य का वह फल जो सुख-दुःख आदि के रूप में भोगा जाता है। प्रारब्ध। ६ देवताओं के आगे रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य। ७ राशियों में ग्रहों के रहने का समय।
भोगना-अ० [सं० भोग] सुख-दुःख आदि सहना। भुगतना।
भोग-बंधक-पुं० [सं० भोग्य+हिं० बंधक= रेहन] बंधक या रेहन का वह प्रकार जिसमें ब्याज के बदले में रेहन रखी हुई वस्तु का उपयोग या उपभोग किया जाता है। 'दृष्ट-बंधक' का उलटा।
भोगवना*-अ० दे० 'भोगना'।
भोगवाना-स० हिं० 'भोगना' का प्रे०।
भोग-विलास-पुं० [सं०] सुखपूर्वक अच्छी अच्छी वस्तुओं का उपभोग करना।
भोग-संपत्ति-स्त्री० [सं०] स्वतंत्र राजाओं आदि की वह निजी सम्पत्ति जो उनके व्यक्तिगत भोग के लिए होती है और जिसपर राज्य या शासन का अधिकार

नहीं होता।

भोगाना-स० दे० 'भोगवाना'।

भोगिनी-स्त्री० [सं०] केवल संभोग के लिए रखी हुई स्त्री। रखेली।

भोगी-पुं० [सं० भोगिन्] [स्त्री० भोगिनी] भोगनेवाला।
वि० [सं०] १. भोगनेवाला। २. इंद्रियों का सुख भोगने या चाहनेवाला।

भोग्य-वि० [सं०] भोगने या काम में लाने योग्य।

भोज-पुं० [सं० भोजन] बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना। जेवनार। दावत।
पुं० [सं०] १. भोजकट नामक देश। (आज-कल का भोजपुर) २. मालवे के एक प्रसिद्ध परमार राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े कवि थे।

भोजन-पुं० [सं०] १ खाने की वस्तु भक्षण करना। खाना। २. खाने की सामग्री। खाद्य पदार्थ।

भोजनखानी-*-स्त्री० दे० 'भोजनालय'।

भोजन-भट्ट-पुं० [सं० भोजन+भट] बहुत अधिक खानेवाला।

भोजनालय-पुं० [सं०] १. रसोईघर। २. वह स्थान जहाँ पका हुआ भोजन मिले।

भोजपत्र-पुं० [सं० भूर्जपत्र] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल ग्रंथ आदि लिखने के काम में आती थी।

भोजपुरी-स्त्री० [हिं० भोजपुर+ई(प्रत्य०)] भोजपुर की भाषा।
वि० भोजपुर का। भोजपुर संबंधी।

भोज विद्या-स्त्री० दे० 'इंद्रजाल'।

भोजी-पुं० [सं० भोजिन्] खानेवाला। (यौ० के अन्त में। जैसे-मांस-भोजी)

भोजू*-पुं० दे० 'भोजन'।

वि० [सं० भोज्य] काम में आने योग्य।
यौ०-काजू-भोजू = साधारण रूप से काम में आने योग्य। (अधिक पुष्ट या स्थायी नहीं)

भोज्य-पुं० [सं०] खाद्य पदार्थ।
वि० खाने योग्य।

भोट-पुं० [सं० भोटग] भूटान देश।

भोटा*-वि० दे० 'भोला'।

भोटिया-पुं० [हिं० भोट+इया (प्रत्य०)] भोट या भूटान देश का निवासी।
स्त्री० भूटान देश की भाषा।
वि० भूटान देश का।

भोडर(ल)-पुं०[देश०] अभ्रक। अबरक।

भोथरा-वि० [अनु०] जिसकी धार तेज न हो। कुंठित। कुंद। (शस्त्र आदि)

भोना*-अ० [हिं० भीनना] १. भीनना। २. लिप्त या लीन होना। ३. आसक्त होना।

भोर(1)-पुं० [सं० विभावरी] तड़का।
*†-पुं० [सं० भ्रम] धोखा। भ्रम।
वि० चकित। भौचक्का।
*वि० दे० 'भोला'।

भोराई*†-स्त्री० = भोलापन।

भोराना*-स० [हिं० भोर=भ्रम] भ्रम में डालना। भुलाना।
अ० भ्रम या धोखे में आना।

भोलना*-स० [हिं० भुलाना] भुलावा देना। बहकाना।

भोला-वि० [हिं० भूलना] [भाव० भोलापन] सीधा-सादा। सरल।

भोलानाथ-पुं० [हिं०+सं०] महादेव।

भोला-भाला-वि० दे० 'भोला'।

भौं-स्त्री० दे० 'भौंह'

भौंकना-अ० दे० 'भूँकना'।

भौंतुआ-पुं०[हिं०भौंना=घूमना] १.कुँर्ये के नीचे निकलनेवाली एक प्रकार की गिलटी।

२. तेली का बैल, जिसे दिन भर घूमते रहना पड़ता है। ३. दे० 'जल-भौंरा'। वि० बराबर घूमता रहनेवाला।

भौंना*-अ० [सं० भ्रमण] घूमना।

भौंर-पुं० [सं० भ्रमर] १. भौंरा। २. भँवर। ३. मुश्की घोड़ा।

भौंरा-पुं० [सं० भ्रमर] [स्त्री० भौंरी] १. काले रंग का एक पतंगा। २. बड़ी मधु-मक्खी। ३. एक प्रकार का खिलौना। पुं० [हिं० भँवर] १. तहखाना। २. अन्न रखने का गड्ढा। खात। खत्ता।

भौंराना*-स० [सं० भ्रमण] १. चक्कर देना। घुमाना। २. विवाह के समय भाँवर दिलाना। अ० चक्कर काटना। घूमना।

भौंराला*-वि० दे० 'घुँघराला'।

भौंरी-स्त्री० [सं० भ्रमण] १. पशुओं के शरीर पर वे चक्करदार बाल, जिनसे उनके शुभ या अशुभ लक्षणों या गुण-दोष का निर्णय करते हैं। २. दे० 'भाँवर'।

भौंह-स्त्री० [सं० भ्रू] आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल। भृकुटी। भौं। मुहा०-भौंह चढ़ाना या तानना=क्रुद्ध होना। भौंह जोहना=खुशामद के कारण किसी की दृष्टि से उसके मनोभावों का पता लगाते रहना।

भौंहरा*-पुं० दे० 'मुँइहरा'।

भौ*-पुं० [सं० भव] संसार। पुं० [सं० भय] डर। भय।

भौगोलिक-वि० [सं०] भूगोल का।

भौचक-वि० [हिं० भय+चकित] हक्का-बक्का। चकपकाया हुआ। चकित।

भौज*-स्त्री० दे० 'भावज'।

भौजल*-पुं० दे० 'भव-जाल'।

भौजाई(जी)-स्त्री० दे० 'भावज'।

भौतिक-वि० [सं०] [भाव० भौतिकता] १. पंच-भूत से सम्बन्ध रखनेवाला। २. पाँचो भूतों से बना हुआ। पार्थिव। ३. शरीर संबंधी।

भौतिकवाद-पुं० दे० 'पदार्थवाद'।

भौतिक विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, प्रकाश आदि भूतों या तत्वों का विवेचन होता है। पदार्थ विज्ञान। (फ़ीजिक्स)

भौतिक विद्या-स्त्री० [सं०] १. भूतों-प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या। २. दे० 'भौतिक विज्ञान'।

भौन*-पुं० = भवन।

भौना*-अ० = घूमना।

भौम-वि० [सं०] १. भूमि संबंधी। भूमि का। २ भूमि या पृथ्वी से उत्पन्न। पुं० मंगल ग्रह।

भौमवार-पुं० [सं०] मंगलवार।

भौमिक-पुं० [सं०] भूमि का स्वामी। वि० भूमि संबंधी। भूमि का।

भौर*-पुं० १.दे०'भौंरा'। २.दे०'भँवर'।

भ्रंश-पुं० [सं०] १. नीचे गिरना। पतन। २. नाश। ध्वंस। बरबादी।

भ्रम-पुं० [सं०] १. किसी को कुछ और ही या दूसरा समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति। धोखा। २. संदेह। शक। पुं० [सं० सम्भ्रम] मान। प्रतिष्ठा।

भ्रमण-पुं० [सं०] १. घूमना-फिरना। चलना-फिरना। विचरण। २.यात्रा। सफर।

भ्रमना*-अ० [सं० भ्रमण] घूमना। अ० [सं० भ्रम] १.भ्रम में पड़ना। धोखा खाना। २. भूल या गलती करना।

भ्रमनि*-स्त्री० = भ्रमण।

भ्रम-मूलक-वि० [सं०] जिसके मूल में भ्रम हो। भ्रम के कारण उत्पन्न।

भ्रमर-पुं० [सं०] [स्त्री० भ्रमरी] १. भौंरा । २. उद्धव का एक नाम ।
भ्रमरावली-स्त्री० [सं०] भौंरों की पंक्ति ।
भ्रमात्मक-वि० [सं०] १. जिसमें मूल में भ्रम हो । भ्रम-मूलक । २. जिसके सम्बन्ध में भ्रम हो । सन्दिग्ध ।
भ्रमाना*†-स० हिं० 'भ्रमना' का स० ।
भ्रमित-वि० [सं०] १. भ्रम में पड़ा हुआ । २. घूमता या चक्कर खाता हुआ ।
भ्रष्ट-वि० [सं०] १. अपने स्थान से नीचे गिरा हुआ । पतित । २. बहुत बुरा या खराब । दूषित । ३. बद-चलन ।
भ्रष्टा-स्त्री० [सं०] कुलटा । दुश्चरित्रा ।
भ्रांत-वि० [सं०] जिसे भ्रांति हुई हो । भ्रम या धोखे में पड़ा हुआ ।
भ्रांतापह्नुति-स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें भ्रांति या भ्रम दूर करने के लिए सच बात का वर्णन होता है ।
भ्रांति-स्त्री० [सं०] १. भ्रम । धोखा । २. संदेह । शक । ३. भ्रमण । ४. पागलपन । ५. भूल-चूक । ६. एक काव्यालंकार जिसमें किसी वस्तु को, भ्रम से कुछ और समझ लेने का वर्णन होता है ।
भ्राजना*-अ० [सं० भ्राजन] शोभा पाना ।
भ्राजमान*-वि० [हिं० भ्राजना] शोभायमान । सुशोभित ।
भ्राता-पुं० [सं० भ्रातृ] भाई ।
भ्रातृ-जाया-स्त्री० [सं०] भावज ।
भ्रातृत्व-पुं० [सं०] १. भाई होने का भाव या धर्म्म । २. भाई-चारा ।
भ्रातृ-भाव-पुं० [सं०] १. भाई का-सा प्रेम या सम्बन्ध । २. दूसरों को अपने भाई समझना या उनसे भाइयों का-सा व्यवहार करना । भाई-चारा ।
भ्राम*-पुं० दे० 'भ्रम' ।
भ्रामक-वि० [सं०] १. भ्रम उत्पन्न करनेवाला । २. घुमानेवाला ।
भ्रू-स्त्री० [सं०] भौंह ।
भ्रूण-पुं० [सं०] १. स्त्री का गर्भ । २. बालक की गर्भ में रहने की अवस्था, विशेषतः गर्भाधान से प्रायः चार मास तक की अवस्था । (एम्ब्रायो)
भ्रूण-हत्या-स्त्री० [सं०] गर्भ में भ्रूण या बालक को मार डालना ।
भ्रू-विक्षेप-पुं० [सं०] १. देखना । २. त्योरी चढ़ाना ।
भ्वहरना*†-अ०=डरना ।

म

म-हिन्दी वर्ण-माला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अन्तिम वर्ण, जिसका उच्चारण होंठ और नासिका से होता है । संगीत में यह 'मध्यम' स्वर का और छन्दः शास्त्र में 'मगण' का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है ।
मंकुर*-पुं० [सं० मुकुर] शीशा ।
मंगता(न)-पुं० दे० 'भिखमंगा' ।
मँगनी-स्त्री० [हिं० माँगना+ई (प्रत्य०)] १.किसी के माँगने पर उसे कुछ समय के लिए कोई चीज देना । २. इस प्रकार दी हुई चीज । ३.वह रस्म जिसमें वर और कन्या का सम्बन्ध पक्का या तै होता है ।
मंगल-पुं० [सं०] १. कल्याण । भलाई ।

२. सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह। भौम। कुज। ३. मंगलवार। ४. सफेद रंग की एक कठोर धातु, जिसका उपयोग शीशे के सामान बनाने में होता है। (मैंगनीज)

मंगल कलश(घट)-पुं० [सं०] मंगल-अवसरों पर पूजा के लिए अथवा यों ही रखा जानेवाला पानी का घड़ा।

मंगल-पाठ-पुं० दे० 'मंगलाचरण'।

मंगल-पाठक-पुं० [सं०] बन्दीजन।

मंगल-भाषित-पुं० [सं०] किसी अप्रिय या अशुभ बात को प्रिय या शुभ रूप में कहने का प्रकार। जैसे-'चूड़ियाँ तोड़ना' न कहकर 'चूड़ियाँ बढ़ाना' कहना।

मंगल सूत्र-पुं० [सं०] किसी देवता के प्रसाद-रूप में कलाई पर बाँधा जाने-वाला डोरा या तागा।

मंगलाचरण-पुं० [सं०] वह पद्य जो शुभ कार्य के पहले मंगल की कामना से पढ़ा या कहा जाता है।

मंगलामुखी-स्त्री० दे० 'वेश्या'।

मंगली-वि० [सं० मंगल (ग्रह)] जिसकी जन्म-कुन्डली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह हो। (अशुभ)

मँगाना-स० [हि० 'माँगना' का प्रे०] १.माँगने का काम दूसरे से कराना। २. किसी से कोई चीज लाकर देने के लिए कहना। ३. मँगनी कराना।

मँगेतर-वि० [हिं० मँगनी+एतर (प्रत्य०)] जिसके साथ किसी की मँगनी हुई हो।

मंगोल-पुं० [मंगोलिया प्रदेश से] मध्य-एशिया में बसनेवाली एक जाति।

मंच(क)-पुं० [सं०] १. खाट। खटिया। २. छोटी पीढ़ी। मँचिया। ३. वह ऊँचा मण्डप जिसपर बैठकर सर्व-साधारण के सामने कोई कार्य किया जाय। जैसे-रंग-मंच, न्याय-मंच, सभा-मंच।

मंछुर*-पुं० १.दे० 'मत्सर'। २.दे० 'मच्छड़'।

मंजन-पुं० [सं० मज्जन] १. दाँत साफ करने का चूर्ण या बुकनी। २.दे० 'मज्जन'।

मँजना-अ० [हिं० माँजना] १.माँजा जाना। २. अभ्यास होना। जैसे-हाथ मँजना।

मंजरित-वि० [सं० मंजरी+त (प्रत्य०)] जिसमें मंजरी लगी हो। मंजरियों से युक्त।

मंजरी-स्त्री० [सं०] [वि० मंजरित] १. नया निकला हुआ कल्ला। कोंपल। २. कुछ विशिष्ट पौधों में सींके में लगे हुए बहुत-से दानों का समूह। ३. लता।

मँजाई-स्त्री० [हिं० मँजाना] मँजाने या माँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मँजाना-स० हिं० 'माँजना' का प्रे०।

मँजार*-स्त्री० [सं० मार्जार] बिल्ली।

मंजिल-स्त्री० [अ०] १. यात्रा के समय मार्ग में ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. मकान का खंड। मरातिब।

मंजीर-पुं० [सं०] नूपुर। घुँघरू।

मंजु-वि० [सं०] [भाव० मंजुता] सुन्दर।

मंजुल-वि० [सं०] [स्त्री० मंजुला, भाव० मंजुलता] सुन्दर। मनोहर।

मंजूर-वि० [अ०] स्वीकृत।

मंजूरी-स्त्री० [अ० मंजूर] स्वीकृति।

मंजूषा-स्त्री० [सं०] छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी।

मँझ-धार-स्त्री० [हिं० मँझ=मध्य+धार] १.नदी या उसके प्रवाह का मध्य भाग। २. किसी काम का मध्य।

मँझला-वि० [हिं० मँझ (मध्य)] बीच का।

मंझा*-वि० [सं० मध्य] बीच का। पुं० [सं० मंच] पलंग। खाट। पुं० दे० 'माँझा'।

मँझारा-क्रि० वि० [सं० मध्य] बीच में।
मँझोला-वि० दे० 'मझोला'।
मँड़ई-स्त्री० [सं० मंडप] झोंपड़ी। कुटी।
मंडन-पुं० [सं०] १. शृंगार करना। सजाना। २. प्रमाण देकर कोई बात सिद्ध करना। 'खंडन' का उलटा।
मंडना*-स० [सं० मंडन] १. सजाना। २. युक्ति से सिद्ध करना। ३. भरना। स० [सं०मर्दन] दलित करना। रौंदना।
मंडप-पुं० [सं०] १ किसी उत्सव या मंगल-कार्य के लिए बाँस, फूस, कपड़े आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। मंच। २. देव-मन्दिर के ऊपर की गोल बनावट और उसके नीचे का स्थान।
मँडरना*-अ० [सं० मंडल] चारो ओर से छाना या घेर लेना।
मँडराना-अ० दे० 'मँडलाना'।
मंडल-पुं०[सं०] १.परिधि। चक्कर। घेरा। २. गोल विस्तार। गोलाई। ३ सूर्य या चन्द्रमा के चारो ओर दिखाई पड़नेवाला घेरा। परिवेश। ४. ऋग्वेद का कोई खण्ड। ५. प्रान्त आदि का वह विभाग या अंश जो एक विशेष अधिकारी के अधीन हो। जिला (डिस्ट्रिक्ट) ६.एक ही प्रकार के या किसी विशेष दृष्टि से साथ रहनेवाले कुछ विशिष्ट लोगों का समाज या समुदाय। ७. दे० 'कटिबंध' २।
मंडल-परिषद्-स्त्री० [सं०] किसी मंडल या जिले में रहनेवालों के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह परिषद् जो सारे मण्डल की सड़कों, स्वास्थ्य, प्रारम्भिक शिक्षा आदि लोकोपयोगी कार्यों की व्यवस्था करती है। (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड)
मंडलाकार-वि० [सं०] गोल।
मँडलाना-अ० [सं० मंडल] १. किसी वस्तु के ऊपर चारो ओर घूमते हुए उड़ना। २. बराबर किसी के आस-पास रहना।
मंडली-स्त्री० [सं०] १.समूह। समाज। २. किसी विशेष कार्य, प्रदर्शन, व्यवसाय आदि के लिए बना हुआ कुछ लोगों का संघटित दल। (कम्पनी) पुं० [सं० मंडलिन्] सूर्य।
मँड़वा-पुं० दे० 'मंडप'।
मंडित-वि० [सं०] १. सजाया हुआ। २ छाया हुआ। ३. भरा हुआ।
मंडी-स्त्री०[सं०मंडप] बहुत बड़ा बाजार। भारी हाट। जैसे-अनाज की मंडी।
मंडूक-पुं० [सं०] मेंढक।
मंत*-पुं० [सं०मंत्र] १.सलाह। २.मन्त्र।
मंतव्य-पुं० [सं०] विचार। मत।
मंत्र-पुं० [सं०] १. गुप्त रखने योग्य रहस्य की बात। गुप्त परामर्श। २. वेद के वे वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि करने का विधान है। ३. वे शब्द या वाक्य, जिनका इष्ट-सिद्धि या किसी देवता की प्रसन्नता के लिए जप किया जाता है। ४ वे शब्द या वाक्य जिनका उच्चारण झाड़-फूँक करनेवाले भूत, विष आदि का प्रभाव दूर करने के लिए करते हैं। यौ०-यंत्र-मंत्र=जादू-टोना।
मंत्रकार-पुं० [सं०] मंत्र रचनेवाला ऋषि। (विशेषतः वेदों के मंत्रों का)
मंत्रणा-स्त्री० [सं०] १. परामर्श। सलाह। (एडवाइस) २. आपस की सलाह से स्थिर किया हुआ मत। मंतव्य।
मंत्र-पूत-वि०[सं०] १.मन्त्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। २.मन्त्र पढ़कर फूँका हुआ।
मंत्रिणी-स्त्री०[सं०]मंत्रणा देनेवाली स्त्री।
मंत्रित-वि० [सं०] जिसका मंत्र से संस्कार किया गया हो। अभिमंत्रित।

मंत्रित्व-पुं० [सं०] मन्त्री का कार्य या पद।

मंत्रि-मंडल-पुं० [सं०] किसी देश, राज्य, संस्था आदि के मंत्रियों का समूह। (कैबिनेट)

मंत्री-पुं० [सं० मंत्रिन्] [स्त्री० मंत्रिणी] १. परामर्श या सलाह देनेवाला। २. वह प्रधान अधिकारी जिसके परामर्श से राज्य के अथवा राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हों। सचिव। (मिनिस्टर) ३. किसी संस्था या सरकारी विभाग का वह अधिकारी जो नियमित रूप से उसके सब काम चलाता हो। (सेक्रेटरी)

मंत्रेला-पुं० [सं० मन्त्र] मंत्र-तंत्र या झाड़-फूँक जाननेवाला।

मंथन-पुं० [सं०] १ मथना। बिलोना। २. गहरी छान-बीन। ३. मथानी।

मंथर-वि० [सं०] [भाव० मंथरता] धीमी गतिवाला। मंद। धीमा।

मंद-वि० [सं०] १. धीमा। सुस्त। २. आलसी। ३. जड़-बुद्धि। मूर्ख। ४.दुष्ट।

मंदग-वि० [सं०] धीरे धीरे चलनेवाला।

मंदर-पुं० [सं०] १.पुराणों में उल्लिखित वह प्रसिद्ध पर्वत जिससे देवों और असुरों ने समुद्र मथा था। २.स्वर्ग। ३.दर्पण। वि० मंद। धीमा।

मंदराचल-पुं०=मंदरा (पर्वत)।

मंदा-वि० [सं० मंद] [स्त्री० मंदी] १. दे० 'मंद'। २. कम मूल्य का। सस्ता। ३. जिसका भाव या दाम उतर या गिर गया हो। ४. घटिया।

मंदाकिनी-स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा।

मंदाग्नि-स्त्री० [सं०] अन्न न पचने का रोग। बद-हजमी। अपच।

मंदार-पुं० [सं०] १. स्वर्ग का एक वृक्ष। २. आक या मदार का पेड़। ३. स्वर्ग। ४.हाथी। ५.मंदर नामक पर्वत।

मंदिल*-पुं० १.दे०'मंदिर'। २.दे०'मंदील'।

मंदी-स्त्री० [हिं० मंद] १.भाव कम होना। 'महँगी' का उलटा। सस्ती। २.बाजार में बिक्री कम होना। 'तेजी' का उलटा।

मंदील-पुं० [सं० मुंड ?] एक प्रकार का कामदार रेशमी साफा।

मंदोदरी-स्त्री० [सं०] रावण की पटरानी, जो मय दानव की कन्या थी।

मंद्र-वि० [सं०] १. मनोहर। सुन्दर। २. प्रसन्न। ३. गम्भीर। ४. धीमा। (स्वर, शब्द आदि)

मंशा-स्त्री० [अ०, मि० सं० मनस्] १. इच्छा। चाह। २. आशय। मतलब।

मँहगा-वि० दे० 'महँगा'।

मँहँ-सर्व० दे० 'मैं'।

मइका*-पुं० दे० 'मायका'।

माइमंत*-वि० दे० 'मैमंत'।

मकड़ी-स्त्री० [सं० मर्कटक] एक प्रसिद्ध कीड़ा जो अपने शरीर से निकले हुए एक प्रकार के तन्तुओं से जाला तानकर उसमें मक्खियाँ आदि फँसाता है।

मकबरा-पुं० [अ०] वह इमारत जिसमें किसी की कब्र हो। रौजा। मजार।

मकरंद-पुं० [सं०] १. पुष्प-रस। २. फूलों का केसर।

मकर-पुं० [सं०] [स्त्री०मकरी] १.मगर या घड़ियाल नामक जल-जन्तु। २. मछली। ३. बारह राशियों में से दसवीं राशि। पुं० [फा०] १. छल। धोखा। २.नखरा।

मकर कुंडल-पुं० [सं०] मगर नामक जल-जन्तु के आकार का कुण्डल।

मकराकृत-वि० [सं०] मकर या मछली के आकार का।

मकरालय-पुं० [सं०] समुद्र।

मकान-पुं० [फा०] गृह । घर ।
मकुंद-पुं० दे० 'मुकुंद' ।
मकु*-अव्य० [सं० म] १. चाहे । २. बल्कि । ३. कदाचित् । शायद ।
मकुना-पुं० [सं० मनाक=हाथी] बिना दाँतवाला छोटा नर हाथी ।
मकोड़ा-पुं० [हिं० कीड़ा] छोटा कीड़ा ।
मकोरना*-स० दे० 'मरोड़ना' ।
मक्का-पुं० [देश०] ज्वार । मकई । पुं० (अरब में) मुसलमानों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान ।
मक्कार-वि० [अ०] [भाव० मक्कारी] धूर्त । कपटी । छली ।
मक्खन-पुं० [सं० मंथज] दही मथने से निकला हुआ उस का सार भाग, जिसे तपाने से घी बनता है । नवनीत । नैनूँ । मुहा०-कलेजे पर मक्खन मला जाना=छाती ठंढी होना । बहुत सन्तोष या तृप्ति होना ।
मक्खी-स्त्री० [सं० मक्षिका] १. एक प्रसिद्ध उड़नेवाला छोटा कीड़ा जो प्रायः सब जगह पाया जाता है । मक्षिका । मुहा०-जीती मक्खी निगलना=१. जान-बूझकर ऐसा काम करना जिसके कारण पीछे हानि हो । मक्खी की तरह निकाल फेंकना =त्याज्य या निकृष्ट समझकर बिलकुल अलग कर देना । मक्खी मारना या उड़ाना = बहुत आलसी या निकम्मा होना । २. मधु-मक्खी । मुमाखी ।
मक्खी-चूस-पुं० [हिं०मक्खी+चूसना] परम कृपण । भारी कंजूस ।
मक्षिका-स्त्री० [सं०] मक्खी ।
मख-पुं० [सं०] यज्ञ ।
मखतूल-पुं० [सं०महर्घ तूल] [वि० मख-तूली] काला रेशम ।
मखनिया-वि० [हिं० मक्खन] मक्खन निकाला हुआ (दही या दूध) ।
मखमल-स्त्री० [अ०] [वि० मखमली] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा ।
मख शाला-स्त्री०=यज्ञ-शाला ।
मखाना-पुं० दे० 'ताल मखाना' ।
मखौल-पुं० [देश०] हँसी-ठट्ठा । उपहास । दिल्लगी ।
मखौलिया-वि० [हिं०मखौल] दिल्लगी-बाज । हँसोड़ ।
मग-पुं० [सं० मार्ग] मार्ग । रास्ता । पुं० [सं०] मगध देश ।
मगज-पुं० [अ० मग्ज] १. मस्तिष्क । मुहा०-मगज खाना या चाटना= व्यर्थ बकवाद करके तंग करना । २. गिरी । मींगी ।
मगज-पच्ची-स्त्री० [हिं० मगज+पचाना] कुछ सोचने या करने के लिए बहुत दिमाग लड़ाना । सिर खपाना ।
मगजी-स्त्री० दे० 'गोट' । (कपड़े की)
मगण-पुं० [सं०] छंदःशास्त्र में तीन गुरु वर्णों का एक गण । जैसे-जामाता ।
मगदल-पुं० [सं० मुद्ग] उड़द या मूँग के आटे का एक प्रकार का लड्डू ।
मगदूर*-वि० दे० 'मकदूर' ।
मगध-पुं- [सं०] १.दक्षिणी बिहार का पुराना नाम । २. बन्दीजन ।
मगन-वि० दे० 'मग्न' ।
मगर-पुं० [सं० मकर] दे० 'मकर' १,२ । अव्य० [फा०] लेकिन । परन्तु । पर ।
मगर-मच्छ-पुं० [हिं० मगर+मछली] १. मगर या घड़ियाल नामक जल-जन्तु । २. बहुत बड़ी मछली ।
मगरिब-पुं० [अ०] [वि० मगरिबी]

पश्चिम दिशा। पच्छिम।
मगरूर-वि० [अ०][भाव० मगरूरी]घमंडी।
मगहा†-पुं० [सं० मगध] मगध देश।
मगहर†*-पुं० दे० 'मगध'।
मगही-वि० [हिं० मगह] मगध देश का।
मग्ग*-पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।
मग्न-वि० [सं०] [भाव० मग्नता] १. डूबा हुआ। २. तन्मय। लीन। ३. प्रसन्न।
मघवा-पुं० [सं० मघवन्] इन्द्र।
मघा-स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र। (हिन्दी में प्रायः पुं०)
मघोनी*-स्त्री० [सं० मघवन्] इन्द्राणी।
मचकना-स०, अ० [भाव० मचक] दे० 'मचमचाना'।
मचका-पुं० [हिं० मचकना] १. धक्का। २. झोंका। ३ झूले की पेंग।
मचना-अ० [अनु०] १. आरम्भ होना। (शोर इत्यादि) २. छा जाना। फैलना। (धूम, कीर्त्ति आदि)
मचमचाना-स० अ० [अनु०] इस प्रकार दबाना या दबना कि मच-मच शब्द हो।
मचलना-अ० [अनु०] [भाव० मचल] किसी चीज के लिए बालकों या स्त्रियों की तरह हठ करना। अड़ना।
मचला-वि० [हिं० मचलना] १. बोलने के समय जान-बूझकर चुप रहनेवाला। २. मचलनेवाला।
मचलाई*-स्त्री० [हिं० मचलना] मचलने की क्रिया या भाव। मचल।
मचलाना-अ० [अनु०] कै मालूम होना। (जी) मिचलाना।
स० किसी को मचलने में प्रवृत्त करना।
*अ० दे० 'मचलना'।
मचान-स्त्री० [सं० मंच+आन (प्रत्य०)] १. शिकार खेलने या खेत की रखवाली के लिए लट्ठों पर बाँधकर बनाया हुआ ऊँचा स्थान। २. ऊँची बैठक। मंच।
मचाना-स० हिं० 'मचना' का स०।
मचिया†-स्त्री० [सं० मंच] १. छोटी चारपाई। २. पीढ़ा।
मच्छ-पुं०=बड़ी मछली।
मच्छड़(र)-पुं० [सं० मशक] एक प्रसिद्ध छोटा उड़नेवाला कीड़ा। इसकी मादा काटती और खून चूसती है।
मच्छरता-स्त्री० दे० 'मत्सर'।
मच्छरदानी*-स्त्री० दे० 'मसहरी'।
मच्छी-स्त्री०=मछली।
मच्छोदरी*-स्त्री० [सं० मत्स्योदरी] वेद व्यास की माता, सत्यवती।
मछली-स्त्री० [सं० मत्स्य] १. एक प्रसिद्ध जल-जन्तु जिसकी अनेक छोटी बड़ी जातियाँ होती हैं। मीन।
मछुआ (वा)-पुं० [हिं० मछली] मछली मारनेवाला। (मल्लाह)
मजकूरी-पुं० [फा०] सम्मन तामील करनेवाला चपरासी।
मजदूर-पुं० [फा०] [स्त्री० मजदूरनी, मजदूरिन] १. दूसरों का साधारण शारीरिक श्रम का कार्य करके निर्वाह करनेवाला। मजूर। श्रमिक। २.मोटिया। बोझ ढोनेवाला।
मजदूरी-स्त्री० [फा०] मजदूर का काम, भाव या पारिश्रमिक।
मजना*-अ० दे० 'मजना'।
मजबूत-वि० [अ०] [भाव० मजबूती] १. दृढ़। पुष्ट। पक्का। २. बलवान्।
मजबूर-वि० [अ०] [भाव० मजबूरी] विवश। लाचार।
मजबूरन्-क्रि० वि० [अ०] लाचारी की हालत में। विवश होकर।

मजमा-पुं० [अ०] बहुत-से लोगों का एक जगह जमाव । भीड़-भाड़ । जमघट ।

मजमून-पुं० [अ०] १. किसी लेख आदि का विषय । २. लेख ।

मजलिस-स्त्री० १. दे० 'महफिल' । २. दे० 'सभा' ।

मजहब-पुं० [अ०] [वि० मजहबी] धार्मिक सम्प्रदाय । पंथ । मत ।

मजा-पुं० [फा० मजः] १ स्वाद । मुहा०-मजा चखाना=समुचित दंड देना । २. आनन्द । सुख । ३. दिल्लगी । हँसी ।

मजाक-पुं० [अ०] हँसी-ठट्टा ।

मजार-पुं० [अ०] १. मकबरा । समाधि । २. कब्र ।

मजारी*-स्त्री० दे० 'बिल्ली' ।

मजाल-स्त्री० [अ०] सामर्थ्य । शक्ति ।

मंजिल*-स्त्री० दे० 'मंजिल' ।

मजीठ-स्त्री० [सं० मजिष्ठा] १. एक प्रकार की लता । २. इस लता की जड़ और डंठलों से निकला हुआ लाल रंग ।

मजीर*-स्त्री० दे० 'घौद' ।

मजीरा-पुं० [सं० मंजीर] ताल देने के लिए काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी । जोड़ी । (संगीत)

मजूर-पुं०१.दे०'मयूर'। २.दे०'मजदूर' ।

मजूरी-स्त्री० दे० 'मजदूरी' ।

मजेज*-वि० [फा० मिज़ाज] अहंकार ।

मजेदार-वि० [फा०] १. स्वादिष्ट । २. आनन्ददायक । ३.बढ़िया । ४.मनोरंजक ।

मज्ञा*-स्त्री० दे० 'मज्ञा' ।

मज्जन-पुं० [सं०] [वि० मज्जित] स्नान । नहाना ।

मज्जना*-अ० [सं० मज्जन] १. डूबना । २. नहाना । ३. अनुरक्त होना ।

मज्जा-स्त्री० [सं०] हड्डी की नली के अन्दर का गूदा ।

मझ (झ)*-वि० [सं० मध्य] बीच ।

मझना*-स० [सं० मध्य] प्रविष्ट करना । बीच में धँसाना । अ० थाह लेना ।

मझार*-वि० [सं० मध्य] बीच में ।

मझियाना*-अ०[हिं०माझी] नाव खेना ।

मझियारा*-वि० [सं० मध्य] बीच का ।

मझीला*-वि० दे० 'मझोला' ।

मझु*-सर्व० [हिं० मैं] १. मैं । २. मेरा ।

मझोला-वि० [सं० मध्य] १. मझला । मध्य या बीच का । २.मध्यम आकार का ।

मझोली-स्त्री० [हिं० मझोला] एक प्रकार की बैल गाड़ी ।

मटक-स्त्री० [सं० मट=चलना] १.मटकने की क्रिया या भाव । २. गति । चाल ।

मटकना-अ० [सं० मट=चलना] १. लचककर नखरे से चलना । २ नखरे से हाथ या आँखें नचाना ।

मटकनि*-स्त्री० [हिं० मटकना] १. दे० 'मटक' । २. नाचना ।

मटका-पुं० [हिं० मिट्टी] मिट्टी का बड़ा घड़ा । कमोरा । माट ।

मटकाना-स० [हिं० 'मटकना' का स०] नखरे से स्त्रियों की तरह उँगलियों, हाथ, आँख आदि नचाना ।

मटकी-स्त्री० [हिं० मटका] छोटा मटका । स्त्री० दे० 'मटक' ।

मटकीला-वि० [हिं० मटकना] मटकने-वाला ।

मटकौअल-स्त्री० दे० 'मटक' ।

मट-मैला-वि० [हिं० मिट्टी+मैला] मिट्टी के रंग का । खाकी ।

मटर-पुं० [सं० मधुर] एक प्रसिद्ध द्विदल अन्न ।

मटर-गश्त-पुं० [हिं० मट्टर=मंद+फा० गश्त] सैर-सपाटा ।
मटरगश्ती-स्त्री० दे० 'मटरगश्त' ।
मटिआना-स० [हिं० मिट्टी] १. मिट्टी लगाकर मांजना या साफ करना । २. मिट्टी से ढांकना । ३ मिट्टी लगाना ।
मटिआमेट-वि० दे० 'मलिया-मेट' ।
मटिआला(टीला)-वि०दे०'मट मैला'।
मटुक।-पुं० दे० 'मुकुट' ।
मटुका-पुं० दे० 'मटका' ।
मट्टी-स्त्री०=मिट्टी ।
मट्टर।-वि०[सं०मन्द ?] धीरे धीरे काम करने या चलनेवाला । सुस्त ।
मट्ठा-पुं० [सं० मंथन] मथकर मक्खन निकाल लेने पर बचा हुआ दही का पानी । मही । छाछ ।
मट्ठी-स्त्री० [देश०] एक पकवान ।
मठ-पुं० [सं०] १ निवास-स्थान । २. साधुओं के रहने का मकान । आश्रम ।
मठधारी-पुं० [सं० मठधारिन्] किसी मठ का अधिकारी महन्त । मठाधीश ।
मठरी-स्त्री० दे० 'मट्ठी' ।
मठा-पुं० दे० 'मट्ठा' ।
मठाधीश-पुं० दे० 'मठधारी' ।
मठिया-स्त्री० [हिं० मठ] छोटा मठ ।
।स्त्री० दे० 'मोंठी' ।
मठोर-स्त्री० [हिं० मट्ठा] दही मथने और मट्ठा रखने की मटकी ।
मड़ई।-स्त्री०=झोंपड़ी ।
मड़क-स्त्री० [अनु०] भेद । रहस्य ।
मड़वा।-पुं० दे० 'मंडप' ।
मड़हट*-पुं० दे० 'मरघट' ।
मड़ुआ-पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा अन्न ।
।पुं० दे० 'मंडप' ।
मड़ैया-स्त्री०=झोंपड़ी ।
मढ़-वि०[हिं०मट्टर] १.अड़कर बैठनेवाला । २.जल्दी अपनी जगह से न हिलनेवाला ।
मढ़ना-स० [सं० मंडन] [प्रे० मढ़वाना, मढ़ाना] १. चारो ओर लगाना या लपेटना । २. बाजे के मुँह पर चमड़ा आदि लगाना । ३. पुस्तक पर जिल्द लगाना । ४. चित्र, दर्पण आदि चौखटे में जड़ना । ५. किसी के सिर काम या दोष थोपना ।
*अ० १. आरंभ होना । ठनना । २.मचना ।
मढ़ाई-स्त्री० [हिं० मढ़ना] मढ़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।
मढ़ी-स्त्री० [सं० मठ] १. छोटा मठ । २. छोटा घर । ३. समाधि ।
मणि-स्त्री० [सं०] १. बहुमूल्य रत्न । जवाहिर । २.श्रेष्ठ और परम योग्य व्यक्ति।
मणिधर-पुं० [सं०] सांप ।
मणिबंध-पुं० [सं०] कलाई । गट्टा ।
मतंग(ज)-पुं०[सं०]१.हाथी । २.बादल ।
मतंगी-पुं० [सं० मतंगिन्] हाथी का सवार ।
मत-पुं० [सं०] १ सम्मति । राय ।
मुहा०-*मत उपाना = सम्मति स्थिर करना ।
२. धर्म । मजहब । ३. पंथ । संप्रदाय । ४. भाव । आशय । ५. जिस विषय में मनुष्य रस लेता या जानकारी रखता हो, उसके सम्बन्ध में उसका प्रकट किया हुआ विचार या सम्मति । ६. निर्वाचन आदि के समय किसी व्यक्ति के पक्ष में दी जानेवाली सम्मति । (वोट)
क्रि० वि० [सं०मा] न । नहीं । (निषेध)
मत-दाता-पुं० [सं०] वह जो प्रतिनिधि निर्वाचित करने अथवा उसके निर्वाचन

के सम्बन्ध में मत (वोट) देने का अधिकारी हो। (वोटर)

मत-दान-पुं० [सं०] प्रतिनिधि के निर्वाचन के सम्बन्ध में मत (वोट) देने की क्रिया या भाव। (वोटिंग, पोलिंग)

मतना*-अ०[सं०मति] मत स्थिर करना। अ० [सं० मत्त] मत्त या पागल होना।

मत-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसपर निर्वाचित होनेवाले व्यक्तियों के नाम या विशिष्ट चिह्न रहते हैं और जिसपर अपनी ओर से कोई चिह्न लगाकर मतदाता किसी व्यक्ति के पक्ष में अपना मत (वोट) देता है। (बेलट पेपर)

मत-पेटिका-स्त्री०[सं०] वह पेटी जिसमें निर्वाचक या मतदाता अपना मत-पत्र छोड़ता या डालता है। (बैलट बॉक्स)

मत-भिन्नता-स्त्री० दे० 'मत-भेद'।

मत-भेद-पुं०[सं०] दो या अधिक व्यक्तियों या पक्षों के मत एक-से न होना। आपस में मत न मिलना।

मतलब-पुं० [अ०] १. तात्पर्य। आशय। २. अर्थ। मानी। ३. स्वार्थ। ४. उद्देश्य। ५. सम्बन्ध। लगाव।

मतलबी-वि० [अ० मतलब] स्वार्थी।

मतली-स्त्री० दे० 'मिचली'।

मतवाला-वि०[सं०मत्त+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० मतवाली] १. नशे में चूर। २. हर्ष से उन्मत्त। मस्त। ३. पागल। पुं०१. नीचे खड़े हुए शत्रुओं को मारने के लिए किले या पहाड़ पर से लुढ़काया जानेवाला भारी पत्थर। २. एक प्रकार का गावदुमा लंबा खिलौना।

मताधिकार-पुं० [सं०] निर्वाचन में मत (वोट) देने का अधिकार।

मतानुयायी-पुं० [सं०] किसी धार्मिक संप्रदाय या किसी व्यक्ति के मत को माननेवाला। मतावलम्बी।

मतारी†-स्त्री०=माता।

मतावलंबी-पुं० दे० 'मतानुयायी'।

मति-स्त्री० [सं०] बुद्धि। समझ। क्रि० वि० दे० 'मत'। (नहीं)

मतिमान्-वि० [सं०] बुद्धिमान्।

मतिमाह*-वि० दे० 'मतिमान्'।

मतीरा-पुं० [सं० मेट] तरबूज।

मतीस-पु० [?] एक प्रकार का बाजा।

मतेई*-स्त्री० दे० 'विमाता'।

मतैक्य-पुं० [सं०] किसी विषय में सब या कुछ लोगों का विचार या मत एक होना। ऐकमत्य।

मत्कुण-पुं० [सं०] खटमल।

मत्त-वि० [सं०] मतवाला। मस्त।

मत्ता-प्रत्य० [सं० मत् (मान्)+ता] सं० मान् से बननेवाला भाववाचक रूप। जैसे-बुद्धिमान् से बुद्धिमत्ता।

मत्था†-पुं० दे० 'माथा'।

मत्थे-क्रि० वि० [हिं० माथा] १. मस्तक या सिर पर। जैसे-किसी के मत्थे मढ़ना। २. आसरे या भरोसे पर।

मत्सर-पुं०[सं०][भाव०मत्सरता,मात्सर्य, वि० मत्सरी, मात्सरिक] १. डाह। ईर्ष्या। जलन। २. क्रोध। गुस्सा।

मत्स्य-पुं० [सं०] १. बड़ी मछली। २. विष्णु का पहला अवतार। ३. प्राचीन विराट देश का एक नाम।

मथन-पुं० [सं०] [वि० मथित] १. मथने की क्रिया या भाव। बिलोना। २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। वि० मारने या नष्ट करनेवाला। (यौ० में)

मथना-स० [सं० मथन] १. मथानी या लकड़ी आदि से तरल पदार्थ तेजी से

चलाना। बिलोना। २. नष्ट करना। ध्वंस करना। ३. घूम-घूमकर पता लगाना। छानना। ४. अच्छी तरह विचार करना। पुं० मथानी। रई।

मथनियाँ*-स्त्री० दे० 'मथनी'।

मथनी-स्त्री०[हिं०मथना] १.दही मथने का बरतन। २.दे०'मथानी'। ३.दे०'मथन'।

मथवाहु*-पुं० दे० 'महावत'।

मथानी-स्त्री० [हिं० मथना] दही मथने के लिए काठ का एक प्रकार का डंडा।

मथित-वि० [सं०] मथा हुआ।

मथी*-स्त्री० दे० 'मथानी'।

मथूल*-पुं० दे० 'मस्तूल'।

मथौत-पुं० दे० 'प्रत्याय'। (परि०)

मथ्या-पुं० दे० 'माथा'।

मदंध*-वि० दे० 'मदांध'।

मद-पुं० [सं०] १. हर्ष। आनन्द। २. मतवाले हाथियों की कनपटियों से बहनेवाला गंधयुक्त द्रव। दान। ३. वीर्य्य। ४.कस्तूरी। ५ मद्य। शराब। ६ नशा। ७. अहंकार। घमंड। ८. दे० 'मस्ती'। स्त्री० [अ०] १. विभाग। सरिश्ता। २. खाता। ३. कोई एक रकम या बात। पद। (आइटम)जैसे-एक मद छूट गई है।

मदक-स्त्री० [हिं० मद] अफीम के सत से बननेवाला एक मादक पदार्थ, जो तम्बाकू की तरह पीया जाता है।

मदकची-वि० [हिं० मदक] वह जो मदक पीता हो।

मदकल-वि० [सं०] मतवाला। मस्त।

मदगल-वि० [हिं० मदकल ; मस्त।

मद-जल-पुं०[सं०] हाथी का मद। दान।

मदद-स्त्री० [अ०] १. सहायता। २. किसी काम पर लगाये हुए मजदूर आदि।

मददगार-वि० [फ़ा०] सहायक।

मदन-पुं० [सं०] १. कामदेव। २.भौंरा। ३. मैना पक्षी। ४. प्रेम।

मदन-मस्त-पुं० [हिं० मदन+मस्त] चम्पा की तरह का एक प्रकार का फूल।

मदन-महोत्सव-पुं० दे० 'वसन्तोत्सव'।

मदनमोहन-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

मदनोत्सव-पुं० दे० 'वसन्तोत्सव'।

मद-मत्त-वि० [सं०] मतवाला।

मदर*-पुं० [सं० मंडल] मँडलाने की क्रिया या भाव।

मदरसा-पुं०=पाठशाला।

मदांध-वि० [सं०] जो मद के कारण अन्धा हो रहा हो। मदोन्मत्त।

मदाखिलत-स्त्री० [अ०] १.दखल देना। हस्तक्षेप। २. दखल जमाना।

मदानि*-वि० [?] मंगलकारक।

मदार-पुं० दे० 'आक'। (पौधा)

मदारी-पुं० [अ० मदार] १. वह जो बंदर, भालू आदि नचाकर उनका तमाशा दिखाता है। कलंदर। २. जाग आदि के तमाशे दिखानेवाला। बाजीगर।

मदिर-वि० [सं०] १. मत्तता उत्पन्न करनेवाला। मस्त करनेवाला। २. नशीला।

मदिरा-स्त्री० [सं०] मद्य। शराब।

मदिराभ-वि० [सं०] १. मदिरा की मत्तता से भरा हुआ। २. मस्त। मतवाला। ३. मदिरा के रंग या गंध का।

मदिरालस-पुं० [सं० मदिरा+अलस] मदिरा से उत्पन्न होनेवाला आलस्य। खुमारी।

मदीय-वि० [सं०] [स्त्री० मदीया] मेरा।

मदीयून-वि० [अ०] कर्जदार। ऋणी।

मदीला-वि० [हिं० मद] नशीला।

मदोद्धत, मदोन्मत्त-वि० दे० 'मदांध'।

मदोवै*-स्त्री० दे० 'मंदोदरी'।

मद्दत*-स्त्री० [अ० मदद] सहायता।

स्त्री० [अ० मद्ह] प्रशंसा। तारीफ।
मद्धिम*-वि०[सं०मध्यम]१.मध्यम। कम अच्छा। २. कुछ खराब या घटकर।
मद्धे-अव्य० [सं० मध्ये] १. बीच में। २ विषय में। सम्बन्ध में। ३. लेखे या हिसाब में। बाबत। (ऑन एकाउन्ट ऑफ)
मद्य-पुं० [सं०] मदिरा। शराब।
मद्यप-पुं०[सं०] मद्य पीनेवाला। शराबी।
मद्र-पुं० [सं०] १. उत्तर कुरु नामक प्राचीन देश। २. रावी और झेलम नदियों के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम।
मध(धि)*-पुं० दे० 'मध्य'।
अव्य० [सं० मध्य] में।
मधिम-वि०१.दे०'मध्यम'।२.दे०'मद्धिम'।
मधु-पुं० [सं०] १ शहद। २. मकरन्द। ३.वसन्त ऋतु। ४. चैत्र का महीना। चत। ५. अमृत। ६. जल। पानी।
वि० [सं०] १. मीठा। २. स्वादिष्ट।
मधु-कंठ-पुं० [सं०] कोयल। (पक्षी)
मधुकर-पुं० [सं०] [स्त्री०मधुकरी] भौंरा।
मधुकरी-स्त्री० [सं० मधुकर] साधु-संन्यासियों की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ भोजन लिया जाता है।
मधुप-पुं० [सं०] भौंरा।
मधुपति-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधुपर्क-पुं० [सं०] देवताओं को चढ़ाने के लिए एक में मिलाया हुआ दही, घी, जल, चीनी और शहद।
मधुपुरी-स्त्री० [सं०] मथुरा नगरी।
मधु-मक्खी-स्त्री० [सं० मधुमक्षिका] फूलों का रस चूसकर मधु एकत्र करने-वाली मक्खी। मुमाखी।
मधु-मक्षिका-स्त्री० दे० 'मधु-मक्खी'।
मधु-मेह-पुं० [सं०] बढ़ा हुआ प्रमेह रोग जिसमें मूत्र अधिक और गाढ़ा होता है।
मधुर-वि० [सं०] [भाव० मधुरता, *मधुराई] १. स्वाद में मीठा। २. सुनने में प्यारा। ३. सुंदर। ४. कोमल।
मधुरा-स्त्री० [सं०] १. मथुरा नगरी। २. साहित्य में वह शब्द-योजना जिससे रचना में माधुर्य या मिठास आती है।
मधुराना*-अ० [हिं० मधुर + आना (प्रत्य०)] १.मीठा होना। २.सुन्दर होना।
मधुरान्न-पुं० [सं०] मिठाई।
मधुरिपु-पुं० दे० 'मधुसूदन'।
मधुरिमा-स्त्री० [सं० मधुरिमन्] १. मधुरता। मिठास। २. सुन्दरता। सौन्दर्य।
मधुरी*-स्त्री० दे० 'माधुर्य'।
मधु-वन-पुं० [सं०] १. व्रज का एक वन। २.किष्किन्धा के पास का एक वन।
मधुसूदन-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
मधूक-पुं०[सं०] महुआ। (पेड़ और फल)
मधूकड़ी(री)-स्त्री० दे० 'मधुकरी'।
मध्य-पुं० [सं०] १. बीच का भाग। २. कमर। कटि। ३. अंतर। फरक।
मध्यक-पुं० [सं०] कई संख्याओं, मूल्यों या मानों आदि को एक में मिलाकर उनकी समष्टि का किया हुआ सम विभाग जो उनका मध्यम मान सूचित करता है। बराबर का पड़ता। सामान्य। (एवरेज)
वि० उक्त प्रकार के मध्यम मानवाला। न बहुत छोटा और न बहुत बड़ा। (एवरेज)
मध्य-गत-वि० [सं०] बीच या मध्य का।
मध्य देश-पुं० [सं०] भारतवर्ष का वह मध्य भाग या प्रदेश जिसकी सीमा उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग है।
मध्यम-वि० [सं०] १. मध्य का। २. न बहुत बड़ा, न बहुत छोटा। औसत मान

का। मध्यक। ३. दे० 'मद्धिम'।
पुं० संगीत के सात स्वरों में से चौथा।
मध्यम पुरुष-पुं० [सं०] वह पुरुष जिससे बात की जाय। (व्याकरण)
मध्यमा-स्त्री० [सं०] बीच की उँगली।
मध्यमान-पुं० [सं०] [वि० मध्यमानिक] बराबर का पड़ता। मध्यक। औसत।
वि० १ दे० 'मध्यक'। २.दे० 'मध्या' २.।
मध्य-युग-पुं० [सं०] १ प्राचीन युग और आधुनिक युग के बीच का समय। २. युरोप, एशिया आदि के इतिहास में ईसवी छठी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक का समय।
मध्य-युगीन-वि० [सं०] मध्य-युग का।
मध्यवर्त्ती-वि० [सं०] बीच का।
मध्यस्थ-वि० [सं०] जो बीच में हो। पुं० [भाव० मध्यस्थता] १. वह जो बीच में पड़कर किसी प्रकार का विवाद या विरोध दूर करता हो। आपस में मेल या समझौता करानेवाला। (मीडिएटर) २. वह जो दो दलों या पक्षों के बीच में रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन में कुछ सुभीते उत्पन्न करके लाभ उठाता हो। जैसे-उत्पादकों और उप-भोक्ताओं में व्यापारी; अथवा राज्य और कृषकों में जमींदार आदि। (मिडिल मैन)
मध्या-स्त्री० [सं०] १. काव्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम समान भाव से हों। २.नाप, मान, समय आदि के विचार से दो या दूसरों के बीच में पड़नेवाली नाप या मान। (मीन)
मध्यावकाश-पुं० [सं०] न्याय, पढ़ाई, खेल आदि में, बीच में थोड़े समय के लिए होनेवाला वह अवकाश जो लोगों के सुस्ताने, जल-पान आदि करने के लिए मिलता है। (रिसेस)
मध्याह्न-पुं० [सं०] ठीक दोपहर।
मनः पूत-वि० [सं०] १. मन-चाहा। २. यथेष्ट। ३. मन को प्रसन्न करनेवाला।
मन-पुं०[सं०मनस्]१.प्राणियों में अनुभव, संकल्प-विकल्प, इच्छा, विचार आदि करनेवाली शक्ति। २. अंतःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है।
मुहा०-**मन टूटना**=साहस या उत्साह न रहना। **मन बढ़ना**=उत्साह बढ़ना। **मन बूझना**=मन का थाह लेना। **मन हरा होना**=प्रसन्न होना। **मन के लड्डू खाना**=व्यर्थ आशा रखकर प्रसन्न होना। **मन चलना**=इच्छा होना। **मन डोलना**= १. चित्र चचल होना। २. लालच होना। **मन धरना**=ध्यान देना। **मन तोड़ना या हारना**=हिम्मत छोड़ना। **मन फेरना**=ध्यान हटाना। **मन बढ़ाना**=साहस या उत्साह बढ़ाना। **मन में बसना**= बहुत पसन्द आना। **मन बहलाना**= दुःखी चित्त को किसी काम में लगाकर प्रसन्न करना। **मन भरना**=सन्तोष या तृप्ति होना। **मन मानना**=१. सन्तोष होना। २. निश्चय या प्रतीति होना। ३ प्रेम होना। **मन में रखना**=१. स्मरण रखना। २. छिपा रखना। (बात) **मन में लाना** = सोचना। ध्यान करना। **मन मिलना**=प्रकृति या विचार में समानता होना। **मन मारना**=१. उदास होना। २.इच्छा को रोकना। **मन मैला या मोटा करना**=मन में दुर्भाव रखना। **मन रखना** = संतुष्ट करना। **मन लगना**=१. जी लगाना। २. प्रेम करना। **मन से उतरना**=१. मन में

अनुराग या आदर न रह जाना। २. भूल जाना।
३. विचार। इरादा।
पुं० [सं० मणि] मणि। रत्न।
पुं०[सं०मान]चालीस सेर की एक तौल।
मनकना*-अ० [अनु०] हिलना-डोलना।
मनकरा*-वि० दे० 'चमकीला'।
मनका-पुं०[सं०मणिका] माला का दाना।
पुं० [सं० मन्यका] गरदन के पीछे रीढ़ की सबसे ऊपर की हड्डी।
मुहा०-मनका ढलना या ढरकना= मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।
मन-कामना-स्त्री० दे० 'मनोकामना'।
मनकूला-वि० [अ० मन्कूल:] जो स्थिर या स्थावर न हो। चल।
यौ०-जायदाद मनकूला=चल सम्पत्ति। गैर-मनकूला=स्थिर। स्थावर।
मन-गढ़ंत-वि० [हिं० मन+गढ़ना] जो यथार्थ न हो, केवल कल्पित हो। अपने मन से गढ़ा हुआ। कपोल-कल्पित।
स्त्री० केवल मन की कल्पना।
मन-चला-वि० [हिं० मन+चलना] १. साहसी। २. रसिक।
मन-चाहा-वि० [हिं० मन+चाहना] १. इच्छित। चाहा हुआ। २. यथेष्ट।
मन-चीतना*-अ० [हिं० मन+चाहना] सबको अच्छा लगना।
मन-चीता-वि० [हिं० मन+चेतना] [स्त्री० मन-चीती] मन में सोचा हुआ।
मनन-पुं० [सं०] १. चिंतन। सोचना। २. अच्छी तरह समझकर किया जानेवाला अध्ययन या विचार।
मननशील-वि० [सं० मनन+शील] जो बराबर मनन या चिंतन करता रहता हो।
मन-वांछित-वि० दे० 'मनोवांछित'।
मन-भाया-वि० [हिं०मन+भाना] [स्त्री० मन-भाई] १.जो मन को भावे। २.प्यारा।
मन-भावता(वन)-वि०दे० 'मन-भाया'।
मनमत*-वि० दे० 'मद-मत्त'।
मनमथ-पुं० दे० 'मन्मथ'।
मन-माना-वि० [हिं० मन+मानना] [स्त्री० मन-मानी] १. जो अच्छा लगे। २. यथेच्छ। ३. जो कुछ मन में आवे।
मन-मोटाव-पुं० [हिं० मन+मोटा] मन में होनेवाला वैमनस्य या विराग।
मन-मोदक-पुं० [हिं० मन+मोदक] मन में सोची हुई सुखद, पर असम्भव बात। मन के लड्डू।
मन-मोहन-वि० [हिं० मन+मोहन] [स्त्री० मन-मोहिनी] १. मन को मोहने-वाला। लुभावना। २. प्रिय। प्यारा।
पुं० श्रीकृष्ण।
मन-मौजी-वि० [हिं० मन+मौज] मन-माने काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी।
मनरंजन-वि०, पुं० दे० 'मनोरंजन'।
मनशा-स्त्री० [अ०] १. विचार। इरादा। २. तात्पर्य। आशय। मतलब।
मनसना*-अ० [हिं० मानस] १. इच्छा करना। २. संकल्प या निश्चय करना।
स० संकल्प पढ़कर दान करना।
मनसब-पुं० [अ०] १. पद। ओहदा। २. अधिकार।
मनसबदार-पुं० [फा०] १. वह जो किसी मनसब पर हो। ओहदेदार। २. मुगल शासन-काल का एक पदाधिकारी।
मनसा-स्त्री० [सं०] एक देवी का नाम।
क्रि०वि० मन से। इच्छा या विचार से।
†स्त्री० दे० 'मनशा'।
मनसा-कर-वि० [हिं० मनसा+कर] मनोरथ पूरा करनेवाला।

मनसाना*-अ० [हिं० मनसा] उत्साह या उमंग में आना।
स० हिं० 'मनसना' का प्रे०।
मनसायन-पुं० [हिं० मानुस] चहल-पहल। रौनक।
मनसिज-पुं० [सं०] कामदेव।
मनसूख-वि० [अ०] [भाव० मनसूखी] अप्रामाणिक ठहराया हुआ। अतिवर्तित।
मनसूबा-पुं० [अ०] १. युक्ति। ढंग। मुहा०-मनसूबा बाँधना=युक्तिसोचना। २. इरादा। विचार।
मनस्ताप-पुं० [सं०] १. मन में होनेवाला कष्ट। २. पश्चात्ताप। पछतावा।
मनस्वी-वि० [सं० मनस्विन्] [स्त्री० मनस्विनी, भाव० मनस्विता] १. बुद्धिमान्। २ स्वेच्छाचारी।
मनहर-वि० दे० 'मनोहर'।
मनहार(ी)-वि० दे० 'मनोहारी'।
मनहुँ*-अव्य० दे० 'मानों'।
मनहूस-वि० [अ०] [भाव० मनहूसियत, मनहूसी] १. अशुभ। २. देखने में कुरूप और अप्रिय। ३ सदा दुःखी, चुप और उदास रहनेवाला।
मना-वि० [अ०] निषिद्ध। वर्जित।
मनाक(ग)*-वि० [सं० मनाक्] थोड़ा।
मनादी-स्त्री० दे० 'मुनादी'।
मनाना-स०[हिं०'मानना' का प्रे०] १.रूठे हुए को प्रसन्न करना। २. राजी करना। ३. ईश्वर, देवता आदि से किसी काम या बात के लिए प्रार्थना करना।
मनावन-पुं० [हिं० मनाना] रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव।
मनाही-स्त्री० [हिं० मना] मना करने की क्रिया या भाव। निषेध। रोक।
मनिया-स्त्री० [सं० माणिक्य] १. दे० 'मनका'। २. छोटी माला। कंठी।
मनियार*-वि० [हिं० मणि] १. उज्ज्वल। चमकदार। २. सुन्दर। मनोहर।
पुं० दे० मनिहार'।
मनिहार-पुं० [सं० मणिकार] [स्त्री० मनिहारिन, मनिहारी] चुड़िहारा।
मनी*-स्त्री० [हिं० मान] अहंकार।
स्त्री०[सं०मणि] १ दे०'मणि'। २.वीर्य्य।
मनीषा-स्त्री० [सं०] बुद्धि। अक्ल।
मनीषी-वि० [सं०] १. पंडित। ज्ञानी। २. बुद्धिमान्। अक्लमंद।
मनु-पुं० [सं०] १. ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं। २. अन्तःकरण। मन। ३. वैवस्वत मनु। ४ चौदह की संख्या।
*अव्य० [हिं० मानना] मानों। जैसे।
मनुआँ*-पुं०१.दे०'मन'। २.दे०'मनुष्य'। स्त्री०[देश०] एक प्रकार की कपास। नरमा।
मनुज-पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।
मनुजोचित-वि० [सं०] जो मनुष्य के लिए उचित हो। मनुष्य के उपयुक्त।
मनुष*-पुं० [सं० मनुष्य] १. मनुष्य। आदमी। २. पति। खसम।
मनुष्य-पुं० [सं०] वह द्विपद प्राणी जो अपने बुद्धि-बल के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है और जिसके अन्तर्गत हम, आप और सब लोग हैं। आदमी। नर।
मनुष्य-गणना-स्त्री० [सं०] किसी स्थान या देश के निवासियों की होनेवाली गिनती। (सेन्सस)
मनुष्यता-स्त्री०[सं०]१.'मनुष्य' का भाव। २. मनुष्यों के लिए उपयुक्त या आवश्यक गुण। शील। ३. शिष्टता।
मनुष्यत्व-पुं० दे० 'मनुष्यता'।
मनुष्य-लोक-पुं० [सं०] यह संसार।

मर्त्यलोक। जगत।

मनुसाई*-स्त्री० [हिं० मनुष्य+आई] १. पुरुषार्थ। पराक्रम। २. मनुष्यता।

मनुहार-स्त्री० [हिं० मान+हरना] १. मनावन। खुशामद। २.विनय। प्रार्थना। ३.सत्कार। आदर। ४ शान्ति। ५.तृप्ति।

मनुहारना*-स० दे० 'मनाना'।

मनौं*-अव्य० दे० 'मानो'।

मनोकामना-स्त्री० [हिं० मन+कामना] मन की इच्छा। अभिलाषा।

मनोगत-वि० [सं०] मन में होने या आनेवाला। (विचार आदि)

मनोज-पुं० [सं०] कामदेव।

मनोज्ञ-वि० [सं०] सुदर। मनोहर।

मनोदेवता-पुं० [सं०] विवेक।

मनोनिग्रह-पुं० [सं०] मन का निग्रह। मन को रोकना या वश में रखना।

मनोनियोग-पुं० [सं०] किसी काम में अच्छी तरह मन लगाना।

मनोनीत-वि० [सं०] १. मन के अनुकूल। २. पसन्द किया या चुना हुआ।

मनोभाव-पुं० [सं०] मन में उत्पन्न होनेवाला भाव।

मनोभिराम-वि० [सं०] सुन्दर। मनोहर।

मनोमय-वि० [सं०] १. मन से युक्त या पूर्ण। २. मानसिक। मन-सम्बन्धी।

मनोमय कोश-पुं० [सं०] पाँच कोशों में से वह जिसमें मन, अहंकार और कर्मेन्द्रियाँ मानी जाती है। (वेदान्त)

मनोमालिन्य-पुं० [सं०] मन-मुटाव। मन में रहनेवाला दुर्भाव। रंजिश।

मनोयोग-पुं० [सं०] १. मन की एकाग्रता। २. दे० 'मनोनियोग'।

मनोरंजक-वि० [सं०] मन को बहलाने या प्रसन्न करनेवाला। (कार्य या पदार्थ)

मनोरंजन-पुं० [सं०] मन को प्रसन्न करनेवाली बात या काम। मनोविनोद। दिल-बहलाव।

मनोरथ-पुं० [सं०] मन की इच्छा या अभिलाषा।

मनोरम-वि० [सं०] [स्त्री० मनोरमा, भाव० मनोरमता] मनोहर। सुन्दर।

मनोरमा-स्त्री० [सं०] सात सरस्वतियों में से एक।

मनोरा-पुं० [सं० मनोहर] गोबर से बने हुए वे चित्र या मूर्त्तियां जो दीपावली के बाद दीवार पर बनाकर पूजी जाती हैं।

मनोरा झूमक-पुं० [?] एक प्रकार का गीत।

मनोलीला-स्त्री० [सं०] ऐसी कल्पित बात या विचार जो केवल मन में उठी हो, पर जिसका कोई वास्तविक आधार या अस्तित्व न हो। (फैन्टम)

मनोवांछा-स्त्री० दे० 'मनाकामना'।

मनोविकार-पुं० [सं०] मन में उठनेवाले भाव। जैसे-क्रोध, दया, प्रेम आदि।

मनोविज्ञान-पुं० [सं०] [वि० मनोवैज्ञानिक] वह शास्त्र जिसमें चित्त को वृत्तियों या मन में उठनेवाला विचारों आदि का विवेचन होता है। (साइकॉलोजी)

मनोविश्लेषण-पुं० [सं०] इस बात का विश्लेषण या जांच कि मनुष्य का मन किन अवस्थाओं में किस प्रकार कार्य करता है। (साइको-अनैलिसिस)

मनोवृत्ति-स्त्री० [सं०] १ मन के चलने या काम करने का ढंग। २. मन की स्थिति।

मनोवेग-पुं० [सं०] मनोवृत्ति।

मनोसर*-पुं० दे० 'मनोविकार'।

मनोहर-वि० [सं०] [भाव० मनोहरता] १. मन को आकर्षित करनेवाला। २.सुन्दर।

मनोहारी-वि० दे० 'मनोहर'।
मनौति(ती)*-स्त्री० दे० 'मन्नत'।
मन्नत-स्त्री० [हिं० मनाना] किसी कामना की पूर्ति के लिए मानी हुई किसी देवता की पूजा। मानता। मनौती।
मुहा०-मन्नत मानना=कामना-पूर्ति के लिए पूजा आदि करने का संकल्प करना।
मन्वंतर-पुं० [सं०] इकहत्तर चतुर्युगियों का काल जो ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग माना गया है।
मम-सर्व० [सं०] मेरा (मेरी)।
ममता-स्त्री० [सं०] १. अपनेपन का भाव। ममत्व। २ स्नेह। प्रेम। ३. लोभ। लालच। ४. मोह। माया।
ममरखी*-स्त्री० [अ० मुबारक] बधाई।
ममाखी-स्त्री० दे० 'मधु-मक्खी'।
ममास*-पुं० दे० 'मवास'।
ममिया-वि० [हिं० मामा] सम्बन्ध में मामा के स्थान का। जैसे-ममिया ससुर।
ममीरा-पुं० [अ० मामीरान] एक पौधे की जड़ जो आँख के रोगों की दवा है।
मयंक-पुं० [सं० मृगाङ्क] चन्द्रमा।
मय-पुं० [सं०] १ पुराणों में उल्लिखित एक प्रसिद्ध दानव जो बहुत बड़ा शिल्पी था।
प्रत्य० [सं०] [स्त्री० मयी] एक प्रत्यय जो तद्रूप, विकार और प्रचुरता का बोधक है। जैसे-राममय, दुःखमय, जलमय।
मयगल-पुं० [सं० मदकल] मत्त हाथी।
मयन*-पुं० [सं० मदन] कामदेव।
मयमंत-वि० [सं० मदमत्त] मस्त।
मयस्सर-वि० [अ०] प्राप्त। सुलभ।
मया*-स्त्री० दे० 'माया'।
मयार*-वि० [सं० माया] दयालु।
मयूख-पुं० [सं०] १. किरण। रश्मि। २. दीप्ति। चमक। ३. प्रकाश।
मयूर-पुं० [सं०] मोर। (पक्षी)
मरंद*-पुं० दे० 'मकरंद'।
मरकत-पुं० [सं०] पन्ना। (रत्न)
मरकना-अ० दे० 'मुड़कना'।
मरगजा*-वि० [हिं० मलना+गींजना] मला-दला। मसला हुआ।
मरघट-पुं० दे० 'मसान'।
मरज-पुं० [अ० मर्ज़] रोग। बीमारी।
मरजाद*-स्त्री० [सं० मर्यादा] १.सीमा। २. प्रतिष्ठा। ३. रीति। परिपाटी।
मर-जिया-वि० [हिं० मरना+जीना] १. मरकर जीनेवाला। २. मरणासन्न। ३. जो प्राण देने पर उतारू हो।
पुं० पनडुब्बा। गोताखोर। जिवकिया।
मरजी-स्त्री० [अ०] १. इच्छा। २. कृपा। ३.प्रसन्नता। ४.आज्ञा। स्वीकृति।
मरण-पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।
मरणासन्न-वि० [सं०] जो मरने के बहुत समीप हो।
मरणोत्तर(क)-वि० [सं०] किसी की मृत्यु के उपरान्त का। किसी के मरने के बाद होनेवाला। (पोस्ट-ह्यूमस)
मरत*-पुं० दे० 'मृत्यु'।
मरतबा-पुं० [अ० मर्त्तबः] १. पद। ओहदा। २. बार। दफा।
मरद*-पुं० दे० 'मर्द'।
मरदना*-स० [सं० मर्दन] १.मसलना। मलना। २. नष्ट करना। ३. गूँधना।
मरदानगी-स्त्री० [फा०] १. पौरुष। २. वीरता। शूरता। ३. साहस। हिम्मत।
मरदाना-वि० [फा०] १.पुरुष सम्बन्धी। २. पुरुषों का-सा। ३. वीरोचित।
पुं० [स्त्री० मरदानी] वीर। बहादुर।
मरना-अ० [सं० मरण] १. प्राणियों

की सब शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अन्त होना। शरीर से प्राण निकलना। २ मरने का सा कष्ट उठाना। मुहा०-किसी पर मरना=आसक्त होना। मर मिटना=प्रयत्न करते करते बहुत बुरी दशा में पहुँचना। मरा जाना=बहुत व्याकुल होना। मर लेना= प्रयत्न करते करते मरने का-सा कष्ट भोग चुकना। जैसे-हम तो इसके लिए मर लिये। पानी मरना=१. दीवार, छत आदि में पानी धँसना। २.किसी पर कोई कलंक लगना। ३ शील या संकोच खो देना। ३.कुम्हलाना। सूखना। ४. लज्जा आदि के कारण दबना। ५. बे-काम हो जाना। ६. किसी मनोवेग का दबकर नहीं के समान होना। ७. खेल में, हारने पर कुछ खेलने योग्य न रह जाना।

मरनी-स्त्री० [हिं० मरना] १. मृत्यु। मौत। २. मृतक के लिए उसके सम्बन्धियों द्वारा मनाया जानेवाला शोक। ३ मृतक सम्बन्धी क्रिया-कर्म।

मरम-पुं० दे० 'मर्म'।

मरमर-पुं० [यू०] एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर। जैसे-संग मरमर।

मरमराना-अ०, स० [अनु०] १. मर-मर शब्द होना या करना। २. इस प्रकार दबना या दबाना कि मर-मर शब्द हो।

मरमी*-वि० दे० 'मर्मज्ञ'।

मरम्मत-स्त्री० [अ०] किसी वस्तु का टूटा-फूटा या बिगड़ा हुआ अंश ठीक करने का काम। दुरुस्ती। (रिपेयर्स)

मरसा-पुं० [सं० मारिष] एक साग।

मरहट*-पुं० दे० 'मसान'।

*स्त्री० [देश०] मोठ। (अन्न)

मरहठा-पुं० [सं० महाराष्ट्र] [स्त्री० मरहठिन] महाराष्ट्र देश का निवासी।

मरहठी-स्त्री० दे० 'मराठी'।

मरहम-पुं० [अ०] घाव पर लगाने का औषध का गाढ़ा, चिकना लेप।

मरहला-पुं० [अ०] १. पड़ाव। २. कठिन काम या प्रसंग। विकट समस्या।

मराठा-पुं० दे० 'मरहठा'।

मराठी-स्त्री० [सं० महाराष्ट्री] महाराष्ट्र देश की भाषा।

मरातिब-पुं० [अ०] १. पद। ओहदा। २. उत्तरोत्तर या क्रमशः आनेवाली अवस्थाएँ। ३. मकान का खण्ड। तल्ला। मंजिल। ४. पताका। झंडा।

मरागल*-वि० [हिं० मारना] १. जिसने कई बार मार खाई हो। २. निःसत्व। निस्सार। ३. शक्तिहीन।

पुं० घाटा। टोटा। हानि।

मराल-पुं० [सं०] [स्त्री० मराली] १. हंस। २. घोड़ा। ३. हाथी।

मरिंद*-पुं० १. दे० 'मलिंद'। २. दे० 'मकरंद'।

मरियल-वि० [हिं० मरना] बहुत दुर्बल।

मरी-स्त्री० दे० 'महामारी'।

मरीचि(का)-स्त्री० [सं०] १. किरण। २. प्रभा। कान्ति। ३. मृग-तृष्णा।

मरीची-पुं० [सं० मरीचिन्] १ सूर्य। २. चन्द्रमा।

मरीज-पुं० [अ०] [वि० मरीजी] रोगी।

मरु-पुं० [सं०] [भाव० मरुता] १. मरुभूमि। २. मारवाड़ देश।

मरुत्-पुं० [सं०] १. वायु। २. प्राण। ३. दे० 'मरुत्वान्'।

मरुत्वान्-पुं० [सं० मरुत्वत्] १. इन्द्र। २.धर्म के वंशज देवताओं का एक गण। ३. हनुमान्।

मरुद्वीप-पुं० [सं०] मरुस्थल में स्थित छोटा सजल उपजाऊ स्थान। (ओएसिस)

मरु भूमि-स्त्री० [सं०] बालू का निर्जल मैदान। रेगिस्तान। मरुस्थल।

मरु-स्थल-पुं० दे० 'मरु भूमि'।

मरू*-वि० दे० 'मरु'।

मरूरा*-पुं० दे० 'मरोड़'।

मरोड़-पुं० [हिं० मरोड़ना] १. मरोड़ने की क्रिया या भाव। २. घुमाव। ऐंठन। ३ पेट में होनेवाली ऐंठन। ४.व्यथा। कष्ट। मुहा०-मरोड़ खाना=उलझन में पड़ना। ५. घमंड। ६. क्रोध।

मरोड़ना-स० [हिं० 'मोड़ना'] १. बल डालना। ऐंठना। मुहा०-*अंग मरोड़ना=अँगड़ाई लेना। *भौंह (या दग) मरोड़ना=१. आँख से इशारा करना। २. नाक-भौंह चढ़ाना। *हाथ मरोड़ना=पछताना। २. ऐंठ या घुमाकर नष्ट करना या मार डालना। ३.पीड़ा देना। दुःख पहुँचाना।

मरोड़ा-पुं० दे० 'मरोड़'।

मरोरना*-स० दे० 'मरोड़ना'।

मर्कट-पुं० [सं०] [स्त्री० मर्कटी] १. बंदर। बानर। २. मकड़ा। नर मकड़ी।

मर्कत*-पुं० दे० 'मरकत'।

मर्तबान-पुं० [हिं० अमृतबान] अचार, घी आदि रखने का चीनी मिट्टी या सादी मिट्टी का रोगनी बरतन। अमृतबान।

मर्त्य-पुं० [सं०] १. मनुष्य। २. शरीर।

मर्त्य-लोक-पुं० [सं०] यह पृथ्वी या इसपर बसा हुआ संसार।

मर्द-पुं० [फा०] १. मनुष्य। २. पुरुष। नर। ३. साहसी और पुरुषार्थी व्यक्ति। ४. वीर। ५.पति। भर्त्ता। खसम।

मर्दन-पुं० [सं०] [वि० मर्दित] १. कुचलना। रौंदना। २. मसलना। ३. शरीर में तेल, उबटन आदि मलना। ४. नाश। ध्वंस। वि० [स्त्री० मर्दिनी] मर्दन, नाश या संहार करनेवाला। (यौ० के अन्त में)

मर्दना*-स० [सं० मर्दन] १. मर्दन करना। मलना। २. मसलना। ३. नष्ट करना। ४. मार डालना।

मर्दुम-शुमारी-स्त्री० [फा०] १. किसी स्थान के निवासियों की गणना या गिनती होना। २ कहीं की जन-संख्या।

मर्दुमी-स्त्री० [फा०] पौरुष।

मर्म-पुं० [सं० मर्म्म] १. स्वरूप। २. रहस्य। भेद। ३. संधि-स्थान। ४. दे० 'मर्म-स्थल'।

मर्मज्ञ-वि० [सं०] [भाव० मर्मज्ञता] किसी बात का मर्म, रहस्य या तत्त्व जाननेवाला। तत्त्वज्ञ।

मर्म-भेदी-वि० [सं०मर्म-भेदिन्] हृदय में चुभनेवाला। हार्दिक कष्ट पहुँचानेवाला।

मर्मर-पुं० दे० 'मरमर'। पुं०[अनु०] पत्तों आदि का मर मर शब्द।

मर्मरित*-वि० [अनु० मरमर] जिसमें मर मर शब्द होता हो।

मर्म वचन-पुं० [हिं० मर्म+वचन] वह बात जिससे सुननेवाले का हृदय दुखे।

मर्म वाक्य-पुं० दे० 'मर्म वचन'।

मर्मविद्-वि० [सं०] मर्मज्ञ।

मर्म-स्थल-पुं० [सं०] १. शरीर के वे कोमल अंग जिनपर चोट लगने से बहुत अधिक पीड़ा होती और मनुष्य मर सकता है। जैसे-हृदय, कंठ, नाक, अण्डकोश, कपाल आदि। २. वह स्थल जिसपर आघात या आक्षेप होने से मनुष्य को विशेष मानसिक कष्ट हो।

मर्मस्पर्शी-वि० [सं० मर्मस्पर्शिन्] [स्त्री० मर्मस्पर्शिनी, भाव० मर्मस्पर्शिता] मर्म पर प्रभाव डालनेवाला।

मर्मांतक(तिक)-वि० दे० 'मर्मभेदी'।

मर्मी-वि० [हिं० मर्म] तत्त्वज्ञ। मर्मज्ञ।

मर्यादा-स्त्री० [सं०] १. सीमा। हद। २. तट। किनारा। ३. प्रतिज्ञा। ४. नियम। ५. सदाचार। ६. प्रतिष्ठा। ७. धर्म्म।

मर्यादित-वि० [सं०] १. जिसकी सीमा या हद निश्चित हो। २. जो अपनी मर्यादा या सीमा के अन्दर हो।

मर्षण-पुं० [सं०] [वि० मर्षणीय, मर्षित] १ क्षमा। माफी। २. रगड़। घर्षण। वि० १. नाशक। २. दूर करनेवाला।

मल-पुं० [सं०] १ मैल। गंदगी। २. विष्ठा। गूह। ३. दोष। विकार। ४. पाप।

मलकना*-स०, अ० दे० 'मचकना'।

मलका-स्त्री० [अ० मलिकः] महारानी।

मलखंभ-पुं० दे० 'मालखंभ'।

मलगजा*-वि० दे० 'मरगजा'।

मलता-वि० [हिं० मलना] घिसा हुआ। (सिक्का)

मल-द्वार-पुं० [सं०] १. वह इन्द्रिय जिससे शरीर के भीतर का मल निकलता है। २. गुदा।

मलना-स० [सं० मलन] [प्रे० मलाना, मलवाना] १. हाथ से घिसना या रगड़ना। मुहा०-हाथ मलना = पछताना। २. माँजना। ३. मालिश करना। ४. मरोड़ना। ऐंठना।

मलबा-पुं० [हिं० मल ?] १. कूड़ा-कर्कट। २. गिरी हुई इमारत की ईंटें, पत्थर आदि या उनका ढेर।

मलमल-स्त्री० [सं० मल्लमल्लक] एक प्रकार का महीन कपड़ा।

मल-मास-पुं० [सं०] प्रति तीसरे वर्ष पड़नेवाला वह बढ़ा हुआ या अधिक चान्द्र मास जो दो संक्रान्तियों के बीच में पड़ता है। (ऐसा मास अपने नाम के दूसरे और शुद्ध मास के बीच में होता है।) अधिक मास। पुरुषोत्तम।

मलय-पुं० [सं० मलय (पर्वत)] १. मैसूर के दक्षिण और ट्रावंकोर के पूर्व का प्रदेश। २. मलाबार। ३ मलाबार के निवासी। ४. सफेद चन्दन।

मलयगिरि-पुं० [सं०] १. दक्षिण भारत का मलय पर्वत। २. इस पर्वत पर उत्पन्न होनेवाला चन्दन।

मलयज-पुं० [सं०] चन्दन। वि० मलय पर्वत पर या से उत्पन्न।

मलयाचल-पुं० [सं०] मलय पर्वत।

मलयानिल-पुं० [सं०] १. मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु, जिसमें चन्दन की सुगन्ध होती है। २. वसन्त ऋतु की सुखद और सुगन्धित वायु।

मलराना*-स० दे० 'मल्हाना'।

मलहम-पुं० दे० 'मरहम'।

मलाई-स्त्री० [देश०] १. देर तक गरम किये हुए दूध के ऊपर जमा हुआ सार भाग। साढ़ी। २. सार। तत्त्व। स्त्री० [हिं० मलना] मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मलाट-पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा घटिया कागज।

मलान*-वि० दे० 'म्लान'।

मलामत-स्त्री० [अ०] १. डाँट-फटकार। यौ०-लानत-मलामत=डाँट-फटकार। २. मैल। गन्दगी।

मलार-पुं० [सं० मल्लार] वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक राग।

मलाल-पुं० [अ०] दुःख । रंज ।
मलाह*-पुं० दे० 'मल्लाह' ।
मलिंग-पुं० दे० 'मलंग' ।
मलिंद-पुं० [सं० मिलिन्द] भौंरा ।
मलिक-पुं० [अ०] [स्त्री० मलिका] १. राजा । २. अधीश्वर । ३. सरदार ।
मलिच्छ*-पुं० दे० 'म्लेच्छ' ।
मलिन-वि० [सं०] [स्त्री० मलिना, भाव० मलिनता] १. मैला । गन्दा । २. कपट भरा । ३. विकार-युक्त । ४. पापी । ५. श्री-हीन । म्लान । उदासीन । फीका ।
मलिया†-स्त्री० [सं० मल्लिका] १. छोटे मुँह का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन । २. चक्कर । ३. एक प्रकार का खेल जिसमें जमीन पर कुछ खाने बनाकर गोटियों से खेलते हैं । (यहीं खाने अंकित करके उन्हें मिटाने से 'मलिया-मेट करना' मुहावरा बना है ।)
मलिया-मेट-पुं० [हिं० मलिया (खेल + मिटाना] सर्वनाश । बरबादी ।
मलीदा-पुं० [फा०] १. चूरमा । २. एक प्रकार का बढ़िया मुलायम ऊनी कपड़ा ।
मलीन-वि० दे० 'मलिन' ।
मलूक-वि०[अ०मलिक] सुन्दर। मनोहर ।
मलेच्छ-पुं० दे० 'म्लेच्छ' ।
मलेरिया-पुं० [अं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार । जूड़ी ।
मलोलना-अ० [हिं० मलोला] १. मन में दुःखी होना । २. पछताना ।
मलोला-पुं० [अ० मलूल] १. मानसिक व्यथा । दुःख । रंज ।
मुहा०-मलोले खाना=मानसिक व्यथा सहना । मन में बहुत दुःखी होना ।
२. उत्कट इच्छा या लालसा । अरमान ।
मल्ल-पुं० [सं०] १. द्वन्द्व युद्ध में निपुणता के लिए प्रसिद्ध, एक प्राचीन पंजाबी जाति । २. पहलवान ।
मल्ल-युद्ध-पुं० [सं०] कुश्ती ।
मल्लाह-पुं० [अ०] [स्त्री० मल्लाहिन] एक जाति जिसका पेशा मछली मारना और नाव खेना है । केवट । माँझी ।
मल्लिका-स्त्री० [सं०] एक प्रकार का बेला । मोतिया ।
मल्हाना(रना)†-स० [सं० मल्ह = गौ का स्तन] चुमकारना । पुचकारना ।
मवाद-पुं० [अ०] १. पीब । (फोड़े में की) २. मल । गन्दगी ।
मवास-पुं० [सं०] १. दुर्ग । गढ़ । २. शरण या रक्षा का स्थान ।
मवासी-स्त्री० [हिं० मवास] छोटा गढ़ । पुं० १. गढ़पति । किलेदार । २ सरदार ।
मवेशी-पुं० [अ० मवाशी] चौपाया ।
मवेशीखाना-पुं० [फा०] पशुशाला ।
मशक-पुं० [सं०] १. मच्छड़ । २. शरीर पर का मसा ।
स्त्री० [फा०] चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर लाते हैं ।
मशक्कत-स्त्री०[अ०] परिश्रम । मेहनत ।
मशरू-पुं० [अ० मशरूअ] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा ।
मशहूर-वि० [अ०] प्रसिद्ध । विख्यात ।
मशाल-स्त्री० [अ०] डंडे में चीथड़े लपेटकर बनाई हुई, जलाने की बहुत मोटी बत्ती जो हाथ में लेकर चलते हैं ।
मशालची-पुं० [फा०] [स्त्री० मशालचिन] जलती हुई मशाल हाथ में लेकर दिखलानेवाला ।
मशीन-स्त्री० [अं० मेशीन] पेंचों और पुरजों से बना हुआ वह यंत्र जिससे काम जल्दी होता हो । कल । यन्त्र ।

मशीन गन–स्त्री० [अं०] वह मशीन या यंत्र जो बन्दूक की तरह पर बहुत जल्दी जल्दी गोलियाँ चलाता है।

मश्क–पुं० [अ०] अभ्यास।
स्त्री० दे० 'मशक'। (पानी भरने की)

मष*–पुं०=यश।

मष्ट–वि० [सं० मष्ट] मौन। चुप।
मुहा०–मष्ट धारना या मारना= मौन धारण करना। बिलकुल चुप रहना।

मस*–स्त्री० दे० 'मसि'।
स्त्री० [सं० श्मश्रु] मूछें निकलने से पहले उसके स्थान पर होनेवाली रोमावली।
मुहा०–मस भींजना = मूछें निकलना आरम्भ होना।

मसकत*–स्त्री० दे० 'मशक्कत'।

मसकना–अ० स० [अनु०] १.इस प्रकार दबना या दबाना कि टूट या फट जाय।
अ० दे० 'मसोसना'।

मसका–पुं० [फा०] नवनीत। मक्खन।

मसकीन*–वि० दे० 'मिसकीन'।

मसखरा–पुं० [अ०] परिहास करनेवाला। हँसोड़। दिल्लगी-बाज।

मसखरी–स्त्री० [फा० मसखरा+ई] दिल्लगी। हँसी। मजाक। परिहास।

मसजिद–स्त्री० [फा० मस्जिद] मुसलमानों के एकत्र होकर सामूहिक नमाज पढ़ने का भवन।

मसनद–स्त्री० [अ०] बड़ा तकिया। गाव-तकिया।

मसमुंद*–क्रि० वि० [हिं०मस=मूँदना ?] ठेलमठेल या धक्कम-धक्का करते हुए।

मसयारा*–पुं० [हिं० मशाल] १. मशाल। २. मशालची।

मसरफ–पुं० [अ०] व्यवहार। उपयोग।

मसल–स्त्री० [अ०] कहावत।

मसलति*–स्त्री० दे० 'मसलहत'।

मसलन्–क्रि० वि० [अ०] मिसाल के तौर पर। उदाहरणार्थ। जैसे।

मसलन–स्त्री० [हिं० मसलना] मसलने की क्रिया या भाव।

मसलना–स० [हिं० मलना] [भाव० मसलन] १. उँगलियों से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २. जोर से दबाना।

मसलहत–स्त्री०[अ०] १.रहस्य। २.ऐसा गुप्त और हितकर तत्त्व जो सहसा समझ में न आ सके। छिपा हुआ शुभ हेतु।

मसला–पुं० [अ०] १. कहावत। २. विचारणीय विषय। समस्या।

मसविदा–पुं० दे० 'मसौदा'।

मसहरी–स्त्री०[सं०मशहरी] १. मच्छड़ों से बचने के लिए पलंग के ऊपर और चारों ओर लगाने का जालीदार कपड़ा। २. वह पलंग जिसमें उक्त कपड़ा लगा हो।

मसहार*–पुं० दे० 'मांसाहारी'।

मसा–पुं० [सं० मांस-कील] १.काले रंग का उभरा हुआ मांस का वह दाना जो शरीर पर कहीं कहीं निकलता है। २. बवासीर में निकलनेवाला मांस का दाना।
पुं० [सं० मशक] मच्छड़।

मसान–पुं० [सं० श्मशान] १. शव जलाने का स्थान। मरघट।
मुहा०–मसान जगाना=श्मशान पर बैठकर शव या किसी मन्त्र की तान्त्रिक सिद्धि करना।
२.भूत, पिशाच आदि। ३ युद्ध-क्षेत्र। (क्व०)

मसानिया–पुं० [हिं० मसान] १. मसान पर रहनेवाला। २. डोम।
वि० मसान संबंधी। मसान का।

मसानी–स्त्री० [सं० श्मशानी] डाकिनी, पिशाचिनी आदि।

मसाला-पुं० [फा० मसालह] १. साधारण सामग्री। उपकरण। २. किसी विशेष कार्य के लिए बनाया हुआ ओषधियों या रासायनिक द्रव्यों का मिश्रण अथवा उसका कोई अंश। ३. भोजन को स्वादिष्ट बनानेवाले विशिष्ट द्रव्य। जैसे-लौंग, मिर्च, जीरा, तेजपत्ता आदि। ४. तेल। ५ आतिशबाजी।
मसालेदार-वि० [अ० मसालह+फा० दार] जिसमें मसाला मिला या पड़ा हो।
मसि-स्त्री० [सं०] १. स्याही। रोशनाई। २. काजल। ३. कालिख।
मसिपात्र-पुं० [सं०] दावात।
मसियर*-स्त्री० दे० 'मशाल'।
मसियारा*-पुं० दे० 'मशालची'।
मसीत-स्त्री० दे० 'मसजिद'।
मसीना-पुं०[देश०] मोटा अन्न। कदन्न।
मसीह(ा)-पुं० [अ०] [वि० मसीही] १. ईसाइयों के धर्म-गुरु हजरत ईसा। २. वह जो मरे हुए को जिला सके। (उर्दू कविताओं में प्रेमपात्र के लिए)
मसीही-पुं० [अ० मसीह] ईसाई।
मसू*-क्रि० वि० [हिं० मरू=मरकर] कठिनता से। मुश्किल से। जैसे-तैसे। मुहा०मसू करके=बहुत कठिनता से।
मसूड़ा-पुं० [सं० श्मश्रु] मुँह के अन्दर का वह अंग जिसमें दांत उगे होते हैं।
मसूर-पुं० [सं०] एक प्रकार की दाल।
मसूरिका-स्त्री० दे० 'शीतला' (रोग)।
मसूसना-अ० दे० 'मसोसना'।
मसृण-वि० [सं०] चिकना और मुलायम।
मसेवरा-पुं० [हिं० मांस] मांस की बनी हुई भोजन-सामग्री।
मसोसना-अ० [फा० अफसोस ?] १. किसी मनोवेग को रोकना। जब्त करना। २.मन ही मन खेद या दुःख करना। कुढ़ना। स० १.ऐंठना। मरोड़ना। २.निचोड़ना।
मसोसा-पुं०[हिं०मसोसना]मन का दुःख।
मसौदा-पुं० [अ० मसविदा] १. लेख का वह पूर्व-रूप जिसमें काट-छाँट और सुधार किया जाने को हो। प्रालेख। २. युक्ति। तरकीब।
मुहा०-मसौदा गाँठना या बाँधना= किसी कार्य की युक्ति सोचना।
मस्करा*-पुं० दे० 'मसखरा'।
मस्त-वि० [फा०, मि० सं० मत्त] [भाव० मस्ती] १. मतवाला। मदोन्मत्त। २. प्रसन्न और निश्चिन्त। परम आनन्दित। ३. यौवन-मद से भरा हुआ।
मस्ताना-वि० [फा० मस्तानः] १. मस्तों का-सा। २. मस्त। अ० [फा० मस्त] मस्त होना।
मस्तिष्क-पुं० [सं०] १. मस्तक के अन्दर का गूदा। भेजा। मगज। २. मस्तक में होनेवाली सोचने-समझने की शक्ति। मानसिक शक्ति। दिमाग। बुद्धि।
मस्ती-स्त्री० [फा०] १ मस्त होने की क्रिया या भाव। मतवालापन। २. कुछ विशिष्ट पशुओं की कनपटी से बहनेवाला तरल स्राव। मद। ३. कुछ वृक्षों, पत्थरों आदि में से होनेवाला स्राव। मद।
मस्तूल-पुं० [पुर्त०] बड़ी नावों के बीच का वह लट्ठा जिसमें पाल बाँधते हैं।
मस्सा-पुं० दे० 'मसा'।
महँ*-अव्य० [सं० मध्य] में।
महँई-वि० [सं०महान्] महान्। बड़ा।
महँगा-वि० [सं० महार्घ] १. जिसका उचित से अधिक मूल्य हो। २. बहु-मूल्य।
महँगाई-स्त्री० [हिं० महँगा] १. महँगी के कारण मिलनेवाला भत्ता। २. दे० 'महँगी'।

महँगी-स्त्री० [हिं० महँगा+ई (प्रत्य०)] १. महँगे होने का भाव या अवस्था। महँगापन। २ दुर्भिक्ष। अकाल।

महंत-पुं० [सं० महत्=बड़ा] साधु-समाज का प्रधान। २. मठाधीश।

महंती-स्त्री० [सं० महत्] महंत का भाव या पद।

महक-स्त्री० [मह मह से अनु०] गंध। बास।

महकना-अ० [हिं० महक] गंध देना।

महकमा-पुं० [अ०] व्यवस्था करनेवाला विभाग। सरिश्ता।

महकान*-स्त्री० दे० 'महक'।

महकीला-वि०[हिं०महक] महकनेवाला।

महज-वि० [अ०] केवल। सिर्फ।

महजिद*-स्त्री० दे० मसजिद'।

महजन-पुं० [सं०] महापुरुष।

महत्-वि० [सं०] [स्त्री० महती] महान्। बहुत बड़ा।
पुं० १. दे० 'महत्तत्व'। २. ब्रह्म।

महता-पुं० [सं० महत्] १. गाँव का मुखिया। महतो। २ सरदार।

महताब-स्त्री० [फा०] १. चाँदनी। चंद्रिका। २. दे० 'महताबी'।

महताबी-स्त्री०[फा०] १.नली के आकार की वह आतिशबाजी जिससे केवल रोशनी होती है। २. बाग के बीच का चबूतरा।

महतारी†-स्त्री०=माता।

महती-वि०स्त्री०[सं०] बहुत बड़ी। महान्।

महतु*-पुं० दे० 'महत्त्व'।

महतो-पुं० [हिं० महता] १. कहार। २. प्रधान। ३. सरदार।

महत्तत्व-पुं०[सं०] १.सांख्य में प्रकृति का पहला विकार। बुद्धि-तत्व। २.जीवात्मा।

महत्तम-वि० [सं०] सबसे बड़ा।

महत्तर-वि० [सं०] दो में से बड़ा या श्रेष्ठ। किसी से बड़ा या अच्छा।

महत्ता-स्त्री० दे० 'महत्त्व'।

महत्त्व-पुं०[सं०] १.महान् का भाव। २. बड़प्पन। गुरुता। ३. श्रेष्ठता। उत्तमता। ४. वह गुण या तत्व जिससे किसी वस्तु की आपेक्षिक श्रेष्ठता, उपयोगिता, या आदर घटता या बढ़ता हो।

महना*-स० दे० 'मथना'।

महनीय-वि० [सं०] [भाव० महनीयता] १. मान्य। पूज्य। २. महत्। महान्।

महफिल-स्त्री० [अ०] १ सभा। जलसा। २. नाच-गाने का स्थान या जलसा।

महबूब-पुं० [अ०] [स्त्री० महबूबा] १. प्रिय। प्रेमपात्र। २. दोस्त। मित्र।

महमंत*-वि० दे० 'मदमत्त'।

महमद*-पुं० दे० 'मुहम्मद'।

मह मह-क्रि० वि० [अनु०] सुगन्धि या खुशबू के साथ।

महमहा-वि० [हिं० महक] सुगन्धित।

महमहाना-अ० [हिं० मह मह] महक या गन्ध देना। गमकना।

महर-पुं० [सं० महत्] [स्त्री० महरि] १. बड़े आदमियों के लिए व्यवहृत एक आदर-सूचक शब्द। (ब्रज) २. एक प्रकार का पक्षी। ३. दे० 'महरा'।

महरा-पुं० [हिं०महता] [स्त्री० महरी, भाव०महराई] १. कहार। २.मुखिया।

महराना-पुं० [हिं० महर] महरों के रहने का स्थान या महल्ला।

महरि(री)-स्त्री० [हिं० महर] १. ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द। २. मालकिन। घरवाली।

महरूम-वि० [अ०] जिसे उसका वांछित या प्राप्य न मिला हो। वंचित।

महरेटा-पुं०=श्रीकृष्ण।

महरेटी-स्त्री०=राधिका।

महर्घ-वि० दे० महार्घ।

*महर्षि-पुं० [सं० महा+ऋषि] बहुत बड़ा या श्रेष्ठ ऋषि।

महल-पुं० [अ०] १. राजाओं आदि के रहने का बड़ा और बढ़िया मकान। प्रासाद। २. रनिवास। अन्तःपुर।

महलसरा-स्त्री० [अ०] अंतःपुर।

महल्ला-पुं० [अ०] शहर का वह विभाग जिसमें बहुत-से मकान हों।

महसूल-पुं० [अ०] वह धन जो राज्य या सरकार किसी विशेष कार्य के लिए ले। कर। (टैक्स) २. भाड़ा। किराया। ३. जमीन की लगान। (पुरानी हिन्दी)

महसूली-वि० [हिं० महसूल] जिसपर महसूल लगता हो।

महसूस-वि० [अ०] जिसका ज्ञान या अनुभव हो। अनुभूत।

महाँ*-अव्य० दे० 'महँ'।

महा-वि० [सं०] १. बहुत अधिक। २.सर्व-श्रेष्ठ। सबसे बड़ा। ३.बहुत बड़ा। ‡पुं० दे० 'मट्ठा'।

महाउत*-पुं० दे० 'महावत'।

महाकाय-वि० [सं०] जिसका शरीर बहुत बड़ा हो। बड़े डील-डौल का।

महाकाल-पुं० [सं०] महादेव।

महाकाली-स्त्री० [सं०] दुर्गा।

महाकाव्य-पुं० [सं०] १. साहित्य-शास्त्र के अनुसार वह सर्ग-बद्ध काव्य-ग्रन्थ जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों आदि का वर्णन हो। २. बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काव्य।

महाजन-पुं० [सं०] १. श्रेष्ठ पुरुष। २. धनवान्। ३. रुपये-पैसे का लेन-देन करनेवाला। कोठीवाल। ४. ऋण देनेवाला। धनी। (क्रेडिटर)

महाजनी-स्त्री० [हिं० महाजन+ई (प्रत्य०)] १. रुपये के लेन-देन का व्यवसाय। कोठीवाली। २. महाजनों के व्यवहार की एक लिपि। मुड़िया।

महातम*-पुं० = माहात्म्य।

महात्मा-पुं० [सं० महात्मन्] १. बहुत श्रेष्ठ, उच्च विचारोंवाला और सदाचारी पुरुष। २.बहुत बड़ा साधु या महापुरुष।

महादान-पुं० [सं०] ग्रहण आदि के समय किया जानेवाला दान।

महादेव-पुं० [सं०] शंकर। शिव।

महादेवी-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. राजा की प्रधान रानी या महिषी। पटरानी।

महादेश(द्वीप)-पुं० [सं०] पृथ्वी के स्थल-भाग के पाँच बड़े विभागों में से कोई एक, जिसमें अनेक देश होते हैं। (कान्टिनेन्ट) जैसे-एशिया, योरप।

महान्-वि० [सं०] बहुत बड़ा।

महानता-स्त्री० दे० 'महत्व' या 'महत्ता'।

महानस-पुं० [सं०] रसोई-घर।

महानाटक-पुं० [सं०] दस अंकोंवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा नाटक।

महानिद्रा-स्त्री० [सं०] मृत्यु।

महानिर्वाण-पुं० [सं०] बौद्धों के अनुसार वह उच्च कोटि का निर्वाण या परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी अर्हत् या बुद्ध होते हैं।

महानिशा-स्त्री०[सं०] १.आधी रात। २. कल्प के अन्त में होनेवाली प्रलय की रात।

महानुभाव-पुं० [सं०] [भाव० महानुभावता] बड़ा और आदरणीय व्यक्ति।

महापातक-पुं०[सं०][वि०महापातकी]वे पाँच बहुत बड़े पाप—ब्रह्म-हत्या, मद्य-पान, चोरी, गुरु की पत्नी से व्यभिचार और के

पाप करनेवालों का साथ।
महापात्र-पुं० [सं०] मृतक-कर्म का दान लेनेवाला ब्राह्मण। महाब्राह्मण।
महापुरुष-पुं० [सं०] श्रेष्ठ पुरुष।
महाप्रभु-पुं० [सं०] १. एक आदर-सूचक पदवी जिसका व्यवहार वल्लभाचार्य जी तथा बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य के लिए होता है। २ ईश्वर।
महाप्रलय-पुं० [सं०] वह प्रलय जिसमें सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है।
महाप्रसाद-पुं० [सं०] १. जगन्नाथ जी का चढ़ा हुआ भात। २. माँस। (व्यंग्य)
महाप्रस्थान-पुं० [सं०] मृत्यु की इच्छा से हिमालय की ओर जाना। २. मृत्यु।
महाप्राज्ञ-पुं० [सं०] बहुत बड़ा विद्वान्।
महाप्राण-पुं० [सं०] नागरी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग के दूसरे तथा चौथे अक्षर। जैसे-ख, घ, छ, झ आदि।
महाबलाधिकृत-पुं० [सं०] गुप्त कालीन भारत में साम्राज्य का वह सर्व-प्रधान अधिकारी जिसके अधीन सारी सेना होती थी और जो सैनिक राजमन्त्री होता था।
महाब्राह्मण-पुं० दे० 'महापात्र'।
महाभाग-वि० [सं०] भाग्यवान्।
महाभारत-पुं० [सं०] १. वेदव्यास रचित वह परम प्रसिद्ध संस्कृत महाकाव्य जिसमें कौरवों और पाण्डवों के युद्ध का वर्णन है। २. कौरवों और पाण्डवों का प्रसिद्ध युद्ध। ३. बहुत बड़ा युद्ध।
महाभियोग-पुं० [सं०] वह अभियोग जो बहुत बड़े अधिकारियों पर कोई बहुत अनुचित या हानिकारक काम करने पर चलता है। (इम्पीचमेन्ट)
महाभूमि-स्त्री [सं०] (प्राचीन भारत में) वह भूमि जिसपर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार न हो और जो जन-साधारण के काम आती हो। (पबलिक प्लेस)
महामंत्री-पुं० [सं०] किसी राज्य का वह मंत्री जो और सब मंत्रियों में प्रधान या मुख्य होता है। प्रधान मन्त्री। (प्राइम मिनिस्टर)
महामति-वि० [सं०] बड़ा बुद्धिमान्।
महामना-वि० [सं० महामनस्] बहुत उच्च और उदार मनवाला। महानुभाव।
महामहिम-वि० [सं०] जिसकी महिमा बहुत अधिक हो।
महामांस-पुं० [सं०] गाय या मनुष्य का माँस। (परम त्याज्य)
महामाई-स्त्री० १. दे० 'दुर्गा'। २ दे० 'काली'।
महामात्य-पुं० दे० 'महामंत्री'।
महामाया-स्त्री० [सं०] १. प्रकृति। २. दुर्गा। ३. गंगा।
महामारी-स्त्री० [सं०] वह संक्रामक भीषण रोग जिससे कुछ दिनों तक बहुत-से लोग एक साथ या जल्दी जल्दी मरें। वबा। मरी। (एपिडेमिक) जैसे-प्लेग, हैजा आदि।
महायज्ञ-पुं० [सं०] नित्य किये जाने-वाले धर्म-शास्त्र-विहित कर्म या यज्ञ, जो पांच है। यथा-ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।
महायात्रा-स्त्री० [सं०] मृत्यु।
महायान-पुं० [सं०] बौद्धों के तीन प्रधान सम्प्रदायों में से एक।
महायुद्ध-पुं० [सं०] वह बहुत बड़ा युद्ध जिसमें बहुत-से बड़े बड़े देश या राष्ट्र सम्मिलित हों।
महारथ(ी)-पुं० [सं०] बहुत बड़ा योद्धा।
महाराज-पुं० [सं०] [स्त्री० महारानी] १. बहुत बड़ा राजा। २. ब्राह्मण, गुरु

आदि के लिए आदरसूचक सम्बोधन।

महाराजाधिराज-पुं० [सं०] अनेक राजाओं का प्रधान महाराज।

महाराज्ञी-स्त्री० [सं०] महारानी।

महाराणा-पुं० [सं० महा+हिं० राणा] मेवाड़ के राजाओं की उपाधि।

महारानी-स्त्री० [सं० महाराज्ञी] महाराज की रानी। बहुत बड़ी रानी।

महाराष्ट्र-पुं० [सं०] १. बहुत बड़ा राष्ट्र। २. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। ३. इस प्रदेश के निवासी।

महाराष्ट्री-स्त्री० दे० 'मराठी'।

महार्घ-वि० [सं०] [भाव० महार्घता] १. बहुत अधिक मूल्य का। २ महँगा।

महाल-पुं० [अ० 'महल' का बहु०] १. मुहल्ला। टोला। २.जमीन के बन्दोबस्त के विचार से कई गाँवों का समूह।

महालक्ष्मी-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति।

महालय-पुं० [सं०] पितृ-पक्ष।

महालया-स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्ण अमावास्या जो पितृ-पक्ष का अन्तिम और पितृ-विसर्जन का दिन है।

महावट-स्त्री० [हिं० माह=माघ+वट] जाड़े के दिनों की झड़ी या वर्षा।

महावत-पुं० [सं० महामात्र] हाथी चलाने या हाँकनेवाला। हाथीवान।

महावर-पुं० [सं० महावर्ण ?] वह लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैर रँगती हैं। यावक। जावक।

महाविद्या-स्त्री० [सं०] १. काली, तारा आदि दस तन्त्रोक्त देवियाँ। २. दुर्गा।

महावीर-पुं० [सं०] १. हनुमान जी। २. चौबीसवें और अन्तिम जैन तीर्थंकर। वि० बहुत बड़ा बहादुर।

महाशय-पुं० [सं०] [स्त्री० महाशया] महान् या उच्च आशय और विचारोंवाला व्यक्ति। महानुभाव। सज्जन।

महाश्मशान-पुं० [सं०] काशी नगरी।

महासंधि-विग्रहक-पुं० [सं०] गुप्त-कालीन भारत का वह उच्च अधिकारी जिसे दूसरे राज्यों से संधि और विग्रह आदि करने का अधिकार होता था।

महिं*-अव्य० दे० महँ'।

महि-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

महिजा-स्त्री० [सं०] सीता जी।

महिदेव-पुं० [सं०] ब्राह्मण।

महिधर-पुं० [सं०] १. पर्वत। २ शेषनाग।

महिनंदिनी-स्त्री० [सं०] जानकी।

महिपाल*-पुं० दे० 'महीपाल'।

महिमा-स्त्री० [सं० महिमन्] १.महत्ता। बड़ाई। २. प्रभाव। प्रताप। ३. आठ सिद्धियों में से एक, जिससे मनुष्य बहुत बड़ा रूप धारण कर सकता है।

महिमावान्-वि० [सं०] महिमा या गौरववाला।

महियाँ*-अव्य० [सं० मध्य] में।

महिला-स्त्री० [सं०] भले घर की स्त्री।

महिप-पुं० [सं०] [स्त्री०महिषी] १.भैंसा। २. शास्त्रानुसार अभिषिक्त राजा।

महिषाकार*-वि० [सं० महिष+आकार] (भैंस के आकार का) बहुत बड़ा।

महिषी-स्त्री० [सं०] १. भैंस। २. रानी।

महिसुता-स्त्री० [सं०] सीता जी।

महिसुर-पुं०=ब्राह्मण।

मही-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. नदी। पुं० [हिं० महना] मठा। छाछ।

महीतल-पुं० [सं०] पृथ्वी। संसार।

महीन-वि० [सं० महा+क्षण] १. थोड़ी

मोटाई या घेरे में कम। पतला। 'मोटा' का उलटा। २. बारीक। झीना। ३. कोमल। धीमा। (स्वर)

महीनकार-पुं०[हिं० महीन+कार(प्रत्य०)] [भाव० महीनकारी] कला संबंधी बहुत ही महीन काम करनेवाला।

महीना-पुं० [सं० मास] १. काल का एक प्रसिद्ध विभाग जो प्रायः तीस दिनों का होता है। २. मासिक वेतन। ३. स्त्रियों का मासिक धर्म।

महीप(ति)-पुं० [सं०] राजा।

महीर-स्त्री० [हिं० मठा+खीर] १. मठे में पकाया हुआ चावल। २. तपाये हुए मक्खन की तलछट।

महीसुर-पुं० [सं०] ब्राह्मण।

महुँ*-अव्य० दे० 'महँ'।

महुअर-पुं० [सं० मधुकर] १. तुँबड़ी या तूँबी नाम का एक प्रकार का बाजा। २. एक प्रकार का इन्द्रजाल का खेल जो तुँबड़ी बजाकर खेला जाता है।

महुआ-पुं० [सं० मधूक] एक प्रकार का वृक्ष जिसके छोटे मीठे फलों से शराब बनती है।

महुकम*-वि० [अ० मुहकम] पक्का। दृढ़।

महुर्छा*-पुं० दे० 'महोत्सव'।

महुख*-पुं० [सं० मधूक] १. महुआ। २. मुलेठी। ३. शहद।

महूम*-स्त्री० दे० 'मुहिम'।

महूरत*-पुं० दे० 'मुहूर्त'।

महेंद्र-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. इन्द्र।

महेरा-पुं० [हिं० महेर या मही] एक प्रकार का व्यंजन।

महेश-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

महेशानी-स्त्री० [सं० महेश] पार्वती।

महेश्वर-पुं०[सं०][स्त्री०महेश्वरी]ईश्वर।

महेसुर*-पुं०=महेश्वर।

महोच्च-वि० [सं०] परम या बहुत अधिक उच्च। बहुत ऊँचा।

महोच्छव*-पुं० दे० 'महोत्सव'।

महोत्सव-पुं० [सं०] बहुत बड़ा उत्सव।

महोदधि-पुं० [सं०] समुद्र।

महोदय-पुं० [सं०] [स्त्री० महोदया] १. महाशय। २. कान्यकुब्ज देश। ३. स्वर्ग।

महोला*-पुं० [अ० मुहेल] १. हीला। बहाना। २. धोखा। छल।

महोघ-पुं० [सं०] समुद्री तूफान।

मह्यो*-पुं० [हिं० मही] मठा। छाछ।

माँ-स्त्री० [सं० अम्बा या माता] माता। यौ०-माँ-जाया=सगा भाई।

†अव्य० [सं० मध्य] में।

माँखना*-अ० दे० 'माखना'।

माँग-स्त्री० [हिं० माँगना] १. माँगने की क्रिया या भाव। २. चाह। आवश्यकता। ३. वह बात जिसके लिए किसी से याचना, प्रार्थना या आग्रह किया जाय। (डिमांड)

स्त्री० [सं० मार्ग ?] सिर के बालों को कंघी से विभक्त करने पर उनके बीच में बनी हुई रेखा। सीमन्त।

मुहा०-माँग-कोख से सुखी रहना=सौभाग्यवती और सन्तानवती रहना।

माँग-टीका-पुं० [हिं० माँग+टीका] माँग पर पहनने का एक गहना।

माँगन*-पुं० दे० 'मंगन'।

माँगना-स० [सं० मार्गण=याचना] १. किसी से कुछ लेने के लिए इच्छा प्रकट करना। यह कहना कि यह करो या यह दो। २. प्रार्थना करना। ३. चाहना।

माँग-फूल-पुं० दे० 'माँग-टीका'।

मांगलिक-वि० [सं०] [भाव० मांगलिकता] मंगल करनेवाला।
पुं० नाटक में मंगल-पाठ करनेवाला पात्र।

मांगल्य-वि० [सं०] शुभ। मंगलकारक।
पुं० 'मंगल' का भाव।

माँगा-पुं० [हिं० माँगना] अपने व्यवहार के लिए किसी से कोई चीज कुछ समय के लिए माँगकर लेने की क्रिया या भाव। मँगनी। उधार।

माँचना*-अ० दे० 'मचना'।

माँचा-पुं० दे० 'माचा'।

माँज-स्त्री० दे० 'गंग बरार'।

माँजना-स० [सं० मज्जन] मैल छुड़ाने, चिकना करने या मजबूत बनाने के लिए किसी वस्तु को रगड़ना।
अ० अभ्यास करना।

माँजर*-स्त्री० दे० 'पंजर'।

माँजा-पुं० [देश०] पहली वर्षा से जलाशयों में होनेवाला फेन जो मछलियों के लिए मादक माना गया है।

माँझ*-अव्य० [सं० मध्य] में।
*पुं० अन्तर। फरक।

माँझा-पुं० [सं० मध्य] १. नदी में का टापू। २. पगड़ी पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण। ३. वृक्ष का तना। ४. विवाह के अवसर पर पहनने के वर और कन्या के पीले कपड़े।
पुं० [हिं० माँजना] १. पतंग की डोर पर, उसे कड़ा करने के लिए मसाला लगाने की क्रिया। २. इस काम के लिए बना हुआ मसाला।

माँझिल*-क्रि०वि०[सं०मध्य] बीच का।

माँझी-पुं० [सं० मध्य] १. केवट। मल्लाह। २. मध्यस्थ।

माँट*-पुं० [सं० मट्टक] १. मटका। घड़ा। २. कोठा। अटारी।

माँठी*-स्त्री० [देश०] १. एक प्रकार की चूड़ी। २. मट्ठी या मठरी नामक पकवान।

माँड़-पुं० [सं० मंड] भात पसाने पर निकलनेवाला पानी। पीच।
स्त्री० [हिं० माँड़ना] राजपूताने में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

माँड़ना*-स० [सं० मंडन] १. मलना। २. गूँधना। ३. लेप करना। पोतना। ४. सजाना। ५. अन्न की बालों में से दाने झाड़ना। ६. मचाना। ७. चलना। ८ रौंदना। कुचलना।

मांडलिक-पुं० [सं०] १. किसी मंडल या प्रान्त का शासक। २. किसी बड़े राजा को कर देनेवाला छोटा राजा।

माँड़व-पुं० [सं० मंडप] १. विवाह आदि का मंडप। २. अतिथि-शाला।

माँड़ा-पुं० [सं० मंड] एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर झिल्ली पड़ जाती है।
पुं० [सं० मंडप] मंडप।
पुं० [हिं० माँड़ना] एक प्रकार की रोटी।

माँड़ी-स्त्री० [सं० मंड] कपड़े या सूत पर लगाया जानेवाला कलफ।

माँड़ौ*-पुं० दे० 'मंडप'।

माँड्यो*-पुं० दे० 'माँड़व'।

माँत(ा)-वि० [सं० मत्त] [क्रि० माँतना*] मदमत्त। मस्त।

माँद-वि० [सं० मंद] १. श्री-हीन। उदास। फीका। २. अपेक्षाकृत बुरा या हलका। ३. मात। पराजित।
स्त्री० [देश०] हिंसक जन्तुओं के रहने का गड्ढा। बिल। गुफा।

माँदगी-स्त्री० [फा०] बीमारी।

माँदा-वि० [फा० माँदः] १. थका हुआ। २. रोगी। बीमार।

मौंचना*-अ० दे० 'मातना'।

मौंयँ*-अव्य० [सं० मध्य] में।

मांस-पुं० [सं०] १.शरीर में हड्डियों और चमड़े के बीच का मुलायम और लचीला पदार्थ। २.कुछ पशुओं के शरीर का उक्त अंश जो कुछ लोग खाते हैं। गोश्त।

मांसपेशी-स्त्री० [सं०] शरीर के अंदर का मांसल भाग। पट्ठा।

मांसभक्षी(भोजी)-पुं०दे० 'मांसाहारी'।

मांसल-वि० [सं०] [भाव० मांसलता] १. मांस से भरा हुआ। २. मोटा-ताजा। पुष्ट।

मांसाहारी-पुं० [सं० मांसाहारिन्] १. मांस खानेवाला। आमिष-भोजी। २. दूसरे जीव-जंतुओं का मांस खाकर निर्वाह करनेवाला। (कारनिवोरा)

माँह(हि)*-अव्य० [सं० मध्य] में।

मा-स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. माता।

माई-स्त्री० [सं० मातृ] १. माता। माँ। पद-**माई का लाल** = बहुत उदार, योग्य या समर्थ व्यक्ति।
२. बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिए सम्बोधन।

माकूल-वि० [अ०] १. उचित। वाजिब। ठीक। २. अच्छा। बढ़िया। ३. तर्क में परास्त। कायल।

माख*-पुं० [सं० मख] १. अप्रसन्नता। २. क्षोभ। ३. पछतावा। ४. आवेश।

माखन-पुं०=मक्खन।

माखनचोर-पुं० [हिं०] श्रीकृष्ण।

माखना*-अ० [हिं० माख] अप्रसन्न या नाराज होना।

माखी*-स्त्री०=मक्खी।

माखो-स्त्री० [हिं० मक्खी] शहद की मक्खी। (पश्चिम)
*स्त्री० [हिं० मुख ?] लोगों में फैलने-वाली चर्चा। जनरव। जन-श्रुति।

मागध-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति जिसका काम राजाओं की विरुदा-वली वर्णन करना था। भाट।
वि० [सं० मगध] मगध देश का।

मागधी-स्त्री० [सं०] मगध देश में प्रचलित पुरानी प्राकृत भाषा।

माघ-पुं० [सं०] [वि० माघी] पूस के बाद और फागुन से पहले का महीना।

माच*-पुं० दे० 'मचान'।

माचना*-अ०=मचना।

माचल*-वि०[हिं०मचलना] १.मचलने-वाला। हठी। २. मन-चला।

माचा†-पुं० [सं० मंच] [अल्पा० माची] १. पलंग। खाट। २. मचान।

माछर*-पुं० दे० 'मच्छड़'।
पुं० [सं० मत्स्य] मछली।

माछी†-स्त्री०=मक्खी।

माजरा-पुं० [अ०] १. विवरण। वृत्तान्त। हाल। २. घटना।

माजून-स्त्री० [अ०] औषध के रूप में बनी कोई मीठी चटनी। अवलेह।

माट-पुं० [हिं० मटका] मटका। घड़ा।

माटा†-पुं० [हिं० मटा] लाल च्यूँटी।

माटी*-स्त्री०=मिट्टी।

माड़ना*-अ० दे० 'माँड़ना'।
स० [सं० मंडन] १. सजाना। २. धारण करना। पहनना। ३.आदर करना।
स० दे० 'माँड़ना'।

माढ़ा*-पुं० [सं० मंडप] घर के ऊपर की छत पर का चौबारा।

माणिक(क्य)-पुं० दे० 'मानिक'।

मातंग-पुं०[सं०] १.हाथी। २. चांडाल।

मात-स्त्री० [अ०] पराजय। हार।
वि० [अ०] पराजित।
*स्त्री० दे० 'माता'।

मातदिल-वि० [अ० मोतदिल] न बहुत गरम, न बहुत ठंढा। शीतोष्ण।

मातना*-अ० [सं० मत्त] १. मस्त या मत्त होना। २. बहुत नशे में हो जाना।

मातबर-वि० [अ० मोतबिर] [भाव० मातबरी] विश्वसनीय।

मातम-पुं० [अ०] [वि० मातमी] किसी के शोक में होनेवाला रोना-पीटना।

मातम-पुर्सी-स्त्री० [फा०] मृतक के सम्बन्धियों के पास जाकर उन्हें सान्त्वना देना।

मातहत-वि० [अ०] [भाव० मातहती] किसी की अधीनता या देख-रेख में काम करनेवाला। (सबार्डिनेट)

क्रि० वि० अधीनता में। नीचे। (अंडर)

माता-स्त्री० [सं० मातृ] १. जन्म देनेवाली स्त्री। जननी। माँ। २. कोई आदरणीय स्त्री। ३. गौ। ४. शीतला या चेचक नामक रोग।

* वि० [स्त्री० माती] दे० 'मतवाला'।

मातामह-पुं० [सं०] [स्त्री० मातामही] माता का पिता। नाना।

मातु*-स्त्री०=माता।

मातुल-पुं०=मामा।

मातृ-स्त्री०=माता।

मातृक-वि० [सं०] माता सम्बन्धी।

मातृका-स्त्री० [सं०] १. माता। जननी। २. धाय। ३. तांत्रिकों की ब्राह्मी आदि सात देवियाँ। ४. वर्ण-माला के वे अक्षर, तांत्रिक लोग जिनकी देवी के रूप में पूजा करते हैं।

मातृ-कुल-पुं० [सं०] माता अथवा माता का कुल या वंश।

मातृत्व-पुं० [सं०] माता होने का भाव। माँ-पन। (मैटर्निटी)

मातृ-भाषा-स्त्री० [सं०] वह भाषा जो बालक बचपन में माता के पास रहकर बोलना सीखता है। मादरी जबान। (मदरटंग)

मातृ-भूमि-स्त्री० [सं०] वह भूमि या देश जिसमें किसी का जन्म हुआ हो।

मात्र-अव्य० [सं०] केवल। सिर्फ। भर।

मात्रक-पुं० [सं०] १. वह निश्चित मात्रा या मान जिसे एक मानकर उसी के हिसाब से उस मेल की बाकी चीजों की गिनती या कल्पना की जाय। एकाई। (यूनिट) २. एक ही प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं के योग से बने हुए किसी समूह में की प्रत्येक वस्तु। ३. किसी का वह अंग जो कुछ दशाओं में स्वतन्त्र रूप से भी एक अलग सत्ता के रूप में माना जाता हो। (यूनिट)

मात्रा-स्त्री०[सं०] १.परिमाण। मिकदार। २. एक बार खाने भर का औषध। ३. एक ह्रस्व अक्षर का उच्चारण-काल। कल। कला। ४. अक्षरों में लगनेवाली स्वर-सूचक रेखा या चिह्न।

मात्रिक-वि० [सं०] १. मात्रा सम्बन्धी। २. जिसमें मात्राओं की गणना या विचार हो। जैसे-मात्रिक छन्द।

मात्सिकी-स्त्री० दे० 'मान-क्षेत्र'।

माथ*-पुं० दे० 'माथा'।

माथना*-स० दे० 'मथना'।

माथा-पुं० [सं० मस्तक] १. सिर का ऊपरी और सामनेवाला भाग। मस्तक। मुहा०-माथा टेकना=प्रणाम करना। माथा ठनकना=अनिष्ट की आशंका होना। माथे चढ़ाना या धरना=सादर स्वीकार करना। शिरोधार्य करना। माथे पर बल पड़ना = आकृति से क्रोध या असन्तोष के लक्षण प्रकट होना।
२.किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

माथा-पच्ची-स्त्री० [हिं० माथा+पचाना] ऐसा काम जिसमें मस्तिष्क की बहुत अधिक शक्ति व्यय हो। सिर-पच्ची।

माथुर-पुं० [सं०] [स्त्री० माथुरानी] १. मथुरा का निवासी। २. कायस्थों की एक जाति।

माथे-क्रि० वि० दे० 'मत्थे'।

माद*-पुं० दे० 'मद'।

मादक-वि० [सं०] [भाव० मादकता] नशा लानेवाला। नशीला।

मादन-वि० [सं०] १. मादक। २. मस्त करनेवाला।
पुं० कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

मादर-स्त्री० [फा०] माँ। माता।

मादर-जाद-वि० [फा०] १. जन्म का। पैदाइशी। २. सहोदर या सगा (भाई)। ३. बिलकुल नंगा।

मादरी-वि० [फा०] मादर या माता सम्बन्धी। माता का। जैसे-मादरी जबान।

मादा-स्त्री० [फा०] स्त्री जाति का जीव। 'नर' का उलटा।

माद्दा-पुं० [अ०] १. मूल तत्व। २. योग्यता। सामर्थ्य। ३. मवाद। पीब।

माधव-पुं०[सं०] १ विष्णु। २.वसंत ऋतु।
वि० [स्त्री० माधवी, माधविका] १. मधु सम्बन्धी। २. मस्त करनेवाला।

माधविका(वी)-स्त्री०[सं०] १. सुगन्धित फूलोंवाली एक लता। २. एक प्रकार की शराब। ३. दुर्गा।

माधुरई*-स्त्री० [सं० माधुरी] मधुरता।

माधुरी-स्त्री० [सं०] १. मिठास। २. मिठाई। ३.शोभा। सुन्दरता। ४.शराब।

माधुर्य-पुं० [सं०] १. मधुर का भाव। मधुरता। २. सुन्दरता। ३. मिठास। ४. साहित्य में काव्य का वह गुण जो पाठकों को बहुत भला लगता है।

माधैया(धो)*-पुं० दे० 'माधव'।

माध्यम-वि० [सं०] मध्य या बीच का।
पुं० १. कार्य सिद्ध करने का उपाय या साधन। २. वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय। (मीडियम)

माध्याकर्षण-पुं० [सं०] पृथ्वी के भीतरी भाग का वह आकर्षण जो सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है और जिसके कारण पदार्थ ऊपर से नीचे या पृथ्वी पर गिरते हैं। (ग्रैविटेशन)

माध्व-पुं० [सं०] मध्वाचार्य का चलाया हुआ वैष्णवों का एक सम्प्रदाय।

माध्वी-स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

मान-पुं० [सं०] १. भार, तौल, नाप मूल्य आदि। परिमाण। मिकदार। २. नापने या तौलने का साधन। पैमाना। ३. अभिमान। घमंड।
मुहा०-मान मथना=गर्व चूर्ण करना।
४. प्रतिष्ठा। सम्मान। इज्जत।
यौ०-मान-महत=१.आदर-सत्कार। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।
५. अपने प्रिय व्यक्ति के किसी दोष या अपराध के कारण होनेवाला मन का वह विकार जो उसे प्रिय की ओर से कुछ समय के लिए उदासीन कर देता है। रूठना। (साहित्य) ६. सामर्थ्य। शक्ति।

मानक-पुं० [सं०] वह निश्चित या स्थिर किया हुआ सर्व-मान्य मान या माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान या कल्पना की जाय। मान-दंड। (स्टैंडर्ड)

मानकीकरण-पुं० [सं०] एक ही प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं का मानक स्थिर

करना। (स्टैंडर्डाइजेशन) जैसे-बटखरों या गजों का मानकीकरण।

मान-चित्र-पुं० [सं०] किसी देश या स्थान का नकशा।

मानता-स्त्री० दे० 'मन्नत'।

मानदंड-पुं० दे० 'मानक'।

मानदेय-पुं० [सं०] वह धन जो किसी व्यक्ति को कोई काम करने पर उसके बदले में सम्मान-पूर्ण पारिश्रमिक के रूप में दिया जाता है। (ऑनरेरियम)

मान-धन-वि० [सं०] जो अपने मान या इज्जत को ही धन (मुख्य) समझता हो।

मानना-अ० [सं० मानन] १. सहमत होना। राजी होना। २. प्रसन्न होना। अनुकूल होना। ३. कल्पना करना। फर्ज करना। ४. ठीक रास्ते पर आना। ५. किसी के प्रति आदर का भाव रखना। ६. महत्त्व समझना।

स० १. किसी की कही हुई बात, दी हुई आज्ञा या किये हुए आग्रह आदि का पालन करना। अंगीकार करना। स्वीकार करना। २. धार्मिक दृष्टि से किसी बात पर श्रद्धा या विश्वास करना। ३. देवता आदि की भेंट या पूजा करने का संकल्प करना। मन्नत करना।

माननीय-वि० [सं०] [स्त्री० माननीया] जिसका मान या सम्मान करना उचित और आवश्यक हो। मान्य।

पुं० एक उपाधि जो कुछ विशिष्ट और उच्च राजकीय अधिकारियों और राज्य के मन्त्रियों आदि के नाम के पहले लगाई जाती है। (ऑनरेबुल)

मान-परेखा*-पुं० [?] आशा। भरोसा।

मान-मंदिर-पुं० [सं०] १. कोप-भवन। २. वेध-शाला।

मान-मरोर*-स्त्री० दे० 'मन-मुटाव'।

मानव-पुं० [सं०] मनुष्य। आदमी।

मानवता-स्त्री० [सं०] १. मनुष्यत्व। आदमीयत। आदमी-पन। २. संसार के समस्त मनुष्यों का समूह या समाज। (ह्यूमैनिटी)

मानवती-स्त्री०[सं०]वह नायिका जो अपने पति या प्रेमी से मान करे। मानिनी।

मानव-शास्त्र-पुं० [सं०] मनुष्यों की उत्पत्ति, विकास, विभेद आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र। (एन्थ्रोपॉलोजी)

मानवी-स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

वि० दे० 'मानवीय'।

मानवीय-वि० [सं०] मानव-सम्बन्धी।

मानवेंद्र-पुं० [सं०] १. राजा। २. बहुत श्रेष्ठ पुरुष।

मानस-पुं० [सं०] [भाव० मानसता] १. मन। हृदय। २. मान सरोवर। ३. कामदेव। ४. संकल्प-विकल्प।

वि० १. मन से उत्पन्न। मनोभव। २ मन में सोचा हुआ। ३. मन सम्बन्धी। मन का। ४. मन के द्वारा होनेवाला।

क्रि० वि० मन के द्वारा।

मानसता-स्त्री० [सं०] १. मानस या मन का भाव या स्थिति। २.मन की वह विशेष स्थिति या वृत्ति जिसके वशवर्त्ती होकर मनुष्य कोई विचार या काम करता है। (मेन्टैलिटी)

मान सरोवर-पुं० [सं० मानस+सरोवर] हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध और परम पवित्र मानी जानेवाली बड़ी झील।

मानस शास्त्र-पुं० [सं०] मनोविज्ञान।

मानसिक-वि० [सं०] मन सम्बन्धी। मन का या मन में होनेवाला।

मान-हानि-स्त्री० [सं०][वि०मानहानिक]

कोई ऐसा काम या बात करना जिससे किसी का मान या प्रतिष्ठा घटे। अपमान। बेइज्जती। हतक इज्जत। (डिफेमेशन)
मानहुँ*-अव्य० दे० 'मानों'।
माना*-स० [सं० मान] १. नापना या तौलना। २. जाँचना।
अ० दे० 'समाना' या 'अमाना'।
मानिंद-वि० [फा०] समान। तुल्य।
मानिक-पुं० [सं० माणिक्य] लाल या चुन्नी नामक रत्न।
वि० [सं०] १. मान या परिमाण से संबंध रखनेवाला। २ जिसका कुछ मान या परिमाण हो। परिमाणवाला। (क्वान्टिटेटिव)
मानित-वि० [सं०] सम्मानित। मान्य।
मानिता-स्त्री० [सं०] १.गौरव। सम्मान। २. अभिमान। घमंड।
मानिनी-वि०[सं०] १. गर्व करनेवाली। २. रूठनेवाली। (स्त्री)
स्त्री०मान करनेवाली नायिका। (साहित्य)
मानी-वि० [सं० मानिन्] [स्त्री० मानिनी] १. मान या अभिमान करनेवाला। अहंकारी। घमंडी। २. सन्मानित।
मानुख*-पुं०=मनुष्य।
मानुष-वि० [सं०] मनुष्य का।
पुं० [सं०] [स्त्री० मानुषी] मनुष्य।
मानुषिक-वि० [सं०] मनुष्य का।
मानुषी-वि० [सं० मानुषीय] मनुष्य सम्बन्धी। मनुष्य का।
मानुष्य-पुं० [सं०] १. मनुष्य का धर्म या भाव। मनुष्यता। २ मनुष्य का शरीर।
मानुस-पुं०=मनुष्य।
माने-पुं० [अ० मानी] अर्थ। मतलब।
मानों-अव्य० [हिं० मानना] मान लो कि यह ऐसा है या होगा। जैसे। गोया।
मान्य-वि० [सं०] [स्त्री० मान्या, भाव० मान्यता] १.मानने योग्य। २.माननीय।
मान्यक-वि० [सं०] बिना वेतन लिये किसी प्रतिष्ठित पद पर काम करनेवाला। (ऑनरेरी) जैसे-मान्यक मन्त्री।
मान्यता-स्त्री० [सं०] मान्य होने की क्रिया या भाव। मान लिया जाना।
माप-स्त्री० [सं०] १. मापने की क्रिया या भाव। नाप। २. वह मान जिससे कोई चीज नापी जाय। मान। (मेजर)
मापक-पुं० [सं०] १. वह जिससे कुछ नापा जाय। २. वह जो नापता हो।
मापना-स० [सं० मापन] किसी वस्तु के विस्तार, घनत्व आदि का मान या परिमाण निकालना। नापना।
*अ० [सं० मत्त] मतवाला होना।
माप-मान-पुं० दे० 'मानक'।
माफ-वि०[अ०]क्षमा किया हुआ। क्षमित।
माफिक-वि० [अ० मुआफिक] १. अनुकूल। २ अनुसार। मुताबिक।
माफी-स्त्री० [अ०] १. क्षमा। २. वह भूमि जिसका कर या लगान सरकार या राज्य ने माफ कर दिया हो।
माफीदार-पुं० [फा०] वह जिसको माफी की जमीन मिली हो।
माम*-पुं० [सं० माम्] १. ममता। ममत्व। २.प्रेम। ३. अहंकार। ४. कोई काम करने की शक्ति या अधिकार।
मामता-स्त्री०दे० 'ममता'।
मामलत*-स्त्री० दे० 'मामला'।
मामला-पुं० [अ० मुआमिलः] १. व्यापार। काम। २. व्यवहार। ३. झगड़ा। विवाद। ४. व्यवहार या विवाद की बात या विषय। ५. मुकदमा।
मामा-पुं० [अनु०] [स्त्री० मामी]

माता का भाई।

स्त्री० [फा०] १. माता। माँ। २. रोटी पकानेवाली स्त्री। (मुसल०)

मामी-स्त्री० [सं० मा=नहीं] अपने दोष या भूल पर ध्यान न देना।

मुहा०-*मामी पीना=मुकर जाना।

मामूल-पुं० [अ०] रीति। प्रथा।

मामूली-वि० [अ०] १. नियमित। २. नियत। ३. सामान्य। साधारण।

माय*-स्त्री० १.दे०'माता'। २.दे०'माया'।

मायका-पुं० [सं० मातृ] स्त्री के विचार से, उसके माता-पिता का घर। पीहर।

मायन*-पुं० [सं० मातृका + आनयन] विवाह से पहले मातृका-पूजन और पितृ-निमन्त्रण का कृत्य।

माया-स्त्री० [सं०] १. लक्ष्मी। २. धन। सम्पत्ति। ३. अज्ञान। भ्रम। ४ छल। धोखा। ५.इन्द्रजाल। जादू। ६.प्रकृति। ७. भगवान् या देवता की लीला, शक्ति या प्रेरणा। ८ ममता। ९*दया। अनुग्रह।

*स्त्री० दे० 'माता'।

मायापति-पुं० [सं०] ईश्वर। परमेश्वर।

मायावाद-पुं० [सं०] यह सिद्धांत कि केवल ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या है, भ्रम के कारण जगत् सत्य प्रतीत होता है।

मायावी-पुं० [सं० मायाविन्] [स्त्री० मायाविनी] १. चालाक। धूर्त। २. धोखेबाज। छली। ३. जादूगर।

मायिक-वि० [सं०] १. माया से बना हुआ। २. बनावटी। ३. दे० 'मायावी'।

मार-पुं० [सं०] १. कामदेव। २. विष। जहर।

स्त्री० [हिं० मारना] १. मारने या पीटने की क्रिया या भाव। २. आघात। चोट। ३. लक्ष्य। निशाना। ४. मार-पीट।

*स्त्री० दे० 'माला'।

मारक-वि० [सं०] १. मार डालनेवाला। २. जिससे किसी का प्रभाव दूर या नष्ट हो। प्रबल विष, वेग आदि को दबाकर उनका नाश करनेवाला। (एन्टीडोट)

मारका-पुं० [अं० मार्क] १. चिह्न। निशान। २. अधिकार, स्वामित्व, विशेषता आदि का सूचक चिह्न। छाप।

पुं० [अ०] १ युद्ध। २.बहुत बड़ी घटना।

मार-काट-स्त्री० १. मारने-काटने का काम या भाव। लड़ाई। २. युद्ध।

मारकेश-पुं० [सं०] किसी की जन्म-कुंडली में ग्रहों का वह योग जो उसके लिए घातक माना जाता है।

मारग*-पुं० [सं० मार्ग] रास्ता।

मुहा०-*मारग मारना=रास्ते में यात्री को लूट लेना। डाका डालना।

मारगन*-पुं० [सं० मार्गण] १. बाण। तीर। २. भिक्षुक। भिखमंगा।

मारण-पुं० [सं०] १. मार डालना। प्राण लेना। २. एक तान्त्रिक प्रयोग जो किसी को मार डालने के लिए होता है।

मारतौल-पुं० [पुर्त० मोर्टली] एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

मारना-स० [सं० मारण] १. चोट पहुँचाने के लिए प्रहार करना। पीटना। २.जीवन का अन्त कर देना। प्राण लेना। ३. कुश्ती में विपक्षी को पछाड़ना। ४. शस्त्र आदि चलाना। प्रहार करना।

मुहा०-गोली मारना=१. किसी पर बन्दूक की गोली चलाना। २. उपेक्षा या तुच्छ समझकर जाने देना। कुछ पढ़कर मारना=मन्त्र से फूँककर कोई चीज किसी पर फेंकना। (जादू-टोना)

५. आवेग या मनोविकार आदि रोकना।

जैसे-मन मारना। ६. नष्ट कर देना। न रहने देना। ७.शिकार या आखेट करना। ८.धातु आदि फूँककर उनका भस्म तैयार करना। ९. बिना परिश्रम के अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना या अनुचित रूप से दबा रखना। १०.बल या प्रभाव घटाना।

मार-पीट-स्त्री० [हिं०मारना+पीटना] वह लड़ाई जिसमें लोग मारे और पीटे जायँ।

मार-पेच-पुं० [हिं०मारना+पेच] धूर्तता। चालाकी। चालबाजी।

मारफत-अव्य० [अ०] द्वारा। जरिये से।

मारा*-वि० [हिं० मारना] १. जो मार डाला गया हो। निहत। २.जिसपर मार पड़ी हो।

मुहा०-मारा मारा फिरना=बुरी दशा में इधर-उधर घूमना। टक्कर खाना।

मारामार-क्रि०वि० [हिं०मारना] अत्यंत शीघ्रता से। बहुत जल्दी।

मारी-स्त्री० दे० 'महामारी'।

मारुत-पुं० [सं०] वायु। हवा।

मारुति-पुं०[सं०] १.हनुमान। २.भीम।

मारू-पुं० [हिं० मारना] युद्ध के समय बजाया और गाया जानेवाला एक राग। वि० [हिं० मारना] १. मारनेवाला। २. जान मारनेवाला। ३. हृदय-वेधक।

मारे-अव्य० [हिं० मारना] वजह से।

मार्ग-पुं० [सं०] १. रास्ता। पथ। २. वे साधन, प्रकार आदि जिनका अवलम्बन कोई काम ठीक या पूरा करने के लिए किया जाता हो। रास्ता।

मार्ग-कर-पुं० [सं०] वह कर जो पथिकों से किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जाता है। (टोल टैक्स)

मार्गन*-पुं० [सं० मार्गण] बाण। तीर।

मार्गशीर्ष-पुं० [सं०] अगहन महीना।

मार्गी-पुं० [सं० मार्गिन्] १. मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति। (यौ० के अन्त में ; जैसे-वाम-मार्गी) २. यात्री। पथिक।

मार्जन-पुं० [सं०] [वि० मार्जनीय, मार्जित] १. शुद्ध या पवित्र करना। २. अपने आपको पवित्र करने के लिए तीर्थ आदि का जल अपने ऊपर छिड़कना। ३. भूल, दोष आदि का परिहार।

मार्जनी-स्त्री० [सं०] झाड़ू।

मार्जार-पुं० [सं०] [स्त्री०मार्जारी] बिल्ली।

मार्जित-वि० [सं०] जिसका मार्जन हुआ हो।

मार्तंड-पुं० [सं०] सूर्य।

मार्दव-पुं० [सं०] १. अहंकार बिलकुल छोड़ देना। २ दूसरे को दुःखी देखकर दुःखी होना। ३ कोमलता। ४.सरलता।

मार्मिक-वि० [सं०] [भाव० मार्मिकता] १. जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े। बहुत प्रभावशाली। २. मर्मज्ञ।

मार्शल लॉ-पुं० [अं०] १.फौजी कानून। २. फौजी कानूनों और अधिकारियों का शासन, जो बहुत कठोर होता है।

माल-स्त्री० [सं० माला] १. माला। हार। २. वह डोरी जिससे चरखे में का तकला घूमता है। ३. पंक्ति। कतार। *पुं० [सं० मल्ल] पहलवान। पुं० [अ०] १. सम्पत्ति। धन।

मुहा०-माल चीरना या मारना= दूसरे की सम्पत्ति या धन दबा बैठना। २. सामान। असबाब।

यौ०-माल मता=माल-असबाब।

३.क्रय-विक्रय की वस्तुएँ। ४.कर के रूप में राज्य को मिलनेवाला धन या उपज का अंश। ५. उत्तम और सुस्वादु भोजन। ६. कोई अच्छी और बढ़िया

चीज। ७. वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो। सामग्री।

मालखंभ-पुं० [सं० मल्ल+हिं० खंभा] १. एक प्रकार का खंभा जिसपर चढ़ और उतरकर तरह तरह की कसरतें की जाती हैं। २. वह कसरत जो इस प्रकार के खंभे पर की जाती है।

मालखाना-पुं० [फा०] वह सरकारी या विभागीय स्थान जहाँ माल असबाब जमा रहता हो। भंडार।

माल-गाड़ी-स्त्री० [हिं० माल+गाड़ी] वह रेल-गाड़ी जो केवल माल ढोती है।

मालगुजार-पुं० [फा०] वह जो सरकार को माल-गुजारी देता है।

मालगुजारी-स्त्री० [फा०] १. वह भूमि-कर जो सरकार को जमींदार देता है। २. लगान।

मालती-स्त्री० [सं०] १. एक प्रसिद्ध घनी लता और उसके फूल। २. चाँदनी। ज्योत्स्ना।

मालदार-वि० [फा०] धनवान। संपन्न।

माल न्यायालय-पुं० [अ०+सं०] वह न्यायालय जिसमें केवल माल विभाग के अर्थात् जमीनों के लगान आदि के झगड़ों का विचार होता है। (रेविन्यू कोर्ट)

माल-पूआ-पुं० [सं० पूप] एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा पकवान।

मालव-पुं० [सं०] १. मालवा नामक प्रदेश, जो मध्य-भारत में है। २. इस प्रदेश का निवासी।

वि० मालव देश सम्बन्धी।

मालवीय-वि० [सं०] मालवे का।

पुं० मालव देश का निवासी।

माला-स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। अवली। २. सूत में गोलाकार पिरोये हुए फूल या मनके आदि।

मुहा०-माला फेरना=किसी का नाम अपना या किसी को भजना।

३. समूह। झुंड।

मालामाल-वि० [फा०] बहुत सम्पन्न।

मालिक-पुं० [अ०] [स्त्री० मालिकिन] १. अधिपति। स्वामी। प्रभु। २. पति।

मालिका-स्त्री० दे० 'माला'।

मालिकाना-पुं० [फा०] स्वामी का अधिकार या स्वत्व। स्वामित्व।

क्रि० वि० मालिकों का सा।

मालिनी-स्त्री० [सं०] १ माली जाति की स्त्री। मालिन। २. एक प्रकार का छन्द।

मालिन्य-पुं०=मलिनता।

मालियत-स्त्री० [अ०] १. मूल्य, लागत आदि के विचार से किसी वस्तु का मूल्य। २. धन-सम्पत्ति।

मालिया-पुं० दे० 'मालगुजारी'।

मालिवान*-पुं० दे० 'माल्यवान'।

मालिश-स्त्री० [फा०] मलने की क्रिया या भाव। मलाई। मर्दन।

माली-पुं० [सं० मालिन्] [स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी] बाग के पौधे आदि सींचने और उनकी रक्षा, वृद्धि आदि करनेवाला व्यक्ति। बागवान।

वि० [सं० मालिन्] [स्त्री० मालिनी] जो माला पहने हो।

वि० [फा०] माल या धन से सम्बन्ध रखनेवाला। आर्थिक।

मालूम-वि० [अ०] जाना हुआ। विदित।

मालोपमा-स्त्री० [सं०] एक उपमालंकार जिसमें एक उपमेय के भिन्न भिन्न धर्मोंवाले अनेक उपमान बतलाये जाते हैं।

माल्य-पुं० [सं०] १ फूल। २. माला।

माल्यवंत-पुं० दे० 'माल्यवान्'।

माल्यवान्-पुं० [सं०] एक पौराणिक पर्वत का नाम।

मावत*-पुं० दे० 'महावत'।

मावस*-स्त्री० दे० 'अमावस'।

माविजा-पुं० दे० 'मुआवजा'।

मावा-पुं० [सं० मंड] १. माँड़। २. सत। सार। ३. किसी वस्तु की प्रकृति। ४. दूध जलाकर बनाया हुआ खोया।

माशकी-पुं० दे० 'भिश्ती'।

माशा-पुं० [सं० माष] ८ रत्ती का प्रसिद्ध मान या तौल।

माशूक-पुं० [अ०] [स्त्री० माशूका] प्रेमपात्र। प्रिय।

माष-पुं० [सं०] १ उड़द। २. माशा। *स्त्री० दे० 'माख'।

मास-पुं० [सं०] वर्ष के बारहवें भाग (प्रायः ३० दिनों) का काल-विभाग। महीना।

पुं० दे० 'मांस'।

मासना*-अ० स०=मिलना, मिलाना।

मासिक-वि० [सं०] १. मास सम्बन्धी। महीने का। २. हर महीने में एक बार होनेवाला।

पुं० १. प्रति मास मिलनेवाला वेतन। २. प्रति मास प्रकाशित होनेवाला पत्र। ३.हर महीने होनेवाला स्त्रियों का रजोधर्म।

मासी-स्त्री० [सं० मातृष्वसा] माँ की बहन। मौसी।

माह*-अव्य० [सं० मध्य] बीच। में। *पुं० [सं० माघ] माघ महीना। पुं० [फा०] मास। महीना।

माहत*-स्त्री० = महत्त्व।

माहना*-अ० स० दे० 'उमाहना'।

माहली-पुं० [हिं० महल] सेवक विशेषतः अन्तःपुर में रहनेवाला सेवक।

माहवार-क्रि० वि० [फा०] प्रति मास। वि० हर महीने का। मासिक।

माहवारी-वि० [फा०] हर महीने का। स्त्री० स्त्रियों का मासिक धर्म।

माहाँ*-अव्य० दे० 'महँ'।

माहात्म्य-पुं० [सं०] १.महिमा। महत्त्व। (विशेषतः धार्मिक) २. आदर। मान।

माहिं*-अव्य० [सं० मध्य] १. भीतर। अन्दर। २. अधिकरण कारक का चिह्न-'में' या 'पर'।

माहिला*-पुं० दे० 'मांझी'।

माही-अव्य० दे० 'माहिं'।

माही-स्त्री० [फा०] मछली।

माही-मरातिब-पुं० [फा०] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले बड़े झंडे।

माहुर-पुं० [सं० मधुर] विष। जहर।

मिंड़ाई-स्त्री० [हिं० मींडना] मसलने या मींजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मिंत*-पुं० = मित्र।

मिंबर-पुं० [अ० मिम्बर] मसजिद में वह ऊँचा चबूतरा जिसपर बैठकर मुल्ला आदि नमाज पढ़वाते, उपदेश करते या खुतबा पढ़ते हैं।

मिकदार-स्त्री० [अ०] परिमाण। मात्रा।

मिचकाना-स० [हिं० मिचना] बार बार पलकें खोलना और बन्द करना।

मिचकी-स्त्री० [हिं० मिचकना] १. आँखें मिचकाने की क्रिया या भाव। २. आँखों से किया हुआ संकेत। आँख का इशारा। *स्त्री० [?] छलाँग। उछाल।

मिचना-अ० हिं० 'मीचना' का अ०।

मिचलाना-अ० [हिं० मतलाना] कै आने को होना। मिचली आना।

मिचली-स्त्री० [हिं० मिचलाना] जी मिचलाने की क्रिया। कै करने की इच्छा।

मतली।

मिचौनी-स्त्री० दे० 'आँख-मिचौली'।

मिछा*-वि० दे० 'मिथ्या'।

मिजराब-स्त्री० [अ०] सितार आदि बजाने का तार का झुकीला छल्ला।

मिजाज-पुं० [अ०] १. किसी पदार्थ का स्थायी और मूल गुण। प्रकृति। तासीर। २. स्वभाव। प्रकृति। ३. मन की अवस्था। तबीयत।

मुहा०-मिजाज खराब होना=१. अप्रसन्नता, अरुचि आदि होना। २.अस्वस्थ या बीमार होना। मिजाज पूछना= तबीयत या स्वास्थ्य का हाल पूछना। ४. अभिमान। घमंड। शेखी।

मुहा०-मिजाज न मिलना=घमंड के कारण किसी से ठीक तरह से व्यवहार न होना।

मिटना-अ० [सं० मृष्ट] १. अंकित चिह्न आदि नष्ट होना। २.न रह जाना।

मिटाना-स० [हिं० 'मिटना' का स०] १. अंकित रेखा, दाग, चिह्न आदि इस प्रकार रगड़ना कि वह न रह जाय। लुप्त करना। २.आज्ञा, निश्चय आदि रद करना। ३. नष्ट या खराब करना।

मिट्टी-स्त्री० [सं० मृत्तिका] १.वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल पर प्रायः सब जगह पाया जाता है। धूल। खाक।

मुहा०-मिट्टी करना=नष्ट या खराब करना। मिट्टी के मोल=बहुत सस्ता। मिट्टी डालना = १. उपेक्षापूर्वक जाने देना। २. किसी के दोष पर परदा डालना। मिट्टी में मिलना=नष्ट या चौपट होना।

यौ०-मिट्टी खराबी=दुर्दशा। दुर्गति। २. शरीर। बदन।

मुहा०-मिट्टी पलीद या बरबाद करना=दुर्दशा करना।

३. मृत शरीर। शव। लाश। ४. शारीरिक गठन या बनावट।

मिट्टी का तेल-पुं० [हिं० मिट्टी+तेल] एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जो दीपक, लालटेन आदि जलाने के काम आता है।

मिट्ठू-पुं० [हिं० मीठा+ऊ (प्रत्य०)] १. मीठा बोलनेवाला। २. तोता। वि० चुप रहनेवाला।

मिठ-बोला-पुं० [हिं० मीठा+बोलना] १. मधुर-भाषी। २. वह जो केवल दिखाने के लिए मीठी मीठी बातें करता हो।

मिठ-लोना-पुं० [हिं०मीठा=कम+लोन] जिसमें नमक कम या थोड़ा हो।

मिठाई-स्त्री० [हिं० मीठा+आई (प्रत्य०)] १.मीठापन। मिठास। माधुरी। २.विशेष प्रकार से बनी हुई खाने की मीठी चीज।

मिठाना-अ० [हिं०मीठा] मीठा होना।

मिठास-स्त्री० [हिं०मीठा+आस (प्रत्य०)] मीठा होने का भाव। माधुर्य।

मितंग*-पुं० दे० 'हाथी'।

मित-वि० [सं०] १. जिसकी सीमा बँधी हो। परिमित। २. थोड़ा। कम। जैसे-मितव्यय, मिताहार।

मितभाषी-पुं० [सं० मितभाषिन्] कम या थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय-पुं० [सं०][भाव० मितव्ययता] कम खर्च करना। किफायत।

मितव्ययी-पुं० [सं० मितव्ययिन्] थोड़ा या कम खर्च करनेवाला।

मिताई*-स्त्री०=मित्रता।

मिति-स्त्री० [सं०] १. मान। परिमाण। २. सीमा। हद। ३. अवधि।

मिती-स्त्री० [सं० मिति] चान्द्र मास की तिथि जो प्रत्येक पक्ष में १ से १५ तक

होती है।

मिती-काटा-पुं० [हिं० मिती+काटना] एक-एक दिन और एक-एक रकम का सूद जोड़ने का एक महाजनी सहज ढंग।

मित्त*-पुं०=मित्र।

मित्र-पुं०[सं०] १. वह जो सब बातों में सहायक और शुभ-चिन्तक हो। बंधु। सखा। दोस्त। २ सूर्य। ३. भारतीय आर्यों के एक प्रचीन देवता।

मित्रता-स्त्री० [सं०] मित्र होने का भाव या धर्म्म। दोस्ती।

मित्राई*-स्त्री०=मित्रता।

मिथिला-स्त्री० [सं०] आज-कल के तिरहुत प्रदेश का पुराना नाम।

मिथुन-पुं० [सं०] १. स्त्री और पुरुष या वर और वधू का जोड़ा। २. समागम। मेल। ३. मेष आदि बारह राशियों में से तीसरी राशि।

मिथ्या-वि० [सं०] [भाव० मिथ्यात्व] असत्य। झूठ।

मिथ्याचार-पुं०[सं०]कपटपूर्ण व्यवहार।

मिथ्यावादी-पुं० [सं०] [स्त्री० मिथ्या-वादिनी] झूठ बोलनेवाला। झूठा।

मिदुराना*-अ० [सं० मृदु] मृदु या मधुर होना। कोमल होना।

मिनकना-अ० [मिनमिन से अनु०] बहुत ही दबकर या धीरे से कुछ बोलना। जैसे-जब वह आकर खड़े हो जायँगे, तब तुम मिनकोगे भी नहीं।

मिनजालिक-पुं० [?] खरच की मद। व्यय किया जानेवाला धन या उसका खाता।

मिनट-पुं० [अं०] एक घण्टे का साठवाँ भाग। साठ सेकंड का समय।

मिनती-स्त्री० दे० 'बिनती'।

मिनमिनाना-अ० [अनु०] धीमे स्वर से या नाक से बोलना।

मिनहा-वि० [अ०] किसी में से काटा या घटाया हुआ। मुजरा किया हुआ।

मिनिस्टर-पुं० [अं०] १. एक प्रकार का पादरी या ईसाई धर्माधिकारी। २. राज्य या प्रान्त के शासन में किसी विभाग का मंत्री।

यौ०-प्राइम मिनिस्टर=प्रधान मन्त्री।

मिनिस्टरी-स्त्री० [अं० मिनिस्टर] मिनिस्टर का कार्य, पद या भाव।

मिन्नत-स्त्री० [अ०] विनय। विनती।

मिमियाना-अ० [अनु०] भेड़ या बकरी का बोलना।

मियाँ-पुं० [फा०] १. स्वामी। मालिक। २. पति। खसम। ३. महाशय। ४ मुसलमान।

मियाँ मिट्ठू-पुं० १ मीठी बातें करने-वाला। मधुर-भाषी।

कहा०-अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना= आप ही अपनी प्रशंसा करना या अपने आप को बड़ा समझना।

२. तोता।

मियाद-स्त्री० दे० 'मीयाद'।

मियाना-पुं०[फा०]एक प्रकार की पालकी।

मिरग*-पुं० दे० 'मृग'।

मिरगी-स्त्री० [सं० मृगी] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें रोगी अचानक बेसुध होकर गिर पड़ता है। अपस्मार।

मिरचा-पुं० दे० 'लाल मिर्च'।

मिरजई-स्त्री० [फा० मिरज़ा] एक प्रकार की बन्ददार कुरती।

मिरदंगी-स्त्री०[सं०मृदंग]१.छोटा मृदंग। २.एक प्रकार की आतिशबाजी जो मृदंग के आकार की होती है। ३. एक प्रकार का शीशे का आधार, जिसमें मोमबत्ती

जलती है।

मिरियास*-स्त्री० दे० 'मीरास'।

मिर्च-स्त्री० [सं०मरिच] १. एक प्रकार की कड़ुई फली जो व्यंजनों में मसाले की तरह पड़ती है। लाल मिर्च। २.उक्त की तरह काम आनेवाला एक प्रसिद्ध काला, छोटा दाना। गोल मिर्च। काली मिर्च।

मिल-स्त्री० [अं०] १. अनाज, गल्ले या दाने आदि पीसने की चक्की जो भाप या बिजली आदि की सहायता से चलती हो। २. रूई ओटने, सूत कातने और कपड़ा बुनने आदि का कारखाना।

मिलकी-स्त्री० [अ०मिल्क] १. जमीन-जायदाद। २ जागीर।

मिलकना*-अ० [?] जलना।

मिलन-पुं० [सं०] मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। भेंट।

मिलनसार-वि० [हि० मिलन+सार (प्रत्य०)] [भाव० मिलनसारी] सबसे अच्छी तरह मिलने-जुलनेवाला।

मिलना-अ० [सं० मिलन] १ दो अलग अलग पदार्थों का सम्मिलित या मिश्रित होकर एक होना।

यौ०-मिला-जुला=१. सम्मिलित। २. मिश्रित।

२. समुदाय या समूह में समा जाना। ३. साथ लगना। सटना।

मुहा०-गले मिलना=आलिंगन करना। गले लगना।

४. बहुत कुछ समान होना। ५ सामना, भेंट या मुलाकात होना।

स० प्राप्त या हस्तगत होना।

मिलनी-स्त्री० [हिं० मिलना] विवाह की एक रसम जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलकर उन्हें कुछ धन देते हैं।

मिलवना*-स०=मिलाना।

मिलवाना-स० हि० 'मिलना' का प्रे०।

मिलाई-स्त्री० [हिं० मिलाना] १. मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २. भेंट। मुलाकात। (जेल के कैदियों से)

मिलान-पुं० [हिं० मिलाना] १. मिलाने की क्रिया या भाव। २. तुलना। मुकाबला। ३. ठीक होने की वह जाँच जो सम्बद्ध वस्तुओं को मिलाकर की जाय।

मिलाना-स० [सं० मिलन] [भाव० मिलाई, मिलावट] १. एक चीज में कोई दूसरी चीज या चीजें डालकर सबको एक करना। सम्मिलित या मिश्रित करना। २. जोड़ना। ३. तुलना करना। मुकाबला करना। ४. ठीक होने की जाँच करना। ५. भेंट या परिचय कराना। ६. अपने पक्ष में करना। साथी बनाना। ७. बजाने से पहले बाजों के सुर ठीक करना।

मिलाप-पुं० [हिं०मिलना+आप(प्रत्य०)] मिलने की क्रिया या भाव। मेल।

मिलावट-स्त्री० [हिं० मिलाना] १. मिलाये जाने का भाव। मिश्रण। २. बढिया चीज में घटिया चीज का मिश्रण। ३. वह चीज जो इस प्रकार मिलाई जाय। मेल। खोट।

मिलिंद-पुं० [सं०] भौंरा।

मिलिक*-स्त्री० दे० 'मिलक'।

मिलित-वि० [सं०] मिला हुआ। युक्त।

मिलौना-स० [हिं० मिलाना] १. दे० 'मिलाना'। २. गौ दुहना।

मिलौनी-स्त्री० दे० 'मिलाई'।

मिल्कियत-स्त्री० [अ०] १. मालिक या स्वामी होने का अधिकार या भाव। २. वह वस्तु, सम्पत्ति आदि जिसपर

मालिकों का सा या स्वामित्व का अ-धिकार हो। ३. धन-सम्पत्ति। जायदाद।

मिलत-स्त्री० [हिं० मिलना] १. मेल-जोल। मिलाप। २. मिलनसारी।

स्त्री० [अ०] धार्मिक सम्प्रदाय।

मिशन-पुं० [अं०] किसी विशिष्ट कार्य के लिए जाना या भेजा जाना। २. इस प्रकार भेजे जानेवाले लोग। ३. ईसाई धर्म-प्रचारकों का धर्म-प्रचार के लिए कहीं जाना। ४ उक्त का निवास-स्थान।

मिशनरी-पुं० [अं०] ईसाई धर्म-प्रचारक। वि० मिशन सम्बन्धी। मिशन का।

मिश्र-वि० [सं०] १. एक में मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। २. संयुक्त। पुं० कुछ ब्राह्मणों के वर्ग की उपाधि।

मिश्रण-पुं० [सं०] [वि०मिश्रित, मिश्र, मिश्रणीय] कुछ वस्तुओं को एक में मिलाने की क्रिया या भाव। मिलावट।

मिश्रित-वि० [सं०] एक में मिले हुए।

मिष-पुं० [सं०] १. छल। कपट। २. दे० 'मिस'।

मिष्ट-वि० [सं०] मीठा। मधुर।

मिष्टभाषी-पुं० दे० 'मधुरभाषी'।

मिष्टान्न-पुं० [सं०] मिठाई।

मिस-पुं० [सं० मिष] १. बहाना। हीला। २. पाखंड। आडंबर।

वि० स्त्री० [अं०] बिना ब्याही। कुमारी।

मिसकना-अ० [अनु० या फा० मिसकीन] इस प्रकार धीरे धीरे बोलना कि मिस मिस सा शब्द सुनाई पड़े। मिनमिनाना।

मिसकी-स्त्री० दे० 'मिस्की'।

मिसकीन-वि० [अ० मिस्कीन] [भाव० मिसकीनी] १. बेचारा। दीन। २. गरीब। निर्धन।

मिसलाक-अ०=मिलना।

अ० हिं० 'मीसना' का अ०।

मिसरा-पुं० [अ० मिसरऽ] उर्दू-फारसी की कविता का कोई चरण या पद।

मिसरी-स्त्री० [मिस्र देश से] १. मिस्र देश की भाषा। २. साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी।

वि० मिस्र देश का।

पुं० मिस्र देश का निवासी।

मिसहा†-वि०[हिं०मिस] १. बहानेबाज। २. कपटी। ढोंगी।

मिसाल-स्त्री० [अ०] १. उपमा। २. उदाहरण। ३. कहावत।

मिसिल-वि० [अ०] समान। तुल्य। स्त्री० किसी विषय या मुकदमे से सम्बन्ध रखनेवाले सब कागज पत्रों की नत्थी।

मिस्की-स्त्री० [हिं० मिसकना] १.धीरे-धीरे बोलने या मिनमिनाने की क्रिया या भाव। २. गाने का वह ढंग जिसमें पूरी तरह से गला खोलकर और ऊँचे स्वर से नहीं, बल्कि बहुत धीरे से और धीमी आवाज से गाते हैं। सीसी।

मिस्कोट-पुं० [अं० मेस] १. भोजन। २. गुप्त परामर्श।

मिस्तरी-पुं० [अं० मास्टर] वह जो मकान, काठ, धातु आदि के सामान बनाने अथवा यन्त्रों आदि की मरम्मत करने का अच्छा कारीगर हो।

मिस्री-स्त्री० दे० 'मिसरी'।

मिस्ल-वि० दे० 'मिसिल'।

मिस्सा-पुं० [हिं० मीसना] कई तरह की दालें आदि एक में पीसकर बनाया हुआ आटा।

मिस्सी-स्त्री० [फा० मिसी=ताँबे का] एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।

मिहचना*-स० दे० 'मीचना'।
मिहानी*-स्त्री० दे० 'मथानी'।
मिहिर-पुं०[सं०] १. सूर्य्य। २. चन्द्रमा।
मिहीं†-वि० दे० 'महीन'।
मींगी-स्त्री० दे० 'गिरी'।
मींजना†-स० [हिं० मींड़ना] हाथों से मलना। मसलना।
मींडक*-पुं० दे० 'मेंढ़क'।
मींडना-स० दे० 'मींजना'।
मीआद-स्त्री० दे० 'मीयाद'।
मीच-स्त्री० [सं० मृत्यु] मौत।
मीचना-स० दे० 'मूँदना'।
मीचु*-स्त्री० [सं० मृत्यु] मौत।
मीज़ान-स्त्री० [अ०] संख्याओं का योग। जोड़। (गणित)
मीटर-पुं० [अं०] वह यन्त्र जिससे नल में से गुज़रनेवाले पानी, बिजली के तार में से गुजरनेवाली बिजली या किसी चलनेवाली चीज की गति आदि नापी जाती है। माप-यन्त्र।
मीठा*-वि० [सं० मिष्ट] [स्त्री० मीठी] १. जिसमें चीनी या शहद आदि का सा स्वाद हो। मधुर। २. स्वादिष्ट। ३. धीमा। सुस्त। ४.हलका। मद्धिम। मन्द। पुं० १. मिठाई। २. गुड़।
मीठी छुरी-स्त्री० [हिं० मीठी+छुरी] ऊपर से मित्र बनकर अन्दर अन्दर घात या द्रोह करनेवाला। विश्वास-घातक।
मीत-पुं०=मित्र।
मीन-पुं० [सं०] [भाव० मीनता] १. मछली। २ बारह राशियों में से अन्तिम।
मीन-क्षेत्र-पुं० [सं०] १. वह क्षेत्र जिसमें मछलियाँ विशेष रूप से सुरक्षित रखकर पाली जाती हैं और उनकी नसल बढ़ाई जाती है। २. वह राजकीय विभाग जिसके अधीन मछलियों के पालन-पोषण, संवर्द्धन, क्रय-विक्रय, निर्यात आदि की व्यवस्था होती है। (फ़िशरीज़)
मीन-मेख-पुं०[सं०मीन+मेष (राशियाँ)] १.सोच-विचार। आगा-पीछा। असमंजस। २. दूसरे के किये हुए कामों में छोटे-मोटे दोष ढूँढ़ना।
मीना-पुं० [देश०] राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।
पुं० [फ़ा०] १. सोने चाँदी आदि पर किया जानेवाला एक प्रकार का रंग-बिरंगा काम। २. शराब रखने का कंटर।
मीनाकारी-स्त्री० [फ़ा०][कर्त्ता मीनाकार] सोने या चाँदी पर होनेवाला मीना।
मीना बाज़ार-पुं० [फ़ा०] बहुत सुन्दर और सजा हुआ बढ़िया बाजार।
मीनार-स्त्री० [अ० मनार] बहुत ऊँचा और गोलाकार स्तम्भ। लाट। धरहरा।
मीमांसक-पुं० [सं०] १. किसी बात की मीमांसा या विवेचन करनेवाला। २. मीमांसा-शास्त्र का ज्ञाता।
मीमांसा-स्त्री० [सं०] १. अनुमान और तर्क-वितर्क से यह निश्चय करना कि कोई बात वास्तव में कैसी है। २. हिन्दुओं के छः दर्शनों में से पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा नामक दो दर्शन।
मीयाद-स्त्री० [अ०] किसी कार्य के लिए नियत समय। अवधि।
मीयादी-वि० [अ०] जिसकी कुछ मीयाद या अवधि निश्चित हो। जैसे-मीयादी हुंडी, मीयादी बुखार।
मीयादी बुखार-पुं० दे० 'मोतीझिरा'।
मीर-पुं० [फ़ा०] १. सरदार। नेता। २. मुसलमानों में सैयद जाति या वर्ग की उपाधि। ३. वह जो प्रतियोगिता का

काम सबसे पहले करे।

मीरास-स्त्री० [अ०] उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति। तरका।

मीरासी-पुं० [अ० मीरास] [स्त्री० मीरासिन] एक मुसलमान जाति जो गाने-बजाने और भाँड़ का काम करती है।

मील-पुं० [अं० माइल] १७६० गज की दूरी की एक नाप।

मीलन-पुं० [सं०] [वि० मीलित] बन्द करना। मूँदना।

मीलित-वि० [सं०] बन्द किया या मूँदा हुआ।

पुं० एक अलंकार जिसमें के उपमेय और उपमान एक होने के कारण उनमें कोई भेद न होने का उल्लेख होता है।

मुँगरा-पुं० [सं० मुद्गर] [स्त्री० मुँगरी] काठ का बड़ा हथौड़ा।

मुँगौछी(री)-स्त्री० [हिं० मूँग+बरी] मूँग की बनी हुई बरी।

मुंचना*-अ० [सं० मोचन] मुक्त होना।

मुंड-पुं० [सं०] १. खोपड़ी। सिर। २. कटा हुआ सिर।

मुंडन-पुं० [सं०] १. उस्तरे से सिर या और किसी अंग के बाल साफ करना। मूँडना। २.हिन्दुओं के १६ संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूँडा जाता है।

मुँड़ना-अ० [सं० मुंडन] १. मूँड़ा जाना। २. लूटा या ठगा जाना।

मुंड-माला-स्त्री० [सं०] शिव और काली के गले में रहनेवाली कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला।

मुंडमाली-पुं० [सं०] शिव।

मुंडा-पुं० [सं० मुंडी] [स्त्री० मुंडी] १. वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़े हुए हों। २. साधु या योगी। ३.वह पशु जिसके सींग न निकले हों। ४. वह जिसके ऊपरी अथवा इधर-उधर के अंग न हों। ५. कोठीवाली या महाजनी लिपि, जिसमें मात्राएँ नहीं होतीं। ६. एक प्रकार का जूता।

मुँड़ाई-स्त्री० [हिं० मूँडना] मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मुँड़ासा-पुं० दे० 'साफा'। (पगड़ी)

मुँडेरा-पुं० [हि०मूँड+एरा (प्रत्य०)] छत की दीवार का ऊपरी उठा हुआ भाग।

मुँदना-अ० [सं० मुद्रण] १. खुली रहनेवाली या खुली हुई वस्तु का बंद होना। २. छिपना।

मुँदरा-पुं० [सं० मुद्रा] १. योगियों के कान का एक प्रकार का कुंडल। २. कान का एक आभूषण।

मुँदरी-स्त्री० दे० 'अँगूठी'।

मुंशी-पुं० दे० 'मुनशी'।

मुँह-पुं० [सं० मुख] १. वह अंग जिससे प्राणी बोलते और भोजन करते हैं। २. मनुष्य का उक्त अंग।

मुहा०-मुँह आना=गरमी के रोगी के मुँह के अन्दर छाले पड़ना और चेहरा सूजना। मुँह खुलना=बढ़-बढ़कर बोलने की आदत पड़ना। मुँह चलना=१. भोजन होना। खाया जाना। २. मुँह से बहुत बातें निकलना। मुँह चिढ़ाना= किसी का उपहास करने के लिए उसकी आकृति, हाव-भाव, कथन आदि की बिगाड़कर नकल करना। मुँह छूना=नाम मात्र के लिए या ऊपरी मन से कहना। मुँह पेट चलना=कै-दस्त का रोग या हैजा होना। मुँह बाँधकर बैठना=चुप-चाप बैठना। मुँह भरना=किसी को घूस देना। किसी का मुँह मीठा करना=

१. मिठाई खिलाना। २. कुछ देकर प्रसन्न करना। मुँह में खून या लहू लगना=किसी प्रकार के लाभ का चसका लगना या चाट पड़ना। मुँह में पानी भर आना=कुछ पाने के लिए ललचना। मुँह में लगाम न होना=बिना सोचे-समझे बोलने की आदत होना। मुँह सीना= १. बोलने से रुकना। २. बोलने से रोकना। मुँह से फूल झड़ना=मुँह से बहुत मधुर या प्रिय बातें निकलना।
३. सिर का अगला भाग जिसमें माथा, आँखें, नाक, मुँह, कान, गाल आदि अंग होते हैं। चेहरा।
मुहा०-अपना-सा मुँह लेकर रह-जाना=लज्जित होकर रह जाना। (अपना) मुँह काला करना=१. व्यभिचार करना। २. अपनी बदनामी करना। (दूसरे का) मुँह काला करना= उपेक्षापूर्वक दूर करना या हटाना। मुँह की खाना=अपमानित या लज्जित होना। मुँह के बल गिरना=बहुत धोखा खाना। मुँह छिपाना = लज्जा के कारण सामने न आना। (किसी का) मुँह ताकना = १. आशा लगाकर किसी की ओर देखना। २. चकित होकर किसी की ओर देखना। मुँह ताकना=कुछ कर न सकने के कारण चुपचाप बैठे रहना। मुँह धो रखना=कुछ पाने की आशा छोड़ बैठना। मुँह पर=सामने। मुँह फुलाना=अप्रसन्नता प्रकट करनेवाली आकृति बनाना। मुँह फूँकना या झुलसना=मुँह में आग लगाना। (गाली) (किसी के) मुँह लगना=१. बड़ों के सामने बढ़-बढ़कर या अनुचित बातें करना। २. बड़ों की बातों का उत्तर देना। मुँह लगाना=ढीठ बनाना। सिर चढ़ाना। मुँह सूखना= भय या लज्जा से चेहरे का तेज नष्ट होना।
४. किसी पदार्थ का ऊपरी कुछ खुला हुआ भाग। ५. छेद। छिद्र। ६. व्यवहार या सम्बन्ध का ध्यान। मुलाहजा। मुरव्वत।
मुहा०-मुँह देखने का=जो हार्दिक न हो। केवल ऊपरी या दिखौआ। मुँह मुलाहजे का = वह परिचित जिसके साथ शीलपूर्ण व्यवहार करना पड़ता हो।
७. सामने की या ऊपरी सतह। सामना।

मुँह-अखरी*-वि० दे० 'अबानी'।

मुँह-काला-पुं० [हिं० मुँह+काला] १. अप्रतिष्ठा। बेइज्जती। २. बदनामी।

मुँहचंग-पुं० दे० 'मुरचंग'।

मुँह-चोर-वि० [हिं० मुँह+चोर] जो औरों के सामने जाने में हिचकता हो।

मुँह-छुट-वि० दे० 'मुँह-फट'।

मुँह-जोर-वि० [हिं० मुँह+जोर] १. बहुत अधिक बोलनेवाला। बकवादी। २. दे० 'मुँह फट'।

मुँह-दिखाई-स्त्री० [हिं० मुँह+दिखाना] १. पहले-पहल ससुराल में आने पर नई वधू का मुँह देखने की रसम। मुँह-देखनी। २. वह धन जो इस अवसर पर वधू को दिया जाता है।

मुँह-देखा-वि० [हिं० मुँह+देखना] [स्त्री० मुँह-देखी] केवल सामना होने पर संकोचवश होनेवाला (व्यवहार)।

मुँह-फट-वि० [हिं० मुँह+फटना] अनुचित या कटु बातें कहने में संकोच न करनेवाला।

मुँह-बोला-वि० [हिं० मुँह+बोलना] (सम्बन्धी) जो वास्तव में न होने पर

भी मुँह से कहकर बनाया गया हो। जैसे-मुँह-बोला भाई।
मुँह-माँगा-वि० [हिं० मुँह+माँगना] मुँह से माँगा हुआ। मनोनुकूल।
मुँहासा-पुं० [हिं० मुँह] मुँह पर के वे दाने जो युवावस्था में निकलते हैं।
मुअत्तल-वि० [अ०] [भाव० मुअत्तली] जो अपराध या अभियोग लगने पर जाँच या अन्तिम निर्णय तक के लिए अपने पद से हटा दिया गया हो।
मुआफिक-वि० [अ०] [भाव० मुआफिकत] १. अनुकूल। २. सदृश। समान।
मुआयना-पुं० = निरीक्षण।
मुआवजा-पुं० [अ०] १. बदला। पलटा। २. हानि आदि के बदले में मिलनेवाला धन। प्रतिकर। (कम्पेन्सेशन)
मुकताई*-स्त्री० [सं० मुक्त] १. मुक्ति। २. छुटकारा।
मुकता-वि० [हिं० अ + मुकना = समाप्त होना][स्त्री०मुकती] बहुत अधिक। यथेष्ट।
मुकतावली-स्त्री० दे० 'मुक्तावली'।
मुकति*-स्त्री० दे० 'मुक्ति'।
मुकदमा-पुं०[अ०मुकद्दमः]१.अभियोग, अपराध, अधिकार या लेन-देन आदि से सम्बन्ध रखनेवाला वह विवाद जो न्यायालय के सामने किसी पक्ष की ओर से विचार के लिए रखा जाय। अभियोग। २.दावा। नालिश। ३.ग्रन्थ की भूमिका।
मुकदमेबाज-पुं० [अ० मुकदमा+फा० बाज (प्रत्य०)] [भाव० मुकदमेबाजी] वह जो प्रायः मुकदमे लड़ता रहता हो।
मुकद्दमा-पुं० दे० 'मुकदमा'।
मुकना*-अ० [सं० मुक्त] १. मुक्त होना। छूटना। २.समाप्त होना। खतम होना।
मुकम्मल-वि० [अ०] पूरा किया हुआ। पूर्ण। (कार्य)
मुकरना-अ० [सं० मा=नहीं+करना] कोई बात कहकर उससे इन्कार करना या पीछे हटना। नटना।
वि० पुं० [हिं०मुकरना] कोई बात कहकर उससे इन्कार कर जानेवाला।
मुकरानी-स्त्री० दे० 'मुकरी'।
मुकरी-स्त्री० [हिं० मुकरना+ई (प्रत्य०)] वह कविता जिसमें पहले कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही बात बनाकर कही जाय। कह-मुकरी।
मुक़र्रर-वि० [अ०] [भाव० मुकर्ररी] १. निश्चित। नियत। २. नियुक्त।
मुकलाना*-स० [सं० मुक्त या मुकलित ?] १. खोलना। २. छोड़ना।
मुकाबला-पुं० [अ०] १. सामना। २. मुठ-भेड़। ३. तुलना। ४. मिलान। ५. विरोध।
मुकाबिल-क्रि० वि० [अ०] सम्मुख। सामने।
पुं० १. प्रतिद्वन्द्वी। २. शत्रु। वैरी।
मुकाम-पुं० [अ०] १.स्थान। जगह। २. यात्रा करते समय मार्ग में ठहरने की क्रिया या स्थान। ३. अवसर। मौका।
मुकामी-वि०दे०'स्थानीय' या 'स्थानिक'।
मुकुंद-पुं० [सं०] विष्णु।
मुकुट-पुं० [सं०] देवताओं, राजाओं आदि के सिर पर रहनेवाला एक प्रसिद्ध शिरोभूषण।
मुकुता*-पुं० दे० 'मुक्ता'।
मुकुर-पुं०[सं०]१.शीशा। दर्पण। २.कली।
मुकुल-पुं० [सं०] १. कली। २. शरीर। ३. आत्मा।
मुकुलित-वि० [सं०] १. (पौधा) जिसमें कलियाँ निकली हों। २.कुछ खिली

हुई (कली)। ३.आधा खुला और आधा बन्द। (फूल, नेत्र आदि)

मुकेशक-पुं० दे० 'मुकेश'।

मुक्का-पुं० [सं० मुष्टिका] [स्त्री० अल्पा० मुक्की] आघात या प्रहार के लिए बाँधी हुई मुट्ठी। घूँसा।

मुक्की-पुं० [हिं० मुक्का+ई (प्रत्य०)] १. मुक्का। घूँसा। २.मुक्कों की मार या लड़ाई। ३. बँधी मुट्ठियों से किसी के शरीर पर, उसकी थकावट दूर करने के लिए, धीरे धीरे आघात करना।

मुक्केबाजी-स्त्री० [हिं० मुक्का+फा०बाजी (प्रत्य०)] मुक्कों की लड़ाई। घूँसेबाजी।

मुक्कैश-पुं० [अ०] १. बादला। २. जरी का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

मुक्त-वि० [सं०] १. जिसे मुक्ति मिल गई हो। २. बन्धन से छूटा हुआ। ३. बन्धन-रहित। स्वच्छन्द। ४. चलाने के लिए छोड़ा या फेंका हुआ।

मुक्त-कंठ-वि० [सं०] बिलकुल स्पष्ट रूप से, बिना किसी संकोच या दबाव के और कृतज्ञतापूर्वक कहा हुआ। जैसे-मुक्त-कण्ठ से प्रशंसा करना।

मुक्तक-पुं० [सं०] फुटकर या कई प्रकार के विषयों की कविता।

मुक्त व्यापार-पुं० [सं०] दूसरे देशों के साथ होनेवाला ऐसा व्यापार जिसमें आयात और निर्यात संबंधी विशेष बाधाएँ न हों। (फ्री ट्रेड)

मुक्त-हस्त-वि० [सं०] [भाव० मुक्त-हस्तता] जो खुले हाथों और बहुत उदारतापूर्वक दान या व्यय करता हो।

मुक्ता-स्त्री० [सं०] मोती।

मुक्तावली-स्त्री० [सं०] मोतियों की माला या लड़ी।

मुक्ताहल०-पुं० दे० 'मुक्ताफल'।

मुक्ति-स्त्री० [सं०] १. बन्धन, अभियोग आदि से छूटने की क्रिया या भाव। (रिलीज) २. नियम, पक्ष, भार आदि से छूटने की क्रिया या भाव। (एक्ज़ेम्पशन) ३. धार्मिक विश्वास के अनुसार वह दशा जिसमें मनुष्य बार बार जन्म लेने से छूट जाता है और उसकी आत्मा ईश्वर में मिल या स्वर्ग पहुँच जाती है। मोक्ष।

मुख-पुं० [सं०] १. मुँह। आनन। विशेष दे० 'मुँह'। २. किसी पदार्थ का सामनेवाला ऊपरी खुला भाग। ३.आदि। आरम्भ। ४. नाटक में एक प्रकार की संधि जहाँ से अर्थों और रसों के व्यंजक बीज की उत्पत्ति या सूत्रपात होता है।

मुख-चित्र-पुं० [सं०] किसी पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर या बिलकुल आरम्भ में दिया हुआ चित्र।

मुखड़ा-पुं० [सं० मुख] मुख। चेहरा। (सुन्दरता का सूचक)

मुखतार-पुं० [अ०] १. जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने के लिए नियत किया हो। २. एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और कार्य-कर्त्ता।

मुखतारनामा-पुं० [अ० मुखतार+फा० नामः] वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने का अधिकार मिला हो।

मुखपात्र-पुं० [सं०] वह जिसकी आड़ में रहकर कोई काम किया जाय।

मुख-पृष्ठ-पुं० [सं०] किसी पुस्तक में सबसे ऊपर का पृष्ठ। पहला आवरण पृष्ठ।

मुखबंध-पुं० [सं०] ग्रन्थ की प्रस्तावना।

मुखबिर-पुं० [अ०] [भाव० मुखबिरी]

खबर देनेवाला आदमी। गोइन्दा।

मुखबिरी-स्त्री० [हिं० मुखबिर+ई (प्रत्य०)] गुप्त रूप से भेद देना। मुखबिर का काम।

मुखभेड़*-स्त्री० दे० 'मुठभेड़'।

मुखर-वि० [सं०] [स्त्री० मुखरा] १ अप्रिय या कटु बोलनेवाला। २. बहुत बोलनेवाला। ३. दे० 'मुखरित'।

मुखरित-वि० [सं०] शब्दों या ध्वनियों से युक्त। बोलता हुआ।

मुख-शुद्धि-स्त्री० [सं०] १ मुँह साफ करना। २. भोजन के बाद पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना।

मुख-संधि-स्त्री० दे० 'मुख' ४.।

मुखाग्र-वि० [सं०] जो जबानी याद हो। कण्ठस्थ।

मुखापेक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० मुखापेक्षी] आश्रित रूप में दूसरों का मुँह ताकना।

मुखापेक्षी-पुं० [सं०] वह जो आश्रय, सहायता आदि के लिए दूसरों का मुँह ताकता हो।

मुखारी-स्त्री० [सं० मुख] १. चेहरे की बनावट मुखाकृति। २. दे० 'दतुअन'।

मुखालिफ-वि० [अ०] [भाव० मुखालिफत] १. विरोधी। २. शत्रु। ३. प्रतिद्वंद्वी।

मुखिया-पुं० [सं० मुख्य+इया (प्रत्य०)] १. नेता। सरदार। २ अगुआ।

मुखौटा-वि० [सं० मुखपट] धातु आदि का बना हुआ मुख के आकार का वह खंड जो देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के मुख पर लगाया जाता है। चेहरा।

मुख्तसर-पुं० [अ०] १. संक्षिप्त। २ अल्प। थोड़ा।

मुख्य-वि० [सं०] [भाव० मुख्यता] १. सब में बड़ा, ऊपर या आगे रहनेवाला। प्रधान। २. जिसमें औरों की अपेक्षा बहुत अधिक विशेषता या महत्त्व हो। अधिक महत्त्ववाला। ३. अपने वर्ग या विभाग में सबसे बड़ा या प्रधान। (चीफ) जैसे-मुख्य न्यायाधीश। (चीफ जस्टिस)

मुख्यतः-क्रि०वि० [सं०] मुख्य रूप से। खास तौर पर।

मुख्यावास-पुं० [सं०] वह मुख्य या प्रधान स्थान जहाँ कोई बड़ा अधिकारी नियमित रूप से रहता हो और जहाँ उसका सबसे बड़ा कार्यालय हो। (हेडक्वार्टर)

मुगदर-पुं० [सं० मुद्गर] वह भारी मुँगरी का जोड़ा जिसका उपयोग व्यायाम के लिए होता है। जोड़ी।

मुगल-पुं० [फा०] [स्त्री० मुगलानी] १. मंगोल देश का निवासी। २. तुर्कों का एक वर्ग जो तातार देश में रहता था।

मुगलई-वि० [फा० मुगल] मुगलों की तरह का।

स्त्री० मुगल होने का भाव। मुगलपन।

मुगलाई-वि० स्त्री० दे० 'मुगलई'।

मुगलानी-स्त्री० [हिं० मुगल] १. मुगल स्त्री। २. दासी। ३. कपड़े सीनेवाली।

मुग्ध-वि० [सं०] [भाव० मुग्धता] १. जिसे मोह या भ्रम हुआ हो। २. आसक्त। मोहित।

मुग्धकर-वि० [सं०] [स्त्री० मुग्धकरी] मुग्ध करनेवाला। मोहक।

मुग्धा-स्त्री० [सं०] वह युवती नायिका जिसमें अभी काम-चेष्टा उत्पन्न न हुई हो।

मुचकुंद-पुं० [सं० मुचुकुन्द] एक बड़ा पेड़ जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं।

मुचना*-अ० [सं० मोचन] मोचन होना।

अ० [हिं० मोच] अंग में मोच आना।

मुचलका-पुं० [तु०] वह पत्र जिसके

द्वारा कोई अनुचित काम न करने या नियत तिथि पर न्यायालय में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो और प्रतिज्ञा पूरी न करने पर कुछ अर्थ-दण्ड देना पड़े।

मुछंदर-पुं० [हिं० मूँछ] १. बड़ी बड़ी मूँछोंवाला। २. बड़े बड़े बालों के कारण, कुरूप। ३. मूर्ख। उजड्ड।

मुजरा-पुं० [अ०] १. किसी रकम में से काटी हुई रकम अथवा कुछ रकम काटना। २. किसी बड़े के सामने पहुँचकर उसे सलाम करना। अभिवादन। ३. वेश्या का बैठकर गाना।

मुजरिम-पुं० [अ०] जिसपर जुर्म लगा हो। अभियुक्त।

मुजावर-पुं० [अ०] किसी पीर की कब्र, दरगाह आदि पर बैठकर पुजाने और चढ़ावा लेनेवाला।

मुझ-सर्व० [हिं० मुझे] 'मैं' का वह रूप जो कुछ कारकों में विभक्ति लगने से पहले होता है। जैसे-मुझको, मुझसे।

मुझे-सर्व० [सं० मह्यम्] मुझको।

मुट्ठा-पुं० [हिं० मूठ] १. घास-फूस आदि का पूला। २. कागजों आदि का गोल लपेटा हुआ पुलिन्दा। खर्रा। दस्ता।

मुट्ठी-स्त्री० [सं० मुष्टिका, प्रा० मुट्ठिआ] १. हाथ की उँगलियाँ मोड़कर हथेली पर दबाने से बननेवाली मुद्रा या रूप। २. उतनी वस्तु जितनी ऐसे हाथ में आवे। मुहा०-मुट्ठी में=अधिकार या वश में। मुट्ठी गरम करना=कुछ धन देना। ३. बँधी हुई हथेली के बराबर लंबाई। ४. घोड़ों की ऊँचाई की एक नाप जो दोनों मुट्ठियों और फैले हुए अंगूठों के बराबर होती है। जैसे-सात मुट्ठी का घोड़ा। ५. दे० 'मुक्की' ३.।

मुठ-भेड़-स्त्री० [हिं० मूठ+भिड़ना] १. टक्कर। भिड़न्त। २. भेंट। सामना।

मुठिका*-स्त्री० १. दे० 'मुट्ठी'। २. दे० 'मुक्का'।

मुठिया-स्त्री० दे० 'बेंट'।

मुठी*-स्त्री० दे० 'मुट्ठी'।

मुड़कना-अ० दे० 'मुरकना'।

मुड़ना-अ० [सं० मुरण] १. घूम या बल खाकर किसी ओर फिरना। सीधे न जाकर इधर-उधर या पीछे प्रवृत्त होना। घूमना। २. लौटना।

मुड़ला*-वि० [स्त्री० मुड़ली] दे० 'मुंडा'।

मुड़ाना-स० दे० 'मुँड़ाना'।

मुतअल्लिक-वि० [अ०] सम्बन्ध या लगाव रखनेवाला। सम्बद्ध। क्रि० वि० सम्बन्ध में। विषय में।

मुतक्का-पुं० [देश०] १. दे० 'मुँडेरा'। २. छोटा खंभा। ३. मीनार। लाट।

मुतबन्ना-पुं० [अ०] दत्तक पुत्र।

मुतलक-क्रि० वि० [अ०] कुछ भी। तनिक भी। जरा भी। वि० बिलकुल। निपट। निरा।

मुतसद्दी-पुं० [अ०] १.लेखक। मुनशी। २. प्रबन्धकर्ता। ३. मुनीम।

मुतसिरी*-स्त्री० [हिं० मोती] मोतियों की माला या कंठी।

मुताबिक-क्रि० वि० [अ०] अनुसार। वि० अनुकूल।

मुतालबा-पुं० दे० 'पावना'।

मुताह-पुं० [अ० मुताअ] एक प्रकार का अस्थायी विवाह। (मुसल०)

मुति लाडू*-पुं० [हिं० मोती+लड्डू] मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा*-पुं० [हिं० मोती+हार] कलाई पर पहनने का एक गहना।

मुद-पुं० [सं०] हर्ष। आनन्द।

मुदगर-पुं० दे० 'मुगदर'।

मुदर्रिस-पुं० [अ०] [भाव० मुदर्रिसी] अध्यापक।

मुदवंत*-वि० [सं० मोद] प्रसन्न। खुश।

मुदा*-अव्य० [अ०मुद्दआ=अभिप्राय] १. तात्पर्य यह कि। २.मगर। लेकिन। परन्तु।

मुदाम-क्रि० वि० [फा०] १. सदा। हमेशा। २. निरंतर। लगातार। † ३. ज्यों का त्यों। (क्व०)

मुदामी-वि०[फा०]सदा होता रहनेवाला।

मुदित-वि० [सं०] [स्त्री० मुदिता] प्रसन्न। खुश।

मुदिता-स्त्री० [सं०] एक प्रकार की परकीया नायिका। (साहित्य)

मुदिर-पुं० [सं०] बादल। मेघ।

मुद्गर-पुं० [सं०] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। २. दे० 'मुगदर'।

मुद्दई-पुं० [अ०] [स्त्री० मुद्दइया] १. दावा दायर करने या अभियोग उपस्थित करनेवाला। वादी। २. शत्रु। दुश्मन।

मुद्दत-स्त्री० [अ०] [वि० मुद्दती] १. अवधि। २. बहुत दिन। अधिक समय।

मुद्दती-वि० [अ०] जिसकी कोई मुद्दत या अवधि नियत हो।

मुद्दाअलेह मुद्दालेह-पुं० [अ०] वह जिसपर दीवानी दावा हो। प्रतिवादी।

मुद्ध*-वि० दे० 'मुग्ध'।

मुद्धा-पुं० [देश०] पिंडली के नीचे का गाँठवाला भाग। टखना।

मुद्धी-स्त्री० [देश०] रस्सी की वह गाँठ जिसके अन्दर से उसका कोई सिरा इधर-उधर खिसक सके।

मुद्रक-पुं० [सं०] १. छापनेवाला। २. २. समाचारपत्र आदि का वह अधिकारी जिसपर उसके छापने का भार होता है। (प्रिन्टर)

मुद्रण-पुं० [सं०] छापना। छपाई।

मुद्रण-यंत्र-पुं० [सं०] वह यन्त्र जिसकी सहायता से साधारण समाचार पत्र, पुस्तकें आदि छपी जाती हैं।

मुद्रणालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मुद्रण-यन्त्र की सहायता से समाचारपत्र, पुस्तकें आदि छपती हैं। (प्रिन्टिंग प्रेस)

मुद्रांकित-वि० [सं०] जिसपर मुद्रा या मोहर लगी हो।

मुद्रा-स्त्री० [सं०] १. किसी के नाम की छाप। मोहर। (सील) २. रुपये-पैसे आदि। सिक्का। ३. अँगूठी। छल्ला। ४. छपाई के लिए सीसे के ढले हुए अक्षर। (टाइप) ५. गोरख-पंथी साधुओं का कान में पहनने का वलय। ६. खड़े होने, बैठने आदि में शरीर के अंगों की कोई स्थिति। ठवन। (पोस्चर) ७. विष्णु के आयुधों के चिह्न जो भक्त अपने शरीर पर अंकित कराते हैं। छाप। ८ हठ योग में ये अंग-विन्यास-खेकरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी।

मुद्रा-बाहुल्य-पुं० दे० 'मुद्रा-स्फीति'।

मुद्रायंत्र-पुं० [सं०] छापने या मुद्रण करने का यंत्र। छापे की कल।

मुद्रा-विस्फीति-स्त्री० [सं०] कृत्रिम रूप से बढ़े हुए मुद्रा के प्रचलन या स्फीति को घटाकर कम करना या साधारण स्थिति में लाना। 'मुद्रा-स्फीति' का उलटा। (डिफ्लेशन)

मुद्रा-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें पुराने सिक्कों के आधार पर ऐतिहासिक घटनाएँ जानने का विवेचन होता है। (न्यूमिजमैटिक्स)

मुद्रा-स्फीति-स्त्री० [सं०] किसी देश

में कागजी मुद्रा या नोटों आदि का अपेक्षाकृत बहुत अधिक प्रचलन होने पर अथवा कृत्रिम रूप से मुद्रा के बहुत बढ़ जाने की स्थिति, जिससे मुद्रा का मूल्य बहुत घट और वस्तुओं का मूल्य बहुत बढ़ जाता है। (इन्फ्लेशन)

मुद्रिका-स्त्री० [सं०] अँगूठी।

मुद्रित-वि०[सं०] १ जिसका मुद्रण हुआ हो। छपा हुआ। २. जिसपर कोई मुद्रा अंकित हुई हो। मोहर किया हुआ। (सील्ड) ३. मुँदा हुआ। मुँह-बन्द।

मुधा-क्रि० वि० [सं०] व्यर्थ। वृथा। वि० १. व्यर्थ का। २. मिथ्या। झूठ।

मुनशी-पुं० [अ०] १. लेख आदि लिखनेवाला। लेखक। २.पंडित। विद्वान्।

मुनसरिम-पुं० [अ०] १. प्रबन्ध करनेवाला। २. कचहरी के कार्यालय का वह अधिकारी जो मिसलें या नत्थियाँ यथा-स्थान रखता है।

मुनसिफ-पुं० [अ० मुन्सिफ] [भाव० मुन्सिफी] १. वह जो न्याय या इन्साफ करता हो। २. न्याय विभाग का एक अधिकारी।

मुनहसर-वि०[अ०]अवलंबित। आश्रित।

मुनादी-स्त्री० [अ०] ढोल आदि पीटकर की जानेवाली घोषणा। ढिंढोरा। डुग्गी।

मुनाफा-पुं० [अ०] लाभ। नफा।

मुनारा-पुं० दे० 'मीनार'।

मुनासिब-वि० [अ०] [भाव० मुनासिबत] उचित। वाजिब।

मुनि-पुं० दे० 'ऋषि'।

मुनीब(म)-पुं० [अ० मुनीब] आय-व्यय का हिसाब लिखनेवाला लिपिक।

मुनीमी-स्त्री० [हिं० मुनीम] मुनीम का काम या पद।

मुनीश(श्वर)-पुं० [सं०] मुनियों में श्रेष्ठ। बहुत बड़ा मुनि।

मुन्ना(न्नू)-पुं० [देश०] १. छोटों के लिए प्रेम-सूचक शब्द। २.प्रिय। प्यारा।

मुफलिस-वि० [अ०] [भाव० मुफलिसी] निर्धन। दरिद्र। कंगाल।

मुफस्सल-वि० [अ०] ब्योरेवार। विस्तृत। पुं० केन्द्रस्थ नगर के आस-पास के स्थान।

मुफ्त-वि० [अ०] जिसमें कुछ मूल्य या धन न लगे।

मुहा०-मुफ्त में=१. बिना मूल्य दिये या कुछ व्यय किये।

क्रि० वि० व्यर्थ। बे-फायदा।

मुफ्तखोर-वि० [अ०+फा०] [भाव० मुफ्तखोरी] बिना परिश्रम किये मुफ्त का माल खानेवाला।

मुफ्ती-पुं०[अ०]१.मुसलमान धर्म-शास्त्री। स्त्री० वर्दी पहनने के अधिकारी सैनिकों, सिपाहियों आदि के सादे और साधारण कपड़े। (वर्दी से भिन्न)

वि० [अ० मुफ्त] मुफ्त का।

मुबलिग-पुं०[अ०] धन की संख्या। रकम।

मुबारक-वि० [अ०] १. जिसके कारण बरकत हो। २. शुभ। मंगलकारी।

मुबारकबाद-पुं० दे० 'बधाई'।

मुबारकी-स्त्री० दे० 'बधाई'।

मुमकिन-वि० [अ०] जो हो सके। संभव।

मुमानियत-स्त्री० दे० 'मनाही'।

मुमुक्षु-वि० [सं०] मुक्ति की कामना या इच्छा करनेवाला।

मुमुच्छु*-वि० दे० 'मुमुक्षु'।

मुमूर्षा-स्त्री० [सं०] मरने की इच्छा।

मुमूर्षु-वि० [सं०] जो मरने के समीप हो।

मुरकना-अ० [हिं० मुड़ना] [भाव० मुरक, स० मुरकाना] १. दबककर

किसी ओर झुकना। मुड़ना। २. किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि उसमें पीड़ा होने लगे। मोच खाना। ३. हिचकना। ४. नष्ट होना।

मुरकी-स्त्री० [हिं० मुरकना] १. संगीत में किसी स्वर को बहुत कोमलता और सुन्दरतापूर्वक घुमाते हुए दूसरे स्वर पर ले जाने की क्रिया। २. कान में पहनने की एक प्रकार की बाली।

मुरखाई*-स्त्री० दे० 'मूर्खता'।

मुरगा-पुं० [फा० मुर्ग] [स्त्री० मुरगी] एक प्रसिद्ध पक्षी जो बहुत सबेरे बोलता है।

मुरगाबी-स्त्री० [फा०] मुरगे की तरह का एक जल-पक्षी।

मुरचंग-पुं० [हिं० मुँह+चंग] मुँह से बजाया जानेवाला एक बाजा। मुँहचंग।

मुरचा-पुं० दे० 'मोरचा'।

मुरछना(छाना)*-अ० [सं० मूर्च्छन] १. मूर्च्छित होना। २. शिथिल होना।

मुरछावंत(छित)-वि० दे० 'मूर्च्छित'।

मुरझना*-अ० दे० 'कुम्हलाना'।

मुरझाना-अ० [सं० मूर्च्छन्] १ दे० 'कुम्हलाना'। २. सुस्त या उदास होना।

मुरदा-पुं० [फा० मुर्दः] मरे हुए व्यक्ति का निष्प्राण शरीर। शव।

वि० १. मरा हुआ। मृत। २. जिसमें कुछ भी शक्ति न हो। बे-दम। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ।

मुरदार-वि० [फा०] १. मरा हुआ। मृत। २. अपवित्र। ३. अशक्त। बे-दम।

मुरना*-अ० दे० 'मुड़ना'।

मुरब्बा-पुं० [अ० मुरब्बः] चीनी आदि की चाशनी में पकाया हुआ फलों आदि का पाक। जैसे-आम का मुरब्बा।

मुरमुरा-पुं० [अनु०] एक प्रकार का भुना हुआ चावल या ज्वार जो अंदर से पोला होता है। फरवी। लावा।

मुरलिका-स्त्री० दे० 'मुरली'।

मुरली-स्त्री० [सं०] बाँसुरी। वंशी।

मुरलीधर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

मुरवी*-स्त्री० [सं० मौर्वी] धनुष की डोरी। चिल्ला।

मुरव्वत-स्त्री० दे० 'मुरौवत'।

मुरहा-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

*वि० दे० 'मुलहा'।

मुराद-स्त्री० [अ०] १. मन की कामना या अभिलाषा। वासना।

मुहा०-मुराद पाना=मनोरथ सिद्ध होना। मुराद माँगना=मनोरथ सिद्ध होने की अभिलाषा या प्रार्थना करना।

२. अभिप्राय। आशय। मतलब।

मुराना-स० १ दे० 'चुभलाना'। २. दे० 'मोड़ना'।

मुरार-पुं० [सं० मृणाल] कमल की जड़। कमल-नाल।

मुरासिला-पुं० [अ० मुरसिलः] १ पत्र। चिट्ठी। खत। २. राज-दरबार से भेजा जानेवाला पत्र। खरीता।

मुरारी-पुं० [सं० मुरारि] श्रीकृष्ण।

मुरीद-पुं० [अ०] १. शिष्य। चेला। २. पक्का अनुयायी और भक्त।

मुरुख*-वि० दे० 'मूर्ख'।

मुरुछना*-अ० दे० 'मुरझाना'।

मुरेठा-पुं० [हिं० मूँड़] पगड़ी। साफा।

मुरेरना-स० दे० 'मरोड़ना'।

मुरौवत-स्त्री० [अ० मुरव्वत] शील। संकोच। लिहाज।

मुर्ग(ा)-पुं० दे० 'मुरगा'।

मुर्दनी-स्त्री० [फा० मुर्दन=मरना] १. चेहरे पर दिखाई देनेवाले मृत्यु के लक्षण।

२. शव की अंत्येष्टि क्रिया के लिए लोगों का उसके साथ जाना।

मुर्दावली-स्त्री० दे० 'मुर्दनी'।
वि० मुरदे से सम्बन्ध रखनेवाला।

मुर्री-स्त्री० [हिं० मरोड़ना] १. कपड़े, डोरे आदि का सिरा मरोड़कर लगाई हुई गाँठ। २. कपड़े आदि में लपेटकर उसमें डाली हुई ऐंठन या बल।

मुल¹-अव्य० [देश०] १. मगर। लेकिन। पर। २. तात्पर्य यह कि। (पश्चिम) स्त्री० [अ०] शराब। मद्य।

मुलकना*-अ० [सं० पुलकित] १. पुलकित होना। २ मुस्कराना। ३. मचकना।

मुलकाना*-स० हिं० 'मुलकना' का स०।

मुलकित-वि० [सं० पुलकित] १. मुस्कराता हुआ। २ प्रसन्न। खुश।

मुलजिम-वि० दे० 'अभियुक्त'।

मुलतवी-वि० दे० 'स्थगित'।

मुलना¹-पुं० दे० 'मौलवी'।

मुलम्मा-पुं० [अ०] १ किसी चीज पर रासायनिक प्रक्रिया से चढ़ाई हुई सोने, चाँदी आदि की हलकी रंगत या तह। गिलट। कलई। २. ऊपरी तड़क-भड़क।

मुलहा¹-वि० [सं० मूल (नक्षत्र)] १. जो मूल नक्षत्र में पैदा हुआ हो। (अशुभ) अनाथ। ३. उपद्रवी। नटखट।

मुलाकात-स्त्री० [अ०] १. दो या कई व्यक्तियों का आपस में मिलना। भेंट। मिलन। २. जान-पहचान या मेल-मिलाप।

मुलाकाती-पुं० [अ० मुलाकात] १. वह जिससे जान-पहचान हो। परिचित। २. मुलाकात करने के लिए आनेवाला। यौ०-मुलाकाती कार्ड=वह कार्ड जो कोई मुलाकाती अपने आने की सूचना और परिचय देने के लिए भेजता है।

मुलाजिम-पुं० [अ०] नौकर। सेवक।

मुलाजिमत-स्त्री० [अ०] नौकरी। सेवा।

मुलायम-वि० [अ०] १. जो कड़ा न हो। 'सख्त' का उलटा। २. हलका। धीमा। ३. कोमल। सुकुमार। यौ०-मुलायम चारा=वह जो सहज में दबाया या अधीन किया जा सके।

मुलायमियत(मी)-स्त्री० [अ० मुलायम] मुलायम होने का भाव। कोमलता।

मुलाहजा-पुं० [अ०] १. निरीक्षण। देख-भाल। २. शील-संकोच। ३. रिआयत।

मुलेठी-स्त्री० [सं० मधुयष्टि] घुँघची की जड़ जो दवा के काम आती है। जेठी मधु।

मुल्क-पुं० [अ०] [वि० मुल्की] १ देश। २. प्रांत। प्रदेश। ३. संसार।

मुल्ला-पुं० दे० 'मौलवी'।

मुवक्किल-पुं० [अ०] वह जो अपने काम के लिए वकील नियुक्त करता है।

मुवना*-अ०=मरना।

मुशायरा-पुं० [अ० मशायरः] वह समाज जिसमें बहुत-से लोग मिलकर शेर या गजलें पढ़ते हैं। उर्दू कवि-सम्मेलन।

मुशाहरा-पुं० [फा०] वेतन। तनख्वाह।

मुश्क-पुं० [फा०] १. कस्तूरी। २. गंध। बू। स्त्री० [देश०] कन्धे और कोहनी के बीच का मांसल भाग। भुजा। बाँह। मुहा०-मुश्कें कसना या बाँधना=दोनों भुजाओं को पीठ की ओर ले जाकर रस्सी से बाँधना। (अपराधियों आदि को)

मुश्किल-वि० [अ०] कठिन। दुष्कर। स्त्री० १. कठिनता। दिक्कत। २. विपत्ति।

मुश्की-वि० [फा०] १. कस्तूरी के रंग का। काला। २. जिसमें कस्तूरी पड़ी हो। पुं० काले रंग का घोड़ा।

मुश्त-पुं० [फा०] मुट्ठी।

यद-एक-मुश्त=एक-साथ या एक ही बार में दिया जानेवाला (धन या देन)।

मुश्तरका-वि० [अ० मुश्तरकः] जिसमें कई आदमी शरीक हों। जिसमें और लोग भी सम्मिलित हों। साझे का।

मुषुर*-स्त्री० दे० 'मुखर'।

मुष्टि(का)-वि० [सं०] १. मुट्ठी। २. मुक्का। घूँसा।

मुसकान*-स्त्री०=मुस्कराहट।

मुसजर-पुं० [अ० मुशज्जर] एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा।

मुसना-अ० हिं० 'मूसना' का अ०।

मुसन्ना-पुं० [अ०] १. असल लेख की दूसरी नकल। प्रतिलिपि। २. रसीद आदि का वह दूसरा भाग जिसपर उसकी नकल होती है और जो रसीद देनेवाले के पास रहता है। प्रतिपर्ण।

मुसम्मात-वि० स्त्री० [अ०] नाम्नी। नाम-धारिणी। जैसे-मुसम्मात राधा। स्त्री० स्त्री। औरत।

मुसम्मी-वि०[अ०] नामवाला। नामक। नामधारी। जैसे-मुसम्मी रामकृष्ण। स्त्री० [मोज़ैम्बिक (अफ्रीका का एक प्रदेश)] एक प्रकार का बढ़िया मीठा नीबू।

मुसरा-पुं० दे० 'मूसला'।

मुसलमान-पुं० [फा०] [स्त्री० मुसलमानी] मुहम्मद साहब के चलाये हुए सम्प्रदाय का अनुयायी।

मुसलमानी-वि०[फा०] मुसलमान का। स्त्री० दे० 'सुन्नत'।

मुसल्लम-वि० [फा०] पूरा। अखंड।

मुसल्ला-पुं० [अ०] वह दरी या चटाई जिसपर बैठकर नमाज़ पढ़ते हैं। †पुं०=मुसलमान। (उपेक्षासूचक)

मुसहर-पुं० [हिं०मूस=चूहा+हर(प्रत्य०)] उत्तर भारत की एक जंगली जाति।

मुसाफ़िर-पुं० [अ०] यात्री।

मुसाफिरखाना-पुं० [अ० मुसाफिर+फा० खाना] १ यात्रियों के ठहरने का स्थान। धर्मशाला। सराय। २.रेल के स्टेशन पर बना हुआ यात्रियों के ठहरने का स्थान। यात्री-गृह।

मुसाफिरत(फिरी)-स्त्री०[अ०] यात्रा।

मुसाहब-पुं० [अ०] [भाव० मुसाहबी] धनवान् या राजा आदि का पार्श्ववर्ती।

मुसीबत-स्त्री० [अ०] १. तकलीफ। कष्ट। २. विपत्ति। संकट। आफत।

मुस्कराना-अ० [सं० स्मय+कृ] बहुत ही मंद रूप से या धीरे से हँसना।

मुस्कराहट-स्त्री० [हिं० मुस्कराना] मुस्कराने की क्रिया या भाव। मंद हास।

मुस्काना-अ०=मुस्कराना।

मुस्की-स्त्री०=मुसकराहट।

मुस्क्यान*-स्त्री०=मुस्कराहट।

मुस्टंडा-वि० [सं० पुष्ट] १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २. बदमाश। गुंडा।

मुस्तैद-वि० [अ० मुस्तअद] [भाव० मुस्तैदी] १. तत्पर। सन्नद्ध। २. अच्छी तरह और पूरा काम करनेवाला।

मुस्लिम-पुं० [अ०] मुसलमान।

मुहकमा-पुं० [अ०] विभाग। सरिश्ता।

मुहब्बत-स्त्री० [अ०] १. प्रीति। प्रेम। स्नेह। २. लगन। लौ।

मुहर्रम-पुं० [अ०] १. अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे। २. इस महीने में इमाम हुसेन का शोक मनाने के दस दिन।

मुहर्रमी-वि० [अ० मुहर्रम+ई (प्रत्य०)] १. मुहर्रम सम्बन्धी। मुहर्रम का। २. शोक-सूचक। ३. मनहूस।

मुहर्रिर-पुं० [अ०] [भाव० मुहर्रिरी] लेखक। मुनशी।

मुहल्ला-पुं०=महल्ला।

मुहासल-पुं० [अ० मुहासिल] १. कर उगाहनेवाला। २. प्यादा। फेरीदार। ३. कर, लगान आदि प्राप्य धन।

मुहाफिज-वि० [अ०] [भाव० मुहाफिजत] हिफाजत करनेवाला। रक्षक। रखवाला।

मुहार-स्त्री० [फा० महार] ऊँट की नकेल। पद-शुतुर बे-मुहार = वह जो व्यर्थ या यों ही इधर-उधर घूमता फिरता हो।

मुहाल-वि० [अ०] १. असंभव। ना-मुमकिन। २. कठिन। दुष्कर। पुं० दे० 'महाल'।

मुहावरा-पुं० [अ०] किसी विशिष्ट भाषा में प्रचलित वह वाक्य या पद जिसका अर्थ लक्षणा या व्यंजना से निकलता हो। वह अर्थ जो शब्दों के प्रत्यक्ष या शाब्दिक अर्थ से भिन्न और विलक्षण हो। २ अभ्यास। मश्क।

मुहावरेदार-वि० [अ० महावरः+फा० दार (प्रत्य०)] (भाषा) जिसमें मुहावरों का ठीक ठाक प्रयोग हुआ हो।

मुहावरेदारी-स्त्री० [अ० मुहावरः+फा० दारी (प्रत्य०)] १. मुहावरों के ठीक प्रयोग का ज्ञान। २ मुहावरों से युक्त या अभिज्ञ होने की दशा।

मुहासिल-पुं० [अ०] १. आय। आमदनी। २. लाभ। मुनाफा। ३. उगाहने पर मिला हुआ धन। (कर, चन्दा आदि)

मुहिं*-सर्व० दे० 'मोहिं'।

मुहिम-स्त्री० [अ०] १. विकट या बड़ा काम। २. लड़ाई। युद्ध। ३. फौज की चढ़ाई। अभियान।

मुहूर्त्त-पुं० [सं०] १. दिन-रात का तीसवाँ भाग। २. निर्दिष्ट क्षण या समय। ३. फलित ज्यौतिष के अनुसार निकाला हुआ वह समय जब कोई शुभ काम किया जाय।

मुह्य-वि० [सं०] [भाव० मुह्यता] १. मोह में पड़ा हुआ। २. मूर्च्छित। बेहोश। बेसुध।

मुह्यमान-वि० दे० 'मुह्य'।

मूँग-पुं० [सं० मुद्ग] एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल बनती है।

मूँग-फली-स्त्री० [हिं० मूँग+फली] १. एक प्रकार का पौधा जिसका फल बादाम की तरह का, पर जमीन के अंदर होता है। चिनिया बादाम।

मूँगरी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार की तोप।

मूँगा-पुं० [हिं० मूँग] एक प्रकार के समुद्री कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में होती है। प्रवाल। विद्रुम।

मूँछ-स्त्री० [सं० श्मश्रु] ऊपरी ओंठ पर के बाल जो केवल पुरुषों के होते है।

मुहा०-मूँछें उखाड़ना=गर्व दूर करके दंड देना। मूँछों पर ताव देना= अभिमान से मूँछ मरोड़ना। मूँछें नीची होना=हार या अप्रतिष्ठा होना।

मूँछी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कढ़ी।

मूँज-स्त्री० [सं० मुंज] एक प्रकार का तृण।

मूँठ-स्त्री० दे० 'मूठ'।

मूँड़[+]-पुं० [सं० मुंड] सिर। माथा।

मुहा०-मूँड़ मुड़ाना=संन्यासी, त्यागी या साधु होना।

मूँड़न-पुं० दे० 'मुंडन'।

मूँड़ना-स० [सं० मुंडन] १. उस्तरे से सिर, गाल आदि के बाल साफ करना। हजामत बनाना। २. धोखा देकर धन लेना।

ठगना । ३. किसी को चेला बनाना ।

मूँदना-स० [सं० मुद्रण] १.ऊपर कोई चीज डालकर छिपाना । बंद करना । ढाँकना । २. द्वार, मुँह आदि पर कुछ रखकर उसे बंद करना ।

मूँदर*-स्त्री० दे० 'मुँदरी' ।

मूक-वि० [सं०] [भाव० मूकता] १. जो बोलता न हो । गूँगा । २. जो चुप हो । अवाक् । ३. विवश । लाचार ।

मूकना*-स० [सं० मुक्त] १ छोड़ना । त्यागना । २. मुक्त करना । छुड़ाना ।

मूका*-पुं० दे० 'मुक्का' ।

मूकु*-वि० [सं० मूक] अपना दोष जानते हुए भी चुप रहनेवाला । मचला ।

मूखना*-स० दे० 'मूसना' ।

मूचना-स० दे० 'मोचना' ।

मूझना*-अ० [सं० मूर्च्छना] मूर्च्छित होना । बेसुध होना ।

मूठ-स्त्री० [सं० मुष्टि] १. मुट्ठी । २. औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ या मुट्ठी में पकड़ा जाता है । मुठिया । दस्ता ३ जादू । टोना । मुहा०-**मूठ चलाना या मारना**=जादू या टोना करना । **मूठ लगना**=जादू का प्रभाव या फल होना ।

मूठना*-अ० [सं० मुष्ट] नष्ट होना ।

मूठी*-स्त्री दे० 'मुट्ठी' ।

मूड़-पुं० दे० 'मूँड़'

मूढ़-वि० [सं०] [भाव० मूढ़ता] १. मूर्ख । बेवकूफ । २. चकित । स्तब्ध । ३. जिसकी समझ में यह न आता हो कि अब क्या करना चाहिए ।

मूढ़ाग्रह-पुं० [सं० मूढ़+आग्रह] [वि० मूढ़ाग्रही] मूढ़तापूर्वक किया जानेवाला आग्रह । अनुचित हठ । दुराग्रह ।

मूत-पुं० दे० 'मूत्र' ।

मूतना-अ० [सं० मूत्र] पेशाब करना ।

मूत्र-पुं० [सं०] शरीर का वह तरल विषैला पदार्थ जो उपस्थ मार्ग या जननेन्द्रिय से निकलता है । पेशाब । मूत ।

मूत्राशय-पुं० [सं०] नाभि के नीचे का वह भीतरी भाग जिसमें मूत्र संचित रहता है । मसाना । फुकना । (ब्लैडर)

मूर*-पुं० [सं० मूल] १. मूल । जड़ । २. जड़ी-बूटी । ३. मूल नक्षत्र ।

मूरख*-वि० दे० 'मूर्ख' ।

मूरछना*-स्त्री० दे० 'मूर्च्छना' ।

मूरछा*-स्त्री० = मूर्च्छा ।

मूरत*-स्त्री० = मूर्ति ।

मूरतिवंत*-वि० दे० 'मूर्तिमान्' ।

मूरि*-स्त्री० [सं० मूल] १ मूल । जड़ । २ जड़ी । बूटी ।

मूर्ख-वि० [सं०] जिसे बुद्धि न हो, या बहुत कम हो । बेवकूफ । अज्ञ । मूढ़ ।

मूर्खता-स्त्री० [सं०] मूर्ख होने का भाव । ना-समझी । बेवकूफी ।

मूर्च्छन-पुं० [सं०] १.संज्ञा या चेतना का लोप होना या करना । २. मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग ।

मूर्च्छना-स्त्री० [सं०] संगीत में सातों स्वरों के आरोह-अवरोह का क्रम ।

मूर्च्छा-स्त्री० [सं०] रोग, भय, शोक आदि से उत्पन्न वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट या संज्ञा-हीन हो जाता है । अचेत होना । बेहोशी ।

मूर्च्छित-वि० [सं०] [स्त्री० मूर्च्छिता] १. जिसे मूर्च्छा आई हो । बेहोश । अचेत । २. मारा या भस्म किया हुआ । (पारा या और कोई रस या धातु)

मूर्त्त-वि० [सं०] [भाव० मूर्त्तता] १.

जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप या आकार हो। साकार। (कॉन्क्रीट) २. ठोस।

मूर्त्ति-स्त्री० [सं०] १. शरीर। देह। २. आकृति। सूरत। ३. किसी की आकृति के अनुरूप गढ़ी हुई आकृति। प्रतिमा। विग्रह। ४. चित्र। तसवीर।

मूर्त्ति-कला-स्त्री० [सं०] मूर्त्तियाँ या प्रतिमाएँ आदि बनाने की विद्या या कला।

मूर्त्तिकार-पुं० [सं०] मूर्ति बनानेवाला।

मूर्त्तित-वि० [सं०] मूर्त्ति के रूप में लाया या बनाया हुआ।

मूर्त्ति-पूजक-पुं० [सं०] १ वह जो मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो।

मूर्त्ति-पूजा-स्त्री० [सं०] मूर्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसे पूजना।

मूर्त्ति-भंजक-पुं० [सं०] वह जो मूर्त्तियों को व्यर्थ मानकर तोड़ता हो। २.मुसलमान।

मूर्त्तिमंत-वि० दे० 'मर्त्तिमान्'।

मूर्त्तिमान्-वि० [सं०] [स्त्री० मूर्त्ति-मती] १. जो मूर्त्ति या शरीर के रूप में हो। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

मूर्द्ध-पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूर्द्धन्य-वि० [सं०] १. मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। २. मस्तक में स्थित। पुं० [सं०] वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्द्धा से से होता है। जैसे-ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, और ष।

मूर्द्धा-पुं० [सं० मूर्द्धन्] सिर।

मूल-पुं० [सं०] १. पृथ्वी के नीचे रहनेवाला वृक्षों आदि का वह भाग जिससे उनका पोषण और वर्द्धन होता है। जड़। २. खाने के योग्य मोटी जड़। कंद। ३.आरंभ या उत्पत्ति का कारण या स्थान। ४. असल जमा या धन। पूँजी। ५. नींव। ६. स्वयं ग्रंथकार का लिखा हुआ वाक्य या लेख, जिसपर टीका की जाती है। ७. उन्नीसवाँ नक्षत्र। वि० [सं०] मुख्य। प्रधान।

मूलक-वि० [सं०] १.उत्पन्न करनेवाला। जनक। २. जो मूल में हो या जिसके मूल में कुछ हो। (यौ० के अंत में. जैसे-विवादमूलक बात)

मूल द्रव्य-पुं० [सं०] वे आदिम द्रव्य या भूत, जिनसे सब पदार्थ बने हैं।

मूल-द्वार-पुं०[सं०] सदर या बड़ा फाटक।

मूल धन-पुं० [सं०] वह असल धन जो किसी के पास हो या व्यापार में लगाया जाय। पूँजी।

मूल पुरुष-पुं० [सं०] किसी वंश का आदि-पुरुष जिससे वह वंश चला हो।

मूल भूत-वि० [सं०] किसी वस्तु के मूल या तत्त्व से संबंध रखनेवाला। असल।

मूल स्थान-पुं० [सं०] १. पूर्वजों का निवास-स्थान। २ प्रधान स्थान।

मूली-स्त्री०[सं०मूलक] १.एक प्रसिद्ध पौधे की जड़ जो मीठी और चरपरी होती है। मुहा०-(किसी को) मूली-गाजर समझना=बहुत तुच्छ या हीन समझना।

मूल्य-पुं० [सं०] १. कोई वस्तु खरीदने पर उसके बदले में दिया जानेवाला धन। दाम। कीमत। (प्राइस) २. वह गुण या तत्त्व जिसके कारण किसी वस्तु का महत्त्व या मान होता है। (वैल्यू) जैसे-वह चरित्र का मूल्य नहीं समझता।

मूल्यन-पुं० [सं०मूल्य+हिं० न (प्रत्य०)] किसी वस्तु का मूल्य निश्चित या स्थिर करना। दाम आँकना।

मूल्यवान्-वि० [सं०] जिसका मूल्य अधिक हो। बहुत दाम का। कीमती।

मूल्यांकन-पुं० [सं०] किसी का मूल्य

या महत्त्व आँकना या समझना। (एप्रिसिएशन)

मूल्यानुसार-क्रि० वि० [सं०] (वस्तुओं पर उनके) मूल्य के विचार या अनुपात से लगनेवाला (आयात या निर्यात कर)। (ऐड वैलोरम)

मूष(क)-पुं० [सं०] चूहा।

मूसना-स० [सं० मूषण] छीन या चुराकर ले जाना।

मूसर(ल)-पुं० [सं० मुशल] १. धान कूटने का लंबा मोटा डंडा। २.एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

मूसलचंद-पुं० [हिं० मूसल] हट्टा-कट्टा, पर निकम्मा पुरुष।

मूसलधार-क्रि०वि० [हिं० मूसल+धार] मूसल के समान मोटी धार से। (वर्षा)

मूसला-पुं० [हिं० मूसल] वह मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर शाखाएँ नहीं होतीं। 'झखरा' का उलटा।

मूसा-पुं० [सं० मूषक] चूहा।
पुं० [इबरानी] यहूदियों के मूल पैगंबर।

मूहजन-पुं० [अं० मियोन] वायु मंडल में रहनेवाला एक प्रकार का वाष्प।

मृग-पुं० [सं०] [स्त्री० मृगी] १. पशु। २. हिरन। ३. मृगशिरा नक्षत्र। ४. चार प्रकार के पुरुषों में से एक। (काम शास्त्र)

मृग-चर्म-पुं० [सं०] हिरन की खाल जो पवित्र मानी जाती है।

मृग-छाला-स्त्री० दे० 'मृग-चर्म'।

मृग-तृष्णा-स्त्री० [सं०] जल की लहरों की वह भ्रांति जो कभी कभी रेगिस्तान में कड़ी धूप पड़ने पर होती है, और जिसे जल समझकर मृग बहुत दूर तक व्यर्थ दौड़ता है। मृग-मरीचिका।

मृगधर-पुं० [सं०] चंद्रमा।

मृग-नाभि-पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृग-नैनी-स्त्री० दे० 'मृग-लोचनी'।

मृग-मद-पुं० [सं०] कस्तूरी।

मृग मरीचिका-स्त्री० दे० 'मृग-तृष्णा'।

मृगया-स्त्री० [सं०] शिकार। आखेट।

मृग-लांछन-पुं० [सं०] चंद्रमा।

मृग-लोचना-वि० [सं०] हिरन के समान सुंदर नेत्रोंवाली (स्त्री)।

मृगलोचनी-स्त्री० दे० 'मृगलोचना'।

मृग-वारि-पुं० [सं०] १. मृग-तृष्णा में दिखाई देनेवाला जल। २. झूठी आशा दिलानेवाली चीज या बात।

मृगांक-पुं० [सं] चन्द्रमा।

मृगाक्षी-वि० दे० 'मृग-लोचना'।

मृगिनी*-स्त्री० दे० 'मृगी'।

मृगी-स्त्री० [सं०] हिरन की मादा। हरिणी। हिरनी।

मृगेंद्र-पुं० [सं०] सिंह। शेर।

मृणाल-पुं० [सं०] १. कमल का डंठल। कमल-नाल। २. कमल की जड़। मुरार।

मृणालिनी-स्त्री० [सं०] कमलिनी।

मृण्मय-वि० [सं०] [स्त्री० मृण्मयी] मिट्टी का बना हुआ।

मृण्मूर्ति-स्त्री० [सं०] मिट्टी की बनी हुई मूर्ति।

मृत-वि०[सं०][स्त्री०मृता] १.मरा हुआ। २. जिसे मरे कुछ समय हुआ हो।

मृतक-पुं० [सं०] मरा हुआ प्राणी या उसका शरीर।

मृतक-कर्म-पुं० [सं०] मरे हुए व्यक्ति की सद्‌गति के लिए किया जानेवाला कृत्य। अंत्येष्टि।

मृत-कल्प-वि० दे० 'मृत-प्राय'।

मृत-प्राय-वि० [सं०] जो मरा तो न हो, पर मरे हुए के समान हो बे-दम।

मृत-संजीवनी-स्त्री० दे० 'संजीवनी'।
मृताशौच-पुं० [सं०] किसी आत्मीय के मरने पर होनेवाला अशौच।
मृति-स्त्री० दे० 'मृत्यु'।
मृत्तिका-स्त्री० [सं०] मिट्टी।
मृत्युंजय-पुं० [सं०] १. वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। २. शिव का एक रूप।
मृत्यु-स्त्री० [सं०] शरीर से प्राण निकलना। मरना। मौत। (डेथ) (सभी प्रकार के प्राणियों के लिए)
मृत्यु-कर-पुं० [सं०] वह कर जो राज्य की ओर से किसी के मरने पर लिया जाता है। (डेथ-ड्यूटी)
मृत्यु-लोक-पुं० [सं०] १. यम-लोक। २. मर्त्य-लोक।
मृत्स्न-स्त्री० [सं०] १. उत्तम भूमि। २. गीली मिट्टी जिससे बरतन बनते हैं।
मृथा*-क्रि०वि०१ दे०'वृथा'।२ दे०'मृषा'।
मृदंग-पुं० [सं०] एक प्रकार का प्रसिद्ध पुराना बाजा। (ढोल का मूल रूप)
मृदु-वि० [सं०] [स्त्री० मृद्वी, भाव० मृदुता] १. कोमल। मुलायम। नरम। २. जो सुनने में मधुर और प्रिय हो। ३. सुकुमार। कोमल। ४. धीमा। मंद।
मृदुत्पल-पुं० [सं०] नील कमल।
मृदुल-वि० [सं०] [स्त्री० मृदुला, भाव० मृदुलता] १. कोमल। नरम। २. कोमल हृदय। ३ दयामय। कृपालु। ४. नाजुक। सुकुमार। कोमल।
मृदुलाई*-स्त्री० = मृदुलता।
मृन्मय-वि० [सं०] मिट्टी का बना हुआ।
मृषा-अव्य० [सं०] [भाव० मृषात्व] झूठ-मूठ। व्यर्थ।
वि० असत्य। झूठ।
में-अव्य० [सं०मध्य] अधिकरण कारक का चिह्न जो शब्द के अन्त में लगकर उसके अन्दर होने अथवा आधार या अवस्थान का सूचक होता है। जैसे-घर में।
मेंगनी-स्त्री० [हिं० मींगी] बकरी, भेड़, चूहे आदि की विष्ठा।
मेंड़-स्त्री० [सं० मंडल या हिं० बाँध का अनु०] १. खेतों आदि की सीमा का सूचक मिट्टी की ऊँची रेखा या बाँध। २. सीमा। हद। ३. सम्मान या गौरव की सीमा। मर्यादा।
मेंड़-बंदी-स्त्री० [हिं० मेंड + बाँधना] मेंड बनाने का काम या भाव।
मेंड़रा-पुं० [सं० मंडल] [स्त्री० अल्पा० मेंडरी] १. घेरकर बनाया हुआ कोई गोल चक्कर। २. एँडुआ। गेडुरी। ३. किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। ४. किसी वस्तु का मंडलाकार ढाँचा। जैसे-चलनी या खँजरी का मेंडरा।
मेंढ़ी-स्त्री० [सं० वेणी] १. माथे के ऊपरी भाग के दोनों तरफ के वे थोड़े-से बाल जिन्हें कुछ स्त्रियाँ तीन लड़ों में गूथकर जूड़े की तरफ ले जाकर बाँधती हैं। २. तीन लड़ियों में गूथी हुई चोटी या बाल। ३.घोड़ों के माथे पर की एक भौंरी।
मेंबर-पु० दे० 'सदस्य'।
मेंह-पुं० [सं० मेघ] आकाश से बरसनेवाला पानी। वर्षा।
मेख-स्त्री० [फा०] १. कील। काँटा। २. लकड़ी का खूँटा।
मेखचू-पुं०[फा०]मेख ठोंकने की हथौड़ी।
मेखला-स्त्री० [सं०] १. किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरनेवाली डोरी, शृंखला, रेखा आदि। २.करधनी। तागड़ी। किंकिणी। ३. मंडल। मेंडरा। ४. पर्वत का मध्य भाग। ५. वह कपड़ा

जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलफी।

मेघ-पुं० [सं०] १. बादल। २. संगीत में छः रागों में से एक।

मेघडंबर-पुं० [सं०] १. बादल की गरज। २. बहुत बड़ा शामियाना।

मेघनाद-पुं० [सं०] १. बादल की गरज। २. रावण का पुत्र, इंद्रजित्। ३. मोर।

मेघराज-पुं० [सं०] इंद्र।

मेघवाई*-स्त्री० [हिं० मेघ] बादलों की घटा।

मेघा†-पुं० दे० 'मेढ़क'।

मेघागम-पुं० [सं०] वर्षा ऋतु का आरम्भ।

मेघाच्छन्न-वि० [सं०] मेघों या बादलों से भरा या छाया हुआ (आकाश)।

मेघावारि*-स्त्री० दे० 'मेघवाई'।

मेचक-वि० [सं०] [भाव० मेचकता] १. काला। श्याम। २. अँधेरा।

पुं० १. धूआँ। २. बादल।

मेज-स्त्री० [फा०] लिखने-पढ़ने आदि के लिए बनी ऊँची चौकी। टेबुल।

मेजबान-पुं० [फा०] १. वह जिसके यहाँ कोई अतिथि या मेहमान आकर ठहरे। २. वह जो लोगों को अपने यहाँ किसी कार्य, विशेषतः भोजन, जल-पान आदि के लिए निमंत्रित करे। आतिथ्य करनेवाला। मेहमानदार।

मेजबानी-स्त्री० [फा० मेजबान] १. मेजबान का भाव या धर्म। २. वे खाद्य पदार्थ जो बरात आने पर पहले-पहल कन्या-पक्ष से बरातियों के लिए भेजे जाते हैं।

मेट-पुं० [अं०] मजदूरों का सरदार।

मेटक, मेटनहारा*-वि० [हिं० मेटना] मिटानेवाला।

मेटना†-स० = मिटाना।

मेटा†-पुं० दे० 'मटका'।

मेड़-स्त्री० दे० 'मेंड़'।

मेड़राना*-अ० दे० 'मँडराना'।

मेढक-पुं० [सं० मंडूक] एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती जल-स्थलचारी जंतु। जो प्रायः वर्षा ऋतु में तालाबों कुओं आदि में दिखाई पड़ता है। दर्दुर।

मेढ़ा-पुं० [सं० मेढ] [स्त्री० मेढ़] भेड़ की तरह का एक छोटा चौपाया।

मेढ़ी†-स्त्री० दे० 'मेंढ़ी'।

मेथी-स्त्री० [सं०] एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है।

मेथौरी-स्त्री० [हिं० मेथी+बरी] वह बरी जिसमें मेथी का साग मिला रहता है।

मेद-पुं० [सं० मेदस्, मेद] चरबी।

मेदनी-स्त्री० [सं० मेदिनी ?] यात्रियों का वह दल जो झंडा लेकर किसी तीर्थ या देव-स्थान को जाता है।

मेदा-स्त्री० [सं०] एक ओषधि।

पुं० [अ०] पेट का वह भीतरी भाग जिसमें अन्न पचता है। पक्वाशय।

मेदिनी-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

मेदुर- वि० [सं०] १ चिकना। स्निग्ध। २. मोटा या गाढ़ा।

मेध-पुं० [सं०] यज्ञ।

मेधा-स्त्री० [सं०] बातें समझने और स्मरण रखने की शक्ति। धारणा शक्ति।

मेधावी-वि० [सं०] [स्त्री० मेधाविनी] १. जिसकी मेधा या धारणा शक्ति तीव्र हो। बुद्धिमान्। २. पंडित। विद्वान्।

मेध्य-वि० [सं०] १. यज्ञ-संबंधी। २. पवित्र।

पुं० १. बकरी। २. जौ। ३. खैर।

मेना-स० [हिं० मोयन] १. पकवान आदि में मोयन डालना। २. मिलाना।

मेम-स्त्री० [अं० मैडम] यूरोप, अमेरिका आदि पाश्चात्य देश की स्त्री।

मेमना-पुं० [मैं मैं से अनु०] १. भेड़ का बच्चा। २. घोड़े की एक जाति।

मेमार-पुं० [अ०] [भाव० मेमारी] मकान बनानेवाला कारीगर। राज।

मेयना-स० दे० 'मेना'।

मेर*-पुं० दे० 'मेल'।

मेरवन*-स्त्री० [हिं० मेरवना] मिलाने की क्रिया या भाव। मिश्रण। २.मिलाई हुई चीज। मेल।

मेरवना-स० दे० 'मिलाना'।

मेरा-सर्व० [हिं० मैं] [स्त्री० मेरी] 'मैं' के संबंध कारक का एक रूप।

मेराउ(व)-पुं० दे० 'मेल'।

स्त्री० [हिं० मेरा] अहंकार।

मेरी-स्त्री० [हिं० मेरा] अहंभाव। ममता।

मेरु-पुं० [सं०] १. दे० 'सुमेरु'। २. छंदःशास्त्र की वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने कितने लघु-गुरु के कितने छंद हो सकते हैं।

मेरु-ज्योति-स्त्री० [सं०] उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में दिखाई पड़नेवाली वह चित्र-विचित्र और नाना वर्णों की ज्योति जो वायु-मंडल में व्याप्त विद्युत् के कारण उत्पन्न होती है।

विशेष-उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में छः महीनों तक दिन और छः महीनों तक रात रहती है। जब वहाँ रात रहती है, तब प्रायः समय समय पर यह ज्योति वहाँ दिखाई देती है। इसका दृश्य बहुत ही मनोहर और आकर्षक होता है।

मेरुदंड-पुं० [सं०] १. रीढ़। २. पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच की सीधी कल्पित रेखा।

मेरे-सर्व० [हिं० मेरा] १. 'मेरा' का बहुवचन। २. 'मेरा' का वह रूप जो उसके बाद की संज्ञा में विभक्ति लगने पर होता है। जैसे-मेरे भाई का।

मेल-पुं० [सं०] १. मिलने की क्रिया या भाव। समागम। मिलाप। २. आपस का सद्भाव। 'वैर-विरोध' का उलटा। मैत्री। मित्रता। ३. आपस में एक समान होना। विरुद्ध न होना। संगति। अनुरूपता। (एग्रिमेंट)

मुहा०-मेल खाना, बैठना या मिलना= १. संगति या संयोग का ठीक और उपयुक्त होना। २. दो चीजों का जोड़ ठीक बैठना।

४. मिश्रण। मिलावट। †५. ढंग। ६. प्रकार। तरह।

स्त्री० [अं०] १. डाक। २. डाक गाड़ी।

मेलक-पुं० [सं०] १.संग-साथ। पहचान। २. मिलान। ३. समूह। ४. मेला।

वि० [हिं० मेल] मेल कराने या मिलानेवाला।

मेल-जोल-पुं० [हिं० मिलना+जुलना] प्रायः मिलते रहने से उत्पन्न सम्बन्ध। मेल-मिलाप। घनिष्ठता।

मेलना*-स० [हिं० मेल] १. मिलाना। २. डालना। ३. पहनाना।

अ० इकट्ठा होना। मिलना।

मेल-मिलाप-पुं० दे० 'मेल-जोल'।

मेला-पुं० [सं० मेलक] उत्सव, त्योहार आदि के समय होनेवाला बहुत-से लोगों का जमावड़ा। २. भीड़।

मेलान-पुं० [हिं० मेलक] १. ठहराव। २. पड़ाव। डेरा।

मेली-वि० [हिं० मेल] १. जिससे मेल-मिलाप हो। २. जल्दी हिल-मिल जानेवाला। मिलनसार। ३. संगी। साथी।

मेलहना†-अ० [?] १. विकल होना। २. आना-कानी करके समय बिताना।
मेवा-पुं० [फा०] किशमिश, बादाम, आदि सुखाये हुए बढ़िया फल।
मेवाटी-स्त्री० [फा० मेवा+बाटी] मेवे भरकर बनाया जानेवाला एक पकवान।
मेवासा*-पुं० [हिं० मवासा] १. किला। गढ़। २. सुरक्षित स्थान। ३. घर।
मेवासी-पुं० [हिं० मेवासा] १. घर का मालिक। २. किले में रहनेवाला। वि० सुरक्षित और प्रबल।
मेष-पुं० [सं०] १. भेड़। २. बारह राशियों में से पहली राशि।
मेसू-पुं० [?] बेसन की बनी हुई बरफी।
मेहँदी-स्त्री० [सं० मेन्धी] एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ पीसकर स्त्रियाँ हथेली या तलवे रँगने के लिए लगाती हैं।
मेह-पुं० [सं०] १. मूत्र। २. प्रमेह रोग। * पुं० १ दे० 'मेघ'। २. दे० 'मेंह'।
मेहतर-पुं० [फा०] [स्त्री० मेहतरानी] मुसलमान भंगी। हलालखोर।
मेहनत-स्त्री० [अ०] परिश्रम।
मेहनताना-पुं० दे० 'पारिश्रमिक'।
मेहनती-वि० [हिं० मेहनत] परिश्रमी।
मेहमान-पुं० [फा०] अतिथि।
मेहमानी-स्त्री० [फा० मेहमान] १. अतिथि-सत्कार। २. मेहमान बनकर रहना। ३. दे० 'मेजवानी' २।
मेहर-स्त्री० [फा०] कृपा। दया। † स्त्री० दे० 'मेहरी'।
मेहरबान-वि० [सं०] कृपालु।
मेहरबानी-स्त्री० [फा०] दया। कृपा।
मेहरा-पुं० [हिं० मेहरी] स्त्रियों की सी चेष्टा या हाव-भाव करनेवाला। जनखा।
मेहराना†-स० [हिं० मेंह+राना (प्रत्य०)] वर्षा आदि होने पर नमकीन और कुरकुरे पकवानों आदि का इस प्रकार मुलायम पड़ जाना कि उनका कुरकुरापन जाता रहे।
मेहराब-स्त्री० [अ०] द्वार आदि के ऊपर की अर्द्ध-मंडलाकार रचना।
मेहरी-स्त्री० [सं० मेहना] १. स्त्री। औरत। २. पत्नी। जोरू।
मैं-सर्व० [सं० अहम्] सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप। स्वयं। खुद।
मै-स्त्री० [अ०] शराब। मद्य। * अव्य० दे० 'मय'।
मैका-पुं० दे० 'मायका'।
मैगल-पुं० [सं० मदकल] मस्त हाथी।
मैच-पुं० [अं०] खेल की प्रतियोगिता।
मैजल*-स्त्री० [अ० मंजिल] १. पड़ाव। ठिकाना। २. यात्रा। प्रवास।
मैड़*-स्त्री० दे० 'मेंड़'।
मैत्री-स्त्री० [सं०] मित्रता। दोस्ती।
मैथिल-पुं० [सं०] मिथिला का निवासी।
मैथिली-स्त्री० [सं०] जानकी।
मैथुन-पुं० [सं०] स्त्री के साथ पुरुष का समागम। संभोग।
मैथुनिक-वि० [सं०] १. मैथुन से संबंध रखनेवाला। २. स्त्रीलिंग और पुंलिंग या दोनों के पारस्परिक व्यवहार या संपर्क से संबंध रखनेवाला। (सेक्सुअल)
मैदा-पुं० [फा०] बहुत महीन आटा।
मैदान-पुं० [फा०] [वि० मैदानी] १. लंबा-चौड़ा खाली स्थान। सपाट भूमि। मुहा०-मैदान में आना=मुकाबले पर आना। मैदान साफ होना=मार्ग में बाधा या रुकावट न आना। २. युद्ध-क्षेत्र। रण-भूमि। मुहा०-मैदान करना=युद्ध करना।

मैदान मारना=विजयी होना।

मैन-पुं० [सं० मदन] १.कामदेव। मदन। २ काम-वासना। ३ भोग।

मैन-कामिनी-स्त्री० [हिं० मैन=मदन+कामिनी] कामदेव की स्त्री, रति।

मैनमय*-वि० [हिं० मैन] कामासक्त।

मैना-स्त्री० [सं० मदना] काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया जो मनुष्य की सी बोली बोलती है। सारिका।

मैनाक-पुं० [सं०] एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है।

मैमंत*-वि० [सं० मदमत्त] १.मदोन्मत्त। मतवाला। २. घमंडी। अभिमानी।

मैया-स्त्री० [सं० मातृका] माता। माँ।

मैर†-स्त्री० [सं० मृदर] साँप के विष की लहर या प्रभाव।

मैल-स्त्री० [सं० मलिन] १. किसी चीज पर पड़ी हुई या जमी हुई गर्द, धूल आदि। कहा०-हाथ पैर की मैल=तुच्छ वस्तु। २. दोष। विकार।

मैला-वि०[सं० मलिन][भाव० मैलापन] १. जिसपर मैल जमी हो। मलिन। अस्वच्छ। २. विकार-युक्त। दूषित। पुं० १. विष्ठा। गू। २. कूड़ा-कर्कट।

मैला-कुचैला-वि० [हिं० मैला+सं० कुचैल] बहुत मैला। गंदा।

मैला-घर-पुं० वह स्थान जहाँ गुड़ भरा या रखा जाता हो। (पेल डिपो)

मों*-अव्य० दे० 'मैं'।

मोंछ-स्त्री० दे० 'मूँछ'।

मोंढ़ा-पुं० दे० 'कंधा'।

मो*-सर्व० [सं० मम] १. मेरा। २. अवधी और ब्रजभाषा में 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्त्ता कारक के सिवा दूसरे कारक का चिह्न लगने पर प्राप्त होता है।

मोकना*-स० दे० 'छोड़ना'।

मोकल*-वि० दे० 'मुक्त'।

मोकला†-वि० [हिं० मोकल] १. लंबा-चौड़ा। विस्तृत। २.छूटा या खुला हुआ।

मोक्ष-पुं० [सं०] १. बंधन से मुक्त। छुटकारा। २ जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना। मुक्ति। ३. मृत्यु।

मोख*-पुं० दे० 'मोक्ष'।

मोखा-पुं० [सं० मुख] दीवार में बना हुआ छोटा छेद।

मोगरा-पुं० [सं० मुद्गर] एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला (फूल)।

मोगल-पुं० दे० 'मुगल'।

मोगा-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का रेशम। २ इस रेशम का बना हुआ कपड़ा।

मोघ-वि० [सं०] १. जो अपना प्रभाव या फल दिखला सके। २. जो न होने के समान हो। जिसके होने का कोई फल या महत्त्व न हो। ३. रद्द या निरर्थक किया हुआ। (नल्ल)

मोच-स्त्री०[सं० मुच] शरीर के किसी अंग के जोड़ का कुछ इधर-उधर हट जाना।

मोचन-पुं० [सं०] १. बंधन आदि खोलकर मुक्त करना। २. दूर करना। हटाना। ३ छीन लेना।

मोचना-स०[सं०मोचन] १.बंधन से मुक्त करना या कराना। २. गिराना। ३. बहाना। पुं०हज्जामों का बाल उखाड़ने का औजार या चिमटी।

मोची-पुं० [सं० मोचन] जूते आदि बनानेवाला कारीगर।

वि० [सं० मचिन्] [स्त्री० मोचिनी] १. छुड़ानेवाला। २. दूर करनेवाला।

मोच्छ*-पुं० दे० 'मोक्ष'।

मोछ-स्त्री० दे० 'मूँछ'।

मोजा-पुं० [फा०] १. पैरों में पहनने का पायताबा। जुर्राब। २. पिंडली के पीछे का भाग।

मोट-स्त्री० [हिं० मोटरी] गठरी।
पुं० चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचते हैं। चरसा। पुर।
* वि० दे० 'मोटा'।

मोटर-पुं० [अं०] एक प्रकार का यंत्र जो दूसरे यंत्रों का संचालन करता है। स्त्री० वह गाड़ी जो इस यंत्र से चलती है।

मोटरी-स्त्री० दे० 'मोट'।

मोटा-वि० [सं० मुष्ट] [स्त्री० मोटी] १.फूले हुए या स्थूल शरीरवाला।'दुबला' का उलटा। २. दलदार। 'पतला' का उलटा। ३. अधिक घेरे या मानवाला। यौ०-मोटा असामी=अमीर।
४. दरदरा। ५. साधारण या घटिया।
मुहा०-मोटे हिसाब से = अंदाज या अनुमान से। मोटा दिखाई देना = कम दिखाई देना।

मोटाई-स्त्री० [हिं० मोटा+ई (प्रत्य०)] १.'मोटा' होने का भाव। मोटापन। २. शरारत। पाजीपन।

मोटाना-अ० [हिं० मोटा] १. मोटा होना। २. घमंडी होना। ३. धनी होना। स० दूसरे को मोटा करना।

मोटापा-पुं० [हिं० मोटा] १. शरीर का मोटापन या स्थूलता। २. दे० 'मोटाई'।

मोटा-मोटी-क्रि० वि० [हिं० मोटा] मोटे हिसाब से। अनुमानतः।

मोटिया-पुं० दे० 'खद्दर'।
पुं० [हिं० मोट=बोझ] मोट या बोझ ढोनेवाला मजदूर।

मोट्टायित-पुं० [सं०] साहित्य में वह हाव जिसमें नायिका कटु भाषण आदि द्वारा अपना प्रेम छिपाने की चेष्टा करने पर भी छिपा नहीं सकती।

मोठ-स्त्री० [सं० मकुष्ठ] मूँग की तरह का एक मोटा अन्न।

मोड़-पुं० [हिं० मुड़ना] १. रास्ते आदि में घूम जाने का स्थान। २. वह स्थान जहाँ रास्ता किसी ओर मुड़ता हो। ३. मुड़ने की क्रिया या भाव।

मोड़ना-स० [हिं० मुड़ना] १. किसी को मुड़ने में प्रवृत्त करना।
मुहा०-मुँह मोड़ना = विमुख होना।
२. कुछ अंश उलट या समेटकर विस्तार कम करना। ३. कुंठित करना। जैसे-धार मोड़ना।

मोतिया-पुं० [हिं० मोती] १. एक प्रकार का बेला। २. एक प्रकार का सलमा।
वि०मोती की तरह छोटे गोल दानों का।

मोतियाबिंद-पुं० [हिं० मोतिया+सं० बिंदु] आँख का एक रोग जिसमें पुतली के आगे गोल झिल्ली पड़ जाती है।

मोती-पुं० [सं० मौक्तिक] समुद्री सीपी से निकलनेवाला एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न।
मुहा०-मोती गरजना=मोती चटकना या कड़क जाना। मोती रोलना=बिना परिश्रम बहुत अधिक धन पाना। मोतियों से मुँह भरना=बहुत धन देना।

मोतीचूर-पुं० [हिं० मोती+चूर] छोटी बुँदियों का लड्डू।

मोती-झिरा-पुं० [हिं० मोती+झिरा] छोटी शीतला का रोग। मंथ-ज्वर।

मोती-भात-पुं० [हिं० मोती+भात] एक विशेष प्रकार का भात।

मोती-सिरी स्त्री० [हिं० मोती+सं० श्री] मोतियों की माला।

मोद-पुं० [सं०] १. आनन्द। हर्ष।

प्रसन्नता। २. सुगंध। महक।

मोदक-पुं० [सं०] लड्डू।

मोदना*-अ० [सं० मोदन] १. प्रसन्न या खुश होना। २. सुगंध फैलना।

स० १. प्रसन्न करना। सुगंधि फैलाना।

मोदित*-वि० दे० 'मुदित'।

मोदी-पुं० [सं० मोदक=लड्डू] आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया।

मोदीखाना-पुं० [हिं०+फा०] अनाज आदि रखने का भंडार।

मोधू-वि० [सं० मुग्ध] मूर्ख।

मोना*-स० [हिं० मोयन] भिगोना।

पुं० [सं० मोथ] झाबा। पिटारा।

मोम-पुं० [फा०] वह चिकना कोमल पदार्थ जिससे शहद की मक्खियों का छत्ता बना होता है।

मोमजामा-पुं० [फा०] वह कपड़ा जिस-पर मोम का रोगन चढ़ा हो।

मोमती*-पुं० दे० 'ममत्व'।

स्त्री० [मो+मति] मेरी मति। मेरी सम्मति।

मोमबत्ती-स्त्री० [फा० मोम+हिं० बत्ती] मोम आदि की बत्ती जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है।

मोमियाई-स्त्री० [फा०] १. नकली शिलाजीत। २. प्राचीन मिस्र में मृतकों के शरीर जो विशेष प्रक्रिया से सुरक्षित किये जाते थे।

मोमी-वि० [फा०] मोम का बना हुआ।

मोयन-पुं० [हिं० मैन=मोम] गूँधे हुए आटे में डाला जानेवाला घी या तेल जिसके कारण उससे बननेवाली वस्तु खसखसी और मुलायम हो।

मोर-पुं० [सं० मयूर] [स्त्री० मोरनी] एक अत्यंत सुन्दर प्रसिद्ध बड़ा पक्षी।

*सर्व० [स्त्री० मोरी] दे० 'मेरा'।

मोर-चंद्रिका-स्त्री० [हिं० मोर+चंद्रिका] मोर-पंख पर की चंद्राकार बूटी।

मोरचा-पुं० [फा०] १. लोहे पर चढ़ने-वाला वह काला अंश जो वायु और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता है। जंग। २. शीशे, दर्पण पर जमी हुई मैल।

पुं० [फा० मोरचाल] १. वह गड्ढा जो किले के चारों ओर रक्षा के लिए खोदा जाता है। २. वह स्थान जहाँ से गढ़ या नगर की रक्षा की जाती है। ३. द्वन्द्व या प्रतियोगिता में होनेवाला सामना।

मुहा०-**मोरचा जीतना या मारना**= विजय प्राप्त करना। **मोरचा लेना**=१. युद्ध करना। २. द्वन्द्व या प्रतियोगिता में सामने आना।

मोरचा-बंदी-स्त्री० [हिं०+फा०] शत्रु पर आक्रमण करने या अपनी रक्षा करने के लिए मोरचा बनाना।

मोरछड़*-पुं० दे० 'मोरछल'।

मोरछल-पुं० [हिं० मोर+छड़] मोर के परों से बना हुआ चँवर।

मोरछाँह*-स्त्री० दे० 'मोरछल'।

मोरन*-स्त्री० दे० 'शिखरन'।

मोरना*-स० [हिं० मोरन] १. दही मथ-कर मक्खन निकालना। २. दे० 'मोड़ना'।

मोरनी-स्त्री० [हिं० मोर] १. मोर पक्षी की मादा। २. नथ में लगनेवाला मोर के आकार का टिकड़ा।

मोरपंख-पुं० [हिं० मोर+पंख] १. मोर का पर। २. मोर के पर की कलगी।

मोर-मुकुट-पुं० [हिं० मोर+मुकुट] मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।

मोरा*-वि० दे० 'मेरा'।

मोराना*-स० [हिं० मोड़ना] चारो ओर घुमाना।

मोरी-स्त्री० [हिं० मोहरी] गंदा पानी बहाने की नाली ।
*स्त्री० दे० 'मोरनी' ।

मोल-पुं० [सं० मूल्य] दाम । मूल्य ।
यौ०-मोल-चाल=१. किसी वस्तु का दाम बढ़ाकर कहना । २. किसी चीज का दाम घटा बढ़ाकर तै करना ।

मोलना-पुं० [अ० मौलाना] मौलवी ।

मोलाना*-स० [हिं० मोल] मूल्य या दाम पूछना या तै करना ।

मोवना*-स० दे० 'मोना' ।

मोह-पुं० [सं०] १. अज्ञान । २. भ्रम । भ्रांति । ३. ईश्वर का ध्यान छोड़कर शरीर और सांसरिक पदार्थों को अपना या सब कुछ समझना । ४. प्रेम । प्यार । ५. साहित्य में भय, दुःख, चिंता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता, जो एक संचारी भाव है । ६ मूर्च्छा । बेहोशी ।

मोहक-वि० [सं०] [भाव० मोहकता] १. मोह उत्पन्न करनेवाला । २. मोहित करने या लुभानेवाला । मनोहर ।

मोहताज-वि० [अ० मुहताज] १. दरिद्र । कंगाल । २ विशेष कामना रखनेवाला ।

मोहन-पुं० [सं०] १. मोहित करने की क्रिया या भाव । २ किसी को बेहोश या मूर्च्छित करने का एक तांत्रिक प्रयोग । ३. एक अस्त्र जिससे शत्रु मूच्छित किया जाता था । ४ श्रीकृष्ण ।
वि० [सं०] [स्त्री० मोहनी] १. मोह उत्पन्न करनेवाला । २. मन को लुभानेवाला ।

मोहन-भाग-पुं० दे० 'हलुआ' ।

मोहन-माला-स्त्री० [सं०] सोने के दानों की बनी हुई माला ।

मोहना-अ० [सं० मोहन] १. मोहित होना । रीझना । २. मूर्च्छित होना ।
स० [सं० मोहन] १. मोहित या अनुरक्त करना । लुभाना । २. भ्रम में डालना ।

मोह-निशा-स्त्री० दे० 'मोह-रात्रि' ।

मोहनी-स्त्री० [सं०] १. भगवान् का वह स्त्रीवाला रूप जो उन्होंने समुद्र मंथन के उपरान्त अमृत बाँटने के समय बनाया था । २. वशीकरण का मंत्र या विद्या । ३. मोहित करनेवाली शक्ति या माया ।
मुहा०-मोहनी डालना = १ मोह या माया के वश में करना । २. किसी को अपने ऊपर मोहित करना । मोहनी लगना=मोहित होना । लुभाना ।

मोहर-स्त्री० [फा० मुह] १. अक्षर, चिह्न आदि की छाप लेने या उन्हें दबाकर अंकित करने का ठप्पा । २. उक्त ठप्पे की छाप । ३. अशरफी ।

मोहर-बंद-वि० [हिं०मोहर+बंद] जिसे बन्द करके ऊपर से मोहर लगाई गई हो ।

मोहरा-पुं० [हिं० मुँह+रा (प्रत्य०)] [स्त्री० मोहरी] १ मुँह या खुला भाग । २. सामने का भाग । ३. सेना की अगली पंक्ति ।
मुहा०-मोहरा लेना=मुकाबला करना ।
पुं० [फा० मुहरः] १. शतरंज की कोई गोटी । २. रेशमी कपड़े घोटने का घोटना । ३. यशब या अकीक पत्थर की वह छोटी गुल्ली जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं । ओपनी । ४. सिंगिया विष । ५. जहर-मोहरा ।

मोह-रात्रि-स्त्री० [सं०] १. वह प्रलय की रात जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होती है । २. कृष्ण जन्माष्टमी ।

मोहरिल*-पुं० [अ० मुहरिर ?] वह व्यक्ति जो किसी असामी के साथ इसलिए रख दिया जाता है कि जब तक वह

ऋण न चुकावे, तब तक कहीं जा न सके।

मोहरी-स्त्री० [हिं० मोहरा] पाजामे का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं।

मोहलत-स्त्री० [अ०] १. फुरसत। अवकाश। २. छुट्टी। ३. अवधि।

मोहिं*-सर्व० [सं० मह्यम्] मुझे।

मोहित-वि० [सं०] [स्त्री० मोहिता] १. मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मुग्ध। २. लुभाया हुआ। आसक्त। लुब्ध।

मोहिनी-वि० स्त्री० [सं०] मोहनेवाली। स्त्री० दे० 'मोहनी'।

मोही-वि०[सं०मोहिन्]मोहित करनेवाला। वि० [हिं० मोह+ई (प्रत्य०)] १ मोह या प्रेम करनेवाला। २. लोभी। लालची।

मौं*-अव्य० [सं० मध्य] ब्रज भाषा में अधिकरण कारक का चिह्न। में।

मौंगा*-वि० [सं० मौन] मौन। चुप।

मौंगी*-स्त्री० [हिं० मौन] चुप्पी। मौन।

मौंड़ा*-पुं० [सं० माणवक] [स्त्री० मौंडी] लड़का। बच्चा।

मौका-पुं० [अ०] १. किसी घटना के घटित होने का स्थान। २. अवसर। समय।

मौकूफ-वि० [अ०] [भाव० मौकूफी] १. रोका या बंद किया हुआ। २. नौकरी से हटाया हुआ। बरखास्त। ३. रद्द किया हुआ। ४. अवलंबित। आश्रित।

मौक्तिक-पुं० [सं०] मुक्ता। मोती। वि० १. मोतियों का। २. मुक्ता संबंधी।

मौखर्य-पुं०=मुखरता।

मौखिक-वि० [सं०] १. मुख का। २. मुँह से कहा हुआ। जबानी।

मौज-स्त्री० [अ०] १. लहर। तरंग। २. मन की उमंग।

मुहा०-(किसी की) मौज पाना= इच्छा या मनोवृत्ति से अवगत होना।

३. सुख। आनन्द। मजा।

मौजा-पुं० [अ०] गाँव।

मौजी-वि० [हिं० मौज+ई (प्रत्य०)] १ जो जी में आवे, वही करनेवाला। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनंदी।

मौजूद-वि० [अ०] [भाव० मौजूदगी] १ उपस्थित। विद्यमान। २.प्रस्तुत। तैयार।

मौजूदा-वि०[अ०]१.वर्त्तमान काल का। इस समय का। २.उपस्थित। वर्त्तमान।

मौत-स्त्री० [अ०] १ मरण। मृत्यु।

मुहा०-मौत सिर पर खेलना = मृत्यु या भारी संकट समीप होना। मौत के मुँह में=घोर संकट में।

२ मरने का समय या काल। ३. मरने के समय का सा कष्ट।

मौन-पुं० [सं०] १. मुनियों का व्रत या चर्या। २. चुप रहना। न बोलना। चुप्पी।

मुहा०-मौन लेना या साधना=चुप रहना या चुप रहने का संकल्प करना। न बोलना। मौन सँभारना*=मौन साधना। चुप होना।

वि० [सं० मौनी] जो न बोले। चुप। *पुं० [सं० मौण] बरतन।

मौनी-वि० [सं० मौनिन्] मौन धारण करने या चुप रहनेवाला।

मौर-पुं० [सं० मुकुट] [स्त्री० अल्पा० मौरी] १. एक आभूषण जो विवाह के समय वर को सिर पर पहनाया जाता है। २. शिरोमणि। प्रधान।

पुं० [सं० मुकुल] मंजरी। बौर।

पुं० [सं० मौलि] गरदन।

मौरना*-स० दे० 'बौरना'।

मौरसिरी*-स्त्री० = मौलसिरी।

मौरूसी-वि० [अ०] बाप-दादा के समय

से चला आया हुआ। पैतृक। (धन-सम्पत्ति)

मौल-वि० [सं०] १. मूल संबंधी। २. मूल का। ३ बिलकुल आरंभिक या आदि काल से चला आनेवाला।

मौलवी-पुं० [अ०] मुसलमान धर्म-शास्त्र का आचार्य।

मौलसिरी-स्त्री० [सं० मौलि+श्री] एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। बकुल।

मौला-पुं० [अ०] १. मित्र। दोस्त। २. सहायक। मददगार। ३. स्वामी। मालिक। ४. ईश्वर।

मौलाना-पुं० दे० 'मौलवी'।

मौलि-पुं० [सं०] १ चोटी। सिरा। २. मस्तक। सिर। ३. किरीट। ४. जटा-जूट। ५. प्रधान। सरदार। मुखिया।

मौलिक-वि० [सं०] [भाव० मौलिकता] १. मूल से संबंध रखनेवाला। २. असली। ३. (ग्रंथ या विचार) जो किसी का अनुवाद, नकल या आधार पर न हो, बल्कि अपनी उद्भावना से निकला हो।

मौली-वि० [सं० मौलिन्] मौलि धारण करनेवाला।

स्त्री० पूजा आदि के लिए रँगा हुआ सूत। नारा।

मौसर*-वि० दे० 'मयस्सर'।

मौसा-पुं० [हिं० मौसी] [स्त्री० मौसी] माता की बहन (मौसी) का पति।

मौसिम-पुं० [अ०] [वि० मौसिमी] १. ऋतु। २. उपयुक्त समय।

मौसिया-वि० दे० 'मौसेरा'।

मौसी-स्त्री० [सं० मातृष्वसा] [वि० मौसेरा] माता की बहन। मासी।

मौसेरा-वि० [हिं० मौसी+एरा (प्रत्य०)] मौसी के सम्बन्ध का। जैसे-मौसेरा भाई।

म्याँव-स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली। मुहा०-म्याँव म्याँव करना=दीनता-पूर्वक और बहुत दबकर धीरे से बोलना।

म्यान-पुं० [फा० मियान] १. तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना।

म्याना*-स०[हिं०म्यान] म्यान में रखना। *पुं० दे० 'मियाना'।

म्यूजियम-पुं० [अं०] अजायब-घर।

म्रजाद*-स्त्री० दे० 'मर्यादा'।

म्रियमाण-वि० [सं०] मरे हुए के समान। मरा हुआ-सा।

म्लान-वि० [सं०] [भाव० म्लानता] १. कुम्हलाया हुआ। मलिन। २. दुर्बल। ३. मैला। मलिन।

म्लानता-स्त्री० [सं०] १. म्लान होने का भाव। मलिनता। २. दुर्बलता।

म्लानि-स्त्री० दे० 'म्लानता'।

म्लेच्छ-पुं० [सं०] हिन्दुओं की दृष्टि से वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो। वि० १. नीच। २. पापी।

म्हा*-सर्व० दे० 'मुझ'।

म्हारा*-सर्व० दे० 'हमारा'।

य

य-हिन्दी वर्ण-माला का २६ वाँ अक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान तालू है। छन्दः-शास्त्र में यह यगण का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

यंत्र-पुं० [सं०] [वि० यंत्रित] १. तंत्र-शास्त्र में कुछ विशिष्ट प्रकार के

कोष्ठक आदि । अंतर । २. वह उपकरण जो कोई विशेष कार्य करने या कोई वस्तु बनाने के लिए हो । कल । (मशीन) ३. बाजा । वाद्य । ४. ताला ।

यंत्रणा-स्त्री० [सं०] १. कष्ट । तकलीफ । २. दर्द । पीड़ा ।

यंत्र-मंत्र-पुं० [सं०] जादू-टोना ।

यंत्र-युक्त-वि० दे० 'यंत्र-सज्ज' ।

यंत्र विद्या-स्त्री० [सं०] कलें या यंत्र चलाने और बनाने की विद्या । (इंजीनियरिंग)

यंत्र-शाला-स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यंत्र रखे हों या बनते हों । २. वेधशाला ।

यंत्र-सज्ज-वि० [सं०] मशीन-गनों और टैंकों आदि से युक्त और आधुनिक अस्त्र शस्त्रों से सजी हुई (सेना) ।

यंत्रालय-पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ कलें हों । २ छापाखाना ।

यंत्रिका-स्त्री० [सं०] ताला ।

यंत्रित-वि० [सं०] १. यंत्र के द्वारा रोका या बंद किया हुआ । २. ताले में बंद ।

यंत्री-पुं० [सं० यंत्रिन्] १. यंत्र-मंत्र करनेवाला । तांत्रिक । २. बाजा बजानेवाला । ३ यंत्र या मशीन की सहायता से काम करनेवाला । ४. दे० 'यांत्रिक' ।

यंत्रीकरण-पुं० दे० 'यांत्रीकरण' ।

यकायक-क्रि० वि० [फा०] अचानक। सहसा ।

यकीन-पुं० [अ०] विश्वास । एतबार ।

यकृत-पुं० [सं०] १. पेट में दाहिनी ओर की वह थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है । जिगर । २. तापतिल्ली नामक रोग ।

यक्ष-पुं० [सं०] १. कुबेर की निधियों के रक्षक, एक प्रकार के देवता । २. कुबेर ।

यक्षिणी-स्त्री० [सं०] १. यक्ष जाति की स्त्री । २. कुबेर की पत्नी ।

यक्ष्मा-पुं० [सं०यक्ष्मन्] क्षय नामक रोग ।

यखनी-स्त्री० [फा०] उबाले हुए मांस का रसा या शोरबा ।

यगण-पुं० [सं०] छंदः-शास्त्र में एक लघु और दो गुरु मात्राओं का एक गण जिसका संक्षिप्त रूप 'य' है । (।SS) ।

यच्छ‡-पुं० दे० 'यक्ष' ।

यजन-पुं० [सं०] यज्ञ करना ।

यजना*-स० [सं० यजन] १. यज्ञ करना । २. पूजा करना ।

यजमान-पुं० [सं०] [भाव० यजमानी] १. यज्ञ करनेवाला । यष्टा । २. ब्राह्मण की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उससे अपने धार्मिक कृत्य कराता है ।

यजुर्वेद-पुं० [सं०] [वि० यजुर्वेदी] चार वेदों में से एक, जिसमें यज्ञ-कर्मों का विधान और विवरण है ।

यज्ञ-पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आदि होते थे । मख । याग ।

यज्ञ-कुंड-पुं० [सं०] यज्ञ या हवन करने का कुंड या वेदी ।

यज्ञ-पशु-पुं० [सं०] यज्ञ में बलि चढ़ाया जानेवाला पशु ।

यज्ञ-पात्र-पुं० [सं०] यज्ञ में काम आनेवाला काठ का पात्र या बरतन ।

यज्ञ-भूमि-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो । यज्ञ-क्षेत्र ।

यज्ञ-मंडप-पुं० [सं०] वह मंडप जो यज्ञ करने के लिए बनाया गया हो ।

यज्ञ-शाला-स्त्री०=यज्ञ-मंडप ।

यज्ञोपवीत-पुं० [सं०] १. जनेऊ ।

यज्ञसूत्र। २. उपनयन संस्कार। जनेऊ।

यतः-अव्य० [सं०] इस कारण से कि। जब कि ऐसी अवस्था है। चूँकि। (इस-का संबंध-पूरक 'अतः' है।)

यति-पुं० [सं०] १. संन्यासी। त्यागी। २. ब्रह्मचारी।

स्त्री० [सं०] छंदों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय कुछ विराम होता है।

यति-भंग-पुं० [सं०] छंद की रचना में वह दोष जिसमें किसी चरण के विराम-स्थान के अंतिम शब्द के एक-दो अक्षर कम या अधिक हों या इधर-उधर जा पड़ें।

यति-भ्रष्ट-वि० [सं०] (कविता) जिसमें यति-भंग दोष हो।

यती-पुं० स्त्री० दे० 'यति'।

यत्किंचित्-क्रि० वि० [सं०] थोड़ा।

यत्न-पुं० [सं०] १. उद्योग। कोशिश। २. उपाय। तदबीर। ३. रक्षा का प्रबन्ध। हिफ़ाजत।

यत्नवान्-वि० [सं० यत्नवत्] यत्न करनेवाला। प्रयत्नशील।

यत्र-क्रि०वि० [सं०] जहाँ। जिस जगह।

यत्र-तत्र-क्रि० वि० [सं०] १. जहाँ-तहाँ। इधर-उधर। २. जगह जगह।

यथांश-पुं० [सं०] किसी के लिए निश्चित किया हुआ हिस्सा जो उसे दिया जाय या उससे लिया जाय। (कोटा)

यथा-अव्य० [सं०] जिस तरह। जैसे।

यथा-क्रम-क्रि० वि० [सं०] क्रमानुसार।

यथातथ-वि० [सं०] जैसा हो, वैसा ही। ज्यों का त्यों।

यथा-तथ्य शैली-स्त्री० [सं०] मूर्त्ति, चित्र, काव्य आदि की रचना की वह शैली जिसमें हर एक चीज ज्यों की त्यों और अपने मूल रूप में, बिना अपनी ओर से कुछ घटाये-बढ़ाये, दिखाई जाती है।

यथा-तथ्य-अव्य० [सं०] [भाव० यथा-तथ्यता] ज्यों का त्यों। जैसा हो, ठीक उसी के अनुसार या वैसा ही।

यथानुक्रम-क्रि० वि० दे० 'यथा-क्रम'।

यथापूर्व-अव्य० [सं०] १. जैसा पहले था, वैसा ही। २. ज्यों का त्यों।

यथायथ-क्रि० वि० [सं०] जैसा चाहिए, वैसा।

वि० पूर्ववर्त्तियों का अनुयायी।

यथा-योग्य-अव्य० [सं०] जैसा उचित हो, वैसा। उपयुक्त। मुनासिब।

यथारथ-अव्य०=यथार्थ।

यथार्थ-अव्य० [सं०] [भाव० यथार्थता] १. ठीक। उचित। २. जैसा है, वैसा। ३ सत्य।

यथार्थतः-अव्य० [सं०] यथार्थ में। वास्तव में। सचमुच।

यथार्थवाद-पुं० [सं०] १. सत्य-कथन। २. एक पाश्चात्य साहित्यिक सिद्धांत जिसके अनुसार किसी वस्तु का यथार्थ रूप में वर्णन किया जाता है। (रियलिज़्म)

यथार्थवादी-पुं० [सं०] १. यथार्थ या सत्य कहनेवाला। सत्यवादी। २. साहित्य में यथार्थवाद का सिद्धांत माननेवाला। (रियलिस्ट)

यथावत्-अव्य० [सं०] १. जैसा था, वैसा ही। २. जैसा चाहिए, वैसा। ३. अच्छी तरह।

यथा-विधि-अव्य० [सं०] विधि के अनुसार ठीक।

यथा-शक्ति-अव्य० [सं०] शक्ति के अनुसार। जहाँ तक हो सके। भर-सक।

यथा-शक्य-अव्य० दे० 'यथा-शक्ति'।

यथा-संभव-अव्य० [सं०] जहाँ तक

हो सके।
यथा-साध्य-अव्य० दे० 'यथा-शक्ति'।
यथास्थित-वि० [सं०] जैसा है, वैसा ही रहनेवाला। जैसे-यथा-स्थित समझौता= वह समझौता जो अब तक चली आई हुई स्थिति को उसी रूप में बनाये रखने और चलाये चलने के लिए हो। (स्टैंडस्टिल एग्रिमेन्ट)
यथेच्छ-अव्य० [सं०] इच्छा के अनुसार। जितना या जैसा चाहिए, उतना या वैसा।
यथेच्छाचार-पुं० [सं०] [वि० यथेच्छाचारी] मन-माना काम करना। जो मन में आवे, वही करना। स्वेच्छाचार।
यथेच्छित-वि० दे० 'यथेच्छ'।
यथेष्ट-वि० [सं०] [भाव० यथेष्टता] जितना चाहिए, उतना। भरपूर। पर्याप्त।
यथोचित-वि० [सं०] जैसा या जितना उचित हो, वैसा या उतना।
यदपि॰-अव्य० = यद्यपि।
यदा-अव्य० [सं०] जिस समय। जब।
यदा-कदा-अव्य० [सं०] कभी कभी।
यदि-अव्य० [सं०] अगर। जो।
यदुराई॰-पुं० = यदुराज।
यदुराज-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।
यदुवंशी-पुं० दे० 'यादव'।
यदृच्छया-क्रि०वि० [सं०] १.अकस्मात्। २. दैव संयोग से। ३. मन माने ढंग से।
यद्यपि-अव्य० [सं०] यदि ऐसा है ही। अगरचे। तो कि।
यम-पुं० [सं०] १. दे० 'यमराज'। २. इंद्रियों को वश में रखना। निग्रह।
यमक-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक ही शब्द कई बार भिन्न भिन्न अर्थों में आता है।
यम-कातर-पुं० [सं० यम+हिं० कातर] १.यम का छुरा। २. एक प्रकार की तलवार।
यम-घंट-पुं०[सं०]दीपावलीका दूसरा दिन।
यमज-पुं० [सं०] १. एक साथ जनमे हुए दो बच्चों का जोड़ा। जुड़वाँ बच्चे। २. अश्विनीकुमार।
यमधार-पुं० [सं०] दुधारी तलवार।
यमन॰-पुं० = यवन।
यमनाह॰-पुं० = यमराज।
यम-पट-पुं० [सं०] यमराज के यहाँ पापियों को मिलनेवाली यातनाओं के वे चित्र जो प्राचीन काल में लोग घर घर दिखलाकर भीख माँगते फिरते थे।
यमपुर-पुं० = यम-लोक।
यम-यातना-स्त्री० [सं०] मृत्यु के समय होनेवाला शारीरिक और मानसिक कष्ट।
यमराज-पुं०[सं०] मृत्यु के बाद दंडादिकी व्यवस्था करनेवाले देवता। धर्मराज।
यमल-पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।
यम-लोक-पुं० [सं०] यमराज का लोक जहाँ मरने पर लोग जाते हैं। यमपुरी।
यमुना-स्त्री० [सं०] १. यम की बहन, यमी। २.उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
यव-पुं० [सं०] १. जौ (अन्न)। २. १२ सरसों या एक जौ की तौल। ३. एक जौ या तिहाई इंच की एक नाप।
यवन-पुं० [सं०] [स्त्री० यवनी] १. यूनान देश का निवासी। २. मुसलमान।
यवनिका-स्त्री० [सं०] नाटक का परदा।
यश- पुं० [सं० यशस्] १. अच्छा काम करने के कारण होनेवाली सुख्याति। नेक-नामी। कीर्ति। २. बड़ाई। प्रशंसा। मुहा०-यश गाना=१.प्रशंसा करना। २. एहसान मानना। यश मानना=कृतज्ञ होना। एहसान मानना।
यशस्वी-वि० [सं० यशस्विन्] [स्त्री०

यशस्विनी] जिसे यश मिला हो। कीर्तिमान्।

यशी-वि०=यशस्वी।

यशुमति-स्त्री०=यशोदा।

यशोदा-स्त्री० [सं०] १. नंद की पत्नी, जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था।

यशोमति-स्त्री० दे० 'यशोदा'।

यष्टा-पुं० [सं०] यज्ञ करनेवाला।

यष्टि(का)-स्त्री० [सं०] छड़ी।

यह-सर्व० [सं० इदं] (बहु० ये) एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त निकटवर्ती सभी संज्ञाओं या बातों के लिए होता है।

यहाँ-क्रि० वि० [सं० इह] इस स्थान पर। इस जगह।

यहि*-सर्व०, वि० [हिं० यह] १. पुरानी हिन्दी में 'यह' का वह रूप जो उसे कोई विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है। २. इसको। इसे।

यही-अव्य० [हिं० यह+ही] 'यह ही' का संक्षिप्त रूप। निश्चित रूप से यह।

यहूदी-पुं० [यहूद (देश)] [स्त्री० यहूदिन] यहूद देश का निवासी।

यांत्रिक-वि० [सं०] यंत्र-सम्बन्धी। यंत्र या यंत्रों का।

पुं० वह जो यंत्रों का बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो। यंत्र-विद्या का ज्ञाता। (मेकैनिक)

यांत्रीकरण-पुं० [सं०] १. यंत्रों आदि से युक्त या सज्जित करना। २.कल-कारखाने आदि स्थापित करना।

या-अव्य० [फा०] यदि यह न हो। अथवा। वा।

सर्व०, वि० ब्रज भाषा में 'यह' का कारक-चिह्न लगने के पहले का रूप।

याग-पुं० [सं०] यज्ञ।

याचक-पुं० [सं०] १. याचना करने या माँगनेवाला। २. भिखमंगा।

याचना-स्त्री० [सं०] [वि० याच्य, याचक, याचित] कुछ पाने के लिए प्रार्थना करने की क्रिया या भाव। माँगना।

*स० १ माँगना। २. प्रार्थना करना।

याचित-वि० [सं०] माँगा हुआ।

याजक-पुं० [सं०] यज्ञ करनेवाला। यष्टा।

याजन-पुं० [सं०] यज्ञ करना।

याजी-वि०=याजक।

याज्ञिक-पुं० [सं०] १. यज्ञ करने या करानेवाला। २. ब्राह्मणों की एक जाति।

यातना-स्त्री० [सं०] कष्ट। पीड़ा।

यातायात-पुं० [सं०] एक स्थान से दूसरे स्थान को (व्यक्ति, माल आदि) आने-जाने की क्रिया या साधन। (कम्यूनिकेशन)

यातुधान-पुं० [सं०] राक्षस।

यात्रा-स्त्री० [सं०] १. एक स्थान से दूसरे दूरवर्ती स्थान तक जाने की क्रिया। सफर। २ धार्मिक उद्देश्य या भक्ति से पवित्र स्थान पर दर्शन, पूजा आदि के लिए जाना।

यात्रावाल-पुं० [सं० यात्रा+हिं० वाला] यात्रियों को देव दर्शन करानेवाला पंडा।

यात्री-पुं० [सं०] १. यात्रा करनेवाला। मुसाफिर २. तीर्थाटन करनेवाला।

याथातथ्य-पुं० [सं०] यथातथ होने का भाव। ज्यों का त्यों होना।

याद-स्त्री० [फा०] १. स्मरण। २.स्मृति।

यादगार-स्त्री० [फा०] स्मृति-चिह्न।

याददाश्त-स्त्री० [फा०] १. स्मरण-शक्ति। २. स्मरण रखने योग्य बात।

यादव-पुं० [सं०] [स्त्री० यादवी] १

यदु के वंशज। २. श्रीकृष्ण।

यादृश-वि०[सं०] जिस तरह का। जैसा।

यान-पुं० [सं०] १. वह चलनेवाला उपकरण जिसपर चढ़कर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते हैं। सवारी। (कनवेयेन्स) २ आकाश-यान। विमान। ३ शत्रु पर होनेवाली चढ़ाई। अभियान।

यान-भत्ता-पुं० [सं० यान+हिं० भत्ता] वह भत्ता जो किसी को कहीं आने-जाने के लिए, सवारी के खर्च के रूप में मिले। (कनवेयेन्स एलाउएन्स)

यानी, याने-अव्य० [अ०] अर्थात्।

यापक-पुं० [सं०] वह जिसके नाम कोई वस्तु भेजी जाय और जिसका नाम उसके ऊपर लिखा हो। भेजी हुई चीज पानेवाला। (ऐड्रेसी)

यापन-पुं० [सं०] [वि० यापित, याप्य] १ चलाना। २.व्यतीत करना। बिताना।

यापित-वि० [सं०] विताया या व्यतीत किया हुआ (समय)।

याम-पुं० [सं०] १. तीन घंटे का समय। पहर। २. काल। समय। *स्त्री० [सं० यामि] रात।

यामिनी-स्त्री० [सं०] रात।

यायावर-पुं० [सं०] १. वह जो एक जगह टिककर न रहता हो। २.संन्यासी। ३. ब्राह्मण। ४. अश्वमेध का घोड़ा।

यार-पुं० [फा०] १. मित्र। दोस्त। २. किसी स्त्री का उपपति। जार।

यारी-स्त्री० [फा०] १. मित्रता। २. स्त्री और पुरुष का अनुचित संबंध।

यावज्जीवन-क्रि० वि० [सं०] जब तक जीवन रहे। जीवन भर। जन्म भर।

यावत्-अव्य० [सं०] १. जब तक। जिस समय तक। २. सब। कुल।

यावनी-वि० [सं०] यवन-संबंधी।

यासु*-सर्व० दे० 'जासु'।

याहि*†-सर्व० [हि० या+हि] इसको।

युंजन-अ० [सं०] कर्मों से जुड़ना या युक्त होना।

युक्त-वि० [सं०] १. जुड़ा या मिला हुआ। संयुक्त। २. साथ लगा हुआ। सहित। सम्मिलित। ३. युक्ति-संगत। उचित। योग्य। ४ युक्ति या तर्क से ठीक।

युक्ति-स्त्री० [सं०] १. उपाय। तरकीब। ढब। २. कौशल। चातुरी। ३. तर्क। दलील। ४. योग। मिलन।

युक्ति-युक्त-वि० [सं०] युक्ति या तर्क के विचार से ठीक। तर्क-संगत।

युग-पुं० [सं०] १. जोड़ा। युग्म। २. जुआ। जुआठा। ३. पासे के खेल में एक घर में साथ बैठनेवाली दो गोटियाँ। ४. बारह वर्ष का काल। ५. इतिहास का कोई ऐसा बड़ा काल-मान जिसमें बराबर एक ही प्रकार के कार्य, घटनाएँ आदि होती रही हों। (एज) जैसे-प्रस्तर युग। यौ०-युग-धर्म=समय विशेष में होनेवाला व्यवहार या चलन। ६.पुराणानुसार काल के ये चार परिमाण या विभाग—सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि। ७. समय। जमाना। मुहा०-युग युग = बहुत दिनों तक।

युगति*†-स्त्री०=युक्ति।

युग-पुरुष-पुं० [सं०] अपने समय का वह बहुत बड़ा आदमी जिसके जोड़ का उस युग में और कोई न हुआ हो।

युगम*-पुं० दे० 'युग्म'।

युगल-पुं० [सं०] युग्म। जोड़ा।

युगांत-पुं० [सं०] युग का अंत।

युगांतर-पुं० [सं०] १. दूसरा युग। २. दूसरा समय और जमाना।
मुहा०-युगांतर उपस्थित करना= पुरानी बातें हटाकर उनके स्थान पर नई बातें या नया युग चलाना।

युग्म(क)-पुं० [सं०] [भाव० युग्मता] १. जोड़ा। युग। २. द्वंद्व।

युग्मज-पुं० दे० 'यमज'।

युत-वि० [सं०] मिला हुआ। युक्त।

युति-स्त्री० [सं०] योग। मिलना।

युद्ध-पुं० [सं०] दो पक्षों के सैनिकों में होनेवाली लड़ाई। संग्राम। रण।
मुहा०-*युद्ध माँडना=लड़ाई छेड़ना।

युद्धक-वि० [सं०] १. युद्ध करनेवाला। जैसे-युद्धक वायु-यान। २. युद्ध-संबंधी।

युद्ध-पोत-पुं० [सं०] लड़ाई का जहाज।

युद्ध-मंत्री-पुं० [सं०] राज्य का वह मंत्री जिसके जिम्मे युद्ध-विभाग हो।

युद्धमान-वि० [सं०] युद्ध करनेवाला।

युधिष्ठिर-पुं० [सं०] पाँचो पांडवों में सबसे ज्येष्ठ, जो बहुत धर्म-परायण थे।

युयुत्सा-स्त्री० [सं०] १. युद्ध करने की इच्छा। २. शत्रुता। दुश्मनी।

युयुत्सु-वि० [सं०] युद्ध करने या लड़ने की इच्छा रखनेवाला।

युवक-पुं० [सं०] सोलह से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का पुरुष। जवान। युवा।

युवती-स्त्री० [सं०] जवान स्त्री।

युवराई*-स्त्री० दे० 'युवराजी'।

युवराज-पुं० [सं०][स्त्री० युवराज्ञी] राजा का वह सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का उत्तराधिकारी हो।

युवराजी-स्त्री० [सं० युवराज] युवराज का पद या भाव। यौवराज्य।

युवराज्ञी-स्त्री० [सं०] युवराज की पत्नी।

युवरानी*-स्त्री०=युवराज्ञी।

युवा-वि० [सं० युवन्] [स्त्री० युवती] युवक। जवान।

यूँ†-अव्य० दे० 'यों'।

यूथ-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। गरोह। २. सेना। फ़ौज।

यूथप(ति)-पुं० [सं०] १. दल का सरदार। २. सेनापति।

यूप-पुं० [सं०] यज्ञ का वह खंभा जिसमें बलि चढ़ाया जानेवाला पशु बाँधा जाता था।

यूह*†-पुं० दे० 'यूथ'।

ये-सर्व० हिं० 'यह' का बहु०।

येई*†-सर्व० = यही।

येऊ†-सर्व० [हिं० ये+ऊ] यह भी।

येतो*†-वि० = इतना।

येन-केन-प्रकारेण-क्रि० वि० [सं०] जैसे तैसे। किसी तरह से।

येहू*†-अव्य० [हिं० यह+हू] यह भी।

यों-अव्य० [सं० एवमेव] इस प्रकार। इस तरह। ऐसे।

यों ही-अव्य० [हिं० यों + ही] बिना किसी कार्य या कारण के। व्यर्थ।

योग-पुं० [सं०] [भाव० योगत्व] १ मिलना। संयोग। २. उपाय। तरकीब। ३. प्रेम। ४. छल। धोखा। ५. औषध। दवा। ६. लाभ। फायदा। ७. कोई शुभ काल। ८. धन और संपत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना। ९. वैराग्य। १०. योग-फल। जोड़। (टोटल) ११. सुभीता। सुयोग। १२. फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट काल या अवसर। १३. चित्त को एकाग्र करने का उपाय या शास्त्र। विशेष दे० 'योग-शास्त्र'।

योग-क्षेम-पुं० [सं०] १. प्राप्ति या लाभ

और उसकी रक्षा। २. जीवन-निर्वाह। गुजारा। ३. कुशल-मंगल। खैरियत। ४. राष्ट्र की शांति और सुव्यवस्था। (पीस एण्ड आर्डर)

योग-दर्शन–पुं० दे० 'योग-शास्त्र'।

योग-दान–पुं० [सं०] किसी काम में साथ देना या सहायक होना।

योग-फल–पुं० [सं०] दो या अधिक संख्याओं का जोड़। (टोटल)

योग-माया–स्त्री० [सं०] भगवती।

योगरूढ़–पुं० [सं०] [भाव० योग-रूढ़ि] वह यौगिक शब्द जो किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो।

योग शास्त्र–पुं० [सं०] पतंजलि ऋषि का दर्शन जिसमें चित्त को एकाग्र और ईश्वर में लीन करने का विधान है।

योगाभ्यास–पुं० [सं०] [वि० योगाभ्यासी] योग शास्त्र के अनुसार योग का साधन।

योगिनी–स्त्री० [सं०] १. योग-साधन करनेवाली तपस्विनी। २.रण-पिशाचिनी।

योगींद्र–पुं० [सं०] बहुत बड़ा योगी।

योगी–पुं० [सं० योगिन्] १. आत्म-ज्ञानी। २. योग का साधन या अभ्यास करनेवाला।

योगेश्वर–पुं० [सं०] १. श्रीकृष्ण। २. शिव। ३. बहुत बड़ा योगी।

योग्य–वि० [सं०] [भाव० योग्यता] १. उपयुक्त अधिकारी। लायक पात्र। २. समर्थ। ३. श्रेष्ठ। ४. उचित।

योग्यता–स्त्री० [सं०] १. वह गुण या शक्ति जिससे कोई कुछ काम करने के योग्य होता है। लियाकत। २.बुद्धिमत्ता। ३.सामर्थ्य। ४.अनुकूलता। ५.उपयुक्तता।

योजक–वि० [सं०] १.मिलाने या जोड़नेवाला। २.योजना करने या बनानेवाला।

योजन–पुं० [सं०] १. योग। २. मिलाना। संयोग। ३. किसी काम में लगाना। ४. धन-सम्पत्ति आदि अपने काम में ले आना या अपना लेना। (एप्रोप्रिएशन) ५ दूरी की एक नाप जो दो से आठ कोस तक की कही गई है।

योजन-गंधा–स्त्री० [सं०] व्यास की माता और शांतनु की भार्या, सत्यवती।

योजना–स्त्री० [सं०] [वि० योजनीय, योज्य, योजित] १. प्रयोग। व्यवहार। २. मिलान। मेल। ३. बनावट। रचना। ४. कोई कार्य या उद्देश्य सिद्ध करने के उपाय, साधन, व्यवस्था आदि की निश्चित की हुई रूप-रेखा। (प्रोजेक्ट, प्लान)

योजनीय, योज्य–वि० [सं०] १. योजन, संयोग या मिलान करने योग्य। २. जो कहीं प्रयुक्त हो सकता हो। योग या प्रयोग करने अथवा काम में लाने योग्य। (एप्लिकेबुल)

योद्धा–पुं० [सं० योद्धृ] १. वह जो युद्ध करता हो। लड़ाई लड़नेवाला। २. युद्ध में लड़नेवाला सिपाही। सैनिक।

योनि–स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति-स्थान। उद्गम। २. स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। ३ प्राणियों की जातियाँ जिनकी कुल संख्या ८४ लाख कही गई है। ४. देह। शरीर।

योनिज–पुं० [सं०] जो 'योनि' से उत्पन्न हुआ हो (अंडे आदि से न हुआ हो)। जिसने माता के गर्भ से स-शरीर और जीवित रूप में जन्म लिया हो।

योषिता–स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।

यौं†–अव्य० दे० 'यों'।

यौ*–सर्व० [हिं० यह] यह।

यौक्तिक-वि० [सं०] १. युक्ति संबंधी। २. युक्ति-संगत।

यौगिक-वि० [सं०] १. योग संबंधी। योग का। २. किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ।
पुं० १. प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। २. दो शब्दों के मेल से बना हुआ शब्द। जैसे-योग-क्षेम।

यौतक (तुक)-पुं० [सं०] विवाह के समय वर और कन्या को मिलनेवाला धन। दायजा। जहेज। दहेज।

यौद्धिक-वि० [सं०] युद्ध संबंधी। युद्ध का।

यौधेय-पुं० [सं०] १. योद्धा। २. एक प्राचीन देश का नाम। ३. इस देश में रहनेवाली एक प्राचीन योद्धा जाति।

यौन-वि० [सं०] १. योनि संबंधी। २. दे० 'लैंगिक'।

यौवन-पुं० [सं०] १. बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के बीच की अवस्था। २. जवानी। ३. दे० 'जोबन'। ४. स्त्रियों के स्तन।

यौवराज्य-पुं० [सं०] 'युवराज' का भाव या पद। युवराजी।

यौवराज्याभिषेक-पुं० [सं०] प्राचीन काल का वह अभिषेक (या उत्सव) जो राजा के उत्तराधिकारी पुत्र के 'युवराज' बनाये जाने के समय होता था।

र

र-हिन्दी वर्ण-माला का सत्ताइसवाँ अन्तःस्थ व्यंजन, जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

रंक-वि० [सं०] १. दरिद्र। २. कंजूस।

रंग-पुं० [सं०] १ राँगा नामक धातु। २. नाचना-गाना। ३. नृत्य या अभिनय का स्थान। ४. रण-क्षेत्र। ५. पदार्थ का, उसके आकार से भिन्न, वह गुण जिसका ज्ञान केवल आँखों के द्वारा होता है। वर्ण। जैसे-हरा, काला। ६. वह पदार्थ जिससे कोई चीज रँगी जाती है। ७. बदन और चेहरे की रंगत। वर्ण। (कौम्प्लेक्शन)
मुहा०-(चेहरे का) रंग उड़ना या उतरना=भय या लज्जा से चेहरे का तेज कम होना। रंग निखरना=चेहरा साफ और चमकदार होना। रंग बदलना=१. क्रुद्ध होना। २. रूप या वेष बदलना।
८. युवावस्था। जवानी।
मुहा०-रंग चूना या टपकना=भरी जवानी में होना। यौवन उमड़ना।
९. शोभा। सौन्दर्य। १०.आतंक। धाक।
मुहा०-रंग जमना=दृढ़ प्रभाव पड़ना। धाक बैठना। रंग जमाना या बाँधना=प्रभाव डालना। रंग लाना=प्रभाव या गुण दिखलाना।
११. क्रीड़ा। आनन्द-उत्सव।
यौ०-रंग-रलियाँ=आमोद-प्रमोद। मौज।
मुहा०-रंग में भंग पड़ना=आनंद में बाधा होना। रंग रचाना=उत्सव करना।
१२ युद्ध। लड़ाई।
मुहा०-रंग मचाना=खूब युद्ध करना।
१३. उमंग। मौज। १४. आनंद। मजा।
मुहा०-रंग जमना=खूब आनंद आना।

१२ दशा। हालत। १६. अनुराग। प्रेम। १७. ढंग। चाल।

स्त्री०-रंग-ढंग=१. दशा। हालत। २. चाल-ढाल। ३. बरताव। ४ लक्षण।

मुहा०-*रंग काछना=नया ढंग अख्तियार करना।

१८. भाँति। प्रकार। १९. चौपड़ की गोटियों के दो वर्गों में से कोई एक।

मुहा०-रंग मारना=बाजी जीतना।

रंगत-स्त्री० [हिं० रंग+त (प्रत्य०)] १. रंग। वर्ण। २. दशा। अवस्था।

रंग-थल-पुं० दे० 'रंग-भूमि'।

रँगना-स० [हिं० रंग+ना (प्रत्य०)] १. किसी चीज को घुले हुए रंग में डाल या डुबाकर रंगीन करना या उसपर रंग चढ़ाना।

मुहा०-रँगे हाथ या रँगे हाथों=कोई अपराध करते हुए उसी दशा में या उसके प्रमाण सहित। जैसे-रँगे हाथ पकड़ा जाना।

२. किसी को अपने प्रेम में फँसाना। ३. अपने अनुकूल करना।

अ० किसी पर आसक्त होना।

रंगबाती-स्त्री० [हिं०रंग+वर्त्ती] शरीर पर लगाने के लिए सुगंधित वस्तुओं की बत्ती।

रंग-बिरंगा-वि० [हिं०रंग+बिरंग] १. अनेक रंगों का। चित्रित। २. अनेक प्रकार का। तरह तरह का।

रंग-भवन-पुं० दे० 'रंग-महल'।

रंग-भूमि-स्त्री० [सं०] १. खेल, तमाशे या उत्सव का स्थान। २. नाट्य-शाला। ३. रण-क्षेत्र।

रंग-भौन*-पुं० = रंग-महल।

रंग-मंच-पुं० [सं०] १. नाट्यशाला, विशेषतः उसमें का वह स्थान जिसपर अभिनेता अभिनय करते हैं। (स्टेज) २. दे० 'रंग-भूमि'।

रंग-महल-पुं० [हिं०रंग+महल] भोग-विलास करने का स्थान।

रंग-रली-स्त्री०[हिं० रंग+रलना] आमोद-प्रमोद। आनंद।

रंग-रसिया-पुं० [हिं० रंग+रसिया] भोग-विलास का प्रेमी। विलासी।

रँग-राता*-वि० [हिं० रंग+रत] [स्त्री० रँगराती] १. भोग-विलास में लगा हुआ। ऐश-आराम में मस्त। २. प्रेम-युक्त। अनुरागपूर्ण।

रँगरूट-पुं० [अं० रिक्रूट] १. सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही। २. किसी काम में पहले-पहल आकर लगा हुआ व्यक्ति। नौ-सिखुआ।

रँगरेज-पुं० [फा०] [स्त्री० रँगरेजिन] कपड़े रँगने का व्यवसाय करनेवाला।

रंग-शाला-स्त्री० दे० 'रंग-भूमि'।

रंगसाज-पुं० [फा०] [भाव० रंगसाजी] १. चीजों पर रंग चढ़ानेवाला। २. रंग बनानेवाला।

रंग-स्थल-पुं०=रंग-भूमि।

रँगाई-स्त्री० [हिं० रंग+आई (प्रत्य०)] रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रंगा-रंग-वि० [हिं० रंग] १. अनेक रंगों का। २. तरह तरह का।

रँगावट-स्त्री० [हिं० रंग] रँगने की क्रिया या भाव।

रंगी-वि० [हिं० रंग+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० रंगिणी, रंगिनी] १. दे० 'रँगीला'। २. रंगोंवाला। रंगीन।

रंगीन-वि० [फा०] [भाव० रंगीनी] १. रँगा हुआ। रंगदार। २. विलास-प्रिय। ३. चमत्कारपूर्ण। मजेदार।

रँगीला-वि० [हिं० रंग] [स्त्री० रँगीली] १. रंगीन । २. रसिक । ३. सुन्दर ।

रंच(क)-वि० [सं० न्यंच] थोड़ा ।

रंज-पुं० [फा०] [वि० रंजीदा] १. दुःख । खेद । २. शोक ।

रंजक-वि० [सं०] १. रँगनेवाला । २. प्रसन्न करनेवाला । (यौ० के अन्त में, जैसे-मनोरंजक)

स्त्री० [हिं० रंच=अल्प] बत्ती लगाने के लिए बंदूक की प्याली पर रखी जानेवाली बारूद ।

रंजन-पुं० [सं०] [वि० रंजनीय] १ रँगने की क्रिया या भाव । २. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया । ३. रंगों आदि से अंकित किया हुआ चित्र । (पेन्टिंग)

वि० [स्त्री०रंजिनी] मन प्रसन्न करनेवाला।

रंजना*-स० [सं० रंजन] दे० 'रँगना' । स० किसी का मनोरंजन करना ।

रंजित-वि० [सं०] १. रँगा हुआ । २. आनंदित । प्रसन्न । ३. अनुरक्त ।

रंजिश-स्त्री० [फा०] किसी के प्रति मन में होनेवाली अप्रसन्नता । मन-मुटाव ।

रंजीदा-वि० [फा०] [भाव० रंजीदगी] १.जिसे रंज हो । दुःखित । २ अप्रसन्न ।

रंडा-स्त्री० [सं०] राँड़ । विधवा ।

रँडापा-पुं० [हिं० राँड़] राँड़ या विधवा होने का भाव या अवस्था । विधवा-पन । वैधव्य ।

रंडी-स्त्री० [सं० रंडा] वेश्या ।

रँडुआ(वा)-पुं० [हिं० राँड़] वह जिसकी पत्नी मर गई हो ।

रंता*†-वि० [सं० रत] अनुरक्त ।

रंति-स्त्री० [सं०] क्रीड़ा । केलि ।

रँदना-स० [हिं० रंदा] रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी और साफ करना ।

रंदा-पुं० [सं० रदन] लकड़ी छीलकर चिकनी और साफ करने का औजार ।

रंधन-पुं० [सं०] [वि० रंधित, रंधक] रसोई बनाना या पकाना ।

रंध्र-पुं० [सं०] छेद । छिद्र ।

रंभ-पुं० [सं०] भारी शब्द ।

रंभण-पुं० [सं०] १. गले लगाना । आलिंगन । २ रँभाना ।

रंभन*-पुं० दे० 'रंभण' ।

रंभा-स्त्री०[सं०] १.केला (फल)। २.गौरी। ३ वेश्या । ४ एक प्रसिद्ध अप्सरा ।

पुं० [सं० रंभ] लोहे के मोटे छड़ का बना औजार जिससे दीवार खोदते हैं ।

रँभाना-अ० [सं० रंभण] गाय का शब्द करना ।

रइकां*†-क्रि० वि० दे० 'रंच' ।

रइनि*†-स्त्री० [सं० रजनी] रात ।

रई-स्त्री० [सं० रय] मथानी ।

वि० स्त्री० [सं० रंजन] १. डूबी या पगी हुई । २. अनुरक्त । ३. युक्त । सहित ।

रईस-पुं० [अ०] [भाव० रईसी] अमीर । धनी । बड़ा आदमी ।

रउताई*†-स्त्री० दे० 'रवताई' ।

रउरे-सर्व० [हिं० राव] आप ।

रकत-पुं०, वि० दे० 'रक्त' ।

रकबा-पुं० [अ०] क्षेत्र-फल ।

रकम-स्त्री० [अ०] १. धन । संपत्ति । २. गहना । जेवर । ३. धन की राशि । (एमाउंट) ४. प्रकार । भाँति ।

रकाब-स्त्री० [फा०] सवारी के घोड़े की काठी या जीन में लटकनेवाला पावदान ।

मुहा०-रकाब पर पैर रखना=चलने के लिए तैयार होना ।

रकाबी-स्त्री० [फा०] तश्तरी ।

रक्त-पुं० [सं०] १. शरीर की नसों में

बहनेवाला लाल रंग का प्रसिद्ध तरल पदार्थ। खून। २. केसर। ३. कमल। ४. सिंदूर। ५. लाल रंग।
वि० [सं०] १. रँगा हुआ। २. लाल।
रक्त-चाप-पुं० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त का वेग या चाप साधारण से अधिक घट या बढ़ जाता है। (ब्लड प्रेशर)
रक्त-पात-पुं० [सं०] मार-काट। खून-खराबी। (युद्ध या लड़ाई-झगड़े में)
रक्त-स्राव-पुं० [सं०] शरीर के किसी अंग के कट-फट जाने के कारण उसमें से रक्त या खून बहना। (हैमरेज)
रक्तातिसार-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें लहू के दस्त आते हैं।
रक्ताभ-वि० [सं०] लाल रंग की आभा से युक्त। लाली लिये हुए।
रक्तिम-वि० [सं०] लाल रंग का।
रक्तिमा-स्त्री० [सं०] लाली। सुरखी।
रक्तोत्पल-पुं० [सं०] लाल कमल।
रक्ष-पुं० [सं०] १. रक्षक। २. रक्षा।
*पुं० [सं० रक्षस्] राक्षस।
रक्षक-पुं० [सं०] १. रक्षा करने या बचानेवाला। २. पहरेदार।
रक्षण-पुं० [सं०] [वि० रक्षणीय, रक्षित] १. रक्षा करना। २. पालन-पोषण।
रक्षणीय-वि० [सं०] [स्त्री० रक्षणीया] जिसकी रक्षा करना उचित हो। रक्षित रखने के योग्य।
रक्षस*-पुं० = राक्षस।
रक्षा-स्त्री० [सं०] १.आपत्ति, आक्रमण, हानि, नाश आदि से बचाना। बचाव। २. वह सूत्र या यंत्र जो बालकों को भूत-प्रेत, रोग, नजर आदि की बाधा से बचाने के लिए बाँधा जाता है।
रक्षाइद*-स्त्री० [हिं० रक्षा+आइद (प्रत्य०)] राक्षसपन।
रक्षा-कवच-पुं० दे० 'रक्षा' २.।
रक्षागृह-पुं० [सं०] १. प्रसूतिगृह। २. हवाई हमलों या इसी प्रकार की और आपत्तियों से बचने के लिए बना हुआ सुरक्षित स्थान।
रक्षा-बंधन-पुं० [सं०] श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होनेवाला एक त्योहार जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है। राखी पूनो। सलोनो।
रक्षित-वि० [सं०] [स्त्री० रक्षिता] १. जिसकी रक्षा की गई हो। २. पाला-पोसा हुआ। ३. किसी व्यक्ति या काम के लिए अलग किया हुआ। (रिज़र्व्ड)
रक्षित-राज्य-पुं० [सं०] वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य या साम्राज्य के संरक्षण में हो और जिसे साम्राज्य से बहुत से परिमित अधिकार प्राप्त हों। (प्रोटेक्टरेट)
रक्षिता-स्त्री० [सं० रक्षित] बिना विवाह किये,यों ही रखी हुई स्त्री। रखेली।
रक्षी-पुं० = रक्षक।
रक्ष्यमाण-वि०[सं०] १. जिसकी रक्षा हो सके। २. जिसकी रक्षा होती हो।
रखना-स० [सं० रक्षण] [प्रे० रखाना, रखवाना] १. स्थित करना। ठहराना। टिकाना। धरना। २. रक्षा करना। नष्ट न होने देना। ३ सपुर्द करना। सौंपना। ४. रेहन रखना। बंधक में देना। ५. अपनी रक्षा या अपने अधिकार में लेना। ६. नियुक्त करना। ७. जिम्मे लगाना। ८. मन में अनुभव या धारण करना। ९. उपपत्नी (या उपपति) बनाना। १०. पालना।
रखनी-स्त्री० दे० 'रखेली'।

रखसा*-पुं० दे० 'रहँकला'।

रखवाई-स्त्री० दे० 'रखाई'।

रखवार*†-पुं० दे० 'रखवाला'।

रखवाला-*†-पुं० [हिं० रखना] १. रक्षा या रखवाली करनेवाला। २. पहरेदार।

रखवाली-स्त्री० [हिं० रखना] रक्षा या देख-भाल करने की क्रिया या भाव। हिफ़ाजत।

रखाई-स्त्री० [हिं० रखना] रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी।

रखाना-स० हिं० 'रखना' का प्रे०।
अ० [सं० रक्षा] रखवाली या रक्षा करना।

रखाव†-स्त्री० [हिं० रखना] गोचर-भूमि।

रखिया*†-पुं०=रक्षक।

रखीसर*-पुं० [सं० ऋषीश्वर] १. नारद ऋषि। २. बहुत बड़ा ऋषि। ऋषीश्वर।

रखेली(खैल)-स्त्री० [हिं० रखना] उपपत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री। रक्षिता।

रग-स्त्री० [फा०] १. शरीर में की नस। मुहा०-रग दबना=किसी के अधीन या अधिकार में होना। रग रग फड़कना=बहुत अधिक उत्साह या चंचलता होना। रग रग में=सारे शरीर में।
२. पत्तों में दिखाई पड़नेवाली नसें।
स्त्री० [?] हठ। जिद।

रगड़-स्त्री० [हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। २. दे० 'रगड़ा'।

रगड़ना-स० [सं० घर्षण] [प्रे० रगड़वाना] १. घर्षण करना। घिसना। २. पीसना। ३. किसी से बहुत परिश्रम लेना। ४. तंग करना।
अ० बहुत मेहनत करना।

रगड़ा-पुं० [हिं० रगड़ना] १. रगड़ने की क्रिया या भाव। २. अत्यंत परिश्रम। ३. बराबर चलता रहनेवाला झगड़ा।

रगण-पुं० [सं०] छंद-शास्त्र में एक गुरु, एक लघु और एक गुरु का एक गण। (ऽ।ऽ)

रगत*-पुं० दे० 'रक्त'।

रग-पट्ठा-पुं० [फा० रग+हिं० पट्ठा] शरीर के अंदर की रगें और मांस-पेशियाँ।

रग-रेशा-पुं० [फा० रग+रेशा] १. नस। २. किसी की सूक्ष्म से सूक्ष्म बात।

रगेदना-स० [भाव० रगेद] दे० 'खदेड़ना'।

रघु-पुं० [सं०] अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्य-वंशी राजा जो श्री रामचंद्र के परदादा थे।

रघुकुल-पुं० [सं०] राजा रघु का वंश।

रघुनाथ-पुं० [सं०] श्री रामचंद्र।

रघुराई*-पुं० [सं० रघुराज] श्री रामचंद्र।

रघु-वंश-पुं० [सं०] [वि० रघुवंशी] महाराज रघु का वंश या खानदान।

रघुवर-पुं० [सं०] श्री रामचंद्र।

रचक-पुं० [सं०] रचना करने या बनाने-वाला। रचयिता।
*वि० दे० 'रंचक'।

रचना-स्त्री० [सं०] १. रचने या बनाने की क्रिया या भाव। बनाव। निर्माण। २. बनाने का ढंग या कौशल। ३. बनाई हुई या निर्मित वस्तु। ४. साहित्यिक कृति। जैसे-लिखा हुआ ग्रन्थ या की हुई कविता।
स० [सं० रचन] [प्रे० रचवाना] १. लिखना। २. ग्रंथ आदि लिखना। ३. कल्पना से प्रस्तुत करना। रूप खड़ा करना। ४. सँवारना। सजाना।
मुहा०-*रचि रचि=बहुत ध्यानपूर्वक या कारीगरी से (कोई काम करना)।
स० [सं० रंजन] रँगना।
अ० [सं० रंजन] १. अनुरक्त होना। २. ठीक, उपयुक्त या सुन्दर होना। जैसे-हाथों में मेंहदी रचना।

रचनात्मक-वि० [सं०] जो किसी प्रकार

की रचना या निर्माण से सम्बन्ध रखता हो और उसमें सहायक हो। २. किसी देश या समाज की उन्नति और सम्पन्नता में सहायक होनेवाला। (कन्स्ट्रक्टिव)

रचयिता-पुं० [सं० रचयितृ] रचना करने या बनानेवाला।

रचाना*-स० [हिं० 'रचना' का प्रे०] अनुष्ठान करना या कराना।
स० [सं० रंजन] रँगना।
अ० [सं० रंजन] हाथ-पैरों में मेंहदी, महावर आदि लगवाना।

रचित-वि० [सं०] रचा या बनाया हुआ।

रचौहाँ*-वि० [हिं० रचना] १. रचा हुआ। २. रँगा हुआ। ३. अनुरक्त।

रच्छनहार*-पुं० = रक्षक।

रच्छा*-स्त्री०=रक्षा।

रज-पुं० [सं० रजस्] १. स्त्रियों की जननेन्द्रिय से प्रति मास तीन-चार दिन तक निकलनेवाला रक्त। कुसुम। ऋतु। २. फूलों का पराग। ३. दे० 'रजोगुण'।
स्त्री० [सं०] धूल। गर्द।
* पुं० [सं० रजक] धोबी।

रजक-पुं० [सं०] [स्त्री० रजकी] धोबी।

रजतंत*-स्त्री० दे० 'वीरता'।

रजत-स्त्री० [सं०] चाँदी। रूपा।
वि० १. सफेद। शुक्ल। २. लाल।

रजत-पट-पुं० [सं० रजत+पट] वह परदा जिसपर सिनेमा के चित्र आदि दिखाये जाते हैं। (अँगरेजी में यह 'सिलवर स्क्रीन' कहलाता है ; इसी से यह तदर्थीय शब्द बना है।)

रजत जयंती-स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, संस्था या महत्वपूर्ण कार्य आदि के जन्म या आरंभ से २५ वें वर्ष होनेवाली जयन्ती। (सिलवर जुबिली)

रजन-स्त्री० दे० 'राख'।

रजना*-अ० [सं० रंजन] रँगा जाना।
स० रँगना।

रजनी-स्त्री० [सं०] रात।

रजनी-गंधा-स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल जो रात को फूलता है।

रजनीचर-पुं० [सं०] राक्षस।

रजपूत*†-पुं० दे० 'राजपूत'।

रज-बहा-पुं० [सं० राज+हिं० बहना] वह प्रधान नल अथवा नहर जिससे अनेक शाखाएँ निकली हों।

रजवती-स्त्री० दे० 'रजस्वला'।

रजवाड़ा-पुं० [हिं० राजा] १. रियासत। २. राजा।

रजवार*†-पुं० दे० 'दरबार'।

रजस्वला-वि०स्त्री० [सं०] (स्त्री) जिसका रज निकल रहा हो। ऋतुमती।

रजा-स्त्री० [अ०] १ मरजी। इच्छा। २. छुट्टी। ३. अनुमति। ४. स्वीकृति।

रजाइ*-स्त्री० १.दे०'आज्ञा'। २.दे०'रजा'।

रजाई-स्त्री० [?] एक प्रकार का रूईदार ओढ़ना। मोटी दुलाई। लिहाफ।
*स्त्री० [अ० रजा] आज्ञा।

रजाकार-पुं० [फा०] १. स्वयंसेवक। २. दक्षिण हैदराबाद की एक मुस्लिम संस्था, उसके सदस्य और स्वयंसेवक जिन्होंने सन् १९४८ में वहाँ के हिन्दुओं पर घोर अत्याचार करने और अराजकता फैलाने में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

रजामंद-वि० [फा०] [भाव० रजामंदी] सहमत।

रजाय*†- स्त्री० दे० 'रजा'।

रजायसु*-स्त्री० [सं० राजा+आयसु] राजा की आज्ञा।

रजोगुण-पुं० [सं०] प्रकृति के तीन

गुणों में से एक गुण। राजस।

रजोदर्शन-पुं० [सं०] रजस्वला होना।

रजोधर्म-पुं० [सं०] स्त्रियों का मासिक धर्म या रज-प्रवाह।

रज्जु-स्त्री० [सं०] रस्सी।

रटंत-स्त्री० [हिं० रटना] रटने की क्रिया या भाव।

वि० रटा हुआ।

रट(न)-स्त्री० [हिं० रटना] कोई शब्द या बात बार बार कहने की क्रिया या भाव।

रटना-स० [अनु०] १. कोई बात या शब्द बार बार कहना। २. कंठस्थ करने के लिए बार बार कहना या पढ़ना।

स्त्री० दे० 'रट'।

रढ़ना*-स० दे० 'रटना'।

रण-पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

रण-क्षेत्र-पुं० [सं०] लड़ाई का मैदान।

रण-चंडी-स्त्री० [सं०] रण-क्षेत्र में मार-काट करानेवाली देवी।

रण-छोड़-पुं० [हिं०] श्रीकृष्ण।

रणन-पुं० [सं०] [वि० रणित] १. शब्द या गुंजार करना। २. बजना।

रण-भूमि-स्त्री०[सं०] लड़ाई का मैदान।

रण-रोज*-पुं० [सं० अरण्य-रोदन] बन में बैठकर व्यर्थ रोना (जिसका कोई फल नहीं होता)।

रण-स्तंभ-पुं० [सं०] युद्ध में जीतने के स्मारक के रूप में बनवाया हुआ स्तंभ।

रणांगण-पुं०[सं०] युद्ध-क्षेत्र। रण-भूमि।

रत-पुं० [सं०] १. मैथुन। २. प्रीति।

वि० [सं०] [स्त्री० रता] १. अनुरक्त। आसक्त। २. (कार्य्य आदि में) लगा हुआ। लिप्त।

*पुं० [सं० रक्त] रक्त। खून।

रतन-पुं० = रत्न।

रतनागर*-पुं० दे० 'रत्नाकर'।

रतनार (ा)-वि० [सं० रक्त] [स्त्री० रतनारी] कुछ लाल। सुरखी लिये हुए।

रत-मुँहाँ*-वि० [हिं० रत=लाल+मुँह] [स्त्री० रतमुँहीं] लाल मुँहवाला।

रतल-स्त्री० दे० 'रत्तल'।

रति-स्त्री [सं०] १. कामदेव की पत्नी, जो परम रूपवती मानी गई है। २. मैथुन। संभोग। ३. प्रीति। प्रेम। (साहित्य में श्रृंगार-रस का स्थायी भाव) ४. शोभा। छवि।

रतिक*†-क्रि० वि० [हिं० रत्ती] थोड़ा।

रतिनाह*-पुं० [सं० रतिनाथ] कामदेव।

रतिपति-पुं० [सं०] कामदेव।

रति-मंदिर-पुं० [सं०] प्रेमी और प्रेमिका के संभोग और क्रीड़ा का स्थान।

रतिराई*-पुं० दे० 'रतिराज'।

रति-राज-पुं० [सं०] कामदेव।

रती-*†-स्त्री० १ दे०'रति'। २ दे०'रत्ती'।

क्रि० वि० जरा सा। रत्ती भर।

रतीक*-क्रि० वि० दे० 'रतिक'।

रतोपल*-पुं०[सं०रक्तोत्पल] लाल कमल।

रतौंधी-स्त्री० [हिं० रात + अंधा] एक रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता।

रत्त*-पुं० दे० 'रक्त'।

रत्तल-स्त्री० [देश०] आध सेर के लग-भग की एक तौल।

रत्ती-स्त्री० [सं० रक्तिका] १. आठ चावल या २० घुँघची की तौल।

मुहा०-रत्ती भर=बहुत थोड़ा। जरा सा।

*स्त्री० [सं० रति] शोभा। छवि।

रत्थी-स्त्री० दे० 'अरथी'।

रत्न-पुं० [सं०] १. बहुमूल्य, चमकीले प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो आभूषणों आदि में जड़े जाते हैं। मणि। जवाहिर। नगीना।

विo सर्व-श्रेष्ठ या बहुत अच्छा।
रत्न-गर्भा-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
रत्न-माला-स्त्री० [सं०] रत्नों या जवाहिरात की माला।
रत्नसू-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।
रत्नाकर-पुं० [सं०] १. समुद्र। २.खान।
रत्नावली-स्त्री० [सं०] मणियों की श्रेणी।
रथ-पुं [सं०] १ दो या चार पहियों की एक प्रकार की पुरानी सवारी या गाड़ी। बहल। २. शरीर। ३. पैर। ४. शतरंज में, ऊँट नामक मोहरा।
रथवान(ह)-पुं० दे० 'सारथी'।
रथांग-पुं० [सं०] १. रथ का पहिया। २.चक्र नामक अस्त्र। ३.चकवा (पक्षी)।
रथिक-पुं० दे० 'रथी'।
रथी-पुं० [सं० रथिन्] १ रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। २. बहुत बड़ा योद्धा।
विo रथ पर चढ़ा हुआ।
स्त्री० दे० 'रत्थी'।
रद-पुं० [सं०] दंत। दाँत।
विo दे० 'रद्द'।
रद-छद*-पुं० [सं० रदच्छद] होंठ।
पुं० [सं० रद-क्षत] संभोग के समय अंगों पर दाँतों के गड़ने का चिह्न।
रद-पट-पुं० [सं०] होठ।
रद्द-वि०[अ०]१.बदला हुआ। परिवर्तित।
यौ०-रद्द-बदल=परिवर्तन।
२. खराब या निकम्मा ठहराया हुआ।
रद्दा-पुं० [देश०] १ दीवार पर चुनी हुई ईंटों की एक पंक्ति या मिट्टी की एक तह। २. थाली में चुनी हुई मिठाइयों का स्तर। ३. स्तर। तह।
रद्दी-वि० [फा० रद] निकम्मा। बेकार।
स्त्री० पुराने और व्यर्थ के कागज।
रन*-पुं [सं० रण] युद्ध। लड़ाई।
पुं० [सं० अरण्य] जंगल। वन।
पुं० [?] १ झील। २. खाड़ी।
रनकना*†-अ० [सं० रणन] [स० रनकाना] घुँघरू आदि का धीमा शब्द होना।
रनना*-अ० [सं० रणन] झनकार होना। बजना।
रन-बंका (बाँकुरा)-पुं० [सं० रण+ हिं० बांका] योद्धा। वीर।
रनवादी*-पुं० = योद्धा।
रन-वास-पुं० [हिं० रानी+वास] रानियों के रहने का महल। अंतःपुर।।
रन-साजी-स्त्री० [वि०रण+फा० साजी] युद्ध या लड़ाई छेड़ना।
रनित*-वि० [हिं० रनना] बजता हुआ।
रनी*-पुं० = योद्धा।
रपट†-स्त्री० [हि० रपटना] १. रपटने की क्रिया या भाव। फिसलना। २. दौड़।
स्त्री० [अं० रिपोर्ट] किसी घटना की वह सूचना जो थाने में लिखाई या किसी अधिकारी को दी जाती है। आख्या।
रपटना-†-अ० [सं०रफन] [प्रे० रपटाना] १. फिसलना। २. तेजी से चलना।
रफल-स्त्री० दे० 'राइफल'।
स्त्री० [अं० रैपर] ऊनी चादर।
रफा-वि० [अ०] १. दबा हुआ या शांत। २. दूर किया हुआ। निवारित।
रफू-पुं० [अ०] १. फटे या कटे हुए कपड़े के छेद में बुनावट की तरह के तागे भरकर उसे बंद करना। २. इस प्रकार बन्द किया हुआ छेद।
रफू-चक्कर-वि० दे० 'चंपत'।
रब-पुं० [अ०] परमेश्वर। ईश्वर।
रबड़-पुं०[अं० रबर] १. बट की जाति का एक वृक्ष। २. इस वृक्ष के दूध को सुखाकर बनाया हुआ प्रसिद्ध लचीला पदार्थ,

जिससे बहुत-सी चीजें बनती हैं।

रबड़-छंद-पुं० [हिं० रबड़+छंद] कविता का ऐसा छंद जिसमें मात्राओं आदि की गिनती का कुछ विचार न हो। (व्यंग्य)

रबड़ी-स्त्री० दे० 'बसौंधी'।

रबाना-पुं० [देश०] एक प्रकार का डफ।

रबाब-पुं० [अ०] सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

रबाबी-वि०[हिं०रबाब]रबाब बजानेवाला।

रबी-स्त्री० [अ० रबीऽ] १. वसंत ऋतु। २. वसंत ऋतु में काटी जानेवाली फसल।

रब्त-पुं० [अ०] १. अभ्यास। २. विशेष संपर्क या संबंध। मेल-जोल। यौ०-रब्त-जब्त=मेल-मिलाप।

रब्ब-पुं० दे० 'रब'।

रभस-पुं० [सं०] १. वेग। तेजी। २. प्रसन्नता। आनंद। ३. प्रेम का उत्साह। उमंग। ४. पछतावा। ५. खेद। रंज।

रमक-स्त्री० [हिं० रमकना] १ झूले की पेंग। २. झोंका।

रमकना-अ० [हिं० रमना] १.झूले पर बैठकर झूलना। २. झूमते हुए चलना।

रमण-पुं० [सं०] १.विलास। क्रीड़ा। २ मैथुन। ३. विचरण। घूमना। ४. पति। वि०१. सुंदर। २. प्रिय। ३. विलास या क्रीड़ा करनेवाला।

रमणी-स्त्री०[सं०] स्त्री, विशेषतः युवती।

रमणीक-वि० [सं० रमणीय] सुंदर।

रमणीय-वि० [सं०] [भाव० रमणीयता] सुंदर। मनोहर।

रमता-वि० [हिं० रमना] जो बराबर घूमता-फिरता रहता हो। जैसे-रमता जोगी।

रमन*-पुं०, वि० दे० 'रमण'।

रमना-अ० [सं० रमण] १. भोग-विलास के लिए कहीं जाकर ठहरना या रहना। २. आनंद करना। मजा उड़ाना। ३. व्याप्त होना। ४. अनुरक्त या लीन होना। ५. घूमना-फिरना। ६. चल देना। पुं० [सं०आराम या रमण] १. वह स्थान या घेरा जिसमें पाले हुए पशु चरने के लिए छोड़ दिये जाते हैं। २. बाग। ३. कोई सुन्दर और रमणीक स्थान।

रमनी*-स्त्री० दे० 'रमणी'।

रमल-पुं० [अ०] [वि० रमली] पासे फेंककर शुभाशुभ फल या भविष्य जानने और बतलाने की विद्या।

रमसरा*-पुं० दे० 'रामशर'।

रमा-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी। (देवी)

रमाकांत-पुं० [सं०] विष्णु।

रमाना-स० [हिं० रमना का स० रूप] अनुरक्त या लीन करना।

रमापति-पुं० [सं०] विष्णु।

रमित*-वि० [हिं० रमना] जिसका मन किसी में रमा हो। मुग्ध।

रमैनी-स्त्री० [हिं० रामायण] दोहे-चौपाइयों में कहे हुए कबीरदास के वचन।

रमैया*†-पुं० [हिं० राम] १. राम। २. ईश्वर।

रम्माल-पुं० [अ०] रमल जाननेवाला।

रम्य-वि० [सं०] [स्त्री० रम्या, भाव० रम्यता] १. मनोहर। सुंदर। २.रमणीय।

रय*-पुं० [सं० रज] रज। धूल। गर्द।

रयन*†-स्त्री० [सं० रजनि] रात।

रयना*†-स० [सं० रंजन] रँगना। *अ० १. अनुरक्त होना। २. मिलना।

रयबारा*-पुं० दे० 'रजवाड़ा'।

रय्यत†-स्त्री० [अ० रअय्यत] प्रजा।

रर*-स्त्री० दे० 'रट'।

ररना†-स० दे० 'रटना'।

ररिहा*†-पुं०[हिं०ररना] १.दे० 'रटना'।

१. भारी और हठी भिखमंगा।

रखना*†-अ० [सं० रक्षण] = मिलना।

रलिका*-स्त्री० दे० 'रली'।

रली-स्त्री० [सं० ललन] १. विहार। क्रीड़ा। २. आनंद। प्रसन्नता।

यौ०-रंग-रली=आनन्दपूर्ण विहार।

रलु-*पुं० दे० 'रेला'।

रव-पुं० [सं०] १. गुंजार। नाद। २. आवाज। शब्द। ३. शोर। हल्ला।

*पुं० [सं० रवि] सूर्य।

रवताई*-स्त्री० [हिं० रावत] १. राजा या रावत होने का भाव। २. प्रभुत्व।

रवन*-पुं०, वि० दे० 'रमण'।

रवना*-अ० [सं० रमण] १. रमण या क्रीड़ा करना। २. रमना।

अ० [हिं० रव=शब्द] शब्द करना।

रवनि (नी)*-स्त्री० [सं० रमणी] १. रमणी। सुंदरी। २. भार्या। पत्नी।

रवन्ना-पुं० [फा० रवाना] १. वह कागज जिसपर भेजे हुए माल का ब्योरा लिखा रहता है। २. वह पत्र जिससे किसी रास्ते से आने का अधिकार मिलता है। (ट्रानजिट पास)

रवा-पुं० [सं० रज] १. बहुत छोटा टुकड़ा। कण। दाना। २. सूजी।

वि० [फा०] १. उचित; २. प्रचलित।

रवाज-स्त्री० [फा०] प्रथा। परिपाटी।

रवादार-वि० [फा० रवा+दार (प्रत्य०)] संबंध या लगाव रखनेवाला।

रवानगी-स्त्री० [फा०] प्रस्थान।

रवाना-वि०[फा०] [भाव० रवानगी] जो कहीं से किसी दूसरी जगह के लिए चल पड़ा हो। प्रस्थित। २.भेजा हुआ।

रवि-पुं० [सं०] सूर्य।

रवि-मंडल-पुं० [सं०] सूर्य के चारो ओर दिखाई देनेवाला लाल गोला।

रविश-स्त्री० [फा०] १.गति। चाल। २. तरीका। ढंग। ३. बाग की क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।

रवीला-वि० [हिं० रवा] जिसमें कण या रवे हों। रवेवाला।

रवैया-पुं०[फा०रविश या रवाँ] १. चाल-चलन। २. तरीका। ढंग।

रशना-स्त्री० [सं०] करधनी।

*स्त्री० दे० 'रसना'।

रश्क-पुं० [फा०] ईर्ष्या। डाह।

रश्मि-पुं० [सं०] १. किरण। २. घोड़े की लगाम। बाग।

रस-पुं० [सं०] [भाव० रसता] १. खाने का स्वाद। रसनेन्द्रिय का विषय। (रस छः प्रकार के माने गये हैं-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय) २. सार। तत्व। ३. पुस्तक पढ़ने या अभिनय देखने से मिलनेवाला आनंद। ४. आनंद। सुख (विशेषतः यौवन का)। मुहा०-रस भीजना या भीनना= यौवन का आरंभ और संचार होना। ५. प्रेम। प्रीति।

यौ०-रस-रंग=प्रेम-क्रीड़ा। केलि। रस-रीति=प्रेम का व्यवहार।

६.कोई तरल या द्रव पदार्थ। ७. पानी। ८. शरबत। ९. पारा। १०. धातुओं का भस्म। ११. भाँति। प्रकार।

रस-केलि-स्त्री० [सं०] १. विहार। क्रीड़ा। २. दिल्लगी। हँसी।

रस-गुल्ला-पुं० [हिं० रस+गोला] एक प्रकार की बँगला मिठाई।

रसज्ञ-वि० [सं०] [भाव० रसज्ञता] १. रस का जाननेवाला। २. काव्य या साहित्य का मर्म और गुण समझनेवाला।

रसद्-वि० [सं०] १. स्वादिष्ट। २. सुखद।
स्त्री० [फा०] कच्चा अनाज जो अभी पकाया जाने को हो। (भोजन के लिए)

रसना-स्त्री० [सं०] १. जिह्वा। जीभ। मुहा०-रसना तालू से लगाना=चुप करना। बोलना बंद करना।
२. जीभ से मिलनेवाला स्वाद।
अ० [हिं० रस+ना (प्रत्य०)] [भाव० रसाव] १. धीरे धीरे बहना या टपकना। २. किसी पदार्थ का गीला होकर जल या रस छोड़ना या टपकाना।
मुहा०-रस रसया रसे रसे=धीरे धीरे। ३.तन्मय या मग्न होना। ४.स्वाद लेना। ५. प्रेम में अनुरक्त होना।
*स्त्री० [सं० रश] १.रस्सी। २. लगाम।

रसनेंद्रिय-स्त्री० [सं०] जीभ। जिह्वा।

रस-प्रबंध-पुं० [सं०] १. नाटक। २. वह कविता जिसमें एक ही विषय बहुत से संबद्ध पद्यों में वर्णित हो।

रसम-स्त्री०=रस्म।

रसमि-*स्त्री०=रश्मि।

रसरी† स्त्री०=रस्सी।

रसवंत-पुं०=रसिक।

रसवाद-पुं० [सं०] १. प्रेम की बात-चीत। २. प्रेमपूर्ण विवाद या झगड़ा।

रसांजन-पुं०[सं०] १. रसौत। २. सुरमा।

रसा-स्त्री० [सं०] १. पृथ्वी। २. जीभ।
पुं० [हिं० रस] पकी हुई तरकारी में का पानीवाला अंश। झोल। शोरबा।

रसाइनी*-पुं०=रासायनिक।

रसाई-स्त्री० [फा०] किसी तक पहुँचने की क्रिया या भाव। पहुँच।

रसातल-पुं० [सं०] नीचे के सात लोकों में छठा लोक।
मुहा०-रसातल में जाना=नष्ट होना।

रसाना*-स० [सं० रस] १. रस-पूर्ण करना। २. प्रसन्न करना।
अ० १.रस-युक्त होना। २.आनंद लूटना।

रसाभास-पुं० [सं०] १. साहित्य में किसी रस का ऐसे अवसर या स्थान पर उपयोग, जहाँ वह उचित या उपयुक्त न हो। २. एक प्रकार का अलंकार जिसमें उक्त प्रकार का वर्णन होता है।

रसायन-पुं० [सं०] १. मनुष्य को सदा स्वस्थ और पुष्ट बनाये रखनेवाला औषध। (वैद्यक) २ ताँबे से सोना बनाने का एक कल्पित योग। ३.दे०'रसायन शास्त्र'।

रसायनज्ञ-पुं० [सं०] वह जो रसायन-शास्त्र का ज्ञाता हो। रसायन-शास्त्री।

रसायन-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के तत्वों तथा भिन्न भिन्न दशाओं में उनमें होनेवाले विकारों का विवेचन होता है। (कैमिस्टरी)

रसायनिक-वि० दे० रासायनिक'।

रसाल-पुं० [सं०] [भाव० रसालता] १. गन्ना। २. आम।
वि० [स्त्री०रसाला] १.मधुर। २.रसीला।
*पुं० [अ० इरसाल] कर। राजस्व।

रसाली-पुं० [सं० रस] भोग-विलास में रस या आनन्द लेनेवाला। रसिक।

रसाव-पुं०[हिं०रसना]१.रसने की क्रिया या भाव। २.इस प्रकार निकला हुआ अंश।

रसावर(ल)†-पुं० [हिं० रस+चावल] ऊख के रस में पकाये हुए चावल।

रसिक-पुं० [सं०] [भाव० रसिकता] १. रस या आनन्द लेनेवाला। २. काव्य का मर्मज्ञ। ३. सहृदय। ४. भावुक।

रसिया-पुं० [सं० रसिक] १. रसिक। २. एक प्रकार का गाना जो फागुन

में ब्रज में गाया जाता है।

रसी*-पुं०=रसिक।

रसीद-स्त्री० [फा०] १. किसी चीज की प्राप्ति या पहुँच। २. किसी चीज के प्राप्त होने या पहुँचने के प्रमाण के रूप में लिखा हुआ पत्र। प्राप्तिका।

रसीला-वि० [हिं० रस] [स्त्री० रसीली] १.जिसमें रस हो। रसदार। २.स्वादिष्ट। ३. रसिक। ४. बाँका और सुन्दर।

रसूख-पुं० [अ० रुसूख] १. धैर्य। २. अध्यवसाय। ३. किसी के यहाँ तक होनेवाली पहुँच। ४.विश्वास। एतबार।

रसूम-पुं० [अ०] १. नियम। कानून। २. प्रचलित प्रथा या विधान के अनुसार किसी को दिया जानेवाला धन। नियत शुल्क या देय।

रसूल-पुं०[अ०] ईश्वर का दूत। पैगंबर।

रसेस*-पुं० [सं०रसेश] श्रीकृष्ण।

रसोइया-पुं० [हिं० रसोई] रसोई पकाने-वाला आदमी।

रसोई-स्त्री० [हिं० रस+ओई (प्रत्य०)] १. पकाई हुई खाने की चीजें।

मुहा०-*रसोई तपना=भोजन पकाना।

२. दे० 'रसोई-घर'।

रसोईघर-पुं० [हिं० रसोई+घर] भोजन बनाने की जगह। पाकशाला। चौका।

रसोईदार-पुं० दे० 'रसोइया'।

रसोय*†-स्त्री० दे० 'रसोई'।

रसौर-पुं० दे० 'रसावर'।

रस्ता-पुं० दे० 'रास्ता'।

रस्म-स्त्री० [अ०] १. मेल-जोल।

यौ०-राह-रस्म = मेल-जोल।

२.औपचारिक प्रथा या परिपाटी। रवाज।

रस्सा-पुं० [हिं० रस्सी] [स्त्री० अल्पा० रस्सी] बहुत मोटी रस्सी।

रस्सी-स्त्री० [सं० रश्मि] रूई, सन आदि को बटकर बनाई हुई बाँधने के काम की लंबी चीज। डोरी।

रहँकला-पुं० [हिं० रथ+कल] १. एक प्रकार की तोप। २.तोप लादने की गाड़ी।

रहँचटा-पुं० [हिं० रस+चाट] आतुरता-पूर्ण लालसा या उत्कंठा। चसका।

रहठान*-पुं०[हिं०रहना+स्थान] निवास-स्थान। रहने की जगह।

रहतिया-वि०[हिं०रहना+तिया(प्रत्य०)] (बिक्री का माल) जो बहुत दिनों से न बिकने के कारण यों ही पड़ा हो। रखाऊँ।

रहन-स्त्री० [हिं० रहना] १. रहने की क्रिया या भाव। २. आचार। व्यवहार।

रहन-सहन-स्त्री० [हिं० रहना+सहना] जीवन बिताने और काम करने का ढंग।

रहना-अ० [सं० राज= विराजना] १. स्थित होना। ठहरना। २.रुकना। थमना।

मुहा०-रह चलना या जाना=१. रुक जाना। २. पिछड़ जाना।

३ निवास करना। ४. कोई होता हुआ काम बंद करके रुकना या ठहरना।

मुहा०-रह जाना=विफल होना।

५. विद्यमान होना। ६. समय बिताना। ७. नौकरी करना। ८. जीवित रहना। जीना। ९. बाकी बचना। छूट जाना।

यौ०-रहा-सहा=बचा-बचाया।

मुहा०-(अंग आदि) रह जाना= १. थक जाना। शिथिल हो जाना। २. निकम्मा हो जाना। रह जाना=१. पीछे छूट जाना। २. शेष रहना।

रहनि*-स्त्री० दे० 'रहन'।

स्त्री० [?] प्रेम। प्रीति।

रहम-पुं० [अ०] १. करुणा। २. कृपा।

यौ०-रहम-दिल=दयालु। कृपालु।

रहस-पुं० [सं० रहस्] १. दे० 'रहस्य'। २. क्रीड़ा। क्रीड़ा। ३. आनंद। ४. गुप्त या एकान्त स्थान।
रहसना-अ० [हिं० रहस] प्रसन्न होना।
रहसि*-स्त्री० दे० 'रहस'।
रहस्य-पुं० [सं०] १. गुप्त भेद। छिपी हुई बात। भेद। २ मर्म्म। ३.गूढ़ तत्व।
रहस्यवाद-पुं० दे० 'छायावाद'।
रहाई-स्त्री० [हिं० रहना] १. दे० 'रहन'। २. सुख। चैन। आराम।
रहाना*-अ० [हिं० रहना] १. होना। २. रहना।
रहित-वि० [सं०] किसी वस्तु, गुण आदि से खाली या हीन। बिना। बगैर।
रहितत्व-पुं० [सं०] १. रहित या खाली होने का भाव। २. नियम, बन्धन, भार आदि से मुक्त या रहित किये जाने का भाव। (एग्जेम्पशन)
रहीम-वि० [अ०] कृपालु। दयालु।
राँक†-वि० दे० 'रंक'।
राँगा-पुं० [सं० रंग] सीसे के रंग की एक प्रसिद्ध मुलायम धातु।
राँच*†-अव्य० दे० 'रंच'।
राँचना*†-अ० दे० 'राचना'।
राँड़-स्त्री०[सं०रंडा]१.विधवा।२.वेश्या।
राँध†-पुं० [सं० परान्त] आस-पास का स्थान।
राँधना-स० [सं० रंधन] भोजन पकाना।
राँभना*-अ० दे० 'रँभाना'।
राआ*†-पुं० दे० 'राजा'।
राइ*-पुं० [सं० राजा] छोटा राजा। वि० उत्तम। श्रेष्ठ।
राइफल-स्त्री० [अं०] एक प्रकार की बन्दूक जो पैदल सैनिकों के पास रहती है।
राई-स्त्री० [सं० राजिका] १. एक प्रकार की छोटी सरसों।
मुहा०-राई नोन उतारना=जिसे नजर लगी हो, उसपर से राई और नमक उतार कर आग में डालना। (टोना) राई से पर्वत करना=बहुत छोटे से बहुत बड़ा बनाना। राई-काई करना=छिन्न-भिन्न करना।
२. बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।
*पुं० दे० 'राइ'।
राउ*-पुं० दे० 'राव'।
राउर*-पुं० [सं० राज+पुर] रनवास। †वि० श्रीमान् का। आपका।
राउल*†-पुं० दे० 'राजा'।
राकस*†-पुं०=राक्षस।
राका-स्त्री० [सं०] पूर्णिमा की रात।
राकेश-पुं० [सं०] चंद्रमा।
राक्षस-पुं० [सं०] [स्त्री० राक्षसी] १. दैत्य। असुर। २. क्रूर और पापी। ३. एक प्रकार का विवाह जिसमें युद्ध करके कन्या छीन लाते और तब उसे पत्नी बनाते थे।
राक्षसपति-पुं० [सं०] रावण।
राख-स्त्री०[सं०रक्षा] किसी चीज के बिलकुल जल जाने पर बचा हुआ अंश। भस्म।
राखना*†-स० [सं० रक्षण] १. रक्षा करना। बचाना। २. रखवाली करना। ३. छिपाना। ४. रोकना। ५. दे० 'रखना'।
राखी-स्त्री० [सं० रक्षा] रक्षा-बंधन के समय कलाई पर बाँधने का डोरा। रक्षा। †स्त्री० दे० 'राख'।
राग-पुं०[सं०] १.प्रिय वस्तु के प्रति होनेवाला मन का भाव या झुकाव। २.ईर्ष्या और द्वेष। ३. प्रेम। अनुराग। ४. मोह। ५. अंग-राग। ६. रंग, विशेषतः लाल रंग। ७. महावर। ८. संगीत में स्वरों के

विशेष प्रकार और क्रम या निश्चित योजना से बना हुआ गीत का ढाँचा। (भारतीय संगीत में छः राग माने गये हैं।)

मुहा०-अपना राग अलापना=अपनी ही बात कहते चलना।

रागदारी-स्त्री० [सं० राग+फा० दारी] भारतीय संगीत-शास्त्र के नियमों के अनुसार राग-रागिनियाँ या पक्के गाने गाना।

रागना*-अ० [सं० राग] १. अनुरक्त होना। २. रँगा जाना। ३ निमग्न होना। *स० [सं० राग] गीत गाना।

राग-माला-स्त्री० [सं०] एक ही पद या गीत में एक साथ मिले हुए अनेक रागों या उनके कुछ अंगों का समूह।

राग-सागर-पुं० दे० 'राग-माला'।

रागिनी-स्त्री० [सं०] संगीत में किसी राग की पत्नी। (प्रत्येक राग की प्रायः छः रागिनियाँ मानी गई है।)

रागी-पुं० [सं० रागिन्] १. अनुरागी। प्रेमी। २ राग-रागिनी गानेवाला गवैया। वि० १. रँगा हुआ। रंजित। २. लाल। ३. विषय-वासना में लिप्त। *स्त्री० [सं० राज्ञी] रानी।

राघव-पुं० [सं०] रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। २ श्री रामचंद्र।

राचना*-स० दे० 'रचना'। अ० रचा जाना। बनना। अ० [सं० रंजन] १ रँगा जाना। २.अनुरक्त होना। ३ लिप्त या लीन होना। ४. प्रसन्न होना। ५. शोभा देना।

राछ-स्त्री० [सं० रक्ष] १. कारीगरों का औजार। २. जुलाहों का वह उपकरण जिससे ताने के तागे ऊपर उठते और नीचे गिरते हैं। ३. जलूस।

राछस*-पुं० = राक्षस।

राज-पुं० [सं० राज्य] १.राज्य। शासन। (गवर्नमेन्ट)

यौ०-राज-काज = राज्य का प्रबन्ध। राज-पाट=१.राज-सिंहासन। २. राज्याधिकार।

२. राजा द्वारा शासित देश। राज्य। ३. पूरा अधिकार। प्रभुत्व।

मुहा०-राज रजना=बहुत अधिक सुख और अधिकार भोगना।

४. राज्य या शासन का काल। ५. बड़ी जमींदारी और भू-सम्पत्ति। (एस्टेट) पुं० [सं० राजन्] राजा। पुं० दे० 'राजगीर'।

राज-ऋण-पुं० [सं०] १ राज्य या राष्ट्र के नाम पर और उसके कार्यों के लिए सरकार द्वारा लिया हुआ ऋण। सरकारी ऋण। २. वह पत्र जो इस प्रकार का ऋण लेने पर उसके प्रमाण-स्वरूप उन लोगों को दिया जाता है, जिससे ऋण लिया जाता है। (स्टॉक)

राज-कर-पुं० [सं०] १. राजा या राज्य का लगाया हुआ कर। २ राजस्व।

राजकीय-वि० [सं०] राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राजकुमार-पुं० [सं०] [स्त्री० राजकुमारी] राजा का पुत्र।

राज-कुल-पुं० दे० 'राज-वंश'।

राजग-पुं० [सं० राज+ग] नगर की वह भूमि जो किसी प्रकार राज्य को मिल गई हो और जिसकी व्यवस्था राज्य की ओर से होती हो। नजूल।

राज-गद्दी-स्त्री० [हिं० राज+गद्दी] १ राज-सिंहासन। २. राज्याभिषेक।

राजगीर-पुं० [सं० राज+गृह] मकान बनानेवाला कारीगर। राज। थवई।

राजगृह-पुं० [सं०] १. राजा का महल। २. बिहार में पटने के पास का एक प्राचीन स्थान।

राजतंत्र-पुं० [सं०] १. राज्य का शासन और व्यवस्था। राज्य-प्रबन्ध। (पॉलिटी) २. वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबन्ध केवल राजा के हाथ में हो; और जिसमें प्रजा या उसके प्रतिनिधियों का कोई नियन्त्रण न हो। (मानर्की)

राज-तिलक-पुं० दे० 'राज्याभिषेक'।

राजत्व-पुं० [सं०] राजा का पद, भाव या काम।

राज-दंड-पुं० [सं०] १. वह दंड जो राजा के पास उसके राजत्व के सूचक चिह्न के रूप में रहता है। २. राज्य या राजा की आज्ञा से दी जानेवाली सजा।

राजदूत-पुं० [सं०] वह दूत जो किसी राज्य की ओर से दूसरे राज्य में भेजा या नियुक्त किया जाता है। (एम्बैसेडर)

राजद्रोह-पुं० [सं०] [वि० राजद्रोही] राजा या राज्य के प्रति द्रोह। (सेडिशन)

राज-द्वार-पुं० [सं०] १. राजा के महल की ड्योढ़ी। २. न्यायालय।

राजधानी-स्त्री० [सं०] किसी देश या राज्य का वह प्रधान नगर जहाँ से उसका शासन होता है और जहाँ उसके प्रमुख अधिकारी तथा कार्यालय रहते हैं।

राजना*-अ० [सं० राजन] १. विद्यमान होना। रहना। २. शोभित होना।

राजनीति-स्त्री० [सं०] [वि० राजनीतिक] राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा का शासन और पालन तथा दूसरे राज्यों से व्यवहार होता है। (पॉलिटिक्स)

राजनीतिक-वि० [सं०] राजनीति-संबंधी।

राजनीतिज्ञ-पुं० [सं०] राजनीति का अच्छा ज्ञाता। (पॉलिटीशियन)

राजन्य-पुं० [सं०] १. क्षत्रिय। २. राजा।

राज-पथ-पुं० [सं०] बड़ी सड़क।

राज-पद-पुं० [सं०] राजा का पद या स्थान।

राज-पीठ-पुं० [सं०] विधायिका सभाओं आदि में वे आसन जिनपर राज्य के सचिव और विभागीय मंत्री आदि बैठते हैं। (ट्रेजरी बेंचेज)

राजपुत्र-पुं० [सं०] राजकुमार।

राज-पुरुष-पुं० [सं०] १. राज्य का कर्मचारी। २. राज्य या शासन की नीति और व्यवहार का ज्ञाता। (स्टेट्समैन)

राजपूत-पुं० [सं० राजपुत्र] क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश।

राजपूताना-पुं० दे० 'राज-स्थान'।

राज-प्रासाद-पुं० [सं०] राजा के रहने का महल। राज-महल।

राजबंदी-पुं० [सं० राजबंदिन्] वह जिसे राजा या राज्य ने बिना मुकदमा चलाये किसी संदेह में कैद कर लिया हो।

राज भक्त-वि० [सं०] [भाव० राजभक्ति] जो अपने राजा या राज्य के प्रति भक्ति और निष्ठा रखता हो। (लॉयल)

राज-भक्ति-स्त्री० [सं०] अपने राजा या राज्य के प्रति भक्ति, निष्ठा और प्रेम।

राज-भवन-पुं० [सं०] राजा का महल।

राज-भाषा-स्त्री० [सं०] किसी देश में प्रचलित वह भाषा जिसका उपयोग प्रायः सभी राजकीय कार्यों और न्यायालयों आदि में होता हो। (स्टेट लैंग्वेज)

राज-महल-पुं० [हिं० राज+महल] राजा के रहने का महल। राज-प्रासाद।

राज-महिषी-स्त्री० [सं०] पटरानी।

राज माता-स्त्री० [सं०] किसी देश के राजा या शासक की माता।

राज-मार्ग-पुं० [सं०] चौड़ी सड़क।

राज-मुद्रा-स्त्री० [सं०] राजा या राज्य की वह मोहर जो राजकीय पत्रों आदि पर अंकित की जाती है। (रॉयल सील)

राज-यक्ष्मा-पुं० [सं०] क्षय नामक रोग।

राज-राजेश्वर-पुं० [सं०] [स्त्री० राज-राजेश्वरी] अनेक राजाओं का प्रधान राजा। सम्राट्।

राज-रोग-पुं० [हि० राज+रोग] १. बहुत बड़ा और असाध्य रोग। २. क्षय रोग।

राजर्षि-पुं० [सं०] राज वंश में उत्पन्न ऋषि।

राज-लिपि-स्त्री० [सं०] किसी देश के राज कार्यों में काम आनेवाली लिपि।

राज लोक*-पुं० दे० 'राज-प्रासाद'।

राज-वंश-पुं० [सं०] राजा का कुल, वंश या परिवार।

राजस-वि० [सं०] [स्त्री० राजसी] रजोगुण से उत्पन्न या युक्त। रजोगुणी। पुं० १. रजोगुण। २. क्रोध।

राज-सत्ता-स्त्री० [सं०] १. राज-शक्ति। राज्य की सत्ता। २ राज्याधिकार।

राज-सत्तात्मक-वि० [सं०] (वह शासन-प्रणाली) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो। 'प्रजा-सत्तात्मक' का उलटा।

राज-सभा-स्त्री० [सं०] १. राजा का दरबार। २. राजाओं की सभा।

राज-सिंहासन-पुं० [सं०] राजा के बैठने का सिंहासन। राज-गद्दी।

राजसिक-वि०दे०'राजस' और 'राजसी'।

राजसी-वि० [हिं० राजा] राजाओं के योग्य या राजाओं का-सा।

राजसूय-पुं० [सं०] एक यज्ञ जो सम्राट् पद के अधिकारी राजा करते थे।

राज-स्थान-पुं० [सं०] संयुक्त प्रान्त के पश्चिम और पूर्वी पंजाब के दक्षिण का वह प्रदेश जो पहले राजपूताना कहलाता था।

राजस्थानी-वि० [हिं० राज-स्थान] राज-स्थान या राजपूताने का। स्त्री० राज-स्थान या राजपूताने की भाषा।

राजस्व-पुं० [सं०] कर, शुल्क आदि के रूप में राजा या राज्य को होनेवाली आय। (रेविन्यू)

राज-हंस-पुं० [सं०] [स्त्री० राजहंसी] एक प्रकार का बड़ा हंस।

राजा-पुं० [सं० राजन्] [स्त्री० रानी, रानी] किसी देश या जाति का प्रधान शासक और स्वामी।

राजाज्ञा-स्त्री० [सं०] राजा या राज्य की आज्ञा।

राजाधिराज-पुं० [सं०] राजाओं का राजा। बहुत बड़ा राजा।

राजि(का)-स्त्री० [सं०] १. पंक्ति। श्रेणी। २. रेखा। लकीर। ३. राई।

राजिव*-पुं० [सं० राजीव] कमल।

राजी-वि० [अ०] १. सहमत। २. नीरोग। स्वस्थ। ३.प्रसन्न। खुश। ४.सुखी। यौ०-**राजी-खुशी**=१. सही सलामत। २. कुशल-मंगल।
*स्त्री० दे० 'राजि'।

राजीनामा-पुं० [फा०] वह लेख जिसे प्रमाण और निश्चय के रूप में मानकर दो विरोधी पक्ष आपस में मेल करते हैं।

राजीव-पुं० [सं०] कमल। पद्म।

राजेश्वर-पुं० [सं०] [स्त्री० राजेश्वरी] राजाओं का राजा। महाराज।

राज्य-पुं० [सं०] १. राजा का काम। शासन। २.एक राजा अथवा एक केन्द्रीय सत्ता द्वारा शासित देश। (स्टेट)

राज्य-त्याग-पुं० [सं०] राजा का अपना राज्य त्याग या छोड़ देना। (एबडिकेशन)

राज्य-परिषद्-स्त्री० [सं०] किसी राज्य के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह बड़ी परिषद जो साधारण विधायिका से ऊँची होती और उसके निर्णयों पर पुनर्विचार करती है। (काउन्सिल आफ स्टेट)

राज्य-श्री-स्त्री० [सं०] राज्य की शोभा और वैभव।

राज्याभिषेक-पुं० [सं०] किसी राजा के राजगद्दी पर बैठने के समय होनेवाला औपचारिक कृत्य या उत्सव। राज्यारोहण।

राज्यारोहण-पुं० [सं०] किसी राजा का पहले-पहल राज-सिंहासन पर बैठकर राज्य का अधिकार प्राप्त करना।

राठ*-पुं० १. दे० 'राज्य'। २. दे० 'राजा'।

राणा-पुं० [सं० राट्] १. राजा। २. नेपाल, उदयपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

रात-स्त्री० [सं० रात्रि] सूर्यास्त से सूर्योदय तक का समय। रात्रि। निशा। यौ०-रात-दिन=सदा। हमेशा।

राता*-वि० [सं० रक्त] [स्त्री० राती, क्रि० रातना] १. लाल। २. रँगा हुआ।

रातिब-पुं० [अ०] पशुओं का भोजन।

रात्रि-स्त्री० [सं०] रात। निशा।

राधना*†-स० [सं० आराधन] १. आराधना या पूजा करना। २. सिद्ध या पूरा करना। (काम)

राधा-स्त्री० दे० 'राधिका'।

राधिका-स्त्री० [सं०] वृषभानु की कन्या, राधा।

रान-स्त्री० [फा०] जंघा। जाँघ।

रानी-स्त्री० [सं० राज्ञी] १. राजा की स्त्री। २. स्वामिनी। मालकिन।

राब-स्त्री० [सं० द्रावक] पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

राम-पुं० [सं०] १. परशुराम। २. बलराम। बलदेव। ३. श्री रामचंद्र। मुहा०-राम राम करके=बहुत कठिनता से।

४. तीन की संख्या। ५. ईश्वर। भगवान्।

रामचंगी-स्त्री०[देश०] एक प्रकार की तोप।

रामचद्र-पुं० [सं०] अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र जो दस अवतारों में माने जाते हैं।

राम-जना-पुं० [हि० राम+जना=उत्पन्न] [स्त्री० रामजनी] एक जाति जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति और नाच-गाने का काम करती हैं।

राम-तारक-पुं० [सं०] राम जी का तारक मंत्र जो यह है-रा रामाय नमः।

रामति*†-स्त्री० [हिं० रमना] भीख माँगने के लिए इधर-उधर घूमना।

राम-दल-पुं० [सं०] १. रामचन्द्र जी की बंदरोंवाली सेना। २. बहुत बड़ी और प्रबल सेना।

राम-दूत-पुं० [सं०] हनुमान् जी।

राम नवमी-स्त्री० [सं०] चैत्र सुदी नवमी, जो रामचंद्र जी की जन्म-तिथि है।

रामनामी-स्त्री० [हिं० राम+नाम] १. वह कपड़ा जिसपर 'राम राम' छपा रहता है। २ एक प्रकार का हार। (गहना)

राम-फटाका-पुं० [हिं० राम+फटाका= लंबा तिलक] वह लंबा तिलक जो रामानुज आदि संप्रदायों के अनुयायी मस्तक पर लगाते हैं।

राम-बाण-वि० [सं०] १. अचूक। अमोघ। २. तुरन्त लाभ करनेवाला (औषध)।

राम-रज-स्त्री० [सं०] तिलक लगाने की एक प्रकार की पीली मिट्टी ।

राम-रस-पुं०=नमक ।

राम-राज्य-पुं० [सं०] अत्यंत सुखदायक और आदर्श राज्य या शासन ।

राम-रौला-पुं० [हिं० राम+रौला] व्यर्थ का हल्ला या शोर-गुल ।

राम-लीला-स्त्री० [सं०] राम के चरित्रों का अभिनय ।

राम-शर-पुं० [सं०] एक प्रकार का नरसल या सरकंडा ।

रामा-स्त्री० [सं०] १. सुंदर स्त्री । २. नदी । ३. लक्ष्मी । ४. सीता । ५. राधा ।

रामायण-पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन हो ।

रामायणी-पुं० [सं० रामायण] रामायण की कथा कहनेवाला ।

राय-पुं० [सं० राजा] १. राजा । २. सरदार । ३ भाटों की उपाधि ।

वि० १ बड़ा । २. बढ़िया । (यौगिक शब्दों के अन्त में ; जैसे-यदुराय)

स्त्री० [फा०] सम्मति । सलाह ।

रायता-पुं० [सं० राजिकाक्त] दही में पका हुआ कद्दू, बुँदिया आदि ।

रायमुनी-स्त्री० [हिं० राय+मुनिया] लाल नामक पक्षी की मादा । मदिया ।

राय-रासि*-स्त्री० [सं० राजराशि] राजा का कोष ।

रॉयल्टी-स्त्री० दे० 'स्वामित्व' ।

रायसा-पुं० दे० 'रासो' ।

रार-स्त्री० [सं० राटि] झगड़ा । विवाद ।

राल-स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का वृक्ष । २. इस वृक्ष का निर्यास ।

स्त्री० [सं० लाला] लार ।

मुहा०-राल टपकना=कुछ पाने के लिए बहुत लालच या लालसा होना ।

राव-पुं० दे० 'राय' ।

रावट-पुं० [हिं० राव] राज-महल ।

रावटी-स्त्री० [हिं० रावट] १. छोटा तंबू । छोलदारी । २. छोटा घर । ३. बारह-दरी ।

रावण-पुं० [सं०] लंका का प्रसिद्ध राक्षस राजा जिसे रामचन्द्र ने मारा था ।

रावत-पुं० [सं० राजपुत्र] १. छोटा राजा । २. शूर । वीर । ३. सरदार ।

रावना*-स० [सं० रावण] रुलाना ।

रावर*-पुं०, वि० दे० 'राउर' ।

रावल-पुं० [सं० राजपुर] रनिवास ।

पुं० [पा० राउल] [स्त्री० रावली] १. राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि । २. दे० 'रावत' ।

राशन-पुं० [अं० रैशन] १. खाने-पीने आदि के लिए मिलनेवाली सामग्री । २. वह राजकीय प्रबन्ध जिसमें लोगों को खाने-पीने या अन्य आवश्यकताओं की वस्तुएँ कुछ नियत मात्रा में और कुछ नियत काल पर ही दी जाती हैं ।

राशनिंग-स्त्री० दे० 'रैशनिंग' ।

राशनी-वि० [हिं० राशन] राशन संबंधी । राशन का । जैसे-राशनी आटा ।

राशि-स्त्री० [सं०] १. ढेर । २. उत्तराधिकार । ३. क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले तारों के बारह समूह, जो ये हैं-मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन ।

राशि-चक्र-पुं० [सं०] मेष, वृष, आदि बारह राशियों का मंडल । भ-चक्र ।

राष्ट्र-पुं० [सं०] १ राज्य । २. देश । ३. एक राज्य में बसनेवाला समस्त या पूरा जन-समूह । (नेशन)

राष्ट्रपति-पुं० [सं०] १. किसी आधुनिक

प्रजातंत्री राष्ट्र द्वारा चुना हुआ उसका सर्व-प्रधान शासक। २. भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) का सभापति।

राष्ट्र-परिषद्-स्त्री० [सं०] किसी राष्ट्र के मुख्य मुख्य लोगों या प्रतिनिधियों की सभा। (काउन्सिल आफ स्टेट)

राष्ट्र-भाषा-स्त्री० [सं०] किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित वह प्रधान भाषा जिसका व्यवहार उस देश या राष्ट्र के रहनेवाले अन्य भाषा-भाषी भी सार्वजनिक पारस्परिक कामों में करते है। (नैशनल लैंग्वेज)

राष्ट्र-मंडल-पुं० [सं०] कुछ ऐसे राष्ट्रों का वह समूह जिसमें सबको समान अधिकार प्राप्त हों और सबके कुछ निश्चित कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व हो। (फेडरेशन)

राष्ट्र-मुद्रा-स्त्री० [सं०] राष्ट्र की वह मुद्रा या मोहर जो राष्ट्रिय कागज-पत्रों पर मुद्रित या अंकित की जाती है। (स्टेट सील)

राष्ट्र-लिपि-स्त्री०[सं०] वह लिपि जिसमें किसी देश की राष्ट्र-भाषा लिखी जाती है।

राष्ट्रवाद-पुं० [सं०] [वि० राष्ट्रवादी] वह सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है।

राष्ट्रवादी-पुं० [सं०] वह जो अपने राष्ट्र या देश की एकता, महत्ता और कल्याण का पक्षपाती हो। (नैशनलिस्ट)

राष्ट्र-संघ-पुं० [सं०] संसार के कुछ प्रमुख राष्ट्रों का एक संघ जो दूसरे युरोपीय महायुद्ध के बाद बना था और जिसका उद्देश्य संसार में शान्ति बनाये रखना है। (यूनाइटेड नेशन्स ऑर्गनिजेशन)

राष्ट्रिक-वि० [सं०] राष्ट्र का। राष्ट्रिय।
पुं० जातीय, धार्मिक, राजनीतिक आदि सूत्रों से बँधे हुए किसी राष्ट्र या देश का निवासी या किसी राष्ट्र का अंग या सदस्य। (नैशनल) जैसे-हमारा भारतीय राष्ट्र अनेक राष्ट्रिकों के योग से बना है। विशेष दे० 'राष्ट्रिकता'।

राष्ट्रिकता-स्त्री० [सं०] जातीय, धार्मिक, राजनीतिक आदि सूत्रों से बँधे हुए किसी संघटित राष्ट्र के निवासी, अंग या सदस्य होने का भाव अथवा स्थिति। राष्ट्रिक होने की अवस्था। (नैशनैलिटी) जैसे-पहले तो वे भारत के ही राष्ट्रिक थे; पर अब उन्होंने पाकिस्तान की राष्ट्रिकता ग्रहण कर ली है।

राष्ट्रिय-वि० [सं०] १. राष्ट्र-संबंधी। राष्ट्र का। २. अपने राष्ट्र की एकता, महत्ता और उन्नति आदि से संबंध रखनेवाला। (नैशनल)

राष्ट्रियता-स्त्री० [सं०] १. किसी राष्ट्र के विशेष गुण। २. अपने देश या राष्ट्र का उत्कट प्रेम।

रास-स्त्री० [सं०] १. प्राचीन भारत के गोपों की एक क्रीड़ा जिसमें वे घेरा बाँधकर नाचते थे। २. श्रीकृष्ण की रास-लीला या उसका अभिनय।
स्त्री० [अ०] लगाम। बाग-डोर।
स्त्री० [सं० राशि] १. दे० 'राशि'। २. जोड़। ३. चौपायों का झुंड। ४. गोद या दत्तक लेने की क्रिया या भाव। ५. सूद। ब्याज।
वि० [फा० रास्त] अनुकूल। ठीक।

रासक-पुं० [सं०] हास्य-रस का एक प्रकार का एकांकी नाटक।

रासधारी-पुं० [सं० रासधारिन्] कृष्ण-लीला का अभिनय करनेवाला व्यक्ति।

रास-नशीन-पुं० [हिं० रास + फा० नशीन] १. गोद लिया हुआ लड़का। दत्तक। २. उत्तराधिकारी।

रासभ-पुं० [सं०] १. गधा । २. खच्चर ।
रास-मंडली-स्त्री० [सं०] रासधारियों का समाज या मंडली ।
रास-लीला-स्त्री० [सं०] रासधारियों का कृष्ण-लीला संबंधी अभिनय ।
रास-विलास-पुं० [सं०] १. रास-क्रीड़ा। २. आनंद-मंगल ।
रासायनिक-वि० [सं०] रसायन-शास्त्र से सम्बन्ध रखनेवाला । रसायन का । पुं० दे० 'रसायनज्ञ' ।
रासायनिक परीक्षक-पुं० [सं०] वह जो किसी वस्तु के रासायनिक तत्त्वों का विश्लेषण या जाँच करके उनका ठीक पता लगाता हो। (कॅमिकल इग्जामिनर)
रासुख-वि० दे० 'रास्त' ।
रासो-पुं० [सं० रहस्य] किसी राजा के वीरतापूर्ण युद्धों के विवरणों से युक्त पद्य में लिखा हुआ जीवन-चरित्र । जैसे-हम्मीर रासो ।
रास्त-वि० [फा०] [भाव० रास्ती] १. सीधा । सरल । २ दुरुस्त । ठीक । ३. उचित । वाजिब । ४. अनुकूल ।
रास्ता-पुं० [फा०] १. मार्ग । राह । मुहा०-रास्ता देखना=प्रतीक्षा करना । रास्ता पकड़ना=चले जाना । रास्ता बताना=चलता करना । हटा देना । २. चाल । ढंग । ३. उपाय । तरकीब ।
राह-स्त्री० दे० 'रास्ता' ।
राह-खर्च-पुं० [फा० राह+खर्च] यात्रा के समय रास्ते में होनेवाला खर्च । मार्ग-व्यय ।
राहगीर-पुं० [फा०] पथिक । बटोही ।
राह-चलता-पुं० [फा० राह+हिं० चलना] १. पथिक । २. जिसका प्रस्तुत विषय से कोई सम्बन्ध न हो । गैर ।
राहत-स्त्री० [अ०] आराम । सुख ।
राहदारी-स्त्री० [फा०] १. रास्ते का महसूल । सड़क का कर । २. चुंगी । पद-राहदारी का परवाना = रवन्ना ।
राहना†-अ० दे० 'रहना' ।
राहित्य-पुं० [सं०] १.'रहित' का भाव । खालीपन । अभाव । २. दे० 'रहितत्व' ।
राहिन-वि० [अ०] कोई चीज किसी के पास रेहन या बंधक रखनेवाला ।
राही-पुं० [फा०] पथिक । यात्री ।
राहु-पुं० [सं०] नौ ग्रहों में से एक ।
रिंगना-अ० [प्रे० रिंगाना] दे०'रेंगना' ।
रिंद-पुं० [फा०] १. धार्मिक बंधनों को व्यर्थ समझने या न माननेवाला । २. स्वेच्छाचारी और स्वच्छंद पुरुष । वि० [फा०] १. मतवाला । २. मस्त ।
रिआयत-स्त्री० [अ०] १. कोमल और दयालुतापूर्ण व्यवहार । नरमी। २.कृपा । अनुग्रह । ३. छूट । कमी ।
रिआया-स्त्री० [अ०] प्रजा ।
रिकाब-स्त्री० दे० 'रकाब' ।
रिक्त-वि० [सं०] [भाव० रिक्तता] १. खाली । २. निर्धन ।
रिक्ति-स्त्री० [सं०] १. रिक्त या खाली होने की क्रिया या भाव । खाली होना । २. किसी अधिकारी या कर्मचारी के हट जाने पर उसका पद या स्थान खाली होना । (वैकेन्सी)
रिक्थ-पुं० [सं०] १. भू-सम्पत्ति और धन-दौलत । (एस्टेट) २ वह पूँजी जो सम्पत्ति आदि के रूप में हो; अथवा वह धन जो कार-बार में लगा हो और जल्दी डूबनेवाला न हो । (एसेट्स)
रिक्शा-पुं० [जापानी] एक प्रकार की हलकी सवारी जिसे आदमी खींचते या चलाते हैं ।

रिच्छ-पुं० दे० 'ऋच'।
रिखभ*-पुं० दे० 'ऋषभ'।
रिच्छ*-पुं० = रीछ।
रिजक-पुं० [अ० रिज़्क] जीविका।
रिझवार†-पुं० [हिं० रीझना] १. प्रसन्न या मोहित होनेवाला। २. अनुरागी। प्रेमी। ३. गुण-ग्राहक।
रिझाना-स० [सं० रंजन] किसी को अपने ऊपर प्रसन्न या मोहित कर लेना।
रिझायल*-वि० [हिं० रीझना] रीझनेवाला।
रिझाव-पुं० [हिं० रीझना] रीझने की क्रिया या भाव।
रिढ़ना-अ० [?] घसिटते हुए चलना।
रित(तु)-स्त्री० दे० 'ऋतु'।
रितवना*-स० दे० 'रिताना'।
रिताना†-स० [हिं० रीता=खाली+आना (प्रत्य०)] खाली करना। रिक्त करना। अ० रिक्त या खाली होना।
रिद्धि-स्त्री० दे० 'ऋद्धि'।
रिन*-पुं० = ऋण।
रिपु-पुं० [सं०] [भाव० रिपुता] शत्रु।
रिपोर्ट-स्त्री० [अं०] १. किसी घटना की सूचना, जो किसी को दी जाय। आख्या। २. कार्य-विवरण। (संस्था आदि का)
रिपोर्टर-पुं० [अं०] समाचार-पत्र का संवाददाता।
रिम-झिम-स्त्री० [अनु०] वर्षा की छोटी छोटी बूँदें गिरना। फुहार। क्रि० वि० छोटी बूँदों की रूप में (वर्षा)।
रियासत-स्त्री० [अ०] [वि० रियासती] १. राज्य। अमलदारी। २. अमीरी। रईसी। ३. वैभव। ऐश्वर्य।
रियाह-स्त्री० [अ० रीह का बहु०] शरीर के अन्दर की वायु। बाई।
रिर*-स्त्री० [हिं० रार] १. हठ। जिद। २. झगड़ा। ३. गिड़गिड़ाहट।
रिरना†-अ० [अनु०] गिड़गिड़ाना।
रिरिहा†-वि० [हिं० रिरना] गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक माँगनेवाला।
रिलना*-अ० [हिं० रेलना] १. पैठना। घुसना। २. मिल जाना। यौ०-रिलना-मिलना=१ अच्छी तरह मिलना। २. मेल-मिलाप रखना।
रिल-मिल-स्त्री० [हिं० रिलना+मिलना] मेल-जोल। मेल-मिलाप।
रिवाज-पुं० [अ०] प्रथा। रस्म।
रिवाल्वर-पुं० [अं०] एक प्रकार का तमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियाँ भरने की जगह होती हैं और वे गोलियाँ लगातार छोड़ी जा सकती हैं।
रिश्तेदार-पुं० [फा०] संबंधी। नातेदार।
रिश्वत-स्त्री० [अ०] घूस। उत्कोच।
रिश्वतखोर-वि० [अ०+फा०] रिश्वत लेने या खानेवाला। घूसखोर।
रिश्वती-वि० दे० 'रिश्वतखोर'।
रिष्ट*-वि० [सं० हृष्ट] १. प्रसन्न। २. लंबा-चौड़ा या मोटा-ताजा।
रिस-स्त्री० [सं० रुष] क्रोध। गुस्सा। मुहा०*-रिस मारना=क्रोध रोकना।
रिसाना†-अ० [हिं० रिस] क्रुद्ध होना। स० दूसरे को क्रुद्ध करना।
रिसानी*-स्त्री० दे० 'रिस'।
रिसाल†-पुं० [अ० इरसाल] राज्य-कर।
रिसालदार-पुं० [फा०] घुड़-सवार सेना का एक छोटा अधिकारी।
रिसाला-पुं० [फा०] घुड़-सवार सेना।
रिसिआना-अ०, स० दे० 'रिसाना'।
रिसिक*-स्त्री० [सं० रिष्टीक] तलवार।
रिसौहाँ*-वि०[हिं०रिस+औहाँ (प्रत्य०)]

कुछ कुछ क्रोध में भरा हुआ।
रिहा-वि० [फा०] [भाव० रिहाई] बन्धन आदि से छूटा हुआ। मुक्त।
रिहाई-स्त्री० [फा०] छुटकारा। मुक्ति।
रिहाना*-स० [फा० रिहा] रिहा या मुक्त कराना। छुड़ाना।
रीछ-पुं० [सं०ऋक्ष] भालू। (हिंसक पशु)
रीझना-अ० [सं० रंजन] [भाव० रीझ] प्रसन्न, अनुरक्त या मोहित होना।
रीठ*-स्त्री० [सं० रिष्ट] तलवार। वि० १. अशुभ। २. बुरा। खराब।
रीठा-पुं० [सं० रिष्ट] एक जंगली वृक्ष का फल जो कपड़े धोने के काम आता है।
रीढ़-स्त्री० [सं० रीढ़क] पीठ के बीच की लंबी खड़ी हड्डी। मेरु-दंड।
रीत-स्त्री०=रीति।
रीतना*-अ०, स० [सं० रिक्त] खाली या रिक्त होना या करना।
रीता-वि० [सं० रिक्त] खाली। रिक्त।
रीति-स्त्री० [सं०] १. ढंग। प्रकार। २. रिवाज। परिपाटी। ३. नियम। ४. साहित्य में वर्णों की ऐसी योजना जिससे वर्णन में ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि गुण आते हैं।
रीस-स्त्री० दे० 'रिस'। स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १. डाह। २. किसी की बराबरी करने की इच्छा। स्पर्द्धा।
रीसना*-अ० [हिं० रिस] क्रोध करना।
रुंड-पुं० [सं०] १. सिर कट जाने पर खाली बचा हुआ धड़। कबंध। २. वह शरीर जिसमें के हाथ-पैर कट गये हों।
रुँधना-अ० [सं० रुद्ध] १. मार्ग रुकना या घिरना। २.उलझना। ३ घेरा जाना।
रु*-अव्य० [हिं० अरु] और।
रुआँ*-पुं० दे० 'रोआँ'।
रुआना*-स० दे० 'रुलाना'।
रुऐंदा-वि० दे० 'रोआसा'।
रुकना-अ० [हिं० रोक] [भाव० रुकावट, प्रे०रुकवाना] १. अवरुद्ध होना। अटकना। २. ठहर जाना। ३. किसी कार्य्य या चलते हुए क्रम का बीच में बंद हो जाना।
रुकाव-पुं० दे० 'रुकावट'।
रुकावट-स्त्री० [हिं० रुकना] १. रुकने की क्रिया या भाव। रोक। २. बाधा। विघ्न। ३. रोकनेवाली बात या चीज। (चेक)
रुक्का-पुं० [अ० रुक्अ] पत्र। चिट्ठी।
रुक्ख*-पुं० [सं० रूक्ष] पेड़। वृक्ष।
रुक्मिणी-स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की रानी।
रुक्ष-वि० [सं० रूक्ष] [भाव० रुक्षता] १. जिसमें चिकनाहट न हो। रूखा। २. जिसमें घी, तेल या कोई चिकनी वस्तु न पड़ी या लगी हो। ३. खुरदरा। ४. नीरस। शुष्क। ५. शील-रहित।
रुख-पुं० [फा०] १. मुँह। २. आकृति। चेष्टा। ३. चेहरे या आकृति से प्रकट होनेवाली मन की इच्छा। ४. कृपा-दृष्टि। ५. सामने का भाग। ६. अंग। पार्श्व। क्रि० वि० १. तरफ। २. सामने।
रुखसत-स्त्री० [अ०] छुट्टी। अवकाश। वि० जो कहीं से चल पड़ा हो। बिदा या रवाना हो जानेवाला।
रुखसती-स्त्री० [अ० रुखसत] बिदाई, विशेषतः दुलहिन की।
रुखाई-स्त्री० [हिं० रूखा] १. रूखापन। २. शुष्कता। खुश्की। ३. शील का अभाव। बे मुरौवती।
रुखाना*-अ० [हिं० रूखा] १. रूखा होना। २. नीरस होना। सूखना।
रुखावट-स्त्री० दे० 'रुखाई'।
रुखित*-स्त्री० [सं० रुचिता] आन

करने या रूसनेवाली नायिका।

रुग्न-वि० [सं०] रोगी। बीमार।

रुचना-अ० [सं० रुचि] अच्छा लगना।

मुहा०-*रुच रुच=बहुत रुचि से।

रुचि-स्त्री० [सं०] [वि० रुचित, भाव० रुचिता] १. मन की प्रवृत्ति। २. प्रेम। चाह। ३ किरण। ४.शोभा। कांति। ५. खाने की इच्छा। भूख। ६. स्वाद। ७. साहित्य या कला की कृति को पसंद करने या न करनेवाली मन की वृत्ति।

रुचिकर-वि० [सं०] १. अच्छा लगनेवाला। २. रुचि उत्पन्न करनेवाला।

रुचिमान-वि० [सं०रुचि+मान (हिं० प्रत्य०)] मनोहर। सुन्दर। रुचिर।

रुचिर-वि० [सं०] [भाव० रुचिरता, *रुचिराई] १. सुंदर। २. मीठा।

रुज-पुं० [सं०] १. रोग। २. कष्ट। ३. क्षत। घाव। ४ भेंग। भंग। (पत्ती)

रुजाली-स्त्री० [सं०] कष्टों का समूह।

रुजू-वि० [अ० रुजूअ=प्रवृत्त] प्रवृत्त।

रुझना*-अ० [सं० रुद्ध] घाव आदि भरना या पूजना।

अ० दे० 'उलझना'।

रुझान-पुं० [अ० रुजहान] १. किसी ओर प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव। २.साधारण या हलकी प्रवृत्ति।

रुणित-वि० [सं०] बजता हुआ।

रुत†-स्त्री० दे० 'ऋतु'।

रुतबा-पुं० [अ०] पद। ओहदा।

रुदन-पुं० [सं० रोदन] रोने की क्रिया।

रुदना*- अ० [सं० रोदन] रोना।

रुदराछ*-पुं० दे० 'रुद्राक्ष'।

रुद्ध-वि० [सं०] १. घेरा, रोका या रूँधा हुआ। २. बंद।

रुद्र-पुं० [सं०] १. एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में ग्यारह हैं। २. ग्यारह की संख्या। ३. शिव का एक रूप। वि० १. भयंकर। डरावना। २. उग्र।

रुद्राक्ष-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वृक्ष के गोल बीज जिनकी माला बनती है।

रुद्राणी-स्त्री० [सं०] पार्वती।

रुधिर-पुं० [सं०] रक्त। खून। लहू।

रुन-मुन-स्त्री० [अनु०] नूपुर आदि के बजने का शब्द। झनकार।

रुनाई*-स्त्री० [सं० अरुण] अरुणता। लाली। सुरखी।

रुनित*-वि० [सं० रुणित] बजता हुआ।

रुपना-अ० हि० 'रोपना' का अ०।

रुपमनी*-स्त्री० [हिं०रूपवती] सुंदर स्त्री।

रुपया-पुं० [सं० रूप्य] १. चाँदी का सबसे बड़ा सिक्का जो सोलह आने का होता है। २. धन। संपत्ति।

रुपहला-वि० [हिं०रूपा] [स्त्री० रुपहली] १. चाँदी के रंग का। २. चाँदी का-सा।

रुमंच*-पुं० दे० 'रोमांच'।

रुमावली*-स्त्री० दे० 'रोमावली'।

रुराई*-स्त्री० [हिं० रूरा] सुंदरता।

रुरुआ-पुं० [हिं० ररना] एक प्रकार का बड़ा उल्लू। (पक्षी)

रुलना†-अ० [सं०ललन] इधर-उधर मारा फिरना। ठोकरें खाना या रौंदा जाना।

रुलाई-स्त्री० [हिं० रोना] रोने की क्रिया या भाव। रोना।

रुलाना-स० [हिं० 'रोना' का प्रे०] दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।

स० [हिं० 'रुलना' का स०] १. इधर-उधर रुलने देना। २. खराब करना।

रुष्ट-वि० [सं०] [भाव० रुष्टता] कुपित। अप्रसन्न। नाराज़।

रुसना*-अ० दे० 'रूसना'।

रुसित*-वि० [सं० रुषित] रुष्ट। नाराज।
रुसूम-पुं० दे० 'रसूम'।
रुस्तम-पुं० [फा०] १. फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। २. बहुत वीर। पद-छिपा रुस्तम=देखने में सीधा-सादा पर वास्तव में बहुत वीर या गुणी।
रुहठि*-स्त्री० [हिं० रूठना] रूठने की क्रिया या भाव।
रुहिर*-पुं०=रुधिर। (लहू)
रुहेला-पुं० [?] पठानों की एक जाति।
रूँधना-स० [सं० रुंधन] १. कँटीले पौधों आदि से कोई स्थान घेरना। २. चारो ओर से घेरना। ३. बंद करना। रोकना।
रूई-स्त्री० [सं० रोम] कपास के डोडे में का रेशेदार धूआ जिसे कातकर सूत बनाते या जो गद्दे, रजाई आदि में भरते हैं।
रूईदार-वि० [हिं० रूई+फा० दार(प्रत्य०)] (कपड़ा) जिसमें रूई भरी हो।
रूख†-पुं० [सं० रूक्ष] पेड़। वृक्ष।
*वि० दे० 'रूखा'।
रूखना*-अ० दे० 'रूठना'।
रूखा-वि० [सं० रूक्ष] [भाव० रूखा-पन] १. जो चिकना न हो। २. जिसमें घी, तेल आदि कोई चिकनी वस्तु न पड़ी या मिली हो। ३. स्वाद-रहित। फीका।
यौ०-रूखा-सूखा=१. जिसमें चिकना या सरस पदार्थ न हो। २. साधारण भोजन।
४. सूखा। नीरस। ५. खुरदुरा। ६. शील-संकोच न करनेवाला। शील-रहित।
रूझना*-अ० = उलझना।
रूठ(न)-स्त्री० [हिं० रूठना] रूठने की क्रिया या भाव।
रूठना-अ० [सं० रुष्ट] अप्रसन्न होकर उदासीन, चुप या अलग हो जाना।
रूढ़-वि० [सं०] [स्त्री० रूढ़ा] १. चढ़ा हुआ। आरूढ़। २. प्रसिद्ध। ३. गँवार। ४. कठोर। कड़ा। ५. प्रचलित।
पुं० वह यौगिक शब्द जिसके खंड करने पर कोई अर्थ न निकले।
रूढ़ि-स्त्री० [सं०] १. रूढ़ का भाव। २. प्रसिद्धि। ३. बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा। चाल। (कस्टम)
रूनी-पुं० [देश०] घोड़ों की एक जाति।
रूप-पुं० [सं०] १. शकल। सूरत। २. सौन्दर्य। खूबसूरती।
मुहा०-किसी का रूप हरना=अपनी सुन्दरता से किसी को लज्जित करना।
३. शरीर। देह। ४. वेष। भेस।
मुहा०-रूप भरना=भेस बनाना।
५. दशा। ६. आकार। ७ *चाँदी। रूपा।
८. दे० 'रूपक' ४।
रूपक-पुं० [सं०] १. मूर्त्ति। प्रतिकृति। २. वह काव्य जिसका अभिनय किया जाय। इसके दस भेद माने गये हैं नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन। ३. एक अर्थालंकार जिसमें उपमान का उपमेय में आरोप किया जाता है। ४. प्रार्थना, विवरण आदि से सम्बन्ध रखने-वाले पत्रों आदि का वह निश्चित रूप जिसमें भिन्न भिन्न बातें भरने के लिए प्रायः कोष्ठक आदि बने रहते हैं। (फॉर्म) ५. केवल दिखलाने के लिए बनाया हुआ रूप। बनावटी मुद्रा या आचरण।
रूपकरण-पुं० [सं० रूप+करण] घोड़ों की एक जाति।
रूपकातिशयोक्ति-स्त्री० [सं०] वह अतिशयोक्ति जिसमें उपमेय के स्थान पर केवल उपमान का कथन होता है।

रूपकार-पुं० [सं०] मूर्ति बनानेवाला।

रूपगर्विता-स्त्री० [सं०] वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व या अभिमान हो।

रूपधारी-पुं० [सं०] रूप धारण करनेवाला। (विशेषतः दूसरे का)

रूप-भेद-पुं० [सं०] चित्र-कला में हर प्रकार की आकृति और उसकी विशेषताओं का विभेद, जो भारतीय चित्र-कला के छः अंगों में से एक है।

रूपमनी*-वि० [हिं० रूपमान] सुन्दरी।

रूपमय-वि० [हिं० रूप+मय] [स्त्री० रूपमयी] बहुत सुंदर।

रूपमान*-वि० दे० 'रूपवान'।

रूप-रेखा-स्त्री० [सं०] १. किसी बनाये जानेवाले रूप या किये जानेवाले काम का वह स्थूल अनुमान जो उसके आकार, प्रकार आदि का परिचायक होता है। (प्लान) २ वह चित्र जो अभी केवल रेखाओं के रूप में हो। (स्केच)

रूपवंत-वि० दे० 'रूपवान्'।

रूपवान्-वि० [सं० रूपवत्] [स्त्री० रूपवती] सुन्दर। खूबसूरत।

रूपसी-स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

रूपा-पुं० [सं० रूप्य] १. चाँदी। २. घटिया चाँदी। ३. सफेद घोड़ा। नुकरा।

रूपी-वि० [सं० रूपिन्] [स्त्री० रूपिणी] १. रूपवाला। रूपधारी। २. तुल्य। समान।

रूपोश-वि० [फा०] [भाव० रूपोशी] १. छिपा हुआ। २ छिपकर भागा हुआ।

रूप्यक-पुं० [सं०] रुपया।

रूबकार-पुं० [फा०] १. किसी को बुलाने के लिए अदालत का आज्ञापत्र। आकारक। २. आज्ञापत्र।

रू-बरू-क्रि० वि० [फा०] सम्मुख। सामने।

रूम-पुं० [फा०] तुर्किस्तान देश। पुं० [अं०] बड़ी कोठरी। कमरा।

रूमना-स० हिं० 'झूमना' का अनु०।

रूमाल-पुं० [फा०] १. हाथ-मुँह पोंछने के लिए कपड़े का चौकोर टुकड़ा। २. चौकोर शाल या दुपट्टा।

रूमी-वि० [फा०] रूम देश संबंधी। पुं० रूम देश का निवासी। स्त्री० रूम देश की भाषा।

रूरना*-अ० [सं० रोरवण] चिल्लाना।

रूरा-वि० [सं० रूढ़=प्रशस्त] [स्त्री० रूरी] १ श्रेष्ठ। २ सुन्दर। ३. बहुत बड़ा।

रूल-पुं० [अं०] १ दे० 'रूलर'। २. सीधी खींची हुई लकीर। ३. वह गोल डंडा जिससे लकीरें खींचते हैं।

रूलर-पुं० [अं०] १. सीधी लकीर खींचने की पट्टी या डंडा। २. शासक।

रूष*-पुं० दे० 'रूख'।

रूस-पुं० [अं० रशा] एक बहुत बड़ा देश जो यूरोप और एशिया में फैला हुआ है।

रूसना-अ० दे० 'रूठना'।

रूसी-पुं० [अं० रशा] रूस देश का निवासी। स्त्री० रूस देश की भाषा। वि० रूस देश सम्बन्धी। रूस का। स्त्री० [देश०] सिर के ऊपर की वह पतली झिल्ली जो बहुत छोटे टुकड़ों के रूप में फट या कटकर निकलती है।

रूह-स्त्री० [अ०] १. आत्मा। जीव। २. सत्त। सार। ३. एक प्रकार का इत्र।

रूहना*-अ० [सं० रोहण] १. चढ़ना। २. उमड़ना। ३. चारों ओर से घिरना। स० दे० 'रूँधना'।

रेंकना-अ० [अनु०] १. गधे का बोलना। २. बहुत भद्दे ढंग से गाना या बोलना।

रेंगना-अ० [सं० रिंगण] [स० रेंगाना] धीरे धीरे और जमीन से रगड़ खाते हुए

चलना। जैसे-साँप या च्यूँटी का रेंगना।

रेंड़-पुं० [सं० एरंड] एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

रेंड़ी-स्त्री० [हिं० रेंड़] रेंड़ के बीज।

रे-अव्य० [सं०] छोटों या तुच्छ आदमियों के लिए एक सम्बोधन।

पुं० संगीत में ऋषभ स्वर का सूचक संक्षिप्त रूप। जैसे-सा, रे, ग, म।

रेख-स्त्री० [सं० रेखा] १. लकीर। रेखा। मुहा०-रेख काढ़ना, खींचना या खाँचना=१. प्रतिज्ञा करना। २. जोर देकर या दृढ़तापूर्वक कुछ कहना।

२. चिह्न। निशान। ३. नई निकलती हुई मूँछें।

मुहा०-रेख भींजना या भीनना=मूँछे निकलना आरम्भ होना।

रेखता-पुं० [फा०] १. एक प्रकार की गजल। २. उर्दू-भाषा का आरंभिक रूप और नाम।

रेखना*-स० [सं० रेखना या लेखन] १ रेखा खींचना। २. खरोंचना।

रेखांकन-पुं० [सं०] १. चित्र की रूप-रेखा बनाने के लिए रेखाएँ अंकित करना। खत-कशी। (स्केचिंग) २. दे० 'रेखा-चित्र'।

रेखा-स्त्री० [सं०] १. लंबा और पतला चिह्न। लकीर। २. वह जिसमें लंबाई तो हो, पर चौड़ाई या मोटाई न हो। (रेखा-गणित) ३. गणना। गिनती। ४. रूप। आकार। ५. हथेली, तलवे आदि की वे लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार होता है।

रेखा-कर्म-पुं० दे० 'रेखांकन'।

रेखा-गणित-पुं० दे० 'ज्यामिती'।

रेखा-चित्र-पुं० [सं०] किसी वस्तु का केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र। खाका। (स्केच)

रेखा-चित्रण-पुं० [सं०] रेखा-चित्र बनाने का काम।

रेखित-वि० [सं० रेखा] जिसपर रेखाएँ या लकीरें पड़ी हों।

रेग-स्त्री० [फा०] बालू। रेत।

रेगमाल-पुं० [फा० रेग+हि० मलना] एक प्रकार का कागज जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिससे रगड़कर धातुएँ या लकड़ियाँ साफ की जाती हैं।

रेगिस्तान-पुं० [फा०] मरुस्थल।

रेचक-वि० [सं०] जिसके खाने से दस्त आवे। दस्तावर।

पुं० प्राणायाम में वह क्रिया, जिसमें खींचा हुआ साँस बाहर निकाला जाता है।

रेचन-पुं० [सं०] १. पेट साफ करने के लिए दस्त लाना। २. जुल्लाब।

रेचना*-स० [सं० रेचन] वायु, मल आदि पेट से बाहर निकालना।

रेजगारी(गी)-स्त्री० [फा० रेजः] १. एकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी आदि छोटे सिक्के। २. छोटे टुकड़े या कतरन आदि।

रेजा-पुं० [फा०] १. बहुत छोटा टुकड़ा। २. कपड़ों, रत्नों आदि में का कोई एक थान या खंड।

रेडियम-पुं० [अं०] एक उज्वल मूल धातु जिसमें बहुत शक्ति संचित रहती है।

रेडियो-पुं० [अं०] एक प्रसिद्ध विद्युत-यंत्र जिसमें बिना तार के संबंध के बहुत दूर से कही हुई बातें सुनाई देती हैं।

रेणु-स्त्री० [सं०] १. धूल। २. बालू। ३. बहुत छोटा खंड। कण।

रेत-स्त्री० [सं० रेतजा] बालू।

रेतना-स० [हिं० रेती] रेती से रगड़कर काटना या छीलना।

रेती-स्त्री० [हिं० रेत] एक प्रसिद्ध औजार जिसे किसी धातु पर रगड़ने से उसके महीन कण कटकर गिरते हैं । स्त्री० [हिं० रेत+ई (प्रत्य०)] रेतीली या बलुई भूमि ।

रेतीला-वि० [हिं० रेत] [स्त्री० रेतीली] जिसमें या जहाँ रेत हो । बालूवाला ।

रेनुक-पुं० दे० 'रेणु' ।

रेफ-पुं० [सं०] १. किसी अक्षर के ऊपर आनेवाला हलंत रकार । जैसे 'हर्ष' या 'धर्म' में 'ष' या 'म' के ऊपर का रकार । २. रकार (र अक्षर) ।

रेरी-स्त्री० [हिं० रे=ओ+री (प्रत्य०)] किसी को 'रे' 'तू' आदि कहकर उससे बातें करना । (तुच्छता बोधक और अवज्ञा का सूचक)

रेल-स्त्री० [अं०] भाप के इंजन के द्वारा चलनेवाली गाड़ी । रेल-गाड़ी ।

रेल-ठेल-स्त्री० दे० 'रेल-पेल' ।

रेलना-स० [देश०] धक्के या दबाव से आगे बढ़ाना । ढकेलना ।

रेल-पेल-स्त्री०[हिं०रेलना+पेलना]१.भारी भीड़ । २. भर-मार । बहुत अधिकता ।

रेलवे-स्त्री० [अं०] १. रेल-गाड़ी की सड़क । २. रेल का महकमा या विभाग ।

रेला-पुं० [देश०] १. तेज बहाव । तोड़ । २. समूह द्वारा चढ़ाई । धावा । ३. जन-समूह का जोरों से आगे बढ़ना । ४. दे० 'रेल-पेल' ।

रेवड़-पुं० [देश०] भेड़, बकरियों आदि का झुंड । लहँड़ा । गल्ला ।

रेवड़ी-स्त्री० [देश०] छोटी टिकियों के रूप में तिल और चीनी की बनी एक मिठाई ।

रेशम-पुं० [फा०] एक प्रकार के कीड़े से तैयार किये हुए महीन, चमकीले और दृढ़ तंतु जिनसे रेशमी कपड़े बनते हैं । कौशेय ।

रेशमी-वि० [फा०] रेशम का बना हुआ ।

रेशा-पुं० [फा०] महीन सूत । तंतु ।

रेह-स्त्री० [?] खार मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसर मैदान में पाई जाती है ।

रेहन-पुं० [फा०] किसी के पास कोई चीज इस शर्त पर रखना कि जब ऋण चुका दिया जायगा, तब वह चीज लौटा ली जायगी । बंधक । गिरवी ।

रेहनदार-पुं० [फा०] वह जिसके पास कोई चीज रेहन रखी जाय ।

रेहननामा-पुं० [फा०] वह पत्र जिस-पर रेहन की शर्तें लिखी जाती हैं ।

रेहना-स० [हिं० रेतना ?] सिल, चक्की आदि को छेनी से कूटकर खुरदुरा करना । कूटना ।

रैक-पुं० [अं०] लकड़ी का खुला हुआ वह ढाँचा जिसमें पुस्तकें आदि रखने के लिए दर या खाने बने रहते हैं ।

रैदास-पुं० [सं० रविदास] १. एक प्रसिद्ध चमार भक्त । २. चमार ।

रैन-स्त्री० [सं० रजनि] रात्रि । रात ।

रैयत-स्त्री० [अ०] प्रजा । रिआया ।

रैशनिंग-स्त्री० [अं०] वह व्यवस्था जिसमें लोगों को खाद्य-पदार्थ या उनके उपयोग की दूसरी वस्तुएँ कुछ निश्चित नियमों के अनुसार, निश्चित मात्रा में और निश्चित समय पर ही दी जाती हैं ।

रोंगटा-पुं० दे० 'रोआँ' ।

रोआँ-पुं० [सं० रोम] १. शरीर पर के बहुत छोटे और पतले बाल । रोम । मुहा०-रोएँ खड़े होना=कोई भयानक बात देखकर बहुत क्षोभ या भय होना । २. वनस्पति आदि पर के ऐसे तंतु ।

रोआसा-वि० [हिं० रोना + आसा

(प्रत्य०)] जिसे रुलाई आना चाहती हो। रोने को उद्यत।

रोईं—स्त्री० [हिं० रोआँ का अल्पा०] बहुत छोटा रोआँ, जैसा तरकारियों और फलों आदि पर होता है।

रोउँ*—पुं० दे० 'रोआँ'।

रोएँदार—वि० [हिं० रोआँ+दार] १. जिसके शरीर पर बहुत-से रोएँ हों। २. जिसपर रोएँ की तरह सूत, रेशे आदि हों।

रोक—स्त्री० [हिं० रोकना] १. रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २. नियंत्रण में रखनेवाली बात। प्रतिबंध। (चेक) ३. मनाही। निषेध। ४. रोकनेवाली चीज या बात।

वि० रुपये-पैसे आदि के रूप में। नगद। (कैश)

रोक-टीप—स्त्री० [हिं० रोक (ड़)+टीप] वह चिट या पावती जो बेचनेवाला कोई चीज बेचने पर खरीदनेवाले को उस बिक्री के प्रमाण-स्वरूप देता है और जिसपर बेची हुई चीज का नाम और मूल्य लिखा रहता है। (कैश मेमो)

रोक-टोक—स्त्री० [हिं० रोकना+टोकना] १. वह जाँच या पूछ-ताछ जो कहीं आने-जाने या कुछ करने के समय बीच में हो। मनाही। निषेध।

रोकड़—स्त्री० [सं० रोक=नगद] १. नगद रुपया-पैसा आदि। (कैश) २. जमा। धन। पूँजी।

रोकड़-बही—स्त्री० [हिं०] वह बही जिस-पर प्रति दिन की आय और व्यय लिखा जाता है। (कैश बुक)

रोकड़-बाकी—स्त्री० [हिं०] व्यय आदि निकल जानेपर बाकी बची हुई रकम। (क्लोजिंग बैलेन्स)

रोकड़िया—पुं० [हिं० रोकड़] वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ और आमदनी-खर्च का हिसाब रहता है। (कैशियर)

रोक-थाम—स्त्री० [हिं० रोकना+थामना] किसी अनुचित या अनिष्ट कार्य को रोकने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न।

रोकना—स० [हिं० रोक] १. किसी को आगे बढ़ने न देना। २. कहीं जाने से मना करना। ३. चली आती हुई बात बन्द करना। ४. अपने ऊपर कोई भार लेकर बीच में बाधक होना।

रोग—पुं० [सं०] [वि० रोगी, रुग्ण] शरीर को अस्वस्थ रखनेवाली शारीरिक प्रक्रिया। व्याधि। मर्ज। बीमारी।

रोगन—पुं० [फा० रौग़न] [वि० रोगनी] १ तेल। २. वह चिकना लेप जो कोई वस्तु चमकाने के लिए उसपर लगाया जाता है। (वारनिश)

रोगी—वि० [सं० रोगिन्] [स्त्री० रोगिणी] जिसे रोग हुआ हो। अस्वस्थ। बीमार।

रोचक—वि० [सं०] [भाव० रोचकता] १. अच्छा लगनेवाला। २. मनोरंजक।

रोचन—वि० [सं०] १. रोचक। २. शोभा बढ़ानेवाला। ३. लाल।

रोज—पुं० [फा०] दिन। दिवस।

अव्य० प्रति दिन। नित्य।

*पुं० [सं० रोदन] रोना। रुदन।

रोजगार—पुं० [फा०] १. व्यापार। २. व्यवसाय। कार-बार। तिजारत।

रोजगारी—पुं० [फा०] व्यापारी।

रोजनामचा—पुं० दे० 'दैनिकी'।

रोजमर्रा—अव्य० [फा०] नित्य।

पुं० नित्य के व्यवहार में आनेवाली बोल-चाल की भाषा का विशिष्ट प्रयोग।

रोजा—पुं० [फा०] उपवास।

रोजी-स्त्री० दे० 'जीविका'।

रोजीना-पुं० [फा०] दैनिक वृत्ति या मजदूरी।

रोट-पुं० [हिं० रोटी] मोटी और बड़ी रोटी। लिट्ट।

रोटी-स्त्री० [तमिल ?] १.गुँधे हुए आटे की आँच पर सेंकी या पकाई हुई लोई या टिकिया। चपाती। २. भोजन या रसोई। ३. जीविका।

यौ०-रोटी-कपड़ा = खाने-पहनने की सामग्री या व्यय।

मुहा०-किसी बात की रोटी खाना= किसी बात से जीविका चलाना। किसी के यहाँ रोटियाँ तोड़ना=किसी के घर रहकर उसके दिये हुए अन्न से निर्वाह करना। रोटी-दाल चलना= जीवन-निर्वाह होना।

रोठा*-पुं० दे० 'रोड़ा'।

रोड़ा-पुं० [सं० लोष्ठ] ईंट या पत्थर का बड़ा टुकड़ा। ढेला।

मुहा०-रोड़ा अटकाना=विघ्न डालना।

रोदन-पुं० [सं०] रोना।

रोदा-पुं० [सं० रोध] धनुष की डोरी। चिल्ला।

रोध(न)-पुं० [सं०] [वि० रोधित] रोक। रुकावट। अवरोध। (चेक)

*पुं० [सं० रुदन] रोना। विलाप।

रोधना*-स० = रोकना।

रोना-अ० [सं० रुदन] १. दुःखी होकर आँसू बहाना। रुदन करना।

मुहा०-रो-रोकर=बहुत कठिनता से।

यौ०-रोना-गाना=गिड़गिड़ाना।

२. बुरा मानना। चिढ़ना। ३. दुःखी होना।

पुं० १.दुःख। खेद। २.अपने दुःख का वर्णन।

वि० [स्त्री० रोनी] ज़रा-सी बात पर भी रो पड़नेवाला।

रोपक-वि० [सं०] रोपनेवाला।

रोपण-पुं० [सं०] [वि० रोपित, रोप्य] १. ऊपर से लाकर लगाना या स्थापित करना। जमाना। बैठाना। (बीज या पौधा) २. दे० 'आरोप'।

रोपना-स० [सं० रोपण] १. जमाना। लगाना। बैठाना। (पौधे आदि) २. स्थित करना। ठहराना। ३. बीज डालना। बोना। ४. पसारना। फैलाना। (हाथ या पाँव) ५. रोकना।

रोब-पुं० [अ० रुअब] [वि० रोबीला] शक्तिशाली होने की ऐसी धाक कि विरोधी कुछ कह या कर न सके। आतंक। दबदबा।

मुहा०-रोब जमाना=आतंक उत्पन्न करना। रोब में आना=किसी के आतंक के कारण दब या रुक जाना।

रोम-पुं० [सं० रोमन्] १ रोआँ। लोम।

मुहा०-रोम रोम में=सारे शरीर में। रोम रोम से=शुद्ध और पूर्ण हृदय से।

२. छेद। सूराख। ३ ऊन।

पुं० इटली की राजधानी या उसके आस-पास का प्रदेश।

रोमक-पुं० [सं०] १. रोम का निवासी। रोमन। २. रोम नगर या देश।

रोम-कूप-पुं० [सं०] शरीर के वे छेद जिनमें से रोएँ निकलते हैं।

रोमन-वि० [अं०] रोम नगर या राष्ट्र का।

स्त्री० वह लिपि जिसमें अँगरेजी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोम-हर्षण-पुं० [सं०] अचानक बहुत अधिक आनन्द अथवा भय से रोएँ खड़े होना। रोमांच। सिहरन।

वि० भयंकर। भीषण।

रोमांच-पुं० [सं०] [वि० रोमांचित] आनंद या भय से रोएँ खड़े होना।

रोमाली*-स्त्री० दे० 'रोमावलि'।

रोमावलि-स्त्री० [सं०] पेट के बीचो-बीच नाभि से ऊपर की रोओं की पंक्ति। रोमराजी।

रोमिल-वि० [सं० रोम] रोएँदार।

रोयाँ-पुं० दे० 'रोआँ'।

रोर-स्त्री० [सं० रवण] १. कोलाहल। शोर-गुल। २. उपद्रव। उत्पात।
वि० १. प्रचंड। तेज। २. उपद्रवी।

रोरित-वि० [हिं० रोर] जिसमें रोर हो। रोर से युक्त।

रोरी*-स्त्री० [हिं० रोर] चहल-पहल।
वि० स्त्री० [हिं० रुरा] सुंदर।
† स्त्री० दे० 'रोली'।

रोल*-स्त्री० [सं० रवण] १. दे० 'रोर'। २. ध्वनि। शब्द।
पुं० पानी का बहाव। रेला।

रोली-स्त्री० [सं० रोचनी] तिलक लगाने का एक प्रसिद्ध लाल चूर्ण।

रोवना-अ०, वि० दे० 'रोना'।

रोशन-वि० [फा०] १. जलता हुआ। प्रदीप्त। २. चमकदार। ३. प्रसिद्ध। ४. प्रकट। जाहिर।

रोशन चौकी-स्त्री० [फा०] शहनाई।

रोशनदान-पुं० [फा०] दीवार के ऊपरी भाग में प्रकाश आने का छेद। झरोखा।

रोशनाई-स्त्री० दे० 'स्याही'

रोशनी-स्त्री० [फा०] १. उजाला। प्रकाश। २. दीपक। दीया।

रोष-पुं० [सं०] [वि०रोषी, रुष्ट] १. क्रोध। गुस्सा। २. चिढ़। ३. कुढ़न। ४. वैर-विरोध। ५. लड़ने का आवेश।

रोहज*-पुं० [?] नेत्र।

रोहण-पुं० [सं०] ऊपर चढ़ना।

रोहना*-अ० [सं० रोहण] १. चढ़ना। २. ऊपर की ओर जाना या बढ़ना।
स० १. चढ़ाना। २. सवार कराना। ३. पहनना।

रोहिणी-स्त्री० [सं०] १. गाय। गौ। २. बिजली। ३. वसुदेव की स्त्री और बलराम की माता। ४. सत्ताइस नक्षत्रों में से एक।

रोहित-वि० [सं०] लाल रंग का।
पुं० १. लाल रंग। २. एक प्रकार का हिरन। ३. केसर। ४. रक्त। लहू। खून।

रोही-वि० [सं० रोहिन्] [स्त्री० रोहिणी] चढ़नेवाला।
पुं० [देश०] एक प्रकार का हथियार।

रोहू-स्त्री० [सं० रोहिष] एक प्रकार की बड़ी मछली।

रौंथ-स्त्री० [?] चौपायों की जुगाली।

रौंद-स्त्री० [हिं० रौंदना] रौंदने की क्रिया।
स्त्री० [अं० राउंड] देख-रेख या जाँच-पड़ताल के लिए लगाया जानेवाला चक्कर।

रौंदना-स० [सं० मर्दन] पैरों से कुचल या दबाकर नष्ट-भ्रष्ट करना। मर्दित करना।

रौ-स्त्री० [फा०] १. गति। चाल। २. वेग। तेजी।
*पुं० दे० 'रव'।

रौगन-पुं० दे० 'रोगन'।

रौजा-पुं० [अ०] वह कब्र जिसपर इमारत बनी हो। समाधि।

रौद्र-वि० [सं०] [भाव० रौद्रता] १. रुद्र-संबंधी। २. प्रचंड। उग्र। ३. क्रोधपूर्ण।
पुं० १. काव्य के नौ रसों में से एक, जिसमें क्रोधसूचक बातों का वर्णन होता है। २. गरमी। ताप।

रौन*-पुं० दे० 'रमण'।

रौनक-स्त्री० [अ०] १. चमक-दमक।

दीप्ति। २. प्रफुल्लता। ३. शोभा। सुहावनापन।

रौनी*-स्त्री० दे० 'रमणी'।

रौप्य-पुं० [सं०] चाँदी। रूपा। वि० चाँदी का।

रौरव-वि० [सं०] भयंकर। पुं० एक भीषण नरक का नाम।

रौरे-सर्व० [हिं० राव] आप। (संबोधन)

रौला-पुं० [सं० रवण] हल्ला। शोर।

रौस-स्त्री० [फा० रविश] १. दे० 'रविश'। २. रंग-ढंग। तौर-तरीका। ३. छज्जा या बरामदा।

ल

ल-व्यंजन-वर्ण का अट्ठाईसवाँ अल्प-प्राण वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।

लंक-स्त्री० [सं०] कमर। कटि। स्त्री० [सं० लंका] लंका द्वीप।

लंका-स्त्री० [सं०] भारत के दक्षिण का एक टापू जहाँ रावण राज्य करता था।

लंग-स्त्री० दे० 'लाँग'। पुं० [फा०] लँगड़ापन।

लंगड़-पुं० १. दे० 'लँगड़ा'। २. दे० 'लंगर'।

लँगड़ा-वि० [फा० लंग] जिसका एक पैर बेकाम हो या टूट गया हो। पुं० एक प्रकार का बढ़िया आम।

लँगड़ाना-अ० [हिं० लँगड़ा] लँगड़े होकर चलना।

लंगर-पुं० [फा०] १. लोहे का वह बहुत बड़ा काँटा जिसे नदी या समुद्र में गिरा देने पर नावें या जहाज एक ही स्थान पर ठहरे रहते हैं। २. लकड़ी का वह कुंदा जो नटखट गाय या बैल के गले में बाँधा जाता है। ३. लटकती हुई कोई भारी चीज। जैसे-घड़ी का लंगर। ४. पैर में पहनने का चाँदी का तोड़ा। ५. कपड़े में वे टाँके जो पक्की सिलाई के पहले डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ६. वह स्थान जहाँ दरिद्रों को भोजन मिलता है। वि० १. भारी। २. नटखट। पाजी।

लँगरई*-स्त्री० [हिं० लंगर + ई (प्रत्य०)] पाजीपन। शरारत।

लंगी†-वि०=लँगड़ा।

लंगूर-पुं० [सं० लांगूली] १. एक प्रकार का बड़ा बंदर जिसका मुँह काला और पूँछ बहुत लंबी होती है। *२. बंदर की दुम।

लँगोट(ा)-पुं० [सं० लिंग+ओट] [स्त्री० लँगोटी] कमर पर बाँधने का वह पहनावा जिससे केवल उपस्थ और चूतड़ ढके रहते हैं। कमाली।

यौ०-लँगोट-बंद=ब्रह्मचारी।

लँगोटी-स्त्री० [हिं० लँगोट] छोटा लँगोट।

यौ०-लँगोटिया यार=बचपन का साथी।

मुहा०-लँगोटी में फाग खेलना = गरीब होने पर भी बहुत व्यय करना।

लंघन-पुं० [सं०] १. लाँघने की क्रिया या भाव। डाँकना। २. अतिक्रमण। ३. उपवास। अनाहार। फाका।

लँघना*-स० दे० 'लाँघना'।

लंठ-वि० [हिं० लट्ठ] मूर्ख।

लँडूरा-वि० [देश० या सं० लांगूल] कटी हुई पूँछवाला। (पक्षी या पशु)

लंपट-वि० [सं०] [भाव० लंपटता] व्यभिचारी। विषयी। बद-चलन।

लंब-पुं० [सं०] किसी रेखा पर सीधी और खड़ी गिरनेवाली रेखा।
वि० लंबा।
*स्त्री० दे० 'विलंब'।

लंबन-पुं० [सं०] १. लंबा करना। २. कोई काम या बात कुछ समय के लिए रुकी या टली रहना। (पेंडेन्स)

लंबा-वि०[सं० लंब] [स्त्री० लंबी, भाव० लंबाई] १. जो एक ही दिशा में दूर तक सीधा चला गया हो। 'चौड़ा' का उलटा। मुहा०-लंबा करना = चलता करना। हटाना।
२. अधिक विस्तार या ऊँचाईवाला। बड़ा।

लंबाई-स्त्री० [हिं० लंबा] 'लंबा' होने का भाव। लंबापन।

लंबायमान-वि० [हिं० लंबा] १. बहुत लंबा। २. लेटा हुआ।

लंबित-वि०[सं०]१.लंबा किया हुआ। २. विचार, निश्चय आदि के लिए कुछ समय तक रोका या टाला हुआ। (पेंडिंग)

लंबोतरा-वि० [हिं० लंबा] लंबे आकार-वाला। जो कुछ अपेक्षाकृत लंबा हो।

लउटी*-स्त्री० दे० 'लकुटी'।

लकड़बग्घा-पुं० दे० 'लगड़' २।

लकड़हारा-पुं० [हिं० लकड़ी+हारा] जंगल से लकड़ी काटकर बेचनेवाला।

लकड़ी-स्त्री० [सं० लगुड] १. पेड़ का कटा हुआ काठवाला कोई ठोस या स्थूल अंग। काठ। २.ईंधन।३.छड़ी या लाठी।

लकवा-पुं० [अ०] एक वात-रोग जिसमें कोई अंग सुन्न और बेकार हो जाता है।

लकीर-स्त्री० [सं० रेखा] १. वह सीधी आकृति जो एक सीध में दूर तक चली गई हो। रेखा। खत। मुहा०-लकीर का फकीर होना या लकीर पीटना=पुरानी प्रथा पर चलना। २. धारी। ३. पंक्ति। सतर।

लकुट(ी)-स्त्री०[सं० लगुड] लाठी। छड़ी।

लक्खी-पुं० [हिं० लाख=वृक्ष का निर्यास] घोड़े की एक जाति।
पुं० [हिं० लाख (संख्या)] लखपती।
वि० लाखों से संबंध रखनेवाला। जैसे-लक्खी बाग, लक्खी मेला।

लक्ष-वि०[सं०] एक लाख। सौ हजार।
पुं० [सं०] एक लाख की संख्या।
पुं०[सं०] १.किसी उद्देश्य से किसी वस्तु या बात पर दृष्टि रखना। २. दे०'लक्ष्य'।

लक्षण-पुं०[सं०] १. वह विशेषता जिसके आधार पर कोई चीज पहचानी जाय। चिह्न। निशान। २.नाम। ३.परिभाषा। ४. शरीर के अंगों पर शुभ और अशुभ माने जानेवाले कुछ विशेष प्राकृतिक चिह्न। ५. चाल-ढाल। रंग-ढंग।

लक्षणा-स्त्री० [सं०] शब्द की वह शक्ति जो उसका अर्थ सूचित करती है।

लक्षना*-स० दे० 'लखना'।

लक्षित-वि० [सं०] १. बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २.देखा हुआ। ३ लक्षणा शक्ति के द्वारा समझ में आनेवाला (अर्थ)।

लक्षिता-स्त्री० [सं०] वह परकीया नायिका जिसका पर-पुरुष से होनेवाला संबंध और लोग जानते हों।

लक्षितार्थ-पुं० [सं०] वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति से निकलता है।

लक्ष्म-पुं० [सं०] लक्षण। चिह्न। निशान।

लक्ष्मण-पुं० [सं०] सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के दूसरे पुत्र।

लक्ष्मी-स्त्री० [सं] १. धन की अधिष्ठात्री देवी जो विष्णु की पत्नी कही गई है। कमला। रमा। २. धन-संपत्ति। दौलत।

३. शोभा। छवि। ४. घर की मालकिन। गृह-स्वामिनी।

लक्ष्मी-पुत्र-पुं० [सं०] धनवान। अमीर।

लक्ष्य-पुं० [सं०] १. वह जिसपर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाय। उद्दिष्ट पदार्थ या बात। २. निशाना। ३. वह जिसपर किसी प्रकार का आक्षेप हो। ४ दे० 'लक्षितार्थ'।

लक्ष्य-भेद-पुं०[सं०] चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना लगाना।

लक्ष्यार्थ-पुं० [सं०] लक्षणा से निकलनेवाला अर्थ।

लखघर*-पुं० दे० 'लाक्षागृह'।

लखन*-पुं०=लक्ष्मण।

लखना-स० [सं० लक्ष] [भाव० लखन] १ लक्षण देखकर अनुमान करना या समझना। ताड़ना। २. देखना।

लखपती-पुं० [सं० लक्ष+पति] जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

लख-पेड़ा-वि० [हिं०लाख+पेड़] (बाग आदि) जिसमें बहुत अधिक वृक्ष हों।

लखाउ*-पुं० दे० 'लाक्षागृह'।

लखाना-स० हिं० 'लखना' का प्रे०।

†अ० दे० 'लखना'।

लखाव*-पुं० दे० 'लक्षण'।

लखिया*-पुं० [हिं०लखना] लखनेवाला।

लखेरा-पुं० [हिं० लाख=वृक्ष का निर्यास] लाख की चूड़ियाँ आदि बनानेवाला।

लखौटा-पुं० [हिं०लाख+औटा (प्रत्य०)] १. चंदन, केसर आदि से बनाया जानेवाला उबटन। २. वह डिब्बा जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर आदि रखती हैं।

लखौरी-स्त्री० [सं० लाक्षा] १. एक प्रकार की भौंरी (कीड़ा) का घर। २. पुरानी चाल की पतली छोटी ईंट।

स्त्री० [हिं० लाख (संख्या)] देवी-देवता को उनके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना।

लग*-क्रि० वि० [हिं० लौं] १. तक। पर्यंत। २. निकट। पास।

स्त्री० लगन। लौ।

अव्य० १. वास्ते। लिए। २. साथ।

लगन-स्त्री० [हिं० लगना] १. किसी व्यक्ति या काम की ओर पूरी तरह से ध्यान लगाना। लौ। २. स्नेह।

पुं० [सं० लग्न] १. विवाह का मुहूर्त। २ हिन्दुओं में वे विशिष्ट दिन जिनमें विवाह होते हैं। सहालग। ३. दे० 'लग्न'।

पुं० [फा०] एक प्रकार की थाली।

लगनवट-स्त्री० [हिं० लगन] लगन। प्रेम।

लगना-अ० [सं० लग्न] १. किसी पदार्थ के तल से दूसरे पदार्थ का तल मिलना। सटना। जुड़ना। २. किसी चीज पर कुछ सीया, टाँका, चिपकाया, जड़ा या मढ़ा जाना। ३ सम्मिलित होना। मिलना। ४. तल, सीमा या आधार पर पहुँचकर टिकना या रुकना। ५. क्रम से लगाया या सजाया जाना। ६. व्यय होना। खर्च होना। ७. जान पड़ना। मालूम होना। ८. संबंध या रिश्ते में कुछ होना। ९.आघात या चोट पहुँचना। १०. जलन, चुनचुनाहट आदि मालूम होना। ११. कार्य में रत होना।

मुहा०-लगे हाथ या लगे हाथों= कोई काम करते रहने की दशा में या उसे पूरा करके निश्चिन्त होने से पहले। जैसे-लगे हाथ यह काम भी कर डालो। १२. फलों आदि का सड़ना या गलना प्रारंभ होना। १३. मन पर किसी बात का प्रभाव या असर होना।

मुहा०–लगती बात कहना = मर्म्म-भेदी बात कहना।

१४. आरोप होना। १५. गणित की क्रिया पूरी होना। १६. दूध देनेवाले पशुओं का दूहा जाना। १७. छेड़-छाड़ करना। १८. दाँव पर धन रखा जाना। १६. घात या ताक में रहना।

लगभग–क्रि० वि० [हि० लग = पास + भग अनु०] प्रायः। बहुत-कुछ। (संख्या या समय आदि के संबंध में)

लगमात–स्त्री० [हिं० लगना+सं० मात्रा] व्यंजनों में लगनेवाली स्वरों की मात्राएँ या उनके सूचक चिह्न।

लगव*–वि० [अ० लग्व] १. झूठ। मिथ्या। असत्य। २ व्यर्थ। बेकार।

लगवाना–स० हि० 'लगाना' का प्रे०।

लगातार–क्रि० वि० [हिं० लगना+तार= क्रम] बिना क्रम टूटे। बराबर। निरंतर।

लगाद*–स्त्री० [हि०लगावट] प्रेम। प्रीति। क्रि० वि० दे० 'लगायत'।

लगान–पुं० [हि० लगना] १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. खेती-बारी की भूमि पर लगनेवाला कर। पोत। (रेन्ट)

लगाना–स० [हि० 'लगना' का स०] १. एक वस्तु के तल से दूसरी वस्तु का तल मिलाना। सटाना। २. किसी के साथ रखना या करना। सम्मिलित करना। ३. वृक्ष आदि आरोपित करना। जमाना। ४. क्रम से यथा-स्थान रखना। चुनना। ५. व्यय या खर्च करना। ६. आघात करना। चोट पहुँचाना। ७. किसी में कोई नई प्रवृत्ति, व्यसन, चसका आदि उत्पन्न करना। ८. काम में लाना। ९. दोष या अभियोग का आरोप करना। १०. ठीक स्थान पर बैठाना। ११. गणित या हिसाब करना। १२. चुगली खाना। शिकायत करना। १३. कार्य में संलग्न करना। १४. कर आदि नियत करना। १५. गौ, भैंस आदि दूहना। १६. स्पर्श करना। छुआना। १७. जूए में दाँव पर धन रखना। १८. किसी बात या काम में अपने आपको औरों से श्रेष्ठ समझना।

लगाम–स्त्री० [फा०] घोड़े के मुँह में लगाया जानेवाला वह ढाँचा जिसके दोनों ओर घोड़े को चलाने के लिए) रस्से या चमड़े के तस्मे बँधे रहते हैं। रास। बाग। मुहा०–ज़बान या मुँह में लगाम न होना=बिना सोचे-समझे बोलने की आदत होना।

लगार*–स्त्री० [हिं० लगना] १. नियम-पूर्वक नित्य या बराबर काम करना। बंधी। बंधेज। २. लगाव। संबंध। ३. सिल-सिला। क्रम। ४. लगन। लौ। वि० मेल-मिलाप या सम्बन्ध रखनेवाला।

लगाव–पुं० [हिं० लगना] १. लगे होने का भाव। २. संबंध। वास्ता।

लगावट–स्त्री० [हिं० लगाव] १. संबंध। लगाव। २.प्रेम या आपसदारी का सम्बन्ध।

लगि(गु)*–अव्य० दे० 'लग'।

लगुड़–पुं० [सं०] डंडा। लाठी।

लगूल*–स्त्री० [सं० लांगूल] पूछ। दुम।

लगौहाँ*–वि० [हिं० लगना+औहाँ (प्रत्य०)] जो किसी से लगन लगाने के लिए उत्सुक या उद्यत हो।

लग्गा–पुं० [हिं० लगना] १. कार्य्य का प्रारंभ या सूत्र-पात। काम में हाथ लगना। २.किसी दाँव पर जुआरी के सिवा दूसरे लोगों का लगनेवाला धन या दाँव।

लग्घड़–पुं० [देश०] १. बाज। २. चीते की

तरह का एक छोटा पशु। लकड़-बग्घा।

लग्घा-पुं० [सं० लगुड] [स्त्री० लग्घी] १. लंबा बाँस, विशेषतः वृक्षों से फल आदि तोड़ने का बाँस। २.दे० 'लग्गा' २।

लग्न-पुं० [सं०] १. ज्योतिष में उतना समय, जितने में कोई राशि किसी विशिष्ट स्थान में वर्तमान रहती है। २. शुभ कार्य्य का मुहूर्त्त। साइत। ३. विवाह का मुहूर्त। ४. विवाह। शादी। वि० [स्त्री० लग्ना] लगा या सटा हुआ।

लग्नक-पुं० [सं०] जमानत करनेवाला। प्रतिभू। (बॉन्ड्समैन)

लघिमा-स्त्री० [सं० लघिमन्] १ 'लघु' का भाव। लघुता। २. एक कल्पित सिद्धि जिसके प्राप्त होने से मनुष्य बहुत छोटा या हलका बन सकता है।

लघु-वि० [सं०] [भाव० लघुता] १. कनिष्ट। छोटा। २ हलका। ३ निःसार। ४.थोड़ा। कम।

पुं० १. व्याकरण में एक मात्रा का स्वर। जैसे-अ, इ, उ। २. छन्दः-शास्त्र में वह अक्षर जिसमें एक ही मात्रा हो। 'गुरु' का उलटा। इसका चिन्ह '।' है।

लघुचेता-पुं० [सं० लघुचेतस्] तुच्छ या बुरे विचारोंवाला। नीच।

लघु-शंका-स्त्री० [सं०] पेशाब।

लच(क)-स्त्री० [हि० लचकना] १. लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। २. लचकने का गुण।

लचकना-अ० [हि० लच (अनु०)] [स० लचकाना] १. दबने पर बीच से दबना या झुकना। लचना। २. कोमलता आदि के कारण या हाव-भाव के समय स्त्रियों की कमर या दूसरे अंग झुकना।

लचकनि*-स्त्री० दे० 'लचक'।

लचकाना-स० हिं० 'लचकना' का प्रे०।

लचकौहाँ*-वि० दे० 'लचीला'।

लचन-स्त्री० दे० 'लचक'।

लचना-अ० दे० 'लचकना'।

लचारी-स्त्री० [देश०] १. भेंट। नजर। २. एक प्रकार का देहाती गीत।

लचाव-पुं० दे० 'लचक'।

लचीला-वि० [हिं०लचना+ईला(प्रत्य०)] [भाव० लचीलापन] १. जो सहज में लच या झुक सकता हो। लचकदार। २. जिसमें सहज में परिवर्तन, उतार-चढ़ाव या कमी-बेशी हो सकती हो।

लच्छ*-पुं० [सं० लक्ष्य] १. बहाना। मिस। २. निशाना। लक्ष्य।

स्त्री० दे० 'लक्ष्मी'।

वि०, पुं०दे० 'लक्ष' (लाख की संख्या)।

लच्छन*-पुं० [सं० लक्षण] १. लक्षण। २. शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग।

लच्छना*-स० दे० 'लखना'।

लच्छमी*-स्त्री० = लक्ष्मी।

लच्छा-पुं० [अनु०] [स्त्री० अल्पा० लच्छी] १. गुच्छे के रूप में गुथे हुए सूत या तार। २. सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े। ३. हाथ या पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना।

लच्छा-गृह*-पुं० दे० 'लाक्षागृह'।

लच्छि*-स्त्री० = लक्ष्मी।

लच्छित*-वि० [स० लक्षित] १. देखा हुआ। २. निशान लगा हुआ। अंकित।

लच्छि-निवास*-पुं० = विष्णु।

लच्छी-वि० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

स्त्री० [हिं० लच्छा] छोटा लच्छा।

*स्त्री० = लक्ष्मी।

लच्छेदार-वि० [हिं० लच्छा+फा० दार

(प्रत्य०)] १. (खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे बने हों। २. चिकनी-चुपड़ी और मजेदार (बात)।

लछमन-पुं० = लक्ष्मण।

लछमी-स्त्री० = लक्ष्मी।

लछारा*-वि० दे० 'लंबा'।

लज*-स्त्री० दे० 'लाज'।

लजना-अ० दे० 'लजाना'।

लजवाना-स० हिं० 'लजाना' का प्रे०।

लजाना-अ०, स० [सं० लज्जा] लज्जित या शरमिन्दा होना या करना।

लजालू-पुं० [सं० लज्जालु] एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ या कुछ मुरझा-सी जाती है।

लजीला-वि० दे० 'लज्जाशील'।

लजुरी†-स्त्री० [सं० रज्जु] कूएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लजौहाँ-वि० [सं० लज्जावह] [स्त्री० लजौहीं] लज्जाशील।

लज्जत-स्त्री० [अ०] स्वाद।

लज्जा-स्त्री० [सं०] [वि० लज्जित] १. वह मनोभाव जो स्वभावतः अथवा संकोच, दोष आदि के कारण दूसरों के सामने सिर उठाने या बोलने नहीं देता। शर्म। हया। २. मान-मर्यादा। इज्जत।

लज्जाशील-वि० [सं०] जिसे स्वभावतः जल्दी लज्जा आती हो।

लज्जित-वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। शरमाया हुआ।

लट-स्त्री० [सं० लट्वा] १. बालों का गुच्छा। केश-पाश। अलक। २. उलझे हुए बाल। स्त्री० [हिं० लपट] लपट। लौ।

लटक-स्त्री० [हिं० लटकना] १. लटकने की क्रिया या भाव। २. अंगों की कोमल, लचीली और मनोहर चेष्टा। अंगभंगी।

लटकन-पुं० [हिं० लटकना] १. लटकती हुई चीज या अंग। २. नाक में पहनने का एक गहना। ३. एक प्रकार की वनस्पति के दाने जिनसे बढ़िया और सुगंधित बसन्ती या गेरुआ रंग निकलता है। ४. इन दानों को उबालकर निकाला हुआ रंग।

लटकना-अ० [सं० लटन=झूलना] १. ऊपर टिके रहने पर भी कुछ अंश का नीचे की ओर कुछ दूर तक बिना आधार के अधर में झुका रहना। झूलना। २. खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ३. काम का कुछ समय तक अधूरा पड़ा रहना।

लटका-पुं० [हिं० लटक] १. ढंग। ढब। २. बनावटी कोमल चेष्टा और बात-चीत। हाव-भाव। ३. उपचार आदि की छोटी और सहज युक्ति। टोटका।

लटकाना-स० हिं० 'लटकना' का स०।

लटना-अ० [सं० लड] १. थककर बेकाम होना। २. दुबला और अशक्त होना। ३. विकल या बेचैन होना।

अ० [सं० लल] १. चाह या लोभ में पड़ना। २. तत्पर या लीन होना।

लटपट(ा)-वि० [हिं० लटपटाना] [स्त्री० लटपटी] १. लड़खड़ाता हुआ। २. ढीला-ढाला। ३. अस्त-व्यस्त। ४. अस्पष्ट और क्रम-विरुद्ध (कथन)। ५ अशक्त। वि० १. जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढ़ा। (खाद्य पदार्थ, रस आदि)

लटपटाना-अ० [सं० लड+पत्] १. लड़खड़ाना। २. ठीक तरह से न कर सकना। अ० [सं० लल] १. लुभाना। मोहित होना। २. लीन या अनुरक्त होना।

लटा†-वि० [सं० लट्ट] [स्त्री० लटी] १. लंपट। लुच्चा। २. तुच्छ। हीन।

लटापोट*-वि० दे० 'लहालोट'।

लटी-स्त्री० [हिं० लटा = बुरा] १. झूठी या झूठ बात। २. साधुनी या भक्तिन। ३. वेश्या। रंडी।
लटूरी-स्त्री० दे० 'लट' (बालों की)।
लट्टू-पुं० [सं० लुंठन=लुढ़कना] १. एक प्रकार का गोल खिलौना जो जमीन पर फेंककर नचाया जाता है।
मुहा०-(किसी पर) लट्टू होना= मोहित या लुब्ध होना।
२. शीशे का वह गोला जिसमें बिजली का प्रकाश होता है। (बल्ब)
लट्ठ-पुं० [सं० यष्टि] बड़ी लाठी।
लट्ठबाज-वि० [हिं०लट्ठ+फा०बाज] लाठी चलाने या उससे लड़नेवाला। लठैत।
लट्ठ-मार-वि० [हिं० लट्ठ+मारना] १. लट्ठबाज। २. अप्रिय और कठोर (बात)।
लट्ठा-पुं० [हिं० लट्ठ] १. लकड़ी का बड़ा बल्ला। शहतीर। २.एक प्रकार का कपड़ा।
लठिया-स्त्री० दे० 'लाठी'।
लठैत-पुं० दे० 'लट्ठबाज'।
लड़-स्त्री० [सं० यष्टि] १. एक ही तरह की चीजों की श्रेणी या माला। २. रस्सी या डोर के कई तारों में का एक तार।
लड़कपन-पुं० [हिं० लड़का+पन] १. बाल्यावस्था। २. ना-समझी।
लड़का-पुं० [हिं० लाड़=दुलार] [स्त्री० लड़की] १. छोटी अवस्था का मनुष्य। बालक। २. पुत्र। बेटा।
पद-लड़कों का खेल = १. साधारण या सहज बात या काम।
यौ०-लड़का-बाला=सन्तान।
लड़काई*-स्त्री० दे० 'लड़कपन'।
लड़कौरी-वि० स्त्री० [हिं० लड़का] बच्चेवाली (स्त्री)।
लड़खड़ाना-अ० [अनु०] अच्छी तरह चल या खड़े न रह सकने के कारण इधर-उधर झुकना या गिरना। डगमगाना।
लड़ना-अ० [सं० रणन] १. एक दूसरे को चोट या हानि पहुँचाना। भिड़ना। २. झगड़ा या तकरार करना। ३. बहस करना। ४. टकराना। ५. सफलता प्राप्त करने के लिए विरुद्ध प्रयत्न करना। ६. जहरीले जानवर का काटना।
लड़-बावला-वि० [हिं० लड़का+बावला] [स्त्री०लड़-बावली] १.अल्हड़। २.मूर्ख। ना-समझ। ३. गँवार। अनाड़ी।
लड़ाई-स्त्री० [हिं०लड़ना+आई (प्रत्य०)] १. वह क्रिया जिसमें दो दल या पक्ष एक दूसरे को मार गिराने या हानि पहुँचाने के लिए वार करते हैं। २. संग्राम। युद्ध। ३. झगड़ा। तकरार। हुज्जत। ४. वाद-विवाद। बहस। ५. किसी के विरुद्ध सफल होने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ६. अनबन। विरोध। वैर।
लड़ाका-वि० [हिं० लड़ना + आका (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ाकी] १. योद्धा। २. लड़ाई-झगड़ा करनेवाला। झगड़ालू।
लड़ाना-स० हिं० 'लड़ना' का प्रे०। स० [हिं० लाड़=प्यार] लाड़-प्यार या दुलार करना।
लड़ी-स्त्री० दे० 'लड़'।
लड़ीला*-वि० दे० 'लाडला'।
लड़ैता-वि० [हिं० लाड़=प्यार+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० लड़ैती] १. लाडला। दुलारा। २.जो लाड़-प्यार के कारण बहुत बिगड़ गया हो। धृष्ठ। शोख। ३. प्रिय।
वि० [हिं० लड़ना] लड़नेवाला। योद्धा।
लड्डू-पुं० [सं०लड्डुक] एक प्रसिद्ध गोल मिठाई। मोदक।
मुहा०-ठग के लड्डू खाना=धोखे में

खाकर ना-समझी करना। मन के लड्डू खाना=किसी बड़े सुख या लाभ की व्यर्थ या निराधार कल्पना या आशा करना।

लड्यानाक्ष†-स० [हिं० लाड़=प्यार] लाड़-प्यार करना। दुलार करना।

लढ़ा-पुं० दे० 'लढ़िया'।

लढ़िया†-स्त्री० [हिं० लुढ़कना] बैल-गाड़ी।

लत-स्त्री० [सं० रति] बुरी आदत।

लत-खोर-वि० [हिं० लात+फा० खोर=खानेवाला] [स्त्री० लत-खोरिन] १. प्रायः लात खाने या दुर्दशा भोगनेवाला। २ कमीना। नीच।

लतखोरा-पुं० [हिं० लतखोर] पैर पोंछने का बिछावन। पायंदाज।

लत-मर्दन-स्त्री० [हिं० लात+सं० मर्दन] पैरों से रौंदने की क्रिया या भाव।

लतर-स्त्री० [सं० लता] लता। बेल।

लता-स्त्री० [सं०] जमीन पर फैलने या किसी आधार पर चढ़नेवाला कोमल पतला पौधा। बल्ली। बेल।

लतागृह-पुं० [सं०] लताओं से घिरा और घर के रूप में बना हुआ स्थान।

लताड़-स्त्री० [हिं० लताड़ना] १. लताड़ने की क्रिया या भाव। २. दे० 'लथाड़'।

लताड़ना-स० [हिं० लात] [भाव० लताड़] १. पैरों से कुचलना। रौंदना। २. खड़े होकर पैरों के भार से किसी के अंग दबाना। ३. तंग करना।

लता-पता-पुं० [सं० लतापत्र] १. पेड़-पत्ते। २. जड़ी-बूटी। ३. रद्दी चीजें।

लता-मंडप-पुं० [सं०] लतागृह।

लतिका-स्त्री० [सं०] छोटी लता।

लतियर(यल)-वि० दे० लत-खोर'।

लतियाना-स० [हिं० लात + आना (प्रत्य०)] १. पैरों से दबाना। २. पैरों से आघात करना। लातें मारना।

लतीफा-पुं० दे० 'चुटकुला'।

लत्ता-पुं० [सं० लक्तक] फटा-पुराना कपड़ा या उसका टुकड़ा। चीथड़ा।

लत्ती-स्त्री० [हिं० लात] पशुओं के लात मारने की क्रिया।

लथ-पथ-वि० [अनु०] १. भींगा हुआ। तर। २. (कीचड़ आदि से) सना हुआ।

लथाड़-स्त्री० [अनु० लथपथ] १. जमीन पर घसीटने की क्रिया। २. झिड़की।

लथेड़ना-स० [अनु० लथपथ] १. धूल-मिट्टी लगाकर मैला या गंदा करना। २. जमीन पर पटककर घसीटना। ३. तंग करना। ४. डाँटना। डपटना।

लदना-अ० हिं० 'लादना' का अ०।

लदवाना-स० हिं० 'लादना' का प्रे०।

लदाव-पुं० [हिं० लादना] १. लादने की क्रिया या भाव। २. भार। बोझ। ३. छत का एक प्रकार का पटाव जिसमें बिना धरन के ईंटों की जोड़ाई होती है।

लद्दू-वि० [हिं० लादना] जिसपर बोझ लादा जाय। (पशु) जैसे-लद्दू घोड़ा।

लद्धड़-वि० [हिं० लादना] मोटा और फलतः सुस्त या आलसी।

लद्धनाक्ष-स० [सं० लब्ध] प्राप्त करना।

लप-स्त्री० [अनु०] लपलपाने की क्रिया या भाव।

पुं० [देश०] अँजली।

लपकना-अ० [अनु०] [भाव० लपक] झपटकर या तेजी से आगे बढ़ना।

लपट-स्त्री० [हिं० लौ+पट] १. आग की लौ। २. गरम हवा का झोंका। ३. गंध से युक्त हवा का झोंका।

लपटना†-अ० दे० 'लिपटना'।

लपटा-पुं० [हिं० लपटना] १ गाढ़ी

गीली वस्तु या पिंड। २. लपसी। ३. कढ़ी। ४. थोड़ा-बहुत संबंध या लगाव।

लपटाना†-स० १. दे० 'लिपटाना'। २. दे० 'लपेटना'।

*अ० दे० 'लिपटना'।

लपना-अ० [अनु० लप लप] १. इधर-उधर या ऊपर-नीचे लचना या झुकना। २. लपकना। ३. हैरान होना।

लपलपाना-अ०[अनु० लप लप][भाव० लपलपाहट] १. लपना। २. छुरी, तलवार आदि का चमकना।

स० १. छुरा, तलवार आदि हिलाकर चमकाना। २. दे० 'लपाना'।

लपसी-स्त्री० [सं० लप्सिका] १. एक प्रकार का पतला हलुआ। २. गीले गाढ़े पिंडों का समूह।

लपाना-स० हिं० 'लपना' का स०।

लपेट-स्त्री० [हिं० लपटना] १. लपेटने की क्रिया या भाव। २. लपेटकर डाला हुआ घुमाव या फेरा। ऐंठन। बल। ३. घेरा। परिधि। ४. उलझन।

लपेटना-स० [हिं० लिपटना] १. घुमाते हुए चारो ओर लगाना। २. सूत आदि लच्छे के रूप में करना। ३ किसी चीज से आवृत करना। ४. उलझन या झंझट में किसी के साथ सम्मिलित करना।

लफंगा-वि० [फा० लफंग] १. लंपट। दुश्चरित्र। २. लुच्चा। बदमाश।

लफना*-अ० दे० 'लपना'।

लफ्ज-पुं० [अ०] शब्द।

लबड़-घोंघों-स्त्री० [हिं० लबाड़+घों घों (अनु०)] १. अंधेर। कुव्यवस्था। २. बेईमानी और जबरदस्ती की चाल।

लबड़ना*-अ० [सं० लप=बकना] १. झूठ बोलना। २. गप हाँकना।

लबादा-पुं० [फा०] चोगा। (पहनावा)

लबार†-वि० [सं० लपन] [भाव० लबारी] १. झूठा। २. गप्पी।

लबालब-वि० [फा०] ऊपर या किनारे तक भरा हुआ। छलकता हुआ।

लबेद-पुं० [सं० वेद का अनु०] लोकाचार की भद्दी या भोंडी बात या प्रथा।

लब्ध-वि० [सं०] मिला हुआ। प्राप्त। पुं० भाग करने पर निकलनेवाला फल। (गणित)

लब्ध-प्रतिष्ठ-वि० [सं०] प्रतिष्ठित।

लब्धि-स्त्री० [सं०] प्राप्ति। लाभ।

लभ्य-वि० [सं०] १. जो मिल सके। २. उचित। मुनासिब।

लभ्यांश-पुं० [सं०] व्यापार या क्रय-विक्रय आदि में होनेवाला आर्थिक लाभ। मुनाफा। (प्रॉफिट)

लमकना†-अ० [हिं० लपकना] १.लपकना। २. उत्कंठित होना। ३. लटकना।

लम-छड़-वि० [हिं० लंबा] बहुत लंबा। पुं० भाला। बरछा।

लम-तड़ंग-वि० [हिं० लंबा+ताड़+अंग] [स्त्री० लम-तड़ंगी] बहुत लंबा या ऊँचा।

लमधी†-पुं० [हिं० समधी का अनु०] समधी का दूसरा समधी।

लमाना*†-स० [हिं० लंबा] लंबा करना। अ० १ लंबा होना। २.दूर निकल जाना।

लय-पुं० [सं०] १. एक का दूसरे में समाना। विलीन होना। २.ध्यान में लीन होना। ३. अन्त में सारी सृष्टि या जगत् का होनेवाला विनाश। प्रलय। ४.विनाश। स्त्री० १. गीत गाने का विशेष और सुन्दर ढंग। धुन। २. संगीत में स्वर और ताल का ठीक रूप में निर्वाह।

लरकई*-स्त्री० = लड़कपन।

लरखरनि*-स्त्री॰ [हिं॰ लड़खड़ाना] लड़खड़ाने की क्रिया या भाव ।

लरजना-अ॰[फा॰लरजा=कंप]१.काँपना। २. हिलना । ३. डर जाना । दहलना ।

लर-झर*-वि॰ [हिं॰ लड़ + झड़ना] बहुत अधिक । प्रचुर ।

लरनि*-स्त्री॰ = लड़ाई ।

लरिक-सलोरी†-स्त्री॰=खेलवाड़ ।

लरिका*†-पुं॰=लड़का ।

लरी*-स्त्री॰=लड़ी ।

ललकना-अ॰ [सं॰ ललन] [भाव॰ ललक] १.बहुत अधिक लालसा करना । ललचना । २. प्रेम या चाह से भरना ।

ललकार-स्त्री॰[हिं॰ले ले से अनु॰+कार] ललकारने की क्रिया या भाव ।

ललकारना-स॰ [हिं॰ ललकार] [भाव॰ ललकार] अपने साथ लड़ने या किसी पर आक्रमण करने के लिए चिल्लाकर बुलाना या कहना । प्रचारना ।

ललकित*-वि॰ [हिं॰ललक] गहरी चाह से भरा हुआ ।

ललचना-अ॰ [हिं॰ लालच] १. लालच करना । २. लालसा से अधीर होना ।

ललचाना-स॰ [हिं॰ ललचना] १. ऐसा काम करना कि किसी के मन में लालच उत्पन्न हो । २. किसी को कुछ दिखाकर उसके पाने के लिए अधीर करना । *अ॰ दे॰ 'ललचना' ।

ललचौहाँ-वि॰ [हिं॰ लालच] [स्त्री॰ ललचौहीं] लालच से भरा हुआ ।

ललन-पुं॰ [सं॰] १. प्यारा बच्चा । २. नायक या पति । ३. क्रीड़ा ।

ललना-स्त्री॰ [सं॰] सुन्दर स्त्री । *पुं॰ दे॰ 'ललन' ।

लला-पुं॰ [हिं॰ लाल] [स्त्री॰ लली] १. प्यारा और दुलारा लड़का । २. नायक या पति ।

ललाई-स्त्री॰=लाली । (रंगत)

ललाट-पुं॰ [सं॰] मस्तक । माथा ।

ललाना*-अ॰=ललचना ।

ललाम-वि॰ [सं॰] [भाव॰ ललामता] १. रमणीय । सुंदर । २. लाल । सुर्ख । ३. श्रेष्ठ । उत्तम ।
पुं॰ १. अलंकार । गहना । २. रत्न ।

ललामी-स्त्री॰ [सं॰ ललाम] १. सुन्दरता । २. लाली । सुर्खी ।

ललित-वि॰ [सं॰] [भाव॰ लालित्य] १. सुन्दर । मनोहर । २. प्रिय । प्यारा । पुं॰ शृंगार रस में सुकुमारता से अंग हिलाना । मनोहर अंग-भंगी ।

ललित कला-स्त्री॰ [सं॰ ललित+कला] वह कला जिसके अभिव्यंजन में सुकुमारता और सौन्दर्य की अपेक्षा हो । जैसे-संगीत, चित्रकला आदि । (फाइन-आर्ट्‌स)

ललिताई*-स्त्री॰=लालित्य ।

लली-स्त्री॰ [हिं॰ लला] १. 'लड़की' का वाचक प्यार का शब्द । २.नायिका । ३. प्रेमिका । प्रेयसी ।

ललौहाँ*-वि॰ [हिं॰ लाल] [स्त्री॰ ललौहीं] लाली लिये हुए ।

लल्ला-पुं॰ दे॰ 'लला' ।

लल्लो-स्त्री॰[सं॰ललना] जीभ । जबान ।

लल्लो-चप्पो(पत्ती)-स्त्री॰ [सं॰ लल+ अनु॰ चप] चिकनी-चुपड़ी और खुशामद की बातें ।

लवंग-पुं॰ [सं॰] लौंग । (मसाला)

लव-पुं॰ [सं॰] १. बहुत थोड़ी मात्रा । २.दो काष्ठा या छत्तीस निमेष का समय ।

लवण-पुं॰ [सं॰] नमक ।

लवना*-स॰ दे॰ 'लुनना' ।

लवनी-स्त्री० [सं० लवन] अनाज की पकी फसल काटने की क्रिया। लुनाई। *स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन।

लव-लासी*-स्त्री० [हिं० लव=प्रेम+लासी=लसी] १. प्रेम की लगावट। २. सम्बन्ध स्थापित करने की चाह।

लव-लीन-वि० [हिं० लव+लीन] तन्मय। तल्लीन। मग्न।

लव-लेश-पुं० [सं०] बहुत थोड़ा अंश या संसर्ग।

लवा-पुं० [सं० लव] तीतर की जाति का एक पक्षी। *पुं० दे० 'लावा'।

लवाई-स्त्री० [देश०] नई ब्याई गौ। स्त्री० दे० 'लवनी'

लवाजमा-पुं० [अ० लवाज़िम] १. बड़े आदमियों के साथ रहनेवाले लोग और साज-सामान। २.आवश्यक सामग्री।

लवारा-पुं० [हिं० लवाई] गौ का बच्चा। †वि० दे० 'आवारा'।

लवासी*-वि० [सं० लव=बकना] १. बकवादी। २. लंपट। बद-चलन।

लशकर-पुं० [फा०] [वि० लशकरी] १. सेना। फौज। २. सेना की छावनी। ३. जहाज पर काम करनेवाले आदमी।

लस-पुं० [सं०] १. वह गुण या तत्व जिससे कोई चीज किसी से चिपकती है। लासा। २. दे० 'लसी'।

लसना-स० [सं० लसन] चिपकाना। अ० १. चिपकना। २. शोभित होना।

लसनि*-स्त्री० [हिं० लसना] १. अवस्थिति। विद्यमानता। २. शोभा। छटा।

लसलसाना-अ० [हिं० लस] चिपचिपा होना। लस से युक्त होना।

लसित-वि० [सं०] सजता या सुन्दर जान पड़ता हुआ। सुशोभित।

लसी-स्त्री० [सं० लस] १. लस। २. मन लगने की बात। आकर्षण। ३. प्राप्ति या लाभ का योग। ४. संबंध। लगाव। ५. दे० 'लस्सी'।

लसीका-स्त्री० [सं०] १. थूक। २. मवाद। पीब। ३. शरीर के अंगों में से निकलनेवाला रक्त की तरह का एक तरल पदार्थ जिसका उपयोग चिकित्सा-संबंधी कार्यों में होता है। (लिम्फ)

लसीला-वि० [हिं० लस] [स्त्री० लसीली] १. जिसमें लस हो। लसदार। २ सुंदर। मनोहर।

लस्टम-पस्टम†-क्रि० वि० [देश०] किसी तरह से। जैसे-तैसे।

लस्त-वि० [हिं० लटना] शिथिल। यौ०-लस्त-पस्त=बहुत शिथिल।

लस्सी-स्त्री० [हिं० लयस] १. छाछ। मठा। तक्र। २. एक आधुनिक पेय जो दही घोलकर बनाया जाता है। ३. दे० 'लसी'।

लहँगा-पुं० [हिं० लंक=कमर+अंगा] १. पश्चिमी भारत की स्त्रियों का एक घेरदार पहनावा। २. इस आकार का वह कपड़ा जो स्त्रियाँ महीन साड़ी के नीचे पहनती हैं। साया। अस्तर।

लहकना-अ० [अनु०] [भाव०लहक] १ लहराना। २ आग सुलगना। ३.लपकना।

लहकाना-स० हिं० 'लहकना' का स०।

लहनदार-पुं० [हिं० लहना+फा० दार (प्रत्य०)] जो किसी से अपना प्राप्य धन या दिया हुआ ऋण लेने का अधिकारी हो।

लहना-पुं० [सं० लभन] उधार दिया हुआ या बाकी रुपया जो मिलने को हो। *स० [सं० लभन] प्राप्त करना।

लहबर-पुं० [हिं० लहर ?] १. एक प्रकार का चोगा । २. ऊँचा लंबा झंडा ।

लहर-स्त्री० [सं० लहरी] १. नदी आदि में ऊपर उठनेवाली जल की राशि । हिलोर । तरंग । २. उमंग । जोश । ३. रोग या पीड़ा आदि का रह रहकर होनेवाला वेग । जैसे-साँप काटने की लहर । ४. आनंद की उमंग । मौज । यौ०-लहर-बहर=सब प्रकार की प्रसन्नता, सम्पन्नता और सुख । ५. टेढ़ी-तिरछी चाल या रेखा ।

लहर-पटोर-पुं० [हिं० लहर+पट] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा ।

लहरा-पुं० [हिं० लहर] १ लहर । तरंग । २. मौज । आनंद । ३. नाच या गाना आरम्भ होने से पहले सारंगी, तबले आदि साजों पर बजनेवाली गत ।

लहराना-अ० [हिं० लहर] [भाव० लहर, लहरान] १. हवा के झोंके से लहरों की तरह इधर-उधर हिलना-डोलना । लहरें खाना । २. हवा के झोंके से पानी का अपने तल से कुछ ऊपर उठना और गिरना । ३. इस प्रकार झोंका खाते हुए बढ़ना या हिलना । ४. मन का उमंग में होना । ५. आग भड़कना या सुलगना । ६ शोभित होना । स० १. हवा के झोंके में लहरों की तरह इधर-उधर हिलाना । २. टेढ़ी चाल से चलाना या ले जाना ।

लहरिया-पुं० [हिं० लहर] १. लहर की तरह टेढ़ी लकीरों की श्रेणी । २. एक प्रकार का धारीदार कपड़ा ।

लहरी-स्त्री० [सं०] लहर । तरंग । †वि० [हिं० लहर] मन-मौजी ।

लहलहाना-अ० [अनु०] १. हरी पत्तियों से युक्त या हरा-भरा होना । २.प्रफुल्लित या प्रसन्न होना ।

लहसुन-पुं० [सं० लशुन] एक पौधा जिसकी जड़ मसाले के काम में आती है ।

लहसुनिया-पुं० [हिं० लहसुन] एक प्रकार का रत्न ।

लहा*-पुं० दे० 'लाह' ।

लहा-छेह-पुं०नाचने में एक प्रकार की गति ।

लहाना*-स० [सं० लभन] १. लब्ध या प्राप्त कराना । मिलाना । २. ऐसे ढंग से बात करना कि काम बन जाय ।

लहालोट-वि० [हिं० लाह+लोटना] १. हँसी से लोटता हुआ । २. बहुत मोहित ।

लहास†-स्त्री० [हिं० लाश] मृत शरीर ।

लहुरा†-वि० [सं० लघु] [स्त्री० लहुरी] अवस्था, पद आदि के विचार से छोटा ।

लहू-पुं० [सं० लोह] रक्त । खून । यौ०-लहू-लुहान = खून से तर-बतर । (शरीर) पद-लहू का प्यासा=भारी शत्रु ।

लाँक†-स्त्री० [हिं० लंक] कमर ।

लाँग-स्त्री० [सं० लांगूल] धोती का वह भाग जो पीछे खोंसा जाता है । काछ ।

लाँघ*-स्त्री० [सं० लंघन] बाधा । रुकावट ।

लाँघना-स० [सं० लंघन] इस पार से उस पार जाना । ऊपर से डाँकना ।

लाँच-स्त्री० [देश०] रिशवत । घूस ।

लांछन-पुं० [सं०] १. चिह्न । निशान । २. दाग । धब्बा । ३. दोष । ऐब ।

लांछित-वि० [सं०] जिसे लांछन या कलंक लगा हो । कलंकित ।

लाँबा*-वि० = लंबा ।

लाइ*-पुं० [सं० अलात=लुक] अग्नि ।

लाइन-स्त्री० [अं०] १.पंक्ति । कतार । २. सतर । ३. रेखा । लकीर । ४. रेल की

सड़क। ४. छावनी आदि में घरों की वह पंक्ति जिसमें सिपाही रहते हैं। बैरिक।

लाई-स्त्री० [सं०लाजा] धान का लावा। स्त्री० [हिं० लगाना] चुगली।

यौ०-लाई-लुतरी=१.चुगली। २.चुगलखोर (स्त्री)।

लाकड़ी-स्त्री० = लकड़ी।

लाकट-पुं० [अं०] वह लटकन जो घड़ी की या और किसी प्रकार की पहनने की जंजीर में शोभा के लिए लगाया जाता है।

लाक्षणिक-वि० [सं०] १. लक्षण सम्बन्धी। २. जिससे लक्षण प्रकट हो। ३. लक्षण के रूप में होनेवाला (काम)।

लाक्षा-स्त्री० [सं] लाख। लाह।

लाक्षागृह-पुं [सं०] लाख का वह घर जो दुर्योधन ने पांडवों को जला डालने के लिए बनवाया था।

लाक्षिक-वि० [सं०] १. लाख का बना हुआ। २. लाख संबंधी।

लाख-वि० [सं० लक्ष] १. सौ हजार। २. बहुत अधिक।
क्रि० वि० बहुत। अधिक।
स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जो कुछ वृक्षों की टहनियों पर कुछ कीड़े बनाते हैं। लाह।

लाखना*†-स० दे० 'लखना'।

लाखा-मंदिर-पुं० दे० 'लाक्षागृह'।

ला-खिराज-वि० [अ०] (ज़मीन) जिसका खिराज या लगान न देना पड़े। माफ़ी।

लाखी-वि०[हिं० लाख+ई (प्रत्य०)] १. लाख के रंग का। २ लाख का बना हुआ। पुं० लाख के रंग का घोड़ा।

लाग-स्त्री० [हिं० लगना] १. संपर्क। संबंध। लगाव। २. प्रेम। प्रीति। ३. लगन। लौ। ४. वह स्वांग जिसमें कोई ऐन्द्र-जालिक कौशल हो। ५. वह नियत धन जो मंगल कार्यों के समय ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जाता है। ६. दे० 'लाग-डाँट'।
* क्रि० वि० [हिं० लौं] पर्य्यंत। तक।

लाग-डाँट-स्त्री० [हिं० लाग+डांट] १. शत्रुता। वैर। दुश्मनी। २. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी।

लागत-स्त्री० [हिं० लगना] किसी चीज की तैयारी या बनाने में होने या लगनेवाला व्यय। (कॉस्ट)

लागना*-अ०=लगना।

लागि*-अव्य० [हिं०लगना] १. कारण। हेतु। २.वास्ते। लिए। ३.द्वारा। से।
क्रि० वि० [हिं० लौं] तक। पर्यंत।

लागू-वि० [हिं० लगना] १. जो कहीं लग सके या प्रयुक्त हो सके। लगाये जाने के योग्य। २. जो लगाया गया हो या लगाया जा सके। (एप्लिकेबुल)

लाघव-पुं० [सं०] १. 'लघु' का भाव। लघुता। छोटापन। २. कमी। न्यूनता। ३. कोई काम करने में हाथ की सफ़ाई। हस्त-कौशल। ४. फुरती। तेजी।

लाघवी*-स्त्री० [सं० लाघव] शीघ्रता।

लाचार-वि० [फा०] [भाव० लाचारी] १. जिसका कुछ वश न चले। विवश। मजबूर। २. जो शारीरिक असमर्थता के कारण कुछ कर न सकता हो। असमर्थ।
क्रि० वि० विवश होकर। मजबूरी से।

लाज-स्त्री०=लज्जा।

लाजना*†-अ० दे० 'लजाना'।

ला-जवाब-वि०[फा०]अनुपम। बे-जोड़।

लाजिम(ी)-वि० [अ०] १. आवश्यक। २. अनिवार्य। ३. उचित। मुनासिब।

लाट-स्त्री० [हिं० लट्ठा ?] १. मोटा,

ऊँचा और बहुत बड़ा खंभा। २. इस आकार की कोई इमारत या बनावट।
पुं०[अं० लॉर्ड] १. एक अँगरेजी उपाधि। २. प्रान्त का प्रधान शासक। गवर्नर।

लाटरी-स्त्री० [अं० लॉटरी] वह योजना जिसमें लोगों को गोटी या गोली उठाकर, उनके भाग्य के अनुसार, धन बाँटा या कोई बहुमूल्य चीज दी जाती है।

लाटानुप्रास-पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति होने पर भी अन्वय करने पर अर्थ बदल जाता है।

लाठ-स्त्री० दे० 'लाट'।

लाठी-स्त्री० [सं० यष्टि] बड़ा डंडा।
मुहा०-लाठी चलना=लाठियों से मार-पीट होना।

लाठी-चार्ज-पुं० [हिं० लाठी + अं० चार्ज] भीड़ आदि हटाने के लिए पुलिस आदि का लोगों पर लाठियाँ चलाना।

लाड़(ड़)-पुं०[सं० लालन] बच्चों के साथ किया जानेवाला प्रेमपूर्ण व्यवहार। दुलार।

लाड़-लड़ैता-वि० दे० 'लाडला'।

लाडला-वि० [हिं०लाड़] [स्त्री० लाडली] जिससे लाड़ किया जाय। दुलारा।

लाडू-पुं० दे० 'लड्डू'।

लात-स्त्री० [?] १ पैर। पाँव। २. पैर से किया जानेवाला आघात।
मुहा०-लात खाना=पैरों का आघात सहना। लात मारना=तुच्छ समझकर दूर हटाना या छोड़ देना।

लाद-स्त्री० [हिं०लादना] १. लादने की क्रिया या भाव। लदाई। २.पेट। ३.आँत।

लादना-स० [सं० लब्ध] १. किसी के ऊपर बहुत-सी चीजें रखना। २. ढोने या ले जाने के लिए वस्तुएँ ऊपर रखना या भरना। ३.देन आदि का भार रखना।

लादिया-पुं० [हिं० लादना] वह जो एक स्थान से माल लादकर दूसरे स्थान पर ले जाता या पहुँचाता हो।

लादी-स्त्री० [हिं० लादना] पशु पर लादी हुई गठरी या बोझ।

लाधना*-स० [सं० लब्ध] पाना।

लानत-स्त्री० [अ० लअनत] धिक्कार।

लाना-स० [हिं० लेना+आना] १. कहीं से कुछ लेकर आना। २. उपस्थित करना। सामने रखना।
*स० [हिं० लाय=आग] आग लगाना।
*स० दे० 'लगाना'।

लाने*-अव्य०[हिं० लाना] वास्ते। लिए।

ला-पता-वि० [अ० ला=बिना+हिं० पता] जिसका पता न लगे या न हो।

ला-परवाह-वि० [अ० ला + फा० परवाह] [भाव० ला-परवाही] १. जिसे किसी बात की परवा या चिन्ता न हो। बे-फिक्र। २. असावधान।

लाबी-स्त्री०[अं०लॉबी] विधायिका सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा जिसमें उसके सदस्य बैठकर आपस में बात-चीत करते और बाहरी लोगों से मिलते-जुलते हैं।

लाभ-पुं० [सं०] १ हाथ में आना। मिलना। प्राप्ति। २. व्यापार आदि में होनेवाला मुनाफा। नफा। (प्रॉफिट) ३. उपकार। भलाई।

लाभकारी (दायक)-वि० [सं०] फायदा करनेवाला। गुणकारक।

लाभांश-पुं०[सं०] किसी व्यापार से होनेवाले आर्थिक लाभ का वह अंश जो उस व्यापार में रुपये लगानेवाले सब हिस्सेदारों को उनके हिस्से के अनुसार मिलता है। (डिविडेन्ड)

लाभालाभ-पुं० [सं०] लाभ और

अलाभ या हानि। (प्रॉफिट एँड लॉस)

लाम-पुं० [फा० लाम] १. सेना। फौज। २ बहुत-से लोगों का साथ मिलकर चलना या जाना। ३. भीड़। समूह।

लामन*-पुं० [देश०] लहँगा।

लामा-पुं० [तिब्बती] तिब्बत के बौद्धों का धर्म्माचार्य।

लाय*-स्त्री० [सं० अलात] १. आग। अग्नि। २. आग की लपट। ज्वाला। लौ।

लायक-वि० [अ०] [भाव० लायकी] १. उचित। ठीक। वाजिब। २. उपयुक्त। मुनासिब। ३. सुयोग्य। गुणवान्। ४. समर्थ। सामर्थ्यवान्।

लायची-स्त्री० दे० 'इलायची'।

लार-स्त्री० [सं० लाला] १ मुँह से निकलनेवाली पतली लसदार थूक।

मुहा०-लार टपकना=कोई चीज लेने या पाने की परम लालसा होना।

२. पंक्ति। श्रेणी। ३. लासा। लुआब। *क्रि० वि० [मारवाड़ी लैर=पीछे] १. साथ। २. पीछे।

लारी-स्त्री० [अं० लॉरी] वह लंबी मोटर-गाड़ी जिसपर बहुत-से आदमियों के बैठने और माल लादने की जगह होती है।

लाल-पुं० [सं० लालक] १. बेटा। पुत्र। २. प्यारा लड़का या आदमी।

[1]पुं० १. दे० 'लाड'। २. दे० 'लार'।

पुं० [अ० लअल] मानिक। (रत्न)

वि० १. रक्त वर्ण का। २. बहुत क्रुद्ध।

मुहा०-लाल-पीला होना=क्रोध करना।

३. खेल में पहले जीतनेवाला (खेलाड़ी)।

मुहा०-लाल होना=बहुत अधिक धन पाकर सम्पन्न होना।

पुं० एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

*स्त्री० [सं० लालसा] इच्छा। चाह।

लाल चंदन-पुं० वह चंदन जिसे घिसने से लाल रंग का सार निकलता है। रक्त-चंदन। देखो चंदन।

लालच-पुं० [सं० लालसा] [वि० लालची] कुछ पाने की बहुत अधिक और अनुचित इच्छा। लोभ।

लालची-वि० [हिं० लालच] जिसे बहुत अधिक लालच हो। लोभी।

लालटेन-स्त्री० [अं० लैन्टर्न] प्रकाश का वह आधार जिसमें तेल और बत्ती रहती है; और जिसके चारो ओर गोल शीशा लगा रहता है। कंदील।

लालन-पुं० [सं०] [वि० लालनीय] प्रेमपूर्वक बालकों को प्रसन्न करना। लाड़।

*पुं० [हिं० लाला] प्यारा बच्चा।

लालना*-स० [सं० लालन] दुलार या लाड़ करना।

लाल-बुझक्कड़-पुं० [हिं० लाल+बूझना] बातों का अटकल-पच्चू और मूर्खतापूर्ण मतलब लगाने या अनुमान करनेवाला।

लाल मिर्च-स्त्री० दे० 'मिर्च'।

लालस-वि० [सं०] ललचाया हुआ। लोलुप।

लालसा-स्त्री० [सं०] कुछ पाने की बहुत अधिक इच्छा या चाह। लिप्सा।

लालसिखी[1]-पुं० दे० 'मुरगा'।

लालसी*-वि० [सं० लालसा] लालसा या इच्छा करनेवाला।

लाला-पुं० [सं० लालक] १. एक प्रकार का आदर-सूचक संबोधन। महाशय। २. कायस्थ जाति का वाचक शब्द। ३. बच्चों के लिए संबोधन।

स्त्री० [सं०] लार। थूक।

लालायित-वि० [सं०] [स्त्री० लालायिता] जिसे बहुत लालसा हो। लोलुप।

लालित-वि० [सं०] [स्त्री० लालिता] १. जिसका लालन हो। दुलारा। प्यारा। २. पाला-पोसा हुआ।

लालित्य-पुं० [सं०] 'ललित' का भाव। सरसतापूर्ण सुंदरता।

लालिमा-स्त्री० [हिं० लाल] 'लाल' होने का भाव। लाली।

लाली-स्त्री० [हिं० लाल+ई (प्रत्य०)] १. लाल होने का भाव। ललपन। २. प्रतिष्ठा। इज्जत।

लाले-पुं० बहु० [सं० लालसा] अभिलाषा। मुहा०-किसी चीज के लाले पड़ना= अप्राप्य वस्तु के अभाव में उसके लिए बहुत तरसना।

लाव*-स्त्री० [हिं० लाय] आग।

लावण्य-पुं० [सं०] १.'लवण' का भाव या धर्म। नमकीनी। २. सरस सुंदरता।

लावना*-स० = लाना। स० [हिं० लगाना] १. स्पर्श कराना। लगाना। २. जलाना।

लावनि*-स्त्री० दे० 'लावण्य'।

लावनी-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छंद जो प्रायः चंग पर गाया जाता है।

ला-वबाली-स्त्री० [अ०] १ अविचार। २. ला-परवाही। उपेक्षा। वि० १. आवारा। २. ला-परवाह।

लाव-लश्कर-पुं० [फा०] सेना और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।

लावा-पुं० [सं०] लवा (पक्षी)। पुं० [सं० लाजा] भूने हुए धान, ज्वार, रामदाने आदि के दाने जो फूल जाते हैं। खील। लाई।

ला-वारिसी-वि० [अ०] १. जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो। २. (वस्तु) जिसका कोई मालिक न हो।

लाश-स्त्री० [फा०] मृत शरीर। लोथ। शव।

लास-पुं० दे० 'लास्य'।

लासा-पुं० [हिं० लस] १. कोई लसदार चीज। २. वह लसदार पदार्थ जो बहेलिये चिड़ियाँ फँसाने के लिए उनके परों में लगाने के उद्देश्य से बनाते हैं। ३. किसी को जाल में फँसाने का साधन।

लास्य-पुं० [सं०] १. नृत्य। नाच। २. श्रृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन करनेवाला कोमल और स्त्रियों का सा नृत्य।

लाह*-स्त्री० [सं० लाक्षा] लाख। चपड़ा। पुं० [सं० लाभ] लाभ। नफा। स्त्री० [?] चमक। दीप्ति।

लिंग-पुं० [सं०] १. चिह्न। लक्षण। निशान। २. पुरुष की गुप्त इंद्रिय। शिश्न। ३. शिव की इस आकार की मूर्ति। ४. व्याकरण में वह तत्व जिससे पुरुष और स्त्री के भेद का पता लगता है। जैसे-पुंलिंग, स्त्रीलिंग।

लिंगेंद्रिय-पुं० [सं०] पुरुषों की मूत्रेंद्रिय।

लिए-संप्रदान कारक का एक चिह्न जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित करता है। जैसे-उसके लिए पानी लाओ।

लिक्खाड़-पुं० [हिं० लिखना] बहुत बड़ा लेखक। (व्यंग्य)

लिखत-स्त्री० [सं० लिखित] १. लिखी हुई बात। लेख। २. दस्तावेज। विशेष दे० 'करण' ३.।

लिखधार(वार)*-पुं० दे० 'लेखक'।

लिखना-स० [सं० लिखन] १. कलम और स्याही से अक्षरों की आकृति बनाना। लिपि-बद्ध करना। २ चित्रित या अंकित करना। चित्र बनाना। ३. ग्रन्थ, लेख, काव्य आदि की रचना करना।

लिखनी*-स्त्री० दे० 'लेखनी'।

लिखाई-स्त्री० [हिं० लिखना] १. लिखने का कार्य, भाव, ढंग या पारिश्रमिक। २. चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव।

लिखाना-स० हिं० 'लिखना' का प्रे०।

लिखा-पढ़ी-स्त्री० [हिं० लिखना+पढ़ना] १. लिखने और पढ़ने का काम। २. पत्रों का आना और उनके उत्तर जाना। पत्र-व्यवहार। ३. किसी बात या व्यवहार का लिखकर निश्चित और पक्का होना।

लिखावट-स्त्री० [हिं० लिखना+आवट (प्रत्य०)] १. लिखने की क्रिया, भाव या ढंग। २. लेख-शैली।

लिखित-वि० [सं०] १. लिखा-हुआ। अंकित। २ जो लेख या लेख्य के रूप में हो। (डॉक्यूमेन्टरी)

लिपटना-अ० [सं० लिप्त] १. चारो ओर से घेरते हुए सटना या लगना। २. गले लगना। आलिंगन करना। ३. काम में पूरी मेहनत से लगना।

लिपटाना-स० हिं० 'लिपटना' का स०।

लिपना-अ० हिं० 'लीपना' का अ०।

लिपाई-स्त्री० [हिं० लीपना] लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपाना-स० हिं० 'लीपना' का प्रे०।

लिपि-स्त्री० [सं०] १. अक्षरों या वर्णों के चिह्न। २. वर्ण-माला के अक्षर लिखने की कोई विशिष्ट प्रणाली। जैसे-ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि। (कैरेक्टर) ३. लिखी हुई बात। लेख।

लिपिक-पुं० [सं० लिपि] १ लिखनेवाला। २. कार्यालयों में लिखा-पढ़ी का काम करनेवाला। लेखक। (क्लर्क)

लिपिकार-वि० [सं०] प्रतिलिपि या लेख की नकल करनेवाला लेखक।

लिपि-बद्ध-वि० [सं०] लिपि के रूप में लाया हुआ। लिखा हुआ। लिखित।

लिप्त-वि० [सं०] १. लिपा या पुता हुआ। २. कार्य में लगा हुआ। लीन।

लिप्सा-स्त्री० [सं०] पाने की इच्छा।

लिफाफा-पुं० [अ०] कागज का वह चौकोर घर या पुट जिसके अन्दर चिट्ठियाँ आदि रखी जाती हैं। २. दिखावटी तड़क-भड़क। आडंबर।

लिबड़ना-अ०, स० [अनु०] कीचड़ आदि में लथ-पथ होना या करना।

लिबड़ी-बरताना-पुं० [अं० लिबरी=वर्दी+अं० बैटन=सिपाहियों का डंडा] साधारण या तुच्छ गृहस्थी अथवा निर्वाह का सब सामान। सारी सामग्री या असबाब। (तुच्छतासूचक)

लिबास-पुं० [अ०] पहनने के कपड़े। परिच्छद। पोशाक।

लियाकत-स्त्री० [अ०] योग्यता।

लिलाट (र)*-पुं० दे० 'ललाट'।

लिव*-स्त्री० [हिं० लौ] लगन।

लिवाल-पुं० दे० 'लेवाल'।

लिवैया†-वि० [हिं० लेना] लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला।

लिहाज-पुं० [अ०] १. व्यवहार या बरताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्ण ध्यान। मुलाहजा। २. शील-संकोच। ३. सम्मान या मर्यादा का ध्यान। ४. लज्जा। शर्म। हया।

लिहाफ-पुं० [अ०] ओढ़ने का एक प्रकार का रूईदार कपड़ा। भारी रजाई।

लिहित*-वि० [सं० लिह] चाटता हुआ।

लीक-स्त्री० [सं० लिख] १. लकीर। रेखा। मुहा०*-लीक खींचना=१. किसी बात का दृढ़ या निश्चित होना। २. मर्यादा

या लाक बँधना। लीक खींचकर= दृढ़तापूर्वक। जोर देकर।

२. प्रतिष्ठा। ३. बँधी हुई मर्य्यादा या क्रम। लोक-नियम। ४. प्रथा। चाल। ५. सीमा। हद। ६. कलंक। लांछन।

लीख-स्त्री० [सं० लिक्षा] १. जूँ का अंडा। २. लिक्षा नामक बहुत छोटा परिमाण।

लीग-स्त्री० [अं०] १. कुछ विशिष्ट वर्गों का किसी उद्देश्य से आपस में मिलना। २. बहुत बड़ी सभा या संस्था। ३. लंबाई की एक नाप जो स्थल के लिए तीन मील की और समुद्र के लिए साढ़े तीन मील की होती है।

लीगी-वि० [अं० लीग] लीग का। पुं० लीग का सदस्य।

लीचड़-वि० [देश०] १. सुस्त। आलसी। २. निकम्मा। ३. जल्दी पीछा न छोड़नेवाला।

लीद-स्त्री० [देश०] घोड़े, गधे, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीन-वि० [सं०] [भाव० लीनता] १. किसी में समाया हुआ। २. काम में पूरी तरह से लगा हुआ। तन्मय। मग्न।

लीपना-स० [सं० लेपन] गीली वस्तु का पतला लेप चढ़ाना। पोतना।

मुहा०-लीप-पोतकर बराबर करना= पूरी तरह से चौपट या नष्ट करना।

लीवर*-वि० [हिं० लिबड़ना] कीचड़ आदि से भरा या सना हुआ।

लीलना-स० दे० 'निगलना'।

लीलया-क्रि० वि० [सं०] १. खेल या खेलवाड़ में। २. बहुत सहज में।

लीला-स्त्री० [सं०] १. केवल मनोरंजन के लिए किया जानेवाला काम या व्यापार। क्रीड़ा। खेल। २. प्रेम का खेलवाड़। प्रेम-विनोद। ३. साहित्य में नायिका का एक हाव जिसमें वह प्रिय के भेस या बोल-चाल आदि की नकल करती है। ४. विचित्र काम। ५. अवतारों या देवताओं के चरित्र का अभिनय। पुं० [सं० नील] काला घोड़ा।

*† वि० दे० 'नीला'।

लुँगाड़ा-पुं०=लुच्चा।

लुंगी-स्त्री० [हिं० लँगोटा या लाँग] कमर में लपेटने का एक प्रकार का बड़ा अँगोछा। तहमत।

लुंचन-पुं० [सं०] चुटकी से बाल उखाड़ना। उत्पाटन।

लुंज(ा)-वि० [सं० लुंचन] १. बिना हाथ-पैर का। लँगड़ा-लूला। २. बिना पत्ते का। ठूँठ। (पेड़)

लुंठन-स० [सं०] [वि० लुंठित] १. लुढ़कना। २. लूटना।

लुंठित-वि० [सं०] १. जो जमीन पर गिरा या लुढ़का हुआ हो। २. जो लूटा-खसोटा गया हो।

लुंड-वि० दे० 'रुंड'।

लुंड-मुंड-वि० [सं० रुंड+मुंड] १. जिसके सिर, हाथ, पैर आदि अंग कट गये हों। २. लुढ़कता हुआ।

लुंडा-वि० [सं० रुंड] [स्त्री० लुंडी] पक्षी जिसकी दुम और पर झड़ गये हों।

लुआठा-पुं० [सं० लोक=काष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लुआठी] जलती हुई लकड़ी।

लुआब-पुं० [अ०] लासा।

लुआर-स्त्री० दे० 'लू'।

लुकंजन*-पुं० दे० 'लोपांजन'।

लुक-पुं० [सं० लोक=चमकना] १. चमकीला रोगन। वार्निश। २. आग की लपट। लौ। ज्वाला। ३. दे० 'लुकाबा'

१. और २.।

लुकना-अ० दे० 'छिपना'।

लुकाठ-पुं० [सं० लकुच] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल। लकुट। *पुं० दे० 'लुआठा'।

लुकार*-स्त्री० दे० 'लुक'।

लुगड़ा-पुं० दे० 'लूगा'।

लुगदी-स्त्री०[देश०] छोटा गीला पिंड।

लुगाई-स्त्री० [हिं० लोग] स्त्री। औरत।

लुग्गा‡-पुं० दे० 'लूगा'।

लुचकना*-स० = छीनना।

लुचुई†-स्त्री० [सं० रुचि] मैदे की बहुत पतली और बड़ी पूरी। लूची।

लुच्चा-वि० [हिं० लुचकना] [स्त्री० लुच्ची] नीच और पाजी। बदमाश।

लुच्ची-स्त्री० = लुचुई।

लुटत*-स्त्री० = लूट।

लुटना-अ० हिं० 'लूटना' का अ०। *अ० दे० 'लुठना'।

लुटरना-अ० = लुढ़कना।

लुटाना-स० [हिं० 'लूटना' का प्रे०] १. कोई चीज इस प्रकार लोगों के सामने रखना कि वे उसे लूटें। दूसरों को लूटने देना। २ बहुत सस्ते दाम पर बेचना। ३.व्यर्थ बहुत अधिक व्यय करना। अंधा-धुंध खरचना, बाँटना या दान करना।

लुटिया-स्त्री० [हिं० लोटा] छोटा लोटा।

लुटेरा-पुं० [हिं० लूटना] लूटनेवाला।

लुठना*-अ० [सं० लुंठन] १. भूमि पर गिरकर लोटना। २. लुढ़कना।

लुठाना*-स० हिं० 'लुठना' का स०।

लुढ़कना-अ० [सं० लुंठन] नीचे-ऊपर चक्कर खाते हुए आगे या नीचे की ओर जाना। ढुलकना।

लुढ़काना-स० हिं० 'लुढ़कना' का स०।

लुढ़की-स्त्री० [हिं० लुढ़कना] गाढ़े दही में छानी हुई भाँग या भंग।

लुढ़ना*-अ० दे० 'लुढ़कना'।

लुतरा-वि० [देश०] [स्त्री० लुतरी] १. चुगलखोर। २. पाजी। दुष्ट।

लुत्थ*-स्त्री० दे० 'लोथ'।

लुनना-स० [सं० लवन] १. खेत से पकी फसल काटना। २. नष्ट करना।

लुनाई*-स्त्री० १. दे० 'लावण्य'। २. दे० 'लवनी'।

लुनेरा-पुं० [हिं० लुनना] खेत की फसल काटने या लुननेवाला।

लुपना*-अ० = छिपना।

लुप्त-वि० [सं०] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. अदृश्य। गायब।

लुप्तोपमा-स्त्री० [सं०] वह उपमा अलंकार जिसमें उसका कोई अंग न हो या लुप्त हो।

लुबुधना†-अ०, स०=लुभाना।

लुबुधा*-वि०१.दे०'लोभी'।२.दे०'लुब्ध'।

लुब्ध-वि० [सं०] पूरी तरह से लुभाया हुआ। मोहित।

लुभाना-अ० [सं० लुब्ध] मोहित होना। रीझना।

स० १. लुब्ध या मोहित करना। रिझाना। २. किसी के मन में कुछ पाने की गहरी चाह उत्पन्न करना। ललचाना।

लुरकना†-अ० = लटकना।

लुरकी-स्त्री० दे० 'बाली'। (गहना)

लुरना*-अ० [सं० लुलन] १. झूलना। २. लटकना। ३. ढल या झुक पड़ना। ४. अचानक आ पहुँचना।

लुरी-स्त्री० दे० 'लवाई'।

लुहना*-अ० = लुभाना।

लुहार-पुं० = लोहार।

लूँबरी†-स्त्री० = लोमड़ी।

लू-स्त्री० [सं० लुक या हिं० लौ] गरम और तेज हवा। (ग्रीष्म ऋतु की)
मुहा०-लू लगना=लू लगने से ज्वर आदि होना।

लूक-स्त्री० [सं० लुक] १ आग की लपट। २. जलती हुई लकड़ी। ३. टूटा हुआ तारा। उल्का। ४. दे० 'लू'।

लूकट*-पुं० दे० 'लुआठा'।

लूकना*-स० [हिं० लूक] जलाना। *अ० दे० 'लुकना'।

लूका-पु० दे० 'लूक'।

लूखा*-वि०=रूखा।

लूगा†-पुं० [देश०] कपड़ा। वस्त्र।

लूट-स्त्री० [हिं० लूटना] १. लूटने की क्रिया या भाव।
यौ०-लूट-मार, लूट-पाट = लोगों को मार-पीटकर उनका धन छीन या लूट लेना।
२. लूटने से मिला हुआ माल।

लूटक-पुं० दे० 'लुटेरा'।

लूटना-स० [सं० लुट्=लूटना] १. किसी को मार या डरा-धमकाकर उसका धन ले लेना। २.अनुचित रूप से ले लेना। ३.बहुत दाम लेना। ठगना। ४. मोहित या मुग्ध करना।

लूता-स्त्री० [सं०] मकड़ी।
पुं० [हिं० लूका] लूका। लुआठा।

लूम-पुं० [सं०] पूँछ। दुम।

लूमना*-अ०=लटकना।

लूला-वि० [सं० लून=कटा हुआ] [स्त्री० लूली] १. जिसका हाथ कटा हो। लुञ्जा। टुंडा। २. असमर्थ। अशक्त।

लूलू-वि० [अनु०] मूर्ख। बेवकूफ।

लेंड़ी-स्त्री० [देश०] १. बँधे हुए मल की बत्ती। २. बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़(ा)-पुं० [देश०] पशुओं का झुंड या दल। गल्ला।

लेई-स्त्री० [सं० लेही] १. किसी चूर्ण का गाढ़ा लसीला रूप। अवलेह। २.लपसी। ३. गाढ़ा उबाला हुआ मैदा जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है। ४. वह गीला चूना या मसाला जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।
यौ०-लेई-पूँजी=सारी संपत्ति। सर्वस्व।

लेऊ-वि० दे० 'लेवाल'।

लेख-पुं० [सं०] १. लिखे हुए अक्षर। लिपि। २.लिखावट। लिखाई। ३.किसी विषय पर लिखकर प्रकट किये हुए विचार। मजमून। ४. कोई ऐसी लिखी हुई आज्ञा या आदेश जो विधान के अनुसार किसी बड़े अधिकारी ने प्रचलित किया हो। (रिट)
* वि० लिखने योग्य। लेख्य।
स्त्री० [हिं० लीक] पक्की बात।

लेखक-पुं० [सं०] [स्त्री० लेखिका] १. लिखनेवाला। लिपिकार। २. ग्रंथ-लिखनेवाला। ग्रंथकार। ३.दे०'लिपिक'।

लेखन-पुं० [सं०] [वि० लेखनीय, लेख्य] १. लिखने की क्रिया या भाव। (विधिक व्यवहार में मुद्रण या छापा और छाया-चित्रण आदि भी इसी में आते है।) २. लिखने की कला या विद्या। ३. चित्र बनाने का काम। ४ हिसाब लगाना। लेखा करना।

लेखन-सामग्री-स्त्री० [सं०] कागज, कलम, स्याही आदि लिखने की सामग्री। (स्टेशनरी)

लेखन-हार*-वि०=लिखनेवाला।

लेखना*-स० [सं० लेखन] १. लिखना। २. कुछ समझना या गिनना। ३. समझना। सोचना-विचारना।

लेखनी-स्त्री० [सं०] कलम।

लेखा-पुं० [हिं० लिखना] १. गणना। हिसाब। २. आय-व्यय अथवा घटना आदि का विवरण। (एकाउन्ट)

मुहा०-लेखा ड्योढ़ा या डेवढ़ करना= १. हिसाब चुकता या बराबर करना। २. समाप्त करना। न रहने देना।

३. अनुमान। विचार।

मुहा०-किसी के लेखे=किसी के विचार के अनुसार। किसी की समझ से।

स्त्री० [सं०] १ हाथ की लिखावट। लेख। २. चित्र। ३. रेखा। ४. श्रेणी। पंक्ति। ५. रश्मि। किरण।

लेखा-कर्म-पुं० [सं०] आय-व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का काम। (एकाउन्टेन्सी)

लेखा परीक्षक-पुं० [सं० लेखा+सं० परीक्षक] वह जो किसी के आय-व्यय के लेखे की जाँच-पड़ताल करता हो। (ऑडिटर)

लेखा-परीक्षा-स्त्री० [हिं० लेखा+परीक्षा] अच्छी तरह जाँचकर यह देखना कि आय-व्यय का जो लेखा तैयार किया गया है, वह ठीक है या नहीं। (ऑडिटिंग)

लेखा-बही-स्त्री० [हिं०] वह बही जिसमें आय-व्यय आदि का हिसाब लिखा जाता है। (एकाउन्ट-बुक)

लेखिका-स्त्री० [सं०] १. लिखनेवाली। २. ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।

लेखी-स्त्री० [हिं० लेख] खाते में लिखी जानेवाली रकम। पद। (एन्ट्री)

लेख्य-वि० [सं०] १. लिखा जाने योग्य। २. जो लिखा जाने को हो।

पुं० १. लिखी हुई वस्तु या पत्र आदि। लेख्य। २. वह लेख जो विधिक क्षेत्र में साक्ष्य के रूप में काम आवे या आ सके। दस्तावेज। (डॉक्यूमेन्ट)

लेज़म-स्त्री० [फा०] १. वह कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास करते हैं। २. कसरत करने की वह भारी कमान जिसमें लोहे की जंजीरें लगी रहती है।

लेजुर(री)-स्त्री० [सं० रज्जु] कूएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लेट-पुं० [देश०] चूने-सुरखी की वह परत जो गच या छत पर डाली जाती है।

लेटना-अ० [सं० लुंठन] १. फर्श आदि से पीठ लगाकर सारा शरीर उस-पर ठहराना। २ बगल की ओर झुक-कर जमीन पर गिर जाना।

लेटाना-स० हिं० 'लेटना' का प्रे०।

लेन-पुं० [हिं० लेना] १. लेने की क्रिया या भाव। २. लहना। पावना।

लेनदार-पुं० [हिं० लेन+फा० दार (प्रत्य०)] जिसका कुछ धन या पावना बाकी हो। लहनेदार।

लेन-देन-पुं० [हिं० लेना+देना] १. लेने और देने का व्यवहार। आदान-प्रदान। २. बिक्री का माल या रुपये उधार देने और लेने का व्यवहार।

लेनहार-वि० [हिं० लेना] लेनेवाला।

लेना-स० [हिं० लहना] १. किसी के हाथ से अपने हाथ या अधिकार में करना। ग्रहण या प्राप्त करना।

मुहा०-आड़े हाथों लेना=गूढ़ व्यंग्य द्वारा या खरी-खोटी सुनाकर लज्जित करना। लेने के देने पड़ना=लाभ के बदले हानि होना। ले डालना या बीतना=१. खराब करना। चौपट करना। २. पूरा करना। समाप्त करना।

कहा०-लेना एक न देना दो=कोई

सरोकार या सम्बन्ध न रखना। २. पकड़ना। ३. मोल लेना। खरीदना। ४. अगवानी या अभ्यर्थना करना। ५. भार ग्रहण करना। जिम्मे लेना। ६. सेवन करना। खाना या पीना।

लेप-पुं०[सं०] १. लीपने-पोतने या चुपड़ने की चीज। २. ऐसी चीज की वह तह जो किसी वस्तु पर चढ़ाई जाय।

लेपना-स० [सं० लेपन] गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना। लेप लगाना।

ले-पालक-पुं दे० 'दत्तक'।

लेवा-पुं० [सं० लेप्य] १. मिट्टी का वह लेप जो बरतन को आग पर चढ़ाने से पहले उसकी पेंदी में लगाते हैं। २. लेप।
वि० [हिं० लेना] लेनेवाला।

लेवाल-पुं० [हिं० लेना] लेने या खरीदने-वाला।

लेश-पुं० [सं०] १. अणु। २. बहुत ही थोड़ा अंश। ३. चिह्न। निशान। ४. संसर्ग। संबंध।

लेसना-स० [सं० केश्य] जलाना।
स० [हिं० लस] १. लेप लगाना। पोतना। २. चिपकाना। सटाना।

लेहन-पुं० [सं० लेहक] १. चखना। २. चाटना।

लेह्य-वि०[सं०]जो चाटा जाता हो। चाटने के योग्य। जैसे-चटनी आदि।

लैंगिक-वि०[सं०] १. लिंग-संबंधी। लिंग का। २.स्त्री और पुरुष के लिंग या जननेंद्रिय से संबंध रखनेवाला। यौनि। (सेक्सुअल)

लै*-अव्य० [हिं० लगना] तक। पर्यंत।

लैरू-पुं० [?] १. बछड़ा। २. बच्चा।

लैस-वि० [अं० लेस] १. हथियारों आदि से सजा हुआ। २. सब तरह से तैयार।
पुं० कपड़े पर लगाने का सुनहला फीता। पुं० [देश०] एक प्रकार का तीर।

लोंदा-पुं० [सं० लुंठन] गीले पदार्थ का ढले की तरह बँधा हुआ पिंड।

लोइ*-पुं० [सं० लोक] लोग।
स्त्री० [सं०रोचि] १. प्रभा। दीप्ति। २. लौ।

लोइन*-पुं० १. दे० 'लावण्य'। २. दे० 'लोचन'।

लोई-स्त्री० [सं० लोप्त्री] गुँधे हुए आटे का पेड़ा जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं।
स्त्री० [सं० लोमीय] एक प्रकार की ऊनी चादर।

लोकंजन*-पुं० दे० 'लोपांजन'।

लोक-पुं० [सं] १. ऐसा स्थान जिसका बोध प्राणी को हो अथवा जिसकी उसने कल्पना की हो। जैसे-इह-लोक, पर-लोक। २. पृथ्वी के ऊपर और नीचे के कुछ विशिष्ट कल्पित स्थान। भुवन। विशेष दे० 'भुवन' ४.। ३. संसार। जगत। ४. लोग। जन। ५. सारा समाज। जनता। (पब्लिक)
वि० सब लोगों से सम्बन्ध रखनेवाला। (यौ० के आरम्भ में, जैसे-लोक-स्वास्थ्य)

लोक-कंटक-पुं०[सं०] ऐसी बात जिससे जन-साधारण को कष्ट पहुँचे। जैसे—सड़क पर थूकना करना या कूड़े का ढेर लगाना। (पब्लिक नुएजेन्स)

लोक-गीत-पुं० [सं०] गाँव-देहातों में गाये जानेवाले जन-साधारण के गीत। (फोक-लोर)

लोकटी*-स्त्री० = लोमड़ी।

लोक-धुनि-*स्त्री० दे० 'जन-श्रुति'।

लोकना-स० [सं० लोपन] १. ऊपर से गिरती हुई चीज हाथों में रोकना। २. बीच में से ही उड़ा या ले लेना।

लोक-नृत्य-पुं० [सं०] गाँव-देहातों में

नाचे जानेवाले नाच। (फोक-डान्स)

लोकपति-पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. लोकपाल। ३. राजा।

लोक-पद-पुं० [सं०] लोक या जनता की सेवा से सम्बन्ध रखनेवाला पद। (पब्लिक ऑफिस)

लोक-मत-पुं० [सं०] किसी विषय में लोक या जनता की राय। समाज के बहुत से लोगों का मत। (पब्लिक ओपीनियन)

लोक-लीक-स्त्री०[हिं०लोक+लीक] लोक की मर्यादा।

लोक-वास्तु-पुं० [सं०] राज्य आदि का वह विभाग जो लोक के कल्याण या उपयोग के लिए सड़कें, कुएँ, नहरें आदि बनाता है। (पब्लिक वर्क्स)

लोक-संग्रह-पुं० [सं०] [वि० लोक-संग्रही] १. संसार के लोगों को प्रसन्न रखना। २.सबकी भलाई। लोकोपकार।

लोक-सत्ता-स्त्री० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार लोक या जनता के हाथ में हो।

लोक-सभा-स्त्री० [सं०] १. प्रतिनिधि-सत्तात्मक राज्यों में साधारण जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है। २. भारतीय संविधान में उक्त प्रकार की सभा। (हाउस ऑफ पीपुल)

लोक-सेवक-पुं० [सं०] १. वह जो जनता के हित के काम या सेवा करता हो। २. वह जो राज्य की ओर से लोक या जनता की सेवा के लिए नियत हो। (पब्लिक सर्वेन्ट)

लोक-सेवा-स्त्री० [सं०] १. जन-साधारण के हित या उपकार के लिए सेवा-भाव से किये जानेवाले कार्य। २. राज्य की सेवा या नौकरी, जो वस्तुतः जन-साधारण के हित के लिए होती है। (पब्लिक सरविस)

लोक-स्वास्थ्य-पुं० [सं०] सामूहिक रूप से सब लोगों के स्वस्थ और नीरोग रहने की अवस्था या व्यवस्था। (पब्लिक हेल्थ)

लोकाचार-पुं० [सं०] जनता में प्रचलित व्यवहार। लोक-व्यवहार।

लोकाना†-स० हिं० 'लोकना' का प्रे०।

लोकापवाद-पुं० [सं०] लोगों में होनेवाली बदनामी। लोक-निंदा।

लोकायत-पुं० [सं०] १. वह जो परलोक को न माने। २. चार्वाक दर्शन।

लोकेश (श्वर)-पुं० [सं०] सब लोकों का स्वामी, ईश्वर।

लोकोक्ति-स्त्री० [सं०] १. कहावत। मसल। २. वह अलंकार जिसमें कहावत के द्वारा कुछ चमत्कार लाया जाता है।

लोकोत्तर-वि० [सं०] [भाव० लोकोत्तरता] ऐसा अद्भुत, जैसा इस संसार में न होता हो। अलौकिक।

लोग-पुं० बहु० [सं० लोक] आस-पास के सब आदमी। जन-समूह।

लोच-स्त्री० [हिं० लचक] १. लचक। २. कोमलतापूर्ण सौन्दर्य।

स्त्री० [सं० रुचि] अभिलाषा।

लोचन-पुं० [सं०] आँख। नयन।

लोचना†-स० [हिं० लोचन] १. प्रकाशित करना। चमकाना। २. किसी बात की रुचि उत्पन्न करना। ३. इच्छा करना।

अ०१. शोभा देना। २. इच्छा या लालसा करना। ३. ललचना। तरसना।

पुं० [हिं० लोचन] दर्पण। शीशा।

लोटना-अ० [सं० लुंठन] १. चित

और पट होते हुए इधर-उधर होना।

मुहा०-लोट जाना=१. बेसुध होकर पड़ या लेट जाना। २. मर जाना।

२. लुढ़कना। ३. कष्ट से करवटें बदलना। तड़पना। ४. लेटना। ५. मुग्ध होना।

लोट-पोट-स्त्री० [हिं० लोटना] लेटने या आराम करने की क्रिया या भाव।

वि० १. हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट जानेवाला। २. बहुत अधिक प्रसन्न।

लोटा-पुं० [हिं० लोटना] [स्त्री० अल्पा० लुटिया] पानी रखने का धातु का एक प्रसिद्ध गोल पात्र।

लोड़ना*†-अ० [पं० लोड़=आवश्यकता] आवश्यकता होना। जरूरत होना।

लोढ़ना-स० [सं० लुंचन] १. फूल चुनना या तोड़ना। २. ओटना।

लोढ़ा-पुं० [सं० लोष्ठ] [स्त्री० अल्पा० लोढ़िया] सिल के साथ का पत्थर का वह टुकड़ा जिससे चीजें पीसते हैं। बट्टा।

लोथ-स्त्री० [सं० लोष्ठ] मृत शरीर। लाश। शव।

मुहा०-लोथ गिरना=मारा जाना।

लोथड़ा-पुं० [हिं० लोथ] मांस-पिंड।

लोन*-पुं० = नमक।

लोन-हरामी-वि० दे० 'नमक-हराम'।

लोना-वि०[भाव०लोनाई] दे०'सलोना'। पुं० दे० 'नोना'।

स्त्री० [देश०] एक कल्पित चमारी जो जादू-टोने में बहुत दक्ष मानी गई है।

स० [सं० लवण] फसल काटना।

लोनाई-स्त्री० दे० 'लावण्य'।

लोप-पुं० [सं०] [भाव० लोपन, वि० लुप्त, लोप्य] १. नाश। क्षय। २. गायब होना। अन्तर्द्धान। ३. व्याकरण में वह नियम जिसके अनुसार शब्द-साधन में कोई वर्ण निकाल या छोड़ देते हैं।

लोपना*-स० [सं० लोपन] १. लुप्त या गायब करना। २. छिपाना। ३. न रहने देना। नष्ट करना। मिटाना।

अ० १. लुप्त होना। २. नष्ट होना।

लोपांजन-पुं० [सं०] एक कल्पित अंजन। यह कहा जाता है कि इसे लगाने से आदमी दूसरों को दिखाई नहीं देता।

लोबान-पुं० [अ०] एक प्रकार का सुगंधित गोंद जो जलाने और दवा के काम में आता है।

लोभ-पुं० [स०] [वि० लुब्ध, लोभी] दूसरे के पास की कोई वस्तु प्राप्त करने की कामना। लालच। लिप्सा।

लोभना†-स०[हिं०लोभ] मोहित करना। अ० मोहित होना।

लोभनीय-वि० [सं० लोभ] जिसपर लोभ हो सके। सुंदर। मनोहर।

लोभार*-वि० [हिं० लोभ] लुभानेवाला।

लोभी-वि० [सं० लोभिन्] जिसे बहुत लोभ हो। लालची।

लोम-पुं० [सं] १. रोआँ। २. बाल। पुं० [सं० लोमश] लोमड़ी।

लोमड़ी-स्त्री० [सं० लोमश] गीदड़ की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली पशु।

लोम-हर्षण-वि० [सं०] (ऐसा भीषण) जिसे देखकर रोएँ खड़े हो जायँ। भयानक।

लोय*-पुं० [सं० लोक] लोग।

स्त्री० [हिं० लौ] आग की लपट। लौ।

पुं० [सं० लोचन] आँख। नयन।

अव्य० दे० 'लौं'।

लोयन*-पुं० [सं० लोचन] आँख। नेत्र।

लोरना*-अ० [सं० लोल] १. चंचल होना। २. लपकना। ३. लिपटना। ४. झुकना। ५. लोटना।

लोरा†-पुं० [?] आँसू । अश्रु ।

लोरी-स्त्री० [सं०लाल] वह गीत जो स्त्रियाँ छोटे बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं।

लोल-वि० [सं०] १. हिलता हुआ। २. बदलता रहनेवाला । ३. उत्सुक ।

लोलक-पुं० [सं०] १. नथों, बालियों आदि में का लटकन । २. कान की लौ ।

लोलना*-अ०=हिलना ।

लोलुप-वि० [सं०] १.लोभी । लालची । २. परम उत्सुक ।

लोष्ठ-पुं [सं०] १. पत्थर । २. ढेला ।

लोह-पुं० [सं०] लोहा । (धातु)

लोह-चून-पुं० [हिं० लोहा+चूर] लोहे का चूरा या बुरादा ।

लोहबान-पुं० दे० 'लोबान' ।

लोहा-पुं० [सं० लोह] १. काले रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिससे बरतन, हथियार, यंत्र आदि बनते हैं।

कहा०-लोहे के चने=अत्यंत कठिन काम। २. अस्त्र । हथियार ।

मुहा०-*लोहा गहना=युद्ध के लिए हथियार उठाना । लोहा बजना=युद्ध होना। किसी का लोहा मानना=किसी विषय में किसी का प्रमुख या अधिकार मानना । लोहा लेना=१. युद्ध करना । २. किसी प्रकार की लड़ाई करना ।

लोहार-पुं० [सं०लौहकार][स्त्री०लोहारिन, लोहाइन, भाव० लोहारी] लोहे की चीजें बनानेवालों एक प्रसिद्ध जाति ।

लोहित-वि० [सं०] लाल । (रंग) पुं० [सं० लोहितक] मंगल ग्रह ।

लोही-स्त्री० [सं० लोहित] उषा काल या प्रभात के समय की लाली ।

लोहू-पुं० दे० 'लहू' ।

लौं*-अव्य० [हिं० लग] १.तक । पर्यंत। २. समान । तुल्य । बराबर ।

लौंग-पुं० [सं० लवंग] १. एक झाड़ की कली जो सुखाकर मसाले और दवा के काम में लाई जाती है। २. इस आकार का नाक या कान में पहनने का एक गहना।

लौंडा-पुं० [?] बालक । लड़का ।

लौंडी-स्त्री० [हिं० लौंडा] दासी ।

लौंद-पुं० दे० 'मल-मास' ।

लौ-स्त्री० [हिं० लपट] १.आग की लपट । ज्वाला । २.दीपक की शिखा । टेम । स्त्री० [हिं० लाग] १. लगन । चाह । २. चित्त की वृत्ति ।

यौ०-लौ-लीन=किसी के ध्यान अथवा किसी काम में लगा हुआ । तन्मय ।

लौकना†-अ० [हिं० लौ] दिखाई पड़ना ।

लौकिक-वि०[सं०] १.इस लोक या संसार से सम्बन्ध रखनेवाला । सांसारिक । २. व्यावहारिक ।

लौकिक विवाह-पुं० [सं०] वह विवाह जो ऐसे वर और वधू में होता है जो किसी धर्म या सम्प्रदाय का बन्धन नहीं मानते और केवल विधि द्वारा निश्चित नियमों के अनुसार विवाह-बन्धन में बँधते हैं। (सिविल मैरेज)

लौकी†-स्त्री० दे० 'कद्दू' ।

लौ-जोरा*-पुं० [हिं० लौ+जोड़ना] धातु की चीजें जोड़ने या बनानेवाला ।

लौटना-अ० [हिं० उलटना] [भाव०लौट] १. कहीं आकर वहाँ से जाना । वापस आना । पलटना । २.पीछे की ओर घूमना। स० पलटना । उलटना ।

लौट-फेर-पुं० दे० 'उलट-फेर' ।

लौटाना-स० १. हिं० 'लौटना' का स० । २. दे० 'उलटना' ।

लौन*-पुं० = नमक ।

लौना*-वि० दे० 'सलोना'।
 स० दे० 'लुनना'।

लौनी‡-स्त्री० दे० 'लवनी'।
 स्त्री० [सं० नवनीत] मक्खन। नैनूँ।

लौरी-स्त्री० [?] बछिया। (गौ की)

लौह-पुं० [सं०] लोहा।

लौह-युग-पुं० [सं०] संस्कृति के इतिहास में वह युग जब अस्त्र-शस्त्र, औजार आदि लोहे के ही बनते थे। (आयरन एज)

लौहित्य-पुं० [सं०] लाल सागर।
 वि० १. लोहे का। २. लाल रंग का।

ल्याना(वना)-स० = लाना।

ल्वारि*-स्त्री० दे० 'लू'।

व

व-हिन्दी और संस्कृत वर्ण-माला का उन्तीसवाँ व्यंजन-वर्ण जो अंतस्थ अर्द्ध-व्यंजन माना गया है। अव्यय के रूप में यह 'और' का अर्थ देता है।

वंक-वि० [सं०] [भाव० वंकता] टेढ़ा।

वंकिम-वि० [सं०] टेढ़ा। वक्र।

वंग-पुं० [सं०] १.बंगाल प्रदेश। २. राँगा (धातु)। ३. राँगे का भस्म। (वैद्यक)

वंचक-वि० [सं०] १. धूर्त्त। २. ठग।

वंचन-पुं० [सं०] १. धोखा। छल। २. धोखा देना। ठगना। ३.किसी को प्राप्य या भोग्य वस्तु उसे प्राप्त करने या भोगने से रहित करना। (प्राइवेशन)

वंचना-स्त्री० [सं०] धोखा। छल।
 * स० [सं० वंचन] १. ठगना। २. धोखा देना।
 † स०[सं०वाचन] पढ़ना। (लेख आदि)

वंचित-वि०[सं०] १. जो ठगा गया हो। २.अलग किया हुआ। ३.जिसे कोई वस्तु प्राप्त न हुई हो या न करने दी गई हो। जैसे-सुख से वंचित। ३. हीन। रहित।

वंदन-पुं० [सं०] स्तुति और प्रणाम।

वंदनमाला-स्त्री० दे० 'वंदनवार'।

वंदना-स्त्री० [सं०] [वि० वंदित, वंदनीय] १. स्तुति। २. प्रणाम। वंदन।
 * स० वन्दना या स्तुति करना।

वंदनीय-वि० [सं०] जिसकी वंदना करना उचित हो। वंदना करने योग्य।

वंदित-वि० [सं०] [स्त्री० वंदिता] १. जिसकी वंदना की जाय। २. पूज्य।

वंदी-पुं० [स्त्री० वंदिनी] दे० 'बंदी'।

वंदीजन-पुं० [सं०] राजाओं की कीर्त्ति का वर्णन करनेवाली एक जाति। चारण।

वंद्य-वि० [सं०] [भाव०वंद्यता] वंदनीय।

वंश-पुं० [सं०] १. बाँस। २. पीठ की हड्डी। रीढ़। ३. नाक की हड्डी। बाँसा। ४. बाँसुरी। ५. परिवार। खानदान।

वंशज-पुं० [सं०] किसी के वंश में उत्पन्न। संतान। औलाद।

वंशधर-पुं० दे० 'वंशज'।

वंश-वृत्त-पुं० [सं] वह लेख जो किसी वंश के मूल पुरुष से लेकर उसके परवर्त्ती विकास और उस वंश में होनेवाले सब लोगों के स्थान आदि सूचित करता है। (यह प्रायः वृक्ष और उसकी शाखाओं के रूप में होता है।)

वंशावली-स्त्री० [सं०] किसी वंश के लोगों की काल-क्रम से बनी हुई सूची।

वंशी-स्त्री०[सं०] मुँह से बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा। बाँसुरी। मुरली।

वंशीधर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण ।

वक-पुं० [सं०] बगला (पक्षी) ।

वकालत-स्त्री० [अ०] १. दूत का काम । २. किसी का पक्ष पुष्ट करने के लिए उसके अनुकूल बात-चीत करना । ३. वकील का काम या पेशा ।

वकालतनामा-पुं० [अ०+फा०] वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी ओर से न्यायालय में मुकदमा लड़ने के लिए नियत करता है ।

वकील-पुं० [अ०] १. दूत । २. राजदूत । एलची । ३. प्रतिनिधि । ४. दूसरे के पक्ष का समर्थन करनेवाला । ५. वह जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में किसी की ओर से बहस करे।

वक्त-पुं० [अ०] १. समय । काल । २. अवसर । मौका । ३. अवकाश। फुरसत।

वक्तव्य-पुं० [सं०] किसी विषय में कही हुई कोई बात; विशेषतः ऐसी बात जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए हो। (स्टेटमेन्ट)

वि० कहने के योग्य ।

वक्तव्यता-स्त्री०[सं०] किसी बात के संबंध में वक्तव्य या उत्तर देने का भार । उत्तर-दायित्व । (ऐनसरेबिलिटी)

वक्ता-वि० [सं० वक्तृ] १.बोलनेवाला । २. भाषण करनेवाला ।

पुं० कथा कहनेवाला, व्यास ।

वक्तृता-स्त्री० [सं०] १. वाक्-पटुता । २. भाषण देने की योग्यता या शक्ति । ३. व्याख्यान । भाषण ।

वक्तृत्व-पुं० [सं०] वक्तृता देने की योग्यता या शक्ति । वाग्मिता ।

वक्फ़-पुं० [अ०] १. धर्मार्थ दान की हुई सम्पत्ति । २. किसी के लिए कोई चीज छोड़ देना ।

वक्र-वि०[सं०] [भाव०वक्रता] १.टेढ़ा । तिरछा । २. झुका हुआ । ३. कुटिल ।

वक्र-दृष्टि-स्त्री० [सं०] टेढ़ी दृष्टि । (प्रायः रोष या क्रोध की सूचक)

वक्रोक्ति-स्त्री० [सं०] एक काव्यालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का कुछ और अर्थ निकलता है ।

वक्षःस्थल-पुं० [सं०] छाती ।

वक्ष-पुं [सं० वक्षस्] छाती ।

वक्षोज,वक्षोरुह-पुं० [सं०] स्तन । कुच।

वगैरह-अव्य० [अ०] इत्यादि । आदि ।

वचन-पुं० [सं०] १. मनुष्य के मुँह से निकलनेवाले सार्थक शब्द । वाणी । २. कथन । उक्ति । ३. व्याकरण में वह विधान जिसके द्वारा शब्द के रूप से एक या अनेक का बोध होता है । (हिन्दी में दो वचन हैं-एकवचन और बहुवचन ।)

वज़न-पुं० [अ०] [वि० वजनी] १ भार । बोझ । २. तौल । ३ मान-मर्यादा । गौरव । ४. वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अंग दूसरे से न्यून या विषम हो जाय । (चित्रकला)

वजह-स्त्री० [अ०] कारण । हेतु ।

वज़ा-स्त्री० [अ० वज़अ] १. रचना या बनावट का प्रकार या ढंग । २.सज-धज । ३. प्रथा । रीति । प्रणाली । ४. धन या और कुछ देते समय उसमें से कुछ काट लेना या कम करना । मुजरा । मिनहा ।

वज़ादार-वि० [अ० वज़ा+फा० दार] जिसकी बनावट या ढंग बहुत सुन्दर हो ।

वज़ीफ़ा-पुं० [अ०] १. विद्वानों, छात्रों आदि को दी जानेवाली आर्थिक सहायता। वृत्ति । २. जप या पाठ । (मुसल०)

वज़ीर-पुं० [अ०] मंत्री ।

वजीरी-स्त्री॰ 'वजीर' का भाव॰। पुं॰ घोड़ों की एक जाति।
वजूद-पुं॰ [अ॰] अस्तित्व। मौजूदगी। यौ॰-बावजूद=इतना होने पर भी।
वज्र-पुं॰ [सं॰] १.इन्द्र का प्रधान शस्त्र। कुलिश। पवि। २. विद्युत्। बिजली। ३. हीरा। ४. भाला। बरछा। वि॰ १. बहुत कड़ा और दृढ़। २. घोर। भीषण। विकट।
वज्रपाणि-पुं॰ [सं॰] इन्द्र।
वज्र-लेप-पुं॰[सं॰] एक प्रकार का मसाला जिसके प्रयोग से दीवार, मूर्त्ति आदि या उनके जोड़ मजबूत हो जाते हैं।
वज्रोली-स्त्री॰ [हिं॰ वज्र] हठ-योग की एक मुद्रा।
वट-पुं॰ [सं॰] बरगद (पेड़)।
वटक-पुं॰ [सं॰] बड़ी टिकिया या गोली। बड़ा।
वटिका,वटी-स्त्री॰ [सं॰] छोटी गोली या टिकिया।
वटु(क)-पुं॰ [सं॰] १. बालक। लड़का। २. ब्रह्मचारी। ३. एक भैरव। (देवता)
वणिक्-पुं॰ [सं॰] १. व्यापारी। २. वैश्य। बनिया।
वतन-पुं॰ = जन्म-भूमि।
वत्-पुं॰ [सं॰] समान। तुल्य।
वत्स-पुं॰[सं॰] १ गौ का बच्चा। बछड़ा। २. बालक। लड़का।
वत्सनाभ-पुं॰ [सं॰] बछनाग नामक विष। मीठा जहर।
वत्सर-पुं॰ [सं॰] वर्ष। साल।
वत्सल-वि॰ [सं॰] [स्त्री॰ वत्सला, भाव॰ वत्सलता] १. सन्तान के प्रेम से भरा हुआ। २. छोटों से अत्यंत स्नेह और उनपर कृपा रखनेवाला। पुं॰ साहित्य में (पीछे से बढ़ाया हुआ) दसवाँ रस जिसमें माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम दिखाया जाता है।
वदन-पुं॰ [सं॰] १. मुख। मुँह। २. बात कहना। बोलना।
वदान्य-वि॰ [सं॰][भाव॰ वदान्यता] १. बहुत बड़ा दानी। २. मधुर-भाषी।
वदि-पुं॰ [सं॰ अवदिन्] कृष्ण पक्ष। (चान्द्र मास का) जैसे-माघ वदि २.।
वदुसाना॰-स॰ [सं॰ विदूषण] १. दोष या कलंक लगाना। अ॰ भला-बुरा कहना।
वध-पुं॰ [सं॰] [वि॰ वधक, वध्य] किसी मनुष्य को जान-बूझकर किसी उद्देश्य से मार डालना। (मर्डर)
वधक-पुं॰ [सं॰] १. वध करनेवाला। २. व्याध। शिकारी।
वधिक-पुं॰ [सं॰] १. दे॰ 'वधक'। २. वह जो प्राण-दंड पानेवालों का वध करता है। फाँसी चढ़ानेवाला। (एग्जिक्यूशनर)
वधू-स्त्री॰ [सं॰] १. नई ब्याही हुई स्त्री। दुलहन। २.पत्नी। भार्या। ३.पुत्र की बहू।
वधूटी-स्त्री॰ दे॰ 'वधू'।
वन-पुं॰ [सं॰] १. जंगल। २. बगीचा। बाग। ३. जल। ४. घर। ५. दशनामी साधुओं में से एक वर्ग की उपाधि।
वनचर(चारी)-वि॰ [सं॰] वन में घूमने या रहनेवाला।
वनज-पुं॰[सं॰] १.वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ। २. कमल।
वन-माला-स्त्री॰ [सं॰] जंगली फूलों की माला।
वनमाली-पुं॰ [सं॰] श्रीकृष्ण।
वन-लक्ष्मी-स्त्री॰ [सं॰] वन की शोभा।
वन-वास-पुं॰ [सं॰] १. वन या जंगल

में रहना। २. बस्ती छोड़कर जंगल में रहने का विधान या ढंग।

वन-स्थली-स्त्री० [सं०] वन-भूमि।

वनस्पति-स्त्री० [सं०] पेड़-पौधे।

वनस्पति घी-पुं० [सं०+हिं०] बिनौले, मूँगफली नारियल आदि का साफ किया हुआ तेल, जो देखने में प्रायः घी के समान होता है।

वनस्पति विज्ञान-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें पेड़-पौधों की जातियों, अंगों आदि का विवेचन होता है। (बोटैनी)

वनिता-स्त्री० [सं०] औरत। स्त्री।

वन्य-वि०[सं०]१.वन में उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २. जंगली।

वपन-पुं० [सं०] [वि० वपित] बीज बोना।

वपु-पुं० [सं० वपुस्] शरीर। देह।

वपुमान-पुं० [सं० वपुष्मान] सुंदर और हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला।

वबाल-पुं० [अ०] १. बोझ। भार। २. आपत्ति। आफत। झंझट।

वमन-पुं [सं०] [वि० वमित] १. कै करना। उलटी करना। २. वमन या कै किया हुआ तरल पदार्थ।

वमि-स्त्री० [सं०] वमन का रोग।

वयःसंधि-स्त्री० [सं०] बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का समय।

वय-स्त्री० [सं० वयस्] अवस्था। उम्र। (एज)

वयन-पुं० [सं०] बुनने का काम। बुनाई।

वयस-पुं० [सं० वयस्] बीता हुआ जीवन-काल। अवस्था। उम्र।

वयस्क-वि० [सं०] [स्त्री० वयस्का] १. उमर या अवस्थावाला। (यौ० में; जैसे-अल्प-वयस्क) २. पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ। बालिग। (मेजर)

वयस्कता-स्त्री० [सं०] १. वयस्क होने का भाव। २. विधि या कानून के अनुसार पूर्ण वयस्क होना। (मेजॉरिटी)

वयस्क मताधिकार-पुं० [सं०] निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने का वह अधिकार जो किसी स्थान के सभी वयस्क निवासियों को बिना किसी प्रकार के भेद-भाव के प्राप्त होता है। (एडल्ट सफरेज)

वयस्य-पुं० [सं०] १. समान अवस्था या उम्रवाला। २. मित्र। दोस्त। सखा।

वयोवृद्ध-वि० [सं०] बुड्ढा। वृद्ध।

वरंच-अव्य० [सं०] १. ऐसा नहीं, बल्कि ऐसा। बल्कि। २.परन्तु। लेकिन।

वर-पुं० [सं०] १. देवता आदि से माँगा हुआ मनोरथ। २. किसी देवता या बड़े से मिला हुआ मनोरथ का फल या सिद्धि। ३.वह जिसके साथ कन्या का विवाह निश्चित हो। ४. पति। दूल्हा।
वि० १. श्रेष्ठ। उत्तम। २. उच्च कोटि का। 'अवर' का उलटा। (सुपीरियर)

वरक-पुं० [अ०] १. पत्र। २. पुस्तकों का पन्ना। पृष्ठ। ३. धातु का पतला पत्तर।

वरण-पुं० [सं०] १. किसी को किसी काम के लिए चुनना। (सेलेक्शन) २. कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने और विवाह पक्का करने की रीति।

वरणी-स्त्री० [सं० वरण] मंगल अवसरों पर ब्राह्मणों को दिया जानेवाला आसन, वस्त्र, पात्र आदि का समूह।

वरद-वि० [सं०] [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला। वर-दाता।

वर-दान-पुं० [सं०] किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई माँगी हुई वस्तु या सिद्धि देना।

वरदी-स्त्री० [अ० वर्दी] वह पहनावा जो

किसी विशेष विभाग के कार्य-कर्त्ताओं के लिए नियत हो। परिच्छद। (यूनिफ़ॉर्म)

वरन्‌-अव्य० [सं० वरम्] बल्कि।

वरना॰-स० [सं० वरण] १. किसी को किसी काम के लिए चुनना या मुकर्रर करना। वरण करना। २.विवाह के समय कन्या का वर को अंगीकार करना। ३. ग्रहण या धारण करना।

पुं० [सं० वरण] ऊँट।

अव्य० [अ० वर्नः] नहीं तो।

वरम-पुं० [फा०] सूजन। शोथ।

वर-यात्रा-स्त्री० = बरात।

वरही॰-पुं० दे० 'बर्ही'।

वरानना-स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री।

वरासत-स्त्री०[अ०विरासत] १ 'वारिस' होने का भाव। उत्तराधिकार। २. उत्तराधिकार से मिला हुआ धन। तरका।

वराह-पुं० [सं०] सूअर। (पशु)

वरिष्ठ-वि० [सं०] १. श्रेष्ठ। बड़ा। २. उच्च कोटि का। 'कनिष्ठ' का उलटा। (सुपीरियर)

वरुण-पुं० [सं०] १.एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति माना गया है। २.जल। पानी। ३. सूर्य। ४. हमारे सौर जगत् का सबसे दूरस्थ ग्रह जिसका पता सन् १८४६ में लगा था। (नेपच्यून)

वरुणालय-पुं० [सं०] समुद्र। सागर।

वरूथिनी-स्त्री० [सं०] सेना। फौज।

वरेण्य-वि० [सं०] १. प्रधान। मुख्य। २. पूज्य। श्रेष्ठ।

वर्ग-पुं० [सं०] १. एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह। कोटि। श्रेणी। २. सामान्य धर्म या स्वरूप रखनेवाले पदार्थों का समूह। (ग्रूप) ३. परिच्छेद। अध्याय। ४. दो समान अंकों या संख्याओं का घात या गुणन-फल। ५. वह चौकोर क्षेत्र जिसकी लंबाई-चौड़ाई और चारों कोण बराबर हों। (स्क्वेयर)

वर्ग-फल-पुं० [सं०] दो समान राशियों के घात से प्राप्त होनेवाला गुणन-फल।

वर्ग-मूल-पुं० [सं०] किसी वर्ग का वह अंक जिसे उसी अंक से गुणा करने पर वही वर्गांक आता है। जैसे १६ का वर्ग-मूल ४ है।

वर्गलाना-स० दे० 'बहकाना'।

वर्गांक-पुं०[सं०] किसी अंक या संख्या को उसी अंक या संख्या से गुणा करने पर प्राप्त होनेवाला गुणन-फल।

वर्गीकरण-पुं० [सं०] [वि० वर्गीकृत] बहुत-सी वस्तुओं या व्यक्तियों को उनके अलग अलग वर्गों के अनुसार छाँटकर अलग अलग करना। (क्लैसिफिकेशन)

वर्चस्व-पुं० [सं०] १. तेज। २. श्रेष्ठता।

वर्चस्वी-वि० [सं० वर्चस्विन्] तेजस्वी।

वर्जन-पुं० [सं०] [वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित] १ त्याग। छोड़ना। २. कुछ करने से रोकना। मनाही। मुमानियत।

वर्जना-स्त्री० दे० 'वर्जन'।

॰स० [सं० वर्जन] मना करना।

वर्जित-वि० [सं०] जिसके संबंध में मनाही हुई हो। निषिद्ध।

वर्ण-पुं० [सं०] १. पदार्थों के लाल, काले आदि भेदों के नाम। रंग। २. मनुष्य-जाति के गोरे, काले, भूरे, पीले और लाल ये पाँच भेद। ३. हिन्दुओं के ये चार विभाग ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। जाति। ३. भेद। प्रकार। ४. अकारादि अक्षरों के चिह्न या संकेत। अक्षर। ५. रूप। सूरत।

वर्णांक-पुं० [सं०] वास्तविक रूप छिपाने

के लिए ऊपर से धारण किया जानेवाला कोई और रूप या आवरण। (मास्क)
वर्णच्छटा-स्त्री० [सं०] १. किसी वस्तु की वह आकृति जो उसे देखने के बाद आँखें बन्द कर लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देती है। २. प्रकाश में के रंग, जो कुछ विशेष प्रक्रिया से विश्लेषण आदि के लिए किसी परदे पर डालकर देखे जाते हैं। (स्पेक्ट्रम)
वर्ण-तूलिका-स्त्री० [सं०] चित्रों आदि में रंग भरने की कूँची या बुरुश।
वर्णन-पुं० [सं०] [वि० वर्णनीय, वर्णित] विस्तारपूर्वक कहा जानेवाला हाल। बयान। (एकाउन्ट)
वर्णनातीत-वि० [सं०] जिसका वर्णन न हो सके। वर्णन के बाहर।
वर्ण-भेद-पुं० [सं०] १. हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारो वर्णों में होनेवाला विभाग, भेद-भाव या ऊँचे-नीचे का विचार। २.गोरी, काली, पीली आदि जातियों में शरीर के वर्ण की दृष्टि से होनेवाला भेद-भाव या ऊँच-नीच का विचार।
वर्ण-माला-स्त्री० [सं०] किसी लिपि के सब अक्षरों की क्रम से सूची। (एल्फाबेट्स)
वर्ण-वृत्त-पुं० [सं०] वह छन्द या पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम एक-से होते हैं।
वर्ण-संकर-पुं० [सं०] वह जो दो भिन्न जातियों के यौन-सम्बन्ध से उत्पन्न हुआ हो। दोगला।
वर्णिक वृत्त-पुं० दे० 'वर्ण-वृत्त'।
वर्णिका-स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट रंगों का समवाय जो किसी चित्र या शैली में विशेष रूप से बरता जाय। (चित्र-कला)
वर्णित-वि० [सं०] जिसका वर्णन हुआ हो। कहा हुआ।
वर्ण्य-वि० [सं०] १. वर्णन के योग्य। २. जिसका वर्णन हो रहा हो।
वर्त्तन-पुं० [सं०] [वि० वर्तित] १. बरताव। व्यवहार। २. फेरना। घुमाना। ३. पात्र। बरतन।
वर्त्तमान-वि० [सं०] १. जो इस समय हो या चल रहा हो। (एग्जिस्टिंग)। २. उपस्थित। मौजूद। विद्यमान। (प्रेजेन्ट) ३.आधुनिक। आज-कल का। हाल का। पुं० १. व्याकरण में क्रिया का वह काल, जिससे सूचित होता है कि कार्य अभी हो रहा है, समाप्त नहीं हुआ। २. वृत्तान्त। समाचार।
वर्त्ती-वि० [सं०वर्त्तिन्] [स्त्री० वर्त्तिनी] १. बरतनेवाला। २. स्थित रहनेवाला। जैसे-पार्श्ववर्त्ती।
वर्त्तुल-वि० [सं०] वृत्ताकार। गोल।
वर्त्म-पुं० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। २ किनारा। ३ आँख की पलक।
वर्दी-स्त्री० दे० 'वरदी'।
वर्द्धक-वि० [सं०] बढ़ानेवाला।
वर्द्धन-पुं० [सं०] [वि० वर्द्धित] १. बढ़ाना। २. वृद्धि। बढ़ती। ३. पशुओं आदि को पाल-पोसकर उनकी उन्नति और वृद्धि करना। (ब्रीडिंग)
वर्द्धमान-वि० [सं०] १. बढ़ता हुआ। २. बढ़नेवाला।
वर्द्धित-वि०[सं०] बढ़ा या बढ़ाया हुआ।
वर्म-पुं० [सं० वर्म्मन्] १. कवच। बकतर। २. घर। मकान।
पुं० [फ़ा०] शोथ। सूजन।
वर्मा-पुं० [सं०वर्म्मन्] क्षत्रियों की उपाधि।
वर्य्य-वि० [सं०] श्रेष्ठ। जैसे-विद्वद्वर्य्य।
वर्ष-पुं० [सं०] १. बारह महीनों का

समूह जो काल-गणना में एक प्रसिद्ध मान है। बरस। साल। २ पुराणों के अनुसार सात द्वीपों का समूह या विभाग।

वर्षक-वि० [सं०] १. (जल की) वर्षा करनेवाला। (कोई चीज) २.बरसानेवाला।

वर्ष-गाँठ-स्त्री० दे० 'बरस-गाँठ'।

वर्षण-पुं० [वि० वर्षित] दे० 'वर्षा'।

वर्ष-फल-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण। (फलित ज्योतिष)

वर्षांक-पुं० [सं०] संख्या-क्रम से किसी सन् या संवत् के वर्षों के निश्चित किये हुए नाम जो अंकों के रूप में होते हैं। जैसे-सन् १९५१ या संवत् २००६।

वर्षा-स्त्री० [सं०] १. वह ऋतु जिसमें पानी बरसता है। बरसात। २. पानी बरसने की क्रिया या भाव। वृष्टि। ३. किसी वस्तु का बहुत अधिक मात्रा में ऊपर से गिरना या चारों ओर से आना।

वर्षा-काल-पुं० [सं०] बरसात।

वर्ह-पुं० [सं०] १. मोर का पर। २. पत्ता।

वर्ही-पुं० [सं० वर्हिन्] मयूर। मोर।

वलभी-स्त्री०[सं०]१.सदर फाटक। तोरण। २. छत के ऊपर का कमरा। अटारी।

वलय-पुं० [सं०] १.मंडल। घेरा। २. कंकण। ३. चूड़ी।

वलाक-पुं० [सं०] [स्त्री० वलाका] बगला।

वलाहक-पुं० [सं०] १.मेघ। बादल। २. पर्वत। पहाड़।

वलि-पुं० [सं०] १ रेखा। लकीर। २. पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा। बल। ३ देवता को चढ़ाई जानेवाली चीज या उसके उद्देश्य से चढ़ाया या मारा जानेवाला पशु। ४. एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ५. श्रेणी। पंक्ति।

वलित-वि० [सं०] १.बल खाया या घूमा हुआ। २.झुका या मुड़ा हुआ। ३. घेरा हुआ। ४.लिपटा हुआ। ५.मिला हुआ।

वली-स्त्री० [सं०] १. झुर्री। सिलवट। २. श्रेणी। पंक्ति। ३. रेखा। लकीर। पुं० [अ०] १. मालिक। स्वामी। २. साधु। फकीर। ३. अल्प-वयस्क बालक की देख-रेख करनेवाला। अभिभावक।

वल्कल-पुं० [सं०] वृक्ष की छाल।

वल्द-पुं० [अ०] औरस पुत्र। बेटा। जैसे-मोहन वल्द परमानन्द; अर्थात् परमानन्द का बेटा मोहन।

वल्दियत-स्त्री० [अ०] १. वालिद या पिता होने का भाव। पितृत्व। २. पिता के नाम का उल्लेख।

वल्मीक-पुं० [सं०] दीमकों के रहने की बाँबी। बिमौट।

वल्लभ-वि० [सं०] [भाव० वल्लभता, [स्त्री० वल्लभा] प्रियतम। प्यारा। पुं० १. पति। स्वामी। २. अध्यक्ष। मालिक। ३ वैष्णव-संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लभा-स्त्री० [सं०] प्रेमिका। प्रेयसी।

वल्लरी-स्त्री० [सं०] बेल। लता।

वल्लाह-अव्य०[अ०] ईश्वर की शपथ है।

वल्ली-स्त्री० [सं०] लता। बेल।

वश-पुं० [सं०] १. अधिकार। काबू। २. शक्ति या अधिकार की सीमा। काबू। मुहा०-वश चलना=शक्ति या सामर्थ्य का अपना फल या प्रभाव दिखलाना। ३. अधिकार। कब्जा।

वशवर्त्ती-वि०[सं०वशवर्तिन्] किसी के वश या अधिकार में रहनेवाला। अधीन।

वशीकरण-पुं० [सं०] [वि० वशीकृत]

मंत्र-तंत्र के द्वारा किसी को वश में करना।

वशीभूत-वि० दे० 'वशवर्ती'।

वश्य-वि० [सं०] [भाव० वश्यता] वश में आने या रहनेवाला।

वसंत-पुं० [सं०] [वि० वासंत, वासंतिक, वसंती] १. सर्व-प्रधान मानी जानेवाली वह ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और बैसाख के महीने माने गये हैं। बहार का मौसिम। २.शीतला या चेचक नामक रोग। ३. छः रागों में से दूसरा राग।

वसंतोत्सव-पुं० [सं०] प्राचीन काल का एक उत्सव जो वसंत-पंचमी के दूसरे दिन होता था। मदनोत्सव।

वसन-पुं० [सं०] १. वस्त्र। कपड़ा। २. रहना या बसना। निवास।

वसति(ी)-स्त्री० [सं०] १. निवास। २. घर। ३. बस्ती।

वसवास-पुं० [अ०] [वि० वसवासी] शंका। भ्रम। संदेह।

वसह-पुं०=बैल। (पशु)

वसा-स्त्री० [सं०] चरबी। मेद।

वसीका-पुं० [अ०] सरकारी खजाने में जमा किये हुए धन का वह सूद जो जमा करनेवाले के वंशजों को मिलता है। वृत्ति।

वसीयत-स्त्री० [अ०] यह कहना या लिखना कि हमारे मरने पर हमारी संपत्ति का विभाग या प्रबन्ध इस तरह हो। दिस्सा।

वसीयतनामा-पुं० [अ० वसीयत+फा० नामा] वह लेख या पत्र जिसमें वसीयत की सब शर्तें लिखी हों। दिस्सा-पत्र।(विल)

वसीला-पुं०[अ०] १.संबंध। लगाव। २. जरिया। द्वार।

वसुंधरा-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसु-पुं० [सं०] १. आठ वैदिक देवताओं का एक गण। २. आठ की संख्या। ३. रत्न। ४. धन। ५. अग्नि। ६. जल। ७. सुवर्ण। सोना। ८. सूर्य।

वसुधा-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसुमती-स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

वसूल-वि०[अ०]१.मिला या लिया हुआ। प्राप्त। २. उगाहा हुआ।

वसूली-स्त्री० [अ० वसूल] दूसरे से अपना प्राप्य धन या वस्तु लेने की क्रिया या भाव। उगाही।

वस्ति-स्त्री० [सं०] १. पेड़ू। २.मूत्राशय। ३. पिचकारी।

वस्ति-कर्म-पुं० [सं०] लिंगेंद्रिय, गुदेन्द्रिय आदि मार्गों में पिचकारी लगाना।

वस्तु-स्त्री०[सं०] [वि० वास्तव, वास्तविक] १ वास्तविक या कल्पित सत्ता। पदार्थ। चीज। २. दे० 'कथावस्तु'।

वस्तुतः-अव्य० [सं०] १. वास्तव में। (ऐक्चुअली) २. सचमुच।

वस्तु-स्थिति-स्त्री० [सं०] वास्तविक स्थिति या परिस्थिति।

वस्त्र-पुं० [सं०] कपड़ा।

वस्ल-पुं० [अ०] मिलन। मिलाप।

वह-सर्व०[सं०सः] १.वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे मनुष्य या दूर के पदार्थ का संकेत करनेवाला सर्वनाम या परोक्ष वस्तुओं का सूचक शब्द।

वि०[सं०वहन] वहन करनेवाला। वाहक। (यौ० के अन्त में, जैसे-भारवह।)

वहन-पुं० [सं०] [वि० वहनीय, वहित] १. खींच या ढोकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। २. ऊपर लेना। उठाना।

वहन-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी जहाज का प्रधान अधिकारी अपने जहाज पर लादे हुए माल की रसीद के रूप में माल भेजनेवाले को देता है और जिसके

अनुसार वह प्रेषिती को माल पहुँचाने का भार लेता है। (बिल ऑफ लेडिंग)

वहम-पुं०[अ०] [वि० वहमी] १ मन में होनेवाली मिथ्या धारणा। २. भ्रम। धोखा। ३. झूठी शंका या संदेह।

वहशी-वि०[अ०] १ जंगली। २.असभ्य।

वहाँ-अव्य० [हिं० वह] उस जगह।

वहिःशुल्क-पुं० दे० 'सीम शुल्क'।

वहित्र-पुं० [सं० वहित्य] जहाज।

वहिरंग-पुं० [सं०] शरीर, पदार्थ, क्षेत्र आदि का बाहरी या ऊपरी भाग। 'अंतरंग' का उलटा।

वि० ऊपरी या बाहरी।

वहिर्गत-वि० [सं०] बाहर निकला या निकाला हुआ। बाहर का।

वहिर्द्वार-पुं० [सं०] बाहरी दरवाजा।

वहिर्भूत-वि० [सं०] बहिर्गत।

वहिर्मुख-वि० [सं०] विमुख।

वहिष्कार-पुं० दे० 'बहिष्कार'।

वहीं-अव्य० [हिं० वहाँ] उसी जगह।

वही-सर्व० [हिं० वह+ही] १. जिसका उल्लेख हुआ हो, वह ही। पूर्वोक्त ही। २. निर्दिष्ट व्यक्ति ही, और कोई नहीं।

वह्नि-पुं० [सं०] अग्नि। आग।

वांछनीय-वि०[सं०] १.चाहने योग्य। २. जिसे प्राप्त करने की इच्छा हो। इष्ट। ३. जिसका होना अनुचित या अप्रिय न हो।

वांछा-स्त्री० [सं०] [वि० वांछित, वांछनीय] अभिलाषा। चाह।

वांछित-वि० [सं०] चाहा हुआ।

वा-अव्य० [सं०] या। अथवा।

*सर्व० [हिं० वह] वह।

वाइ*-सर्व० दे० 'वाहि'।

वाक्-पुं०[सं०] १.वाणी। २. सरस्वती। ३. बोलने की इंद्रिय।

वाकई-अव्य० [अ०] सचमुच। वस्तुतः।

वाकिफ-वि०[अ०] १.ज्ञाता। २.परिचित।

वाक्छल-पुं० [सं०] बातों या शब्दों का कुछ का कुछ अर्थ लगाकर धोखा देना।

वाक्पटु-वि० [सं०] बातें करने में चतुर।

वाक्य-पुं० [सं०] व्याकरण के नियमों के अनुसार क्रम से लगा हुआ वह सार्थक शब्द-समूह जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रकट किया जाता है।

वागीश-पुं० [सं०] १. बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३. कवि।

वि० अच्छा बोलनेवाला। सु-वक्ता।

वागीश्वरी-स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वाग्जाल-पुं०[सं०] बातों का ऐसा आडंबर जिसमें अर्थ या तथ्य बहुत कम हो।

वाग्दत्त-वि० [सं०] जिसे दूसरे को देने का वचन दिया जा चुका हो।

वाग्दत्ता-स्त्री० [सं०] वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ पक्की की जा चुकी हो।

वाग्दान-पुं० [सं०] १. कुछ देने या करने का वचन। वादा। (प्रॉमिस) २. कन्या के पिता का किसी से यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हारे साथ ब्याहूँगा।

वाग्देवी-स्त्री० [सं०] सरस्वती।

वाग्मी-पुं० [सं०] १. अच्छा वक्ता। २ पंडित। विद्वान्।

वाग्विलास-पुं० [सं०] आपस में प्रेम और सुख से बातें करना।

वाङ्मय-पुं० [सं०] साहित्य।

वाङ्मुख-पुं० [सं०] उपन्यास।

वाचक-वि० [सं०] किसी व्यक्ति या वस्तु आदि का निर्देश करने या परिचय देनेवाला (शब्द)। वाची। जैसे-यहाँ 'सारंग' शब्द 'मोर' का वाचक है।

पुं० १. नाम। संज्ञा। २. वह जो किसी बड़े अधिकारी को कागज आदि पढ़कर सुनाने के लिए नियत हो। पेशकार। (रीडर)

वाचन-पुं० [सं०] १. पढ़ने का काम। पठन। २. विधायिका सभा में किसी विधेयक (बिल) के उपस्थित होने पर उसका तीन बार पढ़ा जाना। आवृत्ति। (रीडिंग) (विशेष—पहली बार विधेयक इसलिए पढ़कर सुनाया जाता है कि सब लोग उसका सामान्य स्वरूप समझ लें। इसे 'पहला वाचन' कहते हैं। दूसरे वाचन में काट-छाँट, संशोधन, परिवर्तन और सुधार होते हैं। तीसरे या अंतिम वाचन में उसका वह रूप सामने आता है जिसमें वह स्वीकृत होने को होता है।)

वाचनालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ लोगों के पढ़ने के लिए समाचार-पत्र या पुस्तकें रखी रहती हैं। (रीडिंग रूम)

वाचस्पति-पुं० [सं०] १. वाणी। २. वचन। ३. बहुत बड़ा विद्वान्।

वाचाबंधक-वि० [सं०] [वि०वाचाबद्ध] प्रतिज्ञा या वचन से बँधा हुआ।

वाचाल-वि० [सं०] [भाव० वाचालता] १. बहुत बोलनेवाला। बकवादी। २. बातें करने में चतुर। वाक्पटु।

वाचिक-वि० [सं०] वाणी सम्बन्धी। वाचा या वाणी से कहा या किया हुआ। पुं० अभिनय का वह प्रकार जिसमें केवल बात-चीत और उसके ढंग से ही अभिनय का सारा तात्पर्य समझा जाता है।

वाची-वि० [सं० वाचिन्] प्रकट करने-वाला। सूचक। वाचक। जैसे-भाववाची।

वाच्य-वि० [सं०] १. कहने योग्य। २. जिसका ज्ञान या परिचय शब्दों के द्वारा हो। अभिधेय।

वाच्यार्थ-पुं० [सं०] शब्दों के नियत अर्थ से प्रकट होनेवाला आशय। विशुद्ध शब्दार्थ।

वाजिब-वि० [अ०] उचित। मुनासिब।

वाजी-पुं० [सं० वाजिन्] घोड़ा।

वाजीकरण-पुं० [सं०] वह प्रयोग जिससे मनुष्य का वीर्य बढ़ता है।

वाट-पुं० [सं०] मार्ग। रास्ता।

वाटिका-स्त्री० [सं०] बाग। बगीचा।

वाड़वाग्नि-स्त्री० [सं०] वह कल्पित प्रबल अग्नि जो समुद्र के अंदर जलती हुई मानी गई है।

वाण-पुं० [सं०] धारदार फलवाला वह अस्त्र जो धनुष की सहायता से चलाया जाता है। तीर।

वाणिज्य-पुं० [सं०] व्यापार। रोजगार। (कॉमर्स)

वाणिज्य-दूत-पुं० [सं०] किसी राज्य का वह दूत जो दूसरे देश में व्यापारिक सम्बन्ध सुरक्षित रखने और बढ़ाने के लिए रखा जाता है। (कॉन्सल)

वाणी-स्त्री० [सं०] १. सरस्वती। २. मुँह से निकलनेवाले सार्थक शब्द। वचन। मुहा०--वाणी फुरना=मुँह से बात निकलना।

वात-पुं० [सं०] १. वायु। हवा। २. शरीर में की वह वायु जिसके बिगड़ने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं। (वैद्यक)

वातज-वि० [सं०] वायु या वात से उत्पन्न (रोग आदि)।

वातायन-पुं० [सं०] झरोखा।

वातावरण-पुं० [सं०] १. वह हवा जिसने पृथ्वी को चारो ओर से घेर रक्खा है। २. आस-पास की परिस्थिति, सजिका

जीवन अथवा दूसरी बातों पर प्रभाव पड़ता है। (ऐटमॉस्फियर)

वातुल-पुं० [सं०] बावला। पागल।

वात्या-स्त्री० [सं०] बवंडर।

वात्सरिक-वि०[सं०]वार्षिक। सालाना।

वात्सल्य-पुं०[सं०]१.प्रेम। स्नेह।२.माता-पिता का सन्तान पर होनेवाला प्रेम।

वाद-पुं०[सं०] १.किसी तथ्य या तत्त्व के निर्णय के लिए होनेवाला तर्क। शास्त्रार्थ। २. तत्त्वज्ञों द्वारा निश्चित कोई मत या सिद्धान्त अथवा किसी प्रकार की विचार-धारा या कार्य-प्रणाली। (इज्म) (कुछ संज्ञाओं के अन्त में प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त; जैसे-साम्यवाद, पूँजीवाद, अवसर-वाद, अद्वैतवाद) ३. बहस। विवाद। ४. न्यायालय में उपस्थित किया हुआ अभियोग। मुकद्दमा। (सूट)

वादक-पुं० [सं०] १. बाजा बजाने-वाला। २. तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वाद-ग्रस्त-वि०[सं०] जिसके सम्बन्ध में विवाद या मत-भेद हो।

वादन-पुं० [सं०] बाजा बजाना।

वाद-विवाद-पुं० [सं०] किसी पक्ष के खंडन और मंडन में होनेवाली बात-चीत। तर्क-वितर्क। बहस। (कॉन्ट्रोवर्सी)

वादा-पुं० [अ० वाइदा] वचन। इकरार।

वादानुवाद-पुं० दे० 'वाद-विवाद'।

वादित्र-पुं० [सं०] वाद्य। बाजा।

वादी-पुं० [सं० वादिन्] १. वक्ता। बोलनेवाला। २. न्यायालय में कोई वाद या मुकदमा पेश करनेवाला। फरि-यादी। मुद्दई। (प्लैन्टिफ) ३. विचार के लिए कोई पक्ष या तर्क उपस्थित करनेवाला।

वाद्य-पुं० [सं०] बाजा।

वानप्रस्थ-पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय आर्यों के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसमें पचास वर्ष के हो जाने पर वन में जाकर रहने का विधान है।

वानर-पुं० [सं०] बंदर।

वानस्पत्य-वि० [सं०] वनस्पति सम्बन्धी। वनस्पति का। । पुं० वनस्पतियों के तत्त्वों, वृद्धि और पोषण आदि से सम्बन्ध रखनेवाला शास्त्र या विद्या। (बारबोरिकल्चर)

वापस-वि०[फा०] १. लौटकर फिर अपने स्थान पर आया हुआ। (व्यक्ति) २. मालिक को फेरा या लौटाया हुआ। (पदार्थ)

वापसी-वि० [फा० वापस] १.लौटाया या फेरा हुआ। २. जिसमें वापस आने का परिव्यय भी जुड़ा हो। जैसे-वापसी टिकट (रेल का)। स्त्री० लौटने या लौटाने की क्रिया या भाव। प्रत्यावर्त्तन।

वापिका (पी)-स्त्री० [सं०] छोटा जलाशय। बावली।

वाम-वि० [सं०] १. बायाँ। 'दाहिना' का उलटा। २. प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. टेढ़ा। वक्र।

वामन-वि० [सं०] १. छोटे डील या कद का। बौना। २.ह्रस्व। नाटा। छोटा। पुं० [सं०] १. विष्णु। २. शिव। ३. विष्णु का एक अवतार जो बलि को छलने के लिए हुआ था।

वाम-पंथ-पुं० [सं०] [वि० वाम-पंथी] किसी विषय में बहुत उग्र मत रखनेवालों का सिद्धान्त या वर्ग। (लेफ्ट विंग)

वाम-मार्ग-पुं० [सं०] [वि० वाम-मार्गी] तांत्रिक मत जिसमें मद्य, माँस आदि के सेवन का विधान है।

वामांगिनी(गी)-स्त्री० [सं०] पत्नी।
वामा-स्त्री० [सं०] स्त्री। औरत।
वामावर्त्त-वि० [सं०] १. बाईं ओर घूमा हुआ। २. बाईं ओर से आरंभ होनेवाला।
वायॐ-सर्व० दे० 'वाहि'।
वायविक-वि० [सं०] वायु-सम्बन्धी। वायु का। (एरियल)
पुं० वे बाँस और तार आदि जिनकी सहायता से रेडियो वायु में से शब्द, ध्वनि आदि ग्रहण करता है। (एरियल)
वायव्य-वि०[सं०] वायु-संबंधी। वायु का। पुं० १. उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिम-मोत्तर दिशा। २ एक प्रकार का अस्त्र।
वायस-पुं० [सं०] कौआ। (पक्षी)
वायु-स्त्री० [सं०] हवा।
वायु-पथ-पुं० [सं०] आकाश में हवाई जहाजों के आने-जाने के रास्ते। (एयरवेज)
वायु-मंडल-पुं० [सं०] १. आकाश। २. दे० 'वातावरण'।
वायु-यान-पुं० [सं०] हवा में उड़नेवाला यान। हवाई जहाज। (एयरोप्लेन)
वार-पुं० [सं०] १. द्वार। दरवाजा। २. रोक। रुकावट। ३.अवसर। ४.बार। दफ़ा। ५. सप्ताह का कोई दिन। जैसे-रविवार। पुं० [सं० वार=दोष] १.चोट। आघात। २. आक्रमण। हमला।
वारक-वि० [सं०] १. वारण या निषेध करनेवाला। २. दूर करनेवाला।
वारण-पुं० [सं०] [वि० वारक, वारित, वार्य्य] १.निषेध। मनाही। २.रुकावट।
वारतियॐ-स्त्री० = वेश्या।
वारदॐ-पुं० = बादल।
वारदात-स्त्री०[अ०] १.भीषण या विकट दुर्घटना। २. मार-पीट। दंगा-फसाद।
वारनॐ-स्त्री० [हिं० वारना] वारने की क्रिया या भाव। निछावर। बलि। पुं० दे० 'वंदनवार'।
वारना-स० [हिं० उतारना] कोई चीज किसी के ऊपर चारों ओर घुमाकर किसी को देना या फेंकना। निछावर करना। (किसी की श्रेष्ठता या आदर का सूचक) पुं० निछावर। उत्सर्ग।
मुहा०-ॐवारने जाना=निछावर होना।
वारनारी-स्त्री० = वेश्या।
वारनिश-स्त्री० [अं०] कोई चीज चमकाने के लिए उसपर लगाया जानेवाला रोगन।
वार-पार-पुं० दे० 'आर-पार'।
वार-वधू-स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।
वारांगना-स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।
वारा-पुं० [सं० वारण] १. खर्च की कमी या बचत। किफायत। २.लाभ। फायदा। वि० थोड़े या कम दाम का। सस्ता।
वाराणसी-स्त्री० [सं०] काशी नगरी।
वारा-न्यारा-पुं० [हिं० वार+न्यारा] किसी बात का पूरी तरह से इधर या उधर होने का निश्चय। निपटारा।
वाराह-पुं० दे० 'बराह'।
वारि-पुं० [सं०] जल। पानी।
वारिज-पुं० [सं०] १. कमल। २. शंख। ३. खरा सोना।
वारित-वि० [सं०] जिसका वारण या मनाही की गई हो। वर्जित।
वारिद-पुं० [सं०] बादल। मेघ।
वारिधि-पुं० [सं०] समुद्र।
वारिवर्तॐ-पुं० [सं० वारि] एक मेघ का नाम।
वारिवाह-पुं० [सं०] मेघ। बादल।
वारिस-पुं० [अ०] उत्तराधिकारी।
वारींद्र(रीश)-पुं० [सं०] समुद्र।
ॐ**वारुणी**-स्त्री० [सं०] १. मदिरा। शराब।

२. वरुण की स्त्री। ३. एक पर्व जिसमें गंगा-स्नान का माहात्म्य है। ४. सौर जगत् का एक ग्रह जिसका पता सन् १७८१ में लगा था। (यूरेनस)

वार्त्ता-स्त्री०[सं०] १.वृत्तान्त। हाल। २. विषय। मामला। ३ बात-चीत। ४.कृषि, वाणिज्य, गो-रक्षा आदि वैश्यों के काम।

वार्त्तायन-पुं० [सं०] [वि० वार्त्तायित] वह सामयिक पत्र जिसमें किसी राज्य या विभाग आदि से संबंध रखनेवाली बातें प्रकाशित होती हैं। (गजट)

वार्त्तायित-वि० [सं०] जिसका उल्लेख वार्तायन में हो चुका हो। (गजटेड)

वार्त्तालाप-पुं० [सं०] बात-चीत।

वार्त्तावह-पुं०[सं०]संदेश पहुँचानेवाला। दूत। हरकारा।

वार्त्तिक-पुं० [सं०] किसी ग्रंथ की टीका या व्याख्या।

वार्द्धक्य-पुं० [सं०] १. वृद्धावस्था। बुढ़ापा। २ वृद्धि। बढ़ती।

वार्षिक वि०[सं०] १.वर्ष-संबंधी। (ऐनुअल) २.जो प्रति वर्ष होता हो। (ईयरली)

वार्षिकी-स्त्री० [सं० वार्षिक] १. प्रति वर्ष दी जानेवाली वृत्ति या अनुदान। (ऐनुइटी) २. प्रति वर्ष होनेवाला कोई प्रकाशन। (ऐनुअल)

वाला-प्रत्य० [?] [स्त्री० वाली] कर्तृत्व, स्वामित्व, संबंध आदि का सूचक प्रत्यय। जैसे-खानेवाला, घूमनेवाला।

वालिद्-पुं० [अ०] पिता। बाप।

वाल्मीकि-पुं०[सं०] एक प्रसिद्ध मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि-कवि हैं।

वावैला-पुं० [अ०] १. विलाप। रोना-कलपना। २. कोलाहल। हल्ला। शोर।

वाष्प-पुं० [सं०] भाप।

वाष्पीकरण-पुं० [सं०] किसी वस्तु को कुछ विशेष प्रक्रिया से वाष्प के रूप में लाना। (एवोपोरेशन)

वासंतिक-वि०[सं०] वसंत का। वसंती।

वासंती-स्त्री० [सं०] १. माधवी लता। २. वसंतोत्सव।

वि० वासंतिक। वसन्त का।

वास-पुं० [सं०] १. रहना। निवास। २. घर। मकान। ३. गंध। बू।

वासक-सज्जा-स्त्री० [सं०] वह नायिका जो नायक की प्रतीक्षा में सज-धजकर बैठे।

वासना-स्त्री० [सं०] कुछ पाने या करने की इच्छा। कामना।

वासर-पुं० [सं०] दिन। दिवस।

वासित-वि० [सं०] सुगंध से युक्त या सुगंधित किया हुआ।

वासिल-वि०[अ०] १. मिला या पहुँचा हुआ। प्राप्त। २. जो वसूल हुआ हो।

यौ०-वासिल-बाकी=वसूल की हुई और बाकी रकम।

वासी-पुं० [सं० वासिन्] किसी स्थान पर रहनेवाला। निवास करनेवाला।

वासुकी-पुं० [सं०] आठ नागराजों में से दूसरा नागराज।

वासुदेव-पुं० [सं०] १. वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्णचंद्र। २. पीपल का पेड़।

वास्कट-स्त्री० [अं० वेस्टकोट] एक प्रकार की कुरती। फतूही।

वास्तव-वि० [सं०] [भाव० वास्तवता] प्रकृत। यथार्थ। असली।

वास्तविक-वि० [सं०] [भाव० वास्तविकता] जो वास्तव में हो या हुआ हो। बिलकुल ठीक। (ऐक्चुअल)

वास्तव्य-वि०[सं०]रहने या बसने योग्य। पुं० बस्ती। आबादी।

वास्ता-पुं० [अ०] संबंध । लगाव ।

वास्तु-पुं० [सं०] १. वह स्थान जहाँ घर बनाया जाय । २. घर । मकान । ३. ईंट-पत्थर आदि से बनी चीज़ । इमारत ।

वास्तु-कला-स्त्री० [सं०] वास्तु या मकान, महल आदि बनाने की कला ।

वास्तु-काष्ठ-पुं० [सं०] वास्तु-वृक्ष की वह सूखी लकड़ी जो भवन, कुरसी, अलमारी आदि बनाने के काम में आती है । (टिम्बर)

वास्तु-वृक्ष-पुं० [सं०] वह वृक्ष जिसकी लकड़ी घर, अलमारी, मेज, कुरसी आदि बनाने के काम में आती है । (टिम्बर ट्री)

वास्तु-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें वास्तु-कला का विवेचन होता है ।

वास्ते-अव्य० [अ०] १. लिए । निमित्त । २. हेतु । कारण ।

वाह-अव्य० [फा०] १. प्रशंसा या आश्चर्य-सूचक शब्द । धन्य । २. घृणा या तिरस्कार सूचक-शब्द ।

वाहक-पुं० [सं०] [स्त्री० वाहिका] १. बोझ ढोने या खींचनेवाला । २. भार ग्रहण करनेवाला । ३. सारथी ।

वाहन-पुं० [सं०] सवारी ।

वाहना-स० दे० 'बाहना' ।

वाह-वाही-स्त्री० [फा०] लोगों की प्रशंसा । स्तुति । साधुवाद ।

वाहि*-सर्व० [हिं० वा] उसको । उसे ।

वाहित-वि० [सं०] १. वहन किया हुआ । ढोया हुआ । २. बिताया हुआ ।

वाहिनी-स्त्री० [सं०] सेना । फौज ।

वाहिनीपति-पुं० [सं०] सेनापति ।

वाहियात-वि० [अ० वाही+फा० यात (प्रत्य०)] १. व्यर्थ । फजूल । २. बुरा । खराब ।

वाही-वि० [सं० वाहिन्] [स्त्री० वाहिनी] वहन करनेवाला । जैसे-भारवाही ।

वाही-तबाही-वि० [अ० वाही+तबाही] १. वाहियात । बेहूदा । २. अंड-बंड । बे-सिर-पैर का ।

स्त्री० अंड-बंड या गाली-गलौज की बातें ।

वाह्य-वि० [सं०] १. वहन करने योग्य । २. जो वहन करता हो । जैसे-वाह्य पशु= भार ढोनेवाला पशु ।

वाह्लीक-पुं० [सं०] १. अफगानिस्तान के पश्चिम का एक प्राचीन प्रदेश । २. इस देश का घोड़ा ।

विंद*-पुं० १ दे० 'वृंद' । २. दे० 'विंदु' ।

विंदक-पुं० [?] १. प्राप्त करनेवाला । २. जाननेवाला ।

विंदु-पुं०[सं०बिन्दु] १.पानी की बूँद । २. बिन्दी । ३.अनुस्वार । ४.शून्य । ५.रेखा-गणित में वह जिसका स्थान तो हो, पर जिसके विभाग न हो सकें । (पॉइन्ट)

विन्ध्य-पुं०[सं०] भारत के मध्य में पूर्व-पश्चिम फैली हुई एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी ।

विंश-वि० [सं०] बीसवाँ ।

वि-उप० [सं०] एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर ये अर्थ देता है-(क) विशेष; जैसे-विलुब्ध । (ख) अनेक-रूपता; जैसे-विविध । (ग) निषेध या विपरीतता; जैसे-विक्रय, विपक्ष ।

विकंपन-पुं० [वि० विकंपित] = कंपन ।

विकच-वि०[सं०] १. खिला हुआ । विकसित । २.जिसके कच या बाल न हों । पुं० बालों की लट ।

विकट-वि० [सं०] [भाव० विकटता] १. भयंकर । भीषण । २. कठिन । मुश्किल । ३. दुर्गम ।

विकर-पुं० [सं० वि=विशिष्ट+कर] कुछ

विशेष अवस्थाओं में या विशिष्ट पदार्थों पर लगानेवाला कर। अववाव। (सेस) पुं० [सं०] रोग। बीमारी।

विकराल-वि०[सं०] भीषण। डरावना।

विकर्षण-पुं० [सं०] [वि० विकृष्ट] १. आकर्षण। खिंचाव। २. प्राचीन काल का एक शास्त्र जिसमें किसी को अपनी ओर खींचने या अपने पर अनुरक्त करने की विद्या का वर्णन है। ३. न रहने देना। जैसे-किसी प्रथा, पद्धति आदि का विकर्षण। (एबॉलिशन) ४. वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई बना हुआ विधान समाप्त कर दिया जाता है। विधान आदि का अन्त करना। (रिपील)

विकल-वि० [सं०] [भाव० विकलता] १. जिसके मन में शांति न हो। विह्वल। व्याकुल। बेचैन। २. जिसमें 'कला' न हो। 'कला' से रहित या हीन। ३. टूटा-फूटा। खंडित। ४.अपूर्ण। अधूरा।

विकलता-स्त्री० [सं०] १. 'विकल' होने का अवस्था या भाव। व्याकुलता। बेचैनी। २. कला-हीनता।

विकलन-पुं० [सं०] खाते या रोकड़-बही में किसी के नाम उसे दिया हुआ धन लिखना। किसी के नाम या खर्च की मद में लिखना। (डेबिट)

विकलांग-वि०[सं०] जिसका कोई अंग टूटा या बेकाम हो। खंडित अंगवाला।

विकला-स्त्री० [सं०] १. चन्द्रमा की कला का सोलहवाँ भाग। २. गणित में समय का एक बहुत छोटा मान।

विकलाना-अ०,स० [सं०विकल] व्याकुल या बेचैन होना या करना। घबराना।

विकलित-वि दे० 'विकल'।

विकल्प-पुं० [सं०] १. भ्रम। धोखा। २. पहले कोई बात सोचकर फिर उसके विरुद्ध और और बातें सोचना। ३. योग के अनुसार एक प्रकार की चित्त-वृत्ति। ४. एक प्रकार की समाधि। ५. कविता में एक प्रकार का अलंकार जिसमें दो विरोधी बातें रखकर कहा जाता है कि या तो यह होगा या वह। ६. व्याकरण में किसी विषय के कई नियमों में से अपनी इच्छा के अनुसार कोई एक नियम लेना या मानना। ७. वह अवस्था जिसमें सामने आये हुए कई विषयों या बातों में से कोई एक विषय या बात अपने लिए चुनने का अधिकार रहता है। (ऑपशन)

विकसन-पुं० [सं०] १. विकसित होने की क्रिया या भाव। विकास होना। २. (कलियों आदि का) खिलना।

विकसना-अ० [सं० विकास] १. विकसित होना। विकास को प्राप्त होना। २. (कलियों आदि का) खिलना। ३. (मन का) प्रसन्न होना।

विकसाना-स० हिं० 'विकसना' का स०।

विकसित-वि० [सं०] १. जिसका विकास हुआ हो। विकास को प्राप्त होनेवाला। २. खिला हुआ।

विकस्वर-पुं० [सं०] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर फिर साधारण बात से उसकी पुष्टि करते हैं।

विकार-पुं० [सं०] १. वह दोष जिसके कारण किसी वस्तु का रूप-रंग बदल जाता और वह खराब होने लगती है। बिगाड़। २. दोष। खराबी। बुराई। ३. मन में उत्पन्न होनेवाला कोई प्रबल भाव या वृत्ति। ४. व्याकरण में उसके नियम

के अनुसार किसी शब्द का रूप बदलना। जैसे 'वह चलने लगा' में 'चलने' वस्तुतः 'चलना' का विकार या विकृत रूप है।

विकारी- वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार का विकार या बिगाड़ हुआ हो। २. जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन या हेर-फेर हुआ हो। ३.जिसके मन में राग-द्वेष आदि विकार उत्पन्न हुए हों। पुं० व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप कुछ विशेष नियमों के अनुसार या कुछ विशेष अवस्थाओं में बदलता हो। जैसे-प्रायः सभी संज्ञाएँ, क्रियाएँ और विशेषण विकारी होते हैं।

विकाश-पुं० [सं०] १. प्रकाश। रोशनी। २. विस्तार। फैलाव। ३ दे० 'विकास'।

विकाशन-पुं०[सं०]किसी वस्तु में अच्छी अच्छी बातें बढ़ाकर उसे उन्नत करना। अच्छी, उन्नत या सम्पन्न दशा की ओर ले जाना। (डेवलपमेन्ट)

विकास-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का फैलना या बढ़ना। प्रसार। फैलाव। २. (फूलों आदि का) खिलना। ३. विज्ञान में मानी जानेवाली वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई वस्तु अपनी आरम्भिक सामान्य अवस्था से धीरे धीरे बढ़ती, फैलती और सुधरती हुई उन्नत और पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है। (इवोल्यूशन)

विकासना*-स०=विकसित करना। अ० दे० 'विकसना'।

विकासवाद-पुं० [सं०] आधुनिक वैज्ञानिकों का एक प्रसिद्ध सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि आरंभ में पृथ्वी पर एक ही मूल-तत्व था और सब वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव-जंतु, मनुष्य आदि क्रमशः उसी से निकले, फैले और बढ़े हैं।

विकिर-पुं० [सं०] पक्षी। चिड़िया।

विकिरण-पुं० [सं०] बहुत-सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना या होना। जैसे-आतशी शीशे से।

विकीर्ण-वि० [सं०] १.चारो ओर बिखरा या फैला हुआ। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

विकुंठ*-पुं० = वैकुंठ।

विकृत-वि० [सं०] १. जिसमें किसी प्रकार का विकार हो गया हो। बिगड़ा हुआ। २. जिसका रूप बिगड़ गया हो। ३. जो युक्ति, तर्क या बुद्धि के अनुसार ठीक न हो, बल्कि उसके विपरीत अनुचित या भ्रमपूर्ण हो। (परवर्स)

विकृत-चित्त-वि० [सं०] किसी प्रकार के मानसिक विकार या नशे आदि के कारण जिसका चित्त या बुद्धि ठिकाने न हो। (आफ अनसाउन्ड माइंड)

विकृति-स्त्री० [सं०] १.विकार। बिगाड़। २. वह रूप जो किसी वस्तु के बिगड़ने पर उसे प्राप्त होता है। किसी वस्तु का बिगड़ा हुआ रूप। ३. सांख्य में मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर उसे प्राप्त होता है। ४. मन का क्षोभ। ५. व्याकरण में शब्द का वह रूप जो मूल धातु में विकार होने पर उसे प्राप्त होता है। ६. सत्य, औचित्य, न्याय, तर्क, नियम, विधान आदि के सिद्धांतों से विपरीत या विरुद्ध होने की अवस्था। (परवर्शन, परवर्सिटी)

विकृष्ट-वि० [सं०] १ खींचा या खिंचा हुआ। आकृष्ट। २.(विधान, आज्ञा आदि) जिसका अन्त कर दिया हो। जो न रहने दिया गया हो।

विकेंद्रीकरण-पुं० [सं०] सत्ता आदि को एक केन्द्र से हटाकर आस-पास के भिन्न

भिन्न अंगों में बाँटना (डिसेन्ट्रलाइजेशन)

विक्रम-पुं० [सं०] १. पराक्रम। वीरता। बहादुरी। २. बल। शक्ति। ताकत। ३. दे० 'विक्रमादित्य'।

विक्रमाजीत-पुं० दे 'विक्रमादित्य'।

विक्रमादित्य-पुं० [सं०] उज्जयिनी का एक प्रसिद्ध और बहुत प्रतापी राजा जिसका ठीक ठीक समय इतिहासज्ञ अभी तक निश्चित नहीं कर सके हैं। विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द-पुं०[सं०] दे०'विक्रमी संवत्'।

विक्रमी-वि० [सं०] १ जिसमें विक्रम या वीरता हो। २.विक्रम संबंधी। विक्रम का।

विक्रमी संवत्-पुं० [सं०] भारत में प्रचलित एक प्रसिद्ध संवत् जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रय-पुं० [सं०] मूल्य लेकर कोई वस्तु किसी को देना। बेचना। बिक्री। (डिस्पोजीशन, सेल)

विक्रय कर-पुं० दे० 'बिक्री कर'।

विक्रयिका-स्त्री० [सं०] वह पुरजा जो नगद माल बेचने पर बेचनेवाला लिखकर खरीदनेवाले को देता है। नगद बिक्री का पुरजा। (कैश मेमो)

विक्रयी-पुं०[सं०विक्रयिन्] वह जो बेचता हो या जिसने बेचा हो। बेचनेवाला।

विक्रियोपमा-स्त्री० [सं०] उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय के अवलंबन का वर्णन होता है।

विक्रेता-पुं०[सं०] बेचनेवाला। विक्रयी।

विक्रेय-वि० [सं०] जो बेचा जाने को हो। बिकाऊ।

विक्षत-वि० [सं०] चोट खाया हुआ। जिसे क्षत लगा हो। घायल।

विक्षिप्त-वि० [सं०] फैला, बिखरा या छितराया हुआ।

पुं० [भाव० विक्षिप्तता] १. जिसके मस्तिष्क में विकार हो गया हो। पागल। २. योग के अनुसार चित्त की वह अवस्था जिसमें कभी वह स्थिर और कभी चंचल होता है।

विक्षुब्ध-वि० [सं०] जो विशेष रूप से क्षुब्ध हुआ हो। जिसे या जिसमें विक्षोभ हुआ हो।

विक्षेप-पुं० [सं०] १. ऊपर या इधर-उधर फेंकना। २. मन का इधर-उधर भटकना। मन का संयत या शान्त न रहना। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ४. विघ्न। बाधा।

विक्षोभ-पुं० [सं०] [वि० विक्षुब्ध] १. मन की चंचलता। उद्वेग। २. किसी अप्रिय या अनिष्ट घटना के कारण मन में होनेवाला विकार। ३. उथल-पुथल।

विखानस-पुं०=विषाण।

विख्यात-वि०[सं०] [भाव० विख्याति] जिसकी बहुत ख्याति हो। प्रसिद्ध।

विख्याति-स्त्री० [सं०] प्रसिद्धि।

विख्यापन-पुं० [सं०] [वि० विख्यापित] कोई बात सबकी जानकारी के लिए सार्वजनिक रूप से कहना या प्रकाशित करना। (एनाउन्समेन्ट)

विगत-वि० [सं०] १ (समय) जो गत हो चुका हो। बीता हुआ। २. जो अभी तुरन्त बीता है, उससे ठीक पहले का। 'गत' से पहले का। जैसे-विगत सप्ताह, विगत वर्ष। (अर्थात् गत सप्ताह या गत वर्ष से पहले का सप्ताह या वर्ष) ३. रहित। विहीन।

विगति-स्त्री०[सं०] १.'विगत' का भाव। २. दुर्दशा। दुर्गति।

विगर्हित-वि० [सं०] बुरा। खराब।

विगलन-पुं० [सं०] [वि० विगलित] १. पुराने या खराब होने के कारण किसी चीज का सड़ना या गलना। २. शिथिल होना। ढीला पड़ना। ३. बिगड़ना। खराब होना। ४. बह या गिरकर अलग होना या निकलना।

विगुण-वि० [सं०] गुण-रहित। निर्गुण।

विग्रह-पुं०[सं०][वि०विग्रही] १ दूर या अलग करना। २ विभाग। ३ यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों की व्याख्या या विश्लेषण के लिए प्रत्येक शब्द अलग अलग करना। (व्याकरण) ४. कलह। लड़ाई। झगड़ा। ५. युद्ध। ६. शत्रुओं या विरोधियों में फूट डालना। ७. आकृति। रूप। ८.शरीर। ९.देवता आदि की मूर्त्ति।

विघटन-पुं० [सं०] [वि० विघटित] १. घटित करनेवाले या संयोजक अंगों को अलग अलग करना। (डिस्सोल्यूशन) जैसे-संस्था का विघटन। २. बिगाड़ना। ३. नष्ट करना। ४. तोड़ना-फोड़ना।

विघात-पुं०[सं०] १ चोट। आघात। २. नाश। ३ हत्या। ४.विफलता। ५.बाधा।

विघ्न-पुं० [सं०] अड़चन। बाधा।

विचकित-वि०=चकित।

विचक्षण-वि० [सं०] १. चमकता हुआ। २.किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता। निपुण। (एक्सपर्ट) ३. पंडित। विद्वान्। ४. बहुत बड़ा बुद्धिमान्।

विचच्छन*-पुं०=विचक्षण।

विचरण-पुं० [सं०] १. चलना। २. घूमना-फिरना।

विचरना-अ० [सं० विचरण] चलना-फिरना। घूमना।

विचल-वि० [सं०] [भाव० विचलता, वि० विचलित] १. जो स्थिर न हो। चलता या हिलता हुआ। अस्थिर। २. स्थान, प्रतिज्ञा आदि से हटा हुआ।

विचलना*-अ० [सं० विचलन] १. अपने स्थान से हटकर इधर-उधर होना। २. घबराना। ३. प्रतिज्ञा या संकल्प से हट जाना या उसपर दृढ़ न रहना।

विचलाना*-स०हिं०'विचलना' का स०।

विचलित-वि० [सं०] १. अस्थिर। चंचल। २ अपने स्थान, प्रतिज्ञा, सिद्धान्त आदि से हटा हुआ।

विचार-पुं० [सं०] १. मन में सोचा या सोचकर निश्चित किया हुआ तत्त्व या बात। संकल्प। २. मन में उत्पन्न होनेवाली बात। भावना। खयाल। ३. किसी बात के सब अंग देखना या सोचना-समझना। ४. मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

विचारक-पुं० [सं०] १. विचार करनेवाला। २. न्याय-विभाग का वह अधिकारी जो अर्थ-संबंधी व्यवहार या मुकद्दमों का विचार करता है। (मुन्सिफ)

विचारणा-स्त्री० [सं०] १. विचार करने की क्रिया या भाव। २. अभियोग, विवाद आदि के सम्बन्ध में न्यायालय का किया हुआ निर्णय। (जजमेन्ट)

विचारणीय-वि० [सं०] [स्त्री० विचारणीया] १ जिसपर कुछ विचार करना आवश्यक या उचित हो। २. जिसके ठीक होने में संदेह हो। संदिग्ध।

विचारना-अ० [सं० विचार+ना (प्रत्य०)] १.विचार करना। सोचना। *२.पूछना। ३. ढूँढ़ना। पता लगाना।

विचारपति-पुं० [सं०] न्याय-विभाग

का वह उच्च अधिकारी जो किसी व्यवहार या मुकदमे पर विधि या कानून और न्याय के अनुसार विचार करके अपना निर्णय देता है। (जज)

विचारवान्-पुं० = विचारशील।

विचारशील-पुं० [सं०] [भाव० विचारशीलता] वह जिसमें अच्छी तरह विचार करने की शक्ति हो। विचारवान्।

विचारालय-पुं० = न्यायालय।

विचारित-वि० [सं०] जिसपर विचार हुआ हो। विचार किया हुआ।

विचारी-पुं० [सं० विचारिन्] वह जो विचार करता हो। विचार करनेवाला।

विचार्य्य-वि० = विचारणीय।

विचित्र-वि० [सं०] [भाव० विचित्रता] १. कई रंगोंवाला। २. अद्भुत। विलक्षण। पुं० साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें फल की सिद्धि के लिए कोई उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख होता है।

विचूर्ण(चूर्णित)-वि० [सं०] अच्छी तरह पीसा या चूर्ण किया हुआ।

विचेतन-वि० [सं०] बेहोश। बेसुध।

विचेष्ट-वि० [सं०] चेष्टा-रहित।

विच्छित्ति-स्त्री० [सं०] १. विच्छेद। अलगाव। २.कमी। त्रुटि। ३.साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री साधारण शृंगार से ही पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

विच्छिन्न-वि० [सं०] १. काट या छेदकर अलग किया हुआ। विभक्त। २.अलग।

विच्छेद-पुं० [सं०] [वि० विच्छिन्न, विच्छेदक] १. काट या छेदकर अलग करना। २. बीच से क्रम टूटना। ३. टुकड़े टुकड़े करना या होना। ४. नाश। ५. विरह। वियोग।

विच्युत-वि० [सं०] [भाव० विच्युति] अपने स्थान आदि से गिरा हुआ। च्युत।

बिछोई*-पुं० = वियोगी।

बिछोह*-पुं० = वियोग।

विजन-वि० [सं०] १. जिसमें जन या मनुष्य न हों। २. एकान्त। निराला।

विजना*-पुं० = पंखा।

विजय-स्त्री० [सं०] युद्ध, विवाद, प्रतियोगिता आदि में होनेवाली जीत। जय।

विजय-यात्रा-स्त्री० [सं०] किसी को जीतने के लिए की जानेवाली यात्रा।

विजय-लक्ष्मी(श्री)-स्त्री० [सं०] विजय की अधिष्ठात्री और विजय प्राप्त करानेवाली देवी।

विजया-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. भाँग। ३ दे० 'विजया दशमी'।

विजया दशमी-स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ला दशमी। (हिन्दुओं का त्यौहार)

विजयी-पुं० [सं० विजयिन्] [स्त्री० विजयिनी] विजय प्राप्त करने या जीतनेवाला। विजेता।

विजयोत्सव-पुं० [सं०] १.विजया दशमी का उत्सव। २. किसी पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में होनेवाला उत्सव।

विजल-वि० [सं०] जल-रहित। पुं० वर्षा का अभाव। अवर्षण।

विजातीय-वि० [सं०] दूसरी जाति का।

विजानना*- स० [हिं० जानना] अच्छी तरह जानना।

विजित-वि० [सं०] जिसे या जो जीत लिया गया हो। जीता हुआ।

विजेता-पुं० [सं० विजेतृ] जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। विजयी।

विजै*-स्त्री०=विजय।

विजोग*-पुं० = वियोग।

विज्ञ-वि० [सं०] [भाव० विज्ञता]

१. जानकार। २. बुद्धिमान्। ३. विद्वान्।

विज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] [वि० विज्ञप्त] १. जतलाने या सूचित करने की क्रिया। (नोटिफिकेशन) २. विज्ञापन। इश्तहार।

विज्ञान-पुं० [सं०] १. ज्ञान। जानकारी। २. किसी विषय की जानी हुई बातों और तत्वों का वह विवेचन जो एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में हो। (साइन्स) जैसे-भौतिक विज्ञान, राजनीति विज्ञान।

विज्ञानमय-कोष-पुं० [सं०] ज्ञानेंद्रियों और बुद्धि का समूह। (वेदान्त)

विज्ञानी-पुं० [सं० विज्ञानिन्] १. किसी विषय का अच्छा ज्ञाता। २. बहुत बड़ा ज्ञानी। ३. विज्ञानवेत्ता।

विज्ञापन-पुं० [सं०] [वि० विज्ञापक, विज्ञापनीय, विज्ञापित] १ जानकारी कराना। सूचना देना। २. वह सूचना-पत्र जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बतलाई जाती है। इश्तहार। ३. बिक्री आदि के माल या किसी बात की वह सूचना जो सब लोगों को, विशेषतः सामयिक पत्रों के द्वारा दी जाती है। (एडवरटिज़मेन्ट)

विज्ञापित-वि० [सं०] १ जिसका विज्ञापन हुआ हो। (एडवरटाइज्ड) २. जिसकी सूचना दी गई हो। (नोटिफायड)

विज्ञापित क्षेत्र-पुं० [सं०] स्थानिक स्वशासन और प्रबन्ध के लिए नियत किया हुआ छोटा क्षेत्र। (नोटिफायड एरिया)

विट-पुं० [सं०] १. कामुक और लंपट। २. धूर्त। चालाक। ३. साहित्य में वह धूर्त और स्वार्थी नायक जो भोग-विलास में अपनी सारी संपत्ति गँवा चुका हो।

विटप-पुं० [सं०] वृक्ष। पेड़।

विडंबना-स्त्री० [सं०] [वि० विडंबनीय, विडंबित] १. किसी को चिढ़ाने या तुच्छ ठहराने के लिए उसकी नकल करना। २. हँसी उड़ाना। उपहास करना।

विडरना*-अ० [?] १. तितर-बितर होना। २. भागना।

विडारना-स० हिं० 'विडरना' का स०।

विड़ाल-पुं० [सं०] बिल्ली।

विड़ौजा-पुं० [सं०] इन्द्र।

वितंडा-स्त्री०[सं०] १. दूसरे की बातों की उपेक्षा करते हुए अपनी बात कहते चलना। २.व्यर्थ का विवाद या कहा-सुनी।

वितंत*-पुं० [सं० वि+तंत्र] (सारगा, सितार आदि से भिन्न प्रकार का) वह बाजा जिसमें तार न लगे हों।

वित*-वि० [सं० विद्] १. जानने-वाला। ज्ञाता। २. चतुर। निपुण।

वितताना*-अ० [सं० व्यथा] व्याकुल होना। बेचैन होना।

वितति-स्त्री० [सं०] विस्तार। फैलाव।

वितथ-वि० [सं०] १. जिसमें कुछ तथ्य न हो। २. मिथ्या। झूठ। पुं०आज्ञा, निश्चय, आभार आदि के निर्वाह या पालन का अनुचित या दंडनीय अकरण या अभाव। (डिफॉल्ट)

वितथी-पुं० [सं० वितथ] वह जो आज्ञा, निश्चय, आभार आदि का ठीक समय पर और उचित रूप से पालन न कर सका हो। वितथ का दोषी। (डिफॉल्टर)

वितन*-पुं० [सं० वितनु] कामदेव।

वितपन्न*-पुं० = व्युत्पन्न। वि० [?] घबड़ाया हुआ। व्याकुल।

वितरक-पुं० [सं०] १. वह जो बाँटता हो। बाँटनेवाला। २. वह जो किसी के अभिकर्त्ता के रूप में उसकी तैयार की हुई चीज़ें ग्राहकों या थोक व्यापारियों को देता हो। (डिस्ट्रिब्यूटर)

वितरण-पुं० [सं०] १. देना। २.बाँटना। (डिस्ट्रिब्यूशन)

वितरना*-स०=बाँटना।

वितरित-वि० [सं०] बाँटा हुआ।

वितर्क-पुं०[सं०] १.किसी तर्क के उत्तर में दिया जानेवाला दूसरा तर्क। २. एक तर्क के उत्तर में उपस्थित किया जानेवाला दूसरा तर्क। (आर्गुमेन्ट) ३. संदेह। शक। ४ एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है।

विताड़न-पुं० दे० 'ताड़ना'।

वितान-पुं० [सं०] १ विस्तार। फैलाव। २. बड़ा तम्बू या खेमा।

वितानना*-स० [सं० वितान] खेमा आदि तानना।

वितीत*-वि०=व्यतीत।

वितु*-पुं०=वित्त।

वित्त-पुं० [सं०] [वि० वैत्तिक, वित्तीय] १. धन। संपत्ति। २. राज्य, संस्था आदि के आय और व्यय की व्यवस्था। आर्थिक प्रबन्ध। (फाइनान्स)

वित्त विधेयक-पुं० [सं०] १. राज्य का वह विधेयक जो आगामी वर्ष के आय-व्यय आदि से संबंध रखता और विधायिका में स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाता है। (फाइनान्स बिल)

वित्तीय-वि० [सं०] वित्त संबंधी। वित्त का। (फाइनैन्शल)

विथकना*-अ० [हिं० थकना] १.थकना। २.मोह या आश्चर्य के कारण चुप होना।

विथकित*-वि० [हिं० विथकना] १. थका हुआ। २. मोहित या चकित होने के कारण चुप।

विथराना*-स० [सं० वितरण] १. फैलाना। २. बिखराना। छितराना।

विथा*-स्त्री०=व्यथा।

विथारना*-स०=फैलाना।

विथित*-वि०=व्यथित।

विदग्ध-पुं० [सं०] १. रसिक। २. विद्वान्। पंडित। ३. चतुर। होशियार।

विदरना*-अ० [सं० विदरण] फटना। स० विदीर्ण करना। फाड़ना।

विदर्भ-पुं० [सं०] आधुनिक बरार प्रदेश का पुराना नाम।

विदल-वि० [सं०] १. जिसमें दल न हो। २. खिला हुआ।

विदलन-पुं० [सं०] [वि० विदलित] १. रौंदने, मलने, दबाने आदि की क्रिया या भाव। २. फाड़ना। ३. नष्ट करना।

विदा-स्त्री० [सं० विदाय] १. प्रस्थान। २. जाने की अनुमति। वि० प्रस्थित। रवाना।

विदाई-स्त्री० [हिं०विदा+ई (प्रत्य०)] १. विदा होने की क्रिया या भाव। २. प्रस्थान करने के समय दिया जानेवाला धन।

विदारक-वि० [सं०] फाड़नेवाला।

विदारण-पुं० [सं०] १. फाड़ना। २. मार डालना।

विदारना*-स०=फाड़ना।

विदित-वि० [सं०] जाना हुआ। ज्ञात।

विदीर्ण-वि०[सं०] फाड़ा या फटा हुआ।

विदुषी-स्त्री० [सं०] विद्वान् स्त्री।

विदूर-वि० [सं०] [वि० विदूरित] बहुत दूर।
* पुं० दे० 'वैदूर्य'।

विदूषक-पुं० [सं०] [स्त्री० विदूषिका] १.अपने वेष, चेष्टा, बात-चीत आदि से दूसरों को हँसानेवाला। मसखरा। २. प्रायः नाटकों में इस प्रकार का एक पात्र जो नायक का अंतरंग मित्र या सखा

होता है।

विदूषण-पुं० [सं०] दोष लगाना।

विदेश-पुं०[सं०] [वि०विदेशी, विदेशीय] अपने देश के सिवा दूसरा देश। पर-देश।

विदेशी-वि० [हिं० विदेश] १. दूसरे देश या देशों से सम्बन्ध रखनेवाला। (फॉरेन) २. विदेश का निवासी। परदेसी।

विदेह-पुं० [सं०] १. राजा जनक। २. प्राचीन मिथिला देश।

वि० [सं०] १. शरीर-रहित। २ बे-सुध।

विदेही-वि०[स्त्री०विदेहिनी] दे०'विदेह'।

विद्-वि० [सं०] जानकार। ज्ञाता। (यौ० के अन्त में : जैसे-कलाविद्।)

विद्ध-वि० [सं०] १. बेधा या छेदा हुआ। २. घायल। ३. टेढ़ा। ४. सटा हुआ।

विद्यमान-वि० [सं०] [भाव० विद्यमानता] उपस्थित। मौजूद। (प्रेजेन्ट)

विद्या-स्त्री० [सं०] १. शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान। २. वे शास्त्र जिनमें ज्ञान की बातों का विवेचन होता है। ३. ज्ञान के विशेष विभाग। ४ गुण।

विद्याधर-पुं० [सं०] [स्त्री० विद्याधरी] १. एक प्रकार की देव-योनि। २. एक प्रकार का अस्त्र। ३ विद्वान्।

विद्यापीठ-पुं० [सं०] शिक्षा का बड़ा केन्द्र। महाविद्यालय।

विद्यारंभ-पुं० [सं०] बालक की शिक्षा या पढ़ाई आरंभ करने का संस्कार।

विद्यार्थी-पुं० [सं०] [स्त्री० विद्यार्थिनी] विद्या पढ़नेवाला। छात्र।

विद्यालय-पुं० [सं०] वह जगह जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला। (स्कूल)

विद्युत्-स्त्री० [सं०] बिजली।

विद्युत्-चालक-वि०[सं०] [भाव०विद्युत् चालकता] (वह पदार्थ) जिसके एक सिरे पर विद्युत् लगते ही उसके दूसरे सिरे तक पहुँच जाय। जैसे-धातुएँ आदि।

विद्युत्मापक-पुं० [सं० विद्युत्+मापक] वह यंत्र जिससे विद्युत् का बल और वेग या गति नापी जाती है।

विद्रुम-पुं० [सं०] मूँगा।

विद्रोह-पुं० [सं०] १. द्वेष। २.वह भारी उपद्रव जिसका उद्देश्य राज्य को हानि पहुँचाना, उलटना या नष्ट करना हो। बलवा। बगावत। (रिबेलियन,म्यूटिनी)

विद्रोही-पुं० [सं० विद्रोहिन्] १. द्वेष करनेवाला। २.बलवा करनेवाला। बागी।

विद्वान्-पुं० [सं० विद्वस्] [भाव० विद्वत्ता] जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो। पंडित।

विद्विष्ट-वि० [सं०] १. विद्वेष से उत्पन्न। २ विरुद्ध पड़नेवाला। (रिपगनेन्ट)

विद्वेष-पुं० [सं०] १. शत्रुता। वैर। २. विरोध। विपरीतता। (रिपगनेन्सी)

विधंस*-पुं० [सं० विध्वंस] [*क्रि० विधंसना] नाश।

वि० विध्वस्त। नष्ट। विनष्ट।

विध*-पुं० [सं० विधि] ब्रह्मा।

स्त्री० विधि। प्रकार। तरह।

विधना-स्त्री० [सं० विधि] १. विश्व का विधान करनेवाली शक्ति। २. होनी। होनहार। भवितव्यता।

विधया-क्रि० वि० [सं०] १. विधि के रूप में। २. विधि के अनुसार।

विधर्मी-पुं० [सं० विधर्मिन्] १. अधर्म करनेवाला। २. पराये या दूसरे धर्म का अनुयायी।

विधवा-स्त्री० [सं०] [भाव० वैधव्य] वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो। राँड़।

विधवाश्रम-पुं० [सं० विधवा+आश्रम]

वह स्थान जहाँ अनाथ विधवाओं के पालन-पोषण और शिक्षा आदि का प्रबंध होता है।

विधाँसना*-स० दे० 'विधंसना'।

विधाता-पुं० [सं० विधातृ] [स्त्री० विधात्री] १. विधान करनेवाला। २. उत्पन्न करने या जन्म देनेवाला। ३. सृष्टि रचनेवाला। (ब्रह्मा या ईश्वर)

विधान-पुं० [सं०] १. किसी कार्य का आयोजन। अनुष्ठान। २ व्यवस्था। प्रबन्ध। ३. विधि। प्रणाली। ढंग। ४. रचना। निर्माण। ५. कोई काम करने के लिए दी हुई आज्ञा। विधि। ६. राज्य या शासन द्वारा किसी विशेष विषय में बनाये हुए नियमों का समूह। कानून। (ऐक्ट) जैसे-साक्ष्य विधान, दंड विधान आदि।

विधान-परिषद्-स्त्री०=संविधान परिषद्।

विधान-मंडल-पुं० दे० 'विधायिका'।

विधानवाद-पुं० [सं०] [वि० विधानवादी] वह सिद्धान्त जिसके अनुसार विधान या राज-नियम ही सर्व-प्रधान माना जाता हो और उसके विरुद्ध कुछ न किया जाता हो। (कॉन्स्टिट्यूशनलिज्म)

विधानवादी-पुं० [सं० विधान+वादिन्] वह जो विधानवाद मानता हो। विधान या राज-नियम के अनुसार ही सब काम करनेवाला। (कॉन्स्टिट्यूशनलिस्ट)

विधायक-वि० [सं०] [स्त्री० विधायिका, विधायिनी] १.विधान करनेवाला। २.यह बतलानेवाला कि यह काम इस प्रकार होना चाहिए। ३.(पत्र, आज्ञा आदि) जिसके द्वारा कोई विधान किया या आज्ञा दी जाय। (मैनडेटरी)

विधायन-पुं० [सं०] १. विधान करना या बनाना। २. राज्य, शासन या विधायिका सभा का कोई नया विधान या कानून बनाना। (एनैक्टमेन्ट)

विधायिका(सभा)-स्त्री० [सं०] लोक-तंत्री शासन में प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो नये विधान या कानून बनाती और पुराने विधानों में संशोधन, परिवर्तन आदि करती है। (लेजिसलेचर)

विधायित-वि० [सं०] १. जिसका विधान किया गया हो। २. विधान या कानून के रूप में लाया हुआ। (एनैक्टेड)

विधायी-वि० दे० 'विधायक'।

विधारण-पुं० [सं० वि (विकृत या विपरीत) + धारणा] [वि० विधारित] किसी विवादास्पद या अप्रमाणित बात या विषय में पहले से स्थिर की हुई विपरीत, विकृत या पक्षपात-पूर्ण धारणा। (प्रिजुडिस)

विधारित-वि० [हिं० विधारण] १.जिसने अपने मन में किसी विषय में कोई विकृत या पक्षपात-पूर्ण धारणा बना ली हो। २. जिसके संबंध में उक्त प्रकार की धारणा बनी या हुई हो। (प्रिजुडिस्ड)

विधि-स्त्री० [सं०] १. काम करने का ढंग या रीति। प्रणाली। रीति। २.व्यवस्था। प्रबंध। ३.किसी शास्त्र या प्रामाणिक ग्रंथ में बतलाई हुई व्यवस्था। शास्त्रीय विधान। ४.शास्त्रों की यह आज्ञा कि मनुष्य को अमुक अमुक काम अवश्य करने चाहिएँ। ५. मनुष्यों के आचार-व्यवहार के लिए राज्य द्वारा स्थिर किये हुए वे नियम या विधान, जिनका पालन सबके लिए आवश्यक और अनिवार्य्य होता है और जिनका उल्लंघन करने से मनुष्य दंडित होता या हो सकता है। कानून। (लॉ) ६. व्याकरण में क्रिया का वह

रूप जिससे किसी को कोई काम करने का आदेश दिया जाता है। ७. साहित्य में वह अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। ८. प्रकृति या नियति। ९. भाँति। पुं० ब्रह्मा।

विधिक-वि० [सं०] १. विधि या कानून से सम्बन्ध रखनेवाला। २. जो विधि के विचार से ठीक हो। वैध। (लीगल)

विधि-कर्त्ता-पुं० [सं०] वह जो विधि या कानून बनाता हो। (लॉ मेकर)

विधिक व्यवहार-पुं० [सं०] वह कार्य या प्रक्रिया जो किसी व्यवहार या मुकदमे में विधि या कानून के अनुसार होती है। (लीगल प्रोसीडिंग)

विधिज्ञ-पुं० [सं०] १. विधि का ज्ञाता। २. वह जिसने विधि-शास्त्र या कानून का अच्छा अध्ययन किया हो और जो दूसरों के व्यवहारों के संबंध में न्यायालय में प्रतिनिधि के रूप में काम करता हो। जैसे-वकील, बैरिस्टर आदि। (लॉइयर)

विधितः-क्रि० वि० [सं०] विधि या कानून के अनुसार।

विधि-पत्नी-स्त्री० [सं०] सरस्वती।

विधि-भंग-पुं० [सं०] ऐसा काम करना जिससे कोई विधि या कानून टूटता हो। (ब्रीच ऑफ लॉ)

विधि-रानी*-स्त्री०=सरस्वती।

विधिवत्-क्रि० वि० [सं०] १. विधि या नियम के अनुसार। २. उचित रूप से।

विधि-शास्त्र-पुं० [सं०] किसी देश या राष्ट्र की सामान्य विधि (कॉमन लॉ) और प्रविधियों की समष्टि। जैसे-भारतीय विधि-शास्त्र (इन्डियन लॉ), जरमन विधि-शास्त्र (जरमन लॉ) आदि।

विधु-बैनी*-स्त्री० दे० 'विधु-वदनी'।

विधुर-पुं० [सं०] [स्त्री० विधुरा] १. दुःखी। २.व्याकुल। ३.असमर्थ। ४. वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गई हो। रँडुआ।

विधु-वदनी-स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री।

विधूत-वि० [सं०] १. काँपता या हिलता हुआ। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त। ३. दूर किया या हटाया हुआ।

विधूनन-पुं०[सं०][वि०विधूनित] काँपना।

विधेय-वि० [सं०] १. जिसका विधान करना उचित हो। किये जाने के योग्य। कर्त्तव्य। २. जिसका विधान होने को हो। पुं० व्याकरण में वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाता है।

विधेयक-पुं० [सं०] किसी विधान या कानून का वह पूर्व या प्रस्तावित रूप जो पारित होने के लिए विधायिका में उपस्थित किया जाता है। कानून का मसौदा। (बिल)

विध्वंस-पु० [सं०] नाश। बरबादी।

विध्वंसक-वि० [सं०] नाश करनेवाला। पुं० एक प्रकार का लड़ाई का जहाज। (डिस्ट्रायर)

विध्वस्त-वि० [सं०] नष्ट किया हुआ।

विनत-वि०[सं०]१. झुका हुआ। २. नम्र।

विनति-स्त्री० [सं०] १. झुकाव। २. नम्रता। सुशीलता। ३. प्रार्थना। विनती।

विनती-स्त्री० = विनति।

विनम्र-वि० [सं०] [भाव० विनम्रता] बहुत विनीत या नम्र।

विनय-स्त्री० [सं०] १. नम्रता। २. शिक्षा। ३. प्रार्थना। ४. नीति।

विनयन-पुं० [सं०] १. विनय। नम्रता। २. शिक्षा। ३. निर्णय। निराकरण। ४.

दूर करना। मोचन।

विनयी-वि० [सं० विनयिन्] विनययुक्त। विनयशील। नम्र।

विनशन-पुं० = विनाश (करना)।

विनश्य-वि० [सं०] नष्ट किये जाने या होने के योग्य।

विनश्वर-वि०[सं०] नाशवान्। अनित्य।

विनष्ट-वि० [सं०] १. नष्ट। ध्वस्त। २. मृत। ३. बिगड़ा हुआ। ४. पतित।

विनसना*-अ०[सं०विनशन] नष्ट होना।

विनाती*-स्त्री० = विनति।

विनायक-पुं० [सं०] गणेश।

विनाश-पुं० [सं०] [वि० विनाशक] १ नाश। २ लोप। ३.बिगाड़। खराबी।

विनाशक-पुं० [सं०] [स्त्री० विनाशिका] विनाश करनेवाला।

विनाशन-पुं० [सं०] [वि० विनाशी, विनश्य] १. नष्ट करना। २. संहार करना।

विनासना*-स० [सं० विनाशन] १. नष्ट करना। २ मार डालना।

विनिमय-पुं० [सं०] १. एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्त्तन। (बार्टर) २ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न भिन्न पक्षों या देशों का लेन-देन विनिमय-पत्रों के अनुसार होता है। (एक्सचेंज) ३ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न भिन्न देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होते हैं और जिसके अनुसार आपसी लेन-देन चुकाये जाते हैं। (एक्सचेंज)

पद-विनिमय की दर=वह दर जिससे एक देश के सिक्के दूसरे देश के सिक्कों से बदले जाते हैं।

विनिमय-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी आर्थिक देन या प्राप्य का सूचक होता है और जिसके द्वारा आपस के लेन-देन का भाव तै होता है। (बिल-आफ एक्सचेंज)

विनियंत्रण-पुं० [सं०] [वि०विनियंत्रित] नियंत्रण का हटाया या दूर किया जाना। (डि-कन्ट्रोल)

विनियोग-पुं० [सं०] १. उपयोग। प्रयोग। २. वैदिक कृत्यों में होनेवाला मंत्र का प्रयोग। ३. प्रेषण। भेजना। ४. व्यापार में पूँजी लगाना। (इन्वेस्टमेंट) ५. संपत्ति आदि किसी प्रकार (विक्रय या दान आदि से) दूसरे को देना। (डिस्पोजल) ६. दे० 'उपयोजन'।

विनियोगिका(वृत्ति)-स्त्री० [सं०] विनियोग करने के योग्य या विनियोग करने में सक्षम बुद्धि या वृत्ति। (डिस्पोजिंग माइन्ड)

विनियोजक-वि०[पुं०]१.विनियोग करनेवाला। २. व्यापार में पूँजी लगानेवाला। ३ अपनी संपत्ति किसी को देनेवाला।

विनिर्दिष्ट-वि० [सं०] विशेष रूप से निर्दिष्ट किया या बतलाया हुआ। (स्पेसिफायड)

विनिर्देश-पुं० [सं०] विशेष रूप से किया हुआ कोई निर्देश या निश्चित रूप से बतलाई हुई कोई बात। (स्पेसिफिकेशन)

विनिश्चय-पुं० [सं०] किसी विषय में, विशेषतः किसी सभा-समिति या न्यायालय में होनेवाला निश्चय या निर्णय। (डिसीजन)

विनिश्चायक-वि० [सं०] विनिश्चय या निर्णय करनेवाला। (डिसाइसिव)

विनीत-वि० [सं०] [स्त्री० विनीता] १.विनयी। सुशील। २ शिष्ट। नम्र। ३. धर्म या नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला।

विनोद-पुं० [सं०] [वि० विनोदी] १.मन

बहलानेवाली बात या काम। तमाशा। २. क्रीड़ा। ३. परिहास। ४. प्रसन्नता।

विन्यास-पुं० [सं०] [वि० विन्यस्त] १. स्थापन। रखना। २. यथा-स्थान या ठीक क्रम से लगाना। ३. जड़ना।

विपंची-स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की वीणा। २. बाँसुरी। मुरली।
वि० जिससे मनोहर शब्द निकले।

विपक्ष-पुं० [सं०] १. दूसरा या विरोधी पक्ष। २. विरोध या खंडन। ३. दे० 'विपक्षी'।

विपक्षी-पुं० [सं० विपक्षिन्] १. विरुद्ध पक्ष का व्यक्ति। २. विरोधी। शत्रु। ३. प्रतिद्वंद्वी। ४. प्रतिवादी।

विपत्ति-स्त्री० [सं०] १. दुःख। संकट। २. दुःख की स्थिति। ३ कठिनाई।

विपत्ति-जनक-वि० [सं०] जिससे विपत्ति उत्पन्न होती या हो सकती हो। (डेन्जरस)

विपथ-पुं० [सं०] बुरा या खराब रास्ता।

विपथगामी-पुं० [सं०] [स्त्री० विपथ-गामिनी] १. बुरे या खराब रास्ते पर चलनेवाला। कुमार्गी। २. चरित्र-हीन। बद-चलन।

विपद्-स्त्री० [सं०] विपत्ति। आफत।

विपन्न-वि० [सं०] [स्त्री० विपन्ना, भाव० विपन्नता] दुःखी। आर्त्त।

विपरीत-वि० [सं०] १. जो अनुकूल या हित-साधन में सहायक न हो। प्रतिकूल। विरुद्ध। खिलाफ। २. उलटा। (रिवर्स)

विपर्ण-पुं० [सं०] एक साथ या आमने-सामने लगा हुई रसीदों आदि का वह बाहरी भाग जो भरकर किसी को दिया जाता है। (आउटर-फॉयल)

विपर्य्यय-पुं० [सं०] [वि० विपर्यस्त] १. इधर-उधर या आगे-पीछे होना। उलट-पुलट। व्यतिक्रम। २. कुछ का कुछ समझना। भ्रम। ३. भूल। गलती। ४. उलटकर फिर पहले रूप, स्थान आदि में लाना। (रिवर्शन) ५. गड़बड़ी। अव्यवस्था।

विपर्य्यस्त-वि० [सं०] १. जिसका विपर्य्यय हुआ हो। २. जिसे ठीक या मान्य न समझकर उलट या रद्द कर दिया गया हो। (ओवर-रूल्ड)

विपल-पुं० [सं०] एक पल का साठवाँ भाग।

विपाक-पुं० [सं०] १. परिपक्व होना। पकना। २. पूरी अवस्था को पहुँचना। ३. परिणाम। फल। ४. पचना। ५. दुर्दशा।

विपिन-पुं० [सं०] १. वन। जंगल। २. उपवन। बगीचा। बाग।

विपुल-वि० [सं०] [स्त्री० विपुला, भाव० विपुलता, *विपुलाई] संख्या, परिमाण आदि में बहुत अधिक।

विपोहना*-स० [सं० वि+प्रोत] १. पोतना। २ नष्ट करना। ३. दे० 'पोहना'।

विप्र-पुं० [सं०] ब्राह्मण।

विप्रलंभ-पुं० [सं०] १. प्रिय वस्तु या व्यक्ति का न मिलना। २. वियोग। विरह। ३. छल। धोखा। ४. धूर्त्तता।

विप्रलब्ध-वि० [सं०] जिसे चाही हुई वस्तु न मिली हो।

विप्रलब्धा-स्त्री० [सं०] नायक के वियोग से दुःखी नायिका। वियोगिनी।

विप्लव-पुं० [सं०] १. उपद्रव। अशान्ति। २. विद्रोह। बलवा। (रिबेलियन) ३. उथल-पुथल। हल-चल। ४. आफत। विपत्ति। ५. नदी आदि की बाढ़।

विप्लवी-वि० [सं० विप्लविन्] विप्लव या विद्रोह करनेवाला। (रिबेल)

विफल-वि० [सं०] [भाव० विफलता] १. (वृक्ष) जिसमें फल न लगा हो। २.

(काम) जिसका कोई फल या परिणाम न हो। निष्फल। व्यर्थ। ३. (व्यक्ति) जिसे प्रयत्न में सफलता न हुई हो। ४. (विषय या निश्चय) जो न होने के समान हो या ऐसा कर दिया गया हो। (नल)

विबुध-पुं० [सं० वि+बुध] १. विद्वान्। २. बुद्धिमान्। ३. देवता। ४. चंद्रमा।

विबुधाकर-पुं० [सं०] चंद्रमा।

विबुधेश-पुं० [सं०] इन्द्र।

विभंग-पुं० [सं०] १. खंडित होना। टूटना। २. आघात आदि से शरीर की कोई हड्डी टूटना। (फ्रैक्चर)

विभक्त-वि० [सं० वि+भज] १. दो या कई भागों में बँटा हुआ। विभाजित। २. अलग किया हुआ।

विभक्ति-स्त्री० [सं०] १. विभाजित या अलग होने की क्रिया या भाव। विभाग। अलगाव। २. कारक-चिह्न। (व्याकरण) जैसे-का, ने, से, को आदि।

विभव-पुं० [सं०] १.धन। संपत्ति। २. ऐश्वर्य। ३. अधिकता। बहुतायत।

विभव-कर-पुं० [सं०] वह कर जो किसी से उसको धन-संपत्ति या वैभव के विचार से लिया जाता है। (सरकम्सटैन-सेज टैक्स)

विभाँति-वि० [हि० वि+भाँति] अनेक प्रकार का। तरह तरह का।

अव्य० अनेक प्रकार से। कई तरह से।

विभा-स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। चमक। २. प्रकाश। रोशनी। ३. किरण।

विभाकर-पुं० [सं०] १. सूर्य्य। २. अग्नि। ३. राजा।

विभाग-पुं० [सं०] १. बाँटने की क्रिया या भाव। बँटवारा। २. अंश। हिस्सा। ३. पुस्तक का प्रकरण। अध्याय। ४. सुभीते या प्रबन्ध के लिए कार्य का अलग किया हुआ क्षेत्र। मुहकमा। (डिपार्टमेन्ट)

विभाजक-वि० [सं०] १. विभाग या टुकड़े करनेवाला। २. बाँटनेवाला।

विभाजन-पुं० [सं०] १. विभाग करना। बाँटना। २.बँटवारा। विभाग। तकसीम।

विभाजित-वि० = विभक्त।

विभाज्य-वि० [सं०] १. विभाग करने योग्य। २. जिसका विभाग करना हो।

विभाना*-अ० [सं० विभा] १. चमकना। २. शोभित होना।

स० १. चमकना। २. शोभित करना।

विभाव-पुं० [सं०] साहित्य में रति आदि भावों को उनके आश्रय में उत्पन्न या उद्दीप्त करनेवाली वस्तु या बात।

विभावन-पुं० [सं०] किसी को देखकर पहचानना और कहना कि यह वही है। शिनाख्त। (आइडेन्टिफिकेशन)

विभावना-स्त्री० [सं०] १. स्पष्ट धारणा या कल्पना। २ निर्णय। ३. प्रमाण। ४. एक अर्थालंकार जिसमें कारण के बिना अथवा विरुद्ध कारण से कार्य्य की उत्पत्ति या सम्पादन का वर्णन होता है।

विभावरी-स्त्री० [सं०] रात।

विभाव्य-वि० [सं०] [भाव० विभाव्यता] जिसके होने की कुछ आशा या संभावना हो। जो हो सकता हो। (प्रोबेबुल)

विभास-पुं० [सं०] [*क्रि० विभासना] चमक। दीप्ति।

विभिन्न-वि० [सं०] १.बिलकुल अलग। पृथक्। जुदा। २. अनेक प्रकार के।

विभीषिका-स्त्री०[सं०]१.भयभीत करना। डराना। २. भयानक कांड या दृश्य।

विभु-वि० [सं०] [भाव० विभुता] १. सर्व-व्यापक। २. बहुत बड़ा। महान्। ३. सदा बना रहनेवाला। नित्य। ४. बलवान्। पुं० १. जीवात्मा। २. ईश्वर।

विभुता-स्त्री०=विभूति।

विभूति-स्त्री० [सं०] १. अधिकता। बढ़ती। २. विभव। ऐश्वर्य। ३. संपत्ति। धन। ४ दिव्य या अलौकिक शक्ति। ५. शिव के अंग में लगाने की राख या भस्म। ६. लक्ष्मी। ७. सृष्टि।

विभूषण-पुं० [सं०] [वि० विभूषित] १. भूषण। गहना। २. गहनों आदि से सजाना। अलंकरण।

विभूषना*-स० [सं० विभूषण] १. गहनों से सजाना। २. सुशोभित करना।

विभेटन*-पुं०=भेंटना।

विभेद-पुं० [सं०] [* क्रि० विभेदना] १. अंतर। फरक। २. अनेक भेद। कई प्रकार। ३. विशेष रूप से किया हुआ भेद या अलगाव। (डेस्क्रिमिनेशन) ४. भेदन करना। छेदना या बेधना।

विभोर-वि० [सं० विह्वल] १. विह्वल। विकल। २. मग्न। लीन। ३. मत्त। मस्त।

विभौ*-पुं०=विभव।

विभ्रम-पुं० [सं०] १. भ्रान्ति। धोखा। २. संदेह। ३. स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे प्रियतम के आगमन आदि के समय हर्ष या अनुराग के कारण शीघ्रता में उलटे-पलटे भूषण-वस्त्र पहन लेती हैं।

विमत-पुं० [सं०] विरुद्ध या विपक्ष में दिया जानेवाला मत। (डिस्सेन्ट)

विमन-वि० [सं० विमनस्] १. अनमना। २. उदास।

विमनस्क-वि० [सं०] १. अन्यमनस्क। अनमना। २. उदास।

विमर्श(र्ष)-पुं० [सं०] १. विचार या विवेचन। २. आलोचना। ३. परीक्षा। जाँच। ४. परामर्श। ५. नाटक की पाँच संधियों में से एक, जिसमें बीज का अधिक विकास होता है, परन्तु फल-प्राप्ति से पहले शाप, विपत्ति आदि के रूप में विघ्न होने लगते हैं।

विमल-वि० [सं०] [भाव० विमलता, स्त्री० विमला] १. स्वच्छ। निर्मल। २. पवित्र। निर्दोष। ३. सुंदर।

विमाता-स्त्री० [सं० विमातृ] [वि० वैमात्रिक] सौतेली माँ।

विमान-पुं० [सं०] १. आकाश-मार्ग से चलनेवाला रथ। उड़न-खटोला। २. वायु-यान। हवाई जहाज। ३. मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो धूम-धाम से निकाली जाती है। ४. रथ। ५. घोड़ा।

विमान-चालक-पुं० [सं०] वह जो विमान या हवाई जहाज चलाता हो।

विमान-वाहक-पुं० [सं० विमान+वाहक] एक प्रकार का समुद्री जहाज जिसके ऊपर बहुत लंबी-चौड़ी छत होती है और जिस पर बहुत-से हवाई जहाज रहते हैं।

विमान-वेधी-स्त्री० [सं० विमान+हिं० वेधी] एक प्रकार की तोप, जो उड़ते हुए हवाई जहाजों पर गोले चलाती है।

विमुक्त-वि० [सं०] १. अच्छी तरह मुक्त। २. स्वतंत्र। स्वच्छंद। ३. (दंड आदि से) बचा या छुटा हुआ। (एक्विटेड) ४. त्यक्त।

विमुक्ति-स्त्री० [सं०] १. छुटकारा। रिहाई। २. मुक्ति। मोक्ष। ३. अभियोग से मुक्त होना या छूटना। (एक्विटल)

विमुख-वि० [सं०] [भाव० विमुखता] १. जिसे मुँह न हो। २. जिसने किसी से मुँह मोड़ लिया हो। विरत। ३. उदासीन।

१ विरुद्ध । ४. अप्रसन्न । ६. निराश ।

विमूल्यन-पुं० दे० 'अवमूल्यन' ।

विमोचन-पुं० [सं०] १. बंधन आदि से छूटना या छोड़ना । २. सन्तोषजनक प्रमाण के अभाव में अभियुक्त का अभियोग से मुक्त होना । (एक्विटल) ३. किसी आवर्तक भार या देन से छूटने के लिए एक ही बार में कुछ इकट्ठा धन दे देना । (रिडम्पशन)

विमोचना*-स० [सं० विमोचन] बंधन आदि से छुड़ाना या छोड़ना ।

विमोहना*-अ० [सं० विमोहन] १. मोहित होना । २. बेसुध होना । ३. धोखे में आना ।
स० १. मोहित करना । लुभाना । २. बेसुध करना । ३. धोखे में डालना ।

वियंग*-पुं० = शिव ।

विय*-वि० [सं० द्वि] १. दो । २.जोड़ा । युग्म । ३. दूसरा । अन्य ।

वियत*-पुं० [सं० वियत्] आकाश ।

वियुक्त-वि० [सं०] १. जिसका किसी से वियोग हुआ हो । २. अलग । ३. रहित । (माइनस)

वियुग्म-वि० [सं०] १. जो युग्म या जोड़ा न हो । अकेला । २. जिसे दो से भाग देने पर एक बचे । ३.जो साधारण, निश्चित या स्वाभाविक से कुछ भिन्न और अलग हो । विलक्षण । अनोखा । (ऑड)

वियो*-वि० [सं० द्वितीय] दूसरा ।

वियोग-पुं० [सं०] [वि० वियुक्त] १. अलग होना । २. प्रिय व्यक्ति से मिलन न होना । विरह । ३. अलग होने का दुःख । ४. घटाया या कम किया जाना ।

वियोगांत-वि० [सं०] (नाटक, उपन्यास आदि) जिसका अन्त या पर्यवसान दुःखपूर्ण हो । (ट्रेजेडी)

वियोगी-वि० [सं० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] प्रेमिका के वियोग से दुःखी । विरही ।

वियोजक-पुं० [सं०] पृथक् या अलग करनेवाला ।

वियोजन-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु के संयोजक अंगों को अथवा कुछ मिले हुए तत्वों को अलग अलग करना । २. युद्ध-काल में बढ़ाये हुए सैनिकों को सैनिक सेवा से हटाना । (डिमॉबिलाइजेशन)

विरचि-पुं० [सं०] ब्रह्मा ।

विरंजन-पुं० [सं०] १. वह प्रक्रिया जिससे किसी वस्तु में के सब रंग हट या निकल जायँ । रंगों से रहित करना । २ धोकर साफ करना । (ब्लीचिंग)

विरक्त-वि० [सं०] [भाव० विरक्ति] १. विमुख । विरत । २. उदासीन । ३. अप्रसन्न ।

विरक्ति-स्त्री० [सं०] [वि० विरक्त] १. वैराग्य । २.उदासीनता । ३.अप्रसन्नता ।

विरचन-पुं० [सं०] [वि० विरचित] १ रचने का काम । निर्माण । बनाना । २. तैयारी ।

विरचना*-स० [सं० विरचन] १.रचना या निर्माण करना । बनाना । २.सजाना । अ० [सं० वि + रंजन] विरक्त होना ।

विरचित-वि० [सं०] बनाया या रचा हुआ । निर्मित ।

विरत-वि० [सं०] [भाव० विरति] १. जो अनुरक्त न हो । विमुख । २. जो काम छोड़कर अलग हो गया हो । निवृत्त । ३. विरक्त । वैरागी । ४. कार्य, पद, सेवा आदि से हटा हुआ । (रिटायर्ड)

विरति-स्त्री० [सं०] १. विरत होने की

क्रिया या भाव। २. कार्य, पद, सेवा आदि से अलग होना। (रिटायरमेन्ट)
विरथ-वि० [सं०] १. जो रथ या सवारी पर न हो। २. पैदल।
विरद-पुं० दे० 'विरुद'।
विरदावली-स्त्री० दे० 'विरुदावली'।
विरदैत*-वि० [हिं० विरद] बड़े विरदवाला। कीर्ति या यशवाला।
विरमना*-अ० [सं० विरमण] [स० विरमाना] १ किसी से या कहीं मन लगाना। रमना। २. रुकना। ठहरना। अ० दे० 'विलंबना'।
विरमाना*-स०हिं० 'विरमना' का स०।
विरल-वि० [सं०] [भाव० विरलता] १. 'घना' या 'सघन' का उलटा। २. दूर दूर पर स्थित। ३. दुर्लभ। ४. कम। थोड़ा। ५. पतला। ६ निर्जन।
विरस-वि० [सं०] [भाव० विरसता] १. नीरस। फीका। २.अप्रिय। अरुचिकर। ३. जिसमें रस का निर्वाह न हुआ हो। (काव्य)
विरह-पुं० [सं०] १. किसी से अलग या रहित होने का भाव। २. दे० 'वियोग'।
विरही-वि० [स्त्री० विरहिणी] वियोगी।
विराग-पुं० [सं०] [वि०विरागी] १.रुचि या इच्छा का अभाव। २.दे० 'वैराग्य'।
विराजना-अ० [सं० विराजन] १. शोभित होना। २. बैठना। ३. विद्यमान होना। (आदर-सूचक)
विराजमान-वि० [सं०] १. शोभित। २. उपस्थित। मौजूद। ३. बैठा हुआ।
विराट्-पुं० [सं०] १. विश्व-रूप ब्रह्म। २.विश्व। ३.क्षत्रिय। ४. कांति। दीप्ति। वि० बहुत बड़ा या बहुत भारी।
विराम-पुं० [सं०] १. रुकना। ठहरना। २. विश्राम। ३. पद, सेवा कार्य आदि से अवकाश ग्रहण करना। (रिटायरमेन्ट) ४. वाक्य में वह स्थल जहाँ बोलते समय कुछ रुकना पड़ता हो। ५. पद्य के चरण में की यति।
विराम-काल-पुं० [सं०] वह समय या छुट्टी जो विराम करने या सुस्ताने के लिए मिलती है। (वैकेशन)
विराम-चिह्न-पुं० [सं०] लेख, छापे आदि में प्रयुक्त होनेवाले वे विशिष्ट चिह्न जो कई प्रकार के विरामों के सूचक होते हैं। (पंक्चुएशन) जैसे- , ; - . आदि।
विराम-संधि-स्त्री० [सं०] वह संधि जो अंतिम या पक्की संधि होने से पहले उसकी शर्तें तै करने के लिए होती हैं। (ट्रूस)
विरासत-स्त्री०=वरासत।
विरासी*-वि०=विलासी।
विरुज-वि० [सं०] नीरोग। रोग-रहित।
विरुझना*-अ०=उलझना।
विरुद-पुं० [सं०] १. राजाओं की स्तुति या प्रशंसा। यश-वर्णन। प्रशस्ति। २. प्राचीन काल के राजाओं की कीर्ति-सूचक पदवी। ३. यश।
विरुदावली-स्त्री० [सं०] गुण, पराक्रम, उदारता आदि का विस्तारपूर्वक होनेवाला वर्णन। प्रशंसा। २. गुणावली।
विरुद्ध-वि० [सं०] १. प्रतिकूल। विपरीत। २. अप्रसन्न। ३. अनुचित। क्रि० वि० प्रतिकूल स्थिति में। खिलाफ।
विरूप-वि० [सं०] [स्त्री० विरूपा, भाव०विरूपता] १.अनेक रंग-रूपों का। २. कुरूप। भद्दा। ३. परिवर्तित। ४. शोभाहीन। वि-श्री। ५. विरुद्ध।
विरेचन-पुं० [सं०] [वि० विरेचक, विरेचित] १. दस्त लानेवाली दवा। जुलाब। २. दस्त लाना। ३.निकालना।

विरोध-पुं० [सं०] [वि० विरोधक] १. प्रतिकूलता। २.वैर। शत्रुता। ३.दो विपरीत बातों का एक साथ न हो सकना। व्याघात। ४. किसी कार्य को रोकने के लिए अथवा उसके विपरीत प्रयत्न। ५. भिन्न भिन्न विचारों या तथ्यों में होनेवाला पारस्परिक विपरीत भाव। (रिपग्नेन्सी)

विरोधना*-अ० [सं० विरोधन] विरोध, शत्रुता या लड़ाई करना।

विरोध पीठ-पुं० [सं०] विधायिका सभाओं आदि में वे आसन जिनपर राजकीय पक्ष या बहु-मत दल के विरोधी लोग बैठते हैं। (अपोजिशन बेंचेज)

विरोधाभास-पुं० [सं०] १. दो बातों में दिखाई देनेवाला विरोध। २. एक अर्थालंकार जिसमें जाति, गुण, क्रिया आदि का विरोध दिखाया जाता है।

विरोधी-वि० [सं० विरोधिन्] [स्त्री० विरोधिनी] १. विरोध करनेवाला। २. विपक्षी। ३. शत्रु। वैरी।

विलंब-पुं० [सं० विलंबन] साधारण या नियत से अधिक समय (जो किसी काम में लगे)। देर। अति-काल।

विलंबना*-अ० [सं० विलंबन] १. देर करना या लगाना। २. लटकना। ३. सहारा लेना।
अ० दे० 'विरमना'।

विलंबित-वि० [सं०] १. लटकता हुआ। २. लंबा किया हुआ। ३. जिसमें देर हुई हो। ४. देर लगाकर और मन्द गति से गाया जानेवाला (गान)। 'द्रुत' का उलटा।

विलक्षण-वि०[सं०] [भाव०विलक्षणता] १. अद्भुत। अनोखा। २. असाधारण।

विलखना-अ० दे० 'बिलखना'।
*अ०[सं०लक्ष] १.पता पाना। २.देखना।

विलग-वि० = अलग।

विलगाना*-अ०,स० [हिं०विलग] अलग या पृथक् होना या करना।

विलपना*-अ० [सं० विलाप] रोना।

विलम*-पुं० दे० 'विलंब'।

विलमना*-अ० दे० 'बिलमना'।

विलय(न)-पुं० [सं०] १. लय या लीन होना। २. एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर समा जाना। ३. घुल या गल जाना। (फ्यूजन) ४. विघटित होना। ५. किसी देशी रियासत या राज्य का आस-पास के सरकारी या दूसरे बड़े राष्ट्र या राज्य में मिलकर एक हो जाना। (मर्जर)

विलयीकरण-पुं० [सं०] १. विलय करना। २. राज्य या राष्ट्र का किसी छोटे राज्य को अपने में मिला लेना। (मर्जर)

विलसन-पुं० [सं०] [वि० विलसित, *क्रि० विलसना] १. चमकने की क्रिया। २. क्रीड़ा। आमोद-प्रमोद।

विलाप-पुं० [सं०] [*क्रि० विलापना] रोकर दुःख प्रकट करना। रुदन। रोना।

विलायत-पुं० [अ०] [वि० विलायती] १. विदेश। २. दूर का देश।

विलास-पुं० [सं०] १. प्रसन्न करनेवाली क्रिया। २. मनोविनोद। ३. आनंद। हर्ष। ४. स्त्रियों की पुरुषों के प्रति अनुराग-सूचक चेष्टाएँ। ५.कोई मनोहर चेष्टा। ६. किसी वस्तु का मनोहर रूप में हिलना-डोलना। ७ यथेष्ट सुख-भोग।

विलासिनी-स्त्री० [सं०] १. सुंदरी स्त्री। कामिनी। २. वेश्या।

विलासी-पुं० [सं० विलासिन्] [स्त्री० विलासिनी] १. सुख-भोग में लगा

रहनेवाला पुरुष । २. कामी । कामुक । ३. क्रीड़ाशील । विनोदप्रिय ।

विलीक*-वि० [सं० व्यलीक] अनुचित ।

विलीन- वि० [सं०] १. अदृश्य । लुप्त । २.मिला या घुला हुआ । ३.छिपा हुआ ।

विलुंठना*-अ०[सं०विध्वंस] नष्ट होना ।

विलेख-पुं० [सं०] वह करण या साधन-पत्र जिसमें दो पक्षों में होनेवाली संविदा, पत्राया या अनुबंध लिखा हो और जो निष्पादक के द्वारा हस्ताक्षरित होकर दूसरे पक्ष को दिया गया हो । (डीड)

विलोकना-स० दे० देखना ।

विलोड़न-पुं० [सं०] [वि० विलोड़ित] आलोड़न । मथना ।

विलोपन-पुं० [सं०] १. लुप्त या गायब करना । २. कुछ समय के लिए भंग या समाप्त करना । (डिस्सोल्यूशन)

विलोपना*-स० [सं० विलोप] लुप्त या नष्ट करना ।

विलोम-वि० [सं०] विपरीत । उलटा । पुं० ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम ।

विव*-वि० दे० 'विवि' ।

विवक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० विवक्षित] १.कहने की इच्छा । २.अर्थ । तात्पर्य । ३. फल या परिणाम के रूप में या आनुषंगिक रूप से होनेवाली बात । (इम्प्लिकेशन)

विवदना*-अ० = विवाद करना ।

विवर-पुं० [सं०] १. छिद्र । छेद । २. बिल । ३.दरार । गर्त । ४.गुफा । कंदरा ।

विवरण-पुं० [सं०] १. किसी बात या कार्य से संबंध रखनेवाली मुख्य बातों का उल्लेख या वर्णन । वृत्तान्त । हाल । (डिस्क्रिप्शन, एकाउन्ट) २. दे० 'विवरणिका' ।

विवरणिका-स्त्री० [सं०] सभा-संस्थाओं या घटनाओं आदि का वह विवरण जो सूचना के लिए किसी को भेजा जाय । (रिपोर्ट)

विवर्जन-पुं० = वर्जन ।

विवर्ण-पुं० [सं०] साहित्य में भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदलना जो एक भाव माना गया है । वि० [सं०] १. जिसका रंग बिगड़ गया या फीका पड़ गया हो । बद-रंग । २. कान्तिहीन ।

विवर्तन-पुं० [सं०] १. चक्कर लगाना । घूमना । २. घूमना-फिरना । टहलना ।

विवर्द्धन-पुं० [सं०] [वि० विवर्द्धित] १. बढ़ाना । २. किसी छोटी वस्तु के प्रतिबिम्ब आदि को कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओं से बड़ा करना । (मैगनिफिकेशन)

विवश-वि० [सं०] [भाव० विवशता] १. बे-बस । लाचार । २. पराधीन ।

विवशन-पुं० [सं०] विवश करने की क्रिया या भाव ।

विवसन-वि० [सं०] [स्त्री० विवसना] जो कोई वस्त्र न पहने हो । नंगा । नग्न ।

विवस्त्र-वि० [सं०] [स्त्री०विवस्त्रा] नंगा ।

विवाद-पुं० [सं०] १. ऐसी बात जिसके विषय में दो या अधिक विरोधी पक्ष हों और जिसकी सत्यता का निर्णय होने को हो । (डिस्प्यूट) २. कहा-सुनी । वाक्-युद्ध । ३. झगड़ा । कलह । ४. दीवानी या फौजदारी मुकदमा । (केस, सूट)

विवादास्पद-वि०[सं०] जिसके विषय में विवाद हो । विवादयुक्त । (डिस्प्यूटेड)

विवादी-पुं० [सं०विवादिन्] १. विवाद या झगड़ा करनेवाला । २.मुकदमा लड़ने-वालों में से कोई एक । ३. संगीत में

वह स्वर जो किसी राग में लगकर उसका स्वरूप विकृत कर देता हो।

विवाह-पुं० [सं०] [वि० वैवाहिक, विवाहित] वह धार्मिक या सामाजिक कृत्य या प्रक्रिया जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष में पत्नी और पति का सम्बन्ध स्थापित होता है। पाणि-ग्रहण। ब्याह। शादी। (हमारे यहाँ आठ प्रकार के विवाह कहे गये हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच। आज-कल इनमें से केवल ब्राह्म-विवाह प्रशस्त माना जाता है और वही प्रचलित है।)

विवाहना-स०=विवाह करना।

विवाह-विच्छेद-पुं० [सं०] पति और पत्नी का वैवाहिक सम्बन्ध तोड़ना या न रखना। तलाक। (डाइवोर्स)

विवाहित-वि० [सं०] [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो चुका हो। ब्याहा हुआ।

विवि॰-वि० [सं० द्वि] १.दो। २.दूसरा।

विविध-वि० [सं०] [भाव० विविधता] अनेक प्रकार का। कई तरह का।

विवृत-वि० [सं०] [भाव० विवृत्ति] १ विस्तृत। फैला हुआ। २.खुला हुआ। पुं० ऊष्म स्वरों के उच्चारण में होनेवाला एक प्रकार का प्रयत्न। (व्याकरण)

विवृति-स्त्री० [सं०] वह कथन या वक्तव्य जो अपने किसी कार्य के अनुचित समझे जाने पर उसके स्पष्टीकरण के लिए हो। कैफियत। (एक्सप्लेनेशन)

विवेक-पुं० [सं०] १. भली-बुरी बातें सोचने-समझने की शक्ति या ज्ञान। (डिस्क्रीशन) २. मन की वह शक्ति जिससे भले-बुरे का ठीक और स्पष्ट ज्ञान होता है। (कॉन्शेन्स) ३. बुद्धि।

विवेकाधीन-वि० [सं०] जो किसी के विवेक या भले-बुरे के ज्ञान पर आश्रित हो। (डिस्क्रीशनरी)

विवेकी-पुं० [सं० विवेकिन्] १. भले-बुरे का ज्ञान रखनेवाला। विवेकशील। २. बुद्धिमान्। ३. ज्ञानी। ४.न्यायशील।

विवेचन-पुं० [सं०] [वि० विवेचनीय, विवेचित] १.भलीभाँति परीक्षा करना। २. विचार-पूर्वक निर्णय करना। मीमांसा। ३. तर्क-वितर्क।

विशद-वि०[सं०] १.स्वच्छ। निर्मल। २. स्पष्ट। ३. व्यक्त। ४. सफेद। ५. सुंदर।

विशल्यकरणी-स्त्री० [सं०] शरीर के व्रण आदि में से विष का प्रभाव दूर करनेवाली प्रक्रिया या दवा।

विशारद-पुं०[सं०] १.पंडित। २.कुशल।

विशाल-वि० [सं०] [भाव० विशाल-ता] १. बहुत बड़ा। २ विस्तृत। लंबा-चौड़ा। ३. भव्य। शानदार।

विशिख-पुं० [सं०] वाण। तीर।

विशिष्ट-वि० [सं०] [भाव० विशिष्टता] १. किसी विशेषता से युक्त। २. असाधारण। ३. मुख्य। प्रधान।

विशिष्टाद्वैत-पुं० [सं०] एक भारतीय दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न ही माने गये हैं।

विशुद्ध-वि० [सं०] [भाव० विशुद्धता, विशुद्धि] १. किसी प्रकार की मिलावट से रहित। खरा। २. सत्य। सच्चा। पुं० हठ-योग के अनुसार शरीर के अन्दर के छः चक्रों में से एक जो गले के पास माना गया है। (आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र की प्रक्रिया से शरीर में के विष बाहर निकलते हैं।)

विशूचिका-स्त्री० दे० 'विसूचिका'।

विश्रृंखल-वि० [सं०] [भाव० विश्रृंखलता] जिसमें क्रम या श्रृंखला न हो।

विशेष-पुं० [सं०] १. साधारण के अतिरिक्त और उससे कुछ आगे बढ़ा हुआ। जितना होना चाहिए या होता हो, उससे कुछ अधिक या उसके सिवा। (एक्स्ट्रा) २. किसी विषय में उसके स्पष्टीकरण के लिए या अपनी सम्मति के रूप में कही जानेवाली बात। (रिमार्क) ३. साहित्य में एक अलंकार जिसमें बिना आधार के आधेय, थोड़े परिश्रम से बहुत प्राप्ति या एक ही चीज के कई स्थानों में होने का वर्णन होता है।

विशेषज्ञ-पुं० [सं०] १ वह जो किसी विषय का विशेष रूप से ज्ञाता हो। किसी काम का बहुत अच्छा जानकार। (स्पेशलिस्ट) २. दे० 'विचक्षण'।

विशेषण-पुं० [सं०] १. वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो। २. वह विकारी शब्द जो संज्ञा की विशेषता बतलाता है। (व्याकरण)

विशेषता-स्त्री०[सं०]१.'विशेष' का भाव या धर्म। खासियत। २. विलक्षणता।

विशेषना*-स० [सं० विशेष] १. विशेष रूप देना। २. विशिष्टता उत्पन्न करना।

अ० निश्चय करना।

विशेष्य-पुं०[सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिसके पहले कोई विशेषण लगा हो।

विश्रंभ-पुं० [सं०] १. दृढ़ या पक्का विश्वास। पूरा एतबार। (कॉन्फिडेन्स) २. प्रेमी और प्रेमिका में संभोग के समय होनेवाला विवाद या झगड़ा। ३. प्रेम।

विश्रंभी-वि० [सं०] १. दृढ़ विश्वास रखनेवाला। (कॉन्फिडेन्ट) २. जो इस बात का विश्वास रखकर किसी को बतलाया जाय कि वह दूसरे किसी को न बतलावेगा। गोप्य। (कॉन्फिडेन्शल)

विश्रब्ध-वि० [सं०] १. शान्त। २. विश्वास के योग्य। ३ निर्भय। निडर।

विश्रांत-वि० [सं०] १.जो विश्राम करता हो। २.ठहरा या रुका हुआ। ३.थका हुआ।

विश्रांति-स्त्री० [सं०] १. विश्राम। आराम। २. थकावट। ३. दे०'विराम'।

विश्राम-पुं० [सं०] १. श्रम या थकावट दूर करना। आराम करना। २. ठहरने का स्थान। ३. आराम। चैन। सुख।

विश्रामालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ यात्री विश्राम करते हों। (रेस्ट हाउस)

वि-श्री-वि० [सं०] १. श्री या कांति से रहित या हीन। २. भद्दा। कुरूप।

विश्रुत-वि० [सं०] प्रसिद्ध। विख्यात।

विश्रुति-स्त्री० [सं०] १. प्रसिद्धि। ख्याति। २. कोई बात सब लोगों में प्रसिद्ध करने या सबको जतलाने की क्रिया या भाव। (पब्लिसिटी)

विश्रुति-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो ऋण लेते समय उसे नियत समय पर चुका देने की प्रतिज्ञा का सूचक होता है। (प्रॉमिसरी नोट)

विश्लिष्ट-वि०[सं०] १.जिसका विश्लेषण हुआ हो। २. विकसित। ३. प्रकट।

विश्लेष-पुं० [सं०] १. वियोग। बिछोह। २. दे० 'विश्लेषण'।

विश्लेषक-पुं० [सं०] वह जो रासायनिक अथवा इसी प्रकार का और कोई विश्लेषण करता हो। (एनालिस्ट)

विश्लेषण-पुं० [सं०] किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों या किसी बात के सब अंगों या तथ्यों की परीक्षा, आदि के

लिए अलग अलग करना। (एनेलेसिस)
विश्वंभर-पुं०[सं०] १ ईश्वर। २.विष्णु।
विश्व-पुं० [सं०] १. सारा ब्रह्मांड। २.संसार। दुनियाँ। ३.दस देवताओं का एक गण। ४. विष्णु। ५. शरीर। देह। वि० १. पूरा। सब। कुल। २. बहुत।
विश्वकर्मा-पुं० [सं०] १. ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३. एक प्रसिद्ध देवता जो शिल्प-शास्त्र के पहले आचार्य और आविष्कर्ता माने जाते हैं। ४. बढ़ई। ५. लोहार।
विश्व-कोश-पुं० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें सभी विषयों या किसी विषय के सभी अंगों का विस्तार से वर्णन हो। (एन्साइ-क्लोपीडिया)
विश्वनाथ-पुं० [सं०] १. विश्व का स्वामी। २. शिव।
विश्वविद्यालय-पुं० [सं०] वह बहुत बड़ा विद्यालय जिसमें अनेक प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा देनेवाले अनेक महाविद्यालय हों। (युनिवर्सिटी)
विश्व-व्यापी-वि० [सं०] सारे विश्व में व्याप्त या फैला हुआ।
विश्वसनीय-वि० [सं०] [भाव० विश्वसनीयता] जिसका विश्वास या एतबार किया जा सके। विश्वस्त।
विश्वस्त-वि० [सं०] विश्वसनीय।
विश्वात्मा-पुं० [सं०] ईश्वर।
विश्वास-पुं० [सं०] यह निश्चय कि ऐसा ही होगा या है, अथवा अमुक व्यक्ति ऐसा ही करता है या करेगा। एतबार।
विश्वास-घात-पुं० [सं०] [वि० विश्वास-घातक] अपने पर विश्वास करनेवाले के विश्वास के विपरीत कार्य्य करना। धोखा।
विश्वास-पात्र(भाजन)-पुं० [सं०] वह व्यक्ति जिसका विश्वास किया जाय।
विश्वासी-पुं० [सं० विश्वासिन्] [स्त्री० विश्वासिनी] १. विश्वास करनेवाला। २.जिसपर विश्वास हो। विश्वासपात्र।
विषंग-पुं० [सं०] १. आपस में मिले हुए तत्वों, अंगों आदि का अलग या पृथक् होना। २. अपने में से किसी को काटकर या और किसी प्रकार अलग कर देना। (डिस्सोसिएशन)
विष-पुं० [सं०] १.वह वस्तु जिसके खाने या शरीर में पहुँचने से प्राणी मर जाता है। जहर। गरल। २. किसी की सुख-शांति या स्वास्थ्य आदि में बाधक वस्तु। मुहा०-विष की गाँठ=बुराई या खराबी पैदा करनेवाला व्यक्ति, वस्तु या बात। ३. बछनाग। ४. कलिहारी।
विष-कन्या-स्त्री०[सं०] वह युवती जिसके शरीर में बाल्यावस्था से ही इसलिए विष प्रविष्ट किया गया हो कि उसके साथ संभोग करनेवाला मर जाय। (प्राचीन)
विषरण-वि० [सं०] दुःखी। खिन्न।
विषधर-पुं० [सं०] साँप।
विषम-वि० [सं०] [भाव० विषमता] १. जो समान या बराबर न हो। २. (वह संख्या) जो दो से भाग देने पर पूरी पूरी न बँट सके। ताक। ३. बहुत कठिन। ४. तीव्र या तेज। ५. भयंकर। पुं० १. वह वृत्त जिसके चारो चरणों में अक्षरों की संख्या समान न हो। २. एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं के संबंध या औचित्य का अभाव बतलाया जाता है।
विषय-पुं० [सं०] १. वह जिसके बारे में कुछ कहा या विचार किया जाय। (सबजेक्ट) २. मजमून। ३. स्त्री-संभोग।

४. संपत्ति। ५.बड़ा प्रदेश या राज्य। ६. वह जिसे इंद्रियाँ ग्रहण करें। जैसे-नेत्र का विषय रूप या कान का विषय शब्द है।

विषयक-अव्य० [सं०] किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाला। सम्बन्धी।

विषय-प्रवेश-पुं० [सं०] ग्रन्थ की भूमिका या उसके विषय का परिचायक कथन।

विषय-समिति-स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट सदस्यों की वह समिति जो किसी महासभा या सम्मेलन में उपस्थित किये जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित या प्रस्तुत करती है। (सब्जेक्ट कमिटी)

विषयानुक्रमणिका-स्त्री० [सं०] किसी ग्रंथ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विषय-सूची।

विषयी-पुं० [सं० विषयिन्] १. भोग-विलास में आसक्त रहनेवाला। विलासी। कामी। २. कामदेव। ३. धनवान्।

विष-वैद्य-पुं० [सं०] वह जो विष का प्रभाव दूर करनेवाली चिकित्सा करता हो।

विषाक्त-वि० [सं०] विष-युक्त। जहरीला।

विषाण-पुं० [सं०] १. सींग। २. सूअर का दाँत। खाँग।

विषाद-पुं० [सं०] [वि० विषादी] १. खेद। दुःख। २. जड़ता। निश्चेष्टता।

विषुव-पुं० [सं०] वह समय जब सूर्य के विषुवत् रेखा पर पहुँचने से दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं। (ऐसा वर्ष में दो बार होता है—२० मार्च तथा २२ या २१ सितंबर को।)

विषुवत् रेखा-स्त्री० [सं०] वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी-तल के पूरे मान-चित्र पर ठीक बीचोबीच गणना के लिए पूर्व-पश्चिम खींची गई है। (ईक्वेटर)

विष्ठा-स्त्री० [सं०] मल। मैला। गुह।

विष्णु-पुं० [सं०] हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध और प्रमुख देवता जो सृष्टि का पालन करनेवाले और अवतार माने जाते हैं।

विसंभूत-वि० [सं० वि+संभूत] अचानक ऐसे रूप में सामने आनेवाला, जिसकी कोई आशा या संभावना न हो। (एमर्जेन्ट)

विसंभूति-स्त्री० [सं० वि+संभूति] वह घटना या बात जो अचानक ऐसे रूप में सामने आवे कि पहले से कोई आशा, संभावना या कल्पना न हो। (एमर्जेन्सी)

विसदृश-वि० [सं०] १. विपरीत। उलटा। २. अ-समान। ३ विलक्षण।

विसर्ग-पुं०[सं०] १. दान। २. छोड़ना। त्याग। ३. व्याकरण में एक चिह्न जो किसी वर्ण के आगे लगाया जाता है। (इसमें ऊपर-नीचे दो बिंदु होते हैं और इसका उच्चारण प्रायः आधे 'ह' के समान होता है।) ४.मोक्ष। ५. मृत्यु। ६.प्रलय।

विसर्जन-पुं० [सं०] [वि० विसर्जित] १. परित्याग। छोड़ना। २. विदा करना। रवाना करना। ३.किसी कर्मचारी पर कोई दोष या लांछन लगाकर उसे उसके पद से हटाना या अलग करना। (डिस्मिसल) ४. न्यायालय में वाद आदि का रद्द या खारिज होना। (डिस्मिसल)

विसामान्य-वि० [सं०] जो सामान्य से कुछ घटकर हो। (सब-नार्मल)

विसूचिका-स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक रोग जिसे आजकल कुछ लोग हैजा मानते हैं।

विस्तर-वि० [सं०] १. बड़ा और लंबा-चौड़ा। विस्तृत। २.बहुत अधिक। ● पुं० दे० 'विस्तार'।

विस्तरण-पुं० [सं०] विस्तार करने या बढ़ाने की क्रिया या भाव। (एक्सटेन्शन)

विस्तार-पुं० [सं०] लंबाई और चौड़ाई। फैलाव।

विस्तारण-पुं० [सं०] १.विस्तार करना। बढ़ाना। २. फैलाना।

विस्तारना*-स० = विस्तार करना।

विस्तारित-वि० [सं०] जिसका विस्तार किया गया हो। बढ़ाया हुआ। (एक्सटेंडेड)

विस्तीर्ण-वि० [सं०] विस्तृत।

विस्तृत-वि० [सं०] [भाव० विस्तार, विस्तृति] १.लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। २. यथेष्ट विवरणवाला। ३. दूर तक फैला हुआ या विशाल।

विस्फारण-पुं० [सं०] [वि० विस्फारित] १. खोलना। फैलाना। २. फाड़ना।

विस्फारित-वि० [स०] १. अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ। जैसे-विस्फारित नेत्र। २. फाड़ा हुआ।

विस्फीति-स्त्री० [सं०वि+स्फीति] कृत्रिम रूप से फूले हुए पदार्थ या बढ़े हुए मुद्रा के प्रचलन का फिर से पूर्व स्थिति में लाना। 'स्फीति' का उलटा। (डिफ्लेशन)

विस्फाट-पुं० [सं०] १. अन्दर की गरमी से बाहर उबल या फूट पड़ना। २. जहरीला और खराब फोड़ा।

विस्फोटक-पुं० [सं०] १ जहरीला फोड़ा। २. गरमी या आघात के कारण भभक उठनेवाला पदार्थ। (एक्सप्लोजिव) ३. शीतला का रोग। चेचक।

विस्मय-पुं० [सं०] आश्चर्य। ताज्जुब।

विस्मरण-पुं० [सं०] भूल जाना।

विस्मित-वि० [सं०] जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो। चकित।

विस्मृत-वि० [सं०] भूला हुआ।

विस्मृति-स्त्री० [सं०] भूल जाना।

विहंग-पुं० [सं०] १. पक्षी। चिड़िया। २. वाण। तीर। ३. मेघ। बादल।

विहँसना*-अ०=हँसना।

विहग*-पुं० दे० 'विहंग'।

विहरना*-अ० [सं० विहार] १. विहार करना। २. घूमना-फिरना।

विहान-पुं० [सं० वि+अह्नि] प्रातः-काल। सवेरा।

विहार-पुं० [सं०] १. टहलना। घूमना। २. मनोविनोद और सुख-प्राप्ति के लिए होनेवाली क्रीड़ा। ३. बौद्ध भिक्षुओं या साधुओं के रहने का मठ। संघाराम।

विहारी-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण। वि०[स्त्री०विहारिणी] विहार करनेवाला।

विहित-वि० [सं०] १. जिसका विधान हुआ या किया गया हो। (प्रेस्काइब्ड) २. नियमों के अनुसार उचित या ठीक।

विहीन-वि० [सं०] [भाव० विहीनता] १. रहित। बिना। २. त्यागा हुआ।

विहून*-वि०=विहीन।

विह्वल-वि० [सं०] [भाव० विह्वलता] व्याकुल। विकल। बे-चैन।

वीचि-स्त्री०[सं०] पानी की लहर। तरंग।

वीज-पुं० [सं०] १. मूल कारण। २. शुक्र। वीर्य्य। ३. तेज। ४. तांत्रिक मंत्र। ५. दे० 'बीज'।

वीज-गणित-पुं० [सं०] वह प्रक्रिया जिससे सांकेतिक अक्षरों की सहायता से गणना करके अभीष्ट राशियाँ निकाली जाती हैं। (गणित का एक अंग)

वीणा-स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध बाजा जो सब बाजों में श्रेष्ठ माना गया है। बीन।

वीत-राग-पुं० [सं०] जिसने सांसारिक वस्तुओं और सुखों के प्रति राग या आसक्ति बिलकुल छोड़ दी हो।

वीथी-स्त्री० [सं०] १. दृश्य-काव्य में

रूपक का एक भेद जिसमें एक ही अंक और एक ही नायक होता है। २. मार्ग। रास्ता। ३. आकाश में सूर्य्य के चलने का मार्ग। ४. आकाश में नक्षत्रों के रहने के कुछ विशिष्ट स्थान।

वीभत्स-वि० [सं०] [भाव० वीभत्सता] १. जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २. क्रूर। ३. पापी।
पुं० साहित्य में नौ रसों के अंतर्गत सातवाँ रस। इसमें रक्त, मांस आदि ऐसी वस्तुओं का वर्णन होता है जिनसे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।

वीर-पुं० [सं०] १. बहादुर। बलवान। २.योद्धा। सिपाही। ३.उत्साह या साहस का कोई बड़ा काम करनेवाला। ४.भाई, पति, पुत्र आदि के लिए सम्बोधन। ५. काव्य में एक रस जिसका स्थायी-भाव उत्साह है।

वीरगति-स्त्री०[सं०] युद्ध-क्षेत्र में वीरता-पूर्वक लड़कर मरने पर प्राप्त होनेवाली गति जो श्रेष्ठ मानी गई है।

वीर-मंगल-पुं० [देश०] हाथी।

वीर-माता-स्त्री० [सं० वीर-मातृ] वीर पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री। वीर जननी।

वीरसू-वि० स्त्री० [सं०] वीरों को उत्पन्न करनेवाली।

वीरान-वि० [फा०] उजाड़।

वीरासन-पुं० [सं०] बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा। (वीरता-सूचक)

वीरुध-पुं० [सं०] १. लता। २. पौधा।

वीर्य्य-पुं० [सं०] १. शरीर की वह धातु जिससे उसमें बल, तेज और कांति आती तथा सन्तान उत्पन्न होती है। शुक्र। रेत। बीज। २. दे० 'रज'। ३.बल। पराक्रम।

वृंत-पुं० [सं०] १.कच्चा और छोटा फल। २. इस आकार के वनस्पति का कोई अंग। बौंड़ी।

वृंद-पुं० [सं०] दल। झुंड।

वृक्ष-पुं० [सं०] १. पेड़। दरख्त। २. वृक्ष के समान वह आकृति जिसमें कोई मूल वस्तु और उसकी शाखाएँ आदि दिखाई गई हों। जैसे-वंश-वृक्ष।

वृक्षायुर्वेद-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों की चिकित्सा का विवेचन होता है।

वृज-पुं० दे० 'व्रज' ३.।

वृत्त-पुं० [सं०] १.वृत्तान्त। हाल। २. चरित्र। ३. जीविका का साधन। वृत्ति। ४. वर्णिक छंद। ५. वह क्षेत्र जो ऐसी रेखा से घिरा हो, जिसका प्रत्येक बिंदु उस क्षेत्र के मध्य-बिंदु से समान अंतर पर हो। गोला। मंडल। ६ घेरा।

वृत्तांत-पुं० [सं०] समाचार। हाल।

वृत्तांश-पुं० [सं०] वृत्त या गोलाई का कोई अंश। गोलाई लिये हुए ऐसी रेखा जो पूरा वृत्त न बनाती हो।

वृत्ति-स्त्री० [सं०] १. कोई ऐसा काम जिसमें मनुष्य कुशल हो और जिसके द्वारा वह अपना निर्वाह करता हो। जीविका। रोजी। पेशा। (प्रोफेशन) २. किसी दरिद्र या योग्य छात्र आदि को उसके सहायतार्थ दिया जानेवाला धन। (स्टाइपेंड) ३. सूत्रों आदि की व्याख्या। ४. शब्द-योजना की वह विशेषता जिससे रचना में माधुर्य, ओज, प्रसाद आदि गुण आते हैं। जैसे-मधुरा, परुषा और प्रौढ़ा आदि। (साहित्य) ५. नाटकों में विषय के विचार से भारती, सात्वती, कैशिकी और आरभटी ये चार वर्णन-शैलियाँ। ६. व्यापार। कार्य्य। ७. स्वभाव। प्रकृति। ८. एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

वृत्त्यनुप्रास-पुं० [सं०] वह शब्दालंकार जिसमें कुछ व्यंजन-वर्ण एक या कई रूपों में बार बार आते हैं।

वृथा-वि० [सं०] [भाव० वृथात्व] जिससे कोई मतलब न निकले। व्यर्थ का। क्रि० वि० बिना मतलब के। व्यर्थ।

वृद्ध-पुं० [सं०] [भाव० वृद्धता] १. साठ वर्ष से अधिक अवस्थावाला मनुष्य। २ वह जो साधारण की अपेक्षा बड़ा और श्रेष्ठ हो। (एल्डर) ३. बुड्ढा। ४. पंडित। विद्वान्।

वृद्धा-स्त्री० [सं०] बुड्ढी स्त्री। बुढ़िया।

वृद्धावस्था-स्त्री०[सं०] १ बुढ़ापा। २.मनुष्यों में साठ वर्ष से अधिक की अवस्था।

वृद्धि-स्त्री० [सं०] १. 'वृद्ध' होने की क्रिया या भाव। २. बढ़ने की क्रिया। बढ़ती। अधिकता। ३ ब्याज। सूद। ४. वह अशौच जो सन्तान उत्पन्न होने पर सगे-सम्बन्धियों को होता है। ५. अभ्युदय। समृद्धि। ६. वेतन में होनेवाली अधिकता। (इन्क्रीमेन्ट)

वृश्चिक-पुं० [सं०] १ बिच्छू। २. बारह राशियों में से आठवीं राशि।

वृष-पुं० [सं०] १. गौ का नर। साँड़। २. श्रीकृष्ण। ३ बारह राशियों में से दूसरी राशि। ४. दे० 'वृषभ' २.।

वृषण-पुं० [सं०] १. इन्द्र। २. साँड़। ३. घोड़ा। ४. अंडकोश। पोता।

वृषभ-पुं०[सं०] १.बैल या साँड़। २.चार प्रकार के पुरुषों में से एक जो बहुत समर्थ और श्रेष्ठ कहा गया है। (काम-शास्त्र)

वृषल-पुं० [सं०] १. शूद्र पत्नी या दासी के गर्भ से उत्पन्न पुरुष। २.शूद्र। ३. दुष्कर्मी। बद-चलन।

वृषोत्सर्ग-पुं० [सं०] मृत पूर्वज के नाम पर साँड़ पर चक्र दागकर उसे छोड़ना।

वृष्टि-स्त्री० [सं०] १. वर्षा। २. बहुत-सी चीजों का एक साथ आकर गिरना। जैसे-फूलों की वृष्टि, गोलियों की वृष्टि आदि।

वृष्य-वि० [सं०] वीर्य और बल बढ़ानेवाला (पदार्थ)।

वृहत्-वि० [सं०] बहुत बड़ा या भारी।

वे-वि० [हिं० वह] हिं० 'वह' का बहु०।

वेग-पुं० [सं०] १. प्रवाह। बहाव। २. मल, मूत्र आदि की शरीर से बाहर निकलने की प्रवृत्ति। ३. जोर। तेजी। ४ शीघ्रता। जल्दी।

वेग-धारण-पुं० [सं०] मल, मूत्र आदि का वेग या उन्हें निकलने से रोकना।

वेगवान्-वि० [सं०] तेज चलनेवाला।

वेणी-स्त्री० [सं०] स्त्रियों के सिर के बालों की गूथी हुई चोटी।

वेणु-पुं० [सं०] १. बाँस। २. बाँसुरी।

वेतन-पुं० [सं०] १.वह धन जो किसी को कोई काम करते रहने के बदले में दिया जाता है। तनखाह। महीना। (पे, सैलरी) २. पारिश्रमिक। (वेजेज)

वेतन-भोगी-पुं० [सं० वेतन-भोगिन्] वेतन लेकर काम करनेवाला।

वेताल-पुं० [सं०] १. द्वारपाल। २. शिव के गणों में से एक प्रधान गण। ३. एक प्रकार की भूत-योनि।

वेत्ता-वि० [सं०] जाननेवाला। ज्ञाता।

वेद-पुं० [सं०] १. सच्चा और वास्तविक ज्ञान। २. भारतीय आर्यों के सर्व-प्रधान और सर्व-मान्य धार्मिक ग्रंथ। श्रुति। आम्नाय। ये चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

वेदन-पुं०=वेदना।

वेदना-स्त्री० [सं०] पीड़ा, विशेषतः

हार्दिक या मानसिक। व्यथा।

वेद-वाक्य-पुं० [सं०] ऐसी प्रमाणित बात जिसमें तर्क की जगह न हो।

वेद व्यास-पुं० दे० 'व्यास'।

वेदांग-पुं० [सं०] वेदों के ये छः अंग — शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंदःशास्त्र।

वेदांत-पुं० [सं०] १. वेदों के अंतिम भाग (उपनिषद और आरण्यक आदि), जिनमें आत्मा, ईश्वर, जगत् आदि का विवेचन है। ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म। २. छः दर्शनों में से एक जिसमें पारमार्थिक सत्ता का विवेचन है। अद्वैतवाद।

वेदांती-पुं० [सं० वेदांतिन्] वेदान्त का अच्छा ज्ञाता।

वेदिका-स्त्री० [सं०] १. वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है। कुरसी। २. दे० 'वेदी'।

वेदी-स्त्री०[सं०] शुभ या धार्मिक कृत्य के लिए बनाई हुई ऊँची छायादार भूमि।

वेध-पुं० [सं०] १. छेदना। बेधना। २. दूर-दर्शक यंत्रों आदि से ग्रहों, नक्षत्रों तारों आदि की गति-विधि देखना।

वेधक-वि० [सं०] १. वेध करनेवाला। २. छेदनेवाला।

वेधशाला-स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ ग्रहों, नक्षत्रों और तारों का वेध करने के यंत्र रहते हों। (ऑबजर्वेटरी)

वेधालय-पुं० = वेधशाला।

वेधी-पुं० दे० 'वेधक'।

वेपथु-पुं० [सं०] कँपकपी। कंप।

वेला-स्त्री० [सं०] १. काल। समय। २. समुद्र की लहर। ३. तट। ४.सीमा।

वेल्लि(ी)-स्त्री० [सं०] बेल। लता।

वेश-पुं० [सं०] १. वस्त्रादि पहनने का ढंग। २. पहनने के वस्त्र। पोशाक। यौ०-वेश-भूषा = पहनने के कपड़े और ढंग।

३. खेमा। तंबू। ४. घर। मकान।

वेश्म-पुं० [सं०] घर। मकान।

वेश्या-स्त्री० [सं०] गाने-बजाने और धन लेकर संभोग करनेवाली स्त्री। रंडी।

वेश्यालय-पुं० [सं०] वह घर जिसमें वेश्याएँ रहकर पेशा करती हों। (ब्रॉथल)

वेष-पुं० [सं०] १. दे० 'वेश'। २. रंग-मंच में का नेपथ्य।

वेष्टन-पुं० [सं०] [वि० वेष्टित, स्त्री० वेष्टनी] १. घेरना या लपेटना। २.कोई चीज लपेटने का कपड़ा। बेठन।

वै-वि० १. दे० 'वे'। २. दे० 'वो'।

वैकल्पिक-वि० [सं०] १ किसी एक पक्ष में होनेवाला। एकांगी। २.जो अपनी इच्छा के अनुसार चुनकर ग्रहण किया जा सके। (ऑप्शनल) ३. उन दो या कई में से कोई एक जिसे अपनी इच्छा से ग्रहण किया जा सके। (ऑल्टरनेटिव)

वैकुंठ-पुं० [सं०] १ विष्णु। २. विष्णु का निवास-स्थान या लोक। ३.स्वर्ग।

वैक्रम(मीय)-वि० दे० 'विक्रमी'।

वैखरी-स्त्री० [सं०] १ वाणी का व्यक्त रूप। २. व्यक्त और स्पष्ट वाणी। ३. वाक्-शक्ति। ४. वाग्देवी।

वैगन-पुं० [अं०] माल-गाड़ी का डब्बा जिसमें भरकर माल बाहर भेजा जाता है।

वैचारिक-वि० [सं०] १.विचार सम्बन्धी। २. न्याय-विभाग और उसके विचार या व्यवहार-दर्शन से संबंध रखनेवाला। (जुडिशल)

वैचारिक अवेक्षा-स्त्री० [सं०] किसी विषय में न्याय-विभाग या वैचारिकी के

द्वारा होनेवाली अवेक्षा या उसपर दिया जानेवाला ध्यान। (जुडिशल नोटिस)

वैचारिक विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें व्यवहारों या मुकदमों के विचार से सम्बन्ध रखनेवाले मूल सिद्धांतों का वर्णन होता है। (लीगल ज्युरिसप्रुडेन्स)

वैचारिकी-स्त्री० [सं०] न्याय-विभाग में काम करनेवाले अधिकारियों का वर्ग या समूह। (जुडिशिअरी)

वैचित्र्य-पुं० दे० 'विचित्रता'।

वैजयंती-स्त्री० [सं०] १. पताका। झंडी। २. एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगों के फूल होते हैं।

वैज्ञानिक-पुं० [सं०] विज्ञान का ज्ञाता। विज्ञानवेत्ता। (अशुद्ध प्रयोग) वि० विज्ञान संबंधी। विज्ञान का।

वैतनिक-पुं० [सं०] वेतन पर काम करने या वेतन पानेवाला। (सैलरीड)

वैतरणी-स्त्री० [सं०] यम के द्वार के पास की एक कल्पित पौराणिक नदी।

वैताल(लिक)-पुं०[सं०] प्राचीन काल में राजों-महाराजों के दरबार में वह कर्मचारी जो स्तुति-पाठ करके उन्हें जगाता था।

वैत्तिक-वि० [सं०] आय-व्यय आदि की व्यवस्था से संबंध रखनेवाला। वित्त संबंधी। वित्त का। (फाइनेन्शल)

वैदर्भी-स्त्री० [सं०] काव्य की एक प्रकार की रीति या शैली जिसमें कोमल वर्णों से मधुर रचना की जाती है।

वैदिक-पुं० [सं०] १. वेदों का अनुयायी। २. वेदों का पंडित। वि० वेद-संबंधी। वेद या वेदों का।

वैदूर्य-पुं० [सं०] लहसुनिया' (रत्न)।

वैदेशिक-वि० [सं०] १. विदेश संबंधी। विदेश का। २. दूसरे देशों या राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला। (फॉरेन)

वैदेही-स्त्री० [सं०] सीता। जानकी।

वैद्य-पुं०[सं०] १. पंडित। २ वैद्यक शास्त्र के अनुसार रोगियों की चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक।

वैद्यक-पुं०[सं०] वह शास्त्र जिसमें रोगों की पहचान और चिकित्सा आदि का विवेचन होता है। चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद।

वैद्युत्-वि० [सं०] विद्युत् संबंधी। बिजली का। (इलेक्ट्रिकल)

वैध-वि० [सं०] १. जो विधि के अनुसार हो। कानून के अनुसार ठीक। (लीगल) २. जो विधान या संविधान के अनुसार ठीक हो। (कांस्टिट्यूशनल)

वैधव्य-पुं० [सं०] 'विधवा' होने का भाव या अवस्था। रँडापा।

वैधानिक-वि० [सं०] १. विधान या संघटन के नियमों से संबंध रखनेवाला। (कांस्टिट्यूशनल) २. जो विधान के रूप में हो। (स्टेट्यूटरी)

वैफल्य-पुं० [सं०] विफल या निरर्थक होने का भाव। विफलता। (नल्लिटी)

वैभव-पुं० [सं०] १. धन-संपत्ति। विभव। २. ऐश्वर्य।

वैभव-शाली-पुं० [सं०] वह जिसके पास बहुत धन-सम्पत्ति हो। मालदार। अमीर।

वैभिन्न्य-पुं०=विभिन्नता।

वैमनस्य-पुं० [सं०] शत्रुता। दुश्मनी।

वैमात्र(त्रेय)-वि० [सं०] [स्त्री० वैमात्रेयी] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

वैमानिक-वि० [सं०] विमान संबंधी। पुं० १. वह जो विमान पर सवार हो। २. हवाई जहाज चलानेवाला।

वैयक्तिक-वि० [सं०] किसी एक व्यक्ति

से सम्बन्ध रखनेवाला । व्यक्तिगत । 'सामूहिक' का उलटा । (पर्सनल)
वैयाकरण-पुं०[सं०] व्याकरण का पंडित।
वैर-पुं० [सं०] [भाव० वैरता] शत्रुता।
वैरागी-पुं० [सं०] १. वह जिसे वैराग्य हुआ हो । विरक्त । २. एक प्रकार के वैष्णव साधु ।
वैराग्य-पुं० [सं०] सांसारिक कार्यों और सुख-भोगों अथवा किसी विशेष बात से होनेवाली विरक्ति ।
वैराज्य-पुं० [सं०] एक ही देश में दो राजाओं या शासकों का शासन ।
वैरी-पुं० [सं० वैरिन्] दुश्मन । शत्रु ।
वैलक्षण्य-पुं० = विलक्षणता ।
वैवाहिक-वि० [सं०] विवाह संबंधी ।
वैशाख-पुं० [सं०] चैत के बाद और जेठ के पहले का महीना ।
यौ०-वैशाखनन्दन=गधा ।
वैशिक-पुं० [सं०] वेश्यागामी नायक ।
वैशेषिक-पुं० [सं०] १. महर्षि कणाद-कृत दर्शन जो छः दर्शनों में से एक है । २. वैशेषिक दर्शन का ज्ञाता या अनुयायी । वि० किसी विशेष विषय आदि से संबंध रखनेवाला । जैसे-वैशेषिक विद्यालय ।
वैश्य-पुं० [सं०] भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण, जिसके काम कृषि, गो-रक्षा और वाणिज्य है ।
वैषम्य-पुं० = विषमता ।
वैष्णव-पुं० [सं०] [स्त्री० वैष्णवी] १. विष्णु का उपासक और भक्त । २. हिंदुओं का एक प्रसिद्ध विष्णु-उपासक सम्प्रदाय। वि० विष्णु-संबंधी । विष्णु का ।
वैष्णवी-स्त्री० [सं०] १. विष्णु की शक्ति । २. दुर्गा । ३. गंगा । ४. तुलसी।
वैसा-वि० [हिं० वह+सा] उस तरह का।
वैसे-क्रि० वि० [हिं० वैसा] उस तरह ।
वोक*-पुं० [?] ओर । तरफ ।
वोट-पुं० [अं०] चुनाव में किसी उम्मेदवार के पक्ष में दी जानेवाली राय । मत ।
वोटर-पुं० दे० 'मत-दाता' ।
वोटिंग-स्त्री० [अं०] किसी चुनाव के लिए वोट या मत लिया या दिया जाना।
व्यंग्य-पुं० [सं०] १. शब्द का व्यंजना-वृत्ति के द्वारा प्रकट होनेवाला अर्थ । २. गूढ़ अर्थ । ३. ताना । बोली । चुटकी ।
व्यंग्यचित्र-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति या घटना का वह चित्र जो व्यंग्यपूर्वक उसका उपहास करने के लिए बना हो । (कार्टून)
व्यंजक-वि० [सं०] व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवाला ।
व्यंजन-पुं० [सं०] १. व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया । (एक्सप्रेशन) २. चावल, रोटी आदि के साथ खाये जानेवाले पदार्थ । जैसे-तरकारी, साग आदि। ३ पका हुआ भोजन । ४.वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के न बोला जा सके । (हमारी वर्णमाला में 'क' से 'ह' तक के सब वर्ण व्यंजन हैं ।)
व्यंजना-स्त्री० [सं०] १. व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया या भाव । २. शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के सिवा कुछ विशेष अर्थ निकलता है ।
व्यक्त-वि० [सं०] [भाव० व्यक्तता] १. जो प्रकट किया या सामने लाया गया हो। जिसका व्यंजन हुआ हो । प्रकट । (एक्स-प्रेस्ड) २. साफ । स्पष्ट ।
व्यक्ति-स्त्री० [सं०] व्यक्त या प्रकट होना। पुं० १. मनुष्य । आदमी । २. जाति या समूह में से कोई एक । (इंडिविजुअल)
व्यक्तिगत-वि० [सं०] किसी व्यक्ति से

सम्बन्ध रखनेवाला। वैयक्तिक।

व्यक्तित्व-पुं० [सं०] १. 'व्यक्ति' का गुण या भाव। २. वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है। (पर्सनैलिटी)

व्यग्र-वि० [सं०] [भाव० व्यग्रता] १. घबराया हुआ। विकल। २. डरा हुआ। भयभीत। ३.काम में लगा हुआ। व्यस्त।

व्यजन-पुं० [सं०] पंखा।

व्यतिकरण-पुं० [सं०] १ क्रिया और प्रतिक्रिया के रूप में होना या करना। २. सम्पादन करना। ३ बीच में बाधा के रूप में होना। बाधक होना। (इंटरफियरेन्स) ४ दे० 'हस्तक्षेप'।

व्यतिक्रम-पुं०[सं०] १ क्रम-भंग। उलट-फेर। २. बाधा। विघ्न।

व्यतिरिक्त-क्रि० वि०=अतिरिक्त।

व्यतिरेक-पुं० [सं०] [वि० व्यतिरेकी] १. अभाव। २. भेद। अंतर। ३. एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ विशेषता बतलाई जाती है।

व्यतीत-वि० [सं०] बीता हुआ। गत।

व्यतीतना*-अ०=बीतना।

व्यतीपात-पुं० [सं०] ज्योतिष में एक योग जिसमें शुभ काम करना मना है।

व्यत्यय-पुं० दे० 'व्यतिक्रम'।

व्यथा-स्त्री० [सं०] [वि० व्यथित] १.पीड़ा। वेदना। कष्ट। २.दु:ख। क्लेश।

व्यथित-वि० [सं०] [स्त्री० व्यथिता] १. जिसे किसी प्रकार की व्यथा या कष्ट हो। २. दु:खित।

व्यपगत-वि० [सं०] १. असावधानी के कारण छूटा या भूला हुआ। २.(अधिकार या सुभीता) जो ठीक समय पर उपयोग में न आने के कारण हाथ से निकल गया हो और फिर जल्दी न मिल सकता हो। (लैप्स्ड)

व्यपगति-स्त्री० [सं०] १. असावधानी के कारण होनेवाली कोई सामान्य या छोटी भूल। २. नियत समय तक किसी अधिकार, प्राधिकार या सुभीते का उपयोग न करने के कारण उसका हाथ से निकल जाना। (लैप्स)

व्यभिचार-पुं० [सं०] १. बुरा या दूषित आचार। दुश्चरित्रता। २. किसी पुरुष या स्त्री का क्रमात् पर-स्त्री या पर-पुरुष से होनेवाला अनुचित सम्बन्ध। छिनाला।

व्यभिचारी-पुं० [सं० व्यभिचारिन्] [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. दुश्चरित्र। २. पर-स्त्री गामी। ३. दे० 'संचारी' (भाव)।

व्यय-पुं० [सं०] [वि० व्ययी] १. खर्च। (एक्सपेंडिचर) २. खपत। ३. नाश। बरबादी।

व्यर्थ-वि० [सं०] [भाव० व्यर्थता] १. बिना मतलब का। अर्थ-रहित। २. जिससे कोई लाभ न हो। निरर्थक। ३. जिसका कोई फल न हो। विफल। (नल्ल) क्रि० वि० बिना मतलब के। यों ही।

व्यर्थन-पुं० [सं०] आज्ञा, निर्णय आदि रद्द या व्यर्थ करना। (नलिफिकेशन)

व्यर्थीकरण-पुं० दे० 'व्यर्थन'।

व्यवधान-पुं० [सं०] १. ओट। परदा। २. रुकावट। बाधा। ३ विभाग। खंड। ४. विच्छेद। ५. परदा।

व्यवसाय-पुं० [सं०] [वि० व्यवसायी] १ जीविका-निर्वाह के लिए किया जाने-वाला काम। पेशा। धन्धा। (ऑकुपेशन) २. रोजगार। व्यापार। ३ काम-धंधा।

व्यवस्था-स्त्री० [सं०] शास्त्रों, नियमों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित

किसी कार्य का विधान जो उसके औचित्य का सूचक होता है। (रूलिंग) २. चीज़ों को सजाकर या ठिकाने से रखना या लगाना। ३. प्रबंध। इन्तज़ाम।

व्यवस्थान-पुं० [सं०] १. आपस में होनेवाला समझौता या सन्धि। २. संघटित सभा या संघ। (कम्पैक्ट)

व्यवस्थापक-पुं० [सं०] १. शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला। २. प्रबंध-कर्त्ता।

व्यवस्था-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था या वैधानिक विधान लिखा हो।

व्यवस्थापन-पुं० [सं०] व्यवस्था देने या करने का काम या भाव।

व्यवस्थापिका सभा-स्त्री० [सं०] किसी देश के प्रतिनिधियों आदि की वह सभा जो देश के लिए कानून आदि बनाती है।

व्यवस्थित-वि० [सं०] जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो। नियमित।

व्यवहार-पुं० [सं०] १. कार्य। काम। २. सामाजिक सम्बन्धों में औरों के साथ किया जानेवाला आचरण। बरताव। (कॉन्डक्ट) ३. रुपये-पैसे आदि के लेन-देन का काम। महाजनी। ४.मुकदमा। (दीवानी और फौजदारी दोनों) (केस)

व्यवहारतः-क्रि० वि० [सं०] १.व्यवहार की दृष्टि से। २. उपयोग के विचार से।

व्यवहार-दर्शन-पुं० [सं०] व्यवहारों या वादों (मुकदमों) का विचार और सुनवाई करना। (ट्रायल आफ केसेज़)

व्यवहार-निरीक्षक-पुं [सं०] वह अधिकारी जो छोटे या साधारण मुकदमों में सरकार की ओर से पैरवी करता है। (कोर्ट इन्स्पेक्टर)

व्यवहार-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें विधान के निर्णय और अपराधों के दंड का विवेचन होता है। धर्म-शास्त्र।

व्यवहार्य-वि० [सं०] १. व्यवहार या काम में आने या लाने के योग्य। २ जिसे क्रियात्मक रूप दिया जा सके। (प्रैक्टिकल)

व्यवहृत-वि० [सं०] [भाव० व्यवहृति] १. व्यवहार या काम में लाया हुआ। २. जिसका व्यवहार या प्रयोग होता हो।

व्यष्टि-पुं० [सं०] समष्टि का कोई एक स्वतंत्र और पृथक् अंश या सदस्य। 'समष्टि' का उलटा। व्यक्ति।

व्यसन-पुं० [सं०] [वि० व्यसनी] १. विपत्ति। २.कोई बुरी या अमांगलिक बात। ३. विषयों के प्रति आसक्ति। ४. कोई बुरा शौक या बुरी लत। ५. किसी काम या बात का शौक।

व्यसनी-पुं० [सं० व्यसनिन्] वह जिसे किसी काम या बात का व्यसन हो।

व्यस्त-वि० १.दे० 'व्यग्र'। २ दे० 'व्याप्त'।

व्याकरण-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के प्रकारों और प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है।

व्याकल्प-पुं० [सं०] १.कुछ निश्चित अवधि तक होनेवाले आय-व्यय आदि का पहले से किया जानेवाला अनुमान। २. इस प्रकार अनुमान से तैयार किया हुआ लेखा। (बजट)

व्याकुल-वि० [सं०] [भाव० व्याकुलता] १. घबराया हुआ। २. बहुत उत्कंठित।

व्याकृति-स्त्री० [सं०] १. वाक्य में शब्दों का क्रम, जिसके आधार पर उसका अर्थ निकलता है। (कन्स्ट्रक्शन) २. शब्दों के क्रम के विचार से निकलनेवाला वाक्य या शब्द का अर्थ। (रीडिंग)

व्याख्या-स्त्री० [सं०] [वि० व्याख्यात]

किसी जटिल वाक्य आदि के अर्थ का स्पष्टीकरण। टीका। (एक्सप्लेनेशन) २. वर्णन।

व्याख्याता-पुं० [सं० व्याख्यातृ] १. व्याख्या करनेवाला। २.भाषण करनेवाला।

व्याख्यान-पुं० [सं०] १. व्याख्या या वर्णन करने का काम। २. वक्तृता। भाषण।

व्याख्यापक-वि० [सं०] १. व्याख्या करनेवाला। २. जो व्याख्या के रूप में हो। (एक्स्प्लेनेटरी)

व्याख्यापन-पुं० [सं०] व्याख्या करना।

व्याघात-पुं० [सं०] १. विघ्न। बाधा। २. मार। ३. किसी के अधिकार या स्वत्व पर होनेवाला आघात या उसमें पड़नेवाली बाधा। (इन्फ्रिन्जमेन्ट)

व्याघ्र-पुं० [सं०] बाघ। शेर।

व्याघ्र-चर्म्म-पुं० [सं०] बाघ की खाल।

व्याज-पुं० [सं०] १. छल। मिस। बहाना। २. बाधा। विघ्न। ३. विलंब। पुं० दे० 'ब्याज'।

व्याज-निन्दा-स्त्री० [सं०] किसी बहाने या ढंग से की जानेवाली वह निन्दा जो साधारणतः देखने में निन्दा न जान पड़े।

व्याज-स्तुति-स्त्री० [सं०] कुछ खास ढंग से की जानेवाली वह स्तुति जो साधारणतः देखने में स्तुति न जान पड़े।

व्याधि-स्त्री० [सं०] १ रोग। बीमारी। २.विपत्ति। आफत। ३.झंझट। बखेड़ा।

व्यापक-वि० [सं०] [भाव० व्यापकता] १ चारों ओर फैला हुआ। २. भरा या छाया हुआ। ३. घेरने या ढकनेवाला।

व्यापन-पुं० [सं०] व्याप्त होना। फैलना।

व्यापना-अ०[सं० व्यापन] किसी चीज के अन्दर व्याप्त होना या फैलना।

व्यापार-पुं० [सं०] १. कार्य। काम। २. क्रियात्मक रूप धारण करने का भाव। काम करना। (ऑपरेशन) ३. चीजें खरीदकर बेचने का काम। रोजगार। (ट्रेड)

व्यापार-चिह्न-पुं० [सं०] वह विशेष चिह्न जो व्यापारी अपने माल पर, उसे दूसरे व्यापारियों के माल से पृथक् सूचित करने के लिए अंकित करते हैं। (ट्रेड मार्क)

व्यापारिक-वि०[सं०] व्यापार सम्बन्धी। रोजगार का।

व्यापारी-पुं० [सं०व्यापारिन्] व्यवसाय, व्यापार या रोजगार करनेवाला। रोजगारी। (डीलर, ट्रेडर) वि० [सं० व्यापार] व्यापार सम्बन्धी।

व्यापी-वि० [सं० व्यापिन्] व्याप्त होने या चारों ओर फैलनेवाला। (यौगिक के अन्त में। जैसे-संसार-व्यापी महायुद्ध)

व्याप्त-वि० [सं०] १. किसी वस्तु या स्थान में भरा, फैला या छाया हुआ। २. सीमा में या अंतर्गत आया हुआ।

व्याप्ति-स्त्री० [सं०] १. व्याप्त होने की क्रिया, भाव या सीमा। २.न्याय-शास्त्र में किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का एक या पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना।

व्यामोह-पुं० [सं०] [वि० व्यामोहक, व्यामोही] अज्ञान।

व्यायाम-पुं०[सं०]१.केवल बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जानेवाला शारीरिक श्रम। कसरत। (एक्सरसाइज)

व्यायोग-पुं० [सं०] रूपक या दृश्य-काव्य का एक प्रकार या भेद जो एक अंक का होता है और जिसकी कथा ऐतिहासिक या पौराणिक होती है।

व्याल-पुं० [सं०] [स्त्री० व्याली] १. साँप। २. बाघ। ३. राजा। ४. विष्णु।

व्यालू-उभय० [सं० वेला] रात के

समय किया जानेवाला भोजन।

व्यावहारिक-वि० [सं०] १. व्यवहार या बरताव सम्बन्धी। २. व्यवहार में आने या लाने योग्य।

व्यास-पुं० [सं] १. कृष्ण द्वैपायन, जिन्होंने वेदों का संग्रह और संपादन किया था और जो पुराणों के रचयिता माने जाते हैं। २. वह ब्राह्मण जो पुराणों आदि की कथाएँ सुनाता हो। कथा-वाचक। ३. वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त या गोल क्षेत्र के बीचो-बीच होती हुई गई हो और जिसके दोनों सिरे वृत्त की परिधि से मिले हों। विस्तार। ४. फैलाव। यौ०-व्यास-समास=१. घटाना-बढ़ाना। २. काट-छाँट।

व्यासक्त-वि० [सं०] १. एक ही वर्ग या प्रकार के अंतर्गत होने के कारण परस्पर सम्बद्ध या सदृश। (एलाइड)

व्यासक्ति-स्त्री० [सं०] वह समानता जो अनेक वस्तुओं में उनके एक ही प्रकार या वर्ग के अंतर्गत होने के कारण होती है। (एफिनिटी)

व्यासार्द्ध-पुं० [सं०] किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग। (रेडिअस)

व्यासिद्ध-वि०[सं०] किसी विशेष कार्य, पद, व्यक्ति आदि के लिए मुख्य रूप से अलग या सुरक्षित किया हुआ। (रिजर्व्ड)

व्यासेध-पुं० [सं०] किसी विशिष्ट व्यक्ति, पद, कार्य आदि के लिए मुख्य रूप से अलग करने या सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव। (रिजर्वेशन)

व्याहत-वि० [सं०] १. मना किया हुआ। वर्जित। २. बुरा। निषिद्ध। ३. व्यर्थ।

व्याहृति-स्त्री० [सं०] १. कथन। उक्ति। २. भूः, भुवः, स्वः इन तीनों का मंत्र।

व्युत्पत्ति-स्त्री० [सं०] १. उद्गम या उत्पत्ति का स्थान। २. शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला या बना हो। (डेरिवेशन) ३. शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न-वि० [सं०] [भाव० व्युत्पन्नता] किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित।

व्यूह-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. निर्माण। रचना। ३. शरीर। ४. सेना। ५. युद्ध में सैनिकों आदि या सेना की स्थापना का विशेष प्रकार। विन्यास।

व्योम-पुं० [सं० व्योमन्] आकाश।

व्योमकेश-पुं० [सं०] महादेव।

व्योमचारी-पुं० [सं० व्योमचारिन्] १. जो आकाश में विचरण करता हो। २. देवता। ३. पक्षी। चिड़िया।

व्योम-यान-पुं० [सं०] हवाई जहाज।

व्रज-पुं० [सं०] १. जाना या चलना। २. समूह। ३. मथुरा और वृन्दावन के आस-पास का क्षेत्र और श्रीकृष्ण की लीला-भूमि।

व्रज-भाषा-स्त्री० [सं०] मथुरा, आगरे आदि में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा जिसमें सूर, तुलसी, बिहारी आदि के अनेक ग्रंथ-रत्न हैं।

व्रज-मंडल-पुं० [सं०] व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।

व्रजराज, व्रजेश-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

व्रजांगना-स्त्री० [सं०] १. व्रज की स्त्री। २. गोपी।

व्रण-पुं० [सं०] १. फोड़ा। २. घाव।

व्रत-पुं० [सं०] १. भोजन न करना। २. पुण्य या धार्मिक अनुष्ठान के लिए नियमपूर्वक उपवास करना। ३. संकल्प। प्रतिज्ञा।

व्रती-पुं० [सं० व्रतिन्] १. वह जिसने

कोई व्रत धारण किया हो। २. यजमान। ३. ब्रह्मचारी।

ब्राचड़-स्त्री० [अप०] अपभ्रंश भाषा का एक भेद जो सिन्ध में प्रचलित था।

व्रात्य-पुं० [सं०] १. वह जिसके दस संस्कार न हुए हों। २. यज्ञोपवीत संस्कार से हीन या रहित। ३. वर्ण-संकर।

व्रीड़ा-स्त्री० [सं०] लज्जा। लाज। शर्म।

व्रीहि-पुं० [सं०] १. धान। २. चावल।

श

श-हिंदी वर्णमाला में तीसवाँ व्यंजन वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

शंक-पुं० [सं०] १. डर। भय। २. शंका।

शंकना*-अ० [सं० शंका] १. शंका या संदेह करना। २. डरना।

शंकर-वि० [सं०] मंगलकारक। शुभ। पुं० १ शिव। २. दे० 'शंकराचार्य'।
*पुं० दे० 'संकर'।

शंकरी-स्त्री० [सं०] पार्वती।

शंका-स्त्री० [सं०] १. अनिष्ट का भय। डर। खटक। २. सन्देह। संशय। शक। ३ काव्य में एक संचारी भाव।

शंकित-वि० [सं०] [स्त्री० शंकिता] १. जिसे शंका हुई हो। २. डरा हुआ।

शंकु-पुं० [सं०] १. मेख। कील। २. खूँटी। ३. भाला। ४. वह खूँटी जिससे प्राचीन काल में सूर्य या दीये की छाया नापी जाती थी। ५. मोटी सींक।

शंख-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का बड़ा घोंघा जिसका कोष बहुत पवित्र माना जाता और देवताओं के आगे बजाया जाता है। कंबु। २. सौ पद्म की संख्या जो अठारहवें स्थान पर पड़ती है।

शंखचूड़-पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत जहरीला साँप।

शंखिनी-स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार की वनौषधि। २. काम-शास्त्र में स्त्रियों के पद्मिनी आदि चार भेदों में से एक।

शंड-पुं० दे० 'षंड'।

शंपा-स्त्री० [सं० शम्पा] १. विद्युत्। बिजली। २. कमर। कटि।

शंबुक-पुं० [सं०] घोंघा।

शंभु-पुं० [सं०] शिव। महादेव।

शंसिका-स्त्री० [सं० शंसा] किसी व्यक्ति या घटना के सम्बन्ध में आलोचना के रूप में प्रकट किया हुआ संक्षिप्त विचार। (रिमार्क)

शऊर-पुं० [अ०] १. अच्छी तरह काम करने की योग्यता या ढंग। २. बुद्धि।

शक-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन जाति जो म्लेच्छों में गिनी जाती थी। २.शकाब्द।
पुं० [अ०] [वि० शक्की] शंका। सन्देह।

शकट-पुं० [सं०] बैल-गाड़ी। छकड़ा।

शकर-स्त्री० दे० शक्कर'।

शकर कंद-पुं० [हिं० शकर+सं० कंद] एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।

शकर-पारा-पुं० [फा०] १.एक प्रकार का फल। २. एक प्रकार की छोटी चौकोर मिठाई। ३. इस आकार की चौकोर सिलाई जो रुईदार कपड़ों में होती है।

शकल-स्त्री० [अ० शक्ल] १. मुख की आकृति। चेहरा। स्वरूप। २. मुख का भाव। चेष्टा। ३. बनावट। गढ़न। ४. उपाय। ढंग। रास्ता। (काम करने

पुं० [सं०] १. चमड़ा। २. छाल। ३. अंश। खंड। टुकड़ा।

शकाब्द-पुं० [सं०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत् जो सन् ई० के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।

शकुंत-पुं० [सं०] पक्षी। चिड़िया।

शकुन-पुं० [सं०] १. किसी विशेष कार्य के आरंभ में दिखाई देनेवाले शुभ या अशुभ लक्षण। सगुन। २. शुभ मुहूर्त्त। ३ शुभ मुहूर्त में होनेवाला कार्य।

शक्कर-स्त्री० [सं० शर्करा, फा० शकर] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खाँड़।

शक्की-वि० [अ० शक+ई (प्रत्य०)] हर बात में शक या सन्देह करनेवाला।

शक्त-पुं० [सं०] समर्थ। शक्तिमान्।

शक्ति-स्त्री० [सं०] १.कोई ऐसा तत्व जो कोई कार्य्य करता, कराता अथवा क्रियात्मक रूप में अपना प्रभाव दिखलाता हो। बल। ताकत। (एनर्जी) २. वे साधन या तत्व जिससे कोई कार्य या अभीष्ट सिद्ध होता है। जैसे-सैनिक या आर्थिक शक्ति। ३ बड़ा और पराक्रमी राज्य, जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो। (पॉवर) ४. वह सम्बन्ध जो शब्द और उसके अर्थ में होता है। ५. प्रकृति। माया। ६. किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहलाते हैं। (तंत्र) ७. दुर्गा। ८. एक प्रकार का शस्त्र। साँग।

शक्तिमत्ता-स्त्री० [सं०] शक्तिमान् होने का भाव। ताकत।

शक्तिमान्-वि० [सं०] [स्त्री० शक्तिमती] बलवान्। बलिष्ठ। ताकत-वर।

शक्य-वि० [सं०] [भाव० शक्यता] क्रियात्मक रूप में हो सकने योग्य। संभव।

शक्यता-स्त्री० [सं०] 'शक्य' होने की क्रिया या भाव। (पोटेंशियालिटी)

शक्र-पुं० [सं०] इन्द्र।

शक्र-चाप-पुं० [सं०] इन्द्र-धनुष।

शक्ल-स्त्री० दे० 'शकल'।

शख्स-पुं० [अ०] व्यक्ति। जन।

शगल-पुं० [अ०] १. व्यापार। काम-धंधा। २. मनोविनोद।

शगुन-पुं० [सं० शकुन] १. दे० 'शकुन'। २. विवाह की बात-चीत पक्की होने की रसम। तिलक। टीका।

शगुनियाँ-पुं० [हिं० शगुन] शकुन का विचार करनेवाला साधारण ज्योतिषी।

शगूफा-पुं० [फा०] १. कली। २. फूल। ३ कोई नई और विलक्षण घटना या बात।

शची-स्त्री० [सं०] इन्द्र की पत्नी।

शजरा-पुं० [अ०] १. वंश-वृक्ष। २. पटवारी का बनाया हुआ खेतों का नकशा।

शठ-वि० [सं०] [भाव० शठता] १ धूर्त्त। चालाक। २. लुच्चा। बदमाश। ३ मूर्ख। ४. दुष्ट। पाजी।
पुं० साहित्य में वह नायक जो बातें बनाकर अपराध छिपाने में चतुर हो।

शत-वि० [सं०] पचास का दूना। सौ।

शतक-पुं० [सं०] [स्त्री० शतिका] १. एक ही तरह की सौ वस्तुओं का समूह या संग्रह। २. शताब्दी। (सेन्चुरी)

शत-कुंडी-स्त्री० [सं० शत-कुंडिन्] वह महायज्ञ जिसमें सौ कुंडों में एक साथ यज्ञ होता है।

शतघ्नी-स्त्री० [सं०] एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।

शत-दल-पुं० [सं०] कमल।

शतधा-अव्य० [सं०] १.सैकड़ों बार। २. सैकड़ों प्रकार से। ३. सैकड़ों टुकड़ों में।

शतरंज-स्त्री० [फा०, मि० सं० चतुरंग] एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो बत्तिस गोटियों से खेला जाता है।

शतरंजी-स्त्री० [फा०] रंग-बिरंगे सूतों से बनी हुई दरी या मोटा बिछावन।

शतशः-वि०[सं०] १.सैकड़ों। २.सौगुना।

शतांश-पुं० [सं०] सौ हिस्सों में से एक। १०० वाँ भाग।

शताब्दी-स्त्री० [सं०] सौ वर्षों का विशेषतः किसी सन्, संवत् की किसी इकाई से सैकड़े तक का समय। शती। शतक। (सेन्चुरी)

शतायु-वि० [सं० शतायुस्] सौ वर्षों की आयुवाला।

शतावधान-पुं० [सं०] [वि० शतावधानी] वह जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें ठीक क्रम से याद रख सकता और बहुत-से काम एक साथ कर सकता हो।

शती-स्त्री० [सं० शतिन्] १.सौ का समूह। सैकड़ा। २.शताब्दी। (सेन्चुरी)

शत्रु-पुं० [सं०] वैरी। दुश्मन।

शत्रुता-स्त्री० [सं०] दुश्मनी। वैर।

शनाख्त-स्त्री० [फा०] किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर पहचानने की क्रिया या भाव। विभावन। पहचान।

शनि-पुं० [सं०] सौर जगत् का सातवाँ ग्रह। (फलित ज्योतिष में अशुभ)

शनिवार-पुं० [सं०] शुक्रवार के बाद और रविवार के पहले का वार या दिन।

शनिश्चर-पुं० दे० 'शनि'।

शनैः-अव्य० [सं०] धीरे। आहिस्ता।

शनैश्चर-पुं० दे० 'शनि'।

शपथ-स्त्री० [सं०] १. कसम। सौगंद। २ दृढ़तापूर्ण कथन। प्रतिज्ञा।

शपथ-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी बात की सत्यता प्रमाणित करने के समय शपथ-पूर्वक लिखकर न्यायालय में उपस्थित किया जाता है। (एफिडेविट)

शबनम-स्त्री० [फा०] १ ओस। २. एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।

शबल(लित)-वि० [सं०] १ चितकबरा। २. रंग-विरंगा। बहुरंगा।

शबीह-स्त्री० [अ०] चित्र। तसवीर।

शब्द-पुं० [सं०] १. ध्वनि। आवाज। २. सार्थक ध्वनि। ३.संतों के बनाये हुए पद।

शब्द-कोष-पुं० [सं०] वह कोष (ग्रंथ) जिसमें बहुत से शब्द यों ही अथवा अर्थ सहित दिये हों।

शब्द-चित्र-पुं० [सं०] शब्दों में किसी विषय या बात की ऐसी स्पष्ट और विस्तृत चर्चा जो देखने में उसके चित्र के समान जान पड़े।

शब्द-जाल-पुं० दे० 'शब्दाडंबर'।

शब्द-प्रमाण-पुं० [सं०] ऐसा प्रमाण जिसका आधार केवल किसी का कथन हो।

शब्द-भेद-पुं० दे० 'शब्द-वेध'।

शब्द-योजना-स्त्री०[सं०] १.किसी वाक्य या कथन के लिए उपयुक्त शब्द बैठाना। २. इस प्रकार बैठाये हुए शब्दों का क्रम और रूप। (वर्डिंग)

शब्द-विरोध-पुं० [सं०] वह विरोध जो वास्तविक या तात्पर्य-सम्बन्धी न हो, बल्कि केवल शब्दों में जान पड़ता हो। केवल शब्द-गत विरोध।

शब्द-वेध-पुं० [सं०] [वि० शब्द-वेधी] बिना देखे हुए केवल सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारना।

शब्द-वेधी-पुं० [सं० शब्द वेधिन्] केवल

सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को बाण से मारनेवाला।

शब्द-शक्ति-स्त्री०[सं०] शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उससे कोई अर्थ निकलता है। यह तीन प्रकार की कही गई है अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। (देखो)

शब्द-शास्त्र-पुं० [सं०] व्याकरण।

शब्द-साधन-पुं०[सं०] व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, प्रकार और रूपान्तर आदि का विचार होता है।

शब्दाडंबर-पुं० [सं०] साधारण बात कहने के लिए बड़े बड़े शब्दों और जटिल वाक्यों का प्रयोग। शब्द-जाल।

शब्दालंकार-पुं० [सं०] काव्य में वह अलंकार जिसमें प्रयुक्त होनेवाले शब्दों से ही चमत्कार उत्पन्न हो, उनके स्थान पर उनके पर्याय रखने से वह चमत्कार न रहे।

शब्दावली-स्त्री० [सं०] १. किसी विषय या कार्य से सम्बन्ध रखनेवाले शब्द या उनकी सूची। २. किसी वाक्य, कथन या रचना में प्रयुक्त शब्दों का प्रकार या क्रम। (वर्डिंग)

शब्दित-वि० [सं०] १. जिसमें शब्द उत्पन्न होता हो। २. बोलता हुआ।

शम-पुं० [सं०] [भाव० शमता] १. शान्ति। २. मोक्ष। ३. अंतःकरण तथा इंद्रियाँ वश में रखना। ४. क्षमा।

शमन-पुं० [सं०][वि० शमित] १. दोष, विकार, उपद्रव आदि दबाना। २. शान्ति। ३. दे० 'दमन'।

शमशेर-स्त्री० [फा०] तलवार।

शमा-स्त्री० [अ० शमऽ] मोमबत्ती।

शमादान-पुं० [अ०+फा०] वह आधान जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।

शमी-स्त्री० [सं० शिवा ?] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। सफेद कीकर।

शयन-पुं० [सं०] १. सोना। निद्रा लेना। २. लेटना। ३. शय्या। बिछौना।

शयन-गृह-पुं० दे० 'शयनागार'।

शयनागार-पुं० [सं०] सोने का कमरा या घर। शयन-गृह।

शयनालय-पुं० दे० 'शयनागार'।

शयित-वि०[सं०] १.सोया हुआ। निद्रित। २. शय्या पर पड़ा या लेटा हुआ।

शय्या-स्त्री०[सं०] १. बिछौना। २.पलंग।

शय्या-दान-पुं० [सं०] मृतक के उद्देश्य से महाब्राह्मण को चारपाई, ओढ़ना-बिछौना, बरतन आदि दान देना।

शर-पुं० [सं०] [भाव० शरता] १. बाण। तीर। २. सरकंडा। सरई। ३ सरपत। रामशर। ४. दूध या दही पर की मलाई। ५. भाले का फल।

शरअ-स्त्री० [अ०] [वि० शरई] १. कुरान में बतलाया हुआ विधान। २. दस्तूर। परिपाटी। ३ मुसलमानों का धर्म-शास्त्र।

शरई-वि० [अ०] जो शरअ या इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार ठीक हो।

शरण-स्त्री० [सं०] १. रक्षा। आश्रय। २. बचाव की जगह। ३. घर। मकान।

शरण-गृह-पुं० [सं०] जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण आदि से बचने के लिए छिपकर रहते हैं।

शरणागत-वि०[सं०]शरण में आया हुआ।

शरणार्थी-पुं० [सं०] १. वह जो कहीं शरण पाना चाहता हो। २. वह जो अपने निवास-स्थान से बलपूर्वक हटा दिया गया हो और दूसरी जगह शरण पाकर रहना चाहता हो। (रिफ्यूजी)

शरण्य-वि० [सं०] शरण में आनेवाले

की रक्षा करनेवाला।

शरत्-स्त्री० [सं०] १. एक ऋतु जो आश्विन और कार्तिक में होती है। २. वर्ष। साल।

शरतिया-क्रि० वि० दे० 'शर्तिया'।

शरत्काल-पुं० दे० 'शरत्' २.।

शरद्-स्त्री० दे० 'शरत्'।

शरबत-पुं० [अ०] [वि० शरबती] १. कोई मधुर पेय पदार्थ। २. चीनी आदि में पकाकर तैयार किया हुआ किसी ओषधि का रस। ३. वह पानी जिसमें शक्कर या खाँड़ घुली हो।

शरभ-पुं० [सं०] १. टिड्डी। २ हाथी का बच्चा। ३. शेर।

शरम-स्त्री० [फा० शर्म] १.लज्जा। हया। मुहा०-मारे शरम के गड़ जाना या पानी पानी होना=बहुत लज्जित होना। २ लिहाज। संकोच। ३.प्रतिष्ठा। इज्जत।

शरमाऊ-वि० दे० 'शरमीला'।

शरमाना-अ० [अ०शर्म+आना(प्रत्य०)] लजाना। लज्जित होना। स० शर्मिंदा या लज्जित करना।

शरमिंदा-वि० [फा०] [भाव० शरमिंदगी] लज्जित।

शरमीला-वि० [फा०शर्म+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० शरमीली] जिसे जल्दी शरम या लज्जा आती हो। लजीला। लज्जालु।

शरह-स्त्री० [अ०] १. टीका। भाष्य। २. दर। भाव।

शरह-बंदी-स्त्री० दे० 'दर-बंदी'।

शराकत-स्त्री० [फा०] साझा।

शराकत-नामा-पुं० [अ० शिरकत+फा० नामः] वह पत्र जिसपर शराकत या साझे की शर्तें लिखी रहती हैं।

शरापना-स०=शाप देना।

शराफत-स्त्री० [अ०] सज्जनता।

शराब-स्त्री० [अ०] मदिरा। मद्य।

शराबखोरी-स्त्री० [फा०] मदिरा-पान।

शराबी-पुं० [हिं० शराब+ई (प्रत्य०)] वह जो प्रायः शराब पीता हो। मद्यप।

शराबोर-वि० [फा०] बिलकुल भीगा हुआ। लथपथ। तर-बतर।

शरारत-स्त्री० [अ०] पाजीपन। दुष्टता।

शरासन-पुं० [सं०] धनुष।

शरीक-वि० [अ०] [भाव० शराकत] १. किसी काम में साथ देनेवाला। २. मिला हुआ। शामिल। सम्मिलित। पुं० १. साथी और सहायक। २. हिस्सेदार। साझी।

शरीकत-स्त्री० दे० 'शराकत'।

शरीफ-पुं० [अ०] भला आदमी। सज्जन।

शरीफा-पुं० [सं० श्रीफल या सीता-फल] १. मझोले आकार का एक प्रसिद्ध वृक्ष। २. इस वृक्ष का फल। सीता-फल।

शरीर-पुं० [सं०] १. प्राणियों के सब अंगों का समूह। देह। तन। बदन। काया। (बॉडी) २. किसी वस्तु का सारा विस्तार या ढाँचा जिसमें उसके सब अंग सम्मिलित हों। (फ्रेम) वि० [अ०] [भाव० शरारत] पाजी। नटखट।

शरीर-पात-पुं० [सं०] मृत्यु।

शरीर-रक्षक-पुं० दे० 'अंग-रक्षक'।

शरीर-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शरीर के अंगों की बनावट और उनके कार्यों का विवेचन होता है।

शरीरांत-पुं० [सं०] मृत्यु। मौत।

शरीरी-पुं० [सं० शरीरिन्] १. शरीर-धारी। प्राणी। २. आत्मा। जीव। वि० शरीर से युक्त। शरीरवाला।

शर्करा-स्त्री० [सं०] १. शक्कर। २. बालू।

शर्त्त-स्त्री० [अ०] १. किसी विषय के ठीक होने के सम्बन्ध में दृढ़तापूर्वक कुछ कहने का वह प्रकार जिसमें सत्य या असत्य सिद्ध होने पर हार-जीत और कुछ लेन-देन भी हो। दाँव। बाजी। २. किसी काम के पूरा होने के लिए बन्धन या नियंत्रण के रूप में होनेवाली आवश्यक बात या काम।

शर्त्तिया-क्रि० वि० [अ०] निश्चयपूर्वक। वि० बिलकुल ठीक। निश्चित।

शर्म-पुं० [सं०] १. सुख। २. घर। स्त्री० दे० 'शरम'।

शर्म्मा-पुं० [सं० शर्म्मन्] ब्राह्मणों की उपाधि।

शलगम-पुं० [फा० शलजम] गाजर की तरह का एक प्रसिद्ध कंद।

शलभ-पुं० [सं०] १. टिड्डी। २ फतिंगा।

शलवार-स्त्री० दे० 'सलवार'।

शलाका-स्त्री० [सं०] १. सलाई। सींख। २. बाण। तीर। ३. निर्वाचन आदि में छोटी रंगीन गोलियों या कागजों की सहायता से गुप्त रूप से दिया जानेवाला मत। ४. इस प्रकार मत देने की प्रणाली। (बैलट)

शलूका-पुं० [फा०] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शल्य-पुं० [सं०] १. शस्त्र-चिकित्सा। २. हड्डी। अस्थि। ३. शलाका। ४. साँग नामक अस्त्र। ५. दुर्वचन। गाली।

शल्ल-वि० [सं०] शिथिल। सुन्न। (हाथ-पैर आदि)

शव-पुं० [सं०] मृत शरीर। लाश।

शव-परीक्षा-स्त्री० [सं०] किसी मरे हुए व्यक्ति के शव या लाश की वह जाँच जो उसकी मृत्यु के कारण जानने के लिए होती है। (पोस्ट-मॉर्टम)

शवर-पुं० [सं०] [स्त्री० शबरी] एक प्राचीन जंगली जाति।

शवल-वि० दे० 'शबल'।

शशक-पुं० [सं०] १. खरगोश। २. चन्द्रमा में का कलंक। ३. काम-शास्त्र में पुरुष के चार भेदों में से एक।

शशधर-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

शश-शृंग-पुं० [सं०] खरगोश के सींग की तरह असम्भव या अनहोनी बात।

शशांक-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

शशि-पुं० [सं० शशिन्] चंद्रमा।

शशिधर-पुं० [सं०] शिव।

शशि-मुख-वि० [सं०] [स्त्री० शशिमुखी] चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाला।

शसा*-पुं० [सं० शश] खरगोश।

शसि(ी)*-पुं० दे० 'शशि'।

शस्त्र-पुं० [सं०] १. वे साधन जिनसे युद्ध के समय शत्रु पर आक्रमण तथा आत्म रक्षा की जाती है। (आर्म्स) २. शत्रु पर आक्रमण करने के उपकरण। हथियार। (वेपन) ३. कार्य सिद्ध करने का उपाय, ढंग या साधन।

शस्त्र-धारी-वि० [सं० शस्त्रधारिन्] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियार-बंद।

शस्त्र-विद्या-स्त्री० [सं०] १. हथियार चलाने की विद्या। २. दे० 'धनुर्वेद'।

शस्त्रशाला-स्त्री० दे० 'शस्त्रागार'।

शस्त्रागार-पुं० [सं०] शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रशाला। सिलहखाना।

शस्त्रास्त्र-पुं० [सं०] शस्त्र और अस्त्र जिनसे युद्ध में आक्रमण और आत्म-रक्षा की जाती है। (आर्म्स ऐण्ड वेपन्स)

शस्त्रीकरण-पुं० [सं०] सेना या राष्ट्र को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शस्य-पुं० [सं०] १. अन्न। अनाज। २. फसल। ३. नई घास।

शहंशाह-पुं० दे० 'शाहंशाह'।

शह-वि० [फा०] बढ़ा-चढ़ा। श्रेष्ठतर। (यौ० में) जैसे-शहजोर=बलवान्। स्त्री० १. शतरंज के खेल में कोई मोहरा किसी ऐसे घर में रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो। किश्त। २. भड़काने या बढ़ावा देने की क्रिया या भाव।

शहजादा-पुं० दे० 'शाहजादा'।

शहजोर-वि० [फा०] बली। बलवान्।

शहतीर-पुं० [फा०] लकड़ी का बड़ा और लम्बा लट्ठा। (इमारत में)

शहतूत-पुं० [फा०] मझोले आकार का एक पेड़ जिसकी फलियाँ मीठी होती हैं।

शहद-पुं० [अ०] मधु-मक्खियों द्वारा फूलों से संग्रह करके छत्तों में संचित शीरे की तरह की प्रसिद्ध मीठी वस्तु। मधु। कहा०-शहद लगाकर चाटो=निरर्थक पदार्थ व्यर्थ लेकर बैठे रहो। (व्यंग्य)

शहना-पुं० [अ० शिहनः] १. शासक। २. कोतवाल। ३. कर संग्रह करनेवाला।

शहनाई-स्त्री० दे० 'रोशन-चौकी'।

शहबाला-पुं० [फा०, मि० सं० सह-बाल] विवाह के समय दूल्हे के साथ जानेवाला छोटा बालक।

शहर-पुं० [फा०] नगर। पुर।

शहर-पनाह-स्त्री० [फा०] शहर की चारदीवारी। प्राचीर। परकोटा।

शहराती-वि० = नागरिक।

शहरी-वि० [फा०] शहर का। पुं० नगर-निवासी। नागरिक।

शहवत-स्त्री० [फा०] काम-वासना।

शहवती-वि०=कामुक।

शहादत-स्त्री० [अ०] गवाही।

शहाना-वि० [फा०] [स्त्री० शहानी] १. शाही। राजसी। २. बहुत बढ़िया। उत्तम।

शहीद-पुं० [अ०] किसी शुभ प्रयत्न में अपने प्राण देनेवाला व्यक्ति।

शांत-वि० [सं०] १. (मन) जिसमें क्षोभ, चिंता, दुःख उद्वेग आदि न हों। राग आदि से रहित और स्वस्थ। २. वेग, गति, क्रिया आदि से रहित। निश्चल। ३. हो-हल्ले आदि से रहित। ४. जिसके दुष्ट विकारों का अन्त हो गया हो। ५. (समाज या देश) जिसमें उपद्रव, आन्दोलन, झगड़े-बखेड़े आदि न हों। सभी विघ्न-बाधाओं से रहित। ६. धीर और सौम्य। ७. मौन। चुप। ८. मरा हुआ। मृत। पुं० काव्य के नौ रसों में से एक जिसका आलम्बन संसार की असारता का ज्ञान या परमात्मा के स्वरूप का चिन्तन होता है।

शांति-स्त्री० [सं०] १. मन की वह अवस्था जिसमें वह क्षोभ, चिन्ता, दुःख आदि से रहित रहता है। चित्त की स्वस्थता। २. वेग, गति, क्रिया आदि का अभाव। निश्चलता। ३. हो-हल्ले या चीख-पुकार का अभाव। स्तब्धता। सन्नाटा। ४. युद्ध, मार-काट आदि का अभाव। ५. समाज या देश में उपद्रव, आन्दोलन, विद्वेष, झगड़े-बखेड़े आदि का अभाव। (पीस, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६. बाधा, अमंगल आदि दूर करनेवाला धार्मिक उपचार या कृत्य।

शांति-भंग-पुं० [सं०] कोई ऐसा उपद्रव या अनुचित काम जिससे जन-साधारण के सुख और शान्ति-पूर्वक रहने में बाधा

होती हो। (श्रीच ऑफ पीस)

शांतिवाद-पुं० [सं०] [वि० शांतिवादी] वह सिद्धान्त कि सब लोगों को यथा-साध्य शांति-पूर्वक रहना चाहिए और संसार से लड़ाई-झगड़े आदि का अंत हो जाना चाहिए। (पैसिफिज़्म)

शाक-पुं० [सं०] भाजी। तरकारी। वि० [सं०] शक जाति-संबंधी।

शाक द्वीप-पुं० [सं०] [वि० शाकद्वीपी] १. पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप। २. ईरान और तुर्किस्तान के बीच का वह प्रदेश जिसमें पहले शक रहते थे।

शाकाहार-पुं० [सं०] [वि० शाकाहारी] वनस्पति-जन्य पदार्थों और अन्न का भोजन। 'मांसाहार' का उलटा।

शाक्त-वि० [सं०] शक्ति-सम्बन्धी। पुं० शक्ति या देवी का उपासक।

शाक्य-पुं० [सं०] नैपाल की तराई में बसनेवाली एक प्राचीन क्षत्रिय जाति।

शाख-स्त्री० दे० 'शाखा'।

शाखा-स्त्री० [सं०] १. वृक्षों आदि के तने से इधर-उधर निकले हुए अंग। टहनी। डाल। २. किसी मूल वस्तु से इसी रूप में या इसी प्रकार के निकले हुए अंग। ३. किसी मूल वस्तु के वे अंग जो स्वतंत्र विभाग के रूप में हो गये हों। जैसे-वेद की शाखा। ४. किसी संस्था का वह अंग जो दूर रहकर भी उसके अधीन और उसके अनुसार काम करता हो। जैसे-किसी दूकान या बंक की शाखा। (ब्रांच, उक्त सभी अर्थों के लिए) ५. वेद की संहिताओं के पाठ और क्रम-भेद।

शाखा-मृग-पुं० [सं०] बंदर।

शाखी-वि० [सं० शाखिन्] शाखाओंवाला। पुं० वृक्ष। पेड़।

शाखोच्चार-पुं० [सं०] विवाह के समय होनेवाला वंशावली का बखान।

शागिर्द-पुं० [फा०] [भाव० शागिर्दी] शिष्य। चेला।

शाण-पुं० [सं०] [वि० शाणित] १. सान रखने का पत्थर। कुरंड। २. पत्थर। ३. कसौटी।

शातवाहन-पुं० दे० 'शालिवाहन'।

शादी-स्त्री० [फा०] १. खुशी। आनंद। २. आनंदोत्सव। ३. विवाह। ब्याह।

शाद्वल-पुं० [सं०] रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती। (ओएसिस)

शान-स्त्री० [अ०] [वि० शानदार] १. तड़क-भड़क। ठाट-बाट। २. दर्प। ठसक। ३. भव्यता। विशालता। ४. शक्ति। विभूति। ५. प्रतिष्ठा। स्त्री० दे० 'सान'।

शान-शौकत-स्त्री० [अ०] तड़क-भड़क। ठाठ-बाट। सजावट।

शाप-पुं० [सं०] १. किसी के अनिष्ट की कामना से कहा हुआ शब्द या वाक्य। २. धिक्कार। भर्त्सना।

शापना*-स० [सं० शाप] शाप देना।

शापित-वि० [सं०] जिसे किसी ने शाप दिया हो। शाप-ग्रस्त।

शाबाश-अव्य० [फा०] [भाव० शाबाशी] एक प्रशंसा-सूचक शब्द। वाह वाह। धन्य हो। साधुवाद।

शाब्द-वि० [सं०] [स्त्री० शाब्दी] शब्द सम्बन्धी। शब्द या शब्दों का।

शाब्दिक-वि० [सं०] १. शब्द संबंधी। २. शब्दों में (कहा हुआ)।

शाम-स्त्री० [फा०] साँझ। संध्या। * वि० पुं० दे० 'श्याम'। पुं० अरब के उत्तर का एक प्राचीन देश

जो अब सीरिया कहलाता है।

शामत-स्त्री० [अ०] १. दुर्भाग्य।

पद-शामत का मारा=जिसका दुर्भाग्य समीप आ गया हो।

२ विपत्ति। दुर्दशा।

मुहा०-शामत सवार होना=दुर्दशा का समय निकट आना।

शामियाना-पुं० [फ़ा० शामियानः] एक प्रकार का बड़ा तम्बू या खेमा।

शामिल-वि० [फ़ा०] सम्मिलित।

शामी-पुं० [शाम (देश)] मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग या विभाग जिसमें यहूदी, अरब, मिस्री आदि जातियाँ हैं। (सेमेटिक)

स्त्री० प्राचीन शाम देश की भाषा। (सेमेटिक)

वि० १.शाम देश संबंधी। २.शाम देश में होनेवाला। जैसे-शामी कबाब।

शायक-पुं० [सं०] १ बाण। तीर। शर। २. खड्ग। तलवार।

पुं० [अ० शायक ('शौक' से)] शौकीन।

शायद-अव्य०[फ़ा०]कदाचित्। सम्भव है।

शायर-पुं० [अ०] कवि।

शायरी-स्त्री० [अ०] १. कविताएँ रचना। २. काव्य। कविता।

शायी-वि० [सं० शायिन्] सोनेवाला। (यौ०के अन्त में, जैसे-शेषशायी, जलशायी।

शारद-वि० [सं०] शरद् काल का।

शारदा-स्त्री० [सं०] १. सरस्वती। २. भारत की एक प्राचीन लिपि।

शारदीय-वि० [सं०] शरद् काल का।

शारीर-वि० [सं०] शरीर संबंधी।

शारीरक-वि० [सं०] शरीर से युक्त। शरीरधारी। शरीरवाला।

पुं० जीवात्मा।

शारीर विज्ञान(शास्त्र)-पुं० [सं०] १. वह शास्त्र जिसमें जीवों की उत्पत्ति और वृद्धि आदि का विवेचन हो। २. दे० 'शरीर-शास्त्र'।

शारीरिक-वि० [सं०] शरीर-संबंधी। शरीर का। जैसे-शारीरिक कष्ट।

शारीरित-वि० [सं०] शरीर के रूप में लाया हुआ। जिसे शरीर का रूप दिया गया हो।

शार्ग-पुं० [सं०शार्ङ्ग] १.धनुष। कमान। २. विष्णु का धनुष।

शार्गधर(पाणि)-पुं० [सं० शार्ङ्गधर] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शार्दूल-पुं०[सं०] १. बाघ। २. सिंह। ३. एक प्रकार की चिड़िया। ४. राक्षस।

वि० सर्व-श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

शाल-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध वृक्ष। साखू। पुं० [फ़ा०] दुशाला।

शालग्राम-पुं० [सं०] विष्णु की गोल पत्थर की एक प्रकार की मूर्त्ति।

शाला-स्त्री० [सं०] १. घर। गृह। २. जगह। स्थान। जैसे-पाठशाला, धर्मशाला।

शालि-पुं० [सं०] अगहन धान।

शालि-धान्य-पुं०[सं०]बासमती चावल।

शालिवाहन-पुं० [सं०] एक प्रसिद्ध शक राजा जिसने 'शक' संवत् चलाया था।

शालिहोत्र-पुं० [सं०] १. घोड़ा। २.पशु-चिकित्सा की विद्या। (वेटेरिनरी साइन्स)

शालिहोत्री-पुं० [सं० शालिहोत्र+ई (प्रत्य०] पशुओं और पक्षियों की चिकित्सा करनेवाला। (वेटेरिनरी डॉक्टर)

शालिहोत्रीय-वि० [सं०] पशुओं की चिकित्सा से संबंध रखनेवाला। (वेटेरिनरी)

शालीन-वि० [सं०] [भाव० शालीनता] १. विनीत। नम्र। २. लज्जाशील। ३.

अच्छे आचार-विचारवाला । ४. धनवान् । ५. दक्ष । चतुर ।

शाल्मलि-पुं० [सं०] १. सेमल का पेड़ । २. पुराणानुसार एक द्वीप ।

शावक-पुं० [सं०] पशु या पक्षी का बच्चा ।

शाश्वत-वि० [सं०] जो सदा बना रहे । नित्य । (एटेर्नल)

शासक-पुं० [सं०] [स्त्री० शासिका] १. वह जो शासन करता हो । २. हाकिम ।

शासन-पुं० [सं०] १. आज्ञा । आदेश । हुक्म । २. अधिकार या वश में अथवा उचित सीमा या मर्यादा के अन्दर रखना । नियन्त्रण । जैसे-सभा-समिति या इन्द्रियों का शासन । ३. राज्य के कार्यों का प्रबन्ध और संचालन । हुकूमत । (गवर्नमेन्ट) ४. राज्य का संचालन करनेवाले मुख्य अधिकारियों का समूह या मंडल । (ऑथारिटी) ५. राजत्व का काल या समय । ६.वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाय । पट्टा । ७ दंड । सजा ।

शासनिक-वि०[सं०] १.शासन सम्बन्धी । शासन का । २. शासन-विभाग का । जैसे-शासनिक अधिकारी ।

शासित-वि० [सं०] [स्त्री० शासिता] १. जिसपर शासन हो । २. जिसे दंड दिया जाय ।

शास्ता-पुं० दे० 'शासक' ।

शास्ति-स्त्री० [सं०] १. शासन । २. दंड । सजा । ३. दंड या हरजाने आदि के रूप में लिया जानेवाला धन या कार्य । (पेनैल्टी)

शास्त्र-पुं० [सं०] १. जन-साधारण के हित के लिए विधान बतलानेवाले धार्मिक ग्रन्थ । जैसे-चारो वेद, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, धर्म-शास्त्र, पुराण, आयुर्वेद आदि । २.किसी विषय का वह सारा ज्ञान जो क्रम से एकत्र किया गया हो । विज्ञान ।

शास्त्रकार-पुं० [सं०] शास्त्र बनानेवाला ।

शास्त्री-पुं० [सं० शास्त्रिन्] १. शास्त्रों का ज्ञाता । २. धर्म शास्त्र का ज्ञाता ।

शास्त्रीकरण-पुं० [सं०] किसी विषय को शास्त्र का रूप देना ।

शास्त्रीय-वि० [सं०] १. शास्त्र-संबंधी । २. शास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार ।

शास्त्रोक्त-वि० [सं०] शास्त्रों में कहा या बतलाया हुआ ।

शाहंशाह-पुं० [फ़ा०] [भाव०शाहंशाही] बहुत बड़ा बादशाह । महाराजाधिराज ।

शाह-पुं० [फ़ा०] १.महाराज । बादशाह । २. मुसलमान फ़कीर ।
वि० बड़ा या भारी । महान् ।

शाह-खर्च-वि० [फ़ा०] [भाव० शाह-खर्ची] बहुत खर्च करनेवाला ।

शाहज़ादा-पुं० [फ़ा०] [स्त्री० शाहज़ादी] बादशाह का लड़का । महाराज-कुमार ।

शाहाना-वि० [फ़ा०] राजसी ।
पुं० वह जामा जो विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जाता है । जामा ।

शाही-वि० [फ़ा०] बादशाहों का ।
स्त्री०कुंभ आदि पर्वों पर साधु-महात्माओं की निकलनेवाली सवारी ।

शिंगरफ़-पुं० दे० 'इंगुर' ।

शिंजन-पुं० [सं०] [वि० शिंजित] १. मधुर ध्वनि । २.आभूषणों की झनकार ।
वि० मधुर ध्वनि करनेवाला ।

शिंजिनी-स्त्री०[सं०] १. नूपुर । पैंजनी । २. अँगूठी । ३. धनुष की डोरी ।

शिंबी-स्त्री० [सं०] १. छीमी । फली । २. सेम नाम की फली । (तरकारी)

शिंशुमार-पुं० [सं०] सूँस। (जल-जंतु)

शिकंजा-पुं० [फा०] १. दबाने, कसने आदि का यंत्र। २. वह यंत्र जिससे जिल्द-बंद किताबों के पन्ने काटते हैं। ३. कठोर दंड देने के लिए एक प्राचीन यंत्र।

शिकन-स्त्री० [फा०] सिलवट।

शिकम-पुं० [फा०] पेट।

शिकमी-वि० [फा०] १ पेट सम्बन्धी। २. किसी के अन्तर्गत रहनेवाला।

शिकमी काश्तकार-पुं० [फा०] वह जो दूसरे काश्तकार से खेत लेकर जोतता हो।

शिकरम-स्त्री० [?] एक प्रकार की गाड़ी।

शिकरा-पुं० [फा०] एक प्रकार का बाज (पक्षी)।

शिकस्त-स्त्री० [फा०] पराजय। हार।

शिकायत-स्त्री० [अ०] [वि० शिकायती] १. निन्दा। २. चुगली। ३. उलाहना। ४. रोग। बीमारी।

शिकार-पुं० [फा०] १ मांस खाने या मनोविनोद के लिए जंगली पशुओं को मारने का कार्य्य। आखेट। मृगया। मुहा०-किसी का शिकार होना=१. किसी के जाल में फँसना। २.मारा जाना। २.वह जानवर जो इस प्रकार मारा जाय। ३ गोश्त। मांस। ४ आहार। खाद्य। ५ वह जिसके फँसने या हाथ में आने से बहुत आय या लाभ हो। असामी।

शिकारगाह-स्त्री० [फा०] शिकार खेलने की जगह।

शिकारी-पुं० [फा०] शिकार करनेवाला। वि०शिकार से संबंध रखने या शिकार में काम आनेवाला।

शिक्षक-पुं० [सं०] १. शिक्षा देनेवाला। २. विद्यालय में विद्यार्थियों को पढ़ाने-वाला। गुरु। उस्ताद।

शिक्षण-पुं० [सं०] तालीम। शिक्षा।

शिक्षण-विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने आदि की शिक्षा किस प्रकार दी जाय।

शिक्षण-विद्यालय (महाविद्यालय)-पुं० दे० 'प्रशिक्षण विद्यालय' (महा-विद्यालय)। (परि०)

शिक्षणालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की शिक्षा दी जाती हो। विद्यालय।

शिक्षा-स्त्री० [सं०] १. विद्या पढ़ाने या कला सिखाने की क्रिया। तालीम। २. उपदेश। नसीहत। ३. एक वेदांग जिसमें वेदों के वर्णों स्वरों, मात्राओं आदि का विवेचन है। ४. सबक। पाठ। ५. परामर्श। सलाह।

शिक्षार्थी-पुं० [सं०] [स्त्री० शिक्षार्थिनी] वह जो किसी विद्या, कला या कार्य की शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसमें लगा हो।

शिक्षालय-पुं० दे० 'विद्यालय'।

शिक्षा-विभाग-पुं० [सं०शिक्षा+विभाग] वह सरकारी विभाग जो देश में शिक्षा का प्रबंध करता है। (एजुकेशन डिपार्टमेन्ट)

शिक्षित-वि० [सं०] [स्त्री० शिक्षिता] जिसने शिक्षा पाई हो। पढ़ा-लिखा।

शिखंड-पुं० [सं०] १. मोर की पूँछ। २. चोटी। शिखा।

शिखंडी-पुं० [सं० शिखंडिन्] [स्त्री० शिखंडिनी] १. मोर। २. मुरगा। ३. बाण। ४ शिखा।

शिख-स्त्री० = शिखा।

शिखर-पुं० [सं०] १. सिरा। चोटी। २. पहाड़ की चोटी। ३ मंदिर या मकान

के ऊपर का नुकीला भाग। कँगूरा। कलश। ३. मंडप। गुंबद।

शिखरन-स्त्री० [सं० शिखरिणी] दही का बनाया हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

शिखरिणी-स्त्री० [सं०] १. स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री। २. रोमावली। ३. शिखरन।

शिखा-स्त्री० [सं०] १. चोटी। चुटिया। यौ०-शिखा-सूत्र=चोटी और यज्ञोपवीत जो द्विजों के प्रधान चिह्न हैं।

२. आग या दीपक की लौ। ३. नुकीला सिरा। नोक। ४. दे० 'शिखर'।

शिखि-पुं० [सं०] [स्त्री० शिखिनी] १. मोर। २. कामदेव। ३. अग्नि।

शिखी-वि० [सं० शिखिन्] [स्त्री० शिखिनी] शिखा या चोटीवाला।

पुं० १. मोर। २. मुरगा। ३. बैल। साँड़। ४ घोड़ा। ५. अग्नि। ६. बाण। तीर।

शिगाफ-पुं० [फा०] १. दरार। दर्ज। २. छेद। सूराख।

शित-वि० [सं०] (शस्त्र) जिसमें धार हो। धारदार। (जैसे-छुरी या कटारी)

शिथिल-वि० [सं०] [भाव० शिथिलता] १. जो अच्छी तरह बँधा, कसा या जकड़ा हुआ न हो। ढीला। २. जो थकावट आदि के कारण धीमा पड़ गया हो। ३. सुस्त। धीमा। ४. (आज्ञा या विधान) जिसका ठीक तरह से या पूरा पालन न हो। ५. (वाक्य) जिसकी शब्द-योजना ठीक न हो।

शिथिलता-स्त्री० [सं०] १. 'शिथिल' का भाव। २. वाक्य में शब्दों की ठीक और संगत योजना न होना।

शिथिलाई*-स्त्री० = शिथिलता।

शिथिलाना*-अ०, स० [सं० शिथिल] शिथिल होना या करना।

शिथिलित-वि० = शिथिल।

शिनाख्त-स्त्री० [फा०] पहचान।

शिफर*-पुं० [फा० सिपर] तलवार का वार रोकने की ढाल।

शिया-पुं० दे० 'शीया'।

शिर-पुं० दे० 'सिर'।

शिरकत-स्त्री० [अ०] १. किसी वस्तु, कार्य, अधिकार आदि में शरीक या सम्मिलित होने का भाव। २. हिस्सेदारी। साझा। ३ किसी काम में सम्मिलित होना।

शिरस्त्राण-पुं० [सं०] युद्ध के समय सिर पर पहना जानेवाला लोहे का टोप। कूँड़। खोद।

शिरहन*-पुं० दे० 'तकिया'।

शिरा-स्त्री० [सं०] १. शरीर में रक्त की छोटी नस, विशेषतः वह नस जिसके द्वारा शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से रक्त चलकर हृदय तक पहुँचता है। 'धमनी' का उलटा। (वीन) २. इस आकार या प्रकार की कोई नाली।

शिरोधार्य्य-वि० [सं०] आदरपूर्वक ग्रहण करने के योग्य।

शिरोभूषण-पुं० [सं०] १. सिर पर पहनने का गहना। २. मुकुट।

वि० सर्व-श्रेष्ठ। सबसे अच्छा।

शिरोमणि-पुं० [सं०] सिर पर पहनने का रत्न।

वि० सबसे अच्छा। सर्व-श्रेष्ठ।

शिरोरुह-पुं० [सं०] सिर के बाल।

शिल-पुं० दे० 'उंछ'।

शिला-स्त्री० [सं०] १. पत्थर की पटिया या बड़ा चौड़ा टुकड़ा। २. उंछ-वृत्ति।

शिलाजीत-स्त्री० [सं० शिलाजतु] पहाड़ों की चट्टानों से निकलनेवाली एक प्रसिद्ध पौष्टिक काली ओषधि। मोमियाई।

शिलान्यास-पुं० [सं०] नींव का पत्थर रक्खा जाना।

शिलारोपण-पुं० दे० 'शिलान्यास'।

शिला-लेख-पुं० [सं०] पत्थर पर खोदा हुआ (विशेषतः प्राचीन) कोई प्राचीन लेख।

शिला-वृष्टि-स्त्री० [सं०] ओले गिरना।

शिलीमुख-पुं० [सं०] भौंरा।

शिल्प-पुं० [सं०] हाथ से चीजें बनाकर तैयार करने की कला। दस्तकारी। कारीगरी।

शिल्पकार-पुं० [सं०] शिल्पी। कारीगर।

शिल्प-विद्या-स्त्री० दे० 'शिल्प'।

शिल्प-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें शिल्पों का विवेचन होता है।

शिल्पी-पुं० [सं० शिल्पिन्] १. शिल्प के काम करनेवाला। कारीगर। २. किसी शिल्प का अच्छा ज्ञाता। (टेकनीशियन) वि० [सं० शिल्प] शिल्प सम्बन्धी। शिल्प का। जैसे-शिल्पी प्रशिक्षण।

शिव-पुं० [सं०] १. मंगल। कल्याण। २. मोक्ष। ३. रुद्र। ४. परमेश्वर। ५. हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करनेवाले माने जाते हैं।

शिवनामी-स्त्री० [सं० शिव+नाम+ई (प्रत्य०)] वह चादर या कपड़ा जिस-पर जगह जगह 'शिव' या 'जय शिव' छपा होता है।

शिव-निर्माल्य-पुं० [सं०] १. शिव पर चढ़ा हुआ पदार्थ जो ग्रहण करने के योग्य नहीं होता। २.परम अग्राह्य वस्तु।

शिवपुरी-स्त्री० [सं०] काशी नगरी।

शिव-लिंग-पुं० [सं०] शिव या महादेव की पिंडी जिसकी पूजा होती है।

शिवा-स्त्री० [सं०] १. दुर्गा। २. पार्वती। ३. मुक्ति। मोक्ष।

शिवालय-पुं० [सं०] शिव का मन्दिर।

शिवाला-पुं० = शिवालय।

शिविका-स्त्री० [सं०] पालकी। डोली।

शिविर-पुं० [सं०] १. सेना के ठहरने का स्थान। पड़ाव। २. वह स्थान जहाँ कुछ लोग मिलकर किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से रहें। जैसे-शिक्षा-शिविर। (कैम्प) ३. डेरा। खेमा। निवेश। ४. दुर्ग। किला। कोट।

शिशिर-पुं० [सं०] माघ और फाल्गुन मास की ऋतु। २. जाड़ा। शीत काल।

शिशु-पुं० [सं०] [भाव० शिशुता, शिशुत्व] छोटा बच्चा।

शिशुता-स्त्री० [सं०] बचपन।

शिशुपन-पुं० = शिशुता।

शिश्न-पुं० [सं०] पुरुष का लिंग या जननेन्द्रिय।

शिष*-पुं० = शिष्य। स्त्री० १. दे० 'शिक्षा'। २. दे० 'शिखा'।

शिष्ट-वि० [सं०] [भाव० शिष्टता] अच्छे स्वभाव, व्यवहार और आचरण-वाला। भला आदमी। सभ्य। वि० अच्छा। उत्तम।

शिष्टता-स्त्री० [सं०] १. सभ्यता। भल-मनसत। २. उत्तमता। श्रेष्ठता।

शिष्ट-मंडल-पुं० [सं०] कुछ शिष्ट लोगों का वह दल जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए कहीं भेजा जाता है। (डेपुटेशन) जैसे-पार्लमेण्ट का शिष्ट मंडल।

शिष्टाचार-पुं० [सं०] १. सभ्य या शिष्ट पुरुषों का-सा आचरण। उत्तम व्यवहार। २. आनेवाले का आदर-सम्मान। आव-भगत। ३. दिखावटी और ऊपरी सभ्य व्यवहार।

शिष्य-पुं० [सं०] [स्त्री० शिष्या, भाव० शिष्यता] १. वह जिसे किसी ने कुछ

पढ़ाया या सिखाया हो। चेला। शागिर्द।

शिस्त-स्त्री० [फा०] निशाना। लक्ष्य।

शीघ्र-क्रि० वि० [सं०] [भाव० शीघ्रता] बिना विलम्ब किये या देर लगाये। जल्द।

शीघ्रगामी-वि० [सं० शीघ्रगामिन्] जल्दी या तेज चलनेवाला।

शीघ्रता-स्त्री० [सं०] जल्दी। फुरती।

शीत-वि० [स०] ठंढा। शीतल।

पुं० १. जाड़ा। सरदी। २. जाड़े के दिन।

शीत-कटिबंध-पुं० [सं०] पृथ्वी के वे दो विभाग जो भू-मध्य-रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद पड़ते हैं और जिनमें बहुत सरदी होती है।

शीतकर-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

शीत-ज्वर-पुं० [सं०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। (मलेरिया)

शीत तरंग-स्त्री०[सं०] शीत काल में किसी स्थान पर बहुत अधिक सरदी या बरफ पड़ने पर उसके प्रभाव से किसी दिशा में बढ़नेवाली शीत की वह तरंग जिससे दो-चार दिनों के लिए सरदी बहुत बढ़ जाती है। (कोल्ड वेव)

शीतल-वि० [सं०] [भाव० शीतलता] १. ठंढा। सर्द। 'गरम' का उलटा। २. क्षोभ या उद्वेग-रहित। शान्त।

शीतला-स्त्री० [सं०] १ चेचक रोग। २. इस रोग की अधिष्ठात्री देवी।

शीया-पुं० [अ०] एक मुसलमानी सम्प्रदाय जो हजरत अली का अनुयायी है।

शीरा-पुं० [फा०] चीनी या गुड़ पका-कर बनाया हुआ गाढ़ा रस। चाशनी।

शीराजी-वि० [फा० शीराज (नगर)] शीराज नगर का।

पुं० १. एक प्रकार का कबूतर। २. एक प्रकार की शराब।

शीरीनी-स्त्री० [फा०] १. मिठास। मीठापन। २ मिठाई। मिष्ठान्न।

शीर्ण-वि० [सं०] १. टूटा-फूटा। २. फटा-पुराना। ३. मुरझाया या कुम्हलाया हुआ। ४. दुबला। पतला।

शीर्ष-पुं० [सं०] १. सिर। कपाल। २ माथा। मस्तक। ३. सिरा। चोटी। ४ सामने या आगे का भाग। ५.खाते आदि की मद या विभाग का नाम। (हेड)

शीर्षक-पुं० [सं०] १ दे० 'शीर्ष'। २. वह शब्द या पद जो विषय का परिचय कराने के लिए लेख के ऊपर रहता है। (हेड)

शीर्ष-नाम-पुं० [सं०] लेख्य, विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरंभ में रहता है। सिरनामा। (टाइटिल)

शीर्ष-बिंदु-पुं० [सं०] सिर के ऊपर या ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

शील-पुं० [सं०] [भाव० शीलता] १ स्वभाव की प्रवृत्ति या रुख। मिजाज। चाल-ढाल। (डिस्पोजीशन) २ उत्तम स्वभाव और आचरण। सद्वृत्ति। ३. संकोच। मुरौवत।

वि० [स्त्री० शीला] प्रवृत्त। तत्पर। (यौ० के अन्त में जैसे-प्रयत्नशील)

शीलवान्-वि०=सुशील।

शीश*-पुं० दे० 'शीर्ष'।

शीशम-पुं० [फा०] एक बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी इमारत के और सजावटी सामान बनाने के काम में आती है।

शीश-महल-पुं०[फा० शीशः+अ० महल] वह मकान या कमरा जिसकी दीवारों में बहुत-से शीशे लगे या जड़े हों।

शीशा-पुं० [फा० शीशः] १. काँच नामक पारदर्शी मिश्र धातु। विशेष दे०

'काँच'। २. इस धातु के एक पार्श्व पर रासायनिक प्रक्रिया से लेप करके बनाया हुआ वह रूप जिसमें दूसरे पार्श्व पर सामने की वस्तु का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। दर्पण। आइना। ३. झाड़, फानूस आदि काँच के बने सजावट के सामान।

शीशी-स्त्री० [हिं० शीशा] शीशे का वह लम्बोतरा छोटा पात्र जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं। छोटी बोतल।

मुहा०-शीशी सुँघाना=बेहोशी की दवा सुँघाकर बेहोश करना। (अस्त्र-चिकित्सा आदि के समय)

शुंड-पुं० [सं०] हाथी का सूँड़।

शुंडा-स्त्री० [सं०] १. सूँड़। २. एक तरह की शराब।

शुंडिक-पुं० [सं] कलवार।

शुंडी-पुं० [सं०] १. हाथी। २. मद्य बनाने और बेचनेवाला। कलवार।

शुक-पुं० [सं०] तोता।

शुकराना-पुं० [अ० शुक्र] १. शुक्रिया। धन्यवाद। २. वह धन जो किसी के कोई काम कर देने पर उसे धन्यवाद-पूर्वक दिया जाता है।

शुक्ति(का)-स्त्री० [सं०] सीपी।

शुक्र-पुं० [सं०] १.अग्नि। २. एक प्रसिद्ध ग्रह जो पुराणों में दैत्यों का गुरु माना गया है। ३. पुरुष का वीर्य्य। मनी। पुं० [अ०] धन्यवाद।

शुक्रवार-पुं० [सं०] बृहस्पतिवार के बाद और शनिवार के पहले का दिन।

शुक्रिया-पुं० [फा०] धन्यवाद।

शुक्ल-वि० [सं०] सफेद। उजला।

शुक्ल पक्ष-पुं० [सं०] अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के १५ दिन।

शुचि-स्त्री० [सं०] [भाव० शुचिता] १. पवित्रता। शुद्धता। २. स्वच्छता। वि० १. शुद्ध। पवित्र। २. स्वच्छ। साफ। ३. निर्दोष।

शुचिता-स्त्री० [सं०] १. पवित्रता। २. वह स्वच्छता और शुद्धता जो स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आवश्यक होती है। (सैनिटेशन)

शुजा-वि० [अ० शुजाअ] बहादुर। वीर।

शुतुर-पुं० [अ०] ऊँट।

शुतुर-नाल-स्त्री० [अ०+फा०] ऊँट पर रखकर चलाई जानेवाली तोप।

शुतुर मुर्ग-पुं० [फा०] एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह लम्बी होती है।

शुदनी-स्त्री० [फा०] नियति। होनी। भावी। होनहार।

शुद्ध-वि० [सं०] [भाव० शुद्धता, शुद्धि] १. पवित्र। २. स्वच्छ। साफ। ३. जिसमें भूलें, त्रुटियाँ आदि न हों। ठीक। सही। ४. जिसमें मिलावट न हो। खालिस। ५.जिसमें से लागत, व्यय आदि निकाले जा चुके हों। जैसे-शुद्ध लाभ। (नेट प्रॉफिट) ६.निर्दोष। बे-ऐब।

शुद्धि-स्त्री० [सं०] १. 'शुद्ध' होने का कार्य या भाव। २. सफाई। स्वच्छता। ३. वह धार्मिक कृत्य या संस्कार जो किसी धर्मच्युत, विधर्मी या अशुचि व्यक्ति को शुद्ध करने के लिए होता है।

शुद्धि-पत्र-पुं० [सं०] ग्रन्थ का वह पत्र जिसमें यह बतलाया जाता है कि इसमें कहाँ क्या क्या अशुद्धियाँ हैं और उनका शुद्ध रूप क्या है। (एर्राटा)

शुफा-पुं० [अ० शुफअ] पड़ोसी। पार्श्ववर्ती।

यौ०-हक्क शुफा=किसी मकान या

ज़मीन को खरीदने का वह अधिकार जो उसके पड़ोस में रहनेवाले को, औरों से पहले, प्राप्त होता है।

शुबहा-पुं० [अ०] १. सन्देह। शक। २. धोखा। भ्रम।

शुभंकर-वि० [सं०] मंगल-कारक।

शुभ-वि० [सं०] १. अच्छा। भला। २. कल्याणकारी। मंगलप्रद।

पुं० कल्याण। भलाई।

शुभचिंतक-वि० [सं०] शुभ या कल्याण चाहनेवाला। हितैषी।

शुभ-दर्शन-वि० [सं०] सुन्दर। खूबसूरत।

शुभमस्तु-अव्य० [सं०] शुभ हो। अच्छा फल देनेवाला हो। (शुभ कामना)

शुभा-स्त्री० [सं०] १. शोभा। २. कान्ति। चमक। ३. देव-सभा।

पुं० दे० 'शुबहा'।

शुभाकांक्षी-वि० [स्त्री० शुभाकांक्षिणी] दे० 'शुभचिंतक'।

शुभाशय-पुं० [सं०] वह जिसके आशय या विचार शुभ या अच्छे हों।

शुभ्र-वि० [सं०] [भाव० शुभ्रता] सफेद। श्वेत। उजला।

शुमार-पुं० [फा०] १. गिनती। गणना। २ हिसाब। लेखा।

शुरू-पुं० [अ० शुरूअ] आरंभ।

शुल्क-पुं० [सं०] १. वह देन जो किसी विधि, नियम या परिपाटी के अनुसार आवश्यक रूप से दिया या लिया जाय। (ड्यूटी) २. आयात, निर्यात, विक्रय आदि की वस्तुओं पर राज्य की ओर से लगनेवाला एक विशेष प्रकार का कर। (ड्यूटी) ३. कोई काम कराने के बदले में लिया जानेवाला धन। (चार्ज, फी) ४. किराया। भाड़ा। ५. विवाह में कन्या को दिया जानेवाला दहेज।

शुल्कार्ह-वि० [सं०] जिसपर शुल्क लग सकता हो। शुल्क लगाये जाने के योग्य। (ड्यूटीएबुल)

शुश्रूषा-स्त्री० [सं०] [वि० शुश्रूष्य] १. सेवा। टहल। २.रोगी की परिचर्या।

शुष्क-वि० [सं०] [भाव० शुष्कता] १ जिसमें गीलापन या तरी न हो। सूखा। खुश्क। २. नीरस। रस-हीन।

शूक-पुं०[सं०] १.अन्न की बाल या सींका। २. यव। जौ। ३. कागज नत्थी करने की काँटी। आलपीन। (पिन)

शूकधानी-स्त्री० [सं०] गद्दी आदि लगी हुई वह डिबिया या आधार जिसमें शूक या आलपीनें खोंसकर रक्खी जाती हैं। (पिन-कुशन)

शूद्र-पुं० [सं०] [स्त्री० शूद्रा, शूद्री, भाव० शूद्रता] १. हिन्दुओं के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम। (इस वर्ण के लोगों का काम शेष तीनों वर्णों की सेवा करना कहा गया है।) २. इस वर्ण का मनुष्य।

शून्य-पुं० [सं०] [भाव० शून्यता] १. वह जगह जिसके अन्दर कुछ भी न हो। खाली स्थान। (वैकुम) २.आकाश। ३.बिंदु। बिंदी। ४. न होना। अभाव।

वि० १. जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २. विहीन। रहित।

शूर-पुं० [सं०] [भाव० शूरता] १. वीर। बहादुर। २. योद्धा। सूरमा।

शूर वीर-पुं० [सं०] अच्छा वीर और योद्धा। सूरमा।

शूरा-पुं० [सं० शूर] बहादुर। वीर।

पुं० [सं० सूर्य] सूर्य।

शूर्पणखा-स्त्री० [सं०] रावण की बहन

एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसके नाक-कान लक्ष्मण ने काटे थे।

शूर्पनखा-स्त्री० = शूर्पणखा।

शूल-पुं० [सं०] १. बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। विशेष दे० 'त्रिशूल'। २. बड़ा लंबा और नुकीला काँटा। ३. वायु के प्रकोप से पेट में होनेवाली एक प्रकार की प्रबल पीड़ा। ४. पीड़ा। दर्द।

शूलना॰-अ० [हिं० शूल] १. शूल या काँटे की तरह गड़ना। २. दुःख देना।

शूलपाणि-पुं० [सं०] महादेव।

शूल-स्तूप-पुं० [सं०] वह विशेष प्रकार का स्तूप जो शूल के आकार का होता है।

शूली-पुं० [सं० शूलिन्] शिव। महादेव। स्त्री० दे० 'सूली'।

शृंखला-स्त्री० [सं०] १. क्रम। सिल-सिला। २. जंजीर। साँकल। सिकड़ी। ३ श्रेणी। कतार। ४. एक अलंकार जिसमें पहले कहे हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन किया जाता है। (साहित्य)

शृंग-पुं० [सं०] १. पर्वत का शिखर। चोटी। २. गौ, बकरी आदि के सिर के सींग। ३. कँगूरा।

शृंगार-पुं० [सं०] [वि० शृंगारित] १.सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २. साहित्य में नौ रसों में से सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान रस, जिसमें नायक-नायिका के मिलन या संयोग से उत्पन्न सुख अथवा वियोग के कारण होने-वाले कष्टों का वर्णन होता है। (यह दो प्रकार का होता है-संयोग और वियोग या विप्रलंभ।) ३.स्त्रियों का गहने-कपड़ों से अपने आपको सजाना। ४. वह जिससे किसी चीज की शोभा बढ़े।

शृंगारना॰-स० [सं० शृंगार] सजाना।

शृंगार हाट-स्त्री० [सं० शृंगार+हिं०हाट] वेश्याओं के रहने का बाजार। चकला।

शृंगारिक-वि० [सं०] शृंगार-संबंधी।

शृंगारिया-पुं० [सं० शृंगार] वह जो देव-मूर्तियों आदि का शृंगार करता है।

शृंगी-पुं० [सं०] १. हाथी। २. पेड़। ३. पहाड़। ४. सींगवाला पशु। ५.सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। ६. महादेव। शिव।

शृगाल-पुं० [सं०] गीदड़।

शेख-पुं० [अ०] [स्त्री० शेखानी] १. मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से पहला और श्रेष्ठ वर्ग। ३. आचार्य।

शेख चिल्ली-पुं० [अ०+हिं०] १. एक कल्पित महामूर्ख व्यक्ति। २. व्यर्थ बड़े बड़े और असम्भव मन्सूबे बाँधनेवाला।

शेखर-पुं० [सं०] १. शीर्ष। सिर। माथा। २ मुकुट। किरीट। ३. पहाड़ की चोटी। शिखर।

वि० सबसे अच्छा या श्रेष्ठ।

शेखी-स्त्री० [फा० शेख] १. अभिमान। घमंड। २. ऐंठ। अकड़। ३. बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग।

मुहा०-शेखी बघारना या हाँकना = बहुत बढ़ बढ़कर बातें करना। डींग हाँकना।

शेर-पुं० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १. बिल्ली की जाति का एक बहुत बड़ा और भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु। व्याघ्र। नाहर। मुहा०-शेर होना=निर्भय, धृष्ट या बहुत प्रबल होना।

२. बहुत बड़ा वीर और साहसी व्यक्ति।

पुं० [अ०] गजल के दो चरण।

शेर-पंजा-पुं० [फा० शेर+हिं० पंजा] शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र। बघ-नहाँ।

शेर-बच्चा-पुं० [फा०] एक प्रकार की तोप।

शेर बबर-पुं० [फा०] सिंह। केसरी।

शेरवानी-स्त्री० [फा० शेर ?] एक प्रकार का अँगा या लंबा पहनावा।

शेरिफ-पुं० [अं०] १. एक विशिष्ट राजकीय उच्च अधिकारी जो भिन्न भिन्न देशों में न्याय, शान्ति-रक्षा आदि कार्यों के लिए अवैतनिक और सम्मानित रूप से नियुक्त या निर्वाचित होता है। २. दे० 'सुमान्य'।

शेष-पुं० [सं०] १. बाकी बची हुई वस्तु। बाकी। २. गणित में घटाने से बची हुई संख्या या रकम। बाकी। (बैलेन्स) ३. समाप्ति। अंत। ४.शेष नाग। ५. लक्ष्मण, जो शेष नाग के अवतार कहे जाते हैं। वि० १. बचा हुआ। अवशिष्ट। बाकी। २. अंत तक पहुँचा हुआ। समाप्त।

शेष नाग-पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार हजार फनोंवाला वह नाग जिसके फनों पर यह पृथ्वी ठहरी है।

शेषशायी-पुं० [सं०] विष्णु।

शेषांश-पुं० [सं०] १. बाकी बचा हुआ अंश। २. अंतिम अंश।

शैतान-पुं० [अ०] १. ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों में तमोगुण का प्रधान देवता जो मनुष्यों को ईश्वर के विरुद्ध चलाता और धर्म-मार्ग से भ्रष्ट करता है।

पद-**शैतान की आँत**=बहुत लंबा। २.भूत। प्रेत। ३.बहुत बड़ा पाजी या दुष्ट।

शैतानी-स्त्री० [अ० शैतान] दुष्टता। पाजीपन।

वि० १. शैतान-संबंधी। शैतान का। २. दुष्टतापूर्ण।

शैत्य-पुं० [सं०] शीत का भाव। शीतता।

शैथिल्य-पुं० = शिथिलता।

शैल-पुं० [सं०] पर्वत। पहाड़।

शैलजा-स्त्री० [सं०] पार्वती।

शैली-स्त्री० [सं०] १. चाल। ढब। ढंग। २. प्रणाली। तर्ज। ३.रीति। प्रथा। रवाज। ४. वाक्य रचना का वह विशिष्ट प्रकार जो लेखक की भाषा-सम्बन्धी निजी विशेषताओं का सूचक होता है। (स्टाइल) ५. हाथ से बनाई जानेवाली वस्तुओं में ऐसी बातों का समूह जिनकी विशेषताओं में उनके कर्ताओं की मनोवृत्ति की एकरूपता के कारण साम्य हो। कलम। जैसे-मुगल या पहाड़ी शैली के चित्र।

शैलूष-पुं० [सं०] १. नाटक या अभिनय करनेवाला। नट। २ धूर्त। चालाक।

शैलेंद्र-पुं० [सं०] हिमालय।

शैव-वि० [सं०] शिव-संबंधी। शिव का। पुं० शिव का उपासक एक संप्रदाय।

शैवलिनी-स्त्री० [सं०] नदी।

शैवाल-पुं० [सं०] सेवार।

शैशव-वि० [सं०] १. शिशु-संबंधी। छोटे बच्चों का। २. बाल्यावस्था का। पुं० वह अवस्था जब तक कोई शिशु रहता है। बचपन।

शोक-पुं० [सं०] प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या वियोग के कारण मन में होनेवाला परम कष्ट। सोग। गम।

शोख-वि० [फा०] [भाव० शोखी] १. ढीठ। धृष्ट। २. नटखट। पाजी। ३. चंचल। चुलबुला। ४. गहरा और चमकदार (रंग)।

शोच-पुं० [सं० शोचन] १. दुःख। रंज। अफसोस। २. चिंता। फिक्र।

शोचनीय-वि० [सं०] १. जिसकी दशा देखकर दुःख या चिन्ता हो। २. बहुत हीन या बुरा।

शोच्य-वि० [सं०] १. सोचने या विचार करने के योग्य। २. दे० 'शोचनीय'।

शोण-पुं० [सं०] १. लाल रंग। २. लाली। अरुणता। ३. अग्नि। आग। ४. रक्त। लहू। ५. सोन नामक नद। वि० लाल रंग का। सुर्ख।

शोणित-वि० [सं०] लाल। सुर्ख। पुं० रक्त। लहू। रुधिर। खून।

शोथ-पुं० [सं०] रोग के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना। सूजन। वरम।

शोध-पुं० [सं०] १. शुद्ध करनेवाला संस्कार। २. ठीक या दुरुस्त किया जाना। दुरुस्ती। ३. चुकता या अदा होना (ऋण)। ४. जाँच। परीक्षा। ५. खोज। तलाश।

शोधक-वि० [सं०] [स्त्री० शोधिका] १. शोधनेवाला। २. सुधार करनेवाला। ३ ढूँढनेवाला।

शोधन-पुं० [सं०] [वि० शोधित, शोधनीय] १. शुद्ध या साफ करना। २. दुरुस्त या ठीक करना। सुधारना। ३. ओषधियों का वह संस्कार जिससे वे व्यवहार के योग्य होती हैं। ४. छान-बीन। जाँच। ५. तलाश करना। ढूँढना। ६. ऋण, देन आदि चुकाना। (पेमेन्ट) ७. दस्त की दवा से पेट साफ करना। विरेचन।

शोधना-स० [सं० शोधन] शोधन करना। शुद्ध या साफ करना। (दे० 'शोधन'।)

शोधवाना-स० हिं० 'शोधना' का प्रे०।

शोधित-वि० [सं० शोध] १. शुद्ध या साफ किया हुआ। २. जिसका या जिसके सम्बन्ध में शोध हुआ हो।

शोबदा-पुं० [अ०] जादू।

शोबदेबाज-पुं० [अ०+फा०] धूर्त। चालाक।

शोभन-वि० [सं०] [स्त्री० शोभिनी] १. सुंदर। २. सुहावना। ३. उत्तम। ४. शुभ। पुं० १. अलंकार। गहना। २. मंगल। कल्याण। ३. सुन्दरता।

शोभना-स्त्री० [सं०] सुंदरी स्त्री। अ० शोभा देना। भला लगना।

शोभनीय-वि० दे० 'शोभन'।

शोभा-स्त्री० [सं०] १. दीप्ति। कान्ति। चमक। २. सुन्दरता। छटा। ३. सजा-वट। ४. हलाली का धन। (हलाल)

शोभायमान-वि० [सं०] शोभा बढ़ाने या देनेवाला। सुन्दर।

शोभित-वि० [सं०] १. सुन्दर। २. फबता या अच्छा लगता हुआ।

शोर-पुं० [फा०] १. जोरों की आवाज। कोलाहल। २. प्रसिद्धि। धूम।

शोरबा-पुं० [फा०] उबाली हुई तरकारी आदि का रस। जूस। रसा।

शोरा-पुं० [फा० शोर] मिट्टी से निकलने-वाला एक प्रसिद्ध क्षार।

शोशा-पुं० [फा०] १ निकली हुई नोक। २. विलक्षण या अनोखी बात। ३. दोष।

शोषक-वि० [सं०] [स्त्री० शोषिका] १. शोषण करने या सोखनेवाला। २. दूसरों का धन हरण करनेवाला। (एक्स्प्लॉयटर)

शोषण-पुं० [सं०] [वि० शोषित, शोषनीय] १. किसी वस्तु में का जल या रस खींचकर अपने अन्तर्गत करना। सोखना। २. सुखाना। ३. नाश करना। ४. दुर्बल या अधीनस्थ के परिश्रम, आय आदि से अनुचित लाभ उठाना। (एक्सप्लॉयटेशन)

शोषित-वि० [सं०] १. जिसका शोषण किया गया हो। २. जो सोखा गया हो।

शोषी-वि०=शोषक।

शोहदा-पुं० [अ०] १. व्यभिचारी। लंपट। २. गुंडा। बदमाश।

शोहरत-स्त्री० [अ०] प्रसिद्धि। ख्याति।

शौंडिक-पुं० [सं०] कलवार।

शौक-पुं० [अ०] १. किसी वस्तु की प्राप्ति या सुख के भोग की अभिलाषा या लालसा। मुहा०-शौक से=सहर्ष या प्रसन्नतापूर्वक। २. व्यसन। चसका।

शौकत-स्त्री० दे० 'शान'।

शौकिया-क्रि० वि० [अ०] शौक से।

शौकीन-पुं० [अ० शौक] [भाव० शौकीनी] १ वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो। शौक करनेवाला। २. सदा बना-ठना रहनेवाला। छैला।

शौक्तिक-पुं [सं०] मोती।

शौच-पुं० [सं०] १. शुद्धता। पवित्रता। २. सब प्रकार से पवित्र जीवन बिताना। ३. मल-त्याग, कुल्ला-दातुन आदि कृत्य जो सबेरे उठकर सबसे पहले किये जाते हैं। ४. पाखाने या टट्टी जाना। ५. दे० 'अशौच'।

शौद्ध-वि० [सं० शुद्ध] निर्मल।

शौरसेनी-स्त्री० [सं०] १. शौरसेन प्रदेश की प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो 'व्रजभाषा' भी कहलाती थी।

शौर्य-पुं० [सं०] 'शूर' का भाव। शूरता। वीरता। बहादुरी।

शौल्किक-पुं० [सं०] शुल्क संबन्धी। शुल्क का। जैसे-शौल्किक अधिकारी।

शौहर-पुं० [फा०] स्त्री का पति। खसम।

श्मशान-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ मुरदे जलाये जाते हैं। मसान। मरघट।

श्मशान-यात्रा-स्त्री० [सं०] शव या मृत शरीर का श्मशान ले जाया जाना। रथी का श्मशान जाना।

श्मश्रु-पुं० [सं०] दाढ़ी-मूँछ।

श्याम-पुं०[सं०] श्रीकृष्ण।

वि० [भाव० श्यामता] १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. साँवला।

श्यामकर्ण-पुं० [सं०] वह सफेद घोड़ा जिसका एक कान काला हो।

श्यामल-वि० [सं०] [स्त्री० श्यामला, भाव० श्यामलता] १. कुछ कुछ काला। २. कुछ कुछ काला। साँवला।

श्यामसुंदर-पुं० [सं०] श्रीकृष्ण।

श्यामा-स्त्री० [सं०] १. राधा। राधिका। २. एक प्रसिद्ध सुरीला काला पक्षी। ३ सोलह वर्ष की युवती। ४. काले रंग की गाय। ५. यमुना नदी। ६. रात। ७. स्त्री। वि० श्याम रंगवाला। काला।

श्याल(क)-पुं० [सं०] १.पत्नी का भाई। साला। २ बहन का पति। बहनोई।

श्येन-पुं० [सं०] बाज (पक्षी)।

श्रंगार-पुं० दे० 'शृंगार'।

श्रद्धा-स्त्री० [सं०] १. ईश्वर, धर्म या बड़े लोगों के प्रति आदरपूर्ण और पूज्य भाव। आस्था। २. कर्दम मुनि की कन्या जो अंगिरा ऋषि को ब्याही थी। ३. वैवस्वत मनु की पत्नी।

श्रद्धादेव-पुं० [सं०] वैवस्वत मनु, जो श्रद्धा के पति थे।

श्रद्धालु-वि० [सं०] जिसके मन में श्रद्धा हो। श्रद्धावान्।

श्रद्धास्पद-वि० [सं०] जिसके प्रति श्रद्धा करना उचित हो। श्रद्धेय।

श्रद्धेय-वि० [सं०] श्रद्धास्पद।

श्रम-पुं० [सं०] [वि० श्रमित] १. शरीर को थकानेवाला काम। परिश्रम। मेहनत। २. धन-उपार्जन के लिए किया जानेवाला इस प्रकार का काम।

(लेबर) ३. थकावट। क्लान्ति। ४. साहित्य में कोई काम करते करते सन्तुष्ट और शिथिल हो जाना, जो एक संचारी भाव है। ५. दौड़-धूप। ६. पसीना।
श्रम-कण-पुं० [सं०] पसीने की बूँदें।
श्रम-जल-पुं० दे० 'श्रमजीवी'।
श्रम-जल-पुं० [सं०] पसीना। स्वेद।
श्रम-जीवी-वि०[सं०श्रमजीविन्] श्रम या मजदूरी करके पेट पालनेवाला। (लेबरर)
श्रमण-पुं० [सं०] १. बौद्ध संन्यासी। २. यति। मुनि।
श्रम-विंदु-पुं० [सं०] पसीना। स्वेद।
श्रम-विभाग-पुं० [सं०] १ किसी कार्य के अलग अलग अंगों के सम्पादन के लिए अलग अलग व्यक्ति नियत करना। (डिस्ट्रिब्यूशन ऑफ लेबर) २. राज्य का वह विभाग जो श्रम-जीवियों के सुख और कल्याण की व्यवस्था करता है।
श्रमिक-पुं० [सं०] वह जो शारीरिक श्रम करके अपना पेट पालता हो। मजदूर। वि० श्रम-सम्बन्धी। शारीरिक श्रम का।
श्रमिक संघ-पुं० [सं०] कल-कारखानों आदि में काम करनेवाले मजदूरों का वह संघ जो मजदूरों के हितों की रक्षा और उनकी अवस्था के सुधार के उद्देश्य से बनता है। (लेबर यूनियन)
श्रमित-वि० [सं० श्रम] थका हुआ।
श्रवण-पुं० [सं०] [वि० श्रवणीय] १. वह इन्द्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है। कान। कर्ण। २. सुनना। ३. धार्मिक कथाएँ और देवताओं के चरित्र आदि सुनना जो एक प्रकार की भक्ति है। ४. बाईसवाँ नक्षत्र।
श्रवणीय-वि० [सं०] सुनने योग्य।
श्रवन*-पुं० [सं० श्रवण] कान।
श्रवना*-स० [सं० स्राव] १. बहना। २. चूना। टपकना। ३. रसना। स० १. गिराना। २. बहाना।
श्रवित*-वि० [सं० स्राव] बहा हुआ।
श्रव्य-वि० [सं०] १. जो सुना जा सके। २. सुनने योग्य। जैसे-संगीत।
श्रव्य-काव्य-पुं० [सं०] वह काव्य जो केवल सुना जा सके, पर जिसका अभिनय न हो सकता हो।
श्रांत-वि० [सं०] [भाव० श्रांति] थका हुआ।
श्राद्ध-पुं० [सं०] १. श्रद्धापूर्वक किया जानेवाला काम। २. हिन्दुओं में पिंड-दान और ब्राह्मण-भोजन आदि कृत्य जो पितरों के उद्देश्य से और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए होते हैं। ३.पितृ-पक्ष।
श्राप-पुं० दे० 'शाप'।
श्रावक-पुं० [सं०] [स्त्री० श्राविका] १ बौद्ध संन्यासी या भिक्षु। २.जैन धर्म का अनुयायी। जैनी। वि० सुननेवाला। श्रोता।
श्रावगी-पुं० [सं० श्रावक] जैनी।
श्रावण-पुं० [सं०] आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना। सावन। वि० [सं०] श्रवण या कानों अथवा सुनने से सम्बन्ध रखनेवाला। (ऑडिटरी) पुं० सुनने की क्रिया या भाव।
श्रावणी-स्त्री० [सं०] सावन मास की पूर्णमासी जो 'रक्षा-बंधन' का दिन है।
श्रावना*-स० [हिं० स्रवना] गिराना।
श्रावित-वि० [सं०] १. सुना हुआ। २.जो सुनकर मान्य कर लिया गया हो। ३. (लेख्य या दस्तावेज) जिसे सुनकर लिखानेवाले ने उसपर अपनी स्वीकृति के सूचक हस्ताक्षर कर दिये हों। (एटेस्टेड)

श्राव्य-वि० [सं०] सुनने योग्य ।

श्री-स्त्री० [सं०] १. विष्णु की पत्नी। लक्ष्मी। कमला। २. सरस्वती। ३. सम्पत्ति। धन। दौलत। ४. विभूति। ऐश्वर्य। ५. छटा। शोभा। ६. एक आदर-सूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले लगाया जाता है। जैसे-श्री नारायणदास। ७. कान्ति। चमक।

श्रीकांत-पुं० [सं०] विष्णु।

श्रीकृष्ण-पुं० [सं० श्री+कृष्ण] यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो ईश्वर के प्रधान अवतारों में माने जाते हैं।

श्रीखंड-पुं० [सं०] १. हरि-चन्दन। २ दे० 'शिखरन'।

श्रीधर-पुं० [सं०] विष्णु।

श्रीधाम-पुं० [सं०] स्वर्ग।

श्रीपति-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. रामचन्द्र। ३. कृष्ण। ४. राजा।

श्रीफल-पुं० [सं०] १.बेल। २.नारियल।

श्रीमंत-पुं० [सं० सीमंत] १ एक प्रकार का शिरोभूषण। २.स्त्रियों के सिर की माँग। वि० दे० 'श्रीमान्'।

श्रीमती-स्त्री० [सं०] १. 'श्रीमान्' का स्त्रीलिंग रूप, जिसका प्रयोग स्त्रियों के नाम के पहले होता है। जैसे-श्रीमती विष्णुकुमारी देवी। २. पत्नी का वाचक शब्द। जैसे-आपकी श्रीमती भी आई हैं।

श्रीमान्-पुं० [सं० श्रीमत] १. धनवान। सम्पन्न। अमीर। २. एक आदर-सूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले विशेषण के रूप में लगाया जाता है। श्रीयुत।

श्रीयुक्(त)-वि० = श्रीमान्।

श्रीवत्स-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. विष्णु के वक्ष-स्थल पर का वह चिह्न, जो भृगु के लात मारने से हुआ था।

श्रीश-पुं० [सं०] विष्णु।

श्री-हत-वि० [सं०] जिसकी श्री या शोभा न रह गई हो। निस्तेज। निष्प्रभ।

श्रुत-वि० [सं०] १. सुना हुआ। २. जो परम्परा से सुनते आये हों। ३. प्रसिद्ध।

श्रुत-पूर्व-वि० [सं०] जो पहले सुना हो।

श्रुति-स्त्री० [सं०] १. श्रवण करना। सुनना। २. सुनने की इन्द्रिय। कान। ३. सुनी हुई बात। ४. सृष्टि के आरम्भ से चला आया हुआ पवित्र ज्ञान। वेद। ५. चार की संख्या। ६. दे० 'श्रुत्यनुप्रास'।

श्रुति-पथ-पुं० [सं०] १. श्रवणेन्द्रिय। कान। २. वेद-विहित मार्ग।

श्रुत्यनुप्रास-पुं० [सं०] अनुप्रास का वह भेद जिसमें मुख के एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले व्यंजन कई बार आते हैं।

श्रेणी-स्त्री०[सं०] १ पंक्ति। अवली। पाँति। २. क्रम। शृंखला। परंपरा। ३. एक ही प्रकार का व्यवसाय करनेवाले व्यापारियों का संघात। (कॉरपोरेशन) ४ योग्यता, कर्तव्य आदि के विचार से किया हुआ विभाग। दरजा। (क्लास) ५. सीढ़ी।

श्रेणीकरण-पुं० [सं०] १. बहुत-सी वस्तुओं को अलग अलग श्रेणियों में बाँटना या रखना। (क्लैसिफिकेशन) २. व्यापारियों आदि के संघात या संस्था को विधि या कानून के अनुसार श्रेणी का रूप देना। (इन्कॉरपोरेशन)

श्रेणीकृत-वि० [सं०] (संस्था या संघ) जिसे विधि के अनुसार श्रेणी का रूप दिया गया हो। (इन्कॉरपोरेटेड)

श्रेणी-बद्ध-वि० [सं०] श्रेणी या पंक्ति के रूप में लगा या रखा हुआ।

श्रेय-वि० [सं० श्रेयस्] [स्त्री० श्रेयसी] १. अधिक अच्छा। बेहतर। २.श्रेष्ठ। उत्तम।

पुं० १. अच्छापन । २. कल्याण । मंगल । ३. शुभ और शुद्ध आचरण । सदाचार । ४. किसी काम के लिए मिलनेवाला यश । (क्रेडिट)

श्रेयस्कर-वि० [सं०] श्रेय देने या श्रेष्ठ बनानेवाला ।

श्रेष्ठ-वि० [सं०] [स्त्री० श्रेष्ठा, भाव० श्रेष्ठता] १. सर्वोत्तम । २. मुख्य । प्रधान । ३. पूज्य ।

श्रेष्ठी-पुं० [सं०] महाजन । सेठ ।

श्रोता-पुं० [सं० श्रोतृ] सुननेवाला ।

श्रोत्र-पुं० [सं०] कान ।

श्रोन*-पुं० दे० 'शोण' ।

श्रोनित*-पुं० दे० 'शोणित' ।

श्रौत-वि० [सं०] १. श्रवण-संबंधी । २. श्रुति-संबंधी । ३. जो वेदों के अनुसार हो ।

श्रौन*-पुं० दे० 'श्रवण' ।

श्लथ-वि० [सं०] १. शिथिल । ढीला । २. मन्द । धीमा । ३. दुर्बल । कमजोर ।

श्लाघनीय-वि० [सं०] १. प्रशंसा के योग्य । २. उत्तम । बढ़िया ।

श्लाघा-स्त्री० [सं०] [वि० श्लाघ्य, श्लाघनीय] प्रशंसा । तारीफ ।

श्लिष्ट-वि० [सं०] १. एक में मिला या जुड़ा हुआ । २. (साहित्य में) श्लेष-युक्त । जिसके दो अर्थ हों ।

श्लीपद-पुं० [सं०] फीलपाव (रोग) ।

श्लील-वि० [सं०] [भाव० श्लीलता] १. उत्तम । बढ़िया । २. शुभ । ३. शिष्टों और सभ्यों के योग्य । सभ्योचित ।

श्लेष-पुं० [सं०] १. संयोग । मिलना । जुड़ना । २ एक शब्द के दो या अधिक अर्थ होने की अवस्था या भाव ।

श्लेषोपमा-स्त्री० [सं०] वह अर्थालंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग हो जो उपमेय और उपमान दोनों पर घटें ।

श्लेष्मा-पुं० [सं०] कफ । बलगम ।

श्लोक-पुं० [सं०] १. शब्द । आवाज । २. स्तुति । प्रशंसा । ३. कीर्ति । यश । ४. अनुष्टुप छन्द । ५. संस्कृत का कोई पद्य ।

श्वपच-पुं० [सं०] चांडाल ।

श्वशुर-पुं० [सं०] पति या पत्नी का पिता । ससुर ।

श्वश्रू-स्त्री०[सं०] श्वसुर की स्त्री । सास ।

श्वसन-पुं० [सं०] १. श्वास । साँस । २. जीवन ।

श्वसित-वि० [सं०] १ जो श्वास लेता हो । २. जीवित । पुं० निश्वास । ठंडा साँस ।

श्वान-पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] कुत्ता ।

श्वापद-पुं० [सं०] हिंसक पशु ।

श्वास-पुं० [सं०] १. नाक से हवा खींचना और बाहर निकालना जो जीवन का लक्षण है । २. दमा नामक रोग ।

श्वासा-स्त्री० [सं० श्वास] १. साँस । २. प्राण-वायु ।

श्वासोच्छ्वास-पुं० [सं०] वेग से साँस लेना और छोड़ना ।

श्वेत-वि० [सं०] [भाव० श्वेतता] १. सफेद । २. उज्वल । साफ । ३. गोरा ।

श्वेत वाराह-पुं० [सं०] एक कल्प जो ब्रह्मा के मास का पहला दिन कहा गया है ।

श्वेत-सार-पुं० [सं०] अनाजों, तर-कारियों आदि का वह सफेद सत्त जो प्रायः कपड़ों पर कलफ लगाने या दवाओं आदि में काम आता है । माँड़ी । कलफ । (स्टार्च)

श्वेतांग-वि० [सं०] जिसके अंग का वर्ण

श्वेत हो। सफेद रंग के शरीरवाला। पुं० गोरी जाति (अर्थात् युरोप, अमेरिका आदि) का कोई व्यक्ति।

श्वेतांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

ष

ष-हिन्दी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में ३१ वाँ वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है, इससे यह मूर्द्धन्य कहलाता है। इसका उच्चारण 'श' के समान भी होता है और 'ख' के समान भी।

षंड(ढ)-पुं० [सं०] हीजड़ा। नपुंसक।

षट्-वि० [सं०] गिनती में छः।

षट्कर्म्म-पुं० [सं० षट्कर्म्मन्] १. ब्राह्मणों के ये छः काम-यज्ञ करना, यज्ञ कराना, पढ़ना, पढ़ाना, दान देना और दान लेना। २. झगड़ा। झंझट।

षट्कोण-वि० [सं०] छः कोनेवाला।

षट्चक्र-पुं० [सं०] १. हठ-योग में माने जानेवाले कुंडलिनी के ऊपर के छः चक्र। २ षड्यन्त्र।

षट्पद-वि० [सं०] [स्त्री० षट्पदी] छः पदों या पैरोंवाला। पुं० भ्रमर। भौंरा।

षट्रस-पुं० दे० 'षड्रस'।

षट्राग-पुं० [सं० षट्+राग] १. संगीत के छः राग। २ बखेड़ा।

षट्रिपु-पुं० दे० 'षड्रिपु'।

षट्शास्त्र-पुं० दे० 'षड्दर्शन'।

षटक-पुं० [सं०] १. छः की संख्या। २. छः वस्तुओं का समूह।

षडंग-पुं० [सं०] १.वेद के ये छः अंग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। २. शरीर के ये छः अंग-दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़। वि० जिसके छः अंग हों।

षडानन-पुं० [सं०] कार्त्तिकेय।

षड्ज-पुं० [सं०] संगीत के सात स्वरों में से पहला जिसका संकेत 'स' है।

षड्दर्शन-पुं० [सं०] न्याय, मीमांसा आदि छः दर्शन।

षड्यंत्र-पुं० [सं०] १. किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की जानेवाली कार्रवाई। भीतरी चाल। (कॉन्सपिरेसी) २ कपट-पूर्ण आयोजन।

षड्रस-पुं० [सं०] मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल ये छः प्रकार के रस या स्वाद।

षड्रिपु-पुं० [सं०] मनुष्य के ये छः विकार—काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और अहंकार।

षष्ठ-वि० [सं०] छठा।

षष्ठी-स्त्री० [सं०] १. चान्द्र मास के किसी पक्ष की छठी तिथि। २. दुर्गा। ३. सम्बन्ध कारक। (व्याकरण) ४. छठी।

षाडव-पुं० [सं०] वह राग जिसमें केवल छः स्वर लगते हों, कोई एक स्वर न लगता हो।

षाण्मासिक-वि० [सं०] छठे महीने होने या पड़नेवाला।

षोडश-वि० [सं०] सोलह। पुं० सोलह की संख्या।

षोडश शृंगार-पुं० [सं०] पूर्ण शृंगार जो सोलह अंगोंवाला कहा गया है।

षोडश संस्कार-पुं० [सं०] गर्भाधान, पुंसवन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि सोलह

वैदिक संस्कार।

षोडशी-वि०स्त्री०[सं०] १. सोलहवीं। २. सोलह वर्ष की (युवती)।
स्त्री० वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है। (हिन्दू)

षोडशोपचार-पुं० [सं०] पूजन के ये १६ अंग-आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा और वन्दना।

स

स-हिन्दी वर्ण-माला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान दन्त है, इसलिए यह दन्ती या दन्त्य 'स' कहलाता है। शब्दों के प्रारम्भ में यह उपसर्ग के रूप में लगकर ये अर्थ देता है—(क) सहित या साथ; जैसे-सशरीर, सजीव। (ख) एक ही से का, जैसे-सगोत्र। संगीत-शास्त्र में यह षड्ज स्वर का और छंदःशास्त्र में 'सगण' का संक्षिप्त रूप या सूचक है।

सं-अव्य० [सं० सम्] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले शोभा, समानता, संगति, उत्कृष्टता, सततता आदि सूचित करने के लिए लगता है। जैसे-संयोग, संताप, संतुष्ट आदि।

सँइतना†-स० दे० 'सैंतना'।

संक*-स्त्री० = शंका।

संकट-पुं० [सं० सम+कृत] १. विपत्ति। आफत। २. दुःख। कष्ट। ३. जल या स्थल के दो बड़े विभागों को बीच से जोड़नेवाला तंग रास्ता या संकीर्ण अंग। जैसे-गिरि-संकट (पहाड़ का दर्रा), जल-संकट (जल-डमरूमध्य), स्थल-संकट (स्थल-डमरूमध्य)। ४. दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता। दर्रा।

संकत*-पुं० = संकेत।

संकना*-अ० [सं० शंका] १. शंका या सन्देह करना। २. डरना।

संकर-पुं० [सं०] [भाव० संकरता] १. दो चीज़ों का आपस में मिलना या मिलकर एक हो जाना। २. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न वर्णों या जातियों के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ३. जो दो या कई प्रकार की वस्तुओं के योग से बना हो। जैसे-संकर राग।
*पुं० दे० 'शंकर'।

संकर समास-पुं० [सं०] दो ऐसे शब्दों का समास जिनमें से एक शब्द किसी एक भाषा का और दूसरा किसी दूसरी भाषा का हो। जैसे-अछूतोद्धार में हिन्दी के 'अछूत' शब्द का संस्कृत के 'उद्धार' शब्द से समास हुआ है। (ऐसे समास अच्छे नहीं समझे जाते।)

संकर-घरनी-स्त्री० = पार्वती।

सँकरा†-वि० [सं० संकीर्ण] [स्त्री० सँकरी] पतला और कम चौड़ा। तंग।
*स्त्री० दे० 'साँकल'।

सँकराना*-अ, स० [हिं० सँकरा] सँकरा या संकुचित होना या करना।

संकर्षण-पुं० [सं०] [वि० संकृष्ट] १. खींचना। २. हल जोतना। ३. कानून में अधिकार या उत्तरदायित्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान पर दूसरी वस्तु या व्यक्ति का रखना या नाम चढ़ाया जाना। (सब्रोगेशन)

संकला†-स्त्री० दे० 'साँकल'।

संकलन-पुं० [सं०] [वि० संकलित] १. संग्रह या जमा करना। २. संग्रह। ३. गणित में योग नाम की क्रिया। जोड़। ४. अनेक ग्रन्थों या स्थानों से अच्छे अच्छे विषय या बातें चुनने की क्रिया। ५. इस प्रकार चुनकर तैयार किया हुआ ग्रन्थ, संग्रह या और कोई चीज। (कम्पाइलेशन)

संकलप-पुं०=संकल्प।

संकलपना*-स० [सं० संकल्प] संकल्प का मंत्र पढ़कर धार्मिक कार्य या कोई वस्तु दान करने का निश्चय करना।

अ० १. संकल्प या विचार करना। २. दृढ़ निश्चय करना।

संकलित-वि० [सं०] १. चुना हुआ। २. इकट्ठा किया हुआ। संगृहीत।

संकल्प-पुं०[सं०] १ कोई कार्य करने का दृढ़ विचार। पक्का इरादा। २.देव-कार्य या दान आदि करने के समय विशिष्ट मंत्र पढ़ने हुए उसका दृढ़ निश्चय करना। ३. इस प्रकार पढ़ा जानेवाला मंत्र। ४. सभा-समिति आदि में किसी विषय में विचारपूर्वक किया हुआ पक्का निश्चय। मंतव्य। (रिजोल्यूशन)

सँकाना*-अ०, स०=डरना या डराना।

संकारना†-स० [हि०संकेत] संकेत करना।

संकीर्ण-वि० [सं०] [भाव० संकीर्णता] १. कम चौड़ा। सँकरा। २. संकुचित। तंग। 'उदार' का उलटा। जैसे-संकीर्ण विचार। ३. क्षुद्र। तुच्छ। ४. छोटा। पुं० दो या अधिक रागों के मेल से बना हुआ राग। संकर राग।

संकीर्त्तन-पुं० = कीर्त्तन।

संकुचन-पुं० = संकोच।

संकुचित-वि० [सं०] १. जिसे संकोच हो। हिचकता हुआ। २. सिकुड़ा हुआ। ३. तंग। सँकरा। ४. जो औरों के अच्छे विचार ग्रहण न करे। 'उदार' का उलटा।

संकुल-वि० [सं०] [भाव० संकुलता] १. संकीर्ण। तंग। २. भरा हुआ। परिपूर्ण। पुं० १. युद्ध। लड़ाई। २. समूह। झुंड। ३. भीड़। ४. परस्पर-विरोधी वाक्य।

संकेत-पुं०[सं०] [वि० संकेतित] १. मन का भाव प्रकट करनेवाली कोई शारीरिक चेष्टा। इंगित। इशारा। २. वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका जाकर मिलते हैं।

संकेत-चिह्न-पुं० [सं०] वाक्य, पद, नाम आदि के सूचक वे चिह्न जो संकेत के रूप में होते हैं। जैसे-मध्य-प्रदेश का म० प्र०। (एब्रीविएशन)

संकेतना*-स० [सं० संकीर्ण] संकट या कष्ट में डालना।

संकेत-लिपि-स्त्री० [सं०] किसी लिपि के अक्षरों के छोटे और संक्षिप्त संकेत या चिह्न बनाकर तैयार की हुई वह लेख-प्रणाली जिससे कथन या भाषण बहुत जल्दी लिखे जाते हैं। (शार्ट हैन्ड)

संकोच-पुं० [सं०] १ सिकुड़ने की क्रिया या भाव। २. हलकी या थोड़ी लज्जा या शर्म। ३ आगा-पीछा। हिचक। ४. एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के बहुत अधिक संकोच का वर्णन होता है।

संकोची-पुं० [सं० संकोचिन्] १. सिकुड़नेवाला। २. संकोच करनेवाला।

संकोपना-अ० दे० 'कोपना'।

संक्रमण-पुं० [सं०] १. जाना या चलना। २. एक अवस्था से धीरे धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना। (ट्रांजिशन) ३. दे० 'संक्रांति'।

संक्रांति-स्त्री०[सं०] १. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना। २.ठीक वह समय जब सूर्य एक राशि से निकलकर दूसरी में प्रवेश करता है। (हिन्दुओं का पर्व)

संक्रामक-वि० [सं०] (रोग) जो संसर्ग या छूत से फैलता हो। (कन्टेजस)

संक्रोनक-स्त्री०=संक्रांति।

संक्षमण-पुं० [सं०] किसी दोष या अपराध के लिए किसी को जान-बूझकर और उसके दोष या अपराध पर ध्यान न देते हुए क्षमा कर देना। (कन्डोन)

संक्षिप्त-वि० [सं०] (लेख, कथन आदि) जो संक्षेप में लिखा या कहा गया हो। खुलासा। (एब्रिज्ड)

संक्षिप्त आलेख-पुं० [सं०] बड़े लेख, वक्तव्य आदि का तैयार किया हुआ संक्षिप्त रूप। (एब्रिविएचर)

संक्षिप्तीकरण-पुं० [सं० संक्षिप्त+करण] किसी विषय कथन आदि को संक्षिप्त करने की क्रिया या भाव।

संक्षेप-पुं० [सं०] १. थोड़े में कोई बात कहना। २. बहुत-सी बातों को दिया जानेवाला छोटा रूप। सार।

संक्षेपण-पुं० [सं०] संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करना। (एब्रिजमेन्ट)

संक्षेपतः-अव्य०[सं०] संक्षेप में। थोड़े में।

संखिया-पुं० [सं० शृंगिका] एक प्रसिद्ध सफेद उपधातु जो बहुत उत्कट विष है।

संख्यक-वि० [सं०] संख्यावाला। जैसे-बहु-संख्यक, अल्प-संख्यक।

संख्या-स्त्री० [सं०] १. एक, दो, तीन आदि गिनती। तादाद। २. गिनती के विचार से किसी वस्तु का परिमाण बतानेवाला अंक। अदद। ३. सामयिक पत्र का अंक।(नम्बर, उक्त सभी अर्थों के लिए)

संख्याता-पुं० [सं०] वह जो किसी प्रकार का हिसाब (आय-व्यय आदि) लिखता हो। (एकाउन्टेन्ट)

संख्यान-पुं० [सं०] आय-व्यय का लेन-देन का लिखा हुआ हिसाब। (एकाउन्ट)

संख्यान-कर्म-पुं० [सं०] आय-व्यय या लेन-देन का हिसाब लिखने का काम। (एकाउन्टेन्सी)

संग-पुं० [सं० सङ्ग] १ मिलना। मिलन। २. साथ रहना। सहवास। सोहबत। ३. सांसारिक विषयों में अनुराग। आसक्ति।

क्रि० वि० साथ। सहित।

पुं० [फा०] [वि० संगी, संगीन] पत्थर।

संगठन-पुं० = संघटन।

संगठित-वि० = संघटित।

संगत-वि० [सं०] पूर्वापर के विचार से अथवा और प्रकार से ठीक बैठने या मेल खानेवाला। (कन्सिस्टेन्ट)

स्त्री० [सं० संगति] १.संग रहना। साथ। सोहबत। २. उदासी या निरमले साधुओं के रहने का मठ। ३. संबंध। संसर्ग। ४. बाजा बजाकर गानेवाले के काम में सहायता या योग देना।

संग-तराश-पुं० [फा०] [भाव० संग-तराशी] पत्थर काटने या गढ़नेवाला कारीगर।

संगति-स्त्री० [सं०] १. मिलने की क्रिया। मेल। मिलाप। २. संग। साथ। ३. संबंध। ४. आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का अर्थ के विचार से या कार्यों आदि का पूर्वापर के विचार से ठीक बैठना या मेल खाना। (कन्सिस्टेन्सी)

संगतिया(ती)-वि० [हिं० संगत] १. साथी। २. गवैये के साथ बाजा बजानेवाला।

संग-दिल-वि० [फा०] कठोर-हृदय ।

संगम-पुं० [सं०] १.मिलाप । सम्मेलन । मेल । २.दो नदियों के मिलने का स्थान । ३. दो या अधिक वस्तुओं के एक जगह मिलने का भाव ।

संग-मरमर-पुं० [फा० संग+अ० मर्मर] एक प्रकार का बहुत चमकीला, मुलायम बढ़िया सफेद पत्थर ।

संग-मूसा-पुं० [फा०] संग-मरमर की तरह का काला चिकना पत्थर ।

संगर-पुं० [सं०] १. युद्ध । संग्राम । २. विपत्ति । ३. नियम ।

पुं०[फा०]१. सेना की रक्षा के लिए बनी हुई चारो ओर की खाई या धुस । २.मोरचा ।

संगाती-पुं० [हिं० संग] साथी । संगी ।

संगिनी-स्त्री० [हिं० 'संगी' का स्त्री० रूप] साथ रहनेवाली स्त्री । सखी । सहेली ।

संगी-पुं० [हिं० संग+ ई (प्रत्य०)] [स्त्री० संगिनि, संगिनी] १. संग रहनेवाला । साथी । २. मित्र । बन्धु । दोस्त ।

स्त्री०[देश०]एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

वि० [फा०संग=पत्थर] पत्थर का । संगीन ।

संगीत-पुं० [सं०] लय, ताल, स्वर आदि के नियमों के अनुसार किसी पद्य का मनोरंजक रूप से उच्चारण, जिसके साथ कभी कभी नृत्य और प्रायः वाद्य भी होता है । गाना ।

संगीत-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें संगीत विद्या का विवेचन रहता है ।

संगीतज्ञ-पुं० [सं०] वह जो संगीत-विद्या में निपुण हो । गवैया ।

संगीन-पुं० [फा०] [भाव० संगीनी] वह बरछा जो बंदूक के सिरे पर लगी रहती है ।

वि० १. पत्थर का बना हुआ । २. मोटा या भारी । ३. विकट ।

संगृहीत-वि० [सं०] संग्रह या एकत्र किया हुआ । संकलित ।

संगोपन-पुं० [सं०] छिपाना ।

संग्रह-पुं० [सं०] १. एकत्र या इकट्ठा करना । संचय । २. वह पुस्तक जिसमें अनेक विषयों की बातें इकट्ठी की गई हों । (कलेक्शन) ३. ग्रहण करना ।

संग्रहणी-स्त्री० [सं०] एक रोग जिसमें पतले दस्त आते हैं ।

संग्रहणीय-वि० दे० 'संग्राह्य' ।

संग्रहना*-स० [सं० संग्रहण] संग्रह या इकट्ठा करना । जमा करना ।

संग्रहाध्यक्ष-पुं० [सं०] वह जो किसी संग्रह या संग्रहालय का अध्यक्ष या व्यवस्थापक हो । (क्यूरेटर)

संग्रहालय-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ एक ही अथवा अनेक प्रकार की बहुत-सी चीज़ों का संग्रह हो । (म्यूज़ियम)

संग्रही-वि० दे० 'संग्राहक' ।

संग्राम-पुं० [सं०] युद्ध । लड़ाई ।

संग्राहक-पुं० [सं०] संग्रह करनेवाला । संग्रह-कर्त्ता ।

संग्राह्य-वि० [सं०] संग्रह करने योग्य ।

संघ-पुं० [सं०] १. समूह । समुदाय । २. संघटित समाज । (सभा, समिति आदि) ३. वह सभा या समाज जिसे कानून के अनुसार एक व्यक्ति के रूप में कार्य्य करने का अधिकार हो । (कॉरपोरेशन) ४. प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य । ५. आज-कल ऐसे राज्यों का समूह जो अपने क्षेत्र में कुछ स्वतन्त्र हों पर कुछ विशिष्ट कार्य्यों के लिए किसी केन्द्रिय शासन के अधीन हों । (फेडरेशन) ६. बौद्ध भिक्षुओं आदि का धार्मिक

समाज अथवा निवास-स्थान।

संघटन-पुं० [सं०] १. मेल। संयोग। २. नायक और नायिका का मिलाप। ३. रचना। बनावट। ४. बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिलाकर उन्हें किसी काम के लिए तैयार करना। ५. इस उद्देश्य से बनाई हुई संस्था। (आरगनिजेशन)

संघटित-वि० [सं०] जिसका संघटन हुआ हो। (ऑर्गनाइज्ड)

संघति-स्त्री० [सं०] दो अथवा अधिक दलों, संस्थाओं, राज्यों आदि का मिलकर इस प्रकार एक हो जाना कि सब एक दल, संस्था या राज्य के रूप में काम करें।

संघती-पुं० दे० 'संघाती'।

संघरना*-स० [सं० संहार] संहार या नाश करना।

संघर्ष(ण)-पुं० [सं०] १. रगड़ खाना। २ प्रतियोगिता। होड़। ३. एक चीज की दूसरी चीज के साथ होनेवाली रगड़। (फ्रिक्शन) ४. दो दलों में होनेवाला वह विरोध जिसमें दोनों एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते हैं। (कॉन्फ्लिक्ट)

संघ-स्थविर-पुं० [सं०] संघाराम का प्रधान बौद्ध भिक्षु।

संघात-पुं० [सं०] १. समूह। झुंड। २. कुछ लोगों का ऐसा समूह जो मिलकर कोई काम करने के लिए बना हो या कोई काम करता हो। (बॉडी) ३. रहने की जगह। निवास-स्थान। ४. गहरी या भारी चोट। ५. मार डालना। वध।

संघाती-पुं० [सं० संघ] १. साथ रहनेवाला। साथी। २. मित्र। दोस्त।

संघात्मक साम्राज्य-पुं० [सं०] प्राचीन भारतीय राजतंत्र में वह साम्राज्य जिसके अन्तर्गत कई एक-तंत्र राज्य होते थे।

संघार*-पुं० = संहार।

संघाराम-पुं० [सं०] प्राचीन काल के वे मठ जिनमें बौद्ध साधु या भिक्षु रहते थे।

संच*-पुं० [सं० संचय] १. संचय। २. देख-भाल।

संचकर*-वि० [सं० संचय+कर] १. संचय या इकट्ठा करनेवाला। २. कंजूस।

संचना*-स० [सं० संचय] संचित या इकट्ठा करना। जमा करना।

संचय-पुं० [सं०] [वि० संचयी] १. समूह। ढेर। २. एकत्र या संग्रह करना। जमा करना।

संचरण-पुं०=संचार।

संचरना*-अ० [सं० संचरण] १. चलना। २. फैलना। ३ प्रचलित होना।

संचरित-वि० [सं०] जिसमें या जिसका संचार हुआ हो।

संचान-पुं० [सं०] बाज पक्षी।

संचार-पुं० [सं०] [कर्त्ता संचारक, वि० संचारित] १. गमन। चलना। २. फैलना, विशेषतः किसी के अंदर फैलना।

संचारक-पुं० [सं०] [स्त्री० संचारिका] संचार करने या फैलानेवाला।

संचारना*-स० [सं० संचारण] १. संचार करना। फैलाना। २. प्रचार करना। ३. जन्म देना।

संचारिका-स्त्री० [सं०] कुटनी। दूती।

संचारी-पुं० [सं० संचारिन्] साहित्य में व भाव जो मुख्य भाव की पुष्टि या सहायता करते हैं।

वि०[स्त्री०संचारिणी] संचरण करनेवाला।

संचालक-पुं० [सं०] [स्त्री० संचालिका, संचालिनी] १. चलाने या गति देनेवाला। परिचालक। २. कार्य या कार्यालय आदि का काम चलानेवाला।

संचालन-पुं० [सं०] १. गति देना। चलाना। २. ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था करना जिसमें कोई काम चलता या होता रहे। (कन्डक्ट)

संचालित-वि० [सं०] जिसका संचालन किया गया हो। चलाया हुआ।

संचिका-स्त्री० [सं० संचय] वह नत्थी जिसमें पत्र या कागज आदि इकट्ठे करके रक्खे जाते हैं। नत्थी। (फाइल)

संचित-वि० [सं०] १ इकट्ठा या जमा किया हुआ। २. संचिका या नत्थी में लगाया हुआ। (फाइल्ड)

संजम*-पुं०=संयम।

संजाफ-स्त्री० [फा०] कपड़े पर टँकी हुई झालर। गोट। मगजी।

पुं०रंग के विचार से एक प्रकार का घोड़ा।

संजीवनी-वि० [सं०] जीवन देनेवाली। स्त्री० मरे हुए मनुष्य को जीवित करनेवाली एक कल्पित ओषधि या विद्या।

संजीवनी विद्या-स्त्री० [सं०] मरे हुए व्यक्ति को जिलाने की विद्या।

संजुग*-पुं० = संग्राम।

संजुत*-वि० = संयुक्त।

सँजोइ*-क्रि०वि० [सं०संयोग] साथ में।

सँजोइल*-वि० [हिं० सँजोना] १ अच्छी तरह सजा हुआ। २. जमा किया हुआ। एकत्र।

सँजोऊ*-पुं० [हिं० सजाना] १. तैयारी। उपक्रम। २. सामग्री।

सँजोग-पुं० = संयोग।

सँजोना-स० = सजाना।

सँजोवल*-वि० [हिं० सँजोना] १. सजा हुआ। २. सेना-सहित। ३. सावधान।

सँजोवना-स०=सजाना।

संज्ञा-स्त्री० [सं०] १. प्राणियों के शारीरिक अंगों की वह शक्ति जिससे उन्हें बाह्य पदार्थों का ज्ञान और अपने शरीर या मन के व्यापारों की अनुभूति होती है। चेतना-शक्ति। (सेन्स) २. बुद्धि। ३. ज्ञान। ४. नाम। ५. व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी वास्तविक या कल्पित वस्तु का बोधक होता है। जैसे-राम, पर्वत, घोड़ा, दया आदि।

संज्ञाहीन-वि० [सं०] बेहोश। बेसुध।

सँझला-वि० [सं० संध्या] संध्या का। वि० [हिं० 'मँझला' का अनु०] मँझले से छोटा और सबसे छोटे से बड़ा।

सँझबाती-स्त्री० [सं० संध्या+वर्ती] १ संध्या समय जलाया जानेवाला दीया। २ वह गीत जो ऐसे समय गाया जाता है।

सँझोखा*-पुं० = संध्या। (समय)

संड-मुसंड-वि० [हिं० संडा+मुसंड (अनु०)] हट्टा-कट्टा। मोटा-ताजा।

सँड़सा-पुं० [सं० संदंश] [स्त्री० अल्पा० सँड़सी] गरम या कसी चीजें पकड़ने का लोहे का एक प्रकार का चिमटा या औजार।

संडा-वि०[सं०शंड] हृष्ट-पुष्ट। हट्टा कट्टा।

संडास-पुं० [?] एक प्रकार का पाखाना जो जमीन में गहरा गड्ढा खोदकर बनाया जाता है। शौच-कूप।

संत-पुं० [सं० सत्] १. साधु, संन्यासी या महात्मा। २. ईश्वर-भक्त।

संतत-अव्य०[सं०] १.लगातार। बराबर। २. सदा। हमेशा।

संतति-स्त्री० [सं०] बाल-बच्चे। संतान।

संतप्त-वि० [सं०] १. अच्छी तरह या खूब तपा हुआ। २.जिसके मन को बहुत दुःख पहुँचा हो। परम-दुःखी।

संतरा-पुं० [पुर्त० संगतरा] एक प्रकार का मीठा नीबू।

संतरी-पुं० [अं० सन्टरी] पहरेदार।
संतान-उभय० [सं०] किसी के लड़के-लड़कियाँ या बाल-बच्चे। संतति। औलाद।
संताप-पुं० [सं०] १. ताप। जलन। आँच। २. मानसिक कष्ट या दुःख।
संतापना*-स० [सं० संताप] संताप या कष्ट देना।
संतुलन-पुं० [सं०] १ आपेक्षिक तौल या भार बराबर और ठीक करना या होना। २.दो पक्षों का बल बराबर रखना या होना।
संतुष्ट-वि० [सं०] १. जिसका संतोष हो गया हो। २. तृप्त।
संतुष्टीकरण-पुं० [सं० संतुष्ट+करण] किसी को संतुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। (एप्पीजमेन्ट)
संतोष-पुं० [सं०] १. सदा प्रसन्न रहना और किसी बात की कामना न करना। सब्र। २. जी भर जाना। तृप्ति। ३. किसी बात की चिन्ता, अपेक्षा, परवाह या शिकायत न होना।
संतोषना*-स० [सं० संतोष] संतोष कराना। संतुष्ट करना।
अ० संतुष्ट होना।
संतोषी-पुं० [सं० संतोषिन्] वह जो सदा संतोष रखता हो।
संत्रस्त-वि०[सं० त्रस्त] १. डरा हुआ। भय-भीत। २.घबराया हुआ। व्याकुल। ३. जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीड़ित।
संथा-पुं० [सं० संहिता ?] एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ पाठ।
संदंश-पुं० [सं०] १. सँडसी। २. चिमटी। ३. एक विशेष प्रकार की चिमटी जो चीर-फाड़ के समय नसों आदि को पकड़ने के काम में आती है।
संदर्भ-पुं० [सं०] १.रचना। २.निबन्ध। लेख। ३. वह पुस्तक जिसमें किसी दूसरी पुस्तक में आई हुई किसी गूढ़ बात का स्पष्टीकरण हो। (रेफरेन्स बुक)
संदल-पुं० [फा०] चंदन।
संदली-पुं० [फा० संदल] १. एक प्रकार का हलका पीला रंग। २. एक प्रकार का हाथी। ३. एक प्रकार का घोड़ा।
वि० सन्दल या चन्दन का।
संदिग्ध-वि० [सं०] १. जिसमें संदेह हो। संदेहपूर्ण। (एम्बीगुवस) २. जिस-पर संदेह हो। (सस्पेक्टेड)
संदीपन-पुं० दे० 'उद्दीपन'।
संदूक-पुं० [अ०] [अल्पा० संदूकड़ी] लकड़ी या धातु की चौकोर पेटी। बकस।
संदूकड़ी-स्त्री० [अ०संदूक] छोटा संदूक।
संदेश-पुं० [सं०] १. समाचार। हाल। २. किसी के उद्देश्य से कही या कहलाई हुई कोई महत्वपूर्ण बात। (मेसेज) ३. एक प्रकार की बँगला मिठाई।
संदेसा-पुं० [सं० संदेश] जबानी कह-लाया हुआ समाचार।
संदेसी-पुं० [हि० सँदेसा] सँदेसा ले जानेवाला। दूत।
संदेह-पुं० [सं०] १. किसी विषय में यह धारणा कि यह ऐसा है या नहीं। निश्चय का अभाव। संशय। शंका। शक। २. एक अर्थालंकार जिसमें कोई वस्तु देखकर भी उसके ठीक या सत्य होने की शंका का उल्लेख रहता है।
संधना*-अ० [सं० संधि] संयुक्त होना।
संधान-पुं० [सं०] १. निशाना लगाने के लिए कमान पर तीर ठीक तरह से लगाना। निशाना बैठाना। २. ढूँढ़ने या पता लगाने का काम। ३. युक्त करना। मिलाना। ४. लेखे, खाते आदि में लेन-

देन का हिसाब ठीक और पूरा करना। जमा-खर्च करना। (ऐडजस्टमेन्ट) ५. कोई ऐसा काम ठीक तरह से और उपयुक्त रूप में करना, जो सहज में ठीक तरह से न होता हो। मेल मिलाना या बैठाना। (ऐडजस्टमेन्ट) ६. दो चीजों का मिलना। सन्धि। ७.किसी का किसी उद्देश्य से किसी ओर मिलना। (एलायन्स) ८. किसी चीज को सड़ाकर उसमें से खमीर उठाना। (फर्मेन्टेशन) ९. काँजी। १०. अचार।

संधानना†-स० [सं० संधान] निशाना लगाना।

संधाना-पुं० दे० 'अचार'।

संधि-स्त्री० [सं०] १. मेल। संयोग। २. दो खण्डों या पदार्थों के मिलने की जगह। जोड़। ३. राज्यों आदि में होनेवाला यह निश्चय कि अब हम आपस में नहीं लड़ेंगे और मित्रतापूर्वक रहेंगे, अथवा अमुक क्षेत्र में अमुक प्रकार से व्यवहार करेंगे। सुलह। (ट्रीटी) ४. व्याकरण में दो शब्दों के साथ साथ आने पर उनके मिलने के कारण उनके कुछ अक्षरों में विशेष प्रकार का होनेवाला परिवर्तन। ५. चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। ६. एक अवस्था की समाप्ति और दूसरी अवस्था के आरंभ का समय या स्थिति। ७. दो चीजों के बीच की थोड़ी-सी खाली जगह। अवकाश।

संध्या-स्त्री० [सं०] १. वह समय जब दिन का अन्त और रात का आरंभ होने को होता है। सायंकाल। शाम। २. आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो सबेरे, दोपहर और संध्या को होती है।

संन्यस्त-वि० [सं० संन्यास] १. जिसने संन्यास लिया हो। २. पूरी तरह से किसी काम में लगा हुआ। निरत।

संन्यास-पुं० [सं०] १. हिन्दुओं के चार आश्रमों में से अंतिम, जिसमें त्यागी और विरक्त होकर सब कार्य निष्काम भाव से किये जाते हैं। २. अपने विधिक या कानूनी अधिकारों का स्वेच्छापूर्वक त्याग। (सिविल सुइसाइड)

संन्यासी-पुं० [सं० संन्यासिन्] संन्यास आश्रम में रहनेवाला।

संपत्ति-स्त्री० [सं०] १ धन-दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो और जो खरीदी और बेची जा सकती हो। जायदाद। (प्रॉपर्टी) २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपत्ति कर-पुं०[सं०] वह कर जो किसी पर उसकी संपत्ति या जायदाद के विचार से लगाया जाता है। (प्रॉपर्टी टैक्स)

संपद्-स्त्री०[सं०] १ वैभव। ऐश्वर्य। २. सौभाग्य। ३. व्यापारिक मण्डली या संस्था की व्यापार में लगी हुई पूँजी। ४. किसी व्यक्ति का वह धन या पूँजी जो उसने किसी व्यापारिक संस्था में अपने हिस्से के रूप में लगाया हो। ५. इस प्रकार लगी हुई पूँजी का सूचक प्रमाण-पत्र। (स्टाक, अन्तिम तीनों अर्थों के लिए)

संपदा-स्त्री०[सं०संपद्] १.धन। दौलत। सम्पत्ति। (एस्टेट) २. ऐश्वर्य। वैभव।

संपन्न-वि० [सं०] [भाव०संपन्नता] १. पूरा किया हुआ। सिद्ध। २.सहित। युक्त। जैसे-गुण-संपन्न। ३. धनी। दौलतमंद।

संपरीक्षक-पुं० [सं०] संपरीक्षण करनेवाला। (स्क्रूटिनाइज़र)

संपरीक्षण-पुं० [सं०] किसी कार्य्य, तथ्य, लेख आदि के संबंध में अच्छी तरह देखकर यह जाँचना कि वह ठीक और नियमानुसार है या नहीं। (स्क्रूटिनी)

संपर्क-पुं० [सं०] [वि० संपृक्त] १. लगाव। संबंध। वास्ता। २ स्पर्श।

संपर्कित-वि० दे० 'संपृक्त'।

संपात-पुं० [सं०] १. संगम। समागम। २ वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी से मिलती या उसे काटती हुई बढ़ती है।

संपादक-पुं० [सं०] [भाव० संपादकत्व] १. कार्य्य संपन्न या पूरा करनेवाला। २. किसी समाचारपत्र या पुस्तक का क्रम आदि लगाकर और उसे सब प्रकार से ठीक करके प्रकाशित करनेवाला। (एडिटर)

संपादकीय-वि० [सं०] संपादक का।

संपादन-पुं० [सं०] [वि० संपादित] १. काम पूरा और ठीक तरह से करना। २. पुस्तक या सामयिक पत्र आदि का क्रम, पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करना। (एडिटिंग)

संपाद्य-वि० [सं०] १. जिसका संपादन करना हो या होना हो। २.(वह बात या सिद्धान्त) जिसे विचारपूर्वक ठीक सिद्ध करने की आवश्यकता हो। (प्रॉब्लेम)

संपुट-पुं० [सं०] [स्त्री० अल्पा० संपुटी] १. पात्र के आकार की कोई वस्तु। २. दोना। ३. डिब्बा। ४. अंजली। ५. कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटकर बन्द किया हुआ वह बरतन जिसमें कोई रस या ओषधि का भस्म तैयार करते हैं। (वैद्यक)

संपुटी-स्त्री० [सं०संपुट] कटोरी। प्याली।

संपूर्ण-वि० [सं०] [भाव० संपूर्णता] १. खूब भरा हुआ। २. सब। बिलकुल। ३ समाप्त। खतम। पुं० वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों।

संपूर्णतः-क्रि० वि० [सं०] पूरी तरह से।

संपृक्त-वि० [सं०] जिसका या जिससे संपर्क हो। संबद्ध।

सँपेरा-पुं० [हिं० साँप] [स्त्री० सँपेरिन] साँप पालनेवाला। मदारी।

सँपै*-स्त्री०=संपत्ति।

सँपोला-पुं० [हिं० साँप] साँप का बच्चा।

संप्रति-अव्य० [सं०] इस समय।

संप्रदान-पुं० [सं०] १. दान देने की क्रिया या भाव। २. किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना। (डेलिवरी) ३. व्याकरण में वह कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न 'को' है।

संप्रदाय-पुं० [सं०] [वि० सांप्रदायिक] १. कोई विशेष धार्मिक मत। (सेक्ट) २. किसी मत के अनुयायियों की मंडली।

संप्राप्त-वि०[सं०][भाव०संप्राप्ति]१.आया या पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. पाया हुआ। प्राप्त। ३ जो हुआ हो। घटित।

संप्रेक्षक-पुं० [सं०] वह जो संप्रेक्षण करता हो। आय-व्यय या हिसाब-किताब आदि की जाँच करनेवाला। (ऑडिटर)

संप्रेक्षण-पुं० [सं०] आय-व्यय आदि का लेखा जाँचने का काम। (ऑडिटिंग)

संप्रेक्षा-स्त्री० दे० 'संप्रेक्षण'।

संप्रेक्षित-वि० [सं०] (आय-व्यय का लेखा) जिसकी जाँच हो चुकी हो। जाँचा हुआ (हिसाब)। (आडिटेड)

संबंध-पुं० [सं०] १. एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना। २. लगाव। संपर्क। वास्ता। (कनेक्शन) ३. नाता। रिश्ता। ४. विवाह अथवा उसका निश्चय। ५. व्याकरण में वह कारक जिसमें एक शब्द

का दूसरे शब्द के साथ संबंध सूचित होता है। जैसे-आम का पेड़।

संबंधित-वि० दे० 'संबद्ध'।

संबंधी-वि० [सं० संबंधिन्] १. जिसका या जिसके साथ संबंध या लगाव हो। २. विषयक। किसी विषय से लगा हुआ। पुं० वह जिससे कुछ संबंध या नाता हो। रिश्तेदार।

संबद्ध-वि० [सं०] १. जिससे संबंध हो या हुआ हो। २. बँधा या जुड़ा हुआ। ३. जिसका किसी के साथ संबंध लगा हो। संबंध-युक्त। (कनेक्टेड)

संबल-पुं० [सं०] १. रास्ते का भोजन। २. वह सामग्री, साधन आदि जिनके भरोसे कोई काम किया जाय। (रिसोर्सेज)

संबुल-पुं० [अ० सुंबुल] बाल-छड़। जटामासी।

संबूर*-पुं० दे० 'समूर'।

संबोधन-पुं० [सं०] [वि० संबोधित, संबोध्य] १. जगाना। २. पुकारना। ३. किसी के उद्देश्य से कोई बात कहना। (एड्रेस) ४. समझाना-बुझाना। ५. व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या उससे कुछ कहने के लिए प्रयोग सूचित होता है। जैसे-हे राम!

संबोधना*-स० [सं० सम्बोधन] १. संबोधन करना। २. समझाना-बुझाना।

संभरण-पुं० [सं०] भरण-पोषण आदि की व्यवस्था या सामग्री। (प्रॉविज़न)

संभरण निधि-स्त्री० [सं०] वह निधि जिसमें किसी की वृद्धावस्था आदि के समय भरण-पोषण आदि के लिए धन एकत्र किया जाय। (प्रॉविडेन्ट फंड)

सँभरना*-अ० = सँभलना।

सँभलना-अ० [हिं० भालना=देखना] १. किसी बोझ आदि का रोका या किसी कर्त्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना। २. किसी आधार या सहारे पर रुका रहना। ३. होशियार या सावधान होना। ४ चोट या हानि से बचाव करना। ५. रोग से छूटकर स्वस्थता प्राप्त करना। चंगा होना।

संभव-पुं० [सं० सम्भव] उत्पत्ति। वि० १. उत्पन्न। (यौ० के अन्त में; जैसे-कर्म-संभव=कर्म से उत्पन्न) २. जो हो सकता हो। हो सकने के योग्य। मुमकिन। (पॉसिबुल)

संभवतः-अव्य० [सं०] हो सकता है संभव या मुमकिन है।

संभवना*-स० [सं०संभव] उत्पन्न करना। अ० १. उत्पन्न होना २ संभव होना।

संभवनीय-वि० [सं०] संभव। मुमकिन।

सँभार*-पुं०[हिं०सँभालना]दे०'सँभाल'। यौ०-सार-सँभार=पालन पोषण और देख-भाल।

संभार-पुं० [सं०] १. संचय। एकत्र करना। २ वह स्थान जहाँ एक ही तरह की बहुत-सी वस्तुएँ इकट्ठी करके अथवा बिक्री के लिए रखी हों। भंडार। (स्टोर) ३ तैयारी। साज-सामान। ४ धन। संपत्ति। ५. पालन। पोषण।

सँभारना*-स०=सँभालना।

स० [सं० स्मरण] याद करना।

सँभाल-स्त्री० [सं० संभार] १. रक्षा। हिफाज़त। २. पोषण या देख-रेख आदि का भार। ३. तन-बदन की सुध।

सँभालना-स० [हिं० 'सँभलना' का स०] १. भार ऊपर लेना। २. रोककर वश में रखना। ३ गिरने न देना। ४. रक्षा करना। ५. बुरी दशा में आने से

बचाना। ६. पालन-पोषण या देख-रेख करना। ७. ठीक तरह से निर्वाह करना। चलाना। ८. यह देखना कि कोई चीज ठीक और पूरी है या नहीं। सहेजना।

सँभाला-पुं० [हिं० सँभाल] मरने के पहले कुछ चेतनता-सी आना।

संभावना-स्त्री० [सं० सम्भावना] १. हो सकना। मुमकिन होना। (पॉसिबिलिटी) २. एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी के आश्रित होने का वर्णन होता है।

संभावित-वि० [सं०] जिसके होने की संभावना हो। जो कभी हो सकता हो। मुमकिन। (प्राबेबुल)

संभाव्य-वि० [सं० सम्भाव्य] जो बहुत करके हो सकता हो। संभावित।

संभाव्यतः-क्रि० वि० [सं०] हो सकने के विचार से जिसकी आशा की जा सकती हो। बहुत करके। (लाइकली)

संभाषण-पुं० [सं०] [वि० संभाषित, संभाष्य] कथोपकथन। बात-चीत।

संभाष्य-वि० [सं० सम्भाष्य] जिससे बात-चीत करना उचित या योग्य हो।

संभूत-वि० [सं०सम्भूत] [भाव० संभूति] १. एक साथ उत्पन्न होनेवाले। २. उत्पन्न। पैदा। ३. युक्त। सहित।

संभूय-अव्य० [सं०] साझे में।

संभूय समुत्थान-पुं० [सं०] कुछ लोगों के साझे में होनेवाला रोजगार।

संभेद-पुं० [सं०] आपस में मिले हुए व्यक्तियों, पदार्थों, तत्वों आदि में होनेवाला वियोग, अलगाव या भेद। (क्लीवेज)

संभोग-पुं० [सं०] १. अच्छी तरह होनेवाला भोग, उपभोग या व्यवहार। २. स्त्री के साथ रति-क्रीड़ा। मैथुन। ३. प्रेमी और प्रेमिका का संयोग या मिलाप।

संभ्रम-पुं० [सं० सम्भ्रम] १. घबराहट। व्याकुलता। २. मान। गौरव।

संभ्रांत-वि० [सं० सम्भ्रान्त] १. भ्रम में पड़ा या घबराया हुआ। २. सम्मानित। प्रतिष्ठित। (अशुद्ध प्रयोग)

संभ्राजना*-अ० [सं० संभ्राज्] अच्छी तरह सुशोभित होना।

संमत-वि दे० 'सम्मत'।

संयत-वि० [सं०] १ बँधा हुआ। बद्ध। २ किसी के नियंत्रण या दबाव में पड़ा हुआ। दमन किया हुआ। ३ क्रम-बद्ध। व्यवस्थित। ४. वासनाओं और मन को वश में रखनेवाला। निग्रही। ५. उचित सीमा के अन्दर रोककर रखा हुआ।

संयम-पुं [सं०] [वि० संयमी, संयमित, संयत] १. रोक। दाब। २ मन की वासनाओं को रोकना। इन्द्रिय-निग्रह। ३. हानिकारक या बुरी बातों या कार्यों से दूर रहना या बचना। परहेज। ४. बंधन। ५ बाँधना या बंद करना। ६ योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

संयमी-वि० [सं० संयमिन्] १ मन और वासनाओं को वश में रखनेवाला। आत्म-निग्रही। २. पथ्य से रहनेवाला।

संयुक्त-वि० [सं०] [भाव० संयुक्तता] १. जुड़ा, सटा या लगा हुआ। संबद्ध। (एनेक्स्ड) २. एक में मिला हुआ। ३. साथ रहकर या मिलकर बहुत कुछ समान भाव से काम करनेवाला। (ज्वाइण्ट) जैसे-संयुक्त सम्पादक।

संयुक्तक-पुं० [सं०] वह पत्र या और कोई कागज जो किसी दूसरे पत्र आदि के साथ लगा दिया गया हो। (एनेक्शर)

संयुक्त परिवार-पुं० [सं०] वह परिवार

जिसमें भाई-भतीजे आदि सब मिलकर एक साथ रहते हों। (ज्वाइन्ट फैमिली)
संयुत-वि० [सं०] जुड़ा या लगा हुआ।
संयोग-पुं० [सं०] १. मेल। मिलाप। २ लगाव। संबंध। ३. दो या कई बातों का अचानक एक-साथ होना। इत्तफाक। ४. पुरुष और स्त्री या प्रेमी और प्रेमिका का इकट्ठा रहना। 'वियोग' का उलटा।
संयोजक-पुं० [सं०] १. जोड़ने या मिलानेवाला। २. व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों के बीच में उन्हें जोड़ने या मिलाने के लिए आता है। ३. सभा-समिति आदि का वह मुख्य सदस्य जो उसकी बैठकें बुलाने और उसके अध्यक्ष के रूप में उसका काम चलाने के लिए नियुक्त होता है। (कन्वीनर)
संयोजन-पुं० [सं०] [वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य संयोजित] १. जोड़ने या मिलाने की क्रिया। २. चित्र अंकित करने में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को ठीक जगह पर बैठाना। जुड़ाना। ३. किसी बड़े राज्य का किसी छोटे राज्य या प्रान्त को बलपूर्वक अपने में मिला लेना। (एनेक्सेशन)
संयोना*-स० दे० 'सजाना'।
संरक्षक-पुं० [सं०] [स्त्री० संरक्षिका] १. देख-रेख या रक्षा करनेवाला। २ पालन-पोषण करने या आश्रय में रखनेवाला। (पेट्रन) ३. दे० 'अभिभावक'।
संरक्षण-पुं० [सं०] [वि० संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय] १. हानि, विपत्ति आदि से बचाना। हिफाजत। २. देख-रेख। निगरानी। ३. अधिकार। कब्जा। ४.दूसरों की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा। (प्रोटेक्शन)
संरक्षित-वि० [सं०] १. सँभालकर या अच्छी तरह बचाकर रखा हुआ। २.अपनी देख-रेख या संरक्षण में लिया हुआ।
संलग्न-वि० [सं०] [स्त्री० संलग्ना] १. सटा हुआ। २. संबद्ध। ३. किसी दूसरे के साथ पीछे से या अन्त में लगा, जुड़ा या सटा हुआ। (अपेन्डेड)
संलाप-पुं० [सं०] बात-चीत।
संलापक-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का उपरूपक। २. संलाप करनेवाला।
संलेख-पुं० [सं०] वह लेख या विलेख जो विधिक क्षेत्र में नियमानुसार लिखा हुआ, ठीक और प्रामाणिक माना जाता हो। (वैलिड डीड)
संलोभन-पुं० दे० 'प्रलोभन'।
संवत्-पुं० [सं०] १. वर्ष। साल। २ संख्या के विचार से चलनेवाली विशेषतः महाराज विक्रमादित्य के समय से प्रचलित मानी जानेवाली वर्ष-गणना में का कोई वर्ष। जैसे-संवत् २००६।
संवत्सर-पुं० [सं०] वर्ष। साल।
सँवर*-स्त्री० [सं० स्मृति] १.स्मरण। याद। २. वृत्तान्त। हाल।
संवरण-पुं० [सं०] [वि० संवरणीय, संवृत] १. पसन्द करना। चुनना। जैसे-विवाह के लिए वर का संवरण करना। २. दूर करना। हटाना। ३. समाप्त या अन्त करना। जैसे-इह-लीला संवरण करना। ४. विचार या इच्छा को दबाना या रोकना। जैसे-क्षोभ संवरण करना। ५. गोपन करना। छिपाना।
सँवरना-अ० हिं० 'सँवारना' का अ०। *स० [हिं० सुमिरना] स्मरण करना।
सँवरिया-वि० दे० 'साँवला'।
संवर्द्धन-पुं० [सं०] [कर्त्ता संवर्द्धक,

वि० संवर्द्धित, संवृद्ध] १. बढ़ना । २. पालना । ३. बढ़ाना ।

संवल-पुं० दे० 'संबल' ।

संवाद-पुं० [सं०] [कर्त्ता संवादक] १. वार्त्तालाप । बात-चीत । २. खबर । समाचार । ३. विवरण । हाल । (रिपोर्ट)

संवाददाता-पुं० [सं०] १. वह जो समाचार या संवाद दे । खबर देनेवाला । २ वह जो किसी विशेष स्थान या क्षेत्र के समाचार लिखकर समाचारपत्र में छपने के लिए भेजता हो । (कॉरेस्पान्डेन्ट, रिपोर्टर)

संवादी-वि० [सं० संवादिन्] [भाव० संवादिता, स्त्री० संवादिनी] १. संवाद या बात-चीत करनेवाला । २. अनुकूल या मेल में होनेवाला । जैसे-संवादी स्वर । (संगीत)

सँवार*-स्त्री० [सं० संवाद या स्मरण] हाल । समाचार ।

स्त्री० [हिं० सँवारना] १. सँवारने की क्रिया या भाव । २. क्षौर-कर्म । हजामत । ३.एक प्रकार का शाप या गाली। ('मार' के स्थान पर । जैसे-तुझपर खुदा की सँवार।)

संवार-पुं० [सं०] शब्दों के उच्चारण में वह बाह्य प्रयत्न जिसमें कंठ कुछ सिकुड़ता है ।

सँवारना-स० [सं० संवर्णन] १. दोष, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक या अच्छी अवस्था में लाना । दुरुस्त या ठीक करना । २. अलंकृत करना । सजाना । ३. काम बनाना । काम ठीक करना ।

संवास-पुं० [सं०] [वि० संवासित] १. सुगंध । खुशबू । २. श्वास के साथ मुँह से निकलनेवाली दुर्गंध । ३. सार्वजनिक निवास-स्थान । ४. मकान । घर ।

संविद्-स्त्री० [सं०] १. चेतना । ज्ञान-शक्ति । २. बोध । ज्ञान । ३. समझ । बुद्धि । ४. संवेदन । अनुभूति । ५. वृत्तान्त । हाल । ६. नाम । संज्ञा । ७ युद्ध । लड़ाई । ८. संपत्ति । जायदाद ।

संविद्-वि० [सं०] चेतनायुक्त । चेतन ।

संविदा-स्त्री० [सं०] कुछ निश्चित पक्षों या शर्तों के आधार पर दो पक्षों में होनेवाला समझौता । (कन्ट्रैक्ट)

संविदा-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिस-पर किसी संविदा की शर्तें लिखी हों । ठेकानामा । (कन्ट्रैक्ट डीड)

संविदा प्रविधि-स्त्री० [सं०] वह प्रविधि या कानून जिसमें संविदा या ठेके से संबंध रखनेवाले नियमों का विवेचन हो । (लॉ ऑफ कन्ट्रैक्ट)

संविधान-पुं० [सं०सं=संघटन+विधान] वह विधान या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन और व्यवस्था होती है । (कान्स्टिट्यूशन)

संविधान परिषद्-स्त्री० [सं०] वह परिषद् या सभा जो किसी देश, जाति या राष्ट्र के राजनीतिक शासन की नियमावली आदि बनाने के लिए संघटित हो । (कान्स्टिट्यूएंट एसेम्बली)

संविधान सभा-स्त्री०=संविधान परिषद् ।

संवृत-वि० [सं०] १. ढका या छिपा हुआ । २. रक्षित ।

संवृद्धि-स्त्री० [सं०] किसी वस्तु के बाहरी अंगों में निरन्तर या बाद में होनेवाली वृद्धि । (एक्रीशन)

संवेदन-पुं० [सं०] [वि० संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य] १. सुख-दुःख आदि का अनुभव करना । २. ज्ञान । ३.

जताना। प्रकट करना।

संवेदन सूत्र-पुं० [सं०] सारे शरीर में फैले हुए तन्तुओं का वह जाल जिससे स्पर्श, शीत, ताप, सुख, पीड़ा आदि का अनुभव या ज्ञान होता है। स्नायु।

संवेदना-स्त्री० [सं० संवेदन] १. मन में होनेवाला बोध या अनुभव। अनुभूति। २. किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुःख। सहानुभूति।

संशय-पुं० [सं०] [वि० संशयी] १. ऐसा ज्ञान जिसमें पूरा निश्चय न हो। संदेह। शंका। शबहा। २. आशंका। डर।

संशुद्ध-वि० [सं०] जिसका संशोधन हुआ हो। शुद्ध किया हुआ।

संशोधक-पुं० [सं०] १. संशोधन करनेवाला। २. बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला। सुधारनेवाला।

संशोधन-पुं० [सं०] [वि० संशोधनीय, संशोधित] १. भूल, दोष आदि दूर करके ठीक या शुद्ध करना। २. ठीक करना। सुधारना। ३. प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाने-बढ़ाने का सुझाव। (एमेन्डमेन्ट) ४. ऋण आदि) चुकता करना। (देन) चुकाना।

संशोधित-वि० [सं०] जिसका संशोधन हुआ हो। शुद्ध किया हुआ।

संश्रय-पुं० [सं०] १. संयोग। मेल। २. संबंध। लगाव। ३. आश्रय। ४. सहारा।

संश्रित-वि० [सं०] १. लगा या सटा हुआ। २. शरण में आया हुआ। ३. दूसरे के सहारे रहनेवाला। आश्रित।

संश्लिष्ट-वि० [सं०] मिला, सटा या लगा हुआ।

सश्लेषण-पुं० [सं०] [वि० संश्लिष्ट] १. एक में मिलाना, लगाना या सटाना। २. कार्य से कारण अथवा नियम, सिद्धान्त आदि से उनके फल या परिणाम का विचार करना। मिलान मिलाना। 'विश्लेषण' का उलटा। (सिन्थेसिस)

संस(इ)*-पुं० दे० 'संशय'।

संसक्त-वि० [सं०] १. किसी की सीमा के साथ सटा या लगा हुआ। (कन्टिगुअस) २. सम्बद्ध। ३. (किसी की ओर) अनुरक्त या प्रवृत्त। ४. (किसी विचार या काम में) लग्न। लीन।

संसक्ति-स्त्री० [सं०] १. किसी के साथ सटे या लगे होने का भाव। (कन्टिगुइटी) २. एक ही तरह के पदार्थों या तत्वों का आपस में मिल या सटकर एक-रूप होना। (कोहेशन) ३. सम्बन्ध। लगाव। ४. विशेष अनुराग या आसक्ति। लगन। ५. लीनता। ६. प्रवृत्ति।

संसद्-स्त्री० [सं०] राज्य या शासन-सम्बन्धी कार्यों में सहायता देने और पुराने विधानों में संशोधन करने तथा नये विधान बनाने के लिए प्रजा के प्रतिनिधियों की चुनी हुई सभा। (पार्लमेन्ट)

संसरण-पुं० [सं०] [वि० संसृति] १. चलना। २. संसार। जगत। ३. रास्ता।

संसर्ग-पुं० [सं०] १. साथ या पास रहने से होनेवाला संबंध। लगाव। २. मिलन। मिलाप। ३. संगति। साथ। ४. स्त्री और पुरुष का संबंध या सहवास।

संसर्ग-दोष-पुं० [सं०] वह दोष या बुराई जो किसी के साथ रहने से उत्पन्न होती है।

संसर्ग-रोध-पुं० [सं०] १. वह व्यवस्था जो किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की जाती है। २. इस काम के लिए

अलग किया हुआ स्थान। (क्वारेन्टाइन)

संसर्गी-वि० [सं० संसर्गिन्] [स्त्री० संसर्गिणी] जिससे या जिसका संसर्ग या लगाव हो।

संसा*-पुं० = संशय।

संसार-पुं० [सं०] १. जगत। दुनिया। २. इह-लोक। मर्त्यलोक। ३. घर।

संसार-यात्रा-स्त्री० [सं०] १ जीवन का निर्वाह या यापन। २. जीवन। जिन्दगी।

संसारी-वि० [सं० संसारिन्] [स्त्री० संसारिणी] १. संसार-संबंधी। लौकिक। २. संसार के झगड़ों में फँसा हुआ।

संसृति-स्त्री० [सं०] संसार।

संस्करण-पुं० [सं०] १. संस्कार करना ठीक या दुरुस्त करना। सुधारना। २. पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति। (एडिशन)

संस्कर्त्ता-पुं० [सं०] संस्कार करनेवाला।

संस्कार-पुं० [सं०] १. दोष आदि दूर करके ठीक करना। दुरुस्ती। सुधार। २. पूर्व जन्म, कुल-मर्यादा, शिक्षा, सभ्यता आदि का मन पर पड़नेवाला प्रभाव। ३. हिन्दुओं में धर्म की दृष्टि से शुद्ध और उन्नत करने के लिए होनेवाले १६ विशिष्ट कृत्य। जैसे-यज्ञोपवीत, विवाह आदि। ४. मन, रुचि, आचार-विचार आदि को परिष्कृत तथा उन्नत करने का कार्य। (कलचर) ५. मृतक की अंत्येष्टि क्रिया।

संस्कृत-वि० [सं०] १. जिसका संस्कार हुआ हो। शुद्ध किया हुआ। २. सँवारा हुआ। परिमार्जित। ३. सुधारा और ठीक किया हुआ।

स्त्री० भारतीय आर्यों की प्रसिद्ध प्राचीन साहित्यिक भाषा। देव-वाणी।

संस्कृति-स्त्री० [सं०] १. शुद्धि। सफाई। २. संस्कार। सुधार। ३. किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र, आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं। (कलचर)

संस्था-स्त्री० [सं०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। स्थिति। २. व्यवस्था। विधि। ३ मर्यादा। ४.जत्था। गरोह। ५. किसी धार्मिक, सामाजिक या लोकोपकारी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिए संघटित समाज या मंडल। (इन्स्टिट्यूशन) ६. किसी कार्यालय या विभाग में काम करनेवाले सब लोगों का समूह या वर्ग। अधिष्ठान। (एस्टैब्लिशमेन्ट) ७ राजनीतिक या सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाला कोई नियम, विधान या परंपरागत प्रथा। (इन्स्टिट्यूशन) जैसे-विवाह हमारे यहाँ की धार्मिक संस्था है।

संस्थान-पुं०[सं०] १.ठहराव। स्थिति। २. बैठाना। स्थापन। ३.अस्तित्व। ४ देश। ५ सर्व-साधारण के इकट्ठे होने का स्थान। ६. किसी राज्य के अन्तर्गत जागीर आदि। (एस्टेट) ६. साहित्य, विज्ञान, कला आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज। (इन्स्टिट्यूशन) ७. प्रबन्ध। व्यवस्था।

संस्थापक-पुं० [सं०] [स्त्री० संस्थापिका] संस्थापन करनेवाला।

संस्थापन-पुं० [सं०] [वि० संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य] १. अच्छी तरह जमाकर बैठाना, लगाना या खड़ा करना। २. मंडली, संस्था आदि बनाना। ३.कोई नई बात चलाना।

संस्मरण-पुं० [सं०] [वि० संस्मरणीय, संस्मृत] १ किसी व्यक्ति के संबंध की

स्मरणीय घटनाएँ या उनका उल्लेख। (रेमिनेस्सेंज) २. अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

संहृत-वि० [सं०] १. खूब मिला, जुड़ा या सटा हुआ। २. कड़ा। सख्त। ३. गठा हुआ। घना। ४. एकत्र। इकट्ठा।

संहृति-स्त्री० [सं०] १. मिलान। मेल। २. इकट्ठा होने की क्रिया या भाव। ३. राशि। ढेर। ४. समूह। झुंड। ५. घनता। ठोसपन।

संहरना*-स०[सं० संहार] संहार करना। अ० संहार या नाश होना।

संहार-पुं० [सं०] [क्रि० संहरना, कर्त्ता संहारक] १. (सिर के बाल) अच्छी तरह समेटकर बाँधना। गूँथना। २. छोड़ा हुआ बाण फिर अपनी ओर लौटाना। ३. नाश। ध्वंस। ४. मार डालना। (युद्ध आदि में)

संहित-वि० [सं०] १. इकट्ठा किया हुआ। २. मिला, सटा या जुड़ा हुआ।

संहिता-स्त्री० [सं०] १. संहित या मिले हुए होने का भाव। २. मेल। मिलावट। ३. व्याकरण में, संधि। ४. वह ग्रन्थ जिसके पद-पाठ आदि का क्रम परम्परा से एक नियमित या निश्चित रूप में चला आ रहा हो। जैसे-धर्म-संहिता। ५. आधिकारिकी द्वारा किया हुआ नियमों, विधियों आदि का संग्रह। (कोड)

सइ*-अव्य० [सं० सह] से। साथ।

सइयो*-स्त्री० = सखी।

सउँ*-अव्य० दे० 'सौं'।

सक*-पुं० दे० 'साका'।

स्त्री० दे० 'शक्ति'।

सकत*-स्त्री० [सं० शक्ति] १. बल। शक्ति। ताकत। २. धन-संपत्ति।

क्रि०वि० जहाँ तक हो सके। यथा-शक्ति।

सकता-पुं० [अ० सक्तः] १. बेहोशी या इसकी बीमारी। २. स्तब्धता। भौचक्कापन। ३.कविता में, विराम। यति। ४. यति-भंग का दोष।

सकती*-स्त्री०=शक्ति।

सकना-अ० [सं० शक् या शक्य] कुछ करने में समर्थ होना। कुछ करने के योग्य होना। जैसे-चल सकना।

सकपकाना-अ० दे० 'चकपकाना'।

सकरना-अ० [सं० स्वीकरण] सकारा या माना जाना। जैसे-हुंडी सकरना।

सकर्मक-वि० [सं०] १. व्याकरण में, कर्म से युक्त। २. काम में लगा हुआ।

सकर्मक क्रिया-स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य्य उसके कर्म पर समाप्त होता है। जैसे-खाना, धोना।

सकल-वि० [सं०] सब। समस्त।

सकलात-पुं० [?] [वि० सकलाती] १. रजाई। दुलाई। २. सौगात। उपहार। ३. मखमल नामक कपड़ा।

सकसकाना*-अ०[अनु०]डर से काँपना।

सकसना*-अ० [अनु०] १. भयभीत होना। डरना। २. अड़ना। ३. फँसना।

सकाना*-अ० [सं० शंका] १. संदेह करना। २. हिचकना। ३. दुःखी होना।

स० हिं० 'सकना' का प्रे०। (क्व०)

सकाम-पुं० [सं०] १. वह जिसके मन में कोई कामना या वासना हो। २. वह जिसकी कामना पूरी हुई हो। ३. कामुक। ४. वह जो फल की इच्छा से काम करे।

सकारना-स०[सं० स्वीकरण] १. स्वीकार करना। मंजूर करना। २. महाजन का अपने नाम पर आई हुई हुंडी मान्य करना। (ऑनर ए बिल ऑर ड्राफ्ट)

सकारे†-क्रि० वि० [सं० सकाल] १. सबेरे। २. शीघ्र। जल्दी।
सकुच*†-स्त्री० = संकोच।
सकुचना-अ० [सं० संकोच] १. लज्जा या संकोच करना। २. (फूलों का) सिमटना या सिकुड़ना। बंद होना।
सकुचाई*-स्त्री०=संकोच।
सकुचाना-अ०[सं०संकोच]संकोच करना। स० १. संकुचित करना। सिकोड़ना। २. लज्जित करना।
सकुचीला(चौहाँ)*-वि० [हिं० संकोच] संकोच करनेवाला। लजीला।
सकुन*-पुं०१.दे० शकुन'। २.दे०'शकुंत'।
सकुपना-* अ० दे० 'कोपना'।
सकुल्य-पुं० दे० 'सगोत्र'।
सकूनत-स्त्री० [अ०] निवास-स्थान।
सकृत्-अव्य०[सं०] १.एक बार। २.सदा।
सकृद्दर्शन-अव्य० [सं०] १. देखने पर तुरन्त। २. ऊपर से देखने पर। (प्राइमा फेसी)
सकेत*†-पुं० दे० 'संकेत'। वि० [सं० संकीर्ण] तंग। संकुचित। पुं० विपत्ति। संकट।
सकेतना*†-अ० दे० 'सिकुड़ना'।
सकेलना†-स० [?] इकट्ठा करना।
सकोपना*†-अ० दे० 'कोपना'।
सक्र*-पुं० [सं० शक्र] इंद्र।
सक्रारि*-पुं० [सं० शक्रारि] मेघनाद।
सक्रिय-वि० [सं०] [भाव० सक्रियता] १.जिसमें क्रिया भी हो। २.जो क्रियात्मक रूप में हो। ३.जिसमें कुछ करके दिखलाया जाय। (ऐक्टिव)
सक्षम-वि० [सं०] [भाव० सक्षमता] १. जिसमें क्षमता हो। २. समर्थ। ३. किसी काम के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त और उसका अधिकारी। (काम्पीटेन्ट)
सखरच*-वि० दे० 'शाह-खर्च'।
सखरस-पुं० [?] मक्खन।
सखरी-स्त्री० [हिं० 'निखरी' से अनु०] दाल, रोटी आदि कच्ची रसोई।
सखा-पुं० [सं० सखिन्] १. साथी। संगी। २. मित्र। दोस्त। ३. साहित्य में नायक के पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक ये चार प्रकार के सहचर।
सखी-स्त्री० [सं०] १. सहेली। सहचरी। २. संगिनी। ३. साहित्य में नायिका के साथ रहनेवाली वह स्त्री जिससे वह अपने मन की सब बातें कहती है। वि० [अ० सख़ी] १. दाता। २. उदार।
सखी भाव-पुं० [सं०] भक्ति का वह प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देवता की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना और सेवा करता है।
सखुन-पुं० [फा० सखुन] १. कथन। उक्ति। २. कविता। काव्य।
सखुन-तकिया-पुं० [फा०] वह शब्द या पद जो कुछ लोगों के मुँह से बात-चीत करने समय प्रायः निकला करता है। जैसे-क्या नाम, जो है सो आदि।
सख्त-वि० [फा०] [भाव० सख्ती] १. कठोर। कड़ा। २. मुश्किल। कठिन। ३. कठोर व्यवहार करनेवाला। क्रि० वि० बहुत अधिक। (बुरे या दूषित बातों के सम्बन्ध में। जैसे-सख्त नालायक)
सख्य-पुं० [सं०] १. 'सखा' का भाव। सखापन। २. मित्रता। दोस्ती। ३. भक्ति का वह प्रकार जिसमें इष्ट देव को भक्त अपना सखा मानकर उसकी उपासना करता है।
सगण-पुं० [सं०] पिंगल में दो लघु

और एक गुरु अक्षर का एक गण । इसका रूप ॥ऽ है ।

सग-पहिती-स्त्री० [हिं० साग+पहिती= दाल] साग मिलाकर पकाई हुई दाल ।

सगबग-वि० [अनु०] [क्रि० सगबगाना] १. तर-बतर । लथ-पथ । २. द्रवित । ३. परिपूर्ण । भरा हुआ ।

क्रि० वि० जल्दी से । तुरन्त ।

सगरा†-वि० [सं० सकल] सब । सारा ।

सगल*-वि० = सकल ।

सगा-वि० [सं०स्वक] [स्त्री०सगी, भाव० सगापन] १. एक ही माता से उत्पन्न । सहोदर । २. संबंध या रिश्ते में अपने ही कुल या परिवार का। जैसे-सगा चाचा।

सगाई-स्त्री० [हिं० सगा+आई (प्रत्य०)] १. विवाह का निश्चय । मँगनी । २. विधवा स्त्री के साथ पुरुष का वह संबंध जो कुछ जातियों में विवाह के ही समान माना जाता है । ३.संबंध । नाता । रिश्ता ।

सगापन-पुं० [हिं० सगा] 'सगा' या आत्मीय होने का भाव ।

सगारता*-स्त्री० दे० 'सगापन' ।

सगुण-पुं० [सं०] सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त परमात्मा का रूप । साकार ब्रह्म ।

सगुन-पुं० १. दे० 'शकुन' । २.दे० 'सगुण' ।

सगुनाना-स० [सं० शकुन] शकुन निकालना या देखना ।

सगुनिया†-पुं० [सं० शकुन] शकुन बतलानेवाला ।

सगुनौती-स्त्री० [हिं० सगुन] शकुन विचारने की क्रिया या भाव ।

सगोती-पुं० = सगोत्र ।

सगोत्र-पुं० [सं०] एक ही गोत्र के लोग ।

सग्गड़-पुं० [सं० शकट] बोझ ढोने की एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिसे आदमी खींचते या ढकेलते हैं ।

सघन-वि० [सं०] [भाव० सघनता] १. घना । अविरल । २. ठोस । ठस ।

सच-वि० [सं० सत्य] १. जैसा हो, वैसा ही (कहा हुआ) । सत्य । २. वास्तविक । ३. ठीक ।

सचना*-स० [सं० संचयन] १. संचय या इकट्ठा करना । २ पूरा करना ।

सच-मुच-अव्य०[हिं०सच+मुच (अनु०)] १. वास्तव में । यथार्थ रूप में । २. अवश्य । निश्चय ।

सचरना*-अ० [सं० संचरण] संचरित होना । फैलना ।

सचराचर-पुं० [सं०] संसार के चर और अचर सभी पदार्थ तथा प्राणी ।

सचल-वि० [सं०] [भाव० सचलता] १. जो अचल न हो । चलता हुआ । २. चंचल । ३ जंगम ।

सचाई-स्त्री० [सं० सत्य, प्रा० सच्च] १. 'सच' का भाव । सत्यता । सचापन । २. वास्तविकता । यथार्थता ।

सचान-पुं० [सं० संचान] बाज पक्षी ।

सचारना*-स० हिं० 'सचरना' का स० ।

सचिन्त-वि० [सं०] जो किसी बात की चिन्ता में हो । चिन्तायुक्त ।

सचिक्कण-वि० [सं०] बहुत चिकना ।

सचिव-पुं० [सं०] १ मित्र । दोस्त । २. मंत्री । (मिनिस्टर)

सचिवालय-पुं० [सं०] वह भवन जिसमें किसी राज्य, प्रान्तीय सरकार अथवा किसी बड़ी संस्था के सचिवों, मन्त्रियों और विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय रहते हैं । (सेक्रेटेरियट)

सचु*-पुं० [?] १. सुख । आराम । २.

प्रसन्नता। आनंद।

सचेत-वि० [सं० सचेतन] १. जो चेतना-युक्त हो। २. सावधान। होशियार। खबरदार। ३. दे० 'सचेतन'।

सचेतन-पुं० [सं०] [भाव० सचेतनता] वह जिसमें चेतना या ज्ञान हो। वि० 'जड़' का उलटा। चेतन।

सचेष्ट-वि० [सं०] १. जिसमें चेष्टा हो। २. जो चेष्टा कर रहा हो।

सच्चरित(त्र)-वि० [सं०] अच्छे चरित्र या चाल-चलनवाला। सदाचारी।

सच्चा-वि० [सं० सत्य] [स्त्री० सच्ची] १. सच बोलनेवाला। सत्यवादी। २. वास्तविक। यथार्थ। ठीक। ३. असली। झूठा या बनावटी नहीं। ४. बिलकुल ठीक और पूरा।

सच्चाई-स्त्री० [हिं० सच्चा] 'सच्चा' होने का भाव। सत्यता।

सच्चिदानंद-पुं० [सं०] (सत्, चित् और आनंद से युक्त) परमात्मा।

सच्ची टिपाई-स्त्री० [हिं० सच्ची=बिलकुल ठीक+टिपाई] प्राचीन चित्र कला में चित्र बनाने के समय पहले रूप-रेखा अंकित कर चुकने पर गेरू से होनेवाला अंकन।

सच्छंद*-वि० = स्वच्छंद।

सच्छत*-वि० [सं० सक्षत] घायल।

सच्छी*-पुं०, स्त्री० दे० 'साक्षी'।

सज-स्त्री० [हिं० सजावट] १. सजावट। २. बनावट। गठन। डौल। ३. शोभा। ४. सुन्दरता।

सजग-वि० [सं० जागरण] [भाव० सजगता (अशुद्ध रूप)] सावधान। सचेत। होशियार।

सज-धज-स्त्री० [हिं० सज+धज (अनु०)] बनाव-सिंगार। सजावट।

सजन-पुं० [सं० सद्+जन=सज्जन] [स्त्री० सजनी] १. सज्जन। २. पति। स्वामी। ३. प्रियतम।

सजना-अ० [सं० सज्जा] सज्जित या अलंकृत होना। सजाया जाना। स० दे० 'सजाना'।

सजल-वि० [सं०] [स्त्री० सजला] १. जल से युक्त। २. आँसुओं से भरा। (नेत्र)

सजवना*-स०=सजाना।

सजवाना-स० हिं० 'सजाना' का प्रे०।

सजा-स्त्री० [फा०] १. दंड। २. कारागार में बन्द रखने का दंड।

सजाइ*-स्त्री० दे० 'सजा'।

सजाई-स्त्री० [फा० सजाना] सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सजागर-वि० दे० 'सजग'।

सजात-वि० [सं०] जो साथ में उत्पन्न हुआ हो। पुं० वे लोग जो एक ही स्थान में जनमे, पले और रहते हों। वि० दे० 'सजाति'।

सजाति(तीय)-वि० [सं०] एक ही जाति या वर्ग के (लोग या पदार्थ)।

सजान*-पुं० [सं० सज्ञान] १. जानकार। ज्ञाता। २ चतुर। होशियार।

सजाना-स० [सं० सज्जा] १. इस प्रकार उचित स्थान पर और अच्छे क्रम से रखना कि देखने में भला जान पड़े। २. नई चीजें या बातें जोड़ या रखकर सुंदर बनाना। अलंकृत करना।

सजाय*-स्त्री० दे० 'सजा'।

सजा-याफ़ता-वि० [फा०] जिसे कैद की सजा मिल चुकी हो।

सजावट-स्त्री० [हिं० सजाना] सजे हुए होने की क्रिया या भाव।

सजावन*-पुं० = सजावट।

सजावल-पुं० [तु० सजावुल] १. लेन या कर उगाहनेवाला कर्मचारी। २.जमादार।

सजीला-वि० [हिं० सजना] [स्त्री० सजीली] १ सज-धज से या बन-ठनकर रहनेवाला। छैला। २ सुंदर। आकर्षक।

सजीव-वि० [सं०] १ जिसमें जीवन या प्राण हो। २ जिसमें ओज या तेज हो।

सजीवन-पुं० दे० 'संजीवनी'।

सजुग*-वि० दे० 'सजग'।

सजूरी-स्त्री० [?] एक प्रकार की मिठाई।

सजोना-स०=सजाना।

सजोयल*-वि० दे० 'सँजोइल'।

सज्ज*-पुं० दे० 'साज'।

सज्जन-पुं० [सं० सत्+जन] [भाव० सज्जनता] १. सबके साथ अच्छा, प्रिय और उचित व्यवहार करनेवाला। भला आदमी। शरीफ। २. प्रियतम।

सज्जनता-स्त्री० [सं०] 'सज्जन' होने का भाव। भल-मनसत। सौजन्य।

सज्जनताई*-स्त्री०=सज्जनता।

सज्जा-स्त्री० [सं०] [वि० सज्जित] १. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २. वेष-भूषा।

* स्त्री० दे० 'शय्या'।

सज्जित-वि० [सं०] [स्त्री० सज्जिता] १. सजा हुआ। अलंकृत। २. आवश्यक वस्तुओं या सामग्री से युक्त। जैसे-सज्जित सेना या भवन।

सज्जी-स्त्री० [सं० सर्जिका] एक प्रसिद्ध क्षार जो चीजें धोने या साफ करने के काम में आता है।

सज्ञान-वि० [सं०] १. ज्ञानवान। २. चतुर। ३.बुद्धिमान।

सज्या*-स्त्री० १.दे०'सज्जा'।२.दे०'शय्या'।

सटक-स्त्री० [अनु० सट से] १. सटकने की क्रिया या भाव। २.धीरे से चल देना। ३ हुक्का पीने की लचीली नली। नैचा।

सटकना-अ० [अनु० सट से] धीरे से या चुपचाप खिसक जाना। चंपत होना।

सटकाना-स० [अनु० सट से] छड़ी, कोड़े आदि से मारना।

सटकारना-स०[अनु०] [भाव० सटकार] १. छड़ी या कोड़े से सट सट मारना। २. गौ, बैल आदि हाँकना।

सटकारा-वि०[अनु०] चिकना, मुलायम और लंबा। (विशेषतः बाल ; बहु० में)

सटना-अ० [सं० स+स्था] १. आपस में इस प्रकार मिलना कि दोनों के पार्श्व या तल एक दूसरे से लग जायँ। २. चिपकना। ३. मार-पीट होना।

सटाना-स० हिं० 'सटना' का स०।

सटियल-वि० [?] घटिया। रद्दी।

सटिया-स्त्री० दे० 'सांटी'।

सटीक-वि० [सं०] जिसमें मूल के सिवा टीका भी हो। व्याख्या सहित।

वि० [हिं० ठीक] [भाव० सटीकपन] बिलकुल ठीक। (एक्योरेट)

सटोरिया-पुं० दे० 'सट्टेबाज'।

सट्टक-पुं०[सं०]एक प्रकार का छोटा रूपक।

सट्टा-पुं० [देश०] १. इकरारनामा। २. साधारण व्यापार से भिन्न खरीद-बिक्री का वह प्रकार जो केवल तेजी-मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिए होता है। सेला। (स्पेक्युलेशन)

सट्टा-बट्टा-पुं० [हिं० सटना+बट्टा] १. मेल-मिलाप। हेल-मेल। २. धूर्तता-पूर्ण युक्ति। चालबाजी। ३. अनुचित संबंध।

सट्टी-स्त्री० [हिं० हट्टी] वह बाजार जिसमें एक ही तरह की चीजें कुछ निश्चित

समय पर आकर बिकती हैं। हाट।

सट्टेबाज-पुं० [हिं०+फा०] [भाव० सट्टेबाजी] वह जो केवल तेजी-मंदी के विचार से खरीद-बिक्री करता हो। सट्टा करनेवाला। (स्पेक्युलेटर)

सठियाना-अ० [हिं० साठ] १. साठ वर्ष का होना। २. बुड्ढे हो जाने पर बुद्धि का ठीक काम न देना।

सठोरा-पुं० दे० 'सोंठौरा'।

सड़क-स्त्री० [अ० शरक] आने-जाने का चौड़ा पक्का रास्ता। राज-मार्ग।

सड़ना-अ० [सं० सरण] १. किसी चीज में ऐसा विकार होना जिससे उसके अंग गलने लगें और उसमें दुर्गन्ध आने लगे। २. जल मिले हुए पदार्थ में खमीर उठना या आना। ३. हीन अवस्था में पड़ा रहना।

सड़ाना-स० हिं० 'सड़ना' का स०।

सड़ायँध-स्त्री० [हिं० सड़ना+गंध] किसी चीज के सड़नेपर उसमें से आनेवाली दुर्गंध।

सड़ाव-पुं० [हिं० सड़ना] सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़-क्रि०वि०[अनु०सड़ से] १. सड़ सड़ शब्द के साथ। २. जल्दी जल्दी।

सड़ियल-वि० [हिं० सड़ना] १. सड़ा हुआ। २. निकृष्ट। रद्दी। खराब।

सत्-पुं० [सं०] ब्रह्म।

वि० १. सत्य। २. सज्जन। ३. नित्य। स्थायी। ४. शुद्ध। पवित्र। ५. श्रेष्ठ।

सतंत॰-अव्य० दे० 'सतत'।

सत-पुं० [सं० सत्] सत्यतापूर्ण धर्म। मुहा०-सत पर चढ़ना=पति का मृत शरीर लेकर चिता पर बैठना और उसके साथ सती होना। सत पर रहना=पतिव्रता और साध्वी होना।

वि० १. दे० 'शत'। २. दे० 'सत्'।

पुं० [सं० सत्व] १. किसी चीज में से निकाला हुआ सार भाग। तत्त्व। २. जीवन-शक्ति। ताकत।

वि० 'सात' (संख्या) का संक्षिप्त रूप। (यौ० के अन्त में, जैसे-सतलड़ा हार।)

सतकारना॰-स०=सत्कार करना।

सतगुरु-पुं० [हिं० सत्+गुरु] १. सच्चा और अच्छा गुरु। २. परमात्मा।

सतजुग-पुं० = सत्य युग।

सतत-अव्य० [सं०] १. सदा। हमेशा। २. निरंतर। लगातार।

सत-नजा-पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल।

सतपदी-स्त्री० दे० 'सप्तपदी'।

सतफेरा-पुं० दे० 'सप्तपदी'।

सतभाय॰-पुं० दे० 'सद्भाव'।

सत-मासा-पुं० [हिं० सात+मास] १. वह बच्चा जो गर्भ के सातवें महीने उत्पन्न हो। २. गर्भाधान के सातवें महीने होनेवाला कृत्य। (हिन्दू)

सतयुग-पुं० दे० सत्य-युग।

सत-रंगा-वि० [हिं० सात+रंग] सात रंगोंवाला।

पुं० इन्द्र-धनुष।

सतर-स्त्री० [अ०] १. रेखा। लकीर। २. पंक्ति। कतार।

वि० १. टेढ़ा। वक्र। २. क्रुद्ध। नाराज।

स्त्री० [अ०] १. स्त्री या पुरुष की गुप्त इंद्रिय। २. ओट। आड़।

सतराना॰-अ०[हिं०सतर] क्रोध करना।

सतरौंहाँ-वि० [हिं० सतराना] १. कुपित। क्रुद्ध। २. कोप-सूचक।

सतर्क-वि० [सं०] [भाव० सतर्कता] १. तर्क या युक्ति से युक्त। २. सावधान।

सत-लड़ी-स्त्री० [हिं० सात+लड़] सात लड़ों की माला।

सतवंती-वि० दे० 'सती'।

सतसई-स्त्री० [सं० सप्तशती] किसी कवि के सात सौ पद्यों आदि का संग्रह। सप्तशती। जैसे-बिहारी सतसई।

सतह-स्त्री० [अ०] किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल।

सताना-स० [सं० संतापन] कष्ट या दुःख देना। पीड़ित करना।

सति*-पुं० दे० 'सत्य'।

सती-वि० [सं०] [भाव० सतीत्व] पति के सिवा और किसी पुरुष का ध्यान न करनेवाली (स्त्री)। साध्वी। पतिव्रता। स्त्री० १ दक्ष प्रजापति की कन्या और शिव की पहली पत्नी। २. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जलकर या उसके मरने पर तुरन्त किसी और प्रकार से अपने प्राण दे दे।

सतीत्व-हरण-पुं० [सं०] किसी सदाचारिणी स्त्री के साथ बलपूर्वक संभोग करना। स्त्री का सतीत्व नष्ट करना।

सतृष्ण-वि० [सं०] तृष्णा से युक्त। तृष्णापूर्ण।

सतोखना*-स० [सं० संतोषण] १. संतुष्ट या तृप्त करना। २. ढारस देना।

सतोगुण पुं० दे० 'सत्वगुण'।

सत्कर्ता-पुं० [सं०] सत्कार करनेवाला।

सत्कर्म-पुं० [सं०सत्कर्मन्] अच्छा काम।

सत्कार-पुं० [सं०] १. आनेवाले व्यक्ति का आदर या सम्मान। खातिरदारी। २. धन आदि भेंट देकर किसी का किया जानेवाला, आदर सम्मान या सेवा।

सत्कार्य्य-वि० [सं०] सत्कार करने योग्य। पुं० उत्तम कार्य्य। अच्छा काम। सत्कर्म।

सत्कृत-वि० [सं०] जिसका सत्कार किया जाय। आदृत।

सत्कृति-पुं० [सं०] वह जो अच्छे कार्य करता हो। सत्कर्मी। स्त्री० अच्छी कृति। उत्तम कार्य।

सत्त-पुं० [सं० सत्व] सार भाग। सत। * पुं० दे० 'सत'।

सत्तम-वि०[सं०] १.सबसे बढ़कर। सर्वश्रेष्ठ। २. परम पूज्य। ३. परम साधु।

सत्ता-स्त्री० [सं०] १. 'होना' का भाव। अस्तित्व। २ शक्ति। सामर्थ्य। ३. वह शक्ति जो अधिकार, बल या सामर्थ्य का उपभोग करके अपना काम करती हो। (पावर) जैसे–राज-सत्ता।

सत्ताधारी-पुं० [सं०] जिसके हाथ में सत्ता हो। अधिकारी।

सत्तू-पुं० [सं० सक्तुक] भुने हुए जौ, चने आदि का चूर्ण।

सत्पथ-पुं० [सं०] १. उत्तम मार्ग। २ सदाचार। अच्छा आचरण।

सत्पात्र-पुं० [सं०] १. दान आदि ग्रहण करने के योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति या अधिकारी। २. श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति।

सत्पुरुष-पुं० दे० 'सज्जन'।

सत्यंकार-पुं० [सं०] कोई बात निश्चित करने के समय पहले से दिया जानेवाला धन। अग्रिम। पेशगी। अगाऊ।

सत्य-वि० [सं०] [भाव० सत्यता] १ यथार्थ। ठीक। सही। २. जैसा हो, या होना चाहिए, वैसा। ३.असल। वास्तविक। पुं० १. यथार्थ तत्त्व। ठीक बात। २ न्याय-संगत और धर्म की बात। ३. ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपरी लोक। ४. दे० 'सत्य-युग'।

सत्य-निष्ठ-वि० [सं०] [भाव०सत्य-निष्ठा]

सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला। सत्यव्रत।

सत्य-प्रतिज्ञ-वि० [सं०] अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। बात का पक्का।

सत्य युग-पुं० [सं०] पुराणों के अनुसार चार युगों में से पहला जो सबसे अच्छा माना गया है।

सत्य लोक-पुं० [सं०] सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्म रहता है। (पुराण)

सत्यवादी-वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] सच बोलनेवाला।

सत्य-संध-वि० [सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] अपने वचन का पालन करनेवाला।

सत्या-स्त्री० १.दे० 'सत्ता'। २ दे० 'सत्यता'।

सत्याग्रह-पुं० [सं०] किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिए शान्ति-पूर्वक हठ करना।

सत्याग्रही-पुं० [सं० सत्यग्रहिन्] वह जो सत्याग्रह करता हो।

सत्यानाश-पुं० [सं० सत्ता+नाश] [वि० सत्यानाशी] सर्वनाश। ध्वंस। बरबादी।

सत्यापन-पुं० [सं०] [वि० सत्यापित] १. कहकर सिद्ध करना कि यह ठीक है। (सर्टिफिकेशन) २ मिलान या जाँच करके यह देखना कि यह ठीक या क्यों का त्यों है न। (वेरीफिकेशन) ३. लेख्य आदि पर उसके ठीक होने की बात लिखकर हस्ताक्षर करना। (एटेस्टेशन)

सत्र-पुं० [सं०] १. यज्ञ। २. घर। मकान। ३. वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन बाँटा जाता है। क्षेत्र। सदावर्त। ४.वह नियत काल जिसमें कोई कार्य एक बार आरंभ होकर कुछ समय तक बराबर होता रहता है। (सेशन) ५. वह नियत काल जिसमें कोई कार्यकर्ता या प्रतिनिधि अपना काम करता है। (टर्म)

सत्र न्यायालय-पुं० [सं०] किसी जिले के जज का वह न्यायालय जिसमें कुछ विशिष्ट गुरुतर अपराधों का विचार होता है और जिसमें किसी व्यवहार या मुकदमे का विचार आरम्भ होने पर तब तक चलता रहता है, जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता। (सेशन्स कोर्ट)

सत्राई*-स्त्री० = शत्रुता।

सत्रावसान-पुं०[सं०] विधायिका सभाओं आदि के किसी अधिवेशन का आधिकारिक रूप से कुछ समय के लिए बन्द किया जाना अथवा अगले अधिवेशन तक के लिए स्थगित किया जाना। (प्रोरोग)

सत्रिक-वि० [सं०] १. सत्र सम्बन्धी। सत्र का। २. किसी सत्र या नियत काल पर होता रहनेवाला। (पीरियोडिक) २. किसी सत्र या नियत काल तक बराबर होता रहनेवाला। (टरमिनल)

सत्रुहन*-पुं० दे० 'शत्रुघ्न'।

सत्त्व-पुं० [सं०] १. सत्ता। अस्तित्व। २. सार। तत्त्व। ३.आत्म-तत्त्व। चैतन्य। ४. जीवनी शक्ति। प्राण।

सत्त्व गुण-पुं० [सं०] प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करता है।

सत्वर-क्रि० वि० [सं०] शीघ्र। जल्द।

सत्संग-पुं० [सं०] [वि० सत्संगी] १. साधुओं या सज्जनों का संग-साथ। अच्छी संगत। २. वह समाज जिसमें धर्म या अध्यात्म संबंधी चर्चा होती हो।

सथर*-स्त्री० [सं० स्थल] भूमि।

सथिया-पुं० [सं० स्वस्तिक] १. स्वस्तिक चिह्न 卐। २. भारतीय ढंग से फोड़ों की चीर-फाड़ करनेवाला। शल्य-चिकित्सक।

सदका-पुं० [अ० सदक़ः] १. खैरात। दान। २. निछावर। उतारा।

सद्चारी-पुं०=सदाचारी।
वि० ठीक और सत्य।

सदन-पुं० [सं०] १. घर। मकान। २. वह स्थान जिसमें किसी विषय पर विचार करने या नियम, विधान आदि बनानेवाली सभा का अधिवेशन होता हो। ३ उक्त कार्यों के लिए होनेवाली सभा या उसमें उपस्थित होनेवाले लोगों का समूह। ४. वह स्थान या भवन जिसमें बहुत-से लोग दर्शक या प्रेक्षक के रूप में उपस्थित हों। ५. उक्त प्रकार के स्थानों में उपस्थित होनेवाले लोगों का समूह। (हाउस, उक्त सभी अर्थों के लिए)

सदमा-पुं० [अ० सद्मः] किसी दुःखद घटना का आघात या चोट।

सदय-वि० [सं०] [भाव० सदयता] जिसके मन में दया हो। दयालु।

सद्र-वि० [अ० सद्र] प्रधान। मुख्य। पुं० १. वह स्थान जहाँ कोई बड़ा अधिकारी रहता हो या किसी विभाग का प्रधान कार्यालय हो। केंद्र-स्थल। २.सभापति।

सदरी-स्त्री० [अ०] बिना आस्तीन की एक प्रकार को कुरती।

सदर्थना*-स० [सं० समर्थ] समर्थन या पुष्टि करना।

सदस्य-पुं० [सं०] सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। (मेम्बर)

सदस्यता-स्त्री० [सं०] 'सदस्य' का भाव या पद। (मेम्बरशिप)

सदा-अव्य० [सं०] १. नित्य। हमेशा।

सदाचरण(चार)-पुं० [सं०] उत्तम आचरण। अच्छा चाल-चलन।

सदाचारिता-स्त्री० दे० 'सदाचरण'।

सदाचारी-पुं० [सं० सदाचारिन्] [स्त्री० सदाचारिणी] नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरणवाला मनुष्य।

सदाबहार-वि० [हिं० सदा+फा० बहार] सदा हरा रहनेवाला (वृक्ष)।

सदारत-स्त्री० [अ०] सभापतित्व।

सदावर्त-पुं० [सं० सदाव्रत] वह स्थान जहाँ गरीबों को नित्य भोजन मिलता हो।

सदाशय-वि०[सं०] [भाव० सदाशयता] सज्जन। भला-मानस।

सदा-सुहागिन-स्त्री० = वेश्या।

सदी-स्त्री० दे० 'शती'।

सदुपदेश-पुं० [सं०] १. उत्तम उपदेश। अच्छी शिक्षा। २. अच्छी सलाह।

सदुपयोग-पुं० [सं० सद्+उपयोग] सद् या अच्छा उपयोग। अच्छी तरह या अच्छे काम में लगाना।

सदूर*-पुं० दे० 'शार्दूल'।

सदृश-वि० [सं०] समान। तुल्य।

सदेह-क्रि० वि० [सं०] १. इसी शरीर से। सशरीर। २. मूर्त्तिमान्। प्रत्यक्ष।

सदैव-अव्य० [सं०] सदा। हमेशा।

सद्गति-स्त्री० [सं०] मरने के बाद अच्छे लोक में जाना।

सद्गुण-पुं० [सं०] [वि० सद्गुणी] अच्छा गुण।

सद्गुरु-पुं० [सं०] १. अच्छा गुरु। २. परमात्मा।

सद्द*-पुं० [सं० शब्द] १ शब्द। २ ध्वनि। अव्य० [सं० सद्य] तुरंत। तत्काल।

सद्धर्म-पुं० [सं०] १. अच्छा या उत्तम धर्म। २. बौद्ध धर्म।

सद्भाव-पुं० [सं०] १. प्रेम और हित का भाव। २. सच्चा और अच्छा भाव या नीयत। ३. मेल-जोल। मैत्री।

सद्म-पुं० [सं० सद्मन्] [स्त्री० अल्पा० सद्मिनी] १. घर। मकान। २. युद्ध।

सद्रूप-वि० [सं०] [भाव० सद्रूपता] अच्छे स्वरूपवाला । सुन्दर ।

सद्वृत्त-वि० [सं०] अच्छी वृत्ति या आचरणवाला । सदाचारी ।

सद्व्रत-वि० [सं०] [स्त्री० सद्व्रता] १. जिसने अच्छा व्रत धारण किया हो । २. सदाचारी । नेक-चलन ।
पुं० उत्तम या शुभ व्रत ।

सधना-अ० [हिं० साधना] १. कार्य सिद्ध होना । काम पूरा होना । २. काम चलना या निकलना । मतलब निकलना । ३. अभ्यस्त होना । मँजना । ४. प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल होना । ५. हो सकना । ६. निशाना ठीक बैठना ।

सधर-पुं० [सं०] ऊपर का होंठ ।

सधवा-स्त्री० [हिं० विधवा का अनु०] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो । सुहागिन ।

सधाना-स० हिं० 'साधना' का प्रे० ।

सधुक्कड़ी-वि० [हिं०साधू+उक्कड़(प्रत्य०)] साधुओं का-सा । साधुओं की तरह का । जैसे-सधुक्कड़ी बोली या कविता ।
स्त्री० 'साधु' होने का भाव । साधुता ।

सन्-पुं० [अ०] १. वर्ष । २.दे०'संवत्' ।

सन-पुं० [सं० शण] एक पौधा जिसके रेशों से रस्सियाँ और टाट बनते हैं ।
स्त्री० [अनु०] वेग से चलने या निकलने का शब्द ।
वि० दे० 'सन्न' ।
* प्रत्य० [सं० संग] से । साथ ।

सनअत-स्त्री० [अ०] [वि० सनअती] कारीगरी । शिल्प-कौशल ।

सनक-स्त्री० [सं० शंक=खटका] पागलों की-सी धुन, प्रवृत्ति या आचरण । झक ।

सनकना-अ० [हिं० सनक] १. पागल होना । २ पागलों की-सी बातें या आचरण करना ।

सनकारना*-अ० [हिं० सैन+करना] संकेत या इशारा करना ।

सनद-स्त्री० [अ०] [वि० सनदी] १. प्रमाण । सबूत । २. प्रमाण-पत्र ।

सनना-अ० [सं० संधम्] १. गीला हो कर किसी में मिलना । २. लीन होना ।

सनमानना*-स० [सं० सम्मान] सम्मान या सत्कार करना ।

सनसनाना-अ० [अनु०] (हवा का) सन सन शब्द करते हुए चलना या बहना ।

सनसनाहट-स्त्री० [अनु०] सन सन शब्द होने की क्रिया या भाव ।

सनसनी-स्त्री० [अनु० सन] १. शरीर के संवेदन-सूत्रों का एक प्रकार का स्पंदन जिसमें कोई अंग जड़ होकर सन सन करता हुआ जान पड़ता है । झुनझुनी । २. किसी विकट घटना के कारण लोगों में फैलनेवाली आश्चर्यपूर्ण स्तब्धता या उत्तेजना । उद्वेग । घबराहट । (सेन्सेशन)

सनातन-पुं० [सं०] १. अत्यंत प्राचीन काल । २. बहुत दिनों से चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परम्परा ।
वि० बहुत दिनों से चला आया हुआ ।

सनातन धर्म-पुं० [सं०] १. पुराना या परंपरागत धर्म । २.आज-कल का हिंदू धर्म, जिसमें पुराण, तंत्र, मूर्ति-पूजन आदि विहित और माननीय हैं ।

सनातनी-पुं० [सं० सनातन+ई(प्रत्य०)] सनातन धर्म का अनुयायी ।
वि० दे० 'सनातन' ।

सनाह-पुं० [सं० सन्नाह] कवच । बकतर ।

सनित*-वि० [हिं० सनना] सना या एक में मिला हुआ । मिश्रित । (अशुद्ध रूप)

सनीचर-पुं० दे० 'शनैश्चर' ।

सनेस(ा)-पुं०=संदेश।

सनेह॰-पुं०=स्नेह।

सनेही-वि० [सं० स्नेही] स्नेह या प्रेम रखनेवाला। प्रेमी।

सन्न-वि० [सं०शून्य या अनु०] १.संज्ञा-शून्य। निश्चेष्ट। जड़। २. स्तब्ध। भौचक। ३. डर से चुप।

सन्नद्ध-वि० [सं०] १. तैयार। उद्यत। २. काम में पूरी तरह से लगा हुआ।

सन्नयन-पुं० [सं०] १. ले जाना। २. लेख या लेख्य आदि के द्वारा किसी संपत्ति, विशेषतः अचल सम्पत्ति का एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। अंतरण। (कन्वेयन्स)

सन्नयनकार (लेखक)-पुं० [सं०] वह जो सन्नयन-सम्बन्धी लेख्य आदि लिखकर प्रस्तुत करता हो। (कन्वेयन्सर)

सन्नयन-लेखन-पुं० [सं०] सन्नयन विषयक लेख्य आदि लिखने का काम। (कन्वेयन्सिंग)

सन्नयन विद्या-स्त्री० [सं०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें सन्नयन सम्बन्धी लेख्य आदि प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (कन्वेयन्सिंग)

सन्नाटा-पुं० [हिं० सन से अनु०] १. वह अवस्था जिसमें कहीं कुछ भी शब्द न होता हो। नीरवता। निस्तब्धता। २.निर्जनता। एकान्तता। ३. भौचक्कापन। मुहा०-**सन्नाटे में आना**=स्तब्ध या हक्का-बक्का हो जाना।
४. पूरा मौन। चुप्पी।
मुहा०-**सन्नाटा खींचना या मारना**= बिलकुल चुप हो जाना। **सन्नाटा छाना**=सब लोगों का बिलकुल स्तब्ध हो जाना।
५. चहल-पहल आदि का अभाव। पुं० जोर से हवा चलने का शब्द।

सन्नाह-पुं० [सं०] कवच। बकतर।

सन्निकट-अव्य० [सं०] समीप। पास।

सन्निकर्ष-पुं० [सं०] [वि० सन्निकृष्ट] १. संबंध। लगाव। २. निकटता।

सन्निधाता-पुं० [सं० सन्निधातृ] प्राचीन भारतीय राजनीति में वह व्यक्ति जो राज-कोष का प्रधान अधिकारी होता था।

सन्निधि-स्त्री० [सं०] समीपता।

सन्निपात-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें कफ, वात और पित्त तीनों बिगड़ जाते हैं। त्रिदोष। सरसाम।

सन्निविष्ट-वि० [सं०] [संज्ञा सन्निवेश] किसी के अंतर्गत आया या मिलाया हुआ।

सन्निवेश-पुं० [सं०] [वि० सन्निविष्ट] १. साथ बैठना या स्थित होना। २ सजा या जमाकर रखना। ३ अँटना। समाना। ४. एकत्र होना। इकट्ठा होना। जुटना।

सन्निवेशन-पुं० [सं०] [वि० सन्निविष्ट] १. किसी को किसी दूसरी वस्तु या बात के अंतर्गत लाना। सन्निविष्ट करना। मिलाना। २ सजा, जमा या लगाकर रखना।

सन्निहित-वि० [सं०] १. साथ या पास रखा हुआ। २. पास का।

सन्मान-पुं० दे० 'सम्मान'।

सन्यास-पुं० दे० 'संन्यास'।

सपत्नी-स्त्री० [सं०] पत्नी की दृष्टि से, उसके पति की दूसरी स्त्री। सौत। सौतिन।

सपत्नीक-वि० [सं०] पत्नी के सहित।

सपना-पुं० [सं० स्वप्न] अच्छी तरह नींद न आने की दशा में दिखाई देनेवाला मानसिक दृश्य या घटना। स्वप्न।

सपरदाई-पुं० [सं० संप्रदायी] वेश्या

के साथ तबला या सारंगी बजानेवाला आदमी। समाजी।

सपरना-अ० [सं० संपादन] १. काम का पूरा होना। निपटना। २. काम का हो सकना।

सपराना-स० हिं० 'सपरना' का स०।

सपाट-वि० [सं० स+पट्ट] जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो। सम-तल। (विशेषतः भूमि या मैदान)

सपाटा-पुं० [सं० सर्पण] १. चलने या दौड़ने का वेग। २. तीव्र गति। दौड़। यौ०-सैर सपाटा=मन बहलाने के लिए कहीं जाकर घूमना-फिरना।

सपिंड-पुं० [सं०] एक-ही कुल के वे लोग जो एक-ही पितरों को पिंड देते हों।

सपुर्द-वि० [फा० सिपुर्द] [भाव० सपुर्दगी] किसी के जिम्मे किया हुआ। किसी को सौंपा हुआ।

सपूत-पुं० [सं० सत्पुत्र] अच्छा और योग्य पुत्र।

सप्त-वि० [सं०] छः और एक। सात।

सप्तक-पुं० [सं०] १. सात वस्तुओं का समूह। २ संगीत में सातों स्वरों का समूह।

सप्तपदी-स्त्री० [सं०] विवाह के समय वर और वधू का अग्नि की सात परिक्रमाएँ करना। भाँवर। भँवरी।

सप्त-भुज-पुं० [सं०] सात भुजाओंवाला क्षेत्र। (हेप्टैगन)

सप्तम-वि०[सं०] [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमी-स्त्री०[सं०] १. चान्द्र मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि। २. अधिकरण कारक की विभक्ति। (व्याकरण)

सप्तर्षि-पुं० [सं०] १. इन सात ऋषियों का समूह या मंडल-(क)-गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि; अथवा (ख)-मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। २. वे सात तारे जो साथ रहकर ध्रुव की परिक्रमा करते हुए दिखाई पड़ते हैं।

सप्तशती-स्त्री० [सं०] सात सौ (छन्दों आदि) का समूह। सतसई।

सप्ताह-पुं०[सं०] १.सात दिनों का काल। हफ्ता। २. सोमवार से रविवार तक के सात दिन। ३.भागवत, रामायण आदि की पूरी कथा सात दिनों में पढ़ना या सुनना।

सफर-पुं० [अ०] यात्रा।

सफर-मैना-स्त्री० [अं० सैपर+माइनर] सेना के व सिपाही जो खाई खोदने, जंगल काटने या रास्ता साफ करने के लिए उसके आगे आगे चलते हैं।

सफरी-वि० [अ० सफ़र] सफर में काम आनेवाला। (छोटा और हलका) स्त्री० [स० शफरी] सौरी मछली। स्त्री० [देश०] धातु का एक प्रकार का पीला वरक या पत्ती।

सफल वि० [सं०] [स्त्री० सफला भाव० सफलता] १. जिसमें फल लगा हो। २. जिसका कुछ फल या परिणाम हो। सार्थक। ३ जिसने प्रयत्न करके कार्य या उद्देश्य सिद्ध कर लिया हो। कृतकार्य। कामयाब।

सफलता-स्त्री० [सं०] 'सफल' होने का भाव। कार्य की सिद्धि। कामयाबी।

सफा-वि० दे० 'साफ'। पुं० [अ० सफ़हः] पुस्तक का पृष्ठ।

सफाई-स्त्री० [अ० सफ़ा] १. 'साफ' होने की क्रिया या भाव। २. लड़ाई-झगड़े आदि का निपटारा। दुर्भाव न रह जाना। ३. अभियुक्त का अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करना।

सफा-चट-वि० [हिं० साफ़] बिलकुल साफ़ या चिकना ।

सफाया-पुं० [अ० साफ़] १. कुछ भी बाकी न रह जाना । पूरी सफाई । २. पूर्ण विनाश ।

सफ़ीना-पुं० [अ० सफ़ीनः] अदालत या पुलिस की ओर से हाज़िर होने का बुलावा ।

सफेद-वि० [फा० सुफ़ैद] उजला ।

सफेद दाग़-पुं० [हिं० सफेद+अ० दाग़] श्वेत-कुष्ठ नामक रोग में शरीर पर होनेवाला सफेद धब्बा । श्वेत कुष्ठ ।

सफेद-पोश-पुं० [फा०] [भाव० सफेद-पोशी] १. साफ कपड़े पहननेवाला । २. साधारण गृहस्थ, पर भला आदमी ।

सफेदा-पुं० [फा० सुफ़ैदः] १ जस्ते का चूर्ण जो दवा के काम में आता है । २. एक प्रकार का बढ़िया आम ।

सफेदी-स्त्री० [फा० सुफ़ैदी] १ सफेद होने का भाव । श्वेतता । उजलापन ।
मुहा०-सफेदी आना=बाल सफेद होना । बुढ़ापा आना ।
२. दीवारों आदि पर चूने की सफेद रंग की पोताई ।

सब-वि० [सं० सर्व] १. जितने हों, वे कुल । समस्त । २. पूरा । सारा ।

सबक-पुं० [फा०] १. पाठ । २. शिक्षा ।

सबज-वि० दे० 'सब्ज' ।

सबद-पुं० [सं० शब्द] १. दे० 'शब्द' । २. किसी साधु-महात्मा के वचन ।

सबब-पुं० [अ०] कारण । वजह ।

सबर-पुं० [अ० सब्र] संतोष । धैर्य ।
मुहा०-किसी का सबर पड़ना=किसी के चुपचाप सहन किये हुए मानसिक कष्ट का प्रकारान्तर से प्रतिफल मिलना ।

सबल-वि० [सं०] [भाव० सबलता] १. बलवान् । ताकतवर । २. जिसके साथ सेना हो ।

सबार*-क्रि० वि० [हिं० सबेरा] शीघ्र ।

सबील-स्त्री० [अ०] १ युक्ति । उपाय । तरकीब । २. पौसला ।

सबूत-पुं० [अ०] प्रमाण ।
वि० [अ० साबित] जो टूटा न हो । पूरा ।

सबेरा-पुं०=सवेरा ।

सब्ज-वि० [फा०] १. हरा । (रंग) २. कच्चा और ताज़ा (फल, फूल आदि) । ३. सुन्दर और लहलहाता हुआ ।
मुहा०-सब्ज बाग़ दिखलाना=फँसाने के लिए झूठी आशाएँ दिखाना ।

सब्ज-कदम-पुं० [फा०] वह जिसका आना अशुभ सिद्ध हो । मनहूस ।

सब्जा-पुं० [फा० सब्ज़] १. हरियाली । २. पन्ना नामक रत्न । ३. वह घोड़ा जिसका रंग कालापन लिये सफेद हो ।

सब्जी-स्त्री० [फा०] १ हरापन । २. हरियाली । ३. हरी तरकारी । साग-भाजी ।

सब्र-पुं० दे० 'सबर' ।

सभा-स्त्री० [सं०] १. परिषद् । गोष्ठी । समिति । २. वह संस्था जो कोई विशेष कार्य करने या किसी विषय पर विचार करने के लिए बनी हो ।

सभापति-पुं० [सं०] सभा का प्रधान, नेता या मुखिया । (प्रेसिडेन्ट)

सभा-मंडप-पुं० [सं०] १ वह स्थान जहाँ कोई सभा या समाज एकत्र होता हो । २ देव-मंदिरों में गर्भ-गृह के सामने का वह स्थान जहाँ भक्त लोग बैठकर भजन, कीर्तन आदि करते हैं । जग-मोहन ।

सभासद-पुं० [सं०] वह जो किसी सभा में उसके अंग के रूप में और अधिकार-पूर्वक रहता हो । सदस्य । (मेम्बर)

सभिक–पुं० [सं०] वह जो अपने यहाँ लोगों को बैठाकर जूआ खेलाता और बदले में उनसे कुछ धन लेता हो। फड़बाज।

सभीत–वि० दे० 'भीत'।

सभ्य–वि० [सं०] अच्छे आचार-विचार रखने और भले आदमियों का-सा व्यवहार करनेवाला। शिष्ट। (सिविल)

पुं० १. सभा का सदस्य। सभासद। २. वह जिसका व्यवहार सज्जनों और शिष्टों का-सा हो। भला आदमी।

सभ्यता–स्त्री० [सं०] १ 'सभ्य' होने का भाव। २. सदस्यता। ३. शील और सज्जन होने की अवस्था या भाव। भलमनसत। शराफ़त। ४. किसी जाति या राष्ट्र की वे सब बातें जो उसके सौजन्य तथा शिक्षित और उन्नत होने की सूचक होती हैं। (सिविलिज़ेशन)

समंजन–पुं० [सं०] [वि० समंजित] १. ठीक करना या बैठाना। २ लेन-देन का हिसाब या इसी तरह का और काम ठीक करके बैठाना। (ऐडजस्टमेन्ट) विशेष दे० 'संधान' ४, ५.।

समंजस–वि० [सं०] प्रसंग, उल्लेख आदि के विचार से ठीक बैठनेवाला। उपयुक्त। ठीक।

समंदर–पुं० [सं० समुद्र] १. सागर। समुद्र। २. बड़ा तालाब या झील।

पुं० [फा०] एक प्रकार का कल्पित चूहा जिसकी उत्पत्ति आग से मानी जाती है।

सम–वि०[सं०] [स्त्री०समा, भाव० समता] १. समान। तुल्य। बराबर। २ जिसका तल बराबर हो, ऊबड़-खाबड़ न हो। चौरस। ३. (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस।

पुं० १. संगीत में वह स्थान जहाँ लय के विचार से गति की समाप्ति होती है और जहाँ गाने-बजानेवालों का सिर हिलता या हाथ आप से आप आघात-सा करता है। २.साहित्य में वह अर्थालंकार जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग का वर्णन होता है।

पुं० [अ०] विष। ज़हर।

सम-कक्ष–वि० [सं०] समान। तुल्य।

सम-कालीन–वि०[सं०] जो (दो या कई) एक ही समय में हुए हों। (कन्टेम्पररी)

सम-कोण–पुं० [सं०] ज्यामिति में ९० अंशों का कोण जो किसी बेड़ी रेखा पर बिलकुल खड़ी सीधी रेखा के आकर मिलने से बनता है। (राइट ऐंगिल)

वि० [सं०] (चतुर्भुज) जिसके आमने-सामने के सभी सभी कोण समान हों।

समक्ष–अव्य० [सं०] सामने। सम्मुख।

समग्री*–स्त्री० = सामग्री।

समग्र–वि० [सं०] सारा। सब।

समझ–स्त्री० [सं० संज्ञान] बुद्धि। अक्ल।

समझदार–वि० [हिं० समझ+फा० दार] बुद्धिमान्। अक्लमन्द।

समझना–स० [हिं० समझ] कोई बात अच्छी तरह विचार करके ध्यान में लाना।

समझाना–स० [हिं० समझना] ऐसी बात करना जिससे कोई समझ जाय।

समझाव(ा)–पुं० [हिं० समझाना] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता–पुं० [हिं० समझ] लेन-देन, व्यवहार, झगड़े, विवाद आदि के सम्बन्ध में सब पक्षों में आपस में होनेवाला निपटारा। (एग्रीमेन्ट, काम्प्रोमाइज़)

सम-तल–वि० [सं०] जिसकी सतह या तल बराबर हो। सपाट।

समता–स्त्री० [सं०] सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। (इक्वैलिटी)

समतूल*-वि० दे० 'सम तोल'।

सम-तोल-वि० [सं० सम+तोल] महत्त्व आदि के विचार से समान। बराबर।

समतोलन-पुं० [सं०] १. महत्त्व आदि के विचार से सबको समान रखना। २. दोनों पलड़ों या पक्षों को समान रखना। (बैलेन्सिंग)

समदर्शी-वि० [सं० समदर्शिन्] सबको एक-सा समझनेवाला।

समधिक-वि० [सं०] बहुत। अधिक।

समधियाना-पुं० [हिं० समधी] समधी का घर।

समधी-पुं० [सं० संबंधी] किसी के लड़के या लड़की का ससुर।

समन-पुं० दे० 'सम्मन'।

*पुं० दे० 'शमन'।

समनुज्ञा-स्त्री० [सं०] [वि० समनुज्ञात] किसी विषय की पुष्टि या समर्थन करते हुए उसे मान्य करना। (सैन्क्शन)

समन्वय-पुं० [सं०] [वि० समन्वित] १.विरोध का अभाव। मिलान। मिलाप। २.कार्य और कारण की संगति या निर्वाह।

समय-पुं० [सं०] १. सबेरे-सन्ध्या या दिन-रात आदि के विचार से काल का कोई मान। वक्त। २. अवसर। मौका। ३. अवकाश। फुरसत।

समय-सारिणी-स्त्री० [सं०] कोष्ठकों की वह सारिणी जिसमें भिन्न भिन्न समयों पर होनेवाले कार्यों का विवरण सूची के रूप में होता है। (टाइम टेबुल) जैसे-विद्यालय या रेल की समय-सारिणी।

समर-पुं० [सं०] युद्ध। लड़ाई।

समरत्थ(थ)-वि० = समर्थ।

समर-भूमि-स्त्री० [सं०]युद्ध-क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

सम-रस-वि० [सं० सम+रस] [भाव० समरसता] १. एक ही प्रकार के रसवाले (पदार्थ)। २ एक ही तरह या विचार के। ३. सदा एक-सा रहनेवाला।

समराना*-स० [हिं० सँवारना] सजाना या सजवाना।

समर्चना-स्त्री० [सं०] भली भाँति की जानेवाली अर्चना।

समर्थ-वि० [सं०] [भाव० समर्थता] १. कोई काम करने का सामर्थ्य या शक्ति रखनेवाला। २. दूसरे पदार्थों, कार्यों आदि पर अपना प्रभाव डालने की शक्ति रखनेवाला। (एफेक्टिव) ३.काम में आने या प्रयुक्त होने के योग्य।

समर्थक-वि० [सं०] समर्थन करनेवाला।

समर्थन-पुं० [सं०] [वि० समर्थनीय, समर्थक, समर्थ्य] यह कहना कि अमुक विचार, सुझाव या प्रस्ताव ठीक है या इसके अनुसार काम होना चाहिए। किसी मत का पोषण। (सेकेंडिंग)

समर्थित-वि० [सं०] जिसका समर्थन हुआ हो।

समर्पक-वि० [सं०] १. समर्पण करनेवाला। २. कहीं पहुँचाने के लिए कोई माल देनेवाला। (कन्साइनर)

समर्पण-पुं० [सं०] १.किसी को आदर-पूर्वक कुछ देना। भेंट या नजर करना। २.धर्म-भाव से या श्रद्धा-भक्तिपूर्वक कुछ कहते हुए अर्पित करना। (डेडीकेशन) ३.अधिकार, स्वामित्व, भार आदि देना। ४. जमा करने, सुरक्षापूर्वक रखने या कहीं पहुँचाने के लिए किसी को देना। (कन्साइन्मेन्ट, अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

समर्पना*-स० [सं० समर्पण] समर्पण करना। सौंपना।

समर्पित-वि०[सं०] १.जो समर्पण किया गया हो। २. (माल) जो कहीं भेजने के लिए दिया गया हो। (कन्साइन्ड)

समर्पितक-पुं० [सं० समर्पित] वह माल जो कहीं भेजने या पहुँचाने के लिए किसी को दिया गया हो। (कन्साइन्मेन्ट)

समर्पिती-पुं० [सं० समर्पित] १. वह जिसे कुछ समर्पित या भेंट किया गया हो। २. वह जिसके नाम कोई माल भेजा गया हो। (कन्साइनी)

सम-वयस्क-वि० [सं०] समान वयस या अवस्थावाला। बराबर की उमर का।

समवर्ती-वि० [सं० समवर्तिन्] किसी के साथ समान रूप और समान भाव से होने, रहने या चलनेवाला। (कॉन्करेन्ट)

समवाय-पुं० [सं०] १.समूह। झुंड। २.अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का सम्बन्ध। ३. विधि या कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार व्यापारिक कार्य के लिए बनी हुई वह संस्था जिसके हिस्सेदारों को अपनी लगाई हुई पूँजी के हिसाब से उस व्यापार से होनेवाले लाभ का अंश मिलता है। (कम्पनी)

सम-वृत्त-पुं० [सं०] वह वृत्त या छंद जिसके चारों चरण समान हों।

समवेत-वि० [सं०] इकट्ठा या जमा किया हुआ। एकत्र।

समष्टि-स्त्री० [सं०] १. जितने हों, उन सबका समूह, जिसमें उसके सभी अंगों या व्यष्टियों का समावेश या अन्तर्भाव होता है। 'व्यष्टि' का उलटा। २. साधुओं का वह भंडारा जिसमें सभी स्थानिक साधु निमंत्रित होते हैं।

समष्टिवाद-पुं०[सं०] आधुनिक राजनीति में समाजवाद का वह विकसित और उग्र रूप, जिसमें कहा जाता है कि सब पदार्थों पर राष्ट्र के सब लोगों का समान रूप में अधिकार होना चाहिए; सम्पत्ति पर व्यक्तियों का अधिकार नहीं होना चाहिए। (कम्यूनिज्म)

समष्टिवादी-पुं० [सं०] समष्टिवाद का सिद्धान्त माननेवाला। (कम्यूनिस्ट)

समस्त-वि० [सं०] १. सब। कुल। समग्र। २. समास के नियमों से मिला या मिलाया हुआ। समास-युक्त।

समस्या-स्त्री० [सं०] १.वह उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसंग। (प्रॉब्लेम) २.छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सामने रखा जाता है।

समस्या-पूर्ति-स्त्री०[सं०] किसी समस्या, छन्द आदि के अन्तिम चरण या पद के आधार पर उससे पहले रहने के योग्य चरण बनाकर छंद आदि पूरा करना।

समाँ-पुं० [सं० समय] समय। वक्त। मुहा०-समाँ बँधना=(संगीत आदि का) इतनी उत्तमता से संपन्न होना कि लोग स्तब्ध हो जायँ।

समांतर-वि०[सं०] (दो या अधिक रेखाएँ आदि जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अन्तर पर रहें। (पैरेलल)

समाई-स्त्री० [हिं० समाना] १. समाने की क्रिया या भाव। २. सामर्थ्य। शक्ति। ३. औकात। बिसात।

समाख्यान-पुं० [सं०] किसी घटना की सभी मुख्य मुख्य बातें क्रम से कहना या बतलाना। (नैरेशन)

समागत-वि० [सं०] आया हुआ।

समागम-पुं० [सं०] १. आगमन।

आना। २. मिलना। ३. कुछ लोगों का आपस में मिलकर किसी उद्देश्य से संबद्ध होना। (एसोसिएशन) ४. सम्भोग। मैथुन।

समाचार-पुं० [सं०] संवाद। ख़बर। हाल।

समाचार-पत्र-पुं० [सं० समाचार+पत्र] नियमित समय पर प्रकाशित होनेवाला वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों। अख़बार।

समाज-पुं० [सं०] १. समूह। गरोह। २. एक जगह रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोगों का वर्ग, दल या समूह। समुदाय। ३ किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा। (सोसाइटी, उक्त सभी अर्थों में)

समाजवाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि समाज के आर्थिक क्षेत्र में बहुत बढ़ी हुई विषमता दूर करके समता स्थापित की जानी चाहिए। (सोशलिज़्म)

समाजवादी-पुं० [सं०] वह जो समाजवाद का सिद्धान्त मानता हो। (सोशलिस्ट)

समाज शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जो मनुष्यों को सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज और संस्कृति की उत्पत्ति, विकास आदि का विवेचन करता है। (सोशियालोजी)

समाज-शास्त्री-पुं० [सं० समाज-शास्त्रिन्] समाज-शास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

समादर-पुं० [सं०] [वि० समादृत] यथेष्ट आदर या सम्मान।

समादृत-वि० [सं०] जिसका ख़ूब आदर हुआ हो। सम्मानित।

समादेश-पुं० [सं०] [वि० समादिष्ट] १. अधिकारपूर्वक किसी को कोई काम करने का आदेश या आज्ञा देना। २. इस प्रकार दिया हुआ आदेश या आज्ञा। (कमांड) ३. वह आज्ञा जो न्यायालय कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। (इनजंक्शन)

समादेशक-पुं० [सं०] १. वह जो किसी को कोई काम करने का आदेश दे। २. वह प्रधान सैनिक अधिकारी जिसके आदेश से सेना के सब काम होते हैं। (कमांडर) यौ०-प्रधान समादेशक।

समाधान-पुं० [सं०] [वि० समाधानीय] १. किसी का संदेह दूर करनेवाली बात या काम। २. मत-भेद या विरोध दूर करना। ३. निष्पत्ति। निराकरण। ४. समाधि।

समाधानना*-स० [सं० समाधान] १ किसी का समाधान या संतोष करना। २. सांत्वना देना।

समाधि-स्त्री० [सं०] १. ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। २. योग-साधन का चरम फल, जिससे मनुष्य सब क्लेशों से मुक्त होकर अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त करता है। ३. वह स्थान जहाँ किसी का मृत शरीर या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों। ४ प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी संज्ञा या चेतना नष्ट हो जाती है और वे कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते। ५. एक अर्थालंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से किसी कार्य्य के सुगमतापूर्वक होने का वर्णन होता है।

समाधिस्थ-वि० [सं०] जो समाधि लगाये हुए हो। समाधि में स्थित।

समान-वि० [सं०] [भाव० समानता] आकार, गुण, मूल्य, महत्त्व आदि के विचार से एक-जैसे। बराबर। तुल्य। *स्त्री० दे० 'समानता'।

समानता-स्त्री० [सं०] बराबरी।

समानांतर-वि० दे० 'समांतर'।

समाना-अ० [सं० समावेश] किसी वस्तु के अन्दर पहुँचकर भर जाना या उसमें लीन हो जाना। भरना।
स० अंदर करना। भरना।

समानार्थ-पुं० [सं०] वे शब्द जिनका अर्थ एक हो या एक-सा हो। पर्य्याय।

समापक-वि० [सं०] समाप्त करनेवाला।

समापत्ति-स्त्री० [सं०] युद्ध, दंगे, दुर्घटना आदि के कारण लोगों के प्राणों या शरीर पर आनेवाला संकट। (कैजुएेलिटी)

समापन-पुं० [सं०] [वि० समाप्य, समापनीय] १. कार्य समाप्त या पूरा करना। (डिस्पोजल) २. विवाद, विचार आदि के समय उसका अन्त करने के लिए कोई विशेष बात कहना। (वाइंडिंग अप) ३. मार डालना।

समापात-पुं० [सं०] दो कार्यों या बातों का संयोग-वश साथ साथ या एक ही समय में घटित होना। (कॉयनसाइडेन्स)

समापिका क्रिया-स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य और फलतः उसके सूचक वाक्य या उप-वाक्य की समाप्ति सूचित होती हो।

समाप्त-वि० [सं०] जो अन्त तक पहुँचकर पूरा हो गया हो। खतम।

समाप्ति-स्त्री० [सं०] (कार्य या बात का) खतम या पूरा होना।

समायुक्त-वि० [सं०] आवश्यकता पड़ने पर दिया या पास पहुँचाया हुआ। (सप्लायड)

समायुक्तक-पुं० दे० 'समायोजक'।

समायोग-पुं० [सं०] [वि० समायुक्त] ऐसा प्रबन्ध करना कि लोगों को आवश्यकता की वस्तुएँ उन्हें मिल जायँ या उनके पास पहुँच जायँ। (सप्लाई)

समायोजक-पुं० [सं०] वह जो समायोग करता हो। (सप्लायर)

समायोजन-पुं० दे० 'समायोग'।

समारंभ-पुं० [सं०] १. अच्छी तरह आरंभ या शुरू होना। २. समारोह।

समारना*-स० = सँवारना।

समारोह-पुं० [सं०] १. भारी आयोजन। धूम-धाम। २. बहुत धूम-धाम से होनेवाला उत्सव या कोई बड़ा काम।

समालोचक-पुं० [सं०] समालोचना करनेवाला व्यक्ति।

समालोचना-स्त्री० [सं०] १. अच्छी तरह देखना-भालना जिसमें दोषों और गुणों का पूरा पता लग जाय। २. इस प्रकार देखे हुए गुणों और दोषों की विवेचनावाला लेख। आलोचना। (रिव्यू)

समावर्त्तन-पुं० [सं०] १. वापस आना। लौटना। २. एक प्राचीन वैदिक संस्कार जो ब्रह्मचारी के अध्ययन समाप्त कर लेने पर गुरु-कुल में उसके स्नातक बनकर लौटने के समय होता था। ३. आधुनिक विश्वविद्यालयों में वह सभा जिसमें उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियों को पदवियाँ दी जाती हैं। पदवीदान समारंभ। (कानवोकेशन)

समावास-पुं० दे० 'अधिवास'।

समावेश-पुं० [सं०] [वि० समाविष्ट] १. एक साथ या एक जगह रहना। २. एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अंतर्गत होना।

समास-पुं० [सं०] १ समर्थन। २. संग्रह। ३. सम्मिलन। ४. व्याकरण के नियमों के अनुसार दो शब्दों का मिलकर एक होना। (संस्कृत और हिन्दी में यह चार प्रकार का होता है-अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व।)

समाहरण-पुं० [सं०] १. एक स्थान पर इकट्ठा करना। संग्रह। २. राशि। ढेर। ३. कर, चन्दा, प्राप्य धन आदि उगाहना। (कलेक्शन) ४. मिलाना। ५. क्रम, नियम आदि से सजकर या ठीक ढंग से इकट्ठा होना। (फॉरमेशन) जैसे-वायुयानों का समाहरण।

समाहर्त्ता-पुं० [सं० समाहर्तृ] १. समाहार या संग्रह करनेवाला। २. मिलानेवाला। ३. राज-कर या प्राप्य धन आदि उगाहनेवाला अधिकारी। (कलेक्टर)

समाहार-पुं० दे० 'समाहरण'।

समाहित-वि० [सं०] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ; विशेषतः सुन्दर और व्यवस्थित रूप से इकट्ठा किया हुआ। केंद्रित। २. शांत। ३. समाप्त। ४. स्वीकृत।

समिति-स्त्री० [सं०] १. सभा। समाज। २. वैदिक काल की वह सभा या संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था। ३. किसी विशेष कार्य्य के लिए बनी हुई छोटी सभा। (कमिटी)

समिद्ध-वि० [सं०] १. प्रज्वलित। २. भड़का या भड़काया हुआ। उत्तेजित।

समिध-पुं० [सं०] अग्नि।

समिधा-स्त्री० [सं० समिध] हवन-कुंड में जलाने की लकड़ी।

समीकरण-पुं० [सं०] १. समान या बराबर करना। २. गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात राशि जानी जाती है।

समीक्षक-पुं० [सं०] १. वह जो समीक्षा करता हो। छान-बीन और जाँच-पड़ताल करनेवाला। २ समालोचक।

समीक्षा-स्त्री० [सं०] [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १. छान-बीन या जाँच-पड़ताल करने के लिए कोई वस्तु या बात अच्छी तरह देखना। २. आलोचना। समालोचना। ३. मीमांसा-शास्त्र।

समीचीन-वि० [सं०] [भाव० समीचीनता] १. उपयुक्त। ठीक। २. उचित। वाजिब।

समीप-वि० [सं०] [भाव० समीपता] निकट। पास। नजदीक।

समीर(ण)-पुं० [सं०] वायु। हवा।

समुचित-वि० [सं०] १. उचित। ठीक। २. जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

समुच्चय-पुं० [सं०] [वि० समुच्चित] १. कुछ वस्तुओं का एक में मिलना। (कॉम्बिनेशन) २. समूह। राशि। ३. कुछ वस्तुओं या बातों का एक साथ एक जगह इकट्ठा होना। (क्यूमुलेशन) ४. एक अलंकार जिसमें कई भावों के एक साथ उदित होने अथवा कई कारणों से एक ही कार्य्य होने का वर्णन होता है।

समुज्ज्वल-वि०[सं०] [भाव०समुज्ज्वलता] १. विशेष रूप से उज्ज्वल या प्रकाशमान। २. चमकीला।

समुझ*-स्त्री० = समझ।

समुत्थान-पुं० [सं०] १ उठने की क्रिया या भाव। २. उत्पत्ति। ३ आरंभ।

समुत्सुक-वि०[सं०] [भाव०समुत्सुकता] विशेष रूप से उत्सुक।

समुदय-पुं०, वि० दे० 'समुदाय'।

समुदाय-पुं० [सं०] १. समूह। ढेर। २. झुंड। गरोह। (एसेम्बली) वि० सब। समस्त। कुल।

समुदाव*-पुं० = समुदाय।

समुद्र-पुं० [सं०] १. खारे पानी की वह विशाल राशि जो पृथ्वी के स्थल-भाग को चारों ओर से घेरे हुए है। सागर। अंबुधि। उदधि। २. किसी विषय के

झाग या गुफा का बहुत बड़ा आगार।

समुद्र-यात्रा-स्त्री० [सं०] समुद्र पार करके दूसरे देश में जाना।

समुद्री-वि० दे० 'समुद्रीय'।

समुद्रीय-वि० [सं०] समुद्र-संबंधी।

समुन्नत-वि० [सं०] भली भाँति उन्नत।

समुन्नति-स्त्री० [सं०] [वि० समुन्नत] १. यथेष्ट उन्नति। २. उच्चता। ऊँचाई।

समुहाना*-अ० [सं० सम्मुख] सामने आना।

समूर-पुं० [अ०] साबर। (हिरन)

समूल-वि० [सं०] जिसका मूल या हेतु हो। क्रि० वि० जड़ से। मूल सहित।

समूह-पुं० [सं०] १. बहुत-सी चीजों का ढेर। राशि। २ मनुष्यों का समुदाय। झुंड।

समृद्ध-वि० [सं०] संपन्न। धनवान्।

समृद्धि-स्त्री० [सं०] धन, वैभव आदि की अधिकता। संपन्नता।

समेटना-स० [हिं० सिमटना] बिखरी या फैली हुई चीजें इकट्ठी करना।

समेत-वि० [सं०] संयुक्त। मिला हुआ। अव्य० सहित। साथ।

समै(या)*-पुं० = समय।

समोखना*-स० [सं० सम्मुख] बहुत ताकीद से या जोर देकर कहना।

समोना*-स० [?] मिलाना।

समौ*-पुं० = समय।

सम्मत-वि० [सं०] जिसकी राय मिलती हो। सहमत। (एग्रीड)

सम्मति-स्त्री० [सं०] १ सलाह। राय। २. आदेश। अनुज्ञा। ३. मत। अभिप्राय। ४. किसी विषय में कुछ लोगों का एक मत होना। (एग्रीमेन्ट) ५. किसी के प्रस्ताव या विचार को ठीक और उचित मानकर उसके निर्वाह के लिए दी जाने-वाली अनुमति। (कॉन्सेन्ट)

सम्मन-पुं० [अं० समन] न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमें किसी को उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है।

सम्मान-पुं० [सं०] [वि० सम्मानित] मान। प्रतिष्ठा। इज्जत।

सम्मानना-स्त्री० दे० 'सम्मान'। * स० सम्मान या आदर करना।

सम्मिलन-पुं० [सं०] मिलाप। मेल।

सम्मिलित-वि० [सं०] मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।

सम्मिश्रक-पुं० [सं०] १ वह जो किसी प्रकार का सम्मिश्रण करता हो। २. वह व्यक्ति जो ओषधियों, विशेषतः विलायती ओषधियों आदि के मिश्रण प्रस्तुत करता हो। (कम्पाउडर)

सम्मिश्रण-पुं० [सं०] [वि० सम्मिश्रक] १. मिलने की क्रिया। २. मेल। मिलावट। ३. औषध तैयार करने के लिए कई प्रकार की ओषधियाँ एक में मिलाना। (कम्पाउंडिंग)

सम्मुख-अव्य० [सं०] सामने। समक्ष।

सम्मेलन-पुं० [सं०] १. मनुष्यों का, किसी विशेष उद्देश्य से अथवा किसी विशेष विषय पर विचार करने के लिए, एकत्र होनेवाला समाज। (कॉन्फरेन्स) २. जमावड़ा। जमघट। ३. मिलाप। संगम।

सम्यक्-वि० [सं०] पूरा। सब। क्रि० वि० सब तरह से। २. अच्छी तरह।

सम्राज्ञी-स्त्री० [सं०] १. सम्राट् की पत्नी। २. साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट्-पुं० [सं० सम्राज्] वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन अनेक राजा या राज्य हों। महाराजाधिराज। शाहंशाह। (एम्परर)

सयन*-पुं० दे० 'शयन'।

सयान*-पुं० १. दे० 'सयाना'। २. दे० 'सयानपन'।

सयानप-स्त्री० दे० 'सयानपन'।

सयानपन-पुं० [हिं० सयाना+पन] १.'सयाना' होने का भाव। २.चालाकी।

सयाना-पुं० [सं० सज्ञान] १. अधिक या पूरी अवस्थावाला। वयस्क। २. बुद्धिमान्। ३.चतुर। ४ चालाक। धूर्त।

सरंजाम-पुं० [अ० सर-अंजाम] १. कार्य की समाप्ति। २ व्यवस्था। प्रबंध। ३. सामग्री। सामान।

सर-पुं० [सं० सरस्] तालाब।

* पुं० दे० 'शर'।

* स्त्री० [सं० शर] चिता।

पुं० [फा०] १. सिर। २. सिरा।

वि० १. बलपूर्वक दबाया हुआ। २. जीता हुआ। पराजित। ३. अभिभूत।

सरकंडा-पुं० [सं० शरकांड] सरपत की जाति की एक वनस्पति।

सरकना-अ० दे० 'खिसकना'।

सरकस-पुं० [अं०] पशुओं और कला-बाजी आदि का कौशल या ऐसा कौशल दिखलानेवालों का दल।

सरकार-स्त्री० [फा०] [वि० सरकारी] १. मालिक। प्रभु। २ देश का शासन करनेवाली संस्था या सत्ता।

सरकारी-वि० [फा०] १. सरकार या मालिक का। २. राज्य का। राजकीय।

सरखत-पुं० [फा०] वह कागज या छोटी बही जिसपर मकान आदि के किराये या इसी प्रकार के और लेन-देन का ब्योरा लिखा जाता है।

सरग*-पुं० = स्वर्ग।

सरग-तिय*-स्त्री०=अप्सरा।

सरगना-पुं० [फा० सर्गनः] सरदार।

सरगम-पुं० [हिं० सा, रे, ग, म,] संगीत में सातों स्वरों का समूह या उनके चढ़ाव-उतार का क्रम। स्वर-ग्राम।

सरजना-स० दे० 'सिरजना'।

सरजा-पुं० [फा० सरजाह] १. सरदार। २. सिंह। शेर।

सरणी-स्त्री० [सं०] १. मार्ग। रास्ता। २. ढर्रा। ढंग। ३. लकीर। रेखा।

सर-ताज-पुं० दे० 'सिर-ताज'।

सर-तारा*-वि० [हिं० सिर+तरना ?] जो अपना काम करके निश्चिन्त हो गया हो।

सरद-वि० दे० 'सर्द'।

सर-दर-क्रि० वि० [फा० सर+दर=भाव] १. एक सिरे से। २. सबको एक मानकर उनके विचार से। औसत में।

सरदा-पुं० [फा० सर्दः] एक प्रकार का बढ़िया खरबूजा।

सरदार-पुं० [फा०] [भाव० सरदारी] १. नायक। अगुआ। २. शासक। ३. अमीर। रईस।

सरदार-तंत्र-पुं० दे० 'कुल-तंत्र'।

सरदी-स्त्री० [फा० सर्दी] १. शीतलता। ठंडक। २. जाड़ा। ३. प्रतिश्याय। जुकाम।

सरधन*-वि०=धनवान।

सर-धर*-पुं० दे० 'तरकश'।

सरधा-स्त्री०=श्रद्धा।

पुं० दे० 'सरदा'।

सरन*-स्त्री०=शरण।

सरनदीप-पुं० दे० 'सिंहल द्वीप'।

सरना-अ० [सं० सरण] १. सरकना। खिसकना। २.हिलना-डोलना। ३. काम चलना या निकलना। ४. किया जाना। पूरा होना।

सर-नाम-वि० [फा०] प्रसिद्ध। मशहूर।

सरनामा-पुं० [फा०] १. शीर्षक। २. पत्र के आरंभ का संबोधन। ३. लिफाफे आदि पर लिखा जानेवाला पता।

सरनी*-स्त्री० दे० 'सरणी'।

सरपंच*-पुं० [फा० सर+हिं० पंच] पंचों में प्रधान व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

सर-पंजर*-पुं० [सं० शर+पिंजर] बाणों का बना हुआ पिंजड़ा या घेरा।

सरपट-पुं० [सं० सर्पण] घोड़े की एक प्रकार की तेज चाल।

क्रि० वि० घोड़े की उक्त चाल की तरह तेज या दौड़ते हुए।

सर-पेच-पुं० [फा०] पगड़ी के ऊपर लगाने की जड़ाऊ कलगी।

सरफराना*-अ० [अनु०] व्याकुल होना। घबराना।

सरबंधी*-पुं० [सं० शरबंध] तीरंदाज। धनुर्धर।

पुं० दे० 'संबंधी'।

सरब*-वि० दे० 'सर्व'।

सर-बराह-पुं० [फा०] १. प्रबंध-कर्त्ता। व्यवस्थापक। २. मजदूरों आदि का सरदार। ३ रास्ते के खान-पान और ठहरने आदि का प्रबन्ध करनेवाला।

सरबस*-पुं० = सर्वस्व।

सरबोर*-वि० दे० 'सराबोर'।

सरमाया-पुं० [फा० सरमायः] १. मूल-धन। पूँजी। २. धन-दौलत। सम्पत्ति।

सरल-वि० [सं०] [स्त्री० सरला, भाव० सरलता] १. निश्छल। निष्कपट। सीधा-सादा। २. सहज। सुगम।

पुं० १. चीड़ का पेड़। २. इस पेड़ का गोंद। गंधा बिरोजा।

सरलीकरण-पुं० [सं० सरल+करण] किसी कठिन विषय आदि को सरल करने की क्रिया या भाव। (सिम्प्लिफिकेशन)

सरवन*-पुं०=श्रवण।

सरवर-पुं०=सरोवर।

सरवरि*-स्त्री० [सं० सदृश] १. बराबरी। समता। २. प्रतियोगिता। होड़।

सरवरिया-वि० [हिं० सरवार] सरवार या सरयू-पार का।

पुं० सरयूपारी।

सरवान*-पुं० [?] तंबू। खेमा।

सरवार-पुं० [सं० सरयू+पार] सरयू नदी के उस पार का देश जिसमें गोरखपुर, और बस्ती आदि जिले हैं।

सरस-वि० [सं०] [स्त्री० सरसा, भाव० सरसता] १. रसयुक्त। रसीला। २. गीला। तर। ३. हरा और ताजा। ४. सुंदर। मनोहर। ५. मधुर। मीठा। ६. जिसमें मन के कोमल भाव जगाने की शक्ति हो। भावपूर्ण।

सरसई*-स्त्री०=सरस्वती।

*स्त्री० [सं० सरस] सरसता।

सरसना-अ० [सं० सरस] १. हरा होना। पनपना। २. उन्नत होना। बढ़ना। ३. शोभित होना। सोहाना। ४. रसपूर्ण होना। ५. कोमल या सरस भाव के आवेश में आना।

सर-सर-पुं० [अनु०] साँपों आदि के जमीन पर रेंगने या वायु के चलने से उत्पन्न शब्द।

क्रि० वि० इस प्रकार शब्द करते हुए।

सरसराना-अ० [अनु० सर सर] [भाव० सरसराहट] १. वायु का सर सर शब्द करते हुए चलना। सनसनाना। २. जल्दी जल्दी कोई काम करना।

सरसरी-क्रि० वि० [फा० सरासरी] १. अच्छी तरह ध्यान लगाकर नहीं, बल्कि

जल्दी में। २. स्थूल रूप से। मोटे तौर पर।

सरसाना-स० हिं० 'सरसना' का स०। *अ० दे० 'सरसना'।

सरसाम-पुं० [फा०] सन्निपात।

सरसिज-पुं० [सं०] कमल।

सरसी-स्त्री० [सं०] १. छोटा सरोवर या जलाशय। २. बावली।

सरसीरुह-पुं० [सं०] कमल।

सरसों-स्त्री० [सं० सर्षप] एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

सरसौंहाँ*-वि० [हिं० सरस] सरस या रस-युक्त करनेवाला।

सरस्वती-स्त्री० [सं०] १ विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी। वाग्देवी। भारती। शारदा। २. विद्या। इल्म। ३. पंजाब की एक प्राचीन नदी।

सरहंग-पुं० [फा०] १. सेनापति। २. पहलवान। ३. कोतवाल। ४. सिपाही।

सरहद-स्त्री० [फा० सर+अ० हद] [वि० सरहदी] १. सीमा। २. चौहद्दी बतानेवाली रेखा या चिह्न।

सरहदी-वि० [हिं० सरहद] १. सरहद या सीमा-संबंधी। २. सरहद या सीमा पर रहनेवाला।

सरा*-स्त्री० [सं० शर] चिता।

सराध*-पुं० दे० 'श्राद्ध'।

सराना*-स० हिं० 'सारना' का प्रे०।

सरापना*-स० [सं० शाप] शाप देना।

सरापा-पुं० [फा०] नख-शिख।

सराफ-पुं० [अ० सर्राफ़] [भाव० सराफी] १. सोने-चाँदी का व्यापारी। २. रुपये-पैसे रखकर बैठनेवाला वह दूकानदार जिससे लोग रुपए, नोट आदि भुनाते हैं।

सराफा-पुं० [अ० सर्राफः] १. सराफ का काम या पेशा। २. सराफों का बाजार।

सराबोर-वि० [सं० स्राव+हिं० बोर] बिलकुल भींगा हुआ। तर।

सराय-स्त्री० [फा०] यात्रियों के ठहरने की जगह। मुसाफिरखाना।

सराव*-पुं० [सं० शराब] १. मद्य पीने का प्याला। २ कटोरा। ३. दीया।

सरावगी-पुं० दे० 'जैन'।

सरासर-अव्य० [फा०] [भाव० सरासरी] १. बिलकुल। पूरा पूरा। २. साक्षात्। प्रत्यक्ष।

सराहना-स० [सं० श्लाघन] प्रशंसा या बड़ाई करना।

स्त्री० प्रशंसा। तारीफ।

सराहनीय*-वि० [हिं० सराहना] प्रशंसा के योग्य। अच्छा। (अशुद्ध रूप)

सरि*-स्त्री० [सं० सरित्] नदी।

*स्त्री० [सं० सदृश] समता। बराबरी। वि० समान। तुल्य। बराबर।

सरिता-स्त्री० [सं० सरित्] १. धारा। २. नदी।

सरिश्ता-पुं० [फा० सरिश्तः] १ कार्यों अथवा कार्यालय का विभाग। महकमा। २. कार्यालय।

सरिश्तेदार-पुं० [फा० सरिश्तःदार] १. किसी विभाग का प्रधान अधिकारी। २. अदालतों में मुकदमों की नत्थियाँ आदि रखनेवाला अधिकारी।

सरिस*-वि०[सं०सदृश] सदृश। समान।

सरी-स्त्री० [सं०] १. छोटा सर या तालाब। २. झरना। सोता। चश्मा।

सरीकता*-स्त्री० [अ० शरीक] साझा।

सरीखा-वि० [सं० सदृश] समान। तुल्य।

सरीसृप-पुं० [सं०] रेंगकर चलनेवाला।

जंतु। जैसे–साँप, कनखजूरा आदि।

सक्कर–पुं० [फा० सुक्र] हलका नशा।

सरेख(ा)*–वि० [सं०श्रेष्ठ] [स्त्री०सरेखी] सयाना और समझदार। होशियार।

सरेखना–स० दे० 'सहेजना'।

सरेस–पुं० [फा० सरेश] एक प्रसिद्ध लसदार वस्तु जो चमड़े, सींग आदि को उबालकर निकाली जाती है।

सरोकार–पुं० [फा०] १. आपस के व्यवहार का संबंध। २.लगाव। वास्ता।

सरोज–पुं० [सं०] कमल।

सरोजिनी–स्त्री० [सं०] १. कमलों से भरा हुआ तालाब। २. कमल।

सरोट*–स्त्री० दे० 'सिलवट'।

सरोद–पुं० [फा०] एक प्रकार का बाजा।

सरोरुह–पुं० [सं०] कमल।

सरोवर–पुं० [सं०] तालाब।

सरोष–वि० [सं०] क्रोधयुक्त। कुपित। क्रि० वि० रोषपूर्वक। क्रोध से।

सरो-सामान–पुं०[फा०सर+व+सामान] सारी सामग्री या उपकरण।

सरौता–पुं० [सं० सार=लोहा+पत्र] एक प्रसिद्ध औजार जिससे सुपारी आदि काटते हैं।

सर्ग–पुं० [सं०] १. चलना या आगे बढ़ना। गमन। २. संसार। सृष्टि। ३. बहाव। प्रवाह। ४. प्राणी। जीव। ५. संतान। औलाद। ६. स्वभाव। प्रकृति। ७. किसी ग्रंथ, विशेषतः महाकाव्य, का अध्याय। ८. प्राकृतिक वस्तुओं, जीवों आदि का कोई स्वतंत्र और पूरा समूह या वर्ग। (किंग्डम) जैसे–जीव-सर्ग, वनस्पति-सर्ग आदि।

सर्गुन*–वि० दे० 'सगुण'।

सर्जन–पुं० [सं०][वि० सर्जनीय, सर्जित] १. (कोई चीज) चलाना, छोड़ना या फेंकना। २. निकालना। ३. कोई चीज बनाकर तैयार करना। रचना। (क्रिएशन) पुं० [अं०] फोड़ों आदि की चीर-फाड़ करनेवाला डाक्टर।

सर्द–वि० [फा०] १. ठंढा। शीतल। २. सुस्त। मंद। धीमा।

सर्दी–स्त्री० दे० 'सरदी'।

सर्प–पुं० [सं०] [स्त्री० सर्पिणी] साँप।

सर्पिल–वि० [सं०] १. साँप की चाल की तरह का टेढ़ा-तिरछा। २. जो साँप की तरह कुंडली मारे हुए हो।

सर्फा–पुं० [अ० सर्फः] व्यय। खर्च।

सर्बस–पुं०=सर्वस्व।

सर्रक–स्त्री० [अनु०] सर्राते हुए आगे बढ़ने की क्रिया या भाव।

सर्राटा–पुं० [हिं० सर्र से अनु०] १. हवा के जोर से चलने पर होनेवाला सर्र सर्र शब्द। २.इस प्रकार तेजी से भागना कि सर्र सर्र शब्द हो।

मुहा०–सर्राटे भरना=तेजी के साथ सर्र सर्र शब्द करते हुए इधर से उधर जाना।

सर्व–वि० [सं०] सब। समस्त। कुल।

सर्व-क्षमा–स्त्री० [सं०] किसी विशिष्ट कारण से या विशिष्ट अवसर पर किसी प्रकार के सभी अपराधी बन्दियों को एक साथ क्षमा करके छोड़ देना। (एमनेस्टी)

सर्व-ग्रास–पुं० [सं०] चंद्रमा या सूर्य्य का वह ग्रहण जिसमें उसका सारा बिम्ब ढक जाता है।

सर्वजनीन–वि० दे० 'सार्वजनिक'।

सर्वजित्–वि०[सं०]सबको जीतनेवाला।

सर्वज्ञ–वि० [सं०] [भाव० सर्वज्ञता] सभी बातें जाननेवाला। पुं० १. ईश्वर। २. बुद्धदेव।

सर्वतंत्र-पुं० [सं०] सब प्रकार के शास्त्रीय सिद्धांत।
वि० जिसे सब शास्त्र या लोग मानते हों।

सर्वतः-अव्य० [सं०] १. चारों ओर। २. सब प्रकार से।

सर्वतोभद्र-वि० [सं०] जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुँड़े हों। पुं०१. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो देवताओं पर चढ़ाने के वस्त्र पर बनाया जाता है। २.एक प्रकार का चित्रकाव्य।

सर्वतोमुख(ी)-वि०[सं०] १.जिसका या जिसके मुँह चारों ओर हों। २. सब जगह मिलने या होनेवाला। व्यापक।

सर्वत्र-अव्य० [सं०] सब जगह।

सर्वथा-अव्य० [सं०] १. सब प्रकार से। पूरी तरह से। २. बिलकुल। पूरा।

सर्वदर्शी-पुं० [सं० सर्वदर्शिन्] [स्त्री० सर्वदर्शिनी] विश्व में होनेवाली सभी बातें देखनेवाला।

सर्वदा-अव्य० [सं०] हमेशा। सदा।

सर्वदैव-अव्य० [सं०] सदा ही। सदैव।

सर्वनाम-पुं० [सं० सर्वनामन्] व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा की जगह आता है। जैसे-मैं, तुम, वह।

सर्वनाश-पुं० [सं०] सब चीजों का या पूरा नाश। पूरी बरबादी।

सर्व-प्रिय-वि० [सं०] जो सबको प्रिय हो या अच्छा लगे। (पॉपुलर)

सर्वभक्षी-वि० [सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खा जानेवाला।

सर्व-भोगी-वि० [सं०] सबका भोग करने या आनंद लेनेवाला।

सर्वरीक-स्त्री० दे० 'शर्वरी'।

सर्व-व्यापक(पी)-वि० [सं०] सब पदार्थों में व्याप्त रहनेवाला।

सर्व-शक्तिमान्-वि० [सं०] जिसमें सब कुछ करने की शक्ति हो।
पुं० ईश्वर।

सर्व-श्री-वि० [सं०] एक आदर-सूचक विशेषण जो बहुत-से नामों का उल्लेख होने पर उन सबके साथ अलग अलग 'श्री' न लगाकर, उन सबके सामूहिक सूचक के रूप में, आरम्भ में लगाया जाता है। जैसे-सर्व-श्री सीताराम, आशाप्रसाद, बालकृष्ण, नारायणदास आदि।

सर्व-श्रेष्ठ-वि० [सं०] सबसे उत्तम।

सर्व-साधारण-पुं० [सं०] सभी लोग। जनता। आम लोग।
वि० जो सबमें पाया जाय। आम। (कॉमन)

सर्व-सामान्य-वि० [सं०] १. जो सब में समान रूप से पाया जाय। (कॉमन) २. जो सब लोगों के लिए हो। (पब्लिक)

सर्वस्व-पुं० [सं०] जो कुछ पास में हो, वह सब। सारी संपत्ति या पूँजी।

सर्वांग-पुं० [सं०] १. संपूर्ण शरीर। सारा बदन। २ सब अवयव या अंश।

सर्वांगीण-वि०[सं०] १.सब अंगों से संबंध रखनेवाला। २.सब अंगों से युक्त। संपूर्ण।

सर्वाधिकार-पुं० [सं०] १. सब कुछ करने का अधिकार। पूरा इख्तियार। २. सारे अधिकार।

सर्वेश(श्वर)-पुं० [सं०] १. सबका स्वामी। २. ईश्वर।

सर्वेश्वरवाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि ईश्वर एक है और वह विश्व के सभी प्राणियों और तत्त्वों में समान रूप से वर्तमान है। (पैन्थिइज्म)

सर्वे-सर्वा-वि० [सं० सर्वे सर्वाः] जिसे किसी विषय या कार्य में सब प्रकार के

और पूरे अधिकार हों। पूरा मालिक।

सर्वोत्तम-वि० [सं०] सबसे उत्तम। सबसे बढ़कर या अच्छा।

सर्वोपरि-वि० [सं०] सबसे ऊपर या बढ़कर।

सलई-स्त्री० [सं० शल्लकी] १. चीड़ का पेड़। २ चीड़ का गोंद। कुंदुर।

सलज्ज-वि० [सं०] जिसे लज्जा हो। लज्जाशील।

क्रि० वि० लज्जापूर्वक। शरमाते हुए।

सलतनत-स्त्री०[अ०सल्तनत] १. राज्य। २. साम्राज्य। ३. प्रबंध। ४. सुभीता।

सलना-अ० हि० 'सालना' का अ०।

सलमा-पुं० [अ० सलमह ?] सोने या चाँदी का वह तार जो कपड़ों पर बेल-बूटे बनाने के काम में आता है। बादला।

सलवार-स्त्री० [फा० शलवार=जाँघिया] १. पायजामे के नीचे पहनने का जाँघिया। २. एक प्रकार का बहुत ढीला पायजामा जो विशेषतः पंजाब और उसके पश्चिमी भागों में पहना जाता है।

सलहज-स्त्री० [हिं० साला] साले की स्त्री।

सलाई-स्त्री० [सं० शलाका] १. काठ या धातु का छोटा पतला छड़।

मुहा०-सलाई फेरना = अंधा करने के लिए सलाई गरम करके आँखों में लगाना।

२. दीया-सलाई।

स्त्री० [हिं० सालना] सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सलाक-पुं० दे० 'तीर'।

सलाखा-स्त्री० [फा० मि० सं० शलाका] धातु का मोटा, लंबा छड़।

सलाद-पुं० [अं० सैलाड] एक प्रकार के कंद के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे खाये जाते हैं।

सलाम-पुं० [अ०] प्रणाम। बंदगी।

मुहा०-दूर से सलाम करना=पास न जाना। दूर या अलग रहना।

सलामत-वि० [अ०] १. हानि या आपत्ति से बचा हुआ। रक्षित। २.जीवित और स्वस्थ। सकुशल। ३. स्थित। कायम।

सलामती-स्त्री० [अ०] १. तन्दुरुस्ती। स्वस्थता। २. कुशल। क्षेम।

सलामी-स्त्री० [अ० सलाम] १. सलाम करना। २.सैनिकों आदि की सलाम करने की प्रणाली। ३.इस ढंग से (तोपें, बन्दूकें आदि छोड़कर) बड़े अधिकारी या सम्माननीय व्यक्ति का अभिवादन करना।

मुहा०-सलामी उतारना=किसी बड़े अधिकारी के आने या जाने के समय उक्त प्रकार से अभिवादन करना। सलामी लेना=किसी बड़े अधिकारी का खड़े होकर सैनिकों का अभिवादन स्वीकृत करना।

४. वह धन जो मकान या जमीन का मालिक मकान या जमीन किराये पर देने के समय किराये के अतिरिक्त, पहले ले लेता है। पगड़ी।

वि० थोड़ा ढालुआँ। (स्थान)

सलाह-स्त्री० [अ०] १. सम्मति। राय। २. परामर्श।

सलाहकार-पुं० [अ० सलाह+फा० कार (प्रत्य०)] परामर्श या सलाह देनेवाला।

सलिल-पुं० [सं०] जल। पानी।

सलीका-पुं० [अ० सलीक़ः] १. अच्छी तरह काम करने का ढंग। शऊर। २. हुनर। ३. शिष्टता।

सलीता-पुं० [देश०] एक प्रकार का मोटा मारकीन। (कपड़ा)

सलील-वि० [सं०] १. लीला-युक्त। २. क्रीड़ाशील। खेलवाड़ी। ३. लुभावना-

प्रिय। कौतुकी। ४. किसी प्रकार की आन-बान से युक्त। ५. लीला या क्रीड़ा से युक्त।

सलूक-पुं० [अ०] १. आपसदारी का अच्छा बरताव या व्यवहार। २. भलाई। उपकार।

सलोतर-पुं० दे० 'शालिहोत्र'।

सलोना-वि० [हिं० स+लोन=नमक] [स्त्री० सलोनी] १. जिसमें नमक पड़ा हो। नमकीन। २. सुंदर।

सलोनो-पुं० [सं० श्रावणी ?] हिन्दुओं का रक्षा-बंधन नामक त्योहार।

सल्लम-स्त्री० [देश०] हाथ का बुना एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गाढ़ा।

सवन-पुं० [सं०] यज्ञ।

सवर्ण-वि० [सं०] १. समान। सदृश। २. एक ही वर्ण या जाति के। जैसे—क्षत्रिय के लिए क्षत्रिय या ब्राह्मण के लिए ब्राह्मण सवर्ण होते हैं।

सवाँग-पुं० दे० 'स्वाँग'।

सवा-वि० [सं० स+पाद] जिसमें पूरे के सिवा चौथाई और लगा हो। जैसे—सवा चार।

सवाई-स्त्री० [हिं० सवा+ई (प्रत्य०)] १. वह ऋण जिसमें मूल धन का सवाया चुकाना पड़ता है। २. जयपुर के महाराजाओं की उपाधि।

सवाद-पुं० दे० 'स्वाद'।

सवादिक*-वि० दे० 'स्वादिष्ट'।

सवाब-पुं० [अ०] १. पुण्य। २. उपकार।

सवाया-वि० [हिं० सवा] पूरे से एक चौथाई अधिक। सवा गुना।

सवार-पुं० [फा०] १. वह जो घोड़े, गाड़ी या किसी वाहन पर चढ़ा हो। २. अश्वारोही सैनिक।

वि० किसी पर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारा*-पुं० दे० 'सवेरा'।

सवारी-स्त्री० [फा०] १. वह चीज जिस पर सवार हों। वाहन। २. वह व्यक्ति जो सवार हो। ३. बड़े आदमी, देव-मूर्ति आदि के साथ चलनेवाला जलूस।

सवाल-पुं० [अ०] १. पूछने की क्रिया। प्रश्न। २. कुछ पाने की प्रार्थना। माँग। ३. वह प्रश्न जो परीक्षा या जाँच के समय उत्तर पाने के लिए दिया जाता है।

सवाल-जवाब-पुं० [अ०] तर्क-वितर्क। वाद-विवाद। बहस।

स-विकल्प-वि० [सं०] विकल्प या संदेह से युक्त। संदिग्ध।

पुं० किसी आलंबन की सहायता से होनेवाली समाधि। (योग)

सविता-पुं० [सं० सवितृ] १. सूर्य। २. बारह की संख्या।

सविनय अवज्ञा-स्त्री० [सं० सविनय+अवज्ञा] राज्य या अधिकारी की अनुचित आज्ञा या कानून न मानकर उसकी अवज्ञा या उल्लंघन करना। (सिविल डिसओबीडिएन्स)

सवेरा-पुं० [हिं० स+सं० वेला] १. दिन निकलने का समय। प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित या नियत समय के पहले का समय। (क्व०)

सवैया-पुं० [हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०)] १. सवा सेर का बाट। २. वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है। ३. एक प्रसिद्ध छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। मालिनी।

सव्य-वि० [सं०] १. वाम। बायाँ। २. दक्षिण। दाहिना। ३. प्रतिकूल। उलटा।

सव्यसाची-पुं० [सं०] अर्जुन। (पांडव)

सशंक-वि० [सं०] जिसे शंका हो ।

सशंकना*-अ०.[सं० सशंक] १. शंका या सन्देह करना । २. डरना ।

सशस्त्र-वि० [सं०] १. शस्त्र सहित । शस्त्र से युक्त । २. जिसके पास शस्त्र हों। जैसे-सशस्त्र बल । (आर्म्ड फोर्स)

सस*-पुं० [सं० शशि] चंद्रमा । पुं० [सं० शस्य] खेती-बारी ।

ससक-पुं० [सं० शशक] खरगोश ।

ससहर*-पुं० [सं० शशिधर] चंद्रमा ।

ससा-पुं० दे० 'ससक' ।

ससाना*-अ०[?] १.घबराना। २.काँपना।

ससि*-पुं० [सं० शशि] चंद्रमा ।

ससिधर(हर)-पुं० = चन्द्रमा ।

ससी*-पुं० दे० शशि' ।

ससुर-पुं० [सं० श्वशुर] किसी के पति या पत्नी का पिता । श्वशुर ।

ससुराल-स्त्री० [सं० श्वशुरालय] ससुर का घर ।

सस्ता-वि० [सं० स्वस्थ] [स्त्री० सस्ती, क्रि० सस्ताना] १.साधारण से कम मूल्य का । २.साधारण । मामूली । (व्य०) ३. जिसका भाव उतर गया हो ।

मुहा०-सस्ते छूटना=सहज में किसी बड़े काम या संकट से छुटकारा पाना ।

सस्ती-स्त्री० [हिं० सस्ता] १. सस्तापन । २.वह समय जब चीजें सस्ती मिलती हों ।

सस्त्रीक-वि०[सं०] स्त्री या पत्नी के साथ।

सस्मित-वि० [सं० स+स्मित] मुस्कराता या हँसता हुआ ।

क्रि० वि० मुस्कराकर । मुस्कराते हुए ।

सह-अव्य० [सं०] सहित । समेत । साथ । वि० [सं०] १. सहनशील । २. समर्थ ।

सहकार-पुं० [सं०] १ सुगंधित पदार्थ । २. आम का वृक्ष । ३. औरों के साथ मिलकर काम करने की वृत्ति, क्रिया या भाव । सहयोग । (कोऑपरेशन)

सहकार समिति-स्त्री०[सं०] वह समिति या संस्था जो कुछ विशेष प्रकार के उप-भोक्ता, व्यवसायी आदि आपस में मिलकर सबके हित के लिए बनाते हैं और जिसके द्वारा वे कुछ चीजें बनाने, बेचने आदि की व्यवस्था करते हैं। (कोऑपरेटिव सोसाइटी)

सहकारिता-स्त्री० [सं०] १. साथ मिलकर काम करना । (कोऑपरेशन) २. सहकारी या सहायक होने का भाव ।

सहकारी-पुं० [सं० सहकारिन्] [स्त्री० सहकारिणी] १. साथी । सहयोगी । २. सहायक । (एसिस्टेन्ट)

सह-गमन-पुं० [सं०] पति के शव के साथ पत्नी का जल मरना । सती होना ।

सह-गान-पुं० [सं०] १. कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना । २. वह गाना जो इस प्रकार गाया जाय । (कोरस)

सहगामिनी-स्त्री० [सं०] १. सह-गमन करनेवाली स्त्री । २. पत्नी । ३. सहेली ।

सहगामी-पुं० [सं०] [स्त्री० सहगामिनी] १.साथ चलनेवाला । २.साथ रहनेवाला । साथी । ३. दे० 'समवर्त्ती' ।

सहगौन*-पुं० दे० 'सह-गमन' ।

सहचर-पुं० [सं०] [स्त्री० सहचरी] १. साथी । संगी । २. सेवक ।

सहचरी-स्त्री० [सं०] १. पत्नी । २ सखी ।

सहचार-पुं० [सं०] साथ । संग ।

सहचारी-पुं० [स्त्री० सहचारिणी, भाव० सहचारिता] दे० 'सहचर' ।

सहज-पुं० [सं०] [स्त्री० सहजा, भाव० सहजता] १. सगा भाई । २. स्वभाव । वि० १. साथ उत्पन्न होनेवाला । २. स्वाभाविक । ३. सरल । सुगम ।

सहजधारी-पुं० [सहज ? + धारी (धारण करनेवाला)] गुरु नानक का वह अनुयायी जो सिर और दाढ़ी आदि के बाल न बढ़ाता हो, बल्कि साधारण हिन्दुओं की तरह कटवाता या मुँड़ाता हो।

सहज बुद्धि-स्त्री० [सं०] जीव-जन्तुओं में होनेवाली वह स्वाभाविक शक्ति या ज्ञान जो उन्हें कोई काम करने या न करने की प्रेरणा करता है। (इंस्टिंक्ट)

सहजात-वि० [सं०] १. साथ साथ जन्म लेने या उत्पन्न होनेवाले। (कान्जेनिटल) २. यमज।
पुं० सगा भाई। सहोदर।

सह-जातिक-वि० [सं०] एक ही साथ या प्रकार के। (होमोजीनियस)

सहदानी*-स्त्री० दे० 'निशानी'।

सहदूल*-पुं० दे० 'शार्दूल'।

सह-धर्मिणी-स्त्री०[सं०] पत्नी। भार्या।

सहधर्मी-वि० [सं०] समान धर्मवाला।
पुं० [स्त्री० सहधर्मिणी] पति।

सहन-पुं० [सं०] १. सहने की क्रिया या भाव। २. आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। (एबाइड) ३ क्षमा।
पुं०[अ०] १. घर में का आँगन या चौक। २. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

सहनशील-वि० [सं०] [भाव० सहनशीलता] सहने या बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु।

सहना-स० [सं० सहन] १ झेलना। बरदाश्त करना। २. भार वहन करना।
*पुं० दे० 'साहनी'।

सहपाठी-पुं० [सं० सहपाठिन्] वह जो किसी के साथ पढ़ा हो। सहाध्यायी।

सह-प्रतिवादी-पुं० [सं०] किसी वाद या मुकदमे में वह व्यक्ति जो मुख्य प्रतिवादी के साथ गौण रूप से उत्तरदायी बतलाया गया हो। (को-डिफेन्डेन्ट)

सहबाला-पुं० दे० 'शहबाला'।

सह-भावी-वि० [सं० सहभाविन्] साथ-साथ होने, रहने या चलनेवाला। (कॉन्कमिटेन्ट)

सह भोज-पुं० [सं०] [वि० सहभोजी] बहुत-से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना।

सहम-पुं० [फा०] १. भय। २. संकोच।

सहमत-वि० [सं०] जिसकी राय दूसरे से मिलती हो। एक मत का। (एग्रीड)

सहमति-स्त्री० [सं०] सहमत होने की क्रिया या भाव। किसी के साथ एक मत होना। (एग्रिमेन्ट, कॉन्करेन्स)

सहमना-अ० [फा० सहम] डरना।

सह-मरण-पुं० दे० 'सह-गमन'।

सहयोग-पुं० [सं०] १. किसी काम में किसी के साथ लगकर उसकी सहायता करना। २. बहुत से लोगों के साथ मिलकर कोई काम करने का भाव। (कोऑपरेशन) ३. सहायता।

सहयोगी-पुं०[सं०] १.साथ मिलकर वही या उसी तरह का काम करनेवाला। २. सहकारी। साथी। ३. सम-कालीन।

सहर-क्रि० वि० [हिं० सहराना] मंद गति से। धीरे धीरे।
पुं० [अ०] बहुत सबेरा। तड़का।

सहर-घड़ी-स्त्री० [अ० सहर = प्रभात + फा० गह] निर्जल व्रत आरंभ करने के पहले बहुत तड़के उठकर किया जानेवाला हलका भोजन। सहरी।

सहराना*-स० दे० 'सहलाना'।
*अ० दे० 'सिहरना'।

सहल-वि० [अ०] सरल। सुगम। सहज।

सहलाना-स० [अनु०] १. किसी वस्तु या अंग पर धीरे धीरे हाथ फेरना। २. मलना।
सहवास-पुं० [सं०] १. साथ रहना। २. मैथुन। स्त्री-संभोग।
सहसगो*-पुं० = सूर्य।
सहसा-अव्य० [सं०] एकाएक। अकस्मात्।
सहसाखि(खी)*-पुं० = इंद्र।
सहसानन*-पुं० [सं० सहस्रानन] शेषनाग।
सहस्र-पुं० [सं०] दस सौ। हजार।
वि० जो गिनती में दस सौ हो।
सहस्रपाद-पुं० [सं०] १. सूर्य। २. विष्णु।
सहस्राब्दी-स्त्री० [सं०] किसी संवत् या सन् के हर एक से हर हजार तक के वर्षों का समूह। साहस्री। (माइलेनियम)
सहस्रार-पुं० [सं०] हठ-योग के अनुसार शरीर के अन्दर के छः चक्रों में से एक जो मस्तिष्क के ऊपरी भाग में माना गया है और जो आधुनिक विज्ञान के अनुसार मन तथा उन गिलटियों का केन्द्र है जिनसे शरीर का विकास होता है।
सहांश-पुं० [सं०] अपने हिस्से या अंश के रूप में किसी को दी जानेवाली कोई चीज या धन। (कॉन्ट्रिब्यूशन)
सहांशिक-पुं० [सं०] वह जो अपने हिस्से या अंश के रूप में किसी को कुछ देता हो। (कॉन्ट्रिब्यूटर)
वि० सहांश के रूप में। (कॉन्ट्रिब्यूटरी)
सहाइ(ई)*-पुं० = सहायक।
स्त्री० [सं० सहाय] सहायता। मदद।
सहाना*-वि० [स्त्री० सहानी] दे० 'शहाना'।
सहानुभूति-स्त्री० [सं०] किसी का दुःख देखकर उससे दुःखी होना। हमदर्दी।
सहाय-पुं० [सं०] १. सहायता। मदद। २. सहायक। ३. आश्रय। सहारा।
सहायक-वि० [सं०] [स्त्री० सहायिका] १. सहायता करनेवाला। २. किसी बड़ी (नदी) में मिलनेवाली छोटी (नदी)। ३. अधीन रहकर काम में सहायता करनेवाला। सहकारी। (असिस्टेन्ट)
सहायता-स्त्री० [सं०] १. किसी के कार्य्य में इस प्रकार योग देना कि वह काम जल्दी या ठीक तरह से हो। मदद। २. कोई कार्य्य आगे बढ़ाने या चलता रखने के लिए दिया जानेवाला धन। (एड)
सहारना†-स० [भाव० सहार] दे० 'सहना'।
सहारा-पुं० [सं० सहाय] १. आश्रय। आसरा। २. भरोसा। ३. सहायता।
सहालग-पुं० [सं० साहित्य ?] ब्याह-शादी के दिन। लगन। (हिन्दू)
सहावल†-पुं० दे० 'साहुल'।
सहिजन-पुं० [सं० शोभांजन] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की तरकारी बनती है।
सहिदानी*†-स्त्री० दे० 'निशानी'।
सहित-अव्य० [सं०] समेत। साथ।
सहिदानी†-स्त्री० [सं० सज्ञान] १. स्मृति के लिए किसी को दी हुई कोई वस्तु। निशानी। २. पहचान। चिह्न। लक्षण।
सहिष्णु-वि० [सं०] [भाव० सहिष्णुता] बरदाश्त करनेवाला। सहनशील।
सही-वि० [फा० सहीह] १. सत्य। प्रामाणिक। २. शुद्ध। ठीक।
मुहा०-(किसी की) सही भरना=यह कहना कि हाँ, यह ठीक है।
३. हस्ताक्षर। दस्तखत।
सही-सलामत-वि० [फा०+अ०] १. स्वस्थ। भला-चंगा। २. जिसमें कोई बाधा न हुई हो।
क्रि० वि० कुशलपूर्वक। सकुशल।
सहूँ*-अव्य० [सं० सम्मुख] १. सामने।

२. तरफ । ओर ।

सहूलियत-स्त्री० [फा०] सुभीता ।

सहृदय- वि० [सं०] [स्त्री० सहृदया, भाव० सहृदयता] १. दूसरों के दुःख-सुख आदि समझनेवाला । २. दयालु । ३. रसिक । भावुक ।

सहेजना-स० [अ० सही ?] [प्रे० सहेजवाना] १. यह देखना कि सब चीज ठीक और पूरी है या नहीं । सँभालना । २. सँभालने या याद रखने के लिए कहना ।

सहेत*-पुं० [सं० संकेत] प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट गुप्त स्थान ।

सहेतुक-वि० [सं०] जिसमें कुछ हेतु या उद्देश्य हो ।

सहेली-स्त्री० [सं० सह+एली (प्रत्य०)] स्त्री के साथ रहनेवाली दूसरी स्त्री । सखी ।

सहैया*-पुं० [हिं० सहाय] सहायक ।
वि० [सं० सहन] सहनेवाला ।

सहोदर-पुं० [सं०] [स्त्री० सहोदरा] सगा भाई ।
वि० एक ही माता से उत्पन्न । सगा ।

सह्य-वि० [सं०] सहने या बरदाश्त करने योग्य । जो सहा जा सके ।

साँई-पुं० [सं० स्वामी] १. स्वामी । मालिक । २. ईश्वर । ३. पति । ४ मुसलमान फकीर ।

साँक*-स्त्री० दे० 'शंका' ।

साँकड़ा-पुं० [सं० शृंखला] पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना ।

साँकर*-स्त्री० [सं० शृंखला] जंजीर ।
पुं० [सं० संकीर्ण] संकट । विपत्ति ।
वि० १. संकीर्ण । सँकरा । २. दुःखमय ।

सांकेतिक-वि० [सं०] जो संकेत रूप में हो । इशारे का ।

सांख्य-पुं० [सं०] महर्षि कपिल-कृत एक प्रसिद्ध दर्शन, जिसमें जड़ प्रकृति और चेतन पुरुष ही जगत् का मूल माना गया है ।

सांख्यिकी-स्त्री० [सं०] किसी विषय की संख्याएँ आदि एकत्र करके उनके आधार पर कुछ सिद्धान्त स्थिर करने या निष्कर्ष निकालने की विद्या । (स्टैटिस्टिक्स)

साँग-स्त्री० [सं० शक्ति] एक प्रकार की बरछी । शक्ति ।

सांग-वि० [सं० साङ्ग] सब अंगों से युक्त । संपूर्ण । पूरा ।

सांगोपांग-अव्य० [सं० साङ्गोपाङ्ग] सब अंगों और उपांगों से युक्त । संपूर्ण ।

सांघातिक-वि० [सं०] १. 'संघात' से सम्बन्ध रखनेवाला । २. (चोट का प्रहार) जिससे आदमी मर सकता हो । घातक । (फैटल) ३. जिससे प्राणों पर संकट आ सकता हो । बहुत जोखिम का ।

सांघिक-वि०[सं०] संघ-संबंधी । संघ का ।

साँच*-वि०, पुं० [स्त्री० साँची] दे० 'सच' और 'सच्चा' ।

साँचा-पुं० [सं० स्थाता] १. विशिष्ट आकार का वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज डालकर उसी के आकार की दूसरी और चीजें बनाई जाती हैं ।
मुहा०-साँचे में ढला=सर्वांग सुंदर और सुडौल ।
२. किसी बड़ी आकृति का छोटा नमूना ।
३. बेल-बूटे छापने का ठप्पा । छापा ।
।वि० दे० 'सच्चा' ।

साँची-स्त्री० [?] पुस्तकों की छपाई का वह ढंग जिसमें पृष्ठ के बेड़े बल में पंक्तियाँ रहती हैं ।

साँझ-स्त्री० दे० 'संध्या' ।

साँझी-स्त्री० [हिं० साँझ] मंदिरों में भूमि पर रंगीन चूर्णों से बनाई हुई बेल बूटों

आदि की सजावट, जो प्रायः सावन में या उत्सवों के समय होती है।

साँट-स्त्री० [सट से अनु०] १. छड़ी। २. कोड़ा। ३. शरीर पर कोड़े आदि की मार का दाग या निशान।

साँटा-पुं० [हिं० साँट=छड़ी] १. कोड़ा। २. गन्ना।

साँटेमार-पुं० [हिं० साँटा=कोड़ा+मार (प्रत्य०)] एक प्रकार के सिपाही जो हाथ में सांटा लेकर राजा की सवारी में हाथी के साथ चलते हैं।

साँठ-पुं० [देश०] १. दे० 'साँकड़ा'। २. ईख। गन्ना। ३. सरकंडा।

स्त्री० [हिं० सटना] संबंध। सम्पर्क। यौ०-साँठ-गाँठ=घनिष्ठ या गुप्त संबंध।

साँठी-स्त्री० दे० 'पूँजी'।

साँड़-पुं०[सं०षंड] १.केवल सन्तान उत्पन्न कराने के लिए पाला हुआ गौ का नर। २. मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ा हुआ बैल।

साँड़नी-स्त्री० [हिं० साँड़िया] ऊँटनी जो बहुत तेज चलती है।

साँड़िया-पुं० [हिं० सोड़ ?] सांड़नी पर सवारी करनेवाला।

साँढू-पुं० [सं० श्यालिवोढ़ी] किसी की साली (पत्नी की बहन) का पति।

सांत-वि० [सं०] १. जिसका अंत अवश्य होता हो। २. अन्त-युक्त।

सांति*-स्त्री० = शांति।

सांत्वना-स्त्री० [सं०] दुःखी व्यक्ति को धीरज दिलाना। ढारस। तसल्ली।

साँथ*-पुं० दे० 'सथ्य'।

साँधना*-स० [सं०संधान] निशाना ठीक करना या साधना। संधान करना।

स० [सं० साधन] पूरा करना। साधना।

*स० दे० 'सानना'।

सांख्य-[वि० सं०] संख्या-संबंधी।

साँप-पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] एक प्रसिद्ध सरीसृप जिसकी कुछ जातियाँ बहुत ही जहरीली और घातक होती हैं। भुजंग। विषधर।

मुहा०-कलेजे पर साँप लोटना= ईर्ष्या आदि के कारण अत्यंत दुःख होना। कहा०-साँप-छछूँदर की दशा या गति=बहुत असमंजस की अवस्था।

सांपत्तिक-वि० [सं० साम्पत्तिक] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। संपत्ति का।

सांप्रत-अव्य० [सं० साम्प्रत] [वि० सांप्रतिक] इस समय। अभी।

सांप्रतिक-वि० [सं०] जो इस समय हो या चल रहा हो। (करेन्ट)

सांप्रदायिक-वि० [सं० साम्प्रदायिक] किसी विशेष संप्रदाय से संबंध रखनेवाला।

सांप्रदायिकता-स्त्री० [सं०] १. सांप्रदायिक होने का भाव। २. केवल अपने संप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना।

साँभर-पुं० [सं० सम्भल या साम्भल] १. राजपूताने की एक झील जिसके पानी से नमक बनता है। २. इस झील के पानी से बना हुआ नमक। ३.एक प्रकार का हिरन।

*पुं० दे० 'संबल'।

साँमुहें-अव्य० [सं० सम्मुखे] सामने।

साँवत-पुं० दे० 'सामंत'।

सांवत्सरिक-वि० [सं०] संवत्सर का। संवत्सर संबंधी।

साँवर-वि० दे० 'साँवला'।

साँवला-वि० [सं० श्यामल] [स्त्री० साँवली, भाव० साँवलापन] कुछ कुछ काला। हलके श्याम वर्ण का।

पुं० १.श्रीकृष्ण । २.पति या प्रेमी । मीत ।

साँवाँ-पुं० [सं० श्यामक] कँगनी या चेना की तरह का एक घटिया अन्न ।

साँस-पुं० [सं०श्वास] १.नाक या मुँह से हवा अन्दर फेफड़ों तक खींचकर फिर उसे बाहर निकालने की क्रिया । श्वास । दम । मुहा०-साँस उखड़ना या टूटना= मरने के समय रोगी का बहुत कष्ट से साँस लेना । साँस ऊपर-नीचे होना=साँस रुकना । दम घुटना । साँस चढ़ना= परिश्रम आदि के कारण साँस का जल्दी जल्दी चलना । साँस तक न लेना= कुछ भी न बोलना । साँस फूलना=१. दमे का रोग होना । २. जल्दी जल्दी साँस चलना । साँस रहते=जीते जी । गहरा, ठंढा या लंबा साँस लेना=१. बहुत दु:ख या शोक होना । २. संतोष या विश्राम का अनुभव करना ।

२. अवकाश । फुरसत । ३. गुंजाइश । समाई । ४ संधि या दरज । ५. दमा या श्वास नामक रोग ।

साँसत-स्त्री० [सं० शास्ति] बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा । यातना ।

साँसत-घर-पुं० दे० 'काल-कोठरी' ।

सांसद-वि० [सं०संसद्] (कथन, व्यवहार या आचरण) जो संसद् या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो । पूर्ण भद्रोचित । (पार्लमेन्टरी)

सांसदी-पुं० [सं०संसद] वह जो संसद के रीति-व्यवहारों का अच्छा ज्ञाता हो और उसमें बैठकर सब काम ठीक तरह से चलाने में पूर्ण पटु हो । (पार्लमेन्टेरियन)

साँसना*-स० [सं०शासन] १. साँसत करना । यातना देना । २. डाँटना । डपटना ।

सांसर्गिक-वि० [सं०] १ संसर्ग-संबंधी । २. संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला ।

सांसारिक-वि०[सं०] [भाव०सांसारिकता] संसार का । लौकिक । ऐहिक ।

साँसी-स्त्री०दे० 'सिस्की' । (गाने का ढंग)

सांस्कृतिक-वि० [सं०] संस्कृति से सम्बन्ध रखनेवाला । संस्कृति-संबंधी ।

सा-अव्य० [सं० सदृश] १. समान । तुल्य । २. एक परिमाण-सूचक शब्द । जैसे-थोड़ा-सा, बहुत-सा ।

पुं० [सं० षड्ज] संगीत में षड्ज स्वर का सूचक शब्द । जैसे-सा, रे, ग ।

साइकिल-स्त्री० [अं०] दो पहियोंवाली एक प्रसिद्ध गाड़ी जिसके दोनों पहिये आगे-पीछे होते हैं और जो पैरों से चलाई जाती है । पैर-गाड़ी ।

साइत-स्त्री०[अ०साअत] १.पल । क्षण । २. समय । ३. मुहूर्त्त । ४. शुभ समय ।

साइन बोर्ड-पुं० दे० 'नामपट्ट' ।

साईं-पुं० दे० 'साईं' ।

साई-स्त्री० [हिं० साइत ?] वह धन जो पारिश्रमिक देकर कोई काम कराने से पहले बात-चीत पक्की करने के लिए दिया जाता है । पेशगी । बयाना । (अर्नेस्ट मनी)

साईस-पुं० [हिं० रईस का अनु०] घोड़े की देख-रेख करनेवाला नौकर ।

साउज*-पुं० दे० 'सावज' ।

साका-पुं० [सं० शाका] १. संवत् । २. यश । कीर्ति । ३. कीर्ति का स्मारक । ४. धाक । रोब । ५ कोई बहुत बड़ा काम जिससे कर्त्ता की बहुत कीर्ति हो ।

साकार-वि० [सं०] [भाव० साकारता] १. रूप या आकारवाला । २. मूर्त्तिमान् । मूर्त्त । ३. स्थूल ।

साकिन-वि० [अ०] निवासी । रहनेवाला ।

साकेत-पुं० [सं०] अयोध्या नगरी ।

साक्षर-वि० [सं०] [भाव० साक्षरता] जो पढ़ना-लिखना जानता हो। शिक्षित।

साक्षरता-स्त्री० [सं०] साक्षर या पढ़े-लिखे होने का भाव। (लिटरेसी)

साक्षात्-अव्य० [सं०] सामने। सम्मुख। वि० मूर्तिमान्। साकार। पुं० भेंट। मुलाकात।

साक्षात्कार-पुं० [सं०] भेंट।

साक्षी-पुं० [सं०साक्षिन्][स्त्री० साक्षिणी] १. वह व्यक्ति जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो। २. साखी। गवाह। ३. दूर से देखनेवाला। तटस्थ दर्शक। स्त्री० गवाही। साखी।

साक्ष्य-पुं० [सं०] गवाही।

साक्ष्य प्रविधि-स्त्री० [सं०] वह प्रविधि या कानून जिसमें साक्षी देने के नियमों आदि की व्यवस्था हो। (लॉ आफ एविडेन्स)

साक्ष्य विधान-पुं० दे० साक्ष्य प्रविधि'।

साख-पुं० [हिं० साखी] साखी। गवाह। स्त्री० १. गवाही। २. प्रमाण। स्त्री० [सं० शाका] १. धाक। रोब। २. मर्यादा। ३. लेन-देन या व्यवहार के खरेपन की मान्यता। (क्रेडिट)

साखना॰-स० [सं० साक्षि] गवाही देना।

साखी-पुं० [सं० साक्षिन्] गवाह। स्त्री० १. साक्षी। गवाही। मुहा०-साखी पुकारना=गवाही देना। २. ज्ञान-संबंधी दोहे या पद्य। पुं० [सं० शाखिन्] वृक्ष। पेड़।

साखोच्चारन॰-पुं० दे० 'गोत्रोच्चार'।

साग-पुं० [सं० शाक] १. कुछ विशेष प्रकार के पौधों की, तरकारी की तरह खाने योग्य, पत्तियाँ। शाक। २ तरकारी। भाजी। यौ०-साग-पात=१. रूखा-सूखा भोजन। २. तुच्छ और निकम्मी चीज।

सागर-पुं० [सं०] १. समुद्र। २. झील।

सागू दाना-पुं० [अं० सैगो+हिं० दाना] सागू नामक वृक्ष के तने के गूदे से तैयार किये हुए दाने जो शीघ्र पच जाते हैं। साबूदाना।

सागौन-पुं० दे० 'शाल' १। (वृक्ष)

साग्रह-क्रि० वि० [सं०] आग्रहपूर्वक। ज़ोर देकर।

साचित्य-पुं० [सं० सचेत] सचेत होने की क्रिया या भाव। सचेतता। (कॉशन)

साज-पुं० [फा०, मि० सं० सज्जा] १. सजावट। ठाठ-बाट। २. सजाने या कसने की सामग्री। जैसे-घोड़े का साज। ३. बाद्य। बाजा। ४. लड़ाई के हथियार। वि० मरम्मत करने या बनानेवाला। (यौगिक के अंत में; जैसे-घड़ीसाज)

साजन-पुं० [सं० सज्जन] १ पति। २. प्रेमी। प्यारा। ३. सज्जन।

साजना॰-स० दे० 'सजाना'। अ० दे० 'सजना'।

साज-बाज-पुं० [सं० सज+बाज (अनु०)] १. तैयारी। २. मेल-जोल।

साज-सामान-पुं० [फा०] १. सामग्री। उपकरण। २. ठाठ-बाट।

साजिंदा-पुं० [फा० साजिन्दः] साज या बाजा बजानेवाला।

साझा-पुं० [सं० सहार्घ्य] १. हिस्सेदारी। २. भाग। हिस्सा।

साझी-पुं० दे० 'साझेदार'।

साझेदार-पुं० [हिं०साझा+दार (प्रत्य०)] किसी काम या रोजगार में साझा रखने-वाला। हिस्सेदार। साझी।

साटन-स्त्री० [अं० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

साटना॰-स० [हिं० सटाना] १. किसी

को किसी काम के लिए गुप्त रूप से अपनी ओर मिलाना। २. दे॰ 'सटाना'।

साठा-पुं॰ [देश॰] ईख। गन्ना।
वि॰ [हिं॰ साठ] साठ वर्ष का।

साड़ी-स्त्री॰ [सं॰ शाटिका] स्त्रियों के पहनने की चौड़े किनारे की धोती।
स्त्री॰ दे॰ 'मलाई'।

साढ़े-अव्य॰ [सं॰ सार्द्ध] एक अव्यय जो पूरे के साथ लगकर आधे अधिक का सूचक होता है। जैसे-साढ़े चार।

साढ़े-साती-स्त्री॰ [हिं॰ साढ़े+सात+ई (प्रत्य॰)] शनि ग्रह की अशुभ दशा या प्रभाव जो प्रायः साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने या साढ़े सात दिन तक रहता है।

सातंक-क्रि॰ वि॰ [सं॰स+आतंक] आतंक या भय-प्रदर्शन के साथ। आतंकपूर्वक।

सात्-वि॰ [सं॰] एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर 'मिला हुआ' या 'रूप में आया हुआ' का अर्थ देता है। जैसे-भूमिसात्, भस्मसात्।

सात-वि॰ [सं॰ सप्त] पाँच और दो।
पुं॰ इस अंक की सूचक संख्या।
यौ॰-**सात-पाँच**=चालाकी। धूर्तता।
सात समुद्र पार=बहुत दूर।

सातत्य-पुं॰ [सं॰] 'सतत' का भाव। सदा या निरंतर होता रहना। (पर्पेचुइटी)

सातिक॰-वि॰ दे॰ 'सात्त्विक'।

सात्वती-स्त्री॰[सं॰] नाटक में एक प्रकार की वृत्ति, जिसमें मुख्यतः दान, दया, शौर्य आदि वीरोचित कार्यों का वर्णन होता है। इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्भुत और शान्त रसों में होता है।

सात्त्विक-वि॰ [सं॰] १.सतोगुणी। २. पवित्र। निर्मल। ३.सत्त्व-गुण से उत्पन्न।
पुं॰ साहित्य में सतोगुण से उत्पन्न ये अंग-विकार—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वरभंग, कंप, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय।

साथ-पुं॰ [सं॰ सहित] १.संगति। सहचार। २.साथी। संगी। ३.मेल। मित्रता।
अव्य॰ १. सहित।
यौ॰-**साथ ही** = सिवा। अतिरिक्त।
साथ ही साथ=एक साथ। एक क्रम में। २. प्रति। से। ३. द्वारा।

साथी-पुं॰ [हिं॰ साथ] [स्त्री॰ साथिन] १. साथ रहनेवाला। संगी। २. मित्र।

सादगी-स्त्री॰ [फा॰] १ सादापन। २. सीधापन। निष्कपटता।

सादरा-पुं॰ [?] एक प्रकार का बढ़िया पक्का गाना।

सादा-वि॰ [फा॰ सादः] [स्त्री॰ सादी] १. साधारण बनावट का। २. जिसके ऊपर बेल-बूटे, सजावट आदि का कोई काम न हो। ३. बिना विशेष मिलावट या आडंबर का। जैसे-सादा भोजन। ४. जिसके ऊपर कुछ लिखा न हो। ५. सीधा। सरल।

सादृश्य-पुं॰ [सं॰] १. रूप, प्रकार आदि की समानता। एक-रूपता। २ बराबरी। तुलना। ३. परस्पर-विरोधी या भिन्न बातों के कुछ विशेष तत्त्वों में पाई जानेवाली समानता। अतिदेश। (एनालोजी)

साधं-पुं॰ [सं॰ साधु] १. साधु। सन्त। महात्मा। २. सज्जन।
स्त्री॰ [सं॰ उत्साह] १. अभिलाषा। कामना। २. गर्भवती होने के सातवें महीने में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।
वि॰ [सं॰ साधु] उत्तम। अच्छा।

साधक-पुं॰ [सं॰] [स्त्री॰ साधिका] १. साधना करनेवाला। २. योगी। तपस्वी। ३. साधन। जरिया। ४.

वह जो अनुकूल और सहायक हो।

साधन-पुं० [सं०] १. कार्य आरम्भ करके सिद्ध या पूरा करना। २. निर्णय, आज्ञा आदि के अनुसार कार्य का रूप देना। पालन करना। ३. अपने कार्यों का निर्वाह अथवा अपने पद के कर्तव्यों का पालन करना। ४. विधिक लेख्यों आदि में बतलाये हुए काम पूरे करना। (एक्जिक्यूशन, उक्त सभी अर्थों के लिए) ५. कोई चीज तैयार करने का सामान। सामग्री। ६. वह जिसके द्वारा या जिसकी सहायता से कोई कार्य सिद्ध हो। उपकरण। ७. उपाय। युक्ति। ८. औषध के लिए धातुएँ आदि शोधने का काम।

साधन-पत्र-पुं० १. दे० 'करण' ३। २. दे० 'साधिका'।

साधना-स्त्री०[सं०] १. कोई कार्य्य सिद्ध करने की क्रिया या भाव। सिद्धि। २. उपासना। आराधना। ३. दे० 'साधन'। स० [सं० साधन] १. पूरा करना। २. निशाना लगाना। ३.अभ्यास करना। ४. पक्का करना। ठहराना। ५. एकत्र करना। ६. वश में करना। ७.बनावटी को असल की तरह कर दिखाना।

साधनिक-वि० [सं०] किसी राज्य या संस्था के प्रबन्ध, शासन या कार्य-साधन से सम्बन्ध रखनेवाला। (एक्जिक्यूटिव)

साधनिक अधिकारी-पुं० [सं०] किसी संस्था का वह अधिकारी जो उसके प्रबन्ध आदि का साधन या संचालन करता है। (एक्जिक्यूटिव ऑफिसर)

साधनिकी-स्त्री० [सं० साधनिक] १. राज्य या सरकार का वह विभाग जो विधि-विधानों आदि का पालन करता और कराता है। (दि एक्जिक्यूटिव) २. इस विभाग के अधिकारियों का समूह या वर्ग। (एक्जिक्यूटिव)

साधर्म्य-पुं० [सं०] समान धर्म या गुण होने का भाव। एक-धर्मता।

साधार-वि० [सं० स+आधार] जिसका कुछ आधार हो। आधार-युक्त।

साधारण-वि० [सं०] १. जैसा प्रायः सब जगह होता या पाया जाता हो। जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो। सामान्य। २. अच्छे से कुछ हलके दरजे का। विशेषता या उत्कृष्टता से रहित। मामूली। (आर्डिनरी; उक्त दोनों अर्थों के लिए) ३ सबके समझने योग्य। सहज। सुगम। सरल। ४. सब या बहुतों से सम्बन्ध रखनेवाला। ५. प्रायः सभी व्यक्तियों, अवसरों, अवस्थाओं से सम्बन्ध रखनेवाला। सार्वजनिक। आम। (जनरल, अन्तिम दोनों अर्थों के लिए)

साधारणतः-अव्य० [सं०] १. सामान्य रूप से। मामूली तौर पर। २. बहुधा। प्रायः। अक्सर।

साधारणीकरण-पुं० [सं०] १. एक ही प्रकार के बहुत-से विशिष्ट तथ्यों के आधार पर कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धान्त स्थिर करना जो उन सब तथ्यों पर समान रूप से प्रयुक्त हो सके। २. किसी समान गुण या धर्म के आधार पर अनेक तत्त्वों को एक तल पर या एक वर्ग में लाना। गुणों आदि के आधार पर समानता स्थिर करना। (जेनरलाइज़ेशन)

साधिका-स्त्री० [सं० साधक] वह लेख या पत्र जिसपर किसी प्रकार के देने-पावने का ठीक ठीक हिसाब या भेजे हुए माल का पूरा विवरण लिखा रहता है। (वाउचर)

साधिकार-क्रि० वि० [सं०] अधिकार-

पूर्वक। अधिकार से। (ऑफिशिएलिटी)
वि० जिसे अधिकार प्राप्त हो।

साधित-वि० [सं०] साधा या सिद्ध किया हुआ। जिसका साधन हुआ हो।

साधु-पुं० [सं०] [भाव० साधुता] १. कुलीन। आर्य। २. धार्मिक जीवन बितानेवाला पुरुष। संत। ३. सज्जन।
वि० १. अच्छा। २. प्रशंसनीय। ३. उचित। ४. शिष्ट और शुद्ध (भाषा)।
अव्य० ठीक है। अच्छी बात है।

साधुवाद-पुं० [सं०] किसी के कोई अच्छा काम करने पर 'साधु साधु' कहकर उसकी प्रशंसा या आदर करना।

साधो-पुं० [सं० साधु] संत। साधु।

साध्य-वि० [सं०] [भाव० साध्यता] १. करने योग्य। २. जो हो सके। ३. सहज। सुगम। ४. जिसे प्रमाणित करना हो। ५ जो अच्छा किया जा सके। (रोग)
पुं० १. देवता। २. शक्ति। सामर्थ्य।

साध्या-स्त्री० [सं० साध्य] किसी व्यवहार या दीवानी मुकदमे में वे विचारणीय बातें जिनका एक पक्ष स्थापन करता हो और जिन्हें दूसरा पक्ष न मानता हो और जिनके आधार पर उस व्यवहार या मुकदमे का निर्णय होने को हो। (इश्यू)
विशेष-वह दो प्रकार की होती है—(क) विधि अर्थात् कानूनी प्रश्नों से संबंध रखनेवाली साध्या। (इश्यू आफ लॉ) और (ख) वास्तव्य अथवा वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से संबंध रखनेवाली साध्या। (इश्यू ऑफ फैक्ट्स)

साध्वी-वि० [सं०] पतिव्रता या पवित्र आचरणवाली (स्त्री)।

सानंद-क्रि० वि० [सं०] आनंदपूर्वक।

सान-पुं० [सं० शाण] वह पत्थर जिसपर रगड़कर अस्त्रों आदि की धार तेज की जाती है। कुरंड।
मुहा०-सान धरना=धार तेज करना।

सानना-स० [हिं० 'सनना' का स०] १. चूर्ण आदि किसी तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। २. मिश्रित करना। मिलाना। ३. सम्मिलित करना। ४. दोष अपराध आदि के लिए किसी के साथ उत्तरदायी बनाना।

सानी-स्त्री० [हिं० सानना] पानी में भिगोया हुआ गौ-भैंसों का चारा।
वि०[अ०] १. दूसरा। २. बराबरी का।
यौ०-ला-सानी=अद्वितीय। बे-जोड़।

सानु-पुं० [सं०] १. पर्वत का शिखर। २. छोर। सिरा। ३. चौरस भूमि। ४. वन। जंगल।
वि० १. लंबा-चौड़ा। २. चौरस।

सान्निध्य-पुं० [सं०] निकटता।

सापना*-स० [सं० शाप] शाप देना।

सापेक्ष-वि० [सं०] [भाव० सापेक्षता] १. एक दूसरे की अपेक्षा या आवश्यकता रखनेवाले। २. किसी की अपेक्षा करनेवाला। ३. जो विचार, निर्णय या आज्ञा की अपेक्षा में रुका पड़ा हो। (पेन्डिंग)

सापेक्षवाद-पुं० [सं०] वह सिद्धान्त जिसमें दो वस्तुओं या बातों को एक दूसरी का अपेक्षक माना जाता है।

साप्ताहिक-वि० [सं०] १. सप्ताह-सम्बन्धी। २. प्रति सप्ताह होनेवाला। हफ्तेवार। (वीकली)

साफ़-वि० [अ०] १. स्वच्छ। निर्मल। २. शुद्ध। पवित्र। ३. निर्दोष। ४. स्पष्ट। ५. उज्ज्वल। ६. जिसमें कोई झंझट-बखेड़ा न हो। ७. निखरा हुआ। चमकीला। ८. निष्कपट। ९. सादा। कोरा।

१०.जिसमें रही अंश न हो। ११.खाली। मुहा०-साफ करना=१. मार डालना। २. नष्ट करना।
१२.(लेन-देन) जो चुकता किया गया हो। क्रि० वि० १. बिना किसी दोष या कलंक के। २. बिना किसी प्रकार की हानि के। ३. इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे। ४. बिलकुल। परम।

साफल्य-पुं०=सफलता।

साफा-पुं० [अ० साफ़ः] छोटी पगड़ी।

साफी-स्त्री० [अ० साफ़] भाँग छानने या गाँजे की चिलम के नीचे लगाने का छोटा कपड़ा।

साबर-पुं० [सं० शबर] १. साँभर (हिरन) का चमड़ा। २. मिट्टी खोदने की सबरी। ३. दे० 'शाबर'।

साबिक-वि० [अ०] पहले का। पुराना। यौ०-साबिक-दस्तूर=जैसा पहले था वैसा ही। यथापूर्व।

साबिका-पुं० [अ०] संबंध। सम्पर्क।

साबित-वि० [फा०] प्रमाणित। सिद्ध। वि० [अ० सबूत] १. पूरा। २. दृढ़।

साबुन-पुं० [अ०साबून] क्षार, तेल आदि से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और कपड़े आदि साफ किये जाते हैं।

साबूत-वि० [फा० सबूत] संपूर्ण। पुं० दे० 'सबूत'।

साबूदाना-पुं० दे० 'साग् दाना'।

साभार-क्रि० वि० [सं० स+आभार] आभार मानते हुए। कृतज्ञतापूर्वक।

सामंजस्य-पुं० [सं०] १. औचित्य। २. अनुकूलता। ३. मेल। एक-रसता।

सामंत-पुं० [सं०] १. वीर। योद्धा। २. शक्तिशाली जमींदार या सरदार।

सामंत तंत्र-पुं० [सं०] किसी राज्य के अंतर्गत वह व्यवस्था जिसमें सामंतों या सरदारों और जमींदारों आदि को किसानों, खेती-बारी की जमीनों आदि के सम्बन्ध में बहुत अधिक या पूरे पूरे अधिकार होते हैं। (फ्यूडल सिस्टम)

साम-पुं० [सं० सामन्] १. गाये जाने-वाले वेद-मंत्र। २. दे० 'साम वेद'। ३. राजनीति में शत्रु को मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने की नीति। पुं० दे० 'शाम'।

सामग्री-स्त्री० [सं०] १. वे आवश्यक वस्तुएँ जिनका किसी कार्य्य में उपयोग होता हो। आवश्यक द्रव्य। २.सामान। ३. साधन। उपकरण।

सामना-पुं० [हिं० सामने] १. समक्ष या सम्मुख होने की क्रिया या भाव। २. भेंट। मुलाकात। ३. आगेवाला भाग। ४. प्रतियोगिता। मुकाबला।

सामने-क्रि० वि० [सं० सम्मुख] १. सम्मुख। समक्ष। आगे। २. उपस्थिति में। ३.सीधे आगे की तरफ। ४.मुकाबले में। विरुद्ध।

सामयिक-वि० [सं०] [भाव० सामयिकता] १. समय से संबंध रखने-वाला। २.वर्त्तमान समय का। ३.समय को देखते हुए उचित, उपयुक्त या ठीक।

सामयिकता-स्त्री० [सं०] १. सामयिक होने का भाव। २.वर्त्तमान समय, परिस्थिति आदि के विचार से युक्त दृष्टि-कोण या अवस्था।

सामयिक पत्र-पुं० [सं०] कुछ निश्चित समय पर बराबर प्रकाशित होता रहने-वाला पत्र। (पीरियॉडिकल)

सामरिक-वि० [सं०] समर-संबंधी। युद्ध का।

सामर्थ्य-पुं॰ [सं॰] 'समर्थ' का भाव। कुछ कर सकने की शक्ति।

साम वेद-पुं॰ [सं॰ सामन्] चार वेदों में से तीसरा जिसमें गाये जानेवाले स्तोत्र हैं।

सामहिं॰-अव्य॰ = सामने।

सामाजिक-वि॰ [सं॰] [भाव॰ सामाजिकता] सारे समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। (सोशल) पुं॰ काव्य, नाटक आदि का श्रोता या दर्शक। सहृदय।

सामान-पुं॰ [फा॰] १ दे॰ 'सामग्री'। २. उपक्रम। आयोजन।

सामान्य-वि॰ [सं॰] १. जिसमें कोई विशेषता न हो। मामूली। विशेष दे॰ 'साधारण'। २. दे॰ 'मध्यक'।
पुं॰ [सं॰] १.समानता। बराबरी। २.किसी जाति या प्रकार की सब चीजों या बातों में पाया जानेवाला समान गुण। जैसे-मनुष्यों में मनुष्यत्व। ३. दे॰ 'मध्यक'।

सामान्यतः-क्रि॰ वि॰ [सं॰] सामान्य या साधारण रीति से। साधारणतः।

सामान्य विधि-स्त्री॰ [सं॰] १. साधारण विधि या आज्ञा। जैसे-बुरे काम मत करो। २. किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार परिचालित होता है। (कॉमन लॉ)

सामासिक-वि॰ [सं॰] समास से सम्बन्ध रखनेवाला। समास का।

सामी॰-पुं॰ दे॰ 'स्वामी'।
वि॰, पुं॰, स्त्री॰ दे॰ 'शामी'।

सामीप्य-पुं॰ [सं॰] समीप होने का भाव। निकटता।

सामुहिं॰-स्त्री॰=समक्ष।

सामुदायिक-वि॰ [सं॰] समुदाय का।

सामुद्रिक-वि॰ [सं॰] समुद्र-संबंधी।
पुं॰ १. वह विद्या जिसमें मनुष्य के शारीरिक लक्षण, विशेषतः हथेली की रेखाएँ देखकर शुभाशुभ फल बतलाये जाते हैं। २. इस शास्त्र का ज्ञाता।

सामुहे॰-अव्य॰=सामने।

सामूहिक-वि॰ [सं॰] [भाव॰ सामूहिकता] समूह से सम्बन्ध रखनेवाला। 'वैयक्तिक' का उलटा।

साम्य-पुं॰ [सं॰] समानता।

साम्यवाद-पुं॰ दे॰ 'समाजवाद'।

साम्या-स्त्री॰ [सं॰] साधारण न्याय के अनुसार सब लोगों के साथ निष्पक्ष और समान भाव से किया जानेवाला व्यवहार। समदर्शितापूर्ण व्यवहार। (ईक्विटी)

साम्या-मूलक-वि॰ [हिं॰साम्या+मूलक] जिसमें साम्या या समदर्शिता का पूरा पूरा ध्यान रक्खा गया हो। (ईक्विटेबुल)

साम्यावस्था-स्त्री॰ [सं॰] वह अवस्था या स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियाँ इतनी तुली हुई हों कि एक दूसरी पर अपना अनिष्ट प्रभाव डालकर कोई विकार न उत्पन्न कर सकें। (ईक्विलिब्रियम)

साम्राज्य-पुं॰[सं॰] १.वह बड़ा राज्य जो एक सम्राट् के शासन में हो और जिसमें कई राज्य या देश हों। सार्वभौम राज्य। (एम्पायर) २. किसी क्षेत्र या कार्य में किसी का पूरा अधिकार। आधिपत्य।

साम्राज्यवाद-पुं॰ [सं॰] साम्राज्य को बनाये रखने और बढ़ाते चलने का सिद्धान्त। (इम्पीरियलिज्म)

साम्राज्यवादी-पुं॰ [सं॰] वह जो साम्राज्यवाद का अनुयायी और समर्थक हो। (इम्पीरियलिस्ट)

सायं-पुं०[सं०] सन्ध्या। शाम। (समय)

सायंकाल-पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] सन्ध्या का समय। शाम।

सायक-पुं० [सं०] १. बाण। २. खड्ग।

सायत-स्त्री० दे० 'साइत'।

सायन-पुं० [सं०] वर्ष में दो बार आनेवाला वह समय (२० मार्च और २३ सितम्बर) जब सूर्य के भू-मध्य रेखा पर पहुँचने पर दिन और रात दोनों बराबर होते हैं। (इक्वीनॉक्स)

सायबान-पुं० [फा० सायःबान] मकान या कमरे के आगे की ओर छाया के लिए बनी हुई टीन आदि की छाजन।

सायर1-पुं० [सं० सागर] समुद्र।

पुं० [अ०] १. वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। २. अतिरिक्त और फुटकर आय।

वि० प्रकीर्णक। फुटकर।

सायल-पुं० [अ०] १. सवाल या प्रश्न करनेवाला। २. प्रार्थना करनेवाला। प्रार्थी। ३. माँगनेवाला। याचक।

साया-पुं० [फा० सायः मि० सं० छाया] १. छाया। २. परछाईं। ३. भूत, प्रेत आदि। ४. सान्निध्य से पड़नेवाला प्रभाव। असर।

पुं० [अ० शेमीज] घाँघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।

सायास-क्रि० वि० [सं० स+आयास] प्रयत्न या परिश्रमपूर्वक। मेहनत से।

सायुज्य-पुं० [सं०] [भाव० सायुज्यता] १. योग। मिलन। २. एक प्रकार की मुक्ति।

सारंग-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का हिरन। २. कोयल। ३. हंस। ४. मोर। ५. पपीहा। ६. हाथी। ७. घोड़ा। ८. शेर। ९. कमल। १०. स्वर्ण। सोना। ११. तालाब। १२. भौंरा। १३. एक प्रकार की मधु-मक्खी। १४. विष्णु का धनुष। १५. शंख। १६. चन्द्रमा। १७. समुद्र। १८. पानी। जल। १९. तीर। २०. साँप। २१. चन्दन। २२. बाल। केश। २३. शोभा। २४. तलवार। २५. बादल। मेघ। २६. आकाश। २७. मेढक। २८. सारंगी। २९. कामदेव। ३० बिजली। ३१. फूल। ३२. एक प्रकार का राग।

वि० १. रँगा हुआ। रंगीन। २. सुन्दर। मनोहर। ३. सरस। रस-युक्त।

सारंगपाणि-पुं० [सं०] विष्णु।

सारंगिया-पुं० [हि० सारंगी] सारंगी बजानेवाला।

सारंगी-स्त्री० [सं० सारंग] एक प्रसिद्ध बाजा जिसमें लगे हुए तार कमानी से रेत कर बजाये जाते हैं।

सार-पुं० [सं०] १. किसी पदार्थ का मुख्य या मूल भाग। तत्त्व। सत्त। २. तात्पर्य। निष्कर्ष। ३. अरक। रस। ४. जल। पानी। ५. गूदा। मग्ज। ६. परिणाम। फल। ७. धन। दौलत। ८. मलाई या मक्खन। ९. बल। शक्ति। १०. तलवार।

*पुं० [सं० सारिका] मैना। (पक्षी)

*पुं० [हिं० सारना] १. पालन-पोषण। २. देख-रेख। ३. पलंग। खाट।

†पुं० दे० 'साला'।

सार-गर्भित-वि० [सं०] जिसमें सार या तत्व हो। सार-युक्त। तत्व-पूर्ण।

सारग्राही-वि० [सं०] [स्त्री० सारग्राहिणी, भाव० सारग्राहिता] वस्तुओं या विषयों का तत्व या सार ग्रहण करनेवाला।

सारणी-स्त्री० [सं०] १. छोटी नदी या नाला। २. एक पृष्ठ में अलग अलग खानों या

खानों के रूप में दिये हुए शब्दों, पदों, अंकों आदि का वह विन्यास जिससे उन शब्दों, पदों, अंकों आदि के पारस्परिक सम्बन्ध या कुछ विशिष्ट तथ्य सूचित होते हैं और जिसका उपयोग अध्ययन, गणना आदि के लिए होता है। (टेबुल)

सारथी-पुं० [सं०] [भाव० सारथ्य] १. रथ चलानेवाला। सूत। २. समुद्र।

सारद०-स्त्री० [सं० शारदा] सरस्वती। वि० [सं० शारद] शरद ऋतु-संबंधी।

सारना-स० [हिं० 'सरना' का स०] १. (काम) पूरा या ठीक करना। २. सुन्दर बनाना। सजाना। ३. रक्षा करना। ४. (आँखों में अंजन या सुरमा) लगाना। ५. (अस्त्र-शस्त्र) चलाना। प्रहार करना। ६. पालन-पोषण या देख-रेख करना।

सार-भाटा-पुं० [सं०सार=सारण या पीछे हटना] समुद्र में ज्वार आने के बाद उसके पानी का फिर पीछे हटना।

सारवान्-वि० [सं०] [भाव० सारवत्ता] जिसमें सार या तत्व हो। सार-युक्त।

सारस-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सुन्दर बड़ा पक्षी। २. हंस। ३. चन्द्रमा। ४. कमल।

सारस्य-पुं० [सं०] सरसता।

सारस्वत-पुं०[सं०] १.पंजाब में सरस्वती नदी के तट पर का प्राचीन प्रदेश। २. इस देश के प्राचीन निवासी। ३. इस देश में रहनेवाले ब्राह्मण।
वि० १. सरस्वती सम्बन्धी। २. विद्वानों का। ३. सारस्वत देश का।

सारांश-पुं० [सं०] १. संक्षेप। सार। (एब्सट्रैक्ट) २. तात्पर्य। निष्कर्ष।

सारा-पुं० दे० 'साला'।
वि०[सं०सह] [स्त्री०सारी] समस्त। पूरा।

सारि-पुं० [सं०] जूआ खेलने का पासा।

सारिका-स्त्री० [सं०] मैना पक्षी।

सारी-स्त्री०[सं०]१.सारिका पक्षी। मैना। २. जूआ खेलने का पासा। ३. थूहर। स्त्री० दे० 'साड़ी'।

सारूप्य-पुं० [सं०] १.वह मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है। २. सरूपता। समानता।

सारो०-स्त्री० दे० 'सारिका'।
पुं० दे० 'साला'।

सारोपा-स्त्री० [सं०] साहित्य में लक्षणा का एक प्रकार जिसमें एक पदार्थ का दूसरे में आरोप होता है।

सारौ०-स्त्री० दे० 'सारिका'।

सार्थ-वि० [सं०] अर्थ सहित।

सार्थक-वि० [सं०] [भाव० सार्थकता] १.अर्थ सहित। २.सफल। पूर्ण-मनोरथ।

सार्थवाह-पुं० [सं०] व्यापार, विशेषतः वह व्यापारी जो अपना माल बेचने दूर तक जाता हो।

सार्द्र-वि० [सं०] जिसमें आधा और मिला या लगा हो। अयोढ़ा।

सार्वकालिक-वि० [सं०] १. सब कालों में होनेवाला। २. सब समयों का।

सार्वजनिक(जनीन)-वि० [सं०] सब लोगों से सम्बन्ध रखनेवाला। सर्व-साधारण सम्बन्धी। (पब्लिक)

सार्वदेशिक-वि० [सं०] १. सब देशों से संबंध रखनेवाला। २. सब देशों में होनेवाला।

सार्वभौतिक-वि० [सं०] सब भूतों या तत्वों से सम्बन्ध रखने या उनमें होनेवाला।

सार्वभौम-पुं० [सं०] [वि० सार्वभौमिक] १. चक्रवर्ती राजा। २.हाथी।
वि० सारी पृथ्वी या उसके सब देशों से

संबंध रखने या उसमें होनेवाला।

सार्वभौमिक-वि० दे० 'सार्वभौम'।

सार्वराष्ट्रीय-वि०[सं०]सब या अनेक राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला। (इन्टरनेशनल)

सार्विक-वि० [सं०] १.सर्व-सम्बन्धी। सब का। २. सब जगह समान रूप से होने या पाया जानेवाला। (युनिवर्सल)

साल-पुं० [फा०] वर्ष। बरस। काल-मान। स्त्री० [हिं० सालना] १. छेद। सूराख। २. लकड़ियाँ जोड़ने के लिए उनमें किया जानेवाला चौकोर छेद। ३.घाव। क्षत। ४. पीड़ा। वेदना।

*पुं० दे० 'शालि' और 'शाल'।

*स्त्री० दे० 'शाला'।

साल-गिरह-स्त्री० [फा०] बरस-गाँठ।

सालन-पुं० [सं० सलवण] पकी हुई मसालेदार तरकारी।

सालना-अ०[सं०शूल] १ दुःख मिलना। कसकना। २. चुभना।

स० १. दुःख पहुँचाना। २.छेद करना। ३.चुभाना। ४.लकड़ी आदि में छेद करके दूसरी लकड़ी का सिरा उसमें घुसाना।

सालसा-पुं० [अं० सारसा-पेरिल्ला] खून साफ करनेवाली एक प्रसिद्ध दवा।

साला-पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १. किसी की पत्नी का भाई। २. इस सम्बन्ध की सूचक एक प्रकार की गाली।

*पुं० [सं० सारिका] मैना (पक्षी)।

सालाना-वि० [फा० सालानः] हर साल या वर्ष का। वार्षिक।

सालार-पुं० [फा०] १. मार्ग-दर्शक। २. प्रधान नेता। अगुआ।

सालिस-वि० [अ०] तीसरा। तृतीय। पुं० [भाव० सालिसी] दो पक्षों में समझौता करानेवाला तीसरा व्यक्ति। पंच।

सालिसनामा-पुं० दे० 'पंचनामा'।

सालू*-स्त्री० दे० 'साल'।

सालू-पुं० [देश०] एक प्रकार का लाल कपड़ा। (मांगलिक)

सालोक्य-पुं० [सं०] वह मुक्ति जिसमें जीव को भगवान का लोक प्राप्त होता है।

सावंत-पुं० दे० 'सामंत'।

साव-पुं० दे० 'साहू'।

सावक*-पुं० दे० 'शावक'।

सावकाश-पुं० [सं०] १. अवकाश। फुरसत। छुट्टी। २. मौका। अवसर।

सावज-पुं० [?] वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाता हो। शिकार।

सावधान-वि० [सं०] [भाव० सावधानता, सावधानी] सचेत। सतर्क। होशियार। खबरदार।

सावधानता-स्त्री० [सं०] सावधान, सचेत या सतर्क रहने की क्रिया या भाव।

सावधानी-स्त्री०=सावधानता।

सावधि-वि० [सं० स+अवधि] जिसमें या जिसकी कुछ अवधि हो। अवधियुक्त।

सावन-पुं० [सं०श्रावण] आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण।

सावित्री-स्त्री० [सं०] १. गायत्री। २. सरस्वती। ३. उपनयन के समय होनेवाला एक संस्कार। ४.सत्यवान् की पत्नी, जो अपने सतीत्व के लिए प्रसिद्ध है। ५. यमुना नदी। ६. सुहागिन। सधवा।

साश्रु-क्रि० वि० [सं० स+अश्रु] आँखों में आँसू भरकर।

वि० जिसमें आँसू भरे हों। अश्रु-युक्त।

साष्टांग-क्रि० वि० [सं०] आठों अंगों से।

साष्टांग प्रणाम-पुं०[सं०]सिर, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन इन आठों से भूमि पर लेटकर किया जाने-

वाला मकान।

सास-स्त्री० [सं० श्वश्रु] किसी के पति या पत्नी की माँ।

सासन-पुं०=शासन।

सासना-स्त्री० दे० 'साँसना'

सासा*-पुं० [सं० संशय] सन्देह।

पुं० दे० 'श्वास' या 'साँस'।

साहु-पुं० १. दे० 'साहु'। २. दे० 'शाह'।

साहचर्य-पुं० [सं०] १. 'सहचर' होने का भाव। सहचरता। २. संग। साथ।

साहजिक-वि० [सं०] १. सहज बुद्धि या स्वभाव से होनेवाला। (इन्स्टिन्क्टिव) २. स्वाभाविक।

साहनी-स्त्री० [अ० शिहन=कोतवाल] सेना। फौज।

पुं० १. साथी। संगी। २. पारिषद। ३. मध्य-कालीन भारत के एक प्रकार के राज-कर्मचारी।

साहब-पुं० [अ० साहिब] [स्त्री० साहबा] १. प्रभु। स्वामी। २. परमेश्वर। ३. एक सम्मान-सूचक शब्द। महाशय। ४.गोरी जाति का व्यक्ति। गोरा।

साहब-सलामत-स्त्री० [अ०] १.परस्पर अभिवादन। बंदगी। सलाम। २.परस्पर अभिवादन का सम्बन्ध। मेल-जोल।

साहबी-वि० [अ० साहिब] साहबों या अँगरेजों का-सा।

स्त्री० १. प्रभुता। अधिकार। २. बड़ाई।

साहस-पुं० [सं०] १.मन की वह दृढ़ता जो कोई बड़ा काम करने में प्रवृत्त करती है। हिम्मत। हियाव। २.बलपूर्वक दूसरे का धन लेना। लूटना। ३.कोई बुरा काम।

साहसिक-पुं० [सं०] [भाव० साहसिकता] १.पराक्रमी। २.डाकू। ३.चोर। वि० निर्भीक। निडर।

साहसी-वि० [सं० साहसिन्] साहस रखनेवाला। हिम्मती। दिलेर।

साहस्री-स्त्री० [सं० साहस्रिक] किसी सन् या संवत् के हर एक से हजार वर्षों तक का समूह। सहस्राब्दी। (मिलेनियम)

साहाय्य-पुं० [सं०] सहायता। मदद।

साहि*-पुं० [फा० शाह] राजा।

साहित्य-पुं० [सं०] १.'सहित' या साथ होने का भाव। एक साथ होना, रहना या मिलना। २. किसी भाषा अथवा देश के उन सभी (गद्य और पद्य) ग्रन्थों, लेखों आदि का समूह या सम्मिलित राशि, जिनमें स्थायी, उच्च और गूढ़ विषयों का सुन्दर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो। वाङ्मय। (लिटरेचर) ३. वे सभी लेख, ग्रन्थ आदि जिनका सौन्दर्य, गुण,रूप या भावुकतापूर्ण प्रभावों के कारण समाज में आदर होता है। ४.किसी विषय, कवि या लेखक से संबंध रखनेवाले सभी ग्रन्थों और लेखों आदि का समूह। जैसे-वैज्ञानिक साहित्य, तुलसी का साहित्य। ५. किसी विषय या वस्तु से सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों का विस्तृत विवरण जो प्रायः उसके विज्ञापन के रूप में बँटता है। जैसे-किसी बड़े ग्रन्थ, संस्था, यंत्र आदि का साहित्य। (लिटरेचर) ६.गद्य और पद्य की शैली और लेखों तथा काव्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौन्दर्य अथवा नायिका-भेद और अलंकार आदि से सम्बन्ध रखनेवाले ग्रन्थों का समूह।

साहित्यिक-वि० [सं०] साहित्य-संबंधी।

पुं० वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो। साहित्यकार। (अशुद्ध प्रयोग)

साही-स्त्री० [सं० शल्यकी] एक जंगली जन्तु जिसके शरीर पर लम्बे काँटे होते हैं।

साहु-पुं० [सं० साधु] १.सज्जन। २.सेठ। महाजन। ३. बनिया। वणिक्। ४. ईमानदार। 'चोर' या 'बेईमान' का उलटा।

साहुल-पुं० [फा० शाकूल] दीवारें आदि बनाते समय उनकी सीध नापने का एक प्रकार का डोरेदार लट्टू या यंत्र।

साहूकार-पुं० [हिं० साहु] [भाव० साहूकारी] बड़ा महाजन। कोठीवाल।

साहूकारा-पुं० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १.महाजनी कार बार। २.वह बाजार जहां ऐसा कार-बार होता हो।

साहैं*-स्त्री० [हिं० बाँह] भुज-दंड। अव्य० [हिं० सामुहें] सामने। सम्मुख।

सिउँ*-प्रत्य० दे० 'स्यों'।

सिंगार-पुं० [सं०शृंगार][क्रि० सिंगारना] १. सजावट। सज्जा। बनाव। २. शोभा। *पुं० दे० 'हर-सिंगार'।

सिंगार-दान-पुं० [हिं० सिंगार+फा० दान] शीशा, कंघी आदि शृंगार की सामग्री रखने का छोटा सन्दूक।

सिंगारना-अ०, स०=शृंगार करना।

सिंगार हाट-स्त्री० [हिं० सिंगार+हाट] वेश्याओं के रहने का बाजार। चकला।

सिंगारिया(री)-पुं० [सं० शृंगार] देव-मूर्ति का शृंगार करनेवाला पुजारी।

सिंगी-पुं० [हिं० सींग] फूँककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा। स्त्री०एक प्रकार की मछली। २. सींग की वह नली जिससे जर्राह शरीर का दूषित रक्त या मवाद चूसकर निकालते हैं।

सिंघ*-पुं० = सिंह।

सिंघल-पुं० = सिंहल।

सिंघी-स्त्री० दे० 'सिंगी'।

सिंचन-पुं० दे० 'सेचन'।

सिंचना-अ० हिं० 'सींचना' का अ०।

सिंचाई-स्त्री० [सं० सेचन] १. सींचने या पानी छिड़कने का काम या मजदूरी।

सिंचाना-स० हिं० 'सींचना' का प्रे०।

सिंचित-वि० [सं० सेचित] १. सींचा हुआ। २. भीगा हुआ। गीला।

सिंदन*-पुं० दे० 'स्यंदन'।

सिंदूर-पुं० [सं०] एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे हिन्दू सुहागिनें माँग में भरती हैं।

सिंदूर-दान-पुं० [सं०] विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सिन्दूर भरना।

सिंदूरी-वि० [सं० सिंदूर+ई (प्रत्य०)] सिन्दूर के रंग का। पीला मिला लाल।

सिंधिया-पुं० [मरा० शिंदे] ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राज-वंश की उपाधि।

सिंधी-स्त्री० [हिं० सिंध+ई (प्रत्य०)] सिन्ध प्रान्त की बोली। पुं० १. सिन्ध देश का निवासी। २. सिन्ध देश का घोड़ा। वि० सिंध देश का।

सिंधु-पुं० [सं०] १. नद। बड़ी नदी। २. पंजाब के पश्चिमी भाग का एक प्रसिद्ध नद। ३. समुद्र। ४. सिन्ध प्रदेश।

सिंधोरा-पुं० [हिं० सिंदूर] सिन्दूर रखने का काठ का डब्बा।

सिंह-पुं० [सं०][स्त्री० सिंहनी] १. बिल्ली के वर्ग में सबसे अधिक बलवान् हिंस्र जंगली जन्तु, जिसके नर की गरदन पर बड़े बड़े बाल होते हैं। शेर बबर। मृगराज। केसरी। २. बहुत बड़ा वीर। ३.ज्योतिष में बारह राशियों में से एक।

सिंह-द्वार पुं० [सं०] किले, महल आदि का सदर और बड़ा फाटक।

सिंहल-पुं० [सं०] एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग प्राचीन

लंका मानते हैं।

सिंहली- वि० [हिं० सिंहल] सिंहल द्वीप का।

पुं० सिंहल देश का निवासी।

स्त्री० सिंहल द्वीप का भाषा।

सिंहारहार॰-पुं० दे० 'हर-सिंगार'।

सिंहाली-वि०, पुं०, स्त्री०=सिंहली।

सिंहावलोकन-पुं०[सं०]१. सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन या वर्णन।

सिंहासन-पुं० [सं०] राजा या देवता के बैठने की विशेष प्रकार की चौकी।

सिअन-स्त्री० दे० 'सीवन'।

सिअरा॰-वि० [सं० शीतल] ठंढा।

पुं० छाया। छाँह।

सिकंदरा-पुं० [फ़ा० सिकंदर] स्टेशनों के पास रेल की पटरी के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ डंडा जो झुककर गाड़ी के आगे बढ़ने का संकेत करता है। (सिगनल)

सिकड़ी-स्त्री० [सं० शृंखला] १ जंजीर। २. किवाड़ की साँकल। ३. गले में पहनने का एक गहना। ४. करधनी। तागड़ी।

सिकत॰-स्त्री० दे० 'सिकता'।

सिकता-स्त्री० [सं०] १. बालू। रेत। २. रेतीली जमीन। ३. चीनी। शक्कर।

सिकतिल-वि० [सं० सिकता] रेतीला।

सिकली-स्त्री० [अ० सैकल] [कर्त्ता सिकलीगर] अस्त्र आदि माँजकर साफ और तेज करने की क्रिया।

सिकहर-पुं० दे० 'छींका'।

सिकुड़न-स्त्री० [हिं० सिकुड़ना] सिकुड़ने के कारण पड़ा हुआ कुछ बल। शिकन।

सिकुड़ना-अ० [सं० संकुचन] १. संकुचित होना। सिमटना। २. बल या शिकन पड़ना। ३. तनाव के कारण छोटा होना।

सिकोड़ना-स०हिं० 'सिकुड़ना' का स०।

सिकोरा-पुं० दे० 'कसोरा'।

सिक्का-पुं० [अ० सिक्कः] १. मुद्रा। मोहर। छाप। ठप्पा। २. टकसाल में ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु का टुकड़ा जो वस्तु-विनिमय का साधन होता है। मुद्रा। रुपया-पैसा आदि। ३. अधिकार। प्रभुत्व।

मुहा०-सिक्का बैठना या जमना= १. प्रभाव या अधिकार स्थापित होना। २. रोब जमना। आतंक छाना।

सिक्ख-पुं०[सं०शिष्य] १.शिष्य। चेला। २. गुरु नानक के पंथ का अनुयायी।

॰स्त्री० [सं० शिक्षा] सीख। शिक्षा।

॰स्त्री० [सं० शिखा] शिखा। चोटी।

सिक्त-वि० दे० 'सेचित'।

सिख-पुं० दे० 'सिक्ख'।

सिखरन-स्त्री० दे० 'शिखरन'।

सिखलाना-स०=सिखाना।

सिखाना-स० [सं० शिक्षण] विद्या, कला आदि की शिक्षा या उपदेश देना।

सिखावन-पुं० [हिं० सिखाना] शिक्षा। उपदेश।

सिखी-पुं० दे० 'शिखी'।

सिगनल-पुं० दे० 'सिकंदरा'।

सिगरेट-पुं०[अं०] कागज में लपेटा हुआ तम्बाकू का चूरा जिसका धूआँ पीते हैं।

सिगरो॰-वि० [सं०समग्र] [स्त्री० सिगरी] जितना हो वह सब। सम्पूर्ण। सारा।

सिगार-पुं० दे० 'चुरुट'।

सिचान॰-पुं० [सं० संचान] बाज पक्षी।

सिजदा-पुं० [अ०] प्रणाम। दंडवत्।

सिझना-अ० दे० 'सीझना'।

सिकाना-स० [सं० सिद्ध] १. आँच पर पकाकर गलाना । २. कष्ट देना ।

सिटकिनी-स्त्री० [अनु०] किवाड़ बन्द करने के लिए लोहे या पीतल का एक विशेष प्रकार का उपकरण । चटकनी ।

सिटपिटाना-अ० [अनु०] भयभीत या संकुचित होकर चुप होना । दब जाना ।

सिट्टी-स्त्री० [हिं० सीटना] बहुत बढ़-बढ़कर बोलना । डींग मारना ।

मुहा०-सिट्टी भूलना=सिटपिटा जाना। कुछ कहने या करने में अक्षम होना ।

सिट्ठी-स्त्री० दे० 'सीठी' ।

सिड़-स्त्री० [हिं० सिड़ी] १. पागलपन। उन्माद । २. सनक । झक ।

सिड़वारा*-वि० दे० 'सिड़ी' ।

सिड़ी-वि० [सं०श्रणीक] पागल । सनकी ।

सित-वि०[सं०] [स्त्री०सिता, भाव०सितता] १.सफेद । २.चमकीला । ३ साफ । पुं० १. शुक्ल पक्ष । २. शक्कर । ३.चाँदी।

सित-कर-पुं० [सं०] चन्द्रमा ।

सितम-पुं० [फा०] अत्याचार । जुल्म ।

सिता-स्त्री० [सं०] १. शक्कर । २. ज्योत्स्ना । ३.मल्लिका । मोतिया । (फूल) ४. मदिरा।

सिताब*-क्रि० वि० [फा०शताब] शीघ्र ।

सितार-पुं० [सं० सप्त+तार, फा० सेह-तार] तारों का बना एक प्रसिद्ध बाजा ।

सितारा-पुं [फा० सितारः] १.आकाश का तारा । नक्षत्र । २. भाग्य । प्रारब्ध ।

मुहा०-सितारा चमकना=भाग्य का बहुत प्रबल या अनुकूल होना ।

३. चमकीले पत्तर की छोटी गोल बिन्दी जो शोभा के लिए कपड़ों आदि पर टाँकी या लगाई जाती है । चमकी ।

सितारिया-पुं० [हिं० सितार] सितार नाम का बाजा बजानेवाला ।

सिथिल*-वि०=शिथिल ।

सिथिलाई*-स्त्री०=शिथिलता ।

सिदौसी†-क्रि० वि० [?] जल्दी । शीघ्र ।

सिद्ध-वि० [सं०] [भाव०सिद्धि, सिद्धता] १.जिसकी आध्यात्मिक साधना पूरी हो चुकी हो । २.जिसे अलौकिक सिद्धि प्राप्त हुई हो । ३. जो योग की विभूतियाँ प्राप्त कर चुका हो । ४ सफल । ५. तर्क या प्रमाण से ठीक माना हुआ । प्रमाणित । ६. सीझा, उबला या पका हुआ ।

पुं० १. पूर्ण योगी या ज्ञानी । २. पहुँचा हुआ सन्त या महात्मा । ३. एक प्रकार के देवता ।

सिद्ध पीठ-पुं० [सं०] वह जगह जहाँ योग या आध्यात्मिक अथवा तांत्रिक साधन सहज में सम्पन्न होता हो ।

सिद्ध-हस्त-वि०[सं०] जिसका हाथ कोई काम करने में खूब बैठा या मँजा हो । निपुण । कुशल ।

सिद्धांत-पुं० [सं०] १. विचार और तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ मत । उसूल । (प्रिंसिपुल) २. किसी विद्वान् द्वारा प्रतिपादित या स्थापित मत । वाद । (थियरी) ३. ऋषियों आदि के मान्य उपदेश । (डॉक्ट्रिन) ४. सार की बात । तत्त्वार्थ ।

सिद्धांती-वि० [सं० सिद्धांत] १. शास्त्रों आदि के सिद्धान्त जाननेवाला । २. अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहनेवाला ।

सिद्धासन-पुं० [सं०] १. योग-साधन का एक प्रकार का आसन । २. सिद्ध-पीठ ।

सिद्धि-स्त्री० [सं०] १. काम का पूरा या ठीक होना । सफलता । २ प्रमाणित होना। ३. निश्चय । निर्णय । ४. पकना । सीझना । ५. योग-साधन के अलौकिक फल । (ये आठ सिद्धियाँ मानी गई हैं—अणिमा,

महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ।) ६. मुक्ति । मोक्ष । ७. दक्षता । निपुणता । ८. गणेश की दो स्त्रियों में से एक । ९. भाँग । विजया ।

सिधाई-स्त्री०=सीधापन ।

सिधानाॐ-अ० दे० 'सिधारना' ।

सिधारनाॐ-अ० [हिं०सीधा+आना] १. चले जाना । प्रस्थान करना । २. मरना । ॐ स० दे० 'सुधारना' ।

सिधिॐ-स्त्री०=सिद्धि ।

सिन-पुं० [अ०] उम्र । अवस्था । वय ।

सिनकना-अ० [सं० सिंघाणक] [भाव० सिनक] जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना ।

सिनीवाली-स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक देवी । २. शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा ।

सिनेमा-पुं० दे० 'चल-चित्र' ।

सिन्नी-स्त्री० [फा० शीरीनी] १. मिठाई । २. पीर, देवता गुरु आदि को चढ़ाई जानेवाली मिठाई ।

सिपर-स्त्री० [फा०] ढाल ।

सिपहगरी-स्त्री०[फा०]सिपाही का पेशा ।

सिपहसालार-पुं० [फा०] सेनापति ।

सिपाही-पुं० [फा०] १.सैनिक । योद्धा । २. पुलिस या रक्षी विभाग का एक छोटा कर्मचारी । ३.पहरेदार । ४.वीर । बहादुर ।

सिप्पा-पुं० [देश०] १. निशाने पर किया हुआ वार । २. कार्य सिद्ध करने की युक्ति । ३. कार्य-साधन का सुयोग ।

मुहा०-सिप्पा जमाना या बैठाना=कार्य-साधन की युक्ति या उपाय करना ।

सिफत-स्त्री०[अ०] १.गुण । २.विशेषता ।

सिफर-पुं० [अ०] शून्य । सुन्ना ।

सिफारिश-स्त्री० [फा०] किसी के पक्ष में कुछ अनुकूल अनुरोध । अनुशंसा ।

सिफारिशी-वि० [फा०] १. जिसमें सिफारिश हो । २. सिफारिश करनेवाला । ३. खुशामदी ।

यौ०-सिफारिशी टट्टू = जो केवल सिफारिश से या खुशामद करके किसी पद पर पहुँचा हो या काम निकालता हो ।

सिमटना-अ० [सं०समित+ना] १. सिकुड़ना । २. बल या शिकन पड़ना । ३. विस्तार छोड़कर एक जगह एकत्र होना । ४. कार्य समाप्त होना । निपटना ।

सिमरना†-स० दे० 'सुमिरना' ।

सिमसिमी-स्त्री० [अनु०] वह थोड़ा सा तरल पदार्थ जो प्रायः गीली लकड़ी जलने पर बुदबुदों के रूप में निकलता है ।

सिमिरखॐ-पुं० दे० 'शिंगरफ' ।

सियॐ-स्त्री० [सं० सीता] जानकी ।

सियनाॐ-अ० [सं० सृजन] रचना । स० दे० 'सीना' ।

सियराॐ-वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सियरी, भाव० सियराई] १. ठंढा । शीतल । २. कच्चा । अपक्व ।

सियरानाॐ-अ०[हिं०सियरा]ठंढा होना ।

सिया-स्त्री० [सं० सीता] जानकी ।

सियार†-पुं०=गीदड़ ।

सियाह-वि० दे० 'स्याह'

सियाहा-पुं० [फा०] १. आय-व्यय के लेखे की बही । रोजनामचा । २. मालगुजारी जमा करने की पंजी या बही ।

सिर-पुं० [सं० शिरस्] १. शरीर का सबसे आगे या ऊपर का भाग । कपाल । खोपड़ी । २. शरीर में गरदन से आगे या ऊपर का भाग ।

मुहा०-सिर-आँखों पर होना=शिरो-धार्य होना । सादर मान्य होना । सिर आँखों पर बैठाना=बहुत आदर-सत्कार

करना। सिर उठाना=१. विरोध में खड़ा होना। २. सामने आने के लिए उठना। ३. गर्व, साहस या प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना। सिर ऊँचा करना=दे० 'सिर उठाना'। सिर करना=(स्त्रियों का) केश सँवारना। सिर के बल जाना=१. बहुत विनीत भाव से जाना। २. प्रसन्नतापूर्वक कष्ट सहकर जाना। सिर खाली करना=१.बकवाद करना। २. सिर खपाना। सिर खाना=बकवाद करके परेशान करना। सिर खपाना=सोच-विचार में हैरान होना। सिर चढ़ाना=अधिक आदर या दुलार से उद्दंड बनाना। सिर घूमना=१. सिर में चक्कर आना। २. घबराहट या चिन्ता से विभ्रम होना। सिर झुकाना=१. नमस्कार करना। २. लज्जित होना। सिर देना=प्राण देना। सिर धरना=आदरपूर्वक स्वीकार करना। सिर धुनना=पछताना। हाथ मलना। सिर नीचा करना=लज्जित होना या करना। सिर पटकना=१. बहुत परिश्रम करना। २. पछताना। सिर पर पाँव रखकर भागना=तेजी से भागना। सिर पर पड़ना=१. जिम्मे पड़ना। २. अपने ऊपर आना या बीतना। सिर पर खून चढ़ना या सवार होना=१. किसी को मार डालने पर उतारू होना। २. हत्या करके आपे में न रहना। सिर पर होना=बहुत निकट होना। सिर फिरना=१. सिर घूमना। सिर चकराना। २. पागल हो जाना। सिर मारना=१. व्यर्थ बहुत प्रयत्न करना। २. सोचते सोचते हैरान होना। सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना=आरंभ में ही संकट आना। सिर से पैर तक=आरंभ से अंत तक। पूर्ण रूप से। सिर से कफन बाँधना=मरने के लिए तैयार होना। सिर से खेल जाना=प्राण दे देना। सिर होना=१. पीछा न छोड़ना। २. तंग करना। ३. कोई बात दूर से समझ या ताड़ लेना।

३. ऊपर का सिरा। चोटी।

सिरका-पुं० [फा०] धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ किसी फल का रस।

सिरकी-स्त्री० [हि० सरकंडा] सरकंडे या सरई का छोटा छप्पर जो प्रायः बैल-गाड़ियों पर आड़ करने के लिए रखते हैं।

सिरगोटी-स्त्री० [?] गलगल (पक्षी)।

सिरजक*-पुं० [हिं० सिरजना] १. रचने या बनानेवाला। २. सृष्टि-कर्ता। ईश्वर।

सिरजनहार*-पुं० [सं० सृजन+हिं० हार] सृष्टि रचनेवाला, परमात्मा।

सिरजना*-स० [सं० सृजन] १. रचना। बनाना। २. उत्पन्न या तैयार करना।

सिर-ताज-पुं० [सं० सिर+फा० ताज] १. मुकुट। २. शिरोमणि। ३. सरदार।

सिरधरा(धरू)-पुं० [हिं० सिर+धरना (पकड़ना)]। संरक्षक। पृष्ठ-पोषक।

सिरनामा-पुं० दे० 'सर-नामा'।

सिर-पच्ची-स्त्री० [हिं० सिर+पचाना] सिर खपाना। माथा-पच्ची।

सिर-पाव-पुं० दे० 'सिरोपाव'।

सिर-पेच-पुं० [फा० सर+पेच] पगड़ी पर बाँधने का एक गहना। कलगी।

सिरमनि*-वि० पुं०=शिरोमणि।

सिरमौर-पुं० [हिं० सिर+मौर] १. सिर का मुकुट। २. सिरताज। शिरोमणि।

सिरहाना-पुं० [सं० शिरस्+आधान] सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग।

सिरा-पुं० [हिं० सिर] १. लंबाई के किसी ओर का अंत। छोर। २. ऊपरी भाग। ३. आरंभ या अंत का भाग। ४. शीर्ष। (हेड) ५. नोक। अनी।
मुहा०-सिरे का=सबसे अच्छा।

सिराना*-अ० [हिं० सीरा=ठंडा] १. ठंढा होना। २. मंद पड़ना। ३. समाप्त होना। ४. बीतना। ५. फुरसत पाना। स० १. ठंढा करना। २. समाप्त करना। ३. बिताना।

सिरी*‡-स्त्री० दे० 'श्री'। स्त्री० [हिं० सिर] खाने के लिए मारे हुए पशु या पक्षी का सिर।

सिरोपाव-पुं० [हिं०सिर+पाँव] वह पूरी पोशाक जो राज-दरबार से सम्मान के रूप में किसी को मिलती है। खिलअत।

सिरोही-स्त्री० [देश०] एक प्रकार की काली चिड़िया। स्त्री० सिरोही (राजपूताना) की बनी बढ़िया तलवार।

सिर्फ़-वि० [अ०] केवल। मात्र।

सिल-स्त्री० [सं० शिला] १. शिला। पत्थर का बड़ा लंबा टुकड़ा। २. पत्थर की पटिया जिसपर मसाले आदि पीसते हैं। पुं० दे० 'उंछ'।

सिलपट-वि० [सं० शिलापट्ट] १. चौरस। बराबर। २. चौपट। सत्तानाश।

सिलवट-स्त्री० [देश०] बल। सिकुड़न।

सिलवाना-स० दे० 'सिलाना'।

सिलसिला-पुं० [अ०] १ क्रम। बँधा हुआ तार। २. श्रेणी। पंक्ति। ३. व्यवस्था।

सिलसिलेवार-वि० [अ० + फा०] तरतीब या सिलसिले से। क्रमानुसार।

सिलह-पुं० [अ०सिलाह] हथियार। शस्त्र।

सिलह-खाना-पुं० [अ० सिलाह+फा० खान:]हथियार रखने का स्थान। शस्त्रागार।

सिलाई-स्त्री० [हिं० सीना+आई (प्रत्य०)] सीने का काम, ढंग या मजदूरी।

सिलाना-स० हिं० 'सीना' का प्रे०।

सिलाह-पुं० [अ०] १. कवच। २. हथियार।

सिलाहबंद-वि० [अ०+फा०] सशस्त्र।

सिल्क-पुं० [अं०] १. रेशम। २. रेशमी कपड़ा।

सिल्ला-पुं० [सं० शिल] फ़सल कट जाने पर खेत में गिरे हुए अन्न के दाने।

सिल्ली-स्त्री० [सं० शिला] १. हथियार की धार तेज करने का पत्थर। सान। २. पत्थर की पटिया।

सिव*-पुं० दे० 'शिव'।

सिवई-स्त्री० [सं० समिता] गुँधे हुए आटे के सेव की तरह के लच्छे जो दूध में पकाकर खाये जाते हैं। सिवैयाँ।

सिवा-अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अलावा।

सिवान-पुं० [सं० सीमांत] हद। सीमा।

सिवाय-अव्य० [अ० सिवा] दे० 'सिवा'। †वि० अधिक। ज्यादा।

सिवार-स्त्री० [सं० शैवाल] पानी में होनेवाली एक प्रकार की लंबी घास।

सिसकना-अ० [अनु०] सिसकी भरकर रोना। खुलकर नहीं, बल्कि धीरे धीरे रोना।

सिसकारना-अ० [अनु० सी सी+करना] १. मुँह से सीटी का-सा शब्द निकालना। २. सीत्कार करना।

सिसकारी-स्त्री० [हिं० सिसकारना] १. सिसकारने का शब्द। २. दे० 'सीत्कार'।

सिसकी-स्त्री० [अनु०] १. धीरे धीरे रोने का शब्द। २. सिसकारी। सीत्कार।

सिसुमार*-पुं० दे० 'शिशुमार'।

सिहरन-स्त्री० [हिं० सिहरना] सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरी।

सिहरना†-अ० [सं० शीत+ना] शीत या भय से काँपना।

सिहरावन-पुं० दे० 'सिहरन'।

सिहरी-स्त्री० दे० 'सिहरन'।

सिहाना†-अ० [सं० ईर्ष्या] १. ईर्ष्या करना। २. ललचना। ३. मुग्ध होना। स०ईर्ष्या या अभिलाषा की दृष्टि से देखना।

सिहारना*†-स०[देश०]१.तलाश करना। ढूँढ़ना। २. एकत्र करना। जुटाना।

सींक-स्त्री० [सं० इषीका] १. सरकंडा। २. घास आदि का पतला कड़ा डंठल। ३. तृण। ४. नाक की कील। (गहना)

सींका-पुं० [हिं० सींक] पेड़-पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी। डाँड़ी। पुं० दे० 'छींका'।

सींग-पुं० [सं० शृंग] १. वे नुकीले अवयव जो खुरवाले पशुओं के सिर पर दोनों ओर निकलते है। विषाण।

सींग जमना=लड़ने की इच्छा होना।

मुहा०-सिर पर सींग होना=कोई विशेषता होना। कहीं सींग समाना= कहीं.गुजारा या निर्वाह होना।

कहा०-सींग कटाकर बछड़ों में मिलना=वयस्क होकर भी बच्चों का सा आचरण करना।

सींगदाना-पुं० दे० 'मूँग-फली'।

सींगी*-स्त्री० दे० 'सिंगी'।

सींचना-स० [सं० सेचन] १. खेतों आदि में पानी देना। २. तर करना। भिगोना। ३. छिड़कना।

सींव*-स्त्री०=सीमा।

सी-स्त्री० [हिं० 'सा' का स्त्री०] सदृश।

मुहा०-अपनी-सी=अपनी इच्छा या शक्ति भर। अपने मन के अनुसार।

स्त्री० दे० 'सीत्कार'।

सीउ*-पुं०=शीत।

सीकर-पुं० [सं०] १. जल-कण। पानी की बूँद। २. बूँद। छींटा।

*स्त्री० [सं०शृंखला] जंजीर। सिकड़।

सीख-स्त्री० [सं० शिक्षा] १. सिखाई जानेवाली बात। शिक्षा। उपदेश। २. सलाह। परामर्श। मंत्रणा।

स्त्री० १.दे० 'सींक'। २ दे० 'सीखचा'।

सीखचा-पुं० [फा०] लोहे का छड़।

सीखना-स० [सं० शिक्षण] १.ज्ञान प्राप्त करना। २. शिक्षा पाना। समझना।

सीगा-पुं० [अ०] विभाग। महकमा।

सीझना-अ० [सं० सिद्ध] [भाव० सीझ] १. आँच पर पकना या गलना। २. सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भींगकर मुलायम और टिकाऊ होना। ३. कष्ट सहना। ४. तपस्या करना।

सीटना-अ० [अनु०] शेखी हाँकना।

सीटी-स्त्री० [सं० शीत्] १. होंठ सिकोड़कर बाहर वायु फूँकने से निकला हुआ महीन पर तेज शब्द। २. इस प्रकार का शब्द जो किसी बाजे आदि से निकलता है। ३. वह बाजा जिससे उक्त प्रकार का शब्द निकले।

सीठना-पुं० [?] विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाये जानेवाले वे गीत जिनमें दूसरों पर कुछ व्यंग्य होते हैं।

सीठा-वि० [सं० शिष्ट] नीरस। फीका।

सीठी-स्त्री० [सं० शिष्ट] १. चूसे या रस निचोड़े हुए फल आदि का नीरस अंश। खूद। २. सार-हीन पदार्थ। ३. फीकी या बची-खुची चीज।

सीड़-स्त्री० [सं० शीत] सीली या तर जमीन के कारण होनेवाली नमी। तरी।

सीढ़ी-स्त्री० [सं० श्रेणी] १. ऊँचे स्थान

पर चढ़ने का वह उपकरण या साधन जिसमें एक के बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों। निसेनी। पैड़ी। जीना। २. ऐसे मार्ग या साधन में बना हुआ पैर रखने का प्रत्येक स्थान। डंडा।

सीत*‡-पुं० = शीत।

सीतकर*-पुं० [सं० शीत-कर] चंद्रमा।

सीतल*‡-वि० = शीतल।

सीता-स्त्री० [सं०] १. भूमि जोतने पर हल की फाल से पड़ी हुई रेखा। कूँड़। २. जानकी। (राजा जनक की कन्या, राम की पत्नी)

सीता-फल-पुं० [सं०] १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

सीत्कार-पुं० [सं०] पीड़ा या आनंद, विशेषतः स्त्री-सम्भोग के समय मुँह से निकलनेवाला सी सी शब्द। सिसकारी।

सीदना*-अ० [सं०सीदति] दुःख पाना।

सीध-स्त्री० [हिं० सीधा] १. सीधी रेखा या दिशा। २. लक्ष्य। निशाना।

सीधा-वि० [सं० शुद्ध] [स्त्री० सीधी, भाव०सीधापन] १.जो टेढ़ा न हो। सरल। ऋजु। २. जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। ३. जो चतुर न हो। भोला। ४. शांत और सुशील।

यौ०-सीधा सादा = भोला भाला।

मुहा०-सीधा करना = १. अनुकूल करना। २. दंड देकर ठीक करना।

५. सहज। आसान। सुगम।

यौ०-सीधा-सादा=सुगम और प्रत्यक्ष।

६. दाहिना। दक्षिण।

पुं० सामने का भाग। (ऑबवर्स)

पुं० [सं० असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न।

सीधे-क्रि० वि० [हिं० सीधा] १. सामने की ओर। २. बिना बीच में रुके या मुड़े।

१. शिष्ट व्यवहार से। अच्छी तरह से।

सीना-स० [सं० सीवन] कपड़े आदि के टुकड़ों को सूई-तागे से जोड़ना। टाँका लगाना।

पुं० [फा०] छाती। वक्षःस्थल।

सीप-पुं० [सं० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] १. शंख आदि की तरह कड़े आवरण में रहनेवाला एक जल-जंतु। सीपी। २. समुद्री सीप का सफेद, चमकीला आवरण जिससे बटन आदि बनते हैं।

सीपर*।-पुं० दे० 'सिपर'।

सीपा-पुं० [देश०] कड़ा जाड़ा।

सीपिया-पुं० [हिं० सीप ?] एक प्रकार का बड़ा और बढ़िया आम।

पुं० [अं०] एक प्रकार का गहरा भूरा रंग जो कुछ पीलापन लिये होता है।

सीपी-स्त्री० [हिं० सीप] सीप नामक जन्तु का आवरण या संपुट।

सीबी-स्त्री० [अनु० सी सी] स्त्रियों का संभोग-समय का सीत्कार। सिसकारी।

सीमंत-पु० [सं०] स्त्रियों के सिर की माँग।

सीम*-स्त्री० [सं० सीमा] सीमा। हद।

मुहा०-*सीम चरना=दूसरे के क्षेत्र में पहुँचकर अधिकार जताना।

सीम शुल्क-पुं० [सं० सीमा+शुल्क] वह शुल्क जो देश की सीमा पर बाहर से आनेवाले और देश से बाहर जानेवाले पदार्थों पर लगता है। (कस्टम्स ड्यूटी)

सीमांत-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ सीमा का अन्त होता हो। (फ्रॉन्टियर)

सीमांतिक-वि० [सं०] सीमान्त से सम्बन्ध रखनेवाला। सीमान्त सम्बन्धी।

पुं० दे० 'सीम शुल्क'।

सीमा-स्त्री० [सं०] १. किसी प्रदेश या वस्तु के चारों ओर के विस्तार की अंतिम

रेखा या स्थान। हद। सरहद। (बाउंडरी) २. वह अंतिम स्थान जहाँ तक कोई बात या काम हो सकता हो या होना उचित हो। नियम या मर्यादा की हद। (लिमिट) मुहा०-सीमा से बाहर जाना=उचित से अधिक बढ़ जाना। (निषिद्ध)

सीमा शुल्क-पुं० दे० 'सीम-शुल्क'।

सीमेंट-पुं० [अं०] मटमैले रंग का एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ मसाला जो आज-कल इमारतों की जोड़ाई में काम आता है।

सीय-स्त्री० [सं० सीता] जानकी।

सीयराः*-वि० दे० 'सियरा'।

सीर-पुं० [सं०] १. हल। २. सूर्य। स्त्री० [सं० सीर=हल] १. साझा। शराकत। २. किसी के साझे में जमीन जोतने-बोने की रीति। ३. इस प्रकार जोती-बोई जानेवाली जमीन। ४. वह जमीन जो जमींदार स्वयं अथवा किसी असामी के साझे में जोतता हो। * वि० [सं० शीतल] ठंढा। शीतल।

सीरक*-पुं०[हिं०सीरा] ठंढा करनेवाला।

सीरदार-पुं० [हिं० सीर+फा० दार] १. वह भूमिधर (पुराना जमींदार) जो अपनी भूमि किसी असामी के साझे में जोतता-बोता हो। २. वह किसान जो किसी भूमिधर के साझे में उसकी जमीन जोतता-बोता हो और जिसपर उसे स्थायी वंशानुक्रमिक अधिकार प्राप्त हो।

सीरध्वज-पुं० [सं०] राजा जनक।

सीरा-पुं० [फा० शीरः] पकी हुई चीनी पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चाशनी। * वि० [सं० शीतल][स्त्री० सीरी] १. ठंढा। शीतल। २.शांत। ३.मौन। चुप।

सील-स्त्री० [सं० शीतल] भूमि की आर्द्रता। सीड़। नमी। * पुं० दे० 'शील'।

सीला-पुं० [सं० शिल] १. दे० 'सिल्ला'। २. खेत में गिरे हुए दानों से निर्वाह करने की प्राचीन ऋषियों की वृत्ति। वि० [सं० शीतल] [स्त्री० सीली] आर्द्र।

सीव*-स्त्री० = सीमा।

सीवन-स्त्री० [सं०] १. सीने का काम। २. सिलाई के टाँके। ३. दरार। संधि।

सीस-पुं० = सिर।

सीसक-पुं० [सं०] सीसा (धातु)।

सीस-फूल-पुं० [हिं० सीस+फूल] सिर पर पहनने का एक गहना।

सीसा-पुं० [सं० सीसक] हलके काले रंग की एक मूल धातु। * पुं० दे० 'शीशा'।

सीसो-स्त्री० [अनु०] दे० 'सीत्कार'। * स्त्री० दे० 'शीशी'।

सीह*-स्त्री० [सं० सुगन्ध] महक। गंध। * पुं० दे० 'सिंह'।

सुँघनी-स्त्री० [हिं० सूँघना] सूँघने के लिए बनाई हुई तंबाकू के पत्तों की बुकनी। हुलास। नस्य।

सुँघाना-स० [हिं० सूँघना] किसी को सूँघने में प्रवृत्त करना।

सुंदर-वि० [सं०] [स्त्री० सुंदरी, भाव० सुंदरता] १. रूपवान। खूबसूरत। २. मनोहर। ३. अच्छा।

सुंदरताई*-स्त्री०=सुंदरता।

सुंदराई*-स्त्री०=सुंदरता।

सुंदरी-स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री।

सुंबा-पुं० [देश०] १. डरपंज। २. तोप या बंदूक की गरम नली ठंढी करने के लिए उसपर फेरा जानेवाला भीगा कपड़ा। पुचारा।

सु-उप० [सं०] सुंदर या श्रेष्ठ का वाचक एक उपसर्ग। जैसे-सुकवि, सुकाल।
*सर्व० [सं० स] सो। वह।

सुअटा†-पुं० दे० 'तोता'। (पक्षी)

सुअन*-पुं० [सं० सुत] पुत्र। बेटा।

सुअना*-अ० [हिं० सुअन] उत्पन्न होना।
पुं० दे० 'तोता'। (पक्षी)

सुआउ*-वि० [सं० सु+आयु] दीर्घायु।

सुआर†-पुं० = रसोइया।

सुआसिनी*†-स्त्री० [सं० सुवासिनी] १. स्त्री, विशेषतः पास रहनेवाली स्त्री। सहचरी। २. सधवा। सुहागिन।

सुकंठ-वि० [सं०] १. जिसकी गरदन सुंदर हो। २. जिसका स्वर मधुर हो।
पुं० [सं०] सुग्रीव।

सुकर-वि० [सं०][भाव० सुकरता] सहज।

सुकरित*-पुं० दे० 'सुकृत'।

सुकर्म-पुं० [सं०] [वि० सुकर्मी] उत्तम या अच्छा काम। सत्कर्म।

सुकर्मी-वि० [सं०] सत्कर्म करनेवाला।

सुकवि-पुं० [सं०] अच्छा कवि।

सुकाना*-स० = सुखाना।

सुकाल-पुं० [सं०] १. अच्छा समय। २. सस्ती का समय। 'अकाल' का उलटा।

सुकिया (कीउ)-स्त्री० दे० 'स्वकीया'।

सुकुति*‡-स्त्री० [सं० शुक्ति] सीप।

सुकुमार-वि० [सं०] [स्त्री० सुकुमारी, भाव० सुकुमारता] १. कोमल अंगों-वाला। २. कोमल।
पुं० १. कोमलांग बालक। २. कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त काव्य।

सुकुल-पुं० [सं०] १. उत्तम कुल। २. कुलीन। ३. दे० 'शुक्ल'।

सुकृत्-वि० [सं०] १. उत्तम और शुभ कार्य्य करनेवाला। २. धार्मिक।

सुकृत-पुं० [सं०] १. पुण्य। २. सत्कर्म।
वि० १. भाग्यवान्। २. धर्मशील।

सुकृति-स्त्री० [सं०] अच्छा कार्य्य।
पुं० अच्छे काम करनेवाला व्यक्ति।

सुखंडी-स्त्री० [हिं० सूखना] बच्चों का शरीर सूखने का रोग। सूखा रोग।

सुख-पुं० [सं०] १. वह अनुकूल और प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की कामना हो। 'दुःख' का उलटा।
मुहा०-सुख मानना=संतुष्ट या प्रसन्न होना। सुख की नींद सोना=निश्चिंत होकर रहना।
२. आरोग्य। ३. सरलता। ४. जल। पानी।
*क्रि० वि० १ स्वभावतः। २ सुखपूर्वक।

सुख-आसन-पुं० दे० 'सुखासन'।

सुखकर-वि० [सं०] १. सुख देनेवाला। २. सहज में होनेवाला। सुगम।

सुखकारक(कारी)-वि०[सं०]सुखदायक।

सुख-जीवी-वि० [सं० सुख+जीविन्] वह जो झगड़े-बखेड़ों और परिश्रम आदि से यथासाध्य दूर रहकर निश्चिंतता और सुखपूर्वक जीवन बिताना चाहता हो।

सुखद-वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सुख या आनंद देनेवाला। सुखदायी।

सुखदाता-वि० [सं० सुखदातृ] सुखद।

सुखदानी-वि० [हिं० सुख+दानी] सुखद।

सुखदायक (दायी)-वि० दे० 'सुखद'।

सुख-धाम-पुं० [सं०] १. सुख का घर। २. वैकुंठ। स्वर्ग।

सुखपाल-पुं० [सं० सुख+पाल (की)] एक प्रकार की पालकी।

सुखमन*-स्त्री० दे० 'सुषुम्ना'।

सुखमा-स्त्री० = सुषमा।

सुखरास (ी)*-वि० [सं० सुख+राशि] सर्वथा सुखमय।

सुखवंत-वि० [सं० सुखवत्] १. सुखी। २. सुखदायक।

सुखवार*-वि०[स्त्री०सुखवारी]दे०'सुखी'।

सुख-साध्य-वि० [सं०] सहज में हो सकनेवाला। सुगम। सहज।

सुखांत-पुं० [सं०] वह जिसका अंत सुखपूर्ण हो। (काव्य, नाटक आदि)

सुखाना-स० [हिं० 'सूखना' का प्रे०] १. गीली चीज का गीलापन दूर करने के लिए उसे धूप में या आग पर रखना। २.आर्द्रता दूर करना। ३.दुर्बल बनाना।

सुखारा (ी)*-वि० [हिं० सुख] १. सुखद। २. सहज। सुगम।

सुखासन-पुं० [सं०] पालकी।

सुखित-वि० [हिं०सुखी] प्रसन्न। सुखी।

सुखिया-वि० दे० 'सुखी'।

सुखी-वि० [सं० सुखिन्] जिसे सब प्रकार के सुख हों या मिलते हों। २. आनंदित। प्रसन्न।

सुखैना*-वि० दे० 'सुखद'।

सुख्याति-स्त्री०[सं०] १ प्रसिद्धि। २. कीर्ति। यश।

सुगंध-स्त्री० [सं०] [वि० सुगंधित] १. अच्छी गंध या महक। सुवास। खुशबू। २. वह वस्तु जिसमें से अच्छी महक निकलती हो। ३. चंदन।

वि० सुगंधित। खुशबूदार।

सुगंधित-वि० [सं०सुगंध] सुगंध-युक्त।

सुगति-स्त्री० [सं०] मरने के उपरांत होनेवाली अच्छी गति। मोक्ष।

सुगना†-पुं० दे० 'तोता'। (पक्षी)

सुगम-वि० [सं०][भाव० सुगमता] १. जिसमें जाना या पहुँचना कठिन न हो। २. अच्छी हो सकनेवाला। सहज।

सुगर*†-वि० १. दे० 'सुघड़'। २. दे० 'सुकंठ'। ३. दे० 'सुगम'।

सुगाना*-अ० [सं० शोक] १. दुःखी होना। २. बिगड़ना। नाराज होना।

अ० [?] संदेह करना।

सुगुरा-पुं० [सं०सुगुरु] वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया या शिक्षा पाई हो।

सुगैया†-स्त्री० दे० 'चोली'। (स्त्रियों की)

सुग्गा†-पुं० दे० 'तोता'। (पक्षी)

सुग्रीव-पुं० [सं०] १. बानरों का राजा, राम का मित्र। २. इंद्र। ३. शंख।

सुघट-वि० [सं०] १.सुंदर। सुडौल। २. सहज में बन या हो सकनेवाला। सुगम।

सुघड़ (र)-वि० [सं० सुघट] [भाव० सुघड़ाई, सुघड़पन] १.सुंदर। सुडौल। २ हाथ के काम करने में निपुण। कुशल।

सुघराई-स्त्री० = सुघड़पन।

सुघरी-स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी या शुभ घड़ी। शुभ समय या साइत।

सुच*-वि० दे० 'शुचि'।

सुचना*-स० [सं० संचय] इकट्ठा करना।

अ० इकट्ठा होना।

सुचरित्र-पुं० [सं०] [स्त्री० सुचरित्रा] उत्तम आचरणवाला। नेक-चलन।

सुचा*-वि० दे० 'शुचि'।

स्त्री० [सं० सूचना] ज्ञान। चेतना।

सुचान-स्त्री० [हिं० सोचना] १. सोचने की क्रिया या भाव। २. सूझ। विचार। ३ सुझाव। सूचना।

सुचाना-स० [हिं०'सोचना' का प्रे०] १. सोचने में प्रवृत्त करना। २. दिखलाना। ३. ध्यान आकृष्ट करना। सुझाना।

सुचार*-स्त्री० दे० 'सुचारु'।

वि० दे० 'सुचारु'।

सुचारु-वि० [सं०] [भाव० सुचारुता] अत्यन्त सुंदर।

सुचाल-स्त्री० [सं० सु+हिं० चाल] [वि० सुचाली] अच्छी चाल। उत्तम आचरण।

सुचाव-पुं०[हिं० सुचाना+आव (प्रत्य०)] १. सुझाने की क्रिया या भाव। २. सुझाव। सूचना।

सुचि-वि० दे० 'शुचि'।

सुचित-वि० [सं० सु+चित्त] १ (किसी काम से) निवृत्त। २.निश्चिंत। ३ एकाग्र।

सुचितई*-स्त्री० [हिं० सुचित] १. निश्चितता। बे-फिक्री। २.छुट्टी। फुरसत।

सुचित्त-वि० दे० 'सुचित'।

सुचिमंत*-वि० [सं० शुचि+मत्] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी।

सुचिमन*-वि० [सं० शुचि+मन] पवित्र मनवाला। शुद्ध हृदय।

सुचिर-वि० [सं०] १.स्थायी। २.पुराना।

सुचेत-वि०[सं०सुचेतस्] चौकन्ना। सतर्क।

सुच्चा-वि० [सं० शुचि] १. पवित्र। शुद्ध। २. जो खाकर जूठा न किया गया हो। ३. जो हर तरह से बिलकुल ठीक और निर्दोष हो। ४. जो असली या सच्चा हो, नकली न हो। जैसे-सुच्चा मोती।

सुच्छंद*-वि० = स्वच्छंद।

सुच्छ*-वि० = स्वच्छ।

सुच्छम*-वि० = सूक्ष्म।

सुजन-पुं० [सं०] [भाव० सुजनता] सज्जन पुरुष। भला आदमी।
पुं० [सं० स्वजन] परिवार के लोग।

सुजनी-स्त्री० [फा० सोजनी] बिछाने की एक प्रकार की बड़ी और मोटी चादर।

सुजस-पुं० = सुयश।

सुजागर-वि० [सं० सु+आगर] १. प्रकाशमान। २. सुंदर।

सुजान-वि० [सं० सज्ञान] [भाव० सुजानपन] १. बुद्धिमान्। चतुर। होशियार। २.विज्ञ। कुशल। ३.सज्जन।
पुं० १. पति या प्रेमी। २. ईश्वर।

सुजोग*-पुं० = सुयोग।

सुजोधन*-पुं०='सुयोधन'।

सुजोर-वि० [सं० सु+फा० जोर] १.दृढ़। पक्का। २. बलवान।

सुज्ञ-वि० [सं०] सुविज्ञ। विद्वान्।

सुझाना-स०[हिं०'सूझना' का प्रे०] दूसरे की सूझ या ध्यान में लाना। दिखाना।

सुझाव-पुं० [हिं० सुझाना+आव(प्रत्य०)] १. सुझाने की क्रिया या भाव। २. वह बात जो सुझाई जाय। सूचना। (सजेशन)

सुठ*-वि० दे० 'सुठि'।

सुठार*-वि० [सं० सुष्ठु] सुडौल। सुंदर।

सुठि*-वि० [सं० सुष्ठु] १. सुंदर। २. अच्छा। ३. बहुत।
अव्य० [सं० सुष्ठु] पूरा पूरा। बिलकुल।

सुठैना*-वि० दे० 'सुठि'।

सुड़कना-अ० दे० 'सुरकना'।

सुड़सुड़ाना-स० [अनु०] सुड़ सुड़ शब्द उत्पन्न करना। जैसे-हुक्का सुड़सुड़ाना।

सुडौल-वि० [सं० सु+हिं० डौल] सुंदर डौल, आकार या बनावटवाला। सुंदर।

सुढंग-पुं० दे० 'सुढब'।

सुढंगी-वि० [हिं० सुढंग+ई (प्रत्य०)] १. अच्छे ढंगवाला। २. सुंदर।

सुढर-वि० [सं० सु+हिं० ढलना] कृपालु।
वि० [हिं० सु+ढार] सुडौल।

सुढार*-वि० [स्त्री०सुढारी] दे०'सुडौल'।

सुतंत्र*-वि० = स्वतंत्र।

सुत-पुं० [सं०] [स्त्री० सुता] पुत्र। बेटा।

सुतधार*-पुं० = सूत्रधार।

सुतर*-पुं० दे० 'शुतुर'।

सुतरां-अव्य० [सं० सुतराम्] १. अतः। इसलिए। २. और भी। किंबहुना।

सुतल-पुं० [सं०] सात पातालों लोकों में से एक।

सुतली-स्त्री० [हिं० सूत] १. सूत की बनी हुई डोरी। २. सन की डोरी।

सुतवाँ-वि० दे० 'सुतवाँ'।

सुता-स्त्री० [सं०] पुत्री। बेटी।

सुतार-पुं० [सं० सूत्रकार] १. बढ़ई। २. कारीगर। शिल्पी।
वि० [सं० सु+तार] अच्छा। उत्तम।
पुं० दे० 'सुभीता'।

सुती-वि० [सं० सुतिन्] जिसे सुत या पुत्र हो। पुत्रवाला।

सुतुही-स्त्री० दे० 'सीपी'।

सुथना-पुं० दे० 'सूथन'।

सुथनी-स्त्री० [देश०] १. पिंडालू। रतालू। २. दे० 'सूथन'।

सुथरा-वि० [सं० स्वच्छ] [स्त्री० सुथरी, भाव० सुथरापन] स्वच्छ। साफ।

सुदर्शन-पुं० [सं०] १. विष्णु का चक्र। २. शिव।
वि० देखने में सुंदर। मनोरम।

सुदिन-पुं० [सं० सु+दिन] अच्छा या शुभ दिन।

सुदी-स्त्री० [सं० शुक्ल या शुद्ध] चान्द्र मास का उजाला पक्ष। शुक्ल पक्ष। (महीने के नाम के साथ, जैसे-चैत सुदी नवमी)

सुदूर-वि० [सं०] बहुत दूर।

सुदृढ़-वि० [सं०] खूब मजबूत।

सुधंग-वि० दे० 'सुढंग'।

सुध-स्त्री० [सं० शुद्ध] १. स्मृति। याद।
मुहा०-सुध बिसराना या भूलना=किसी को भूल जाना। याद न रखना।
२. चेतना। होश।
यौ०-सुध-बुध=होश-हवास। चेतना।
मुहा०-सुध बिसरना=बुद्धि ठिकाने न रहना।
३. खबर या हाल। पता।
*स्त्री० दे० 'सुधा'।

सुध-मना*-वि० [हिं० सुध=होश+मन] १. जो होश में हो। २. सचेत। सतर्क।

सुधरना-अ० [सं० शोधन] बिगड़ी हुई या सदोष वस्तु का अच्छे या ठीक रूप में आना। ठीक होना।

सुधांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सुधा-स्त्री० [सं०] १. अमृत। २. जल। ३. दूध। ४. पृथ्वी। धरती।

सुधाई*-स्त्री० [हिं० सीधा] सीधापन।
स्त्री० दे० 'शोधाई'।

सुधाकर-पुं० [सं०] चन्द्रमा।

सुधाधर-पुं० [सं० सुधा+धर] चन्द्रमा।
वि० [सं० सुधा+अधर] जिसके अधरों में अमृत का-सा स्वाद हो।

सुधाना*-स० [हिं० सुध] याद दिलाना।
स० १. किसी से शोधने का काम कराना।
२. (लग्न, कुंडली आदि) ठीक कराना।

सुधानिधि-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. समुद्र।

सुधार-पुं० [हिं० सुधरना] सुधरने या सुधारने की क्रिया या भाव। संस्कार।

सुधारक-पुं० [हिं० सुधार +क(प्रत्य०)] १. दोषों या त्रुटियों का सुधार करनेवाला। संशोधक। २.धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करनेवाला। (रिफॉर्मर)

सुधारना-स० [हिं० सु+धार] दोष या त्रुटि दूर करके ठीक करना।

सुधारालय-पुं० [हिं०सुधार+सं०आलय] वह कारागार जहाँ अपराधी बालक दंड भोगने, पर साथ ही नैतिक दृष्टि से सुधारे जाने के लिए भेजे जाते हैं। (रिफॉर्मेटरी)

सुधि-स्त्री० दे० 'सुध'।

सुधियाना-अ० [हिं० सुधि + आना (प्रत्य०)] सुध आना। याद पड़ना। स० सुधि दिलाना। याद कराना।

सुधी-पुं० [सं०] विद्वान्। पंडित।

सुन-किरवा-पुं० [हिं० सोना+किरवा=कीड़ा] एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर चमकीले हरे रंग के होते हैं।

सुन-गुन-स्त्री० [हिं० सुनना+अनु० गुन] वह भेद या पता जो इधर-उधर सुनने से लगता हो।

सुनत(ति)●-स्त्री० दे० 'सुन्नत'।

सुनना-स० [सं० श्रवण] १. कही हुई बात या शब्द का कानों से ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना।

मुहा०-सुनी अनसुनी कर देना=कोई बात सुनकर भी न सुनी हुई के समान मानना या समझना। ध्यान न देना।

२ किसी की बात या प्रार्थना पर ध्यान देना। ३ अपनी निन्दा की बात या डाँट-फटकार श्रवण करना। ४. विचार के लिए दोनों पक्षों की बातें अपने सामने आने देना।

सुनरी●-स्त्री० [सं० सुन्दरी] सुन्दर स्त्री।

सुनवाई-स्त्री०[हिं०सुनना+आई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. अभियोग आदि का विचार के लिए सुना जाना।

सुनवैया-वि०=सुननेवाला।

सुनसान-वि० [सं० शून्य+स्थान] जहाँ कोई न हो। निर्जन। एकान्त। पुं० सन्नाटा।

सुनहरा(ला)-वि० [हिं० सोना] [स्त्री० सुनहली] सोने के रंग का।

सुनाई-स्त्री० दे० 'सुनवाई'।

सुनाना-स० हिं० 'सुनना' का प्रे०।

सुनाम-पुं० [सं०] कीर्ति। यश।

सुनार-पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, भाव० सुनारी] सोने-चाँदी के गहने आदि बनानेवाला कारीगर।

सुनाहक●-क्रि० वि० दे० 'नाहक'।

सुनोखरी-पुं०[देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न-वि०[सं०शून्य] (अंग) जिसकी चेष्टा या चेतना कुछ समय के लिए बिलकुल लुप्त हो गई हो। स्पन्दन-हीन। निश्चेष्ट। पुं० दे० 'सुन्ना'।

सुन्नत-स्त्री० [अ०] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काटने की कुछ धर्मों की रसम। खतना। मुसलमानी।

सुन्ना-पुं० [सं० शून्य] शून्य की सूचक गोल बिन्दी। सिफर।

सुन्नी-पुं० [अ०] मुसलमानों का एक सम्प्रदाय।

सुपटु-पुं० [सं०] वह जो किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता अथवा किसी विषय में बहुत पटु हो। (एक्सपर्ट)

सुपथ-पुं० [सं०] उत्तम या अच्छा पथ।

सुपन(ा)-पुं० दे० 'स्वप्न'।

सुपनाना●-स० [हिं० सुपना] स्वप्न दिखाना।

सुपात्र-पुं० [सं०] दान, शिक्षा आदि लेने या कोई काम करने के लिए कोई योग्य या उपयुक्त व्यक्ति। अच्छा पात्र।

सुपारी-स्त्री० [सं०सुप्रिय] एक विशेष वृक्ष के छोटे गोल फल जो काटकर पान के साथ खाये जाते हैं। गुवाक।

सुपास-पुं० [देश०] [वि० सुपासी] १. सुख। आराम। २. सुभीता। ३. सुयोग।

सुपुत्र-पुं० [सं०] [स्त्री० सुपुत्री] अच्छा और योग्य पुत्र।

सुपेत(द)-वि० दे० 'सफेद'।

सुप्त-वि० [सं०] [भाव० सुप्ति] १. सोया हुआ। निद्रित। २. जिसकी क्रिया या चेष्टा रुकी हुई हो। (डॉरमेन्ट)

सुप्रतिष्ठा-स्त्री० [सं०] [वि० सुप्रतिष्ठित] अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत।

सुप्रसिद्ध-वि० [सं०] बहुत प्रसिद्ध।

सुफल-पुं० [सं०] अच्छा फल या परिणाम। वि० [स्त्री० सुफला] १. सुन्दर फल-वाला। २. सफल।

सुबह-स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। सबेरा।

सुबहान अल्ला-पद [अ०] एक अरबी पद जिसका अर्थ है—ईश्वर धन्य है।

सुबास-स्त्री० दे० 'सुगंध'।

सुबुक-वि०[फा०] १.हलका। २.सुन्दर। पुं० एक प्रकार का घोड़ा।

सुबुद्धि-वि० [सं०] बुद्धिमान्। स्त्री० अच्छी बुद्धि।

सुबूत-पुं० दे० 'सबूत'।

सुबोध-वि० [सं०] १. अच्छी बुद्धि-वाला। समझदार। २. (विवेचन आदि) जो सब लोग सहज में समझ सकें।

सुभ॰-वि०=शुभ।

सुभग-वि० [सं०] [स्त्री० सुभगा, भाव०सुभगता] १.सुन्दर। मनोहर। २. भाग्यवान्। ३.प्रिय। प्यारा। ४.सुखद।

सुभट-पुं० [सं०] बड़ा योद्धा।

सुभद्रा-स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी।

सुभर॰-वि०=शुभ्र।

सुभाइ(उ)॰-पुं०=स्वभाव। क्रि०वि०१.सहज भाव से। २.स्वभावतः। ३ बहुत सहज में।

सुभाग॰-पुं० [वि० सुभागी]=सौभाग्य।

सुभान-अल्ला-पद दे० 'सुबहान अल्ला'।

सुभाना॰-अ० [हि० शोभना] शोभित होना। सुन्दर जान पड़ना।

सुभाय॰-पुं० = स्वभाव।

सुभायक॰-वि० = स्वाभाविक।

सुभाव॰-पुं०=स्वभाव।

सुभाषित-वि० [सं०] अच्छे ढंग से कहा हुआ (कथन आदि)।

सुभिक्ष-पुं० [सं०] ऐसा समय जिसमें अन्न बहुत और सस्ता हो। सुकाल।

सुभीता-पुं० [देश०] १. वह स्थिति जिसमें कोई काम करने में कुछ कठिनता या अड़चन न हो। सुगमता। सहूलियत। (कनवीनिएन्स) २. सुअवसर। सुयोग।

सुभोटी॰ -स्त्री०=शोभा।

सुमंगली-स्त्री० [सं० सुमंगल] वह दक्षिणा जो विवाह में सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जाती है।

सुम-पुं० [फा०] गौ, घोड़े आदि चौपायों का खुर। टाप।

सुमति-स्त्री० [सं०] १. अच्छी बुद्धि। २. आपस का मेल-जोल। वि० बुद्धिमान्।

सुमन-पुं० [सं० सुमनस्] १. देवता। २. विद्वान्। ३. फूल। पुष्प। वि० १. सहृदय। २. सुंदर।

सुमनस-पुं० [सं० सुमनस्] १. देवता। २ विद्वान्। ३. महात्मा। ४ फूल। वि० प्रसन्न-चित्त।

सुमरन-पुं० = स्मरण।

सुमरना॰-स० [सं० स्मरण] १. स्मरण करना। २. जपना (नाम)।

सुमरनी-स्त्री० [हिं० सुमरना] जप करने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।

सुमान्य-वि० [सं०] विशिष्ट रूप से मान्य और प्रतिष्ठित। पुं० १. कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े नगरों

में एक विशिष्ट अवैतनिक सम्मानित राज-पद जिसपर नियुक्त होनेवाले लोगों को शान्ति-रक्षा और न्याय-विभाग के कुछ विशिष्ट कार्य करने पड़ते हैं। २.इस पद पर नियुक्त होनेवाला व्यक्ति। (अंग्रेज़ी)

सुमिरना*-स० दे० 'सुमरना'।

सुमुखी-स्त्री० [सं०] सुन्दर मुखवाली स्त्री। सुन्दरी।

सुमेरु-पुं० [सं०] एक कल्पित पर्वत जो पुराणों में सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। २. जप करने की माला में ऊपरवाला दाना। ३.उत्तरी ध्रुव। वि० सबसे अच्छा। सर्व-श्रेष्ठ।

सुमेरु-ज्योति-स्त्री० दे० 'मेरु-ज्योति'।

सुयश-पुं० [सं०] अच्छी और बहुत कीर्ति या यश।

सुयोग-पुं०[सं०] अच्छा योग। सुअवसर।

सुयोग्य-वि०[सं०]बहुत योग्य या लायक।

सुयोधन-पुं० = दुर्योधन।

सुरंग-वि० [सं०] १. अच्छे रंग का। २. लाल रंग का। ३. रसपूर्ण। ४. सुन्दर। ५. सुडौल। ६ स्वच्छ। साफ़। पुं० १. नारंगी। २. रंग के विचार से घोड़ों का एक भेद।

स्त्री० [सं० सुरुङ्ग] १. ज़मीन खोदकर या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। २. बारूद आदि की सहायता से किला या उसकी दीवार उड़ाने के लिए उसके नीचे खोदकर बनाया हुआ गहरा और लम्बा गड्ढा। ३. एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिससे (क) समुद्र में शत्रुओं के जहाजों के पेंदे में छेदकर उन्हें डुबाया अथवा (ख) जिसे स्थल में शत्रुओं के रास्ते में बिछाकर उनका नाश किया जाता है। (माइन) ४. दे०'सेंध'।

सुर-पुं० [सं०] [भाव० सुरता] १. देवता। २. सूर्य। ३. मुनि। ऋषि। पुं० [सं० स्वर] स्वर।

मुहा०-सुर में सुर मिलाना=हाँ में हाँ मिलाना। खुशामद करते हुए किसी का समर्थन करना।

सुरकंत*-पुं० = इन्द्र

सुरकना-स० [अनु०] [भाव० सुरक] नाक या मुँह से धीरे धीरे सुड़ सुड़ शब्द करते हुए ऊपर खींचना।

सुर-कुदाव*-पुं० [सं०स्वर+हिं० दाँव?] धोखा देने के लिए स्वर बदलकर बोलना।

सुरक्षा-स्त्री० [सं०] अच्छी तरह की जानेवाली रक्षा। रखवाली। हिफ़ाजत।

सुरक्षित-वि० [सं०] १. जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गई हो। २. जो ऐसी स्थिति में हो कि उसकी कोई हानि न हो सके। ३. दे० 'ब्यासिद्ध'।

सुरख(ा)-वि० दे० 'सुर्ख़'।

सुरख़ाब-पुं० [फ़ा०] चकवा। (पक्षी)

मुहा०-सुरख़ाब का पर लगना = श्रेष्ठतासूचक विशेषता होना। (व्यंग्य)

सुरख़ी-स्त्री० [फ़ा० सुर्ख़?] इमारत के काम में आनेवाला एक प्रकार का लाल चूर्ण या मसाला जो प्रायः ईंटें पीसकर बनाया जाता है।

* स्त्री० [फ़ा०] १. लाली। अरुणता। २. लेखों आदि का शीर्षक।

सुरग*-पुं० = स्वर्ग।

सुरगैया-स्त्री० दे० 'काम-धेनु'।

सुरज*-पुं०=सूर्य।

सुरजन-वि०१.दे०'सज्जन'।२.दे०'चतुर'।

सुरझना-अ०=सुलझना।

सुरत-पुं० [सं०] सम्भोग। मैथुन। स्त्री० [सं० स्मृति] ध्यान। सुध।

मुहा०-सुरत बिसारना=भूल जाना।

सुर-तरु-पुं० [सं०] कल्प वृक्ष।

सुरता॰-वि०[हिं०सुरत] चतुर। सयाना। स्त्री॰ दे० 'सुरत'।

सुरती-स्त्री०[सूरत (नगर)] पान के साथ या यों ही चूने के साथ खाया जानेवाला अथवा बीड़ी, सिगरेट आदि में भरकर पीया जानेवाला तम्बाकू के पत्तों का चूरा।

सुर-धनु-पुं० [सं०] इन्द्र-धनुष।

सुर-धाम-पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरधामी॰-वि० [सं० सुरधामिन्] १. जो स्वर्ग में रहता हो। २ स्वर्गीय।

सुर-धुनी-स्त्री० [सं०] गंगा।

सुर-धेनु-स्त्री० [सं०] कामधेनु।

सुरप(पति) ॰-पुं०= इन्द्र।

सुर-पाल(क)-पुं० [सं०] इन्द्र।

सुरपुर-पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुर-बाला-स्त्री० [सं०] देवता की स्त्री या कन्या। देवांगना।

सुरभि-स्त्री० [सं०] १.पृथ्वी। २.गौ। ३. सुगन्ध। खुशबू।

वि० १. सुगन्धित। २. सुन्दर। ३. उत्तम।

सुरभित-वि० [सं०]सुगन्धित। सौरभित।

सुरमई-वि० [फा०] सुरमे के रंग का। हलका नीला।

पुं० १. हलका नीला रंग। २.इस रंग में रँगा हुआ कपड़ा। ३.इस रंग का घोड़ा।

सुरमचू-पुं० [फा० सुर्मः] आँखों में सुरमा लगाने की सलाई।

सुरमा-पुं० [फा० सुर्मः] एक प्रसिद्ध नीला खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखों में अंजन की तरह लगाते हैं।

सुरमेदानी-स्त्री० [फा० सुरमः + दानी (प्रत्य०)] सुरमा रखने का एक विशेष प्रकार का लंबोतरा पात्र।

सुरम्य-वि० [सं०] अत्यन्त रम्य या मनोहर। परम सुन्दर और रमणीक।

सुरराज-पुं० [सं०] इन्द्र।

सुरली-स्त्री० [हिं०सु+रली] सुन्दर क्रीड़ा।

सुर-लोक-पुं० [सं०] स्वर्ग।

सुरवधू-स्त्री० [सं०] देवांगना।

सुरस-वि० [सं०] [भाव० सुरसता] १. सरस। २. स्वादिष्ट। ३. सुन्दर।

सुरसती॰-स्त्री० = सरस्वती।

सुरसरि-स्त्री०=गंगा।

सुर-सुंदरी-स्त्री० [सं०] १. अप्सरा। २ देव-कन्या। देवांगना।

सुरसुराना-अ० [अनु०] [भाव० सुरसुराहट, सुरसुरी] १. कीड़ों आदि का रेंगना। कुलबुलाना। २. हलकी खुजली होना।

स० हलकी खुजली उत्पन्न करना।

सुरसैया॰-पुं० = इन्द्र।

सुरांगना-स्त्री० दे० 'देवांगना'।

सुरा-स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

सुराई॰-स्त्री० = शूरता।

सुराख-पुं०१ दे० 'सूराख'। २.दे०'सुराग'।

सुराग-पुं० [अ० सुराग] अपराध। षड्यंत्र आदि का गुप्त रूप से लगाया हुआ पता। टोह।

पुं० [सं० सु+राग] १. अच्छा राग। २. उत्तम अनुराग।

सुराज-पुं०१.दे०'सुराज्य'।२.दे०'स्वराज्य'।

सुराज्य-पुं० [सं०] अच्छा और सुखद राज्य या शासन।

सुरापी-वि० [सं० सुरापिन्] शराब पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

सुराय॰-पुं०[सं०सु+राय] अच्छा राजा।

सुरारि-पुं० [सं०] राक्षस।

सुरावट-स्त्री० [हिं० सुर] १.स्वरों का वि-

न्यास का उतार-चढ़ाव। २. सुरीलापन।

सुरा-सार-पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट पदार्थों में से भपके की सहायता से निकाला हुआ वह मादक तरल पदार्थ जो शराब बनाने तथा अनेक प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाओं में काम आता है। कूल शराब। (अल्कोहल)

सुराही-स्त्री० [अ०] जल रखने का मिट्टी, धातु आदि का एक प्रसिद्ध पात्र।

सुराहीदार-वि० [अ०सुराही+फा०दार] सुराही की तरह गोल और लम्बोतरा। जैसे-सुराहीदार मोती या गरदन।

सुरीला-वि० [हिं० सुर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुरीली] बोलने, गाने आदि में मीठे स्वरवाला। सु-स्वर।

सुरुख-वि० [हिं० सु+फा० रुख] प्रसन्न रहकर दया करनेवाला। अनुकूल।

* वि० दे० 'सुर्ख'।

सुरुचि-स्त्री० [सं०] अच्छी, शिष्ट या परिष्कृत रुचि। उत्तम रुचि।

वि० अच्छी रुचिवाला।

सुरूप-वि० [सं०] [स्त्री०सुरूपा] सुंदर।

* पुं० दे० 'स्वरूप'।

सुरेंद्र(रेश)-पुं० [सं०] इन्द्र।

सुरैत-स्त्री० दे० 'रखेली'।

सुर्ख-वि० [फा०] रक्त वर्ण का। लाल।

पुं० गहरा लाल रंग।

सुर्खरू-वि० [फा०] [भाव० सुर्खरूई] १. तेजस्वी। कांतिमान्। २. प्रतिष्ठित। ३. सफल होने के कारण जिसके मुँह की लाली रह गई हो।

सुर्खी-स्त्री० दे० 'सुरखी'।

सुलक्षण-वि० [सं०] [स्त्री० सुलक्षणा] अच्छे लक्षणोंवाला।

पुं० शुभ लक्षण। अच्छे चिह्न।

सुलग*-अव्य० [हिं०सु+लगना] समीप। पास। निकट।

सुलगना-अ० [सं० सु+हिं० लगना] [भाव० सुलग, सुलगन] १. (लकड़ी आदि का) जलना। दहकना। २. अधिक दुःख या सन्ताप से दुःखी होना।

सुलगाना-स० हि० 'सुलगना' का स०।

सुलच्छन-वि० = सुलक्षण।

सुलझना-अ० [हिं० उलझना] उलझन या जटिलता दूर होना या हटना।

सुलझाना-स० हिं० 'सलझना' का स०।

सुलटा-वि० [हिं० उलटा] [स्त्री० सुलटी] सीधा। 'उलटा' का विपरीत।

सुलतान-पुं०[फा०] बादशाह। महाराज।

सुलप*-वि० दे० 'स्वल्प'।

पुं० [सं० सु+आलाप] सुन्दर आलाप।

सुलभ-वि० [सं०] [भाव० सुलभता, सुलभत्व] १. सहज में प्राप्त होने या मिलनेवाला। २. सहज। सुगम।

सुलह-स्त्री० [अ०] १. मेल। मिलाप। २. लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर होनेवाला मेल। सन्धि।

सुलहनामा-पुं० [अ०सुलह+फा० नामः] वह पत्र जिसपर सुलह या मेल की शर्तें लिखी हों। सन्धि-पत्र।

सुलागना*-अ० दे० 'सुलगना'।

सुलाना-स० हिं० 'सोना' का प्रे०।

सुव-पुं० दे० 'सुअन'।

सुवटा-पुं० = तोता (पक्षी)।

सुवन*-पुं० १.दे०'सुअन'। २.दे०'सुमन'।

सुवर्ण-पुं०[सं०]१.सोना। स्वर्ण। (धातु) २. दस माशे की एक पुरानी स्वर्ण-मुद्रा।

वि० सुन्दर वर्ण या रंग का।

सुवस*-वि० [सं० स्व+वश] जो अपने वश या अधिकार में हो।

सुवा-पुं० दे० 'सुआ'।
सुवाना*-स० = सुलाना।
सुवार*-पुं० [सं० सूपकार] रसोइया।
सुवाल*-पुं० दे० 'सवाल'।
सुवास-पुं० [सं०] [वि० सुवासित] १. सुगन्ध। खुशबू। २.सुन्दर या अच्छा घर।
सुविचार-पुं० [सं०] [वि० सुविचारी] १. अच्छा या उत्तम विचार या खयाल। २. अच्छा न्याय या फैसला।
सुविचारी-वि० [सं० सुविचारिन्] १. सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार करनेवाला। २. अच्छा फैसला करनेवाला। न्यायशील।
सुविज्ञ-वि० [सं०] बहुत अच्छा ज्ञाता।
सुविधा-स्त्री० = सुभीता।
सुशिक्षित-वि० [सं०] जिसने अच्छी शिक्षा पाई हो।
सुशील-वि० [सं०] [स्त्री० सुशीला, भाव० सुशीलता] अच्छे शील या स्वभाववाला। अच्छे आचरण और व्यवहारवाला।
सुशोभित-वि०[सं०] अच्छी तरह शोभित और सजता हुआ। अत्यन्त शोभायमान।
सुश्री-वि० [सं०] सुन्दर या अच्छी 'श्री' से युक्त।
स्त्री० एक आदरसूचक शब्द जो स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता है। जैसे-सुश्री मालती देवी।
सुश्रूखा*-स्त्री० = शुश्रूषा।
सुषमना (नि)*-स्त्री० = सुषुम्ना।
सुषमा-स्त्री० [सं०] बहुत अधिक शोभा या सुन्दरता।
सुषिर-पुं० [सं०] १. बाँस। २. अग्नि। आग। ३. वह बाजा जो हवा के दबाव या जोर से बजता हो।
वि०१.जिसमें छेद हों। २.खोखला। पोला।
सुषुप्ति-स्त्री० [सं०] [वि० सुषुप्त] १. गहरी निद्रा। २. योग-साधन में वह अवस्था जिसमें ब्रह्म को प्राप्त कर लेने पर भी जीव को उसका ज्ञान नहीं होता।
सुषुम्ना-स्त्री०[सं०] हठ योग के अनुसार शरीर की तीन मुख्य नाड़ियों में से वह जो नासिका से ब्रह्म-रंध्र तक गई हुई मानी जाती है। वैद्यक में इसका स्थान नाभि के मध्य भाग में माना गया है।
सुष्ट-वि०[सं० दुष्ट' का अनु०या सं०सुष्टु] अच्छा। भला। 'दुष्ट' का उलटा।
सुष्ठु-वि० [सं०] [भाव० सुष्ठुता, सौष्ठव] १. उत्तम। अच्छा। २. सुन्दर।
सुष्मना*-स्त्री० = सुषुम्ना।
सुसंगति-स्त्री० [सं०सु+हि०संगत] अच्छे या भले आदमियों की संगत। सत्संग।
सुसज्जित-वि० [सं०] [स्त्री० सुसज्जिता] अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ।
सुसर(ा)-पुं० दे० 'ससुर'।
सुसराल-स्त्री० दे० 'ससुराल'।
सुसा*-स्त्री० [सं० स्वसृ] बहन।
सुसाध्य-वि० [सं०] [संज्ञा सुसाधन] सहज में हो सकनेवाला। सुगम।
सुसुकना-अ० = सिसकना।
सुसुपि(प्ति)*-स्त्री० = सुषुप्ति।
सुस्त-वि० [फा०] [भाव० सुस्ती] १. जिसकी प्रसन्नता या उत्साह बहुत कम हो गया हो। उदास। २. जिसका बल या वेग घट गया हो। मन्द। ३. जो अच्छी तरह पूरा काम न कर सके। धीमा। आलसी।
सुस्ताई*-स्त्री० = सुस्ती।
सुस्ताना-अ० [फा० सुस्त] काम करते करते थककर विश्राम करना। थकावट मिटाने के लिए काम रोकना।

सुस्ती-स्त्री० [फा० सुस्त] १. सुस्त होने का भाव । शिथिलता । २. आलस्य ।

सुस्थ-वि० [सं०] [भाव० सुस्थता] १. भला-चंगा । नीरोग। स्वस्थ । २.प्रसन्न। सुखी । ३. अच्छी तरह बैठा या जमा हुआ।

सुस्वादु-वि० [सं०] जिसका स्वाद बहुत अच्छा हो । बहुत स्वादिष्ट ।

सुहँगा(1)*-वि० [हिं० 'महँगा' का अनु०] सस्ता ।

सुहटा*-वि० [स्त्री०सुहटी] = सुहावना ।

सुहराना-स० = सहलाना ।

सुहलक*-पुं० दे० 'सुहेल' ।

सुहाग-पुं० [सं० सौभाग्य] १. स्त्री की वह अवस्था जिसमें उसका पति जीवित हो । सधवा रहने की दशा । सौभाग्य । २. वे गीत जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की स्त्रियाँ गाती हैं ।

सुहागिन-स्त्री० [हिं० सुहाग] वह स्त्री जिसका पति जीवित हो । सधवा । सौभाग्यवती ।

सुहागिल*-स्त्री० = सुहागिन ।

सुहाना-अ० [सं० शोभन] १. अच्छा या भला जान पड़ना । सुन्दर लगना । २. सुशोभित होना । शोभा देना । वि० दे० 'सुहावना' ।

सुहाया*-वि० = सुहावना ।

सुहारी-स्त्री० [सं० सु+आहार] पूरी नामक पकवान ।

सुहावना-वि० [हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] देखने में भला और सुन्दर जान पड़नेवाला । प्रिय-दर्शन ।

* अ० दे० 'सुहाना' ।

सुहावल-वि० दे० 'सुहावना' ।

सुहृद-पुं० [सं० सुहृत] १. अच्छे और शुद्ध हृदयवाला मनुष्य । २. सखा । मित्र ।

सुहेल-पुं० [अ०] एक कल्पित तारा, जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह यमन देश में दिखलाई देता है और इसके उदित होने पर चमड़े में सुगन्ध आ जाती है तथा सब जीव मर जाते हैं । हिन्दी के कवियों ने इसका निकलना शुभ माना है।

सुहेलरा*-वि० पुं० दे० 'सुहेला' ।

सुहेला-वि० [सं० शुभ ?] १ सुहावना । सुन्दर । २. सुख देनेवाला ।

पुं० १. मंगल गीत । २. स्तुति ।

सूँ*-अव्य० [सं० सह] करण और अपादान का चिह्न । से । (ब्रज भाषा)

सूँघना-स० [सं० सु+घ्राण] १. नाक से गंध का अनुभव करना । वास लेना । मुहा०-सिर सूँघना=एक रसम जिसमें बड़े लोग मंगल-कामना के लिए छोटों का मस्तक सूँघते हैं ।

२. बहुत थोड़ा भोजन करना । (व्यंग्य) ३. (साँप का) काटना । डसना ।

सूँघा-पुं० [हिं० सूँघना] १. वह जो केवल सूँघकर बतलाता हो कि जमीन के नीचे इस जगह पानी या खजाना है । २ भेदिया । जासूस ।

सूँड़-पुं०[सं०शुण्ड] हाथी का वह लंबा अंग जो प्रायः जमीन तक लटकता और नाक का काम देता है । शुंड ।

सूँड़ी-स्त्री० [सं० शुंडी] १. अनाज या फसल में लगनेवाला एक प्रकार का सफेद कीड़ा । २. दे० 'जल-स्तंभ' ।

सूँस-स्त्री० [सं० शिशुमार] एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जंतु । सूस ।

सूँहै*-अव्य० [सं० सम्मुख] सामने ।

सूअर-पुं० [सं० शूकर] [स्त्री० सूअरी] एक प्रसिद्ध स्तनपायी जंतु जो आकार और वास-स्थान के विचार से दो प्रकार

को होता है—जैंगली और पालतू।

सूआ-पुं० [सं० शुक] तोता।

पुं० [हिं० सूई] बड़ी सूई।

सूई-स्त्री० [सं० सूची] १. लोहे का वह छोटा पतला उपकरण जिसके छेद में तागा पिरोकर कपड़ा सीते हैं। २. किसी विशेष परिमाण, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा। जैसे-घड़ी की सूई। ३. पौधे का छोटा पतला अंकुर।

सूक्त-पुं० [सं०] वेद के मंत्रों या ऋचाओं का कोई संग्रह।

वि० अच्छी तरह कहा हुआ।

सूक्ति-स्त्री० [सं०] उत्तम या सुन्दर उक्ति, पद, वाक्य आदि।

सूक्ष्म-वि० [सं०] [स्त्री० सूक्ष्मा, भाव० सूक्ष्मता] बहुत छोटा, पतला या थोड़ा। पुं० १. लिंग शरीर। २. एक अलंकार जिसमें सूक्ष्म चेष्टाओं से अपनी मनोवृत्ति प्रकट करने का वर्णन होता है।

सूक्ष्मदर्शक यंत्र-पुं० [सं०] वह यंत्र जिससे देखने पर छोटी चीजें बड़ी दिखाई देती हैं। (माइक्रोस्कोप)

सूक्ष्मदर्शी-वि० [सं० सूक्ष्मदर्शिन्] बहुत ही सूक्ष्म या छोटी छोटी बातें तक सोच या समझ लेनेवाला।

सूक्ष्म दृष्टि-स्त्री० [सं०] छोटी छोटी बातें तक सहज में समझ या देख लेनेवाली दृष्टि।

सूक्ष्म शरीर-पुं० [सं०] वह कल्पित शरीर जो पाँच प्राणों, पाँच ज्ञानेंद्रियों, पाँच सूक्ष्म भूतों तथा मन और बुद्धि के योग से बना हुआ और मनुष्य की मृत्यु के उपरान्त भी बना रहनेवाला माना जाता है। लिंग शरीर।

सूखना-अ० [सं० शुष्क] १. नमी, रस आदि से रहित हो जाना। शुष्क होना। २. जल न रहना या कम हो जाना। ३. बहुत डर जाने के कारण सन्न होना। ४. रोग चिन्ता आदि से दुबला होना।

सूखा-वि० [सं० शुष्क] [स्त्री० सूखी] १. रस, जल, तरी आदि से रहित। २ हृदय-हीन। अ-सरस। ३. केवल। निरा। जैसे-सूखा भोजन=वह भोजन जिसके साथ वेतन, वृत्ति आदि न हो।

मुहा०-सूखा जवाब देना = साफ इनकार करना।

पुं० १. पानी न बरसने की दशा या समय। अनावृष्टि। २. ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। स्थल। ३. तंबाकू का सुखाया हुआ चूरा या पत्ता। ४. एक प्रकार की खाँसी। हब्बा-डब्बा। ५. दे० 'सुखंडी' (रोग)।

सूघर*-वि० दे० 'सुघड़'।

सूचक-वि० [सं०] [स्त्री० सूचिका] १. सूचना देनेवाला या कोई बात बताने-वाला। २. किसी बात के अस्तित्व के लक्षण आदि बतानेवाला। बोधक। (तत्व)

सूचना-स्त्री० [सं०] [वि० सूचनीय, सूचित] १.वह बात जो किसी को किसी विषय का ज्ञान या परिचय कराने के लिए कही जाय। जताने या बताने के लिए कही हुई बात। (इन्फॉर्मेशन) २. वह पत्र आदि जिनपर इस प्रकार की कोई बात लिखी या छपी हो। विज्ञापन। इश्तहार। (नोटिस) ३. वह बात जो कोई कारंवाई करने से पहले किसी संबद्ध व्यक्ति को पहले से सचेत करने के लिए कही जाय। (इन्फॉर्मेशन) ४. दुर्घटना आदि के संबंध में अदालती या और किसी तरह की कारंवाई करने से पहले पुलिस या किसी और उपयुक्त अधिकारी से उसका हाल कहना। (रिपोर्ट) ५.

कहीं से आनेवाले माल के साथ या उसके संबंध में आया हुआ विवरण, सूची आदि। बीजक। चलान।(ऐडवाइस) क्रम० [सं० सूचन] बतलाना।

सूचनापत्र-पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसपर कोई सूचना छपी या लिखी हो। विज्ञप्ति। इश्तहार। (नोटिस)

सूचिका-स्त्री० [सं०] सूई।

सूचित-वि० [सं०] जिसकी सूचना दी गई हो। बताया हुआ। ज्ञापित।

सूची-स्त्री० [सं०] १. कपड़ा सीने की सूई। २. सेना का एक प्रकार का व्यूह। ३. दे० 'सूचीपत्र'।

सूचीपत्र-पुं० [सं०] वह पुस्तिका जिसमें बहुत-सी चीजों की नामावली, विवरण, मूल्य आदि हों। तालिका। सूची। (कैटलॉग)

सूछम*-वि०=सूक्ष्म।

सूच्य-वि० [सं०]सूचित करने के योग्य।

सूच्यार्थ-पुं० [सं०] शब्दों की व्यंजना-शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

सूछम*-वि० = सूक्ष्म।

सूजन-स्त्री० [हिं० सूजना] सूजने की क्रिया या भाव। शोथ।

सूजना-अ० [फा० सोजिश] आघात, रोग आदि के कारण शरीर के किसी अंग का प्रायः पीड़ा लिये हुए फूलना। शोथ होना।

सूजा-पुं० [सं० सूची] बड़ी सूई।

सूजाक-पुं०[फा०] मूत्रेंद्रिय का एक रोग जिसमें उसके अन्दर घाव हो जाता है।

सूजी-स्त्री० [सं० शुचि] गेहूँ का एक विशेष प्रकार का दरदरा आटा।

सूझ-स्त्री० [हिं० सूझना] १. सूझने का भाव। २. दृष्टि। नज़र। ३. अनोखी कल्पना। उपज।

सूझना-अ० [सं० संज्ञान] १. दिखाई देना। २. ध्यान में आना।

सूझ-बूझ-स्त्री० [हिं० सूझ+बूझना= समझना) दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता।

सूट-पुं० [अं०] पहनने के सब कपड़े, विशेषतः कोट, पतलून आदि।

सूत-पुं० [सं० सूत्र] १. रुई, रेशम आदि का वह पतला बटा हुआ तागा जिससे कपड़ा बुनते हैं। तंतु। धागा। डोरा। २. किसी चीज में से निकलनेवाला इस प्रकार का तार। ३. लंबाई नापने का एक छोटा मान। ४. इमारत के काम में लकड़ी आदि पर निशान डालने की डोरी। मुहा०-सूत धरना या बाँधना = निशान लगाना।

पुं० [सं०] [स्त्री० सूती] १. प्राचीन काल की एक वर्ण-संकर जाति। २. सारथी। ३.भाट। चारण। ४.पुराणों की कथा कहनेवाला। पौराणिक। ५ सूत्रधार।

वि० [सं०] प्रसूत। उत्पन्न।

पुं० दे० 'सूत्र'।

वि० [सं० सूत्र=सूत] भला। अच्छा।

सूतक-पुं० [सं०] १. जन्म। २. घर में संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को लगनेवाला अशौच।

सूतक-गेह-पुं० दे० 'सूतिकागार'।

सूतकी-वि० [सं० सूतकिन्] जिसे सूतक या अशौच लगा हो।

सूतना†-अ० दे० 'सोना'। (शयन)

सूतवाँ-वि० [हिं० सूत] (सूत से नापकर ठीक की हुई वस्तु के समान) सुडौल। जैसे-सूतवाँ नाक।

सूतिका-स्त्री० [सं०] वह स्त्री जिसे अभी हाल में बच्चा हुआ हो। जच्चा।

सूतिकागार(गृह)-पुं० [सं०] वह

कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती है। सौरी। प्रसव-गृह।

सूतिमा-पुं० दे० 'सूतक'।

सूती-वि० [हिं०सूत] सूत का बना हुआ। स्त्री० दे० 'सीपी'।

सूत्र-पुं० [सं०] [वि० सूत्रित] १. सूत। तागा। डोरा। २. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ३. करधनी। ४. नियम। व्यवस्था। ५. थोड़े शब्दों में कहा हुआ वह पद या वचन जिसमें बहुत और गूढ़ अर्थ हों। ६. वह बात जिसके सहारे किसी दूसरी बहुत बड़ी बात, घटना, रहस्य आदि का पता लगे। पता। सुराग। (क्ल्यू) ७ वह सांकेतिक पद या शब्द जिसमें कोई वस्तु बनाने या कार्य्य करने के मूल सिद्धान्त, प्रक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो। (फॉर्म्यूला)

सूत्रकार-पुं० [सं०] १. वह जिसने सूत्रों की रचना की हो। सूत्ररचयिता। (विशेष दे० 'सूत्र' ५) २ बढ़ई। ३.जुलाहा।

सूत्रधर(धार)-पुं० [सं०] १. नाट्य-शाला का प्रधान और नाटक की व्यवस्था करनेवाला नट। २. बढ़ई। ३. पुराणा-नुसार एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

सूत्रपात-पुं० [सं०] किसी कार्य का प्रारम्भ होना या प्रारम्भ होने का पूरा आयोजन होना। नींव पड़ना।

सूत्रित-वि० [सं०] सूत्र के रूप में लाया या बनाया हुआ। (फॉरमूलेटेड)

सूथन-स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पायजामा।

सूद-पुं० [फा०] १. लाभ। फायदा। २. उधार दिये हुए धन के बदले में मिलनेवाला (मूल से भिन्न) धन। ब्याज। वृद्धि।

मुहा०-सूद दर सूद = ब्याज का भी ब्याज। चक्र-वृद्धि।

सूदखोर-वि [फा०] [भाव० सूदखोरी] बहुत सूद या ब्याज लेनेवाला।

सूदन-वि० [सं०] विनाश करनेवाला। पुं० [सं०] वध करना। मार डालना।

सूदना*-स० [सं० सूदन] नष्ट करना।

सूदी-वि० [फा० सूद] (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर दी गई हो। ब्याजू।

सूध*-वि० १. दे० 'सीधा'। २. दे० 'शुद्ध'।

सूधना*-अ० [सं० शुद्ध] १.सिद्ध होना। २. सत्य या ठीक होना।

सूधा-वि० = सीधा।

सूधे-क्रि० वि० [हिं०सूधा] सीधी तरह से।

सून-पुं० [सं०] १. प्रसव। जन्म। २. फूल की कली। ३ फूल। ४ पुत्र। बेटा। * वि० दे० 'शून्य'।

सूना-वि० [सं० शून्य] [स्त्री० सूनी] जिसमें या जहाँ कोई न हो। निर्जन। एकान्त। सुनसान।

पुं० निर्जन स्थान। एकान्त।

स्त्री० [सं०] १. पुत्री। बेटी। २. कसाई-खाना। ३. गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चीजें (चूल्हा, चक्की आदि) जिनमें या जिनसे अनजान में जीव-हिंसा होती या होने की संभावना रहती है। ४.हत्या।

सूप-पुं० [सं०] १. पकाई हुई दाल या उसका पानी। २. रसेदार तरकारी। ३. रसोइया। ४. बाण। तीर।

पुं० दे० 'छाज'। (अनाज फटकने का)

सूप शास्त्र-पुं०=पाक-शास्त्र।

सूफ-पुं० [अ०] १. पशम। ऊन। २. देशी काली स्याहीवाली दावात में डाला जानेवाला लत्ता या चिथड़ा।

सूफी-पुं० [अ०] १.मुसलमानों का एक

धार्मिक संप्रदाय जो अपने विचारों की उदारता के लिए प्रसिद्ध है और जिसमें साधारण मुसलमानों का कट्टरपन बिलकुल नहीं है। २.इस सम्प्रदाय का अनुयायी।

सूबा-पुं०[अ०सूबः] १.किसी देश का कोई भाग। प्रांत। प्रदेश। २. दे० 'सूबेदार'।

सूबेदार-पुं० [फा० सूबः+दार (प्रत्य०)] १. किसी सूबे या प्रांत का प्रधान अधिकारी या शासक। २. सेना विभाग में एक छोटा पद। ३. इस पद पर रहनेवाला व्यक्ति।

सूबेदारी-स्त्री० [फा०] सूबेदार का पद या काम।

सूभर*-वि०[सं०शुभ्र]१.सफेद। २.सुंदर।

सूम-वि० [अ० शूम] कृपण। कंजूस।

सूर-पुं०[सं०] १.सूर्य। २.आक। मदार। ३.विद्वान्। ४.आचार्य। ५ दे०'सूरदास'।

* पुं० [सं० शूर] वीर। बहादुर।

यौ०-सूर-सावंत (सामंत)=१. बहुत बड़ा बहादुर। २ युद्ध का संचालन करनेवाला अधिकारी। ३. नायक। सरदार।

*-पुं० [सं० शूकर] १. सूअर। २. भूरे रंग का घोड़ा।

* पुं० दे० 'शूल'।

पुं० [देश०] पठानों का एक वंश।

सूरज-पुं० [सं० सूर्य] सूर्य।

सूरज-मुखी-पुं० [सं०सूर्यमुखी] १. एक पौधा जिसके पीले रंग के फूल दिन के समय सीधे खड़े रहते और रात के समय नीचे झुक जाते हैं। २. एक प्रकार का शीशा जिसपर सूर्य का ताप पड़कर एक केन्द्र में एकत्र होता और वहाँ ताप या अग्नि उत्पन्न करता है। ३ बड़े पंखे के आकार का एक प्रकार का राज-चिह्न। ४. मनुष्यों के शरीर का एक विशेष प्रकार का रंग-जिसे वैद्य और युरोपियनों आदि के वर्ण से मिलता-जुलता होता है।

सूरत-स्त्री०[फा०]१.रूप। आकृति। शक्ल।

मुहा०-सूरत दिखाना=सामने आना।

सूरत बनाना=१. अच्छा रूप देना या बनाना। २. नाक-भौंह सिकोड़ना।

सूरत बिगड़ना=रूप-रंग आदि खराब होना या फीका पड़ना।

२ शोभा। सौन्दर्य।३.कार्य-सिद्धि का मार्ग या युक्ति। ४. अवस्था। दशा। हालत।

स्त्री० [अ० सूरः] कुरान का प्रकरण।

* स्त्री० दे० 'सुरत'।

सूरता(ई)*-स्त्री०=शूरता।

सूरदास-पुं० [सं०] ब्रज भाषा के एक प्रसिद्ध और परम श्रेष्ठ कृष्ण-भक्त महाकवि और महात्मा जो अंधे थे।

सूरन-पुं०[सं०सूरण] एक प्रसिद्ध कंद जिसकी तरकारी बनती है। जमींकंद। ओल।

सूरनखा*-स्त्री० दे० 'शूर्पणखा'।

सूरमा-पुं० [सं० शूर] वीर। बहादुर।

सूराख- पुं० [फा०] छेद। छिद्र।

सूरी*-स्त्री० दे० 'सूली'।

* पुं० [सं० शूल] भाला।

सूरुज*-पुं० = सूर्य।

सूर्य-पुं० [सं०] हमारे सौर जगत् का वह सबसे बड़ा और ज्वलंत पिंड जिससे सब ग्रहों को गरमी और प्रकाश मिलता है। प्रभाकर। दिनकर। २.बारह की संख्या।

सूर्यकांत-पुं० [सं०] १. एक तरह का बिल्लौर। २. सूरजमुखी शीशा।

सूर्य-ग्रहण-पुं० [सं०] पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने और उसकी छाया पड़ने से होनेवाला सूर्य का ग्रहण।

सूर्य लोक-पुं० [सं०] सूर्य का लोक। (कहते हैं कि युद्ध-क्षेत्र में लड़कर मरने-

बाले इसी लोक में आते हैं।)

सूर्य्यास्त-पुं०[सं०]१.सन्ध्या को सूर्य्य का छिपना या डूबना। २.सन्ध्या का समय।

सूर्य्योदय-पुं० [सं०] १. सूर्य्य का उदय होना या निकलना। २. सूर्य्य निकलने का समय। प्रातःकाल। सबेरा।

सूल-पुं० दे० 'शूल'।

सूलना-स० [हिं० सूल+ना (प्रत्य०)] १. नुकीली चीज से छेदना। २.कष्ट देना। अ० १. नुकीली चीज से छिदना। २. पीड़ित या व्यथित होना।

सूली-स्त्री [सं० शूल] १. लोहे आदि का वह नुकीला डंडा या इसी प्रकार का और कोई उपकरण जिसपर बैठा या लटकाकर प्राचीन काल में अपराधियों को प्राण-दंड दिया जाता था। २. प्राण-दंड। ३. दे० 'फाँसी'

* पुं० [सं० शूलिन्] महादेव। शिव।

सूवना*-अ० [सं० स्रवण] बहना।

सूस-पुं० दे० 'सूँस' (जल-जन्तु)।

सूहा-पुं० [हिं० सोहना] १. एक प्रकार का लाल रंग।

वि० [स्त्री० सूही] लाल रंग का।

सृक-पुं० [सं०] १. बरछा। भाला। २. बाण। तीर। ३. वायु। हवा।

*पुं० [सं० स्रज, स्रक्] माला। हार।

सृग*-पुं० दे० 'सृक'।

सृजक*-पुं० [सं० सृज्] सृष्टि या रचना करनेवाला। स्रष्टा।

सृजन*-पुं० [सं० सृज् , सर्जन] १. सृष्टि या रचना करने की क्रिया। २. सृष्टि।

सृजनहार*-पुं०=सृष्टिकर्त्ता।

सृजना*-स०[सं०सृज्+हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि या रचना करना। बनाना।

सृत-वि० [सं०] चला या खिसका हुआ।

सृति-स्त्री० [सं०] १ पथ। रास्ता। २. गमन। चलना। ३.सरकना। खिसकना।

सृष्ट-वि० [सं०] १. जिसकी सृष्टि या रचना की गई हो। बनाया हुआ। निर्मित। रचित। २. छोड़ा हुआ। त्यक्त।

सृष्टि-स्त्री० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. निर्माण। रचना। ३. संसार। जगत्।

सृष्टिकर्त्ता-पुं० [सं० सृष्टिकर्तृ] संसार की रचना करनेवाला। (ब्रह्मा या ईश्वर)

सृष्टि विज्ञान-पुं०[सं०] वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, बनावट और विकास का विवेचन होता है। (कॉस्मोजेनी)

सेंक-पुं० [हिं० सेंकना] १ सेंकने की क्रिया या भाव। २. ताप। गरमी।

सेंकना-स० [सं० श्रेषण] १. आग पर या उसके सामने रखकर साधारण गरमी पहुँचाना। जैसे-रोटी सेंकना। २.धूप में गरमी पहुँचानेवाली चीज के सामने रहकर उसकी गरमी से लाभ उठाना। जैसे-धूप सेंकना।

मुहा०-आँखें सेंकना-=सुन्दर रूप देखकर आँखें तृप्त करना।

सेंत-स्त्री० [सं० संहति] पास का कुछ खर्च न होना।

मुहा०-सेंत का=१ जिसमें कुछ व्यय न हुआ हो। मुफ्त का। सेंत में=१. बिना कुछ व्यय किये हुए। मुफ्त में। २.व्यर्थ।

वि० बहुत अधिक।

सेंतना*-स० दे० 'सैंतना'।

सेंत-मेत-क्रि०वि०[हिं०सेंत+मेत (अनु०)] १. मुफ्त में। २. व्यर्थ।

सेंति (ी)*-प्रत्य० [प्रा० सुंती] पुरानी हिन्दी में करण और अपादान की विभक्ति।

स्त्री० दे० 'सेंत'।

सेंदुर*-पुं० दे० 'सिंदूर'।

सेंद्रिय-वि० [सं०] जिसमें इन्द्रियाँ हों। इन्द्रियोंवाला। जैव। (जीव या जन्तु) (ऑर्गैनिक)

सेंध-स्त्री० [सं० संधि] दीवार में किया हुआ वह छेद जिसमें से घुसकर चोर चोरी करते हैं। सुरंग। नकब।

सेंधा-पुं० [सं० सैंधव] एक प्रकार का खनिज नमक। सैंधव।

सेंधिया-पुं० [हिं० सेंध] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला चोर।
पुं० दे० 'सिंधिया'।

सेंधुआर-पुं० [देश०] एक प्रकार का मांसाहारी जन्तु।

सेंधुर†-पुं० दे० 'सिंदूर'।

सेंवई-स्त्री० [सं० सेविका] गुँधे हुए मैदे से बनाये हुए पतले लच्छे जो दूध या पानी में पकाकर खाये जाते हैं।

सेंवर*-पुं० दे० 'सेमल'।

सेंसर-पुं० [अं०] वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, चित्र-पट दिखाये जाने या तार से कहीं समाचार भेजे जाने के पूर्व देखने या जाँचने और रोकने का अधिकार होता है।

सेंहुड़-पुं० दे० 'थूहर'।

से-प्रत्य० [प्रा० सुंत] करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति, जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है-(क) द्वारा; जैसे-हाथ से देना, (ख) आपेक्षिक मान में कम या अधिक; जैसे-इससे कम, (ग) सीमा का आरम्भ; जैसे-यहाँ से।
वि० हिं० 'सा' (समान) का बहु०।
* सर्व० हिं० 'सो' (वह) का बहु०।

सेउ*-पुं० दे० 'सेब' और 'सेव'।

सेकंड-पुं० [अं०] एक मिनट का साठवाँ भाग। (काल-मान)

सेख*-पुं० दे० 'शेष' और 'शेख'।

सेगा-पुं० [अ०] विभाग।

सेचक-वि० [सं०] सींचनेवाला।

सेचन-पुं० [सं०] [वि० सेचनीय, सेचित] १. जमीन आदि जल से सींचना। सिंचाई। २. छिड़काव। ३. अभिषेक।

सेज-स्त्री० [सं० शय्या] शय्या। पलंग।

सेजपाल-पुं० [हिं० सेज+पाल] राजा की सेज का पहरा देनेवाला सैनिक।

सेजरिया*-स्त्री० = सेज।

सेटना*-अ० [सं० श्रत] १. मानना। २. महत्व स्वीकार करना।

सेठ-पुं० [सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी] बड़ा साहूकार। धनी और महाजन।

सेढ़ा†-पुं० दे० 'सींढ़'।

सेत*-पुं० दे० 'सेतु'।
वि० दे० 'श्वेत'।

सेतदुति*-पुं० = चंद्रमा।

सेतवाह*-पुं० = अर्जुन (पांडव)।

सेती†-अव्य० दे० 'से'।

सेतु-पुं० [सं०] १. नदी आदि पर का पुल। २. पानी की रुकावट के लिए बना हुआ बाँध। (डैम) ३. खेत की मेंड़। बाँध। ४. सीमा। हद।

सेतुक*-पुं० दे० 'सौतुख'।

सेतुबंध-पुं० [सं०] १. पुल या बाँध बनाने का काम। २.कन्या कुमारी के पास का समुद्र का वह पुल जो लंका पर चढ़ाई करने के समय रामचन्द्र जी ने बनवाया था।

सेद*-पुं० दे० 'स्वेद'।

सेन-पुं० [सं० श्येन] बाज पक्षी।
* स्त्री० दे० 'सेना'।

सेनप-पुं० = सेनापति।

सेना-स्त्री० [सं०] युद्ध के लिए सिखाये हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए सैनिकों या सिपाहियों का बड़ा दल या समूह। फ़ौज। पलटन। (आर्मी)

स० [सं० सेवन] १. सेवा-टहल करना। मुहा०-चरण सेना=१. पैर दबाना। २. किसी की तुच्छ चाकरी करना।

२. आराधना या उपासना करना। ३. नियमित रूप से प्रयोग करना। ४.पवित्र स्थान पर निरन्तर वास करना। ५. मादा पक्षी का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना। ६. व्यर्थ लेकर बैठे रहना। (व्यंग्य)

सेनाध्यक्ष-पुं० [सं०] सेनापति।

सेनानायक-पुं० [सं०] सेनापति।

सेनानी-पुं० [सं०] १. सेनापति। २. कार्त्तिकेय।

सेना-न्यायालय-पुं०=सैनिक न्यायालय।

सेनापति-पुं० [सं०] [भाव० सेना-पत्य] १. सेना का प्रधान और सबसे बड़ा अधिकारी। (कमान्डर-इन्-चीफ़) २. कार्त्तिकेय।

सेना-वाहक-पुं० [सं०] वह हवाई या समुद्री जहाज जो सैनिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है।

सेनि*-स्त्री० दे० 'श्रेणी'।

सेनी-स्त्री० [फ़ा० सीनी] तश्तरी।

*स्त्री० [सं० श्येनी] मादा बाज पक्षी।

* स्त्री० = श्रेणी।

सेब-पुं० [फ़ा०] नाशपाती की तरह का एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़।

सेमई-स्त्री० दे० 'सेंवई'।

सेमल-पुं० [सं० शाल्मलि] एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फलों में से एक प्रकार की रूई निकलती है।

सेमेटिक-पुं० दे० 'शामी'।

सेर-पुं० [सं० सेठ ?] सोलह छटाँक, चार पाव या अस्सी तोले की एक तौल।

सेरा-पुं० [हिं० सिर] चारपाई में सिरहाने की ओर की पाटी या लकड़ी।

पुं० [फ़ा० सेराब] सींची हुई जमीन।

सेराना*-अ०[सं०शीतल] १. ठंडा होना। २. मर जाना। ३. समाप्त होना।

स० १. ठंडा करना। २. मूर्त्ति आदि जल में प्रवाहित करना।

अ० [फ़ा० सेर] तृप्त होना। अघाना।

स० [फ़ा० सेर] तृप्त करना।

सेल-पुं० [सं० शल्य] बरछा। भाला।

सेला-पुं० [सं० शल्लक] [स्त्री० अल्पा० सेली] एक प्रकार का तिल्लेदार दुपट्टा।

सेलिया-पुं० [?] एक प्रकार का घोड़ा।

सेली-स्त्री० [हिं० सेल] बरछी।

स्त्री० [हिं० सेला] १. छोटा दुपट्टा। २. गाँती। ३. वह माला जो योगी आदि गले में या सिर पर लपेटते हैं। ४. एक प्रकार का गहना।

सेव-पुं०[सं०सेविका] सूत के रूप में बना हुआ बेसन का एक प्रकार का पकवान।

* स्त्री० दे० 'सेवा'।

पुं० दे० 'सेब'।

सेवक-पुं० [सं०] [स्त्री० सेविका, सेव-कनी, सेवकिनी] १. सेवा करनेवाला। नौकर। (सर्वेन्ट) २. सेवन करनेवाला। ३ किसी पवित्र स्थान में नियमपूर्वक स्थायी रूप से निवास करनेवाला।

सेवकाई-स्त्री०=सेवा।

सेवग*-पुं०=सेवक।

सेवड़ा-पुं० [?] एक प्रकार के जैन साधु।

पुं० [हिं० सेव] सेव की तरह का पर

उससे मोटा, एक प्रकार का पकवान।

सेवति*-स्त्री० दे० 'स्वाती'।

सेवती-स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब।

सेवन-पुं० [सं०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवी] १. परिचर्या। टहल। सेवा। २.उपासना। आराधना। ३. नियमित रूप से किया जानेवाला प्रयोग या व्यवहार। इस्तेमाल। जैसे-औषध का सेवन। ४. बराबर किसी बड़े के पास या किसी अच्छे स्थान पर रहना। जैसे-काशी-सेवन। ५. उपभोग।

सेवना*-स० दे० 'सेना'।

सेवनी-स्त्री०=दासी।

सेवनीय-वि० [सं०] सेवन करने योग्य।

सेवरी*-स्त्री० दे० 'शबरी'।

सेवा-स्त्री० [सं०] १.बड़े, पूज्य, स्वामी आदि को सुख पहुँचाने के लिए किया जानेवाला काम। परिचर्या। टहल। मुहा०-सेवा में = बड़े के सामने। २. सेवक या नौकर होने की अवस्था या काम। नौकरी। ३. व्यक्ति, संस्था आदि से कुछ वेतन लेकर उनका कुछ काम करने की क्रिया या भाव। नौकरी। ४. किसी लोकोपयोगी वस्तु, विषय, कार्य आदि में रुचि होने के कारण उसके हित, वृद्धि, उन्नति आदि के लिए किया जानेवाला काम। जैसे-साहित्य-सेवा, देश-सेवा आदि। ५. सार्वजनिक अथवा राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जिम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो। जैसे-वैचारिक सेवा (जुडीशियल सर्विस), साधनिक सेवा। (इक्जिक्यूटिव सर्विस) ६ इस प्रकार के किसी विभाग में काम करनेवालों का समूह या वर्ग। (सर्विस, उक्त सभी अर्थों के लिए) ७. धार्मिक दृष्टि से ईश्वर, देवता आदि का पूजन या उपासना। आराधना। ८.आश्रय। शरण। जैसे-आज-कल मैं इन्हीं की सेवा में हूँ।

सेवादार(धारी)-पुं० [हिं० सेवा+फा० दार] सिक्ख गुरुद्वारे में रहकर वहाँ की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

सेवा-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमें सेवकों, विशेषतः राजकीय सेवकों के सेवा-काल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती हैं। (सरविस बुक)

सेवार(ल)-स्त्री० [सं० शैवाल] पानी के अन्दर होनेवाली एक प्रकार की घास।

सेवा-वृत्ति-स्त्री० [सं०] नौकरी।

सेविका-स्त्री० [सं०] सेवा करनेवाली स्त्री। दासी।

सेवित-वि० [सं०] [स्त्री० सेविता] १. जिसकी सेवा की जाय या की गई हो। २. जिसका सेवन या प्रयोग किया जाय या किया गया हो। ३. उपभोग किया हुआ।

सेवी-वि० [सं० सेविन्] सेवन करनेवाला। (विशेष दे० 'सेवन'।)

सेव्य-वि० [सं०] [स्त्री० सेव्या] १. जिसकी सेवा, पूजा या आराधना करनी हो या की जाय। २. सेवन करने के योग्य। पुं० स्वामी। मालिक।

सेव्य-सेवक-पुं० [सं०] स्वामी और सेवक। पद-सेव्य-सेवक भाव = भक्ति-मार्ग में उपासना का एक भाव जिसमें देवता को स्वामी और अपने आपको उसका सेवक माना जाता है।

सेष*-पुं० दे० 'शेष' और 'शेख'।

सेस*-पुं० वि० दे० 'शेष'।

सेहत-स्त्री० दे० 'स्वास्थ्य'।

सेहरा-पुं० [हिं० सिर+हार] १. विवाह

के समय वर को पहनाने के लिए फूलों या सोनहले-रुपहले तारों आदि की बड़ी मालाओं की पंक्ति या पुंज। २ विवाह का मुकुट। मौर।

मुहा०-किसी के सिर सेहरा बँधना= किसी को किसी बात का श्रेय मिलना। ३. विवाह के अवसर पर वर-पक्ष में गाये जानेवाले मांगलिक गीत या पद्य।

सैंकड़ा-पुं० [हि० सै या सौ] सौ का समूह। एक सौ।

सैंकड़े-क्रि० वि० [हि० सैंकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रति शत। जैसे-चार रुपये सैंकड़े।

सैंकड़ों-वि० [हि० सैंकड़ा] १. कई सौ। २. गिनती में बहुत अधिक।

सैंडल-पुं० [अं०] पैर में पहनने का एक प्रकार का जूता। चप्पल।

सैंतना†-स०[सं०संचय] १.संचित करना। इकट्ठा करना। २. समेटना। ३. सहेजना।

सैंथी†-स्त्री० [?] छोटा भाला। बरछी।

सैंधव-पुं० [सं०] १. नमक। २.सिन्ध देश का घोड़ा।

वि० १.सिन्ध देश का। २. सिन्धु या समुद्र सम्बन्धी।

सैंहु*-वि० दे० 'सौंह'।

सैंहथी†-स्त्री० दे० 'सैंथी'।

सै†-वि० [सं० शत] सौ।

*स्त्री० [सं० सत्व या फा० शै (चीज)?] १. तत्व। सार। २. वीर्य। ३. बल। शक्ति। ४. बढ़ती। वृद्धि।

सैकत(तिक)-वि० [सं०] [स्त्री० सैकती] १. रेतीला। बलुआ। (स्थान) २. रेत या बालू का बना हुआ। (पदार्थ)

सैकल-पुं० दे० 'सिकली'।

सैद*-पुं० दे० 'सैयद'।

सैद्धांतिक-पुं० [सं०] सिद्धान्त का ज्ञाता। विद्वान्। पंडित।

वि० सिद्धान्त सम्बन्धी। जैसे-सैद्धांतिक मत-भेद या विवाद।

सैन-स्त्री० [सं० संज्ञपन] १. संकेत। इशारा। २. चिह्न। निशान।

*पुं० १. दे० 'शयन'। २. दे० 'श्येन'।

*स्त्री० दे० 'सेना'।

पुं० [देश०] एक प्रकार का बगला।

सैनपति*-पुं० = सेनापति।

सैना*-स्त्री० दे० 'सेना'।

सैनिक-पुं०[सं०] [भाव० सैनिकता] सेना या फौज में रहकर लड़नेवाला सिपाही।

वि० सेना-सम्बन्धी। सेना का। जैसे-सैनिक न्यायालय, सैनिक आयोजन।

सैनिक न्यायालय-पुं० सैनिक विभाग का वह विशिष्ट न्यायालय जो साधारणतः सेना-विभाग में होनेवाले अपराधों का विचार और न्याय करता है। (कोर्ट मार्शल)

सैनिकीकरण-पुं० [सं० सैनिक+करण] लोगों को सैनिक बनाने और सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम।

सैनिटोरियम-पुं० [अं०] वह स्थान जहाँ लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए जाकर रहते हैं। स्वास्थ्य-निवास।

सैनी-पुं० [सेना भगत (व्यक्ति)] हज्जाम।

*स्त्री० दे० 'सेना'।

सैनेय*-वि० [सं० सेना] सेना में रहकर लड़ सकने के योग्य।

सैन्य-पुं० [सं०] १.सैनिक। सिपाही। २. सेना। फौज। ३.सैनिक पड़ाव। छावनी।

वि० सेना सम्बन्धी। फौज का।

सैन्य-सज्जा-स्त्री० [सं०] सेना को आवश्यक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित करना।

सैफ-स्त्री० [अ०] तलवार।

सैयद्-पुं० [अ०] मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंशजों का वर्ग या उपाधि।
सैयाँ*-पुं० [सं० स्वामी] पति।
सैरंध्र-पुं० [सं०] [स्त्री० सैरंध्री] १. सेवक। नौकर। २. एक प्राचीन जाति।
सैरंध्री-स्त्री० [सं०] १. अन्तःपुर में रहनेवाली दासी। २. द्रौपदी का एक नाम।
सैर-स्त्री० [फा०] १. मन बहलाने के लिए कहीं जाना या इधर-उधर घूमना-फिरना। २. मौज। आनन्द। ३. बाग-बगीचे आदि में कुछ मित्रों का होनेवाला खान-पान और आमोद-प्रमोद। ४. मनोरंजक दृश्य। तमाशा।
सैरा-पुं० [फा० सैर या अ० सहरा=जंगल ?] चित्र में अंकित प्राकृतिक दृश्य।
सैल-स्त्री० दे० 'सैर'।
पुं० दे० 'शैल'।
स्त्री० [फा० सैलाब] १. नदी आदि की बाढ़। २. पानी का बहाव।
सैलजा*-स्त्री० दे० 'शैलजा'।
सैलानी-वि० [फा० सैर] सैर-सपाटा करने या मनमाना घूमनेवाला।
सैलाब-पुं० [फा०] पानी की बाढ़।
सैलाबी-वि० [फा०] (खेत या स्थान) जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो।
सैलूख*-पुं० दे० 'शैलूष'।
सैवल*-पुं० दे० 'शैवाल'।
सों*†-प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] द्वारा। से।
क्रि० वि० संग। साथ।
वि० दे० 'सा'।
स्त्री०, अव्य० दे० 'सौंह'।
सोंटा-पुं० [सं० शुण्ड या हिं० सटना] १. मोटा डंडा। २. भंग घोटने का डंडा।
सोंठ-स्त्री० [सं० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक।
सोंठौरा†-पुं० [हिं० सोंठ] सोंठ तथा कुछ मेवे-मसालों का बना हुआ एक प्रकार का लड्डू। (प्रसूता स्त्री के लिए)
सोंध*-अव्य० दे० 'सौंह'।
सोंधा-वि० [सं० सुगंध] [स्त्री० सोंधी] १. सुगंधित। खुशबूदार। २. मिट्टी पर वर्षा का पहला पानी पड़ने या भुने हुए चने, बेसन आदि से निकलनेवाली सुगंध के समान।
पुं० १. सिर के बाल धोने का एक प्रकार का सुगंधित मसाला। २. तेल को सुगंधित करने के लिए उसमें मिलाया जानेवाला एक प्रकार का मसाला।
सोंह (ी)*-स्त्री०, अव्य० दे० 'सौंह'।
सो-सर्व० [सं० सः] वह।
अव्य० इसलिए। अतः।
*वि० दे० 'सा'।
सोऽहम्-पद[सं०सः+अहम्] वह (अर्थात् ब्रह्म) मैं ही हूँ। (वेदान्त का सिद्धान्त)
सोअना*-अ० दे० 'सोना'। (शयन)
सोआ-पुं० [सं० मिश्रेया] एक प्रकार का साग।
सोई-सर्व० दे० 'वही'।
अव्य० दे० 'सो'।
सोऊ*-वि० [हिं० सोना] सोनेवाला।
सर्व० वह भी।
सोक*-पुं०=शोक।
सोकना*-स० [सं० शोक] शोक करना।
सोकक*-वि० [सं० शोषक] १. सोखने-वाला। २. नष्ट करनेवाला।
सोखना-स० [सं० शोषण] जल या नमी चूसना। शोषण करना।
सोख्ता-पुं० [फा० सोख्तः] एक प्रकार का खुरदुरा कागज जो तुरन्त के लिखे हुए लेख पर की स्याही सोख लेता है।

सोग॰-पुं॰ [सं॰ शोक] किसी के मरने पर होनेवाला दुःख या शोक। मातम।

सोगिनी॰-वि॰, हिं॰ 'सोगी' का स्त्री॰।

सोगी-वि॰ [हिं॰ सोग] [स्त्री॰ सोगिनी] १. शोक मनानेवाला। २. वियोगी।

सोच-पुं॰ [सं॰ शोच] १.चिन्ता। फिक्र। २.दुःख। रंज। ३.पछतावा। पश्चात्ताप।

सोचना-अ॰ [सं॰ शोचन] १. किसी विषय पर मन में कुछ विचार करना। २. चिंता या फिक्र करना। ३. खेद या दुःख करना।

सोच-विचार-पुं॰ [हिं॰ सोच + सं॰ विचार] सोचने और समझने या विचार करने की क्रिया या भाव। गौर।

सोचान-स्त्री॰ [हिं॰ सोचना] सोचने या विचार करने की क्रिया या भाव।

सोझ(ा)[1]-वि॰=सीधा।

सोटर॰-वि॰ [देश॰] मूर्ख। बेवकूफ।

सोढ़ा-स्त्री॰ दे॰ 'सौंढ़'।

सोत-पुं॰ दे॰ 'स्रोत' या 'सोता'।

सोतली[1]-स्त्री॰ दे॰ 'सौत'।

सोता-पुं॰ [सं॰ स्रोत] [स्त्री॰ अल्पा॰ सोती] १. कहीं से निकलकर बराबर बहती रहनेवाली जल की छोटी धारा। झरना। २. नदी की शाखा। ३. नहर।

सोदर-पुं॰ दे॰ 'सहोदर'।

सोध॰-पुं॰=शोध।

पुं॰ [सं॰ सौध] प्रासाद। महल।

सोधना[1]-स॰[सं॰शोधन] १.शुद्ध करना। २. दोष या भूल दूर करना। ३. ढूँढ़ना। ४. कुछ संस्कार करके धातुओं को औषध रूप में काम में लाने के योग्य बनाना। ५. ऋण चुकाना। ६. निश्चित करना।

सोधाना[1]-स॰ हिं॰ 'सोधना' का प्रे॰।

सोधी॰-वि॰ दे॰ 'शोधी'।

सोन-पुं॰ [सं॰ शोण] बिहार का एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिलता है।

वि॰ [सं॰ शोण] लाल। अरुण।

॰ पुं॰ दे॰ 'सोना'।

सोन-चिरी-स्त्री॰ [हिं॰ सोना+चिड़िया] नट जाति की स्त्री। नटिन। नटी।

सोन-जूही-स्त्री॰[हिं॰सोना+जूही] एक प्रकार की पीली जूही। स्वर्ण यूथिका। (फूल)

सोना-पुं॰ [सं॰ स्वर्ण] १. एक प्रसिद्ध बहुमूल्य पीली धातु जिसके गहने आदि बनते हैं। स्वर्ण। कांचन।

मुहा॰-सोने में सुगंध होना = किसी बहुत अच्छी चीज में और भी कोई अच्छा गुण या विशेषता होना।

२. बहुत सुन्दर और बहुमूल्य पदार्थ।

अ॰ [सं॰ शयन] १. लेटकर शरीर और मस्तिष्क को विश्राम देनेवाली निद्रा की अवस्था में होना। नींद लेना। शयन।

मुहा॰-सोते-जागते=हर समय।

२. शरीर के किसी अंग का सुन्न होना। ३. किसी विषय या बात की ओर से उदासीन होकर चुप या निष्क्रिय रहना।

सोना-मक्खी-स्त्री॰ [सं॰ स्वर्णमाक्षिक] एक खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग औषध के काम में होता है।

सोनार-पुं॰ दे॰ 'सुनार'।

सोनित॰-पुं॰ दे॰ 'शोणित'।

सोनी[1]-पुं॰ दे॰ 'सुनार'।

सोपत-पुं॰ दे॰ 'सुभीता'।

सोपाधिक-वि॰ [सं॰] १. जिसमें कोई प्रतिबन्ध या शर्त लगी हो। (कंडिशनल) २.किसी विशिष्ट सीमा, मर्यादा, व्यवस्था आदि से बँधा हुआ। (क्वालिफायड)

सोपान-पुं॰ [सं॰] [वि॰ सोपानित] ऊपर चढ़ने की सीढ़ी। जीना।

सोपि-वि० [सं० सः+अपि] १. वही । २. वह भी ।

सोफा-पुं [अं०] एक प्रकार का लम्बा गद्दीदार आसन । कोच ।

सोफियाना-वि० [अ० सूफी] १. सूफियों का । सूफी संबंधी । २. देखने में सादा होने पर भी बहुत सुन्दर ।

सोभना*-अ० [सं० शोभन] शोभा देना ।

सोभाकारी-वि० [सं०शोभाकर] सुन्दर ।

सोभार-वि० [सं० स+हिं उभार] जिसमें उभार हो । उभारदार ।

क्रि० वि० उभार के साथ । उभरकर ।

सोभित*-वि०=शोभित ।

सोम-पुं० [सं०] १. एक प्राचीन भारतीय लता जिसके रस का सेवन प्राचीन वैदिक ऋषि मादक पदार्थ के रूप में करते थे । २.एक प्राचीन वैदिक देवता । ३.चन्द्रमा । ४. सोमवार । ५. अमृत । ६. जल ।

सोमन*-पुं० दे० 'सौमन' ।

सोमनाथ-पुं०[सं०] बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक जिसका मन्दिर काठियावाड़ में है ।

सोम-पान-पुं० [सं०] सोम लता का रस पीना ।

सोमपायी-वि० [सं० सोमपायिन्] सोम लता का रस पीनेवाला ।

सोम-रस-पुं० [सं०] सोम लता का रस ।

सोम वंश-पुं०[सं०] क्षत्रियों का चंद्र वंश ।

सोमवल्ली-स्त्री० दे० 'सोम' १. ।

सोमेश्वर-पुं० दे० 'सोमनाथ' ।

सोय*-सर्व० [हिं० सो+ही, ई] वही । सर्व० दे० 'सो' ।

†स्त्री० दे० 'सुभीता' ।

सोर*-पुं० [फा० शोर] १. कोलाहल । हल्ला । २. प्रसिद्धि । ख्याति ।

†स्त्री० [सं० शटा] पेड़ों की जड़ । मूल ।

सोरठ-पुं० [सं० सौराष्ट्र] १. गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम । २. इस देश की राजधानी, सूरत ।

सोरठा-पुं० [सं० सौराष्ट्र] एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरणों में ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरणों में तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं । (दोहे के प्रत्येक चरण को यति-स्थान से उलट देने पर सोरठा हो जाता है ।)

सोरही†-स्त्री० [हिं० सोलह] १. जूआ खेलने के लिए सोलह चित्ती कौड़ियाँ । २ इन कौड़ियों से खेला जानेवाला जूआ ।

सोलह-वि० [सं० षोडश] गिनती में दस से छः अधिक । षोडश ।

मुहा०-सोलहो आने=पूरा पूरा । सब ।

सोलह सिंगार-पुं० दे० 'षोडश शृंगार' ।

सोला-पुं० [देश०] एक प्रकार का झाड़ जिसके छिलके से अँगरेजी टोप बनते हैं ।

सोल्लास-क्रि० वि० [सं० स+उल्लास] उल्लास-पूर्वक । आनंद और उत्साह से ।

सोवज*-पुं० दे० 'सावज' ।

सोवन*-पुं० [हिं० सोवना=शयन करना] सोने की क्रिया या भाव । शयन ।

सोवना*-अ० दे० 'सोना' ।

सोवरी†-स्त्री० दे० 'सौरी' ।

सोविएट(यत)-पुं० [रूसी] १. रूसी सैनिकों या मजदूरों के प्रतिनिधियों की सभा । २. आधुनिक रूसी प्रजातंत्र, जो इन सभाओं के प्रतिनिधि चलाते हैं ।

सोवैया*-पुं० [हिं० सोवना] सोनेवाला ।

सोसन-पुं० [फा० सौसन] १. एक प्रकार का पौधा । २. इस पौधे का फूल ।

सोसनी-वि० [हिं० सोसन] सोसन के फूल के रंग का । लाली मिला पीला ।

सोसाइटी-स्त्री० [अं०] १. समाज । २.

सभा। समिति।
सोस्मि*-पद दे० 'सोऽहम्'।
सोहँ(ग)-पद दे० 'सोऽहम्'।
सोहं*-क्रि० वि० दे० 'सौंह'।
सोहगी-स्त्री० [हिं० सुहाग] १. ब्याह की एक रसम जिसमें तिलक के बाद वर-पक्ष से लड़की के लिए कपड़े, गहने आदि भेजे जाते हैं। २. सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की सूचक वस्तुएँ।
सोहन-वि० [सं० शोभन] [स्त्री० सोहनी] सुंदर। सुहावना।
पुं० १. सुंदर पुरुष। २. नायक।
पुं० एक प्रकार का पक्षी।
सोहन पपड़ी-स्त्री० [हिं० सोहन+पपड़ी] एक प्रकार की बढ़िया मिठाई।
सोहन हलुआ-पुं० [हिं० सोहन+अ० हलवा] एक प्रकार की बढ़िया मिठाई।
सोहना-अ० [सं० शोभन] १. शोभित होना। सुंदर लगना। २ रुचिकर होना। अच्छा लगना।
वि० [स्त्री० सोहनी] सुंदर। मनोहर।
सोहनी-स्त्री० [सं० शोधनी] झाड़ू।
सोहबत-स्त्री० [अ०] १. संग-साथ। संगत। २. स्त्री-प्रसंग। संभोग।
सोहमस्मि-पद दे० 'सोऽहम्'।
सोहर†-पुं० दे० 'सोहला'।
स्त्री० दे० 'सौरी'।
सोहराना-स० दे० 'सहलाना'।
सोहला-पुं० [हिं० सोहना] १. घर में बच्चा पैदा होने पर गाये जानेवाले गीत। २. कोई मांगलिक गीत।
सोहागा†-पुं० दे० 'सुहाग'।
सोहाना-अ० दे० 'सुहाना'।
सोहारद*-पुं० दे० 'सौहार्द'।
सोहारी-स्त्री० दे० 'पूरी'। (पकवान)
सोहासित*-वि० [हिं० सोहाना] १. अच्छा लगनेवाला। रुचिकर। २. सुन्दर।
पुं०[सं०सुभाषित]ठकुर-सुहाती।खुशामद।
सोहिं-क्रि० वि० दे० 'सौंह'।
सोहिल*-पुं० दे० 'सुहेल' (तारा)।
सोहीं(हैं)*-क्रि० वि०=सामने।
सौं*-स्त्री० दे० 'सौंह'।
अव्य०, प्रत्य० दे० 'सों' या 'सा'।
सौंघा-वि० [हिं० 'महँगा' का उलटा] [भाव० सौंघाई] १. अच्छा। उत्तम। २. ठीक। वाजिब। ३. सस्ता।
सौंचना†-स० [सं० शौच] मल-त्याग करने पर गुदा और हाथ-पैर धोना।
सौंज(जाई)*-स्त्री० दे० 'सौज'।
सौंड़†-स्त्री० [देश०] ओढ़ने की चादर।
सौंतना*-स० दे० 'सूतना'।
सौंतुख*-क्रि० वि०=सामने।
सौंदन-स्त्री० [हिं० सौंदना] कपड़े धोने से पहले उन्हें रेह मिले पानी में भिगोना। (धोबी)
सौंदना-स० [सं० संधम्] १. मिलाना। सानना। २.मिट्टी आदि के योग से मैला या गन्दा करना।
सौंदर्य-पुं० [सं०] सुन्दरता। खूबसूरती।
सौंध*-पुं० दे० 'सौध'।
स्त्री० दे० 'सुगंध'।
सौंधना-स० = सुगंधित करना।
सौंधा†-वि० [हि० सोंधा] १. दे० 'सोंधा'। २.अच्छा लगनेवाला। रुचिकर।
सौंपना-स० [सं० समर्पण] १. किसी को सपुर्द करना। २. दे० 'सहेजना'।
सौंफ-स्त्री० [सं० शतपुष्पा] [वि० सौंफी] एक छोटा पौधा जिसके बीज दवा और मसाले के काम में आते हैं।
सौंरना*-स० [सं० स्मरण] स्मरण करना।

अ० दे० 'सँकरना'।

सौंह*-स्त्री० [हिं० सौगंद] शपथ। कसम।
क्रि० वि० = सामने।

सौंही-स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार।

सौ-वि० [सं० शत] गिनती में पचास का दूना। नब्बे और दस। शत।
पद-सौ बात की एक बात=सारांश। निचोड़।
*वि० दे० 'सा'।

सौकना-स्त्री० दे० 'सौत'।

सौकर्य-पुं० [सं०] १. 'सुकर' का भाव। सुकरता। २. सुभीता।

सौकुमार्य-पुं० [सं०] १. सुकुमारता। २. यौवन। जवानी। ३. काव्य का एक गुण जो ग्राम्य और श्रुति-कटु शब्दों का त्याग करने और सुन्दर तथा कोमल शब्दों का प्रयोग करने से उत्पन्न होता है।

सौख*-पुं० दे० 'शौक'।

सौख्य-पुं० [सं०] १. 'सुख' का भाव। सुखता। २. सुख। आराम।

सौगंद(ध)-स्त्री० [सं० सौगंध] शपथ। कसम।

सौगत(तिक)-पुं० [सं०] १. 'सुगत' का अनुयायी। बौद्ध। २. नास्तिक।

सौगात-स्त्री० [तु०] [वि० सौगाती] वह अच्छी चीज जो इष्ट-मित्रों को देने के लिए कहीं से लाई जाय। भेंट। उपहार। तोहफा।

सौघा†-वि० = सस्ता।

सौच*-पुं० = शौच।

सौज-स्त्री० [सं० सज्जा] सामग्री।

सौजना*-अ०, स० = सजना।

सौजन्य-पुं० [सं०] 'सुजन' होने का भाव। सुजनता। भल-मनसत।

सौत(तिन)-स्त्री० [सं० सपत्नी] स्त्री की दृष्टि से उसके पति या प्रेमी की दूसरी पत्नी या प्रेमिका। सपत्नी।
पद-सौतिया डाह = दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या।

सौतेला-वि० [हिं० सौत] [स्त्री० सौतेली] १. सौत से उत्पन्न। २. जिसका संबंध किसी सौत के पक्ष से हो। जैसे-सौतेला भाई=माता की सौत का लड़का।

सौदा-पुं० [अ०] १. खरीदने और बेचने की चीज। माल।
यौ०-सौदा-सुलुफ = खरीदने की चीजें या वस्तुएँ। कई तरह की चीजें।
२. खरीदने-बेचने या लेने-देने की बात-चीत या व्यवहार।
स्त्री० [फा०] पागलपन। (रोग)

सौदाई-पुं० [अ० सौदा] पागल।

सौदागर-पुं० [फा०] [भाव० सौदागरी] व्यापारी। व्यवसायी।

सौदामनी-स्त्री०[सं०] बिजली। विद्युत्।

सौध-पुं० [सं०] १. बड़ा और ऊँचा मकान। प्रासाद। २. चाँदी। रजत।

सौधना†-स० दे० 'सोधना'।

सौन*- क्रि० वि०=सामने।

सौनक-पुं० दे० 'शौनक'।

सौभागिनी-स्त्री० दे० 'सुहागिन'।

सौभाग्य-पुं० [सं०] १. अच्छा भाग्य। खुशकिस्मती। २. सुख। आनन्द। ३. ऐश्वर्य। वैभव। ४. स्त्री के सधवा होने की दशा। सुहाग। अहिवात।

सौभाग्यवती-वि० [सं०] (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सधवा। सुहागिन।

सौभाग्यवान्-वि०=भाग्यवान्।

सौभिक्ष्य-पुं० = सुभिक्ष।

सौम*- वि० = सौम्य।

सौमन-पुं० [सं०] एक प्रकार का

पुराना हथियार।

सौमनस-वि० [सं०] १. सुमनों या फूलों का। २. मनोहर। सुन्दर।

पुं० १. प्रसन्नता। आनन्द। २. अस्त्रों को व्यर्थ करनेवाला एक प्राचीन अस्त्र।

सौमनस्य-पुं० [सं०] १. भलमनसत। २.प्रसन्नता। ३.प्रेम। प्रीति। ४.सन्तोष।

सौम्य-वि० [सं०] [स्त्री० सौम्या] १ सोम या उसके रस से सम्बन्ध रखनेवाला। २. सोम या चन्द्रमा से सम्बन्ध रखनेवाला। चान्द्र। ३. ठंडा और शान्त। ४. अच्छे स्वाभाववाला। नम्र और सुशील। ५. सुन्दर। मनोहर।

पुं० १. सोम यज्ञ। २. बुध, जो चन्द्रमा का पुत्र माना जाता है। ३. अगहन का महीना। मार्गशीर्ष। ४. रक्त का वह पूर्व रूप जिसमें वह लाल रंग का होने से पहले रहता है। (सीरम)

सौम्य-दर्शन-वि०[सं०] देखने में सुन्दर।

सौम्य विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें औषध के काम के लिए जीवों के रक्त से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।

सौर-वि० [सं०] १. सूर्य-सम्बन्धी। सूर्य का। जैसे-सौर जगत्। २.सूर्य से उत्पन्न। ३.सूर्य के प्रभाव से होनेवाला। (सोलर)

पुं०१.सूर्य्य का उपासक। २.सूर्य-वंशी। ३ शनि ग्रह।

*स्त्री० [हि० सौंड] चादर।

सौरज*-पुं०=शौर्य्य। (शूरता)

सौर जगत्-पुं० [सं०] सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले ग्रहों (पृथ्वी, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, यूरेनस आदि) का समूह या वर्ग जो आकाशचारी पिंडों में स्वतन्त्र इकाई के रूप में माना जाता है। (सोलर सिस्टम)

सौर दिवस-पुं० [सं०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।

सौरभ-पुं० [सं०] [वि० सौरभित] १. सुगन्ध। खुशबू। २. आम्र। आम।

सौर-मास-पुं० [सं०] एक सौर संक्रान्ति से दूसरी सौर संक्रान्ति तक का महीना।

सौर वर्ष-पुं० [सं०] एक मेष संक्रान्ति से दूसरी मेष संक्रान्ति तक का वर्ष।

सौरस्य-पुं० [सं०] सुरसता।

सौराष्ट्र-पुं० [सं०] १. गुजरात-काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सोरठ देश। २. उक्त प्रदेश का निवासी।

सौरी-स्त्री० [सं० सूतिका] वह कोठरी जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सूतिकागार। जच्चाखाना।

स्त्री० [सं० शफरी] एक प्रकार की मछली।

सौर्य-वि० [सं०] सूर्य-सम्बन्धी। सौर।

सौवर्ण-वि० [सं०] सोने का।

पुं० स्वर्ण। सोना। (धातु)

सौवीर-पुं० [सं०] १. सिन्धु नद के आस-पास का प्राचीन प्रदेश। २. इस प्रदेश का निवासी।

सौष्ठव-पुं० [सं०] १ 'सुष्ठु' होने का भाव। सुष्ठुता। २. सुन्दरता। सौन्दर्य।

सौसन-पुं० दे० 'सोसन'।

सौहँ-स्त्री०[सं०शपथ] सौगन्द। कसम।

क्रि० वि० [सं०सम्मुख] सामने। आगे।

सौहार्द(र्द्य)-पुं० [सं०] १. 'सुहृद्' होने का भाव। २. सज्जनता। ३. मित्रता।

सौहृद-पुं० [सं०] [भाव० सौहृद्य] १. मित्रता। दोस्ती। २. मित्र। दोस्त।

स्कंद-पुं० [सं०] १. निकलना या बाहर आना। २.विनाश। ध्वंस। ३. कार्तिकेय जो देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४. शरीर। देह।

स्कंध-पुं०[सं०] १. कंधा। २.वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमें से डालियाँ निकलती हैं। कांड। ३. शाखा। डाल। ४. समूह। झुंड। ५. वह स्थान जहाँ विक्रय, उपयोग आदि के लिए बहुत-सी चीजें जमा रहती हों। भंडार। (स्टॉक) ६ ग्रन्थ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो। ७. शरीर। देह। ८. युद्ध। लड़ाई। ९. दर्शन-शास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।

स्कंधक-पुं० [सं०] वह जो विक्रय आदि के लिए बहुत-सी वस्तुएँ (या स्कंध) अपने पास रखता हो। (स्टॉकिस्ट)

स्कंधधारी-पुं० [सं०] अपने पास किसी प्रकार की बहुत-सी वस्तुएँ या उनका स्कंध रखनेवाला। (स्टॉक-होल्डर)

स्कंध-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या बही जिसमें स्कंध या भंडार में रखी हुई वस्तुओं का विवरण हो। (स्टॉक बुक)

स्कंधपाल-पुं० [सं०] वह अधिकारी जो किसी स्कंध या भंडार की देख-रेख आदि के लिए नियत हो। (स्टॉक-कीपर)

स्कंधावार-पुं०[सं०] १.राजा का शिविर। २. सेना का पड़ाव। छावनी। ३ सेना।

स्कंभ-पुं० [सं०] १. स्तम्भ। २. ईश्वर।

स्काउट-पुं० दे० 'बाल-चर'।

स्कूल-पुं० [अं०] [वि० स्कूली] १. विद्यालय। २ सम्प्रदाय या शाखा।

स्खलन-पुं० [सं०] [वि० स्खलित] १.चीरना-फाड़ना। २.हत्या। ३. गिरना।

स्खलित-वि० [सं०] १. गिरा हुआ। च्युत। २. लड़खड़ाया हुआ। विचलित। ३. चूका हुआ।

स्टांप-पुं० दे० 'अंक-पत्र'।

स्टीमर-पुं० [अं०] भाप के जोर से चलनेवाला छोटा समुद्री जहाज।

स्टेट-पुं० [अं०] बड़ा राज्य। पुं० [अं० एस्टेट] १. बड़ी जमींदारी। २. स्थावर और जंगम सम्पत्ति।

स्टेशन-पुं० [अं०] १.रेल-गाड़ी के ठहरने का स्थान। २.किसी विशेष कार्य के संचालन के लिए नियत स्थान। प्रास्थान।

स्तंभ-पुं० [सं०] [वि० स्तंभित] १. खंभा। २. पेड़ का तना। ३. साहित्य में किसी कारण या घटना से अंगों की गति रुक जाना, जो सात्विक भावों में माना गया है। ४. जड़ता। अचलता। ५. प्रतिबंध। रुकावट। ६. तंत्र में किसी शक्ति को रोकनेवाला प्रयोग।

स्तंभक-वि०[सं०] १.रोकनेवाला। रोधक। २. मल रोकने या कब्ज करनेवाला। ३. संभोग के समय वीर्य को जल्दी स्खलित होने से रोकनेवाला। (औषध)

स्तंभन-पुं० [सं०] १. रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २. वीर्य्य आदि को स्खलित होने या मल को पेट से बाहर निकलने से रोकना। ३. वीर्य्य-पात रोकने की दवा। ४. जड़ या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५. किसी की चेष्टा, क्रिया या शक्ति रोकनेवाला तांत्रिक प्रयोग। ६. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

स्तंभित-वि० [सं०] १. जो जड़ या निश्चेष्ट हो गया हो। निस्तब्ध। सुन्न। २. रुका या रोका हुआ। अवरुद्ध। ३.चकित।

स्तन-पुं० [सं०] स्त्रियों या मादा पशुओं का वह अंग जिसमें दूध रहता है। छाती।

स्तनन-पुं० [सं०] १ बादल का गरजना। २. ध्वनि या शब्द होना। ३. आर्त्तनाद।

स्तन-पान-पुं० [सं०] स्तन में मुँह लगाकर उसमें का दूध पीना।

स्तनपायी-पुं० [सं०] वे जन्तु या जीव जो जन्म लेने पर अपनी माता का दूध पीकर पलते हैं। (मैमल) जैसे-मनुष्य, चौपाये आदि।

स्तनहार-पुं० [सं०] गले में पहनने का एक प्रकार का हार।

स्तनित-पुं० [सं०] १. बादल की गरज। २. बिजली की कड़क। ३. ताली बजाने का शब्द।
वि० गरजता या शब्द करता हुआ।

स्तन्य-वि० [सं०] स्तन सम्बन्धी।
पुं० दूध।

स्तब्ध-वि० [सं०] [भाव० स्तब्धता] १. जो जड़ या निश्चेष्ट हो गया हो। स्तंभित। २. दृढ़। पक्का। ३. मन्द। धीमा।

स्तर-पुं० [सं०] १ एक दूसरी के ऊपर पड़ी या लगी हुई तह। परत। २ भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो भिन्न भिन्न कालों में बनी हुई उसकी तहों के आधार पर किया गया है। (स्ट्रैटा)

स्तरण-पुं० [सं०] [वि० स्तीर्ण] फैलाने या बिखेरने का काम।

स्तरीभूत-वि० [सं०] जो जमकर स्तर के रूप में हो गया हो। (स्ट्रैटिफायड)

स्तव-पुं० [सं०] १. (पद्य के रूप में) देवता आदि का स्वरूप-वर्णन या गुण-गान। स्तोत्र। २. स्तुति। प्रशंसा।

स्तवक-पुं० [सं०] १. स्तव या स्तुति करनेवाला। २. फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। ३. समूह। झुंड। ४. राशि। ढेर। ५. पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।

स्तवन-पुं० [सं०] स्तव या स्तुति करना।

स्तिमित-वि० [सं०] १. ठहरा हुआ। निश्चल। २. भींगा हुआ। गीला। तर।

स्तुत-वि० [सं०] जिसकी स्तुति की गई हो।

स्तुति-स्त्री० [सं०] [वि० स्तुत्य] १. किसी के गुणों का वर्णन। प्रशंसा। बड़ाई। २. स्तव।

स्तुत्य-वि० [सं०] स्तुति या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय।

स्तूप-पुं० [सं०] १. मिट्टी, पत्थर आदि का ऊँचा ढूह। टीला। २. वह ढूह या टीला जो भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति-चिह्नों को सुरक्षित रखने के लिए उनके ऊपर बनाया गया हो। ३. ऊँचा ढेर।

स्तेन-पुं० [सं०] १. चोर। २. चोरी।

स्तेय-पुं० [सं०] चोरी।

स्तैन्य-पुं० [सं०] चोरी।

स्तोता-वि० [सं० स्तोतृ] स्तुति करनेवाला।

स्तोत्र-पुं० [सं०] १. देवता आदि का पद्यात्मक गुण-गान। २. स्तव। स्तुति।

स्तोम-पुं० [सं०] १. स्तुति। स्तव। २. यज्ञ। ३. समूह। झुंड। ४. राशि। ढेर।

स्त्री-स्त्री० [सं०] [भाव० स्त्रीत्व] १. मनुष्य-जाति के जीवों के दो भेदों में से एक जो अपनी सुन्दरता, कोमलता आदि के लिए प्रसिद्ध है और जिसका काम गर्भ धारण करके सन्तान उत्पन्न करना है। 'पुरुष' का उलटा। नारी। औरत। २. पत्नी। जोरू। ३. किसी जीव-जन्तु की मादा। 'पुरुष' या 'नर' का उलटा।
स्त्री० दे० 'इस्तरी'।

स्त्री-धन-पुं० [सं०] स्त्री को उसके मैके या ससुराल से मिला हुआ वह धन जिसपर उसका एकान्त रूप से पूरा अधिकार रहता है और जो परिवार के लोगों में बँट नहीं सकता।

स्त्री-धर्म-पुं० [सं०] स्त्री का रजस्वला होना। मासिक धर्म।

स्त्री-प्रसंग-पुं० [सं०] मैथुन। संभोग।

स्त्री-लिंग-पुं० [सं०] हिन्दी व्याकरण में दो लिंगों में से एक जो स्त्री-जाति का अथवा किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है। जैसे-'लड़का' का स्त्री० 'लड़की' या 'छुरा' का स्त्री-लिंग 'छुरी' है।

स्त्रैण-वि० [सं०] १. स्त्री-संबंधी। स्त्रियों का। २. स्त्री के वश में रहनेवाला। स्त्री-रत।

स्थ-प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर ये अर्थ देता है--(क) स्थित। जैसे-तटस्थ। (ख) उपस्थित। वर्त्तमान। जैसे-कंठस्थ। (ग) रहनेवाला। जैसे-काशीस्थ। (घ) लीन। रत। मग्न। जैसे-ध्यानस्थ।

स्थगन-पुं० [सं०] १. छिपाना। २. सभा की बैठक, वाद की सुनवाई अथवा और कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक देना। (एडजोर्नमेन्ट)

स्थगित-वि० [सं०] १. ढका हुआ। आच्छादित। २. ठहराया या रोका हुआ। (स्टड) ३. जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो। मुलतवी। (एडजोर्न्ड)

स्थल-पुं०[सं०] [वि० स्थलीय] १. भूमि। जमीन। २. जल से रहित भूमि। खुश्की। ३. स्थान। जगह। ४. अवसर। मौका।

स्थल-कमल-पुं०[सं०] स्थल में होनेवाला, कमल के आकार का एक प्रकार का फूल।

स्थलचर(चारी)-वि० [सं०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला।

स्थलज-वि० [सं०] स्थल में उत्पन्न होनेवाला।

स्थल-पद्म-पुं० दे० 'स्थल-कमल'।

स्थल-युद्ध-पुं० [सं०] स्थल या भू-भाग पर होनेवाला युद्ध। मैदान की लड़ाई।

स्थल-सेना-स्त्री० [सं०] स्थल या जमीन पर लड़नेवाली फौज। पैदल सिपाही और घुड़-सवार आदि।

स्थलालेख्य-पुं० [सं०] किसी स्थल का रेखाचित्र। (साइट प्लान)

स्थली-स्त्री० [सं०] १. जमीन। भूमि। २. स्थान। जगह।

स्थविर-पुं० [सं०] १. वृद्ध। बुड्ढा। २. वृद्ध और पूज्य बौद्ध भिक्षु।

स्थाई-वि०=स्थायी।

स्थाणु-पुं० [सं०] १. खंभा। २. पेड़ का वह खाली तना जिसके ऊपर की डालियाँ न रह गई हों। ठूँठ। ३. शिव। वि० स्थिर। अचल।

स्थान-पुं० [सं०] १. स्थिति। ठहराव। २. खुला हुआ भूमि-भाग। जमीन। मैदान। ३. निश्चित और परिमित स्थिति-वाला वह भू-भाग जिसमें कोई बस्ती, प्राकृतिक रचना या कोई विशेष बात हो। जगह। स्थल। जैसे-वहाँ देखने योग्य अनेक स्थान हैं। ४. रहने की जगह। (मकान, घर आदि) ५. सेवा या लोकोपकार आदि के काम करने की जगह। पद। ओहदा। (पोस्ट) ६. बैठने का वह विशिष्ट स्थान जो निर्वाचित अथवा प्रतिनिधित्व करनेवाले लोगों के लिए न्यासिद्ध होता है। ७. देवालय, आश्रम या इसी प्रकार का और कोई पवित्र स्थान। ८. अवसर। मौका।

स्थान-च्युत(भ्रष्ट)-वि० [सं०] जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।

स्थानांतर-पुं० [सं०] प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न या दूसरा स्थान।

स्थानांतरण-पुं०[सं०][वि०स्थानांतरित] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचाना, रखना या भेजना। (रिमूवल)

स्थानापन्न-वि० [सं०] १. किसी के न रहने पर उसके स्थान पर बैठनेवाला। २. किसी कर्मचारी के कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाने पर उसकी जगह काम करनेवाला। एवजी। (ऑफिशिएटिंग)

स्थानिक-वि० [सं०] १. उस स्थान का, जिसके विषय में कोई उल्लेख या चर्चा हो। २. उस स्थान का जहाँ से कोई बात कही जाय। (लोकल)

स्थानिक कर-पुं० [सं०] किसी स्थान विशेष पर लगनेवाला कर। (लोकल टैक्स)

स्थानिक परिषद्-स्त्री० [सं०] किसी बस्ती के निवासियों के प्रतिनिधियों की वह परिषद् या सभा जिसपर वहाँ के कुछ विशिष्ट लोक-हित संबंधी सार्वजनिक कार्यों का भार हो। (लोकल बोर्ड)

स्थानिक स्वराज्य-पुं० दे० 'स्थानिक स्व-शासन'।

स्थानिक स्व-शासन-पुं० [सं०] किसी देश या प्रान्त के भिन्न भिन्न नगरों आदि को अपना शासन और व्यवस्था करने के लिए मिला हुआ अधिकार; अथवा ऐसे अधिकार के अनुसार अपना शासन आप करने की स्वतंत्रता और प्रणाली। (लोकल सेल्फ-गवर्नमेन्ट)

स्थानीय-वि०=स्थानिक।

स्थानीयकरण-पुं० [सं०] चारों ओर फैली हुई बहुत-सी शक्तियों, वस्तुओं, उपद्रवों आदि को घेर या लाकर किसी एक स्थान पर एकत्र करना। (लोकलाइजेशन)

स्थापक-वि० [सं०] १. स्थापन करने-वाला। स्थापनकर्त्ता। २. मूर्त्ति बनाने-वाला। ३. नाटक में सूत्रधार का सहकारी। ४. दे० 'संस्थापक'।

स्थापत्य-पुं० [सं०] वह विद्या जिसमें मकान, पुल आदि बनाने के सिद्धांतों और प्रणालियों का विवेचन होता है। वास्तु-शास्त्र।

स्थापन-पुं०[सं०] [वि० स्थापनीय, स्था-पित] १. दृढ़तापूर्वक जमाना, रखना या बैठाना। जैसे-वृक्ष या देवता का स्थापन। २. दृढ़ या पुष्ट आधार पर स्थित करना। स्थायी रूप देना। ३. कोई नई संस्था या व्यापारिक कार-बार खड़ा करना। ४. प्रमाण आदि के द्वारा ठीक सिद्ध करते हुए कोई विषय सामने रखना। निरूपण। प्रतिपादन। (इस्टै-ब्लिशमेन्टः उक्त सभी अर्थों के लिए) ५. किसी को किसी पद पर काम करने के लिए लगाना। नियत करना। (पोस्टिंग)

स्थापना-स्त्री० दे० 'स्थापन'।

* स०=स्थापित करना।

स्थापित-वि० [सं०] जिसका स्थापन हुआ हो। विशेष दे० 'स्थापन'।

स्थायी-वि० [सं०] [भाव० स्थायित्व] १.बराबर बना रहने या काम करनेवाला। सदा स्थिर रहनेवाला। (परमनेन्ट) २.बहुत दिनों तक चलनेवाला। टिकाऊ।

स्थायी कोष-पुं० [सं०] किसी संस्था आदि का वह कोष या धन-राशि जो उसे स्थायी रूप से बनाये रखने के लिए संचित होती है और जिसका केवल सूद खर्च किया जा सकता है। (परमनेन्ट फंड)

स्थायी भाव-पुं० [सं०] साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक जो रस में सदा स्थायी रूप से स्थित रहता और विभावों आदि के द्वारा अभिव्यक्त होता है। यह नौ प्रकार का कहा गया है; यथा-रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, निंदा, विस्मय और निर्वेद।

स्थायी समिति–स्त्री० [सं०] १. वह समिति जो स्थायी रूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त की गई हो। २. किसी सम्मेलन या महासभा आदि की वह समिति जो उस सम्मेलन या महासभा के अगले अधिवेशन तक सब कार्यों की व्यवस्था के लिए चुनी जाती है। (स्टैंडिंग कमिटी)

स्थाली–स्त्री० [सं०] १. हंडी। हँडिया। २. मिट्टी की रिकाबी।

स्थाली-पुलाक न्याय–पुं० [सं०] (हाँडी में का एक चावल देखकर, अर्थात्) कोई एक बात देखकर उसके संबंध की या उस तरह की और सब बातें जान लेना।

स्थावर–वि० [सं०] १. अचल। स्थिर। २. जो अपने स्थान से हट न सके। 'जंगम' का उलटा। अचल। गैर-मनकूला। (इम्मूवेबुल)

स्थावर संपत्ति–स्त्री० [सं०] वह सम्पत्ति जो अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक लगी या जमी हो और वहाँ से हटाई न जा सकती हो। अचल संपत्ति। (रीयल एस्टेट)

स्थित–वि० [सं०] १. एक स्थान पर ठहरा या टिका हुआ। २. बैठा हुआ। आसीन। ३. उपस्थित। मौजूद।

स्थित-प्रज्ञ–वि० [सं०] १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २. सब प्रकार के मनो-विकारों से रहित।

स्थिति–स्त्री० [सं०] १ स्थित होने की क्रिया या भाव। रहना या होना। अव-स्थान। अस्तित्व। २. एक ही स्थान पर या एक ही रूप में बना रहना। ३. अवस्था। दशा। हालत। ४. किसी व्यक्ति, संस्था आदि की वह विधिक स्थिति जो उसे अपने क्षेत्र में कुछ निश्चित सीमा में प्राप्त होती है और जो उसकी मर्यादा, पद, सम्मान आदि की सूचक होती है। (स्टेटस) ५. वे बातें जो कोई पक्ष अपने वक्तव्य, अभियोग, आरोप आदि के संबंध में कहता या उपस्थित करता है। (केस) जैसे-इस विषय में मैं अपनी स्थिति आपको बतला चुका हूँ।

स्थितिक–वि० [सं०] एक ही स्थान या रूप में ठहरा या बना रहनेवाला। स्थिर। (स्टैटिक)

स्थिति-स्थापक–वि० [सं०] [भाव० स्थिति-स्थापकता] दाब हट जाने पर फिर ज्यों का त्यों हो जानेवाला। लचीला।

स्थिर–वि० [सं०] [भाव० स्थिरता] १. एक ही स्थिति में रहने या ठहरनेवाला। निश्चल। २. सदा ज्यों का त्यों बना रहनेवाला। स्थायी। ३. निश्चय के रूप में लाया हुआ। निश्चित। ४. उद्वेग, चंचलता आदि से रहित। शान्त।

स्थिरीकरण–पुं० [सं०] घटती-बढ़ती रहनेवाली वस्तुओं का स्वरूप या मानक स्थिर करना। (स्टैबिलाइजेशन) जैसे-मूल्य या भाव का स्थिरीकरण।

स्थूल–वि० [सं०] १. मोटा। २. तुरन्त या बिना परिश्रम के समझ में आनेवाला। 'सूक्ष्म' का उलटा। ३ मोटे हिसाब से अनुमान किया या ध्यान में आया हुआ।

स्थूल आय–स्त्री० [सं०] वह सारी आय जिसमें से लागत या परिव्यय निकाला न गया हो। (ग्रॉस इनकम)

स्नात–वि० [सं०] नहाया हुआ।

स्नातक–पुं० [सं०] १. वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्य-व्रत समाप्त कर लिया हो। २. वह जिसने किसी

विश्व-विद्यालय की कोई परीक्षा पारित की हो। (ग्रैजुएट)

स्नान-पुं० [सं०] १. स्वच्छ या शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना या जल-राशि में प्रवेश करना। नहाना। २. धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना, लेटना या होना कि सारे शरीर पर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे-वायु-स्नान, आतप-स्नान। ३. इस प्रकार किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का पड़नेवाला प्रभाव या प्रसार। जैसे-चंद्रमा की चाँदनी में पृथ्वी का स्नान।

स्नानागार-पुं० [सं०] स्नान करने का कमरा या कोठरी।

स्नायविक-वि० [सं०] स्नायु-संबंधी।

स्नायु-स्त्री० [सं०] सारे शरीर में फैला हुआ बहुत सूक्ष्म नसों का वह जाल जिससे स्पर्श, शीत, ताप, वेदना आदि की अनुभूति होती है। (नर्व)

स्निग्ध-वि० [सं०] [भाव० स्निग्धता] १. जिसमें स्नेह या प्रेम हो। २. जिसमें स्नेह या तेल हो या लगा हो। चिकना।

स्नेह-पुं०[सं०] १ प्रेम। प्यार। मुहब्बत। २. चिकना पदार्थ; विशेषतः तेल।

स्नेही-पुं० [सं० स्नेहिन्] वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो। प्रेमी।

स्पंद(न)-पुं० [सं०] [वि० स्पंदित] १. धीरे धीरे हिलना। काँपना। २. (अंगों आदि का) फड़कना।

स्पंदित-वि० [सं०] हिलता, काँपता या फड़कता हुआ।

स्पर्द्धा-स्त्री० [सं०] [वि० स्पर्द्धित] १. प्रतियोगिता आदि में किसी से होड़। २. सामर्थ्य या योग्यता से अधिक करने या पाने की इच्छा।

स्पर्द्धी-वि०[सं०स्पर्द्धिन्]स्पर्द्धा करनेवाला।

स्पर्धा-स्त्री० दे० 'स्पर्द्धा'।

स्पर्श-पुं० [सं०] [वि० स्पृष्ट] १. त्वचा का वह गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है। २. एक वस्तु के तल का दूसरी वस्तु के तल से सटना या छूना। ३. व्याकरण के उच्चारण के चार प्रकार के आभ्यंतर प्रयत्नों में से एक, जिसमें उच्चारण करते समय वागिन्द्रिय का द्वार बंद-सा हो जाता है। ('क' से 'म' तक के व्यंजनों का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है।) ४ ग्रहण के समय सूर्य अथवा चंद्रमा पर छाया पड़ने लगना।

स्पर्श-जन्य-वि० [सं०] १. स्पर्श से उत्पन्न। २. दे० 'संक्रामक'।

स्पर्शमणि-पुं० [सं०] पारस पत्थर।

स्पर्शी-वि० [सं०] [स्त्री० स्पर्शिनी] स्पर्श करने या छूनेवाला।

स्पर्शेंद्रिय-स्त्री० [सं०] त्वचा। चमड़ा।

स्पष्ट-वि० [सं०] [भाव० स्पष्टता] १.साफ दिखाई देने या समझ में आनेवाला। २. जिसके सम्बन्ध में कोई धोखा या सन्देह न हो। (क्लियर)

स्पष्टतया-क्रि० वि० [सं०] स्पष्ट रूप से। साफ साफ।

स्पष्टवक्ता-पुं० [सं०] वह जो बिना किसी संकोच या भय के स्पष्ट या साफ बातें कहने का अभ्यस्त हो।

स्पष्टीकरण-पुं०[सं०] कोई बात इस प्रकार स्पष्ट या साफ करना कि उसके सम्बन्ध में कोई भ्रम न रहे। (एक्सप्लिकेशन)

स्पृश्य-वि० [सं०] स्पर्श करने के योग्य। छूने लायक।

स्पृष्ट-वि० [सं०] जिसका या जिससे स्पर्श हुआ हो। छूआ हुआ।

पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का वह प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे को छू लेते हैं। (जैसे-प या म में)

स्पृहा-स्त्री० [सं०] [वि० स्पृहणीय] इच्छा। कामना।

स्फटिक-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर। २.शीशा। काँच।

स्फीत-वि० [सं०] [भाव० स्फीति] १. बढ़ा हुआ। वर्द्धित। २. फूला या उभरा हुआ। ३. समृद्ध।

स्फीति-स्त्री०[सं०] १.बढ़ना। २. उभरना या फूलना। ३. दे० 'मुद्रा-स्फीति'।

स्फुट-वि० [सं०] १. दिखाई देनेवाला। व्यक्त। २. खिला हुआ। विकसित।

स्फुटन-पुं० [सं०] १. सामने आना। २. खिलना। फूलना। (फूल का) ३.फूटना।

स्फुटित-वि० [सं०] खिला हुआ।

स्फुरण-पुं० [सं०] [वि० स्फुरित] १. कुछ कुछ हिलना। २ (अंग का) फड़कना।

स्फुलिंग-पुं० [सं०] चिनगारी।

स्फूर्ति-स्त्री० [सं०] १. धीरे धीरे हिलना। २.फड़कना। ३. किसी काम के लिए मन में होनेवाला उत्साह। ४. फुरती। तेजी।

स्फोट (न)-पुं० [सं०] १. किसी वस्तु का अपने ऊपरी आवरण को फाड़कर वेगपूर्वक बाहर निकलना। फूटना। जैसे-ज्वालामुखी का स्फोट। २. फोड़ा, फुन्सी आदि।

स्मर-पुं० [सं०] कामदेव।

स्मरण-पुं०[सं०] १.किसी देखी, सुनी या बीती हुई बात का मन में ध्यान रहना या फिर से याद आना। २. नौ प्रकार की भक्तियों में से वह जिसमें उपासक अपने देवता को बराबर याद करता रहता है। ३. एक अलंकार जिसमें कोई बात या चीज देखकर किसी दूसरी बात या चीज के याद हो आने का उल्लेख होता है।

स्मरणपत्र-पुं० [सं०] किसी को कोई बात याद दिलाने के लिए लिखा जाने-वाला पत्र। (रिमाइन्डर)

स्मरण-शक्ति-स्त्री० [सं०] वह मानसिक शक्ति जिससे बातें स्मरण या याद रहती हैं। (मेमरी)

स्मरणीय-वि० [सं०] याद रखने योग्य।

स्मरना*-स० [सं० स्मरण] स्मरण या याद करना।

स्मशान-पुं०=श्मशान।

स्मारक-वि० [सं०] स्मरण करानेवाला। पुं० १. वह कार्य, पदार्थ या रचना जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिए हो। यादगार। (मेमोरियल) २. वह चीज जो किसी को अपना स्मरण बनाये रखने के लिए दी जाय। यादगार। ३. वह पत्र जो किसी बड़े आदमी को कुछ बातों का स्मरण कराने या कुछ बातें स्मरण रखने के लिए दिया जाय। (मेमोरियल) ४. दे० 'स्मारिका'।

स्मारिका-स्त्री० [सं० स्मारक] वह पत्र जो किसी के पास उसे किसी कार्य, वचन आदि का स्मरण कराने के लिए भेजा जाय। स्मरणपत्र। (रिमाइंडर)

स्मार्त्त-पुं० [सं०] वह जो स्मृतियों का अनुयायी हो। वि० स्मृति सम्बन्धी। स्मृति का।

स्मित-पुं०[सं०]धीमी हँसी। मुस्कराहट। वि० १.खिला हुआ। २.मुस्कराता हुआ।

स्मिति-स्त्री० दे० 'स्मित'।

स्मृति-स्त्री० [सं०] [वि० स्मृत] १. वह ज्ञान जो स्मरण-शक्ति के द्वारा एकत्र या प्राप्त होता है। याद। २.

कर्म, दर्शन, आचार-व्यवहार आदि से सम्बन्ध रखनेवाले हिन्दू धर्म-शास्त्र।

स्मृतिपत्र-पुं० [सं०] १. वह पत्र, पुस्तिका आदि जिसमें किसी विषय की कुछ मुख्य मुख्य बातें स्मरण रखने या कराने के विचार से एकत्र की गई हों। २. किसी संस्था आदि के मुख्य मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका। (मेमोरैन्डम)

स्यंदन-पुं०[सं०] रथ, विशेषतः युद्ध का।

स्यमंतक-पुं० [सं०] एक मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण पर लगा था।

स्यात्-अव्य० [सं०] कदाचित्। शायद।

स्यानपन-पुं० [हिं० स्याना+पन (प्रत्य०)] १. चतुरता। बुद्धिमानी। २. चालाकी।

स्याना-वि० [सं० सज्ञान] [स्त्री० स्यानी] १ चतुर। बुद्धिमान्। होशियार। २. चालाक। धूर्त। ३. वयस्क। बालिग। पुं० १ बड़ा-बूढ़ा। वृद्ध पुरुष। २. झाड़-फूँक करनेवाला ओझा। ३. चिकित्सक।

स्यापा-पुं० [फा० स्याहपोश] मरे हुए व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों का प्रति दिन एकत्र होकर शोक करना। मुहा०-स्यापा पड़ना = १. रोना-चिल्लाना मचना। २. बिलकुल उजाड़ या सुनसान हो जाना। (किसी स्थान का)

स्याम*-पुं०, वि० दे० 'श्याम'।

स्यार†-पुं० दे० 'गीदड़'।

स्यावज*-पुं० दे० 'सावज'।

स्याह-वि० [फा०] कृष्ण वर्ण का। काला। पुं० घोड़े की एक जाति।

स्याह-कलम-पुं० [फा०] मुगल चित्र-शैली के एक प्रकार के बिना रंग भरे रेखा-चित्र जिनमें एक एक बाल तक अलग अलग दिखाया जाता है और होंठों, आँखों और हथेलियों में नाम मात्र की और बहुत हलकी रंगत रहती है।

स्याहा-पुं० दे० 'सियाहा'।

स्याही-स्त्री० [फा०] १. वह प्रसिद्ध रंगीन तरल अथवा कुछ गाढ़ा पदार्थ जो लिखने या कपड़े, कागज आदि छापने के काम में आता है। रोशनाई। २. कालापन। कालिमा। ३. कालिख। कलौंछ। स्त्री० दे० 'साही'। (जंतु)

स्यों(ों)*-अव्य० [सं०सह] १. साथ। सहित। २. निकट। पास।

स्रजना*-स० दे० 'सृजना'।

स्रम*-पुं०=श्रम।

स्रमना*-अ० [सं० श्रम+ना (प्रत्य०)] श्रमित होना। थकना।

स्रवण-पुं० [सं०] १. बहने की क्रिया या भाव। बहाव। प्रवाह। २. गर्भ का समय से पहले गिरना। गर्भ-पात।

स्रवना*-अ० [सं० स्रवण] १. बहना। २. टपकना। ३. गिरना। स०१ बहाना। २. टपकाना। ३. गिराना।

स्रष्टा-पुं० [सं० स्रष्टृ] १. सृष्टि बनाने-वाले, ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। वि० (कोई चीज) बनानेवाला।

स्रस्त-वि० [सं०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. शिथिल।

स्राध*-पुं०=श्राद्ध।

स्राप-पुं०=शाप।

स्राव-पुं० [सं०] १. वह या रसकर निकलना। क्षरण। (डिस्चार्ज) २. गर्भ-पात। गर्भस्राव। ३. निर्यास। रस।

स्रुतिमाथ*-पुं०=विष्णु।

स्रुवा-स्त्री० [सं०] लकड़ी की वह कलछी जिससे हवन के समय अग्नि में घी आदि की आहुति दी जाती है।

स्रोत-पुं० [सं० स्रोतस्] १. पानी का

बहाव । धारा । २. नदी । ३. पानी का सोता । झरना । ४.वह आधार या साधन जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आती हुई किसी को मिलती रहे । (सोर्स)

स्रोतस्विनी-स्त्री० [सं०] नदी ।

स्रोन-कन*-पुं० [सं० श्रमकण] पसीने की बूँद । स्वेद-कण । श्रम-कण ।

स्व-वि० [सं०] १ अपना । निज का । प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अन्त में लगकर ता, त्व आदि की भाँति भाव-वाचकता ; (जैसे-निजस्व, परस्व;) या प्राप्य धन (जैसे-राजस्व, स्वामित्व) आदि का अर्थ देता है ।

स्वकीय-वि० [सं०] अपना । निज का ।

स्वकीया-स्त्री० [सं०] अपने ही पति से प्रेम करनेवाली नायिका । (साहित्य)

स्व-ख्यापन-पुं० [सं०] स्वयं ही अपनी प्रशंसा करके अपने आपको प्रसिद्ध करना।

स्वगत- क्रि० वि० [सं०] आप ही आप । स्वतः (कुछ कहना) ।
वि० १. अपने में आया या जाया हुआ । आत्मगत । २.मन में आया हुआ । मनोगत ।
पुं० दे० 'स्वगत-कथन' ।

स्वगत-कथन-पुं० [सं०] नाटक में किसी पात्र का कोई बात इस प्रकार कहना, मानो उसकी बात सुननेवाला वहाँ कोई हो ही नहीं । अश्राव्य ।

स्वच्छंद-वि० [सं०] [भाव० स्वच्छंदता] १. अपनी इच्छा के अनुसार सब काम कर सकनेवाला । स्वाधीन । स्वतंत्र । २. मन-माना आचरण करनेवाला । निरंकुश ।
क्रि०वि० बिना किसी संकोच या विचार के।

स्वच्छ-वि० [सं०] [भाव० स्वच्छता] १ निर्मल । साफ । २. उज्ज्वल । शुभ्र । ३. शुद्ध । पवित्र ।

स्वच्छना*-स० [सं० स्वच्छ] स्वच्छ, शुद्ध या साफ करना ।

स्वजन-पुं० [सं०] १. अपने परिवार के लोग । २. रिश्तेदार । संबंधी ।

स्वजनि (नी)*-स्त्री० [सं० स्वजन] १. अपने कुटुंब या आपसदारी की स्त्री । २. सखी । सहेली । सहचरी ।

स्व-जाति-स्त्री० [सं०] [वि० स्वजातीय] अपनी जाति ।
वि० अपनी ही जाति का ।

स्वतंत्र-वि० [सं०] [भाव० स्वतंत्रता] १. जो किसी के दबाव के बिना स्वयं सब कुछ कर सकता हो । स्वाधीन । आज़ाद । (इन्डिपेन्डेन्ट) २. अलग । जुदा । भिन्न । ३. नियमों आदि के बन्धन से रहित । (फ्री)

स्वतंत्रता-स्त्री० [सं०] बिना बाहरी दबाव के स्वयं सब कुछ कर सकने की शक्ति या अधिकार । आज़ादी । (फ्रीडम)

स्वतः-अव्य० [सं० स्वतस्] आपसे आप । आप ही । स्वयं । खुद ।

स्वतःसिद्ध-वि० दे० 'स्वयंसिद्ध' ।

स्वत्व-पुं० [सं०] १. स्व का भाव । अपनापन । २. वह अधिकार जिसके आधार पर कोई चीज अपने पास रखी या किसी से ली या माँगी जा सकती हो । अधिकार । हक । (राइट)

स्वत्वाधिकारी-पुं० [सं० स्वत्वाधिकारिन्] १. वह जिसे किसी बात का पूरा स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो। २.स्वामी । मालिक।

स्वदेश-पुं० [सं०] अपना देश । मातृ-भूमि।

स्वदेशी-वि० [सं० स्वदेशीय] १. अपने देश का । २. अपने देश में बना हुआ ।

स्वन-पुं० [सं०] शब्द । आवाज ।

स्वनाम-धन्य-वि० [सं०] जो अपने

नाम से ही धन्य या प्रसिद्ध हो। बहुत बड़ा पराक्रमी या महापुरुष।

स्वप्न-पुं० [सं०] १. सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २. सोने के समय पूरी नींद न आने के कारण कुछ घटनाएँ आदि दिखाई देना। ३. नींद में इस प्रकार दिखाई देनेवाली घटना। ४. मन में उठनेवाली वह बहुत ऊँची कल्पना या विचार जो सहज में पूरा न हो सके।

स्वप्न-दोष-पुं० [सं०] एक रोग जिसमें सोने की दशा में वीर्य-पात हो जाता है।

स्वप्नाना-अ०, स० [सं० स्वप्न] स्वप्न देखना या दिखाना।

स्वप्निल-वि० [सं०] १. सोया हुआ। २.स्वप्न देखता हुआ। ३.स्वप्न-सम्बन्धी। स्वप्न का।

स्वभाव-पुं० [सं०] १. व्यक्ति या वस्तु में सदा प्रायः एक-सा बना रहनेवाला मूल या मुख्य गुण। प्रकृति। (नेचर) २. आदत। बान। (हैबिट)

स्वभावतः-क्रि०वि० [सं०] स्वभाव से ही। प्राकृतिक रूप से।

स्वयं-अव्य० [सं० स्वयम्] १. आप। खुद। २. आपसे आप।

स्वयंदूत-पुं० [सं०] [स्त्री० स्वयंदूती] नायिका पर अपनी वासना और प्रेम आप ही या स्वयं प्रकट करनेवाला नायक।

स्वयंपाक-पुं० [सं०] [कर्त्ता स्वयंपाकी] अपना भोजन आप पकाना। अपने हाथ से भोजन बनाकर खाना।

स्वयंभव-वि० दे० 'स्वयंभू'।

स्वयंभू(त)-पुं० [सं०] १. ब्रह्मा। २. काल। ३. कामदेव। ४. शिव। वि० आपसे आप उत्पन्न होनेवाला।

स्वयंवर-पुं० [सं०] प्राचीन भारत की एक प्रसिद्ध प्रथा जिसमें कन्या अपने लिए आप ही वर चुन लेती थी।

स्वयंवरा-स्त्री० [सं०] अपना वर आप चुननेवाली कुमारी या स्त्री। पतिंवरा।

स्वयं-सिद्ध-वि०[सं०] (बात या तत्त्व) जो किसी तर्क या प्रमाण के बिना आप ही ठीक और सिद्ध हो। सर्व-मान्य।

स्वयं-सिद्धि-स्त्री० [सं०] वह सर्व-मान्य सिद्धान्त या तत्त्व जिसे सिद्ध या प्रमाणित करने की कोई आवश्यकता न हो। (एग्ज़ियम)

स्वयंसेवक-पुं० [सं०] [स्त्री० स्वयंसेविका] अपनी इच्छा से और केवल सेवा-भाव से आप ही किसी काम में, विशेषकर सैनिक ढंग के काम में सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति। (वॉलेन्टियर)

स्वयमेव-क्रि० वि० [सं०] आप ही।

स्वर-पुं० [सं०] १. कोमलता, तीव्रता, उतार-चढ़ाव आदि से युक्त, वह शब्द जो प्राणियों के गले अथवा एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आघात पड़ने से निकलता है। २. संगीत में इस प्रकार के वे सात निश्चित शब्द या ध्वनियाँ जिनका स्वरूप, तीव्रता, तन्यता आदि स्थिर हैं। सुर। यथा-षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। ३. व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के और आपसे आप होता है और जिसके बिना किसी व्यंजन का उच्चारण नहीं हो सकता। यथा-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ, ए, ऐ, ओ और औ।

स्वर-ग्राम-पुं० [सं०] संगीत में 'सा' से 'नि' तक के सातो स्वरों का समूह। सप्तक।

स्वर-पात-पुं० [सं०] १. किसी शब्द का

उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना। २. उचित वेग, रुकाव आदि का ध्यान रखते हुए होनेवाला शब्दों का उच्चारण। (एक्सेन्ट)

स्वर-भंग-पुं० [सं०] आवाज या गला बैठना, जो एक रोग माना गया है।

स्वर-लिपि-स्त्री० [सं०] संगीत में किसी गीत या तान आदि में आनेवाले सभी स्वरों का क्रम-बद्ध लेख। (नोटेशन)

स्वरस-पुं० [सं०] पत्तियों आदि को कूटकर निकाला हुआ रस। (वैद्यक)

स्वराज्य-पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें किसी देश के निवासी अपने देश का सब शासन और प्रबंध स्वयं और बिना किसी विदेशी शक्ति के दबाव के करते हों। अपना राज्य।

स्वरूप-पुं० [सं०] व्यक्ति, पदार्थ, कार्य आदि की आकृति। शकल। २. मूर्त्ति, चित्र आदि। ३. वह जिसने किसी देवता का रूप धारण किया हो।

वि० [स्त्री० स्वरूपा] १. खूबसूरत। २. तुल्य। समान।

अव्य० रूप में। तौर पर।

स्वरूपवान्-वि० [सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] सुन्दर। खूबसूरत।

स्वरूपी-वि० [सं० स्वरूपिन्] १.स्वरूपवाला। २. किसी के स्वरूप के अनुसार होने या दिखाई देनेवाला।

*पुं० दे० 'सारूप्य'।

स्वरोदय-पुं० [सं०] स्वरों या श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जानने की विद्या।

स्वर्गगा-स्त्री० दे० 'आकाश-गंगा'।

स्वर्ग-पुं० [सं०] १. हिन्दुओं के अनुसार सात लोकों में से वह जिसमें पुण्य और सत्कर्म करनेवालों की आत्माएँ जाकर निवास करती हैं। देव-लोक।

मुहा०-स्वर्ग के पथ पर पैर रखना=१. मरना। २.जान जोखिम में डालना। स्वर्ग जाना या सिधारना=मरना।

पद-स्वर्ग-सुख=उसी प्रकार का बहुत अधिक और उच्च कोटि का सुख, जैसा स्वर्ग में मिलता है। स्वर्ग की धार=आकाश-गंगा।

२.अन्य धर्मों के अनुसार इसी प्रकार का एक विशिष्ट स्थान जो आकाश में माना जाता है। बिहिश्त। ३. वह स्थान जहाँ बहुत अधिक सुख मिले। ४. आकाश।

स्वर्गवास-पुं० [सं०] मरना। मृत्यु।

स्वर्गवासी-वि०[सं०स्वर्गवासिन्] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १. स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मर गया हो। स्वर्गीय। मृत।

स्वर्गस्थ-वि०[सं०] १. जो स्वर्ग में हो या स्थित हो। २. स्वर्गवासी।

स्वर्गारोहण-पुं० [सं०] १. स्वर्ग की ओर बढ़ना या जाना। २. मरना।

स्वर्गिक-वि०=स्वर्गीय।

स्वर्गीय-वि० [सं०] [स्त्री० स्वर्गीया] १. स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग का। २. जो मर कर स्वर्ग चला गया हो। मृत।

स्वर्ण-पुं० [सं०] सोना नामक बहुमूल्य और प्रसिद्ध धातु। सुवर्ण।

स्वर्ण-कीट-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का चमकीला कीड़ा। सोन-किरवा। २. जुगनूँ।

स्वर्ण-जयंती-स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, संस्था आदि के जन्म या आरंभ होने के ५०वें वर्ष होनेवाली जयंती।(गोल्डेन जुबिली)

स्वर्ण दिवस-पुं० [सं०] बहुत ही अच्छा, शुभ और महत्वपूर्ण दिन।

स्वर्णपुरी-स्त्री० [सं०] लंका।

स्वर्ण मुद्रा-स्त्री०[सं०] सोने का सिक्का।

स्वर्ण युग-पुं० [सं०] सबसे अच्छा और श्रेष्ठ युग या समय।

स्वर्णिम-वि० [सं० स्वर्ण] सोने के रंग का। सुनहला।

स्वल्प-वि० [सं०] बहुत थोड़ा।

स्व-विवेक-पुं० [सं०] कुछ विशिष्ट नियमों और बन्धनों के अधीन रहकर उचित-अनुचित और युक्त-अयुक्त बातों का विचार करने की शक्ति। (डिस्क्रीशन)

स्वस्ति-अव्य० [सं०] कल्याण हो। मंगल हो। भला हो। (आशीर्वाद) स्त्री० कल्याण। मंगल।

स्वस्तिक-पुं० [सं०] एक प्रकार का बहुत प्राचीन मंगल-चिह्न जो शुभ अवसरों पर दीवारों आदि पर अंकित किया जाता है। आज-कल इसका यह रूप प्रचलित है 卐। २. हठ-योग में एक प्रकार का आसन।

स्वस्थ-वि० [सं०] [भाव० स्वस्थता] १. जिसे कोई रोग न हो। नीरोग। तन्दुरुस्त। चंगा। २. जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान। ३. जिसमें कोई दोष, अश्लीलता आदि न हो। (हेल्दी)

स्वस्थ-प्रज्ञ-वि० [सं०] जिसकी बुद्धि सब बातें समझने और सब काम ठीक तरह से करने में समर्थ हो। (ऑफ साउंड माइंड)

स्वाँग-पुं० [सं० सु+अंग] १. किसी के अनुरूप धारण किया जानेवाला बनावटी वेष या रूप। भेस। २.परिहासपूर्ण खेल या तमाशा। नकल। ३.लोगों को धोखा देने के लिए बनाया हुआ रूप या किया जानेवाला काम। आडम्बर।

स्वाँगना*-अ० [हिं० स्वाँग] कृत्रिम रूप या वेष धारण करना। स्वाँग बनाना।

स्वाँगी-पुं० दे० 'बहु-रूपिया'।

स्वांगीकरण-पुं० [सं०] किसी वस्तु को अपने शरीर या अंग में पूरी तरह से मिलाकर लीन या एक कर लेना। आत्मसात् करना। (एसिमिलेशन)

स्वांत-पुं० [सं०] अंतःकरण।

स्वाँस-पुं०=साँस।

स्वाक्षर-पुं० [सं०] [वि० स्वाक्षरित] हस्ताक्षर। दस्तखत।

स्वागत-पुं० [सं०] किसी मान्य या प्रिय के आने पर आगे बढ़कर आदर-पूर्वक उसका अभिनंदन करना। अभ्यर्थना।

स्वागतकारिणी सभा-स्त्री० [सं०] वह सभा जो किसी बड़े सम्मेलन आदि में आनेवालों के स्वागत-सत्कार के लिए बनती है। (रिसेप्शन कमिटी)

स्वाच्छंद*-क्रि० वि० [सं० स्वच्छंद] १.स्वच्छंदता-पूर्वक। २.सुख से। सहज में। स्त्री० दे० 'स्वच्छंदता'।

स्वातंत्र्य-पुं० = स्वतंत्रता।

स्वाति-स्त्री० [सं०] पन्द्रहवाँ नक्षत्र जिसकी वर्षा के जल से मोती की उत्पत्ति मानी जाती है।

स्वात्म-वि० [सं० स्व+आत्म] अपना।

स्वाद-पुं० [सं०] कुछ खाने या पीने से जीभ या मुँह को होनेवाला अनुभव। जायका। २. किसी बात में होनेवाली रुचि या उससे मिलनेवाला आनंद। मुहा०-स्वाद चखाना=किसी को उसके अनुचित कार्य का दंड देना।

स्वादिष्ट(ष्ठ)-वि० [सं० स्वादिष्ठ] जिसका स्वाद अच्छा हो।

स्वाधिकार-पुं० [सं०] १. अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतंत्रता।

स्वाधिष्ठान-पुं० [सं०] हठ-योग के

अनुसार शरीर के छः चक्रों में से एक, जिसका स्थान शिश्न का मूल माना गया है। (आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र से यौवन और शरीर की प्रजनन शक्ति आती है।)

स्वाधीन-वि०[सं०][भाव०स्वाधीनता] जो किसी के अधीन न हो। स्वतंत्र। आजाद।

स्वाध्याय-पुं० [सं०] १. वेदों का नियमपूर्वक, पूरा और ठीक अध्ययन। २. किसी विषय का अनुशीलन। अध्ययन।

स्वाना*-स० = सुलाना।

स्वाप-पुं० [सं०] १. निद्रा। नींद। २. अज्ञान।

स्वाभाविक-वि० [सं०] [भाव० स्वाभाविकता] १. स्वभाव से या आपसे आप होनेवाला। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती। (नेचुरल) २. स्वभाव से सम्बन्ध रखने या होनेवाला।

स्वाभिमान-पुं० [सं०] [वि० स्वाभिमानी] अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

स्वामि*-पुं० = स्वामी।

स्वामित्व-पुं० [सं०] 'स्वामी' होने का भाव। मालिकपन। (ओनरशिप)

स्वामिनी-स्त्री० [सं०] [हिं० स्वामी' का स्त्री०] १ मालकिन। २ घर की मालकिन। गृहिणी। ३. श्री राधिका।

स्वामिस्व-पुं० [सं० स्वामी+स्व] वह धन जो भू-स्वामी, किसी वस्तु के आविष्कर्त्ता, ग्रन्थ के लेखक आदि को उसके स्वामित्व, आविष्कार या रचना से होनेवाले लाभ के अंश के रूप में कुछ नियत मात्रा में और नियत समय पर बराबर मिलता रहता है। (रॉयल्टी)

स्वामि-हीनत्व-पुं० = अस्वामिकता। (परि०)

स्वामी-पुं० [सं० स्वामिन्] [स्त्री० स्वामिनी, भाव० स्वामित्व] १. वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे और सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों। मालिक। (ओनर) २.घर का प्रधान व्यक्ति। ३.पति। शौहर। ४. साधु, संन्यासी आदि का संबोधन।

स्वायत्त-वि० [सं०] [भाव० स्वायत्तता] १. जिसपर अपना ही अधिकार हो। जो अपने अधीन हो। २. जो किसी दूसरे के शासन या नियंत्रण में न हो, बल्कि अपने कार्यों का संचालन अपने आप करता हो। (ऑटोनोमस)

स्वायत्त शासन-पुं०=स्थानिक स्वराज्य।

स्वारथ*-पुं० = स्वार्थ।
वि० [सं० सार्थ] सफल। सार्थक।

स्वारस्य-पुं० [सं०] सरसता।

स्वारी*-स्त्री० = सवारी।

स्वार्थ-पुं० [सं०] १. अपना अर्थ या उद्देश्य। अपना मतलब। २ ऐसी बात जिसमें स्वयं अपना लाभ या हित हो। मुहा०-(किसी बात में) स्वार्थ लेना=किसी होनेवाले काम में अनुराग रखना। (आधुनिक, पर भद्दा प्रयोग)

स्वार्थ-त्याग-पुं० [सं०] [वि० स्वार्थ-त्यागी] किसी अच्छे काम के लिए अपने हित या लाभ का ध्यान छोड़ देना।

स्वार्थ-पर-वि० [सं०] [भाव० स्वार्थ-परता] स्वार्थी। खुद-गरज।

स्वार्थ-परायण-वि० [सं०] स्वार्थी।

स्वार्थ-साधन-पुं० [सं०] [कर्त्ता स्वार्थ-साधक] अपना मतलब या काम निकालना। स्वार्थ सिद्ध करना।

स्वार्थांध-वि० [सं०] जो अपने स्वार्थ के फेर में पड़कर अंधा हो रहा हो और

भले-बुरे का ध्यान न रखे।

स्वार्थी-वि० [सं० स्वार्थिन्] [स्त्री० स्वार्थिनी] अपना मतलब निकालनेवाला। मतलबी। खुद-गरज।

स्वावलंबन-पुं० [सं०] अपने ही भरोसे रहकर और अपने बल पर काम करना।

स्वावलंबी-वि० [सं० स्वावलम्बिन्] अपने ही भरोसे या सहारे पर रहनेवाला।

स्वाश्रय-पुं० [सं०] [वि० स्वाश्रित] वह जिसे केवल अपना सहारा हो, दूसरे का सहारा न हो।

स्वासा-स्त्री० = श्वास।

स्वास्थ्य-पुं०[सं०] स्वस्थ या नीरोग होने की दशा। आरोग्य। तन्दुरुस्ती। (हेल्थ)

स्वास्थ्य-कर-वि०[सं०]तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाला। आरोग्य-वर्द्धक।

स्वास्थ्य-निवास-पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ जाकर लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए रहते हैं। (सैनिटोरियम)

स्वास्थ्य विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाये रखने के नियमों और सिद्धान्तों का विवेचन हो। (हाईजीन)

स्वाहा-अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका प्रयोग हवन की हवि देते समय होता है। वि० १. जो जलकर राख हो गया हो। २. पूरी तरह से नष्ट। बरबाद।

स्वीकरण-पुं० [सं०] १. स्वीकार या अंगीकार करना। २ मानना।

स्वीकार-पुं० [सं०] अपनाने या ग्रहण करने की क्रिया। अंगीकार। मंजूरी।

स्वीकारोक्ति-स्त्री० [सं०] वह कथन या बयान जिसमें अपना अपराध स्वीकृत किया जाय। अपराध की स्वीकृति। (कन्फेशन)

स्वीकार्य-वि० [सं०] स्वीकृत या ग्रहण करने या मानने के योग्य।

स्वीकृत-वि०[सं०] स्वीकार किया हुआ। ग्रहण किया या माना हुआ। मंजूर।

स्वीकृति-स्त्री० [सं०] स्वीकार करने की क्रिया या भाव। मंजूरी।

स्वेच्छया-क्रि० वि० [सं०] अपनी इच्छा से और बिना किसी के दबाव के। (वालन्टरिली) जैसे-स्वेच्छया किया हुआ काम।

स्वेच्छा-स्त्री० [सं०] अपनी इच्छा। जैसे-स्वेच्छा से कोई काम करना।

स्वेच्छाचार-पुं० [सं०] [भाव० स्वेच्छाचारिता, वि०.स्वेच्छाचारी] भला-बुरा जो कुछ मन में आवे, वही कर डालना। यथेच्छाचार।

स्वेच्छासेवक-पुं० = स्वयंसेवक।

स्वेटर-पुं० [अं०] बनियाइन या गंजी आदि की तरह का एक प्रकार का मोटा पहनावा जो कोट, कमीज आदि के नीचे पहना जाता है।

स्वेद-पुं० [सं०] [वि० स्वेदित] १. पसीना। २. भाप।

स्वेद-कण-पुं० [सं०] पसीने की बूँद।

स्वेदज-पुं० [सं०] पसीने से उत्पन्न होनेवाले जीव। जैसे-खटमल, जूँ आदि।

स्वै*-वि० [सं० स्वीय] अपना। सर्व० दे० 'सो'।

स्वैच्छिक-वि० [सं०] १. अपनी इच्छा से सम्बन्ध रखनेवाला। २. अपनी इच्छा से किया, या अपने ऊपर लिया जानेवाला। (वॉलेन्टरी)

स्वैर-वि० [सं०] [भाव० स्वैरता] १. स्वेच्छाचारी। २. स्वतंत्र। ३. धीमा। मंद। ४. मन-माना।

स्वैरचारी-वि० [सं० स्वैरचारिन्] [स्त्री०

स्वैरचारिणी] १. मन-माना काम करनेवाला। २. व्यभिचारी। लंपट।
स्वैराचार-पुं० दे० 'स्वेच्छाचार'।
स्वैरिणी-स्त्री० [सं०] व्यभिचारिणी।
स्वोपार्जित-वि० [सं०] अपना उपार्जित किया या कमाया हुआ।

ह

ह-संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यंजन जो उच्चारण के विचार से ऊष्म वर्ण कहलाता है।
हँकड़ना॰-अ०=ललकारना।
हँकवा-पुं० [हिं० हांकना] बहुत-से लोगों का शेर-चीते आदि को चारो ओर से घेरकर शिकारी के सामने लाना।
हँकवाना-स० हिं० 'हाँकना' का प्रे०।
हँकवैया॰-पुं०=हाँकनेवाला।
हँकाई-स्त्री० [हिं० हाँकना] हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
हँकाना-स० [हिं० हाँक] १. दे० 'हाँकना'। २. पुकारना। ३. हँकवाना।
हँकार-स्त्री० [सं० हक्कार] जोर से बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार।
मुहा०-हँकार पड़ना=बुलाहट या पुकार होना।
हंकार॰-पुं० १.=अहंकार। २.=हुंकार।
हँकारना॰-स०=पुकारना।
अ० हुंकार करना।
हँकारी-पुं० [हिं० हकार] १ लोगों को बुलाकर लानेवाला व्यक्ति। २. दूत।
स्त्री० बुलाने की क्रिया या भाव। बुलाहट।
हंगामा-पुं० [फा० हंगामः] १. उपद्रव। उत्पात। २. शोर-गुल। हल्ला। ३ भीड़-भाड़।
हंडना-अ० [सं० अभ्यटन] १. घूमना-फिरना। चलना। २. इधर-उधर ढूँढ़ना। ३. वस्त्र आदि का व्यवहार में आने पर कुछ समय तक चलना या ठहरना।
हंडा-पुं० [सं० भांडक] पानी रखने या भरने का पीतल या ताँबे का एक प्रकार का बड़ा बरतन।
हँडाना-स० हिं० 'हँडना' का स०।
हँडिया (डी)-स्त्री० दे० 'हाँडी'।
हंत-अव्य०[सं०] एक दुःख सूचक शब्द। जैसे-हा हंत! यह क्या हो गया!
हंता-पुं० [सं० हंतृ] [स्त्री० हंत्री] हत्या या वध करनेवाला।
हँफनि-स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफने की क्रिया या भाव।
मुहा०-हँफनि मिटाना॰=सुस्ताना।
हँबाना॰-अ० दे० 'रँभाना'।
हंस-पुं० [सं०] १. बत्तख की तरह का एक प्रसिद्ध जल-पक्षी। २. सूर्य। ३ ब्रह्म। ४. जीवात्मा। ५. संन्यासियों का एक भेद।
हँसना-मुखी-पुं० = हँस-मुख।
हँसना-अ० [सं० हसन] १. प्रसन्नता प्रकट करने के लिए मनुष्य का मुँह खोलकर हा हा करना। हास करना।
मुहा०-हँसते-हँसते=१. प्रसन्नता से। २. सहज में। हँसना-खेलना या हँसना-बोलना=प्रसन्नता और आमोद-प्रमोद की बातचीत करना। हँसकर बात उड़ाना = तुच्छ या साधारण समझकर हँसते हुए कोई बात टाल देना।
२. दिल्लगी या परिहास करना। ३. बर,

स्थान आदि का इतना सुन्दर लगना कि हँसता हुआ-सा जान पड़े।
स० किसी की हँसी या उपहास करना। हँसी उड़ाना।
मुहा०-किसी पर हँसना=किसी की हँसी उड़ाना। उपहास करना।

हँस-मुख-वि० [हिं० हँसना+मुख] १. सदा हँसता रहनेवाला। २.विनोदशील। हास्य-प्रिय। ठठोल। मसखरा।

हँसली-स्त्री० [सं० अंसली] १. गले के पास छाती के ऊपर की दोनों धन्वाकार हड्डियाँ। २.गले में पहनने का एक गहना।

हँसाई-स्त्री० [हिं० हँसना] १.दे० 'हँसी'। २. लोक में होनेवाली बदनामी या निन्दा। जैसे-नाम-हँसाई।

हँसाना-स० [हिं० हँसना] किसी को हँसने में प्रवृत्त करना।

हँसिया-स्त्री० [देश०] खेत की फसल, घास,तरकारी आदि काटने का एक औज़ार।

हँसी-स्त्री० [हिं० हँसना] १. हँसने की क्रिया या भाव। हास।
यौ०-हँसी-खुशी = प्रसन्नता। हँसी-ठट्ठा=विनोद। मजाक।
मुहा०-हँसी छूटना=हँसी आना।
२ परिहास। दिल्लगी। मजाक। ठट्ठा।
मुहा०-हँसी उड़ाना=व्यंग्यपूर्ण निन्दा या उपहास करना। हँसी या हँसी-खेल समझना=किसी काम या बात को साधारण या तुच्छ समझना। हँसी में उड़ाना=साधारण समझकर हँसते हुए टाल देना। हँसी में ले जाना= गंभीर बात को हँसी की बात समझना।
३. लोक में होनेवाली उपहासपूर्ण निन्दा या बदनामी।

हँसुआ-पुं०=हँसिया।

हँसुली-स्त्री०=हँसली।

हँसोड़-वि०[हिं० हँसना+ओड़ (प्रत्य०)] सदा हँसी की बातें करनेवाला। दिल्लगी-बाज़। मसखरा। ठठोल।

हँसौहाँ*-वि० [हिं० हँसना] [स्त्री० हँसौहीं] १. कुछ हँसी लिये हुए। २ हँसी या दिल्लगी का।

हउँ*-अ०, सर्व० दे० 'हौं'।

हक-वि० [अ०] १. सच। सत्य। २. उचित। वाजिब। ठीक। मुनासिब।
पुं० १. अधिकार। इख्तियार।
मुहा०-हक में=पक्ष में।
२. कर्तव्य। फर्ज।
मुहा०-हक अदा करना=कर्तव्य पालन करना। फर्ज पूरा करना।
३. वह वस्तु जिसपर न्याय से अधिकार प्राप्त हो। ४. किसी लेन-देन में बन्धेज आदि के अनुसार मिलनेवाला धन। ५. उचित या ठीक बात अथवा पक्ष। ६. ईश्वर। (मुसलमान)

हकदार-पुं० [अ० हक़+फा० दार] हक या अधिकार रखनेवाला। अधिकारी।

हक-नाहक-अव्य० [अ०+फा०] १. जबरदस्ती। २. व्यर्थ। फजूल।

हकबक*-वि० दे० 'हक्का-बक्का'।

हकबकाना-अ० [अनु० या हक्का-बक्का] हक्का-बक्का हो जाना। घबरा जाना।

हकला-वि० [हिं० हकलाना] हकला-कर या रुक-रुककर बोलनेवाला।

हकलाना-अ० [अनु० हक] शब्दों का ठीक तरह से उच्चारण न कर सकने के कारण बीच-बीच में कोई शब्द बहुत रुक-रुककर बोलना।

हक-शफा-पुं० [अ० हक़्के-शुफ़्आ=पड़ोसी] जमीन, मकान आदि खरीदने का वह हक

जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है।

हकीकत-स्त्री० [अ०] १. वास्तविक तत्त्व या बात। तथ्य। असलियत। मुहा०-हकीकत में = वास्तव में। सचमुच। हकीकत खुलना=ठीक बात का पता लगना।

२. सच्चा और वास्तविक वृत्तान्त।

हकीम-पुं० [अ०] १. विद्वान्। पंडित। २. यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक।

हकीमी-स्त्री० [अ० हकीम+ई (प्रत्य०)] १. हकीम का पेशा या काम। २. यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। हिकमत।

वि० हकीम-सम्बन्धी।

हकूमत-†-स्त्री० [अ० हुकूमत] १ शासन। २. आधिपत्य, अधिकार।

मुहा०-हकूमत चलाना = प्रभुत्व या अधिकार जताना या उससे काम लेना। हकूमत जताना=अधिकार या बड़प्पन दिखाना।

३. राजनीतिक शासन या आधिपत्य।

हक्काक-पुं० [?] नगीने आदि काटने और जड़ने का काम करनेवाला।

हक्का-बक्का-वि० [अनु० हक, धक] बहुत घबराया हुआ। भौचक्का।

हगना-अ० [?] मल-त्याग करना। झाड़ा या पाखाना फिरना।

स०विवश होकर देन चुकाना या कुछ देना।

हचकोला-पुं० [हिं० हचकना] गाड़ी आदि चलनेवाली चीजों के हिलने-डोलने से लगनेवाला धक्का। धचका।

हचना*-अ०=हिचकना।

हज-पुं० [अ०] मुसलमानों का काबे की परिक्रमा के लिए मक्के (अरब) जाना।

हजम-वि० [अ०] १. जिसका पाचन हुआ हो। पचा हुआ। २. बेईमानी या अनुचित रीति से इस प्रकार लिया हुआ (धन) कि फिर दिया न जाय।

हजरत-पुं० [अ०] १. महात्मा। महापुरुष। २. दुष्ट या धूर्त। (व्यंग्य)

हजामत-स्त्री० [अ०] बाल काटने और दाढ़ी बनाने का (हज्जाम का) काम। क्षौर। मुहा०-हजामत बनाना=१. दाढ़ी या सिर के बाल मूँड़ना या काटना। २. ठगकर धन लेना।

हजार-वि० [फा०] १. दस सौ। सहस्र। २. बहुत। अनेक।

पुं० दस सौ की संख्या या अंक। १०००।

क्रि०वि० चाहे जितना अधिक। बहुतेरा।

हजारा-वि० [फा०] (फूल) जिसमें हजारों (बहुत अधिक) पंखड़ियाँ हों।

पुं० फुहारा।

हजारी-पुं०[फा०] १.एक हजार सिपाहियों का सरदार। २.वर्ण-संकर। दोगला।

हजूम-पुं० [अ० हुजूम] भीड़।

हजूर-पुं० [अ० हुजूर] १. किसी बड़े की समक्षता। २. बादशाह या हाकिम का दरबार। कचहरी। ३. बहुत बड़ों के सम्बोधन का शब्द।

हजूरा†-पुं० [स्त्री० हजूरी] दे० 'हजूरी'।

हजूरी-पुं० [अ० हजूर] बड़े आदमी, बादशाह या राजा की सेवा में सदा उपस्थित रहनेवाला सेवक।

हजो-स्त्री० [अ० हज्व] निन्दा।

हज्ज-पुं० दे० 'हज'।

हज्जाम-पुं० [अ०]हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।

हटक†-स्त्री० [हिं० हटकना] १. हटकने या मना करने की क्रिया। वारण। वर्जन।

मुहा०—हटक मानना*=मना करने पर मान या रुक जाना।

२. पशुओं को हाँकने का काम।

हटकनी—स्त्री० [हिं० हटकना] १. दे० 'हटक'। २.पशुओं को हाँकने की लाठी।

हटकना—स०[हिं०हटक] १.मना करना। रोकना। २ पशुओं को किसी ओर हाँकना।

मुहा०—*हटकि=१. बलपूर्वक। २. बिना कारण या आधार के।

हटना—अ०[सं०घट्टन]१.अपना स्थान छोड़कर इधर-उधर होना। खिसकना। सरकना। २. सामने से इधर-उधर या दूर होना। टलना। ३ अपने स्थान से पीछे की ओर चलना, जाना या पहुँचना। ४.न रह जाना। ५. वचन आदि का पालन न करना।

*स० दे० 'हटकना'।

हटवाई*—स्त्री० [हिं०हाट] हाट में जाकर सौदा लेना या बेचना।

हटवाना—स० हिं० 'हटाना' का प्रे०।

हटवार*—पुं० = दूकानदार।

हटाना—स० [हिं० 'हटना' का स०] १. पहले के स्थान से किसी प्रकार दूसरे स्थान पर करना या भेजना। २. अलग या दूर करना। ३. हराकर भगाना। ४. जाने देना। छोड़ देना।

हट्टा-कट्टा—वि० [सं० हृष्ट+अनु०] [स्त्री० हट्टी-कट्टी] हृष्ट पुष्ट। बलवान।

हट्टी—स्त्री० [हिं० हाट] दूकान।

हठ—पुं० [सं०] [वि० हठी, हठीला] १. आग्रहपूर्वक यह कहना कि ऐसा ही है, होगा या होना चाहिए। अड़। टेक। जिद। मुहा०—हठ पकड़ना = आग्रह या जिद करना। हठ रखना=जिस बात के लिए कोई हठ करे, वह मान लेना या पूरी करना। हठ माँड़ना*=हठ करना।

२. दृढ़ प्रतिज्ञा। अटल संकल्प।

हठ-धर्म—पुं० [सं०] अपने मत पर, हठपूर्वक जमा रहना। कट्टरपन।

हठ-धर्मी—स्त्री० [सं० हठ+धर्म] अपनी अनुचित बात पर भी अड़े रहना। दुराग्रह। कट्टरपन।

वि० दे० 'हठी'।

हठना—अ०=हठ करना।

हठ-योग—पुं० [सं०] योग का वह अंग जिसमें शरीर वश में करने के लिए कठिन मुद्राओं और आसनों का विधान है।

हठात्—अव्य० [सं०] १. हठपूर्वक। २. जबरदस्ती। ३. अचानक। सहसा।

हठाहठ(ी)०—क्रि० वि० दे० 'हठात्'।

हठी—वि० [सं० हठिन्] हठ करनेवाला। जिद्दी।

हठीला—वि० [सं० हठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १. दे० 'हठी'। २. लड़ाई में धीरतापूर्वक जमा रहनेवाला।

हड़—स्त्री० [सं० हरीतकी] १. एक बड़ा पेड़ जिसका प्रसिद्ध फल औषध के रूप में काम में आता है। हर्रे। २. उक्त फल के आकार का एक गहना। लटकन।

हड़-कंप—पुं० [हिं० हाड़+काँपना] लोगों में घबराहट फैलाने या उनकी हड्डियाँ तक कँपानेवाली भारी हलचल। तहलका।

हड़क—स्त्री० [अनु०] १. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए होनेवाली व्याकुलता। २.कुछ पाने की उत्कट लालसा।

हड़कना—अ० [हिं० हड़क] कोई चीज न मिलने से बहुत व्याकुल होना।

हड़काना—स० [हिं०हड़क] १.तंग करने के लिए किसी को किसी के पीछे लगाना। २. बहुत तरसाना। ३. दूर हटाना।

हड़ताल—स्त्री० [सं० हट्ट=दूकान+ताला]

दुःख, विरोध या असन्तोष प्रकट करने के लिए कल-कारखानों, बाजारों या दूकानों आदि का बन्द होना।

स्त्री० दे० 'हरताल'।

हड़प-वि० [अनु०] १. खाया या निगला हुआ। २. लेकर छिपाया हुआ।

हड़पना-स० [अनु० हड़प] १. मुँह में रखकर निगल जाना। २.अनुचित रूप से ले लेना। उड़ा लेना।

हड़बड़-स्त्री० दे० 'हड़बड़ी'।

हड़बड़ाना-अ० [अनु०] जल्दी मचाना। स० जल्दी मचाकर किसी को जल्दी जल्दी कोई काम करने में प्रवृत्त करना।

हड़बड़ी-स्त्री० [अनु०] १. जल्दी। शीघ्रता। उतावली। २. जल्दी या उतावलेपन के कारण होनेवाली घबराहट।

हड़ावर-पुं० [हिं० 'जड़ावर' का अनु० या हाड़ = आषाढ़] गरमी के दिनों में के कपड़े।

हड़ावल-स्त्री० [हिं० हाड़+सं० अवलि] १. हड्डियों का ढाँचा। ठठरी। २. हड्डियों की माला।

हड़ीला-वि० [हिं० हाड़] १. जिसमें हड्डियाँ मात्र रह गई हों। २.दुबला-पतला।

हड्डी-स्त्री० [सं० अस्थि] १ मनुष्यों, पशुओं आदि के शरीर के अन्दर की वह प्रसिद्ध कड़ी सफेद वस्तु जो भीतरी ढाँचे के अंग के रूप में होती है। अस्थि।

मुहा०-हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना= बहुत मारना। हड्डियाँ निकल आना= रोग आदि के कारण बहुत दुबला होना।

यौ०-पुरानी हड्डी = पुराने समय के आदमी का दृढ़ शरीर।

२. वंश। खानदान।

हत-वि० [सं०] १. जो मार डाला गया हो। २. जिसे मार पड़ी हो। ३. रहित। ४. बिगड़ा हुआ। नष्ट। जैसे-हत-प्रभ।

हतक-स्त्री० [अ० हतक=फाड़ना] अपमान। अप्रतिष्ठा। हेठी।

हतक-इज्जती-स्त्री० = मान-हानि।

हत-चेत-वि० दे० 'हत-ज्ञान'।

हत-ज्ञान-वि० [सं०] बेहोश। बेसुध।

हतना-स० [सं० हत] १. मार डालना। २. मारना। पीटना। ३. पालन न करना। न मानना।

हत-प्रभ-वि० [सं०] जिसकी प्रभा या श्री नष्ट हो गई हो। श्री-हीन।

हत-बुद्धि-वि०[सं०]१.बुद्धि-हीन। मूर्ख। २.जिसकी समझ में यह न आवे कि अब क्या करना चाहिए। किंकर्त्तव्यविमूढ़।

हत-बोध-वि० दे० 'हत-बुद्धि'।

हत-भागा-वि० दे० 'अभागा'।

हत-भाग्य-वि० [सं०] भाग्यहीन।

हतवाना-स० हिं० 'हतना' का प्रे०।

हत-श्री-वि० [सं०] १. जिसके चेहरे पर कान्ति न रह गई हो। हत-प्रभ। २. मुरझाया हुआ। उदास।

हता*-स०'होना'का भूतकालिक रूप। था।

हताना-स०=हतवाना।

हताश-वि० [सं०] जिसकी आशा नष्ट हो गई हो। निराश।

हताहत-वि० [सं०] हत और आहत। मारे हुए और घायल।

हते*-अ० 'होना' का भूतकालिक रूप। थे।

हतोत्साह-वि० [सं०] जिसमें उत्साह न रह गया हो।

हत्थ*-पुं०=हाथ।

हत्था-पुं०[हिं० हत्थ, हाथ] १.औजार का वह भाग जिससे उसे पकड़ते हैं। दस्ता। मूठ। २.केले के फलों का गुच्छा। घौद।

हत्थी-स्त्री० दे० 'हत्था'।

हत्थे-क्रि० वि० [हिं० हाथ] १. हाथ में। मुहा०-हत्थे चढ़ना=१. हाथ में आना। मिलना। २. वश में आना।

२. हाथ से। द्वारा। हस्ते।

हत्या-स्त्री० [सं०] १. मार डालने की क्रिया। खून। (मर्डर)

मुहा०-हत्या लगना=किसी को मार डालने का पाप लगना।

२. अनजान में अथवा यों ही संयोगवश (मार डालने के उद्देश्य से नहीं) किसी के प्राण ले लेना। (होमीसाइड) ३. व्यर्थ का बखेड़ा। झंझट।

हत्यारा-पुं० [सं० हत्या+कार] [स्त्री० हत्यारिन, हत्यारी] हत्या करने या मार डालनेवाला। (मर्डरर)

हथ-कंडा-पुं० [हिं० हाथ+सं० कांड] १. हाथ की चालाकी। २. छिपी हुई चालबाजी। (काम निकालने के लिए)

हथकड़ी-स्त्री० [हिं० हाथ+कड़ी] लोहे के वे कड़े जो कैदी के हाथ बाँधने के लिए उसे पहनाये जाते हैं।

हथ-गोला-पुं० [हिं० हाथ+गोला] तोप के गोलों की तरह का एक प्रकार का गोला जो शत्रुओं पर हाथ से फेंकते हैं।

हथ-नाल-पुं० दे० 'गज-नाल'।

हथनी-स्त्री० [हिं० हाथी+नी (प्रत्य०)] १. हाथी की मादा। २. घाटों आदि में बड़ी और ऊँची सीढ़ियों के आकार की बनावट, जो साधारण सीढ़ियों के दोनों ओर होती है।

हथ-फूल-पुं० [हिं० हाथ+फूल] हथेली पर पहनने का एक गहना।

हथ-फेर-पुं० [हिं० हाथ+फेरना] १. प्यार से शरीर पर हाथ फेरना। २. चालाकी से किसी का माल उड़ा लेना। ३. कुछ समय के लिए लिया या दिया हुआ ऋण। हाथ-उधार।

हथ-लेवा-पुं० [हिं० हाथ+लेना] विवाह के समय वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेने की रीति। पाणि-ग्रहण।

हथसार-स्त्री० [हिं० हाथी+सं० शाला] हाथियों के रहने का स्थान। फील-खाना।

हथा-हथी*-अव्य० [हिं० हाथ] १.हाथो-हाथ। २. चटपट। तुरन्त।

हथिनी-स्त्री० दे० 'हथनी'।

हथिया-पुं० [सं० हस्त] हस्त नक्षत्र।

हथियाना-स०[हिं०हाथ+आना(प्रत्य०)] १. अपने हाथ में करना। २. धोखे से लेना।

हथियार-पुं० [हिं० हथियाना] १. हाथ से पकड़कर चलाया जानेवाला अस्त्र। जैसे-तलवार, बन्दूक आदि। (आर्म्स) २. औजार। उपकरण।

हथियार-बंद-वि० [हिं० हथियार+फा० बंद] जो हथियार लिये हो। स-शस्त्र।

हथेली-स्त्री० [सं०हस्त-तल] हाथ पर का, कलाई के आगे का वह ऊपरी चौड़ा हिस्सा जिसके आगे उँगलियाँ होती हैं। कर-तल।

मुहा०-हथेली पर जान लेकर कोई काम करना=जान जोखिम में डालकर कोई काम करना।

हथौटी-स्त्री० [हिं० हाथ+औटी (प्रत्य०)] हाथ से कोई काम करने का ठीक ढंग।

हथौड़ा-पुं० [हिं० हाथ+औड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौड़ी] एक प्रसिद्ध औजार जिससे कारीगर कोई चीज तोड़ते, पीटते, ठोंकते या गढ़ते हैं।

हथ्याना*-स० = हथियाना।

हथ्यार*-पुं० = हथियार।

हद-स्त्री० [अ०] १. सीमा।

मुहा०-हद बाँधना = सीमा निश्चित करना।

२. वह स्थान या परिमाण जहाँ तक कोई बात ठीक हो सकती हो। मर्यादा।

पद-हद से ज्यादा=१. बहुत अधिक। २. अत्यन्त।

हदस-स्त्री० [अ० हादिस ?] मन में उत्पन्न होनेवाला ऐसा भय जिसमें मनुष्य किं-कर्तव्य विमूढ़ हो जाय।

हदसना-अ० [हिं०हदस] [स० हदसाना] मन में हदस या भय उत्पन्न होना। डरना।

हदसाना-स० हिं० 'हदसना' का प्रे०।

हनन-पुं० [सं०] [वि० हननीय, हनित] १.मार डालना। वध करना। २. आघात करना। मारना। ३ गुणा करना। (गणित)

हनना*-स० [सं०हनन] १. दे० 'हनन'। २. लकड़ी के आघात से बजाना। (नगाड़ा आदि) ३. (शस्त्र) चलाना।

हनिवंत*-पुं० = हनुमान।

हनु-स्त्री० [सं०] १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। *२. ठोड़ी। चिबुक।

हनुमान्-वि० [सं० हनुमत्] १. भारी दाढ़ या जबड़ेवाला। २. बहुत बड़ा वीर। पुं० श्री रामचन्द्र के परम भक्त एक प्रसिद्ध वीर बन्दर। महावीर।

हफ्ता-पुं०[फा०]१.सप्ताह। २.सात दिन।

हबकना।-अ० [अनु० हप] खाने या काटने के लिए झपटना।

स० दाँत काटना।

हबराना*-अ० दे० 'हड़बड़ाना'।

हबशी-पुं० [फा०] अफ्रिका के हबश देश का निवासी, जिसके शरीर का रंग घोर काला होता है।

हबूड़ा-पुं० [?] एक यायावर जाति।

हम-सर्व० [सं० अहम्] उत्तम पुरुष बहुवचन का सूचक सर्वनाम। 'मैं' का बहुवचन।

पुं० अहंभाव। अहंकार। घमंड।

अव्य० [फा०] १. साथ। संग। २. समान। तुल्य। (यौ० के आरम्भ में; जैसे-हम-जोली, हम-उम्र)

हमकाना।-स० [अनु०] हं हं शब्द करके घोड़े आदि को चलाना।

हम-जोली-पुं० [फा० हम+हिं० जोली] समान अवस्था के और बराबर साथ रहने-वाले साथी। संगी।

हमता*-स्त्री० [हिं०हम+ता(प्रत्य०)] यह समझना कि हम बहुत कुछ हैं। अहंकार।

हमदर्द-पुं० [फा०] [भाव० हमदर्दी] सहानुभूति रखनेवाला।

हमदर्दी-स्त्री० [फा०] सहानुभूति।

हमरा।-सर्व०=हमारा।

हमल-पुं० [अ०] गर्भ।

हमला-पुं०[अ०] १.आक्रमण। चढ़ाई। २. मारने के लिए झपटना। ३. प्रहार। वार।

हमाम-पुं० दे० 'हम्माम'।

हमारा-सर्व० [हिं० हम+आरा (प्रत्य०)] [स्त्री०हमारी] 'हम' का सम्बन्ध कारक रूप।

हमाल-पुं० [अ० हम्माल] बोझ ढोने-वाला मजदूर। कुली।

हमाहमी-स्त्री० [हिं० हम] १. सब लोगों का अपने अपने लाभ के लिए होनेवाला आतुर प्रयत्न। २. अहंकार।

हमें-सर्व० [हिं० हम] 'हम' का कर्म और सम्प्रदान कारक का रूप। हमको।

हमेव*-पुं०=अहंकार।

हमेशा-अव्य० [फा०] सदा। सदैव।

हम्माम-पुं० [अ०] १. चारो ओर से बन्द वह कमरा जिसमें गरम पानी से नहाते हैं। २. स्नानागार।

हर्यंद्र*-पुं० [सं० हर्येन्द्र] बड़ा या अच्छा घोड़ा।
हय-पुं० [सं०] १. घोड़ा। २. इन्द्र।
हयना*-स० दे० 'हनना'।
हय-नाल-स्त्री० [सं० हय+हिं० नाल] घोड़े पर से चलाई जानेवाली तोप।
हया-स्त्री० [अ०] [वि० हयादार] लज्जा। शर्म।
हर-वि० [सं०] [स्त्री० हरी] १. छीनने, लूटने या हरण करनेवाला। २. दूर करने या मिटानेवाला। ३. वध या नाश करनेवाला। ४. ले जानेवाला। वाहक।
पुं० १. शिव। महादेव। २. गणित में वह संख्या जिससे भाग देते हैं। भाजक।
वि० [फा०] प्रत्येक। एक एक।
पद-हर एक=प्रत्येक। एक एक। हर रोज=प्रति दिन। नित्य। हर दम=सदा।
हरउद्'-पुं० दे० 'ओरी'।
हरएँ*-अव्य० [हिं० हरुवा] १. धीरे धीरे। २. चुपके से। ३. क्रम क्रम से।
हरकत-स्त्री० [अ०] १. हिलना-डोलना। गति। २. चेष्टा। क्रिया।
हरकना*-स० दे० 'हटकना'।
हरकारा-पुं० [फा०] पत्र आदि पहुँचाने या ले आनेवाला दूत। पत्रवाह।
हरक्कत-स्त्री० दे० 'हरज'।
हरख*-पुं०=हर्ष।
हरखना*-अ० [सं० हर्ष] प्रसन्न होना।
हरगिज-अव्य० [फा०] कदापि। कभी।
हरज-पुं० [अ० हर्ज] १. काम में पड़नेवाली अड़चन या बाधा। रुकावट। २. क्षति। हानि। नुकसान।
हर-जाई-वि० [फा०] १. हर जगह व्यर्थ घूमनेवाला। २. हर किसी से अनुचित प्रेम-सम्बन्ध स्थापित करनेवाला। आवारा। स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।
हरजाना-पुं० [फा० हर्जानः] किसी का हरज या हानि होने पर उसके बदले में दिया जानेवाला धन। क्षति-मूल्य। प्रति-कर।
हरट्ट*-वि० [सं० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट।
हरण-पुं० [सं०] १. छीनना, लूटना या अनुचित रूप से बलपूर्वक ले लेना। २. दूर करना। मिटाना। ३. नाश। ४. ले जाना। वहन। ५. भाग देना। (गणित)
हरता-धरता-पुं० दे० 'कर्त्ता-धर्त्ता'।
हरताल-स्त्री० [सं० हरिताल] [वि० हरताली] पीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो दवा के काम में आता है।
मुहा०-(किसी लेख या बात पर) हरताल लगाना=व्यर्थ या रद करना।
हरद(ी)*-स्त्री० दे० 'हलदी'।
हरद्वार-पुं० दे० 'हरिद्वार'।
हरना-स० [सं० हरण] हरण करना। छीनना या ले लेना। (विशेष दे० 'हरण')
मुहा०-मन हरना=मोहित करना। लुभाना। प्राण हरना=१. मार डालना। २. बहुत कष्ट देना।
* अ० दे० 'हारना'।
* पुं० [स्त्री० हरनी] दे० 'हिरन'।
हरनाकस*-पुं० = हिरण्यकशिपु।
हरनाकुस*-पुं० = हिरण्याक्ष।
हरनी-स्त्री० [हिं० हिरन] हिरन की मादा। मृगी।
हरनौटा-पुं० [हिं० हिरन] हिरन का बच्चा।
हरपा*-पुं० [देश०] १. सिन्दूर रखने का डिब्बा। सिन्धोरा। २. डिब्बा।
हरफ-पुं० [अ०] अक्षर। वर्ण।
हरबराना*-अ०, स० दे० 'हड़बड़ाना'।
हरबा-पुं० [अ० हरबः] हथियार। शस्त्र।
हरबोंग-पुं० [?] १. अंधेर। २. उपद्रव।

वि० गँवार। उजड्ड।

हरम-पुं० [अ० मि० सं० हर्म्य=प्रासाद] अन्तःपुर। जनानखाना। रनवास।

स्त्री० १. स्त्री। पत्नी। २. रखेली स्त्री।

हरयाल*-स्त्री० = हरियाली।

हरयें*-अव्य० दे० 'हरएँ'।

हरवल-पुं० दे० 'हरावल'।

हरवली-स्त्री० [तु० हरवल] १.हरावल के अधिकारी का कार्य या पद। २.सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हरवा†-पुं० दे० 'हार'। (माला)

हरवाहा-पुं० दे० 'हलवाहा'।

हरष*-पुं० = हर्ष।

हरषना*-अ० [हिं० हर्ष+ना (प्रत्य०)] हर्षित या प्रसन्न होना।

हरषाना*-स० हिं० 'हरषना' का प्रे०।

अ० हर्षित या प्रसन्न होना।

हरषित*-वि० = हर्षित।

हरसना*-अ० दे० 'हरषना'।

हरसा†-पुं० दे० 'हरिस'।

हर-सिंगार-पुं० [सं० हार+सिंगार] एक पेड़ जिसमें छोटे सुगन्धित फूल लगते हैं। परजाता।

हरहाया-वि० [?] [स्त्री० हरहाई] नटखट (गौ, बैल आदि)।

हर-हार-पुं० [सं०] १. (शिव के गले का हार) सर्प। साँप। २. शेष नाग।

हराँस*-स्त्री० [अ० हिरास] १. भय। डर। २. दुःख। चिन्ता। ३. थकावट। ४. हलका ज्वर या ताप। हरारत।

हरा-वि० [सं० हरित] [स्त्री० हरी] १. घास, पत्ती आदि के रंग का। हरित। सब्ज। २. प्रफुल्ल। प्रसन्न। ३. जो मुरझाया न हो। ताजा।

यौ०-हरा भरा=१.जो सूखा या मुरझाया न हो। २.जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।

पुं० घास या पत्ती का सा रंग। हरित वर्ण।

*पुं० दे० 'हार'। (माला)

हराना-स० [हिं० हारना] १. युद्ध, प्रतियोगिता आदि में प्रतिद्वंद्वी को परास्त करना। पराजित करना। २.ऐसा काम करना जिससे कोई हार जाय। ३. थकाना।

हराम-वि० [अ०] १. जो इस्लाम धर्म-शास्त्र में वर्जित या त्याज्य हो। निषिद्ध। २. बुरा। दूषित।

मुहा०-(कोई बात) हराम करना= कुछ करना परम कष्टदायक और फलतः असम्भव कर देना। जैसे-तुमने हमारा खाना-पीना हराम कर दिया है।

पुं० १. अधर्म। पाप।

मुहा०-हराम का=१ जो अधर्म से उत्पन्न या प्राप्त हो। २ मुफ्त का।

२. स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। व्यभिचार।

हराम-खोर-पुं० [अ०+फा०] [भाव० हराम-खोरी] १.मुफ्त का माल खानेवाला। २. धन लेकर भी काम न करनेवाला।

हरामजादा-पुं० [अ०+फा०] [स्त्री० हरामजादी] १. दोगला। वर्ण-संकर। २. परम दुष्ट। बहुत बड़ा पाजी।

हरामी-वि० दे० 'हरामजादा'।

हरामीपन-पुं० [अ० + हिं०] अधिक दुष्टता या नीचता।

हरारत-स्त्री० [अ०] १. गरमी। ताप। २. हलका ज्वर। ज्वरांश।

हरावरि*-स्त्री० १. दे० 'हड़ावर'। २. दे० 'हरावल'।

हरावल-पुं० [तु०] सेना में सबसे आगे चलनेवाले सिपाहियों का दल।

हरास-पुं० [फा० हिरास] १.भय। डर। २.आशंका। खटका। ३.दुःख। ४.निराशा। स्त्री० [हिं० हारना] हारने की क्रिया या भाव।

हराहर*-पुं० = हलाहल।

हरि-पुं० [सं०] १. विष्णु। २. शिव। महादेव। ३. बंदर। ४. अग्नि। आग। ५. विष्णु के अवतार, श्रीकृष्ण। *अव्य० [हिं० हरुए] धीरे। आहिस्ते।

हरिअर*-वि० दे० 'हरा'। (रंग)

हरिआली-स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरि-कीर्त्तन-पुं० [सं०] ईश्वर या उसके अवतारों के नाम या गुणों का कीर्त्तन।

हरि-चंदन-पुं०[सं०]एक प्रकार का चन्दन।

हरि-जन-पुं० [सं०] १.ईश्वर का भक्त। २. पद-दलित या अस्पृश्य जातियों का सामूहिक नाम। (आधुनिक)

हरि-जान*-पुं० दे० 'हरि-यान'।

हरिण-पुं० [स्त्री० हरिणी] दे० 'हिरन'।

हरिणाक्षी-वि० [सं०] हिरन की आँखों के समान सुन्दर आँखोंवाली। (स्त्री)

हरिणी-स्त्री० [सं०] १. हिरन की मादा। २. दे० 'चित्रिणी'।

हरित्(त)-वि० [सं०] हरा। सब्ज।

हरिताभ-वि० [सं०] जिसमें हरे रंग की आभा हो। हरापन लिये हुए।

हरितालिका-स्त्री० [सं०] भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए व्रत की तिथि है। तीज।

हरिद्रा-स्त्री० [सं०] हलदी।

हरिद्वार-पुं० [सं०] उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-तट पर है।

हरि-धाम-पुं० [सं०] वैकुंठ।

हरिन-पुं० [स्त्री० हरिनी] दे० 'हिरन'।

हरि-नग*-पुं० [सं०] साँप का मणि।

हरिनाकुस*-पुं० = हिरण्यकशिपु।

हरि-नाम-पुं० [सं० हरिनामन्] ईश्वर या भगवान् का नाम। (जपने के लिए)

हरिनी-स्त्री० [हिं० हिरन] मादा हिरन।

हरि-प्रिया-स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

हरि-भक्त-पुं० [सं०] ईश्वर का भक्त या दास।

हरियर*-वि० दे० 'हरा'।

हरियाई*-स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरि-यान-पुं०[सं०] विष्णु के वाहन,गरुड़।

हरियाली-स्त्री० [हिं० हरा] हरे-भरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार।

मुहा०-हरियाली सूझना = कठिन अवसर पर भी उमंग, प्रसन्नता या दूर की असम्भव बातें सूझना।

हरिश्चंद्र-पुं० [सं०] सूर्य-वंश के एक प्रसिद्ध राजा जो बहुत बड़े सत्य-निष्ठ थे।

हरिस-स्त्री० [सं० हलीषा] हल का वह लट्ठा जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी और दूसरे सिरे पर जूआ रहता है।

हरिहाई*-वि०हिं० 'हरहाया' का स्त्री०।

हरी-पुं० दे० 'हरि'।

हरीकेन-स्त्री० [अं०] एक प्रकार की दस्ती लालटेन।

हरीतकी-स्त्री० [सं०] हड़। हर्रे।

हरीतिमा-स्त्री० [सं०] १. हरे-भरे पेड़ों का विस्तार। हरियाली। २. हरापन।

हरीरा-पुं०[अ०हरीर:] दूध में मेवे-मसाले डालकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ। *वि० [हिं० हरियर] [स्त्री० हरीरी] १. हरा। सब्ज। २. हर्षित। प्रसन्न।

हरुअ(ा)*-वि०[भाव०हरुआई] हलका।

हरुआना-अ० [हिं० हरुआ] १. हलका होना। २.फुरती करना। ३.जल्दी मचाना।

हरुए*-क्रि० वि० दे० 'हरएँ'।

हरू-वि० दे० 'हलका'।

हरेक-वि०=हर एक। (अशुद्ध रूप)
हरेरी*-स्त्री० दे० 'हरियाली'।
हरेव-पुं० [देश०] १. मंगोलों का देश। २. मंगोल जाति।
हरेवा-पुं० [हिं० हरा] बुलबुल की तरह की हरे रंग की एक चिड़िया।
हरैं*-क्रि० वि० दे० 'हरे'।
हरैया*-पुं० [हिं० हरना] १. हरण करने या हरनेवाला। २. दूर करने या मिटानेवाला।
हरौल-पुं० दे० 'हरावल'।
हरौहर*-स्त्री० [सं०हरण] १. बलपूर्वक छीनना। २. लूट।
हर्ज-पुं० दे० 'हरज'।
यौ०-हर्ज-मर्ज=बाधा। अड़चन। विघ्न।
हर्त्ता-पुं० [सं० हर्तृ] [स्त्री० हर्त्री] हरण करनेवाला।
हर्फ-पुं० दे० 'हरफ'।
हर्म्य-पुं० [सं०] सुन्दर प्रसाद। महल।
हर्रे-स्त्री० दे० 'हड़'।
हर्ष-पुं० [सं०] [वि० हर्षित] १. प्रसन्नता या भय के कारण रोएँ खड़े होना। रोमांच। २. प्रसन्नता। आनन्द। खुशी।
हर्षित-वि० [सं०] प्रसन्न। खुश।
हल्-पुं० [सं०] व्यंजन का वह विशुद्ध रूप जिसके अन्त में स्वर न लगा हो। जैसे-'सम्राट्' में का ट्।
हलंत-पुं० दे० 'हल्'
हल-पुं० [सं०] १. जमीन जोतने का एक प्रसिद्ध उपकरण। सीर। लांगल।
मुहा०-हल जोतना = १. खेत में हल चलाना। २.गँवारों का-सा काम करना।
२. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
पुं० [अ०] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २. समस्या का समाधान या निराकरण।
हल-कंप-पुं० दे० 'हड़-कंप'।
हलक-पुं० [अ०] गले की नली। कंठ।
हलकई†-स्त्री०=हलकापन।
हलकना-अ० [सं० हल्लन], [भाव० हलकन] १. बरतन में भरे हुए जल का हिलने से शब्द करना। २. हिलोरें लेना। लहराना। ३. हिलना।
हलका-वि० [सं० लघुक] [स्त्री० हलकी, भाव० हलकापन] १. जो भारी न हो। कम वजन का। २. जो तेज या चटकीला न हो। ३. जो गहरा न हो। उथला। ४. जो अपने साधारण मान, बल, वेग आदि से कुछ कम या घटकर हो। कम अच्छा। ५. कम। थोड़ा। ६. ओछा। तुच्छ। ७. सहज। सुख-साध्य। ८. निश्चिन्त। ९ प्रफुल्ल। प्रसन्न। १०. हरा। ताजा।
†पुं० [अनु० हलहल] तरंग। लहर।
पुं० [अ०हल्कः]१.वृत्त। मंडल। गोलाई। २. घेरा। परिधि। ३. मंडली। गरोह। ४. किसी विशेष कार्य के लिए निर्धारित कुछ गाँवों और कसबों का समूह।
हलकाई†-स्त्री०=हलकापन।
हलकान†-वि० दे० 'हलाकान'।
हलकापन-पुं०[हिं० हलका+पन(प्रत्य०)] १. 'हलका' होने का भाव या गुण। २. ओछापन। तुच्छता। ३. अप्रतिष्ठा। हेठी।
हलकोरा†-पुं० [अनु०] तरंग। लहर।
हल-चल-स्त्री० [हिं० हिलना+चलना] १. हिलने-डोलने की क्रिया या भाव। २. जनता में घबराहट फैलने के कारण होनेवाली दौड़-धूप, भगदड़, शोर-गुल, विकलता आदि। खलबली।
वि० डगमगाता या हिलता हुआ।
हलदी-स्त्री० [सं० हरिद्रा] एक प्रसिद्ध पौधे की जड़ जो मसाले और रँगाई के

काम में आती है।

मुहा०-हलदी उठना या चढ़ना = विवाह के पहले दूल्हे और दुलहन के शरीर में हलदी और तेल लगना। हलदी लगना=विवाह होना।

कहा०-हलदी लगे न फिटकिरी=बिना कुछ खर्च या परिश्रम किये हुए। मुफ्त में।

हलधर-पुं० [सं०] बलराम जी।

हलना॰-अ० [सं० हल्लन] १. हिलना। २. घुसना। पैठना।

हलफ-पुं० [अ०] शपथ। कसम।

हलफनामा-पुं० दे० 'शपथ-पत्र'।

हलबल॰-पुं० [हिं० हल+बल] [क्रि० हलबलाना] खलबली। हलचल।

हलबी(ब्बी)-वि० [हलब देश] १. हलब देश का। २. मोटे दल का और बढ़िया (शीशा)। ३. बहुत मोटा।

हल-यंत्र-पुं० [सं०] जमीन जोतने का वह बड़ा हल जो इंजन की सहायता से चलता है और जिससे बहुत अधिक भूमि बहुत जल्दी जोती जाती है। (ट्रैक्टर)

हलराना-स० [हिं० हिलोरा] (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना। अ० इधर-उधर हिलना-डोलना।

हलवा-पुं० दे० 'हलुआ'।

हलवाई-पुं० [अ० हलवा+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] मिठाई, पूरी, नमकीन पकवान आदि बनाने और बेचनेवाला।

हलवाह(ा)-पुं० [सं० हलवाह] हल चलानेवाला।

हलहलाना॰-स० [अनु० हलहल] जोर से हिलाना। झकझोरना। अ० काँपना। थरथराना।

हलाक-वि० [अ० हलाकत] जो मार डाला गया हो। हत।

हलाकान॰-वि० [अ० हलाक] [भाव० हलाकानी] परेशान। हैरान। तंग।

हलाकू-वि० [हिं० हलाक] हलाक करनेवाला।

हलायुध-पुं० [सं०] बलरामजी।

हलाल-वि० [अ०] जो शरअ या इसलामी धर्म-शास्त्र के अनुकूल ठीक हो। जायज। पुं० वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।

मुहा०-हलाल करना=१. मुसलमानी शरअ के अनुसार (धीरे धीरे गला रेतकर) पशु की हत्या करना। जबह करना। २. मार डालना।

पद-हलाल का=ईमानदारी से कमाया या लिया हुआ।

हलालखोर-पुं० दे० 'मेहतर'।

हलाहल-पुं० [सं०] १. वह प्रचंड विष जो समुद्र-मथन के समय निकला था। २. उग्र विष। भारी जहर।

हली-पुं० [सं० हलिन्] १. बलराम। २. किसान।

हलीम-वि० [अ०] सुशील और शान्त।

हलुआ-पुं० [अ० हलवः] एक प्रसिद्ध मीठा खाद्य-पदार्थ। मोहन-भोग।

हलुक॰-वि० दे० 'हलका'।

हलूफा-पुं० [अ० अलूफः] वे मिठाइयाँ, पकवान आदि जो कुछ विशिष्ट जातियों में विवाह से एक-दो दिन पहले लड़की-वालों के यहाँ से लड़केवालों के यहाँ भेजे जाते हैं।

हलोर॰-पुं० दे० 'हिलोर'।

हलोरना-स० [हिं० हिलोर] १. पानी में हिलोरा उत्पन्न करना। २. अनाज फटकना। ३. दोनों हाथों से समेटना। (धन आदि)

हब्शी-स्त्री० दे० 'हबशी'।

हल्ला-पुं० [अनु०] १. शोर-गुल। कोलाहल। २. लड़ाई के समय की ललकार या शोर। ३. आक्रमण। चढ़ाई।

हल्लीश-पुं० [सं०] एक प्रकार का नृत्य-प्रधान और एक अंकवाला उप-रूपक।

हवन-पुं० [सं०] [वि० हवनीय] मंत्र पढ़कर घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का वैदिक धार्मिक कृत्य। होम।

हवलदार-पुं० [अ० हवाल:+फ़ा० दार] पुलिस या फ़ौज का एक छोटा अफ़सर।

हवस-स्त्री० [अ०] १. लालसा। वासना। चाह। २. तृष्णा।

हवा-स्त्री०[अ०] १. प्रायः सर्वत्र चलता रहनेवाला वह तत्त्व जो सारी पृथ्वी में व्याप्त है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं। मुहा०-हवा उड़ना = खबर फैलना। हवा करना=पंखे आदि से हवा चलाना। हवा के घोड़े पर सवार होना=१. बहुत जल्दी में होना। २.किसी प्रकार के नशे या गहरी उमंग में होना। हवा खाना=१. शुद्ध वायु का सेवन करना २. विफल या वंचित होना। हवा पीकर रहना=बिना भोजन किये रहना। (व्यंग्य) हवा बताना = यों ही चलता करना। टालना। हवा बाँधना=गप या शेखी हाँकना। हवा पलटना, फिरना या बदलना=कोई नई स्थिति उत्पन्न होना। हालत बदलना। हवा बिगड़ना=सारी परिस्थिति खराब होना। हवा से बातें करना=बहुत तेज़ दौड़ना या चलना। (किसी की) हवा लगना=संगत का प्रभाव पड़ना। हवा हो जाना=१. बहुत जल्दी चले जाना। २. न रह जाना। गायब हो जाना। हवा से लड़ना=बिना किसी कारण के लड़ना। २. भूत। प्रेत। ३.यश। कीर्ति। ४.महत्त्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास। साख। मुहा०-हवा बँधना=१. कीर्ति या यश फैलना। २.. बाज़ार में साख होना। हवा बिगड़ना=पहले की-सी मर्यादा या धाक न रह जाना।

हवाई-वि० [अ० हवा] १. हवा का। वायु-सम्बन्धी। २. हवा में चलनेवाला। जैसे-हवाई जहाज। ३. कल्पित या झूठ। निर्मूल। जैसे-हवाई खबर। स्त्री० बान या आसमानी नाम की आतशबाज़ी। मुहा०-(मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना=चेहरे का रंग फीका पड़ जाना।

हवाई अड्डा-पुं० वह स्थान जहाँ हवाई जहाज यात्रियों को उतारने-चढ़ाने के लिए आकर ठहरते हैं। (एयरोड्रोम)

हवाई जहाज-पुं० हवा में उड़नेवाली सवारी। वायु-यान। (एयरोप्लेन)

हवा गाड़ी-स्त्री० दे० 'मोटर' २.।

हवा-चक्की-स्त्री० [हिं० हवा+चक्की] १. हवा के ज़ोर से चलनेवाली आटे की चक्की। पवन-चक्की। २.इस प्रकार का कोई यंत्र।

हवादार-वि० [फ़ा०] जिसमें हवा आने-जाने के लिए खिड़कियाँ आदि हों। पुं० सवारी के काम का एक प्रकार का हलका तख्त।

हवाबाज़-पुं० [अ०हवा+फ़ा० बाज़] वह जो हवाई जहाज चलाता हो। उड़ाका।

हवाल-पुं० [अ० अहवाल] १. हाल। दशा। २. परिणाम। ३. वृत्तान्त।

हवालदार-पुं० दे० 'हवलदार'।

हवाला-पुं०[अ०] १.प्रमाण का उल्लेख। २. दृष्टान्त। मिसाल। ३. सुपुर्दगी।

जिम्मेदारी।

मुहा०-(किसी के) हवाले करना=किसी के हाथ सौंपना। किसी को दे देना।

हवालात-स्त्री० [अ०] १. पहरे में रक्खा जाना। २. वह स्थान जहाँ विचार होने तक अभियुक्त पहरे में रक्खा जाता है।

हवालाती-वि० [अ०] १. हवालात-सम्बन्धी। २. हवालात में रक्खा हुआ (अभियुक्त)।

हवाली-स्त्री० [अ०] आस-पास के स्थान, विशेषत: किसी नगर के आस-पास के गाँव आदि।

हवास-पुं० [अ०] १. इन्द्रियाँ। २. संवेदन। ३. चेतना। सुध। होश।

मुहा०-हवास गुम होना=होश ठिकाने न रहना। कर्त्तव्य न सूझना।

हवि-पुं० [सं०हविस्] आहुति देने की वस्तु।

हविष्य-वि० [सं०] हवन करने योग्य। पुं०१ देवता के उद्देश्य से अग्नि में डाली जानेवाली बलि। हवि।२.दे०'हविष्यान्न'।

हविष्यान्न-पुं० [सं०] व्रत, यज्ञ आदि के दिन या उससे पहले दिन किया जानेवाला कुछ विशिष्ट सात्विक भोजन।

हविस-स्त्री० दे० 'हवस'।

हवेली-स्त्री०[अ०] १. पक्का बड़ा मकान। २. पत्नी। स्त्री। (पूरब)

हव्य-पुं० [सं०] हवन की वस्तु।

हसद-पुं० [अ०] ईर्ष्या। डाह।

हसन-पुं० [सं०] १. हँसना। २. परिहास। दिल्लगी।

हसब-अव्य० [अ०] अनुसार। मुताबिक।

हसरत-स्त्री० [अ०] १. दु:ख। अफसोस। २. हार्दिक कामना।

हसित-वि० [सं०] १. जिसपर लोग हँसते हों। २. हँसनेवाला। ३. खिला हुआ।

हसीन-वि०[अ०] बहुत सुन्दर। (व्यक्ति)

हसीला-वि० [अ० असील] सीधा-सादा।

हस्त-पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथी का सूँड़। ३.चौबीस अंगुल की एक नाप। हाथ। ४. एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

हस्तक-पुं० [सं०] १. हाथ। २. हाथ से बजाई जानेवाली ताली। ३. करताल। ४. नृत्य में हाथों की मुद्रा।

हस्त-कौशल-पुं०[सं०] हाथ की कारीगरी।

हस्त क्षेप-पुं०[सं०] किसी होते या चलते हुए काम में कुछ फेर-बदल करने के लिए हाथ डालना या कुछ कहना। दखल देना। (इन्टरफिअरेन्स)

हस्तगत-वि० [सं०] हाथ में आया या मिला हुआ। प्राप्त। हासिल।

हस्त-मुद्रा-स्त्री० [सं०] नृत्य आदि में भाव बताने के लिए हाथ को किसी विशेष स्थिति में रखने की मुद्रा या ढंग। हस्तक।

हस्त-रेखा-स्त्री० [सं०] हथेली पर की वे रेखाएँ जिन्हें देखकर सामुद्रिक के अनुसार किसी के जीवन की मुख्य मुख्य घटनाएँ बताई जाती हैं।

हस्त-लाघव-पुं० [सं०] हाथ की चालाकी, सफाई या फुरती।

हस्त-लिखित-वि० [सं०] हाथ का लिखा हुआ। (ग्रंथ, लेख आदि)

हस्त-लिपि (लेख)-स्त्री० [सं०] किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। (हैन्ड-राइटिंग)

हस्तांतरण-पुं० [सं०] (सम्पत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। (ट्रान्सफरेन्स)

हस्ताक्षर-पुं० [सं०] लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम

जो उस लेख या उसके उत्तरदायित्व की स्वीकृति का सूचक होता है। दस्तखत। (सिगनेचर)

हस्ताक्षरित-वि०[सं०] जिसपर हस्ताक्षर हुए हों।

हस्तामलक-पुं० [सं०] वह चीज या बात जिसके सभी अंग सामने आते ही स्पष्ट प्रकट हो जाते हों।

हस्तायुर्वेद-पुं० [सं०] हाथियों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।

हस्तिनी-स्त्री० [सं०] १. मादा हाथी। हथिनी। २ काम-शास्त्र में चार प्रकार की स्त्रियों में से सबसे निकृष्ट प्रकार की स्त्री।

हस्ती-पुं० [सं० हस्तिन्] [स्त्री० हस्तिनी] हाथी।

स्त्री० [फा०] १. अस्तित्व। २. व्यक्तित्व।

हस्ते-अव्य० [सं०] हाथ से। द्वारा। (धन या और किसी वस्तु का दिया जाना)

हहरना+-अ० [अनु०] १. काँपना। २. दहलना। थर्राना। ३. दंग रह जाना। चकित होना। ४ ईर्ष्या या डाह करना।

हहराना-स० हिं० 'हहरना' का स०।

॰अ० दे० 'हहरना'।

हहा-स्त्री० [अनु०] १. हँसने का शब्द। ठट्ठा। २. हाहाकार। ३. दीनता प्रकट करने या गिड़गिड़ाने का शब्द।

मुहा०-हहा खाना=बहुत गिड़गिड़ाना।

हाँ-अव्य० [सं० आम्] १. स्वीकृति, समर्थन आदि का सूचक शब्द।

मुहा०-हाँ जी, हाँ जी करना या हाँ में हाँ मिलाना=किसी की अनुचित बात भी ठीक मान लेना या बतलाना।

+२. दे० 'वहाँ'।

हाँक-स्त्री० [सं० हुंकार] १. वह जोर का शब्द जो किसी को पुकारने के लिए किया जाय। पुकार।

मुहा०-हाँक देना, या लगाना=जोर से पुकारना। हाँक-पुकारकर कहना=सबके सामने चिल्लाकर या खुले-आम कहना।

२. ललकार। हुंकार। ३. बढ़ावा। ४. दुहाई।

हाँकना-स० [हिं० हाँक] १. जानवरों को चलाने या हटाने के लिए आगे बढ़ाना या इधर-उधर करना। २. गाड़ी, रथ आदि चलाना। ३. जोर से पुकारना या बुलाना। ४. लड़ाई या धावे के समय शत्रु को लड़ने के लिए ललकारना। हुँकार करना। ५. बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग लेना। ६. पंखे से हवा करना।

हाँका-पुं० [हिं० हाँक] १. पुकार। टेर। २. ललकार। ३. गरज। ४. दे० 'हँकवा'।

हाँगी॰-स्त्री० दे० 'हामी'।

हाँड़ना+-स० [सं० भंडन] यों ही इधर-उधर घूमना।

हाँड़ी-स्त्री०[सं० भांड] १.देगची के आकार का मिट्टी का छोटा बरतन। हँडिया।

मुहा०-हाँड़ी पकना=षड्‌यंत्र रचा जाना। हाँड़ी चढ़ना=भोजन आदि पकाने के लिए हाँड़ी का आग पर रक्खा जाना।

कहा०-काठ की हाँड़ी=ऐसा छल जो बार बार न चल सके।

२. इसी आकार का शीशे का वह पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाते हैं।

हाँतना॰-स० [सं० हात] १. अलग करना। २. दूर करना। हटाना।

हाँता॰-वि० [सं० हात] [स्त्री० हाँती] अलग या दूर किया हुआ।

हाँपना-अ० [अनु०] परिश्रम करने, दौड़ने आदि के कारण जोर जोर से और जल्दी जल्दी साँस लेना।

हाँसना*-अ०, स०=हँसना।

हाँसल-पुं० [देश०] लाल रंग का वह घोड़ा जिसके पैर कुछ काले हों।

हाँसी-स्त्री०=हँसी।

हाँ हाँ-अव्य० [सं० आम्] स्वीकृति या सहमति का शब्द।

अव्य० [हिं० हैं! (आश्चर्य)] मना करने या रोकने का शब्द।

हा-अव्य० [सं०] १. शोक, दुःख, भय आदि का सूचक शब्द। २. आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द।

प्रत्य० हनन करनेवाला। मारनेवाला। (यौ० के अन्त में, जैसे-वृत्रहा)

हाइ*-स्त्री० [सं० घात] १. दशा। हालत। अवस्था। २. घात। गौं। ३ तौर। ढंग। ढब।

अव्य० दे० 'हाय'।

हाऊ-पुं० दे० 'हौआ'।

हाकिम-पुं० [अ०] [वि०, भाव० हाकिमी] १. शासक। २. बड़ा अधिकारी।

हाजत-स्त्री० [अ०] [वि० हाजती] १. आवश्यकता। ज़रूरत। २. चाह। ३. पहरे में रक्खा जाना। हिरासत। हवालात।

हाजमा-पुं० [अ०] भोजन पचाने की क्रिया या शक्ति।

हाजरी-स्त्री० दे० 'हाज़िरी'।

हाजिर-वि० [अ०] उपस्थित। मौजूद।

हाजिर-जवाब-वि० [अ०] [भाव० हाजिर-जवाबी] हर बात का तुरन्त और उपयुक्त उत्तर देनेवाला।

हाजिरात-स्त्री० [अ०] एक प्रक्रिया जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति पर कोई आत्मा बुलाकर उससे कुछ बातें पूछी जाती हैं।

हाज़िरी-स्त्री० [अ०] १ हाजिर होने की क्रिया या भाव। २. उपस्थिति। मौजूदगी। ३. भोजन, विशेषतः दोपहर का।

हाजी-पुं० [अ०] वह जो हज कर आया हो। (मुसल०)

हाट-स्त्री० [सं० हट्ट] १. दूकान। बाजार।

मुहा०-हाट करना=१. दुकान लगाकर बैठना। २. बाजार जाकर चीजें लाना। हाट लगना=बाजार में दूकानें लगना। हाट चढ़ना=बाजार में बिकने के लिए आना।

हाटक-पुं० [सं०] सोना। स्वर्ण।

हाटकपुर-पुं० [सं०] लंका।

हाड़*-पुं० [सं० हड्ड] १. हड्डी। अस्थि। २. वंश की मर्यादा। कुलीनता।

हाता-पुं० दे० 'अहाता'।

*वि० [सं० हात] [स्त्री० हाती] १ अलग या दूर किया हुआ। २. नष्ट।

पुं० [सं० हंता] वध करनेवाला।

हाथ-पुं० [सं० हस्त] १ कन्धे से पंजे तक का वह अंग जिससे चीज पकड़ते और काम करते हैं। कर। हस्त।

मुहा०-हाथ में आना या पड़ना=प्राप्त होना। मिलना। (किसी को) हाथ उठाना=सलाम करना। (किसी पर) हाथ उठाना या चलाना=मारना। हाथ कट जाना=प्रतिज्ञा, लेख आदि से बद्ध होने या और किसी कारण से कुछ करने योग्य न रहना। हाथ खाली होना=पास में धन न होना। हाथ खींचना=कोई काम करते करते रुक जाना। हाथ छोड़ना=मारना। हाथ जोड़ना=१. प्रणाम या नमस्कार करना। २. कृपा के लिए अनुनय-विनय करना। दूर से हाथ जोड़ना=बिलकुल दूर या अलग रहना। हाथ डालना=१. हस्तक्षेप करना। २. योग देना। हाथ तंग होना=पास में धन

न रहना। (किसी चीज से) हाथ धोना=गँवा या खो देना। २. प्राप्ति की आशा छोड़ देना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=पूरी तरह से प्रयत्न में लग जाना। हाथ पकड़ना=१. कोई काम करने से रोकना। २. आश्रय देना। शरण में लेना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना= खाली बैठे रहना। कुछ न करना। हाथ पसारना या फैलाना=माँगने के लिए हाथ आगे करना। हाथ-पाँव चलाना= काम धन्धा करना। हाथ-पाँव फूलना= इतना घबरा जाना कि कुछ करते-धरते न बने। हाथ-पाँव मारना=प्रयत्न या परिश्रम करना। हाथ-पैर जोड़ना= अनुनय-विनय करना। (किसी काम में) हाथ बँटाना = सम्मिलित होना। योग देना। हाथ बाँधे खड़े रहना=सदा सेवा में उपस्थित रहना। हाथ मलना= पछताना। (किसी चीज पर) हाथ मारना=उड़ा लेना। गायब कर देना। हाथ में करना=अपने अधिकार या वश में करना। हाथ रँगना=लाभ या प्राप्ति करना। *हाथ रोपना या ओड़ना = दे० 'हाथ फैलाना'। हाथ लगना=प्राप्त होना। मिलना। (किसी काम में) हाथ लगना=आरम्भ या शुरू होना। हाथ लगाना = १. छूना। २. आरम्भ करना। रँगे हाथ या हाथों=अपराध करते हुए या उसके प्रमाण के साथ। जैसे-रँगे हाथ पकड़े जाना। लगे हाथ या हाथों=कोई काम करते समय, उसे पूरा करके निश्चिन्त होने से पहले। जैसे- लगे हाथ यह काम भी कर डालो। हाथों-हाथ=एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए। हाथों-हाथ लेना=बहुत आदर और सम्मान से स्वागत करना। पद-हाथ या हाथ पैर की मैल=तुच्छ वस्तु या पदार्थ।

२.कोहनी से पंजे के सिरे तक की लम्बाई की नाप। ३ हाथ से खेले जानेवाले खेलों में हर खिलाड़ी के खेलने की बारी। दाँव।

हाथ-फूल-पुं० [हिं० हाथ+फूल] हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा-पुं० [हिं० हाथ] १. मूठ। दस्ता। २. मंगल-अवसरों पर हलदी आदि से दीवारों पर लगाई जानेवाली पंजे की छाप।

हाथा-पाई(बाँही)-स्त्री० [हिं० हाथ+ पाँव या बाँह] हाथ-पैर से खींचने और ढकेलने की लड़ाई। भिड़ंत।

हाथी-पुं० [सं०हस्तिन्] [स्त्री० हथिनी] एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो अपने सूँड़ के कारण सब जानवरों से विलक्षण होता है।

*स्त्री० [हिं० हाथ] हाथ का सहारा।

हाथीखाना-पुं० [हिं० हाथी+फा०खान:] वह स्थान जहाँ पाले हुए हाथी रहते हों।

हाथी-दाँत-पुं० [हि० हाथी+दाँत] हाथी के मुँह के दोनों ओर बाहर निकले हुए दाँत के आकार के वे सफेद अवयव जिनसे कई तरह की चीजें बनती हैं।

हाथीनाल-स्त्री० दे० 'गज-नाल'।

हाथी-पाँव-पुं० दे० 'फीलपा'।

हाथीवान-पुं० दे० 'महावत'।

हादसा-पुं० [अ०] दुर्घटना।

हानि-स्त्री० [सं०] १. टूटने-फूटने आदि के कारण होनेवाला नाश। (लॉस) २. आर्थिक क्षति। नुकसान। (डैमेज) ३. घाटा। टोटा। 'लाभ' का उलटा। ४. स्वास्थ्य को पहुँचनेवाली खराबी। ५. अपकार। बुराई।

हानिकर (कारक)-वि० [सं०] १. हानि करनेवाला। जिससे नुकसान हो। २. स्वास्थ्य बिगाड़नेवाला।

हानि-मूल्य-पुं० [सं०] वह धन जो किसी की हानि होने पर उसके बदले में उसे दिया जाय। प्रति-कर। (डैमेजेस)

हानि-लाभ-पुं० [सं०] व्यापार आदि में होनेवाला या और किसी प्रकार का नुकसान और नफा। (प्रॉफिट ऐन्ड लॉस)

हाफिज-पुं० [अ०] वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो।
वि० हिफाजत करनेवाला। रक्षक।

हामी-स्त्री० [हिं० हाँ] 'हाँ' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति।
मुहा०-हामी भरना=मंजूर करना।
पुं० [अ०] हिमायत करनेवाला।

हाय-अव्य० [सं० हा] शोक, दुःख, पीड़ा आदि का सूचक शब्द।
मुहा०-(किसी की) हाय पड़ना= किसी के हाय करने का बुरा फल मिलना।

हायन-पुं० [सं०] वर्ष। साल।

हायल*-वि० [हिं० घायल] १. घायल। २. मूर्छित। ३. शिथिल। थका हुआ।
वि० [अ०] बीच में आड़ करनेवाला।

हाया*-प्रत्य० [हिं० हाही] (किसी वस्तु के लिए) आतुर। व्याकुल।

हार-स्त्री० [सं० हारि] १. युद्ध, प्रतियोगिता, खेल आदि में प्रतिद्वंद्वी से न जीत सकने की दशा या भाव। पराजय।
मुहा०-हार खाना=हारना।
२. शिथिलता। थकावट। ३. हानि।
पुं० [सं०] १. राज्य द्वारा हरण। २. विरह। वियोग। ३. गले में पहनने की सोने, चाँदी, मोतियों, फूलों आदि की माला। ४. अंक-गणित में भाजक।
वि० १. वहन करने या ले जानेवाला। २. हरण करनेवाला। ३. नाशक।
*प्रत्य० दे० 'हारा'।

हारक-वि० [सं०] [स्त्री० हारिणी] १. हरण करनेवाला। २. मनोहर। सुन्दर।
पुं० १. चोर। २. लुटेरा। ३. गणित में भाजक। ४. हार। माला।

हारद*-वि० दे० 'हार्दिक'।
पुं० [सं० हृदय] मन की बात, अभिप्राय, उद्देश्य, वासना आदि।

हारना-अ० [हिं० हार] १. युद्ध, खेल, प्रतिद्वंद्विता आदि में प्रतिपक्षी के सामने विफल या पराजित होना। 'जीतना' का उलटा। २. थक जाना। ३. प्रयत्न में विफल होना।
मुहा०-हारे दर्जे=लाचार होकर। हार-कर=असमर्थ या विवश होकर।
स० १. प्रतियोगिता, युद्ध, खेल आदि में सफल न होने के कारण हाथ से उसे या उससे सम्बन्ध रखनेवाली चीज जाने देना। जैसे-लड़ाई, धन या बाजी हारना। २. गँवाना। खोना। ३. न रख सकने के कारण जाने देना।

हारबार*-स्त्री० दे० 'हड़बड़ी'।

हारा-प्रत्य० दे० 'वाला'।

हारिल-पुं०[देश०] एक चिड़िया जो प्रायः अपने चंगुल में तिनका लिये रहती है।

हारी-वि० [सं० हारिन्] [स्त्री० हारिणी] १. हरण करनेवाला। (यौ० के अन्त में)

हारीत-पुं० [सं०] १. चोर। २. डाकू।

हारौल*-पुं० दे० 'हरावल'।

हार्दिक-वि० [सं०] १. हृदय-संबंधी। हृदय का। २ हृदय से निकला हुआ या हृदय में होनेवाला। ठीक और सच।

हाल-पुं० [अ०] १. दशा। अवस्था।

२. परिस्थिति । ३. समाचार । वृत्तान्त । ४. विवरण । ब्योरा ।
वि० वर्त्तमान । मौजूद ।
मुहा०-हाल में = कुछ ही दिन पहले । हाल का=ताजा ।
अव्य० १. अभी । २. तुरन्त ।
स्त्री० [हिं० हिलना] १. हिलने की क्रिया या भाव । कंप । २. पहिये पर चढ़ाया जानेवाला लोहे का गोल बन्द ।

हाल-गोला-*पुं० दे० 'गेंद' ।

हाल-डोल-पुं० [हिं० हालना+डोलना] १. हिलने-डोलने की क्रिया या भाव । २. हलचल ।

हालत-स्त्री० [अ०] १ दशा । अवस्था । २. आर्थिक स्थिति । ३ परिस्थिति ।

हालना*-अ० = हिलना ।

हालरा†-पुं० [हिं० हालना] १. बच्चों को गोद में लेकर हिलाना-झुलाना । २. झोंका । ३. लहर । हिलोर ।

हालाँ कि-अव्य० [फा०] यद्यपि ।

हाला-स्त्री० [सं०] मद्य । शराब ।

हालाहल-पुं० = हलाहल ।

हाव-पुं० [सं०] संयोग के समय नायक को मोहित करने के लिए नायिका की स्वाभाविक चेष्टाएँ जो साहित्य में ग्यारह प्रकार की कही गई हैं । यथा—लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, बिब्बोक, विहृत, कुट्टमित, ललित और हेला ।

हावन-दस्ता-पुं० [फा०] खरल और बट्टा ।

हाव-भाव-पुं० [सं०] पुरुषों को मोहित करने के लिए स्त्रियों की मनोहर चेष्टाएँ । नाज-नखरा ।

हाशिया-पुं० [अ० हाशियः] १. किनारा । पाड़ । २. गोट । मगजी । ३. लिखने के समय कागज के किनारे खाली छोड़ी हुई जगह । उपांत ।
पद-हाशिये का गवाह = वह गवाह जिसने किसी लेख के किनारे पर गवाही की हो । उपांतस्थ साक्षी ।
४. किसी बात पर की हुई टीका-टिप्पणी ।
मुहा०-हाशिया चढ़ाना=किसी विवरण में अपनी ओर से कुछ और जोड़ना ।

हास-पुं० [सं०] १. हँसने की क्रिया या भाव । हँसी । २. दिल्लगी । ठठोली ।

हासक-पुं० [सं०] [स्त्री० हासिका] १. हँसने-हँसानेवाला । २. हँसोड़ ।

हासिल-वि० [अ०] पाया या मिला हुआ । प्राप्त । लब्ध ।
पुं० १ जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अन्तिम अंक के नीचे लिखे जाने पर बच रहे । २.गणित की क्रिया का फल । ३. पैदावार । उपज । ४. लाभ । नफा । ५. जमीन का लगान । जमा ।

हासी-वि० [सं० हासिन्][स्त्री० हासिनी] हँसनेवाला ।

हास्य-वि० [सं०] १. हँसने के योग्य । जिसपर लोग हँसें । २. उपहास के योग्य ।
पुं० १. हँसने की क्रिया या भाव । हँसी । २. नौ स्थायी भावों या रसों में से एक, जिसमें हँसी की बातें होती हैं । ३. दिल्लगी । ठट्ठा । मजाक ।

हास्यक-पुं० [सं० हास्य+क (प्रत्य०) हँसी की बात या किस्सा । चुटकुला ।

हास्यास्पद-वि० [सं०] [भाव० हास्यास्पदता] जिसके बेढंगेपन की लोग हँसी उड़ावें । हँसी उत्पन्न करानेवाला ।

हा हंत-अव्य० [सं०] हे ईश्वर, यह क्या हो गया ।

हा हा-पुं० [अनु०] १. हँसने का शब्द ।

यौ०-हा हा, ही ही (ठी ठी)=हँसी-ठट्ठा। निम्न कोटि का परिहास।

२. बहुत विनती की पुकार। दुहाई।

मुहा०-हा हा करना या खाना॰=बहुत गिड़गिड़ाकर विनती करना।

हाहाकार-पुं० [सं०] घबराहट के समय 'हाय हाय' की पुकार या चिल्लाहट (विशेषतः बहुत से लोगों की)। कुहराम।

हाहाहूत॰-पुं० दे० 'हाहाकार'।

हाही-स्त्री० [हि० हाय हाय] कुछ पाने के लिए बहुत 'हाय हाय' करते रहना। चरम सीमा का लोभ।

हाहू॰-पुं० [अनु०] १. शोर-गुल। कोलाहल। हल्ला। २. हलचल।

हिंकरना-अ० १ दे० 'हिनहिनाना'। २ दे० 'रँभाना'।

हिंगु-पुं० [सं०] हींग।

हिंगुल-पुं० [सं०] ईंगुर। शिंगरफ।

हिंगोट-पुं० [सं० हिंगुपत्र] एक कँटीला जंगली पेड़ जिसके फलों से तेल निकलता है। इंगुदी।

हिंछा॰-स्त्री०=इच्छा।

हिंडोरा॰-पुं० दे० 'हिंडोला'।

हिंडाल-पुं० [सं० हिन्दोल] १. हिंडोला। २. संगीत में एक प्रकार का राग।

हिंडोला-पुं०[सं०हिन्दोल] १ काठ का बना हुआ वह बड़ा चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिए ऊपर-नीचे घूमनेवाले छोटे-छोटे चौखटे होते हैं। २.पालना। झूला।

हिंदवी-स्त्री० दे० 'हिंदी' (भाषा)।

हिंदी-वि० [फा०] हिन्द या हिन्दुस्तान का। भारतीय।

पुं० हिन्द का निवासी। भारतवासी।

स्त्री० १. हिन्दुस्तान की भाषा। २. उत्तरी और मध्य-भारत की वह भाषा जिसके अन्तर्गत कई उप-भाषाएँ या बोलियाँ हैं और जो इस देश की राष्ट्र-भाषा है।

मुहा०-हिन्दी की चिन्दी निकालना=१. बहुत सूक्ष्म, पर व्यर्थ के या तुच्छ दोष निकालना। २. कुतर्क करना।

हिंदुस्तान-पुं० [फा० हिन्दोस्तान] १. भारतवर्ष। २. दिल्ली से पटने तक का भारत का उत्तरीय और मध्य भाग।

हिंदुस्तानी-वि० [फा०] हिन्दुस्तान का। पुं० हिन्दुस्तान का निवासी। भारतवासी। स्त्री० १ हिन्दुस्तान की भाषा। २. बोल-चाल या लोक-व्यवहार की (पर साहित्यिक से भिन्न वह हिन्दी जिसमें न तो अरबी-फारसी के शब्द अधिक हों, न संस्कृत के।

हिंदुस्थान-पुं० दे० 'हिंदुस्तान'।

हिंदू-पुं०[फा०] [भाव० हिंदूपन, हिन्दुत्व] भारतीय आर्यों के वर्त्तमान भारतीय वंशज जो वेदों, स्मृति, पुराण आदि को अपने धर्म-ग्रन्थ मानते हैं।

हिंवार¹-पुं० [सं० हिमालि] १ हिम। बरफ। २. तुषार। पाला।

हिंसक-पुं०[सं०][भाव०हिंसकता, हिंसा] १. हिंसा करने या मार डालनेवाला। घातक। २. दूसरों की बुराई या हानि चाहने और करनेवाला।

वि० (पशु) जो पशुओं या जीवों को मारकर उनका मांस खाता हो।

हिंसना॰-स०[सं० हिंसन ना० धा०] १. हिंसा या हत्या करना। २.किसी की निन्दा या बुराई करना। बुरा-भला कहना।

हिंसा-स्त्री० [सं०] १. प्राणियों को मारने-काटने और शारीरिक कष्ट देने की वृत्ति। २. किसी को हानि पहुँचाना।

हिंसात्मक-वि० [सं०] जिसमें हिंसा हो।

हिंसा से युक्त।

हिंसालु-वि० [सं०] हिंसा करनेवाला।

हिंस्र (क)-वि० [सं०] हिंसा करनेवाला।

हि-एक पुरानी विभक्ति जो पहले सब कारकों में चलती थी, पर बाद में 'को' के अर्थ में ही रह गई थी।

*अव्य० दे० 'ही'।

हिअ(रा)*-पुं० = हृदय।

हिकमत-स्त्री० [अ०] [वि० हिकमती] १.कोई नई बात ढूँढ निकालने की बुद्धि। २. युक्ति। उपाय। तरकीब। ३. यूनानी चिकित्सा का शास्त्र या पेशा। हकीमी।

हिक्का-स्त्री० [सं०] १. हिचकी। २. एक रोग जिसमें बहुत हिचकियाँ आती हैं।

हिचक-स्त्री० [हिं० हिचकना] कोई काम करने से पहले मन में होनेवाली हलकी रुकावट। आगा-पीछा।

हिचकना-अ० [हिं० हिचकी या अनु०] [भाव० हिचक, हिचकिचाहट] कोई काम करने से पहले, आशंका, अनौचित्य, असमर्थता आदि का ध्यान करके कुछ रुकना। आगा-पीछा करना।

*अ० [हिं० हिचकी] हिचकियाँ लेना।

हिचकिचाना-अ०=हिचकना। रुकना।

हिचकी-स्त्री० [अनु० हिच या सं० हिक्का] १. एक प्रसिद्ध शारीरिक व्यापार जिसमें पेट या कलेजे की वायु कुछ रुककर गले के रास्ते निकलने का प्रयत्न करती है।

मुहा०-हिचकी लगना = मरने के समय बार बार हिचकियाँ आना।

२. इसी प्रकार का वह शारीरिक व्यापार जो बहुत अधिक रोने पर होता है।

हिजड़ा-पुं० दे० 'हीजड़ा'।

हिजरी-पुं० [अ०] मुसलमानी सन् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने या हिजरत करने की तिथि (१५ जुलाई, ६२२ ई०) से चला है।

हिज्जे-पुं० [अ० हिज्जः] किसी शब्द में आये हुए अक्षरों, मात्राओं आदि का क्रम। अक्षरी। वर्त्तनी।

हिज्र-पुं० [अ०] वियोग। (शृंगार में)

हित-पुं० [सं०] १ कल्याण। मंगल। २. भलाई। उपकार। ३. लाभ। फायदा। ४ स्नेह। मुहब्बत। ५. वह जो किसी की भलाई चाहता और करता हो। ६.संबंधी। रिश्तेदार।

अव्य० १. (किसी की भलाई या प्रसन्नता के) लिए। वास्ते। २. लिए। वास्ते।

हितकर(कारक)-वि० [सं०] [भाव० हितकारिता] १. हित या भलाई करनेवाला। २.लाभदायक। फायदे-मन्द। ३ स्वास्थ्य के लिए अच्छा और लाभदायक।

हितकारी-वि० = हितकर।

हितचिंतक-वि०[सं०][भाव०हितचिंतन] भला चाहनेवाला। शुभचिन्तक। हितैषी।

हित-चिंतन-पुं० [सं०] किसी के उपकार या भलाई की बातें सोचना।

हितता*-स्त्री० दे० 'हित' १-४।

हितवना*-अ० दे० 'हिताना'

हिताई-स्त्री० [सं० हित] १. सम्बन्ध। रिश्तेदारी। नातेदारी। २.हित-चिन्तन।

हिताना*-अ० [सं० हित] १. हितकारी या लाभदायक होना। २. प्रेम या स्नेह करना। ३. उपकार या भलाई करना।

हितावह-वि०=हितकारी।

हिताहित-पुं० [सं०] १. हित और अहित। भलाई और बुराई। २. लाभ और हानि। नफा और नुकसान।

हिती(तू)-पुं०[सं०हित] १. हितैषी। २. सम्बन्धी। रिश्तेदार। ३.सुहृद। स्नेही।

हितेच्छु-वि०=हितैषी।
हितैती†-स्त्री० दे० 'हिताई'।
हितैषी-वि० [सं० हितैषिन्] [स्त्री० हितैषिणी, भाव० हितैषिता] हित या भला चाहनेवाला। हितचिन्तक।
हिदायत-स्त्री० [अ०] १. बड़े का छोटे को यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए। २.आदेश। निर्देश।
हिनती*-स्त्री०=हीनता।
हिनहिनाना-अ० [अनु०] [भाव० हिनहिनाहट] घोड़े का हिन् हिन् शब्द करना। हींसना।
हिफाजत-स्त्री० [अ०] रक्षा। रखवाली।
हिब्बा-पुं० [अ० हिब्बः] १. कौड़ी। २. दान।
हिब्बानामा-पुं०=दानपत्र।
हिमंचल*-पुं०=हिमालय।
हिमंत*-पुं०=हेमंत।
हिम-पुं० [सं०] १. पाला। तुषार। २. जाड़ा। शीत। ठंढ। ३.जाड़े का मौसिम। शीत ऋतु। ४. चन्द्रमा। ५. कपूर। वि० ठंढा। शीतल।
हिम कण-पुं० [सं०] तुषार या पाले के बहुत छोटे छोटे कण या टुकड़े।
हिमकर-पुं० [सं०] चन्द्रमा।
हिमजन-पुं० [अं० हीलियम को दिया हुआ सं० रूप] एक प्रकार का रासायनिक तत्व जो एक पारदर्शक वाष्प के रूप में होता है और जिसका पता हाल में लगा है। (हीलियम)
हिमयानी-स्त्री० [फा०] कमर में बाँधी जानेवाली रुपये रखने की लम्बी थैली।
हिमवान्-वि० [सं० हिमवत्] [स्त्री० हिमवती] जिसमें बरफ या पाला हो। पुं० १. हिमालय। २. चन्द्रमा।
हिमांशु-पुं० [सं०] चन्द्रमा।
हिमाकत-स्त्री०[अ०] मूर्खता। बेवकूफी।
हिमाचल-पुं०=हिमालय।
हिमाद्रि-पुं०=हिमालय।
हिमानी-स्त्री० [सं०] १. तुषार। पाला। २. बरफ। ३. बरफ की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर रहती हैं। (ग्लेशियर)
हिमायत-स्त्री० [अ०] [वि० हिमायती] १. पक्षपात। २. किसी के पक्ष का समर्थन या पोषण।
हिमालय-पुं० [सं०] भारत के उत्तर का प्रसिद्ध और संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा प्रसिद्ध पर्वत।
हिम्मत-स्त्री० [अ०] [वि० हिम्मती] साहस।
मुहा०-हिम्मत हारना=हताश होकर साहस छोड़ना।
हिय(रा)†-पुं० [सं० हृदय, प्रा० हिअ]. १ हृदय। २ साहस।
मुहा०-हिय हारना*=साहस छोड़ना।
हियाँ†-अव्य०=यहाँ।
हिया-पुं० [सं० हृदय] १. हृदय।
पद-हिये का अंधा = परम मूर्ख।
मुहा०-हिये की फूटना=बुद्धि नष्ट होना। हिय जलना = अत्यन्त क्रोध या ईर्ष्या होना। हिय में लोन सा लगना= बहुत बुरा या अप्रिय लगना।
२. वक्षःस्थल। छाती।
मुहा०-हिये लगाना=गले लगाना।
३. साहस। हिम्मत।
हियाव-पुं० [हिं० हिय] साहस।
हिरकना*-अ० [सं० हरुक्=समीप] १.पास आना। २. सटना। ३.परचना।
हिरकाना*-स० हिं० 'हिरकना' का स०।

हिरण-पुं० दे० 'हिरन'।
हिरण्मय-वि०[सं०]सोने का। सुनहला।
हिरण्य-पुं० [सं०] सोना। स्वर्ण।
हिरदय*-पुं० = हृदय।
हिरन-पुं० [सं० हरिण] सींगोंवाला एक प्रसिद्ध चौपाया जो मैदानों और जंगलों में रहता है। मृग। हिरन।
मुहा०-हिरन हो जाना=१.भाग जाना। २. नष्ट हो जाना। न रह जाना। जैसे-नशा हिरन हो जाना।
हिरना-पुं० दे० 'हिरन'।
*स० दे० 'हेरना'।
हिरनौटा-पुं०[हिं०हिरन] हिरन का बच्चा।
हिरमजी-वि०=किरमजी।
हिरसा-स्त्री० दे० हिर्स'।
हिराती-पुं० [हिरात देश] अफगानिस्तान के उत्तर हिरात नामक प्रदेश का घोड़ा।
हिराना[1]-अ० दे० 'हेराना'।
हिरास-स्त्री० [फा०] दे० 'हरास'।
हिरासत-स्त्री० [अ०] १. किसी व्यक्ति पर रखा जानेवाला पहरा या चौकी। २ हवालात।
हिरौंजी-स्त्री० दे० 'किरमिज'।
हिरौल*-पुं० दे० 'हरावल'।
हिर्स-स्त्री० [अ०] १. लालच। लोभ। २. स्पर्द्धा। ३. वासना।
हिलकना-अ० [सं० हिक्का] १. हिचकी लेना। २. सिसकना। ३ दे० 'हिलगना'।
हिलकी*-स्त्री०=हिचकी।
हिलकोर(ा)-पुं० दे० 'हिलोर'।
हिलगना-अ० [सं० अभिलग्न] [भाव० हिलग] १. अटकना। फँसना। २. हिलना-मिलना। परचना। ३. सटना।
हिलगाना-स०[हि० 'हिलगना' का स०।
हिलना-अ० [सं० हल्लन] १. अपने स्थान से कुछ इधर या उधर होना। सा-धारण गति में आना।
मुहा०-हिलना-डोलना=१.थोड़ा इधर-उधर होना। २. घूमना-फिरना। ३. किसी काम के लिए उठना या आगे बढ़ना।
२. कम्पित या चलायमान होना। गति-युक्त होना। ३.लहराना। ४.काँपना। ५. जमा या दृढ़ न रहना। ढीला होना। ६. (पानी में) पैठना। धँसना। ७. (मन का) चंचल होना। डिगना।
अ० [हिं० हिलगना] हेल-मेल में आना। परचना।
हिलाना-स० हिं० 'हिलना' का स०।
हिलोर-स्त्री० [सं० हिल्लोल] पानी की लहर। तरंग।
मुहा०-हिलोरें लेना=लहराना।
हिलोरना-स०[हिं०हिलोर+ना (प्रत्य०)] १.पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें। २ लहराना। ३. दे० 'हलोरना'।
हिल्लोल-पुं० [सं०] १. पानी की लहर। तरंग। २.आनन्द की तरंग। मौज। उमंग।
हिसाब-पुं० [अ०] [वि० हिसाबी] १. गिनकर लेखा तैयार करने का काम या विद्या। २. लेन देन, आय-व्यय आदि का लिखा हुआ विवरण। लेखा।
मुहा०-हिसाब चुकाना या चुकता करना=जो कुछ बाकी निकलता हो, वह दे देना। हिसाब देना=आय-व्यय का विवरण बताना। हिसाब लेना या समझना=यह पूछना कि कहाँ से कितना (धन) आया और कहाँ कितना खर्च हुआ। हिसाब बैठना = १. युक्ति या व्यवस्था ठीक होना। २. सुभीता होना।
यौ०-बे-हिसाब=बहुत अधिक। टेढ़ा हिसाब = १ कठिन कार्य। मुश्किल

काम। २. अव्यवस्था। कु-प्रबन्ध। ३. गणित-सम्बन्धी प्रश्न। ४.भाव। दर। ५. तरीका। ढंग। ६. धारणा। समझ। ७. अवस्था। दशा। ८.किफायत। मित-व्यय।

हिसाब-किताब-पुं० [अ०] १. आय-व्यय आदि का (विशेषतः लिखा हुआ) ब्योरा या लेखा। २. व्यापारिक लेन देन का व्यवहार। ३. ढंग। रीति।

हिसाबी-पुं० [अ०] हिसाब या गणित का जानकार।

वि० हिसाब का। हिसाब सम्बन्धी।

हिसिषा*-स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १. स्पर्द्धा। होड़। २.समता। बराबरी। ३.ईर्ष्या। डाह।

हिस्सा-पुं० [अ० हिस्सः] १.समष्टि या समूह का कोई अंश। अवयव। अंग। २. टुकड़ा। खंड। ३. विभक्त होने या बँटने पर मिलनेवाला अंश। भाग। बखरा। ४. व्यापार आदि में होनेवाला साझा।

हिस्सेदार-पुं० [अ० हिस्सः+फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० हिस्सेदारी] १. वह जिसे कुछ हिस्सा मिला हो या मिलने को हो। २. अंश या हिस्से का मालिक। साझेदार। (व्यापार, आय आदि में)

हींग-स्त्री० [सं० हिंगु] १. अफगानिस्तान और फारस में होनेवाले एक पौधे का जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें बहुत तीव्र गंध होती है और जो दवा और मसाले के काम में आता है।

हींचना।-स०=खींचना।

हींसना-अ०[भाव०हींस]दे०'हिनहिनाना'।

ही-अव्य० [सं० हि (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका प्रयोग निश्चय, परिमिति, स्वीकृति आदि सूचित करने अथवा किसी बात पर जोर देने के लिए होता है। जैसे-वही (वह ही), यों ही।

*पुं० दे० 'हिय' या 'हृदय'।

अ०ब्रज-भाषा के 'हो' (था) का स्त्री०।थी।

हीक-स्त्री० [सं० हिक्का] १. हिचकी। २. हलकी अप्रिय गन्ध या स्वाद।

हीचना*-अ० = हिचकना।

हीजड़ा-पुं० [?] वह व्यक्ति जिसमें न तो पुरुष का और न स्त्री का चिह्न या लिंग हो। नपुंसक।

हीन-वि० [सं०] [भाव० हीनता] १. किसी तत्व, गुण, वस्तु, बात आदि से खाली। रहित। जैसे-हीन-बुद्धि=बुद्धि से रहित। २. निम्न कोटि या श्रेणी का। निकृष्ट। घटिया। जैसे-हीन पद। ३. बहुत छोटा, तुच्छ या नगण्य। ४.दरिद्र। ५. अपेक्षाकृत हलका कम या थोड़ा।

हीन-बुद्धि-वि० [सं०] मूर्ख।

हीन-यान-पुं० [सं०] बौद्ध धर्म की मूल और प्राचीन शाखा जिसका विकास बरमा, स्याम आदि देशों में हुआ था।

हीन-हयात-स्त्री० [अ०] जीवन-काल।

हीय(ा)*-पुं० = हृदय।

हीर-पुं० [हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के अन्दर का मूल तत्व या सार-भाग। २. इमारती लकड़ी के अन्दर का भाग। ३. धातु या वीर्य, जो शरीर का सार भाग है। ४. शक्ति। बल। ताकत।

हीरक-पुं० [सं०] हीरा नामक रत्न।

हीरक जयंती-स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति संस्था, महत्वपूर्ण कार्य आदि की वह जयन्ती जो उसके जन्म या आरम्भ होने के ६० वें वर्ष होती है। (डायमन्ड जुबिली)

हीरा-पुं० [सं० हीरक] एक प्रसिद्ध बहु-मूल्य रत्न जो अपनी उज्ज्वल द्युति और बहुत अधिक कठोरता के लिए प्रसिद्ध है। मुहा०-हीरे की कनी चाटना=हीरे का

कनी खाकर आत्म-हत्या करना।

हीरा-कट-वि० [हिं० हीरा+हिं० काट] जिसके पहल हीरे के पहलों की तरह कटे हों।

हीरा-तराश-पुं० [हिं० हीरा+फा० तराश] [भाव० हीरा-तराशी] वह जो हीरे घिसने या तराशने का काम करता हो।

हीरामन-पुं० [हिं० हीरा+मणि] एक प्रकार का तोता जिसका रंग सोने का-सा माना गया है।

हीलना*-अ० = हिलना।

हीला-पुं० [अ०हीलः] १ बहाना। मिस। यौ०-हीला-हवाला = बहाना।

२. निमित्त। द्वार। साधन।

हीसका(सा)*-स्त्री० [सं० हिंसा] १. ईर्ष्या। डाह। २. प्रतियोगिता। होड़।

हुं*-अव्य० १. दे० 'हू'। २. दे० 'हो'।

हुंकार-पुं० [सं०] १. भय-भीत करने के लिए जोर से किया जानेवाला शब्द। गर्जन। गरज। २. ललकार।

हुंकारना-अ० [सं० हुंकार] १. डराने के लिए जोर का शब्द करना। २. गरजना।

हुंकारी-स्त्री० [अनु० हुँ] 'हूं' 'हुँ' करके स्वीकृति या सम्मति सूचित करने की क्रिया।

* स्त्री० दे० 'बिकारी'।

हुंडावन-स्त्री० [हिं० हुंडी] हुंडी से रुपये भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी।

हुंडियाना-अ० [हिं० हुंडी] किसी के नाम हुंडी लिखना।

हुंडी-स्त्री० [देश०] १. भारतीय महाजनी क्षेत्र में वह पत्र जो कोई महाजन किसी से कुछ ऋण लेने के समय उसके प्रमाण-स्वरूप ऋण देनेवाले को लिखकर देता है और जिसपर यह लिखा होता है कि यह धन इतने दिनों में ब्याज सहित चुका दिया जायगा। (पुराने ढंग का एक प्रकार का हैंड नोट)

मुहा०-हुंडी सकारना=हुंडी के रुपये चुकाना स्वीकृत करना और चुकाना।

२.अपना प्राप्य धन या उसका कोई अंश पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिसपर यह लिखा होता है कि इतने रुपये अमुक व्यक्ति, महाजन या बैंक को दे दिये जायँ। (ड्राफ्ट्, बिल आफ एक्सचेंज) यौ०-दर्शनी हुंडी (देखो)

३. रुपये उधार लेने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को कुछ निश्चित समय के अन्दर ब्याज-सहित कुछ किस्तों में सारा ऋण चुका देना पड़ता है।

हुँत*-प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हिंतो'] १. पुरानी हिन्दी में पंचमी और तृतीया की विभक्ति। से। २ लिए। वास्ते। ३.द्वारा।

हु*-अव्य० [सं० उप] 'भी' का वाचक एक अतिरेक-सूचक अव्यय।

हुआ-अ० हिं० 'होना' क्रिया का भूत०।

हुक-पुं० [अं०] १ टेढ़ी कील। २. अँकुसी। स्त्री० [देश०] एक प्रकार का नस का दर्द जो प्रायः पीठ में सहसा बल पड़ने पर उत्पन्न होता है।

हुकुमा-पुं० दे० 'हुक्म'।

हुकूमत-स्त्री० दे० 'हकूमत'।

हुक्का-पुं० [अ० हुक्कः] तम्बाकू पीने के लिए विशेष प्रकार का एक उपकरण। (इसके गड़गड़ा, फरशी, पेचवान आदि कई भेद होते हैं।)

हुक्का-पानी-पुं० [अ० हुक्का+हिं० पानी] एक बिरादरी के लोगों का आपस में जल, हुक्का आदि पीने-पिलाने का व्यवहार। बिरादरी का बरताव।

मुहा०-हुक्का-पानी बन्द करना= बिरादरी से निकाल या अलग कर देना।

हुक्काम-पुं० अ० 'हाकिम' का बहु०।

हुक्म-पुं० [अ०] १. किसी बड़े का छोटे से यह कहना कि ऐसा करो या ऐसा मत करो। आज्ञा। आदेश। मुहा०-हुक्म चलाना=आज्ञा देना। हुक्म तोड़ना=आज्ञा न मानना। २. जन-साधारण के लिए राज्य या शासन द्वारा निकाली हुई आज्ञा। ३. शासन। प्रभुत्व। ४. धर्म-शास्त्र आदि में बतलाई हुई विधि। ५. ताश का एक रंग।

हुक्मनामा-पुं०=आज्ञापत्र।

हुक्मी-वि० [अ० हुक्म] १. हुक्म या आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। पराधीन। २. अवश्य गुण दिखानेवाला। अचूक। अव्यर्थ।

हुजूर-पुं० दे० 'हजूर'।

हुजूरी-पुं० दे० 'हजूरी'।

हुज्जत-स्त्री० [अ०] [वि० हुज्जती] १. व्यर्थ का विवाद। तकरार।

हुज्जती-वि० [हिं० हुज्जत] बहुत या प्रायः हुज्जत करनेवाला।

हुड़क (न)-स्त्री० [अनु०] हुड़कने की क्रिया या भाव।

हुड़कना-अ० [अनु०] [स० हुड़काना] १. वियोग के कारण बहुत दुःखी होना। (विशेषतः छोटे बच्चे का) २. भयभीत और चिन्तित होना। ३. तरसना।

हुड़दंग-पुं० [अनु० हुड़+हिं० दंगा] उपद्रव-युक्त उछल-कूद।

हुड़क-पुं० [सं० हुडुक] एक प्रकार का छोटा ढोल या बाजा।

हुड्डु-वि० [देश०] १. जंगली। गँवार। उजड्ड। २. उद्दंड।

हुढक्क*-पुं० दे० 'हुड़क'।

हुत-वि० [सं०] १. हवन किया हुआ। २. आहुति के रूप में दिया हुआ। *अ० 'था' का पुराना रूप।

हुता*-अ० [हिं० हुत] 'होना' क्रिया का पुराना रूप। था।

हुताशन-पुं० [सं०] अग्नि।

हुति*-अव्य० [प्रा० हिंतो] १. करण और अपादान कारक का चिह्न। से। द्वारा। २. ओर से। तरफ से।

हुते*-अव्य० [प्रा० हिंतो] १. से। द्वारा। २. ओर से। तरफ से। अ० हिं० 'होना' का ब्रज० भूत-कालिक बहु० रूप। थे।

हुदकाना*-स० दे० 'उकसाना'।

हुदना*-अ० [सं० हुंडन] १. स्तब्ध होना। चकपकाना। २. ठिठकना।

हुदहुद-पुं० [अ०] एक प्रकार का पक्षी।

हुन-पुं० [सं० हूण] १. सोना। स्वर्ण। २. मोहर। अशरफी। मुहा०-हुन बरसना=बहुत आय होना।

हुनना*-स० [सं० हवन] १. आहुति देना। २. हवन करना।

हुनर-पुं० [फा०] १. कला। कारीगरी। २. कोई काम करने का कौशल।

हुनरमंद-वि० [फा०] १. हुनर जानने-वाला। कलाविद्। २. निपुण। कुशल।

हुमकना-अ० [अनु० हुँ] १. दे० 'हुमचना'। २. ठुमकना। (बच्चों का)

हुमचना-अ० [अनु०] १. किसी चीज पर चढ़कर उसे बार बार जोर से नीचे दबाना। २.उछलना। कूदना। ३. दे० 'हुमकना'।

हुमसना†-अ० १. दे० 'हुमचना'। २. दे० 'उमसना'।

हुमसाना-स० [हिं० हुमसना] १. जोर से ऊपर की तरफ उठाना। उछालना।

१. बढ़ाना।

हुमा-स्त्री० [फा०] एक कल्पित पक्षी। (कहते हैं कि जिसपर इस पक्षी की छाया पड़ जाय, वह राजा हो जाता है।)

हुमेल-स्त्री० [अ० हमायल] अशर्फियों, रुपयों आदि को गूँथकर बनाई हुई माला।

हुर-पुं० [देश०] सिन्ध में रहनेवाले एक प्रकार के अर्द्ध-सभ्य मुसलमान।

हुलसना-अ० [हिं० हुलास] १. बहुत प्रसन्न होना। २. उभरना। ३. उमड़ना। ⊛स० आनन्दित या प्रसन्न करना।

हुलसाना-स० हिं० 'हुलसना' का स०।

हुलसित⊛-वि० [हिं० हुलास] आनन्द की उमंग से भरा हुआ। परम प्रसन्न।

हुलसी-स्त्री० [हिं० हुलास] १. हुलास। उल्लास। २ कुछ लोगों के मत से गो० तुलसीदास जी की माता का नाम।

हुलाना†-स० दे० 'हूलना'।

हुलास-पुं० [सं० उल्लास] १. विशेष आनन्द। उल्लास। २. उत्साह। हौसला। स्त्री० सुँघनी। नस्य।

हुलिया-पुं० [अ० हुलियः] १ रूप। शकल। आकृति। २. किसी मनुष्य के रूप-रंग आदि का ऐसा विवरण जिससे उसकी पहचान हो सके।

मुहा०-हुलिया कराना=किसी आदमी का पता लगाने के लिए उसकी शकल, सूरत आदि पुलिस को बताना।

हुल्लड़-पुं० [अनु०] १. कोलाहल। हो-हल्ला। २. उपद्रव। उत्पात।

हुल्लड़-बाजी-स्त्री० [हिं० हुल्लड़+फा० बाजी] हो-हल्ला या शोर-गुल मचाने या मचाने या उपद्रव करने की क्रिया।

हुशियार-वि०=होशियार।

हुस्न-पुं० [अ०] सौन्दर्य। उत्तम रूप।

हूँ-अव्य० [अनु०] स्वीकृति-सूचक शब्द। ⊛अव्य० दे० 'हू'।

हूँसना-स० [अनु०] [भाव० हूँस] १. नजर लगाना। २. बराबर होंठ चुआते रहना। ३. ललचाना। ४. कोसना।

हू⊛-अव्य० [सं० उप=आगे] भी।

हूक-स्त्री० [सं० हिक्का] १. हृदय की वेदना। २. दर्द। पीड़ा। ३. आशंका। खटका।

हूकना-अ० [हिं० हूक] १. पीड़ा या कसक होना। २. पीड़ा या कष्ट से चौंकना।

हूटना⊛-अ०=हटना।

हूठा-पुं० दे० 'ठेंगा'।

हूड़⊛-वि० दे० 'हुड्ड'।

हूण-पुं० [?] एक प्राचीन मंगोल जाति जो कुछ दिनों तक एशिया और युरोप के देशों पर आक्रमण करती फिरती थी।

हूत-वि० [सं०] बुलाया हुआ।

हूनना†-स० [सं० हवन] १. आग में डालना। २. विपत्ति में फँसाना।

हू-बहू-वि० [अ०] १. ज्यों का त्यों। जैसा हो, ठीक वैसा ही। २. (किसी के) बिलकुल अनुरूप या समान।

हूर-स्त्री० [अ०] मुसलमानों के अनुसार, स्वर्ग की अप्सरा। पुं० दे० 'हुर'।

हूरना†-स० [अनु०] १. बहुत अधिक भोजन करना। २. मारना। ३. हूलना।

हूल-स्त्री० [सं० शूल] १. हूलने की क्रिया या भाव। भोंकना। २ हूक। टीस। स्त्री० [अनु०] १. कोलाहल। हल्ला। २. हर्ष-ध्वनि। ३. ललकार।

हूलना-स० [हिं० हूल] लाठी, भाले आदि का सिरा जोर से धँसाना या घुसाना।

हूश-वि० [हिं० हूड़] गँवार। उजड्ड।

हूह-स्त्री० [अनु०] हुँकार।

हृत-वि० [सं०] [भाव० हृति] हरण किया हुआ। छीनकर लिया हुआ।
हृत्कंप-पुं० [सं०] हृदय की धड़कन।
हृत्तंत्री-स्त्री० [सं०] हृदय-रूपी तंत्री या वीणा।
हृत्तल-पुं० [सं०] हृदय। कलेजा। दिल।
हृत्पिंड-पुं० [सं०] कलेजा।
हृदयंगम-वि० [सं०] अच्छी तरह हृदय या समझ में आया हुआ।
हृदय-पुं० [सं०] १. छाती के अन्दर बाईं ओर का एक अवयव जिसके द्वारा शुद्ध रक्त शरीर की नाड़ियों में पहुँचता है। दिल। कलेजा। २. इसी के पास छाती के मध्य भाग में माना जानेवाला वह अंग जिसमें प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न होते और रहते हैं। मन।
मुहा०-हृदय विदीर्ण होना = शोक, कष्ट, करुणा आदि के कारण मन को बहुत अधिक कष्ट पहुँचना।
३ अंतःकरण। विवेक-बुद्धि।
हृदय-ग्राही-पुं० [सं०] [स्त्री० हृदय-ग्राहिणी] मन को आकृष्ट करनेवाला।
हृदय-विदारक-वि० [सं०] मन को बहुत अधिक कष्ट पहुँचानेवाला। (शोक, करुणा आदि की घटना)
हृदयहारी-वि० [सं० हृदयहारिन्] [स्त्री० हृदयहारिणी] मन को हरण करने या लुभानेवाला। मनोहर।
हृदयालु*-वि० दे० 'हृदयालु'।
हृदयालु-वि० [सं०] १ दृढ़ हृदयवाला। २. साहसी। ३. उदार। ४. स-हृदय।
हृदयेश (श्वर)-पुं० [सं०] [स्त्री० हृदयेश्वरी] १. प्रियतम। २. पति।
हृद्गत-वि० [सं०] १ हृदय में का। आन्तरिक। २. मन में बैठा या जमा हुआ।
हृद्रोग-पुं० [सं०] हृदय में होनेवाला रोग। जैसे-कलेजे की धड़कन आदि।
हृद्रोध-पुं० [सं०] हृदय की गति का रुक जाना। (हार्ट फेल्योर)
हृषीकेश-पुं० [सं०] १.विष्णु। २.कृष्ण।
हृष्ट-वि० [सं०][भाव० हृष्टि] प्रसन्न।
हृष्ट-पुष्ट-वि० [सं०] मोटा-ताजा।
हेंगा†-पुं० [सं० अभ्यंग] खेत में मिट्टी के ढेले चूर करने का उपकरण। पाटा।
हें हें-स्त्री० [अनु०] दीनतापूर्वक हँसने या गिड़गिड़ाने का शब्द।
हे-अव्य० [सं०] सम्बोधन-सूचक अव्यय। †अ०व्रज-भाषा के 'हो' (था) का बहु०। थे।
हेकड़-वि० [हिं० हिया+कड़ा] [भाव० हेकड़ी] १ हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। २. प्रबल। प्रचंड। ३. अक्खड़। उद्दत।
हेच-वि० [फा०] तुच्छ। हीन।
हेठ†-क्रि० वि० [सं० अधस्थः] नीचे।
हेठा-वि० [हिं० हेठ=नीचे] १. नीचा। २. घटकर। हलका। ३. तुच्छ।
हेठी-स्त्री० [हिं० हेठा] अ-प्रतिष्ठा।
हेतः*-पुं० १. दे० 'हेतु'। २. दे० 'हित'।
हेति-स्त्री० [सं०] १. आग की लपट। लौ। २. वज्र। ३ सूर्य की किरण। ४. भाला। ५. चोट। आघात।
हेतु-पुं० [सं०] १. वह बात जिसे ध्यान में रखकर अथवा जिसके विचार से कोई काम किया जाय। अभिप्राय। उद्देश्य। २. कारण। वजह। सबब। ३. वह बात जिसके होने से कोई और बात घटित हो। ४. तर्क। दलील। ५. एक अर्थालंकार जिसमें कारण ही कार्य के रूप में दिखलाया जाता है।
हेतुवाद-पुं० [सं०] १. तर्क-शास्त्र। २.

कु-तर्क। थोथी दलील। ३. नास्तिकता।

हेत्वाभास-पुं० [सं०] कोई बात सिद्ध करने के लिए बतलाया जानेवाला ऐसा कारण जो देखने में ठीक जान पड़ने पर भी वास्तव में ठीक न हो। मिथ्या हेतु।

हेमंत-पुं०[सं०] अगहन और पूस की ऋतु।

हेम-पुं० [सं० हेमन्] १. हिम। पाला। २. सोना। स्वर्ण।

हेम-मुद्रा-स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का। अशरफी। मोहर।

हेमाद्रि-पुं० [सं०] सुमेरु पर्वत।

हेमाभ-वि० [सं०] हेम या सोने की-सी आभावाला। सुनहला।

हेय-वि० [सं०] १. छोड़ने योग्य। त्याज्य। २. बुरा। खराब। ३. तुच्छ।

हेरंब-पुं० [सं०] गणेश।

हेर*[+]-स्त्री० हिं० 'हेरना' का भाव०। पुं० दे० 'अहेर'।

हेरना-स० [सं० आखेट] १ ढूँढ़ना। २. देखना। ३ परखना।

हेर-फेर-पुं० [हिं० हेरना+फेरना] १. घुमाव-फिराव। चक्कर। २. दाँव-पेंच। चालबाजी। ३. अदल बदल। उलट-पलट। ४. कुछ बेचना और कुछ खरीदना।

हेराना[+]-अ० [सं० हरण] १. पास से निकल या खो जाना। २ लुप्त हो जाना। न रह जाना। ३. किसी के सामने फीका या मंद पड़ना। ४. सुध-बुध भूलना। स० कोई चीज खाना। गँवाना।

हेरा-फेरी-स्त्री० [हिं० हेर+फेर] १. हेर-फेर। अदल-बदल। २.इधर का उधर होना या करना। ३ बार-बार आना-जाना।

हेरी*-स्त्री० [हिं० हेरना] पुकार। मुहा०-हेरी देना*=पुकारना।

हेलना-अ० [सं० हेलन] १. क्रीड़ा या मनोविनोद करना। २ मन बहलाना। स० [हिं० हेला] हेय या तुच्छ समझना। [+]अ० [हिं० हिलना] १.पैठना। २.तैरना।

हेल मेल-पुं० = मेल-जोल।

हेलया-क्रि० वि० [सं०] १.खेलवाड़ में। २. हँसी या मजाक में।

हेला-स्त्री० [सं०] १. तुच्छ या उपेक्ष्य समझना। तिरस्कार। २. खेलवाड़। क्रीड़ा। ३. प्रेमपूर्ण क्रीड़ा। केलि। ४. साहित्य में नायिका की वह विनोदपूर्ण चेष्टा जिससे वह नायक पर अपनी मिलने की इच्छा प्रकट करती है।

पुं० [हिं० हल्ला] १. पुकार। हाँक। २. धावा। चढ़ाई।

पुं० [हिं० रेलना] धक्का। रेला।

पुं० [हिं० हेल] [स्त्री० हेलिन, हेलिनी] भंगी। मेहतर।

हेली*-अव्य०[संबोधन हे+अली] हे सखी। स्त्री० दे० 'सहेली'।

हेली मेली-वि० [हिं० हेल-मेल] जिससे हेल-मेल हो।

हेवंत*-पुं०=हेमंत।

हैं-अ० 'होना' क्रिया के वर्तमान रूप 'है' का बहुवचन।

अव्य० [अनु०] १. एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है।

है-अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान-कालिक एक-वचन रूप।

* पुं० दे० 'हय'।

हैकड़-वि० दे० 'हेकड़'।

हैकल-स्त्री० [सं० हय+गला] गले में पहनने का एक गहना।

हैजा-पुं० [अ० हैजः] एक प्रसिद्ध घातक और संक्रामक रोग जिसमें कै होती और दस्त आते हैं। विशूचिका।

हैनाक-स० [सं० हनन] मार डालना।

हैवर-पुं० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।

हैम-वि० [सं०] [स्त्री० हैमी] १. सोने का बना हुआ। २.सोने के रंग का। सुनहला। वि० [सं०] १ हिम या बरफ का। २. जाड़े में होनेवाला।

हैरान-वि० [अ०] [भाव० हैरानी] १. चकित। भौचक्का। २. परेशान। तंग।

हैवान-पुं० [अ०] [वि० हैवानी] पशु। जानवर।

हैसियत-स्त्री० [अ०] १ सामर्थ्य। शक्ति। २. आर्थिक योग्यता। बित्त। बिसात। ३ धन-सम्पत्ति।

हों-अ० 'होना' क्रिया का संभाव्य-काल का बहुवचन रूप।

होंठ-पुं० दे० 'ओठ'।

हो-अ० 'होना' क्रिया के अन्य पुरुष, संभाव्य काल और मध्यम पुरुष, बहुवचन के वर्त्तमान काल का रूप।

* ब्रज भाषा में 'है' का सामान्य भूत का रूप। था।

पुं० [सं०] पुकारने का शब्द।

होई-स्त्री० [हिं० अ = नहीं + होना] एक पूजा जो स्त्रियाँ दीवाली के आठ दिन पहले सन्तान की प्राप्ति और रक्षा के लिए करती हैं।

होड़-स्त्री० [सं० हार=विवाद] १ शर्त। बाजी। २ चढ़ा-ऊपरी। प्रतियोगिता। ३ हठ। जिद।

होड़ावादी-स्त्री० दे० 'होड़ा होड़ी'।

होड़ा-होड़ी-स्त्री० [हिं० होड़] १. प्रतियोगिता। चढ़ा-ऊपरी। २ शर्त। बाजी।

होनी-स्त्री० [हिं० होना] १. पास में धन होने का भाव। सम्पन्नता। २. वित्त। सामर्थ्य।

अ० [हिं० हो] पुकारने का शब्द। हो।

होतब (व्य)-पुं०=होनहार।

होता-पुं० [सं० होतृ] [स्त्री० होत्री] हवन करने या यज्ञ में आहुति देनेवाला।

होनहार-वि० [हिं० होना+हारा (प्रत्य०)] १. जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २. आगे चलकर जिसके सुयोग्य होने की आशा हो। अच्छे लक्षणोंवाला। स्त्री० वह बात जो अवश्य होने को हो। होनी। भवितव्यता।

होना-अ० [सं० भवन] १. सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति आदि सूचित करनेवाली मुख्य और सबसे अधिक प्रचलित क्रिया। अस्तित्व में आना या वर्त्तमान रहना।

मुहा०-किसी का होना=१. किसी के अधीन या वश में होना। २. किसी का आत्म या संबंधी होना। रिश्ते में होना। कहीं का हो रहना=कहीं जाकर वहीं रह जाना। हो आना = भेंट करने के लिए जाना और भेंट करके लौट आना।

२. पहला रूप छोड़कर दूसरे या नये रूप में आना।

मुहा०-हो बैठना = नये रूप में स्थित होना। बन जाना।

३. कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से सामने आना। व्यवहार या परिणाम के रूप में सामने आना।

मुहा०-होकर रहना=किसी तरह न टलना। जरूर होना।

४. स्त्री का रजस्वला होना। ५. कार्य के रूप में सिद्ध या सम्पन्न होना। ६. बनाया या तैयार किया जाना। बनना। ७.रोग आदि का अपना रूप प्रगट करना। जैसे-ज्वर होना। ८ जन्म लेना। जैसे-लड़का होना।

होनी-स्त्री० [हिं० होना] १. होने की क्रिया या भाव। २. अवश्य होने या होकर रहनेवाली बात या घटना। भावी। भवितव्यता।

होम-पुं० [सं०] हवन। यज्ञ।

मुहा०-**होम करना**=१. जलाना। २. नष्ट या बरबाद करना। ३. अर्पण या उत्सर्ग करना। जैसे-जी होम करना।

होमना-स० [सं० होम+ना (प्रत्य०)] १ होम या हवन करना। २. नष्ट करना। ३ अर्पण या उत्सर्ग करना।

होरसा-पुं० [सं० घर्ष=घिसना] पत्थर का वह चकला जिसपर चन्दन घिसते हैं।

होरहा-पुं० [सं० होलक] चने का हरा पौधा। बूट।

होरा-स्त्री०[यू०] १.दिन-रात का चौबीसवाँ भाग। घंटा। २. जन्म-कुण्डली। पु० दे० 'होला'।

होरिल-पुं० [देश०] बहुत छोटा बालक। छोटा बच्चा। शिशु।

होरिहार*-पुं० [हिं० होरी] होली खेलनेवाला।

होरी-स्त्री०=होली।

होला-पुं० [हिं० होली] सिक्खों की होली जो होली जलने के दूसरे दिन होती है। पुं० [सं० होलक] १. आग में भुने हुए हरे चने या मटर की फलियाँ। २. चने का हरा पौधा या दाना। होरहा। बूट।

होलिका-स्त्री०=होली।

होली-स्त्री० [सं० होलिका] १. हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्यौहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है और जिसमें आग जलाते और एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि छिड़कते हैं।

मुहा०-**होली खेलना**=एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालना।

२. लकड़ियों आदि का वह ढेर जो उक्त दिन जलाया जाता है। ३.एक प्रकार का गीत जो माघ-फागुन में गाया जाता है।

होश-पुं० [फा०] १. ज्ञान करानेवाली मानसिक शक्ति या वृत्ति। चेतना।

मुहा०-**होश उड़ना या जाता रहना**=कष्ट, भय आदि से सुध-बुध भूल जाना। **होश सँभालना**=समझने-बूझने के वयस में आना। सयाना होना। **होश में आना**=बेहोशी दूर होने पर फिर चेतना प्राप्त करना। **होश की दवा करना**=बुद्धि ठिकाने लाना। **होश ठिकाने होना**=१ भ्रम दूर होना। २ हानि सहकर या दंड भोगकर पछतावा होना।

२ बुद्धि। समझ।

यौ०-**होश-हवास**=चेतना और बुद्धि।

होशियार-वि० [फा०] [भाव० होशियारी] १ समझदार। बुद्धिमान्। २ दक्ष। कुशल। ३ सावधान। सचेत। ४. जो वय के विचार से समझने-बूझने के योग्य हो गया हो। सयाना। ५. चालाक। धूर्त।

होस*-पुं० दे० 'होश'। स्त्री० दे० 'हौस'।

होस्टल-पुं०=छात्रावास।

हौं*-सर्व० [सं० अहम्] मैं। (ब्रज०) अ० हूँ। (ब्रज०)

हौंकना*-अ० [हिं० हुंकार] गरजना। स० १.दे० 'हाँकना'। २.दे० 'धौंकना'।

हौ*-अ० १. दे० 'था'। २. दे० 'हो'।

हौआ-पुं० [अनु० हौ] बच्चों को डराने के लिए कल्पित भयानक जीव। स्त्री० दे० 'हौवा'।

हौका-पुं० [हिं० हाय] १. किसी बात की

बहुत प्रबल इच्छा । २. दीर्घ निश्वास ।

हौज-पुं० [अ०] पानी का छोटा कुंड ।

हौद-पुं० दे० 'हौज' ।

हौदा-पुं० [अ० हौदज] हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला चौखटा जिसपर आदमी बैठते हैं । अम्मारी ।

हौदी-स्त्री० [हिं० हौदा] १. छोटा हौदा । २. छोटा हौज । ३. मकानों के सामने बना हुआ वह छोटा गड्ढा जिसमें मकान का खराब पानी, कीचड़ और गन्दगी आकर जमा होती है ।

हौन*-पुं० [सं० अहम्] अपनापन । निजत्व ।

हौरा[1]-पुं० [अनु०] हल्ला । कोलाहल ।

हौरे*-क्रि० वि० दे० 'हौले' ।

हौल-पुं० [अ०] डर । भय ।

हौल-दिल-पुं० [फा०] १ कलेजा धड़कने का रोग । २ कलेजे की धड़कन ।

हौलदिली-स्त्री० [फा०] सग-यशब (पत्थर) का वह टुकड़ा जो गले में हृदय सम्बन्धी रोग दूर करने के लिए पहना जाता है । नादली ।

हौली-स्त्री० [सं० हाला=मद्य] देशी शराब बनने या बिकने की जगह । कलवरिया ।

हौले-क्रि० वि० [हिं० हरुआ] १ धीरे । आहिस्ते । २. हलके हाथ से ।

हौवा-स्त्री० [अ०] पैगम्बरी मतों के अनुसार संसार की वह पहली स्त्री जो आदम की पत्नी थी और जिससे सारी मनुष्य जाति की उत्पत्ति मानी जाती है । पुं० दे० 'हौआ' ।

हौस-स्त्री० [अ० हवस] १ लालसा । कामना । चाह । २. उत्साह । हौसला ।

हौसला-पुं० [अ० हौसिल.] १. कोई काम करने की उमंग । प्रबल उत्कंठा । मुहा०-मन का हौसला निकालना= १. इच्छा पूरी होना । २. प्रयत्न कर देखना । २. उत्साह ।

ह्याँ-अव्य० = यहाँ ।

ह्यो*-पुं० दे० 'हिया' ।

ह्रद-पुं० [सं०] १. बड़ा ताल । झील । २. सरोवर । तालाब ।

ह्रस्व-वि० [सं०] [भाव० ह्रस्वता] १ छोटा । २. नाटा । ३. थोड़ा । ४. नीचा । पुं० दीर्घ की अपेक्षा कुछ कम खींचकर बोला जानेवाला स्वर । जैसे-अ, इ आदि ।

ह्रास-पुं० [सं०] १. कमी । घटती । २ उतार । घटाव ।

ह्वाँ*-अव्य० = वहाँ ।

परिशिष्ट

छूटे हुए शब्द और अर्थ

अंकित मूल्य-पुं० [सं०] किसी वस्तु का वह मूल्य जो उसपर अंकित रहता है, पर जो कुछ विशेष अवस्थाओं में या विशेष कारणों से घटता-बढ़ता रहता है। (फेस वैल्यू) जैसे-रुपये का अंकित मूल्य सोलह आने होने पर भी विनिमय के काम के लिए चौदह या अठारह आने भी हो सकता है।

अंकुरण-पुं० [सं०] बीज आदि का जमीन में पड़कर अंकुरित होना। (जरमिनेशन)

अंगच्छेद-पुं० [सं०] शरीर का कोई अंग या अवयव काटकर निकाल या अलग कर देना। (ऐम्प्यूटेशन)

अंग-संस्थान-पुं० [सं०] जीव-विज्ञान का वह अंग या शाखा जिसमें प्राणियों, वनस्पतियों आदि के अंगों और आकृतियों का विवेचन होता है। (मारफॉलोजी)

अंगारक-पु० [सं०] एक बहुत ही महत्वपूर्ण अ-धातवीय तत्व जो जीव-जन्तुओं वनस्पतियों और खनिज पदार्थों में पाया जाता है। कोयला, पेट्रोल आदि इसी के बल से जलते हैं। (कार्बन)

अंतःकरण-पुं० १. मनुष्य के अन्दर की वह शक्ति जिससे वह संकल्प-विकल्प, अच्छे-बुरे की पहचान, निश्चय, स्मरण आदि करता है। हमारे यहाँ इसके चार विभाग मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार किये गये हैं। (कॉन्शेन्स)

अंतरण-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपनी सम्पत्ति, स्वत्व, सत्ता आदि दूसरे के हाथ सौंपता है। (ट्रांसफरेन्स डीड)

अंतरायण-पुं० [सं० अन्त] [वि० अन्तरायित] राज्य द्वारा किसी व्यक्ति का अपने घर या किसी स्थान में पहरे में इस प्रकार रखा जाना कि वह कहीं आ-जा न सके। नजरबन्दी। (इन्टर्नमेन्ट)

अंतर्गनक-पुं० [सं०] वे कागज-पत्र आदि जो किसी दूसरे कागज के साथ नत्थी करके कहीं भेजे जायँ। (एन्क्लोजर)

अंतर्देशीय-वि० [सं०] किसी देश के अन्दर या उसके भीतरी मार्गों में होने या उनसे संबंध रखनेवाला। (इनलैंड) जैसे-अंतर्देशीय जल-मार्ग।

अंतर्भुक्त-वि० [सं०] किसी के अंदर आया समाया या मिला हुआ।

अंतर्भौम-वि० [सं०] पृथ्वी के भीतरी मार्ग का। भू-गर्भ का। (सब-टेरेनियन)

अंतर्वर्ग-पुं० [सं०] किसी वर्ग या विभाग के अंतर्गत होनेवाला कोई छोटा वर्ग या विभाग। (सब-ऑर्डर)

अंतर्वाणिज्य-पुं० [सं०] किसी देश के भीतरी मार्गों में होनेवाला वाणिज्य। 'बहिर्वाणिज्य' का उलटा। (इन्टर्नल ट्रेड)

अंशदाता-पुं० [सं०] वह जो औरों के साथ साथ देन सहायता आदि के रूप में अपना भी अंश या हिस्सा देता हो। (कॉन्ट्रिब्यूटर)

अंश-दान-पुं० [सं०] [वि० अंश-दानिक] (औरों के साथ साथ) अपना अंश या

हिस्सा भी देन या सहायता आदि के रूप में, देना। (कॉन्ट्रिब्यूशन)

अग्निज-वि० [सं०] १. अग्नि से उत्पन्न। २. अग्नि या उसके ताप से होने या बननेवाला। (इग्नियस)

अजायब घर-पुं०[अ०अजायब+हि०घर] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार की अद्भुत, विलक्षण और कला-कौशल की वस्तुएँ जन-साधारण के देखने के लिए स्थायी रूप से रहती हैं। (म्यूज़ियम)

अज्ञेयवाद-पुं० [सं०] यह सिद्धान्त कि दृश्य जगत से परे जो कुछ है, वह जाना नहीं जा सकता। (एग्नॉस्टिसिज़्म)

अति-उत्पादन-पुं० [सं०] खेतों की पैदावार या कल-कारखानों में तैयार होनेवाले माल की इतनी अधिकता होना कि उसकी पूरी पूरी खपत न हो सके। (ओवर-प्रोडक्शन)

अति-जीवन-पुं० [सं०] साधारणतः औरों का अन्त हो जाने पर भी, अथवा कुछ विशिष्ट घटनाओं के बाद भी बचा, बना या जीता रहना। (सर्वाइवल)

अतिदिष्ट-वि० [सं०] धर्म, प्रकृति, स्वरूप आदि के विचार से किसी के सदृश। समान। (एनेलोगस)

अतिदेश-पुं० [सं०] [वि० अतिदिष्ट] कई भिन्न या विरोधी बातों या वस्तुओं में कुछ विशेष तत्वों की समानता। सादृश्य। (एनालोजी)

अति प्रजन-पुं० [सं० अति+प्रजा] किसी नगर या देश में रहने और बसनेवालों का इतना अधिक हो जाना कि वहाँ उनका ठीक और पूरी तरह से निर्वाह न हो सके। (ओवर-पॉपुलेशन)

अतिरिक्त-वि० ४ साधारण या नियमित के बाद आवश्यकता के अनुसार उसमें कुछ और जुड़ा, बढ़ा या लगा हुआ। (एक्स्ट्रा) जैसे-अतिरिक्त आय।

अतिरेक-पुं० ३. किसी वस्तु या बात के आवश्यकता या औचित्य से अधिक विकट या गम्भीर होने का भाव। (एग्रेवेशन)

अधः स्वस्तिक-पुं० [सं०] वह कल्पित बिन्दु जो देखनेवाले के पैरों के ठीक नीचे माना जाता है। अधो-बिन्दु। 'स्वस्तिक' का उलटा। (नेडर)

अधस्तन-वि० [सं०] अधीन या नीचे रहने या होनेवाला। अधीनस्थ। (लोअर) जैसे-अधस्तन न्यायालय।

अधि-ग्रहण पुं० [सं० अधि=अधिकार+ग्रहण] अधिकारपूर्वक अथवा अधियाचन के द्वारा किसी की सम्पत्ति या और कोई चीज ले लेना। (एक्विज़िशन)

अधिग्राहक-पुं० [हि० अधिग्रहण] किसी वैध उपाय से प्राप्त करनेवाला। (एक्वायरर)

अधिनायक-पुं० २. विशेष अवस्थाओं या परिस्थितियों के लिए नियत किया हुआ सर्व-प्रधान और पूर्ण अधिकार-प्राप्त शासक या अधिकारी। (डिक्टेटर)

अधिपत्र-पुं० [सं० अधि (अधिकार)+पत्र] वह पत्र जिसमें किसी को कोई काम करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो। (वॉरन्ट) जैसे-किसी को कुछ धन देने या उसे पकड़ने का अधिपत्र।

अधि-प्रचार-पुं० [सं० अधि+प्रचार] [वि० अधिप्रचारित, अधिप्रचारक] कोई सिद्धान्त, मत, विचार आदि लोगों में फैलाने के लिए किया जानेवाला संघटित प्रयत्न या प्रचार। (प्रॉपैगैन्डा)

अधि-प्रचारक-पुं० [सं० अधि+प्रचारक] वह जो किसी मत, सिद्धान्त, विचार

आदि का लोगों में संघटित रूप से प्रचार करता हो। (प्रॉपेगैंडिस्ट)

अधिमुद्रण-पुं० [सं०] किसी ग्रंथ या सामयिक पत्र-पत्रिका के किसी प्रकरण, लेख आदि की प्रतियाँ जो छापे के उन्हीं बैठाये हुए अक्षरों से किसी काम के लिए अलग छाप ली जाती हैं। (ऑफ प्रिन्ट)

अधियाचन-पुं० [सं० अधि=अधिकार+याचन] अधिकारपूर्वक किसी विशेष कार्य के लिए किसी से कुछ माँगने या कोई कार्य करने के लिए कहना। (रिक्विज़िशन) जैसे-किसी सभा के अधिवेशन के लिए सदस्यों का या संपत्ति दिखाने के लिए अधिकारियों का अधियाचन।

अधिवर्ष-पुं० [सं०] १. वह वर्ष जिसमें कोई मल-मास पड़ता हो। २. वह वर्ष जिसमें फरवरी का महीना २८ की जगह २९ दिनों का होता है। (लीप-ईयर)

अधिष्ठान-पुं० १. लाभ के लिए व्यापार या और किसी काम में धन लगाना। (इन्वेस्टमेन्ट)

अधिष्ठित स्वार्थ-पुं० [सं०] वह स्वार्थ जो कहीं धन व्यय करके या व्यापार आदि में लगाकर स्थापित किया गया हो। (वेस्टेड इन्टरेस्ट)

अधिसूचना-स्त्री० [सं०] [वि० अधिसूचित] किसी से यह कहना कि अमुक कार्य इस प्रकार या इस रूप में होना चाहिए। हिदायत। (इन्स्ट्रक्शन)

अध्यादेश-पुं० [सं०] किसी कार्य, व्यवस्था आदि के सम्बन्ध में राज्य द्वारा दिया या निकाला हुआ कोई आधिकारिक आदेश। (ऑर्डिनेन्स)

अध्यासीन-वि० [सं०] किसी समाज या वर्ग में सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हुआ। (प्रिसाइडिंग) जैसे-न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में या सभा-समाज में सभापति के रूप में अध्यासीन होना।

अनार्जव-पुं० [सं०] १. आर्जव या ऋजुता का अभाव। २ बेइमानी। (डिसऑनेस्टी)

अनावासिक-वि० [सं०] जो स्थायी रूप से निवासी या बसा हुआ न हो, बल्कि कुछ दिनों के लिए कहीं से आकर रह या ठहर गया हो। 'आवासिक' का उलटा। (नॉन-रेजिडेन्ट)

अनीहा-स्त्री० [सं०] ईहा का न होना। वासना, अनुराग आदि का अभाव।

अनुकल्प-पुं० [सं०] चुनने, छाँटने या ग्रहण करने के लिए सामने की वस्तुओं या बातों में से कोई ऐसी वस्तु या बात जो चुनने या गृहीत होने को हो। (ऑल्टरनेटिव)

अनुकूलन-पुं० [सं०] १. अपने आप को किसी के अनुकूल बनाना। २. किसी स्थिति आदि को अपने अनुकूल बनाना। (एडैप्टेशन)

अनुगम-पुं० [सं०] तर्क-शास्त्र में कोई बात सिद्ध करने के लिए भिन्न भिन्न तथ्यों या तत्त्वों के आधार पर स्थिर किया जाने-वाला परिणाम। निष्कर्ष। (इन्डक्शन)

अनुच्छेद-पुं० [सं०] १.किसी साहित्यिक पुस्तक, विवेचन, लेख आदि के किसी प्रकरण के अन्तर्गत वह विशिष्ट विभाग जिसमे किसी एक विषय या उसके किसी अंग का एक साथ विवेचन होता है। (पैराग्राफ) २. नियमावली, विधान, संविदा आदि का कोई एक विशिष्ट अंग जिसमें किसी एक विषय, प्रतिबंध आदि का एक साथ विवेचन होता है। (आर्टिकिल)

अनुधर्मक-वि० [सं०] धर्म्म, प्रकृति, स्वरूप आदि के विचार से किसी के समान। (एनैलोगस)

अनुपूरक-वि० [सं०] १. किसी के साथ लग या मिलकर उसकी पूर्त्ति करनेवाला। (कॉम्प्लिमेन्टरी) २. छूट, त्रुटि आदि की पूर्त्ति के लिए बाद में लगाया या बढ़ाया हुआ। (सप्लिमेन्टरी)

अनुपूरण-पुं० [सं०] किसी प्रकार की त्रुटि या कमी पूरी करने के लिए बाद में उसमे कुछ और बढाना, मिलाना जोड़ना या लगाना। (सप्लिमेन्ट)

अनुबंध-पुं०४.वस्तुओं, जीवों, अंगों आदि में आवश्यक या अनिवार्य रूप से होनेवाला पारस्परिक सम्बन्ध। (को-रिलेशन)

अनुभोग-पु० दे० 'भोग'।

अनुमति-स्त्री०[सं०]१.आज्ञा। हुक्म। २ किसी काम के लिए बड़ों से मिलनेवाली स्वकृति। अनुज्ञा। इजाजत। (परमिशन)

अनुलाप-पु० [सं०] कही हुई बात फिर से कहना या दोहराना। (रिपीटीशन)

अनुवर्त्ती-वि० [सं०] १. अनुयायी। २ किसी के उपरान्त उसके परिणाम-स्वरूप होनेवाला। (कॉन्सिक्वेन्ट)

अनुषक्ति-स्त्री० [सं०] अपने राजा या राज्य के प्रति जनता या नागरिक के कर्त्तव्य और निष्ठा। (एलीजिएन्स)

अनुसूची-स्त्री० [सं०] कोष्ठक, सूची आदि के रूप में वह नामावली जो किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के अन्त में परिशिष्ट के रूप में हो। (शेड्यूल)

अनुस्मरण-पुं० [सं०] भूली हुई बात फिर से याद होना या करना। (रिकलेक्शन)

अपजात-वि० [सं०] जिसमें अपने जनक, उत्पादक, वर्ग या मूल के पूरे पूरे गुण आदि न आये हों। अपेक्षाकृत कम या हीन गुणोंवाला। (डी-जेनेरेटेड)

अपराध विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि लोग अपराध क्यों करते हैं और उनकी आपराधिक प्रवृत्ति का किन उपायों से अन्त किया जा सकता है। (क्रिमिनॉलोजी)

अपराधशील-वि० [सं०] जो स्वभावतः अपराध करता या अपराधों की ओर प्रवृत्त होता हो। जैसे-अपराधशील जातियाँ। (क्रिमिनल ट्राइब्स)

अपसरक-पुं० [सं०] वह जो सेवा, विशेषतः सैनिक सेवा से अथवा अपना कोई कर्त्तव्य या उत्तरदायित्व (पत्नी या सन्तान का भरण-पोषण आदि छोड़-कर भाग गया हो। (डिजर्टर)

अपसारी-वि० [सं०] एक-दूसरे से भिन्न या विरुद्ध दिशा में जाने, चलने, होने या रहनेवाला। (डाइवर्जेन्ट)

अबाध व्यापार-पुं० दे० 'मुक्त व्यापार'।

अबूझ*-वि० [हिं० अ+बूझना] १. जो बूझा, समझा या जाना न जा सके। अज्ञेय। २ दे० 'अबोध'।

अबेश(स)*-वि० [फा० बेश] अधिक। [हिं० अ+फा० बेश] १ थोड़ा। कम। २. धीमा।

अभयपत्र-पुं०[सं०]वह पत्र जिसे दिखा-कर कोई व्यक्ति किसी संकट की स्थिति से निरापद पार हो सके। (सेफ कॉन्डक्ट)

अभिकथन-पुं० [सं०] किसी व्यक्ति या पक्ष की ओर से कही जानेवाली ऐसी बात अथवा किया जानेवाला ऐसा आरोप जो अभी प्रमाणित न हुआ हो अथवा जिसके प्रमाणित होने में कुछ सन्देह हो। (एलिगेशन)

अभिक्रांति-स्त्री० [सं०] [वि० अभिक्रान्त] किसी वस्तु का अपने स्थान से हट या हटा दिया जाना। (डिस्प्लेसमेन्ट)

अभिजात-तंत्र-पुं० [सं०] वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबन्ध थोड़े से उच्च कुल के और सम्पन्न लोगों के हाथ में रहता है। (ऑरिस्टोक्रेसी, ऑलीगार्की)

अभिजित-वि०[सं०] [भाव०अभिजिति] जिसे जीत लिया गया हो। विजित।

अभिदिष्ट-वि० [हिं० अभिदेश] १. प्रसंग-वश जिसकी चर्चा, उल्लेख या उद्धरण किया गया हो या जिसकी ओर संकेत या निर्देश किया गया हो। २ जिसे कहीं भेजकर उसके विषय मे किसी का मत या आदेश माँगा गया हो। (रेफर्ड)

अभिदेश-पुं० [सं० अभि+देश (आदेश)] [वि० अभिदिष्ट] १. पहले की किसी घटना, उल्लेख आदि की ऐसी चर्चा जो साक्षी, संकेत, प्रमाण आदि के रूप में की गई हो। २ किसी विषय में किसी का मत या आदेश लेने के लिए वह विषय या उसके कागज-पत्र उसके पास भेजना। (रेफरेन्स उक्त दोनों अर्थों के लिए)

अभिभव-पुं० [सं०] १. पराजय। हार। २. तिरस्कार। अनादर। ३. विलक्षण घटना। ४ किसी को बलपूर्वक दबाकर कहीं रोक रखना या ले जाना। (कॉन्स्ट्रेन्ट)

अभिरक्षक-पुं० [सं०] वह जो किसी संपत्ति या व्यक्ति को अभिरक्षा के लिए लेकर अपने अधिकार या देख-रेख में रखता हो। विशेष दे० 'अभिरक्षा')

अभिरक्षा-स्त्री० [सं०] किसी संपत्ति को रक्षापूर्वक रखने के लिए अथवा किसी व्यक्ति को भागने आदि से रोकने के लिए अपने अधिकार, देख रेख या रक्षा में लेकर रखने की क्रिया या भाव। (कस्टडी)

अभिलेख अधिकरण-पुं० [सं०] किसी राज्य के प्रधान अभिलेख-विभाग का वह अधिकरण या न्यायालय जो अभिलेखों आदि में लिपि-सम्बन्धी अथवा इसी प्रकार की दूसरी भूलें सुधारने का एक मात्र अधिकारी होता है। (कोर्ट ऑफ रेकर्ड्स)

अभिवचन-पुं० [सं०] वह बात जो न्यायालय में विधिक प्रतिनिधि या अभिवक्ता (वकील) अपने नियोजक (मुवक्किल) की ओर से कहता है। (प्लीडिंग)

अभिसमय-पुं० [सं०] [वि० अभिसामयिक] १ राष्ट्रों या राज्यों के पारस्परिक समान हित या व्यवहार से सम्बन्ध रखनेवाले विषयों पर उनमें आपस में होनेवाला वह समझौता जिसका पालन उन सबके लिए समान रूप से विधि या विधान के रूप में आवश्यक होता है। जैसे-डाक-विभाग या युद्ध-संचालन सम्बन्धी अभिसमय। २. परस्पर युद्ध करनेवाले राष्ट्रों के सैनिक अधिकारियों का युद्ध स्थगित करने अथवा इसी प्रकार की दूसरी बातों के सम्बन्ध में आपस में होनेवाला वह समझौता जिसका पालन सभी पक्षों के लिए आवश्यक होता है। ३. किसी प्रथा या परिपाटी के मूल में रहनेवाला सब लोगों का वह समझौता या सहमति जिसे मानक के रूप में मानना सबके लिए आवश्यक होता है। जैसे-कला या काव्य-सम्बन्धी अभिसमय। ४. उक्त प्रकार की बातें

निश्चित करने के लिए आधिकारिक रूप से होनेवाला कोई सम्मेलन या सभा। (कन्वेन्शन, उक्त सभी अर्थों के लिए)

अभिसामयिक-वि० [सं०] १. अभिसमय या समझौते से सम्बन्ध रखनेवाला। २ जो किसी चली आई हुई प्रथा या परिपाटी के अनुसार हो। (कन्वेन्शनल)

अभिस्रावण-पुं० [सं०] [वि० अभिस्रावित] भभके आदि की सहायता से शराब, अरक आदि टपकाना। चुआना। (डिस्टिलेशन)

अभिस्रावणी-स्त्री० [सं०] शराब आदि चुआने की भट्ठी या कारखाना। (डिस्टिलरी)

अभ्युपगम-पुं० [सं०] तर्क में पहले कोई सिद्ध या असिद्ध बात मानकर तब उसकी सत्यता की जाँच करना और उससे कोई निष्कर्ष निकालना। (डिडक्शन)

अरति-स्त्री० [सं०] रति, अनुराग, प्रवृत्ति, वासना आदि का अभाव। उदासीनता। (एपैथी)

अर्जक-वि० [सं०] अर्जन करने या कमानेवाला।

अर्थ-प्रकृति-स्त्री० [सं०] नाटक में वह चमत्कार पूर्ण बात जो कथा वस्तु को कार्य की ओर बढ़ाने में सहायक होती है। यह पाँच प्रकार की कही गई है-बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य।

अर्थाधिकरण-पुं० दे० 'अर्थ न्यायालय'।

अल-गरजी-वि० [अ० गरज] १ स्वार्थी। मतलबी। २. किसी की विशेष चिन्ता या परवाह न करनेवाला। ला-परवाह।

अलैंगिक-वि० [सं०] (जीव) जिसमें स्त्री या पुरुष में से किसी का लिंग या चिह्न न होता हो। (एसेक्सुअल)

अल्पार्थक-पुं० [सं०] वह शब्द जो किसी वस्तु के छोटे रूप का वाचक हो। जैसे-'फोड़ा' का अल्पार्थक 'फोड़िया' और 'घर' का अल्पार्थक 'घरौंदा' है।

अवम तिथि-स्त्री० [सं०] चान्द्र मास की वह तिथि जिसका क्षय हो गया हो।

अवमूल्यन-पुं० [सं० अव+मूल्य] किसी वस्तु का निश्चित मूल्य, विशेषतः विनिमय के लिए सिक्कों आदि का मूल्य या दर घटाकर कम करना। (डि-वैलुएशन)

अवसरवाद-पुं० [सं०] [वि० अवसरवादी] प्रत्येक उपयुक्त अवसर से पूरा पूरा लाभ उठाने का सिद्धान्त। (अपरच्यूनिज्म)

अश्रव्य-वि० [सं०] जो किसी को सुनाने योग्य न हो।

पुं० दे० 'स्वगत कथन'।

अस्वामिकता-स्त्री० [सं०] किसी वस्तु या सम्पत्ति की वह अवस्था जब कि उसके मिलने पर उसका कोई स्वामी न दिखाई देता हो। (बोना वैकेन्सिया) जैसे-जमीन खोदने पर मिलनेवाला धन। (ऐसी अवस्था में मिलनेवाली वस्तु पर प्रायः राज्य का अधिकार हो जाता है।)

आंतर-वि० [सं०] अन्दर का। भीतरी।

आंतिक-वि० [सं० अंत] अंतिम या समाप्ति के स्थान से संबंध रखनेवाला। (टरमिनल) जैसे-आंतिक कर।

आंतिक कर-पुं० [हिं० आंतिक] वह कर जो किसी यात्रा की समाप्ति के स्थान पर पहुँचने के विचार से लिया जाता है। (टरमिनल टैक्स)

आँदू-पुं० [देश०] हाथी के पैर में बाँधने का सिक्कड़।

आकृत-वि० [सं०] जिसे कोई आकार या रूप प्राप्त हो। आकार में आया हुआ।

आगामिक-वि० [सं०] १ आगामी से

सम्बन्ध रखनेवाला। २. आनेवाला।

आगृहीत-वि० [सं०] आग्रहण किया हुआ। जमा किये हुए धन में से लिया या निकाला हुआ (धन)। (ड्रॉन)

आगृहीती-पुं० [सं० आगृहीत] वह जो आग्रहण करे। कहीं से कुछ रुपये उठाने, निकालने या लेनेवाला। (ड्रॉई)

आग्रहण-पुं० [सं०] [वि० आग्राहक, आगृहीत] जमा किये हुए रुपयों में से अपने नाम के देयादेश (चेक आदि) के आधार पर कहीं से कुछ रुपये निकालना या लेना। (ड्रॉ)

आग्राहक-वि० [सं०] आग्रहण करने या जमा किये हुए रुपयों में से कुछ रुपये निकालने या लेनेवाला। (ड्रॉअर)

आचरण-पंजी-स्त्री० [सं०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमें किसी कर्मचारी के आचरण, कर्तव्य-पालन आदि का समय समय पर उल्लेख किया जाता है। (कैरेक्टर रोल)

आचार शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें मनुष्य के चरित्र, आचरण, नीति, सामाजिक व्यवहारों आदि का विवेचन होता है। (ईथिक्स)

आचारिक-वि० [सं०] आचार-संबंधी। आचार का ; जैसे-आचारिक नियम।

आज्ञप्ति-स्त्री० [सं०] १. सर्वोच्च अधिकारी अथवा आधिकारिक परिषद् आदि की वह आज्ञा जो किसी कार्य, व्यवस्था आदि के संबंध में सर्वोपरि होती और बहुत कुछ विधान के रूप में भेजी जाती है। २ वह निर्णय-सूचक लेख जो किसी अर्थ-व्यवहार (दीवानी मुकदमे) में किसी पक्ष के विजयी होने पर उसके पक्ष में न्यायालय के निर्णय के रूप में लिखा जाता है। (डिक्री)

आत्म-कथा-स्त्री० [सं०] १. अपने सम्बन्ध की आप कही हुई बातें। २. दे० 'आत्म-चरित'।

आत्म-गत-वि० [सं०] अपने में आया या मिला हुआ।

पुं० दे० 'स्वगत-कथन'।

आत्म-चरित-पुं० [सं०] किसी का वह जीवन-चरित्र जो उसने आप लिखा हो। (ऑटो-बायोग्रैफी)

आत्मसात्-वि० [सं०] जो पूरी तरह से अपने अन्तर्गत कर लिया गया हो। अपने आप में लीन किया हुआ।

आदर्श-विज्ञान-पुं० [सं०] विज्ञान की दो शाखाओं में से एक, जिसमें वे विद्वान् आते हैं जो कल्पना आदि के आधार पर आदर्शों का विवेचन करते हैं। (नॉरमेटिव साइन्स) जैसे-नीति-विज्ञान। (दूसरी शाखा तात्विक विज्ञान है)

आदाता-पुं० दे० 'आग्राहक'।

आनुषंगिक-वि० दे० 'उपसर्ग' ४.।

आपजात्य-पुं० [सं०] [वि० अपजात] गुण आदि के विचार से अपने जनक, उत्पादक, वर्ग या मूल से कम और हीन होना। (डी जेनरेशन)

आपात-पुं० [सं०] [वि०आपातिक] वह घटना या बात जो अचानक ऐसे रूप में सामने आ जाय जिसकी पहले से कोई आशा, सम्भावना या कल्पना न हो। (एमर्जेन्सी)

आपातिक-वि० [सं०] अचानक ऐसे रूप में सामने आनेवाला जिसकी कोई आशा या सम्भावना न हो। (एमर्जेन्ट)

आभा-स्त्री० १. रंगों आदि की दिखाई देनेवाली साधारण से कुछ हलकी गहरी

या कुछ दूसरे प्रकार की छाया। (शेड)

आरोप-पुं० [सं०] २. किसी के विषय में यह कहना कि इसने ऐसा किया है। (अलीगेशन)

मुहा०-**आरोप करना**=साधारण रूप से किसी का यह कहना कि अमुक व्यक्ति ने यह दोष या अपराध किया है। **आरोप लगाना**=आरंभिक जाँच या गवाही के बाद न्यायालय का यह स्थिर करना कि अभियुक्त इस अपराध का कर्त्ता या दोषी हो सकता है। दफा लगाना।

आवह-वि० [सं०] १. लानेवाला। २ उत्पन्न या आविर्भाव करनेवाला। जैसे-भयावह।

पुं० १. आकाश के सात स्कन्धों में से पहला स्कंध की वायु जिसमें बिजली, ओले आदि की उत्पत्ति मानी गई है। २. दे० 'वातावरण'।

आवास-पुं० ३. स्थायी रूप से बसकर रहने की जगह। (रेज़िडेन्स)

आवासिक-वि० [सं०] स्थायी रूप से किसी स्थान पर बसनेवाला। (रेज़िडेन्ट)

आवेग-पुं० ४. सहसा मन में उत्पन्न होनेवाला वह विकार जो मनुष्य को बिना कुछ सोचे-समझे कुछ कर डालने में प्रवृत्त करता है। (इम्पल्स)

आसन्न-वि० [सं०] २. अनुमान से लगभग ठीक या वास्तविक के बहुत-कुछ पास तक पहुँचता हुआ। (एप्रॉक्सिमेट)

ईप्सा-स्त्री० [सं०] [वि० ईप्सित, ईप्सु] १. इच्छा। अभिलाषा। २. कोई काम करने के लिए मन में होनेवाला विचार या उद्देश्य। इरादा। (इन्टेन्शन)

ईश्वरवाद-पुं० [सं०] यह मानना कि ईश्वर है और वही सारी सृष्टि का रचयिता और कर्त्ता धर्त्ता है। (थीइज़्म)

ईहा-स्त्री० [सं०] १ प्रयत्न। चेष्टा। २ लोभ। लालच। ३. इच्छा। वासना।

उत्तरण-पुं० [सं०] १. पार उतरने की क्रिया या भाव। २ यानों आदि पर से पृथ्वी पर उतरना। (लैंडिंग)

उत्तरोत्तरता-स्त्री० [सं०] 'उत्तरोत्तर' या एक के बाद एक होने की क्रिया या भाव। (सक्सेशन)

उत्तारण-पुं० [सं०] १. पार उतारना। २. कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर पहुँचाना। (ट्रान्सपोर्टेशन) ३. विपत्ति या संकट में पड़े हुए का उद्धार करना। (रेसक्यूइंग)

उत्थानक-वि० [सं०] उत्थान करने, ऊपर उठाने या ऊँचा चढ़ानेवाला।

पुं० १. किसी व्यक्ति का एक-दम से ऊँचे स्थान या पद पर पहुँचना। २. बिजली द्वारा चढ़ने-उतरनेवाला वह चौकोर सन्दूक जिसकी सहायता से लोग ऊँचे घरों या खानों में चढ़ते-उतरते हैं। (लिफ्ट, दोनों अर्थों के लिए)

उत्पत्ति-स्त्री० [सं०] ३. उपज। पैदावार। ४. किसी वस्तु में उपयोगिता या उसके स्वरूप में कोई नवीनता आने की क्रिया या भाव। (प्रोडक्शन)

उत्पादन-पुं० [सं०] लोगों के व्यवहार या उपभोग के लिए सामान या माल तैयार करना। (प्रोडक्शन)

उदिक-वि० [सं०] १ जल-संबंधी। २. उस जल से संबंध रखनेवाला जो नल के द्वारा कहीं पहुँचता हो। (हाइड्रॉलिक)

उद्घाटन-पुं० [सं०] १. आगे पड़ा हुआ परदा उठाना, खोलना या उघाड़ना। २. छिपी हुई बात प्रकट या प्रकाशित

करना। रहस्य खोलना। ३. किसी बड़े आदमी का किसी बड़े सम्मेलन आदि का कार्य आरम्भ करना। (इनॉगुरेशन)

उद्घोषणा-स्त्री० [सं०] सार्वजनिक रूप से की जानेवाली सूचना। (प्रोक्लेमेशन)

उद्धारण-पुं० [सं०] १. उद्धार करने की क्रिया या भाव। २ वाक्य, पद, शब्द आदि किसी उद्देश्य से कहीं से निकाल या अलग कर देना। (डिलीशन)

उद्भव-पुं० [सं०] २. किसी पूर्वज के वंश में उत्पन्न होने अथवा किसी मूल से निकलने का तथ्य या भाव। (डिसेन्ट)

उद्योग-धन्धे-पुं० बहु० [सं० उद्योग+हि० धन्धा] व्यापार आदि अथवा लोक-व्यवहार के लिए कच्चे माल से पक्का माल या सामान बनाना। (इन्डस्ट्री)

उद्योग पति-पुं०[सं०] वह जो कच्चे माल से पक्का माल तैयार करनेवाले किसी कार-खाने का मालिक हो। (इन्डस्ट्रीअलिस्ट)

उद्वेग-पुं० [सं०] [वि० उद्विग्न] १. किसी विकट या चिन्ताजनक घटना के कारण लोगों को होनेवाला वह भय जिसके फल-स्वरूप वे अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगते हैं। (पैनिक)

उन्नतांश-पुं० [सं०] किसी आधार, स्तर या रेखा से ऊपर की ओर का विस्तार। ऊँचाई। (एल्टिट्यूड)

उन्मुक्त-वि० [सं०] १. जो बँधा न हो। खुला हुआ। जैसे—उन्मुक्त केश। २. जो किसी प्रकार के बन्धन से छोड़ दिया गया हो। मुक्त किया हुआ। (डिस्चार्ज्ड)

उपच्छाया-स्त्री० [सं०] किसी वस्तु की मूल छाया के अतिरिक्त इधर-उधर पड़नेवाली उसकी कुछ आभा या वैसी हलकी झलक, जैसी ग्रहण के समय चन्द्रमा या पृथ्वी की मुख्य छाया के अतिरिक्त दिखाई देती है। (पेनम्ब्रा)

उप-धारा-स्त्री० [सं०] किसी विधान या लेख की किसी धारा के अन्तर्गत उसका कोई विभाग या अंग। (सब-सेक्शन)

उप-निर्वाचन-पुं० [सं०] किसी स्थान, पद, सदस्यता आदि के लिए होनेवाला वह निर्वाचन जो किसी सत्र की अवधि पूरी होने से पहले किसी विशेष कारण से उस स्थान या पद के रिक्त हो जाने पर उसकी पूर्ति के लिए होता है। (बाई-इलेक्शन)

उपपाद्य-वि० [सं०] (बात, तथ्य या सिद्धान्त) जो अभी तक सिद्ध न हो, बल्कि जिसे तर्क या प्रमाण से सिद्ध करना पड़े। (थियोरम)

उपपुर पुं०[सं०] किसी नगर या केन्द्र के आस-पास के स्थान या क्षेत्र। (सबर्ब)

उपभोक्ता-पुं० [सं०] वह जो वस्तुएँ खरीदकर उनका उपभोग करता या उन्हें अपने काम में लाता हो। (कन्ज़्यूमर)

उपभोग-पुं० २ कोई चीज लेकर अपने काम में लाना। (कन्ज़म्पशन)

उपसर्ग-पुं० ४ वह पदार्थ जो कोई दूसरा पदार्थ बनाते समय बीच में यों ही या आपसे आप बन जाता या निकल आता हो। जैसे-गुड़ बनाते समय शीरा। (बाई प्रोडक्ट)

उपस्कर-पुं०[सं०]१.सजावट की सामग्री। उपस्कार। २ कोई चीज बनाने या कोई काम करने का छोटा यंत्र। (एपरेटस)

उपादान-पुं० ३ किसी की कोई चीज लेकर अपने काम में लाना।

उपाधि-स्त्री० ५ किसी वस्तु, वर्ग आदि का सूचक नाम। (एपेलेशन)

उभय-लिंग-पुं० [सं०] व्याकरण में वह संज्ञा जिसका प्रयोग स्त्री-लिंग और पुंलिंग दोनों में होता हो। २. वह जीव जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों के लिंग या चिह्न समान रूप से पाये जाते हों।

उभय-संकट-पुं० [सं०] ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर (कोई काम करने पर भी और न करने पर भी) संकट दिखाई दे। (डिलेम्मा)

ऊनता-स्त्री० [सं०] १ कमी। त्रुटि। २. घाटा। (डेफिसिट)

एकक-निगम-पुं० [सं०] वह निगम (संस्था) जो एक ही व्यक्ति से सम्बन्ध रखता हो। (सोल कारपोरेशन) जैसे-राजा एकक निगम है।

एक-रूप-वि० [सं०] [भाव० एक-रूपता] रूप, बनावट, प्रकार आदि के विचार से औरों से मिलता-जुलता। (यूनिफॉर्म)

एक-रूपता-स्त्री० [सं०] रूप, बनावट, प्रकार आदि के विचार से किसी या औरों से समान होने का भाव। (यूनिफॉर्मिटी)

एक-वर्षी-वि० [सं० एक+वर्ष] (पेड़ या पौधा) जो एक ही वर्ष तक जीवित रहकर नष्ट हो जाता है। (एनुअल)

एकांतर(रिक)-वि० [सं०] बीच में एक अथवा एक-एक को छोड़कर उनके बाद होने या एक-एक को छोड़कर उनके पर-वर्त्ती से सम्बन्ध रखनेवाला। (आल्टरनेटिव)

एकात्मता-स्त्री० [सं०] १. रूप, प्रकृति, गुण आदि के विचार से किसी के इतना समान होना कि दोनों एक जान पड़ें। (आइडेन्टिटी)

ऐक●-पु० [?] गहराई की थाह।

कच्चा-चिट्ठा-पुं० [हिं० कच्चा+चिट्ठा] आय-व्यय आदि का वह लेखा जो अभी कार्यालय से पूरी तरह जाँचा न गया हो।

कदाचार-पुं० [सं०] [वि० कदाचारी] अनुचित या बुरा व्यवहार अथवा आचरण। (मिस बिहेवियर)

कर तल-पुं०[सं०][वि०कर-तली]हथेली। यौ०-करतल-ध्वनि=दाहिने हाथ की हथेली बाईं हथेली पर मारकर शब्द करना। तालियाँ बजाना। (प्रायः प्रसन्नता और कभी कभी परिहास का सूचक)

कर्ष-पुं० [सं०] १. खिंचाव। तनाव। २. वैद्यक में १६ माशे की तौल। ३. एक प्रकार का पुराना सिक्का। ४.खेत की जोताई। ५. वह भार या दबाव जिससे हानि या अनिष्ट की आशंका हो। (स्ट्रेन)

कलौंछ-स्त्री०[हिं० काला+औंछ(प्रत्य०)] १. कालापन। २. धूएँ की कालिख।

काल्पनार्थ-पुं० [सं०] १. केवल तर्क के उद्देश्य से कोई बात कुछ देर के लिए इस प्रकार मानना कि यदि ऐसा हुआ, तो क्या होगा)। (हाइपॉथेसिस)

कवच-पुं० [सं०] [वि० कवची] १. वह ऊपरी मोटा छिलका या आवरण जिसके अन्दर या नीचे कोई फल या जीव रहता हो। जैसे-बदाम या कछुए का कवच। (सेल) २. लोहे की कड़ियों का वह आवरण जो लड़ाई के समय योद्धा पहनते थे। सन्नाह। सँजोया। ३. नगाड़ा। डंका। ४. तंत्र के अनुसार वे मंत्र जो अपने शरीर के अंगों की रक्षा के लिए पढ़े जाते हैं। ५. वे मंत्र-यंत्र आदि जो लिखकर और जंतर में भरकर विपत्ति आदि से रक्षा के लिए पहने जाते हैं। जंतर। तावीज।

कवचधारी-पुं० [सं०] वह जिसके

ऊपर कवच हो या जो कवच पहने हो।

कांजिक-वि० [सं०] सिरके, काँजी आदि से सम्बन्ध रखनेवाला या इनके स्वाद का। खट्टा। (एसेटिक)
पुं० दे० 'काँजी'।

कामिता-स्त्री० [सं०] १. 'कामी' होने का भाव। २. वह शक्ति, वृत्ति या गुण जो जीवों में काम-वासना उत्पन्न करता है। (सैक्सुऐलिटी)

कारणिक-वि० [सं०] [भाव० कारणिकता] १.कारण-सम्बन्धी। २. कारण के रूप में होनेवाला। (कॉजल)

कीट-भोजी-पु० [सं०] कीड़े मकोड़े खाकर पेट भरनेवाला जीव या जन्तु। (इन्सेक्टिवोरस)

कीटाणु-पुं० [सं० कीट+अणु] केवल सूक्ष्मदर्शक यंत्र से दिखाई देनेवाले वे बहुत छोटे छोटे कीड़े जो हवा या खाने-पीने की चीजों में मिले रहते और अनेक प्रकार के रोगों के मूल कारण माने जाते हैं। (जर्म्स)

कोषाणु-पुं० [सं०] बहुत ही सूक्ष्म कणों या छोटे छोटे कोषों के रूप में वह मूल तत्व जिससे जीव-जन्तुओं के शरीर और खनिज पदार्थ आदि बने होते हैं। (सेल)

कोणिक-वि० [सं०] जिसमें कोण या नोक हो। नुकीला। (ऐंगुलर)

कौषिक-वि०[सं०] १.रेशम का। रेशमी। २. रेशम की तरह चिकना और कोमल।

क्रय-शक्ति-स्त्री० [सं०] किसी समाज या राष्ट्र का वह आर्थिक बल या सामर्थ्य जिससे वह जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुएँ खरीदता है। (परचेज़िंग पावर)

क्षय-कर-वि० [सं०] पदार्थों आदि को क्षीण करने या धीरे धीरे खा जानेवाला। (कोरोजिव)

क्षयिष्णु-वि० [सं०] जिसका जल्दी अथवा अवश्य क्षय होने को हो। क्षयशील।

क्षारोद-पुं० [सं०] वे वनस्पतियाँ, जीव-जन्तुओं के अंग या दूसरे पदार्थ जिनमें क्षार का अंश हो। (अलकलायड)

क्षेत्र-मिति-स्त्री० [सं०] गणित की वह शाखा या अंग जिसमें रेखाओं की लम्बाई, धरातल का क्षेत्र-फल और ठोस पदार्थों का घनफल निकालने के नियमों का विवेचन होता है। (मेन्सुरेशन)

क्षेत्र-संन्यास-पुं० [सं०] संन्यास का एक प्रकार, जिसमें इस बात की प्रतिज्ञा होती है कि हम अमुक क्षेत्र या भू-भाग के अन्दर ही रहेंगे, इसके बाहर नहीं जायँगे।

खनिज-विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें खानों का पता लगाने, उनमें से चीजें निकालने और खनिज पदार्थों के प्रकार, स्वरूप आदि का विवेचन होता है। (मिनरॉलोजी)

खरी-खोटी-स्त्री० [हि० खरा+खोटा] कुछ बिगड़कर कही जानेवाली कटु बातें।

खाद्यान्न-पुं० [सं०] वे अन्न जो खाने के काम में आते हैं। (फूड ग्रेन्स) जैसे-गेहूँ, चना, चावल, मूंग आदि।

ख्यात-स्त्री० [सं० ख्याति] वह कविता जिसमें किसी की वीरता, कीर्ति आदि का वर्णन हो।

गजर-पुं० [सं० गर्जन, हि० गरज] १. समय-सूचक घंटा बजाने में चार, आठ या बारह बजा चुकने पर फिर बहुत जल्दी जल्दी चार, आठ या बारह बजाना।

गजर-दम-क्रि०वि०[हि०गजर+फा०दम] प्रभात के समय। बहुत सबेरे। तड़के।

गड्ड-पुं० २. लागत, मूल्य आदि के विचार से एक साथ रहनेवाली छोटी-बड़ी या कई तरह की चीजों का समूह ।

गड्डी-स्त्री० [हिं० गड्ड] एक ही आकार-प्रकार की एक पर एक रक्खी हुई चीजों का समूह । जैसे-ताश या कागज की गड्डी।

गण-पुं० ७. वस्तुओं, जीवों आदि का वह बड़ा विभाग जिसके अंतर्गत और भी उप-विभाग या भेद हों । (जेनस) ८. छन्द-शास्त्र में लघु-गुरु के विचार से तीन-तीन मात्राओं के आठ समूह या वर्ग। यथा-यगण मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण ।

गण-तंत्र-पुं० [सं०] [वि० गण-तंत्री] वह शासन-प्रणाली जिसमें जनता ही अपने विधान बनानेवाले प्रतिनिधि और प्रधान शासक चुनती है । (रिपब्लिक)

गण-तंत्री-वि० [सं०] १. गण-तंत्र-सम्बन्धी । २. जो गण-तंत्र के सिद्धान्तों के अनुसार हो । ३. गण-तंत्र का पक्ष-पाती । (रिपब्लिकन)

गवेषणा-स्त्री० २ किसी विषय का अच्छी तरह अनुशीलन करके उसके सम्बन्ध में नई बातों का पता लगाना । (रिसर्च)

गालन-पुं० [सं०] [वि० गालित] १. गलाने की क्रिया या भाव । २. किसी तरल पदार्थ को किसी वस्तु में से इस प्रकार इस पार से दूसरे पार निकालना कि उसमें की मैल आदि बीच में रुककर अलग हो जाय । (फिल्टरेशन)

गीति-काव्य-पुं० [सं०] वह काव्य जो मुख्यतः गाने के लिए बना हो ।

गृह-रक्षक-पुं० [सं०] १. एक प्रकार का अर्द्ध-सैनिक संघटन जो स्वतंत्र भारत में स्थानिक शान्ति और सुरक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है। २.इस संघटन का कोई सिपाही या अधिकारी। (होम गार्ड)

गोला-बारूद-पुं० [हिं० गोला + फा० बारूद] युद्ध में काम आनेवाले अस्त्र-शस्त्र आदि । (एम्युनिशन्स)

ग्राह्य-वि० ४ जो नियमानुसार विचार आदि के लिए लिया जा सकता हो । ५ जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो । (एडमिसिबुल)

घोटा-पुं० [हिं० घोटना] १. घोटने की क्रिया का भाव । २ वह डंडा या कोई उपकरण जिससे कोई चीज घोटी जाय ।

चक्र-पुं० ९. बन्दूक से गोली चलाने की क्रिया । (संख्या के विचार से) (राउन्ड) जैसे-पुलिस ने चार चक्र गोलियाँ चलाईं । १०. योग के अनुसार शरीर के अन्दर के वे विशिष्ट स्थान जो आधुनिक विज्ञान के अनुसार कुछ विशिष्ट जीवन-रक्षिणी गिल्टियों के आस-पास पड़ते हैं । इनके नाम हैं--सहस्रार, विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, मूलाधार और स्वाधिष्ठान । ११. उतना समय, जितने में कुछ विशिष्ट घटनाएँ किसी क्रम से होती हैं और फिर उतने ही समय में जिनकी उसी प्रकार पुनरावृत्ति होती है । (साइकिल)

चरम पंथ-पुं० [सं०] [वि० चरम-पंथी] राजनीति आदि में यह सिद्धान्त कि सब प्रकार के दोष तुरन्त और चाहे जैसे हों दूर किये जाने चाहिएँ । (एक्स्ट्रीमिज्म, रैडिकलिज्म) (उग्रता और आतुरता का सूचक)

चरम-पंथी-वि० [सं०] वह जो राज-नीति आदि में सब प्रकार के दोष तुरन्त दूर करने का पक्षपाती हो । (रैडिकल, इक्स्ट्रीमिस्ट)

चेंदुआ*-पुं० [?] चिड़िया का बच्चा।
चेताना-स० [हिं० चेतना] १. सावधान या होशियार करना। २. स्मरण या याद कराना। ३. उपदेश करना। ४. (आग) जलाना या सुलगाना।
चेतावनी-स्त्री० [हिं० चेताना] १. चेताने या सावधान करने के लिए कही जानेवाली बात। २. उपदेश। शिक्षा।
जंतु-विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें जन्तुओं या प्राणियों की उत्पत्ति, विकास, स्वरूप, विभागों आदि का विवेचन होता है। (जूलॉजी)
जन-जाति-स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट स्थानों में पाये जानेवाले ऐसे लोगों का समूह या वर्ग जो साधारणतः एक ही पूर्वज के वंशज होते हैं और जो सभ्यता, संस्कृति आदि के विचार से आस-पास के निवासियों से बिलकुल भिन्न और कुछ निम्न स्तर पर होते हैं। (ट्राइब)
जल-दस्यु-पुं० [सं०] समुद्र में रहकर जहाजों और समुद्री यात्रियों को लूटनेवाला डाकू। समुद्री डाकू। (पाइरेट)
जल-मार्ग-पुं० [सं०] नदियों, नहरों आदि के रूप में बना हुआ मार्ग। (वाटरवेज)
जलीय-वि० [सं०] १. जल सम्बन्धी। २. जल या पानी में होनेवाला। ३. जिसमें पानी या उसका कुछ अंश हो।
जागरण-पुं० १. किसी वर्ग या जाति की वह अवस्था जिसमें वह गिरी हुई दशा से निकलकर उन्नत होने का प्रयत्न करती है। (अवेकनिंग)
जीव-धातु-स्त्री० [सं०] कुछ विशिष्ट रासायनिक तत्वों से बना हुआ वह पारदर्शक स्वच्छ तत्व या धातु जिसमें जीवनी शक्ति होती है और जो जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि के मौलिक रूप का मूल आधार है। (प्रोटोप्लाज्म)
जीव-विज्ञान-पुं० [सं०] वह विज्ञान जिसमें जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की उत्पत्ति, स्वरूप, विकास, वर्गों आदि का विवेचन होता है। (बायॉलोजी)
जीवावशेष-पुं० [सं०] बहुत प्राचीन काल के जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि के वे अवशिष्ट रूप जो जमीन खोदने पर उसके भीतरी स्तरों में मिलते हैं। (फॉसिल)
जैव-वि० [सं०] १. जीव या जीवन सम्बन्धी। २. जीवों या उनके शारीरिक अंगों से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. जिसमें जीवनी शक्ति और शारीरिक अंग या इन्द्रियाँ हों। (ऑर्गेनिक)
जोत-स्त्री० ३. किसी की वह भूमि जिसपर जोतने-बोनेवाले को कुछ विशिष्ट अधिकार मिल गये हों। (होल्डिंग)
टंकण-पुं० १. धातु के टुकड़ों पर ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने की क्रिया या भाव। (कॉयनेज)
डॉक्टर-पुं० १. एक प्रकार की उपाधि जो बहुत बड़े विद्वानों को कोई उच्च परीक्षा पास करने पर अथवा यों ही उनके सम्मानार्थ दी जाती है।
डासन*-पुं० = बिछौना।
डिंब-पुं० १. जीव-जन्तुओं में स्त्री-जाति का वह जीवाणु जो पुरुष-जाति के वीर्य के संयोग से अथवा यों ही आपसे आप बन और बढ़कर नये जीव या प्राणी का रूप धारण करता है। (ओवम)
डिंबाशय-पुं० [सं०] स्त्री जाति के जीवों में वह भीतरी अंग जिसमें डिंब रहता या उत्पन्न होता है।
तः-प्रत्य० [सं०] एक संस्कृत प्रत्यय जो

शब्दों के अंत में लगकर ये अर्थ बढ़ाता है-(क) रूप या प्रकार से, जैसे-साधारणतः। (ख) के अनुसार; जैसे-नियमतः।

तदर्थीय-वि० [सं०] (शब्द या पद) जो किसी दूसरी भाषा के शब्द या पद का अर्थ सूचित करने के लिए उसके अनुकरण पर बना हो। जैसे-'रजत-पट' अँग्रेज़ी के 'सिलवर स्क्रीन' का तदर्थीय है।

तलीय-वि० [सं०] १. तल, पेंदे या नीचे के भाग से सम्बन्ध रखनेवाला। २. ऊपरी अंश निकाल, हटा या बाँट देने पर बाद में या नीचे बच रहनेवाला। (रेसिडुअरी) जैसे-तलीय अधिकार=वह अधिकार जो प्रान्तीय शासनों को बाँट देने के बाद सुरक्षा, कार्य-संचालन के सुभीते आदि के विचार से बाँटनेवाला अथवा केन्द्रीय शासन अपने हाथ में बचा रखता है। (रेसिडुअरी पावर)

तात्त्विक विज्ञान-पुं० [सं०] विज्ञान की दो शाखाओं में से एक जिसमें कार्यों और कारणों के पारस्परिक सम्बन्ध बतलानेवाले और कार्यों के वास्तविक स्वरूप अथवा तत्त्वों का विवेचन करनेवाले विज्ञान आते हैं। (पॉज़िटिव साइंस) जैसे-ज्योतिष, रसायन या भौतिक विज्ञान। (दूसरी शाखा 'आदर्श विज्ञान' कहलाती है)

तानना-स्त्री० [सं०] वह गुण या शक्ति जिससे वस्तुएँ या उनके अंग आपस में दृढ़तापूर्वक सटे, जुड़े या मिले रहते हैं। (टनैसिटी)

तुषार रेखा-स्त्री० [सं०] पर्वतों पर की वह कल्पित रेखा, जिसके ऊपरी भाग पर बरफ बराबर जमा रहता है और नीचे के भाग का बरफ गरमी के दिनों में गल जाता है। (स्नो-लाइन)

दंडाधिकारी-पुं० [सं०] वह राजकीय अधिकारी जिसे आपराधिक अभियोगों का विचार करने और अपराधियों को दंड देने का अधिकार होता है। (मजिस्ट्रेट)

दत्त-विधान-पुं० [सं०] किसी के लड़के को दत्तक के रूप में अपना लड़का बनाना। गोद लेना। (एडॉप्शन)

दर्शन-प्रतिभू-पुं० [सं०] वह प्रतिभू या जमानतदार जो इस बात की जिम्मेदारी लेता है कि अभियुक्त अमुक समय न्यायालय में उपस्थित हो जायगा। (श्योरिटी फॉर एपीएरेन्स)

दह्य-वि० [सं०] जो जल सकता हो। जलने योग्य। (कबस्चिबुल)

दिवा-स्वप्न-पुं० [सं०] दिन के समय, जागते रहने पर भी, स्वप्न देखने के समान, तरह तरह की असम्भव कल्पनाएँ करना। हवाई किले बनाना। मन के लड्डू खाना। (डे ड्रीम)

दिव्य-दृष्टि-स्त्री० [सं०] ३. बहुत दूर के या छिपे हुए पदार्थों या बातों को देखने और समझने की शक्ति जो कुछ विशिष्ट अवस्थाओं अथवा कुछ विशिष्ट व्यक्तियों में होनेवाली मानी जाती है। (क्लेयरवाएन्स)

दीर्घा-स्त्री० [सं०] १. आने-जाने के लिए कोई लम्बा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग। बरामदा। २. किसी भवन के अन्दर कुछ ऊँचाई पर दर्शकों आदि के बैठने के लिए बना हुआ छायादार स्थान। (गैलरी)

दुर्मर-वि० [सं०] १.जो सहज में न मरे। जिसका मरना कठिन हो। २. जो उन्नति, सुधार अथवा उदार विचारों का घोर विरोधी हो। (डाई-हार्ड)

द्यूत–पुं० [सं०] दाँव लगाकर खेला जानेवाला हार-जीत का खेल। जूआ।

द्राक्ष-शर्करा–स्त्री० [सं०] दाख या अंगूर के रस से निकाली हुई चीनी। (ग्लूकोज)

द्वितीयक–वि० [सं०] जिसका स्थान प्रमुख या सबसे पहलेवाले के बाद हो। दूसरे स्थान का। (सेकेन्डरी)

द्वि-पक्षी–वि० [सं०] १. दो पक्षों या पार्श्वों से सम्बन्ध रखनेवाला। २. दो पक्षों या दलों में होनेवाला। (बाई-लेटरल)

द्वि-पार्श्विक–वि० [सं०] १. दो या दोनों पार्श्वों से सम्बन्ध रखनेवाला। दो-रुखा। २. दे० 'द्वि-पक्षी'।

द्वीप-पुंज–पुं० [सं०] समुद्र में होनेवाला बहुत-से छोटे-छोटे और पास-पास के द्वीपों या टापुओं का समूह। (आर्कीपेलेगो)

द्वैत-वाद–पुं० २. दो स्वतंत्र और भिन्न सिद्धान्त एक-साथ माननेवाली विचार-शैली। (ड्युअलिज्म)

धातु-मल–पुं० [सं०] खनिज पदार्थों या धातुओं को गलाने पर उनमें से निकलनेवाली मैल या कीचड़। (स्लेग)

ध्रुवीय–वि० [सं०] १. ध्रुव सम्बन्धी। २ ध्रुव प्रदेश का।

नगर-पालिका–स्त्री० [सं० नगर+पालिका] वैधानिक आधार पर संघटित किसी नगर के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह संस्था जो उस नगर के स्वास्थ्य, शुचिता, सड़कों, भवन-निर्माण, जल-कल आदि लोकोपकारी कार्यों की व्यवस्था करती है। (म्युनिसिपैलिटी)

नतोदर–वि० [सं०] जिसका ऊपरी भाग या तल कुछ नीचे या अन्दर की ओर दबा या झुका हो। (कॉन्केव)

नन्वर्थक–वि० [सं०] १. जिसमें किसी वस्तु या बात का अस्तित्व न माना गया हो। २. जिसमें कोई प्रस्ताव या सुझाव मान्य न किया गया हो। (नेगेटिव)

नम्य–वि० [सं०] १. जो झुक सके। २. जो झुकाया जा सके हो।

नल-कूप–पुं० [हि० नल+सं० कूप] खेतों, मैदानों आदि में जमीन के अन्दर से पानी निकालने का वह नल जिसका दूसरा सिरा जमीन के अन्दर उस गहराई तक पहुँचा रहता है, जहाँ जल होता है। (ट्यूब वेल)

नाक्षत्र–वि० [सं०] नक्षत्र-सम्बन्धी। नक्षत्र या नक्षत्रों का।

नाभि–स्त्री० ३ पृथ्वी के भीतरी मध्य भाग का कल्पित अंश या केन्द्र। ४ बीच में रहनेवाला वह भाग या वस्तु जिसके चारों ओर दूसरे भाग, अंग या वस्तुएँ आकर इकट्ठी होती या मिलती हैं। समष्टि या घन पदार्थ का केन्द्र। (न्यूक्लियस)

नाम धातु–स्त्री० [सं०] व्याकरण में वह नाम या संज्ञा जो कुछ क्रियाओं में धातु का काम देती है। जैसे–'रँगना' में 'रंग' नाम धातु है।

नामिक–वि० [सं०] जो केवल नाम के लिए या संकेत रूप में हो, और जिसका वास्तविक स्थिति या तथ्य से कोई सम्बन्ध न हो। नाम भर का। (नॉमिनल)

नावाधिकरण–पुं० [सं०] किसी राज्य की सामुद्रिक शक्ति और नाविक विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग अथवा उनका प्रधान कार्यालय। (ऐडमिरैल्टी)

नाव्य–वि० [सं०] (नदी या कोई जलाशय) जिसमें नावें, जहाज आदि चल सकते हों। (नैविगेबुल)

निगम–पुं० [सं०] वह संघटित स्थायी संस्था जिसे विधि के द्वारा शरीर अथवा

शरीरधारी का-सा रूप दिया गया हो। (कॉरपोरेशन)

निगमन-पुं० [सं०] १. न्याय में वह कथन जो कोई प्रतिज्ञा सिद्ध कर चुकने पर उस प्रतिज्ञा के फिर से उल्लेख के रूप में होता है। सिद्ध की हुई बात के सम्बन्ध में अन्तिम कथन। २. किसी संस्था को निगम का रूप देने की क्रिया। विशेष दे० 'निगम'। (इन्कॉरपोरेशन)

नियमावली-स्त्री० [सं०] किसी सभा, समिति या कार्य आदि के संचालन से सम्बन्ध रखनेवाले नियमों का संग्रह। २ वह पुस्तिका जिसमें ऐसे नियमों का संग्रह हो।

निरुक्त-पुं० [सं०] व्याकरण का वह अंग या शाखा जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति या मूल और उनके रूपों के विकास आदि का विवेचन होता है। (एटिमॉलोजी)

निरुदन-पुं० [सं०] [वि० निरुदित] रासायनिक तत्वों, वनस्पतियों आदि में से जल या उसका अंश निकालना या सुखाना। (डी-हाईड्रेशन)

निरोध-पुं० [सं०] किसी अभियुक्त, सदिग्ध, विकट या उपद्रवी आदमी को इसलिए रोक रखना कि वह भाग न सके अथवा अनिष्ट न कर सके। (डिटेन्शन)

निर्बंध-पुं० किसी व्यक्ति पर अथवा किसी विषय में शर्तों आदि के रूप में लगाई जानेवाली रोक। रुकावट। (रेस्ट्रिक्शन)

निर्मायक-वि० [सं०] निर्माण करने या बनानेवाला।

निवृत्ति-स्त्री० ४. अपने कार्य या पद से अवकाश पाकर अथवा अवधि पूरी हो जाने पर सदा के लिए अपने कार्य या पद से हट जाना। (रिटायरमेन्ट)

निषेक-पुं० [सं०] १. छिड़कना। २. डुबाना। ३. सबके आदि से अरक उतारना। ४. गर्भ धारण कराना। ५. किसी के अन्दर कोई चीज या शक्ति भरना। ६. इस प्रकार भरी हुई वस्तु या शक्ति। (इम्प्रेगनेशन)

निष्ठा-स्त्री० ४. राज्य या शासन के प्रति जनता या प्रजा का श्रद्धापूर्ण भाव। (एलीजिएन्स)

निस्तरण-पुं० [सं०] सामने आये हुए कार्य या व्यवहार (मुकदमे आदि) को नियमित रूप से देखकर पूरा करना अथवा उसका निराकरण करना। (डिस्पोज़ल)

निस्सारण-पुं० [सं०] १. कहीं से कुछ बाहर निकालना। २. वनस्पतियों की गाँठों या शरीर की गिल्टियों का अपने अन्दर से कोई तत्व या तरल अंश बाहर निकलना जो अंगों को विशुद्ध और ठीक दशा में रखने या ठीक तरह से चलाने के लिए आवश्यक होता है। ३. इस प्रकार निकलनेवाला कोई पदार्थ। (सीक्रेशन)

न्यायाधिकरण-पुं० [सं०] विवाद-ग्रस्त विषयों पर विचार करके उनका न्याय या निर्णय करनेवाला अधिकारी, अधिकारी-वर्ग अथवा न्यायालय। (ट्रिब्यूनल)

पण्य चिह्न-पुं० [सं०] वह चिह्न जो व्यापारी या कारखानेदार अपनी बिक्री के या अपने यहाँ बने हुए माल पर औरों से उसका पार्थक्य और अपनी विशिष्टता सूचित करने के लिए लगाते हैं। (मर्चेन्डाइज मार्क)

पथ-प्रदर्शन-पुं० [सं०] कोई काम करने का रास्ता या ढंग बतलाना। (गाइडेन्स)

पर-जीवी-पुं० [सं० परजीविन्] १. वह जो दूसरों के सहारे रहकर जीवन बिताता हो। २. कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्प-

तियाँ या कीड़े-मकोड़े जो दूसरे वृक्षों और जीव-जन्तुओं के शरीर पर रहकर और उनका रस या रक्त चूसकर पलते हैं। जैसे-आकाश बेल, पिस्सू आदि। (पैराज़ाइट)

परधानी*-स्त्री० [सं० परिधान] (पहनने की) धोती।

स्त्री० [सं० प्रदान] दान-दक्षिणा आदि।

पर-राष्ट्रिय-वि० [सं०] राजनीतिक क्षेत्र में अपने राष्ट्र से भिन्न, दूसरे या बाहरी राष्ट्र से सम्बन्ध रखनेवाला। (फ़ॉरेन)

परार्थवाद-पुं० [सं०] [वि० परार्थवादी] यह सिद्धान्त कि मनुष्य को सदा दूसरों की भलाई के काम करते रहना चाहिए। (एलट्रूइज़्म)

परिकलक-पुं० १. वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के लगे हुए हिसाबों के बहुत-से कोष्ठक होते हैं। (कैलक्युलेटर)

परिजीवन-पुं० [सं० परि+जीवन] [वि० परिजीवित, परिजीवी] अपने वर्ग, परिवार या साथ के दूसरे व्यक्तियों, वस्तुओं आदि के न रह जाने पर भी प्राप्त होनेवाला दीर्घ-कालिक जीवन। साधारणतः नियत काल से अधिक चलनेवाला जीवन। (सरवाइवल)

परिजीवी-पुं० [सं० परि + जीविन्] वह जो अपने वर्ग, परिवार या साथ के लोगों या पदार्थों की अपेक्षा अधिक समय तक जीता या बचा रहे। (सरवाइवर)

परिप्रश्न-पुं० [सं०] कोई बात जानने के लिए किया जानेवाला प्रश्न। पूछ-ताछ। (एन्क्वायरी)

परियान-पुं० [सं०] [वि० परियात] अपना देश या स्थान छोड़कर स्थायी रूप से बसने के लिए किसी दूसरे देश या स्थान में आना। (एमिग्रेशन)

परिरूप-पुं०[सं०]१. किसी होनेवाले कार्य के स्वरूप आदि के सम्बन्ध में पहले से की जानेवाली कल्पना। २. किसी कलात्मक कृति, रचना, सजावट आदि के सम्बन्ध की वह मूल कल्पना या रूप-रेखा जिसके अनुसार उसका बाकी सारा काम पूरा होता है। नमूना। ३ किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक और सुन्दर ढंग या प्रकार। तर्ज़। (डिज़ाइन, उक्त सभी अर्थों के लिए)

परिरूपक-पुं० [सं०] वह जो किसी वस्तु का परिरूप बनाता हो। (डिज़ाइनर)

परिवहन-पुं० [सं०] १. कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह उठाकर ले जाना। वहन। (कैरिज) २. समुद्री या हवाई जहाज आदि चलाना। (नेविगेशन)

परिशयन-पुं० [सं०] कुछ पशुओं और जीव-जन्तुओं की वह निष्क्रिय अवस्था जिसमें वे जाड़े के दिनों में बिना कुछ खाये-पीये चुपचाप पड़े रहते हैं। (हाइबरनेशन)

परिसंपद्-स्त्री० [सं०] १. भू-सम्पत्ति और धन दौलत। (एस्टेट) २. वह पूँजी जो सम्पत्ति आदि के रूप में हो अथवा वह धन जो कार-बार में लगा हो और जल्दी डूबनेवाला न हो। (एसेट्स)

परिसीमन-पुं० [सं०] किसी प्रदेश या स्थान की सीमा निश्चित या स्थिर करना। हद बाँधना। (डिलिमिटेशन)

परोक्ष-कर-पुं० [सं०] वह कर जो किसी को, विशेषतः उपभोक्ता को स्वयं प्रत्यक्ष रूप से नहीं बल्कि अ-प्रत्यक्ष रूप से दूसरों के द्वारा देना पड़े। (इनडाइरेक्ट टैक्स) जैसे-प्रातिभागिक शुल्क और आयात-निर्यात कर।

पाक-शास्त्र-पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमें

तरह तरह के खाद्य पदार्थ या व्यंजन बनाने की प्रक्रियाओं का विवेचन होता है।

पारिणामिक-वि० [सं०] किसी के उपरान्त और उसके परिणाम-स्वरूप होने वाला। (कान्सीक्वेन्शल)

पीठ-पुं० ७. विधायिका सभाओं आदि में किसी विशिष्ट दल या पक्ष के लिए बैठने का सुरक्षित स्थान। जैसे-राज पीठ, विरोध पीठ। (देखो) ८ न्यायालय में न्यायाधीश के बैठने का स्थान। ९. न्यायाधीश अथवा न्यायाधीशों का वर्ग। (बेंच)

पुंजन-पुं० [सं० पुंज] [वि० पुंजित] धीरे धीरे जमा होने, बढ़ने आदि के कारण मिलकर बड़े मान में होना। (एक्यूम्यूलेशन)

पुंजित-वि० [सं०] जो धीरे धीरे जमा होने, बढ़ने आदि के कारण मिलकर बड़े मान का हो गया हो। (एक्यूम्यूलेटेड)

पुनर्मुद्रण-पुं०[सं०] १. एक बार छपे हुए ग्रंथ, लेख, पत्रिका आदि फिर से छापने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार छापे हुए ग्रंथ, लेख, पत्रिका आदि। (रिप्रिन्ट)

पुरुषानुक्रमिक-वि० [सं०] जो किसी वंश में कई पीढ़ियों से बराबर चला आया हो और जिसके आगे की पीढ़ियों में भी चलते रहने की सम्भावना हो। आनुवंशिक। (हेरिडेटरी)

पूर्व-तिथीय-वि० [सं०] जिसपर पहले से आनेवाली कोई तिथि या तारीख लिखी हो। (ऐन्टी-डेटेड)

पोषिका-स्त्री० [सं०] गले के अन्दर की वह नली जिससे भोजन पेट तक पहुँचता है। (एलिमेन्टरी केनाल)

प्रकोष्ठ-पुं० [सं०] ४. संसदों, विधायिका सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा जिसमें उसके सदस्य लोग बैठकर बात-चीत करते और बाहरी लोगों से मिलते हैं। (लॉबी)

प्रच्छाया-स्त्री०[सं०] ग्रहण के समय सूर्य पर पड़नेवाली चन्द्रमा की, अथवा चन्द्रमा पर पड़नेवाली पृथ्वी की छाया। (अम्ब्रा)

प्रतिक स्वत्त्व-पुं० [सं०प्रति=नकल+क+स्वत्व] किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की किसी कृति की प्रतियाँ छापने या प्रस्तुत करने का वह स्वत्व जो उसके कर्त्ता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता। (कॉपी-राइट)

प्रतिग्रह-पुं० ४. रक्षापूर्वक रखने के लिए मिली हुई किसी की सम्पत्ति। ५. अभियुक्त या सन्दिग्ध व्यक्ति का अधिकारियों के हाथ में जाँच या विचार के लिए रखा जाना। (कस्टडी)

प्रतिपालक अधिकरण-पुं० [सं०] वह राजकीय विभाग जो सम्पन्न विधवाओं, अल्प-वयस्कों अथवा अयोग्य व्यक्तियों की सम्पत्ति की रक्षा और व्यवस्था करता है। (कोर्ट ऑफ वार्ड्‌स)

प्रतिरक्षा-स्त्री० [सं०] किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा या बचाव के लिए, अथवा अभियोग आदि का उत्तर देने के लिए किये जानेवाले कार्य या व्यवस्था। बचाव। (डिफेन्स)

प्रतिशुल्क-पुं०[सं०] केवल बदला चुकाने के लिए किसी ऐसे देश से आनेवाले माल पर लगाया जानेवाला कर या शुल्क जिसने पहले (ऐसा कर लगानेवाले) देश से आनेवाले माल पर अपने यहाँ कोई कर या शुल्क लगा रखा हो। (कॉउन्टरवेलिंग ड्यूटी)

प्रतिश्रुति-स्त्री० २.इस बात की जिम्मेदारी कि कोई चीज या बात ऐसी ही है, इसके विपरीत नहीं है ; अथवा आगे भी ऐसी

ही रहेगी। (गारन्टी)

प्रतिषिद्ध-वि० [सं०] जिसका प्रतिषेध किया गया हो। (प्रॉहिबिटेड)

प्रवर-समिति-स्त्री० [सं०] किसी विषय पर विचार करके सम्मति देने के लिए उस विषय के चुने हुए विशेषज्ञों की बनाई हुई समिति। (सेलेक्ट कमिटी)

प्रवेश-पुं० ४. किसी क्षेत्र, वर्ग आदि में उसके विशिष्ट नियम पूरे करते हुए पहुँचना या लिया जाना। (एडमिशन)

प्रशांति-स्त्री० २. पूर्ण शांति, विशेषतः किसी देश या समाज में होनेवाली पूर्ण शांति। किसी प्रकार के आन्दोलन, उपद्रव आदि का अभाव। (ट्रैंक्विलिटी)

प्रशासक-पुं० [सं०] वह जो राज्य का प्रशासन या प्रबन्ध करता हो। (ऐड मिनिस्ट्रेटर)

प्रशिक्षण महाविद्यालय-पुं० [सं०] वह महाविद्यालय जिसमें ऊँची कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षण-विज्ञान के सिद्धान्त और शिक्षा देने की प्रणाली सिखलाई जाती है। (ट्रेनिंग कालेज)

प्रशिक्षण विद्यालय-पुं० [सं०] वह विद्यालय जिसमें देशी भाषाओं के शिक्षकों को शिक्षण-विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। (नॉर्मल स्कूल)

प्राभ्यास-पुं० [सं० प्र+अभ्यास] अभिनय या किसी बहुत बड़े सार्वजनिक कार्य के ठीक समय पर या सार्वजनिक रूप में होने से पहले, उससे सम्बन्ध रखनेवाला वह अभ्यास जो उसके पात्रों अथवा उसमें सम्मिलित होनेवाले लोगों को करना पड़ता है। (रिहर्सल)

प्लावन-पुं० २. बहुत दिनों के अन्तर पर सारे संसार में आनेवाली पानी की वह बहुत बड़ी बाढ़ जिसकी गिनती प्रलय में होती है। (डेल्यूज) हिन्दुओं के अनुसार वैवस्वत मनु के समय में और ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार हजरत नूह के समय में ऐसी बाढ़ आई थी।

प्लावनिक-वि० [सं०] प्लावन या बाढ़ से सम्बन्ध रखनेवाला। (डिल्यूवियल) विशेष दे० 'प्लावन' २.

बचती-वि० [हि० बचत] १. बचत सम्बन्धी। बचत का। २. जिसमें व्यय आदि काट लेने अथवा अपनी आवश्यकताएँ पूरी कर चुकने के बाद भी कुछ बचा रहे। (सर्प्लस) जैसे-बचती आय-व्ययिक या व्ययकल्प, (सर्प्लस बजट) बचती प्रान्त। (सर्प्लस प्रॉविन्स)

स्त्री० वह जो व्यय, उपभोग आदि हो चुकने के बाद भी बचा रहे। (सर्प्लस)

बलिक नीति-स्त्री० [सं० बल+नीति] विरोधियों, प्रतियोगियों आदि के मुकाबले में अपना बल, प्रभुत्व, अधिकार आदि बढ़ाने अथवा स्थापित करने की नीति। (पावर पॉलिटिक्स)

बेकारी-स्त्री० [फा०] [वि० बेकार] वह अवस्था जिसमें जीविका-निर्वाह के लिए मनुष्य के हाथ में कोई काम-धंधा नहीं होता। (अनएम्प्लॉयमेन्ट)

भूमिसात्-वि० [सं० भूमि+सात् (प्रत्य०)] जो गिरकर जमीन के साथ मिल गया हो। जैसे-मकानों का भूमिसात् होना।

भोग-पुं० ६ वह स्थिति जिसमें कोई चीज अपने पास रखकर उसका सुख भोगा या उपयोग किया जाता है। अधिकार। (पजेशन)

भौमिक अभिलेख-पुं० [सं०] भूमि की नाप-जोख, स्वामित्व आदि से सम्बन्ध

रखनेवाले अभिलेख। (लैंड रेकर्ड्स)

मनोवैकल्य-पुं०[सं०]वह अवस्था जिसमें ठीक और पूरी तरह से मानसिक विकास न होने के कारण मनुष्य की बुद्धि परिपक्व नहीं होती। (मेन्टल डेफिशिएन्सी)

महा प्रशासक-पुं० [सं०] वह बड़ा प्रशासक जो पद, मर्यादा आदि में (साधारण प्रशासकों से) बहुत उच्च होता है। (ऐडमिनिस्ट्रेटर जनरल)

मीनकी-स्त्री० [सं० मीन] १.मछलियों का पालन-पोषण या संवर्द्धन करने की क्रिया या विद्या। (फिशरी) २. यह काम करनेवाला विभाग।

माघन-पुं० [सं०] न किये हुए के समान करने की क्रिया या भाव। रद्द या व्यर्थ करना। व्यर्थन। (नलिफिकेशन)

यावनीकरण-पुं० [सं० यवन+करण] १. किसी वस्तु, कार्य आदि को यावनी रूप देना। २. मुसलमानों का अन्य धर्मावलम्बी लोगों को अपने धर्म का अनुयायी या मुसलमान बनाना।

राज्यपाल-पुं० [सं० राज्य + पाल] किसी प्रदेश या प्रान्त का सर्व-प्रमुख अधिकारी और शासक। (गवर्नर)

रात्रि पाठशाला-स्त्री० [सं०] वह पाठशाला जिसमें दिन के समय काम करनेवाले लोगों को रात के समय लिखना-पढ़ना सिखाते हैं। (नाइट स्कूल)

विधु-पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. ब्रह्मा।

विनिधान-पुं० [सं० वि + निधान] [वि० विनिधित] १. निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से यह बतला देना कि अमुक कार्य इस रूप में हो अथवा अमुक अमुक वस्तुओं का प्रयोग इस प्रकार हो। २ इस प्रकार के निर्देश या सूचना से युक्त लेख। (प्रेसक्रिप्शन)

विनिधित-वि० [हिं० विनिधान] जिसका निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से विनिधान हुआ हो। (प्रेसक्राइब्ड)

विभावन-पत्र-पुं० [सं०] वह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक हो और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। (आइडेन्टिटी कार्ड)

शिल्पिक-वि० [सं० शिल्प] शिल्प सम्बन्धी। शिल्प कला या उसकी शिक्षा से संबंध रखनेवाला। (टेकनिकल) जैसे- शिल्पिक शिक्षण, शिल्पिक विद्यालय।

श्वेत-पत्र-पुं० [सं०] सफेद कागज पर छपी कोई सरकारी विज्ञप्ति, विशेषतः ऐसी विज्ञप्ति, जिसमें किसी विषय का उज्वल पक्ष प्रतिपादित हुआ हो। (ह्वाइट पेपर)

संक्षिप्तक-पुं०[सं०संक्षिप्त] किसी शब्द या नाम के वे आरंभिक अक्षर जो उस शब्द या नाम के अभिसामयिक सूचक बन जाते है। (एब्रिविएशन) जैसे-'पंडित' का संक्षिप्तक'पं०'या 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का संक्षिप्तक 'हिं० सा० स०' है।

सहगतक-पुं० [सं० सह+गत] वे पत्र, कागज आदि जो किसी मुख्य पत्र के साथ नत्थी करके उसी लिफाफे में कहीं भेजे जाते हैं। (एन्क्लोजर)

स्थगनक-पुं० [सं०] वह प्रस्ताव जो विधायिको आदि में यह कहकर उपस्थित किया जाता है कि और काम रोककर पहले इस पर विचार होना चाहिए। (एडजर्नमेन्ट मोशन)

स्वामिक-वि०[सं०] [भाव० स्वामिकता] १. स्वामी सम्बन्धी। मालिक का। २. जिसका कोई स्वामी या मालिक हो।

अँगरेजी-हिन्दी शब्दावली

Abactor-गोरू-चोर, पशु-चोर।
Abandon-१. अपसर्जन। (वि॰अपसर्जित) २. परित्याग। (वि॰परित्यक्त)
Abatement-अपचय।
Abbreviation-संकेत-चिह्न, संक्षिप्तक।
Abbreviature-संक्षिप्त आलेख।
Abbutal-चतुःसीमा।
Abdication-१. पद-त्याग। २. राज्य-त्याग।
Abduction-अपनयन। (वि॰अपनीत)
Abetment-प्रवर्त्तन।
Abetter-प्रवृत्तक, प्रवर्त्तक।
Abeyance-लंबन।
Abide-१.अनुसरण।२.पालन।३.सहन।
Abinitio-आरम्भतः।
Ab-normal-१.अ-प्रकृत।२.असामान्य।
Abode-आवास।
Abolition-१. उत्पादन। (वि॰ उत्पादित) २. उन्मूलन। (वि॰ उन्मूलित) ३ विकर्षण। (वि॰ विकर्षित, विकृष्ट)
Aboriginal-मौल।
Abortive-निष्फल।
Above par-बढ़ती से।
Abridgement-संक्षेपण। (वि॰संक्षिप्त)
Abscond-पलायन करना, भाग जाना।
Absconder-पलायक, भगोड़ा।
Absence-१. अनुपस्थिति। २. अभाव।
Absent-अनुपस्थित।
Absolute-१. केवल। २. निरुपाधि, निरुपाधिक। ३.अविकल्प, निर्विकल्प। ४. निस्सीम, असीम। ५. अबाध, अनियंत्रित। ६. परम। ७. पूर्ण।
Absolute Monarchy-अनियंत्रित या एक-छत्र राज्य।
Absolute Order-परम आज्ञा।
Absolute Power-परम सत्ता।
Abstinence-उपरति।
Abstract-संज्ञा-सारांश।
वि॰ अमूर्त्त।
Abuse-दुरुपयोग।
Accent-स्वर-पात।
Acceptance-प्रतिपत्ति।(वि॰प्रतिपन्न)
Access-पहुँच, गति।
Accessory, after the fact-अनुषंगी।
,, before the fact-पुरःसंगी।
Accident-१. दुर्घटना। २. घटना।
Accomplice-अभिषंगी।
Accordance-अनुसारता।
Account-१.खाता। २ लेखा, संख्यान। ३ विवरण, वर्णन।
Accountancy-लेखा-कर्म, संख्यान-कर्म।
Accountant-संख्याता।
Account book-लेखा-बही।
Accrued-निर्जित।
Accumulated-पुंजित। (परि॰)
Accumulation-पुंजन। (परि॰)
Accurate-परिशुद्ध, सटीक।
Accusation-१.अभियोग।२.आरोप।
Accused-अभियुक्त।
Acetic-कांजिक। (परि॰)
Acid-क्षार।
Acquired-१ अर्जित। २. अधिगृहीत।

Acquirer-अभिग्राहक । (परि०)
Acquisition-अभिग्रहण । (परि०)
Acquittal-विमोचन, विमुक्ति, उन्मुक्ति । (वि० विमुक्त उन्मुक्त)
Acquitted-विमोचित, विमुक्त ।
Act-१. कृत्य, कार्य । २. अधिनियम । (परि०) ३. विधान ।
Acting-वि०१ कार्यकारी (या कारिणी)। २. कारक ।
संज्ञा अभिनय ।
Action-१. क्रिया, कार्य । २. चर्या ।
Active-सक्रिय ।
Actual-वास्तविक ।
Actually-वस्तुतः ।
Adaptation-अनुकूलन । (परि०)
Addition-१. संवृद्धि । २. जोड़ ।
Address-१.पता, वाह्य नाम । २.अभिनन्दन-पत्र । ३ संबोधन । ४. अभिभाषण ।
,, of Advocate-अभिभाषण ।
Addressee-प्रेषिती, यापक ।
Ad hoc-तदर्थ ।
Ad hoc committee-तदर्थ समिति ।
Adjourned-स्थगित ।
Adjournment-स्थगन ।
,, motion-स्थगनक । (परि०)
Adjusted-संधानित, समंजित ।
Adjustment-संधान, समंजन ।
Administration-प्रशासन ।
Administrative-प्रशासनिक ।
Administrator-प्रशासक ।
Administrator General-महा प्रशासक । (परि०)
Admiralty-नावाधिकरण । (परि०)
Admissible-ग्राह्य । (परि०)
Admission-१. ग्रहण । २. प्रवेश । ३. मान्यता ।
Admission fee-प्रवेश-शुल्क ।
Adopted son-दत्तक ।
Adoption-दत्त-विधान । (परि०)
Adult-वयस्क ।
Adulteration-अपमिश्रण ।
Adult sufferage-वयस्क मताधिकार
Ad valorem-मूल्यानुसार ।
Advance-अगाऊ, अग्रिम, सत्यंकार ।
Advertised-विज्ञापित ।
Advertisement-विज्ञापन ।
Advice-१. परामर्श, मंत्रणा । २. प्रज्ञप्ति । ३. सूचना ।
Advocate-अभिभाषक ।
Advocate, address of-अभिभाषण
Aerial-वायविक ।
Aerodrome-हवाई अड्डा ।
Aeroplane-वायु-यान, हवाई जहाज ।
Ætiology-निदान ।
Affectation-उपरंजन । (वि०उपरक्त, उपहत)
Affection-अनुरक्ति ।
Affectionate gift-प्रसाद-दान ।
Affidavit-शपथपत्र ।
Affinity-व्यासक्ति ।
Affirmation-प्रकथन ।
Age-१. वय, अवस्था । २. युग ।
Agency-अभिकरण ।
Agenda-कार्यावली ।
Agent-*अभिकर्ता* ।
Aggrarian-कृषिक, क्षेत्रिक ।
Aggravation-अतिरेक । (परि०)
Agitation-आंदोलन ।
Agnosticism-अज्ञेयवाद । (परि०)
Agreed-सहमत, सम्मत ।

Agreement-१. अनुबन्ध । २. समझौता, ठहराव । ३. अनुरूपता, मेल । ४. सहमति, सम्मति ।
Aid-सहायता ।
Air force-विमान-बल ।
Airways-वायु-पथ ।
Album-चित्राधार ।
Alcohol-सुरा-सार ।
Algebra-बीज-गणित ।
Alias-उपनाम ।
Alienable-देय ।
Aliment-पोषण । (परि०)
Alimentary canal-पोषिका । (परि०)
Alimony-भृति ।
Alkaloid-उपक्षार, क्षारोद । (परि०)
Allegation-अभिकथन । (परि०)
Allegience-अनुषक्ति, निष्ठा । (परि०)
Alliance-संधान ।
Allied-व्यासक्त ।
Allowance-उपजीविका, भत्ता, वृत्ति ।
Alloy-मिश्र-धातु ।
Allurement-प्रलोभन ।
Alphabets-वर्ण माला ।
Alternate-एकांतर । (परि०)
Alternative-वि० १. वैकल्पिक । २. एकांतर (रिक)। (परि०) संज्ञा-अनुकल्प । (परि०)
Altitude-उन्नतांश । (परि०)
Altruism-परार्थवाद । (परि०)
Amalgamation-एकीकरण । (वि० एकीकृत)
Ambassador-राजदूत ।
Ambiguous-संदिग्ध ।
Amendment-संशोधन ।
Amentia-बालिश्य ।
Ammunitions-गोला-बारूद ।
Amnesty-निर्मुक्ति, सर्व-क्षमा ।
Amount-रकम ।
Amputation-अंगच्छेद । (परि०)
Analogous-अतिदिष्ट, अनुधर्मक (परि०), सदृश ।
Analogy-अतिदेश (परि०), सादृश्य ।
Analysis-विश्लेषण ।(कर्त्ता विश्लेषक)
Ancestor-पूर्वज, पितृ ।
Ancestral-पैतृक । (परि०)
Angle-कोण ।
Angular-कौणिक । (परि०)
Annexation-संयोजन ।
Annexed-संयुक्त ।
Annexure-संयुक्तक ।
Announcement-विख्यापन । (वि० विख्यापित) ।
Annual-वि० १ वार्षिक । २ एक-वर्षी । संज्ञा वार्षिकी ।
Annuity-वार्षिकी ।
Answerability-वक्तव्यता ।
Anthropology-मानव-शास्त्र ।
Anticipation-प्रवेक्षा ।(वि० प्रवेक्षित)
Anti-dated-पूर्व-तिथीय । (परि०)
Anti-diluvial-पूर्व प्लावनिक ।
Antidote-मारक ।
Apathy-अरति । (परि०)
Apparatus-उपकरण, उपस्कर(परि०)।
Appeal-पुनर्वाद ।
Appeasement-संतुष्टीकरण ।
Appelant-पुनर्वादी ।
Appelation-उपाधि । (परि०)
Appended-संलग्न ।
Appendix-परिशिष्ट ।
Applicable-१. योजनीय । २. लागू ।

Application-१.प्रार्थना-पत्र। २.प्रयोग।
Applied-१ प्रायोगिक। २. प्रयुक्त।
Appointment-नियुक्ति।(वि०नियुक्त)
Appreciation-उन्मान, मूल्यांकन।
Appropriation-१.उपयोजन, योजन। २. उपादान।
Approval-अनुमोदन।
Approver-परिसिद्धक।
Approximate-१ प्रायिक।२.आसन्न।
Arbitration-पंच, पंचायत। (परि०)
Arbitrator-पंच।
Arboriculture-तरु-रोपण,वानस्पत्य।
Arc-चाप।
Archaeology-पुरातत्त्व।
Archipelago-द्वीप-पुंज। (परि०)
Area-१. क्षेत्र। २ क्षेत्र-फल।
Argument-वितर्क, तर्क।
Aristocracy-अभिजात-तंत्र। (परि०)
Arithmetic-पाटी-गणित।
Arm-१. भुज, बाहु। २. शस्त्र, आयुध।
Armed force-स-शस्त्र बल।
Armistice-अवहार।
Arms-शस्त्र, आयुध, हथियार।
Arms and weapons-शस्त्रास्त्र।
Army-सेना।
Arrear-अवशिष्ट।
Arrears-अवशेष।
Artery-धमनी। (परि०)
Article-अनुच्छेद। (परि०)
Artisan-शिल्पी।
A-sexual-अयौन, अलैंगिक।
Aspect-अंग, पार्श्व, पहलू।
Asphalt-अश्मज।
Assault-आक्रमण।
Assembly-१. समुदाय। २. परिषद्।
Assessee-निर्धारिती।
Assessment-निर्धारण।
Assets-परिसंपद्। (परि०)
Assignee-अभ्यर्पिती।
Assignment-१.अभ्यर्पण।(वि०अभ्यर्पित) २.निर्देश। (वि०निर्दिष्ट) ३.प्रयोग।
Assignor-अभ्यर्पक।
Assimilation-स्वांगीकरण।
Assistant-सहायक।
Association-समागम।
Atheism-निरीश्वरवाद। (परि०)
Atlantic-अतलांतक।
Atmosphere-आवह, वातावरण, वायु-मंडल।
Atom-अणु, परमाणु।
Attached-१.अनुलग्न। २.आसंजित।
Attachment-आसंग, आसंजन।
Attestation-सत्यापन।(वि०सत्यापित)
Attested-आवित।
Attorney-अभिकर्त्ता।
,, power of-अभिकर्त्ता-पत्र।
Audited-संप्रेक्षित।
Auditing-लेखा-परीक्षा, संप्रेक्षण।
Auditor-लेखा परीक्षक, संप्रेक्षक।
Auditory-श्रावण (वि०)।
Authorised-अधिकृत।
Authoritative-आधिकारिक।
Authoritatively-साधिकार। अधिकारतः।
Authority-१. अधिकार। २. आधिकारिक। ३. आधिकारिकी। ४. शासन।
Auto-biography-आत्म-चरित्र।
Autonomous-स्वायत्त।
Average-१.मध्यन, औसत। २. लघु।
Awakening-जागरण। (परि०)

Axiom-स्वयंसिद्धि, स्वतःसिद्धि ।
Axis-अक्ष ।
Back ground-१.भूमिका।२.पृष्ठिका।
Balance-अवशेष, शेष ।
Balance sheet-आय-व्यय फलक, तुला-पत्र, तल-पट । (परि०)
Balancing-सन्तुलन, समतोलन ।
Ballot-शलाका ।
Ballot-box-मत-पेटिका ।
Ballot paper-मत-पत्र ।
Bar-बाध ।
Barometer-ताप-क्रम-यंत्र ।
Barter-१. विनिमय । २. सौदा ।
Base-संज्ञा-भूमि, आधार ।
वि०-कूट (जाली या नकली) ।
Basic-आधारिक ।
Below par-घटती से ।
Bench-पीठ । (परि०)
Bestiality-पशु-मैथुन ।
Betting-बदान ।
Bibliography-संदर्भ-सूची ।
Bi-lateral-द्विपक्षी । (परि०)
Bill-१. प्राप्यक । २. विधेयक ।
Bill-collector-प्राप्यक-समाहर्त्ता ।
Bill of exchange-विनिमय-पत्र,हुंडी।
Bill of lading-वहन-पत्र ।
Biology-जीव-विज्ञान । (परि०)
Birth-register-जन्म-पंजी ।
Black-market-चोर-बाजार ।
Bladder-मूत्राशय ।
Bleaching-विरंजन ।
Blood-pressure-रक्त-चाप ।
Body-१. शरीर । २. संघात ।
Body-guard-अंग-रक्षक ।
Bona vacantia-अस्वामिकता, परि०), स्वामि-हीनत्व ।
Bondsman-बन्धक ।
Bonus-अधिलाभ ।
Book-post-पुस्त डाक ।
Booty-परिहार ।
Borrower-अधमर्ण, उद्धारणिक ।
Botany-वनस्पति-विज्ञान ।
Boundary-सीमा ।
Boy-scout-बाल-चर ।
Branch-शाखा ।
Breach-भंग ।
Breach of Law-विधि-भंग ।
Breach of Peace-शांति-भंग ।
Breach of Trust-न्यास-भंग ।
Breeding-वर्द्धन ।
Broadcasting-प्रसारण ।
Bronze age-ताम्र-युग ।
Brothel-वेश्यालय ।
Budget-आय-व्ययिक, व्याकल्प ।
Bulb-१. लट्टू । २ गांठ ।
Bungling-घपला, घपलेबाजी ।
Bye-आनुषंगिक । (परि०)
Bye-election-उप-निर्वाचन। (परि०)
Bye-law-उप-विधि ।
Bye product-उपसर्ग,उपजात(परि०), आनुषंगिक उपज ।
Cabinet-मंत्रि-मंडल ।
Calculation-१.गणना, कलन। (वि० कलित) २. परिकलन । (वि०परिकलित)
Calculator-१. कलयिता । २. परि-कलक । (परि०)
Calendar-१. दिन-पत्र । २. पंचांग ।
Camp-शिविर ।
Cancellation-निरसन।(वि० निरस्त)
Candidate-अर्थिक ।

Canvasser-अनुयाचक ।
Canvassing-अनुयाचन ।
Capacity-क्षमता ।
Capitalism-पूँजीवाद ।
Capital punishment-प्राण-दंड ।
Cappilary-कैशिक ।
Caption-शीर्षक ।
Carbon-अंगारक ।
Care-अवधान ।
Carnivora-मांसाहारी ।
Carriage-परिवहन ।
Cartoon-व्यंग्य-चित्र ।
Case-१. अभियोग । २. विवाद, व्यवहार । ३. स्थिति ।
Cash-क्रि०-भुनाना ।
संज्ञा-१. रोकड़ । २ मुक्ति ।
वि० रोक, नगद ।
Cash book-रोकड़-बही ।
Cashed-मुक्त ।
Cashier-रोकड़िया ।
Cash-memo-रोक-टीप, विक्रयिका ।
Caste-जाति ।
Casting vote-निर्णायक मत ।
Casual-आकस्मिक ।
Casuality-आकस्मिकी, समापत्ति ।
Casual leave-आकस्मिक छुट्टी ।
Catalogue-सूचीपत्र ।
Causal-कारणिक ।
Causality-कारणिकता ।
Cause of action-कार्य-हेतु ।
Caution-साविस्य ।
Caution money-पारिभाव्य ।
Cell-१. कोश । २. कोषाणु ।
Census-१. गणना । २. मनुष्य-गणना ।
Centralization-केन्द्रीकरण ।
Centre-केन्द्र । (वि० केन्द्रिक, केन्द्रिय)
Century-शती, शतक, शताब्दी ।
Certificate-प्रमाणपत्र, प्रमाणक ।
Certification-१. प्रमाणीकरण । २. सत्यापन ।
Certifier-प्रमाणकर्त्ता ।
Cess-विकर ।
Chairman-अध्यक्ष ।
Challenge-चुनौती ।
Channel-प्रणाली, द्वार ।
Character-१. आचरण, चरित्र, चाल-चलन । २. लिपि ।
Character book or . .oll-आचरण पुस्तिका, आचरण-पंजी ।
Charge-१. अभियोग, आरोप, अभि-रोप (ण) । २. अवधान, प्रत्यवेक्षण । ३. परिव्यय । ४. भार । ५. शुल्क ।
Chargeable-परिव्ययनीय ।
Charge-certificate-भार-प्रमाणक ।
Charge-holder-भार-धारक ।
Charge sheet-आरोप-फलक ।
Check-१. जाँच, पड़ताल । २. रुका-वट, रोध(न), रोक ।
Checking-पड़ताल ।
Chemical Examiner-रासायनिक परीक्षक ।
Chemistry-रसायन-शास्त्र ।
Cheque-देयादेश ।
Chief-मुख्य ।
Chorus-सह-गान ।
Circle-परिधि ।
Circle Inspector-परिधिक ।
Circumscribed-परिगत ।
Circumstances-परिस्थिति ।
Circumstances Tax-विभव-कर ।

Citation-उपनय (वि० उपनीत)।
Civics-नागरिक शास्त्र।
Civil-१. नागर। २.जानपद। ३. अर्थ। ४. सभ्य। ५. लौकिक।
Civil case-अर्थ व्यवहार (विवाद)।
Civil Court-अर्थ-न्यायालय।
Civil disobedience-सविनय अवज्ञा।
Civilisation-सभ्यता।
Civil Law-अर्थ-विधि, जानपद-विधि।
Civil marriage-नागर-विवाह, लौकिक-विवाह।
Civil Procedure-अर्थ-प्रक्रिया।
Civil process-अर्थ-प्रसर।
Civil remedy-अर्थोपचार।
Civil Service-जानपद सेवा।
Civil suicide-संन्यास।
Civil war-गृह-युद्ध, नागर-युद्ध।
Claim-अभ्यर्थ, अभ्यर्थन।
Clairvoyance-दिव्य-दृष्टि।
Class-१. श्रेणी। २. वर्ग।
Classification-श्रेणीकरण। वर्गीकरण।
Clause-१. खंड। २. प्रनियम।
Clear-स्पष्ट।
Cleavage-संभेद।
Clerk-करणिक, लिपिक।
Cliff-भृगु।
Clique-गुट्ट।
Clock tower-घंटा-घर।
Closing balance-रोकड़-बाकी।
Clue-सूत्र।
Co-defendant-सह-प्रतिवादी।
Codicil-उप-दित्सा।
Cognizance-अवेक्षा।
Cohesion-संसक्ति।
Coinage-टंकण।
Coincidence-समापात।
Cold wave-शीत-तरंग।
Collection-१. संग्रह। २. समाहरण।
Collector-समाहर्त्ता।
Colony-उपनिवेश।
Combination-समुच्चय।
Combustible-दह्य। (परि०)
Command-समादेश।
Commander-समादेशक।
Commander-in-chief-सेनापति।
Commerce-वाणिज्य।
Commission-आयोग। (वि०आयुक्त)
Commissionary-प्रमंडल।
Commissioner-आयुक्त।
Committee-समिति।
Common-१. सर्व-साधारण। २. सर्व-सामान्य।
Common Law-१ सामान्य-विधि। २. विधि-शास्त्र।
Communication-यातायात।
Communique-विज्ञप्ति। (परि०)
Communism-समष्टिवाद।
Communist-समष्टिवादी।
Compact-व्यवस्थान।
Company-१.मंडली। २.पूग, समवाय।
Comparative-तुलनात्मक।
Comparison-तुलना।
Compensation-प्रतिकार, बदला।
Compensatory-प्रतिकारक।
Competent-सक्षम।
Compilation-संकलन।
Complainant-अभियोगी।
Complaint-१.अभियोग। २.परिवाद।
Complexion-रंग, वर्ण।

Complaince-पालन ।
Compliment-पूरक ।
Complimentary-अनुपूरक, पूरक ।
Compoundable-प्रशाम्य ।
Compounder-सम्मिश्रक ।
Compounding-१. सम्मिश्रण । २. प्रशम, प्रशमन ।
Compromise-समझौता ।
Compulsory-अनिवार्य ।
Concave-नतोदर । (परि०)
Concommitant-सहभावी ।
Concrete-मूर्त ।
Concurrence-सहमति ।
Concurrent-समवर्ती ।
Condition-१. दशा, अवस्था । २. पण, प्रतिबन्ध ।
Conditional-सोपाधिक ।
Condone-संक्षमण ।
Conduct-१. आचरण । २. व्यवहार ।
Conduction-परिचालन ।
Conductor-परिचालक ।
Confederation-परिसंघ ।
Conference-सम्मेलन ।
Confession-स्वीकारोक्ति ।
Confidence-विश्रंभ ।
Confident-विश्रंभी ।
Confidential-विश्रंभी ।
Confirmation-दृढ़ायन ।
Conflict-संघर्ष, संघर्षण ।
Congenital-सह-जात ।
Congratulation-प्रतिनंदन ।
Connected-संबद्ध ।
Connection-संबंध ।
Conquest-अभिजिति, विजय ।
Conscience-१.अंतःकरण । २.विवेक ।

Consent-सम्मति ।
Consequent-अनुवर्ती ।
Consequential-पारिणामिक ।(परि०)
Consigned-समर्पित ।
Consignee-१. प्रेषिती । २. निक्षिप्ती । ३. समर्पिती ।
Consignment-१. चालान, निक्षिप्तक । २. प्रेषण, प्रेषितक । ३. समर्पितक । ४. समर्पण ।
Consignor-१. निक्षेपक । २. प्रेषक । ३. समर्पक ।
Consistancy-संगति ।
Consistant-संगत ।
Conspiracy-षड्यंत्र ।
Constellation-नक्षत्र ।
Constituency-निर्वाचन-क्षेत्र ।
Constituent Assembly-संविधान परिषद् ।
Constitution-संविधान ।
Constitutional-१.वैधानिक ।२.वैध ।
Constitutionalism-विधानवाद ।
Constitutionalist-विधानवादी ।
Constraint-अभिभव ।
Construction-व्याकृति ।
Constructive-रचनात्मक ।
Consul-वाणिज्य-दूत ।
Consultation--परामर्श ।
Consumer-उपभोक्ता ।
Consumption-उपभोग ।
Contagious-संक्रामक ।
Contemporary-सम-कालीन ।
Contempt-अवमान ।
Contents-अंतर्वस्तु ।
Contiguity-संसक्ति ।
Continent-महादेश, महाद्वीप ।

Contingency-प्रासंगिकी ।
Contingent-आकस्मिक, अनिश्चित । प्रासंगिक ।
Contract-१. ठीका । २. संविदा ।
Contract deed-१. ठीकापत्र । २. संविदापत्र ।
Contractor-ठीकेदार ।
Contrary-प्रतिकूल ।
Contribution-१.अंशदान।२.सहांश।
Cotributor-अंशदाता, सहांशी ।
Contributory-सहांशिक ।
Control-नियंत्रण ।
Controversy-वाद्-विवाद ।
Convener-संयोजक ।
Convenience-सुभीता ।
Convention-अभिसमय। (वि॰ अभिसामयिक)
Conventional-अभिसामयिक ।
Convergent-अभिसारी ।
Converse-प्रतिलोम ।
Conveyance-१. यान । २. सवयन ।
" allowance-यान-भत्ता ।
Conveyancer-सवयक, सवयनकार, सवयन लेखक ।
Conveyancing-१ सवयन विद्या । २ सवयन लेखन ।
Convex-उन्नतोदर ।
Conviction-१.अभिशंसा। (वि॰ अभिशंसित) २.आश्वस्ति । (वि॰ आश्वस्त)
Convocation-समावर्तन ।
" Address-दीक्षान्त भाषण ।
Co-operation-१. सहकार । २. सहकारिता । ३ सहयोग ।
Co-operative Society-सहकार समिति ।
Copied-प्रतिलिपित ।
Copy-१. प्रतिलिपि । २. प्रति ।
Copyist-प्रतिलिपिक ।
Copy Right-प्रतिक स्वत्व । (परि॰)
Co-relation-अनुबंध ।
Corporation-१.निगम।(परि॰)२.संघ।
" Aggregate-बहुक निगम ।
" Sole-एकक निगम ।
Correspondence-पत्र-व्यवहार ।
Correspondent-संवाददाता ।
Corresponding-तदनुरूप ।
Corrosive-क्षय कर ।
Corrupt-प्रदुष्ट ।
Corruption-प्रदोष ।
Cosmogeny-सृष्टि विज्ञान ।
Cost-लागत परिव्यय ।
Costs-अर्थ-दंड ।
Council-परिषद् ।
" of State-राज्य-परिषद् । राष्ट्र-परिषद् ।
Counter-action-प्रतिकरण ।
Counter-attack-प्रत्याक्रमण ।
Counter-balance-प्रतितुलन ।
Counter-charge-प्रत्यारोप ।
Counterfeit-प्रतिरूप, जाली ।
Counter foil-प्रतिपर्ण ।
Countervailing Duty-प्रतिशुल्क । (परि॰)
Court-अधिकरण, न्यायालय, कचहरी ।
Court fee-अधिकरण शुल्क, न्याय शुल्क ।
Court Inspector-व्यवहार निरीक्षक ।
Court of Records-अभिलेख-अधिकरण ।
Court of Wards-प्रतिपालक अधिकरण । (परि॰)
Court Martial-सैनिक न्यायालय ।

Court Sale-आधिकरणिक विक्रय।
Creation-सर्जन।
Credit-१. आकलन। २. प्रतीति, प्रत्यय। ३. साख। ४ श्रेय।
Credit Note-आकलन पत्रक।
Creditor-उत्तमर्ण, महाजन।
Credit side-धन-पक्ष, आकलन-पक्ष।
Crime-अपराध।
Criminal-१. अपराध-शील। २. आपराधिक, आपराधिक।
Criminal process-अपराधिक प्रक्रिया।
Criminal tribe-अपराध-शील जन-जाति।
Criminology-अपराध-विज्ञान।
Cross-examination-प्रति-परीक्षण।
Crusade-धर्म युद्ध।
Culture-१ संस्कार। २. संस्कृति। ३ पालन।
Cumulation-समुच्चय।
Curator-संग्रहाध्यक्ष।
Currency-प्रचलन।
Currency note-चल पत्र।
Current-१ चलता, चालू, चलित, प्रचलित। २ सांप्रतिक।
Current account-चलता खाता।
Custodian-अभिरक्षक। (परि०)
Custody-१ प्रतिग्रह। २. अभिरक्षा। (परि०)
Custom-१. आचार। २ संधान, रूढ़ि।
Customs Duty-सीमा-शुल्क।
Cut-motion-कटौती (का प्रस्ताव)।
Cycle-चक्र।
Dairy-गोशाला।
Dam-सेतु।
Damage-क्षति, हानि।
Damages-हानि-मूल्य।
Dangerous-विपत्ति-जनक।
Dead lock-निरोध, गत्यवरोध।
Dealer-व्यापारी।
Death-मृत्यु।
Death Duty-मृत्यु-कर।
Debenture-ऋण-पत्र।
Debit-विकलन।
Debtor-ऋणी।
Decade-दशक, दशी।
Decadence-अवक्षय। (परि०)
Decease-प्रमीति।
Deceased-प्रमीत।
Decentralization-विकेन्द्रीकरण।
Decimal-१. दशमलव। २. दशमिक। (परि०)
Decimal System-दशमिक प्रणाली।
Decision-विनिश्चय।
Decisive-विनिश्चायक।
Declaration-प्रख्यापन।
Declaratory-१. प्रख्यापनिक। २. प्रख्यापक।
Declared-प्रख्यापित।
De-colororization-विरंजन।
De-control-विनियंत्रण।
Decree-१.जय-पत्र २.आज्ञप्ति।(परि०)
Dedication-समर्पण।
Deduction-अभ्युपगम।
Deed-विलेख।
Defamation-मान-हानि।
Default-वितथ।
Defaulter-वितथी।
Defence-प्रतिरक्षा। (परि०)
Defendant-प्रतिवादी।
Deficit-ऊनता। (परि०)

Definition-परिभाषा। (वि॰परिभाषित)
Deflation-१. विस्फीति । २. मुद्रा-विस्फीति ।
Degenerate (d)-अपजात । (परि॰)
Degeneration-आपजात्य । (परि॰)
Degradation-कोटि-च्युति ।
Degree-१. अंश । २. अवांश ।
Dehydrated-निर्जलित । (परि॰)
De-hydration-निर्जलन । (परि॰)
Deism-ईश्वरवाद। (परि॰)
Delegacy-प्रतिनिधान ।
Delegation-प्रतिनिधायन ।
Deletion-उद्धारण । (परि॰)
Delimitation-परिसीमन। (परि॰)
Delivered-अभिदत्त ।
Delivery-१. अभिदान । २. संप्रदान । ३. प्रसव ।
Deluge-प्लावन ।
Demand-अभियाचन, अभ्यर्थन, माँग।
Dementia-बुद्धि-भ्रंश ।
Demise-निधन ।
Demobilization-वियोजन ।
Demonstration-१. उपपादन । २. प्रदर्शन ।
Density-घनता, घनत्व ।
Department-विभाग।
Departure-प्रयाण, प्रस्थान ।
Dependence-अवलंबन ।
Dependent-१.अवलंबित।२.आश्रित।
Deposit-निक्षेप । (वि॰ निक्षिप्त), अभिन्यास । (वि॰ अभिन्यस्त)
Depositor-निक्षेपक ।
Depreciation-१. अपकर्षण । २. अर्घ-पतन, उतार । ३. घटी ।
Depressed class-दलित वर्ग ।
Deputation-१. प्रतिनिधायन, प्रतिनियोजन । २. शिष्ट-मंडल ।
Deputed-प्रतिनियुक्त ।
Deputy-प्रतिपुरुष ।
Derivation-व्युत्पत्ति ।
Derogation-अपकर्षण ।
Derogatory-अपकर्षक ।
Descent-उत्तरण । (परि॰)
Deserter-अपसरक ।
Desertion-अपसरण ।
Design-परिरूप । (परि॰)
Designation-अभिधान ।
Designer-परिरूपक । (परि॰)
Destroyer-विध्वंसक ।
Detention-निरोध । (परि॰)
Determination-अवधारण ।
Detraction-अपकर्षण ।
De-valuation-अवमूल्यन । (परि॰)
Development-विकासन ।
Dialect-बोली ।
Diamond Jubilee-हीरक जयंती ।
Diarchy-द्वैध-शासन ।
Diary-दैनिकी ।
Dictator-अधिनायक । (परि॰)
Die-hard-दुर्मर । (परि॰)
Dilemma-उभय संकट । (परि॰)
Diluvial-प्लावनिक ।
Direction-निर्देश ।
Director-निर्देशक ।
Directory-निर्देशिका ।
Dis-affection-अपरक्ति ।
Discharge-१. निस्सरण, निस्सारण । २. स्राव । ३. निरसन । ४. उत्सर्जन, छोड़ना । ५. अवरोप, अवरोपण । ६. पालन । ७. उन्मोचन ।

Discharged-उन्मुक्त। (परि०)
Discipline-अनुशासन।
Discount-बट्टा।
Discovery-आविष्कार।
Discretion-विवेक, स्व-विवेक।
Discretionary-विवेकाधीन।
Discrimination-विभेद।
Dishonesty-अनार्जव। (परि०)
Dismissal-विसर्जन।
Disobedience-अवज्ञा, आज्ञा-भंग।
Displacement-अभिक्रांति। (परि०)
Disposal-१. विनियोग। २. समापन। ३. निस्तरण। (परि०)
Dispose-निपटाना।
Disposing mind-विनियोगिका वृत्ति।
Disposition-१. विक्रय। २. शील।
Dispute-विवाद।
Disputed-विवादास्पद।
Dis-regard-उपेक्षा।
Dissent-विमत।
Dissociation-विषंग।
Dis-solution-१. अवसान। २ विलोपन। ३. विघटन।
Distillation-अभिस्रावण। (परि०)
Distillery-अभिस्रावणी। (परि०)
Distinguish-पहचानना।
Distribution-१. विभाजन, विभाग। २. वितरण।
,, of labour-श्रम-विभाग।
Distributor-वितरक।
District-मंडल।
District Board-मंडल परिषद्।
Divergent-अपसारी। (परि०)
Dividend-लाभांश।
Division-१. प्रखंड, प्रमंडल। (भू-भाग) २. विभाजन। विभाग।
Divisional-प्रादेशिक, प्रमंडलिक।
Divorce-विवाह-विच्छेद, विविच्छेद।
Doctrine-सिद्धांत।
Document-१. लेख्य। २. कीलक।
Documentary-लिखित।
Domicile-अधिवास। (वि० अधिवासी)
Dormant-सुप्त।
Draft-१. पांडु-लिपि। २. प्रालेख। ३. हुंडी।
Drafting-पांडु-लेखन, प्रालेखन।
Draftsman-पांडु-लेखक, प्रालेखक।
Drain-१. निर्गम। २. नाली।
Draw-आग्रहण। (परि०)
Drawee-आगृहीती। (परि०)
Drawer-आग्राहक (परि०), आहर्ता (परि०), प्रापक।
Drawn-आगृहीत। (परि०)
Dualism-द्वैतवाद। (परि०)
Due-१. दातव्य। २. प्राप्य।
Duplicate-द्वितक।
Dutiable-शुल्कार्ह।
Duty-शुल्क।
Earn-अर्जन।
Earnest money-साई, अग्रिम, अगाऊ।
Easement-आमुक्ति, आभोग।
Echo-गूँज, प्रतिध्वनि।
Economic-आर्थिक।
Economics-अर्थ-शास्त्र।
Editing-संपादन।
Edition-संस्करण।
Editor-संपादक।
Effect-१. गुण। २. प्रभाव।
Effective-१. प्राभाविक। २. समर्थ।
Efficiency-कौशल।

Efficiency Bar-कौशल-बाध।
Efficient-कुशल।
Elastic-नम्यक।
Elasticity-नम्यता।
Elder-वृद्ध।
Election-निर्वाचन, चुनाव।
Elector-निर्वाचक।
Electoral roll-निर्वाचक सूची।
Electrical-वैद्युत्।
Element-भूत, तत्त्व।
Elucidation-स्पष्टीकरण।
Embezzlement-अपभोग।
Embryo-भ्रूण।
Emergency-आपात।
Emergent-आपातिक।
Emigration-परियान।
Emissory-प्रशिष्टि।
Emperor-सम्राट्।
Empire-साम्राज्य।
Employed-अभियुक्त।
Employee-अभियुक्ती।
Employer-अभियोजक, नियोक्ता।
Emplovment-अभियोजन।
Enacted-विधायित।
Enactment-विधायन।
Enclosed-अनुलग्न, सहगत।
Enclosure-अनुलग्नक, सहगतक।
Encroachment-अतिक्रमण, अतिचार।
Encumbered-भारित।
Encyclopædia-विश्व-कोश।
Endorsement-अनुलेख।
Endowment-निधि।
Endurance-तितिक्षा।
Energy-शक्ति।
Enforce-बलवत्।
Engineering-यंत्र-विद्या।
Enquiry-१. जाँच। २. परिप्रश्न।
Enrolment-१. पंजीयन। २. नाम लिखाई, नाम-निवेश।
Entered-निविष्ट।
Entrance-प्रवेशिका।
Entrance Fee-प्रवेश-शुल्क।
Entry-निविष्टि, लेखी।
Environment-प्रतिवेश।
Epic-महाकाव्य।
Epidemic-महामारी।
Epigraphy-पुरालिपि शास्त्र।
Equality-समता।
Equator-विषुवत् रेखा।
Equilibrium-साम्यावस्था।
Equinox-सायन।
Equitable-साम्यामूलक।
Equity-साम्या।
Errata-शुद्धि-पत्र।
Espoinage-चार कर्म, भेदन।
Establishment-१. अधिष्ठान। २ संस्था। ३. स्थापन।
Estate-१. भू-संपत्ति, संपदा। २ भूमि। ३. अवस्थान। ४. राज।
Estate Duty-भू-चुंगी। भू-शुल्क।
Estimate-प्राक्कलन।
Eternal-शाश्वत।
Ether-आकाश।
Ethics-आचार-शास्त्र, नीति-विज्ञान (शास्त्र)।
Etymology-निरुक्त।
Evacuee-निष्क्रमिती।
Evaporation-वाष्पीकरण।
Evolution-विकास।
Examination-परीक्षा।

Examiner-परीक्षक ।
Example-उदाहरण ।
Exception-अपवाद ।
Exchange-विनिमय ।
Excise-प्रातिभागिक ।
Excise Duty-प्रतिभाग ।
Executed-निष्पन्न ।
Execution-१. निष्पादन । २. साधन । ३. वधन ।
Executioner-वधिक ।
Executive-साधनिक ।
Executive, The-साधनिकी ।
Executive Officer-साधनिक अधिकारी ।
Executive Service-साधनिक सेवा ।
Executor-निर्वाहक, निष्पादक ।
Exemption-१. उन्मुक्ति, उन्मोचन, छूट । २. रहितत्व ।
Exercise-१. व्यायाम । २. प्रयोग ।
Exhibit-दर्शित ।
Exhibition-प्रदर्शनी ।
Existing-वर्तमान, प्रस्तुत ।
Ex officio-पदेन ।
Expedition-अभियान ।
Expenditure-व्यय ।
Experiment-परीक्षा, प्रयोग ।
Experimental-प्रायोगिक ।
Expert-विचक्षण, सुपटु, प्रवर ।
Explanation-१. विवृति । २. व्याख्या ।
Explanatory-व्याख्यापक ।
Exploitation-शोषण ।
Exploited-शोषित ।
Exploiter-शोषक ।
Explosive-विस्फोटक ।
Export-निर्यात ।
Exporter-निर्यातक ।
Express-आशुग ।
Expressed-व्यक्त, अभिव्यक्त ।
Expression-अभिव्यंजन, व्यंजन ।
Expressive-अभिव्यंजक ।
Expulsion-अपसारण ।
Extended-विस्तारित ।
Extension-विस्तरण ।
External-बाह्य ।
External Trade-बहिर्वाणिज्य ।
Extinction-निर्वापण ।
Extra-१. विशेष । २. अतिरिक्त ।
Extreme-परिसीमा, चरम सीमा ।
Extremism-चरम-पंथ ।
Extremist-चरम-पंथी ।
Face value-अंकित मूल्य । (परि॰)
Faith-१. निष्ठा । २. धर्म । ३. श्रद्धा ।
False-मिथ्या ।
Family-१. कुटुम्ब । २. परिवार ।
Fanatic-धर्मांध, कट्टर ।
Fatal-सांघातिक, घातक ।
Federation-१. संघ । २. राष्ट्र-मंडल
Fee-शुल्क ।
Fermentation-संधान ।
Ferry toll-घट्ट-कर ।
Feudal System-सामंत-तंत्र, सामंत प्रणाली ।
File-१.पत्रजात । २.नत्थी । ३.संचिका ।
Filed-१. नत्थित । २. संचित ।
Filteration-गालन । (वि॰ गालित)
Final-१. अंतिम । २. अविकल्प ।
Finance-वित्त ।
Finance Bill-वित्त-विधेयक ।
Finance Minister-अर्थ-सचिव, वित्त-सचिव ।

Financial-वित्तीय, वैत्तिक ।
Finding-अभिज्ञान, अन्वेषण ।
Fine-अर्थ-दंड ।
Fine Art-ललित कला ।
Finger-print-अंगुलि-प्रतिमुद्रा ।
Fisheries-मीन-क्षेत्र ।
Fishery-मीनक्षी ।
Flag-पताका ।
Flagged-पताकित ।
Flat File-चपटी मत्थी ।
Foil-पर्ण ।
Folk Dance-लोक-नृत्य ।
Folk Lore-लोक-गीत ।
Food Grains-खाद्यान्न ।
Foot-note-पाद-टिप्पणी ।
Forceps-संदंश ।
Foreign-१. पर-राष्ट्रिय, वैदेशिक । २ विदेशी ।
Foreword-प्राक्कथन ।
Forfeiture-अपवर्तन ।(वि॰ अपवर्तित)
Form-रूपक ।
Formally-उपचारात् ।
Formation-समाहरण ।
Formulæ-सूत्र ।
Formulated-सूत्रित ।
Forwarding-अग्रसारण । (वि॰ अग्रसारित)
Fossil-जीवावशेष, जीवाश्म ।
Fraction-१. भग्नांश । २. भग्नांक ।
Fracture-विभंग ।
Frame-१. चौखटा । २. ठाठ, ढाँचा । ३. शरीर ।
Free-१. स्वतंत्र । २. मुक्त ।
Freedom-स्वतंत्रता ।
Free trade-मुक्त व्यापार ।
Friction-संघर्ष, संघर्षण ।
Frontier-सीमांत ।
Fund-निधि ।
Fundamental-१. तात्त्विक । २. मौलिक ।
Furnishing-उपस्करण ।(वि॰ उपस्कृत)
Furniture-उपस्कार ।
Fusion-विलय, विलयन ।
Gallery-वीथी ।
Gamut-स्वर-ग्राम, सप्तक ।
Gazette-वार्त्तापत्र ।
Gazetted-वार्तापित ।
General-साधारण ।
Generalisation-साधारणीकरण ।
Generation-पीढ़ी ।
Generator-उत्पादक ।
Genius-प्रतिभा ।
Genuine-जैन्य ।
Genus-गण, जाति ।
Geography-भूगोल ।
Geology-भूगर्भ-शास्त्र ।
Germ-कीटाणु, जीवाणु ।
Germination-अंकुरण ।
Gift-१. दान । २. देय ।
Gland-गिलटी ।
Glucose-द्राक्ष-शर्करा ।
Godown-गोदाम ।
Golden Jubilee-स्वर्ण जयंती ।
Goods-पण्यक, पण्य, माल ।
Government-राज, शासन, सरकार ।
Governor-राज्यपाल । (परि॰)
Gradation-कोटि-बंध । (वि॰ कोटि-बद्ध)
Graduate-स्नातक ।
Grant-अनुदान ।
Grant-in-aid-सहायता, सहायक अनु-

दान।

Gratification-अनुतोष, अनुतोषण, परितोष, परितोषण।

Gratuity-आनुतोषिक।

Gravitation-गुरुत्वाकर्षण।

Gross income-स्थूल आय।

Group-वर्ग।

Grouting-पिलाई।

Guarantee-प्रतिभूति।

Guardian-अभिभावक।

Guidance-पथ-दर्शन (प्रदर्शन)।

Guide-पथ-दर्शक।

Habit-स्वभाव।

Habitat-निवास।

Hæmorrhage-रक्त-स्राव।

Hand-note-हुंडी।

Hand-writing-हस्त-लिपि (लेख)।

Head-१.शीर्ष, शीर्षक।२.मद।३.सिर।

Head Constable-अधिरक्षी।

Head Office-प्रधान कार्यालय।

Head Quarter-मुख्यावास।

Health-स्वास्थ्य।

Healthy-स्वस्थ।

Heart failure-हृद्रोध।

Heat wave-ताप-तरंग।

Helium-हिमजन।

Heptagon-सप्तभुज।

Hereditary-आनुवंशिक, पुरुषानुक्रमिक। (परि०)

Heritance-पैतृक संपत्ति।

Hero-नायक।

Heroine-नायिका।

Hibernation-परिशयन।

Highway-राज-पथ।

Hindu Law-धर्म-शास्त्र (हिन्दू)।

Holding-जोत। (परि०)

Home Guard-गृह-रक्षक। (परि०)

Home Minister-गृह-सचिव।

Homicide-नर-हत्या, हत्या।

Homogeneous-सम-(सह)जातिक।

Honesty-आर्जव।

Honorable-माननीय।

Honorarium-मानदेय।

Honorary-अवैतनिक, मान्यक।

Honour a bill or draft-सकारना।

Hostage-प्रोत।

House-सदन।

House of People-लोक-सभा।

Humanity-मानवता।

Hurt-उपहत।

Hydraulic-उदिक।

Hydrogen-उदजन।

Hydrophobia-जलातंक।

Hygiene-स्वास्थ्य-विज्ञान।

Hypothesis-कल्पितार्थ, परिकल्पना।

Hypothetic-परिकल्पित।

Ideal-आदर्श।

Idealisation-आदर्शीकरण।

Identification-१. तादात्म्य। २. पहचान, अभिज्ञान।

Identity-१. एकात्मता। २.अभिज्ञान।

Identity Card-अभिज्ञान-पत्र।(परि०)

Igneous-अग्निज। (परि०)

Illegal-अवैधिक, अवैध।

Illusion-अध्यास।

Illustration-१. निदर्शन। २. चित्र।

Imagination-कल्पना।

Immovable-अचल, स्थावर।

Impartial-निष्पक्ष।

Impeachment-महाभियोग।

Imperialism-साम्राज्यवाद ।
Imperialist-साम्राज्यवादी ।
Implication-विवक्षा ।
Import-१. आयात । २. निहितार्थ ।
Impounding-अवरोध। (वि० अवरुद्ध)
Impregnation-निषेक । (वि० निषिक्त)
Impression-१. चिह्न । २. आस्था । ३. छाप ।
Imprisonment-कारारोध ।
Impulse-आवेग । (परि०)
Inactive-अक्रिय, निष्क्रिय ।
Inauguration-उद्घाटन
In-charge-अधिनायक ।
Incidence-अनुषंग। (वि० आनुषंगिक)
Inclination-नति । (परि०)
Income-आय ।
Income Tax-आय-कर ।
Incorporated-१. निगमित, श्रेणीकृत । २. अंतर्भावित ।
Incorporation-निगमन (परि०), श्रेणीकरण
Increment-वृद्धि ।
Incurred-उपगत ।
Independent-स्वतंत्र ।
Indian Law-भारतीय विधि-शास्त्र ।
Indirect tax-परोक्ष-कर ।
Individual-संज्ञा-व्यक्ति । वि० वैयक्तिक ।
Induction-अनुगम । (परि०)
Industrial-औद्योगिक ।
Industrialist-उद्योगपति ।
Industrialization-औद्योगीकरण ।
Industry-उद्योग-धंधे ।
In-efficiency-अ-कौशल ।
Inferior-अवर ।
Inferior servant-अवर सेवक ।
Inferior Service-अवर सेवा ।
Inflation-१. स्फीति । २.मुद्रा-स्फीति ।
Influence-प्रभाव ।
Information-सूचना, ज्ञप्ति ।
Infringement-व्याघात ।
Inheritance-उत्तराधिकार ।
Initial-आद्याक्षर । (वि० आद्याक्षरित) ।
Injunction-समादेश ।
Injury-आघात, चोट ।
Inland-अंतर्देशीय ।
In-operative-अक्रियमाण ।
In-organic-निरिन्द्रिय ।
Insectivorous-कीट-भ
Insomnia-उन्निद्र । (रोग)
Inspection-निरीक्षण ।
Inspector-निरीक्षक ।
Instalment-किस्त, खंडिका ।
Instance-उदाहरण ।
Instinct-सहज बुद्धि ।
Instinctive-साहजिक ।
Institute-संस्थान ।
Institution-संस्था ।
Instruction-अभिसूचना, हिदायत ।
Instrument-करण ।
Insult-अपमान ।
Insurance-बीमा ।
Intention-आशय, ईप्सा ।
Interference-हस्त-क्षेप, व्यतिकरण ।
Interim-अंतरिम ।
Internal trade-अंतर्वाणिज्य ।
International-सार्व-राष्ट्रिय, अंतराष्ट्रिय ।
Internment-अंतरायण ।
Interpretation-अर्थापन ।

Invalid deed-दुर्लेख।
Invention-उपज्ञा, आविष्कार।
Investigation-अनुसंधान।
Investment-अभिहान, विनियोग।
Invoice-बीजक।
Involuntary-अनैच्छिक।
Iron Age-लौह-युग।
Irrelevant-अप्रासंगिक।
-ism-वाद।
Issue-१. निकासी। २. साध्या। ३. अंक (सामयिक पत्रों आदि का)। ४ संतान। ५. प्रश्न।
Issue of facts-घटनाओं या तथ्यों से संबंध रखनेवाली साध्या। तथ्यक साध्या।
Issue of law-विधिक प्रश्नों से संबंध रखनेवाली साध्या। विधिक साध्या।
Item-पद।
Jail-कारागार।
Jailor-कारागारिक।
Jealousy-असूया।
Joint-वि० संयुक्त। संज्ञा-जोड़।
Joint family-संयुक्त परिवार।
Jubilee-जयंती।
Judge-विचारपति।
Judgement-विचारणा।
Judicial-वैचारिक।
Judicial notice-वैचारिक अवेक्षा।
Judicial Service-वैचारिक सेवा।
Judiciary-वैचारिकी।
Junior-कनिष्ठ।
Jurisdiction-अधिक्षेत्र।
Jury-अभिनिर्णायक।
Jury, verdict of-अभिनिर्णय।
Justice-१. न्याय-मूर्ति। २. न्याय।
Kidnapping-अपहरण।
Kingdom-१. सर्ग। २ राज्य।
Lable-अंकितक।
Laboratory-प्रयोग-शाला।
Labour-परिश्रम, श्रम।
Labourer श्रम-जीवी।
Labour Union-श्रमिक-संघ।
Lading, Bill of-वहन-पत्र।
Landing-उतरना।
Land-lord-भू-स्वामी।
Land Records-भौमिक अभिलेख।
Land Revenue-भू-राजस्व।
Land tenure-भू-धृति।
Lapse-व्यपगति।
Lapsed-व्यपगत।
Latitude-अक्ष, अक्षांश।
Law-विधि।
Law, Breach of-विधि-भंग।
Law-maker-विधि-कर्ता।
Law of Contract-संविदा प्रविधि।
Law of Evidenee-साक्ष्य प्रविधि।
Lawyer-विधिज्ञ।
Leap year-अधिवर्ष।
Lease-पट्टा।
Leave-१. छुट्टी। २. अवकाश।
Ledger-खाता-बही।
Left-wing-वाम-पंथ। (वि० वामपंथी)
Legacy-उत्तर-दान।
Legal-विधिक, वैध।
Legal Jurisprudence-वैचारिक विज्ञान।
Legal proceeding-विधिक व्यवहार।
Legation-दूतावास।
Legislature-विधायिका (सभा)।
Lens-ताल।

Letter-book-पत्र-पंजी।
Letter-box-पत्र-पेटी।
Letter of credit-प्रत्यय-पत्र।
Levy-उगाहि (वि० उगाह्य, उगाहा), करारोप। (वि० करारोप्य)
Liability-१. देय। २. दायित्व।
Liable-दायी, देनदार।
Liberal-उदार।
Life-boat-जीवन-नौका।
Lift-उत्थापक।
Light-house-प्रकाश-गृह, दीप-स्तंभ।
Likely-संभवतः।
Limit-सीमा।
Limitation-अवधि।
Limited-परिमित।
Liquidation of Company-अपाकर्म।
Liquidation of debt-अपाकरण।
Literacy-साक्षरता।
Literary-साहित्यिक।
Literate-साक्षर, शिक्षित।
Literature-साहित्य।
Lithograph-प्रस्तर-मुद्रण।
Living Allowance-जीवन-वृत्ति।
Lobby-प्रकोष्ठ। (परि०)
Local-स्थानिक।
Local Board-स्थानिक परिषद्।
Localisation-स्थानीयकरण।
Local Self Government-स्थानिक स्वशासन।
Local tax-स्थानिक कर।
Loss-हानि।
Lower-अधस्तन।
Loyal-१. निष्ठ। २. राज-भक्त।
Loyalty-निष्ठा। (वि० निष्ठ)
Lymph-लसीका।
Machine-यंत्र।
Magistrate-दंडाधिकारी।
Magnification-विवर्धन।
Maintenance-पालन, पोषण।
,, Allowance-पोषण-वृत्ति।
Major-वयस्क।
Majority-१. वयस्कता। २. बहुमत।
Malaria-शीत-ज्वर।
Mammal-स्तनपायी।
Manager-प्रबन्धकर्त्ता, प्रबन्धक।
Mandatory-विधायक।
Manganese-मंगल। (धातु)
Manuscript-पांडु-लिपि।
Margin-उपांत।
Marginal-उपांतस्थ, उपांतीय।
Marginal witness उपांतस्थ साक्षी।
Mark-चिह्न।
Martial Law-फौजी कानून।
Mask-वर्णक।
Materialism-देहात्मवाद।
Maternity-मातृत्व।
Mean-मध्या।
Measure (ment)-नाप, माप।
Mechanic-यांत्रिक।
Medal पदक।
Mediator-मध्यस्थ।
Medical Certificate-चिकित्सक प्रमाणक।
Medical Jurisprudence-चिकित्सा-वैधानिक-विज्ञान।
Medical leave-चिकित्सावकाश।
Meditation-ध्यान।
Mediterranean-भूमध्य सागर।
Medium-माध्यम।

Member-सदस्य, सभासद ।
Membership-सदस्यता ।
Memo पत्रक ।
Memorandum-१. अनुबोधक । २. भालोकपत्र । ३ परिचय-पत्र । ४.स्मृति-पत्र ।
Memorial-स्मारक ।
Memory-स्मरण शक्ति ।
Mensuration-क्षेत्र-मिति ।
Mental-मानसिक ।
Mental deficiency-मनोवैकल्य ।
Mentality-मानसता ।
Merchandise-पण्य-द्रव्य ।
Merchandise mark-पण्य-चिह्न ।
Merger-विलय, विलयन, विलयीकरण ।
Message-संदेश ।
Meteorology-अंतरिक्ष विज्ञान ।
Microphone-ध्वनि क्षपक यंत्र ।
Microscope-सूक्ष्म-दर्शक-यंत्र ।
Middle-man-मध्यस्थ ।
Millennium-सहस्राब्दी, साहस्री ।
Mine-१. खान । २. सुरंग ।
Minerology-खनिज-विज्ञान ।
Minister-मंत्री, सचिव ।
Ministerial-कारखिक ।
Ministerial Servant-कर्मचारी ।
Ministerial Service-कारखिक सेवा ।
Minor-अवयस्क, अल्प-वयस्क ।
Minority-१. अल्प-मत । २. अल्प-संख्यक । ३. अवयस्कता ।
Minus-वियुक्त ।
Minute-कक्षा ।
Minute book-कक्षा-पंजी ।
Mis-appropriation-अपयोजन ।
Mis-behaviour-कदाचार ।
Miscellaneous-प्रकीर्णक, फुटकर ।
Model-प्रतिमान ।
Modification-परिष्करण ।
Monarchy-राजतंत्र ।
Monism-अद्वैतवाद ।
Monopoly-एकाधिकार ।
Morphology-अंग-संस्थान ।
Mortuary-चीर-घर ।
Mother tongue-मातृ-भाषा ।
Municipal Commissioner-नगर पार्षद ।
Municipal Court-जानपद न्यायालय ।
Municipality-नगर-परिषद्, नगर-पालिका ।
Murder-नर वध, वध, हत्या ।
Murderer-हत्याकारी, हत्यारा ।
Museum-संग्रहालय, अजायब घर ।
Mutation-नाम-चढ़ाई, नामांतरण ।
Mutiny-विद्रोह ।
Nadir-अधः स्वस्तिक, अधोबिंदु ।
Narration-समाख्यान ।
Nation-राष्ट्र ।
National-वि० १ राष्ट्रिय । २. जातीय । संज्ञा-राष्ट्रिक ।
Nationalist-राष्ट्रवादी ।
Nationality-१.राष्ट्रिकता । २.जातीयता ।
National language-राष्ट्र-भाषा ।
Natural-१. नैसर्गिक, प्राकृतिक । २. स्वाभाविक ।
Nature-१. निसर्ग, प्रकृति । २. स्वभाव ।
Naval Force-नौ-शक्ति ।
Navigable-नाव्य । (परि०)
Navigation-१.नौ-गमन । २.परिवहन ।
Navy-नौ-सेना ।
Negative-वि० नकारात्मक ।

संज्ञा-व्ययाम्लु ।
Neptune-वरुण ।
Nerves-स्नायु, संवेदन-सूत्र ।
Neumismatics-मुद्रा-शास्त्र ।
Neutral-तटस्थ ।
Night School-रात्रि-पाठशाला ।
Nomad-यायावर ।
Nominal-नामिक ।
Nomination-नामांकन ।
Non-cognizance-अनुत्प्रेक्षण ।
Non-recurring-अनावर्तक ।
Non-resident-अनावासिक ।
Normal-प्रकृत ।
Normal School-प्रशिक्षण विद्यालय ।
Normative Science-आदर्श-विज्ञान । (परि०)
Notation-स्वर-लिपि ।
Note-१. टीप, टिप्पणी । २. आलोक । ३ पत्रक ।
Notice-सूचना, सूचना-पत्र ।
Notification-विज्ञप्ति ।
Notified-विज्ञपित ।
Notified Area-विज्ञापित क्षेत्र ।
Nucleus-नाभि ।
Nuisance-कंटक ।
Null-मोघ, व्यर्थ, विफल ।
Nullification-व्यर्थन, मोघन । (परि०)
Nullity-वैफल्य, व्यर्थता ।
Number-१. संख्या । २. अंक ।
Oasis-मरु-द्वीप, शाद्वल ।
Object-१ ध्येय । २. वस्तु । पदार्थ ।
Objection-आपत्ति ।
Obligation-आभार ।
Observation-१. पर्यवेक्षण । २. वेध ।
Observatory-वेध-शाला ।
Observer-पर्यवेक्षक ।
Obverse-सीधा ।
Occupation-व्यवसाय ।
Odd-विषुग्म ।
Offence-अपराध ।
Offer-प्रस्ताव ।
Offeree-प्रस्ताविती ।
Offerer-प्रस्तावक ।
Office-१. कार्यालय । २. पद ।
Officer-अधिकारी, पदाधिकारी ।
Officer-in-Charge-अवधायक अधिकारी ।
Officiating-स्थानापन्न, निर्वाहिक ।
Off-print-अधिमुद्रण ।
Oil painting-तैल चित्र ।
Oligarchy-अभिजात तंत्र ।
Omission-१. अकरण, अनाचरण । २. चूक, छूट ।
On account of-मद्दे ।
Opening balance-आद्य शेष ।
Operation-१. व्यापार । २. चीर-फाड़ ।
Operative-क्रियमाण ।
Opportunism-अवसरवाद ।
Opportunity-अवसर ।
Opposition Benches-विरोध पीठ ।
Optimism-आशावाद ।
Option-विकल्प ।
Optional-ऐच्छिक, वैकल्पिक ।
Order Sheet-आज्ञा-फलक ।
Ordinance-अध्यादेश ।
Ordinary-साधारण ।
Organic-सेंद्रिय, जैव । (परि०)
Organisation-संघटन ।
Organised-संघटित ।
Original-१. नव, नवीन । २. मौलिक ।

Originator-प्रवर्तक।
Outerfoil-विपर्ण।
Out-of-date-विगतांक।
Ovary-डिंबाशय।
Over-population-अति-प्रजन।
Over-production-अति-उत्पादन।
Over-ruled-विपर्यस्त।
Overseer-अधिकर्मी।
Ovum-१. डिंब। २. डिंबाणु। (परि०)
Owner-स्वामी।
Ownership-स्वामिकता, स्वामित्व।
Pacific Ocean-प्रशांत महासागर।
Pacifism-शांतिवाद।
Pad-पत्रावली।
Paid-दत्त।
Painting-रंजन।
Palaeontology-प्रत्न-जीव-विद्या।
Pale Depot-मैला-घर।
Panic-उद्विग्न।
Pannel-चयनक।
Pantheism-सर्वेश्वरवाद।
Papers-पत्रजात।
Paper weight-दाब, पत्र-धारक।
Parachute-छतरी।
Paragraph-अनुच्छेद। (परि०)
Parallel-समांतर।
Parasite-पर-जीवी(परि०),पराँग भक्षी।
Parcel-पार्सल।
Parcel post-पोट-डाक।
Parliament-संसद्।
Parliamentarian-सांसदी।
Parliamentary-सांसद्।
Parody-भंड़ौआ।
Part-भाग।
Partial-आंशिक।
Party-दल, पक्ष, पक्षक।
Pass-१. पारपत्र। २. प्रवेशपत्र। ३. प्रवेशिका। ४. गिरि-संकट, दर्रा।
Pass-book-प्रतिलेखा।
Passed-पारित।
Passing-पारण।
Patron-संरक्षक।
Pay-वेतन।
Payment-१. भुगतान। २. शोधन।
Payment Order-शनादेश,देयादेश।
Peace-शांति।
Peace and order-योग-क्षेम।
Peace, Breach of-शांति-भंग।
Penalty-दंड, शास्ति।
Pending-अनुलंबित, लंबित,सापेक्ष।
Peninsula-प्रायद्वीप।
Pension-अनुवृत्ति।
Pensionable-अनुवृत्तिक।
Pensioner-अनुवृत्तिधारी।
Penumbra-उपच्छाया।
Peon-पत्रवाह।
Peon-book-पत्रवाह-पंजी।
Perennial-बहुवर्षी।
Periodic-सत्रिक।
Periodical-सामयिक पत्र।
Permanent-स्थायी।
Permanent Advance-अप्रतिदेय ऋण।
Permanent Fund-स्थायी कोश।
Permission-अनुज्ञा, अनुमति।
Permutation-प्रस्तार।
Perpetuity-सातत्य।
Personal-१. वैयक्तिक। २. निजी।
Personal Assistant-निजी सहायक।
Personality-व्यक्तित्व।

Personal Law-धर्म-शास्त्र (वैयक्तिक)
Perspective-अनुदृष्टि, दृष्टि-क्रम।
Perusal-अवलोकन।
Perverse-प्रतीप, विकृत।
Perversion-विकृति।
Perversity-प्रतीपता, विकृति।
Pessimism-१. निराशावाद। २. दुःखवाद।
Petition-याचिका, प्रार्थना-पत्र।
Petition of objection-आपत्ति-पत्र।
Phantom-मनोलीला।
Philosophy-दर्शन-शास्त्र।
Phobia-आतंक।
Photo-छाया-चित्र, चित्र।
Photography-आलोक(छाया)-चित्रण।
Physics-पदार्थ-विज्ञान, भौतिक विज्ञान।
Pin-कंटिका, शूक।
Pin-cushion-शूकाधानी।
Pirate-जल-दस्यु।
Place of occurrence-घटना-स्थल।
Plaintiff-वादी।
Plan-१. योजना। २. रूप-रेखा।
Play-ground-क्रीड़ा-स्थल, खेल-भूमि।
Pleader-अभिवक्ता।
Pleading-अभिवचन।
Plot-१. गाटा। २. कथा-वस्तु।
Point-बिंदु।
Police-आरक्षी।
Policy-नीति।
Polish-ओप।
Politician-राजनीतिज्ञ।
Politics-राजनीति।
Polity-राज-तंत्र।
Polling-मत-दान।
Polygamy-बहु-विवाह।
Polygon-बहु-भुज।
Pool-गोलक।
Popular-सर्व-प्रिय, लोक-प्रिय।
Population-जन-संख्या।
Portion-भाग।
Pose-ठवन।
Positive-संज्ञा-धनात्मक। वि० सदर्थक।
Positive Science-तात्त्विक विज्ञान। (परि०)
Possession-१. अधिकार। २. भोग।
Possible-संभव।
Possibility-संभावना।
Post-स्थान, पद।
Poster-ज्ञापक।
Post-humous-मरणोत्तर (क)।
Posting-स्थापन। (स्थान पर)
Post-mortem-शव-परीक्षा।
Posture-मुद्रा, ठवन।
Potentiality-शक्यता।
Power-१. अधिकार। २. शक्ति। ३. सत्ता।
Power of Attorney-अभिकर्त्ता-पत्र।
Power politics-बलिक नीति।
Practical-व्यवहार्य।
Preamble-पूर्व-वाद।
Predecessor-पूर्वाधिकारी।
Preferable-अधिमान्य।
Preference-अधिमान। (वि० अधिमानित)
Pre-historic-प्रागैतिहासिक।
Prejudice-विभारख।
Prejudiced-विभावित।
Preliminary-प्रारम्भिक।
Pre-paid-पुरःदत्त, पूर्व-दत्त।
Preparation-१. उपक्रम। २. उपकरण।

Pre-payment-पुरःदान। (वि॰ पुरोदत्त)
Prerogative-आदि-मान।
Prescribe-प्रदेशन। (वि॰ प्रदिष्ट)
Prescribed-१. प्रदिष्ट। २. विहित। ३. विनिश्चित। (परि॰)
Prescription-१.अतियोग।२.प्रदेशन।
Present-१. उपस्थित (भाव॰ उपस्थिति), विद्यमान। २. प्रस्तुत। ३. वर्त्तमान।
Preside, to-अध्यासन।
Presiding-अध्यासीन।
Presiding Officer-अधिपति।
Presumption-परिकल्पना।
Prima facie-ऊपर से देखने पर।
Prime-आद्य।
Prime Minister-महामंत्री।
Principle-सिद्धांत।
Printer-मुद्रक।
Printing Press-मुद्रणालय।
Priority-पार्यमिकता।
Privation-वंचन।
Privilege-प्राधिकार।
Privileged-प्राधिकृत।
Prize-पारितोषिक।
Probable-विभाव्य, संभावित।
Probation-परीक्षण। (वि॰परीक्षणिक)
Problem-१. संपाद्य। २. समस्या।
Procedure-प्रक्रिया।
Process-१. प्रक्रिया। २. प्रसर।
Process fee-प्रसर-शुल्क।
Process-server-प्रसरपाल।
Proclamation-उद्घोषणा।
Production-१.उत्पत्ति। २.उत्पादन।
Profession-वृत्ति।
Professor-प्राध्यापक।
Profit-फलोदय, लाभ, लभ्यांश।
Profit and loss-हानि-लाभ।
Programme-कार्य-क्रम।
Prohibited-प्रतिषिद्ध।
Prihibition-प्रतिषेध।
Prohibitory-निषेधक, प्रतिषेधक।
Project-१. प्रक्षेप। २. योजना।
Promise-प्रतिश्रुति, वाग्दान।
Promissory Note-विश्रुति-पत्र।
Promotion-१ उन्नयन। (वि॰उन्नीत) २. पदोन्नति, प्रोन्नति। (वि॰ प्रोन्नत)
Promulgation-प्रचारण।
Pro-note-प्रश्रुति-पत्र।
Propaganda-१.प्रचार।२.अभिप्रचार।
Propagandist-अभिप्रचारक। (परि॰)
Property-१. गुण। २. संपत्ति।
Property-tax-संपत्ति-कर।
Propitiation-प्रसादन।
Proportion-अनुपात।
Proposer-प्रस्तावक।
Prorogue-सत्रावसान।
Protection-संरक्षण।
Protectorate-रक्षित राज्य।
Protoplasm-जीव-धातु।
Provident fund-संभरण-निधि।
Provision-१. निर्देश। २. संभरण।
Psychology-मनोविज्ञान।
Psycho analysis-मनोविश्लेषण।
Public-संज्ञा-जनता, लोक। वि॰ १. सार्वजनिक। २. सर्व-सामान्य।
Publication-प्रकाशन।
Public health-लोक-स्वास्थ्य।
Publicity-विश्रुति।
Public nuisance-लोक-कंटक।
Public Office-लोक-पद।

Public opinion-लोक-मत ।
Public place-महाभूमि ।
Public Servant-लोक-सेवक ।
Public Services-लोक-सेवा ।
Public Works-लोक-वास्तु ।
Publisher-प्रकाशक ।
Punctuation-विराम-चिह्न ।
Purchasing power-क्रय-शक्ति ।
Purposely-कामतः ।
Qualified-सोपाधिक
Quantitative-मात्रिक ।
Quarantine-संसर्ग-रोध ।
Question-१. अनुयोग । २. प्रश्न ।
Quorum-इयत्ता ।
Quota-पर्यांश ।
Quotation-उद्धरण, प्रोक्ति ।
Quotient-भाग-फल ।
Race-जाति ।
Radical-चरम-पंथी । (परि॰)
Radicalism-चरम-पंथ । (परि॰)
Radius-व्यासार्द्ध ।
Rate-१. दर । २. भाव ।
Ratification-अभिपोषण ।
Ration-अनुभक्त ।
Rationalism-बुद्धिवाद ।
Rationed-अनुभक्त ।
Rationing-अनुभाजन ।
Re-action-प्रतिक्रिया ।
Re-actionery-१ प्रतिक्रियावादी । २ प्रतिक्रियात्मक ।
Reader-१. उपस्थापक । २. पाठक, वाचक । ३. पाठावली ।
Reading-१ पाठ । २.अधिगमन । ३. वाचन । (समाचार-पत्रों का) ४.व्याकृति ।
Reading Room-वाचनालय ।
Real estate-स्थावर संपत्ति ।
Realism-यथार्थवाद ।(वि॰यथार्थवादी)
Rebate-छूट ।
Rebel-विद्रोही, विप्लवी ।
Rebellion-विद्रोह, विप्लव ।
Receipt-प्राप्तिका, रसीद ।
Reception Committee-स्वागत-कारिणी समिति ।
Receiver-प्रतिग्राहक ।
Recess-मध्यावकाश ।
Recollection-अनुस्मरण ।
Recommendation-अनुशंसा ।
Record-अभिलेख ।(वि॰अभिलिखित)
,, Court of-अभिलेख अधिकरण ।
Recording-अभिलेखन ।
Record-keeper-अभिलेख-पाल ।
Recovery-पुनःप्राप्ति, प्रतिप्राप्ति ।
Recruit-रंगरूट ।
Recruitment-भरती ।
Recurrence-आवर्त्तन ।
Recurring-आवर्त्तक ।
Recurring grant-आवर्त्तक अनुदान ।
Redemption-विमोचन ।
Reduction-१. छँटनी (व्यक्तियों की) । २. छूट, कमी (मूल्य, देन आदि की) ।
Re-enacted-पुनर्विधायित ।
Re-enactment-पुनर्विधायन ।
Reference-अभिदेश । (परि॰)
Reference book-सन्दर्भ ।
Referred-अभिदिष्ट । (परि॰)
Reformatory-सुधारालय ।
Reformer-सुधारक ।
Refugee-शरणार्थी ।
Refund-प्रतिनिवपन ।
Register-१ पंजी ।२.पंजीयन,निबंधन ।

Registered-निबंधित, निबद्ध ।
Registrar-निबंधक ।
Registration-निबंधन ।
Regulation-अधिनियम ।
Re-habilitation-पुनर्वासन ।
Rehearsal-प्राभ्यास
Rejected-अपासित, अस्वीकृत ।
Rejection-अपासन, अस्वीकरण ।
Relative-आपेक्षिक ।
Release-मुक्ति ।
Religion-धर्म ।
Remark-१. टिप्पणी । २. शंसिका ।
Reminder-स्मारक(रिका),स्मरण-पत्र ।
Reminiscence-संस्मरण ।
Remission-अवसर्ग, छूट ।
Remittance-प्रषण ।
Ramoval-१.पृथक्करण।२.स्थानांतरण।
Remuneration-पारिश्रमिक ।
Renaissance-नवाभ्युत्थान, नवोत्थान ।
Rent-१. किराया, भाड़ा । २ लगान ।
Rent Collector-भाटक-समाहर्त्ता ।
Rent Officer-भाटक अधिकारी ।
Repairs-मरम्मत, संस्कार ।
Re payment-परिशोध, परिशोधन ।
Repeal-विकर्षण । (वि० विकृष्ट)
Repetition-१. पुनरुक्ति । अनुलाप । २ आवर्त्तन ।
Replacement-प्रतिस्थापन ।
Replied-उत्तरित ।
Reply-उत्तर ।
Report-१. आख्या । २. सूचना । ३. प्रवाद । ४. विवरणिका । ५. संवाद ।
Reporter-१.आख्यापक।२.संवाददाता।
Representative-प्रतिनिधि ।
Repression-अवदमन, दमन ।
Re-print-पुनर्मुद्रण ।
Republic-गण-तंत्र ।
Republican-गण-तंत्री ।
Repugnancy-विरोध, विद्वेष ।
Repugnant-विरुद्ध, विद्विष्ट ।
Requisition-अधियाचन ।
Rescuing-उत्तारण ।
Research-गवेषणा ।
Re-seated-पुनरासीन ।
Reservation-न्यासेध ।
Reserved-१. रक्षित । २. न्यासिद्ध ।
Residence-आवास ।
Resident-आवासिक ।
Residuary-तलीय ।
Residuary power-तलीय अधिकार ।
Resignation-त्याग-पत्र ।
Resolution-१. प्रस्ताव । २. संकल्प ।
Resources-संवल ।
Responsibility-उत्तरदायित्व ।
Responsible-उत्तरदाता, उत्तरदायी ।
Rest House-विश्रामालय ।
Restoration-१. पुनरुद्धार । २ प्रत्यानयन ।
Restriction-निर्बंध ।
Result-परिणाम, फल ।
Resumption-१. पुनर्ग्रहण । २ प्रत्याहार । ३. पुनरारंभ ।
Retired-अवसर-प्राप्त, विरत ।
Retirement-१. अवकाश-ग्रहण, नि-वृत्ति । २. विराम, विरति ।
Return-१. परिलेख । २. प्रतिदान ।
Returning Officer-निर्वाचन अधिकारी ।
Revenue-राजस्व ।
Revenue Court-माल-न्यायालय,

राजस्व न्यायालय ।
Reversal-१. उलटाव । २. परावर्तन ।
Reverse-संज्ञा-पृष्ठ, पीछा, पीठ ।
वि० उलटा, विपरीत ।
Reversion-विपर्य्यय, विपर्य्यास ।
Review-१.समालोचना। २.पुनरीक्षण।
Revise-दोहराना ।
Revision-१. दोहराव । २.पुनरीक्षण ।
Revocation-अनुशय ।
Revolution-क्रांति ।
Right-स्वत्व, अधिकार ।
Right wing-दक्षिण पक्ष या मार्ग ।
Rise-उत्कर्ष, उत्थान ।
Risk-जोखिम, झोंकी ।
Roll-१. चीरक । २. पंक्ती ।
Roll Number-नामांक ।
Round-चक्र (गोलियों का) ।
Royal Seal-राज-मुद्रा ।
Royalty-स्वामित्व ।
Rule-१. नियम । २. शासन ।
Ruling-व्यवस्था ।
Running-चलता, चालू ।
Rural-ग्राम्य ।
Sacrifice-त्याग ।
Safe conduct-अभय पत्र ।
Safety-क्षेम ।
Salary-वेतन । (वि० वैतनिक)
Sales tax-बिक्री-कर ।
Sanction-अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा ।
Sanitation-शुचिता ।
Sanitorium-स्वास्थ्य-निवास ।
Satisfaction-परितोष ।
Schedule-अनुसूची ।
School-विद्यालय
Science-विज्ञान ।
Scroll-खर्रा, चीरक ।
Scrutiniser-संपरीक्षक ।
Scrutiny-संपरीक्षण ।
Seal-मुद्रा, मुद्रांक । (वि० मुद्रांकित
Secondary-द्वितीयक, गौण ।
Seconding-समर्थन ।
Secret-गोप्य ।
Secret agent-प्रणिधि ।
Secretariat-सचिवालय ।
Secretary-मंत्री ।
Secretion-निस्सारण ।
Sect-संप्रदाय ।
Secular-ऐहिक, लौकिक ।
Sedition-राज-द्रोह ।
Select Committee-प्रवर समिति ।
Selection-वरण ।
Semetic-शामी, सामी ।
Sender-प्रेषक ।
Senior-ज्येष्ठ ।
Seniority-ज्येष्ठता ।
Sensation-सनसनी ।
Sense-१. संज्ञा । २ भाव, आशय ।
Serial Number-क्रम-संख्या ।
Serum-सौम्य ।
Servant-सेवक ।
Service-१ सेवा । २ अनुपालन ।
Service Book-सेवा-पंजी ।
Session-सत्र ।
Session's Court-सत्र-न्यायालय ।
Set aside-उत्सादन अन्यथा करना ।
Settlement-१. प्रबंध । २. निपटारा ।
" Officer-प्रबंधक अधिकारी ।
Sexual-१. यौन, लैंगिक । २.मैथुनिक ।
Sexuality-कामिता, यौनता ।
Shade-१ आभा । २. छाया ।

Shell-१. कवच। २ गोला। (तोप का)
Sheriff-सुमान्य।
Shift-पाली।
Shorthand-संकेत-लिपि।
Signal-१. सिकन्दरा। २. संकेत।
Signature-हस्ताक्षर।
Sign board-नाम-पट्ट।
Silver Jubilee-रजत-जयंती।
Silver screen-रजत-पट।
Simplification-सरलीकरण
Site plan-स्थलालेख्य।
Sketch-१. आलेख्य। २. रूप-रेखा। ३. रेखा-चित्र
Sketching-१ आलेखन। २.रेखांकन।
Slander-अपवाद। (वि० अपवादिक)
Slogan-घोष, नारा।
Snow-line-तुषार-रेखा।
...गांक।
Socialism-समाजवाद।
Socialist-समाजवादी।
Society-समाज।
Sociology-समाज-शास्त्र।
Solace-ताप।
Solar-सौर
Solar system-सौर जगत्।
Sole-एकक, एकल।
„ Corporation-एकक-निगम।
Sound mind, of-स्वस्थ प्रज्ञ।
Source-स्रोत।
Sovereign-परम सत्ताधारी।
...st-विशेषज्ञ।
Specification-विनिर्देश।
Specified-विनिर्दिष्ट।
Specimen-प्रतिरूप, नमूना।
Spectrum-वर्णच्छटा।
Speculation-सट्टा।
Speculator-सट्टे-बाज।
Spokesman-प्रवक्ता।
Square-१. चत्वर। २. वर्ग।
Stabilisation-स्थिरीकरण।
Staff-कर्तृक, कर्तृ-वर्ग।
Stage-१. अवस्थान। २. रंग-मंच।
Stamp-अंक-पत्र। (वि० अंकपत्रित)
Standard-मानक।
Standardisation-मानकीकरण।
Standing Committee-स्थायी समिति।
Stand-post-चौकी घर।
Standstill agreement-यथा-स्थित समझौता।
Starch-श्वेत सार।
State-१. राज्य। २ संस्थान।
State language-राज-भाषा।
Statement-१. अभ्युक्ति, कथन। २. परिवृत्त। ३. वक्तव्य।
State prisoner-राज-बंदी।
State Seal-राष्ट्र मुद्रा।
Statesman-राज पुरुष।
Static-स्थितिक।
Station-अवस्थान।
Stationery-लेखन-सामग्री।
Statistics-१ आंकड़े। २. सांख्यिकी।
Status-स्थिति।
Statute-प्रविधान।
Statutory-१. प्राविधानिक। २. वैधानिक।
Stayed-स्थगित।
Stipend-वृत्ति।
Stock-१. भांडार। स्कंध। २ राज ऋण। ३. संपद्।

Stock-book-भांडार-पंजी, स्कंध-पंजी।
Stock-holder-स्कंधधारी।
Stockist-भांडारिक, स्कंधिक।
Stock-keeper-भांडारपाल, स्कंधपाल।
Stone-Age-प्रस्तर-युग।
Store-संभार, भंडार।
Strain-कर्ष।
Strata-स्तर।
Stratified-स्तरीभूत।
Style-शैली।
Sub-clause-उपखंड।
Subject-१ विषय। २. प्रजा।
Subject Committee-विषय-समिति।
Subject to-अध्यधीन, उपाश्रित।
Subjugation-१. अधीनीकरण। २ पराभव।
Sub-marine-डुबकनी, जल-डुब्बी।
Sub-normal-विसामान्य।
Sub-order-अंतर्वर्ग।
Subordinate-मातहत, अवर।
Sub-Registrar-उप-निबंधक।
Subrogation-संकर्षण।
Sub-rule-उप-नियम।
Sub-section-उप-धारा।
Subterranean-अंतर्भौम।
Suburb-उप-पुर।
Succession-१. उत्तराधिकार। २. उत्तरोत्तरता।
Sufficiently-पर्याप्ततः।
Suggestion-सुझाव।
Suicide-आत्म-हत्या, आत्म-घात।
Suit-विवाद, वाद।
Summon-आकारक।
Summoning-आकारण।
Sun-bath-आतप-स्नान।

Super-annuation-अधिहायन।
,, charge-१. अधिभार। २. अधिशुल्क।
Superintendence-अधीक्षण।
Superintendent-अधीक्षक।
Superior-वर, वरिष्ठ।
Superseded-अधिक्रांत।
Supersession-अधिक्रमण।
Super-tax-अतिकर, अधिकर।
Supervision-पर्यवेक्षण।
Supervisor-पर्यवेक्षक।
Supplement-१. पूरक। २. क्रोड़-पत्र।
Supplementary-अनुपूरक।
Supplied-समायुक्त।
Supplier-समायोजक।
Supply-समायोग।
Suretv for appearance-दर्शन प्रतिभू।
Surplus-बचती।
Survey-१ पर्यवलोकन। २ भू-मापन।
Surveyor-भू-मापक।
Survival-अति-जीवन, परिजीवन।
Surviver-परिजीवी।
Suspect-संदिग्ध।
Suspended-अनुलंबित।
Suspense-१. अनुलंब। २. उचित।
,, account-अनुलंब खा
Suspension-अनुलंबन।
Symbol-प्रतीक।
Symmetry-प्रतिसाम्य।
Synthesis-संश्लेषण।
Table-सारणी।
Tautology-पुनर्वाद।
Tax-कर, महसूल।
Technical-१. पारिभाषिक। २. शिल्पिक।
Technical term-परिभाषा।

Technician-शिल्पी ।
Temporary-अस्थायी ।
Tenacity-तानता ।
Tendency-प्रवृत्ति ।
Tnder-उपक्षेप ।
Term-१.अवधि।२.पण।३.पद।४.सत्र।
Terminal-१. सन्निक । २. आंतिक ।
Terminal tax-आंतिक कर ।
Terminology-पारिभाषिकी ।
Test-जाँच, परख ।
Theorem-उपपाद्य ।
Theory-सिद्धांत ।
Thermometer-ताप-मापक यंत्र ।
Ticket-प्रवेशपत्र, टिकट ।
Tidal waters-ज्वार-भाटा ।
Timber-वास्तु-काष्ठ ।
Timber-tree-वास्तु-वृक्ष ।
Time Table-समय सारिणी ।
Titanus-धनुष-टंकार (रोग) ।
Title-१.आगम।२.उपाधि।३.शीर्ष-नाम।
Toll-tax-मार्ग-कर ।
Total-जोड़, योग, योग-फल ।
Tour-परिक्रम, दौरा ।
Town-नगरी, पत्तन ।
Town-area-नगरी-(पत्तन) क्षेत्र ।
Tracing-प्रत्यंकन ।
Tractor-हल-यंत्र ।
Trade-व्यापार ।
Trade-mark-व्यापार-चिह्न ।
Trader-व्यापारी ।
Trade-Union-श्रमिक संघ ।
Tradition-१. अनुश्रुति । २. परंपरा ।
Tragedy-१. दुर्विपाक। २. वियोगांत ।
Training-प्रशिक्षण ।
Training College-प्रशिक्षण महा-विद्यालय । (परि॰)
Trance-समाधि ।
Tranquility-प्रशांति ।
Transaction-पणाया ।
Transferee-अंतरिती ।
Transference-१. अंतरण । २. बदली । ३. हस्तांतरण ।
Transference deed-अंतरण-पत्र ।
Transferer-अंतरिक ।
Transferred-अंतरित ।
Transgression-अतिचरण ।
Transition-संक्रमण ।
Transit pass-निकासी, रवन्ना ।
Translation-अनुवाद, उल्था ।
Transparent-पारदर्शक ।
Transport-उत्तारण । (परि॰)
Transportation-उत्तारण । (परि॰)
Treasurer-कोषाध्यक्ष ।
Treasury-कोशागार ।
Treasury Benches-राज-पीठ ।
Treaty-संधि ।
Tresspass-अपचार ।
Tresspasser-अपचारक ।
Tresspassing-अपचारण ।
Trial-१. परिदर्शन । २. परीक्षण ।
Trial of cases-व्यवहार-दर्शन ।
Triangle-त्रिभुज ।
Tribe-जन-जाति । (परि॰)
Tribunal-न्यायाधिकरण ।
Triennial-त्रै-वार्षिक ।
Truce-विराम-संधि ।
Trust-न्यास ।
Tube-well-नल-कूप । (परि॰)
Type-writer-टंकण-यंत्र ।
Type-writing-टंकण ।

Typist–टंकक।
Ultimatum–अंतिमेत्थम्।
Umbra–प्रच्छाया।
Un-cashed–असुक्त।
Un common–असाधारण।
Under–अवस्थ, मातहत।
Un employed–अनियुक्त, बेकार।
Un-employment–बेकारी (वि० बेकार), अनधियुक्ति (वि० अनधियुक्त)।
Uniform–संज्ञा-परिच्छद, वरदी। वि० एक-रूप।
Uniformity–एक-रूपता।
Uni-lateral–एक-पक्षीय।
Unit–मात्रक, एकाई, इकाई।
United Nations Organisation–राष्ट्र-संघ।
Universal–सार्विक।
University–विश्वविद्यालय।
Un-parliamentary–असंसद।
Unsound mind, of–विकृत-चित्त।
Up-to-date–दिनाप्त।
Uranus–वारुणी। (आकाशस्थ पिंड)
Urgent–आवश्यक।
Usual–प्रायिक।
Vacancy–रिक्ति।
Vacation–विराम-काल।
Vaccum–शून्य।
Valid deed–संलेख।
Valuation–मूल्यन।
Value–मूल्य।
Verdict, of jury–अभिनिर्णय।
Verification–सत्यापन।
Vested interest–अधिष्ठित स्वार्थ।
Veterinary–शालिहोत्रीय।
Veterinary Doctor–शालिहोत्री।
Veterinary Science–शालिहोत्र।
Vice-Chairman–उपाध्यक्ष।
Vice-Chancellor–कुलपति।
Vice-Chancellor, Pro–उप-कुलपति
Vice-president–उप-सभापति।
Voluntarily–स्वेच्छया।
Voluntary–स्वैच्छिक।
Volunteer–स्वयंसेवक।
Vote–१. मत। २ मत-पत्र।
Voter–मत-दाता।
Voting–मत-दान।
Voucher–साक्षिका।
Wages–वेतन।
Waiting Room–प्रतीक्षा-गृह।
Warrant–अधिपत्र, अधिकरण।
War-ship–युद्ध-पोत।
Wasting disease–क्षीयक रोग।
Waterways–जल-मार्ग। (परि०)
Wave–तरंग।
Whip–चेतक।
Will–लिप्सा (पत्र), वसीयतनामा।
Winding up–समापन।
Wording–शब्दावली।
Working day–कार्य-दिवस।
Writ–लेख।
Year–वर्ष।
Year-book–अब्द-कोश।
Zenith–शीर्ष-बिंदु।
Zoology–जंतु-विज्ञान।